	•		1	



देवकानिक म्हीलव

DOI 10 1-64 40

म्हामात, २६८म देवतम्, ५७५५ च्याहमात, अस्टि सारम्, ५७५६

Friday, 8th May, 1980 -- Bridge Stat Sulp. 1886

Car was

विका क मार्का

l W II

(बायक					
ींक्ष्यकूषात स्मिनगर्•७ 🤇	-	les.	144		প্রমীলা নজর্ল (ক্ষিতা) ৭৪৮;
জয় ৰস্	***			}-4	रथमात्र कथा ८৯९;
জৈত মুখোপাধ্যায়		***	240	•••	জীয়ন রস (গম্প) ৬৭৩;
कर्ण्य बल्मानाबाहा	•••	,	***	***	শরীরের বাগানে (কবিন্তা) ৯০৮;
্বীন ৰন্দ্যোপাধ্যায়	-	-	•••	204	বিমলা ও কুস্মের গলপ (গলপ) ৮৪;
		,			নীলকণ্ঠ পাথির খোঁজে (উপন্যাস) ২১৫, ২৯৬, ৩৭৯, ৪৫৮, ৫৭৪,
!		,	÷	- 1	604, 620, 920, 860, 282, 2012;
ীশ বর্ধন			h-a		গাছ (গলপ) ৭৮:
, व्यक्त		•••	•••		সাহিত্য ও সংস্কৃতি ২১১, ২৯০, ৩৬৩, ৪৫২, ৫১৬, ৬০৫, ৬৮৬,
70 14	•••	•	•••	***	946, 885, 856, 5005, 5098;
াল ভোমিক					কেমন করে ভরসা রাখি (কবিতা) ৫০৮;
	***	144	•••	•••	
্ৰাককুমার সেনগ্ৰেড	•••	•••	• • •	•••	হেমন্তের শুসাভূমি (গল্প) ৬৩২;
ী শাককুমার চট্টোপাধ্যায়	•••	•••	•••	•••	বাদত্তব (কবিতা) ৪২৮;
^{ब्रीर} ाग्न कोध् _र ज्ञी	•	•••	•••	•••	িনজেরে হারায়ে খ'্লি (স্মৃতিভারণ) ২৩৯, ৩১৩, ৩৯৫, ৪৭১
					688, 429, 90%, 9%8, 849, %6 2, 3000, 330 5;
শ্ৰীৰ শ্ৰুষ্ণত	***	•••	•	•••	विस्तातन कथा २७२, ०৮৮, ৫৫०;
बः n	See w				
্ল আফীজ আল-আলান	ý •	,	1.0	•••	নজর্ল চরিত্রের অনাদিক (আলোচনা) ২৮৭;
थार म सन्दान	* ***	•••		***	महाथत सामा २०८, २१७, ०६५, ८८५, ६८६, ६९४,
	+				968, 808, 888, 8098;
হ তি দাস	•••		5 0.4	3.4	প্রে সীমান্ত (ক্রিডা) ১৮৮;
ंग्ज ज्ञानग्रम			•		এখন (কবিতা) ২৬৮;
	*** ** ₃	•••	***	•••	ক্বিভার অনুবাদ (আলোচনা) ৭৭৪;
्रिकाच म्राचाणायात	pes	***)40	***	
•					र्माधाधात हत्र (१९७१) ১৮৯;

विषय ७ भाषी

n = n	•	•			
n = n					
ক্লীকলত ভট্টাচাৰ	•••	•••	•••	•••	খেলার কথা ৪১৩, ৭৩৩;
क्रीक्लाम त्वन		•••	•••	•••	দিনগ্রিল রাতগ্রিল (বড় গলপ) ৭৭৭, ৮৬২, ৯৪৯, ১০২৭,
श्रीकाको धाँ	•••	•••	•••	•••	ব্যুক্সচিত্র ১৮৬, ২৬৫, ৩৪৩, ৪২৩, ৫০৪, ৫৮৬, ৬৬৬
A					৮২৫, ৯০৬, ৯৮৪, ১০৬৬; পালাশেরে দিন (কবিতা) ৮২৮;
क्रीवित्रपण्डम् स्निग्र्च	***	•…	•••	•••	শ্লালোর (দ্ন (ক.বেডা) ৮২৮;
น ๆ แ				. •	
শ্লীগৰি কুনোলী					তোমায় ভালবেদেছি (কবিতা) ৯৮৮;
জিগিরিজাপতি ভট্টা চার্য	•••				ম্নাইপ শিকার (গম্প) ৪৩৭;
শ্লীলোপাল দাসত	•••				বেলফ্ল (গণ্প) ১০৬৯;
क्रिलाविण गृत्वाभागाम	•••	•••			বন্দী ধর্মশালায় গাজন (কবিতা) ১০৮৬;
এ বোরাপা ভৌমিক	**	•••	•••		কে দেখে এমন দ্শা (কবিতা) ৪২৮;
श्रीरणोत्रीयण्यम् अग्रेग्रागर्य		• • •			ন্ডির দুর্গ (গলপ) ১৬২;
बी श्रम्थनमी	•••	• • •	• • • •	• • •	বৈকুন্ঠের খাতা ৩৬৭, ৪৫৬, ৫২০, ৬৯০, ৭৭১, ৮৪৫,
					500 6 , 5095;
n 6 n					•
× × ×					চিঠিপত ১৮০, ২৬০, ৩৪০, ৪২০, ৫০০, ৫৮০, ৬৬০,
					₹₹0, %00, %₩0, %0%₩;
ত্রিভিন্নর সিক্					প্রদর্শনী পরিক্রমা ২৩৩, ৩৯৩, ৭১৮, ১০৯৮;
क्री डिस्टनथक			•		ওয়ারহাউজেন উৎসব (আলোচনা) ৯৬৪;
क्रिका ण्यमा					জলসা ৩২৬, ৪১১, ৪৮৭, ৫৬৪, ৬৫১, ৭২৪, ৮০৩,
					565, 552 2 ;
nti					
রীছ ৰি বস্	•••	• • • •			অতি কথা (গল্প) ৫৯২;
n er n					
•					
শীক্ষণানাথ চছৰতী	***	•••	•••	•••	শেষ ঢড়্ইভাতি (কবিতা) ৫৮৮;
শ্রীজ্যোত্তিক নক্ষ্মী	• • •	•••	•••	•••	गाष्ट्र (गल्म) ৯৭;
n v n					
ভারাশক্ষর বল্যোপাধ্যায়					নববর্ষের সাহিত্যসভা (আলোচনা) ২৯৩; তেরই আ ষা ঢ় (আ
					890 ;
uvu					
श ्चिक	•••	•••	•••	•••	रबनाध्ना २६७, ७७५, ८५६, ८५६, ६५६, ५६६, ५०८,
					498' 946' 2066' 2266:
क्रिक्यातसम् वम्	•••	•••	•••	•••	অংশকার পাথরের মত (কবিতা) ৪২৮; ভালে ঝিলমে (কবিতা)
विशेषिक क्योंगक विशेषक क्योंगकी	•••	•••	•••	•••	নাটমন্ডের মন্ডোৎসব (আলোচনা) ৬৪২;
श्रीवीलक कोब्रुवी श्रीवीलक करू	•••	•••	•••	•••	বিপ্ৰদেশ (গ্ৰুপ) ৬৭; অতিক্লান্ত (গ্ৰুপ) ২৭১;
श्रीपीटणन साम श्रीपर्त्वाण स्वाप	, ***	•••	•••	•••	নিমাণ (কবিতা) ৫৮৮;
জান্দাল নোৰ জীন্ততি চলবতী	•••	•••	•••	•••	আমরা মাঝে মধো (কবিতা) ১৮৮;
क्रान्यक क्रम्बर्गः क्रीरम्बन सम्बद्धाः	•	•••	•••	•••	वारना नाग्रेटकत कथा
क्रास्थ्यम् । क्रास्थ्यम् हास	•••		•••	•••	এপার-ওপার (গম্প) ৯৯১; পা (গম্প) ১২৬:
	•••	•••	•••	•••	
×××					ल्ल-विस्तरम ५४८, २४८, ७८८, ८२८, ६०५, ६४८;

विषय ७ भाषी

•					• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
nun					
श्रीवीरतम्प्रनातात्रण नास		•••	•••		ৰ্মালিখিত কাব্য (কবিজা) ১০৬৮;
nan					
মাননী ভৌমিক					Company Company
व्यानमा स्थानम	•••		•••	•••	গান্ধারী (গলপ) ১০০;
वानद्वनम् ६५२५ विभागतिकत	•••	•••	•••	•••	রাতি (গশপ) ৩০; স্থেক্সাগ্র ২৪৪, ৩২৮, ৪০২, ৪৮৯, ৫৬৬, ৬৪৫, ৭২৫, ৮০ ৪,
,अस्तुर-पर-काम	•••	•••	•••	•••	४४९, ७७६, २०८७, ४३ २ ८;
वैभावाद्यभ गटण्याचाया				•••	कि निरंत्र कारक निरंत्र शक्य (स्रोत्नाइना) ১৫;
শ্রীনিশকাল্ড		•••	***	•••	মশ্দির (কবিতা) ৩৪৮;
		•••	•••	•••	¥ 3*
น ๆ แ					
শ্ৰীপরিমল গোশ্বামী	•••	•••	•••	•	পাথুরে ভূতের গল্প (গল্প) ১৮;
শ্রীপ্-ভর ী ক			•••		प्तरम-विरमरम ७७८, १८८, ४२८, ४०६, ४४६, ४०७८;
শ্ৰীপ্ৰতিভা বস্	•••	•••		•••	বিচিত্র হৃদয় (গ্রুপ) ৩৫;
শ্রীপ্রতিষা সেনগাংক		•••			দুটি কবিতা (কবিতা) ৯০৮;
श्रीज्ञाम मृद्ध		•••	•••	•••	দামাল ছায়া (কবিতা) ২৬৮;
					আত্মসমপুণ (গ্ৰুপ) ৫৩৬;
श्रीशक्त हान	•••		•••	•••	আজকের সমাজ (আলোচনা) ৩৪৯;
শ্রীপ্রভাতদেবসরকার	•••	•••		•••	বিনিয়োগ (গল্প) ৪৬;
<u> शिक्षमी</u> णा	***	•••	• • •	• • •	অপানা ২৪২, ৩২১, ৪৮২, ৫৫৯, ৬৩৭, ৭২১, ৭৯৮, ৮৮৩,
_					369, 5555;
শ্ৰীপ্ৰাণতোষ ঘটক	•••	•••	••	•…	विश्वान (येन्य) ४६;
শ্রীপ্রেমেন্দ্র মিত্র	•••	•••	•••	•••	গণেপুন্তাল (আলোচনা) ১৪; গোরেশা কবি পরাশর
					কোহিনী-চিত্র) ২৪১, ৩২০, ৩৯৭, ৪৮১, ৫৫৮, ৬৩৬, ৭২০,
					RO2' RA5' 262' 2088' 2222'
nan					$(\mathbf{w}_{i}, \mathbf{v}_{i}) = (\mathbf{v}_{i}, \mathbf{v}_{i}, $
শ্ৰীৰাশীকণ্ঠ ৰন্দ্যোপাধ্যায়					and a market and a factor of the factor of t
धानान ।कान्छ नरन्त्रानावग्रह	***	•••	•••	•••	একটি আলপিন চাই (কবিতা) ১৮৮;
नारकाम नगा नीर्वादकम् मख	•••	•••	•••	•••	চন্দনেশ্বর মন্দির (আলোচনা) ৪৭৩; অমলের শোণিত (গল্প) ১৬৭;
बीब्र्याम्य गृह		•••	•••	•	ইচ্ছার দাস (গণপ) ১০৩;
and and aff	***	•••	•••	• • •	रुष्यात्र नाम् (तन्ता) ३००,
nwn					
•					
श्रीकवानी भ्रदेशांभाषात्र	***			***	ছায়া প্রাগামিনী (গল্প) ২২; আজকের সমাজ (আলোচনা) ৭৪৯ টু
শ্রীভেন্ন নোভিকোভা	•••	•••	***		সোভিয়েত ইউনিয়নে বাঙলা চর্চা (আলোচনা) ৫২২:
19 67 as					
្យ ន ្យ					
श्रीमणीन्स ब्राह्म	•	***		•	আজ্ঞাকর সমাজ (জালোচনা) ৬৬৯;
শ্রীমন্ত্রী স্বকার (চাকী)	•••	***	•••	•••	র্ভা ড়ব ী ন্তা (আ লোচ না) ১১১১;
শ্রীমতি নলগী	•••	•••	•••		গ্-ডाम्बर्स (शक्त) ৯০;
अभटना वित्र	•••	-	•••	***	মনের কথা ২২৬, ০০৫, ০৮১, ৪৬৬, ৫০০, ৬১৭, ৭০২, ৭৮৭,
					₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩
वीवानव जानग्रज	•••	***			भाभ (भवन) ६५६;
শ্রীমিহির জাচার্য	***	•••	***	•-•	তাহের আলি (গল্প) ২৫;
					স্হোদর (গণশ) ৯০৯; লাল অংথকার (ক্বিডা) ৫০৮;
শ্রীদ্যাধক রার	•••	***	***	***	भीषा जन्मकार (कानका) ६०६:
nun					
क्षियत्मामाक्षीयम क्ष्मांठाव	• ,		***	}	ঘাতক (গল্প) ১৪৫; আজকের সমাজ (আলোচনা) ২৬৯;
. •	•				

विवय ७ भ छ।

nan .					
सर्वीन्द्रमाथ देवस	••4	•	•••	•••	নিধিরামের বেসাতি (গণ্প) ৫২;
विवासन दर्शभद्वी		•••	***	•••	আমি, আমার স্বামী ও ন্বিলয়া (গল্প) ১৩০;
बिद्राण्यम् नवकाव	•••	•••	•••	•••	আলেকজাশ্ডার বিজি করে দাঁতের মাজন (কবিতা) ১০৮৬;
n = n					
শশ্দরবিজয় মিত্র	•••		•••	•••	থেলার কথা ২৫১, ৫৭৩, ৮৯৩;
শচীপ বস্ত		•••	•••	*7*	চটুগ্রামের চন্দ্রনাথ (আলোচনা) ২২১;
শ্ৰু শিল্প শ্ৰু শ্ৰু শ্ৰু শ্ৰু শ্ৰু শ্ৰু শ্ৰু শ্ৰু	•••	•	•••	•••	ম্পাৰ্য (গ্ৰহণ) ১০৬;
निरक्दबन्द्रमाथ भित		•••	•••	•••	ঢোকরা কাহিনী (আলোচনা) ৯১৯;
নিশ্তি পাল		•••	•••	•••	দ্বিতীয় প্থিবী (বড় গলপ) ৩৫২, ৪৬৯, ৫৫৫, ৬২ ২, ৭
লৈণিতদেৰ যোগ				***	বিশ্বভারতীর বর্তমান সমস্যা (আলোচনা) ১০০৮;
মিশ্বরাম চক্রবতশী	•••	•	•	•••	খট্টাখ্য পর্রাণ (গশপ) ৮২;
विनवनान कोयुनी		•••		•••	কান্বোডিয়া (আলোচনা) ৪৪৫;
हिष्टियम हटहोशायात		•••	•••	•••	সীমানত ছাড়িয়ে (কবিতা) ৯০৮;
सान्द्रवन १८३१ गावास सर्वेशका इक्कबर्जी	•••				গোয়েন্দা কবি পরাশর (কাহিনী-চিত্র) ২৪১, ৩২০, ৩১৭
आध्यका व्यवस्थाः .	•••	•••	•••	b	\$\$K, \$0\$, 450, KO2, KK5, \$\$2, 5088, \$335;
<u> </u>					আমার বন্ধ: নজর্ল (আলোচনা) ২৮০;
क्रिटेनलकानन्य ग्रह्माशाशा श	•••	•••	•••	***	आभात यस्यू मकत् _य (आध्याक्या) २४०; छ (शक्य) ५००५;
श्रीरेनरनम नाम	•••	***	•••	•••	বেতারপ্রতি ২৫০, ৩২৩, ৩৯৮, ৪৮৪, ৬ ০৯, ৭২ ৭, ৮০
ब्रीश नपक	•••	•••		pes	%4, 5086, 5554;
n a n					
ী স্ত ীস্থলাথ মৈত্ৰ		•••		•••	কলকাতা '৬৯ (কবিতা) ২৬৮;
লিক্ডাৰকুমার খোৰ নিক্তাৰকুমার খোৰ	•••	•••			ছায়া হরিণ (গল্প) ৭২;
	•••	•••	•••	•••	আজকের সমান্ত (আলোচনা) ১৯২;
शिनम्पीनन हटहाभाशाद्य	•••	•••	•••	***	বিজ্ঞানের রক্তমাংস (গ্রন্থপ) ১৪৮;
·					নিকটেই আছে ২২২, ৩০২, ৩৭৭, ৪৬২, ৫২৯, ৬১৩
बीर्जान्यरम्	•••	•••		***	
					940, 840, 828, 3054, 5089;
श्रीलमन ्	•••	•••	•••	•••	माना कार्य ১४२, २७२, ७८२, ४२२, ४०२,
					७७२, १८२, ४१२, ५०२, ५४१, ५०७१;
× × ×					সম্পাদকীয় ১৮৭, ২৬৭, ৩৪৭, ৩৭৭, ৪২৭, ৫০৭ ,
					৬৬৭, ৭৪৭, ৮ ২ ৭, ৯০৭, ৯ ৮৭, ^১০৬৭ ;
हीज्यक्षात स्मन	•••		•	•••	রবীন্দ্রনাথের কবিতা-গান প্রসংশ্যে (আলোচনা) ১১; 🥞
श्रीन्यीत्रक्षन भ्रदश्राभाष्य	•••			•••	মঙ (গ্ৰহণ) ১৪;
শ্ৰীস্ভাষ ঘোষাল	•	•••	••		মেঘ ও ময়্র (গল্প) ৩১৭;
क्रीज्ञधनाथ स्थाय	•••	•-•	•••		দুক্তের (গলপ) ৫৪;
श्रीज्ञानील काना		•••	•••	•••	অধর মাঝি (গলপ) ১৩৮;
হৈয়ৰ মুক্তাফা সিরাজ					নোহিনী-স্কভা-রাজেন (গলপ) ১৭০;
श्रीतीयम हन्य			•••		ই'দ্র (গল্প) ১১৫;
क्रीन्यर्गकाम क्षेत्रहार्य		•••		•••	হাতেখড়ি (গম্প) ৫৯;
n e n					
क्रीवीटबन्द्रनाथ मृदयाणायात्र	J es	•••		•••	অমান্বতার বিপক্ষে (মালোচনা) ৭৫১;
n 🖛 u					
क्रीरकश्चनाथ शास	_ G AA	***	•••		খেলার কথা ৩০৬, ৬৫৫, ৯৭৫;
	. /	-			

শ্ৰেষ্ঠ লেখক শ্রেষ্ঠ রচনা

॥ অচিন্ত্যকুমার সেনগঞ্ত ॥

ভাগৰতী তন্ (যন্ত্ৰস্থ) গোরাখ্য পরিজন ১০ কবি খ্রীরামকৃষ্ণ ৫॥ ভক্ত বিৰেকানন্দ ৪॥ ॥ অবধ্ত ॥ ॥ আশাপূর্ণা দেবী ॥ নীলকণ্ঠ হিমালয় ৮॥ হিংলাজের পর ৫ নয়ছয় ৫॥ বিজয়ী বসনত ৬ একাল সেকাল অন্যকাল ১০

॥ আশ্বতোষ মুখোপাধ্যায় ॥

বিদেশিনী ^৪় নগরপারে র্পনগর ১৮ বরুংবৃতা ৬ সাতপাকে বাঁধা ৫ কাল, ভুমি আলেয়া ১২ ম

॥ গজেন্দ্রকুমার মিত্র॥

আমি কান পেতে রই ১৪ রমণীর মন ৫॥ দহন দীপ্ত ৬ একদা কী করিয়া ১৩ উপকর্পে ১০ ॥ তারাশঙ্কর বন্দ্যোপাধ্যায়॥

শ্কেসারী কথা ৮॥ গলাবেগম ৮; রাধা ৮; উপছায়া ৫; দৈবতসংগতি ৩॥ মিশ্ররাগ ৪;

" সম্প্রাক্ষ ব্যাপাধ্যায়॥
॥ নকুল চট্টোপাধ্যায়॥

।। নারায়ণ গ**েগাপাধ্যায়**।।

া হৈলোক্য মুখোপাধ্যায় ॥ ॥ নকুল চট্টোপাধ্যায় ॥ । কঙ্কাবতী ৫॥ রচনাসম্ভার ১২ তিন শতকের কলকাতা ৬ চিরকুমারী সভা ৪ ॥ প্রফর্ল্ল রায় ॥

নতুন তোরণ ৪॥ কলধ্রনি ৪॥ বাতাদে প্রতিধর্নি ৭॥ প্রপার্বতী ১১ কিল্রী ৪॥ া। নীহাররঞ্জন গুম্ত ॥

সেই মর্প্রান্তে ১১ রাত্রিনশীথে ৭ স্থাতিপস্যা ১০ স্মৃতির প্রদীপ জন্লি ৯ অপারেশন ৭॥

॥ প্রবোধকুমার সান্যাল ॥

গংগাপথে গংখ্যাত্রী ৩॥ উত্তর হিমালয় চরিত ১১ মনে রেখো ৮ নগরে অনেক রাত ৪॥ ॥ প্রমথনাথ বিশী॥

র্বা-কমসরণী ১০্রবীন্দ্রসরণী ১০্লালকেলা ১৪্কেরীসাহেবের মুন্সী ১০্নিকৃষ্ট গলপ ৫্ ॥ প্রমোদকুমার চট্টোপাধ্যায়॥ ॥ প্রেমেন্দ্র মিত্র॥

॥ প্রশানত চৌধুরী ॥

। বিমল কর ॥

আলোকের বন্দরে ৪॥ গোধ্লি রঙীন ৫ স্থিনী ৪ সমারেখা ৪॥ বাড়িবদল ৪ ॥ বিভূতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায়॥

দ্দিউপ্রদীপ ৭ দেবযান ৬, অথৈজল ৫॥ আরণ্যক ৬॥ ইছামতী ৯, শ্রেষ্ঠ গলপ ৫॥ উমিমি,খর ৪, ॥ বিভৃতিভূষণ মুখোপাধ্যায় ॥

একই পথের দুই প্রান্তে ৪ আর এক সাবিতী ৫ দ্বর্গাদপি গরীয়সী ১ম ৫ ২য় ৫॥ ৩য় ৬ া মনোজ বস্ ॥ । মহাশ্বেতা দেবী ॥ । রমাপদ চৌধ্রী ॥ । । লীলা মজ্মদার ॥ । সাজবদল ও॥ । আধারমানিক ১২॥ । জরির আঁচল ৪ । আর কোনখানে ও

॥ শঙ্কু মহারাজ ॥

॥ मृत्रथनाथ घाष ॥

া শৈলজানন্দ মুখোপাধ্যায় ।। । হরিনারায়ণ চট্টোপাধ্যায় ।। নিবেদন্মিদং ৭ শ্রীমান শ্রীমতী ৭ কাল্ডবিহণ্গী ১১ প্রাচল ১১ মুকাসন্ভবা ৫

মির ও ঘোষ : ১০, শ্যামাচরণ দে শ্রীট, কলি কাতা-১২ ফোন : ৩৪-৩৪৯২ ৩৪-৮৭৯১

ডঃ নিরঞ্জন চক্রবতশী	निननीकृष्य मानगरूक	গোপাল বেদান্তশাল্মী
বিদ্যাপতি-সমীক্ষা	र्देणिशाम-भिक्षण ४	রা চ ট্রভাষা ০৸
<u> </u>	and a sea March a flad	नाबाद्यन जानग्रन
ৰিংকম অভিধান ১৫:	त्रभर्कित भरथ ७	অপর্পা অজন্তা
	কালীকৃষ্ণ ভট্টাচাৰ্য	(त्रवीम्प्र-भर्तप्रकातथना) २०
णः ग्रक्तर निरह श्रीत ्भ ७ भगवली	বঙ্গের রত্যমালা ৬	বাস্ত্রবিজ্ঞান ১০
	नाताग्रण हन्म	(The only Book on Building Construction in Bengal)
সাহিত্য ১৫্	মহাপ্রভ, শ্রীচৈতন্য	Handbook of Estimating
णः दमवत्रक्षन मृत्थाशामाम	9;	ৰাসবদত্তা
गाँउ पर्गन उ	ष्ट्रस्य वरम्माभाषाम	
माङक वि ४	দেশী বিদেশী গম্প ৩,	গৃহস্থবধুর ডায়েরা ৭,
न, थमन म, दशानाशाम	অনিলবরণ গ্রেপ্যাপাধায়	विश्ववन्धः भागाण
ATOM ACAINING	रमगी-विरमभी २	
ৰাংলা ইতিহাসের	রামনাথ বিশ্বাস	সাগরবেদে ৬্
प्रमावष्ट्र ५६	আজকের	न्रअम्बनाथ ठ८द्वोशाक्षा
(স্বাধীন স্পতানদের আমল) রবীশূদ-সাহিত্যে নবরাগ ৬্	ञार्याद्रका ७॥	গোকী'র মা ৬্
कः कीरतन्त्रनातासन स्राथात्रास	नानहीन ७	
উण्जनन नीनर्भाग	প্রতিয়া ইউরোপ চল্ল	গোপালচন্দ্র চক্রবতশী
- 2/4 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 -	व्यन्धकादात्र व्यक्तिका २॥०	সম্মিট-উন্নয়ন ও
ৰোগেশচন্দ্ৰ ৰাগল	Es Wellder aller	भम्श्रमात्रग १॥
ম্বির সন্ধানে	রৰীন্দ্রনাথ (কবি ও দার্শনিক) ২॥০ রবীন্দ্রনাথের উপন্যাস	
		रतक्ष मृत्यानायाम
ভারত ১০্	বিধ্ভূষণ ভটুচার' হ₁গলী ও হাওড়ার ইতিহাস ৬্	० जीशाज्यहो-प्राचित्रम
		ए छोमाम् - विम्राभि 8,
মোহিতলাল মদ্যান্ত্রদার (সম্পূর্ণ ও সটীক)	ह् शीमाम बन्न,	
	আরামবাগের	विभन मेख
कावा-मञ्जूषा ১०	रेजिकथा ७	साभाम ात गलभ ०५०
	স্প্ৰকাশ রায়	চেকভের গলপ ৪
জ্বালকানিত দাখগানত	W. TORY THE PARTY OF THE PARTY	
শ্রীরামকৃষ্ণ ৬	क्षिकृषण विश्वाम	রাহ্যে সংস্কৃত্যায়ণ
পরমারাধ্য শ্রীমা ২৮০	বিভীষিকার	মানব-সমাজ ৬্
ভগিনী নিবেদিতা ৬,	ञखनात्म ः।	
	22	স্নীজ বিশ্বাস
রূপ হতে অরূপে ২॥০	नात्र ।। तक मिक्का नाः	সোমারসেট মমের
निकासकृष्य स्थाप	ভারতী ব্রুক স্টল	
श्राथीयक छेन्।ान-विमा ७	७, तमानाथ मज्यभात खीरे किनकाछा ১	শ্রীমতী ক্লাডক ৬

=== विस्मामस्यव वहे = **ब्रीकथक**ठाकुरत्रत शस्थानःकशन অথ ভারত কথকতা ১০০০ তৈলোক্যনাথ মংখোপাধ্যায়ের উপন্যাস ক্ৰাব্ৰ 0000 প্রেমেন্দ্র মিতের উপন্যাস ও গণপ **ময়ুরপ**শ্বা 6.00 মকরমখ ७.00 [আগামী প্রকাশ] গলপ আর গলপ २ • २ ७ শ্রে যারা গিয়েছিল 0.00 ড্যাগনের নিঃশ্বাস ₹.₹€ भौतिशहरू हत्हे। शासास्यत .ভরাৎকরের জীবন-কথা २ • ३ ७ সঞ্জয় ভট্টাচার্যের দুটি বড় গল্প নাবিক রাজপত্ত্র ও সাগর রাজকন্যা ₹.00 স্শাল জানার গলপ-সংকলন গণ্পময় ভারত । প্রথম খণ্ড ৩০০০ ॥ দ্বিতীয় খণ্ড ৩০০০। গোপেন্দ্র বস্ত্র রহস্য উপন্যাস দ্বণ মাকুট ₹.60 আশ্তোষ বল্দ্যোপাধ্যায়ের উপন্যাস বিজ্ঞানের দ্যুঃস্বপন বহিক্মচন্দ্র চট্টোপাধাায়ের উপন্যাস আনন্দমঠ | ছোটদের | ₹.00 স্থলতা রাওয়ের গল্প-সংকলন দ্বপন্বভার গল্প-সংকলন প্ৰপনৰ,ড়োর কৌতুক কাহিনী ₹.40 শিবরাম চক্রবতীরি গলপ-সংকলন আমার ভালকে শিকার 0.00 চোরের পাল্লায় চকর বর তি o.00 সমর্বজিং করের বিজ্ঞানাশ্র্যী উপন্যাস ওয়ঙ্কর সেই यावशाः 0.56

विष्णामम लाहेरबरी शाः लिः

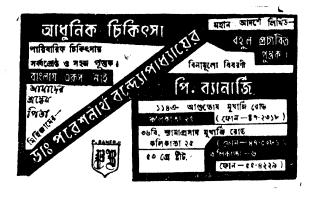
৭২ মহাত্মা গান্ধী রোড: কলিকাতা ৯ ফোন: ৩৪-৩১৫৭ अ पण

১ল সংখ্যা জ্লো ২ুটাকা

Friday, 8th May, 1970.

महत्रवात, २८१म रेबमाथ, ५०१५ Rs. 2.00

প্ষা বিষয় লেখক ১১ রবীন্দ্রনাথের কবিতা-গান প্রসংশ্য --- শ্রীস্কুমার সেন --শ্রীপ্রেমেন্দ্র মিত্র **১८ शस्म नक्न काम** 50 की नित्म काटक नित्म शहल --- শ্রীনারায়ণ গণেগাপাধ্যায় -- শ্রীপরিমল গোস্বামী ১৮ পাথারে ভূতের গলপ -- শ্রীভবানী মুখোপাধ্যায় ২২ ছায়া প্ৰ'গামিনী -- শ্রীমিহির আচার্য ২৫ তাহের আলি --श्रीनरवन्म, रचाय ৩০ রাত্রি —গ্রীপ্রতিভা বস: ৩৫ বিচিত্র হ্দয় -- শ্রীপ্রাণতোষ ঘটক ৪২ বিহাসাল শ্রীপ্রভাতদেব সরকার ৪৬ বিনিয়োগ -- শ্রীরবীন্দ্রনাথ মৈত্র ৫২ নিধিরামের বেসাতি



মহাত্মা শিশিরকুমারের

—काञ्चकवानि उत्तवसाभा अख-

অমিয় নিমাই-চরিত

(৬ঠ খন্ড) প্রতি খন্ড

0.00

कानाहाँम भीजा

৪৭ সংস্করণ

9 00

নিমাই সন্ন্যাস

(नाएंक) २त्र সংকরণ

₹.00

নরত্তম চরিত

৩য় সংস্করণ

২∙০0

লড গোরাঙ্গ

(২টি খন্ডে) (ইংরাজী) প্রতি খন্ড

9.00

নরত্তম চরিত

(হিন্দী)

₹.00

नग्रत्भा तर्राभिया ७ वाकारतत नफ़ारे

(নাটক)

N.40

সপাঘাতের চিকিৎসা

(৮ম সংস্করণ)

3.40

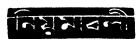
LIFE OF SISIR KUMAR GHOSH

De-luxe Ed. - Rs. 6.50

LIFE OF SISIR KUMAR GHOSH
Popular Ed. — Rs. 5.50

প্রাণ্ডস্থান ঃ

र्शाजका उवन-वागवाळात्र ३ विभिष्टे भूञ्चकालग्र



লেখকদের প্রতি

- ১। অম্ভে প্রকাশের জন্যে সমুস্ত স্থানার সকল রেখে পাশ্চুলিপি সম্পাদকের নামে পাঠান আবশাক। স্থানার স্কানা কোনো বিশেষ সংখ্যার প্রকাশের বাধ্যবাধকতা নেই। অমনোনীত স্থানা সংশ্য উপাব্র স্থাক-চিকিট থাকলে ফেরড ফেরল্ল হয়।
- হ। প্রেরিড রচনা কাগজের এক দিকে
 লপ্টাক্ষরে লিখিত হওরা আবশাক।
 অস্পন্ট ও পুরেবিলা হস্ডাক্ষরে
 লিখিত রচনা প্রকাশের জন্মে
 বিবেচনা করা হয় না।
- ৩। রচনার সভ্যো লেখকের নাম ও ঠিকানা না ধাকলে অম্ভে প্রকাশের জন্যে গৃহীত হয় না।

একেণ্টদের প্রতি

এজেন্সীর নিয়মাবলী এবং সে সম্পর্কিত জনানা স্তাতব্য তথ্য জমতেন্ধ কার্যাগরে প্র শ্বারা স্তাতবা।

গ্ৰাহকদের প্ৰতি

আবশ্যক।

১। গ্রাহকের ঠিকানা পরিবর্তানের জন্যে
অনস্তত ১৫ দিন আলো অমান্তেরে
কার্যালারে সংবাদ দেওরা আবদাক।
২। ভি-পিতে পঠিকা পাঠনেন হর না।
গ্রাহকের চাদা মণিঅভাবিয়েবাদে
অমান্তের কার্যালারে পাঠানো

ठीमात शांत

বাৰিক টাকা ২০-০০ টাকা ২২-০০ ৰাখ্যাহিক টাকা ১০-০০ টাকা ১২-০০ হৈমানিক টাকা ৫-০০ টাকা ৫-৫০

'অমৃত' কার্যালয়

১১/১ আনন্দ চ্যাটান্ধি লেন, কলিকাতা—০

क्मान : ६६-६२०५ (५८ मार्टन)





পূষ্ঠা

ار ۱

১২৬ পা

১৩৩ আমি আমার স্বামী ও ন্লিয়া

১০৮ অধর মাঝি

১৪১ ঋতুপর্ণ

১৪৫ ঘাতক

১৪৮ বিজ্ঞানের রম্ভ মাংস

১৫৭ ৰাৰ

১৬২ ন্ডির দুর্গ

১৬৭ অমলের শোণিত

১৭০ মোহিনী স্পতা রাজেন

১৭৫ देश्याणिक न्ही शत

বিষয় লেখক

—গ্রীদেবেশ রায়

-- श्रीतमाशन कौध्रती

- शिम्भीन जाना

· —শ্রীমণীন্দ্রলাল বসর

-শ্রীযশোদাজীবন ভট্টাচার্য

-শ্রীসন্দর্শিন চট্টোপাধ্যায়

-- শ্রীপ্রফালে রায়

শ্রীগোরীশক্ষর ভট্টাচার্য

--- শ্রীবীরেন্দ্র দত্ত

—শ্রীসৈয়দ মৃশ্তাফা সিরাজ

इमातिः कि जाशित

मर्लानद्रायक मःवाम मार्श्वाहक

বিচার পড়েছেন?

বাংলাদেশের প্রখ্যাতনামা সাংবাদিক ও সাহিতিয়কের ফলমে চাওল্যকর সংবাদ, নেপথ্য রাজনৈতিক ঘটনাবলী, আকর্ষণীয় ফিচার, লোমহর্ষক কাহিনী।

''মাঠে-ময়দানে'' ও **''মণ্ডজগং''** যাঁরাই পড়েছেন, তাঁদের মতামত

সংবাদ সাশ্তাহিক হিসেৰে

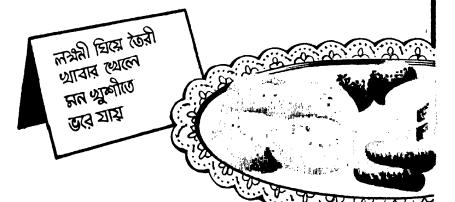
বিচার -এর জর্ড় নেই

৮ই মে-র সংখ্যা থেকে আতিরিত আকর্ষণ সাংবাদিক-সাহিত্যিক শ্রীনিমাই ভট্টাচার্যের ধারাবাহিক উপন্যাস

উইং কমাণ্ডার

গ্রাহক চাঁদা ১ বছরের জন্য ১১⁻ টাকা ও ৬ মাসের জন্য ৬⁻ টাকা কার্যালয় ঃ সং**স্কৃতি সাহিত্য মান্দির** ৮৬এ, আচার্য জগদীশচন্দ্র বস্কৃতি, কলিকাতা-১৪ ফোন ঃ ২৪-৬১২৪

स्त थूमील ७स यारा



लभूभी घि





5/11/8

শুধু উৎকর্ষ নয় সুরুচির পরিচায়ক

via Gia



নববৰ': রবীন্দ্রনাথ : সাহিত্যচিন্ত্য

আম্ত-র প্রতিপোষক লেখক-লেখিকা এবং অগণিত পাঠকম-তলাঁকৈ নমস্কার। দশম বর্ষে পদাপণি করল আম্ত। এই এক দশক বাংলার সাহিত্য, শিশ্প ও সাংস্কৃতিক জাঁবনে একটি স্মরণীয় অধ্যায়র্পে চিহ্নিত হবে। প্রতিটি দশকিই নিতানত্ন চিন্তার আলোড়নে উল্জ্বলতর হতে চায়়। জাঁবনের দ্রুতলয়ের ছন্দ, তার ব্যাপক অন্বেষণ এবং অভান্ত লক্ষ্যে পেণিছুবার প্রেরণা শিশ্প ও সাহিত্যের দর্পণে প্রতিবিদ্বিত হয়়। অম্ত বয়সে নবীন হলেও জাঁবনের এই সত্তাকে ধরবার জন্য আপ্রাণ চেন্টা করে চলেছে। এই প্রয়াসে অম্তর সহযাহী রয়েছেন বাংলা দেশের খ্যাতনামা সাহিত্যিকবৃদ্দ এবং তর্ণ প্রতিভাবান কবি ও কথাকারগণ। পাঠকদের সান্রাগ সাহচ্য বাতীত কোনো সাহিত্যপত্র সাথিক হতে পারে না। দশম বর্ষে ক্রাপেণি করে আম্ত সানন্দে এই কৃতজ্ঞতা স্বীকার করছে যে, তার যাত্যাপথে সকলের সাহচ্য ও আশাবিদিই হয়েছে অম্ল্য পাথেয়। আমরা আশা রাখি, আগামী দিনেও এই সহযোগিতা অমৃতকে তার স্কুঠিন দায়িছ পালনে সহায়তা করবে।

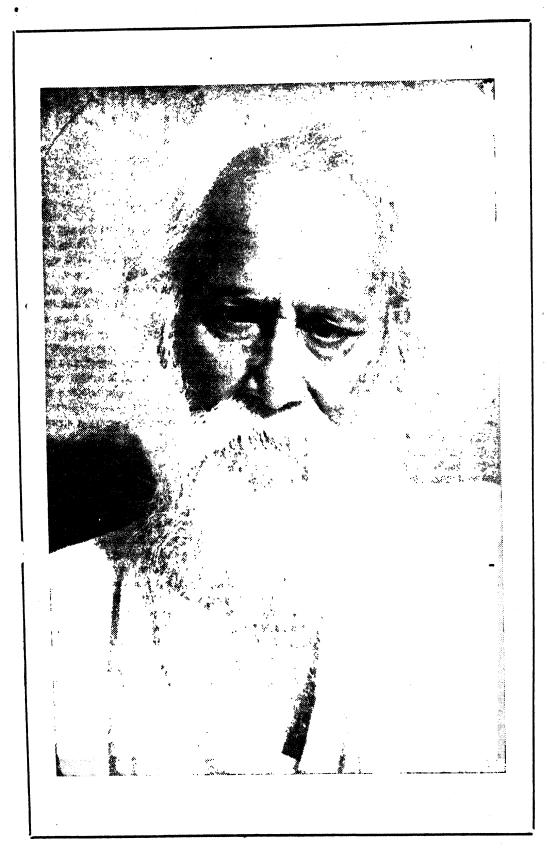
অম্তর নববর্ধের দিনে আমরা প্রদ্ধা জানাই বাংলার অমেয় কবিপ্র্ব্র রবীন্দ্রনাথকে। তাঁর জন্মশতব্ধেই অম্ত ভূমিণ্ট হয়েছিল। বৈশাথের রৌদুদণ্ধ দিনে তাঁর আবিভাব। এই দিনটি বাঙালাঁর উৎসবের দিন। প্রতি বংসরই তাঁকে আমরা নত্ন করে ফিরে পাই। ফিরে পেতে চাই তাঁকে আমরা প্রতিদিনের জাগ্রত সন্তার অনুভবে। আমারা জানি পাঁচিশে বৈশাথকে যিরে বাঙালাঁ উৎসবের আলোকে উদ্দীপিত হবে। আমাদের অস্তিভের কতথানি জুড়ে যে তিনি আছেন তা ভাষায় প্রকাশ করার নয়। তিনি তো শুধু একজন কবি বা সাহিত্যিকর্পেই আমাদের বরণাঁর ন'ন। তিনি তার চেয়েও বেশি। বলা চলে, তিনিই বাংলার এক শতাব্দীর মননের, চিরন্তনের এবং ধানের জেগ্তিমার প্রতিভূ। তাঁকে বাদ দিয়ে বাংলার বা বাঙালাঁর কোনো শুভ কমাই সম্ভব নয়। তিনি হলেন বাকগতি, তিনি স্বাসিন্ধিদাতা।

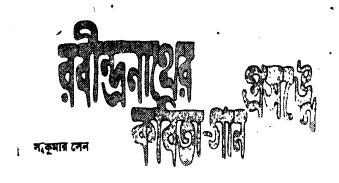
দঃখে-সুথে, আনন্দে-হতাশায়, উৎসবে-শােকে সর্বন্ধণ তিনি আমাদের সংগ্র থাকেন। আমাদের আধানিক চিন্তার তিনি উৎসাবর্প, আমাদের শ্ভেচেতনার তিনি সারাৎসার। বাঙালী যে তার ভাষা নিয়ে এত গর্ব করে, সংস্কৃতি নিয়ে যে তার এত গােরববাধ তার জন্য রবীন্দ্রনাথের দীর্ঘ জীবনের অনলস সৌন্দর্য সাধনাই মুখা কৃতিছের অধিকারী। ইংরেজের যেমন শেকসপীয়র, জামানিদের যেমন গাোটে-শিলার, রুশীদের যেমন তলস্ত্য বাংলার ও বাঙালীর তেমনি রবীন্দ্রনাথ। শাংধ সাহিতোর সেবকর্পেই বাঙালী সারণ করে না। তিনি আমাদের সমাজচেতনা, জাতীয়তাবাধ, আন্তর্জাতিকবাদেও দীক্ষিত করে গেছেন। এই দুংখিনী দশের বড় পুণোর ফলে তিনি জন্মেছিলন আমাদের লােক হয়ে। এই দেশের কী প্রয়োজন, কী অভাব তা তিনি উপলব্দি করতে পেরেছিলেন বলেই সকল দিকে ছিল তাঁর স্বন্ধ দৃষ্টি। প্রাম সংগঠন, শিক্ষা বিস্তার, সমাজ-সংস্কার প্রভৃতি যে কাজ কবির নয়, সে-কাজও তিনি নিজের হাতে করে আমাদের পথ দেখিয়ে গেছেন

এই দশের প্রতি তাঁর ক্ষমতার অব্চ ছিল না। তিনি যখন বিশ্বজনর কবি হিসেবে সর্বত্ত নাল্যত ও প্রজিত তখনও তিনি এই দেশের জনাই বেদনায় আকুল হয়েছেন, সাথক জনম আমার জব্মেছি এই দেশে, সাথক জনম মাগো তোমার ভালবেসে। এই পবিত্ত ভালবাসার কোনো তুলনা নেই প্রিথবীর সাহিতেরে ইতিহাসে। তিনি জব্মের ঋণ দ্ব হাত ভবে দিয়ে শোধ করে দিয়ে গেছেন। আমরা তাঁর উত্তরপূর্ষ কীভাবে এই দেশ, এই ভাষা, এই সংস্কৃতিকে জানব, ভালবাসব, রক্ষা করব পাচিশে বৈশাথে সেই হোক আমাদের সঙ্কলপ। শ্বধ্ব আবেগ-উচ্ছনাস নগ্ন, শ্বধ্ব ভাষণ নয়, শ্বধ্ব সঙ্গীত ন্তাদিও নয়, রবীন্দনাথের উত্তরাধিকার মহত্তর, গভীরতর অন্রাগের প্রত্যাশা আমাদের কাছে করে। আমরা যেন তাঁর সেই জীবনসাধনার যোগ্য উত্তরাধিকার হাতে পারি। কবিকে প্রণাম।

ছোট গলেপর ক্ষেত্রেও রবীন্দুনাথই আমাদের সামনে তৃলে ধরেছিলেন মানবন্ধীবনের অন্তর্গতি ভাষ্য। তাঁকে অন্সরণ করে বাংলার লেখকগণ ছোট গলেপর জগতে অনেক চমংকার পরীক্ষার অবতারণা করেছেন। গলপগ্লুছ দিয়ে বাংলা ছোটগলেপর যে জয়য়য়য়য় স্ত্রপাত তারই পরিগতি আমর লক্ষা করি আধুনিক ছোটগলেপ লেখকদের রচনানৈপুণে। আমরা তাই এবারে অমৃতর নববর্ষ সংখ্যার বাংলা ছোট গলেপর একটি চিন্ন পাঠকদের সামনে তৃলে ধরবার চেন্টা করেছিং গতবারও আমরা নির্বাচিত ছোট গলেপ ও গলপকারদের বিষয়ে তর্ণ লেখকদের আলোচনা প্রকাশ করেছিলাম। এবারে আরও কয়েরজন তর্ণ লেখকদের লেখা নির্বাচিত করা হল। অবশা স্থানাভাবে সকল লেখকদের রচনা সংকলিত করা গেল না। আমরা আশা রাখি ভবিষাতে আবার বাংলা ছোট গলেপর নিরীক্ষাম্লক একটি সংকলন অমৃত প্রকাশ করেছে পারবে।

বর্তমান সংখ্যার রবীন্দ্র-পরবর্তী ব্লের লেখকদের থেকে শ্রুর করে অধ্নিককাল পর্যন্ত বিশিষ্ট ও তর্শ লেখকদের প্রতিনিধিন্থানীয় ছোট গলপ সংকলন করা হল। এতে গত তিন দশকের বাংলা ছোট গলেপর প্রকৃতি ও গতিধারা পাঠকরা ব্যাতে পারবেন বলে আশা রাখি। রবীন্দ্রনাথ বাংলা ছোট গলেপর ধারাকে বে-খাতে প্রবৃহিত করে গিরেছিলেন তার কী পরিপ্রিণ সাধিত হয়েছে, পাঠকরা এই সংকলন থেকে তা উপলিখি করতে পারলেই আমাদের প্রচেষ্টা সাথকি বলে গণ্য করব।





রবীন্দ্রনাথের প্রথম বয়সের একটি বইয়ের নাম ছবি ও গান'। কিন্তু রবীণদ্র-নাথের যে কোন কবিতাগ্রন্থের এ নাম হতে পরে, এমনকি রবীন্দ্রনাথের প্রায় বে কাবতার এবং সমগ্র কবিতাবলীর শিকাও হতে পারে। রবীন্দ্রনাথের অধিকাংশ কবিতা-ফলের বাজি অথবা অটির্পে পাই ছবি, আর গানর পে পাই আর বা ক্রিছা তবে সে ছবির মাল্রভেদ এবং প্রকারভেদ **আছে।** কোথাও ছবি পার-পূৰ[্] কোথাও সম্পূৰ্ণ, কোথাও দেখা-িকত। কোথাও বা **ছবি আধখানা**, কোথাও ता अकरें, रें,करता। अहे एक धितत माता-ভেদ। প্রকারভেদে রবীন্দ্র-কবিতার পরি**প্র** ছবি একটি গলপ-কাহিনী বা অন্যরক্ষ বস্তুর বিদ্বন হতে পারে কোন গলপ-কাহিনী বা অনাবিধ বস্তর ইণ্গিতবহ হতে পারে অথবা কোন ভাবের বা তত্ত্বের দ্যোতক রূপক-কাহিনী অথবা তেমন কাহিনীর ইণ্সিতবহ হতে পারে। এই প্রবৃদ্ধে রবীন্দ্রনাথের কবিতায় (ও গানে) রূপকবীজের কিঞিং **আলোচনা করছি।**

রবীন্দ্রনাথের র্পকগর্ড কবিতার কথা চিন্তা করতে গিয়ে প্রথমেই মনে. এল সোনার-তর্মীর 'পর্মশ-পাথর'। এই কবিতাটি এবং ঠিক আ**গের** দিনে **লেখা 'হিং-টিং ছট্'** কবিতাটি রবীন্দ্রনাথের নিপ্রে হস্তের প্রথম রূপক কবিতা রচনা। তবে ^কবিতা দ্টি সম্পূর্ণ ভিন্ন ধাতুর, কবির মেজাজও ভিল্ল রুচির। দুটির বস্তুই পরিপ্ণ গলপ। হিং-টিং-ছটে গলপটাই প্রার সব, অর্থাৎ বেন আটিসার দেশি আমড়া। শাস বেট্কু তা পাকা আমড়াক্টে মডো মিণ্টির আমেজ দেওরা টক। তার রূপকের বেজা (সাধ, ভাষার রাধাদ্রক) হল বাঙালীর আলস্য অক্ষমতা ও সেই সপোফাঁক আধ্যান্ত্রিকতা এবং প্রচণ্ড আত্মগরিমা। স্নিপ্ণ শেলবে ঝলোমলো কবিতাটিকে স্যাটিরিক্যাল প্যারাবল বললে বোধহয় र्वाठेक इय मा।

এস ভাই, তোলো হাই, মুরে পড় চিত. আনিদ্যত এ সংসারে এ-কথা নিশ্চিত— জগতে সকলি মিখ্যা সব মারামর, দ্বান শুধু সভা ভারে সভা কিছু নর।

পরমাপাধর পারাবলটির ফাহিনী বিচপত হরেছে—ব্লাবনে গোল্বামীদের মহত্যটিত একটি প্রচীন কিবেদলতী থেকে। সে কিবেদলতী নিয়ে কবি অনেকলাল পরে কথা'য় সংকলিত 'স্পর্শামণি' কবিতাটি লিখেছিলেন। ('নদীতীরে বৃন্দাবনে সনাতন একমনে জপিছেন নাম')। পরশ পাথরে মুল কাহিনীর ভোল একেবারে পালটে গেছে। গলেপ খ্যাপার খ্যাপামি হরেছে ট্রাজিক,

রুপকে তা হয়েছে চরম রোমান্টিক। মান্ধের জীবনে এমন কোন কোন মহতে আসে বখন তার মনে অকারণে হর্ম সপার সেই হরে'র উপলক্ষা ভার কাছে তুক্ত্ ব্যাপার-আকাশ অত্যান্ত ক্ষণিক ও থেকে আলো আসার দিক রোদের হাল্কা বাতালের ছোঁরা, খক্ত রোদে লতা-পাতার ঝিলিমিলি গীলের ডাক দরে কাঠ-রামাখরের চালে শালিকের বাগডা—এই সব কুক্তাত্ত্ত নিতাল্ড নির্থক ব্যাপার তার মনের কারণ-হীন স্থের সংগে জড়িয়ে গিয়ে মনের সিম্বলৈ পরিণত হয়। ভারপর रठार **७ व**णेना তৃচ্ছাতিত্বৰ দুলা উপরে ভেন্সে ওঠে, আর সব্দের সংগ্র সেই ক্লণের অকারণের হর্ষের যেন ছোরা

a বিভীয় ম্দ্ৰণ প্ৰকাশিত হলো ॥ এ-বছরের সাহিত্য আকাদমী প্রেস্কারপ্রাণত বই

साहिनी वाजान

मणीन्द्र द्वारा

প্রথ্যাত কবির সবচেয়ে পরিগত সবচেয়ে উল্লেখযোগ্য কাবাগ্রন্থ। বিষয় ও প্রকরণগত উৎকর্ষে বাংলা কবিতায় অভিনব। লাইনো টাইলে ছাপা, নতুন প্রক্রেশ। ০০০০ তিন ব্যায়ে কবিতা। মণশিশুরায় সম্পাদিত। ০০০০

(श्राम्या प्राप्ति नित्र

চিরঞ্জীব-এর নভুন বই। সদ্য প্রকাশিত

খ্যাতনামা ক্রণ্ডা-সাংবাদিকদের এই বৃষ্টিটি খেলোয়াড্লের জীবনীমার নর; জনপ্রিরতা ও হাততালি থেকে দুরে তাঁদের দুঃখ-সুখে আলা-বার্থতার জাহিনী। সাক্ষাংকারের ধরকে লেখা। বাংলা ভাষায় এই প্রথম। অসংখ আটাপ্লেটসমূন্থ।

ফ্রান্সের যুব বিদ্রোহ

ভারতের নৃত্যকলা ॥ গায়গ্রী চট্টোপাধ্যার

বাংলা ভাষার একটি মান্ন প্রশ্বে ভারতের নৃত্যকলার ধারাবাহিক পূর্ণান্ধ আলোচনার প্ররাস এই প্রথম। বাইপটি আটাপেট ও শতাধিক চিচ্চনম্ম্ম সন্দের শোভন সংক্ষরণ। ১২০০০

সরোজকুমার সেনগংশেতর উপন্যাস। ব ন জ ভা দিবতীর মহাধ্যে অত্যাচারিতা বিদেশী ম হিলার কাহিনী। ৯-০০ দীলঘরের নটী। সৈয়দ ম্যুতাফা সিরাজের উপন্যাস তর্শ লেথকের স্বচেরে পরিণত ও প্রশংসিত গ্রন্থ। বি-০০

वरभव श्रकामव

৫৯ পট্রাটোলালেন। কলিকাতা ১

١

পায়। এই হল পরশ-পাথরের পরিচয়, স্পামণির স্পাশ—যে মণি আমাদের অস্তরে থাকতে পারে, কিস্তু তা আমরা **জানতে** পারি না। অর্থাৎ তার আবিডাব जल्लात्न जन्म क्या यात्र ना. रेपवार कथाना সখনো অনুভব করা বার। জানি না সেকালের খ্যিরা রক্ষানন্দ বা রক্ষাস্বাদ বলতে কি ব্ৰেছিলেন। আমায় মনে হয় **রবীন্দ্রনাথ এই পরশ-পাথ**রের পরিচয় দ্যুন্টিতেই রক্ষের আনন্দ এবং অমৃত্ত রুপ অনুভব করেছিলেন। তাই তিনি একটি পালে বলেছিলেন, 'তোমার বাণী কথনো শ্লিন কখনো শুনি না যো কখন যে সে মধ্যম-প্রব্যের আবিভাব ঘটবে ভার ঠিক ঠিকা<mark>না নেই। কো</mark>ন সাধনায় তা পাওয়া বার না (শায়মাস্থা প্রবচনেন' ইত্যাদি) তাকে পাওরা যার দৈবাৎ ('যমৌবর বৃণ্যুতে' ইত্যাদি)।

ব্রহ্ম ও বেদান্তর কথা ছেড়ে দিলেও কবিতাটির রুপকম্ল্য আজকের বাজাত কিছুমার কম হয় না। মানুবের ব্যক্তি-**থ**ীবনের যা কিছা নিজস্ব এবং ম্লাবান তা সে নিজের অভিজ্ঞতা থেকেই পার। বাইরের উপদেশ শিক্ষা তার অভিজ্ঞতার সহায়ক হতে পারে, এই পর্যান্ত। ব্যান্তগত অভিজ্ঞতার বে অহেতৃক অনুভব (অর্থাং ভালো লাগা), তাতেই স্পর্মাণর ছৌরা পড়ে। সেই অন্ভবের প্রত্যাশাই থ্যাপার থেজি। জীবনের মৃল্যের রস অন্বেষণ। যে সে পরশ-পাথরের স্পর্শ একবার পেয়েছে সে বনা হরেছে। সে হয়ত নিজে তা খ্ব অবগত না থাকতে পারে, কিল্ড তার কথায় কাজে, ভাঁপাতে ইপ্গিতে সোনার ঝলক অপক্রের গোচরে আলে।

স্থাপা মুক্তে খুকৈ ফিন্তে প্রণ পাথর ।... বহুকোল দুক্ত সেবি নির্মিত্ত লক্ষ্মীদেবী উদিল ক্লাং মাঝে অতুল সূক্রের।

সেই সম্ফের ভীরে শীর্ণ দেহ জীর্ণ চীরে শ্যাপা খাজে খাজে ফিরে পরণ পাথর ৷...

ব্য়ানগর কলোলগোণ্ঠী প্রযোজিত

পরবতী আকর্ষণ

(म्बा भाउवा

্ নিধেশনায় ঃ কণিক ভট্টাচার্য

শ্রেষ্ঠাংশে ঃ আরু ব্বেখাপাব্যার, অর্প লেল, গোপাল ব্যানাজী, আর্থ ব্রুখার্জি, শিশির বোহ, ডপল পাল, চিন্ত ভট্টাহার্বি, বিপ্লে চাটার্জি, শ্যামল চাটার্জি, রাজ্যর প্রপদ পাল, অভিড চন্দ্র, দীপক ভট্টাহার্য, কল্যানী পাল, দীলিয়া চল্লবর্ডী,

ৰ্ঘান্দরা গান ও প্রক্রার রার তেনেকা একদা শ্বাল তারে গ্রামবাসী ছেলে, সম্মাসীঠাকুর এ কী,

কাঁকাজে ও কাঁ ও দেখি
সৈনার শিকল তুমি কোথা হতে পেজে দ সম্মাসী চমকি ওঠে শিকল সোনার বর্ট, লোহা সে হয়েছে সোনা জানে না কথন।...

এই র্পকটিতে আরও একট্ তথ্
আছে, সেট্কু দ্থ্ল অতএব বেদি প্রয়োজনীয়। মানুবের জীবন পরিদ্ধার দু-ভাগে
বিভক্ত,—উঠ্তি বরস, পর্ভাত বরসে। উঠিতি
বরসে সে উদাম করে ন্তনের দ্বাদ পাবার
জনো, পর্ভাত বরসেও সে তাই চার কিল্পু
তথন তার প্রয়াসের পিছনে উদাম থাকে
না স্বাভাবিক কারণেই। তথন সে প্রাভনেই দ্বাদ ফিরে পেতে চার, প্রাভনকে
নতুন করতে চার। কিল্পু জীবনে কোন
ন্তনের তো প্নরাব্তি নেই। সেই হল
মানুবের ব্যক্তিগত ট্রাজেডি।

অর্ধেক জাবন খাজি কোন্কণে চক্ষা ব্রজি স্পর্শ লভেছিল বার এক পলভর, বাকি অর্ধ ভন্ম প্রাণ আবার করিছে দান ফিরিয়া খাজিতে সেই পরুশ পাথর।

জীবনের গভীরতর অনুভবের যে অসামানাতা তাকে বিশেষ মূল্য দেয়, তা গভার-অগভার অনুভব থেকে স্বতন্ত্র জাতের নয়। যে পরশ-পাথর ছ'লে লোহা সোনা হয় সে পরশপাথর বাইরে থেকে দেখতে সাধারণ থেকে ভিন্ন নয়। মনে যখন কোন দিকে কোনরকম টান থাকে না. চিত্তে যথন কোনরকম রং লেগে থাকে না, বাসনা यथन कान किছ त झाला छेमाछ शाक ना তখনই তাতে সোনা-করা জাদ্র গুণ জাগে এবং তা মৃহতের জনা। তাই অকারণের হর্ষ নিতাশ্ত চকিত শ্যুরণ বিজ্ঞানেব ভাষায় স্পার্ক। আমাদের দেশে অ-শাস্ত্র-পশ্থী কোন কোন অধ্যাত্ম সাধকেরা ক্ষণ-কালের খণ্ডকালের অখণ্ড ম্লা ভানতেন। তাই তাঁদের সাধনায় মোক নেই নিব'াণ নেই, স্বৰ্গভোগ নেই। তাদের মতে মান,ষই চরম। সৃতরাং চরমতার সাধনা মানুষের চিরজীবন লাভ। তা সম্ভব **হ**য় যদি খণ্ডকাল শতব্ধ হয়ে অনশ্ডকালে পরিণত হয়। অর্থাৎ যখন চিত্ত হয় নিশ্চক শ্বাস হয় নির্মধ, অতএব কায় হয় আবি কারী। বলা বাহ্বল্য ভাবের দিকে ষতই মিল থাক না কেন্হঠযোগীদের সাধনা ও তত্ত্ব সপ্তে রবীন্দ্রনাথের ভাবনার কোনই সম্পর্ক ছিল না। রবীন্দ্রনাথ ইহজাবনই বিশ্বাস করতেন, পরলোক বিশ্বাস করতেন বলে মনে হয় না। অতএব তিনি মরণক বিশ্বাস করতেন। তাঁর ভাবনার অমরত ইচ-জীবনের ওপারে নয় ৷— মরার পরে চাইনে ওরে আমর হতে তার ভবেনায় সে অমরছ হল প্রশাপাথরের স্পর্শ ।

(২)

রবীন্দ্রনাপের গানে ছবি এবং রা্পকের ব্যবহার কবিতার চেয়েও বেশি। তবে গানের ছবি প্রায়ই অসম্পূর্ণ অথবা ভাষা এবং তা গানের পক্ষে সমগ্রস। দৈবাৎ গানে কবিতার ছবির জনসেরণ এবং র্পেকের প্রতিফলন উদাহরণ দিই। সোনার-ঘটেছে। একটা ক্ষবিভাষ্টি। চাবী প্রথম ফালয়েছে পরিপূর্ণ, সে ফসল কাটাও হয়ছে। ফসল খামারে ভোলবার জন্যে শে নদীক্লে তরীর অপেক্ষা করছে। কাল প্রাবপ প্রভাত। আকাশে মেম্বেব আড়ুন্বর নদীক্ল নিজ'ন। কিহুক্স প্রতীকার পরে খেরারির আগমনী শোনা গেল-পরিচিও কল্ঠের গান। তরী ক্লে ভিডল, ফুস্ট বোঝাই হল, তবে চাষীর ঠাঁই হল না ে খেয়ায়। ফসল চলে গেল, সে শ্ন্য নদীর ক্লে পড়ে রইল।—এই হল সোমার-তর' কবিতাটির ছবি। রূপক মর্ম-মান্তে: কাজেই তার জীবনের মূল্য এবং সে কাজের ফল সব কালের সকলের **জ**না। ঘাঁর শাস্ত্রের নজির ভালোবাসেন তারা বলবেন ঠিকই তো। গীতার ব**লেছে** ক**ম'ল্যেব্য**ধি কারবস্তে, মা ফলেষ্ট কদাচন। /

সোনার তরী কবিতাটির (রচনাকার ১৮৯২) অনেককাল পরে (রচনাকাল ১৯১০ রবীন্দ্রনাথ একটি সান লিখেছিলে: এই ছবিটিরই জের টেনে—

ঐ রে তরী দিবল থাকো। তোর বোঝা কে নেবে জুলো।

এবারে ফসল নর, বোঝা তাও হরেছে
ভারি। সে বোঝা পার করা যত আবশ্যক
তার চেয়ে বেশি আবশ্যক এখন বোঝার
মালিকের নিজে পার হওয়া। আলে মাঝির
গরজ ছিল ফসলের জনা, এখন মাঝির
কোন গরজ নেই জালজ্ঞালের বোঝার জন্য
বোঝার টানে পারাথী অনেকবার খেয়
হারিয়েছে। তাই কাতরজ

খরের বোঝা টেনে ं । পারের খাটে রাখলি এনে, ভাই যে ভোরে বারে বারে ফিল্ডে হবে গোলি ভূলে।

ডাকরে এবার মাঝিরে <mark>ডাক,</mark> বোঝা ডোমার বাক ভেসে বাক...

সাঁঝের তারা আরু সাঁঝের বাতিং প্যারাব্ল্-গভ গানটিও একটি উল্লুক পরিপূর্ণ ছবি। গানটিতে কবি বাটিং ঘরের কোলে প্রগ নামিরে এনেছেন।

মাটির প্রদীপথানি আছে

মাটির খরের কোলে সংখ্যাতারা তাকায় তারি

चाला एचर वरन

সেই আলোটি নিমেবহত
প্রিয়ার বাক্ল চাওরার মতো, সেই আলোটি মারের প্রাণের ভরের মতো দোলে।...

নাৰণ ক্ৰ্যাভাৰার বৃশী আকাশ হতে আদিল আনি, লয় দিখা আকুল হল

মত শিখার উঠতে জালে।

এক জীবনের পার থেকে আর জীবনের eপারে উত্তীর্ণ হওয়ার বান; মৃত্যু এবং বুঃখের অভিক্রতা জীবনের সার্থকতার অভিজ্ঞান এবং জন্মজন্মান্তরের বিস্ত,—এই ভতুটি প্ৰকাশ পেরেছে একটি ছবি ও গানে। সৈ-গান বেন একটি অপরুপ রুপক্ষর নাটাচিত্র, গীডাঞ্চলিতে আছে,—'মেৰ বলেছে ৰাব বাব রাত বলেছে বাই'। নাট্যচিত্ৰের নায়ক কবিসত্ত্ব, মৌন ভূমিকা। দায়িকা প্রেম —জীবন-পরম্পরার বাসরহারে অংশক্ষমাণ প্রেম। অপর ভূমিকা হল মেব, রাত, সাগর, দঃখ, তিনি'-জীবনের শেষ পরিপ্রতা, ক্রিসভের ইহজীবনের 'আমি' ভুকন, গগন, মরণ। দুরোগমর দিশীথে ক্বিস্ত জীবন-তরীতে বসে কালের সাগরে পাড়ি দিয়েছে। পারে উত্তরণের কোন ভরসা নেই। (তৃসনা করি যোগী-সাধকদের গানের ছত্ত-'ঝাঁপিয়া তরীতে পোড়ি সম্ভুল গহীন':) --এই হল পটভূমিকা। বখন আশা-ভরসা ফ্রিয়েছে, তখন হঠাৎ নজর হল আকাশে মেঘ ব্রি একট, হালকা হয়েছে ('মেখ বলেছে যাব যাব'), রাভ বোধ হয় কাটল ('রাভ বলেছে ষাই'), আর মনে হল তীর যেন ঝাপসা দেখা যাচ্ছে ('সাগর বলে—ক্ল মিলেছে, আমি তো আর নাই')। এক মৃহ্তে সারারাতের বিভীষিকা মিখ্যা হরে গিরে স্মরণে লালিত হবার জনা হৃদয়ে সোনা হরে সাঞ্চিত রইল ('দঃখ বলে--রইন, চপে তাঁহার পায়ের চিহ্নবূপে'। এখানে বিষ্কৃর বক্ষ ভূগ্মপদচিছের ধরনি আছে!) কবি-সত্তের অহং অভিমানের আরু রইল না ('জাম বলে-মিলাই আমি আর কিছু না চাই')। চারদিকের **জগ**ণ এখন কবিসন্তের ভালো লাগছে ('ভূবন বলে—ভোমার তরে আছে মালা'), আকাশের স্য গ্রহতরা উৎসবের আয়োজন করেছে (পাগন বলে---তোমার তরে লক্ষ প্রদীপ জন্মলা')। মনে প্রসন্নতার প্রেমের আবিভাব হরেছে ('প্রেম বলে যে—বংগে যুগে তোমার লাগি আছি জেগে')। মরণ জীবনেরই ভৃত্য (মরণ বলে —আমি ভোমার জীবনতরী বাই'), সে शास्त्रत मधा नत्।

ছবির ছোট ট্করো দিরে গানে ব্যবহারের একটি উদাহরণ দিরে এই প্রসংগ শেব করি। এ-গানের ছবিতে গল্প নেই। প্ৰথম ছল্লে শ্ব্ব আছে একটি ছেলেডুলানো গদেশর ইণিণত। রাজপুর রাজকন্যার সম্পানে বেরিরে ঘ্রতে ঘ্রতে রাক্ষসীর শ্রুরীতে এসে **আটক পড়েছে।** তাকে দিনের বেলা প্রাসাদের সব ছরে প্রবেশের স্বাধীনতা দেওরা আছে, কেবল একটি খরের চাবি খোলা তার নিষিম্মা—এই গলেশর ইম্পিত-কু^{না} ব্যব্বলে গান্টির <mark>অর্থ পরিক্</mark>রার হয় ণ। হচটি এই—এ দিন আজি কোন্ খরে गा भारत मिला न्यात ।'

मरक्त-अन्न मञ्ज वह

লায় ২০ বিনে প্রথম সংস্করণ বিঃশেষিত

এপার বাংলা ওপার বাংলা

कोनभ्गी ५२.६० मानिहत ७.०० न्याणाय ह.०० পাত্ৰপাত্ৰী ২০৫০ সাথকৈ জনম ৫০৫০

यामद्रश वाभः य

বিভূতিভূষণ ম্থোপাধ্যারের

তাঞ্জাম 8.60 जारमाक भगा অ্যাতার জয়্যাতা

১০.০০ ॥ नातात्र**ण गटनाणाशात**

ব্যাপার বহুতের

৫.০০ য় ওব্দার গ্রেছ

বিমল মিল-র

এর নাম সংসার ৮.৫০ গ্রুপসম্ভার ১৬.০০

পর্বালনবিহারী সেন সম্পাদিত सवीनहासन ७म ७२.०० १स ७०.०० ॥ সাংস্কৃতিকী শ্রীস্নীতিকুমার চট্টোপাধ্যার 6.GO 1 প্ৰীকৃষ্ণ বাস্বাসৰ 5.00 II रात्रीन्ध्रनाथ नाम भागात्मक नीहे # 02.5 নিমাই ভট্টাচাৰ ন্বভীয় অস্তর \$0.00 II महीन्त्रनाथ यरनगाभाषात्र আৰ্ড আকাশ \$0.00 1 मीलक क्वांध्रजी **ভডাবনীয়** দিলীপকুমার রার 20.00 II

अधिकलाल 8.60

पुक त्यांक शक्का ७.६० ॥ वसक्त

माधा कथा মনি বউদি তিন তর্ম ৭০০০ ম চাণকা সেন

8 ৫০ n তারাশকর বন্দ্যোপাধ্যার

নত্বন ত্রির টান ৭-০০ ॥ আদ্তোব ম্থোপাধাার

ছড়ানো জালের ব্রে রাত তখন দশটা ভবষ্বে ও অন্যান্য আমার জীবন रभोध काग्रानंत्र भाना कारना र्शत्र कारा অপ্রকাশিত রচনাবলী ৫·৫০ ॥ মণীন্দ্র রায় ७ ७० ॥ प्रवन प्रविधी ৬-৫০ ॥ সৈরদ ম্কেতবা আলী

७६.०० ॥ मध् वम् ১৫-০০ ॥ গজেন্দ্রকুমার মিল্ল

১০ ০০ ॥ ধনজন বৈরাগী ५·६० ॥ नदश्चन हरद्वेशाशास

जगम्मल

১৫·०० ॥ नमरत्रण वन्

অলকা চট্টোপাধ্যায়ের শৈলেন রায়ের

সতীনাথ ভাষ্ডীর

कुक्षकाव

দাম : ১০.০০

ৰাক্-সাহিত্য প্ৰাইডেট লিমিটেড্ ৩৩, কলেজ রো, কলিকাতা-৯



বর্তমান কালের স্বনামধন্য প্রথম শ্রেণীর একজন লেখকের প্রথম প্রকাশিত বই একটি গল্প-সংগ্রহের ভূমিকায় ছোটগল্প সন্বন্ধে বলতে গিয়ে বিদ্যুক্ত সিন্ধুর' উপমা দিয়েছিলাম মনে আছে।

কথাটা লাগসই হয়েছিল। কানে ধরার দর্ন অনেক তরফ থেকে তারিফও পাওয়া গিয়েছিল তথন।

সে ধারণা আমার সম্পূর্ণ বদলে গেছে এমন কথা বলব না কিন্তু বেশ একট্ চিড় যে, খেয়েছে তা অম্বীকার করবার নয়।

চিড় খাবার কারণ প্রধানত বিশ্ব আর সিশ্ব, এই দুটি শব্দের বিশেষ তাৎপর্য নিয়ে।

ছেটিগ্রন্থাকে এক হিসেবে জীবনের বিন্দু বলভে আপতি নেই। কিন্তু সে বিন্দুর স্বরুপ কি?

শ্বীবনের সামান্য একটা ওকনংশ হলেই তা কি গঞ্জের বিন্দুশ্বে উত্তীর্গ হবার যোগ্য হয় ?

তার মধ্যে 'সিম্ধ্র' হিসাবে কি আশা করি? জীবনের গভীর বিরাট অর্থময়তা?

অর্থাৎ ছোট্যালপ বিচিন্ন অশেষ জ্ঞানিন-লীলার কোনো এক সামান্য তরগণডগের ওপর ক্ষণিকের আলোর রেথা ফেলে জ্ঞানিরের বিরাট রহস্য মহিমার ইণিগ্রত জ্ঞানির

কথনো কথনো ছোটগলপ হয়ত তা করে৷ সে রকম অসামানা ছোটগলপ কোনো দেশের সাহিতোই একেবারে বিরল নর, কিম্তু তাই বলে ছোটগলপ মানেই জীবনের যে কোন কণিকার মধো বিশ্বর্প দেখানো এ কথা বলতে এখন বাধে!

ছোটগালেশর সংজ্ঞার্থ সুন্বদেধ নতুন করে এই জিজ্ঞাসার মূলে জাবন সদ্বদেধই আমাদের পরিবর্তমান ধারণার আনিচরতা বে অনেকথানি কাজ করছে ভা অব্দা শ্বীকার মা করে উপার নেই।

আদি ব্লো কণ্টের ভাষার সেই প্রথম জব্ম থেকেই ছোটগল্প বেশ ত করেকটা ফরমাল থেটে আসছিল। বারা শুনছে তাদের ধ্মি করো এই হল ফরমাল। শুধ্ব বারা শুনছে তারও খ্মি হওরার কালিদ আছে সংক্র

খনিশটা মানা রকমের কিন্তু আশ মেটানোটাই ভার মধ্যে বড় কথা।

সাধ মেটানেটো অবশা পাকা হাতে হওয়ে চাই। বে শ্নেবে, বে পড়বে কথার স্বাদ্তেত তাকে বাকে বলে নিচ্ছেম্ন নাম ভূলিরে ছেড়ে দিতে হবে। গলেপর মধ্যে সে নতুন করে আর এক সন্তার সপো একাকার হয়ে যাবে। সেই সন্তার সংখ দঃখ আশা নিরাশা ঘন্দানা উপ্লাসের দোলায় সে থাকবে দোলানো।

আমাদের প্রভাকের একটা ত' মার জীবন, একটা মার চেতনার ধারা। তাতে তৃশ্তি নেই। আরো অনেক অনেক জীবনের আক্ল পিপাসা আমাদের অম্থির করে রাখে। সেই পিপাসা মেটায় গলপ। সেই পিপাসা যেটানোর মারফং আমাদের ইচ্ছা' প্রণের কাজটাও সমাধা হয়ে যায়।

হাত যাদের পাকা আর তার সংশ্য ঘাড়ও একট্ বাঁকা তেমন গল্পের বাাপারীরা কিন্তু নগদ বিদারের লোভে মামালী ছক ধরে শ্মে নাধ মোটাবাব ফর-মাশই খাটে নি। ইচ্ছা প্রণের ছলেই বেয়াড়া কিছা সংশয আর ভিজ্ঞাসা তারা নিজেদের সওদায় মিশিয়ে এসেছে চিরকাল।

প্রেমেন্দ্র মির

সাধ মেটাবার দায় মেনেও কিছু গলপ সাহিতা তাই জীবন সদবদেধ আমাদের ধারণার ভিত্তিমূল ধ্বেই নাড়া দিয়ে যায়।

ধুব বলে যা ধরে নেওয়া হত আজকের দিনে জীবনের সঞ্জে সেই ভিতটাই চোখের সামনে যদি টলে তাহলে পাঠকের নাধ মেটাবার মেজাজ ছোটগলেপর পক্ষে বজায় রাথা নিশ্চয় শক্ত।

সাধ যে মেটাবে, তাই বা কোন্ সাধ? জীবন কি ঘর-বাঁধা ঘ'ন্টির খেলা যে ডাইনে কি বাঁয়ে এগিয়ে কি পেছিরে কটা চাল সদলে দিয়ে বেশ একটা মনের মত মাং দিয়ে শেষ করা যায়? কি যে সাধ আর কি অসাধ ডাই ঠিক মত কৈ বলতে পারে!

না, শধ্ বিন্দুতে সিন্ধু বলে ছোট-গলপ সন্বদ্ধে শেষ কথা আর বলে দেওরা যার না।

বিন্দুতে সিন্ধুনা হোক, কোনো সংতা করমাশ খাটার দার সে না মানুক, ছোট-গলেশর একটা কিছু ধর্ম ও থাকবে। কি সে ধর্ম!

এপার ওপারের বিশ্রেছী ছোট গশ্প
সামান্য যা পড়িছি তাতে সে ধর্ম খুঁজে
বার করা সহজ হচ্ছে না। গল্প এখন আর
ঘটনা প্রবাহের কোনো একটা একুনা মানবে
না, না মানকে। চরিয়ের সংগতিতে বিশ্বাস
তার নেই, না থাকক সমসের ধারাবাহিকতা
তার কাছে অলাক দাই হোক তব্ কাগজের
ওপব কালিব আঁচড় টানে 'শব্দ সাজাবার
এ-টা কৈফিয়ংও কি থাকবার দরকার নেই?

কৈফিরৎ, —নদীর স্লোতে উড়ো প ভানার ছারার মত পাঠকের চেতনার। তৎক্ষণিকের একটা মনুস্তণ, নাশ্বর অসং তাই ধার সাথকিতার উপাদান।

অথহান বাগাড়ন্বর বাদি শোনায় ত অপরাধটা সংস্কারের জড়ছ ভাঙা নব দি সংধানী নতুন কালের ছোটগলেগর নর।

নতুন ছোটগলপ এখনো সাত ন খাগতা হরেই হয়ত আছে, নিজেকে চে মত চোথই তার হয়ত ফোটেনি, উদয়ত অংধলারে নিজের যথার্থ পথ হয়ত হাতড়ে ফিরছে, তব্ সব ভড়ং আর ভ সবস্বতার পেছনে তার বিদ্রোহটা একে ফাঁকি, এ কথা বলবার মত স্পধা কাররে না হয়।

গলেপর ঐতিহ্য আর শিলপ-সং
থারা মেনে চলেছেন আর থারা ভাঙ্ত
সং ও সার্থাক হলে দুপেক্ষকেই ও
সমস্যার সামনে দাঁড়াতে হছে অ
জীবনের বাঞ্জনার সমস্যা, শাস্ত আর লো
চার, নির্বিচার আন্পেত্য আর ং
সংস্কারে শৃংখালিত সাবেকী জীবন ন
লাগ্রভ আত্ম-জিজ্ঞাস, চেতনার উন্মেরে
ধারণার সীমা যা ছাপিয়ে যাছে সেই বি
নিপ্ল বিক্ষুত্ব বর্তমান জীবনপ্রব

ইচ্ছাপ্রেদের দার কাঁধ থেকে নামারে দাবেকী চালের কলমে এ ব্যঞ্জনা যে আপনা থেকে ফোটে না, তেমনি শিলে সব ব্যাকরণ জলাঞ্জলি দিয়ে প্রলাগে কিনারায় মনকে টেনে এনে সব রাশ ছে দিলেও নয়।

ঐতিহ্যাশ্রয়ী গণপকারকে আজ নত্ব করে বিষয় খ'ুজতে হচ্ছে তার শ্রুণী ম জীবন রক্ষার ডিশ্র শ্রুরে মেলে রেথে বিষয়ের সঙ্গে প্রকাশের নতুন ব্যাকরণও।

আর সব সংশ্বার-ভাঙা বিদ্রোহীকেও
সংধান করতে হচ্ছে নিজের সেই নিগ্
দিংপী-সন্তা, তার স্চি-কর্মের সম্বত্ব আপাতঃ অসংগতি আর উংক্রান্দ্রক বিক্ষেপ যা একটি গভীর সামঞ্জতে রাধত করে দিতে পারে।

পথ ভিম হোক পেণিছোবার ঠিকানার তফাৎ নেই। উদ্ভাবনী প্রতিভার আর দঃসাহসিকতাতে কে আগে কে পেছনে তার রায় দিতে আমি কিন্তু নারাঞ্চ।

পান্তের তলার মাটিই বেখানে দ্লাহে সেখানে পারে পারে জড়িরে কথার কথার ডিগরাজি থাওরার চেরে সোজা হরে মাথা উচ্ রেথে হুটার বাহাদ্রীই বোধ হয় বেশী।

জ্ঞীবন দক্তেরে জটিল বিচিত্র বলে ভার অপার রহস্য মহিমার ইণ্গিত দেওয়ার সব-চেমে সার্থক উপার ভাষা ও ভাবের যারি-শ্ৰুপলার বালাই ঘোচানো, একথা মানতেও এখনো প্রস্তৃত নই।

পরীকা নিরীকা চলছে, চিরকালই চলবে। তবু সাধারণ মান্ধের সম্তা সাধ মেটাবার ফরমাশ না মানকোই স্বরং মান্বকেই গলেপর রাজা থেকে বাদ দেবার হুকুমত বোধহয় মেলে না।

গলেশ নারকের সিংহাসন উল্টো স্কেছ। বাবারই কথা। কিন্তু মান্বের মিছিল সেখানে থামবার নম।



সেদিন একজন শভিমান তর্ণ লেথক
সাচনা-প্রসপ্তেদ দুটো কথা বললেন।

বৈ প্রথম বছবা ছিল, এখন আর কাকে

নরে গলপ লিখব—নিজেকে ছাড়া? তার

কতীয় কথাটি ইল : কী নিরে গলপ লিখব

মরে—প্রিবীতে গলেপর সাড় উপকরণই

মতি-ব্যবহৃত হয়ে গেছে, কী হবে ওই সব

কাণিতার প্নরাবৃত্তি করে?

এই তর্ণ লেখক বাংলা-সাহিত্যে পরিকৈত এবং প্রতিষ্ঠিত, সাত্রাং তাঁর এই

চাবনাটা একালের একটা বড়ো সংখ্যক

কতুন লেখকের প্রতিধনিন ভাবা যেতে পারে।

আমরা যারা নিজেদের বাদ দিয়েও অনেক

গল্প লিখতে চেণ্টা করেছি এবং এখনো

যাদের কাছে বিষয়ের অভাবটা খ্ব গ্রেতর

সমস্যা হয়ে দেখা দেয়নি, সেই আফাদেরও

ক্থাদ্টো একটা তলিয়ে দেখবার দরকার

ভাছে।

বাংলা দেশের 'লিটল ম্যাগাজিন'গুলোতে প্রায়ই অনেক স্পাধিত উল্জাল স্বর শ্নতে পাই। সেখানেও কেউ কেউ বলেছেন, নিজের বাইরে আমরা যা, কিছু লিখে সগ্লো তো বানানো গল্প। আমি কল-কাতার এক মধ্যবিত্ত সংসারের সন্তান— অন্মার এই পরিবেশ, এই দিন্যান্তার ভেতরে প্রতিম্হুতে আমার সত্তার সহাবস্থান, সংগ্রাম আর সমস্যা; সাহিত্য যদি জীবনের অকুণ্ঠিত সতাপ্রকাশ হয়—তা হলে এর বাইরে আমি যা কিছ; লিখব, তা কৃত্রিম, তা আরোপিত। **মধাবিত্ত যন্ত্রণা**য় যে আমি নাগরিক অলাত-চক্তে পাক খেয়ে চলোছ, সেই আমাকেই নানা খণ্ডে—নানাভাবে আমি প্রকাশ করতে পারি, কিন্তু তাই বলে আমি বাঁকুড়ার কৃষক হতে পারি না—আল্র ব্যবসারী গদাধর পাল হওয়াও আমার পক্ষে সম্পূর্ণ অসম্ভব। সত্তাকে এইভাবে ভেঙে ফেললে, ভার যাই হোক, সত্যের णात्र **अन्द**न्ध शास्त्र ना ।

এট চিদ্তাধারার মধ্যে কোথায় যেন 'অণ্ডবাদী' দশ'নের ছায়া পড়ছে মনে হর, কিশ্তু সে কথা থাক। তবে 'বিষয়ের অভাব' দ্বাভাবিক ভাবেই এই চিল্তার অনুষ্ণগী হয়ে আছে। কারণ, কতক্ষণ আমার এককত্বকৈ আমি ট্করো ট্করো করতে পারি, কডক্ষণ পারি তাকে নানা দ্গিটকোণ থেকে প্রতি-ফ্লিত করতে? ব্যক্তি-মান্য হিসেবে আমার একটা সীমা আছেই, ভাবনার, অনুভূতির, ব্লিধর, বিচারের। এইগ্লোকে ভেঙে, নানাভাবে বি: শ্লষণ করে, এক-একটা বিশেষ ম,হাতের উভাসনে, আমি দশ-পনেরো-বিশটা গল্প লিখতে পারব। বড়ো জোর। তারপর আসবে নিজেকে পালা-- যার চাইতে বড়ো দ্ভাগা সাহি-ত্যিকের আর নেই। তা থেকে নিজের কাছেই আমরা ক্লাম্ড এবং বিরম্ভ হয়ে উঠব, তারপর একদিন গল্প লেখাই ছেড়ে দিতে হবে।

তা হলে খ্ব বিশশ্জনক সম্ভাবনা দেখা যাছে একটা। নিজেকে নিয়ে গদপ লিখতে গেলে (দু একজন অলোকিক শছিধরের কথা বলতে পারি না) অচিরাৎ বিষয়ের সমাণিত ঘটবে—আসবে আখান্ত্তি। ভার মানে আমাদের দীশ্ভিমান গদপলেখকের গ্রি কয়েক গদপ লিখেই কলমের থাপ বন্ধ করবেন? বাংলা ছোটগলশ নিরে আমানের আন্তর্জাতিকভাবেই গবিত হওরার অধি-কার আছে—আমি আন্তত এত সহজ্ঞে সে অন্তন্ধার হাড়তে প্রশৃত্ত নই। আমানের তর্গেরা অনেক—অনেক ভালো আর মতুন গলপ লিখে চলবেন, অনেক সম্ভাবনা ভালের সায়নে।

এই নতুন গল্প বলতে ফর্মের ভাবনা-টাকে আমার খ্ব জর্রি মনে হয় না। ভাষার ভা**্রে করাতেই বা কী আসে** য য়-্যে-কোনো ভাষাই তো একটা সন্নয়ের পরে সম্পূর্ণ বাসী হরে যাবে। শব্দ সংস্কার মানব না—ভালো কথা, কিন্তু তাতেও নতুন গল্প গড়া যাবে না; 'কিছ্ই মানব না—' এ <u>ধরণের নৈরাজাবাদও এক ধরণের রোমান্স</u> মার, সমাজে জীবনে-পারম্পরিকতায় প্রতি-মুহ্ুতে আমরা মেনে চলি, মেনে চলতে হয়, 'ম্লাবোধে'র সংশা সামাজিক দায়িছ-বোধের একটা নিগড়ে সম্পর্ক আছে 'কন্ভেনশান মানব না এইটেই তাঁর কন্-ভেনশান হয়ে দাঁড়িয়েছে—' জানৈক অতি-খাতে ইংরেজ উপন্যাসিক এবং কবি-সম্পাক এই উত্তিটি বিদামান

এগলে বাইরের জিনিস। কিল্ডু ম্ল প্রশন হল, নিজের সীমা ছাড়িরে যা কিছু লিখব, তা মিথাটার কিনা? এইটেই একট্ ডেবে দেখা যাক।

আমার নিজের কথা সবচাইতে সাঁতা করে লেখা সম্ভব একমাত ভাইরিতে। সে ভাইরিরে কথা বলছি না—যেখানে প্রতিদিনের কথা কালকমা, জমা-খরচ, খাটিনাটি ঘটনার কথা আমরা সোজাসাজি লিখে চলি। আর এক ধরণের ভাইরি আছে—যেখানে আমরা নিজে-দের মাখোমাখি বসতে চাই, আমাদের ভাবনা, উপলিখি তত্ত্ব ও জিজ্ঞাসাকে সাজিয়ে ধাই—যে ড ইরিকে আমরা নিজেদের প্রতিবিদ্ব বলতে পারি। প্রথিবীতে এইরকম আনক আম্বোলখন প্রথাত সাহিতা হয়ে উঠেছে।

শিরায় শিরায় হাকে ভালোবাসা শেনিন লেনিন সাম্প্রতিক বাংলা কাব্যে নৈরাজ্যের বিরুদেধ সংগ্রামের হাতিয়ার

গণেশ বস্র

কমরেড লেনিনকে নির্বোদত দীর্ঘ কবিতা

অধিকার রক্তের কবিতার ২-০০

প্রাণ্ডপ্থান : মনীয়া প্রশোলয়, সিগনেট ব্রুপপ কলি-১২ ও সারুবত লাইরেরি

MARKEY MINES

ি কিন্তু প্রশন জাগে, এই আত্মন্ত্রক লেখা-গ্লোতেই কি আমরা সম্পূর্ণ সভানিষ্ঠ হতে পারি? অথবা বলা উচিত, বস্তুনিন্ঠ? মত্যানের 'এসে', বেকনের পাঁসে, পেপীর रमभा-नर्वाटे मान्यव प्रटे विस्थवही धना প'ড়-বেখানে সে শ্রে নিজের কথা লেখে মা নিজেকে ছাড়িয়ে মায় নিজেকে স্থি করে। একটা দর্ঘটনার যার, তিলের জনো মাজ্যুর হাত থেকে বে'চে গেছি—সেঠ সাকাকীট আমার সর ভাবনা **প্তৰণ অন**ে ভৃতিগ্লো প্রার অসাড়। অনেক রাতে আলো জেনলে ভাইরিতে ঘটনাটা লিখতে ব'সন্থি কিন্ত তথন আর সেই স্তুশ্রতার লিখন্তি না আকস্মিক মাতাকে কেন্দ করে আমার যে চিন্তাগ্রলোকে ছড়িয়ে দিচ্ছি-তারা তখন আলাদা স্থিট হয়ে যাছে— আমি আর বস্তুর সত্যসীমানার মধ্যে থাকছি না।

শূথিবীর অগণিত শিল্পী সেলফশের্টেট একৈছেন। কিন্তু কোনো শিল্পীই
আব নিরাসকভাবে ক্যান্নেরার সামনে দীড়িযে
নেই। শিল্পী রেমারাট স্থান, হোগার্থা সোন
ভাব পিকাসেই হোন—প্রস্তোকেই নিজেকে
একটা বিশেষ রূপ দিরে গাড় তুলাভন—
একটা নির্দিট্ট মানসিকারা সঞ্চাব কর্তমে
ভাতে—অর্থাৎ নিজেকেই নত্ন করে স্থানি
কর্মন তুলাতে হাজে তাঁদের। সিনি লিখনে
শারেন, বিনি আঁকতে পারেন—ইচ্ছেয় হোক
অনিক্ষের হোক—এই স্থিটিপ্রবণ্ডার ভাত্ত

থেকে তাঁরা পরিবাশ পেতে পারেন না। কিছুতেই না।

অতএব আমি ষখন আমাকে নিয়ে গলপ লিবছি, প্রতিজ্ঞা করেছি সত্যসীমাকে কখনো অতিজ্ঞম করব না—তখনো অনিবার্যভাবে নিজেকে অতিজ্ঞম করছি, আমি যা—
তার অনেক বেশি ছড়িয়ে দিচ্ছি তার ভেতরে।
ক্রমান মান্ত সাজের মধ্যে থাককে পারে
বাজারের হিসেবে, কুশলসংবাদের চিঠিপত্র।
কিংত লেখার জনো যে কলম ধরে—নিজেব একাশ্র কেপুরেগাকে ছাড়িয়ে যায় বলেই
এই তাগিদটা তার ভেতরে জগ্ম নেয়।

স্তরাং আমাকে নিয়ে গলপ লেখাও আমাকে ছাড়িয়ে যাবে। তা যদি হয়, তা হলে নিছক আত্মাবর্তন কেন?

একটা মৌলিক সত্য স্বীকার করে নিদেউ হারে যে বাঁকডার কৃষক নিয়ে গল্প লিখি কিংবা আলুরে ব্যবসায়ী গদাধর পালকে নিয়ে উপন্যাসই রচনা করি—ভারা কেউই আমার বাইরে নয়। প্রত্যেক লেথকের প্রতিটি গম্পই কোনো না কোনো দিক থেকে তার আত্ম-আরোপ। সেথানে তার গড়া শিলবাফোও সে আছে 'ঈশ্বরোও রয়েছে÷ সেই-ই তার গদেপর নায়ক-নায়িকা, ডার ভিলেন তাৰ মহায়ানৰ: ভার বারিমাক অসংখ্য ভাগে ছড়িয়ে দিয়ে সে চরিত্র গড়ছে. পুতি চবিত্রের পুতেকে মনের ব্যাখায়-বিচারে সক্রিয় হয়ে আছে তারই একান্ত ভূমিকা। তাই ভলস্ভারে চরিত্রগুলোতে ভলস্ভয়ই সন্তারিত, প্রন্তের উপন্যাসে তাই, বণ্কিয়ের লেখার তাই, রবীশ্যনাথের মধ্যেও এর ব্যক্তিকম নেই। একটা জাবিনগভ বাচ্তবতার ওপর চরিত্র-ঘটনাকে প্রতিষ্ঠা করে নিরে—সর্ব-জনীনতার পটভূমিতে এনে তার মধ্যে প্রণাটকু ছড়িরে দেওরা হর—তা লেখকেরই, তাঁরই সম্ভার অংশ। তাই জগতের প্রত্যেক কড়ো লেখকের আঁকা প্রধান চরিত্রগলোর ফে নিজত ররেছে—মেটা তাঁরই বাজিবৈশিষ্টা ছাড়া কিছুই নয়।

তাহলে বাঁকুড়ার কুষক কিংবা চাঁপদানির চটকলের শ্রমিক অথবা কোনো সাধারণ বাঙালী করণিক--আমি যাকে নিয়েই গলপ লিখছি—তা আমার অধিকারের দাঁড়াচ্ছে না। বরং একটা দায়িত এসে দেখা দিছে। লেখক জীবনের শিলপী, কিন্তু সেই জীবনটা কেবল আবার ব্যক্তিগত ভালো-মন্দের মধোই বাঁধা পড়ে নেই । আমি স্মাজ, জীবন, দেশ এবং মানবভার মধ্যে বাস করি-এর মধ্য থেকে আমার নিজের দাবি-দাওয়া আমি পারো মিটিয়ে নিতে চাই, কোথাও কম পড়লে প্রাণপণে আতনাদ করি। কিন্তু দেশ এবং সমাজ সকলেরই— অথচ অনো আমার পরিচর্যা করবে এবং আমি আত্মকেন্দ্রিকতার ব্রুতে জাল বুনে চলব-এ-দাবি অন্যায় অপরাধ। পাড়ায় ভাকাত পড়বে-সবাই লাঠি নিয়ে তাদের আমি তখন ঘরে বসে সম্ধান করব এবং আশা করব অনোর সমবেত প্রয়াসে আমার বাডীটি



াকবে নিরাপদ—এই প্রত্যাশা থাকলে য়ামাকে অচিরাং পাড়া ছাড়ভে হবে।

আমার প্ররোজনেই আমার সমাজ. নামার দেশ। সেই কারণেই ক্ষরিত বাঁকুড়ার হুষক আমার ধন্যপার শরিক, সংগ্রামী প্রমিক য়ামার আত্মজন, বে-কোনো উতরোল লীবনধমী আন্দোলনে আমারও স্থানিশ্চিত চমিকা। আমার ভাবনা, আমার প্রত্যর আমার ব্যক্তিয় নিয়েই আমি তার অংশী-দার। 'অহং'-বু<mark>ত্তের পরিচর্যা নর—বে দেশ</mark>, যে জাতি, যে সমাজ আমার ব্যক্তিয়ের ভিত্তি, তার দিক থেকে বখন চোথ ফিরিরে রাখব. তখন টেরও পাব না যে নিজের পারের তলার আমিই কবর **থ্ডে চলোছ।**

আমার গোঁকুর জ্নাল মনে পড়ছে। গোঁকুরেরা তো ফরাস্ট ন্যাচারালিস্ট আন্দোলনের প্রায় প্রবর্তক বলা যায়। অথচ ফ্রাঙেকা-প্রাণীয় ব্রেধর সময় সর্বজনপ্রথের ফ্রোব্যার সম্পর্কে তাঁদের জ্ব্র্ণালেই লেখা হক্তে 🕫 লোকটা কী নিল ল্জা যখন সারা ফ্রান্স লক্জায় দৃঃখে তলিয়ে রয়েছে, তথন ফ্রোব্যার নিশ্চিশ্তে বসে বসে শিল্পতত্ত ভাবছে। কবি রাাবাৈও তো সেদিন মৃত সৈনিকের ওপর কবিতা লিখছেন-জনলে উঠছে মোপাসাঁ আরু দোদের কলম।

ব্যক্তিমকে কেন্দ্রের বাইরে ছড়িয়ে দিলেই অফ্রুকত জীবন। অসংখ্য গ্রুপ। বিষয় প্রোনো হয়ে গেছে? প্রত্যেকটি মান্বই তো প্রোমো। প্থিবীর মানব-গোষ্ঠীগুলো নিশ্চিত হয়ে যাওয়ার পরে নতুন কিছা কি সংযোজিত হয়েছে নারীর আনেটমিতে? তব্ প্রেম আসছে—নতুন হয়েই আসছে। স্পার্টাকাসের ক্রীতদাস-বিদ্রোহের পর অনেক শতাব্দীই পার হল আজ্ঞো কি পৃথিবীর সব ক্রীতদাসের শেকস ভেঙেছে?

আর এই বাংলাদেশে, আমাদের ভারত-বৰ্ষে, এত দৃঃখ, এত যদ্যণা, এত কঠিন সংগ্রাম; ব্যক্তিম্বের এত প্রশ্ন, এত জটিলতা —এ নিয়ে গলপ লেখা আমাদের শেব? এতই কি গলপ, ভালো গলপ, প্রতিদিনের নতুন নতুন চেতনার গলপ, প্থিবীর সংখ্য নাড়ীর সংযোজন স্পন্দিত বিদ্যুৎশাণিত গল্প-সব আমরা লিখে ফেলেছি?

আমাকে হাড়া আর লেখবার কিছু নেই, সব শেষ হয়ে আসছে, বাংলাদেশের মাটি এতথানিই কথ্যা হরে গেছে, এ-কথা অশ্ততঃ আমি বিশ্বাস করতে। রাজী নই।

অন্ততঃ অমতের এই গল্প-সংখ্যার তর্ণেরা তা প্রমাণ করবেন বলে আমার मत्न इय ना।

- श कवि कविनामन्य गाटमत कावाजन्य ॥ ধ্সর পাক্তিপি, बनवजा तन, মহাপ্থিবী এবং রুপদী বাংলা— স্বভ্যেষ্ঠ কাব্য চতুষ্টর একরে পরিপাটি म्हिन व शक्ता। ३५.००
- ॥ बन्धरनय भूष् ॥ कारतरमञ् कारह 4.00 मृत्यत मृभात 8.60 तमदामत
- ।। জনসভ সিংহ ।। মহানারক স্বে' সেন ও চটগ্রাম বিস্পব ৮০০০
- ॥ मदबण्तमाबाबन **उक्तनाजी ॥** मकाद्रात्मत সপ্তে কারাগারে ৫-০০ নেভান্দী সপা ও প্রস্থা ১ম ১২.৫০ ২র ৬.০০ ৩র 9.00
- । বিমল কর ।। বসত্তবিলাপ ৪:০০ আকাশ কুস্ম ৯:০০ মলিকা ৪:০০
- 🏿 আদিত্য দেন 🕦 রাইনের নীল চোখে 🕦 বনকলে 🕦 জপায় ১য় ৭٠০০ জপায 9.00
- ।। শ্রেষ্ঠ গলপ ।। তারাশকর বলেয়াঃ ৬.00 মানিক বল্লোপাধাায় V.00 বিভৃতি মুখোঃ ৫.০০ সমরেশ বস্ ৮০০০ সাবোধ খোষ ৫০০০ বিমল কর 9.60
- ।। অক্তাডশ্র, ॥ রূপসী অংধকার 9.00 Ma 8.50
- ॥ অভিভাভ চৌধ্রৌ ॥ টাইন্ট ৪.০০ গল্পের মতো ৪০০০ অচেনা শহর কলকাতা ৪.০০ অন্যনগর দর্শন 9.40
- ॥ আশ্বেতাৰ ম্বেশিধার ॥ =বীপারণ ৬.০০ রাগশর ৬.০০ চলো জ্বনারে ষাই ৬.০০
- ।। कालक्षे ॥ আম্তকুলেডর
- ॥ গজেশ্রকুমার মির ॥ আর্থ্যতী ৪.০০ मौजकके १.६०
- ॥ জনাসন্ধ ॥ লোহকপাট ১ম ৪٠০০ ২র ৪-৫০ তামসী ৫-৫০ সহচরী ৫-০০
- ॥ ভারাশ•কর বস্দোপাধ্যার ॥ ধান্তী দেবতা ৯.০ স•তপদী ৩.৫০ ভাকহরকরা ০-০০ হাস্কী বাঁকের উপকথা ১০০০ চাপাডাপার বউ ৩০০০
- ৷ তৈলোকানাথ চক্ৰবতী মহারুজি 🏗 জীবন মাতি ৪০০০
- য় দিলীপ মালাকার য় মম্কো থেকে মাদ্রিদ
- ॥ मरबन्द्रमाथ विष्ठ ॥ উপনগর ৭-०० মুন্ধ প্রহর ৩.৫০ প্রম্পরা ৪.০০
- ॥ नाबाबन गरम्माभाषात ॥ कृकार्ण ७.৫० নিজনি শিখর ৪:০০ বনবাংলো ৪:০০ হতীয় নরন ৪.০০
- ।। নিমাই ভট্টাচার্য ।। রাজধানীর নেপ্রে। ৪-৫০ বৌবনে নিকুঞে ৪-০০ ভি সাই পি ৩ 💰 🔾
- য় **নীহারবুলন গ্_{পেড য়** লিপিকা ৫-৫০} অণিনাশ্বাক্ষর ৭-০০ রহস্যভেগী কিন্নীটী ১০-০০
- ॥ সৈরদ মুস্তাকা সিরাজ ॥ বদ্যা ৮-৫০ নিশিম্পরা ৫:00

- ॥ काली महत्त्वाच देनवाम ॥ कारा जनक
- 🏿 समीत केंग्निस 🖁 सक्जी कविता बाठे ৩-০০ সোজন ব্যাদরার বাট ৫-০০ ঠাকুর বাড়ির আভিনার ৫-৫০
- ॥ नग्रथानिस्त्रक इचर्न ॥ कत्रजी १-०० ।। প্রবোধকুমার সান্যাল ।। রাশিরার ভারেরী ২০:০০ হাস্বান্ ১৪:০০ বসত वाशात 8.60
- n रशास्त्रक विश्व n अदिना चरहना ८-६० স্থা কাণলৈ সোনা ১৫.০০ স্তব্ধ-
- য় প্রজন্ম বার য় কোরপাতার নৌকো ১য ১২.৫০ ২র ১১.০০ এখানে পিলর A-00
- O# 22.00
- া বিভূতিভূষণ ব্ৰুমেশাধ্যায় 🛚 উমি আহ্বান ৭.০০
- বরুশ রার ॥ স্বাধীন ফ্রীতদাস ৫-৫০ ভিয়েতনাম ঝড়ের কেল্পে ৮০০০
- য় ভূপেন ছব্দিত রাম য় স্বার অলক্ষ্যে ১য় ১১.০০ ২য় ১০.০০
- ॥ মনোজ বস্ ॥ মান্ব গড়ার কারিগর **१∙०० हीन एनस्थ धनाम ३म छ∙००** ২য় ৩-৫০ জলজভগল ৭.০০ বকুল ২ ২৫ বৃণিট বৃণিট ৬ ০০ জুলি নাই २.६० महाभएकत स्वंदत्र ८.६० नवाक চিঠি ৩০০০ পথ চলি ৩০০ লোভি-রেতের দেশে দেশে ৬০০ চাদের র্ভাপঠ ৫.৫০ ঝিলমিল ৫.০০ রাশী ৩.৫০ ওনারা ৪.৫০ পথ কে রুখবে? ১২-০০ ছবি আর ছবি ৮০০০ নিশি क्ट्रेम्य ३० ४:०० २३ ४-६०
- া সানিক বল্দ্যোপাধ্যার দ পদ্মানদীর মাৰি ৫০০০ প্ৰাগৈতিহাসিক ৩০০০
- া লোকনাৰ ভট্টাচাৰ' য় ভোর ৬০০০ দ্রোকটি বর, দ্ব একটি শ্বর ৮০০০ ৷৷ পর্বিচন, বন্দ্যোপাধ্যার ৷৷ আদিম রিপ্র
- ৪-৫০ রভিন নিমের ৪-৫০ n সন্ভোৰকুমার ৰোৰ n বাইরে দুরে 8.00 श्वरा नारक 8.00 वटा नमी
- 0.00 ।। সমরেশ বস্তু ।। বাহিক ৪০০০ বর্ণ-
- পিঞ্জর ৩-৫০ মিছিমিছি ৪-০০ পদক্ষেপ ৪-০০ শেষ দর্বার ৪-০০ বাহিনী 20.00
- মু সাবোরকুমার ভারতী মু তুপাভয়া 8·০০ একজন লামা ও মানসসরোবর 4.40
- য় **স্থারভ্রম ম্বোপাধ্যরে য় প্রা**স্তর রণ্য 0.00
- **।। দ্বাংশ্রেমন খোব ।।** সাধ্তপদ্বী ১ম **খণ্ড ৭·০০ ২র খণ্ড** ৬·০০ ৩র শণ্ড 6.00 MG-CH-Gt 6.00
- ্বা নৈয়ৰ ন্যান্তৰা আলী ব্য পঞ্চত ১ম পৰ্ব ৫-৫০ হয় পৰ্ব ৬-৫০ জলে ভাগ্যার ৩-৫০ হাস্যমধ্র ৫-৫০

পূর্ণ তালিকার জন্য ক্যাটালগ চেয়ে পাঠান গ্রন্থপ্রকাশ 🗘 বেশাল পাবলিশার্স, ১৪ বন্ধিয় চাট্ডের স্টাট, কলি—১২

দীৰ্থক দত্তকে আমি ভালই চিনভাম। সে আমার সহপাঠী, আমরা এক সংস্থা ন্তত্ত্ পর্জেছ এক সংখ্য পাশ করেছ। সে তো আজ বছর কৃড়ি আগের কথা। ভারপর আর ভার সংশ্যে আমার দেখা হর্নান। শুনেছি टम ब्यून्स जल्मीनरमत मटसा ठारणत यानमा करत, धनी इसाह। भागनार्छ, भृषियीएड মান্তেক আবিভবি কি করে হল ভার বিশ্বরে সে একেবারে অভিভূত হরে পঞ্জেছল। কোনো একটা নতুন বিষয়ে জ্ঞানলাভ করে এরকম উক্তনাস আমি আর কারুও মধ্যে দেখিন। কিন্তু বিদ্যার অভিভূত লোকটি আজ শ্ধ্ই ভূত! চমকে केंग्रेनाम कायरक गिरम । स्मर्ट मीनवन्धः अधन পাখরের নিচে কেন? কিংবা ভূত নয় সে। খবে সম্ভব চুরি-জোজ্বরি করে এখন भ्दानित्मत्र छरतः वाशास्त नद्दिनसः चार्छ।

আমার মনের কথা ব্যুতত পেরেই বেন দীনকথা কলে উঠল, "তুই খ্র অবাক ছজিল না? হবারই কথা। এটি বে আমার জন্মানা, এইখানেই আমি প্রথম বাস করেছি। কিন্তু তুই এখানে কেন?"

এতক্ষে আমাৰ তম কিছা দ্ব হয়েছে, কাৰণ আমাৰ তখন মনে হল আমি নিশ্চয় ক্ষম দেখছি। আগ্লোড়া সবটাই ব্দুক, আমি বাড়িতেই ঘ্মিরে আছি।

কিন্তু এ ধারণা বেশিকণ স্থামী হল
মা। চেতন মান্বের সচেতনতাই তাকে
কিচার করে এবং সে বিচার বেশির ভাগ কেন্তেই নিভূল হয়। অবশা স্বন্দেও এমন করা মনে হয় স্বন্দ দেখছি, কিন্তু স্বন্দ দেখছি এই মিখ্যা চেতনা মূহুতে মিলিরে যার। জাগ্রত অবস্থার চেতনা কঠোর এবং দীর্ঘস্থামী।

দীনবন্ধ্র ঠান্ডা হাতের স্পর্শ লাগতেই আমি ষোল আনা চেতনাপ্রধান হয়ে উঠলাম, যদিও ভয়ে সে চেতনা ধরে রাখা খ্রই শক্ত বোধ হল। ভূতের হাত বরকের মত ঠান্ডা। রাত্রির দিস্তব্ধতায় **জ্বপালের মধ্যে এক পোড়ো** বাড়ির ভিটের ভূতের ম্থোম্থি বসে আছি। ভূত আমার **একখানা হাত ধরে আছে। এমন অ**বস্থায় মাখা ঠিক রেখে বন্ধরে সপো আলাপ করার মধ্যে কোনো মনোহারিম্ব নেই, কিন্তু ভূত আমাকে ছাড়বে না। সে বলল, "কারও সলো কথা বলতে না পেরে হাঁপিয়ে উঠেছি. ভাছাড়া আমার অনেক কথা বলবার আছে, ভূই ধৈষ্য ধরে শোন। না বলতে পেরে আমি ছটফট করছি এতদিন। তুই ভয় হাড় ৷"

আমার নিজের কোনো ক্রমতা আর দীনকব্ব বলল, "এর পর মার ভিন মাস আমি সক্ষ ছিলাম। এই ভিন মাস পর আবার মদ চগুল হরে উঠল। বখন লক্ষে থাকি, তখন সব ব্যুতে পারি। মনে হর, আবার বলি আমার ন্বিভীর সন্তাটি বড় হরে ওঠে, ভাছলে হর উন্মাদ আভামে বেডে হবে না হর ফাসি কাঠে বলুলতে হবে। একটা বিষরে আমি বড় বাঁচা বেডে গিরেছিলাম এই বে, সভক্ষা বাড়ির সুমানার মধ্যে বাকতাম ততক্ব সুক্ষে থাকতাম। বাবা, রা, দাী, ছেকেমেরেদের ক্ষরণ আমার চোমে বদলাত না, বাড়িকেও অবল্য ময়ে হত না। এখামেও কিন্তু ঠিক সুক্ষে লোকদের বিপ্রীত। কারণ কথ্যের কারে শ্রেমি, তারা স্বাই বলে, বাড়িকেই তাদের অবলা মনে হর, বাড়িকে এলে তাদের মাথা আদাপ হর, বাইরে থাকলে হাঝা ভাল থাকে।

'কিল্ফু বাড়িতে ক্ষতক্ষণ থাকা বার ?
অফিসেল চাকরি করি। বংগণ হুটি নির্মেছি,
আর নেরা বাবে না। চাকরি হেড়ে দেওরাই
ঠিক করলাম। ভাবতে ভাবতে ভাবনার আর
দেব নেই। একদিন একখানা রিকশ ভাড়া
করে গণ্যার ধারে চলে গোলাম, সমদত পথ
চোধ ব্রুভ ছিলাম, কি জামি বদি পথের
মানুষ দেখে কেপে কাই।

"গাপার খারে বসে নামা কথা ভাবছি, কিন্তু হঠাং দেখি আমার অক্সাতসারেই কথন আশেপাশের ভাপা ইটের ট্করো ছুড়ে ছুড়ে ফেলছি জলে। হঠাং থেরাল হতেই চমকে উঠলাম। এও কি সেই পাথর ছেড়ির প্রভিলম। আবার কি আক্রমণ আরম্ভ হতে চলেছে?

"তাড়াতাড়ি বাড়ি ফিরে এলাম। এভাবে নিজের সংখ্য আর লকেচুরি খেলা বার না বেশিদিন। মাথা সম্পূর্ণ খারাপ হওরার আগে আরও একবার শেষ চেন্টা করতে হবে। মনশ্তভের দানা বই সংগ্রহ করে পড়তে লাগলাম। আধুনিকতম মনো-বিকলনের যত রকম বই পাওয়া গেল, ভাও লাইরেরি থেকে আনিয়ে নিলাম। আমাকে বাঁচতে হবে। স্ত্রী এবং শিশ্বসম্ভানদের বাঁচাতে হবে। মনে মনে কঠিন প্রতিজ্ঞা করে কাজ আর**ল্ড করলাম। আর্থাচিকিৎসার** কাজ। মনের অবস্থা বিশেষণ কর্লাম নানাভাবে। খাতায় সমস্ত নোট করলাম। মূলে দেখা দিল দুটি জিনিস, বর্বর বুগ এবং পাথর দিয়ে পশ**ৃ হত্যা। অনেক চি**ন্তা, অনেক বিশেলধণের পর থীসিস দীড় করলায় এই বে, আছরা আবার বর্বর ব্রুগেই ফিরে এসেছি, শৃধ্য বাইরের চেহারাটা ভার বদল হয়েছে মাত্র। অতএব এই যুগকেই বদি वर्वत यून वरल मरभञ्जारम विभवान कति, তা হলে আর কল্পনার আশ্রয় নিতে হবে না এবং তা বিশ্বাস করা কঠিন হল না। মহামান্বলতর দেখলাম চোখের সামনে। বর্বর যুগ না হলে এমন করে অধাহারে লক্ষ লক মানবে এভাবে পথে ধাঁকে ধাঁকে মরভ कि ?

"এই প্রথনই আমাকে আমার চিকিৎসার ইপিলত দিল। কেমনি মনে হল—এরা বাকি জীবিত মান্হদের পাথর দিরে মারছে, চালে পাথর মিদিরে ম্নাফার অক্ষর ডোকে, তখনি আমি পথ পোরে পোলায়। আমি অবিলন্দের চালের বাবসা আরুক্ত করলায়। প্রথমে ব্যবসারীদের কাছে পাথরের গ'হড়োর বোগান দিতে লাগলায়, কেমনা বাবসার জনা আমার মত নগলা লোক চাল পাবে কোধার? তাই ছোরা পথে ব্যবসারী-

एस कियानकावम रख रहार धर्मक सरकार कांचनाती हरत केंग्रेमाम । मरन्य माना माथा जिल हटलं ट्रांग । शायत विटल मान्य মানার এই পথটা বলি আমার মাধার আগে আসত তা হলে কি আর নালের পর মাস जामारक क्यूक्स विक्रीविकात प्रत्या काठीएक হত? এক মণ চালে পাঁচলের পাথর। অধ্র जारेम जामान मिटक। अक मरन मण जा **व्यानात्मक आहेरन** जाणेकारन मा, किन्छ जामि जल्मे निकेश दर्गिन बाबा विक हवात भारतः। कि जन्द महत्वाम, रकत एम দেখি। চালে কত ইছে পাখর মেশাও কেউ किए, बनारव मा, बख्न दकात व्यवस्त्र कागरक म् वक्षां किंठि दिस्ताद्य, म् वक्षे भन्न সম্পাদকীর লেখা হবে।" বলতে বলতে দীনবন্ধ, হাসতে আরক্ত করল।

হঠাং হাসি। হাসির আওরাক করে
চক্ততে লাগল। হাসতে হাসতেই বলতে
লাগল, একটা মোটর দুর্ঘটনার মারা থা গেলে আৰু আহি রাজা। এরে, আমি রাজা
হতে পারি নি, কিন্তু হেলে হরেছে। ডাকে
হতে ধরে সব শিথিরেছি, পাথর দিরে
মানুর মারার বিশার সে এখন পাকা
অন্তাদ। এখন সম্বাশ্ত বাংলাদেশের অন্তত
চার কোটি হরিণ বধ করেছে সে।"

দীনবৃশ্ব হাসির ভীরতা ক্রমে বাড়তে লাগল, ক্লমে ভাসকল স্বাভাবিক সীমা ছাড়িয়ে গেল। আমি স্তম্ভিত। গাছের পাথীরা ভরাত সুরে ভাকাডাকি শ্রু করল। শেরালরা ছুটে পালাল। আমার পাণ मिता विमा शतकार अकि माताम धारे रभन। म्रा-वर् म्रात खनःश कुकृत ডাকতে লাগল। সেই নিশ্তশ্ব রাচির নিশ্তব্যতা ভণা করে সেই বিকট হাসি আমার সমুশ্ত চেত্রণাকে আচ্ছার করল, ভারপর কি হল এখন আর তা কিছুট মনে নেই। যখন আজান হল তখন আমি ামার সেই আন্দ্রীয় বাড়ির বিছানার শ $\chi \gamma = 0$ এমার শিররে আমার স্ত্রী, পাশে পত্রে, পটি ছ'দিন পর আমাকে কলকাতা এনে হাসপাতালে ভর্তি করে দেওরা হল।

মাস্থানেক লাগল স্কুছ হতে। শক্ পেয়েছিলাম খুবই।

এর পর আমার নিজের সামান্য একট, কাহিনী আছে। নিডাল্ডই সামান্য। হরতো না বললেও চলত। কিল্ডু দীনকথ গোণ-ভাবে আমার বে উপকার করেছে ভা শ্বীকার করে ভার প্রতি আগ্নি এই স্থোগে আমার আন্তরিক কৃতজ্ঞতা ভামাজি।

অর্থাৎ আমি নিজেই এপন চালের বাবসা করছি। প্রতি মণে দশ সের পাথর নিবিবাদে চলে বাছে।

আমার শ্বিতীর বাড়ি তৈরি আরশ্ত হরে গেছে, ভৃতীর বাড়ির প্লান জালোচনা চলতে, কমি কেনা হলে গেছে।

व्यव गीनवन्द्र।

া না, ব্ৰজাম, প্নেতেই হবে। তাই গকুও বললাম, 'ভাহলে হাও ছাও।'' দীনবন্ধ্ হাত হাড়কা। ভারপর ভাল বসে বলতে আরুড বরল ভার হনী। ''কম্পনাপ্রবদ ছিলাম অভি-র—''

वननाम, "रन छ सानि।"

'मा, जानिज मा। छात्र मात्रा कछम्द्र बिन जा क्ले जाता ना जात जा क्ले পনাও করতে পারবে না। তুই জানিস না, ুবের আবিভাবের পরে প্রস্তর বুগটা াকে আকর্ষণ করেছিল সবচেরে বেশি। র ভাল লাগত তাদের কথা পড়তে পনা করতে। ঐ **ব্**গের সপো আমি এক ন্য বন্ধনে বাঁধা পড়ে গেলাম. সৈ এক াত মোহ। কিল্ডু ভার প্রারশ্চিত্ত যে াবে করতে হবে তা ভাবি নি। কিল্ডু ট্যোনি অপেকা কর, আমি একট্যাদি চুমোড়া ভেঙে নি, সমস্ত দিন পাথরের প থেকে হাত পায়ে খিল ধরে গেছে। ররে এতক্ষণ তোর পাল্স ধরে বংস দাম, তোর **অবস্থা দেখে ভর পেরে** রহিলাম।"

বলতে বলতে দেখি দীনবন্ধর দেহটা ।

থ বা বেড়ে যেতে লাগল। বাড়তে তে বেল গাছ ছেড়ে উপরে উঠে গেল । মাথাটা। তারপর দ্ব' হাত দ্বিদকে তার করে, ভেঙে, কিছু উঠ-বস করে বার ছোট হরে আমার সামনে বসল। ম আমার মাথায় একটা অভ্যুত টান ভূষ করে হাত দিয়ে দেখি, মাথার ত চুল থাড়া হরে উঠে কাঁপছে।

সেই ভারাভরা আকাশের আবছা লায়, আমারই সামনে, আমারই পরিচিত াবন্ধ্র প্রেভাত্মা, দেখতে দেখতে তকায় হল, এবং আবার ছোট হয়ে মার সামনে বসল, আর সেই জনহীন া ভাঙা বাড়িতে। আগের পরিচিত বতই দুটি জগৎ ত আলাদা! শিশ্কাল ক ভূতের জগংকে ভর করতে শিথেছি ভয় রয়ে গেছে প্রতিটি স্নায়,তে। তাই াকখ্য আমাকে বার বার আশ্বস্ত করতে াল। বলল, "তুই ভয় পাবি কেন, ভয় চ্ছ এখন আমি। আমাকে তো একটা রই ঢ্কতে হবে ঐ পাথরের নীচে। ার চাপা হরে পড়ে থাকতে হবে অনত্ত-ন। এই একট্রক্ষণ করেক ঘণ্টার জন্য ত বেরোডে পারি। এই সময়টার মধ্যে টোকে একট, ছড়িরে দিই। হাত-পা শ হরে থাকে, এতে একট্থানি আরাম ই। কিস্তু যাক, আমার কাহিনীটা না নাতে পেরে আহার যে কি কণ্ট হচ্ছে আর কি বলব! শোন সে কাহিনী. নাতে পারলে মনটা হালকা হবে। সভিং কণ্ট পাচ্ছি, ভাই।"

এসৰ কথা শুনে ভয় সতিটেই অনেকটা টে গেল। বললাম, "শোনাও কাহিনী।" বললাম বটে, কিন্তু কাহিনী শোনার ডি হবে? তখন আমি একা ফিরব কি করে? মনটা বড় অশাস্ত হরে উঠল, কিন্তু বাইরে তা প্রকাশ করলাম মা।

्र गौलवन्थर् वजटण जानज, "राजानर्, जानाव কল্পনাপ্রবশতা কভনুত্র পঞ্জিরে ছিল ভা কেউ जारन ना, जाबात न्हींत कारक का रशानन রেখেছি। আমার সে কম্পনা খ্রই অপ্রত नागरव। अवधि बद्धान म्हणा निरस्टरक মিলিয়ে দেখতে দেখতে একদিন আমি নিজেই সেই ব্লের মাধ্য হরে জেলাম। কল্পনা করতে করতে চারটি ত্বার ব্রুগের ও তাদের মধ্যবতী তিনটি যুগের ছবিটা আমার মনের মধ্যে ক্লমে বাস্তব হরে উঠতে লাগল। আমি আমার মন্টাকে মাবে মাঝে अरकवारत भूमा करत रक्नात रहकी कत्रकात । বেন আমি কে তা জানি না, আমার বর্তমানের কোনো পরিচরে আহাকে চেনা যার না। আমি বেন হঠা**ং কোনো**ু **আদি** প্রাইমেট জাভীর বংশ খেকে সদ্য মাদ্যবেগ অবরব নিরে *জলে*ছি। সেই প্রথম তুবার ব্লেও মান্য আমি, পাথর নিয়ে অস্ত বানিরেছি, পাথর ছ' ড়ে ছবিশ মেরে থাচ্ছি। সে দশ লক্ষ বছর আগের ব্গ! সেই ব্ণের দৃশ্য চোথের সামনে। বর্তমান যুগ সম্পূর্ণ মিখ্যা হরে বেড বখন এই কম্পনার ভূবে যেতাম। কিরে, শুনছিস তো আহার কথা?"

"শন্নছি, তুমি বলে যাও"—কোনরকমে উচ্চারণ করলাম।

দীনবংধ উৎসাহিত হরে বলতে লাগল,
"কলপনার কি সে উল্লাস। আমি আদি
মান্ব, লংবা চুল, দাড়ি, আমার পরনে
পশ্র ছাল, হাতে পাথরের অক্তঃ আমার
দলে আমার মতো দশ-বারোজন ক্তীপ্রব। ভাষা আমারা তখনও পাই মি, দ্বচারটে কথা তৈরি করেছি মাত্র। এসব এমন
সাত্য মনে হত বে অনেক সমরে এক একটি
ঘণ্টা কেটে যেত এই মোহ থেকে মুভ হরে
আপন পরিচরে ফিরে আসতে।"

দীনকথ্ হঠাৎ আমার ঘাড়ে তার ঠাণ্ডা হাতের পশর্শ লাগিরে একটা ঝাঁকুনি দিরে জিজ্ঞাসা করল "তুই কি ব্যুমিরে পড়েছিস? এত নিজনীব মনে হচ্ছে কেন?"

আমি চোখ ব্রেজ নিবিক্ট মনে শুনহিলার, এমন অবন্ধার ভার হাডের ছোঁরা লেগে প্রার ডেটিরে উঠলাম।

সে এক অক্টুত দক্ষ বেরোস আমার গলা দিরে, আর সে দক্ষ দুনে পাদের জপাল থেকে করেকটা বন্য জব্দ দুকনো পাতা খচমচ করতে করতে পালিরে গেল। গাছের ভালে পাখী চমকে উঠল। পদ্দের ভাড়াতেই সম্ভব করেকটি সজারু, কটি। ধ্যাধ্য করতে করতে আমার পাদ দিরে ছাটে পালাল।

এবারে আছাত্র হতেই হল, দা হলে বাঁচবার কোন উপার নেই। বললাম "না আমি ঘুমোই নি, মনোযোগ দিরে দুর্নাছ, তুমি দুরে আমার গারে আর হাত দিও না। তোমার ঠান্ডা হাত এই দীতে ঘড়ে লাগাতেই চমকে উঠেছি বেশি।" দীনবাধ্ বলল, "আছা, আছা, আছা
হাত দেব লা। কি বলছিলান? —হা,
দেই কললান্ত আদিন ব্লের মান্ব
হরে বাওরার কলা। আগে নিজেকে
হলতর ব্লের মান্ব কলনা করতে কিছ্
দেরি হত, পেবে কলনানার হরে বেডান।
সে কি ভীষণ অবন্ধা। সেই অবন্ধার
আমার চোধে অন্য সব মান্ব হারণ হরে
কেও। চালি চাপলিসের গোল্ড রাল ছবিতে
চালি বেমন ক্ষাতের চোধে ম্রলী হরে
বেত, ঠিক তেমান। আমি নিগর থাকছে
পাছতাম মা। জেকিল ও হাইওের মতো
অমার বালিস্থ দ্ব ভাগে ভাগ হরে গোল।
ডক্টর জেকিল বেমন ম্হুতে শিলাচর্শী
হাইডে পরিগত হত, আমারও হল ভাই।

ইংরেজীতে বাকে বলে জিলোলিরেশন'।
আমার শ্বিতীর বাজিছের ঘটল সেই দলা।
সে আমার নিরন্দাশের বাইরে চলে সেলা।
মনে হত সভিটে আমি আদিম বংগের
জপালে বংরে বেড়াছি। বর বাড়ি সবই
গাছপালার র্পাতিরিত হরে বেড। ভূমি
বিশ্বাস কর, একদিন সভিটি এবজুলা
মান্বের মাখা লক্ষ্য করে পাখর ছ'ডে
মেরেছিলাম। কিন্তু ভাগিাস ভার মাখার
লাগে নি! কিন্তু ভা না লাগলেও আমার
মাখা লক্ষ্য করে পথের লোকেরা বে টিল
ছ'ড়েছিল ভার একটা আমার মাখার এসে
লেগেছিল ঠিকই। আমি প্রাণপদ বেগে
ছুটে না পালালে হরুত আরও লাগত।"

একট্কণ থেমে দীনবন্ধ আবার বলতে লাগল, "ঐ একটা চিলেই আমাকে সামরিকভাবে সুম্থ করেছিল। তার মানে আমার ভিতরের সেই দ্বিতীর আদিম বর্বর মান্বটি কিছুকাল মুক্তিত অবস্থার পড়েছিল।

দীনবন্ধ্য আবার একট্য থামল। মনে হল কেন এবারে সে তার কাহিনীর ন্বিতীয় অধ্যায় আক্লভ করবে। এমন সমর কিছা দুরে হঠাৎ একটা শেরাল ভেকে ওঠাতে আমি কোথার কি অকন্থার আছি সে বিষয়ে আবার মনে প্রখন জেলে উঠল। এতক্ষণ ভূলে ছিলাম, কিন্তু শেরালের ভাকে আবার যেন সব স্বপ্ন, সব অবাস্তর বোধ হতে লাগল। সে কি এক অ**স্কৃত অভিজ্ঞ**তা ! শেরালের ডাকের সপো সপো কাছে, দুর্বে, বত শিরাল ছিল সব একে একে ভেকে উঠল। মনে হল যেন একই **শং**লার প্রতিধননি সমস্ত পরিম-ভালে হাছাকার করে বেড়াছে। যেন জনহীন, পশহীন, বিরাট এক অন্ধকারের খনো পাতে সে আঘাত কর্ণভাবে ধ্রনিত-প্রতিধ্রনিত হয়ে যিদরছে।

দীনবাধ আবার কথা বলতে আরু করতে আমি বেল অনেকটা ভরুসা পেলাম ।
এমন অবস্থার বোধ করি আমার মদ কোনো ।
মানবিক শব্দের জন্যই ব্যাকুল হরে উঠেছিল তাই ভূতের কণ্ঠ হলেও ভা আমার কাছে তখন মধ্রে মনে হল। ভার আরও কারণ, ভূত হলেও সে আমার কম্ম ভূত এবং গদেশর ভূতের মৃতো ভার জন্ম কুটে স্কর ছিল না।

SPEDICE IN

টোলফোনের খণ্টা আবার বেজে উঠল— ভাড়াভাড়ি কল্টা ধরার জন্য ওঠার উদ্যোগ করতে করতে হেমাপা বলে ওঠে—"আছা, ফোন এলেই ভূমি অমন লাফিরে ওঠো কেন? কেন এই চপ্তলভা?"

মাধবীর দিকে একটা তিবাঁক দৃষ্টি হৈনে ফোনটা ধরল হেমাপা। মাধবী কিন্তু নীরবে নিস্পাদ ভগাতৈ শিবর হয়ে বসে রইলা। ঠোঁট দুটি ঈবং খোলা, একার্গ্রচিত্তে টেলিফোনের কথাস্থা ধরার চেন্টা করছে, অধাচ ভালে এইখানে বসে অপরপ্রান্ত থেকে কি কথা আসক্তে তা জানা অসম্ভব।

হেমাপা কিরে এসে সিগ্রেট ধরাতে ধরাতে হলে, "বড়ির দোকান থেকে ফোন, করছিল। ওরা বলছে কাল শনি, পরশ্, রবি, তারপর দিন উদের ছাটি। সেই মণ্গলবারের আগে বড়ি মেরামত হবে না ।"

পরিপূর্ণ নিটোল ব্যাস্থা হেমাখার সাধারণ বাঙালী ব্যারর পক্ষে কিঞিং বৈমানান। সামনের মাধার চুল কম, টাক পড়তে সূত্র করেছে, কিন্তু পিছন দিকের বাব্রী দেধবার মতন।

মাধবীর দিকে যখন তাকালো হেমাপা তখন তার চোখ দ্বটি যেন জনল্ছে।

মাধবী বলে—"তোমাকে কিন্তু হেস্টিংসে শ্মীটের এটপী' বলে মনে হয় না, দেখার বেন মাউপ্টেড প্রিস। কিংবা ওদের বোড়ার মতন—তেমনই তেড়ে উঠ্তে পারো, তবে অবশ্য হাণ্গামা যদি বাধে।'

ওর মুখের দিকে সক্সিয়ে তাকার হেমাপা,—কি অভ্যুত তার ভপাী, তেমনই বিচিচ তার কথাবাতা। সব কিছু লক্ষণ এবং ভপামা দেখে করের মনে হবে না বে, মাধবী পরম প্রেমে আছারার হরে আছে। এইবার কর্কশ গলার বলে হেমাপা—"তুমি কিছু আমাকে কিছুতেই বললে না টোল-কোন কেন তোমাকে চণ্ডল করছে। যেন কোনো অজ্ঞান জনের সংবাদের প্রতীকার রয়েছ, ব্যাপার কি মাধবী ?

"ছিঃ, পাগলামি কোরো না।" কিছ্কণ চুপ করে থেকে আবার মুক্ষ গলার বলে হেমাপা—"নিশ্চরই কিছু কারণ আছে, আমার চোখে ধুলো দিতে পারবে না। আমাকে সব বলতেই হবে।"

দুই হাতে কপালটা চেপে কিছুক্ষণ বসে বহল মাধবী, ভারপর মৃদু গলায় বলল— 'শ্ভামাকে আগে বলিনি—ভূমি হয়ত কি ভাববে, আমাকে পাগল মনে করবে, কিন্তু দ্বানটা, উঃ—"

ধীর গলায় হেমাপা প্রশন করে "কি জাতীয় স্বশন?"

সেইভাবেই গালে হাত রেখে বসে রইল ক্ষণকাল মাধবী, তারপর যেন আত্ম-কথনের ভগ্নীতে টেবিলের উপর দ, খিট রেখে ক্ষীণ-কণ্ঠে বন্ধৰ—''হয়ত অণ্ডুত মনে হবে, কিন্তু ভোরের দিকে স্বংন দেখলাম-যেন আমার ছোট ভাই নীল, আমার বিছানার ধারে এসে বসেছে, আমি বলছি কিরে নিূল্ এত রাত্তিরে কোথা থেকে? নীল, বললে— ⁴দিদিভাই আমি আর বে°চে নেই। বারোটার সময় মারা গেছি।' কথাটা শুনে আমার ভারী মন খারাপ হয়ে গেল, হয়ত নিছক কল্পনা, স্বান মাত্র, কিন্তু আমার যেন মনে হচ্ছে আমি স্পণ্ট তাকে দেখেছি, এমনি আমার চোখের সামনে ওদিকে বৰ্মেছিল সে. দেখছি শ্রো তমি অঘোরে ঘ্যাচ্ছ ' কিছুক্ষণ মাধবী আবার বলতে সর করে—"নীলু একথাও বলল আমি আন্ত সকালের ভিতরই খবর পাবো যে, এ স্বান সত্যি, দিল্লী থেকে ট্রাব্ককলে খবর আসবে যে, নীল্ব কাল রাতে মারা গেছে।"

সোজা ওর মুখের দিকে তাকায় হেমাণ্য,

—সে একট্ বিদ্রালত হয়ে পড়েছে, মাধবী
হঠাৎ এ সব বলে কি, হোল কি ওর। হেমাণ্য
সাল্ফনার সুরে বলে—" বেশ ত' এখন ত'
প্রায় বেলা দশটা বাজে, কেউ ত' ফোন
করেনি, আর ধরো যদি"— ইতুস্ততঃ করে
হেমাণ্য তারপর আবার বলে—"নীণ্
কিছকাল ধরেই ত' ভুগছিল, অবশা তোমরা
দু'জনে খ্বই ঘনিষ্ঠ, কিস্তু তব্ বা সত্য
তাকে মেনে নিতে হবে, অনেক আগে থেকেই
ত' এই দুঃসংবাদের জনা তৈরী হয়ে আছো।
যদি সতাই এই দুঘটনা ঘটে থাকে,
তাহলে—"

মাধবী যেন ঘ্মের খোরে কথা বলছে সেইভাবেই টেবলের দিকে চোখ রেখে বলে—
"ভোমার কথাই সভা, কিন্তু স্বংশর ভেতর
নীল্ আরো কিছ্ বলেছে, সে কি বলেছে
জানো—? এইবার সোজা হেমাজার মুখের
পানে ভাকার মাধবী। ভারপর স্পন্ট গলার
বলে—"আমাকে সাবধান করেছে নীল্,
বলেছে আজ রাত বারোটার পর আয়ারও সব

বিদ্যাত হেমাপা ৰলে উঠে—"বলো বি, আজই রাত বারোটা? বত সব গান্ধা, তোমাকে আমি কতদিন বলোহ ঐ সব ভূত-প্রেত আর গোরেশা কাহিনী পড়া ছাড়ো, তুমি কিছুতেই কথা শুনবে মা।"

মাধবীর কণ্টেশ্বর কীণ কিন্তু তাঁদ্ধা, সে যেন আর্তনাদ করে উঠল—না, আম আর বাঁচবো না। আর বড়ম্পের চোন্দ-পনের ঘন্টা। পড়ির দিকে সন্দেত দ্বন্দিতে তাকিরে মাধবী বলল—"আর কটা ঘন্টা মাদ্র।"

এই বলে কালার ভেশো পড়ে মাধবী।
এক মুহুতের জন্য হেমাগার মনে কর্ণা
হরেছিল, সাম্পনা দানের উম্পেশ্যে মাধবীকে
ব্রিফ পপর্শ করার ইচ্ছা হরেছিল, কিন্তু সে
ইচ্ছা দমন করে পকেট থেকে সিগারেট কেসটা বার করে নাড়াচাড়া করে তারপর কণ্ঠস্বর ইষৎ মোলারেম করে বলে—'দেখা, এ সব ভোমার বানানো গল্প কিন্যু কে জানে, যদি সতা বলেই ধরি তাহলেও স্বন্ন। আর্ যদি স্বন্ন হর, তাহলে দুঃস্বন্ন দুঃস্বন্নকে মনে মনে রেখে বসে কোনও লাভ নেই, তাকে ভূলতে হয়, ভূলতে দেখো। তা নিরে ব্যা মন থারাপ করে বসে থেকে লাভ কি?"

তন্দ্রাছ্ণর ভাগীতে বলে মাধবী—"নীল্ বললে, যখন খবরটা পেশছবে তখন ব্রুবে আমার কথা সবট্কু সতি। সে বে ভবিষাং বাণী করছে তার প্রমাণ পাওয়া যাবে।"

হেমাপ্স বললে—"ছাই প্রমাণ পাবে, কিছাই প্রমাণ হবে না। তুমি জানতে তোমার ভারের কঠিন অসুখ, সে অনেক দিন ধরে ভূগছিল,—মাধবী, তুমি লেখাপড়া জানা মেরে, নিশ্চরই জানো মাঝে মাঝে ভাই-বোনের মধে এই জাতীয় সংবাদ আদান-প্রদান ঘটে থাকে। ওকে বলে টেলিপ্যাথি—কোথার কি হক্ষে ওরকম বোঝা যায়।"

জানদার কাছ থেকে সরে এতে
প্রীতিভরে মাধবীর মাথায় হাত রথে
হেমাপা। সাম্পনার ভপাতি বেশ মাধারাক
কপ্তে বলে—"দোনো মাধবী, ব্যাপারটা
বেশ করে তলিয়ে ভাবো। আজ এই
উনিশশো পণ্ডায়র তোমার এই রাইট ত্যীটের
বাণিতে এই ধরনের ভৌতিক বালী কি
বিশ্বাস করতে ইচ্ছে হয়, তার চেয়ে মাথাটা
মাটির দিকে করে আর পা দুটি ওপরে করে
হাঁটতে শেখা বরং সহজ্ব। এ সব কাশ্ড
কথনও ঘটে না। তা ছাড়া নীল্ল তোমাকে
বে রকম ভালবাসে সে কথনই এইভাবে
শ্বশ্নে ভর দেখাবে না। স্তরাং উঠে পড়ো,



আছে করো, খাও, সাও স্কৃতি গুন্ছো?"

াপ্র লক্ষ্য করল মাধবী ফাণছে,

ড এগিরে গিরে ওর কবিটা

থরে, সাহস ও শারু দেওরাটাই

পদ্যা। ব্যক্ষের ব্যাপারটি নেহাৎ

নেগড়া ফাকা আওরাজ যে নর তা

বিশ্বাস হরেছে হেমাপ্যার, একট্

ডেবেছে মাধবী অভিনর করছে,

লাত করাটাই হয়ত তার ফল্মী।

বিলট্ প্রকৃতিপথ হয়ে বলে, "আছো,

বলছ তাই হয়ত ঠিক, আমারই

বে গোলমাল হয়ে বাছে। ব্যন্দটা

মার মনোবিকার।"

্র্ পরেই আবার টেলিফোন বেঞে

ার মুখে হাত চেপে মাথা নীচু করে
বসে রইল মাধবী। অতি দ্রুতপারে
গেল হেমাশা টোলফোন রিসিভ
ফিরে এলো কিম্ছু অনেক পরে। ওর
দকে তাকিয়ে সোজাস্ত্রি প্রশন
াধবী,—'কি দিল্লী থেকে থবর এলো
ত তাহলে নেই।"

েনড়ে সায় দেয় হেমাপগ। সে ঠাণড়া হয়ে গেছে। এতক্ষণ পর্যকত ঠাট্যার বিষয় ছিল এখন তা নিষ্ঠার নাবে প্রমাণিত হয়েছে।

যেন বলার চেণ্টা করলো হেমাপা, র ম্থে কথা যোগায় না, বিষয়টির হ সে স্তম্ভিত হয়ে গেছে। সাক্ষনা ্ব আর একবার টেলিপাাথির কথা করে হেমাপা।

কাজকর্ম ছেড়ে সারা দিনটা দঙ্গে কাটাবে দিথর করলো হেমাপা। কন্দ্ ভীষণ আপতি জানালো। বললো "একা থাকলে তব্ একট্ গবে, অনেক ভালো থাকবে হয়ত, মাকে না হয় একা থাকতে দাও।"

রে যাওয়ার সময় হেমাপা গাম্ভীর বল—''সতি বলছি, তখন তোমাকে মছি বলে এখন মনে কণ্ট হচ্ছে, ফানের কথাটি বলা উচিত হয় নি

ী বেশ ঠান্ডা গলায় বলে উঠে—
ক, বেশ করেছ, সংসারে এমন ঘটেই

আওয়াজ মিলিয়ে •গর গাড়ির মাধবী তাভাতাভি গিয়ে ধরে. ওপার থেকে নসতেই কাহায় হয়ে অপর 2/20 কোমল ন করে—"হোলো কি ভোমার? হবে সব খলে।"

কণ্টে, মাঝে মাঝে চাপা কালার রা, ওপার থেকে শোনা কথার পেরে কোনো রক্মে সমগ্র শেষ কর্লো মাধবী। কিন্তু কথা উল্লেখ করতে গিয়ে এমন নতুন কথা বল্ল যা হেমাপা क्रपीन्त भारतन्त्राक्ष्यान्य राज्यक मा बाबन नामारमञ्ज मधून प्रेभना।न

তাজের স্বণ্ন ৮১

আকাদেমী প্রস্কারপ্রাপ্ত লেখক মণীন্দ্র রারের নতুন উপন্যাস

रात्रात्ना श्रान्धि नित्र (न्मम ५

नानकार्क नीलकार्ठ विक्रिया ५०:

শ্বোধ গলপ মণিঘর ১৪১

ভঃ ৰুম্মদেৰ ভট্টাচাৰের বহু প্রশংসিত প্রমণ কাহিনী

विशासा नमीत प्रत्म ७,

শক্তিপদ ৰাজগ্ৰের নতুন উপন্যাস

যদি জানতেম ১০১

মুক্তিমনন ৬০০০ ॥ জনম অবধি ১০০০০ ॥ জলসা ২০০০ রূপ বদল ৫০০০ ॥ অনেক বসম্ভ একটি দ্রমর ২০৫০

श्रक्त बाराब উপन्যाञ

সর্ধাপারাবার ৬১

ইন্দ্রধন্য রঙ ৫-৫০॥ সোনালী রেখা ৪-০০॥ সন্ধ্যাকলি ৪-০০

কুশান, বন্দ্যোপাধ্যায়ের রহস্য উপন্যাস

রাই শোন আজ ৬১

গোধ্লির কুমকুম ৮০০০ ॥ ভোর হল বিভাবরী ৮০০০ নেপোলিয়নের শেষ বিচার ৪০০০

বিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যায়ের

অবগ্রণ্ঠন ৫১

नीलाऋ्तीय ১० वाध्रानिक ७

কুশী প্রাণ্যণের চিঠি ৫,॥ তাল বেতাল ৪,॥ অণ্টক ২০৫০

त्रवीन्त्र नारेटबर्गी : ১৫ ।२, भग्रामाहत्रन रेम न्द्रीहे, **कानकाखा-५१ : : ०৪-४०৫७**

and the state of t

প্রভূলদা, আমার বিছানার নীলা, বছন বার্নাছল তথন আমি ওকে প্রশন করালার বা ঘটবার তা ঘটবেই, তব্ আমাকে সাবধান করার হেতু কি! আমি জানতে চইলাম, কোনো উপার আছে কি বাঁচবার? নীলা, বল্ল—একেবারে শেষ বলে কোনো কথা নেই, পালাবার পথ নিশ্চরই আছে, ভাগোর হাত থেকে বাঁচার ঘালতা হ'ল অভিশর সাবধানে থাকা। তা হ'লে হরত পরিপ্রাণ পেতে পারো। কিল্ফু প্রভূলদা তারপর আমার মুখের দিকে অভি বিশ্বা চোথ মেলে বলল—"কিল্ফু মাধ্দিতোমার যে রকম কাণ্ড, প্রভূলদাকে নিরে মেডাবে মেতে আছ তাতে বে তুমি অত সহলে নিশ্বাতি পাবে মনে হর না।"

কিছ্কণ চুপ করে রইল, অপর প্রাণ্ড থেকে যে কথা ভেসে আসছে অতিশয় আগ্রহভরে তাই শ্নছে মাধবী। তার পর অতি কীণ গালার বলে—"প্রতুলদা, আমি বেশু পৃন্ততে পারছি এ যাতা আর নিস্তার নেই, স্বশেনর একাংশ যথন ফলে গেছে তথন অপর দিকটাও নিশ্চাই ফলে যাবে। কেউ আমাকে বাঁচাতে পারবে না। প্রতুলদা আমাদের.....।

অপর প্রাণ্ড থেকে প্রভুলদা বলে ওঠে

"দন্দেশ, কি সব বাজে বক্ছ, একট,
শক্ত হও, লক্ষীটি এই সময়ে মনটাকে অত দুবলি করতে নেই।"

এবার জোর গালার বলে মাধবী,—"না প্রভুলদা, ব্যাপারটা সবট,কু একেবারে নন্-সেসস নর। আঞ্চ সকালেই লক্ষা করেছি উনি আমাকে বেশ সন্দেহ করছেন, বেশ বীকা বীকা কথাও বলছেন আমি সব সরে গোছ। এমন কি এই ইণ্গিতও করেছেন বে কোন ভালবাসার জনের ফোন পাওয়ার জন্য আমি উদমুখ হরে আছি। এরপর আর কি বলনে?"

"ও বাবা, এত সব কাণ্ড ঘটেছে?" "হাঁ, সেইজনোই আমি বিশ্বাস করছিযে, নীলবে ব্যাপারটা নিছক উড়িয়ে দেওয়ার মত নয়।"

প্রতৃদ্ধ বলল—"কিন্তু মাধবী আমি
নাহর ধরছি নীলুর কথাই ঠিক, তব্ জিনিস্টা অবিশ্বাসা। ধরো আমাদের এই ব্যাপার হেমাণা জান্লো, তা সে কি ভোমাকে খ্ন করবে, অন্ততঃ তুমি ত' সেই কথাই বলছ?"

'জানি মা কি করবে না করবে। শুন্ধ্
এইট্কু য্বাছি আমার ভর হয়েছে, ভীষণ
ভয়। আজ আর আমাদের দেখা করার দরকার নেই। অলততঃ বিপদট্কু না কাটা
পর্ষণত দেখা না করাই ভালো। আজ যদি
দেখা না হয় আমাদের তাহলে হয়ত
মীলুর কথাটা বিফল হর্তে পারে।
নীলু বলেছিল তোমার যা অবন্থা তাতে
হরত তুমি সামলাতে পারবে না। তা হ'লে
আর যাজি না.....।

অনেক বিতকের পর প্রভূলের কণ্ঠদ্বর রাজী হল, তার পর শাস্ত গলার সাস্থ্যনা দিয়ে বলে—"কিন্তু মাধবী কথা দাও তুমি এ সব কথা নিরে মোটে চিন্ডা করবে না। এতট্কু মাখা ঘামবে না। আমি আবার ডোমাকেরাত বারোটার পর কোন করবে।"

"আছা, তাই করো, অপ্রতুলদা, আমাকে
তুমি ঠিক রাত বারোটার পর ফোন করবে,স'
বারোটার ভেতর ৷.....তা হ'লে ব্যাবে
বিশাদ কাটলো আর তুমিও জানবে কি
থবর !"

"কিন্তু—?" প্রতুল কি প্রশন করতে সাম ৷

মাধবী ভাড়াভাড়ি বলে—"কোন ভর নেই, একবার শ্লেই ওর আর জ্ঞান থাকে না, একেবারে পাথর হয়ে হায়। এমনিতেই এত ঘ্ম, তার আজ আবার শনিবার, ক্লাব হয়ে ফিরবে, ব্রুতেই পারছাে এতট্কু জ্ঞান থাকবে না। ঠিক তা হ'লে বারোটার পর ফোদ করবে। তুমিই ফোন কোরো, বাদ ব্রুতে পারে, বলবাে রঙ নাম্বার।"

থাওয়া দাওয়া অনেককণ শেষ হয়েছে,
হেমাপা শ্তে গেছে অনেক আগে। আয়নার দিকে তাকিয়ে ড্রেসিং টেবলে চূপ করে
বসে আছে মাধবী। হেমাপাকে অনেক
ব্রিয়ে শ্তে পাঠানো হয়েছে। কিছ্তেই
সে শোবে না, বলেছিল—"তুমিও বরং শ্রে
পড়ো, আজ আর সেলাই করে কাজ নেই,
সারাদিন ধরে মনটা ক্লান্ড হয়ে আছে
বিশ্রামের প্রয়োজন"।

মাধবী চুপ করেছিল।

তব্বার বার বলেছে হেমাজা—"ঠিক বল্ছ তোমার শরীর ভালো আছে?"

মাধবীর চোখের কোণে জল দেখে হেমাপা শতে গেছে। এতক্ষণে মাধবী একট্ম স্বস্তি বোধ করছে, শেষ পর্যস্ত কিছ,ই হয়নি, আর কতট্কুই বা বাকী এর মধ্যে কি আর ঘটতে পারে? স্বন্দের প্রথম দিকটা মিলেছে তাই শেষটাও মিলবে এমন কথা নেই। কাল শরীর ব্বে না হয় পেলনে চলে যাবে দিল্লী। নীলার কথাটাও ত' মোছা যায় না মন থেকে। জানলার ধারে গিয়ে পরদাগালি ঠিকমত টেনে দেয় মাধবী। জানলার নীচেই ছোটু বাগান কত বিচিত্র মরশামি ফাল ফাটে আছে, এই **ল্লান আলো**য় অস্পন্ট কাপে'টের মত মনে হয়। কত কাছে অথচ কত দুরে। জানলায় कात्ना भवना स्मर्डे, नजून काात्रान। यीन এই জানলার ফাঁকে উড়ে যাওয়া যেত সতি৷ যদি পাখনা থাকত, কত মজাই না হ'ত হেমাপার হা্কুটি উপেক্ষা করে ডানা মেলে **छिए इतन एएड भाधवी, कछ** एउ-पिशुस्ख्य পারে মেঘের সপো গিরে মিশত।

কিন্তু কি সব কথা ভাবছে মাধবী, পাগলের মত। ভানাই বা মেলবে কেন, কলহ যদি হয় সামনের দরজাও খোলা রয়েছে— তার পব প্রশাসত রাজশধ।

এখন সে অনেক ভালো আছে, এত ভালো আছে বে এই উন্দাম চিল্ডার উল্ভট সম্ভাবনার সে হাসতে পারছে।

এই শতব্যতার মধ্যে কিসের ধেন একটা অন্তৃত শব্দ শোনা গেল, অপ্রবা তার বংকার। প্রথমটা কিছ্তেই ব্রুডে পারে না মাধবী শব্দটা কিসের! পরে মনে পড়ল সিশ্টর ওপরকার বড়িটার হণ্ট বাজার আগে এমনই শব্দ হর। তারপর হণ্টা বাজলো, এক, দুই, তিন—

ভাল করে কান পেতে শোসে মাধবী। বারোটাই বাজলো শেব পর্যপত। তব্ কিছু-কণ সেইভাবে বলে রইলো মাধবী। বারোটা যে বেজেছে সে বিষয়ে নিশ্চিত হওয়া চাই।

অনেকক্ষণ চুপ করে কপালে হাত রেখে বসে রইল মাধবী। সেই অশুভ মুহুত পার হরে সে এসেছে নবীন জীবনে সংকটের হাত খেকে নিজ্জতি পেরেছে, বারবার ভাবে বিপদ কাট্লো।

পা টিপে একবার হেমাণ্যর বিছানার পাশে এসে দাঁড়ালো, মুখে তার বিজ্ঞারনীর দাঁশত ভাগামা। তারপর পাশের ঘরে টেলিফোনটির সামনে বসে পড়ালো। টেলিফোনটা বাজলেই সেটা যাতে ধরতে পারে। মনে মনে এক দুই করে সাত মিনিট, আট মিনিট পর্যান্ত সময় গুন্লো। তারপর আর তার এওট্কু অপেক্ষা করার গৈর্য থাকে দা। চোরের মত অতি সন্তর্পাণে সেটেলিফোনের রিসিভারটা তুলে নিরে কম্পিত কন্টে প্রতুল লাহিড়ীর ফোন নাম্বারটা উচ্চারণ করে।

অনেক পরে ওপার থেকে প্রভুলের কণ্ঠ শোনা যায়—"হ্যানো।"

অনুযোগের মুরে মাধবী বলে—'প্র হোল তোমার? কখন বারোটা বেজে গেছে, স' বারোটাও হরে গেল, তোমার সাড়া নেই কেন?"

"সে কি! এর মধো ারোটা পনের, হ'তেই পারে না, এখন ও' পৌনে বারোটা, তোমাদের ঘড়ি নিশ্চরাই ভীষণ ফাস্ট চলচ্চে।"

হঠাৎ পিছনে কি যেন ঘস্ ঘস্ করে উঠল। সচকিত মাধবী সন্দুসত ডগ্যীতে পিছনে তাকিয়ে দেখে রবাে শিলপার পামে হেনাগা নিঃশব্দে দ দ ড্রে আছে, চোণের চাউনিটা কেমন যেন উদ্ভাল্ডের হতে।

উত্তেজিত তপগীতে মাধবী বলে—'বঃ.

তুমি ব্রি দড়িছের দড়িছের সব শুনছো'—
তারপর সহসা রিসিভারটা ছুড়ে ফেলে
দিয়ে উদ্দামগতিতে মাধবী ঘর থেকে
বেরিয়ে যায়। পিছনে যেন হেমাপ্গও দেড়ৈ
আসছে, তার পায়ের আওয়ার শোনা যাছে,
ঘর থেকে বেরিয়ে সোজা সেই জানলার
ধারে এসে পেভায় মাধবী। ভীষণ আতকে
তার সারা শরীর কপ্মান। তারপর হঠাং
জানলার উপরে উঠেই শুনো মালিয়ে পড়ে।
হয়ত তথনও ভানা মেলে দেওয়ার

"মাধবী, মাধবী।" চীৎকার করে ওঠে হেমাপা, কিব্তু কাছে আসার অনেক আগেই মাধবীর অচেতম দেহ মরশ্মি ফুলের ওপর ক্টিরে পড়েভ।

স্বশ্বের ঘোর তার কাটে নি।

অনেক দুরে থানার ছড়িতে বারোটা বাজলো।



জেল আদালতেই তার বিচার হরে গল। শাল্টীরা শভেখলাবন্ধ করেদিকে নৈ নিরে এসে ছ‡ড়ে ফেলে দিল ন্ধকার সেলের কুঠ্যিবতে।

বাইরে হয়তো এখনো এত ঘন ন্ধকার নামেনি। ভারত মহাসাগরের গুলান্ত পিচ্ছিল জলরাশি হয়তো এখনো ালকাতরার মতো কালো হরে ওঠেন। থনো ভারবান ডকে বাস্ত কুলি-কামিন বিমালাদের বিচিত্ত কর্মপ্রবাহে छाँग ড়েন। দুর পাল্লার কোন কারগো বন্দর ম,হ,তে ড়বার **পূর্ব সংগ্রামোদাত** াপনের মতো শক্তি সঞ্জ করে নিচেছ। হায়ারের **জলে** জেটি কাপছে...ছলাৎ নাং...ভাসমান বয়াগ্লোকে দেখাছে হষের মাথায় মতো। আর আলোর পমালায় সমস্ত ডক অণ্ডলটা যে÷ শ্চর্য রুপসী হয়ে উঠেছে।

বাইরে হয়তো এখনো এত মিশকালো
খকার নামেনি, কিন্তু পরে দেয়ালঘেরা
লের ভেতরে নরকের জন্ধকার নেমে
সছে। কোন রকমে ক্লান্ত অবসম
টোকে টেনে নিয়ে গিয়ে ঠান্ডা শক্ত
ার পরে নিজেকে মেলে দিল তাহের
লি। বিচারে জ্বিরা রায় দিয়েছে।
ফাঁসি হবে। তার প্রথম অপরাধের
ঝা সে জন্মকাল থেকেই বয়ে নিয়ে
দছে। তার চামড়া কালো। আর এই
লা চামড়া স্ন্বল করে কিনা সে
ডাগাঁ মিস মার্থাকে রেপ করতে
মছিল!

একট্ আগেই ওয়াডার এসে একটি সমাথা বাতি রেখে গিয়েছিল। সেই ণ আলোতে ঘরটা আলোকিত হতে রনি। তকু এক টুকরো সোনারাভা লা। এই আলোই না মানুষের কোন 'পরেষ দ্বগ' থেকে চুরি করে এনেছিল। ট্রকরো আলোর আশীর্বাদ। আলোর নে তার শ**ভ**ুমজব_নত হাতটা এগিয়ে তাহের আলি। সতাই কি কালো-না তার গামের চামড়া। হ্যা কালো-না-কালো। কালোর কোন রঙ নেই শ্ব্ব কালোই। কিন্তু.....এই কুর্ণসত া চামড়ার ঢাকনাটাকে যদি একব।র নয়ে নিঃশেষ করা যায়, তাহলেও কি াও ছিটেফোটা একট্ব শাদাও দেশা না? এই কালো চামড়ার আশ্তরণের পর্র্ মাংসের শতর.....লাল রম্ভ আর হাড়। আচ্ছা, শাদা মানুষের রম্ভও ণাদা? নাকি, কালো চামড়ার মতোই রক্তের রঙ লাল? হা আলো! তোমার রার শাদা কালের প্রভেদ করেছিলে পূৰ্ণিবীতে তো এক রঙেরই মান্য—শুধ্ শাদা, গিজের পাদরির আল-থালার মতোই শ্বেতশুল্প। আর বৃদি কালোই করলে তাহলে মান্বের রঞ্জের লাল রঙ ঢেলে দিলে কেন আমার শিরা-উপশিরার।

বিচার বসবার আগে বাচ্চাটাকে বিয়ে লক-আপে দেখা করতে গিয়েছিল তার বউ জাবেদা। জাবেদা তার তেরো বছরের শাদি-করা বউ......আর তার বা**চ্চা সেলিম।** আহা, কতাদন চুলে তেল দেয়নি জাবেদা, গামের কামিজ যেমন ময়ল্য ছে ড়া.....এই অলপ বয়সেই কেমন সে ব্ডিয়ে গেছে.....চোখের দ্ভিট গর্র মতো ভাাবডেবে...গলার প্ররও ভেভেচুরে ফাটা বাসনের মতো। **জাবে**দার মুখচ্ছবি এখনো ভাসছে। আগ্নের শিখার মতো। ব্দাবেদা তার বউ—এখনো **বৃকের মধ্যে জেবলে রেখেছে** আগ্রন। যে-আগ্রন যে-উত্তাপ জীবনের সত্য-প্রকাশ। সে যে বে'চে আছে, বে'চে থাকতে চায়—তাই <mark>তো দে ব্কের মধ্</mark>যে অনিবাণ এক অন্নিশিখা প্রে রেখেছে। कारवमा **कौवनरक रमस्थरह, छालारवरमरह**, সে গেরস্থালি পেতেছে, তার স্বণন, তার সাধ জড়িয়ে গেছে স্বামী-পুরের সংগ্রা জাবেদা তাহেরকে ভালোবেসেছে, কারণ সে জীবনকে ভালোবেসেছে...তাহের তার কাছে এক সংগ্রামমর **জীবনের অর্থপূর্ণ প্রতীক...** তাহের ভারবান ডকের জবরদুস্ত মজদুর... তার পেশীতে ইম্পাতের কাঠিনা, তার শক্তিতে সমাদ্রে জোয়ার আসে। সে খাটতে চার, সাচ্চা মান,বের কাছে তার শ্রম ছাড়া আর পবিত্র জিনিস কি আছে? কিন্তু সে অব্ধ প্রথমে নয়, তার চোথ থোলা আছে, চোথ খোলা রেখে সে খাট্রনির জোরাল কাঁধে নের। তাহেরের হাতে ডক-মজুর-দের আত্মার চাবি! তাহেরের যোগ্যতাই ডাকে নেতৃদ্বের আসনে তুলে দিয়েছে।

তাহের। ডারবান ডকের সাহসী নেতা। জাবেদার স্বামী। ডাকে না ভালোবেসে কি পারে জাবেদা?

জাবেদার ক্লিণ্ট কঠিন মুখছেবি এখনো ভেসে উঠছে চোখের সামনে।

বিড় বিড় করে বলেছিল জাবেদাঃ বলো—বলো তুমি মার্থাকে বেইজ্জত করেছিলে?

তাহেরের চোখেও আগম্ম জরুল উঠেছিল। জ্বাত এক সাপ ঝিলিক দিয়ে উঠেছিল তার চোখের তারার। মাথা কাঁকিরে বলেছিল ঃ না।

তবে? তবে কেন তারা তোমাকে ফাঁসি দেবে। কেন, কেন, কেন? জাবেদা আইত মরিয়া চিংকার করে উঠেছিল। এরপর এক মৃত্তও শালার।
ভাবেদাকে কথা বলতে দেবনি। চুপ।
ভাবেরের ঠান্ডা ভারি হাতটা সেলিমের
মাধার উপর দেমে এসেছিল। কি বলতে
চাইছিল সে, ভাবেদা এগিরে এসেছিল,
বলেছিল ঃ কিছু বলবে?

ভাবের নির্ক্তরে চুপ করে ছিল কিছ্কণ। ভারপর বলেছিল: জাবেদা— সেলিম আমার বাচ্চা, সেলিমও বেন শাদা হতে চার না কোনদিন.....

ব্বতে পেরেছিল কিনা, জানি না। ফ্যালফ্যাল করে একবার সেলিয়ের দিকে চেমে মুক হমে গিরেছিল জাবেদা।

আন্ধ এই সেলের নির্ম্পনে বসে তাহের সেই কথাগুলোই ভাবছিল আবার। ভাব-ছিল কালো হওয়ার দাম তো সে জীবন দিমেই শোধ করে দিয়ে যাছে। কিন্তু তার ছেলে সেলিম—সেও বড় হবে, কালো হবে, সেও হয়তো ভারবান ভকে কুলিগিরি করতে যাবে—তারপর……

না। তারপর নেই। তব, কাল কর্মই শাদা হরে। কালো হরেই যেন বড় হতে পারে পোলম, কালো রঙ দিয়েই যেন প্রতিটি মৃহত্তিকে সে ভরিয়ে রাথে। আর যেন কোনোদিন সে না ভোলে এই কালোর দাবিকে অমর করে রাথবার জন্মেই ভার বাপ একদিন ফাঁসিকাঠে মিজেকে ক্রিলের দিয়েছিল।

কিন্তু শধ্রে কি কালো? শ্রে কালো এই তার অপরাধ। এই অপমত্যু শ্রে কি কালোর দাবিকে দঢ়ে করবার জনো।

জলেডোবা মানুষের মতো সমস্ক ঘটনাগুলো যেন এক-এক করে মনের প্রেট ভেসে উঠতে লাগল। আজ তার জীবনের শেষ রাচি। তাহেরের বে'চে থাকার বিরটি ইতিহাসটা আজ গাহিশেষেই নিঃশেষ লুক্ত হয়ে যাবে। লুক্ত হয়ে যাবে একটা মানুষের বিচিত্র জীবনের অভিজ্ঞতা—তার সংগ্রাম, তার আনন্দ, তার শ্রম. তার বেদনা,—তার চিক্তার উত্তর্যাধকারী আরু কেউ থাকবে না।

থাকবে না?

থাকবে। থাকবে তার সাথীদের সধ্যে, তার পরিবারের মধ্যে।

কিবতু তারা যদি বিশ্বাস না করে। নিশ্চয়ই করবে। তার বিশ্বাস দিয়েই তো তাদের বিশ্বাসকে স্পূর্শ করেছে সে।



মানবের উপর বিশ্বাস কোনো দিনই হারাবে না সে।

হঠাং কী দ্রুত সমুস্ত পরিস্থিতি বোরালো হরে উঠল। ভেতরে ভেতরে **জনুলছিল মজ্বুরা। কোশানী** তাদের কাঁধে মাল বোঝাই আর খালাস করে লাভের পাথাড় বানিরে ভুলল। তাদের মতো মজার মান্বেগ্রালর খামে ভকের পাটাতন ভিজে গেল। বংসর লেবে ম্নাফার বাড়তি অংশ প্রতিশ্রতি মতো এল না তাদের ভাগ্যে। মদমন্ত মালিক রভচকা দেখাল। ভারপর ঘটল সেই দুর্ঘটনাটি। মাল খালাস করতে গিয়ে কি করে একটা নোঝাই বাকস এসে পড়ল পলের স্বাড়ে। সাহায্য করতে আসবার আগেই ফাঁসা বেল্নের মতো চ্যাণ্টা হয়ে মরে গেল পল। পল তাদের মতো ই-িডরান নর, সে নিথো। কা**লো। মালিক বললে**, একটা কালো নিগ্রোর খুনের জন্য কোম্পানী কোনো ক্ষতিপ্রণ দিতে পারে না।

ভারপর প্রমিকরা নোটিশ দিল। স্টাইফ শ্রু হল ডক ইমার্ডে। কাজ হারাল মজ্বেরা, কিন্তু কাজ বাড়ল তাদের। তারা ব্রল ভিশারীর মড়ো কয়েক ট্করো বাসি র্টির চেয়ে শ্বাধীনতা বড়, বড় তাদের ইম্লত।

ভাছেবের দিনে কাজের শেষ নেই,
রাগ্রে ঘুম নেই। দ্রীইকের দিন যত
বাড়তে লাগল, বাড়তে লাগল অভাব। দশ
হাজার প্রমিকের রুলি বংধ মানে আরো
কুড়ি হাজার ছেলেমেয়ে বুড়োর পেট বংধ।
অর্থের অভাবে রেশনও বংধ। তব্
বাঁচতে হবে, দু টকেরো বাসি রুটির চেথে
ইক্ষত বড়, স্বাধীনতা বড়।

কোন্পানী দু' একবার তাহেরকে ডেকে পাঠিরেছিল। লোভ দেখিরেছিল, তার মাইনে বাড়িরে দেবে বলেছিল, তারপর লাসানি, পুলিশ আর সংভাষির ভর।

তাহের শুধ্ বন্ধাত ঘোড়ার মতে। ঘাড় বেশিকরে জবাব দিয়েছিল ঃ "সাহেব, দ্ টুকরো বাসি রুটির চেয়ে স্বাধীনতা বড়, ইম্পুত বড়।

মছনুরদের মধ্যে বিভেদ আনবার সব চেন্টাই করেছিল কোম্পানী। শাদা লোক-দের ডেকে বলেছিল ঃ ওই বর্বর ইন্ডিয়ান আর নিগ্রোদের সপো হাত মিলিরে শাদা মছনুরা তাদের কিম্চানিটির অপমান ডেকে আনছে—লড জেসাস নাকি এতে বিশেষ ক্রম হবেন।

শ্রমিকদের ধর্বী মিটিঙে তাহের আলি সোজা দাঁড়িষে উঠে বলেছিল ঃ দােশত শাদা-কালো তাে চামড়ার রঙ। এই চামড়ার তলার আমাদের রঙ লাল..... মালিকের চাবকের ঘারে আমাদের শাদা-পিঠ বালাে পিঠ ছি'ডে গেছে...ফিনকি দিরে আমাদের রঙ ছা্টছে...তার রঙ লালা দেশত—একই আগনে আমামা প্রেছি বি আগনে ক্রেমানের বাঁচতে হলে আমাদের এক পাঞ্চা দিরে লাড়তে হবে।

সমস্বরে জবাব দিয়েছিল মজ্বরা। লড়াই চলতেই থাকবে।

ডকে কাজ বন্ধ। জাহাজ এসে পড়ে আছে। দ্র সম্দ্রে ঘন ঘন জাহাজ থেকে সিগনাল দিছে। কিন্তু জাহাজগাঁটিতে ভাষগা নেই। মাল খালাস হচ্ছে না।

স্ত্পাকারে মাল পড়ে আছে। পচছে। পচা গণ্যে ডক অঞ্চল তরে উঠেছে।

এদিকে শ্রমিক এলাকার আগ্রন জ্বলছে। ক্ষুধা। ব্যুড়োরা মাখা নেড়ে বলেছিল এতবড় লড়াই নাকি ভারবানে এই প্রথম।

যুবকেরা মাথা নেড়ে ব্ৰিরেছিল : 'ঠিক। বড় লড়াই—তাই তাকতও চাই বড়।'

রাত্রে ঘুম চোথে তাহেরের ছেলেটা টলতে টলতে মাকে জিল্পেস করেছিল: আশ্মা, আমরা খেতে পাইনে কেন?'

জাবেদা **বৰ্লেছিলে, 'ডকে মাল প**চছে কিনা তাই।'

'প্চছে। তবু আমাদের খেচে নেবে না!' সোলম। সাত বছরের ছেলে, সেও প্রশন করেছিল। ক্ষ্মা তাকে দমতে পার্রেন। দমিয়েছিল মান্যের বির্দেধ মান্যের এই অধ্যের সংগ্রাম।

সেলিম। তাহেরের ছেলে। সে প্রশ্ন করেছিল তার রাগ্রিভরা চো**রুথ। • হ**য়তো দিনের আলোয় ভূলে গিঞ্ছেল, সেই রাত্র **অন্ধকার প্রদন্তা। ভারপর আরো**রাত গেছে, আরো অনেক রাতের মতো আজকের রাতটাও **থমকে দ**টিড**য়েছে**, ভা**ং**রের অস্তিত্বকে **স্তব্ধ করে দিয়ে। আ**জকের রাতেও ঘ্যমভাব্যা চোখে বাচ্চা সেলিম যদি আবার সে-প্রশন করে, তাহলে ওর মা জাবেদা আন্তো কি সেই একই জবাব দেবে? জাবেদা। আহা, কতদিন ও চুলে তেল দেয়নি, ওর খন্তানি পাখির মতো জীবনভরা **ठणम रहाथ मृत्यो कि निश्चेर मिथत श**ाह গেছে। তার সাতাশ বছরের তৃণিতহ^{ান} জীবন যৌবন নিয়ে কি সম্বল করে টিকে তাহেং থাকবে সে। তাহের। তাহের। জনিবানের যথন থাকবে না-মৃত্যু ম্বাভাবিক পূর্ণচ্ছেদ—তথ চো থাক[ে] ওই সাতাশ বছরের অর্চরি**তার্থ** জী^{তন-} যৌবন-জাবেদার সামনে রইল বিরটি প্থিবী, মহান আকাশ, উদার সমন্ধ, আর উত্তাল বায়_ুতরশ্যের মর্মার সঞ্গীত। তাই প্থিবীতে বসন্ত আসবে, ফ্ল ফ্টং. পাখিরা গান গাইবে—জাবেদার জীবন 🥨 তাহেরের ফাঁসির রক্জ্ব সংগ্রেই শেষ হ যাচ্ছে না, তার ভবিষাং আছে, সম্ভাবন আছে, জীবন আছে, ধৌবন আছে ৷...^{মৃতি} হ্দর থাকে জীবনত, আশা থাকে প্রিপত... তাহেরের স্মৃতির বোঝাকে ঠেলে জীবনক পণা, করবার অর্থ নেই, মৃত লোক জীবন্ট প্রথিবীতে কোনো ঋণ রেখে যায় ন তাহেরের অবর্তমানে যদি কোনো নি জোয়ান তার জীবন-সংগ্রামে সাথী হিসেব জাবেদাকে বাহ্মলে তুলে নের — তা^{হার} তাহেরের মতো আদন্দিত কে হবে? ছ বিরাট—তার আয়োজন উপকরণ অ^{জসু} সাতাশ বছরের নির্জন যৌবনের পক্ষে ^{এই} पीर्घ भिष्य अका कना मृत्रू स्- विष भ^{र्द}

কৰম: প্রকাশিত নতুন কবিতার বই

সমীর দাশগ**েতর** প্রথম কবিতার বই

দুরের কলাবতী

0.00

প্রচ্ছদ ও অলংকরণ খালেদ চৌধ্রী

পরেশ বস্দ্যোপাধ্যায়ের প্রথম কবিতার বই को (वर्धभाव

0.00

শাশ্তি লাহিড়ার স্বাধ্নিক কবিতা সংগ্রহ অহংকার, হে আমার

0.00

প্ৰাশ্তিশান/সিগনেট ৰুক শৃপ, ১২ বঞ্চিম চ্যাটাজী দাটি, কলকাতা ১২

্ সংগাঁ পাওরা কার—কে না জ্ঞানে পথচলা কত সহজ্ঞ হর, নিশ্চিত হয়।

জাবেদা। জাবেদার প্রশ্নটাই ধারালো ছুর্বির মতো ঝিলিক দিয়ে উঠছে চোথের সামনে। 'বলো-বলো তুমি—মার্যাকে বেইম্জত করেছিলে?'

भा। ना, झारवना ना। यहुँ। विनक्न ঝুট।' যদি চিংকার করে বলতে পারত তাহের। বলতে পারত সে সাচ্চা মজরে-মেহনতি মানুষ -- মানুষের কাছে মেহনত করে বে'চে থাকার মতো পবিত্র জিনিস কি আছে। বে'চে থাকতে হলেই কাজ করতে হবে। কাজ-কাজ। আজ এই ম.হ.তে তাকে শৃংখলম্ভ করে দিয়ে যদি তারা জিজেস করত ঃ কী, কী চাও তুমি? স্বাধীনতা?' না। তাহের বলত : 'আমি দ্বাধীনতা চাই না—মর্বার প্রাধীনতা! আমি কাজ চাই-কাজ-কাজের দ্বাধীনতা। কজ-করা মান্ত প্রমে আনন্দে বিজয়ী কুলিতহিনি প্লানিহান মান্য—জীবন ভার কাছে বিচিত্র রঙে-রসে সঞ্জীবিত। ঘোলাটে চোখে জীবনকে দেখবার নেশাটা কর্মাহীন **ज्ञान्य अस्ता, यादा भाषा-भाषा क्वीवनरक** দেখতে ভর পায়। মদ আর মেয়ে-মান্**ষ**-মেরে-মান্য আর মদ-এই তাদের জীবনের র্প।

মিস মার্থা। কোম্পানীর পোষা মেয়েমান্ষ। দুজোড়া সিপ্ক স্টবিং আর কয়েক
বোডল কোকাকোলা। তারপর মিশি-থোলা
শাদেপনের মতোই হাসবে সে উন্দান,
কার্গল বক-বক করে বাবে, চেউরের মতো
ল্টোপ্টি থাবে, তারপর নরম কুকুরের
মতো কথন এলিয়ে পড়বে সে আপনার
কোলে। দুশ্চরিত্র দ্বামীকে ত্যাগ করে
বখন সে ভারবানে ফ্রাটডাড়া করে নতুন
করে সংসার পাতল কেউ জানত না সেদিনও
পর্যানত তার পোশাক-আশাক-টয়লেট আর
নরম বিছানার নিয়মিত দাম জোগাছে কে।
কোম্পানীর সাহেবদের চর। বাহিতে সূব্য
এবং ক্মিনীসাহচর্যে মার্থার ফ্রাটে শ্বিদত
হয়ে উঠত।

কোম্পানির মোটা বর্কাশসের লোভে
যথন এই নতুন অভিসারে মেতে উঠল
মার্থা, কেমন রোমান্তই জেগেছিল। তার দেহ
স্পর্শের অধিকার যেথানে একমান্ত উপরতলার শাদা সাহেবদের, সেখানে কিনা সে
ছটেছে এক ডাটি ইন্ডিয়ানের পেছনে।

তাহেরের পেছনে লোলিয়ে দিল কোম্পানি নার্থাকে। জয় করতে হবে লোকটাকে, তার বিবেক, তার আত্মার চাবি কেড়ে নাও।

হারার মতো ঘ্রতে লাগল মার্থা।
কিন্তু এ কেমন ধারা মান্ব। লোভ নেই,
মাসন্থি নেই। বে-মেরেটাকে ইচ্ছে করলেই
নাকি সে ব্কের কাছে জ্বাপটে ধরতে
পারে। কিন্তু মার্থার হিসাকেও বেন ভূল
পো আর জূলটা বত বেলি করে ধরা পঞ্জত

লাগল, জেনও বাড়ন্তে লাগল তার। এ বেন
মার্থাকে অপমান নর, অপমান তার
বোকনকে। জীবনের সাতাগটি বছর বে
প্রতিটি রাত্রে প্রের্মকে শব্যাসপর্গী করেছে,
জেনেছে প্রের্ম চরিত্র...প্রব্বের কামনার
অন্ধক্পে বে এক লহমার নরকের বীভংস
আগনে জনলিয়ে দিতে পারে। প্রতিটি
প্রেব তার কাছে শিশ্ব...শিশ্বে মতোই
বিচিত তাদের কামনার অলি-গলি।...কিন্তু
তাহের—একটা কালা ইন্ডিরানের কাছে সে
কি হেরে বাবে।

গ্রাড়-গ্রাড় বৃট্টি পড়ছিল সৌদন
সদেখা থেকেই। আর ঝোড়ো বাডাস। সমন্ত্র
থেকে আহত মুম্বার কাতরানির মতো
একনগোড়ে সাইক্লোনের শব্দ ভেসে আসছিল। যের বন্দী প্রমিথিউসের চিংকার।
দিঃশন্দ ভক এলাকার ভূতের ঘোলাটে
চোখের মতো বাতিগ্লো জুলছে ঃ গলির
ওধার থেকে একটা কুকুর ঘেউ-ঘেউ করছে
অকাবদে। লাইট-হাউস থেকে কেড সিগনান
দিছে। সন্তুদ্ধ জাহাজের নাবিকরা মাঝদরিয়ায় নোভর বে'ধে উদ্বিশন প্রহর গ্নেছে।
অনেকক্ষণ রেলিঙ ধরে চপ করে

নাড়িয়ে ছিল তাহের।
হঠাং পেছনে খাড়ের পালে মৃদ্যু খনথস শব্দ। দুনিরার যত রক্ষের নার্ছউত্তেজিত-করা উগ্র সূ্বাসিত গব্ধ। নোনা

হাওরাটা পর্যন্ত চমকে উঠল এই উর শবেদর লগপে।

'িলজ—' পিছন ফিরে দাঁড়াল ভাহের।

মিস মার্থা। মুখে লম্বা সিগারেট, আর চোখে অনুনর।

"f=##="

লাইটার জনালিরে ওর নিগারেটটা ধরিরে দিল তাহের। এক মুখ ধেরা ছেড়ে মার্থা কৃতজ্ঞতা জানাল : খ্যাব্দ ইউ।'

তাহের আবার সামনের দিকে মুখ ফিরিয়ে দিল। সম্মু। ঋষ্ণ। জ্ব-জন সার্চ-লাইট আর লাল আলোর সম্ভেত।

মার্থা তথনো তার পাশে দাঁড়িরে। আপন মনে সিগারেট টানছে আর জপাশে চাইছে তাহেরের দিকে।

ফিস-ফিস করে বললে একবার ঃ গোরে ঝড় হবে, না ?'

তাহের জবাব দিল না।

মিস মার্থা আবার বলল, কাছে-পিঠে কোথাও একটা পার্যালক হাউস নেই?

প্রকাশিত হল

দ্বিতীয় সংস্করণ

त्रायम त्रष्टवायली

শ্রীষোগেশচন্দ্র বাগল সম্পাদিত। রমেশচন্দ্র দরের ছয়টি উপন্যাস একরে ঃ বর্ষাবিজ্ঞতা, মাধবীকন্দ্রণ, মহারাদ্দ্র জীবন-প্রভাত, রাজপুতে জীবন-সম্পাদ, সমাজ ও সংসার-কথা। এই সংস্করণে 'সংসার' উপন্যানের পরিবর্তে লেখকের জীবন্দশার সংশোধিত 'সংসার কথা' সমিবিল্ট হয়েছে। রমেশচন্দ্রের জীবনী ও সাহিষ্যাকীতি আনুলোচিত। [টাঃ ১৩-০০]

রচনাবলী সিরিজের অন্যান্য বই বিংকম রচনাবলী

শ্রীযোগেশচন্দ্র বাগল সম্পাদিত। প্রথম খণ্ডে সমগ্র উপন্যাস (মোট ১৪টি) | যন্ত্রম্ব | দ্বিতীয় খণ্ডে উপন্যাস বাতীত সমগ্র সাহিত্য-অংশ। [টা ১৭-৫০]। তৃতীয় খণ্ডে সমগ্র ইংরেজি রচনা [টা ১৫-০০]

ण्विकम् तहनावनी

ডঃ 'রথীন্দ্রনাথ রায় সম্পাদিত। দুই খন্ডে সমগ্র রচনা। প্রথম খন্ডে (৫টি নাটক, ৩টি প্রহসন, ৪টি কবিতা ও গানের গ্রন্থ ও ২টি গদ্য-রচনা—[টা ১২-৫০]। দ্বতীয় খন্ডে (৮টি নাটক, ৩টি প্রহসন, ৪টি কবিতা গ্রন্থ, ২টি গদ্য-রচনা ও ইংরেজি কবিতা)—[টা ১৫-০০]।

श्याम्य त्राचनी

ডঃ ক্ষেত্র গ^{্ন}ত সম্পাদিত। একটি খন্ডে ইংরেজি-সহ সমগ্র রচনা (৪টি কাব্যগ্রন্থ, ২টি কবিতাবলীর গ্রন্থ, ৭টি নাটুক ও প্রহসন, ৮টি ইংরেজি রচনা —[টা ১৫-০০]

मीनवन्धः तहनाव**मी**

ডঃ ক্ষেত্র গ্রন্থ সম্পাদিত। একটি খ্রন্ড সমগ্র রচনা (৮টি নাটক ও প্রহসন, ২টি গ্রুপ-উপন্যাস, ০টি কাবা ও কবিতা গ্রন্থ)—[টা ১০০০০]।

शित्रिण तहनावली

ডঃ রেখীন্দুনাথ রায় ও ডঃ দেবীপদ ভটুাচার্য সম্পাদিত। প্রথম খণ্ডে ২১টি নাটক ও প্রহসন টি ২০-০০ ।

প্রতি রচনাবলীতে জীবনী ও সাহিত্য-কীতি আলোচিত সাহিত্য সংসদ ০২এ আচার্য প্রফ্লেচন্দ্র রোড ঃ কলিকাতা, ৯

क्रमांच वरे

॥ श्रवन्थ ॥

म्बनीयनाथ अनुन बार्टशभ्याती भिक्तभ श्रवसायली

(২য় সংস্করণ) ১৬·০০ সরোজ জাঢার

সাহিত্যেশালিনতা ও অন্যান্য প্ৰবন্ধ

७.00

চিত্তরন্ধন বন্দ্যোপাধ্যান সাহিত্ত্যের কথা

3.00

লোম্যেন্দ্রনাথ ঠাকুর

ভারতের শিলপ বিপান ও রামমোহন

6.00

চঃ মতীন্দ্রনাথ বস্ লোরাজ্যাব্যাদ

20.00

PENGUIN SALES EXCEED £ 5 MILLIONS

Penguin Group sales in 1968 exceeded £5 millions, says the company's annual report.

Penguin Books are increasingly being adopted either for examination purposes or recommended for study at school and university level.

We are selling Penguins since 1936. Constant stock of saleable titles are always in our stock. Out of stock titles are always procured from overseas.

Standing Orders for new titles are accepted.

আমাদের পূর্ণ গ্রন্থ তালিকার জন্য লিখুন



রুপা অ্যাণ্ড কোম্পানী ১৫ বজ্জি চাটার্জি শাটি, ক্লকাডা--১২ ক্ষেণার ইজ সো ক্ষাইলড-কণ্ট ইউ হ্যাড সাম খ্লিক ৷'

ভাহের নির্ভর। ঝড় উন্তাস হরে
উঠছে। রাল্ডাঘাট জনমানবহীন। অন্ধারে
ভূতের চ্চেথের মড়ো কেবল বাভিগ্রেলার
ঘার্টাঘাট হালি। হটিতে শ্রে করল
ভাহের। কড রাভ হবে? মটা বেজে গেছে।
ভাহামানের রাত্রি।

হঠাৎ ওর সামনে পথ অতিক দাঁড়াল মার্থা। এতজ্ঞগকার চেন্টাকৃত সংস্থত আবরণটা মেন ন'ন হরে পড়েছে। অপধকারেও হরতো ক্ষ্মিত মার্কারের মতো চোথের নীল তারা জ্বলছিল। ফ্লে-ফ্লে উঠছিল তার পরিপুণ্ট বক্ষপেশ। বিপাদ গনেল তাহের। নির্দক্ষ মেরেমান্য যথন নিজেকে উল্লাটন করে দের তথন সে ভারত মহাসাগ্রের সাইক্রোনের চেরেও ক্রুর।

তাহের কিছ্কণ দর্ভান্তত দটিওরে থেকে বলল ঃ কি চাই? হোয়াট ভূ ইউ ওয়ান্ট?'

মিস মার্থা ছেনাল গলার বলে উঠল : 'আই---আই লাভ ইউ।'

শ্ব্যাঞ্চল, দ্যাট ওরে শ্বিক।' তাতের আঙুলে দিরে তাকে কোম্পানির সাহেবদের বাঙলোর রাস্চা দেখাল। প্রেম! মিস মার্থার প্রেম! দ্ব জোড়া সিদক স্টকিং আর করেক বোউল কোকাকোলা।

চুত পা চালিরে দিল তাহের।

মিস মার্থা ঠেটি কামড়ে অনেকক্ষণ শুডুব্ধ হরে দাড়িরে রইল। তারপর দিজের মনে গালাগালি দিল বর্ণর কালা আদমিটাকে।

রালে ব্যারাকে ফিরে ভূগে গিয়েছিল ভাহের সম্বারাতির ঘটনা। সারা রাা১ ওর চোখে ছাম আলে নি অন্যদিনের মতই। সেলিমকে বৃকে জড়িয়ে ওধারে অকাতরে নিদ্রা থাকে জাবেদা। ক্ষ্যুথ ক্রুণিভাতে শীর্ণ ওর মুখখানা। আর এত কর্ণ! সেই রাল্লে ভীষণ আদর করতে ইছে করছিল বউটাকে। ওর বৃক্ষ কর্তশ हूलगर्दलात मरथा, खत्र टहारथ-मर्द्रथ ध्वकरेर् হাত বুলিয়ে দিতে কড় ইচ্ছে করছিল তাহেরের। কড়দিন ওকে ছোঁরনি। তাহেরের মৃদ্যু লগলোঁ কথন ঘুম ভেঙে ভেগে উঠে-**क्लिकार्यमा। न्यामीत मृत्यत मिरक राटरा** বিশীর্ণ হা**সছিল সে।** আরো ঘন হয়ে সরে এসেছিল ভাছেরের ব্যক্তর কাছে। ওর আলতো একটা হাত জড়িয়ে ধরেছিল তাহেরের কণ্ঠদেশ। কডক্ষণ ওভাবে নিজেকে ছেডে দিরে গভীর আরামে এক সমরে ব্দিরে পড়েছিল জাবেদা। ভাহেরের চোখে হুম নেই। জনসভিল চোধ দুটো আর দব-দব করছিল কপালের শিরটা।

ভোর রাত্রে হঠাৎ তার অরের বাইরে কেমন একটা চাপা পঞ্জেনে সচকিত হরে উঠল তাহের। জাবেদার আদিপান মুক্ত করে উঠে এল লে আমান্যার ধারে। মাইরে তথনো ফিকে অন্ধকার, কুরাশার অস্পর্ট। তব্ মনে হল কারা বেন বাইরে দীড়িরে।

হাা। তারাই। বাদের আসার কথা— আজু নম কাল! সমস্ত কোরাটারটাকে বিরে দাঁড়িরেছে সমস্ত প্রহরী। আর দরজার সামনে অপেকারত সার্জেন্ট।

জাবেদারও ঘুম তেওে গিরেছিল। কি জিজেন করতে চাইছিল সে। তাহের বলনে, চপ।

দরজায় ভারি ব্রের লাখি।

'কে, কে ওরা?' জাবেদা হস্ত চোখে জিজেদ করেছিল।

তাহের স্থির গলরে বলেছিল : 'প্রিল'।'

জ্ঞামা-কাপড় পরে দরজা খ্রুলে দিল ভাহের।

সাজেন্ট গশ্ভীর গলার জানালো : 'ইউ আর আারেন্টেড।'

কটেশট বে'ধে ফেলল তাকে। তারপর টেনে তুলল প্রিক্স ভ্যানে। ভ্যান ছ্টল।

জাবেদা চোকাঠ ধরে দাঁড়িরেছিল পাথরের মতো। ওর রুক্ষ কর্কশ চুল উড়ছিল...রাত্তের সোমজে পেটিকোটে অনাব্ত অধানন্দ দেহে শতশিভত দাঁড়িয়ে-ছিল। মজনুর ব্যারাক তথনও জাগে নি। চোরের মতো এসে তাহেরকে নিয়ে ওরা ১লে গেল...

অন্ধকার নির্জ্ঞান সেত্রের পাথরের বেদীতে শিশুর হয়ে বঙ্গেছিল তাহের। তেত্রের অন্ধকারটা যেন ক্লমশ পাতলা হয়ে আসছে। প্রথিবীর বৃক্তে আর একটি নতুন দিন ভূমিন্ঠ হতে চলেছে।

জেল আদালতে তার সাম ও কে
দাড়িয়ে। মিস মার্থা। দ লেজ সিক্ দটকিং আর কোকাকোলা। আই—আই লাভ ইউ।' মিস মার্থা আদালাও দাড়িয়ে আবেগ কম্পিত হবরে ভার নির্যাতিত নারীক্ষে কাহিনী কলে যাজে: 'দিস ভার্টি' ইন্ডিয়ান—ভাহের আলি…..'

'বলো — বলো তুমি — মিস' মার্থীকে বেইম্কত করেছিলে?' কানের কাষ্টে আর্তনাদ।

না।' মাথা ঋতিকরে ফলে উঠল তাহেবঃ 'নানানা।'

'তবে? তবে কেন তোমাকে ফাঁসি দিক্ষে। কেন কেন কেন?'

হট যাও৷

বাইরে সেলের কুপাট খোলার শব্দ।

'কে? কে ডোমরা কি চাও?' ডাহের
আলি চিংকার করে উঠেছে। আমি মরব
না। আমি মরতে পারি মা। দোশত—সাখী—
র্যাদ আবার জন্মাতে হর—বাদ বারে-বারেই
এই প্রথিবীতে আসতে হর—তবে বার-বার
ক্রেম এই পথেই আসি। জারেনা—সেলিম—
দোশত; হ'শিরার। করেক ট্করো বাসি
কুটির ডেরে আম্বিকতা বড়, ইক্কেড কড়।'

বাঙালীর আন্দোপলন্থির প্রধান উপায় সাহিতা; বে বাঙালী জাতি ও বাংলার সংস্কৃতি লইয়া আমাদের গৌরব প্রীতি ও বেদনাবোধ তাহা অনুকাংশে বাঙালী সাহিত্যিকদেরই স্টি।

क्षीयमी श्रम्बामा

অনুলচন্দ্ৰ লেনঃ অবোৰভাৰত ২-৫০ ॥ মণি বাগচিঃ আচাৰ প্ৰাকৃত্ৰিক ৪-৫০, বেশবচন্দ্ৰ ৪-৫০, বাবিনালন্দ্ৰ ৬-০০, মহাৰি দেবেন্দ্ৰনাথ ৪-৫০, মাইকেন ৭-০০, কনেন্দ্ৰ ৫-০০, বানিনাল্ল আনুলাল ৪-৫০, মাইকেন ৭-০০, কনেন্দ্ৰ ৫-০০, বানিনাল্ল আনুলাল ৪-৫০, মাইকেন ৭-০০, কনেন্দ্ৰ ৫-০০, বানিনাল্ল ৪-৫০, মাইকেন ৫-০০ ॥ মাইকেন ৪-৫০, মাইকেন ৫-০০ ॥ বানিনাল্ল ৪-৫০, মাইকেন ৪-৫০ ॥ মাইকেন

দাহিত্য সংস্কৃতি ও সমালোচনাম্লক গ্ৰন্থ

ৰিজেনুলাল নাৰঃ **আধ্নিক ৰাঙালী লংক্ষতি ও ৰাংলা লাহিডা ৮**০০০ ৯ নাবালণ চৌধ্রীঃ আধ্নিক ৰাংলা সাহিত্যের ম্<mark>ল্যালন</mark> ৩.৫০ ৷৷ ডঃ জনতোৰ দত্ত সম্পাদিত ঃ ঈশ্বরদ্ধ গুলেজর জীবল-চরিত ও কবিছ / ব্যিক্সচন্দ্র ২০০০ ৷৷ ডঃ অর্ণকুমার ম্থো-পাধ্যার : ঊনবিংশ শভাব্দীর গাঁতিকাল্য ৮০০ ॥ অর্ণ ভট্টার্য : কবিভার ধর্ম ও বাংলা কবিভার বতুবদল ৪০০০ ॥ নলিনী-রঞ্জন প্রভিত্ত**ঃ কাল্ডকবি মুজসীকাল্ড ১০**০০০ ॥ বতীস্থানাথ সেনগ**়ত ঃ কাব্য পরিমিতি ৩**০০০ 🕦 ভবতোধ দ**ত্ত**ঃ কাব্যবাদী ১০০০০, চিন্ডানায়ক ৰন্দিন্দের ৬০০০ ম বিক্সেদ ভট্টাচার্য ঃ কালিবাস ও রবনিয়নাথ ৬০০০ 👖 সভারত দে ঃ চর্যাগীতি পরিচয় ৫০০০ ॥ প্রবোধসন্তু সেন : রাষারণ ও ভারত সংস্কৃতি ৩০০০ ॥ সাধনকুমার ভট্টাচার্য : নাটক ও নাটকীরত্ব ২০৫০, নাটক লেখার মূলে সূত্র ৫-০০ ॥ ডঃ শিবপ্রসাদ ভট্টাচার্য ঃ পদাবলী ততুলৌন্দর্য ও কবি রবীন্দ্রনাথ ৫-০০ ॥ ডঃ বিমান-বিহারী মজুমদার স্প্রাদিত : পাঁচশাভ বংলবের পদাবলী ৭٠০০, বোড়শ শভাব্দীর পদাবলী সাহিত্য ১৫٠০০, শ্রীকৃষ্ণ কশাস,ভাষ্ / লীলাশকে বিব্যাপাল ১২.০০ ॥ তঃ রখীন্দানাথ রার ঃ প্রামণ্ড সংগ্রহ/বলেন্দ্রনাথ ঠাকুর ৭.৫০/১০.০০. মন্দ্র/ িবকেন্দ্রলাল রায় ৫০০০, বাংলা লাহিছে। প্রথম চৌধ্রী ১২০০০, লাহিছ্য বিচিত্রা ৮০৫০ ॥ প্রমথনাথ বিশীঃ বাংলা লাহিছে।র নরনারী ৬ ০০ ।। অমিতস্কুন ভটুচার্য : বড় **চণ্ডীবালের প্রীকৃষ্ণ কীড**নি ১২ ০০ ।। আজহারউল্পীন খান : বাংলা লাহিতে। মোহিডলাল ৫·০০, বাংলা সাহিত্যে লহন্দ্র শহীব্লাহ ৭·৫০ 🏿 স্ভৃতিরজন বড়রো : বৃন্ধ-পথ ৬·০০ 👖 চিপ্রোশফর সেন শাস্ত্রীঃ স্বানায়দের কথা ১-২৫, গীভার গলাক্ষণনি ৪-০০ ॥ ডঃ জ্যোতিমার ঘোষ ঃ রবীক্র উপন্যানের প্রথম পর্যায় ৮০০০ মু বীরেন্দ্র দেবনাথ ৫ ম্ববীন্দ্রনাথের ব্রাক্তিভ জাড়ুচ ৬০০০ মু- গোরীপ্রসাদ ঘোব ৫ রবীন্দ্রকাব্যে নিগপর্প ৬০০০ মু প্রভ,তচন্দু গপোপালার : ভারতের রাশীর ইভিহালের খসড়া ৬-০০ ম যোগেশচন্দ্র বাগল : হিন্দুমেলায় ইভিহ্ত ৮-০০ 🏾 বেলাবাসিনী গুহু ও অহনা গুহু: **লংখন ও নক্ষ ২০**০০০ ম শিবনাথ শাস্ত্রী: **ম্পাস্তর** ৮০০০ ম নিম্লিকুমার ঘোষ ঃ পাইক विस्ताह ७ श्रीतमा बान्य ८.००

ভাষাতত্ব ও হলোবিজ্ঞান

ডঃ বিজনবিহারী ভট্টচার্য : ৰাগর্য ৪০০০ ম স্কুমার বিশ্বাস : ভাষাবিজ্ঞান পরিচয় ৭০৫০ ম প্রবোধচন্দ্র সেন : হন্দ্র পরিক্ষা ৪০০০

काहार्च भीरममूहम्म ब्रह्मात्रम्खाब

প্রীকৃতলীলা উপাধ্যানমূলক রচনা : কান্পরিবাদ ও শামলী খেজি ২-৫০, মুডাচুরি ২-৫০, রাগালগ ২-৫০, রাখালের রাজগি ২-৫০, ব্রক সমার কান্ড ২-৫০ ম পোরাগিক কাহিনী সন্বলিত উপাধ্যান : জড়ভরত ১-৫০, জ্লেরা ১-৪০, বেহুলা ১-৬০, সভী ১-৩০, ধরালোদ ও কুশবলে ১-২০, পোরাগিকী ৬-০০ ম রামারণী কথা ৪-০০, বাংলার প্রনারী ৮-০০, যরের কথা ও যুগ সাহিত্য ১২-০০

স্পাতিবিষয়ক গ্ৰন্থ

দিলীপকুমার রায় ও প্রফ্রেকুমার লাস : কান্ডেমীডলিপি ১ল খন্ড ৫০০০ ম সন্তোহকুমার দেও কল্যাণবন্ধ ভট্টাচার : কবিকও ৫০০০ ম বিমল রায় : ভারডীর লগাডি প্রলগা ৬০০ ম প্রফ্রেকুমার দাস : রবীলুসপ্গতি প্রস্থা ১ল খন্ড ৫০০০, হর খন্ড ৫০০০, রাগান্দুর ১০০০ ম দিলীপ মুখোপাধ্যার : লগাডি সাধ্যার বিবেলনন্দ ও স্পাতি কান্ডের ৬০০০ ম গোপেন্বর বন্দ্যোপাধ্যার : ক্লাডি সাধ্যার হার চৌধ্রী ও প্রফ্রেকুমার দাস : হিন্দুন্ধারী নগাডির ইডিছাল ২০৫০

ডঃ ভবডোৰ দত্ত 🍍 আজহারউদ্দীন খান সম্পাদিত ও সম্কলিত : মেহিতলালের পরগ্রহ ১৬০০০

১০০এ রাসনিহারী **জ্মতেনিউ,** কলিকাডা—২৯

জিজালা: প্রকাশন বিভাগ ৩০ কলেজ য়ো, কলিকভা—১

৯এ কলেজ জে, কলিকভা—৯



টগর সাজিতে বসিল:

ঘণ্টাখানেক প্ৰে এক পণালা বৃদ্টি হইয়া গিয়াছে আকাশ এখনও মেঘাচ্চন. প্ৰের আর্ম্ন বাতাসে একট্ শীত বোধ হয়। পাঁচটা বাজিয়া গিয়াছে। সময় হইয়াছ।

সময় হইয়াছে বৈকি। অন্যান্য দিন অনুপক্ষা আৰু বৰং একট্ দেরি হইয়াছে, টগর আৰু বেশক্ষিল ঘ্মাইয়াছে। পাদ্রা আসিয়া বার প্রেক ভাহাকে ডাকিয়ছিল, কিন্তু সে উঠে নাই। হার্গ, সময় হইয়াছে বৈকি।

বহুদিনের প্রোতন স্টোভের ওপর চালের পাচটো চড়াইয়া দিয়া টগর লাজিতে বসিল।

সেই প্রাতন সাজ। সাত বংসর প্রতাহ সে একই ধরনের সাজ করিয়াছে। জড়ির পাড়ওয়ালা নীল শাড়ি গিলটি করা গহনা, ললাটে একটি খনেরের টিপ, চোখের কোনে কাজলের স্কার রেখা, পারে আলভার খন প্রলেপ, সম্ভা পাউডার আর দিলবাহার' এসেক।

সাজসন্জা শেষ হইলে টগর দেওবালে বিকাশ্বিত বড় দপণিটির সন্মাথে গিয়া দাঁড়াইল। ঠিক আছে। নিতাকার বাতি জাগরণে চোথের কোণে কালো ছায়া ঘন হইয়াছে, অলক্ষো সময় তাহার ললাটে দ্বোধা রেখায় কি যেন লিখিয়াছে দেহ হইয়াছে ঈষং মেনবহল, বক্ষ আর কটিদেল আগেকার মত আক্ষণীয় নয়, তব্ চলিবে। এখনও আরও কিছুদিন চলিবে।

চায়ের জ্লা টগা্বগ করিতেনছ।

'আমারও এক কাপ দে ভাই'—মাননা আসিয়া দাঁড়াইগ। মাননা প্রোটা, স্থলাগগাঁ, মুখে বড় বড় বসন্তের দাগ, রংটা দ্যামবর্ণ। এককালে তাহার চেহারা ভালাই ছিল, আর বাবসাও চলিত ভাল কিন্তু আজকাল—।

'বস ভাই'—টগর বলিল।

চায়ের কাপে চুমুক দিতে দিতে কিছুক্ষণ পরে সে প্রণন করিল, 'শশী কোথার মানদা ?'

মানদা ঠেটি উন্টাইল, 'সে হারামঞ্জাদার কি আর কোন জ্ঞানগিমা আছে—কাল রাত থেকেই তো উধাও।'

টোরকে একট, চিশ্তিত বোধ ছইল; আজ মুখপোড়া গেল কোথায় কৈ জানে।'

মানদা মুচকি হাসিতা বলিল—'জানিস, হতভাগা তোকে ভালবাসে?'

वेकत हात्रिकः छानसमाः वहानिम भार्य-कात क्या-नार्योग्न नामक अकवि मासकान যুবক বিম্নলাকে ভালরাসিত। সেই বিম্নলা আজ টগর হইয়াছে—আর সুধীর?

চায়ের কাপটা নামাইরা রাখিয়া মানদা বালিল যাই ভাই, আমিও তৈরী হইগে।

মানদা চলিয়া গেল। এখন আর তাহার সোদন নাই, একটি লোকও তাহার দিকে আকৃষ্ট হয় না, আর সকলের দাসীবৃত্তি করিয়াই সে অজ্ঞকাল বাঁচিয়া আছে; তব্ত অন্যান্য সকলের মত সেও সাজিয়া গ্রিজয়া দ্বারপাশ্বা দাড়ায়, পথলামী লোকদের প্রতি কটাক্ষ হানে, রসিকতা করে, অশ্লীল কথা কলে। ক্লেক্তর মধ্যে অভ্যাসটা ধনন বন্ধম্ল চইয়া গিয়াটে।

টগর বসিয়া রহিল। শশীর ভালবাসা।
এবার আর সে হাসিল না। ধীরে ধীরে তাহার
দৃষ্টি সিতমিত হইয়া উঠিল, পাউডারে অবলিশ্ত ললাটের রেখায়য় আবার পরিস্ফুট
হইল চোধের কোণের কাজলের রেখায় উপর
একবিনন্ জল টলমল করতে লাগি...।
ভালবাসা! সে করেকার কথা—!

দিনের আলো জ্বান হইয়া আসিয়াছে।
মেঘলা দিনের আলো। সেই আলো বেন হঠাং
অংধকারে পরিণত হয় আর সেই অংধকারের
মধ্যে ছায়াছবির মত কতকগালি ছিমভিম
ছবি ভাসিয়া যায়, কতকগালি প্রাতন কথা
প্নজীবন লাভ করে।

সংধীর কলিল, বিমলা, তোমাকে আমি ভালবাসি।

বিমলা লক্ষায় অধোবদন হইল। বাহিরে সূর্য অসত গিয়াছে, আকাশের মেঘে মতে সূর্যের শোণিত চিহা।

সাধীর বলিল 'বিমলা, ভূমি আমার'— বিমলা বলিল, 'আর ভূমি আমার।'

গলিতে ভিড় বাড়িতিছে। বিসপিল গলি। গলির মোড়ে কানাইদের মাংসের দোকান। পুবের ঠান্ডা বাডাসে মাংসের তরকারীর গম্ধ ভাসিয়া আসিতেছে।

স্ধীরের আলিজানে আবদ্ধ বিমলা। স্ধীর বলিল, বিমলা, চল-পালিয়ে

বিমলা বলিল—'চল'—

তাহার পর এক নগর। সেখানে স্বাদ্দ্রভাগের পর এক নগর। সেখানে স্বাদ্দ্রভাগের বিমলাকে ভারাক্রাত করিয়া একদিন স্থানীর অনুশ্য হইস। তারপর ন্তন ন্তন লোক্প ন্থ আরু ক্ষিত দৃশ্টির মাঝে একটি শিশুর ক্ষো শোলা পোলা গেল। ক্রেপর—

কিলো গালে হাত দিয়ে কি ভাব্ছিস, জাই ?'

চমক ভাঙ্কিল, ব'চী। সম্বার অন্যকারও ঘনাইরা আসিরাছে, গালির বাতিগালি জালির উঠিরাছে। মান্বের ভিড় বাড়িরাছে। তাহা-দের হাসির শব্দ আর কোলাহল শোনা বায়।

টগর হাসিল, তের কথা রে ব'চী।' ব'চী নিজের গোলম্থে আবলবিস্তৃত হাসি ফুটাইয়া বলিল, 'ঘাঃ মাইরি—ইয়াকি' ফ্রিস না। বলা না ভাই—

বলি কি ভাবছিস্লা পোড়ারম্খী?'

কোন সে প্রেষগ্রেণ্ঠ হরিরাছে? চিত্ত তব দেবেন্দ্রযোগ্য?—'

ব্'চী কোন থিয়েটারে একবার এক স্থীর ভূমিকার অভিনয় করিয়াছিল। তাহার অভিনয় করিয়াছিল। তাহার অভিনয় প্রথমবারেই শেষবারে পর্যবিগত হইনাছিল, যেহেতু সে স্টেলে নামিরা একটি কথাও বলিতে পারে নাই, অনেক লোক দেখিয়া সেভর পাইয়াছিল। কিন্তু স্টেলে যে কথা তাহার বলা হয় না তাহা প্রায়ই বেশ সূরে করিয়া মাঝে মাঝে টগর পালা প্রভৃতিকে কারণে অকারণে শোনার।

টগর হাসিল। বেশ মেরে এই ব'্চী। ব'্চী আবার বলিল—'কি, বলি কোন মন চেষের কথা ভাবছিলে?'

মন্চুরি! সে ভূল একবার হইয়ছিল। সে কবেকার কথা। তাহার পর 'প্রেষ্প্রেণ্ড' নয়, বহু প্রেষ আসিয়াছে, নিতা ন্তন। বৃদ্ধ, ম্বা, প্রেচ্ট। সুন্ধরায় আর ব্যাধিগ্রুত। এখনও আসে, নিতা তাহার চতুদিকে তাহারা ভিড় করে, গ্লেমধ্নি তোলে। টগরের নয়, বিমলাব মন একবার চুর গিয়াছিল বটে। কিন্তু যে হতভাগীতো আর বাঁচিয়। নাই।

'ব্চী'—

'কি প্রাণেশ্বর ?'

'আর বাজে কথা বললে চলবে ।।' 'কেন হ্দয়বলভ?'

'সবাই চলে গেছে, বাইরের ি তাকিয়ে দেখা

ব'টোর জ্ঞান হটল, 'তাই তো! চল্ চল্'--

ফটকের সামনে গিল্পা তাহাবা দাড়াইল। ল্যাম্প পোন্টের আলোতে তাহাদের দেহ আর পোষাক আর গিল্টির গহনাগালি ঝক্-কক্কিরিয়া উঠিল। আলোর ইন্দ্রজাল।

রাত্রি হইয়াছে। তাহাদের জ্ঞাবন আক্রন্ত হইল। তাহারা সকলে দাড়াইল—এক বাড়িতে তাহারা পঠিজন থাকে।



যানদাও দাড়াইয়াছে। রভের মধ্যে সটা বৰ্ধমূল হইয়া গিয়াছে। ালা হাসিয়া বলিল, "মাইরি টগর, ভোর দিন দিন খোলতাই হচেছ! পুর নির্ভরে হাসিল। হঠাৎ ভাহার পড়িল রাধার দিকে। এক কোণে সে রভাবে একটা সাদা শাড়ি পরিয়া য়া আছে। উগর বিশ্মিত হইল। াধা'--বস ডাকিস। াধা তাহার মুখের দিকে চাহিল। টু এলি যে, আজই না তুই পথিয় ¥?" ।धा भाष्क कर्ल्ड विनन-'शां'-কন এলি তবে?' াকা চাই, বাড়িউলি আজে আমায় কথা শর্মিয়েছে।' র আর কি বলি**বে**?

ধা চলমান জনতার দিকে দুইটি বড় বড়
নিংপ্রত দুণ্টি ফেলিয়া দাড়াইরা
কোণ ভোগের পর ভাহার শাণি
অধিকংশ শাণি হইয়াছে, কালো রং
চালী হইয়াছে, গাল ভাঙ্কিয়া গিয়াছে
থার চুল কিছা উঠিয়া গিয়াছে। রাধাব
নাকি কি এক দুর্বোধা ব্যাধি
জীবনের আশা খুব কম্ শ্বাস
লইতে ভাহার অজকাল বড় কথ্ট বেশ ডাঞার ভাহাকে খুব সাবধানে
বলিয়াছে।

তিনীৰ মত মাংসহীন পিক্পিকে বংগুদিয়া দৰজার পাশবদৈশ অধিক বিষয় বাধা বাহিবের দিকে চাহিয়া উকা চাই।

ক বলিল - 'সতি ভূই শ্বয়ে থাক্ষে ৪. এখনত আরও কয়েকদিন তোর উচিত্র

্ডিল মা, কথাত বলিল না।
বসায়ের, গোলামের সেলাম মাও।'
ট কালো ও মোটা লোক, গায়ে
ন আদির পাঞ্জাবি, পামে লপেটা।
ভববাল হাসিয়া আগাইয়া গেল—
সে: কত ঢংই জান, চল ভেতরে।'
চটি হো হো করিয়া হাসিয়া উঠিল।
বাকে ধরিয়া টানিয়া ভিতরে শইয়া

ও ভিড় ক্রমে বাড়িয়া উঠে। নানা-ফেব্দ, পাউডার আর দেহের গাব্ধ। র মুখ, পোধাক আর ক্থা। র পানের পিচ আর সিগারেটের

मद्राणे भन्न नम्र।' जा?'

য কোমরে হাত দিয়ে—আহাহা, ঠনটা দেখছিস।

ায়ুহক এদিক গুদিক একবার হতে দেখিয়া লইয়া টগরের সম্মুখে ড়িইল।

'-रत्र र्वामन।

বলছেন ?' উগর ছাসিল। ঝন্কার দিয়া উঠিল—'মর ছ'্ডী— লা ?'

ট ঘামিয়া **উঠিয়াছে। সে এ** গ্ৰেছ। কি কথা, বলনে'—টগর নিপ্র কটাক হাসিয়া প্রদান করিল।

'ছেতরে চল।' 'সেকি? দরদস্তুর!'

'সে পরে হবে।'

সকলে খিল খিল করিয়া হাসিয়া উঠিল, কেবল রাধা হাসিল না।

নিজের ঘরে গিয়া উগর বলিল, 'বস্নে।' য্বেকটি সলক্ষভাবে বসিল। পকেট হইতে একটি সিগারেট বাহির করিরা সে ঘর ঘন টানিতে পাগিল

'পান খাবেন?' টগর প্রশ্ন করিল।

একদ্দেউ য্বকটি তাহার দিকে চাহিয়া রহিল, বারংবার তাহার নামিকা স্ফীত হইতে থাকে। স্দেশনে, স্কুষার য্বক। টগর মনে মনে হাসে। ন্তন পথিক।

'কর্তাদন এ পথে এসেছ?'

টগর শেলষ্টিস্ত কণ্ঠে বলিল 'ওসব জেনে কি করবেন--দেবদাস হবেন নাকি?'

য্বক অপ্রতিভ ইইল 'না—না, মানে'—
'থাক ওসব কথা, বাতি নিভিয়ে দেব?'
সিগারেট বারাশার নিক্ষেপ করিয়া শ্যায় বিসয়া য্বক কম্পিত কটেই বলিল, 'দাও!'
'আগে দুটো টাকা দিন'

দ্টেটি টাকার আওয়াজ। অন্ধকার হুইল। অন্ধকারে উষ্ণ রক্তের মন্ত ইতিহাস, নিবিড় আলিম্পনে টগরের শ্বাস র্ম্থ হইয়া আসে, দেহগুম্থিগ্লি টন্টন করে।

বারান্দায় সিগারেটটা নিচ্চিতে চলিয়াছে। আলো ছম্মলিল।

য্বকটির মাথা নত। সে উঠিয়া দাঁড়াইল। অবিনাসত চুলে একবার হাত ব্লাইয়া সিণ্ডির দিকে পা বাড়াইল।

'একটা সিগারেট দিন তো'—টগর বলিল।

য্বকটি তাহার দিকে চাহিল না, কেবল নির্ভরে একটি সিগারেট বাহির করিয়া ভাহার হাতে দিল।

তাখার দিকে চাহিয়া মৃদ্ হাসিয়া টগর বলিল, 'বসনে।'

'না'—পাপের অবসাদ তাহার কণ্ঠে ধর্নিত হইল।

> আমার জীবনকাহিনী শ্নবেন না?' য্বক মাথা নাড়িল। 'কালকে আসবেন তো?'

যুবক শব্দায় লাল হইয়া উঠিল। মুহত্তিল দাঁড়াইয়া থাকিয়া সে সিণ্ড় দাহিয়া নামিয়া গেল।

টগর হাসিল। সে জানে ঐ যুবক আবার একদিন আসিবে। এখন তাহার মাথা নীচু হইয়াছে বটে, কিন্তু দেহভাশ্তরশ্বিত নিক্তেঞ্জ শিরাগালি যথন আবার উষ্ণ রক্তের স্লোতাবেগে উন্দাম হইবা উঠিবে, মন তথন আবার বদলাইবে, সে আবার আসিবে।

বাতাসে কানাইয়ের দোকানের মাংসের গন্ধ। পাশের ঘরে পানা হাসিতেছে। ওপাশের বড় বাড়িটার স্কেশী গান ধরি-রাছে। মহানগরীর ব্রুকে রাচি গভীর হয়।

আরনার মুখ দেখিয়া, খোঁপা ও বেশ ঠিক করিয়া লাইয়া টগর সির্ণাড় বাহিয়া নীচে নামিতে শাগিল। এমন সময় আসিল শাণী৷ সি'ডির করেক ধাপ উঠিয়া রেলিংরে ভর দিয়া দাঁড়াইরা সে হাসিল, তোকেই খ্লেছিলাম টগর।

টগর ঝঞ্চার দিয়া উঠিল, 'কেন, কি দরকার আমার খোঁজে, এখন ব্রীঝ খিদে পেরেছে?'

'না—তা নর, দুটো পরসা চাই।' 'ওপরে চল্য'

টগরের পিছনে শশী ঘরে ঢাকিল।

ঘরের আলোতে শশীর চেহারা এইবার পরিক্লারভাবে দেখা যায়। একটি সর্ পাড় ময়লা শাড়ি পরনে, গায়ে একটা অর্ধ-ছিল পাজাবি, মাথায় একরাশ ফার্শিকা ওঠা রক্ষ চুল। উক্জান শ্যামবর্গ দেহ ভাহার অতিমানায় দীঘা, অস্বাভাবিক শীর্ণা, হাতের শিরাগার্লি স্ফ্রীত, দন্বাটে মুখের মাংসহীন দুইটি গালের উপর গর্ব মত একজোড়া ভাবিভেবে ও ক্লান্ড চক্ষ্।

পরসা দিতে গিয়া শশীর দিকে ভাল করিয়া চাহিল, হৃদরে একটা ব্যথা মোচড় খাইয়।ও উঠিল। হতভাগা শশী। কবে কোন্ এক বেশার গভে এই গলির এক অম্পর্কার থরে দে জন্মগ্রহণ করিয়ছে। তাহার আর মনে নাই, উদ্দেশাহীন হয়-ছাড়া জীবনের স্লোতে নিজেকে সম্পূর্ণ করিয়া দিয়া সেই কথা সে ভূলিতে চায়। কেথায় যায়, কোথায় কথন থাকে, কি খায় কিছুরই ঠিক নাই।

্বিলি আজ থেয়েছিস তো?' টগর প্রশন করিল।

ক্ষ্দু শিশ্র যত মাথা দ্**লাই**য়া **শশী** বলিল, 'হাা'।

'কোথায় ?'

ম্হত্ত কাল চুপ করিয়া থাকিয়া টগর বলিল—'আছ্যা শশী'—

'art"—

'কেন মরতে এখানে থাকিস হলতো, অন্য কিছা করতে পারিস না?'

শশীর শাশত ও ক্লাশত দুগিটতে হঠাৎ যেন আগনুন জনুনিয়া উঠিল, 'এখানে যে নাড়ীর টান আছে।'

'না শশী, বাজে কথা **নয়**।'

শশী একটা গম্ভীর হইয়া বলিল, 'ভোদের মায়া ছাড়তে পারি না।'

'কেন ?'

শূশা তাহার উত্তর দিল না, হঠাং
একটা কথা যেন তাহার মনে পাঁড়রা
গিরাছে এমান ভাব মুখে ফুটিয়া উঠিল।
সে বলিল, 'আল গণেশের ওথানে একটি
ভারী অম্ভূত লোকের সংগ্যে দেখা হল
টগর, বরস বেশী নম, কিন্তু ভার জ্ঞান/
সে আমার বলকো,'—সে থামিল।

ৰ্ণক বলকো?'

'তার আগে একটা কথার উত্তর দে তো?'

'কি?'

'এই জীবন কি তোর ভাল লাগে?'

চগরের দ্ণিট দিতমিত হইয়া আদিল,
মাখা নাড়িয়া ধীরে ধীরে সে বলিল 'না
ধীচতে হবে তো, অন্য আর কি উপায়
আছে?'

শশী যাথা নাড়িল, পোনটি সেই কথাই বললে বে এমন একটা দিন আসবে যখন তোদের এ কবিনের আর দরকার হবে না, মান্য আর সমাজ একদিন ভেশো পিষে নতুনভাবে তৈরী হবে।

শশীর ক-ঠম্বর আবেগে কাঁপিতে থাকে, কথা শেষ ধরিয়া সে গাহিরের দিকে চাহিয়া রহিল।

টগর ঠিক কথাগ্লি ব্ৰিডে পারে না, তব্ও তাহা কেমন খেন ভাল লাগে। সমাজ আর মান্ব! ঠিকই তো। ম্হ্তে ভাহার সারা অভীত আবার চোথের সম্মুখে ভাসিরা ওঠে। কিল্পু এই অভীতের ধ্যুতিতে কোথার খেন একটা শীড়াদারক ফলবা ল্কারিড আছে, টগর তাহা সহ্য করিতে পারে না। ভাের করিরা হাসিরা সে বলিল, জাজ্বা এবার দবিচে চল্: '

ললী হঠাৎ তাহার দিকে আসিয়া হুত্তকওে, উত্তেজিতভাবে বলিল 'টগর'— বিহু?'

'চল্ না কোথাও বেরিরে পড়ি, এই কুকুরের জীবন, এই গলির ভ্যাপসা দ্পশ্ধ আর অন্ধকার ছেড়ে চল্না কোথাও চলে বাই। বাবি?'

উপর হাসিল, 'তা আমাকে এত দয়া কেন রে মুখপোড়া, আরও তো কত লোক করেছে—কুচী, মানদা, পায়া—তাদের বল্লে না।'

'তোকে যে ভালবাসি।'

পিক! মানদার কথাগ্রিল টগরের মনে পড়িল, সপো সপো অতীতের ভালবাসার ছবিগ্রিল চোখের সামনে ভিড় করিয়া দড়াইল। বল্লবাসং! যা যা শশী দ্র হ, বেশ্যাকে ভালবাসং! যা যা শশী দ্র হ, বেশ্যাকে ভালবাসতে এসেছেন, বলি কত টাকা আছে রে তোর হারামজাদা?'

শশীর বড় বড় চোখ দ্ইটি যেন এবার ফাটিয়া বাহিরে অসিবার উপক্রম হইল, নাই বা থাকল টাকা, টাকাওয়ালদের মত রাতের বেলার এসে এক ঘণ্টার জনা তো তোকে ভালবাসি না আমি, আর বেশ্যার ছেলে আমি বেশ্যাকে ভালবাসব না তো কাকে ভালবাসৰ?'

টগর বিরঙ বোধ করে, 'পথের কুকুর মাথায় উঠেছিস্না? প্রেমের কথা শোনাতে এসেছেন বাব্, বলি ভাত যে গিলিস, আজ কটা লোককে এনিছিস্রে মুখপোড়া? যা যা দ্র হ স্মুখু থেকে।'

মহতে শাশীর মুখের র্পান্তর ঘটিল আবার প্রেকার সেই নির্মাহ পাশুর মত ক্লান্ত ভাব ও দুন্টি ফিরিয়া আসিল, একট্ হাসিয়া বালাল, ঠিকই তো, বাইরে যে একটা বুডোনে দাঁড় করিরে এসেছি।'

টগর একট্ চুপ করিয়া বলিল, 'যা— নিয়ে আয়।'

'যাই।'

ক্ষম্বা কম্বা পা ফেলিয়া শশী চলিয়া গোল। কেবল যাওয়ার সমর একবার কি ভাবিরা টগরের দিকে বিষয় দৃশ্টিতে ফিরিয়া চাহিল। মরের আলো ভিযুক গতিতে সিন্ধির উপর পড়িরাছে, তাহাতে ধিন্দুটা সম্পূর্ণভাবে আলোকিত হর নাই। সেই আধো আলো. আধো অণ্ধলরে শশীর গর্র মত ভাবতেবে চোথের মধো যেন কি একটা ভাষা। টগর ব্বিরাও বোঝে না। ভারী অম্ভূত এই শশী, একেবারে পাগল।

টগর বিছানার গিয়া বসিল। ছরের ভিতর বর্ষাকালের ঠাণ্ডা বাতাস আসি-তেছে। বাহিরে নক্ষ্যহীন অপ্কার আকাশে মেছরাশি আবার প্রেট্ড হইতেছে। টগর ভাবে, ভালবাসা। শশীর ভালবাসা। স্বীর আর বিমলা।

সংধ্যাবেশায় অতীত জীবনের কথা চিশ্তা করিতে করিতে যেথানে ছেদ পড়িয়া-ছিল, সেইথান হুইতে সে আবার ভাবিতে আরম্ভ করিল।

--এক নগর। সেখানে হঠাৎ একদিন এकिं मिम्द्र क्रम्मत विभवात तथा ভাগিল, সে ব্ঝিতে পারিল যে পশ্চাতের জীবনে ফিরিবার আর কোনও উপায় নাই। এদিকে মধ্লোভী মুণ্ধ শ্রমরদের ভিড় বাড়িয়া চলিল। ইণ্গিতে দৃণ্টিতে কদৰ্য পিপাসা আর প্রলোভন। ওদিকে পাপের বোঝাটি দিবারাত টাাঁ টাাঁ করে। বিমলা বড় ম্যুন্কলে পড়িল, সে কি করিবে? অব-শেষে সে একদিন নিজের পাপকে ভূলিতে চাহিল। এক মন্ত মুহাতে সে ঐ শিশ্চির কোমল গলদেশ নিপ্রীডন করিয়া তাহাকে এই প্রথিবী হইতে বিদায় দিল। ফলুণায় বেচারীর দেহটি কয়েকবার কাঁপিয়া উঠিয়া-ছিল মাত আর কিছুনয়। তারপর দুরে এক জণ্গলে, মাটির নীচে তাহার কচি দেহ ঢাপা পড়িল। হায়, বিমলা ভুল করিয়াছিল।

পাপ দ্র করিতে গিয়া সে তাহাকে আরও কারেমী করিয়া তুলিল, অজ্ঞাত নিয়তির আকর্ষণে সে থামিল এই গলিতে। তাহার পর এই গলির অধ্কারে বহু মানুষের আলিঙ্গনে নিপিণ্ট হইয়া বিমলা হইল টগর। সে ক্রেক্র—

भूमभावम् ।

একজন বৃদ্ধ আসিল। বয়স প্রায় মাটের কাছাকাছি। নুস্জানে: শীণকায়, মাথার চুলগুলি কচিপাকা, ছোট ছোট চোখে সর্বদা সম্পিশ্ব দৃষ্টি, পরনে কেচিন ধৃতি, পাঞ্জাবি আর সিম্পের চাদর।

'আসনে'—ট্গর বলিল।

বারান্দা হইতে শশী একবার উ'কি' মারিয়া চলিয়া গেল।

বৃশ্ধ হাসিল, 'আসনুন কিগো, এসেছি।' 'বসুন।'

বৃদ্ধ বলিল, 'তোমার নাম টগর বৃঝি?' 'আজে হাট'—

'বেশ বেশ, তা বাছা শশী মিখ্যা কথা বংশনি—তুমি দেখতে মন্দ নও দ

টগর হাসিল, পান থাবেন?' নিশ্চরই, অনেক পান তো খেলাম তোমার হাতেরটাও খেয়ে দেখি। দেখ বেন

গ্রেকর নাভাই।' বৃশ্ধ রসিক।

টগরও রসিকতা করে, 'গ**্রুল করলেই বা** ভয়ের কি. আমি কি বাঘ?'

বাঘ!কে বলে তা? তোমরা বাঘের চেয়েও বড়—তোমরা হছে বাঘের সাসী। বুশ্ধ হো হো করিয়া হাসিয়া উঠিল। কিব্ হঠাং দেওয়ালে বিলম্বিত ক্রুর পটের উপর দ্দিট পড়ায় তাহার হঠ থামিয়া গোল, দাভি নত হইল, ফির্মি করিয়া সে বলিল, বাতিটা নিভিয়ে ন তো'—

'কেন?' টগর বিস্মিত হয়, 'এত তারু তাড়ি, গম্প করবেন না?'

'নেভাও বলছি।'

অন্ধকার ৷

'घरत भारस्य होत रतस्थह रकन?' कृ अभ्न कतिल।

'আমরা কি মারের সম্ভান নই?'
'না, তা বলছি না—কিন্তু মারের ছড়ি
সামনে ভয় হয়।'

'তবে ফিরে যান।'

অপকারে হাত বাড়াইয়া বৃদ্ধ টারা নিকটে লইল। লোল চমের স্পর্শ।

'পাগল, এখানে যারা আসে, তারা ফিরবার জন্য আসে?'

টগর মৃদ্দ হাসিল, 'ছবি না রাজ্ কি মা এসব কাজ দেখতে পান না?' 'না—তা নয়—তবে'—

'কেন তবে এই ফার্নিক, পাপ করছে আবার নিজেকে ভূপও বোঝাচ্ছেন!'

বৃদ্ধ নিবিড্ভাবে টগরকে আলিগ করিয়া বলিল, 'ও বাবা, তুমি যে অন বড়বড়কথা জ্বান মাইরি।'

সিণিড়র উপর দাঁড়াইয়া শশী ফেন্ট ভাবিতেছে। বেশায়ে ছেলে শশী। আলো জন্মিল।

বৃদ্ধ মলান হাসিয়া বলিল, শে কাটলৈ যেমন সৰ বিম্বাদ মনে হয় এ তেমনি মনে হচেছ। ভাৰভি কেন এই ছিলাম ?'

'কেন এর্সোছলেন?'

তা কি জানি— সামলাতে পাঁ না। ঘরেতে আমার ছেলেমেরে নাট নাতনী সবই তো তাছে তব্ তোমার এখানে একবার না এসে পার না কেন

'আমাদের ভালবাসার টান'—^{টা} হাসিয়া বলিল

বৃশ্ধ মাথা নাড়িল, 'তোমাদের ভর বাসা! সে তো মিথাা—অভিনয়।'

সে নীচে নামিয়া গেল। মিথ্যা—অভিনয়! বিমলার ভা^{লবে} কি মিথ্যা ছিল!

রাধা তথনও একইভাবে ঠায় দড়িই আছে। একটি লোকও তাহার দিকে ফি^{র্টি} চাহে না।

মানদাও একপালে দড়িইয়া ^{রির} টগরকে দেখিয়া একগাল হাসিয়া ^{র্বার্ক} 'তোদেরই ভাগ্যি মাইরি।'

> 'কেন ?'
> 'একটা থাচ্ছে তো আরেকটা আসছে।' টগর মৃদ্ হাসিল।

'ব'্চী, পান্না, কনক—এরা ব্ঝি ^{ছার}্ 'হার্ম'

মামদা সাগ্রহে রাশ্তার দিকে তাকায় বি
কি মুখ্য হইল? একদিন কিশ্তু তে
বোরে লোকেরা হুমড়ি খাইরা পড়িত। প
বৈ এক মারওয়াড়ী, কি বিরটে ভূচি বি
তার! সে একদিন আসিয়া মানবার!

∌ড়াইয়া ধরিয়া কত সাধিয়াছিল তাহার দহিত যাইতে, বি∗কু সে যায় নাই। আর আজ? নিজের মৃথের বসক্তের দাগগন্লির এপর মানদা হাত ব্লায়।

রাধার দিকে চাহিয়া টগরের মনটা কেমন বেন করে। মোলায়েম সারে সে ডাকিল—

রাধা ফ্লান্ডভাবে তাহার দিকে চাহিল।
'তোর টাকাা দরকার তো একটা টাকা
নিস আমার কাছ থেকে, তুই এখন ভেতরে

যা ভাই।'

রাধা নির্ভরে মুখ ফিরাইয়া লইল।
রাচি বাড়িতেছে। রাচির কালো ধমনীতে
হাহার কালো আজার স্পদ্দন। গালির মধ্যে
ভড়। নানা মুখ আর নানা কথা, হাসি আর
গিগত, মদ আর পানের পিচ, অদাশ্য বীজাণ্র হাসি আর কানাইয়ের দোকানের
যাংসের গদ্ধ। হাাঁ, রাচি বাড়িতেছে।

আবার শশী আসিল।

'আর একটাকে এনেছি'—সে বলিল।
তাহার পশ্চাতে একটি লোক
টলতেছিল। তাহার মাথার চুলগুনি
প্রবিনাদত, অত্যাচারে গাল ভাগিয়া গিয়াছে,
রন্ধাত দ্ণিটতে অর্থাহান চাহান, চেহারাটা
তাহার ভালই, দেখিয়া অবস্থাপার ও ভার
বিলায়া মনে হয়।

'নিয়ে আয়'—বলিয়া টগর সি'ড়ির দিকে ∵গ্রসর হইল।

তংগকে অনুসরণ করিতে করিতে জড়িত স্বরে লোকটি বলিল, 'অত হন্ হন্ করে যেও না ভাই, মুখখানা একবার দুখাও'—

টগর থামিল, লোকটির দিকে অগ্রসর ইয়া বলিল, 'দেখনে না কত দেখবেন।' লোকটি টলিয়া ট'লেয়া দেখিতে দেখিতে হাসিল, 'বেশ মুখে।'

লোকটিকে টগরও দেখিতেছিল। দেখিতে দেখিতে অকমাং তাহার সারা দেহের রঞ্জ-স্রাত উদ্দাম হইয়া উঠিল, প্রতি কোষে উপকোষে হিংস্কতার অধ্বকার ঘনাইয়া ঘাসিল, দুই হাত বাড়াইয়া কঠিমভাবে লোকটির গলা টিপিয়া ধরিয়া সে উচ্চকণ্ঠে চাকিল, 'শশী!'

শশীর লম্বা ছায়া সি'ড়ির ধাপে শড়িল।

'এ হারামজাদাকে বের করে দে।'
'কেন ?'

'বের করে দে বলছি।'

লোকটির নেশা ভাগ্গিয়া গিয়াছে। গ্রাচীরে হেলান দিয়া হাপাইতে হাঁপাইতে স বলিল 'ভোমায় যেন চিনি–ভূমি কে?'

টগর অদ্ভূত হাসিয়া বলিল, 'চিনে 'বকার নেই আর, এ গলিতে আর কোনদিন যন তামার মুখ না দেখা যায়।'

'তুমি কে?'

'আমি উগর—বেশ্যা—আবার কে।' 'না, ঠিক করে বল তুমি কে?'

টগর গজন করিয়া উঠিল, 'শশী— তভাগা আমার কথা কি তোর কানে ার্থান...বের করে দে এ কুকুরটাকে।'

শশী লোকটির হাত ধঠিকা টানিয়া নহিরে ঠেলিয়া দিল। তব্ও লোকটি আকুলকপ্তে বলিল— তোমায় যেন চিনি—তুমি কে?'

শশী আবার সির্গড়র ধাপে বসিয়া পড়িল।

দুইটি কাবলীওয়ালাকে লইয়া রাধা উপরে চলিয়া গেল। তাহার টাকা চাই— আজই।

হঠাৎ টগর উঠিল, দুতুপদে দ্বারপাদেব গিয়া গলির একপ্রান্ত হইতে অপর প্রান্ত পর্যান্ত তীক্ষাদৃশিট মেলিয়া একবার চাহিয়া দেশিল। লোকটি টলিতে টলিতে গ**লির** মোড়ে অদৃশ্য হইল। স্ধীর অদৃশ্য হইল। হইবে না তো কি—টগর তো বিমলা নয়। বিমলা তাহাকে ভালবাসিত, টগরের সে শত্ন।

মানদা প্রশ্ন করিল, 'ফিরিয়ে দিলি কেন রে?'

নির্ত্রের টগর নিজের ঘরে গিয়া বিছানায় এলাইয়া পড়িল। মুহুতে কি যেন হইয়া গেল। না দুঃখ, না ক্লেধ, না হতাশা, এমনি একটা অবণনিয়ি ভাবে আক্লন্ন হইয়া সে নিব্যের মত পড়িয়া রহিল আর

।। আমাদের কতকগৃলি বিশিষ্ট প্রকাশন।।

উপন্যাস শরৎচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়

দত্তা ৩-৫০ পথের দাবী ৬-৫০ লেবের পরিচয় ৭-০০ বিশ্রদাস ৫-০০ ব্লুম্বদেব বস্তু

শেষ পাণ্ডুলিপি—৫·০০
জায়নার মধ্যে একা—৫·০০
বিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যায়
এবার প্রিয়ংবদা—৬·০০

অন্নদাশ কর রায় বিশল্যকরণী—৫০০০ দীপক চৌধুরী

পাতালে এক ঋতু — ৬·০০ শঙ্থবিষ — ৫·৫০

এই গ্ৰহের জন্দন — ৬-০০ মণিকা ঘোষাল

সাদা শাঁথে লাল রং — ৪১০০ **প্রেমে**ন্দ্র মিত্র

মন্বাদশ — ৩.৫০ আচিশ্ত্যকুমার সেনগ**্ণ্ত** আনিমিত্তা — ৪.৫০

<u>ভ্রমণকঃহিনী</u>

व्यव्यक्तियः वस्त्र रमभाग्यतः — ১০٠००

জাপানী জর্ণাল — ৩-০০ আন্দোশন্কর রায়

ফেরা—৫·৫০ পথে প্রবাসে—৪·০০ ভক্তি বিশ্বাস হিমবাহ পথে বহুনীনারায়ণ — ৫·০০

গল্পসংগ্ৰহ

রাজশৈথর বস্
গন্ডলিকা—৩·৫০ কল্জগী—৪·০০
হন্মানের স্থ্য-—৪·০০ নীগডারা—
৩·০০ কৃষকলি—২·৫০ ধ্যুত্বীমাল্লা—৪·০০ গদ্ধকণ—২·৫০

আনন্দীবাস—৪-০০ চনংকুমারী—৪-০০
পর্শরোম গ্রন্থাবলী — ১ম, ১৫-০০
ঐ — ২র, ১৫-০০
ঐ — ০র, ১৫-০০

न्यौत्रहम्म नत्रकात

कथाग्राम् -- ५२.६०

জীবনী ও সংকলন

স্থারিচন্দ্র সরকার জীবনী অভিধান — ৬-০০ পৌরাণিক অভিধান — ১০-০০ অচিন্ত্যকুমার সেনগ্রুণ্ড

वीरत्रम्बतः विस्वकानम्न ५८-०० स्रो २६-१००

ঐ ২য়—৫∙০০ ঐ ৩য়—৭∙৫০

দেবেন্দ্রনাথ বিশ্বাস বিজ্ঞান ভারতী — ৫·২৫

কাব্যগ্রন্থ

রাজনেখর বস্ গরশ্রামের কবিতা — ২-০০ হরপ্রসাদ মিত্র গাকো থেকে দেখা — ৩-০০ মণীন্দ্র রায়

সংকলিত সবিতা — ৪-০০ বৃদ্ধদেব বস্ ...মে অধিয়ে আলোয় অধিক—৩-০০

প্ৰেমেন্দ্ৰ মিত্ৰ অথৰা কিন্তৰ — ৩-৫০

শংকর চট্টোপাধ্যায় কেন জন্ম কেন নির্মাতন—২০৫০ অচিস্তাকুমার সেনগাঁহত আজন্ম স্বভি—৩০০০

> **ৰিষ্ণ, দে** একুশ ৰাইশ—৮০০

এম, সি. সরকার অন্যাশ্ড সন্স প্রাইভেট লি: ১৪, বণিকম চটেকো দুর্ঘীট ঃঃ কলিকাতাঃ ১২ জিতীতের ছবিগ্লি একের পর এক ভোজ-বালীর মত মিলাইয়া যাইতে লাগিল। কেবল একটি দ্ব দ্বান্তরে কোন এক জন্গালের মাটির বাধাকে ভেদ করিয়া একটি রুম্মন্যা কচি শিশুর কালা ভাসিয়া আসিতে লাগিল।

বাহিরে মেখ গজনি শোনা গেল।
পাশের ঘরে কাবলীওয়ালা দুইটি
তাহাদের দুবোধা ভাষার কি সব রসিকতা
করিয়া হাসিতেছে।

য়াবা।

শশী আসিল।

শাবি না টগর?

'তৃই খেয়েছিস?'

कुँ व्याल था।

हैगत छेखत मिल ना।

বারাদ্যায় বসিয়া শশী বলিদা, 'প্রেনো দিনের কথা ভাবিস না, এমনি হয়, অথচ কত কথাই না ভেবেছিস এই অপদার্থ লোকটার বিষয়ে!'

'ওসব কথা ছাড় দেখি।' টগর তিও হইয়া উঠিল।

 • শশী শ্লান হাসিল, 'আছো তবে খেয়ে
ন চারটি।'

টগর উঠিল। দিনের রাধা ভাত একটি পাতে কিছু দিয়া বলিল, 'নে থা।'

শৃশী **আইছে** বসিল। সংশের ঘরে রাধা একট্ন গোঙাইয়া

কলের ধরে রাধা একট্ গোভাইয়া উঠিল।

টগর খাওয়া দেখে। একগাল ভাতের
চাপে শশীর দক্ষিণ গালটা ক্ষপেকের জন।
মাংসল বলিয়া মনে হয়। অনেকক্ষণ পরে
বোধ হয় সে খাইতেছে তাই আরামে তাহার
চক্ষ্য অধনিমালিত হইয়া আসে। টগরের
মমতা বোধ হয়। শশী নাকি ভাহাকে
ভালবাসে! ভালবাসা!

টগর হাসিল, 'কি রে এখনও আমায় ভালবাসিস?'

খাওয়া থামাইয়া শশী তাহার দিকে
চাহিল, কোনও উত্তর দিল না, কেবল তাহার
গর্র মত ভাাবডেবে চক্ষ্ দ্ইটিতে একটা
কর্ণ মিনতি ফ্টিয়া উঠিল। পরে একট্
মৃদ্ হাসিয়া সে বলিল, 'খেয়ে নে তুই
এবার।'

টগর নি**জের থালা** টানিয়া লইল।

) বাহিরে বৃশ্চি নামিল। সংগ্রাহাস।
কাব্লীওয়ালা দুইটি উত্তিজিতভাবে
কি বলাবলৈ করিতে করিতে তরতর করিয়া
নীচে নামিয়া গেল।

্ 'এক গেলাস **জল দে** তো শশী ['] 'দিই '

হাত ধ্ইয়া শশী দৈরকে জল দিল।

পানের আই (স্বর্লিপিও খিওরি) পাওর যায়। লিখিলে যে কোন প্রকারের বই দুত ভি, পি করা হয়। এজেস্সীও নেওয়া হবে।

শ্রীপ**ৃত্তকালয়** এ-৬৫, কলেজ স্থীট মার্কেট, কলি-১২ একটি বিজি ধরাইয়া ধোঁরা ছাড়িতে ছাড়িতে সে পরে বারান্দার উপর গড়াইয়া পড়িল। 'ও কিরে, খালি মাটিতে শর্মব!'

শশী রসিকতা করিবার চেণ্টা করিয়া বলিল, শরীরটাও মাটির তা জানিস, একাদন তা মাটিতে মিশে বাবে—বাউলের গান শ্নিস নি?'

মাটি !

ঝন্দার দিয়া রুংধকণ্ঠে টগর বলিল, বেশী কথা ব'লস না হারামজাদা—ওঠ বলছি। থেয়ে নিই, একটা মাদ্রে আর বালিস দিচ্চি।'

'आस्टा ।'

মানদার চীংকার শোনা গেল-'ওরে তোরা শিগ্গির আয়—ও ব'চ্চী—ও টগর, শিগ্গির আয়—রাধা নড়েনা যে!'

'এ'ন।' টগর উঠিয়া দাঁড়াইল।

'তুই থা না, আমি দেখে আসি'—শশী রাধার ঘরের দিকে গেল।

কি হইল রাধার? টগর আর খাইতে পাবে না।

শশী ফিরিয়া আসে না।

ব'চীর কাল্লা শোনা যায়, 'ও ভাই রাধা---রাধা'।

টগর যক্রচালিতের মত গিয়া রাধার যরের সম্মুখে দাঁড়াইল। মালন শ্যার উপর রাধা মুছিত হইণ পড়িয়া আছে। কিন্তু কাবলীওয়ালা দুইটি অকৃতজ্ঞ নয়, তাহারা একটি টাকা তাহার মাথার নিকটে রাখিয়া গিয়াছে।

ঘরের ভিতর ভিড় জমিয়া গেল। পাশের বাড়ির কমল, মতি প্রভৃতি আর বাড়িউলী আসিল। অনেক জেরা, অনেক চীংকার, জল-ঢালা আর পাখার বাতাস। রাত্রি গভীর হুইজেছে।

নিজের ঘরে অনেকক্ষণ পরে ফিরিয়া গ্রিয়া উগর ভাবে, রাধার নিম্পদদ দেহটা চোখের সামনে ভাসিয়া উঠিতেছে একটা দ্বিবার বিবমিয়া পাকখলীতে পাক খাইয়া উঠিল। সে বমি করিতে অরম্ভ করিল। বাহিবে বৃষ্টি জোবে আরম্ভ হইযাছে। রাতি অন্ধকার। এ গাঁলর অন্ধকার আর তাহাদের অন্ধকার জীবনের মত।

বেশার ছেলেটা মমতায় ভাঙিয়া পড়ে। টগরের মাথায় জল ঢালিয়া তাহাকে শ্যায় শোয়াইয়া দিয়া শশী বলিল, 'এবার ব্যুমো টগর—ব্যুমোলে স্ব ঠিক হয়ে যাবে।'

'সব ঠিক হয়ে যাবে? আছো—' চক্ষ্মুদ্রিত করিয়া টগর আবার ভাবিতে আরম্ভ করিল। বিমলা। মাটি। 'টগর তোমায় যেন চিনি—ভূমি কে?' রাধার মাংসহীন দেহ আর রস্কা টগর কি করিবে?

শশী মেঝেটা ধ্ইয়া বাতি নিভাইয়া বারাদনার গিয়া শাইল।

রাত গভীর হইতে থাকে। বৃষ্টি থামে না, একটানা স্বরে অবিরাম পড়িতে থাকে। কালির হত কালো আকাশ।

হঠাৎ টগর বিছানা হইতে উঠিল, বাতিটা আবার জনালাইয়া শাশীর নিকট গিয়া তাহার দেহে ঠেলা দিয়া বলিল, 'শাশী!' শৃশী জাগে না, সারা সিনের ঘ্য তাহার চোখে।

.6 alal -- alal 3,

'धर्ग—रक ?'

জ্ঞাহিছ ।'

কে—টগর ?'

'शौं ।'

'কি হল?' 'চল।'

'কোথায় <u>?'</u>

'এই না আজ সংখাবেলা বলেছিলি কোথায় নিয়ে যাবি আমায়, এই কুকুরেও জীবন থেকে আমায় না ডুই মুক্ত করতে চাস?'

শশীর ঘ্যভরা চোথে বিদ্যায় ফ্টিয়া উঠে, টগরের দিকে চাহিয়া দ্বদ্দ দেখিতেও কি না তাহাই দে কেবল ভাবিতে লাগিল।

নিয়ে চল শশী-ও শশী-তুই না আমায় ভালবাসিস?' টগারের কণ্ঠে ঋ্র বালিকার মত কাতরতা, সে যেন বড় অসহায় হইয়া পড়িয়াছে।

ম্হতে শশীর চেহারা বদলাইয়া মায়, প্রত্র মত জাবডেবে ও নিম্প্রভ চক্ষ্ দুইটিতে মধ্যাহোর সূর্য জনুলিয়া ওঠে।

টগরের ডান হাতটা চাপিয়া ধরিয়া সে প্রশন কবিল, সেতিয় বলছিস টগর—না মিথো কথা?'

দ্ই ছাতে টগর এবার শশীকে আঁকড়াইয়া ধবিল, ফিসফিস করিয়া বলিক— সেতি—সতি, এফা্লি চল শশী, দেরি করলে ২রতো হবে না।

টগরের কটিদেশ জড়াইয়া ধরিয়া শশ্চী ভারী মিন্টি হাসিয়া বলিল—'চল তবে।'

রতি গভীর। কেই জাগিয়া নাই। ব্যিট পড়িতেছে অবিরাম আর আকাশটা যেন কালো কালি।

রাস্তায় নামিয়া বৃণ্টিতে ভিজিতে ভিজিতে ভাহারা দুইজনে চলিল। বড় বিভি—না েটগর বলিল।

শ্রণী থাথা নাডিল, ছাাঁ—ভাতে কি ' চারাদকের নিসভন্ধতাকে অন্তব করিয়া উগর আবার বলিল, 'রাভ অনেক হয়েছে—আর বড অধ্বকার—না শশী?'

বেশ্যার ছেলেটা গভীর অনুরাগের সহিত টগরকে আরও নিবিড্তর সমীপো টানিয়া লইয়া বলিল, হোক না, ভয় কি, আমি তোকে আকাশের স্থিয় এনে দেব।

রাতি গভীর। কেহ জাগিয়া নাই। ব্যি পজিতেছে অবিরাম আর আকাশটা যেন কালো লাল। তব্ ভয় নাই, ব্যি থামিবে, লাকেরা জাগিবে, রাহিও শেষ হইবে বেশা। টগর আর বেশারে ছেলে শশীর জীবন ন্তন দিনের আলোতে উজ্জ্লে হইয়া জীঠবে। এ আলো পশ্চাতে ফেলিয়া আসা গলিতে কোনও দিন ছিল না, থাকিবেও না সেখানে তো, চিরাধ্বকার রাহির চির্বতন বিলাস।



আমার বাবা ছিলো না। এই অভাব-গ্রাধটা খুব ছোটো থেকেই আমাকে বারং-ার আঘাত করেছে। মাকে জিজ্ঞেস করেছি, তুনি তার বিষয় মুখ আরো বিষয় করে রা গলায় জবাব দিয়েছেন, তিনি স্বর্গে। ার্গ কোথায়, প্রগ কী, কতদ্রে—অনেক ন ভের্বোছ, কিন্তু সে-প্রশেনর মীমাংসা য়নি। আমার মা-র মুখ্শী আতি সুন্দর, মুদ্ত মুখ্থানাতে তার এমন একটা মধ্যুর াষ্মতার আভা ছডিয়ে থাকতো যে কোনো গ্রনো সময় অপলকে সে মুখের দিকে াকিয়েও আমার দেখার তৃষ্ণা মিটতো া তিনি কালোপাড় শাড়ি পরতেন, হাতে র্-সর্ দ্ব-গাছা বালা ছিলো-গলাধ ায়-অদৃশ্য একছড়া সোনার হার চিকচিক রতো। কী যে স্কুদর দেখাতো তাঁকে— াণ শ্যামল রংয়ে একটা বর্যার সজল ভা ছিলো—আমি ফশা ছিল্ম, কিট্ ্মকলে বলতো মা-র দ্রী আমি পাইনি। তাৰত শাৰত আৱে দড়ে ছিলো তাঁর ভোব। আমি তার অতি গলপ বয়সের ফার সংভার।

মার চৌন্দ বছর বয়সেই তার জীবনের ্যত আলো নিবে গিয়েছিলো। দাদ**ে**-ায় ছিলেন সনাতনপন্থী কাজেই বারো বয়সেই কন্যার বিবাহ দিয়ে খুব াটা ভূপিত লাভ করলেম। বিয়ের পরে ম বছর মা-র প্রায় পিত্রালয়েই কেটে-লো। দিবতীয় বছরের প্রারেমেড আমার ভাবনার সূত্রপাতেই আমার বাবার মৃত্য লা। শোকে আমার মা কতটা। মুহুয়োন গ্রাছলেন আমি জানি না, কিন্তু আমার ামশাই এ-আঘাত সামলাতে পার্লেননা. ংবছরের মধ্যে তিনিও গত হলেন। ব আর দিদিমার পরিচ্যায় আমি বড়ো ৰ্যছল ম—কোনো পরে যের সংস্থ মাদের ছিলো না: দু-একজন আজীয়ই আসা-যাওয়া করতেন--- আরু অসুখ লৈ ডাহার। দ্রী-পরেম্ব সকলের কাজ া আমার মাকেই করতে দেখেছি। বিপদে পদে সুখে-দঃখে সব সময়েই তিনি কলিত। দিদিমা যত না বুড়ো হয়ে-লন তত হয়েছিলেন ্রু•ন—আথিক সতার অভাবও ছিলো প্রচর ^{দ্}কর্ম সবই প্রায় মাকে করতে হতো। ালে উঠেই জিনি একেবারে কলের মতো লেগে এবং কাঞ্জের আবর্ত । বাচ্চা একটি গুলই যথেষ্ট—তার উপর আমার

ছিলেন আমার প্রতি অত্যন্ত মনোযোগী—
তাঁর চোদদ বছরের মাতৃত্ব আমি দেখিনি,
কিণ্তু যে বয়সের কথা আমার মনে আছে
—তথানো আমার মা খ্র ব্ডো হয়ে
যাননি—এখন সে-বয়সের মেয়েদের বিয়ের
কথাও কেউ চিন্তা করেন না। আমার
যথন দ্? বছর বয়েস মা তখন আই-এ
পাশ করলেন। ঠিক এই সময় হঠাৎ এক
সকলে ঘ্ম তেঙে আমি একজন ভদ্দলোককে আমাদের ঘরে দেখতে পেল্ম—
যাঁর চেহারা আমার মনের মধ্যে সেই
মুহুতেও একটি গভীর দাগ কেটে দিলো।

স্বদর লম্বা চওডা বলিষ্ঠ চেহারা. ম্বথের মধ্যে এমন একটি আকর্ষণ যা মান্যেকে টানে—অত্যন্ত নিচু স্বরে কথা বলেন আর এমনভাবে মাঝে মাঝে চোথ নাথেন মুখের উপর যে চোখে চোখ ফেলতে কেমন একটা অস্বস্তি হয়। দিদিমার সপ্রে কথা বলছিলেন, আমি ঘরে যেতেই আমাকে খাত বাড়িয়ে কাছে টেনে নিলেন। আমি মিশাক ছিলাম না. বিশেষত কোনো প্রুষের সংস্রব বজিত হয়ে মান্য হবার দর্ন পার্ষ সম্বন্ধে আমার একটা অহেতৃক ভয়ও ছিলো। কিশ্তু তব্ব আমি ঐ ভদ্র-লোকের মৃদ্ আকর্ষণেই একটা ভয়মিখিত কৌতাহল নিয়ে কাছে গিয়ে মাথের দিকে তাকাল্ম। ভদ্রলোক অতান্ত স্থানর করে হাসলেন, তারপর পকেট থেকে লাল ফিতেয় বাঁধা এতো বড়ো এক বাকস চকোলেট বার করে আমার ছাতে দিলেন। নেবো কি নেবো না ভাবছিলমে হয়তো, এমন সময় কাপ চা হাতে নিয়ে আমার মা দ্বকলেন ঘরে—এই প্রথম তার মাথায় কাপড় দেখল্ম। কেমন একটা সলজ্জ সসংকোচ ভঞ্জিতে তিনি ভদ্রলোকের হাতে চা-টা দির্মেছলেন সেই দ্শাটা আমার এখনো মনে পডে। দিদিমা দীঘনিঃ বাস ফেলে বললেন, 'এই আগন্ন বাকে নিয়ে আমি বে'চে আছি, বাবা'। তাঁর চোথ সজল হয়ে

ভ্রলোক মার মুখের দিকে তাকিয়ে ভিলেন—একট্ সময়ের জনা বোধ হয় গিন অন্যমনস্ক হয়ে পড়েছিলেন—দিদিন্মার কথায় সতক হলেন। একট্ চুপ করে থেকে বললেন, 'আমি জানতুম না আপনারা এখানে দেশে ফিরেছি মারই দশদিন—হঠাৎ পশ্ আপনাদের ঠিকানা পেলা্ম। স্মন্ত আমার কতথানি ছিলো তা আপনাদের বোঝানো সম্ভব নয়। আমার বিলোত যাতার রাস্তাটা বলতে গেলে ও-ই সুগম করে দিয়ে-

ছিলো'—আমি লক্ষ্য করে দেখলুম বলতে বলতে তিনি মার মুখের দিকে তাকালেন আর মার সাগ্রহ দৃষ্টি তথুনি নত হরে গোলো। হঠাৎ উঠে দড়িলেন ভদুলোক—আমার একট্র দরকার আছে—আজ আর বসবো না'। নত হরে তিনি আমার দিদিমার পারের খুলোনিলেন—মার দিকে তাকিরে বললেন, 'কখনো ভাবিনি আপনাকে এ অবস্থায় দেখবো। সবই ভাগা'। মা চুপ করে রইলেন। আমি মার কাপড়ের আঁচল খরে দদ্বিয়ে ছিলুম, আমার গালে মৃদ্ টোকা দিয়ে বিদায় নিলেন।

তাঁকে দেখার এই আমার প্রথম অভি-জ্ঞতা। তারপরে তিনি <mark>আবার এলেন, আবার</mark> এলেন-আমার জামা-কাপড়ের শ্রী বদলে গেলো, আমার মার মুখের বিষয়তার পারিবতে ভরে থাকার একটা অম্ভুত আভা দেখা দিলো—ক্রমে ক্রমে সংসারে যেন একটা নতুন আলো অন্ভব করতে লাগল্ম। 78(28) আন্তে আন্তে এমন হলো যে, তিনিই এ বাড়ির অভিভাবক হয়ে উঠ**লেন।** মাকৈ আর অত পরিশ্রম করতে দেখতুম না, জীমার পরিচার্যার জন্য পৃথ্কির পরিচ্ছর একজন দ্বীলোক এলো, বাড়িতে রাধবার জন্যঠাকুর এলো—বাইরের কাজ করবার জন্য চার্কর রাখা হলো। প্রথমটায় দিদিমা ও মাকে প্রায়ই এ নিয়ে নানারকম ওজর-আপত্তি আর অভি-যোগ করতে শ্রনেছি, কিন্তু শেষ প্রতেত নিশ্চয়ই সেই জেদ তাঁরা বজায় রাখতে পারেন নি। আমার মার আত্মযশ্লা ছিলো অসাধারণ, কিন্তু সেই ব্যক্তিত্বময় অসাধারণ মানুষ্টির হ্দয়-ব্যত্তির কাছে নিশ্চয়ই তিনি হার মেনে-ছিলেন। একখানা ছোটো অম্টিন গাড়ি ছিলো ভদুলোকের। সকালে-বিকালে সেই গাড়িখানা নিজেই চালিয়ে তিনি আসতেন। তিনি সকালের দিকে সবশঃখ পনেরো মিনিটও হয়তো থাকতেন না—কেবল একটা খেজিথবর নেয়া~ তার পায়ের শব্দ পেলেই মার মাথে একটা আলো ছড়িয়ে পড়তো-হাতের কাজ শিথিল হ'য়ে উঠতো, অকাগণে এক কাজ থেকে আরেক কাজে নিজেকে নিবিষ্ট করবার চেণ্টা করতেন। আমি চুপি-চুপি কানের কাছে মুখ এনে বলতুম, 'সা'হব এসেছেন, মা।' প্রথম দিন তিনি স্মাট পরে এসেছিলেন আর আমাব মনে গে'থে গিয়েছিলো তিনি নিশ্চয়ই সাহেব। তারপরে দিদিমা কত ব্রিঝয়েছেন যে ইনি একজন খাঁটি বাঙালি—আমাব বাবার বিশেষ বন্ধ্—তারপরে কতবার উনি



ধ্যতি পরে এসেছেন কিম্তু আমার মনের সেই সাহেংকা ছবি কিছাতেই মহছ বায়নি। কাজ করতে করতে মা ঈষং মুখ তুলে বলে-ছেন, 'আস্কা। ভূমি পড়তে বলো গে'। এ কথার আমি দুঃখিত হয়ে যাই-যাই করেও দ,ড়িয়ে থাকতুম। এ ভন্তলোকের সামিধ্যের ক্ষেন একটা অভ্যুত আকর্ষণ ছিলো আমার কাছে। এত দেখে-দেখেও তরি কাছে আমি সহজ ছিলুম না। সেই বালিকা বয়সেও আমি কড়ো মেরেদের লজ্জা অন্ভেব কর্তুম। একটা পরেই ভপ্তলোক নিজেই মার খ্রে আগতেন। 'কেমন আছেন?' রোজই এক প্রশন। আমামি ভেবে পেতৃম না এই তেন কাল রাত দশটা পর্যন্ত দেখে গেছেন—আজ এট্রকু সময়ের মধ্যে জাবার কী হবে যে এই প্রদন। মা-ও রোজকার মতোই মাথা নিচু করে জবাব দিতেন, 'ভালোই।' একটা চুপচাপ কাটতো। তারপর মা চোণ তুলে তাকাতেন—আমি দেখতাম ভদুলোকও তাকিয়ে আছেন মায় দিকে। তাদের দ্রজনের মিলিত দ্রভির এমন একটা অনুভূতি আমার অপূর্যিরণত মনের মধ্যে ब्रि.। कतरका त्य म्हलनाक महल्यात महीपे থেকে বিক্লিক করবার জন্য আমি অভিথর হয়ে উঠতুম। মা তক্ষ্যিন ব্বে ফেলতেন আমার মনের কথা। সতক হয়ে দুড়ি कितिस्त निरञ्ज। এकটा निभ्वाम स्वतिस्य আসতো তাঁর মূখ দিয়ে। ভদ্রলোক বলতেন, 'কী হ'ব ?' মা জবাব দিতেন না—আমাব আভিড়ানো মাঞায় হাত দিয়ে ধীরে ধীরে আরো পরিপাটি করতেন। তারপরে তাঁরা মৃদ্ৰুক্তেও আরো দ্-একটা কথা বিনিময় করতেন।—সে সব কথার আমি মানে ব্রুতে পারতম না।

একদিন দিদিমা বলকেন, 'তোমাকে বাবা আরু কত কন্ট দেবো, তুমি যা করলে—'

'ও-কথা বলছেন কেন?' ভদুলোক একট,
আছত করে বললেন, 'স্মান্তর কাছে আমি
অংশবভাবে ঋণী ছিল্ম। ঋণ তো কথনো
শোধ হয় না, কিন্তু তব্ যদি তার হয়ে
কিন্তুটাও করতে পারি, সেইটাই আমার
সমতেয়ে মড়ো আননদ।'

'ও-কথা বোলো না—সে যদি তোমাকে কৈছে, করেই থাকে তার একশো গুণ তুনি ফিরিংকু দিয়েছো আমাদের। যে সময়টায় তোমার দেখা পেকেছিল্ম—বলতে আর লক্ষা নেই বে সে-সমর আমাদের সম্প্রম রক্ষা করাই দুঃসাধ্য হরে উঠেছিলো।'

আমাকে আপনি পর ভাবেন কেন?
আমার এই উপার্জনে যে আপনাদেরও একটা
ন্যায়া দবি আছে সেটা কেন ভাবতে পারেন
না। আন্ধীয় হলে কি কথনো এমন কথা
ধলতে পারতেন কি ভাবতে পারতেন?

'কথাটা যে কত সতা আমি বৃথি। আন্ধীয়না সৰ্বপাই শত্ব, অথক তাদের কাছে ভিন্দা চাইডেও আমাদেৰ লম্জা নেই কিন্তু--

'এর মধ্যে কিন্তু নেই। এবার তো আমাদের আনো দরকার বাড়ছে, হাত বাড়িয়ে আমাকে কাছে টেনে নিরে বললেন, 'আমাদের ব্লমেণিকে এবার ইস্কুলে দিতে হবে না? কীবলো, আটি?'

ু আমি তখন আট বছরের হয়েছি।

ঘাগরা দেরা স্ফের-স্কের ফ্রক পরি—
দুংপাণে লাল রিবন দিরে বেণা ঝুলিরে
দি—আর সব সময় মনের মধ্যে কেমন একটা
অহংকার বোধ করি। করেছদিন থেকে
ইন্কুলে ভর্তি নিয়ে মা-র সপে কারাকাটি
করছিল্মে—এ-কথার স্থা হরে লাজ্যার
ম্খ নিচু করে থাকল্ম। ভদ্রলোক বললেন,
'খ্ব ভালো ইন্কুলে ভর্তি ক'রে দেবো—
ইন্কুলের বাস আসবে ভো করে—আর তুমি
বেণা দ্লিয়ে ছুটে গিয়ে উঠে বসবে।
স্থামাদের তো তখন চিনবেই না।'

আমি একগাল হেসে লক্ষায় তাঁরই কোলের মধ্যে মুখ লুকোলাম।

'শোনো, শোনো—' আমি মুখ তুললাম না। এর পরে তিনি মা-র ঘরে গেলেন। আমি সেখানেই চুপ করে বসে রইল্ম। তাঁর ব্বেকর কাছটায় মুখ রেখেছিল্ম, তাঁর গায়ের সোঁগখ্য লেগে রইলো আমার প্রাণে।

ভার করেকদিনের মধ্যেই আমি ইম্কুলে
ভার্ডি হ'য়ে গেল্ম। লেখাপড়ায় আয়ার
ম্বাভাবিক ঝেক ছিলো, ইম্কুলের আবহাওয়া
আয়ার ভালো লাগলো। তাছাড়া ঝাড়িতে
আমি নিঃসলা ছিলাম এখানে অনেক মেয়ের
ক্ষাত্রা, অনেক দিদিমণিদের স্নেহ আয়ার
ভাবনে যেন একটা নতুন জগৎ এনে দিলো।
প্রথম বছরটা আয়ি ইম্কুলের বাস-এ যেতায়,
ম্বিতীয় বছরে আয়াদের একখানা বড়ো গাড়ি
এলো। আয়াদের মানে ভদ্রলোকের। তার
ছোটো গাড়িখানাও ছিলো, সেটা তিনি নিজে
বাবহার করতেন আর এ গাড়ি রইলো
আয়াদের জনা। য়া ঈষৎ ভিরম্কারের স্বের
বললেন, মিছিমিছি অর্থ নন্ট, কী দরকার
ছিলো আবার এ-গাড়িটা কেন্বরে?

'শস্তায় পেলাম।'

'শস্তায় পেলেই সৰ যদি কিনতে হয় তা হ'লে—'

'চুপ করো তো---'

ইদানিং মা-কে তিনি তুমি বলতেন। আমার ভালো লাগতো না, কিন্তু আমার তো কোনো হাত নেই। মা বললেন, আমি তো চুপ করেই থাকি। কিন্তু সতিত এ আমার ভালো লাগছে না।

'আছো, তোমার ভালো না লাগে, সামি আর বৃলু ঘরে বেড়াবো। কেমন?'

মা-র পিছনে দাঁড়িয়ে পেল্সিলের কাঠ চিবোজিলাম—মৃদ্ হেসে মৃথ নামালাম। আমাকে সন্বোধন করে জিন যথনই কোনো কথা বলেন ভিতরে ভিতরে আমি যেন কেমন এক রকমের শিহরণ জন্তুব করি। আমা প্রার তিন বছর ধরে ভদ্রলোকের সপো আমাদের এ-রকম ঘনিষ্ঠ ধোগাযোগ—বলতে গোলে তিনিই বাড়ির কর্তা অথচ একদিনের জনা তার মুখোমুখি আমি লালা কাটাতে পারিনি—আন্ধ পর্যক্ত তাকে আমি জোনো সন্বোধন করি না। আমার দিগিমা বলেন, ও আবার কী! বাবার বন্ধু, ভাছাড়া এমন মানুষ, কত ভালোবাসেন, কত যতা। করেন, ভার কাছে আবার লক্ষরে কী আছে? কাকা বলে তা একদিন ডাকেতেও দুর্নি নাং

মা বলেন, 'ও ব্নোছ'রে গেছে, মা। জনেম থেকে তোমা আরে দিদিমা—অন্য মানুষ ভাই ওর বরদাস্ত হয় না।'

বরদাস্ত হয় না—এ কথাটা নিতাস্ত মিথ্যা নয়। সাত্যই তিনি আমাদের এত ভালোবাসেন, এত যতা করেন, সংসারের সমস্ত সূৰ আমাদের জনাই আহরণ করেন তিনি, তথাপি আমি তাকে বরদাশ্ত করতে পারি না। এমন নয় যে আমি তাঁকে ভালো-বাসি না—তাঁকে পছন্দ করি না কিংবা তাঁর কোনো ব্যবহারই আমার মনের প্রতিক্ল হয়েছে--বিশেষ ক'রে আজ জীবনের এইখানে দাঁড়িয়ে পারক্ষার উপলব্ধি করছি যে আমি তাঁকে দেখামাত্রই অতিরিক্ত ভালো-বেসে ফেলেছিল্ম ব'লেই তাঁর প্রতি আমার একটা অহেতৃক বিশেবষ ভাবও ছিলো। আমার বয়সের মেয়ের প্রতি যতটা মনোযোগ দেয়া উচিত এবং যে-রকম মনোযোগ দেয়া উচিত, তিনি কেবলমাত্র সেটাই কেন দিয়ে-ছিলেন সেটাই ছিলো আমার প্রম হতাশার কারণ। আমার শিশ-মন সেটা বোঝেনি, আজকের অভিজ্ঞ মন দিয়ে সেটা বিশেলষ্ণ করে ব্রুবতে পার্রাছ যে আমাকে ছাড়িয়ে প্রথিবীর অন্য কারো প্রতি তাঁর একতিল বেশী আসম্ভিও ছিলো আমার পক্ষে দ্বঃসহ। মাত্র ঐচিত্যের মাপে যে মনোযোগ তিনি আমাকে দিলেন, বন্ধুপত্যীর প্রতি সে মনোযোগের প্রশাই উঠলো না-তাঁর জন্য তিনি সারা প্থিবী জয় ক'রে আনতেও শ্বিধা বোধ করতেন না। আমি আমার শিশ**্-**মনের সহজাত প্রবৃত্তি দিয়ে প্রথম দিন থেকেই সেটা উপলব্ধি ক'রে ভিতরে ভিতরে যদ্রণাপেতৃষ। হয়তোমা-র প্রতি আমি ঈর্ষাকাতরই হয়েছিলাম।

আদেত আদেত বড়ো হ'তে লাগল্ম।
আমার সতেরো বছর বয়স হলো—সুথে
সম্ভিতে সাচ্ছলোতরা সংসারে আমার
কোনোই দুঃখ ছিলো না, তব্ আমার ভেতরে
তিতরে কেমন একটা ভালো—. নাগা-বোধ
অবিপ্রান্ত আমাকে কণ্ট দিচ্ছিলো। একদিন
পড়তে পড়াত হঠাৎ উঠে এলাম মা-র কাছে।
মা সোয়েটার ব্নছিলেন। মা-র নতদ্বিত
স্বদর ম্থের দিকে তাকিয়ে একট্ চুপ ক'রে
দাড়িয়ে রইলাম। তার মস্ব রংয়ের
স্গাঠত দ্বিট হাতের ওঠা-পড়া দেখতেদেখতে তাকি আমার সময়বয়সী মনে হ'তে
লাগলো। হঠাৎ চোথ তুলে তিনি আমাকে
দেখতে পেয়ে হাসিম্থে বললেন, 'কী রে?'

গশ্ভীর মুখে জিল্কাসা করলাম, 'কী ব্নছো?'

'তোমার সাহেব-কাকার জন্য একটা সোয়েটার। কিছ' বলবে?'

কোনো ভূমিকা না ক'রে হঠাং বললাম, 'আছো মা, এ ভক্রলোক তো স'তাই আমাব কাকা নন, তবং কেন আমরা তাঁরটাই ভোগ করি?' মা চকিত হ'য়ে আমার মুখের দিকে তাকালেন। এ রকম একটা প্রশন যে আমার মনে উঠতে পারে, একথা তিনি কল্পনাও করতে পারেন নি।

ছকে একট্ব সামলে নিয়ে বললেন, কো বলতে কী বোঝায় তা কি ভূমি

ার বন্ধ্ব, এই তো? কিন্তু বাবার বাও না কাকাও না—লোকে তাঁকে বে। তাঁর গাড়ি চড়ে ইম্কুলে বাই— গ দিয়ে ভালো বাড়িতে থাকি—তাঁর ভালো-ভালো পোশাক পরি—আখ-লাগে আমার।'

হর সোয়েটারটা মা বেন ঝেড়ে ফেলে সোজা উঠে দাঁড়িরে কঠিন গলায় ভালো যিনি বাসতে জানেন তিনিই খাঁয়—ভালোবাসাই সম্মান—ভালো-জীবন—তার চাইতে বড়ো কিছ্

কে যদি বলে—'
কে কী বলে না বলে তা তোমাকৈ
বে না, বলে, '

যা সমে বললাম 'কেন ভাবতে হবে

য়া হয়ে বললাম, 'কেন ভাবতে হবে ক নিয়েই তো আমাদের বে'চেচ হবে।'

্বে! মা একটা মম'ভেদী গলায়
সন্দোধন করে সহসা ঘর থেকে
গেলেন। আমি ষেন হঠাৎ একটা
খেয়ে জেলে উঠলাম। এত বছরের
জীবন সন্ধন্ধে যে আমার মনে কেন
বল প্রশন ধাক্কা দিছে, তা কি
জানি? আট বছর বয়স থেকে
প্রতিদিন প্রতি পলে আমার মনের
ক্লেলালত হয়েছে, এতদিনে তার
স্পণ্ট উপস্থিতিতে আমার সারা
ভাবে গেলো।

क्लरवला ভদুলোক यथन এलেन ম্জায় সংকোচে এতটাফ হ'য়ে গিয়ে বরে লাকোলাম। ছ' বছরে বয়স ই যোল বছর বয়স প্যশ্তি আমি র্থাছ, তার যতে, তার ভালোবাসায়ই -মন ভ'রে আছে, আর তার সম্বর্ণেধ মি এত বড়ো কথাটা উচ্চারণ করেছি ়ংখে ব্ৰুক ভ'রে গেল। তিনি কি ার? তিনি কি আমাদের দয়া করেন? থ কি কখনো সাহায্যের পর্যায়ে ামি জানলা দিয়ে তাঁকে উঠে দেখলাম। সেই দীর্ঘা, বলিষ্ঠা, উন্নত -घन कारना इन जाकज्ञाम कड़ा-ই প'র্যাত্রশ বছর বয়সেও তার্নোর উম্জবল চামড়া। সহসা আমি আমার গ্নে গ্নে তার সংগ্র আফর হিসেব করলাম।

রীতি তিনি দিদিমার কাছে গিরে। আমি আমার ঘর থেকেই সেটা করলাম, কেন না আমার সমস্ত আমি দেদিনেই নিবিষ্ঠ করে নাম। দিদিমার শরীরের অকথা ছলো না। কিছুদিন থেকে তিনি বিবাহের জন্য অভানত ব্যাকুল হয়ে-এবং আমি লক্ষ্য করেছি সেই র সপো এই ভদ্যলোকের পরিপ্রণ লো। কাছাকাছি ঘর—আমি তাদের মধানে কান দিলাম। দিদিমা বললেন, 'বদি তুমি ভালো মনে করো তা হ'লেই ভালো—আমি কী বুঝি!'

'তাহ'লে একদিন নিয়ে আসি ছেলেটিকে!'

'আনো। ওর মারের সপো কথা ব'লে দ্যাখো।'

'ব্ল্কেও জিজ্জেস করতে হয়।'

'ব্লা:'—দিদিমা বোধ হয় একটা হাসলেন, 'ও আবার কী বোঝে?'

'না না, ওকে আপনি অবহেলা করবেন না। ওর মতো ব্লিখমান মেয়ে বিরল।'

'তোমরা দ্যাথো ওর ব্দিধ। ওর মা-ই
আমার কাছে শিশ্ব, আর ও তো তার মেরে।'
আর অপপ দ্ব' একটা ট্করো কথা কানে
ভেসে এলো, তারপরে তিনি উঠে এলেন
মার কাছে।

মা-র ঘরসংলপন ছোটু একফালি বারান্দা ছিলো। সেই বারান্দায় এসে জনতোর শব্দ থামলো—ব্রালাম, মা ব'সে আছেন সেখানে। অতানত মৃদ্,স্বরে ভদ্রলোক কী বললেন আমি ব্রাতে পারলাম না, অতানত ক্লিন্ট গলায় মা জবাব দিলেন, কিছু না।'

আমি অত্যত নিঃশব্দে দরজা খুলে বারাধ্বার পাশের ঘরে এসে বসলাম।

ভদ্রলাক কললেন, 'ব্লুর বিয়ে সম্বর্ণে তোমার মতামত দাও।'

'আমি ক**ী বলবো, তুমি যা** ভালো বোঝো তাই-ই হবে ৷'

মা-র তুমি সম্বোধনে আমি আঁংকে উঠলাম। যে সদেশহ আমাকে প্রতিদিন ক্ষয় করছিলো, মা-র সংখত আচরণ প্রতিম্হুতে তার বির্দ্ধে সাক্ষী দিয়েছে। এই দশ বছরের মধ্যে এমন একটি প্রমাণও পাইনি যা থেকে সেই সম্পেহকে আমি রুপ দিতে পারি। সম্পত শরীরে একটা বৈদ্যুতিক অনুরণন অনুভব করলাম।

'তোমার মেয়ে—'

অত্যত উদাস গলায় মা বললেন. 'মোয়ই আমার—আর সবই তো তুমি করেছো—' 'ভাহ'লে তোমার মত আছে ক্লিনা, বলো।'

'আছে 🕈

'তোমার আজ কীহয়েছে?'

'তোমাকে একটা কথা বলবো।' মা-র গলা অত্যন্ত দৃয়ে।

'বলো।'

'এগারো বছর ধ'রে তুমি **ষত ঝণ** দিয়েছো সব আজ আমি শোধ করে দেবো।'

'সামাজিক অনুষ্ঠান? যা আমার প্রত্যহের স্বণন—সমস্ত জীবনের বিনিমরে একমাত্র যা আমার কামা—ভূমি কি স্তিচ সেই কথা বলতে চাইছো?'

'হাাঁ, আমি মনস্থির করেছি—তোমার আমার মূভ জীবনকে এভাবে বিচ্ছিম করে রাথার কোনো যুদ্ভি নেই, সেটাই পাপ।'

"মণি, এ কি সতিয়?'

'হাাঁ, এতদিন ঈশ্বর সাক্ষী ছিলেন, এখন মান্যকে সাক্ষী করে নিশ্চিত হতে চাই—'

আমি ঘরের মধ্যে সহসা দুই কানে
হাত চেপে ধরলাম, তারপর একটা অম্ফুট
আতিনাদ করে ছুটে বৈরিয়ে এলাম সেখান
থেকে। দিদিমার মুমুর্যু দেহের উপর
ঝাপিয়ে পড়াতই তিনি ক'কিয়ে উঠলেন।
'কী, কী, কী হয়েছে?' দুর্বল হাতে জড়িরে
ধরে অতাশত ব্যাকুল হাদয়ে তিনি প্রশন
করলেন আমাকে। আমি কারার বেশে
অনেকক্ষণ বলতে পারলাম না। একট্ শাশ্ত



হয়ে বললাম, 'আমি বিষে করবো না, দিদিমা, বিষে ভেঙে দাও।' দে কী কথা—
আশ্চর্য হয়ে তিনি তাকিয়ে রইলেন আমার দিকে। আমি নিলালেন মতো বললাম, 'যাকে মন দিয়েছি—তাকে ছেড়ে আর কাউকে বিয়ে করতে পারবো না।'

আম র কথা শানে দিদিমা হতবাক্ হ'লেন।
আমাকে ঠেলে নি:জর গারের উপর থেকে
তলতে চেণ্টা কারে বললেন, 'বলছিস কী
তুই ? আমি যে কিছুই ব্রুতে পার্বছ
না।' আমি নিশ্বাস ফেলে বল্লাম, 'আমি
বিমালন্দ্রকৈ বিয়ে করবো।'

'বিমলেগন্—? বিমল? তোর সাহেব-কাকা?' দিদিমা কাঁপতে কাঁপতে উঠে বসলেন—আমি তাঁকে দুই হাতে জড়িয়ে ধ'রে ব'লে উঠলাম, হাাঁ, তাঁকেই। তিনিই ভাষার ব্যামী।'

দিদিমার মুখ দিয়ে আর কথা সরলো না। স্তব্ধ হ'রে মরা মান্দের মতো ব'সে রুইলেন। সম্ধারে অধ্যকারে ভ'রে পোলো দ্বর। থানিক পরে নিঃশব্দ পায়ে মা ঘরে এসে আলো জন্লকোন—আমাকে মুখ গ্রেড়ে প'ড়ে থাকতে দেখে অবাক হ'রে বল্লেন, 'এ কী বুলু! কী হয়েছে?'

আমি জবাব দিলাম না। দিদিমা বললেন, 'মলিনা দোনো।' মা কাছে এসে দাঁডালেন। একট চুপ ক'রে থেকে বললেন, 'বিমলের সংগই বৃলুরে বিয়ে ঠিক কর। বয়সে একট্র বড়ে তা আর কী! আমাব শাদ্যিভ আর শবশ্বও কৃডি বছরেল হোটো-বড়ো ছিলেন।'

'এ কী বলছে: মা?'

'ঠিকই বলছি, এর চাইতে ভালো আর তুই কী আশা করিস?'

ছিছি, মা শিহ্রিত হ'রে উঠলেন, 'ও ও'র কন্যার মতো—এমন অসংগত কথা ডুগ্লি ভাবলে কেমন ক'রে, মা?'

'কিছ্ই অসংগত নর সংসারে। তুই তাকে বলবি এ-কথা।' মা-র মুখে একটি কালো ছায়া বিশ্তীর্ণ হ'লো। আমার মাথায় ঈশং ঠেলা দিয়ে বললেন, 'দিদিমা কী বলছেন দুনলে, বুলু ?'

আমি নিঃশব্দে প'ড়ে রইলাম। মা ভাবার বললেন, 'দিদিমা কী বলছেন— বুল্ব—'

আমি নিঃশব্দ।

'হ';—' মা-র মুখ দিরে এ-শব্দটি এমন-একটি মুডি' নিলো আমার কাছে বে, জামার মনে হ'লো সমস্ত ঘরে যেন আগ্রন লোগেছে, পুড়ে এক্রনি ছাই হ'রে বাবে।

অতালত একটা অশান্তি আর অস্বস্তিতে কাটতে লাগলো সময়। বাড়িময় যেন একটা ভূতের ফিশফিশানি, কেমন-এক অদৃশ্য ভয়ে মৃহ্মুহ্ আমি কে'পে উঠতে লাগলাম। রাত্তিতে মা-র সংগা পাশাপাশি শুয়ে সর কাটতে লাগলো—আমি অনুভব করলাম তিনি বুমোননি—তিনিও হরতো অনুভব করলেন যে, আমার টোখ নিঘ্ম। অনেক রাতে আমার গারের উপর হাত রেখে মা ভাকলেন, 'বুলু, যুমিয়েছো?'

'ना।'

'তোমার দিদিমা যা বললেন, তা-ই কি তোমার মত?'

'হাা ৷'

'তুমি কি জানো এতদিন ধ'রে এ-সংসারকে তিনি লালন-পালন করেছেন কার জন্য।'

জানি।'

'কী জানো?' 'তোমার জনা।'

'ত.হ'লে তুমি জানো যে আমি তাঁর জীবনের প্রধান কেন্দ্র? আমাকে ঘিরেই তাঁর স্বেশংখা'

क्षानि।'

'ভবে ?'

'আমি তাঁকে ভালোবাসি। তিনি ভোমাকে যত ভ লোবাসেন তার চাইতে অনেক, অনেক বেশী আমি তাঁকে ভালোবাসি।

অতানত ধরি গলায় মা বলালেন, 'তুমি কি বিশ্বাস করো না যে তাঁর অতথানি জালেবাসা আমিও অন্তরের মধ্যে গ্রহণ করেছি? আর তা সার্থাক করবার একমাত বাদা ছিলে তুমি? তোমার জনাই অমি আমার সম্মৃত ইচ্ছাকে এতকাল গলা চিপে বেয়েছি।'

'বাবার মৃত আস্থাকে তুমি অসম্মান করেছো।'

'আমি ম'রে গেলে কি তোমার বাবা আমাব আত্মর কথা ভাবতেন?'

'তুমি দতী, তিনি দ্বামী।'

'সে তো সমাজের অন্শাসনের প্রভেন' তাত্মার তো কেনো ভেদাভেদ নেই।'

হঠাৎ আমি ভেবে পেলাম না এ-কথার की জবাব দেবো। একটা পরে ম:-ই বললেন, 'ত্মি আগ্নার সন্তান। শরীরের বিন্দ্য বিন্দ্য রক্ত দিয়ে তিলে-তিলে আগ্নি তোহাকে লালন করেছি, প্রাণের অধিক ভালোবেসে, সাধ্যের অতিরিক্ত যত্ন দিয়ে ভোমাকে বড়ো হ'তে সহায়তা ক'রেছি সতি৷ বলতে, এ-ভদুলোকের সাহাযা তোমার কথা ভেবেই গ্রহণ করেছিলাম। কিন্তু আজকের দিনে তুমিই আমার পরম শত্রা আজ এই অন্ধ-কারে শ্রে ভৌমার সঙ্গে যে-কথ আমাকে বলতে হ'লো সেটা মা-মেয়ের কথা নয়, আমার পক্ষে তার চাইতে লম্জার, তার চাইতে মন্নাশ্তিক আর কী থাকতে পা'র? কিন্ত তব: তোমাকে বলি, অনেক দিন আগেই তিনি প্রস্তাব করেছিলেন, আনি শুক্তি হইনি কিন্তু কাল আমি তাঁকে কথা দিয়েছিল;মু--'

'মা !'

'ব্লু!'

'মা—' কান্নার বে.গ আমার সমস্ত শরীর উদ্দেশিত হ'তে ল.গলো। একট্ পরে মা আমাকে ব্কের কাছে টেনে নিলেন —একটা নিশ্বাস নি'ত-নিতে বললেন, 'তাদ্দেটর এ কী বিভশ্বনা!'

পরের দিন সকালে ঘুম তেঙেও বিছানায় পাড়ে ছিল্ম। মা কখন উঠ গেছেন জানি না। জানলা দিয়ে একফালি রোদ এাস পড়েছিলো বিছানায়, ব্রুগাম বেলা হয়েছে। সহসা ঐ ভদ্রলোকের গলা শ্নে ধড়রাড় ক'রে উঠে গেলায়। দ্রতে পারে তিনি ঘরে **ঢ.কলেন, আ**মাকে তখনে, বিস্থানায় দেখে অবাক হ'রে বললেন, ও মা এখনো ঘ্নমুচ্ছো? ওঠো, ওঠো, মা কই? শিগাগির একবার বসবার ঘরে এসো।

চোখ তুলতে পারলাম না সংকোচ। ততক্ষণে তিনি বাসত হ'য়ে অদৃশা হলেন। দেয়ালে ঠেকানো তত্তপোশে হেলান দিয়ে ব'সে রইলাম চুপ করে। হাত-পা যেন কেমন শৈথিল হ'য়ে এলো।

থানিক পরে মা এলেন ঘরে। সেই কালো-পাড় শাড়ি, মাথার আঁচল ঈষণ তোল।
— সর, হার গলায় চিকচিক কবছে— সেই বকম শানত, গশভীর মুখন্তী। এতদিনের দেখা মাকে আবার দেখলু মা। মাথার কাছে অংশা-ভেজানে জানলা খলে দিয়ে বললেন 'তুঠো, কত বৈলা হ'লো।' একটা ছোলে কাল বিমালবাৰ বলেছিলেন একটি ছোলোভ নিয়ে আসবেন— তিনি এসেছেন। তোলা সংগ্র দেখা কবাবন।'

ভা কণ্ডিত হালো। উঠছিলম্ থলকে দক্ষিত কললাভ ভোনি কেন।

ক্ষিপ্রকাদে বিশৃত্থল বিভাগ প । ববতে করতে মা জবাব দিলেন, ' সই কো আন আর নেই—তে মার ইচ্ছা পারণ করব। চেন্টাই আমি করবো। কিন্তু বাডিতে যথ-অতিথি আসেন তাঁর সংগ্য শোভন ব্যবহাব। ভাতা।'

অমি মেনে নিলাম। একট্ পরে রা বেবিয়ে গেলেন ধর ধেকে—আমি বাধবার গিয়ে মুখ-হাত ধরে যথবৌতি ভচু হ'রে এ-মনে ওলাম।

আমার বরস এবং বাদিংও যোগা ও পার। বিমালবাবা আলাপ করি যু দিলো -আভাত লাজ্যক চোথে একবার তাকিষেই মাুখ নামিয়ে নিলো ছেলোট।

বয়স বাইশ-তেইদোর বেশী নয় ্টেউ-খেলানে বড়ো-বড়ো ঘন আা াশ্খেল চুল মুখে ঘিরে আছে। ভা**লে** ্রে তাকে দেখবার অবকাশ ঘটলো- কেননা সে নিজে নতদ†ণ্ট--আর বিষপ্রশাস্কর ব্ 5[[/.**#** ভাকতে গেলেন। খুব যে একটা বলেবন প্রায় তা নয়—কিন্তু স্বাস্থ্যের আভাভ্য মুখ। কালে: আর সুসলিবিণ্ট ভুরুর তলায দুৰ্গাট ভাসা-ভাসা চোখ। একটা কেশে একটা লাল হ'য়ে ছেলেটি মুখ তুললো এবার--ন'ডে ১'ড়ে ব'সে বললো 'অ পনি তে স্কটিশেই পড়েছেন, আমিও ওই কলে^ও পড়ত্যা।

'3 l'

'খ্ব ভালো লাগতো, আমাদের একটা আলদা দলই ছিলো—'

'আমার ভালো লাগে না—' উৎসাংহ'ই
মুখে পাথর চাপা দিয়ে ব'লে উঠল ম আমি।
ফামার নিকর্ণ জবাবে হঠাং থতমত খেযে
চুপ ক'রে গোলা ছেলেটি। আমি বললাম
ভারি খারাপ ছেলে সব। এ-দেশে নাকি
এখনো ছেলেমে'র একসংজা শিক্ষার সময়
হাসাছে—আমার তো মনে হয় না।' ঈযং
প্রতিবাদের গলায় (যদিও খ্ব স্তিমিত)
বল্লো, 'তা দেখ্ন—সব মেয়েও তো কিছু

গ হয় না—ছেলেদের মতো তাঁদের ও ব্যতিক্য আছে।'

জানি না।'

মান্ত্র কথাবার্তা যে অত্যান্ত উপত ও
। ছিলো সে-বিষয়ে আমি অচেতন
ম না। বিরক্তির বান্দেও ওকে আচ্ছম
দিতে আমার ভালো লাগছিলো। ও যে
ছে আর সে-আসা ওর পক্ষে অতান্ত
হিসের কাজ হয়েছে সে-কথা ওকে
নো ভালো। আমার জবাবের পর একটেথেমে রইলো ওর জিহন, আমি উঠে
র জনো মনে-মনে প্রন্তুত হচ্ছিলান,
া মুখ তুলে বলালো, 'আজ কথন
ন?'

খাবো! কোথায়ে ?'
'কেন, বিমল-দা যে বললেন--'
'কী বলেছেন বিমলবাব; ?'
'আমাকে তো ধ'ৱে নিয়ে এলেন--'

ওর কথার মধিখানেই মা আর বিম্নতঘরে চ্কেলেন। ও থেমে লিয়ে তাড়াচেষার ছেড়ে উ.ঠ দড়ালো। মৃ: ফাসে
লগেন, উঠছে কেন? বোসো। ব্লুর,
তো, চা নিয়ে এসো। আমি সব ঠিক
রেখে এসেছি।

র এই আদেশ আমি মনে-মনে অপছন্দ ম। চাকর দিয়েও অন্যাস এটা য়। তবু উঠতে হলো।

ায়ের পর্বাট কিছু বিরাট ছিলে। না.
অন্যান্য দিনের তুলনায় একট্ বেশা।
হাতে কারেই সব নিয়ে এল.ম।
বাব্ সাহায্য করলেন। আলাকেও
াহালে ওদের সলো চা থেতে। এতদেখল্ম চেলটি সহজ হায়েছে, অতানত ভারে কথা বলাছে মা-র সংগা। অবশেষে
মর্গসাংশত প্রস্থা করে এলো।

চখন যাবেন, বিয়প-দা : থাম একচোথ প্রশন নিয়ে তাক লায় বাব্রে দিকে। মা-র মা্থ দেখে মনে এই যাওয়ার থববার য়া জানেন।

ামলবাব্ হাত্ঘড়ির দিকে এক নজর যে বললেন, 'বাবা! এর মধোই সাড়ে ৷! এক কাজ করো, অসিত, তুমি আর যেয়ে না, এখানেই যা-হয় দুটো খেয়ে অমি এদিকে বারোটার মধ্যে কজকর্ম চ'লে আসি, তারপরে—'

िव**्ल ७५**:लन, 'भार्र हे नवस्त्रस

া না, অপাণেগ একবার আত্মাকে দেখে অসিত বাদত হ'য়ে বললে; আপনারা যাবেন বলনে, আত্মি ঠিক সেই সময়ে যা।

কাথার বাবে, মা?' আমি আর কৌত্-।াথতে পারলাম না।

আমার মাথের দিকে তাকিয়ে
ন. 'তোমার সাহেব-কাকা আজ
নকেল গাডেনে যাচ্ছেন তোমাদের
' মাখ থেকে কথা শেষ না-হ'তেই
বাব বাসত হ'রে ব'লে উঠলেন, 'তুমি
বাদ ?'

াহেব-কাকা ব'লেই মা আমার মেজাজ ক'রে দিয়েছিলেন। কালকের ঐ ব্যাপারের পরেও মা যে কী ক'রে তাঁকে আমার কাকা ব'লে উচ্চারণ করলেন—জানি না—উপরুদ্ধ মা যাবেন না ব'লে বিমলবাবরে এই ব্যাকুলতা আমাকে চাব্রক মারগো। দুর্বিনীতের মত উঠে দড়ালাম চেয়ার ছেড়ে—আলস্য ভাঙতে ভাঙতে অবহলোর ভংগীতে বললাম, তোমরাই ঘাও, মা—তামি যাবো না।'

'কেন?' বিমলবাব বললেন, 'তোমার জনোই তো যাওয়া—তুমি না-গেলে কি হয়?'

'আমার জনো কিনা জানি না—তবে হ'লেও আমি যাবো না, এটা ঠিক।'

'তোমার আবার কী হ'লো?'

'এর মধ্যে একটা হওয়ানা-ইওয়ার কী
দেখছেন, বিমলবাবর ?' আখার বিমলবাবর
দশেবাধনে উনি অবাক হারে গেলেন—
মা-র মুখ, রাগে কি লক্জার
জানি না, নৃগুতে লাল হরে
উঠলো। অমি প্রহো না করে অতিরিঞ্জ
সহজভাবে তাকালাম সেই আগেতুক আর
অপ্রস্তুত ছেলেটির মুখে—সহাস্যে বললাম
আছো নম্প্রনার, আশা কবি আবার দেখা
হবে। প্রতাভিবাদনের আর অপ্রক্রানা করে
ভিন্তি প্রাণীকে বিমৃত্তি করে দিয়ে আবার
সোলা চলে এলাম িজের নিজনি ঘরে।

তারপরে স্থাসত বাপুপারটাকে যা অবশ্যই
কোনো রক্ষে তারি নিজের ওচুতা আর
ন্থাটা দিয়ে মানিয়ে নিয়েছিলেন। প্রায়
গণ্টাখানেক পরে আয়ার যুখন মাথা ঠণ্ডা
হার এলো, যা তথ্য থার এলেন। সোজা
তিনি আয়ার যায়েখাম্থি সাঁড়িয়ে প্রশন
করলেন, স্মান্ত জীবনটা যে আমি তোমার
জনাই উৎসর্গ করে বেগেছিলাম, তুমি কি
তারই প্রতিশোধ নিজে, ব্রেল্, গ্র

ভীর চোথ চকিতে তুললাম। জবাব দিলাম না।

বলো, জবাব দাও—আমার চোথের সামনে আমার হাতে গড়া সংহান এত বড়ো উদ্ধত আচল্ল করবে, অহে তুক অস্থ্যান করবে শ্রাধ্যেরের, আর আমি চুপ করে তা দেখবো? বল, তুমি ভেবেজো কাঁ?

কথা বলতে বলতে মানুর নিশ্বাসের উত্থান-পতন দুত হ'লে। ছেলেবেলা থেকে মা আমাকে দেনহ দিয়ে, মমতা দিয়ে, বন্ধতোর উত্তাপ দিয়ে বডো করেছেন – শাসন করেছেন তার ফাঁকে-ফাঁকে-আমি জানতে পাগি নি, তাঁর সংগ, তার স্পর্ণ, তাঁর স্বভাবের মাধ্রী আমার সারা হাদয়ের সকল অভাব মিটিয়ে রেখেছিলো আর আজ দুই ৮০০ বিফারিত ক'রে দেখলাম, তার চাইতে বড়ো শন্ত্র আমার কেউ না। হয়গো কিছা বলতে যাচ্ছিলাম—ভীব্ৰ কণ্ঠে মা ব'লে উঠলেন, 'আমারই অন্যায়, আমারই প্রপ্রয়ে আজ তোমার এতথানি দুঃসাহস। যিনি তোমার পিতৃত্ব্য তাঁকে তুমি ভালোবাসো— যে-মাহাতে তুমি এ-কথা উচ্চারণ করেছিলে সে-মূহতে ই—'

ধৈয'চুতি ঘটলো — মুখে-মুখে ব'লে উঠলাম, কেন, কিসের জন্য? কেন তুমি তাঁকে আমার কাকা ব'লে সম্বোধন করলে একটা আগে?'

'তুমি তাঁকে যা-ই ভাবো ভিনি তোমার পক্ষে তাছাড়া অন্য-কিছ্ হ'তে পারেন না।' অসভোর মতো বললাম, স্বামীর বশ্ব হ'বে তিনি তোমার পক্ষে অন্য হ'তে পারলে আমার পক্ষেও হ'তে পারেন।'

'ব্লু, আমি তোমার মা!' সহসা মা-র গলা কান্নার আবেগে ব্রেজ এলো। আমি নিব্ত হতে পার**লাম দা—অনেক** দিনের अत्मक क्रिमां के क्रिया श्राप्त श्राप्त को क्रम করেছি এতদিন ধবে আ**জ তা কথার রেখায়** মূতি নিলো। যাঁকে বাকের মধ্যে পাবার জন্য অবিরত ইচ্ছার তীর আবেগে আমি মরে যাচ্ছি, যাকৈ না-পেলে সমস্ত জীবন আমার গভীর অন্ধকারে বিলা্ণত হ'য়ে যাবে ব'লে মনে হচ্ছে,—তাঁকে যে-মেয়ে থেকে বিচ্ছিন্ন আমার কাছ করে যে-মেরের **छ** ना আজ অনাদিকে মুখ ফেরাতে পারেন না, তাকে আমি ক্ষমা করতে পারি না্যা হ'লেও না। চোখে-চোখে তাকি-য়ে বললাম—'তিনিভ অবিবাহিত, আমিও কারে৷ স্ত্রী নই—তোমার জনা, শুধু তোমার জনা আমার সমস্ত জীবন আ্রজ বার্থ হ'তে ব্যস্তে ত্থিই আমাদের জীবনকে মুক্ত করবার একমান্র প্রতিবন্ধক।'

'কী হয়েছে?' — ঘরের মধ্যে সহসা বিমলবার্ চুকলেন এসে। 'বলুর আজ হ'লো কী? মেজাজ এত বিগড়েছে কেন?'

আমান কথা শানে মানুর চোখ দিয়ে অবিবল জল গড়িয়ে পড়লো, আরু তাঁকে দেখে অমি চুপ করলমে।

'হ'লো কী তোমাদের ?' আশ্চয় হ'রে তিনি একবার মানর দিকে, একবার আমার দিকে তাকালেন, তারপর আমার একাশ্চ কাছে এসে তবি সেই বলিষ্ঠা দেনহত্তরা ব্যক্তির মধ্যে আমাকে টেনে নিয়ে বললেন, 'কী ইয়েছে বলো তো, ব্ল্ল্। লক্ষ্মী মা

ছিটকৈ সরে এলাম **ব্কের সামিধ।** থেকে। একন-বিভাড়ত গলায় বললাম, আপনি আয়াকে যা বলেন কেন?'

অভ্যাত অপ্রতিভ হ'য়ে থমকে গেলেন ভদ্রশোক। হঠাং আমি দ্ব' হাত বাড়িয়ে ঝাপিয়ে পড়লাম তাঁর ব্কের উপর; দ্টু আলিগেনে আবন্ধ করে কে'দে মূখ ঘ্যে-ঘ্যে বলতে লাগলাম, 'আমি আপনাকে ভালোবাসি—থ্য ভালোবাসি—মা-র চাইতে বেশী, অনেক, অনেক বেশী।'

আমার এই অতকিতি আবেশের জন্য প্রস্তুত ছিলেন না-আমার এ-রক্ম অসংলাপ কথাবাতীও অবশাই তাকৈ বিরম্ভ ও বিস্মিত কারে থাকবে---আমাকে 'ঈষৎ সরিয়ে দিয়ে বললেন, 'শাহত হও, কী হয়েছে খুলে বলো।' তার গলার গদভীর স্বরে হঠাৎ আমি ভয় পেলাম।

তাঁর প্রভাবত ধাঁর কণ্ঠ আরো ধাঁর হ'লো, পিড়াছের গাদ্ভাঁথ ছড়িয়ে পড়লো তাঁর মুখে, মার দিকে তাকিরে **বললেন**, **িতৃমি যাও, অ**সিতকে বসিয়ে রেখে **এসেছি**।'

মা পাধরের ম্তির মতো দাঁড়িয়ে ছিলেন — ভাবে মনে হ'লো না কোনো কথাই তাঁর কানে চ্কেছে। বিমলবাব, ম্থের দিকে তাকিরে একট্ উদ্বিদ্দ হলেন। আবার বললেন, 'আমি ব্লুর স্পো কথা বলবো—তুমি অসিতের কাছে গিয়ে বোদো।' মা আদেত ব'সে পডলেন মেঝে উপর।

'কী হোলো, মণি, কী হোলো', উণ্ডালত গলায় ব'লে উঠলেন বিমলবাব, 'ব্লু, শিগগির জল নিয়ে এসো।'

চে'চামেচিতে বাড়ির সবকটি প্রাণীই
কড়ো হ'লো সেই ঘরে—দেখলুম, অসিতও
এসে দড়িংয়ছে দোরগোড়ায়। কেবল অসহায়
দিদিমা ও-র ঘর থেতে কাংরাতে লাগলেন।
বাাকুল হ'য়ে বিমলবাব বললেন, 'এই অসিত,
তুমি শিগগির ভক্তর মুখাজিকে নিয়ে এসো
—একট্ দেরি না—' তারপর মা-র মাথাটা
কোলের উপর টেনে নিয়ে ডাকতে লাগলেন,
মণি, মণি—শোনো, এই শ্নছো?' তার
কার স্কেকী ছিলো সে-কথা আমি কেমন
ক'রে বোঝাবো? হয়তো ভালোবাসার
অতলম্পাশী সম্মোহন ছিলো তাঁর ক্তেই।
অমি মুখ্য বিষ্ময়ে রইলাম তাঁর মুখ্যের
দিকে চেয়ে।

বিশেষ-কিছ্না — একট্থানি সময়ের জনা হয়তো মা-র চৈতনা লুগত হয়ে-ছিলো, থানিক পরেই তিনি চোথ থ্লালেন। ডান হাতটি একট্নেড়ে ক্লান্ত গলায় ডাকলেন, 'ব্লু, আয়।'

ম্থের কাছে এগিয়ে গিয়ে ব্যাকুল আগ্রহে মা-র কপালে হাত রাখলাম-তবি স্কানর ম্থে দুঃখ-বেদনাব ললি। একট্ আগে যে-মা আমার পরম শুরু ছিলো আমার জীবনের চবম স্থের পক্ষে সর্বপ্রধান অন্তরায়, সেই মা-ব এইট্কু অটৈতনোর বাবধানই আমাকে তার অনেক কাছে এনে ফেললো। মা আমাকে ব্যাকর মধ্যে টেনে নিয়ে স্কৃত্তীর লক্ষ্য়ে দুই হাত ঢেকে নিতারত অসহায়ের মতো ফালিয়ে উঠলেন।

অসিত ফিরে এলো ডান্ডার নিয়ে। তার মুখেও উদেবগের ছারা। ফিশফিশিয়ে আমাকে জিজ্ঞেস করলো, 'কী হয়েছিলো?' অমি বললাম, 'এই একটা অজ্ঞান মতো—'

'এ-রকম আরো হয় নাকি?'

আমার সংক্ষিপ্ত জবাবে আর-কিছ্ জিজ্ঞাসা করতে সে ভরসা পেলো না, বোধ-হয় কয়েক ঘন্টার মধোই মা ন্বাভাবিক হ'য়ে উঠলেন। বিমলবাব, নিজেও গেলেন না-অসিতকেও ধরে রাথলেন সে-বেলার জনা। আবহাওয়াটা সহজ করবার জন্য হাসিমুখে বললেন, 'আমার এত সাধের রবিবারটাই মাটি করলে তোমরা। কোথায় ভের্বোছলাম বোটানিকেলে গিয়ে গাছের ছায়ায়-ছায়ায় চমৎকার ঘ্রেব বেড়াবো—চারটা না বাজতেই মাঠে ব'সে চর্বচোষাসহযোগে চা পান—কী का फरें र'ला वाली एवा? की आत कताव. অসিত, তোমরই ভাগা। বুলা, অসিতকে ভালো ক'রে বলো—ও কিছু;তেই থাকতে চাইছে না। আমিই জোর ক'রে ধ'রে বেথে-ছিলাম—'

'আমি যাই, বিমল-দা, আমার আজ—'
মা বললেন, ' বোসো' তাঁর উচ্চারণের
ভাগতে অপরিমিত দেনহ ও আদেশ ছিলো।
তিনি যেন মা আর অসিত তাঁর ছেলে।
অসিত বাধা ছেলের মতো বসলে, আর কথা
বললো না। আমি উঠে গেলাম দেখান
থেকে। বিমলবাব, গ্রেক্তনের মতো
বললেন, খাও, মা-র খাবার ঠিক করো গে।'

এ-বেলা বিমলবাব মা-কে উঠতে দিলেন না। কিন্তু বিকেলে আবার তিনি ওঠা-হাটা করতে লাগলেন, কালকর্ম করলেন, আর সমুস্থ মায়ের দিকে তাকিয়ে আবার সেই লম্জা আর বিরোধ ফিনে এলো আমার হৃদয়ের মধ্যে। দুদিন আমি প্রায় নিজেকে লংকিয়েই রাখলাম তাঁর কাছ থেকে। বিমলবাব্ যথারীতি এলেন, অসিত্ত পরের দিন খবর নিতে এলো—আমার সংক্ষে দেখা হালো না কার্রেই। আত্মগোপন করা ছাড়া আর আমার কি উপায় ছিলো?

ম্শকিল হাতো রাভিরে। নিংশদেদ মানর পাশে থিয়ে শ্রুম, কিন্তু গারে গা ঠেকিয়ে শ্রেম থাকতে পারে গা ঠেকিয়ে শ্রেম থাকতে পারে দাজন প্রাণীর মধ্যে আমরা মামেরে তা প্রতি পলে অন্ভব করতুমা। বলি-বল কারে মা-ভ কথা বলতে পারতেন না, আমিভ পারতাম না, দ্লেপ্থি এক দেয়াল উইলো দাজেনের মধ্যে।

তৃতীয় দিন ভোর রাতে হঠাৎ আমার ঘাম ভেঙে গেলো—জেগে উঠল্ম, গ্নে-গ্নিয়ে মা কদিছেন। মা কদিছেন। আমি তো তাঁকে কদিতে দেখিনি কোনোদিন।
ব্কটা ধড়াশ করে উঠলো—অংধকারে হাত
বাড়ালাম তাঁর দিকে—ডাকলাম, মাঃ
ম্হুতে মানর সংন্তানোনি বংধ হার
গোলা—একটা কাতরোক্তি কারে তিনি পাদ
ফিরলেন। উদ্বিশন হ'রে বললাম, 'কী
হয়েছে?'

'वकरें कम माख।'

তাড়াতাড়ি উঠে ব'সে তাঁর গান্তে হার দিয়ে চমকে উঠলাম। তাঁর উত্তাপে গা প্রে যাছে। আমার হাত-পা ঠাণ্ডা হ'য়ে এলো। তাড়াতাড়ি উঠে আলো জন্মলালাম, জন্ম লাজির বিমলবাবকে ডাকতে পাঠালাম। হয়তো তথনো ট্রাম চলতে শ্রু করে বিহারতা অনেকক্ষণ অপেক্ষার তাকে দাছির থাকতে হবে, তব্ সেই অধ্যকারেই আমি তাকে রওনা করিয়ে দিয়ে মা-র কাছে ফিন্সে বসলাম, একটা অনির্দিন্ট আন্ফল্যে ভারে ব্যক্ষেম বোঝাই হ'য়ে উঠলে মৃহ্তেওঁ। স্থা ওঠবার সংগো-সংগাই বিমলবাবকে নিয়ে ভাতা ফিরে এলো। লাল-দাই চোথ মেলে মা তাকিয়ে বইলেন তার দিরে।

কপালের উপর হাত রেখে উনি ভুব,
কুটকোলেন। দ্বারার মাথায় হাত ব্যুলিরে ঘর থেকে বেরিয়ে যেতে-যেতে বললেন,
ভুমি করেছ থাকো, বলল্ল, ভারার নিয়ে আসি।

ডাঙার এপেছিলো। তার চাইতে বাস ভাষারত এসেছিলো দ্যাদিন পরে—অং তারও পাঁচ দিন পারে কলকাতা শহরেং সমুহত প্রসিদ্ধ ডাক্তারদের ছিকে মাখ ফিরিয়ে মা সমুগত সাখ-দাঃখের সাতীত হালেন। बरता बाच किमार वाक काल आहे ।। ए সমসত প্রিবী ভ'রে গেলো। শুক্র চেরে ব'পে-ব'সে দেখলুম, বিমলবাৰ, নিং হাতে সাজিয়ে দিছেন মা-কে। 🚈 🚛 স বেনারসিতে শোভিত কর**লেন** শরু মাত-দেত, ফ**্লের গহনা দিয়ে ৯,ড়ে** দিলেন আপাদমসতক—তারপর রাশি-রাশি সি*দারে শোভিত করলেন তার ললাট আরু মাগা। তাঁৰ এই। পাগলামি দেখে কে কী ভেবে-ছিলো জানি না—আমি নিজেও যে কী ভে'বেছিলমে তাও জানি না—বুকের মধে একটা চাপা আর দম-আটকানো গ্রন্থরান অন্ভব করলাম অতানত তীরভাবে— আদেত এগিয়ে গিয়ে মা-র নরম ব্রকের উপর মাথা রাখলাম, ধীরে-ধীরে আমার সমস্ত চৈতনা আচ্চল হ'য়ে এলো।

তন্দিন কাটলো। একটা দণ্ড ফার অসিত্র না-থাকলে এই ছোটো সংস্থ আবিতিত হ'বে উঠতো—সেই মান্ত্রেব অভবেও এ-শাড়ির স্বোদির স্থাস্থ তাদের আলো-ছায়া ফেললো—কয়েক দিন পরে বিমলবাব আবার আপিশে যেতে লাগলেন—আপাদমস্তক শাদা কাপড়ে মেভা দিদিমাও মুখের ঢাকা খুললেন — আমি আবার প্রাণপ শক্তিতে উঠে দাঁড়ালম, সকল কতবাই সকলে নড়ে-চ'ড়ে করতে

ঋগ্বেদ

ম্ল পদ্বিতাগ, অব্যয়, অন্বাদ ও শ্বশ্যবিধাখাসিহ সম্প্র ঋণবেদ খণ্ডে খণ্ডে প্রাণ্ড হটতেছে। ১০০ খণ্ডে সম্প্র ইইবে। প্রথম ও দ্বতীয় খণ্ড প্রকাশত হইয়াছে: প্রথাত পর-পতিষা ও পণ্ডিতমণ্ডলী কতৃকি উচ্চ প্রশাসিত। প্রতি খণ্ডের ম্লা তিন টাকা। তক্শ খণ্ডের অগ্রিম ম্লা ২৫০ টাকা। চলিশ/কৃডি/দশ্বণাজর অগ্রিম ম্লা যথান্তমে ১০০ / ৫০ টাকা। প্রতি খণ্ড শ্বতশ্যভাবেও বিহাম হইতেছে।

যোগাযোগের ঠিকানা ঃ পরিকোষ ঠাকুর, বেদগুম্থমালা, ২৯, সদানন্দ রোড, কলিকাডা-২৬। ম, কেবল প্রাণশক্তি চাবিকাঠিট মা আর ফিরে এলেন না এই সংসারে।
ার অসংখ থেকে শ্রে করে আমাদের বেণনীয় দিনের দ্রুসময় জীবনের অসিতও এ-ক'দিন জড়িত ছিলো। ায় বিমলবাব, অত্যুক্ত বেশি রকম নতই হয়ে পড়েছিলেন। বলতে গেলে ডুর সব ক'টি প্রাণীই আমরা এমন অবস্থায় ছিলাম যে অসিত না ন হয়তো কিছুতেই চলতো না। ার আশীবাদের মতোই সকলের ভার নিয়ে সে ম্থ গ'ভেল পড়েছিলো

াস দুয়েক পরে কোনো একদিন চুপ
শ্রেছিলাম ঘরে। সংধ্যার আবছা
য় ঘর ভরে গিয়েছিলো। দরজার
পারের শব্দ শুনে চঞ্চল হয়ে
যা ব্রুলাম বিমলবাব্ এনেছেন।
গলায় উনি আমার নাম ধরে ডাকতেই
ভৌকে আসাতে বলে উঠে বসলাম।
া জেনল দিলাম ঘরের। চায়েব
ড়ে যাছিলাম, উনি বলালেন, 'এখনো
ছিলে?'

এমনি।'

এ-বাড়ি আর ভালো লাগে না না ?' িগিয়ে তরি চোখ ছলছল করে া আমি মুখ নিচুকরলমে।

একটা চুপ করে থেকে আবার বল্লেন, না। আমি এখন চা খালো না। তোমার কথা আছে।'

স কী কথা তা আমি ব্যক্তাম।
বিধেকেই উনি ধেন কী বলতে চান
ক। বারংবার বলবার জনা মথে
ও থেমে যান। কিন্তু অসুখী বোধ
।ও প্রস্তুত হয়ে বললাম, 'বলুন।'
একট্ও ভূমিকা করলেন না তিনি।
ও সেদিন প্রস্তুত ছিলেম হয়জো।
গংকীর গলায় স্বভাবোচিত নিচু স্বরে

আমাকে জিজেস করছেন কেন?' তোমার মত না নিয়ে তো হতে না।'

ান, 'অসিতকে কী বলবো?'

াঁর চোখের উপর দৃণ্টি নিবম্ধ রেখে ম. 'কী হতে পারে না?'

একটা পলক নড়লো না তাঁর, কেবল একটা কঠিনতা ছড়িয়ে পড়লো সারা —বললেন, 'বিয়ে।'

বিয়ে !'

াঁ, ব্লু—তোমার বিষের কথাই আমি। তোমার কোনো ব্রকথা করত রা প্রক্তি আমার শাহিত নেই। অমি ্শাহিত চাই।

ফথা শ্নে আহত হলাম। নিজেকে েরেথে যথাসম্ভব ম্বাভাবিক গলার ম. 'আপনাকে তো সবই বলেছি। সবই জানেন।'

জামি।'

'তবে ?'

'সে তোমার ভূল ব্ল্, সে তোমার শিশ্-মনের একটা খেলা।'

'জানি না থেলা কিনা—আ**য়াকে** অবকাশ দিন ভূল ভাঙবার।'

'শোনো—' তাঁর গলার স্বরে অণ্ডত কালার শব্দ পেলাম। চকিত হয়ে চোখ তুলতেই তিনি আমার মাথার উপর হাত রেখে বললেন, 'তুমি তো জানো তোমার মা ছাড়া এ পৃথিবীতে আমার কাছে এমন কোনো মেয়ে ছিলো না, যার প্রতি ক্ষণিকের জনাও আমার মন বিদ্রান্ত হতে পারে। ও যে আমার কীছিলো— ও যে আমাকে কতথানি ভরে দিয়েছিলো শৃধ্ ওর অহিতত্ব দিয়ে, তা আমি তোমাকে কেমন করে বোঝাবো। তোমাকে এইটাুকু থেকে। ভালোবেসে বড়ো করেছি, আমার স্নেহে এতটাুকু খাদ ছিলো না—তোমার প্রতি আমার অপরিসীম আকর্ষণ—অপরিস্থীম মমতা-সংমদ্য বে'চে থাকলে আমার চাইতে বেশি ভালোবাসতে পারতো কিনা জানি না —'সেই জুমি—'

আলি দ্'হাতে মুখ ঢেকে বলশান, 'জানি, জানি—'

'শান্ত হও, শোনো—তোমার মৃত মায়ের আত্মার কথা চিশ্তা করো—'

কালাভরা গলায় বললাম. 'তিনি তে' আপনাকে লিখে গেছেন, আমার সুখই ভার সুখ,—তাঁর কোনো আলাদা সুখ নেই।' একটা দাঘিনিশবাস ফেললেন তিনি, বাগৈত গলায় বলালেন, 'এই তোমার শেষ কথা?' 'এই শেষ—বিমলবাবা, এই শেষ।' আমি নিছ হয়ে তাঁর পায়ে মাথা রাখলাম। একট, বসে রইলেন চুপ করে—একট, হাত বালোলেন মাথায়—তারপর নিঃশব্দে উঠে গেলেন সুখান থেকে। আমি সেই পরিভাক্ত জালগায় মাথা কুটে বাাকুল হয়ে কাঁবতে লাগেলাম।

অসিত এলো ঘণ্টাথানেক পরে। ভূতা এসে থবর দিতেই সংগত হয়ে উঠে বসলাম। আমার ম্খ-চোথ দেখে ও যেনো আঘাত পেলো। একটা তাকিয়ে রইলো আমাব দিকে। চোখের এ-দৃশ্টি আমার অপরিজিত নয়। ব্রকটা কোপে উঠলো। বললাম, বস্ন।

> 'আপনি আজ বভ বিচলিত রয়েছেন।' 'না।'

'কিন্তু কী করবেন-'

চুপ করে রইলাম। একট্ দিবধা করে বললো, 'আমার তো চলে যাবার সময় হলো—ছ্টির দুটো মাস কাটিয়ে দিলাম—'

'আপনি যাবেন?'

'হর্ন, মা বার-বার চিঠি লিখছেন--

'আমার তো যেতে ইচ্ছে করে না, কিণ্ডু—'

'না, যাবেন না কেন—মা আশা করে আছেন।'

অসিত আমার কাছে থেকে বাবার উংসাহ প্রার্থনা করে নি—কী প্রার্থনা করেছিলো তা আমি জানি। ব্যথিত হলাম, কিন্তু উপায় নেই।

একট্ চুপচাপ কাটলো। ভারপর মন্ত্রের বললো, 'আমাকে কি আপনার কোনোই প্রয়োজন নেই?'

নিশ্বাস নিরে বললাম, আপনার জন্য আমার কত কৃতজ্ঞতা জমা হ'রে আছে মনের মধ্যে—

বাধা দিয়ে অম্থির গলায় বললো, 'কৃতজ্ঞতার কথা কেন তুলছেন—আমি তার কথা বলছি না—আপনি কি বোঝেন নি আমার কথা?'

দতি দিয়ে ঠোঁট কামড়ালাম, তার**শ্রন** পরিংকার গলায় বললাম, 'ব্রেছি, কিন্তু সে হ'তে পারে না, অসিতবাব্—কিছুতেই না।'

কিছাতেই না?'

'सा ।'

খানিকক্ষণ স্থাণ্র মতো ব'সে রইকো আসত—তারপর ঠিক বিমলবাব্র মতো ক'রেই ধীরে ধীরে উঠে গেলো ঘর ছেড়ে। আবার আমার দ' চোথ ছাপিরে জল এলো—ব্ক ডেসে গেলো উন্বেলিত অশ্র্র

পরের দিন সকলেবেলা কিছু আলে পরে দুখানা চিঠি পেলাম ভৃত্তার মারফং—

'ব্লু

তোমার সব বাবশ্থাই ক'রে রেখে গেলাম— আশা কার কোনো আর্থিক কল্ট তোমাকে পেতে হবে না।

যেথানেই থাকি আমার **অস্তরের সকল** মংগলাকাঙ্খা সততই তো**মাকে খিরে** থাকবে।

হতভাগা বিমলেন্।

'সচেরিতাসা,

প্যাণেডারার অদম্য কোত্রংলের দোরেই
সম্পত প্রথিবীতে ব্রথ ছড়িয়ে পড়েছিলো-কিন্তু আশার কোটোটি সে খ্লতে
পারে নি—তাই সে আশা যতই দ্রাশা
হোক, মান্য তাকে চিরকাল ধরে লালন
করে আপন ব্কের মধ্যে—আমিও সেই
আশাটি মনের মধ্যে জ্বালিরে রাথলাম—
র্যাদ কথনো সময় আসে আপনি নিশ্চরই
ভাক দেবেন আমাকে।

হতভাগ্য অসিত।'

দুখোনা চিঠি হাতে নিয়ে শ্তশ্ম হ'রে
বসে রইলাম খানিকক্ষণ। মনের মধ্যে
ভ্রমরের একথেয়ে গুণগুনানির মতো একটি
কথাই কেবল গুলিও হ'তে লাগলো ঃ
গেলো—সব গেলো।



উত্তর কলকাতার বৃশাবন বস্ লেনের
লাহিড়া-পরিবারের যে-কোন একজনকৈ
দেখলেই চেনা যায় সে একই গাছের ফ্ল।
ভারতমা শুধু বরসের, নয়তো দ্বাভাবিক
ঐকা পরস্পরের আকৃতিতে, দেখা মাত্র ধরা
যায়। পরিবারের সকলের মধ্যে নৌখিক
সাদৃশ্য সহজেই নজরে পড়ে। লাহিড়া
ভেলামেরেদের যাকেই দেখা যাক, লাগে
পড়বে ঐ একই একতা। ফর্সা রঙ, কটা
চোখ, জোড়া ভূর্, টিকালো নাক, মাথায়
কোকড়ানো চূল।

তেমন পরিকলিপত পরিবার নয়, ভাই
ভরা সংখ্যায় কিছু বেশী। আর সেই
কারণেই কি দা জানি না, জন্মদাতা স্থ্ময়
একট্ যেন অধিক কর্মবাস্ত। কাজ করেন
কী একটা আধা-সরকারী বাবসায়িক
সংশ্যায়। মাইনে তেমন কিছু নেহাং ক্ম
নয়, তব্ও উপরি-উপার্জনের চেণ্টায়
থাকতে হয়। নয়তো স্থময়ের পক্ষে সম্ভব
হয় দা সকলের মৃথে হাসি ফোটানো। ন্দা
প্রতিলাতা একদা-বিত্তশালী ঘরের স্কুর্মা
কনা, সহজে মন পাওয়া ভার যায় না।
চদ্পরি স্থময়ের মেয়ের সংখ্যা চার
ছেলে মার তিনটি। মাসালেত যা হাতে আসে
ভার অধিকাংশই নিঃশেষিত হয়ে য়ায়
মাসের শেষে।

লাহিড়ী-পরিবারের সর্বাশেষ সংস্করণকে প্রায় সর্বাদাই আপনি দেখতে পারেন বার-দর্মলা আগলে বনে আছে। আদ্ড়ে গা্ পরণে শধ্যে জাঙ্কিয়া। গলায় র্পার চেনে ভাষার মাদ্শৌ। মুখ কখনও হর্ষ, কখনও বিষয়ব বিষয়।

রাস্তায় ফেরীওলার দেখা পেলেই সে ডাক পাড়বে।

শিশ্কণেঠর কাকলী শুনে কেউ কেউ এসে দীড়ার। বারা চেনে জানে তারা আর সাড়া দের না। কেন না কেউ কেউ ঠকেছে মাঝে মিশেলে। হাতে বেলুন-বাঁশী নিয়ে শিশ্ সেই যে অদ্যরে সিশোর তারপর শত ডাকেও আর তার সাড়া মেলে না। ডেকে ডেকে যখন কারও পাত্তা মেলে না তথন ফেরীওলাকে স্লেফ পথ দেখতে হয়। থানায় গিয়ে অভিযোগ জানিয়ে শিশ্র নামে তো আর নালশ লেখানো বার না।

উদয়াস্ত কাজে বাস্ত স্থ্যায়। এবং গ্যুহে অনুপশ্পিত। ছেলেরা লেখাপড়া করে। দশটা বেজে গেলেই স্কুলে চলে যায়। মেরেরা একটা বয়স প্যাদত স্কুলে যায়। অতঃপর আর তারা পড়ে না। কলেজে ছেলেদের সজ্গে একচ পড়বে মেরেরা—মন থেকে পছম্ম করেন না স্থেময়। যতই হোক, যি আর আগন্ন একম্বানে শাকলেই হৃতাশনের আশণকা থাকে। তার চেয়ে যোগা পাচ দেখে মানে মানে মেরেদের বিদেয় করতে পারলেই সকল দায় চূকে যায়। মেয়েদের কে ভারে ক্রে ঘ্রে প্রেল বাথে।

মেয়েদের স্বধো বড সচেরিতা।

শ্বমারের র্প-সজাগ ধনী-কন্য শতী প্রীতিশতা বাঙলা শব্দ-ভাণ্ডার থেকে 'তা' আকারাশত শব্দিটি বেছে নিয়ে নেয়েদের নামকরশ করতে অভানত। যতই হোক, ববি ঠাকরের দেশের মোয়ে প্রীতিলাতা।

মেজ মেজের নাম সুস্মিতা। তার সংগ্রহ

আমার আকৈশোর অংতরংগতা। কিছু বা

ঘনিন্টা যোগাযোগ। মাঝে মাঝে আমরা

দুজেনে মিলিত ইই কোথাও। বান্ধবীর

স্পো দেখা করার মিথা। অজাহাতে সুস্মিতা

অভিভাবিকার কাছ থেকে অলিখিত ছাড়পর

যোগাড় করে। বলা বাহলো, বান্ধবীর
বালাই যথন নেই আমলাই মিলিত হই

দুজিনে। সিনেমার, হোটেলে, পারের

বেঞে, চল্লত টাজিরতে প্রস্পরের ঘন
সাহিশ্য পাই।

আজ আর বলতে লক্জা মেই, আমি সতিটে সংস্থিতাকে ভালোবাসি।

তার র্প প্রশংসনীয়, গুণোবলীও কম নয়। শিলপকলায় সে দক্ষ, সংসারের কাজ-কর্মে সপেট্। সবার উপরে সংস্থিত। ধরি স্থির স্বল্পবাক ব্রন্থিয়তী। চট্লা চঞ্চলকে আমি যেন কেমন সহা কবতে পারি না।

সেদিন শনিবারে বিকেল। পরের দিন রবিবার। তাই ছাটি ছাটি মন।

অফিসে যেতে হবে সেই সোমবার বেলা সাড়ে দশটায়।

শনিবার এলেই তাই যেন কেমন একটা শৈথিলা এসে গ্রাস করে আমাকে। বাঁধাধরা কোন কাজে আর মন লাগে না।

কলকাতার শহরে গোধালির চিচ্চ নেই।
তব্যুক বলা যায় সেটা গোধালিবেলা। দলম অবসহা বেটা বিলাশিবর পণে। নাকোশের পশিচয়ে বন্ধলাল লাভা শহরেব সংক্রক কাক চিল চড়াই বাসার দিকে ছুটো চলেছে। লাহিড়ী বাড়ির বার-সরজাটা কথ কেছে কিছু বা হতাশা কিছু বিন্দার আমার। তব্ও সদর-দরজার কড়া ধরে বারকরেক কন কন করি আমি। পরিবারের কারও সাড়া পেলাম না। ঠিকা ঝি কেল্টর মা এসে একগাল হেসে বললে, মেজদিদি তো নেই। বেইরে গেছেন।

নেই ?

ঈষং বিস্মারে আমি যেন কিঞ্ছিং উদ্মান হলাম। তবে কি আর কোন প্রতিপক্ষের আবিভাবি ঘটেছে! ভালোবাসার অভিধানে যার দাম রাইভাল? অফিস লাইরেরী থেকে যাই হোক একখানা বই এনেছিলাম স্পিতার জনো। দিয়ে যেতে চাই আমি। বিরক্তির সুরে বলি আর কেউ আছেন?

সম্মতি জানিয়ে কেণ্টর মা বলে, আছেন। ভেতরে আসনে না।

শনিবারের বিকেল। রাস্তায় মনএলানো গা-ভাসানো মাধ্যর চলমান জনতা।
বৃদ্ধ থেকে শিশ্—কেউ বাদ নেই। মহিপারা
দল বে'ধে চলেছেন সন্ধ্যাকালীন সিনেমার
শো-তে। ডেবেছিলাম ছাদে গিয়ে কসব
দু'জনে। মনের কথার আদান প্রদান করব
যতক্রণ না রাহি যনিয়ে আসে।

ভেতরে ঘুকতেই সেই চেনা <mark>চেনা স</mark>ংগণ্ধ ভেসে এল।

কি একটা সেনা না পাউডার সাহিড়ীদের সকলেই বাবহার করে। তারই স্বাসট্ক সহাই যেন গমকে থাকে ঘরে ঘরে। ভেতরে কারও পাতা শেই। কা কসা প¹রবেদনা!

মিণ্ট্ !

আমি থানিক অস্বস্থিত হ'বা গ্লাষ ডাক দিলাম। স্মিস্থাতার এক ভাইদের নাম মিল্ট্। সি^লড়ি বেয়ে উপরে উঠিছ, এমন সময় কোথা থেকে মিল্টুর পরিবতে মিল্ট মিল্টি মেয়েলী গ্লার স্বর ভাস-।

কোন্ এক ঘরের ভেতর থেকে বললে স্চোরতা, মিণ্ট তো নেই। মামান বাড়ি গেছে।

আমি বললাম, স্মাস্মতা?

ইয়তো **বৈক্যালক বেশ-পরিবর্তনে** বাস্ত ছিল স্ফ্রিকা। সেই অবস্থায় ঘর থেকে বেরিয়ে এল ব্যাকল ভুগণীতে।

আমার চোখ, <mark>যেন ঝলসে উঠস</mark> অনেক আলোর জৌলস দেখে।



নাধন-শ্ল স্চরিতা। চোখে কাজলের
রেখা। ঠোটে ঘন লাল প্রলেপের
চিকন। বিচিত্র কবরী মাথার, কপালে
চুণ অলকের গ্রেছ। গালে টোল
ক্ষিতম্থে বললে, স্কিও গেছে।
রাড়িতে। সকলেই গেছে। মামার
চু আজ নেমাত্রর আছে। সেকমামার
বিদ্যাকাত্র প্রীক্ষার ফার্টা হুরেছে।
জনে। খাওয়া দাওয়া। আমিও
ব্যানে।

বে আমি চলি। এই বইখানা গ্ৰেক দিয়ে দেবেন।

ন্ন-হৃদয়, তথাপি সহজ স্রেই কথা সচেণ্ট হই আমি।

পরে এস মানস। পাঁচ দশ মিনিট াও।

ানতির সার যেন সাচরিতার কথায়। কতা দেখায় হয়তো।

ইটা হাতিয়ে দিয়ে কেটে পড়বার থ্যায়র। যার জন্য আসা সেন্ট ধ্যন ১৯৫০। তুর্বুও ভদুতার খাতিরে ঘরে চেয়ার দখল করলাম। ড্রোসং আন্নোর ১লে গেল স্মর্চারত।। পাউভারের ব্লাতে থাকল শ্রু নিটোল গ্রীবার, । পাশে। বললে, আমিও যাব, তবে ন্য়। কেন্টর মা চলে গেলে ঘর-চারি দিয়ে—

টে বেশে কোনদিন দেখিন একে। চোখে পড়ল তান নিরাবরণ অনাব্যত বাহ্। ফেন মোম-পিছল। ইট। আমার চোখের ঘোর বাধা পেয়ে মেকে থাকে। আফনার প্রতিবিশ্বিত স্টেরিতা বললে, মানস, আমাকে একটা ন্বরবে ?

[া]শ্চরই। কী করতে হরে বলুনা কিপ কিছা কিনে আনতে হবে? ্বললাম আমি। চেয়ার ছেড়ে উঠতে ্লাম।

্চরিতার দুই নিটোল হাত তখন চেন্টায় চণ্ডল। পিঃক রঙের ইলাম্টিক ম্ট্রাপ, বাধতে না কিছুতেই। দুই হাতের সরু আঙ্কে, পৃষ্ঠদেশে বৃথা নাচানাচি । অবিন্যুস্ত স্যাত্তসেতে জাম ্ আঁচল অধরে কামড়ে ধরে বক্ষ ঢেকে ছ অতি কদেট। আবার একট**্ন** হাসল তা। বললে, এই স্ট্রাপটা আটকে शातरव ? यीम किष्ट्र भरन ना कत-। স্যার ছেড়ে উঠে পড়লাম আমি। পা এগোতেই প্রসাধনের উগ্র স্কাশ্ধ ণ ধরা দিল। স্ফরিতার পেছন থেকে [া] পালন করলাম সম্তপ্ণে। আমার স্চরিতার দেহের পরশ ঠেকল। ঠান্ডা, পেলব, পিচ্ছিল দেহত্বক।

াকটা দ্বদিতর শ্বাস ফেলে স্চরিতা ন্য, বললে, লক্ষ্মী ছেলে। ক্ষণেক হাসির জের টেনে একট্ চাপা স্বের শ্টাপ খ্লতেই পারে ছেলেরা, গারে না।

রসিক ইণিগতটা ধরতে পারি আমি। ম. আজ দেখলাম সচেরিতাদি, আপনি দের। হাসির লোয়ার তোলে স্কৃতিরতা।
হাসতে হাসতে বলে, ও, তাই না কি।
তব্ তো আমার বাবা মনের মতো পার
জোটাতে পারছেন না বলে মধ্যে মধ্যে ভবিণ
দৃঃথ প্রকাশ করেন। তবে একজনের সন্ধে
কথা প্রায় পাকা হয়ে গেছে শ্নাছ।
জানি না, কে একটা উজব্ব জানুটছে আমার
কপালে।

তাই বা কেন। পাত্র নিশ্চয়ই আপনার যোগ্য। উজব্বুক হবে কেন?

সহান্তৃতির সংরে বল্লাম আমি। চেয়ারে বসে পড়লাম।

জোরালো কঠে স্কর্চরিতা বলে, হার্ট তাই। স্মাট ছেলে কটো দেখতে পাওয়া যার বলতে পারো? হাজারে একটা মেলে না। স্মাট আর ইন্টেলিজেন্ট, ভদ্র সম্প্রাঞ্চ ব্রিধ্যান। যাক্ গে, কপালে যা আছে তাই হবে। কথার শেষে ঘরের আলোটা জেলে দিল সে।

আর একটা জামা জুলে নিল তেপায়া থেকে। ফিকা নীল রঙের থাটো রাউজ। স্চরিতা বলে, চোখ দুটো থানিক বধ্ধ কর মানস। জামাটা পরে ফেলি। শাড়িটা বদলে নিই।

আমার অবাক চোথ ব**ণ্ধ ক**রি তৎক্ষণাং।

নিষিশ্ব দৃশ্য না নী দেখতে নেই।
অন্যাদকে মুখ ফিরিয়ে থাকি। লম্জ্ঞার
সংকাচে আমি যেন বিহন্দ। মনে মনে
গনেতে থাকি, ঘরে ক'টা জানালা। ছোট আর
বড় কতগালি আসবাব আছে ঘরে।
দেওয়ালে ক'খানা ছবি। কেমন একটা
অবান্ত রাগে সন্স্মিতার পরে বির্প হই
আমি। আগে আমাকে জানিয়ে দিতে পারত
সে, শনিবারের সংধ্যায় দেখা মিলবে না,
তবে আর এ দুভেণ্ণ পোয়াতে হত না।

এবার চোখ খলেতে পারো। ফিনিশড্। আর কোন বাধা নেই। স্চারতার কথা শুনে ফিরে তাকাই।
দেখতে পাই সদ্য ভাঁক খোলা গাড়ি
তার পরণে। জানি না স্তী না রেশমী,
নাইলন না সিফন। আজকাল চলাত
ফ্যাশানের সদা-পরিবর্তনিশীলতার ঠেলার
বিবিধ শাড়ির নাম রাতারাতি পালটে বার।
কালকের নামকরণ আজ পালটে বার।
আজ বা আছে কাল আর তা থাকে না।

ষাই হোক শাড়িখানির রপ্ত দীলাভ। জমিতে কৃষ্ণরেখায় ফুল ও পাতা। প্র থেকে দেখায়, যেন এক"ত শার্দ মেঘ গায়ে পরেছে সূচরিতা।

ঘরের শতশুগতা ভেঙে আবার সেকথা বলল, তোমার চান্স আসতে ঢের দেরি এখনও। আগে আমি পার হই। তারপর সংস্থিমর পালা আসবে। তুমি কি ঠিক করলে মানস? সংস্থিকেই বিয়ে করবে তো? শনেছি তে:মার চাকরিটা পাকা হয়ে গেছে।

ভেবে দেখিনি এখনও। বললাম জভ্তা কাটিয়ে। দেখা যাক কি হয়। ভবিষ্তের কথা কেউ বলতে পারে।

ইচ্ছে যখন আছে তখন উপায় হবে**ই।** ভাবনা নেই।

শাড়ির আঁচলে বিনাস আনে স্চরিতা,
আরনার নিজেকে দেখতে দেখতে সে যেন
নিজের সংগ্র কথা বলছে। বললে, তাই যান
হয় তবে তো একটা দটো রিহাসলি
দিয়ে রাখা উচিত আগে-ভাগে। অভিজ্ঞতা
সন্তয় করা থাকলে আসল অভিনরের রাতে
কোন অস্থিবিধে ভোগ করতে হয় না।

কি 'য বলতে চার স্চরিতা, ঠাওরাতে পারি না ঠিক। বললাম, তার মানে? কিসের রিহাসালি?

ব্যংশ্যর অস্ফটে হাসি তার রক্তিম ঠোটে। পরিহাসের স্বরে বললে, শ্ধে কিসের বিহাসলি নত্ত সব কিছার— কিস।

শক্তিপদ রাজগ্রের নতুন উপন্যাস

कालाभाश्र 🗝

রাহ্ল সাংস্কৃত্যারণের গোবিন্দ বম পের নীহাররঞ্জন গ্লেতর দৈবপারনের সোমদেবের সিংহ সেনাপতি রক্ত গোলাপ রাত গোড়ামাটি তাপ্যাঘর ঘেরাও ₽.00 **¢.¢**0 ₽.00

এই *দশকের কোলকা*তা

6∙00 **q**∙00

রবীন মুখোপাধ্যায়ের সর্বপ্রেষ্ঠ উপন্যাস

न्दर्ग भग्रद्ध ५-००

ভ্যারাইটি পাবলিশার্স : ১৩, কলেজ রো, কলিকাতা-১

বিদ্যুতের ঝিলিক লাগে আমার মালতক্ষের স্কুন্তম লিরার। আমি যেন বোবা মেরে যাই। নির্বাক থাকতে চেটা করি। বেল ব্যুতে পারি, আমার ম্থে দানক হাসি ফুটেছে। বললাম, কি যে বলেন আপনি ইস্।

নিজের পশ্বমান হাতে পাউভারের ছোরা দিতে দিতে মিটি মিটি হাসতে হাসতে স্কারতা বললে, বিরে গো বিরে। বিষের রিহাসাল! আমি তোমাকে শিখিয়ে দিতে পারি স্ব কিছ্। মানে তালিম দিতে পার। অবশা তুমি যদি রাজি থাক। আর, যদি কথা দাও, স্ক্সিম জানতে জানতে পারবে না।

সম্মতি বা অসম্মতির ধার ধারে না সে। আমার কাছে এগিয়ে আসে। হাতে সেপ্টের খোলা শিশি। পম্পেই এসেপ্সের বহু পরিচিত আধার।

ব**ললে,** মাখিয়ে দাও দেখি। কথার শেষে শিশিটা আমার হাতে ধরিয়ে দেয়।

অপ্রস্তৃত আমি, তার বলেক আঁচলের

 অফ প্রান্ত তুলে ধরি দ্বিধার সংক্রাচে।

 কি কারণে কে জানে থিল থিল হাসতে

 বাকল স্চুরিতা। তার দেহলত: যেন নেও

 নেচে উঠল। হাসতে হাসতে বললে,

 দেখছি তুমিও একটা স্রেফ আহাম্মথ!

 মেন্টেরা কি আঁচলে সেন্ট মাথে?

তবে কোথায় মাখে?

নির্বোধের মতো প্রশ্ন করলাম। অম্বন্দিততে আমার যেন মুহামান অবন্থা।

এইখানে মাখে, বোকা কোথাকার। দেখছি তুমি স্ট্রপিড! ফ্লে! চিব্কের ইন্সিতে দেখিয়ে দিল সে।

অগত্যা আমিও ফলচালিতে মতো স্চরিতার নির্দেশ পালন করতে তংপর হলাম।

তশ্মহাতে আমার অপর হাতথানিধরে আমাকে টেনে তুলে খানি খানি স্চরিতা মিলি হাসির সংগে বললে, এস মানস আমারা পাশের ঘরে যাই। মনে কর, আমাদের সাজ-পোলাকের পালা শেষ হাছে। এখন আমাদের বিয়ের আসরে যেতে হবে। অর্থাৎ কী না স্টেজে নামতে হবে।

কথার শেষে খরের আলোটা নিভিয়ে দিল সে। আমি তাকে অন্সরণ করণান সভয় পদক্ষেপে। কীযে তার বস্তবা, অন্-ধাবন করতে পারি না। আমি যেন মকুমুক্ধ। সমোহিত।

বাইরে তখন অন্ধকার ঘনিয়ে এসেছে।

পাশের ঘরে বেতেই খোলা জানালা থেকে দুরে রাস্তায় আলোর বাত্রলা চোঝে পড়ল। হয়তো পাশের বাড়িতে রেডিও বেজে চলেছে। সাখ্য-অনুস্ঠান দুরু হয়েছে। গীটারের সার ভেসে আসছে। এক বিখ্যাত গানের স্বরেলা ধর্ননি

বরের আলো লালিয়ে দিল সাচরিতা। বিজ্ঞানী পাথাটি চালিয়ে দিয়ে বলল, এস আমরা এই ছবির সামনে দ্'জনে দাঁড়াই। তুমি আমার ভান পাশে এসে দ'ড়াও। স্ফাঁ সব সময়ে স্বামীর বাঁদিকে থাকবে। এইটেই চিরকালের প্রথা।

দেওয়ালের কৃষ্ণ আর রাধার ব্ণলম্তির রঙীন ছবি। সতিটে দেখলাম,
শ্রীক্ষের বামপাশে রয়েছেন শ্রীরাধা। ব্ণল শ্রীম্থে প্রশাসত হাস্যরেখা। চোথে চোখে বেন বিহুন্লতা।

আমরা দ্'জনে ছবির সামনে। পাশাপাশি।

অস্ফ্টেকন্ঠে স্চরিত। বলে, মনে মনে প্রাথনা জানাও, আমাদের জীবন যেন স্থের হয়, মধ্র হয়। আমাদের মিলন যেন স্থায়ী হয়। আমরা যেন বিপদ-আপদ থেকে দ্রে থাকতে পারি।

আমার যে কী করণীং ব্বে উঠতে
পারি না। মাঝে মাঝে ইচ্ছা হয়, এই
ম্হুতে পালিয়ে হাই এখান থেকে। ভয়
পাই, যদি স্কিতা এসে পড়ে। কিংবা
যদি আসেন স্বময়! হঠাং, অতকিতে!
দেখতে পান এই অভাবনীয় ঘটনা!

বললাম, ধরা গলায়, কোথা থেকে শিথেছেন বিষেৱ আচার কান্ন?

হাসল স্কৃতিরতা। বললে, কোথা থেকে আবার! দেখে শিখেছি। শুনে শিখেছি। কিন্তু স্বামী কথনও স্থাকৈ আপনি বলে না। এটা নিয়ম নয়। তুমি সম্বোধনটা কত মিণ্টি! কত আপন শুনতে লাগে!

আমার মুখের দিকে অপলক তাকিয়ে কথা বলে সে। আমার গা ঘে'ষে দাঁড়ি-য়েছে। অনুভব করি, তার দেহটা কেমন নধর কোমল। বললাম, আছো, তুমিই বলব। তোমার কথাই থাকবে।

আমার মানস লক্ষ্মী ছেলে। এবার কিন্তু খাওয়ার পাগা। কী খাবে তাই বল দ চা না কহি? না বললে শ্নেছি না। একট্ কিছ্ থেতেই হবে। অন্তত এক পেয়ালা কফি। সেই সঙ্গে দ্টো মিজিট। সন্দেশ। অপেক্ষা কর্ পাঁচ মিনিটের মধ্যে আসব আমি। একতলার বার-দরক্রা খোলা আছে। হয়তো কেণ্টর মা কাজ সেরে চলে গেছে।

ঘর থেকে বেরিয়ে যায় স্মেণিজতা স্চেরিতা। রেথে যায় মৃতে স্মৃতির মৃতো, একরাশ স্কাশ। নিঃশব্দ পদক্ষেপে অদৃশা হয়ে গেল স্বানপ্রীর রাজকনা। যেন বাতাসে ভেসে গেল। চুড়ির রিনিঝান মিলিয়ে যায় ধীরে ধীরে।

ঘরের মধ্যে মোহ মোহ গণধ। আর ভীত রুসত আমি। নিজেকে যেন আমার কেমন নাভাস ঠেকে। পকেট থেকে সিগারেটের প্যাকেট বের করলাম। শুণকাভরা উত্তেজনা দমন করতে হবে। ধ্মপান না কী প্রশামত করে চিন্টাজনালা, স্তিমিত করে দেয় মনের উচাটন উদ্ধেব্য আত্যক।

একেকবরে সদ্দেহ জেপ্তে ওঠে, স্ক্রিতা কীত্রে প্রকৃতিম্থ নয়! সে কী জানে না সে কী করছে, কী বলছে! তার মাথায় হয়তো বিকার দেখা দিয়েছে। মনের অসুখ্ ধরেছে। যাকে বলে মানসিক বাধি। ব্লিধ বিকৃত না হলে এমন আচরণ কেউ করে না। সদরের দরজাটা বংশ করে দিরে আস্থে সক্রিতা, জেনে কিছু বেন আদ্বস্ত হলন আমি। স্থানিতার কাছে হাতে-নতে ধর পড়বার আর কোন আশাখ্যা থাকল না। মনে মনে স্থির করে ফেললাম, কফ জার সন্দেশ থেরে সরাসরি জানিয়ে দেব, এবার আমি যাই। আর নর। তের শিথেছি বিহে বিরে থেলা। জ্ঞান-সপ্তরে প্রবৃত্তি নেই জার

ঘরের কোণের টেবিল খেকে ভূরে
নিলাম কী একটা প্রোনো সামায়ক পরিকা।
অতি-ব্যবহারে মলাট ছি'ড়ে গেছে, তাই
আর নাম খ'ড়েল পাওয়া বায় না। পারে
ওলটাতেই দেখা বায় ফটোগ্রাফ। ছায়াছবির
নামিকার বিশেষ পোজের ছবি। পটলারে
টোখে যেন কামনা ফুটে আছে। ব্কের
আচল বুকে নেই, হয়তো আমার ভূল হতে
পারে, কিন্তু কোথায় যেন সক্রেরতার সঞ্জ সাদৃশা খ'ড়েল পাওয়া বায়। ভাব-ভলী,
সাজ-পোশাক—সকল কিছু মিলিয়ে অভ্তুর
সামজস্য খ'ড়েল পাওয়া বায়।

আমি তোমাকে খাইয়ে দেব। এস মান্স, আমার কাছে এস।

ঘরে সিদিয়ে বললে স্টারিতা। এগ হাতে টলটলায়মান কফির পেরালা। অন হাতে সন্দেশের রেকাবী। মুখে পরিতৃতিও চাপা আনন্দ। মেয়েরা না কী প্রিয়জনকে খাইয়ে স্বর্গসূথ পায়।

টোবলে পাত্র দুটি নামিয়ে বে'ং কপালের মিনমিন ঘাম মাছতে থাকে সে है। के श्वरंक वाहिरकत काम क्या हरकारन রঙের রুমাল টেনে নিয়ে। <mark>আবার বল</mark>লে হাঁফধরা প্ররে, সব নিয়মই যে মেনে চলতে হ'বে এমন কোন কথা নেই। **স্বামী** আর ম্বীর নিজের নিজের সাধ-আ**হ**্মাদ থাকতে পারে কিছা কিছা। যাকে বলে ব্যক্তিগত ইচ্ছে অনিচেছ। তাও মানতে হবে বৈকি! আমার যেমন ইচ্ছে করে নিজের হাতে রে'ধে খাওয়াই তোমাকে। খানিক থেমে দম নিয়ে আবার বলে, মনে নেই সাবিত্রী ভরীশকে, রাজলক্ষ্মী শ্রীকাণ্ডকে কত পবিশাটি করে কত পদ খাইয়েছি**ল? যাও সিগারে**টটা र्यन्ति माउ।

আমার যেন কিছুই মনে পড়ছে না। যেন অভতি ভূলে গেছি। বর্তমান ঠেকছে স্বন্ধের সামিল। ভবিষাৎ সম্পর্কে কিছু ধারণা করতে পারি না।

কাছে যেতেই আমার কোমরে বাহ্
জড়ালে স্টেরিভা। স্পের বেন্ট্নের মড়ো
ঠেকল যেন। মাথা রাখল আমার চিপচিপ
ব্কে। কেমন যেন সিতু কপ্ঠে বললো, আগে
কী খাবে—এটা না ওটা?

হাতে একটা সন্দেশ, অথচ লাল অধর
উচিয়ে ধরল সে। দুই হাতের আলিগনে
ধরে ফেললাম তাকে, নরতো আমি হরতো
তার দেহভার সামলাতে পারতাম না। কিহ্
বলার অবকাশ পাই না। আমার মুখের মধো
নিজের অধর সি'দিয়ে দিয়ে টানা টানা চোথ
দ্টি বন্ধ করল স্চরিতা। মুখে বেন নরম
জেলির আশ্বাদ পেলাম। বিদেশী সিনেমা
দেখার অভাসে আছে আমার। বিশেষত
'A'-মাকা ছবি এলে বাদ দিই না। সেই
অভিজ্ঞতার চুক্নের রাতিনীতির থিও-

রিটিক্যাল জ্ঞান আজ বেন বিশেষভাবে কাজে লাগাতে চেম্টা করি।

স্চ্রিতার তশ্ত শ্বাস আমার মুখে লাগতে থাকে। খন খন শ্বাস পড়ছে তার। সাপের ফোঁসের মতো শোনার বেন।

করেক মিনিট উন্তর্গি হয় তব্ও মুখ
সরাং না দে। ছাড়তে চার না বাছরে বাঁধন।
বংকে আমার ধেন তাঁর খোঁচা লেগে
থাকে। আমাকে ধেন বিশ্ব করতে চায়।
দেওয়ালে ঠেস দিয়ে নিজেকে সামলাই
আমি। প্রতিরোধের জন্য ধেন একটা কোন
আপ্ররেপ্রয়োজন বোধ করি।

তারপর আমাকে মুক্তি দিরে একটা গোটা সদেদশ আমার মুখের মধ্যে পুরে দিয়ে সুচরিতা বললে, এবার বল কোন্টা বেশী মিণ্টি। এটা না ওটা?

খেতে খেতে বললাম, অবশাই প্রথমটা।

স্চরিতা তৃশ্তির শ্বাস ফেলে বলে, আমার সোনার মানস কত মিতি আর লক্ষ্মী, কেউ কী জানে? আমি শ্ধ্য জানি।

• শ্বান আহারের পর্ব চুকতে যেন ব্রুতি পার সে। যেন এক অবশা কর্তব্য দার থেকে উদ্ধার পেরেছে। শ্না পাত ঘরের বাইরে রেখে এসে আধেক হাসি আধেক গাম্ভীযের ৮ও বললে, থ্রই অম্ভুত ঠেকছে তোমার, ব্রুতে পেরেছি। আমি আবার মুখ দেখে মনের কথা জানতে পারি। মান্যের মুখে ফুটে ওঠে মনের ভাষা।

বললাম, তাই তো মৃথ্মকুর কথাটা চাল আছে।

স্চেরিত। বলে, ঠিক বলেছ। আমার মানসের দেখছি ভাষাজ্ঞান আছে। তাই তো তোমাকে আমি এত—

আমি আমতা আমতা করি। বলি, মনে হচ্ছে, আমি যেন আমাতে নেই।

কথার সূত ধরে সূচরিতা বলে, জানা কথা, তুমি এখন আর কারও নহ। তুমি এখন একা•ত আমার। সাত পাকে বে'ধে ফেলেছি তোমাকে।

দড়ির আবেণ্টনে আবশ্ধ আমি, সারা
দেহে অস্বস্থিতর দহন লাগে। যেন এক
ভয়াল সাপ জড়িয়ে আছে আমাকে, শরীরে
তাই বিষের ক্রিয়া শ্রুর, হয়েছে। আপন
সতা, ব্যক্তির যেন হারাতে বসেছি। আমি
আর আমি নেই। অতি কল্টে মোহ জয়
করতে চেন্টা করি। কাণ্টহাসির সংগে
বললাম্ যদিও অবশ্য এটা আসল অভিনয়
নয়। মহলা চলেছে মান্ত।

স্চরিতা বসে পড়ল আমার পাশে।
সোফার গদী ফেন নেচে উঠল। আমার কোলে
তার একথানি শুদ্র হাত বিছিয়ে দিয়ে
আমার কাঁধে মাথা গালিরে বললে, আমার
কাছে কিন্তু রিহাসালাই হল আসল। ভূল
এটি শুধরে নেওগা বায়। যা কিছু শিক্ষা
দীক্ষা লাভ করা বায় রিহাসালে। শিক্ষানবিদী দেয় হলে তবেই যা পালাপোক্ত
অভিনেতা হওয়া যায়। পরীক্ষা না দিয়ে
ছমি কী বি ই ডিপ্রী পেয়েছ মানস?

বললাম, আজা এখানেই যবনিকা পতন হোক। আমি এবার বাই। ডারপর তোমাকৈ যেতে হবে তোমার মামার বাড়িতে। নিমন্ত্রণ রাখতে।

নিরাশার কালে ছারা ঘনার তার মুখে।
চরম উন্দীপনা যেন এক নিমেবে উবে বার।
বিস্ফারিত চোখের দ্মিট, স্তিমিত হতে
থাকে। মিয়ানো সুরে বলে, না হয় আর
না-ই গেলাম আজ। বলে দেওঃ। বাবে
যা হয় একটা কিছু। বলতে পারি, ভীষণ
মাথা ধরেছিল। সারিজন খেলাম, তব্রুও
সারল না।

দীর্ঘশ্বাস ফেলতে হয় আমাকে।

দিনশেষের ঠাপ্ডা হাওয়া চলেছে বাইরে।
ঘরের মুক্ত জানালা থেকে দেখতে পাই
রাস্তার অপর তীরে তীরে সারি বাড়ির রোলং
থেকে ঝলানো শুক্লো রঙীন শাড়িস্বালি
বাতাসে দ্লো দলে উঠছে। রাস্তায় ছুটেন্ড
দ্রুকত ট্যাক্সির হর্ন বেজে চলেছে। পাশের
বাড়ির রেডিওতে দিল্লী থেকে প্রচারিত
বাংলা সংবাদ পুড়ছে ঘোষক।

হাত-ঘড়ি দেখলাম। সাড়ে সাতটা বেজে গেছে। লক্ষ্য করি, স্টোরতা কেমন ধেন নীরব নিধর হয়ে আছে। মূখে ধেন আষাঢ়ের মেঘ নেমেছে। জানালার বাইরে রাতের আকাশে চাহনি থমকে আছে। সোফায় এলিয়ে দিয়েছে নিজেকে। ধেন এক মৃতের হাত পড়ে আছে আমার জানুতে।

আবার একটা সিগারেট ধরাই। অশৈথর্য উদ্বেগ দমন করতে চাই হয়তো।

স্ক্রিতা বললে, আমার খ্ব ভালো লাগে তাকে যে ছেলে সিগারেট খায়।

পরোক্ষে যেন আমাকেই প্রশংসা করলো। দ্বাধ উৎসাহিত হলাম। বলালাম্ আজ্ঞাকালা বৈজ্ঞানিকরা সিগারেট খেতে খেতে রায় দেন্ ধ্মপান দ্বাশেধ্যর পক্ষে ভীষণ ক্ষতিকর। ধ্মপান করলে ক্যাম্সার, গ্রমবাস্স—

ক'টা বাজল মানস? সাতটা?

কী যেন মনে পড়তেই সময় জ্বানতে চাইল সে।

সাতটা বেজে চল্লিশ হয়ে গেছে। প্রায় পৌনে আটটা। আমি উঠলাম।

সোফা ছেড়ে উঠে পড়তেই স্চরিতাও উঠে পড়ল। বললে, সে কী! তুমি তা আছো নিন্ঠরে! হার্টলেস! মানস, আমি ভেবেছিলাম তুমি—

কেন? কী অপরাধ আমার? বিয়ে হয়ে গেল। তারপর?

ভারপর কী? তুমিবল, আমি তো জানিনা।

জানো না? ন্যাকামি?

সতি। বলছি। আমি মিথো বলি না কলনও। মিথো বলা আমার স্বভাবে নেই।

অর্থাৎ সহক্ষে মিথো না বললেও শন্ত পাল্লায় পড়লে অনায়াসে মিথো বলতে পারে। পুরুষরা ভীষণ মিথাক হয়। কথায় কথার বাজে কথা বলে।

ভূরতে কুণ্ডন ফটিয়ে রাগের স্বের বলে স্চরিত। কেমন যেন হিংস্ত দেখার তাকে। ক্লোধে কুটিলা। মারম্খী। বলে, তোমার জন্যে আমি কী না এমন একটা নেমান্তম ক্যানসেল করলাম। আর তুমি কী না মাঝার্শরিয়ার নোকা ভাসিয়ে দিরে কেটে পুড়তে চাইছ? তা হতে দিছি না।

কী করতে হবে আমাকে তাই বল। কেউ যদি এসে পড়ে এখনিন!

আমি বললাম নির্পায়ের মতো। ঘরে পারচারী করতে করতে।

কী করতে হবে! জ্ঞানো না,
বিশ্বাস করতে হবে আমাকে ।
চলা, আমরা এখন বিছানায় বাব। ফুলেশবারে
পালা শ্রে; হবে এবার। বীরেডি মাই
ডিয়ার ফুলে! ননসেম্স! দশটার আগে কেউ
ফিরছে না।

কথা বলতে বলতে খরের আলোটা নিভিয়ে দিল স্ফরিতা। বললে, আর আলোহ নম, এখন অংধকারে থাকতে হবে। জানো না, নতুন বর বৌ অংধকার ঘরে দুকলে আর বেরোতে চার না?

কথার শেষে আমার হাত ধরে হাচিকা

এক টান মারল স্টেরিকা। আমি চক্রসাম

তার সাথে সাথে। যেন বধ্যভূমিতে চলেছি।

আমাদের দ্রোনের পতনের সপো সপের

হরের থাটথানা কাচি কাচি শব্দ তোলে।

আমার ব্রকের মধ্যে নিজেকে প্রেলপ্রির
সংপ দিয়ে ফিস ফিস কথা বলে স্টেরিতা।

বলে, দ্র্থট্! পাজী! বেলিক!

নিশ্ছিদ্র অংধকরে। কিছুই দেখা যায় না। হঠাৎ অনুভব করলাম ফেটা ফোটা জল পড়ছে আমার মুখে চোথে চিবুকে। তংত অলু যেন।

তবে কী কদিছে স্চেরিতা। বেদনার জ্বালা ধরে আমার ব্বে। সমবেদনার দংশন ধেন। তব্ও বললাম, স্ক্রিডাকে ঠকাতে চাই না আমি। বিবেকের কাছে কী জ্বাবাদিহি করব?

স্ক্রিম কিছ্ জানতে পারবে না। তুমি আমাকে নাও।

কামার সারে বললে সাচরিতা। ফা্'পিয়ে উঠল যেন।

নিবিড়তর বন্ধনে আমি তাকে কাছে টেনে নিই। মুখের মধ্যে আবার সেই আম্বাদ পাই। যেন মিণ্টি মিণ্টি কেলী। যেন অফ্রন্ত অশেষ।

খানিক বাদে মুখ সরিয়ে স্চরিতা বলে, এক মিনিট সব্র কর। লক্ষ্মীটি।

অণ্ধকার। ঘন আর গভীর। শনেতে পেলাম একটা একটা বোভাম খুলছে সে। চিপকলের বোতাম।

তারপর থেকে লাহিড়ীদের আবাসে আর হাই না আমি। সংস্মিতার সংগে দেখা হর আমার। ঘরে নয় বাইরে। জনতার অরণো, পথ চলতে। হোটেলে সিন্মেয়।

চলত টাক্সিতে।

একদা এক সংখ্যায় সংস্থিতা জানাল,
দিদির বিয়ে হয়ে গেল। পাচ খবে ভালো।
চার্টার্ড আকোউন্টেন্ট। হাইকোট পাড়ার
চেন্বার। কলকাতার বর্ডি, গাড়ি টেলিফোন।

আমি শ্বাস ফেললাম একটা। দীর্ঘ-শ্বাস। স্বসিতর শ্বাস।



ি সিশিড়তে দাঁড়িয়ে এক সংশ্য এত কথা হয় না। তাছাড়া স্থাংশ্রেও তাড়া ছিল। বললে, পরে দেখা করবো। তুই তো এখানেই চাকরি করিস্?

প্রনো বন্ধকে যতক্ষণ মুখোম্থি
পাওয়া যায়। দিবোদন্ সাগ্রহে বললে, হাঁ।
এই বিশিন্ধ দিয়ে উঠে দোতলায় ডান দিকের
প্রথম ঘরটার পর মিন্টার মুখাজনী বললে
চাপরাদাী দেখিয়ে দেবে,—নয় ডো দিবলিপাম্-এর পি-এ বললে যে কেউ বলে
দেবে, আমি অপেক্ষা করবো। আসিস্
কিল্ড!

স্থাংশ্ব খাড় নাড়লে।

শ্ধ এই অফিসে নয়, এখানে বড় চাকরি করে দিব্যেদন্। মিন্টার মুখার্জি! পিনএ!

আগে জানলে কাজ হ'তো। স্থাংশ্র মনটা খ্'ত থ্'ত করতে লাগগ। দরখাস্ত করবার সময় যদি ঘ্ণাক্ষরে জানতো তাহলে আজ ইণ্টারভিউ-এ এ ধ্ক-প্কুনি ধাকতো না।

দিব্যেলার সহযোগিতায় শিবলিপামের লোক হয়ে যেত। চাকরি ঠেকায় কে? এক আঁচড়ে ডিরেক্টর অব পার্সোনেলের চক্ষ্

এমনি না হলে মনকে বোঝান বেতো কিন্তু এখন না হলে আর বোঝান যাবে না। দিবোলন্ যেখানে অমন চাকরি পার সেখানে সে এই সামান্য চাকরিটা না পেলে লংখা রাখবার আর জারগা থাকবে না। আর জানাজানি হয়ে লংকা আরো বাড়বে।

ওপরে উঠতে উঠতে স্থাংশ্মনে মনে বললে, না, আর দেখা-সাক্ষাৎ নয়— যে যেমন আছে তেমনি থাক—যেমন চুপিসারে এসেছে তেমনি চুপিসাড়ে চলে যাবে ইন্টার্রাডিউ-এর পর। আর যদি কোন-দিন দেখা হয় দিবোল্দ্র সপো বলবে সময় পায় নি। ফ্রিয়ে যাবে!

এন্ডারসন্ হাউসের সির্ণড় আর ফুরোর না। সুধাংশ্র পা জড়িয়ে আসে।

নিশ্চিত ক'রে তার মনে হর, আঞ্চ ইণ্টারভিউএ সে নির্ঘাণ ফেল করবে। এখন থেকেই বুক ঢিপ্ চিপ্ করতে আরম্ভ করেছে। দিবোল্দুটা সব মাটি ক'রে দিলে, মাঝখানে শনির দৃষ্টি দিরে গেলা। সে জানতে চায় নি, ওর অত কথা জানাবার দরকার ছিল কি? যত চাল!

তব্ মনটাকে সংধাংশ, কিছুতে স্থির করতে পারে না। প্রতি পদক্ষেপে অস্থির হ'য়ে ওঠে আপসোসে ঃ তার বাল্যবংশ, দিবোন্দা এখানে বড় চাকরি করে! এত খবর নিলে, আর ওট্বু খবর সংগ্রহ করতে পারলে না! চাকরিটা হাতের কাছে এসে ফসকে যাবে শেষ প্রযন্ত!

হাত কামড়াতে ইচ্ছে করে সুধাংশর '
যাবে নাকি একবার দিবোলনুর কাছে? বলে
আসবে এখানে আসার উদ্দেশ্টো? শেষ
মুহাতে ইনফুরেলস করবে? শিবলিলগমের
মুখের কথা বা থাবার আঁচড় একটা ঃ টেক্
হিম! বাস।

না, সংধাংশরে কোথায় যেন বাঁধ।
দিবোন্দকে ধরে চাকরি তার মনঃপতে নয়।
যেভাবে হ'চ্ছে হোক, বাল্যবন্ধ যৌবনে
প্রতিশ্বন্ধনী—আর ঠিক কি, তার কথায়
অমনি সে শিবলিঙগকে নড়াবে! মনে মনে
কৌতুক বোধ করবে নিশ্চয়। থাকা গে।
বিনা সংপারিশে যন্দরে হয়। নিজের
চেণ্টায় যতথানি সম্ভব।...

বংধুকে দিব্যেশন যথোচিত অভার্থনা করে নিজের ঘরে বসালো। হাত বাড়িয়ে সিগারেট দিলো। ঠাক্ডা পানীয়ের অভার দিলো।

এখন মনে হচ্ছে, তখন দিবোদন্কে বললে হ'তো এগ্রন্ডারসন হাউসে আসার উদ্দেশটো। তারপর ও যদি কিছু করতো—

ঘরের চারপাশে চোথ ব্লিয়ে স্থাংশ; বললে, ভূই কতদিন এথানে চাকরি কর্মচস্?

এখানে চাকরি করাটা যেন বিশেষ লক্জার—লংকিয়ে নেশা করার মত, দিবেলন্ চাপা দেবার মত কললে, তা শ্রে, থেকে—

স্ধাংশ, বললে, তাহলে পাঁচ ছ' বছর বল!

দিবোলন্ হেসে বললে, আর বলিস্ কেন! স্থাংশ, গম্ভীর হ'য়ে গেল। বল্ধর হাসিতে যোগ দিতে পারলে না।

দিব্যেন্দ্র জিগোস করলে, তারপর কেমন আছিস? বহুকাল দেখা-সাক্ষাৎ নেই! সেই কবে কলেজে সব পড়েছিল্ম মনে আছে? মনে আছে বলেই বোধ হয় এত আদ্চর্য বোধ করছে স্থাংশ, আজ। সেই দিব্যোদ, আর এই দিবোদন, ভিন্ন মান্য। দশ-বার বছরে সম্পূর্ণ বদলে গেছে, একটা চিরকেলে পেট রোগা ছেলের হঠাং স্বাস্থ্য ফেরার মত—বিশ্বাসই হয় না। দৈব, টোটকা-ট্টকির ফল আর কি!

সুধাংশ, বললে, সেইখানেই আছিস; তো? কালীঘাট!

দিবোপন্ন যেন আহত হ'লো! বললে, কালীঘাট, তবে দেখানটা নয়, অন্য বাড়ি। স্থাংশ্র মনে হ'ল, প্রকারান্তরে ওর খোলার বস্তির উল্লেখ করা উচিত হয় নি। অক্থান্তরে বাসান্তর নিশ্চয়ই ঘটেছে। ধ্তির বদলে প্যান্ট!

দিবোন্দ্ব বললে, আয় মা একদি আমার ওখানে। গ্লপ হবে।

স্থাংশ্ অনামন>কভাবে বললে, বাব। আগ্রহ দেখিয়ে দিবোল: বললে, সভিচ আসবি? কবে? না, ভূলে যাবি?

আশ্বাস দিয়ে সুধাংশা বললে, না ভূলবো কেন। তবে কি জানিস এখন যে যার ধাংবায় বাসত, সময় পাই না।

দিবোদনু হয়তো বিশ্বাস করলে না, তাই চুপ করে রইল। পুরনো বদধ্দের আর কাছে না-পাওয়ার কারণ বোধ হয় এ নয়।

স্ধাংশা বললে, আর কারো সংগে তোর দেখা হয় ?

দিবোলদ্ হতাশার স্বেরললে, হাবে না কেন! কিবতু ফিরে আর কেউ ওম্থে হয় না। দরকার ছাড়া আর কে নড়ে বেডায় বল্! দ্টো মনের কথা বলবার লোক পাই না। ভাবি, অফিস না থাকলে বাঁচভুম কি করে! স্থোংশ্ বংধ্বে মনোবেদনাটা বোঝে, বলে, দেখিস আমি ঠিক ধাব। তথন—

দিবেন্দর্ পর্থ করতে বললে, াশ. আজই চল। আর ঘন্টাখানেক পরে এক সংগোধান। কেমন?

স্থাংশ তাড়াতাড়ি বললে আজ নয়, আর একদিন নিশ্চয়ই যাব। আজ একট্—

দিবোশন অবিশ্বাসের সন্ত্রে বললে, ঐ হ'লো! শেষ পর্যণত সময় আর হ'বে না। আমার জানা আছে।

স্থাংশ্ বংধ্কে উৎসাহিত করতে বললে, তোর ওখানে সে আন্তা আছে তো? গান-বাজনা?



ভৃতীয় ব্যক্তির মত দিব্যেন্দ্র বললে, হ', গান-বাজনা। আসলে দেখতে পাবি'।

হৈসে সুধাংশ, জিগ্যেস করলে, কি
দেখবা? ও-পাঠ তুলে দিয়েচিস না কি?
আর এক দফা দ্বিগারেট ধরিরে
হাতের মুঠোর আগনুনটা বন্ধরে মুথের
কাছে আলগোছা ধরে দিব্যেদ্দ বললে,
রেরাজ নেই বহুকাল। আর কাকে নিরে

হ'বে ও-সব?
স্থাংশ বকলে, কেন তোর বোন তো গিবিং গাইতো।

দিবোন্দা অনামনকের মত সিগারেটটার দীর্ঘ টান দিলে। এদিক ওদিক আগ্যুনের ফুলকি ছাটলো।

স্থাংশ, জিলোস করলে, স্মীতি গান ছেড়ে দিয়েছে নাকি? তখনই তো কত মেডেল-কাপ পেয়েছিল! ক্লাসিক্যালে নাম করেছিল, অল্ বেণ্গলে প্রথম হয়েছিল যেন।

দিবোপন জবাব না দিয়ে সিগারেট প্রিড়য়ে হাসতে লাগল।

্রহস্য ভেদ করতে স্থাংশ্ আকার প্রশা করলে, স্নীতির বিয়ে হ'য়ে গেছে ব্রি? তাই বল!

চাপরাশী ঘরে চ্কে কি একটা কাগজ হাতে দিলে, দিবোন্দ্র উঠে দাঁড়াল, বললে, বস্, সাহেবের ঘর থেকে আসচি।

স্ধাংশ, মনে মনে অপ্রসত্ত বোধ
বর্গ একট্ আগে অবাদতর প্রশন করার
জনা। দশ বছর পরেও স্নীতি তেমনি
লপ্ততিহত কটে দাদার বন্ধাদের সামান
মন গাইবে—নিলাজ সরে চর্চা করতে শারে।
পার প্রাল বছরের মেয়ের প্রাক্ষ যা গণে
প্রতিশ-ছানিবশ বছরে তা তো দোষে
বিষয়ে।

কিন্তু বড় ভাল গান গাইতো **স্নীতি।** গান-বাজনায় দিব্যেন্দ্রদের বাড়ীর আব-হাওয়াটাও তথন বড় লোভনীয় ছিল। ^স্থসামাধা কত গান যে স্নীতি গাইতো. বড় মিষ্টি গলা আর দর্দ ছিল সে গানের। স্ধাংশার মত যারা গানের পা' বোঝে না ^{ভারা}ও গান পাগলা হ'য়ে যেত। খোলার চালের আকাশ অন্বাগে কপিতো। কোন-দিনই মনে হ'তো না স্থাংশ্দের বৃহত্র একটা এ'দোপড়া ঘরে তারা অবসর কাটাচ্ছে। দিবোন্দ্ মাথা নেড়ে নেড়ে ভবলা বাজাতো, স্নীতি সামনে বসে অপ্রতিভ কর্ম্ভে গান গাইতো, আর দিবোদনুর অশ্তরজ্ঞা বন্ধারা এদিক ওদিক বসে থাকতো ^{তুপ করে।} মাঝে মাঝে দিবোন্দর মাকে ^{দর্জা}র সামনে দেখা যেত। দরিচের **দ্বগ** অপ্রে মনে হতো। স্ধাংশ্র মত অনেকে বলতো দিব্যেন্দ,কে—বোনকে কোনদিন গান ছাড়াস্নি—খুব করে গান শেখা!

তা দিবালন্ সাধামত বোনকে গান শিখিয়েছিল। দুশ বছর আগে অনেক মেডেল, কাপ, সাটিফিকেট যোগাড় করেছ স্নীতি। ক বছর দিবোলন্ত বোনের নামও শোনা গিয়েছিল গীত-র্মুক্তের মুখে-মুখে—মের্মেটি ভাল গায়। তারপর আর কোন খে**জি**খবর রাখে নি স্থাংশ**ু**।

ছিছি, বড় অসভাতা হ'রে গোল। দিবোলনু নিশ্চরই মনে মনে ক্লেছয়েছে।

ফিরে এসে দিব্যেন্দর্ বললে, कि বলছিলি ? গান!

সাধাংশা বংধার মাধের দিকে অর্থাপার্ণা দ্বিটতে চাইলো।

অন্যমনস্কভাবে দিব্যেন্দ্ম বললে, আসিস্ শোনাব ।

স্থাংশ, বিসময় প্রকাশ করলে, স্নীতি এখনো গান গায়! বিয়ে হয় নি?

দিবোন্দ ফাইল পড়তে পড়তে বললে, গায় না, বললে গায়। তোর সামনে গাইবে। স্থাংশ সাহস ক'রে আর কিছ জিক্তেস করলে না। দিবোন্দ্রে কথার স্রটা বেন কেমন—কেমন। বোনের সম্বন্ধে বুঝি আশান্ত্রপ ফল পার নি সে।

সংধাংশরে মনে কেমন খট্কা লাগে। এত বয়েস পর্যাত স্নীতির বিয়ে হয় নি ? দিব্যালন্তো মলন রোজগারপাতি করে না!

স্থাংশ**্লিজ্ঞা**স করলে, তুই বি**রে** করেচিস?

দিব্যেশন জবাব দিলে, না। তুই? সন্ধাংশন বললে, কবে!

দিবোদ্দ্র জিজ্ঞাস করলে, ছেলে-প্রেল ? পাঁচটি !

শিউরে উঠে দিবোলত্বললে, করেচিস কি? আাঁ!

আর—র! অপ্রতিভ বোধ হয়

नজর ब्ल-विक्ति ५२-००

বিদ্রোহী কবি নজর্ল ইসলামের উপন্যাস-গল্প-কবিতা-গান ও সর্বশ্রেণীর রচনার স্নিবাচিত সংগ্রহ। ভূমিকা প্রেমেন্দ্র মিত্র।

নজর্বলেরপ্রেমেরকবিতা

কবি নজর লৈর প্রেমের কবিতার সমষ্টি। নতুন দ্বিতীয় সংস্করণ প্রকাশিত হলো। দাম তিন টাকা।

নজর্বল-পত্রাবলী ৫-০০

সাহিত্য জীবনের বিভিন্ন সময়ে লেখা কবি ন**জর্লের** চিঠিপতের সংকলন।

बिक करता युविवारित कविता

কবি রচিত নানান স্বাদের কবিতার সংগ্রহ। কবির এ-ধরনের কাব্য সমন্টি এই প্রথম প্রকাশিত হলো। দাম পাঁচ টাকা

नজর্ল-সম্তি ৬-००

সম্পাদনা ঃ বিশ্বনাথ দে

কবি নজরুল সম্পর্কে বাংলার একশো একজন কবি-সাহিত্যিক-শিল্পী-মনিষ্ঠার লেখার সংগ্রহ। ''এ বই প্রকাশ করে সম্পাদক ও প্রকাশক একটি জাতীয় কর্তব্য পালন করেছেন।'' —দৈশ

সাহিত্যম্ ॥ ১৮বি, শ্যামাচরণ দে শ্রীট ॥ কলিকাতা--১২

স্থাংশ্কে। নিবোন্দ্র রহসা ক'রে বলে, ম্যানেজ করিস কি করে রে?

যা রোজগার করি আনতে আনতেই ফুরিয়ে বার!

স্থাংশ; বললে, গরীবরা যে ক'রে মানেজ করে--এখানকার মাটি ওখানে ওখানকার মাটি এখানে আরু কি!

থোঁচাটা দিবোদ্দ ব্ঝলে, নিজেকে সংশোধন করে নিজে না, তা নর। আজকাল একার চলাই দায়, তায়--সতি। বলচিস তোর পাঁচটা ছেলে-মেয়ে? বাঃ।

স্থাংশ, হাসলে। সত্যি না তো মিথে। আমার ছেলেপ্লের ভার তো আর পাঁচজনে নেবে না! মিথে। বলে লাভ?

অনেকে রগড় ক'রে বলে কি-না।
দিবোদদ, হাসতে লাগল। তোকে দেখে
কিন্তু মনেই হয় না। বরং আগের চেয়ে
তোর চেহারাটা ভালই হয়েচে।

স্থাংশ, সংগ্য সংগ্য বললে, না হ'লে পাঁচটি সম্ভানের পিতা বলে মানাবে কেন? Father's personality

দিবোগদ্ মুখে এক রক্ষ শব্দ করকে বংধরে কথায় কাতৃক অনুভব ক'র। সুধাংশ্য জিগোস করলে, তুই বিরে কর্নবি না? নাকি confirmed?

দিবোদন্ অনামনস্কের মন্ত বললে। বোনটার একটা বাবস্থা করি আগো। সন্দি কথা বলকে কি যত দেখচি, তোদের ঐ বিয়ের ওপর যেলা ধরে যাচ্ছে। যত সব—

ইংরেজী গালটা দিবেশ্দ; প্রুক্ত উচ্চারণ করলে না। তবে বোনের বিরের বাপোরে সংসারটাকে সে চিনে নিরেছে বোঝা গেল।

স্থাংশ্ বললে, স্নীতি তো দেখতে ভাল। এতদিনে বিয়ে হলো না, আশ্চর তুই ঠিকমত ডেফা করিস্ দি, না হ'লে—

দিবোদন্ বাধা দিলে, চেণ্টা করি নি
মানে! তা বলে তো আর জেনে শনে একটা
vorthless -এর হাতে বোনকে
তুলে দিতে পারি না। যে নিজের দর
বোঝে না, সে আমার বোনের সেণ্টিন্রেন্ট
ব্রবে কি ক'রে। বাংলা দেশে একটা
ছেলেরও শিরদাঁড়া নেই, বিয়ে করবে!

দিবোপদ্ হয়তো বলতে পারে ৩ কথা।
শিরদীড়া না থাকলে তার মত কেউ নিজের
চেণ্টায় এতটা উমতি করতে পারে না। এই
অফিসের কর্তার পি-এ। তার ওপর আরো
হয়তো কত কি!

স্ধাংশ আমতা আমতা কারে জিগ্যেস করলে বোনের বিরেতে কত খরচা কর্তে চাস?

খোলাম কৃচি গোনার মত দিবেলের বললে, পাঁচ-দশ, বিশ হাজার Anything for a right groom!

স্থাংশ্র চকা স্থির, বলে তি দিবেদের। মনে হ'লো ধরাটাকে সরার মত ধরে ফেলে দ্'-পারে থে'ংলে কৃচি-কৃচি করে ডেঙে দিবোন্দ্ সবাইকে ডেকে কলছে, চলে আ-ও কে কত চাও-ও!

এর পর আর কথা চলে না, বা বোনের বিবের জন্যে যে দিবোলার কোন চাড় নেই একথা বলা যায় না। দশ বিশ হাজার টাকা যে খরচ করবে সে পাত বাজিয়ে নেবে বই-কি। হলেই বা বোন।

মনে মনে সুখাংশ ইয়ানিবত হয়।
তুলনার সে আর কি করতে পেরেছে এক
চাকরির পর চাকরি বদল করা ছাড়া।
দিবোলনু শা্ধ ভাল চাকরিই করে নি.
বোনের বিয়ের জনা দম্তুর মত টাকা
জাময়েছে এই ক' বছরে। দিবোলনুর বাবা
এই সেদিনও কালীঘাটের যাত্রী ধরতেন
আর ভালার কমিশনে সংসার চালাতেন।
টুইশানি করে দিবোলনু নিজের পড়ার
থরচ চালাতো।

স্ধাংশ্ মুখে বললে, আমি দেখবো সুনীতির জনো পাত।

দিবোল্য খ্ব বাধিত হলো বলে মনে হ'লো না। এমন একটা ভাব করলে যেন জাতো মেরে বোনের পাত যোগাড় করবার সংকলপ তার।

কিছুক্ষণ চুপ ক'রে থেকে দিবোলদ, একটা মীতিদীঘা বকুতা দিলে আধ্যনিক বাঙালী হিশ্ব সমাজের অবনতির সম্বধ্যে। মাধার টিকি থেকে পারের গোড়ালি পর্যাত পচ ধরেছে—ছেলের বাপ, আত্মীয়স্বজনের সব অশ্তাজ, জোট লোক, তার বোনের বিয়ে না হোক, এ সমাজের আর আশা নেই।

এত কথায় দিবেন্দরে রাগের ঠিক কারণটা স্থাংশা ধরতে পারে না। অপছম্দ করার মেয়ে নয় স্নীতি, তার ওপার ভাই-এর টাকা দেবার ক্ষমতা আছে, অথা এতদিন বিয়ে হয় নি। রহসোর মত মনে হয় স্থাংশ্ব।

কে জানে এর জনো দিবোদনের টাকার গরম দায়ী কি-না। হয়তো উৎসকে পাত্র পক্ষের সামনে অমনি গরম-গরম বক্তাও করে। কুট্দিবতা করতে পাত্র পক্ষ দক্তাবতই ভর পায়।

এমনি একটা যোগা ভারের অভিভাবকত্বে পড়ে স্নাতির অবস্থাটা কি
রকম হ'রেছে ভেবে স্থাংশ্ বিশেষ থ্লা
হ'তে পারে না। চোথে না দেখলেও স্দীর্ঘ
কুমারী জীবনের অপ্রকাশা বেদনার একটা
র্প স্থাংশরে কাভে স্পন্ট হয়ে ওঠে।
পরম্থাপেক্ষী স্থের, প্লেক আনশ্দর,
আশা-ব্দেন্র বার্থতা! হয়তো স্নীতির
ম্থে সে কথা লেখা হ'রে গেছে এতদিন।

দিবে।পদ্ বললে, স্নীতিকে আফি বলি—এই নে টাকা, চলে যা থিয়েটার, থেলার মাঠ, ষেখানে খুশী তোর। ট্যাক্সি ফিটন তোর যাতে খুশী। বিয়ে না হ'লে কি জীবন বার্থ হয়ে যাবে?No...Never

যুক্তি দিয়ে হয়তো কথাটা গ্রাহা, স্ধাংশরে মন স্বীকার কর্ক বা না-কর্ক। স্ধাংশ্যু মুখে বললে, তা বটে। বিষে ছাড়া কি মেয়েদের আর কাঞ্চু নেই!

দিবোপন্ বোধ হয় উৎসাহিত বোধ করলে : বলি পড়া-শোনা করতে। তাতেও ভিসম্বীকসন হ'বে। কি বই চাই, যা চাইকে হাতের কাছে পাবে! বোনের জনে। করতে কিছের বাকি রাখি নি। স্থাংশ্য বিশ্বাস করে। ভাই-এর কর্তন্থ দিবোলন্য করছে। বলবার কি থাকতে পারে ভেবে পার না। নেহাং নিশন্ক না হলে কোন দোষ ধরতে পারবে না।

হঠাৎ দিবোলন এমন দীরব হ'ল যায় যে স্থাংশ অফবিল্ড বোধ করে। মনে করে প্রসংগটা না তোলাই ভাল ছিল। ওদের সাথ দঃখ ওদের থাকাই ভাল। ওদের জীবন ওরা যেভাবে পার্ক যাপন কর্ক। স্থাংশার এ কোতা্হল বোধ হয় আমার্জনীয়।

কথা ঘ্রতে স্ধাংশ, বললে, তা হ'লে ভালই আছিস বল। চাকরিটা থ্ব বাগিয়েছিস!

দিবোদন হাসল ঃ কোন মানে হয় লা।
আজ দ্ব' বছর ধরে বস্ দেতাক দিচ্ছে—
মিণ্টার মুখাজি তোমার একটা ব্যবস্থা
করবো! পাঁচশো টাকায় পচে মরতে হবে
শেষ প্যশ্ত!

স্থাংশ্ বিদ্যায়ে হতবাক, তার অভিজ্ঞতায় এই প্রথম বাঙালী ছেলের মুখে পাচশো টাকায় পচে মরার থবর শুনজে।

না, নির্ংসাহ হবার কোন কারণ নেই। জানা-শোনা কেউ এখানে আসতে চাইকো তাই বলি কেন আস্বে, এ আবার একটা জায়গা!—এর চেয়ে আমেরিকান গ্ডেস্ ফিরি করা চের ভাল। ব্টন্!

ভাগিসে স্থাংশ্ এতক্ষণে তার এখানে আসার হেতুটা প্রকাশ করে নি। শ্নলে দিবোন্দ, না জানি কি বলতো ম্থের ওপর—ইন্টার্ডিউ পাওয়ার চেঞেও তা প্রিতাপের হ'তো। মানে মানে চেপে গেছে ভালই ক্রেছে সে।

ভয়ে ভয়ে স্থাংশ, বংধ্রে কাছে বিদায় নিলেঃ আজ উঠি। শিগগীর একদিন যাবো তোর ওখানে। ঐ তো তেল-কলটাুর ওপর দোতশা বাড়ী? ঠিকু আ্কে।

দিবোদদা মাথা নেড়ে সিগারেটের *িন্টা* বন্ধার সামনে এগিয়ে ধরকো...।

দিন দ্য়েক পরে একদিন সম্পেরেলায় স্বাংশ্ব সভি। সভি। দিবেল্বর বড়ী এল। রাহতা থেকে সোজা ওপরে উঠে এসে কড়া নাডলো।

একটা কৌতুককরতায় দোরের সামনে অপেক্ষা করলে—দরজা খালে যে কেউ দেখবে সেই অবাক হবে, এত দিন পরে স্থাংশ্যকে পথ ভূলে এদিকে আসতে দেখে। এ বাড়ীর সি^{র্ভ}ড়র ঘ্**লঘ্লি জানালা** দিয়ে নীচে খোলার চালের বস্তিটা এখনো হয়তো চেণ্টা করলে দেখা যায়। একট ওলোট-পালট হয়েছে দৃশাটার—আগে ঐ খোলার চালের বস্তি থেকে চোখ তৃষ্ণে এদিকে তাকাতে হতো (নতুন বাড়ীটা দক্ষিণটা হাত করে নিয়েছে), এখন তলার দিকে নজর দিলে তবে বস্তিটা দেখা <mark>যার।</mark> গা-ছড়া গলিটা পায়ে পায়ে জড়িয়ে আছে, গাসপোষ্টটা নেড়া-নেড়া।

স্থাংশ বার করেক র্মালে রংখ মুছে নিলে। ওপরে সিভি পথটা কড় নিজনি, এখন তাকে এডাবে বেখাল ফা-কেট স্বেদ্ধ করতে পারে। নীচে তেলচিটে শুস্টা বন্ধ হয়ে অস্বস্পিটা আরো বাড়িয়ে পিয়েছে। সুধাংশ, কড়ায় ঝাঁকানি দিলে। দিবোন্দাই দরজা খ্লালে, আরে, তুই।

আয়, আয়।

চ্চেক্ট বস্বার ঘর। দিবেলদ্ব চাল মার নি। দেখে শুনে স্থাংশ্রে বিশ্বাস হর দিবেলদ্বে স্সমারের কথা। আলমারী ভতি চকচকে নতুন বই, টেবিলে ফ্লপাভা কাটা কভার, ফ্লেদানিতে শ্কেনো রজনী-গধা। চিনে মাটির আশ-টে!

ত্রিক ভূদিক চেয়ে সুধাংশ বললে, কত ভাড়া দিস্?

অন্দরের দিকে প্রদাটা ফেলে দিয়ে এসে দিবেদ্যু বললে, আশি টাকা! প্রাস প্রাচালন দেলামী!

স্ধাংশ্বিসময় প্রকাশ করলে, ইস-স্! ক'খনা ঘর?

তুর্নলি প্লি! একেবারে চোর, গলাকাটা! বাতী-ঘর আছে নাকি তোর সন্ধানে?

স্ধাংশ অক্ষমতার হাসি হাসক্ষে নিংশকে। একটা অবাস্তব কথা অসংখা মধে শুনে শুনে ঘোড়ার ডিমের মত অবিশ্বাস।।

দিবেশেন্ বললে, একটা প্রবেশেম ! ক'বছর কত লোককে যে বলেছি তার ঠিক নেই! দেখিস্ যদি পাস।

স্ধাংশ মাথা নাড্লে। বললে, দ**ीक** नठें। বেশ বেলো!

দিবোদম বললে, বসিতটার জনো। ভাগিসমুমাথা ভোলে নি।

তোরই অস্বিধা! টাকার কিহুটো তব্ উস্ল হয়। স্ধাংশ্ অর্থপূর্ণ দৃণিটতে কথ্য দিকে চাইলে।

দিবোদ্ম কি ব্রালো কে জানে, বললে তা যা বলোচস্! পাথরে দরকার হয় না।

তাবা বলোচস্! প্রির দরকরে হয় না। স্থাংশ্ শেল্য করলে, একটা খরচ তোবেংচেচে!

দিবেলের চুপ করে গেল। কিছুক্রণ
অপ্রতিকর নীরবতার মধ্যে কাটে। দেখে
মনে হয় না, উভয়ে উভয়েরই সালিধো
বিশেষ স্থা হয়েছে। অনভিপ্রেত না
ইলেও আগ্রহশীল নয় এই সাক্ষাৎকার।
ডেকে এনে অপমান করার মত মনে হহ
স্থোংশরে। কথা কইবার যদি কিছু নাই
থাকে তা হলে বাড়িতে আসবার জনো
নিমান্ত্রণ করেছিল কেন? আশ্চর্য লাগে
দিবেশেরর বাবহারটা।

কিছকেণ চুপচাপ বাসে থাকবার পর স্থাংশ্ বললে, আজ উঠি।

দিবোদন্ কেমন যেন এক ধরনের গাভীর হ'রে বসে আছে। হাঁ-ও বলে না. না-ও বলে না। স্ধাংশ্ আবার বললে আজ চল্ল্ম! একদিন আমার ওখানে আসস্

হঠাং যেন দিবোদার খেরাল হরেছে সংশ্রেখিতের মত বললে, এরি মধো! চা খাবি না?

স্ধাংশা বললে, না থাক, আব এক দিন খাওয়া যাবে। দেখে তো গেলাম বাসা।

দিবোদম্জেদ করলে, না. বস. চা আনচ্ছি। বলেই চট করে পদা ঠেলে পাশের ঘরে চলে গেল। সংশা সংগা একটা কাপ-ডিস্ হাতে করে বেরিয়ে এসে চুটি দ্বীকারের ভাগতে বললে, এক মিনিট।

ঘর থেকে দিবোলন্ন বেরিয়ে গেল।
আগাগোড়া ব্যাপারটা সন্ধাংশন্র রহস্যের
মত মনে হ'লো। হঠাং কাপ-ডিস্ হাতে
ক'রে দিবোলন্ন গেলে কোথায়? সিভিতে
পায়ের শব্দ শোনা যাছে। তবে কি নীচের
দোকান থেকে বন্ধার জন্যে চা আনাতে
গেল? বাড়িতে অতিথির জন্যে চা হর ন'
সময়—অসময়ে? আশ্চর্ম! দিবোলন্র মা
তো আছেন? স্নুনীতিও তো আছে?
এক কাপ চা করে দেবার সৌজন্য নোধ
করে না।

একলা-একলা বসে থেকে স্থাংশরে
অভ্নত মনে হয় এদের অবস্থানতর। নীচ্
থেকে ওপরে উঠে মান্যগ্লো এলোমেলো
হয়ে গেছে বাসা বদলে আসবাবপর তছর্প
হওয়ার মত। গোটা জিনিস ভেঙে যাওয়রে
মত।

স্নেটিওও ভূলে গেল? আজ না হর দেখা নেই, কিন্তু এককালে তো কত ঘনিষ্ঠতা ছিল? এক পরিবারের লোকের মত স্ধাংশন কত মেলামেশা করেছে। ওদের সংখ দ্থেবর স্পাদন সাগ্রহে, সমবেননার সঙ্গো অন্ভব করেছে। এমনও দিন গেছে বখন এক সংগা বসে শাকাল হাসি মন্থে থেয়েছে। ঘরের লোকের মত স্ধাংশকে দিবেশন্র পরিবারের সকলে মনে করতো।

আজ তাই এভাবে বাইরের লোকের
মত বসে থাকতে স্ধাংশরে অভিমান হয়।
বাবহারটা ঠিক উপেকা কিনা ব্রুত পারে না। এতদিন পরে সামনে আসতে স্নীতির যদিও লাজা হয়, দিবোদার মারও কি সংকাচ হবে? নিশ্চয়ই এবা আজকাল নিজেদের ভিন্ন জগতের জীব বলে ভাবতে আরুত করেছেন। ছেলের প্রসায় মা'র মাথা ঘুরে গেছে।

স্থাংশ্র ভাল লাগে না এভাবে
চোরের মত অপেক্ষা করতে, একবার ভাবলে,
চূপি চূপি সরে পড়ে। উঠলোও স্থাংশ্।
দোরের চৌকাঠে পা দিতেই হঠাং বিকট
একটা শব্দ পারের তলা থেকে মাথার চিশি
পর্যত অসাড় ক'রে দিলে। স্থাংশ্র গা
বাম বাম ক'রে উঠলো। টলতে টলাত
চেমারে এসে বসলো। ভেতরের দিকে
পদাটা নিঃসাড় গলার দরি মত ব্লভে।
গোঁ গোঁ করে শব্দটা এখনো হচ্ছে—
স্থাংশ্র মনে হচ্ছে তার মাথার ওপর কে
যেন ত্রপনে বসিয়ে দিরেছে। নীচের
তলায় ইলেকট্রকর ঘানিটা ঘ্রতে আরুত্ত
করেছে। সরিষা নিঃস্ভ খাঁটি তৈলের
কল—বোর বেরি হয় না, দি মডেল ঘানি।

তব্ও স্ধাংশ্ম দ তিনটে সদ্বংশ নিয়ে গিয়েছিল স্নীতির জন্মে। নাম ঠিকানা পরিচয় রেখে এসেছিল দিবেল্দ্রিকাছে। বয়ন্থা মেয়ের উপযুক্ত ঘর বর। আশ্চর্য কোনোটাই দিবেল্দ্র প্রছন্দ হর নি। সেই এক কথা, রটনা ও স্বাধ্বর আশা নেই। ছেলের বিয়েতে বাপের দালালি অসহা। বিয়ে না বাবসা! আরো অনেক টিটকিরি দিবেল্দ্ ক্রেছিল।

সংধাংশ, ঠিক ব্রুতে পারে না দিবোংদরে মনোগত ভাবটা কি, বোনের বিয়ে দেবে, না, সমাজ সম্বন্ধে গবেষণা করবে? কি চায় ও? পাগল না উজব্ক?

বিরক্ত হ'য়ে স্থাংশ হাল ছেড়ে দিলে। উপযাচক হ'য়ে বক্তা শ্নে লাভ কি? আর দিবোলন্ব যখন গা নেই তখন তারই বা এত আগ্রহ কেন! ওর বোনকে নিয়ে

নাটক —	ন্তুন — নাট	•	
^{গজাপদ বস্কু} অন্ধকা রের হন্ত	-৫০ বাকি ইতিহাস ৩:		
— कदग्रकी			
घर्न ा भ	শুন্তু মিত	٥٠٥٥	
কান্তনরঙগ	শুৰু মিত্ৰ ও অমিত মৈত্ৰ	0.00	
মেখে ঢাকা তারা	শক্তিপদ রাজগ্রে	9.00	
বাঁধ	স্শীল ম্খোপাধ্যায়	0.00	
আজকের নাটক	म्भील ग्रात्थाशाय	0.00	
জীবন জিজ্ঞাসা	মন্ট [ু] গঙ্গোপাধায়	0.00	
আজ অভিনয় বন্ধ	বীরেন্দ্র পাল চৌধুরী	₹∙₲0	
পালাবদল	দূৰ্বাসা	₹.00	
অংশীদার (৩য় সং)	গঙ্গপদ বস	(যদ্গ্রহুথ)	
গ্রন্থপীঠ	मीशाससक्षम गर्	নীহাররজন গ্রেত্র	
২০৯বি, বিধান সরণি, কলিব	^{গতা-৬} ছুই র।ক্রি		

ख वा थानी कत्रक, कात्र कि! याथण वन्यकुका शांत्रक।

স্থাংশ্ব আর কোন খেজি-খবর নের নি। একটা সামরিক ঘটনা বলে যেন ব্যাপারটা ভূলে গেছে। অনেক অভ্তুত অভিজ্ঞতার মত এ-ও এক অভিজ্ঞতা! মল কি! কিল্টু এ্যান্ডারসন হাউসের কথা স্থাংশ্ব ভোলে নি। ইন্টারভিউ-এর ফলা-ফল এখনো জানতে পারে নি।

বেদিন বন্দরে মনে হরেছিল, বোর্ড ইন্প্রেসড হরেছিল। চার্ফরিটা তার হ'লেও হ'ডে পারে।

দেখতে দেখতে তিন চার মাস কেটেও গেছে। একদিন স্থাংশ বাাপারটা 'দেখাই বাক্-না' ভাব নিরে আলীপ্রের হাজির হ'লো। হর হবে দা-হর নাই হ'বে।

থবর খ্ব আশাপ্রদ নর, লোক একজন নেওরা হ'রে গেছে। তবে নেকস্ট চ্যাক্সে তার হ'তে পারে। স্থাংশ্ব মনোনীত হয়েছে।

ফেরবার সময় কি মনে ক'রে স্থাংশু দিবোসন্র বরে উাকি মারকো। খ্ব ব্যুস্ত মনে হ'লো তাকে।

বরে চুকে সুধাংশা বললে, এদিকে এসেছিল্ম, ভাবলাম একবার—

দিব্যেদ্য উচ্চ্নিসত হ'য়ে উঠলো : সো কাইন্ড অফ্ ইউ! তার্পর—

ভাল। তোর খবর কি? সা্ধাংশা চারদিক দেখে নিলে।

একই। সেই বে ডুব দিলি আর দেখা নই। দিবোদন্ মাথা দোলাতে লাগল।

বংশরে কথাগালো নির্লাজের মত মনে হ'লো স্থাংশরে। বোধ হয় এত বেহায়া বলেই প্রেত বামানের ছেলে হ'য়েও উল্লিড করেছে। স্থাংশা চুপ করে রইল।

দিবোল্দ্ বললে, ভাল কথা, স্নীতির একটা পার যোগাড় করে দে'না! খেতে পরতে পায়, স্বাস্থাটা ভাল—

নির্বাস্থিতার একটা সীমা আছে এ তাকেও ছাড়িয়ে বার। ভূলে গেছে নাকি মাস করেক আগের ব্যাপারটা—কত ছু:টো-ছুটি করেছে সুমাংশ, নিঃস্বার্থভাবে?

উত্তর না দিরে স্থাংশ্র ইচ্ছে করলো টেনে একটা চড় মারে দিবেদ্দ্র গালে, বেহারা কোথাকার!

কিম্পু নিলাম্প্রভার চরম দেখালে দিবোস্মু নিজের বিয়ের থবরটা দিয়ে— আমি বিয়ে করেচি—ভাড়াভাড়িতে বংধ্ব-বাংধ্ব কাউকে বলা হয় নি, একদিন আয় নাং

স্থাংশ হতবাক কি বলবে ভেবে পেলে না। গা-টা তার রি-রি করতে লাগল।

িদবোল্দ্র বলতে লাগল বস্ত ধরেছিল গুরা। বলল্ম, বেদনের বিয়েটা হ'রে বাক, না, তালের আরু দর সর না। বাধা হরে—

স্তিকারের কোন আগ্রহ আর স্থাংশ্রে নেই। কোন লাভ নেই আর স্নীতির জনো দৃঃধ্ করে।

বেহারার মত হেসে দিব্যেশ, আবার

জিলোস করলে, খ্ব অন্যায় হ'রে গেছে, না

বংশর মুখের দিকে চেয়ে সুখাংশ, বংশরে দেওরা সিগারেট টানতে লাগলো আলগোছে। মুখের ওপর কিছা বলাটা বোধ হয় শোভন হবে না।

দিবোশন্র কতবা-জ্ঞান মাথা চাড়া দিয়েছে। বললে, দেখিস্না স্বিধে মত টাকা আমি আট-দশ হাজারই খরচ করবো!

একবার স্থাংশরে ইচ্ছে করল, জিগোস করে, দিবোলা, কোথায় বিয়ে করেছে— মেরে পক্ষ কোন্ সমাজের! দেওয়া-নেওয়ার কথা তাতে ছিল কি-না!

খ্ব একটা আগ্রহ আজ স্বাংশ: रमथारम ना। भूनराज इत्र जाहे राम भूरन যাচ্ছে বন্ধ্র কথা। দিবোন্দ্র কিন্তু না-ছোড় বাশ্দা, বোনের বিয়ের জন্যে তার যেন আর ঘুম হচ্ছে দা। দশ হাজারেও যদি না কুলোয় পনের হাজার সে খরচ কবতে রাজী আছে। তবে হাাঁ, পাত্রও তেম[ন হওয়া চাই—শিরদাড়াওলা আস্ত মান্ধ। বাপের কথাও শ্নবে, মামার কথাও শ্নবে আবার মা'র কথাও শ্নবে, এমনি নয় ' জানিস তো আমার বোন বরাবর কিভাবে মান,ৰ হ'য়ে এসেছে।সিইজ এ বিট ইন্ডিপেন্ডেন্ট। কোন্দিন তার ইচ্ছেয় আমরা কেউ হাত দিই নি !

স্থাংশ হাঁ-না কিছা বললে না।
দিবোদ্য বলতে লাগল, নিজে বিয়ে
করে বড় মুশকিলে পড়ে গেছি, চার পুন্
খরচ বেড়ে গেছে! এর মধাে একটা ব্রক্থা
না করতে পারলে—দেখিস একটা খেভি
খবর করে। ভাল কথা৷ সেই যে সেই ছেলেটি
কোন অফিসের একাউনটেন্ট...হাতে আছে
নাকি এখনাে? সভাি বলতে কি আমি কোন
খেজিই নিই নি ভাব! দেখা না যদি থাকে।

স্থাংশঃ গমভীর গলায় বললে, দেখবো আজ বংধরে খাতিরটা এক ধাপ ওপরে উঠেছে। প্রচুর খাবার আনিয়েছে দিবোলা চাপরাশী ঢাকতে বললে, নে খেয়ে নে!

স্থাংশ, বললে, মানে? হঠাৎ? দিবোৰদ, মিটি মিটি হাসলে, আপতি আছে?

হাত ধ্রে স্থাংশ্বললে, না আপত্তির আর কি? কিংতু ঘ্র নয় তো?

দিবোলনু প্রতিবাদ করলে ঃ ঘ্য! মুষ্
দিয়ে দিবোলনু মুখুলেজ কোন কাজ
করে না!

যথা লাভ হিসেবে স্থাংশ নিঃশব্দে থাবারগ্লো গলাধঃকরণ করতে লাগল। আর ঘ্য হলেই বা তার আপত্তির কৈ সে তো কোন লেখাপড়া করে দিছে না বে স্নীতির মনোমত পাল সে যোগাড় করে দেবে!

আজ দিবোলন্যক স্থাংশার অন্যরক্ষ মনে হচ্ছে। নিজের কাজের জনো সে যেন কিছাটা অপ্রতিত, দিবধাগ্রুত বংধার সামান।

আপায়েনের পর কিছ্কেণ বঙ্গে, স্থাংশ্ উঠে দাঁড়াল, চলল্ম। দিব্যেলহ সিগাক্ষে দিয়ে বললে, আর একদিন আর না আমার ওখানে, ভাকে সং বলবো।

হঠাৎ দিবোলন্ব ভাবাল্ডরটা স্থাংশ্র বোধগম্য হয় না। কি এমন অপরাধ করেছে বে, ব্রিথয়ে বলবার দরকার করবে। অনিজ্ঞা সত্তে স্থাংশ্র মুখে বললে, আস্ব। সল্থোবলায় থাকিস তো?

বন্ধকে এগিয়ে দিতে সপ্যে সপ্যে উঠ এসে দিবোলন বললে, অফিস ছাড়া সং সময়।

সি'ড়ির মাথায় এসে দিবোদনে নাঁড়ালে। কি যেন এতক্ষণ সে বলতে ভূলে গিরেছিল, হঠাং বললে, বন্ধ খরচ বেড়েচে ভাই, আর পারি না!... এখানেও আর কোন আশা নেই, চেয়ারমান বদলী হয়ে যাছে।

স্থাংশ্র বিশেষ আগ্রহ নেই এ খবরে। দ্ব'ধাপ সে নেমে এল। মিছিমিছি সময় নণ্ট।

দিনোন্দ্র বন্ধাকে শানিয়ে বললে, কত টাকা প্রভিডেণ্ট ফণ্ড-এ দিতে হয় জানিস্থ

সংশংশরে জানবার কথা নয়। তব; জানবার জনো: নামতে নামতে থমকে দড়িল।

বড় আতাদতরে পড়েছে দিবোদনু বললে, একশ' টাকা…বিয়ে করেচি ভবিষং ভাবতে হবে তো!

স্পাংশ্র আর দাঁড়ালে না, তার তার করে নেমে গেল। স্বাথপিরের একশেষ।

সংধাংশরে চে^ডচিয়ে বলতে ইচ্ছে করল, বোনের ভবিষাতের ভাবনাটা আগে ভবে হামবাগ্ কোথাকার!

সি^{র্ভি}ড়র মাথায় দাঁড়িয়ে প্রভেটর পরেটে হাত দিয়ে দিবোলনু বললে, আস্চি**স তে**া?

কর্মবাসত অফিস চহরে শব্দটা কোথার যেন মিলিয়ে গেল-নিন্দাগানী সোপোন-শ্রেণীর ম্বা-গোজ! হঠাৎ দিবেশা পা দটো যেন কে'পে উঠলো থর গা করে— তিনতলা থেকে সি'ড়ি দিয়ে গড়িয়ে পড়াল বোধ হয় বাঁচা যাবে না। মাঝপথেই দম আটকে যাবে।...

বন্ধরে বউ দেখতে কি, সুনীতির
একটা সম্বংধ নিয়ে সেদিন সুধাংশু আবার
দিবোলারে বাসায় এল। অলধকার সি°ড়িতে
দাঁড়িয়ে কি যেন ভাবলে সে খানিকক্ষণ।
কড়া নাড়ার আগে ইতস্তত করলে কিছ্কেণ।
দিবোলারে বাড়ীতে এখন নতুন মান্ত্রে
এসেছে। আপনা থেকেই কিছ্টো সংকাচ

আন্তে আন্তে বার দুই কড়াটা নাড়লে স্ধাংশ আলগোছে—কেউ যদি শ্নুসক প্রের খ্লে দেয় তো ভালই, নচেং নিজের আগমনবাতাটা সশব্দে বিঘোষিত করবার তার তেমন ইচ্ছে নেই। অপেকা করতে পারে সে নিঃশব্দে কিছুক্ষণ।

কিন্তু মিনিট পাঁচেকেও ওদিক থেকে কোন সাড়া পাওয়া গেল না। সি'ড়ির অন্ধকারে ভূতের মত অপেকা করে লাভ নেই—স্থাংশ্যু জোরে কড়ায় ঝাঁকানি দিলে।

দরজা খ্লতে স্থাংশ্ সংকোচে পাশে

সরে দাঁড়াল। সামনে নারী মৃতি, নীরব। একটা অপ্রকৃত ভাব উভরের মাঝখানে থমখমে। স্ধাংশ বলালে, দিবোল্ন আছে > স্নীতি অক্ষাটে বলালে, আস্না!

আহ্বানকারিশীকৈ সংধাংশং হয়তো চিনতে পোরেছে, হয়তো চিনতে পারেনি। কণ্ঠবরের হৃদ্যতায় কেমন যেন সে থতমত খারে গোছে।

দরজাটা সম্পূর্ণ থ্লে স্নীতি সপ্রতিভ কপেঠ বললে, আসনে, ভেতরে আসুন! দাঁড়িয়ে কেন?

স্থাংশ্ব এডক্ষণে যেন সপ্রতিভ হলেঃ নাদা নেই?

স্নীতি মাথা নাড়লে। দিবোন্দ্র বাড়ী নেই।

স্থাংশ বললে, বলো আমি এসেছিলমে।

স্নীতি জিগোস করলে, বসবেন না? চরতো দাদা এক্ষ্নি ফিরতে পারে। আস্ফ্রনা!

কি মনে হলো সন্ধাংশনুর, বললে, চল বিস।

ভেতরে চাকে সা্ধাংশ্য স্পাট দেখলে স্নীতিকে। ম্থাবয়বের জনোই কেবল চেনা সায়। বয়েসের স্বাভাবিক সৌল্যটা কেমন কে দলান হয়ে গেছে—অনেকদিনের ফোটা ফ্ল বৃত্তচ্ত না-হওয়ার মত। বিষয় কুস্মের মত।

ম্ধাংশ জিগোস কগলে, ভাল আছে? জান হেসে স্মীতি বললে, হাাঁ। আপনি

উত্তর দিয়ে আর কিছা হয়তো জিগোস করা যাবে না, সাধাংশা চূপ করে রইল' নিজেকে কেমন যেন অপরাধী মনে হয়

স্নীতিরও কি কিছ্ মনে হচ্ছে দাদার বংধ্র সামনে? সংকাচ ছাড়া নিজেকে নিয়ে কোন লব্জা?

তব্ এই নীরবতার একটা হ্দাতার, আখীয়তার ভাব বিনিময় যেন হয় উভয়ের মধ্যে, মাঝে মাঝে চোখ তুলে সুধাংশ্য স্নীতির আপাদমস্তক লক্ষ্য করে। স্নীতি অপরাধীর মত প্রতীক্ষা করে।

স্ধাংশ, জিগেসে করলে, দাদা কোথায় গৈছে ?

স্নীতি উত্তরটার জন্যে যেন নিজের মধ্যে একটা চাঞ্চলা বোধ করলো। মহেতের জনো হলেও স্থাংশ্র দৃষ্টি এড়াল না। ম্-কুগুনে কি ফুটেছে?

স্থাংশ্ব আবার জিগ্যেস করলে, ফিরবে তো!

একটা নিষিক্ষ কথা যেন অপরিচিত কারো সামনে প্রকার্শ করা হচ্ছে, স্নীতির কঠ কোধ হয় কাপলো ঃ দাদার দ্বশ্র বাড়ী থেকে গাড়ি এসেছিল, বৌদিকে নিয়ে হয়তো কোথাও—

প্রকশ্পিত কণ্ঠ অসহার দৃষ্টিতে বড়

অসহার মনে হলো। সুধাংশ সুনীতির

ম্থের দিকে তাকাতে পারলে না।

স্থাংশ^{্ব} অন্য কথা পাড়লে. মা কোথায়? মা মন্দিরে গেছেন। সুনীতির গলা কাপছে।

ত্মি তা হলে একলা আছ? স্থাংশ্ব স্নীতির সাহসের তারিক করে যেন।

একলাই তো থাকি! হাসতে চেন্টা করে স্নাতি বললে।

ষরোয়া হতে স্থাংশ জিগ্যেস করসে. আজকাল গানটান গাও না?

হঠাৎ হাসি মিলিয়ে গেল, স্নীতি বললে, শুনুধৰ কে?

কেন, নিজে!

সব জিনিস কি নিজের জন্যে হর? প্রশ্নটার যেন কিছু অভিযোগ আছে, সংধাংশ, চেয়ে দেখলে স্নীতির চোখ দ্টো কেমন নিম্প্রভ।

তা হয় না, তা বলে ছাড়তে হবে? বেশ তো গাইতে!

স্নীতি নির্ত্তর। মনে হচ্ছে, দাদার বংধ্রে এই অহেতৃক আগ্রহে সে কৌতৃক অন্তব করছে। এসব আলাপের কোন লাভ নেই। হয়তো দঃখ বাড়ে আরো।

পর্দাতে ছবি-অটার মত শ্বির, নিশ্চল হরে দাঁড়িরে আছে স্নাটিও। স্থাংশরে কথাও ফ্রিয়ে গেছে। অনেক কথা জিলোস করবার ছিল, সর যেন গোলমাল হয়ে গেল, স্যোগ মত বলাও হলো না কিছু। কি জানি কেন স্থাংশ্র মনে হলো দিবেশদ্র অবর্তমানে কুশল প্রদ্ম ছাড়া আর কোন প্রশন করাই আশোভন। উপবাচক উপচিকীর্যার কোন ম্লা নেই। পক্ষাশ্তরে অপরাধ বাডায়।

স্থাংশ[ু] উঠে দ**াঁ**ড়া**ল। বললে, আজ** চললাম।

স্নীতিরও বোধ হয় কিছ্ বলবাব নেই। ধীর পদক্ষেপে এগিয়ে আসে সদর দক্জাটা বন্ধ করবার জন্যে।

স্ধাংশঃ পিছন ফিরলে।

আলো নিভিয়ে দরজা বংধ ক্রছে করতে স্নীতি বেন নিজেকে শানিয়ে অস্ফুটে বললে, কেন মিথো আপনারা চেণ্ট করচেন—আমি ভালই আছি!

ফিরে স্থাংশ্ব দাঁড়াল, এটা নিষেধ না উপরোধ দিবোন্দরে বোনের ভাল থাকার জন্যে। এ কথা বলার মানে কি!

কিল্ডু স্থাংশ্ মুখ ফ্টে কিছ্ জিগোস করতে পারলে না। ওপারে অথধকার আধভেজান দরজার ফাঁকে দ্টো সজল চোখ দপ্ট দেখা গোল মুহুতের জনো। কে জানে স্নীতি কি বলতে চাইলে, কি বোঝাতে চাইলে? তার স্দীব কুমারী জীবনে প্রকৃত কোন দরেখই নেই বোধ হয়। স্থাংশ্র মাথা-বাথার কোন মানে হয় না।...

হঠাং একদিন হ'মাস পরে স্থাংশরে ইণ্টারভিউ-এর জবাব এল। স্থাংশরে চাকরি দেবার জনো স্মরণ করেছে! খুলী হলেও আর যেন চাকরিটার ওপর তেমন লোভ নেই স্থাংশরে। এতদিন না হরে যথন চলেছে, একেবারে না হলে যেন ক্ষতিছিল না। তার ওপর দিবোস্ত্র অফিস, এবার দ্ব'বেলা হাম্বাগ্টার লম্বা লম্বা কথা শ্নতে হবে।

চাকরিটা গ্রহণ করা সম্প্রশেষ স্থাংশ্র অনেক ভাবলে, শেব পর্যান্ত দেওরাই ঠিক করলে। হাতের লক্ষ্মী পারে না ঠেলাই ভাল। বলা কি যার একদিন দিবোল্যের মড সে উত্তপদে আসীন হতে পারে। শিক্ষা-দীক্ষা তার কম কি!

নত্ন অফিসের হালচাল জানবার রনে। সন্ধাংশ সোজা দিবোজনুর উরে উপস্থিত হলো। কিস্তু দরজা ঠেলেই সন্ধাংশ, পিছিয়ে এল। দিবোজনুর জারগার অন্য একজন।

শব্দ পেরে চোথ তুলে দিবোলন্র ম্থলাডিবিত ব্যক্তি বললেন, কাকে চাই > স্থাংশ অপ্রস্কৃতের মত আমতা আমতা করলে মিস্টার ম্থার্জি—

ও, কলে' ভদ্রকোক বেল টিপলেন। চাপরাশী আসতে বললেন, একে ডি-পির করে নিয়ে যাও।

মানে? স্ধাংশ ইতস্তত করলে।
ভদ্রলোক বললেন, যান ওর সংশা মিস্টার
ম্থাজির কাছে নিয়ে যাবে।

চাপুরাশী বললে, আইরে!

বেরিয়ে সংধাংশ ঢোক গিপে চপারাশীকে জিগোস করলে, ডি-পি কোন হ্যায় ?

স্থাংশরে এতবড় অক্সতার চাপরাশী ম্চকি হাসলে। বললে, বড় সাব আছেন, ডিরেক্টার সাহেব!

এতক্ষণে দিবোদরে নতুন পদের সম্পূর্ণ তাংপর্য ব্রতে পারে—ভিরেক্টার অফ পারসোনেল! দিবোদ্দ করেছে কি! পাঁচশো থেকে একেবারে বারশো! বাহাদ্র!

স্থাংশ্র পা আর ওঠে না। স্পট চোথের ওপর সে দেখতে পার দিবেগদ্ চোথ ঘ্রিয়ে ঘ্রিয়ে বলছে, এ সমাজের কোন পদার্থ নেই—বোনের একটা বোগাঃ পার পেল্ম না! সব রট্ন্!

এখানে চাকরি করার চেরে মানে মাদে সরে পড়াই মেন ভাল। ঐ দিবোদ্দ্র এ অফিসের কর্তা, নিরোগ-বদলীর দুওমুন্দ্র!

বড় সাহেবের দকজার সামনে এশ্স সংধাংশ্য দাঁড়াল, বিদ্যুৎস্প্রেটর মৃত একটা সন্দেহ তার মাথার থেলে গেল—দিব্যেন্দ্রে এই পদোমাতিতে নারী-রপ্রস-স্করেকান পরোক্ষ হাত নেই তো? মিল্টার দিবালগাম্ কি দিব্যেন্দ্রেক এমান এমান স্নজরে দেখেছিল? কিনের বিনিম্নরে এ সম্শিধ দিব্যেন্দ্র সিলন স্নাভিদ্ন সংল্পা সাক্ষাংকারে এর বেন আভাস স্থাংশ্য পেরেছিল! আপনারা মিথো চেন্টা ক্রছেন, আমি ভালই আছি'—মানে কি? স্থাংশ্র পা থেকে মাথা পর্যক্ত সরীস্প স্পর্ণেরি অন্ভতি লিবলির করে ওঠে।

ভিরেক্টার সাহেবের কামরার দরজার একটা পালা ফাঁক করে ধরে চাপরাগাঁটা তথনো অপেক্ষা করে।

ঠিক এই মহেতে বংশকে সংবর্ধনা করা উচিত হবে কিনা ভেবে ঠিক দা করতে পেরেই বোধ হয় স্থাংশ্ব পাপা পিছিলে বায়। ভরে।



চৈতালীর আবাদ শেষ করিরা নিধিরাম কলিকাতার আসিত, ডাহার পর বর্ষা নামিতেই দেশে ফিরিড, এই ছর্যাট মাস দৈখিতাম একচক নিধিরাম পাঠক মাথার একটি ছোট লাল টিনের বাক্স চাপাইয়া হাঁকিয়া যাইতেছে "চাই—ই—চীনা—আ— সিদরে!" আর তাহার পশ্চাতে নালকায় **িশশ্বর দল বাদল মিত্রের গলির তন্ত্রলস** মধ্যাহকে সচকিত করিয়া চিংকার করিতেছে, **"চাই-ই কানা ইদ'্র।" কবে ছ**ম্দরসিক কোন শিশ্ব কবি সিন্দ্রওয়ালা নিধিরামের এই অপ্রে শতববাণী প্রথম উচ্চারণ করিয়াছিল তাহা কেই জানে না, স্ভবতঃ স্বয়ং কবিরও সেক্থা মনে নাই, কিম্তু দীর্ঘকাল ধরিয়া প্রতি বংসর নব নব শিশ্কেণ্ঠ একই ভাষায় নিধিরামকে অভার্থনা করিয়া আসিতেছিল। এই বিরূপ সম্বর্ধনায় নিধিরাম কোনও দিন রাগ করে নাই, প্রত্যুক্তরে মর্নিকের অন্-করণে শব্দ করিয়া তাহার শিশন্বন্ধ্রগণকে भूजी कांत्रवाष्ट्, दर्शभग्नाहि।

বিশ বংসর ধরিরা এইর্পেই চলিতেছিল, সহসা একদিন এই নিয়মের ব্যতি
ক্রম দেখিরা নিধিরাম আশ্চর্য হইয়া গেল।
গলির মধ্যে এক শ্বানে গ্র্টেক্য়েক শিশ্র
ক্রটলা করিতেছিল, নিধিরাম সেখানে
আসিমা গলার শ্বর উচ্চ করিয়া হাঁকিল,
"চাই-ই-চীনা-আ-সিশ্র।" দ্র হইতে দ্ইএকটি ক্রপ্তে প্রিচিত প্রতিধ্বনি শোনা গেল
বটে, কিন্তু প্রত্যহের মত ক্রমাট বাঁধিয়।
উঠিল না।

শিশুর দল নীরব পরম সম্ভ্রমের সহিত **একজনকে খিরিয়া দাঁড়াই**য়া তাহার কথা **শ_নিতেছিল। নিথিরা**ছ নিকটে আসিয়া मौफाइन। कथा करिएकिन धर्कां वर्णनका। **কোমরে নীলাম্বরী আড়ীর অণ্ডল** জড়াইয়: হাত নাজিয়া সে প্রতিপন্ন করিতেছিল যে. **জানাকে কানা এবং খেড়াকে খেড়া** বলিতে নাই এবং যদি কেহ বলে তবে তাহার সহিত বস্তার জন্মের মৃত আড়ি এবং প**্তেলের বিবাহে সে**'ভাহাকে कनाह নিম্মান করিবে না। সমাজ-চুর্ণতর এই নিদার্ণ শাল্তির ভরে পরিচিত কন্ঠধর্নি শ্বনিয়াও শিশ্বে দল আজ নীর্ক হইয়া-ছিল, নিধিরাম ভাহা ব্রিকা এবং তাহাকে একবার ভাল করিয়া দেখিয়া লইয়া নিঃশব্দে किविद्या शुन्।

সন্ধ্যার ফিরিবার পথে গলির মোড়ে
নীলবাড়ির দরভার দ্বিগুহরের শিশুস্ভার
এই নেচুটির সহিত নিধিরামের সাক্ষাং
পরিচর হইল ৷ নিধিরামকে দেখিরাই বিনা
ভূমিকার বালিকা কহিল, "তুমি আর জন্মে
কানাকে কানা বলেছিলে, সিদ্রেওয়লা!"
বলাবাহলা জন্মান্তরের কথা নিধিরামের
সমরণ ছিল না, শুধ্ এই নবাগতার সহিত
আলাপ জমাইবার অভিপ্রামে সে কহিল,
"হাঁ, মা লক্ষ্মী"

"মা বলেছে তাই এ-শশে তুমি কানা হয়েছ, না?" বলিয়াই সে এক প্রচন্ড অভিশণত-বাণী উচ্চারণ করিল, "বদ্ মধ্ ছোটকু নিমাই সবাই আর জন্মে কানা হৰে। তোমায় খেপায় কিনা।"

নিধিরাম দাঁতে জিভ কাটিয়া কহিল,
"এসব কথা বলতে নাই মা লক্ষ্মী।"
"মা লক্ষ্মী" এইবার রুমিয়া উঠিয়া কহিল,
"বলব, একশোবার বলব। তারা কেন
তোমাক কানা বলবে?" বলিয়াই একট্ম
থামিয়া প্রশন করিল, "তুমি বামনে?"

নিবিরাম কহিল, "হাাঁ।"

প্রশনকত্তীর চক্ষে সংশয় **ফ্টিয়া উঠিল,** কাহল, "দেখি সৈতে?"

নিধিরাম ছিল মেরজাইরের মধ্য হইডে মালন উপবীতগুচ্ছ বাহির করিয়া দেখাইল। বালিকা কহিল, "কাল রাধ্র ছেলের সংগ্রু আমার মেরের বিয়ে। তুমি মণ্ডর পড়াবে?"

নিধিরাম তংক্ষণাৎ পৌরোহিত্য স্বীকার করিয়া কহিল, "পড়াব।"

"আমরা কিল্তু গরীব মানুৰ, দাক্ষণে
দিতে পারব না, ব্রুকে?" স্থালয়া প্রম গাম্পীয়ের সহিত বালিকা কহিল, "এটি পার হলেই বাঁচি। আর দ্রটিকে একরকমে বিরে দিরেছি। মাগো ছেলে মানুৰ করা যে কি কন্টা" এই বলিয়া পত্তেলের ভালা-থানি নিধিরামের হাতে দিরা সে কছিল, "দেখছ, মেরের আমার মুখ্খানা রোদে দ্বিরে গেছে। এখন আবার জল ছিরে রাখতে হবে নৈলে পাড়ার লোকে বৌ দেখবার সমর খেটা দিরে বলবে, বৌ কুছিং।" এমন সমর ভিতর হইতে আহ্মান আনিল, "সরু।"

"মালো মা! দেখছ? দুন্দত আপন ছেলেমেরের কথা কইবার লো নেই?" বলিয়া বালিকা উঠিরা দাড়াইল। প্রভূলের ভালা হাতে দিয়া দিখিয়ায় কহিল, "ভবে আসি হা লক্ষ্মী!" "আমি লক্ষ্মী নই গো, সরক্ষ্যী। আমাকে মা-সরক্ষ্মী বলে ভাক্ষে, ব্যুক্ত। এই বলিয়া বালিকা ভিতরে ত্ত্তিল। নিধ-রামের সহিত সরক্ষ্মীর পরিচরের স্তুগাও

n e n

इहेन धरे शकारत।

এই মুখরা মেরেটিকৈ সহসা নিধিরামের অত্যত ভাল লাগিয়া গেল। ক্লমে ক্লম कानीबार्टित भर्जन, भागात हुड़ी, म्र-এक ট্ৰুরা জরির কাপড় নিধিরামের সিদ্রের বাকসে আগ্রয় পাইয়া অবশেষে সরস্বতীর रथमाघरत न्यानमाङ করিতে লাগিল। প্রত্যহের আনন্দহীন একছেয়ে কেনাবেচার মধ্যে এই মেয়েটির সংগ্যে দৃদ্রণড কথা কহিয়া নিধিরাম আনদদ পাইত, সময় সমর নীল বাড়ির জানালার রোয়াকে সি'দ্রের পেট্রা কোলের উপর রাখিয়া নিধিরাম সরস্বতীর সাহত ভাহার মাটির ছেলেমেয়েদের স্থ-দঃখের কথা কহিয়া খন্টার পর ঘন্টা কাটাইয়া দিয়াছে। ভিন্ন পলীতে গিয়া বেসাতি বেচিলে দশটা পশ্নসা রোজগার হয়, একথা মাঝে মাঝে মনে হইয়াছে বটে. তথাপি তাহার প্রগল্ভা বাশ্ধবীর কথার মোহ কাটাইয়া উঠিতে পারে নাই। সেকথাণ লি একাশ্ডই নির্থাক এবং কোনো-দিন নিধিরামের কোনও কাজে লাগিবার সম্ভাবনা ছিল না।

বর্ষা নামিলে নিধিরাম দেশে গেল।

সেবার দেশে মারাত্মক রক্ষের একটা ব্যাধির উৎপাত আরম্ভ হইয়াছিল, তাহার আক্রমণ হইতে নিধিরামও নিম্কৃতি পাইল না। মাস ছয় জনুরে ভূপিয়া একদিন মালের শ্বিপ্রহরে নিধিরাম তাহার সিন্দুরের বাকস্টি মাথায় করিয়া সরস্বতীর বাড়ীর দর**জার আসিয়া হ**িক**ল, 'চাই-চ**ীনা-আ-সিন্দ্রে।" আগেকার মত আরু কেও দুড়েদাড় কর্মায়া নামিয়া স্বার খুলিয়া বাহেরে আসিল না, শ্বিতীয়বার হাঁকিতে নিচের ঘরের একটা कानामा थ्लिया शमः कानामात प्रत->বডীকে দেখিয়াই এক গাল হাসিয়া নিধিরাম ি**জ্ঞা**সা করিল—"বুড়ো বেটার কথা মনে ছিল, সর্-মা?" সরস্বতী ছাড নাড়িয়া জবাব দিল। নিধিরাম আশচর্য হইল, সরস্বতী কথা নাবলিয়া থাকিবার পার্ত্তী নহে। জিজ্ঞাস: করিল, "ভোমার ছেলেমেয়ে ভাল আছে তো. সর্ন-মা?" এইবার সরদ্বতী কথা কহিল, "সে সব আমি রাধ্বকে বিলিয়ে দিয়েছি ৷" ইহার



পর আর কোনও প্রশ্ন করিবার সূত্র নিধি-রাম খ্রিকরা পাইল না। থানিককণ অপেকা ক্রিরা অনেক ভাবিয়া সে কহিল "একবার বাইরে আসবে মা?" সরু কথা কহিল না, পিছন হইতে সরস্বতীর কনিষ্ঠ ভাইটি **''মা বলেছে দি**দি আর কহিয়া উঠিল, वाहेद्र बाद्य ना। मिनि वक् इद्धार किना।" ও: তাই! এইবার নিথিরামের চক্ষে সর-স্বতীর পরিবর্তন ধরা পড়িল। এক বংসর সে সরুবতাকে দেখে নাই। কিল্ফু বর্ষপূর্বে গ্রহযাত্রার দিন সে যে ম্থরা চক্তল। বালিকার নিকট হইতে বিদায় লইয়া গিয়া-ছিল, তাহার সহিত এ মেয়েটির প্রভেদ কিতর। ইহার সহিত কি ভাবায় কোন উপলক্ষে কথা কহিবে তাহা সহসা নিধিরাম ম্পির করিয়া উঠিতে পারিল না। ইতস্তত করিয়া বাড়ি হইতে সে পাটালী গড়ে তাহার প্টেরিলটা জানালা আনিয়াছিল, গলাইয়া সরস্বতীর হাতে দিয়া নিধিরাম कोश्ल, "वाष्ट्रि श्वरक अर्त्नोष्ट्र अत्र मा, निर्प्त যাও।" তাহার পর নিজ গৃহ সম্বদ্ধে দুই-একটি অসম্বন্ধ কথা কহিয়া নিধিরাম চলিয়া গেল, গ্রামের কারিগরের শ্বারা যে ^{*}বিচিত্র বর্ণের কাঠের প**্তুলগ**্রাল পড়িয়া আনিয়াছিল সেগ্লি আর বাকস হইতে বাহির করিবার অবকাশ হইল না।

প্রদিন নিধিরাম প্রতাহের বেসাতি
লইয়া নীলবাড়ির জানালায় দাঁড়াইল। নিচের
ঘরের তক্তপোবের উপর বসিয়া সরুব্বঙৌ
লেথাপড়া করিতেছিল, নিধিরাম মৃদ্দুব্বর
প্রশন করিল, "কি পড়ছ সরু-মা?"
সরুবতী মুখ তুলিয়া হাসিয়া কহিল,
"কথামালা।"। প্রক্ষণেই প্রশন করিল,
"মা জিজ্ঞাসা করছে গুড়ের দাম কত?" প্রশন
শ্নিয়া নিধরাম থমকিয়া গেল, তাহার পর
শ্বে মুখে কহিল, "দিদমাকে বোলো
সর্-মা, আমার ঘরের তৈরী গুড় প্রসা
লাগেনি।" সরুবতী কহিল, "আছ্ল।"

ইহার পর আর দুই তিনদিন সে-পথে নিধিরাম আসিক নাঃ তৃতীয় দিনের মধ্যাকে যথারীতি নীলবাড়ির জানালয়ে দাঁড়াইয়া **ভাকিল** "সর্মা!" স্রস্বতী <u>শ্লেট হইতে ম.খ তুলিয়া একেবারে প্রশ্ন</u> করিল, "দুদিন কেন আসনি?" নিধি-রামের মুখ উল্লাসে উল্ভাসিত হইয়া উঠিল, তাহা হইলে সর্-মা তাহার কথা মনে রাখিয়াছে। অন্পাস্থিতির একটা মিথাা কারণ নিদেশি করিয়া নিধিরাম অতি সতক' ম্দ্ৰেবরে কহিল, "সর্-মা! একখানা বই এনেছি, পড়বে?" বলিয়া জানালা দিয়া একখানা বটতলার কুত্তিবাসী বাঁধানো রামারণ চারিদিক চাহিয়া সরস্বতীর চৌকির উপর রাখিরা দিল। সরস্বতী ভাকিয়া জিজ্ঞাসা করিল, "ছবি আছে?"

নিধিরাম হাসিয়া কছিল, "অনেক! রাম, রাবণ, হন্মান সবার ছবি। আমি পড়তে ছানিনে সর্মা, তুমি আগে পড়ে নাও, তারপর আমাকে পড়ে শোনারে।"

সরুস্বতী কহিল, "আছা। তুমি আবার কাল আসবে?" নিধিরাম একটি সম্ভূল্প আনন্দ-হাসোর সহিত সন্মতি জানাইরা চলিয়া গেল।

সরস্বতী রামায়ণ পড়িত আর নিধিরাম

সি'দ্বের পেটরা কোলের উপর রাখিয়া জানালার রোরাকে বসিরা শ্রিনত। মধ্যে যে ই'টের দেয়ালের ব্যবধান ছিল, প্রোতা ও পাঠিকার কাহারও তাহা মনে ছিল না, সহসা একটি ব্যবধান বাড়িয়া গেল।

পাঠ যখন **অবোধ্যাকান্ড পর্বনত অলুসর** হইয়াছে, তখন একদিন নিধিয়াম আসিয়া দেখিল যে সরস্বতীর পরিবর্তে নিচের ছরে তত্তপোষের উপর দুইটি ভদুলোক পরিকার বিছানায় বসিয়া তামাক টানিতেছেন। নিধিরাম ভাকিল, "চাই-ই-চীনা-আ-সিদ্ধর।" দোতলায় একটা জানালা খুলিয়া গেল, সরস্বতী জানালায় দাড়াইয়া বাম হাত মুখে দিয়া ডান হাত নাড়িয়া ইপিতে জানাইল বে, সে আছে। পড়িবে না। নিধিরাম হে-পথে আসিয়াছিল সেই পথেই ফিরিয়া গেল। গলির মোড়ে সরস্বতীর সখী রাধারাণী **७तरक ताथ** निधितामरक **मः**रवाम कानाहेक रय, সরস্বতীর বিবাহ আসম এবং পাত্রপক্ষ দেখিতে আসিয়াছেন। সর্মার বিবাহ! তারপর শবশরেবাড়ি! সে কতদ্র! নিধিরাম একবার ফিরিয়া নীলবাড়ির দোতলার রুখ বাডায়নের দিকে চাহিয়া মন্থর পদে চাল্যা ा चित्र

(0)

নিতাকার মত সেদিনও নীরবে চলিয়া
যাইতেছিল, এমন সময় নীলবাড়ির জানালা
হইতে একটি শিশ্ব ডাফিল, "দীড়াও
সিন্দ্রেওয়ালা। দিদি তোমাকে ডাকছে।'
নিধিরামের ব্রুক কাঁপিয়া উঠিল। ফিরিতেই
সে দেখিল নিচের ঘরের জানালায় সর্ক্বতী
দাড়াইয়া। নিধিরাম আনন্দ গদগদ স্বরে
কহিয়া উঠিল, "কবে এলে সর্ন্-মা। আমি
তো জানিনে, তাই—"

সর্ক্রবতী সংক্রেপে কহিল, "আক্রা।" ইহার পর নিধিরাম ঘল্টাখানেক ধরিয়া নিজেই অবিশ্রাপত কথা কহিল গেল। লেথে কহিল, "তোমার সিন্দরের কোটোটা আন তো সর্ন্মা, খ্ব ভাল উব্লাল সিন্দরে আছে।"

সর্বতীর সোনার কোটা সি'দ্রের ভরিয়া নিধিরাম সেদিনকার মত চলিয়া গেল। তাহার পর হইতে ক্লমে ক্লমে বিচিত্র বর্ণের কাঠের কোটায় সি'দ্রের উপঢোকন আসিতে আরুভ হইল, সেই সুপো তরল আলতা হইতে শ্রের করিয়া . শীথের কঙ্কন প্রবাধিত এরোতির কোন সর্বশ্লম বাদ রহিল না।

সেবার ব্যার নিধিরাম দেশে গেল না। আদিবনে প্জার প্বে সরুবতী দেদিন দ্বশ্রেগ্রেহ বাচা করিল, নিধি- রামও সেইদিন দেশে গেল। বর্ষার বাড়িতে উপস্থিত না থাকিবার জন্য অধিক জাত হইরাছে এই বলিয়া স্চী হইতে আরম্ভ করিয়া কনিও পত্র পর্বাত নিধিরামকে বংশুট ভংগনা করিল। কিন্তু আথিক জাতর প্রকাশ অকটি তাহাকে মোটেই 'বিচলিত করিল না।

ফাল্যনের বাতালে কৃষ্ণচ্ডা গাছের জালে রং ধরিয়াছে। নিধিরাম কলিকাতার ফিরিল। সরন্বতী ধ্বশুর বাড়ি হইতে ফিরিয়াছে কিনা সে জানিত না। নীলবাড়ির সম্মুখে দড়িইরা হাঁকিল, "চাই-ই-চীনা-সিদ্র।" কোনো সাড়া আসিল না। নিধিরাম গলির পথে ফিরিয়া জেল ক্ষিতু কি ভাবিয়া আবার ফিরিয়া আসিয়া ফ্রন্সবর উচ্চে তুলিয়া ভাকিল, "চাই-ই-চীনা-আ-সিদ্র।"

অতি ক্ষীণ পদধননি লোনা গেল।
নিধিরাম কম্পিত বক্ষে জানালার ধারে
আসিরা প্রতীক্ষার দাড়াইল। জানালা
খ্লিয়া সরুষ্বতীর ছোট ভাইটিভুকহিল,
"তোমাকে এ-পথে আসতে মা বারণ করে
দিরেছে, সিশ্রুকহালা।"

অজ্ঞাতে কোনও অপরাধ করির। ফোলরাছে ভাবিরা নিধিরামের মুখ শুকাইল। আমতা আমতা করিরা সে কহিল, "কেন?"

এমন সময় দর্জা খুলিরা পেল। দ্বারে
আসিরা দাঁড়াইল দ্বানমুখী দুবেবেশা
নিরাভরণা সরক্তী। নিধিরাম দুমকিরা
উঠিল। তাহার পর মাথার পেট্রা মাটিতে
নামাইয়া তাহার উপর বসিয়া পড়িরা অধহান উদ্ভাদত দ্ভিতে সম্মুখে চাহিয়া
রহিল।

নীলবাড়ির দরজা ব**ম্ধ হইরা গেল।**

সন্বিত পাইরা বখন নিধিরাম কিবিরা চলিল, তখন তাহার মাখার সি'দ্রের পেটরা বিশ মণ ভারি হইরা **উঠিরাছে**।

ইহার পর আর সাতদিন সে পলিতে
কেই দিধিরামকে দেখে নাই। শেবে একদিন
হঠাৎ পরিচিত কণ্ঠন্বর দুনিয়া জানালা
খুলিলাম। নিধিরামের মুতি দেখা গেল।
সিন্দুরের পেটরার পরিবর্তে ভাহার মাধার
একটি প্রকান্ড ফলের ঝাকা। ভাহার গুরুভারে অবনত হইয়া বৃন্ধ নিধিরাম পাঠক
ঘর্মান্ত কলেবরে নীলবাড়ির সন্মুখ দিরা
গলির পথে হাঁকিয়া হাইতেছে, —"ফল চাই
যা, পাকা ফল।"





ৰাল্ডবিক পক্ষে সভীনাথবাব, যে বৌরের প্রাম্থে এড ধ্যধায় ও ঘটা করবেন, কেউ-ই তা কল্পনা করতে পারেনি।

পাড়া-প্রতিবেশীরা ডেবেছিল, একে
নিজের ছেলে মেই, তার মণিমালার বরসও
এমন কিছু বেশী হর্রান, হরত থবে
সংক্ষেপেই কাজটা সারবেন। সতীনাথবাব,
তাঁর অক্তরের শোক আর বাইরে প্রকাশ
করবেন না! বলা বাহুলা, আথাীয়ন্বজন,
বংধ্ধাখ্বন, সতীনাথবাব্র কন্যারা, এমনকি
তাঁর শ্বশ্ববাড়ীর লোকেরাও সব ঐরকম
কিছু একটা অনুমান করেছিলেন। মোট
কথা, কার্র-ই মনে একথা আর্সেন বে
ওই সাত বছরের নাডি, দৌহিস্তকে দিয়ে
তিনি ওইরকম বিরাট কান্ড-কারথানা করে
বস্কেন।

সতিয় কথা বলতে কি, এত জাক-জমকের প্রাণধ ও-পাড়ায় বহুকাল হয়নি, পলাশডাঙার জমিদারের মারের প্রাণেধ সেই একবার কোন্ কালে ধনী-দরিলুনিবিশৈষে সকলের নিমন্ত্রণ হয়েছিল, আর এই মণি-**মালার প্রাম্থে। তব্ পাড়া-প্রতিবেশী**রা **এটার ওপর বেশী জোর** দেয়। বলে, তখন-কার দিনে সব্ সম্তা-গণ্ডা ছিল, কিণ্ডু আজকের বাজারে যেসব উৎকৃষ্ট জিনিস খাইরেছেন সতীনাথবাব, তাতে তখনকার দশগ্রে বেশী খরচ হয়েছে তাঁর। স্তার প্রতি গভীর ভালবাসা না থাকলে, কেউ কখনো **এমনভাবে পাগলের মত ব**রচ করতে পারে না! **অথচ মণিমালা** যে আদৌ দেখতে ভাল **ছিল না, তাও সবাই জানে।** তার ওপর চিরর পা। সামান্য কোন গোগ ছ'লেই **একেবারে কমে-মান্তে টানাটানি।** সতীনাথ-ৰাব্র অভাব নেই, তাই পয়সার জোরে বড় বড় ভারার দেখিয়ে প্রতিবারেই ঠেকিয়ে द्वार्थम यग्रतक।

কথাটা ঠিক। তব্ প্রতিবার ভাল হলে,
স্বামার ব্রুক মাখা রেখে মণিমালা সোহাগভরা কণ্ঠে বলে, এই ক'খানা হাড়কে
বাঁচাবার জনো কেন তুমি মিছিমিছি, এইভাবে দুখোতে টাকা খন্দ করে, পাড়ার
ভাজারকে দেখালে পারো? বলে একট্ থেমে
স্বামার মুখের দিকে আড়নরনে তাকিরে
মুদ্ অভিবোগ করে, আর যদি মরেই বাই,
ভাতেই বা কি! মানুব কি চির্গদন বাঁচে?
তুমি পরসার জোরে কি আমার মৃত্যুর হাড
থেকে রক্ষা করতে পারবে?

শ্বীর শীর্ণ হাতখানা নিজের মঠির মধ্যে তুলে নিয়ে সতীনাথবাব; জবাব দেন, পারবো কিনা জানি না, তবে ষতদিন একটা পয়সা হাতে থাকবে, চেণ্টার মুটি করব না স্থির জেনো।

দ্বামীর ব্কের মধ্যে মুখটা লুকিয়ে দ্বামীর ব্কের জল গোপনে মুছে মণিমালা বলে, লোকের কথার কি এসে যার,
আমি ত জানি তুমি আমাকে কত ভালবাসো! তারপর একট্ ম্লান হাসি হেসে
সতীনাথবাব্ব চোথের ওপর নিজের চোথদুটো রেখে বলেছিল—সভাি গো, তোমার
এই কথা শোনার পর আর আমার মরতে
ইচ্ছা করে না। মনে হয়, রোগ নিয়ে যেন
বেংচে থাকি—অনেক, অনেক দিন।

এসব কথা একমাত্র সতীনাথবাব, ছাড়া বাইরের কেউ জানে না। জানবার কথাও নর। বুকি সেইজনোই স্থার মৃত্যুতে এত জাঁক-জমক, এত অর্থার করার জনো ক্ষেপে উঠেছিলেন তিনি। অস্ততঃ লোকে ব্রুক্ত, জান্ক বে, কত গভার প্রেম ছিল তাঁদের মধ্যে। হোক স্থা বুকানা বা রুপহাঁনা, তব, তাকে নিয়ে এই দাঁঘদিন তিনি কি মনের সুথে কাটিরেছেন, প্রাংশ উপলক্ষে এই যে এত ঘটা ও জাঁকজমক সব যেন তারই অভিবান্তি। সেই বিগত-প্রেমের সাকাঁ। টাকা অনেকেরই আছে, তবে ঠিক এইভাবে দরাজ-হাতে মৃত্যের জনো আজকাল ক'টা লোক এত খরচা করতে পারে—যাদ সতিনকার প্রেমের অনুপ্রেরণা না থাকে তাঁর মধ্যে।

বাড়ীর সামনে ছেলেদের খেলার মাঠটা থিরে মনের মত করে প্যাণ্ডাল সাজালেন সতীনাথবাব, মিজে দাঁড়িয়ে থেকে। খ'্টিতে খ'্টিতে লতাপাতা, সাদা ফ্লের রকমারী গৃছ্ক, রেশমের সাদা নেট ও সাদা আলর। সাদা নিওন আলোর রোশনাই। সামিয়ানার ভেতরটা ছুড়ে সর্বত পবিদ্রু থমথমে ভাব। সোনালী ফ্লেমে বাঁধানো প্রকাণ্ড দাঁড়ানো ম্পিমালার অয়েলপেন্টিং ফ্লের মাল্য দিয়ে সাজানো ঠিক সভার

মাঝখানে। যেন তার সেই ছবির সামনেই তাকে সাক্ষী রেখে সবকিছু করতে চান সতীনাথবাব্! বড় বড় বাইজ্বীদের কীতন গান থেকে শ্রুর করে ব্রাক্ষণভোজন, অতিথি বন্ধ্-বান্ধবদের চেয়ার-টেবিলে বসে থাওয়ান্ধাওয়া, শেষ দিন দরিপ্রনায়য়ণের ভোজন পর্যন্ত সব-ই হলো ওইথানে। মণিমালার সেই দাঁড়ানো প্রমাণ-সাইজের অয়েলপেন্টিং ছবিটরে সামনে।

কোথাও কোন মুটি যাতে লা হয়, নিজে ঘুরে ঘুরে দেখেন সতীনাথবাবু। বিরাট আয়োজন! লোকজনও খাটছে বহু, কিন্তু তবু তাঁর বিশ্রাম নেই। কার্র কোন অযত্ন না হয়, সেটার প্রতি লক্ষ্য রাখার চেয়েও কে এলো বা এলো দা, সেটাই যেন নিজের চোখে দেখতে চান।

তাঁর সন্ধানী চোথ ঘুরে বেড়ায় সর্বত।
বাড়ীর ভেতরে গিয়েও যেমন দেখে আসেন
বাইরেও তেমনি। বিদায় নেবার সময়
নম্পার জানিয়ে স্বাই স্তীনাথ্বাব্কে,
এক কথাই বলে যান, বড় ভাল আয়োজন
করেছেন, ওঃ দেখালেন বটে একটা
ভালবাসা!

বলা বাহুলা, সতীনাথবাবুর সমস্ত মন ফেন এই একটি কথা সকলের মুখ থেকে শোনবার জন্য উৎকণিঠত হয়ে থাকে। সেই-জনোই বুঝি এমন নিখুত আয়োজন করেছেন, খরচের কথা একবারও মনে ভাবেননি!

সতি।, শুধ্ ধনী বলে নয়, অমন বিনয়ী, বন্ধবিংসল ও পরোপকারী বান্তি আজকলেকার দিনে মেলা দকের! তাই সবাই এসেচে নিমন্ত্রণ রক্ষা করতে। কেউ-ই বাদ ঘারান। যাদের সম্ধায় খেতে আসার অস্মবিধা ছিল, তারা পর্যক্ত দ্পুরে এসে দেখা করে গিয়েছে এবং সতীনাথের প্রত্তিমের স্থোতি ওর ম্থের ওপর কা লেছে হা দেখালে বটে একটা যা হোক কীতি!

কিন্তু এত খ্যাতিতেও ব্রিম মন ভরে না সভীনাথবাব্র। একজনের অনুপৃষ্ঠিত যেন কাঁটার মত বিশ্বতে থাকে তাঁর মনে। চপলা এক্রা না কেন? এত লোকজন হৈচৈ-র মধ্যে তাঁর চোখ বারবার কেবল তাকে খ'লে মরে। সকাল থেকে কীতনি শ্রেহ হরেছে—তিনি ভেবেছিলেন্ হরত একট্ব বেলা হলে আসবে। কিন্তু কীতনি শেষ



হতে কথন আর বিশস্ব সেই, তথন নিজেই ওর বাবার কানের কাছে মুখটা নিয়ে গিয়ে চুগিচুগি প্রথন করলেন, চপলাকে দেখছি না কেন? আপনার ছেলে-মেয়ে-স্মী সকলকেই ত দেখলুম।

বৃন্ধ মাথাটা চুলকে উত্তর দিলেন, ও আসবে না, বলেই দিয়েছে।

কেন? ও ত খ্ব কীর্তান শ্নেতে ভালবাসে! কীর্তানের প্রোগ্রাম ফোদন থাকে, আমার রোভিওটার কাছ থেকে ওকে ওঠাতে পারতম না।

হাাঁ, আমিও তাই ডেবেছিল্ম—এত সব নামকরা বড় বড় কীতদিউলীর গান শ্নতে আগেই সে ছুটে আসবে।

এরপর আর কোন কথা যেন জিজ্ঞেস করতে পারলেন না সতীনাথবাব। গশ্ভীর মাথে সরে গেলেন সেখান থেকে।

একট্ব পরে লোকজনের মধ্যে থেকে
চঠাং একবার বাড়ীর ভেতর সরে গিয়ে
চপলার মাকে একলা ভেকে তিনি প্রশন করলেন—চপলা এলো না কেন, কীত্নি ত শহ হতে আর বেশী দেবী নেই?

চপলার মা সঙেকাচ-জড়ানো কপ্ঠে উত্তর দেন, মুখপর্ডির জন্যে আমি জনলে-প্রাড় মলমে। দাও না বাবা, একটা যা হোক পাত দেখে, বাঁচি আহলে আমি আমার হাড় জ্যুড়ায়। এত করে সাধল্ম, চল আমার সংশ্যাকিল্ড মেয়ের সেই এক গোঁ— 'না'। বলে, শ্রাদেধর কীতনি শ্রালে নাকি ওর কারা পায়। বলেই স্পে স্পে মতীনাথবাবুর গম্ভীর মুখ্থানার দিকে আড়চোখে একবার তাকিয়ে কথাটাকে অন্য-দিকে মোচড় দিলেন—অবশা ওর থ্ব দোষ নেই।সকল সময়-ই বৌমার কাছে কাছে থাকটো। তার শ্রান্থের ব্যাপার যথন ওর মনে একটা ঘা লাগবে বৈকি! তাছাড়া বৌঘাও ত ওকে একেবারে নিজের মেয়ের মত দেখতো কিনা।

স্তীনাথবাব্ 'হাঁ কি 'না' ম্থে একটি
শব্দও আর উচ্চারণ করলেন না। শ্ধ্ব একটা দীঘনিঃশ্বাস চেপে বলে উঠলেন, সেইজনেই ত ও না আসাতে আমারও মনটা ঠিক ভাল লাগছে না। বাস্তবিক পেটের মিরেও অমন করতে পারে না, সে যা করেছে।

চপলারা সভীনাথবাবার সবচেয়ে কম ^{টাকা}র ভাড়াটে। নীচের তলায় সবচেয়ে ছোট এবং সবচেরে অন্ধকার যে দু'খানা ঘর, ভাতে উঠে এসেছে অলপদিন ছলো। এক ^{বছর} এখনও পূর্ণ হয়নি বোধহয় ওরা এসেছে, কিন্তু এতটা হ্বাতা গড়ে উঠে-ছিল ওদের সংশো তাঁর স্ত্রীর যে ওরা যে ^{পুর}, এটা **সভীনাথবাব,ই ভূলতে বর্সোছলেন**। বিশেষ করে মৃত্যুর আগে চপলা ও'র রুক্ন শ্বীর ষেভাবে সেবা-শ্রেরো করেছে, সেটা ^{জীবনে} তিনি ভূ**ল**তে পারবেন না। একা রাতের পর রাভ শুধ্য জাগোনি, চপ্সা সতীনাথবাব্ৰে জোর করে ঘ্যতে পাঠিয়ে িরেছে বরে। বলেছে, সারাদিন ত ছাটো-ছ্টির অশ্ত নেই, তার ওপর আবার রাভ ^{জেগে} শেৰে কি আপনিও একটা রোগ ধরাবেন? তখন মাসীমাকে দেখবে কে শ্নি?

কিন্তু তোমারও ত ওই একই কারণে রোগ হতে পারে চপলা! তথন তোমার বাপ-মাকে আমি কি কৈফিলং দেব?

চপলার ঠোঁটের কোণে একপ্রকার স্লান হাসি নিমেবে দেখা দিরেই মিলিরে বার।

—ভয় নেই, কেউ তার জনো কৈফিয়ৎ
চাইবে না আপনার কাছে, বরং মনে মনে
ও'রা আশীর্বাদ করবেন, ও'দের কন্যাদারের
হাত থেকে আপনি রক্ষা করেছেন কলে।
ও'দের কাছে আমি ত বমের অর্চি।
কাজেই আমার কথা না ভাবকেও চলবে
আপনাব।

তবু ইতস্তত করে বলেন সতীনাথ-বাব্, কিম্তু সেটা কি জেনেশ্নে তোমার ওপর অন্যায় করা হবে না চপলা?

তাই যদি মনে করেন, ত পরে না-হর একটা প্রায়শ্চিত করবেন। তাহলেই সাত-থ্ন মাপ। আমাদের শাঙ্গেই তার বিধান আছে!

আজ সাগাক্ষণ কেবল ঘ্রেফিরে সেই কথাটাই মনে পড়ছে সতীনাথবাব্র— একটা প্রায়শ্চিত্ত করবেন, তাহলেই সাতথ্ন মাস।

মনে মনে হাসেন সতীনাথবাব, এর চেয়ে আর প্রায়শ্চিত্ত কি আছে। চপলা আর্মেনি আর সকলে এসেছে। এটাই যেন তাঁর মনের অবচেতনায় কটাৈ ফোটাতে থাকে। এক-একবার মনে হয়, সাঁত্য কি চপলা খ্ব আঘাত পেয়েছে, তাই আসেনি? আবার অন্য চিন্তা একই সংগ্রে **জাগে।** যেদিন মণিমালা মারা যায়, শেষ তাকে সাজিয়ে দিয়ে সেই যে ঘর থেকে বেরিয়ে গিয়েছিল, এই দশদিনের মধ্যে আর তাঁর বাড়ী মাড়ায়নি চপলা, কেন? অথচ ওর মা-বাবার আসা-যাওয়ার কামাই ছিল না। বখন তখন তারা আসতেন তাকে সাম্থনা দিতে, কখনো বা শ্রাম্ধ-শান্তির কাজে যেচে এসে সাহায্য করতেন। কিন্তু চপলা একদিনও যেমন আসেনি, তেমনি সতীনাথবাব, কি পরিমাণ ঘটা করে স্ত্রীর প্রাম্থ করতে মনস্থ করেছেন, সে-কথাটা বাপ-মায়ের মূখ থেকে শানে ও থাশীর বদলে কঠিন হয়ে উঠেছে। যেন কি একটা অন্যায় করতে যাচ্ছেন সতীনাথবাব,। অথচ সে এমন গম্ভীর যেন মণিমালার মৃত্যুতে শোকটা একমাত্র লেগেছে

ওর মা খোঁচা দিয়ে তাকে বলেন, তোর সব তাতে আদিখোতা। মণিমালা মরেছে, না রোগের হাত থেকে নিস্ফৃতি পেরে বেচৈছে। যে স্বামী, যার ঘর চিরদিনের মত অস্থকার করে সে চলে গেল, তার মুখ দেখলে কেউ ব্ঝতে পারবে যে, এতবড় শোকটা লেগেছে তাঁর? তবে তুই অমন দিন নেই, রাত নেই, সব সমর মুখ গোমড়া করে চুপচাপ থাকিস কেন ব্রিক না।

মারের এ-কথার কোন জবাব মা দিরে তেমনি প্রের মত নীরব থাকতে দেখে চপলাকে, ওর বাণু মেরের আড়ালে স্তীকে চুপি চুপি জিজেন করেন, আসল ব্যাপারটা কি বল ড? হলো কি ভোমার মেরের?

জানি না। তোমার ঐ ধিশাী মেরেকে জিক্তেস করোগে। সর তাতে ওর নাটক করা চাই ত। কলে হাত-মুখ ছ্রিয়ে দ্বামীর ওপর কেন মারমুখী হরে ওঠেন।

চপলা বরাবরই একট্ পাকা কিংবা বলা বেতে পারে, বেগা রক্ষের প্পতি বলা। অন্য ব্যাপার হলে বাপ-মা কিংবা প্রতিবেশনী কাউকে সে কখনো ছেড়ে কথা কইতো না। কিন্তু এক্ষেত্র কেন বে সে একেবারে মুখে চাবি বন্ধ করেছে; তা এক্ষান্ত ইম্বর জানেন। সতীনাথবাব্ ও মণিমালার গভীর প্রেমের কথা যখন সকলের মুখে, তখনো ও তেমনি চুপচাপ।

পরের দিন ব্রাহ্মপডোজন। আছারপ্রজন, বংধ্-বাংধব, পাড়া-প্রতিবেশীদের
দ,পর থেকেই খাওয়-দাওয়া শ্রুহ হলো।
মোটরের পর মোটর, ট্যাক্সির ভিড় জ্বমে
উঠলো রাস্তায়। নিম্লিডদের কেউ দ্ধার
বাকী বইল না আসতে।

भूशः এला मा अक्बात हशना।

ওর বাপ-মা যখন ছেলে-মেরেদের দিরে থেতে এলেন, তখন চপলাকে না দেখে সতীনাথবাব প্রদন করলেন, কৈ চপলা ও এলো না খেতে?

ওর মা একটা চোক গিলে জবাব দিলেন, ওর পোটটা আজ ভাল নেই, কিছু, খাবে না, তাই আসেনি।

না না, সে কি কথা। অতত মিন্টি-টিন্টিও একট্ খেতে হবে তাকে। সে না খেলে কি চলে। বলে তিনি নিজেই তিন-তলার সিন্টি ভাঙতে ভাঙতে নীচে নেমে এলেন।

চপলারা বে-দিকটার থাকে, সেদিকে আলো কম। অন্ধকারে পা টিপে টিপে সতীনাথবাব পিছনের দরজা দিয়ে ভিতরে এনে চ্কুলেন।

রাত তথন সাড়ে দশটার বেশী হবে
না। চপলা ঘরের আলো নিভিয়ে চুপ করে
দাঁড়িরেছিল ভেতরের ছোট্ট বকটার এক
কোণে। সামনের সেই উৎসব-মুখর উচ্চু
তিনতলা বাড়াটার ছাদের দিকে ব্লিড সে
তাকিরেছিল। বারা বড়লোকের বাড়াতি
ভালমন্দ খেতে খেতে সতীনাথবাব্র জরগান করছিল, তাদের কথা শ্রেছিল চপলা,
না বাকে উপলক্ষ করে এই বিরাট আরোজন, তারই কথা চিন্তা করছিল—স্বীন্বর
জানেন।

সতীনাথবাব্রে পারের শব্দ পেরে চমকে উঠলো চপলা, একি, আপনি?

শ্বে বিকার নর, তার সংস্থা সংস্থা একটা কেমন অবিশ্বাসও কেন ধর্নিত হলো তার কণ্ঠে।

সতীনাখবাব্র কানে নর মনে গিরে ব্রি তা ধারা মারলে। তিনি বললেন, হাঁ তোমাকে ডাকতে এল্ম চপলা। সবাই পেতে বসেছেন, একটা পাতা তোমায় জনো আমি আলাদা করে রেখে এসেছি। চলো আর দেরী করো না। হঠাৎ চপলার কণ্ঠস্বর কঠিন হয়ে উঠলো। সে বললে,—কেন, মা বলেনি যে আমি খাব না?

হাঁ. তা বলেছেন।

ু তাহলে আবার আপনি নিজে এসেছেন কেন?

সতীনাথবাব, চট করে বলে ফেললেন, অনা কেউ এলে পাছে না যাও, সেইজনো আমি নিজেই এসেছি তোমায় ধরে নিয়ে যেতে চপলা!

আমার শরীর ভালো দয়, আমি খাবো না। আপনি দয়া করে চলে যান। বলে রক থেকে ঘরের ভেতরে গিরে ত্কে আলোর সুইচটা টিপে দিলে।

সত্তীনাথবাব্বও ওর পিছনে পিছনে থকের এসে দাঁড়ালেন। তারপর অন্রোধ-ভরা দ্বরে বললেন, অশ্তত আজকের দিনে একটা সন্দেশত বদি তুমি মুখে না দাও, তাইলো মালার আজা তৃশ্তি পাবে না চপলাল

উদ্যতফ্লা সপিণীর মত সহসা ঘাড়টা ছ্রিয়ের চপলা বিষাপ্ত দ্ভিট্তে তাকালো সতীনাথবাব্র মুখের দিকে। তারপর চাপা গলার ফিসফিস করে বললে— এত লোককে এত সন্দেশ খাওয়ালেন, তাতে তার আত্মার ভিশ্ত যদি না হয়ে থাকে ত আমি একটা সন্দেশ খেলেই হবে কি করে জানলেন। শেলায় না যেন তাীর বিষ করে পড়ে ওর রসনা থেকে।

ভূলে যেও না, তিনি তোহাকে স্বচয়ে বেশী ভালবাসতেন চপলা।

আপনার চেয়েও? বলে খিল খিল করে হেসে উঠলো চপলা। এমন অম্ভূত, বিচিচ ধরনের হাসি তার মুখে আর কথনো যেন শোনেননি স্তীনাথবাব। হাসি নয় যেন তীক্ষাধার অস্তের ঝঞ্চনা।

সতীনাথবাবার ব্যকের মধোটা তার শব্দে সহসা যেন কে'পে ওঠে। তরি মুখ থেকে কোন জবাব শোনার আগেই চপলা যেন অস্থাঘাত হানলে সভা সভা একেবারে তার মর্মস্থলে। নিঃশব্দে সভীনাথবাবরে দিকে দ্'পা এগিয়ে এসে সে বললে. মাসীমা আমায় এত ভালবাসতেন কলেই যাব না। আর সেইজনোই একটা দানাও কোনকিছ্ মুখে দেব না, তাহলে আমার পাপ হবে।

পাপ! কথাটা কানে প্রবেশ করতেই পায়ের নথ থেকে মাথার চুল পর্যক্ত এক-সংগুল শিউরে উঠলো সতীনাথবাব্র।

হাঁ। যারা আজ থেয়ে আপনার জয়গান করতে করতে চলে যাচ্ছে, তারা ত জানে দা যে, এত ধ্নেধায়, এত ঘটার পিছনে রয়েছে এক হতা।কারীর চকাণত। জানি এত আয়োজন করেছেন আপনি কেন? শর্মে সেই পাপকে ঢাকবার জনো। শর্মে লোকের চোথ অথেরি রোশনাই দিয়ে ধ্যিয়ে দেবার জনো।

কি বল্লছো তুমি এসৰ চপলা, পাগলের মত! সতীনাথবাব্র কঠেস্বর যেন কেমন কে'পে কে'পে ওঠে।

যা বলচি তার একবিন্দৃত থিখা নয়।
আপনার মনেব দিকে তাকিয়ে প্রশ্ন করনে,
ব্কেতে পারবেন। চপলার দা'চোখ বেয়ে
জলের ধারা নামে। সে বলে, কেন আপনি
অনাবারের মত এধারে বড় ডাক্টার তাকেমনি
শ্নি?

কাঠগড়ায় উঠে আসামী যেন বিচারকের সামনে এসে পর্যিড্য়েছে, সতীনাথবাক্র মুখের অবস্থা ঠিক ভেম্নি। আমতা-আমতা করে তিনি উত্তর দিলেন, কি করে জানবো বলো যে হঠাৎ এত 'দিরিয়াস' হবে!

মিথো কথা। ধমক দিয়ে ভঠে চপলা। আমি স্ব জানি, কেন এ-কাজ করেছেন। বলে আরো একপদ্যা গলা চড়িয়ে দিয়ে আবার প্রশন করলে চপলা, ডাক্তার যে 'কোরামিন' পদেধো মিনিট অন্তর খাওয়াতে বলে গিয়েছিলেন, সেটাও কি ভাকে ঠিক সময়ে খেতে দেন্নি হাসীয়া মরে যাবেন ভাবতে পারেননি বলে? যান আলায় আর ঘটি।বেন মা। বলতে বলতে ফ'্লিস্ফ ति पि छेठेला हथला। लाकरक थाইरा তাদের মাথে পদ্ধীপ্রেমের জয়ধন্নি শানে যত আল্ড•িত লাভ কর্ন আপনি ত্রু মনে মনে ঠিকই জানেম, এ-মৃত্যু আপনার ইচ্ছাকত। আপনি চেয়েছিলেন ভাকে সবিয়ে দিতে এ-প**্থিবী থেকে। আমায় সেদিন** মাঝ রাতে ভূট জনো একটা ঘ্রমিয়ে নিতে বলেছিলেন। তথন যদি জানতম যে, আপনার মনে লাকিয়েছিল এই দারভিস্মিশ...

কিন্তু, না না.....

কোন কিংকু নেই, এর মধা। মাসীমার দেহ থেকে প্রাণ বেরিরে গেছে শুনেই আমি সবপ্রথম ছুটে গিরেছিল্ম কোরামিনের শিশিটা দেখতে। দেখল্ম, একেবারে নতুন শিশি যেমন ছিল ঠিক তেমনি পড়ে রয়েছে। ছিপি পর্যাপত খোলা হয়নি! য়ন! প্রেমর বড়াই অন্তত আমার কাছে করতে আসবেন না। আপনি আমার গ্রেজন, সকলে আপনাকে ভিছ্লখ্যা করে তাই কিছু বালনি এতদিন চুপ করে ছিল্ম, পাছে
আপনার মাথা হেট হয়। শুধু আমাকে
ওই হত্যার মহোৎসবে অংশগ্রহণ করার জনা
ভাকতে এসেছেন আপনি নিজে বলেই, আর
চুপ করে থাকতে পারলাম না।

বন্দী আসামী থালাস পেলে মেমন করে ছুটে বেরিরে যায় তেমনি ভাবে সভীনাথবাব নিজের ঘরে গিরে একেবারে দরজায় খিল লাগিয়ে যেন হাঁপাতে থাকেন। সে বাতে তিনি মুখে এক ফোটা জলও দিলেন না।

বাড়ীর লোকেরা কেউ আর সভীনাথ-বাবকে বিরক্ত করতে এলো না। সারাদিনের পরিশ্রমে তিনি ক্লান্ড, ভাছাড়া স্ফীর শোকে মহোমান মনে করে, সবাই চুপ করে। গেল।

রাত গভীর থেকে গভীরতর হয়। উৎসব মুখর বাড়ীটা স্ব'র নীরব, নিস্তব্ধ ্কাথাত বৰ্ণঝ একজনত জেগে নেই। ধীরে ধীরে বিছানার ওপর উঠে বসেন সতীনাথ-বারু। তারপর হাতড়াতে হাতড়াতে দেও-য়াল-জোডা মণিমালার বিরাট আয়েল পেণ্টিংটার সামনে গিয়ে দ**াঁড়ালেন। আলো**র স্টেডটা টিপতে গিয়ে তাঁর হাতটা বার বার কে'পে ভঠে, দ্ব'বার হাতটা সরিয়ে নিলেন ্যন কিসের আতংকে। তৃতীয়বার হঠাৎ আলোটা ক্রালতেই শিউরে উঠলেন। একি মূল্যালার মাথের রেখায় এমন তীর খুলা কেন। সেকি তবে জানতে পেরেছে তাঁর মনের অবচেতনায় লাকানো ছিল কিসের দ্রেভিসন্ধি! ওই চ্নিবশ বছরের আটি-সটি দেহ, প্রাণ চণ্ডলা-কর্ম-মিপ্রণা চপলাকে িবয়ে করার গোপন বাসনা, ভাঁকে এই কাজে অন্প্রণিত করেছিল। তাকে ভাল ভা**ছা**র না দেখিয়ে, ওয়ুধ না খাইয়ে তিনি মেরে ফেলেছেন, তবে কি সব জানতে পেরেছে মণিমালা ?

ভাড়াভাড়ি আলোটা ভিনি িভয়ে দিলেন। মণিমালার দিকে তা**কা**তে ্ব**ন ভ**য় করে-ছবি নয়, ও যেন এই মৃহ্তে জ্যান্ত হয়ে উপেছে। আবার বিছানায় এসে চোথ বুজিয়ে শুহে পড়েন তিনি। কিন্তু ঘুম আসে না কিছাতেই। দেহে মনে যেন িনসের অবাক্ত যন্ত্রণা। কিন্তু যে কথা তিমি কোনদিন মুখে প্রকাশ করেন নি, এমন কি চে'চিয়ে ভাবেননি পর্যদত পাছে চপলা জানতে পারে এবং সব সময় **আরো** বেশী সতক থাকতেন তার সঙ্গে। আলাপ আলোচনা করতে গিয়ে কি করে তা মণ-মালার পকে জানা সম্ভব হলো! সতি। কি সে জানতে পেরেছিল মতার আগে যে চপলাকে তিনি মনে মনে ভালবেসে ফেলেছেন। তাকে কামনা করেন।

না অসম্ভব। ৫ তাঁর মনের ভূল। মানমালা কেন চপলা নিজেও বোধহয় জানতো
না যে তাঁর মনের অবচেতনার এই গোপন
কথাটা লাকিয়ে ছিল। অথচ এর জনো সারী
মানিমালা নিজে। সে-ই তো জোর করে
চপলাকে তাঁর ঘরে পাঠিরে দিতো, জিনিস
পর্য সব গোছগাছ করার জন্যে। নিজে
র্শন, অসমর্থা বলে তার কাজগালো ওকে
দিয়ে করিয়ে নিতো সমরে-অসমরে। কত-

১৯१० সালে वाभनात खागा

যে-কোন একটি ফ্লের নাম লিথিয়।
আপনার ঠিকানাসহ একটি পোণ্টকার্ড
আমাদের কাছে পাঠান। আগাম্মী বারমাসে

আপনার ভাগোর



নিদ্যারিত বিবরণ আমরা আপনাকে পাঠাইব; ইহাতে পাইবেন ব্যবসায়ে লাভ - লোকসান, চাকবিতে উল্লাক্ত বদলী, জন্ম, বিবাহ ও স্থান

সম্পির বিবরণ—আর থাকিবে দুট্ রহের প্রকোপ হইতে আত্মরক্ষার নির্দেশ একবার পরীক্ষা করিলেই ব্যক্তিতে পারিবেন

Pt. DEV DUTT SHASTRI Raj Ivotshi (AWC) P. B. 86 JULLUNDUR CITY দিন সতীনাথবাব্ নিষেধ কংগ্রেন মণিমালাকে, পরের মেয়েকে কেন তুমি এমনি
করে খাটাও, আমি পছল করি না। কিন্তু
তার জবাব ও'কে না দিয়ে চপলা নিজে
মণিমালাকে দিতো। বলতো, এমন কিছ্
ভারী কাজ নয় যে, আমি মরে যাবো,
আপনি ও'র কথা শ্নবেন না। উনি
আমাকে পর ভাবেন, তাই ও-কথা বলতে
পারেন। কিন্তু আমি ত আপনাকে নিজের
মাসীমা বলেই মনে করি। কাজেই মাসীমার
কাজগ্রলো করে দেবার অধিকার সম্পূর্ণ
আছে আমার।

সতীনাথবাব, এর ওপর আর কি বলবেন ভেবে না পেয়ে চুপ করে যেতেন। কি করে মুখ ফুটে জানাবেন স্তীকে যে, গোছ-গাছ করতে এসে চপলা তাঁর মনের মুখ্য সর্বাঞ্ছা, আরো বেশী যেন এলোমেলা, ঘু-গোছালো করে দিয়ে যায়।

তাছাড়া চপলাই বরং নিজে থেকে কতদিন রঙ্গ-বিদ্রুপ করেছে তাঁর সঙ্গে মণিমালার সামনে। তথন, যদি এতট্রকু দুদেহ জাগে তার মনে, তাহলে কি আড়ালে ডেকে চপলাকে সে নিষেধ করে দিতোনা ?

মনে মনে এমনি সব পরোনো কথা নিয়ে ভখন কত কি আলোচনা করতে থাকেন সতীনাথবাব,। আরু যত করেন তত যেন ব্যকে বল একটা একটা করে ফিরে পান। না, মণিমালার মনে কোন সন্দেহ জাগেনি। নইলে তার সামনেই ত একদিন স্পণ্ট চপলা বলে ফেলেছিল, দেখুন আপনি মাসীমাকে একেবারে ভালবাসেন না। অপনার প্রেমটা শা্ধা লোক-দেখানো। নইলে এতদিন ধরে মাসীমা ভূপছেন, কেন ওকে ভিয়েনায় নিয়ে গিয়ে কোন ভাল ডাক্তা দেখিয়ে সমুখ্য করে আনেন না? আপনি ত রাজালোক। কলকাতার শহরে পাঁচখানা ভাড়া বাড়ীর মালিক। এ কি সহজ কথা। মাসীমা ছাড়া আর আছেই বা কৈ খাবার লোক আপনার? আমি হলে আগেই দ্বীকে নিয়ে পাড়ি দিতুম সেদেশে। আপনাদের যে কিরকম ভালবাসা ব্রিমনে বাপ:!

কথাটা অবশ্য হাসতে হাসতেই
বর্লাছল চপলা। কিবতু মণিমালা সেটা
একেবারেই গায়ে মাথেনি। বরং থপ করে
ওর সামনে তার মূখটা চিপে ধরে বলেছিল,
ছি একথা শ্নলে পাপ হয়। ঠাটা করেও
বলতে নেই। সাত জন্ম তপসাা না করলে
এমন শ্বামী পাওয়া যায় না; জন্ম ভন্ম
যেন আমি ওকে প্রামীর্পে পাই।
ভগবানের কাছে, রোজ এই প্রার্থনাই করি।

বেশ মনে আছে, একদিন মণিমালা

এসে তাঁকে বলেছিল, চপলার জন্যে একটা

থমন তেমন পাত্র দেখে দাওনা। তোমার ত

এত লোকের সংগ্র আলাপ। দোজ-বরে

কিংবা একটা বেশী বয়স হয়েছে, কি কোন

উদ্বাস্ত্র পাকিস্তানের ছেলে হলেও চলবে,

নোদ্দা যা হোক দৃণ্টো খেতে পরতে পেলেই

হলো! রোজ ওর মা এস্কে আমার হাত ধরে

কামাকাটি করে।

এর জবাবে তিনি বলেছিলেন, সে কি! এমন মেয়ে ওইরকম একটা যার তার হাতে দেবে ওর মা-বাপ?

তা কি করবে। যাদের ঘরে একটা কানাকড়ির সম্বল দেই, তারা মেয়েকে রাজারাজড়ার ঘরে দেবে কোথা থেকে শুনি। এককড়ি বার করতে না পারলে ত একালে মেয়ের ভাল বিয়ে হবার কোন উপায় নেই। তাছাড়া প্রসার অভাবে মেয়েটিকে লেখাপড়াও শেখাতে পার্রোন ওরা। ক্লাস নাইন-এ উঠে ছেড়ে দিতে বাধ্য হয়েছিল! আজকালকার দিনে কে এই মুখ্যু মেয়েকে নেবে শুনি?

সতীনাথবাব্ বলেছিলেন স্থাীকে—না, দেখো, এমন অধ্যের কাজ আমার দ্বারা সম্ভব হবে না। তারপর সারা জীবন ঐ চপলা আমায় শাপ-শাপানত করবে, এ আমি পাববো দা সহা করতে।

বেশ ত, এত যদি দরদ, তাহলে কোন ভাল পাত্র দেখে দু' পাঁচ হাজার খরচ করেই ওর বিয়েটা দিয়ে দতে না। তোমার ত টাকার অভাব নেই।

এটাই বরং সম্ভব। বলে হাসতে হাসতে দুরীর মুখের দিকে তাকিয়ে তিনি বলে-ছিলেন,—বেশ, তেমন পাত্র পেলে নিশ্চুরাই বলবো!

এর তিন কি চারদিন পরে, ঠিক স্মরণ নেই সতীনাথবাব্র। একদিন দুপুরে চশ্মাটা টোখে লাগিয়ে 'চেরোর' একখানা হাত-দেখার বই খুলে নিজের কর-রেখার সংগ কি যেন মিলিয়ে দেখছিলেন তিনি। পিছন থেকে কথন যে নিঃশক্ষে হরে এসে ডুকেছিল চপলা, তা তিনি টের পাননি!

ও, আপনার আবার এসব বিদ্যেও জানা আছে নাকি! বলে তাঁর সামনে এসে নিজের হাতটা অপা্করে বাড়িয়ে দিলে চপলা! দেখান ও আমার ভাগাটা কি রক্ষ?

পতির তিনি বিশেষ কিছু জানতেন না।
তব্ বইয়ের সজো চপলার হাতের কতকগুলো রেখার মিল খাঁলে বার করে
বললেন,—আরে করছো কি? এই যে
দেখছো তিনটে রেখা এক জায়গায় এসে
বিভূজের মত মিলছে, এ হলো যাকে বলে
রাজরাণী হবার চিহা।

এবার খিল খিল করে একটা হাসির তরুগা খেন বইথে দিলে চপলা। ঠিক সেই সময় পাশের ঘর থেকে মণিমালা এসে বললেন তথিক রে, এত হাসছিদ কেন? কি হয়েছে?

চপলা হাসির সে বেগ দমন করতে করতে বললে, দেখুন না মাসীমা, আমি নাকি রাজরাণী হবো, উনি হাত দেখে বলছেন!

ত। এতে হাসির কি আছে? মেরে-ছেলের ভাগে কথন কি হয়, বলা যায় কি?
আমার যথন বিয়ে হয়েছিল, তথন ও'র কি
ছিল? যাকে বলে রাস্তার ভাগোবতঃ।
তারপর বাবসা কবতে নেমেই না. যুম্ধের
বাজারে যা কিছু দেখছিস্, স্ব হয়েছে।

চপলা বললে, তাহলে আমি যে-রাজার রাজরাণী হবো, নিশ্চয়ই সে রাজাহনীন রাজা। রাজা বলতে তার কিছু নেই—অর্থ নেই, লোক নেই। শেষটা বলার আগেই আবার হেসে ফেললে।

না—না—ঠাট্টা নয়। আমি ধাকে বা বলেছি হ্বেহ্ মিলে গিয়েছে, জানো? বলে ম্চকী হেসে চপলার ম্থের দিকে সতীনাথবাব্ যেমন তাকালেন অমনি সে যেন গিটাকরি দিয়ে হেসে উঠলো।

ভারপর সে হাসির দমক থামাতে থামাতে বললে, ভাহ'লে ত দেখছি আপনার কথাটা সতো পরিণত করতে হলে, আপনাকেই মালা বদল করতে হয় আমার সংশা।

মূখ ফসকে কথাটা হঠাৎ বলে ফেলেই দ্রুতপদে ঘর থেকে বেরিয়ে গেল চুপলা।

সংপা সংপা ছাৰ করে উঠলো সতীনাথবাব্র ব্কটা। খেলার ছলে চপলা তাঁকে এমন একটা বিশেষ ইপ্পিত দিয়ে বেল যে তা নিয়ে তিনি যত মনে চিকতা করেন, এ চপলার রাসকতা মাত্র, এ অসম্ভব, তত যেন তাঁর দেহ-মন ভেতরে ভেতরে বোমাণিও হতে থাকে। দেহের আড়ালে মনের গভীরে আরো নীচে অম্ধকারের পশক করেছেল ওঠে। হাঁ, কেনই বা সম্ভব নয়। চপলাকে ত তার বাপ-মা হাত-পা বে'ধে জলে ফেলে দিতে উদাত হয়েছেন। তবে কেনই বা তাকে বিয়ে করতে পারবেন না তিনি?

ভয়ে ভয়ে একবার সে কথাটা উচ্চারণ
করেই। আবার তেমনি থমকে থেমে গিমেছিলেন সতীনাথবার। হাঁ বাধা আছে
একটা। দ্র্লাজ্যা বাধা। সে হারো মণিমারলা!
তার চিরবংশা অকর্মাণ্যা দ্রী। বিষের পর
থেকে দুটো বছরও যার সঙ্গে স্বচ্ছালে,
আমোদ আহ্মাদে কটোতে পারেননি তিনি।
অথচ সে তার গৃহলক্ষ্মী। ভারই দৌলতে
দাকি তাঁর যত কিছা সৌভাগ্য সব! এ শ্ধে
তাঁর মত নয়। অনা সকলেরও মনের
বিশ্বাস। তাই দেবী জ্ঞানে তাকৈ যক্তে
মাথায় করে রেখেছিলেন। এই দীর্ঘাদিন
ধরে এতট্কু কোথাও কত্বিরে হাটি
কথনো হতে দেননি!

কিন্তু এই একটা বছর, শুধু চপলা ঘরে আসার পর থেকেই যেন মনের মধ্যে কোথায় ভেতবে ভেতরে আগ্রুন ধরে গিয়ে-ছিল তার। মনের সংশ্য বার বার যুম্ধ করেও সতীনাথবাব্ হেরে যান, পারেন না জয়ী হতে।

ধীরে ধীরে তার মন এগিয়েছিল চপলার দিকে সতাি, কিন্তু এগাতে এগাতে দোষ সীমায় এসে প্রচৌবের কাছে থমকে দড়িয়ে পড়েছিলেন তিনি। কি কার উর্জ্ঞান করবেন সেই কঠিন অবরাধ, তারই চিন্তায় যথন রাতের পর রাত বিনিদ্র রজনী কাটছে, তখন ছঠাং যেন চোথেব সামনে দেখতে পেকেন একটা ফাটবা। সেই

স্মৃত্ প্রাচীরকে ধ্রিসাং করবার একটা ছিল্ল পেরে ব্রিখ লেতে উর্লেছিলেন ধ্রংসের নেশার।

তারপর! তারপর আর চিন্তা করতে
পারেন না সতীনাধবাব্। স্থান অসুথ
বাদ্ধলে জন্য সময় ধেমন অধার হরে ওঠেন,
ছুটোছুটি করে বড় বড় ভারার ভাকেন,
ওয়্ধ-পথার ব্যবস্থা করেন, এবার থেন
হঠাৎ তাতে কিছু শৈথিলা দেখা দিলে!
পাড়ার সুবোধ ভারারকেই ভাকলেন তিনি।
জবন্য পরে ধখন খ্ব খারাপের দিকে গেল
মণিমালার রোগটা, তখন লোক-দেখানো
বড় বড় ভারার এদেছিলেন। কিন্তু তারা
জাড়ালে ভেকে তাকৈ বলে গেলেন, এত
দেরীতে ভেকেছেন যে, আমাদের আর করার
কিছু নেই। তবে বখনই হাত-পা ঠান্ডা হয়ে
ভাসবে—দশ ফোটা করে কোরামিন দিতে
ভূলবেন না, পনের মিনিট অন্তর।

সত্যি কথা বলতে কি। সে কথা শ্নে মুহুতে দুঃখের পরিবর্তে মনের ভেতর ত্যোখার একটা মারির আনন্দ যেন ঠেলে উঠেছিল সতানাথবাব্র।

তাইতো সেদিন রাত যখন একটা ৰাজলো তখন তিনি নিজে স্থানীর শ্যার পাশে গিরে বসলেন। আর চপলাকে জোর করে একট্ ঘ্যিরে নেবার জনো ভেতরের মবে পানিয়ে দিলেন।

তারপর রাত্র যথন দুটো, সভীনাথবাব্ প্রাীর গারে, পারের তলায়, হাতের
চেটোর প্রশা করে দেখেন, ঠান্ডা কন্কন্
করছে সব। ভাড়াভাড়ি উঠে কোরামিনের
শিশিটা যেমন খুলতে গেলেন, কেন জানিনা
সহসা তার হাত থেমে গেল। কিসের একটা
গোপন কম্পন কেন তার আঙ্লগ্লোর
মধ্যে সিরসির করে ওঠে। বিষান্ত সরীস্পের
স্পা লেগে যেন হঠাং অনড়, অসাড় হয়ে
যায় তার আঙ্লোর সব শভি! শিশিটা
হাতে নিরে শুডম্ম হয়ে দাঁড়িয়ে পাকেন
সভীনাথবাব্, যুকি মদের সপ্রে এই তার
শেষ যুম্ধ।

ফিরে এসে স্থার গায়ে হাত দিয়েই তিনি আংকে উঠলেন, এটা, মালা মালা, তুমি তাহকে ফাঁকি দিয়ে স্তি স্তিত্য এতদিন পরে চলে গেলে। চীংকার করে উঠলেন তিনি:

চাকর-বাকর আত্মীরুব্রুর স্বাই যে বেখানে ঘুনচ্ছিল ছুটতে ছুটতে ঘরে এসে পড়ল। চপলার চোখে যেন কাল ঘুন ধরে ছিল। অনেকটা পরে সে উঠে এসেছিল, শুখু এইট্কু মনে আছে সতীনাথবাবুর।

তারপর আর কিছ, তিনি জানেন না। তবে চপলা যে কে'দেছিল খুব আনককণ ধরে ফুলে ফুলে মণিমালার শ্ব্যার ওপর, মনে আছে। তিনি হাকুম দিয়েছিলেন, এই খাট বিছানা অলংকার, যা কিছা ওর গায়ে আ**ছে যেন ওর সং**শ্য দেওয়া হয়। আর পাগলের মত মুঠো মুঠো টাকা রাস্তায় ছড়াতে ছড়াতে নিজে শব্যানার প্রোভাগে গিয়েছিলেন। যাতে লোকের মনে এতটাকু সদেহ না জনাগে যে তিনি তাকে মেরে ফেলেছেন। আর দেইজন্যে যে এই বিপ্ল খরচা করে তার শ্রাম্থ করেছেন এটা স্তিয় হলেও চপলা কি করে জানতে পারলে তাঁর মনের খবর—এটাই বার বার সতীনাথবাবরে মাথার মধ্যে পাক খেতে থাকে। দেই গভীর রাত্রে যত ওই কথাটা ভাবেন তত যেন সেই সংশ্যে আরো একটা কথা জ্ঞাগে তাঁর মনে. ভাহ'লে এতই যখন জেনেছে চপলা তবে কি এর পিছনে যে আসল উদ্দেশটো তাও সে জানে? সে কি তবে ব্যক্তে পেকেছে যে তাকে পাবার জন্যে এত বড় অন্যায়টা তিনি করেছেন ?

সংগ্য সংগ্য তার সমসত মন একসংগ্য বলে ওঠে, হাঁ, সে জানে। মিশ্চয়ই ব্রুগতে পেরেছে। চপলা অতাক্ত চতুরা। সে-ই যে তাকে এই ঘ্রণিত কাজে উন্দুদ্ধ করেছে, তা নিশ্চয় সে জানে। আর জানে বলেই হয়ত এত রাগ তাঁর ওপর। সেইজনোই ত একবারও এলো না এ শ্রাম্থে, কিছু মুখে দিলে না।

সতীনাথবাবার চিদ্তায় আবার ছেদ। পড়ে।

তিনি ভাবেন আকাশপাতাল। এর পর কি করে মুখ দেখাবেন চপলাকে। আর কি করেই বা তার কাছে বিয়ের প্রস্তাব করকেন! সে যদি মুখের ওপর বলে বসে, আপনি স্থাী হত্যা করতে পারেন, আপনার ছারা মাড়ালে পাপ। তাহ'লে? আর ভাবতে পারেন না। তাহ'লে কি
মিছিমিছি সামাজনীবন ধরে শ্বেম এ পাপের
বোঝা বহন করবেন? কোন, কুক্লণে দেখা
হয়েছিল চপলার সপো। অনুশোচনার
আগ্নে ধেন ভেতরটা তার দাউ দাউ করে
জন্পতে থাকে।

এ পাপের কি প্রার্হিচন্ত—রোছট্ ভাবেন। কিন্তু ভেবেও কোন ক্লকিনারা করতে পারেন দা।

এমনি করে যত দিন যায় সতীনাধ-বাবুর কাছে জীবনটা যেন বোঝা হয়ে ওঠে। ঘর-বাড়ী, বিষয়-সম্পত্তি সব বিষাকু ন্ন হয়।

বোধ হয় মাস তিনেক পরে হঠাং একদিন চপলার বাবা এসে প্রস্টাব করজেন, আমাদের সকলোর ইচ্ছে যে আপনি চপলাক বিয়ে করে আবার সংসার পাতুন।

এই দীর্ঘদিন তিনি চপলার ছাষ্ট্র প্রাক্ত দেখতে পাননি। সে তাঁর বাড়ীত আর পদাপণি করেনি। সতীনাথবাব ভেকে ছিলেন হয়ত আর তাঁর মুখ দেখবে ন কোনদিন!

তাই চমকে উঠলেন সে প্রদণ্ডার শানে।
তবা প্রথমটা মাথে অনিচ্ছা দেখিয়ে এবং
অবংশকে অনেক ভেবে চিতে ফেন
সতীনাথবাবা বললেন,—আপনি ত বলঙেন,
কিল্কু আপনার মেয়ে তাতে রাজী হবে
কেন?

ব্যুড়ো এবার গলাটা খাটো করে বল্লেন,—আরে মেয়ে নিজেই বলেছে, নইলে আমাদের সাধ্য কি যে আপনার কাছে এ প্রস্তাব করি।

আবার বিরাট পাণ্ডেল বাঁধা হল, সেই
একই মাঠে। একই জায়গায়। আবার তেমনি
ভাবেই সাজানো হলো সেখানে সামিষ্যনা
ধহলে লভায় পাভায়, বৈদাভিক আলোকমালায়। তবে কীতানের বদা এবও
কাশীর বিখাতে মুসলমান একভাদদের
সানাই বাজালো।

আবার আত্মীয় বধ্ধ-বাধ্ব ও পাড়া-শাংধ সকলে নিমন্ত্রণ থেতে এলো আগের মতেই।

এবারও ভূরিভোজন করে যাবার সময়
স্বাই একবাকো বললে.—বেশ করেছা।
সঙ্গিনাথ, একটা প্রেব্রের মত কাজ করছো।
বড় খ্লি হয়েছি। যে যাবার সে ত চলে
গেছে। ভাছাড়া সে ছিল চিরর্শনা। একটা
দিনের জনোও ভূমি তাকে নিয়ে সাখী হতে
পারনি। কেবল ভারার আর ওব্ধ। ছুটোছুটি করে ভোমার দিন গেছে। আমবা সব
জানি। কেউ বা বলে, এখন ভূমি ব্ডো
ছছো, ভোমার মুখে জল দেবার একটা
মান্য চাই ত! বেশ করেছো।

এ শানে সতীনাথবাব, শাব, মনে মনে হাসেন।

কিন্তু আর একজন বোধ হয় সেই সংগ সকলের অন্তরাল থেকে হেসে উঠেছিলেন— তিনি অন্তর্যামী।

উৎপল দত্তের ফেরারী ফোজ * কল্লোল

n 0.00 n

n 0.00 n

ধনপ্তায় বৈরাগীর আর হবে না দেরী

1 00.00 H

रथीक कर्नान: "श्रम्थ विकारण" कणिकाका



ভার থেকেই নীলিমার হাঁকডাকে সারা বাড় বাতবাদত। ভাতা ভজায়ার সোয়াদিত নাই। ঘন ঘন ফরমাস ঃ এটা কর, ওটা ধর, এদিকে আয়, ও বাড়ি ঘা। ব্যাপার আনো সাধারণ নয়। এই ছোট্ সংসারটির জবিনে আছ একটা দিনের মাতা দিন। নীলিমার এক- নাত পত্র বাবলা এই প্রথম সকুলে থাইতেছে।

বাবলা কি আর সে বাবলা আছে! আজ যা তাই কাজের ফাঁকে ফাঁকে ছোলর োযাকী নম স্বাজিং বলিয়াই তাকে ভাকিতে চায়। তা মুখ হইতে কেবলি বার হয় 'বাবলা', ইখনে বা খোকম'।

বালন্র মন দ্রেন্র করে আনকে আর এতকে। পকুল আর যাই হোক, মামারবাড়ি যান্য সে-জান তার নিটনে। এক বছর কবের কাছে ধ্যাড়ায় চড়িল আচাড় খাইলা কবিতে গিয়া মাঝে মাঝে চড়চাপড় কম হয় নাই। গাহনিক্ষক বনমালীবার, তাঁর প্রতি-গুত্রপ্রার বারণ শত্তি ভগ করিতে পারেন না বনিয়াই মাঝে মাঝে দতিম্য খিটাইয়া হিত্রের বালিটা গে প্রকাশ করিয়া কেলেন সেই ঘতিজতাও বাবল্যে কাছে খ্রু স্যক্তর কাত্রি ক্রেমা অন্তব্ন করে মাত বছরের এক কিলেত মন।

নালিখার রালের পাট আজ বহু আরেই শেষ। থোকার জানাকাপড় কোঁটাইয়া গোছাইয়া ধ্যান্থানে রাখিয়া দিয়াছে বহুক্দ। থানিক কাজারত প্রস্কৃত্য। ভজ্লাকে দিয়া বিব্বপত্ত, সত্ত্যান্ত আল ধানবুর্বীত যোগাড় ক্রিয়া বিশিয়াতে।

মার্থ মার্থ নালিম, ম্ছ্টের জন্য আন-না হয়। সেই এক-রাত্ত শিশ্ব বাব্য-মার সভাগ দ্বিত্তর ওপর দিয়া দেখিতে দেখিতে করে যে এতথানি বড় গুইয়া উঠিয়াঙে সেই গতি প্রতাক নিঃশাদ সতাটা যেন আজই প্রথম ধরা পড়িল। নীলিমার খোকা আর বাবল্ নয়। সে এখন দস্ত্রমতো শ্রীমান স্কুজিং রায়। তার সামনে এক উজ্জ্বল ভবিষ্যতের অসপ্ট পথ, আজ গ্রহ সেই যাতারলেভর নগলাচরব।

,,≭েশ⊉ ১.,

বিশ্বজিং নথিপত্তের উপর হইতে মুখ না তুলিয়াই বলে ঃ "শুনেছি।"

"এই নিয় তে তিন্বার শুন্লে।" "হগু।"

"আজ প্রথমদিন। থোকাকে তুমিই স্কুলে দিয়ে আসাব।"

"ভজ্মা দিয়ে আসবে'খন। আজ আমার মেলা কাজ।"

"ভজ্যা একবার যাবে ডাকঘরে মণি-

অভার করতে, আবার ষাবে টিফিনের সময় থোকাকে থাবার দিয়ে আসতে, আবার বিকেলে যাবে থোকাকে নিয়ে আসতে। চাকর বলে সে তা আর মেশিন নয়।"

"পাশের বাসার পলটা আর মণির সঞ্জে যাকা না।"

ন্যালিমা এবার ফেন্সি করিয়া ওঠে, "পশ্ট্র-ন্যানরা যেন আজই প্রথম দকুলে যাচ্ছে! আর, ওর সংগ্যে বুঝি তাদের তলনা!"

অগত্যা রাজি না হইয়া উপায় নাই। তব্ দ্বামী বলিয়াই বিশ্বজিংকে আরো দ্বৈতথা শ্নিতে হয়। নিজের ছেপেকে এমন হেলা-ফেলা নাকি ভূভারতে কেহ কোর্নিন করে নাই।

বিশ্বজিৎ হাসিদা ধ্বাব দের: "ওই তোমার দ্বভাব। একটাতেই উতলা হও। এই করেই ছেলে মানুষ করবে, তাহলেই হয়েছে। এই বয়েস থেকেই শিশুদের সাহস শেখাতে হয়---"

"চের হরেছে, থামো।" নীলিমা বাধা দিয়া কহিল, "সব তাতেই লেকচার!— প্রথম দিনটায় অমন ভয়ভয় স্বারই করে। ভূমিও এক লাফেই এতটা বড হয়েছ কি-না!"

যাহাকে লইয়া এত বাদানুৰাদ সেই বাবল, আসিয়া হাজির। পিতা সোৎসাহে জিজ্ঞাসা করে, "কিবে খোকন। তুই এক একা ফুলে যেতে পারবি নে?"

সংস্থা সংস্থাই বাব**ল**্মাড় নাড়ে সম্মতি-স্টেব

্ 'ওরে দিসা ছেলে!' নীলিমা ছেলের কাছে আগাইয়া যায়। ''অমন দঃসাহস করিস্ নি কখনো।'

"আমি একাই যেতে পারব মা। সেদিন এ-বাসার কাল্দোর সংগ্য বেড়াতে গিয়ে দেখে এসেছি না! থানার কাছাকাছি আমাদের ইস্কুল। তার আগেই লোন-আপিন, তার খানিক আগে ডাকঘর, ভারও আগে মধ্ কুন্ডুর গদি, সেই গদির পাশ দিরেই তো আমাদের পাড়াব রাস্তাটা এসেছে। আমি ঠিক চিনে যেতে পারব।"

বাবল, গড়গড় করিয়া সারাটা পথ মুখদ্দ বলিয়া যায়। বাবা আরে মা খুদি হইয়াই দেশনে। তব্ নীলিমার মনে কেমন একটা শঙ্বা। ভয়টা যে কিসের ভাহা নীলিমাও কি ছাই ভালো করিয়া ছানে! ছোটো মফঃদ্বল শহর। য়াম বাস নাই। মোটর গাড়ি আর লরির উৎপাত যংসামানা। দ্বামী অসপ সময়ের মধোই বেশ পসার করিয়াছে। তানের ছেলে পথ ভুলিয়া গেলেও এই শহরে হয়াইয়া যাওয়ার কোনো সম্ভাবনা নাই। তব্ নীলি-মার শক্ষা ঘোটে না। বাবা ছেলেকে আবার উম্ফাইরা দের ঃ
"আজ তোকে আমিই দিয়ে আসব। কাল থেকে কিন্তু একাই স্কুলে বাবি, ভর কী!"

নীলিমা রাগতভাবে জানার, "ছেলেকে অমন করে আম্কারা দিয়ো না বলছি।"

"আমি সত্যি পথ চিনি মা," বাৰলা আবার সগবে জানায়, "পল্ট্দাও তো একা যায়, একা আসে।"

"যার থাশি সে যাক। তুমি যেতে পারবে না।"

ছেলে আপাতত চুপ করিয়া থাকে। কিন্তু সংকলপটা মনে মনে রাখে। স্কুলের পথ কোন্ ছার, দুই-চার দিন বাদেই মায়ের কাছে সে প্রমাণ দিবে এক ক্রোল দুরে রহসাপুরের মাঠে—ডিন্টিক্টক্ট্ বোডের রাস্তার পালে গত চৈত্র সংক্রান্তিতে সে মন্ত বড় মেলা বসিয়া-ছিল, সেথানটায়—তার বাবলুও একা গিয়া একাই ফিরিয়া আসিতে পারে।

বিশ্বজিৎ তাড়াতাড়ি স্নান করিয়া লাইরা খাইতে বসিয়াছে।

এদিকে নীলিমা ছেলেক সাজাইতে বাসত। দেল প্জার সময় পাওয়া জারর-জাঁচ-দেওয়া কাপড়খান পরিয়া, সিকেকর পাঞ্জারিটা গায়ে দিয়া, মুখে খানিক স্নো-পাউজার মাথিয়া, কপালে ছোটু একট্ চন্দানের কোটা লইয়া খোকা এখন ঠিক বাবক্ও নয় স্বাজিংও নয়—নীলিমারই মুখ্ মনের সকোত্ক মন্তব্য অনুযায়ী বিবাহ-বাসরের মধ্যমণি।

বাবল এতক্ষণ কোনো আপতি করে নাই। কিন্তু চোখে কাজল সে কিছুতেই পারিবে না। সে যেন এখনো ছোটোই আছে।

মা-'ছপোর সহাস্য হাতাহাতির **মাঝথানে** বিশ্তবজিং হরে চুকিল।

"এা[†]! একেবারে রাজ**পত্তের! ছেলে** তোমার দিশিকজ্যে বার হ**চ্ছে ব্যাঝ?**"

বাবল লভ্জায় মায়ের দে হর আড়ালে ম.থ
লকায়। নগালিয়া কৃতিয় ক্রোধ প্রকাশ করে,
"তোমায় কোনো কাজের কথা বললে তখন
খোঁড়া হও আর অকাজের বেলায় পঞ্চম্খ।"
বাবলার সলভ্জ মাথখানি জাের করিয়া তুলিয়া
ধরিয়া মা জানায়, "লঙ্জা কিসের, মাখ তোলা।
বাকা কোথাকার! তুই যেন ও'র মতাে এক
গে'য়াে পাঠশালায় পড়াত যাাছিয়। সেদিন
বাঝি আর আছে! মাখ তোলা।"



মণ্ণল্যটের কাছে কপাল ঠেকাইরা ধানদুর্বা নাখার লাইরা, জননাকৈ প্রথম করিয়া
বাবল, তার বাবার সংগা বার-দুয়ার পার
ইইরা রালতার গিরা পড়িল, নীলিয়া একদুল্টে চাহিয়া আছে। এতদিনে খোকারও
তবে একটা প্রতদ্ম জীবন শুরু হইল?

নীলিমার মনে হয় সে থেন আজই প্রথম প্রোপ্তির মা হইল—সাত বছর আগে নর! শাশন্তীর মতো তারও আজ হইতে পথ চাহিয়া বনিয়া থাকার পালা। তহাং শ্বু এই বে. একজন দ্র হইতে কত দিনে আবার ছেলের দেখা পাইবেন সেই হিসাব করেন মাস গ্নিয়া, আর একজন এখন হইতে প্র কখন ক্রুতে ইইতে ফিরিবে সেই হিসাব করিবে ঘণ্টার আরে মিনিটে।

শাশুড়ীর ইচ্ছা ছিল তাঁর ছেলে গ্রামের হাই প্রক্রন মাস্টারি লইনা মারের কাছেই থাকুক। তা হয় নাই। শাশুড়ীর সন্দেহ প্র-বধুই তা হইতে দের নাই। তিনি বখন-তখন আখাীর-স্ক্রনদের কাছে বলিয়া বেড়ান তাঁর ছেলে নীকি পর হইয়া গিয়াছে। অথচ তাঁর নিজের দুটি মেরেই বার বার স্বামীর কম-প্রদেশ ছরসংসার করিতেছে নিবি-বাদে। শাশুড়ী নিশ্চিন্ত। মেরেদের সৌভাগ্যে

বেশ একট্ গবিতিও। মত অপরাধ পরের মেয়ে নীলিমার?.....

নীলিমার কি দোষ! শাপ্যকৃত্তির ছেলেই যে অভ্নৃত প্রকৃতির। চিঠিপর দিয়া মারের খৌজখবর লওরার ভাব দুরীর ওপর ফেলিয়া দিয়া খালাস। নীলিমাকে তাই প্রতি চিঠিতেই লিখিতে হয়; আপনার ছেলে রার্তাদন কাজে বাসত: সময় পায় না; প্থক পর দিজা না; ভালোই আছে। ইত্যাকার।

ছেলে বটে! মায়ের কাছে নিজের হাতে দ্'ছত লিখিলে যেন মহাভারত অধ্যুধ হয়। প্রতি মাসে ঠিক সময়ে মাকে টাকা পাঠাইবার দায়ট্কুও প্রীকে ব্রাইয়া দিয়া নিশিচত।

ভজনুয়ার ভাতক নীলিমার চিত্তাজাল ছিন্ত হয়।

"খোকাবাব্র ইস্কুলে কথন যেতে ছবে?" "বারটায়। ডুই আজ্জ সকাল করে নেথে অসম নে"

দেড়টা নাগাত নীলিমা উপ্দীৰ ছইয়া আছে টিফিনের সময় খোকাকে খাবার দিয়া কথন ভজুয়া ফিরিয়া আসিবে।

মার চার খণ্টা। বড় কম সময় নর। খেকার একটা খবর চাই। মাকে ছাড়িয়া এত- কণ কোনোদিন কোনোখানেই কাটায় নাই সে। অপরিচিত সহপাঠীদের মধ্যে সে হয়তো এখন জড় সড় হইরা বসিরা আছে একটি কোণে, হয়তো বা মার কথা, বাড়ির কথা বার-বার কমিরা তার মনে পাড়িতছে।

সেকালের মতো আঞ্চকাল আর স্কুলে বেধড়ক মারধর করে না। নীলিমা শ্নিয়াহে বেত্যারা এখন বে-আইনী। মাঝে মাঝে এক³ আধট্ কান্যলা বা ম্দ্রেনল চড় চাপড় বা আছে তা-ও আজ প্রথম দিনে নিশ্চিয়ই নর। তব্ মারের মনে কেমন একটা অস্পত্ত অকারণ শুকা।

বার-দৃষ্যারে আওয়াজ পাইয়া নীলিমা ডাকে "ডজুয়া এসেছিস?"

"হা মা।"

''ইদিকে আয়।''

ভক্রা আসিয়া গৃহকলীরে সামনে দীভায়।

"থোকাকে তুই নিজের হাতে খাইয়ে এসেছিস তো?"

1 ****

"দাধ সবটাই খেলে? ফেলে দেয়নি?" "না।"

খানিক নীরব থাকিয়া নীশিমা প্রশ্ন করে,

"(थाका किছ् रक्तल?"

'না।'

"किट्युना?"

প্রশন্তী ভালো ব্রিষতে না পারিশ্র ভঙ্কুয়া চুপ করিয়া থাকে।

"ৰাড়ি আসাতে চাইলে না?**"**

"না তো।"

"তোকে আমার কথা কিছ,ই জিগ্রেস করলে না?"

'**ণ্ট'হ**ু।"

"আছে। যা এবার।"

বাড়ির জন্য শোকার মন নিশ্চয় ছটফট করিয়াছে। ভজ্য়াটার ব্লিধ কম। আত্শত তশাইয়া সে ব্লিবে কী করিয়া?

খানিক বাদেই আবার নীলিম ভাকে, "ভজ্যা!"

"যাই মা।"

ভশ্যা হাজির।

"থোক্যাকে 'ঠুই 'ক্যোথায় দেখলি? ক্যানের মধ্যে, না বাইরে?''

"বাইরে।"

"কাঁ করছিল তখন?"

"খেকছিল।"

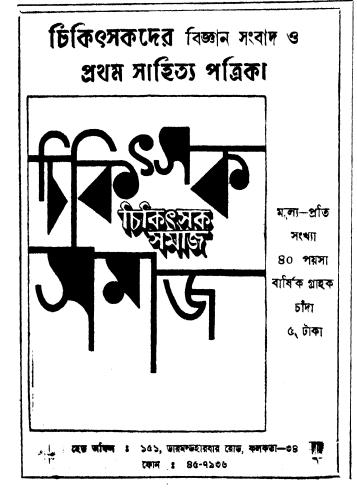
"रथना कर्ताइन?"

"হার্ণী মা। ইম্কুলের লাগোয়া ছোটো মাঠটার আর সব ছেলেদের সংস্থা বৃড়ি-ছোয়া খেলছিল।"

নশিকা নিবাক। মার কথা একটি বারও জিঞ্জাসা করে নাই। বিচিত্র কী? বাঘের বাচ্চা আজ রক্তের স্বাদ পাইরাছে। গ্রের সংকীর্ণ পরিধির বর্ণপরিচয় সাংগ করিয়া আজ সে বৃহস্তর বাইরের পরিচয় লাডের প্রথম পাঠ গ্রহণ করিতে গিয়াছে।

এবার নীলিমা নিজেই ভজ্মার ছরের দোর-গোড়ার আসিরা দাঁড়ার।

"छज्ञा।" क्षेत्रा।"



"তোর মার জন্যে মন তোর কেমন-কেমন করে না বে?" ভনুৱা ইতস্তত করে, "হাা-না-তা একটা একটা, করে!"

"बाटक विकि मिन् एका?"

এবার **ভজ্রা সম্ভার মাধা** নোয়ার। লেথাপড়া সে জানে না।

"কেন দিস্না? আমায় বললে তোর চিঠি ব্যি আমি লিখে দিতে পারি না? হতভাগা!"

বিকালে নীলিমা রাস্তার ধারের জানালার কাছে বীসরা আছে। পোনে পাঁচটা বাজে। এত দেরি হওরার তো কথা নয়।

আরও আধ ঘণ্টা বাদে অদুরে গলির মোড়ের মাথায় ডজুয়ার আগে আগে ব্যবদু যেন বীরদর্গে দেশ জর করিয়া ঘরে ফিরিতেছে। নীলিমা ছুটিয়া বাদ-দুয়ারে আসিয়া থমকিয়া দাঁড়ায়। খোকার মুখ তো এডট্কুও শুকুনো নর। খুশির আবেগে যেন টলোমলো।

• "দুড়াও, আগে আমার বই-প্তর সব রেখ আসি," বলিয়া জননীর প্রসারিত বাহ্র আমশুণ অগ্রাহ্য করিয়া বাবল; প্ডার ঘরে চলিয়া যার।

"হার্টরে ভজ্বয়া, তোদের আসতে এত দেরি হল কেন?"

"আর ব'লো না মা! খোকবোব ব্রিথ কথা গোনে আমার! খানিক পথ চলেই দড়িরে হায়। ডাকবাংলোয় এক সাছেব এসেছে, তাকে না দেখে আসবে না। ডাক-ঘরে গিয়ে টোল-করা আজই দেখা চাই।"

"তুই বাধা দিস্নি কেন?"

"বাধা দিলে আমায় ধমকে ওঠে।" ভদুয়া বলিয়া বায়, 'জলের কলের কাছে এসে আর আসতেই চার মা। কাল দেখাব বললাম, কানে সে কথা তোলেই না। মা! কী সাহস খোকাবাব্র! দুগুগা বাড়ির প্রেলর উপর উঠে রেলিং ধরে বলেতে চায়।"

নীলিমা ব্ৰিষা ওঠে, "তোকে দিয়ে কোনো কাজ হবে না বাপন্! রাস্তা দ্যাখ্। একটা ছোট্ট ছেলেকে বাগ মানাতে পালিস্ না!—বসিয়ে বসিয়ে কে কোথার খাওরাবে যা না সেখানে।"

ভদ্যা হতবাক। ভাবিরাছিল খোকা-বাব্র বারতের ফিরিস্ডি পাইরা গ্তৃকটী থ্লিই হইবেন। এ যে হিডে বিপরীত। ভজ্যা ধারে ধারে সরিয়া পড়ে।

পড়ার খর থেকে আসিরাই বাবল; মোংসাহে মাকে জানার, 'জানো মা, আমাদের ইম্কুলের তীম, এবার মম্ভবড় একটা বুপোর কাপ পেরেছে।"

সে-কথা জানিবার কোনো স্মগ্রহ নারের নাই। মা খাবার সামনে রাখিয়া বলেন, "আগো খেরে নে।"

"আমার এখনো খিলে পারনি মা!" "পেরেছে। তোর কথন খিলে পার না-শার সে-কথা ব্রি তোর কাছ থেকে জামি শিখতে বাব?" বাবল খাইতে বলে। আজ মনে তার সহস্র কথা। মাঝে মাঝে মাঝে বাবার সংগ্য আর রোজ বিকালে ভজ্বার সংগ্য স্বল্প সমরের ফাঁকে ফাঁকে যে বহিজাগতের ম্দু-মদদ আভাস পাইরা আসিরাছে, তার অবারিত আক্ষাদের ছাড়পত্র এতদিনে মিলিয়াছে।

মা প্রদন করে, 'পড়া জিগ্রেণ্স করেছিল ?'

'প্রথম দিন বৃঝি পড়া দিতে হর। — ভূমি কিছে, জানো না মা।'

নীলিমা খানিক চুপ করিয়া থাকিয়া কহিল, আমি না হয় জানিই না, তাই বলে আমন করে ব্ঝি মায়ের কথার জ্বাব দিতে হয়:

খাওরা শেষ হইলে নীলিয়া ছেলেকে বিছানায় কোলের কাছে টানিয়া লয়।

'থোকা! ইস্কুলে বাড়ির জন্যে তোর মন কে'দেছিল?'

না ছো।'

নিশ্চর কে'দেছে। টিফিনের সময় ভজ্জার সংশ্য বাড়ি আসবার জন্যে মনে মনে ছটফট করেছিলি, —কেমন?'

প্তের নিকট হইতে কোনো জবাবের অপেকা না রাখিয়াই নীলিমা বলিয়া যাহ, 'ভাষ' কি রে বোকা! চিরকাল তোকে আমি আগলে রাখব নাকি! এখন না তুই বড় হরেছিল!

> ছেলে চুপ করিয়া শোনে। 'খোকন!'

'কীমা?' 'কীমা?'

'এখন থেকে দিনরাত তুই তো বই নিরেই কাটাবি। তাই না? কত বন্ধ; ছবে তোর।'

वावन् निद्राखद्र।

'হাাঁরে দুক্তু ছেলে! কথা বলিস না মে!—বাড়িতে দু' বেলা কেবল বই কোলে নিয়েই পড়ে থাকবি তো?'

'নামা!' জাবাব একটা না দিলে। নয় ভাই বাবলা, কথা বলো।

নিশ্চর তুই বইপত্তর নিরে পড়ে থাকবি তারপরে থাকবি বউ নিরে।

'বাঃ ! !'

'আর্যা! বড় যে ভালোমান্যি দেখানো হচ্ছে! ভোর পেটের কথা আমি যেন টের পাইনি কিনা শ

বাবল অকারণ লম্জায় মৃদ্ মৃদ্ হাদে। নীলিমা একদ্তে ছেলের ম্থের দিকে তাকাইরা আছে। সে কেণ জানে নদী কথনো সরোবর হয় না। না-ই বা হইল। তব্ আজ তার সর্বাংগ দিরা নীলিমা এই উন্দেল মৃহ্তে জননীর উপর একাল্ড নিজরিতার নাগালের মধ্যে ভবিষাতের এক বিলন্ঠ দেহ ব্বক্কে একটিবার বাধিরা ধরিয়া রাখার ল্বংন দেখিয়া লয়!

মারের আক্সিফ ভাবান্তর ব্রিহতে না পারিয়া ছেলে জিজ্ঞাস্য চোখে চাহিয়া আছে।

থেকন! তুই আর বাই করিস, কি-হ*ডার আমার কিস্তু একখানা করে চিঠি দিস—নিজের হাতেই লিখবি। ভূলিস নি কেন। বউ-এর উপর বরতে দিয়ে দায় সারকে চলাবে না কিস্তু।";

নূতন বই

प्तापिक श्रन्थावनी

(তয় খণ্ড)

মাণিক বল্বোপাধ্যারের সাহিত্য জীবন এক বলিণ্ঠ বিদ্রোহী পদক্ষেপ নৃত্ন ও প্রাতনের সংঘাত। বাংলা সাহিত্যের এক অপরিহার্য অংশ। ৩য় খন্ড বের হল। সম্পাদনা করেছেন অধ্যাপক জ্ব সরোজনোহন মিত্র। প্রতি খন্ডে বিভিন্ন উপানাস, গলপ, প্রবন্ধ ও সাহিত্য সংকলিত ॥ ১৪ । ডিঃ পিতে ১৫ ।

মার্ণিক বন্দ্যোপাধ্যায়ের জীবন ও সাহিত্য

সাহিতিকের সমগ্র সাহিত্য সাধনা নিরে
অধ্যাপক ডঃ সরোজমোহন মিল্লের বিশেষ
গবেষণার ফলাহাতি। মানিক ও তার
জীবনকে সমগ্রভাবে জানতে হলে এই বই
অপরিহার্থায় ন্তন বেরিরেছে ॥ ৭; ॥

मानिक शन्धावनी ॥

১ম খণ্ড॥ ২য় সং॥ ১২, ২য় খণ্ড॥ ১২,॥

किटमात्र विक्ति ॥

মানিক বন্দ্যোপাধ্যায় ॥ কিশোরদের জন্য তার সমগ্র গদশ সংগ্রহ ॥

अन्यान्य वर्

রাতির সীমানা ।। গজেন্দ্র মিরে ॥ ৫;
তারভূমি ॥ শচীশুনাথ বন্দোঃ ॥ ৫;
আজ কাল পরশ্ব ॥ নিরজন চক্রবতী ॥ ৪;
গোরাকালার হাট ॥ আশাক গৃহ ॥ ৮٠৫০
চৌর্রী বাড়ী ॥ ডাঃ বিশ্বনাথ রাম ॥ ৪;
ডিন কন্যা ॥ ভারাশণকর, বিমল মির ও
শচীন বন্দেয়া ॥ ৪;

লাহিত্য বিচিত্রা ॥ বিমশ মিত্র ॥ উপন্যাস, গলপ নাটক ইত্যাদি সংকলম ॥ ১২; কৰি পক্ষে ॥ কবিতা ও বিভিন্ন প্রশেষ বিপ্ল স্মাবেশ। ক্রেতাদের বিশেষ স্বাধাণ।

গ্রন্থালয় প্রাঃ লিঃ ১১-এ, বডিকম চাট্রেল্ড স্বীট, ছলিঃ-১২



্রতিদন ছাটে-বাজারে পোণ্টার পড়াছল, এবার শ্রুহল বাড়ির দেখালে দেয়ালে।

ভদ্র একাকা শেষ হতে মই খাড়ে লোক এসে এ পাড়ার মাটির দেয়ালের ওপর পোস্টার আটকাতে আরম্ভ করল। মাঝ-খানে ছবি, ওপরে নিচে বড় বড় লাল জক্ষরের মিছিল।

আর দিন তিনেক, তারপর ভদুলোক এসে পড়কেন। গাঁরের বাতে উন্নতি হয়, গাঁরের মানুবের দৃঃখ কণ্ট ঘোচে সেই চেন্টার।

উঠানে গোবর জল ছিটাতে ছিটাতে প্রথমে সোনালীর নজরে পড়ল। বালতি রেখে পোস্টারের নামনে গিয়ে দভিলা। পা উ'ছু করে দেখল কিছুক্ষণ তারপর ঘরের দাঞ্জার উঠে গলা ছাড়ল, বংস আর আমাদের দ্বংখ-কণ্ট কিছু থাকবে না লো। শহর থেকে বাবু আসছেন। কোঁচার খ্বংটে চোখের জল মোছাবেন।

কথা শেষ করে সোনালী মুখের স্বাক্তিত ভংগীকরল।

একসময়ে জমজমাট ছিল এখন ভাঙা হাট। কিছু মরেছে অস.থে কিছু ছিটকে পড়েছে এদিক-ওাদক। সুদ্বল ছ-সাত ঘর। সাউ-সকালে সোনালীর হাক-ভাকে সুগই বেরিমে এলো। কিলা সোনালী, ভোববেলা পাড়া মাধায় তুর্গেছিস যে ?

সোনালী বিধনুর দিকে আড়চোখে

একবার চৈল্লে দেয়ালের দিকে আঙুল্ল দেখাল, সোনালী আবার কি করবে। ওদিকে যে নুটিশ শটকে দিয়ে গেছে।

নোটিশ! কিসের নোটিশ! স্বাই গিয়ে জড় হল। বাড়িওয়ালী মাসী থেকে বিশ্নু, সোহাগা, রাধারাণী, পার্ল এমন কি বড়ী দামিনী প্রশিত।

অনকেই পড়তে পারে না। যারা পারে তারা অন্য সকলকে ব্রিয়ে দিল। সোহাগী ক্লেপে অপ্রির।

 —ওসব চালাকি ব্ঝি আমরা। ভাল করতে আসছে, না ছাই। প্রসব ভোটের ফ্রন্টি। তোদের বোকা বানাতে পারে, আমার চোখে ধ্লো দেওয়া অত সহজ নয়।

গন্ধ গন্ধ করতে রুরতে সবাই যে ধার ঘরে ফিরে এলো। সোনালীর যত স্থিট-ছাড়া কাণ্ড। হৈ-ঠে করে মানুবের কাঁচা খুম নন্ট। সবাই চলে যাবার পরেও পার্ল দাঁড়িয়ে রইল চুপচাপ। এদিক-ওদিক চেয়ে ছবির আরো কাছে গিয়ে দাঁড়াল।

একট্ মাংস লেগেছে গালে বয়স একট্ বেড়েছে, তাছাড়া আর কোন তফাং নেই। সেই রকম বড় বড় চোখ, চাপা ঠেতির গড়ন, এমন কি জ্ব পালের কাটা দাগটা পর্যনত। স্বদেশীবার্। দেশের দৃঃখ দ্ব করার জনা কোমর বে'ধেছিল, আজ ব্রি গাঁরের দৃঃখ দ্বে করতে এখানে আসছে।

সারাটা দিব পার্ল ছটফট করল।
কেমন একটা অংবণিত। মান্যকে বলবাব
নয় বোঝাবার নয়। নিজেই কি ছাই ব্ধতে
পারছে। দাঁতের গোড়ার কটা ফুটে থাকার
মতন, জিভ লাগতেই খচ-খচ করে উঠল।

বছর দশেক, কি আর একট্ কমহ হবে। গ্রেট গরম। ঘামে বিছানা ভিজে একশা। দ্দিন খদেরের বালাই নেই। আকাল পড়েছে। গরমে পার্ল ঘর আর বার করছে। ছিটেফেটা ঘ্র নেই চোখে।

কু জো থেকে ঘটি ঘটি জল গড়িয়ে নিজের গলাতেই শুধু ঢালল না মুখে-চোখেও আপটা দিল। কপালে, কানের দুপালো। শেষকালে ঝাপ খুলে বাইরের দুওয়ায় এসে বসল।

সামনে মাতংগী নদী। একেবারে দাওয়ার কোল ঘে'ষে। ঘটেঘুটে অংধকার। ঘুটেঘুটে অংধকার। দু খাড দুরের জিনিস নজরে ঠেকে না। বাতাস নেই। গাছের পাতাটি প্র্যাক্ত নড়ছে না। মাতংগী প্রুরের সামিল।

আচমকা ছপছপ শব্দ হতেই পার্ল চমকে মুখ তুলন। জলের আওয়াও। একট্র দ্র থেকে কি একটা ভেসে ভেসে আসছে। ভলে মৃদ্ব আলোড়ন। চোথ কুচকে দেখল কিছ্কল। বেশাক্ষণ বাইরে থাকতে পার্লের সাহস হল না। ফিরে কাঁপ সরিয়ে ধরের মধে। ঢ্কতে গিয়েই বাধা পেল।

একট্ন দাঁড়াও।

চমকে পার্ল মুখ ফেরাল। জলজানত গান্ম। গা-মাথা বেয়ে টপ-টপ করে জল গাঁড়য়ে পড়ছে। ভিজে চুল কপালের ওপর। খুব ক্লাত গলার সূর।

চেচাতে গিয়েও কি ভেবে পার্ল চেচাল না। খ্ব কাছাকাছি। দেখতে কোন অস্বিধা নেই। বড় বড় চোখ, অন্ধকারে বিলিক দিয়ে ওঠে। চোর ছাচিড় পার্চী বদমাইস নয়—ভদ্রলোক। আহা, কি বিপদে পড়ে হয়তো জলে ঝাঁপিয়ে পড়েছে।

আজ রাতের মতন একট্ আ<u>খ্</u>য দেবে? একটা রাতের মতন?

কে আপনি? দরজায় পিঠ রেখে পার্বল ঘ্ররে দাঁড়াল!

নাম বললে তো চিনবে না। এ গার আমি থাকি না। কিম্বু বেশীক্ষণ দাড়িয় কথা বলার সময় নেই। প্রিশ তাড়া করেছে। এখনি এসে পড়বে।

প্লিশ? ভদুগোকের ছেলে, তা পুলিশ কেন পিছনে?

্জিজ্ঞাসা করতে গিয়েই কিন্তু পার্ল বাধা পেল।

ভিতরে এস। সব বলব। পার্তের পাশ ঘে'ষে লোকটা দরজার কাছ বরাবর দাঁডাল।

অসহায় গলা কাতরোক্তির সামিল। কাঁপ থালে পার্ল ঘরে দাড়াল। মূহে বলল, একটা দাড়ান পিল্দিমটা জ্বালি।

ঘরের মধ্যে গৃকে পার্ল কি ভেবে প্রদীপ নয় হারিকেনটাই জনালাল। থদের না এলে হারিকেন জনালায় না প্রদীপেই কাজ চালায়। কেরোসিন পাওয়াই দায়। ভোর থেকে লাইন দিয়ে এক ছটাক মেলে, ভাও আগনে ছোঁয়া দায়।

চোর বদমাইস ময়, স্বদেশী। পার্ল সব শ্নলা। একেবারে কোণের দিকে দেয়াল ঠেস দিয়ে বসে ভদ্রলোক বলল। অংপ কথায়। তাও পার্লের পীড়াপীড়িতে।

দ্বদেশী! একট্ব একট্ব করে পার্বলের মনে পড়ল।

চন্ডীতলাব মাঠে মেলার দিন এইসব
দবদেশীবাব্রা জড় হয়েছিল। সার দিয়ে
দাঁড়িয়ে ছল সবাই। হাত ছোড় কবে। ন্যা
করে বিলিতি জিনিস কিন্তেন ে কেউ।
বিলিতি কাপড় চোপড়, হি তি খেলনা
কিছা ছোবেন না। সন্ধার দিকে শাকুনে
পাতা জড় কবে আগ্রন জেনলে দিয়েছিল।
পার্ল, সোহাগী, বিন্দু, স্বাই ছুটে
গিয়েছিল সেদিকে। শাধ্য শাকুনো পাতাই
নয় বিলিতি কাপড়ও ছিল তার মধে।
পোকান লাই কবে স্বদেশীবাব্রা দেশলাই
ধরিয়ে দিয়েছে তাতে। পেউল ছড়িয়ে।

এরকম গ্রুডামী করলে তো প্রিশ পিছনে লাগবেই।



হ্যারিকেনের ব্লান দীপিত, কিন্তু দেখতে কোন অসম্বিধা হল না। শাস্ত্র নির্ভেজ চেহারা। কতই বা বয়স। একে-বারে ছেলেমান্য, তিন কুলে কেউ নেই নাক। এমন করে বাঘের মুখে ছেড়ে গিয়ছে?

প্রিস্থা পিছ্ব ধাওয়া করেছিল আমাদের নৌকার। আমি ঝাপিয়ে জ্বলে পড়েছি। পিছন পিছন হয়তো তাড়া করে আসতে পারে এখানে। তুমি বাঁচিও আমাকে। কোথাও না হয় ল্কিয়ে রেথে

একটানা এতগ্রেলা কথা বলে হাঁপাতে লাগল ভদ্রলোক। এক নাগাড়ে সাঁতার কেটে এতটা পথ এসে এমনিতেই ক্লান্ত হয়ে পড়েছে। কথার ফাঁকে ফাঁকে ঠেটি চেপে বন্ধ নিচ্ছে।

মিণ্টি হাসল পার্স।

পানের ছোপ লাগা লালচে ঠেটি উলেট বলল্ কোন ভয় নেই। মোহিনীমাসীর আওতা থেকে বাটাছেলে ছিনিয়ে নিয়ে যাবে এমন প্রিলশ এখনও জন্মাযান। অপ্রিনিশিচ্ত হুব।

কথা শেষ করে পার্ল বেরিয়ে গিয়ে-ছিল ঘরের ফাঁপ ভেজিয়ে। চুপি চুপি প্রামণ করেছিল বাড়িওয়ালী মাসীর সংগা। খণ্দেরের জনা মাসী সব করতে পারে। তবে বকরা দিতে হবে পার্লক। ভস্য স্বদেশীবাব্রে টাকি একেবারে ফাঁকা। সে পেজি পার্ল নিয়েছে।

কোথা দিয়ে কৈ হয়ে গেল। পার্ল সংগ্র সংগ্র উত্তর দিল, তেমন কচা দেখে পার্তান মাসা। ধরে চোকামার পার্তনা খান্য করে নিহাছে। তুমি শৃষ্ধ প্লিশ ঠেকার। বকরা কাল ভোৱে হাতে হাতে দিয়ে দেব।

মাধী খ্শীতে ৬গমগ। হাসি আর ধর না মাখে। বাস, বাস, নিবিধিয় ঝাঁপ ধেষ করে দিক পার্ল। মাধী রইল ঘাঁটি আগলে। ধমের সাধ্য নেই, তাকে ভিঙ্গে বাবে।

গোলমাল শ্রু হল গভীর রাতে।

মাসী বোধংয় ঘ্নিয়ে পড়েছিল। জনলার ফাকৈ ফাকৈ সাচলাইটের জোর আলো। চোখ-ধাধানো।

দেয়াল খে'ষে ভ্রলোক চুপচাপ বসে-ছিল। বিছানা পেতে দিয়েছিল পার্ল। বিছানা আর কি। একটা শত্ছিল সতরঞ্জ আর আধ ময়লা বালিশ। নিজে শুরেছিল টোকাঠ বরাবর। মেঝে মুছে নিয়ে তার

আচমকা গামে হাত লাগতেই পার্ল বঙ্মড় করে উঠে পড়ল। ভদুলোক অংশকারে ্রিড় দিয়ে গায়ের ওপর এসে পড়েছে। আন্তে আন্তে ঠেলছে দুহাত দিয়ে।

কি কি হল?

বাইরে আলো আর লোকের গলার

শব্দ। বোধহয় প্রিলশের লোকই এসে
পৌচেছে। নিভন্ত হ্যারিকেন। মান্ব

দেনার উপায় নেই। কিল্তু অসহার কাতর

কাঠনবন। পার্ল উঠে বাইরে গেল।

দ্কন জল-প্রিলা। স্টীম লণ্ডের
ওপর দািড়িয়ে হল্লা করছে। একেবারে
আচনা নয় পার্লের। রাত-বিরেতে এখান
দিয়ে যেতে যেতে কাউকে দেখতে প্রের
রাসকতার ট্করে ছ্'ড দিয়েছে, হাক্লা
পরিহাসও করেছে দ্'-একবার। মাঝে মাঝে
উৎকট স্বের গানও গেয়েছে। কখনও-সখনও
পার্লিও মন্করা করেছে। শুধ্ পার্ল কেন, সোহাগাঁ, রাধা, স্শালা স্বহি।
হেসে বলেছে, স্টীমলণ্ডে বেড়িয়ে নিয়ে
আসবে নাকি গো? ও প্রিলশবাব্রা?

চোথ রগড়াতে রগড়াতে পার্ল গিয়ে দাঁড়াল, কি ব্যাপার, মাঝরাতে এত হৈ-হঞ্লা কিসের?

পার্লকে দেখে একজন মুচ্চিক হাসল, আরে এক বাব্ ভাগিথেছে। এ তরফে এগে উঠেছে নাকি? ধরতে পারলে বহুত ইনাম মিলবে। বাব্ ডাকু আছে।

এসেছে রে মৃখপোড়া, পার্শ মৃখ ঝামটা দিয়ে উঠল, মাঝ রাত্তিরে সাগর পেরিয়ে নাগর এসেছে। বলে দ্দিন একটা মান্ষের দেখা নেই। কি করে পেট চলবে ভগবান ভালেন। ডাকু হোক, আর সাধ্ থোক, একটা বাব পেলে বে'চে ঘাই। বাজের সংগে খোঁজ নেই কেবল হৈ-ছল্লা! প্রিশ আর দড়িয়েন। এধার ওধার সার্চলাইটের আলো ফেলে ফেলে সরে গিয়েছে।

চলি বিবিজান। মাঝ রান্তিরে খুম ভাঙাবার জন্য কিছু মনে কর না। বাবুকে খুজে পাই তাে ধরে এনে দিরে বাব তােমার ঘরে।

লক্ত সরে যাবার পর অনেকক্ষণ পর্যক্ত পার্ল দেয়ালে হেলান দিয়ে বসল। হিসাব করল মনে মনে। এই দুদিন। একটি প্রসা রোজপারের নাম নেই, অথচ ভোর না হতেই নিজের জমানো প্রসা থেকে অকতত নগদ দা-তিন টাকা বাড়িওয়ালী মাসীর হাতে তুলে দিতে হবে। প্রিলশের ভাড়া খাওয়া বাবা, ওই তো জামা-কাপড়ের ছিরি, হাতে বে কিছ্ব দিয়ে যাবে এমন ভরসা কম।

চলে গেছে? ফিসফিসানি শ্নে পার্ল মুখ ফেরাল।

ঝাঁপ ফাঁক করে ভদ্রলোক কাছে এসে দাঁড়িয়েছে।

-311

উপ্লেখ্যেকা চুল, নিজের জেজা ধ্তি ছেড়ে পার্লের বছীন শাড়ি জড়িয়েছে। খাল গা। চওড়া ব্কের পাটা। শক্ত সবল দেহটার সপো কচি ম্থের যেন মিল নেই।

স্ভাষ চক্রবতী	3	জবাৰ্বাদহি	8.00
তারাশংকর বন্দোপাধ্যায়	:	অরণ্যবাহ্	4.4
দীপক চৌধ্রী	8	পশ্য ও প্রেমিক	6.0
নীহাররজন গাুণ্ড	:	সীমণ্ডিনী	b. 0
বেদ,ইন	:	মাণিকা রাজ্যের প্রেমকথা	6.00
ধনজ্ঞয় বৈরাগাঁর	:	মঞ্চন্যা	9.0
শচীশ্বনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়	:	স্যেরি সম্তান	6.0
শক্তিপদ রাজগর্ব	:	রাতের পাখিয়া	b. 00
বাণী রায়	:	মিস ৰোসের কাহিনী	9.00
উপেন্দ্রনাথ গন্সোপাধ্যায়	:	পরকীয়া	0.0
চার্চন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়	:	শ্রেষ্ঠ গল্প	6.00
প্রভাত ম্থোপাধ্যায়	ŧ		36.00
বাণী রায়	:	মধ্য জীবনীর ন্তন ব্যাখ্য	19.00
পরিমল গোস্বামী	:	স্মৃতি চিত্ৰণ	9.00
ডেল কানে গীর	:	দ্যিকতাহীন নতুন জীবন	৫・৫০
শিবরাম চক্রবতী	8	माम्-नाण्यि स्नोफ्	२.६०
পরিমল গোস্বামী	:	रताम नम्बत २० ६	२.६०
মণি গশোপাধ্যায়	•	ठीकूत श्रीत्रा धक्यः नापेक	२ .५०
উৎপল দত্তের	:	ফেরারী ফৌজ	0.00
উৎপশ দত্তের	:	ক মোল	0.00
ধনঞ্জয় বৈরাগী	:	আর হবে না দেরী	0.00
দীপক চৌধ্রী	:	क ित्रग्राम	9.60

হাতি বাব, পার্ল বলতে ছাড়েনি, এমন করে প্লিশের ভয়ে ল্কিয়ে ল্কিয়ে কদিন বেড়াবে? সোমত প্র্য শাড়ি জড়িয়ে বসে থাকবে ঘরের কোণে?

দ্-চোখে বিদ্যুতের ঝিলিক। দুটো হাত মুন্ট্রন্থ ভদ্রলাক পার্লের কাছে এসেছিল, মিছিমিছি প্লিশের হাতে ধরা পড়ে লাভ কি বল লৈলে প্রে দেবে কিনা বিচারে। আমাদের সব কাঞ্চ পভা। ধরা পড়লে কিছুতেই চলবে না। ওদের নজর এড়িয়ে আমাদের বাঁচতে হবে।

ভারপর পা মুড়ে বসে পার্লকে অনেক কথা বলেছে। দেশ গ্রাধীন হবে। নতুন করে গড়ে উঠবে সব কিছ্। প্রনো দিনের জ্মাট কালো অপমানের কালি দুহাতে মুছে নিয়ে নতুন করে চলার শ্রা। মানুষের মতন মাথা উচ্ব করে বাঁচা। দুঃথ দারিন্তা অশিক্ষার কুষাশা কাতিয়েছে।

আবো অনেক কথা বাব্রি বলৈছিল।
সব কথা পার্লের মনেও নেই, অনেক কথা
সে ব্যুতেও পারেনি। শুধু দেপেছিল,
গ্রৈসব বলবার সময় লোকটির সারা মুখ্
আরক্ত হলে উঠেছিল, দু-চোথে ঘান্যে
আসা কিসের স্বংন। চেয়ে চেয়ে পার্লের
আশ মেটেনি। ভাঙা কু'ড়ে ঘরে দেবদ্ভ নেমে আসার মতন বাব্রি ব্রি অননত
আশবাসের বালী বরে এনেছে।

পরের দিন পাশের ঘরের সোহাগী আর রাধা ঠাট্টা করেছিল।

কি ব্যাপার রে পার্ক? নতুন কনের মত সারাটা রাত বাব্র সংশ্য কিসের এত গ্রু গ্রু ফ্সেফ্সে? ভালবাসার কথা এতক্ষণ ধরে? অবাক কর্রলি ডুই।

মুখ টিপে পার্ল হেসেছে, নতুনতর ভালবাসার পাঠ নিলাম নতুন নাগরের

কতই দেখালি বৃঞ্যে বন্ধনে। ওই তো একরতি ছেড়িয়, ও শোনাবে সোহাগের কথা, রাধা মুখ ঘুরিয়েছিল, মাসীর কাছ থেকে বোতল বেরোল না, খাবার আনার বালাই নেই। শ্কনো ভালবাসার কথা, থাটা মারো অমন নাগরের মৃথে।

সোহাগী অত কথা বলেনি। কাছে এসে জিপ্তাসা করেছে, বেশ কিছ আদায় করেছিস ব্নিঃ? এত হাসি হাসি ম্থ?

পার্ক উত্তর দেয়নি। শুধু আঁচলে
নিজের ডান হাতটা চেকেছে। বাজারে
হয়তো এর দান কানাকড়িও নয়, কিন্তু
ওর কাছে এর দান অনেক। মিনে করা
নিকেল-কোমকেল সোনার আংটি। শাঁথের
ওপর নীল রংয়ের অক্ষর 'ল'। বাব্টিব
নামের আদাক্ষরই হবে বোধহয়।

যাবার সময় বাব্টি কাছে এসে
দাড়িয়েছিল, রাত কাটালে কিছু দিয়ে
যাওয়ার রেওয়াজ আছে, কিণ্ডু আমি
একেবারে নিঃস্বল। কিছুই নেই কাছে।
খ্চরো সামানা যা আছে, ছাড়তে গাহস
হচ্ছে না। কোখায় কিভাবে কাটাতে হবে
ঠিক নেই। তারপর কি ভেবে আঙুল
থেকে আংটি খ্লে নিয়ে পার্লকে দিয়েছে,
এর দমত খ্বই সামানা। কিণ্ডু বাজারের

দামে সব সময় তো সব জিনিসের যাচাই
চলে না। এ আংটি আমার মার দেওয়া।
তোমার উপকার আমি জীবনে ভুলব না।
প্লিশ ঘর সার্চ করে আমায় পেলে
তোমায়ও রেহাই দিত না। এটা ভূমি রেখে
দাও।

পার্ল কিছ্ বলবার আগেই ঝাঁপ খুলে লোকটি বেরিয়ে গেল।

দেওয়ালে হেলান দিয়ে পার্ল দটিড়য়ে দটিড়য়ে দেখল। উঠান পার হয়ে মাতপ্ণী নদীর ধার দিয়ে সোজা শহরের দিকে পা চালাল। একট্, দ্রে যেতেই পার্ল আর দেখতে পেল না।

সেই এক লোক, তাতে আর পার্লের কোন সংস্থে নেই। সংস্থে একেবারে ঘ্চল আসল মান্যটাকে দেখে আসার পর।

পলাশভাপার মাঠ ভিড়ে একেবারে ভেঙে পড়েছে। বাঁশ দিয়ে প্রেষ্থ আর মেয়েছেলে আলাদা করে দেওয়া হয়েছে। মাথার ওপর ঝলমলে চাঁদোয়া। ওলার চেয়ারের সার। স্বচেয়ে মাঝ্যানের চেয়ারে ভদ্রাকে গিয়ে বসল।

বাশের বেড়া ধরে পার্ল আর সোনালী দেখল দাড়িয়ে দাড়িয়ে। গাড়ি থেকে নেমে একেবারে পাশ বনাটিয়ে গেল ভদ্রলাক। বড়জার হাত খানেকের তজাং। চোখ ড়াডকে পার্ল ভাল করে দেখল। সেই বাব্, আর কোন সংশয় নেই। একট্ বযস বেড়েছে কেবল কপালের দ্পাশে চুলের ফাকে ফাকে বুপোলী ইশারা। সেদিনের মতন আনুন নেই চোখে, দ্টি অনেক দিতামত।

মিটিং শেষ হবার আগেই পার্ল চলে এল। মধ্পে সঞ্চে সোনালাঁও, দেশোম্বারের বড় বড় কথা। কানে গেলেও একটি বর্ণ মানে ব্যুবতে পারল না। অবশ্য অত বড় একটা দেশসেবকের বছুতা ওদের মতন আশান্ধতা নারীরা ব্যুবতে পারবে, এমন আশাও ওরা করোন। প্লিশের নজর এড়িয়ে বাঁচতে চেয়েছিল বাব্। ভালভাবেই যে বে'চেছে তার জল্জান্ত প্রমাণ এবচেয়ে বেশী আর কি হতে পারে।

বাঁশের আগায় তেরঙা নিশান তুলল, ফুলের মালা পরল গলায়, জেলায় হাকিমের পাশাপাশি বসে সারা গাঁয়ের হাততালি ফুড়াল। এর বেশী আর কি চাইবে মানুষ!

দিন দুয়েকের মধ্যেই ব্যাপারটা জানা-জানি হয়ে গেল।

প্রথম থবর আনল জবা। কোন গাঁ থেকে
ছটকে এসে নতুন আগতানা বে'ধেছে। শন্ত সমর্থ গরীর। চেহারার টানে খন্দেরের আনাগোনার কর্মাত নেই। আগের রাতে রাজীবলোচন এসেছিল ওর ঘরে। বড়ো উকীল তিনকড়ি সেনের পাকা মুহুরী। দুনিয়ার থবর নথের তবায়। জানে না এমন বিষয় নেই। সে-ই বলে গেছে।

ভোর ভোর জবা পার্শের ঘরের শিকল নাড়ল। ও পার্লেদি, গা তোল। কি সবন্দেশ থবর শ্নলাম গো?

বার দুই তিন। তার পরই পার্ক ধড়মড় করে উঠে পড়ল, কি রে জবা? জবা বলল, পা মুড়ে পার্কের কাছা কাছি বসে। গাঁ থেকে ওদের নাকি উক্ত করা হবে। কুলোর বাতাস দিয়ে দ্বে বর দেবে সবাইকে। নোংরা ব্যবসা বফা কর দিতে হবে। আকাশে বাতাসে বিষ ছড়াছে ওরা দেশের সর্বনাশ করছে।

প্রথমটা পার্ক বিশ্বাস করে নি। যত আজগুবি কথা। রাজীবলোচনের ফেন থেয়ে-দেয়ে কান্ধ নেই।

কিন্তু জবা পার্লের গা ছুপ্রে বলন্ একটি বর্ণ মিধ্যা নয় দিদি। সেই জনেই বৃঝি শহর থেকে লালত মজ্মদার এসেছে। গাঁয়ের মাতব্রদের ডেকে শলা-প্রামণ্ হচ্ছে।

ললিত মজ্মদার? বিশ্ময়ে পান্ত চোখ তুলল।

হাাঁগো, ওই যে? দেয়ালের ওপৰ লাগানো পোষ্টারের দিকে জবা আঙ্, তুলে দেখাল।

ঁ ওই ললিত মজ্মদার। সে রাতের আশ্রয়-পাওয়া বাবু।

আর কথা বাড়াল না পার্ল। জন উঠে যেতে ঝাঁপি খুলে আংটিটা , বেং করল। মিনে করা আংটি। আপের সেই উম্ভব্লতা নেই, কেমন বিবর্ণ, ফ্যাকাসে।

এই আংটি নিয়ে দেখা করলে হয় ন বাব্র ডেরায়! প্রেনো কথা মনে করিছে দেওয়া যায় না! দশ বছর আলে ঘ্টমট অন্ধকার এক রাতের কথা। সে রাজে প্রিলেয় হাত থেকে বাঁচিয়েছিল পারত আর আজ সর্বনাশের হাত থেকে বাঁচার পারে না পার্লদের। আগাছার মত্র নিম্মিতাবে উপজে ফেললেই হল ব্ফি এতদিনের আশতানা গ্রিয় যাতেই ধ কোথায়। কোন্ ভাষ্যামে।

পার্ল মন ঠিক করে ফেলল, বার্থপ্র পাকাপাকি হবার আগেই দেখা করা উচিত্র জ্বীবলোচন বাড়তি খবর আন্তর্গ ক্ল-বাড়িতেই লগিত মজুমদ্ আশতানা গেড়েছে। তবে নাতা পাওয়া মুশ্কিল হরদম লোকজন যাওয়া আহ করছে। চুনো-প্রশূচি থেকে রাঘ্য বোয়াল মলা-প্রামশ, ফ্রিপ-ফ্রিকর। মতগরে আর অনত নেই। মাটি কেটে কেটে সচ তৈরা, নদীতে বাধ, রাস্তার মোটেপাকল, হরেক রক্ম বাসাবা। তার ওপ্র গ্রেইছে, রোগ তাড়ানো আর বন্দ মেটাছেলে তাড়ানো—দুইই।

পার্লের একনা যেতে সাহস হল ন জবাকে সংগ্রানল।

উঠতি বয়স, কচি। প্রসা হাতে জা কাজেই জোরও রয়েছে ব্কে। আর কি না পার্ক, ভিড় ঠেলে এগোতে পারবে। তারপর পার্লের অভিলে ব আংটি তো বইলই।

স্কুল-বাড়ির কাছ বরাবর গি: দুজনে দাঁড়িয়ে পড়ল। গোটা তি মোটর, কেশ কয়েকজন গোকও ঘোরা[্] করছে এদিক ওদিক।

🧫 ও পার্লদি, দাঁড়িয়ে পড়ল 🧐

চ্যাকাসে মুখের রং। পারের আঙ্ক দিয়ে আঁকি-বৃকি কাটল মাটিতে।

চিয়ে আএক বংশ কি হল? জোর করে সার্ল নিজের গলরে আওয়াজ চড়াল।

আমি দাঁড়াই এখানে, তুমিই যাও চাই। জবা একটা এগিয়ে পেয়ারা গাছের হায়ায় বনেই পড়ল।

আ মলো, অত ভরটা কিসের, বাঘ ভালুক তো আর নয়। মানুষ তো বটে। তাছাড়া, আমরা তো আর ভিক্ষে চাইতে ষাচিছ না। স্পন্ট কথা বলব, ভর কিসের অত?

কিসের যে ভয় তা পার্ল নিজেই জানে না। তব্কেমন ভয় ভয় করল।

পিছনে ফেলে আসা এক রাতের পরিচয়ের ওপর ভর করে দিনের আলোয় মুখোমুখি দড়ান যাবে তো মানুষটার! দবংপ মুলোর এক আংটির জোরে ব্কে জোর আনা কতথানি হাস্যকর তা ব্থেই ভিতরে পার্ল একট্ মিইয়ে গেল। কিব্তু এতখান এগিয়ে এসে অসুর বৃশ্বি পিছনো যায় না। হাসি টিটার্করিতে তাহলে পার্লকে আর মাথা তুলে দাঁড়াতে দেবে না।

স্কধার হাত ধরে পার্ল টেনে তুলল। হেসে বলল, হায় রে, প্রেমনান্যকে এত ভয়? আমার আচলে বাঁগা শেকড় আছে, সাপের নাকের কাছে ধরতেই দেখবি ফণা গুটিয়ে আসবে।

দরভার মুথেই বাধা। লাঠি হাতে

দেখুন! পরিষ্ণার দেখা যাচ্ছে... টিনোপাল সবচেয়ে সাদা ধবধবে করে





পরীক্ষা ক'বে দেখা গেছে ! সামার একটু টিনোপাল শেষবার গোষার সমষ দিলেই কি চমৎকার ধ্বধবে সাদা হ'ব— এমর সাদা তথু টিনোপালেই সম্ভব । আপরার শাট, শাড়ী, বিছারীর চাদর, তোরালে—সব ধ্বধবে ! আব, তার ধরচ ? কাপড়পিছু এক প্রসারও কম । টিনোপাল কিব্র — বেগুলার প্যাক, ইক্রমি প্যাক, কিয়া "এক বালতির জনো এক, প্যাকট"



இदिवास्त्र—ক আর গালী এন এ, বাল,
 বইআরআন-ক এ বিভাই ট্রেডাই।

मूक्तम त्रावती लि:, (नाः चाः यस ১১०६०, (दाषारे २० दि. चाः:

^eপাইক পথ আটকাণ। ডিতরে **লোক আছে,** যাব্যর হাকুম নেই। অপেকা করতে হবে।

ঠিক আছে, অপেক্ষাই করবে। এডদ্র এসে আর ফিরে যাবে না। পার্ল আর ধ্ববা উঠানে গিয়ে দক্ষিল।

ঘণ্টাথানেকেরও বেশা। লোক আসা
যাওয়ার যেন আর কামাই নেই। দাঁড়িয়ে
দাঁড়িয়ে দক্রেনেই বিরক্ত হয়ে উঠল। আঁচল দিয়ে দাওয়া মুছে বসে পড়ল। আঁচলের গিটে খুলে জবা পানের ডিবা যের করল। দোঞ্জার মিশেল। তব খানিকটে প্রাণ ব্যক্ত।

জবা কি একটা বলতে গিয়েই থেমে গোল। পাইকটি সামনে এসে দাঁড়িয়েছে, বাব্ থালি হয়েছেন এইবার। দেখা করতে হয়তো গা তুলতে ২বে।

চৌকাঠ বরাবর গিয়ে পার্ল কাপড় দিয়ে মুখটা মুছে নিল। ঘারের ফোঁটা জমে উঠেছে কগালে। পা দুটোও বেশ কপিছে।

সারা ঘর জুড়ে সতরও, মোটা মোটা কয়েকটা তাকিয়া এদিক ওদিক ছড়ানো। ঠিক মাঝখানে ভদুলোকটি পা মুড়ে বসে। সামনে কাগজপত্রের রাশ। পালে গোটা দুয়েক ছোকরা কি সব আলাপ করছে বুড়াক পড়ে।

পারের আওয়াজ হতেই ভদ্রলোক মৃধ তুলে চাইল।

পার্ল আর জবা সামনে গিয়ে বসতে পাশের ছোকরা দুটি উঠে বাইরে চলে গেল।

कि वनान?

জিত দিয়ে পার্ল ঠোঁট দুটো ভিজিরে নিল। আন্তে আন্তে বলল, আমরা প্র-পাড়া থেকে আসছি।

প্ৰপাড়া ! দ্ৰুকু'চকে ভদুলোক কি ভাবলে দ্-চার মিনিট, তারপর ব্যাপারটা ব্যক্ত পেরেই যেন মাথা নাড়ল, ওঃ বলুন কি বলতে এসেছেন।

আমাদের নাকি উঠিয়ে দেবার কথা হচ্ছে? এ গাঁথেকে সরিয়ে দেবার বংদাবহত?

ভুদুলোক সোজা চাইল পার্লের দিকে। সারা মুখে হিজিবিজি অ'১ড়। আগের দিনের কম্নীয়তার বদলে র্ক্ষ ককশি ভাব।

হাঁ কথা হচ্ছে, আর যাতে ওঠাতে পারি সেই চেণ্টাতেই আমার এখানে আসা।

কিন্তু আমরা তাহলে যাব কোথার? কিভাবে চলবে আমাদের!

সে দেখার কথা তো আমার নর, অসম্ভব নির্মাম ঠেকল ভদুলোকের কণ্ঠ।

ঘূলা বাবসা যাতে বংশ হয় সে চেণ্টা করতে আমি দূটসংকলপ। ভদ্রলোক কথা শেষ করে তাকিয়ার হেলান দিল।

ব্যবসা বন্ধ হলে আমাদের উপায়? না থেয়ে শুকিয়ে মরতে হবে স্বাইকে। হয়তো হবে। চোরেরাও তো ঠিক একই কথা বলতে পারে। কিন্তু তাদের ব্যবসা করতে দেওয়া নিশ্চশ্প উচিত নঃ ?

মুখের ওপর সবেশে চাবুক পড়পেও বোধহয় পার্ক এতটা বিস্মিত হত না। যক্ষণায় এত নীল হয়ে উঠত না মুখের শিরা উপশিরা। চমংকার উপমা। চোরের সপো তুলনা। কিক্তু সেরাতে চোরের মঙন এদেরই একজনের ঘরে পার্কিয়ে থাকতে বাধে নি মর্যাদায়, লম্জা হয় নি!

কোন কথা না বলে পার্ল আঁচলের গিটে খুলল। মোদন অস্তা। এখনি মুখ-চোখের চেহারা পালেট যাবে ভদ্রলোকের। প্রনো দিনের মাটি খু'ড়ে খু'ড়ে জীর্ণ একটা ক•কাল বের হবে চোখের সামনে। নিজের অতীত কীতিকিলাপের ক৽কাল।

এ আংটিটা চিনতে পারছেন? পার্ল আংটিটা সতরণ্ডের ওপর রেখে ভদ্রলোকের দিকে চোখ তুলে চাইল।

ললিত মজনুমদার হাত দিরে আংটিটা তুলে ধরল। বিস্ময় ঘনিয়ে এল দুটি চোখে। জ্বুচকে বলল, এ আর্থান কোথায় পেলেন? এ আমার আংটি।

পাইনি কোথাও। আংটির মালিকই দিয়েছেন আমাকে। চোখ ফেরাল না পার্ল।

আর ভয় নেই। ওযুধ শেগেছে, আংটি
থখন চিনেছে, তখন মানুষও চিনবে।
একট্ একট্ করে সেরাতের সব কথা মনে
পড়বে! শিকড় স্মেধ উপড়ে ফেলতে হাত
শাধ্বনয়, ব্ৰুক্ত কে'পে উঠবে।

আপনাকে দিয়েছেন? ধাঁরে ধাঁরে কথাগ্লো উচ্চারিত হল। মনের মধ্যে ললিত মজ্মদার ডুব্রী নামিয়েছে। কি খ্'লছে, অতীতের ক্মতিমন্থন। গরল না সা্ধা কি ওঠে ঠিক নেই।

কি**ন্তু পার্ল হতাশ হল।**

ললিত মজ্মদার মাথা নাড়ল। কি জানি, ঠিক মনে পড়ছে না, ফেলে আসা জীবন যে কত জায়গায় কাটাতে হয়েছে তার আর হিসেব নিকেশ নেই।

ললিত মজ্মদারের ছিসেব নিকেশ নেই কিন্তু পার্লের ঠিক ছিসেব আছে। একটি কথাও সে ভোলে নি। থেমে থেমে সব বলল। সেরাতের কাছিনী।

লণিত মজ্মদার দিথর হরে শ্নল। একটি আচড় পড়ল না মনুখে। একটা ভাঁজ নয়।

পার্লের কথা শেষ হতে ধীর গলার বলল, আজীবন আমি সত্যের প্জারী। বিপদের মধ্যে পড়েও সত্যের আগ্রয় ছাড়িনি। কাউকে মিথ্যা কথা বলতে দ্বালেই অধ্বস্থিত লাগে।

মিথ্যা কথা! পার্ল টান হয়ে বসল। আল তাকিয়া ঠেস দিয়ে বসতে পেরেছে বলে ব্ঝি সেরাতের সব কথা মিথ্যা হয়ে গেল? উচ্ছেদ হবার ভয়ে পার্ল বানিয়ে বানিয়ে মিথ্যা কথা বলছে এটাই প্রতিপন্ন করতে চার।

পার্ল গলার আওমান্স চড়াল, এর একটি বর্ণ যদি মিথা হয়, তবে আমি—

কঠিন শপথ করার মুখে পার্ন থেমে গেল।

হাত তুলে ললিত মজুমদার তাকে বাধা দিল, আপনার কথা মিথা। তা তো আমি বলি নি। আপনার প্রভাকটি কথা সতা। আমার সব মনে পড়েছে। তেওঁতুল গাছি থেকে নৌকার ফেরবার মুথে প্র্লিশে তাড়া করেছিল। গোকুল আর আমি দ্কেনে দ্বিকে ঝাঁপিয়ে পড়েছিলাম। তারপর সাঁতার কেটে কেটে আপনাদের বাহিততে এসে ঠেকছিলাম। সব ঠিক, কিণ্টু আমাকে বাঁচাতে গিয়ে মিথা। কেন বললেন আপনি? মিথা। বলা মহাপাপ। যে কোন কারণেই হোক।

অনেককণ পার্ল কিছু ব্রতে পারল না। মান্যটা ঠিকই আছে, কিন্তু তার কথা বলার ধরনটা কেমন দ্বেধিঃ।

সেরাতে প্রিল্মের হাতে ধরিবে দেওয়াই ব্রিঝ উচিত কাজ হত! শাড়ি জড়াশো অবস্থায় বাইরে বের করে দেওয়া!

কথাগ্রেশ মনে মনে আউড়ে পার্ল বলেই ফেলল। শ্কনো থটখটে কথা শেষ হবার আগেই লালিত মজ্মদার ঘাড় নাড়ল, হ্যাঁ, তাই উচিত হত। সভাজ্র মান্য পশ্র সামিল। ইহকাল পরকাল দুই-ই তার থতম! তখনকার শাসকদের চোথে আমি অপরাধী, আইন এডিয়ে পালিরে পালিয়ে বেড়াছি। আমাকে প্রকরে রাখা মানে আসামীকে ল্যুকিয়ে রাখা! প্রিশের কাছে মিথ্যা কথা বলা আর অন্যায়কে প্রশ্নর দেওয়া একই স্পা। যে অন্যায় আপনারা করছেন, তার স্পা। বেই।

হেলে দ্লে পলিও মজুমদার ঠিক হয়ে বসল। তাকিয়া চেপে আরো কায়েমী আসনে। পলাশঙাপোর মাঠে বক্তৃতা দেওয়ার সূর আনল গলায়। অবিকল সেই ভপাী।

মাপ করবেন, আমার অন্য কাজ ররেছে। আপনাদের আদশের বালাই নেই, কিন্দু আমাকে আদশ'ছ্যুত করবেন না।

ললিত মজ্মদার ওঠবার আগেই পার্ল উঠে দাঁড়াল। জবাও। এক তিল এখানে বসবার ইচ্ছা পার্লের নেই। উঠে দাঁড়াবার আগে সামনে রাখা আংটিটাও হাতে তুলে নিল।

ললিত মজুমদার আংটিটার দিকে হাত প্রসারিত করতেই পার্ল ভাল করে আঁচলে গিট দিল। অলপ ছেসে বলল, সেরাতে ভূল করেছিলাম প্রিলেশের হাতে মান্বটাকে ধরিয়ে না দিয়ে, এ আংটি অন্য মান্বের হাতে ভূলে দিরে আজ আবার নতুন করে ভূল করব না।



আপনারা অবাক হবেন জানি। আমি যে বাঙালী তাও আপনারা বিশ্বাস করতে চাইবেন না। আপনারা বলবেন, হয় আমি অবাঙালী নশতো উদ্মাদ। কিন্তু তা সত্ত্বেও আমি আজ ঘোষণা করছি যে, সারা জীবনে একটিও গলেপর বই আমি পাঁড়ান—উপনাাস যে নয়ই। কেন পাঁড়ান তার কারণটা আমার জানা নেই।

্ অঞ্চ আমার মা উপন্যাস পড়তে খাহ তালবাসংক্রেন। দাপুরবেলা তিনি ঘ্রম্তেন না। প্রায় প্রত্যেকদিনই এক-একটা নতুন উপ-নাস পড়ে শেষ করে ফেলতেন তিনি। আমরা ইট্রা করে বলতাম, মারের পান জদার নেশা নেই বটে, কিন্তু উপন্যাসের নেশা বড় প্রবল। তার এই দ্রত পঠনের অভ্যাস দেখে আমরা ধরাই অবাক হয়ে যেতাম। বাবা কিনতেন ছোগিপের বই। বছর দশেক পর আমাদের জনক রোডের বাডিটা গংপ-উপন্যাসের একটা লাইরেরী হয়ে দাঁড়াল। বড়দার কাছে শ্রেনছি, শ্রমার যথন জন্ম হয়, তখন আতৃড়ঘর থেকে বই এর আলমারিগ্রেলা বার করে আনবার সম্ম পাননি বাবা। তার ফলে গ্রুপ-উপন্যাসের জগতেই জন্ম হল আমার।

কিন্তু সারা জীবনে একটিও গলপ-উপ-নাস আমি পড়ে উঠ:ত পারিন। স্বাপারটা থ্বই বিচিত্র মনে হয়, তব্যুত্ত বলচ্ছি আমার শৌকৃতির মধ্যে মিথ্যা ভাষণের চেণ্টা একে-^{বারেই} নেই। স্কুলের লেখাপড়া শেষ করে কলেজে এলাম, তথনও মাসিক কিংবা সাংতা-হিকের পাতা উল্টে দেখিনি। লেখাপড়ার আমার স্থ্যাতি ছিল খ্ব। প্রতিটি পরীকা পাশ করেছি প্রথম হয়ে। আজে তো আমি জেলা শাসক—যার ইংরেজী নাম ডিম্ট্রিক্ট ^{মার্চিজস্ট্রট}। চাকরি করছি তাওপ্রায় দশ বছর হয়ে গেল। বিয়ে করেছি দ; বছর আগে। স্ত্রিকথা বলতে কি আগামীকাল আমা;দর বিয়ের দিবতীয় বংসর পূর্ণ হবে সেইজনা আগামীকাল সন্ধোবেলা আমার বাংলোয় একট্ আমোদ আহ্মাদের হয়েছে। রবীন্দ্র সংগীতের পর খেয়াল গান গাইবেন ওপ্তাদ দাবির,দ্দীন খাঁ। এটা পাহাড় অঞ্চল। তিনি এখানে দিন কয়েকের জন্য বেড়াতে এসেছেন।

এখানে আমি বদলি হয়ে এসেছি মাস-খানেক আগে। আজ সম্প্যোবেলা অফিস-ঘরে বসেছিলাম আমি। মিউনিসিপ্যালিটির চেয়ার-ম্যান সাহেব একট, আগেই আমার সঙ্গে দেখা করতে এসেছিলেন। বড়ু মিণ্টি স্বভাবের মানুষ্টি। আলাপ-আলোচনায় সহ্দয়তার পরিচয় পাওয়া গেল। শ্নেলাম, তিনি বাংলঃ মাসিকপতে মাসে মাসে ছোটগণপ লেখেন। তিনি জানতে চেয়েছিলেন, তাঁর নামটা আমাও কথনো চোখে পড়েছে কিনা। লম্জায় মাথা নিচু করে রেখেছিলাম মিনিট দুই। তারপর বংলছিলাম তাঁকে, 'না, চোখে পড়েনি। এমন অপরাধের মার্জনা নেই.....জানেন, আজও অমি একটিও গলপ-উপনাস পড়িনি!'

চেয়ারম্যান সাহেব কি ভাবলেন জানি না, চলে গোলেন তিনি। ফ্রয়েড সাহেব বৈ'চে থাকলে হয়তো বা আমার অবচেতন মনের রহসাটা কামজ বলে ঘোষণা করতে শ্বিধা করতেন না। তাঁর বিশেলষণটা আমার মনঃপৃত হতোনা। কিন্তু তাঁর বৈজ্ঞানিক ব্যাখ্যার প্রতি আমার শ্রুখা দেখাতে হতোই।

চেয়ারমানে সাহেব চলে যাওয়ার পর ভাব-ছিলাম যে, আগামীকাল থেকে গলপ পড়তে আরম্ভ করে দেব। পাঁচ দর্শদিন চেম্টা করলে হয়তো গলপ পড়ার প্রতি ঝোঁক আসবে। তার পর আনন্দের উৎস খা্জে পাওয়া অসম্ভব হবে না।

রাত আটটার সময় এখানকার প্রিলিশ সাহেব দেবেন ধর এসে উপস্থিত হল আমার অফিস-কামরায়। খাওয়া-দাওয়া শেষ কবে খবরের কাগজ পড়ছিলাম। দেবেনকে একটা উত্তোজিত মনে হল। ভাবলাম, শহরের কোথাও ব্রিঝ দাংগা-হাংগামা লেগে গিয়ে থাকবে। জিজ্ঞাসা করলাম, কি ছে খবর কি?'

আমার হাতে একটা প্যাকেট তুলে দিল সে। পাাকেটের ওপরে আমার নাম লেখ। রয়েছে। জিজ্ঞাসা করলাম, 'চিঠি না কি?'

'আজ্ঞে না—পান্ফুলিপি বলে মনে হচ্ছে।' 'কোথায় পেলে এটা?'

'ধর্মশালায়। দিন সাতেক আগে একজন শিলপী এসে উঠেছিলেন এখানে।'

'ও হাাঁ, আমি তাঁকে চিনি। মহী'তোষ পাহিড়ী। খুব ভাল ছবি আঁকে।'

'আছে হাাঁ। আগামীকাল একটা চিত্রপ্রদর্শনী খোলার কথা ছিল। ওয়ান-মাান শো
- 'দেনে ধর হঠাং থেমে গেল। ওর কথাবাতা বলার ভাবভগগী দেখে আমার সন্দেহ
হল কি একটা গুরুত্র কথা যেন ঘোষণা করবার চেণ্টা করছে সে। কিন্তু বলার সাহস
পাছে না। পাকেটটা হাত দিয়ে নাড়াচাড়া
করতে করতে আমি বললাম, 'আগামীকাল
সকালে ওর চিত্রপ্রদর্শনীর শ্বারোশ্ঘাটন
করবার কথা ছিল আমার। আমি

নিজেও দ্-একথানা ছবি ওর কিনতাম । ক প্রসার খ্ব অভাব ছিল মহীতোধের। কাল সকালে আমি অবশাই যাব—'

দেবেন ধর ইতস্তত করতে করতে বলে ফেলল, 'মহীতোষবাব্যু মারা গিয়ে:ছন।'

> 'মারা গিয়েছেন?' 'মনে হয় আত্মহত্যা করেছেন।' 'বলো কি দেবেন!'

আজে হাঁ। দরজা ভেগে ঘরে চুকতে, হল। গোটা পনেরো তৈলচিত্র পড়েছিল মেঝের ওপর। তারই মাঝখানে শিলপার মৃতদেহ।.... সবচেরে আশ্চর্মের ব্যাপার তৈলচিত্রগ্রেমির শ্রেষ্ একজন ভদ্রমহিলাকে কেন্দ্র করে আকা। আপনি কি শ্বদেহটাকে একবার দেখবেন ?*

'মগে' নিয়ে যাও। কাল সকালে ধর্ম-শালা হয়ে মগে' যাব আমি।'

দেবেন ধর চলে গেল। আমার তব্ সন্দেহ হল আরও দ্'একটা জর্বী কথা গোপন করে; গেল সে।

র্ঘাড়র দিকে চেয়ে দেখলাম রাত নটা বে**ঞ** গিয়েছে। অক্টোবর মাস, ঠাণ্ডা পড়েছেখ্ব। প্রতি ঘরেই চুলাতে আগনে জনসছে। ইঞ্চি-क्षात्रों रहेत निरंश राजाम हुझीत कारह। মহীতোষের লেখা চিঠিখানা ওখানে বঙ্গে পড়ব। তার আগে দোতলায় উঠে গিয়ে দেখে এলাম প্রমীলা ঘ্রমিয়ে পড়েছে কিনা। হ।। ঘ্নিয়ে পড়েছে। বন্দ্র শতিকাতুরে। পাহার্ট অঞ্জ সে আসতে চায়নি। প্রমীলার বিশ্বাস, কলকাতার চেয়ে উৎকৃষ্টতর আবহাওয়া ভারতন্ধের আর কোথাও নেই। কলকাতার সব কিহু ওর ভাল লাগে। এমন কি মশা-মাছির কথা উল্লেখ করলেও প্রমীলা বলে. 'আহা ওরাতো থাকবেই। মানব চরিত্র তৈরী হয়। কোন_ি শহরটা **যোল আনা** ভাল? কোন খান্যটা যোল আনা সং?'

অফিস-কমারায় ফিরে এলাম আমি। বয়বাব্রির সবাই চলে গিরেছে। পরিবেশের
ব্বে ঘন নৈঃশব্দ। শতিকালের রাত্রে নিসর্গচর্চার ইচ্ছা হয় না জানালা খুলে পর্বতির্বার
দিকে দৃথ্টি দিতে গেলে বর্কে সদিবসার ভয়
থাকে। চল্লিশ ঘণ্টাই আগ্রের ভাপের কাছে
চলাফেরা করতে হয়। ধর্মশালায় কি করে বে
ঘাতটা দিন কাটিয়েছিল মহীতোষ তেবে
আশ্চর্যা হয় যাই। আমার সপো দেখা করতে
এসেছিল সে। আমার এখানে থাকবার জন্যে
অন্রোধ করেছিলাম। বলেছিলাম, ধর্মশালায়
চিত্রপ্রদর্শনী খুলেলে ধনী লোকের। কেউ



সেখানে বাবে না। আমার কোনো পরামণ ই
কানে নেরান সে। আমার প্রশতাব শ্নে একট্
শ্ব্ ছেসেছিল। দারিদ্রের শতাচ্ছ দেখতে
প্রেছিলাম আমি। ওর হাসিটা ছিল সামাছিক প্রতিবাদের মত প্রথর। জেলা-শাসকের
বাংলার মতো ধর্মশালাটা কেন যে আরাম
দারক এবং স্বাচ্থাকর নর তেমন প্রশনটা প্রকর্ম
ছিল ওর হাসির তলার। আমার বিশ্বাস,
মহীতোষের মনের ম্বাভাবিক অবম্থা লোপ
পাওয়ার ম্লে রয়েছে একটা ভয়কর্মপেরার ম্লে রয়েছে একটা ভয়কর্মপেরার (এই ভয়টা যে কি তা আমার
জানা নেই। ভয় থেকে ম্বান্ত পাওয়ার জন্যেই
আজ্ব সে আয়হত্যা করেছে বলে ধারণা
জন্মাল আমার।

ইজি-চেয়ারে বসে চুল্লীর দিকে পা ছড়িয়ে मिनाम। भारकरेरा थ्राल रक्ननाम णाम। উল্লট-পালেট দেখলাম, लम्बा সাইজের পনেরে পাতা চিঠি। বন্ধ, বলে আমায় সন্বোধন করেছে মহীতোষ। ছেলেবেলায় একসন্দো পড়তাম আমরা। তারপর সে ভতি হল আর্ট কলেজে। আমি গেলাম আই এ পড়তে। মহীতোষ **इ**ट्रिटेल थाकट्या। भारत भारत छत मटन एम्था করকত যেতাম। আর্ট কলেক্সের অধ্যাপকরা বলতেন, উত্তরকালে মহীতোষ উচ্চু দরের শিক্পী কলে স্বখ্যাতি অজনি করবে। পাস করার পর নিজেই একটা স্ট্রডিও খোলে। বৌবাজারের একটা সর্ গলির মধ্যে নিয়েছিল। একটা •र्हे, फिखरों छाड़ा भ्रताना वाष्ट्रित একতলার পেছন দিকে আলোবাতাস এकथाना घत টোকবার রাহ্যাঘর। মহীতোষ নিজেও তা জানতো। বাড়িওয়ালা ঘরখানার প্রেইডিহাস গোপন করেননি। কিন্তু উপায় ছিল না। অতো সম্তায় এর চেয়ে **উল্জনশ**তর ঘর সংগ্রহ করা অসম্ভব ছি**ল**। পর্রনো আপ্তরের ওপর বাড়িওয়ালা চুনকাম করিয়ে দিয়েছিলেন। কিন্তু দুভাগাবশত रमशास्त्रत तर भामा रासा ना किएएउटे। ताज-মিশ্রী মহীতোষকে বলে গিয়েছিল, 'চুনের কোনো দোষ নেই বাব, দোষ সব বাড়িটার। ইতির গায়ে পর্যক্ত রোগ ধরেছে, মহাব্যাধি। বাড়িটা এখন ভেলে ফেলা দরকার ইত্যাদি। মনে হলো হেসে উঠেছিল মহীতোষ। গভবার কাজ করবার জনোই ঘরভাড়া নিয়েছিল সে। চাপাবার দায়িত্ব ওর নয়, ইতিহাসের।

এই ঘরে বসে ছবি আঁকত মহীতোষ, র্মতও এইখানে। স্থিকমের প্রেরণা মাঝে মাঝে বালিগঞ্জের শাওয়ার জন্য দকে বেড়াতে যেত। 4. একটা ারোয়া সভাসমিতিতে যোগ দিয়েছে বড়লোকের জুইংরুমে বসে শলপকলার আধর্নিক ব্যাখ্যা শহুনেছে সমা-লাচকের মুখ থেকে। সমালোচকদের মধ্যে মনেকেই ধনীলোক। তাদের কাছ থেকে দু: একটা তৈলচিত্রর অর্ডার পাবে আশা করেই য়ত আলোচনায় যোগ দিতে কিন্তু বছর ধানেক যাওয়ার পর সে ব্রুতে পারল যাঁরা নমালোচক তাঁরা প্রসা দিয়ে ছবি কেনেন না।

তা সত্ত্বেও মহীতোষের শিল্পক্মের প্রতি চুন্টি পড়ল অনেকের। সুখ্যাতিও অন্ধন করতে লাগল সে। শয়সা যা রোজ্ঞগার কর-ছল তাতে সংসারটা চলে যাছিল কোনো ক্মে। মহীতোষের যে মান্বাব্য বে'চে ছিলেন তা আমি ছানতাম না। তরি থাকতেন মেদিনীপুর জেলার একটা প্রনার জিলা। একটি বোনও ছিল। পর্যার অভাবে বোনটির বিয়ে দিতে পারেননি। প্রতি মাসে মাল অভার যোগে তাদের টাকা পাঠাত মহীতোষ।

এমনিভাবে বছর পাঁচেক কেটে গোল বৌবাজারের স্ট্রডিওতে। এই নিদা**র্ণ** অর্থাভাবের মধ্যেও শিল্পকর্মের ব্যাঘাত ঘটেনি। মনটা ওর কম্পনার প্রশারথে চেপে मि**॰र्वा**मर**ः**। উড়ে বেড়িয়েছে প্থিবীর জাগতিক সুখ্যবাচ্ছদেশর দিকে নজর দেয়নি, কম্পনার ঐশ্বর্য বেড়েই গিয়েছে শুধ্। এই সময় পরিচয় হয় একটি মেয়ের সঞ্জো। তার পিতা একজন স্বনামধন্য চিত্রসমা-লোচক। বিক্তশালী পরিবার। সমালোচকের জ্রইংর্মে বসে পরিচয় হয় মেরেটির স**েগা**। প্রথম দশনেই মুক্ধ হয়ে গিয়েছিল মহী-তোষ। দ্বিতীয় দশুনে মেয়েটির কথা শনুনে পাগল হয়ে গেল সে। শিলপজ্ঞান অসাধারণ। পিতার চেয়েও বেশী চতুর। শিশ্পের জ্বগংটাকে প্রাণ দিয়ে ভালবাসে। ইউরোপের বড় বড় আর্ট গ্যালারী দেখে এসেছে যোল বছর পূর্ণ হওয়ার আগেই। এখন মেয়েটির বয়স কুড়ি।

দ্-পাতার মধ্যে এই ইতিহাসট্কু শেষ করেছে মহীতোষ। মের্মেটির নাম কোথাও উল্লেখ করেনি। ভাবলাম পরে হয়তো নামটা জানতে পারবো আমি। বাকি তেরো পাতার মধ্যে সে দ্-একবার অঞ্চতত তার নামের সংগে পরিচয় ঘটবে আমার।

একটা সিগারেট ধরিরে বসলাম। মনে হচ্ছে এবার আসল গলেপর মধ্যে প্রবেশ করতে হবে আমায়। এই আমার প্রথম গলেপ পড়া। মন্দ লাগছে না। পরিচিত বন্ধরে জীবনী পড়ছি বলেই হয়তো বাকি তেরো পাতার প্রতি আকর্ষণ জন্মছে। কেউ যদি এখন আমার হাত থেকে পাতা কটাছিনিয়ে নিয়ে বায় ভাহলে হতাশায় ভেশে পড়ব আমি। রায়তে ঘ্মতে পারব না। উত্তেলাটা উড়ো জাহান্দের আওয়ান্ডের মতো মাধার ভেতরে অন্বন্দিতর স্থিট করবে।

রাত দশটা থেকে গিয়েছে। হঠাৎ যদি
প্রমীলার ঘুম ভেঙেগ যায় তাহলে আমায়
সে দেখতে পাবে না। ভর পেতে পারে।
হঠাৎ ভর থেকে অসুস্থ হরে পড়া বিচিত্র
নয়। কাল আমাদের বিষের দু বংসর পূর্ণ
হবে। খাওয়া দাওয়া এবং জলসার বাবস্থা
হয়েছে। প্রমীলাকে সুস্থ থাকতে হবে। এই
ভেবে দোতলার উঠে গেলাম আমি। ওকে
বলে আসাই ভাল যে, অফিসে বসে একটা
জর্বী দরকারী ফাইল পড়তে হচ্ছে আমায়।
আরও ঘন্টা দুই সময় লাগবে।

গভীর নিদায় আক্ষর হয়ে গিয়েছে প্রমীলা। কাঠের মেকেন্তে পা দিয়ে আওয়াজ করলাম। দরজা খোলার সময়ও শব্দ হল জোরে। তাতেও ওর ঘুম ভংগল না। আবার ফিরে এলাম অফিস কামরায়।

চিঠিটা পড়তে গিয়ে আমার মনে প্রদন উঠল একটা ঃ মহীতোষ আমাকে কেন চিঠিখানা লিখল? মৃত্যুর আগে ওকে আমি বহুবার অর্থসাহার্যা করেছি। কিন্
মৃত্যুর পর তো আর কিছু আমার করবার
নেই। মহীতোৰ কি আমার ঘাড়ে কোনা
দায়িত্ব চাপিরে গৈছে?

বারকমেক দেখা হল মেয়েটির স্থা মহীতোষ তাকে ভালবাসল। ডুইংরুমের বাইরে ভাদের দেখা-সাক্ষাৎ হচ্ছে। পার **স্টাটির চায়ের দো**কানে বসে গলপ করে। রাত্রে **ডিনার খাম বড়** বড় হোটেলে। স্বচেত্র বেশী দামের সীটে বসে ছবি দেখে। প্রয় দুদিন প্রসা দিয়েছিল মহীতোষ, তারপর দিতে লাগল মেয়েটি। এ তো কাছে বস এতো টাকা খরচ করতে কখনো দেখেমি মহীতোষ। ত্রিশ টাকার বিল দিতে শ'টাকার त्ना**डे काञ्चास स्मरक्**षि। मार्किटडे ए.ख প্রায়ই শাড়ি কাপড় কেনে। শ[']টাকার নোটগুলো গলে থেতে এক ঘণ্টারও সময লাগে না। এইসব দেখে-শন্নে মহীভোষ্কে মধ্যে একটা বিচিত্র মনোভাবের স্^{দিট} হলো। যেমন করেই হোক টাকা রোজগার করতে **হবে। চহ্বিশ ঘণ্টাই টাকার কথা** চিতা করে। মেয়েটিকে বিয়ে করতে ছলে টাঞ্চার **দরকার—হাজার হাজার লক্ষ লক্ষ** টাকা চাই। বন্ধ্বাশ্ধবদের কাছে অভাবের কথা উল্লেখ করে টাকা ধার করতে লাগন। মেয়েডিকৈ জানতে দিল না কিছ্যুতই। **ভাকে সে মাঝে মাঝেই বলে, 'আ**ছ ঢে•কালনের রাজার কাছ থেকে বড় অডাঃ পাওয়া গেল।' এক সপ্তাহ পর আবার সে ঘোষণা করে, রাজপ্রতনা থেকে একজন **ধনীলোক এসেছেন। তাঁর মায়ের এ**কটা পোর্টেট একে দিতে হবে। হাজার দশেক দাম চেয়োছ।'

ধার করবার মতো কলকাতায় আর
বংধ রইল না। প্রত্যোকের কাছ থেকেই বার
করেক টাকা ধার করেছে সে। প্রত্যেকের
বিশ্বাস ছিল, মহীতোধ একজন উ'ছু দরের
প্রতিভা। ওকে বাচিয়ে রাখতে হবে। সক্ষম
ও কমঠি করে রাখতে না পারলে শিংপজগতের ক্ষতি অনা কাউকে য়ে আর
প্রণ করা চলবে না।

ছবি আঁকা বন্ধ করল মহীতোষ। বৌৰজারের স্ট্রডিওড়ে মন বসছে না আর।
চব্দিশ ঘন্টাই টাকার কথা ভাবছে। ভাবতে
ভাবতে স্নায়্তন্ত দুর্বল হয়ে পড়ল।
অজ্ঞাতসারে ওর অচেতন মনের ওপর
আধিপতা বিস্তার করে বসল ভয়। টাকা
ন্য থাকার ভয়, টাকা না পাওয়ার ভয়।
মেয়েটির সপো দেখা হওয়ার সময় পকেটে
র্যাদ অলততে একথানা শটাকার নােট না
থাকে তাহলে সে পথ চলতে পারে না।
টামে উঠতে পা ফসকে পড়ে যায়। হাতলটা
ধরতে গিয়ে দেখে টামটা ওর নাগালের
বাইরে দাঁড়িয়ে আছে। চিন্তাচ্ছ্লটা ক্রমশই
কাটল হয়ে উঠতে সাাগল।

মনে হল দোওলার ঘরে প্রমীলা হাঁটা-হাঁটি করছে। এগারোটা বেক্তে গিরেছে। প্রায় মধারাতি। এমন সময় প্রমীলার ঘ্রম কথনো ভাগে না। আমাকে না দেখলে হঠাং হয়তো ভয় পেরে যেতে পারে ভেবে আবার আমি শয়ন কামরায় উঠে এলাম। ঘরের দেয়ালে খুব কম শক্তির একটা নীল ন্নংয়ের বৈদ্যতিক আলো অবলছিল। দরজার দাঁড়িয়ে বিছানাটা পরিত্কার দেখা যায়। না প্রমালা ওঠেনি। গভীর নিমায় ডুবে ্র্য়েছে সে। ভাগ করে **পরথ কর**বার জন্য বিছানার কাছে গিয়ে ঋ্বকে দাঁড়ালাম। বার हिहे नाम थ**रत छाकलाम। সाफ़ा फिल** ना र**न।** ভকে স্থানিয়ে যাওয়াই উচিত ছিল। সর-কারী ফাইল নিয়ে বাস্ত আছি, সেই কথাটা বলে যেতে পারলে নিশ্চিন্ত মনে খ্রমতে পারত প্রমীলা। ধাক ঘুম যথন ভাগোলো না _{তথন} আর ওকে বিরক্ত করে লাভ নেই। দ**্রভার ফটে উ'চুতে বসে শীতের রা**তির কথা ভাবতেও শরীরের রক্ত বরফ হয়ে আসে। এখন শ্বের রাতি নয়, মধ্যরাতি। পাহাড়ের গায়ে জমাট বাঁধা বরফ। লেপের তলায় আরাম করে ঘ্মচ্ছে প্রমীলা---ঘুমক। জাগিয়ে দিলেই আরামট্কু নন্ট হরে। আমি এবার পা টিপে টিপে নেমে

ভরের জগতে বাস করছে মহীতোষ।
কথ্পের সামনে গিয়ে হাত পাত্ত ভর
পাছে সে। চিঠি লিখতে লগলে তাদের
কছে। হঠাৎ অসুস্থ হয়ে পড়ায় কাজ
বরতে পারছে না। ঘরতাড়া ছ' মাসের
বাকি পড়েছে। এক গেলাস জল গড়িয়ে
দেওয়ার মতো ঘরে একজন লোক নেই।
একশো তিম ডিগ্রী জার নিয়ে ওকে ডাজারের
কাছে যেতে হয়। দোকানে গিয়ে ওয়্মণ্ড
কিনতে হয়। ইত্যাদি।

আমি তখন বর্ধমানের এস-ডি-ও।
মহীতোষের কাছ থেকে আমিও একথানা
চিঠি পড়েছিলাম। চিঠি পড়ে এত বেশী
কৈচনিত বাধ করলাম যে, তক্ষ্মি চাপরাণীকে ডেকে থললাম, 'এই তিনশোটা
চিনা টি-এম-ও করে পাঠিয়ে দিয়ে এসো।
অএই কলকাতা পে'ছিনো চাই। দেরী
কোরো না—এখনি চলে যাও।'

মোরটি টের পেল না কিছ্ই। ট্যাকসি
ভাড়া করে মহীতোষ তাকে নিম্নে গেল
ভাষ্যানভহারবার। সেখান থেকে কাকদ্দীপ।
নিরিবিলিতে গাছতলায় বসে গলপ করল
সারাটা দাপুর। পালাপাশি গাছের গ্^{*}ড়িতে
হেলান দিয়ে বসেছিল ওরা। তারপর বাবধনটাও আর রইশ না। মেয়েটির কাছে
প্রশ্নতাব উত্থাপন করলো মহীতোষ, 'আর
আমি অপেক্ষা করতে চাইনে।'

'কি চাও তুমি?' জিজ্ঞাসা করলো মেরেটি।

বিরে করতে। যদি তোমার আপত্তি না থাকে, তাহলে কাল সকলেকই তোমার ববার কাছে কথাটা তুলতে চাই।'

পারিত্ব নিতে পারবে কি, মহীতোষ?' প্রদেনর মধ্যে সংশহের স্ব শ্নাতে পেল মহীতোষ। ভরে মুখ শ্নিকরে গেল তার। নেয়েটি কি তবে বিশ্বাস করে না বে, মহীতোমের ব্যাভেক টাকা আছে অনেক? টাকা না থাকলে ট্যাক্সি চেপে কি করে কাক্ষ্মীপ এল?

মেরেটি ওর জবাবের জনা অপেক্ষা করল না। বললে সে, 'বাবার কাছে প্রস্কৃতাব তুলে লাভ নেই। আমাদের বিরে তিনি কিছ্তেই জন্মোদন করবেন না। বে-চোখ দিয়ে তিনি শিচপবিচার করেন সেই চোখ দিরে শিচপী-দের দেখেন না বাবা। জাগতিক ব্যাপারে তার বিচারের মাপকাঠি একেবারে সম্পূর্ণ আলাদা। জীবন খেকে শিল্পকে পৃথক করে দেখেন—

'তা কখনো হয়?' মেয়েটির হাত ছেড়ে দিয়ে সোজা হয়ে উঠে বসল মহীতোষ, 'তা কখনো হয় না। আমার জীবনই হচ্ছে আমার শিকপক্ম'।'

কিম্তু শিলপচর্চার দ্বারা বাবাকে বিয়ের ব্যাপারে রাজী করানো অসমভব হবে।

তাহলে কি কর্থ আমি? অসহায়ের মতো অনুচ্চ কণ্ঠে প্রশন করল মহীতোষ। কণ্ঠনালী শুনিকরে খ্রখ্রে হয়ে উঠেছে। কাকস্বীপের চতুদিকৈই জল। মহীতোধের তব্ মনে হল, সাহারার বুকে তাব্ ফেলেছে ওরা। বালির সম্প্রে ঝড় উঠেছে ব্রি।।

একট্ম পরেই মেয়েটি বলল, 'বাবার অমতে বিয়ে করতে পারবে?'

'পারব।' শতছিল্ল স্নায়্তশ্বকে জ্বোড়া দেওয়ার চেণ্টা করল মহাতোষ।

'তাহলে দায়িত্ব নেওয়ার প্রশন উঠে পড়ছে, মহীতোষ।'

'দায়িত্ব বলতে কি বোঝাতে চাইছ তমি ?'

গীকা। অন্তত হাজার দশেক টাকা তোমার থাকা চাই। বাবার কাছ থেকে কানাকড়িও পাওয়ার আশা করো না।'গাছের গুণিড়তে স্ফিথরভাবে হেলান দিয়ে বসল থেয়েটি।

আদ্ভূতভাবে হেসে উঠল মহীতোষ।
হাসিটা মিলিয়ে যাওয়ার সময় বিকৃত একটা
আওয়ারু বৈর্লা। ফাল্টানের প্রথম সপতাহ
পার হয়নি। কাক্স্বীপের বাতাসে আর্দ্রতার
উপস্থিতি অন্ভব করা যাছে না। মহীতোষের আদ্দির পাঞ্জাবীটা তব্ ভিরে
উঠতে সময় লাগল না। টস টস করে কপাল
থেকে ঘাম গড়িয়ে পড়ছে। বিকৃত হাসির
ধাক্কা লেগে চোয়ালের হাড় দুটো ঠেলে

বেরিরের এল বাইরের দিকে। যেন হাড়
দুটো আত্মপ্রতারের সাক্ষা দিচ্ছে। চারিতিক
দ্টেতার প্রমাণস্চক ভণ্গী করে দাঁতের
ওপর দাঁত চাপলো মহীতোষ।

মেরেটির মনে তথ্ নিভরিতার জোর এল না। প্রশন করল সে, 'তোমার হাতে কি হাজার দশেক টাকা নেই?'

শেই ! গ্রেলী-খাওয়া সাপের মতো দেহটাকে ঘাসের ওপর উল্টেপাল্টে মহী-তোষ শেষপর্যক্ত কাত হয়ে বসে বলতে লাগঙ্গ, "দল হাজার নয় বিশ হাজার টাকা ব্যাক্তে পড়ে রয়েছে। বোধ হয় মরচে ধরে গেল।'

তাহলে ভয় করবার কারণ নেই।' উঠে পড়ল মেরেটি।

'ভর আমি পাচ্ছিনে—'

'তোমার মুখ দেখে তা মনে হচ্ছে না।' টাাকসির দিকে হাঁটতে লাগল মের্য়েট।

মহীতোষও উঠে পজন। ট্যাকসিতে বসে মের্মোট বলল, শুধু হাজার দশেক টাকা হাতে থাকলেই ঝুণাক নেওয়ার সাহস পাব আমি।

'বেশ তো বিয়ের আগে দশ হাজার ডোমার হাতে নগদ তুলে দেব।'

ত্যাঁ, নিশ্চিত হওয়া যাবে তাহলো। ট্যাকসির দ্বে কোণায় হেলে বসল মেয়েটি। মহীতোষের মনে হল, ওর স্পর্শ বাঁচাবার চেণ্টা করছে সে।

ভারমশন্তহারবার রাদতা ধরে ট্যাকসিটা ফিরে চলল কলকাতা। বেহালা পর্যন্ত আর কোনে কথা হলো না। কথা বলবার ইচ্ছে নেই মহাতোরের। হাপিয়ে পড়েছে সে। চলন্ত ট্যাকসির দুদিক দিয়ে হাওয়া ঢুকছে। নইলে আন্দির পাঞ্জাবীটা ভিলে থাকতো তথনও।

গভর্নশ্রেণ্টের টাকা তৈরীর কারথানাটার সামনে পেণছে মেরেটি বলল, 'যা করবার তাড়াতাড়ি করো।'

'কতো তাড়াতাড়ি?' নতুন সমস্যার সন্ধান পেলো মেয়েটির কথায়।

শুকসারী গ্রন্থমালা

ডিরোজিওর কবিতা ৩-০০

ম্ল কবিতাসহ বাঙলায় তর্জমা। গবেষণা ও অন্রাগী-দের পক্ষে অপরিহার্য গ্রন্থ। অন্বাদ ও সম্পাদনা পল্লব সেনগ্পত। বাঙলা প্রকাশনায় একটি যুগান্তর কীতি।

— অন্য গ্রন্থ — -

প্ৰ ৰাঙলার গদশসংগ্ৰহ ॥ মিহির আচার্য সম্পাদিত ৫.০০ নত বিভাবরী ॥ আশিস সেনগণ্পত ২.০০ প্ৰ ৰাঙলার কৰিতা ॥ মিহির আচার্য সম্পাদিত ৪.০০ জাজ কাল প্রশ্ ॥ মিহির আচার্য ৫.০০

भ्रक्तात्री ॥ ১৭২।০৫ আচার্য জগদীশ বস্বরাড । কলকাতা ১৪

'এই ধরো দিন পনেরো। হাাঁ, পনেরো
দি নর চেয়ে এক ঘণ্টাও বেশাঁ নয়। আজ
চেটা, উনিশে ফালগনে রাত সাড়ে আটটার
লগেন আমার বিয়ে।' ঘোষণাটা জলসাহেবের
রায়ের মডো শোনা লা। আপীল করবার
দরকার বেধ করল না মহাঁতোষ। শা্ধ্
বলল "ফিক্সড ডিপোজিট। ব্যাঞ্চে গিয়ে
তুলতে যে ক'ঘণ্টা সময় লাগবে—" একট,
থেমে মহাঁতি।ষই জিজেস করল, "পাত ঠিক
আছে ব্রিফ?"

'হাাঁ। আমাদের চেনা পরিবার। কথা-বাহ'। সব পাকা করেছেন বাবা। ছেলেটি আগ্লায় একবার দেখেও গিয়েছে। বড় চাকরী ক.ব।"

ভা তো বরবেই—' অস্মচকের মত নিক্ষাস্চক মণ্ডর্য কবল মহীতোষ, "ধরবার বাকথা থাকলেই মেয়ের: ছাড়বার কথা ভাবে।" ব্যাপারটা তুলনাম্লক। উনিশ তারিখের আগে যদি অ রো বড় চাড়রর সংধান আসে তা হলে তোমার বাবা প্রেট ফ কর্নেট হু অপেক্ষা করতে রাজী থাকবেন। তাম কি করবে তথন?"

ি "তে।মার জনা অপেকা করব। পরে।
ফাক্সনেটাই যদি তোমার হ'তে থাকে তা'ফলে
টাকা জোগাভ করা সহজ হবে। অমি
এখানেই নামবো মহীতোষ। এটা কোনা
ভায়গা ?"

"होत्रश्ती।"

ফার পোর সামনে নেমে গেল মেয়েটি।
এক নিঃশ্ব সে গালপটা পড়তে পারছি
না। জমে উঠেছে গালপ। মনে হচ্ছে তাড়াভাড়ি পড়লে তাড়াতাড়ি শেষ হয়ে যাবে।
রাত মাত্র একটা। বাকি রাবটা কাটরে কি করে
আমার? গালপ পড়তে পড়তে রাভটা শেষ
করে শিতে চাই আমি। তারপর সোজ।
অফিস কামার। থেকে চলে থাব ধমশিলায়।
মহাত্র খাজাহতা। করেছে। সে নেই। তা
হোক। সে তার শিশপজগতটিক ছতা। গরে
খানা, কাল সকলে গিয়ে চিত্র-প্রশানীর
বারোভ্যাটন করব অমি। একটা ছবি
তাত্ত কিন্তুব।

নতুন একটা সিগারেট ধরিয়ে বসলাম। সিণ্ডিত পায়ের আওয়াজ শানতে পেলাম। চমাক উঠলাম আমি। প্রমীলা তো ঘ্মাকেছ। যদি সে জেগে গিয়ে থাকে তা হলে সে পা টিপে টি.প নিচে ন'মবে কেন? ওপরে দীভিয়ে নাম ধরে ড কবে আমায়। ঘরে বসে ত্রপক্ষা করতে লাগলম। সে যদি নিচে নেম এসে থাকে তা হলে এখানেই চাকে পভ্রে প্রমাল। মিনিট দ্বতিন কেটে গেল। কেই এল না। সিণ্ড দিয়ে ওপরে উঠে প্রেল্ডার। শয়ন কামর য় চাকে প্রমীপার নাম ধার ক্ষেক্ষার ডাকলামও। বিশ্বমার সাড়া পাওয় গেল না। আলগভোগে কপালের ওপর ছাত রাখলাম ওর। তাতেও সে নডে-চড়ে উঠল না। ঘুমের এমন গভীরতা আগে কখনো চেখে পড়েনি অন্নার। একটা যেন অস্বভোবিক মনে হল আমার। প্রমালা কি ভবে জোলে রয়েছে? সন্দেহাকুল মন নিয়ে আবার ফিরে এলাম অফিসঘরে। চিঠিখানা পড়তে অরম্ভ করলাম। কিন্তু মনের একাগ্রতা ম্বিধাবিভর হয়ে গেল। মাঝে-

মাঝেই সন্দেহ হচ্ছে আমাদের শোবার ঘরে প্রমীলা হে'টে বেড়াচেছ। অর্ফান্ডিতে সময় কাটছে ওর।

কেন যে সে জেগে থাকবে তার কারণ
খ'লে, পেলাম না আমি। বিবাহিত জীবনের
খবতীয় বছর প্রতিবে কাল। আমার
বিশ্বাস, প্রমীলাকে আমি চিনি। এমন সদা
হ সাম্যী মন-খোলা মেয়ের সঞ্জে আগে
কথনো আার পরিচয় হর্যান। প্রমীলাকে
আমি সারা মনপ্রণ দিয়ে ভালব্যাস। ওর
দিক থেকেও কোন বিচ্যুতি ঘটেছে বলে
আয়ার জানা নেই।

দশ হান্ধার টাকা জোগাড করার উপায় খ'জে বার করতে। পারল না মহীতোষ। টাাকাসর মিটারের মতো এক একটা দিন খরচ হয়ে যাচেছ। মেয়েটির সঙ্গে দেখা হয় ना, दिनिक्यात कथा १३। किन्ठ होकात कथा উল্লেখ কর না কেউ। মহীতোষের মনো-ভাব থেকে মেরেটি ব্রুতে পারে টাকার জন্য ভাববার কেন করেণ নেই। উনিশ তারিখ পর্যাত অপেক্ষা করতে চায় না মেরেটি। মহীতোষ টেলিফোনের তারের হারফং রোম্যাণ্টিক হয়ে ওঠে। বাল তোমার বারার ধার্য করা তারিখেই বিয়ে করব আমরা। বিকেলবেলা বিয়ের চেলি পরে ভলে এস ছবি। পাক দ্বীট ফাট নিছে। ফারপো রেস্তোঁরার দোতলার বারান্দায় অপেক্ষা করব অমি। তৃমি টাক্সি থেকে নেয়ে সোজা উঠে আসাব দোতলায়।

বোধ হয় দিনটা ছিল এগারই ফালান। গোবিনদপ্রে গিয়েছিল মহাতাষ। শিংপ-সন্মেলনীর প্রধান-অভিথি হরেছিল সে। বক্তুতা দিতে গিয়ে হঠাং পড়ে যায় মঠের ওপর। সভার উদ্দোষ্ধারা ভয় পেয়ে গেল। এবজন উদায়মান শিংপার যদি অকাল-মৃত্যু ঘটে তা হ ল দঃখের সীমা থাকবে না। এখানকার ডাক্তার পরীক্ষা করে বোগ কিছু ধরতে পারলেন না। মৃগী রেগের কাঞ্চনগুলোও স্পাই নয়। তবে ? তবে তার কি হ ল? উদ্যোজাদের ডেকে মহাতার বলল, রোগ খ্র গ্রুত্ব। চিকৎসা করবার প্রসা নেই। আমার নামে একটা ফাণ্ড খ্লতে পারো?

নিশ্চর, নিশ্চয়—সেংসাহে স্বীকৃতি জানালো উদ্যোক্তার।

'কাল তা'হলে ডোমরা আমার বৌবাজারের স্ট্ডিওতে এসো। কাগজপত্র গাঁদার খাত, সব ছাপিয়ে রাথব আমি।''

"কখন যাব ?"

বিকেলের দিকে। কাগজপত ছাপিয়ে আসতে ঘণ্টা পাঁ.চক সময় লাগবে তো।

ক গঞ্চপত দুদিন আগেই ছাপিয়ে রেখে-ছিল মহাতে,ষ। শিলপার জাবনরক্ষা ফ ত খুলে ফেলল ছেলেরা। উনিশ তারিখের বি কলেলা প্যান্ত চাদা যা উঠল তার মেট এক পাঁচ শো টাকাও হল না। উদোক রা বললা "এই টাকা দিয়েই এখন চিকিৎসা ভারম্ভ কর, হোক।"

পথ-ভূল-করা প্রয়টিকের মতো হতাশার ভূবে গেল মহীতোষ।

দক্ষিণের জানালাটা খুলে দিলাম আমি। ভার হওয়ার সপো সপোই পাহাড়ের ফাঁক দিয়ে স্থা উঠে পড়ে। বরফে আব্ত কাণ্ডনজংঘার গা গড়িয়ে পড়ে গলিও সোনা। কুয়াশার আরু অপসারিত হয়েছে। আল্লন্ত দেখলাম সনাতন সতা পর্বতিচ্ড়য় রৌদ্রলাকে সমুস্ভাসিত। কুয়াশার আরু ভাকে ঢেকে র খতে পারেনি। গলা সোনার স্থাত গড়িয়ে পড়েছে পর্বাতর চ্ড়া থেকে।

শেষ পাতটো পড়তে আরম্ভ করলাম।
মনে পড়ে শিংপীর জীবনরক্ষা করতে
অামিও কিছু টাকা পাঠিয়েছিলাম। আজ

মুখতে পারছি, সেই টাকাটা ওর কোনো
কংজে লাগোন। মহীতোষের জীবনটা, রক্ষা
করতে পারলে আমি নিজেও আজ
গোরবাদিবত বোধ করতাম। এমন একটি
প্রতিভার অকালমাতার জনা গোটা সমাজটাই
কি লায়ী নয়? মেয়েটিকে লায় দেওয়া যায়
না। অধকারে চিল ছেডিবার প্রবৃত্তি মেয়েদেব প্রভাববির্দেশ। ভারপ্রবণত, যুবাই কো
গভীর হোক না নিদ্বিট পথের বাইরে পা
ভেলতে ভয় পায়। বোবাভারের স্ট্ডিওটা
কিলপের প্রাণকেন্দ্র হলেও জীবনযাপনের
প্রিস্কর পাবসর তাতে নেই।

তা সত্তেও উনিশ তারিখে বিকেশ বলা চেলি পরে মেষেটা চলে এসেছিল ফারপে। রে স্তারার দোভলায়। অপেক্ষা করেছিল এক ঘণ্টারও ওপর। মহীতোষ আর্ফোন। দ্যাভিয়োর অন্ধকারে চাঁদার খাতা হাতে বসে ছিল সে। ভয়ে জড়োসড়ো হয় গিয়ে-ছিল। ভেরেছিল, মেটোট বোৰাজারের ঠিকানা খ'ুজে এখনে এসে উপ্শিত হতে পারে। রাত সাঙ্গে আটটার পৰ লগন পাৰ হয়ে যাওয়াৰ পৰ - বেড় তে বেরি**মেছিল ম**ধ্বীতে যা। হাটিতে হাটিত চলে। এসেছিল 'ফারপো' রেন্ডেরীরা পর্যাত। সি'ড়ি দিয়ে উঠে গিয়েছিল দোতনায়। অপরিচিত ভিড়ের মধ্যে মেরেটিকে দেখবার আশা করে[°]ন সে। তব্য তার উপস্থিতির কথা কল্পনা কার প্রাণ্ড প্রেছিল মহীতোষ। তারই *িন্*রেণ দেওয়া জায়গায় নায়িকা এসে অপেক্ষা করেছিল। নায়ক আর্ফো বিপ্র-লব্দার হতাশা মিয়ে বাড়ি ফি র গিয়েছে মেয়েটি। এতক্ষণে বিয়ের মন্ত্র পড়াও শেষ হয়েছে তার। রক্ষা পেল ংহীতোষ।

পনেরো পাতার চিঠিখানা ফেলে রাখলাম চৌবলের ওপর। আমার অচেতন মনটা চেরে-ছিল চিঠিখানা খোলাই পড়ে থাক। তাতে পুনীলার ইয়তো চোঝে পড়বে এটা। কেন যে প্রমীলাকে দিয়ে চিঠিখানা পড়াতে চাই আমি, তার কারণটা এখনো আমার পরিব্দার-ভাবে জানা নেই। প্রমীলা ছোটগম্প পড়তে ভালবাসে। হয়তো সেইজনাই গম্পটা একে দিয়ে পড়াতে চাইছি আমি।

অ'মার অফিস-কামরয় চেকে পড়ল প্রমীলা। জিজাসা করল, "কি ব্যাপার সার: রাত বাস কি পড়ছ?"

'ছোটগল্প।'

'তৃমি তো গল্প কখনে: পড়ো না।'

'ঝাল রাত থেকে পড়তে আরুড করেছি। নেশা ধরে গিয়েছিল।' উঠ পড়লাম আমি। প্রমীলা জিজ্ঞাসা করল, "তুমি কি এক্ষনি বাইরে চললে?"

মাথা নিচু করে রাখল প্রমীলা। চোখ

দুটো আমাকে দেখতে দিছে না। প্রথমেই আমার সন্দেহ হয়েছিল, চোথ দুটো ওর ভিজে রয়েছে। ব্যাপারটা আমার বোধগম্য হল না। ন্বিতীয়বার প্রধন করলাম, "কিছ্ বলতে চাও কি?"

"হাঁ, আমিও কাল সারা রাত ঘুমুইনি"। "ধর্মশালা থেকে ফিরে আসি। তারপরে ভোমার গম্পটা শুনব।"

দেবেন ধরকে সংশ্য নিয়ে ধর্মশালায় এলাম। দরজার সামনে পালিশ পাহারা ররেছে। সৈলাম করে তারা সরে গেল এক-ধারে। দেবেন বলল, 'আপনি ভেতরে বান, আমি বাইরে থাকি।"

ঘরের মেখেতে ছবিগালো ছড়িয়ে রয়েছে। একটি ছবিও ফ্রেম করা নেই। প্রসার অভাবের জনাই বাঁধাতে পারেনি মহীতোষ। প্রত্যেকটি ছবি আমি হাতে ভূলে নিয়ে দেখতে লাগলাম। শিশ্পবিচারে আমার বিন্দুমার দক্ষতা ছিল না। অভিজ্ঞ-তারও অভাব ছিল খ্ব। তব্ প্রতিটি ছবি

আমার চোথে খ্বই স্কুদর লাগল। দেবেন ক'ল রালে মিছে কথা বলোন। প্রত্যেকটি ছবি একই মেয়ের। ডাকে কেন্দু করেই বিভিন্ন ভংগীর ছবি এ'কেছে সে। রং আর ডুলির সাহালো ক্যানভাসের ওপর নবজীবনের লগনন ডুলেছে মহী'ডাছ। এমন স্ভিটর ডুলনা মেলা সহজ্ব নয়। ছবিগ্লো সব গ্ছিয়ে নিলাম আমি। প্রমীলাকে দেখাবো। আমার বিশ্বাস, এই মের্য়টিকে প্রমীলা

চেনে।



শুভ পরিণয়, জন্মদিন, নববর্ষ, শারদীয়া পূজা, দেওয়ালি, বজ্দিন, ঈদ কি অন্ত যে কোনো উপলক্ষে প্রিয়জনকে উপহার দিতে পারেন ইউবিশাই গিফ্ট চেক। দেখতে ভারি সুন্দর —চেক ও চেকের ফোল্ডার হুটিই নজর কেড়ে নেবে। ব্যাকে আপনার অ্যাকাউন্ট না থাকলেও চেকে আপনি সই করতে পারবেন।

এবার থেকে উপহার দিন ইউবিআই গিক্ট চেক।



रैंपेवारैटिंए नाक वक रैंखिया

P88/UBU9-69 Ben ;

१६६ चाक्यः ८, नदबस्य हस्य पञ्च मत्रशि कलिकाछ।-১

পশ্চিমবশ্যে ১৩৫টির অধিক শাখা আছে



(একটি অবাস্তব গল্প)

"रमध', कम्भना वज्रम, 'छूमि त्राक त्राज धात्र ना।'

বিছানার ধারে উঠে এসে পা ঝালিয়ে
বসেছিল কল্পনা, মাথার পিছনে হাত
ছারিয়ে-ছারিয়ে অভবা চুলগালো গাটিয়ে
রাখছিল, খেলা শেষ, বেদেনীর সাপ এবার
ফের ঝাপিতে কুন্ডলী হবে, পায়ের পাতা
দ্টিও শাড়ির পাড়ে ঢেকে কল্পনা বলল.
'দেখ, তুমি রোজ-রোজ এস না।'

আর্মনায় অর্ণের চোথে চোথ রেথে
কল্পনা একথা বলল। যে-অর্ণ চুলে এথন
চির্নি চালাচ্ছে, তাকে নয়। তার দিকে
তাকাতে পারে না কল্পনা। ব্কের ভিতর
থেকে অনেকথানি রস্ত ফিনকি উঠে মুথে
ছড়িয়ে বায়।

আয়নার অর্ণ চির্নিটা নামিয়ে বাখল। 'আসব দা কেন?'

—'ও বাদ একদিন এসে পড়ে, যদি দেখে ফেলে, যদি টের পেয়ে যায়?'

স্বর্ণ হাসল। — 'দেখবে না। দেখার চোখই ওর নেই।'

অশ্ভুত বিশ্বাস, অসম্ভব সাহস। कम्भना आह किए वनन ना। इभ कर्त নেমে পড়ল খাট থেকে। সবচেয়ে অবাক ব্যাপার এই জ্যোৎস্না রঙের আলো একট্ নীল-নীল, নরম। যেন ফ'্ দিলে এই আলো উবে যাবে। কল্পনা একবার দিলও। र्शम मा। अथा द्वारकरहे य वाल्वहा जदनहरू, এই আলো তার নয়। ষাট-ওয়াট বালবটার षारमात्र त्रष्ठ कल्ला रहरत। इनएन, भरामा-ময়লা। কুট করে কবে কেটে যায় তার ঠিক নেই। তবে? পাশের কোন বাড়ি থেকে ঠিকরে আসে কি না দেখবে বলে কলপনা জানালা দিয়ে মৃখ বাড়াল। হতে পারে। বদিও চোখে পড়ল না। তা-ছাড়া চাঁদ-চোগানো আলোটাকে ওর কি রোজই জনলবে ঠিক একই সময়ে অর্ণ যখন আসবে?

খরের ভিতরটা একট্ ধোঁয়া-ধোঁয়া, ধোঁয়া নয় কুয়াশা। খোলা জানালা দিরে কতক্ষণ ধরে কে জানে ঢাকে ঘরটাকে ছেরে ফেলেছে। আলোর রঙ তাই এমনি-কুয়াশাই হলদে রঙটাকে দালি-নীল করে দিরেছে? হবেও বা।

কম্পনা খাত বাড়িয়ে জানালার পালা

টেনে দিতে যাচিছল, পারল না। অবাক হয়ে দেখল, তার কবজি অরুণের হাতের ম্ঠিতে। অরুণ কখন ধপ করে ধরে ফেলেছে।

বাথা নয়, অর্ম্বাস্ত থেকেই কল্পনা অস্ফাট গলায় বলল, 'ছাড়!'

অর্ণ হাসছিল, সেই হাসি স্পে করে কল্পনার ম্থেছ ছিড়িয়ে দিয়ে বলল, খাস না, খোলা থাক।

'—হিম চ্কবে যে। যদি আমার ঠা∿ভা লাগে? যদি জনুর হয়?'

'লাগবে না। জন্ধ হবে না।' অর্ণ যেন প্রেরিত প্রেষের মত প্রতারে স্থির গলায় বলল। সেই প্রতার কবজি থেকে সঞ্জারত হয়ে গেল কম্পনার শরীরে। সে আর কিছু বলল না।

তা-ছাড়া তথন সেই গণ্ধটার অস্তিত্ব ছডিয়ে পড়েছিল কল্পনার সন্তায়, তাকে ছেয়ে ফেলেছিল। খ্ব মৃদ্ গন্ধ আর মিণ্ট। একট্র ঝিম-ধরানো — কল্পনার অনেক দিনের চেনা। এই গন্ধটা কবে যে প্রথম টের পেয়েছিল মনে নেই। সেই য়ালবামটার নয়ত—অনেক অনেকদিন আগে নাকের কাছে ধরতে যে গন্ধটা ওকে ঘুম পাড়িয়ে দিয়েছিল? সেই য়ালবামটার পাতার ভাঁজে একটা শ্বকনো পাপড়ি ছিল— পার্পাড়টার গম্ধও হতে পারে। তার সংগ ন্যাপথলিনের ঘাণও মিশেছিল, হয়ত প্র-পর্ই বিলাতী কাগজগুলোরও, কিন্তু এত বছর ধরে কি সেই একই গন্ধ ফিরে-ফিরে আসতে পারে। যদি পারে, অর্থের সংগ্রার সম্পর্কারী। সে এলেই কেন গম্ধটা একট্-একট্নকরে ছড়িয়ে পড়ে, কল্পনা ডোবে...ডোরে. থানিকটা ভেসে-থাকার বার্থ চেম্টা করে শেষে একেবারে তলিয়ে যায়?

অর্ণ ওর দিকেই চেয়েছিল, তখনও সেই স্ফার হাসিটি লেগে আছে অর্ণের চোখে, কল্পনার ঘাম-ঘাম কপালটা ছারে-ছারে মুছে দিছে।

অর্ণ বসল, চলি। দরজার দিকে পা বাড়াল। ছিটাকিনি খ্লে দিয়ে এক পাশে সরে দাড়াল কম্পনা, বাধা দিল না। অর্ণ ও হাতে একট্ চাপ দিল, তার পরেই অর্ণ আর নেই। বাইরের বারান্দা অধ্বার। বেখানটায় অর্ণ চাপ দিয়েছিল,

হাতের সেই অংশ কল্পনা ঠোঁটে ছোঁৱাল।
চোখ ব'জল সংশ্য সংশ্য। এইবার ঘরের
কুয়াশা কেটে বাবে, গংশ মিলিয়ে যাবে
একট্, একট্, করে, নীল-নীল নরম
আলোটা আবার হলদে হবে, আমি জানি
আমি জানি, তার আগেই চোখ বংশ করে
ফোল। আমি জানি, অনেক বছর ধরে এই
একই ব্যাপার দেখছি হো।

চোধ ব'কেই বিছানার ফিরে কম্পনা চাদর মুড়ি দিল।

কুলেশের নাক ডাকছিল! রোজই ডাকে, আজত ডাকছিল। রোজই কল্পনার ঘ্র ভাঙে, আজত ভাঙল।

অধ্কারে বোঝা যায় না রাত কড,
সকাল ঠিক কত দ্রে এসে আটকে আছে।
কুলেশই বা কোন্খানে, পাশেই। আন্দাজে
হাত বাড়িয়ে কল্পনা তার হিদশ পেল!
কন্বলের রোয়ার মত কুটকুটে লাগছে,
নিশ্চয় কুলেশের বুক। প্রকাশ্ভ বুক চিতিয়ে
লোকটা পড়ে আছে। মাথার দাঁটে বালিশটা
কল্পনা ঠিক করে দিল, কুলেশের নাক হয়ত
থামবে এই আশায়। কিন্তু থামতে গিয়ে
কিপদে পড়ল। দ্ব-একবার ভোঁস-ভোঁস
করেই কুলেশ পাশ ফিরল, মোটা-মোটা হাত
বাড়িয়ে জড়িয়ে ধরল কল্পনাকে। যদি আরও
কাছে টানে, যদি পিষে মারে! কল্পনা হাঁসফাঁস করছিল, অনেক অনেক কণ্টে নিজেকে
ছাড়িয়ে নিল।

গা ঘ্লিয়ে-ওঠা ভাব তথনও গেল না। ঘ্মোলে কুলেশের ঠোঁট দিয়ে কম গড়ায়, লালায় বালিশ ভেলে। কম্পনার গালে লালা লেগে থাকবে, চিট চিট করছিল। আর ঘাম। লোকটা এত থামে কেন?

ঘমেছিল কলপনাও। দরজা-জানালা দুই-ই বংধ। বাইরে কিন্তু মেঘ ডাকছে, থানিক আগে দু-চার ফেটা ব্যিত হয়ে গিয়ে থাকবে। এখন গুমোট জানালা ও বংধ করলে কে, কুলেশ নিজেই? ও ওই রকমই প্তপুতে। সাদির ভয়, হাঁচর ভয়, কাশির ভয়।

জানালা খ্লে দেবে বলে কম্পনা জামাকাপড় গ্র্ছিয়ে উঠে বসেছিল, কিন্তু স্যাতসেতে মেঝেয় পা দেবার কথা ভাবতেই গা
শির্মির করল। খাটের নীচে খচখচ
করছে—কী ওটা? বোধ হয় বেড়াল। মাছের
কটা টেনে নিয়ে এসেছে। তপ্তপোষে টকাটক আঙ্ল ঠকে কম্পনা বেড়ালটাকে
ভাড়াতে চেণ্টা করল। আঃ কথন যে মোরগ
ভাকবে, সকাল হবে, কুচকুচে রাভটাকে
চিবিয়ে আকাশ্টার দাঁতের মাড়ি টকটকে
হবে।



কুলেশ কী বেন বলল, ঘ্নের বোরে।

হ্মের ঘোরেই একটা পা তুলে দিল কল্পনার

হতির ওপরে। অড়ে-ভাঙা খাটি চাপা
পড়লে কলাগাছ থেতিলে বার নাকি? দম
বদ্ধ, দাঁতে-দাঁত, কল্পনা চুপ করে পড়ে
বইল।

কবে আমি তোমাকে প্রথম দেখি
অর্ণ। আমার বিরে হয়েছে এই তিন
বছর—তাহলে কি পাঁচ বছর আগে।
লালাদি বেবার বিধবা হয়ে বাপের বাড়ি
এল। সকলে গেছে হ্লচ্থ্ল কামাকাটিতে,
দুপ্রে লালাদিকে দেখতে গেলুম।
লালাদি কাঁদছিল না। চুপ করে শ্যে ছিল,
দেয়ালের দিকে মুখ ফিরিয়ে। আমাকে
বেখে ফিরে তাকাল, হাসল। কালো পাড়
শাড়ি, গলায় সর্ হার, হাতে একগাছি করে
চুড়।

খ্ব বড় ঘরে বিয়ে হয়েছিল লীলাদির।
বর এখানকার সবকটা পাশ সেরে আরও
কী শিখতে বিলেত গিয়েছিল। সেখানে
বফ জলের কোন হুদে নৌকো বাইতে গিয়ে
ছিল মরেছে। চোথের জল মুছছিল আর
বলছিল লীলাদি। য়ালবাম খুলে ফটো
দখিয়েছিল। তথনই ত সেই গণ্ধটা আমি
প্রথম পেলাম। নানা বয়সের ছবি ওর
বরের। পাশের পোশাকের, বিয়ের সময়কার
খুতি শাদা চাদর, টোপর; বিলাতের ছিপছিপে, ফর্সা, চমংকার ছটি।-কাটা পোশাক
অলপ অলপ হাসি। ওলটানো চুল, একট,
ফালানো, ঠিক আড়াইটে চেউ। মরা ফ্লের
গপিটো পাতার ভাঁজে রেখে য়ালবামটা
মুডে লীলাদিকে ফিরিয়ে দিলাম।

অর্ণ, তোমাকে সেদিনই 2(3) দেখি ? আর সেই গৃন্ধ। ্য**ে**র গা ধুয়েছি, গাংধ তবে সাবানের। না-ও হতে পারে। চুলে যে বেলফ,ল গ'্জেছি, হয়ত তার। কড়কড়ে ভাজ-ভাঙা শাড়িরও একটা গণ্ধ আছে : ছাদ থেকে ঝাকে পড়ে একটা ডাল ভাঙল্ম। সব্জ পাতা চটকাতে ইচ্ছে হল। খ্ব আলগোছে ছ'্য়ে-যাওয়া হাওয়া বিচ্ছিল, ধ্লো একটা উড়ছিল না, অরুণ তখনই তোমাকে সামনের রাস্তা দিয়ে হে°টে যেতে দেখলুম। মাথা তললে একবার. আমাকে দেখে থমকে দাঁড়িয়ে ফের মুখ নীচুকরলো।

তরতর করে সির্ণাড় বেয়ে নেমে এল্ম একেবারে রামাধরে। চমকে উঠে মা বলল: কীরে! বলল্ম, কিছু না। বুক তথনও কেপ্কে করছিল। মা আর কিছু বলল না। খ্যাত দিয়ে মাছ-ভাজা উল্টে দিতে দিতে বলল, খুকু, কাল ভোকে দেখতে আসবে। ভারপর থেকে একরকম রোজ।

সেদিন কারা এল, কী দেখল, কী
জানতে চাইল, সেদিকে আমার থেরাল ছিল
না, আমার একবার মনে হয়েছিল তাদের
মধা একজন অনেকটা তোমার মত দেখতে।
এক কোলে বসেছিল, একট্ন লাজ্ক, চুরি
করে চাইছিল। আমি ভাল করে তাকাতে
পারি নি।

ওরা যেই গেল, আমি অমনই ছুটে উঠে গেলুম ছাদে। সেই মিন্টি গণ্ধটা তথন ছড়িয়ে পড়িছিল, বাচ্চা ছেলে ভারী বই নিয়ে বেমন করে—হাওয়া খ্ব হালকা হাতে গাছের পাভাগ্লো উল্টে-পাল্টে দেখছিল।

তোমাকে দেখলাম। আজ্ও তুমি এক-বার দাঁড়ালে। মাথা তুলে খুব স্ফার করে হাসলে, অর্ণ কী সাহস তোমার! সাহস আমারই বা কম কী, অচেনা মানুষের হাসি জমা রাখতে নেই এই ভেবেই কি সপো-সপো হাসিটা ফিরিয়ে দিলুম?

সংশ্য সংশেষ ভয়ও হল, মাথা ফিরিয়ে দেখে নিল্ম, মা বা আর কেউ দেখে ফেলে নি ত!

তারপর থেকে রোজ।

বিকেল হলেই গণ্ধ ছড়াত, ছাদটা আমাকে ওপরে টেনে নিত। একবার থমকে দাঁড়ানো, হাসি বদলা-বদলি। কথা নয়।

কিন্তু অর্ণ, সাহসের সতিটে সীমা নেই তোমার, থাকলে দ্প্রবেলা জানলায় এসে টোকা দাও?

জার হয়েছিল, গলা অবধি চাদর ঢাকা
দিয়ে শারে ছিল্ম। চোথ বন্ধ, মাথার
যক্ষা। মা একবার এল, হাতে বালির
বাটি, কপালে হাত দিয়ে দেখে দরজা টেনে
দিয়ে চলে গেল। অনেক কলেট চোথ
মেলল্ম। হাত বাড়িয়ে টেনে নিল্ম
ফটোটা, বালিশের নীচে ল্কানো ছিল।
লীলাদির বরের, য়ালবাম থেকে চুরি করে
খ্লে এনেছিল্ম, খসখসে কাগজে, কিন্তু
খ্ব চাপা একটা গন্ধ। আমাকে ওরা পছন্দ
করে গেছে, যারা দেখে গিয়েছিল তারা।
কী নাম আমার বরের? ক্লেশ কিম্বা ওই
রকমই যেন কী। দেখতে? দেখতে লাজ্কলাজ্ক সেই ছেলেটি ত নয়। জানি মা।

টোকা শ্নেল্ম, ধরতে পারি নি।
আমার চোখ বশ্ধ করলমে। চোখ বশ্জেই
টের পাজিলমে, কী একটা যেন পরিবর্তন
ঘটেছে ঘরটায়, জমাট ছায়া একটা করে
ফিকে হয়ে আসছে। নিশ্বাসেরও শক্ষ।
করে?

চোখ মেলে দেখি, তুমি!

শিয়রে বসেছ, ভোমার ফর্সা লম্বা আঙ্ল আমার হাত ছ'(রে। লাজ্লা হল, পুট পুট করে জামার বোতাম আটিলুম, উঠেও বসতে যাব, তুমি ইশারায় মানা করলে।

—কেউ দেখে নি? ক্লাম্ত গলায় বলেই

আবার বিছানার ঢলে পড়শ্ম। আমার হাত তথনও তোমার হাতে ধরা।

- —কেউ না।
- —এলে কী করে।
- —সদর খোণা ছিল। ঠেলতেই খ্লল। আর সকলে বোধহয় খ্মিরে। অনেক পরে বলল্ম, যদি দেখতে পেত? তুমি শ্নে শ্ধ্হাসলে।

আস্তে আস্তে আবার বলল্ম, এলেই বা কেন? তুমি ত আমাকে চেন না?

-1519

আর কোন কথা হল না, অনেকক্ষণ সব চুপ। ডোমার মুখের একটা দিকই দেখতে পাচ্ছি। ডেউ তোশা, অন্প অন্প সোনালীর ছিটে আছে।

- —কীদেখছ?
- —তোমাকে। কী স্পের তোমার চল!
 একট্ থেমে বলল্ম, তোমার সবই স্পের।
 সেই ঘি রংয়ের জামাটা আজ পরে এলে না
 কেন?
 - —ভোমার পছক?
- ` —খ্ব। বংগই কন্ই দিয়ে চোথ ঢাকল্ম।
 - —বেশ, কাল সেটাই পরে আসব।
 - -কালও আসবে?
- —রোজ। আমার মুখের ওপর ঝু'কে পড়ে তুমি বললে।
- অণ্ডুত লাগছে, আমি ব**লল্ম,** একেবারে যেন বানানো-বানানো।—**সতি** রোজ আসবে?

মায়া-মায়া চোখ দুটি আরও বড় করে
ছুমি হাসলে। তোমার ঠান্ডা হাত
কপালের ওপর রেখে বলল্ম, সতিত তুমি
গদি আবার আস, যদি কপালে হাত বুলিরে
দাও আর আমি এইভাবে চোখ বুলির
গানিক থাকতে পারি তা হলে বোধহয়
আমার অসুখ দুদিনেই সেরে যার।

কী তেল তুমি চলে মাখ, অর্ণ, সোদন ব্যতে পারি নি। তার স্বাস কিণ্তু আমার নাকে, মুখে শাগছিল, আমার গলা আমার ব্কের তলা দিয়ে বরে যাভিচল।

সেদিন ষতক্ষণ ছিলে ততক্ষণ তোমার হাতখানা আমার কপালে রেখেছিলে। এত কাছে তোমাকে এর আগে পাই নি, এত কাছ থেকে দেখি নি।

হো-হো করে হেসে উঠল কুলেশ, বলল, বটে! থিয়েটার দেখার সাধ হয়েছে?

১৫·০০ আগ্রম পাঠাইলে ডাক নাশ্বল ফ্রি দেওয়া **হয়।**

কিল্তু দুঃখিত, কী করব বল, আল আমাকে ইন্ডনিং ডিউটি দিয়েছে।

कक्शना रक्षण, छ।

ভা-ছাড়া, জামার পকেটে হাত ত্রিকরে পক্টেটা বাইরে টেনে এনে কুলেশ বলল, ভাছাড়া দেখছ ত, আমার পকেট মনে মুখে এক? কুচো চিংড়ি এনে দিয়েছি, তাই খাও আর চোলা চেকুর ভোল। থিরেটার দেখার সাধ এ মাসের মত ভোলা থাক।

-- ও মাসেও তুমি এই কথাই বলেছিলে।

-- আমি দ্-কথা ত বলি না। কুলেশ
হাসছিল, দুটো চোথের পাতা তিরতির
কারে নাড়ছিল, টেরছা হারে গিয়েছিল একটা
চোথের চাউনি।

তারপর কৃষ্ণেশ অনেকক্ষণ ধরে তেল মাখল, কৃষ্ঠুটে চুলগ্লো চুপচুপে করল। চান সেরে এসেই বলল, চটপট খেতে দাও। বার তিনেক ভাত চেরে চেরে খেল।

হাফ পাণেটর তলায় থাকির শাটটা যখন প্'জছিল কুলেশ, কলপনা চেয়ে চেয়ে দেখছিল। এই রংটা তার দ্' চোথের বিষ, হাফ-পাণ্টও বিশ্রী। প্র্যুক্ত কেমানান-ভাবে বালক করে রাখে। কুলেশ বলে, উপায় নেই, আমার বে কাঞ্জ তার এই ইল উর্দি, শ্রাস্থ্য প্রাই সরকারী নিরম।

চুল আঁচড়াতে আঁচড়াতে ক্লেশ চুক্চুক করে আফশোস উকারণ করছিল— এ'হে, সব উঠে গাচ্ছে—এবার খেকে শালার চুলে কবরেন্দ্রী তেল লাগাব।

—বিচ্ছিরি গন্ধ হবে কিন্তু। দাগ পড়বে বালিশে।

পড়্ক। তব্ চুল ত টি'কবে।

গামছা দিলে শেষবারের মত কপাল আর ঘাড় ঘনে কুলেশ সোজা হয়ে দাঁড়াল। সব চুল পাট পাট, পরিপাটি। একটিও উড়ছে না।

হঠাৎ অর্ণকে দেখতে পেরে অস্ফুট চিৎকার করে উঠোছল কল্পনা। অর্ণ এখানেও আসবে সে ভাবতে পারে নি।

চিংকার কারও কানে যায় মি। দরজা বংধ ছিল।

কিল্ডু অর্ণ এলোই বাকী করে। পরে অনেকদিন ধরে ভেবেও কলপনা ক্ল-কিনারা পার নি। মনে আছে সে **ঘ**্নিয়ে পড়েছিল। দ**্বপ্রের খাওয়া সেরে পা**নটি ম্থে প্রেতেই শক্ত স্প্রির একটা ডেলা ঠেকল দাঁতে, মাখা কেমন যেন ঘ্রে উঠল। **এই সাড়ে বরিশ ভাজা বাড়িটা** একবার দলে উঠেই মিলিয়ে যেতে থাকল। সদর-রাস্তায় কৃষ্ঠরোগী—টানা ঘর্ষর র্ঘর কাঠের গাড়ি মেই, ঠন ঠন বাসনওরালা মেট ক্যানেস্তারা পিটিয়ে পাড়া মাত बानाइक्रत्रत प्राकामणे कृत करत शास्त्र। শব্দগালো মাছে গেল একটা একটা করে। পরে রঙও মহেল। দেরালে জবজব তেলের ছাপে আঁকা মোনের মাথাটা দেখা গেল না, লিচু সাইজের পানের পিচের চিহ ফিকে হতে থাকল, তখনই সেই ঘ্ম-ঘ্ম গঙ্গটা টের পে**ল কণ্পনা।** অনেক দিন পরে। চোথ মেলতেই দেখা গেল অর্ণকে। कुल्ला हिस्काद करत छेल।

অর্ণ হাসছিল—যেভাবে হাসতে থালি
অর্ণই পারে। করেক পা এগিরে আসতে
ওর চেহারা প্রকাতরও হল। দেরাদের
ভিত্তরে গাঁথা দেরাজ্যীর ভালা আলগ্য হরে
কাঁপছিল। কল্পনা এক দ্বেট চেরেছিল
সেদিকে। অন্যামন্দক, অবাক।

--এই! কী দেখছ?

অর্ণের কথার হঠাং যেন লক্ষা পেলে কলপনা; বলল, কিছু না। অর্ণের বুকে মুখ লুকিয়ে আধো-আধো গলায় বলল, লুনলে তুমি বলবে পাগলামি। আমার অম্ভূত একটা কথা মনে হয়েছিল।

--কী।

অনেক কণ্টে সংগ্রেচ কটিয়ে কণ্ণনা বলল, ঘর অংধকার, দরজা ভেজানো। দেরাজের ডালা খোলা; মনে হরেছিল তুমি যেন ওই দেরাজের ভেতর থেকে বেরিরে একো।

দুখটু দুখটু ধরনে হাসছিল অর্ণ—
তাই ত এলাম। কিব্তু আর কাউকে বোলো
না। কুলেশবাব শুনালে ৰলবেন, তোমার
চোৰ থারাপ, মাথা খারাপ।

— ও তো ওই রকমই বলে। কিন্তু স্তিয় তুমি কী করে এলে বল না! দেরাজটা যদি বন্ধ থাকত?

—তা হলেও আসতাম। দেয়ালে ফ[ু] দিতাম, ইট আলগা হয়ে যেত, আমি যে মশু জানি।

অর্ণের গালে আদর করে একটা টোকা দিয়ে কল্পনা বলল, ঠাটা! বলেই দেয়াল ঘে'যে শুয়ে পড়ল, ভদিকে মুখ ফিরিয়ে।

—এই। শ্নতে পেল অর্ণ বলছে

<u>--(B</u>• !

—এদিকে ফের।

—তোমার সংগ্রেকথা বলব না আমি।

-- ফের বলছি! অর্গের নিশ্বাস
পড়তে ওর কানের গোড়ার। কম্পনার গারে
কটা দিল। সর্বানাশ, অর্ণ কি শুরে
পড়েছে নাকি, ওর পাশেই, এই বিছানার?
বালিশ যে কুলেশের লালার দাগ এখনও
দেখতে পাওয়া যাবে। ঘরটা আধা
অধ্যকার তাই রক্ষা—কুশ্রীতা, আম্তর
নসা চেহারা—সব টাকা পড়ে গেছে।

—এই। তোমার ব্রুক কাঁপছে কেন? হাত সরিয়ে দিয়ে কল্পনা বলল, কাঁপছে না তো!

—তমি তো কাদছো!

—কদিব না? হঠাং সোজা হয়ে উঠে বসে কলপনা বলল, কদিব না? আমার বিয়ে হয়েছে সাত মাস, এতদিনে ভূমি প্রথম আসবার ফ্রেসং পেলে?

অর্থ কিছু বলছিল না। কল্পনার একটা হাড টেমে নিরে এক-দ্ই করে যেন আঙ্লগালো বারে বারে গ্রেছিল।

—আমার বিরেতেও ত তুমি আস নি।
অর্থ আন্তে আন্তে বলল, এসেছিলাম।
তুমি দেখতে পাও নি। তোমাকে সালিরে
দিয়ে ওরা বিরে বসেছিল, মনে নেই? আমি
সেই বরের বাইরের জানালার দাঁড়িরে
তোমাকে দেখছিলাম।

চকিতে কলপনার কী কেন মনে পড়ে গেল। অসকটে, কেন মনে-মনে বলল, তখন বৃত্তি পড়ছিল। একবার মনে হল বটে, ছায়ার মত কী বেন সরো গেল। সে তবে তমি?

অর্ণ বলল, আমি!

ওর কালে মাখা এলিয়ে দিয়ে কল্পন্ বলল, তারপর?

—তারপর তোমাকে গুরা বখ্য পিশিড়তে তুলে পাকে পাকে বোরাথে থাকল, তখন আমি চলে এলাম।

—তথ্ম আমার মাথা ব্রছিল। জান, শুডদ্ভির সমরে আমি চমকে উঠি? আর একটু হলেই ফিট হজে।

-ফিট হত কেন?

—ও যে একট্ও তোমার মত নয়।
জ্ঞানো অর্ণ, বিরের সম্পন্ধ যথন ঠিক হল,
আমি তথন থেকেই রোজ ভারতাম, বর
কেমন হবে। ভারতাম, যদি এমন হয় যে
বিরের সময় চোল তুলে দেখি, তুমিই
টোপর পরে আমার সামনে? তাহলে খ্ব
মলা হয়। তা সে-সব ত হল মা, ধ্বণন কি
আর সতিই ফলে? তোমাদের কুলেশবাব,
একেবারে আলাদা জাতের। যাক গে, অর্ণ
তুমি এতদিনে ব্বি আমার ঠিকানা
পেলে?

—এতদিনে **পেলাম।**

হঠাৎ পাখির মত বটপট করে উঠল কলপনা, পাখির মত কলকল ভাষাতে বলল, বললে বিশ্বাস করবে না অর্ণ, কিম্তু আমি জানতাম আজ তমি আসবে।

—কা করে?

—চান করে এসে ধােওয়া শাড়ি একটাও
পেলাম না। সর ছি'ড়ে এসেছে। তথন,
তথন বাক্সে থাকে সব লাট করে ফেললাম।
নেই। খালানাম সবচেয়ে নীচের স্পাণ্ডরে
ভারী তােরগণাটা। বিরের পর ক্রেই, আর
খোলা হয় নি, ছাভড়াতে শিরে সেই
ফটোটা হাতে ঠেকল ৰে। লীলাদির বরের
সেই ছবিটা তােমাকে বলি নি?—বিলেতে
গিরে ছাবিশ বছর বয়সে সে মারা গিরেছিল। অর্ণ, তােমার বয়সও তাে
ছাবিশ?

—তাতে কী।

—জানি না কী। আমার মন তথ^নই বলল, তুমি আজ আসবে।

ওর আঙ্ক নিরে খেলা করতে করতে অরণ বলল, মের্মেল বিশ্বাস!

—থাই হোক, শেষ পর্যশ্ত সেই বিশ্বাসেরই দিত ইলো তো। অর্ণ, তুমি সড়িটে ত আঞ্চ এলে।

বাইরের রাস্তার তখনই কী একটা সোরগোল উঠল, চঞল হয়ে অর্ণ বলল, আজ আসি।

কিন্দু দ্-হাতে ওর কোমর জড়িরে কোলে মাখা রেখে ততক্তে শ্রুরে পড়েছে কন্সনা, ধরা-ধরা গলার বলছে, না, তুমি একট্রাবে না। থাকো, থাকো না আর একট্র।

তুমি যতক্ষণ আছ, এই ভ্যানিসা সরবতের মত মিণ্টি মিণ্টি গন্ধটাও ততক্ষণ আছে। অর্ণ, তুমি থাকলে কী ভাল যে লাগে। আমাকে তুমি জড়িয়ে নাও, ছেয়ে থাক, অনেক নিয়েও অনেক তুমি ফিরিয়ে দিতে পার।

--আমি এবার চলি, কল্পনা।

ক্র একট্-বা আহত গলায় কণ্ণনা বলল, এস, সারাক্ষণ ধরে ত রাখতে পারব ন। বেলা গেল, কলে জল এল, এক্র্নি ঠিকে কি আসবে, আমিও এবার উঠব। আমাদের দশ ঘরের কলতলায় সার দিয়ে দাঁড়াতে হয়, এর পর গেলে গা খুতে পারব না। উন্নে আঁচ দেবার আগেই হয়ত দেথব আমাদের বাব হুট করে হাজির হয়েছেন। কাল আবার এস, কেমন? কথন আস্বে বলো ত, কোন্ রাস্তায়? দরজা খুলে বাথব?

রহসাময় ধরনে হেসে অর্ণ কলল দরকার নেই। এই মান্ধাতার বাড়িটার সব গ্ণত পথ আমি চিনি। জানো, এটা দেড়শো বছর আগে তৈরি— এর তলা দিয়ে স্তুড়গ আছে, ইচ্ছে হলে গণ্গায় চলে বেতে পার।

--সেখানে কী আছে?

—ঘাটে নোকো বাঁধা আছে।

— যদি চড়ে বসি?

—মাঝিরা কাছি খুলে দেবে, পাল **তুলে** দেবে।

অরুণ, আমাকে একদিন নিরে যাবে? —যাব।

তুমি একট্ও অর্ণের মত না, তুমি



लिनहाम-L.61,140 BG

रिশুস্থান লভারের একটি উৎকৃষ্ট উৎপাদন

একট্ও অর্ণের মত না। কলঘরে গায়ে মুগ্মগ্জল ঢালছিল কল্পনা আর বিড়-বিড় করে বলছিল। বিচ্ছিরি, বিচ্ছিরি এই কলভূলাটা। শ্যাওলাপড়া, আর একট্র হলেই আাম পিছলে পড়তাম। ঝাঁঝরির মূখ বন্ধ, পচা পচা গণ্ধ। ঢ্কলেই গা ছিন্ছিন করে। সাসটা কাজ করে না—নোংরা, নোংরা, ছিঃ ' কে যেন টিনের ঝাঁপটায় টোকা দিল, বোধ-হয় কোণের ঘরের গিল্লী। অসভ্য, ইতর, ওর যেন আর তর সয়না। খুলব না, কিছুতে খুলব না আমি, এক ঘণ্টার মধ্যে বেরোব না, দেখি ও কী করে। আমরাও ভাড়া দিয়ে থাকি। টিনের ঝাঁপটায় একটা ফটটো হয়ে আছে, সেদিন দেখেছি। ওদের কেউ ওখানে চোথ রাথেনি তো! রাখলেই বা কী. আমি তো ভিজে গামছা গায়ে জড়িয়ে আছি।

তুমি একট্ও ওর মত নও, কল্পনা বলাছল নিজের মনে, ঘরে ফিরে আসার পরেও কাপড় ছেড়ে যখন চুল বাঁধা হয়ে গেছে তখনও। রামাঘরে কড়াটা ছাাঁক ছাাক কর্মাছল, পড়েক, তোমাকে আমি পোড়া ছেখ্রিকট্ট ধরে দেব।

তুমি ওর মত একট্ও না, সে আমি
প্রথম দিন থেকেই টের পেরেছি। বিরের
পর্বাদন সকালেই গরম ন্ন জলে বিকট
আওয়ার করে তুমি গার্গল করছিলে। সেটা
আবিশ্যি এমনকছে খাপছাড়া ব্যাপার নর
তব্য আমার কানে খারাপ ঠেকছিল। থরে
চ্কে গামছায় মুখ মুছতে মুছতে তুমি
ব্যোকার মত দাঁত বার করে বললে, শেলক্মার
ধাত কিনা, অনেক দিনের, তাই সকালে
আমার ন্ন-প্রমন্তল চাই-ই চাই। পানের
ছোপ লাগা দতিগুলো ফাঁক ফাঁক—চোখ
নামিয়ে নির্গেচলাম।

ঘর করতে এলাম ঠিক পনেরো দিন পর। ছঠিশ ভাড়াটের এক বাড়ি, কী ঘূপচি, কী ঝ্রেঝ্রে, কী পাথরচাপা। এই আমাদের বাসা?

লজ্জার লেশ নেই, বেহারা, তুমি হাসতে হাসতেই বললে, আবার কী। আমার হা রোজ্গার তাতে এর চেয়ে ভাল বাসা মেলে না।

দাতে দাত চেপে শ্নেলায়। তোমার রোজগার ঠিক কত? তাও টের পেতে দেরি হল না। বিয়ের আগে শ্নেছিলুম মাইনে চারশো না সাড়ে চারশো, বিয়ের পরে এই ক' মাসে একসংশা দেগুশোর বেশি দেখিনি। তাও মাইনে নয়, কমিশন। কোন্ ঠিকে-দারের হয়ে কুলি খাটাও তার দালালি।

সকালে উঠি, উন্ন ধরাই, চা গিলি, তোমাকে পেলাই, মাছ কৃটি, ফ্যান গালি, ফ্যোস্কা পড়ে তব্ উহা-আহা করিনে, ভিড় ঠেলে কোনদিন চান করা হল তো হল, নইলে সমসত দুপের চুল চিড়ে পাকিরে মাথার ফলগার ছটফট করি, বিকেলে হাওরা যদি দিল তো গা জড়োল, বিভিট্ন নামল তো সব ভাসল—একেবারে রসাতল, সারা রাত্তির মাদরে বালিশ ঘরের একোণে—ওকেণে টানাটানি। সাপে যে কার্টেক কাঁকড়া বিছে আজও কামড়ায়ন সে নেহাছ প্রনায়র জোরে।

শবদ করে থ্যে ফেলল কলপনা, পাথার বাঁট পিঠে ঢুকিয়ে ঘামাচি মারল। তুমি আমাকে ঘামাচি দিয়েছ, তুমি আমাকে ছোট করেছ, যে ফিরিস্তি দিলমে, তা তো শুনলে। এর কোন্টাকে বাঁচা বলে। কোনোটাকে না। এবাজিতে একটা বই

কোনোটাকে মা। অবাস্থিত বংশাতা নেই যে পড়ি। একটা পত্তিকা নেই যে পাতা উলটে সমর কটোই। অথচ বই পড়তে আগে কী ভালই না বাসতাম, একটা নেশার মত ছিল।

গা ধ্যে বদে আছি, এখন তুমি আসবে না। থিয়েটারে যেতে চেয়েছিলাম, তোমার আজ সমর হল না, ইভনিং ডিউটি। সময় হলেই বা কী হত। তোমার সংগ্রান। বিডানোর কত সুখে তা হাড়ে হাড়ে জানি।

সেবার প্রেজার সময় হটিটে হটিটের পারের খিল খুলিরে দিয়ে ছেড়ে ছিলে, পাশ দিরে কত বাস যাবে, আমরা উঠব না, রিক্সা চলবে, আমরা নেব না, তুমি খালি বলবে, আব একট্—আর একট্.। চার আনা বাচিয়ে সেই প্রসায় একটা সম্ভা চারের দোকানে তুমি চা খাওয়াবে। সে-সব দোকানে খুপরি থাকে না, কাটা দরজা থাকে না, কোন মজা নেই।

ঠান্ডা একটা দোকানে বসে আইসক্রীম খাব—আমার অনেক দিনের এই ছোট্ট শখ আন্তও মিটল না।

কুলেশবাব, তুমি একট্ও অর.শের
মত নও। যথন ধর, তথন পিষে মার,
গোগ্রাসে ভাত গেলার মত কর। যথন ছাড়
তথন সারা শরীরে বাথা, একট্ও ভাল
লাগে না। অথচ অর্ণ—সে তার ছোঁগ
সমস্ত দেহে মনে ফুলের মত ছড়িয়ে দের!

—তুমি থাকো এইখানেই, এই চিলে কোঠায়? কই, কোনদিন তো বলনি?

—ঞ্চানতুম তুমি একদিন জেনে ফেলবে, আর তাইতেই বেশি মজা।

—তিনতলার ওপর এই ছোট্ট ঘরটা ভাড়া নিয়েছ কেন?

—ভোমার কাছে হবে বলে।

— ও। জান, আমি রোজই তুমি বেরিরে বেতে উর্ণক দিয়ে দেখতে চেয়েছি তুমি কোন্দিকে যাও। দেখতে পাইনি তুমি কি হাওয়ার মত চল হাওয়াতে মিলিয়ে যাও?

—যা খুলি তুমি ভেবে নাও।

—জান কদিন থেকেই আমার খটকা লাগছিল। অনেক রাত, শাকে আছি, ছাদের দিকে তাকিয়ে থাকি। সেদিন হঠাৎ একটা ছায়া দেখলুম। মনে হল, অর্ণ, তোমার মত, যেন তুমি। পায়চারি করছ। আমি চেরেই রইলুম যতক্ষণ পারি। জোংশ্লা সরে সরে ছাদেব ওপালে পড়ে গেল। অন্ধকার। মনে হল, তুমি যেন চিলেকোঠার চাকে গোলে। ঠিক দেখিনি

—िठिक।

—পর পর তিন দিন। তাই তো আৰু দংশ্রের পা টিপে টিপে উঠে এলাম। তী সম্পর ছাদ, এতাদন কেন হে উঠিন। জান, ওরা ভয় ধরিরে দিরোছল। আদা কালের বাড়িকে এটা—এই চিলে কোঠার করে নাকি কে গলায় দড়ি দিয়ে মরেছিল। সেই থেকে এটা বন্ধ থাকে। কে যেন থেকে থেকে ধ্পে কবে নাকে নই এই বা আক আজি কলায় দকলা সৈলে চ্কলাম। কিছ্ নেই তো, তোমাকে পেরে গেলাম। ইস্রের

না, চামচিকে না। হাড়গোড় না, ধৰণৰে বিছানাটা স্পণ্ট দেখতে পাক্সি। ফুলডোলা বালিশ, চাদরে ফুল ছড়ানো, ভোমার দ্ব ভো অর্থ, এ-রকম তো হবেই। ধৰণৰে দেয়ালা, ধুপ পাড়ছে, ধোঁয়া উড়ছে। সার্গ্রানই কি এ-ঘরে ধুপের গণ্ধ থাকে?

—একসপো, কলপনা, তোমার ক'র্য কথার জ্বাব দেব?

—দিও না, শ্ধে শ্লে যাও। আমার কী-যে মজা লাগছে, নিজেকে হালকা মনে হচ্ছে এখন বোধহয় আমি পাখি হয়ে উন্তে যেতে পারি। তোমার কাছে আসতে ওই জনোই তো ভাল লাগে, অর্ণ, সব ভার নেমে গায়। যা হতে চাই, তাই হতে পারি যা চাই, তাই পাই। ইচ্ছে হলে তোমার হাত ধরে ধরে তরতর করে নেমে এখনই আইসক্রীম খেরে আসতে পারি, আর শো-কেসের সেই আগ্নন রঙের শাড়িটা আঙ্ল দিয়ে দেখালেই তুমি আমাকে কিনে দেবে, জানি, দেবে না?

-एता।

—তাই তো বলছি, আমাদের কুলেশ বাব্র মত পায়ে পামে পায়ে পায়ে পারে তামাকে করতে হর না, আর সেইজনেই তো অর্ণ তুমি অর্গ। তুমি টাাকসি চাপিয়ে আমাকে ময়দানের হাওয়া থাওগাতে নিয়ে যেতে পার, কিংবা তার চেয়েও আরও দ্রের পার না ?

—পারি।

—তবে চুপে চুপে তোমাকে বলছি, চল না। সেই যে স্ভুগ্গ পথের কথা বলেছিলে, তা কি সতিয়। আমরা গণ্ণার ঘাটে গিয়ে উঠব, নোকো খলে দেবে। তারপর—তারপর কাঁ? খিলাখিল হাসি, আর হাত তালি। আমরা যাবই—এই ঘিনাঘনে ঘর থেকে তুমি বাইরে নিয়ে যাবেই। তুমি যোদন বলবে সোদনই দেখবে আমি তৈর। এখানে আমি তিলে তিলে মরছি, মরে আহি, অর্ণ, তোমার একট, মারা হয় াঃ

–হয়, কল্পনা।

আঃ, তোমার হাত কী গ্রন্ডা! আর

একট্রাথ আমার কপালে, তোমার গাল

আমার গালে রাখ, তোমার গা

কথনও

আমে না, গাধ হয় না, গোঞ্জ জবজবে হয় না,

সব সময়েই ফ্রেফ্রে সোনালী চুল ওড়ে—

সাত্য কী অল্ডুত তুমি! আর তোমর

চোখের মণি—তুমি জ্লান না অর্ণ, ওই

টলটলে নীল চোখ দুটো তোমাকে ক্তথানি

মায়াবী করেছে।

কলপনা ফ'্সছিল, আর বলছিল, মিথ্যক মিথ্যক কোথাকার।

খোঁচা খোঁচা দাড়ি হাতের উল্টো পিঠ দিয়ে ঘসছিল কুলেশ আর হাসছিল—মিথো কেন হবে। এই তো ররেছে ভান্তারের রিপোট', পড়ে দেখ না।

কাগজটা ছ'ড়ে ফেলে দিয়ে কল্পনা বলল, চাইনে দেখতে। জানোরার, ভোটলোক খাঁচাঃ আমাকে প্রেছ তাতেও আর্ মেটেনি। এবার একেবারে শেকল পারিয়ে রাখতে চাও?

হাসতে হাসতেই বেরিয়ে গেল কলেল কল্পনা কখনত ফামছিল। টলতে টলতে এসে শুরে পড়ল বিছানার। বালিশে মুব ভূবিরে দিল। চোখ কেটে কেটে পোনা জল ফেটে পাড়ছে। রিপোটেই বা দরকার কী, দে-তো নিজেই জানে। চোখের কোপে কালির ছোপ, সব কিছুতেই অর্চি, এর মানে তার নিজেরও বে অজানা তা-তো নর। রিপোট শুধ্ব ভরটাকেই পাকা করেছে।

কুলেশ হাসছিল—পশ্। ওর হাসি,
দাড়াও ঘ্চিরে দিছি। চোথ রগড়ে উঠে
বসল কলপনা। ওকৈ জব্দ করতে হবে।
ব্বিয়ে দিতে হবে শেকল প্রাতে চাইলেই
প্রানো যায় না, শেকল কাটারও ফিকির
আছে। ওব্ধ আছে। সেই ওব্ধ আনিটে
নিতে হবে। অর্ণকে বলালেই—

ভা-র্-ণ! হাত-পা আবার হিম হরে
পেল কলপনার। অরণে আর কি আসবে?
এলেও দ্-হাতে মৃথ ঢেকে কলপনাকে ছুটে
পালাতে হবে—এ মৃথ অর্ণকে সে কী
করে দেখার। ব্কের তামাটে চাকতি দুটো
কুচকুচে কালো হবে, কোমরটাকে দেখাবে
ফাপানো ফান্সের মত, তথন অর্ণই কি
ঘলায় মৃথ ফিরিয়ে নেবে না! তারপর এই
অটিসটি বিছানার মত বাঁধা শরীরটা খুশে
গিরে ছুলো ব্রেবর্বে তোষকের চেহারা নেবে,
তার আগে কি মরণ হয় না কলপনা?

চোখ জলে টসটস কর্মছিল, কলপনা অধার উব্,ড় হয়ে পড়ে বালিশে ডুব দিল। পিঠ ছলে ফ্লে উঠছিল, পেটের নাড়ীসম্ধা গলায় এসে ঠেকেছে, মাথা ঘ্রছে, আঃ এই সময় যাথ একবার আসত অর্ণ, কোলে ওর মাথা টেনে নিত, হাত ব্লিয়ে দিত কপলে, সব জালা নিমেবে জ্ডিয়ে যেত। লক্ষা? না, লক্ষ্যার সময় এখন নয়। অর্ণের হাত দ্টি চেপে ধরত কলপনা এখনও সময় আছে, ওকে অর্ণে নিয়ে যাক পেনা খ্রিদ, এই কটার থেকে রেহাই দিন।

কিন্তু অর্ণ এল না।

একবার চোখ মেলে কল্পনা
দেখতে পেল কুলেশকে। ময়লা
গোলিটা সে তুলে নিয়ে নাকের কাছে
ধরল মুখ শিটকে তব্ পরল সেটাকেই,
ভারপর সেই হটি, বের করা পাাণ্টটার বেল্ট
ক্ষে অটিল। কুচকুচে চুল, রোমশ হাত—
কল্পনা সেই হাতে যেন একটা সাঁড়াশি
দেখতে পেল। এক পা এক-পা করে এগিয়ে
আসবে লোকটা, এই সাঁড়াশি দিয়ে ভার
কঠনালী চেপে ধরবে।

কল্পনা ভরে মুখ ঢেকে চেচিরে উঠল এস অর্ণ বোস। না-না, এখানে নং এই মোড়াটা টেনে বোস। দেখছ না, এই বিছানটো কী নোংরা, তা-ছাড়া নীল্র ঘন ভেঙে যাবে। ওর ঘ্ন পাতলা, খেকে থেকে চমকে ওঠে, জেগে উঠলে আমাকে খাবে। কত বড় হাঁদেখছ না, এটা একটা খ্নে রাক্রখাস।

তাছাড়া বিছানার অর্ধেকিটার অরেল রুপ পাতা, তুমি বসবেই বা কোথার। গংধ তোমার নাকে যাবে, তুমি যা দোখানীন অর্থাণ, র্মালে নাক ঢাকবে। নীল্রে বারার অবিশিদ অত থেয়াপিত্তি নেই, চেনো তো, ওরই ওপর উপড়ে হয়ে পড়ে চটকে চটকে বাছাটাক শেষ করে ফেলে।

্ অর্ণ, তুমি অনেক দিন পরে এলে।

শেষবার বেদিন আস, সেদিন ওই ক্যালে-ভারের স্ব কটা পাতা ছিল, এখন আছে একটা।

সেই প্রথম দিককার বন্দ্রণা আর লাক্ষা
ভূমি জান না। নিজেকে ল্রাকিরে রাখতাম
আর কদিতাম। দূপেরে যথন কেউ নেই
এই ঘরটা ছাই-ছাই রংরের হরে গেছে,
তথন বার বার দেয়ালটার দিকে চেষে
থেকেছি। সেই ম্যাজিকটা, ভাবতাম, এবার
ঘটবে। দেরাজের পাল্লা কাপবে, ভূমি
বরাবর এক রক্মের ভূমি, বেরিরে আসবে।

তুমি একদিনও আসনি কেন? অর্প? কোথাই পালিয়েছিলে? রাতে ছাদের দিকে তাকিয়ে দেখেছি, তোমাকে পায়চারি করতে দেখা যায় কিনা। যায় নি। চিলে কোঠাটা ফের ভুতুড়ে হয়ে গেছে।

ভাবতেও পারবে না অর্.ণ, তথন রোঞ্চ তোমাকে কত ডেকেছি। বাচ্চাটা ভেতরে নড়ে নড়ে উঠত, সেটাই অসহা লাগত। একটা ভয়ানক ফলবীও মনে মনে ঠিক করে রেখেছিলাম। তুমি এলে দ্জনে প্রামশ করে সেটা কাজে লাগাব ভেবেছিলাম

তুমি এলে না। তখন ভাবলাম বিষ খাব। তোমার চিলে কোঠার দরজায় টোকা দেব। কিল্তু সির্ণাড়র মথে থেকে ফিরে এসেছি। এ অরম্পায় নাকি সম্পার পর ছাদে যেতে নেই। তাছাড়া আম্তে আশেও আমার কেমন ধারণা হয়েছিল, ওই চিলে কোঠাতে তুমি আর নেই। ছেড়ে গিয়েছ।

ঠিক না? ভালই হংগ্ছে, অর্ণ তুমি আসনি। এলে সর্বদেশে কোন্ ব্নিধতে কী করে বসতাম, ঠিক কী!

দেখ তো অর্ণ—না-না, আমাকে ছাঁতে বলছি না, শুধু চেয়ে দেখে বল—আমি খবে রোগা আর ফ্যাকাশে হয়ে পড়েছি, কেমন? মাথার চুল—চের উঠে গেছে, রোজই যাছে, কী করি। তোশার চুল কিন্তু তেমনি আছে, চেউ খেলানো, সোনালী-সোনালী। দেখি তোমার চোখ দেখি? তেমনি নীল। অর্ণ তোমার বয়স একট্ও বাড়ে না।

হাসপাতাল থেকে ফিরেছি—তাও প্রায় দিন দশেক হয়ে গেল এখনও ভাল করে চলাফেরা করতে পারি না। দুটো টানক আছে, তা থাকলে হবে কী, সারারাত এই ডাকাতটা যে জাগিয়ে রাখে। গলা ফাটিয়ে বখন চে'চায় পাড়াসুম্ম সাড়া পড়ে, কে বলবে মোটে এক মাসও পোরেনি। আগেকার মেজাজ থাকলে কী করতাম জানি না এখন—এখন কিন্তু অতিশ্ঠ হলেও একবারও ওটাকে গলা টিপে মারতে ইচ্ছে হয় না। আসল কথা ভোমকে খোলাখালি বলব পেটে থাকতে যেটা ছিল কাঁটা, মাটিতে পড়তে দেখি, আরে কাঁটা ভো নয়, ফ্লা!

তেল মাখাই টিপে টিপে দিখি নরম ভূলকলে। তোমার মত একটুও নর কিন্তু সব ওর বাবার মত পেয়েছে। ওই রকমই গটিগোট্রা হবে আরু কী।

ওর বাবা, তোমাদের কুলেশবাব্বে তুমি হালে বোধহয় দেখনি, খনে রোগা হঞ্জে গেছে। ভাবনায় খাট্নিতে। খবে খাট্ছে যে। নিজ্ঞে রীধ্যছ হাত প্রভিয়ে তবা আমাকে রাল্লাঘরে যেতে দেল্লান। বাংনত একটা না একটা ওম্ব্যু আনবে, ন্যুতো আনগ্রে, কিংবা আন্য কোন ফল। অথচ নিজের দিকে নজর নেই। বলে, আর কিছু দেখতে হবে না, তোমার ছেলেকে ভূমি সামলাও। ছেলে ছয়েছে কিনা, তাতে আবার নিজের মত দেখতে, বাব্র কর্ম খ্বা।

সতি। বলতে কী অর্ণ, ওকে, তোমাদের কুলেশবাব্বে এদিক থেকে
আমি কোনদিন দেখিন। সারাদিন যে থাটে, বেখান থেকে যা পারে কুড়িয়ে সংসারে
আনে, আমার জনো, ওর ছেলের জনো।
কী যেন বদলে গেছে। হয়তো ও নিজেই।
কিংবা যা ছিল তাই আছে, বদলে গেছে
আমার দেখার টঙ়।

একট্নাথা যথনই তুলতে পারব অর্থ, গামে জোর পাব, তথনই রালাঘরে গিয়ে ঢ্ৰুক। ওকে ঘরে বাইরে থেটে থেটে শেব হতে দেব না।

অর্ণ, তুমি উঠছ? নীল্টা কেমন হাসছে, যাবার আগে একবার দেখে যাও। ঘুমের ঘোরেই ওমনি হাসে, ওরা ভগবানের সংশা কথা বলে, না?

অর্ণ, উঠো না, আর—একট্ বোদো।
বকবক করে তোমার মাথা ধরিয়ে দির্টেছ,
জানি। থানিক পরে ও জেগে উঠে চে'চ'ব,
ওকে দ্ধে খাওয়াতে বসব, তখন তো যেতেই
হবে তোমাকে। তার আগে বরং আরও
একট্ব বসেই গেলে।

না—না, ভয় পেও না, আমাকে নিয়ে
পালাতে আর বলব না। আগে থ্র
পাগলামি করঙাম না? চাইলেই বা আর
পালাতে দিছে কে। দেখছ বটে ছোট ছোট হাত, ওর কিম্কু জোর থ্ব। আকিড়ে যথন
ধরে, ছাড়নো মুশ্বিল।

কী করি বল, আর উপায় নেই।
বলেছি তো, একটা সেরে উঠলে আমি
রাল্লাঘরে ঢ্কেব, ময়লা বিছানার চাদর রোজ
সকালে রোজ্পরে দেব। সেই চাদর তুলে
টান টান করে পাতব বিকেলে। শোর।
জানি কোন কোন দিন সকালে শারীরটাকে
নিংড়ে নেওয়া, ছিবডের মত ঠেকবে, তব্ ভোরে উঠতেই হবে রালা চাপাব, কুটনো
কৃটতে গিয়ে আঙ্ল কেটে, রক্ত বের্তে পারে, ফ্যান গালতে গিয়ে হয়ত পায়ের
পাডা দগদগে হবে ঘেমে নেয়ে উঠব, খাম
ম্ছেও ফেলব। কিঞ্চু পালাব না।

—কল্পনা, আমি এবার হাই। আমাকে তোমার তে। আর দরকার নেই।

লনই! কাঁজানি বলাও বার না। হয়ত আছে। মাঝে মাঝেই তোমাকে ডাক**্ত** হবে। পালাব না বটে। কিন্তু এটাও ডো ঠিক, কোন কোন দিন খুব একঘেয়ে ঠেকৰে, ছটফট করব। যখনই দম বৃদ্ধ হবে, অভিন্ঠ হয়ে উঠে, তখনই চাইব ভাকে, যার চেখ নীল, মুখে মায়াবী হাসি, সুক্ষর সোনালী চুল বাডাসে ওড়ে, যে কখনো রেগে যায় না. ঘামে না, হাপায় না হিসেব করে যাকে থরচ করতে হর না। আলগা একটা ছেরা দিলে যে ছেয়ে রাখে, রেদিনটা দলেরটা অসহা হবে, সেদিনই অরুণ, জানি ৫ই দেরাজের ডালা কপিবে হঠাৎ স্বাস ছড়িরে পড়বে তমি কেরিয়ে আসবে, ও**ই ম্ন্যালবাম** থেকে বরাবর যামন বসেছ, কিংবা আমিই টেনে এনেছি ভোমাকে।



মনে হয়েছিল ব্বি দ্বেশ্বন। কিন্তু দ্বেশ্বন তো মিথে। হয় রাত ফ্রেলে। কিন্তু এ দ্বেশ্বন মিথে। হয়নি। সতি। হয়েছে। ভয়ংকর সেই সত্য। নিন্ত্র, নির্মাম সেই সতা।

প্রথম যেদিন দেখা গিয়েছিল **সেই সব্জ আলে।র ধারা, তখন কি কে**উ কল্পনাও করতে পেরেছিল মহাম্মশানে পরিণত হতে চলেছে এই পরিথব ী? রাতের আকাশ থেকে করে-পড়া স্নিশ্বসান্দর সব্জ রশিম আর ট্রকট্রে লাল ফ্লেঝ্রি দেখে বিশ্ময়বিহাল হয়োছল মানুষ, মুক্ধ হয়ে-ছিল, বিধাভার অপূর্ব লীলারেখা মনে করে পরম ভব্তিতে মাথা হে°ট করেছিল। কিল্ড ঘণেক্ষরেও কেউ কল্পনা করতে পারেনি কি ভয়ংকর দুর্যোগ ঘনিয়ে আসছে প্থিবীর বাকে। আতবড় দঃস্বাসনও কেউ ভারোন স্বলীয় এই সব্যুক্ত রাম্মর পেছনে ্লোপন রয়েছে কি তুর অভিসন্ধি—লক্ষ रयाजन मृद्रतत विष्ठित श्रामीतम् भौभाशीन নিমমিতার পৈশাচিক পরিকল্পনা।

তেরতলা বাড়ীর ওপর তলায় বসে
আমি লিখছি সেই ভয়ানক দুযোগের
কাহিনী। কিম্তু কেন লিখছি তা জানি
না। লিখছি কার জনো? পড়বার লোক
কি আর আছে? তবে কি মানুষ-শ্না
ইয়ে গেছে সব্ভ প্রিবী?

না। মান্য এখনো আছে ! ভূগোলকের এখানে-সেখানে এখনও হয়ত মান্যের কিছু কিছু বিচ্ছিন্ন দল একতা হারিয়ে নিজেদের মধো হানাহানি করে এই মুহুতে' চলে পড়ছে মুভার কোলে। এক গরস খাবারের অভাবে ভারা নেমে এসেছে পশারুর পর্যায়ে।

শৃধ্ কি তাই। মান্য তার শ্রেষ্ঠ সম্পদ হারিরেছে।

সেই কাহিনীই শোনাই এবার।...

সব্জরণিম প্রথম দেখা গিয়েছিল,
আমি তখন হাসপাতালে। দুই চোখে
ব্যাশেজজ বাঁধা অবস্থায় আমি কিছুই
দেখিনি, কেবল শানেছি। শানছি যে, অজল্ল
সব্জ তারা শিলাব্দিটর মত ঝরে পড়ছে
প্রথিবীর দিকে। কিন্তু ভূতল স্পূর্ণ করার
প্রনেক আগেই আচন্বিতে নিঃশব্দে ফেটে

যাচ্ছে তারাগ্রা। অবিকল তারাবাজীর মত। আর, ফ্লেক্রির মত লাল আলো লক্ষ সাপের আনারে কিলবিলিয়ে করে পড়ছে ধরিতীর বুকে।

এরকম তারা একটা নয়, দুটো নয়, লক্ষ লক্ষ কোটি কোটি আচন্দিবতে দেখা দিয়েছে ১৯৭০ সালের ৯ মার্চের রাগ্রে।

পর-পর তিনরাত এমনি সব্জ র্থিম আর লাল ফ্লেক্রির থেলা চলল প্রথিবীর সবঁত। পিকিং, মস্কো, মোন্থাসা, গান্বিরা, ফকলান্ডে, আজিন্টিনা, ওয়ানিংটিন, রোক্সানে, টাসমানিয়া, জাপান—কোথাও বাদ গেল না। হতভদ্ব হয়ে সাধারণ লোকে সারারাত দেখল সেই বিচিত আত্সবাজীর উৎসব। দ্বয়ং বিধাতা যেন আকাশ জ্ঞে সাজিয়েছেন লক্ষ্ম দেওয়ালীর কল্পনাতীত ভালোকমালা।

বাঘা বাঘা বৈজ্ঞানিকরা মাথা চুলকাতে লাগলেন—দিশেহারা হয়ে গেলেন পাকুকেশ দার্শনিকরা, মহা ফাপড়ে পড়লেন ব্রুষ্থর রাজনীতিবিদরা, আর উপ্লাসত হলেন মোপ্লা, পাদরী, প্রুত্তের দল। ফলে, যাগ্রুজ্ঞ উপাসনার ধ্ম পড়ে গেল মন্দিরে, গিজাঁহ, মুসজিদে। সারাশ্স-ফিকশান ভত্তরা বললেন বিজ্ঞের মত, এ নিশ্চয় অনা গ্রহ্মাসীর কীতি। হয় মুগুজা, না হয় শ্কু থেকে কিছু বিটকেল বাসিন্দা এসে মুক্রয় করছে প্রথিবীবাসীদের সঙ্গে।

কিন্তু প্রকৃত কারণটা যে কি, তা কেউই অন্মান করতে পারলেন না; জানা তো দ্রের কথা।

হলিউড, টোকৈও, টালিগঞ্জ থেকে আতি-উৎসাহী কামেরামানেরা নিশীথ রাতের সেই ঐশ্বর্য মুডি কামেরায় তুলে রাখতে লাগল। টোপাভিশন কোম্পানীরাও পিছিয়ে থাকবার পাচ নয়। তারাও তোড়-ভোড় করতে লাগল ভারী ভারী কামেরা নিয়ে। সারা পৃথিবীতে সাড়া পুড়ে গেল বংহারি সব্জ তারা আর লাল ফ্লঝ্রি নিয়ে।

আমি কিম্পু কিছুই দেখলাম না।
রেডিওতে, নাদের মুখে, ডান্তারের কাছে
কেবল শুনেই গোলাম। কারণ, চোখ থেকেও
আমি তখন অখা। দুই চোখে আমার পুর্
প্যাডের ওপর বাধা চওড়া ব্যাভেজ।
ব্যাভেজ খোলা হলে কোনদিন দুভি ফিরে
প্যওয়ারও কোন নিশ্চয়তা ছিল না।

দুই চোথে আতীর ষন্তণা নিয়ে অংধ অবস্থায় এসেছিলাম হাসপাতালে। অথচ আমি জন্মাধ্য নই। জন্মেছিলাম সুস্থ দুল্টি নিয়ে। উচ্চশিক্ষা লাভ করেছিলাম কর্ম-দ্বীবনেও উগ্লাতি করেছিলাম দুল্টিশন্তির ভৌক্ষাতার জনো।

স্মার, তার পরেই ঘটল সেই লোমহর্ষক অঘটন। আমি অন্ধ হয়ে গেলাম।

সে আর এক কাহিনী।...

প্রথমে আগাছা বলেই মনে হয়েছিল।
কোপেকাড়ে থেমন অগ্রনিত নাম-নাজানা গাছ-গাছড়া দেখা যায়, ভেবছেলাম্
নত তাই। কিন্তু তখন যদি সাবধান হ'তাম,
ভাহলে আজ আমার এ অকথা হত না।
প্রিবীর সমস্ত রঙ-র্প আজ মুছে যেত
না আমার চোখেব সামনে থেকে।

আমি অন্ধ হয়ে গেছি। অন্ধ হয়ে গেছি ঐ গাছটার জনো।

দেশ-বিদেশের গাছ-গাছড়া নিয়ে নাড়াচাড়া করা বাবাব চিরকালের সথ। ছেলেবেলা থেকেই বাগানে ঘ্র-ঘ্র করতে করতে
অমনি কত গাছের নাম আমারও মুখ্যত
হয়ে গিয়েছিল। কিন্তু অন্তুত সেই গাছটি
আমি চিনতে পারিনি।

গাছটা বাবাকে দেখিয়েছিলাম। বাবা দূর্ কৃচিকে কিছ্ম্মণ তাকিয়ে সইলেন। তারপর একটা লেবেলে তারিখ লিখে ঝুলিয়ে দিলেন শুগুটায়।

ওহো, গাছটার যে শাড় ছিল তা
বলতে ভূলে গোছি। মথার ওপর যেখানে
পাতা আর ডাল থাকার কথা, সেখান থেকে
একটা মাত্র সর্ শাড়ে দুলছিল হাওয়য়।
সামানা একটা শাড়ে। কিল্ডু কি নির্মা।
হত্যাকারী সেই শাড়ের মার খেরেও প্রাণে
বেচে গোছি আমি, কিল্ডু জন্মের মত ব্রিধ
হারাতে হল চোখ জোড়া।

করেক হপ্তার মধ্যে বেশ বড় হরে উঠেছিল গাছটা। আরো একমাস গেল। আশ্চর্য বাড় বটে। প্রায় ছ'ফ্টের কাছা-কাছি পেণছে গেল উচ্চতা। আর, তারপরেই লক্ষ্য করলাম সেই আশ্চর্য প্রত্যুগ্য তিনটে।



ভোৰের দিকে বাগানে এনোছলাম।
তবাক চোথে তাকিরেছিলাম শ ্ভেসমেত
ভোতিক চেহারার গাছটার দিকে। ভাবছিলাম, গাছ কি এত ভাড়াতাড়ি বাড়ে?
এ কি গাছ না, অনা কিছু;

চিক এই সমরে দুলে উঠল গাছটা। দুন রহস্যজনক উপারে আমার মনের কথা টুর পেরেই চনমন করে উঠল গাছটার সারা দুর।

চমকে উঠেছিলাম আমি। তারপর ভাব-ছিলাম নিশ্চর চোথের ছূল। কিন্তু প্রকলেই আবার দুলে উঠল গাছটা। এমন প্লাট সেই দুলুমিন যে তা চোথের ছূল হুডেই পারে না।

প্রায় সংশ্য সংশ্যেই দেখেছিলাম, নডে নড়ে উঠছে গাছের শেকড়গংগো। আর... আর, শেকড়ের ফাঁক দিয়ে দেখা যাচ্ছে তিন-তনটে অম্ভূত প্রত্যপা! শব্বে প্রতাংগই বল্ব। প্রত্যংগ ছাড়া ডাকে আর কিছা বলা যায় না পা বললে হয়ত জিনিসটা ণাঁর•কার হত, কিন্তু গাছের কি পা ইয়? হাল-ফাশোনের টেবিলের পায়ার মত তিনটে *्_{र्} क्रेका क्रे**ल** निष्य अफ्राइं। क्रहे ঠকার ওপর **ভর** দিয়ে দ**িড়য়ে দ্লছে** গোটা গাছটা। তারপরেই, আচমকা সামনের ঠকা দ্টো দ্মড়ে বেকে গিয়েই সিধে হয়ে গেল। কিলবিল করে উঠল শেকড-গ্লো... আর - অদ্ভূতভাবে মাথা ঝাঁকিয়ে আহরে দিকে তেড়ে এল গাছটা...পর মহাতে যেন বিদ্যাতের মত শ্না পথে ्थरम राज भा, फुछो।

সমূদত জিনিসটা এত চকিতে ঘটল যে সাম্যান হওয়ার আগেই সপাং করে মুখে আছড়ে পড়ল শুশুটা...পড়ল ঠিক চোখ শুটোর ওপরেই। তারপর আর কিছু মনে

জ্ঞান ফিরে এলে কানে ভেসে এসেছিল
াবার কঠা। কিল্টু দেখতে পাইনি কাউকে।
সমস্ত ক্ষমতাই গোপ পেরেছিল। শ্বাড়ের
মধ্যে ছোট ছোট থালির ভেতরে নাকি
মারাখ্যক বিষের সম্প্রান্ধ পেরেছেন বাবা।
বলি ফোট চোখে প্রবেশ করেছে সেই বিষ।
মধ্য হয়ে গোছি আমি।

হাসপাতালে এসে শ্নেছিলাম হয়ত
আমার দৃণ্ডিশক্তি ফিরে আসতে পারে।
আবার, নাও পারে। কারণ, তিনপেরে
ধ্যাবত দানবের মত সেই গাছটি বয়েসে
করাতই শিশ্ব তাই বিষের থলিতে যে
কৈ ছিল, তা হলত তেমন মারাত্মক নাও
তে পারে।

ভগবানের কাছে প্রার্থনা করলাম, তাই যন হয়। বিশেবর এই রঙ-রূপ যেন চোথের মেনে থেকে জন্মের মত মুছে না যায়।

তারপর কেটেছে জনেকদিন, আনেক রাত, কিব্তু আমার চোমে কোনো প্রভেপই ধরা পড়ে নি। বাবার মুখে শুনেছি সারা প্রথবী নাকি রাতারাতি ছেরে গেছে এই অভ্নত আগাছার। অবিশ্বাসা গতিতে তারা বিড়ে উঠেছে, গা-লিউরানো তিনটে সাংগ্রে ভর দিয়ে দুকে দুলে হুটিছে। প্রতিটি আগাছার শুড়ে মারাজক বিষ এবং বিজের অতকিচে আঘাতে বিবের

ছোনার অংধ হরে বাছে বহু মান্ব, মারাও বাছে অনেকে। সব চাইতে আদ্দর্য, গাছ-গ্লোর যত আছোশ মান্বের চোথের ওপরেই। নির্ভুল লক্ষো তারা শুড় চালার চার্কের মত, বাতাস কেটে ছুপাং শব্দে ঠিক চোখ লোড়ার ওপরেই আছড়ে পড়ে বিষাত্ত শুড়। বিষের তীরতা বেশি থাকলে মান্ব মারা যাছে তংক্ষণাং। যারা বেচে থাক্ছে, তারা দ্ভিশান্ত হারাছে জন্মের মত।

চোখ হারিরে আদ্ধিদন গ্রেছিলাম সেই দিনের যেদিন অন্ধের গ্রহে পরিণত হবে সমাগরা এই ধরিতী। আর ঠিক সেই সময়ে দেখা গেল সেই আশ্চর্য দশো! সব্জ তারা আর লাল ফ্লেঝ্রি ঝরতে লাগল প্রিথবীর আকাশে।

পর-পর তিনরাত দেখা গেল সেই বিচিত্র দৃশ্য।

চতুর্থ দিন আমার চোথের বাঁধন খোলার দিন। চক্ষ্ণ বিশেষজ্ঞের মতে সেই-দিনই জানা যাবে বিশ্ব জ্বশান্ডের ব্প-স্থা চোথ দিয়ে পান করার শক্তি আমি জন্মের মত হারিয়েছি কিনা। যদি ভাগা স্প্রসম থাকে, ফিরে পাব দ্ভিটশক্তি, নইলে চির ভাশকারের রাজ্যে নির্বাসিত থাকতে হবে বাকী জীবনটা।

সেদিন তাই যথাসময়ে ঘ্র ভাঙতে
কাটা উদ্পেশ্যে ভরে উঠল। কিন্তু চারদিক
তে নিস্তুন্ধ কেন? এত নিথর কেন? তবে
কি রাত এখনো ফ্রেরারনি? অভ্যেস মত
ভোরেই ঘ্র ভাঙে প্রতিদিন। আজ কি
তন্তরের উৎকন্টার রাত থাকতেই ঘ্র
ভেঙেছে আমার? নিশ্চরাই তাই। তাই চারিদিক এত শব্দহীন।

বালিশে আবার মাথা এলিরে দিলাম।

হুমোবার চেন্টা করলাম। কিন্তু হুম আর

এল না। কি করে আসবে? আজ আমার

ভাবনের একটা সন্ধিক্ষণ। অংধ আজ

চক্ষ্মান হবে, অথবা আর কখনই হবে

না। আজ কি আমি ঘুমোতে পারি।

কতক্ষণ এভাবে শংরেছিলাম জানি না।
আনেক...অনেকক্ষণ পরে কিদের জনালা
অনুভব করলাম। নিশ্চয়ই ভোর হরেছে।
কিংতু এখনও ঘুমিয়ে রয়েছে গোটা
হাসপাতাল / চারাদক এখনও নিশ্চপ। না
না, পরেরাপ্রি শশক্ষী নয়। অপ্পণ্ট

একটা গোডানির সন্মিলিত শব্দ যেন দ্র থেকে ভেসে আসহে কণরদের।

কিলের শব্দ?

নাসকি ডাকলাম। ওয়াডারিকে ডাকলাম। কিন্তু কোন সাড়া দেলাম না।

গেল কোথায় সব? এরকম কান্ড তো কোনদিনই ঘটোন।

ট'টিটেগা নৈঃশব্দা মাঝে মাঝে শিউরে উঠছে কাদের কাতর আর্ডনাদে। কারা যেন নিঃসীম যক্তনায় কাতরে উঠছে, কাক্ষে উঠছে। তারপরেই আর্চান্বতে স্তম্প হয়ে যাছে। যেন ক্ষণে ক্ষণে আঁতকে উঠছে নিজনিপ্রী।

ক্ষিদের জনালার মেজাজও সংক্রমে
চড়ল। হাকাহাকি ভাকাডাকি করেও যথন
কারো সাড়া পেলাম না, তথন নিজেই
উঠলাম শ্যাা ছেড়ে। হাতড়ে হাতড়ে
ঘ্রলাম ঘ্রময়। দেখলাম, যেখানে যেটি
প্রতিদিন থাকে, আজও তেমনি রয়েছে।
শ্ধু নেই কোনো মান্য। নেই ভাজার, নেই
সিম্টার, নেই ওয়াডার।

হাতড়াতে হাতভাতে হঠাং হাতে ঠেকল একটা কাঁচি। ডাভারী কাঁচি, তুলো এবং অনানা শিশবোতলের পাশেই রয়েছে কাঁচিটা। আজ আমার বাশেজ্জ কাটার দিন বলেই বোধহয় নার্স সব সাজিয়ে রেখে গিয়েছিল। ডাভার এলেই শ্রের্ছত বাশেজ্জামোচন পর্ব।

কিব্দু কোথায় ভাকার? বেশ ব্রুক্সাম, বেলা অনেক গড়িয়েছে। প্রচণ্ড কিদেয় পেটের বহিশনাড়ি মোচড় দিক্ছে।

এইভাবেই ছটফট করতে করতে কাটলো আরো অনেকক্ষণ। কতক্ষণ? তা বলতে পারব না। ছড়ি দেখার তো উপায় ছিল না। তবে কয়েক ঘণ্টা তো বটেই।

তারপর আর সহ; কবতে পারলাম না। হাততে হাততে দরজার কাছে পৌছোলাম। পালা খ্ললাম। করিডরে পা দিলাম। কিন্তু তখনও কেউ আমায় বাধা দিল না। কথা বলন না। হ্লিয়ার করল না।

আচন্দ্ৰতে অজানা আতংকে শিউরে
উঠলাম আমি। নামহীন ভয় হিম্নশীতল সাপের মত পে'চিয়ে ধরলা সর্ব অপা। পায়ে-পায়ে আবার আমি ফিরে এলাম হরের মধা। প্রতি মৃহ্তে মনে হতে লালল এই ব্রিফ কোনো বিভীষিকা শ্রীপিমে পড়বে



আমার ওপর-- আমার অধ্যতার স্যোগ মিয়ে মরণ কামড় বসাবে আমার দেহে.....

খরে চুকেই কচিচা খুক্তে বার কর লাম। এতক্ষণ যা পারিনি, নিদার্ণ ভরে এবার তা সম্ভব হল। নিজেই কচি চালা-লাম চোখের বাান্ডেকের ওপর। যা হয় হোক। এই অস্বাভাবিক নীর্বতা আর ঐ অপার্থিব কাত্রানি সহা হয় না।

কিছুক্ণের চেণ্টাতে খুলেও গেল ব্যান্ডেক্স। চোথের ওপর থেকে সরিয়ে দিলাম তুলোর প্রা প্যাড। সরালাম অতি সন্তপ্ণি—কীপা হাতে।

প্রথমটা কিছ্ই দেখতে পেলাম না। ভারপর, যেন ঘসা-কাঁচের মধ্যে দিয়ে দেখতে পেলাম অদ্রেম্থ টেবিলটা। পরক্ষণেই চোথ বন্ধ করে ফেললাম। এত আলো সহা হল না। দীর্ঘদিন অধ্ধকারে থেকে অভ্যমত. ভাই আলোয় চোথ ধাঁধিয়ে গেল।

সে সমসারও স্রাহা হল অচিরে। বেখানে কটি ছিল, তার পাশেই পেলাম একজোড়া কালো চশমা।

চোথে চশমা এ°টে বাইরে এসে কি দেখলাম? অবর্ণনীয় সেই দৃশা। ভাষায় বর্ণনা করা যায় না।

চৌকাঠের বাইরে পা দিরে দেওলাম খাঁ-খাঁ করছে করিজর। দ্রু দ্রু বুকে পা দিলাম পাশের বারান্দায়। সেখানেও কেউ নেই।

হঠাৎ চোথে পড়ল একজন ডান্তারক।
অভ্তভাবে হাঁটছিলেন ভদ্রলোক। পাশের
দরজা ঠেলে পা ঘষতে ঘষতে বেরিরে এসেই
থমকে দাঁড়িয়েছিলেন—বোধ করি আমার
পদশশ শ্বেই। দর্শ ভরে ফ্যাকাশে হয়ে
গিন্দেছিল তাঁর মুখ। তারপরেই ছুটে
পালাতে গিরে হুমড়ি থেরে পড়লেন
দেওরালের ওপর।

এবার আর কোন সন্দেহই রইল না।
ভাজার অন্ধ। হাসপাতালে অন্ধ ভাজার ।
এগিয়ে গোলাম। সন্তপ্ণে হাত দিলাম তার
কাধে। তৎক্ষণাৎ শিউরে উঠে গ্রভিয়ে
উঠলেন ভদ্রনাক—কে কে?

—আমি, বল্লাম আমি। নিজের পরিচয় দিলাম।

—কিন্তু আপনি তো অন্ধ? শ্বধোলেন ভারার।

-- এখন আর নর।

বললেন—গ্রভ লাক। অপারেশান করে আমিই আপনার চোখ ফিরিয়ে দিলাম। কিস্তু হারালাম আমার চোখ।

--আপনি অংধ?

—হ্যা।

—ি ভাবে?

—সব্জ ভারা আর লাল ফ্লঝ্রি

—সর্জে তারা আর লাল ফ্লেঝ্রি দেখে। বিস্থাবিম্ড কঠে প্নরাব্তি ক্রেছিলাম আমি।

শুধু ভান্তরের কাছে নর, তারপরেও আনেকের কাছে শুনেছিলাম সেই একই কাহিনী।

হাসপাতালের প্রত্যেকেই হারিচেছিল দৃশ্টিশন্তি। শ্যারে ওপর দৃশ্টিহীন চোখ মেলে বনেছিল রুগী, খাঁ-খাঁ করছিল করিডর সিণিড়, লন। নার্স, গুরার্ডবির কেউ আসেনি নিজেদের কোয়াটার ছেড়ে। আসার উপার ছিল না। কেননা প্রত্যেকই হারিয়েছিল অম্লানিধি চক্ষরম্ব।

হারিয়েছিল রাতারাতি। তিনরাত আলোর বাজা দেখার পর ভার হওরার সংশা সংশা তারা চোখ খ্লেছে, কিন্তু আর কোন আলো দেখোন। আলোর জগং চির-তরে মছে গেছে তাদের বিন্তু চক্ষ্প্রত্যপোর সামনে থেকে। অধ্য হয়ে গেছে সকলে।

অন্ধ কে হয়নি? রাস্তায় বেরিয়ে দেখেছি সেই একই ভয়বহ দ,শা। দেখেছি যেন যাদ্মশন্ত বলে কলকাতা নগরী অন্ধের নগরীতে পরিণত হয়েছে। রাস্তায় চলমান গাড়ী নেই, ঘোড়া নেই, সাইকেল নেই, রিকসা নেই, বাস নেই, ট্রাম নেই, ট্রাকসি নেই। এখানে-সেখানে রাস্তায় ধারে দ্ব-একটা প্রাইভেট কাব। তাছাড়া বড় রাস্তাগ্রেলা অব্যাভাবিক শব্দেইনি। দ্বাচার কল অব্ধ মান্ব দেওয়ালা ধরে হটিছে অতি কড়ে—মাঝে মাঝে হেচিট খাছে। আবার উঠছে, দ্হাত সামনে প্রসারিত করে পাঘরতে ঘরতে চলেছে অতাকত অসহায়ভাবে।

সারা শহরেই কি একই কান্ড! আমি কি উন্মাদ হয়ে গেলাম? নাকি ভয়াল দ্বঃস্বংশনর ঘোর এখনও কাটোন আমার চোখের সামনে থেকে?

এসপ্ল্যানেডের মোড়ে দেখলাম একটা
টাাকসি রাস্তা ছেড়ে ফটেপাতে উঠে
দোকানের কাঁচের শো-কেসের মধ্যে চ্বুকে
গেছে। প্রচন্ড সংঘর্ষে সামনের দিকটা
দ্মড়ে গেছে—ড্রাইডারের ম্তদেহ বিকৃত
ভাগমায় আটকে রমেছে স্টিয়ারিং হ্ইলের
সামনে। ধাক্কার চোটে আটকে গেছে গাড়ীর
দরজাগ্লো। পেছনের সিটে ভরাত মুথে
বসে একজন যুবক আর একজন যুবতী।
দর্জনেই অধ্য

বাকে দেখছি রাশতার, সেই অবধ।
স্টেটসমান বিকিডংরে উঠেছি। মেশিন ববধ।
মৃতপ্রেরীর মত নিশ্তবধ অত বড় বাড়ীটা।
গলা শ্নিকরে গিয়েছিল আমার। আডংক
টিপ টিপ করছিল বকে। কলপনাই করতে
পারছিলাম না এ রকম অসম্ভব কাম্ড কি
করে সম্ভব হল।

এমন সমরে শ্নসাম একটা নতুন শব্দ।
খটা-খট, খটা-খট! কে যেন এক
নাগাড়ে টাইশ করে চলেছে ওপর তলার।
তবে কি চক্ষ্মান বাজি এখনও আছে
শহরে?

এক-এক লাফে দুটো তিনটে সিণ্ড্ টপকে পৌছেছিলাম তিনতলার। শব্দের উৎস অনুসরণ করে দরজা ঠেলে ত্রেছিলাম ছোটু একটা ঘরে। দেখেছিলাম জানালার সামনে একটা টেনিলের রাখা টাইপ-রাইটারে ঝড়ের মত আঙ্ল চালিরে চলে-ছেন এক বালি।

হাঁপাতে হাঁপাতে পাশে গিরে দাঁড়িরে-ছিলাম আমি। দাধিরেছিলাম আকুল কন্ঠে —আপনি.....অপনি দেখতে পান?

আচমকা শতন্থ হয়েছিল খটাখট খটাখট যালিক শন্দ। ভদুলোক কিন্তু মুখ তোলেন নি। প্লকহীন চোখে জানলা পুথে বাইরে তাকিয়ে বলেছিলেন অস্বাভাবিক শাস্ত হাঠ —না।

—তবে টাইপ করছেন কিভাবে? —অভ্যাসের বশে। কিন্তু আপনি ভে;

—অভ্যাসের বলে। কিন্তু আপান কে; আপান অংশ হননি! কোখার ছিলেন; কিভাবে রেহাই পেলেন?

আবেগ থরথর কঠে শ্নিরেছিলার আমার কাহিনী। শ্নে জ্বান হেসে দ্দি: হ'ন চোথ মেলে ভদ্রলাক শ্নিরেছিলের সেই একই কাহিনী। যে কাহিনী শ্নেছি হাসপাতালে, শ্নেছি রাস্তার প্রত্যেকঃ কাছে।

লাল ফ্লাক্রি আর সব্জ জার দেখে অথ হরে গেছে সারা পৃথিবীর মান্ত। টেলিপ্রিন্টারে সেই খবরই আসত শ্রু হরেছিল। পৃথিবীর কোণাও কেট আর কিছা দেখতে পাচ্ছে না।

তারপরেই একে একে শতব্দ হয়ে গেল সারা প্থিবীবাাপী যোগাযোগ বাক্ষা। নীরব হল রেভিও, টেলিফোন, টেলিপ্রিন্টার। কলকজ্ঞা চালাবে কে? সবাই তো অধ্ধ!

চাণ্ডলাকর সেই কাহিনীই নিছক কও'বেরে তড়েনায় অভ্যাসবশে টাইপ-রাইটারে লিখে রাথছিলেন সাংবাদিক ওদ-লোক। চক্ষ্ম হারিয়েও তিনি কত'বা ভোলেননি। যদি কারও কাজে লাগে, তাই প্রিবীর শেষ সংবাদ ধরে রাথছিলেন কাগজের প্রতায়।

শেষ সংবাদই বটে। মান্যে জ্ঞাতির শেষ!
সাংবাদিক ভদ্রলোকের টাইপ-করা সেই
শেষ রিপোটের একটা কপি নিয়ে পথে বেরিয়ে আমি দেখেছিলামু সেই শেষ দংশা।

দেখেছিলাম, অতকিতে কোথেকে কাতারে কাতারে কিম্ভুতকিমাকার কতকগ্লো জীব চাকে পড়েছে শহরের মধ্যে।

দ্র থেকে জীবই মনে হয়েছিল। কিন্তু কাছাকাছি আসতেই শিহরি: অগতরে দেথেছিলাম তাদেরই যাদের একজনর কুপার চোথ হারিয়েও চোথ ফিরে পেয়েছি আমি।

চলমান গাছ! চলমান পাছেরা হেলেপ্রেল ছড়িদে পড়ছে শহরের পথেখাটে।
আর, সামনে যে কোনো অধ্য মান্র পড়তে,
চাব্কের মত শান্ডের অব্যর্থ আঘাতে
শা্ইরে দিচ্ছে তাকে জামির এপর। ভরাবহ
আতা চাংকারে বিদীশ হার যাজ্যে নিস্তঞ্জনগরের ব্ক—কিল্ডু কেউ ছা্টে আসছে না
তাকে উধ্যর করতে।

চলমান গাছেরা কিন্তু বাড়ীর ওপর তলায় উঠছে না। সদর দরজার সামনে গিলে দাড়াচছে। অংশ মান্বেরা ক্ষিদের ভাড়নায় যেমনি পা দিছে বাইরে, অমনি সাঁই শব্দে বাতাস কেটে নেমে আসছে মৃত্যু-শব্দ অধিকাংশ হতভাগ্য আর ভূমিশবা ছেড়ে উঠছে না।

দার্ণ ভরে আমি একটা প্রাইভেট কারে গিরে উঠেছিলাম। প্রতিটা কাঁচ ভালভাবে এ'টে দিরে গাড়ী চালিরেছিলাম বেদিকে দ'টোম বাম।

গাড়ীর শব্দে অপাধিব ভণিগার সামনে ছটে আসছিল চলমান গাছের। বিবভরা শুড় হেনেছিল কাঁচ লক্ষা কর। কিন্তু আক্রমণ তাদের বার্থ হরেছে। পিচা কিরির মত বিষের ধারা ছিটকে পড়েছে উইণ্ড-কুটন--ওরাইপার চালা, করে তা পরিব্লার করেছি। আর একেবেকে ভরাবহ দানোর মত চলমান গাছেদের পাশ কাটিরে এগিরে গিয়েছি ব্লাবোর্ল রোডের দিকে।

আর, তারপরেই দেখেছি রাস্তা বন্ধ।
কি এক অলোকিক উপারে সেখানকার
চলমান গাছের। আগেই খবর পেরে গেছে
আমি আসছি সেই দিকে। তাই পাশাপাশি
দাঁড়িয়ে তারা রাস্তা অবরোধ করেছে।
একটা কুকুরেরও ক্ষমতা নেই তাদের সেই
বহে ডেদ করার।

গাড়ী ধারু মেরে পথ করে নেওয়াও ব্নিধ্যানের কাজ নয়। সংঘর্ষে কাঁচ ভেঙেগ গোলেই আমি আর নিরাপদ নই। সবেগে গাড়ী ঘ্রিরে নিয়েছিলাম। কিল্ডু সভয়ে লক্ষা করছিলাম পেছনকার রাশ্ডাও বন্ধ। চলামন গাছেরা হেলভে-দ্লিতে এসে দাড়িয়েছে পাশাপাশি। সে পথও বন্ধ।

আমি তথ্ন একটা তেরতলা বাড়ীর সামনে। চকিতে দরজা খনেে লাফিরে পড়েছলাম রাস্তার এবং চক্ষের পলকে সেধিয়ে গিয়েছিলাম সেই বাড়ীর ওপর জলায়।

সেখান থেকেই লিখছি এই কাহিনী।
কেন লিখছি তা জানি না। কেননা, এ কাহিনী
পড়বার মত মান্ষ কি আর আছে? আমার
সামনেই রমেছে সাংবাদিক ভদুলোকের
টাইপ করা বিকৃতি। শেষ বিকৃতি। কিল্তু
তব্ও তা শেষ নয়। কেননা, তিনি শুধে
লিপিবন্ধ করেছেন একটা মাত্র সতা। মান্য
অনৈস্থিকি আলো দেখে অন্ধ হার গৈছে।
এর বেশি আর কিভ্ তিনি জানেন না। জান-বর উপারও ছিল না। কেননা নিজেও তিনি
অন্ধ।

কিন্তু আমি তা নই। আমি স্বচক্ষে দেখছি আমাদের শেষ পরিণতি। মান্য জাতির শেষ পরিণতি। কেননা, সংপরি-ক্ষিপ্তভাবে 'এরা' হানা দিয়েছে আমাদের এই গ্রহে।

হারঁ, 'এরা' বলতে আমি চলমান গাছেদেবই বোঝাছি। 'এদের' আমরা নিছক
গাছ বলে এডদিন অবজ্ঞা করে এসেছি।
সেই স্থোগে প্থিবী ছেয়ে ফেলেছে এরা।
সাপের মত বিবভরা শা্ড হেনে অংধকার
করেছে যাকে পেরেছে সামনে।

এই কেল ওদের আক্রমণের প্রথম পর্ব।
মান্র তথনও বোঝেনি কি ভ্রানক দ্রেগি
ঘনিরে আসছে তাদের শিরে। দেশে-দেশে
যথন বল্ফার রেবারেমি, ভিরেতনাম আর
স্কেজ প্রচন্ড লড়াই, পিকিংরে হানাহানি,
ঠিক তথনি মূর্খ মানবজাতিকে চমক্তি
করে 'ওরা' তারাবাজী দেখাতে বসলো কালো
আক্রাণের ব্বেক।

উদ্দেশ্য ছিল একটিই। সে উদ্দেশ্য মান্যকে অধ্য করে দেওয়া। কারণ চোথই মানুষের শ্রেষ্ঠ প্রতাপা। চোৎ আছে বলেই আমরা জ্ঞানে-বিজ্ঞানে, সভ্যতার এত অগ্রসর হর্মেছ। চোখ ছাড়া আমরা বাঁচতে জানি না, শিখিন। তাই, এই ম্ল্যুবান প্রত্যুগটিকেই করে পৃথিবী দখলের আয়োজন করেছে 'ওরা'—ভিন্গ্রহের অধিবাসীরা। মানুষের অলক্ষিতে তারা বীজের আকারে ছড়িয়ে পড়েছে সারা পরিথবীতে। শ্যামলা ধরিতীর উবরি বক্ষ শোষণ করে মাথা চাড়া দিয়েছে, বড় হয়েছে। তারপর, মানুষের অজ্ঞাত কোনো অলোকিক উপায়ে জানিয়ে দিয়েছে তাদের জ্ঞাতিদের যে, সময় হয়েছে। সময় হয়েছে আক্রমণের চরম পর্যায় শরে করার—নিবোধ পৃথিবী-তহীদের চোখের সামনে থেকে অকস্মাৎ আলোর দুনিয়া নিভিয়ে দেওয়ার।

আর, তাই আচন্বিতে ভারা সব্জ ভারকা আর লাল ফলেঝ্রির এমন মারা-থাক রণ্মির বেড়াজাল রচনা করেছে সারা প্রিবীর আকাশ ঘিরে বে, রাতের আকাশে আশ্চর্য স্কেদর সেই দৃশা যে দেখেছে ভারই চোথের স্নায়, শিরা-উপশিরা, অসাড়, অবশ হয়ে গেছে চিরকালের মত। ফলে রাভারাভি অসহার হয়ে গেছে মান্য। কলকারথানা বন্ধ হয়ে গেছে, সভাভা আচ-মকা থমকে দাঁড়িয়ে গেছে।

আর, তার পরেই আরম্ভ হয়েছে ক্ষ্যত জনতার হল্লা। নিজেদের মধ্যে হানাহানি করেছে তারা এক ট্করেরা কি এককণা খাবারের জনে। দলে দলে রাস্তার নেমে এসেছে অস্থ্যান্য। অধিকাংশই প্রাণ হারিয়েছে চলমান গাছর্পী ভিন্তাহী হানাদারদের কবলো। বারা ভাগাবলে বে'চে পেছে, তারা হাতাড় হাতড়ে লঠেপাট চালিয়েছে দেলিনে দোকনে। খাবার থেয়েছে, ছড়িয়েছে ছিনিয়ে নিয়েছে—

তারপর একে একে ঢলে পড়েছে মৃত্যুর কোলে চলমান গাছেদের আক্রমণে।

এক হৃণ্ডা ধরে এই কাল্ডই দেখেছি
আমি তেরতলায় বলে। থাবার আর পানীয়
জলের অভাব নেই আয়ায়। টালার টালক
থেকে বলিও জল আসা কথ হরে গেছে,
ইলেকট্রিসিটি সাংলাই থেকে বিদাংও
আসছে না। সংখ্যা হলেই নিম্ছিন্ত অংধকার
বিরাজ করে কলকাতা শহরে। আর, সেই
নিবিড় অমানিশার মধ্যে স্বছলেদ পাহারা
দেয় আর শিকার অল্বেখন করে চলমান
গাছেরা। তাদের চোল নেই, কিন্তু আশ্চর্ম
অন্ভূতিবলে তারা সব শ্নতে পায়,
দেখতে পায়। তাই, তারা চক্কুয়ান
মান্ধের চেকে অনেক উন্লত।

আলোহীন খাদাহীন জলহীন এই শহরে দীর্ঘদিন আমি বে'চে থাকব। কেননা আমার চোখ আছে। সংযোগমন্ত রাস্তার গিয়ে দোকান ভেঙে খাবার-দাবার, জল, মোমবাতি সবই নিয়ে আসছি। রাতে মোম-বাতি ৰুদালিয়ে লিখছি এই কাহিনী। মনে হচ্ছে যেন মহাশ্মশানে বসে রয়েছি। ৰবংশ শতাবদীর স্কুসন্জ্ঞত কলকাতা নগরীর একি ভয়াবহ রূপ! কোথাও এতটাকু শব্দ নেই, সমস্ত নিথর নিস্ত্রখ। গোটা পরিথবী-গ্রহে বোধকরি আমি শ্বধ্ব দীঘদিন বেংচে থাকব চক্ষু নিয়ে—দিন গুনব সেই ভয়াবহ দিনের, যেদিন মহাশ্ন্য থেকে নেমে আসকে বিচিত্র আকারের গ্রহমানব। পি**ল** পি**ল** করে প্রথিবীর জনশ্ন। শহরণালিতে নেমে পড়বে তারাই, যারা এই সৌরজগভের তৃতীয় গ্রহর বহু, শুরে থেকেও জয় করেছে প্রথিবীকে কোনো কিছু, ধরংস না করেই, যারা বহু পূর্বে চলমান গাছর্পী সশস্ত বাহিনী পাঠিকে সংবাদ সংগ্রহ করেছে মানব-কুলের পর পর তিনরতে তারাবাজী দেখিয়ে হাজার হাজার বছরের প্রোনো সভাতাকে রাতারাতি মুছে দিয়েছে প্থিবীর

তার। এসে দেখবে এক অতি প্রাচীন, অতি উল্লভ সভাতার সদাম্ভ শ্নপ্রশ কাঠামো, দেখবে কোটি কোটি ইভঙ্গত বিক্ষিণ্ড নরকংকাল।

ধু ধ্ সেই অমণান-প্থিবীর মধো ধ্কধ্ক করবে শংধ্ একটি হাদয়। সে আমার হাদ্য!

মিহিজামের স্বনামধন্য ডাঃ পরেশ বন্দ্যোপাধ্যায়ের মহান আদর্শে এবং অনপ্রাণিত হইয়া

ডাঃ প্রণব বন্দ্যোপাধ্যায়

লিখিত পারিবারিক চিকিৎসার সর্বমেষ্ঠ ও সবচেয়ে সহজ বই

আধ্যনিক চিকিৎসা



ি বছন্দিন পরে আবার .ভাই দ্র্টিকে দেখা গোল। আবিভাবের মৃতই দেখিতে পেলাম, গোলদীঘি কফি-হাউনের কোণ ক্রেনে বনে।

আমিও ওদের কোল ঘে'বে পাশের টেনিলে গিয়ে বসেছি। আমাকে দেখে হর্ষ-বর্ধ'ন—ঠিক হর্ষধর্নি নয়—অর্ধ'পরিচিতের মতই অভার্থনা করল—এই বে!

বলেই আবার ভাইরের সপো মশগলে হয়ে গেল গদেপ।

অনেকদিন পরে দেখা। মনে হল,
হলতো আমার চিনতে পারেনি ঠিক। কিন্বা
হলতো হাড়ে হাড়ে চিনেই—? নইলে শ্বে,
এই যে—এই শ্বুক সম্ভাষণ, এত কম
ভাষণ নিতাশতই হর্ষবর্ধন-বির্বধ, কিন্তু
ও নিরে আর মাথা না ঘামিরে নিজের কফির
পেলালার মন দিলাম। আর কান দিলাম
ওদের কথার...।

'ব্ৰুলি গোৰরা, এ রকমের আরেকটা কলি-হাউস আছে চৌরণগাঁর কাজে। কিন্তু সাবধান, সেখানে ধেন ভূলেও কখনো যাসনে—।'

'কেন, যাব না কেন?' কান খাড়া করা ভাই মাথা চাড়া দিরেছে ঃ

'কি হয় গেলে?'

'গৈছিস কি মরেছিস। এ কফি-হাউস তো ভালো। এখানে তো খালি বাঙালী। বাঙালীর ছেলেমেরেরাই আসে কেবল। নিতাশত নিরাপদ। কিশ্চু সেখানে—বাবা, যা মারাখ্যক!

বলে ভারায়ক মুখখানা ভাইয়ের চোখের ওপর তিনি রাখেন।

'মারাত্মক কি শ্রনি?'

'মেমরা আনে সেখানে।' হর্ষবর্ধন বিশদ হন--'মেমরা দেখা দেয়।'

দিলেই বা। মেম তো আর বাঘ নর যে গিলে ফেলবে!

'বাধের বেশী। না গিলেই হজম করে ফেলতে পারে। তবে আর বলছি কি।... সেদিন একটা মেমের পালার পড়েছিলাম। ধরেছিল আযায়।'

'কি করেছিলে ভূমি?'

াঁকছে, না। সবেমাতে সেখানে চুকে
একটা খালি জায়গা পোরে বসেছি। অতবড়
ছলটা গিসগিস করছে মানুষে। বাঙালী
পাঞ্চাবী, চিনেম্যান সাহেব মেমে ভর্তি।
ছলের মাঝামাঝি একটা খাম খেখে শুধ্ দুটি মাত চেয়ার খালি। একটি ছোটু টেবিল
নিয়ে—তারই একটিতে গিরে আমি বসেছি।
একট্ পারেই একটা মেম এসে অমা
চেমারটার বসল।

'ও এই ধরা' সে তোমাকে ধরবার জন্যে নয় গো দাদা, বসবার আর জায়গা ছিল না বলেই—' বলতে যায় গোবর্ধন। নিউজন দাদাকৈ লৈ ধত বোর মধোই ধরে না।

'শোন না আগে। সবটা শোন তো।'
হয়বধনি বাধা দেন—'মেমটা বসেই না
আমাকে বলল—'গড়ে ইডনিং মিণ্টার।'
আমি তার জবাব দিল্ম—'গড়ে নাইট মিসেস।'

'তুমি গড়ে নাইট ফলতে গেলে কেন? গড়ে নাইট তো বলে লোকে বিদায় দেবার

"তথন কি আর ইন্ডনিং ছিল রে? সম্পো উংরে গেছে কতক্ষণ! আটটা বাকে প্রায়। আমি শ্বা মেঘটার ভূল শ্বেরে দিরেছি। কিশ্ব বলতে কি, আমি অবাক হরেছি বেশ। মেমরাও ইংরেজিতে ভূল করে তাহলো। আশ্চবি!

'তারপর? তারপর?'

'তারপর মেমটা কি ফেন বলদ ইংরেজিতে, তার একটা কথাও যদি আমি ক-মতে পেরেছি'

'নিশ্চয় থাব ভুল ইংরিজি:'

ক্যা জানে। তারপরে করল কি মেয়েটা। তার জ্যানিটি বাগ থেকে একটা নোটবই বের করল আর ছোটু একটা পেন-সিল। কি যেন লিখদ কিছুক্ষণ ধরে, তার-পরে দেখাল সেটা আমায়।

'তাম পড়তে পারলে?'

'পারব না কেন, ইংরিজি তো নয়।' পেয়ালা।'

'পেরা**গা? পে**রালা **আ**বার **কোন্** পেশী ভাষা দাদা?'

'এই পেরালারে বোকা।' ছর্ষবর্ধন কফির পাতটা তুলে ধরেন—'এই বাংলা কাপ-ডিস। এই না এ'কে মেরেটা আমার দিকে তাকিয়ে রইল। বাকে কলে সপ্রদন নেতে।'

'ডুমি কি করলে?'

'আমি ব্রুজণাম মেমটা এক পেরালা কফি থেতে চাইছে। আমিও আর দিবর্দ্তি না করে বেয়ারাকে কফি আনতে বললাম--দ্ব পাত্তর্। আমাদের দ্বেশনের জন্যে।'

'মেমটা দেখতে কেমন?'

'মেম--মেম। আবার কেমন? মেমরা যেমন হয়ে থাকে। তবে বমেস বেশি নর, এই প'চিশ কৈ ছান্বিশ। বাঙালীর মেনের মত অত সংক্ষর না ইলেও দেখতে ভালোই বলতে হবে।'

তাই বলো!' গোবধনি সমকদারের মতন ঘাড় নাড়েঃ প্রেম করার মত মেম? তা বলতে হয়।'

গ্ৰহ্ণ বে বলিক! তোর বেলীদ বদি জানতে পায়—! ভারপর শোন্। আমি ভাবলাম একটা মেয়েকে কি দুখু শুখু কফি খাওরানো তিক হবে? সেটা রেন কেমন দেখার। তাই আমি ওর খাতাটা নিরে একটা পাতার টোস্টের মতন কতক-গুলো অকিলাম। এ'কে দেখালাম ওরে, দেখে সে বলল—ইরেসিয়েস্। থাাওক।'

'ইরেসিরেস, মানে?' গোবরা জানতে

শানে, তুই যা করছিল এখন। হা।
দাদা জানায়—'ইয়েল মানে জানিসনে বোকা?
তারি জবোল, ব্রেকচিল এখন? আর থ্যাক্
মানে—'

'জানি জানি। বলতে হবে না আর। তাহলে মেমটা তোমার কথার হাঁহাঁ করে উঠল বলো?'

করবে না? তারপর মেমটা করল কি, এক জোড়া ভিম এপেক দেখাল আমায়। বামলমে টোসটের সংগ্য ভিম-সেধ চাইছে। তাও তখন আনতে বললাম বেশারাকে।

'বাঃ বেশ তো!' বলে গোবরা স্বৃং করে জিভের ঝোল টানে।

'মেমের কথা শানে যে তোর জিও দিয়ে জল পড়ছে দেখছি।'

'মেম নয়। মেমলেটের কথা ভেরে দাদা। মেমটা মেমলেট খেতে চাইল না?'

'ওর ডিম পাড়বার পর তারপর আমি
থাতাটা নিলাম। নিয়ে এক ক্লেট কাজ্ববাদাম আঁকলাম। আর ও আঁকলো—কতকগ্লো চাপ্টা চাপ্টা কি যেন। মনে হল
পাপড়ভাজা। কিব্তু বেয়ারাকে জিজেস
করার সে বললে পাপড়ভাজা সেখানে মেলে
না। আল্ভাজা হতে পারে। সে আল্ভাজা নিয়ে এলো। আর কাজ্ব-বাদামও।
আল্ভাজা পেয়ে মেয়েটাকে খ্শী হতে
দেখে তথন ব্রুলাম যে সে আল্ভাজাই
চেয়েছিল।'

'আল্ভাজা আর পাঁপড়ভাজার কি এক চেছারা?' গোবর নিখুত চিত্র-সমা-লোচকের ন্যায় খু'ংখু'ং করে। 'দুটোর আকার কি একরকম?'

ভা কি হয় রে? কিস্কু ছবি দেখে কিছে বোঝবার গো নেই। এই যে মণাই, আপনাকেই বলছি—হর্ষণর্থন সন্বোধন করেন আমায়—আঁকার বিষয়ে আর্পনিকছ; জানেন? বলুন ভো, আঁকতে গেলে এমনটা হয় কেন? পাণড়ভাজার সংগে আলাভাজা এমন মিলে যায় কেন?

অকৈর বেলায় যেমন একেক সময় মিলে যায় না? তেমনি আর কি। আবার অকৈর মতই অনেক সময় মেলেও না ফের। ভালো অকিরে হলে তবেই মেলাতে পারে। এমন ই'দ্রে অকিবে যে মনে হবে যেন হাতী। আবার উটপাখীকে মনে হবে ম্রাগ—ঐথেনেই আকার বাহাদ্রি।'



িক করে তা হয়ে থাকে?' দুই ভাই कमरुका भासास। पर्कल्पत भरूष्य छरवान

রেস দেখা দেয়।

_{'বুকের} কেরামতি মশাই। আঁকাতো হুছুই না। আঁকিয়ে তো এক ট্করো _{গিজে} ছোটু করে একট্রখানি **আঁকে। যারা** _{ই করে} তারাই **হচ্ছে পুস্তাদ। তারাই** _{থো} থাটিয়ে দরকারমাফিক সেইটাকে র্গাড়য়ে কমিয়ে যে ছবিটি চাই তার মতন ক বানিয়ে দেয়। ধর্ন, আপনি লিচু 'কেছেন। কিন্তু আপনার দরকার fizicলর। রকমেকার সেই লিচুকেই বড় _{তরে বা}ড়িয়ে কাঁঠাল বানিয়ে তার রুকে ন্নাতে পারে। একই অক্রিন ছোট করলেই লা আর বড় করলেই কাঁঠাল।'

'ছোট করলেই লিচু আর বড় করলে ্ঠাল? বারে!'—গোবরা **অবাক হয়।**

ভাহলে আমি যে কাজ্ব-বাদাম a কৈছিলাম, রকওয়া**লা ইচ্ছে করলে সেই** ছবির থেকেই কুমড়োর ঝাড়ি বানাতে শারত ?'

'পারতই তো ৷'

'যাগু কে', আমাদের িশংপ-তাত্তিক আলোচনায় গোবর্ধন বাধা দেয়।—'তার-পর কি হল বলো না দাদা।'

'ভারপর অনেক কিছ্ই খেলাম আমরা, একটিও কথা না বলে--শ্ব্ব কেবল ছবি ^{দালিরে।} প্রায় টাকা পনেরর মত থাওয়া ংল। তারপর বেয়ারা বিল নিয়ে এ**লে আমি** একটা একশ টাকার নোট দিয়েছি আর সে ভাঙিয়ে আনতে গেছে এমন সময় দেখলাম কি- মেরেট। একমনে কি যেন খকছে তথনো!'

'টে'ছার চৈহারা বুলিঃ গোবরার মূঞ বেয়াড়া হা**সি দে**খা দেয়।

ার্ড চেহারা আঁকা কোন মেমের ক্ষা না। ছোট্ একট্র খাতার পাতায়। োর মত রোগা পাতলা হলেও হয়তে। হত। আঁকা শেষ করে ছবিখানা সে আমার হাতে দিল। দিয়ে একট্মানি—যাকে বলে সলজ্জ शींभ शभन।

ওর নিজের ছবি ব্রিয়া?

^{'না}, দেখলাম একটা খাট এ'কেছে সে।' 'খাট ? খাট কেন? খাট কি কোন ^{খাবার জিনিস} শোবার তো জানি!' গোবরা অবাক হয়, ও ব্রুঝেছি, তোমাকে আরো ^{খাটাবার} মতলব ছিল মেয়েটার।'

'আমি কি মশারি যে আমায় খাটাবে? ্রত সোজা নয়।' হর্ষবর্ধন আপত্তি করেন। ^{কিন্}তু কেন যে সে খাট আঁকলো তাই আমি অবাক হয়ে ভাবতে লাগলাম।'

্কি রকম খাট? দ্বন্ধফেন্নিভ?' আমি **भ**ूशाई।

'বেশ বড় খাট। খাট যেমন হয়ে থাকে। ^{কিণ্}তু সেজনো না, আমার তাক্ লাগলো ^{এই ভেবে} যে, আমি যে খাটের জম্মদাতা, কাঠের বাবসা যে আমাদের, তা সেই নেয়েটা টের পেলে কি করে? এর রহস্য আমি ভাই এখনো অবধি ব্যতে পারিনি। ^ঘ হয়ে রয়েছি সেই থেকে—রহস্যের **থ**ই শা পেয়ে, ব্ৰচেন মশাই।'

सामगीतंक्यी जातामञ्चत्र वटन्याभावात्त्रत

कालताां व ४ यशनगती ६

যাদকেরী ত্মান্তের মন ত্এক পশলা বৃদ্ধি ২য়৷ দীপার প্রেম ২্ স্ধাংশরেশন ঘোষ

ফাসিমণ্ডথেকে এ সমাজবিরোধী এ

অমরেন্দ্রকুমার ঘোষ

অগ্নিয়ুগের নায়ক 🥴 স্বর্গাখেলনা 🤫

স্ধাংশ্রঞ্জন ঘোষ

নকশালবাড়ি ব্যাভিচারিণী

ट्यादबन दगाश्चीन অনাহত আহুতি

٥٥, ¢

নিমিতা ৩ মানসকন্যা ২॥ क्रभर्गा २॥ जन्द-मन २

আশাপ্রণা দেবী শ্বিক্তীয় অধ্যায় ৩, মুখৰৰাতি 🗢 যাহা চাই ভাছা ৩, মায়ালপশি ২॥

জ্যোতি বস্কু জবাৰ দাও ৪ बर्द्स्भी

প্রেমেন্দ্র মিত্র ক্লাবের নাম কুমতি জেগে থাকে প্রেম ৰহিংবাসৰ

শ্যামল গ্'শ্ড নৰর|গ ٥. वस्यत्रम মানিক বন্দ্যোপাধ্যায় সহর্বাসের ইতিক্থা

দীপক চৌধ্রী यत्नत्र यद्या यन ०

रेमनकानम भूरभाभाषात বিয়ের পরে ২্ गुन्हें अनामीक श्

রাজীরাও সেন তব, বিহৎগ ৩

निनमात শ্ভবিৰাহ ২ জ্যোতিবিন্দ্ৰ নন্দৰী হরিণ মন ২

মাও সে-ত্রং একটি নাম পিকিং থেকে বলছি

32, \$0,

۲,

রাজা আর নেই রাজনীতির দাবাখেলা

উপেক্ষিত বসন্ত ৫

নীহাররঞ্জন গতে **উ**দয় দিগন্ত সু্য মহল

निषयम् क्कांम गान्धात ४ खेवनी ७ ৬⁻ পভিন্**সংগ তৰ** ৬্ দরবারী ৩॥ নটিনী ৩০ খুম ভাঙার রাড ৩০ ইমনকল্যাণ ৩০ হেমণ্ডিকা ৩, ভুৱা অনুৱাণে ৩, প্ৰপধন, ২॥ ছল্ছ বসন্ত ২,

বহর্পী ष्ट्राह्मबाशात्मन्न व्यक्त २,

रेगालग प रगाभ्रीन स्वनाम शा

ভূলি-ক্লাম : ১, কলেজ রো, কলকাতা-৯ ফোন : ৩৪-৮১৮০



দলটা হ্রম্ড করে স্টেশনে নেমে পড়ল এবং এদিক ওদিক ছোটাছটি করে দেটখনের বাইরে লাফিরে পড়ল। দেটখনের বছবাব হাসলেন। নিডা এমন হছে। তিনি লানতেন এই দলটা চাল চোরাচালানের দল। টোন টোন এই দলটা চাল চোরাচালানের দল। টোন টোন এই দলটা বাকেল দেখে ফেলছে স্তরাং ছোটো ছোটো বতক্ষণ হোটো এবং বিমণাও দেখাদেখি ছ্টিছল। সেন্তন এই কালে, সে হাররে বৌর পিছনে পিছনে ছুটছে। অভিনয়টা সে ধরতে পারে নি।

তথন বেলা দুপুর। তথন হাটে সবে দুর থেকে করলা এসেছে, ঝিছে এসেছে, হাটে গরু মহিব এসেছে—রাস্তায় বড় ভিড়। বড় বড় সব ট্রাক দড়ি করনে আছে রাস্তার উপর। শহরের জন্ম সন্তি বোঝাই হচ্ছে— এবং বড় সব ট্রাকে সন্তির নীচে মিহি চাল যাছে।

বিমলা দৌড়াছিল। হাররে বৌ ডাকল, আ বিমলা কৈ আর যাস। ইবারে ইটু থাম। বিমলা কলল, পুলিশে ধরলে।

হার্র বৌবলল, আ ল তর বে কথা। নিতাইর বাপ বাব্গ খুশী করতে গেছে।

—তবে স্টেশনে তোরা সকলে ছুটলি জ্যান?

—দ্যাথাতে হয় না ল, দ্যাথাতে হয়। বাব্রা দাঁড়াইয়া থাকেন। অগ করনের কিছ, নাই বেন, অবলা জীবের মত ভান কইর। থাকে, যাত্রা দ্যাথছস্ বিমলা? কেস্ট যাত্রা।

বিমলা এবার দলটকে দেখল। সব একটা ৰছ ভাঙা বাড়ীর সামনে জড় হচ্ছে। বিমলা বলল দেখছি।

— ঐ যাত্রার সং। আমরা সং করলাম।

বাবারা দাঁড়াইলা থাকল—অবলা জীব সব

ইট্টা যাইতেছে, আমরা কি করতে পার।
নিতাইর বাপের লগে সলাপরামশা কইরাই
স্বটা করছে।

বিমলা দেখল এই ভাঙা বাড়ীটার পাশে বড় একটা আমলিক প্রছ। গাছে কোন ফল নেই। গাছটা সামানা ছায়া দিছিল। বিমলা এই ছায়ার নীচে বসল। দলে ওকে নিয়ে আঠার জন। একমান্ত নিতাইর বাপ প্রেছ এবং সেই বাব্র ডান হাত। দলের ছোয়া।

নিতাইর বাপ সকলকেই কেমন শাসনের গলার বলল, এখানে বস! কেউ কোথাও বাবে না। একট, জিরিয়ে নাও সকলে। আজ হাটবার, তোমরা ইচ্ছা করলে কিছু, কেনা-কাটা করে খেয়ে নিতে পরে। আমরা রাত দশটায় ট্রেন ধরব। বড়বাব বলেছে তথ্য চক্রবত মিশাইর দলের ডিউটি—ওরা লাল-গোলা থেকে আসবে।

নিতাইর বাপ আর কিছু বলল না। সে হাটবার বলেই হাটে হ্রতে ফরতে চলে গলে। বিমলা এখান থেকে স্টেশনের মাল-গুদাম দেখতে পাচ্ছে। বড় বড় খাঁচার মূরণা। একদ হাজার মরেগা খাঁচার ভিতর। এইসর মুরগা শহরে চালান হচ্ছে। একটা মানকে পরেন লালা মাখার পালা চুল—মান্যটা মুরগার বাড়িগুলার ভিতর খাবার ফেলে দিছে। মুরগাগুলোর ভিতর খাবার ফেলে দিছে। মুরগাগুলো মাঝে মাঝে বড় দেশা চাংকার করিছল বিমলা এখানে বসে শ্রুতে পাচ্ছে। ট্রেন করে রাত জেগে আসতে হারা বড় পাচ্ছল—এবং আমলকি গাছের ছারা বড় ঠাডা—বিমলা সামান্য সময়ের জন্য চোখ বড়জা।

গঙ্গের মত এই জায়গার জেলার বঙ হাট ঃ হাটের ভিতর মানুষের শব্দ গম গম করছিল। দৃপত্র বলে রোদের তাপ ভয়•কর। এবং দীঘদিন থেকে বৃদ্ধি হচ্ছে না। শীঙ পড়ার আগে এ**কবার এ অঞ্**লে বুলিট হয়েছে, তারপর থেকে বড় মাঠের ভিতর বুজিটর জনা সব কৃষকদের হাহাকার ভেসে বেড়া চ্ছল। সাভরাং অভাব অন্টনের জন। চাষা ঘান্যেরা শেষ সম্বল **ম্রগার আশ্ডা** পর্যান্ত বেচে দিচ্ছে। গর্ম বাছরে বলতে আর চাষার ঘরে কিছা নেই। অনটনের জনা গ্রা পদের শীর্ণ গর, বাছার নিকে হাটে এসেছে। গাই গর বলদের হাট পার হ**লে যোকের** এবং মেষের হাউ—নিভারের বাপ হাটটা ঘ্রে ফিরে দেখছিল-এবং বাজারে চালের দাম কত আর মহা**জনরাই বা ওদের খেকে দাম** কত নিচ্ছে—নিতায়ের বাপ হে'টে হে'টে সব যাচাই করে নিচ্ছিল।

বিমলা কিসের শব্দে চোখ থলে জাকাল

- দেখল একটা আমেলকি ঠিক ওর পারের
কাছে পড়ে আছে। সে আমলকিটা তুলে
তাড়াতাড়ি অচিলে বেধে নিল। বাপ
নিশাপের কথা মনে পড়াছে এবং ছাগলটার
কথা মনে পড়াছল বিমলার। ছাগলটা আজ্ব কাল পরশ্ বাজা দেবে। বাপ নিশাভ অলস
প্রকৃতির মান্য। স্তরাং ওর ভাড়াতাড়ি
চাল নিয়ে জেন ওঠে বাড়া ফেরা দরকার।
সে ডাক্ল, অ বোঁ।

হার্র বৌ জিলিপি কিনে এনেছিল হাট থেকে। সে বাড়াটার ভাঙা সিডিতে বসে জিলিপি খাছিল। একটা ভিলিপি উঠে এনে বিমলার হাতে দিল। এবং পালে বনে বলল, ভাকলি ক্যান?

-- चारत ठाम किर्माद कथम?

—ভর দ্যাখতে হইব না। নিতাইর বাপ সব ঠিক করব।

—আমার মণটা ভাল না বৌ।

—ক্যান সেই জন্দর লোকের কথা যনে পড়ছে।

বিমলা ধ্ব ধ্ব ফেলল। আর সংগে সংগ মনে হল সিংহের দুই চোধ বেন—খেলা দেখানো বাকি—চোধে নীল রংদের উল্ল_বল এক আন্তা। তীক্ষা রোদের ডাপে চোথের মনি দুটো বড় বেলী হিল্পে দেখাছিল।

— অ বিমলা তুই এমন করতাছস ক্যান। — আমার কি ইসছা হৈছিল বৌ জানস।

— কি কইরা জানম।

—ইসছা হইছিল অর...বলে ফের থা থা ফেলল।

হার্র বৌ হাসল। এবং বলার ইচ্ছা যেন এই ভোতা দারের সম্বলই বা আমাদের কোথায়।

বিষলা দঃথের সংশ্য বলল, তোরা ধৌ একটা কথা কইলি না।

হার্রের বৌ কুস্মে ব্রুক্তে পারল রাতের সেই বাব্র চুরি করে ইতরামো করার বাসনা বিমলাকে এখনও কণ্ট দিছে। অসম্মান ভেবে বিমলা সারা পথ আর কারো সঙ্গে কথা বলে নি। ফেন ওর চোখ দেখলে মনে হয়—বিমলা হিংদ্র এক প্রতিশোধের অপেক্ষার আছে।

কুসুম বলল গরীবের আর অসম্মান।
কুসুম গশ্চীর গলায় কথা বললে বাব্মান্বের
মত কথা বলে। এবং এই কথার দ্বারা সে
নিজের সম্মানের উপর নিভরেশীল থকেতে
চার—অসম্মান সেও সহা করতে পার্ছেন।
—কিন্তু দ্বেলা অনাহার আর ১৩। ছচ্ছিল
না। কুসুম গভবিতী কুসা গল চোরাচালানের জনা বের হয়ে পড়েছে।

কুস্ম, গভবিতী কুস্ম পা ছড়িয়ে বসপ। ওর ছোটু বাাপ থেকে পান স্পারী বের করে একট্ পান, চ্প এবং সাদাপাতা খ্ব আরাস অথবা আরামের মত মুখে ছেলে দিতে থাকল। এইট্কু সুখ—চারিদিকে যথন



রোদ থাঁ খাঁ করছিল, চারিদিকে যখন অভাব অন্টন-তথ্ন কুসংমের এইট্কু সুখ। বিমল ্জিলাপিটা আলগা করে মুখে ফেলে দিয়েছিল। সে কুস্মের দিকে হাত বাড়িথে বলল, এক ট্রকরা স্পাারী দ্যা বৌ। তারপর ওরা পরস্পর মূখ দেখে এক সময় চুপ করে

বিকেলের দিকে সেই মহাজন মান্ধটি এসে সকলকে বড় আদর করে গদিতে নিয়ে গেল। নিতাইর বাপ দলটার মোলা। স্তরাং নিতাইর বাপ আগে আগে হটিছিল। মাছ এবং আনাজের হাট পার হলে সর্ব এক গাল। আশেপাশে গেরস্থ মান্বের সংসার। বাবসা আছে বলে বোঝা যায় না। বিমলা কুসমে এক এক করে চাল নিয়ে ফের সেই আমলাক গাছটার নীচে এসে বসল।

বিমলার ভিনটি থলে। কাঁথের থলেটা বড়। এবং **ভানহাতের থলেটা মাঝারি আর** হাঁ হাতে ধরার জনা ছোটু এক থলে। চাল প্রাঃ তিশ সের হবে তিন থলে মিলে। কুস্ম

এত চাল ব**ইতে পারবে না। সে কিছু কম** নিয়েছে। শরীর ওর আর দিচ্ছে না। পাগ্রেলা হাতগ্ৰো ক্ৰমণঃ শীৰ্ণ হরে আসছে। বিমলা থলের ভিতর হাত রাখল—চালের উদ্ভাপ আছে—সে চালের ভিতর থেকে দুটো একটা আবর্জনা বের করে নেড়ে চেড়ে দেখল যেন এই চাল কত ভালবাসার জিনিস্ এই অম বড় দামী এবং সোনার মতো ভাল-বাসা এই অহের জন্য সে ভেডরে-ভেডরে পূষে রেখেছে। অন্যান্য সকলে চাল আগলে বসে আছে। এখন আর এই চাল ফেলে কেউ কোথাও বাবে না! সকলে ভাল করে বে'ধে নিজ্জিল-বেন ওরা সকলে জেনে ফেলেছে ওদের টেনে চড়ে যাবার সমর নানা প্রকারের হ্রুজাতি হবে-বেন ওদের সেই মিদিন্টি স্টেশনে পেণিছে দিলে গলায় সোনার হার-পরা এক বাব; পান চিব্তে-চিব্যুক্তে এন্সে সকলের থলে গ**ু**লে. চাল ওজন করে, কেজি-প্রতি একণ চাল মেপে

দিয়ে তিনি চলে যাবেন। নিতাইয়ের বাল পিছনে চাল চোরা-চালানের হকদার হয়ে লাঠি ঘ্রাবে। সে বাব্র বরকলাজের মডো এই চালের পিছনে কত নাচবে-কুপবে।

স্তরাং নিতাইর বাপ দল্টার কেন্দ্র-বিন্দাতে দীড়িয়ে একসপো কটা থলে গ্লেল। ওর মুখে বড় একটা আবু চোরাল-বসানো, দাড়ি-কামানো নর বলে মুখ जम्म, व-पर्मा वाजा. ভার কত দারিত-সে প্রার সারাক্ষণ স্টেশন এবং এই আমলকী গাছ, প্রনো **জী**ৰ্ণবাড়ীর সি^{*}ড়িতে ছোটাছ**ুটি করছে। লাল**গোলা থেকে যদি চক্তবভীবাব, না আলে তবে মুশকিল-যার-যার দল নিরে হার-বার খেলা। অপরের হাতে পড়ে গেলেই— প্রবিশ, থানা এবং কিছু অবিবেচক মানাবের মত মাঠে-বাটে সংগ্রায়—সাভরাং নিতাইর বাপ সকলকে প্রথমে বলল, হয় গ মা-মাসীরা--বার্ডাত পরসা কত রাখলে।

স্কান্ত সমগ্র

দাম ১৫.০০

স্কাশ্ত ভট্টাচার্যের অন্যান্য বই ছাডপত ৩০০০ ঘ্রম নেই ২০৫০ প্ৰোভাস ২০০০ মিঠে কড়া ২০০০ অভিযান ২০০০ হরতাল ১.৫০ গীতিগ্ছে ১.৫০ স্কান্ত ভট্টাচার্য সম্পাদিত।। আকাল

অর্ণাচল বসঃ ও সরলা বসঃর স্মৃতিকথা কবি-কিশোর স্কান্ড।। ৩১৫০ মিহির আচার্য সম্পাদিত।। স্কান্তনামা ৩.০০ কৰি সংকাশ্ত

অশোক ভট্টাচার্য।। ৩٠০০

ডঃ অম্ল্যুচন্দ্ৰ সেন প্ৰণীত অভিজ্ঞান শকুশ্তলা ৮-৫০ कानिमात्मत्र स्थापम् ७ ७ ००० त्र्यकथा ७.०० ज्ञादमार्काम् ৫.০০ রাজগৃহ ও নালন্দা ২.০০

প্ৰকাশিত হল

ইতিহাসে ট্রাজিক উल्लाटन

ৰিফ**্ৰে** ॥ ৫ · ০০

বাঘ ও অজন্তা

দেবৰত মুখোপাধ্যার ॥ ৬-৫০ রাম বস্ত্র কাব্যনাট্য र्भाजन व्याप्रना ॥ २.५०

राजात वष्टरतत वाःना गान

প্ৰভাতকুমার গোম্বামী সম্পাদিত ॥ ১৫ ০০০

त्रवीन्ध्रनाथ उ স,ভাষচন্দ্র

त्निभाग अक्रमनात्र ॥ ১०-००

उमन रेथग्रारमन **ब्रू वा** हे या ९

অশোক ভট্টাচার অন্দিত 🕫 দেবত্তত মুখোপাধ্যার চিত্তিত ৪০০০

সংস্কৃত সাহিত্যের ইভিহাস ডঃ গৌরীনাথ শাস্তী।। ৮٠০০ ब्राटकम्प्रलान भिन्न ডঃ শিশিরকুমার মিহা। ৩-০০ ब्रस्थिमहम्म मख ডঃ স্নীল সেন।। ৩-০০ রবীন্দ্রনাথের গদ্যরীতি অবশ্চীকুমার সান্যাল।। ৫-০০ ৰাংলা সাহিত্যে বৈক্ষৰ পদাবলীর ক্রমবিকাশ ডঃ সতী ঘোষ।। ৫-০০ অর্থনীতিবিদ মার্কস তর্প সাম্যাল।। ২.০০ কৰিতার কথা ম্গাণ্ক রার।। ৩٠০০ ধারা থেকে মাণ্ড

দেবত্রত মুখোপাধ্যার।। ২.৫০ উনবিংশ শতাক্ষীর স্বরূপ विमहकुक क्खा। ১-৫०

विद्याद्मिर्णं बारणा র্নিম লকুমার বস্থা। ১০০০

भाग्ना काळन (काव्य नाविका) অলকা উকিল।। ৩-৫০

ডিয়োজিও: কবি ও প্রাবল্যিক পল্লব সেমগ্ৰেত।। ১.৫০

সারস্বত লাইব্রেরী ॥ ২০৬ বিধান সরণী কলিকাতা ৬ ॥ ফোন ৩৪-৫৪৯২

বিমলা বলল, আমার হাতে কিছু নাই নিতাইর বাপ।

—নাইত বাব্দের প্রা দিয়া কি দিরা।

—আমারে আগে কইতে হয়। সব টাকার চাল কিনা ফেলছি।

—ভাল করছ। মিতাইর বাপের জ একটা কপিলা গাই আছে।

্ —তোমার কপিলা গাই আছে আমি কইছি! বিমলা রুখে উঠল।

নিতাইর বাপ মদন বিমলার দিকে এবার ভরে তাকাতে পারল না। টেনের সেই विश्वना भध-चाउँ हित्न यन रमञ्जाना २८४ राष्ट्र। विभागारक वाव्यावीत भएका वहमा করার সময় মদন বড় বেশী সতক করে দিয়েছিল বিমলাকে। এখন সতক করতে গিয়ে ফের অনথ কারণ বিমলার বড়-বড় চোখ-বেন সিংহের খেলা দেখানো বাকি এবারে সে ট্রেনের ভিতর অথবা অনা কোন মাঠে সিংহের খেলা দেখাবে। বিমলা দড়ি **ঠদয়ে থলের মূখ শস্ত করে বাঁ**ধছিল। ওর শক্ত শরীর এবং পিঠের নীচু অংশটা দেখা ষাক্ষে। সাদা থানের ভেতরে ছিট কাপঞ্র সেমিজ। বিমলার সাদা থানের ভিতর ঘাড় গলা মস্ণ রেখেছে এখনও। স্য অস্ত যাঞ্চিল কলে আমলকির ছায়া হেলে পড়েছে। কিছ্-কিছ্ মান্য হাট-'ফরত গাঁরে ফিরছে। চাষা বৌ মারগী বগংল ফ্রছে। ঝ্রিড়তে আণ্ডা নিয়ে ফিরছে পাইকার। বিমলা গলা তুলে এসব দেখল। ভারপর উঠে গিয়ে বলল হার্র বৌকে--**আমারে একটা টাকা দা** বৌ। নিভাইর বাপের (গোলামের) কথা শ্নলে গা জইলা

কুসমুম কাপড়ের খ'্ট থেকে টাক। খুলে দিল বিমলাকে।

তথন অন্য এক বৌ দলে বচসা
কর্ছিল। তথন সংধ্যা হচ্ছে। আর তথন
হাটের মাঠে বড়-বড় হ্যাজাক জেনুলে দেওয়া
হরেছে। বিমলার ক্ষ্ধার পেট জনুলছিল।
সন্তরাং মুখে গল্ধ। দুগাল্ধের মত। সন্তরাং
মুখে বার-বার থাখা উঠছে। দশটার টেনে
উঠলে পেশছতে ভোর হরে যাবে। মদন
আর একবার এসে সকলকে বলছিল ভোমরা
মা-মাসীরা কিছ্ খেরে নাও। চিড়া-মুড়ি
বা হোক কিছু। টেন আসতে লেট হবে।

বিমলা কিছু ছোলার ছাতু এনেছিল সপো। সে বাটিটের জল এনে ছাতুটা ডিজিরে থেলা। বাটিটার গারে নিশথির নাম। ছাতু খাবার সময় নিশীথের মুখ মনে পড়িছল এবং ছাগলের মুখ পাশাপাশি। বাচ্চা ছাগলটা ঘরে এনে রেখেছে কিনা, বাপ নিশীথ বড় বড়ো মানুষ, ছাগলটা বাচ্চা হবার সময় চিৎকার করবে—বিমলা একটা ছোট্ট ছাতুর দলা কুস্মকে দেবার সময় বাপের মুখ মনে করতে পারল। অথিলের মুখ মনে অসছে। তখন সংসারে স্থেবর গাবী ছিল। অথিল সংসারে স্থেবর পারী ছিলা। অথিল সংসারে স্থেবন সংসারে স্থান সংস

থাকত—অথিল বড় বেশী হাবা-গোবা অথবা বলা চলে সরল প্রকৃতির মান্ম, অধিলের কি কাজ ছিল, অথিল কি করে উপার্জন করত বিমলার জানা ছিল না। যে কোন সময়ে সে চলে আসত—বিমলাকে ভিন্ন-ভিন্ন উপহার দিত এবং ক'রাত বেজায় ফ্তিতে কাটানর পর মান্মটা ফের রোজগারের ধাংধায় সেই বর্ডারে চলে যেত। নিশীথকে বিমলা নিজের কাছে রেখেছিল তথন। নিশীথ এবং বিমলার দিনগুলো তথন মধ্দ কাটছিল না।

মদন ছুটে-ছুটে আস্ছিল। সাড্টা বাজে এখন। সে এসে বলল, এই তোমরা মা-মাসীরা সকলে চলে এস। চক্রবর্তী-বাব্ সাড্টার গাড়ীতে চলে আসছেন। বড়বাব্ ভাড়াভাড়ি করতে বলছে ভোমাদের।

স্টেশনের বড়বাব, রোলঙের ধারে এসে উক্তি দিয়ে দেখল দলটা নিয়ে মদন রেললাইনের উপর দিয়ে ছুটে আসছে। কুসমুম সকলের পিছনে পড়ে যাচ্ছিল। ওরা কাপড় দিয়ে কাঁথের থলেটাকে ঢেকে রেখেছে। এরা সকলে ভয়ঙ্কর লম্বা কাপড় এবং সেমিজ পরে সকল চাল প্রায় পোশাকের ভিতর আড়াল দেবার চেণ্টা করছিল। কুসুম ছুটতে পার্ছিল না। সকলে স্ল্যাটফরমে উঠে গেছে। কুস্মের জন্য কিম**লাও পিছনে পড়ে** থাক**ল।** এবং বিমলার শক্ত শরীর, সে ইচ্ছা করলে কুসমেকে বৃকে নিয়ে স্টেশনে উঠে যেতে পারে। বিমলা নিজের বাঁ হাতের ছোট থালেটা কুসামকে দিয়ে ওর বড় থালেটা ডান কাঁধে নিয়ে ছটেতে থাকল। — তই আয় বৌ। আন্তে-আন্তে আয়। আমি উইঠা যাই।

কুসুম একট্ হালকা হওয়ায় প্রায় বিমলার সংগ্ণ-সংগ্রেছ ছাটতে পারছিল। হাতে-পায়ে শক্তি কমে যাছে। ওর ছাটতে গিয়ে হাত-পা কাপছিল। তব্ কোনরকমে সে টেনে-টেনে পা দুটোকে গ্লাটফরমের উপরে নিয়ে ডুলল। টেনের ধোঁয়া দেখা যাছে। এই ছোটাছ্টির জনা বড় হাফ ধরছিল বুকে এবং পেটের ভিতর খিল ধরত মাঝে-মাঝে। কুসুম আর প্রায় নড়তে পারছিল না। সে বিমলার আশায় বিমলা তাকে ডুলে নেবে এই আশায় এবং টেন এলে পালিশের মহব্বতের গান গেয়ে হাইসল বাজালে—বিমলা কুস্মকে ডুলে নেবে—বিমলা ব্যাহাকে ব্লেক্তির সব ডুলে দিল ভিতরে।

আর ভিতরে মান্ধে-জনে ঠাসাঠাসি।
ওরা একা নয়, এ-প্রায় হাজারের মত হবে।
পিল-পিল করে হাটের ভেতর থেকে সব
উঠে আসছে। কোন এক যাদ্মাশুর মত
যেন—সকলে ব্ঝে গেছে এই টেন ওদের
নিরাপদ স্থানে পেণিছে দেবে—কেবল এক
চক্রবত্নী, রাজামান্ধ, তাদের নিয়ে যাবে—
হাজার লোকের কাছে তিনি দেবতার মত।
বড়বাব্ ছোটাছ্টি করছিলেন। টেনের
যাবীরা দেখল পিল-পিল করে সব ছোটবড় মান্ধ বোচকা-বোচকি নিয়ে বাঙ্কের

নীচে **ঢ**ুকে **যাছে।** কামরার ভেত্ত অন্ধকার। আ**লো জ**নালা হচ্ছে না। ভেড্ঞা ভয়ৎকর অন্ধকার লাগছিল বিমলার! 🛪 প্রায় কিছুই দেখতে পাছে না आग्मारक कुम्पारक छोला मिल वालक নীচে। ওর বোচকা-বৃচ্চিক কুস্কুমের মাধার কাছে ঠেলে দিল, তারপর বিমলা _{নিষ্টে} মেঝের উপর পামুড়ে শুয়ে _{পড়ল}ে ব,কের কাছে সব বোচকা-ব,চাক-সন্তানের মত লেপ্টে থাকল বিমলা। যাত্ৰীরা হৈ ১ করহিল। ওদের পায়ের তলায় জলজান এক যুবতীমেয়ে এবং আরো সব 🚓 বৃভুক্ষ-মানুষের দল ঠাসাঠাসি করে শুদ্ধ বসে আছে। দরজা পর্যন্ত দলটা এমনভাবে শ্রায়ে-বসে ছিল, অন্ধকারের ভিতর মান্ত্রে এত ঠাসাঠাসি যে, যাত্রীরা দর্জা পর্যন্ত এসে ভয়ে ভিতরে চ্কতে সাহস করে না। ভিডের ভিতর দেখল অন্ধকারে শ্ধে মান, ষের পি'জরাপোল। ভ্যাপসা গণ উঠছে ভিতরে এবং হা-অমের জনা অখাদা-কুখাদ্য খাচ্ছে--সত্তরাং ভেতরটা মান্;'ফ্ নরক যেন এবং ওরা সব অঙ্গের মৃত প্রান বৃদ্ধু অপহরণ করে নিয়ে যাচ্ছে-বিনল দুর্গাদেধর ভিতর পড়ে থেকে নিজের চাল এবং কুস্মুমের চাল আগলাচ্ছিল। এ-পাশ-ও-পাশ হওয়া যাচেছ না, সব মেলা যাছে না, হাত মেলা যাছে না—সর্বন্ত এই অপ-হরণের দৃশা, পা, পিঠ অথবা পাছা লাগছে। বিমলা তব্ ঠেলেঠ্লে কুস্মের পা মেলার জনা একট্ জায়গ। করে দেবার সময় *ম*দ হল বাঙেকর উপর কিছু যাত্রী শুয়ে-বসে **আছে। নীচে বিমলার সিংহের মত** চেখ শা্ধা খেলা দেখানো বাকি-বিমলার চোখ জন্মজনল কর্ছিল--সে তার পাছা সাপের মত ঘুরিয়ে দিল সহসা। মনে হল বাধুটি, সেই বাবুটি বিমলার পাছার কাছে বংগ এই অপহরণের দৃশ্য দেখে রুসিলতা করতে চাইছে। সেই বাবুটি যে ভাসার পথ হারামজাদী বলে গাল দি...ছল। বাব্টি ফেরার পথে এখানে কেন, বাব্রটিকে আসার পথে কোন এক দেটশনে, নেমে যেতে দেখে-ছিল যেন, ফের সেই বাব্ মান্ষটি ঠিক বাণেকর উপর পত্মাসন করে নিমিলিত চোত্ বসে আছেন। বিমলা ব্রুবল কপালে আ^র বড় দুঃখ আছে। বিমলার উপায় থাকল ন একট[ু] সরে বসতে, শ্রুরে পড়তে, অথবা সরে অন্য কোথাও স্থান করে নিতে। একবার এই আশ্রয় থেকে বিচ্যুত হ**লে** র^{ক্ষা} নেই--তাকে একা পড়ে থাকতে *হ*ো স্তরাং বিমলা কুস্মের পিঠে হাত রাখ^{ল।}

টোন ছেড়ে দিরেছে। টোনের চাকার এখন কারা যেন দ্বংথের গান গাইছে। এই গান শ্নতে শ্নতে বোধ হয় কুস্ম ঘ্নিটে শব্দন দেখছে। এক প্রকৃর জল, বড়াব্দ সরপাটি জলের ভিতর খেলা করছে শাপলা-শাল্কের জমি—বর্ষার দিনে ইলিম্মাছ, ভাজা গব্ধ এবং তালের মালপোট অথবা বর্ষার জনা মান্ধের এক পরিবর্ধ জালাসা; কুস্ম এর দেশের ছবি টোনের চাকার দেখতে পাজ্বিল বোধ হয়। সেই ভালা

্রাসার ছবি আরে কোখাও দেখা বা**লে না।** বিষ্ণালা অনেক চেণ্টা করেও কুস্মেকে জানাতে পারল না। কুস্ম ভৌস-ভৌস করে ঘ্যোত্তে।

বিমলা মরার মত পড়ে থাকল। কুস্মুমকে
এবং চালের বোচকা-ব্চকি দিয়ের বিমলা,
বিধবা বিমলা—খার প্রামীর দাম অখিল
ছিল—অখিল, সরল হাবাগোবা, অখিল
বভারে কি সব পাচার করত, অখিল হাবাগোবা মান্য সোনার বাট অখিলের পেটেপিঠে বাধা থাকত—হার সেই অখিল মরে
গোল। ওকে, দলের লোকেরা ধরা
সভার ভরে মোরে ফেলল। সেই সরল
অখিলের জনা ভেতরে-ভেতর বড় কণ্ট
ছাল্ল বিমলার। শুরে থাকলে এবং একা
থাকের ভর বিচিত্র স্ব ছবির কথা মনে

ট্রেন চলছিল, পাশাপাশি কেউ কোন भक्त कदछ ना। भारक भारक क्लिमान खेन থামছিল। কিছু হকারের শবদ শোনা যাছে। তারপর ক্রমশঃ ট্রেন এবং স্টেশন কেমন নিঝ্ম হয়ে আসতে থাকল। শ্ধ্ মাঝে মাঝে দলের মোল্লাদের হাঁক শোনা হাচ্ছিল-মা-মাসীরা বড় সাবধানে যাবেন-কোন হল্লা করবেন না, যাতীদের কোন অস্বিধা ঘটাবেন না। যাত্রীদের পায়ের নীচে পড়ে থাকবেন। ওদের স্থস**্বিধা** দেশনে। এবং **এই বাবরে জন্য বিমলার** ভয়, স্থস্বিধা বাব্র **অন্যায় রকমের।** এত অন্ধকার যখন, এবং মান্ধে মান্যে এই ঐসাঠেসি যখন, কোথায় কার হাত পড়ছে, পা পড়ছে অন্ধকারে ঠাহর করা যাজে না মুখন—তখন বাবার পোয়াবারো, এই^{সব} ভেবে ক্রমশঃ গ**্রিয়ে আসছিল। এবং** ছাগলটার কথা মনে পড়ছে, **ছাগলটার** হয়ত চারটা বা**চ্চা হবে। বাপ দিশীথ** ছাগলটা বেচে দেবার ম**তলবে ছল।** বাপের লালসা বড় বেশী। কেননা সারাদিন খাব খাব করছে। এই বয়েস-বয়েস আর বাড়ছে **না যেন দিশীথের**— মেয়ের ফেরার জনা সে নিশ্চয়ই এখন দাওয়ায় ব**সে তামাক টানছে।**

কারণ রাত হল, রাত বাড়ছে, মেয়েটা ফিরছে না—নিশীথ হাঁটতে হাঁটতে স্টেশনে ^{চলে} এসে দেখ**ল স্টেশনে প**্লিশ: আর**ম্ড** ^{প্রিশ} সব। এ লাইনে কিছ্বিদন থেকে চাল চোরাচালান বড় বেশী ছচ্ছে। কেউ ^প্রিশকে ভর পাচ্ছে না। ওরা ট্রেনে চাল ^{এনে শহরে গঞ্জে বেশী দরে বিক্রি করছে।} দ্বারে স্টেশন পার হলে প্রলিশের শান্নেই চেন টে'ন স্ব ব্যুক্ত্র মর্মারী চাল মাথার করে ছোটে। ভাগে বনিকনা মা হলে এমন হয়। জনতা প্লিশে সং**গ্রাম। এথানে** প্রিলেশের রাজা ক্<u>জাঙে দিয়েছিল মান্তেরনা।</u> পর্যালশের সরফে এবার কিন্তু খুব কড়া-কড়ি। নিশ⁹গ শ্যল **আজ খবর আছে**— ^{পরের টেন্টিক} প্রচুব চাল আস**ছে, চোরাই** চাল। প**্লিশের। রেডি, ট্রেন আটকে এইসব** চাল উত্থার করবে ওরা। নিশীথ প্রমাদ গুমল।

কামরার ভিতর বিমলাও প্রমাদ গ্নেল। বাব্ বড় বেশী ছটফট করছেন। বড় বেশী হাই তুলছেন। এবং হাত পা এদিক ওদিক ছেড়ার বন্দ্র বেশী বদভ্যাস। সবই অন্য-মদস্কতার জন্য হচ্ছে এমন ভাব। ট্রেন চলছিল। ভিতরে প্রচন্ড গরম। জানালা খোলা বলে সামান্য হাওয়া ভিতরে ত্কতে পারছে। আর আর এই সামানা হাওয়া বাবু মানুষটা কিংবা সামান্য যাত্রী যারা বাংকে শ্রুয়ে বঙ্গে হাত পা ছড়িয়ে নিশিথে নিভায়ে ঘ্যোচ্ছে অথবা যারা নিজের রসদ আগলাবার জন্য ঘ্মতে পারছে না—এই সামান্য হাওয়া ভারাই শুবে মিচ্ছিল। ঘামে বিমলার সেমিজ এবং কাপড় ভিজে যাছে। হাত পা একটা খলে ও-পাশ হতে পারলে শরীর সামান্য আসান পেত—কিন্তু বিমালার কোন উপার নেই—শা্ধ, অন্ধকার সামনে, পিছনে মাঠ প্রত ফেলে ট্রেন ছাটছে। রাত এখন গভীর হয়ে আসছে এবং মাঝে মাঝে সেই দ্রুত মাঠের ভিতর টেনটা ভয়ে বালি বাজাজিল বেম। আর ঠিক তথনই মসে হল ঘাড়ে কে বেম মুদ্ধ সভেসংড়ি দিছে বিমলার।

প্রথমে মনে হল একটি নেটে ইদ্রে ঘাড়ের নীচ দিরে নেমিজের ভেতরে চ্চে গেল। বিমলা চুপ করে অথকারে থাড়ে হাত রেখে ব্রুল, নেটে ইদ্রেটা ভীষণ চালাক। অদুশা হবার ক্ষাতা রাখে। সে ঘাড় গলাতে নেটে ইদ্রেটাকে খাজে পেল না। সে শ্রুবলল, মরণ।

বিমলার ঠিক উপরে বাব্ মান্রটা কাছে বসে আছে। একজন লখনা মতন ফাণকায় মান্ব, মনে হচ্ছে পিলের রুগাঁ, বাঙেক শ্রেষ ঘুনুচ্ছে। পাশের বাঙেক বৃশ্ধ মতন মান্ব। এবং প্রায় বোবার সমিল। ছোট কামরা বলে ঘাতীরা আর উঠছে না। শ্ধ নীচে অপ্যকারে ঠাসাঠালি করে বৃভ্জ্জ্ম মান্বের মিঃশ্বাস পড়ছে। ওরা সকলে নিতাইর বাপ মদনের মত এক মান্তের সংক্তেরে জনা অপেক্ষা করছিল। স্তরাং আপ্যকারের ভিতর ইচ্জতের বাপার কলে কোন বস্তু ছিল মা। বিষলা গত রাতের মত চাংকারে করতে পারত, ফোঁস করতে

শংকর-এর বই

স্বিনয় নিবেদন,

বেশ কিছ্মিন পরে আমরা আবার একটি সাড়া-জাগানো বই প্রকাশ করেছি।
শংকর-এর সূত্র্থ সম্পূর্ণ বিদেশ প্রমণ-কাহিনী এপার বাংলা ওপার বাংলা
(১০০০) পথে প্রবাসে এবং দেশে বিদেশের মতই বাংলা সাহিত্যের পাঠকদের
হৃদ্র জয় করবে বলে আমাদের বিশ্বাস। এই বইটির সামানা কিছু অংশ পঠিকার
প্রকাশিত ইবার পর উভর বাংলার বিপ্লে আলোড়নের স্ভি ইর। সম্পূর্ণ বইটি
নিঃসম্পেহে দুই বাংলার অর্থান্ত পাঠক-পাঠকার মনে নতুন আশার স্ভি করবে।
হুমণ-কাহিনী যারা পড়তে ভ্র পান, তাদের জ্বানীই এবং নাটকের চেরে নাটকীর।
অসারের চেরে উপাদের, রমারচনার চেরে রমণীয় এবং নাটকের চেরে নাটকীর।
আর একটি ক্যা—এপার বাংলা ওপার বাংলা এমন একটি বই যা ছোট-বড় সকল
ক্রিজনের হাতে নিন্দ্র্পায় ভুলে দিতে পারেন। এর মধ্যে এমন কিছু জিনিস
আছে যা দেশের তর্ণ-ত্রণীদের জানা বিশেষ প্রয়োজন।

সম্প্রতি আতেজাতিক থাতিসম্প্র ইংরিজী সাহিত্য পতিকা Books Abroad-এ শংকর সম্পর্কে একটি স্বিশাল আলোচনা প্রকাশিত হরেছে। লেখিকা জক্টর রাচেল ভানে বমার চৌর-গা উপন্যাসটির ভূরসী প্রশংসা করেছেন। গাঠকরা জেনে আনান্দত হবেন এই বইটি মিনেসোটা বিশ্ববিদ্যালয়ে দক্ষিণ এশীর গাঠকরা জেনে আনান্দত হবেন এই বইটি মিনেসোটা বিশ্ববিদ্যালয়ে দক্ষিণ এশীর গাঠকরা চৌরুট-বৃক্ষ হিসেবে পঠিত হচ্ছে। সোভিয়েট রাশিয়ার চৌরুল-বি অন্বাদের থবরও পঠিকদের অজানা ময়। হিন্দী অনুবাদের অসাধারণ জনপ্রজার উদ্বাহণ হয়ে, সম্প্রতি একটি গালরাভী অনুবাদ প্রকাশিত হয়েছে। চৌরুশী (৯২-৫০) যে বিগতে দশকের সর্বাধিক পঠিত ও আলোচিত উপন্যাস তা আজ বলার অপেক্ষা রাখে না।

চৌরণদার অবিশ্বাসা জনপ্রিয়তার সংগ্য যে বইটি সমানে তাল রেখে চলেছে, তার নাম যোগ বিরোগ গালু জাগ (৫-৫০)। স্যাটা বোস সম্পর্কে উৎসাহী পাঠক এতে নতুন উপকরণ পাবেন। সম্প্রতি বিংশ সংস্করণ প্রকাশিত হয়েছে। কিন্তু প্রকৃত রেকর্ড বলতে যা বোঝার তা হলো শংকর-এর মানচ্চি (৬-০০), অপ্টাশেশ সংস্করণ চলছে। এই বইটির শেষ পরিচ্ছেদ, 'নৈতিক' নামের কাহিনীটিকে অনেকে শংকরের শ্রেষ্ঠ সাহিত্যকর্ম বলে মনে করেন। যদিও আমাদের ধারণা তার পার-পারী (২-৫০) বইটির এই সম্মান পাওরা উচ্চিত। কারণ এ-ধরশের বই বাংলার আর একটিও নেই।

শংকরের আর করেকটি বিশিষ্ট বই লাখক জনম (৫.৫০) এক দুই ভিন (৪.৫০) এবং মুপভাপদ (৫-০০)। মুপতাপদ উপনাদটি মুপের তপদার নিমন্দ্র এক ভাষ্করের কর্ণ-মধ্যে কাহিনী। আর এক দুই ভিন আয়াদের প্রকাশিত বইগালির মধ্যে আক্ত এক এবং অধ্যতীয়।

শংকর-এর লেখা সম্বন্ধে আরও জানতে হলে আমাদের কাছে চিঠি লিখন। ৩৩ কলেজ রো কলিকাতা—১ **বাক-সাহিত্য** পারত অথবা চোথে সিংহের খেলা দেখানো বাকি—সে সিংহের মত গর্জন করে উঠতে পারত। সে কিছুই না করে দম বংধ করে দায়ে থাকল। টোন মাঠ পার হয়ে যাজে দুতে। স্টেশনে এলে একট্ব আলো জন্মের —ওর ইচ্ছা তথন খালেজ পেতে সেই নেংটি ইন্দ্রকে বের করা অথবা মান্য বা বাব্-মান্য,—মান্যটা রহস্যজনকভাবে ওর সঞ্জে সাংগ্র থাকছে। গত রাতে এই বাব্ মান্যটাই ওকে হারামজাদী বলে গাল দিরোছল—আর যাত্রী সেজে খ্ব সাফ স্তরো য্বকের মতো চলাফেরা করেছে। বিমলা এবার সাহসের সঞ্জে অংধকারেই পরিহাস করল।

—কে। কি বললে? বাব্যান্যটির গলার স্বরে অভিনয় ফুটে উঠল।

—বাব্, আমি বিমলা। আমি নীচে শুরে আছি বাব্।

—তুমি কোন বিমলা বাছা? কাল রাতে বিতে দেখেছি ট্রেনে করে?

—হাাঁ বাব:, কাল বাতে যেতে দেখেছেন। আজ রাতে ফিরছি।

-সঙ্গে আর কে আছে।

—ছার্র ঝেঁ আছে, নিতাইর বাপ আছে।

–মাঠ পার হতে পারবা?

—ভয় কি বাব্।

হার্র বৌ জেগে গিয়েছিল ওদের কথায়। —আমরা কোনখানে বিমলা।

—সামনে ধুবুলিরা ফটশন। তুই খুমো।

--হ্যাল ভুই কার লগে কথা কস?

—ক্রের লগে।

--বাব্র চোথে ঘ্ম আসে না।

—বলছে, আপনার চোণে ঘ্র আসে না? আপনি রাতে ঘ্যোবেন না।

বাব্ মানুষ বললেন, অদৃষ্ট। ঘুম আনে না রাতে। অদৃষ্ট।

বিমলা বলল, টেনে টেনে কি করেন বাব:।

বাব টি এবার হাই তুলে বলল, তোমার দলে কতজন? আঠারজন ব্রিষ।

—বাব সব গানে গে'থে রেখেছেন দেখছি।

বাব্টি এবার বিজ্ঞার মত অধ্ধকারেই হাসল।

কুস্ম কু'কড়ে ছিল নীচে। ধুলোবালি কাপড়ে সেমিজে কাদার মত লেগে আছে—
হামে নীচটা জনজব করছিল। বাব্র বিজ্ঞের
মত হাসি উপরে এবং বাংকের নীচে
কুস্ম—ওর পিরীতের কথা মনে পড়াছল।
কু'কড়ে থাকার জনা এবং বিমলা লেপটে
থাকার জনা কুস্ম নড়তে পারছিল না।
সে কোন রক্ষে হাতটা ভার্নাদকে এনে
বিমলাকে একটা তিমটি কাটলা।

্—বৌ ভাল হইব না।

—হ্যা গ বাব্রে লগে পিরীতের কথা আনু।

বিমলা পারের নীচ পর্যক্ত বাঁ হাতে কাপড় টেনে ফিস-ফিস করে বলল, মান্যটারে ভাল মনে হইতেছে না। প্রিলশের লোক। চুপ কইরা থাক।

কুস্ম থথাথ ই ভয় পেয়ে গেল। চেটশনে গ্লিশ অথবা হোমগার্ডের লোক আছে। সেথানে নিতাইর বাপ আছে, বড়বাব্ আছেন। কিন্তু যে মান্বটা গা ঢাকা দিয়ে যাচ্ছে— তাকে বড় ভয় কুস্মের। সে এবার বলগ, বারের কৈয়া দায় না, বিড়ি খায় কিনা।

বিমলা বলল, তুই কৈয়া দাখে। কুস্ম ব্যাংকের নীচ থেকে বলল, নিতাইর বাপরে ভাকুম নাকি?

বিমলা বলল, ডাকলে অনর্থ বাড়বে বৌ। ওরা এত ফিস-ফিস করে কথা বলছিল যে বাব্মান্যটি কানখাড়া করেও বিশ্দু-বিসর্গ ব্রুতে পারছেন না। তিনি তব্ বিচক্ষণ প্রেষের মত বসে থাকুলেন। তিনি কাসলেন, হাত-পা নাড়লেন এবং ম্যু জানালায় বের করে স্টেশনে পে'ছিতে হত দেরী দেখলেন। তাকে দেখে এ সময় মনে হচ্ছিল তিনি কোগাও কোন খবর পে'ছে দিতে চান।

বাব স্টেশনে নেমে একটা কার্ড দেখাণ স্টেশনের বড়বাব্যক, আপনাদের ফোনটা দেবেন? বলে সে তার কার্ড বের করে ধরল।

—হ্যালো। কে? স্যুর আছেন?

—হ্য় হা। হিসাব করে দেখলাম প্রায় চারশতের মত লোক যাচ্ছে চাল নিয়ে।

—তাহলে বড় দল একটা আনতে হয়! আমার সপো মাত্র দশজন আছে।

—ওতে হবে না সার। মাঠের ভেতর দিয়ে সব তবে নেমে যাবে পি°পড়ের মত।

—তাহলে বড় একটা এনকাউন্টার হবে বলতে চাও।

—মনে ত হাঙ্। বলে মানুষ্টা ফের গা ঢাকা দিয়ে এসে বিমলার বাংকৈ বসে পড়ল। আসার আগে বড়বাব্কে বলে এল— থ্ব গোপন রাখতে হবে সার। তা না হলে আপনার আমার দুজনের মুশ্কিল।

আর মদন এবং সব মোলারা হেকে

হেকে যাছিল তখন—মা-মাসীরা বড়

দুর্যোগ। মা-মাসীরা আমরা দেটশন পর্যণত

যাব না। তার আগে ভাঙা পোলের কাছে—

সেই বড় প্রোনো বাড়ীটার কাছে চেন

টেনে নৈমে পড়ব। আপনারা মা-মাসীরা

ভর পাবেন না। আমরা আমাদের সম্তান
সম্ততির জনা চাল নিখে যাছি। মা-মাসীরা

কোন চ্রি করছি না। জানালার জানালার

মুখ বাড়িয়ে দলের মোলা হেকে গেল—

আমরা যা করছি সম্তান-সম্ততিগণের

প্রতিপালনের জনা করছি। আমরা চ্রি

করছি না, চুরি করা এটাকে বলে না।

কুস্ম *ঝলল*, নিতাইর বাপ কি _{কইন} বিমলা?

—কইল, আমরা আগে নাইমা বাষ্। চেন টাইনা গাড়ী থামাইয়া দিব।

কুস্মকে চিশ্তিত দেখাল। অন্যান্যি ওরা স্টেশনে নেমে কাঁচা পথ ধরে ছোটা অভিনয় করে। অভিনয় রসের। স্টেশুরে মাস্টারবাব্রা তখন হাসেন। না ছ্টলে ব্ গালমন্দ করেন। একেবারে চোখের উপ্ চুরি। চুরিতে আরাম হারাম। তোরা ছুট্র তা-ততঃ আমরা থেমে থাকতে পারি। অংগ আজ গাড়ী তার আগেই থেমে যাতে চক্রবতীবাব্র হাতে আর কোন কৌশ্র নেই কুসমে ভাবল, আর কোন কোঁশল নেং হার সাহায়ে তিনি ট্রেনটাকে স্টেশ্চ পে⁴ছে দিতে <mark>পারেন। সেই ভাঙা</mark> পোনের প্রাশে থাকলে...অনেকদ্রে তাকে এই লোচকাৰ্ট্চি<mark>ক টেনে নিয়ে যেতে হ</mark>ৰে। ন গেলে অনাহার। শিশ্বেস্তানেরা বাড়ীফ হাঁসের বাচ্চার মত কেবল পাাঁক পাাঁক করছে। জননী ফিরলে হাঁসের বাচ্চাগলে শান্ত হবে। কুসামের এতটা পথ হাঁটার কথা ভেবে চোখে জল আসতে চাইল। কারণ পেটের ভিতর নতুন বাচ্চাটাও প্যাঁক পাক করে কুস্মকে মালে মাঝে জনালাতন করছে। স**ু**তরাং সে পেটের উপর হায় রেখে বার বার বাচ্চাটাকে শাস্ত করার ডেণ্টা করল। অনাহার হুস্মের দিন্মান-স,তেরাং ভিত*রে*র - বা**চ্চা কেবল খাই** খাই করছে। কুসমে রাগে দ্রংখে দ্বামীকে মন্ মনে গাল পাডতে থাকল.—মান্যটা মরে না কান। মরলে হাড় জাড়ায়।

বিমলা বলল, কার কথা কস।

—আরে কার কথা। বঙ্গে কুস্ম চ্প করে গেল। কুস্ম ব্যুবতে পারে না মনের ভেতর কথা রাখার অভাসে তার কবে শেষ হয়ে গেছে।

বিমলা দেখল বাব**ু সাহ**্ম স্টেশনেও নৈমে গেল।

—হেলো সার আছেন। সে ফোন তুলে অনুসংধানের ভগগতৈ দাঁড়িয়ে থাকল।

—शांशां वर्माष्ट्र।

—ওরা চেন টানবে বলছে।

—চেন টানবে।

—হ্যাঁ চেন টানবে। ওরা ভাঙা প্রলের কাছে চেন টানবে বলছে।

—ওখানে শালগাছের বড় বন আছে না?

সপ্পে সপ্পে জানালার মোল্লাবের সকলের ম্ব দেখা গেল। আপনারা চেন টানার সপ্পে সপ্পে মা-মাসীরা বের হয়ে পড়বেন। আপনারা আর শুরে বসে থাকবেন না। আমাদের সামনেই নামতে হবে। বোচকাব্চকি সব কাঁধে হাতে নিরে রেডি থাকেন।

বাব্টি বিষ্ণার ঘাড়ে শেষবারের মত নেটি ই'দ্রগ্লোকে অধ্বনারে ছেড়ে দিতে চাইল। বিষ্ণা অসহিক্ হয়ে উঠেছে। বার বার সেই ই'দ্রটাকে বিষ্ণা ঘাড় গণা থেকে নামিয়ে দিছে। কিন্তু শেষবা দ কিছুতেই পারছে না। বাব্র হাতটা মাশ শঙ্ক হরে বিমলার শরীরের উপর থাকা মতে আছে। বিমলার চোপে সিংহের খেলা খোনো বাকি—সে শঙ্ক হাতে এবার ছুড়ে ফলে দিতেই বাব্টি বলল, কোখার নামবে ছারা! ভাঙা পোলের কাছে নামবে ?

কুস্ম জানত না অংশকারে বাব্নুম্মি বিমলার মত যুবতীর সপ্সে রুপা
নাসা করছে। বিমলা, অসহিষ্ণু বিমলা,
লাদের ভরে এই যাত্রী মানুষটাকে কিছু
লতে পারছে না, সে রাগে দৃঃথে এবং
সম্মানের ভরে সরে যাবার চেণ্টা করল।
স্পু ব্ভুক্ষ্মান্যের ভিতর নেমে যাবার
ভো। তারা উঠে অংশকারেই নিজের
জের বোচকা ঠিক করে নিছে। এবং
শ্বনার্যিট বললেন, কোথায় নামবে
ছারা। পুলিশের বুটের শব্দ শ্বনতে পাছছ
। বন্ধ্বের ভেতর থেকে শব্দ ভেসে
নিছে না

্যুস্ম হাউমা**উ করে কে'দে দিল,** মনদের কি হবে বাব**ু।**

ার্টি বিজ্ঞের মত হাসলেন—যেথানে বাছ সেখানে থাকো। এক পা নড়বে না।

বিমলা বলল, ওদের ফেতে দেন বাব্।

প্রিক্রের লোক আমাদের মা-বাপ।

বাব্টি বললেন, কেউ নামবে না

ছারা। বাব্টি এবার সাধারণ পোশাক লে বেগের ভিতর থেকে হাইসল জালেন।

তথন নিতাইর বাপ চীংকার করে। ানালায় জানালায় ছুটে যাচিছ্নল।

—তোমরা দাঁড়িয়ে থেকো না। মাঠের ছতর নেমে যাত্ত। অন্ধকারে যেথানে চোখ যায় চলে যাত্ত। পর্যালশে ট্রেনটাকে তা ফেলেছে।

বিমলা বলল, বৌ তুই নেমে যা। শিলারা ধারা আছেন নেমে যান। বাব্টি শিল, না, কেউ নামবে না।

্তানরা সেহে যাও মা-মাসীরা— ল সে বাব্টির কাঁধে মাথা রাখল ধ্বাত্তা

প্রবিশের দলটা জানালা দিয়ে দরজা য়ে ত্কে পড়ছে। অন্য দরজা দিয়ে কুস্ম মে গেল। অধ্বকারের ভিতর বিমলা টের তে পারছে। বিমলা এবার নিজের টিকাব্টাক নিয়ে উঠে দক্ষিল, তারপর মে যেতে চাইলে পেছন থেকে বাব্টি র ফেলল।

বিমলা চাল ফেলে অল্ধকারে ছুটতে লৈ বাব্টি দরজা বল্ধ করে দিলেন। তু অনা দরজায় প্রালশ—বাব্টি ভাল মুখ্য মত দরজা খুলে বললেন, দেখ লে কিছু চাল আছে। তুলে রাখ।

বিমলা বোচকাব্যুচিক ফৈলে ছ্টুছে। দিকে কুস্ম চলে গেছে সেদিকে ছ্টুছে। বিচি বিমলাকে অনুসরণ করছেন।

সামনে মদত শালের জঞাল। চাঁদের লোতে এই বন এবং সামনের প্রান্তর বড় সামর লাগছিল। মানুষের সোরগোল। মার্টি এবং চাঁহকার শোনা যাছে। মাঝে মাঝে গ্রিলর শব্দ শোনা যাচিছল। ট্রেনটা একটা বড় জন্তুর মত একা পড়ে চীংকরা করছিল যেন। বিমলা ছুটে ছুটে কুস্মের কাছে চলে গেছে। সে ঝোপের ভিতর লুকিয়ে পড়ছিল—বিমলা দেখল এদিকটা ফাঁকা। সামনের মাঠে কিছু মান্ষের সোরগোল পাওয়া যাচছে। সেখানে পর্বিশের দলটা কিছু লোককে পাকড়াও করে নিয়ে যাবার জন্য সেখানেও একধরনের হায় হায় রব। পরোনো ভাঙা বাড়ী দেখা যাচ্ছে দ্রে। সে যাবার পথে এক বৃন্ধকে এই পোড়ো বাড়ীতে লাকিয়ে পড়তে দেখেছিল। বোধ হয় সেই মান্য এখনও সেখানে আ**ছেন।** দেয়ালের ফাঁকে তার ভাঙা হ্যারিকেন জ্বলছিল—সেই আলো দেখে বিমলা কুসমুমকে বয়ে নিয়ে যাচেছ।

কুস্ম চলতে চলতে বলল, পেটে কামড় দিচ্ছে।

বিমলা ওর সব চাল বেচিকা কাঁধে হাতে নিয়ে বলল ইবারে হটি বৌ।

তথন পিছদ থেকে বাব্টি বললেন, কোথায় যাবে বাছা।

কুস্ম হাউমাউ করে বাব্র পা জড়িরে ধরল।

এদিকটা ফাঁকা এবং নিঃসপা। সামানা
দ্রে শালের জপাল। এবং প্রাশতরের
ভিতর শুধু ইঞ্জিনের আলোটাকে দেখা
যাছে। এই পোড়ো বাড়ীর দিকে কেউ
ছুটে আসছে বলে মনে হচ্ছে না। শুধু সেই
বাব্টি দাঁড়িয়ে আছেন। খুব বলিন্ঠ মনে
হচ্ছিল, দেখতে সেই উচ্চ লম্বা মান্য
দারোগাবাব্র পারে কুস্ম পড়ে পড়ে
কাঁদিছিল।

বাব্টি ঠাপ্ডা গলায় বললেন, চাল নিয়ে কোথাও খেতে দেব না বাছা। আমরা প্লিশের লোক। আমরা আইন অমানা করলে সরকারের চলবে কি করে?

বিমলা বলল, ষেতে দিন বাব্! আমিও আপনার পায়ে পড়াছ।

বার্টি হাসলেন, আইন অমান্য করলে কারো রেহাই নেই। তুমি ত বিমলা। যাবার পথে তুমি আমাকে কি বলে গালমন্দ করেছিলে তুলে গেছ।

হায় সিংহের থেলা দেখানোর চোঝ বিমলার ভয়ে এতটাকু হয়ে গেল। বলল, বাব্ আমরা অবলা জীব, আমাদের কথা ধরতে নেই।

—অবলা জীবের মতন ত দেখতে মনে হচ্ছে না।

বিমলা কুস্মকে এবার ঠেলা দিল, এই তুই করছিস কি বৌ, হটিতে পারছিস না। নে—বলে চালের বোচকা কুস্মের কাঁধে দিরে বাষ্টিকে বলল—কত ৰড় মাঠ দ্যাথছেন বাব্।

—দেখছি।

—আমার সংক্রা আসেন। দেখবেন কত লোক সেখানে চাল চুরি করে নিয়ে বাচেছ। একটা বোচকার জন্য একশটা বোচকা চলে বাচ্ছে। বাব্টি বললেন, কি করে জানলে? —আপনাদের হ্রজার প্রিলের লোক ত সব রামতা চেনে না।

—তা ঠিক বলেছ।

বিমলা কুস্মেকে বলল, এই বৌ তুই তাড়াতাড়ি হাটতে পারিস না!

—হাাঁ তাড়াতাড়ি হাঁট বাছা।

—িক করে হাঁটবে বলন। আট মাসের পোরাতি। বিমলা হাঁটতে থাকল।

—তা বটে। তুমি কোথায় চললে বিমলা।

—মাঠে চলেছি ৰাব্। বিমলা পথ দেখিয়ে চলল।

—আর কতদ্র নিম্নে ধাবে।

বিষলা ব্যক্ত এখনও কুস্ম ভাঙা প্লে পার হতে পারে নি। আরও কিছ্ সময় বাব্টিকৈ ধরে রাখতে হবে। নতুবা কুস্মের চাল বাবে—কুস্ম ঘরে ফিরে বেতে পারবে দা। ওর বাচ্চাগ্লো পাঁক পাঁক করবে।

বাব্টি যেন ওর চাতুরী ধরে ফেলল, এবং বলল চালাকী করার জারগা পাস না। দুম করে পাছার উপর লাথি মেরে দিল।

বিমলা রাগ করল না। সে ভাবল আহ। ছাগলটা আমার চারটা বাচা দেবে। সে বাব্র দিকে ঝ'কে পড়ল। এবং বলল, হুজ্ব একবার দ্যাথেন আমাকে।

বাব্তি এবার পিছন ফিরে বিমলাকে
দেখল। এত বড় প্রাণ্ডর, ঠান্ডা বাতাস নেই
প্রাণ্ডরে। দরে শালবনের ভেতর খেকে
পোড়ো বাড়ীর আলোটা শ্ব্ এক চোথ
বাদরের মত মনে হচ্ছে। কোথাও এতট্কু
প্রাণের উৎস খাজে পাওয়া বাচছে না। বড়
বড় ফাটল—দীর্ঘদিন ব্লিট হয় নি—বরণী
ফেটে চিরে একাকার। জোংশনা রাতের জন্য
ভয়। এই মাঠে বাব্টি বিমলার নশ্ন দেহ
দেখে এতট্কু নড়তে পারল না। বিমলা
এই শস্যিবহীন মাঠে পাথরের মত শ্রেষ
থেকে শ্ব্ বলছে, হুজুর কি দেখছেন।

সেই হবার মূথে বিমলা জীবনের সব অত্যাচারের প্লানি দরে করার জন্য শক্ত দীত मिरस वार्याणेत कर्छनामी कामरफ् धतम। এবং এ সময় দেখা গেল দুরে এক চোখ বাদরের মত আলোটা আর দেখা যাচ্ছে না। আলোটি নিভে গেল। শালের বন এবং শস্যবিহীন এই প্রাশ্তরে সিংহের খেলা দেখানো বাকি এমন এক চোখের বেদনা টপটপ করে অসতী হবার জনা চোথের জল ফেলছিল। আর মনে হল দ্রে সেই নিঃসণ্য প্রান্তর থেকে কারা যেন খালি ট্রেনটিকে र्छाल र्रहाल रूपेमरन निरंत बाटक। এই छोन ঠেলে স্টেশনে পেণছে দেবার জনা বিমলাও দলের মধ্যে ভিড়ে গেল। ওর দাঁতে মৃথে রক্তের স্বাদ লেগে ছিল। ট্রেন ঠেলে নেবার সময় সেই নোনা রক্তের স্বাদ চেটে চেটে চুষে নিচ্ছিল বিমলা।



হতাররাতে স্মিষ্টার 'শতাপাত ঘটলা।
পান-বসতে ছদিন ধরে ভূগছে। জনর
উঠল একশো তিন। মিথিল শ্যেছিল
মেঝেয়। স্মিয়ার চিৎকারে ঘ্য তেওে
দেখল বিছানায় বলে চাপা আতংক ও
তখন চেটাজেছ, 'বেরিয়ে গেল, বেরিয়ে গেল।'

আলো জেবলে নিখিল দেখে স্থানতার

দাই উর্ব মাঝে কাপড়টা ফ্লেররেছে।
একট্ নড়তেই দলমল করে উঠল সেই
ফালিড। স্মিলা সাত মাসের পোয়াতি।
ফালেফ্যাল করে নিখিলের দিকে তাকিয়ে
ছিল। চোখ সরিয়ে নিল নিখিল। বসন্তের
ক্ষতে মুখ্টা খোদলাঘ। পাশের ঘরে মা
ঘ্যোচ্ছে, তাকে ডেকে ভুলল।

বাডিওলার বউ উপর থেকে নেমে এসে পরামশ দিল ভাক্তার ভাকতে। পাড়ার ডাঙ্কারকে ঘ্ম থেকে তুলে আনল নিখিল। তিনি স্বামন্তার নাড়ী কেটে পনেরোটি টাকা নিয়ে চলে গেলেন। আর সতেরোটি মাত্র টাকা সংসার খরচের জন্য রইল। নিথিল হিসেব করে দেখল আটদিন বাকি অফিসে মাইনে হতে। তবে টিউশানীর টাকাটা আগাম চাইলে পাওয়া ধাবে। এছাড়া ওয়্ধ কেনার একটা খরচও আছে। কুড়ি টাকা পর্যশ্ত ধার অবশ্য অনায়াসেই পাওয়া যেতে পারে, ভেবে কিছ্বটা নিশ্চিন্ত হল। ডাল্কার বলে গেছে ভয়ের কিছু নেই অর্থাৎ আরু টাকা খরচ হবে না। বিছানার চাদর-তোষক রঞ্জে জবজব করছে। স্মিতার শায়ার রঙ বদলে গেছে, শাড়ির কিছা অংশে রস্ত। এসব ফেলে দেওয়া ছাড়া উপায় নেই।ওকে কাপড় বদলিয়ে মা সেই চাদর, শায়া ও শাড়ি ঘরের এক কোণে জড়ো করে রেখেছেন. সেই সংশ্য সর্মিচার পেট থেকে যে জিনিসটা বেরিয়েছে সেটাও।

বাড়িতে ধাঙ্গড় আসতেই বাড়িওলার বো তাকে এই জিনিসগুলো ফেলে দিতে বলল। দেখেই সে মাথা নাড়ল। এ-কাঞ্চ তার ম্বারা হবে না, প্রিলাশ ধরলে ফাটকে প্রের দেবে। দশ টাকা বর্থালস কব্ল করেও তাকে রাজি করানো গেলো না। এখন বাড়িওলার বো বাড়িওলার সভেগ পরামশ করে এসে বলল ভাঙারের কাছ থেকে সাড়িফিকেট আনো। সেটা দেখালে প্রিলাশ কিছু বলুবে মা। উনি কললেন, এ তো আরু আইব্ডো বা রাড়ির পেট-থস্যনে মাল নয়। ভন্দরঘরের বৌয়ের অ্যাকসি-ডেন্ট, তুমি বাপ্র ডাঞ্চারের কাছেই যাও।'

তাই শ্বনে নিখিল ডাঞ্চারদের কাছে ছটেল তখন ডাকার বাডি ছিল না। কখন আসবে তারও ঠিক নেই। বাড়ি ফিরে এঙ্গে সাত মাসের সুক্তান্টিকে বিছানার চাদর. শাড়ি ও শায়ার উপর রেখে নিথিল পরি-পাটি করে ভাঁজ করল। শাড়ির পাড় ছি'ড়ে নিয়ে বেশ শক্ত করে বাঁধল যাতে জিনিসটার আকৃতি ছোট হয়। তার উপর থবরের কাগজ মুড়ল। তাতে হ্বহ্ মনে হতে লাগল একটা কাপড়ের পাাকেট। কিছু, দিন আগেই হ্যাণ্ডলাম হাউস থেকে পদার কাপড় ও ব্রাউন্ভের ছিট কেনা হয়েছে। দোকানের নাম-দেখা ছাপা কাগজের যে থালতে জিনিসগ্লো ভরে দেয়, সেটা রেখে দেওয়া আছে। তাইতে নিখিল প্যাকেটটা ভরে খাটের নিচে রেখে দিল। স্থামতা শ্রে শংয়ে দেখছিল, কাতরস্বরে সে বলল, 'শাড়িটা তো কাচিয়ে নিয়ে পরা যায়। একট্রখানি জায়গায় তো মোটে লেগেছে।'

নিখিল একথা গ্রাহ্য করল না। স্নিয়গ্রার্থ দিকে ভাকালোও না। ওর মুখে বসন্তের ঘা-গ্লো পেকে টস্টস করছে। সাজ্ বারোটা নাগাল আবার সে ভাক্তারের বাড়ি গোল। ভাক্তার খেতে বসেছে। স্টিম্ফিকেটটা পাঠিয়ে দিল ছেলের হাত দিয়ে। ছেলেটি হেসে বলল, 'বাবা লিখেই রেখেছিল।'

বলার ধরণে মনে হল বলতে চায়, কি রকম বৃশ্ধি দেখেছেন, বলার আগেই করে রেখেছে। কিন্তু পনেরো টাকা ফ্রী দিয়েছি এই কথা নিখিল ভোলেনি। কৃতজ্ঞতা না জানিয়েই চলে এল। খ্র ভোরে খ্ম-ভাঙা অভ্যাস নেই, তাই চোথ জ্বালা করছে।ভাত খেয়েই সে শ্রে পড়ল মেঝের স্মিষ্টার খাটের পাশে। মা প্রত্নশারের বাড়ি গেছে সভ্যনারায়ণের বাকথা করতে। ক্যাজ্রেল লীভের হিসেব কষতে কষতে নিখিল খ্মিয়ে পড়ল।

বিকেলে চা থেয়ে, নিখিল থালটা হাতে ঝালিয়ে বেরোল। বারবার পকেটে হাত দিয়ে দেখল ভাক্তারের সাটিফিকেটটা আছে কিনা।

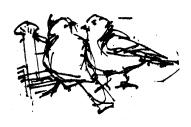
গলি থেকে বড় রাস্তায় পা দিয়েই নিশ্বিল ভাবল এবার কি করার? চারদিকেই বকককে আলো, লোক, গাড়ি। থলিটা এখানেই কোথাও ফেলে রেখে গেলে কেমন হয়! এই ভেবে পায়ের কাছে সেটি রাখল। অর্মান কোথা থেকে একটা লোক এসে বললো, 'প্রোর বাজার সেরে ফেললেন?' লোকটার লম্প্রী আছে পাড়াতেই। থলিটা হাতে তুলে নিয়ে মিথিল মাথা নেড়ে হটা শ্রু করল।

সংদৃশ্য থলিটা রাস্তায় ফেলে রেখে
পালে অনেকেরই চ্যেখে পড়বে। তার মধা
পাড়ার লোকও থাকতে পারে। তারপর
কেউ হয়তো খলেবে। বস্তুটি দেখেই হাউমাউ করে প্লিশে থবর দেবে। সেই চেনা
লোকটি তথন আগ বাড়িয়ে বলবে, হাঁ হাঁ
জানি লোকটাকে, আমাদের পাড়াতেই
ছাবিশের দ্ইয়ে থাকে, নাম নিখল
চাট্জো, ব্যাংক কাজ করে। এখন প্লিশটা
স্তাত কাগজের থালিটা ঝ্লিয়ে এবং তার
পিছনে এক পাল লোক মজা দেখা এবং
কেচ্ছা রুটাবার জন্য বাড়িতে এসে হাজির
হবে।

দৃশাটা কলপনা করতে গিয়ে নিখিলের দম বন্ধ হবার উপক্রম। সামনেই চিলপ্তেশস পার্কা, তারই একটা বেণ্ডে, কোঁলে থালিটারেথে সে বসল। কিছুক্ষণ ধরে সে চার-পাশে তাকিয়ে তাকিয়ে দেখল চেনা মানুষ কেউ আছে কিমা। কাউকে সে চিনল না তবে তাকে চেনে, এমন অনেকেই হয়তো থাকতে পারে। চিনেবাদামওয়ালা ডেকে এক আনার কিনল। বাদাম খতে থেতে ভাঁজতে শ্রু করল, কিভাবে থলিটার হাত থেকে কিনা বাদ্যেলায় বরহাই পাওয়া হায়।

একট্ পরেই সংখ্যা হবে। আধু মাইলটাক দুরে নিজনি গলি বা মাঠ দেখে
থালিটা টুক করে নামিয়ে বৈথে দিলেই
ল্যাটা চুকে যাবে। এই ভোবে নিখিল ভারী
সূখ বোধ করল। চিনেবাদামগুয়ালাকে ভোকে
এক আনার কিনল এবং ঝগড়া করে দুটো
বৈশি বাদামগু আদায় করল।

অকা চুপচাপ: বংস থাকা হ ব না।
বিশেষত তার সামনের দৃশা—বাজাদের
ছুটোছাটি, কিশোরীদের পাষচারিতে নকল
গামভীর্য, অফিস-ফেরং নাসের জানলায়
সারিবাঁধা বিবর্ণ মা্থশ্রী, বারান্দায় কন্টেরাথা নতদেহে নিঃস্পত্য ধ্বতী, রিক্সাচালকের খামে-ভেজা ঘাড়—যদি খ্বই
প্রোনো হয়। নিথিল ভাবল লপ্তাওয়ালাটাকে। এমন কোনোবার যায় নি মে
প্যাপ্টের একটা না একটা বোতাম ভেঙেছে।
শেষবার ঝগড়া করতে হয়েছে শাটে



নন্দরী মার্কা দেওরার ব্যাপারে। লোকের চোথে পড়ে কালিটা। এই সমরে হঠাং নিখিলের মনে পড়ল, খ্ব ছেলেবমসে একটা ভিটেকটিভ বইয়ে সে পড়েছিল, ধোপাবাড়ির কাচা কাপড়ের নন্দরী মার্কা ধরে তদন্ত করতে গোয়েন্দা দেখ-কালে খ্নীকে ধরে ফেলে। এই থলের মধো স্মিলার কাপড় এবং বিছানার চাদরে নিশ্চয়ই লন্দ্রীওয়ালাটা নন্দর দিয়েছে। স্তরাং যেখানেই ফেলা যাক না কেন, প্রালা ঠিক বার করে ফেলবেই।

এইবার খামতে খারে করল নিখিল।
বাদ বছরখানেকেরও বাচা হতো, তাহলে
সকলের চোখের সামটা দিয়ে শমশানে নিয়ে
গিয়ে চিতা সাজিয়ে পোড়ান বেত। কিস্তু
কেউ বাদ দেখে ফেলে! হৈ-চৈ করে ভিড়
জমাবে। তারপর কত কথা জিজ্ঞাসাবাদ
করবে। শেষে প্রিলাশ দেবে। কি ফেলল্ম
সেটা প্রমাণ করা সোজা কথা নয়। সাটিফিকেটটা দেখালেও বিশ্বাস করবে কেন?
ঠিক ওই জিনিস্টাই ফেলেছি কি অনা

কাউকে খনে করে কুচি কুচি করে প্যাকেটেঁ বে'ধে ফেলিনি তার প্রমাণ কি!

নিখিলের মাথা বিমানিশ করতে শ্র করল। আর হতে পারে এই থলিটার রঞ্জ-চঙ দেখে যদি কেউ এটাকে চুরি করে। টোর নিশ্চরই প্রিলশকে খবর দেবে না। নিখিল এধার-এধার তাকিরে চোর খ্রুতে শ্রু করল। এবং আশ্চর্য হল একটা লোককেও তার চোর-চোর মনে হচ্ছে না। অথচ প্রতিদিনই যত লোক দেখে, তার মধ্যে



हिन्तुवान शिकारतत अक्षे छेपकुडे छेप्शामन

প্রায় ডক্সনখানেককে তার চোর বলে মনে হয়। এমনকি ঘর থেকে ঘড়িটা চুরি বাওয়ার বিকে সবাই সন্দেহ করলেও তার প্রথমেই মনে পড়েছিল বাড়িওয়ালার মুখ। কিন্তু একটাও চোর সে দেখতে পাছে না।

চোর নিশ্চাই কলকাতার আছে, হয়তো এখন এই জারগাটার একজনও নেই। নিখল খালি হাতে উঠে পড়ল। থালটা হাতে খুরে বেড়ালে নিশ্চাই কোন না কোনো ছিনতাই-ওলাকে আকর্ষণ করষে। তবে অন্ধকার রাশ্চার ছাড়া তাদের পাওরা গাবে না। নিখিল আবার বসে পড়ল সন্ধ্যাটা প্রোন্ধ্রি নামার অপেক্ষার।

यथन स्मीकिता मन्था नामन निध्य হাঁটতে শ্ব্র্ করল। উদ্দেশ্যহীনভাবে। বহু ভাস্টবিন সে পেল ষেখানে থালটা ফেলে দেওয়া যায়। কিম্তু একটা ভয় ওর মনে গে'থে আছে, বলা যায় না কে কোথা থেকে দেখে ফেলবে--হয়তো অন্ধকার গালতে কোনো য্বক পাড়ার মেরেকে চুম্ খেতে-খ্যেত কিংবা কোনো ব্যাড় অন্ধকরে বারান্দায় জপ কর্ত করতে বা রামাখর থেকে কোনো গ্রিণী। একবার চের্টারে উঠলেই হল! তাও যদি না হয়, কাপড়ের **এদবরী মাকা যাবে কোথার। প**্লিদের গোরেন্দা তদনত করে ঠিক বার করে ফেলবে। তথন সাটিফিকেট দেখিয়ে বলা বাবে, মশাই অবৈধ কোনো ব্যাপার নয়। বাড়িওয়ালাকে চোরের মত দেখতে হলেও বলেছে ঠিকই অ্যাকসিডেন্ট। স্বেচ্ছাকৃত ঘটনা নয়। যে-কোনো পরিবারেই এমন ঘটতে পারে। কিন্ডু এসব বলার আগেই, পর্বিশ দেখে পাড়ায় ফিস্ফাস শ্রু হবে। গ্রন্থব রটবে। মাসকয়েক আগেই তো একটা সার্জেণ্ট এসেছিল পাড়ায়, অর্মান শোদা গেল, দেবস্তবাব, বাড়িতে খ্যা খেলত তাই ধরে নিয়ে গেল। শেবে জানা বায়, ভদ্রলোকের একটা রিক্স আছে, সেটা অ্যাকসিডেন্ট করায় থানার ডাক পড়েছে।

সকল অভ্যত অপরিবর্তিত ও
অপরিবার্য পানীর

তি
কলার লমর 'অলকানন্দার'
এই লব বিচর কেন্দ্রে আলবেন

ত্রিকানিশা টি হাটস
৭, গোলা বীট কলিভাজ-১
৪, গালবারা বীট কলিভাজ-১
৪৭, চিকালা এখিনিই কলিভাজ-১২
ম পাইকারী ও খ্রেরা ক্লেজনের
অলভ্যয় বিদ্যান্ত প্রতিক্রান ম

হটিতে হটিতে নিখিল ক্লানত হয়ে
পড়ল। থলিটা ছিনিয়ে নিতে কেট তার
সামনে ছোরা বার করল গা। অথচ বস্তি
দেখলেই সে তুকেছে। কেট তার দিকে ফিরে
তাকারনি। প্রায় নিজন গলি দিয়েও হটিল,
একটা কি প্রেণীর মেরেমান্য শুধু তেরছা
চোখে দেখল মান্ত। এছাড়া কিছাই না
হওরার নিখিল ভাবতে বাধ্য হল, তাহলে?

এইবার সে ভর পেতে শ্রু করল। তাহলে এই সাত মাসের মৃত সম্তানটিকে নিয়ে সে এখন করবে কি? পনেরো-যোল ঘণ্টা হয়ে গেল। এবার পচ ধরবে, গন্ধ বেরোবে। অশ্তত স্মামন্রার পেটে প্রেরা সমশ্বটা কাটিয়েও যদি বেরোত! দোষটা অবশা কার্রই নয়। অথচ এইরকম একটা নির্দোষ ব্যাপার ভাকে বিপাকে ফে**লল**। নিখিলের খ্বে রাগও হল। সেই সংখ্য এটাও টের পেতে লাগল, আসলে সে ভয়ানক ভীতু। রীতিমত কাপ্রেব। এরকম ঘটনা নিশ্চয় এই **প্রথম কল**কাতায় ঘটছে না। সেসব ক্ষেত্রে কিছ্ব একটা অবশ্যই করা হয়েছে। কি**ল্ডু নিখিল ভাবল, তারা** তো আমার মত নয়। মানুবের সংশা মানুষের প্রকৃতিগত হ্বহ্ মিল থাকতেই পারে না। তারা নিশ্চরই সাহসী ছিল অশ্তত আমার

হঠাং নিখিলের মনে হল, তার থেকেও
ভীত্ব এমন কার্র বাড়ে বিদ দারিষটা
চাপিরে দেওরা বার তাহলে রেহাই মিলবে।
ভীত্রা প্রিলেশ বাবে না। প্রিলটা নিরে
এইভাবেই ব্রে বেড়াবে আর ভাববে কি
করে রেহাই পাওরা বায়। অবশা গোপনে
তার বাড়ে চাপাতে হবে, না হলে জিনিসটা
কার জানতে পারলে, বাড়ি বয়ে ফেরং দিরে
আসবে।

চেনাশ্বনো ভীতু কে আছে, নিখিল ডাই ভাববার জন্য একটা দ্রীম-স্টপে দাঁড়িয়ে পড়ল। বহুজনের নাম তার মনে এল। তারা কি পরিমাণ ভীতু তার দানান উদাহরণ মনে করতে লাগল। অবশেষে শশাংককেই তার পছল্দ হল। প্রায় চার বছর স্মিতার গৃহ-শিক্ষক ছিল। স্থমিত্রাদের তরফ থেকেই বিয়ের প্রস্তাব দেওরা হয়। কিন্তু শশা[©]ক নানান অজ্বাত দেখিয়ে বিয়েতে রাজি হয়নি। নিখিলের সংশা স্মিতার আলাপ ওই করি**রে দের। অ**বশ্য মাস-ছয়েক **হল** ও বিরে করেছে। এখন যদি শশাভেকর সামনে হাজির হওরা বার, তাহলে নিশ্চর ওর মদের মধ্যে স্থিমনা, প্রেম, বিবাহ-প্রস্তাব **অপ্তাহ্য অর্থাৎ বাবতী**য় ধাণ্টামো এবং অন্য আর একজনকে বিবাহ, সব মিলিয়ে **অপরাধবোধ তৈরী কর**বে। প্রান্তন প্রেমিক-দের ভূলা ভীতু আর কে? এই থলিটা ওর হাতে কোনোরকমে গছাতে পারলে, তারপর **ওর ঝামেলা। বস্তুত স**্নিম্নার প্রতি ওর বিশ্বাসম্বাতকভার এটা শাস্তিও হাবে।

নিখিক এতসব তেবে প্রফলে বোধ করল। তবে প্রেরাপ্রির অবন্তি অনুচল দা। শশাক্ষ থাকে একটা গলির মধ্যে এক-তলায়। কড়া নাড়তে বি দরকা খুলল। শৃশা । ক্রিরেরে এল পরনে ল্পি এবং গোঁজ। নিখিলকে চিনতে পেরে উচ্চ কতে সাজুলরের অভ্যর্থনা জানিরে ঘরে নিরে বসাল।

'সম্ধা, দেখ দেখ কে এসেছে।' এই বলে শশা•ক ডাকতেই ভিতর থেকে ওর বৌ এল। দেখতে মোটাম্টি। রেডিওর গান গার, দ্-একখানা রেকড'ও আছে। নিখিল দাঁড়িয়ে উঠে নমস্কার করল।

'আপনার কথা ওর কাছে শুনেছি।'
এতে নিখিল বিস্মিতই হল। স্মিতার
স্বামীর প্রসংগ বৌয়ের কাছে ভীতু শশাংক
কি তুলবে? নাকি এটা আলাপ করার একটা
কেতা।

'আমার সব বংশ্র গলপই করেছি। পরিচয় করিয়ে গ্লেপনার ব্যাথারে দরকার আর হবে না।'

শশাণক নতুন কেনা একটা বেতের চেয়ারে হেলান দিয়ে পা নাচাতে লাগল। ঘরের সব আসবাবপত্তই যে ওদের বিয়ের পর কেনা তা রঙের ঔশ্সন্প্রতেই বোঝা বায়।

'ওনার গ্লেপনার থবর অবদ্য না বললেও আমরা জানি।' নিখিল ইচ্ছে করেই 'আমরা' বলল। সম্ধাত যথারুটিত বিনয় জানাতে 'ভারুটী তো গ্লেপনা। আমার মত গাইরে গণ্ডা গণ্ডা আছে' ইত্যাদি কথা পরম স্থে বলে গোল। এরই মধ্যে নিখল শ্শাংকর হাবভাব জরীপ করে একটা 'লানে তৈরীতে হাত দিল।

'আমি তো এলাম, এবার আপনারাও একদিন চলান।'

'নিশ্চয়।' শশাংক যেন প্রশ্তাবটার জন্য ৬ং শেতেই ছিল। 'করে যাব বলো, সামনের রোববার? তাহলে, ইলিশ থাওয়াতে হরে। তিলাপিয়া খেয়ে খেয়ে পেটে চড়া পড়ে গেল। স্মিত্রা দার্ণ ইলিশ-ভাতে করতে পারে।'

নিখিপকে হাসতেই হল। সন্ধা াট উন্বিংনতা দেখিয়ে বলল, 'এখন ইালশ পাওয়া যায় দা।' আর তুমি ভদ্রলোককে বিশ্রত করতে বায়না ধরলে ইালশ খাব।'

'আরে ও আবার ভদ্রলোক কি। ওতো নিখিল। ওকে সব থেকে লেগপুল করতাম আমি আর সনং। সনং লিখেছে ছাটি পেলে জানুয়ারিতে কলকাতা আসবে। তোর ঠিকানাটা লিখে দিস ওকে পাঠাব।' শশাংক সবিশতারে সনং-এর গদপ করে চলল আর নিখিল ভাবল, একি!

'প্জোর বাজার গাকি' ছঠাং সুন্ধ্যা প্রশ্ন করল। নিখিল লাজ্ক হেসে ঘাড় নাড়ল। শশাংক ছোঁ মেরে থলিটা হাতে তুলে নিয়ে বলল, 'দেখি বৌয়ের জনা কি শাড়ি কিনলি।' নিখিলা তাড়াতাড়ি ওর হাতটা চেপে ধরল। 'আরে ধাং, দেখার কি আছে। মার থান, ঝিয়ের ক্মদামী একটা মিলের আর স্মিষ্টার একটা তাঁতের যোল টাকার শাড়ি। খ্লিসনি শিক্তা। বেশ বাধাছাদা রয়েছে আবার কেন খাট্নি বাড়াবি।' সন্ধ্যা দেখেছ, বৌরের শাড়ি আছে
কিনা, অনোর হাতের ছোঁরাতেও আপবি।
কি রঙের কিনলি ? শেলট না ভীপ মেবুন?
স্মিতা একটা রঙ এক্ষার পরেছিল
মেবুনের ওপর গ্রীন ফাটি ফ্টি, পাড়টা
হোরাইট, দার্গ দেখাছিল ওকে।

'त्रुष्ठ धार कर्ता वृत्ति।' सन्धारक धार कोक्ष्मी प्रधान।

'না, খ্ব ময় আপনার মতই।'
'ওমা তাহলে তো বেশ কালো।'
'আপনি কালো হলে আমরা ডো আপকাতরা।'

নিখিল হাস্মাধে শধাব্দর দিকে তাকিয়ে সমর্থান চাইল। পশাব্দ বড় করে ঘাড় নাড়ল। রঙের প্রশাসায় প্রকৃতিত সংধ্যা বলল 'দেখেছেন চা দিতেই ভূলে গেছি।'

স্থ্যা ঘর থেকে বেরিয়ে বেডই নিখিল বলল, 'শাশাংক, একটা খুব অস্বিধার পড়ে গোছ।' জিল্লাস্ চোখে শাশাংক তাকিরে রইল। তখন নিখিল আদ্যোপাকত বাপারটা বলে টোবলের ওপর রাখা কাগজের থলিটা আঙ্লুল দিয়ে দেখিলে বলল, 'ওর মধোই সেটা রুয়েছে।'

শশাণক চড়াং করে সিধে হরে বসল।
'তার মানে, তুমি ওই কুংসিত জিনিসটা
আমার টেবিলের উপর রেখেছ? নামাও
নামাও বলছি।' দাঁত চেপে হিস্হিস্ করে
শশাংক আঙ্লে দিয়ে মেঝে দেখাল। নিখিল
নামিয়ে রাথল।

িক করতে এখানে এনেছ?' চাপা স্বরেই শ্শাংক বলল, ভিতরের দিকে চোখ রেখে।

'এটাকে নিয়ে কি করব ভেবে পাছিছ না'

'ফেলে দেবে, আস্তাকু'ড়ে ছ'্ট্ড় ফেলে দেবে।'

'বলটো খ্বই সোজা, ফেলতে গেলেই লোকে দেখে ফেলবে। তখন চিংকার হবে, একগাদা লোক জমবে, টানতে টানতে হাজার হাজার লোকের মধ্য দিয়ে থানায় নিয়ে যাবে। অশ্লীল কথা বলাবলি করবে।'

'তা আমায় কি করতে হবে?'

'এটার একটা বন্দোবন্ত করে দে,
শূলাতক নিজন্ধ। তোর কথাতেই বিরে করেছিল্ম। এবার তুই , আমার কথা রাখ।'
নিখিল হাত বাড়াল শুলাতকর হাত চেপে
ধরার জন্য। হাতদুটো তার আগেই শুলাতক
তুলে নিরেছে। টেবলে নিখিলের দুটো হাত
থলিটার পালে পড়ে রইল।

'আমার কথাতেই শুৰু বিরে করে-ছিলি? সুমিত্রাকে তোর প্রকাশ হরনি?'

নিশ্চর, ওকে নিশ্চর ভালবেঙ্গেছিল্ম আন্তর বাসি। কিন্তু তোর সপো ওর একটা সম্পর্ক ছিল তাও জানি।

তাই এক্সচেল করতে এসেছিস, এই এই জিনিসটার কালো। শুশাব্দ থলিটার দিকে আঙ্বে তুলেছে তথন চায়ের কাপ হাতে সম্প্রা ত্কল।

কিসের এক সডেএ ?' হাসি মুখ করে সম্থা একটা চেরারে বসল।

নিখিল বলছিল ভূমি যদি গোটাকতক গান শোনাও। তাইতে বলল্ম বৌয়ের শাড়িটা তার বদলে দিতে হবে।'

আহা, পছন্দ করে উনি কিনেছেন। আর গান যা গাই সে এমন কিছু নয়।"

সন্ধ্যা মেয়েটি ভাল। এর পর থবে বেশি সাধাসাধি করতে হয়নি। থালি গলায় ভিনটি গান করল। শশাণ্ক উঠে দাঁড়িয়ে বলল, "নিখলকে একট্ব এগিয়ে দিরে স্থাসি। পাঞ্জাবিটা দাও।"

ওরা দ্রান চুপচাপ পাশাপাশি হাঁটতে লাগল। রাজ হরেছে। রাজভার লোকজন কম: দোকানগ্লো বন্ধ হয়ে যাওয়ার আলোর পরিমাণ খ্বই অলপ। নিখিলের মনে হল, এখন রাশতার বে- কোনো জারগার ধলিটা রেখে নিবিবাদে চলে বাওয়া বাম।

"ওটা দে" শশাংক দাঁড়িয়ে পড়ল। "কেন!"

"ওই ডাস্টবিনটার ফেলে দি।"

"সে তো আমিও পারতুম় তা হলে তোর কাছে এলুম কেন?"

"তবে কি মতলব তোর?" হঠাং
শশাংক গলার স্বর ও দাঁড়াবার ভণিগ
পালটে ফেলল। নিখিল পা পা করে
পিছোল। দুরে পানের দোকানটা মাত্র খোলা। এখন খালি হাতে ছুটতে শ্রে করলে চোর বলে ধরা পড়তেই হবে। নিখিল
দাঁড়িয়ে রইল।

"তুমি এখন স্মিত্রার বিয়ে-করা শ্বামী।" শশাংক ওর ব্কের জামা মুঠো করে ধরল, "তুমি এই জিনিসটার বৈধ অভিভাবক, তার সাটিফিকেট পকেটে আছে। অতএব এর সম্পূর্ণ দায়িত্ব তোমার। আমার দায়িত্ব বহুদিন আলো শেষ হয়েছে। তব্
ভ আমার কাছে কেন এসেছ?" নিথিককে ঝাঁকাতে শ্রু করল শশাংক। "তুই আমার ঘাড়ে দায়িছ চাপিরে দিরেছিস। তুই কাওরাড, তুই ইরেসপন-সিব্ল।" নিখিল মরীয়া হরে উঠল শ্না প্রায়াধকার রাজপথে। শশাম্কর হাত থেকে নিজেকে মূক করার জন্য ধাজা দিল। বদলে জোরে চড় মারল শশাম্ক। এইবার জোধে দিশাহারা হরে মারবার জন্য নিধিশ বাণিরে পড়কা।

হঠাং জানলা খুলে দোতলা থেকে এক পরেষে কণ্ঠ গজে উঠল, "কি হচ্ছে, আাঁ। গ্'ডামাঁ?" লোকটা চিংকার করে উঠল। দুড়দাড় করে কিছু লোকের ছুটে আসার শব্দ এল অধ্ধারের মধ্য থেকে।

নিখিল আরু চিন্তা করারও স্থোগ
নিজেকে দিল না। প্রাণপণে রাস্তার নিজন
দিকে ছাটতে শ্রু করল। ছাটতে ছাটতে
যখন দম ফ্রিয়ের এল, থামল। তখন
পায়চারি করতে করতে এক কনস্টেবল তার
কারে এসে, কেন সে এমন করে হাঁপাছে
তার কারণ জানতে চাইল। নিখিল বলল,
একটা গ্রুডা তাকে তাড়া করেছিল।
গ্রুডাট কোনদিকে কনেস্টবল জানতে
চাইল। নিখিল আঙ্কা দিরে দেখাল।
কনেস্টবলটি কিছ্কেণ সেইদিকে তাকিরে
থেকে 'আছ্ডা ঠিক হাায়' বলে পায়চারি
করতে করতে চলে গেল।

নিখিল এইবার টের পেল কাগজের থালিটা তার কাছে নেই। ছোটার সময়ও হাতে ছিল না। সেটি শশাংকর কাছেই রয়ে গেছে। শশাংককে লোকগুলো জিল্পাসা করলে ও নিশ্চয় বলবে গংশু তাড়া করেছিল। গুশু নিশ্চয়ই স্দৃদ্য কাগজের থালতে ভরা কাপড়ের প্যাকেট ফেলে যায়নি। লোকগুলো খ্ব খুশি হয়ে নিজেদের মধ্যে বলাবলি করবে, ভাগ্যিস আমরা এসে পড়লুম তাই ভদ্রলোকের এই জিনিসটা রক্ষে পেল। এই বলে তারা গালিটা শশাংকের হাতে তুলে দেবে।

নিখিল বুক পকেটে হাত দিয়ে সার্চি-ফিকেটটা অনুভব করে ভারী আরাম পেল। তখন সে মনশ্চক্ষে দেখল, শশাৰ্ক সেই থলিটা হাতে নিয়ে হে'টে চলেছে।

তর্ণতর কবিদের অন্যতম অগ্রগণ্য কবি

আশিস সান্যালের

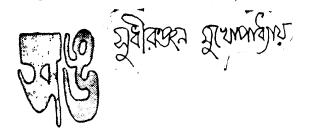
নতুন কবিতাগ্রন্থ

न्दर्नत উদ্যাन ছ**ँ**८य

প্রকরণে ও চিণ্তার মৌলিকত্বে কবি আরো পরিণতির স্বাক্ষর রেখেছেন এই প্রন্থে। এর অনেক কটি কবিতাই ইংরেজি এবং অন্যান্য করেকটি ভাষার অনুদিত হয়ে দেশে-বিদেশে আলোচিত এবং অভিনান্দিত হয়েছে। দাম — তিন টাকা

ৰাক্-সাহিত্য প্ৰাইডেট লিমিটেড দ

৩৩ কলেজ রো, কলকাতা-৯



্ মহাদেব নাশনাল সাকানের ক্লাউন। তার মাথের গড়ন ঠিক বাংলা পাঁতের মতো। চোখদ'(টো গোল, নাক বেশ লংবা কিক্টু তীক্ষা নয়, টিয়াপাথীর ঠোঁটের মতো

কিন্তু তক্ষি নয়, টিয়াপাথীর ঠেটির মতো বাঁকানো। একে দেখবার জনোই সহস্র

দর্শকের ভিড়জ্মে যায়।

দ্র'-একটা ছোটখাটো থেলা হার যাবার পর নিজের বিশেষ পোশাক পারে খাড়িয়ে খাড়িয়ে অভ্ছত ভংগীতে মহাাদব এসে আছাড় খেয়ে পড়ে একেবারে মাঝ-খানে। বাস, সেইটাকুই যথেন্ট। প্রবল অটুহাসিতে চারপাশ যেন ফেটে পড়ে।

তরপর রঘুনাথের বাঘের থেলা।
কিন্তু প্রথম করেক মিনিট রঘুনাথকে চুক্
করে দাঁড়িয়ে থাকতে হয়—দর্শকের হাসি
সহক্ষে থামে না।

আরও নানারকম থেলার পর আদে রুক্মিণী।

প্রায় চৌষট্টি চেয়ার একটার পর একটা দিয়ে উচু করা। চেয়ারের ওলা দিয়ে সাপের মতে। এ'কেবে'কে রুক্মিণী একেবারে ওপরের চেয়ারে গিয়ে বসে, তারপর তেমান ক'রে আবার নেমে আসে। কী আশ্চর্য কৌশল। নির্বাধ বিসময়ে দতখ্য হ'য়ে প্রত্যকে যেন তাদের হাৎস্পদন শোনে। একট্র এদিক-ত্রদিক হ'লেই সর্বানাশ—বে-কামদায় প'ড়ে গিয়ে রুক্মিণীর হাড় গ'ড়ে। হ'য়ে যাবে। হাত-তালির তীর শাক্ষ তার্র বাশগ্রেলা যেন দুলে ওঠে।

তারপর আবার মহাদেব। নিমেধে দশকৈর হ্ংপ্পদন শোনার আগ্রহ ট্৻টে যায়—সমুস্ত গাম্ভীয আর আশং⇔। হাওয়ার মিশে যায়।

ঠিক র্বিশ্বণীর মতো সেও চেয়ারের তলায় সশক্ষে মাথা ঠুকে সেই চৌষট্টি: চেরারের সঞ্চে হুড়ম্ট্ ক'রে পড়ে। কিন্তু তার হাড় গ'বুড়ো হয় না—অন্তুত কায়দার আঘাত বাঁচিয়ে পা বাঁকাতে বাঁকাতে মহাদেব উঠে দাঁড়ায়।

হাসির আওয়াল প্রবল হ'য়ে ওঠে।
বাইয়ে বেরিয়ে এসেই মহাদেব
ব্বিশীকৈ জিজ্ঞেস করে, কেমন খেলা
দেখালাম আজ?

ওঃ চমংকার!

চমৎকার হাাঁ? হে' হে', বা বা বাঃ, খেলানা দেখেই ব'লে দিলে চমৎকার?

না দেখে মানে? নিশ্চরই দেখেছিলাম। কই বাবা, মাথা চুলকে মহাদেব বললো, আমি চেরারের তলা থেকে চোথ পিট্পিট, ক'ব্রে দেখছিলাম যে, তুমি তো— ভাড়াতাড়ি রুবিশ্বণী বললো, কেমন ক'রে বেরিয়ে আসো তুমি? আমি হ'লে তো গ'ন্ডো হ'রে যেতাম।

আহা হা, কী যে বলো, তুমি হ'লে সাকাসের প্রাণ—তুমি কি পড়ে যেতে পারো?

আমি না-হয় সাকাসের প্রাণ, আর ভূমি?

আমি বাবা সাকাসের লেজটি। ওমা, সে আবার কী?

হ্ম্বাবা, লেজটি। কিল্তু পড়ে যাবার কথা তুমি আর ব'লো না--আমার ভয় লাগবে।

আমি প'ড়ে গেলে কাৃদিবে তুমি?

হ্মে বাবা, কেন কদিবো না? তাম হ'লে সাক'':সর প্রাণটি...সেটি পড়াল কদিবো না? একেবারে ভেউ ভেউ ক'রে—

পেছন থেকে রঘুনাথ ব'লে উঠলো তোকে ভেট্ট ভেট ক'রে কাঁদতে দেখলে সকলে হাসতে হাসতে পেট ফেটে মরে বাবে। ভাগ্ এখান থেকে—

এই সব নিয়ে গড়ে উঠেছে ন্যাশনকে সাকাস। সমুদ্ত পৃথাবী থেকে লোক নেয়া হ'য়েছে। আয়োজন বিরাট। তাছাড়া বাঘ-সিংহ, হাতী-ঘোড়া, বাদর-ভাল্ক, নানা-রকম জণ্ডু-জানোয়ার মান্ধের সংগে পালা দিয়ে খেলা দেখায়।

আজ সাকাস বংধ। মাঝে মাঝে বিশ্রাম। ফেণী মহকুমায় তাব্ পড়েছে। বাইরে বেশ জোরে ব্লিট পড়ছে, কার্র শহর দেখাত বের্বার উপায় নেই। চায়ের কাপ আর খাবারের স্পেট হাতে নিয়ে মহাদেব আর রঘ্নাথ র্ক্শিণীর তাব্পত আসর জ্মালো।

त्रिकारी वलाता, किक्ट्र थाएक ना स्य तक्षां तथ

বাড়ির কথা ভাবছি!

বাড়ির কথা ? গশ্ভীর হ'রে র্রন্থিণী বললো, বউ-এর কথা নাকি?

না, আমার বিয়ে হয়নি।

আমারও হয়নি, মহাদেবের কণ্ঠস্বব ভেসে এলো।

আনহা হা হা, হেসে রুক্তিণী বললো, তোমার কেন বিয়ে হয়ান মহাদেব?

কে বিয়ে করবে বাবা? যা হ্যা•গামা! যেন আলুর বস্তা ঘাড়ে নিয়ে কু'জে। হ'য়ে এমনি ক'রে চলা—উঠে দাঁড়িয়ে চলাটা দেখিয়ে দিতে দিতে মহাদেব বেরিয়ে গেল।

হাসতে হাসতে রুক্মিণী বললো, ও এতো শিখলো কোণায় রঘুনাথ?

হাাঁ, বেটা শিখছে বটে।

তর মুখ দেখলেই আমার হাসি পায়। মহাদেব বলে, তার মুখ নাকি আর এক-রকম ছিল, চেণ্টা ক'বে ক'বে ও এমনি মজার মুখ তৈরী করেছে।

হবেও বা, শালা সব পারে! তারপর একট্ চুপ করে থেকে খাব আচ্তে রঘুনাথ বললো, আচ্ছা রাঝিণী তুমি বির করোনি?

র্ষিপী থেন বড়ো বেশি লম্জা পেল। মাথা নেড়ে জানালো, না।

(44 ?

সে অনেক কথা রঘুনাথ!

वन मा भईन?

আর কেউ এদের কথা শ্নেছে না।
বৃণ্ডি ঝরার একঘেয়ে শব্দ ভেসে আসছে।
মেমসাহেবদের তাব থেকে হাসির কল্লোল শোনা যাছে। বোধহয় মহাদেব গিয়ে
জুটোছে সেখানে।

বলোর,ফিলেণী।

অমি বিয়ে করলে সংসারে চলবে না। আবার বাবা নেই, মা আর অনেক ভাই বোন। ভোমার দেশ কোথায় রহনোথ?

দেশের সংগ্য সম্পর্ক চুকিয়ে দিয়েছি অনেকদিন। আমার আপনার লোক নাতত এখন কেউ নেই। আজ এখানা কাল সেখানে—এখন তো ঘর-সংসালের ঠিক নেই। তাই তো বিয়েত্র কৃতি নি।

তবিরে হাওয়া যেন সজল গমভীর হয়ে
উঠলো। কিছ্ফুল জীবনের নানা কথা
ভাবতে ভাবতে দাজেনের বাকে ফালে ফালে
উঠলো দীঘানিশ্বাস।

এখানকার প্রত্যেকের জীবনের পেছনে একটা ইতিহাস আছে। এমনি অসরে মাঝে



बात्य त्रहे तर कथा जात्नाच्या करा हत। সকলের ইতিহাস প্রত্যেকের জানা।

জানোয়ারেরা কথা বলতে পারে না। তব্ কথনো কখনো খাঁচার ধারে গিরে দাঁড়ালে তাদের চোখের ভাষা যেন পঢ়া হায়। গহন বনের স্বাধীন জীবনের প্রায়-বিস্মৃত ইতিহাস ভাদের চোথের তারার কাঁপে। তাদেরও দীর্ঘনিশ্বাস খাঁচার কোটরে জমা হয়ে আছে।

কিম্তু শ্ধা ব্যতিক্রম মহাদেব। তার চেহারা দেখলেই প্রত্যেকের হাসি পায়। তারও নিশ্চয়ই একটা কাহিনী আছে আর হয়তো তা একাশ্ত দঃখেরই গম্ভীর ইতিহাস! কিল্ডু সে কথা শ্নেবে কে? তার মুখই যে দুঃখ ভোলানো। ভাড়ামির প্রবল চাপে মহাদেবের অন্তরের গভীর দিকটা আল একেবারে গ'্ডো গ'্ডো হয়ে পেছে। মহাদেবও নিজের সব গভীর কথা ভূলেছে— এই ভাড়ামির ভোলই তার একমার চরম প্রিচয়।

যদি সে একদিন অন্য সকলের মতে। বেশ গশ্ভীর মুখে আসরে বলতে আরুভ করে, শোন তোমরা, তোমাদের মতো আমিও একদিন সংসারে ছিলাম, আমারও আশা ছিল, স্বপন ছিল, বিয়েও কর্বো ভেবে-ছিলাম—কিন্তু এতো কথা ওই মঞ্চার মুখ নিয়ে বলতে পারবে কি? আর বললেই বা লোকে শ্নবে কেন! মহাদেবের জীবনের গভীর কাহিনী তার ভাঁড়ামির ছাপ্মারা মুখের চেয়ে বড়ো কি? লোকে হাসি ঠেকাবে কেমন করে!

মহাদেবের কোন কথাই কেউ জানে না। मकालराला जन्ड कारनामात्रास्त्र रथना শেখানো হয়। রঘুনাথই শেখার আর অনেকে নিজের খেলা অভ্যাস করে নেয়। মহাদেব এ সময়টা বড়ো ব্যস্ত থাকে। কারণ তাকৈ হাসাবার নতুন ভণ্গী বের করতে হয় আর খেলারও অভ্যাস করে নিতে হয় মাঝে মাঝে।

রাঝণী দারে দাঁড়িরে মহডা দেখে। কথনও কথনও সে মৃশ্ব বিসময়ে রছুনাথের দিকে পলকহীন চোখে চেয়ে থাকে। তার দীঘ' বলিণ্ঠ দেহ, গায়ের রঙ আর গদভীর মুখ রুক্রিণীর মনে যেন নেশা **জা**গায়। বঘ্নাথ কি যাদ্ জানে? তাকে দেখলেই বাঘ সিংহেরা যেন স্তিমিত **হয়ে পড়ে।** চেয়ে চেয়ে র্ক্সিণীর মানসিক বিলাস বেড়ে যায়। তারপর সে হাসতে **আরুভ** করে। দুর থেকেই হাসির শব্দ শুনে মহাদেব ব্ৰতে পারে র বিশ্বী তাকে লক্ষ্য করছে। হঠাৎ মহাদেবেরও উৎসাহ বেড়ে যায়। গড়াতে গড়াতে সে চলে আসে একেবারে তার পায়ের কাছে।

কেমল ব্রিল্পী?

খ্যব ভালো, এতো জানো তুমি! সোজা হয়ে দাঁড়িয়ে কথা নেই বাতী নেই মহাদেব ফদ্ করে গান ধরে, আমি জানি তাই মানি...

মহাদেৰের হাত ধরে টানতে টানতে রাশিণী তাঁবাতে চলে এলো।

की भारत वर्णा महाराव? তোমাকে খাৰো—হা-মহাদেব মুখটা

धकरें दर्शकरा लाम हाँ करामा। বাবারে বাবা. এতো হাসাতে পারো

তমি, পেটে খিল ধরে গেল! ছেডে গেলেই সেরে যাবে।

তাই নাকি?

হুম্বাবা।

সতিঃ মহাদেব, তোমাকে দেখলে শ্ধ্ হাসতে ইচ্ছে করে। কাকে বিয়ে করবে তুমি? সে বোধহয় হাসতে হাসতে মরে যাবে।

নকল কামাভরা গলা করে মহাদেব বললো, শৃধু আমার এই চেহারাটা দেখে প্রথমেই ডুকরে কে'লে উঠবে—হুমু বাশ্বা!

रहरत्र रक्ष्यल द्विष्या रक्षा, याला এবার কী খাবে?

বকের ডিম—

বকের ডিম? সে কোথায় পাবে?

ডিমা ডিমা ডিমি ডিডিমা—নাচতে নাচতে মহাদেব বেরিয়ে গেল।

সেদিন একেবারে প্রথমেই এক কান্ড! ঘোডার পিঠের ওপর পি-ককা হতে পড়লো মহাদেবের মাথার চাঁদি। একটা শব্দ হ'লো। মহাদেব জ্ঞান হারা**লো—রক্তের ধারা ব'য়ে গেল।** ধরাধরি করে মহাদেবকে ভেতরে নিয়ে যাওয়া হ'লো। তারপর ডাক্তার্—ব্যান্ডেজ ইত্যাদি।

এমন ঘটনা এই সাকাসে এই প্রথম। আজ মহাদেব দেখছিলো দুৱে দাঁড়িয়ে রুঝিণী হাসছে—তাকে टपटथ ম,হ,তের **क**(ना সে কী ভেবেছিল! তারপরই ব্যস্ এই কান্ড! কিছ্কণের জন্যে খেই হারিয়ে গেল। সার্কাসের লোকেরা কি করবে ভেবে পেল না।

জ্ঞান হবার পর চোখ খালে মহাদেব ব্ৰুতে পারলো না দে কোথায়। চোখ চেয়ে দেখলো রুক্মিণী গায়ে হাত বুলিয়ে দিচ্ছে আর তার মাথায় অসহা বশ্রণা।

কেমন আছো মহাদেব?

আমার কী ছ'য়েছে? স্বপ্নের, মুডৌ সমস্ত খট্নাটা মহাদেবের মনে পড়লো। মृদ্মুস্বরে রুন্স্রিদী বললো, আর কথা ব'লো না, ঘ্মোও চুপ ক'রে—

অনুমার মাথায় বড়ো হালুলা—উঃ, বড়ো

সৰ সেৱে যাবে মহাদেব। **য**ুমোও, তোমার কপালে আমি হাত ব্লিয়ে দিই।

ভূমি থাকবে, আমি বচিবো রুম্মিণী? আঃ, কী ষে কলো!

কেন আমার এমন হলো!

কিছ; হয়নি তোমার। আর কথা বলো না, বাথা তাহলে বেড়ে যাবে।

হ্যাঁ হার্য এবার আমি মুমোই।

দুরে কোলাহল শোনা যা**ছে। বোধহ**য় সকলের খাওয়া শেষ হলো। রাত কত কে जाता !

কয়েক দিন কাটলো। আজ ভাঙারবাব, আশা দিয়ে গেছেন. মহাদেবের আর কোন ভয় নেই।

র্বিলণীর দিকে চেয়ে চেয়ে কৃতজ্ঞায় মহাদেবের মন ভরে গেল।

বালিটো খাও এবার—

না, আমাকে আর বার্লি দিও না। ছি, ছেলেমান্থী করে দা, আমার কথা

আগে তুমি খাও?

ওমা, আমি কেন থেতে যাব? আমার কি হয়েছে?

তাহলে আমিও খাবো না। বারে, এতো বেশ!

নিঃশবেদ অস্থকার জমা হচ্চিল। রুবিশা আন্তে আন্তে উঠে গিয়ে ল্যান্প্ জেবলে দিল। আর সেই মৃদ্র আলোয় তার চেহারা দেখে মহাদেবের কি যেন মন হলো-একটা তীর নতুন অনুভূতিতে তার শরীর কে'পে উঠলো। বালি হাতে নিয়ে মহাদেবের বিছানায় আবার এলো রুক্রিণী আর আন্তে আন্তে মহাদেব তাব একটা হাত চেপে ধরলো।

বলি খাও—

ছোট পরিবারই সুখী পরিবার

সঃষ্ঠা, জন্মনিয়ন্ত্রণের একমাত্র সহায়ক

मनन बाना'ब-

পরিবেশক : জনর লাইরেরী, ৫৪ (৬, কলেজ স্মীট, কলি—১২ 🛝

ে রুক্সিণী, কেন তুমি আমার জন্যে এত কর, কথাটা মৃদ্ গদ্ভীর স্বরে বললো মহাদেব আর তার মুখে একটা অদ্ভূত ভাব ফুটে উঠলো।

হঠাং হাসির প্রবল তর্গণ উঠলো রংকিণীর পেটে। সে অনেক চাপতে চেণ্টা করলো কিণ্ডু ফল হলো না কিছাই। হাসির তোড়ে কিছুটা বালি ছিটকে পড়লো মহাদেবের গামে।

এ কি, অতো হাসছো কেন রুজিণী? না, কিছা না—

' আবার আমার মুখ দেখে তোমার হাসি পাছে না?

না না—বালির কাপটা রেখে হাসি খামাবার জন্যে রুল্মিণী বাইরে বেরিয়ে কোল। একটা, পরে ফিরে এসে দেখলো মহাদেব বালি খায়নি, কাপটা দুরে ছ'্ড়ে দুরেছে।

রাগ হয়েছে, না?

ना।

ও বাবা বন্ধ রেগে গেছ দেখছি।

না, আমোর আবার রাগ কি!

হাসি চেপে র্বাশ্বণী বললো, ছি, অত রাগ করে না, এখনো তুমি খবে দ্ববল— আবার অসুখ বেড়ে যাবে যে!

আমি মরলেই বা কার কি!

থাক, অনেক হয়েছে, যাই আবার আমার কাক্স বাড়লো, বালি করি গে!

আমি থাবোনা।

দেখা যাক, হাসতে হাসতে র্কিনণী চলে গেল:



বালি তৈরী করে ফিরে এসে দেখলো মহাদেব ঘ্রিয়য়ে পড়েছে।

র্কিনশী তাকে আর জাগালো না।
তার অভ্তত মুখের দিকে চেয়ে কিছুক্ষণ
ছুপ করে দাড়িয়ে রইলো।

ক্ষেক দিন পর মহাদেবের মনে হলো তার বাথা অনেক কমে গেছে। বোধহয় ইচ্ছে করলে সে এখন উঠে দড়িতে পারে: সে উঠতে থাবে এমন সময় রুকিনণী এলো।

উঠো ना, উঠো ना वर्ना छ।

আমি সেরে গেছি রুকিনণী।

তা তো দেখতেই পাচছে, কিন্তু কে সারিয়ে তুললো তোমাকে?

তৃমি। কি**ণ্ডু কেন** স্থামাকে সারিয়ে তুললে তুমি?

কেন বল তো?

আমাকে দেখে হাসবে বলে।

না না মহাদেব।

সতি৷ বলছো?

হা গো, মহাদেবের পাশে র্কিন্নী ২সে পড়লো।

তার একটা হাত ধরে মহাদের বললো, একটা কথা বলবো রুকিনশী?

বলবে বৈকি, নিশ্চয়ই বলবে। ভাবছি আমার অসুখ কেন সারলো : তোমাকে তো আর অতো বেশি কাছে পাবো না

হেসে ফেলে র্কিনণী বললো, এত কথা শিখলে কোথায়?

তুমিই তো শিখিয়ে দিলে, একট্ থেমে মহাদেব আবার বললো, আছে। রুকিনদী, তোমার কী কোনদিনও বিয়ে হবে না?

কে বিয়ে করবে আমাধ:

প্রচর উৎসাহ নিয়ে মহাদেব জোরে বলে উঠলো, আমি—আমি তোমাকে বিয়ে করবে। মুক্তিমণী।

আরও জোরে হেসে উঠে র্কিন্ণী বল্লো, দ্রে পাগলা, তোমাকে কেন বিয়ে করবো ? রখ্নাথ—রঘু কী আমায় বিয়ে করবে।

বড়ো বেশি আঘাত লাগলো মহাদেবের, কর্ণ চোখে ফ্যাল ফ্যাল করে র্কিএণীর মুখের দিকে সে চেরে রইলো।

হাসতে হাসতে রুক্মিণী বললো, বিমে—তোমাকে বিমে—বাকি কথাগলো হাসির ঝাপটাম সে আরু বলতে পারলো পারলো না।

শীতের প্রবাহে তাঁব্র চারপাশ গম্ভীর হয়ে উঠেছে।

আজ রাতে হবে শেষ প্রদর্শনী। বছ্দিন পর আসরে আগরে মহাদেককে দেখা যাবে। হ্যাক্তিবলৈ একথা শেখা ছিল। সুক্ষে থেকেই শহরের সমস্ত **লোক ভেঙে** পড়লো সার্কাসের তাব্তে। ভেডরে প্রত্যেক থেলোয়াড় প্রস্থৃত—যাবার আগে সবচেয়ে ভালো থেলা তারা দেখিরে যাবে।

যথা সময়ে সাকাসের সেই পরিচিত বাজনা বেজে উঠলো। রুক্নিগীকে আঞ্জলল পোশাকে দেখাছে উজ্জনল তলোয়ারের মত। দ্রে দাঁড়িয়ে মহাদেব তার খেলা দেখলো। সেই রুক্নিগা—যে তার মাখার কাছে বসে থাকতো দিনের পর দিন আর রাতের পর রাত।

তারপর আরম্ভ হলো রখুনাথের
বাঘের থেলা। ঢাপা উত্তেজনার গাালারীগলো যেন থমথম্ করছে। চারপাশে
চারটে রয়েল বেংগাল টাইগার নিয়ে শুখু
হাতে তেজম্বী নিভানিক বীরের মতো রখুনাথ ভয়াবহ থেলা দেখাছে। কখনত বাঘের
মুখে মাথা পুরে দিছে আর কখনত
অন্তুত কৌশলে প্রকাত বাঘকে ধরাশায়ী
করছে। জনতার মুখে ফুটে উঠেছে তীর
আগ্রহ।

দশকিদের আড়ালে একট্ন দুরে পাশা-পাশি দাঁড়িয়ে মহাদেব আর রুকিয়ণী খেলা দেখছে। মহাদেব এক দৃষ্টিতে চেয়ে আছে রুকিয়ণীর মুখের দিকে। কী বাঞ্ক দৃষ্টি রুকিয়ণীর! তার গভীর কালো চোখ থেকে যেন আগ্রহ আর উত্তেজনার জ্যোতি বিচ্ছারিত হচ্ছে।

মহাদেব ভাবলো, তার খেলার সময় রা্কিরণীর চোথ মুখ এমনি অপরাপ হয়ে ওঠে না কেন! সে শুখে, হাসে। কিন্তু সে তো তার মনে এমনি দাগ অতি সহজে কাটতে পারতো: কি খেলা দেখায় রঘ্নাথ! অমন প্রামান কিছে করলেই মহাদেব দেখাতে পারে। হোক না সে এ সাকাসের ভঙ্, কোন খেলা সে না জানে? হাাঁ, এই বাঘের খেলা এক সেকেন্ডে সে দেখাতে পারে। মহাদেবের মাখার ভেতর কেমন খন হতে লাগলো। দ্বলি শ্রীর জিন, সে এগিয়ে যেতে লাগলো।

হঠাং প্রচণ্ড হাসির শংব্দ মহাদেবের চমক ভাঙলো। আরে একি সে যে একে-বারে রঘুনাথের পাশে এসে দাঁড়িয়েছে: তাকে দেখে আর দশকদের হাসির আওয়াজে বাঘগুলোও বেশ বিচলিত হয়ে পড়েছে।

কোনরকমে হাসি চেপে রঘ্নাথ মহা-দেবের কাছে এগিরে এসে কানে কানে বললা, এই শালা পালা এখান থেকে, বাঘ ক্ষেপে গেলে মুশ্চিক হবে।

পরিপ্র্ণ সাকাস মণ্ডপে দাঁড়িরে অকস্মাং মহাদেব থেন নিজেকে ফিরে পেল, ফাল ফাল করে দর্শকের দিকে চাইলো সে শ্র্যু একবার। তারপর তার নিজ্ক ভংগী করে পা বাঁকাতে বাঁকাতে বেরিয়ে গেল। চারপালে হাসির প্রচন্দ্র আওয়াজ। দ্রের ব্রুক্মণীও হাসছে।



একটা গাছ। অনেকদিনের গাছ। গাছটা স্বদর কি অস্বদর কেউ প্রদন তোলেনি।

গাছের মনে গাছ দ'ড়িয়ে আছে। এর প্রয়োজন আছে কি নেই তা নিয়েও কেউ মাথা ঘামায় না।

ষেমন মান্য মাথার ওপর আকাশ
দেখে মেঘ দেখে, পাফের নিচে ধ্লো দেখে
ঘাস দেখে, তেন্নি তার। চোখর সামনে
একটা গাছ দাঁড়িয়ে আছে দেখছে। সংধাায়
দেখছে দ্পুরে দেখছে সকালে দেখছে।
ক্রবল চোখ দিয়ে হ্দয় দিয়ে অন্ভৃতি
দিয়ে দেখা নয়, বোঝা নয়।

বা এমন করে একটা গাছকে ব্যক্তে হবে কেউ কোর্নাদন চিস্তাও করে না।

দিনের পর দিন যায়, ঋতুর পর ঋতু কাটে, বছরের পর বছর যায় আসে— গাছের জায়গায় গাছ দাঁভিয়ে।

বধার পাতাগ্লি বড় হয় প্ত হয়,
শরতে পাতাগ্লি ভাবি হয় মোটা হয়,
দর্ভ রং থাতার দুসবৃজ হয়ে কালোর
কাছাকাছি গিয়ে দড়ায়, হেমন্তের মাঝামাঝি হঠাং সেই সবৃজ-কালো গভীর রং
ধ্সর হয়ে ওঠে তারপর শীতে হলদে
ফাাকাসে নিরভ প্রস্তির পাত্র চেহারা
ধরে পাতাগ্লি করে ধরে পড়ে। গাছ
রিভ হয়।

তথনও গাছ গাছ থাকে।

গাছের চেহারা তখন শ**্**ধ্ কাঠের চেহারা হয়।

ছোট কাঠ বড় কাঠ চিলতে কাঠ
সর্ কাঠ পতেলা চিকন মান্বের
অঙ্গের মতো ট্করো ট্করো অজপ্র
কাঠ কাঠির একটা লবরজং কাঠামো হয়ে
গাছ দাড়িয়ে থাকে।

কিংতু তা বলে কি মান্ব তখন তার ওপর রাগ করে? করে না। কারণ মেঘ-মেদ্র আকাশের নিচে অরণোর চেহারা ধরে গাছ যখন দাড়িয়ে থাকে তখন মান্য তাকে যে চোখে দেখে শাতের শ্কনো আকাশের নিচে সর্ মোটা কতকণ্লি কাঠ কাঠির বোঝা মাথার করে দাঙ্গির থাকলেও মান্য তাকে সেই চোখে দেখে। তাই বলছিলাম ওপর ওপর দেখা। মন দিয়ে দেখা নয় বোঝা নয়। তাহলে বালেনে লালে সব্জে মেশানো নতুন পাতার সমারোহ দেখে মান্য নাচত অথবা

বৈশাখ পড়তে অজন্ত মঞ্জব্ধী মাথায় নিয়ে গাছটা আশ্চর্য গোলাপী আভার আকাশ আলো করে তুলেছে দেখে আনন্দে চিৎকার করত। তা কেউ করে না, এ পর্যাহত করে নি।

দ্-তিনটা বাড়ির মাঝখানে এক ফালি পড়ো জমির ওপর একটা গাছ ভালপালা ছড়িয়ে দাড়িয়ে আছে বলে তাদের একট্ স্বিধা হয়, এই শ্ব্ধ্ব তারা জ্বানে। এ-বাড়ির মানুষ জানে ও-বাড়ির মানুষ জানে, আশেপাশের আরো গোটা দ্র-তিন ব্যাড়ির মান্যগ্রিলও একট্-আধট্ স্ববিধা আদায় করতে গাছের কাছে আসে বৈ [†]ক. যেমন সকাল ২তে খবর কাগজ হাতে করে দ্ল-চারজন প্রোঢ় বৃড়ো পাছতলায় একত হয়ে রাজনীতি সমাজ নীতি অর্থনীতি আলোচনা করে যেমন দুপ্রের দিকে এবাড়ির বুড়ি ও বাড়ির বুড়ি এবাড়ির বৌ ও ব্যাড়র মেয়েকে গাছের নিচে সর গালিচার মতন ঘাসের ওপর পা ছড়িয়ে বসে রালার কথা সেলাইয়ের কথা ছেলে হওয়ার কথা ছেলে না হওয়ার কথা বলে সময় কাটায়, আর বিকেল পড়তে ছাটে আসে ছেলে ছোকরার দল। গাছটাকে ঘিরে হৈ-হল্লা ছুটোছুটি, গাছে উঠে ডাল ভাঙা পাতা ছে'ড়া, বা কোন[ি]দন গাছের ডালে দোলনা বে'ধে দোল খাওয়া।

বা শাঁতের দ্পুরের গাছের ছায়ায় মাথা রেখে শরাঁরটা রোদ্রে ছড়িয়ে দিয়ে কারো কারো গদেপর বই পড়া। আবার গ্রীন্সের রায়ে ঠিক এই গাছের তলায় শাঁতল পাটি বিছিয়ে হার্যিকেন জেবলে পাড়ার পাঁচ-সাতজন গোল হয়ে বসে তাস খেলছে এই দ্শাও চোখে পড়ে।

যথন মানুষ থাকে না তথন গাছতলায় ছাগলটাকে গর্টাকে মাথা গু'জে মনের আনন্দে ঘাস ছি'ড়ে থাছে দেখা গেছে।

আর ওপরে নানাজাতের পাখিব কিচিব্র-মিচিব কলরব, ডানা ঝাপটান, ঠোঁটে ঠোঁট ঘসার শব্দ। ি আরে মাঝে মাঝে হাওয়ার পাতা নড়ে, ভাল দ্লে ওঠে।

বা এমনও এক-একটা সময় আসে

যখন পাখি থাকে না, বাতাস নেই। গাছ

স্থিয় কতম্ব। পড়ো জমিতে নিবিড় ছায়াট্রু ফেলে অনক্তকালের সাক্ষী হয়ে
নিঃসংগ গাছ যেন হুল খুল ধরে দাঁড়িয়ে
আছে। বা মনে হয় কোন দাশনিক।
নীরব থেকে অবিচল থেকে জগতটাকে

দেখছে। সংসারের উত্থান-পতন লক্ষ্য
করছে। পাপের জয় প্লোর পরাজয় দেখে
বিমৃত্ বিস্মিত হয়ে আছে।

চিন্তাশীল মানুষের মনের অবন্থা মেমা হয়। চিন্তাশীল মানুষ মেমন চুপ করে থাকে। সতিঃ গাছটাকে সময় সময় এমন একটি মানুষ বলে কন্পনা করা যার। তথন তার ধারে কাছে অন্য মানুষ পশ্ব-পাখি হাওয়ার চাপলা ক্রপনা করতে কন্ট হয়।

হয়তো এমন করে কেউ •গাছটাকে দেখছিল গাছটাকে নিয়ে ভাবছিল। এতদিন জানা যায় নি, এতদিন বোঝা যাচ্ছিল না। কে জানে হয়তো গাছটার সেই অর্ন্ডর্দ্রিণ্ট ছিল, গাছ ব্রুতে পার্রাছল প্রাদকের একটা ব্যাড়ির সব্জ জানলায় বসে একজন তাকে গভাঁরভাবে দেখছে লক্ষ্য করছে। না. আগে হয়তো সে আর দর্শাট মানুষের মতো সাদা চোথে গাছের পাতা ঝরা দেখত নতুন পাতা গঞ্জানো দেখত। **এখন আর** তার চোথ সাদা নেই। কাজল পরে গভীর कार्ला इरग्रहा এখন আর হাল্কা বেণী ব্যলিয়ে ধ্রুক উড়িয়ে সে ছটফট করছে না যে, বাড়ির সামনের পড়ো জমিতে একটা গাছ আছে কি বাঁশের থাটি দাঁডিয়ে আছে ওপর ওপর দেখে শেহ করবে! এখন সে শাস্ত গলভীর, মাথায় দূঢ়বন্ধ সংযত কঠিন খেশির মতো তার মনও বৃঝি সতক স্মংকথ সিথর ও নিবিভ হয়ে উঠেছে। আর সেই নিবিড় **মন সতক** দ্ভিট নিয়ে সারাঞ্জণ সে গাছের দিকে তাকিয়ে আছে। গাছটাকে নিয়ে ভাবছে। যেন ভাবতে ভাবতে একদিন তার দৃষ্টি কেমন ভীত সন্থ্যত হয়ে উঠল। চোখের कारला भानकारीन जात नफ्रष्ट ना, कारला মণি দুটি পাথরের মতো দ্থির কঠিন হয়ে আছে। গাছ ব্রুতে পারল একটা ভয়ঞ্কর ভাবনা তাকে পেয়ে বসেছে, ওই কালো পালক ঘেরা চোথ দটোর তাকানোর



মধ্যে ক্ষেবল ভর না বিশ্বেষত যেন মিশে
আছে। গাছ তয় পেল, দেখল, দেবল
দিনের আলায় না রাচির গভীর
অধ্বরেও দ্টি চোথ জানালায় ছেগে
আছে। নিরাকার অস্পণ্ট ছারা ম্তি হয়ে
রাচির গাঢ় তমসায় ল্লিমে থেকেও হয় গাছ ওই দ্ভি থেকে নিজেকে রক্ষা
করতে পারছে না। আতংকর সংশ্যে প্রে
প্রা হুড়ে দিক্তে একজন তার
দিকে।

The Market of the Commence of

তারপর কথাটা জানাজানি হয়ে চোজ। ব্রিথ সব্জ জানালার ওই মান্বটি সকলকে জানিয়ে দিল।

এই গাছ দুটে। এই গাছ শয়তান। একে এখান থেকে সরিয়ে দাও।

পড়ো জমির আশে-পাশের মান্য-গ্লি সজাগ হয়ে উঠল।

মান্ধের মতো শয়তান হয়ে একটা গাছ মান্ধের মধ্যে মিশে থাকতে পারে তারা এই প্রথম শ্নল, জানল।

তাইতো, সকলে ভাষতে আরুজ্ঞ করন, বুড়োর দল গাছের নিচে বসে পলিটিকস আলোচনা করে, বুড়িরা

> বিশ্বে প্রথম অণ্, পতিকা স্বাধিক প্রচারিত এবং সাহিত্যে ন্বধারার স্চক

পত্ৰাণ্

।। সম্পাদক ।। অনিয়**ু চট্টোপাধ্যায়** আশীষ্টভার, মুখোপাধ্যায়

।। কার্যালয় ।। ১২২এ, বালিগঞ্জ গার্ডেন্স, কলিকাতা ১৯



যুবতীদের সংগ্য বসে ছেলে হওয়া না হওয়ার গণ্প করে, ছেলে-ছোকরার দল গাছের কাছে এসে শেলা করে এখন গাছটা যদি ভাল না হয় যদি তার মধ্যে দুফুট বুদ্ধি লাকিয়ে থাকে তবে তো—

কেটে ফেলতে হবে, প্ডিয়ে দিতে
হবে ম্লস্ম্ম উপড়ে ফেললে সবচেয়ে
ভাল হয়। সাদা ফ্লের মালা জড়ানো
হফীত শক্ত থোঁপা নেড়ে জানালার মান্ষটি
বলল, তা না হলে এই গাছ কথন কি
বিপদ ঘটায় বলা যায় না।

भवादे भागल भवादे जानमः।

শিশ্রা খেলা করে। এই গাছের একটা
কড় ভাল তাদের মাথায় ভেগে পড়তে
কতক্ষণ। বক্তপাত হতে পারে এই গাছের
মাথায়। আর তার নিচে তথন যে দাঁভিয়ে
বা বসে থাকরে, সংশা সংশা তার
অবধারিত মৃত্যু। অর্থাং গাছেই বক্তকে
ডেকে আনবে। শয়তান কী না পারে।
শ্রেন মান্যগ্লির চোথ বড় হয়ে গেল।

কিন্তু সেই সব্জ জানালার মান্ধটি গুপ করে থাকল না। গাছ সদবন্ধে এতকাল বারা উদাসীন ছিল তারা আরো ভরংকর কথা শুনল।

কেবল বক্ত কেন, শয়তান মধ্যরাতে যে কোন একটি মান্যকে ডেকে নিজের কাছে আনতে পারে।

হ**্ন**, সকালে ড:১ সবাই দেখৰে সেই মান্য গুই গাছের কোন না কোন একটা ভালে ঝ:সছে।

গলায় দর্ভি দেবার পথে গাছের ডাল যে এর্বটি চমংকার অবলম্বন কথাটা নতুন করে সকলের মনে পড়ে গেল।

ওই গাছ প্রতিয়ে ফেলতে হবে, কেটে ফেলতে হবে, সম্ভব হলে মূলসম্পা।

হয়তো গাছের জানা ছিল না, পড়ো জমির পশ্চিম দিকের আর একটা বাড়ির লাল রং-এর জানালায় বসে আর একজন তাকে গভীরভাবে দেখছিল। সেদিকে দ্বিট পড়তে গাছ চমকে উঠল। এবং খ্ৰি হল। লাল রঙের জানালার মান্যটির চোখ দুটি বড় স**ৃদ্র। সেই চোথে** ভয় আতৎক ঘ্লা বিশ্বেষ কিছুই নেই। আছে দেনং প্রেম মমতা সহান্ভূতি। দেখে গাছ বিক্ষিত হল। কেননা কদিন আগেও মান্বটির দ্বিট অশানত ছিল চলায় বলায় **राभमा हिन। हाक भाग्ये भरत मग**रा অসময়ে তার কাছে ছুটে এসেছে, চিল ছ, ডেছে ভাগ-পাতা লক্ষ্য করে, পাতার আড়ালে পাখির বাসা খুলৈ বার করে ভেঙে দিয়েছে আর যথন-তথন দোপনা বে'ধে দোল খেয়েছে। আজ সে মাজিত ভদ্র ক্লিম্ম স্কার। আদির পাঞ্জাবির হাত দুটো কন্ই পর্যাত গুটিয়ে দু হাতের তেলায় চিবুক রেখে জানালার ধারের টোবলের কাছে বসে গাছের দিকে গাঢ় मुन्धि स्मरण रहस्य थारक। नाष्ट्रगेरक निरय ভাবে। ভাবতে ভাবতে টেকিলের ফ্লদানি থেকে একটা গোলাপ নাকের কাছে তুলে ধরে গশ্ব শেকৈ, মেন গাছটাকে যত দেখছে ৰজ ভাবছে তত সে পরিভূত হচ্ছে আর্নান্দত হচ্ছে। বেন গাছকে নিয়ে ভাবনার সপো গোলাপের গণেষর একটা আশ্চর্য মিল রয়েছে। ব্বিথ গাছ তার কাছে গোলাপের মতো স্ক্রের।

গাছ নিশিচনত হল আশ্বনত হল। লাল লানালার মান্যটার মুখে স্বাই অন্য কথা শ্নল।

এই গাছ ঈশ্বরের আশীর্বাদের মতো
আমাদের মধ্যে দীড়িয়ে আছে। একে
লাচিয়ে রাখতে হবে। এই গাছের নিচে
সকালে বিকালে মান্যগুলি এক হয়।
একটি মান্যকে আর একটি মান্যুমের মনের
কাছে টেনে আনছে গাছটা। তার অর্থ
আমাদের সামাজক হতে শেখাছে।
গাছটা আছে বলে ছেলেরা খেলাম্লা
করতে পারে। মায়ের মতো শিশ্বদের শেহ
ও আনদ বিতরণ করছে মাঠের ওই
বনস্পতি।

স্তিচ্সে সন্দর।

তার ছায়া স্কার, **ডাল স্কার।** তাই না নিরহি স্কার পাখিগুলি তাকে আল্লয় করে সারাক্ষণ ক্জন গ্রেন করছে। **প্রজা**-পতি ছাটে আসছে।

পাড়ার মান্ধগর্লি নতুন করে ভাবতে আরুম্ভ করল।

পশ্চিমের লাল জানালার সহুন্দর মানুষ্টি সেইখানেই হপু করে থাকল না।

মান্ষ্ঠি সেইখানেই হুপ করে থাকল না।
ইণ্ট, লোহা, সিমেন্টের মধ্যে বাস
করে আমরা কান্ত হয়ে পড়েছি। আমানের
চোথের সামনে একটি সব্জ গাছ আছে
বলে প্রকৃতিকে আমরা মনে রাখতে পারছি।
আমরা যে এখনো প্রোপরি কৃতিম হয়ে
যাইনি মিথা হয়ে ধাইনি তা ওই গাছের
কল্যালে। এই গাছ থাকবে। এই গাছ
আমানের রুশত অবসাদগুল্ত জীবনে একটা
ক্বিতার মতো।

তবে কি লাল জ্বানাল্যর মানুষ্টি কবি? গাছ ভাবল। রাত্রে জ্বানাল্যর ধারে টেবিলে বসে মানুষ্টি কাগজ কলম নিশে কি যেন লেখে, যখন লেখে না চুপ ক বাইরে গাছের দিকে তাকিয়ে থাকে।

মন্দ কথা শ্নে মানুষ কেমন বিচলিত হয় তেমনি ভাল কথা শ্নে তারা নিশ্চিন্ত হয় খুলি হয়।

তাই একজন গাছটাকে মন্দ বলতে মান্যগর্নি যেমন ক্ষিপ্ত হয়ে উঠেছিল, আবার আর একজন গাছ তাদের অনেক উপকার করছে শ্রেন শাস্ত হল।

তাই তারা গাছ নিয়ে আর মাথা ঘামাল না।

গাছের মনে গাছ দাঁড়িয়ে রইল।

কিন্তু প্ৰের জানালার মানুষ্টি চুপ থাকল না। গাছ শুনল, দাঁতে দাঁত ঘলে সে প্রতিজ্ঞা করছে যদি আর কেউ তাকে সাহাষ্য না করে তো সে নিজেই কুড়ুল চালিরে গাছটাকে দেষ করে দেবে। এই গাছ সে কিছুতেই সহা করতে পারছে না। শারতানকে চোথের সামনে থেকে বেভাবে ক্ষেত্র কর

গাছ শুনে দুঃখ পেল, আবার মনে
মনে হাসল। যেন প্বের জানালার
মান্হটিকে তার ডেকে বলতে ইছে হল,
তোমার ধোঁপার ফ্লের মালা শোভা পার
তোমার চোথের কাজল, কপালের কুকুমটি
চমংকার, তোমার হাতের আঙ্লেগ্লি
চপার কলির মতো স্নদর। স্ন্দর ও নর্ম,
এই হাতে কুডুল ধরতে পারবে কি?

ষেন পশ্চিমের জানালার মান্বটির কানেও কথাটা গেল। তার স্ফুর আঙ্কে-গ্রাল কঠিন হয়ে উঠল। গাছের বেশ জানা আছে এই হাত, হাতের আঙ্ল দরকার হলে ইম্পাতের মতো দৃঢ় দৃশ্ত হতে জানে। আজ ওই হাত দিয়ে—সে কবিতা লিখছে বটে, গোলাপ ফ্লকে আদর করছে—একদিন ঐ হাতে ঢিল ছ'্ড়ে সে অনেক পাথির বাসা তছনছ করে দিয়েছে, গাছের ডাল ভেঙেছে, পাতা ছি'ড়েছে আর রন্দ্রের মতো হাতের দুটো মুঠো কঠিন করে দোলনার দড়ি আঁকড়ে ধরে দানব শিশরে মতো দোল থেয়েছে। তাই বৃঝি আজ বছুম্খি শ্নে। তুলৈ সে প্রতিজ্ঞা করল, এই গাছকে যেমন করে হোক রক্ষা করবে। যদি কেউ এই গাছ নষ্ট করতে আসে তাকে ক্ষমা করবে না। জীবন থেকে কবিতাকে নিৰ্বাসন দেওয় চলে না। যদি কেউ গাছের গাখে হাত তুলতে আসে শরীরের শেষ রক্তবিন্দ্ দিয়ে মে তাকে প্রতিহত করবে। গাছের গায়ে আঁচড়টি পড়তে দেখে না।

গাছ নতুন করে ভয় পেল! তাকে কেন্দ্র করে পূব ও পশ্চিমের জানালার দ্বিট মান্থের মধ্যে সংঘর্ষ বাধবে না তো!

দ্বের গড়িয়ে গেল। দুটো একটা ছাগল নিচের ছায়ায় বাচ্চা নিয়ে ঘরে ঘুরে ঘাস খেল। বিকেল পড়তে শিশ্র দল হুটোপাটি করল। অগুনতি পাখি কচির মিচির করে উঠে তারপর এক সময় চুপ হয়ে গেল। রাত্রি নামল। নিমেঘি কালো আকাশে অসংখ্য তারা ফুটল। হাওয় ছিল। গাছের পাতার সর সর শব্দ হচিত্র। রোজ থেমন হয়। পড়ো মাঠের চারপাশের বাড়ি-গুলিতে নানারকম শব্দ হচ্ছিল, আলো জনুলছিল। ক্রমে রাত যত বাড়তে লাগল এক একটি বাড়িচুপ হয়ে যেতে লাগল, আলো নিভল। তারপর চারদিক নিঃসীম অন্ধকারে ছেয়ে গেল। অন্ধকার আর অমেয় ম্ভব্দতা। মাথার ওপর কোটি কোটি নক্ষ<u>র</u> নিয়ে গাছ চুপ করে দাঁড়িয়ে রইল। এক সময় হাওয়াটাও মরে গেল। গাছের একটি পাতাও আর নড়ছিল না।

এমন সময়।

নিরণ্ধ অংধকারে দিনের আলোর
মতো গাছ সব কিছু দেখতে পার।
গাছ দেখল প্রদিক থেকে সে আসছে।
আচলটা শক্ত করে কোমরে বে'ধেছে। মালটো
ধোঁপা থেকে খরেল ফেলে দিরেছে। যেন
বৃশ্ধ করতে আসছে। এখন আর ফুলের
মালা নয়। হাতে ধারালো কুঠার। গাছ
দিউরে উঠল।

কিন্তু সংখ্যা সংখ্যা আর একদিকে
মানুকের পারের শব্দ হল । গাছ সেদিকে
চোখ ফেরাল । এবার গাছ নিশ্চিন্ত হল ।
সে এসে গেছে । পশ্চিমের জানালার সেই
মানুষ এসে গেছে । তার হাতে এখন কলম
নেই । একটা লাঠি ! গারে আদ্দির পাঞ্জাবি
নেই । হাতকাটা গোঞ্জ । তার চোরালা শক্ত ।
দৃষ্টি নির্মাম । যেন এখনি সে বছের
হুক্লার ছাড়বে ।

গাছ কান পেতে রইল।

বিষয় শতক্ষতা। অনিশ্চিত মহেতে।

গাছের মাখার একটা পাখির ছানা কিচমিচ শব্দ করে উঠল। বেন কোন দিক থেকে একটা নাম না জানা ফ্লের গাধ্ব ভেসে এল। আকানের এক প্রাফ্ডের একটা তারার কাছে ছুটে গেল। একটা হাওয়া উঠল বৈ কি। নরম শাখাগ্রিল দ্লতে লাগল।

—বেন ভিতরে ভিতরে গাছ এমনটা আশা করেছিল। তাই খবে একটা অবাক হল না।

শাড়ি জড়ানো মান্বটির অধরে হাসি ফ্টেছে।

পশ্চিমের জানালার মানুবের শক্ত চোরাল নরম হরেছে। বক্ত নির্ঘোঘ শোনা যাকে না।

একজন আর একজনের দিকে তাকিয়ে আছে। দৃক্তনের মাঝখানের ব্যবধান এত কম যে গাঢ়ে অধ্যকারেও তারা পরস্পারের মুখ পরিন্দার দেখতে পাচ্ছিল। বেন একজন আর একজনের শ্বাস প্রশ্বাসের শব্দ শ্রন্ছিল।

'হাতে কুড়্ল কেন?'

'গাছটাকে কাটব।'

'লাভ কি?'

'গাছটা শয়তান।'

'গাছটা দেবতা।'

'শংতানকে যে দেবতা মনে করে সে মূর্থ।'

'দেবতাকে ষে শরতানের মতন দেখে সে পাপী। তার মনে পাপ তার হৃদরে হিংসা। তাই সাদাকে কালো দেখে—আলো থাকলেও তার চোখে সব কিছু অন্ধকার।'

'তবে কি পৃথিবীতে অধ্যকার বলতে কিছু নেই? কালো বলতে কিছু নেই?"

'নেই।'

'এ কেমন করে সম্ভব।' হাত থেকে
কুড়ালটা খনে পড়াল ওর। ভাবতে লাগাল।
গাছ খানি হল। গাছ দেখল একজন
কুড়াল ফেলে দিলে আর একজন হাতের
লাঠি ফেলে দিল। 'এ কেমন করে হর!'
ভাবতে ভাবতে প্রের জানালার মান্রটি
মুখ ভূলে গাছের পাতার ফাকে ফাকে ভাররে
ঝিকিমিকি দেখতে লাগাল। তারপর এক

সমর বিজ্ঞাবিড়ি করে বলাল সেব আলো সব স্বাদর—কিছু কালো নেই কোথাও অপ্যকার নেই এমন কখন হয়!

'নিক্ষের ভিতরে বখন আলো জাগে।' 'সেই আলো কী?'

'প্রেম'।

মেরেটির চোথের পাতা কে'পে উঠল। গাঢ় নিশ্বাস ফেলল। তার গলার গ্রর কর্ণ হয়ে গেল।

'আমার মধ্যে কি প্রেম জাগবে না?'
'অভাস করতে হবে, চর্চা করতে হবে।'
ছেলেটি স্ফার করে হাসল। 'ভালবাসতে
শিখতে হবে।'

'তুমি আময়ে শিথিয়ে দাও।'

গাছ চোখ ব্রুলা। তার ঘ্ম পেয়েছে।
গাছও ঘ্মায়। কত রাত দ্ভিচ্তায় সে
ঘ্মোতে পারে নি। অথবা যেন ইচ্ছা করে
সে আর নিচের দিকে তাকাল না। মান্য যেমন গাছ সম্পকে উদাসীন থাকে, গাছকেও সময় সময় মান্য সম্পকে উদাসীন থাকতে হয়, অভিজ্ঞ গাছকে তা বলে দিতে হল না।

> কৰিপকে একটি দ্ৰুভি কৰিতা সংকলন বৰীন্দ্ৰনাথ বেখানে একটি আন্দোলনের নাম

সেই প্র'কাংলার কবিদের রবি-প্রণাম বেরিরেছে দাম : এক টাকা

অন্তমের ম্বতীর নিকেন ঃ

প্ৰবাংলার সংগ্ৰামী কৰিতা

गःशास एवए

অনুত্রম

৩৩/৪, দীন্ নেন, হাওড়া-১



মেডিকেল কলেজে পড়ি। ছুটিতে ছুটিতে বাড়ি ঘাই। বাড়ি মানে মফুস্বল জেলায় একটা শহর। বাড়ি ঘাই আর আশ্চর্য লাগেই বে শহরটাতে বড় হয়ে উঠেছি, সেটা আসলে এত ডুচ্ছ, মাম্লী, এত পোছরে পড়া ছিল নাকি কথনো?

S 84

महत्रको इनक या ছिन ठाई आছে. १३४७ ৰা একটা এগিমেছে। কিন্তু আমাদের মন এগিয়ে চলেছে তার চেয়ে সনেক ৮,৩ একটা গতিতে। তাই এক একবার ছ্রটিতে শহরে আসি, আরে এক এক পেটি স্পান **হথে যায় শহরটা, এক এক ডিগ্রি তুচ্ছ**। ছেলেবেলায় মোড়ের খে ঝুর্পাস গাছটা দেখে বিশ্বয়ে চোথ ভরে উঠত, এক ছ্রটিতে **এসে চোখে পড়ল তার মধো এতট্**কু অসাধারণ কিছে নেই। নিতাত মাঝারি **আকারের একটা ধ্লোভ**রা বট। মেথর পাড়ার যে বদরাগী ভরাবহ মাতালটাকে দেখে পাড়াশ্বে সকলে বার বার ভয় পেয়েছি আর মনে মনে অস্রের মৃতি কংপনা করোছ, এক ছুটিতে এনে মনে হল সে একটা নিতাশত গ্রামা বিনীত বৃদ্ধ লক্ষ্যী-ছাড়া মাত। তাকে দেখে কর্ণা ছাড়া আর কোন ভরাবহ অন্ভৃতির অবকাশই करव ना।

শহরের সবচেয়ে বলবান লোকটা, সবচেমে স্প্র্য পাব্টি, সবচেয়ে মাননীয়
মাস্টারমশাই—বছরের পর বছর এ'রা
সকলেই আমাদের চোখে এক এক পোচ
শ্লান এক এক ডিগ্রি করে
মাম্লী হরে উঠতে লাগলেন। আমাদের
কট ইড, তব্ মেনে নিমেছিলাম এই হবে,
কেননা আমরা তথন এক এক ডিগ্রি করে
এগিয়ে চলেছি।

কলে মা-মণিকে দেখে সেই ছেলেবেলার বা বা মনে হন্ত, পরে বা আর তা
মনে হবে না, সেটা কানা কথা। তব্
ছ্টিতে এলেই মা-মণির সংগ্য একবার করে
দেখা না করে যেতাম না। তার রারাঘরের
সামনে পিশিদ্ধ পেতে বসতাম, চা খেতাম
কাসারে গেলাসে, ও'দের বাড়িতে চিনেমাটির কাপ বড়ো একটা থাকত না।

আর গণশ করতায়। যা-মণি নিজে বৈজন গণশ করতে ভাগবাসতেন, তেমনি শোনার মত গণশ পেলেও স্কুড্রাড্রতন না। বাগতেন, ভোরা তো অভিনাল কলকাতার লোভ। নতুন কি সিনোলা লেজিলা-বল না। কু নতুন দেখা খা-কিছু, নতুন আইডিয়া শ্ব-কিছু যথাসাধ্য মা-মণিকে শোনাতাম। প্রতি আধ্নিক কোনো একটা ইংরেজি ফিল্ম কিংবা অতিখ্যাত কোন একটা ফ্রাসী উপ-ন্যাসের গণ্প শ্রনিয়ে বলতাম, 'জানো মা-মণি, দ্বানয়াড়া ভয়ানক এগিয়ে যাছে। লোকে আর স্ক্রের করে বানাতে চার না, সতি। করে বলতে চার।'

'কিন্তু এ তোদের কি সত্যি হল রে বার্থ যে-গণপ বললি তার মানে তো এই যে ভালোবাসাটা আসলো ভালবাসা নর নিতান্ত স্বাহাপর একটা প্রবৃত্তি এ কী রকম সতি। থে সতি। জেনে লাভ কি প্র

আমি ডাকারির ছাত্র। ডাজারি প্রমাণ দিয়ে জানাতাম, রেকমটকম ব্রক্তি না, লাভ লোকসানের কথা নয়, কিব্লু এই-ই হল বিজ্ঞানের আবিব্জার। বিজ্ঞানকৈ গাল দাও কিংবা গ্রহণ করো, সেটা বিজ্ঞানই।

মা-মণি বলতেন, 'হ্মড তোদের কথাই সজি। কিন্তু সব সজি। তোরাই জেনে ফেলেছিস বলতে চান? আর হলেই বা সজি। সাজাই কি সব? আমি যদি না মনি?

মা-মাণ তক' করতেন কিম্ফু কিছু না জেনে। সেই অনেককাল আগে যা জেনে-ছিলেন যা শিখেছিলেন সেইট্কুর জোরে। তারপর না পেরে, ওঠে যেতেন সংসারের এটা ওটা কাজে। কোলের মেরেটাকে দ্ব থাওয়ানো হয়নি। তার বড়োটা খ্লোর মধো গড়াজে। বড়োছেলে মাট্রিক পাশ করার পর থেকে বাড়িতে বিশেষ থাকে না। মাঝখানে ছেলেনেয়েগুলো পড়ার নামে এর ওর সংক্ষা খনুস্টি করে চলেছে অনবরত।

আর তখন অসহা মাম্লী মনে হত সা-মণিকে। অসহা রকমের পেছিয়ে পড়া এক গ্রাম্য মাস্টারের মধাবরস্থী স্ত্রী মাত্র। সংসারের জনটন আর একগানা ছোলেরের ছাড়া আর কোনো ভাবনা ভাবার ক্ষতা বার নিঃশেব হরে গেছে জনেকদিন। অথচ এই মা-মণিকে আমরা একদিন কী চোথেই না দেখেছিলাম।

ইংরেজির নতুন মান্টার এসেছিলেন প্রমথবাব। যা পড়াতেন সবকিছ্ই অপ্র লাগত। স্কুলের পড়া ছাড়াও ওলি বাড়িতে আমরা হানা দিতাম দল বেধে। আর কিছ্-দিনের মধ্যেই দেখা গেল প্রমথবাব্র চেয়েও বড়ো আকর্ষণ আছে প্রমথবাব্র বাড়িডে ঃ হা-মণি।

প্রমধ্বাব্বে আমরা **ভাকতাম সারে**বলে। প্রমধ্বাব্র স্থাকৈ কি কলে ভাকা
যায় আমরা ভেবে পাইনি ঃ গ্রেমা?
কাকীমা, মাসীমা। কোনোটই ঠিক পঞ্জ ইচ্ছিল না। মা-মণিই বললেন, 'শোনো, গ্রেমা-ট্রেমা নয় বাবা। কি বিচ্ছিরি সেকেলে
তাক। তোমরা বরং আমাকে মা-মণি কলে
ভেকো, কেমন?'

ভাকার মতো এমন স্কার একটা নাম আমরা এর আগে কখনো শ্রানি। উল্লাসে আমরা চে'চিয়েছিলাম, ঠিক তো! কি দঃশর নাম। মা-মণির মাথা ছাড়া এসব আর কারো কাছ থেকে বের্ত না।

আমদের কাছে মা-মণি ছিলেন যা কিছু স্কোর, যা কিছু আধুনিক তারই প্রভীক। আমাদের যেতে দেখলে মা-মণি একটা-না-একটা কবিতার লাইন বলে আমাদের অভার্থনা করতেন। আরু সব কবিতা রবীণ্দ্র-নাথের।

যাবো বলে কোনোদিন যদি যেতে
দেরি হক, তো দেখতাম মা-মণি ঠিক
দিড়িয়ে আছেন দরজায়। আমাদের দেখে
মুর করে বলে উঠতেন, 'ঘণ্টা বেজে গেছে
কথন অনেক হল বেলা...'

বাইরের ঘরে অতিথি অভ্যাগত ক্রু এলে প্রমাধনাব্ যখন তার দরিদ্র আয়োজন নিয়ে বিত্রত হয়ে উঠতেন, তখন অসমুরে মা-মাণ খানিক বহসা খানিক আক্ষেপে চা তৈরি করতে করতে হাসতেন, 'কোথায় বানে কোথায় মালা কোথায় আয়োজন...' আর তখন মা-মাণর সংসারের সমুস্ত দারিদুট্কুও বেন স্কুল্ব হয়ে উঠত।

আমরা প্রায়ই আলোচনা করতাম মাাট্রিক পাশ করে কে কি করব এই স্ব।



তথন মাঝে মাঝে সমস্ত আলোচনাটাকে এক আশ্চয় বেদনার জগতে তুলে দিয়ে মা-মণি আব্তি করতেন, 'পাগল হইয়া বনে বনে ফিরি আপন গলেধ মম, কস্তুরী মৃগ সম...

আমরা প্রায়ই তক করতাম, কে স্কুর দেখতে, কে কুর্থসৈত, কে ফ্রসা, কে কালো। আর তখন সমস্ত আলোচনা লাসিয়ে দিয়ে মা-মণি হয়ত গ্নগ্ন করে উঠতেন 'কালো সে যতোই কালো হোক, দেখেছি তার কালো হরিগ চোখ।' আর বিস্ময়ে শেষ পেতাম না আমরা।

খ্ব বেশি পড়াশ্না ছিল না মা-মণির।
কিন্তু এমন আন্চর্য একটা মন ছিল, যা
আমাদের বাড়ির, আমাদের চরেপাশের
বাড়ির কারে। মধ্যে আমরা দেখিনি। পাঠাপ্তকের বাইরে রবীন্দ্রনাথের যে কবিতা
আমরা হয়ত কোনোদিনই পড়ে দেখতাম
না সেই সব কবিতা যেন একটা জাবিন্ত
মানে নিয়ে মা-মণিকে গড়ে তুলোছল। সেই
সব না শোনা না চেনা কবিতা থেকে আমরা
কিছ্তেই মা-মণিকে আলাদা করে দেখতে
পুরতাম না।

অথচ মা-মণির চারপাশের যে জগতটা ছিল, ভার সংখ্য এই কবিতার জগতের এত-্ৰুক কোনো মিল থাকলেও না হয় হত। প্রমথবাব, পড়াতেন ভালো, কিন্তু হাজার হলেও তিনি ছিলেন মফস্বল স্কুলের এক লধান মাঘ্টার মার। অভাব-অন্টনের শেষ ছিল না। আর ওই বয়সেই মা-মণির ছেলে-পিলে হয়ে গিয়েছিল একপাল। বড়ো ছেলে শ্যামলটা আমাদের চেয়ে বছর চার-পাটেক ছোটো। আর সবচেরে ছোটো ছেলে কেউ ছিল না। কেননা, একটা ছেলে কোলে থেকে লামতে না নামতেই দেখা থেত মা-মণি ্রকাদন ভাদের বারান্দার এক কোণে চট টাংগয়ে থালিগারে কি**ছ্ ছে'ড়া ন্যাতা**-কৰি জড়িয়ে শংহে আছেন। আর **অন্ধকার** দোরগোড়ায় বঙ্গে অশ**িচ আতৃড্**ঘরটার ছানিপড়া চোখে ব্রড়ি ধাই কাঠকথলার মালসায় হাওয়া দিয়ে আগ্ন করছে।

মাত এইবকম সমনে মা-মাণ কবিতা বলভেন না কোনো। কেবল অদভূত ছবিতর এক কঠিদবরে আতুড়ের অদ্ধকার থেকে লালচে এটা শিশুকে অদপ একট তুলে বলভেন, তোদের আর একটি ভাই বাড়ল বরিবা। এটা কিন্তু অনাগ্লোর মতো হবে দা, না রে বীরা?

আমরা অবাক হরে বলতাম, 'সতি মা-মণি, তোমার এ ছেলেটা ভারি স্ক্রর হবে কিপতু।' কিগ্ডু তথন ষেটা তেমন চোথে পড়োন, পরে সেইটাই দৃষ্টিকট্, লাগতে লাগল আমাদের কাছে। মা-মণির ছেলে হওয়া, মা-মণির কবিতার সপেগ এই একেং পর এক ছেলে হয়ে যাওয়ার যেন কোনো মিল নেই।

আমবা শ্নতাম পাড়ার সকলে ঠাটা করত প্রমথবাব্কে: প্রমথবাব্ আর কটি হবে আপনার? প্রমধবাব_ু গস্ভীর হরে যেতেন।

ঠাট্টা হক্ত মা-মাণকে নিয়েও। মুখের ওপর কেউ বলত না, কিন্তু আড়ালে মুখ টিপে বলত, গান্ধারী, মাত এগারোটি হয়েছে, এখান কি। একলটি না হওয়া পর্যান্ত। থামে কি না দেখো।

আমরা তখন বড়ো ছয়ে উঠেছি। কলেকে পড়াছ।

এমনসব জিনিস তথন আমাদের চোখে পড়ত, যা আগে পড়েনি।

প্রথম অন্ভব করলাম, মা-মণি দেখতে মোটেই স্কর নয়, অথচ আগে কি স্ফরই নামনে হত মা-মণিকে। চোখে পড়ল মা-মাণর চেহারার মধ্যে কেমন একটা ধ্সে থাওয়া ভাব আছে। কপালটা বড়ো, চুলগালো শাধ্ পাতলা নয়, বিছ ছিবি একটা টাক পড়েছে পাশ দিয়ে। চোথদুটো যেন কোনো একটা রুম্পতার চাপে খোজের মধ্যে ঢোকা। চোখের কোণগুলোতে কিসের একটা কদর্য কার্ণা। সেমিন্সের বাইরে কঠার হাড়টা উর্ছ। ঘামাচি ভরা শিথিল চামড়ায় ঢাকা শরীরের সমগত কাঠামের মধ্যে শ্ধ্ মাঝথানতেই যা কিছু স্থ্লতা। আর স্বাক্ছাই কেম্ন শীণ, শিথিল, বাঁকা, কুংসিত। হাসলে চোথ দুটো এখনো ছলছল করে ওঠে, কিব্তু ভাতে কেমন কর্ণাই লাগে বেশি করে।

ছ্টিতে মা-মণির সংশ্য দেখা করতে এলে এখনো মা-মণি ঠিক তেমনি করেই কবিতার স্তুরে সম্ভাষণ করতেন, 'গান গেয়ে তরী বেয়ে কে আসে পারে। দেখে যেন মনে হয় চিনি উহারে?'

আমরা হাসতাম আব মনে হত, ঠিক এই লাইনটা ঠিক এমনি করেই মা-মণি আরো কতোবার যে বলেছেন। সে বলার আর কোন বিশ্ময় ছিল না তেখন, শ্ধ্ এক জণি প্নেরাব্ডি। শ্ধ্ই এক অভাস। সে অভাসকে শ্ধ্ই উনিশ শতকের ভাবপ্রবশত। বললে ভূল বলা হবে। উনিশ শতকের ভাবপ্রবশতার একটা নকল অভিনয় মন্ত্র। মাঝে মাঝে সম্ভাষণ করতে অসিতেন
না। প্রমথবাব্ থেকে স্ব্কুকরে একপাল
ছেলেমেরের জন্য হাজাররকমের সাংসাবিক
কাল সেরে মান্দাি তখন নিজের অত্ত্ত্
নিজেই তৈরি করে নিজেন। ধারাম্পার সেই
অবধারিত কোণটিতে মম্থর পরিপ্রমে চট
টাঞ্চাচ্ছেন, থক পর্বজনে খ্রিটর চারিপাশে। বড়ো মেরে কমলকে হ্কুম করছেন
ছেড়া নাাতাকানি কোথার কি আছে খ্রেজ
দেখতে।

অভিডু ধাবার আগে এইরকম সময়টাতে মা-মাণর হাড় খোঁচা চেহারার মধোও কেনন একট্ব মায়া জেগে উঠত। শিখিল চামড়াগ্লো টান টান হয়ে উঠত একট্ব। ব্রুকটা অলপ একট্ব প্রেব। চোখের চার্ডনি কেমন থানিক চলচল। আর তখন অমরা গেলে কবিতা বলতেন না মা-মনি। কেমন একটা ভরা ভরা উস্টুসে গলায় আশেত করে বলতেন, এগোছস বীর্ব রাম, তোরো তো বড়ো হয়ে গিরেছিস এখন। বড়ো হবি, উর্রতি করবি। মাঝে মাঝে ভাবি আমার এতগ্লো ছেলেমেরে—একটাও বিদিম্বনের মতো হতা! একটাও হল না।

বজতাম, 'থাক, থাক আপনি নিজে এই অবস্থায় অত খাটবেন না। আমাকে বসনুন কি করতে হবে।'

জানতাম, এর কয়েকদিন পরে এলে কি দেখব। দেখব অধকারের কোণ থেকে ন্যাতা-কানি জড়ানো মা-মাণ একটা লালচে শিশুকে অবপ একটা তুলে বলছেন, তেদের আর একটি বোন বাড়ল বারির। এটা কিগতু অন্যগ্রলার মতো হবে না: না রে বারির? আমার মন বলছে...' মা-মাণর মন আই বলুক, আমি ডাঙারি পড়ি। মেজাজটা বিতৃষ্ণার ভরে তঠছিল। বিশেষ করে প্রমথবাব্রে ওপর। ভেরেছিলাম, মান্টারমশাইকে খোলাখ্যিল বলব।

কিন্তু বলি-বলি করেও সঞ্চেচ আট্রেক জিলা। তারপর কোন সময় আবার কলকাতার ফিরে এসেছি। কলকাতার জীবনের মধ্যে ভূবে গেছি। বলা হয়নি।

'কলকাতার রামতায় হঠাৎ চাঁদ দেখা গেলে মনে বিসময় জাগে।
ঠিক তেমনি আধুনিক কবিতার আন্রোমাণ্টিক শব্দ-সর্বস্বতার আবহাওয়ায় এই কবিতাগুলি অভিনব......' মন্তব্য করেছেন কোন বিশিষ্ট বিদশ্ধ সমালোচক

> শিশির ভট্টাচার্য্যের শিকীঃ কবিভাগুৰ

कथरता सूङ्राजंत जारन

লয় – তিন টাক

ৰাক্সাহিত্য প্ৰাইডেট লিমিটেড ॥

৩৩ কলেজ রো, কলকাতা ৯

শ্বদ্ধা দেড়েক পরে আবার গিরেটি ছ্টিতে। মা-মণির সংশা প্রত্যেকবারের মতো একবার আন্টোনিক দেখা করে আসতে হবে জানি। কিংতু তথনে। প্রশ্বত বাওয়া হয়ে প্রতিনি।

হঠাং মা-মণির বড়ো ছেলে শ্যামণ নি জই একদিন এসে হাজির হল সংখ্যবেল।

শ্যামলটা বড়ো হয়ে উঠেছে, প্রায় জ্বোন। কিংতু সেই করে ম্যাট্রিক পাশ করার পর আর পড়াশ্নাও হয়নি ওর, কোনো কাজেও লাগতে পারেনি। ভেরেছিলাম, ও বলবে কোলকাতার কিছে একটা স্বিধা করে দিন না, বীর্দা। বাবা আর টানতে পারছে না।

কিন্তু তার বদলে ও বললে, করিংন: আপনাকে এখনি যেত হবে আমাদের বাড়িতে। মা কেমন করছে।

ওর ফ্যাকাশে মুখের দিকে তেয়ে জিগেন ক্রলাম, 'কেন, কি হল মা-মণির?'

শামিল একটা অনাদিকে মূখ ফিরিঃর অস্ফ,ট গলায় বললে, ছেলে হতে গিয়ে...

্রত কড়ো এক জোয়ান ছেলের কাছে তারই মামের প্রসব-প্রসংগ কেমন লাগ ছ কি জানি ভেবে ভাড়াঙাড়ি কথা চংপা দিলাম, 'চলু যাচ্ছি কি মুসকিল।'

শানতাম এই হবে। এইরকম একটা অঘ-हेन ना इछशा भयन्छ उत्मन्न अहे छ।भा অভ্যাসের সমাণিত ঘটবে না। গিয়ে দেথি সারা ঘর থমধমে, বোকার মত মুখ করে প্রমধবাব, বসে আছেন চুপ করে। মা-মণির মেয়ে, শামলের ছোটো বোন গাঁতুটারও বিষ্ণে হরে গিয়েছিল বছর দুই তিন আগে। বাপের বাড়ি এসেছে ছেলে কোলে নিয়ে। ছেলে কোলে করেই স্তব্ধ ছোটাছ্টি যা করার সেই আর সেই বারান্দার কোণে ঠিক তেম[্]ন করেই ছে'ড়া চট আর খড় বাখারি দিয়ে অশর্মিত একটা অন্ধকার কোণ রচনা করা ঠিক **সেই আগের মতো। শ**ুধ**ু আ**গের আগের বারের মতো দেখান থেকে মা-মণির ফিস-ফিসে ডাক শোনা যাচেছ না। শোনা যাচেছ শ্ব্ব থেকে থেকে এক বিকৃত যণ্ত্ৰণার গোণগানি।

ঘ্ণার প্রমথবাব্র সংগ্য কথা বলতেও ইচ্ছে করছিল না। দ.তে দাত চেপে ব্ললাম, হাসপাতালে নিয়ে থেতে হবে এখান।

জ্ঞানতাম, শহরের যে সব সরকারী হাস-পাফালটার নিয়ে বাবার কথা বলছি, সেখানে শহরে ভদ্রলোকরো এখনো ষেতে সাহস পার না তব্ এই অধ্বনার নরক আর বৃড়ি ধাইরের চেয়ে সেটা শতগ্প ভালো।

দুই দিন দুই রাচি ঘুম ছিল না আমার।
এখনো পাশ করে বেরুই নি তব্ মফুস্বল
হাসপদ্তালের সরকারী ভালারদের কাছে
আমিক ছিল আমার। দুদিন পর একটি
আমুক্তিপুন্ত মরা জেলেকে ন্যক্ত্যুর কড়িকে

প্রমধ্রাব্র কাছে এনে দিলাম, খান সংকার করে আসন্ন গে! আরো ছেলে চাই আপনার? আশ্চর্য! আমার গলার দ্বরে ঘ্যার তিক্তাট্টু একট্টেও চেপে রাখার চেণ্টা করিনি আমি। প্রমধ্বাব্র প্রায় রংখ নির্বোধ মুখ্টা খালি বিহুলের মতো আমার দিকে তাকিরে রক্তাল কিছুক্ল। কিছু বল্লন না। বল্লেন রাতে, মান্ধাণ বভিবে এইটে জনোর পর।

বিবর তুই ভেকেছিদ এ ব্ ঝি আমার
জনো নারে আমি চাইনি। এতগ্রেলা ছেলে
সেয়ে কোন বাপে চায় । এতগ্রেলা পেট।
একটাও কি মান্য হচ্ছে একটাও মান্য করে
যেতে পারব না। কিল্ডু....ও যে মানে না।
ও তব্ চায়।....আমি কি করব যদি

আমি চমকে উঠেছিলমে, 'ও মানে মা-মণি ? কেন ?'

প্রমথবাব, বিভাবিভ করে এলোমেলো কি সব বললেন পরিষ্কার হল না। শংধা কারকম একটা অম্ভূত অম্বস্থিত মনের মধ্যে বিশ্বে রইল কেবল।

মা-মণির হখন জ্ঞান হল, র্ডেভাবেই বল-লাম, 'এইবার খ্ব বে'চে গেছে। মা-মণি। কিন্তু আর যদি ছেলে হয়, বাঁচবে না!'

মা-মণি আমার মুখের দিকে চেয়ে তর-পর কি যেন খাজুলান। আমি জানতাম কি খাজুলান। বললাম নেই, ওটা বাঁচেনি। কিন্তু এর পরের বার তুমিও বাঁচবে না, বুকেছো?

মা-মণি তাকিয়ে রইলেন শুধু।

কিম্তু অসহা একটা রুডতা পেয়ে বসে-ছিল আমাকে। আমি বলেই চললাম, তুমি বুড়ি হয়ে গেছো মা-মণি, ব্বেছ? তার কেন? আর হবে না, তার ব্যক্থা করে দেওরা হয়েছে বুঝেছ ?'

র্চভাবে যেটা বলেছিলাম, সেটা আমাদের চিকিংসাশান্তের নিদেশ অনুসারেই
বলেছিলাম। ছুটি শেষ হয়ে গেলে যাবার
আগে মা-মণিকে আরও একট্ নরম করে
ব্বিয়ে দিয়েছিলাম ব্যাপারটা। মা-মণি
চুপ করে রইলেন। বললাম, কি ভাবছো?

মা-মণি ম্লান হাসলেন, 'তাহলে মরে শ্বাবো ব্লছিস ?'

ৰললাম 'হা !'

'তোমার দেহটা আমরা প্রোপ্রি পরীক্ষা করে দেখোছ। দেহের একটা নিয়ম আছে তো। সে নিয়মকে মানতে হবে।'

'দেহের সব পত্যি তোরা জেনে ফেলেছিস বলতে চাস ?'

'হাঁ, মা-মণি, হাঁ অস্তত এটা জেনেছি।' মা-মণি চুপ করে রইলেন একট্র।

'আমার এতগুলো ছেলেমের।
সবকটাকে কি ভালোই না বাসি
বীর্। সবকটাকে! বেটা মরে গেলো
সেটাকে দেখিনি, তবু সেটাকে ভালোবাসি কেমন। বড় খেকে ছোটটা স্বাইকে
কবু কি মনে হয় যেন ভারি স্কুমর একটা
ছেলে হবে আমার। ছেলে ছোক মেরে ছোক,
এমন স্কুমর একটা কিছু হবে, বা আরু কারে।
স্কুটো রন্ধ। ক্ষেমন এক ধরনের স্বুপের মুখ্যে

এমন কি একটার জনো যে আশা করে থাকি! যেগ্লো হয়েছে সেগ**্লা ভালোবাসি ভীষণ,** কিন্তু তবং আশা করি অনা একটার...

আমি জোর করে প্রসংগটা ফিরিয়ে এনে

ছिलाभ किकिश्मा-भारम्छ।

িকস্তু যা বলেছি মনে থাকে ধেন। মা-মণি ছলছল চোখে সার করে বলে-ছিলেন

'যাহা চাই তাহা ভূল করে চাই, যাহা পাই তাহা চাই না—'

তিন বছর পরে আবার ফিরেছি দেশে।
মা-মাণর সংশ্য দেখা করতে গেলাম।
দেখলাম মা-মাণ অসম্প্র। ঘরভাতি একপাল
ছেলেমেয়ে। শ্যামল আমাকে দেখে
দৌড়ে এল, 'বীর্দা' দেখন আপনি
রদি পারেন বোঝান। আমরা
পারলাম না। লক্ষা সরম ফেলে রেথে
আমি, গীতু, গীতুর ছোটোটা সবাই মিলে
রোজ মাকে বোঝাছি। কিন্তু মা কিছুতেই
গ্নেবে না। ভাদ্ধার বলেছে, এখনো সময়
আছে …। কিন্তু শা…..

্তার মানে! আমি চমকে উঠকাম, আবার?

'हार्गं'

গ্রন্থে গিয়ে দড়িলাম মান্মাণির শিয়র।
মান্মণি বা কোন অচনা কুংসিত এক প্রোচ।
ফাফাশে চামড়া থেচি। খেলি হাড়, শাদার
ছিটে লাগা পাতলা হুল। মন্য মান্য বার তব্
একট্ অস্থায়ী মায়া নানে চোখে মুখে, একট্
ভরাট হয়ে ওঠে বুক। এবার তাও নয়।

শুরে শুরে মা-মান গাঁতুকে দিরে বা যা দরকার জোগাড় করে রার্যাছলেন— 'ওরে গাঁতু, ছে'ড়া নাাকড়াগ্লো ফেলিস না মা। রেখে দিস। শাামলটা যদি কিছু নতুন চট নিয়ে আসে...'

আমাকে দেখে মা-মণির ফ্যাকালে ম্খ-খানাতেও কেমন একটা অপগিথ'ব উচ্ছাস দেখা দিল—'বীর', তুই এসেছিস। আয় তুই বলে-ছিলি হবে না, কিন্তু দ্যাখ…'

আমি জবাব দিলীয় না। আয়ি জানি য মণি যে শ্যায় পড়ে আছেন সেটা মৃত্যুদ্ধ:। কোন ধ্বতারর হাত নেই তা রোখ।

'তুই বলোছাল, সব সত্যি তোরা জেনে ফেলেছিস, হয়তে দেহটার কলকজ্ঞা জানিস, কিন্তু মা-কে তোরা জানবি কি করে?

আমি চুপ করে রইলাম। হঠাৎ চমকে উঠলাম এক অম্ভূত স্বপ্নাতুর ফিস্ফিনে থাওয়াজে, আমি মরে যাবে বলছিস?... কিন্তু এবারকার ছেলেটা হয়ত অনাগ্রেলার মতো হবে না। না রে বীর্? আমার মন বলছে.....

সেই অনেক-অনেক কাল আগে মা-মণি
বখন দেখতে সজিই স্কুলর ছিল, আমরা
বখন ছোটো ছিলাম তখন মা-মণি ঠিক বেমন
স্বের একটা লালচে কচি বল্ডাকে অলপ একট,
তুলে ধরে আমাদের বলভেন, অবিকল সেই
সূর।

জানি না কখন নিজের অজ্ঞাতে আমিও বলতে শ্রে করেছি, 'সতিয় মা-মণি, এটা কিম্তু সতিয়ই ভারি সংপর হবে...।'

আমার দ্টোথ দিয়ে কখন জল পড়তে শ্বু কুরেছিল শান্তি জুলি না।



অরা বললো, তুমি ত কিছ্ই থেলে
না, আমার খাওয়া বেশি হয়ে গেল। এই বলে
ডিভান ছেড়ে উঠে ও জানালার কাছে গেল,
একট্ দাঁড়িয়ে থাকল, তারপর ডিভানে
ফিরে এসে বালিশটা টেনে নিয়ে আধশোয়া
ছুগাতি বসলো। বললো, রীতিমত গ্রম
পড়ে গেল। না?

রাজ; বললো, বেশ। তবে তোমাদের হাজারীবাগের গরম কিশ্চু আমার ভাল লাগে--বেশ শ্কনো গরম--মনের আদ্রতা সব শ্যে নেয়।

তোমার মনে আর্তা আছে নাকি?

আমার কথা ত বলিনি। যাদের মন আছে, তাদের কথা কলিছি।

তারপর ওরা দ্কানে কেউই আর কোনো কথা বলল না।

অরার মা-বাবা খাওয়াদাওয়ার পর
ঘ্মিয়েছেন। কাব্রিল বিড়ালটি আদুরে
আদুরে চোখ করে অরার ঘা-ঘেশ্রে বসে
আছে। রাজা জানালা দিয়ে বাইরে চাইল।
কানারী পাহাড়টি রোদে আর ধ্লোর ঝড়ে
কেমন মেঘলা দেখাছে—শুকনো শালপাতাগ্লি উড়িয়ে ঘ্রিয়ে ছড়িয়ে গরম হাওয়াটা
জগালের দিক থেকে ছুটে আসছে। বাইরের
গেটে বোগোনভেলিয়ার ফুলেভরা ডাল
হাহাকার তোলা হাওয়ায় উথাল-পাথাল
করছে। গেটের পাশের বাঁদর লাঠির গাছটির
পাতা নড়ছে; পাতা ঝরছে।

এমন সব উষ্ণ হাহা-করা দৃপ্রে রাজার ইচ্ছা করে ও একটি শ্কনো শালপাতার মতো উড়ে উড়ে ঘ্রে ঘ্রে এই হতাশ হাওয়ায় ভর করে কোনো শান্ত নির্লিণিততে সম্পতি হয়। তারপর কোনো কীণ থয়ের নদীর বালিতে অথবা কোনো রক্ষ কালো পাছাড়ের পায়ে ও পড়ে থাকে। আর চলতে হয় না, ভাবতে হয় না, আর জ্বলতে হয় না, ভাবতে হয় না, আর জ্বলতে হয় না ভাহলে। শ্রে শ্রে আকাশের দিকে চেয়ে একদিন প্রশত্রীভূত হয়ে যেতে পারে।

জরা বললো, কি ভাবছ? ৰাইরে তাকিয়ে?

কিছন না। যদি বা ভাবতামও, ভাবনা ত কাউকে দেখানো যায় না। দেখাতে চাও না, তাই দেখানো যায় না। তা হলে তাই।

আর কথা বললো না। একটা সিগারেট ধরালো। কথার থেলা আর ভাল লাগে না। বহুদিন হল। যথনি ও আজকাল অরার কাছে আসে, ওর সংশা কথা বলে, চোখে চায়, রাজার সমসত শরীর জ্ড়ে কি একটা জনালা কাঠের আগন্নের মত জনলে - ক্রাটটা শর্কিয়ে আঙ্গে-ব্রকটা হায় হায় করে। রাজার মনে হয়, কোনো কোনো-দিন অরারও নিশ্চয়ই ওরকম অর্থ্বিত হয়। ও বড় চাপা মেয়ে। ওর মুখ দেখে কিছ, বোঝা সহজ নয়। ওর ব্কে ঝড় উঠলেও মুখ প্রশানত থাকে। তবু রাজার বহুদিন মনে হয়েছে-—ওরা দ্বজনে একটি টাব-পেয়ারে বসে দাঁড় টানছে ইচ্ছার জলে। রাজার হাতে ম্ট্রোকের দাঁড় আর অরার হাতে বো मारेट अता पदका में मार्स माँ छोटन চলেছে, কিন্তু কোনোদিন একসংগ্য জল কার্টোন। কক্সে কে আছে, রাজ্ঞা জ্বানে না। ভগবান টগবান গোছের কোনো শান্ত নিশ্চয়ই আছে। সে কোনোদিন তাদের দ**্জ**নকৈ একসংখ্য দাঁড় ফেলতে দেয়নি। স্বীং-লোনাইজেশান নামক ঘটনাটি ঘটেনি ওদের দ*্রজনের জীবনে*। একজন য**খন** খুব একাশ্তভাবে অনাজনকে চেয়েছে, তখন দে কু[°]কড়ে থেকেছে। আবার সে যখন হাত বাড়িয়েছে, জোরে দাঁড় ফেলে শক্ত হাতে জল কেটেছে, অন্যজনের দাঁড় তখন জ্বলেই নেই। কার অভিশাপে এমন হয়েছে, রাজা জানে না, অরা জানে ⁵কনা অরাই জানে।

রাজা অরার দিকে তাকালো। একটা শাদা ছাপা ভয়েলের শাড়ি পরেছে আজ, মধ্যে হালকা নালের চাকতি বসানো। একটা নালরঙা ফ্ল গর্মুন্সে আছে। এর দিকে তারে থাকতে থাকতে রাজা হঠাৎ মনম্পর করে ফেলল যে, আজ একটা হেস্তনেস্ত হয়ে যাবে। সব নেবে অথচ কিছুই দেবে না—এ বরাবর চলতে পারে না। ঘুমোবার সময় তার মুখ ভেবে ঘুমোবে, ঘুম ভেঙে প্রথম তার মুখ মনে পড়বে—প্রথমীর আর কোনো মেরের মুখের দিকে জকাতে পারেবে না,

কারণ অন্কণ সে-ই একা রাজার মন-জুড়ে চোখ ভরে আছে—অখচ অরা তাকে বরাবরই এমন সাপের খোলসের মত শীতসতার মুড়ে রাখবে, এ হতে পারে না। রাজা ভাবলো, আজ মনে মনে অরাকে ঘেরাও করে ফেলবে। আজ তার এতদিনের দাবি মেটাতেই হবে।

রাজা বললো, বইটা এখন রাখ, আমার দিকে তাকাও।

অরা দুটি উল্লেবল চোথ ছুলে বললো, কি? হলটা কি?

কি হল তুমি জান না?

না। অসভাতা করবে না। পিশক, তুমি এমন কিছু চেয়ো না যাতে তুমি সকলের সমান হয়ে যাও। তুমি জান না রাজা, তুমি আমার চোখে কত বড়। তোমাকে ত কত-দিন বলেছি।

রাজা বললো, অসাধারণ হয়েই ত এতদিন কাটিয়ে দিলাম। তাতে লাভ হল না এককণা, নিজের মধ্যের জনেলাঞ্চা কেবল বেড়েই চললো। তোমার কোনো ধারণা আছে: ভূমি আগাকে কতথানি বন্দ্রণা দিয়েছ এতদিন, এত বছর, প্রতিটি মৃহুভেঁ?

অরা মুখ নিচু করে বললা, আমি ত দিতে চাই না—তোমাকে একট্ও বল্টণা দিতে চাই না। আসলে তুমি বন্দাণা পেতে ভালবাস। এ তোমার একটা বিলাস—বেদনা-বিলাস। বলে অরা ওর বিভালটির নরম গায়ে হাত বোলাতে শাগলো।

রাজা সিগারেটটা আসম্রেটত **গ**ুছে রাথতে রাথতে একটি দীর্ঘশ্বাস **ফেলন্স।** কথা বলন্স না।

অরা বালিশটা সরিয়ে সোজা হয়ে বসে বললো, কি? বাব্র রাগ হল ব্রিং ভূমি আমাকে মুখে মুখেই ভালোবাসো। সভিটে ভালোবাসলে ভূমি আমার ইচ্ছার দাম দিতে।

রাজা তব্ও কথা বললো না, **জানালা** দিয়ে বাইরে চেয়ে র**ইলো**।

এই ইচ্ছার গমের কথা অরা অনেকদিন রাজাকে বলেছে। একমাত রাজাই জানে বে, অরার ইচ্ছার দাম কতভাবে এবং কিসের বিনিময়ে ও দিয়ে এসেছে। তব্ আরা ওকে



আ

ব্য

The the surper for some and

বারে বাঁরে ক্ষরণ করায় তার ইচ্ছার দামের কথা। অথচ রাজার যেন কোন ইচ্ছাই নেই; থাকতে পারে না। রাজা যেন ভগবান, যেন ও রক্তমাংস শরীর হ্দয়ের কোন সাধারণ मान्य नय। ताकात टेक्टा किंक ও এशात ফোর্সের পাইলট হয়, কিন্তু বাবার ইচ্ছার দাম দিতে ও সালিসিটর হয়েছে। রাজার থ্ব हैफ्श ও মালিনীকে ব্যথা না দেয়, কিন্তু মার ইচ্ছার দাম দিতে ও মালিনীকে নিষ্ঠ্যরভাবে ব্যথা দিয়েছে। আর আজ রাজার নির্পার ভালবাসাকে অরা প্রতি মৃহতে পায়ে মাড়াচ্ছে ওকে তার ইচ্ছার দাম পিতে বলছে, বলছে ঠাকুরঘরের ভগবান হয়ে চিরাদন ওর মনের জগতে বাস করতে। মনটাই সব, শরীরটা শ্রেই ঘ্লার এমন कथा वरन वरन वरन वरन, ताकात निरक्ष **मतीरतत উপরও অ**রা একটা ঘ্ণা জন্মিয়ে नित्राह्, अहे भृषिनीत्छ त्कहे वा कात हेकात माघ एम्झे ? कार्न निक्रम म्, भूदत्रत क्रिति छना इ

घटना घटनत छानिए नात्र मग्रम् म्यान हैकात घननातीन माकिएस ताका कर्णान फिति करत फिरतरह। किए जात रेव्हात कारना माभ रमग्रीन। छात्र भव देष्ठात घर्म रतारमञ ভাপে এক এক করে শ্রকিয়ে গেছে। তব্ভ তার কাছে সকলে ইচ্ছার দাম দাবী করে এসেছে। এবং ও এমনি বোকা, এমনি হ্দর-वान त्य अकत्नत इच्छात माथ मिटल मिटल दन निस्कृतक वात्रवाद वश्वना करत्र छ मिरत्र अरमस्ट । 'ইচ্ছার দাম' কথাটা শ্নলেই আজকাল क्षीयन त्राम इत्य यात्र वाकाव। ও সাধারণ, সাধারণ হয়েই থাকতে চায় কিন্তু অরার কাছে এলেই অরা ভাল দোকানের ম্যানেজারের মতো হে:স হেসে, রাজাকে ছোট ছেলে ভেবে মহত্তের মোহন মুখোশ পরিয়ে দেয়। প্রতিবার রাজা মহত্ত্বের মূথোশ পরে কাঁদতে কাঁদতে ফিরে याहः। এমন कतः সে আর ফিরবে না। এমন करत निन आत कार्टे सा।

হঠাং অরা বললো, জানো? তোমাকে
বলতে জুলে গোছলাম—সেদিন এক কাণ্ড
হয়েছে। গত মাসে যথন কলকাতায় গোছলাম, এষা, কোয়েল, ম্নিয়া ওরা সকলে
ধরলো, চাইনীজ খাওয়াতে হবে। পার্ক শাীরে থেতে গেলাম। খাওয়ার পর যথন বেরোলাম, তখন দেখলাম কি জানো?

कि:

অরা একটা ভাবলো, বললো তোমাকে ঘলছি, কিন্তু তুমি আর কাউকে বোলো না।

রাজ্য বললো, তুমিই যে সকলকে বলবে, সে বিষয়ে আমি নিশ্চিত। আমি বলবো না সে সম্পর্কে নির্ভয়ে থাকতে পারো।

বলছি কিন্তু তা হলে দেখলাম রছদো—মানে রিণি।দর বর ডেড ড্রা॰ক হয়ে একটা বার থেকে বোরেলো—সংশ্য একটি দার্ণ ফিগার কিন্তু খারাপ মুখের মেয়ে— মেয়েটা হটিতে পর্যান্ত পারছিল না—এমন বেহ'দ। ট্যাকসি—ট্যা—কাসি বরে দ্বার ভাকলো, তারপর ট্যাকসিতে এমনভাবে হ্রুকে উঠে চকে গেল যে তোমাকে বলতে পারছি না। ফটপাতে ভীড় জন্ম গেল। এষরো ওদের নিষে আলোচনা করতে লাগলো —আমি লজ্জায় রঘ্দাকে যে চিনি এমন কথা প্যাত্ত বলতে পারলাম না। কী থারাপ। তাই নাঃ উস্বেচারী রিণিদি।

তাহ নাং সপ্তেমান ক্রমের কেনো-রাজা বললো, তুমি যদি আমার কোনো-দিন এখনভাবে দেখো, আমার সম্বন্ধে তোমার কি ধারণা হবে?

অরা চোথ বড় বড় করে বললো, ধারণা মানে? তোমার সংশা কোনোদিন কথাই বলবো না। বাড়ি চুকলে কুকুর লেলিয়ে দেব।

রাজা হাসলো, বললো, এইখানেই তোমাদের সংকা পার্বতীদের অমিলা। দেব-দাসকে দেখে পার্বতীর অনতত দয়া হয়েছিল। তোমাদের দয়াও নেই।

মন না, নেই। ও বকম উপমা আজকাল চলে
বান শবং চাটিজির সময়ের দেবদাসের।
বার আজকাল আর জন্মায় না। তৃমি কি বলতে
বার চাও যে রঘুদার সংগ্রার মেগের মেরেটির সংগ্রা
বার্থানা কোনে ইমোশনাল কানেকসান
ভিলাং তবেং দেবদাসের মত যদি শুমু মন্
থেয়ে একজনের দুঃখ ভোলার জনো মরে
যেত, তা হলে তার কেসটা কনসিতার করা
যেত, কিম্বু এ সর ত অভান্ত নোংৱা
ব্যাপার, বাজে ব্যাপার ন্যুদা ভালানিসিন্তর
কি জানে:

রাজা আবার হাসলো, বললো, ভোমার ভার নেই। আমি চেডা করেও কোনাদন রঘুদা হতে পারবো না—কারণ তোমারা যাকে গাটস বলো আমার ২মতো সেটাই নেই তা ছাড়া হমতো আমি ঐ যুক্তিতে বিশ্বাস করি না। এক মুহুতেরি জনো যাকে তাকে পেয়ে খুশা হবার চেয়ে সারাজাবিন একজন বিশেষ কাউকে চেয়ে দুঃখ পাওয়া ভাল। পাওয়াটাই ত সব নয়, কি পাব সেটাই সব। অরা, তোমাকে ভালোবেসে আমার ইহকাল পরকাল সব গেল। তুমি আমার ভালোবাসা দুহাতে ঠেলে সরালে আর আমি অনা সকলের ভালোবাসা কাঁচের বাসনের মতো হাত থেকে ফেলে দিলাম। মজাই সাগে ভারালা

অরা কোনো জবাব দিল না। চুপ করে গবিত চোখে রাজার মুখে চেয়ে রইলো।

দ্জনে আবার অনেকক্ষণ চুপচাপ বসে রইলো। কথায় কথায় বিকেল গড়িয়ে গেল।

হঠাৎ রাজা বললো, এই, আমার কাছে এসো।

না। বলছি না অসভ্যতা কোরো না, বললো অরা।

কিন্তু রাজার মনে হলে, অরার মুখে সেই মুহুতে ও কি যেন এক অজানা আবীর দেখতে পেল যা ও আগো কোনো-দিন দেখে নি—যে কোনো কারণেই হোক—এই জনলাধরা দুপুরে ওর কাব্লি বিড়ালের মতো অরার নিজেরও বোধহর একট্ আদর খাবার ইচ্ছা হল। কিংবা নিজেকে তাই বোঝালো রাজা। রাজা হঠাং চেয়ার হেড়ে অরার কাছে যেতে গেল। যাবার আগে জানালার পদাগ্লি টেনেদিতে গেল। এই অব্কাশে অরা দৌড়ে ঘর

ছেড়ে পালিরে গিরে **বাইরের বা**রালার দাড়ালো।

রাজার সমস্ত বুকে রঙ ছলাং ছলাং
করতে লাগলো, কোনোদিন ওর এমন
হয়নি—কোনোদিন না। ও ডাকলো, অরা।
তরা উত্তর দিল না—বারান্দা থেকে বিজ্ঞানিট
মিখাও করে উঠলো। আবার রাজা ডাকলো,
তরা, এ ঘরে এসো। অরা উত্তর দিল,
বললো, কি? কিন্তু ঘরে এলো না। রাজা
ভারও একবার ডাকলো। এবারে অরা এসে
পর্না ঠেলে ঘরে ঢুকলো—এবং সপো সপো
রাজা ওকে বুকের কাছে টেনে নিয়ে ওর
ঠোটে ঠোট ছোমালো—অরা একট্ সামনে
ঝাণকে রাজার আদর খেলো—তারপর ফিন্
ফিসিয়ে এক নিঃশ্বাসে বললো, মা উঠ
গোছেন; মা উঠে গোছেন। ছাড়ো। পরকলেই
ঘর ছেড়ে ও দৌড়ে পালিরে গেল।

অনেকক্ষণ রাজা একা একা বদে থাকলে। পদ্যিনা ঘরে।

ভারপর অরাকে খুজিতে খুজিতে বিজ্ঞান করা তার পড়ার ঘরের জনালার পাশে দাঁড়িয়ে আছে।—এখনো উত্তেজনার জোরে জোরে নিঃধবাস নিজে। রজা ভাকলো, অবা। অরা মাখানা ফিবিটেই ধবির বললো, কেম এমন করলো ভুমি ভারী অসভা: ভবিশ অসভা। অল ভুমি আমার চোখে সকলের সমান এয় লোল রাজা, ভুমি আমার ইচ্ছার নাম নিল

রাজা ভেবেছিল হয়তো অরা কদিরে,
ভেবেছিল ওকে ঘ্ণা করবে, ওকে চলে
যেতে বলবে, কিন্তু অরা কিছুই করল না—
কেমন এক রংসাময় হাসিতে মুখ রাভিয়ে
আবার বললো, আজ থেকে তুমি ছোট হয়ে
গেলে। ঈস্কেন এমন করলে?

রাজ্য জানালা দিয়ে বা**ইরে** স্ভয়ে রইলো।

ধ্যিথ সাহেবের বাড়ির বাগানে, কত রকম ফ্ল ফ্টেছে—ফিকে বেগুনী রঙা ফ্লের পোকা হাওয়ায় দল্লছে গোলাপি আকাশের পটভূমিতে। গয়ার বাসটি গো-গো করে লাল ধ্লো উড়িয়ে নিজান পথ বেয়ে আচমকা চলে গেল।

রাজা কোনো জবাব দিল না।

রাজার ঠোঁঠে এখনো অরার ঠোঁঠের মিখিই আমেজ ছিল। এর বুকের কাছে আবার ছিপছিপে শরীরের ভাপ তথনো ফুলের গদের মতো ভাসছিল। অথচ সেই মৃহত্তের রাজার ভীষণ কারো পেলা। এতদিন ত সে ফল্লায় আত্রর হয়ে ছিলই, কিচ্চু সে ফল্লায় অমন এক গভীর আনক্ষও ভিল কিন্তু আজকের এই পাওয়া—এই উচ্চতা, এই স্বাস–স্বকিছতে কামন ফেন একটা দৃংখ আছে, হীন্মন্যতা আছে। এতদিন ও বরাবর অরাকে অপরাধী করে এপোছল, আজকে নিজেকে বড় অপরাধী মনে হতে লাগলো। রাজার খ্ব ইছা করলো যে অরাকে বলে, আমার প্রেনানা মহতের ছিড়ে যাওয়া মুখোশটা নিজে

হাতে আবার আমাকে পরিরে দাও। ওর বলতে ইচ্ছা করলো, অরা, তোমার সব রঙিন ইচ্ছাগ্লোকে আমি মাছরাঙা পাথির ডিমের মতো একটি একটি করে আমার প্রেমের উত্তাপে ফ্টিরে তুলবো এক্দিন দা একদিন। তুমি দেখো অরা, তুমি দেখো। তোমাকে বে আমি সতিই ভালোবেসেহি অরা, এত ভানমাত নর। কিন্তু মুখর রাজা এখন মুখে কিছুই বলতে পারল না, কোনো রক্মে বাধো বাধো গলায় বললো, চলি।

প্রতিদিন অরা বারাদদা অবধি এগিরে দিতে আদে, কী স্মের হাসি হাসে, বলে রাজা এসো। আজ আর এল না, কিছু বললোও না। ধেমন দাঁড়িয়ে ছিল, জানালার সামনে তেমনি উদাস চোথে দাঁড়িয়ে রইলো।

গোঁ পেরিরে নেমে ইউক্যালিপটাস গাছের পাতা বিছানো পথে মুখ নিচু করে হাঁটতে হাঁটতে রাজা ভাবতে লাগলো। নিজেকে ছি'ড়তে ছি'ড়তে ও হাঁটতে লাগলো, সতিটে কি অরার ইজার দাম ও দেয় নি? ইজার দাম। সতিটে কি দেয় নি? হওরার বোগোনভেলিয়ার নাচ দেখতে দেখতে অরা নিজের মনে হেসে উঠলো, মনে মনে বললো অসভা, রাজাটা ভীষণ

তারপর হিটারে চারের জল চাপিরে মাকে ডাকলো, বলালা, ওমা, ওঠো না, বাইরে এসে দেখ আজকের বিকেলটা কী সংকর।

আপনার শিশুর নিরাপড়ায় 'ডেটল' কেন জরুরী ?



আপনার শিশু ভূমিষ্ঠ হওয়ার দিনই, নিরাপদ নিশ্চিত জীবাণুনাশক হিসেবে ডাক্তার ডেটল ব্যবহার করেন। তথন থেকেই শিশুকে বড় করে ভূপুন ডেটলের রক্ষণাবেক্ষণে। জলে ডেটল মিশিয়ে লান করালে তার চামড়ায় জেল্লা আসবে, গায়ে রাাশ বার হবে না। জলে খানিকটা ডেটল মিশিয়ে শিশুর কোলট কেচে নিলে বাড়তি নিরাপত্তা মিলবে।

এছাড়াও, বাড়ির আরও নানা নিত্যনৈমিত্তিক প্রয়োজনে ডেটল বাবহার করতে পারবেন—কেটে গেলে, ছড়ে গেলে, দাড়ি কামানোয়. কার্গল্ করতে এবং মেয়েলী যাস্থা বক্ষায়।

এক বোতল ডেটল আজই বাড়ি নিয়ে যান।

ळाशनात वाष्ट्रि ळातक निज्ञाशम ज्ञाशाव



विश्वत प्रवरहाइ विश्वल कीवापूनामक





পথ-সংক্ষেপ করবার জন্য এই গলিপথটা মাঝে মাঝে পার হতে হর
স্মিনলকে। সম্পার পরও কতদিন সে
হে'টে গেছে এই অপরিসর পথ ধরে
সম্পাদক বম্ধর বাড়িতে। কোন কিছ্
ভাবতে ভাবতে অনামনম্কভাবে তার অভ্যমত
ভাগতৈ পথ চলা।

ছ্মেট্র গলি। গলির মুখেই ক্ষ্যুদ্রনার একটি পান-বিড়ি-লেমানেন্ডেগ দোকান, এক ঝলক আলো এসে পড়েছে সেখান থেকে রাস্তার ওপর। এই আলোট্যুকুর পরেই অম্বর্জার। কিছ্টো অংশ জ্বড়ে অবশ্য। তারা পরেই আবার প্রকৃতি দোকান টিনের চালার নিচে বেন্দ্রি পাতা—চা-ফ্র্ল্রি প্রভৃতির দীন আরোজন। আবার পথে এসে পিছলেন্ড্র্ড আলো। এই আলোতেই বড় রাস্তার স্বর্গত নির্বিষ্যে হাটা যায়। বড় রাস্তার সারি আলোর প্রহরী, রিক্সার টাং-টাং বাস অথবা ট্যাকসির উধ্বন্ধ্বাসে ছুটে-চলা।

গলির যেটাুকু অংশ অন্ধকরে — সেই অংশেই আবচ্ছা আলোয় ওরা দাঁড়িয়ে থাকে সময়-সময় চিত্রাপিতের মত মনে হয়। নিজেদের মধ্যে কথা বলতে বলতে হঠাং এক সময় একযোগে নীর্ব হয়ে যায় পথ-চারী আগশ্তুকের পদশব্দে, অসমি ঔৎস্ক্র তাকায় গলির মুখে ব্তাকারে পিছলে-পড়া আলোর দিকে—যারা আসছে, চকিতের মধ্যে সেই আলোয় দেখে নেয় তাদের চেহারা, কখনো সংক্ষিণ্ড আলোচনা করে निरक्ष्यपत भरधा। भरन-भरन मृक्षा এको। প্রতিযোগিতার ভাবও অন্তব করে, এর-ওর মুখের দিকে তাকিয়ে বু**রতে চে**ল্টা করে, কে কার থেকে দেখতে একট**ু স্ফুদরী** বেশী, কার প্রসাধনে পারিপাটা জেগেছে प्याकः, केन्फ्रल-दिशास कात् कार्**ए खेन्छन्**नमा জ্যলছে বেশী? পথচারী নিবিকার চিত্তেই ওদের পার হয়ে যখন আবার গিয়ে **পড়ে** আলোর বৃত্তের মধ্যে, তথন পরুস্পরের দিকে তাকিয়ে সমবেদনায় মদির হয়ে ওঠে ভদের মন — এর-ওর মেকী সোনার দিকে তাকিয়ে অস্ভূত একটা মায়া জাগে ওদের অন্তরে। কিন্তু তাও ক্ষণিকের। আলোর ব্রুতে দেখা যায় নতুন আগ্রুত্ক, আবার মন ভরে ওঠে নতুন প্রত্যাশায়। মন্থর গতিতে এদিক-ওদিক ভাকণতে-ভাকণত **এগিয়ে আনে পথিক**—লক্ষা করে মাহারকার জন্য একটা শিহরণ কে'পে যায় সারা

শরীরে, ওলের দাঁড়ানোর ভাগ্গিমা হয়ে ওঠে লীলান্তিত, — কটাক্ষে জনলে বাঁকাদাণ্টি, মনে-মনে হিসাব করে টাকার অংক। একট্ দালো খাবার — ভালো থাকবার উচ্চাশা মুহাতের জন্য তরুগা তুলে আবার মিলিয়ে

দিনের পর দিন। সকলের অবশ্যা প্রকাশ সমান নর, ওরই মধ্যে একটা অথানৈতিক ভারভুমা আছে। কার্র ঘর বেশী
সাজানো, কার্র কম। কার্র ঘর বড় বড়, কার্র ঘর ছোট। কার্র বাড়িতে বৈদ্ভিক
নীল বাতি জনলে, কার্র বাড়িতে কালিপড়া
লঠন। হয়তো একই বাড়িতে এ-ঘরে বিদাং,
এ-ঘরে লপ্টন। কার্র ভিন-চার মাস
একাদিকমে বিদাং, জন্পবার পর অবশেষে
কেরোসিনের বাতি। ভাড়া বাকী পড়ায়
বাড়িউলার লোক বাধ্ব খ্লে নিয়ে গেছে
সমন্তব্য। তব্, এরই মধ্যে নিভাকার
প্রস্থিম, নিভাকার তেসে কথা বলা।

ভাবকে বলে কণ্ণ, মহলে আছে আছে
স্বিদ্ধান । একটা আগ্রভালা কবি মন।
হিসাব কথা সংগাবে এই বেহিসেবী
লোকটাকে জীবনম্বা দিতে হয় নি কম,
তব্ আজও হিসেব সে ভুল করে, আজও
দূহণ পায়।

সংখ্যা পেরিয়ে রাত্রি ঘন হফেছে রীতি-মত। আকৃশিটাও কালো। পথ চলতে-চলতে মেঘের সে কালিমা আরও ঘনীভূত হল, ওর তাতে ভ্রেক্ষপও নেই। বড় রাম্তা দিয়ে অনেকটা দরে চলে এসেছ, দর্-এক ফোটা বর্মণের আভাস পাওয়া গেল। তথনো থামে নি স্বিমল সংক্ষিত্ত পথটা ধরে সম্পাদক বর্মহে সে।

ভাডাহাড়িতে গলিতে চ্কে পড়ে বিজলী উজ্জ্বল দোকানটা পার হল স্বিমল। কিন্তু হিসাবে ভুল হল। ঝ্যাক্ষম করে নামল ব্লিট। সপো বর্ষাতি নেই, কিছ্ম নেই। ছুটে ষেথামে গিয়ে দাঁড়াতে হল স্বিমলকে, সেটা অন্ধবার এলাকারই মধো। একটা কোঠাবাড়ির আাসবেন্টাস-ছাওয়া চাল খানিকটা রাহতার দিকে নেমে এসেছে, তারি নিচে দাঁড়িয়ে আকাশের দিকে ভালো করে তাকালো স্বিমল। জল লোগ ঝাপসা হয়ে-যাওয়া চশমাটা চোখ থেকে নামিরে রুমালে মুছে নিতে লাগল। তার পরের কাঁচ।

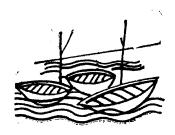
কিন্তু বৃণ্টি এল আরও জোরে। আস-বেস্টাস-ছাওয়া চালের কিনারের নিশাদেশ থেকে কাছাকাছি অন্য কোন নিরাপদ আশ্ররে 50 करत इ.ए याख्या यात्र किना, मन्धानी চোখ মেলে দেখতে লাগল। বৃণ্টির ছাঁট যেন তীক্ষা ছ'কের মত এসে বি'ধে বাকে গায়ে। না কি খানিকটা এগিয়ে ভিজে-ভিজেই যাবে চায়ের দোকানটার মধ্যে? ভরুসা করা যায় না, যে বৃষ্টি, আগাগোড়া ভিজে যেতে হবে **একেবারে। যেমন** বৃণিট তেমান হাওয়া। ওখান থেকে দেখতে পেল স্ববিমল, দোকানের সামনে দিয়ে আসতে গ্রিয়ে জনৈক পথচারীর খোলা ছাতাটা হাওয়ায় গেল উল্টে. ভদ্রলোক বাধ্য হয়ে চাকে গেলেন দোকানে। ছাতা থাকলেও দেখা যাজে বৃণ্টি থেকে বাঁচত না স্বিমল। কী করবে না **করবে ভেরে ঠিক কর**তে পারছে না সে, এমন সময় হঠাৎ কানে এল কেমন মৃদ্ একটা কপস্বর — ভিভরে আস্ন না?

রীতিমত চমকেই তাকাল স্বিমল। ডান দিককাৰ দরজাটা খালে কপাটের কাছে গড়িয়ে একটি মেরে, তাকে লক্ষ্য করে প্যার্গ্তি করছে তার সম্ভাষণের।

একটা অবিধ্বাস। ভীত মৃত্তে শিউৰে উঠে মিলিয়ে গেল সনায়ৰ তক্তীতে-ক্তীতে। মেয়েটি দৰজা ছেণে মু-এক পা এগিয়ে এল মনে হল যেন। বলল—দীড়িয়ে-শিউয়ে ভিজছেন কেন? বস্নুন না ভিতাব এসে?

ক্তির ধারা কথন আরো ঘন, ক ওয়ার তথন আরো জোর। বৃদ্ধি তা াতার মিলে সারা থালিটাকে ক্যাশার ঝাপনা করে তুলেছে। তানেকটা স্বংনাটালতের মতে ভিনরে প্রেশ করল স্বাবিমল। এক ফালি উঠোনের ফাল গাবে-ধার বাবারকেই মত্ব ঘর। কয়েকটি ঘরের দক্ষা থেকে উবি দিল আরও ক্যেকটি মেলেই মুখ। হয়ায়ে ভারা আদ্দর্যাও হরেছে, হয়ভো-বা হর নি। কে একটি মেয়ে বলালা—তোর বাব, এল না কিরে স্বংনা?

উঠোনে পাতা ইণ্টের ওপর পা দিক্তে নিয়ে মেয়েটির ঘনে ডেক্ডেগে একে গেছে সংবিমল। সাপোনীর প্রদেশ একটা হেনে উত্তর দিল মেয়েটি কণী।



—হ্বিড়র ভাগ্য ভাগ — মুক্তব্য করল আরেকজন।

স্ববিমল বরে ত্তে গেছে, দরজার দীভিয়ে ওদের দিকে তাকিয়ে আরো জোরে-लात्त द्राप्त छेठेन प्रासिंग, किन्यू किए, वनन ना। भन्नमार्ट्स नन्नाणे मिन रहेत्न नन्ध করে। আর অনভিজ্ঞ স্ববিমল ঘরের মধ্যে দাঁড়িয়ে রইল পাথরে খোদা নিম্প্রাণ এক মতির মত। কত কী কাহিনী শ্নেছে সে এদের সম্পর্কে, কত কী ভীতিকর বটনা এদের প**ল্ল**ী নিয়ে। মেয়েটি দরকা বন্ধ করার সপো-সপো তার মনে হল, কয়েকটি উদাত ধারালো ঝক-ঝক-করা ছুরি ছুটে আসছে তার দিকে। তার পকেট লক্ষ্য করে वर् मनाइत न्माए भाष्टि। स्मराधि कार्छ আসতেই দু পকেটে হাত দিরে তাড়াতাড়ি वाम উठेन मार्चिमन-गोका तारे. वाथ श्य আনা ছয়েক পয়সা!

মেরেটি একট্ অবাক হল যেন, এক মৃত্ত তাকিরে রইল ওর দিকে, তারপর একট্ হেসে মুখ নীচু করে বলল, টাকার কথা,কেন? বৃণ্টি পড়ছে, একট্ বসে থাকুন, বৃণ্টি ধরলেই চলে যাবেন।

পকেট ছেড়ে পাঞ্জাবির বোতামে হাত দিল স্ববিষল, এগুলো সোনার নর, মেকী। মেয়েটি কেমন যেন হেসে উঠল, নিজের গলার হারটা ছায়ে বলল, এ-ও মেকী।

নীল আলোর বদলে জোরালো আলোটা স্ইচ টিপে জেবলে দিল মেরেটি, তার পরে ওর দিকে তাকিয়ে বলল—ভিজে গেছে কিম্তু কাধ আর বৃকের কাছটায়।

স্বিমল গায়ের জামার ভিজে জারগা-ট্কুহাত দিয়ে দপশ করে নিল, বলল— ভিজ্ক গিয়ে।

মেয়েটি বলল, মাথাটাও ভিজে। গামছা দেব >

না-না—তাড়াতাড়ি বলে উঠল সুবিমল, তারপরে মাথায় হাত দিয়ে দীর্ঘ চুলগ্যলি একটা বিনাশত করে নিল ।

মেয়েটি বলল--দাঁড়িয়ে কেন, বসে পড়্ন না খাটের উপর!

বিছানার ধবধবে নিভান্ত শান্ত চাদরের দিকে চেয়ে স্থিমল বলল, বসর?

বস্ব না!

বসবার পর একট্ যেন স্বচ্ছেন্দ বোধ করতে লাগল সুবিমল, একট্ সহজ।

মেরেটি বাইরের জ্বানলার দিকে
তাকিরে তাড়াতাড়ি এগিরে গেল, টেনে বন্ধ করে দিলে ভাল করে, বলল, বৃদ্টির ছটি আসছে, আপনি ওখানে দাঁড়িরে থাকলে হয়েছিল আর কী আন্ধ্য, ভিজে সপস্পে হয়ে বেতেন!

খ্ব মৃদ্ভবরেই স্বিমল বলল—বাড়ল না কি বৃতিট ?

বাড়ছে মানে? এগিয়ে আসতে-আসতে
মেরেটি বলল—রাস্তাঘাট ভেসে বাছে
এতক্ষেণ! বড় রাস্তার দেখুন গিরে, হহতে।
এরই মধ্যে ভল ভয়ে গেছে, টামগ্রিল সারিসারি দড়িয়ে গেছে। ভল ঠেলে-ঠেলে খ্রু
চলছে বাস।

স্বিষ্ণ মেরেটির দিকে তাকাল এতকলে। সাদা দাড়ি-পরা ছিপছিপে গড়নের মেটাম্টি স্ত্রী একটি তর্ণী। ম্থ্যান্তে কেমন একটা ছেলেমান্থির ভাব মেশানো, চোথের কোণে কিস্তু ফ্লান্ডির গভীর রেখা, একটা অবসাদের ফ্লানিমা নেমেছে যেন চোখ-মূখ ভণিসায়। ওর কাছে জীবনের ভার যেন দ্বিব্হ, অথচ সেটা কটিরে ওঠবার প্ররাস ররেছে অন্কণ, নতুন করে জীবন সংগ্রামের প্রেরণা।

মেরেটির মুখে রক্ত নেই, হাক্কা প্রসাধন মুখখানাতে কিছুটো দ্নিংখতা এনে দিরেছে। তাকিরে-তাকিরে মুহুতেরি জনা স্থিমলের মনে হল কথাগ্লি মুহুতেরি জনাই একটা প্রাণ-দালির ঝলক বেন দেখতে পোল সে মেরেটির মধ্যে। সত্যও হতে পারে, মিথাও হতে পারে।

নাঃ, কিছুক্ষণ আপনাকে বসতেই হল দেখছি, বুন্টিটা ধরবার নাম নেই।

COLLEGE BOOKS

(Calcutta, Burdwan & North Bengal University Course)

Degree Philosophy Course

	. ,	
	অধ্যাপক প্রমোদব ং ধ, সেনগ ্ ণত প্রণীত	
1.	দর্শনের ম্লেডত্ ভোরতীয় ও পাশ্চান্ত্য দর্শন একত্রে)—৫ম সংস্করণ	•
2.	ভারতীয় দশনি (Indian Philosophy)— ২য় প্র'ায়)	8 00
9.	ভারতীয় नर्गन	2.00
4.	পাশ্চান্তা দশন (Western Philosophy) — ৬ ঠ সংস্করণ	8,00
5.	পাশ্চারা দর্শন (for B. U. Part II) — १श সংস্করণ	10.00
6 .	নীতিবিজ্ঞান ও সমাজদর্শন৭ম সংস্করণ	15.00
7.	লীতিবিজ্ঞান (Ethics) - ৭ম সংস্করণ	8.00
8.	সমাজদর্শন (Social Philosophy) — ৬ ঠ সং-করণ	8.00
9 .	ছনোবিদয় (Psychology) —৩য় সং≯করণ	15.00
10.	Handbook of Social Philosophy- Second edition	12.50
11.	পাশ্চান্ত্য দর্শানের সংক্ষিণ্ড ইতিহাস—	
	আধ্নিক যুগ ঃ বেকন্—হিউম	6.00
	Education Course	
	অধ্যাপক খতেন্দ্রক্ষার রায় প্রণীত	
	শিক্ষা-তত্ত্ (Principles & Practice of Edu.)— ইয় সংস্করণ	
2.	ভারতের শিক্ষা সমস্যা (Indian Edu. Problems) — তয় সংস্করণ	12.00
	অধ্যাপক সেনগ ় ত ও অধ্যাপক রায় প্রণীত	
3.	শিক্ষা-মনো [ং] ৰজ্ঞান— (Edu. Psy. with Statistics) – ২য় সং	18.00
	B. T. B.ed. & Basic Course	
1.	শিক্ষণ প্রসংগ্য সমাজবিদ্যা (Social Studies)	8 00
2.		-
	(Economics & Civics)	10 00
3.	শিক্ষণ প্রসংগ্য ইতিহাস (History)	12.00
	অধ্যা পক <i>কতেন্দ্ৰ</i>কুমা র রায় প্রণীত	
4.	শিক্ষা-ভত্ত্ (Educational Theory) – ২য় সংস্করণ	9 00
	ভারতের শিক্ষা সমস্যা (Indian Edu. Problem) — ৩য় সংস্কর	15.07
	অধ্যাপক সেনগ ৃ ণ্ড ও অধ্যাপক রায় প্রণীত	



ŧ

BANERJEE PUBLISHERS

CALCUTTA 9: Phone: 34-7234

6. শিকা-মনোবিকান (Edu. Psy. with Statistics) — ২য় গ্রুরণ

.

ं भूति प्रक्षः वनन, — धारा रहारण जानीवशाहे कडानाम जाननाद।

অস্থাবিধা? মেরেটি ঠেটি টিপে একট্র ছেলে বলল, না। বরং স্থিধাই করেছেন। কীরকম?

হাসতে-হাসতেই মেরেটি বলল— আপনি না এলে ঠার একা বসে থাকতাম তো! বসে-বসে বৃদ্টি দেখতাম।

হয়তো সেটা ভাল হত।

লা, একা-একা বৃদ্ধি দেখবার উপায়
আছে নাকি? এখনি ওঘরের মেনেগ্লো
আসত হুটপাট করতে। গত মাস থেকে
এঘরে বিজলী এসেছে কিনা, টিমটিমে
হাারিকেন আর জনলে না। জোরালো
আলোর নিচে এলে ওদের মধ্যে হৈ-চৈ পড়ে।
ওদের ঘরে বিদয়েৎ নেই ব্রিষ?

না। — মেরেটি বলল — ওপরের ঘরের
এক সরলা ছাড়া কার্রে ঘরে নেই। আমার
ঘরেই কি আসত নাকি? নেহাং চেহারাদ
এতটা চটক ফ্টেছে নাকি, তাই ঘরেও
একট শ্রী এল। আমি বলি, ওসব চটকফটক কিছু না, আসলে আমার একট্ব
পড়তা পড়েছে।

বেশ অন্তর্পা স্রেই কথাগ্লি বলে বাজে মেয়েটি। মনে হচ্ছে, অনেক কথা জমেছে এর, হাওয়া ব্ঝি অনুক্ল, তাই ঝরে পড়ছে এর কথাফ্লগ্লি।

একট্ যেন সরলতা আছে মেরেটির মধা; একট্ যেন ভাবালতোও। এটাও অবশ্য স্বিমলের মনে হওয়া, সভিত্ত হতে পারে, মিথাও হতে পারে। স্বিমল বলল— নাম ব্যক্তি স্বনা?

হেসে ফেলল মেয়েটি, বলল, কোথা থেকে শ্নলেন?

ঐ মেরেটি যে আপনাকে ভাকক তথন?

শানেছেন ক্রি: — মেরেটি বলল—

শানেছেন ক্রি: নিজেই রেখেছি নিজের নাম

আজকালের রেওয়াজ ব্বে: কেমন, ভাল
না নাম্টা?

ভাল।

জ্ঞানেন? মেয়েটি বলল, আজ্ঞানল রঞ্জ-টঙ মাথাও কেউ প্রুম্প করে না। বড বিশ্রী। বেশীক্ষণ রঙ মেথে থাকলে কেমন অফ্সফিত লাগে, মাথাটাও ধরে যায়।

—ভাই নাকি?

ওমা, জানেন না? — প্রশন করেই হেসে ফোলল মেয়েটি। জানেদ, ভান করছেন।

একটা অন্তুতই মনে হচ্ছে মেরেটিক। কিন্বা হয়তো এধরনের মেয়েরা এমনিই হয়।

दनम, धत्रम द्रिष्ठे?

জানলাটা একট্ব খুলে দেখে নিয়ে ফের বংধ করল মেয়েটি, বলল, সে গুড়ে বালি! সমানে বৃণ্টি হচ্ছে। হোক দা, কত আর হবে, থামতেই হবে এক সময়!

এক মৃহ্ভ চুপ করে থেকে মেরেটি জ্ঞাবার বলল—রাস্তায় জল জমলে বেশ মজা মা? বেশ পারের পাতা ভিজিকে-ভিজিকে হে'টে বাওয়া বায়। ভাল লাগে ব্ৰি

কী ব্লিট? ভীষণ ভালো লাগে!—
বালিকার মত সারলো বলতে থাকে
মোয়েটি—ব্লিট পড়লে কোন লোক আসবে
না তো, বেশ মজা পাওরা যায়।

আমামি যে এলাম?

আহা! মেয়েটি বলল, এ কী আসা বলে

বলেই ছেসে উঠল, তারপর বলল, সেসৰ ধরনের লোক আমরা চিনি। আপনি না। সুবিমল বলল, দেখনে, একটা কথা

বল্ন না?

किये मान करायन भा छा?

না ৷

বলব !

স্থাব্যল বলল, এই যে আমি বসে আছি, কোন ভয়টয় নেই তো?

হেসে উঠল মেরেটি, বলল, ওমা কেন? লোকে কত কৈ বলে, টাকা চুরি, হেন-তেন, কত কী?

ব্ৰোছি, মেয়েটি বলল, কিন্তু ভাতে জাত কার বেশী জানেন? ধর্ন আপনার কাছে কৃড়ি টাকা আছে, আমি বা আমার লোক সব কেড়ে নিলাম, কুড়িটা টাকা পেলাম ঠিক কিন্তু আপনি আর আসবেন কেন? কেমন কি না? বাবসা করতে বসে এটা ভাবতে হয় বৈকি! কোনটা হয় তাহলে লাভের শেষ পর্যাপত?

আগ্রহের সংশাই ওর কথা শ্নে যায় স্বিমল। মেরেটির কথা বলার ধরনে একট্ কৌতুকও অন্তব করে। এ এক অনাবিশ্বত জগৎ ওর কাছে!

কাঁ? ভাবছেন কাঁ এত ? এখনো ভয় গেল নাং

না, তা নয়, একট্ অপ্রতিভ হয়ে স্বিমল বলে, আপনার কথাগ্লি শ্নতে বেশ লাগছে। বেশ কথা বলেনও আপনি!

হেসে উঠল মেরেটি, একটা খ্ণীর হিক্সোল যেন বয়ে গেল সারা গ্রীরে, বাহু দুটি একবার দুলিরে খাটের বাজু ধরে রুপায়ৈত ভুপ্টীতে এসে দুড়িল, বলে, জানেন না বুঝি কথায় আমরা ও্স্তাদ। ভাই বুঝি!

হাঁ, কথাবাতায় আপনাদের খুশী করতে না পারলে আমাদের চলবে কেন?

স্বিমল একটা হেসে বলল, খ্ব কথার মালা গাঁথতে হয় বুঝি ?

কী বললেন? কথার মালা? বাঃ বেশ বললেন তাে, শিখে রাখলাম।

তা শিখনে, স্বিমল বলল, কিন্তু আমার প্রশেনর জবাবটা দিলেন না তো?

কোন্ প্রশন? ও, ঐ কথার মালা?—
ম্কুতে বেন বিরস হার গেল মেরেটির
ম্থথানি একট্কেল চ্প করে থাকার পর
কলল,—বারা আদে, কথা আর শ্নতে চার
কই?

ठाय ना ?

মেরেটি একট্ ম্পান হাসে, বলে অথচ আমাদের তো সাধ যায়, বাকে ভাল লাগে, তার কাছে স্থে-দ্বংথের কথা বলতে! সেটাই তো আছিলিক।
কিন্তু সেটা হর না। আমরা নিজেদের
মধ্যে কথা বলাবলি করে কথা বলা গিখি।
ঠিক ব্রেলাম দা আপনার কথা।

ব্রকেন না? মেরেটি হাসল মুখ্
চিপে, বারা আসে তারা শুবু শুনতে চার ভালবাসাবাসির কথা; আর কিছু তো নয়। বড়জোর নামটা, বাস এই পর্বশত!

ভগণীর মধ্যে একটা অকসট কথনের সূত্র আছে মেরেটির, বেটা বেশ ভাল লাগে। স্থিয়ল একট ছেসে বলে, ভেবে দেখতে গোলে এর বেশী জানবার আর কি আছে মানুবের সম্বশ্ধে মানুবের?

চোখ বড়-বড় করে উত্তর দের, আপনার তাই মনে হর ব্বি ? হন্ধতো আপনার কথাই সাতা! আমার কিম্তু ওতেই মন ভরেন।

চূপ করে থাকে মেরেটি। স্বিমলও
চূপ। বাইরে ঝুপ-ঝুপ করে সমানে বর্ষণ
চলেছে তথনও। বন্ধ ক্ষুদ্রকায় ঘরুথানার
মধ্যে শৃধ্যু ওরা দাক্তন। থাট, আলমারী,
আরো কি সব ট্রিকটাকি জিনিস। পাশেই
বোধ হয় রালাঘর। শাভির পাড় জাড়ে-জাড়ে
পদা তৈরী করে ঝুলিয়ে নিয়েছে গ্রহ
ঘরের মাঝখানে। রাশতার দিককার বন্ধ
জানলাটার দিকে তাকিয়ে হঠাং জোরেজোরেই হোসে ওঠে মেরেটি শলে, দেখেছেন?
জানলা টেনে বন্ধ করে থিটেছি তব্ জ্বুপ
চুপ্টিয়ে চুপ্টিয়ে আসছে। ঐ দেখনে কেমন
এপকে-বেশকে দেওবাল বেয়ে একটা ধ্রা
নেয়েছে। ঠিক যেন একটা সাপ, ভাই না?

স্বিমল একট্ হেসে চুপ করে বইল। মেরেটি সেই একভাবে দাঁজিয়ে আছে। কয়েক মুহতে নীব্রে কেটে র পর বলল, ভাবছেন কী অত?

একটা কথা ভাব**ছি**।

স্বিমল মেটেটি মুখের দিকে সেজি স্তি তাকিয়ে বলল, শুনে আশ্চর্য হাবন নাতো?

না। বল্বন আপনি?

স্থিত্য অন্তর্গ মুর্থিকে তারপর বলল—আপনাকে নিরো গলপ লেখা যায় কিনা, তাই ভাবদ্ধি।

থলপ! — মেয়েটি বিস্ফারিত নেপ্রে ওর দিকে তাকার।

হাাঁ, গলপ...মানে.....

মেরেটির মুখখানা যেন মহাত আলোর ভরে ওঠে, বলে, আমায় নিয়ে!

হাাঁ, আপনাকে নিয়ে।
হঠাং আবার ভানিমার তেকে যার
মেরেটির মুখ, বলে, কী করে লিখবেন কতট্তু জানেন আমার কথা?

যতট্নু জেনেছি, তাতে লেখা চলে। অবাক হরে স্ববিমলের দিকে তাকিরে থাকে মেয়েটি — লম্বা-লম্বা ঘন চুল, চৌধ দুটি বেন স্বান্ন দেখছে। এর দিকে চেরে হঠাং একটা কৰা মনে জালে ফেরেটির, সঞ্চান্ত সংগ্রে অধীর হলে ওঠে আছাহে আর উত্তেজনার, বলে, ব্রেছি!

की?

সিনেমার গণ্প, মা? ঐ বে টকীতে কথা বলে হবিগনেলা, ভার গণ্প লিখবেম! না? সে বেশ হবে!

আশ্তর্য হসে বার সাক্ষিত্র ওর কর।
গাসে। গলপ লেখার প্রসল্পে সিনেমার কথা
হঠাং ভুলল কেন সেমেটি? আর এড
উৎসাহের সংগে! ঠিক ভেবে পার না।

মেরেটির উৎসাহ হরে বার দ্বিগন্ধ,
আতিপব্যে ওর একেবারে কাছে সরে আসে
মেরেটি, বলে এওক্পে আমি আপনাকে
কোথার বেন দেখেছি-দেখেছি মনে হচ্ছিল।

বিশ্বরে হতবাক হরে বার স্থাবিমল। মেরেটির সে পরিচিত? বলে কী ও?

মেরেটির বৃষ্ণ দুতে ওঠানামা করছে উত্তেজনার, বলল, বছর তিনেক আলোকার কথা। আমার এক বাব্ আমাকে বেহালার দিকে নিরে গিরেছিল সিনেমা দেখাতে। মিনেমা মানে টকী। কথা বলে। তাতে আপনি পার্ট করছিলেন না? সেই যে মেরেটার ক্বামী, ঐ যে শেষকালে বার সংশ্যে বিরে হল মেরেটার?

কী আবোল-তাবোল বকছে এই মেরেটি? সিনেমায় সে আবার পার্ট করুল করে?

মেরেটি আবিতেউর মত বলে চলেছে—
আমি কোনদিন টকী দেখিনি জানেন? ঐ
সেই একবার। কী স্ক্রের! দেখেছেন,
আপনাকে আমি ভূলেই গিরেছিলাম।

ব্ৰতে পারে স্বিমল, মারাশ্বক ভুল করেছে এই মেরেটি। কোন ছবির নারকের সংগ্য তার সাদৃশ্য কি করে মেরেটি খ্রাক্তে পেল কে জানে? কিন্তু গল্পলেখার সংগ্য ছবির নায়ক সাজার সন্বংধ কী?

চমকটা কেটে যাবার বেশ কিছ্ পরে সংবিমল প্রশন করে—সিনেমা তো দেখেছেন। বই পড়েন? বই?

বই ? মেয়েটি বললে, মা, স্কুলে ভর্তি হলাম কবে ? বাড়ি বসে মা যেট্কু—

না, না, সেকথা নয়। গলেপর বই-টইরের কথা বলছি।

ছোটবেলার ল্কিয়ে-ল্কিয়ে পড়তুম দ্-একটা। এখন বই পাবই বা কোথার, পড়বার সময়ই বা কই? ওপরের সরলার কাছ থেকে অনেক সেধে-টেধে একটা বই পড়েছিলাম, বিষব্জ। ব্যুলেন? কিন্তু বইরের কথা কেন? সিনেমার কথা বল্ম না একটা,। বইগলোকেই তো সিনেমা করে?

তা করে, হেসে সংবিষদে বলে, কিন্তু একথা কেন ? সিনেমার দিকে খ্ব ঝোঁক ব্যক্তিঃ

একেবারে কাছে ঘন হয়ে এসে চুপি
চুপি কথা বলার মতন ফিস্ফিস করে বলে,
ওপরের সরলা। ওর এক বাব্ সিনেমার বই সিথেছিল। ওঃ একদিন কি খাওরা-দাওরা ওর ঘরে।

বলেই চুপ করে বায়, যেন অন্যমনস্ক

হরে পড়ে, বেন চোখের সামনে দেখতে পার প্রতিবোগিনীর সেই সোনামোড়া দিনের ঐশবর্থসম্ভার।

হঠাৎ বেন চমক ছেপো মেরেটি উঠে দড়িায়, বলে, চা খারেম?

্তাড়াতাড়ি বলৈ ওঠে স্বিমল, না-না। তিরস্কারের ভলিতে মেরেটি বলে, না-না কেন? খাদ না? আমার তেলা পেরালা-পিরিচ রয়েছে।

ना-ना, ठात जना नत्र।

আনছি। বসে থাকুন।

তবে? আমার হাতে খাবার কথা ভাবছেন? কেন, রেন্ট্রেন্টে খান না চা? জাত-বেজাত ভাবেন নাকি তথন?

না-না, আমি সে-কথা বলছি না। মেরেটি মাথা হেলিরে বেন শাসদের ভাপাতে বলে, অনেকবার না-না যালছেন। এবার শ্নব না, আমি এক্ট্নি চা করে

সাজানো আলমারির প্তুলগুলির পাশ থেকে পেরালা-পিরীচ বার করে মেয়েটি ওর দিকে অপাপো একবার তাকিয়ে পর্দা র্সারেরে চলে বার রাহাখরে। আর ধরের মধ্যে অপ্রস্তুতের মত বসে থাকে স্ববিষদ। কেমন যেন অস্বাচ্ছল্য বোধ করতে থাকে সে। পতিকার পতিকার লিখে বাওয়া দরিদ্র তর্ণ লেখক। পাইস হোটেলের পয়সা জোটানোই তার কাছে কণ্টকর তার পক্ষে এই অজ্ঞ উৎসাহী মের্রেটর সামনে অন্থ'ক একটা আশার আলো তুলে ধরা মারাত্মক অপরাধ। গলপলেখার কথা তোলাই হয়েছে তার সবথেকে বড় ভূল। ধীর পারে উঠে দাঁজিয়ে স্ববিমল, অতি স্তপ্ণে দরজার থিলটা খালে বাইরের ব্লিটর অবস্থা নিরীক্ষণ করে। হাওয়াটা কমেছে, বৃণ্টির বরুধারাও সরল হয়ে এসেছে।

কাঠের উন্নে হাওয়া দিতে দিতে পি'ড়ের উপর বসে অনেক কথাই ভাবতে থাকে মেরোট। ভদ্রলোককে চা খাওয়ার কথা বলে এসে রীতিমত বিপদেই বৃঝি পড়ল সে। চা আছে দৃধও আছে, কিন্তু চিনি নেই। ব্রাহাঘরের আগড়টা থলে যাবে নাকি রমলার কাছে চিনি ধার করতে। আগেরটিরই তো শোধ হয়নি, দেবে কি এবার চাইলে? ঘরে বাব; এসেছে শ্নলে দিতেও পারে। চায়ের সমস্যা দা হয় মিটলো, কিন্তুরাত পোহালে কাল কি হবে, ভাবতে গিয়ে মাথা ঘুরে যায়। ঘরে স্বকিছ বাড়ুন্ত, হাতে একটাও পরসা নেই। বাড়িউলী মাসীর লোক কাল নিৰ্বাৎ বালব খলে নিয়ে যাবে, ভাড়া বাকী পড়ার দর্শ। তার উপরে যারা টাকা পায়, তারা? থেয়ালের বশে ভদ্রলোককে ঘরে এনে ভাল করেনি সে। ওরা জানবে, বাবু এসেছে, নিশ্চয়ই টাকা পেয়েছে ছ'বড়। কাল সকালে ওরা ছিড়ে খাবে স্বাই টাকা-টাকা করে !

শেজা বৃষ্টির জনাই তো এত! বৃষ্টি পড়লে কেন যেন মাতাল হয়ে যায় মন। যেন মেতে ওঠে সে।

তা হোক, ভদ্ৰলোকটি কিন্তু বেশ। তার পড়তা পড়েছে হেন-তেন কত কী! লোকটা প্রথম থেকেই তাকে 'আপনি-আপনি' করতে
দ্বে করে দিল। ভাদের মত মেরেকে কেউ
আবার আপনি বলে লাকি? হরতো ভাল
লেগেছে তাকে লোকটার। মা-না, অনারক্ম
ভাল লাগা, সিনেমার ভাল লাগা। সভাই,
সিনেমার লোকগ্লোই ঐ রক্ম। সরলার
মত তাকে বলি, যাকে বলে 'চান্স'—সেই
ভালা দের লোকটি, ভাহলে...

তাহলে তার চেহারাই হরে দক্ষিতে অনারকম। সরজা নিবেদিতা হরে মোটরে মোটরে যুৱে বেড়ার, আরু সে…না, সে স্থানাই থাকবে।

ঐ বাঃ! ভদুলোকের নামটা ভো ভেনে নেওরা হর্নি। নিশ্চরই খ্ব স্কুলর নাম। সেই সরলার লোকটার মতন।

ফটেতে থাকুক জলটা কেটলীতে ও ততক্ষণ ঘরে আসন্ক একট্ ছেলেটির কাছ থেকে। চুপচাপ বসে বসে করছে কী ও। পদা সরিরে ঘরে এল ফেরেটি। কিন্তু কোখার সে?

পরজাটা হাট করে খোলা। বারী সে নেই। চলে গেছে চুপি চুপি। বৃদ্ধি করে এসেছে। প্রশতরম্ভিবিং করেক বৃহত্ত দাড়িয়ে রইল স্বশ্না।

দ্শোড় করে ছুটে এল কমলার দল-কী লো, বাবু চলে গেল?

হা-হা করে হঠাৎ হাসিতে জ্বন লুটিয়ে পড়ল মেরেটি, বলল, —বাবা, বাবা, কে?

<u>थे</u> य लाक्षे अर्जाइन?

বাব্ নর। তবে?

তেমনি হাসতে হাসতেই উত্তর দিল মেরেটি, সিন্দেমর লোক রে সিন্দেমার লোক। আমার সপো কন্টাক্ট করতে এসেছিল। হরে গেল কন্টাক্ট।

বলে আবার হাসতে লাগল উচ্ছাসিত হয়ে বিস্মিত বিহলে করেকটি সহচয়ীর সামনে।

প্রেম পিপাসা---

ছাচ-জীবনে আবিরাম প্রেমচর্চা ও দেখা-পড়ার ইতি, স্ফার্ম উপন্যাস। বাস্ত্র----

নান্দ্তার প্লেম—

ও ভূম্বগোঁ অমরনাথ **প্রমণ। শিক্ষিতা** নারীর বিচিত্র প্রেম ও রোমাঞ্চকর প্রমণ-কাহিনী।

মান্তবা—বৰ্ণা সাহিত্যের উৰ্জ্জন্প রস্তা ডঃ প্রীকুষার বন্দ্যোপাধ্যার বলেন, বই দৃষ্টি পড়েছি, কাটগালি ন্তন, ভালই লাগলোঃ চঃ—দ্টি বই একতে কাইলে কছিলন বালে ৮ু স্থাল ৬॥০ ডিঃ পিঃ ছয়।

প্রাণ্ডিস্থান--

মোহিনী মোহন কাঞ্চিলাল ৪০নং রাজা বসত রাম লোভ, ক্লিকাডা—২১



ভগীরথ বখন খুব ছেটে তখনি ওর মা চণ্ডীকে বাঁয়েনে ধরেছিল, বাঁরেনে ধরবার পরে চন্দ্রীকে স্বাই গাঁ-ছাড়া করে দিল। বাঁয়েনকে মারতে নেই, বাঁয়েন মরলে গাঁয়ের एक्टन-भिरम वाँरिक मा। **छाই**रिन धत्रतम भू छिन মারে, বারেনে ধরলে তাকে বাচিয়ে রাখতে

তাই চন্ডীকে সবাই গাঁ-ছাড়া করে রেলের

शारत हाला जुटन मिन।

ভগারপ বড় হয়েছে অনা ম:-র কাছে. জন্য মার আদরে-অনাদরে। নিজের মা কাকে न न जगीतथ जात्न ना। मृथ् भारतेत उभारत ছ তিম গাছের নিচে একটা চালাঘর পেখেছে, শ্বনেছে এখানে চণ্ডী বাঁরেন একলা থাকে।

কখনো মনেও হর্মান চণ্ডী বাঁয়েন कारता मा হতে পारत। मृत व्यक्त रमर्थ(इ ঘরের মাথায় লাল নেকড়ার ধ্বজা, মাঝে মাঝে দেখেছে উদ্প্রাম্ভের মত ধানক্ষেতের আঞ ধরে চৈত্তের চবা দ্প্রে লালকাপড় পরে কে যেন কাঠি দিয়ে টিন বাজাতে বাজাতে মজা প্রকৃরের দিকে যাচছে, পেছনে একট। কুকুর।

বাঁরেন যখন যায় তখন টিন বাজিরে সাজে দিতে দিতে যয়। বাঁরেন যদি কোন ছোট ছেলে বা যুবা প্র্যকে দেখে তথান চোখের দৃণ্টিতে তাদের শরীর থেকে রস্ত শ্যে নি ত পারে।

তাই বাঁয়েনকে একলা থাকতে হয়। বাঁরেন যাচেছ জানলে যুবা বুড়ো সব পথ কেড়ে স'র যার।

এক্দিন শ্ধ্ একদিন ভগীরথ ভার বাবা মলিপরকে বাঁরেনের সপো কথা বলতে (मर्थाष्ट्रम ।

— চক্ষ্য লামা ভগীরথ ওর বাবা ধমকে ব লছিল।

বাঁরেন পা টিলে টিপে প্রুর-পাড়ে এসে দাঁড়িয়েছিল।

ভগীরথ এক পলক দেখেছিল প্রুরের क्लाल न.न काপড़, जाबारि बर्थ, क्लोर्यांथा

म्पर्थिकत मारे हार्थ कि काथि म जि रवन क्षत्रीनम्बद्ध काथ नितन व्यान व्यन्तर ।

না, ভগীরথের ম্থের দিকে চার্যান বারেন। ভগারথ যেমন করে কালো জলে বাঁরেনের লাল ছারা দেখেছিল, বাঁয়েনও ঠিক তেমনি করেই ভগীরণের ছায়াটাকে দেখছিল। ভগারথ শিউরে উঠে চোথ বংগ্রে ছিল, বাবার কাপড় চেপে ধরছিল।

—কেন এর্সোছস? ভগীরথের বাবা হিসহিসিয়ে উঠেছিল।

— মোর মাথায় তেল লাই গুজাপত্ত ঘার কেরাসিন নাই। একলা মোকে ডর मारभ रभा!

वाँरत्रन काँमिक्टल, ठ॰ छी वाँरत्रन। खलात ওপর ওর ছয়া-চোথে জল পড়ছিল।

—কেন, **এ শনিবার বারের ডালা** দেয় नारे ?

শনিবার শনিবার ডোমপাড় র একজন वारतत जाना भिरत यात्र, ठान, जान, नवन, তেল নিয়ে গিয়ে ছাতিম গাছের কাছে রেখে ছতিম গছকে সাক্ষী রেখে বাঁয়েনের বারের **ए।** मिनाभर्गा वरन इ.से हरन आस्त्र।

—কুকুর খেয়ে দিলে।

_ होका निवि? होका ला।

—আগ্নায় কে জিনিস বিচৰে?

--দেব, আমি কিনে দেব, তুই এখন

--- আমি একলা থ কতে পারি না।

—তবে বাঁয়েন হলি কেন? যা বলছি<u>।</u> ভগনীর থর বাবা প্রুর-পাড় থেকে এক দলা কাদা তুর্লেছিল।

গুণ্গাপুত্ত, এ খোকাটা কি.....

একটা বিশ্ৰী গালি দিয়ে ভগীরথের বাবা কাদার দলাটা ছ'্রড়ে হেরেছিল। পালিয়ে গিয়েছিল চণ্ডী বাঁয়েন।

—ব:বা, তুমি বাঁ:য়নের সং∾ে वटार्ड ?

ভীষণ ভয় পেরেছিল ভগীরথ। বাঁরেনের সংশোকথা বললে তার মৃত্যু অবধারিত। ভূগীরথের মনে হয়েছিল ওর বাবা মার যাবে আর বাবা মরে যাওয়ার কথা ভাবলেই **ভগীরথের মনে হত মাধা**য় ব্ঝি বাজ ভেডে পড়ল, বাপ মর**্ল সং-মা যে ত**ংকে তাঞ্জিলে দেৰে ভাতে সন্দেহ নেই।

—এখন বাঁরেন বটে, কিন্তু ও তোর মা। বাবা আশ্চর্য গশভীর গলাম কথাটা বলে-ছিল। গলার কাছটার ডেলা আটকিরে সিরে-ছिल छणीतरथ्त। मा! वौरसम कारता मा रत। रौरतन कि मान्य? बौरतन एका माठि भेटल श्रुता एक्टल त्यत करत, जामत करत, मर्थ খাওয়ায়, বারেনের দ্বিউতে একটা গোটা গাছ অব্দি চড়চড়িয়ে শ্বকিয়ে যেতে পারে। ভগীরথ তো একটা জল-জীয়স্ত ছেলে। সে কেমন করে বাঁমেনের পেটে জন্মাল? ভগীরথ ভেবে পায়নি।

আগে মান্য ছিল, তোর মা ছিল। তোমার বউ?

—আমার বউ।

ম্লিন্র কি ভেবে যেন নিশ্বাস ফেলে-ছিল। বলেছিল—ভোরে সব বলে যাব ভগীরথ, তে।র কোন ভয় লাই।

ভগীরথ অবাক হয়ে ওর বাবার দিকে চেয়ে চেয়ে আল হাঁটছিল। মলিনর গণ্গা-প্তের গলায় এমন স্বরও কখনো শোনেনি। শ্ধ্ ডোম নয় ওরা, শমশানের ডোম, শ্মশানে এখন মিউনিসিপ্যালিটি শ্বধ্ াক-জন ডোম থাকতে দেয়। ভগীরথরা বাঁশ-বেতের কাজ করে, সরকারী মুরগী খোঁঘাড়ে কাজ করে, ময়ল। ফেলে সারমাটি করে। একা মলিম্পর ছাড়া এ অণ্ডলে কোন ডোম নায় সই করতে জানে না। সেইজনা মলিন্দর কিছ, দিন আগে মহকুমার লাশঘরে কাল পেরেছে।

সরকারী কাজ। মিলিন্দর গৃৎগাপ্ত লিখে বেয়াল্লিশ টাকা মাইনে নেবার কজ। ভগীরথ জানে বাবা মাঝে মাঝে বেওয়ারিশ মড়া চুন আর ব্লিচিং পাউডারে পচিয়ে হাড় বের করে। হাড় যদি গোটা মান্বের হাড় নয়তো খুলি, নিদেনপক্ষে পাঁজরা খাঁচাট। পাওয়া যায়, তা'হলে আনেক ল'ভ।

সরকার বাব্ কলকাতার হব্ 🕫 ্রদর কাছে খ্ৰান্স-হাড়-কঙ্কান্স মোটা 🔭 বেচে দেয়। বাবাকে দশ-পনের যা দেয় ভাতেই সুবা খুশী। এই উপরি টাকা সন্দে খাটিরে भाषिता ववा करहाकड़ी भाउत किरनएह।

মলিদ্র গায়ে পিরান পরে, পায়ে জ্বতে পরে মহকুমা যায়, পাড়য়ও সম্মানী মান্ত।



সেই মলিলর চোথ লাল করে অনেককণ্
চণ্ডী বাগেনের খনের ওপরে গের্যা আকাশের কপালে এডট্রু একটা সিদ্রে-ফোটার মত লাল শেকড়ার নিশানট্কুর দিকে চেমেছিল। বিড়-বিড় করে বলেছিল— আধারের ডর খার, অন্ধকারে থাকতে লারত তাকেই বিধাতা বাঁরেন করে ছাড়ল? এখন মলে বাঁরেন শানিত পার কিন্তু বাঁরেন নিজে না মরে তো কেউ ওর জান লিতে লারবে, জানু বাশ্র?

भ्रंत प्रश्य ना श्राटन मिनमद এउ कथा दक्ष ना।

—কে মান্বকে বাঁরেন করে বাবা? —বিধাতা।

মলিন্দর ভাল করে চেয়ে দেখে-ছিল ভগীরথের আল-পাল দিয়ে দ্বের রোদে কোন ছায়া 5000 কিনা? বামেনরা ঠিক হাট-বান্ধারের ফুল, গোলাপ, মাথনবালার মত, নানা ছলা-কলা জানে। ধর কোন ছোট ছেলেকে বাঁয়েন নিতে চায়, সে যখন হে°টে যাবে চারদিক রোদে পাড়লেও তার মাখে ঠিক ছায়া থাকবে। অদৃশা হয়ে বাঁয়েন আঁচলের ছায়া ধরে ছেলেকে আড়াল করে নিয়ে যাবে। ছেলেটা মরে গেলে কেউ যদি দোষ দেয় তাহলে বাঁয়েন মাচকি হেসে বলবে—তা কি জানব বল? খর রোদ দেখে এটু, ছেখা দিতে গেল'ন তা তোমার ঠোকাটা যেন, ননীর প্তুল। এটু তাতে গরে গেল?

ভগীরথের আশপাশে কোন ময়ল, গণ্ধ-ওঠা লালচে আঁচলের ছায়া দেখতে না পেয়ে মলিন্দর যেন নিশ্চিনত হয়েছিল। বলেছিল--তোর কি ভয় বাপ? তোর কুনো অনিণ্ট উ কররে না।

তব্য ভগীরথ ভরসা পায়নি।

শংখ্ ঐদিকে মন চলে গিয়েছিল ওর। ধানখেতে যাক গর নিয়ে যাক কেবল মনে হত' রেললাইন ধরে ছুটে চলে যায় ওখানে। গিয়ে দেখে আসে একলা থেকে থাকে বাঁয়েন কিরকম ভয় পায়। দেখে আসে বাঁয়েন মাথায় তেল মেথে চুলের জল কেমন করে চৈতী বাতাসে শুকোষ।

ষেতে পারত না ভগীরথ, ভয় পেত।
মনে হত যদি আর না ফিরতে পারে
কোনদিন? যদি ওখানেই ভগীরথকে একটা গাছ করে, একটা প.থর করে রেখে দেয়
বাঁয়েন?

কয়েকদিন ভগীরথ শুধু চেয়ে দেখত।

দেখতো ছাতিমগাছ আর চালাঘবের মাঝামাঝি আকাশটা যেন কার কপালের মতন। সেই কপালে এক ফোঁটা সিণ্দ'র দিপের মত লাল নেকড়ার নিশানটা কখনো দিথের ইয়ে থাকৈ, কখনো দোলে। মনে হাত ছুটে চলে বায় একবার আর গাছে ছুটে বায় সেই ভরে উলটোদিকে ছুটে ভগীরথ বাড়ী চলে আসত।

আশ্চর্থ বারেনের ছেলে বলে ওকে কেউ চেন্দ্রা করত না বরণ বেশী খাতির করত। বারেনের ছেলেকে খাতির করলে বারেনে সে কথা জানতে পারে। যে ভাল খাতির দেখায়

তার কচিকাঁচা ভাল থাকে। যে দ্র ছাইভগারিথ জানতে পেরেছিল উনিশ শো

করে তার খরে শুধু মনতেই খাকে ছেলে-পাুলে।

ভগারধের এখানকার মা-ও কৈছু বলে
নি। সভানের ছেলের ওপর ওর জনুরাগ
আছে, না বিরাগ, লেব না ভালবাসা, তার
কোনটাই ও কোনদিন প্রকাশ করেনি। তার
প্রধান কারণ ওর নিজের ছেলে নেই। গৈরবী,
তার সৈরভী দুটো মাত মেরে। প্র সন্তান
না থাকলে স্বামীর ওপর জোর থাকে না।
তা'ছাড়া এখানকার মা-র ওপরের ঠোট ফাক,
মাড়ি বেরকরা। বাড়ী খেকে বেরোতে চার না
বেশী। বলে—কুন মুখ দেখাতে বাব সি বল
দেখি? মুখ মোটে বুজে না যি। হাসলেও
মনে হ্র মাগী হাসতেছে। দেখ গণগাপ্ত।
মলে পরে মুখখানা গামছা দিয়ে ঢেকে দিও
ভানলা? লইনে মান্য বলবে দাঁতী
ডে.মনী চলল।

ষশি শুখু কাজ করে, ঘর নিকোয়, ভাও রাঁধে, কাঠ কুড়োয়, গোবর চাপড়া দেয়, শ্রোর তাড়ায়, মেয়েদের মাথার উকুন বাছে, ভগাঁরথকে 'বাপ' বলে কথা বলে, থেতে এস বাপ, লাইতে যাও বাপ, যেন ওদের মধ্যে কুট্মের সম্পর্ক, বাঁয়নের ছেলেকে যত্র-আন্তি না করলে বাঁয়েন তার মেয়ে দ্টোকে বাণ মেরে দিতে পারে। ঘাল জানে। আরে। জানে একদিন ভগাঁরথের ভাতের ওপরই তাকে নিভাঁর করতে হবে।

মাঝে মাঝে মাড়ি বের করেও সভরে গালে হাত দিরে বনে থাকে, কে জানে ভর দুপ্রের বার্থেন তর মেরেদ্টোর কথা মনে করে মাটি দিরে পতুল গড়ছে কিনা, গার ফণ্ডছে কিনা। তখন যুশিকে যত,কুছিত লেন চেয়েও কুছিত দেখায়। অনেক দ্থেখ মালন্দর ডোমপাড়ার সবচেরে কুইসিত মেরেটিকৈ সাঙা করেছে। করেকটা গাঁয়ের ডোমপাড়ার সবচেরে মান্দরী মেরেটি বাঁরেন হয়ে যাবার পর মান্দর আর র্পসী মেরে দেখতে পারে না।

মলিন্দর বউকে নাকি খ্ব ভালবাসত।
হয়তো সেই ভালবাসার কথা মনে করেই
একদিন মলিন্দর ভগীরথকৈ চন্ডী বাঁয়েনের
কথা বলল। দৃশুনে রেললাইনের পাশ দিয়ে
হাঁটাছল। মলিন্দরের হাতে মাংসের পেটিলা,
এই এক আশ্চর্য দ্বলিতা মলিন্দরের,
নিজের হাতে পালা শৃয়োরগলোকে ও
কাটতে পারে না। শ্যোর পোষে বড় করে,
ভারপর কাটবার দরকার হলে গোটা
শ্যোরটা কাউকে বেচে দেয়। যে কেনে সে
মলিন্দরকে একট্ মাংস দেয়।

--এটু; গাছের ছোঁয়ায় বসি?

যেন তের বছরের ছেলের অন্মতি নিজ ফালন্দর, বটগাছের গাঁ, ডিতে হেলান দিয়ে বস্ল। ভগীরথ জিজেস করল—এখান হতে ভাকাতরা যায়, না কি বাপ?

ভগীরথ এখন ব্নিরাদী ইস্কুলে যায়।
এই সরকারী ইস্কুলের দেওয়ালে ওদের
মাস্টারমশাই এক সময়ে দেওয়াল পতিকা
শিখয়েছিলেন ছেলেদের দিয়ে। নিজ হবফগ্লি লিখে এনেছিলেন। ভগীরথ সেগ্লি
কালি দিয়ে ভরেছিল। সেই লে্খাট পড়ে

পঞ্চাম-র জচ্চাং আইনের পর থেকে ওরা কেট আর অচ্চাং রর।

জেনেছিল জারতীয়-সংবিধান বলৈ একটা জিনিস আছে, তার প্রথমেই একটা মেনিক অধিকারের কথা স্পট করে লেখা আছে, ডারা নাকি সবাই সমান।

া দেরাল পতিকাটা এখনা টাঙানো আছে।
কিম্চু ভগাঁৰুখনা । জানে সহপাঠিরা বা
মাস্টাররা ওদের একট, দ্বে বসাই পছন্দ করেন। এই ইস্কুলে অনা জাতের ছেলেরা নেহাৎ গরীব বা অপার্গ না হলে আস না। আসবে কেন? এখন চর্রাদকে ইস্কুল।

যা হোক, ভগারথ এখন একট, অন্য রক্ষা ভাষায় কথা বলো। মলিন্দর ওর কথা শ্নতে ভালবাসে ও ভগারথের পাশে প্রাবই ওর নিজেকে এক অযোগ্য বাপ বলে মনে হয়।

ভগাঁরথ ডাকাতদের কথা জিগ্যাস করল। এখন এই সোনাডাঙা, পলাশাঁ, ধ্ব-লিয়া জায়গায় জায়গায় সংধ্যার ট্রেন ড কাতি খ্ব বেড়ে গিয়েছে। ডাকাতি সুবাই কলে বলতে গেলে। ভদ্রলোক-গরীব-ছাত্র-কলোনির বাসিদে-পাকা বাড়ীর মালিক— ন না রকম পরিচয় তারা বাইরে দেয় কামবায় ওঠে। তারপর ঠিক সময়ে চেন টেন টেন থামিয়ে দেয় অংধকার মাঠে। অংধকার থে ক সেথোরা আসে। তারপর সবাই মিলে যা পারে নিয়ে থ্য়ে মেরে ধ্রে চম্পট মেয় ব ভারের করে এই বটগাছটা সুদ্ধার পর বড় ভারের হয়ে উঠিছে।

্তাই ভগীরথ ডাকাতের কথা জিজ্জেস করল মলিন্দর কিন্তু সে কথা বিশেষ গায়ে মাখল না। শ্না মাঠের দিকে চেয়ে চেয়ে আকাশে ও মাঠে কি যেন খ'্জল, তারপর কলল।

—আমি আগে নিমায়া-নিদায় ছিল জানলা বাপ! ভোর মাছিল । তুবা তুবা ফানেকে কানত। বিধেতার বিচার!

যেন ভগবানই একদিন ভোমপা**ড়ার** এসে পাশা উটে দিলেন। চণ্ডী হ**রে গেল** বাঁরেন, নিওঠুর নিদায় শিশুহে**ল্ডা। আর** মলিন্দর হয়ে গেল তুষ্পাণ। **হতেই হবে।**

একজন যদি অমান্য হর, মান্বের ধরা-ছোঁয়ার বাইরে অলোকিক জগতের অদৃশ্য দরঞ্জা খালে চুকে যায় তাহলে আরেক-জনকে মান্যের মত মান্য হতেই হবে।

ভগীরথ এই সময়ে ব্যুতে পারল ওর বাবা ওকে কিছু বলতে চায়। ভগীরথ একট্ আশ্চর্য হল। সেই একদিন বাবা বাঁরেনের সংগা কথা বলেছিল আর বলেনি। আজ আবার বাঁয়েনের কথা কেন?

মলিক্ষর ভাগীরথের হাত চেপে ধরল। বলল—ভঃ কি? সবাই জানে আর তুই তোর মায়ের বিত্তাত জানবি না?

ওরা গ্রুপাপ্তে। এরা ডোম, ম**লিন্দর বাঁশ** বইত, কাঠ কাটত আর চন্ডীর **ছিল কাঁ**চা ভাগাডের কাজ।

পর বংশগত উত্তরাধিকার। এই গ্রামের উত্তরে বিলের ধারে বটগাছতলে কাঁচা-ভাগাড়। পাঁচ বছরের নিচে শিশ্ম মরলে এখন পোড়াতে হয়, তথন স্বাই পণুতে দিত। ঐ ভাগাড়ে চন্ডীর বাবা খণ্ডা দিরে গতা খাঁড়েড, কটা গাছ দিরে গতা চেকে রাখত, শোরাল ডাড়াত। হই হই হইরা...ওর প্রমন্ত কল্ডের ভরত্কর ভাক রাতে বিরেতে হরুদম শোনা বেত।

শুধু মদ আর গাঁজা খেত চন্ডীর বাবা।
আর শনিবার একটা ভালা হাতে গাঁরে
বৈর্ত। বলত—আমি আপোনাদের সেবক
গোঁ, আমি গণ্গাপুত, আমার ভালাটা দিয়ে
দেন গো।

সবাই ওকে ভর পেত। ওর চোথ থেকে ছোট ছেলেমেরেকে সরিয়ে রাথত। একটাও কথা না বলে ওকে ভিকে দিয়ে চলে বেত। একদিন একটি ফর্সা মেরে, কটা চোথ,

লালচে চুল, এসে দাাঁড়রেছিল। বলেছিল— —আমি চণ্ডী, অম্ক গণ্গাপ্তের বিটি, বাপ মরে গেল। বাপের ডালা এখন

- াবাচ, বাস মরে গোলা বাং মোকে দেন।
 - —বাপের কাজ তুই কর্রবি :
 —করব।
 - —তাকে ভয় লাগে না?
 - -- মোর ভয়ডর নাই।

এই ভয়ডরের কথাটা চ॰ভী ব্রুবেও
পারত না। ছেলে মেরে মরলে মা বাপ কাঁদে
সে শোকের অর্থ বোঝা যায়। কিন্তু মরাকে
কি কেউ বাড়ীতে ধরে রাথে, না রাখতে
পারে? তার সংকার করাটা তো চন্ডীর কাজ;
অন্যন্ত জাঁবিকা। এতে ভরের কি আছে,
নিন্ডারুতাই বা কি? যদি থাকে সেও তো
বিধাতার নিয়ম? সে নিয়ম তো গঞ্চাপ্তের তৈরী করেনি? তবে তাদের এত ঘেলা করে
কেন মানুষ, কেন ভয় পায়?

এই চন্ডীকে মলিন্দর বিরে করেছিল।
তথানা মলিন্দর সরকারবাব্র সংস্থা হাড়
কোর কাজ করত। গো-ভাগাড়ের হাড় থেকে
সার হয়, সে হাড়েরও দাম আছে। হাতে
প্রসাধিক মলিন্দরের, ব্কে সাহস, রাতে
মাঠ দিয়ে চে'চাতে চে'চাতে ও ফিরত—
কিসকো নেই ডরতা, হাম আগ্রন খাতা।
কিসিকো নেই ডরতা!

সম্পোবেলা শশ্চনহাতে একা চণ্ডীকে বটগাছতলায় ঘ্রতে দেখে ও বলেছিল—এই, তু আধারে ডারস না?

না। হাম আগ্ন খাতা জানিস? চণ্ডীর হাসি দেখে মলিন্দর খ্ব অবাক হয়েছিল। সেই বৈশাখেই ও চণ্ডীকে বিয়ে করে। আরেক বৈশাখে চণ্ডীর কোলে ভণীরথ এসেছিল।

চণ্ডী গুগীরখকে কোলে নিরে একদিন কাদতে কাদতে ফিরে এসেছিল, বলেছিল— মোকে ওরা তেলা মেরেছিল গণ্গাপত্ত। বলল আমার নজর মন্দ।

- क एमा भातम ?
- —লাও! তাকে কি তুমি মারবা?
- —ঢেলা মারল কেন?

মলিন্দর উঠোনে বেড়া পাত্ততে পা্ততে প্রায় নাচতে শ্রে করেছিল চটকা রাগে। আমার বউকে দেলা মারে কে? কার এত আস্পর্যা? গালাগালি দিতে শ্রে করেছিল মলিন্দর। চণ্ডী ওর দিকে কিছুক্রণ নিমিমেবে চেরে বসেছিল: তারপর বর্বোছল—মোর মন চার না গুণ্গাপ্তে, খণ্ডা ধরতে, মন চার না কিন্তুক বিধাতা ই কাজ মোকে দিয়ে করাবে, তা আমি কি করব ব্ল?

চন্ডী আশ্চম' হরে ঘাড় নেড্ছেল, নিজের হাড পা দেখেছিল। ওর বংশে ভাইকাকা-দানা থাকলে বংশের কাজ করত, কিন্তু
কেউ নেই। ওরা সেই আদিম যুগের
ক্ষাশানের দাস, যথন হরিশ্চন্দ্র চাঁড়াল হরেছিলেন তথন চন্ডীদের প্রেপ্রুষ ও'কে
কাজ শিথিরেছিল। আবার যথন হরিশ্চন্দ্র
রাজা হলেন তথন সসাগরা প্থিবী ও'র,
দান করতে লাগলেন ভারে ভারে।

--মোদের কি কেক্স্থা?

সেই আদিম গণগাপ্ত রাজসভা ফাটিয়ে জিজেজন করেছিল। ওদের কানের ভেতরে রাবণের চিতা শোঁ শোঁ করে তাই ওবা প্রতিটি কথাই চে'টিয়ে বলে, ধীরকণ্ঠ শুনতে পায় না।

- কিসের বেক্স্থা?
- —বাম্ন গাই-বলদ পাবে, সলোসীর নিভা ভিক্ষা, মোদের কি বেবস্থা≀ মোদের কি দিলে?
 - —প্^fথবীর সকল শ্মশান দিলাম।
 - कि भिल्ल ?
- ---সসাগরা প্থিবীর সকল শ্মশান তোমাদের দিলাম।
 - --- भि*र*म ?
- দিলাম, দিলাম, দিলাম।

তথন সেই আদি গুলাপ্র দ্ই হাত তুলে ভাষণ নেচেছিল। উল্লাসে বলেছিল— হা, মোরা সকল শমশান পেয়েছি গো, সকল শমশান পেয়েছি! এপিথিমীর সকল শমশান মোদের।

সেই মান্ষ্টির বংশের একজন ২ রে
চণ্ডী কেমন করে জাওকরে লাগিথ মারও?
মারলে যে সে দেবরোয়ে পড়ভ না তার ঠিক
কি? অথচ, চণ্ডীর ভীষণ ভয় করত
ইদানীং, খবতা দিয়ে গর্ত খাড়ে ও মান্
ফিরিয়ে নিত। গর্তে কাঁটা ঝোপ চাপা
দিশেও ওর ভয় যেত না। মনে হত যেতকান
সময়ে মাথে আগ্র নিয়ে একটা শেরাল
বটগাছের মত বড় বড় থাবা দিয়ে মাটি
খাড়তে শারু করবে।

ভগমান-ভগমান-ভগমান..... চন্ডী গ্রুকগুন করে ক'দত। একছুটে চলে অসাত বাড়ী। মতে বাতি জেনলে বসে থাকত আর ভগীরথের দিকে চেয়ে ঠাকুরকে ডাকত। এই সমরে চন্ডী সব সময়ে কামনা করত গ্রামের প্রতিটি শিশু যেন অথন্ড প্রমায় নিরে বে'চে জীয়ে থাকে কেন না আগে ভার যে দুব্লভা ছিল না এখন সেই দুব্লভা

ভগীরথের কথা মনে করে ওর প্রতিটি শিশুর জন্য কণ্ট হয়, নিদার্ণ কণ্ট হয়। যদি বটতলায় বেশী সময় থাকতে হয়, ওর ব্যক দুধে টনটন করে। মুখ নিচু করেও গতাঁ করে ও বাপকে মনে মনে দোষ দেয়। মোয়েকে কেন সে এই নিন্দুর কাজে বতাঁ করে গেল? —আপনারা অন্য মান্ত্র দেখে লাও, মোর মন উঠে না।

চন্ডী একথাও বলেছিল একদিন। কিন্তু ওর কথা কেউ কালে নের নি। মলিন্দর ওর কথা বিশেষ ব্রেত না কেন না অন্য মান্য যা দেখে ভর পার, ষ্ণা করে, সেই অপ্তি গবদেহ, হাড়, চামড়া, নিরেই ওর স্বাবিক।। চন্ডীর কথাবাতা শন্নে ও বলত—ধ্স্ বঙ মিছা ভর!

চণ্ডী বেশী কাদলে বলভ—তো-মানীর বংশে তো কেউ লাই, কে আসবে শ্রনি?

এই সময়েই সেই নিদার খাটনাটা ঘটেছিল। প্রামে বেড়াতে এসেছিল মালিলরের এক জ্ঞাতি বোন। তার মেয়েটা কালিনেই চম্ভীর নাওটা হরেছিল। প্রামে সেবার খ্ব বসনত হচ্ছে। চম্ভীরা কোনাদিনই টিকে নের না, দহিলাতলায় যায়। ননদের মেয়েটিকে কোলে নিয়েছিল চম্ভী। ননদকে নিয়ে প্জোদিয়ে এসেছিল দহিলাতলায়। রেললাইনের ধারে বিহারী কুল্লীরা যখন কাজ করন্ত ওরা একটি শতিলাখান বাসয়ে গেছে। সেখানে পাকাপাকিভাবে বিহারী প্রোহিত খাকেন একজন।

করেকদিন পরে সেই শিশ্বটিই কি আশ্চমণ, মায়ের দরার মারা গেল ৷ চন্ডীর বাড়ীতে নর, অনাত্ত, কিন্তু মেয়ের মা-বাবা-পিসী-কাকা সবাই বলতে লাগল চন্ডীই ওকে নিয়েছে ৷

- আমি ?
- —হা গো তৃমি!
- —আমি লয় গো আমি লয়

চণ্ডী ওদের সমাজের মেয়েপ্র্ব-গ্লির দিকে চেয়ে সকাতরে বলেছিল।

- —হাঁতুমি!
- कथ्या नश्

চ-ডী সাপের মত ফ'্সে উঠেছিল। বলেছিল—আমা হতে কারো মন্দ হ্বার বয়। জান আমি কার বংশ?

ভীর্, কুসংস্কারে অধ্য াল্যক্রি ভীত চোথ নামিয়ে ফ্রিস্ফিস করে বলেছিল—

- ট্ক্নিকে হাটি দিবার কালে তোমার
 ব্ব হতে দুধ ঘাটিতে প্তল কেন?
 - হারে বোকার সমাজা

চণ্ডী কিছ্ফাণ থ্ণা ও বিস্থারে সকলের দিকে তাকিয়েছিল। তারপর বলেছিল ঠিক আছে। পিত্তিপ্রেরের শাপ থাকে লাগ্ক, ভর করি না। উ কাজ ছেড়ে দিলাম আজ্ঞ হতে।

--কাজ ছেড়ে দিবি?

— দিব। যা, যেরে বীরপুর্ধ সব, পাওরা দেগা। মোর মন ই কাজে বহুদিন লাই, গণ্গাপ্ত গোরমেণ্টের ঘরে সরকারী কাজ পাবে, ই কাজে আমি মরতে যাব কেন?

সমাজের সকলকে বোবা করে দিয়ে চণ্ডী ঘরে চলে এসেছিল। মলিন্দরকে বলোছল—কান্ত যিখানে সিখা ঘর মেলে না? সিখা চলে যাব। উরা মোকে কি বলে তা

মন্দিশর চণ্ডীকে ঠাট্রা করে অবস্থাটা সহক্ষ করে নেবার জন্য স্বভাবসিস্থভাবে চেণিচরে হেসে বলেছিল—কি ব্লো উরা। তু বারেন হছিল?

Maria Control of the Control

বলেই মলিন্দর আর্তনাদ চেপে নির্দেছল। কি বলল। মলিন্দর একি ভয়ানক কথা উচ্চারণ কর?

চন্ডী কশিতে শ্রে করেছিল বালের
খাটি ধরে। উত্তেজনার, দর্থখে, রাগে,
চতুগাণ চেচিয়ে ও বলেছিল—খরে
বন্শধর রইতে কেউ উ বাক্য মুখে ল্যার?
আমি বারেন? আমি খরের ছেলে ফেলে,
মরা ছেলেকে দ্ধ দেই, মরা ছেলে লিয়ে
সোহাগ করি? আমি বারেন?

---চুবো ?

মলিন্দর ওকে ধমক দিয়ে উঠেছিল কেন না তথন ভর দুপুর। এ সময়ে মানরের কুক্থা-দুঃসংবাদ বাতাসের মুখে ধায়। এসময়ে মাথায় তেল, ভাত না থাকলে মনে ভয়৽কর হিংসে-রাগ-আলোশ সহজে ধ'ৢইয়ে ওঠে। মালিন্দর ওর সমাজের লোকের স্বভার চরিত্র ভানত।

— আমি বাঁয়েন লাই গো আমি বাঁয়েন লাই!

চন্ডীর কামা চিল ছোঁ মেরে বাতাস্কে পেণছে দিরেছিল। বাতাস নিমেবে সে কামার খবর ঈশান থেকে আন্দা আকাশের সবকটা কোলে ছড়িয়ে দিয়েছিল।

ঐ একবার কে'দেই চুপ করে গৈছেছিল চণ্ডী, আর কোন কথা বলোন, মালিন্দরকে নাকি বলেছিল—মোরা আধারে চলে ঘাই কথা?

- --কুথা যাবি?
- -- পালাবা?
- -কুথা ?
- ⊸কানি না।

চন্ডী মলিন্দরের কাছে এসে ভগী-বংশক কেনে নিয়ে সমেছিল, বলেছিল-কাছে গ্রেফ্ এসো, ব্যকে মাথা রাখি।

বংশছিল মোক বড় ভর লাগছে।
পিতিপ্র্যের কাজ করব না বলে এলাম
থিকে ভর লগছে? এতদিন তো ভরি লাই?
আজ আমন ভর লাগছে, তুমাকে আব দেখব
না, ভগীরথকে আব দেখতে দিবে না,
ভগামন

এই কথাটি বলে মলি-দর চোথ মুছল। বল্ল এখন মনে লায় বাপ, সিদিন ভগ-মান উর মুখ দিয়ে কথাটা বুলিয়েছিল, জ্বানলুঃ

--তারপর ?

তারপর চন্ডী কয়েকদিন আচ্ছল হরে বন্দে থাকছিল। অলপ কাজকর্ম করে আর ভগীরথকে কোলে নিয়ে বন্দে থাকে, গান গায়। ঘরে খ্রে ধ্নোজনালে পিদীম জনালে আর মাঝে মথে কান পেতে শোনে।

একটানা দুটো মাস খ্বে ভাল কেটে-ছিল। আর চন্ডীকে ভাকতে আর্সোন কেট, আর দরকারও হর্মান। খ্ব শাল্ডিডে ছিল ওরা সেই কটা দিন। চন্ডীও খ্ব শান্ড হয়ে গিয়েছিল, বলেছিল...

—ই কাঁচাকচিদের অন্য বেবস্থা হতে ইর। ই বেবস্থা খবে মস্প।

- - रद्व, द्ववन्धा हृद्व। पिर्क पिर्क रहा।

চন্ডী বলত—ভাল করণাম কী ফলদ বরলাম কৈ বুলে দিবে? দেখ, ছোক ফন বুলে নিশি ব্যাখন শুন্লাম ত্যাখন জানি মোক বাপ হাঁকুর দেয়।

--তুই শুনলি?

—মন ব্লে ষেমন হই-হইহইয়া ভাক উঠে, বাপ কি শিরাল ভাড়ায় নাকি?

—চপ বা চ**ন্**ডী!

মলিন্দর ভর পেত। মাঝে মাঝে কি
তারই মনে হত না চন্ডী বারেন হরে বাছে,
চন্ডী রাতে চমকে উঠে বটতলার কাদের
কামা শোনে? হরতো সমাজ ধা বলতে সে
কথাই সতিয়। মনে হত এর চেরে দেশ-গ্রাম
ছেড়ে শহরে যাওয়া অনেক ভাল।

সমাজও চণ্ডীকে ভোরোন। নণ্ডীর ওপর চোথ রাথছিল। চণ্ডী তা ব্রুতে পারত না এই বা! সমাজ বথন চার তথন লক্ষ্যে চোথ রাথে, বথন চার না তথন অলক্ষ্যে চোথ রাথে। সমাজের অসাধা কাঞ্চ নেই।

তাই একদিন ঝড় বাদলের রাতে,
মলিন্দর যথন মদ খেরে নেশার ট্র্পট্রেপ হলে ঘ্রমাছে, ওর উঠোনটা মানুরে মানুরে ভরে গিরোছিল। ওকে ডেকে তুলেছিল কেতন, চন্ডীর কিরকম মেসো। বলেছিল -- ডোর বউ বাঁরেন কিনা দেখে যা!

ঘ্রতাণ্ডা চোখে মলিন্দর বোকার মৃত্ত ওদের দিকে চেরে বর্মোছল কিছুক্ষণ।

--দেখে বা শালা দেখে যা, ঘরে বাঁরেন প্রে মোদের ছেলেগ্রলোকে সারা করাছিস ভ্যাতদিন ধরে।

মলিন্দর দেখতে গিরেছিল।
দেখছিল বটতলায় মশাল জনলছে,
লন্টন, সমান্তেরে বেটাছেলেরা ভিড় করে
চাক বে'ধে আছে, কেউ কথা বলছে না।

—চণ্ডীরে।

মলিন্দরের আর্ড চীংকারটা কে শ্নোই হ্রার দিয়ে কেটে ফেলেছিল। স্বাই স্তৰ্ব, স্বাই দেখছে এরা কি করে। চন্ডী!

চণ্ডী দাঁড়িরেছিল। হাতে একটা দা, পাশে লণ্ঠন এক পাঁজা কটা গড়ের ভাল পাশে উচ্চ করা।

—ডাল ঝোপ এনে আমি গর্ত ঢাকছিলাম গো।

— दक्न, पू फेंद्रे थीन दक्न?

—শিরালগ্রেলা চে'চাতে বেরে বাামন থেমে গেল তামন মোক মন ব্লল উন্স গতে বেয়ে খাবলাচেছ মরা তুলবে।

--তু বাঁৱেন!

গ্রামের লোকের মুখ্যধর্ণীনর মৃত ব্লল, সভরে।

- —ক্যাও পওরা দের **না থি**।
- —তুবীয়েন!
- —মোক বংশকাজা। উরা কি জানবে?
- —তুবাঁয়েন!
- আমি বাঁরেন লাই গো, মোক ব্ৰেক কচিছেলা, মোক ব্ৰু দ্ধে ফেটে বার! বাঁরেন আমি লাই! গুপাপুত্ত তুমি ব্লুল না গো, তুমি তো সব জান?

লাইনের আলোর, বিভিতৈ লেপটানো ব্ক আঁচলটা দেখছিল মলিন্দর মন্ত্যম্পের মত। ব্কের ভেতর ফেটে যাজিল মলি-দরের। কে বলছিল ও মলিন্দর সাপ দেখলে তুবাছে বাস, আগ্নে বেরে হাত চ্কাস, এখন বাস না তু, তুদের কত ভালবাসার বিয়ে, ভালবাসার ঘর। তু গোলে মহা সর্ব-নাশ হয়ে যাবে।

মলিন্দর কাছে গিয়েছিল, রস্ত চেখে দিরে
চণ্ডীকে ভাল করে দেখতে দেখতে চেণ্টারে
উঠেছিল জন্তুর মত--আরি ই-ই-ইহার!
তু বারেন। বটতদার এসে কারে দুর্য
দিচ্ছিলে রে? আরি ই-ই-ই-গো।

—গণ্যাপত্ত.....হায় গো।



Burght to white in which while wife the thirt is in the

`>

ভিন্তীর ভাষণ ও ব্ৰুফটো কাল্লা মাটিন মৃত শিশুদের চন্ডার বাবার অশাস্ত আন্ধাকে ওর আদিমপ্রত্ব সেই আদিম ডোম্বাকে অন্দি তর পাইরে দিরেছিল। মান্বের ম্বাং থেকে অমান্বটি অতিলোকিক লোকে নির্বাসনের সমর্ মান্বের আন্ধা ব্যক্তি অমিন করেই কাঁদে। অমান আকাশ-মাটি-পাতাল কাঁপিরে।

The second secon

কিন্তু মলিলর ছুটে খরে এসে ওর
শ্বশ্বের শনিপ্জোর ঢোলটা নিরে আবার
বটতলা চলে গিরেছিল। ঢোলে কাঠি দিয়ে
হার কাঁপিরে চেণ্টরে উঠিছিল—আমি,
মলিলর গণ্গাপ্ত শোহরং দেই। আমার বউ
বারেন হয়াছে গো বারেন হয়াছে।

—ভারপর ? ভগীরখ জানতে চাইল ।
—ভারপর সমাজ উকে রেল্ডলা লিরে
গেল বাপ। জানল, একেল হতে থি ভায়ন ভরাও, লি একেবারে একেল হরে গেল। উইউছা শোন্ বাঁরেন গান গার।

অনেক দ্র থেকে টিনের কৌটোর শব্দ আর এক আশ্চর্য গানের স্বর ভেসে এল। সে গানে শব্দ নেই। কথা নেই বলে মনে হয় কিল্ফু কথা ধীরে ধীরে শোনা গেল।

বন্ধ এস বৃষ্ণ এসরে সোনা, ঘ্র এসরে যাদ্:.....

গানটা ভগাঁরথ জানে, গানটা গেরে ওর এখানকার মা গৈরবাঁ-সৈরভাঁকে ব্যুম পাড়ার। —চল, বরকে বাই বাপ!

মলিন্দর অভিভূত ভগীরথকে নিয়ে ঘরে ফিরে চলল। ভগীরথ ব্যুতে পারল বারেনের গানটা ওর ভেতরে ঢুকে গেল, ওব রক্ত মিলে গেল, একটা দুর্বোধা বেদনার মত ওর কানের ভেত্র বাজতে থাকল।

তার করেকদিন পর ভগারিথ দুপ্রবেলা একলা চলে এল মজা বিলের পালে। অনেক দ্র থেকে ও টিনের শব্দ শ্নেছে শ্নে ছুটে ছুটে এসেছে।

জলে বাঁরেনের ছারা। বাঁরেন ওকে দেখছে না। চোখ নিচু করে জল ভরছে মাটির কলসীতে।

—তেমার আর কাপড় নাই? বাঁয়েন চুপ; বাঁয়েন মুখ ফিরিয়ে আছে।

— তুমি ভাল কাপড় পরবে?

—গণ্গাপ,তের বেটা **ঘরে ধাক**।

—আমি, আমি এখন ইস্কুলে পিড। আমি ভাল ছেলে।

—'মাক সংগ্য কথা বুলে নারে। আমি বাঁয়েন।

—আমি ছে'য়াকে বলছি।

—মোক ছে'য়াতে পাপ আছে ইকথা গংগাপ্তের বেটা জানে না?

-- আমার ভয় নাই।

—ঘরে যাক্, এখন তাতম্পর তাত। ইকালে দুধের ছেলা বাইরে ঘুরে না।

—তুমি.....তুমি একলা থাকতে ভয় পাও?

— धकना ? नारत प्राक कून **छत्र नारै।** धकमा शाकरक वीरयन छरत?

-- **ज्**रव र्जूब कॉम रकन?

—কে ব্**লে**?

—আমি শ্নেছি।

—গুলাপ্তের বেটা শ্নেছে! আমি ফাদি?

জলে লাল ছায়াটা কাঁপছে। বাঁমেনের
চোখে জল, বাঁমেন চোখ মুছল, বলল—খরে
থেরে গুলাপ্তের বেটা যান ফিরে কাড়ে
বাঁমেনের ধারে কুনাদন আসবে না লয় ডো...
লয়তো আমি গণগাপ্তকে ব্লে দিব।

ভগাঁরথ দেখতে পেল আল ধরে বাঁরেন চলে যাছে। চলের গোছা উড়ে উড়ে পড়ছে, কাপড়ের অচিল লাল। অনেকক্ষন বসে রইল ভগাঁরথ বিলের জল স্থির হওয়া আন্দ বংস রইল। কিন্তু আর কেউ গান গাইল না— খুস এস ঘুম এস সোনা, ঘুম এসরে বাদা।।

ছরে গিয়ে বাঁরেনও অনেকক্ষণ বসে রইল। বসে বসে আকাশ-পাতাল ভাবতে থাকল। ভেবে ভেবে শেষে উঠে অনেকক্ষণ বাদে একটা ভাগ্যা আর্রাস টেনে বের করল। —চ্যাহারার কিছু লাই।

অস্ফৃটে বলল বাঁরেন। চুলগ্লো এক-বার আঁচড়াতে চেণ্টা করল। ভীষণ জোট।

—টোকাটা কাপণ্ডের কথা বলল কেন?
উরত্যে কিছু মনে থাকার কথা লয়। ফর্সা
কাপড়, ভাল চ্যাহারার কথা ? ভূর্ কুট্চেক্
অনেকক্ষণ ধরে ভাবল বাঁয়েন। অনেকদিনই
ও মান্ধের মত গ্রিছা কিছু ভাবতে পারে
না। ভাববার কিছু নেইও ওর। শুধু গাছের
পাতার শব্দ, বাতাসের ডাক, রেলের আওয়াজ্
নিয়ে কত কথা আর ভাবা যায়।

কিল্টু আজ ওর মনে হল টোকাটার সর্বনাশ হয়ে যাবে। হঠাৎ মান্যের বউরের মত অবিবেচক মলিন্দারের ওপার রাগ হল। টোকাটাকে সামলে রাখবা কাব কাজ? বাঁয়েনের নজর থৈকে আড়াল করা কার দাহিছ?

উঠে লাঠন জেনলৈ ও হন হন করে রেল লাইন ধরে ধরে এগোন্তে লাগল। লাইন ধরে এগিয়ে গেলে ঐ দুরে গ্রেটি ঘর, লেভেল ক্রসিং। ওখান দরে আসে মলিন্দর। এসে আলপথ ধরে ঘরে যায়। লাইন ধরে যেতে ও লোকগ্লোকে দেখতে পেল। লোকগ্লো লাইন থেকে কি সরাছে।

না লাইনের ওপর বাঁশ গাদ্য করছে এনে এনে।

আজ ব্ধেকর রাতের ফাইভ-আপ লাল_ গোলায় মেলবাাগ আসবে। অনেক টাকা। অনেকদিন ধরে ওরা এই জনো তৈরী হচ্ছে।

—ডোরা কে? বাঁথেন সংক্র

বাঁষ্টেন লাগ্টন তুলল, নিজের মথের পাশে দোলাল। লোকগালো মুখ তুলছে। ভয়ে সাদা, চোন কিফারিত। ওর সন্নাক্তর মধ্যেদের এত ভয় পেতে বাঁষ্টেন কোনদিন দেখেনি।

—বাঁয়েন ?

তুরা বাঁশ-গাড়ী দিচ্ছিস, তুরা গাড়ী মরলি? আবার পালিয়ে যাচ্ছিস, হা মোক ডার? ই বাঁশ ফেলা আগে, সর্বনাশ চবে।

—ওরা বাঁশ নামাতে পারে না লাইন থেকে, সর্বনিশ ঠেকাতে পারে না। সমাজ ^{িত্রকা}ল এই করে, সমাজের এই কলে। ওর্দেরি একজন একদিন ঢোল সহবং দিয়ে একে বান্ধেন করে দিরেছিল। বাতাসে বিভিন্ন ঝাপট, চন্ডী লাঠনটা হাতে নিল। অসহার, কি অসহার চন্ডী। ও বলি বান্ধেন হর তো ওর পোবা আকারের দানবগ্লো এনে ঐ ট্রেনটাকে থামিতে দিছে না কেন? সমাজ তো এই পারে। শুখু এইট্কু। কি অসহার চন্ডী, চন্ডী এখন কি করে?

লগ্ঠন হাতে চম্ডী লাইন ধরে ছুট্টে লাগলো। একহাত তুলে মানা করতে লাগল এসো না. আর এস না-গো, এখানে পাহাড় প্রমাণ বাঁশ গাড়া।

টোন দ্বেকত ছেলের মত কোন বাধা না মেনে একেবারে চম্ভীর ওপর ঝাপিরে পড়স।

প্রাথ দিকে টোনটাকে দুর্ঘটনা থেকে বাচাবার জনে চন্ডীর নাম অনৈক দ্র দেপছে গিরেছিল। ব্বি বা সরকারের ঘরেও।

লাশ বর থেকে ওরা বখন চণ্ডীকে নিয়ে চলে গেল তখন দারোগাবাব, মলিকার-দের গ্রামে এলোন। সংশ্যে বি ভি ও।

রেল কোম্পানী চণ্ডী গাম্পোনাসীকে নেডেল দিবে মালিন্দর, তা তোদের রেলান্ড তো আমি জানি। বললাম ওর কেউ নেই তব্ মুকাবিলা করে দেওরা দবকার তাই ইনি এসেছেন।

সাহসের কাজ, খুবে সাংশের কাল করেছে, সবাই ভাল বলছে মহকুমায়। তোমার পরিবার?

স্বাই চুপ করে। সমাজে লোশগণি এ ওর দিকে চাইল ঘাড় গণা াকে মাটিন দিকে চেয়ে কেউ বৃলন্স্ তা আমাদেরি জাতি।

ভগীরথ অবাক হ**ে ্ল। সকলের** মাথের দিকে চাইতে লগালো।

চন্ডীকে ওরা জ্ঞাতি বলল? চন্ডীকে ওরা স্বীকার করে নিচ্ছে?

তে মাদের সক**েলর হাতে তো** ওর মৈডেল দেবে না সরকার।

আজ্ঞা আমাকে দেন। ভগীরথ এগিয়ে এল।

--তই কে !

—উনি আয়ার মা।

—বটে, তোর নাম কি—কি করিস...

বি ডি ও লিখতে লাগলেন। ভগাঁরখে চোখ দিয়ে জল পড়তে লাগলো। একলা থেকে থেকে মরে গেল বাঁয়েন, জানতে পারন না শেষ অন্দি ও একলা ছিল না। মান্ত একলা আসে, একলা ছায় বটে কিন্তু কখান কখানো কোন কোন ভাল কাজের মানে কিছাক্ষণের জনোও সমাজের সবাই এক হবি হাসতে কাঁদতে পারে। সেটাও কম পারন না। ভগাঁরথ গলা ঝেড়ে বলল—

আজ্ঞা আমার নাম ভগাঁরথ গংগা^{পরে।} বাপ প্**জা মলিন্দারের প্রে।** নিবাস ডেমপাড়া।

মা ঈশ্বর চণ্ডী গণ্গাদাসী.....! ভগীরথ বংশ পরিচয় দিতে ^{লাগলো।}



আমাদের বাসায় ই'দ্বর এত বেড়ে গেছে বে আর কিছুতেই টে'কা যাচেছ না। ওদের সাহস শদেখে অবাক হতে হয়। চোথের সামনেই যশেক্ষেত্রে সৈন্যদলের স্চুত্র পদক্ষেপে অগ্রসর হওয়ার মতো ওরা ঘুরে বেড়ায়, দৈয়াল আর মেঝের কোণ বেয়ে-বেগে তর্তর্করে ছ্টোছ্টি করে। যথন সেই নিদিন্টি পথে আক্সিমক কোনো বিপদ এসে হাজির হয়, অর্থাৎ কোনো বাক্স বা কোনে: ভারী জিনিসপন্ত সেখানে পথ আগলে বসে, তখন সেটা অনায়াসে ট্রক্ করে বেয়ে তার: চলে বায়। কিন্তু রান্তে আরও ভয়ণ্কর। এই বিশেষ সময়টাতে তাদের কার্যকলাপ আমাদের চোখে সামনে বুড়ো আঙুল দেশিরে শ্রু হয়ে যায়। ঘরের যে কয়েক-খানা ভাঙা কেরোসিন কাঠের বাক্স, কেরোসনের অনেক পরেনো টিন, কয়েকটা ভাঙা পি*ড়ি আর কিছ, মাটির জিনিস্পত্র আছে, সেখান থেকে অনবরতই খুট্খুট্ ট্রংটাং ইত্যাদি নানা রকমের শব্দ কানে আসতে থাকে। তখন এটা অনুমান করে ^{জীনতে} আর বাকি থাকে নাযে এক ঝাঁক ্যাকেদেহ অপদার্থ জীব ওই কেন্ড্রোসন **মঠের বাক্সের ওপরে এখন রাতের আসর** ्ति वस्त्रधः।

যাই হোক, ওদের তাড়নায় আমি উত্তান্ত ক্রেছি, আমার চোখ কপালে উঠেছে। চাবছি ওদের আক্রমণ করবার এমন কিছ ক্রিল থাকলেও সেটা এখনো কেন ষথাম্থানে ক্রোগ করা হচ্ছে না? একটা ই'দ্র-মারা লও কেনার প্রসা নেই? আমি আশ্চর্য হব বু, নাও থাকতে পারে!

আমার মা কিংতু ই'দ্রেকে বড়ো ভয়
রেন। দেখেছি, একটা ই'দ্রের বাচ্চাও তরি
কৈছে একটা ভালাকের সমান। পারের কাছ
রে গেলে তিনি তার চার হাত দ্র দির
রে বান। ই'দ্রের গণ্ধ পেলে তিনি সক্ষত
রে ওঠেন, ওদের যেমান ভয় করেন, তেমান
শাও করেন। এমন অনেকের থাকে। আমি
শান একজনকৈ জানি যিনি সামানা একটা
তিটা দেখলেই ভয়ানক শিউরে ওঠেন,

আবার এমন একজনকেও জানি বার একটা মাকড়সা দেখলেই ভরের আর অন্ত থাকে না। আমি নিজেও জেকি দেখলে দারণে ভর পাই। ছোটোবেলায় আমি যখন প্রুর মতো শাশ্ত এবং অব্ৰ ছিলাম তখন প্ৰায়ই মামাবাড়ি যেতুম, বিশেষত গভীর বর্ষার দিকটায়। তথন সমন্দ্রের মতো বিশ্তৃত বিলের ভিতর দিয়ে যেতে বর্ষার জ্বলের গণেধ আমার ব্ৰুভরে এসেছে, ছই-এর বাইরে জলের সীমাহীন বিস্তার দেখে আমি অবাক হয়ে চেয়ে রয়েছি, শাফ্লা ফুল হাতের কাছে পেলে নির্মানভাবে টেনে তুলোছি, কখনো উপড়ে হয়ে হাত ডুবিয়ে দিয়েছি জলে, কিল্ডু তথান আবার কেবলৈ মনে হয়েছে, এই বুঝি কামড়ে দিল!--আর ভয়ে-ভয়ে অমনি হাত তুলে নিয়েছি। সেখানে গিয়ে হাদের সঙ্গে আমি মিশেছি, তারা আমার স্বশ্রেণীর নয় বলে আপত্তি করবার কোনো কারণ ছিল না, অতত সে রকম আপত্তি, আশংকা বা প্রশ্ন আমার মনে কখনো জাগে নি:

সেই ছেলেবেলায় বন্ধরা মাঠে গর চরাত। তাদের মাথার চুলগর্বল জলক ঘাসের মতো দীর্ঘ এবং লালচে, গায়ের রঙ বাদামী, চোখের রঙও তাই, পাগ্লি অস্বাভাবিক সর্-সর্, মাঝখান দিয়ে ধনুকের মতো বাঁকা. পরনে একথানা গামছা, হাতে একটা বাঁশের माठि, আঙ্বলগ্রিল माठित घर्षाण मञ्ज হয়ে গেছে। তাদের মুখ এমন খারাপ, আর বাবহার এমন অশ্লীল ছিল যে, আমার ভিতর যে সৃশ্ত যৌনবোধ ছিল, তা অনেক সময় উর্ত্তেজিত হয়ে উঠত, অথচ আমি আমার স্বশ্রেণীর সংস্কারে তা মুখে প্রকাশ করতে পারতুম না! তারা আমাকে নিমে ঠাট্টা করত, আমার মূখ লাল হয়ে যেত। তাদের মাধ্য একজন ছিল যার নাম ছিল ভীম। সে একদিন খোলা মাঠের নতুন জলে থেকে একটা প্রকাশ্ড জেকি তুলে সেটা হাতে করে আমার দিকে চেয়ে হাসতে-হাসতে বললে, স**্কু তোমার গায়ৈ ছ**ুড়ে মারব।

অভিন ওর সাহস দৈখে অবাক হয়ে গেলুম, ভয়ে আমার গা শিউরে উঠল, আস্তে-আস্তে ব্লিখমানের মতো দ্রে সরে গিরে বললাম, দাখে ভীম, ভালো হবে না বলছি, ভালো হবে না! ইয়ার্কি, না?

ভীম হি হি করে বোকার মতো হাসতে হাসতে বললে, এই দিলাম, দিলাম—

সেদিনের কথা আজো মনে পড়ে, ভীমের সাহসের কথা ভাবতে আজো অবাক লাগে। অনেকের অমন স্বভাব থাকে—যেমন অনেকে কোঁচো দেখলেও ভয় পায়। আমি কোঁচো দেখলে ভয় পাইনে বটে, কিম্পু জোঁক দেখলে ভয়ে শিউরে উঠি। এসব ছোটখাট ভয়ের মূলে ব্রেলায়া রুটিননীতির কোনো প্রভাব আছে কিনা বলতে পারি নে।

একথা আগেই বংশছি যে আমার মা-ও
ই'দরে দেখলে দার্গ ভীত হরে পড়েন, তথন
তাকৈ সামলানোই দার হমে ওঠে। ই'দ্রে
যে কাপড় কাটবে সেদিকে নজর না দিয়ে
তথন তার দিকেই নজর দিতে হয় বেশী।
একবার তাঁরই একটা কাপড়ের নিচে কেমন
করে জানিনে একটা ই'দ্রে আটকে গিজেছল। সে থেকে থেকে কেবল পালাবার চেন্টা
করছিল ছড়ানো কাপড়ের ওপর দিরে সেই
প্ররাস স্পন্ট চোথে পড়ে। যা পাঁচ হাত দ্রে
সরে থেকে ভাঙা গলার চিংকার করে
বললেন, স্কু, স্কু!

প্রথম ডাকে উত্তর না দেওরা আমার একটা অভ্যাস। তাই উত্তর দির্রোছ এই ডেবে চুপ করে রইলাম।

—স্কু? স্কু? এবার উত্তর দিল্ম, কেন?

মা তার হলদে-বাটার রভিন শীর্ণ হাতখানা ছড়ানো কাপড়ের দিকে ধরে চোখ বড়ো করে বললেন, ওই দ্যাখ!

আমি বিরক্ত হলুম। ই'দারের জনালাম প্রাণ ওচ্ঠাগত হবে আর কি! এত ই'দার কেন? পরম শত্র কি কেবল আমরাই? আমি কাপড়টা ধরে সরাতে যাচ্ছি অমনি মা চে'চিয়ে উঠলেন, আহা ধরিসনে, ওটা ধরিসনে।

— (थरा राम्नात ना 🖭 !

—আহা, বাহাদর্বর দেখানো চাই-ই!

—মা, তুমি যা ভীতু!—ই'দরেটা আচ্ছামা, বাবাকে একটা কল আনতে বলতে



পার না? কোনদিন দেখবে আমাদের পর্যানত কাটতে শারা করে দিয়েছে!

—আহা, মেরে কী হবে? অবাধ প্রাণ, কথা বলাতে পারে না তো! আর কল আনতে প্রসাই বা পাবেন কোথার? মা'র গলার স্বর কিছুমার কাতর হল না, কোনো বিশেষ কথা বলতে হলেও তার গলার স্বর এমনি অকাতর থাকে এবং অতাত্ত সংক্ষেপে শেষ হরে যায়। শেব ইওয়ার পর আর এক মিনিউও তিনি সেথানে থাকেন না। তিনি অমনি চলে গেলেন।

একটা ই'দ্ব-মারা কল কিনতে পয়সা লাগবে, এটা আমার আগে মনে ছিল না। তাহলে আমি বলতুম না। কারণ এই ধরনের কথায় এমন একটা বিশেষ অবস্থার ছবি মনে জাগে বা কেবল একটা সীমাহীন মরুভূমির মতন। মরভূমিতেও অনেক সময় জল মেলে, কিম্কু এ-মর্ক্মিতে জল মিলবে, এমন আশাও করিনে। এই সর্ভূমির ইতিহাস আমার অজ্ঞানা নয়। আমার পায়ের নিচে যে বালি চাপা পড়েছে, যে বালকেণা আশে-পাশে ছড়িয়ে আছে, তারা ফিস্ফিদ করে সেই ইতিহাস বলে। আমি মন দিয়ে শ**ুনি। জ্ঞান হও**য়ার পর থেকে আঠারো বছর বয়েস অবধি এগিয়ে আবোল-তাবোল ভাবনা মঙ্গিতকের হাটে কখনো বিক্রি হয় না। **ঈশ্বরের প্রতি স**দ্দেহ এবং বিশ্বাস, দ্-ই প্রচুর ছিল, তাই ঈশ্বরকে কৃষ্ণ বলে নামকরণ করে ডেকেছি, হে কৃষ্ণ, এ প্রবিধবীর স্বাইকে যাতে একেবারে বড়লোক করে দিতে পারি তেমন বর আমাকে দাও। রবীন্দ্রনাথের প্রশ্মণির কবিতা পড়ে ভেবেছি, ইস, একটা পরশমণি যদি পেতুম! সংখ্য সংখ্যে অনেক লোককে সভাই জিজের করে বসেছি, আছো, পরশমণি পাথর আক্রকালও লোকে পাম? কোথায় পাওরা বার বলবে?

আমি যথন ছোট ছিল্ম, আমাদের বৃহৎ পরিবারের লোকগর্নির নির্মাল দেহে তখনো অথহীনতার ছায়াট্র পড়েনি। ব্জোগারাকের ভাগ্নের দিন তখনো ব্যাপকভাবে শর্ম হয়ে যায় নি। শর্ম না হওয়ার আমি এই মানে করেছি যে তখনো অনেক জনকের প্রসারিত মনের আকাশে তার ছেলের ভবিষাৎ স্মরণ করে গভীর সন্দেহের উদ্রেক হয়নি। আমাকে আশ্রয় করেই কম আশা জন্ম নিয়েছিল! অথচ সে সব আশার শাখা-প্রশাখা এখন কোথায়? আমি বলতে শ্বিধা করব না, সে সব শাখা-প্রশাধা তো ছড়ায়ই নি, বরং মাটির গর্ভে স্থান নিয়েছে। একটা স্বিধা হয়েছে এই যে পারিবারিক স্বেচ্ছাচারিতার অকটোপাশ থেকে রেহাই পাওয়া গেছে, আমি একটা নিরিবিল থাকতে পেরেছি।

কিন্দু নিরিবিলি থাকতে চাইলেই কি আর থাকা বার ? ইন্দ্ররা আমার পাগল করে তুলবে না ? আমি রোজ দেখতে পাই একটা কেরোসিন কাঠের বাকস বা ভাঙা টিনের ভিতর চুকে ওরা অনবরত টুংটাং শব্দ করতে থাকে, কীণ হলেও অবিরত এমন আওয়াকা করতে থাকে যে অনতিকাল পরেই সেটা একটা বিশ্রী সংগীতের আছার ধারণ করে এবং সন্থো সন্থো শধ্মে আমার কেন অনেকেরই বিষম বিরন্ধির কারণ হরে দাঁড়ায়। একটা কুকুর বখন কর্ণকরে কর্ণকরে আদেত আদেত কাদতে খাকে, তখন সেটা কেউ সহ্য করতে পারে? আমি অক্তম্ভ করিনে। অমন হয়। বখন একটা বিশ্রী শব্দ ধারে ধারে একটা বিশ্রী সংগীতের আফার ধারণ করে তখন সেটা অসহ্য না হরে বার না। ই'দ্রগালের কার্বকরাপও আমার কাছে সেরক্ম একটা বিরন্ধির ভারণ হরে বারি সংগীতের অফার কার্যকরাপও আমার কাছে সেরক্ম একটা বিরন্ধির ভারণ হরে বারি সংগীতের

আর একদিন মা চিংকার করে ভেকে উঠলেন, সাকু! সাকু!

বলেছি তো প্রথম ডাকেই উত্তর দেওরার মতো কঠিন তৎপরতা আমার দেই।

মা আবার আর্তাহ্বরে ডাকলেন, স্কুরু? আর তৃতীয় ডাকের অপেক্ষা না করে নিজেকে মার কাছে যথারীতি স্থাপন করে তাঁর অংগালি-নিদেশে যা দেখলমে তাতে যদি বিশ্নিত হবার কারণ থাকে, তব্ও বিশ্মিত হ**ল**্ম না। দেখ**ল**্ম **কি**, আমাদের কচিৎ-আনা দ্বধের ভাড়টি একপালে হাঁ করে আমার দিকে চেয়ে আছে আর ভারই পাশ দিয়ে একটি সাদা পথ তৈরি করে এক প্রকানড ই'দরে দুভে চলে গেল। এখানে একটা **কথা বচেন রাখি, কোনো** বিশেষ খবর শন্নে কোনো বিশেষ **উত্তেজ**না বা ভাষান্ডর প্রকাশ করা আমার **ন্বভাবে** নেই বলেই বার বার প্রমাণিত হয়ে পেছে। কাজেই এখানেও তার ভভনের হবে না. একথা বলাই বাহ্না। দেখতে পেল্ম, আমার মার পাতলা কোমল মুখখানি কেমন এক গভীর শোকে পাম্পুর হয়ে গেছে, চোথ দুটি গোর্র চোখের মত কর্ণ, আর যেন পক্ষপন্তে কয়েক ফোঁটা জল টল্লটল করছে, এখনি কে'দে ফেলবেন। দধে যদি বিশেষ একটা খাদ্য হয়ে থাকে এবং তা যদি নিজেদের আথিক কারণে কথনো দুলভি হয়ে দাঁড়ায় এবং সেটা ধদি অকস্মাৎ কোনো কারণে পাকস্থলীতে প্রেরণ করবার অযোগা হয়, তবে অকমাং কে'দে ফেলা খুব আশ্চর্ষের ব্যাপার নয়। মা অমনি কে'দে ফেললেন্ আর আমি চুপ করে দাঁড়িয়ে রইল্ম, এমন একটা অবস্থায় চুপ করে দাঁড়িয়ে থাকা ছাড়া আর কোনো উপায়ই নেই। মার ছেলেমানুবের মতো ফ্রণিয়ে ফ্রণিয়ে কালা আর বিনিরে-বিনিয়ে কথা আমার চোখের দৃশ্টিপথকে অনেকদ্র পর্যন্ত প্রসারিত করে দিল, আরও গভীর করে তুল**ল। আমি দেখতে** পেল্ম আকাশে মধ্যাহাের সূর্য অশ্নি বর্ষণ করছে, নিচে প্রথিবীর ধ্লিকণা আরও বেশী অন্নিবয়ী। আমার হাদরের ক্ষেত্তে পড়ে পড়ে খাক হ**রে গেল।** একটা নীল উপত্যকাও দেখা বায় না, দুৱে জলের চিহুমার নেই, জলুকুভুঙ নেই মরীচিকা দিয়েছে ফাঁকি। ভাব**ল্ম স্বামী** বিবেকানদ্দের অমূল্য গ্র**ন্থরান্তি কোথায়** পাওয়া যায়? শ্রীরামকুক্ষের উপদেশাবলী অম্লা। সমগ্র মান্ব-সমাজের কল্যালরতী শ্রীঅরবিন্দ প্রথিবীর অন্যতম শ্রেণ্ঠ বহা-

পর্ব (তখনো ভাবতুম না শ্বিতীয় নাম্প্রামণী বৃশ্ধ কখনো শ্বে, হবে)।
আবার মুখর্ডাপা চিন্তাকুল হরে এল, হাট,
দ্টি পেটের কাছে এনে কুকুরের মতো শ্বে
আমি ভাবতে লাগল্ম—বরের সমনত দরজাভানলা বৃশ্ধ করে দির্রেছি ভালো করে
ভাবার জন্য—ভাবতে লাগল্ম, এমন কোনো
উপার মেই বাতে এই বিকৃতি থেকে মুভি
পাওরা বাম?

সন্ধ্যার পর বাবা এলেন, থবরটা শুনে
এমন ভাব দেখালেন না বাতে মনে হর
ভিনি হতভন্ত হয়ে গেছেন অথবা কিছুনার
দুঃখিত হয়েছেন, বরং তাড়াতাড়ি কথা
বলাটা তাঁর অভ্যাস নর—বেশ হরেছে,
ভালো হরেছে! আমি আগে থেকেই ভেবে
রেখেছিল্ম এমন একটা কিছু হবে। আরে,
মানুষের জান নিরেই টানাটনি, দুধ খেয়ে
আর কী হবে বলো!

দেখতে পেলুম, বাবার মুখিট যদিও
শ্কলা তবং প্রচুর ঘামে তৈলাভ দেখাছে,
গামের ভারী লামাটিও ঘামে ভিজে গরের
ভিতর গদ্ধ ছড়িরে দিরেছে। এমন একটা
বিপর্বারের পরও তাঁর এই অবিকৃতপ্রার
ভাব দেখে আমি আদ্বন্ত হলুম। এই ভেবে
যে, ক্ষতি বা হরেছে হরেছেই, তার আলোচনার এছন একটা অবন্ধা—যার কোনো
পরিবর্তন নেই বরং একটা ফন্ড গোলযোগের স্তুপাত হবে—সেই থেকে রেহাই
পাওয়া পেল, খুব শিগাগির আর আমার
মানসিক্ক অবনতি ঘটবে না।

কিন্তু বাবা কিছ্কেণ পরেই সুর বদলালেন : ভামরা পোলে কী? কেবল ফুডি
আর ফুডি! দরা করে আমার দিকে একট্
চাও। আমার শরীরটা কি আমি পাথর
দিচে তৈরী করেছি? আমি কি মান্য নই?
আমি এত খেটে মরি আর তোমরা ওদিকে
ফুডিতে মেতে আছু! সংসারের দিকে একবার চোথ খুলে চাও? নইলো টিকে ংকাই
দার হবে।

আমার কাছে বাবার এই ধরনের কথা মারাপাক মনে হয়। তাঁর এই ধরনের কথার পেছনে আনেক রাগ ও অসহিজ্বতা সঞ্জিত হয়ে আছে বজে আমি মনে করি।

সময়ের পদক্ষেপের সংগে স্বরের উত্তাপত বেড়ে বেডে লাগল। আমি পঞ্চিত হরে উঠলনে। আর করেক মিনিটের মধ্যেই এই কঠিন উত্তম্ভ আবহাওয়ার যে অস্কৃত ন•নতা প্রকাশ পাবে, তাতে আমার **লভা**র আর সীমা-পরিসীমা থাকবে না। এমন অবস্থার সপো আমার একাধিকবার পরিচয় হলেও আমার গামের চামড়া ভাতে প্রু হয়ে বায়নি, বরং আশতকার কারণ আরভ বংশ্টে পরিমাণে বেভেছে। বে প্রথিবীর সংশ্যে আমার পরিচয় ভার বার্থভার মাঝ-খাসে এই নম্পভার দৃশ্য আরও একটি त्वमनात कात्रम ছाष्ट्रा आत्र किंद्दरे नग्न। বাবা ৰঙ্গলেন, আরু তক' কোরো না বলছি! এখান খেকে ৰাও, আলার স্মেৰ খেকে বাও, দ্রে হরে বাও বলছি!

মা বললেন, অত বাড়াবাড়ি ভালো নর। চেডাবেডি ক্ষে প্রিবটিন্ত লোক্রে নিজের গ্রেপনার কথা জানানো হচ্ছে, খবে স্থাতি হবে।

শ্বতে পেল্ম, এর পরে বাবার গলার ×বর রাতির নি×তব্ধতা ভেঙে বোমার মতো ফেটে পড়ল!—তুমি বাবে? এখান থেকে বাবে কিনা বল? পেলি তুই আমার চোখের সামনে থেকে? শয়তান মাগাঁ! বাবা বিভূবিড় করে আরও কতো কী বললেন, আমি কনে আঙ্ল দিল্ম, বালিশের মধ্যে মুখ গংজে পড়ে রইল্মে একটি অসাড় মৃতদেহ হয়ে, আমার চোখ ফেটে জল বের,ল, বিপর্যায়ের পথে ব্যধ্তি হলেও আমার মনের শিশ্বটি আঞ্জন যে শিক্ষা গ্রহণ করে এসেছে তাতে এমন কোনো কথা লেখা ছিল না। মনে হল বেন আজ এই প্রথম বিপর্যায়ের মুহুত-গ্লিচরম প্রহরী সেজে আমার দোর-লোড়ায় কড়া নাড়ছে। আগে এমন দেখিন বা শুনিনি। তব, আমার অনুভূতির এই শিক্ষা কোথা থেকে এল? বলতে পারি আমার এই শিক্ষা অতি চুপি-চুপি জন্মলাভ করেছে, মাটির প্রথিবী থেকে সে এমন-ভাবে শ্বাস ও রস গ্রহণ করেছে যাতে ট[ু] শব্দও ভ্রান। ফ্লের স্বাস যেমনি নিঃশন্দে পাখা ছড়িয়ে থাকে তেমনি ওর চোখের পাখা দুটিও নিঃশবেদ এই অদভূত খেলার আয়োজন করতে ছার্ডোন। আরও বলতে পারি আমার মনের শিশরে বাঁচবার বা বড়ো হবার ইভিহাস যদি জানতে হয় তবে ফালের সংগ্রা তুলনা করা চলে। কিন্তু সেই শিক্ষা আৰু কাজ দিল কই? বরং আমার আরও কমহোনতার নামাণ্ডর হল, কভি৷ শরীরের হাত দর্টি কেটে ভাসিয়ে দিল জংলে, দুই চোথকে বাম্পাকুল করে কিছ্ফুপের জনা কানা করে দিল। আমি কি করব? আমার কিছু করবার আছে কি?

-- শয়তান মাগাী, যা বেরিয়ে <mark>যা!</mark>

আবার ভেসে এল অম্ভূত কথাগ্রি। এসর আমি শ্নতে চাইনে তবং শ্নেতে হয়। বাতাসের সঞ্জে খাতির করে তা ভেসে আসবে, জোর করে কানের ভিতর চকেবে, আমার দ্বলিতার স্থোগ নিফে আমার মনের মাটিতে সজোরে লাথি মারবে।

—যা বলছি!

গোলমাল আরও খানিকটা বেড়ে গেল। কিল্কু পরে মা বাংপাচ্ছল স্বরে ডাক-লেন, স্কু! স্কু!

ঠিক তথুনি উত্তর দিতে লঙ্জা হল, ভয় করল, তবু আংশ্তে বললাম, বলো? মা বললেন, দরজা খোল্।

ভয়ে ভয়ে দরজা খলে দিল্য, ভয় হল এই ভেবে যে এবার অনেক বিচাবের সম্ম্থীন হতে হবে, যা শ্নতেও ভয় পাই ঠিক ভারই সামনে এক সম্ভীর বিচারপতি ইয়ে সমস্ত উত্তেজনাকে শ্লো বিসজ্প দিয়ে রায় দিতে হবে!

কিব্ছু যা ভেবেছিল্ম তা আর হল না।

যা বরের ভিতর চুক্তেই ঠাবচা মেঝের
ওপর আঁচলখানা পেতে খুরে পড়লেন।
পাতলা পরিচ্ছল শরীরখানি বেকৈ একখানা
কাম্ভের আকার ধারণ করল। কেমন
অসহায় দেখাল ওকে। ছোটোবেলায় যাকৈ
প্থিবীর মতো বিশাল ভেবেছি, তাঁকে

এমনভাবে দেখে এখন কত ক্লীপজীবী ও অস্থার মনে ছক্তে। যাকে বৃহত্তম ভেবেছ, সে এখন কত ক্রু, সে এখনো শৈশব অতি-ক্লম করতে পার্রোন বলে মনে হচ্ছে। আর আমি কত বৃহৎ, রক্তের চণ্ডলতার, মাংস-পেশীর দ্যেতায়, বিশ্বস্ত পদক্ষেপে কত উজ্জ্বল ও মহৎ, ওই হরিণের মতো ভীর, ছেটে দেহের রক্ত পান করে একদিন জাবন গ্রহণ করলেও আন্ত্র আমি কত শক্তিমান! আমাকে কেউ জানে? এমনও তো হতে পারত, আজ লশ্ডনের কোনো ইতিহাস-বিখ্যাত মুর্নিভা-সিটির করিডরের বাকে বিশ বছরের বাক স্কুমার গভীর চিন্তার পারচারি করছে অথবা খেলার মাঠে প্রচুর নাম করে সকল সহপাঠিনীদের দুল্টি আকর্ষণ করেছে, অথবা ত্রিশ বছরের নীলনরনা কোনো খাঁটি ইংরেজ মহিলার ধীর গভার পদক্ষেপ ভীরুর মতো অনুসর্প করে একদিন তাঁর দৈহের ছায়ায় বঙ্গে প্রেম যাপা করেছে! এমন তো হতে পারত, তবে সোনালী চুল, দীর্ঘ পক্ষ্যাবৃত চোখ, দেহের সৌরব--আহা, কে সেই ইংরেজ মহিলা? কে এখন কই? আর সেই দ্বণাভি রাজকুমার সৃকুমারের মা ঐ ঠান্ডা মেঝের ওপর সামানা কাপড় বিছিলে শ্রে? এখান থেকে কত ছোট <mark>আর জসহায়</mark> মনে হয়। এক অর্থহীন গরে ব্রুকটা **প্রশ**স্ত-তর করে আমি একবার মার দিকে তাকা-लाम। फांकनाम, मा? ख-मा?

কোনো উত্তর নেই। গভীর নিশ্তশ্বতা ভঙ্গ করে কোনো ভংন নারীকণ্ঠ আমার কানের দর্জায় এসে আঘাত করল না। ঘ্রায়ে পড়েননি তো?

পর্যদনও আবহাওরার গভারতা কিছ্মাত্র দ্রে হল না। মার এমন অদ্বাভাবিক
নারবভা দেখে আমার ছোট ভাইবোনেরা
প্রচুর আদ্কারা পেরে গেছে দেখতে পাছি।
তারা নশনগাত্র হয়ে বথেছে কিরণ করতে
লাগল। স্কুলহীন ছোট বোনটি তার নিতাকার অভ্যাসমতো প্রেমকুস্মাসতীর্শ এক
প্রকান্ড উপন্যাস নিয়ে বসেহে, অনাদিকে

চাইবারও সমার নেই। সেদিন অনেক রাতে
সারা বাড়ি গভার ধোরার তেনে গেল,
সকলের নাক-মুখ দিয়ে কল বেরতে
লাগল, দম কথ হরে এল। ছোট বোনদের
খালি মাটিতে পড়ে খুমুডে দেখে রামাখরে
গিয়ে জিজেস করলুম, এখনো রামা হর্মি,
মা?

চোথের জলে ভিজে উনানের **জিতর** প্রাণপণে ফ^{*}্ব দিতে দিতে মা বললেন, না। এখন চড়াচ্ছি।

> —এত দেরী হল কেন? মাছুপ করে রইলেন।

ব্ৰুতে পারল্ম। সেই প্রেনো কাস্বিদ। ব্ৰতে পারল্ম এ-জিনিস এড়াতে চাইলেও সহজে এড়াবার নয়,— হুরে-ফিরে এসে চোথের সামনে দাঁড়ার, পাশ কাটাতে চাইলে হাত চেপে ধরে, কোনোরকমে এড়িয়ে গেলেও ছাত ভুলে ভাকতে থাকে। এই ডাকাডাকির ইভি**হাসকে** যদি আগাগোড়া লিপিবশ্ধ করি, ভবে সরী-জীবন লিখেও শেষ করতে পারব মা, কে**উ** পারবে মা, ভাতে কতকগর্লি একই রক্ষের চিত্র গলাগলি করে পাশাপাশি এশে দাঁড়াবে, আর শােখিন পাঠকের বির্দ্তি-ভাজন হবেঃ আমি তো জানি পাঠকলেণী কে? তাঁদের মনোরজন করতে ছলে কার্মা-कांग्रित नााकांग्रि हलता ना, किश्वा किंद्रगे লিখলেও টাকার হিসাবটাকে সরমে এভিনে বেতে হবে বা হাসিমাথে বরণ করতে হবে। বেমন আমার বাবা অনেক সময় করেন--প্রচুর অভাবের চিত্রকেও এক দার্শনিক ব্যাখ্যা দিয়ে পরম আনন্দে ঘাড় বাঁকিষে হাসতে থাকেন। কিংবা বেমন আমাদের পাড়ার প্রকাশ্ত গোঁফওয়ালা রাক্ষতম**ণার** করেম-বরে অতি-প্রক্রো স্তী আর এক-পাল ছেলেমেরেদের অভুত্ত রেখেও পথে-বাটে রাজ্য-উজির মেরে আসেন। বা আমাদের প্রেস-কর্মাচারী মদম-শ্ন্যতার দিন্টিকে

विमालनम् हत्वकीति म्'हि अनाशासन शन्ध

একদা পর্তৃগীজন্ম এসেছিল এলাচ ও লবংগার নেশার। গ্রামকে গ্রাম জনুলিরে দিরেছে তারা। বাংলার তথম গভীর নিশীখে তৈরবী চক্ত বসতো। পঞ্চমকার সাধনার বাভিচাবে কুমারীর কোমার্য হ'ত লক্ষিত। মহাসংগম দাস ব্যবদার পটভূমিকার তৈরবী চক্তের কিশোরী ভৈরবীকে আশ্রর করে এক প্রমাণ্চর্য গদাগাখা—

মহাসংগম ৫.০০

ইতিহাসকে সরস কাহিনীতে র্পাণ্ডরের দ্রাভ দক্ষতার স্বাক্ষর

রহস্যময় মোহেনজোদড়ো ২.৫০

ঋতায়ন : ২২।২এ বাগবাঞ্চায় স্মীট কলিকাতা--৩

উপবাসের তিখি বলে গণ্য করে, কখনো প্ৰশাসন কেটে বসে নিমী চোথে দুই শক্ত দীৰ্ঘ বাহু দিয়ে বুক চাপড়াডে **চাপড়াতে ঈশ্বরকে সপরীরে** ডেকে আনে। এজন হয়। এছাড়া আর উপার কী? স্বার্গের পথ রুখে হলে মধ্যপথে এসে দাঁড়াই, জীবন আমাদের কুক্ষিণত করলেও **জীবনকে প্রচুর অবহেলা করি, প্রকৃতি**র করাঘাতে ভাতারের বদনাম গাই, অথবা উধ্বাহ, সম্যাসী হয়ে ঈশ্বরের আরাধনা করি। এসব দেখে আমি একদিন সিম্পান্ত **করেছিলনে যে দ্বেধের সম্**দ্রে যদি কেউ গলা পর্যতে ভূবে থাকে, তবে এই মধ্যবিত্ত **দ্রেপী। মধ্যবিতের নাম করতে** গিয়ে বাদের জিহনার জল আসে সেদিন আমি তাদেরই একজন হয়েছিল্ম। বন্ধকে এক ধোঁয়াটে রহসামর ভাষায় চিঠি লিখলুম : 'এরা কে **जाता? এরা পরিধবীর শ্রেস্ঠ সম্তা**ন বটে **किन्छु मा एथरा घरता। रा काल ज**नामहत **শ্বকিনে করে পড়ে মাটিতে এরা তাই। এরা তৈরি করছে বাগান অথচ ফ**লের শোভা **দেখেনি। পেটের ভিতর স**্চ বি'ধছে **প্রত্যু, কিন্তু ভিক্রাপান্ত** নয়। পরিহাস! পরিহাস!...' ঐতিহাসিক ব্যাখ্যার অজ্ঞতায় **নিজের মনে যে কম্প**নার সৌধ গড়ে ভুলন্ম, তাতে নিজের মনে-মনে প্রচুর পরিভূত হল্ম। যে উপবাসকৃশ বিধবারা ভাদের সক্ষম মেরেদের দৈহিক প্রতিকার **সংসার্থাচার পথ বে**য়ে-বেয়ে কোনোরক্ষে **কালাভিপাত করছেন, ভাদের জন্যে কর**ংগা रकाम रक, बर्न-बर्ग भ्राह्म कतरू माश्रम्य আরও বেদী।

কিন্দু সৈস্ব কণিকের ব্যাপার।
শরতের মেখের মতো ফেমনি এসেছিল
তেমনি মিলিয়ে গেল, মগজের মধ্যে জারগা
বিদ্যুত একটা পেয়েছিল, বেশীদিন থাকবার
ঠাই গেল না। আৰু ভাবছি আমাকে মৃত্যুত্ত দিয়ে গেছে। মইলে এক অসম্পূণ সংকীণ প্রিবীর সপো পরিচর হয়ে থাকত, তখন লে ভাবনা নিরে মনে-মনে পরিতৃণ্ত থাকভূম বটে, কিন্দু গতির বির্দেধ চলভূম, এক ভাবণ প্রতিক্রিয়ার বিষে ক্রারিত হতুম।

এমন দিনে এক অলস মধ্যান্ডের সংগ্র **জামি সাংখ্যাতিক প্রেমে পড়ে গেল্ম।** সেই দুপুর্যটকে যা ভালো লেগেছিল কেবল মুখে ফললে তা যথেন্ট বলা হবে না। ৰেদিন ৰডট্ৰু আকাশকে দেখতে পেল্ম ভার নীলকে এত গভীর মনে হল যে, চ্চোথের ওপর কে যেন কিছ্ শীতল প্রলেপ **দিয়ে দিলে। ভাবনার রাজ্যে পারচারি করে** আমার মীমাংসার সীমান্তে এসে পৌছলুম সেই মধ্যাকে, সেখানে রাখলুম দৃঢ় প্রভার। আকাশের নীলিমার 🚓 চোখকে সিভ করে আমি দেখতে পেল্ম, **৮৫ড়া রাস্ভার পাশে** সারি-সারি প্রকাণ্ড **দালান**, ভার প্রতি কক্ষে স**ুস্থ** সবল মান্তব্য পদক্ষেপ, সি'ড়িতে নানারকম - সমান আওরাজ, মেরেপ,রুবের মিলিত

हिश्काद-धर्मन भृषियौद अरथ-अरथ वीमर्छ দ্য়ারে হানা দেয়, বালচ্চ মান্য প্রস্ব করে, আমি দেখতে পেল্মে ইলেকট্রক আর টোলগ্রাফ তারের অরণা, থাক্টর চলেছে মাঠের পর মাঠ পার হয়ে-অবাধ্য জামকে ভেঙে-চুরে দলে-ম্চড়ে, সোনার ফসল আনন্দের গান গায়, আর যন্তের ঘর্ষণে ও মান্ষের হয়'ধরনিতে এক অপ্রে' সংগীতের স্থিত হল। একদা তা বাতাসে মাটির মান্ষের প্রতি উপহাস করে বিপ্ল অটুহাসি হেসেছে, সেই বাতাসের হাত আজ করতালি দেয় গাছের পাতায়-পাতায়। কেউ শ্বনতে পায়? যারা শোনে তাদের নম**গ্**রা। —তাই অলস মধ্যাক্তকে মধ্রতর মনে হল। দেখল্ম এক নম্নদেহ বালক রাস্তার भावशास वरम এक इंट्रिंब देकरवा निरव গভীর মনোযোগে আঁক কষছে। কোন বাড়ি থেকে পচা মাছের রামার গন্ধ বৈরিয়েছে বেশ, সংগীত-পিপাস্র বেস্বো পলায় পান শোনা যাচেছ হারমানয়ম-সহযোগে এই অসময়ে, রৌদু প্রচণ্ড হলেও হাওয়া দিক্তে প্রচুর, ও-বাড়ির এক বধ্ রাস্তার কলে এইমাত্র স্নান করে নিজ বংকের তীক্ষ্যতাকে প্রদর্শনের প্রচুর অবকাশ দিয়ে সংকৃচিত দেহে বাডির ভিতর চ্কল, দুটি মজ্ব কোনবৃক্ষে খাওয়া-দাওয়া সেবে কয়লা-মলিন বেশে আবার দৌড় দিচেছ। এ-দৃশা বড় মধ্র লেগেছে—অবশা কোনো ব্রেজায়া চিত্রকরের চিরন্ডনী চিত্র বলে নয়। এ-চিত্র যেমন আরাম দেয়, তেমনি পীড়াও দেয়। আমার ভালো লেগেছে এই সমরণীয় দিনটিতে এক বৈজ্ঞানিক বৃদ্ধির রাজত্বে খানিকটা পায়চারি করতে পেরেছে বলে। চমংকার! চমংকার!

অনেক রাগ্রে ই'দ্বেরের উৎপাত আবার
শ্রে হল, ওরা চিন আর কাঠের বাক্সে
দাপাদাপৈ শ্রে করে দিল, বীরদপে চোথের
সামনে দিয়ে ঘরের মেকে অভিক্রম করতে
লাগল, কোথাও কোনো বাকদের ভেতর
থেকে জেক বার করে দার্গ উপহাস করতে
লাগল।

রাহা শেষ করে এসে মা সকলকে ভাকাজাকি শরে করে দিলেন, ওরে মণ্ট্র, ওরে ছবি, ওরে নারা, ওঠা বাবা ওঠা!

মণ্ট্ উঠেই প্রাণপণ চিংকার আরক্ষ করে দিল। ছবি যদিও এতক্ষণ তার উপন্যাসের ওপর উপড়ে হয়ে পড়ছিল এখন বই-টই ফেলে চোখ ব্জে শ্যে পড়ল।

—ওরে ছবি, খেতে আয় খাবি আয়! বারবার ডাকেও ছবি ট^{*}্লফটি করে।

মা তংশকংঠে বললেন, আমার কী দোষ বল ? আমার ওপর রাগ করিস কেন ? গরীব হয়ে জন্মালে...

মার চোথ ছলছল করে উঠল, গলা কে'পে গেল। আমি রাগ করে বললুম, আহা, ও না থেকো না খাবে, ভূমি ওদের দাও না?

মধারাতির ইতিহাস আরও বিশ্মরকর।

এক অনুষ্ঠ কপ্টের শাসে হঠাৎ জেগে উঠলুম। শুনতে পেলুম বাবা অতি নিজ-স্বরে ডাকছেন, কনক, ও কনক, খুমুছ্ছ?

বাবা মাকে ভাকছেন নাম ধরে! ভারি
চমংকার মনে হল, মনে মনে বাবাকে
আমার বয়স ফিরিয়ে দিল্মে, আর আমার
প্রতি ভালোবাসা কামনা করতে লাগল্য
তার কাছ থেকে। যুবক স্কুমার একদিন
তার বৌকেও এমনি নাম ধরে ভাকুবে,
চিংকার করে ডেকে প্রতাকটি ঘর এমনি
সপ্লীতে প্রতিধন্নিত করে তুলবে।

--कनक? ७ कनक?

প্রোচা কনকলতা অনেকক্ষণ পর্যাত কোনো উত্তর দিলেন না। কোনোবার কাকিষে উঠলেন, কোনোবার উঃ-আঃ করলেন। আমি এদিকে রুম্থ নিঃম্বাসে নিম্নগামী হল্ম। বালিশের ভিত্র মুখ গণ্ডে হারিয়ে বাবার কামনা করতে লাগল্ম। লম্ভায় আরম্ভ হয়ে উঠল্ম, শরীর দিয়ে বামের বন্যা ছুটল।

ভাদকে মধারাত্তির চাঁদ উঠেছে আকাশে,
পৃথিবাঁর গায়ে কে এক শাদা মসলিনের
চাদর বিছিয়ে দিয়েছে, সংশ্য এনেছে ঠাংডা
জালের স্রোতের মতো বাতাস, আমার ঘরের
সামনে ভিখিরী কুকুরদের সাময়িক নিদ্রাময়তায় এক শাঁতল নিশত্রশতা বিরাজ
করছে। কিল্ডু মাঝে মাঝে ও বাড়ির ছাণে
নিপ্রাহীন বানরদের অস্পণ্ট গোভানি শোনা
যায়। মধারাত্রের প্রহরী আমায় গ্যুম
পাড়িয়ে দেবে কথন?

অবশেষে প্রোচা কনকলত নীরবত।
ভাঙল: তিনি আবার ত , মহিমার
উজ্জাল হয়ে উঠলেন, অৎপ একটু ঘোমটা
টেনে কাপড়ের প্রচুর গৈঘা দিয়ে নিজেকে
ভালোভাবে আছাদিত করলেন, তারপর
এক অশিক্ষিতা নববধ্র মতো ধার পদ-ক্ষেপে অগ্রসর হতে লাগলেন। অংগভিগর
সঞ্চালনে যে স্প্রাতির স্ভিট হয়, সেই
স্প্রাতির আয়নয়ে আমার কাছে সম্প্রত
প্রতির আরনয়ে আমার কাছে সম্প্রত
ভাজা পারের ভারি অধ্যাচ প্রত্ত আন্তর্গর
আতে আন্তে বাতাসের সংগ্রা মিশে বাছে।

অনেক রাদ্রে বাবা গুন্গুন্ সুরে গানি
গাইতে লাগলেন। চমংকার মিট গলা.
বেহালার মতো শোনা যাছে। সেই গানের
খেলার আলোর কলাগুলি আরও শাদা
হয়ে গেছে, মনে হয় এক বিশাল অট্টালিকার
সপিল সিভি বেয়ে-বেয়ে সেই গানের রেখা
পাগলের মতো ঘুরে বেড়াছে। শেষ রাভির
বাতাস অপ্র স্নেহে মন্থর হয়ে এসেছে।
একটা কাক রোজকার মতো ডেকে উঠোছ।
বাবাকে গান গাইতে আরও শ্নেহি বটে,
কিন্তু আজকের মতো এমন মধ্র ও

গভীর আর কখনো শুনিনি। তাঁর মৃদ্-গশভীর সানে আজ রাচির প্থিবী বেন আমার কাছে নত হরে গেল। তারপর আমি শুমিয়ে পড়স্ম।

পর্যদিনকার প্রাণ্থোলা হাসিতে ছ্ম থেকে হঠাং জেগে উঠন্ম। হাসির ঐপবরে বাড়ির ইণ্টগ্লি কাঁপছে। বাবা বললেন, পশ্ডিতমশাই, ও পশ্ডিতমশাই, উঠন। আর কত ছ্ম্বেন? সকালে না উঠলে বড়-লোক হওয়া বার কি? উঠন?

আমি অনেক কন্টে চোখ মেলে চেরে দেখলুম, কখন ভোর হরে গেছে। বাবার দেনহমর কথার আমি কখনো হাসিনে, কেমন বাধে, যথেন্ট বরেস হরেছে কিনা, এক কুড়ি বছর তো পেরিরে চললুম।

মশারির দড়ি খুলতে-খুলতে বাবা বললেন, পৃথিবীতে যত গ্রেট মেন দেখতে পাচ্ছো, সকলেরই ভোরে ওঠবার অভ্যাস ছিল। আমার বাবা, মানে তোমার ঠাকুর- দারও এমান অভ্যাস ছিল। আমারা যতো ভোরেই উঠি না কেন, উঠেই শুনেতে পেতুম বাইরের ঘরে তামাক খাওয়ার শব্দ হচ্ছে। অমান অধাবসায়ী না হলে আর একটা জাীবনে অত জমিজমা, অত টাকা-পয়সা করে যেতে পারেন! তিনি তো সবই রেথে গিয়েছিলেন, আমারাই কিছু রাখতে পারলম্মা। কিংতু উঠ্ন পান্ডতমশাই যারা ঘ্মাথকে দেবী করে ওঠে, জাীবনে তারা কথানো উমতি করতে পারে না।

অতটা মাতব্দরি সহা হয় না, জীবনে একদিন মাত্র সকালে উঠেই বাড়িস_{্থে}খ লোক মাধার তুলেছেন!

সমস্ত বাড়িটা খ্রির বাজনায় ম্থারত হয়ে উঠল। ওাদকে মণ্ট্র সেলনে চুল ছটিবার জন্য পয়সা চাইতে শ্রুব করেছে, ঘণ্টাখানেক পরেও পয়সা না পেলে মেঝেয় আছাড় খেয়ে তারম্বরে কাঁদবে। নার পক্র-পক্র বাকাবর্ষণ করে সকলের মনোরঞ্জন করবার চেণ্টায় আছে! ছবি এইমাত তার উপন্যাসের পৃষ্ঠায় নায়িকার শয়নম্বে নায়কের অভিযান দেখে মনে মনে প্লাকিত হয়ে উঠছে।

বাবা দার্ণ কর্মব্যুস্ত হয়ে উঠলেন, এঘর-ওঘর পায়চারি করতে লাগলেন।

এক সময় আমার কাছে এসে বললেন, তোমরা থিয়োরিটা বার করেছ ভালোই, কিন্তু কার্যকরী হবে না, আজকাল ওসব ভালোমান্যি আর চলবে না। এখন কাজ হলো লাঠির। হিটলারের লাঠি, ব্রুলে পশ্ভিতমশাই?

আমি মনেমনে হাসলুম। বাবা যা
বলেন তা এমন ভাবে বলেন যে মনে-মনে
বেশ আমোদ অনুভব করা যার। তাঁর কি
ভানি কেন ধারণা হয়েছে, আমরা সব ভালোমান্বের দল, নিজের খেয়ে পরের চিন্তা
করি, শ্কেম্থ হয়ে শীতল জল বিতরণ

করতে চাই, নিজেরা স্বর্গচ্যুত, অথচ পরের স্বর্গলাভের পথ আবিস্কারে মন্ত!

আবার কললেন, তোমালের রাশিরা কেবল সাধ্রই জন্ম দিয়েছে, অসাধ্ দেরনি। কেবল মার খেমে মরবে। তেনিন তো ফল্ড বড় সাধ্ ছিলেন, বেমনি টলন্টর ছিলেন। কিন্তু ও'রা লাঠির সংগ্যা পারবেন কি? কখনো নর!

বলতে ইচ্ছা হয়, চমৎকার ! এমন দ্বকীয়তা, এমন নতুনত্ব আর কোথাও চোধে পড়েছে ? এমন করে আমার বাবা ছাড়া আর কেউ বলতে পারে। তিনি একবার যা বল্বেন ত: ভূল হলেও তা থেকে এক চুল কেউ তাকৈ সরাবে, এমন বলাসদতান ভূ-ভারতে দেখিনে। এক হিটলারি দক্ষেত তার মুখ উম্ভর্কা

কিন্তু একমাত্র আশার কথা এই যে, এসব ব্যাপারে তিনি মোটেই সীরিয়স্ নন, একবার যা বলেন দ্বিতীয়বার তা বলতে অনেক দেরি করেন। নই'ল আমার জীবন অতিষ্ঠ হয়ে উঠত। গৈত্রিক অধিকারে অন্প্রাণিত হয়ে তিনি তার অপবাবহার করতেন সন্দেহ নেই।

ওদিকে কর্মবাসত মাকে দেখতে পাছি।
গভীর মনোযোগে তিনি তাঁর কাজ করে
যাচ্ছেন, কোথাও এতটাকু দৃষ্টিপাত করবার
সময় নেই যেন। কাঁধের ওপর দুর্ই গাছি
খড়ের মতো চুল এলিয়ে পড়েছে, তার ওপর
দিয়েই ঘন-ঘন ঘোমটা টেনে দিচ্ছেন, পরনে
একখানা জীর্ণ মালন কাপড়, ফর্সা পা-দুটি
জলের অত্যাচারে ক্ষত-বিক্ষ্ত দার্গ হয়ে
এসেছে। পেছনে-পেছনে নার্ ঘ্রের
বেড়াছে।

আন্তর্জাতিক রাজনীতি ছেড়ে বাবা এবার ঘরোয়া বৈঠকে যোগ দিলেন। নারকে ডেকে বললেন, নার, বাবা তোমার কী চাই বলো:

নার তার ছোট-ছোট ভাঙা দতিগ্লি বের করে অনায়াসে বলে ফেলল, একটা মোটর-বাইক। সাজে টিরা কেমন স্কর ভট্ভট্করে ঘ্রে বেড়ায় না বাবা?

কিন্তু মন্ট্র কিছু বৃদ্ধি-শান্ধি হয়েছে। সে হঠাৎ পেছন ফিরে মুখটা নিচের দিকে নিয়ে কামানের মতো হয়ে বললে, বাবা, এই দ্যাখো?

দেখতে পাওয়া গেল, তার পেছনটা ছি'ড়ে একেবারে ক্ষতবিক্ষত হয়ে গেছে। বাবা হো-হো করে হেসে উঠলেন, বললেন, বাঃ, বেশ তো হয়েছে, মণ্ট্বাব্র যা গরম, এবার থেকে দ্টি জানালা হয়ে গেল, বেশ তা হল। এবার থেকে হ্-হ্ করে কেবল বাতাস আসবে আর যাবে, চমংকার, না?

মণ্টু সকল ব্রটি-বিচ্ছাত ভূলে ব্রিধ-মানের মতো হেসে উঠল; নার তার ভাঙা দাঁত বের করে আরও বেশি করে হাসতে লাগল, বাবাও সে হাসিতে যোগ দিলেন। আমাদের সামান্য বাসা এক অসামান্য হাসিতে নেচে উঠল, গুম্গুম্ করতে লাগুল। হাসল্ম না ক্লেক আমি। শুষ্কু মনেমনে উপভোগ করলুম। ভাবলুম, আনস্বে,
এই নির্মাণ মহুত গালি বিদি দীবাশ্যামী
হয় তবে খালির আর অল্ড থাকে না। মান্ব
মান্ব হরে ওঠে।

বাবার পরবর্তী অভিযান হল রামানরে। একখানা পিড়ি পেতে দেয়ালে ঠেস দিয়ে হাসিম্বে বাবা বললেন, আল কী। রাধবে গো?

মুখ ফিরিরে অজন্ত হেসে মা বললেন, তুমি যা বলবে!

কাবাকে এবার ছেলেমান্বিতে পেরে বসল। আমি যা বলব ঠিক তো: বলি, রাধ্বে মাংস, পোলাও, দই, সন্দেশ ? র্থিবে, চার্চান, চচ্চাড়ি, রুই মাছের মন্ডো? রাধ্বে ? রাধ্বে আরও আমি যা বলব?

—ও মাগো! থাক থাক, আর আর:
বলতে হবে না! মা দুই হাত তুলে মাথা:
নাজতে লাগলেন, থিলাখিলা করে হেসেউঠলেন।

र्शेंशातीत जना तरतीयि

রাজস্থানের প্রখ্যাত রাজনৈতিক ও সামাজিক নেতা স্বগতি শ্রীশম্ভনাথের... পোত শ্রীকেশবমোহন লাল হাপানীর . উপশমকারী একটি বনৌষ্ধি বিতরণ মধ্যে)। (দরিদ্রগণের করিতেছেন জনৈক সন্ন্যাসী শ্রীশস্ভ্নাথকে এই বনৌষ্ধ প্রদান করিয়াছিলেন এবং উহা ৪০ বংসরের অধিককাল ধরিয়া তংকতৃকি বিতরিত হইয়াছিল। তাঁহার এই স্বা**থ-**ু শেশহীন কমের জন্য তাঁহাকে **সর**কারী পেনশন প্রদান করা হইয়াছিল কিন্তু তিনি তাঁহার পৌত্রকে এই কার্যভার প্রদান क्रीतशा जनगाज व्यवसम्यन क्रातन। धथन তাঁহার পৌর এই কার্য সম্পাদন করিতে-ছেন এবং এই মহান কার্যে সাহা**ব্য** প্রদানের জন্য সং এবং ধনবান ব্যক্তি-ব শেদর নিকট আবেদন **জানাইতেছেন।** এই বনৌযধির <u>মাত তিন মালা **গহণেই**</u> প্রাতন রোগীসহ ব**হ, হাঁপানীর রোগ-**যন্ত্রণাভোগীর পীড়ার উ**পশম হইয়াছে।** উক্ত বনৌষ্ধির জন্য **রোগিব,স্প কেবল** ইংরাজীতে নিম্নঠিকানায় **আবেদন করিতে** পারেন :

শ্রীকেশবমাহন লাল

এইচ ১/৬ হামীরপরে রোড্
কিদোরাইনগর, কাপপুর ৷
চিকিৎসক এবং চিকিৎসা ব্যবসারীগপ
সহ রোগীবলেশর নিকট হইতে প্রাশ্ত সাহায়ে হাঁপানী রোগীগণের উপকারার্থে ১৯৬২ সালের পশ্চিমবণ্ডা সংশ্রা নিবন্ধভূত্তি আইনের অধানি নিবন্ধভূত্তি বাবা শ্রীশাভূনাথ সেবা কেন্দ্র কর্তৃক্তি ব্যাপার দেখে নার, দোড়ে গেল, দ্বজনের দিকে দ্ইবার চেয়ে তারপর মাকে ম্চকে হাসতে দেখে বললে, মাগো কী হরেছে? অমন করে হাসছ কেন? বাবা তোমায় কাতৃকুতু দিয়েছে?

— আরে, নারে না, অত পাকামি করতে হবে না। খেল গে যা—বাঁহাত তুলে মা বাইরের দিকে দেখিয়ে দিলেন।

একট্ প্রকৃতিস্থ হয়ে বাবা আবার বললেন, আছো, তোমাকে যেদিন প্রথম দেখতে গিরেছিল্ম সেদিনের কথা মনে পড়ে?

একটাও চিন্তা না করে মা বললেন, আমার ওসব মনে-টনে নেই।

—আহা, বিলের ধারে মাঠে সেই যে গোর চরাচ্ছিলে?

মার চোথ বড়ো হরে গেল। ওমা, আমি কি ভদ্দরলোক নই গো যে মেয়েমান্য হরেও মাঠে-মাঠে গোরু চরাব?

" গর চরানোটা কি অপরাধ? দরকার হলে এখানে-দেখানে একট্ নেড়েচেড়ে দিলে দোষ হয়? আসল কথা তোমার সবই মনে আছে, ইচ্ছে করেই কেবল শা-তা বলছ।

—হ্য়াঁগো হাাঁ, সব মনে আছে, সব মনে আছে!

भूमद्र भूमद् एटरम वादा दलरानन, स्नोदका থেকেই দেখতে পেল্ম বিলের ধারে কে একটি মেয়ে দাঁডিয়ে আছে অন্ধকার রাত্রে, একটিমাত্র দীপশিখার মতো। নৌকো থেকে নেমেও দেখলমে, সেই মেয়ে তার জায়গা থেকে এতট্কুও সরে দাঁড়াচ্ছে না বা পাখির মতো বাড়ির দিকে উড়ে চলে যাচ্ছে না, বরং আমাদের দিকে সোজাস্তির চেয়ে আছে, অপরিচিত বলে এতটকু লম্জা নেই, কাছে গিয়ে দেখলুম ঠিক যেন দেবী-প্রতিমা, त्थाला भारते करलत थारत भानिस्त्राष्ट्र राम. গভীর বর্ষায় আরও মানাবে। তারপর এক ভাঙা চেয়ারে বসে ভাঙা পাখার বাতাস থেয়ে যাকে দেখলমে সে-ও একই মেয়ে, কিশ্তু এবার বোবা, লক্ষাবভী লভার মতে লম্জায় একেবারে মাটির সপে মিশে যাচ্ছে। --বাবা হা-হা করে প্রাণখ্লে হাসতে লাগলেন। কতকক্ষণ পরে বললেন, তোমার कौ ठाइ---वनतन मा?

—আমার জনো একখানা রালার কাপড় এনো।

-- লাল রঙের?

---शौ।

ভারপর কার জনো কী এনেছিলেন ধবর রাখিনে, কিন্তু নিজের জনো ছ'আনা দামের এক জোড়া চটি এনেছিলেন দেখেছি। মাত্র ছ'আনা দাম। বাবা এ নিয়ে অনেক গর্ব করেছেন, কিন্তু একেবারে কাঁচা চামড়া বলে কুকুরের আশংকাও করেছেন।

কুকুরের কথা জানিনে, তবে কয়েকদিন পরেই জুতো-জোড়ার এক পাটি কোথায় অদৃশা হয়ে গ্রেল ক্রেউ বলতে পারে না। আশ্চর্য ৷ পর্যাদন দুপুরবেলা রেলওয়ে ইয়ার্ডের ওপর দিয়ে যেতে কার ডাকে মুখ ফিরিরে তাকালুম। দেখি শশধর ড্রাইডার হাত তুলে আমায় ডাকছে। এখানে ইউনিয়ন করতে এসে আমার একেবারে প্রথম আলাপ হয়ে-ছিল এই শশধর ড্রাইভারের সংগ্য। সেদিন সংগ্য ক্যারেড বিশ্বনাথ ছিল। তথন গদ্ভীর ভাবে শশধর বলেছিল, দেখুন বিশ্ববাব, সায়েব সেদিন আমায় ডেকেছিল।

---কেন?

শালা বলে কি না, জাইভার, ইউনিয়ন ছেডে দাও, নইলে মুদিকল হবে বলছি। শ্বনে মেজাজটা জবর খারাপ হয়ে গেল। মুখের ওপর বলে এল্ম, সায়েব আমার ইচ্ছে আমি ইউনিয়ন করব। তুমি যা করতে পারো করো। এই বলে তথ্নি ঠিক এইভাবে চলে এলুম। আসবার ভাগ্গাটা দেখাবার জন্যে শশধর হে°টে অনেক দ্র প্য-িত গেল, তারপর আবার যথাস্থানে ফিরে এল। আমার প্রথম অভিজ্ঞতার সেদিনের দুশ্যটি আমার চমৎকার লেগেছিল। আমার সেই মধাাহের ট্রাক্টর-স্বপেনর ভিত পাকা করতে আরম্ভ করলম সেই দিন থেকে। এ কথা বলাই বাহ্লা যে ইভিহাস যেমন আমাদের দিক নেয়, আমিও ইতিহাসের দিক নি**ল্ম। আমি হাত প্রসারিত করে** দিল্ম জনতার দিকে, তাদের উষণ অভিনন্দনে আমি ধন্য হলাম। তাদেরও ধন্যবাদ, যারা আমাকে আমার এই অসহায়তার কণ্ণন থেকে মান্তি দিয়ে গেছে। ধনাবাদ, ধনাবাদ! সেবারত নয়, মানবতা নয়, স্বার্থপরতা অথচ শ্রেণ্ঠ উদারতা নিয়ে এক ক্লান্তিহীন বৈজ্ঞানিক অনুশীলন।

আমি শশধরের কাছে গেল্ম। শশধর বললে, উঠ্ন। সে আমাকে তার এঞিনে উঠিয়ে নিল। তারপর একটা বিড়ি হাতে দিয়ে বললে, খান সংকুমারবাব।

বিকেলের দিকে একটা গ্যান্ডের সংগদেখা করতে গেলমে। একটা মাটিং আরেঞ্জ করবার ছিল। ওরা আমার দিকে কেউ তাকাল, কেউ তাকাল না। অদ্বে এঞ্জিনের সামান করতে। পরেন্টস্মান-গানারদের চিংকার আর হাইসিল শোনা যাছে।

ইয়াসিন এতদিন পরে ছাটি থেকে ফিরছে দেখলাম। আমাকে দেখে কাজ থামিয়ে বললে, ওরা কীবলছিল জানেন? হেসে বললাম, কী?

বলছিল, আপনি একটা ব্যারিস্টার হলেন নাকেন?

সকলে থো-হো করে হেসে উঠল, আমিও হাদতে লাগ্যে।

মট সংরেণ্ট গম্ভীরভাবে বললে, তোমার কাছে আমাদের আর একটি নিবেদন আছে, ইয়াসিন মিঞা! আমরা সবাই মিলে চাঁদা তুলে তোমার ইম্কুলে পড়াতে চাই।

এবার হাসির পালা আরও কোরে <u>দ্রকাজ</u> ফেলে:সবাই বসে পড়ল:

ang manggan ang kalanggan ang kalanggan kalanggan kalanggan ang kalanggan kalanggan kalanggan kalanggan kalang

ইয়াসিন রেগে গেল, বললে, বাং, বাং, বাঃ, খালি ঠাট্টা আর ঠাট্টা, না! চারটে প্রসা দিয়েই খালাস, না? চারটে পয়সা দিলেই বিশ্লব হবে, না? বিশ্লব আকাশ থেকে পড়বে, না?—একট, শাশ্ত হয়ে ইয়াসিন শেষে একটা গলপ বললে। গলপটি হচ্ছে এই: সে এবার বাড়ি গিয়ে তার গাঁয়ের চাষীদের একটা বৈঠকে যোগ দিয়েছিল। সেই বৈঠকে যে লোকটা বস্তুতা করেছিল, সে হঠাং তার দিকে চেয়ে বললে, ভাই ইয়াসিন, ভোমাদের ওখানে ইউনিয়ন নেই? ইয়াসিন ব্ৰুক ঠকে বললে, আলবত আছে। এবং সংগ্যে সংগ ব্ৰুপকেট থেকে একখানা রসিদ বের করে দিল। লোকটা তখন ভয়ানক খ্ৰিশ হয়ে বলেছিল, তুমি যে আমাদের কমরেড, ভাই ইয়াসিন! তুমি যে আমাদেরই। ইয়াসিন তখন বিচক্ষণের মতে। হেসেছিল।—দ্নিয়ার স্বাই এরকম একজোট হচ্ছে, আর আমরাই কেবল চুপ করে বসে থাকব, না? চারটে পয়সা দিলেই খালাস, না? বলতে বলতে ইয়াসিনের ঘমাস্ত মাখ আরও উল্জান্স হয়ে উঠল, কিন্তু পরক্ষণেই আবার সে কাজে লেগে গেল, গভীর মনোযোগে ঠক্ঠকা শব্দ করে কাজ করতে লাগল।

আমি ফিরে এল্ম। সাম্বাদের গর্ব, তার ইপ্পাতের মতো আশা, তার সোনার মতে। ফসল বুকে করে আমি ফিরে এল্ম। এখন সন্ধ্যা হয়ে আসছে। ঝিরঝিরে বাতাসের সংখ্যা শেড-ঘর থেকে তেল আর কাঁচা কয়লার ধোঁয়ার গ**ন্ধ** আসছে বৈশ। আমি বাঁদিকে শেড-ঘর রেখে পথ অতিক্রম করতে লাগল্ম। একটা এগিয়ে দেখি লাইনের ওপর অনেকগর্বল এঞ্জিন দাঁড়িয়ে আছে, মনে হয় গভীর ধ্যানে। বসেছে যেন। আমার কাছে ওদের মান[ু]ষের মতে৷ প্রাণময় মনে হল। এখন বিশ্রাম করতে বসেছে। ওদের গায়ের মধ্যে কত । রক্ষের হাড় কত কলকব্জা, মাথার ওপর এই এক্টিমান্ত ারখ, কিন্তু কত উজ্জাল। মানুষ **ওদের** ল**াউ**-কতা। হাসি নেই, কাল্লা নেই, কেবল **কমী**র মতো রাগ। এমন বিরাট কমী পুরুষ আর আছে! সত্য কথা বলতে কৈ, এত কল-কন্জার মাঝে, এতগ**ুলি এঞ্জিনের** ভিতর দিয়ে পথ চলতে আমার শরীরে কেবল একটা রোমাণ্ড হল। আমি হতভদ্ব হয়ে তাদের মাংসহীন শরীরের দিকে হাঁকেরে চেয়ে ইল্ম।

তারপর সংধ্যার অন্ধকারে বাসায় ফিরে রইল্মে।

করেকদিন পরে কোনো গভীর প্রত্যুম্বে একটি ই'দ্রে-মারা কল হাতে করে আমার বাবা রাস্তার মাঝখানে দাঁড়িয়ে বোকার মতো হাসতে লাগলেন। দার্ণ খ্লিতে নার্ আর মত্ত্ব তার দ্ই আঙ্ল ধরে বানরের মহো লাফাচ্ছিল। কয়েক মিনিট পরেই আরও অনেক ছেলেপ্লে এসে জ্বটল। একটা কুকুর দাঁড়াল এসে পালে। উপস্থিত ছেলেদের মধ্যে যারা সাহসী তারা কেউ লাঠি, কেউ বড়-বড় ই'ট নিয়ে বসল রাস্তার ধরে।

ব্যাপার আর কিছ্ইে নর, করেকটা ইন্দুর ধরা পড়েছে।



"You begin by killing a cat and you end by killing a man."

ছেলেটা মরবে, লাইনে কাটা পড়েই মরবে একদিন। হয়ত আজ কিংবা কাল।

নাম ওর জলকু। বছর বারো বুঝি বয়েস। এথানকার দেহাতী ছেলেদের মতনই দেখতে। গাঢ় কালো রং, নরম সিমেন্ট কালি মেশান কালচে রং-এর একটি ছাঁচ যেন। এখনও কাঁচা, হাত দিলেই দাগ পঙ্ যাবে। এমন-ই নরম কাদাটে কোমল ভাব সারা গায়। মুখটা গোল ফোলা ফোলা গাল। চিক্কের ডৌলট্কু এখনত ফোটেনি, কারিগরের হাত পড়োন বোধহয়, নাকটা মোটা, বসা, পরে, মোটা মোটা ঠেটি। জোড়া খন ভুরুর তলায় বড় বড় দুটো চেথ। কেমন একটা উথলে ওঠার ভাব. কালো শা•ত, কপাল আছে কি নেই বোঝা যায় না চট করে। মাথ।ভতি একরাশ চুলে শ্রপাল ঘাড়, কানের অর্থেকিটা ঢাকা পড়ে থাকে। ছেলেটা একেবারে জংলী। এখানে থেকে থেকে এদের মতনই হয়ে গেছে। গায়ে জামা দেয় না, পায়ে জাতো নেই। মান্ল গায়ে নেংরা একটা ইঞ্জের পরে সারাদিন ওই রেল-লাইনের কাছে।

ছেলেটা মরবে; লাইনে কাটা পড়েই মরবে একদিন। হয়ত আজ...কিংবা কাল। এই এক নতুন খেলা শ্ব্ৰ; ইয়েছে হার। আগে ছিল না।

কিছ্মিন দেখতাম টিলার ওপর উঠে দাঁড়িয়ে থাকত। চারপাশে তাকাত। শেষে বেল-লাইনের দিকে তাকিয়ে বসে থাকত, কি যেন থোজবার চেন্টা করত, দেখত।

ঠিক জানি না কেন, হয়ত টিলার ওপর খ'জে না পেয়ে কিংবা হয়ত ফ'জে পেয়েই টিলার ও-পাশটায় নেমে ফিতে লাগল। ও পাশেই রেললাইন। গইনের পর আবার টিলা। এখানটায় এই কম নু-পাশে, প্রায় বালিয়াডির মতন দুই টলা, মাঝ নিয়ে পথ কেটে চলে গেছে রেললাইন। পূব এবং পশ্চিমে বেশিদ্র ছড়িরে
পড়েনি টিলার চল। শ' দেড়েক গজ বড়জোর, তারপর মাঠ আর মাঠ, অম্পণ্ট
জংগল। প্বে একটা ছোটোখাটো নদার
প্ল। প্লের এ-পার থেকে বেললাইনটা
ধন্কের মতন বে'কে এসে টিলার কাছাকাছি সোজা হয়ে গেছে।

জলকু ঢিলা থেকে নেমে রেললাইনে চলে যেতে শুরু করেছিল আজকাল। আর নতুন যে-থেলা থেলতে শুরু করেছিল, তা বাস্তবিক নতুন নয়, কিন্তু দিনে দিনে কেমন এক ভয়ংকর হয়ে উঠেছিল।

ছেলেবেলায় কে না এই খেলা থেলেছে। রেললাইন থেকে পাথর কুড়িয়ে আমারও লাইন তাক করে পাথর ছুট্ডেছি: দেখেছি, টিপটা কি রকম : হাতেব জোর কতটা, লাইনের গায়ে পাখরের চোট লেগে ফিনকি জরলে কিনা, শব্দটা কেমন হয়। আমাদের এ-খেলা ছিল কদাচিতের, সামান্য সময়ের। কিন্তু জলকুর কাছে লোটা রোজকার হয়ে উঠল। আজকাল প্রতিদিন সে এই খেলা থেলছে। প্রতিদিনই। আর এই খেলায় তার ক্লান্ত নেই, বিরক্তি নেই, খণটার পর ঘন্টা বৈশাখের প্রচাড রোজনুরে, তাপে, লা্ব্য়ে জলকু পাথর ছুট্ডেছে, রেলা্বার তাক করে। আর প্রায় রোজই ওকে ধরে আনতে হয়। আমায়।

আমি ছাড়া জলকুকে ধরে আনার কেউ নেই। ওর বাবা পংগা। ঘরে আছেন কি নেই গোঝা যায় না। এক-এক সময় খেপে গিয়ে যখন চে'চাতে শ্র, করেন, গালিগালাজ ছোটান—তখন বোঝা যায় আমার পাশে ও-বাড়ির কোনো ঘরে একজন পরে, মমান্য আছে। নয়ত জলকুদের বাড়িতে শোনার মতন গলা আর নেই। জলকুর মাকে আমি কমই দেখেছি। চেহারা ম্য কিছাই ভাল করে দেখতে পাইনি, ধারণাও করতে পারি না সেই অবয়ব, অভান্ত ঝাপসাভাবে যে-ট্কু আকার তৈরী করতে পেরেছি, ভাতে মনে হয়—জলকুর মা রোগা, রুশন, কালো অভান্ত

লাক্ষ্ক বা লোক্ডা, প্রায়া। ম্ম্ব্র্ পশ্র মতন পড়ে পড়ে ধ্কেছে। রামাঘর আর উন্ন, মণলাবাটা, ঘরথাটা, কুরাতলার বসে বাসন মাজা—সংসারের এই শ'খানেক অবশ্য-কর্তব্যের মধ্যে জলকুর মা-র ভেনর শ্রহ হয় এবং শ্রামীর অসাড় দ্রগিথ শ্রীরে মালিশ মাখাতে মাখাতে সারা-রাত্তের ক্হেশে ধ্রেম ত্লে পড়ে দিনটা ভার ফ্রিয়ে বায়।

জলকুর বাবা কি রোগে পণা, হরেছেন আমি জানি না। শুনেছি, বছর দুই ধরে ভন্রলোকের এই অবস্থা। ডান **পাশটা পড়ে** গেছে একেবারে, শ্বিকয়ে চিমসে গেছে। অনাচারে কি? হতে পারে। অত্যাচারে কি? অসম্ভব নয়। কোনো সাংখাতিক আঘাতের পরিণাম যদি হয়—হবেও আমি জানি না। জলকুর বাবার সংগো আমার দু-একবার যা সাক্ষাং আমরা দ্-জনেই স্বল্পভাষী হয়েছি। ভদ্ন-লোকের সেই দ্র্লভ গুণ আছে দ্ভাগ্যের কথা ফেনিয়ে ফাঁপিয়ে বলতে যারা চায় না, আমার সহান্তৃতি পাবার আশা উনি করেননি, ইতিব্তও শোনাননি প্রপারে। শুধু মাত্র বর্তমানের **অবম্থাটা** দ, এক কথায় বলৈছিলেন।

সমবেদনা জানাবার ভদ্রতা **আমার জানা** ছিল। আমি বেদনা পেরেছিলাম নিশ্চর। কিন্তু ভদ্রলোকের চেহারা, মুখ, বিছানা, ঘর, ঘরের আবহাওয়া আমায় এত বেশি অম্বস্থিত দিছিল যে, আমি যতট্কু সম্ভব কম কথা বলে, যত তাড়াতাড়ি সম্ভব ওই ঘরের বাইরে বেরিয়ে আসতে চাইলাম।

কাজেই আমরা কথা বলেছি অব্দ্রু নিছক কাজের কথা ছাড়া অনা কথার যাইনি: কাজের কথাও অবশ্য সামান্য— থরের ভাগ-বাটরা, ভাড়া, ভাড়ার তারিশ্ব— এমনি খুর্নিটনাটি।

জলকুদের একতলা ছোট টালি-ছাওয়া বাড়ির পশিচ্মটা আমার, ভাড়া পাওয়া। প্ৰটা তাদের। আমার এলাকায় একটি মাঝারি, অনাটি ছোট ঘর, সামনে পিছনে সামানা বারান্ডা, খাপরা-ছাওয়া একফালি রায়াঘর।

একই বাড়ির আধা-আধি ভাগ-বাটরার মধ্যে দেওয়াল মাটি ছাদের সংযোগ ছাড়া বাকি যেটকে সংযোগ তা ছিল জলকুকে নিয়ে—এবং জলকুর পিসিকে যদি ধরা যার



তবে তাকে নিয়েও। তবে সে-ত সামানা, অতি সামানা।

জ্ঞাকুর পিসির পরো নাম বোধহর
তর্মাতা। তর্ বলেই ভাকতে শ্নতাম।
তেরা রোগাটে গড়ন। মুখের ছাদিটি লান্বা
ধরণের। গায়ের রঙ মাজা কালো। সাপের
মতন লান্বা বেণীটি খোপা থেকে খনে
পিটের ওপর দ্যাত। মিলের শাড়ি, সম্তা
কাপড়ের ভামা, তর্র বয়েস কৃড়ি
ছাডিরেছিল অনেকদিন। বিয়ে হয়নি।
একটি দুটি বসল্তের না-মেলানো দাগের
সলো হতাশা এবং কাতরতা মাখানো সেই
মাথ কেমন ধেন বিশ্ব শ্না অবোধ দেখাত।

থামার আর তর্র মধ্যে মেলামেশা গলপগ্রের ছিল না। দেখা হলে চোখাচোখি হত, জলকর খেলি করতে এসে বড় জার শ্ধোত, জলকুকে দেখেছেন নাকি?
বা আমি যখন রাতে গ্রামোফোন বাজাতাম,

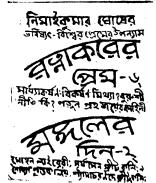
—ওদের তরফের বারাদ্যার দাভিয়ে ও ল্নেত। পরের দিন দেখা হলে বলত, ওই পানটা আরু একবার দেবেন? বড়াভ ভাল গান। কথনও কথনও আমার ভাকে আসা বংলা মাসিক পত্রিকা দুটো চেয়ে নিয়ে যেত, গলপ পড়তে।

গংপ করতে, গান শানতে তর্ এলে আমি বোধহয় অখাশী হতাম না।

পরে সে-কথা ব্রেছি। আর যখন কথাটা প্রথম করে ব্রেছি, তখন থেকে জলকু তার সবলৈশে নতুন খেলা শ্র্ করল।

জলকু অনেককণ পর্যাত উধাও।
বাড়িতে নেই, সামনের আগাছা-ভঃ
বাগানটায় নেই, কুয়াতলার মাঠে, কোখাও
না।...ভারু বাইরে এসে খ্রুছে, ডাক্থে
ভালকু জলকু। বাড়ির মধ্যে বসে সে-ডাক

বিবাহের জন্য বাড়ীভাড়। বিবাহ উৎসব বা অম্প দিনের জন্য বাড়ী ভাড়া। দেববাব, ৫৫-০৭২২, ৩৫-আর, রাজা নবকৃষ্ণ গুটা, কলি-৫।



আমি শ্নতে পাই। প্রথমটায় গরজ দেখাতে ইচ্ছে করে না, ভালোও লাগে না উঠতে।

ভাক যখন বাড়তে বাড়তে ঘুরে ফিরে আমার বারাদার কাছে এসে পেছিয়, উঠতে হয় আমায়। আমি জানি জলকু কোণায় আছে।

সমস্ত ব্যাপারটাই **যেন ছক-আঁটা**। জলকুর পিসি খ্র'জবে ডাকবে, আমি প্রথমে গা করব না, পরে সর্ব বাাকুল গলার ভাক অন্নয়ের মতন আমার বারান্দায় এসে থামবে, আমি উঠব, বিরক্তিতে অপ্রসাম মনে মাথার ওপর বৈশাখের খর রোদ, অসহ্য গরম, আগ্লে-হাওয়া, আক্তে আকেত আমি হাটব, বাড়ির প্রাচলের ফাক দিয়ে টি**লার** কাছে এসে দাঁড়াব, ওপরে উঠব, সতক পায়ে, মুখে ত॰ত বাতাসের ঝাপটা লাগবে, ফটকটে রোদের ঝাঁঝে তাকাতে পারব না টিলার ওপর উঠ*লেই* ভাল করে, তব্ নীচেতে রেললাইনের পাব, দেখতে হিলপারের ওপর দাঁড়িয়ে জলকু कृष्टिः इन्प्राहः। आन्न गा, प्लाप्टल रेट्अइ, চুলে মুখ ঢাকা পড়ে গৈছে : ভাৰ্ত ক্ষিপ্ৰতা এবং অবাৰ্থ নিশানায় জলকু রেললাইনের লোহার ধারালো হিংস্র উম্জন্সতাকে বার-বার আঘাত করছে ধাতব, বেস্বরো একটা আওয়াজ উঠছে, **ट**१-५१-५१ ।

ভলকু। এই জলকু।' কাছে গিয়ে জেরে এক ধ্যক দেব, ভলকুর একটা হাত ভোরে চেপে ধরে। ডান হাত। জলকু প্রথমে হাত ছাড়াবার বার্থ চেন্টা করবে। শেষে চোথ ডাল তাকাবে। সে জানে আমায় দেখতে পাবে। মূথে কোথাও তার এতট্কু বিক্ষম একট্কু ছায়া পড়বে না। আমি জানি, ঘোরভাঙা দ্টি গভার অবসম লালতে চোথ ছাড়া আর কিছু দেখতে পাব না, তত্ত, ঘর্মান্ধ, অথচ নরম পিছিল একটা হাত আমার মুঠোয় শক্তবেধ ধরা থাকবে।

'বাড়ি চলো।' গলাটা আমার রুক্ষ বিরঞ্জ কঠিন, 'তোমায় রোজ বলি এভাবে একা লাইনে এসে দাঁভিয়ো না—সব সময় গাড়ি আসছে বাচ্ছে—কোনদিন কাটা পড়বে লাইনে।'

জলকু কথা বলে না। আরও ঘামে, মুখ মাধা আরও গোঁজ করে আমার হাডের টালে-টানে টিলার ওপর উঠতে থাকে।

মাথার ওপর আকাশ ব্দল্ভে, পাথর আর কাকরে-বাগি থকরক করছে, গরম হাওয়া ঝাপটা দিয়ে বয়ে বাজে গায়ে ছাবল দিয়ে, দ্রের পুলের কাছ থেকে রেল-লাইনের ধন্কের মতন বাকটা বিরাট এক তলাোয়রের মতন ব্যক্টা পানানো, ক্রে-দীত আভায়।

পুমি এভাবে আর এসো না জলকু। কখনও না।' টিলার ওপরে উঠে এসে আমি বলি। হাতটা ছেড়ে দি ওর। করেক পা দ্রেই আমাদের বাড়ির পাঁচিল।

জলকু কথা বলে না। আমি জানি, ললকু আমার নিষেধ শ্নবে না। ও আবার আসবে। হক্ষত আজই দুপ্রের, কোনও ফাকৈ ছাড়া পেয়ে। কি সর্বনেশে খেলায় পেয়েছে ওকে। ছেলেটা মরবে, লাইনে কাটা পড়েই মরবে একদিন। হয়ত আৰু...কিংবা কাল...।

সেদিন একটা লোক জ্টেছিল। আমার এলাকার বাগানটাকু নিয়ে অনেক বেলা প্রশিত থেটেছে। বাথারির ভাঙা বেড়াটা ভেঙেই ফেললাম একেবারে। আর দরকার নেই। কিছু আগাছা জমেছিল, রোদের ভাতে পুড়ে পুড়ে ছড়িছেল, সে-সর পরিক্টার করা হল। বেলফ্লের কেয়ার জ্বে গাছের ভলা টিপ-হল্দের ছোট ঝোপের মাটি খ'ড়তে আর বারান্দার টবের ফ্লেনাছ কটাকে পরিক্যা করতে করতে বেলা অনেক হল। সনান করতে যাব, এমন সমায় জলকুন প্রিসর গলা, 'জলকু-জলকু।'

় ডাকটা পাঁচিলের শেষ পর্যক্ত চলে গেলা ওপাশে কদম গাছের তলা দিয়ে কেড় খেয়ে পেয়ারা ঝোপ, বাতাবি লেব আম-গাছের ছায়া ঘুরে আমার বারান্দার কাছে এসে থামল।

'পালিয়েছে?' আমি বললাম, বিরক্ত গলায়।

ক-খন। আগত্ব আজ , হারামজানা গায়ের ছাল ভুলব। দড়ি দিয়ে বেশ্ধে রেখেও নিম্তার নেই।' তবু বালে ক্ষ ক্ষ ক্রছিল।

'বে'ধে রাখাই উচিত। রোজ রোজ এভাবে রেললাইনে পালিয়ে যায়। একটা বিপদ ঘটতে কডক্ষণ--ওইটুকু তো ছেলো।'

'মরবে; মরবে এক দিন হৃতভাগা। মরুক, আমারও হাড় অলুড়োয়।' তর আজ অসম্ভব চটেছে। কথার ভাবেই বোঝা মাজিল।

চটিটা পারে গলাতে গলাতে আমি বললাম, 'আর কিছা না, এখান থেকে দেখাও যায় না, লোক নেই জন নেই, ফাকা রেললাইন...ভয় হয়।'

আমার অগ্যেছালো কথা, তর্ব তিজ্ বিরক্ত ভাব, সব মিলে-মিশে জলকুর একটি ভবিষাং পালিতি যেন দ্বাজনের চোথেই লহমার জনো ভোসে এল। অলপ একট, নীরবে দাঁড়িয়ে থাকলাম আম্রা। তারপর আমি নেমে গেলাম বারান্দা দিয়ে।

বৈশাথের বর্ঝি শেষ স্পতাহ চলছে।
অসহ্য গরম। মাধার ওপর চোখ তোলা বার
না। গলা তামার মতন প্রতপত আকাশ বেহে
আগ্রেন ঝরে পড়ছে। খাঁ খাঁ করছে
চারপাশ। তে'তুল কি কঠিছের ঝোপগ্লো কাঠ হয়ে দাড়িয়ে আছে মাঠে। একটি
কাক কি চড়ুইও ভাকছে না। টিলাটা ফেন
প্রত্তে, পাথরগ্রেলা রোদ আর তাতকে
দ্বগ্র করে ছুড়ে দিছে চোখে, গায়।

আমার চোথ জনালা করছিল, নিশ্বাস অসহা গরম, কানের পাশ দিয়ে লুয়ের ইলকা বয়ে যাচেছ।

জলকু একটার পর একটা পাথর কুড়োচ্ছে রেললাইন থেকে আর ছ'ড়ুছ ছ'ড়ে মারছে রেললাইনে। ছেলেটা ফেন পাগল হয়ে গেছে আজা। কিসের এক অদ্মা আজোশে তাকে জ্ঞানহারা করেছে। আদ্র গা, ছোট একট্ ইজের, উলোম পা. জ্ঞিপারের ওপর দাঁড়িরে ধারালো শব্ পাধর তুলে নিচ্ছে মুঠোয় আর পলকের মধ্যে হাতটা অসম্ভব কঠিন, হিংস্ল, উম্মন্ত ভাগতে ওপরে তুলতে না তুলতেই পাশ কাটিয়ে প্রাণপণে ছ'্ডে মারছে। ইম্পাতের মস্ণ চকচকে একটা সাপ যেন এই অর্থহীন ছেলেখেলার আঘাত সরে যাচ্ছে; গ্রাহা নেই।

আমার হঠাৎ মনে হল আজ, জলকু অন্য কিছুকে তার ওই অব্ধ দানবীয় আলোশে ক্ষতবিক্ষত করে মারতে চাইছে। কিন্তু কাকে?

কাকে ?

কোন্ অণ্ডুত কোত্হলে জানি না—
আমি চারপাশে একবার ভালো করে
তাকিয়ে দেশলাম। সমস্ত জায়গাটা নিজনি,
ছায়াহীন। যা খাওয়া লোহার বেস্রা ভাঙা
ভারী শব্দ শব্ধ। মাঠের পর মাঠ পোরুয়ে
বয়ে আসা ল্-য়ের ঝড় বইছে, থেকে থেকে,
অতি ছতু বাতাস কেটে এগিয়েয় যাওয়ার
সেই সোঁ সোঁ গর্জান, এই আছে, এই নেই।
প্লের কাছে রেললাইনের প্রো বাঁকটা
চোথে পড়ে না। বাঁক যেখানে শেষ হয়ে
সোজাঁ হয়ে মিশে যাছে সেট্কু চোথে
পড়ে। ধারালো ফলার মতন দেখাছে
অংশটা।

অতি কণ্টে একবার মাথার ওপর চোখ তোলার চেণ্টা করলাম। পারলাম না। সমস্ত আকাশটাই যেন জনলত স্থা, আগনের ঝলসানিতে গনগনে আঁচের মতন রঙ ধরেছে শ্নো। টিলার পাথ্রে শরীরটা প্রভৃছে, কাঁকরের স্ত্প ধকধক করে জনলভে, রেললাইনের পাথর দ্র দ্রাফ্ত পর্যাত উচ্জনল, অসহ। উচ্জনল। আমার গাল মুখ প্ডে যাচিত্ৰ, চোথ ভাৱালী কর্মান্ত ভীষণভাবে, গলার কাছে ব্রুকের তলায় দরদর ক'র ঘাম ঝরছিল। আ**র চো**থে মুখে নাকে ঠিকরে এসে লাগছিল সেই দঃসহ তাপ। অন,ভব করতে পার্বছলাম—টিলা, পাথর লাইন, মাঠ, লোহা, ফিলপার সমুহত জার্গাটা এক ভয়ধ্কর দহ নের ঝলসানিতে জ্লছে জ্লুছে। অবোধা আকারহীন এবং নিম'ম কোনো হিংস্রতা তার বিরাট করতল আন্তে আন্তে মাঠো করে নিচ্ছে।

আচমকা মনে হল, জলকু এই সর্বাগ্রাসী বীভংস অবয়বহীন হিংস্ততাকে তার অতি পরিমিত অর্থাহীন সামর্থ্য দিয়ে আঘাত করছে, নিম্ফল আক্রোশে।

আমার মাথার শিরার রক্তের প্রবাহ হঠাং যেন জমে শক্ত হরে যাছে। অভ্তুত ভীত এক অনুভূতি হল আমার। মুহুত্তের লনা নিশ্বাস-প্রশ্বাস হারালাম, ডোখ একবারে ঠিকরে পড়ল, অসহ্য এক বাখা থাড়ের কাছে ছুরির ফলার মতন বিধে গল।

'জলকু এই জলকু।' জ্ঞান ফিরে পেয়ে গলকুর হাত চেপে ধরলাম।

টিলার ওপর দিয়ে যখন উঠে আসছি, লকুর হাত আমার হাতে. মনে হল, গীচের ইম্পাতের দুটি উষ্ফুকে হিংপ্র অক্সগর যেন তার অফারন্ত ওচ্চে হাসির আভা খেলিয়ে ঋকঝক করছে। বিদ্রাপে।

একটা গাড়ি আসছিল। প্লের কাছ থেকে ইঞ্জিনের সিটি বাজছে, বিরতিহীন কর্কশ তীক্ষা ধর্নি—বাতাস থেকে বাতাসে ছড়িয়ে তরগের একটি ক্ষীণ স্পদ্দন আমার কানে এসে লাগছে।

আর একটা, হলেই জলকু আজ লাইনে কাটা পড়ে মরত। যা বে'হা্শ বেধোর পাগল হয়েছিল আজ।

ছেলেটাকে অবধারিত মৃত্যুর হাত থেকে আমি বাঁচিয়েছি, আমি ভাবছিলাম, আর মনের তলায় তৃশ্তি এবং মমতার শ্বাদ মাথানো এক সুখু পাচিছ্লাম।

জলকু, আমি না এলে আন্ধ তুমি একটা কেলেঞ্জারি কান্ড করতে আর কখনও এভাবে এসো না ব্যবল...?'

জলকু তাকাল না. কথা বলল না. মাথাও নাড়ল না।... কেন জানি না. হঠাং ভীষণ একটা বিরক্তি এল ছেলেটার ওপর। হাত ছেডে দিলাম।

ছেলেটা মরবে, লাইনে কাটা পড়েই মরবে একদিন। হয়ত আজ...কিংবা কাল।

মাঝে জলকুর অস্থের মতন হল।

একদিন বিকেলে হার এল। দেখতে দেখতে
হাহ্ করে জার বাড়ল। পাঁচ পর্যাত
উঠে থামল তখনকার মতন। ছেলেটা
জারের ঘোরে অজ্ঞান, চোখ চাইতে পারছে
না। সারাটা মাখ ফলসে যাছে। এখানে
কাছাকাছি কোথাও ডাল্কার বিদা নেই।
আমার মনে হল, তাত-জার। জলপটি
দিতে বললাম তর্কে সেই সংগ্র আমার
হঠাৎ প্রয়োজনের হোমিওপ্যাথী বাক্কাথেকে
তখনকার মতন একটা ওম্ধ।

পরের দিনও জার থাকল। ভান্তার এল না বাড়ীতে। জলকুর বাবা জলকুর মাকে গালাগাল দিচ্ছিল, শুনেছি। ভান্তার না-ডাকার জনো নয়, অন্য কোনো প্রাসম্পিক কারণে বােধ হয়। জলকুর মা ধথারীতি উন্ন আর বাসন আর কাপড় কাচা নিয়ে বাসত থাকল, তর্ই যা বার দুই আমার কাছে এল ওষ্ধ চাইতে—এটা ওটা বলতে। রাতে যেন জলকুর মাকে কাঁদতে শুনেছিলাম। সম্ভবত বারান্দায় এসে অন্ধকারে বেচারী একট্ আড়াল দিয়ে কাদহিল।

জলকুর জনুর ছাড়ল পরের দিন জ্যোরে। একেবারে ছেড়ে গেল। গা ঠান্ডা।

তর্ এসে থবর দিল আমার। নিজের ওষ্ধের মহিমার অভিভূত হজিলাম। গ্ববোধ হজিল। খ্শী মনে ভূপত মুখে তর্ব দিকে চেরে থাকলাম।

তর অভিলের আগা দিরে আঙ্কুলে পাক দিছিল আর খুলছিল। হঠাং বলল জুরের ঘোরে বার বারই জলকু ভার মানিককে খুলেছে। বৌদ বালিশ এগিরে দিয়েছে, জলকু ভাই ব্রেকর কাছে জাপটে ধরে.....।

অসহা একটা রাগ মাধার মধাে দপ্র করে জনলে উঠল। তরকে কথা শেষ করতে না দিরেই বিশ্রী ইতর গলায় ধমকে উঠলাম, তবে আর কি—তোমার বােদির কাছে যাও। ছেলের জনর তিনিই সারিরেছেন।'

তর চুপ। তার মুখে চোখে গ্র**লার** স্বরে কি রকম এক অপরাধী ভাব ছি**নু**, আমি সহা করতে পারছিলাম না।

একট্ক্ষণ দাঁড়িয়ে থেকে তর্ চলে গেল ধারে ধারে।

যাক। মনের ঝাঁথ তখনও জামার
প্রেমাতায় রয়েছে। প্রায় স্থাগতো ছব
মতন বললাম, 'বৌদি বালিল এগিরে
দিরেছে--? তবে আরু কি, বালিল বুকে
জড়িয়েই তোমাদের ছেলে ভাই-পো
সার্ক।' বিদুপটা আমারই কানে মধ্
বর্ষণ করল।

জলকুর মানিক? সে ত জলকুর সোহাগের একটা ছাগলছানা। সেটা মরেছে। পাপ চুকেছে। বন্ধ জনাজন করত। আমার বহু পরিশ্রমের ফল, টবের দুটি ডালিয়াও একেবারে গোড়া পর্যাক্ত চিবিয়ে থেয়েছিল। অকালের ফ্ল, বছু সাধাসাধনা করে পেরেছিলাম।

গিরোছলাম সাত-সকালে সাইকেল ঠেলে, পাঁচ মাইলটাক পথ, এক বন্ধুর-সপো দেখা করতে। জৈপ্টের রোদে আর ফেরা গেল না সকালে। ফিরলাম বিকেলে। তথনও মাথার ওপর রোদ ছিল।

থানিকটা বিশ্রাম নিয়ে কুয়াতলায় স্পান করতে নামলাম। ঠাণ্ডা গা-জ্বজ্বালা ভল।

প্রকাশিত হল ঃ—

তর্ণ লেখক ও নিভাকি সাংখাদিক
শ্যামল চক্রবন্তীর

ছাপা হরফের হাট

কলেজ স্থীটের সাহিত্য তীর্থের প্রণাণা ইতিহাস

য় মূলা : ৫·০০ টাকা য় সাহিত্য সৰ্ম, ৬৫, মহাত্মা গান্ধী রোভ, কলি—৯ সমস্ত শরীর থেকে তাপ ধ্রে বাছে, মাথটো ঠাকা হয়ে আসছে শীতলতায়, ধুমাল ক্লাক্ত দিনপথতা জড়িয়ে ধরছে। আরাম অনুভ্র করতে পারছি। সাবানের ক্লোল গম্প উঠেছে খসের, মৃদু, সংলাণ।

জলকু—জলকু—।' তর্র গলা কানে গেল। আমি দ্নান করছি, কুয়ায় গা-মাথা জুড়ানো ঠাকা মিন্টি জল, সাবানের কেনার চমংকার গব্ধ, সামনে ছায়া নোমছে, ছালকা ম্লান একট্ রোদ, শালিক বসেছে কুয়াতলার পাড়ে।

'জলকু-জলকু।' ডাকটা বাড়ির সামনে পাঁচিলে পাঁচিলে ঘারে বেড়াল। কদম গাছের ডলা দিয়ে করবী ঝোপের কাছে গিরে থামল। ঘারে ফিরে বাড়াবি লেবর গাছের তলায় থমকে দাঁড়ালো। আদপাশ ঘারে কুরাডলার কাছাকাছি কোথাও।

ছেলেটা আবার পালিয়েছে। দনান শেষ হয়ে গেছে আমার। আমি জলকুর কথা ভাবতে ঘরের দিকে পা বাড়ালাম। এই দিদিন তাত জরে মরতে মরতে বে'চেছে। এখনও ও অসমুখ্য। দুর্বল, রুখন। এই অবস্থায় আবার পালিয়েছে। শায়তান ছেলে একটা।

ঘরে এসে কাপড়চোপড় ছাড়লায়।
কি থেয়াল হল, ধোপ ভেডে একটা পাজ্ঞায়
পরলায়। প্রায় আধ-কোটো পাউডার
ছড়ালাম গায়। কে জানে কেন, অভানত
আরাম লাগছিল, ভাল লাগছিল। নেটের
গোজাটা গায়ে দিলাম। চুল আঁচড়াছি-আারনায় মুখ দেখে দেখে বারান্দার কাছে
তর্ব গলা শোনা গেল, ভাইপোকে ডাকছে।
আাসলে ভাইপোর নাম ধরে আ্মাকেই
ভাকা, আ্মাকেই অনুন্য় করা।

মাধ মাছে, চটিটা পায়ে গলিয়ে বাইরে এলাম।

'পালিয়েছে?'

'হাাঁ, খানিকটা আগেও কঠাল গাছের তলায় দাঁড়িয়েছিল।... আমি ভ'বলাম....' তব্ব কাকুল উদিবংন চোথ ডুলে আমার দিকে তাকাল, বিকেল শেষ হয়ে গেল..... রোগা ছেলে...।' পেশছি।' বারান্দা থেকে নামলাম।
কলমগাছের তলার আসতেই কেমন এক
লালচে আভা দেখলাম পাঁচিলের মাথার
চুপ করে পড়ে আছে। যেন ফিসফিস করে
আমায় কিছু বলতে এসেছে। পশ্চিমের
আকাশের দিকে মাথা তুলে তাকালাম।
সুযাস্তের লংন শুরু হয়েছে। আকাশটা
সিশ্রের রঙে ধ্রে গেছে, সুযটা লাল,
টকটকে...সুযটা ঘন লাল, টকটকে....

হঠাং কিসের আকুলকরা ঠাণ্ডা কনকনে বাতাসের একটা দমকা এসে ঠিক আমার হংগিণেড়ে ঝাপটা দিল। ঝাপটা নর ছোবল। বুক থেকে পলকে সংপেব কিলবিল করা এক অনুভূতি মাথার নায়তে উঠে এল। আমার হংগিণ্ড সম্ভবত জীবনের ধ্বনিট্কু সমংমত্বাজাতে ভূলে গেছে। মাথা ব্রু হাত পাল্য আমাড়ে। আমি স্বাধারকার অন্ভূতি থেকে চ্যুত হলাম ক্ষেক মাহাত্তির মতন।

অলপক্ষণ। হাংপিন্ড এবার ভিয়াকর জোরে শব্দ করতে শ্রুর করেছে। বরফের বিরাট একটা দেওয়ালে কে যেন আমার পিঠ ঘাড় ঠোস ধরেছে। বিম্মাঝিম করছিল মাধা। দৃখিটা টিলার ওপর থেকে আর মন্ডছে না।

জলকু মারা গেছে, লাইনে কটো পড়ে
মারা গেছে অজ, অলপক্ষণ আগেই। কানের
প্রদায় ইজিনের তবীর সিটি, মালগাড়ি চলে
যারার শব্দট্ক ভেসে এল। তামি যথম
মানে করছিলাম একটা মালগাড়ি চলে
গেছে। চাকার বিশ্রী, জঘনা সেই শব্দটি
এখন আবার কানের প্রদায় শ্নিভিলাম।
চাকা চলছে...চলছে, ইম্পাতের হিংস্ততা
হাস্তে। ছেলেটা মারা গেছে। কেন হেন
আমার হঠং আজ মনে হল। আকাশে
টকটকে রক্তালা রঙ, স্যেটা লাল, অসহা
লাল আজ। ভয়ংকর উদ্ভব্ল।

আর আমার পা বাড়াবার মতন সাহস হচ্ছিল না। কাঠের মতন শস্ত হয়ে গেছে। সাডা নেই, আগ্রহ নেই, শাংধ্যাও এক ভরংকর আতংকর পীড়ন আমায় পিছা দিকে টেনে নিচ্ছে। বিহন্লতার এই উগ্রতা আমি দমন করবার চেণ্টা করলাম। কার্যকারণের স্বাভাবিক যুক্তি তৈরি করবার আপ্রাণ পরিশ্রম করছিলাম। কলকু কাটা পড়েছে, এ-কথা আমি কেন ভাবছি? কেন?.... সুর্য এইরকমই লাল থাকে, মেছে এমনই ঘন রঞ্জান্বর ছড়িয়ে পড়ে সুর্যাস্তবেলায়। হয়ত প্রতাহই। আমি চোথ তুলে দেখি না, বা দেখলেও তেমন করে দেখি না।

আমায় যেতে হবে। জলকুকে ধরে
আনতে হবে। সে মারাপ্তক খেলায় মেতে
আছে। বিকেল শেষ হয়ে সংকাপ প বাভিয়েছে। জলকুর মা রুটি সেকিছে
জলকুর জনো। তর্ব কুয়াতলায় গিয়ে
দাভিয়ে আছে গামছা হাতে—অপেকা করছে।জলকু ফিরে এলে হাত মৃথ ধ্ইরে
দেবে।

ব্রুকে পরেলাম আমি হাঁটছি আন্তে আন্তে, ভীত কারত অবসর পারে। টিলার দিকে এলিয়ে যাছি কমশই। ককিরের সত্পে ছোট ছোট আগাছার ঝোপের ওপর থেকে শেষ আলোট্কু মুছে গিয়ে ছায়। মেমেছে, মালার ওপর নিয়ে পারিরা ফিরে যাছে। কোথা থেকে একট্ হাওয়া বইতে মুর্ করেছে এভঞ্চা।

চিলায় ঠিক মতন পা দিতে পার্চছ না—পিছলে যাছে। আমার যেন একবিন্দ্র দক্তি নেই, হয় ঘুমে না হয় কতকাল অস্থে ভূগে আজ দ্বলি পায়ে পথ হটিতে নেমছি।

বারবার বাধা। মন পিছতু টান্ছে। জলক সামনে টানছে। কৈ সেন কানের কাছে ফিস ফিস করে বলছে, যেয়ো না—: পর্ম,ইাতে চোখের ঝাপসায় জলকুর মা যেন রাটির থালা হাতে এগিয়ে আস্ছে, তর্ডাকছে।

ছানি না কখন কোন করে টিলার
ওপর এসে দ'ড়িছেছি। স্থা সেই লহমায়
কোন দ্রেগরাতে ভূব দিতে যাছে যাবার
অংগ শেষ নিশ্বসের মতন হ এ কোনও
অনুশা দক্তি স্থাপিনত থোক দেয়তম
অলোট্কে চেলে ছিল। এই আলো অসহা
গাচ, আশ্বর্গরিক লাল। আমি জীবনে
ক্সন্ত কেই রঙ দেখিনি, কখনও নয়। এত
ঘন, জীবশত, ভাষাময় হতে পারে রঙ
অগ্ন জানতাম না। এখন জানলাম।
দেখলাম।

দেখল ম - টিলার তলায় অসাড় রেললাইন। এক ফলক সেই আলো। চিংপ্র
ধারালো ইম্পাতের ওপর মাঠো মাপের
জাহাগাটকোত আলোটা চিজা। আমাব
চোথের সাড়া পেযে আঙাল দিয়ে কি যেন
দেখাল তবেপর উড়ে গেলা। ছায়ার মাধা
ভালগে ল পাকানো কালো। জামাপর।
জলকর একটা চিলা। সাথারের গায়ে গায়ে
আরু সর নিশ্চিক। সাথারের গায়ে গায়ে

কত বাড় জানি না। ঘদ আন্দলাৰ। ছোট লাঠনটা নিন্মিয় দিখেছি কলন। অলপ টিম-টিমে আলো—তাও সকল পারছিলাম না। যুতটাকুই হোক আলো



াপরিবেশকঃ ঝার, ভি, এম এও কোং, ২১৭, বিধান সরণী, কলি-৬ কোন ৩৪-৩৮-৩৬ Grace

কিং এণ্ড কোম্পানীর সেকল শাখার। ঔষধ বিভাগ প্রতিদিন সকাল ৮টা হইতে রাত্রি ৮টা প্রমণ্ড খোলা থাকে বাকলেই মনে হজিল জন্য কিছে আছে
এ বৰে। অপলক বৃটি চোখ মেলে আমায়
দৈখছে।... বাতি নিভিন্নে বনভন্না অপকার
সামনে বসে আছি। আমায় বেন কেউ না
দেখে। নিজেকেও নিজে দেখতে চাই মা।

কত রাত জানি না। চারিবারে অখণ্ড
নিদ্রুখনে । অব্যক্তর । পাশের বাড়িতে
একটি মুম্ব্রি গলার প্রার শব্দেশী কারাটা শেরবারের রতন শ্নেছি অনেকক্ষণ। এখন
হরত মান্বটির গলা ব্লে গেছে। আর
শব্দ বের্ছে না। জলকুর গিসি হরত
ভলকুর বিছানা জ্বাপটে কলিতে কলিতে
ছ্মিরে পড়েছে। জলকুর ব্যবা—?
ভানি না।

আমি লেগে আছি। ঘ্টঘ্টে জন্মভার আমার ভরে রেখেছে। মনে হচ্ছে এই ল্কিয়ে থাকার খেলা আমি পরে, করেছি কতকাল আলে—আল আর তার ছিসেব পাওরা অসন্ভর; এই খেলা কতকাল খেলব তারও কোনো সীমা পাছিন। এই অন্ধ্কারের মতনই সব। আদি হারিরে গেছে; অনত আহে বলে মনে হর না।

এত অভিনর চন্তল কাতর বিধনন আগে কথনও হইনি। কেন? আজই বা আমার কি হল? জলকুর কাটা পড়ার সপো আমার সম্পর্ক কোধার?

ব্ৰের মধ্যে কী যে বশ্রপা আর কারা। কেমন এক মাধা-থেড়ির মতন হাহাকার। কিন্তু সব জয়ে শক্ত হরে রয়েছে। পাধরের মতন। একট্ও পলবে না. একট্ও না। অথকার কথন একট্ ফ্যাকালে হরে এলেছে। বাইরে হয়ত মাধা-রাতে চাঁদ উঠল। কোন তিথি আজ...?

বাইরে থেকে আমার নিংশক্ষে কে বেন ডাকছে: আমি জানি কে? অনেক্ষণ থেকেই ডাকছে: সে এক ভীষণ আকর্ষণ। প্রাণপণে বাধা নিয়ে যাছি:। কিন্তু চাঁদ উগছে বলে, আকর্ষণ আরও তীর হয়ে এদেছে। এমন কি হয়! হয়ত।

কদমগাছের পাতা সরসর করে
কাপতে, বাতাবিলেব্র তলার কাঠবেড়ালি
ছটছে...জলকুর দড়ির দোলনা ছি'ড়ে গেছে
কবে...তার মানিকের কঠিলপাতা জমে জমে
রোদে শ্কিয়ে খসখসে হরে উঠেছে। এখন
ব্বি হাওয়া ছিল একট্ব, শ্কনো কঠিল
পাতা খসখস করে উতে গেল।

আমার ধরে রাখতে পারল না খরের অংধকার। আমার ব্বু মন, পা—প্রতিটি ইন্দির যেন একবার শেষ চেন্টা করে সেই অন্তৃত যাদ্কেরী তীরতম আকর্ষণের কাছে নিজেকে সম্পূর্ণ করল।

বাইরে বারাক্ষায় এসে দড়িলাম। চাঁদ ওঠেনি—উঠবে। পা বাড়াতে গিরে ফালের টবে পা আটকাল। ছাত বাড়িরে পথ ঠাওর করতে গিয়ে মনে হল. এটা সেই ফাল ছে'ড়া ডাল চিবোনো ডালিয়ার। জলকুর মানিকের একটা বিব্রাট অপরাধের ক্ষাতি।

দ্ৰ'পা এগিরে বারাক্ষার নিচে মাঠে নামলাম। পাশের বাড়ি আলাড। মনে হল দ্বা। হর সবাই মরে গেছে, না হর ছেড়ে চলে গেছে। পোঞ্জে বাড়ির ভ্যাপনা গন্ধ বেন নাকে এসে লাগল। শ্যাওগ জমে জমে কালো দেওয়ালের অত্যন্ত আবহা একট জাভাস।

তর্কি চলে গেছে? তর্জানত আমি ফুল ভালবাসি, তরু জানত আমি গান ভালবাসি, ভর্ম জানত আমি তাকেও ভালবাসতে শ্রু করেছিলাম—সবই জানত তর্। তার অজানা ছিল না কিছ্। সেই যে একদিন এক খন-মেঘলার আঁধার হয়ে আসা দ্পরে তর অসাড় পায়ে আমার ঘরে এসেছিল, আমি ছিলাম...সে ছিল, रबाएं। धर्मात छत्र कानमा वन्ध हिन... প্ৰান্ত|প্ৰ বসে ঘরভরা মেঘলার घनडा...। कनक् इत्ते अत्म घतः प्रका। তর**্চমকে উঠল**, আমি চমকে উঠলাম। জলকু তার মানিককে খ'জছে। ঝড় উ^ঠছে **কি না ভাই। মাদিকের সেই** দিবতীয়

চাদ উঠল। আমি টিলার ওপর উঠছি।
চরাচর নিশ্তম্থ, বাতাস বইছে। ভাল তাল
এবড়ো-থেবড়ো ছামা ছড়ানো এদিকওদিক। কোথাও হাবকা, কোথাও নরম।
চাদের অতি মিছি ঝাপসা আলো আমাকে
ছারাছীন করেছে।

জোনাকি জালে না এখানে, ঝিলিরব হরত আছে...আমার কোনো হ'্দ নেই, মতিক্রম হয়েছে হয়ত...ৰা কোনো কুহকের জাকে চলে এসেছি।

চিলার উপর উঠে এসে দাঁড়ালাম, নিচে রেললাইল। কত বেন নিচু। চাদের মিহি, জালের রতন সাদা একটা আলো, রেল-লাইনের সাঞ্চ নেই, পাথরের কুচিমালো চুপ।

হঠাৎ ক্ষমে হল, আমি বেন কিছু একটা ধরে রেখেছিলাম এতক্ষণ। তার ভার ছিল হাতে। আচমকা মনে হল, সে ভার আর নেই। ফেলে দিয়েছি। ছাড়েই দিয়েছি। টিলার গা বেরে গড়িরে পড়ছে, গড়িরে গড়িরে...পড়ল। শব্দ কি শ্নলাম? না, না। শব্দ নয়। তারপর চাঁদ একটা উল্জন্ম হল, মুহুতেরে জনো...। এক মুঠো কর্ণ বিষয় আলো দুলে দুলে রেললাইনের

একট্ জমিতে কৃপিল। যেমন কৃপিল জলে আলো কৃপে। জলকুর রক্ত ব্যা এখানেই ছিল। কিংবা...মানিকের রক্ত ব্যাক পাশেই ছিল, শ্বিক্সে গিয়েছিল কবে। কবেই।

ক্ষণি চাদ প্রকাশ্ত এক ভাসন্ত মেঘের আড়ালে ঢাকা পড়ে গেল।

কখন কদমতলার কাছে আবার ফিরে এসে দাঁড়িরেছি। জলকুদের ঘর থেকে পোড়ো বাড়ির গণ্ধ ভেসে আসছে।

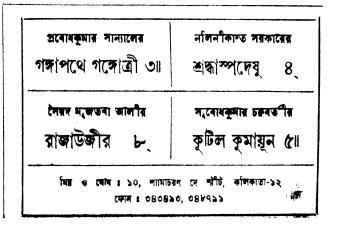
এখানে দাঁড়িয়ে আমি নিজের মন
এবং সন্তাকে ভাঙলাম। দু' ভাগে। এক
ভাগ আমি অন্যটি জলকু। মানুৰ যখন
তার নাগালের কাছে শ্নাতা ছাড়া আর
কিছু হাতড়ে পার না, অথচ তার কথা
থাকে তখন বোধহয় এইভাবে নিজেকে
ভাঙে। জলকুর আদ্ল গা, কালো তুলতুলে
চেহারটি আমার চোখের সামনে ভাসছিল।
আগতে আগতে তার মুখ পপত হল। বড়
বড় চোখ, বসা নাক, বলে জমে কালো হয়ে
থাকার মতন চুলের গ্লেগালি কপালো
কানে চোখে বলে বলে পড়াছে।

মনে হল, জলকু পাথর **ছাড়েছে।** পরিচ্ছন অথচ হাদরহীন এক বড়বল্য এবং অনেক সরল কঠিন নিমামিতার বির্দেশ সে বোকার মতন তার ছোট পলকা হাতে শ্ধু পাথরই ছাড়ুছে বাথা আক্রোণে।

কত কথা বলার ছিল, বলা ছল না। বলতে পারলাম না। শ্ধা বলল্ম, জলকু কে জানত গ্রামফোনের দম দেওয়া অতট্কু হাাঞ্চের, ছাড়ে মারলে তোমার মানিক মরে বাবে...একট্তেই কত কি যে মরে বায়। আদ্যাঃ

জলকু হয়ত আমার কথা শ্নেতে পেল না। নিজের কথা নিজের কানেই খিরে এসে লাগল। আমি শ্নেলাম। তারপর ব্বংশনর মতন দেখছিলাম, সারা দৃশ্রে বিকেল স্থেয়া এবং প্রায় সারারাত পর্যাত লাকিয়ে রাখা মানিককে আমি কেমন করে লাকিয়ে ছে'ড়া একট্রস্রা চটে জাড়িয়ে নিয়ে যাচ্ছি টিলার ওপর।

ছেলেটা মরেছে। লাইনে কাটা পড়েই মরেছে। আজ...।





ষেমনটি কথা ছিল, ঠিক তেমনই ছলো।

প্রতিদিনের মতো সেই দিনটিও তারা ক্ষত আটটা পর্যণত কটোল। রামাবামা মিটিরে রামাঘরেব দাওয়ায় বসে থাকল, আবার উঠোনের মধ্যে একট, হটিা-ফেরা করল, হটিতে হটিতে বাইরে এল বাইরে হটিতে হটিতে একট, এগ্লে, তারপর দ্যোনেই দৌড় দিল।

কাটা হয়ে হাসপাতালে পড়ে দ**্রজনেই** মরতে গিয়েছিল। একজন গ্রহ আব একজন মরতে না-পেরে পালাতে গিয়ে পা-কাটা হলো। তা হলে কি তাদের দ্রকনেরই মরতে অনিচ্ছা ছিল? এতে কি তারা সারাদিনের কাজের ফাকে ফাকে জানিকে দিয়েছে –আমরা কিন্তু আজ মরতে **ষাব আমাদের বাঁচাও। কেউ সে-কথা (मार्ट्स**न, खार्खान, छाइे...! भवाइे म्र्द्र রেলওয়ে ডিসট্যান্ট সিগন্যালের দিকে তার উপরে একটা তাকায়। একটা নীল, নাল গোল আলো। ইক টক করছে না। স্থির হয়ে আছে। এর তলায়, ঠিক ওর তলায়, বড়বৌয়ের শরীরটা এখন তিন ট্করো হয়ে পড়ে আছে। গলাটা এক ট্করো মাঝের ধড়ট্ক এক ট্করো। ধড় থেকে আলাদা হয়ে পাড়ি স্থভানো দ্টো প্রায়-প্রো-পা ছিটকে আর্ছে থানিকটা দ্রে। শাড়ি জড়ানো না থাকলে পা দ্টো আলাদা আলাদা হয়ে ছিটকে যেত।

তা হলে আলাদা প্রায়-পর্বো আরএকটা পায়ের সপ্রে বড়বেইয়ের পা-দ্টো
মিশে যেত। পর্লিশের সার্চ লাইটের
আলোতে সেই পা-টা ধর্মর করছে। উর্ব
যেখান থেকে কেটেছে, সমস্তটা জারগা
ক্রুড়ে লাল, থিকথিকে লাল, কাটা পঠার
ঘাড়ের মতো। ছোট্থেইর হাট্র উপরে
একটা কালো জট। কাটা হলদেটে ফরসা
পায়ের কালো জট। কাটা হলদেটে ফরসা
পায়ের কালো জট। ছোট্রেরিয়ের উর্ব
ভেতরে একটা হাড়ও ঠিক সমান মাপে
কাটা গেছে। একটা তাক্ষ্যধার অল্ফ দিয়ে
কোনো কলাগাছের মাঝখান থেকে কেটে
দিলে তার শাদা শাদা ভেজা ভেজা একট্র
খসখসে উপরিভাগের মতো ছোট্রেরিয়ের
উর্ব্ধ মাংস আর চির্বাতে মেশা গোলা করে

কটো জাগগাটা লাল, ডেজা ভেজা, একট্র খসখনে।

ছোটবো এখন হাসপাতালে সাত-আটজন ডাক্টারে ঘেরা হয়ে নল দিরে নিঃশ্বাস টানছে। যদি ছোটবো বাঁচে আর পা তিনটি তাকে দেখানো যায়, নিজের পা সে পছন্দ করে নিতে পারবে ?

অবশ্য ছোটবৌ ব'চলেও আর বাঁচবে না। একবার যারা আত্মহত্যা করে মরতে যায়, তারা আত্মহত্যা করেই মরে। আরো একবার অবধারিত মরতে যাবার সতোর কাছে বে'চে যাওয়ার সতাটাই যেন মিথে হয়ে যায়। অবশা সভাটা যে কী সেটাই সমস্যা। হাসপাতাপে ছোটবো অস্তান হয়ে হয়তো বেশিক্ষণ থাকত না, কিন্তু তাকে রাখা হলো জ্ঞানহীন করে। দেও দিন পর ছোটবো চোথ খুলল। ছোটবো চোথজোড়া ধ্লল আর বংধ করল। সেই সময়ট কুর মধ্যেই দেখা গেল, তার চোখের শাদা অংশটা হলদেটে, তাতে ছোট ছোট লাল শিরা। মণিটা চকচক করে উঠল। চোথের নিচের তীর দুটো শুকিয়ে যাওয়া ঠোঁটের भराजा त्या. अन्यानीता होति न्राति एकार्व-বৌয়ের একট ফ ক ছিল সেটা খড়খড়ে. ফেটে গেছে যেন। ছোটবো প্রথমে চোখ **थ्राल की प्राथ**, এটা সবারই ভিজ্ঞাসা ছিল। ছোটবৌয়ের চাউনি দেখামাত্র যে-যার মতো বার।শ্নায় চলে গেল। তাদের স্বারই সাধারণ নয়, হাচ্ছল—ছোটবৌ স্বাভাবিক নয়। এবং অসাধারণতা ও অদ্বাভাবিকতার প্রথম ধাক্কাটা ছোটবৌয়ের ম্বামীকেই সামস।তে দেওয়া উচিত। ছোট-বৌ চোখ খোলার পর গত দেড়িদনের সবচেয়ে বেশি দেখা দৃশ্যটার উপর ছোট-वाव्य काथ भएन। यथन वाराधक, देन-জেকশন ইত্যাদি সব কিছ, শেষ করে নাস ছোটবৌয়ের গায়ের উপর একটা লাল কন্বল দিয়ে যায়, তথ্নি ছোটবাব, দেখলেন ছোটবৌয়ের কোমরের নিচের কম্বলের ছোটবৌয়ের অংশটার ভান্ধ অনারকম। ভারনিককার উচু থেকে সব ভাঁজ বাদিকের ঢাল,তে গিরে পড়েছে। সেই তথন থেকে এ-দৃশ্যটা ছোটবাব,র চোখকে বারবার **টानट्छ। खाद नजून कट**द्र ग्रेनम ठिक धथन, स्थन क्यांकेरने अभव काथ कारण हारेण। 🔏

ছোটকো এমন অনেকবার চোথ খ্রাল, বন্ধ করল। দ্বিতীয়বার চোখ খোলার পর थ्यक्ट कांक छोंडे मृत्ता म व्हिस मिन। रिटें वन्ध करत नाक मिरम निःभ्वाम निर्ण নিতে চোখ বন্ধ করে পড়ে ধাকল। আবার চোথ খুলল। মণিটাকে চোখের চারপাশে ঘ্রারয়ে আবার বন্ধ করল। ধেন চোথের তীরগালোয় শ্রিকথে-যাওয়া কাজলের কালিমা দেখা গেল। ছোটবৌয়ের কপালের দুটো পাশ, ভুরুর দুটো দিক, নাকের পাটা, চিব্ক আর গলাটা দেখাচ্চিল ব্লুক্ কর্কশ, রোদে পোড়া কচি লিচু পাতার মতো! ঠোঁট বন্ধ করার পর থেকে ধীরে ধারে ঐসব জায়গা ঘামতে লাগল। গ্র্ণীড় গ্ৰণিড় ঘাম নয়, কপালটা গলাটা প্রেয় ভিজে উঠল। ঘামের বিন্দ, নেই, কিন্তু ভিক্তে। নাকের পাটা আর চিবকে জলবিন্দ আছে, কিন্তু সংখ্যায় খুব কম। প্রথম চোষ থোলা ও যাধ করা থেকে পরেরা একটা কথা বলার আগে ছোটবোয়ের শরীরে তেমনি একটা অনুভূতি হচ্ছিল-খুব চেনা কোনো ফকায় খুব দেখা তকানো গাছ কেটে দিলে আকাশটি দেখতে যেমন খালি খালি লাগে, অথচ বোঝা খায় না কেন অমন লাগছে। ছোটবো সেরকম একটা অন্-ভূতি নিয়ে ঘামছিল, আর যন্ত্রণায় দ্-একটি শব্দ গলা দি<u>য়ে</u> বের করছিল।

ছোটবৌ প্রথম সমস্যায় পড়ল সে কোন কথা বলবে। প্রথম চোখ খোলার থেকেই এই সমস্যাটা ছোটবোয়ের য়নে মনে এসেছে। সারা শরীরটায় এত ক্লান্তি যে, শরীরটার অভিতত্তই ভূলিয়ে দিয়েছে। দীঘ'সময় হতচেতন হয়ে থাকার জন্য নিজের চারপশেটাকে কিহুতেই মেলাতে পারাছল না। সে নিজের মনে সেই ফাঁকা ফাঁকা অন্ভূতিটার ঠিক অর্থ ধরতে পেরেছি**ল**। অর্থ ধরতে পারার সঙ্গে সঙ্গেই 🥫 চোথ বন্ধ করেছিল, চোথ বন্ধ করাল মূহতেই যেন ছোটবৌ ছুটন্ত ট্রেনটা দেখতে পেল। ছিটকনো ছুটণ্ড ট্রেন, একটা একটা শায়িত শ্বীর পলকের মধ্যে শ্নে ধন্কের ব'ক এ'কে সোজা. হাসপাত:ল। এবার ছোটবৌ ঠিক মেলাতে পারল। আবার ভাখ **খুলল**—বর্তমানটাকে দেখবার জন্য। তার **স্বামী শিরুরে বস**া. প:শের বাড়ির বোটি পাশের ট্রেল, বাইরে



আরো কিছু কথাবাতা। ছোটগো চোখ বংধ করল। প্রথম চোখ খোলার পর থেকে শ্রীরের অসহা ক্লান্ত ও অন্ভূতির ভারী দ্র্থাবরতাকে চাপা দিয়ে এ চিন্তাই সে বার-বার করছিল-তার স্বামী শিয়রে বসে। সে ছোটবাবুর স্থা, মরতে গিয়েছিল। মরতে পারেনি। ছোটথাব্র রাগী আর বিরক্ত চেহারাটা কি রকম? কিন্তু রাগ বিরক্তি কিছুই যদি না থাকে—তা হলে ছোটবো क कत्रत? কোন কথা প্রথমে বলবে। ছোটবো ব্যথেছিল সে বাড়িতে শায়ে নেই. তাতে তার মনে হলো—সে স্বাভাবিক ও সাধারণ নয়। প্নকাগরণের তন্দার মধ্যে বার বারই ছোটবৌয়ের মনে ইচ্ছিল—িক কথা প্রথম বলব ? জনরততত রোগী যেমন বিকারের ঘোরে কোন কথার ধর্ননটাকু মাত্র শোনে, কিছাতেই ব্ৰুতে পারে না তার कथ कि? की वलव, की वलव, की वलव, কী বলব-কুরে কুরে খেতে লাগল ছোট-বৌয়ের থমথমে মাথাটাকে। সে চোখ খ্লে পারিপাশ্বিক থতিয়ে দেখতে চাইল। জানাল্য দিয়ে ক্ষণিকের জন্য দেখতে পাওয়া বিকেলকে মেলাতে চাইল সেদিনের সেই ব্যাহ্রর সংখ্য। আর কোনোবারই না পেরে চোখ খোলে, কথ করে, চোখ খোলে, কথ করে। তারপর উঃ আঃ শব্দ করে। চোখটা ঘূরিয়ে প্রামীর দিকে তাক্ষে, তাকিয়েই ঘরিয়ে নেয়। বন্ধ করে। তারপর সেই ঘূণপোক মাথা কাটে—কী বলব কী বলব, কী বলব। ছোটবো শ্নল, কে বলছে--'তোমার অস্থবিধা হচ্ছে কোনো?' কথাটা শোনার পর মাথার সেই ঘ্রপোকাটা থামল, থেমেই আবার মাথাকাটাশরের করল। পা চুলকোচ্ছে খ্ব, পা চুলকোচ্ছে। আরু বারকয়েক উঃ আঃ করে **ছোটবৌ শেষে** বলে ফেলল-'পা জনালা করছে খ্ব, কণ্ট াছ...চুলকোচেছ!' বলে ফেলার পর হোটবৌ অনুভব করল তার **মাথায় এতক্ষণ** পামীর হাত ছিল। সেই অনুভূতির পরই আবার সেই উচ্চারিত বাকোর প্রেরাবৃত্তি চলতে লাগল। কথাগ**ুলো মাথার মধ্যে ঘ**ুরে-ফিরে যেন একই প্রদেনর জবাব খলিছে— প্রথম কথাটা স্বাভাবিক 😮 সহজ্ব হল না তো! নাস'দেখে গেল। ছোটবৌ চোখ খ্লন না। সে চোখ না খ্লেই বাঁহাতটা একটা সরাল। সেটা ছোটবাবার ঠিক হটির উপর দিয়ে পড়ল। তারপরই ছোটবৌ একট থেমে থেমে, একট্ব খ্নিয়ে খ্নিয়ে বলল— ্আমায় সেই লাল চুমকি দেয়া স্যাশ্ভেলটা কিনে দেবে ?' ছোটবাব, আবার ছোটবৌয়ের নাথায় হাত দিলেন। ছোটবাব**্ বললেন**— হাঁ. হাাঁ. ভালো হয়ে ওঠো নিশ্চরই কিনে

ছোটবৌরের প্রথম কথা শোনবার জন্য ধারা আগ্রহী ছিল, তারা জানত অস্বাভাবিক কিছ্ শুনতে হবে। কিস্তু প্রস্তুত থাকলেও তাদের মনে কেমন এক ভীর্তা ছিল। তাই ছোটবৌ চোখ খোলার সংস্পে সংগেই তারা বাইরে চলে পিরেছিল। বাইরে নিছেদের মধ্যে কথা বলাবলি করছিল, আর কানস্থে মনটা ছিল ছোটবৌরের বিছানার পাশে। ঘরের ভিতরে দ্-একটা শব্দ, নাসের পারের ঘটথট, দ্-একবার ঈষৎ জড়িত একটা কণ্ঠন্বর শ্লেই তারা আবার দরজার কাছে এসে দাঁড়াল। তথনই তারা আবার শ্নল—ছোটবৌ কথা বলছে। দ্বামীকে লাল চুমকি দেয়া স্যাণ্ডেল কিনে দিতে বলে এখন ঘ্নাক্তে। ছোটবৌরের বিছানার পাশে ট্লের উপরে বসা পাশের বাড়ির বেটিই এসে কথাগ্লো জানাল। জানিয়ে, সবার মাঝখান দিয়ে পথ ধরে বারান্দায় বেরিয়ে এল এই আশায় য়ে, সবাই এখন বাইরে এসে ছোটবৌরের কথা নিয়ে আলোচনা করবে। আর তারা করলও তাই।

'ষাক জ্ঞান হয়েছে তাহলে?' ---- ' 'দেড় দিন তো গেল!'

'দেড় দিন যেমন গেল, একথানা পা-ও তেমনি গেছে!'

'लाल ठूमिक प्रशा সাতে । की यलल ?'

'চাইবেই তো, এখন বারবার পায়ের কথাই মনে হবে!'

ছোটবো এখন আবার খানিক আঃ উঃ
করে ছোটবাব্রে হটিরে কাছে পড়ে থাকা
হাতটা কোপের উপর তুলে দিয়ে বলল—
'আমি কাত হব।'

'কথা বোলো না, ঘ্নিয়ে থাকো'→ ছোটবাব্ বললেন।

'আমি কাত হব।' অপরিম্কার কালায় ছোটবৌয়ের গলার ম্বর আন্নাসিক।

'তুমি ঘুমোও, আমি মাপায় হাত বুলিয়ে দিচ্ছি'—ছোটবাবু ছোটবৌয়ের কপালের উপর থেকে হাতটা তুলে কোলের উপর রাখা হাতটায় রাখলেন।

'আমি কাত হব'—ছোটবৌয়ের জেদি কথাগালো একেবারে বাচ্চাদের মতো শোনাল। ভঙ্গটো বাচ্চাদের, কিন্তু স্বরটা নয়। ছোটবাব বাচ্চা নয়, বাচার মা। পালের বাড়ির ভদুমহিলাকে বললে—আপনি এখানে বস্নুন, আমি থাকলেই কথা বলবে।' ভদুমহিলা কাছে এলে। ছোটবাব সম্ভপণে খাট থেকে

নামলেন, ছোটবৌয়ের হাতটা নিজের হাতে ধরে। ভদুমহিলা ছোটবাবরে জায়গায় বসলেন। ভদুমহিলার কোলে ছোটবৌয়ের হাতখানা শৃইয়ে ছোটবাব, বাইরে বেরিয়ে গেলেন, ছোটবো টের পেল, কিল্ডু আবছা-ভাবে। ঘুমন্ত বাচ্চাকে অনেক রাতে জাগিরে থাইয়ে দিলে, পর্যদন সকালে সে যেমন ভেবে পায় না গতরাতের খাওয়াটা স্বন্দ, না সভা: তেমনি ছোটবাব্র ওঠা ও ভদ্ন-মহিলা বসার পর মিনিট-দুয়েক না যেতেই ছোটবোয়ের মনে হল-ছোটবাবুর উঠে যাওয়াটা স্বাসন, না সত্যি! ছোটবৌয়ের দেহ ও মনের সবটকু নিথর নিশ্তব্ধ। সেখানে গতি নেই। যেট্কু গতি না **থাকলে ছোটবৌ** কে'চেই থাকত না, বে'চে আছে বলেই সেট্কু গতি সে ব্ৰছে না। ফলে, বাইরের কোন গতি এসে তার সেই নীরব নিথর অপিতকে ধাৰা দিলে সেটা গভীরতায় পে'ছিছে না। হারিয়ে যাছে। ছেমনি, ছোটবাব্রে উপস্থিতিটা এতক্ষণ ছোটবো স্পশ্বারা ব্রহিল। ছোটবাব্ নেমেঁ আবার তার হাতটা পাশের বাড়ির ভদ্র-মহিলার কোলে রেখে গেছেন। ছোট-বৌষের নিপর হাতে দু' মিনিটের মধোই সেই কোল পরিবর্তনের গতিটা হারিয়ে গ্রেছে । আভীর নীরব রাতে হঠাং 🛮 একটা তীক্ষা শব্দে জেগে উঠে কয়েক মাহতে পরে যেমন মনে হয় কোন শব্দই হয়নি, তেমনি ছোটবাব্যর নেমে যাওয়া আরু ভদুমহিলার বসা—এই ঘটনাটা ঘটার করেক মুহূত পরেই ছোটবৌয়ের মনে ছলো, খটনাটা **য**়েট'ন।

নাড়ানো-চাড়ানোর ছোটবোরের হাতটা উপ্ডে হরে ভদ্রমহিলার কোলের উপর পড়ল। আবার সেই ঘটেনি মনে হওরা ঘটনাটা ঘটেছে বলে মনে হলো। হাতটা নাড়ানো-চাড়ানোর কোনো শক্ত কর্লশ উর্ নেইবলানো মেরে বসে আছে শিহরে, মেরেনের উর্ নরম, নরম ফরসা পা, একটা পাধরের বৈছানার অস্বশিতকর শোরা, এ-বিছানাটা পাশ্রেরের মতো শক্ত-'আমি কাত হব'—

রবীন্দ্রনাথের জন্মাদনে জেনারেলের অর্থ ডঃ প্রিয়রত চৌধরী, এম-এ, ডি-ফিল রচিত

রবীন্দ্রসংগীত

লোকগাঁতি, কার্তন ও উচ্চাৎগ সংগাঁতের প্রভাব

্য দাম ১২-০০ ।।
ভোলাবেল প্রিভার্স রাণ্ড পাবলিধার্স প্রা: বিঃ প্রকাশিত
ভোলাবেল পুরুষ্ঠ মার্কেট
ভোলাবেল পুরুষ্ঠ মার্কেট
্যা কলিকাতা-১২ ।।

শ্বমোও'—পাথরের বিছানার ঘুম আসে না,
ঘুম না আসার কণাও মান্য শোর, লোহার
বালিলে ঘাড়, ঘাড়ের নরম মাংসে লোহার
ঠাণ্ডা, বালিলের উপর দিয়ে বেণী,
বালিলটার কাপন, লোহার বালিলটা কাপে,
গর্জন, চোখ বন্ধ, কান খোলা, বন্ধ চোখে
আলোর স'চ্চ, চোখ খোলা, খণ্ড খণ্ড
গরীর, ছিটকে দাড়ানো, দার্ণ ধারু, সাদা
ধবধ্বে পায়ে কালো জট, কী বলব, কী
বলব, হাসপাতালে এক-পা কাটা, বড়দি
দু'পা কাটা, মাথা কাটা; মরা, বড়দি মারা
গেছে, আমি বে'চে গেছি, আমি অম্বাভাবিক
পা-কটা, আমার পায়ে জ্বালা, অমি মরতে
পারিনি, আমার গায়ে বাধা, আমি মরতে

ছোটবো আবার ঘ্মিয়ে পড়ল।

দুই বগলে দুই ক্লাচ নিয়ে বিক্শা থেকে নেমে নিজের ঘরে খাটের উপর এসে বসার মধোই ছোটবো লক্ষ্য করল, বড়দির ঘরে তার একটা ছাব বড় করে টাঙানো। বড়দির পরনে কলকা পেড়ে শাড়ি, বড়দির মোটা গোলগাল চেহারাটা পরিক্রার।

রিক্শা থেকে তার নিজের ঘর প্যতি যাওয়ার মধ্যেই বাডিব আর স্বাই দ্বিতীয়-বার আবিশ্কার করল যে, ছোটবৌর সামনের কটা দাঁত একটা উচ্চ। ছোটবোকে সে-কারণে ঠোঁট বন্ধ করে। থাকতে হত। কিত হাসপাতাল থেকে ফেরার পর ছেট-বৌয়ের ঠেটি দ্যটো বড় বেশি চাপা এবং **লক্ত। ছোটবৌয়ের দ**তি যে উচ্ বাড়ির লোক এটা বিয়ের পর প্রথম আবিংকার করেছিল। দিবতীয়বার আবিশ্কার হলো হাসপাতাল থেকে ফেরার পর। ঠেটিদ**ু**টো মিলে থাকায়, ছোটবৌয়ের নাকের দু'পাশ থেকে দ্বটো রেখা বেরিয়ে উপরের ঠোঁটের কোণ দিয়ে নিচের ঠোঁটের পাশ দিয়ে থ্তনিতে মিশিছে। প্রনো ভাজ-কবা চিঠির ভাঁজ ভাঙলে যেমন অপ্রকট অথত **ম্পণ্ট ভাজের** দাগ দেখা যায়, ছেটেবোয়ের নাকের দ্পাশ থেকে ঠোঁটের দ্পাশ দিয়ে থ্তনিতে এসে মেশা তেমনি দাগ, কিত্ বাড়ির সবাই সেটি এই প্রথম দেখল। নিজের ঘরের খাটের উপর বসে ছোটবৌ টেব পেল না সে হাসপাতাল থেকে একটা নতন অভ্যাস আয়ত্ত করে এনেছে। ঠেটির শ্বেকনো মরা চামড়া তুলবার জনা ছোটবৌ শ্যে শ্রে দতি দিয়ে ঠৌট খটেত। খাটের উপর বাস নিজের বহু পরেনো বিয়ের ছবির দিকে তাকিয়ে থাকতে থাকতে ছোটবৌ তেমনি করে ঠেটি খ'টেছিল। তাতে তাকে গভীর অনামনস্ক দেখায়। যেন সে যা দেখছে, ভা ভাবছে না। আসবার সময় সে দেখে এক্সছে বটঠাকুরের ঘরে বডদির একটা ছবি টাঙানো হয়েছে ৷ পরেনো ছবি---মতুন-করা এবং বড়-করা। বড়িদ মরে গিয়েছে, তাই। ছোটবৌ মরতে পারেনি, তার ছবি নতুন হর্ন। ছোটবৌ নিজেই নতুন হয়ে কৈরে এসেছে।

বড় আর ছোটবোরের বড় মেরে দ্রুলন त्रामाघरत विका वाकि वाकाता अस्य मत्रसार দাঁড়িয়ে ছোটবোকে দেখছে। ছোটবৌয়ের ক্রাচদ্টো ভার দৃই হাতের দৃপাশ। বাচ্চা-দের দৃষ্টি সেই ক্রাচের দিকে, পা না-থাকার य- िन्को कृती त्वन्ति भटा हू भाता ! দাত দিয়ে ঠোটের প্রবনো চামড়া তুলতে তলতে ছোটবো বড়বোয়ের সবচেয়ে ছোট वाकारक फाकल-'हैनहैिन स्थान्।' ना। ७ हो। ট্নট্নি আঙ্ক চুষছিল। সে আঙ্লটা ঠোঁট থেকে নামিয়ে সবার পেছনে সরে গেল। ছোটবৌ বড়বৌয়ের আরেক বাচ্চাকে फाकल---'त्वद्धि , आश्रः।' द्वत्रि प्-शः এগিয়ে দাঁড়াল। পেছনে বাচ্চাদের দশটা উৎস্ক। 'কাছে আয়-।' ব্লব্লি আরও এল। ছোটবৌ হাত দ্-পা কাছে বাড়াল, ব্লব্লিকে ছ'্তে পারল না। ছোয়া দিতে বালবালি আরও এক-পা বাচ্চাদের দলটা ঔংস্কো ପସ୍ଟା। ম্থির। সবচেয়ে সামনে ট্রট্রি, তার মুখে আঙ্কাল নেই। সবচেয়ে পেছনে ছোটবৌয়ের গোটা-দুয়েক বাচ্চা। বুলব্লিকে দুই হাতে ধরে, তুলে, ছোটবৌ কোলের উপর বসাল। ব্লব্লিক প্রথাম বসাল বৈচপ **5** 7 1 বুলবালির থানিকটা পিছন পড়েছে ছোটবৌয়ের উর্তে, আর খানিকটা —য়েখানে উরু থাকার কথা। বেচপ ব্ল-ব,লিকে ছেটবৌ সেই একটা উরাব উপর ঠিক করে বসাল। বসিয়েই আবার দাঁত দিয়ে গোঁট থাটোতে লাগল। তারপর বলল— 'ব,লব; লৈ—।'

নেমে যাওয়ার জনা শরীরের নিচের দিকটাকে পিছলিয়ে রেখে ব্লব্লি বলল---ট

> 'সকালের থাবার থেরেছিস ?' 'হ'', । 'কে দিল ?' 'বাম্নদি।'

'সে কে?' 'নতুন এসেছে।'

'কবে ?' বলেই ছোটবো প্রশন করল— 'কি খেয়েছিস ?'

'ব্,চিঁ'।

সবাই থেমেছিস?' ছোটবৌ বাচ্চাদের
সবাইকে জিঞ্জেস করল। হ'ি মাথা
আঁকিয়ে জবাব দিল সবাই। ছোটবৌ
দরজাটা দিয়ে বাইরে তাকাল। বাড়িতে
মতুন বৌ এলে বচ্চারা তাকে ঘিরে ধরে,
নতুন যৌ তাদের কোনো একজনকে কোলে
নিয়ে এ জাতীয় নানা প্রশ্ন করে, আর ওরা
সম্মন্বরে জবাব দেয়।

খোলা দরজার ওদিকে বারান্দায় ছোট-বৌয়ের বড় মেয়ে ছোটবৌয়ের চোথের সামনে এসে দাঁড়াল। ছোটবৌ ডাকল—
'ইরা।' মেয়েটি চোথ তুলে তাকাল। তাকিয়েই থাকল। বাচ্চারা পেছন ফিরে ইরার দিকে চাইল। ব্লক্লি কোল থেকে পেছলে গেল। ছোটবৌ ডাকল—'শোম।'
ইরা দরজায় এল, ছোটবৌয়ের দিকে তাকিয়ে থাকল। তারপর হঠাৎ বাচ্চাদের বলল—'কী হচ্ছে সব, যাও, বাইরে যাও।'

সবাই দৌড়ে বাইরে গেল। তার মধ্যে ছোট. বৌদ্যের গোটা দুয়েক বাচ্চা ছিল।

দরজার চোকাটে ইরা। খাটের উপর ছোটবো। ছোটবোরের দ্'পাশে দ্টো ক্রাচ। ইরা'—ছোটবো ডাকল। ইরার চোখে উত্তর ও প্রশন।

'কী রাধছিস?'

'আমি রাধছি না, বাম্নদি রাধছে।' ইরার মুখে উত্তর, চোখে প্রশন।

'কী রাধছে?'

ভাত নামিষেছে, আমি আর মীরচি আনাজ কুটে দেব, তারপর তরকারি চড়বে। মীরা কোথায়?'.

বাবা আর জ্ঞাঠামশামের **জন্য** চা করছে।'

তোর জ্যাঠামশায় অফিসে যাবে না?' 'ছন্টি নিয়েছেন।' 'তোর বাবা?'

খাবেন।'
'উন্নে এখন কি?'
'মীরাদি চামের জল চাপিয়েছে।'
'শোন, কাছে আয়।'

ইরা কাছে এল। কাছে এক সোজা হয়ে দড়িল। ইরা চৌদদ বছরের। আর একট্ লম্বা ছরে। এখন বেটে। ইরা দড়িনোটাই এমন সেন সেকটা উদাত প্রশ্ন আমি কেন লম্বা নাই ছোটবৌ দ্বাত দিয়ে বিলাক কাছে টেনে আনল। তারপর ইরার আচলটা পেছন থেকে হাতের তলা দিয়ে টেনে সামনে গগ্নেজ দিশ- উন্যানের পাড়ে কাজ করতে গোল আছিল। ঠিন বাল হাত হয়। মীরাকে বলে লাও। আছা, চলা। আমি রামাধ্যের যাছি। তব-মারি কুটে দেই। তোরা চা করে ঘরে নিমে বস্থা।

ছোটবৌ ক্লাচ সোজা করল, ধপ করে नामल এक পारवद छेপत, क्वांठ मृत्यंगिक मृदे বগলের তলা দিয়ে মাঝামাঝি ধাল। দুটো **রাচে** ভর দিয়ে, দুলে, অনে ান এগিয়ে গেল। আবার দোলা, আয়ার অনেকথানি। আর এক দোলায় ঘরের ঢৌকাঠটা ডিঙে 🕐 বার আগে ছোটবো 🤐 ভর দিয়ে দাড়াল. মাথা নামিয়ে বগলে ক্রাচ দুটোকে আটকে এক হাত একট্ তুলে সামানা ঘোষটা টানল, হাতটাকে নামিয়ে কাটা-পায়ের দিকের কুর্নাচটা একটা তুলে কোমরে গাঁজল. মাটিতে হাচিভাঞ্চিল পাড়টা। ছোটবৌ আব-এক দোলনে চৌকাঠ পোরয়ে গেল। ইর পেছন পেছন আসছিল। আসতে আসত দেখল, সে ঘরের চৌকাঠ পের্তে না-পেরতে মা প্রায় রালাঘরের দরজার কাছে পেণছে গেল। মা ক্রাচে দ্বলে হাঁটে, ক্রাচের দোলনে একবারে দুই পায়ের সমন যাওয় যায়। ইরা ভাব**ল মায়ের কাটা প**ে^{য়ের} চেহারাএখন কী রকম হয়েছে? একট হাতকাটা লোককে মাঝে মাঝে পথ জি যেতে দেখেছে, সেই লোকটার হা^{তে} উপরের ট্করোটা যেমন ছোটু, কোঁচকানো-মোচকানি জায়গাটা যেমন মায়ের উর্টাও কি দেখতে তেমনি হয়েছে

্জাতে ভর দিয়ে ছোটবৌ রামাঘরের দোরগোড়ায় দাঁড়াল। ভেতরে চেয়ে দেখল বালাঘরের পরেনো সঙ্গার মধ্যে কছ, মতন্দ এসেছে। একটা মেয়েছেলে ভাকটার কাছে দাড়িয়ে কী খ'লছে. ছোটবৌকে একবার খাড় ফিরিয়ে দেখেই কি কিছা বাৰতে না-পেরে সোজাস্যক্তি তাকিয়ে থাকল। মীরা উন্নের উপর নিহ হয়ে আঁচল দিয়ে কেটলির হাতলটা ধরেছে। ততক্ষণে ইরা এসে ছোটবৌয়ের পেছনে দাঁডিয়েছে। ছোটবৌ ডাকল-'মীরা শোন ।'

মীরা চমকে চোখ তুলে চাইল। বছর পনেবর মীরা কেটলি ধরবার জন্য বাডানো আচলটা নিজের হাতের মধোই চেপে ধরল। ধরে, দাঁডিয়েই থাকল। ছোট্বৌ মীরার চোথ থেকে চোখ সরিয়ে বামনেদির দিকে তাকাল, বাম্নদির চোখ থেকে 7578 স্থিয়ে মীরাকে বলল--'উন্নের পাড়ে কাজকর্ম সাবধানে করতে পারিস না? আচলটা জুড়িয়ে নে কোমরে। বিমাত মীরা আঁচলটা জড়িয়ে নিল এবং জড়িয়ে নিয়েও দ্ভিয়ে রইল। কাম্নদি, মীরা, ইবা আখ্থানে ছোটবৌ উন্নের বেটলির ভিতর ফুটেশ্ড জলের ঘলবল। ছোটবৌ বলল—'আমাকে চা দিস। তোমার না**ম** কি?'

'ল্বংগ্ৰা'

'লবংগ, ব'টি, আর তরকারির ব্যুড়িটা বারান্দায় দাও, আমি কুটে দি—' পাশে একট্ন সরল ছোটবো। লবংগ এতক্ষণে গতি পোল। কোছেকে পিছি, ব'টি, আর ম্যুড়িটা নিয়ে ভাড়াতাড়ি বারান্দায় দিকে এল। ছোটবো প্রথম বাঁ-এচটাকে বগল থেকে সরিয়ে তার নাঝখানে ধরে বাঁদিকে অনেক-খানি কাত হল, এচটা লাত হয়ে গেল, কাটা পান্টা প্রায় মাটি ছ'ল, ভানদিকে বাটটা বাঁদিকে লেকে গেল, প্রায় ঘাড়ের পিল, তারপর কাচটা একট্ন পিছলে গেল, ছোটবো থপ করে পিছির উপর সল। পিড়ের উপর ঠিকমতো লমা হয় নি, তাই কাচ দুটোকে দেওয়ালের ভিতে শাইয়ের ব্যেব ভোটবো পিশিড়র উপর ঠিক-ঠাক হয়ে বসল।

থরের ভিতর—মীরা কেটলির ঢাকনিটা আচল দিয়ে থলে মাঠো থেকে চা-পাতি খ্র-ঝ্র করে কেটলির ভিতর ঢালতে, চালতে, ইরা তাক থেকে চায়ের বাটি-ডিসটিনির কোটো-ছাঁকনি নামাতে নামাতে এবং
বাম্নদি নানা কোটো খলে খলে একটা বাটির মধ্যে ধনে-জিরে রাখতে রাখতে—
বারাক্ষার ছোটবৌয়ের এই নতুন বসা দেখল।

ছোটবো তরকারি কুটছে। যে-করেই হোক, ছোটবো সহজ হবে দ্বাভাবিক হবে। যে-করেই হোক, ছোটবো বাড়ির লোকদের ছুলিরে দেবে তার একটা পা নেই। তাই চোথ বাজে বিছানায় পড়ে থাকার দ্বিলার লোভ জয় করেও ছোটবো সকলের সংগ্রান্ডর করছে। ছোটবাকৈ আবার এ-বাড়ির ছোটবোই হতে

হবে। মুখ থেকে সে যদি তার একটা পা কাটার সমস্ত চিহু মুছে দিতে পারে, তবে সবাই ভূলে যাবে ছোটবো মরতে গিয়েছিল, মরতে না পেরে এক-পা কেটে পালিয়ে এসেছে। ছোটবোয়ের সেই পা-টা নেই, ফ্রসা ধ্বধ্বে পা, মাঝখানে একটা কালো ভট।

যেট্রক অস্বাভাবিকতার খাদ থাকলে স্বাভাবিকতা খাঁটি হয়, স্বাভাবিকতার প্রণান্তিক চেণ্টায় ছোটবৌ সেট্রকু খাদ দিতে ভূলে গছেে। ছোটবৌ হাসপাতালের শাড়িটা ছাড়ে নি, কুচি দিয়ে পরা ছিল. তেমনিভাবেই পরা আছে, বাড়ির মতো করে বদলায় নি। কুচি-করে-পরা ফরসা-শাড়ি ছোটবৌকে বাড়িতে সম্পূর্ণ বিদে-শিনীর চেহারা দিয়েছে। এলোমেলো খোলামেলা শাডির বদলে আন্ট্রাসন্ট্রি শাড়ি, অভাস্ত অনামনস্ক ঘোমটার বদলে খাটো আঁচলের আত্মবিনাসত অবগ্রহের। ছোটবৌ এ-বাড়িতে যেন কোথা থেকে বেড়াতে এসেছে, ঘুরে ফিরে কাজকর্ম করছে, আজ রাত্টা থাকবে, কাল সকালে আবার চলে যাবে।

এ-কথাটা ছোটবৌয়ের নিজেরও ग्राटन হচ্ছিল, বার্লিডর আর স্বাইয়েরও য়ান হচ্ছিল। যে বারণে ছোটবো শাড়ি বদলাতে পারে নি. শাড়ি অনারকম করে পারতে পারে নি ঠিক সেই কারণেই ছোট-বৌ পির্ণাডর উপর বসে পড়েই তরকারি কাটা শরে; করেছে। ঝুডি আর বাটি নিয়ে তরিতরকারিগ্রলার দিকে তাকিয়ে থেকে কিছুক্ষণ ভেবে নিতে হয়, তা সে ভূলেই গোল। একটা কিছু, তুলে আঙ্কা যে-ভাবে খ্রাশ চলল। সেটা কেন কাটা হলো- কিছুই দেখল না। ছোট-বৌরের চোখ অবশা ওদিকে ছিল, কিছ ঠোঁট দটো জোডা লেগে গিয়েছে। ছোটবৌ দতি দিয়ে নিচের ঠোঁটের চামডা খ'টেছে। পরেনো চিঠির দটোে ভাঁজ শাকের থেকে উপধের ঠোঁটের কোণ দিয়ে নিচের ঠোঁটের দ্ব'পাশ দিয়ে থাতনিতে গিয়ে হিলেছে।

ছোটবৌ অনেকক্ষণ পরে পিঠটাকে সোজা করে বসল। কোমর বাথা কবঙ্গে আদত পা-টায় ঝি'ঝি' ধরেছে। চোথ তলে তাকাতেই আবার সেই পরেনো গিয়ে পডল। প্রথমে চোখ পডল—জানালায় মাথা দিয়ে বটাঠাকর শাষে আছেন, এখান থেকে তার টাকটা দেখা যাচ্ছে, আর পাশের দেওয়ালে বড়ািদর গলা পর্যাক্তা। বটঠাকুর কি বড়দির ফটোটার দিকেই তাকিয়ে আছেন? খবরের কাগজ কোলে নিয়ে ছোটনাব, বারান্দার এক কোলে চেয়ারে বসে তার দিকে নির্ণিমেষে তাকিয়ে আছে। বর্ডাদর দুটো আর তার নিজের **দ**ুটো বাচ্চা বারান্দার এক কোণে জটলা করছে। চারজনের চোথই বড় বড়। বালবালি কাচটা আর নিজের পায়ের দিকে আঙ্কল দেখিয়ে কী যেন বলছে। রামা-ঘরের দরজায় হেলান দিয়ে মারা তাকিষে আছে তার বাবার টাকমাথার দিকে। ইরা

বলে আছে মীরার ঠিক পিছনে। তর্পান্ত কৃত কাটা তরকারির দিকে এক দ্ভিটতে তাকিরে রাহাগরের দেকে এক দ্ভিটতে তাকিরে রাহাগরের তেতেরে বাম্নদি দাঁড়িয়ে আছে। সবটা একবার দেখে নিয়ে চোখ নামাল ছোটবৌ—লভ্জার, পরাজ্ঞরে, রাণ্ডিতে। দ্টো কী আরও কৃচিকুচি করল। তারপর বাড়িভরা নৈংশব্দে সচ্চিক্ত করে বলল—লবণ্য, তরকারিগ্লো নিয়ে যাও।' চেয়ারে বসা ছোটবাব্ কোলের উপর ফেলে রাখা থবরের কাগজ্ঞটা চোখের সামনে মেলে ধরলেন। বাজাগুলো চমকাল। বট্ঠাকুর মাথা সরালেন না। লবণ্য তরকারির পত্পের দিকে তাকিয়ে বলল—'এতো তরকারি কিছবে মা?'

দেয়াল ধরে দাঁড়াতে দাঁড়াতে ছোটবোঁ বলল,—'রেখে দাও, বিকালে রে'ধো।'

'এ শেষ হতে যে দুদিন লাগবে!' নিচু হয়ে ক্লাচটা তুলতে তুলতে ছোট-যৌ বলল—'ফেলে দাও!'

অভিনয়-জীবনের প্রথম রক্তনীতে
দিবতীয় তৃতীয় দ্শো পাঠ ভুলে-যাওয়াঅভিনেত্রী যেমন সকলের সামান চোষ
নিচ্ন করে বেরিয়ে এসে প্রেশত্ত্বী দৃশোর
জনা প্রস্তুত হতে সাঞ্চমরের চেয়ারে বসে,
ছোটবৌ তেমনি করে খাটের উপর বসল।
ছোটবৌ নিজেই ভুলতে পারছে না সে
মরতে গিয়েছিল, মরতে না-পেরে ফিরে
এসেঙে সেই সংগ্রু এসেছে আশ্ত

ছোটবো ক্রাচে ভর দিয়ে খাট ছাড়ল, দলেল, চৌকাঠ পের্ল, দলেল, আর দলেে-দলে ছোটবাব্র চেয়ারের সামনে গিয়ে দাড়াল। ছোটবাব্ চোখ তলে তাকালেন।

'তোমাকে আজ ক'টার সময় অফিস থেতে হবে?'

'একটা।'

'স্নানে চ্লো।'

'যাহিছ ।'

ছোটবাব্ কাগজটাকে ভাঁজে ভাঁজে ভাঁজ করলেন। তারপর উঠলেন। ছোটবাব্র পেছন পেছন ছোটবো চলল। ছোটবাব্

সমস্ত সম্ভান্ত প্রেত্তালয়ে পাওয়া যাবে ২৫শে বৈশাখ রবীন্দু জন্ম-জয়ন্তীতে প্রকাশত হচ্ছে

রাপ

মাসিক মিনি সাহিত্য পত্ৰিকা

দাম মাত ২০ পরসা : এতে লিখেছেন :

অন্নদাশতকর, প্রেমেন্দ্র, নীহাররঞ্জন শিবরাম, রাপদক্ষ, শংকর চটো, অভ মাখো, চলী গোস্বামী, স্টিচা সেন লক্ষাল বংশদা: ও আরো অসনকে। সম্পাদক : জ্যোতিময়ি বংশ্যাপাধায়ে ও নিমালক্ষার সেন।

ঃ কার্যালয় ঃ ৬৯, বি, বি, চ্যাটাঙ্গ^{নী} রোড । কলিকাতা —৪২। ফোন নং--৪৬-৩৯৮২। চলুছিলেন ধরি পারে, ছোটবো চলছিল দূলে দূলে: সেই ক্লাচহটোর সব্দো সপো সেই আদেত হাটা কিছুতেই মিলছিল লা। সেই অমিল ছলে একসংগা হেটে ছোটবো ছোটবাব্যকে নিমে ঘরে এসে ঢ্কেলো। দুই ক্লাচের উপর বগলের ভর রেখে হাত তুলল ছোটবাব্র শরীরের দিকে। স্নানের আগে ছোটবো ছোটবাব্র জামা, গেঞ্জি খুলে দিত। ডেল এগিয়ে দিত। কথনও বা মাখিয়েও। তোরালেটা কাঁধে দিত। ছোটবো আজও তেমনি করতে रतन । रहाध्याद्व त्रक्त कारह भरफ रहाध-বৌ। গেঞ্জিটা অর্থেক খোলার পর ছোট-শাব্র গলায় আউকে গোল। আরো খুলতে লোল। আরো **খ্লতে গোলে হাত** আরো তুলতে হবে, কাচটা মাটিতে পড়ে যাবে। অসহায়ের মতো ছোটবো মহেতে কম দিওর হয়ে থাকতে না থাকতেই ছোটবাব্ হাত দি**রে** গেজিটা থলে ফেললেন। ছোটবৌ মুখ ফেরাল। টেবিলের দিকে যেন কী খাজেছে। ছেণ্টবাব, নিজেই তেল, সাবান, জোরালে নিয়ে বেরিরে পড়লেন।

রাণ-অভিমান-দৃংখ চেপে-ক্ষর করে
নর, কুলে গিরে নর, -ছোটবৌ আবার ক্লচে
ভর দিরে রাহাযর পোল। মানুষ চললে
গারের শব্দ হয়--স্-স্-স্, স্-স-প্।
ভাচের নিচে রবার দেওয়া। শব্দ হয় না।
ভাতের লিচে রবার দেওয়া। শব্দ হয় না।
ভাতের লিচে রবার দেওয়া। শব্দ হয় না।
ভাত্যাভ ওঠে থাস-থাস।

পি'ড়ির ওপর বসে ছোটবৌ নিজের হাতে ভাত বাড়ল। গোল করে, চেপে চেপে, ছোটু করে। বাচিতে বাচিতে তরকারি মাছ-ডাল সাঞ্চাল। ইরাকে বলল পিড়ি পেতে দিতে। সেই পিণাড়তে যথন ছোটবাব্ এসে বসংশন, ছোটবো দৃহাতে থালাটা ভূলে ভাবিশ্বার করণ, পি^{র্}ড়ের সামনে ভাতের থাশাটা এগিয়ে দিতে হলে দাড়াতে হৰে. र्शकेरक शरद। शरक थानाग्ने निरम्न एकाण्ट्रेनी ष्टाप्रेयायुक मितक तमहे मृष्टिक हाहेक, त्य-দৃশ্টিতে আধো-মফন্বলী বাভালি বট এককাশে প্রামীর রেশাবাড়ি যাওয়া দেখত। আত্তধিকার এবং কার্যকরণসূত্র আবি-আনুবের অক্ষমতা ্এই নুটো হচ্ছে সে-দ্**শ্টির ভাষা।** ইরা এসে ছোটবৌষের হাত থেকে থালাটা জুলে নিয়ে ছোটবাব্র সামনে রাখল। ছোট মেরেটি বিয়েবাড়িতে সারাদিন পান সজেছে, পরিবেশনের সময় বয়স্ক কেউ ভার সামনে থেকে থালাটা ভুলে নিয়ে গোলে ৰেমন করে ছোট মেয়েটি তাকিয়ে থাকে. পেছন-ফেরা ইরার দিকে ছোটবৌ তেমনি **করে তাকিয়ে থাকল। হাতে থালা** নিয়ে সামনের দিকে সামানা একটা ঝাকে ইরা চৌন্দ বছরের ইরা—তরতর করে হে'টে, একেবারে নায়ে, পিশ্ভির সামনে থালাটাকে নামিরে দিয়ে সোজা হয়ে দাঁড়াল। প্রতিটি ভিন্স ছোটবৌশ্বের চোখে পড়ল।

প্রতিটি মৃহতে এক-একটা বিরাট বিরাট পাহাড় হরে ছোটবৌরের সামনে এসে দাঁড়াছে। ছোটবৌ সহত ও প্রাক্তাবিক হতে পারতে না। ছোটবৌরের আপতা হতে আর পারতে না। কিন্তু বার বার না পারার সামকে একেও একটা নিশন্সন্দত জেনে ছোটবাে পারতে চাইছে। তাই; সারাটাক্ষণ ছোটবাবন্কে সারল—'এটা নাও', 'ওটা নাও', 'খাও না একট্,।'

রামাখরের দরজার কোণার মীরা-ইরা-লবণ্য দর্যিত্য়ে দর্যাড়য়ে নারবে ছোটবৌরের কান্ড দেখছে। বাডির কোনো বয়স্ক পাগলের কান্ড-কারখানা যেমন অশুৰু নীরবভায় দেখে, ছোটবৌকে সবাই ভেমনি-ভাবে দেখছে। আর ছোটবৌ স্বাপ্তে তাদের দৃণ্টি অন্ভব করেও, ছোটবাব্ৰে ক্লমাগত সেধে সেধে তা অস্বী-কার করতে চাইক। অবশেষে ছোটবাব; যখন জলের প্লাশে হাত ডোবালেন, ছোটবো তথন হাতে-ধরা হাতাটা সশক্ষে ডলের গামলার ফেলে ছোটবাব্র ওঠার অগেই পিণ্ডি ছেড়ে উঠতে গেল। হাতাটা লোরে ফেলে ছোটবো নিজের দেহে যে-ভীরগতি এনেছিল, ওঠবার সময় বাধা পেরে সে-গতিটা নিয়ন্তিত হলো। ছোটবো ক্রাচটার মাঝখানে ভর দিয়ে দাঁড়িয়ে পড়ল। ইতিমধ্যেই সে যেন ভাচতাকে অনেকথানি আপন করে নিয়েছে। ছোটবোঁ সবার চোখের সামনে দিয়ে থাপ-থাপ করে আওয়ার তুলে বেরিয়ে গেল। বট্ঠাকুর ভানলায় নেই। বড়াদর ফটোর দিকে চাইল। বড়দির বিষয়ের ফটো থেকে আলাদা করে বড়-করা। বড়দি সেকেছে। মতে হাসি। ফটোটা যেন বড়দির মরার পরে তোলা। বড়বৌয়ের সাজা এবং হাসি বিষের। ছোটবৌয়ের মনে হলো বড়দিব সাজ্ঞা এবং হাজৈ মরার। ছোট্রেরিয়ের মনে হলো, বড়দির ছবিটার কাচে ভার সার: শরীরের প্রতিবিশ্ব পড়েছে। সে প্রতিবিশ্বটা বড়দির ছবির চাইতে কমু স্পেন্ট নয়। বড়দি সেজেছে এবং হাসছে। ছোটবে[†] নাকের দু'পাশে ভাঁজ নিয়ে ক্লচ-বগলে দ'ডিয়ে আছে। সেক্তে এবং হেসে বড়বো মরার পর জিতে গেছে। ছোটবৌও অমন সাজতে বা হাসতে পারত। বর্ডানর ছবির কাঁচে ছোট-বৌষের প্রতিবিক্তর ইচ্ছেটা যেন সেত্রকমই।

দালে দুলে ছোটবো আবার সেই খাটের উপর গিয়ে বসল। সেই খাটে বসে জানলা দিরে ছোটবাব্র অফিস-বাওরা দেখতে দেখতে, কখন যেন ছোটবা ােচতার লােক দেখতে শ্রু করেছে। ইরা এসে বলল—মা, খাবে নাং নাইতে যােল এবং খেরে এল। এসে, আবার জানলার সামনে বসে বাাচতার লােক দেখা শ্রু করল। সে নাওয়া-খাওয়াটা এমনভাবে সারল, যেন জানলার এদে বসাটাই আসল কাছা।

ছোটবো দেখল মান্ত্র নানাভাবে ছাঁটো একটা হাঁটার সংল্য আরেকটা হাঁটার কোনো মিল নেই। হাঁটাটা যেন কেবল হাঁটা নব, প্রো মান্ত্রটাই। দুংপ্র, লোকজনেব যাওয়া-আসা কম। একজন লোকের পর আরেকজন লোক আসতে খ্রু দেরি হয়। আর সেই সমর ফাঁকা বাস্তার দিকে তাকিরে থাকতে খ্রু তীর মৃত্তে সিনেমার রীল কেটে তেলে বেষদ হয়, ডেমান বালেঃ

একজন লোক হে'টে গেল ভরভর করে: लाक्ये। नद्भ / नद्भ ना हत्न व्यमन करत হটিতে পারত না। খ্ব ছোট ছোট পা ফেলে लाक्षा, इनद्रन एवन थरे दकारहे।.....श्राशह घ राउँ के कि निरम कि च राउँ आनी दौरहे। মাথার বোঝা। দ্ব হাত একট্ব পালে ছড়িয়ে টাল সামলাছে। সমুহত পিঠটা দুলুছে পেছনটা সপস্থ করছে এক সুমিত ছল। একতালে নৌকো বাইলে নদীর জলে যেমন ছল—আং ছল—আং আওয়াজ হয়, তেমনি দেখতে শাগছে পেছনটা। ঘাড় থেকে ঢেউটা পিঠে ড়েঙে, নেমে এসে, কোমরের নিচে একবার উ'চু হয়ে দ্'ভাগ হয়ে যাচ্ছে। আর সেই দু' ভাগ ওজন নিজের দুটো উরুতে বহন করছে, হাঁট, দুটো ভাই একট, বে'কে গেছে । ঐ বাঁকা হটি, থেকে আবার দুটো ঢেউ ছলবল করে উপরে উঠে গেছে। আর ত্রিক কোমরের নিচে উপরে-ওঠা আর নিচে-নামা তেউ দুটো মিলে গিয়ে জটলা করছে। ছোটবৌ ব্রতে পারে, অনুভর কবতে পারে, ঘ'্টেআলীর উর্ দ্টো এখন শক্ত হয়েছে:...আবার একটা লোক হেন্টে চলে গেল। **খনুৰ ধানির, অথা**চ এক গভিতে: যেন হাটাটাই ওর কাজ, কেবল হাটা হাটা এবং শুধ**্ই হটিটে**। রোগারি সব চাংকার কারা অগ্রাহা করে হাসপাতালের ভাকার যেমন ছুবি চালায়, তেমনি[ং] পুথেব সবকিছা অপনীকার शाङ्ग লোকটা হাঁটে, হাঁটে, কেবল হাঁটেই : ছোটবো অনুমান করল লোকটার পায়ের পেছনে হটি, থেকে গোড়ালি প্যান্ত সাপের মতো মোটা স্পণ্ট রগ। আর, লোকটা হাটিলে নিশ্চয়ই কটকট করে আওয়াজ **হয়**। সার-একটা লোক পান চিবতে চিবতে **আস্ছে।** থালি গা, জামাটা কাঁধে ফেলা। শ্বল থেকে ব্যাড়তে একা একা ফিরতে গেলে যেমন সারাটা পথঘাট অন্যমনস্ফ করে দেয় এ লোকটাকেও তেমনি করেছে। লোকটা বাঁ দিকে একবার ভাকাল, তাকিয়ে থাকল, বাঁ দিকে মাথ করে দাঁড়িয়ে পডল। 🧦 জুয়ে धाकला अभितक कारतना शींगे 💌 🗸 करतन চোখ ফোরাল, আবার তাকাল 🏸 াড়াকো চলে গেল : ছোটবৌ ঠিক ব্ৰুতে পারল, কোথাও ঘ্মতে যাছে। সে যখন গা করতে হার, ভার হটি। দেখলেই সেটি বোঝা যায়।

ছোটবৌয়ের হাঁটা এখন সর্বাদা একরকম জাচের দোলন। ছোটবৌয়ের হাঁটান্ত এখন জ্জা-বাগ-ছাঁচিয়ান-ছালনা প্রকাশ করা যাবে না। অথচ আর সবাই পার্বে।

পা. এক পা খাইরে এসেছে ছোটবোঁ সাদা ধবধবে একটা পা. তার মারখানে কালো একটা জট। বিছানার বসে ছোটবোঁ সামনে তার পা-টা মেলে দিল। তারপর শাড়িটা তুলল। একটা একটা করে. ধাঁরে ধাঁরে. নবধধরে ঘোমটার মডো। সমস্ত পা-টা নিরাবরণ হয়ে এখন বিছানার উপর প্রসারিত। নিটোল উর্, মাঝে মধাে রোম-ক্পের আভাস, বাসি দুধের মডো হলদেট চামড়া, গোল হরে সর, হয়ে এসেছে হটিতে। উন্ধ্র নিচ্ দিকে তলার সামানা খড়খড়ে, রটো একটা কালচে, প্রেড় বাওয়া বাদানেম্ম মতো। উপরের লন্দা হাড়টা দেখা যায় না.
বোঝাও যায় না। নিচে দেমে গেছে। সেই
হাড়টার উপর দিরে মাংসের নিটোল স্রোত
বরে গেছে। স্রোতটা আঙ্লগংলোর ডগায়
চলে গেছে। পোড়ালিতে ফাটা
স্ফার ফ্রসা। পাশ দিকটায় একট্ লাল
আভা, থ্য আঁকড়ি-কুর্কাড় কাটা। পারের
গাতার চাপ দিলে আঁকড়ি-ব্রুকিডিগ্লো
বন্দা যায়। পারের তলাটা ফ্লো ফ্লো।
ব্রুড়া অঙ্গলের পেছনটা বেশি মোটা, শক্ক,
একট্ খসথসে। পা-টা স্কেবর।

পা দেখে ছোটবৌ আড়চোথে একবার বাঁদিকে চাইল। এ-পায়ের শাড়িটা এতদ্ব ভোলা হয়েছে, তব্ বাঁ পাশের শাড়ির ভলায় কোনো পায়ের আভাস নেই।

একটা মরা মানুষ দেখলে বিশমর জাগে। মানুষ এত পিরে হতে পারে ? মানুষের অপ্থিরতা সবচেয়ে বড় প্রকাশ পারে। সেই অপ্থির নৃত্যচপল পারের ববন দেখতে দেখতে ছোটবৌ ঘ্যাময়ে পড্ল।

ীরুকলবেলা **ঘ্যা থেকে ওঠা ও রাতি**-লেল, মার্কীর ঘামিষে পড়ার মধ্যে সন্ধো-লেলার একটা ঘটনা প্রদিন সকালের লোগাটারে অনিবার্যাভাবে অনারক্ম করে

সন্ধা তথ্য গড়িয়ে গেছে। বাড়ির **স**ব ছেলেনেয়ের হার **আলো** নিয়ে **পড়তে** ংসেছে। বড়রা স্ক বারাদনার এদিক-এদিক ছিট্টে একা একা ব**ন্দে** অপুছে। বারান্দক্ষ কোনে ফালে। মেই। ঘ্রের আলো জনিলা-_{পরজা}িসয়ে বাইরে ছিটকে **এসেছে। সেই** আলোর গ্রুড়ীতে কেউ ধ্যম নেই। স্বাই চন্দ্রারে। এক ছায়গাখন্য। ইরা মবি। প্রা াকেও। মতে। ব্রাহাণয়রের সাহায়ে। আছে। সংখ্যাহেল তাক ছোটবৌয়ের অপেক্ষা কর-ছিল। কিন্তু সে এল না দেখে কেউ আর र १७ अकटर गार्याच । देवा-वरीता **मनका**व প্রাণ একজন আরু উঠোদ থেকে রালাঘরের ল্যুন্ন্য উঠার সি^{র্ভ}ড়ের উপরে একছন। ছেটিয়ার একটা চেয়ার নিয়ে সকালের ্যুগ্টোতেই সামনের খাটেটার গায়ে পা তলে দিয়ে: *ঘারের* মামনে মাধার উ**পরে**ই कारनाठी तस्थ करत् एस्यान रोज मिरश ছোট্রো। অন্ধকার সারাটা উঠোন আর বারদেশয়। কয়ে।টা মোটাসোটা বে'টো, গোজ অন্ধকর কয়োর বাঁশটা লম্বা হয়ে শ্রেনার উপরে ঝালছে। কারো কোনো ভ**িগ দে**থ থাছে না কেউ দেখছে না। শুধু ঘন কয়েক থেকি অন্ধকার। ভানধকার বারান্দায় আরে চারটে গাভীর ভাষ্ধকার। বা**চ্চারা পড়ছে** কখনো একস্থা চারপাঁচলন চারিয়ে একট. পরেই একে একে থেমে যাচেছ, অবশেষে থাকে কেবল একজনের ঘ্যেজডিত গ্নেগ্নে ওদের খাওয়ার সময় হয়েছে। রালাঘর থেকে ইগবল ধর্মি আসছে। সেই গ্নেগ্ন আর টগবল অন্ধকারের স্পশেরি মতন এ-চাবজনের কানে প্রকেশ করছে। কেউ কাউকে দেখাছ গা। সবাই 'নজেকে ভাবছে, একা ^{একা}, একেবারে একা। বাচ্চাদের গ**্নগনে**, রায়াছরের টগবগ। বাচ্চাদের গ্লেগ্লে,
রায়াছরের টগবগ। বাচ্চাদের গ্লেগ্লে,
রায়াছরের টগবগ। অম্ধকার। ছোট্রো
মাঝে মাঝে তাকাচ্ছে জানলা দিয়ে বটঠাকুরের ঘরে বড়দির ছবির দিকে। বড়দি
হাসছে, বড়দি সেজেছে। অম্ধকার। টগবগ
আগ্লে। বড়দির ছবির কাঁচে কি ছোটবোয়ের ছায়া পড়েছে? সামনে গেলে
পড়বে? প্রতিবিশ্বটা বড়দির ছবির চাইতে
কম দপ্ত নয়। বড়দির মুখে হাসি। ক্লাচবগলে প্রতিবিশ্বর মুখে ময়লা কাগজের
ভাল। অম্ধকার। ছোটবো অম্ধকারে বসে।

প্রতিবিদ্দর পড়কে না। টাগবগ। গ্রেন্থান ।

নুরে একটা বাঁশি শোনা গেল। তীর বাঁশি

নুরে থেকে আসছে। তীক্ষা দ্বর দ্রে থেকে

আসছে। সেই তীক্ষা বাশিটা, সেই তীর

দ্বরটা এক প্রবল গর্জানে রুপার্শ্ভরিত হচ্ছে।

একথা যখন ভারা টের পেল, তখনই দ্রাগত তীর বাঁশির প্রতিধনি করে রামাঘরের

বারান্য থেকে ইরা চেচিরে উঠল—"মা।"

বাচ্চাদের গ্নেগনে থেমে গোল। রামাঘরের

টগবগা আরু অন্ধকার আরু সেই তীক্ষা তীর

বাঁশির সংগ্যাগ্রন। চমকে সবাই সেই

যা চিরন্তর তা মধুর —যা মধুর তা অঞ্সাত!



চিত্রলিপি ফিল্মসের প্রচার ও জন-সংযোগ বিভাগ : ১৫ চিত্ররঞ্জন এভিনিউ, কলি: ১৩ কর্তৃক প্রচারিত

মেকিত অবস্থাতেই স্থির হরে রইল। ছোটবো অনামনস্ক হতে চাইল কুয়োপাড়ের আশ্বকারের দিকে চেয়ে। লবন্স রাহাঘর থেকে বাইরে এসে বারাল্নার আলোটা জেনলৈ দিল। হাটাতে মাখ গোঁজা ইরা চোখ তলল। তীক্ষা তীর বাশি আর গর্জনটা মিলিয়ে গেছে। রালাঘরের টগবগ আরু শোনা যতেছ না। বারান্দরে আলো कतालात्मारः एकाछेरवी एमथल चरतः वर्णामत হাসিটা শ্লান। সেই ট্রেনটা। সেই ট্রেনটা। ছোটবৌ একবার স্বার দিকে চাইল। কেউ ভোশেনি, কেউ ভূলবে না। ইরার চিৎকার যেন এই অন্ধকারে সকলের চিন্তাটা জানিয়ে দিয়েছে। স্বাই একই কথা ভাবছিল। হছাটবো মরতে না-পেরে এক-পা খ্ইয়ে এসেছে। ছোটবো মরতে গিয়েছিল, মরতে পারেনি। ছোটবৌ বাঁচতেও পারছে না। कार्ड महिन रक्षाधेरवी घरत श्रुकन । व कार्ता থমথমে হয়ে গোল। ছোটবৌ তাদের । কৈছ্ বলল না। বিছামার উপর পাশ ফিরে শ্রয় পড়ল। বিছানার সংখ্যা হেলান দেয়া কাচ-া দ্যুটো শবদ করে পড়ে গেল। ছোটবো ফিবে क्ट्रिय रमधन ना।

্বাড়ির কিছ্টিন ধরে শাভি পরতে শেখামেরেটিপ্রেম করছে—এটা বড়িতে প্রথম জানাজানি হবার রাহ্তিতে সেই মেয়ে-টির সবার সংখ্যা খেতে বসা, খাওয়া এবং **উঠে আসার মত** ভাগতে ভোটবৌ সে-কারিতে খেয়ে এল। সেই মেয়েটির মতোই হৈটিবৌ শহুয়ে শহুয়ে সাতপাঁচ ভারতে **লাগল। তারপর ঘ**ুমিয়ে পড়ল। ঘুমের मक्षा कार्टियो एमन कारना अवनी छात्क দাড়া দেবার জন। অসহাধ ইচ্ছ্যুকের সতো প্রদত্ত। ঠেটিনুটো বাদে তার সারা শরারৈ **অসহায়তা।** সামান্য ফাঁক ঠোঁটেও খাব একটা জোর। সেই মধলা কাগছের মতো ভাঁচটার উপর দিকটা স্পণ্ট, আরু নিচ দিকটা আম্পদ্ট। মপ্দট-আম্পদ্ট্ ইচ্ছো অনিচ্ছার মধে। ছোটাবো ঘ্রিয়ে আছে।

প্রদিন থাব সকলো, রাত শেষে, ছেট-বৌ আধো ঘ্ম আধো জাগরণের মধে নিফেকে প্রশন করল--বটঠাকর কি উঠেছেন **শবশ্য? ভারপর** নিজে উত্তর করল --বর্ঠাকুর সারারতে ঘ্যাতে পারেন না নিশ্চয়ই। লবপাও নিশ্চয় স্কালে উঠেই টনানে আচি দেয়। এই একই প্রশ্ন আর এই একই উত্তর ছোটবৌ কিছাক্ষণ নাড়াচাড়া করল। তারপর উঠল। ছেটবাব, অ্যারে হয়েছেন। বউঠাকুর ঘ্রান্ন। ভোট-বাব্যুক্ত জেগে থাক্তে হত! দৃঘরে দৃভাই সারারাত জেগে। নিদিত ছোটবাবার পাশ নিয়ে ছেটেবৌ খাটের কানায় এল। খাটের বাজ্যু ধরে থাপ করে একটা পায়ে ভয় দিয়ে দড়িল। খাটের বজে, ধরে ছেটেনের এক্কা-দোক্কা খেলার মতো একপায়ে একটা লাফিষে দেয়ালে হাত দিল। কাচ নাটো श्वानम । क्विरिकार अकरे, रश्मान निम । कार म्*र्*के दशाल जिला मीकृत्व रामान्य करा প্রস্তুত হয়ে ছোটবো একবার মুখ ঘ্রিয়ে

ছোটবাব্ৰে দেখল। ছোটবাব্ জাগেনি। ছোটবাব, ঘুমুছে। জেগেছে কিনা দেখতে হতক্ষণ সময় লাগার কথা, ছোটবোঁ তার চেয়ে বেশি সময়ই তাকিয়ে থাকল। তারপর তলায় রবার ক্লাচে থ্প থ্প আওয়াল ডুলে ছোটবৌ দরজার কাছে এল। দরজার ছিটকিনিটা খুলল। শব্দ হবে এটা স্কানাই ছিল। তবু সাবধান হয়নি। শব্দ হবার পর আবার মুখ ঘুরিয়ে ছোটবাবুকে দেখল। জার্গেন। জাগবে না। ছোটবৌ বেরিয়ে গেল। ছোটবৌয়ের শাড়ি বিস্তুস্ত, চোখে পিচুটি, মাথের ভিতরে লালার আঠাল অন্ভূতি, ঠেটি চাপা, অভি স্পণ্ট মরলা কগভের ভাজ। ছোটবো বারাদায় এসে দাঁড়াল। বটঠাকুরের ঘরের দরজা থোলা। তার অংগে এ-বাড়ির কেউ জেগেছে, এটা যেন ছোটবোয়ের কাছে খ্ব অনেলের খবর মনে হলো। বটঠাকুর কেথায়? বাথবামে? ছোটবৌ জাচটাকে একটা ঘারিয়ে বট-ঠাকরের ঘরে উর্ণিক দিল। ঘরটা স্থাবছা অন্ধকার। বাইরের সামান্য আলো ভিতরে গেছে। বছদির ছবিটা মোটেই স্পণ্ট নয়। সেই কাঁচে বড়দি ছায়ার মতে। অস্পন্ট। তব্ ছোটবৌ দেখল বছদি সেজেছে এবং হাসছে। ফটোর কাঁচে ছোটবেরৈর প্রতি বিশ্বও কম স্পন্ট নয়। তার ঠেট্টি ভক্তি। বড়দির এই বিয়ের **হাসি আর সাজেব ক**থা মনে করেই বট্টাকুর সারারাত জেগে থাকেন। বটঠাকুর হে সারারাত জেগে থকেন-এটা সে ধরেই নিল। তারপর कर्याभाएकत निर्क काठ ठालान-यन भाग ধাতে যাছে। ছোটবো মরতে চকল। আজ রাত থেকে দাঘরে দাজন জেগে। থাকবে। ছোটবাবাকে সে তো সেদিন থেকে জাগিয়ে রাখ্যত পারত! নজেনে শোয়া অভ্যাস, একজন শহুতে হবে বলৈ কেন একজন জেগে থাকবে পাশের থালৈ বিছান্টার নিকে তাকিয়ে। ছোটবো সিংড়ি নিয়ে নিচে নামল। ছোটবো জানে না কাল রাছে কখন ছোটবাবা এসে শারেছে। ছোটবাবা কেন তার গায়ে হাত দিয়ে জাগালেন না? খ্র নরম কোমল করে বাহাতে হাত বাখলেই ছোটবো জেগে যেও। (খবে নবম কোমল কোনো কভুকে ছাল্ডে—এমনিভাবে ছোট্রো কুয়োর কান্য হাত দিল।) ছোট্রৌ হাম চোখে অস্পতি আলোতে ছোটবাবার মাখের দিকৈ তাকিয়ে হাসল। ছোটবৌকে ছোট-বাব জাগালেন না। আজ রাভ থেকে নিজেকে জেগে থাকতে হবে। যে একবার মরতে গায়ে মরতে পারে না, যে-করেই হোক নিজেকে সে মার্কেই। কত কৃতিনী মনে পড়ল ছেটবৌয়ের। কয়োপাড়ের চার-দিকে চোখ ব্যালিয়ে ছোটবৌ দেখল শ্যাওলা সারারাত জল পড়েনি তাই মাকনো ভাই, ঝামা, নদামার মাথে ভাত-ডালা, কুয়োর কানা এবডো-খেবড়ো। ('ছাট্রাররে হাতির তেলো িবেটালাও মরতে গিছে মরতে না-পোর ফিরে এলে, ছেটেবৌ ভাবল, সে মরণেরও

নয় জীবনেরও নর: কী কারণে ছোটবো মরতে গিরেছিল, তা সে ভূলে গেছে ৷ কিন্তু মরতে গিয়ে যে একটা পা খুইয়ে ফিরে এসেছে, তাসে ভূলল না। কেউ ভোলেনি। এখন মরতে না পারলে সে আর বাঁচতে পারবে না। বড়বৌধের মতে। সে হাসতে পারবে, বিয়ের সাজের হাসি, বড়ো ফটো, মোটাসোটা, ব্ৰুক পর্যণত, ফটোর কাঁচে ছোটবোঁয়ের ছায়া, কুয়োর জলে ছোট-বৌরের অর্থাসপন্ট ছায়া। কুয়োর ভেতরে আবছা অন্ধকার। কুয়োর জল আবছা, তব্ বোঝা খায়, কালো। ছোট গদ্ডী। সেটাকু হাতে পাওয়া যাবে না। ছোটবো মনে মনে কুয়োর জলের ভেতর ডুবে গেল। মাটি ছ'লে। আঁকুপাঁক করল। মাটি থ্রলোল। ওলট-পালট খেল। কুয়োরতলের কাদার মধ্যে থিমডোতে লাগল। কুরোর তলেব টিনের পাতে আরু নানা জিনিয়ে হাতের তেলে কেটে গেল। র্ভ বের্লে, কালে জনের মধ্যে একটাখানি লাল স্টোর মধ্যে রকু। মিশে ধেল। ছোটবৌধের মাথা নিয়ে হলো। একটা ঠাঙে হটিছতে। ভাল হয়ে উপরে ডাং ডাং করতে লাগল। মুখ্টোর নাক থাতনি কাদায় গে'গে গেল। কাত হায়ে কুয়ের কানায় আউকে গেল। পেউটা স্থ-তেকে ভারি হয়ে উঠল। তেনে উঠল। সমস্ত শরীর জলের তলে, কেবল উনউলে সাদ হলদেটে পেটটা জলের উপরে, শাড়িট দেখা যাচেচ ৷

करभा उंदरह आहा र्टीह करर रकते? সকলে উঠে উন্তান আঁচ লিভে পালে না ? বটঠাকর বাধর,মে এত দেশি করেন! ছোট্ৰেট আনাৰ কুয়েন্ত জন্মত দিৰে **ভারাস। প্র**তিবিদ্ধ। বড়চিত্র ৪০টার । ক'চে **প্রতিরেশ্ব**। ছোটারী ছবিছে ক্ষরেওকে, হাসহে। ক্ষেরে জল কালো। ভেটাটা কার্যনার দিকে ৮ইল। খালি। ভারেরপায ছোটাবোঁ কক'শ কান্য দ্যাটো 😘 কার ধার শর্কীরের উপারের অংশটা কুরোর ভেডার ু দাসিয়ে দিল। ছোটবারে হাতের তেলে। নর্ম, স্পূর্ণ কোমলা। ছেটেরৌ এবর আরে একটা ঝারেক হাতের হর চেড়ে ফেরে। মন ঠাকুর : লবংগ : ছেটেবাব্য : ছেটিয়ো ⁽ৰুত্ একটা ভাবতে গেল, পারল না, আর্গ করে একটা কাল্লা শ্রের হয়েই থেখে যাওয়ার ধর্মি কানে এল। ছোট্রে রেল লাইন থেকে। উঠে পড়ার মতে: দ্রতগতিতে উঠে দাঁড়ালা। रमथन वादागनार व्यानवृत्ति शौ करत्। कर्व কাপছে।

ছোটবৌধের দুই ঠেটি আর জোড় লাগল না। মধলা কাগজের ভাঙ্গটা ঠেটি থেকে উপে গেল।

এক বছর পর ছোটবোয়ের একটা দ্ব-পা-অন্যাধাক্যা হলো।



আমার একেবারেই ইচ্ছে ছিল না, াড় জা জোর করে ঠেলে পাঠালো। বললে, 'নতুন, অত লজ্জা দেখাস নি। ঐ লজ্জা করে *ফুরেই* আমরা সব হারিয়েছি, এখন তোদের । দখলৈ শুধু হিংসেয় জনলে পুড়ে মরি।[,] শড়জা আমার চেয়ে বয়সে অনেক বড়। তাই 'বয়ের পর যৈদিন প্রথম আলাপ ২য়, আ'ম গয়েসের এবং **সম্পর্কে**র মান বাথবার জন ারণাম করলাম, সোদন থেকেই বড় 🐓 'মামাকে 'তুই' বলতে শুরু করোছল। আর ।য়হেতু আমি ওর ছোটো দেওরের বউ, অর্থাৎ বাড়ির একেবারে আনকোরা নতুন াউ, সেই হেতু আমার নাম হলে: 'নতুনা ার বড় জা বললে, 'দেখ নতুন, যা কিছা ফ্তিট্তি এখন করে নে, এরপর তো শারাটা জীবন আমাদের মত হ'াড়ি ঠেলতে হবে।' আমার তখন সবে বিয়ে হয়েছে অনভাসের ঘোমটা টানতেও কেমন হাসি ছাসি পায়।

তাই বড জার খোলাখালি কথাগলো শ্লে কেমন লজ্জা লজ্জা করতো, কিল্ড' তাই া জার দমবার পাত্র নয় তার দেওরটিকে ধ্বলে, 'ছোটঠাকুরপো, নতুনকে নিয়ে পরেী াক দাজিলিং কোথাও ব্যেডিয়ে এস। দিন করেকের জন্য। এই যে হানমনে না—ोক ালে, আমরা কি ছাই জানি আজকালকার াতিনীতি।' তা শ্নে এমনভাবে হাসল গতিম তাকালো আমার দিকে যে বেশ ্বিতে পারলাম অমন একটা ইচ্ছে ওরও ^য না হক্ষেত তা নয়। গৌতনের গোপন ক্ষোণা ব্রথতে পেরে—না. আজকালকার মরেদের মত ওকে নাম ধরে ডাকাত আমি শারি না। পরেরানো দিনের বউদের মতই শাড়েঠারে ব্রিষয়ে দিই, তব, সত্যি কথা ালতে কি, মনে মনে ওর নাম ধরে ডাকতে নমটা মুখের মধ্যে লোফাল,ফি করতে বশ লাগতো। কিন্তু বড় জার সামনে তো মার নাম বলতে পারি না। তাই বললাম, ^{ওর'} ই**ছে হ**য় **হা**ক আমি যাবো না। ^{ড়জা} রাগ দেখিয়ে বললে 'ওরে আযার ^{নিজা}বতী লতা ঘাবার ইচ্ছে নেই। ধা লছি শোন' 'নতুন' ছুটিতে দিন করে**ক** काशान निदन

ঠেলেঠ্লেই একরকম পাঠিয়ে দিলে। আমি আর গৌতম এসে উঠলাম প্রীর একটা হোটেলে। একেবারে সমুদ্রের গা ঘে'ষে। সমুদ্র আমি আগে তো *কথনো* দেখিনি, দেখে স্তম্ভিত হয়ে গেলাম। অভিভূত হয়ে গেলাম, সম্দু এত স্ফরে! সম্ভে এমন বিশাল! মনে হলো, কোথায় ছিলাম আমি এতদিন! এমন একটা রুপের পৃথিবী আছে জানতামই না আমার ব্যকের মধ্যেও থেন খুশীর ঢেউগালো গরে-মরে করতে করতে ক্যতিতে ফেটে পড়তে লাগলো, ছেলেমান্ধের মত আমার নাচতে. গাইতে, ছুটো যেতে ইচ্ছে হলো চেউগাুলোর কাছে, কিন্তু তা না করে আমি গৌতমের উপর খুশী হয়ে উঠলাম, ঠায় ওর মুখেব দিকে তাকিয়ে মিণিট-মিণিট হাসি - হাসতে লাগলাম। আর ওর স্বর চোথজোড়ার দিকে, চোখের তারা দুটোর দিকে তাকিয়ে থাকতে থাকতে আমার কেমন ভাবতে ভাল লাগলো, ওর চোখ দুটো যেন সম্দুর এঙ নীল, সম্দ্রের মত গভীর, সম্দ্রের হত বিশাল, আনন্দে আহ্মাদে ওর চোথের কটি সমুদ্রে ভূবে যেতে ইচ্ছে হলো, হারিয়ে যেতে ইচ্ছে হলো।

ও বললে, বি দেখছে। অমন করে ? ওর বাধ হয় একট্ অস্বাসত লাগছিলো। লাগবারই কথা। কেউ একজন হাতে চিব্ক রেখে ঠায় মুখের বিকে তাকিয়ে থাকলে অস্বাস্ত লাগবে না? কিল্ড আমি কি করবো। আমাকে একট্ দ্বট্মিতে, পেয়েছে। বললাম, সম্দুর্ব দেখছি:

ও কেমন অপ্রতিভ হলে। হাসলো। বললে, 'আমি কি সমন্ত্র নাকি?'

আমি আরো দংগ্রীম করে সরে দিয়ে গেয়ে উঠলাম 'তুমি হও গহীন গাং, আমি ডুইবা মরি!'

ভ তিনটে আঙ্লের হালকা থাক্পড় দিলে আমার গালে। আমি খিল খিল করে হেসে উঠেই ছাটে বেলিয়ে এলাম ঘর থেকে। বালির উপর দিয়ে ছাটতে ছাটতে গিয়ে দড়ালাম একেবারে সম্প্রের ধারে, বালির উপর যেখানটাতে তেউপ্লো ফেটে ফেটে ফেনা হরে পড়েছে, সেখানে। না, ঠিক অতদ্রে নর। তেউরের অত
কাছে যেতে আমার কেমন ভর ভর করলো।
আমি তো আর আলে সমূদ্র দেখিনি, তাই
অমন স্কুদর তেউগ্লোকে যেমন ভালোও
লাগলো তৈমনি কাছে যেতেও কেমন একটা
আত ক বোধ করলাম। অচেনা মান্বের
কাছে যেতে হলে যেমন ভর ভর করে,
তেমনি ঠিক কেমন, বলবো? ফ্লেসজ্লার
রাতটার মত। ভালোও লাগছে মনের মধ্যে
একটা বেশ থ্শাব গ্লিগ্নে, আবার
অচেনা মান্য গোত্মের এত কাছে যেতে
হবে ভেবে কেমন এক ভর-ভয় ভাব।

হঠাৎ চমকে উঠে ফরে **তাকিরে** দেখি কি গৌতম এসে দট্ডিরেন্ডে একেবারে আমার পাশ^{টিতে।} গা ঘে'বে। **আর** আমারই মত তাকিরে আছে সম্দ্রের দিকে।

ছোট ছোট এক একটা দল পাড় ঘে'বে হে'টে যাছিল। মেয়ে প্রেষ, ছোট ছোট বাটা হেলেমেরের।। যেই টেউ এসে পড়েছে দ্' একজন ছুটে যাছে সাদা ফেনার পা, ডোবাতে। ওদিকে জেলেদের ভিঙির মারি পড়ে আছে বালির উপর, আর বালির উপর বসে বসে বড় বড় হালগালো মেরান্মত করছে ছেলের।।

'এই, ওরা কুড়োচ্ছে কি? আমি জিগেস করলাম।

ও বললে, 'ঝিনুক।'

'ওমা, তাই নাকি-' আমিও ধীরে ধীরে এগিয়ে গেশাম। দেখলাম ছোট বড় নানা রক্ষের, সাদা আর রভিন ঝিনুকের **রাশি** এসে পড়েছে বালির ওপর। আমি দাঁডিয়ে দ[ি]ড়েয়েই দেখলাম। কুড়োতে কেমন **লক্ষা** হলো। আমার বয়েসী অনেক **মেরেই** বিন্তুক কুড়াতে কুড়াতে এগিয়ে বা**চ্ছিলো।** আমি কেমন লক্জা পাচ্ছিলাম, কারণ, ধারা সামনে দিয়ে তেওি যাছিলো, ভারা ফরে ফিরে তাকচ্ছিলা আমার দিকে। মেয়েরাও। আমি দেখতে থাব সাদের আমার চোখ-দ্যটো টানাটানা, আমার ঘড়িটা কি চমংকার, আমার ফর্সা সুড়োল হাত দেখলে নাকি হাত বলোতে ইচ্ছে করে, এমনি সব কথা বলে ইস্কুলের বন্ধ্রোও আমাকে ক্ষ্যাপাতো. কলেভের মেয়ের।ও প্রশংসা করতো। কিন্ত সম্ভের পাড় দিয়ে যেতে যেতে ওরা বখন বাব বার ফিরে ফিরে তাকা**চ্ছিলো তখন** বেশ ব্ৰুতে পার্ছিলাম রূপ দেখাছলো



না ওরা। বরেস হওরা দুটি মহিলার হাসি দেখেই ব্ৰলাম ব্যাপারটা। আসলে ওরা ব্ৰেডে পারছিল আমাদের সবে বিয়ে হরেছে। ও ঠিক বোঝা যায়, আমি নিজেও ডো হুড মেরেকে দেখেই ধরে ফেল্ডাম। বিরের পর চেহারটোই কেমন অনারকম লালা।

ভা ছাড়া সিপিতে সিদ্ধিও বোধহয় একটা বেশী দিয়ে ফেলতাম তথন। একটা বেশী দরে অবধি।

বরা তাকাছিলো বলে লম্জা নয়, সবে বিরে হয়েছে বলে লম্জা নয়, বরং মজাই লাগছিলো। তবে লম্জা হছিল বিনৃক্ কুড়োতে, ওদের সামনে ওদের মত বিনৃক্ কুড়োতে। কিন্তু সে আর কতক্ষণ। এক সময় দেখলাম, নিজেরই অজানেত কখন হাসতে হাসতে আমিও বিনৃক্ কুড়োতে বিরে করেছি, তেউরের ফেনার পা ভূবিরে হাটছি। আর তেউ লোগে কাপড় ভিজে বাবে বলে কাপড়টা একবিষত তুলে ধরেছি। লম্জা দ্র হয়ে গাছে ভর ভেঙে গেছে তথন। হাটতে হাটতে একট্ আন্ভবেই ব্রুতে পারছিলাম যে গোতম পিছন-পিছন আসতে আসতে আমার ফর্সা পা—পারের উম্বুত্ত আংশট্রুর দিকে তাজাতে।

এক বিষত পা উপন্ত করে হটি। এক জিনিস। আর সমুদ্রে সনান করা অনা। স্বামী বলেই তো বেগী অস্বস্তি। তা ছাড়া অতলোকের সামনে। না বাবা, আমি সমুদ্রে স্পান করবো না।

পরের দিন সকাল থেকেই নুলিরাটা পিছনে লাগলো। সম্পরে নাহাবে না দিদ।

ও বলে উঠলো, না, না, না, নালয়া লাগবে না। আমি কি নতুন নাকি এখানে! আরো কডবার এসেছি।

সভাি, গৌতমের উপর এত হিংসে **হচ্ছিলো। ও ক**তবার এসেছে, অথচ আমি किना धरे अथम। धमन हमस्कात जामगा **হেড়ে কোথা**য় ছিলাম এতদিন? যাক এসেছি বখন চোখ ভৱে দেখে নিই, প্রাণ **ভরে নিশ্বাস নিই। যেখানটায় সকলে স্নান ব্দর্ভিলো সেইখানটায় এসে বালির উপ**র বসলাম দক্ষনে। স্নান করতে করতে সবাই रहरन नदरों भरिंदे शास्त्र । एउं रनल मार्किए শ্রটোপন্টি খাক্তে মেয়েরা, দ্-একজন শরের ডেউরের মাধায় লাফাতে লাফাতে व्यत्नक व्यत्नक मृत व्यवीध हाल शास्त्रहा 🗪র তারাও ওদিকে, অনেক দরের অথৈ **ज्रां काट्ना-काट्ना क्यूप-क्यूप** कार्यकरी **ডিভিতে করে** মাছ **ধরছে ন্**লিরারা। পাড় বেকে কেউবা ডিভি ভাসাবার চেণ্টা করছে বার বার ফিরে আসছে ঢেউ লেগে।

ও বললে, কি. সম্প্রে ন্যান করবে দা। আমি আতংক চাত নেড়ে বলে উঠলাম না বাবা অত লখ নেই আয়ার। —'আরে দ্ব, ভবের কিছুট নেই। আমি নিজে বাবো ভোমাকে দেখো।' গোতম বললে—এমনজ্ঞাৰে তাচ্ছিল্যের সংগ্য বললে, ফেন উনিও একজন ন্র্যালয়।, সম্ফের সংখ্য চেনাশোনা।

আমি মনে মনে বললাম, তোমাকেও
আমি নালিয়া না নিয়ে একা নামতে দেবে।
কি না। বিয়ের পর সবাই বউরের কাছে
অমন সিভালার দেখাতে চার গোতমবাব,
আমি তা জানি।

মনে মনে একথা ভাবতে ভাবতে আমি হঠাং ঠাটুার স্কুরে ভাকলাম, ও গৌতমবাব্র।

ও ফিরে তাকালো।

বললাম কি দেখছেন স্যার?

--- मघः म ।

বল্লাম উ'হ, আমি জানি।

—[**क** ?

रहरम উঠে বললাম, বলবো না।

সতিত্য, মেরেরা যে কি করে স্নান করছিলো আমার নিজেরই অবাক লাগ-ছিলো। কথনো বালিতে গড়িরে পড়ছে, কাউকে প্রোত্তর টানে টেনে নিয়ে যাছে। করে। কাপড়চোপড়—একজনের অবস্থা দেখে তো আমি আর গোতম ছেসে লাটিরে পড়লাম। কোরা শাড়িখানা হাতে নিরেই ট্রপ করে বসে পড়লো গলা অর্থাই জলে ভুবিরে। কি করনে, জলের তোড়ে লাভ-লাজা রাখা দায়। আর কাপড়-জামা নামেই আছে। জলে ভিজে এমন অবস্থা, দারীরের কিছুই চাপাঢাকা থাকে না। প্রে,বগ্লোও কেমন ক্যাট-ক্যাট করে তাকিরে আছে দেখো।

আমি ইয়ার্কির ছলে গৌতমের চোথের দিকে তাকালাম—এই, কি দেখছো মশাই অমন ভ্যাব-ভ্যাব করে?

ও হাসলো। আর আমি ভাবলাম, ওদের মত ওভাবে সম্প্রের জলে নামতে পারবো না আমি এত লোকের সামনে, গোতমের সামনে।

কিন্তুইচ্ছেও যে নাহচ্ছিলোতানয়। এক-একবার ভাবছিলাম, মন্দ হয় না। বেশ তো জলে লুটে:পুটি খাওয়া যায়। বিয়ের আগে এই তো সেদিনও কমকম বৃণিট পড়ছে, আমরা দ্ব'বোন ছাদে গিয়ে ভিজলাম। তবে হাাঁ, ন্লিয়া নানিয়ে নামতে পারবো না। ওদের মত নুলিয়াটাকে হাত ধরতে দেবো না অবশ্য। মেরেগ**্লো** অমনভাবে ন্লিয়াটাকে হাত ধরেই বা যাচ্ছে কেন ঢেউ কেটে কেটে? টাল সামলাতে না পেরে পড়ে যাবে, ভেসে যাবে, এই ভরে? ा अक्षेत्र प्रतिष्टे नक्त थाकरव निकालो। नाः अछन्त अस्य नम्बद्ध स्थान मा करत लाल মনে খাতথাতুনি থেকে বাবে। বড়-জা হয়তো জিগোস ক্রবে, হাাঁরে নতুন, সম্জে নেয়েছিস তো রোজ? তারপরও অবশ্য ইয়াকি ঠাটা করবে তা জানি। বড়-জা বলে-ছিলো, আগে নাকি এসেছিল একবার রুখের সময়। ননদরাও। এবার ওরা যদি সবাই আসতো, ভালো হতো। সবাই মিলে সমুদ্রে স্নান করা যেতো। বড়-জা বেশ ভাগ মানুৰ। সচিা, আমি কত সুখী, কত সুখী। কারো জীবনে বে এত সূখে থাকে বিষেত্র আগে কল্পনাও করতে পারিনি।

গোতম হঠাং হেসে উঠলো হো-হো
করে। তলমন্ত্রতা ভেঙে গেলো। সামনে
তাকাতেই আমি হেসে উঠলাম। তাইব
মোটা একটা লোক সমুদ্রে নামছিলো। প্রথম
তেউ লেগেই কাত। ফুটবলের মত গড়াতে
গড়াতে ফিরে এলো বালির উপর হুমড়ি
থেরে।

আরে, এর মধ্যে এত চড়া রোদ উঠে গেছে? বালি তেতে উঠেছে।

—কি, নামবে না? গৌতম জিগ্যেস করল।

আমি সারও দিলাম না, অমতও দ করলাম না। ভেতরে ভেতরে যে একট্ইছেছ না হছিলো তা নর।

গোতম বললে, চলো তাহলে তেল-তোয়ালে নিয়ে আসি, কাপড়টা বদলে অসি।

উঠে পড়লাম। হোটেলের নুলিরাট্য সেলাম করলে। নাছাতে যাবে না দিদি?

वननाम, याद्वा, मीफ़ाख।

গোতম বলে উঠলো, না, না, না, নির্লির। লাগবে না। আমি একাই পারবো তোমাকে সামলাতে।

আমার সবশ্য নিজের জান্য তত ভয় হচ্ছিলোনা, ভর হচ্ছিলো ওর জনাই। বললাম, থাক দা একজন সপো। স্বাই তো নুলিয়া নিয়েই নামছে।

তাচ্ছিল্যের হাসি হাসলো গোডম আমার কথাটাকে কোন আমলই দিলো না। হেসে বললে, তুমি দেখছি সান্ধ্র্বিতর চেয়ে ভীতু।

আমি কি যেন বলতে যাছিলাম, থেমে
গেলাম। কারণ, আমাদের দোতলার ঘরটির
পালের সিড়ি বেয়ে তেতলার সেই বউটি,
বার সাজগোলের ঘটা দেখে আমরা
'সাজ্গিত' নাম দিয়েছিলাম, ডাক নেমে
আসতে দেখলাম। পিছনে দের স্বামী।

চোথাচোথি হতেই বউটি হেঙ্গে বললে. যাবেন না সমুদ্রে স্নান করতে?

কি আশ্চম', ওই বউটা—কাপড় ভিছে
বাবে এই ভয়ে বিন্তুক কুড়োবার সমস্কেও যে
তেউরের কাছে যেত না, সেও চলেছে সম্মাঃ
নান করতে? একটা সাদাসিধে শাড়ি
পরেছে, গোলাপী রভের টার্কিশ ভোরালেটা
বাঁ কাঁধ থেকে ভান কাঁধ অবধি ছড়িয়ে
দিয়েছে স্ছল্দ ব্কের উপর দিয়ে, একরাশ
মাণানো চলে তেকে গেছে সারা পিঠ।

নিজের অজ্ঞাতেই আমি গৌতমের দিকে তাকালাম। চোখ সরিক্লে নিলে ও আর বউটির প্রদেনর জবাবে হেসে-বললে তথন থেকে তো তয় ভাঙাবার চেষ্টা করচি

আমি হাসলাম বটে, কিল্ডু মনে মনে
চটে গেলাম গোতমের উপর। আমি
সম্প্রকে ভর পাই—এ-কথাটা বউটিকে ন শোনালেই কি চলতো না? আর গোতম বউটির দিকে অমন মুখ্য তালিরে ছিলোই
বা কেন? না হল ক্ষােমর চেরে একটা, লাল- গোজ বেশী করে। দেখতে কি আমার চেরে স্কেরী?

বউটি এবং তার স্বামী হাসতে হাসতে নেমৈ গেলো। আমি চুল খলে কাপড় বদলে নেমে পড়লাম একটাও কথা না বলে। গোতম পিছনে পিছনে।

নুলিরাটা আবার ধরলো বের্বার মুখে।

भोजम वनदन, ना. ना, नागद्व ना।

আসলে ওর মনে প্রথম থেকেই একটা ৰাহাদ্বির দেখাবার নেশা ঢ্কেছিলো বেশ বুঝতে পেরেছিলাম। ও যেন সব জানে. সব বোঝে, সব পারে। প্রথম প্রথম ওর এই ভাবটা আমার বেশ ভালোই লাগছিলো। বেশ একটা নিভরি করবার মত মানুষ যেন। কিন্তু যেখানে স্তাই ভয় আছে, সেখানে এই বাহাদর্বির কি দরকার। দু' আনা পয়সা ছাড়া তো নয়, তার বেশী আশাও করে না নুলিয়াটা। কিন্তু পয়সার জন্যে তো নয়, বরং পয়সা খরচ করতে পেলেই যেন খুশ্মী হয় গৌতম। আসলে ওই অকারণ টাকা খর্চ করার মধ্যেও যেন কি একটা বাহাদ্যরি লাকিয়ে আছে। বেশ ব্রুথতে পারতাম, ও যেন আমার চোখে—তার নব-পরিণীতা স্ত্রীর চোখে নিজেকে বড় করে তোলবার ফিকির খ্লছে। কখনো অপ্রয়োজনে টাকা থরচ করে, কথনো त्रमञ्जल पुष्क करत, कथरना वा स्थारविलात ঠাকুর-চাকরকে ধমক দিয়ে ও বোধ হয় আমার কাছে ওর মূলা বাড়াবার চেন্টা কর্বছলো।

নালিয়াটা কিল্কু নাছোড়বালা। ফিরে তাকিয়ে দেখলাম সে এসে দাঁড়িয়ে আছে একটা দরে।

গৌতম যখন ওকে তুচ্ছ করে আমার হাত ধরে হিড়হিড় করে টেনে নিমে যেতে গেলো, নুলিয়াটা তখন শুধু বললে, কারিণ্ট আছে বাবু।

কিন্দু কে শোনে তার কথা। গোতম
টানতে টানতে আমাকে তখন জলে নামিয়ে
নিয়ে গোছে। ওর হাত ধরেই চেউয়ের ঘা
খেতে খেতে ভয়ে এগিয়ে যাচ্ছিলাম।
কিছ্টা গিয়ে আর সাহস হল না। ও যত
এগিয়ে যেতে চার আমি তত বাধা দিই।
শেষে হাল ছেড়ে দিলে ও, বললে, বেশ তবে
ভূমি উঠে য়াও, আমি একট্, পরে যাবো।
তখন ওর কথা আর কে ভাবে, নিজে
শালিয়ে বাঁচতে পারলে হয়।

পাড়ে উঠে এসে চিৎকার করে বললাম, এই! বেশী দরে বেরো না। কিম্পু বললেই কি আর শোনে। ঐ বে বললাম, এর মনে তখন বাহাদরি দেখানোর নেশা ঢুকেছিলো। বিরের পর তখন একটা মাস্থ কাটোন। এ-সমরে নতুন বউতির চোখে নিজেকে নেপোলিয়ান বানানোর ইচ্ছা কোন স্বামীর না হয়। ২ তাই আমার কথায় কান দিলো না। আমার অবশ্য বেমন ভয়ও করছিলো, তেমনি আলোও লাগাছলো। সাজনিত

ইতিমধ্যে ন্দান সৈরে ভিজে কাপড়ে এসে
দাঁড়িরেছে আমার পাশে, আর তার
ন্বামাটি ন্দান করছে তথনও কিন্তু
ন্লিরার হাত ধরে। তাকে দেখে আমি
হেসেই ফেললাম। মেরেমান্বেরও অধম,
কি ভাঁতু রে বাবা ভদ্রলোকটা। মনে মনে
ভয় পেলে কি হবে, গর্বও হাছলো
গোতমের জনা। ও একা একাই কতদ্রে
এগিরে বাচ্ছে দেখে। একটার পর একটা
টেউরের মাখার লাফ দিরে, কখনো টেউ
ভেঙে পড়ার মূহুতে ট্রপ করে ছুব দিরে
তখন ও অনেক দ্র চলে গেছে। আমি
টিংকার করে ভাকলাম একবার, বোধ হয়
শ্রেতে পেলো না।

একি! এতদারে চলে যাচ্ছে কেন ও? এতদার চলে গেছে তখন গৌতম, দেখাদে আশেপাশে আর একটিও লোকও নেই।

সাজ্বিকর শ্বামী ততক্ষণে উঠে
এসেছেন, আর বোঁটি গোতমের দিকে
আঙ্গুল দেখিয়ে তার স্বামীকে বললে,
দেখো, দেখো, উনি কতদ্যুর গেছেন। বউটির
চোখের দ্ণিউতে, গলার স্বাম স্থান্থ ভাবট্কু দেখে গর্বে বৃক্ ফ্লে উঠলো
আমার। সভি, গোতম যেন ম্হুর্তের জনা
নেপোলিয়ানের মত বার হয়ে উঠলো
আমার চোখে।

কিন্তু সাজন্দিত আর তার শ্বামী হোটেলের দিকে চলে যেতেই আমার ব্বেকর উপর একটা আতংশ্বর পাথর চেপে বসলো। আর ঠিক সেই মুহুতেই আমার মনে হলো গৌতম যেন নিজে ইচ্ছে করে এগিয়ে যাচ্ছে না, গৌতম ব্বিথবা স্লোভের টানে তাল রাখতে না পেরে ভেসে যাচছে। হাঁ, তাই। হাত তুলে তাই বারবার যেন আমাদের দৃণ্টি আকর্ষণ করার চেন্টা করছে। যেন হাত তুলে চিৎকার করে বল্ছে—আমানে বাঁচাও।

অতদ্র থেকে তার চিংকার কানে
এসে পেণীছানোর কথা নয়। কিন্তু সমস্ত
শরীর মৃহতে মধ্যে থরথর করে কেপে
উঠলো। আত্তেক, ভয়ে। মনে হলো,
গোতম ভেসে বাছে, স্থির মৃত্যুর দিকে
এগিয়ে বাছে।

বিদ্রান্তের মত আমি এদিক-ওদিক তাকালাম, কি করবো ঠিক করে উঠতে পারলাম না, ন্লিয়াটাকে থক্তেলাম।

লোকটা ঠার দাঁড়িয়ে আছে তথনও।
অন্যানাকভাবে কি যেন দেখছে। সমসত
শরীর শিউরে উঠলো আমার, চোখ ঠেলে
কামা এলো। পাগলের মত হয়ে গোলাম
আমি। ছটে গোলাম নলিয়টার কাছে।
তারপর মুহুতেরি মধো আমার দু' হাতের
দুটো বালা খলে তার হাতে গাঁলে দিয়ে
কামায় ভেঙে পড়ে অনুরোধ করলাম ওকে,
বাঁচাও তুমি, বাঁচাও। ঐ দেখো ছেসে বাছে,
ভূবে বাছে... ঠিক কি বলেছিলাম, কি ভেবে
বলেছিলাম, নিজেও জানি না। সেই
ছুতুতে জামার যাখার ঠিক ছিলো না।

কিম্পু ন্লিরাটার মাখার ঠিক ছিলো। সে বালাদ্টো আমার হাতেই গাঁকে দিরে একবার তাকালো গোতমের দিকে। বিড় বিড় করে কি যেন বললে, তারপর সম্দ্রের বুকে ঝাঁপিয়ে পড়লো।

উঃ, সেঁযে কী উৎকণ্টায় একঘণ্টা কেটেছে, আজ ভাবলেও সারা শরীর ঘামে ভিজে যায়, খুম আসে না কোনো কোনো দিন।

ন্লিয়াটা একট্ একট্ করে এগিয়ে
চলেছে, একটার পর একটা ঢেউ পার হচ্ছে,
আর আমার মনে হচ্ছে বেন কড সময়
পার হয়ে যাচ্ছে। বালির উপর এ-প্রাচত
থেকে ও-পাত অর্থা নিচ্ছল ছোটাছ্টি,
নিজেরই অজ্ঞাতে কথন আমিও জলের
কাছে এগিয়ে এসেছি...একটার পর একটা
ঢেউ পার হচ্ছে ন্লিয়াটা, আর আমার মন
বলছে, পারবে না, পেশছতে পারবে না
ন্লিয়াটা, গোতমকে বাঁচানো বাবে না।

এক নিমিষের জনো গোতমের শরীরের কালো বিন্দট্কু একটা মাতাল তেউরের মাথায় উঠেই অদৃশ্য হয়ে গোলো। আর আমার পা-দটো থরথর করে কে'লে উঠলো, মাথাটা রিফারিম করে উঠলো, নিঃশ্বাস নিতে কণ্ট হলো, চোথের দ্ভিট ইঠাৎ ঝাপসা হতে হতে সামনের সবক্ছির অন্যকার হয়ে গেলো, সম্টের গার্জন আর স্নানাথীদের চিৎকার কোলাহল একট্ একট্ করে স্তব্ধ হয়ে গেলা...আমি কি অন্ধ হয়ে বাচ্ছি, আমি কি কানে শ্নতে পাবো না আর? বীভৎস একটা আতংক চিৎকার করে কে'দে উঠতে চেণ্টা করলাম আমি, তারপর বোধ হয়, বসে পড়লাম বালির উপর, কিংবা পড়ে গেলাম, কিংবা...

কি যে হয়েছিল আমি জানি না।
একট্ একট্ করে বখন জ্ঞান ফিরে
এলাে, দেখলাম একরাশ লােক আমাকে
ঘিরে আছে। ম্থের সামনে ঝা্কে পড়ে
অচেনা এক ভদুমহিলা বাতাস করছেন
আমাকে, আর ন্লিয়াটা চােখের পাভা
খলাতে দেখে একম্খ হাসি নিয়ে বলছে,
বাব্কে জান বঁটায় দিয়েছি, দিদি বাব্

ধীরে ধীরে আমি উঠে বসলাম। দেখলাম, পাশে বসে ক্লান্ডিতে অবসমতায় গোতম তথনও ধক্তছে, ক্লান্ড অবসম শ্রীর টানতে টানতে, ন্লিয়াটার কাঁধে ভর দিয়ে ধাঁরে



শ্বীর ছোটেলে ফিরে এলাম। ফিরে এসে
বিছানায় ল্টিরে পড়লাম। ঘুম ঘুম, পরম
ভাশ্তর ঘুম।

বিকেলের দিকে যথন হোটেলের
সামনের বারান্দায় দ্বাখানা চেরার টেনে
নিরে এসে বসলাম, তথন আমার শরীরের
ক্রান্ত দূর হয়েছে, কিন্তু গোতমের সারা
দেহে তথনও বাথা, অসহ্য বাথা। দৈতোর
মত শক্তিশালী অবিশ্রান্ত তেউরের সংগ্রা ধ্বাম্ব করে করে পরাজিত সৈনিকের মত
ক্রান্ত আর লাজ্জিত সে। মুখ তুলে
ভাকাতেও লক্ষা।

ইতিমধ্যে গ্রেকটো রটে গিরেছিলো সারা হোটেলে। সকলেই একধার করে এসে সম-বেদনা জানিয়ে যাচ্ছিল, খেজি নিয়ে যাচ্ছিল। গোতম কেমন আছে, আর লজ্জার জাশ্বন্ডিতে আমি মাটিতে মিশো খেতে চাই-ছিলাম। মনে হচ্ছিল, এই সম্দ্র ছেড়ে, এই হোটেল ছেড়ে পালিরে খেতে পারলে যেন বাটি।

এক সময় সাজ্বিত আর তার প্রামী এসে দাড়ালো পিছনে, কেমন আছেন?

গৌতম অপ্রতিভ হাসি হেসে তাকালো মুল্লা, ভালো। তারপর মাথা নিচু করল।

আর ভদ্রলোকের দিকে তাকিছে আমার
মনে পড়ে গেলো। তাঁকে নুলিয়ার হাত
ধরে স্নান করতে দেখে আমি হেসেছিলাম।
পাশাপালি দুক্তনকে তুলনা করে গোডমের
দুঃসাহসের ক্রন্যে গর্ববোধ করেছিলাম।
ধরা চলে পেলো। আমাদের চোথের সামনে
দিক্তেই সমুদ্রের পাড়ে গিয়ে দাঁড়ালো।

আর তথনই চোখোচোথি হলো
দ্বিরাটার সংশা। সামনের রাণতাটা দিরে
যেতে বেতে সে ফিরে তাকালো আমার দিকে,
হাসলো, সেলাম করলো। ভারপর চলে গেল নিক্রে কালো। আর আমার সমসত মন কৃতজ্ঞতার ন্রে পড়লো। ও না থাকলে আঞ্চ কি যে হতো। গোতম বাঁচতো না:
জামি বাঁচতাম না। হাাঁ মৃত্যুই তো বলবো তাকে। বিয়ের পর একটা মাসও যেতে না বেতে যদি আমার বাইশ বছরের যৌবন থমকে থেমে যেতো ভাহলে, তাকে মৃত্যু

নিজেরই অজান্ডে কথন যে হাডের তিন ভরি সোনার বালা দুটোর হাত দিরেছি টের পাইনি। দচেতন হতেই একটা থানির দীর্ঘদ্যাস বেরিয়ে এলো। ভাবলাম লোক-টাকে এখনই ডেকে বালা দুটো দিয়ে দিলে

জ: ছোহলতা ৰঙ্গ এ.৪.৪.৪.৯ জ: এস. এন পাণ্ডে এমনি.বি.এস মোরনের রহস্য প্রাপ্তৰয়ক্ষাদর জন্ম · ফ্লা ৬ যৌনবিজ্ঞানের রঙীনও ব্যক্তির চিন্তিত অড়ি আধুনিক সংস্থাণ মোহন লাইরেরী ০০এ.ভুটনেল ফুর্ট ক্রানিকাতা - জ্বা হতো। ও আমার জনো বা করেছে, বা দিরেছে, তার কাছে এট.কু দান কত তুচ্ছ!

কিন্তু লোকটা তথন অনেক দুর চলে গেছে। তাই ভাবলাম, থাক্, এত তাড়া কিসের, লোকটা তো আর চলে যাছে না. কাল সকালে যথন আবার আসবে তথনই দিয়ে দেবো।

পর্নদন সকালে গোতম আবার চাণ্ণা হয়ে উঠলো। গতকালের সেই লব্জা আর অস্বাস্তি বেন ঝেড়ে ফেলেছে।

> বললো, চলো, বেড়াতে যাবে না? বললাম, চলো।

ঘর থেকে বেরিয়ে এসে গাঁড়ালাম সম্পুদ্রের পাড়ে, যেখানে অবিগ্যানত চেউ ফোটে পড়ছে ভারের উপর, তা থেকে একট্ দ্রো। আগেকার মত কাছে যেতে ইক্ষে হলোনা।না, ভয় নয় কেমন একটা বিভ্কা।

হঠাৎ দেখলাম নুলিয়াটা আর একজনের সশ্যে কাঁধে একটা, লাঠিতে বিরাট জ্বালটা ঝুলিয়ে যাচ্ছে আমাদের পাশ দিয়ে। চোখা-চোখি হলো। ও হাসলো। আমিও। ভাবলাম, এখনই দিয়ে দেৰো বালা দ্বটো? কিম্তু এই দুটো নিয়ে কিই বা করবে ও? ওর কাছে এ বালা দুটো যা, দুপোছি চুড়িও তাই। নিরে ওর বউকে পরতে দেবে হয়তো, বিক্রি তো করবে না। আর চুড়ি দুটোর দামই বা কম কি? দুটোর দামই বা কম কি? দুটোয় এক ভরি সোনা তে। আছেই। তাছাড়া কৃতজ্ঞতোর দাম তো সোনা দিয়ে বাচাই হয় भा। आद वाला मृद्धो ७८क मिरा मिरल भा বকবে নাতো! বড়জা? বলবে হয়তো, দ্ব দিনের জন্যে গোল নতুন, গিরেই বালা-জোড়া খ্ইরে এলি? বলবে নিশ্চয়ই, কারণ বালার প্যাটানটা বড়জার খ্ব পছন্দ হয়ে-ছিল। তার চেয়ে এক জোড়া চুড়িই বরং দেয়া যাবে নুলিয়াটাকে, ওর বউকে পরাতে বলবো। কিন্তু এ-জারগাটা ছেড়ে পালাতে না পারকে যেন শাহিত নেই। আমরা দুজ্জনে এই সম্দুদ্রের পাড়ে দাঁড়িয়েছি, অন্য সকলের মত সম্ভ দেখছি, কিংবা কিছ,ই দেখছি ন।। অথচ ঝিন,ক কুড়োতে কুড়োতে যারাই যাচ্ছে. ফিরে ভাকাজে আমানের দিকে আমার দিকে: আর তাদের সেই ভীর দুস্টিতে আমি বেন উপহাস দেখতে পেলাম। যেন সকলেই হাসছে আমাদের দেখে৷ যেন বলাবলি করছে। যেমন বীরত্ব দেখাতে গিয়েছিল, উচিত শাস্তি হয়েছে।

সাজনুষ্ঠির চোথে যেন এমনি এক উপহাস পারিকরে ছিল। সেই দুটি টানা টানা কোতুকে চণ্ডল চোথ, প্রশংসার বিক্ষারে বিক্ফারিত হয়ে বলে উঠেছিল দেখো দেখো, উনি কতো দুর গেছেন! সেই চোথক্সড়ো এখন যেন উপহাসে তীক্ষা।

আমি গোতমকে বললাম, চলো কাল সকালেই চলে বাই। আমার আর ভাল লাগছে না।

গোতম সাম দিলো, তাই চলো। কিন্তু যাওয়া হোল না। দেটদন থেকে ফিন্তে এসে গোতম বললে, বার্ঘ পাওয়া গেল না। জিন দিন পরে একটা ব্যবস্থা হবে।

প্রদিন স্কালে নিত্য দিনের মত্ত সাজ্বনিত আর তার স্বামী নেমে ्रात আমার চোথের সামনে দিরে। তেমনি ব্কের উপর গোলাপী ভোরালেটা বিছিয়ে। এক পিঠ এলো চুলে একটা অকারণ ঝাঁকুনি দিয়ে সিণ্ড বৈরে নামতে নামতে আমাদের ঘরের সামনে বউটি থমকে দাড়াল কিন্তু দ্দান করতে ধাবো কিনা সে প্রদন না করেই नित्म लाम। अर्थार ६ मका करत्रक स्य के দুর্ঘটনার পর সমুদ্রে স্নান করতে বাইনি শুধু পাক্ষ্য করেছে ? হয়তো বলাবলি করেছেও নিজেদের মধ্যে, হাসাহাসিও। বউটির উপরে অকারণে চটে গেলাম আমি। থামলোই যদি আমার চোথের সামনে তাহলে একটাও কথা বললোনা কেন? ভাবলাম, আমিও আর कथा वनदा ना अत्र সংশ্य, উত্তর দেবো না कारना श्राप्तनत्।

সেরে -যথন স্নান কিল্ড ওরা ম,খোম,খি 23 (निथा ফরেছে, গেল সি'ড়ির বাঁকে। আর स्काशाता रास डिंग्रला वर्डिंगे। —महानाइन ? আজ আবার একজন ডুবে যাচিছল, এकठा दर्दा नर्रामग्रा शिख वाँहाला তাকে। কেউ ভূবে গেলে বাঁচানো কাজ छामत्र न्वित्रारमत् । भन्नमात्र गत्रधन्छे नाकि টাকা দেয় সেই জন্য। সতিয় ? নালিয়ারা না থাকশে কি যে হতো। ...আর আজে 🌣 সাংঘাতিক জোয়ার ছিল, দেখলেন না তো।

অনগাল কথা, অনেক বলে গোল বউটি।
আমি শ্বং ম্লান হাসলাম একট্। আর
বউটি চলে যেতেই আমি গৌতমকে বললাম,
এই। ন্লিয়ার। নাকি টাকা পায় গরমেন্টের
কাছে, কেউ ডুবে গেলে বাঁচাবে বলে?

—কই শ্নিনি তো! গৌতম বললে।

আমি বললাম, হাাঁ ওপরতলার বউটি বে বললে। এই সাজ্বিত। দংপরে শ্রের এই কথাই ভাবছিলাম, আর আনমনে চুড়ি দুটো নিমে নাড়াচাড়া করছিলাম। চুড়ির প্যাটানটা পছন্দ করেছিলে। দিদি দিদি! দিদির কথা মনে পড়লেই ত ভাল লাগে। দিদির মন্ড বোধ হয় কেউ-ই আমাকে ভালবাসে না, গোডমও নয়। বিয়ের যড় ঝামেলা তো দিদিই মাথায় করে নিয়েছিলো। বান্ধার করা, ডেকরেটার ডাকা, ন্বশ্রেবাড়ির লোকদের আদর আপ্যায়ন। —বাবা ডো বুড়ো মান্ধ, কড় দিক আর সামলাবেন? দাদাটা তো আন্ডা আর হিক জিকেট নিয়েই আছে।

দিদি বিরের পর শংধ একটা উপদেশ দিয়েছিলো, বলেছিলো, দ্যাখ নমি, দেখবার জন্যেও নয়, সাজগোজের জনাও নয়, এগুলোই আমাদের ব্যাংক, আমাদের ভবিষ্যং। থেয়ালের বশে যেন এগুলো বিক্তি করিস না, হাজার জভাব অন্টন হলেও না।

আছে৷ অভাব অনটন হলেও এগ^{ুলো} বিভি করতে নিষেধ করেছিল দিদি, অবশা তা বদি নুলিবাটাকে দিরে দিই তাহলে কি দিদি ভাগ করৰে? দিয়ে অবশা দেবো না দিতে আমার নিজেরই তেমন ইচ্ছে এখন দ্মার হচ্ছে না, কেন দেবো, সাজ্বলিত বে ৰললে, ওরা গরমেন্টের কাছ থকে টাকা পায়। ভুবদত মান্য দেখলে তাকে বাঁচানো তো ওদের কাজ। তাছাড়া ডিভি করে কত মাছ ধরে আনে ওরা বিভি করে। নেহাত গরাঁবও ওরা নয়। ' এক-একজনকে স্নান করতে দিয়ে ওরা দ্ব আট আনা নেয়, তাতে ক্ম টাকা রোজগার হয় নাকি ওদের! আমি অবশ্য অকৃতজ্ঞ নই। ন্লিয়াটা সাতাই তো গোডমকে বাঁচিয়ে দিমেছে। ও না থাকলে, আজ কি দশা হতো আমার? কোনু মুখ নিয়ে আমি ,বাড়িফিরতাম? তাছাড়া, সারা জ্বীনটাই তো নণ্ট হয়ে যেতো, এই বাইশ বছর বয়সে-। না, নালিয়াটাকে কিছ, একটা দিতেই হ'বে। আংটিটা দিলে কেমন হয়। আমার তো অনেকগুলো আংটি। চেনা, ক্ষাচনা অনেকেই তো আংটি দিয়েছে। মৃত্ত বসানো যেটা, সেটা অবশ্য দেবো না। আর জামাইবাব্ যেটা দিয়েছে সেটা খ্ব সংশ্র দেখতে। ওটা রেখে দেবো, না রাখলে ভামাইবাব কি ভাববে? যদি কোনদিন পরতে বলে। ওটা দিয়েছি শুনলে জামাই-বাব, খ্য দুঃখ পাবে। জামাইবাব, কি ভাববৈ ৷ জামাইবাব, সতি৷ খুব ভালবাসে আলমাকে, খুব। এক এক সময় মনে হয় দিদিকৈও অত ভালবাসে না। তা অবশ। সতি। নয়। বউয়ের চেয়ে কেউ^{*}কি আর मालीरक रवशी ভाলবাসতে পারে? মেটেই না। জামাইববেটা ভাবি ফাজিল, আর ভারি দ্যন্ট্র ও ইচ্ছে করেই আমন করে ভাব করে। আমি কি বুলি না। লিদিকে রাগাবার জনা অর্থান করে। রাগালে দিদিকে খ্র স্ফার দেখা্য কিনা।

রাগলে দিদিকে যে থ্র স্কর দেখায়—
আনি কিন্তু কোনদিন গক্ষা করিন।
গোটমট প্রথম বলেছিল। সেই যে পারেন
ক্টিগ্রে সর মিণিউল্লো খেতে পারেন
গোটম, আর দিদি তাই রেগে গিয়েছিল—
তারপারই বলেছিলো ভ, বলেছিলো তোমার
দিধি রৈগে গোলে খ্যে স্নের দেখায় কিন্তু

গোঁতম বেগে গোলে আমার মোটেই তাল লাগে না। তাই দুদিন পরে, যাবার দিন বিকোলে ও যথন রাক্ষ লোয় বললে, জিনিসপত্তর গোজগাভ করছি না কেন, তথন আমার থারাপ লোগেছিল। কই বিষের পর থেকে একটা দিনও তো অমনভাবে কথা বলেনি ও। হঠাং এমন রাগ রাগ ভাব কেন? আসলে বোধ হয় ভেবেছিল আমার ফিরে যেতে ইচ্ছে নেই। আর ৬ তথন লালারার মনে কন্যে অধীর। প্রতি মাহাতে বৈচারার মনে অধীর। প্রতি মাহাতে বৈচারার মনে অধীর। প্রতি মাহাতে বৈচারার মনে অধীর। প্রতি মাহাতে বিচারার মনে আছল লোকটা। ভারলে, আমার নিজের হাসি পায়। সতি, কি কাশ্ডটাই না করলে গোতম। বড় জা বলেছিল হানমান করে আসতে। ভাল হানমানই হলো বটে।

কিন্তু সারাটা বিকেল, সারাটা সংখ্য কেমন গদভীর ভাব, সারা মুখ যেন থমথম করছে গৌতমের। অপ্রয়োজনে একটা কথাও যেন বলতে নারাজ। ওর এই মুখের ভাব দেখে কথাটা বলতে সাহস হলো না, অথচ ওকে না বলেতো আংটিটা দেয়া বায় না। ভাবলাম, থাক, কাল সকলে নিন্দ্র মনটা ভাল থাকবে ওর, তখনই বলবো। আর ন্লিয়াটাও তো কলে সকালেই আসবে, তখনই দেয়া যাবে গৌতমকে জিগ্যেস করে।

গোতমকে জিগোস করে আংটিটা দিডাম ঠিকই। আর গোতম নিশ্চরই আপত্তি করতো না, কিব্তু পরের দিন সকালে যে এও তাড়া-হুড়ে। হবে আমি কি ছাই জানতাম।

সকালে ধুম থেকে উঠতেই এমনিতেই দেরি হয়ে গেলা। এলাম দিয়ে রেখেছিলাম টাউমপাঁসে, কিম্তু এলামের দম দিয়ে রাখতেই ভূলে গিলেছিলাম। তাই সেটাও বাজোন খুমও ভাঙেনি। যখন ধ্যম ভাঙল তখন আর এক ঘণ্টাও সময় নেই।

গোতম চা খেরে গেল হোটেলের হিসেব
মিটাতে। ফিরে এসে বিছানাপত্তর গোজগাজ
করতে পেগে গেলাম দৃছেনে: সংসার
ছড়িয়ে নিশ্চিনত হয়ে বাসছিলাম এ-ক
দিন। ট্রিটাকি জিনিসপত্তরগালি তো
নেহাত কম ছিল না। আগের দিন কিছু
কিছু বাধাছান হয়েই ছিল। কিন্তু চির্নিন,
ট্থরাশ, পাউডার, ওর দাড়ি কামানার
সরজাম সব গাছিয়ে নিতে সময় লাগল।
আর এ-সব করতে গিমে নুলিয়াটার কথা
ভূলেই গিয়েছিলাম।

ব্যক্স বেডিং সব বিকশায় কলে। সবে বিকশাওয়ালার। পাডেলে পা দিয়েছে অমনি দেখি কি ন্লিয়াটা আসছে সামনের রাস্তা ধরে হটিতে হটিতে।

রিকশা চলতে শ্রে করেছে তথন। আমাদের দেখতে পেয়ে এক-মূখ থ্যিব হাসি হাসাল। ন্লিয়াটা। সেলাম করলে। সেলাম করল বোধ হয় বকশিশের লোভেই।

ছি ছি, একেবারে ভূলে গিয়েছিলাম ওর কথা। এ থারাপ দাগলো আমার। রিকশা-ভযালাকে থায়তে বললাম।

গৌতমকে বল্লাম, এই দেখো তো ভোমার বাগেটা। ওর বক্ষিশটা দেওখা হয়নি। গৌতম বললে, টাকা তো ভোমার বট্যাতে।

তাই তো। খেয়ালই ছিল না। আমার হাতেই থে। বট্যোটা। লাল ভেলভেটের উপর স্বাদ্ধ নকশা করা বট্যাটা এখানেই কিনেছি—মন্দিরে যেদিন গিয়েছিলাম সেই পান্ডার ছড়িদারটার সংকা, সেদিন।

বট্যা খন্তে দেখলাম, দশ টাকার নোটেই চার পাঁচখানা খচেরো মাত দুর্ঘিট টাকা আর করেক আনা প্রাসা কি করি, দেটশনে পেণছেই তো রিকসার ভাড়া দিতে হবে। কুলির প্রসা দিতে হবে। সব খ্চরো-গুলো ভো দিয়ে দেওরা যায় না।

তাই একটা টাকার নোটই বের করে নালিয়টোর হাতে তুলে দিলাম। ও খানা হয়ে সেলাম করলে। হাসলো, বললে, ফির আস্বেন বাবু, সেলাম দিদি, সেলাম।

সেলাম জানিয়ে চলে গেল লোকটা। আর আমার এত ভাল লাগলো তাকে। এত ভাল।

ফিরে এসেই বড় জাকে বললাম জানেন দিদি, ন্লিয়াগ্লো এত ভালোমান্য, এমন চমংকার।

বড় জা হাসলো, বললে—দেখিস নত্ন এত ভালো ভালো বলিস না ঠাকুরপোর হিংসে হবে। আমি হেসে ফেলনাম। তারপর বললাম, গুমা—আসল কালডটার কথাই তো বলের্জন, রুমিতমত একটা কাল্ড।

কি কান্ড? চোথ কপালে তুললো

বড় জা। আমি বললাম, আপনার ঠাকুরপো

আর একট্ হলেই ডুবে ফেত। একটা ন্লিয়া

দেখতে পেরেই সাঁডরে সিরে বাঁচালো।
লোকটা নিজেই দেখতে পেরেছিলো। ওরা
তো সম্প্রে চান করাতে দ্'আনা করে নেয়,
আমি আসবার সময় কিন্তু একটা টাকাই
বর্জাশা দিয়ে এসেছি।

বলতে বলতে হঠাং কেন জানি না একট্,
অন্যমন্থক হরে পড়েছিলাম, সেদিনের সেই
আত্তেকর দৃশাট্কু চোথের সামনে ভেসে
উঠেছিলো বড় জা কি যেন বলকে, আর
আমার তদময়তা ভেঙে গেলো। ভাবলাম,
সতিটি কি বালা দুটো দেবো বলেছিলাম
ন্লিয়টাকে? বোধ হয় না। সে সময় আমার
কি মাথার ঠিক ছিলো? কি বলেছি, কি
করেছি তা কি আর আমি জানি! না, বালাটালার কথা আমি নিশ্চয়ই বলি নি। ভাছাড়া
আমার বলা কওয়ার জনো কি অপেকা
করেছিলো নাকি ন্লিযাটা? কখনো না।

আমি বলার আগেই ইয়তো দ্বিদায়টা দেখতে পেরেছিলো। দেখতে পেরেই সম্বে কাঁপিয়ে পড়েছিলো। কেউ ডুবে গে**লে তাকে** বাঁচানো তো ওদের কাঞ্চ।

বাংলার অপ্রতিদ্বন্দ্বী ধারা **পার্টি**

তরুণ অপেরার

আগামী আকর্ষণ শদ্ভু বাগ রচিত

''(ब(शानिशाव''

অমর ঘোষ রচিত

রমলা সাকাস

পরিচালনা—**অমর ঘোষ** শ্রেষ্ঠাংশে—শান্তিগোপাল

66-9525

५७३ सि मिली छ

মিলন সমিতির আমন্ত্রণে ছয় রাতিব্যাপী

যাত্ত।ভিনয় শুক্র স্প্রমান্তনয়



খ্দে গাঁউলি অফিসারের দল তালপ গাৃতিরে চলে গোল ওপারে। মোটরে উঠে হাঁফ ছেড়ে ফেন বাঁচল। একজন মনের কথা আর চেপে রাখতে না পেরেই বলে উঠল, বাণ্স, আছে। এক জংলী দেশ। এই শা্খা—এই বান।

মোটরটা প্টার্ট দিল গ্রন্থান করে-তার-পর ধোঁয়া উড়িয়ে চলে গেল মহকুমা শহর-মাথো। কয়েক মাহাতের কৃতিম শুক্তর লাটা একটা অনাবশ্যক ব্যাপারের মতে৷ ব্যুম্ট ভেজা প্ৰালী হাওয়ার গোল আন্তে তারপর ঘোর হয়ে এল আবার এখনকার সেই আদিনকালের প্রকৃতি—নিম্ম সত্যের মতো, অব্ধ ভাগ্যের মতো। যত ব্র চোথ যায়---আকাশ মাঠ-প্রাণ্ডর নদীনালা জ্বড়ে সেই প্রকৃতি– গভীর আর নিথর। আর থেয়া নোকোর ওপরে দাড়িয়ে রইঞ্চ একটা বলিপ্ঠ কাঠা:মার বুড়ো লোক— সংগীহীন, চিন্তামণন, পরিতাত। সে অধর भावि।

'জোর শালা—যা যা যা যা।' হালে একটা ঝাঁকি দিয়ে অধর মাঝি থিশিত করে উঠন অনড় নোকোটাকে। ফিরে চলল ওপারে। নোকো কছটো উজিরে নিয়ে ছেড়ে দিলে চল-নামা স্রোতের মাঝে—নোকোর মাঝাটা শুখা একটা তেরছা করে রাখল ওপার-মাখো। জলের দিকে একবার তাকিরেই মাঝ খারিরে নিলো। কি বিশ্রী থকখকে গেরফো বং—গা ফিন ফিন করে। এ বং মেলে না তার দিন্ধ মাটির সাংগা, এ রং মেলে না তার দিন্ধ মাটির সাংগা, এ রং মেলে না তার শাশত সর্ক্লশ্রীর স্পেগা। এ কান শাহাড় ধোয়া চক নেমেছে দ্ব ক্ল ছাপিয়ে। এর সংগা মেনা অধর মাঝির ছালা আর শক্ষা।

এ পাবের খেরাঘাটের কাছে এসে একটা সর্বু খালের মধ্যে নোকোটা ত্রকিয়ে দিয়ে নোঙর ফেললে অধর মাঝি। তারপর নালা খানা ডিভিয়ে, জলা ভেঙে ভেঙে ফিরে জলল সে অনেক দ্রের গ্রামে।

আকাশ অধ্যক্ষর। বৃণ্ডি সমানে পড়ছেই।
নদীচরের জলা জংলা দেশ। যতপুর চোথ
যায়—শুধু ধানবন আর ধানবন। উ'চু গাছপালার চিফ পর্যান্ত নেই। সে আনেক দুর
দুরে গ্রামের কাছে দেখা যায় শুধু করেকটা
বাবলা গাছের মাখা। সংঝার বৃণ্ডির ধারায়
তাও বাপসা হার গেছে।

িকেল হতে না হতেই যেন সধ্যো। কাছের লোকই মাবছা। অধ্য নিজের ছরের উঠোনে এসে দাঁড়াতেই রামদাসের মেয়ে বললে, 'কে!'

অধন বললে 'আমি বৌমা।'

মেনেটা লক্ষার জিভ কেটে মাথরে ঘোমটা ভূল এই জলের মধ্যে দিরেই অধরের পাশ দিরে স্ভুং করে ছুটে পালাল। যতই চেনালোনা পড়শীর মের হোক, সামনে যে হব্ ধ্বশ্রে। কুস্ম লক্ষায় মরে গেল।

তার পাঁড়-মবি করে ছোটা দেখে অধর সন্দেহে বললে, আক্তে বৌমা—অতেত যাও। পড়ে যাবে।'

মেয়েটা ততক্ষণে এক ছাটে ঘয়।

মেরর মৃথে থবর পেরে থানিক বাদে তামাক থেতে থেতে তার বাপ এদে হাজির। চাষ-আবাদের কাজ শেষ রামদাসের, মাথে ধনগাছগঢ়ালা বেড়ে উঠাছ ধীরে ধীরে। চাষীর বরে অননত আশা আর করেকদিনের বিশ্রাম। শসেই আশা আর বিশ্রামের আমেজ রামদাসের চোথে-ম্থে। রামদাস হোস হেসে বলালা, বেরাই, চলে এলে যে! বহা-বাদেনের দিনে বেরানের কথা মান পড়ে গেল বৃদ্ধি।

হব্ সম্পর্ক ধরে ভাকাভাকি ঠাট্টা মুম্করা ওদের মধো চলচ্ছে বহুদিন ধরে।

কিন্তু অধর মাঝির মুখ আছ নোংরা আকাশের মতো। সেখানে ঠাট্টা মনকরা আছ আর বেরলে না। থমখাম গলার বললে, না, বেরাই, থেয়া বলন। গাঙে রাঙা জল দেখা দিয়েছে। জল বাড়ছে শাঁ মা করে। তার ওপরে প্রালী হাওয়ার দমক। আর শেষ বর্ষার এই অব্রোই ধারা। গাঁওক মের ভাগ লাগছে না বেষাই। তাই চলে এলাম।

রামদাসের মেজাজ ভাতার নয়--বহু পরিত্রম, বহু কুপ্টের শেষে একটা আখা ও দবংন জমাট বে'ধে আছে তার চোখে-মুখে। সে মথে দবংনাতুর চম্বীত মুখ।

রামানাস বললে, 'ওসর আগক্ষাণ কথা আর তেব না ভাই। তালয় ভালয় কটা নাস কেটে যেতে দাও। মাঠের লক্ষ্যী ঘরে তুলে সামার ঘরের লক্ষ্যীটিকে তোমার ঘরে হাজির করে দিই এই অন্তাণে। তারপর নামে নিশ্চিত।'

'সে কি আমিও চাইনে বেয়াই।' অধর মাঝি বললে, 'কিল্ডু গাঙের পতিক ভাল নয়--এ তোমাকে আমি বলে দিলাম। আমি গাঙের মান্য--গাঙকে চিনি বেরাই।'

রামদাস ওর ভরকে আমল দিলে না। বললে, থতো হোক না—শাখার গাঙ বেয়াই। অত বড় বাঁধ আনহে—ভাকুক না কত বান ভাকবে। কিন্দু গাঙ বে টিপি হে—চড়ার চড়ায় ব্ক চিতিয়ে আছে। জল টানবে কোংগ দিয়ে? অধ্যের চোখে-মথে কথায় ধরা নদীর ভিত্ত অভিজ্ঞতা—একটা অনাগত ভয়।

 $(a_{1}, -\mathbf{t}_{1}) = \mathbf{t}_{1} (2 \mathbf{t}_{1})^{T} \left(-\frac{1}{2} \mathbf{t}_{1} - \frac{1}{2} \mathbf{t}_{2} \right)$

কিন্তু তব্ স্থান বুলে চলে রামদাস্
চাষীর প্রণন।... মাঠের ধানগছেল্লে
বাডছে.—হিল হিল—থিল থিল করছে
উদ্ভিদ্ধ-যৌবনা একপালা কিশোরীর মড়ো।
রামদাস বললে, বেটি মোর পা ছুলে বসে
আছে তোমার ধরে আসবার জন্য। তুমি পড়ে
থাক থেয়াঘাটে মাসের মধ্যে তিরিল দিন—
ভূমি তো জান না, দিনের মধ্যে কতবার যে
ছুটে ছুটে আসছে তোমার ঘ্র।

এমন সময়ে উঠোনে এসে দাঁড়াল অধ্য মাঝির বড় ছেলে গগন- নামদাসের হং কামাই। কাদা মেখে ভূত—ফিরে এল শাঠ খেকে। কোঁড়া জোৱান ছোকরা মাথায় বাবরি ছটি চুল। বাপের মতো দশন চওড়া চেহারান সভড়া কপাণ, চওড়া চিব্,ক: চেহারার মধ্যে যেন একটা কঠোব প্রতিজ্ঞা স্থির হয়ে আছে। গগন দাও্যায় উঠে বসভা।

রামদাস জিল্জেস করলে, 'আর কড় বাকি তোমার অবাদ শেষ হ'ত গো?'

'আজ শেষ করে এলাম।' গগন বলসে।
'বাস।' হব জানাইরের জন্য মানত বড়
একটা দ্ভাবনা কেন ব্যুচ গেল রামানাসের।
বলপে, 'ভাল ধান ইবে এলার। আজ দেখি
তোমার টিকেবাড়ির পাঁচ কটায় ধানগতে
এরি নধে। হাব্দে উটেছে। ভখনে কোন না
পাবে ন্মেণ। তারপর জলার মাই থেকে
কৃতিরে বাড়িয়ের বিশ মণ। তারপর বৌমারিব
মটে সাত আট মণ।'

श्रम श्रम श्रम ।

রামদাস উছলে পড়ে শত ধারে। প্রথ পঞ্চাশ ষ্ট মাধুর একটা হিসেবে থাড়া করে আঙ্কো টুসুকি দিয়ে বললে, বাস, প্রায় কি চাই বেয়াই?

না, আনে কি চাই। এধর মাঝি কোথায় হারিছে গেল অনাগত হেই সোনা, বানে স্বাংশর মাথা। বগলে, ভরা সা থাক—মা লক্ষ্মী আমার ঘরে আস্কে, নাংথ ঘরক্ষা কর্ক। ছেলেপ্লে হোক—বংশ বাড়ুক। আর কি চাই!

কথায় কথায় কথার আঝি ভূলে যায় যেন নদার সে সর্বনাদার চেহারার কথা—ভূলে যায় সে বিশ্রী রাজা জলের কথা। গলপগ্রের করে সংধ্যার পরে রামনাস চলে গেলা। যাওরার সময় ভার আশা আর স্বন্দনগলো যেন চাপিয়ে দিয়ে গেল অধর মাঝির ওপরে। ছোট একটা কুট্ডে ঘরের কোণে, কেছটো ভারনাম্প্র উক্ষ আশ্রয়ে সেইগালো উক্ষ্যাসিত হয়ে ওঠে। বিছানায় রাতের অপ্ধ্বগরে ভার



দুড় বজিক দেহের কাছে খন হরে আসে
খিবাজীর পক্ষের বৌ সুমাজি। ককাশ হাতটার
ছোরা লাগে বিবাজীয় পক্ষের বামজ দুই
সম্ভান কালা আর ভোলার নরম মস্প গা,
মনে খুর খুর করে প্রথম পক্ষের বড় ছোল গমনের কথা—আর একটি লক্ষা চকিত কিলোকীর কথা। এই সামানা লোকটার মন বলে, আর কি চাই—আর কি চাই!...

রাত করে বৃষ্টিটা বেন আরও জোরে নামল। সংশা তেমনি প্রের হাওয়া। চালা থোক গড়িরে পড়িছে অগ্রাহত ধারায় জনেব কলকল শব্দ। এ ঘনঘোর বর্ষায়, আর কিছ্ শোনা যায় না—আর কিছ্ দেখা যায় না। এব মধো নদীচরের ছোটু গ্রামট্কু ঘ্রে ঘোর।

হঠাং সেই ঘ্নকত অব্ধকারে চাষ্টানের গোয়ালে গোয়ালে গোরার ভাক শোনা যায়— থোঁয়াড়ে ছাগল ভেড়ার আর্তানাদ। ধড়ুমড় করে ঘ্রু থেকে উঠে বসলা অধ্ব মাঝি। কানেএসে লগ্যে অহালত জলধারার শব্দ। বাইরে বেরিয়ে এল। উঠোন ভেসে তথ্ন জল হৃষ্টি-ছুই করছে লওয়ায়। ব্রুটা ছাহি করে উঠল। ভাক পাড়ল গগনকে।

গগন ঘুম চোখে বলল, 'কি!'

গ্ৰধ্ব থাকি বললে, উঠেন জলে ভরে গেছে: আলো জেনুলে দেখু দিকি—কিসেব জলা ব্যাণ্টৰ জল কিনা—'

গগন আলো জড়ালল। ২০তে দেখল। হললে, বিষতে পার্যছ না।

মধ্য এক আজিলা জল কুলে নিশে তেখেৰ সময়ে। হাত কে'পে উঠল তাৰ। বলে উলৈ, 'এ যে সেই রাক্ষসী বার। জল বে!

977

'গোর্বছ্রগ্রেলা ভয় পোষে ডাইটের খালে দে খালে দে পালে। এরে ফাক পাচ স্বাইকে। বাধ ভেডে গৈছে। কেই না গ্রেমা---

গগদ ভর পার হঠাং। উঠোনে চেটাডে খাকে প্রাণপূল পড়শীদের নাম ধরে।

দশ-পনেরে। ঘর প্রজার একটা গাঁ—
ফার্যান্ড একটা আহানাদের মাঝখানে
ফার্যানের জেনে উঠল মান্যগ্রেণা। গোর্চাগলের ডাক, কাচ্যাবাচ্চার ডাক, ঘ্মভাঞা
কামা—আর জোয়ান মান্যের ঘ্মভাঞা ভ্রপাধরা হাকডাক আদিম বৃদ্ধিভেক্তা অন্ধকার্যানে বিকল্পর আহানাদের
কার্যানিপডটা কোথার মিলিয়ে যার দিগন্তক্রালিপডটা কোথার মিলিয়ে যার দিগন্তক্রালিপডটা কোথার মিলিয়ে যার দিগন্তক্রালিপডটা কোথার মিলিয়ে যার দিগন্ত-

গণন কোমরের কাপড় ক্ষে উঠোনে নামতে যাচ্ছিল—অধর মাঝি তার হাত চেপে ধরলে, 'কোথায় যাবি ?'

'টল পালাই।'

'এই জলে? মর্নাব।' একজন প্রেনো ক্রিক্স মানির সতক্তা অধ্যের চ্যোধ। বললে, 'এই জল ভেডে—এই অন্ধকারে কোথার ছুটে পালাবি তুই? পেছনে রাক্ষসী, এর মধ্যে যে ছুটনে—সেই মর্ব।'

,'তবে ?'

ন্দতি গা খেবে দাঁড়িয়েছে স্বামীর,— তোৰে অনুহারতা। বুমক গুটো ছেলেকে তেপে ধরেছে ব্রে। বছর ভিনেক বর্ম হবে
বালা দ্টোর—ভরে আঁকড়ে ধরে আছে
মাকে। অথন একজনকে তুলে দিলে গগনের
কাঁধে নিজে তুলে নিলে আর একজনক।
দুমাতির হাত ধরে বললে, 'উঠোনে নেমে
দাড়া সবাই চালা ধরে। খরের দেয়াল ধসে
সড়ে চালা এখনি বসে যাবে।'

উটোনে নামল সবাই। জল তথন হাট্র ওপবে। চালা ধরে দাঁড়াল ওরা অধরের কথা মতো। চালাটা কড় কড় করছে। জল বাড়াছ একট্ একট্ কবে হাট্র ওপরে। স্লোডের বেগ দ্রতে।

সেই জন ভেঙে ভেঙে অন্যকারে এসে দাঁড়াল রামদাসের বেটি।

অধর বললে 'কে!'

মেরেট হাউ মাউ করে কে'দে উঠল, যোরা জলে কাঁপিরে পাড় চলে গোল কোপায়—দেখতে পেলাম না! আমি দেখতে পেলাম না!

"মরেছে!' অধ্ব বলে উঠল অস্ফাট কটে), 'দাঁড়িয়ে থাক মোর পালে, চালা ধরে থাক।'

দেশতে দেশতে মাটির দেয়াল ধনে পড়ল চার্বদিক থেকে—ছালাটা বসে গেল জালের ওপরে।

অধর সত্রক গুলায় বললে, 'এবার উঠে পড় সবাই চালার ওপরে। একদিকে সবাই চোপ বসিসানি—ছডিয়ে বস চারদিকে।'

কালা মার ভোলাকে বসিয়ে দিলে ভার মায়ের নূপালা। বললে, 'কপাল ভোদের' শঞ্চ কথে চেপে ধরে বসে থাক।'

শকলাকে বসিয়ে দিয়ে শধর উঠল এক পালে। উঠে বসে বলাল, চালা এমীন বসে থকলে রইলম এই চয়ে—না হলে কোগায় যেয়ে মধ্য জানি না। হে মা গপা। '

চার্রাদকের অথৈ অধ্যকারে আরু কিছু দেখা যায় না। আতানাদের দেই মহাপিশ্ডট যেন ছিরারিচ্ছিল হয়ে ছড়িয়ে পড়েছে কেথায়। সনেক দার থেকে হাওয়ায় চ্ছেপে আসে দা-একটা ভয়াবহ ডাক--এক আঘটাকু আতানাদ। মাতা কচ্চকিত এ অধ্যকারকে আরুও ভয়াবহ করে তোলো। তারই মধ্যে সামানাদ্যের স্পান্ন বিছানো ধান ক্ষেত্রে ওপুর দিয়ে বয়ে যায় উক্কাসিত রাঙ্কা জন্মের সমীনাদ্য।

বোরে ঠান্ডায় আর তয়ে ঠকা ঠকা করে কাঁপছে কালা আব ভোলা, কাঁপছে সমৈতি আর কুসুম।

অধর মাঝি আবার হ'্শিমাবী দিলে চালা খবদার ছাড়বি না। ক্তম নাই। চোপ বলে থাক।

গগন বলে উঠল, 'চালা বেন নড়ছে কৰা!'

অধর ব্রুতে পেরেছে আগেই।ব্রুকী
তার আগেই ধক করে কে'পে উঠেছে।
মুখে কোন কথা এল না। বোবার মতো
শুধু সে চেয়ে রইল অম্থকারে সীমাহীন
— মুকুহীন জলরাশির দিকে। এ চালা
এবার ভাসবে দুর্ভাগ্যের কোন দুর্জের
পথে কে জানে।

গগন ভর পেয়ে আবার বলে উঠল, ''চালা ভেনে উঠেছে বাবা!''

्युवर प्राप्ति नद्दः शीवनिश्रन्तान स्करन

বললে, ''চল বাপ এবার কপাল নিছে। বইল পড়ে এ ডিটা—বইল পড়ে এ চর।'' ভ সূমতি চালার মাথ্য ঠকে কালিরে ফাপিরে কদিতে লাগল।

"চূপ কর বৌ—চূপ কর।" **অবরের** গলার সাক্ষনা, "মাকির বৌরের এখন সাহস চাই।"

ভরে চোথ মেলে চেরে আছে রাম-দাদের বেটি, চেয়ে আছে ফালা আর ভোলা। থরবেগ স্লোভধারায় চালাটা ভেনে চলেছে কোন মির্দ্দিন্ট অব্ধকারে। কোথাও এডট্কু সাড়াশব্দ নেই, মেখলা আকাশে চিহ্ন নেই একটি ভারারও।

গগন বললে, "কোখায় কোনদিকে যাচ্ছিবল ড? ব্ৰতে পারীছ না কিছা যে।"

অধর বললে, "দক্ষিণে—বাহার গাঙ্ক।" "হার কপাল) সে যে সাগর।" গলা কে'গে উঠল গগনের।

"কৈ জানে কপাল কোনদিকে নিমে যায় বাপ!" অধন বলল, "তবে চালা এখনো যাছে গাঙের ধানে ধানে চরের ওপন দিয়ে—গাঙের টানে এখনও পড়েনি।"

"कि करत बुकाल?"

"এই গাঙের জাল ঘোটে বুড়ো ছয়ে গেলাম বাপ। গাঙের আসল টানায় পড়লো চালা আরও জোরে ছটেত।"

ভাই বটে। চালাটা চলেছে একৈ-বেশকে—খাবে থাবে।চরের ওপরে উচ্ছান্ত্রিক লাভাত পাক থাচ্ছে—টেউ তুলছে, বাঁজানিছে। নদীর একটানা থরস্রোভ নয়। তব্দাদী যে কভ দ্রে আছে—ভাই বা কে জানে! শাধ্য চালার ওপর থেকে এ কটি প্রাণী চেরে আছে অগাধ অন্ধকারে। সব কথা—সব প্রশন আপত আসেত থেমে এল ওদের। দ্রেজার ভাগা আর দ্রুকত প্রকৃতির কাছে আত্মসমর্পাণ করে জড়ের মন্তো বলে রইল ওরা।

প্রথমে গেল ভোলা। চালা থৈকে খসে পড়ে গেল জলে। সামান এক প্রক্রের একট আত্মিদ। তার্পর সব চুপ।

গগন চে'চিয়ে উঠল, ''বাৰা, ভো**লা** পড়ে গেল যে!"

"খবরদার চাল। থেকে নামবি না!" অধর ঠান্ডা গলায় হ, সিমারী দিলে, "কি কর্মি তুই, ওব কপাল।"

স্মতি ফ'্লিয়ে উঠল।

কালা চেরে আছে। একটু শব্দ নেই বাচ্চটার রুখে। শুধা বিস্ফারিত পুটো, চোথ—মাছের চোথের রুটো। ভেডরে ভতরে ও বেন মরে শের হরে গেছে। পাঁচ মুটো দুটোতে চেপে আছে চালার খড়—সে দুটো কালিরে শন্ত হরে গেছে অনেককণ। কথন আশেত আকেত খড় সরে এল তারও মুটো খেকে। ঠান্টার শন্ত হরে গেছে সারা দেহ। নেফে গেলা—সর সর করে সেও নেফে নেফে চালা খেকে।

গগন চে'চিয়ে উঠল আহার, "বাবা, কালা পড়ে গেল!"

্ৰাক। ধর কলাল বাপ।"

স্মতি মাথা ঠকে পড়ল চালার। সামান একটা ফেপোনীর শব্দও শোনা গেল না তার।

हालाचे हरलाइ।...

কচি কচি চারটে হাতে কালা আর ভোলা অঞ্জ সম্পোবেলায় তাকে ছাড়িয়ে ধরে কি বলতে চেয়েছিল যেন কিসের কি কথা! না: কিছু মনে পড়ছে না অধর হাঝির। সত্রক' দৃণ্টি মেলে চেয়ে আছে শ্ধু সে সামনের অংধকারে। একটা ঢিপি নেই—একটা বড় গাছ নেই. শ্ধু অচেল আনির্দিট অংধকারের স্রোত। মাঝে মাঝে কথনও বা এক-আধটা কাঠির মতো বাবলা গাছ—ভাও নাগালের বইরে। শ্ধু বোঝা যার—এথনও চালাটা ভেসে চলেছে

তার ম্থোম্থি সামনের চালায় তেমনি মাথা ঠাকে পড়ে আছে স্মতি। অনড় অসাড়। অধর একবার চোথ ফিরিয়ে দেখল। ভাকতে ইচ্ছে হল—ভাকল না। আহা, তার যমজ ছেলের মা! কি বলেছিল ধেন গাঁরের স্বাই? ভারী প্রমুক্ত! হে, কত কথা মনে পড়ে যাছে অধরের।

এই তো সেদিনের কথা--আকাশে
একট্ মেঘের চিহ্ন নেই--চলে গেল আষাত
প্রাৰণ মাস। হাত গাটিয়ে বসে আছে
চাষী, পোর্গুলো ছি'ড়ে খাছে তামার
পাতের মতো মরা ধানগাছের পাতা।
ইন্দের প্জা হল, ধনলা উড়ানো হল।
তব্ জল নেই। শেষে হল বাাঙের বিয়ে।
ডোবা থেকে দুটো বাাঙ ধরে এনে বিয়ে
দিল সবাই। বিয়ের পর সবাই বললে,
"এ বাাঙ জলে ছাড়বে কে?"

প্রমণত গোক চাই—যার হাতের ছোরা লেগে মাঠ ভরে হবে ফসল। বাঙ ভাকবে, মেঘ গলে জল হবে—ভরে উঠবে শ্যা মাঠের জ্ঞা। কে সে এমন প্রমণ্ড জাছে এ চরে?

স্বাই বললে, 'তাধর মাঝির বউ স্মাতি।"

রামদাস বলেছিণ, "বেয়ান ভারী প্রমণ্ড নতুন বউ এসেই দুই বমজ বাটো বিইয়ে দিয়েছে গো! ওর জাড়ি কেউ নাই এ চরে:"

তারপর.....

গগন চেণিচয়ে উঠল আবার, ''গেল, গেল—পড়ে গেল। বাবা!''

স্মতির সেই মাথা ঠোকা অন্ড্ মুছিত দেহটা গড়িয়ে পড়ল চালা থেকে।

অধর শৃধ্ বললে, "ষার যেমন কপাল বাপ!" তারপর বিড় বিড় করে কি বললে শোনা গেল না। অব্ধকারে বসে রইল সে একভাবে চালা চেপে। অভিজ্ঞতার, ব্যথে, জীবনের মায়ায় অটশ অকটা ম্তির মধ্যে।

গগনের অসহা লাগছে এই নীরবতা— এই নিম'ম নির্দ্ধিত ভেসে চলা। সে কথা বলতে চায়। বলে উঠল, "কোথায় চলেছি?"

কেউ উত্তর দিল না। অধর বসে আছে একভাবে। জীবন মৃত্যুর মারখানে পড়ে

হঠাং লোকটা যেন দক্তের আর স্বার্থ-পর হয়ে উঠেছে।

গগন অস্থাট কণ্ঠে বল্লে, "কুস্ম, ভাল করে চালা ধরে রাখিস।"

কুসমে বললে, "ধরে আছি তো।" "ভয় করছে?"

কি বলবে—মেয়েটা যেন ভেবে দেল না।

গগন আবার চে'চিয়ে উঠল, "বাবা, চালাটা খ্লে যাচ্ছে!"

অধর তার সেই সত্রণ নিথর চোথ
তুলে তাকাল। জলের তীর স্লোতে আর
কতক্ষণে টি'কে থাকবে চাষীর কু'ছে ঘরেব
চালা। দড়িত্পোলা আলগা আলগা হয়ে
থেশসে যাক্ষে—খসে যাক্ষে খড়, ট্করো
ট্করো বাতা বাথারি। দেখতে
৬টা চার ট্করো ছয়ে গেল।

গগন চে[†]চয়ে উঠল, "আলাদা হয়ে গেল। বাবা!"

"যে যার কপাল নিয়ে যাও বাপ!" অধরের সেই ঠান্ডা স্বার্থপরের কথা।

কিব্দু কোথায় যাবে!—এই অধ্বকারে - একা। কুসুম তার বিচ্ছিয় চালাটা থেকে আতানাদ করে উঠল—অধ্ব মাখির চালা লক্ষা করে ঝাঁপ দিল জলে। ধরে ফেললে। ঝাঁকিতে খুলে গেল কয়েকটা বাশ বাখারি।

"ছেড়ে দে, ছেড়ে দে— তুবে যাবে।" অধর পা দিয়ে ঠেলতে লাগল মেয়েটার শক্ত মুঠে।করা হাত।

'খাব—আমি যাব মাঝি। আমি যাব তোমাদের সংগ'।"

"গেল গেল! কোথায় যাবি চুলোয়। ছাড় ছাড়।" অধর ভার শক্ত বিলফ্ট পা দিয়ে ঠেলে সরতে চাইল মেফেটার শক্ত মুঠো। এক পা—ভারপর দুই পা।

কুস্ম শ্ধ্ বলতে লাগল, "আমি যাব---আমি যাব, মাঝি "

দ্ই পায়ের চাপে ভ্বে গেল মেয়েটা, ছি'ড়ে নিয়ে গেল অধরের থানিকটা চালা। বিম্ফের মতো চেয়েছিল গগন—চে'চিয়ে উঠল, "কুসুম।"

কোন সাড়া নেই: 'সে কোথায় গেল বাবা?"

"জানি না।" অধরের সেই নির্ত্র গলা।

"ব্ডো শয়তান! বাঁচ, বাঁচ তুমি
একলা।" গগন ঝাঁপ দিল কোনদিকে যেন।
অতল অংশকারে বিধাতার বিদ্যাহের মতো
শোনা গেল তার বিলও বাহার জলক্ষেপ!
দ্রে-জমশ দ্রে। অধরের চালাটা তথনও
ভেসে চলেছে তার দ্রুপ্রে ভাগোর
অংশকারে। আর তার চালা থেকে ছে'ড়া
ছোট্ট অংশট্কু কোথায় ভেসে ভেসে
হারিয়ে গেল কে জানে। বসে আছে সে
একভাবে দয়াহীন মায়াহীন সতর্ক আরণাক আদিন একটা জাবৈর মতো।
কোথায় তলিয়ে গেছে তার শ্বন কোথায়
তলিয়ে গেছে তার শ্বন কোথার

ঘর জমি চর—একটা গোটা মান্তের জীবন!

এক জারগার এসে চালাটা বেন ঠেকল।
আর চলছে না। ভাঙা চালার তলা দিরে
লাঁ দাঁ করে কেটে বাঁররে বাছে জল,
অংধকারে সে সতর্ক দ্ভিট চালিরে দেখল।
কিছুই দেখা বায় না। একভাবে বসে রইল
কিছুক্ষণ। অতাশত সাবধানে একটা পা নামালো চালা থেকে। মাত্র হাঁট্ জল।
পারে ঠেকল মাটি।

মাটি তো নয় জীবন! কোটি জন্মের সাধনার ধন—স্বশেনর কামনা।..

এক লহমার সমশ্ত মানবসতা ফিরে
এল যেন ওর মধাে। দ্রের ভাগাের কাজে
এতক্ষণ আখসমপ্ণ করা জড়পিশেন্ডর মতাে
দেইটার ফিরে এল বাঁচবার কামনা। চালা ভেড়ে দিয়ে দ্বামরে সিধে হয়ে উঠে
দাঁড়াল সে। এগােলাে এক পা এক পা করে। জল কমছে। ক্মতে কমতে জল শেষ হয়ে গেল পায়ের তলা থেকে। মনে হলাে
—সে যেন ঢাল্ব গা বেয়ে উ'ছভে উঠছে।
একটা ঢিপির মতাে। পায়ে ঠেকল দ্টো কি তিনটে গাদাগাদি মান্ষ।

কথা বলতে গেল, পলা দিয়ে প্রথমটা স্বর বের্লু না। কিছ্মণ দাঁড়িয়ে রইল সে হাবা একটা জানোয়ারের মতো। খানিক বাদে গলা খাঁকারি দিয়ে গলা পরিষ্কার করে নিলে। কথা বলল।

> "কো" সাড়া নেই। 'বেটে আছ?" কেউ সাড়া দিলে না। চুপ করে বসে বইল সে সেইখানে।

রুমণ জল নেমে যাচ্ছে **টিপির তলা** থেকে, দ্রে সরে যাচ্ছে জল কল্লোলের শুন্দ। বসে রইল সে ভোরের অপেঞ্চায়। কোনটা কোনদিক তাও সে ব্রুতে **পারল** না। শুন্ব এইট্কু তার মনে আছে-সে দক্ষিণে তেনে এসেছে। লোকটা শুসে রইল পাথরের মৃতিরি মৃত।

তারপর ভোর হলোঃ **চারদিকে রাঙা** জালের সম্দুর।

ভোরের আলোর তাকাল সে দুটো মতদেহের দিকে। একটা প্র্যুথ একটা মেমের।
প্র্যুথটির বলিণ্ঠ একটা বাহু জাড়িয়ে
আছে মেমেটার কোমর। কে জানে কোথা
থেকে ভেসে আসা। মূথ থ্রড়ে মরেছে
আশ্রের শেষ সীমায় এসে। দুজোভা
হাত থামছে ধরেছে চিপির মাটি—মানুষের
জন্মণত অধিকারের মত। দেছ দুটো সে
উপেট চিং করে ফেললো। বড় বড় চোথ
বের করে তাকাল বিহলের মত। কুসুম
না! গগন না! তারপর দুই হাতে মুখ
চেকে কদিতে বিসল অধর মাঝি। লোকটার
দিখর পশ্র মতো চোথে এতক্ষলে নামল
মানুষের অশ্র অভা ভাঙা গলার গুমুমের
হামরে বললে ঃ

'ও'রে তোদের স্মাম বিরে দেবো বলেছিলাম্—বিরে দেবো বলেছিলাম্ 💆



আক্রধকার ধীরে তর্কা হাইরা আসিল— ভাছার সম্মুখে এক বৃহৎ ধ্সর পটভূমিকা, পটভূমিকার উপর আলোকের রেথাপাতে অপর্শ চিতের ন্যাল দিবা দৃশ্য ফর্টিয়া উরিল।

গণনচুন্দী মহান প্রবিভ্রেণী, রুঞা প্রস্তরময় প্রক্রের উপরিভাগে নিবিড় অরণ, মধো গ্রোর পর গ্রোর সারি, নিন্দে স্কুছেভায়া খরস্রোতা নদী। নদীর নাম হির্বতী। তাহার একদিকে বিচিত্র শৃংগাশোভিত প্রবিত, অপর দিকে তরুংগা-য়িত প্রাধ্বের কয়েকটি গ্রাম।

গ্রোগ্লি বিচিত্র স্থের, কোনটি স্ধানাভাষনসম্মিত, কোনটি কার্-কার্মিয় প্রস্তুমভ্জেণী-শোভিত, বৌদ্ধ বিহার বৌদ্ধ-চৈতা।

গহোগলের শেয়ে হিরুধ্বতী নদী অধচিন্দাকৃতি হইয়া বাঁকিয়া গভীর খাতে প্রবেশ করিয়াছে, যেন কোষমূক্ত তরবারিকে কে নিক্ষপর্বতে বিশ্ব করিয়া দিয়াছে। খাতের উপর পর্বতশৃংগ কাচিয়া সমতল করিয়া শিবমন্দির নিমিতি হইতেছে। সে এক অলোকিক ব্যাপার। পর্যতগাত্র হইতে এক বিরাট প্রগতরখন্ড কাটিয়া লওয়া ইইয়াছে দৈখোঁ দেড়শত গজ, প্রদেথ এক-শত পজ ও উচ্চতায় ষাট গজ হইবে। সেই প্রশতরখণ্ড কাটিয়া কোদিত করিয়া মহান শিব্যান্দর গঠিত হইতেছে। অগণিত **"থপতি, ভাস্কর: এমজীবী নিজ নিজ কা**যে' রত। দ্বাদশশত শিল্পী তিন বংসর ধরিয়া এ মন্দির নিমাণে নিযুক্ত, মন্দির শৈষ করিতে আরও দ্বাদ্শ বৎসর লাগিবে। সেই দাদশশত শিলিপগণের স্থেগ সেও রহিরাছে; ভারতের কোনও গৌরবময় প্রাচীন যুগে, কোন্মহান অপুর শিব-মান্দর নিমাণে সেও ভাস্কর ছিল।

মন্দির-সম্মাথে দিবতল মন্ডপ বিপ্লেকার সিংহ, হুস্তী ম্তিপ্লির উপর স্বাক্তিত: অশোকমঞ্জরী উৎকীপ অধি-বোহনীর উপর সে বসিয়া আছে। সকলেই কমে মন্দ্র, সে কিন্তু স্তম্ম বসিয়া উদাস-ভাবে কি ভাবিতেছের মন্ডপের দক্ষিণ দিকের দেওয়ালে প্রবেশ-শ্বারের পাশের্ব হরিদ্রাভ প্রস্তরের উপর ভগীরথের গঞ্জান্তর্গ দৃশ্য ক্ষোদিত করিবার ভার ভাহার উপর। দৃশ্যটি সে কিভাবে উৎকীপ করিবে ভাহাই প্রিকল্পনা করিতেছে, প্র্ণাস্লিলা সন্পার সে কি র্প দিবে?

অদ্রে শ্ব্যাতি স্বিশেধ প্রণ দত্ত, তাহার নানা বৃশ্ব ভাষ্ণরগণ শিবের জীবনের মানা দাশ্য ক্ষোদিত করিতেছে।
কহ অধীকতেছে মহাদেবের মদনদহনের
চিত্র, নগরাজ হিমালাং বস্দত সমাগমে বিচিত্র
প্রপশোভিত পলাশা-পিয়াল-অশোক তর্মঞ্জরীর বংলাচছ্বাসে, ক্লেণ্ড-চক্লবাক প্রক্রিন ক্লেনে চতুদিকৈ বস্দতলক্ষ্মীর
লীলা-উৎসব, তাহারি মধ্যে কৃষ্ণসার চমাপারিহিত ভুজ্গমবেণ্ডিত জ্লাজ্ট্রারে
মহাদেব দেবদার্ তর্তলে ব্যায়চমেরি
উপর ধ্যানে আসীন ছিলেন ঃ কন্দপের
শ্রাথাতে তাহার তপস্যা ভগ্গ রইল, জোধে
ললাটিম্থাত তাহার তপস্যা ভগ্গ রইল, জোধে
ললাটিম্থাত তাহার তপস্যা ভগ্গ রইল, জোধে
ললাটিম্থাত তাহার তপ্যা ভ্যান্ত অভিনামিক

কেং অণিক্তেছে—কৈলাস পর্বতে হর পার্বতী বিহার করিতেছেন; চারিদিকে কিলার অপসরাগণ, হংস দাত্ত্ শতপদ্র নানা বিচিত্রাগণ পক্ষা স্মেধ্র গান করিতেছে। বলগেবিত রাবণ কৈলাসপর্বত তুলিতে যাইয়া তাহার নিচে চাপা পড়িয়াছে।

এ সকল মাম্লী দৃশ্য ক্ষোদাই করিতে এহার ভাল লাগে না। সে আঁকিতে চায মানবজীবনের স্খ-দাংখের ছবি, সে বলিতে চায় মানবঅ•তরের বেদনা, আশা, **স্বস্নের** কথা। নবপারণীতা বালিকাবধ্ পিত্রুহ হইতে চতুদোলায় চড়িয়া ধ্বামীগাহে **চলি**-য়াছে, তাহার হাদয়ে আজন্ম-পরিচিত মাতৃ-দেনহপূর্ণ গৃহতাগের বেদনা, **স্বান্ভরা** দ্বর্গিমগ্রহে গমনের অজানা আনন্দ, অজানা পথ-প্রান্তর-নদী পার হইয়া ভাহার চতুর্দোলা চলিয়াছে; তর্ণ প্রকে মাতা যুদ্ধ-ক্ষেত্রে যাইবার পূর্বে আশীবাদি করিতে-ছেন: প্রিয় বিচ্ছেদকাতরা প্রেমিকা বর্ষার সংখ্যায় উদাসীন, এর্মান কন্ত দৃশ্য-কমলো চনা সুকোশনী উমিলা পশ্মবনতীরে প্রতিপত কদম্বতর্তলে লক্ষণ বিরহ-ক:তরা ক্ষীণ নিতম্বিনী; বিদভ'রাজদুহিতা পশ্ম-নিভেক্ষণা নলবিচ্ছেদ্বিধুরা দ্ময়ণতী ব্যাঘ্রভল্লকসংকল গহন অর্ণো একাকিনী

তাহার মন মানব-বেদশার কোনে গভীর রহস্যালোকে চলিয়া গিয়াছে। সহসা সে কাহার আহনানে চমকিয়া চাহিল—ঋতুপর্ণ! তাহার নাম ঋতুপর্ণ!

ঋতুপণ দেখিল, সম্মুখে স্থপতি-শেখর রুদ্রদাস দাঁড়াইয়। আছেন। নৃপতি নরসিংহের এ শিবমন্দির তাঁহার পরি-কলপনা, তাহার তত্ত্বাবধানে এ মন্দির নিমিতি হইতেছে। এসিত হইয়া দাঁড়াইয়া ঋতুপণ স্থপতিশেখরকৈ প্রশাম করিল। র্ষদাস মৃদ্ হাসিয়া বলিলেন, ঋতুপূর্ণ,
আজ তোমার অত্তর বড় উদাস দেখাই।
ঋতুপূর্ণ লাজ্জতভাবে উত্তর দিল, আচার্থ-দেব, আমার মন সতাই আজ চণ্ডল, গ্রুগা
বতরণের দৃশ্য কির্পে ক্লোদিত করব আনে
ঠিক পরিকল্পনা করতে পারছি না।

স্পতিশেখর বলিলেন, বিষয়টি কঠিন। তা ছাড়া তুমি চির প্রথামতো আঁকতে চাও না, নবদুল্টিতে অপূর্বভাবে গণ্গার রূপ দেখতে চাও। খবেই প্রশংসনীয়। আনি কোনো বাধা দিতে পারি না। তবে ভোমার পরিকল্পিত দাশ্যের একটি রেখাচিত আগে আমায় দেখিও, তারপর পাথরে ক্ষাণিত করো। দেখ, এ স্থান পাথর কাটার শক্ষে পূর্ণ, মনন করার পক্ষে উপযান্ত নয়। তুনি বরণ্ড নদীতীরে বা পাহাড়ের মাথায় কোন ঝণার ধাবে গিয়ে বিষাটি চিন্তা করো। যতকৰ না তো~~ দুভিতর সম্ম,খে চিত্তি পরিপ্রভাবে ধ্রেখা-ছন্দোবদ্ধ হয়ে উদ্ভা-সিত হয়ে উঠছে, ততক্ষণ তুমি কিছে; আঁকতে বা ক্ষোদাই করতে চেন্টা করে। না। একথা জেনো, রূপ-ধানে দিবদেপিটাত সমগ্র চিত্রকে আলে দেখা দরকার, তারপর পটে বা পাথরে যা আঁকবে তা ওই দিব্য-দৃশ্নের ছায়ামার।

ঋতুপণ বিনীতভাবে বলিল, আমি সেই দিব্য নদী দেখবারই প্রয়াস করছি।

র্চদাস ধীরে বলিলেন, দেবতাগণের লোচনান-দদায়িনী স্বধ্নীকে মানবনেতে দেখা অসম্ভব, তবে আরাধনা করলে তিনি ধাানে দেখা দিতে পারেন। তার মূর্তি কোনো মানবশিলপী ধারণা বা অভিক্ত করিতে পারে না। তুমি আমাদের শা**স্তা**-বণিতি দৃশাটি কল্পনা করো—স্বর-তর্রাপ্যনী রক্ষার ক্মণ্ডুল হতে দেবাদিদেব মহাদেবের মুখ্তকে পতিত হয়ে জটার ভিতর দিয়ে ভ্যমণ্ডলে নেমে এসেছেন, মহেশ্বর নীলকণ্ঠ ভিন্ন এ গগনমণ্ডলমেখলা মন্দা-কিনীর দুধেরিণীয় বেগ ধারণ করতে কে সমর্থ হবে? সর্বলোকপ্তলা গণগার সম্মুখে ভগারিথ করজোড়ে পথ দেখাবার জনা দাঁড়িয়ে। ছবিটি কি চোখের সামনে ফ্টে উঠেছে ?

র্দ্রদাসের পদধ্লি লাইয়া ঋতুপণ বলিল, আপনার আশীবাদে কালাই একটি রেখাচিত্র দেখাতে পারব।



ভ্রমণীতদেশ্বর চাঁলরা দেলের। অতুপর্যও বাজর প্রকাশ পার হইরা নির্শাড় দিবা নামির। নদার দিকে চালিল।

চলনবলা-হিরুম্বতী, ব্যার গৈরিক
সলিকলোতে মুক্ল ভরা, ভীরে শুদ্র
ভাল-বন, খন সম্ভে বেণ্-বন সদা প্রস্কৃতিত
ক্টেল-প্-পরাশিতে পান্ত্বণা বেন কোন সীমান্তিনী কেশে কণিকার মালা
ভাড়াইরা, নিডম্মে কেডকীর কাঞ্চামের
লোভিড হইরা, হিরুলা-অগুল ঝলমল করিরা
চকিড-চরলে চলিরাছে।

কাঠের সেতৃর কানার জল উঠিরাছে।
ঋতৃপণ ধাঁরে সেতৃ পার হইল। গ্রামে
তাহার গাহের দিকে গোল না। গ্রামের এক
কিছুল পদ্ধ দিয়া চলিল। আকালে মেছ ও
রোধের লালা, চতুদিকৈ হিজ্যোলিত
ভারনশ্রী।

সহস্য বৃশ্চি আসিল। তাহার ইচ্ছা হইল, ভারের ব্যাধারার ডিজিয়া ভিজিয়া চলে। সম্মুখে এক বৃহৎ সক্লকী বৃচ্চ দেখিলা ভাহার নিচে দক্ষিটিল। রেশমের উত্তরীরে ভালা করিয়া দেহ জড়াইয়া বারি-বর্ণা দেখিতে লাগিল।

পথের অপর দিকে এক শ্রলপ্তের গাছ, দেবতপদ্মগালি রক্তাত হইরা আসি-তেছে, তাহার পাদে প্ৰণিপত সম্তব্ধ

অতুপৰ্ণ চৰকিত হইয়া চাহিল-স্থল-ক্মলকুলের পাদের এক ব্রতী দাঁড়াইয়া, কোন এক গিরিপল্লীবালা হইবে, হিয়-দ্বতীতে স্নান করিরা আলিপনা আঁকা মাটির কলসী নদীর জলে ভরিয়া গুইু क्रीनेनाइ। नावनामयी यूडि भिया न्वरूनन মডো। দীশ্রভিত্ব ভুজপামগ্রণের নারে কৃষ্ণ কেশদাম কলসিন্তিত অকলে এলারিড, হরি-হলদাবর্গের গাতকর শত্রেভকে ক্মলনর্নে কথমও ক্ষেত্রে স্ফিন্ধ, কথনও উৎকণ্টার **৬%ল: চন্দ্রাননা চার**ুনিতন্বিনী ত্রণবিলয়-ম**িডত দক্ষিণ্যদেত চিত্তিত জলপ্ণ কু**ম্ভ ধরিয়া, শীনোল্লভ-প্রোধরা শক্রবন্ধ র নবীন ধান্যস্ত্রী: শোভিত বামহন্তে শ্রেকুদের মতে বারিবিন্দ্র কুল্ডলে কর্ণে ঝালামাল ক্রিডেছে, আলাক্তক রাগরীঞ্জাত চরণ রভক্মলের মতো: জলধারা তাহাকে যেরিয়া 🗨 🛊 র মালার ন্যার করিতেছে।

নবোশ্যত কদস্বপন্তেশর মতো ঋতু-পর্যের চিত্ত রোমাণ্ডিত হইল।

শরতের বারিধারা থামিল। ঋতুপর্ণ সবিক্ষানে দেখিল, নিমেবের মধ্যে সে অপকুপা ক্রতীম্তি অল্তহিছো। ঋতুপর্ণ
পথের চারিদিক দেখিল, প্রলক্ষালক্ষ ক্রিল, কোথাও সে ব্রতীকে খাজিল। এতি কাহার দ্বিভিন্ন ? অধবা কোন দেবী ভ্রানা করিতে আসিলেন?

দেবীদ্ধির দশন আর পাইলা না বটে, কিন্তু ভাহার অভ্যর এক অন্যান্দাদত গভীর আন্দেন প্যা হইরা গেলা। চিডের বিবঙ্গতা আর রহিল না। আক্ষান র্ডাস, আলোক, প্রিষী, নদীধারা, পর্বভিষ্যালা, চারিদিক আক্ষমপূর্ণ রধ্যার।

ক্ষত্নত নদীতীরে এক বনে প্রবেশ কৃষ্টির। মধ্যে মধ্যে, দেবদার, নানা ভাতীর বৃক্ক চারিদিকে। কোথাও মহারী
নাচিতেছে, কোথাও হরিগণাবক খেলা করিভেছে। বনের মধ্যে এক হ্রদ শালবনবেলিত

-হংসা, সারসা, চকোর নানা পক্ষীর কলরবে
প্রা

নির্জন এক পথানে কালো এক পাধরের উপর অতুপর্ণ কিবল হইয়া বসিলা। ছদের কলে নীলাকাদের শুদ্র মেথের সব্জ মেথের ছয়ো। মারামধ্যী বনস্থলী। গণগাবতরণ দাশাটি কির্পে ক্ষোদিত করিবে, তাহাই সেভাবিতে চেট্টা করিল। কোন পরিকল্পনা করিতে পারিকা না। সম্ভবর্ণ কৃষ্ণত্রে বারিধারা-বেভিটত লাবণামায়ী নারীম্তি বারবার মানস্পটে ভাসিয়া উঠিল।

ভাষিতে ভাষিতে সে সহসা চমকিয়া লাফাইয়া উঠিল, আনন্দে নৃত। করিতে লাগিল।

পরিকলপনা করিতে এট ষে-গ্রুগার তাহারি দিব। ম্ভি ভো মনন করিতেছে, সে স্থলপদ্মকুঞ্জের ধারে দেখিয়াছে! এই সভাকার গণ্গাম্তি কল্যাণী নারী, স্নেহ-ময়ী মাভা, অপের্পা স্ফেরী। ব্রহার কমণ্ডলা নয়, শিবের ছটা নয়, দিগাত-মেথলা জ্যোতিম্যী সরেতর িশনী নর, স্থ-দুঃখন্য প্রেমম্যী নারীর রুপ, মাড়-রুপিণী গঙ্গা। আবার সে হতাশভাবে পাথরের উপর বসিয়া পড়িল। কিন্তু শ্রপতিশেখর কি এ মৃতি উংকীণ করিতে ज्यातमा पिरवन? अ त्य भागवीत त्थ! अहे তো প্ৰাসলিলা নদী, ভ্ৰার জল, কা্বাব অল জোগাইরাছে, দেশকে শসাশ্যামল স্কের সম্ভিধশালী করিয়াছে, ভাহার এক হতেত জলপ্র কৃষ্ড অপর হচেত ধানামঞ্রী।

ঋতুশূর্প রখন গৃহে ফিরিল, ওখন সংধ্য ইইয়া গিরাছে। দেখিল গৃহাপানে বংধ্জীব ব্যক্তর নিচে রঞ্জপ্রস্তর বেদিকার চিচ্নেন তাহার প্রতীক্ষার বসিরা আছে।

· চিপ্রসেন উল্জানিয়নীবাসী এক যুবক চিত্রকর, চিত্রবিদা৷ অপেক্ষা দর্শন পাঠে ভাহার অধিক অনুরাগ। সে বৌশ্বশাস্থ্য পাঠ করিবার জন্য এ স্থানে এক বৌন্ধবিহারে বাস করিতেছে। জবিদ্র ভাহার কোথায় একাট গভার দঃখ আছে, সেজন্য ফে সংসার জাগ করিয়া আত্মার শাহিতর আশায় ভারতের নানা প্থানে ব্রিয়াছে। এখন সে মনস্থ করিয়াছে, সে বৌশ্ব ভিক্ষ, হইবে। কিন্ত তাহার গরে ভিক্ষা উদয়ন ভাহাকে প্রব্রুণা-গ্রহণ করিতে উৎসাহ দিতেছেন না। তিনি বলেন, ভাষার বয়স তর্ণে, এখনও ভিক্ জবিন-যাপনের উপয়ন্তে মন হয় নাই। তিনি ভাহাকে গৃহাবিহারের প্রস্তরগাত্তে বৃষ্ধ-দেবের জীবন চিত্রিত করিতে ব্যক্তিরাছেন; সে চিত্রকর, ভগবান ব্যান্ধর জীবনের নানা ঘটনা আঁজ্জ্ড করিয়াই যথার্থা ধর্মাপথে অগ্রসর হইতে.পারিবে।

চিত্রনেম বাজল, ওছে খড়ুপণাঁ, ভোষাকে আমি সারাদিন খা্ছাছি। মালিরে পেলুম না, নলীভারে ভোষার সেই প্রির ম্থানেও সেলুম না, জপদাস্থে গড়ে ভোমার গা্ডে বলে আছি। ভাষার মথে বড় মালিন দেখাকে, শারামিক কুগল ভো; ভাগ শ্রীর আমার ভালই আছে,
কিচ্ছু আজ আমার মন বড় বিক্রিপত কেওনা
কাজে মন লগেল না। ডাছাড়া প্রপাতশেখর বা খোদাই করতে বলেছেন, দে
দুখাটি আমার ঠিক মন্দোমত নর। নীর্ধে
একটা চিন্তা করবার জন্য রাম্যিরির ১৮
চেন্তলাম।

The state of the s

—কি আশ্বর্ধ আমার চিত্তও আন্ত বহু
চপ্তল, আমারও ছবি আঁকতে মোটেই মন
লাগল না: সেজনা তোমার সংধানে
বের্লুম। ইচ্ছা ছিল, ডোমাকে নিয়ে
অপরাপ্তে নদাতীরে একট, বেড়াব। ডোমার
সংপা একটি বিষর গভীরভাবে আলোচনা
করতে চাই।

—তুমি ভাই একটা আপেকা কর আহি হাত-মাধ ধ্রে সংধাপ্তা শেষ করেমি।

—বেশ, আমিও সংগার আরাধন, ভংবান ব্রুধের নাম করি।

সংধ্যার প্রা শেষ করিরা বধন দুই বংধ, বংধকের,ক্ষতালে বসিলা, শ্রে-চতুদানার চন্দ্র পূর্ণ গগনে উঠিয়াছে মধ্যক-প্রুপ-গংধ-ভরা বাতাস ধীরে ধীর বহিতেছে। গৃহকোণে একটি ম্বপ্রদীপ মিটিমিটি জ্বালিতেছে।

চিত্রসন বলিল, ওত্তে ঋতুপণ, ছব খাবার কিছু আছে কি? আহারটা সমাধ, করেই আমানের আলোচনার বসলে ভাগ হয়।

—তেন, তোমার কি ক্র্যার উপ্রেক হারছে? আমার বরে তো থাবার কিছ্ন নেই, পাচকটি আবার অস্ত্রু আজ রাজে আর রামা হচ্ছে না, তবে গড়ের পারেন, দধি ও মধ্যু থাকতে পারে। আর আমি তো তেবেছি, আজ রাত উপবাসে কাটব, তাতে মন কিছ্যু স্থির হবে ও চিক্তার গ্রীক্ষাতার বাড়বে।

—সে আমি জানি, তোমার ঘরে কৈছ, থাকে না। চিম্পার কারণ নেই, আমিও বিশেষ ক্ষ্মিও নই, তবে একেবারে উপবাসী থাকা উচিত নর। আমি আসবার সময়ে কিছা ফল নিয়ে এসেছি, এই পণপ্রেট আছে, তুমি তোমার পারেস, দধি ও মধ্বার করে।

—এ বে অনেক ফল, অসময়ে এম্থানে এসব ফল কোথা খেকে সেলে?

প্রাংশ আৰু প্রভাতে উল্ছারনী থেকে
এসেছে, সে এসৰ ফল নিরে এল, আঙুরগালি বেশ রসাল। দেখ ভোমার পাথগ
খোদাই কাজে মানসিক পরিপ্রামের চেগে
দৈহিক পরিপ্রাম বড় কম হর না, অনাহারে
থাকা উচিত নর।

আহার শেষে পুই ৰন্ধ্ বাহিরে বেশিকার আসিরা বাসল। চিচুনেম বাজন, ওচে, ভূলেই গেছল্ম, এই একটি ম্লানাম পামি, ভোজার সম্মাক্তির শেটিকাতে সব্যে রেখ গাও।

-कि नदीवर

—আমাদের কবি কালিদাস 'মেছদ্ভ' কলৈ একটি কাব্য লিখেছেন, সেই কাবোরই কিল্লদংশ—

— क का निमान ?

—আমাদের উম্পরিনীর কালিদাসের নাম তৃমি শোননি? এখন ডো তাঁকেই আমরা অবস্তীর শ্রেষ্ঠ কবি বলি—

—ঠিক, মনে পড়েছে, 'শকুণ্ডলা' নামে তাঁর এক নাট্য দেখেছিল্ম। লোকটি লেখেন ভাল, উপমাগ্যলি চমংকার।

—তাঁরই এ-কাব্য, পাঁহিণ্টা সম্বন্ধে রেগো; আমার আবার এসব জিনিস বিহারে রাখবার জেন নেই। ভিক্ষ্ উদরন একেই তো বলেন, আমার মন এখন সংসারাসক, ভারপর এইসব কবিদের বিরহ-কাব্য পড়তে কথলে বলকেন, আমার হৃদরে রমণী-প্রেমর প্রতি কামনা, নারী-সোন্দর্যের প্রতি লালসা রয়েছে, ভিক্ষ্ হবার চিন্তা করা আমার পক্ষে দরোশা।

্—তা, তোমার ও কবির কাবাপাঠ ধর্ম-সাধনার থ্র অন্ক্ল বলতে পারি না। আমারও মনে হয়, কালিদাসের লেখা প্রাচীন শাশ্রসম্মত নয়, বড় আধ্যনিক ভাব-যোষা, শাশ্রজ্ঞ পাশ্ডিতেরা নিশ্চয়ই পছন্দ করেন না।

—সে আর বলতে, সভা-পণিডাতেরা তো করিব বিরুদ্ধে এক দল টেরী করেছেন: ভারা বলেন, কলিলাসের কাব্য পড়ে উল্ভায়নীর সকল যুবক-যুবতীর অক্তরে কাম-চাঞ্জার সৃষ্টি হচ্ছে, এতে নৈতিক অবনতি হবে। বিলাথীদের আর শাস্ত্রপাঠে মন নেই।

—এ-বিষয়ে আমি পণিডভাদের সংস্থ একমান।

—বল কি! আমার কিন্তু কাবটো পাঠ করবার ইচ্ছা হচ্ছে: এই চন্দ্রলোকিত শারদ রাত্তি অবশা বর্ষা-বিরহ-কাবাপাঠের পক্ষে ঠিক সময় দর—

—তাছাড়া, আমাদের মন এখন চণ্ডল.
চিত্তাভারাক্রাত; অনুক্লে মন না হলে
কবির কাব্যপাঠ করা উচিত নয়, তাতে রস
গহণেয়ও ব্যাঘাত ঘটে, কবির প্রতি অবিচার
করা হয়।

—ঠিক বলেছ, আচ্ছা তৃমি প[ু]র্থিটি পেটিকাতে রেখে এস।

—আজ্ঞা, তুমি যে আমার পেটিকার চারধারে ছবি এ'কে দেবে বল্লে, তার কি চারধারে

—ছবিটি আমি কল্পনা করেছি। আছা. খন্তানপক্ষী তোমার ভাল লাগে, ধরো এক-দল ন্তারত খন্তানপক্ষী—

্ —কিন্তু শাস্ত-প**ৃ**ষি রক্ষা করবার পেটিকাতে পাখীর ন্তোর দৃশ্য—

—দেখ, তুমি বাই বল আমি কোন দেবীর মুর্তি আর আঁকতে পারব না. ফ্লে-লতা-পাখী এইসব দিরে তোমার একটি স্ফের চিত্র একে দেব। চৈতোর দেওরালে সারাক্ষণ, কেকা বৃত্ধ-বৃত্ধ-বৃত্ধ একৈ আমি প্রান্ত। ধ্যানী বৃশ্ধ, তপস্যারত বৃশ্ধ, মারের সহিত সংগ্রামকারী বৃশ্ধ ধর্মপ্রচারক বৃশ্ধ, কেবল সংখ্যাত, সংগ্রাম সম্ধান—বৃশ্ধম্তি একে একে আমি ক্লান্ত।

—আজ তোমার মন বিক্ষিণত নর বিদ্রোহী দেখছি।

—ঠিক বলেছ, আমার অন্তরে একটা বিদ্রোহ ধনিরে আসছে, সেই জনোই তোমার কাছে এলুম। সমস্যার সমাধান খ'তে পাছি না। তোমার মধ্যে দেখি পরমা পান্তি আছে, তুমি মেন জীবন-সমস্যার একটি শান্তসনুন্দর সমাধান করেছ— সেজনোই এ-বিপ্রাহী চিত্ত নিয়ে তোমার কাছে একুম।

—দেখা প্রতিজনকে নিজ জীবনের সমসাা নিজে মীমাংসা করতে হবে: এ-বিষয়ে বংধ সাহাষ্য করতে পারে কিন্তু সমাধান করতে পারে না। নিজ জীবনের বেদনা-অপ্র্রা দিরে জীবন-প্রদেব উত্তর দিতে হয়।

—ঠিক বলেছ। কিন্তু তোমার সাল্প আলোচনা করলে, আমি হয়তো পথ থাকে পাব।

ঋতুপর্ণ মেম্বন্ত পশ্মিণটি রাখিবা আসিলে, চিন্তুক্স বালল, আমি স্থির কর্মান, ছবি আঁকা ছেতে দুদ্ব, এই চিন্তু-কলার চচা ধর্মাজীবন লাভের পরিপদ্ধী। তোমার কি মান হর?

— জামি প্রথমেই বালছি, নিজ-জাবনের প্রশ্নের উত্তর জাবনের দৃঃখসাধনা ওপস্যার খ্যারা দ্বিত হবে। তবে তোমার সমস্যা সম্বন্ধে আমি ভোমাকে করেকটি প্রশ্ন করতে চাই, ছবি একে তুমি কি আনন্দ পাও?

—ভবি আঁকতে আমার আনন্দ, আমি বসে বসে কত 'চত কল্পনা করি: কিল্ডু বভামান চৈতে। বে-ছবি আঁকছি তাতে আনন্দ নেই।

—আশ্চর্য, এই দ্বন্দ্র আমার মনের মধ্যে জেগেছে। আর দেব-দেবার মুর্ভি করতে ভাল লাগে না, আমি চাই মানব-কাবনের হাস্যদশিও অপ্রাসিক্ত লৌক্রবিশ্র্ণ দুশাগালি পাথেরে ফোটাভে—

—আমার-ও তাই ইছা করে। আমার আঁকতে ইছা করে, শৈশবের র্শকথা,—
রাজপুর ঘোড়ার চড়ে চলেছে রাজকনার
সংধানে, গভাঁর বন, অংধকার রাড ভারার
বিমাঝিম করছে, মহুরা বনের মাখার চাঁদ
উঠেছে; অথবা যৌবনের প্রেমস্কন—শিশু।
দগতে ব্রক-ধ্রতাঁর সনানলীলা, বারিসিক্ত স্বালোকদীণ্ড তন্তে আনন্দের
বলক, বেচে থাকার সহজ স্ব্ধ; এমনকি
ছোট ছেলে ঘুড়ি ওড়াছে, এক ছোট মেরে
মাথার শাকের বুড়ি নিয়ে হাটে চলেছে,
এক জ্ঞানক্ষ্ম নদাঁর ধারে ছিশ নিয়ে বসে
আছে—এমনি সব দ্শা আঁকতে ইছা করে।

—বেশ, ডাই আঁক। বৌশ গহোমদিরে ছবি নাই আঁকলে উচ্ছরিমী, স্বারাবতী, বিদিশা, বারাণসী, বেখানেই বাবে, শ্রেডীরা তাদের নৃতাপ্রাসাদ সুচিত্রিত করবার জনা বহু অর্থ দিয়ে তোমায় নিযুক্ত করবে ভূমি আজ সুপরিচিত।

—কিম্তু প্রণম তা ময়, চিত্রকলার বিষয়-বস্তু নিয়ে আমার সমসনে ময়: আমি জানতে চাই, আমার এই চিত্রকলার চচা আমার ধমলিতের পক্তে অমতরায় নয় কৈ, এ-পথে কি আমি আক্ষ পাব।

—দেখ, ভগবান বৃংধ মোকলাভের ব-পথ নিদেশি করেছেন সে-সাধনপুণ লগী আমার সম্পাণ অজ্ঞান সে-পথ আমি বৃথি না, এ-বিষয়ে কোন মত দিতে চেন্টা করা আমার পণে বাতুলতা হবে; তবে আমি নিজ জীবান আমার আথাকে বৃঞ্চাত, উল্লেখ্য করে তুলেছে।

—কিন্তু নিৰ্বাণসাভ এ-প্ৰে হ'বে কি?

श्राष्ट्रभग र्वाजना नियान कारक वर्तना. আমি জানি না। সৃষ্টকতা হির**ণাগর্ভ** আমার বোধের জগমা আলার বুশিধর ধারণাতীত ! সেখছি, **অর্প** আগ্নি আপনাকে প্রকাশিত করে চলেছেন নৰ নৰ ধারার। এ বিরাট রক্ষাণ্ডের রূপমাধ্রীতে আমি মুশ্ধ: ইচ্ছা করলেই এ-য়োছ পুর কবতে পারব কিনা, জামি না। আমার শব আৰু মেতেছেন স্থিত আনক্ষে, তার কলিত ন্তোন ছব্দে প্রলয়-পরোধি জঙ্গ থেকে প্রিথবী উঠে এল: সে ছম্পে **অন্যত গগনে** স্যচিদ্তারা ঘ্ণিত হচেছ: সশ্তসময়ে বাবিরাখি অলোড়িত হচ্ছে, সাগর-মেখলা-সন্দরী ধরণীতে, তুপে ব্যক্ত, শত-সহস্র জীবপর্যায়ে প্রাণবিকশিত, হিস্তোলিত রূপ হতে র্পাশ্তরিড: চারিদিকে কি অস্ব প্রাণোচ্ছরাস, কড স্করের রূপ, কড বিচিত্র ভুজাী চেরে দেখু, নী**ল ক্**টিক**সম গু**গামুক তলে চন্দ্রমা, অরণমেয় পর্বভক্রোড়ে নদী-জল রেখা, তরপায়িত শস্যক্ষেত্র সব্তের



্শীতাতপ-নির্রান্ত্রত নাটাশালা)

मकुम नाष्ट्रेक



আভিনৰ নাটকের অপূর্ব বুপারক ব প্রতি ব্রুম্পতি ও বনিবাস ২ ৬॥টার প্রতি রবিবার ও হাটির ক্ষিম ২ ৩টা ও ৬॥টার ্বা রচনা ও পরিচালনা থ

श त्राच्या च श्रीतां क्ष्या व्याप्त व्यापत व्याप्त व्याप्त व्यापत व्या

্য স্পান্তে প্র
জাজত বল্লাপায়ায়, অপদা দেবা, ব্রেজন্ম চট্টোপায়ায়, নাগিলা দাস, স্তুডা চট্টোপায়ায়, সভীক্ত ভট্টাপায়ায়, কালি ভট্টাপায়ায়, বালা, বালাকা চট্টোপায়ায়, লৈলেন অনুবোশায়ায়; বাজি চ্ ক

প্রশাদিত; কিংশুক-কণিকা ব্জের প্রশাদতবকে বংগাৎসব, আর এই প্রকৃতির মধ্যে কি স্থানর নরনারীদেহ! এ ব্পেমাধ্রীতে বিম্পুধ হরে স্থানর প্রকালের বেদনা অন্তব করেছ কি? তা বদি না করে থাকো, তাহলে শিক্ষকলা চর্চা করো না। আজ কিবস্রকার সঙ্গো স্থানর ভালার মাততে হবে। তারপর বেদিন তিনি তাশ্ভবন্তো সম্মুক্ত স্থান্থ বিকাশন হরে বাবে।

চিত্রসেন নির্বাক হইরা জ্যোৎস্না রাত্রির দিকে চাহিয়া রহিল।

াকছক্ষণ নীরবতার পর ঋতুপর্ণ ধীরে ধীরে বলিতে লাগিল, আমার মণের অপাণিতর কারণটা ভোমাকে বলি। কাল মধ্যরাতে ঘুম ভেঙে গেল। রয়োদশরি চাঁদ তথন পর্বতশিখরে। মনে হল, আমায় কে ভাকছে। ওই সম্ভাছদ ব্লের নিচে এসে বহুক্তের দাড়িয়ে রইলুম কোথাও কেউ নেই। তারপর মনে হল, হিরপ্বতী নদীতে वन्ता এमেছে, स्मृ भारत् धर्मन आमएह। सन्त **পদেই গৃহ হতে** বাহির হ**ল্**ম। তথন অনুভব করশ্ম, শিব-মন্দিরের বৃহৎ শিলা আমাকে আহবান করছে। মন্দ্রচালিতের মতে। নদী পার হয়ে মান্দরে গিয়ে উপস্থিত হল্ম। মণ্ডপের সম্মূথে মল্ড-ম্বেশ্বর মতো দাঁড়াল্ম-চারিদিক সতব্ধ, रक्शारकारकारक दश्त्राभयः। भट्न दल, विदारे শিলার মধ্যে কে যেন কদিছে, কোন নারী কাদছে। চমকিত বিমচ্ভাবে শ্নতে नागन्य. रत नादी कांग्रह, वनरू — याप्रारक **মন্তে ক**রো, আমাকে প্রকাশিত করো। সমস্ত প্রস্তর ভরে তার প্রকাশবেদনা আলোড়িত হয়ে উঠেছে। সে বলছে— তোমরা আপন থ্লিমতো একি সর ম্তি स्थामारे कब्रह, आमि स्व र्वानमनी ब्रहेन्स, আমাকে প্রকাশিত হতে দাওা তোমরা স্রক্টা াও, তোমরা যদ্র মার, বরফ গলে যেমন নদী প্রবাহিত হয়, কু'ড়ি হতে যেমন প্রেপ ·প্রস্ফৃতিত হয়, সমাদ্রমন্থনে যেমন লক্ষ্মী উঠে আসে, তেমনি আমি পাথর থেকে বিকশিত হয়ে উঠব, তোমরা পথর শ্ব করো ,না, আমার সাহায়া কর।

হার, আমি এ-নারীকে কেমন করে
মূভ করবো? এই পাখরের মধ্যে সে ঘ্যিকে
কাদ্হে, কেমন করে তাঁকে জাগাব, অগলি
থ্লে বারম্ভ করে দেবা, সে প্থিবীতে
প্রকাশিত হবে! চিলুসেন, আমার সমস্যা
ব্যাতে পার্ছা?

গভীর রাত্তি পর্যস্ত দুই বন্ধাতে আলোচনা চলিল।

মধারারিতে ঋতুশপ আবার গৃহ ছাড়িয়া বাহির হইল। মদিলর দিলা তাহাকে আকরণ করিতেছে, লোহকে বেমন চুল্বক আকরণ করে। এই দিলামধো কোন্লারণায়েরী নাবী ক্রমন করিতেছে, তাহাকে ম্ভি দিতে হইবে।

শত্পণ দিশাহারা হইরা চলিল। পাথর ক্রোনিত করিবার শিক্ষাসরজাম দুই চাস্তে। দুরে, গিরি কাভূমি স্তব্ধ। কিলিবেব পাণ্ড্ৰণ আকাশ রিমঝির করিতেছে, জ্যোৎস্নাধীত নদীজলরাশি দুইে তীরে মন্ত আবেশে আছড়াইরা পড়িতেছে। গ্রহাগ্লি সুষ্ণত।

মালির মন্ডপের সম্মুখে আসিরা সে
পিথর হইরা দাঁড়াইরা রহিল না। গণ্গাবতরপের জনা যে প্রশতরথন্ড মাদিন্ট ছিল,
সে প্রশতর পোই ছেদনী দিয়া কাটিতে
লাগিল। রক্ষার কমন্ডলুতে নয়, শিবের
জটায় নয়, হিমালয়ের ত্বারস্রোত নয়,
ওই কুর্জাললার মধ্যে গণ্গা বিদ্দনী, অছার
কারাগারের অর্গলন্বার খুলিতে হইবে।
উন্মন্তের মডো খুডুপর্ণ প্রশতর ক্লোদিত
করিতে লাগিল। মানে মাঝে আনন্দে ন্তা
করিয়া উঠিল। সে শুখ্ ফ্লী, গণ্গাম্তি
আপনা হহতে বিকলিত হইয়া উনিতেছে,
আজ ন্বপ্রহরের সন্তপ্রশা ব্কতলে ধারাবর্গা সে যে লাবশ্যনয়ী যুবতী দেখিয়াছে,
তাহার মতো যুতি!

কমলনরনা, পীনোরত-প্রোধরা, চার্-নিতাদিননী, এক হলেত মঞালজলপ্রণ কলস, অপর হলেত স্বর্গবিশা ধানামজ্ঞারী। ছয় ঋতুর প্রেশ দেহ বিভবিতা,—কেশে হেমানেতর কুল, কর্ণে নিদাযের শিরীশ প্রণ, কর্পে বসলেতর নবকুর্বক্মালা, কটিতে শীতের লোধপ্রপের কান্ধী, সীমানেত বর্বার নবকনন্ব, চরণে শর্তের রস্ক্রান্তি।

ম্তি কোদিত করিতে ঋতুপপ্
নিমশন। কখন চন্দ্র অসত গেল, শ্কেণারা
নিভিন্ন গেল, সে জানিতে পারিল না।
উষার রান্তা আলো যখন ভাহার
নবোংকীর্ণ গঙ্গাম্তির উপর আসিরা
পড়িল, তখন সে চরণতলে পম্মের পর পদ্ম
ফুটাইতেছে।

কাহার আহনানে সে যেন জাগিয়া। চমকিয়া উঠিল।

-শ্বাকুপৰ !

সন্মূথে স্থপতিশেখর র্দ্রদাস একা দাঁড়াইয়া। চারিদিকে অর্পের তীর আলোক।

র্দুদাস ক্ষুখ্যবরে বলিলেন, খতুপর্ণ তুমি কি করছ? ভোরবেলা হ্ম ভেঙে মনে হল, যেন ছেদনীর শব্দ শ্মিছে? একি কান্ড! সারাদিন অলসভাবে কাটালে, আর রাতে ভঙ্গরের মতো এসে পবিত্র মদ্দির গাতে বিলাসিকী নারীম্তি—

সহসা স্থাপতিশেখর সক্তথ হইলেন, অপ্র গণ্যাম্তির দিকে বিম্পভাবে চাহিয়া রহিলেন।

ঋতুপর্যা নতজান, হইয়া তথান রাপ্রদানের পারের উপর পাড়িয়া কাতর কপ্রে বিলাতেভে, আচার্যাদের আমি উদ্যাদ। রাছে কি অসহনীয় বেদনাই উদ্যাদ হারে **আমি** এখানে এসে মার্লি উদ্বাদি করেছি— সান্ধির প্রকাশের ব্যবসান এই শিলার রাধা এই নারী কাঁদভিক্ষ—আমানক যে শাসিত হয় দিন—আমি চ্যাদে। উদ্যাদ—

শাসতিদুশ্যর কিন্তু খড়পাণার কান কথাই শ্রিডেছিলেন না, আবেগের সহিত বালয়া উঠিলেন, একি অম্তনিয়ালনী দেবীম্তি! য়ালালা, তোয়ার একি র্প দেথল্ম! ঋতুপণ, এ র্প তুমি কোথার দেথলে, তুমি দিবাদ্দিউ লাভ করেছ!

সরে, আমার শাস্তির বিধান করেন,
তা না হলে আমি মনে শাস্তি পাব না।

—আর আমার বক্ষে আর, তোর মতো

শিষ্য পেয়ে আমি গবিত।

—আমি কিছু ব্রতে পারছি না, আমার মহিত্তকবিকৃতি ঘটেছে।

— শতুপণ, এ দেবীমার্তি গড়ে ভারতের
শিলেপতিহাসের তুমি নবব্য আনজে।
আমিও এ মাতি পরিকল্পনা কর্তে
পারতুম না। দেবীকে তুমি প্রেমে ক্রেছে
মানবী, মানবীকে তুমি সৌন্দর্যে মহিমার
দেবী করেছ। তবে এ মাতি রাজপারোহিতের প্রকল্প হবে না, আপত্তি হবে।

—আচায়াদের: আমাকে পরিহাস করবেন না—আমার কি প্রায়াদির, কি দাহিত?

—তোমাকে কঠিন শাস্তিই দেব।

--বল্ন, আমি অল্ডরে শাল্ডি পাই।

—বল্লভীপরের যে মন্দির নিমাণের বাবস্থা হচ্ছে, সে মন্দির নিমাণের সমস্ত ভার তোমার উপর, তুমি হবে সে মন্দির গঠনের প্রধান ও শ্রেণ্ড স্থাপতি!

--একি পরিহাস!

—পরিহাস নয়, বংস, সত্য। বাও বল্লভীপারে মদির নিমাণ কর, তাহালে তুমি ব্রুতে পারবে, আমার অণ্তরে কত শ্বম, কত কলপনা জাগে, প্রকাশের কত বাথা, কিশ্তু চারিদিকে বাধার জনা মনের মত্যে করে স্থিত করতে পারি না।

--স্যুটির প্রকাশের বেদনা-শিক্ষার মধ্যে কোন নারী বসে কাদছে--আচ্যুখনের আমি--

জরতের ঘ্র ভাঙিয়া গেল । গভীর রাও পর্যাত স্ট্ডিওতে কাং করিছে করিছে সে ইজিচেয়ারে ঘ্রাইরা পড়িয়াছিল।

তাহার নাম ঋতুপণ নর। বিংশ শতাব্দীতে বাঙগায় সে ভাস্কর জয়কত।

জাগিল। ইজি-চেয়ার হইতে সে উঠিল। জানালার কাঁচে ভোরের পাণ্ডর আলো। স্ট্ডিওর চারিদিকে মাটির তাল, স্লাস্টার অব পারিস, অধাক্ষাদিত প্রস্তরম্ভি, নানা জিনিস ছড়ান।

তাহার মনে হইল, এখন বৃত্তি স্থপতি-শেখর বৃত্তদাস তাহার সম্মুখে আসিরা বলেন, বল্লভীপুরে মন্দির নির্মাণের ভার তোমার ওপর।

হার, এ বুগে কেহ মন্দির নির্মাণ করে না।

বিংশ শাতাবদীর জীবনকে ম্ভি' দিতে চইবে। মানবের স্বশ্ন, বেদলা, সংগ্রাম, আনস্দ।

স্ট্রজিওর জানালা, শ্বার সে খ্রিকরা দিস। প্রভাতের আলো স্ট্রজিওর চারিদিক দীত করিরা তুলিল 4

ছেলেবেলার ট্রু ছিল একমার নিভ্ত র্মাপানী। জীবনে অনেক গোপন সংবাদ এর কাছ থেকেই জেনেছি প্রথম। তার আগে অপরিচয়ের ব্যবধানে অন্ধকার ছিল দ্রধিগম্য। বাংলার স্মৃদ্র, দ্মতর পরকতা বলেছেন, 'আমার অধিক গারু, বেঠিক গরের, গরের অগণন।' ট্রকু ছিল ভাই। অবশা তারও আগে এসেছিল পিলি। গোটা রাভ একই বিছানায় কাটাভে হয়েছিল। সে এক ভয়াবহ অভিজ্ঞতা। নারীর হারয়, প্রেম যেন এক লছমায় তলিয়ে গোল কোথায়। তথন থেকে কবিতা আমারে দুচকের বিষ। পান আর পাপল করে না আমাকে। লোকে ভাবে, রস-নয়হীন, ভয়ৎকর কাঠখোট্টা মানুষ। নিভাস্ত প্রদেশন স্বভাব। তলিয়ে কে আর কাকে

পিপি ব্লেছিল, 'এই কথা যেন পাখারে চাপা থাকে দীর্ঘকাল। কডদিন বাঁচবো কোল আমি জানবো, আর ভূই। এখন ব্রাল ডো দেহটা কোন স্থের?'

বলিনি কাউকে। বলা কি বার্ নরসের বিচারে প্রথিবীর আলো-অন্ধকার আবতের সংখ্যা ওর ঘনিষ্ঠতা ছিল আমার চেরে কিছ, নিবিড়। দেতে-মনে ক্লেদ আর ^{প্ৰক}েমেখে এমনি করেই চুপি চুপি বড় ইক্সো এখন কোখার আছে পিলি সংখ बाह्न किया छा-७ जागित। भूग मत् আছে, এই দেহ সংখের কাভাল। এখনো একলা হলে থেকে থেকে আচমকা মুদ পড়ে সেই মুখ, অস্থকার নিপাট বিছানা আর কালার মত অর্থহীন, অস্পত্ট প্রজাপ। চিবিরে **খে'তলে** বার বার উচ্চারণ করি নেইসৰ কথা, আস্বাদ নেই। ভিন্ত, বিস্বাদ আফিমের নেশার মত রক্তের ভেতরে বিম শানক। এই আছুমতা কাটিয়ে নতুন কিছু, ক্ষা কিবো ভাবা অভ্তত সাময়িকভাবে देशांचा बट्टा इत्र।

জানো, আৰি ডোয়াকে ভালো-কেনুহিন্তুৰ ৷' বিশ্বাস করিনি। কারণ, মন্টা বিশিয়ে দিয়ে সেছে পিপিই। অথচ সে ছিল ছাড়া-ছাড়ির চরম মুহুত। রঙে তথন ভাবনার চেরে বাাকুলতাই বেশী।

'কাল আমরা চলে যাবো।'

সদাশাড়িপার। ট্রুকে মান হছিল নজুন উষার মত সিন্দং, শাসত, স্দুরে। হাত দিয়ে ছোঁয়া যায় না. ধরা যায় না, অথচ ধানে অন্তব করা যায়। এমন করে পরিপ্রিভাবে ৪কে আর কথনো দৌখান। পলকে বয়স যেন আমাকে ছেড়ে দিন-মাস-বছর পেরিয়ে অনা দেশে চলে গোল। অন্য কোনো গ্রহে। যেখানে পাপ নেই, প্রা দেই ত্রান্তি নেই। শ্রহ্ মুখ, শ্রহ্ ত্রান্ত। শ্রহ্ দেহ, শ্রহ্ দীন্ত।

'যাওয়া মানেই তো আসা?'

না। মাথা দুলিয়ে টুকু বললে, চাকরি ছেড়ে দিয়েছে বাবা। এবার আমরা দেশে যাবো।

জলে ডুবে মরতে গিরেছিল একবার।
আমিই বাঁচিয়েছি। টুকু তা ভোলোন।
সর্বাপল আগনে মেখে কোঁদে কোঁদে
নিল্লের মতো আমাকেই ডেকেছে কেবল।
আজ তাই চিব্কে আঙ্লে ছাইয়ে সব
কৈছ্ লেখে নিতে চাই, বা আমার দান, বা
আমার স্মৃতি। নিশ্বিধার ব্যক্তর আঁচল
সরিরে ধাঁরে ধাঁরে উন্মৃত্ত, উন্ভাসিত হল
টুক। আর মৃত্তের্ড মন্দির হয়ে গেল
দ্বীর।

'আর কিছু ?'

ভূজার যদি জল না মেলে কোনোদিন ভাহলে ভোমার কাছেই খাবো।'

'বেখানেই থাকি আমি চিরদিন ভোমার। শ্বহু ভোমারই।'

সেই বাওয়া এখনো হলো না। উকুকে
বুঝি আর দেখা হবে না জীবনে। অথচ
আশা ছিল যাবো সমর হলেট ভোমার
কাছেই যাবো। উক্ আন্ত ভামি কোলার?
অবসরের উদ্যানা মাত্রতিশিলি এখনো
ভোমার কথা দোলে শেক্সপাদ। এখনো
মনের মধ্যে বৈচি আছে গ্রাম, দেশ, বন-

ভূমি। আর সেই গ্রাম্য বালিকার সরল, সংজ আত্মানের স্মৃতি। কাছে রাখতে চেয়ে রাখা গেল না। দেখতে দেখতে বাকে আর দেখা গেল না।

ট্কুর হাত ধরে ঘোরা, লে ছিল। ছেলেবেলাকার সাধ।

টুকুর সংগ্য ছাড়াছাড়ি, সে ছিল জীবনে নিয়তি-নিধায়িত এক জননা পরিণতি।

যার জন্যে প্রস্তুত ছিল না কে**উ।** না ট্কু না আমি।

দ্বঃখ তাই অবিরুদ।

আছে সব। সেই বকুল, *ল*ভাপাভা, কাপেটে নিপ্ণ শিল্প! বিন্তুকের क्वमानि, भाना, तर्द्धत शानाभ! स्ट्रा আর ধোঁয়ার আড়ালে ম্পান। ঝেড়ে নেবার সময় নেই, মৃতে দেখার গরজ নেই। তব্ আছে, ভোলেনি কিছ,ই। একদিন বন্ধ ছিল, অকারণ আদর ছিল এদের। আজ শুধু সপো রয়েছে, প্রাপের মত, প্রত্যাপের মত, কাছে কাছে রেখে দিয়েছে টুকু। ফিল্ডু একদিন ব্রুতে পেরেছিলাম, **আমরা যত** নিকট, ততথানিই দ্র। সংসারের নির**মে** লভ্জা দিয়েই মান্দরকে ঢেকে রাখার, আড়াল করার রীভি। এই ঝিনুক, এই মালা, রক্তের গোলাপ এরা আমার কৈশোরের বেদনা দিয়ে গাঁখা। আমি এদেব চিনি। এত নিকট এত আপন আক্ত আর ট্রকু নর। অথচ এরা আজ কত দারের।

মনে রেখেছে সব, সকল কথাই। সেই প্রেম, প্রতিপ্রতি, অভিমান। অদশনের দুঃখ তবে একা আমারই নর। আজাল থেকে খোঁজ নিয়েছে, দুর খেকে খবর পেরেছে, কেমন আছি, আদৌ আছি কিমা। তব্ না জানিরে, না শুনিরে আচমকা চোখের সামনে এসে হাজির হয়েছি কলেই কি এত স্থির, এমন অচগুল? যেন জানার মধাে ফাঁকি নেই, চিনতে কোথাও বাকি নেই আর। ভেতরে-বাইরে মান্বটা আমি কেমন, কতথানি খাঁটি চোখ বৃজ্ঞে টুকু ভা এক্যনি বলা দিতে পারে।

আর আমি কি চেরেছিল্ম? এত প্র হুটে এ আজ কার কাছে আসা? সেই টুকুই তো! বালক বরসে নির্পার ছেড়ে দিতে হয়েছে যাকে? তাই বলে বৌৰদে আমাকেই ফিরিয়ে দেবে তুমি? কুপদের



মত সরিরে নেবে হাত ? কথা ছিল, তৃষ্ণার্থ কাতর হলে হাবো। তুমি চির্রাদন আমার, শুধু, আমারই। কিন্তু এ কেমন হল ? দরজাটা খোলা নেই, তুমি নেই। তুমি, সেই তুমি। প্রথিবীর মাঠ-ঘাট এখনো ফুলফল-ফসলে প্রণ হয়ে আছে। তামাটে খুলিমাখা বসন্তের আসা-যাওয়া তেমনি অবারত। শুধু বঞ্চনার নর্ভাম আমার ঠিকানা। ধ্রপ আর ধ্সের্ভা আকীর্ণ করে রেখছে আমার পথ।

'ভালো আছো তো ট্র্কু?' 'হাাঁ, তুমি?' 'দেখতেই পাচ্ছো।'

হাসতে চেয়ে দেহমন গ্লিকে এঠে।
বেন এক্রিন বিম করে ভাসিয়ে দেব খর।
যাকে চেয়ে এত পথ হে'টে এখানে আসা,
স গাল কোথায়? এ যে অনা মান্য!
গ্রিশ্লের মত চোয়াল। ভুরুর দিচে শ্না
বাসার মতই দুই চোখে অথকার। পাকানো
দড়ির মত দুই হাতে পেতলের রুলি।
কাকে চেয়ে কার কাছে এল্ম। লব্জায় চোখ
ভূলে তাকাতে পারিনে। টুকু সুখে নেই
টুকু ভালো নেই। যেন সব অপরাধ আমার।
মুখ ফুটে বলতে পারিনে, তোমাকে ভয়ানক
দরকার। একদিন তুমিই কথা দিয়েছিলে
টুকু! তাই আসা। এবার কি নিয়ে ফিরে
যাই বল তো? কোথার যাই আমি?

বিয়ে করেছো নাকি?'

গলায় স্পণ্ট থাঁজ। যেন থাল খেরে
কথা বলছে। শনে হকচাকিয়ে চাই। সঠিক
জবাব দিতে বিলম্ব হয়ে যায়। খতিরে
দেখতে হয়, ভাবতে হয়। তবে কি আশা
করেই বসে ছিল ট্কু? প্থনীরাজের মত
আড়াল খেকে বারিয়ে এসে তাকে নিয়েই
পালিয়ে যাবা কোথাও! নিজেকে বাস্তবিক
অক্ষম অপদার্থ মনে হয়।

'করতে হয় তাই করা।' কথা বলতে বলতে হাই তুলি। মুখের সামনে তুড়ি দিই। বেন জাবনে অথবা সংসারে ওলোট-পালোট হর্মান কোথাও। আমি সেই আমিই আছি, টুকু সেই টুকু। এতটুকু নড়চড় হর্মান কিছুই। তবে কেন কালা পায়? বুকের ভেতর টনটানিয়ে ওঠে বাথা?

'পথ ভূলে নাকি?'

চোকে-চু-হং-কি

টেক্নোক্রেসি ইন্দিটটিউট চিঠিপতে দাবা ও তাস খেলা শেখা : ১। আহানিক কনষ্টাট ভাজি

(১৯৬১) ৩-৫০ টাঃ ২। ইন্টার ন্যাশনাল শবা খেলা

(১৯৬৮) ৪-০০ টাঃ
অভার এবং নিয়মাবলীর জন্দ চিঠি লিখনেঃ
সংপাদকঃ শ্রীষধ্নদ্দন মন্ত্রনার।
বি এস ই (মিলিগান), এম এস্ (ইলিনর)
১৬ বি জি রোভ, হাওড়া-০, পশ্চিমবংগ।

চেহারায়, অবয়বে উদাস, নিম্প্র মনে इश्व। कट्छं विद्युश। किंद्र बाद्या? ब्युक्त ভেতরে ছ্টন্ত ঘোড়ার মত টগর্বাগয়ে ওঠে রস্তু। অত সহজে আঘাত পাইনে এখন। ভুলে গেলে? কেন আসা ব্ৰতে পারো না? শিশ্ব তো নও? আমিই কি অচেনা হয়ে গেছি তবে? একদিন না চাইতেই এই দেহ. এই প্রাণের বিনিময়ে সব**'ম্ব পণ করে** বসেছিলে? আজ কি ভূলে গেলে ট্ৰেকু? আমি কিন্তু ভূলিনি কিছুই। এখন ইচ্ছে হলে শুধু দেহ নয়, প্রাণ কেড়ে নিতে পারি। ভাবছো, কি দ্রুর আমার সাহস! কিন্তু আমি ভূষিত, আর্তু, অসহায়। আজ তুমি ছাড়া গতি নেই। কথা রাখতে ছনটে এর্সেছ। দ্র, দৃস্তরতা ঘ্টিয়ে আরো নিকট আরো সপ্সোপন হতে চাই।

'তোমার স্বাামী কোথার?' চারদিকে তাকাই। আতিপাতি করে খ'র্জি সব।

'কাজে গেছে।' যেন সভরে জবাব দিছে ট্রু। গলা কাঁপিয়ে কথা বলে। বেশ মজা লাগে। ভেতরে-ভেতরে একটা সূথ একটা অনিবচনীয় কোতৃক অন্তব করি।

'একা নাকি? মা হয়নি?'

চোথের ওপর তর্জানী তুলে ধরল।
মাথা দ্বিলয়ে ময়লা হাসি হেসে আমাকে
কেন ঘায়েল করতে চাইল। দাঁতে পাওরিয়ার
কত। গা খিনখিন করে। আঙ্লের মত
কণ্ঠার হাড়। গোসাপের গায়ের মত ঘামাচি
ভর্তি খাড়-গলা কেমন কুংসিত, খসথসে।
ভাষ্ঠ তুমি কত স্কর ছিলো। একদিন মনভলানো রূপ ছিল তোমার।

'আর কেউ নেই?'

'আছে। ব্ডি শাশ্ডি' 'কোথার?'

'অথ হয়ে পড়ে আছে। স্ব দায় এখন আমার।'

ক্লাণ্ড মনে হচিছল, আলান দেখাচিছল ট্কুকে। কেন সরাসরি অভিযোগ করতে চাইছে। কথায় কথায় ব্ৰিয়ে দিতে চাইছে স্ব দোষ আমার। ইছে করলে, সেদিন আমিই বাঁচাতে পারতুম ওকে। বয়সের বিচার করবে না? অভিজ্ঞতার, ক্ষমতার? ব**ললে এক্ষ**নি কাল্লায় ভেঙে পড়বে। চিনি তো! এখন বয়স হয়েছে, ছেলের মা হয়েছে ট্রকু। হোক না প**ংগ**ু আর বোঝা ছেলেই তো? ট্কুরই পেটে-ধরা ছেলে। বেশী বোঝাতে গেলেই বলবে, অভিজ্ঞতা নিয়ে কেউ জন্মায় না। অভিজ্ঞতা আমাদের বয়স আর চিম্তার ফসল। আসলে বল না কেন. তুমি ছিলে ভীরু। কাপ্রেষ। হাাঁ তাই। কিশ্তু আজি তোনই৷ আজাতো কথা রাখতে চলে এসেছি ট্রে । দেরাল দেখি। **ফাটী ছাদ। বহার জ**লের দালে বিবশী। ঘুণে ধরা কড়ির গায়ে বাদ্ভের মত

বলেকালি। মেঝের একপাশে কাঁবাকানি,
বিছানার ক্ত্প। সাতস্যাতৈ গাখ। দড়িতে
ঝোলানো জামা-কাপড়। সরে এল ট্রুড়।
চেয়ারের কাঁধ থেকে নোংরা কাঁচুলিটা তুলে
নিল। চলে বাচ্ছিল। হাত ধরে কাছে টানি।
বলি, কেউ তো নেই। একট্ন পাশে বসধে
না আমার?'

নিপূণ লম্পটের মত হাসতে থাকি।

টুকুর ভাবলেশহীন মুখে আরো এক পেটি
কালি মাখিরে দিল কে! ও এখন ভয়ে কাঠ।
হুদিপিন্ডের শব্দ শোনা বাছে। বাধা দেবার
সাহস নেই। অথচ তেমন করে কাছে আসার
তাগিদও নেই আর। দাঁতে দাঁত থাব।
ইয়াকি'!

'কথা রাখলে ক্ষতি কি ট্কু?' 'ক্ষতি তোমার মেই, আমার আছে।'

'তবে যে বড় মূখ করে আসতে বলেছিলে?'

'বলেছিল্ম ব্ঝি? তা হলে জুলে যাও সে-কথা। এখন এই ঘরদোর সংসারের রঙ্গে রঙ্গে শেকড় ছড়িয়ে দিরেছি। জট নামিরে দিয়েছি এর বাইরে একেই আরে। শক্ত, সজীব করে তুলতে চেয়ে। আজ টেনে তুলতে সেলেই ছি'ড়ে যাবে। জীবনটাই নীরস হয়ে যাবে আমার। তুমি কি তা-ই

কথার কি চিড়ে ভেজে? ক্ষমাহীন নিষ্ঠুরতা আমাকে উগ্র, উদ্মাদ করে তোলে। হাত থেকে কাঁচুলিটা ছিনিরে নিই। কুকুরের মত গম্ধ শাকে দরে দেরালের দিকে ছাড়ে দিই। মেঘের মত গাভীর, গাঢ় দ্বরে আদেশ করি, দরজাটা ভেজিরে লাও টুকু।

মাথে মদের গণধ নিয়ে রাত করে খরে ফেরে মদন। হাতে কচ্ছপের মাংস কলে. 'চলে তো এসব?'

চোখ টিপে সায় দিই।

আমার আবার মা হলে চলে না।' ফোকলা গালে ফা-ফ্যা করে হাসতে থাকে মদন।

ট্কু দুটো 'লাস এনে সামনে রাথে। কিছ্ কচি পেয়াজ, লংকা, ছোলা-মটর। বেশ যত্ন নিয়ে দুটি 'লাস পুর্ণ' করে মদন। গদগদ স্বরে বলে, 'নিন। কত জন্ম তপ্স্যা করলে আপ্নাদের মত প্রাাত্মাদের স্প্র পাওয়া যায় ভাব্ন তো?'

তরল আগনে এক নিঃশ্বাসে গলার তেলে শ্ন্য পলাসটা মদনের সামনে রাখি ফের।

আপনি দেবতা। পারের ধ্লো দিন।
মাংসের ঝোলমাথা হাতথানাই আমার পারে
ঠেকিয়ে কপালে বুকে বুলোতে থাকে
মদন। রাগ করে বলে, মাগীকে আপনি কি
পিথিয়েছিলেন বলুন তো? কেমন মান্টার
ছিলেন আপনি? আমাকে ভত্তি-ছেন্দা করে

না এককম। খরে চ্কেলে নাকে কাপছ দিরে পালিরে বার। অথচ এখনো আপনাকেই মানি করে। কথার-কথার খেটা দের। আমি নাকি আপনার পারের ব্লিগ্য নই। তা এক-বার ক্লে-করে শিখিরে দিরে বান না কেন?

এবার ট্রকু ভাকে।

केल बाहे।

'কত রাত হবে তোমাদের?'

পোটা ব্লাতই কান্টিরে দেব ভাবছি। ভূমি হুমোও গে বাও।'

ভাই কি হয়? তুমি থাকৰে একটা মাডালের সামনে বসে, আর আমি লিভিতেভ **ব্যোবো**?' মোহিনীর মত হাসি द्यारत हे_.कृ। এখন जातक महज, जातक अबन प्राप्त इटक्ट ७८क। यम स्मिट पेर्कु। स्व একদিন হেসে কাছে এসেছিল, কে'দে বিদায় নিয়েছিল। এতক্ষণ কোথায় ছিলে ড়াম? অর্থকার কোন অরণোর গভীরে নিজেকে ল্যুকিয়ে রেখেছিলে বল তো? ्टम-वात्र-धनाथरत ७ एर जनामान्य । এখন ভোমাকে নিয়ে পালিয়ে যেতে ইচ্ছে করছে। **আদর করে কাছে** টানি, বুকে হাড রাথি। ট্রকু নিজেই ঘনিষ্ঠ হতে চায়, আরো নিবিড়। চুলের গণ্ডের নাক ভূবিয়ে বলি, **একদিন আমার জন্যে মরতে চেরেছিলে।** আজ পারো না?'

কথা না বলে একে একে দেখিরে দিকে

কৈ । জন্বার-বোনিতে-শতনে সেই দাগ,
সেই চিহা। তাহলে আমি এখনো বেচে
আছি! কলংকের মত স্বাগন জড়িরে
বর্মেছ তোমার! দেখে আদ্বন্দত হই। তুণিত
বোৰ করি। মদনকে মনে হচ্ছে হের,
অপবার্প, অর্বাচীন।

थीरत-पीरत क्लिस जनस्य।

मारम ह्वरज-ह्वराज भगन वनन, 'इन ?'

কথা বলিনে। চুপচাপ বঙ্গে থাকি।

ফাৰাটা ভীৰণ ভারি ঠেকছে। ফাঁকা,

উলান, শ্মা মনে হচ্ছে ধর। পড়ির

আলনার একটিও কাপড় নেই। মেকের

ওপর বিছানটো এলোমেলো করে পাত।

দেরালে বল্ছরপের ছবি। কড়িকাঠে

বাপ্ডের মত কলে। কেরোসিনের লালচে

আলোর সবিকর্ই রহসামর ঠেকে।

আলোর সবিকর্ই রহসামর ঠেকে।

আলোর সবিকর্ই রহসামর ঠেকে।

আলোর সবিকর্ই রহসামর ঠেকে।

আলোর বলমের মত স্চ।

সন-তারিখের অসংখ্য ফুটো। সব বেন

ফ্লিরে বাচ্ছে। মদনের বোকা ছেলেটা

আনোরারের মত একবার চেচিরে উঠেই

খেমে গেল। আমি কি মাতাল হরে বাক্রি

মারি প্রাণেই মড়ার খ্লিরর মত মাংসের

বাটি, স্পান, ব্যেতভা। গোটা মেকেটাই কেন
কংকাল করোটিমর এক বিশাল শ্মশান।
কণালে জনুলত সিগারেটের ট্করো ধোঁরা
ছড়িরে জনুলছে। কাত হল মদন। বিম
করল। শেবে হাত-পা ছড়িরে গা এলিরে
দিল মেবের। বামর ওপর গড়াতে-গড়াতে
দেরালের কাছে চলে গেল। মদনের কাও
দেশে নিজেকে ভীবণ একলা মনে হছিল।
তারপর আমিও ওর দেখাদেখি বামর
বিপরে নাক-ম্থ বসতে-ঘসতে দেরালের
কাছে এগিরে গেলন্ম। দ্ হাতে প্রার
ব্রেকর মধো চেশে ধরে আদর করে
ডাকল্ম, শ্মদন

ডাক শুনে এতক্ষণ পরে একটা বাচ্চা ছেলের মতই হু-হু করে কোনে উঠল মদন ৷

মদনের মা চিংকার করছিল। মদন, অ-মদন!

কিন্তু ব্যাভেডে পাণের বরে বেটে অনেক পেরি হরে গেল। ট্রুডখন जन्मा । माउ-माउ कत्र जागन्तर मिया-গ্লি হাজার আঙ্বলে ছাদ-বর্গা-কড়িকাট ছ'তে চাইছে। বোবা ছেলেটা মরে পঞ্ আছে। ট্রু নিঃসাড়। ধোঁরা আর মাংস পোড়া গম্পে সারাটা বর আজ্জা হরে গেছে। স্বস্তির নিঃশ্বাস ফেলে মদন আমার হাত ধরে টানল। বাসি হাড়-মাংস বীষর ভেডরে প্লাস আর বোতক নিয়ে আৰার নতুন করে গর্হিরে বসল্ম। মদনকে বেশ গম্ভীর দেখাচ্ছিল। এবার আমি *ধীরে*-ধীরে মাতাল হয়ে হাক্সিলুম। **ভরি**ণ দ**়ংথ হচিত্র আমার। অনেক কথা ম**দে পর্ডাছল। বৃকের ভেতরে **প্**ডে ব্যাহ্রন যেন। পাশের খরে আগ্রাম ছাই হতে ধীরে ধীরে। আমার আন্ধার মত বের্নিছীন, স্তনহীন, **জন্মা**হীন ট্ৰু**পৰিচ হচ্ছে** কুমাশ ৷

মনোরম প্রমোদের নতুন দিগণত উল্মোচিত হচ্ছে

छक्रवात ५ है सि !!

আটি বেকে, সৰ্জ ক্ষেত আৰু গোচাৰণ ভূমির মতই সভেজ ধরিলী বাভার নিজ পর্ত থেকে উৎসায়িত হয়েছে এই চিন্তের কাহিনী - - - -



জনতा ६ कृष्ण ६ स्नितका ६ शाह्रा

(वाजान्क्न विवासवर्ग ध्यकाग्र)

রুপালি — অংশাকা — ন্যাশনার — নবর্পন পিকাভিল - ন্যাশনাল - পরী - চম্পা - নিউ তর্প - শ্রীকৃষ্ণ লীলা - ক্লাক্তির অনুরাধা (স্পাপ্র) - দেশবর্গ্ধ (ঝ্রিয়:) - ওবেলফেরার (র্টিচ) এবং অন্য



আছে ভোরবেলা বাথরমে পেচছাপ করতে । গরে । বজন দেখল গেচ্ছাপের বদলে আছ রস্তু বেরুছে: মে রস্কু-প্রস্তাব করছে। বাধা না দিয়ে বিজন পেচছাপ করল। আরো পেচছাপ পায় কিনা দেখে জল দিয়ে ভালো করে ধুকে নিয়ে সে ঘরে এল। শীত পাছিল ভাই কাথা নুটি দিহে পেভাগোল দুটো বালিস রেখে ভাতে ঠেস দিহে বসল এখনো ভার কপালে রক্ত লেগে ছিল।

এই ভোরে মেজদা ফাকেটার ঘাবে, ঘাবার আগে দরজাটা ভৌজমে দিল বৈজন তার শব্দ পেল। এই সময়টাকে ধরে রাখার চে^{চ্}টায়, বিজ্ঞান জানে, মেজদা এখন বেদিকে বৃকে জড়িয়ে রেখেছে। মেজদা বেরিয়ে গেল বে^{নিন} হাসিম্ধে জানলার গরাদে চেপে তারপর काछ धारम वनन, धारे, हा भारव ? বহুদুর পর্যাত তথন বুণিট চাচ্চল পনানের পর মেয়েরা যেমন চুলে ঝাপটা দেয়, তেম^{ান} করে হাওয়া এসে মাঝে মাঝে ঝাপ্ট যাছে। দু'একটা কাক-পায়র। ওড়াউড়ি কর-ছিল, বুলিট হঠাৎ ঝে'পে এলে বিজ্ঞন বৌদিকে 'আদা বলল, 'হ্যাঁ, কারো, ভারপর বলল, দিও, ব্ৰেলে?' এই যে এমন তুম্লে ব্ডিট হচ্ছে, পাথিদের এতে খুব একটা আপত্তি আছে বলে তো মনে হয় নাংএ দ-েএক মিনিটের ব্যাপার নয় ব্বে অনেকেই চোখ বুজেছে নিখিচতে। এদিকে, কাছেই জানালার শাশিটা ফেটে চুরমার হয়ে ধাঞে ফোটাগুলো ব্যুন্ট্র বারবার। এসে ফেটে वार.वंद মশ্বরভাবে নেয়ে ্রচীচির জলরেখা কী হঠাৎ তারপর কাচময় ! বিজ্ঞান তীরতার ছড়িরে যাচ্ছে মনে করে দেখল, অন্য স্ব কিছু, স্তব্ধ হলে তবে বৃণ্টিপাত হয়। এই সময় ধা-কিছ শব্দ শোনা যায়---রেল, মেঘ কি ট্রাফিকের হণ, জলের ছপছপ বা মানুষের স্বর সবই প্রতিধননির মত মনে হয়।.... ব্লিটর মধে। দিয়ে খোঁয়া উড়ে যাক্তে হাল্কা জামরঙের।

বিজন বসে বসে আরো ভাবতে লাগল।
বিজন সবচেরে বেশি ভালবাসত তার আশতরিকতাকে, সন্দেহও করত তাকেই সবচেরে
বেশি, আজ আর কোনো সন্দেহ নেই, আভরাম নেই, রাগ নেই, আজ সে থ্র আলতরিকভাবে ভাববার চেটা করতে লাগল। বাকি
ভাবনাগললো থব এলোমেলোভাবে এলেও,
দটো বাপোর তার মনে এল প্রথমেই। এক
হল এই বে, তার থ্র গ্রেত্র আস্থহ্লেছ
এটা আর অস্বীকার করবার কোনো উপার
নেই। বিশ্বাস করতে পারছে না অগ্চ তানস্বীকার্য, এমীন একটা অনুভব ব্লিউশেবের

অপরাকে আলোর মত সমুস্জ্রল হয়ে উঠতে পাগল তার ব্ক জ্বড়ে। বিজনের মনে হল. ঠিক এরকম আলোতেই মেয়ে দেখাতে শ্রম দেখালে, কালে। মেয়েকেও সোনালি-ফর্শী দেখায়। দ্বিতীয় কথা তার মনে হল যে, সে কোনো মহিলার সংস্থা প্রেম করে না। এরপর াবজন অন্য কিছ, ভাবল না কয়েক মহেতে। এই সময় হাওয়া উঠে এমন ফাঁপিয়ে দিয়ে গেল ব্লিটটা যে, কিছুক্ষণ বারিপতনের আওয়াজও আর শোনা গেল না। বিজন তখন ভাবল, আচ্ছা, ভাল হাদ বাসত কেউ, তাহলে আমার এই অবস্থাটা কি অনারকম হত? এই যে আজ সকা**ল থেকে অন্**ভবের একটা উচ্জানলতর হয়ে আলো তার বুক জাড়ে উঠছে কমশ, যাব ফ**লে তার বক্ষদেশ** দেখা যাচ্ছে পশ্ট আলোর সামনে মেলে খুরা এক্স-রে জেলটের মত সমস্ত অন্ধ্বার বৃক্ এখন ঝল্ঝাল্ করছে—তাহলে, যদি নারীব ভালবাসা থাকত এ-রকম অরুম্থা তার ইউ কি? বিজন ব্ঝতে পারল না, অপ্রেমে আছে বলেই বুক জুড়ে আজ এমন অলমলানি সেখানে তাই এত কোলাহল। বিজনের হঠাং মনে পড়ে গোলা গ্রুতর অসংখ হবার পর তার বংধ, হিরশময় যখন ছ'মাস অন,পিচিথত রইল আড়ায়, কই, এত সেনসিটিভ হওয়া সত্ত্তে হিরশ্ময় ঐ ছমাস কাল যে দৃঃখ ভৌগ করেছে একা, সেই দৃঃখ তার তো একদিনও হয়নি। হাাঁ, মাঝে মাঝে মান পড়েছে বটে য়ে, হিরশ্বয় আনাদের মধো নেই ফে বা^লড়তে বসে আছে। কিন্তু তাকে যে ইন্ভেকশন নিতে হচ্ছে—যন্ত্রণাকর জানলা দিয়ে বাইরে চেক গাকতে হচ্ছে—যন্ত্রণাকর, তার যে মনে পড়ছে, সে যে হিংসে করছে. ওই যে লোকটা রাস্তা দিয়ে হে'টে ঘাচ্ছে বাজার করতে, চাকরি কবতে মোট বইণ্ডে ওবই মত কয়েকটি লোক, তাদের শুধু হাটাট্কু জানলার ধারে বসে স্প নীরবে হিংসে করছে—এইসব দঃখের কথা তার তো মনে হর্নান। তারপর সেরে উঠে হিরশার যখন তাদের মধ্যে ফিরে এল তা আরো দ্ঃথের নয় কি? ভারা যথন একটার থেকে আর একটা সিগারেট ধারিয়ে নিত, হিরশ্মর কি অনামনস্ক হয়ে ষেড না? বা. সবাই মিলে বখন মদ খেতে হে'টে যেত এস-প্লানেড অঞ্চি সাই বাড়িতে কাজ আছে. হিব্ৰুময় তো এই কথা বঙ্গেই চলে যেতে। এটাই <u>তো অধিকত্ব দঃখের যে একজন যুবা</u> যদেচ্ছ থচা করতে পারছে তার শরীর, ত্যাক সাবধানে থাকতে হচ্ছে, সন্ধে হলে জুকে ভিন্ন ও লাগ বংশক সানিন কোত হয়। "সমস্ত দাৰ্থ আমাকেও এটা ভোগ করতে হবে' বিশ্বন

এতদিনে ব্ৰতে পারল; ব্ৰুডে ना, কিন্তু কালা পাচ্ছে ব্ৰুডে-পারাই . এই সমস্ত না, কারণ নিজেদের মনে বিজ্ঞানের മമ এরা বাচে। कद्र हत्न **म्दः थरवाधरकरै । এ**রা যে বিজনের কোনো পরোয়া করে না। সমন্ত্র নিয়ে একটা স্বপন দেখেছিল বলে, বিজন জানে, গত ক' মাস ধরেই তার প্রবীতে, সমর্দ্রের ধারে, কি**ছ**্দিন কাটিয়ে আসার ইচ্ছে হচ্ছিল। কিন্তু এখন ৰ্যাদ বিজন ধার, ছোটাছন্টি করতে বায় সম্দ্রের ধার অবধি, যে জন্দতে জামা-কাপড় সে পরে আছে—সবই রাস্তায় ফেলে দিডে সম্দের সমান উল্পা পারবে, কিম্ত বীজানুগর্মির হাত থেকে হয়ে দাঁড়ালেও তব্সে কি পরিত্রাণ পাবে! কিছতেওঁ রেহাই সে পাবে না। অসুখ কোবার কামডে পডে রয়েছে. (3 জানে। কিন্তু সে কি পারে কিডনিটাকে খ্ৰেল সমাদ্রের মধ্যে ছ'বড়ে ফেলে দিতে? সে বাদ বলে, আমি কিছুই চাই না, মানুবের পরি-বতে একটা কেন্টোর জীবন গ্রহণ করতেও আমি খুব রাজি আাছ্ কারণ উঠি, অধ'জনীবত বে"চে যদিই আমি চাইনা. থাকতে বেশুচ মের,দক্তহীন হলেও কে'চার .b(3 সম্পূর্ণ জীবন আমার কাম।—এমন কি সে যদি লিখে দেয় যে ভবিষতে নারী-সম্পর্কেও সমসত দাবীসে ছেড়ে দিক্টে তা হলেও কি সেই অনিব'চনীয় হ, প্ডির মালিক ভার শবীর থেকে সব কটি বীজান, তুলে নিতে পারে. ना !

বিজনের থেরাল হল, বৃণ্টি থেমে গেছে, পোছে, পোছে, প্রজান করছে হাওরায় বিষয়ভাবে ঘাও হিলারে লক্ষাহান দৃশ্তি মেলে সে ভাদেখল। সহসা তার কবির দৃশ্তি লাইন মনে পড়ল।

The candle on the table burned. The candle burned.

কবিতাটা সে একবারও অনুবাদ করার চেণ্টা করেছিল কি? সে লাইন দুটো বিড়বিড় করতে লাগল।

কালের ছেলেটা তার বেদির গলা জড়িরে ধরে আছে। চারের কাপ নামিরে রেখে, তার হাত গলা থেকে টেনে ছাড়াতে ছাড়াতে, বোদি, বাকে বলা হয় অর্থপূর্ণ, দেইরকম হেসে জিজ্ঞেস করল, 'কীগো, কবিতা?' বিজন বলল, 'আদা দিরেছ?'



হেলেটা মেঝের হামা দিছিল, একটা আঙ্কল একটা জ্যান্ড পি'পড়ে টিপে তুলে ধ্রেছে ম্থের কাছে, এই ম্থে দিল বলে, তাকে বাধা দেবে কি—একদিন বৌদির ছেলেটাকে লে কোলে নেবার অধিকার থেকে বলিও হবে, এটা আগে থেকে ব্রুতে পেরে কেন সে তাকে বংগণ্ট আদর করে নের নি, এই আপ-সোসে বিজনের চোথে জল এসে গেল, সে ম্থ ঘ্রিয়ে নিল।বৌদি আরো কাছে এগিরে এসে বলল, 'কাগো.....' 'আঃ' বলার মত করে বিজন বলল, 'না'; বলে হাসক। নিজের হাসিটা সে দেখতে পেল।

সমস্ত কোমর জন্তে বিজন এবার একটা বাথা অন্ভেব করল। সেই কোন্ ভোরে বাথ-ব্নে প্রভাব করার পর, সে-কথা এই প্রথম আবার তা মনে পড়ল।

় বাণ্ডি থামলে বিজন রাশ্ডার বেরন্ত্র।
রোদ উঠেছে, শরীরের কোথাও কোনো
অস্থাবধে নেই। না-কোনো মন্ত্রণা, না-মাধাধরা, না-কিছ্ব। সকালে অলপ কাশি ছিল,
এখন তাও নেই। জ্বের নেই। শ্ধ্ চোধের
পাতা ভারি হয়ে আসছে ভার বার।

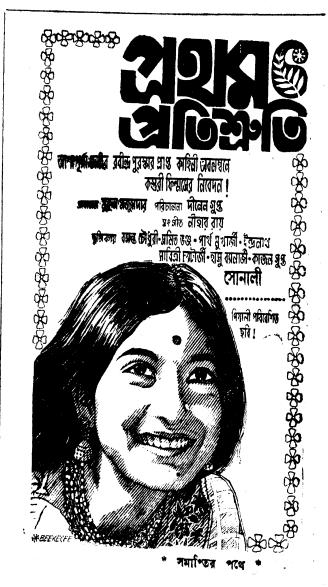
কৰে পেকে মনে নেই, বহুদিন বোধহর সেই কৈশোর থেকে; ভোরবেশা ঘ্রম থেকে উঠেই আয়নায় মূখ **দেখা বিজনের অভ্যাস।** বড়দির কাছে শ্রনেছে, সাত-আট মাস বরুসে যখন তাকে প্রথম **আয়না** দেখানো হয়, সে বাক মিনিট দুই গম্ভীর হয়ে তারপর ফিক ক:ব হেসে ভেলেবেলা থেকেই বিজন স্বণ্ন অতাশ্ত বৌশ, বড় বড় ঘ**্মে ও স্ব**ণম দেখে দেখে রাণ্ড নিজের ফোলা ম**ুখটা**, রাত পোলালে, আয়নায় দেখতে বরাবরই তার ভাল লাগত। বাবার কথা মনে বিজ্ঞান, । বাবা শেষ যে কদিন প্রায়ই বলতেন, 'কীরে, 'আজন সকার হুল কণী দেখছিস ? এই **1.3** ^{ভাতর}, তখন মুখ-হাত ধো, বাইরে ধা। ্যা ওঠেনি, প্থিবীটাকে দেখার এই তো

চেলেবেলা থেকেই বিজনের স্ফার ছেলে-নৈর সংখ্য বংধকে হয়েছে। তার পা**শ্ববিত**ী বংধাতিকে বড়াদের কেউ-মা-কেউ প্রায়ই ব**লে** গেছে, 'বাঃ, ছেলেটি বেশ স্কের তো!' অথচ কিউ কোনোদিন বলল না তাকে কেমন দেখতে, ^ম্বে: চুপচাপ থেকে **গেল। সস্তা আহনা**-্লির কথা বাদ দাও. সেগ্লোর পারা খারাপ, কাচ ভাল না। কিম্তু এ কিষয়ে, দামি এবং বিলিভি ও ভাল আয়নাগ,লিও তাকে িক্ছ; জানাতে পারল কই ? কলেজে তার সংগ্র বংশাত্র হল বর্ণেব: বর্ণ প্রথম পিনেই ওরাই এম সি -এ-র কেবিনে বসে ভার বিশ্বসমত কেমন মাদ্ (হলে আমার রূপের ক্রাজেন না. ছেলেবেল থেকেই প্রশংসা শতুনে আস্চছ । ঠোঁটের কোণ পিয়ে বর্ণের ধোঁয়া ছাড়া বেশ মনে পড়ে বিজন হঠাৎ ভাবল, আচছা র পসীরা আফন্তেক কাত **ভালবাসে** ? বিজনও ^{আয়না} ভালবাসত।

আন্ধ্র সকাল থেকে বিজ্ঞ আরনা দেখোন। দেখোন, কিল্ডু বর্ণনা-করা কোনো মুখের মত দে স্পদ্ধ দেখতে পাছে, তার মুখ্যা ফোলাফোলা, গাল দুটো চিনচিন করছে, চোখের নিচে দুভিনটে বেলি অচিড়, কোলে কালি। বারবার চোখদটো টেনে ভূলেছে সে মু দিরে। বিজনের চোখ বরাবর একটা বেলি কালো, আপনপ্রির, ভাসাভাসা। চোখদ্টি আন্ধ্র বলে দিরেছে বলে সে খ্বই মনোকণ্ট পোল। সে ৮ নন্বর বাস ধরল।

'কী বিজন, কী খবর ' ব্কটা ধড়াস করে উঠল বিজনের। বেচুর সংখ্য আজকাল বিজনের প্রারই দেখা হর: কিন্চু সেই কবে স্কুলে সেকশন বদল হবার জন্যে কথা বন্ধ হরে গিরেছিল, পরে দ্'এক বছর দূর থেকে বে-কোনো একজনের জ্—নাচানো অর্থাৎ খবর ভাল, এবং আর-একজনের বাড় হেলিয়ে

সন্মতিস্ভল হাসি, এই ছিল। রমণ এটা পীড়া হয়ে উঠলে, হঠাৎ দেখা হলে কাউকে আর দেখতে পেত না। তারপর প্রায় ন বছর পরে, আজ, এই ভোরবেলা, বিজন নয়-বিজ্য--'কী বিজ্যু', 'কী খবর?' 'অনেকদিন পরে দেখা হল।' প্রীতিকর হাসি স্মিত চক্ষে বেচু তাকাল। বিজন মুখের কিছু ঢাকবার চেন্টা করল না। মুখ শকেনো হয়ে। গেছে, সন্দেহ নেই: শাদাটে দেখাছে, দেখাক। হার্ট, তা সতি।', সে বলল। গালের বেখানটা চি**ন**-চিন করছে, সেখানটা কি কাঁপছে? বিজম সৈজনো কমপেলকস বোধ করল। হয়ত খ্র ফোলাফোলা দেখাচ্ছে, অভিনেতা রক্ত মাখচে যেমন হয়, হসত তেমনি লাল.....'বেশ লাল দেখাছে তোকে। মোটা হয়েছিস।' মোটা? বিজন অস্বীকার করে হাসল না, স্বী<mark>কার</mark> করেও না। এমনি হাসল। বাসের হ্যা**েডল** थरत राष्ट्र एक्टलराजात शक्य मृत् क्तल। अता



লখন মণিং স্কুলে বেড, বিজ্ঞা বাড়ি থেকে ডেকে নিত বেচুকে, বিজনের কি মনে পড়ে? मान भएड़ विकातना मान भएड़ ह्याडेटवनाय একদিন এই বেচুকে দেখে এমন কি মা পর্যন্ত বিজনের সামনেই বর্দোছল, 'আহা, কী স্কুদর দেখতে রে তোর কন্ধ্রণ কিন্তু কেন বেচু এতদিন পরে তার সপে কথা বলছে, বলল ৰ্মাদ এসৰ বলছে কেন, বিজা, বলে ডাকছে ক্রেন—তবে কি তাহলে সকালের রক্ত প্রস্রাবের সংগ্যে এর সম্পর্ক আছে কিছু? বেচুকে তার এত ভাল লাগছেই বা কেন, তার মধ্যে ভাল-ৰাসা হচ্ছে কেন, এমন ব্যাকুল! হঠাৎ একটা कथा মনে হল বিজনের। আছের, মণিং-স্কুল ভো গ্রীক্মকালে হয়। অথচ এতক্ষণ মনে হচ্ছিল স্কুল যাবার সমস্ত পথটা শীতের কুরাশার ভর্তি। বস্তুত, শীতের ভোর ও স্কুরাশাকে সে কিছুতেই আলাদা করতে পারছে না তার মণিং স্কুলের পথ থেকে। আচ্ছা ভাল কথা, বিজার কি মনে পড়ে যে মণিং-শ্কুলের পথে একটা দেবদার, গাছ ছিল. মনে পড়ে... মনে পড়ে... মনে পড়ে কি বিজ্ঞন, তোর ?'

প্রাইভারের পিছন সিট থেকে লম্বা ও বাঁকা নাকওরাকা ওই রোগা লোকটা নিশ্চমই অনেকক্ষণ ধরে তার দিকে চেরে আছে, এইমাত তাকে দেখে ও চমকে চোথ ফিরিয়ে নিয়ে বিজন ভাবল। একট্ ভাবতেই বৃখতে পারল, লোকটা দেখছিল।

লোকটা নামল করলাখাট শুর্টীটে,
বিজনও নেমে পড়ল। নেমেই বলল,
দেশলাই আছে?' লোকটার কাছে, আশ্চর্য,
ছিলও। হাতের ফাকে প্রেরা কাঠিটা জরলে
বাবার পর, নিভে যাবার আগে। বিজন সিগারেটটা ধরাল ও ততক্ষণ ধরে প্রন্তটো নামিয়ে রেখে লোকটাকে দেখল। বিজনের গ্রন্সটা চিনচিন করতে লাগণ। গালের রুদ্ধ ভূলতে ভূলে গিরে অনামনশ্ব অভিনেতা খিম্মটার থেকে অনেক দ্বর চলে আসার পর বেমন বিরত বোধ করে, বিজন সেইরকম ক্মশেলকস বোধ করল।

শোকটা চৌরস্তার মোড় অন্দি প্রমশ ছোট হতে হতে মিলিয়ে গোল। একবারও ফিরে তাকাল না। লোকটা খোড়া নাকি?

বিজন ঠিক করেছিল, আজ রাত পর্যাপ্ত সারাদিনটা সে রেণুর বাড়িতেই কাটাবে। সেন্দ্রাল আটিনিউ থেকে অবিনাশ কবিরাজ লোনে টোকার মুখে তার যা-একট্ শক্জা করবে, এপাশ ওপাশ দেখে নেবে একবার। কিন্তু গাঁলর ভিতর থানিকটা অগ্রসর হতে হতে ক্রমণ এবং ৪ নং বাড়ির চৌকাঠে পা দেবার আগে সে নিশ্চরই সম্পূর্ণ নিঃসম্পেকাচ বােধ করবে। যেন, এই তৃতীয়-বার সে এ বাড়িতে এল না, বহুদিন ধরে আসছে। প্রকৃতপক্ষে, একডলার কড়া নাড়াব আগে সে মনে করে নেবে ভেবেছিল বে, যেন নার্পিসমা বা মুকুমারের বাড়িতে চুকছে।

বিজ্ঞন ভেবেছিল, রেণ্কে না-জানিরে একেবারে বাজার করে নিয়ে ঢ্কবে। রেণ্র সামনে থলেটা উপড়ে করে দিলে সে অবাক হয়ে বলবে, 'ওমা একী! বললেন না কেন, কত-কী আনতে বলতাম।' কত-কী কথাটার মানে ভাষলে এইভাবে করে নেবে,
বিজন ভেবেছিল যে, রেণ্ যেন, জানিরে
লেলে, আল্ল্-পটল ফি মাংস-পোয়াজের
সংগ্র রাজার থেকে, তাকে করেক গাছা
কাচের চুড়ি কি একটা ভাল রুমাল বা দামি
একটা সাবান আনতে বলত। রেণ্কে সে
ধ্রেবিছিল রাধতে বলবে, দুপুরে যে ঘণ্টাখানেক রেণ্র সংগ্র শারে থাকবে তার
একটি মুহুত্তি অপবাবহার করবে না,
ভারপর নিজে অলপ ঘ্রামরে বা ভ্রমণ্ড
রেণ্কে ঘরে রেখে, তিনটে চারটে নাগাদ
সে একবার অফিনে যাবে ঠিক করেছিল।

বিজন বারোটার আগেই অফি**সে গেল।** এর অগে তার কখনো লেট হয় নি, আজা পি-এ'র ঘরে গিয়ে সই করতে হল। হরি-কাশ্তবাব, মোটাগোছের নন, বেশ রোগাই, কি**স্তু** বিশেষ নড়া১ড়া করেন না। ছরিকাস্ত-বাৰ**্চুলে কলপ** মাথেন, মাথাটা **পাকা** তালের মত, লম্বা লম্বা মাথা-ভাঙা **কানে**র ভেতর থেকে *ব*ুলে রয়েছে **করেকগা**ছি চুল, যেন দুটো জামবুল গোঁ**জা দু'কানে**— তাঁর মুখ লাবণাময় চোথ বে**লুভ দি**রে চিরে দেওয়া—আসলে, কৃতী ও তৃশ্ত মা**ন্যগ**্রিলর মুখে যে একটা রগড় **আছে**, হরিকাশ্তবাবুকে না দেখলে তা বোঝা যায় না**। চশ**মাটা কপালের ওপর জুলে দিয়ে। তিনি চেয়ারে হেলান দিয়ে। পড়েছিলেন। বিজ্ঞন চলে আসংছ, এখন সময় ফক-ফক করে বললেন, 'কী মশায়, দেরি হল?'

'এই, এমনি।' বিজন জানাল।

'কোনো বিপদ?' আবার ফক-ফক আওয়াজ শানে বিজনের টোবলের ওপর চোথ পড়ল। পেন-হোব্ডারে কানো সাড়-সাড়ি দেবার পালক, তার পাশে একটা মোটা ফাইল রয়েছে টোবিলে; বেশ ভারি হবে, বিজনের মনে হল।

এসটার্থনিশমেন্টের সংপ্রভাত কীএকটা ছটিছাটার বিষয়ে ও একবার একটা
শ্রিকচারের ব্যাপারে ওর পার্সোনাল-ফাইল
খ্ব তাড়াতাড়ি মূভ করিয়ে দিয়েছিল বলে,
ভার জের টেনে সে বিজনের বন্ধ। বিজন
তার পাশের সিটে বসে বলল, বোধ হয়
ভাবে ছটি নিতে হবে, হয়ত তার কোনো
গ্রুত্র অস্থ করেছে, বলে সে একটা
গ্রুত্র অস্থের নাম করপ।

'সে কি মশায়, তাহলে তো চাকরি যাবে।'

কী! বিজন ফালেফ্যাল করে ওর দিকে

চেমে রইল। এত আহত সে বহুদিন বোধ

করে নি। কী কথার কী উত্তর! সে নীববে

বলতে লাগল, আমার অসুখের নাম শুনে,
হাঁখবে ছোঁয়াচে, ভয়ক্তর অসুখ বাঁচব কি

মরব ঠিক নেই, কিন্তু এই ভুক্ত কথাটা মনে
হল আপনার! আমার বিদ ওই অসুখই

হয়ে থাকে, তাহলে চাকরি বাবে কি বাবে

কৌ বলছেন ?' বিজন জিজাসা করল। না। বলছিলাম যে—' বিরতগলার অথচ মেন সতিয় সতিয় বলছে, এমনভাবে স্প্রভাত জানাল, মানে, ছুটি নিতে হবে তো অনেকদিন, উইদআউট-পে হয়ে বারেন শেষ পর্যন্ত, ফিট সাটিফিকেট দিয়ে তবে জয়েন করতে পারবেন, তারপর ধর্ন না—

বিজন অবিকল ওর দিকে একভাবে
চেরে আছে দেখে, 'দ্রে মশার, আপনার
কিস্মু হর নি, যন্তস্ব—হাঃ—' দ্রেমশারণটা বেশ জোরের সপ্ণো এবং ভালবেসে
কিস্মু হয় নি' উচ্চারণ করতে পেরে,
পকেটে র্মাল থাজতে গিয়ে একটা সক্জ রঙের পলান্টিকের চির্মান বের করে
ফেলে, স্প্রভাত চুল আঁচড়াতে শ্রে করে
দিল।

সাতের ডিভিশনে গিয়ে বিজন দেখল খরে কেউ নেই, তিনের ডিভিশনে চৌধ্রী, প্রমোদবাব, নিমাই ও রাস্বিহারী, কেন কে জানে, আজ সাহিত্য নিয়ে আলোচনা করছে। ডিভিশনাল ক্লাক প্রফাল্লবাব্যক ফিশফিস করে একজন বলছে, 'একটা উপায় **কর**ন দাদা।' রাসবিহারী বলেছে, এবং বাকি সবাই সব বিষয়ে ওর সংগে একমত ুহচ্ছে। অবশ্য, মধ্মেদনের সনেট-সম্পর্কে ঈবং অ**মিল রয়েছে**। কটিস এবং ফার্নী রাউনের প্রেম সম্পরে রাস্বিহারী দ্'কথা বলগ, বুশ্বদেবের অমাক কবিতা আসলে বোদ-লেয়ারের অনুবাদ, বলল, অপ্রত্যাশিতভাবে এলিয়ট-থেকে দ্র লাইন কোট করগ। ভুল, বিজ্ঞানের না-পড়া থাকলেও সে ব্রুতে পাবল।

ইঠাৎ বাইরে ইলেকডিক এঞ্জিনের তাঁর সিটি বেজে উঠল। রাস্থিয়ারী বিজ্ঞের দিকে ফিরে বলগ (এই মে! আছ্যা, এই সিটি শ্নলৈ আমার কা মনে হয় জ্ঞানে।

'আপনার ?'

'কী-রকম বলুনে তো এই আওয়াজ। দশ সেকেণ্ডের মধ্যে বলতে হবে কিন্তু। ইশ, বলতে পারছেন না।' রাস্তিং াী আপ-দোস করল, 'হোয়াট এ পিশি

'কী?' বিজন জিজ্ঞাসা করন্দ্র গ্রাহ শ্বর না পালেট।

'ঠিক শাথের মত নয় কি?' রাসবিহারী ছুপ্ত হাসল, 'শ্যেনলে মনে হয়, যুক্ত যেন তার জয়ধ্যনি করতে করতে ছুটে যাচ্ছে।'

'চলুন যাই।' একটা প্রশন্বোধক হাসি হাসল রাসবিহারা, যেন বলছে, কেমন দিলাম। বিজন ও রাসবিহারী চা থেওে গেল।

রাসবিহারী সবসময়ই তার শার্রীরিধ
অসুস্থাতার কথা বলত বিজন ভাবত নিউরোসিস শেরের দিকে সংখ্যাবেলার জরে ও
ভারবেলার ব্রুক্ষভূজানর কথা বলতে
গিয়ে এমন যশুণা ফ্টিয়ে ভূলত মুখে যে,
বিজন ধরে নিয়েছিল, ও সভিটে অসুস্থা
রাসবিহারী যখন এক মাস ছুটি নিল,
বিজন ক্রমাগত ওর জন্যে সহান্ভূতি বোধ
করেছিল। আজ রাসবিহারী রেস্তরার
বসেই স্কুম্থ আছি, নেভার ফেল্ট বেটার,
ব্রুক্তনা বিভানবার্ট, ভোরে দুধ্য থান

ালোরাটাক, আর সম্খোবেলা দর্টো ভিন্ম, তা-इर्लरे प्लथरवन—'बंदन जातभव प्राद्धालय শক্তন পাছা ইত্যাদি নিয়ে নপ্রংসকের খিলিত স্ভরাং অশ্লীলতা করতে করতে, ভারপর দুবার, জানেন আন্নি একটা সাংঘাতিক কাব্যনাটা লিখব', জানিয়ে উত্তর না পেয়ে, "আমি কি কাব্যনাটা লিখতে পারব না বলে মনে করেন—' জিজ্ঞাসা করার, আপনি কোন্দিন কিছ্ন লেখেন নি ও ভবিষ্যতেও কিছ্ম লিখতে পারবেন না' বিজনের এই অন্যমনস্ক ও উদাসীন উদ্ভিতে ধীরে ধীরে কেপে গিয়ে তাকে অনেকক্ষণ ধরে বংগভ অপমান করল, অপমান করার সমস্ত সমরটা ধরে বিজন তার মুখের দিকে তাকিয়ে রইলা নির্বাক, শুধু এই কথা ভাবতে ভাবতে যে, আমি কী ক্লীব, আমার কি আত্মসন্মান নেই এবং আমি কেন রেপে উঠছি না? অনেক আশা ছিল যে এইবার, ভারপরেই সে রেগে উঠবে। **একবার র্যা**দ দৈবক্রমেও রেগে যায়, ভাহলে যদি কট্নির কথা ওঠে, বিজন জানে, ভাকে চেন্টা করতে হবে না. জিডে নিপ্ৰত্য শব্দ তার **এমনিই** আসবে, ভর দুর্বালতম জারগাতে আলাপিনের প্রোটা ফ্রটিয়ে, চুপচাপ চেয়ারে 🛚 হেসান দিয়ে কুকড়ে বাদশার মত ভারপর সে শুধ্ ভর কাংরানি দেখাবে।

আশ্চর্য হয়ে হোল বিজ্ঞা, তার বাগ হল না। রাসবিহারী অবশা পরে নিজেট ক্ষমা চাইল, ব্যুঝ্জে সেস্ব দোষ ওর, ওর অস্থ্যতার। ব্যুক্তে পেরেছে, বলল যে, কিজন সাতা সতি।ই তা বলতে চার নি।

রাষবিহারী উঠে পেল বিজন রা**স্তার** বিকে চেয়ে বইল। তার মূখ লাল হকে উঠেছে, বাইরে রাস্তার অফিস**-ফেবং জ**ল-তার ভিড়, এপারে শিবপ্রের কাজে একটা ক্ষবাটে মুখের মত সূর্য ঝুলে রয়েছে।

বিজন কেত্রীয় বসে রইল। পাখাটার লিকে চেরে চেরে হঠাং মনে হল তার, আরে পাশার মুখ্টো যে এমন কার্কার্য-করা, এতানন এসেছে, কই তার চোখে পড়েনি তা। কেনাসেদেখোন এতানন! বিজন বস্ত কণ্টাবোধ করল। কাল থেকে কর্তদিন আবার

ফোন: ৫৫-৩২৬২
বৃহ ও শান ৬।
রবি ও ছাটির দিন ৩, ৬৪

(ব্যাস

কাহিনী নাটক ও নিদেশনা বিষদ ছিল্ল রাদ্যবিহারী সরকার তেঃ—কর্মী দেন, সবিভাতত দক্ত, পভা বন্দ্যোপাবার, কবিকা মজনোলার, ভর্যকুমার, গোবিকা গাংগালী, নিমা ভোমিক, করালী, এবং বেশ্বর ভট্টোপাবার ও ক্রম্পুনার। चानत्व मा, इन्नड कार्मानमहे चानत्व मा আর, কেন সে আগে বহুদিন ধরে পাথাটা प्तरथ त्रारथ नि! एक्टलर्यका त्थरक जाउनाहे रनरभरक भाषा, किकार जात कारण भरक নি, ব্যাধির কথা তার মনে পড়েনি। নইলে কীসের ভূলে, কার ওপর অভিমানে, কাপের পর কাপ চা খেরে, সারারাত ধরে মদ খেরে একটা সিগারেট থেকে আরেকটা সিগারেট धीतात नित्र, न्वाभ्धा थत्र कत्त्र कत्त्र-शौ, আসংখটাতোসে নিজেই ডেকে এনেছে। অথচ তার মধ্যেও বর্গাধ রয়েছে অনিবার্ব, এই বোধ সে কী করে বিস্মৃত হরেছিল? ভাহলে সে কাউকে ভাগবাসে না, নিজেকেও না, পাচিশ বছর বয়সের ভার এই স্বল্ডণা কত মিখ্যা হয়ে যেত! বিজ্ঞানর মনে হল রাস্তা দিয়ে এই যে অফিস-ফেরৎ কেরানীরা যাছে হড়মুড় করে, বারা ভূল জাবিল কাটাচ্ছে, যাদের জীবনে আর কিছুই হ্বার নেই, যা কড়কগালি মাস পরলা ও স্থীর মেনস্রেশনের মধ্যে শত খত একটা ব্যাপার-এই যে জাবন, এও কত গরে,ছ-প্ৰথিদি তাম্ভূন সম্পকে চেডনার ম্বারা শ্^{ৰথা}লত হয়। এইসৰ লোক, এরা প্রভাকে বীকের মত এক-একটা মৃত্যু নিরে **ব্**রে বেড়াচ্ছে, এরা প্রত্যেকটি গোক আলাদা, কারণ এদের প্রভেটকর মধোই রয়েছে তার নিজ্পৰ এবং আলাদা আলাদা মত্যু, বিশ্বদের ইচ্ছে হল সকলকে ডেকে ডেকে সে এই কথা বলে: হ্যা নড়ন কথা বৈকি, অনে-কেই শ্নেলে অবাক হয়ে যাবে। কেউ কেউ আপত্তি তুলে বন্ধতে পারে, তুমি র**বপ্রস্লা**ব করেছ: ভূমি গ্রেভের অসংস্থ, ভূমি অস্বা-ভাষিক, ভাই তুমি একথা বলছ। ভাই কী 🚶 'না', বিজ্ঞানের ব্যাথিত দুই চোথে তাকিকে বিশ্বদারিত শ্বন্ধে সে বলে উঠল, 'তা নয়।' সে অতি সাধারণ মনের লোক ছিল বলেই জ্ঞবিন সম্পক্তে সৰচেয়ে যা স্বাভাবিক, ভা জানার জনা এই অস্বাভাবিকতা অপেক্ষা করতে হয়েছিল ৷ যে-কোনো উপারে এ তার আগেই জান উচিত ছি**ল। কিন্তু** এখন, ধখন সে: জানে, তার অস্কর্থতার জনাই জানে, সে সকলকে তা জানাতে চায়: এদের সকলেরই তে। অস্ম্পতার আগেকার সেই অস্বাভাবিক অংশ্যা, যখন সে তার প্রতিটি প্রদেবর একটিরও উত্তর পার নি! আজ একটির পেয়েছে। আজ সকালে বেচুকে ডেকে সে বলতে পারত, গরচু, ভোর 🏻 🔯 উচিত জানিস? তোর উচিত সবসময় চোধ নামিরে, নিচুগলার আর হে'টম্বে কথা বলা, ষেমন, যথন ভূই মৃতদেহের 211(2) দাঁড়িয়ে থাকিস। কী ডিগনিটি ⊚ક অস্ম্পতার, জীবনের সপো তারই W N ক্ষমাহীন সম্পর্ক, মৃত্যুর কথা মনে রেখে, বেচু, তোর ঘ্মবোরে প্রতিটি কাজ উচিত।'

অধ্য অনাদিকে বে'চে থেকে পড়স্ত আলোর হাটাহাটি করছে এইসব নারী ও প্রেহ—এই পুরু-বে'চে-থাজাট্কুই কড উপভোগ্যভার কিন্তু সে বাই যোক, বিজনের চোথে তব্ ভুজ এনে গেল এই ডেবে লে, সে কেল গু-এক নছর বন্ধে এই কেল্ডরাঁচ
এই কার্কার্করা পাখাটার নিচে বসে
রইল না, অল্ডত বনে থেকে, চারের পেরালার
চামচ নাড়তে নাড়তে, বারবার প্রে-বেঁচেথাকা লোকগালোর সহসা-বিকেলবেলার এই
নীরব হটিছাটি লক্ষ্য করে বেতে পারজ
না! চশমাটা থলে ফেলে বিকান বারবার
তার কচি মান্ততে লাগল।

রাশতার বৈরিরে বিজন একটা ক্যাপশ্রুটান কিনল। আদ সকাল থেকে সে সিগারেট খার নি। কিনেই ভাশল, এছে, দুটো
কিনলেই হত, মিছিমিছি এক নর-প্রসা
গেল। কিন্তু সিগারেটটা দড়িতে ঠেকাতেই
এ কী হত, বিজনের, রেণ্রে নাম দেহটার
জনো সে আপাদমানতক কামনা বোধ করল।

একতলার সির্গিড়া নিচে শেকালির মা শংক্রেছিল। তিনতলার উঠে বার সংশোদেখা হল, কী নাম মনে পড়ার আহেই লোকটা, কী মোশা', কোডা চিলেন এয়ান্দিন?' বজা ওঠার, গলার স্বর শংনে বিজনের মনে পড়ল, ভদ্রলোকের নাম বর্মন। বর্মন বললে, শেষ ভূলে নাকি?' বিজন বলল, না শৃষ্ব চিনেই এলাম।

এই ভরা সন্ধোবেলার বর্ষনা বাঁ-চোধ চিপে বজালে, বেশ করেছেন। ভারপর? বেশ্বে কাচে?'

'লোক আছে?'

'লোক ? দেকুন গিরে !' রেলিচঙ হাভ রেম বর্মন নিচে নামতে লাগল, 'কাল থেকে খিল মেরে পড়ে আচে। মাচের মাড মাজ খাচেচ মোণা', দুদিনে বোডলদশেক ওপরে গিরেচে।' বর্মন তার নিরপরাধ মুখ খ্রিরে জানাল, 'শেফালির কচেই শ্রীচলার।' বলতে বর্মন নিচে নেমে গেল।

বিজন ওপরে উঠতে লাগল।

ছাপের কোপে খাতুনের করে আঁলো ভালছে। এদিকের খরটা রেণ্ডে। দরজার, কই, খিল দেওরা নেই তো। কলের নিচে চাকর গোপাল বাসন মাজছিল, বলল, আ ভেতরে আছেন।

শর্দা তুলে ভেতরে ঢকে চুল করে
দাঁড়িয়ে রইল। ধরে কোনো আলো জ্বলছিল না, একখণত দেওয়ালের মত কালো
আরনাটার ওপাশেই, বেন রাশতার আলোর
রেণ্ শুয়ে আছে উপাড়ু হরে। রেণ্ বাড়
ফিরিয়ে বিক্তনকে দেখল। ইশারা করে তাকে
পাশে বসতে বলল। পাশে বসে বিক্তন ওর
ওপর-হাতের সাপম্থো বলরটা দেখতে
লাগল। ধাবমান সালের মতে আকার্যাকা
ঠিকই, কিন্তু আক্ত কি বিক্তনের সবই অন্
রক্ম মনে হবে? বিক্তনের মনে হল, ধ্বে
উচু থেকে সে বেন একটা পাহাড়ী নদী
দেখতে।

শব্দহীন বনে রেশ্র উপড়ে হরে খারে রারছে, মাথে মাথে ভার চুল ও বাছ স্পর্ণ করল, বেন দেখাসে চুল্ম ছিল, কেন-বা স্বাচ্ডোভি করছে। ভখন, বিক্তম ভার চুল ও

51 एका गृधि कामनोदाह सब 50 स % हिना ঘাড় দপার্শ করতেই, হাউহাউ করে কে'দে উঠল রেণ্। উঠে বসে কোমর জড়িয়ে ধরল বিজনের। ওর ব্কে মুখ ঘসড়াতে লাগল, কোলে মুখ গাঁজে কাঁদতে লাগল। বিজন লম্বা ও প্রকাশ্ড আয়নাটার তাদের দ্জনের ছবি দেখতে দেখতে জিল্পাসা করল, 'কী হর্মোছল রেণ্ড?'

রেণ্ অনেককণ ধরে কদিল। তারপর যখন মুখ তুলল, এলোচুলে, কামার ফোলা, অপ্র্ আর কফে ও মদের গণেধ মাখামাথ —ওই মুখটাই তুলে ধরল। আচ্ছা, আমি কৈ চোর?' বলল, আমি কি চুরি করতে পারি?'

শারার দড়িটা দাঁতে চেপে দেশতলার শেকাশি ঘরে চুকে পড়েছিল। বিজনকে দেখে, 'ওমা', বলে ডিড়িং করে লাফিরে বাইরে গিয়ে, ফের শায়া পরেই ঘরে চুকে বলল, 'ওমা, আপনি! কার কাছে খপর পেলেন? বলুন তো একট্ ব্রিধ্যে, কা এমন হরেছে বলুন না, যে নাওয়াখাওয়া ড্যাগ করতে হবে?' বাইরে মিনিটখানেক ধরে রগড়ে মুখ থেকে কা ভুগতে চেয়েছিল দে-ই জানে, শেফালি আয়নায় ভার ছুলিধরা টকটকে মুখটা দেখতে লাগল। একবার চোখের একটা পাতা টেনে মামাল, দেখল। ভারপর মুখ ঘুরিরে আয়নায় নিজের পেছনটা দেখতে দেখতে বলল, কা মালই খেতে পারিস বাবা!'

'আপনি তো ছিলেন সেদিন, দেখেছেন তো লোকটাকে?' জিজেস করেই শেফালি সচকিত হরে উঠল, জানালা দিরে মুখ যাড়িয়ে চে'চিয়ে বলল, 'কীরে মীরা, তোর হল ভাই?'

বিজন লোকটাকে দেখেছিল বৈনি ।
তবে সংভাতিনেক আগের কথা, ভাল মনে
নেই। লোকটা আসতে গোপাল বাইরে
থেকে ভাকল, 'মা', ভর ও উৎসাহে চমকে
উঠে রেশ্ বলল, 'ওই। লোক এসেছে'
দরলার কাছে উঠে গিরে গোপালকে বলেছল, 'একট্ দাঁড়াতে বল, ছাদে চেয়ারটা পেতে দে' বিজনকে বলেছিল, 'নইলে, ফিরে বাবে। কড লোকসান খাব আপনাদের জন্যে। খামকা বসে রইলেন, কথাবাত্রী
বললেন। এখন তাড়াত্যড়ি নিন দেখি।'

উঠে দাঁড়িরে বিজন বলেছিল, না, আমি আজ যাই। আর একদিন আসব।' বিজনের অভাধিক শান্ত স্বর শ্নেই রেণ্, বলেছিল, 'কেন, নর একট্ব দাঁড়াবে,' নইলে বলান্ত না। বিজন সে-কথা শোনে নি।

দ্রজনের কেউই জামাকাপড় খোলে নি.
রেণ্ নীল আলোটা নিবিয়ে নিয়ন জনালাল,
খিল খালে সরে দীড়াল একপাশে কিন্তু
পদা তুলে বেরতে বাবে বিজন, অপরিচিত
লোকটা ওর দ্বলধি দ্হাত রেখে জড়িত
ক্রের বলে উঠল, 'আপনাকে কোথার দেখেছি বলুন তো?'

বিজ্ঞন দেখল একজন ব্যুড়া লোক। ভল্ললোককে দেখে, কেন কৈ জানে, তার রাচির কথা মনে পড়ল। সে বলল, 'আমা-দের রাচিতে আলাপ হরেছিল।'

র্বাচিতে, রাচি ছিলে, না? আরে, আস্ন মশার, যাচ্ছেন কোথার, ও রেণ, এ যে আমাদের চেনা লোক হে। কদ্দিন আসচেন তোমার কাছে—'

ভদ্রলোক একজন পদস্থ সরকারী কর্মচারী, বিজন জানতে পারলা। কিছু, পরে মদ এলা। শেফালিকে ভাকিয়ে আন্দ্রুংলে, করা মাংস এলা। শেফালির সংশাল থেকে সকসক করে শাস টেনে মিলেন সরকারী কর্মচারী, বিজনের হয়ে সম্মতিস্চুক ঘাড় হেলিয়ে বললেন, 'চলে তো আপনার', শেফালি শ্বিতীয় চুমুকে মেকে দিয়ে ঠক করে শাশটা ঐের ওপর রেথে বললা, 'ফালা বাজার সময় ঘড়িতে তাং ও করে আটটা বাজার সময় জাতে গাভার ফ্লেও হালা হারে উঠল, 'চাই বেলফ্লে উ-উ-উ-উলাং…

আ — আই! ঠিক ধরেছেন, এই লোকটাই। আপনি তো থানিক পরেই চলে পোলেন, আঁ? পরিদিন মিনসে কী বলে জানেন? ওর নাকি পাঁচ-শো টাকা চুরি গেছে। ইকি কান্ড বলুন দেখি, আঁ?' শেকালি জানতে চাইল।

বিজ্ঞানের গালটা ফের চিনিচিন করতে
লাগল। সেদিন রেণ্রে কাছ থেকে যাবার
পর বোধহর পরিদন ভারবেলা থেকে তার
কোমরে একটা বাথা হয়, একটা বেল্ট
থাকার জারগা জুড়ে বাথাটা এখনো
রয়েছে। বিজ্ঞান বার-দুই কাশল, কাশির
শক্টা মন দিয়ে শুনতে গিয়ে সে ভীখণ
আনামনক্ষ হয়ে পড়ল। কী-রকম অভ্নত
কাশি হচ্ছে ভার—কী অমান্যিক...

হঠাৎ ডুকরে কে'দে উঠে রেণ্ডর গলা জড়িয়ে ধরল, আমি কি চোর, আপনি তো ছিলেন। আমাকে চুরি করতে আপনি দেখেছেন?'

বিজন চমকে উঠল, কিব্তু ওর চোথের দিকে চাইল না কিছুবেটই। এলোচুল, সিকনি আর চোগের জলে মাথামাথি চোকোগোছের একটা মুখ, চোথে লালের ছাট, চোথের কোল দিয়ে গড়িয়ে পড়াই কাজল, গা দিয়ে দিশি মদের গণ্ধ ছাড়ছে ভুর-ভুর। ওর চোখের দিকে বিজন এখন ভাবাবে না। না বিজন অনুমানে ব্রুজন, ওর চোধে এখন প্রেটিনির চাউনি।

'কী লো মীরা. তোর হল?' জানলা দিয়ে একতলার দিকে মুখ নমিরে শেফালি লাবান চে'চিয়ে উঠল। তারপর বিজনের দিকে ফিরে কেনুকী গঢ়ে মানে আছে কথাটার এমনভাবে হেসে বলল, 'যাই। চান বসর।'

'আমাকে দ্দিন হাজতে রাখল।' বিজনের বুকে মুখ রগড়াতে রগড়াতে ফোপাতে লাগল রেণ্ খিজিত-খেউড় করল। বুক জলে গেল, তব্মদ খেতে দিল না।' বড়বাব, আমাকে লাখি মারলা কোমর দুর্গিংয় রেণ, বলল, 'এইখানে।'

रत्य भारत भारत भारत हिना । भारती হটির ওপর উঠে গিয়েছে। একটা পারের উর্ পর্যক্ত দেখা যায়। ব্রাউল্লের নিচের বোতামটা খোলা, রেণ্রে ঝোলা দতন দেখা যাচ্ছিল, শতনের বেটায় শ্বেডঅপ্রার মত জমাট দুধ। রেণার স্তন ও উরার রঙ একই রকম বিজন লক্ষ্য করে দেখল। খ্রুমণ্ড শশকের গায়ে যেন হাত রাখছে, বিজন ওর উরতে হাত রাখল। সেদিন তাকে চলে ষেতে হয়েছিল, আজ স্পে-আসলে উস্ক করবে, এই জন্যেই তোসে এসেছে। এই নিয়ে তিন দিন এল, অথচ এখনও ওর শ্রাউজের সব কটি বোতাম সে **খ্**লজে পারে নি। রাস্তার দাঁড়র আগ**্নে যথ**ন সিগারেটটা ঠেকিয়েছিল, বিজন সেই মহেতে'র মত উত্তোজত হবার চেম্টা করতে লাগল।

এদিকে গলাকাটা ছাগলের মাক্টান্ মত ছটফট করছে রেণ্। মাঝে মাঝে বলছে, 'ওরা নিক না। আমার আল্মারি, ড্রেসিং টেবিল বিক্রী করে সব টাকা নিয়ে

বিজনের গালটা গলাকাটা র**ভ লেগে** লাল হয়ে উঠছে। সে র্থাল দিয়ে মুখ মুছল।

'বলনে আপান, কে চুরি করেছে?'

বিজন নিঃশব্দে ওর রাউজের বোডামটা পরিয়ে দিল। গাল দুটো চিন-চিন করছে অসহা। জরি ছয়েছে নাকি তার।

আচন্দিতে রেণ্ডটে বসল ধড়মড়িরে, 'কে চুরি করল তা হলে? আপনি জানেন কৈ চুরি করেছে?'

প্রশন দুটো যেন আঠা-লাগানো দুটো রুজের প্যাড, পাটপট করে তার দু গালে সেটে দিল রেণ্। আগানুনের ঘর থেকে জ্ঞাধ মান্য যেমন করে প্রশন করে, ক[্]ছল। ' তেমনি ব্যাকুল হয়ে উঠে কর্ জিজ্জেস করল, 'কে ছবি করল। '

বিজন এবার রেশ্র গালে হাত রাখল। তার হাত থরথন করে কাপছে। দাঁতে-দাত চেপে বিজন বলল, না, তুমি ছরি করোন।' কিস্তু তার গলা কে'পে গেল কেন?

সেই কথন সম্পের মুখে এসেছে বিজন, এখনো পর্যাত সে এই স্বরে কথা বলোন। এই স্বর রেণুর বড় চেনা। সে টের পেল। টের পেরেই আঁচল দিয়ে মুখটা মুছে নেবার চেণ্টা করল, তথানি নড়েচড়ে শ্লা। হাসিও টেনে আনল ঠোটে। কিল্টু বিজন জা দেখতে পেল কৈ। তার চোয়াল নজকে, শক্ত হয়ে যাছে মুখটা, বেন রেণুর মুখটাই কাপছে থর-থর করে, বিজনের দু হাতের দশটা আঙ্ল রেণুর গালের ওপর চেপে বঙ্গে বেতে লাগল...

বিজনের ম্বান দুই চোখে সে রেপরে দিকে তাকায়।

এই মুখ, হাাঁ, কামায় ফোলা, চোখের কোল দিরে গলে পড়ছে রাতের নিভত্ত বাজল সিকনি আর চোখের মাখামাথি এলোচ্লের ঠিক এই মুখটাই সে আলে

शिका धतर्भंत छूलत एउन विकास विकास वा भावता यात्र वाष्ट्रकान या भावता यात्र ठात मर्पा विमुख्य मान्या विकास विता विकास वि

বসভ মালতী তেল মাখলে চুল পরিপাটি থাকে। কারণ এতে চুলের পক্ষে উপকারী দেশী উপাদানগুলি অবিকৃত্ অবস্থায় রাখা হয়েছে, তার গুণ কোন ভাবে নদ্ট করা হয়নি। জবাকুসুম তৈরীর ৯২ বছরের অভিজ্ঞতা দিয়ে সি, কে, সেন এগু কোম্পানী

> তৈরী করেছেন বসন্ত মা<mark>লতী তেল।</mark> এদিকে দামেও সুবিধে



तमह प्राली

কেশ তৈল সি, কে, সেন এও কোং প্রাঃ লিঃ ন্ধবাকুস্ম হাউস ৩৪ চিম্বর্জন এভেনিউ কলিকাতা-১২

চুলের পক্ষে উপকারী উপাদানগুলি বসন্ত মালতী তেলে অবিকৃত অবস্থায় রাখা হয়েছে ।



বসন্তমালতী তেল দামেও সুবিধে।





ALPANA,BHI

কথনো দেখেছে কি? বিজ্ঞান অনুষ্ঠিব করল,
সে দেখেছে, কিশ্ব কোথার! মনে করার
আকুল ইচ্ছার বিজন উশ্বাধ হরে উঠল,
দেখতে দেখতে দ্র থেকে দ্রুচে-দ্রুচে
এগিরে-আসা একটা চেউরের মত ছুটে এল
শ্বাতি, বিজনের সমন্ত অন্তিম্পুক নিয়ে
ফোলে উঠে, তারপর খুবই কাছে তা
ভেঙ্গে পঞ্জা। কিছুতেই মনে পড়ল না
কিশ্ব বিজন ব্যুতে পারল, বড় ভর্ককর
সেই শ্বাতি।

অথচ, বেশি দুরে নয়, ঘরের অব্ধকার থেকে ভেনে উঠছে ঠোঁট দুটি, কাছেই কপিছে। এখনো কাল, গ'দের শিলি, আলমারিতে শ্না বেতেল, কাঁচি, পাপোল. বৃষ্টি শেষের পিচের রাস্তায় ঠিকরানো গ্যাসের আলোর মত কালো আরন্মর একটা অংশ, তাতে জগ ভতি স্পাশ, তাতে ভিজে বেলফ্ল, পাপোল, তাতে গ'দের লিশি ও আলমারিতে শ্না বোভল, নীল সাপ লতা ও পদ্মা-আঁকা একটা চীনা ফ্লেম্নি, এইসব দেখা যালে। একটা পরে ঠোঁট দর্ঘিট শা্ধা ভাসবে, আরে সব ভূবে বাবে। রুমশা **লাল হয়ে উঠছে, অন্ধকার রডে**র একটা ভূলি বুলিয়ে বারবার লাল করে দিচ্চে ঠোঁট দুর্ঘট, বেন দুটো ফুলের সাপড়ি, কী ফ্ল, নিমন্জমান ব্যাকুলতার বিজন প্রাণ-পণে স্মৃতি হা**তভাৱে লাগল। খ্**বে জানা ফুল, কী নাম কেন ফুলটার, অথবা, হঠাং মনে হ**ল বিজনের, এ বেন** একটা লাল ফড়িং বলে ররেছে ঠোঁটে, দ্ আগুলে এখনি চেপে ধরলে বার ধ্লোমাখা পাথনা দুটি খন খন শিউরে উঠকে।

না: মনে মনে বিজন চিংজার করে উঠল, না আ! ভালবানে না, ভালবাসা-নেই এমদ দুটি ঠেতি সৈ চুমু খাবে কেমন করে। নুক খালি বিজন একটা দীমাল্যাস কেলল, আ:! কী গ্রম' রেগু বলল।

বিশ্বলের চোথের সামনে একে একে গানের শিশি, আরুনা, শ্না বোডদ, ফ্রলদানি, শ্লাশ, কটি, পাপোশ, শ্লাশে বেজক্রে, এইসর ভেনে উঠতে লাগল। ফ্রেলশ্রেলা বাসি, বিজন দেখল। বিষণ হরে সে
জিজ্ঞাসা করল, সেই ফ্লে, সেদিনের?'
বোধহয় ভার গলা দিরে স্বর বেরোর্যান
ভরে, দ্হাতে ওর ব্রুক্ত মৃদ্র ঠেলা দিরে
চাপা কামনা-কাভর গলার রেণ্ বলল,
একট্ সব্রুক্ত কর্ম লা, আঃ!' হাসি-হাসি
ন্থে জিজ্ঞাস করল, নীল আলোটা
জন্নালরে দিই শ

নাঁল আলোটা জনালিরে, ব্রুটা এমন টান করে চিতিরে দীড়াল সে বে, বভিজের দুরানে সেলাই ছেন্ডার আওরাজ দুরেতে পেল বিজন। সমসত চুল খালে টোন করে বীধতে লাগল রেন্দ্র, রেন্দ্র রাউন্সের প্রথম বোডামটার হাত রাখল।

এই প্রথম বিজন ওর আন্তর্কের নড়া-চড়া লক্ষ্য করল। আন্তর্কে মরা মাংস, ব্রড়ি কাকাভ্রার মন্ত বীকা, চামড়ো ঢাকা গটি-গ্রো কী লগত লেখা যাছে, রেশ্র নোকার্ক্য বিজন দেখাত পেল-না।

দা!' আততারী ছুরি হাতে সাম্পে এসে দাঁড়ালে যেমন হয়, বিজ্ঞান সেই রক্ষা, স্বন্দের সেই বন্ধম্ল ভর হগ। তার গলা নিয়ে আওয়াজ বের্ছে না, তার ব্কে পাথর...

> 'কী হল আবার!' রেণ্, জিজ্জেস করল। 'না।' বিজন বলল।

আপনি খুলে দেবেন?' নিতন্বটা অধেক খুরিয়ে যেন শরীরটাকে উপজে দিয়ে দার্গ কটাক্ষ করে রেণ্ ভিস্তোস করল, 'দেবেন নাকি? খুলে?'

সহসা বিজন ফুরেসেন্ট ল্যাম্পটা জেরলে দিল। তিন সম্ভাই আংগর না-পান্টানো উল্টে-যাওরা ফুলদানীর জলের মত ভারি আলোর ঘর ওরে গেল। বেশ্যা-পটির মান্ত্যানে উচ্ছার আলোর এই ঘর, ঘরের মান্ত্যানে প্র্যুগদীর বিছানা, দেয়াল ভাঙে আর্মনা, দেওরালে ব্লেন্ড উম্বরের ছবি সব কিছুর মান্ত্যান প্র্যান্ত্রনে বেশ্যা রেণ্কে দেখে বিজন এবার চিনতে পারল।

না ' হাতের মুসোঁ শক্ত করে রেখে বিজ্ঞান বলল 'আমি যাব।'

সে কী । রেণ্ন বলগ, সপেতের হাসি

'এই নাও টাকা।' বিজ্ঞন ওর দীর্ঘ', কংকালসার হাতটা রেণ্র দিকে বাড়িয়ে দিল। মুঠি খ্লে ধরণ।

আর এক মুখ্যুত দেরি হলে কড়া
নড়ে উঠড, দরজাটা দুখ্যুট করে খুলে
ফেলতেই অকস্মাৎ সর্বাপ্ত বিদ্যুতে ঝলসে
লোল বিজনের, সে আর চৌকাঠের বাইরে
পা বাড়াতে পারল না, দু হাতে পালা
দুটো দেওয়ালের সপে ঠেলে ধরে কাঠ
হলে দাঁড়িয়ে রইলা।

কেন. অপ্রত্যাশিত কিছু নর তব্।
বাসের সেই থেছিা লোকটা। গোড়ালির
কাছে পু পা মুড়ে দেরালে হেলান দিহে
সে দর্গীভরে, অুঅবিধ শামানো ফেলেটর
টুপি, লম্বাটে মুখের প্রতিনিটা ব্কের
কাছাকাছি, এখন তার গারে একটা তারি
ওক্ষাটারপ্রকা। সপসপে ওরাটারপ্রকাটা
দিকে চেয়ে চেয়ে বিক্রন ক্রমণ বৃশ্টির শব্দ পেল, তুমুল ঝড়-বৃশ্টি হচ্ছে বাইরে, সোঁ-সোঁ করে হাওরা চালাছে বেশ বিক্রনের
বাঁ-গালে বৃশ্টির উড়কত একটা ঝাপটা এসে
লাগল।

লোকটা চুরোট খাছে। চুরোটের আগতে মৃত লোকের স্টাছের মত ওর মুখের বাঁ-দিকটা বারবার প্রতিভাত হচ্চে, বিজন ওর জীবতত চোখের দিকে চাইল। লোকটা চোখ ফিরিয়ে নিজ না, দেখার সুযোগ দিল, ওর চোথে **চোধ রেখে ম**ুখোমুখি দাঁড়িয়ে রইল। মাটিভে পেশ্তা একটা পোভ বিভানও দাভিয়ে [नरामाद्वाद মত রইল ওর চোখে চোখ রেখে. মুখোমুখি. শ্বা তার শেকড় ভয়ে সড়সড় করতে লাগল। রাস্তার একটা কুকুর ভাকল। আব একবার ভাকল। লোকটা দ্বার কাশল। কাণিটা অমান,বিক, অনেকটা ছাগলের কালির মত, বিজন শুনেই ব্রুতে পার্রল, ঠিক এই রকম কাশিই সে আজু সার্রাদন কাশছে এবং কোনো সুন্ধ লোক এজাবে কাশে না। লোকটার স্থির চাউনি বিজনের ভিতরে গিয়ে পড়লে সে ভতিভাবে হাসল।

একতলার বাখর্ম থেকে শেফালির সাবান কে মেথে গেছে? ক্ষরে গেছে তার সাবান। 'ভিঃ ভিঃ ছিঃ, ছিঃ,' থ্ণার শেফালি থাকু ছিটোক্ষে উত্তরে, দক্ষিণে, চতুদিকে। 'এ কী প্রবাস্তি!' শেফালি গাঁচাক্ষে তারস্বরে। শেফালি থাকু ছিটোক্ষে, 'ভিঃ ছিঃ', বিজন রাস্তা থেকেও শ্নতে

সেইদিন রাবে বিজন একটা দ্বান্দ্র দেখল। ছেলেতেলার, মা মারা বাবার পর ভারবেলার, বাবার সংগ্র সেকুরী বেড়াতে গেছে। সে দেখল, উত্তাল সমান্ত্র থেকে চেউ আসছে একটার-পর-একটা, শালা হচ্ছে না। অধিকাংশ দ্বাদেরর আকাশ যেমন থাকে, মেঘলা, স্বোদারের আগের এক ফালি ঘন লাল আলো এক জালোরার ছাড়িরে রয়েছে বিস্কাণ হয়ে; ওখানে জলতলে ব্রুক্ত বিশাল শাত্থলের লোহা জেগে উঠাত মরিচার রঙ, স্বান্দ্র বিজন ব্রুক্ত পারল।...

ভাদকে দিগদেত স্থা উঠল লাফ দিরে,
দরের দেশলাই-কাঠির মত একটা নৌকো
লাট খোরে পড়ল তার ভেতর, নৌকোসমেত এখন বনবন করে ধ্রুছে, একটা ফেনমর টেউ কাছে এদে বিজনের পারে পড়ল। পারের পাতা ভিজিরে সরসর করে সরে যাছে জল, এ কাঁ, বিজনের পা ডুবে গেছে একরাশ বেলফালে, ভাষণ, স্ডুসন্টি গাগছে তার, বিজন ফিক করে হেসে,
ফেলসা।.....

বিজন বেখল তার গলার একটা
বেবট। বেক তো? হার বেলট। বোধনের
আগের দিন বড়-বাড়িট হার গেছে
সারা রাত, বিজন জাল হ্যাফ প্যাণট ও ব্রক
পকেটে সোডার ছিপি-আটা একটা সম্প্রক।
সেল্লার শার্ট পরে পড়াল তার ছেলে-বেলার কেনো ফোটো নেই, বা ঐ-রকম
নেখতে ছিল নাকি তাকে? স্বান্ধ হ্যান হয়, বিজনের একবার মনে হল, সে কি

শ্ন্য মন্ডপ। ভারি পর্বা সাররের
উনি দিরে বিজম প্রতিমা দেখছে।
প্রতিমা? পিছনে রাতির একটা সাঁনি
নাতার কড়ে চিমাভির হয়ে গেছে প্রতিমার
ভাকসাজ, সম্পূর্ণ বিবক্ত রঙটা শারীরের
এখানে-ওখানে মাসে-ভাষা খোবলানো
এখনা অস্ত দেওরা হর্মন, দশ হাতের
প্রতান অম্ব দেওরা হর্মন, দশ হাতের
প্রতান করি কৃতিরোগিশীর মড অসম্ভব
রুড়, বিজন দেখল, একটা শ্রুনেই। চোখের
কোল বেরে ভারার কালো গভিরে সভ্তে
চুলের মধা দিরে গার্জন ভেলের সপ্রে
গভিরে এসে সিশ্বির কিন্দুর লাল বক্তে
তেকে ফেলছে মুখ্যম্ভল। শিত্রেলর

প্রদীপের ব্রুক জড়ে এখন চড়চড় করে সলতে পুড়ে যাজে। পাগ্টটা এক হাতে টেনে তুলে, অন্য হাতে বিজন তার প্রিয় সব্জ সেল্লার জামাটার গারে হাত বোলাল। সোডার ছিপিটা স্পর্শ করে বেখলা।

একটা সিণিড় বিজ্ঞান অন্ধকার ; উঠছে। গলায় দ্লছে বেল্ট, বিজন ছ'ুয়ে एरथन, एमरे **एडामरवना**त रवन्छे। स्वरभन মধ্যে সে অস্বস্থিত বোধ করল। বিজন একটা শশ্বা করিডরে পা দিল। দু দিকের উচু দেওয়ালে সারি-সারি ও ম্থোম্থি দরজা। দরজাগলের সামনে এক চিলতে করে আলো। বিজন দেখল করিডোরটা অন্ধকার, তবে মাঝে-মাঝে আলোগালিও তাকে পেরোত হবে। বিজন দেওয়াল ধরে অগ্রসর হল। উচ্তে একটা জামালা খ্লে মুখ বাড়িয়ে, 'রেণ্র খরে যাচ্ছেন?' বলেই ফটাস করে শেফালি জানালাটা কর্ম করে দিল। এর পর বিজন যত এগিয়ে যাচেছ ভয়হীন, দরজায়-দর্জায় মীরা, বাসন্তী, খাতুন, চামেলি, ওরা সব ভীত সরীস্পের মত চমকানো মুখগালি গতে চাকিরে নিচ্ছে লহমায়, বিজনের পিছনের আলো-গ্রন্থিত একে-একে নিবে যাচ্ছে। রেণ্রে ঘরের স্দ্র দর্জাটার সামনে পৌছে হাতথানেক আগে থমকে দাঁড়িয়ে বিজন পিছন ফিরে দেখল করিডোরটা এবার ডুবে গেছে খন ও নিরেট অণ্ধকারে। जन्धकारुत-नाः विक्रम निर्क मन कर**त** নিবে গেল, করিডোরটা আর নেই। তা হলে! সে ফিরবে কী করে?

রেণ্রে ঘরে সরকারী কমচারী বিজনকে দেখে হৈ-হৈ করে উঠল। শেকালি পাসটা ঠক করে নামিয়ে রেখে বলশ, ফোক!' এমন সময় বাইরে গশ্ভীর ও সংরেলা গলা শোনা গেল, 'চাই বেল-ফ্-উ-উ-উল!'

র্ঘাড়তে আটটা বাজন। রেণ্ট্র সরকারী কমচারীকে ফ্ল কিনতে বলল। যদিও দেওয়ালের ওপাশে, শেফান্সি **ফ্রেঅলার** কাছে কমিশন নিচেছ, বিজন দেখতে পেল। শ্বকনো মুখ, খোচা-খোচা দাড়ি কব্সিভাত গোড়ের মালা, হাতে বেলকুজির মর্কুট রজনীগণ্ধা, কয়েকটা ব্লাকপ্রিণ্স— আরে ঐ লোকটা ফ্লঅলা! চৌরিপিতে পাঁড়িরে এই লোকটা মাঝে-মাঝে মাজন বিক্রী করে না? বিজন বেশ অবাক হয়ে ঞেল। সরকারী কর্মচারী রেণ্বর হাতে টাকা গ'্রুজ দিয়ে খারে পড়ে গেল ভিছানার। বিজন দেখল ওর ব্যাগ থেকে ঝুলে রুরেন্তে গোছা-গোছা নোট। বিজন বালিশের তলা থেকে ব্যাগটা বের কর্জ। তথ্ম, মাখার 'স্বৌষ' চু**ল** এক্বার খ্লে, তারপর **ভূলে,** টান করে বাধতে-বাঁধতে রেণ্ চিংকার করে
উঠল, 'সাবধাম'! দাঁড়াও—এই দেখ—' দ্
হাতে ব্লে এমন চাপড় মারতে লাগল রেণ্
যে, বিজনের মনে হল, সে ব্লিড়ার ব্লে
দ্ ফাঁক করে ফেড়ে ফেলে তাকে কিছ:
দেখাতে চার। তার বদলে, রেণ্ পটপট করে
ব্লাউজের সব কটা বোতাম খলে ফেলল।
আতিকে উঠে বিজন দেখল রেণ্র ব্লে
কাকাডুয়ার নেখের মড কর্মা, বাঁকা
ভয়ৎকর করেকগাছি চুল!

রেণা রাক্ষসীর মত ওণ্ঠহীন হাসজ।
স্বশ্নের ভয় জাগরণের চেয়ে অনেক বেশি। মানিব্যুগটা কোণায় ভান পকেঁটে, বা-পকেটে? দুহাতে যুক চেপে ধরে আতাঞ্কর বর্ণনার মত বিজন রাস্তা দিয়ে ছাইতে লাগল।..... অফিলের ছুটি হয়ে গেছে। রামাধার দেলাম করল। দু-তিনটে ফাঁকা হল পেরিরে বিজন চাকল বড়বাব্র ঘরে। বড়-বাব্ নিঃশনেদ তার হাতে ভারি ও মোটা পাদোনাল ফাইলটা তুলে দিলেন। বিজন ওল্টাতে-ওল্টাতে দেখল তার বির্দ্ধে অভিযোগ ফাইলে লিশিবন্ধ হয়েছে। এটা এবার জি এম-এর কাছে সই হবার জনো বাবে।

অফিসে এত দিন ধরে তার বিরুদ্ধে বড়বার হয়েছে, অসচ সে তা জানতে পারে না! শাভে-বের-করা দ্রাৌ মুশোমার্থি পিশতে যেমন করে পরস্পর কথাবার্তা বলে, পি-এ ও বিজনের মধাে সেই রক্ষ কথাবার্তা হতে লাগল। বিজন বলল, আমাকে স্থবধান করে দেন নি আপনি ?'

নতুন বছরে নতুন ইতিহাস রচনা করবে.....



ভাঞাল উত্তম • ভাগপু • সাবিশ্ৰী-প্ৰকল । ভাগপ সমলেনী-ভাগেৰা-ভাগে-উৎসল ও লুক্ত: মধুমণী (ৰম্ব)

्रात प्रशासिक स्थानकाराः तिस्रास्थाः ताञ्च । अस्तिन् प्रशासिकः • विश्व - पश्चित्राताः - अञ्च निर्दे विकासन् •

পরবর্তী আকর্ষণ ! রূপবাণী ঃ অরুণা ঃ ভারতা

•	বজন	দেখল,	বু-দিকে	মাজি	নে লেখা,
94-0	1	লি-এম	शः श्रेशा	র 51	पिराया ख
संग्रह	وعالم	ার পর	ওপরে	<i>व</i> नाक्स	ক্যালতে
-	-	e fatte	িবব রণ	1	

বিজন আবার প্রাণ্ডরে ছাউন্ড লাগণ। ছাউন্ডে-ছাউন্ড ফের সেই সম্প্রের ধারে এসে হাজির হল। বিজন দেখল, অস্তৃত বিজ্ঞান পালার হাত দিল। বেল্ট, হার্ট, বেল্ট-ই তো। সে হেণ্ট হয়ে পাপড়িক¹ট কুড়োটে পেল। কালো লাল হয়ে পেল

दुर्भ	া হেডিং,	নিচে বি	বরণ ঃ—	•				were Ta	•	তার	বিশ্বত	বিবর্ণ	তাং	
•6	82	আই টেম	R (২ 0	সিসল	বারে	্ঞকাকী	মদাপান	٠				**	
•	550	, " ,	"	હ ર			ď							
•	48	,,	, # ,	३ 9	কোবাল্ট র	्य ्रशस्क	भक्ताहरम	ः राष्ट्						
•					হিরশ্মরের আপত্তি	অস-ুখের	জনা অপাট	রুচেড হঙে			0	•	*	
₹.	ħ2	*	*	98	\$\$-6-68 \$\$		53-6-63 3 >60ft			•	•	•	н	
۳,	28	,	"	80	মন্দিরে বি টেনে তুলে	গ্রহের সা উপর্যুগ	য়নে নতজান র চুম্বন	्रतमग ित्क		•		•	*	
47 - 5	47	# .	, , , ,	47	বাবা ও আ করে দেওই		জনের ম	्थ न्त्राम्		•	*	*	**	
		,,	,99	9.5	বেদির স		ধ ও গো	প্ন প্রশার		•	•			
4. 2		,,			जिल्लिन वा					•	*	•	**	
A. 2	99	"	,,	Αo	। याः मुखा चा	CH CHAIN	1 4.0.04							

এখানে পি-এ বসলেন '২০০ প্রতী দেখ্ন। পাত। উল্টে বিজন দেখল, পাতা জন্তে লাল কালির হোড: আইটেম মং ৯২: সোনাগাছিতে রেণ্র গৃহে গাতি-বাসন তাং ২রা সেটেট্বার্..। বিজনের দম বংশ হয়ে এল, সে বিস্তৃত বিবরণ প্রত্যত লাগণ।

খর গত্রব হয়ে থাকে। অনেকক্ষণ
পর-পর তার হার্দিগণেড শব্দ হয়। খরে
অন্য কোনো শব্দ নেই, ঘরের চারপাশে
আহত ক্কুরের মত রাাত গ্রহর চারপাশে
আহত ক্কুরের মত রাাত গ্রহর চারপাশে
আহত ক্কুরের মত রাাত গ্রহর চারপাশে
আহত ক্কুরের মত পাখার গ্রহর দাড়িতেকারা রাহের মত পাখার ঝারলার হাত-পা
ছাড়রে। পড়তে-পড়তে দম আটকে গেল কিজনের, ব্রুক থেটে বাবার উপরুম হছে,
বিজ্ঞান আইটেম নং ৯২ পড়ে শেষ করল।
'না: সেকথা নেই সেকথা কেউ জানে
না...' এই বঙ্গে, ব্রুক থালি করে এও
জোরে নিঃশ্বাস ফোলল সে, যে, ফাইলের
অনেকগ্রিল পাতা উড়ে গেল ফ্রফর করে।
বিজ্ঞান দেখল ঃ

* পা ১ আইটেম নং ১ লাল পিংপটের গতে খোঁচা পিয়ে, তার মধ্যে একটি জীবতে কোচা নিজেপ ও তার বিস্তৃত বিবরণ তাং ১৯ ৷৬ ৷৩৯

বিজন মূক হয়ে গেল। বিজন এইবার টের পেল কী ভয়াবহ ও ব্যাপক এদের অন্সক্ষান! সে বলতে চাইল, 'এ তো আমার ছেলেবেলার ঘটনা । এ আপনারা জানকোন কী করে?' কিন্তু বলার আগে বিজন আবার ভর পেল, স্বপেনর সেই ভর্ জ্ঞাগরণের চেয়ে যা অনেক বেশি। বিজ্ঞান দেখন, পি-এ টেবিলের ওপর পা ভূলে দিশেতেন। টেবিলে নীলসাপ **লত**েও **পদ্ম**-আঁকা রেণ্ডে স্বরের সেই ্ফ্রলদর্মেটা ভাতে স্দীয় রজনীগণ্ধা আর ভার সিক পালে, দেখে হাত-পা পেটেম্ব ক্ষেত্র চাকে यात्रां छेनस्य इन विकास्त्र, शांच स्थार्क খালে-রাখা পি-এ'র দ্ পাটি দাঁত তার লাল-লাল যাড়ি সক্ত্রা পোড়া রাবারের बन्ध बायुट्ड हा स्वरक।

অবশ্যা রাস্তা প্রবাত জল উঠে এনেছে,
সম্প্রের ওপারের প্রবাস থেকে হাওরা
আস্থে হা-হা, হোটেলের পরজা-জানালাগালি বন্ধ, অন্তরে ফাল-পজিরের মত একটা নারকেল পাতা টাঙানো। ওাদকে বিদাহ চমকার। বিক্লম জানতে, পারগ, কে বেম বলেই গোল তাকে, আন্ত সাইব্রোমের আবহাওরা। জাগ গটাফের কাছে একটা
খাটি পোঁতা দেখল, ভাতে লেখা:

বিশ্বদ ! অন্য কেহ সমূচ্যে শ্নাম করিবেন না।

জনহাঁন মিউনিসিপালিটির রাস্ত্রা দিরে গোড়ালি অর্থার জনস্ক্রাও ভেঙে ছপছপ শব্দ পুলে বিজন প্রেনিকে গটিডে লাগল। কৈ বিশ্বাল এই অন্ধ্রার, এরকম ছার্যাবিগান অন্ধর্কার বিজন আগে কথনো দেখেনি। অথ্য একটা আভাও রারছে তার কারণ বিজন পথ্যাট সবই দেখন্তে পাছে। একটা, আগে মিউনিসিপালিটিব মোটিশও সে পড়াতে পেরেভিল।

উড়েব্ছ জলকণার ভবি হাওয় চালাক্ষে
উন্টোদিক থেকে, বিজন অন্ধনারের ক্রেড়ে ঠেগে এগিরে বেন্ডে লাগল। এক জারণার যেমন মঞ্জের মাঝখানে, ঘ্রিরুড় ফেলা গোল আলো, সেখানে একটা জেটি। জেটির ওপর দীড়িব্রেও, জেটি কোথা থেকে এল, বিজন ব্যক্তে পারল না। সমন্ত্রে জেটি থাকে কি?

ভিছে বালি উঠছে চকচকিয়ে পায়েব পাতা তথনও সরসর করছে, ফসফরাস-গালো জালাজ নিবছে। জল সরে বাবান পর বিজন দেখল, পারের কাছে করেবটি লাল পাপড়ি পড়ে ররেছে। বিজন উচ্চতে রাশতার দিকে তাকাল। শুখানাটা দেখা বাজে না, শুলান মুডলাতের আলো নেই, কিল্ড দেবলার, গাছটার ভিতারা দেখা বাজে শুলট এক ঝাঁক জোলাকি চল্লের মড ঘরেছে তাকে যিরে, তাতে আরো ভ্রত্তকর দেখাজে—বেন ভবিগ-দর্শন একটা ভোম দাভিয়ে আছে শুখানে। বেমন, তেমনি রঙ পাপড়িগ্নির। এ বে খ্বই চেনা ফ্লের পাপড়ি, র্যাক প্রিন্স, বিজনের মনে পড়ে গেল, থ্ব হত তাই মায়ের হাতে, প্রায় কন্ই-অবি সোনাব চুড়ি-ভাতি, শাখের মত শাদা, ভারি মিল্টি পোলাপ ফোটাবার হাত ছিল মায়ের।

পাপড়িম্লি হাতে নিয়ে বিজন চোখ नुक्रम। छात्र र्क्ट्टरे এ की इस छात्र! পারের নিচে বিপলে একটা অন্তঃ স্লোতের টান অনুভব করল বিজন, অমাবসারে ছারাবিহীন অধ্বকার অত্কিতে ভার ছন্মবেশ খালে পড়িল একটা গেটা সম্প্রের চেহারা নিয়ে, ওপরে মশানে বেবনার্ক সমনে ডোমের, গলায় জোনাকির মালা म्बाह्य स्ट्रासीय, ध्राह्मी हतात स्ट्रिकी নিয়ে ফে'পে উঠল যে বিশাল চেউ, বিজনেব চাউনিস্পে, সাড়হান দেহটা তার ভিতর চিৎ হয়ে ডাকে যেতে যেতে দেখল 🦈 তা থেকে ছিউকে পড়প্তে লম্বা লম্বা বে'কে-যাওয়া ফেশা, বিদ্যাচ্চমকের শেষ চৈতন্য-টাুকু দিয়ে বিজন দেখল চেউ-এর গায়ে ভোরোকাটা দাগ তার কষে ফেলা। সম্পূর্ণ নেবার আগে সকলকেই যেমন দেখার সম্ভূ বিশ্বাকৈও ভার সেই বিশাস থাবার नम्या ७ दिदिन-शाउँहा कमारीन त्राथन्ति अकवात रमधाम ७ लाकिए। रकमम।

আগে থেকে এনগেলমেণ্ট করে, প্রদিম বিকেলে বিজন একজন স্পেশালিস্টের কাছে গেল। সেপশালিস্ট প্রথমে প্রায় আষ্বণ্টা ধরে কাগজপর পরীক্ষা করে, তারপর সাঁড়াশির মত সেটগেশকোপটা টেবিলে নামিরে রেখে বললেন যে বিজনের অভি গর্মেতর অসমে হারেছে, এর কোনো ওম্বাধ্যেই, এর কোনো চিকিৎসা হর মা: কিম্পুর-কোনো মুহারের এবিজনের করে পারে, এইজনো হতদিন সম্ভব বেশি বাহিরে রাখার জনো, তিনি এখানি বিজনের চিকিৎসা শ্রে করেবন। বিজনের তিনিৎসা শ্রে করেবন। বিজনের তিনিৎসা শ্রে করেবন। বিজনের



কোথার চান্দা জেলা, আর কোথার রত্যগিরি।

রত্যগিরি বলিলে সঠিক বলা হয় না। বলা উচিত নোনপরো।

নোনপরো কাপাস চাবীদের দরিদ্র একখানা গ্রাম। ভূগোলের কোলাহল থেকে অনেক, অনেক দরে রত্যাগির জেলার শেষপ্রাণেত মান্যের এই বস্তিটা প্রায় আত্মগোপন করে আছে। হঠাং দেখলে মনে হয়, এখানকার বাসিন্দারা অজ্ঞাতবাস করতে ভালবাসে:

অন্য সব বছরের মত এবারও নোনশ্রায় এল ঘ্ন্রাম। চান্দা জেলা থেকে
বিরয়ে প্রথম লাইট মারহাট্টা রেলে কিছাটা
পথ এসেছে সে: তারপর শ্রে হয়েছে
হটি: উত্তরায়ণের স্যুম্মাথায় নিয়ে
অবিপ্রান্ত চলা। হটিতে হটিতে কোণাকুণি
পশিচ্মঘাট পাড়ি বিয়ে অংশেষে সেই নোনশ্রায় পেণিছনো গেছে।

মাসটা নাছ। অখাৎ প্রথম ঋতু শীত এখন মধাপ্রত্বরে। নিয়ম অনুযায়ী সমারোহ করে হিম এবং কুয়াশা নামার কথা। উত্ত্বে বাতাসের সওয়ার হয়ে একটা উদ্দাম ক্ষাাপামির দিশ্বিদিকে দাপাদাপি করে বেড়ানোও উচিত ছিল।

কিক্ জগতের আর যেখানে যা খ্রিদ চল্কে, মহাগান্টের এই প্রাক্তে কিক্ট্ বিপরীত রণিত। এখানে হিম নাই, কুয়াদাও না। উত্তরে বাতাসটাকেও কেউ ব্রিথ থাপে প্রের খাপটার মুখ কথ করে দিরেছে। আকাশময় এখনও, সেই মাথে, টুকরো ট্করো ইতক্তত মেঘ ছড়ানো। আষাঢ়-শ্রাবাদর পর কতদিন কতমাস কত প্রহাই তো পার হয়ে গেছে, তব্ রত্য-লিরি জেলা বর্ষাকে ব্রিথ প্রাণ ধরে বিদার দিতে পারে নি; আকাশ জ্বড়ে আষাঢ়-শ্রাবদের ক্যুতি সে সাজিরে রেখেছে।

পাঁচ বছর ধরে শীতের মাঝামাঝি এই সমরটার চান্দা থেকে নোনপ্রায় জাসছে ব্ন্রামা। এই সমরটার সারা মহারাজ্য জানুড়ে শ্রেহ হর গণপতি উৎসব। গণেশ প্রজার আরোজন করেনি, এমন একটি বাড়িও এখন এখানে খণুজে পাওয়া বাবে মা।

গণপতি প্জো মহারাজ্যের জাতীর বিষয় উৎস্বটা চলে দিন্দশেক ধরে কিন্তু সেটা খিরে যে মন্ততা, বে উন্দীপনা তার মেয়াদ মাসথানেক। সেই মন্ততার তেউ রত্যগিরির স্পুর অভ্যন্তরে কাপাস চাষীদের সিভমিত নগণ্য গ্রামথানাতেও এসে লাগে। উচ্ছনিসত দুর্শার এক স্রোভে নোলপুরো তথন ভেসে বায়।

গণপতি-উৎসবেদ্ধ সময় প্রতি বছর ঘন্রাম যে নোনপরোর আসে সেটা অকারণে নয়। নোনপ্রায় এসে বাঘ সাজে সে। গণেশ প্রোর্ম বাঘ সাজা মহারাদ্যের ধ্রোকিক নীতি।

বাঘের দাভ গায়ে নিয়ে আর প্রকাশ্ড লেভ বাগিছে কার্পাস চাষীদের দ্যায়ে দ্যায়ে ক্রায়ে এ সময় ঘ্ন্রাম নেচে বৈড়ায়। সে বেখানে বায় সেখানেই সাড়া পড়ে গয়। বাঘের সং দেখবার জন্য ঘরের বৌর। বাচার।, কিশোরীয়া, বরুক্ত প্রচীনেরা, জোয়ানেরা, নবযুগতীরা — সবাই হুড়মুড় কয়ে ছুটে আসে। মুহুতে তাকে ঘিরে ধরে সমস্বরে চারিদিক মুখর করে তোলে, ওয়ম আলো—ওয়ম আলো'—অর্থাৎ বাঘ এসেছে, বাঘ এসেছে।

এই পার্বশের দিনে ধুনুরাম এসে বাঘ সেজে নেচে নেচে আনন্দের প্রোত্ত ভাসিয়া নিয়ে যাবে, সে জন্য নোলপুরা গ্রামখানা সারা বছর অধীর আগ্রহে প্রতীক্ষা করতে থাকে।

থুনুরামও ভাদের নিরাশ করে না; বাধ-নাচের সংগ্রামও **ভ**ুড়ে দের :

গণপতি বাম্পা মোরেয়া,

প্র্ছাছ বরষি লোকের গ্রারা।'
অধাং হৈ সিম্পিনাতা গদেশ, আগামী
বছর আরো তাড়াতাড়ি এসো। ইত্যাদি
ইত্যাদি—নাচগানের ফলপ্রতি থ্ব একটা
থারাপ হয় না; বরং তা উৎসাহজ্ঞাকই।

দোলপ্রার মান্র গরীব হতে পারে কিন্তু হ্দর ভাদের দরিশ্র নর। বার বা নাধা, অক্রেপে হাসিম্ধে ভাই ভারা খ্ন্-রামের খ্লিতে তেলে দের। একমাস এখানে কাটিরে খ্নুরাম আবার বখন চান্দা জেলার ফিরে বার, তখন ভার প্রাণ্ডর ভালিকা খ্রু একটা ছোট মাপের হর না। খানচারেক নতুন খ্তি, নগদ দল বারোটা টাকা, মল দেড়েকের মত চাল, অক্সন্ত চ্টা (বিড়ির মত বেশার জিনিস), কিছু কার্পাস ভূলো এবং আরো ট্রিক্টেরিক ভনেক কিছুই ভার ঝোলাটিকে ভরে

জগতে খ্নুরাম একা। চারখানা
ধ্তিতে বেশ ভালোভাবেই কেটে যার।
গ্রীও ভার কিনতে ইর না। মণ দেড়েকের
মত যে চাল মেলে ভাতে ভিনটে মাস সে
নিশ্চিত, বাকি 'ন' মাসের জীবন ভাহার
একেবারেই জানিশ্চিত। জীবিলার জন্য
খ্নুরামকে এই সমর চাশা জেলার দানা
ভূমিকার দেখা যার। এ সমর কথনও সে
ভূমিহীন কুবাণ, কখনও সে মালটানা কুলী,
কখনও তাকে পি ভর্-ভির রাস্তা বানাতে
দেখা যার। কখনও সম্পার গৃহস্থের মোষ
চরায় সে, কখনও বিশাখে শৃক্ষ দংশ দিনে
পাহাড়ী করনা খেকে মহাজনদের জন্য
বাক ভরে জল নিরে আসে। আবার কখন
নিখাদ বেকার সে।

এড করেও কারো মন পার না
খন্রাম। খিসিত, গালাগালি এবং মারও
প্রারই ন্যাযা মার হিসাবে জোটে। এড
করেও বাকি ন' মাসের জীবনে খন্রাম
নিশ্চরতা আনতে পারে না। কাজেই
সমস্ত বছর অস্তড তিনটে মাসেরও
নিরাপন্তার জন্য সে যে গাপাতি-উৎসবের
সময় নোনপ্রার ছুটে আসবে, এর মধ্যে
বিশ্মরের অবকাশ নেই।

তিন মাসের খোরাফি আর সারা বছরের আচ্ছাদন—এর জন্য তো বটেই; অন্য আকরণে ছুটে আসে খুনুরাম। সেই আকরণটার কেন্দ্রে বসে আছে রতি। পাঁচ বছর ধরে রতিদের বাড়িতে উঠেছে সে। গণপতি-উৎসবের একটামাস ওখানেই কাটিরে বার খুনুরাম।

সারাটা বছর রত্যগিরির এই অক্তাত-বাস থেকে সে থেন অবিরত হাতছানি দিতে থাকে মেছেটা। আর হ্পিপ্রেডর কোন অদ্যুগ্য শিক্ষড়ে ব্রুকি টান পড়ে ব্রুরুক্সমের। এপারটা মাস কোন রক্ষে



কাটিরে বছরের শেষে বিচিত্ত এক ছোরের মধ্যে নোনপ্রায় চলে আসে সে।

এছাড়া আরো একটা কারণ আছে। নিজের দীণিতহীন, অধাহারা, অনাহার এবং অগোরবের জীবনে এই একটা মাসই যা কিছু মর্যাদা পার ঘুনুরাম। সোন-भारतात माना्य वाराव भः प्रारथ्ये भारता আনন্দ পায় না, তাকে দর্শভ এক অগোরবের সিংহাসনে বসিয়েছে। বাছের সাজ গামে না থাকলেও সবাই, বিশেষত থুবতী মেয়ের৷ তার দিকে আপাৰে বাড়িয়ে ফিস্ফিস্গঞ্লে মেতে উঠত। প্রাচীনেরা এক বংসর উৎসব শেষ হতে না হতেই পরের বছর আসার জন্য সনিবন্ধ অনুরোধ জানায়। যে মানুষকে জগতের কোথাও কেউ ডাকে না, খোঁজে না, চান্দা জেলার সেই ঘুনুরাম নোনপুরার মানুষের কাছে প্রম বিশ্ময়ের মত।

যাই হোক এবার নোনপ্রার এসে
যখন ঘ্ন্রাম পৌছ্লো স্ব তখন
আকাশের মধ্যবিন্দ্তে। মাখার একটা
ছবি টিনের বাক্স। সেটার ভেতর তার
যাবতীয় ম্লধন। শ্লধন বলিতে ভূরোকালি, শিপলে আর হল্দ রঙ্, লোমশ
ট্পি, বাবের মত দাঁত, নখ, সোঁফ, লেজ,
কিছ্ খড়, প্রচ্ব নাাকড়া, বাখারি, আঠা,
তার এবং খানক্রেক লোহার ক্লিণ। এসব
বাঘ সাজার সরঞ্জাম। তাছাড়া জামা কাপড়
আছে, বিছানা আছে। একটা মাস থাকতে
ছবে। তাই চাল, ডাল, আটা মরিচ, মশলা
ইত্যাদি আনতে হরেছে।

মাথার উপরে দৃশ্রের স্য'; পেটের ভেতর আগ্ন জনেছে। তাছাড়া ক'টা দিন সমানে পশ্চিমঘাটের চড়াই-উতরাই ভেঙেছে। অতএব কোথাও দাঁড়াল না হ্ন্রাম। প্রাণত শরীর নিয়ে লম্বা লম্বা পা ফেলে যে রাস্তাটা সোজা দক্ষিণ-গামিনী হয়েছে সেটা ধরে এগিয়ে চলল। আপাতত তিনটে জিনিস ভরানকভাবে প্রয়োজন। প্রথম স্নান, তারপর খাদা, অবশেষে বিকেল পর্যস্ত টানা একখানা ঘুম।

গ্রামটা আধা-পাহাড়ী, আধা-সমতল।
চারিদিকে ছড়ানো বাড়িগুলো জারগাটার
সংগা ছন্দ মিলিরেই যেন মাথা তুলেছে।
গশ্চিমঘাটের চাই-চাই পাথর কেটে
সেগুলো তৈরী; মাথার ওপর অবশা
ভাদের ভাগ্গাচোরা চিন। অথবা ইন্যাসের
হাউনি। হঠাৎ দেখলে মনে হয়, অর্ধপশ্গঠন আদিম মান্রদের ঘানির দুর্গবিশেষ।

নোনপ্রার দক্ষিণ প্রান্তে সর্বশেষ যে টিলাটি তার মাথায় শিবল নায়েকের বাড়ি। শিবলেরই মেয়ে রতি। সরাসরি সেথানে চলে ঘ্নরোম।

শিবলকে বাড়িতেই পাওরা গোল।
সামনের দিকে যে বারাদদা তার একটা
খাটিতে ঠেসান দিকে চুটা ফাকেছিল।
স্মুক্ত প্রাচীন একখানা পাথর দিলে তার
বিশালে দেহটির যেন স্তি। প্রিবাতে
অনেক কাল থেকে আছে শিবল। বহু
বছরের ঝড়, বৃতি, দুর্বোগ তার শ্রীরে

অসংখ্যা ক্ষর ধরিরেছে। মাখার চুল তার ধন্রসর; চোথের দুখি আছেন। শরীরমর এত যে ধন্বস তব্ মনে হয় এই লোকটির কোথায় যেন একটা অট্ট কাঠিন্য আছে।

ঘ্নরেমকে দেখা মার চূটা ফেলে
শিবল ছুটে এল। রীতিমত সরবে এবং
সাদরে অভার্থনা জানাল সে, 'আরে এসো
এসো, সং এসো—বলে ধরাধার করে ঘ্নররামের মাখা থেকে সেই প্রকাল্ড টিনের
বাক্সটা বারাণদার এনে নামাল, তারপর
দুজনে মুখোমুখি বসল।

লিবল আবার বলল, 'কেমন আছ সং?'
বাথের সং সাজে খুনুরাম।' সেহেতু
এ গ্রামের সবাই তাকে সং' বলে ভাকে।
এই 'সং' সম্ভাষণটা লঘ্ তথেবা বাংগারে'
নয়, রটিতমত গোরবাথেই।

খনুনুরাম উত্তর দিল, ভালই আছি। তোমরা কেমন আছ?

তোমরা বলতে শিবল আর রতি। শিবলের সংসারে ঐ এক মেরে ছাড়া আর কেহ নাই। না একটা ছেলে, না আর একটা মেরে। বউটাও দশ-বারো বছর আগে জনরে মারা গেছে।

্ শিবল বলল, 'একরকম কেটে যাছে আমাদের। তা এবার কিন্তু আসতে কিছ্ দেরি করে ফেলেছ সং।'

প্রজার এখনও দিনকয়েক দেরি। তবে গ্রামের ভেতর দিয়ে আসতে আসতে নিজের চোখেই ঘ্নুরাম দেখেছে। ইতিমধ্যে উৎসবের কিছু ছোর লেগে গেছে। শিবল তার সাত্যকারের হিতাকা[ং]ক্ষী। শিবলের ইচ্ছা, উৎসবের মাতামাতি আরুভ হবার আগে ঘ্নুরাম নোনপুরার আস্ক এবং যত বেশী পরিমাণে পারে এখানকার বাহিম্দাদের কাছ থেকে পার্বণী আদায় করে নিক। মাতামাতি যতদিন চলবে ডত-দিনই মান**ুষের মন থাকবে দরাজ** আর বেহির্সোব। এক প্রসার জায়গায় তিন পয়সা ঢেলে দিতে তাদের হাত কপিবে না। কিন্তু উচ্ছবাসে ভাঁটা পড়িলেই বিপদ। দরিদ্র কাপাস চাষীরা তখন হাত গুটিয়ে নেবে। দুটো পয়সা গোজে থেকে বার করতে পাঁচবার ভাববে, দশবার করবে হিসেব। সামনের একপা এগিয়ে পিছ**ু** হটবে তিন যোজন। মোট কথা লোহা গরম থাৰতে থাৰতে সেটাকে পিটিয়ে কাজ গ**ৃছি**কে নাও। শিবলের হিসেব সোজা। তার মতে স্যোগের সম্বাবহার একেবারে প্রথম থেকেই করতে হবে।

খুনুরাম বলল, 'হাাঁ, একটু দেরি হয়ে গেল।'

শিবলের সপো কথা বলছে বটে
ঘন্রাম, কিন্তু তা বেন থানিকটা দ্বমনক্ষের মত। নিজের অক্সাতসারে তার
চোথ দ্বিট চারিপকে চনমন করে ঘ্রে
বেড়াছে। সামনের তকতকে উঠানে, দ্বে
কুরোর পারে, শিশ্ল গাছের তলার একচালা রাহাঘরটার কিবো বারান্দার সংল্ন
পাশাশাশি দ্বটা শোবার ঘরে—কোষাও,
কোষাও রতিকে আহিন্দার করা গেল না।
ক্রা বছর ঘ্রুমুক্রাফুকে চ্রুক্ত্রনা

চ্বক্তেই মেরেটা ছুটে আসে। অপরিক্রীম খুলিতে তার চোথমুখ চকচক করতে থাকে যেন। অকারণ হাসিতে, অবারিত উক্ষাতে, প্রশেনর পর প্রশন করে আর অবিরত অক্সপ্রকথা বলে খুন্রোমের চারপাশের দ্বনত টেল নামিরে দেশ্ব সে। আর সেই ঢলে একবারে ডেসে বার খুন্রাম।

অতর্কিতে ঘুনুরামের ভাবনার ওপর দিয়ে একটা সম্ভাবনা ছারা ফেলেল। এক বছর পর পর সে নোনপুরায় আসে। এর মধ্যে রতির বিরে হয়ে যার নি তো। শিবলের চোখের দিকে তাকিয়ে তাকিয়ে একটা কিছ্ বলতে যাছিল সে। তার আগে শিবসই বল উঠল, 'চান করবে তো?'

থুনুৰাম বলল 'করব বৈকি। চার্রাদম সমানে হে'টে আসছি! রাতে খ্যা নেই। গা-হাত-পা জ্বালা করছে। চান না করতে পারলে মারা যাব।

শিবল আর কিছু বলল না। **ঘর থেকে** তেল আর গামছা বার করে ছুন্রাদের সামনে রাথল।

কুরোর জলে শরীরের দাহ এবং প্রাণিত আনেকথানি জ্বড়িয়ে খুন্রাম আবার বধন ফিরে এল তথন দেখা গেল বারান্দায় সেই বাক্সটা নেই। শিবল সেটা খরে নিরে রেখেছে।

শিবলের ব্যাড়িতে মোট দুখানি ধর। প্রতি বছর গণপতি-উৎসবের সময়টা শিবজ আর রতি এক ঘরে থাকে। শ্বিতীয় ঘরখানা ছেড়ে দেয় বুনুরামকে।

যাই হোক ভেজা কাপড় ছেড়ে বাক্স থ্লে শ্কনো থ্তি প্রল ঘ্নরাম। আর সেই সময় শিবল বলল, 'চল, তোমাকে ভাত দিই। এতথানি পথ হে'টে এসেছো। খেরে-দেয়ে ভালো করে জিবোও।'

কৃষ্ঠিত ভাগ্গতে ঘ্নরোম বলল, কিল্ডু'- একটি মাত শব্দ উচ্চারণ করেই সে থামল।

ही ?'

'ठाल-डाल किছ् हे पिनाम ना-'

প্রতি বছর এখানে থাকেই শ্রু ঘুন্রাম। খোরাকি তার নিজের ' অবশ্য রতি তার রামার দারিত্ব নের। শিবল বলে উঠল, 'ওবেলা থেকে চাল-ভাল দিও। এখন এলো দিকি—'

বেতে গিয়েও ইতস্তত করল ঘনেরাম।
আর সেই সময় রতির কথা আবার মনে
পড়ল। আগেরবার পারেনি, এবার কিন্দু
সে বলেই ফেলল, আছা, তোমার মেরেক তো দেখছি না—' 'ওর কথা আর বলো না
সং। আন্ধ পাঁচ-ছাটা দিন ধরে ও কি আর
বাড়িতে থাকে! ঘরের কাজটুকু কোন রক্ষে
সেরে উত্তরের টিলায় ছোটে, সারাদিন জো
সেখানেই পড়ে আছে। আর মেরেটাকেই বা
কি বলব, সমন্ত গ্রামটা তো গুখানে গিরে
জড়ো হরেছে।'

একটা ব্যাপারে অণ্ডত আশ্বন্ত হওরা গেল। রতি নোনপ্রোতেই আছে এবং তার বিশ্লে হরনি। উৎস্ক স্রে ঘুন্রার জিজেন করল, 'কী ব্যাপার; উত্তরের টিলার স্বাই, ছট্টেছে কেন?' erang kanggan panggan ang panggan ang panggan panggan panggan panggan panggan panggan panggan panggan panggan

শিষল বলল, 'আরে তোমাকে বলতেই ভূলে গোঁছ। উত্তরের টিলার একটা বাঘ এনেছে বে—'

কথাটা ব্যুতে পারল না খুনরেম। বিমুটের মত শিবলের দিকে কিছুকণ তাকি:র খেকে কোনরকমে বলতে পারল, বাছ!

হান-হান বাঘ, জানত চিতাবাঘ। শিবল বলতে লাগল শম্ভা বলে একটা ছোকরা সেই সাজারা জেলা থেকে পোলায় এক খাঁচার পুরে ওটাকে নিয়ে এসেছে। দিন পাঁচ-ছর শম্ভা আমাদের এখানে এসেছে। তার ভেতরই সারা গ্রামটাকে মাত করে ফেলেছে।

খনুরাম কি বলবে, ভেরে পেল না। একটা অজ্ঞাত আশধ্কার তার সমস্ত হুর্গপিন্ড ঝড়ের দোলার দুলতে লাগল হেন।

শিবল কি ভেবে আবার বলল, সে বাক গো, তুমি এখন খেতে এসো সং—।

বিচিত্র এক অভ্যিরতার মধ্যে দিবলের পিছু পিছু রাহাঘরে গৈরে থেতে বসল ঘুনুরাম। থাওয়ার আরোজন সামানাই। ভাত, উল্লেখার এবেগুন দিরে ভাজি খানিকটা হলদে রপোর আমতি (টকের ভাল) এবং আগুনে স্যাকা পাঁপড়।

খুনুরাম লক্ষা করল, মাত্র একজনের মন্ত ভাত-তরকারি বেড়ে নিয়েছে শিবল। বলল, 'এ কি, আমি একইা খাব নাকি?'

হাাঁ।' শিবল মাথা নাড়ল, 'মেয়েটা নে থেরেই হুটেছে। ও ফিরে আসুক; তথন থাব। ওকে ফেলে এখন খাই কি করে বল?'

হঠাং একটা ব্যাপারে সচেতন হয়ে উঠল ধনেরেম। কুন্ঠিত মুখে বলল, 'কিন্তু—' 'কী?'

'তেনাদের দ্ভানের মত তো রালা হরেছে। আমি খেলে—'

খুন্রামের মনোভাব যেন ব্রুতে পারল শিবল। হেসে বলল, 'ভয় নেই, আমরা না খেয়ে থাকব না। আজকাল দুবেলার রামা সকাল বেলাতেই রে'ধে রাখছে রাভ। ভূমি খেলে কি আর হবে। ওবেলা আবার না হর চাট্টি ফুটিয়ে নেবে।'

এরপর আর কিছু বলল না খুন্রোম।
ভাতের থালাটা টেলে নিয়ে অনামনম্পের
মত মুখে গ্রাস তুলতে লাগল। একট্
আগেও পেটের ভেডর গনগনে খিলে ছিল;
এখন সেটা একেবারে অনুভূতিশুনা হয়ে
গেছে। শুধু উন্তরের টিলা, একটা চিতাবাঘ
আর শম্ভা নামে সাতারা জেলার অজ্ঞানাঅচেনা আগাতুক তার সমুস্ত অস্তিত
ভারাক্তান্ত করে রেখেছে।

থাওয়া প্রায়্ম শেষ হয়ে এসেছে। সেই সময় ছুটতে ছুটতে এবং হাঁপাতে হাঁপাতে উত্তরের টিলা থেকে রভি ফিরে এল। বিলাং চমকের মত কি ফেন একটা তীর খরস্রোতে গুলুরামের রক্তের মধ্য দিয়ে বয়ে গেল।

আগের বছর; আগের কেন গত পাঁচ বছর ধরে ঘুনুরাম বেমন দেখছে হুবহু কেই রকম আছে রতি। কালো রং মেরে। ভালো বললে স্ব বলা হয় না। তার গা থেকে তীক্ষা এক দার্তি যেমন ঠিকবে বেরুছে। মনে হর মেক্লো সর্পাধ্যে ছাম-তেলা মেখে আছে। আদিবাসিনী দেরেদের মত উন্দাম অজস্ত স্থান্থ্য তার। নাক-ম্থ বেশ টানা-টানা, তীক্ষা, ছাতে রুপোর কাঙনা, নিটোল গলাটি বেন্টন করে রুপোর কিছে হার। কালো দেহে বুপোর ছটা রুপের ছাট বিসরে দিরেছে বেন।

ম্ঠোর ভেতর বেড় পাওরা রতির কোমরখানি এমনই সরু। কোমরের নাঁচের দিকে বিশাল অববাহিকা; ওপর দিকে সে ছাপগ্লা একটা শাড়ি তার দেহটিকে সাপটে ধরে বয়েছে। মেয়েটা যেন কালো ময়রী। চোথের দৃষ্টিতে তার ঘোর লাগা; ভার মধ্য থেকে কৌতুকের খানিকটা দীপ্তও বিচ্ছুরিত হচ্ছে। ছুটেতে ছুটতে এসে রারা-থরের দরজায় এসে দাঁড়িয়েছিল রতি। रार्थ-मृत्थ এই मृह्रार्ड छेरलका कामाहा ব্রুকটা দুভে তা**লে ওঠানামা করছে।** শিবলের দিকে তাকিয়ে সে বলা ত লাগল বাঘটা কি স্কুলর বাবা; শেংলা পেলো রং। তার ওপর কালো কালো গোল গোল ছাপ। চোখদুটো কাঁচের মতন! क्ताक्रग्रे—'

শিবল সন্দেহে হাসল, 'বুঝেছি, বুর্ফেছি। বাঘ তো নয় একবারে রাজকন্যা।' 'আরে শোনই না—' অসহিষ্ণ সুরে রতি বসতে লাগল, 'ল্যান্ডটা প্রকাশ্ড—'

বাধা দিয়ে শিবল বলল, 'শুনেছি বাপু শুনেছি। এই পাঁচ ছ'দিন ধরে কতবার তো এক কথা বলালি। বাঘটার এমন দোখ, আমন নাক, তেমন লাাজ। শুনেতে শুনতে একেবারে ঝালাপালা হরে গেছি। ঐ বাঘ, বাঘ করে তো খিদে-তেভা বিসন্তান দিয়ে বসে আছ, যাও চান করে এসো—'

রতি চলে যাচ্চিল। শিবল তাকে ডেকে থামাল 'আরে শোন্, শোন্ এই রতি! দ্যাখ কে এসেছে—'

রতি ফিরে দাঁড়াল। উত্তেজনার ঝোঁকে আগে সে লক্ষ্য করোন। এবার দেখল রামা-ঘরের এক কোণে বসেছে ঘনুরাম। চোখ বড় বড় করে রতি বলল, 'কমা সং যে; কখন এসেছ?'

নিজ্বীব সংরে খুন্রোম বলল, 'এই থানিকটা আগে।'

'তুমি যে এখানে বলে খাচ্ছ তা খেরালই করি নি।'

থৈয়াল না করবারই কথা। বাখের গলপ নিয়ে তুমি মৈতে ছিলে—'নতুন উদানে রাড বলল, 'তুমিই বল, অমন চমংকার হাছ—' কথাটা আর শেষ করতে পারল না রাড। তার আগেই শিবল তাড়া দিয়ে উঠল, 'আবার বাখের গলপ জ্বড়ালি! গোল চান করতে গোল—'

রতি তাজাতাজি ব**লে উঠ**ল, 'পরে তোমাকে বাঘের কথা বলব সং।' বলেই ভ্রেট পালাল।

স্বাধ্যে অসীম প্রান্ত; বিছানায় দরীর স'পে দিলে ঘুমের আরকে ডুবে ধাবার কথা। কিন্তু কিছুতেই ঘুম এল না। বুকের ডেডর একটা কটা যেন বি'ধে আছে। কটিটা যে কোথার, হৃৎপিশেন্তর ঠিক
মাঝখানে অথবা ধমনীর পাশে কিংবা অন্ন
কোথাও ঠিক বোঝা যাছে না। সেটা থে
আছে, নিদার্ণ এবং অম্বস্তির মধ্যে তা
টের পাওরা যাছে। আছের এবং অম্পির
খুন্রাম ঘুম এবং না-ঘুমের মাঝামান্তি
একটা জারগার পড়ে ক্ট্লা:

শুরে শুরে একটা ব্যাপার সে লক্ষ্য করেছে, কোনরকমে চান খাওরা সেরেই আবার উত্তরের টিলার ছুট লাগিয়েছে রতি। রতির এই পরিবর্তন ঘুনুরামর প্রাণের ভেতরটা দুমড়ে-মুচড়ে বাঁকিয়েচুরিয়ে কেমন যেন ডেলা পাকিয়ে দিতে লাগল।

তাল্চ--অথচ অনা স্ব বছবে ঘন্রাম এখানে এলে তার সংগ আর ছাড়তে চায় না রতি। কি এক ঘোরে সর্বক্ষণ তার পি**ছ**ু পিছ, ঘ্রতে থাকে। আশ্চর্য, আজ তার সম্বশ্ধে ষেন বিন্দ্মার কৌতৃহলও নেই মেরেটার। আদৌ না খ্রিময়ে খ্রুনুরাম যখন বিছানা থেকে উঠে বাইরের বারান্দার এসে বসল তখন আকাশের কোথাও স্বটাকে খ'কে পাওয়াগেল না। ঘ্নুরামের ইচ্ছা ছিল, আজই ঘুম থেকে উঠে বাঘ সেজে গ্রামে বের বে। কিল্ডু এই মৃহ্তে বাঘ সাজার মত সামান্য উৎসাহট্যকুও নিজের প্রাণের কোন প্রান্তেই বৃত্তির অর্থাশন্ট নেই। নিজেকে উদামহীন নিরুৎসাহ এক জড়পিশেডর মত মনে হচ্ছে। শিবল বাড়িতে নেই আর রতি ও সেই উত্তরের টিলার। বারান্দার বসে **প্রা**য় শ্ন্যচোখে আকাশের দিকে তাকিয়ে রইল ष्न्त्राम्।

বেশিক্ষণ অবদা বসে থাকতে হল না।
সম্পোর কিছু আগে আগেই রতি ফিরে এল।
খন্রামকে বসে থাকতে দেখে বলল, 'আমি
খখন বেরুই তখন তুমি খুমুক্ছ। তা কখন
উঠালে?'

'এই একট্ আগে?' ঘ্নর্রাম বলল।
'অন্য বছর বেদিন আসো সেদিনই তো বাঘ সেজে বেরিয়ে পড়, কই এবার তো বের্লে না?'

'কালই বের্ব ভাবছি।' 'কেন শরীর খারাপ নাকি?' না, 'তেমন কিছু নয়।'

রতি আর জিজ্ঞাসা করল না। এদিকে
সম্পার অংশকার নেমে আসতে শ্রুহ
করেছে। লম্বা পায়ে ধরের ভিতর চলে গেল
সে, তারপর ধরে ঘরে কেরোসিনের লগ্ঠন
জালিয়ে আবার ঘুন্রামের কাছে এলা
দ্-একটা সাধারণ কথার পর আবার বাঘের
প্রসংলা চলে গেল সে। জ্বলজ্বলে চোথে
শ্রুহ করল, বাঘটা যেমন স্কের, তার
খেলায়াড়টাও তেমনি।

খুনুরাম চকিত হয়ে উঠল, 'খেলো-য়াড়টা আবার কে?'

'ঐ বাঘ যার সে। নাম শশ্চা। গারের

কন্ত টকটকে, লশ্বা-চাওড়া চেহারা, পাকানো
গোঁফ, বাবরি চুল। বাঘের খাঁচার

চুকে সে যখন খেলা দেখার

বেকের রক্ত হিম হরে যায়। স্তিয়কারের

একটা প্র-শ্মান্য। বাটাছেলে এমন হলেই

মানার।' বলতে বলতে ব্রতির গুলার শ্বা

আৰ্কে কপিতে লাগল। চেবের ভারা দুটো কেমন বেন আফিট।

শশ্ভা নামে অপরিচিত বাদের খেলোরান্ধটির বুপ, গুলু এবং গৌরবের শুভূতি
খুনতে খুনতে আর রতির চোথমুখের
চ্ছোরা দেখতে দেখতে চোথ জনুলা করতে
লাগল খুনুরামের। জনুরের রুগার মত
কপালের দুণাশে দুটো রগ সমানে লাফাছে।
হঠাৎ উঠে দাঁড়াল সে।

রতি অবাক। বাঘ এবং শম্ভা সম্পর্কে উচ্ছনাস থামিয়ে বলল, কি হল সং। উঠে পড়লে যে।

'মাখাটা ভীষণ খ্রছে। বাই আরেকট্ শুরে থাকি গে।'

রতিকে আর কিছু বলার স্বোগ না দিরে নিজের বরটিতে চলে গেল ঘুন্রাম। শরীর আর মন বত নির্দাম হরেই পড়ুক তবু পরেরদিন সকালে ঘুন্রামকে বের্তে হল। তিন তিনটে মাসের নিরাপত্তা। তার গুপর সমুস্ত বংশরের আছেদেনের প্রশন্ত

একেবারে বাঘ সেজে বের্ল ঘ্নরাম। প্রথমেই সে গেল দক্ষিণপাড়ার।

জন্য সব বছর সে আসা মার সাড়া পড়ে বেড। ঘরসংসার ফেলে সবাই বেরিরে আসত বাহিরে। তার পিছ, পিছ, একটা ভাষজমাট ভিড় আর মৌচাকের মত ভন্-ভামনি সর্বক্ষণ লেগে থাকত।

এবার কিবত খুনুরোমকে নিয়ে কেছ মাতক না। তাকে খিরে অনা অনাবার উদ্দীপনার যে তল নামে, এবছর তার ছিটে-ফোটাও নেই।

তব্ দ্রারে দ্রারে ঘ্রে গলার স্বর সংত্রে তুলে সেই গানটা গাইতে লাগত ঘ্দ্রোম, 'গণপতি বাস্পা মোরেয়া, প্রভূষা বর্রার লোকর এায়।' এত জোরে গাওয়ার উদ্দেশ্য ঃ নিজের অস্তিম্ব ঘোষণা করা।

খ্নারামকে দেখে যে দ্'চারজন ধে বেরিয়ে না এল, তা নর। কিস্কু তাদের চোখে মুখে অভার্থনা নাই, অস্তরংগতার কোন উত্তাপই অন্ভব করতে পারল না।

প্রা বছর এ গ্রামের বাসিন্দারা নিজে পেকেই ছুটে আসে। তার সঞ্জে দুটো কর। বলতে পারলে ধন্য হয়; কৃতার্থ রোধ করে। এবার কেউ কান্তে এল না দেখে উপযাচকের মত ঘ্নরামই এগিয়ে এল। গান থামিয়ে মুখে বিগলিত হাসি ফ্টিয়ে বলল, এবারও এলাম তোমাদের গ্রামে—'

লোকগ্লো বলল, স্মাস্তে বৈকি— ধলল বটে কিন্তু ভার মধ্যে আন্তরিকভার দ্বে বাজল না।

দ্-চার বাড়ি ঘ্রে ভাওজাদৈর উঠানে এসে দাঁড়াতেই ভাওজার জোরান ছেলেটা বলে উঠল, 'এবার আর নকল বাদের নাচ আমরা দেথব না। আসল বাঘ এসেছে। তার শেলা দেথব।'

পাঁচ বছর ধরে নোনপ্রায় আসছে
খুন্রাম। এ গ্রামের স্বাইকে সে চেনে।
নামও জানে। ভাওজীর ছেলের দিকে
ভাকিয়ে সে বলল, আসলা বাধ, নকল, বাধ
—কী বলছ বশোবশত!

বংশাবন্ত বলল, 'ভূমি হলে সকল বাব। ন্যাকড়া-খড়-কালি-ক্লিল দিয়ে সাজো। জার আসল বাঘ আছে উত্তরের টিলায়—'

অধাং সেই শশ্চা আর চিতাবাছ। ঘুনুরামের ধমনীতে রক্তপ্রাত ফেন খেমে যেতে লাগল।

মাই হোক, দ্বকৈ পশ্চিম আকাশের দেউড়ি-পার করিরে সারাদিন পর অবসাম পারে টলতে উলতে অ্নুর্রাম যথন ফিরে এল তথন তার ঝালিতে মোটে পাঁচটা পয়সা আর পোরা দেড়েকের মত চাল। পরের দিন উত্তর পাড়ায়, অবশেষে পশ্চিম পাড়ায় যেখানেই সে যায় সেখানেই এক অকথা। এ বছর কেউ তাকে কাছে টানার জন্য একথানা হাতও বাড়িয়ে রাথে নি। উত্তাপহীন নিস্পৃহ অভার্থনা ছাড়া কোথাও কিছু জোটে না। প্রত্যাশার ঝালিটি প্রতিদিন শ্নাই থেকে যায় অ্নুরামের।

এ গ্রামের বাসিন্দাদের অনেকেই প্রকাশ্যে
জানিয়ে দিয়েছে, বাঘের সং দেখতে তারা
উৎসাহী নয়। সতিকারের অরণাচারী
জাবিকত বাঘ যথন এসেই পড়েছে তখন
তাকে দেখেই তারা পরিকৃত হবে। অনেকে
জারার কিছাই বলে নি। হবে উত্তরের
টিলার চিতাবাঘটার দিকেই যে তাদের প্রকল
অনুরাগ সেট্কু অনায়াসেই টের পাওয়া

কদিন খারেই খ্নারাম বাকতে পারল, এবার আর স্থিবিধে হবে না। একটা গাঢ় গহন শত্বার গুপর জনত্ব সমত সন্তার গুপর জনত্ব রাম তার সমত্ব সন্তার গুপর জনত্ব রাম তার সমত্ব সন্তার গুপর জনতার নানপারায় আসে সে। কিন্তু কাপসি চার্কীদের মুঠি তার প্রতি এত কপণ যে, সত্তা খানোকর মত খোরাকিও উঠনে কিন্সক্রেই। এবার মন্ততার সব স্রোত, সব চলা উত্তরের চিলার দিকে।

যে মান্য নাটা মাস অধাছারে প্রায়
পদরে জীবন কটোয় তারপক্ষে বাকি তিন
মাস আয়েসনী না হলেও চলে। দিন একরকম
না একরকম করে কেটে বাবেই। কিন্তু
নোনপরোয় এসে সে যে মর্বাদা পায়, সেটা
কোথায় মিলবে? ঘুন্রামের মনে হল, তার
নায়সপাত আর চিরান্তন গোরবে শশভা
আর তার বাঘটা অতান্ত অনায়ভাবে হাত
বাড়িরেছে।

উरुत्तत िनात के नावते मूद्य जिन बात्मत नितामका जात भयामारे हिनिता त्नत्र नि. जना पिक शासक चून्त्राभरक करकरात्र भण्य करत खरलाह।

সকলে হলেই নাকেম্থে চারটি গ্রাক বাব সেজে বৈরিয়ে পড়ে খ্নুরাম। সমস্ভ দিন নেচেগেয়ে নোনপরো গ্রামের মনোহরণ করে সম্পোর মুখে শিবল নায়েকের বাড়ি ফিরে আসে। ফিরে কোনদিন রতির দেখা ফেলে। তবে বেশির ভাগ দিনই সে খাকে উত্তরের টিলায়। অবদা স্থ্যার অন্ধ্রার নামবার পর আর বাইরে খাকে না রতি। বাড়ি ফিরে আসে।

বাবের সাজ থাকা কালিয়ালি বাব বাবতে আসতে রাতের আরু একটি প্রহর পার হরে বার। সেই সমর রতি থেতে ভাকে।
থেতে থেতে নানা কথা হয়। তবে সব নাদী
সম্প্রে মেশার মত সব কথার শোরে বাজের
প্রসংগ আনবেই মেরেটা। প্রায় রোজই লে
জিজ্ঞেস করে, চিতাবাঘটা ভূমি দেখে এসেছ
সং?' থেতে থেতে ভাতের ডেবা প্লার
ভাটকে বার। বিশ্বাদর্শ্য স্বরে ছ্ন্রেমার
ভাবে দেয়া বা।'

কি আশ্চর্য, গ্রামের কোন লোকের বাঘটা দেখতে বাকি নেই। রোজ দ্বার চারবার করে সবাই গিরে দেখে আসছে আব ভূমিই শ্ধু বাছ না!' রতির মুখচোধ দেখে মনে হর, উন্তরের টিলার বাঘটা দেখতে না বাওরা রাতিমত অপরাধ।

ছানুরাম এবার আর কছে বলে না।
নিঃশব্দে নতচোবে ভাতের থালার আঁকিবাকি কেটে যার। রতি ভাতা লাগার, 'কালট কিন্তু যাবে সং। নিশ্চয় যাবে। আমন ১মকার বাঘ জীবনে আর কথনও তুমি দেখনি আর দেখাতেও পাবে না। তা ছাত্য ট খেলোরাড় শম্ভা—কি মজাদার লোক ফে

অম্ভূত ব্যাপার! অন্য বছর তাকে দেখা-বার জন্য নোনপরে। গ্রামের সব ইকে টেনে টেনে ব্যক্তিত নিয়ে আসত রতি: সে কী খেতে ভালবাসে, কখন খুমোয়ে কিভাবে বাহ সাজে ইতাদি ইতাদি নানা রাপকথা ছড়িয়া লেককে তাক করে। দিত। সে জানে এই বতি—কালো ময়্রীর মত শিবল নায়েকের *७३ प्रारा*को, এकके, हेमाता *(भरन* এकपिन তব পিছ, পিছ, চানদা জেলা পর্যনত চলে যোত পারত। কিন্তু প্রতাহের আসংখ্য অপ-য়ান, অধাহার আর অনিশ্চরতার জীবনে রতিকে ডেকে নিয়ে যেতে ভরসা হয়নি ঘনেরে:মের। তা'ছ ড়া নোনপারার এই একটা মাস বাদ দিলে প্রাণধারণের জন্য প্রতি মুহুতে ভার যে সংগ্রাম, সে যানুরামকে স্বভাবভার_ি করে রেখেছে। বভিকে ডাক দেবার মৃত দুঃসাহস নিজেং মধ্যে কোন দিনই সে **খ**ু**জে পায়নি।**

খন্রাম নিজে ষেমনই হোক বডই তার
ক্রীর্ভা থাক, রতি কিন্তু এতকাল তাকে
নিরেট মেতে ছিল। তার গৌরবে সবক্রিণ
ক্রিকল অর উছ্নিসিত হয়ে থাকত সে।
আশ্চর্য সেই রতিই আজ উন্তরের টিলার
চিতাবাঘ আর শশ্চাকে নিয়ে প্রমন্ত হরে

ৰাই হোক রতি আবার বলে, 'আমি জানি ভূমি নিজে থেকে বাবে না। আমিই ভোমাকে বাঘ দেখতে কাল নিরে বাব।'

খ্নারীয় উক্তর দের না। শুধা অসহা অক্ষয় আরোশে তার ব্কের ভেতরটা তর-লিগত হতে থাকে। নার, শশ্চা আর ভার কল দে দ্যাধেনি; দেখার বিদ্যোগ্র সাধও নাই।

দেশতে দেশতে গলেশ প্রেরা একে দেল। নোনপ্রা গ্রামের উত্তেজনা, উদ্দীপনা এবং রাজামাতি একুন শীববিদ্ধাতে। উদ্যাহানী ভানমান গ্রামা শেষবারের মত ভানরে নামাল। মান্র এখন উন্দাম, ছিনেবহান। বেসরেরা। এ সমরটা বদি ভাদের খালা করে কছা আদার করা যার। অভএব যতখানি সম্ভব নিশাত করে বাঘ সাজল খ্নারামা; দারীরের সমস্ভ দার দিরে নাচল-কুদদ এবং মসপ্রাপ ঢেলে দিরে গাইল। কিন্তু এবার নানপ্রার মান্বেরা যেন প্রতিজ্ঞান্ত করে বাস্তে তার দিকে ফিরেও ভাকানে না; কঠিন দিরে শুখা দ্বেই সরিরে রাখনে।

ঘনেরামের কেমন ফোন সংশন্ন হল, এতকাল নকল বাঘ সেজে আসল বাবের মর্যাদা পেরে এসেছে সে। নোনপ্রার মান্র আসল-নকলের পার্থক্য স্কুতে না পেরেই বোধহুয় সে মর্যাদা দিয়েছে। এখন সভাকারের বাঘটা এসে পড়ার তফাতটা ধবা পড়ে এবং সংগ্যাসন থেকে এবা তাকে একেবারে পণের ধ্লোয় ছাড়ে দিয়েছে।

আরো কটা দিন কেটে গেল। বার্থা, পর উত হতাশ ঘুনুরাম আজকাল আর বাছ সেজে গ্রামে বেরোয় না। কী-ই বা হ'ব বেরিরে। শুধ্ শিবল নায়েকের বারান্দায়, দ হটিরে কাঁকে মুখ রেখে শ্না দ্লিটতে অ'কাশের দিকে তাকিয়ে থাকে আর ভাবে উত্তের টিলার যে বাঘটা তার সমূসত মুর্যাদা ভিনিয়ে নিয়েছে সেটা কেমন? একদিন সে পণ করেছিল, বাঘটা দেখতে কোনদিনই যাবে না। নোনপ্রা গ্রামের আর স্ব জারণ[া]তেই গোজ সে। শুধ**্** ঐ উত্রের বিলাটাই এতথানি বাদ থেকেছে। কিন্তু ধীরে ধাঁরে প্রবন্ধ বিতৃষ্ণা দিয়ে গড়া শপ্রথের জিতটা কখন যেন শিথিল হয়ে গেছে: ংফাল নেই। ঘুনাুরাম দিথর করল বাঘটা দেখতে যাবে।

বিচিত্র এক বিশেষ আর উত্তেজনার মধ্যে বেদিন সারা দৃপেরে বসে বসে বাছ সাজ্জ্য থনেরোম। ভারপর স্থাটা বখন পশ্চিম আকাশের দিকে অনেকখানি নেমে গেছে সেই সমর পারে পারে উত্তরের টিলার চলে এল।

আজ গণপতি-উৎসবের পঞ্চম দিন।
খনেরাম এসে দেখল, উন্তরের টিলার একেকারে মেলা বাসে গেছে। এখানে ভিড় জ্যাতে,
নোনপ্রা গ্রামের কেউ ব্রি আর বাকি
নেই। আর ভিড়টার একেবারে সামমে
দাঁড়িরে ররেছে সেই কালো মর্রী—রতি।

সভাই দর্শনীর ব্যাপার। ভিজ্ঞা বেথানে শাব হরেছে ভার পরেই লাল শালার একটা সামিরানা খাটানো। সামিরানাটার ঠিক নীচে বিশাল লোহার খাঁচা। ভার ভেতরে একটা চিতাবাদ শারে আছে।

আর খাঁচার গারে হাত রেখে একটি দীর্ঘদেহ ব্বক দাঁড়িরে রয়েছে। সেই বোধ-হব খেলোয়াড়—সাতারা জেলার শভ্যা: বাঁত বা বলেছিল, যিখো নর। সতিটেই শভ্যা ল'প্রেৰ। শরীরম্বর থরে খরে সাজনো শেশী। তার হাড-পা, চওড়া কবর্জি, বিস্তৃত ন্ক-সবই বল্পালীতার প্রতীক। বাবরি চূলে বাঁকা সি^{শ্}র্থ নাকের নীচে স্কা শেশিবন গোঁক। চোথের দ্খিতত খানিকটা অবজ্ঞা মেশানো।

পরনে গোলাপী গোঞ্জ আর খাটো হাফ-প্যান্ট, হাতে লিকলিকে ছড়ি। ভিড্টার ওপর দিরে ধাঁরে ধাঁরে চেম্থ দুইটি একবার ঘ্রিরে নিয়ে শভ্চা আরম্ভ করল, ও বাদ বড় তেজী। খোদ সাতপ্রা পাহাড় থেকে পনের দিন আগে ধরা হয়েছে। কিন্তু অন্ম একে পোদ মানিরেছি। এ আমার কথায় ওঠে, আমার কথায় বন্দে, হাত জোড় করে নমস্কার করে। মন হলে গানও গার।

াধের গণে সন্বদ্ধে ক্ষনা একখন।
ফিরিনিড দিয়ে শশ্চা বা করল, ভাতে সবার
শ্বাস বেন রুখে হয়ে আসতে ক্রাক্তার
চিকতে খাঁচার একটা পাল্লা খলে দেউ'র
চাকে পড়ল সে। ভারপর বাঘটার কাছে গিয়ে
ছড়ির এক খোঁচা মেরে বলল, 'ওঠ বাটো ধ্বা দ্বিয়াকে একটা সেলাম ঠাকে নত দেখা'।

বাঘটা কিন্দু উঠল না। চোখ দ্টো বার-কায়ক পিট পিট করে আবার ঘ্রিময়ে পড়ল। শুশুভা অনেক খোঁচাখান্চি এবং টানাটানি করল। এমনকি ভার মূখ খালে একখানা গাভুট পারে দিলা কিন্দু বাঘটাব কোন বিকার বেই: ঘ্রের আরকে সে ভূবেই রইল।

এদিকে সামনের ভিড়টা শতব্দ, মন্ত্র-মন্দে। আর রতির তো কথাই নেই। দ্র-চোপে অপার অসীম বিক্ষয় নিয়ে একেশারে সম্মোহিত হয়ে গেছে মেয়েটা।

স্বার পিছনে দাঁড়িরে ছিল ঘ্নারাম। আছ্প্রের মত কখন যে ভিড় ঠেলে দে সামনে চলে এসেছে পেয়াল নেই।

ও-দিকে খাঁচার ভেতর থেকে বাইরে এসেছে শম্ভা। এসেই সে কলল, 'না কাব্-মশারদের কাছ থেকে দ্-চার পরসা নজরান; না পেলে ও বাটো কিছাতেই উস্বেনা। সেলামও ঠ্কবে না, নাচও দেখাবে না।'

কলার শুগু অপেক্ষা। সাপ্পে সংগ্ণ চার-পাশ থেকে সিকি আধালি, এমন কি এক টাকার নোটেরও বৃদ্ধি আরম্ভ হল। তাছাড়া ম্থে বাঁধা ভোট ছোট চাগের থলেও পড়তে লগেল।

শতদিভত খনেরাম দেখতে লাগল। এই আগে এক মাস খ্রে খ্রে এ এম থেকে সে যা আদার করতে পেরেছে একদিনেই তার দশগ্প বেশি পেরেছে ঐ শশ্তা আর তার রাখ।

হঠাং ঘ্ন্রোমের মনে হল, জগতে যদের কাছে যত বশুনা যত অপ্যান যত তার্যাদা দে পেরেছে, খাঁচার ডেভর শায়িক ঐ বাঘটা তাদের সবার প্রতিনিধি। বাঘটা তার সমসত গোরব ছিনিরে নিরেছে, নোন-পরো গ্রামটি তার কাছ খোকে অনেক দারে সরিরে দিরেছে। এমনকি কালো মহারীর মতন ঐ মেরেটাকে পর্যালত সংশাহিত করে ফেলেছে। অসম্মানের শেষ প্রান্তে পেণিছে

এক প্রথমবার নিজের শোরো জনলে উঠাত চাইলে ঘুন্রাম। হঠাং শম্ভার উপেশো চিংকার করে উঠল দে, 'এইটা মরা বাঘ নিরে এসে বাহাদুরী দেখালো হক্ষে।'

পয়সা কৃড়তে কৃড়তে চকিত হল শশ্ভার।
ভাবপর বিদাংবেলে উঠে দাঁড়িরে খান্রামের
দিকে তাকালেন। বাঘের সংটাকে দেখতে
দেখতে তার ভ্রা দটো ধারে ধারে উথিত
হল। চোখের দাঁড়ি প্রভাবে সেই বাঁকা
বিদ্রেশ তাঁকা হতে লাগল। চিবিরে, চিবিরে
অনজ্ঞার স্রে সে বললা, 'আমার বাঘটা
মতা।'

'নিশ্চর ।'

'আর তুই ব্বি জাা**ন্ত** বা**থ।**'

শৃশভার বলার ভাগ্গতে ভিড়টা হো-হো করে উম্পাম হাসিতে ভেগেগ পড়ল।

আর সেই হাসির আওয়াজ ভূবিরে দিরে গজে উঠল ঘুনুরাম।

নিশ্চয়ই আমি জ্ঞানত বাছা। এক মহেতে কি ভাবল শশ্ভার। তার-পর আগের মতই চিবিয়ে চিবিয়ে বলল 'কে লানত আর কে মরা'। একবার পর্থ করিব? লড়বি আমার বাঘ্টার সংশা?'

খ্নেরেম লক্ষা করল, চারপাশের মান্ত্র-গালো এবার আর হাসল না। দ্রেকত লভে-গতিতে তার সন্তার মধা দিরে একটা প্রতি-কিয়া ঘটে গোল। মনে হল, ঐ বাঘটার সঞ্জো সংশ্বে নামলে সে তার হারানো গোরব আবার ফিরে পাবে। খ্নারাম বলল, 'নিশ্চরই ল্ডব।'

'আয় তবে'। বলে বাঘের খাঁচার পাল্লা খলেতে শরে, করল শম্ভা, 'শেষে কিছা, হলে আচায় দোষ দিবি না।'

'না দেব না।' অনামনকের মত কথা ক'টা বলে আরেকবার ভিড়টার দিকে তাকাল দ্নেরাম, রতিকে দেখল। অন্ভব করল, সবার হাংপিণ্ড থমকে গেছে: নিশ্বাস আর পড়াছ না কারে।। দত্তথ নিজ্পল্লক স্বাই তার দিকে তাকিয়ে আছে।

সবাইকে দেখে বিচিত্র **যোরের মধ্যে** শীচায় গিয়ে ড্কেল ঘ্ন্রা**ন্ন। সংশ্যে সংশ্** পালা বংধ করল।

শাস্তা যথন ঢকেছিল তথন বাছটা বাবক্রমেক চোথ পিটপিট করেই ছ্মিরে পড়েছিল। কিব্ছু ঘ্নরোম চ্কুডেই চোথ মেলে
ভাগ্ডুডেশনি একটা জানোয়ারকে দেখে কি
যেন ব্রুডে চেন্টা করল। তারপর গা-ঝাজা
দিয়ে লাগে ফ্রিলেয়ে উঠে দাঁড়াল। এবং
দ্নেরাম কিছা ব্রুবার বা করবরে আগেই
দার ঘাড়ের কাছে প্রচন্ড এক থাবা এলে
পড়ল পরম্ছাতে আরেকটা। স্পো স্পেল
তার মনে হল চেত্নাটা কি এক অংশকারে
সেন কমল ডাব যাছে।

লোকগট্লো বোধহয় চারিদিকে ভরাত চিংকার ভাডে দিয়েছে। কিক্ত তা ব্যক্ত পারতে না ঘ্নরোম। মনে হাল্ক দ্রোগতে কীপ একটা ওজন কানে এলে লাগছে। সেটাও বেশিক্ষণ শোনা গেল না। আহত বভাত মার্ডিদি ঘানাবাল মাহাতে লাটিল পাত্র।

জাবিনে চির্দিনট বাশের সং সেজেছে ঘান্বার। এই ওক্সা সার **এক্সার বাদি** হরে উঠতে চেরেছিল সে!



কুমারনাথ যে শেষপর্যশ্ত বিয়ে করবে, 'আকাশে আমন ধান' কেট এমন কংপনাতেও আর্নোন। উদয় দত্ত আর্ও একটা বেশি স্বস্মবাদী বলে সে কুমার-নাথের বিয়েতে বর্ষালী হিসেবে হাজির থেকে দম্ভুরমত হৈ-হাল্লোড় করবার পরও বিশ্বাস করতে পারছে না যে. সাতাই এ-ধরনের অঘটন সম্ভবপর হয়ে গেছে। জুতোজোড়াতে দিবতীয় দফা পালিশ ঘৰতে ঘৰতে সে আপন মনে হেনে উঠল, বাঃ, বেশ মজা তো—কুমারের বিয়েটা উটিডেয়ে দিচিছ, অথচ তার বৌভাতে ধাবার জ্ঞান্যে আধ্যণটা জ্বতোই চক্চকে করছি।... **হাসির রেশ** বেশিক্ষণ রইল না। উদয আরও খানিকক্ষণ বিনামাবিলাস করে খুশী মনে উঠে দড়িল—জ্বতোর গায়ের চামড়াটা আয়নার মত কক্ককে হয়েছে এবার! যে ভর মগ্রে 5 কৈছিল 'A man is judged by his shoe'. ভা মনে নেই, ডবে এই বাণীট্র মন থেকে মছেতে পারে না। এখন তবং নিদিন্ট আয়ে তার আছে, জুতোতে তালি না **লাগিয়েও পদম**র্যাদা বজার রাখতে পারে---যথন জীবনধারণের জনা প্রতিম্যাতে জোড়াতালি দিতে হত সে-আমলেও উদয **ভাফসোল-**দেওয়া জাতো পরত না। উদয **मख तमा वर्ध्या** (श वरल, 'भव्यश्रीमाहे।' ফালতু কথা নয়, দস্ত্রমত আচার-আচরণেও প্রতিফলিত হওয়ার মত মল্য-বান কম্যাণ্ডমেণ্ট।

পালিশ হরে শাওরার পর च.एडा ধ্মপান করা চলে। হাতে পাকানো সিগারেট টানতে টানতে আবার কুমার-নাথের কথাই মনে পড়ল। আড়চোখে জুতোর পালিশটা পর্থ করে উদয় মাথা নাড়ল-না, অবিশ্বাস করার কোন মানে ্ছর না। বিয়ে না করলে হয়তো কুমার ্র ছোকরার জীবনের স্থো আদর্শের সংগতি বজায় থাকত। অথবা **বে-মে**র্টেকে সে ভালবাসে বলে সবাই জানে, তাকেই যদি কুমার বিয়ে করত, তাহলে এই একটা দ্বঃসাহসিক কাজের নজীরেই সে আদর্শেব ় দিক দিয়ে অনেক বড হয়ে যেত। তা হতো ্ বৈকি ! আর সেটাই কুমারনাথের মত ্ৰেরাড়া ছেলের পক্ষে অতাত্ত প্রভাবিক কাজ হত। কুমারনাথকে বেয়াড়া বলকে খাটো করা হয়, আবার উদয় বা নিখি-কালেতর মত নিতাল্ড সাধারণ ভাবকেও ্ ভুল করা হয়। ওর সপো আর কার্ত্র বোল আনা ফিল নেই। তাই ওকে খিরে অনায়াসে অসম্ভব জবপনা-কবপনা করা চপে।

বে হাই হোক, কুমারনাপের চরিতের সংশ্য গৃহপালিত স্বোধ বালকোচিত বিরে কৈহণদ বেমানান হলেও বাস্তবে এটা ঘটেছে। অভএব উদরকে আজ কুমারনাথের বৌভাতে কেতে হবে। না গিয়ে উপার নেই।

ৰাথর্ম থেকে ফিরে এস উদয় দৌড়ল ডাইং ক্লিনিং-এ। পাঞ্জাবি না পরে গেলে নেমন্তরবভিতে কেমন বেখাস্পা লাগে নিজেকে ৷—'ধোপদ্রস্ত' দোকানটার নাম। পাড়াতে এই একটিই ধোলাই-ছর। কথার সিক রাখার গরজ দোকনাদারের দয় ! আৰ্কেণ্ট কাচাতে চার-পাঁচদিনও শেগে যেতে পারে, এবং সব ব্যাপারে দোকানদার যোগেনবার খনে সিধে কথার মান্ত-ম্খের ওপরই বলে থাকেন-গদিচ্ছেন বটে আর্জেণ্ট, দেরি হলে তো আমাকে দ্যোকন মশাই। আমি বলৈ কি আডিনারীই দেওয়া ভাল, ভাতে কাপড়ের লঞ্জিবিটি বাড়ে। আমার নয় দুটো প্রসা লোকসানই হাবে---তা বলে এই মাগ্রিগণডার বাজারে—।' আজত সেই দশা হল, উদয়কে ব্যাজার মূথে খালি হাতেই ফরতে হলো।

পথে দাঁজিয়ে এদিক-ওদিক এক নজর
দেখে নিরে সে ট্ক করে হরিপদ
মাখ্যেজর বৈঠকখানাতে চ্কল। হরিপদ
মানি প্লাণেটর প্লানের জল পাল্টাজিলেন,
মুখ তুলে প্রশ্ন করজোন—কি মনে করে হে
বিজয়বাব! হরিপদকে উদয় আনে পদ্ধক করেন না। কডকটা র্ক্সম্বরেই বলল অনা-দিকে তাকিরে—বিজয় নয়, উদয়, ব্যক্তন।
হাঁ, এই আংটিটা রেখে দশটা টাকা দিতে

—কই মালটা হাতে দাও, পরথ করে দেখি। আলগা হাতে আংটির এজন পরখ করে বললেন—ভোমাদের না দিলে কি পাড়াতে বাস করতে পারব! তা দ্যাখে বাব, সেবারের মত স্কুদের পরসা হজম করে দিও না:

উপর হাসতে হাসতে ধলদ—সে-টাকা তে আমি নিটাম, নিরোছ কুমার। তা আপনি বে তেমনি পঞ্চাশ মণ সাধানের ডিউটি মাফালি ফালি মারলেন, সে তো কুমারের দৌলতেই। — শা, শা, তা নয়। এমনি বলছিল্ম

হে। তা সেই—তোমার কুমারবাব্ বাঝ

বদলি হরে লেলেন। দ্যাথো দেখি ক্যাসাদ্
বচা নেই. কওয়া নেই. হটে করে নতুন

একটা ইন্সপেক্টার হামলা করে গেল।

তোমাদের আকেল থাকলে বদলির খবরটা

দেওয়া কর্তবা ছিল।

and the second

—আমার জলদি দিন, তাড়া আছে। সংধাতে একটা নেমণ্ডম—

প্রম বিজ্ঞ হাসিতে রেখাবহুল ম্থ-খানা তুলে একবার তাকিয়ে হারপদ বল্লেন—কোথায় নেমশ্ত্র —ট্যাকা-ফারো নিয়ে চললে বে সোনাগাছিতে ব্রিষ

ট্যকাট্য এখনো হস্তগত হর্মন, এ-অবস্থার
থামোখা ঝগন্থা বাধিয়ে অস্থিবধরত
পড়তে চার না উদয়—নইলে সে হরতো
হরিপদর বাপ-পিতেমো তুলেই বসত। মনে
মনে সে গালাগালি দিল, জানোরার:
একটা অসহিক্ষ্ নিঃশ্বাস ফেলে কোনেরক্রে
উপতে উম্মাকে সামশন নিল উদয়। টাফা
হাতে নিয়ে সে জনুলদত দুফ্টিতে হরিপদর
চোগে গোখ রেখে বলল—আংটিটার পাথরখনারই দাম পঞ্চাশ টাকা, ব্যাকান!

—তা কি হরেছে তাতে। পাঁচশ' টাকা হলেও ক্ষতি ছিল মা। তুমি তো আছা ছেলে হে এখনো কথাবাতীয় ঝাঁজ মারনি —কুটকুটে বাচেলার কিমা।

ছরিপদ মাখাদেজর ঘর থেকে কেউ বের্লেই ভার দিকে পাড়ার লোক তাকার। এমনই সহজভাবে তাকালে তো ক্ষতি ছিল না, যাকে দেখছে তার নজব বাঁচিয়ে দাদে—যেন লক্ষাই করছে না। সবাই জানে এ-ঘরে যে ঢোকে, সে ফেক্রে' হরেছে ঠাট বজারের দারে পড়ে। খানে আসে সবাই কিণ্ডু জনের নজক শাঁচিরে।

কুমারের বোভাতে কি উপহার দেবে
উদয়; বই, ফ্লেদানি, টেবিল ল্যান্স
কোনটাই মনোমত লাগছে না। দশ টাকার
মধ্যে একথানা শাড়ি হবে না? শাড়ি কিবো
রুপোর সিন্দ্র কোটো ছাড়া অনা কিছ্
দেওয়া সংগত নয়, কেননা কুমার তার বাপদাদার প্রথদকরা মেরেকে বিয়ে করেই
রংচটা সামাজিক জাঁব প্রতিপক্ষ করেছে
আপনাকে। অথচ এই ঘরকলার ছকেবাঁধা
স্বিধাবাদী জাঁবনের ওপর ওদের সকলেরই



ক্রসন্ত অবজ্ঞা। ওরা চোখের পর দেখছে, বিশেষ করে গ্রেপালিভ বিবাহিত মান্ব-গ্রেলা একনাগাড়ে আপন স্বার্থচন্তে স্থা-চন্দের সংশ্য তাল বজার রেখে পাক দিরে কাটাকে। এদের কাছে দেশ, সমাজ, কিছুই কিছু নর। ...উদর মনে মনে কুমারনাথের দাম্পত্যজীবনের ছবি আঁকে। তার চোম কুচকে এল, ঠোঁটের ডগার অফলীল ভাজিলোর হাসি ফুটল। বিভু বিভু করে উঠল সে—কুতার ডিম, শুরোর!

সংটেকেসটা খ্লে উনয় জামা কাপ্ড বাছতে লাগল। প্রেমা পাঞ্জাবি একটা ছিল, ১ সেটা কোথার যে গেল—। কোন্ নবার দরকারের সময় নিয়ে শট্কেছে আরু ফেরড দেরনি—এখন ভূমি মরো। সেটা যে বেপারা তা উদরের মনে ছিল, তব্ একবার উল্টেপ্টেড তালো করে দেখে নিল। ফো খ্লেডে পার্টেই পাঞ্জাই গাঙ্কাই একট্ নিজেকে আহাম্মক প্রতিপায় করে একট্ বুখাই হল উদয়। আজকাল সে আগের মত আর নিজেকে হাট্টেই ব্রিখমান ভাবে না। খ্লিয়র স্ব মান্ত্রেক নিবোধ কলে জ্যাট্কুর মাধেও প্রেমা তারাম নেই—এখন নিজেকে মাড় ভেগে তব্ কিছট্টা স্থা পাওরা মাডেড। এটা মন্দ নর।

কিন্তু দুটো শাট হ'ডা জুতীয় কোন লামা নেই। শাট দুটোর বয়ন বছরথানেক হবে। হার্ট, ডা হবে বে-ওকোর।

বেলারাণীর পাঞ্জর কারবারের প্রথম আমলে এ দুটো অভার দিয়ে **তৈরী** করিরেছিল উদয়। এক বছরেও শার্ট সুটোব আয়ে অক্ষা থাকার কৃতিত কাপড়ের মিনের নর-প্রভার। বেলার হাতের গ্রেণ জামার ব্ৰু পেট হাতা সবই প্ৰায় সমান প্ৰশৃত। ভারিফ করে উদয় বলেছিল-খাটি ডেমোরেসী এবং প্রথম প্রথম সগৌরবে এই শার্ট গায়ে ঘুরে বেড়াত সে। বেছেডু বেলাকে কাটা-কাপড়ের কারবারে দামাদোর ম্লে ছিল কুমারনাথের অসাধারণ মগজ, সেহেতু উদয়ের এই রসিকতার কুমার হাড়ে হাড়ে চটে যেত। একদিন সে আর সামলাতে না পেরে বলেছিল—দোহাই তোকে আমি চারটে জামার খরচ দেব, ওই শার্টা দ্টো ভূই পর্যাড়রে ফেল...। বেলারাণীর ম্থখানা মনের ভেতর ঘোরাফেরা শ্রে করছে। উদয় অকারণে দীর্ঘশ্বাস ফেলল।

উদর একটা শার্ট বার করে চেটিকর ওপর রাথল। শার্টটাকে যিরে অনেক ট্রকরো ছবি উদরের মনের অলস পরেঁ আঁকা হরে যাছে। বেলারাণী এখন বি করবে? প্রথম যেদিন উদর গিরেছিল বেলারাণীর ঘরে সেদিন এরকম কোন শ্রুম ওঠেনি। বরং দ্ব-চারটে রসের কথাই ব্রেছিল উদর। এমনকি, যেদিন কুমার নিলিকাশ্তকে ঢালাও হ্রুম দিল—আজ বেকে ভোমার বাড়ির বা পাড়ার কোন ফেলেমেন্টের বেলি-বির ভামার ভার্ডার আমি ভাজে আর কেন কেট মা পার্যনে বিদিন থরা স্বাই অবাক হলেও ভাবজে পারেছিন

থে, কুমার লেব পর্বাক্ত রাজারের এক

পেশাদার বেশ্যাকে স্পেকে আনার জনা

সেলাই কল কিনে দিরেছে এবং ভার জনা

অর্ডার কুজিরে বেড়াছে। ওরা ভেবেছিল।
কুমার নিজেই বৃথি দির্জার দোকান দিরেছে।
বখন আসল ব্যাপারটা কুমার ভেঙে বলল

তখন উদরই প্রথম গলাবাজি করে ব্লেছিল

—আমার ভাই দ্টো শাট তৈরী করিরে

দাও, মজ্বী কিন্তু অন্যাদজির চেরো না

ভোমার মত আবগারীর ঘ্র ভো জোটে না

কপালে।

মৃথ্যতঃ কুমানের পেরারের নেক্সেমান্র হলেও বেলারাণী ওদের সকলের সপো দিনে দিনে অকতর্পা হরে উঠেছিল— না. দিনে দিনে একটা একটা করে নর, দাদিনেই ওর অকতর অকপট দিবধাসকোচ শানাভাবে খনে দিরেছিল বেলারাণী, বাক্ষী দিন-গালো কেটেছে সেই অকতর্পান্তার মিশ্টি শ্বাসটাক উপভোগের আন্মেক্ত। অবশ্য সেহ-বিনিমারের সপ্পর্ক বিলার সপো কুমার ছাড়া, ওদের দলের আর কার্র ঘটেনি। তেমন ইচ্ছে হলে ভূমি অন্য ঘরে বেন্ডে পার, এই ছিল ও-পাড়ার দপ্তর—ভা দরকার পঞ্চলে অন্যত গিরেছে স্টকি বাকী সকলে।

ও-বাজারের নিরমই এইরকম। অন্য অচেনা পরেবকে খরিন্দার হিসেবে চ্ছেরেরা কারবারের রীভি **প্রথা অন্যায়ী স**ব কিছ্ই করবে, খোদ থরিশার ছাড়া ভার সংগী-সাথী-ইয়ার-বর্ণ্যাদের থাতির বন্ন করতেও বাধা নেই, কিম্ছু শেষ সীমার নেহ বার বন্ধ রাখাই আদ্ধ। এট্রকু বে মেরেয়ান্ব না মেনে চলে সে লাঞ্চিত হর, পক্ষাণ্ডরে কোন পরে, ক্যান্ত্র যদি এই সীমা ডিঙোতে চার তবে ভারও কপালে দ্রগতির অশ্ত থাকে না—ভাকে দেহবিলাসিদীরা চরিতহীন আমান্য বলে চোখ ব্যক্তির ঠোঁট উল্টেখ্য ফেলে মুখ ফিরিরে নের। তা বলে বেলার ক্ষেত্রে এজাতের প্রকাই **ওঠেমি। বেকা হয়তো বরলে ওদের চে**রে দ্-এক বছরের বড়ই হবে, তব্ম 'দাদা' বলেই সন্তোধন করে। ওর আচার-জাচরণে ধনিষ্ঠ বন্ধারের সার ঝারে পড়ে।

মেরেডিকে উদরের ভালই লাগত—ভাল
লাগত ওর গানের কণ্ঠ, এর কথা বলার
বিশেষ বরনেও একট্ অবিবেশন মাধ্রবা
পেরেছে উদর। কুমার বে ওই মেরের প্রেমে
পড়ে গেল সেজন্য কেউ ওরা এতট্কে
আফ্লোস করে নি। বরং নিজেদের
উপার্যহীদভার প্লানিতে নিজেকে কুমারের
কাছে থাটো বলেই মনে হরেছে উদরের।
সেই আক্রেপ মেটাবার মানসে উলর প্রেম্
অনা মেরের সংগো সম্পর্ক পান্তাতে কেটা
করে বিফল হরেছে। এই ব্যথাতার ক্রমা সে
নিজেই গারী—ভিবা সেরুক্র বনের মন্তা
মেরের না পাওরাই হেন্ডু ভা ভাল করে
ক্রেমে সংগো করেনি—ভবে এইকুনে বেন্দ

ब्रुट्साह रहे, नवहिं नव काक भारत ना। कर्षार केनद कांक्र कुमात श्रीक नदा।

া..নাঃ আরু বাজে ভেবে সময় বইরে
লাভ নেই। বা হবার তা তো হরেই গেছে।
আসর্গ আরু বাল্ডন, ক্রুপনা আর ঘটনা,
এক পথে হাটে না। কুমারকে দেবে দিরে
কি হবে। হরতো উলরও এমন ক্রেডে অনা
ক্রিছ্ করঙে পারত না। এবার ভাবনা
রেথে নিজেকে ধোপা-ম্চির বিজ্ঞাপন
সাজিরে বিরেবাড়িতে চটপট হাজির হওরা
দরকার। পথে কুমারের বৌ-এর জানো
একখানা খাড়ি কিমতে হবে।

চাশিক্ষা রংটার মোহ উপর কিছাতেই
কাটিরে উঠতে পারল না। বিরের দিন
কুমারের বাঁকে একনজর দেখেছিল বটে,
তবে এখন কিছাতেই মনে করতে পারছে
না—মেরেটি দেখতে কেমন, এমন কি ভার
গারের রংটাও নর। তবে মেরেকে কেমন
মানাবে সে ভারনা বাদ দিরে বাদ কাপড়
দেখে প্রুদ্ধ করতে হর ভাহলে এই চাশা
রংকেই দেরা বাদ মেনে নেওরা ছাড়া উপার
মেই। দামও ডেমনি। পকেটের সব কাটি
খারে মাছে ব্যিরেরে গেল। ভা বাক, ভা বলে
নজরকে অগ্রাহা করতে পারবে না উদর।

সে তো নিশিকাশত নর বে, সব সমর্ম হিসাবের খাতা চোথের সামনে মের্টে ফলবে। আর কুমারনাথের বিরেও মছরে দশবার হচ্ছে না। মোট কথা কুমারের বিরেতে উদর বে দরেখ পেরেছে সেটা ভার একাশত ব্যক্তিগত হরে থাকাই ভালো। সে কুমারকে ভাশবাসে, কর্তবাট্কু অশতত করতেই হবে।

লপড়খানা কিলে নে লোকানদায়কে বলল—হ্যা মলাই প্ৰজ কর্বে ভো—নাকি?

একগাল হেলে বাড়ো লেলসম্মান চোৰ মটকে জ্বাব দিল—আপনার নজর আছে। বিনি পরকেন তিনি বেশ কর্সা নিক্তরই।

—ভাহতোই ফাসানে ফেলালেন দেখাঁচ!
লিকলিকে বাড়খানা বতদ্ব সম্ভব কাং করে
বড়ো বলল—চোখ বজে নিয়ে বাম আপনি।
এ হল নোকানের সেরা মাল, বে গারে
চড়বে দে গারের রং কিছা না খোক দ্বপোঁচ খোলতাই মাল্য হবে।

মানানসই প্যাকেটে গৃছিরে শাড়িখানা বগলে নিরে দোকান খেকে নেছেই উদরের মনে হল যেন বড় কিদে পেরেছে। পড়েট হাডড়ে সব মিলিয়ে বা পরসা শেল ভা থেকে এক কাপ চা খঙ্রা হর, টোস্ট খেলে কার নিগারেটের পরসা খাকে না। পথ চলতে চলতে ছিলেব করল উদর, আবার কালই গোটা পাঁচেক টাকা কার্র কাছে ধার করতে হবে।... মানের শেকে বিশ্বের মোকক্ষম খাওরা কেম ব্যক্ষারী।

ভথ্য হরিশার কাছে আরো গোটা পাঁচেক টাকা নেদি চাইনেই হস্ত। ভারতে আগায়ীকাল শিক্ষান্তি পণ্ডতে হস্ত কাঃ কিন্দু বোল টাকা দিয়ে হুট্ করে শাড়ি কিনবে উদর কি তা জানত। নাঃ কাজটা বন্ধ বেমকা হরে গেল। বাজেট ছিল দশ, হাতে যা ছিল তাতে মাসটা লেংচে পার করা বেড—। দশ টাকা ধার করা কিছু বার হিসেব হয় নি, তার মেজাজ দিন দিন লকা পাররার মত হয়ে উঠছে—হাতে প্রসা থাকলেই খেয়ে-থাইরে দিলচস্পি করে ফ'ুকে দিতে পারলেই স্বগ্স্থ!

বিরক্ত হয়ে উদয় নিজেকে জব্দ করবার জনা সংক্ষপ করল—স্যাংশন হল না। নো চা—। সিগারেটের ধোরা লাগিয়ে ক্ষিদে বাগিয়ে রাখ, একেবারে লচ্চি মাংসে উস্ক দিও।

পানের দোকানের ঝাপসা আয়নাতে
নিজের স্রত দেখে উদরের হাসি পেয়ে
গেল। ক'মাসে বেশ মোটা হরেছে তো
উদর: আরো একট্ ভাল করে দেখল—
বাঃ বাঃ, শার্ট তো নর বালিলের খোল
পরেছে সে। এই সাজে তাকে দেখে বিয়েবাড়িতে সবাই কি বলবে! কুমার তো ক্লেপে
আগনে হবে। দেখে নির্যাত সে চিনতে
পাররে, বেলারাপীর হাতের ছাঁট। শার্টের
হাতা কত কুচ্ছিত বানালেও বেলার নিজের
হাতের গড়ম কিম্তু ভারি স্থের গোল

অমন বার হাতের গড়ন—নরম কিন্তু টান-টান, সেই হাতের এই স্থিট। কুমারের বেমন খেয়েদেয়ে কাজ ছিল না। বেশ্যাবৃত্তি ছাড়িয়ে বেলাকে বেহুলা সতী করার আর পথ খ'লে পেল না হতভাগা। সেইকালে উদয় বর্লোছল—'ওসব ব্জর্কি রেখে চিভিরাকে শাদি করে ফ্যাল।' কুমার দীর্ঘ-নিশ্বাস ফেলে উত্তর দিয়েছিল—'এটা তারই ফার্স্ট স্টেজ রে। ওকেও ডো একটা ওয়ে रमिथता पिए इरव। आधि योप भामा টি-বিতে ফোত হয়ে যাই তখন কি আমার বাপ-দাদা আমার প্রস্-ওয়াইফকে পাতা দেবে? আরে ভাদার, বিয়ে করব বলেই তো এত ঝান্ধ শোয়াচ্ছি। ওরও একটা ভোকে-শন্যাল ট্রেনিং হরে রইল। অবিশ্যি জানি ভোরা থাকতে ওর তেমন ব্যাড় লাক হবে মা। তবে আই ডোণ্ট মাইক জিপেণ্ডেস্স— ওরও সেইরকম টেস্ট, ব্রুবলি দা।'...

বিরস হাসি হেসে উদর সিগারেট ধরাতে ম্থের কাছে দড়ির আগনে তুলল— কোথায় গেল কুমারের সেই নোবল আইভিয়া।

দীর্ঘনিশ্বাস ফেলে উদর একঝলক ধোরা ছাড়ল—বেচারী বেলা। বেলা এখন কি করবে? ব্যাক টু বাড় বিজ্ঞানেস?—তাই কি সহজে আর পারবে।

 বারোজনকে খাটে জারগা দিতে পারবে। রুচিতে আটকাবে নির্ঘাত।

আচ্ছা বেলা কি বিয়ের খবর জানে? বোধহয় জানে না। উদয়কেই তো দিন-চারেক আগে কুমার বলেছে। তাও নিজে থেকে নয়, নিশিকাশ্তকে দিয়ে বলিয়েছে। কাওয়াড'—বুট—হার্ট'লেস। হঠাৎ উদয়ের মাথাটা গ্রম হয়ে উঠশ। আলবং কুমার একটা নিষ্ঠ্র অমান্ধ। হা আশবাং-। যেন এতক্ষণ নিজের কাছে এই কথাটা বলতে চেণ্টা করেও লে সাহস করেনি। যেন কুমারের এই অমামন্থক কাজটার পিছনে উদয়ের সায় ছিল বলে মিথ্যে অপরাধ-বোধ তাকে ভয় দেখিয়ে ঠেকিয়ে রেখেছিল। হঠাৎ অসতক চিন্তার ফলেই কুমারকে সে সাংঘাতিক প্রতারক ভেবে বসল। ভাবনার মজাই হল এই-একবার ভাবতে শ্রে করলে আর তার ওপর খবরদারী করতে পারে না মান্ষ। এমন ভাবনার পিছ, পিছ, তাকে চলতেই হবে। ...উদহের সেই দশা। সে বে'কে দ জালা।

এরকম হীনচারর স্বার্থলোভী মান্যের বিয়েতে যাওয়া মানেই তো তাকে পরোক-ভাবে সমর্থন করা। কুমার এতদিন চয়ত চরিত্রহীন ছিল কিন্তু সে হীনচারত্র হয়ে পড়ছে। চরিত্রহীনতার মধ্যে দুর্বলতা থাকতে পারে, কিন্তু হীনচারত্র মান্য জঘনা পর্যায়ের জন্তু। আর উদয় একজন খাঁটি মরালিস্ট হয়ে কিনা সেইরক্ম একটি ব্যক্তির বুবিভাতে উৎসব করতে চলেছে।

কুমারের জীবনে যেটা বাস্তব বঙ্গে ম্বীকৃত, সেটা উড়িয়ে দিতে না পারলে, প্রতিবাদ করার হক তার কেউ কেড়ে নেয়নি। প্রথম যখন বিয়ের কথা শত্নে খটকা লেগে-ছিল তখন থেকেই উদয় মনে মনে ব্যাপারটা ভাল চোখে দেখেনি। কিল্তু কেবলমাত ভাল না লাগাটার কোন ম্লা নেই—তাকে চিহ্নিত করার মত প্রতাক্ষ কোন কাজ খ'্জে পাওয়া চাই। যতক্ষণ পর্যাত এই উপারটাক দেখা না যাছে ততক্ষণ পর্যত নিজেকেও জোর দিয়ে বোঝাতে পারে না যে, সহিচ সহিচা ভাল লাগছে ।। তথন মানুষ পাইকারী ফডোয়া দিয়েই নিজেকে থামিয়ে দেয় যেমন উদয় দিয়েছিল, এই বলে যে, সমাজকৈ বাদ দিয়ে মান্য বচিতে পারে না অথবা পার্বেত্ত সাহস করে না, বা সাহস করলেত সে বাঁচাটা সুখের হয় না—সেইজনোই কুমার বেলাকে ভালোবেসে শেষে এরকম একটা বিয়ে করল।... কিম্**ডু যে মৃহ**ুডে প্রতিবাদের প্রতীকচিক্ষ আবিন্কার কর্ল উদয়-সেই মহেতে আগেকার পাইকারী ফতোয়াকে বাতিল করে যেন বাঁচল। জেল-খানা থেকে হঠাৎ বিনাসতে মাক্তির আনদ্দে উদয় আচমকা অটুহাসি হেসে অভিনন্দন कानाम निक्करक।

তাহলে এবার তার বাল্লা বেলারাণীর বরে। দ্নিরার লোকে বা-ই বল্কে উদর বেলারাণীকেই কুমারের "বোভাতের শাড়িখানা" উপহার দেবে। এতদিন ধরে কুমার
যে কথা বলে এসেছে সে কথার দাম এমনি
ভরেই দেবে উদর। প্থিবীতে অভতত
একজন মানুষ রইল যে বেলারাণীকে
কুমারের শ্রীর মর্যাদা দিতে কুণ্ঠিত নর,
ভীত নর। এ ব্যাপারে সমাজের দোহাই
পেড়ে সামজস্যের গোজামিল দিয়ে, আদশের
টা্লি টিপে খতম করে, উৎসবের জীকজমকে আসল সভ্যকে ধামাচাপা দিতে
পারবে না উদর।

বেলারাণীর বাড়ির দরজার সামনে
পৌছবার আগে পর্যত উদরের কোন
হ'্শ ছিল না। প্রচণ্ড একটা ঝড়ের বেগে
ভার সমগ্র সত্তা উন্মন্ত হরে উঠেছিল। বিরাট
প্থিবীর তাবং মিথ্যাচারী মান্যগ্লোর
বিপক্ষে একলা লড়াই করবার উদগ্র
উত্তেজনার সে উগবগ করে ফ্টছে--যে কোন্
ম্হ্রের্ড প্রচণ্ড শক্তির বিক্ষোরণ ঘটিরে
ফেটে পড়বে সে।

গলির মৃথে যারা ঘোরাফেরা করছে
তাদের চেনে উদয়। এ পড়ার ফ্লাটবাড়ি-গ্লোর সদর কথনো বন্ধ থাকে না। সরাসরি তিনতলায় টঠে দেখল বেলার ফ্লাটের সরজা বন্ধ।

কড়া নাড়প। বন্ধ দরজার সামানে দাঁড়িরে তার মনে হল, বেলা খ্ব অবাক হয়ে বাবে। আর তার গায়ের শার্টটা দেখে হয়তো মুখে 'আঁচল চাপা দিয়ে অটুহাসিকে ভদ্র রূপ দেবার চেন্টা করবে।

—আগে বেলা ওর সারা দে তর্পা তুলে হাসত। হাসির চেউ উঠনে সহজে ও সামলাতে পারত না। সে হাসির শব্দে হাতের হাল্কা বেলোয়ারী চুড়ি-ভাঙার ঠ,নকো ঠ, 'শব্দ ধর্নিত হত না—হাত থেকে পড়ে যাওয়া কাসার বাসনে যে রকম শব্দ হয়, সেই শব্দের রেশ উচ্চ থেকে মৃদ্ বিভিন্ন শতরের চেউ থেলিয়ে অনেকক্ষণ ধরে চলে সে রকম ধরনের ধর্নি ছিল ওর হাসিতে।

কিন্দু কুমার পছন্দ করত না বলে ও
নিজের স্বভাবস্লেভভাবে হেসে ফেললেও
নিমেবে সচেতন হরে মুখে অচিল চাপা
দের আজকাল। জোরে হাসাটা ওর স্বভাব
আর মুখে আঁচল ঢাকা দিয়ে আড়াল করা
থর এখনকার অভ্যাস। বেলার এই মেনে
নেওরার স্বংগ মানিরে নেওরার মাধুর্বও
লক্ষা করেছে উদর। আসলে মেরেটার স্ক্রু
শিশ্পবাধিই ওকে আরও স্ক্রু লেভিনীর
করে তুলেছে।

একটা যেন দেরি হচ্ছে দরজা খুলতে। আগের আমলে উদয়ের এরকম হঠাৎ চলে আসাটা হামেশাই হত এবং বেশিক্ষণ দাড়াতেও হতো না। কুমার থাক বা না-शाकः तिला निर्फाट्ट मनका भारत पिछ।... হয়তো বেলা আজকের বেটভাতের খবর জানে, তাই মন মুখড়ে শুয়ে তাছে। কডা-নাড়ার শব্দ শন্নে ইয়তো ভাবছে বাজে কোন উটকো খন্দের এসেছে। এবাভি থেকে বেলার উঠে যাওয়ার কথা হয়েছিল, কিন্তু শওয়া হয়নি কেননা সে রক্ম প্রুদস্ট বাসা পাওয়া যায় নি। মাঝে মাঝে বাজে লোকের উৎপাত পোহাতে হয়। এক এক সময় বেলা খ্ব বিরঞ্ছলে কুমারকে বলত, 'তোমার মুরোদ তো ভারি। একটা ঘর জোগাড় করতে পার না—মুখেই কেবল রাজ। উজীর মারতে পার।'

আবার কড়া নাড়ল উদয়। এবার একট্র জোরে আর বেশিক্ষণ ধরে।

দরজার ওপারে পায়ের শব্দ। এপারে উদয়ের বুকের ভেতর হংপিশ্ড অসম্ভব দাপাদাপি করছে। তার কানের পাশের শিরাগ্লোয় বিশ্বেব বেগ দ্রুত হতে হতে শও ৣদড়ির মত ফ্লো উডল। এরপর মহেতে দ্রজনে ম্থোম্থি দাড়াতে হবে। ভাকে দেখে বেলা চোখেব ভারায় কোন ভাবের কেমন ছবি অকিবে? কত্যুকুই বা সময় ক'পায়েরই বা দ্বিছ—অথচ এই মহেতিটুকুকে যদি আলাদ। করে রাহা সম্ভব হত তাহলে তাৎপ'যার ওজনে উদয়ের জীবনের একটি যুগের চেয়েও বেশি প্রমাণ হত। ধনক ধনক আওয়াল বাকের ভেতরে আর বাইরে অর্থাৎ বৃদ্ধ দর্জাব ওপারে পাথের শব্দ। বেলা আসছে।

কিন্তু দ্রজা খলে যথন বেলা বলল—
আপনি! কী কান্ড--আসন্ন, আস্নে! তথন
উদয় কেমন মনমগ্রা হয়ে পড়ল। বেলার
চেইারায়, ওর মংথের কথায়, কথার ভাষাতে,
ভাষার ভালগতে—কোথাও বিন্দুমাত
অন্বাভাবিক কিছু নেই। কেন? ও কী
জানে না যে, আজ কুমাধের বেভিত—না
কী বিয়ের কথাট্কু প্যন্ত শোনেনি।

অপ্রতিত চোথে উদর দেখছিল বেলার পিঠের ওপর লতিয়ে পড়া লম্বা বিন্নিটা। ঘরের মধ্যে কাটা কাপড়ের ট্কারা যেন শীতের করা পাতার মত এলোমেলো ছড়িয়ে রয়েছে।

অশ্বিতীয় চেয়ারে বতকগ্লো জামা পাটকরা ছিল। সেগালো আলতো হাতে জুলে নিয়ে বেলা বলল—বসুন দাদা। তারপর কি থবর বলুন। মথ্রার রাজা ভালো আছে তোু।

শান হাসিতে উদয়ের ওতে কথার প্রাভাষ জেগে উঠল। কিন্তু তাকে কিছ্ বলবার স্যোগ না দিয়ে বেলাই কলের হাতল ঘোরাতে ঘোরাতে বেলা যেন নিজের মনের কথাকেই সেলাই করছে এমনি ভণগীতে বলল সানেন এ মাসে বেশ মোটা টাকার জড়ার পেরেছি। সাড়া দিল না উদয়। তার হেন কী হয়েছে। কী ভাবছে সে! বেলায় এই নির্ভাপ ভাবভাপা, ওই যক্টার একঘেরে কিটকিট আওয়াল, কিছুই উদযের মনে সায় পাচ্ছে না— বিরব্ধি, বিশম্ম, অস্বস্থিত। তাকে নির্ভুর দেখেই বোধহয় বেলা কল চলানো থামিয়ে চোর্ছ তুলে তাকিয়ে দেখল। তারপর উদয়ের কোল থেকে শাড়ির পাাকেটটা টেনে নিয়ে প্রশন করল—এতে কি ভাছে দাদা?

---শাডি।

—ভাই নাকি? খালে দেখৰ কেমন শাড়ি কিনলেন।

উদয়ের গায়ে যেন হঠাৎ খ্লির এক ঝলক হাওয়া লাগল। সে একট, জোর দিয়ে বলল—শ্রীঅংগে পরেও দেখতে পার, ওটা ভোমারই জন্ম এনৌছ।

কথাগ*্লে*। বলে উদয় থানিকটা এ্নিশ হল নিজেকে প্রকাশ করতে পারার স্বাভাবিক করেশে। আর সেই সপে ইরতো আশা করেছিল বে, বেলাই খুলি হরেছে। কিল্ডু তার উৎস্কু চোখের ওপর দুটি আয়ত আহত চোখ রেখে বেলা বলল— যাঃ. এসব নিয়ে ঠাট্টা তামাসা ভাল নম্ম দাদা।

—কী নিয়ে ঠাট্টা-তামাসা, বেলা? —এই ইয়ে নিয়ে—মানে শ্ব, শ্ব, আমাকেই বা শাড়ি দেবেন কি জনো?

—শৃধ্ শৃধ্ তো নয়, কারণ একটা আছে বইকি!

— কিন্তু আপনারা সে ধরনের ছি'চকে মতলববাজ নন বলেই জানতাম। আপানার বংধ্ বদি শোনে তো কি মনে করবে? সে কথা তেবে দেখেছেন।

অতাদত তাচ্চিলা ভরে হাত নেড়ে উদর জবাব দিল—আমার বংধ-বাংধব কেউ নেই বেলা। সব শালা শ্রোরের বাচ্চা—



ভাতে কঠান্তরে ঘূলা আর আয়োল প্রকট।

বেলারাণী শাড়ী মোড়কটা নেখেতে হৈলে দিয়ে ফেলবমেশানো মিণ্টি সুরে টেস দিয়ে বলল—আগনিই বুলি খাটি ভগবানের প্রামা। তাই একথানা ক'পড় দিয়ে শন ভূলিয়ে আমাব ক'পড় খুলে ফেলাঙে এক্সেছেন। বাঃ—

চমকে উঠল উদয়। ছি-ছি, এসব কীবলছে বেলা! যে কথা সে কল্পনাতেও বিল্পুমান প্রছায় দেরনি—অনায়ালে সেই নোরো বাজে একটা অপবাদ চাপিরে দিল? তার মাথা থেকে পা পর্যক্ত এক কলক অবল করা নিছরল বরে গেলা। ইচ্ছে করছে গলার যত গছি আছে সমস্তট্ক প্ররোগ করে চেণিচার বেলার কথার প্রতিবাদ আনারী— না, না, না। ভূল—ভূমি ভূল করছ বেলা। আমি এসেছি তোমাকে মুখাদা দিতে, যে মুখাদা সমাজের প্রতিনিধি হরে কুমার দিতে বাজী ইয়নি— সেই মুখাদা। আবও জনেক-পালো কথার আবেগে উল্পের মনটা সির-গির করছে। কিন্তু ভাল মুখ ফুটে একটি কথাও বেরুলো না।

য়ে ঘ্লা কুমারকে দেখানোর কথা সেই ঘ্লা কটাক মেলে উদয়ের দিকে তানিয়ে বেলা বলল—এ গাড়ি মাপনি নিয়ে বম। পর্মা দিন বংখ্র বৌভাতে প্রেক্টেও দেবেন—ভাতে থব্চেরও সাহায় হবে আর—

বেলাৰ কথা শেষ হৰাৰ আ**নেই উদৰ** মলল— কি বললে, বৌছাত ক^{ন্ম}?

্ৰক্ষ প্ৰশ়্ জানেন না নাৰি।
দতি দিয়ে ঠোঁট কামজে এবংশ কথা জিভেব আড়ালে বেংশ দিল
টুদর। কি দরকার সতি। কথা
কলে গোলমাল ৰাজিবে। ফাদ সে বলে
যে, বৌডাত প্ৰশ্ নয় আজ তাহবে
হয়তো তার কথা বেলা বিশ্বাসাই করবে না।

ভাকে চুপ করে থাকতে দেখে বেলা একটা, হাসল—আমাৰ কথার বাগ করণেন না যেন লাদ। তবে, এরপ্তম আরু ক্মানে করবেন না বেন, আমি ভীবণ অপছদে করি। বিয়ে-খা বাই ক্যান, প্রর সংগ্যা আমি জোজার্মির করতে পারব না।

দিত্যিত কৰ্মে উদয় ব্লল-ভাহলে বিষয়ে জনো তোমান মনে জেন দঃখ নেই।

লাখ কট ছাড়া কি মান্য দানিয়াতে আছে দাদা? আপানিই বকান। ভাছাড়া আমাব তেমন ইছে থাকলে ওকে কবে বিরে করতে পারতাম। কিন্তু দেখলাম ভাতে জনকগ্লো মান্তের অভিলাপ ক্টোতে হবে। ভার চেরে, এই তো বেশ আছি। বললাম-বিরে করো বাবা-মারেদ চোথের কল্কেলিয়ো না, ভাতে মঞ্চল

কথা বলতে বলতে বেলাব কুঠানবর আবেশে গভীর ভারি হবে উঠেছে। এর চোথের কোলে হরতো অজন্ত অহা, সন্দিত হরে আছে বে কোল মুহুটো করে গড়বে।

क्रम्य वाथा मित्र वसमा-क्रिक्

তাকে থামিরে দিল বেলা—এতে কোন কিন্তু নেই। আমার একটা তো জীবন, স্থে-দঃথে কেটে যাবে। এখন আব তেমন ভাষনা নেই— একটা পেটের ভাক আপনা-भित्र कामीर्वाम झाउँ यात्तरे। छा हाज़ा 'হরে কৰেছে বলেই ও কী আর ফেলে দিতে পারবে। এই তো দেখনে না-বিরে-হাড়ির সবজামাব অডার ও আমাকে পাইয়ে দিয়েছে। কাল ডেলিড়ারি নিরে হাবে, নগদ তিবিশ টাকা মজ্বেরীও পাব। নিজে মুখে বললে থাবাপ শোনাবে, কিন্তু স্তি , আজকাল আমার হাতে কাট-ছণটে সৰাই তারিফ করে। এই তোদেখ্ন না, এটা হল মিনজিব—এটা ফ্লেশ্যার রাতে প্ৰৰে ও-ৰৌ-এর আসল নাম জানেন তো ক্ষা—আমি কিন্তু মিনতি নিয়েছি।

বলে উৎসাত সহকারে একটা রোকেডের
ভাতিত তুলে নিহে উদ্যের চোণের সামনে
মেলে ধরল। উদয়ের আব এবদণ্ডও এখানে
বলে থাকাডে ভর্মা হচ্চে না। কি জানি
নিজেকে যেন ভয় করছে সে। বেলাব কথাগ্রেলা চাব্তের চেরেও জনলা ধরিয়ে
দিক্তে—তব্ মুখ বুজে সব স্নুনে বাছে
উদয়।

বিলার উৎসাহের যেন শেষ নেই, নতুন
ক্রামাগ্রিল একে-একে সব দেখিয়ের সংগ্
সংগ্র বলতে লাগল, কোনটি কথন প্রবেহ
মিনতি অথাং ক্রমা। সব দেখানো হয়ে
গোলে বলল, কেমন শেপ হরেছে বলুন।
আহা মাপের কনো যে ক্রামা এনেছিল তার
কি ছিরি! ব্রু-শেট সব সমান। এই
দেখনে না---

প্রনো একটা জাউজ আর বেশিয়ার টেনে আনল কাপড়ের গাদা থেকে, মুণের কথা কিন্দু থামেনি—আমি কিন্দু ও মাপে বানাইনি। ব্কের নিচে আর পেছনে এমন ফান্ট কাল পিলট ডেঙে দিয়েছি বে, নিচের জামা না প্রকেও চলবে। ব্যুবলেন মণাই, আপনার বিবের স্ব অভারে কিন্দু জানাকে দিতে হবে, হাাঁ।

কথা দোষ করে বেলা এমনভাবে ভাকাল উদদের দিকে বেন এখনই ফরমাস পাবে।

এবার, এতক্ষণের মধ্যে এই প্রথম ইনবের দিকে বেল ভাল করে তাকিঃর দেখল বেলা। দেখতে দেখত প্রগতভাবে কলে লাটটা ব্যক্তি বেভিনেড বিদেশের

বেলার মুখের কথা শেষ হবার আনেই উদ্ধ উঠে দাঁড়াল—চীল।

—ওমা সে কি কথা! এই তো এলেন, বসুন থাসা। হিটারে জল বসিরে নিজি, পাঁচ মিনিটে চা হরে যাবে।

-থাক।

—বারে থাকবে কেন, বস্ন না দাদ। । এবটা গলপ কর্ন—ভারপর বর্ষাতী গিয়েছিলেন তো, বট দেখতে কেমন হয়েছে?

বউ-এর কথা উঠতেই উদ্দেশ্ধ মনে
পড়ল বৌভাতের কথা মনে পড়ল কুমারের
কথা। যে কুমার অধ্য সাঁতার আড়ালে
নিজেকে লাকিয়ে বেখেছে বেলার কাছ
থেকে। মনে মনে হাসল উদয়, সে ইছ্ছা
করলেই পারে কুমারের আসল চেলারা
বলে মেলে দেখিয়ে দিতে—যদি সে বলে
যে ফ্লেশ্যার রাভটা একদিন আগে এসেভিল্ যদি সে বলে যে বৌভাতের নেম্ন্তার
বেরিয়ে বেলার কথা ভেবেই এখানে এসেছে
উদয় ভাছলে বেলার ম্থের অবস্থা কি
দায়াবে। না, বেলার মনের শেষ সাক্ষ্ণার
ঘোরটার কেছে নেবে না উদ্য।

ুশক—মিথো হলেও এই সাম্বনট্ড় সম্বল করে যদি একটি মেয়ে সংখী হয় ভাতে উদ্ধেৰ বাদ সাধার দ্বকাৰ কি?

উদয় ঘর থেকে বেরিয়ে এল, তাম পিছা পিছা বেলাও—বোধহয় দর্গা বন্ধ করে নিশিষ্টত মনে বিষে বাড়ির বাড়ার-গালো তামিল করবে:

– দাড়ান।

খাড় ফিবিষে উদয় দেখল কিন্তু ছতক্ষণে বেলা তাকে দাঁড় কবিদ রংশ ছবে কিরে গেছে। ঘুবে এল শাডিব প্যাকেটটা হাডে নিয়ে। কৃষ্ঠিত হাডে উদরের দিকে সেটা এগিয়ে ধরে বলল— কিছু মনে ক্রবেন না দালা এটা নিয়ে যেতে হবে আপনাকে।

নিক্তের পালিশ চকচকে জ্বেতার দিকে ভাকিয়ে কানি হাসিতে উদরের মুখ্যানা করনে হরে উঠল। হাত পেতে সে শাড়ির পাকেটটা নিরে মুখ্ ফিরিড়ে সিন্দি দিয়ে তরতর করে নেমে গেল। হরিপদ মুখ্লোর কথাটাই ঠিক। হলতা আর একবার সেনিজেকে নির্বেধ প্রতিপার করে বেলাড়া খানির বাঁকা হাসি হেসে নিজে, শেষ প্রত্ত সতিটি কোন স্তিতাকার বাজারে মেরের ঘরে গিয়ে চ্কুবে এবং টাকার বদলে শাড়ি দিরে তার জ্বের ব্যা হ্রণঙ



অম…ল্…। যেন অনেক দ্রে থেকে থুব জোরে ভাকার মত একটা চীংকরে হল।

অমলের মনে হল, কে যেন শ্রীরেরই মধ্যে থেকে ওর নাম ধরে ডেকে উঠল। বালিশে মুখ গুণজ শুয়ে-ছিল। ত°ত রক্তের স্তোত যা ওর মাথাকে ভারী ও অন্ড করে তুলেছে থেকে, দ্ব'চোথের গভীরে অসমভব অস্কস্তি-কর জ্বালা ধরিয়ে নিয়েছে, মনে হ'ল, তার ্মধোই কেউ যেন 'অয়ল' এই ভিন অক্ষরের অতি প্রিচিত **3**43 <u>প্রিয়েত্র</u> *চীৎকার করে উচ্চারণ করল ৷ উচ্চ*িরত হলেও হা যেন ব*দ্ধ **অবস্থা** থেকৈ আহ্বানের মত শোনাল ওর কছে।

অমল সাগে সজো চোথ খাল্লা। অন্ত্ৰ ভব করলা, এই গ্রারের খোরে এর ঠোট দুর্টি একবার জিলান কাজের নামের জিলান অক্ষরের দ্বারে ভাগের বিকার নাম, জাটোলন ভূল বকে যাওয়া নাম গ্রমলা তা নিশ্চিত ভালে। তা হলে কে ডাকতে পারে! খরে ঘ্রাফ এখনি কেউ কি ডাকল তাক। পাশের ঘর খেকে সন্ধা গ্রথনা ব্যাহার খেকে মা

মন্ত্রত এক অন্ধ্রকায় সমলের কেন ফোন গা ছম্ ছম্ করে উঠল। বড় একা অসহায় মনে হাল ধর নিজেকে। অমলের মনে হয়, নিচিত্র অবহণায় ও খাব শক্ত আব সাহসী থাকে। খাম ভাঙার সংগ্যা সংগ্রেকমন দ্যাল এয়ে খায়। অ্যারর মধ্যে খাম ভাঙালে তো কথাই নেই। ধর এখনি মনে হাল এপাশ ফেরে ঘরটায় চোথ ব্লোগে ইয়াত ব্রোভি পাররে, বাইরে থেকে ওকে কেউ বেক্ছে কি না। কিন্তু পাশ ফিরার ভাল লাগছে না। তব্ অন্ধ্র করল, খার এই মাহাতে কেউ নেই, খাকলেও নিশ্চবই সকলে খ্যোচ্ছে।

তাহলে এমন নাম ধরে তাকে ডাঞ্চল কে? এক মৃত্ত তামল তার চিন্তাস্ত্রোতের এক অলোকিক শ্লোর মধে। তেসে উঠল। আর ঠিক সেই সমধের বিচ্ছিলতার নিমিতি চিন্তার অলোকিক শ্লোর মধে। একটা সর্মাতোর মত হিমেল স্রোত বয়ে গেল শরীরে। মের্দিড়া ধরে ঠান্ড। স্থোতটা শ্কনো পাতার শিরা-উপশিরাম চিতিও জালের মত শরীরটাকে কঠিনভাবে আবৃত, ভারী ও কম্পিত করল। অণ্তম মুহুতের অন্তৃতি মাত। অমল ভর পেরে একটা, নড়ে উঠল। আর তারই মধ্যে একটা ঠান্ডা হাত ওব ডান হাতের বগলের ওপর চাপ দিরে ধ্যকল। অমল ব্যুতে পারল, ওর মা

মাথার কাছে বসে থামেমিটার ক্লেভ এর দেখছে।

এক সময়ে বগল খেকে থামোমিটার সরিয়ে মা যথন জার দেখাছে খ্টিয়ে, অমল সারা শরীর নয়, শাধ্য খাড়টাকে পিছনে থাকিয়ে মায়ের ম্থের দিকে তাকাল। ঘাড়টা এভানে বাঁকিয়ে রাখায় একটা অলপ ব্যথার মধ্যে ভারাম পাচেছ ও।

হা থামোমিটার থেকে চোখ সরিয়ে অমলের দিকে ভাকাল। 'কিছা বলবি-্ৰ'

অমল একভাবে মাকে দেখাতে লাগণ। মা একট্ৰোল তাকিয়ে অমলেব দিকে কক্কল। 'আমায় কি বলবি? জল খাবি একট্?'

অমল মাথা নেড়ে না বলগ। 'তুমি কি একট্ আগে আমাকে ডেকেছ?'

না, তো! ভূই তো অংঘারে মুমেচিছস। আমৈ ভারই মধ্যে জন্মটা দেখে নিচিছ্সাম।

থ্যালের আবার মুহুতেরি শ্নাতা তৈরী হল চিক্তার মধ্যে। খাড় ফিরিয়ে আগের মত বালিশে মুখ পুলে। একটা পরে মারের নীচু গলার করে শ্নাল —আর বরফ দিতে হবে না কঠীচবণ। আইস বাাগে বরফগ্লো দিস্না এখন।' মা উঠে গেল।

মারের নিঃশব্দ পদক্ষেপ শ্নেতে শ্নতে অমল ব্রুল, ওর জরে অনেক মেমেছে। একটা আগে ঘ্যোচ্ছিল, না জরের বেংশুস হয়ে পড়েছিল, ব্রুতে পারছে না। তবে এখন মনে হচ্ছে ওর জ্ঞান ছিল না ছখন, এক ভয়াবহ মৃত্যুর সংগ্য তার সংক্ষাতের সময় হয়ে আস্টাছল হয়ত।

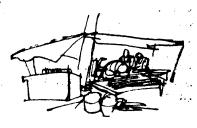
অমল এক মৃহ্তে নিজেকে অসহার ভাবল। মৃত্যুর চিন্তার সে অসহার। যখন বাড়ি নিস্তব্ধ হয়ে যায়, মা পাশের বাড়ির সংধা, মালতীপিসি, ধীরাবৌদি, ভাই ব্যকুন, দাদ্ধ, দিদিমা ষষ্ঠীচরণ সব ঘরের মধ্যে থেকেও চুপচাপ ঘ্রে বেড়ার, তথান অমল ভয় পায়, অসহায় হয়ে চার-পাশ দেখে। একটা পরেই হয়ত ভার চেতনা লংকু হয়ে যাবে, মাকে স্থাকে আর কোন-দিন দৈখতে পাবে না। দীঘদিন বিছানার শা্রে থেকে সে আকান্তের রং দেখেছে, স্থার কথা ভেবেছে, অস্থে থেকে সেরে উঠে হৈ-হৈ **क्या कर्डेका एका**ल ठिक-कत রেখেছে। সব **শেষ হয়ে যাবে**, অমল তা ভাবতে পারে না। **ভারনেই** ভয়ে ভিতরটা কুকড়ে বার, অসহায় হয়ে ওঠে। আর এক অলোকিক অন্ধকার পাথর শ্রীরের মধ্যে থেকে চোথের দৃষ্টি, মুখের ভাষা, প্রবণ-শক্তি বাহার স্পল্ন, হাদ্রের শব্দ-সব কিছুকে অকটোপাৰের বেল্টনীর মত টেনে

রাখে। সে ভরাবহ অকম্থা আজ ইর্মান, বা হয়েছিল, অমল জনুরের ঘোরে ব্রুডে পার্রেন হয়ত। সে রকম অবম্থা দেখা দিলেই এক এক সময় বাড়িতেই রক্ত দেওয়া হরেছে তাকে। কই, ঘরের মধ্যে সে রকম কোন সরঞ্জাম নেই তো!

আর একবার ঘরের ভিতরকার পরিবেশ অন্ভব করতে করতে অমলের শরীরটা কেমন হাল্কা মনে হ'ল। এখন একট**ু পাণ** ফিরলে আরাম হবে। দূর্বল হলেও **জ**রর নেই। অমল জনুর নেই—এই চিম্তা করতে করতেই চিত হয়ে শলে। দেখল **পাশে কেউ** নেই। ও মরে মা-ই বোধ হর ফি**স** ফিস করে কথা বলছে কার সংখ্যে। ভালে লাগছে না অমলের এই অস্বাস্থাকর পরিবেশ, ঘরের এই বৰদহীন, উদ্বিশ্ন আশতকাহীন আব-হাওয়া। ও তো ভাল আছে! মা ছেলরে কথা यम,क. भूधा थिर्नाथन करत **एटम উठे.क,** দিদিম: তার সঞ্জে সেই পরেনো ঠাট্টা-তামাসা কর্ক, ক্কুনটা মাথার চুল জোরে টেনে কেবল বিরম্ভ কর্ক। তা নয়, কেবল ম্থ গম্ভীর করে থাকা। আমি তো ভাল আছি।

কথাগুলো ভাবতে ভাবতে এপাশ ফিরে कानामात वार्ट्य मुण्डि ताथल। এर कानामा অমলের দীর্ঘস্থায়ী অস্ম্পেতার মধ্যে নিমিত নিজ্জ্ব দপ্রণ। তার বা**ইশ বছরের** জীবনের সব কিছুই নিজের মত করে দেখে এই দর্পণে। এখানে একভাবে **শরে থেকে** कानालात वाहरत माणि स्माल के इन्नीइ বাড়িগুলোর ফাঁক দিয়ে একটি খন গাছের শবি দেখতে পার অমল। গা**ছের মাখা**, একরাশ লাজ মদির ফুল, তাকে খিরে বিচিত্র বর্ণের আকাশ! এথনকার বিকেলের আকাশ ফুলগলোর বং গারে মেথেছে ষেন। অমলের তাই মনে হল। মাঝে মাঝে পাখির শব্দ, ঐট্রুকু দ্শ্যে বাতাসের **বিল**~ ম্বিত খেলা করার শব্দ **অমল শ্নতে পাই।** কছ পাতা ও ফল বোটা থেকে বিভিন্ন হয়ে যায়। **অমল সেই অজন্ত পত্ৰ-প্ৰেপর** বিচ্ছিল হওয়ার এক সংখ্যাতীত শব্দের ম্থরতা শ্নেতে পায়। শব্দগ**্রিল ওর** শরীরের লাকানো রাশি রাশি র**ক্তণিকার** অবিবাম সংঘর্ষের মত।

অমল একদিন স্থাকে বলেছিল, ও যথন একা বিছানায় শুয়ে থাকে নিজেব বজের শুন্দ শুনতে পায়। বলেছিল, অসুখে পড়ার প্রথমদিকে হাসপাতালে বখন একস-রে করেছিল বুকের, তথন একস-রের আলায় অন্ধকার রন্তুকণিকাদের মুখর ন্তাশন্দ শুনেছিল। সুধা তখন হৈঙ্গে উঠাছল। বিশ্বাসই করেনি। সুধার অকারণ হাসিতে সেদিন অমলের খ্বে রাগ হরেছিল



সৃত্যি, কিন্তু অমল তখন একট্ও রাগ করে
নি। সুধা হাসলে ভবিশ ভাল লাগে। পতি
গুলো সমট্রেজনে ধোরা শংখের মত
পবিত্য। গালের দুপোশে স্কুলর দৃটি টোল
পড়ে। সহজ্ঞ, সরল অথচ দামাল দুটি টেটএর মত মনে হরেছিল অমলের। হাসির
সুমর যতক্ষণ অমলের দিকে তাকিয়েছিল,
আমলের মনে হরেছিল সুধার দুটোখে
সমট্র, সারা মুখে আকাশের লাবণা। অমল
মুখ্য হয়ে দেখেছিল। তখন মনে হয়েছিল,
সুধার মুখ্যমন্ডল বুকে নিরে অমল উন্জ্ঞা,
এক সম্দের আম্বাদ পার। এ সব ভাবতে
ভাবতে অমল অন্তব করত, ওর শ্রীরে
যেন একট্ও মাংস, মন্জা, অম্ব নেই, সব
কিছা এক তুম্লা রক্তর স্লোত হয়ে গেছে।

মাকেও একদিন বংগছিল অমল। জান মা, তুমি এত আসেত হাটো, কেউ ব্ৰুগত পাৰে না। আমি কিন্তু পাৰি!

্কি করে।' মা কৈতিক করে গিজেপ করেছিল অমলের মাথায় হাত ব্লোচে কলোতে।

'আলার রক্তর্কাক্ত্রার লালের সংগ্র ছোমার চলার শব্দ এক।'

মা প্রথমে বিদিমত, তার পরে বিষয় ও দোষে ভীত হয়ে বলেছিল, 'কি স্ব আন্তেখনাকে চিতা কবিস।'

তুমি জান না মা. এই রক্তের প্রপাদন আরে গ্রন্ধ শ্রুনতে আমার এত ভাল লাগে।
ম্বথন পরে কেউ থাকে না, তুমিত না, তথন
আমার বঙক নিকাদের শ্রুন শ্রুন। দেখো,
আমি ভাল হারে উঠলে এদের দিয়ে কি
কান্ডটা না করব। এদের মের বাইরে দার্থা
দৌড়ব্ খেলব, গান গাইবা। বলতে বলতে
উত্তেজনায় অমল হাপিয়ে উঠে দ্বেল হরে
সভ্যেতিল। মা ভয় প্রেয় উঠে দ্বেল হরে
সভ্যেতিল। মা ভয় প্রেয় উঠে দ্বেল হরে
সভ্যেতিল। মা ভয় প্রেয় জিল তথন।
ভাজেরবাবা একটা উত্তেজিত হতে বাবন
করেছেন। বোধ হয় জরে ছিল তথন। মা
কিছা না বলে বিষয় আর ভীত মাথে
অমলের সারা যুখ্যুণ্ডলে, মুথের, বুকে
ছাতে ব্লিয়ে সামলাচ্চিল তথন।

সেদিনের মাজের মাখ অমলের আগও

শপ্ত মনে পড়ে। সেদিন মাজের দাঁটোথের
কোণে ভারী জালের ফোঁটা দেখা নিয়েছিল।
আরে মাথের চোথে জল দেখলেই অমল ভর
শার। রক্তের মধ্যে অবসাদ ও দুর্বলিতা
টেটলো ওঠে। মা যে কেন কাঁদে অমল বোঝে
না। কই, দাঁখানিন বিছানার শালে থাকার

শ্বেট অমল তো কাঁদে না!

মাকে অমলের অবাক লাগে। মা বে বাড়িটেই আছে, তাদের ভাড়া করা জানি বাড়িটার এই দোতলার চারখানা ঘরেই ঘ্রের বেড়ার, সহাজে বোঝা যায় না। খ্র কম কথা বলে, যেটুকু বলে, ফিসফিস করে বলার মত। খ্র কমদিনই কাঁতে দেখেছে মাকে। বাবার বাস দুর্ঘটনার হঠাৎ মৃত্যুর খবের মা যে একটুও কাঁদেনি, অমলের তা মনে পড়ে। শুধু ঠাকুর ঘরের দরতা বন্ধ করে ঘরের ভিতর মা সারাদিন কাটিয়েছিল। অখন মা মাঝে মাবেই অমলকে বলে, গুড়াকে আমার ভার হয় অমলা! এই কথা গুড়াকে আমার ভার হয় অমল গোঁ এই কথা গুড়াকে বললেই মায়ের গলা কাঁপে, কথা গুড়াকি বললেই মায়ের গলা কাঁপে, কথা ভারী হয়, চোখের সামারেখা খেকে মণিল্টো চকচক করে। যা সঞ্জে সংশ্বাহ্ন

ঘ্রিরে নের। শ্রা এই সময়েই অমল ভর পাষ। মা ভার মৃত্যুর কথা ভেবেই কাঁদে। অমল ব্রুতে পেরে ভরে কেমন ছোট হরে ঘার। সেই অসহায়তা দরোরোগা অস্থের মত ওর ব্ক, মৃখ, নাক, সব চেপে শ্বাস-র্থ্ধ করে ভোলে। অমলের তথন গা ছমছম করে। বড় অসহায় একা মনে হয় নিজেকে।

কথাগ্লো মনে হ'তই অমল ভয় পেল।
মাকে দেখতে চাইল। জানালার দিক থেকে
চোখ সরিয়ে এক এক করে ঘরের সিলিং
ও দেয়ালে চোখ রাখল। সেই চুন-বালি খসা
দেয়ালে কলার ছবি দেওয়া কালেন্ডারে
চোখ পড়ল। নাভিদেশ থেকে কোন দেবতা
যেন জন্ম নিছে। মা যত্ন করে লক্ষ্মী,
কালী আরু স্থিকিতারি কিছু ছবি এই
ছবি দেবলৈ ক্লিয়ে রেখেছে। আবার
পায়ের বালিশ সমেত এপাশ ফিরতেই
অমল দেখল, মাথার কাছে স্থা বসে
রয়েছে।

্তেমার কন্ট হচ্ছে!' সংধা জিজেস করল।

অমল একভাবে তাকিয়ে থাকল কিছা কৰা। সুধাকে দেখতে দেখতে ওর অগিংগুর ধ্যাণ নিলা। বিকেলের গা-ধোষার পর এক-বার অন্তর ওদের রাজ্ আস্থেই। অমলের মাকে ঠাকুর্ঘার পাঠিয়ে নিজে অমলের কাছে বসে। সুধা খবে ভালবাসে অমলাবর বিজিকে। সম্ব পেলেই ওদের বাজি এসে বসে থাকে।

স্থাকে ওর ম্থের দিকে তার্কিরে থাকতে দেখে বলাল, 'আমার কি খুব জারে?' 'এখন নেই, একট্ন আগে ছিল।'

ভাক্তরবাব; এসেছিলেন?'

'সে-ই দুপিরে। আকার সন্ধ্যেবেলায় আস্বেন।'

'আজ দ্বাধার আসেবেন কেনা?'
'এমনি। এ পাড়াং' কোথায় খেন আস-বেন, দেখে খাবেন বলেছেন।'

অমল এখন তাহলে স্পথ! স্ধাকে তার খুব ভাল লাগল। ওর দিকে তাকিয়ে থাকতে থাকতে ক্রমশ উত্তোজ্ত হল। বিছানায় শংস্থে থাকতে - বার বার যে কথা মনে পড়ে, আবার সেই স্মৃতি ঠেলে উঠল মনের মধ্যে। আর পারনো স্মাতির ছায়া-পাত ঘটলেই অমল ক্রাণ্ধ হয়ে ওঠে, বিরক্ত হয়। এই অস্মেশতা যেন তার অহাত জাবনের সম্তিতে জরুরি হয়েওঠে। মৃত্যুকে সে ভর করে, কিন্তু শৃধ্ সমৃতি নিয়ে বে'চে থাকাকে সে। ঘূলা করে। স্মৃতি আর স্বন্দ নিয়ে সে এক জ্বংগায় থাকতে চায় না। হাঁপিয়ে ওঠে তাই এইভাবে এঞ-টানা শ্যে আর ঘ্মিয়ে। এথনি সে যদি সংঘাকে ব্যক্তর মধ্যে বিলানি করে চুমা খেত অজস্ত্র–তবেই বে৷ধ হয় সব প্রনে: ম্যাতিকে চুরমার করে দিত। সে যে অস**্**শ্ব নয় ব্ঝিয়ে দিও।

তথন কত বরস্ট বা অমলের। সুধা
ফ্রক পরত। মাঝে মাঝে শাড়ি পরার বরসত
হরেছিল তথন। অমল সে সময়ে কলেজে
পড়ে ফার্স্ট ইয়ারে। কি দার্ণ দামাল ছিল
অমল—ফটেবলের মাঠে, ক্লিকেটের ব্যাট হাতে,
কলেজের ক্লালে, রাম্ডার, ফ্টপাতে, মারের
কোলের সেই মন্ত ছিন্দুলের অফ দুশুরের

कामन स्थादक इठार काण्यि वर्ताहन। ध्र क्लारतः। अत नाता मन्यमतः व्यक्ततः कृत्यरन আপ্লতে ও উম্ভাসিত করেছিল। তখন সংধা একটিও কথা বলেনি। অমলের শক্ত দুটি বাহুর মধ্যে স্থা ওর দুটি চোখ ব্জিরে স্তিপিত নিঃশ্বাস প্রশ্বাসে 🖟 ভীষণ কোমল, আর নিজের মধোই কেমন আশ্রহীন হয়ে পড়েছিল! অমলের মনে পড়ে সেই মাহাতে এর শ্রীরের উক্তেও রক্তের প্রতিবিশ্ব স্থার দেহের অভ্যান্তরে প্রতিফলিত হতে দেখেছিল। সুধা ওদের বাগানের অনেক ফ্ল এনে হাতে করে ধরে ছিল বলেই প্রত্তিহীন এই দঃসাহসের কাজ করেছিল সেদিন। তারপর ভয়! ভয়টা, স্ধা তার কথা সকলকে বলে দেবে ভেবে মোটেই নহ, সুধার সবাব্দোর স্পর্ণ অমলকে দার্ণ ভয় পাইয়ে দিয়েছিল। তরে-পর থেকে স্থাকে দেখলে অমলের মধ্য স্ব কিছ্রে যেন বিস্মরণ হ'ত। সুধা ভা ব্যব্যিছল বলেই বোধ হয় সহজ সরল নিবিকারভাবে ওদের বাড়ি আসত, এক৷ এক; এঘর-ওঘর ঘরে বেড়াত, ওদের গাছের ফ্ল ঘরময় ছড়িকে রাখত। মাঝে মাঝে হয়ত আপন মনে কথন অন্যমন্ত্র হয়ে যেত! অফলের এই জানালাব পাণে দাঁড়িয়ে থাকলেও বার কর ডেকে সাড়া পেট না। আর অমল তখন কি এক বিক্ষিত ভরে খেলার মাঠে বেরিকে যেত। ফটেবলের সংখ্য নিজেকে বজের সম্বন্ধে জড়িয়ে গোধালির রক্তিম দিশেতরেখার কাছে বলকে পোঁছে দেওয়ার জনা দৌড়ত।

এখন মনে হয়, সেটাই ভালবাসা। অমল স্থাকে বড় ভালবাসো। স্থা কি অভ ও সেই ভালবাসা দিতে পারে না । আমল স্থার দিকে ভালবালা কত বড় হয়ে প্রেছ স্থা। হোক, তব, ওকে চুফ, খেতে ইছে কবে অমলের, জড়িয়ে ধরে ওর ভালবাসায় স্থাকে অতে করতে চায়। স্থা, ভূমি কত বড় হয়ে গেছ। ফুলের মত দেখাছে তোমাই। অমার চ্টাতের ম্টোল কুমি তোমাই। অমার চ্টাতের ম্টোল কুমি তোমাই। অমার চ্টাতের ম্টোল কুমি তোমাই। অমার চ্টাতের ম্টোল কুমি

্কি বলছ? জল খাবে?' া, আমলের মুখের ওপর ঝাকল।

অমল স্থিরভাবে তাশিয়ে থাকল কিছ্যু ক্ষণ, স্মান সামি করে ভাল হব?'

্জার কদিন। ডাক্সারবাব; বলেডেন, সামানা কদিন পরেই একেবারে উঠে বসতে পারবে।' সমলত মিথো জেনেও সুধা সেই পুরানো কথাগলি বলে গেল এক নিঃশ্বাসে।

'ৰাইরে যেতে দেবে, খেলতে দেবে ?' 'ডাঞ্রেরবাব্ ডো ডোমাকেই **হলে** গৈছেন !'

'আমাকৈ অনেক মিথ্যে কথা বলেন, জানি। আমার অসম্থটা কি, তোমাকে বলেন নি?'

স্থা ম্থ ঘ্রিয়ে নিল। কেন বলবেন নাঃ সাধারণ একটা অস্থ। ওধ্ধ, ভাল পথ্য খেলেই ভাল হয়ে উঠবে।

ভাল হয়ে গেলে আমরা দ্রুনে আর কোনদিন বগড়া করব না। কি বল ?' অমল মুখে বিভূ বিভূ করল। গুলুমে বভূ বড় বুল হল্। সূথার হাত ধরল অমল। ভারি ভাল লাগছে স্থাকে অমলের। স্থার হাতটা কপালের ওপর থেকে সারা ম্থমদভলে ঘরতে লাগল অমল। 'ভোমার মনে পড়ে স্থা, এই হাতে ভার্তি ফ্ল আনতে। এখন আনো না কেন' আমি আর কদিন পরে ভাল হয়ে গেলেই আবার অসতে হরে ভোমাকে।' মনে মনে উচ্চারণ করতে করকে স্থাকে দেখতে লাগল। স্থার চোথে ভল কেন?

ভূমি বেশী নজাচড়া কোরো না। বেশী কথা বলা, আর আবোল-ভাবোল চিন্তা বন্ধ।
শ্বে থাকো, আমি হাত ব্লিয়ে দিছি।
স্থা সমলের তণত কপালে হাত ব্লোতে
লাগল। একট্ পরেই বোধ হয় আবার
কপালে ধ্বাপতি দিতে হবে।

অমল দীর্ঘনিঃশ্বাস ফেলে পাশ ফিরল।
এবার মা, নিশ্চরই ঠাকুরঘর থেকে বেরুবে:
ঠাকুর প্রজার ফাল, বেলপাতা মাথার
ছেয়িবে, প্রজার বাতাসা মথে দেবে। তারপর গরম দ্বের বাটি চাকর বণঠীচরণের
হাত দিয়ে পাঠিয়ে দেবে স্বাার কাছে।
নিজ্বে ফলের রস করতে বসবে। সম্বোর
হবার আগে মায়ের এই কটি ফাল থাকে।
সব শেষ হবোর মা অমলের কাছে এসে
বসে। মাকে কাছে পেরে অমলের ভালও
লাগে; কন্টও হয়। অমলের অমলের ভালও
লাগের কন্টও হয়। অমলের ক্রেডির ক্রেডির
হবার এবে জোর করে ঘুম পাড়ানেরে
ক্রেনা মাথার মধ্যে ভারী রক্তের স্রোভ ক্রমা
করছে। অমল ঘ্যমোবার চেন্টা করলে।

হঠাৎ ঘুম ভেন্সে গেল অনলের। কে যেন ওর ঘুমের মধে। শরীরের ভিতরের কয়েকটা সর্বু মাংসপেশ ধরে নেড়ে দেশ। মমল আচমকা ঘুম ভেঙে ব্ৰুবেত পারল ७० ५३ च्यू ४०५ इ.एक्। स्थर आत किस्-ক্ষণ ঘুমিয়ে থাকলেই ওর ভাল ছিল। ভারপাশ তাকাল। মনে হল, বাড়ির সকলেই ওর বিছানার <u>চারপাশ ঘিরে</u> বসে আছে। কেন? সমলের সন্দেহ হল। চারপাশ দেখতে দেখতে অমল ব্ৰছে পারল, ওর চোখ থেকে এখনো ঘুমটা যায় নি। একটু আগে যে স্বশ্নটা দেখছিল তারই রেশ যেন লেগে আছে। সেই আন্ভুত স্বান্ন। **অমল** বাহির ভারাভরা আকাশে দ্রতগতিতে উড়ে 5লেছে একটি পাখাওলা ঘোড়ার লেজ ধরে। আর পিছনে একটা জ্ঞাগনের মত কি যেন তাকৈ খেন্তে এসেও ধরতে পারণছ না ওদের ওড়ার সংক্ষ্য পাল্লা দিয়ে। এ পর্যাশত শ্বপ্নটা ও বহাবার দেখেছে দার্ণ জন্বের ঘোরে। কিন্তু আজ এক্ট্ আগে মনে হচ্ছিল, ড্রাগনের মত জনতুটা যেন ওকে কামড়ে ধরেছে। সেই জনোই কি **ঘুম** ভেঙে গেষ! এতদিন ধরে দেখা স্বশ্নের শেষটা আজ প্রথম দেখল। মা কোথায়? মাকে এ গলপটা করতে হবে। মা! মা গো! অমল পাশের দিকে তাকাল। মা সামনেই বসে আছে। অমল মাকে দেখল। দেখল, মারের পাণে ও পিছনে মালতীপিসি, ধীরা-বৌদি, স্থা ও বণ্ঠীচরণ—সর ভিড় করে পাড়িরে। সুধা বৃকুনের হাত ধরে টানছে, कारक कामरक मिरक ना।

তোমার কি কোন কল্ট হচ্ছে বাবা?' মা. আমি সেই স্বপনটা দেখছিলাম। কিন্তু ড্রাগনটা আজ আমাকে কামড়ে ধরে-ছিল কেন? আমার ভয় করছে মা!'

'কি বলছিস? তুই কিছু থাবি? জল : দুধ ?'

মারের কথা শুনতে পেল অমল। মা,
আমি কবে ভাল হবো, বলতে পার?' ভাল
হয়ে একবার যদি নাইরে বেরুতে পারি,
তোমার কোন অস্ত্রবিধে হবে না, কোন
দুঃখ থাকবে না, দেখো। মা, আর স্বন্দ দেখতে ইচ্ছে করছে না। এবার দেখো,
সাতা আমি একদিন ঘোড়ায় উঠে এমন
জোরে চালাব, ভোমরা অবাক হরে যাবে।
তুমি জ্বান না, ভোমরো অবাক করে যাত্রে
কল খেলতে গিয়ে কতবার বড় বড় ঘোড়াকে
লাইন ধরে যেতে দেখোছ। কি কালো আর
আমা জ্বোর ছুট্ব, ঐ ড্রাগন কেন, কেউ
আমাকে তথন ধরতে পারবে না। কিছতেই
নয়, কথখনে না।

'কি বলছিস ভাল করে বল। জল খালিস

অমল তাকিয়ে থাকল মায়ের দিকে। মা, তুমি বল রক্ষার নাভি থেকে অনেক দেবতা জন্মেছেনঃ দেবতাদের গায়ে রস্ত আছে মা? আমার রক্তের মতন? যাদের রঙ আছে মা, তারা মরে না। আমার শরীরে অনেক রঞ্জ। গ্রারো কত রক্ত দিয়েছ তোমরা। দেখে। সামি এখন মরব না। মা কি আমার কথা শা্নতে পাচেছ না?' অমল এই সামান্য কথাকটি চিন্তা করতে গিছে মায়ের মুখের দিকে তাকিয়ে এক রকমের বিরভিকর ক্রানিত অন্ভব করল। মৃত্যুর কথা মনে পড়তেই ভয় পেল। ভিতরটা হিম হয়ে অসেচে যেন: গ্রমল ঘ্রেন্বের চেম্টা করল। কিন্তু ঘুম পাচ্ছে না। চোখ ব্যক্তিয়ে রঞ্জের শব্দ শ্নেতে চাইল। সে জ্ঞানে না তার কি অসম্থা তবে তার রক্তে কি একটা পাছে যা তাকে ভীষণভাবে দুর্বাল করে দেয়। এটা সে ব্যোঝে। আজ বোধ হয় তা-ই বেড়েছে। রক্ত জমলে কি ইয়ারং বদলে যায়াকালো রক্তা অমল কে'পে উঠল। অমল কালো রক্তের কথা চিন্তা করতে চায় না। সে কি খাব কাঁপছে? কারা যেন তার শরীরটা ধরেছে। মান্তের হাত আর স্থার হাত অমল চেনে। কিণ্ড একি! সমস্ত স্পূর্ণা যে শীতল ও একাকার ইয়ে গেছে. মনে হচ্ছে অমলের! অমল স্তিটে ক্রমণ ভয়ে ভারী অন্ড হয়ে পড়ছে যেন। চোখ ব্রাজ্ঞরে চারপাশের শব্দিকত নি**শ্তখ**তা অন্ভব করতে চেন্টা করল।

কতক্ষণ পরে ঠিক ব্রুবতে পারছে না
আমল, তবে বড়দার কণ্ঠন্বর কানে এল যেন। বড়দা এখন এখানে এলো কি করে:
এমনিতে কাক্ষের চাপে বাড়ি আসা সহক্ষে
হরে ওঠে না। তার ওপর কলকাতা থেকে
প্রায় দেড়েশ মাইল দ্রে থাকে। কলকাতার বাইরে চাকরীতে গিয়ে বড়দা এর আগে
হঠাৎ বাড়ি এসেছে কোন না কোন টোল-গ্রাম পেয়েই। এবার নিশ্চরই কেউ টেলি গ্রাম করেন। খড়দা নিজের ইচ্ছেয় এসেহে। 'কোন ট্রেনে এলি?' দাদর কঠিবর।
'বেটা ঠিক সম্বোর একট্ব আন্তে দিয়াল-দার আসে।' বড়ুদা ধামল। ভাষার জ্ঞাকা হয়েছে?

> 'হ্যাঁ, এখনি আসবেন।' 'রোগটা কি ধরা পড়কা?'

মা কণ্ঠতবর অনেক নামিরে ধমক দেও-রার মত চেচিরে উঠল। আলেত কথা বল, ডাভারবাব, অম্বুর সামনে আলোচনা করতে বারণ করেছেন।

'মা ভারারকাব এসে গেছেন।' বর্ণ্ডীচরক ববর দিল।

াসর্গড়: অলোটা জেনলে দে। সম্পে হরে গেল। সব হরের আলোগ্রলো জেন্ন রাথ। মা ফিসফিস করে বলল।

'এখন কেমন ?' বড়দা অনেক এগিছে এনেছে অমলকে দেখার জনো। সংগ্র মালতীপিসিও। আগের কথার জের টেনেই মালতীপিসি বড়দার বেন কানের কাছে বলল, 'রোগটা লিউকিমিয়া, ব্লাভ ক্যান্সার.'

সমল ককের মধ্যে ধারা খেরে চোশ খ্লাল হঠাং। আর সংগা সংগা বেন চারি-দিক অপ্রকার হয়ে গেল। কি যেন হছে ধর। দুতে শ্রাস-প্রশাসে বড় কওঁ হছে। খোলা দুটি চোথের তার। ফেটে এখনি বোধ হয় সারা জীবনের শ্বন্য সম্পিত অশ্রন্থ নিংশায়ে গড়িয়ে পড়বে।

আলো ফিউজ হয়ে গেল যে, কে ফিউজ করল এ সময়ে!' বাড়িতে গোলামাল উঠল। সৰ্বলেই ষেন চেচাচ্ছে। ব্যুস্ত সুবা অমলের জনো দুখ গ্রম করছিল। ডাক্সর-বাব্র ভারীজ্ঞোর পদক্ষে**প অব্ধকার** সি ডেতে কি ভয়ৎকর বিশ্বখল আর দাপা-দ্যাপির মত শোনাচ্ছে। ধরের মধ্যে সবা**ই** বাদত হল। প্রনো বাড়ির জীণ ইলেক-ট্রিক লাইন। একবার ফিউ**জ হলেই মে**ন সার্রকিটে ফিউজ তার লাগে। মা জানে। না তার বহু পরোনো আধাভাণ্যা টিনের বাকদে, যেখানে অমলের ছোটবেলার লাটু, গ্লি ছে'ড়া টেনিস বল, কাগজের রাজন চশমা, ট্রেনের চিকিট, কাঠের ঘোড়া, প্লাসটিকৈর এরো**প্লেন, ছবি আঁকার রঙের** বাৰ্কস, পেশ্সিল-কাটা শ্ৰেড ইত্যাদি **থাকে**, তারই মধ্যে ফিউজ তার রা**থে। অন্ধকারে** অমলকে ছেডে ম: উঠে গেল ফিউল তার সেখানে খ'লেতে।

অমল এই কলরবের অব্ধকার মৃত্তের্ণ গুলির মধ্যে তার বেদনার অন্তর্ক করক, প্রব দেহের সমস্ত রক্ত বুক আর মুখ্যাড় ভেলে ক্রমে যাড়ে যেন। বুকে স্বিদালে বাড়ি ভেলে গ্র্ডিরে তালগোল পাক্সিরে যাড়ার মত একটা চাপ তাকে ব্যাসর্ব্যান্থর দারিত দিশরে মত কুক্তে গিরে কঠবে শারিত দিশরে মত কুক্তে গিরে কঠবে শারিত দিশরে মত কুক্তে গিরে কঠবে আরো, আরো। তারপরেই কে যেন আনরার সনায়ের চারপাশে ক্রমে-ওঠা রক্তের অধকারে তার চারপাশে ক্রমে-ওঠা রক্তের অধকারে তার চারপাশে ক্রমে-ওঠা রক্তের অধকারে তার চারপাশে ক্রমেন্ত্র সমস্ত কোলাহল হঠাৎ ক্রমেন্ত্র গেলে।

মুহাতে অমলের শরীরের রক্ত আরু ঘরের অধ্যক্ষর এক হয়ে গোল।



পিছন দিকে জানালার ঘ্লাঘ্লি দিয়ে যা দেখার মোহিনা ঠিকই দেখে, তব্ মাথা ঘোরে না, চোখে শ্রের ফ্ল ফোটে না বা দ্ম করে মরে যাবার মত লজ্জাঘেরা আদে না তার। শ্রুর হাতের আঙ্লাগ্লো পারও লিকলিকে খসথসে আর মরামাস খ্লিকওটা দেখার। চোখ ফিরিকে একবার নিজের হাত দ্টোই দেখে নেয় দে। অসম্ভব খড়ি-খড়ি চেহারার নিজেকে মনে হয় আমত বাদর, যেন পা তৃলাতেই ঘ্ভুর বাজ্বে।

ফের দ্টোয় চোথ রাখে সে। থ্তনিতে পি'পড়ে সড়ে-সড়ে করে, এইটাকু যা উপ-দুব। তবে সহার্শান্ত থাকলে অনেক অবিদ দেখা যাবে। মোহিনীর এখন ফেরার कथा नग्नः। गर्धः अथन किन, जामानस्मान থেকে লরী ফিরতে প্রো দ্টো দিন ও একটা রাত্তির সাগার কথা। পঠি মাইল যেতে না যেতে হঠাৎ কোখেকে সামনে এক হেলেগরুর উদয়, এবং চাপা দেবার পর দেখেছে, শুধু গরু নয় সঙ্গে মানুষও ছিল —দ্বি প্রাণীই থে'ংলে একাকার হয়ে গেছে। গাড়ি পাশের নয়ানজ্বলিতে হয়ে পড়ে আছে। কাছেই একটা চটি মত বাজার ছিল। স্তরাং মোহিনীর কপাল কেটেছে। চোমাল টে'সে গেছে। সারা শরীর থাংলানো তো বটেই: দার্ণ *জনর*ভাবও রয়েছে। আচমকা দৌড়ে পলিয়ে বে'চেছে ON I

কিন্তু সতি। কি পালিয়ে বাঁচা যায়।
বাঁচা মানে তো জীবনের সামনে দাঁড়িয়ে
থাকা আকাশভরা রোদে যেমন জীবনের সূথ ছড়ানো, সেই জীবনের ভিতরও আশা-আকাশ্কা তেমনি ব্যাপক। নিতাশত লুকো-চুরি ছলে নেপথা থেকে মণ্ডে উন্কি মারতে গিয়ে মোহিনী দেখে জীবনটা হঠাং বড় বেশী ফাঁকা। অর্থাং আকাশে শুধু নীলই দেখছিল এযাবং; শ্নাতাটা লক্ষা করে নি।

থাটে ডাইকরা বালিশ। সেখানে ছেলান দিয়ে বড় আরামে আছে রাজেন। বিছানাতেই চামের কাপ, খাবারের স্পেট জলের স্পাসটা কেন যে পড়ে যাজে না, তাই আশ্চর্য।

পারের দিকে স্পাতা বসেছে। কপালে

দার্ণ টিপ, এলানো খেপা: ব্কের উপর

দিকটার সর্ চেন চিকমিক করছে। কাপড়

পরে কাল ব্যাউজে টান টান মাংসের ছাল

শ্ব বেশা প্রকট—ইজাক্ত কিবো জলাকে;

মোহিনী জ্বানে না আপাতত। স্লুভার একটা পা মাটি ছেণ্ডিরা অন্যাটা ক্লেছে। জান্ দ্টোর উপর কাপড় আরও টান-টান মনে হচ্ছে। এই সকালে ঘরের ভিতর ঠাণ্ডা নরম ছারার স্লুভার শরীর রেডিয়মের মত তাপ বিকীরণ করছে এবং হারামজাদা রাজেন বেশ আরামে বসে খোসগল্প জ্বেড়েছে।

জানালার বাইরে এদিকটায় যেখানে মোহিনী দাড়িয়েছে এক ট্করো সৰজী-ক্ষেত। সক্ষীগ**্রলো** যদিও এ শরতে অসম্ভব সব্জ হয়ে আছে, কথামত व्यक्तात्व तम ब्रश्नी प्रथायः। এलायात्मा ঝাকড়মাকড় আগাছার সংশ্য তারা একা-কার। গের**স্থ** কিশোরী শিম**ল**ভার সংগ্র বুনো শিম যেন বা সরীশ্পের মত গা-জড়া-জাড় করে মিথনোলশ্ত। ঢ্যাড়সের খসখসে গায়ে হাভিশ-ড়োর ঢলাঢলি। বড় সাধের চিকনকোমল লাউলতাকে পিষেছে আল্রে নামনা সাপের মত কুচ্ছিত গতর। ঝিংফের সংশ্য তেলাকুচো আর বিষাক্ত थ, प्रत्न । ठिक সহयम्थान नवः, थर्षण । भारतः-মাঝে অজন্ত বং-বেরংয়ের দোপাটি গাঁদা ফ্ল আর জিনিয়া ফ্টেছে। ভাল-বাসার ভান—মোহিশীর মনে হয়, এগালো ভালোবাসার ফাদ। ঘাসফড়িং উড়ছে। হ্লহ্লি ফিঙে, শালক ল্চারটে ঘোরা ঘ্রি করছে। নীচে কোখাও ফাঁকা ভিজে মাটিতে—যেখানে ছাস গজায় নি ঘন-ছায়ায়, গ্রাটকয় ছাতারে পাখি হল্লা করছে। প্রজাপতি উড়ছে। গাংফড়িং উড়ছে। চিরোল ম্বাসের পাতায় লালপোকা নীলপোকা মাচানের ওপর राँग्रह। कारहरे

লাউডনা সাপকে শ্রমে থাকতে CHICK त्याहिनी। आज्ञारम भूति वाणि त्वन प्रथए মোহিশীকে। ভারী জনসজনলে নীল চোখ। কেন মোহিনীর হঠাৎ হাসি পার। মনে বলে দাড়া, মজাটা টের পাওয়াচ্ছ। লিকলিকে আঙ্কুল দুমড়ে কিল দেখার সাপটার দিকে। সাপটা শ্রেই থাকে। মোহিনীর পায়ের কাছে ঝুরঝুর করে মাটি খসার শব্দ হয়: সে দেখে দেয়ালের ভিতে ই দুরেরা মাটি ভড়ো করেছে। খ্ব প্রনো এই একতলা দালান। মোহিনীর ঠাকুদার পরসার তৈরী। ঠাকুর্দার **ছেলেটা ছিল বাউ-ভূলে** গোছের। গাঁজা খেত। জমিলমা ককের নাকি প্রেড গেছে। মোহিনী তথন ছেলেমান্ব। আজ-काल प्राहिनीत मत्न इत्, मन श्रास मान्द ফতুর হয়–গাজা খেয়ে ফতুর হবে কেন? গাঁজার সংগে নিশ্চয় কিছ, ছিল। মেয়ে-মানুষ? আলবাং। গাঁজা আর মেয়েমানুষ— থ্যজি, পদ্য করতে দোষ নেই, গাঁজা আর বাঁজা মেয়েমান, ব। তবে সেই এক ভালো। কোন দায় ঝঞ্চাট থাকল না। অর্থান তাঁর বে. সাক্ষীগোপাল মেয়ে-মানুষ যেটা ছিল, অর্থাৎ মোহিনীর মা সে ব[্]জাছিল না—তার প্রমাণ মোহিনী। মোহিনী আকাশ থেকে পড়েনি বা থেকে কুড়োন নয়। কিন্তু এটা নিতান্ত বিশ্বাস ছাড়া কী? মোহিনীর চেহারা তার মাবাবাবাকার্র মত । য় । কেবল স্কোথ मृत्यो वदावर भानक-এकरे, त्यामार्छ। छ। বলে চোখের দ্ভিটতে কোন খাতে ধরা পড়েনি আজ অবিদ শ্বং চোথের লালচে ভাব, ঝিমান ইত্যাদি মাঝে মাঝে নাকাল করে মোহিনাকৈ। তার ড্রাইভার হওয়া উচিত হয় নি।

ধুস্ শালা! হঠাং সাত-পাঁচ ভাবনা
গা থেকে পোকা ঝাড়বার মাত ঝেডে ফেলে
ফের ঘুলঘুলিতে চোথ রাখে দে . দেথে
স্লাতার হাত ধরে টেনে বাডে নিজে
রাজেন। স্লাতা, এই কী হচছে বলে, শেষ
অন্দি কাছেই যাছে। তাইকরা বালিশে
দুটিতে পাশাপাশি হছে। তারপর রাজেন
তার রোদেশোড়া ম্যলের মাত উস্কোখ্নেক।
ঠাাঙটা স্লাতার কলাগাছের গাঁড়ির মাত
ভ্যাড্রেস জান্তে চাপিরে দিরেছে।
বিপাক্ষনকভাবে কাপড় সরে যাছে স্লাভার।



আর রাজন পলার আটেসরা মোটা আছেলে ওর গলার খাঁজ আর ঠোঁট ফান ই'দরের মত কটেছে। গালে গাল ঠেকেছে দর্জনের। স্কাতার চোখটা অবশ্যি এ-দিকেই। খনেখা বিদ্ধানীর দিকেই খেন। বড় বড় শালত চোখা গভীর চাহনি। মোহিনীর চোখটিকে দেখতে পাছে সে? নাঃ, তাহলে তো এরকম ঘটতে থাকত না। আন্তে আন্তে ব্কের কাপড় কোমর থেকে নেমে মাওরা।

क्र गामा! घ्मध्निए हेप्ता हात्य ভার গোলাপীঠোটের ধাক্কাও লাগে যেন। মোহিনী চোথ সরিয়ে নের। নিভাক ই'দরেটা সাড়ুপো স্থির হয়ে থাকে। নডে না। এ এক উপদ্ৰব। নীচে থেকে একটা শ্কনো ডাল খ'্জে নিয়ে খ'্চিয়ে দিতে शत्र त्मारिनौ। रठा९ माथाणे घुटत ७८७ তার। কপালের টাটকা ঘায়ে যে রঙ্ক জমে-ছিল এতক্ষণ জানালার রডে ঘে'ষে থে'ংলে গেছে। তাই ফের রক্ত উপচে আসে। চোখ ঢেকে যেতে থাকে। হাত দিয়ে চেপে ধরে त्माश्चिती। भाता मात्थ दङ नित्य कल थात्क **কিছ**্কণ। মনে পড়ে না, ওরা কি তাকে কোন রড দিয়ে মেরেছিল নাকি ঘারি? কিলচড় অবশি। বেদম পড়ছিল। মাঝখানে হঠাৎ কোন সভজন এসে পড়ে একট্থানি বির্রাত, ভাড়িটাও ক্লান্ত, যার ফলে আচমকা দৌড়ে পালিয়েছিল সে। পালাতে পারত না। তবে দুটো ব্যাপার ওকে তথন সাহায্য করেছে। মৃত্যুভয়ে মরীয়া **হতে** পারা এবং হঠাৎ সামনে ইসমাইলের ট্রাক এসে পড়া। এক ড্রাইভার আর এক বিপন্ন **भारे** आदक प्रमन् भिराहः । क्वित राजे आत রামভকতের জনে। ভাবনা হয়। তারা কি পালাতে পেরেছে? বেচারাদের এক দংগল করে পর্যায়।

রোদ কড়া লাগে। ছায়ার দিকে সরে এসে ঘন সব্জ ঘাসের উপর মোহিনী এবার শ্বয়ে পড়ে। নীচে মাটি স্যাতসেতে। তবে ঘাস পরে, থাকায় তার অর্স্বান্ত লাগে না। নিজের বাগানে চিৎ হয়ে শ্বয়ে মোহিনী ওপরে লতাপাতার ফোঁকর দিয়ে আকাশ দেখতে থাকে। তার সামনে পিছনে ডাইনে-বাঁরে আগাছা আর দোপাটির ঝাড়। খ্য कारह ना जल प्रथा यारा ना य ज्यान কেউ শুয়ে আছে। আন্তে আন্তে প্রচন্ড অভিমান মোহিনীকে জনলাতন করতে থাকে। মোহিনী জীবনে কাদতে পারে নি। এখন মনে হয়, ক'দতে জানা থাব সাথের ব্যাপার। অথচ কালা আসে না। অভিমান তাকে গলাতে প:রে না। বরং কুটকুট করে শোকার মত দাঁতে কুটে খায়। এ অভিমান তাকে নিম্পৃত করে তোলে। সে_ংর্পির্পি শ্বাস ছেড়েমনে মনে বলে, এই কো াাপার? কী হবে? নিখ্ফল মুঠো ঘাসের পরে ভেঙে পড়ে ভার। আন্তে আন্তে চোখ বোজে সে। তার কানের ডগায়, গালে, জামার কলারে পি'পড়ের সারি চলতে থাকে। মগজ লক্ষ্য করে হাঁটে। ব্রুবডে **्ष्टिक हुन करत बारकः स्था ब्ट्रक्स अन**द

গিরগিটি হে'টে বার নির্ভারে দোপ্রটি খসে পড়ে। তারপর ক্রমশ মনে হর, চারপাশে উপরে নীচে সব সব্জ পড়েড বাজে। আগন জনসহে। মোহিনী পড়ে বাওয়ার সংখে চোখ খোলে না।

বড় আরামে হ্মিরে পড়েছিল
মোহিনী। চোথ খুলে প্রথমে সে অবাক
হয়। তার সারা শরীর জনাশ করে। কান
সন্ড-সন্ড করে। আর প্রচন্ড শীতবোধে
সাড়ন্ট মোহিনী ব্যতে পারে, এখন থেকে
কেবল ছায়া তাকে যতে ছিরে রেখেছে।
আশেপাশে কিছু উজ্জ্বল রোদ। তা সত্তেও
সে রোদের স্পর্শ পায় নি—কারণ ছায়ারই
কারছিপ। রোদ আর ছায়া তাকে নিয়ে
বাজী ধরেছিল। ছায়ার কজ্জির বড় জার—
শিকার ছাড়ে নি।

আন্তে আন্তে ওঠে মোহিনী। তার মনে পড়ে হার, কখন ষেন দ্ব-চারবার মুমের মধ্যে হে'টে (এই দিবালোকে) ওই ঘূল-ঘ'্লিতে চোথ রেখেছিল ফের। দেখেছিল স**ুলতা আর রাজেন জড়াজড়ি এই** র্তাম্ভদের মত শুয়ে আছে। ঘরের ভিতর বন্ধতায় তাদের বেশ ভিজে দেখাচিছল। মোহিনী জানতে পারে, নীচের এই মাটিটা –যাতে আমরা শায়ে **থাকি** তা **জীব**-জগতের নিজম্ব জিনিস এবং স্যাতসেতে সতত। জঠরের মত ভিজে। এই ভিজে ভাবটি **থেকেই** যা কিছ**ু গঞ্জায়—ফৃল বা** ফোঁড়া। দোপাটির মত স্থির নিঃঝুম উদ্ভিদের ফ্রলগুলো চারপালে ফৌড়ার মত দেখাছে। অজন্ত টাটকা ও বাসি কত-র্নাশর বিশক্ষ ও পচা র**ক্তে হাত ব্লোতে** ব্লোতে মোহিনী ক'পা হাটে। দ্-একটা পাতা ছি'ড়ে নেয়। দাঁতে কাটে। ফের হাটে। তার চোখের সামনে একট, করে অন্যান্য জিনিস অপ্রয়োজনীয় ও পরিত্যন্ত হতে থাকে—কেবল এইকব ক্ষতচিহ্ন বুকে নিয়ে স্যাতিসেতে মাটিতে পড়ে থাকা জড়া-র্ভিড় শরীরগ**্রলি সে লক্ষ্য করতে পারে।** তার দুটো চোখ ক্রমণ ঘুলঘুলি হতে থাকে। দৃ'হাতে চোথ কচলে মোহিনী চলে। বাগানের এপাশে রাংচিতা বেডার সামনে এসে একবার দাঁড়ায়। শ্যাওলা**-ধরা পরেনো** পৈতৃক বাড়িটা পিছন ফিরে একবার দেখতে সাধ ধায়। কিন্তু **ঘ্লঘ্লি ছাড়া আর** কিছ্ম প্রবেশপথ না পেয়ে এবং রাজেন ও স্পতার আলিপান বাতিরেকে ভিন্ন কিছ, না জেনে সে দীর্ঘদ্বাস ফেলে। হঠাৎ তার বকু কে'পে ওঠে। তার ধারণা হয়, বুকের ভিতর দীর্ঘ সময় সে দুটো মড়াকে জায়গা দিয়েছে এবং নিজে চিতার মত জবলছে। চিতার আগনে উক্তে দিয়ে মডা দটোকে নিকেশ করার কাকৃতি হয় মোহিনীর। আগনে বড় নিস্প্রভ। বড় ঠাণ্ডা বাতাস বইছে। কাঠ ভিজে মাটি **স্যাভ্যতে**।

মাহিশী অসহার ডোমের মত সক্ষরী থাকে।
লম্মা পা বাড়িয়ে বেড়া পেরেতে বার।
বারার পথে ছোট ছোট কটি দিয়ে বতারোপত ক্যাকটাসের সারি তাকে আঁচড়ে
দের। থাকি প্যকে পা দুটো ঢাকা.
ক্যাম্বিসের জনুতো—রম্ভ করার সুযোগ
নেই। কিন্তু তার মনে হয়, তার পোশাকআশাক থেকেও যথেন্ট রম্ভ ঝরের
পার্টার দিকে শার্টা ভীষণ ভিজে—
শার্টার মুখ ঢেকে অনেকক্ষণ যাবং কেন্দেছে
মনে হয়। লাল চোখে মোহিনী তাকার।
থ্লখ্লি দেখে ফের। সে সেই ফ্লোরী-



কক্ষের সৈনিয়র মত গাড়োরালী ই'দ্রেতা খোজে অনেক কন্টের পর ই'দ্রে তাকে ঢার্জ করে: হল্ট! হ,কুমদার! এবং মোহিদাী একট্ হেনে বলে ওঠে: দোল্ড।

क्षवात शक्का भरत देभातको मामल स्त्रस्थ মোহিনী পাশ কাটায়। নিজন পীচের পথে চলতে থাকে। দুগালে হাউসিং এন্টেটের বড় বড় নিমীরিমান বাড়িয় ছায়া পথের দিকে চলেছে। বাড়িগ,লোর প্রতিকৃতি জড়িয়ে বাড়িগুলোকে অপমান করবার সাধে সে হাটে। বাড়িগুলো ভার কাছে অসম্ভব ष्यशासनीय छोटन। टम छाटनत कथा খ'্রিটিরে চিন্তা করে। সে জেনে ফেলে, তাদের পিছনে অজস্ত ব্যাপার রয়ে গেছে। তাদের ভিত্তির মাটি কেঁটেছিল বারা, তাদেরও অজন্র ব্যাপার রয়েছে। ই**টের জ**ন্যে মাটি লেগেছিল। ই'ট পোড়ালো হয়েছিল। বয়ে व्याना श्टराहिन। लाहानकत हून मुर्ताक স্টোনচিপস্ সিমেন্ট-কন্টাকটর ওভার-সীয়ার হাউসিং **কমিটি রাজমিল্যী মজ**্র... অজস্র ব্যাপার ভার সামনে আসতে থাকে। এক অখণ্ড যোগস্তে কয়েক লক মান্যকে বাড়িগ**ুলো বে'ধেছে। কয়েক লক্ষ মান**ুবের ভাবনা শ্রম সাধ উদরপ্তি বে'চে থাকা এবং মৈথানের ইচ্ছা থেকে তাদের অস্তিত। অথচ পলকে, চোধের একটি আকস্মিক দ্যিতিপাতে---যদি না কেউ অণ্ধ হয়, যদি না ওই গাড়োয়ালী ই'দ্বর লেন্ট্রির উপদ্রব থাকে, এত উচ্চ সব নিঃশব্দ বাড়ি অর্থাহীন আর অপ্রয়োজনীয় হরে চিংকারে ফেটে পড়ে। মোহিনী **জানতে** পারে, এ প্রথিবীর সব ঘরবাড়িকে পলকে ভূমিস্যাৎ করতে अक्टो घृनघ्नि**हे बरथण्डे म्यूनका अ** রাজেনের জড়ার্জাড় শরীর কেন্দ্র করেই সব ঘরবাড়ি খড়া হয়েছিল। মোহিনী একট্ কেশে মনে মনে বলৈ, বদি একথার তোমার আপত্তি থাকে, তো বলতে চাই...মিণ্টি করে শাুন্ধ করে শিশাুসালভ ভাষ্যে একে বলি প্রেম-ভালোবাসা...**হার্ট,** পরস্পরকে ভালো-বাসা মাত্র। স্কেতার রাজেনকে ভাল লেগেছে, আমাকে লাগে নি। এই যথেন্ট। তবে আইন... আইনের ব্যাপার একটা আছে (মোহিনী মাথা চুলকার) আইনটা কিছ্ নয়। আইন **এরকম করা থেতে পা**রে : দেখন (কোন মহিলাকে) আপনাৰে আমার ভালো লেগেছে, আপনারও যদি তা লেগে থাকে, আসন্ন, আমরা খরবাড়িতে বাই देमध्यतः निष्ठ १८७। यात्र रमध्य मााजाम, चह च्लाच्चिति वन्ध ना करत कानानाहै भ्रात निम वद्गः। नद्रका थाना द्राथा পারেন। তবে ধরবাড়িটা বিশেষ জরুরী। কারণ মানুষ বিছানার শুতে অভ্যত। নক্ষ মাটি হোক বা খাসে ঢাকাই হোক, ভা সব সময় ভিজে আর সাতিসেতে। তাছাড়া এসব ক্ষেত্রে শোয়াটা বেশ আরামদারক; কারণ হাজার হাজার বছর থলে মান্ত্র

শ্বতে অভ্যস্ত। সে দাঁড়িয়ে খেকে প্রেমের নিষ্পত্তি করতে পারে না। মোহিনী খ্রকথ্ক করে হাসে। তার মনে পড়ে বার, চমনলাল ট্রাস্সপোর্টের রজেশ ড্রাইভার তাকে একদিন ব্লেছিল, আবে শালা, শতীর্মারং তেরা হাতমে হ্যায়, পাকাড় লেগা কৌন? চালা, ट्यांत्ररम हाना , बाह्यामा मिन हाट्ट ! हार्र. স্টীরারিং হাতেই ররেছে, আকসিলেটর পারের নীচে। স্পীডোমিটার সামনে। স্পীত লক্ষ্য কর। রম্ভেশ বর্লোছল, উওলোগ সব রকেটবাগারা বানাতা। কহতা হ্যার, সারেম্স মেরা হাতমে হাায়! তো মেরে দোস্ত, দেখো, সায়েন্স, কাঁহা কিস্কা হাতমে হ্যায়! বোতামই বলো, আর স্টীয়ারিং বলো, ভূমি, মোহিনী বাটাই আসল লোক। তুমি শালা বোতাম টিপলে জাপানে বোমা পড়ে। তুমি শালা চুপসে বসে স্টীয়ারিংটা একট্ ঘোরালেই বাস!..... সতেরাং, ইয়ার, মৌজনে রও চুপচাপ। भव ठिक शास।

সব ঠিক হার। মোহিনী খাশি হয়ে অফচ্ট কণ্ডে বলে ওঠে। হটিতে থাকে।
নিজের হাত দুটোর প্রতি গবে বুক
ফালিয়ে সে চলতে থাকে। চমনলালের
গ্যারেজে পোছতেই ক্রেকজন তাকে ঘিরে
ধরে। মোহিনী হাত নেড়ে বলে, সব ঠিক
হারে। চমনলালের সামনে গেলে সে হাতের
ইসারায় বসতে বলে মোহিনীকে। মোহিনী
একটা চেয়ার টেনে গদীর একপালে বসে।
একট্ পরে সে বলে, গাড়ি পাঁচ মাইলে
পড়ে আছে।

চমনলাল বলে, থবর সব মিলা। দুসরি গাড়িলো। আভি জানা পড়ে গা। বহত জরুরী।

त्याहिनी भृशः अकरे, शाम।

क्या ? के अधक-उध्या र हा ?

নেহী। মাম্কী। হাম ঠিক হারে। কেকিন, ফির কুছ আর্কসিডেন্ট হোনে সে? মোহিনী জার হাসে।

ফির্ ঔর এক গাড়ি দে দেগা!

ফির আকসিডেন্ট হোনেসে?

ফিব্ ঔর এক মিল জারেগা। চমন-লালও হাসে। ষেত্না হোগা হো বানে লো না ভাই। তুম শেকোসে কিয়া নেহী?

জরুর।

उद फेंट्रो, कृष्ट था निग्ना?

নেহী।

তো খা লো। এ ৰ্থিয়া, বাৰ্কো কুছ খিলাও। চিবিরে চিবিরে মাংসের হাড়শান্থ খার মোহিনী। বেড়ালের মত মাথ করে খার। খেরে ঢেকুর তোলে। সিগ্রেট ধরার। ভারণর বলে, বাড়ি হরে যাবো।

চন্দনলাল বলে, ঠিক হায়ে। গাড়ি লেকে বাও। কোঁকন এক বাত...জানিত কুছ না পিও। হাতের ইশারা করে সে পানের মাপ দেখার।..... খোড়িয়ে পিও। গেট ইউর-সেকফ্ রিলাক্সভ্।

পথে গাড়ি দাড় করিয়ে রেখে মোহিনী হনহন করে বাড়ি ঢোকে। স্লতা দরজা খলে অবাক হয়। শালত হেসে বলে, এত শীগগীর ফিরলে যে! পরক্ষণে চমকায়।..... তোমার কপালে কী?

দরজা নিজেই বংধ করে স্কোতার একটা হাত ধরে উঠোন পেরোতে থাকে মোহিনী। বলে, অ্যাকসিডেন্ট হয়েছিল। জ্ঞার বে'চে গেছি।

গায়ের তাপ ব্রুতে পেরে স্লতা বলে, একি! তে•মার জরুর।ইস্ গা পর্ড়ে ষাজেছ সে।

ও কিছা না, বলে মোহিনী ওকে টেনে বিছানায় বসে পড়ে। পা দ্টো ঝ্লিয়ে দেয়। জুটো খোলে। তারপর ওকে জড়িয়ে ধরে দুহাতে।

স্লতা বলে, শোও, শুয়ে পড় চুপচাপ।
তারপর ছাড়িয়ে নেয় নিজেকে। উঠে
দাঁড়ায়।... গরম জল করে দিই। ১াত মুখ ধ্য়ে নাও। কপালে কী লাগিয়েছ?

किष्ठ् ना।

সে কি! দুট্ডাও, ডেটল আনি। ংক. ভূমি এস এখানে।

স্কৃতা কথা শোনে না। তন্তুপোষের নীচে থেকে বৈতের পাটির। থেকে প্রনো কাপড় ছি'ড়ে নেয়। তারপর ডেটল আর স্থলোর পাড়ে নিয়ে আসে—জানানার পাশে রাখা একটা কাঠের টব থেকে। কপালে ব্যাশ্ডেজ বাঁধতে বাঁধতে একট্ হেসে সেবলে—৪ই মদ খাওয়াই তোমার কাল হবে. বলে দিছি। ছি:, গাড়ি অনেকেই চালায়। স্বাই কি তোমার মত মদ খায়?

মোহিনী চোথ ব'ড়েজ বলে, খায় না। আফসিডেন্ট হল কেমন করে?

হয়ে গোল।

লাফিয়ে পড়েছিলে?

शी।

কেউ চাপা পড়েছে নাকি?

র্যা।





CMVS-6-203 Ben

भागायकेनाय नगरका ?

স্তাতার 'মানুষ্টান্ম' কথাটা শুনতে কেমন লাগে মোহিনীর। সে তার মূথের দিকে তাকিয়ে জবাব দেয়, একটা বলদও ভিল।

दल्प ?

হার্। যা হাজ নয়।

স্লতা মূখ ফিরিয়ে বলে, অসভ্য। নাও, চুপচাপ শুয়ে পড়। গারে জরুর, কী খাবে?

মোহিনী একট্ন হেলান দিয়ে বলে, খাবো না। বাইরে গাড়ি দাড়িয়ে আছে।

গাড়ি? স্লেতা প্রায় চে°চিয়ে ওঠে। ফের গাড়ি? কোখায় যাবে?

षाञ्चानरत्राज्ञ।

কথাটা মেহিনী এমনভাবে উচ্চরণ করে যেন এক ইম্পাতের নলের মধ্যে শাই শাই করে ব্লেট ছুটে গিয়ে কেথাও শক্ত দেয়ালে প্রতিহত হয়। শুধু প্রতিহত নয়, প্রতি-

> আমি কেমন! কেমন আছি? এ সম্পর্কিত—

অজ্ মুখোপাধ্যায়ের প্রথম গল্প-সংকলন

চশম। এ তিনটি গণ্প

পেপার বাাক / ৫০ প্রসা লক্ষ্যুপ ৰন্দ্যোপাধ্যায় কর্তৃক সম্পাদিত ও প্রকাশিত

১৩; আচার্য প্রফল্লেচন্দ্র রোভ । কলিঃ ১ শিয়ালদ্য । ফোন নং—৩৫-২৯৫১ ।

डा३ग्रे।

কুষ্ঠকুটির

নৰ'প্ৰকাৰ চুমাৰোগ্ ৰাভৱন্ত আসাঞ্জ্ঞা কালা, এক'কমা সাবাবাসক বাক্ত কলাট অব্যোগ্যক স্থাভানতা প্ৰকাশ শক্তি বাক্তৰা কৰিব স্থাভানতা প্ৰকাশ ক্ৰিম বান্ধি গুৰুত্বত প্ৰাৰ্থ তিন্দ ক্ৰিম বান্ধি গুৰুত্বত প্ৰাৰ্থ তিন্দ ক্ৰেম বান্ধি গুৰুত্বত বাক্তৰতা—১ ব ধ্বনিতও হয়। তারপর নিজেই অবাক হরে যায়। কী বলল সে? কোখায় এ কথাটা কাকে নিয়ে যায়। কী অথে পেশিছে দেয়। তার এই বাড়ি আর 'আসাদসোলের' উচ্চারণ দ্বের কোন ফারাক করতে পারে না সে। কী উচ্চট লাগল শন্দটা। গন্ডবাটা।

আসাদসোল? সে কোথা?

আছে। বলছি যথন, নিশ্চয় আছে কোথাও। মোহিনী জবাব দেয়।

এর আগে গেছ কথনও?

কী জানি! চমনভাই জানে।

জনুরের ঘোরে বকছ। শোও। মাথা টিপে দিই।

স্লেত: ওর গা ঘেঁষে দাঁড়ায় এবরে।
পেটের চাপ মোহিনীর কোমরের পাশের
হাড়ে লাগে। নরম কিন্তু টাইট রাডার মনে
হয় মোহিনী ওকে জড়ায়। বলে, স্নান
করনি আজ?

সংলতা উ'চুথেকে ওকে দেখতে-দেখতে বলে করেছি ।

কী রাহা৷ করেছিলে ?

কাঁ করব? তুমি নেই। শ্বেধ্ আল্ব-ভাতে আর ডালসেখ। গ্রাং গালটা মোহিনীর কপালের ব্যক্তেজের ছোঁহা বাঁচিয়ে কোথাও রেখে স্লতা ফের বলে, গাড়ির স্টার্ট বন্ধ করে এসো। কে আছে ওখানে?

দুজন আছে।

ু ওদের বলে দাও, যাওয়া হবে না। পাগল:

ত্বে আমিই ব**লে আসছি**।

যাবে, দাড়াও।

वट्ना ।

আমার কাছে একবার শোবে?

স্লৃতা জোর হাসে।...এমন করে বিললে কেন...যাও কই, সরো, শুতে নাও।

স্কৃত। শংলে মোহিনী অবিকল
শ্নতে পার বাইরে পথের ওপর পটার্টদেওয়া গাড়ির গরে-গর শবদ। শ্রে-শ্রেই
এখান থেকে তার কাকুনি গার টের পার
সে, এবং বলে, বেশ আরাম লাগে মাইরি।
এখন শ্রে থাকা গেলে কেমন ভালো
হত...কিল্ড থাবে শা। চমনভাই আর
দালা তার গাড়ি, আর হারামজাদা ওই
আসানসোল...সব শালা...থতর মুখের

সামনে থেকে থাবারের থালা কেড়ে নেওয়া। রোস। দেখাছিছ মজা। আমি বাবা মোহিনী ড্রাইভার। মেরা হাতমে স্টীয়ারিং। থোড়ীসে ডাহিনা কী বাঁও...বাস।

তুমি কুল বকছ। মাথার জল ঢালবে, চলো।

রাখো ইয়ার। আভি চুপসে শো যাও। মৌজমে রও।

ছাড়ো। মাথায় জলপটি দিই!

মোহিনী এবার স্বলতার কোমরের কাছে হাত দিয়ে টানতে থাকে।

সম্ধ্যার দিকে রাজেন এসে একবার এদিক-ওদিক দেখে নিমে ভেজানো দরজা ঠেলে ঘরে ঢোকে। স্লতাকে শ্রে থাকতে দেখে সে বলে, কী ব্যাপার?

স্কাত: প্রায় বিবস্থ অবস্থায় থেকেই জবাব দেয়। নিজেকে লাকে না। সে বলে, শুয়ে আছি।

ভকি! ঠোঁট ফাটল কিসে?

শ্ধ্ ঠোঁট না। স্লেতা কেমন হাসে। তারপার গলার গাঁজ, ক্ক, নাভির কাডটা, স্বাশ্রীরে আগ্লে ছাইকে ক্ষতটিক দেখায়।

রাজেন অবাক হয়ে বলে, কেন?

e এসেছিল।

মেরেছে এমনি করে? রাজেন দাঁতে-দাঁত চেপে বলে। কাউণেডুল!

স্কৃত। ৩র হাত ধরে গ্রেন। বলে, না। মারে নি। বিছানায় শর্কে মারামারি হয় না।

রাজ্যে সপ্রেমে অথচ ব্যুখ্য করে বলৈ, তাহলে আদর করেছে?

হার্য। প্রামীরা যা করে।

সব প্রামাই অমন হারামজাদা নয়। যেমন তুমি।

রাজেন একট্ হেসে বলে, অর্থান্য আমি তোমার ব্যামী নই। প্রেমিক।

অন্য একজনের প্রামী ভো!

এই বলে স্লাতা একটা সরে যায় জারগা দিতে। ফের বলে, আমার কাছে যারা শোয়, তারা এক রকমই। এস. শোবে নাকি? কই. এস। অভিমান হল ব্ঝি? সোনা, মানিক, এস!

স্লতাকে স্থাঁলোক জেনেই রাজেন শ্যুত যায়।

আমৃত পাবলিশাস প্রাইভেট লিঃ-এর পাঞ্চ শ্রীস্ত্রির স্বকার কর্তৃক পাঁচকা প্রেস ১৪ আনক চাটোজি লেন কলিকাতা—০ হইতে মৃত্রিত ও তংকতৃক ১১।১, আনক চাটোজি লেন কলিকাতা—০ হইতে প্রকাশিত।

विद्रमामस्युत्र वहे -

থগেন্দ্রনাথ মিতের

শতাব্দার শিশু-সাহিত্য

ডঃ সাধনকুমার ভট্টাচাথের নাট্যতত্ত্বমীমাংসা

20.00

শাহিতরঞ্জন সেনগ্রুণেতর

অলিম্পিকের ইতিকথা ২৫.০০ ডঃ বৃদ্ধদেব ভট্টাচার্যের

পৃথিকং রামেন্দ্রস্কের

H • 00

স্পুকাশ রায়ের

ভারতের কৃষক-বিদ্রোহ ও গণতান্তিক সংগ্রাম ঃ

প্রথম খণ্ড

36.00

শ্রীমণতকুমার জানার

ब्रवीन्द्रयनन

R.00

भःकलन : भौतिमहम्<u>त</u> हाँदोभाशास

বিজ্ঞানী ঋষি

জগদীশচন্দ্র

७.00

ভূজন্ত্যণ ভট্টাচার্যের রবীন্দ্র শিক্ষা-দশনি

50.00

ডঃ বিমানচন্দ্র ভটাচায়ের

সংস্কৃত সাহিত্যের

রুপরেখা

2.00

মোহিতলাল মজ্মদারের

কবি শ্লামধুসূদ্ৰ 20.00

সাহিত্য-বিচার

r.60

বাংলার নবযুগ বঙ্কিম-বৰুণ

₽.00 5·60

সাহিত্যবিতান ৯-৫০

যোগেন্দ্রনাথ গ্রুণেতর

ভারত মহিলা

0.40

কানাই সামূহেত্র চিত্ৰদশ্ৰ

₹6.00

অ:গামী প্রকাশ

মোহিতলাল মজ্মদারের

শ্রীকান্ডের শরংচন্দ্র

স:প্রকাশ রায়ের

ভারতের বৈপ্লাবক সংগ্রামের ইাতহাস

প্রথম খণ্ড

विष्मापग्र माहेरत्र श्री श्री निः ৭২ মহাত্মা গান্ধী রোড
॥ কলিকাতা ৯ ফোন: ৩৪-৩১৫৭

১०म वर्ष



Friday, 15th May 1970.

भाजनात अना टेकाफे, ५०११

সূচীপত্ৰ

প্ঠো	বি ষ য়	লেখক				
280	চিঠিপত্র					
১৮২	भामा दहादथ	- ত্রীসমদশ ি				
288	टमटम्बिटमटम					
১৮৬	ৰ্য•গচিত্ৰ	–শ্ৰীকাফী খাঁ				
289	সম্পাদকীয়					
288	•	–ঐীআরতি দাস				
268		- श्रीपद्रमाम स्थाय				
288		-গ্রীবাণীকণ্ঠ বল্দ্যোপাধ্যায়				
282	মধ্যিখানে চর (গলপ).	-শ্রীআশ্তোষ ম্থোপাধ্যায়				
225	সাহিত্যিকের চোধে আজকের সমাজ	– শ্রীস্মথনাথ ঘোষ				
290	রবীন্দ্রনাথ : একটি বিতক	—্শ্রীলোকনাথ ভট্টাচার				
228	সাম্প্ৰতিক ৰবীণ্ড-সমী ক া	– শ্ৰীবিৱত ঘটক				
₹00	ভূণভূমি (গল্প)	- <u>श्री</u> वीदान्द्र मख				
522	সাহিত্য ও সংশ্কৃতি	– শ্রীঅভয়ণ্কর				
526	নীলকণ্ঠ পাখির খোঁকে (উপন্যাস)	– শ্রীঅত্রীন বন্দ্যোপাধ্যায়				
222	চট্ট্যামের চন্দ্রনাথ	- শ্রীশচীন দত্ত				
२२ २	নিকটেই আছে	–শ্রীসন্ধিংস্				
२२७	भरनत कथा	–শ্রীমনোবিদ				
২ ২৯	ছায়া পড়ে (উপন্যাস্)	–সৈয়দ মৃস্তাফা সিরাজ				
২৩৩	প্রদর্শনী পরিক্রমা	শ্রীচিত্ররসিক				
२ ०८	ম _ু খের মেলা	-আবদ্ল জববার				
२७५	বিজ্ঞানের কথা	–শ্ৰীঅয়ুস্কান্ত				
২৩৯	নিজেরে হারায়ে খ;জি .(স্মৃতিচারণ)	–শ্রীঅহীন্দ্র চৌধ্রী				
२८५	গোয়েন্দা কৰি পৰাশৰ	–শ্ৰীপ্ৰেমেন্দ্ৰ মিত্ৰ লিখিত				
		–শ্রীশৈল চক্রবর্তী চিগ্রিত				
২ 8২	অ পানা	গ্রীপ্রমীলা				
২ 88	প্রেকাগৃহ	—শ্রীনান্দবিকর				
२ ७०	বেতারশ্রুতি •	–শ্ৰীগ্ৰবণক				
२७১	খেলার কথা	- শ্রীশ শ্করবিজয় মিত্র				
२৫७	च्या श्चा	–শ্ৰীদৰ্শক				
२७७	হৈমাসিক স্চীপত্র					
•	, ,					

अक्षर : औन्द्रशन तात्र

ठलएछ

ज्यादि

শিবাজীশংকর সান্যাল সম্পাদিত –মাইক্রে – পড়ন।

বিশেবর প্রথম দ্বিভাষী এই মাইক্রো-মিনি পত্রিকায় **এ মাসে লিখেছেন**— (বাংলায়)--নজর্ল (অপ্রকৃদিত), আশাপ্ণা দেবী, সমরেশ বৃস্, নারারণ গাঙ্গলী, প্রেমেন্দ্র মিত্র, নরেন্দ্রনাথ মিত্র, কৃষ্ণ ধর, শ্যামল গাঙ্গলী।

এ ছাড়া—ইংরাজী বিভাগও সমান **আক্ষণীয়।**

যোগাযোগ কর্ন :--১৩৮, কেশব সেন স্বীট, কলিকাডা--৯



¢ .

ডিপ্লোম্যাট

আমি আপনাদের বহুলে প্রচারিত 'আমতে' পাঁচকার একজন নিয়মিত অনুরাগী পাঠক। এই পত্রিকাটি আমার অতি প্রিয় এবং প্রতি সম্তাহে এই বইটি পাওয়ার জন্য অধীর আগ্রহে অপেক্ষা করি। এই পরিকাটি আমার ভাল লাগে, কারণ বিভিন্ন বিভাগের মাধামে অম,ততে যে বিভিন্ন রচনা এবং নতুন নতুন গলপ উপন্যাস প্রভৃতি প্রকাশ করা হয়, সেটা তার অনন্য বৈশিষ্টা। আমি এইমার এই স*তাহের 'অমৃত' শেব করলাম। এতে নিমাই **ভট্টাচার্য** এর **লেখা** 'ডিস্লোম্যাট' এর শেষ প্রতলাম। সাধারণতঃ আমরা যে ধরনের উপন্যাস পড়তে অভাস্ত সেইসব ক্তান্-গতিক উপন্যাসের থেকে এর কছ,টা পার্থক্য রয়েছে। এই উপন্যাসের প্রথম থেকে শেষ পর্যন্ত বেশ একটা গতি ও আকর্ষণ ছিল। লেখক বেভাবে তাঁর অপ্র লেখনীর শ্বারা উপন্যাসের বিভিন্ন ফ**্রিয়ে তুলেছেন তা সতাই অপ**্র'। বহু, দিন পর এই রকম একটি ভিন্ন স্বাদের উপন্যাস পড়ে খবে ভাল লাগল। আমি আশা করি ভবিষাতেও 'অমৃত' এই ধরনের ভিন্ন স্বাদের উপন্যাস পাঠক সাধারণকে উপহার দিয়ে তার অনন্য বৈশিশ্টোর ধারা অব্যাহত রাথবে। লেখককে আমার আন্তরিক অভিনদন জানালে বাধিত হব।

> প্রশাস্তকুমার দাস সাহাভড়ং বাজার, মেদিনীপরে।

> > ()

আমি আপনাদের বহুল প্রচারিত সা•তাহিক 'অমৃত'-এর একজন নিয়মিত অনুরাগী পাঠক। এই প**রিকা**টি আমার অতিপ্রিয়। এর প্রতিটি গল্প, ফিচার এবং উপন্যাস আমার অতিপ্রিয় এবং পড়তে খ্ব ভাল লাগে। বর্তমানে নিমাই ভট্টাচার্যের লেখা ধারাবাহিক উপন্যাস 'ডিপেলাম্যাট' আমার সবচেয়ে ভাল লাগে। অনেক দিন পর আমন্ধা সাধারণত যে ধরনের উপন্যাস পড়তে অভাস্ত সেই সব গতনুগতিক উপন্যাসের रथरक जम्मार्ग ভिन्न म्यारमन्न धकि छेननाज উপহার দিরে 'অমৃত' তার অনন্য বৈশিন্টোর কথা আর একবার প্রমাণ করল। দেখক ষেভাবে তার অপ্র লেখনীর স্বারা এই উপন্যাসের বিভিন্ন চরিত্ত ক্রটিয়ে তুলেছেন তা সতাই প্রশংসনীর। এই উপন্যাসের মধ্যে বেশ কিছুটা নতুনত রয়েছে যা আমাকে গভীরভাবে আকৃষ্ট করেছে। **লে**ধককে আমি আমার আন্ডারিক অভিনন্দন জানাজি। সপো-সপো আপনাদের ধন্যবাদ জান।জি

এবং অন্রোধ করছি এই উপন্যাসের ধারাবাহিকতা বাতে অক্স্থ থাকে তার প্রতি
দৃষ্টি রাখতে। আশা করব ভবিষ্যতেও এই
ধরনের নতুন-নতুন চিচ্চাধারার উপন্যাসের
সংগ্র 'অম্ত' আমাদের পরিচয় করিয়ে
দেবে। প্রশাহতকুমার দাস
সাহাত্তং বাজার, মেদিনীপরে

बारमा कावाद कवि

১৩ই চৈচ 'অম্ভ'র চিঠিপত্র বিভাগে প্রীস্রেশচন্দ্র দেবনাথ লিখেছেন 'বাংলা ভাষার প্রথম কবি সঙ্গয় এবং বাংলাদেশের আদি কবি বলে খ্যাত কান্তবাস ওঝার পিতা শ্রীহট্রের সংভান ছিলেন: কন্তিবাস ওঝার পিতামহ পশ্চিত নরসিংহ ১০৬৮ থঃ বংগের রাজা গাণেশের প্রধানমন্দ্রী ছিলেন। তার কনিন্দ্রস্কার লিক্টে প্রীহট্রের লাউড় থেকে ক্রিয়ায় গিকে বসতি প্রথাপন করেন।' কন্তবাস ওঝার আছাবিবরণী অন্যুব্র স্বর্গা উপরোক্ত ভাগান্তিল স্বশ্তাভাবে সমর্থন করা যায় না। কৃত্রবাস ওঝার আছাবিবরণীতে পাওয়া যায়—

'প্রে'তে আছিল বেদান্রান্ধ মহারান্ধা তাহার পাত্র আছিল নরাসংহ ওঝা বংগাদেশে প্রমাদ পড়িল সকলে অস্থির বংগাদেশ ছাড়ি ওঝা আইল গংগাতীর।'

উক্ত বিবরণীতে বেদানরোজ মহারাজা বলে উল্লেখ আছে কি**ন্তু কো**ন তারিখ নেই। সেনরাজত্বের অবসানের পরে ১৪১৪ হতে ১৪১৮ খৃন্টাব্দে গৌড়ের সিংহাসনে রাজা গণেশ বা দন্জমদনিদেব এবং তার পুরু যদ্ বা জালাল দিন ব্যতীত তার প্রবতী-কালেও অন্য কোন হিন্দা রাজার উপপিথতি मिथा यात्र मा। जाइटल मिश्रमः भारत बला यात्र রাজা গণেশ বেদানুরাজ মহারাজা এবং ত্রি সময়কাল ছিল ১৪১৪ হতে ১৪১৮ খ্: পর্যাত। পশ্ভিভ নর্রসংহ গৌড়েশ্বর গণেশের প্রধানমন্ত্রী ছিলেন বলে কোন প্রমাণ পাওয়া যায় না তবে তিনি গণেশের সমসাময়িক ও পার ছিলেন এবং গণ্গাতীর ফ্রলিয়াতে বস্তি স্থাপন করেছিলেন। কৃষ্টিবাস ওঝার আত্মবিবরণী অনুসারে পশ্চিত নর্নসংহ ছিলেন ভার বৃশ্পপ্রপিতা-মহ। (নরসিংছ, গভেম্বর, মুরারী বনমালী কৃতিবাস) ভাহজে প্রমাণিভ হয়, কৃতিবাস ওঝার পিডামহ পঃ নরসিংহ ছিলেন না এবং কৃত্তিবাসের পিতা বনমালী শ্রীহটোর সদ্ভান ছিলেন শা, তিনি ফুলিয়াতেই জন্মগ্রহণ করেছিলেন। অতএব শ্রীদেবনাথের পরিবেশিক্ত, তথাগঢ়ীলর সত্যতা স্বীকার नव ।

আদি কবি MENTO! বাংলাদেশের বলতে চাই যে, বাঙালীর সাহিত্য চচার কোন নিদশনি পাল রাজ্বের আগে পাওয়া বায় না। পাল রাজতের শ**ুর**্থেকে সেন রাজত্বের শেষ অর্থাধ অর্থাৎ দ্বাদশ শতাব্দী পর্যতে বাঙালীর লেখা কাবা ও নাটক । যা পাওয়া যায় তার ভাষা সবই সংস্কৃত। তার মধ্যে লক্ষ্যুণ সেনের সভাকবি জয়দেব রচিত অমর গুীতিকাব্য 'গীত গোবিন্দ' বাংলাদেশের তাপ্রে সম্পদ ও গবের বিষয় যা বাংলা তথা ভারতের সীমান্ত আ**্রেমণ** বিদৃশ্ধ সমাজে মহাদার আসন লাভ করেছে। তা বাংলা ভাষয়ে রচিত না হলেও বাংলা-দেশের কাব্য বলে স্বীকৃত, কারণ জয়দেব বাংলাদেশের কেন্দ্রবিলেবর কবি। এই পরি-প্রেক্ষিতে বিচার করলে জয়দেবকে বাংলা-দেশের আদি কবি বলতে হয়।

বাংলা ভাষার প্রথম কবি সম্পর্ক ইতিহাসবেত্তা ও ভাষাতত্বিদদের মধ্যে মতানৈকা রয়েছে। বাংলা ভাষার প্রথম কবি ফিনি হন না কেন তাঁর কবিত। এবং রচনার সময়কাল উজ্জ্বল না হলে সর্বজন গ্রাহা হয় না। ভাষাত্রবিদদের মতে বাংলা ভাষা ব্যবহারের স্ব'প্রাচীন নিদ্র্শন পাওয়া যায সিম্ধাচার্যদের সাধনতভুজ্ঞাপক চর্যাগীতি গর্বির মধ্যে। জানা যায়, বাইশজন সিন্ধা-চার্যের রচিত সাড়ে ছেচ**ল্লিশটি চর্যাপ**দ পাওয়া গিয়েছে, তার স্কুপন্ট অর্থ নিধারণে বিভিন্ন ব্যাখ্যা রয়েছে। কিন্তু সে ভাষা বাংলার্পে প্ণবিকশিত 🕬 । তারপব দ্'শতক পরে বাংলা ভাষার সাহিত্যে চণ্ডীদাসের নাম পাওয়া যায়। বিশেষ্ড্রদের মতে চন্ডীদাস চতুদাশ শতাবদীর মধ্যভাগে জনমগ্রহণ করেছিলেন এবং রাধাকৃষ্ণের প্রেম-ধারাকেই সহজবোধা বাংলা ভাষায় প্রকাশ করেছেন। চল্ডীদখের জীবন**ী সম্ব**ন্ধে কতকগ্রিল আখ্যায়িকা ব্যতীত আর কিছুই জ্ঞানতে পারা ধায় না। তবে তিনি যে চৈতন্যদেবের পূর্বে জন্মগ্রহণ করেছিলেন তা নিঃসন্দেহে প্রমাণিত, কেন না কুঞ্চদাস কবিরাজ চৈতন্য চরিতা**মূতে লিখেছেন** যে শ্রীটেতন্য নীলাচলে অন্তর্গুণের সংগ্ বিদ্যাপতি-চন্ডীদাসের গানের রসাম্বাদন করতেন। তা**হলে বাংলা ভাষার প্রথম** কবির আখ্যা কি চন্ডীদাসের প্রাপ্য নয়? শ্রীদেব-নাথের উম্পতে বাংলা ভাষার **প্রথ**ম কবি-तुर्भ मक्षरःत नाम भाउता याम् ना। **उ**भ-সংহারে কুন্তিবাস ওঝার প্রতি বিনয়চিতে धान्धा व्यानिता वलाक हाहै या. व्यापन ए **চণ্ডীদাস যথাক্তম বাংলাদেশের আদি** কবি এবং বাংলা ভাষার প্রথম কবি হলেও বাংলাদেশের আপামর জনসাধারণের কার্ছে



কৃতিবাসের রামায়ণের জনপ্রিয়তার তুলন হয় ন। **তারানাথ সান্যাল** জামসেদপ্রে-৫

সাহিক্ত্যের খবর

বিগত ৪৯শ সংখ্যা (৯ম বর্ষ। ৪র্থ খন্ড। শ্কুবার, তরা বৈশাখ। ১৩৭৭ বংগাখ) অমৃত সান্তাহিক পচিকায় প্রকাশত একটি সংবাদের প্রতি আপনার দৃণিট আকর্ষণ করছি।

এই সংখ্যায় সাহিতোর খবর' শিরো-ন্মায় (পাঃ ৮৩৭) 'রবীন্দ্রভারতী বিধ্ব-বিদ্যালয়ে' 'রবীন্দুনাথ ও লোকসংস্কৃতি' বিষয়ক আলোচনা চক্রের একটি সংবাদ প্রকাশিত **হয়েছে।** এই সংবাদে দেখলাম আলোচনায় অংশ গ্রহণকারী অধ্যাপকদের নামের তালিকা অসম্পূর্ণ রয়ে গেছে। যাদের নাম বাদ পড়েছে তারা হলেন: অধ্যাপক নির্মালচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় (রবীন্দ্র-নামের চিত্রকলায় লোকচিত্রের প্রভাব) এবং ডঃ দলোল চৌধুরী (লোকউৎসব ও ববীদ্দুনাথ)। ডি, চৌধ্রেণী

কলকাতা-৪৫

সাহিত্যিকের চোখে

'অয়'ত' প্রিকায় ধারাবাহিক 'সাহিত্যিকের চোথে আজকের সমাজ' বিত্রকিত নিবংধটি পড়ে খুব আনন্দ পাচ্ছি। এই আলে৷চনাটি নিঃসন্দেহে বত্মান সাহিত্যিকদের মধ্যে ও পাঠকমহলে বেশ আলোড়ন তুলছে। এ ধরণের বিতকিতি আলোচনা প্রায়ই আপনাদের পত্রিকায় দেখতে পাই। সেজনা সম্পাদকের প্রতি শ্রন্থা ও আভিনন্দন ভরাপন করছি। আমাদের মতন সাহিতা-অনুরাণীরা এধরণের আলোচনা-ম্লক নিবংধ পেলে আনন্দিত হন-- একথা অস্বীকার করা যায় না। আমি 'অম্ড' পাঁচকার নিয়মিত পাঠক। এধরণের বিতর্কিত আলোচনা আমাকে ভীবণভাবে আকর্ষণ করে যেমন, তেমনি আবার পড়ে মুম্বও হই। আমি একটা মহাবিদ্যালয়ের পত্রিকা বিভাগের সম্পাদক হিসেবেও বিভিন্ন জায়গার সাংস্কৃতিক উৎসবে প্রতিযোগী হিসেবে ^{বাস্}তব অভিজ্ঞতা সঞ্চয় করেছি। সেটা হলো, 'বর্তমান **যুগে ছাতুসমাজের** মধ্যে প্রের मरका मिन्न्निका द्वारे। द्वान तिहे? ছात-সমাজের এই পরিণতির মূলে কী আমাদের দেশের বাজনৈতিক চেতনা না **লেশের অর্থনৈতিক পরিস্থিতি** দামী? সামার এই বিজ্ঞাসার উত্তর **খ**ুজে পাইনে। কিন্তু এই বিবয়ের ওপর একটা বিতকিত সমালোচনা কিম্বা নিবশ্ব আপনাদের

পত্রিকায় প্রকাশ পেলে এই সমস্যার সরোহা হবে বলে আমার স্মৃদ্য বিশ্বাস। আমি এবার শুধ্ব পত্রিকা নিয়েই বলছি। আমাদের দেশের ওরহে পশ্চিমবাংলার শিক্ষা-নিকেতনের বিভিন্ন পত্ৰ-পত্ৰিকাগুলো দিনের পর দিন অবনতির পথে। **গঠ**ন চমৎকারিত্ব ব'লতে যা' বর্মি তার চুটি নেই: কিন্তু ভেতরের সারক্ত্গালো দেখতে পেলে ব্রাবেন, লেখার অভোস একদম নেই। মনে হবে সমুস্তই কাঁচা হাতের লেখা। ম্যাগাজিন বের বৈ খবর পেয়েই বোধহয় কেউ কেউ ছাপার অক্ষরে তাঁর নামটা প্রকাশ পাবে ভেবেই দেখার প্রতি স্বাভাবিক দুণ্টি দেন। কিছা স্থি করবার সংকল্প নিয়ে বা শিল্প-কলা চর্চারে জনা লেখেন না। কিল্ত হঠাৎ করে কি উন্নত লেখা কারও কাছ থেকে আশা করাযায়? সাত-আট বছর চচী করেও যে-বস্তুলাভ করা যায় না, ক্ষণিক প্রলোভনে তা' সম্ভব হয় কি?

ছাত্র-সমাজের এই নব অনেব্যার কথা ভেবে আশা করি আমার এই বস্তুবা নিয়ে অমাতে নিবন্ধ প্রকাশিত হবে।

> দেবীপ্রসাদ চৌধুরী পোঃ আলিপ্রেদ্যার কোর্ট জলপাইগ্রিড়

> > (()

"অমৃত" ১ম বর্ষ ৪৭ খণ্ড, ৪৫ সংখ্যা (৬ চৈত্র ১৩৭৩ বঙ্গাবদ) সংখ্যায় অচিতাকুমার সেনগ্রুত মহাশয়ের লিখিত ''সাহিত্যিকের চোখে আজকের সমাজ" ফীচারে তৃতীয় কলমে লিখেছেন, গণেশের ই'দ্বর এবং অন্যান্য দেব-দেবীর বাহন সম্বংশ তাঁর কাছে যারা চাঁদা চাইতে এসেছিলেন তারা কেউ বলতে পারলেন না কেন ই'দার বা প'্যাচা আছে। কালীর রং কেন কাল ইড্যাদি। ঘাইছোক এ সম্বন্ধে যদি লেখক মহাশয় সংক্ষেপে কিছ্ আলোচনা করেন তবে আমাদের মত সাধারণ লোকের কিছু, সুবিধা হয়। কারণ ঐ রকম অপ্রস্তুত অবস্থায় আমাদের পড়তে হয়। বিশেষত নিজের ছেলে-মেয়ের কাছে। আমি ভুক্তাগী। কাজেই লেখক মহাশয়কে অনুরোধ করাছ যেন তিনি শীঘ্রই সংক্ষিত আলোচনা করেন।

সৰিতা দাস, ৰরাহনগর, কলকাতা-৫০।

মনের কথা

মনোবিদ লিখিত খানের কথা বিভাগটি যথেদ্ট কৌত্হলোদ্দীপক। আজ বিজ্ঞান ও সমাজমানস যখন দ্রতেলয়ে অগ্রসরমান তথনও জনসাধারণের একটা বড় অংশ মনকৈ আধিদৈবিক শ্তথলে বে'ধে বিজ্ঞান বিরোধী এক জলাচল প্রকোঠে অবর্খ হয়ে আছে। বলাই বাহলো মা্থরোচক মনস্তা'ত্বক খেযালি—সাহিতা, নিগপ এমন কি বিজ্ঞানের ছম্মবেশেও নানাভাবে অনুপ্রবিণ্ট হয়ে আমাদের চিস্তাধারাকে বাস্ত্রান্ত্র বিজ্ঞানসম্মত হতে বাধা সৃথ্টি করছে। মনোবিদ প্রাঞ্জল ভাষায় যে বৈজ্ঞানক কুশলতার সংগে পাঠককে মিস্তাহকবিজ্ঞানের তত্ব তথ্য ও পরীক্ষা-নিরীক্ষার সমীপবহর্শ করছেন অম্থ পাতকার একজন নির্মাত পাঠক হিসাবে এর জন্য তাঁকে কুভজ্ঞতঃ ও ধন্যবাদ জানাই। এ ধরনের লেখা অম্তে প্রকাশত হয়ে কাগজকে নিঃসন্দেহে আরো আকর্ষণীয় করেছে।

শ্যামল ব্ৰেদ্যাপাধায়ে চলদিয়াঃ

নিকটেই আছে

৬ টের ১০৭৬ সনের নবম বং চতুর্থ বিদ্যান সাংগ্রাহক অমৃতাতে নিকটেই আছে' পড়তে গিয়ে রেশনিং ইনস্পেক্টরের বাস্ত্রিক্তা জানলাম। এবারের প্রসংগার গেংপর্য একট্ বিচার করলে দেখা লাবে যে রেশনিং বিভাগের কয়েকজন অসাধ্রেশনিং অফিসারেসহ ইনস্পেক্টরদের জন্য রেশনিং ইনস্পেক্টরদের অসাধ্র হওয়া ছাড়া উপায় নেই।

ক্ষেকজন অপদার্থ, স্বিধেবাদী, দ্নীতিবাজ ও ব্যার্থপুত্ট পদদ্ধ সরকারী কর্মাচারীরাই খাদ্য দত্তরের দ্নাম্মির জনো দায়ী। অথচ রাজোর দায়িত্বদাল সরকারী পদ্দ্ধ কর্মাচারীর। নিবিকার।

আমার সহক্ষীরা আনেকেই এসব বাপোরে অভাষ্ঠ বলে প্রতিবাদ করতে পারি না। আমার আশেষ দুর্ভাগ্য যে আমি রেশনিং ইনস্পেকটর হয়েছি বঙ্গেই সম্ভাব্য তথা দিতে পারছি না।

তবে এখন রাষ্ট্রপতি শাসন চাল হু হয়েছে। মাননীয় রাজাপাল নিশ্চমই খাদ্য দপতরের স্নাম ফিরিয়ে আনতে চেণ্টা করবেন। নইলে এটা তবি কলক, সমগ্র ফাতির কলক।

সন্ধিংস, আপনাকে আরেকবার ধন্দবাদ জানাই। কারণ, আপনার সংসাহসী
উদ্দেশ্য আমার মতো সাধারণ রেশনিং
ইনস্পেকটরকে সচেতন করবে সত্য বিব্যক্তি
অনুযায়ী ভবিষ্যাৎ এর জন্য।

জনৈক র্যাণনিং ইনস্পেকটার, ভূলকাডা<u>।</u>

मानातिक

পশ্চমবংশ্য যুক্তফার পতন হওয়ব পরও কোলকাতা পৌরসভায় এন্ট রাজহ জানাবধি বর্তমান আছে। আদি এনেটর আশুক্ত ছায়া দীঘায়িত হলেও পৌর-ভবনের একতাকে তা এখনও প্রোপ্রির গ্রান্স করতে পারেনি। তবে গ্রান্স বরবে না একথাও হলফ করে বলা য়ায় না। শুধ্ ভরসা এইট্কু পৌরসভার মুক্তফার্ট এখনও চলছে এবং আরও কিছ্দিন হয়ত চলবে।

সারা পশ্চিমবঙ্গের যাঞ্জুদেটর ভিত্তি ছিল ৩২ দফা কমসিচেট। চৌশ্দটি বাম-পণ্থীদল বা কংগ্রেস বিরোধী দল ঐ **কর্মস্টো**র ভিত্তিতে করায়ত্ত ঐক্যবন্ধ **হয়ে ক্ষমতা ক**রায়ত্ত করতে পারলে ঐ প্রোপ্তাম বাস্তবে রুপায়ণ করবার প্রতি-শ্রুতি দিয়ে জনগণের কাছে ভোট ভিক্ষা **করেছিলেন। অনার**ূপ **ভাবে** পৌর যাক্তফ্রণ্টও **কম'স্চী রূপারণ ও** দলীয় ভিত্তিতে আসন বন্টন করে দীর্ঘদিনেব **কংগ্রেস শাসনকে অপ**সাবিত করেছিলেন। কিন্ত আদি ফ্রন্ট থেকে পৌরফ্রন্টের নেত্র-বৃদ্দ একটা চতুর ও চালাক বলেই মনে হবে। কারণ, সংখ্যাগরিষ্ঠতা অজন করার সংগ্র স্থেগই তাঁর। একটি লিখিত চুক্তিও भाषानन करत राज्याता। स्मिर् हुन्ति अन्यभारत কোন দলের ক'বার মেয়র, ডেপট্ট মেয়র বা কোন স্ট্যাণ্ডিং কমিটির কে সভাপতি रायन वा अनुभा रकान मरलत क'जन थोकाव ইত্যাদি বিষয়ে প্রায় ঠিক হয়ে যায়। অর্ণাৎ পৌরসভার শাসনকার্য পরিচালনার ব্যাপারে ছোট হোক কি বড় হোক প্রত্যেক দলকেই ভাকটি মর্যাদাসম্পন্ন পদে আঁধফিত করার চেন্টা হয়েছে। আরও লক্ষ্য করবার বিষয় এই মে, মেয়র ডেপটেট মেয়ব কিন্তা অনা গ্রেছপূর্ণ পদেও প্রযায়রমে বড় দলগালি থেকে প্রতিনিধিত করার সংযোগ দেওয়া হয়েছে, তা সত্তে পদ ভাগাভাগির প্রশেন মতানৈকা দেখা দিয়েছে। গাজনীতি মাণা हाए। मिश्र উঠেছে। मलের স্বার্থ বড় হয়ে **ऐ**टिंग्ड ।

কিন্দু আদি যুক্তজ্ঞীর মন্ত্রীতের আসন নিয়ে এবকম কোন চুক্তি আদৌ সমপন্ন হয়নি। বরঞ্জ বড় ভাইরা পছন্দনত সমন্ত কিছা, গ্রাস করবার পরই রাজনৈতিক ছবিজন ছোট দলগুলির জনা কিছা প্রসাদ কিছরণ করে দেওয়া হয়েছিল। বাধ্য হয়ে

তাদৈর তা গ্রহণ করতেই হ**ল**। কারণ, বড় ভাইদের সংখ্যা এতই বেডে গেল যে ছোটদের আর কোন ভূমিকাই রইল না। তারপর নির্বাচনের পর অসেন লাভের পরিপ্রেক্ষিতে ছোট দলেরা আরও অকিপিং-कद इरह राम। कार्क्डरे এই पनग्रीनत প্রতি বড়রা শুধু অনুকশ্পাই প্রদর্শন কবলেন। আর নিজেরা মৌরসী পাট্টার মঙ এক-এক⁶⁵ ২০তর অলংকৃত করে বসলেন*ং* যোগভোৱ প্রশন কিম্বা ৩২ দফা কর্মস্টের রূপায়ণের জন্য যুক্তফ্রণ্টের প্রতিশ্রুতি রক্ষার ব্যাপারে আত্তরিকতা আছে কিনা, এই সমুদত বিষয় যাচাই করবার কলাই উঠলো না। দলের শক্তির কথাই প্রাধান্য লাভ করেছিল। দ্বয়ং শ্রীবায়চন্দুকে। নাকি সেত্র-ধনের জনো কাঠবিড়ালীর দাহায্য নিতে স্রেছিল। যুক্তাণেটর ছত্ত-ছাধাতলে (যতই অকিণ্ডিংকৰ হোক নাকেন) টোন্দটি শবিক একান্দ্র হয়ে মিলিত হয়েছিল বলেই মধারতী নিশাচনে ফুন্ট জনতার অকুপণ আশীৰ্বাদ লাভে বণ্ডিত হয়নি। কিণ্ডু নিৰ্বা চনের সময় কোন দলই স্বীয় শক্তির হাঙ্কার ছাড়েনি ৷ ফল বের্বার পরবতণী মুহাতেই গদী ভাণাভাগির প্রশ্ন যথন এল, তথনই বড় ভাইরা নিজের শক্তির উপর জোর দিয়ে মন্ত্রীদণতর দখলের জন্য মরিয়া হয়ে উঠে-ছিলেন। সহৃদয় পাঠকদের নিশ্চয় স্মরণ আছে যে, কে মুখা<mark>মন্ত্ৰী হবেন, স্ব</mark>রাণ্ট্ৰ দশ্তর কার হাতে থাকবে এবং সংখ্যা-গ্রিষ্ঠ দল হিসাবে মাক স্বাদী কম্যানিট পাটি'স্লি স্র্জপ্ণ দণ্ডর দথল কববেন ইত্যাদি প্রশ্ন নিয়ে এক অর্গ্রহিতকর অবস্থার স্থিট হয়েছিল। তথন কিন্তুবড় ভাইরা বিশেষ করে বাম কম্মানিন্টরা এই বক্তবাই রেখেছিলেন যে, তাঁদেব দলেব সদস্যসংখ্যা (বিধান সভার) যেহেতু বেশী সেইজনা তাঁদেরই দায়িত্ব সম্ধিক। কাঞ্চেই বেশীর ভাগ গ্রেড্ডপূর্ণ মন্ত্রীদণ্ডরগুলো তাঁদের হাতে না গেলে জনসাধারণের আম্পার প্রতি স্মাবিচার করা হবে না। তাঁদেৰই স্বারে সূরে মিন্সিয়ে অন্যানারাও একই ধাঁচে দাবী করে বসলেন। ফলে, य् बक्क वे नः भक तोकां छे । जीवन है का छो। इस গেল। আর বাস্তৃতপক্ষে সেদিনই ফ্রন্ট নৌকে। বানচাল হয়ে গেল। যাতীর। লাল-দীঘিত দংতরে আগ্রয় নিয়ে তৃণ্ত নয়নে নৌকাড়বির দৃশ্য অবলোকন করলেন।

একবার কেউ সেদিন আলোচনা পর্যাত করলেন নাযে, ফল্টই যখন ৩২ দফা কর্মা-সূচী রূপায়ণের কথা ঘোষণা করেছিলেন দলীয় স্বাথেরি কথা ত্যাগ করে ফ্রণ্টেরই উচিত নিধারণ করা কে-কে মন্ত্রী হবেন এবং কে কোন্ দ তরের নেবেন। কিন্তু কেউ তা করলেন না। যদ তা হত তবে নিশ্চয়ই সেদিন যে ঐক্যের হাওয়া বইতে শুরু, করত, আজ সারা ভারতে তা নতুন রাজনৈতিক মানচিত্র রচনায় অনেকথানি সাহায়্য করতো। তা সম্ভব না হওয়ার কারণ হচ্ছে প্রদপ্রের প্রতি পূর্ণ আদশ্গত পার্থকা এবং অবিশ্বাস, আখেরে কে কাকে থতম করে গোটা রাজে দলগত শাস্ত ব্যান্ধ করতে পার্বে তার ংগাপন বাসনা। রাজত্ব লাভের পর আবার হথন সমস্যা দেখ। দিয়েছে, তখনই আবার সেই বড় ভাইরা সেই ভুবন্ত নৌকার পাটাতনে বৃদ্ধে সমস্যা সমাধানের সূত্র খাঁজে চেন্টা করেছেল। যুক্তফান্টের বাব করার সম্মিলিত উদ্যোগের ফসল স্বান্ধে তুলেছেন সেই বড় ভাইয়েরা। তথন ছোট ভাই[া]র জিজ্ঞাসা করার পুশ্নও ওঠেনি। তব; স্থাসা দেখা দিলেই সকলকে এক সংগ্ৰে নিয়ে সমাধানের কথা উঠেছে। অর্থাং সমস্যার জন্য সকলকেই কাঁধ দিতে হবে। মেখলা দিন কেটে গিয়ে যখন রৌদ্রকরে৷স্জ্রন্স স্কুদিন আসবে তথন বড় ভাইয়া আনন্দ উপভোগ করবেন। বাজেই দেখা যাকেই, পাঁশ্চম বাংলার যুক্ত-ফুণ্টের ক্বর রচিত হয়েছিল সেইদিন যেদিন মক্রীদপতরের উপর দলীয় শক্তির অশ্যন্ত ছায়া পড়েছিল। তলেরৈ একাছ শ্রিক হিসাবে মন্ত্রী নিয়োগের প্রশন ফান্টের হাত থেকে দলীয় নেতাদের হাতে চলে গৈয়েছিল।

সেদিন যদি অণ্ডত ঐক। রক্ষার প্রয়াসে
দণ্ডরগুলি পর্যায়ক্তমে একদল থেকে অনা
দলের হাতে দেওয়ার জন্য কোন স্বীকৃতিপ্র গৃহীত হত তবৈ হয়ড় এত হাড়াতাড়ি
ফুন্টের সমাপিত ঘটত না। আরও কিছুদিন
ফুন্টেরাজন্ব চলতে পারত। যা-হোক আদি
ফুন্টের অভিজ্ঞতাল্যুব্ধ জ্ঞান থেকেই পৌরসভায় অফিস ভাগাভাগির প্রুশনিট একটি
চুল্পিন্রের মাধামে সমাধা হয়েছিল। ফলে,
পৌরসভায় ফুন্টের আয়্ দ্বির্দায়িত হল্ছে
বলেই মনে হয়।

4.**9**

রাজ্ঞা সরকার পঞ্চিতালনা ও কলকাড়া পৌরসভার শাসন কার্য পরিচালনায় भार्थका अप्तक। जब धक्या वनरज इस् পোরসভার দৈনন্দিন কাজ যদি স্কৃতিতাবে সুন্পন্ন না করা যায় তবে অব্যবহিত পরেই জনতার কাছে পৌর-পিতাদের জবাবদিহি দিতে হয়। অপাৎ জঙ্গ সরবরাহ যদি এক-ঘন্টার জন্য বন্ধ হয়ে যায়, কিন্বা নদামা বৃদ্ধ হয়ে কোন রাস্তা জ্ঞলমণন হয়, কিম্বা সন্ধ্যায় কোন সদর রাস্তার বিজ্ঞলী বাতি মূখ <mark>গোমড়া ক</mark>রে বসে থাকে, বা রাস্তায় আবজনার পাহাড় জমে ওঠে তখনই নাগরিকরা মুখর হয়ে ওঠেন। বর্তমানে যে ভাবে পৌর শাসন চলছে তা যে কংগ্রেস আমল থেকে কিছ, ভাল হয়েছে এমন নহ। স্তি ফলতে কি সেই ট্রাডিশনই সমানে চলছে। তব বলছি যে, শাসনের কাজ যেখানে গভীরভাবে ম্পর্শকাতর, সেখানে যদি গ্রেপুপ্ণ পদগ**্রাল**র কতা'-ব্যক্তিদের বছর বছর পালটে দেওয়ার জন্য অংশীকারাবন্ধ হতে পারা গিয়ে থাকে, তবে আদি ফুণ্টের বেলাতেও সৈই সূত্রহণ করবার জন্য প্রচেটা চালানো হয়নি কেন, সেটাই হচ্ছে জিজ্ঞাসা। রাজ্য সরকারের নীতির রূপায়ণ হলেও তার ফল ফলতে অনেকদিন সময় লাগে। থে কোন পরিকল্পনা কাষ্কির হওয়ার দীর্ঘ দিন পরেই তাব সাফলেরে পরিমাপ করা যায়। কংগ্রেস আমলে বিশেষ করে ব্রগত ৬: বিধান**১**ণ্দু রায়ের নেতৃত্বে যে পরি-কংপনাগর্মির রুপায়িত হয়েছিল এখনই তার প্রভাব জন-জীবনে পড়তে স্বার্করেছে । কাজেই রাজ্যাসরকারের দশতরুগালিতেও যদি প্যায়কেমে বিভিন্ন দলের সদস্রা যদি প্রধায়ক্তমে বিভিন্ন দলের সদস্যরা বস-তেন তবে প্রশাসনিক অস্ক্রীবধা তেমন কিছা হত বলে মনে হয় না। বরং যুক্তফুট যদি পাসোনেল বাছাই করে দিত তবে তা একেবারে নয়া ইতিহাস হয়েই থেকে যেত। তা যখন হল না তখন পৌরসভার মতো যদি আগেভাগে একটি নীতিও ঠিক কবা ে তাহলেও ফণ্টের এই অকালমৃত্যু ইয়ত রোধ করা য়েত।

মাহোক আক্ষেপ করে লাভ নেই। যা ঘটেছে সেই বাসতবতার পরিপ্রেকি∤ত মাল্যায়ন করে বলা হয় যে, যাঁরা বতুমানৈ আবার চৌদ্দ শরিকের পানরাশ্জীবন করার উপর জোর দিচ্ছেন তার৷ কতো রাজ-নৈতিক বৃদ্ধির পরিচয় দিচ্ছেন বলা শক্ত। ম্বাধীনতা লাভের অন্যর্বাহত পর থেকেই যক্তেজ্ব বা মোচার উপর জোর দিয়ে আসা হচিছল। পুশ্চিম বাংলার এবং নিৰ্বাচনের প্রাক্ষালেই যান্ধকে প্রত্যেক একথা বোঝানো হত যে একমাত্র কংগ্রেস-বিরোধী এবং বিশেষ করে বামপন্থী দল-গ্রালর মোচার মধ্যেই কংগ্রেস শাসনের অবল্পিতর গ্ৰুত্তজ্ব নিহিত আছে। ১৯৬৯ সালের মধ্যবতী নিব"চনের আগেও অনেকবার ফ্রন্ট হয়েছে তবে এবারের মত এরকম সার্ঘিক ঐক্য আর আলে প্রতিষ্ঠিত হতে পারেনি। আদর্শগত পার্থক্য নিয়ে ছল্ট গড়কে যে কোন কাজই
হয় না পশ্চিমবাংলার যুক্তর্যুট তা এবার
প্রমাণ করে দিয়েছে। কাজেই আবার বারা
সেই পাঁচমিদেলা ছল্টের কথা তুলভেন
তারা মনকে চোখ ঠারাছেন মাচ। তারা
যদি মনে করেন, এরকম কোশল করে
বাজীমাং করতে পারবেন তবে তারা সময়
দেউ করছেন। জেনেশ্নেই বারা ছল্ট
ভেঙেছেন তাঁদের উচিত হচ্ছে নতুন
করে গণ-আশাবাদি লাভ করার জনা
সচেট হওয়া।

দ্রুণ্ট রাজদ্বকালে যে রা**জ**নৈতিক ছিল অনিশ্চয়তা বজায় রাম্বপতির শাসনেও তা অব্যাহত আছে। কারণ, যে প্রশাসনিক যথুনয়া আবহাওয়া স্থিতব জন্য সচেণ্ট হবে সেই যত্রচালকরা এখনও ভীতি কাটিয়ে উঠতে পারেন নি। তাঁরা এখনও পুরোপ্রি নিরপেঞ্চভাবে কাজকর্ম চালনা করতে অক্ষম। কেননা একটা অজানা আশ•কার তাড়নায় তাঁরা সতত বিব্রত। তুদির মধ্যে প্রতাক্ষ ও পরোক্ষভাবে এই আশংকা রয়ে গেছে যে ফ্রন্টের শরিকদের যে কোন জোট আবার গদীতে আসলেই তারা নাজেংলল হবেন। সম্প্রতি রাজ্যের প্রধান প্রশাসনিক স্তম্ভ আই 🗀 এস্দের সভায় সেই আশংকার প্রতিক্ষবি ফাটে উঠেছে। যারগুটের আমলে সহস্র কিশ্বা ততোধিক মৃদ্রার কম্চারীরা বুজে'ায়া হিসাবে চিহিত হয়ে জনতার একাংশের হাতে এমনকি মন্তীদের কাছেও কিল্ড নানাভাবে লাঞ্চিত হয়েছিলেন, কোন আই এ এস বাঁর সেদিন সেই লাঞ্নার প্রতিবাদ করতে সাহসী হন নি। কিন্তু রাজ্যপাল শ্রীধাওয়ান যথন একদন আই এ এসকে বললেন যে "আপনি অভিযুক্ত, আপনি বড়ো সাহেব নন। অতএব, আপনার কথা বলা সাজে না।" সেই উক্তি নাকি সে ভদ্রলোকের পার্ণ মানহানির কারণ হয়ে উঠেছিল। তাঁর প্রতিবাদে তিনি এবং তার কয়েকজন সহ-কমী ধাওয়ান সাহেবের সন্গে বন্দে চবর্ণ, চুষ্য ও লেহাপেয় সমন্বিত্ত মধ্যাহভোক্ষনে বিরত ছিলেন। এমনকি এই অপমানের প্রতিশোধের জন্য কি বাবদ্থা নেওয়া যায় সেই উদ্দেশ্যে বিশেষ সম্মেলনও ডাকা হয়েছিল। সেখানে "নাভির নীচে কটিবন্ধ লাগানো আই এ এস" একজন নাকি ওজাস্বনী ভাষায় প্রতিকারের দাবী করে-ছিলেন। কিন্তু এই মানীরা প্রায় সকলেই ফ্রন্ট আমলে চরম মানহানির প্রদেনও চোরের মত বেমাল্ম "কিল" হজম করে গেছেন। এই আই এ এস বীরদের স্মরণে থাকা উচিত, জন্তার অর্থপন্থ সরকারী তহ্যিক থেকেই ও'দের গ্রাসাচ্ছাদন হয়। সেই জনগণকে গ্লী করে হত্যা করার জন্য দায়ী করে বন্তব্য রাখতে না রাখতেই নিজেদের নিদেখি বলে জাহির করবার চেন্টা ঔন্ধতা ছাড়া আর কিছ,ই নয়। এবং ধাওরান সাহেব সেই কথা স্মরণ कृतिता पिरत्र ठिक काखरे करत्राहर। राजी টাকা বেতন পেলেই তাঁর সম্মান বেশী— এ ধারণা মন থেকে মুছে ফেলতে হবে, সেবক হিসাবেই থাকতে হবে। -নতার জনপ্রতিনিধি কাঙ্গেই যেখানে সেখানে সেবকের চুপ করে বলবেন, থাকাই উচিত এবং সেটাই সভাতার আজ্যিক। কিন্তু শোনা যাচ্ছে, ধাওয়ান সাহেব নাকি পরে ঐকথা বলার জনা দুঃখ প্রকাশ করেছিলেন : কিন্তু তা সত্ত্বেও সভা আহ্বান করে মানহানির পালা গাইবার প্রয়োজন কি ছিল? যা হোক এই ঘটনা থেকে দেখা যাচেছ প্রশাসনের এই সভরেও বিভেদের বীঞ্জ প্রোথিত হয়ে গেছে। অর্থাৎ ভবিষাতের মালিক সন্বৰ্ণে অনিশ্চিত থাকার ফলে আন্গতোর প্রশেন বিদ্রান্তি মাথা চাড়া দিয়ে উঠেছে। কে আবার কবে মালিক হয়ে বসবেন এই ভাবনায় তাঁদের শংকাগ্রস্ত মনে শিবধার স্থিত করছে। ফলতঃ, সমঙ্ক ঘটনাকেই রঙীন চোথেদেখে সমাধানের সূত্র থেকিরে চেণ্টা চলছে। আইনান্ত্র কাজ করতে তারা অপারগ হয়ে পড়ছেন। এ**ভাবে বিকল** প্রশাসনিক যকু নিয়ে ধাওয়ান সাহেবও মুশকিলে পড়েছেন। ফলে. তাঁকেও প্রশাসনিক চৌহান্দির বাইরে এসে মাঝে মাঝে রাজনৈতিক নেতার মত আদশের বুলি কপচাতে হচেছ। **আর তাই অনারা** সন্দেহের চোখে দেখতে শ্রুর করেছেন। এবং ধাওয়ানজী হঠ যাও বলে প্রস্তাবও পাশ করেছেন। এই বিভ**ন্ন, রোগগ্রহত, জনীর্গ** প্রশাসনিক যদ্র নিয়ে রাষ্ট্রপতির প্রতিভূ কেন. অন্য কোন জনপ্রিয়ু সরকারও শাসনের কাজ পরিচালনা করতে পারবেন -अधरमी কিনা সন্দেহ।



্ গত কয়েক মাস ধরে প্রতিদিন করেক
ভাজার করে মান্য প্র' পাকিস্থান থেকে
সীমানত পার হয়ে এসে পশ্চিমবংগর
বসিরহাট ও হাসনাবাদে জড় হতে থাকায়
প্রবিংগর সংখ্যালঘ্দের সমস্যার প্রতি
আবার সারা দেশের দৃণ্টি আকুণ্ট হয়েছে।

ţ.

উদ্বাদ্যুদের এই ন্তন স্লোভ আসছে
প্রধানত পূর্ববংশার যশোহর ও খুলনা
জ্বলা থেকে। এই সব খেটে-খাওয়া মান্যুদ্র—
চাষী অথবা ক্লেল—এতকাল জন্মভূমির মাটি
আকড়ে পড়ে থেকে শেষ পর্যাত ভারতের
মাটিতে আশ্রম্মা নেওয়ার জন্য চলে আসতে
বাধ্য হচ্ছেন কেন, এই প্রান্ন লোকসভার
সদস্যদের আলোড়িত করেছে।

এই উন্বাস্ত্দের জিজ্ঞাসাবাদ করে যতটুকু জানা গেছে তা হচ্ছে এই যে, পাকিশ্বানে তারা আর নিরাপদ বোধ করতে পারছিলেন না। খুলনার মুসলীম লাগ নেতা
সব্র থা সাহেব নাকি পাকি-পানের
আগামী নির্বাচনের আগে তার জেলা থেকে
ছিল্পুদের উংখাত করতে চান, কেননা,
তার ধারণা ঐ নির্বাচনে জেলার হিন্দুরা
তাকৈ বা তার দলকে সমর্থন করবেন না।
সেই জনা হিন্দুদের উপর নানা রকম চাপ
আসছে। তাদের সম্পতি বিক্রী করতে
দেওয়া হচ্ছে না, বাবন্দা বাণিজ্ঞা করতে দেওয়া
হচ্ছে না, বাব্দা বাণিজ্ঞা করতে দেওয়া
হচ্ছে না, বাব্দা

সীমানত পার হয়ে আসার সময় পাকিশ্বান কর্তৃপক্ষ এই উন্বাস্ত্রের কোন কিছ্ব
সংগ্রুণ করে নিয়ে আসতে দিচ্ছে না।
সম্পূর্ণ কপদক্হীন অবস্থায় জারা আসছেন। দেপশ্যাল ট্রেনে করে প্রতিদিন তাঁদের
হাজারে হাজারে পাঠিয়ে দেওয়া হচ্ছে মধাপ্রদেশের মানা শিবিয়ে, একটা আনিশ্চিত
ভবিষয়তের সামনে। রাজ্যসভায় পররাখ্বমন্দ্রী শ্রীদীনেশ সিং বলেছেন য়ে, এই
উন্বাস্ত্রা যে সম্পত্তি ফেলে এসেছেন তার
করা খেসারত দেওয়ার কোন প্রস্তাব নেই,
তবে তাঁদের প্রন্বাসনের জন্য চেন্টা করা
হবে।

দুল্টি-আকর্ষণী প্রস্তাব সম্পত্কে বিবৃতি দিতে উঠে রাজ্যসভায় শ্রীদীনেশ সিং ও লোকসভায় পররাম্ম বিভাগের উপমন্ত্রী শ্রীসংরেন্দ্রপাল সিং বলেছেন যে, গত ২৪ এপ্রিল তারিখ পর্যন্ত মোট ৩৪,৫০০ জন উদ্বাস্তু ভারতে এসেছেন। উদ্বাস্তু আগ-মনের এই স্লোতের কারণ হল নিরাপত্তার ব্যাপক অভাব, অর্থনৈতিক দ্রেকম্পা ও সংখ্যালঘ্দের প্রতি বৈষমাম্লক আচরণ। সরকারী বিবৃতিতে আরও বলা হয়েছে, 'একথাও মনে করা হচ্ছে যে, কোন কোন রাজনৈতিক দল তাদের নিবাচনী অভিযানে সংখ্যাসদ্বদের সম্পর্কে যা বলছে তাতে भःशानग्रात्व विश्व वाष्ट्राः

পূর্ব পাকিস্থানের সংখ্যালঘ্দের প্রতি
সেখানকার কর্তৃপক্ষের বৈষমাম্লক আচরণের বিষয়িট রাশ্বসভেষ তোলা যায় কিনা
তা নিয়েও লোকসভায় কিছু আলোচনা
হয়েছিল, কিম্তু উপমল্যী শ্রীস্কেল্ডপাল
সিং সপ্পটই জানিয়ে দেন য়ে, বিষয়টি রাশ্বসংগ তোলার কোন ইছেই সরকারের নেই,
কেননা তাতে কোন লাভ হবে বলে মনে
হয় না। তিনি বলেন য়ে, এই বিষয়টিকে
একটি 'আন্তর্জাতিক প্রদেন' পরিণত করার
অভিপ্রাম সরকারের নেই, যদিও তিনি
শ্বীকার করেন য়ে, সংখ্যালঘ্দের প্রতি
পাকিস্থান সরকারের মনোভাব 'দক্ষিণ
আফ্রিকার সরকারের জঘন্য বর্ণবৈষম্য নীতির
তুলনায়' ভাল কিছু নয়।

সংসদে এই আলোচনার প্রাক্কালে ভারত সরকার পাকিস্থানের কাছে একটি প্রতিবাদলিপি পাঠিয়ে সেখানকার সংখ্যা-লঘুদের সম্পত্তি শত্রপক্ষের সম্পত্তি হিসাবে দখল করে নেওয়ার বিরুদ্ধে আপত্তি জানিয়েছেন এবং এতে সেখান-কার সংখ্যালঘ্দের যে সমস্যায় পড়তে হচ্ছে তার উল্লেখ করেছেন। প্রতিবাদলিপিতে বলা হয়েছে যে, পাকিস্থানের এই কাঞ্চ ১৯৫০ সালের নেহর্-ন্ন চুক্তির এবং তাসখন্দ ঘোষণার বিরোধী। প্রতিবাদ-লিপিতে সমরণ করিয়ে দেওয়া হয়েছে যে. সংখ্যালঘ্ সম্প্রদায়ের কোন লোক দেশতাল করে গেলেও নেহর্-লিয়াকং চুক্তি অন্যায়ী **তার স্বাবতীয় অস্থাবর সম্পত্তির উপর তার** অধিকার বজায় থাকার এবং তাঁর ইচ্ছামত সেই সম্পত্তির বিলি-ব্যবস্থা করার অধি-কার থাকার কথা।

সংসদে সরকার পক্ষ থেকে যা বলা হয়েছে ও বাস্তবে তারা যা করছেন, এই দুদিক থেকেই পরিক্লার যে, এই ধরনের ক্টেনৈতিক প্রতিবাদ করা ছাড়া বর্তমানে ভারত সরকারের এ বিষয়ে আর কিছু করার নেই।

ইতিমধ্যে উম্বাস্তুদের স্লোভ চলছে, চলবে।

'প্রোলো' কংগ্রেসের ঘাঁটি বলে পরিচিত
মহাঁশ্রে বিধানসভার তিনটি আসনে উপনিবাচন হয়ে গেল। তিনটিতেই 'প্রানো'
কংগ্রেসের প্রাথাঁ ক্লিতেছেন। লিবাজীনগর
কেলের 'প্রানো' কংগ্রেসের প্রাথাঁর জ্লামানত।
বাজেয়াশত হয়ে গেছে। হোসপেত কেল্রে
'নয়া' কংগ্রেসের প্রাথাঁ তাঁর একমার প্রতিম্বন্দরী 'প্রোনো' কংগ্রেসের মনোনীত
প্রাথাঁকে দশ হাজার ভোটে হারিনে দিয়েছেন।

মহীশ্বে ভোটের এই ফলাফল 'প্রোলো' কংগ্রেমের একাংশকে অভ্যুক্ত বিচলিত করে তুলেছে। এই বিপর্যরে হতাশ হয়ে দলের একজন সাধারণ সম্পাদক প্রীবেঞ্চাস্থ্রায় প্রকাশ করেছিলেন। পরে অবশ্য তিনি দলের নেতাদের অনুরোধে তার পদতাগপঠ প্রত্যাহার করে নিরেছেন, কিন্তু ভোটের বাক্সে এই বিপর্যায় যে দলকে গভীরভাবে নাড়া দিয়েছে ভাতে সন্দেহ নেই।

প্রথম প্রতিক্রিয়া দেখা দেয় 'প্রানো'
কংগ্রস দলের পালা'মেন্টার পাটি'র কার্যনিবাহক কমিটিতে। সেখানে কয়েকজন
সদস্য এই অভিযোগ আনেন যে, দলের
নেতারা শৃথ্ব 'নয়া' কংগ্রেসের সমালোদনা
করেই ক্ষান্ত থাকছেন, 'নয়া' কংগ্রস ও
অন্যান্য দলের চ্যালেজের সামনে দাঁড়াবার
জনা যে ধরনের কঠোর পরিশ্রম করা দরকার
তার জন্য তাঁরা দলকে প্রস্তুত করছেন না।
এই বলেও অভিযোগ আনা হয় যে, দল
নিজের লক্ষা হারিয়ে দিশাহারা হয়ে পড়ছে।

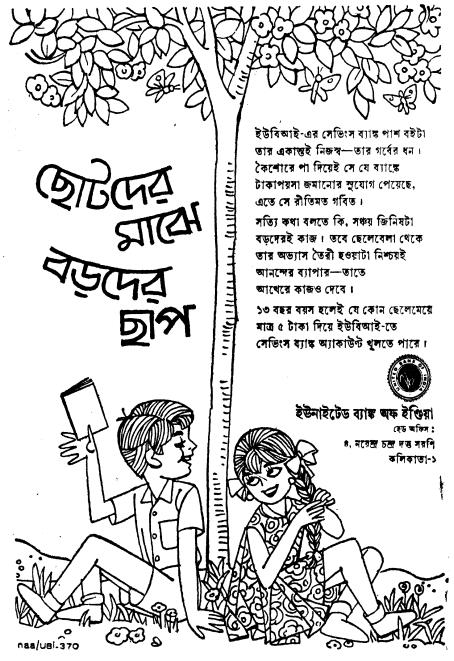
সদস্যদের মধ্যে এতটা তাঁব্র প্রতিক্রিয়া দেখা দেয় যে, তাঁদের যথন বলা হয়, আগামাঁ ২০ মে তারিথে দলের ওয়ানিক'ং কমিটির সভায় এই নিবাচনী বিপর্যরের বিষয় বিবেচনা করা হবে তথন তারা প্রত দিন অপেক্ষা করতে প্রস্কৃত্ত নন। নয়াদিক্লীতে কার্যানিবাহিক সমিতির এই বৈঠক যথন চলচ্ছিল তথন দলের সভাপতি প্রীনিকলিগণেপা বাঙ্গালোরে ছিলেন। জলকে সেখানে টেলিফোন করে অবিলম্বে এই প্রাক্রেয়ের কারণ অনুসংখান করার জন্য একটি কমিটি গঠনের অনুষ্থোন করার জন্য একটি কমিটি গঠনের অনুষ্থোন করার জন্য একটি কমিটি গঠনের অনুরোধ জানান হোক বলে কার্যানিবাহিক সমিতির সদস্যারা অভিমত প্রকাশ করেন।

বিহার এবং উত্তরপ্রদেশের আইনসভার ঐ দ্টি রাজ্যের বিধান পরিষদ তুলে দেওয়ার প্রস্তাব প্রত্থিত হওয়র পর ভরেত-বর্ষের মোট ১৭টি রাজ্যের মধো আর মার চারটি রাজ্য আইনসভার উধর্তম কক্ষরকল। ১৯৫০ সালে ভারতবর্ষের সংবিধান মধন চালা হয় তথন আটটি রাজ্যে বিধান পরিষদ বজায় রইল সেগালি হল মহারাখা, মহশার, জন্ম ও কাদ্মীর এবং তামিলনাড়া, তামিলনাড়ার বিধান পরিষদের আয়ার্ও ফ্রিয়ে এল বলে। ঐ রাজ্যের মুখ্যমন্টী প্রীকর্ণানিধি সন্প্রতি বিধানসভায় বলেভেন য়ে, রাজ্য সরকার বিধান পরিষদ তুলে দেওয়ার কথা চিন্তা করছেন।

উত্তরপ্রদেশে এখন আবার বিধান পরিবদকে জাইয়ে তোলার একটা চেন্টা শ্রের
হয়েছে। এ রকম ইণ্গিত পাওয়া যাছে যে,
সেখানকার বিধান পরিষদ তুলে দেওয়ার
প্রশতাবে আইনসভার সকল সদসা খুলী
নন। এমন কি মুখামন্টা প্রীচরণ সিং-এরও
এই বিষয়ে কতকটা দিবধা ছিল। কিন্তু
তিনি তার ভারতীর ক্লান্তি দলের সদস্যদের
এই বিষয়ে নিজের নিজের ইছলা অনুযায়ী
ভোট দেওয়ার স্বাধীনতা দিয়েছিলেন। এখন
জানা যাছে যে, উত্তরপ্রদেশ বিধানসভার এক-

দল সদস্য বিধান পরিষদ তুলে দেওরার প্রক্তাবটি বাতিল করার উদ্দেশ্যে সদস্যদের মধ্যে স্বাক্ষর সংগ্রহ করছেন। বিধানসভার স্পীকার শ্রীএ জি থের স্বীকার করেছেন বে, বিধানসভায় ৮০ জন সদস্য একটি গোপন পশ্র পাঠিয়ে বিধান পরিষদ তুলে দেওয়ার প্রস্তাবটি বাতিল করতে চেয়েছেন।

উত্তরপ্রদেশের বিধান পরিষদ তুলে দেওরার প্রশতাবের বিরোধিতা ধারা করছেন তাদের একটি মুক্তি হল এই যে, সংবিধানের নিদেশি অনুযায়ী ঐ প্রশ্তাব গৃহীত্ব হয় নি। হাজিরা খাতার বতস্থাল স্বাক্ষর আছে তা থেকে দেখা যার, সেদিন বিধান-সভার মোট ৩৬৯ জন সদসা উপস্থিত ছিলেন। সংবিধানের নিদেশি অনুযানী বিধান পরিষদ বাতিলের প্রশ্তাব গ্রহণ করতে হলে সেই প্রশ্তাবের পক্ষে অণ্ডত এই ৩৬৯টি ভোটের দুই-ত্তীয়াংশের অর্থাং ২৪৬ জনের সমর্থন থাকা চাই, কিন্তু উত্তর প্রদেশে ঐ প্রশ্তাবের পক্ষে ছিলেন মাট ২০০ জন। এই হ্রির উত্তরে ব্লুদ্ধুহছে, বারা সারা দিনে . কোন এক সমরে বিধান-সভার উপস্থিত হাজরা খাতার নথিভূত্ত হয়েছে। বিধানসভার ঐ ভোট গ্রহণের সময় যে করজন সদস্য বিধানসভার উপস্থিত হিলেন তাদের দৃই-ভূতীরাংশের বেশী ঐ প্রতাবের পক্ষে ভোট দিরেছিলেন, সংবিধানের নির্দেশ পালনের দিক থেকে ভাই ব্যেণ্ট।





करम्वाि याय नज्न युष

ইন্দোচীনের যুষ্ধকে ভিন্নেতনামের সীমাশ্ত আজিক্রম করে ক্যশ্বেডিয়ার মাটিতে ছডিয়ে দেওয়ার সিন্ধানত করে এবং একই স্পো উত্তর ভিয়েতনামে আবার বোমা বর্ষণ আরম্ভ করে মার্কিন যুদ্তরান্ট্রের প্রেসিডেন্ট রীতিমত একটি জ্বা খেলেছেন। আমেরিকার এই জগাী সিম্পান্ত ইন্দোচীনে বৃদ্ধাবসানের আশাকে **স্**দুরেপরাহত **করেছে**, প্যারিসের আলো-চনাকে অথ'হীন করে তুলেছে, আমে-বিকার ভিতরে য**়ু**শ্ধবিরোধী বিক্ষো**ভে** ন্তন ইন্ধন ব্লিয়েছে। আমেরিকান সৈনবাহিনীর এশিয়ার মাটি থেকে সরে আসার সম্ভাবা দিনটিকে পিছিয়ে দিয়েছে, সোভিয়েট রাশিয়ার সংক্রে আর্মেরিকার সমঝোতা গড়ে ওঠার সম্ভাবনার উপর আঘাত হেনেছে এবং সাধারণভাবে আশ্ত-জ্বাতিক পরিনিথতির মধ্যে ন্তন উত্তাপ উত্তেজনা এসেছে। এইভাবে বিশ্ব-শাশ্তি, দেশের ভিতর নিজের জনপ্রিয়তা এবং আমেরিকান সৈনাবাহিনীর **মান-**মর্যাদাকে পণ রেখে প্রেসিডেন্ট নিকসন নতেন আর একটা যুদ্ধে নামলেন মাত্র এই ক্ষীণ আশায় যে, ভিয়েতনামে যে সামরিক জয় আমেরিকার করায়ত হয় নি কান্বোভিয়ায় তা হবে। কান্বোভিয়ার যে অঞ্চলে আমেহিকান (ও শক্ষণ ভিয়েত-নামী) সৈনাবাহিনী প্রবেশ করেছে সেখানে। রয়েছে দক্ষিশ ভিয়েত্যনামে যুস্থরত উত্তর ভিষেতনামী ও ভিয়েতকং বাহিনীর সদর ঘাঁটি ও তাদের আশ্রম্থল এবং এই

সদবঘটি ও আশ্রম্প্রল ধ্রংস করতে পারলেই শত্রুর মের্দন্ড ভেপেে যাবে, **এই হচ্ছে প্রেসিডেন্ট** নিকসনের হিসাব। দক্ষিণ ভিয়েতনাম থেকে আমেরিকান সৈনিকদের সরিয়ে নিয়ে আসার যে কর্ম'-স্চী গ্রহণ করা হয়েছে তার সাফল্যের জনাই কান্যোভিয়ার ঘাঁটিগর্নলতে গিয়ে কম্যানিট বাহিনীর উপর আক্রমণ চালান দরকার, এই হজ্ছে প্রেসিডেন্ট নিকসনের যুদ্ধি। টেলিভিসন বন্ধতায় তিনি বলেছেন, "উত্তর ভিয়েতনামীদের ঘটিগালি যথনই পরিন্কার হয়ে যাবে, তাদের রসদ ও সাজসরঞ্জাম যথনই ধংস করা হয়ে যাবে তখনই মার্কিন সৈন্যবাহিনী সরে আসবে। এটা করা নাহলে ভিয়েতনামে আমেরিকান সৈন্যদের জীবন বিপদ্ম হবে এবং তাদের ফিরিয়ে আনার কর্মসূচী ব্যাহত **হবে।**

আমেরিকার ভিতর থেকেই কথা উঠছে, ঠিক একই ধরনের যুক্তি দিয়ে প্রেসিডেন্ট জনসন আমেরিকাকে ভিয়েতনামের যুগ্ধের সংগ্রে ক্রমেই বেশী করে জড়িয়ে ফেলেও কোন সামরিক সমাধান তিনি করতে পারেন নি, সমুতরাং আজ প্রেসিডেন্ট নিকসন যে সফল হবেন তার নিশ্চয়তা কি আছে? প্ৰশ্ন উঠছে, কতগৰ্মল ঘাঁটি বা चाश्चरण नण्डे क्वरलाई कर्मानण्याहिनीरक পরাস্কৃত করা যাব, ভিয়েতনামের যুম্পের এই দীর্ঘ অভিজ্ঞতার পরও কি সেকথা বলা বলা চলে? কাম্বোভিয়ার খাটিগটল ভেগেগ দেওয়ার পর আমেরিকানরা সেখান থেকে ফিরে এলে কমা,নিষ্টরা বে আবার সেই জায়গায় নতেন ঘটিট তৈরী করবে না তার নিশ্চয়তা কি? কাম্বোডিয়া বেমন কমা, নিন্ট-দের আশ্রমশ্বল চীনও তেমান কমানিন্টদের আশ্রস্থল। তাহলে একই যান্তিতে আমেরিকা कि চীদের সংশ্য লড়াইরেরও

ঝাকি নেবে? প্রভাবশীল সংবাদপ্রগর্মিতে উত্থাপিত এই দাব প্রশেমর মধ্য দিয়ে বোঝা যাচ্ছে, নৃতন করে এভাবে যুদ্ধের আগুনে জাঁড়ায়ে পড়াটা আমেরিকার মান্ত্র পছন্দ করছে না। রি**পারিকান দলের কোন কোন** নেতা আশৃত্বা প্রকাশ করেছেন যে, প্রেসিডেন্ট নিক্সনের এই সিম্পান্তের ফলে তাঁর প্রেসিডেণ্ট পদে প্রনিবাচিত হওয়ার সম্ভাবনা নল্ট হয়ে গেল এবং সিনেটের আগামী নিবাচনে রিপারিকান পাটির সাফলালাভের সম্ভাবনায় গ্রেতর আঘাত লাগল। মার্কিন যুক্তরান্ট্রের সিনেটের চারজন সদস্য ঘোষণা করেছেন যে, ভিয়েতনামের সভাইয়ের স**েগ** আর্মোরকার যোগ ছিল গুরার উদ্দেশ্যে তাঁরা ঐ লড়াইয়ের জন্য অংগ ারান্দ বন্ধ করার . চেন্টা করবেন। (ভিয়েতনামের লড়াইয়ে এখন মার্কিন যুক্তরাণ্ট্রকে প্রতিদিন গড়ে ৩৪ কোটি টাকার বেশী খরচ করতে হচ্ছে।) ডেনুমারুণাটিক প্রতিনিধি জর্জ রাউন জানিয়েছেন যে, কান্বোডিয়ার যুদ্ধে আমে-রিকাকে জডিয়ে ফেলে প্রেসিডেণ্ট নিশ্বন তাঁর সাংবিধানিক কড় ছির সীমানা লংঘন করেছেন কিনা সেই প্রশ্নটি তিনি বিবেচনা করে দেখছেন। সারা দেশের ৫০টি ছাত্র সংগঠনের প্রতিনিধিরা আওয়াজ তুলেছেন,প্রেসিডেণ্টকে কাঠগড়ায় দাঁড করান হাক। বিশ্ববিদ্যালয়ে বিশ্ববিদ্যালয়ে যুম্ধবিরোধী ছার্রা বিক্ষোভ-প্রদর্শন করছেন। ওহায়ো রাজ্যের কেণ্ট বিশ্ব-বিদ্যালয়ে প্রলিশের সপে ছাত্রদের এক সংখর্ষের ফলে পর্লেশের গ্রুলীতে দ্বজন ছাত্রী ও দ্ভান ছাত্র মারা গেছেন। সারা দেশে এই ঘটনার তীর প্রতিক্রিয়া দেখা দিয়েছে এবং ছাত্রা দেশব্যাপী সাধারণ ধর্মঘট আছ্বানের জন্য প্রস্তৃত হচ্ছেন।



সীমান্তের ওপারে দুঃসংবাদ

তেইশ বছরেও এর কোনো সমাধান হল না। প্রপাকিস্তান থেকে আবার সংখ্যালঘ্ হিন্দ্রা ভিটে-মাটি ছেড়ে সীমান্ত পার হয়ে এপারে আসছেন। আসছেন তাঁরা দলে-দলে, এ বছরে এ পর্যন্ত যার সংখ্যা ইতিমধােই চল্লিশ হাজারে এসে দাঁড়িরেছে। প্রধানত এবা আসছেন পশ্চিম বাংলার সংলগ্ন খুলনা জেলা থেকে। ম্মরণ থাকতে পারে যে ১৯৫০ ও ১৯৬৪ সালে যে সাম্প্রদায়িক হাজ্যামা সংখ্যালঘ্দের জীবন বিপর্যস্ত করেছিল তারও স্ত্রপাত হয়েছিল খ্লনা থেকেই। ১৯৫০ স্লে নেহর্-লিয়াকৎ চুক্তি স্বাক্ষরিত হয়েছিল সংখ্যালঘ্দের নিরাপত্তাবিধানের জনা। পাকিস্তান সরকার বার-বার . সেই চুক্তি লঙ্ঘন করেছেন। দীর্ঘ তেইশ বছর ধরে চ**লছে সংখ্যালঘ**ুদের এই উৎসাদন। এবারে তারই নবতম অধ্যায়ের স্চেনা। প্রেপাকিস্তানের সাধারণ মান্য সম্প্রীতিতে বসবাস করতে চায় এ বিষয়ে কোনো সন্দেহ নেই। পাকিস্তানের সংখ্যালঘুরা পাকিস্তানকে যদি স্বদেশ বলে না জানতেন তাহলে এত দুঃখ-দুদৈবি সহ্য করে তাঁরা মাটি কামড়ে পড়ে থাকতেন না। সাধারণ চাষী, ছোট দোকানদার, সামানা আয়ের কারবারী এবং সামানা সংখ্যক মধ্যবিত্ত এ নিয়ে প্রায় ৯০ **লক্ষ সংখ্যালঘ, বাস** করছেন পূর্বপাকিস্তানে। এ'রা কেউই পশ্চিমবঙ্গে আসবার জন্য লালায়িত নন, আসবার সংগতিও তাঁদের নেই। কিন্তু পূর্ব-পাকিস্তানে এক গভীর ষড়যন্ত্র চালাচ্ছে ইয়াহিয়া খানের সরকার এই সংখ্যালঘূদের উৎখাত করার জন্য। এর দুটি উদ্দেশ্য। প্রথমত এই চাধীদের উৎখাত করে তাদের জমি দখল করা এবং দ্বিতীয় প্রাক-নির্বাচনী কালে সংখ্যালঘুদের বিদায় করে বাঙালী ভোটের সংখ্য কমানো। প্রপাকিস্তানের সংখ্যালঘ্দের মনে এই নিরাপ্তার অভাব স্থি করেছে পাকিস্তান লরকার। তাঁরা চান না বাঙালী সংখ্যাগ্রে; এবং সংখ্যালঘু মিলে-মিশে এক্যোগে একটি রাজনৈতিক । শক্তিতে পরিণত হয়ে ইয়াহিয়। খানের সরকারকে চাালেজ জানাক। এই উদ্দেশ্য নিয়েই পাতিস্তান সরকার চলছে এবং যথনই পাকিস্তান সরকার সম্বহিতবোধ করেছেন তথনই দফায় দফায় চলেছে সংখ্যালঘ্দের ওপর হামলা এবং বিতাড়ন। লক্ষণীয় যে, সংখ্যালঘ্রা থখনই আসেন তখন তাঁদের একবন্দে চলে আসতে হয়। কৃষক, জেলে, খেটে-খাওয়া মানুষের দল এ'রা। এ'রা রাজনীতি নিয়ে কথনো মাথা ঘামান না। কিল্তু রাজনীতির শিকার হন এ'রা। পাকিস্তান সরকার এবং তার সহযোগীদের যখনই ইচ্ছা হয় তথানি এই অসহায় মান্ষদের বিতাড়ন করে নিজেদের উদ্দেশ। সাধন করে।

ভারত সরকার কিশ্চু এ বিষয়ে কোনোদিনই বেশী দ্রে যেতে চান না। পাকিস্তান সরকারকে কড়াভাবে যদি তাঁরা জানান যে, এই বাস্তৃত্যাগ বন্ধ করতেই হবে, নইলে ফল হবে মারায়ক, তাহলে হয়তো একটা ফল হত। মানবিকতার কারণে বাস্তৃত্যাগীদের প্থান আমাদের দিতে হবে। কিশ্চু বাস্তৃত্যাগীয়াও জানেন যে, তাঁদের ভবিষাং অনিশিচত। পশ্চিম বাংলায় কোনো প্থান নেই। তাই নতুন উশ্বাস্তৃদের পাঠানো হচ্ছে মধ্যপ্রদেশের দশ্ডকারণ্যে মানা শিবিরে। এ'দের প্নবাসনের জন্য কোনো নির্দিত্য পরিকশ্পনা তৈরী না হওয়া পর্যশত ট্রানজিট শিবিরেই বাস করতে হবে এ'দের। কতকগ্লো কর্মঠ মান্ব ভাগ্যবিভূদ্বিত হয়ে অবাঞ্চিত শরণাথীরে জাবিন যাপন করবেন, এ কোনো সমাজের পক্ষেই কল্যাণকর নয়।

কেন্দ্রীয় সরকার কী ভাবছেন তা জানি না। বিষয়টি নাকি তাসখন্দ চুত্তির পরিপ্রেক্ষিতে রাশিয়াকে জানানো হয়েছে। পাকিস্তান রাশিয়ার কথায় কোনো আমল দেবে কিনা তা সেই জানে। সংখালেঘ্দের নিরাপত্তাবিধান এবং তাঁদের জানিব ও জাবিকার নিশ্চিতি দেওয়া প্রতাক সভা দেশেরই দায়িও। সেই দায়িও পাকিস্তান সরকার বার-বার অস্বীকার করে প্রমাণ করেছে যে, সংখালেঘ্দের প্রতি তার বাবহার দক্ষিণ আফিকার নিরোদের প্রতি জঘনা ও বর্বর কোণঠাসা নীতিরই সমত্ল। পাকিস্তানে সংখালেঘ্দের প্রতি তার বাবহার দক্ষিণ আফিকার নিরোদের প্রতি জঘনা ও বর্বর কোণঠাসা নীতিরই সমত্ল। পাকিস্তানে সংখালেঘ্দের কোনোর্শ মর্যাদা নেই। সাধারণ নাগরিকের সামানাত্য অধিকার থেকেও তাঁরা বিশ্বত। এই শ্বেসহ অবস্থায় সংখালেঘ্রা বাস করছন। দেশ মাটি ছেড়ে কেউ স্বেন্ডায় অজানা তানিশ্চিতের প্রথে পা বাড়ায় না। পাকিস্তান সরকার সম্পরিকল্পিতভাবে এই হতভাগাদের দেশছাড়া করছে। এই অসহায় মান্যদের জনা প্রবিসানের বাবস্থা করা এক দ্রহ্ সমস্যা। ভারত সরকারকে অবিলন্ধে দিতে হবে যে, এইভাবে সংখালেঘ্ বিত্যাড়িত করে পাকিস্তান সরকার সহজে পার পারেন না। এর পূর্ণ দায়িত্ব তাদের নিতে হবে। যাঁরা ভিন্টি-মাটি ছেড়ে চলে এসেছেন তাঁদের জন্য ক্তিপ্রেশ আদাফ করতে হবে পাকিস্তান সরকারের কাছ থেকে। বিষয়টি ভারত সরকার রাজ্যসংখ্যর গোচরে এনে এনে একে নিরে আদত্তর্গাতিক জনমত স্থিট করার চেন্টা কর্ন। নীরবে মার খাওয়ার কোনো সার্থকতা আর নেই।



প্ৰি সীমান্তে॥

আর্তি দাস

পাতার তীক্ষাতা তুলে বল্লমের মত, লড়াই দিয়েছে জানি একাকী পাইন, অরণো যা কিছা বাকী গামল কোমল বিনন্ট করেছে শীত ঈষাত্র হাতে;

সব শেষ থবরে প্রকাশ, গ°নুড়ো হিমে যে যে ঘাস পেরেছিল শন্ত এক শান্তির আশ্বাস নিশ্চিক তারাও।

এখন পড়ে না হিম ব্যিত ঝরে না, ধাস, গাছ পাথরের কে যে বেশী রণদক্ষ এ নিয়ে বিতক নেই নিরাশায় সবাই নিশ্চপ:

অথচ এ দুঃসময়ে
বংগাপসাগর তার
প্রতিশ্রুত জগ্গী মেঘ
যদি না পাঠায়,
তবে তো দীতের কাছে
সর্তহীন হার,
মেনে নেবে দিলঙ পাহাড়।

এই মতো জল্পনার
মন্ত ছিল সবাই যথন,
রক্তলাল পতাকার
উচ্চম্টি, ওরা কারা
হো হো করে ছুটে আসে--

বনভূমি লাটে আসে জয়ী সব সৈনিক রডোডেন্ডুন।

আমরা মাঝে মধ্যেই ॥

म्, नान खार

আমরা মাঝে মধ্যেই সময়ের জানলা থেকে
মুখ ফিরিয়ে
নির্বোধের মতো একাকিছ খ'্বজি
শুন্য থরের ঝুল বারান্দার চোখ ঢাকি
তৃষ্ণার্ভ চিকটিকির ক'ঠনালী
অতিসন্তপানে এড়িয়ে যাই
সম্তৃত আজন্ম প্রত্যাশার সিন্দ্রকে অফ্রন্ত অবসাদ
ভাগতে গিয়েই
আমরা ইচ্ছের স্তোয় অহেতৃক জড়িয়ে পড়ি
অংধকার ডাকি ম্বেছার।

নিক্ত্র বাজীকরের মতো আমরা মাঝে মধ্যেই বিষয়ে ছোবল পছন্দ করি
সোক।র মিছিলে কথার খেলাপ হয়
অবসরের আবর্তে তুব দিয়ে
অমরত্ব খ'্জি—
র্পকথা, জলপরী
নতজান, রাজকন্যা, শ্না বিছানা.....
হঠাৎ ল্বাপিত কিশোরীর প্রেম ভ্লে
নিজেকে অহেত্ক
আমরা মাঝে মধ্যেই ফাঁকি দিতে ভালোবাসি।

একটি আলপিন চাই॥

वाशीककं बरम्हाभाशाज्ञ

পিনকুশটা কোথায় গেল?
একটা যে আলপিন চাই!
অনেক কাগজটুকরো গেথে রাখতে
একটা যে আলপিন চাই:
নত্বা, এই সব যত দামীদামী কথা,
অথবা আমার চিন্তা,
স্মৃতিলেখা নাম,
সবাই ছড়িয়ে যাবে যুগের বাতাসে।
এখানে-ওখানে—
থাকবে পড়ে অজস্র কাগজ
বহুতর স্মৃতি।
ঠিক তাই—
সবাইকে এক সাগে গেথে রাখতে
একটা আলপিন চাই।



দ্'টো **ফ্রাটের** ছিমছাম ছোট বাড়ি। একতলার ক্লাটে থাকেন নবজীবনবাব, তার স্বা মালতী, স্কুলে পড়া দুটো ছেলে-रिगरत जीतमत बर्एम मामर आत बर्राफ मिनिया, এবং ডাদের ছোট ছেলে অর্থাৎ নবজাবন-বাবরে ছোট ভাই **প্রভাতজ্ঞীবন। তাদের** বোনেরাও মাকেসাকে এসে দ'চার দন করে থেকে বার। অন্য আত্মীর-পরিজনেরাও আসে।

আধটা, হৈ-চৈ ছটুগোল লেগেই সকলেই জোরে कथा বলে, জোরে शास, রাগারাগির ব্যাপার কিছ, ঘটলে সেও চড়া পর্দাতেই স্কেশল হয়ে **থাকে। ক্ল্যাটথা**না नवक्षीवनवाव्यं नारम। **माम भारत** টাকা ভাড়া গোনেন। বাজারের কাছে মুস্ত স্টেশনারি দোকান তাঁর। **ছোট ভাই এ**বং বড়ো বাপের সহযোগিতার বেশ সচল অবস্থা সেটার। মাইনে করা দুটি বিশ্বস্ত ভান্সেও দোকানের কাজে সংগটা হয়ে উঠেছে। এ ছাড়াও ৰাড়তি লোক আছে।

ওপর তলার অর্থাৎ দোতলার বরের ক্ল্যাটের জাড়া মাসে চারশ। ওই একটি কমবাইন্ড হ্যান্ড এবং একটি स। ড্রাইভার আছে. সে বাড়িতে থাকে মা।

এম এ পাশ মাজিতর চি স্থী স্চী जन्मा यज्यमात शाक्-विवाहकौत्त न्कृतन्त শিক্ষিকা ছিলেন। গোড়ায় সহক্ষি<mark>দীরা</mark> कानाकानि कंद्राएक, छे हु भट्टाव द्वारना প্রেমিকের বিশ্বাসঘাতকতার ফলে সেই আত্মনিগ্ৰহ। কিন্তু সে নিগ্ৰহের কাল দীৰ নর। বোগাযোগ এবং কপালগ**েশ ম**নের মতো বরেই পড়েছেন তিনি।

মেরে বন্দনা অর্থনাল্যের কুতী ছাত্রী। গেল বারে এম-এ পাল করেই কলেন্দ্র মাল্টারি নিরেছে। সদ্য বর্তমানে তার এক-

ঘাত লক্ষ্য কোনো একটা স্বলার্যাশগের ছাভপ্র-বলে আকাশপথে বিদেশ-বালা। এটাক সম্ভব হলেই জীবন মধ্যায়। এম এ পাশ করার পর মা একবার বিজের কথা ভূলে-विकास । बन्मना अकृषि बाठ अकृषि अवः সামান্য মুদ্র ধমকে তার মুখ শেলাই করে দিয়েছে। বাবাও ছিলেন সামনে। তিনি দায়িত্ব-জাত্তবের নিশ্চিক্তভায় বইরে মন দিয়েছেন।

এ-বাড়িতে পা দেবার সাত দিনের মধ্যে মেয়ে বলেছে, তুমি আবার বাড়ির খেতি লেগে যাও বাবা, নীচে সর্বদা বে-कान्छ हरमहरू, अधारन रहेका बारव ना।

मा भार मिलन, कि जानत्न व जारह লোকগ্রলো: আর খাওয়া-লাওয়ার ব্যাপারে সে কি উৎসাহ, রোজ ওপর থেকে দেখছি তো, সকালে একবাশ বাজার এনে উঠোনে ফেলা হয়, আর সংশ্যে সংশে বেখানে ষে আছে সব ছনটে আসে বাজর , ছেলেমেরে দেখতে, त्वार्वे म,:३१ পর্যবন্ধ। ভারপর আলোচনা শ্রুর হর কি দিয়ে কি হবে, ভোমার গবেষণার বিভাগও অভ মাথা খামার কিনা সন্দেহ।

মেয়ে মাত্তবা করল প্রিমিটিভ!

মুদ্র হেসে বাপ সাহ দিলেন, দেশের শতকরা আটানব্টে জন ওইরকম ব্রুলি... महेल এই हाल हत्व किन।

নীচের তলার মানুষেরাও যে ওপরতলা সম্পর্কে সচেতন নয়, ভাবলে ভুল হবে। বরং বেশি মারার সচেতন। ওপর তলার শিক্ষিত এবং শিক্ষিতাদের তাঁরা রীতিমতো সম্প্রমের চোখে দেখেন। ওপর তলার কর্তার সংখ্য নীচের নবজীবনবাব্র সামনাসামনি দেখা হরে গেলে দ্'হাত জন্ড়ে তিনি সগ্রন্থ নমুকার করেন। মা বা মেরের স্থেগ দেখা হয়ে গেলেও নবজীবনবাব্র স্থাী একটা ,আড়া**ল** নিয়ে সাগ্রহে লক্ষ্য করেন তাঁদের। प्रथा कारता मा कारता **मध्या** मकान (थरक অনেক বার হয়। সাড়ে ন'টা নাগাদ ড্রাইভার কতাকে প্রথম আপিসে পেণ্ডে দিয়ে গাড়ি নিয়ে ফিরে আসে। তারপর সেই গাড়িত মেয়ে কলেজে যার। গাড়ি ফিরে এলে দুপুরের দিকে মাঝেসাজে গিলিও বেরোন বিকেলের দিকে জ্রাইভার একট্র বেশি বাস্ত। প্রথমে মেয়ে আসে ভারপর বাড়ির কভা। খণ্টাথানেক বাদে বেড়ানো অথবা সামাজিক বোগাবোগ রক্ষার প্রোগ্রাম। প্রায়ই তিনজনকে একসংশে নেমে এসে গাড়িতে উঠতে দেখা যার। কোনদিন আবার বাবা-মেরে নরতো मा-स्मारत व्यथता कर्जा-शिक्तरक रमशा बात। ওদের ঝিয়ের মুখে নবজীবনবাব্র স্ত্রী भारतरहरू, जकना श्रीनव श्रीनवानी शास्त्रशास्त्र রাতের আহার বাইরের বড় হোটেল থেকে এ**কেবারে** সেরেই আসেন। এই কিটির সংগ্র মা**লভ**ীদেবীর বেশ খাতির হয়ে গেছে। কর্তা-^{পিশা}র আর মেয়ের প্রশংসায় পঞ্চম_্থ त्र।

দেখে তো চোথ জ্বড়োয়ই শ্বনেও কান জড়োর মালতী দেবীর। নিজের মেয়েটা বড় হরে উঠেছে, খুব ইচ্ছে করে ওই মেয়ে ওদের মতো হোক। পরসার তো অভাব নেই ভাদেরও, কেবল ব্যবস্থা আর খানিকটা র্চির অভাব।

গুপর তলার বাসিন্দাদের নিয়ে স্বামী-স্থীর মধ্যে রাতের নিরিবিলিতে কথা হয়। नवक्षीयनवारः वत्नन, ७-त्रकम् भिक्षा-मीकात চেহারাই আলাদা আমাদের কি আর সে त्रकम हर्दा

মালতী দেবী বলেন, ভদ্রলোকের সংগা একট্র কথাবাতী বলে দেখোনা, যদি সে-तकम काউक त्राच मात्रवीतक ककरें व्यना-রুক্মভাবে বড় করে তোলা যায়। ওদের কিয়ের মুখে শুনেছি খুব ভালো লোক, দেখেও তাই মনে হয়...তা'ছাড়া ওই মা আর মেরের সংগ্রে আমিও একট্ আলাপ-সালাপ करत निहे, कि वर्ला?

নবজীবনবাবার আপত্তির কারণ নেই, তবে কি না কি ভাববে এই সঙ্কোচ।

প্রতি রবিবারে নীচের তলায় যেন ভাণেন দুটো আনক্ষের হাট। তো আসেই, তাদের মা-ও আসে। অনেক বাড়াত বাজার হয়। আর হৈ-হ**টগোলে**র ফলে নবজাবনবাব, নিজেই ইদানীং সামাল দিতে চেন্টা করেন, আন্তে. আন্তেজ ওপরের ওরা একপাল জংলীই ভাবছে আমাদের!

সকলে না হোক, ওপরের এক মেয়ে নীচের একটা ছেলেকে যে অন্তত জংলীই ভাবতে শ্বুর করেছে, তাতে কোনো ভূল নেই। কারণটা অবশা একমাত্র বন্দনা ছাড়া **সকলেরই অগোচর। এমনাক নবজীবনবাব**,র ভাই বেচারা প্রভাতজ্বীবনেরও। বন্দনার চোখে সে-ই র্রচিজ্ঞানশ্না জংলী ভূত।

তার বয়েদ সাতাশ আঠাশ। স্কাম ম্বাম্থা। এত ভালো ম্বাম্থা যে সামা-সিধে মোটা ধ্রতি-পাঞ্জাবির ওপর দিয়েও চোখে **পড়ে।** তার অপরাধ, খ্ব ভোবে, প্রায় অন্ধকার থাকতে উঠে খালি গায়ে একটা মাত্র থাটো আ-ভারঅয়ারে পরে নীচের খোলা বাধানো উঠোনে পাড়িয়ে প্লায় ঘন্টা-খানেক ধরে শরীরচর্চা করে। এখানে আসার তিন চার দিনের মধ্যেই বন্দনা এই **চক্ষ**্শ্ল ব্যাপারটা আবিষ্কার করেছে। বরাবর ভালো ছাত্রী, ভোরে ওঠার অভেন্স ভারও। এক একদিন বেশি সকলে উঠে পড়ে। সোদন বাথর:মের দিকে যেতে গিকে নীচের তলায় ভারী লোহার কিছ্ একটা রাখার শব্দ কানে আসতে খোদা শাসির ভিতর দিয়ে উ^eকি দিয়েছিল। ওই দ্শা। কপাল থেকে মাথা প্য[্]ত দ্রদ্র করে ঘামছে। বার্বেল রেখে একজোও। পেলায় ম্গুরের কসরং চলেছে। ভারপর ওঠা-বসা-ব্ক-ডন, ইত্যাদি। সর্বাঞ্গের পেশীগ্রেলা দাগড়া দাগড়া হয়ে ফুলে উঠছে।

অসভা কোথাকার!

সর্চাকত হয়েই জানলা থেকে সরে এসে-ছি**ল বন্দ**না। নীচে থেকে দেখে ফেলবে বলে নয়। একটা মাত্র শাসির ফাঁক দিয়ে দেখলে নীচে থেকে কারো চোখে পড়ার **কথা** নয়। সরে এসেভে চোখে কি রকম একটা ধাক্কা লেগেছে বলে। ..একসারসাই कर्ताच रेक्क थाकरल चात करातारे ज्या পারে—ওই বেশে খোলা উঠোনে কেন!

म्माठा शाबरे कात्य भए বিরক্তও হয়। জংকী ছাড়া আর কি।

অথচ, অন্য সময় একাধিক দিন দেখেছে এই লোকটাও বেশ বিনীত, ভদ্র। তাকেও সমীহ করে। নীচে সামনা-সামান পড্ঞে সসম্ভ্রমে সরে দাঁড়ায়। কলেজের সভ্যত্_{র।} কোলগরা বাড়ি এলৈ বন্দনা হয়তো তাদের রিসিভ করতে নীচে নেমে আসে, নয়তো এগিয়ে দিতে। **তথনো লোকটার** বিনাত অথচ সম্প্রম-ভরা দৃষ্টি লক্ষা করেছে। দৃই-<u>কেদিন এটা-সেটা কিনতে ওদের দোকানেও</u> ্ৰেছে। যত ভিড়ই থাক, এই লোক তাড়াতাড়ি দু'হাত জবড়ে নমস্কার করে এগিয়ে এসেছে, তৎপর হাতে জিনিস প্যাক করে আগে তাকে খ্রাশ করতে পেরে যেন কুতার্থ হয়েছে।

কালচারের দুস্তর বাবধান সত্ত্বেও ওপর তলার সংখ্য নীচের তলার মোটামাটি সদ-ভাবই হয়ে গেল। নবজীবনবাবার সংগা চিশ্ময় মজ্মদারের, মালতী দেবীর সংগ সংখ্যা মজ্মদারের এবং বন্দনার। নীচের তলার অমায়িক চেন্টা এবং আগ্রহেই অবশ এট্রকু সম্ভব হয়েছে। মালতী দেবী দিন-কতক ওপর তলায় আসার ফলে চক্লভার খাতিরে সম্ধ্যা মজ্মদারকেও এক-আধ কি নীচে নামতে হয়েছে। তখন মহাসমাদঃ তাঁর। ছুটির দিনে চিময় মজুমদারকে কখনো নীচে দেখলেই নবজীবনবাব, বাস্ত-সমুহত আগ্রহে তাঁকে একটা বসাতে চেণ্টা করেন, চা আর **ঘ**রের তৈরি কিছ, খাওয়া^ন চা না হোক, খাবারে যেন একটা নতুন ম্বাদ পান চিন্ময় মজ্মদার। বলেনও সে-কথা। আর শ্বনে ভদ্রলোক কৃতার্থ যেন।

এরপর নীচের রামা থাবার মাঝে মাঝে ওপরে উঠতে লাগ**ল। কখনো** একট^{ু মাংস} কখনো একট্ব বিশেষ রকমের রালা মাছ ঝাল-ঝাল সর্ধে পোস্তর সজনে চার্চার্ড বডি সহযোগে মোরলা মাছেল টক' শে^{ষের} দুটোর স্বাদ চিন্ময়বাব্র 🐪 তো লেগেই আছে, এমনকি বন্দনাও ।কার করেঙে বেশ লাগল।

সংখ্যা মজ্মদার বলেছেন, ওরা, নিজের চোধে দেখে এসেছি, কং রকমের যে বড়িই দেওয়া হয়েছে ঠিক নেই

অবশ্য কোনো রুচিসম্পন্ন মান্য^{ু এব} তরপা এ-সব গ্রহণ করতে পারে না ওপর তলা থেকেও বড় হোটেলের কিছ নাম-করা সামগ্রী মাঝে মধ্যে কিয়ে মারফত নীচের তলায় আসে। তবে তুলনা ম্লকভাবে কম। তাইতেও খ^{ুনিতে} ডগমগ নীচের তলার মানুষেরা। আর সে সবের স্বাদও বিচিত্র বটে। নীচের তল কতা খাদির অনুযোগের সারে ওপর তলা কর্তাকে বলেন, আমরা ছাইডসম পাঠি বলে আপনারা আবার কেন-আমাদের টে আর কিছ, কাজ নেই, দোকান আর এই ^স ম্থ্ল ব্যাপার নিয়েই আছি-আপনাদে रम शिरत जामाना कथा।

আলাদা কথা যে, ওপর তলার মনে মনে অস্তত অস্বীকার করেন ^{না} আর এই সহজ স্বীকৃতির ফলে অখ^{িশ} এরগর ওপর তলার কর্তার কাছে নবলীবনবাব, এবং গৃছিলী আর মেনের
কাছে মালতী দেবী মনের কথা বাব করে
কাছে মালতী দেবী মনের কথা বাব করে
কালেন। ...মেরে বড় হছে স্কুলের উটু
কানে পড়ে, আর দ্ব বছর বানে করেকে
বাবে, বড় ইছে মেরেটাকে মনের মতো
করে লেখাপড়াটরা শেখায়। অতএব এখন
থেকেই যদি কোনো ভালো লোক মেনে,
তারা তো এ-ব্যাপারে কিছু জানেনও
না বোকেনও না, ও'রা যদি একট, সাহায়
করেন—টাকা বা লাগবে দেবেন, ইড়াদি।

ওপর তলার তিনলনেরই সহ্দয়তা
দেখে এরা মূশ্ধ। গুলীই—বটে সব।
চিশমা মঙ্গুমদার বললেন, তার জন্ম। ভাবনা
কি মেরেকে বলব'বন, এ লাইনেই আরে,
বাবন্থা করে দেবে। তাছাড়া মেরে তো
সংখার পর আমার কাছেই একট্-আধট্
পড়ে যেতে পারে, বাড়িতে যেদিন থাকি,
বসেই তো থাকি।

ও-দিকে মা আর মেরের কথা নীচের তলার গিলির কাছে আরো বেশি সুধা বর্ষণ করল। মেরে বলল তার জন্ম এক্ষ্মি আন বাবস্থার দরকার কি ছুটির দিনে সকালে বা বাড়ি থাকলে সম্ধার পর আমার কাছে পড়ে যায় যেন, আপনি কিচ্ছু ভাববেন না, ওকে আমিই তৈরি করে দেব। ভাছাড়া মারের কাছে তো যখন তথন আসতে পারে।

সংধ্যা মজমুমদার সায় দিলেন, এখান লোকের জনা ভাবতে হবে না, মেয়ে যেন আসে।

এরপর বইখাতা বুকে করে মেরের দোহলার অভিযান শ্রে হল। কতা বা গ্হিগী বা মেরে একজন না একজনকে মেলেই। স্থাতাই পড়ানো হয়। তাদের ববহারে ওইট্কু মেয়েও ম্পু। নীচের ভলা মান্যদের কৃতজ্ঞতার শেষ নেই। তারা ভাবেন এই শিক্ষা আর কালচারের জোতিই আলাদা।

নানা অছিলায় এরপর আরো কত-রকমের রালা-করা বাটি ওপরে পেশিছতে লাগল ঠিক নেই। ওপরতলার মানুযদের অবাক লাগে, হাসিও পায় এক-এক সময়। ভাবে, এরা আছে ভালো।

একভাবেই কৈটে যাছিল। হঠাং ছেদ
পড়ল একট্। চিম্মায় মজ্মদার অস্কুথ পড়ে গেলেন। গাসেট্রিক আলসারে একে-বারে শ্যাশায়ী কিছ্দিন। সেরে ওঠার পরেও কাহিল অবস্থা। ডাঞ্জারের নির্দেশি তার আহারের ফর্দ একেবারে বদলে গেল। ঘড়ি ধরে বার বার দুধ খাওয়া, সকালে বিকেলে ফল ছানা ইত্যাদি, আর দ্বাবেলা জল-সেশ্ধ মাছের ঝোল ভাত।

কিন্তু প্রী এবং মেরের এত তোরাপে
থেকেও ভদ্রলাক দিনকে দিন শাণি হতে
লাগলেন। ফলে নামা ভারারের আনাগোনা লেগেই থাকল। নীচের থেকে
আহার্য আসাও কমে গেল। বাড়ির কডার
এই হাল, কোন লক্জার ঘন ঘন পাঠানো
বার। ওদের কিন্তের মূথে মালতী দেবী
শ্নিছেন এক-আধ সময় বা-ও পাঠানো
হর-কডার সেদিকে ভাকানও নিবেশ্ব

নবকীবনবাব, আর মাজতী দেবীর
সকল আশার একেবারে ওপর ওলাই বাদ
সেবে বসলেন হঠাং। প্রো একটা বছর
না ঘ্রতে চিন্মর মজ্মদার বড় রক্তরের
প্রমোশন পেরে বসলেন একটা। একট কোম্পানী থেকেই বাড়িভাড়া পাকেন মাসে
ছ'শ টাকা—সেই বাড়িভ পাইশ কর্মী হরে
গেছে। আর দিন সাতৈকের মধ্যে তারা
সেখানে উঠে যাকেন।

নকজীবনবাব্ আর মালতী দেবী বড় বড় দীর্ঘ নিঃশ্বাস ফেলালেন। এমন একটা পরিবার এসেছিলেন বেমনটি সচরাচর বড় দেখা যার না। ও'দের তো ভাগা ভালো হবেই—শুধ্ তাদেরই যে-কপাল সেই কপাল।

এই সাত দিনের ছুটি নিয়েছেন চিক্রায় মজ্মদার। তার দারীর ফেরেনি একট্ও। একট, বেলা হতে নিজেই নেমে একেলন নীচের তলার মেয়েকে পড়াতে। নবজাবিন-বাব্ একবারে খেয়েদেয়ে দ্পুরে দোকানে যান তিনি বাড়িতেই ছিলেন। দাশবাংশ্য ওপরতলার অতিথিকে বসালেন। আধ ঘণ্টার মধ্যে মেয়ে পড়ানো হয়ে যেতে ডিনি সাগ্রহে গশ্প করতে বসলেন। জিজ্ঞাসা করলেন, আপনাতে একট্, হরকিলস দিই?

----2770 4

এই থেকেই খাওয়ার গণপ উঠল। চিশ্ময়
মজ্মদার বললেন, আপনারা জানেনও
অনেক রকম...সেই সজনে চচ্চড়ি আর বঙ্ দিয়ে মোরলা মাছের টক এথনো যেন জিডে লেগে আছে।

নবজীবনবাব, সংখদে বললেন, আপনারা গ্নী বলেই সব-কিছ্ ভালো লাগে..... আলও তো হরেছে, কিন্তু এমনই দ্ভাগ্য আমাদের, একট্ সায়মে দেওরাও বাবে না।

ভাকে অবাক করে চিন্দর এজার্মণার মলে বসলেম, আজা, ইন্তে বধন ছারেছে, আন্স দেখি একট্ন-একট্র।

নবজীবনবাব, উঠে দাঁজিয়েও ফাঁপরে পড়লেন হেন। —আপনার ক্ষতি হবে নাজো?

চিমার মজ্মাদার হেসে জবাব দিলেন, স্থাীবা মেরে শুনলে অবশা রাগ করবেন, তবে শোনাছে কে...যে হাল হরেছে স্পতি আর বেশি কি হবে...মিছিমিছি.....

কথা শেষ হবার আগেই নবজীবনবাব, অন্দরের দিকে ছাট্টোন।

সাত দিনের মধ্যে আরো চারদিন চিশ্বর মজ্মদার মেরে পড়াতে নীচে নেমেছেন। এবং প্রভাহই কিছু না কিছু তার সামশে ধরা হয়েছে।

...এই সাত দিনের প্রায় রোজই
দাপ্রের দিকে সংখ্যা মজ্মদারও দীতে
মালতী দেবীর কাছে এসেছেন। সমনোখোলে
বিভিন্ন রকমের বড়ি দেওয়া এবং কিছা
রামার পাঠ নিয়ে গেছেন।

আজ বেলা হলে বাড়ি বদল। এখন খুব ভোর। একট্ আবছা অধ্বনর আছে এখনো। নীচের উঠোনে বাারাম চলেছে। লোকটার পরনে খাটো আন্ডারঅয়ার, হামে ভেজা পেশীগ্রেলা সব দাগড়া দাগড়া দিরে উঠছে।

দোতলার জানলায় শাসির ফাঁক দিয়ে বন্দনা সতৃষ্ণ চোখে দেখছে।

আজ শেষ দিন। আর দেখবে মা।

'निहिन निहिन' शामार कि शिवत विदी सिन ?



সহিত্যিকর ঢোখে মুস্পাদ

সভা কথা বলতে কি, আজ সমাজের দিকে তাকালে ব্কের মধোটা চিপাচপ করে ওঠে। সব ফেন দেখি অংশকার। এক এক সময় মনে হয়, ব্ঝি ভূমিকম্প-বিধন্দত কোন এক মহানগরীর মধ্যে এসে পড়েছ। যতদ্র দৃষ্টি যায় কেবল ভংনস্ত্পের পর ভংনস্ত্প। এর যেখানে যাকিছ্ ছিল সব ভেঙে গেছে। মান্দির ভেঙেছে, বিদ্যালয় ভেঙেছে, যমাধিকরণ ভেঙেছে—নায়, নীতি, বিবেক, মন্যাছবোধ, সব ভেঙে চুরুমার হয়ে গেছে!

কিন্তু কোথা দিয়ে, কেমন করে এই সর্বনাশা ভাঙন এলো, জিল্ডোস করলে সবাই চুপ করে যায়। সন্দিৎধদ্দিটতে এক-বার শ্ধে প্রদপরের ম্থের দিকে তাকায়।

ত্তে কি এর জন্যে আমরা নিজেরাই দামী!

জগুদা টেবিলের ওপর ঘ'্য মেরে বলে ওঠেন, হাঁ, তাই। দেশ যথন তোমার আমার সকলের তথন তার ভালম্দ্র সব-কিছ্র জনো নায়ত ধর্মত দায়ী আমরা সকলেই। তবে আমার নিজস্ব মত বদি জানতে চাও, তাহলে বলবো, যত নন্টের মূল এই স্বাধীনতা। বেদিন থেকে আমরা স্বাধীনতা পৈয়েছি, স্তিাকারের ভাঙনের দারা সেইদিন থেকে।

চমকে উঠি। কানের পর্বায় জগ্নের কথাটা যেন এক বিরাট ঘা মারে। বজে কি জগ্নো, কত কালের সাধনার ধন এই শ্বাধীনতা, তার জনো এই ভাঙন!

বিশ্বাস হচ্ছে না ব্ঝি: আমার মুখের ওপর গভীর দুলি ফেলে চেরে থাকেন। একেবারে যদি 'না' বলি, তাহলে যেমন তকেরি পর তকের ঝড় তুলে আমার নাজেহাল করে ছাড়বেন, তেমনি 'হা' বললেও রেহাই নেই। কেন তাকৈ সমর্থন করি, তারও জবার্বাদহি করতে হবে।

ভাই দ্কুল বজার রেখে, বার-দ্ই ঢোক গিলে বজলমুম, এ-ধরনের নতুন কথা ইতিপুরে কোথাও কথনো গ্রিনিন। সেপিক থেকে আপনার কেবল সাহস নর, তার-জিন্যালিটি আছে নিশ্চর! হু-কার দিরে উঠলেন তিনি। কেন থাকবে না। আফার মত দিনরাত এ নিয়ে কি কেউ চিশ্ত করে না মাধা বামার! শুধ্য মুধ্য গেস গেল

রব'। আরে কেন গেল, কোথায় তার গলদ
—কারণ ছাড়া কি কার্য হয়—একবার
ঠান্ডামন্তিতকৈ কেউ ভেবে দেখেছে? যে
যার নিজের কোলে ঝোল টানতে বালত।
যা অবশান্ডাবী তাই হয়েছে। কথাগুলো
বলার সময় জগুদার কপে এমন দর্দ ফুটে
ওঠে, মনে হয় যেন তিনি ছাড়া এ হতভাগা
দেশের কথা চিন্তা করার আর ন্বিতীয়
কেউ নেই।

গাঁরের লোকেরা জগুদার নাম দিরেছে
পাগণা জগাই। সকলের ধারণা, বেশী পড়ে
পড়ে তার মাথার স্কুগ্রেলা সব ঢিলে হরে
গেছে। তিনি তিন বিষয়ে এম-এ—ইতিহাস
দর্শনিশাস্ত্র ও বাংলায়: র্যাদচ তিনটেতেই
থার্ড ক্লাশ। এখনো নাকি ইংরিজীতে
একটা দেবার বাসনা আছে, দীঘদিন ধরে
তার প্রস্কৃতি চলেছে। তার ধারণা, জ্ঞানের
যেমন সীমা নেই, তেমনি পরীক্ষা দেওয়ারও
কোন নির্দিট্ট বরেস নেই। বিরে থা

Lusancent

করেনান। বাপ যা বিষয়-সম্পত্তি রেখে গিয়েছিলেন, তাতেই চলে যায় ভালভাবে। তাই চাকরীর পিছনে কখনো ছোটেননি।

কি জানি কেন আমার ওপর তাঁর অগাধ আদ্থা। বছরে একদিন কি দ্'দিনের জানো বখনই দেশে যাই, খবর পাওয়ামাত নিজেই ছুটে আসেন। তারপর সারা বছরের যত-কিছু ভাবনা, চিন্তার বোঝা, আমার কাছে নামিয়ে মাথাটা কেন হান্কা করে নেন।

তিনি বলেন, দেশে কি একটা মান্য আছে, যার সংশা এসব বিষয় নিয়ে আলো-চনা করতে পারি! কার পেটে কওট্কু বিদো, আমার ত জানতে বাকী নেই। তাই সারা বছর তোমার পথ চেয়ে বসে থাকি।

কথাটা হয়ত সতিয়। তবে আলোচনার কথা যা বললেন, সেটা আর যাই হোক, সতিয় নর। কারণ একবার কিছু বলতে দারু করলে, আর তাঁকে থামানো বার না। তখন একলাই বস্তা বলে বান। মনে আছে, গত বহরের কথা। প্রেলার ছুটিতে দেশে গৈছি, হঠাৎ একদিন একবোঝা প্রান্থিত। যা,ও করে জগানা করে এলে

হাজির। হোট-বড়, বিখ্যাত-অখ্যাত সব মিলিরে প্জা-সংখ্যা পাঁচশ-তিরিশখ্নার ক্ষা হবে না।

वनन्म, कि हर वजन ?

আমার কথার জবাব না দিয়ে তিনি নিঃশব্দে শ্ধ্ব একটার পর একটা পত্তিকা, টেবিলের ওপর বিছিয়ে দিলে। তারপর नान (भीन्मतन निर्द्ध स अःभगत्नाय नाग দিয়েছিলেন, আমার চোখের ওপর তুলে ধরে বললেন, তোমরা মনে করেছো কৈ. নোঙরামিগ্রেলাকে ইত্রোমি, সাহিত্য বলতে হবে? আর কি লেখার 'সাবজেক্ট' ছিল না। যদি মগজ দেউলে হয়ে গিয়ে থাকে, তাহলে কলম ফেলে দিয়ে, সমাজের মান্যজনদের ঘরে গিয়ে তাদের দৈন দিন জীবনের স্থ-দঃখ, সমস্যাগ্রেলাকে নিজের চোখে দেখতে বলোগে তোমার-সাহিত্যিক বংধ্দের। শ্ধ্ ঘরের কোণে বদে কিংবা রেম্ভেরোঁ কি ক ফ হাউস দেখে 'সমাজ-সচেতন' সাহিত্য স্তি করা যায় না।ছিছিছি, বলতে বৈসা করে, বোধ হয় শতখানেক গলপ পড়কান, কিন্তু অধিকাংশ ক্ষেত্ৰেই মূল বক্তব্য অবৈধ প্রেম। শিক্ষিত ভদ্রপরিবারের মেয়ে বৌ-ঝি, স্বাই নাকি চরিত্রহীনা। দ্'-একটি গলেপ আবার স্তা স্বামার খাদো বিষ মেশাচ্ছে তার প্রপ্রণয়ীর সঙ্গে মিলনের প্র নিষ্কণ্টক করার জনো।

আধুনিক সাহিত্যই যথার্থ সমাজ-সচেত্র — বংগ্রাফ্রাণ তার মধ্যে দিয়েই ফুটে উপেছে। —বলে তোমরা যে চকানিনাদ করছো, তাহলে এর নাম সেই সমাজ-সচেত্র সাহিত্য? আর এই বংগ্রাফ্রণার মম্না! যংগ্রাফ্রণা বলতে কি তাহলে বোঝায় — সংস্কার্ম্ভ স্বাস্থ্যকল প্রকার দায়-দায়েজমুভ বিশেষত ্রংবের অবাধ যোনাচার!

বলল্ম, আপনি গ্রামে থাকেন। তথা-কথিত সভা ভদুসমাজেই ভেতরে ভেতরে যে কত ছিদ্র, কত গলদ, তার কিছুই জানেন না। শহরে যারা বাস করে, তাদের জিজ্ঞেস করলে ব্রুতে পারবেন।

জগ্দা হ্'কার ছাড়লেন। শহরে! শহরের জীবনে সমাজ কোথার? সে ত জীবিকাজানের ক্ষেত্র। ছাত্রশ জাতের টানাটানি,
থেয়োথোয়তে, সমাজ সেখানে ট্'করো ট্'করো
খন্ড, বিজ্ঞিল! নাগারক জীবনে তাই সমাজ
নেই, আছে শ্ধ্ কতগ্লো ছয়ছাড়া, ব্তিজীবি দল বা গোড়িঠী! এদেরি কোন আম্তাকুড়ের পাঁক মরলা তুলে নিয়ে সমাজের
মাথার চাপিয়ে গায়ের জোলে 'আধ্নিক
সাহিতোর' লেবেল এটে হয়ত হাততালি
পাওয়া যায়, কিম্তু সমাজের ছাড়পত্র তাতে
মেলে না।

বলল্ম, সাহিত্যই ত সমাজের প্রতি-ছবি: আপনি কি তা স্বীকার করেন না?

নিশ্চয় করি। তাই বলে যা কিছু লেখা হয়, তাকে সাহিত্য বলে স্বীকার করি না। তা বদি হতো ভেবে দেখো আৰু প্ৰকৃত্ব সাহিত্যের নামে বত কিছু হাপা হরেছে, সব বদি বেছে ধাৰতে। তাহলে বোধ হর সারা দেশে ক্ষারণ কুলতো না, তাদের রাধার। অথচ ভাদের কটার নাম তুমি জানো। তোমার মনে আছে। যা সত্যিকারের সাহিত্য, তা কালজরী ব্যক্তরী। তাদের সংখ্যাও খুব বেশী নর। বনস্পতির মত অর্ণোর মধ্যে তারা মাথা উচ্চু করে দাঁড়িরে থাকে যুগ থেকে যুগে। অথচ তাদেরি পারের নাচে কত গাছগাছালি নিত্য ক্রন্সাছে আর মরে যাছে, কে তার থবর রাথে।

জগদার কণ্ঠ উত্তেজনায় কাপতে থাকে। বলেন, যা স্তিকারের সমাজসচেতন সাহিত্য তার জন্যে ঢাক পেটাতে হয় না। যেখানে ধর্ম নেই, নীতি নেই, নারীর সতীত্ব বলতে কিছু নেই, আমাদের সমাজ আজ সেখানে নেমে গেছে এটা বিশ্বাস করতে বলো। আজ তাহলে গণগার ঘাটে, কালী-মন্দিরে এত পেশাপিশি ভীড কেন? মন্ত্র পড়ে শালগ্রামশিলা ছ্ব'য়ে কেন তবে মেয়ে-দের বধ্বরণ করে ঘরে আনি। কেন তাদের গ্রলক্ষ্মীর আসনে বসিয়ে ভাবী সদ্তানের জননীর্পে সংসার-স্থের কল্পনা করি? এরা কারা, কোন সমাজের মান্ত্রে বাংলা-দেশে আজ যে প্রায় পাঁচ কোটি লোকের বাস, তার কত ভগনাংশ শহরে বাস করে---আর তার কত ভগ্নাংশের কথা নিয়ে এই অধ্নিক সাহিত্য! হঠাৎ একটা থেমে. আমার মাথের ওপর স্তাকটি করে বললেন সমাজ একটা ছেলেখেলার বৃহত্ত নয় সম্দের মত তা বিরাট, মহাম ও সংগভীর। োমার আমার মত কর্দ্র প্রাণ, ক্ষীণ দৃণিট মান্যের ধানিধারণার তা অতীত। 'সমাজ-সভেতন সাহিত। তাই যাঁর অঘ্তময়ী লেখনীর স্লবিট তিন কেবল প্রখ্যা নন, <u> ছণ্টা! সমল জাতির তিনি নমসা।</u>

এবার আমি তাই জগদের ওই কথার ওবে কি বলা উচিত, ভেবে না পেয়ে চুপ ফরে বইল্মে।

জগ্নে বললেন, জানি কথাটা সকলের কানে যারাপ লাগে, এতকালের প্রাধীনতার পা দেশে ধখন স্বাধীনতা এলো, সেটাই যত দুর্ভাগোর মূল, একথা শুনতে কারো ভাল পাগে না। আমারও কি ভাল লাগে? কিন্তু কি করবো, বাতের পর রাত জেগে বছন্ গবেষণা করে তবে আমি এই সিম্পানেত উপনীত হয়েছি। তুমি কি মনে করো না, এর জনো দায়া, স্বাধীনতা?

এই বলে আমার মাথের ওপর দৃথি ফেলে মাহাত কয়েক থেমে, আমার জ্বাবের অপেক্ষা না করেই আবার নিক্ষের বন্ধরো থিরে এলেন। দৃশো বছর ধরে ইংরেজ একটা জাতকে পরাধীনতার শাংশলে আণ্টে-পিণ্ঠে নোধে রেখেছিল, তার অর্থা কি তোমাকে নিশ্চয় বলে দিতে হবে না। অর্থাং, এক শিতি, এক ভাষা, এক আইন, এক শিক্ষার থারবিংশনে সকলকে বেধি তার প্রভৃত্ব বাহিল, অথও প্রতাপে। এতেইকু এদিক-লিক হলে তার ফ্রছাছিল না। সংগ্র সংগো

অবশ্য সে শাণিতর মধো রকমফের হিন। অবশ্যা অনুযায়ী ব্যবশ্যা। যেমন তার-ভাকাত বা শুনী আসামীদের জনো
ছিল জেন, হাজতবান, ফাঁসি, শ্বীপাল্ডর
তেমান শিক্ষার ক্ষেত্রে, দ্বুলকলেজের আইন
বিরুশ্ধ কোন কাজ করলে, পরীক্ষার হলে
টুকতে গিরে ধরা পড়লে, কি কোন
শিক্ষককে অপমান করলে, অপরাধের
গ্রেছ ভেঙে কথনো ছাত্রদের ফাইন হতো,
কথনো বা নাম কেটে দ্বুল থেকে ভাড়িরে
দেওয়া হতো আবার গ্রেত্র অপরাধের
জনো 'রাসটিকেট' করা হতো। অর্থাৎ
জন্মের মত লেখাপড়া খতম। আর কোন
দ্বুল-কলেজে জাঁবনে কথনো পড়াশ্না
করতে পারবে না!

ম্কুল-কলেজের 'ক্যারেকটর এছাড়া সাটি ফিকেটে'র ওপরই ছাত্রদের ভবিষাং বলতে যা কিছু সব তখন নিভার করতো। কেবল আই-সি-এস, বি-সি-এস পদ নয়, যেকোন সরকারী চাকরীর ক্ষেত্রে কিংবা শিক্ষা প্রতিষ্ঠানে বাকোন দায়িত্বপূর্ণ উচ্চপদের জন্য সর্বাগ্রে এই 'ক্যারেকটর সাটিফিকেটকৈ প্রাধান্য দেওয়া হতো। ফলে ছাত্রদের অভিভাবকরা যেমন তাদের লেখাপড়া ও চরিত্রের ওপর কড়া নজর রাখতেন তেমনি ছাএরা নিঞ্চেও ভবিষ্যাৎ-জীবনের কথা চিন্তা করে, যাতে চরিত্রের কোথাও এতট্টক কলত্ক স্পর্শ না করে, তার জনো শিক্ষকদের ভয় করতো, মান্যও করতো! মোটকথ। কেবল লেখাপড়া নয়. আসল যে চরিত্রগঠন, শিক্ষার সেই মূল নীতি এই স্কুল-কলেজের মাধ্যমে ছাত্রা তখন লাভ করতে বাধ্য হতো। ইংরেজরা জানতো, এই ছেলেরাই সাবালক হয়ে এক-দিন ব্রটিশ সাম্রাজ্যের এক-একটি নাগরিক হবে। এদেরি ওপর কেবল একটা বিশেষ পরিবারের মানমর্যাদা নিভ'র করবে না, দেশের সর্বত্ত শান্তি-শৃত্থলা রক্ষার যে দায়-দায়িত্ব তারও হবে অংশীদার এরাই। তাই সমাজের স্বস্থির ছোটবড়, উ'ছু-নীচু, য়েখানে যে কাজ কেউ ক্ষাক আগে শৃংখলা রক্ষা করে চলতে হতো। এতট্কু বেচাল হলেই শাহ্তি। **জল ম্যা**জিটেট হলেও

ক্ষমা নেই। চাকরীর কেতে সব স্থান। সামান্য কেরানীর মতো তাদেরও সামান্য আটকাতো, 'ডিমোশন' হতো। সৈহ জন্য ঘড়ির কটার সংগ্র পা ফেলে ছুটতো যে-यात कर्मम्थला। उद्दे द्वि लाउँ इला! স্বাই ভরে স্কুষ্ত! তাহলেই হাজরেথাতার नानकानित मान भएए हार्व। खरथा कामारे, বা অনাবশাক ছুটি নিয়েও চাকরির রেকর্ড খারাপ করতে চাইতো না কেউই, পাছে তা প্রমোশনের প্রতিবংধক হয়। অথচ মজা এই। ইংরেজ যাদের হাতে এই শান্তি-শৃত্থলার ভার অপণি করেছিল তারা আমাদের এই দেশেরই লোক! তাদেরই কথায় ফুলাক উঠতো বসতো, তাঁদেরি 'জী' 'হ্রজ্র' বলে সেলাম ঠুকতো, তাঁদেরি জ্বান্তর মতো ভয় করতো। জজ, মাজিন্টেট, বড়বাব,, ভাইস-চ্যাম্পেলার, কলেজের প্রিন্সিপাল, স্কুলের হেডমাস্টার, কার্থানার মানেজার, বাব-সায়ের মালিক, যিনি যে চেয়ারেই বসনে না কেন। কেবল তাই নয়, সাহেবের আর্দালী, বড়বাব্র পিওন আদালতের পেয়াদাকে পর্যন্ত ভয় করে চলতো। সামান্য বৈতনের কোন একটা প্রলিশকে পাড়ায় চত্ত্বতে দেখলে তথন সকলের বৃক্ত ভয়ে চিপ-চিপ করে উঠতো। সে কত টাকা মাইনে পায়, কিংবাসে ম্বারভাগ্যা কি গয়া জেলার লোক, একবারও তা কারো মনে হতো না। তার লালপাগড়ীটাই ছিল মথেন্ট। সে যে, একজন রাজকর্মচারী, ইংরেজ শাসকের প্রতিনিধি তাকে গালাগাল করা বা তার গায়ে হাত দেওয়া মানে ইংরেজ সরকারের অপমান করা। এটা দেশের ছোট বড় সকলেই তথন ব্যাতো বলেই এতবড় দেশকে এতকাল এক শাসন রজ্জ্ব দিয়ে **েধে রাখতে থেয়েছিল তারা। রাজ্ঞধর্ম** বলতে দ্যুঘ্টের শাসন ও শিষ্টের পালনকে বোঝায়। তাই ছোটবড় ও উচ্চ-নীচের প্রভেদটা তথন সবাই ব্রুবতো। নিজ নিজ ক্ষেত্রে স্বাই তাই তার উপরিওলাকে প্রন্থা করে চলতো, ভার আদেশ অমান্য করার সাহস কারো ছিল না। তা ভয়েই হোক.



ভিতিতে হোক। ইংরেজ আমাদের দেশ থেকে লাটপাট করে যেমন অনেক কিছন নিমে গেছে তেমনি যা দিয়ে গিরেছিল তার মূল্য বোধ হয় আরো বেশী, বিশেষ করে আজ তা লোক মধ্যে মর্মে অন্তব করছে। এটা স্বীকার করে। কিনা? বলে তিনি জিজ্ঞাসন্ দৃণিট তুলে আমার মুথের দিকে চেয়ে রইলেন।

28

আমতা আমতা করে জবাব দিলাম, হাাঁ, একথা শ্বধ্ব আমি কেন. সবাই স্বীকার करता 'काम है, मि भरतम्है।' इठाए कश्रमात গলাটা আরো এক পদা চড়ে উঠলো। তিনি বললেন, তাহলে স্বীকার করছো যে, যেদিন এই দীর্ঘকালের পরাধীনের শ্ৰেল ছিন্ন হলো, আমরা স্বাধীনতা লাভ করল,ম, সেই দিন থেকেই দেশের ভাঙন শ্রে হলো। অথাৎ এতকাল ইংরেজ যে একতার কথনে ---এক ভাষা, এক নীতি, এক আইনের त्रभ्य फिरा आभारमत त्व'रध त्तरथिष्टल, जा ছি'ড়ে গেশ সংগে সংগে। আর তার ফলে নিয়মান, বতিতা, কতবাবোধ, न्याशीनष्ठा. আন্গত্য প্রভৃতি যেসব সদগৃণ দাসজের অনুশাসনে এতদিন জাতির মজাগত হয়ে গিয়েছিল, তাতে ধরলো ফাটল। পারনো যা কিছ্ম দাসত্ত্বে প্রতীক: তাই তার বির্দ্ধা-নারণ করে, তাকে ভেঙে যথার্থ স্বাধীনতার মানন্দ পাবার জনো উন্মন্ত হয়ে উঠলো লাক। পরাধীনতার সব কল ক ধ্রুয়ে মাছে फलएड ठाइँला **(म**म श्वरक।

ই, সি, আটে, এর

গতবারের নায় জবংগ
গাট ট্লান্ট মিনিটস্সাজেসনস
বাহির হইয়াছে
প্রাণ্ডিক প্রকাশনী:
২৬, শংকর ঘোষ লেন, কলি:—৬
প্রোগেস্ভ কক:

৩৩, কলেজ রো, কলিঃ—৯

স্বাধীন দেশের মান্ধ স্বাই এক।
সেখানে কেউ কারো দাসত্ত করে না। তাই
ছোট-বড়র পার্থ কা মনিব কর্মচারীর
সম্পর্কের মধ্যে সেদিন যে ফাটল ধরেছিল
একট, একট, করে বাড়তে বাড়তে আল তা
এইখানে এসে পেশিচেছে।

জাতির জনক, মানবতার শ্রেষ্ঠ প্রাক্তরী, মহাত্মা গান্ধীর আদর্শে তথন সবাই আন্প্রাণিত হে সত্যাগ্রহের ফলে একদিন ব্টিশ সাগ্রান্টোর ভিত্তি টলমল করে উঠেছিল, মহাত্মা গান্ধী প্রদর্শিত সেই পথ তারা অন্সরণ করলে। অবশা নিজেদের স্ম্বিধা-নত সত্যাগ্রহের আদর্শ ও নীতিকে পরি-বর্জন ও পরিবর্ধন করে নিয়ে কাজে লাগাতে লাগল।

এই বলে একটঃ থেমে আমার মাথের ওপর চোথ রেখে জগুদো বললেন, আমার মনে হয়, সেই সতাগ্রহই আজ র্পাণ্ডরিত হয়ে ঘেরাও' নাম নিয়েছে।

এদিকে প্রোতন শিক্ষা বাবস্থার
মধ্যে প্রাধীনতার গথ্য আছে তাই স্বাধীন
ভারতের জন্যে নতুন ছ'চে তাকে চালতে
গিয়ে সর্বপ্রথম কুল থেকে 'শাস্তি' তুলে
দেওয়া হ'লো। আর সেই সঙ্গা ব্রেড়া বিদ্যাসাগরকে নির্বাসন দেওয়া হ'লো পাঠাতালিকা থেকে। প্রথম ভাগ, দ্বিতীয় ভাগ,
বোধোদয়, কথামালা প্রভৃতি বইয়ের বদলে
নানা রস্তের ঝক-বাকে চক-চকে ছবিয় এই
তাদের পত্তে দেওয়া হ'লো। বিদ্যাসাগরের
কথা তারা ভূলে গেল। অর্থাৎ ভূলে গেল,
'সদা সতা কথা বলিবে', 'চুরি করা বড় দেয়ে'। 'কথনো কাহাকেও কট্ বাকা বলিও
না' পারের দ্রবানা বলিয়া লাইলে চুরি করা
হয়' ইভাদি ইত্যাদি।

তার মানে স্বাধীন ভারতের যারা ভাবী নাগরিক, যাদের ওপর জাতির মান-ম্যাদা দায়-দায়িত্ব সব কিছা নিভার করছে, তাদের প্রথম দীকা হলো শাহিত্হীন নিভায় মনেতা আর প্রথম শিক্ষা পেলে নীতিশিক্ষা-বাজতি পাঠাপাহতকে। আজকের যে য্ব-স্মাজ, ভারা সেদিনের ধ্বাধীন ভারতের দার।

হঠাং বেন মনে হলো জগদো বস্তুতা দিচ্ছেন, কোন বিরাট জনসভায়। মৃ৽ধ শ্রোত্ম-ডলী তার মাথের ওপর সাগ্রহে ত্রাকরে আছে। তার কণ্ঠ উৎসাহে ভর্ল ওঠে, কোন কাষ্ঠ কারণ ব্যতিরেকে ঘটে না। এদিকে রাল্টের যাঁরা কর্ণধার তাঁরাও স্বাধী-নতার আন্দেদ দিকবিদিকজ্ঞানশ্না হয়ে এমন কাণ্ড করে বসলেন, যা প্রথিবীর কোন দেশে কখনো হয় নি বা কেউ কোন দিন শোনে নি। দীর্ঘকালের প্রাধীনতার প্র কোন রাষ্ট্র স্বাধনিতা পেলে, আগে সে তার নিরাপত্তা কায়েমী করার জন্যে একদিন যারা তার সংগ্রে শত্রতা করেছিল বা নিমক-হারামী করেছিল সেইসব দ্যমনদের রাজা থেকে দুর করে দেয় কিন্তু আমরা তান করে বরং দু বাহ্ম বাড়িয়ে বুকে টেনে নিয়েছি, 'মেরেছো কলসীর কানা, তাই বলে কি প্রেম দেবো না'! শহুকে আমরা ভাল-বাসা দিয়ে জয় করতে চেয়েছি। প্রতিশোধের বদলে 'প্রতিশোধ' বলেছি। একবারও মনে হয়নি 'রাজধ্যে' আত্ধম, বৃধ্ধম নই আছে শাধ্য জয়ধল মহারাজ।' তাই ভেই ভাই' নীতি, 'শাহিতপণ্' সহবহুথান', প্ড-শীল প্রভৃতি নিয়ে যথন নাচানাচি কর্ণছি বুঝতে পারি নি সং^চবধানের নামে জ খিছুড়ি তৈরী করেছি, মানা জাতি, মন ধর্ম নানা মতবাদের সংমিশ্রণে, ভারতের মহান ঐকোর আদর্শ দেখিয়ে বিশ্ববাসীকে হত্তবিত করে দেবার জনো তখন কেওঁ জানতে পারিনি যে, সেই ঐকের মনেট ছিল ভাঙ্ন।যে পেশে এক সংসারে িন্ট হাড়ি ভাষে ভাষে প্ৰক. মা ছেলেটে গনিয়ে থাকতে পাবে না, সেখানে কাজেনে বহা মত, বহা পথ নিয়ে একতা বক্ষা বরা কি কথনো সম্ভব।

এই বলে একট্ থেমে, দম নিয়ে নিলেন জগ্দো। তারপর আমার মনে ছয় আজকে দুড়ি ফেলে বললেন, আমার মনে ছয় আজকে এই যে, আমাদের দেশে সুব কিছাটে ভাঙন ধ্রেছে, তার জনা ্যী এট দ্বাধীনতা। তুমি কি বলো?

আমি ভূ হতথাক। কি বলবো এরপর ব্যুবতে না পেরে নীরতে চেয়ে থাকি।

বিশ্বাস ংক্ষে না, ব্রতে পেরেছি। কিন্তু কি করবো, এই আমার সিদ্ধান্ত। তোমরা বিশ্বাস করো যা না করো, জাতে আমার কিছা, এসে যায় না।

এই বলে তিনি যথম চুপ করলেন, আমি আন্তে আন্তে প্রশ্ন করল্ম, সর ত শ্নলান এখন এ থেকে বাঁচবার পথ কি, ভেবে দেখে-ছেন ডিছা?

সংগ্য সংগ্য তিনি বলে উঠলেন থেনি মহাজন গতঃ স পন্থাঃ । ইতিহাস তে মগ্য পড়ো না। সেখানেই স্বকিছা লেখা আছে। সমুখ, সম্মিধ, শাহিত যথন যে বাজে বিলেজ করতো তখন সেখানের শাসন্থীত কি কম ছিল, সেটা দেখলেই সহজে ব্যুক্ত পারবে। মনে বেখো, হিস্কিই বিপিট্য ইটসেলছ।

় আমি একেবারে বোবা বনে গেলমে। 🔟

অন্টম বর্ষা রবান্তভারতা পরিকা বৈশাধ-আবাদ্ বিভাগ সংখ্যা রবান্তভারতা পরিকা ১৩৭৭

সম্পাদক ঃ রমেন্দ্রনাথ মাল্লক

লেখকস্চী: রবশিদ্রনাথ ঠাকুর (চিঠিপত), সোমোণ্ট্রনাথ ঠাকুর (ববশিদ্রনাথের আনন্দমীমাংসা), আশ্চেম ভট্টাচার্য (রবশিদ্রনাথ ও বাউল সাধনা), হিরুত্মম বন্দোপাধ্যায় (রবশিদ্রনাথের মানবিকতা), উলা রায় :রবশিদ্রনাথের প্রেণ্ঠ গদাক্রিতা), সভোন্দ্রনায়ার মল্পেমার (রবশিদ্রনাথিত ভারতপথ ও উত্তরস্বীদের গবেষণা), অলিভক্ষাত ঘোষ (রবশিদ্রনাথ ও লোকসংস্কৃতি), স্বোধশ্মেমার বন্দ্যোপাধ্যায়, পাঁম্ব্রশিক্ত মহাপাত ও জ্বের গ্লেড (গ্রুথসমালোচনা)। চিচ্চস্চী। রবশিদ্রনাথ ঠাকুর (স্বপ্রতিকৃতি)।

হৈমাসিক সাহিত্যপত্তঃ প্রতি সংখ্যার মূল্য এক টাকা। বাহিকি চান চার টাকা (সাধারণ ডাকে) ও সাত টাকা (রেজিসিট্র ডাকে)।

রবীন্দ্রভারতী বিশ্ববিদ্যালয় : ৬।৪ স্বারকানাথ ঠাকুর লেন, কলিকাতা—৭ পরিবেশক : পাঁচকা সিন্দ্রিকট প্রাঃ লিঃ। ১২।১ লিন্দ্রেস স্থাটি, কলিকাতা—২৬

त्रवीन्प्रनाथः এकि विजक

रणाकनाथ छद्दोहाय

আবার রবীদ্রনাথ? হার্গ, একথা খুবই বলা যায়, তব্ বলতে চাওয়ার আগে অন্য একটা প্রদানও মনে জাগতে বা্ধা, এ-মৃহ্তে জাগছেও, এবং সেটা হল এই : কী তবে হরেছে আমাদের-হরতো সকলের নয়, আশা করি নয়, কিন্তু অনেকেরই—রবীন্দ্রনাথের প্ৰতি হঠাৎ এই অনীহা কেন? অনীহাটা হঠাং কিনা, হলেও কত দ্র হঠাং সে-প্রশ্নটা হয়তো ততটা বড় নয় এবং ভাতে যাওগর সময়ও এখন নেই। কিন্তু অনীহাটা যে আছে, হয়েছে, একটা সত্য, সেটাই বড কথা—আর তাই এই অনীহা কেন, সে-প্রশনটাও বড়। অন্য দেশ হলে এ ধরনের একটা প্রণন তুলতে কোনো পাঁয়তাড়া ক্যারই দরকার পড়ত না, কারণ সেখানে চট করে বলা এত স**হজ যে ভালেরিকে আজকাল** আমার আরে তত ভালো লাগে নাবা রিলকেকে এখন আমার অপাঠ্য বলে মনে হয় বা মার দৃদিনের আগের সেই টি এস এলিঅটকেও অবশেষে তাকে তুলে রাখতে বাধা হয়েছি। কিন্তু এখানে সে রকম কিছু বলা, বিশেষত রবীন্দ্রনাথকে নিয়েই ? সেটা অভাবিতবা। এ-দেশে আমরা মান্**ষকে হ**য় অমান্ষিক অবজ্ঞা ও নির্যাতনের মধ্যে রাথব, নয়তো কর্বচৎ-কদাচিৎ তাকে তুল্লব দেবতার আসনে, এবং একবার দেবতার আসনে তাকে তুলতে পেরেছি কি আর কথা ^{নয়,} তাকে ঘিরে নির্ভেজাল স্তোকবাকা ও বিচিত্র টাবেরে বাসিফ**ুলের মালা সাজাব।** সাম্প্রতিক বাংলা সংস্কৃতির চর্চায় একটি ^{চর্মত্}ম দুর্ভাগ্য আমাদের হল এই যে রবীন্দ্রনাথকে আমরা জীইফে রাখতে পারি নি সজীব সমালোচনার মাধ্যমে, পরিবর্তন-শীল যুগের নতুন আলোক নিয়ে আঙ্গো তাঁর দিকে তাকাতে পারি নি। এতে ক্ষতি যা হয়েছে-হচ্চে সেটা তার এতটুকু নয়, সম্পূর্ণ আমাদেরই, কারণ অভিভূতের ভাবে না বলে তো পারব না কিছ,তেই যে রবীপ্ত-নাথ আধর্নিক সারা বিশেবর এক প্রকাণ্ড তম লেখক, এক প্রচন্ডতম মান,ব।

বাংলা কবিতার ধারার 'শেষ লেখা'-র
পথান কী, সে-আলোচনার সপে এ প্রশনগালি যকে মনে করি, তাই তুর্লোছ। এখন
গভারে যাওয়ার চেন্টা করা ধাক, সবিনরে
ও আমার অতি সামান্য জ্ঞান ও সাধামতো।
শেব লেখা'র যেটি শেষতম লেখা, সেই
বহুবিদিত 'ভোমার সৃন্টির পথ রেথছ
আকীর্ণ করি' কবিতাটি, সেটি নিরে যাদ বছরা শ্রে করি তো এ-আপত্তি ছরতো
উঠবে যে কোনো বাজিত্বের শেব সজ্ঞান
শ্রাক্রর বা উক্তারণের মধ্যে তার আদান্তের
সামগ্রিক মমার্থাটি বে সব সময় ধরা পড়বেই
এমন কোনো নিরম নেই। কিন্তু এ-ক্লেবে
আগতিটাকে টেক্টানো মুশ্বিকা, ক্রব্রণ রবীন্দ-জীবনের এই শেষতম সৃষ্টিশীল
উত্তির মধ্যেও হরতো সেই জীবনের
আত চারিহিক ধর্নি ও দর্শন সন্দেহভৌতভাবে বিধ্ত। এমনিতেই তো আগাগোড়া
এক অবিচ্ছিনতার সরে রবীন্দ্রনাথের স্ক্রীর্থ
জীবনের বিপরে পরিমান ও বহুবিচিত্র
অবদানকে একটি বিশিষ্ট ঐক্যে চিহ্নিত
করেছে, তার উপর গোড়ার ও মধ্যজীবনের
লেখাগ্রিলতে ধে-বছরা ছিল অলংকারে ও
অতিকথনে ভারাক্রান্ত, তা-ই শেষের পর্যায়ের
নচনার সকল অহেত্ক আভ্যাবন ঘ্রিরে ক্রমশই
হয়ে উঠেছে আরো অজ্য, আরো উচ্জ্যল,
আরো দাণিত—ধ্যেন অনুকটা একাস রিম্মর

নিবংধটি বিতর্কম্লক, এবং সংশাদকীর মতের সপো সামঞ্চসাহীন। তব্ প্রকাশিত হল এই উদ্দেশ্যে বাতে এ নিয়ে আলোচনা চলতে পারে। অ, স,

ভিতর দিয়ে মাহু সার বৃশ্জুটিই বেরিয়ে আসার মতো। এখানে অবশ্য মানব, কেট-কেউ সেই ঐক্যের স্থামী ভাবের মধ্যেও ম্থানে-ম্থানে দুরেকটি স্বন্ধারী-ব্যাভিচারী ভাবের আবিজ্ঞার করেছেন, এক-আধল্পন তো রবীন্দ্রনাথের শেষ পর্বাহের একটি-দুটি কবিতায় পাশ্চান্তাস্কাভ আঁশ্তত্বাদ ও অতি অধ্নাকালের তথাকথিত সন্দেহবাদের ছি'টে-ফোটাও খ'ফে পেয়েছেন। তাদের সপো একমত আমি নই, তব্ তকে মাততে চাই না, শুধু এটাকু বলা হয়তো সমীচীন হবে উল্টোপাল্টা ধর্নন অস্ফর্টভাবে যদি কোথাও মাথাচাড়া দিয়ে উঠতে চেয়েও থাকে, সামগ্রিক সরেকে তা কোনো অংশে ব্যাহত করে নি—এবং সেই সূরটি হচ্ছে এক বিশ্বাসের, যে বিশ্বাস সর্ব দিবধাহীন।

রবীন্দ্রনাথের উপর উপনিষদের প্রভাব নিয়ে ইতিমধ্যেই এত সরস-নীরস-বিদৰ্শ্ব আলোচনা হয়েছে যে আবার পোড়বড়ি-খাড়া করতে চাই না। রবীন্দ্রনাথের বিশ্বাস ঠিক কোন পর্যায়ের ছিল বা ভারতীর সেই দশনে কতথানি চিহিত ছিল, তা আজ আর প্রমাশের অপেক্ষা রাখে না। 'তোমার স্থির পথ' ক্বিতাটিতেও সেই একটি বিশ্বাসের অপাকার এবং কবিতাটি যদিও তার সারল্যে-সংযদে-গাম্ভীর্যে অন্বদ্য এক অনুস্বীকার্য মহিমায় মণ্ডিত, তা পাঠের পরে অনেক উৎস্ক পাঠকই এক বিচিত্র অস্বস্তিবোধের হাত থেকে রেহাই না। এমন-কি আমি আরো দরে এগোব এবং বলব, সেই অম্পদিভবোধের ছাভ থেকে बरीन्सनाथ न्यहरहे रहहाहे भाग नि, वदार अमन

এক আলে হরতো তিনি সতিই তুলা ব বা দুখে এই কবিতাতেই নর তার কবিনের ব্যাণিততে অন্তত প্রক্রেকারে প্রতি-ফলিত। কবিতাটি আরেকবার তলিঙ্গে দেখা বাক তবে— বলছেন রবীন্দ্রনাথ ঃ

ভোমার স্থিতির পথ রেখেছ আকীর্ণ করি বিচিন্ন ছলনাজালে, হে ছলনামরী।

মিধ্যা বিশ্বাসের ফাঁদ পেতেছ নিশ্বণ হাতে সরল জীবনে। এই প্রবণনা দিয়ে মহত্তেরে করেছ চিছিত তার তরে রাখনি গোপন রাতি।

তোমার জ্যোতিত্ব তারে
যে পথ দেখার
সে যে তার অত্তরের পথ,
সে যে চিরস্বছ,
সহজ বিশ্বাসে সে যে
করে তারে চিরস্বান্তর্ভা

বাহিরে কুটিল হোক অণ্ডরে সে **খজ**ু এই নিয়ে ভাহার গৌরব। লোকে ভারে বলে বিড**িন্ড**।

সতোরে সে পার আপন আলোকে ধোত অভ্যরে অভ্যরে।

> কিছনেত পারে না তারে প্রবান্ধতে, শেষ প্রস্কার নিয়ে বারু সে যে আপন ভাস্ডারে।

অনাগাসে যে পেয়েছে ছলনা সহিতে সৈ পায় তোমার হাতে শাস্তির অক্ষয় অধিকার।

ব্যাখ্যার কমই দরকার পড়বে, বিশেষত রবীন্দ্র-কাব্যে অভ্যন্ত পাঠকের কাছে। তব্ **থটকা লাগতে** পারে একেবারে মূল বস্তব্যটা নিয়েই। প্রথমত, কোন 'ছলনাময়ী'র कान इनना'त कथा अधान वना श्यक्? এ-'ছলনাময়ী' কি কবির বহু আগের এ কী কৌতুক নিতা ন্তন ওগো কোতুক-ময়ীর দেই 'কোতৃকময়ী'র সংশ্য একাছা, নাকি তার স্বজাতিবাদ্র সম্প্রেক্র কুট্মুস্বমাত্র, কারণ এতদিনে ছলনার প্রকৃতি-ভেদ হয়েছে কবির অভিজ্ঞতায়, গভীরতায় ও পরিচ্ছপ্রতায় আজ আরো অনেক বেশী শয়স্ক, বলতে পারছেন, 'কমিনেরে ভালোবাসিলাম' বা আপনারে আঘাতে আঘাতে रवमनायः ? ना-इय प्राप्त निकाम অনুমানই সভা, তবু দ্বিতীয় একটি প্রদান জাগবেইঃ সেই কঠিনের কণ্টিপাথব্ৰে উম্জনল হয়ে বেরিয়ে আসতে পেরেছে বলেই কি কেউ অনানাসে ছলনা সওয়ার দর্ন শাতির অক্ষয় অধিকার পাবে? অক্ষয় অধি-কার' কথাটা তো বন্ধ বাড়াবাড়ি নিশ্চর, তাছাড়া সেটা পাছে কে. এবং শান্তি'-টার্ট্ট या स्वत्भ की? छेखरत व्यामात मरन हंत्र ७-শান্তি কোনো শান্তিই নয়, এ-শান্তির

िमक समामा मण्डम सर, क-मान्छि ग्रस् প্ৰতি পোলাম বলে একটি মনগড়া কল্পনা सिता प्रिया जान्द्रभाषात अवर क्षीयम छ প্ৰকৃতিৰ সম্পূৰ্ণ বিৰোধী হয়ে ও প্ৰাণপৰ চেণ্টার শান্তির এই মিথাা সাশ্বনা যে পেতে চার বা পারে, সে একমাত কোনো বাঙ্কি-विद्यानके धा-त्करत स्वीम्त्रनाथ स्वतः। कात्रव धानाशास्त्र धननारक व्यवका करत শাহিত্র এই অক্ষয় অধিকার অজানের সংগ্র মান্যের 👁 প্রথিকীর ইতিহাসের প্রচেণ্টার কোনো मम्भक थाकरा भारत मा. धमन-कि কারা করে বলতে **रगरम** ফ,লের कर्ड-छोत जागुगा प्रथि সংগ্রামের সংস্থে এর কোনো পরিচয় নেই। এ-শান্তি একান্ডভা**ৰে পলাভকের, অন্যাথের** তরংগা-কল সমাদের সামনে হাত-পা গাটিয়ে বসে থাকা অসহার আত্মকেন্দ্রির, নিজেকে নিজের একটা শেতাক-এক কথায়, এ-শাশিত মান,ষ-বিরোধী, প্রকৃতি-বিরোধী, ইতিহাস-विरताशी।

790

किन्छ असम अक्रो कथा शामि की करत? কারণ কবি রবীন্দ্রনাথের সব্থেকে বড় পরিচয় তার মানব-প্রেমে, অন্তত সেই विश्वात्महे जामना छेन्द्रस्य इस्त्रीह। यथार्थ-ভাবে তিনি ছিলেন বিশ্ববাসী, এবং সেখানেই সংগাত অন্যান্য বহু সাহিত্যিকের নশো তাঁর তফাং। দ্ল্যাণ্ডস্বরূপ বলা চলে, বিশেষর মান্যবের কথা সমানই ঐকাণ্ডিক-ভাবে ভেবেছেন কুমা রলা-ও, এবং বিশেলষণী म्क्यून्निएए यपि वर्गेम्बनारथत रथरक ভাঁকে আরো অনেক বেশী উল্জবল মনে হওয়া প্ৰাভাবিক, মানুৰ নিয়ে তাঁর আতি কখনো পেণছোতে পারে নি সেই বসো-सीर्ग মহিমার, বা পেয়েছে রবীন্দ্রনাথে। সেই মানব-প্রেমের অজন্র সভাকারের প্রমাণ र्कारना त्रतारह त्रवीग्तनारथत कर्ममत जीवतन আছে যিনি 'শাস্তির অক্ষয় অধিকার'-এর প্রস্পা তুলছেন, তিনিই মাত কিছ.কাল আগে অন্য এক পরিপ্রেক্ষিতে বলেছেন ্রশা**ন্তর জলিত বাণ**ী শোনাইবে বার্থ পরি-হাস', লিংগছেন, 'সভাতার সংকট'. এমন কি. শ্নতে পাই ১৯৪১-এর বিশ্বস্তস,ত্রে সেই মুম্ব কণগ্ৰেণতে তিনি বিশেষ টিন্দিল ছিলেন গত বিশ্বযুগ্ধ সংগ্রাস্ত কিছা খবর নিরে, যেমন নাংসী বাহিনীয় আক্রমণে সোবিয়েৎ রাশিয়া পিছিয়ে পড়ছে কি না, এবং পিছিয়ে পড়ছে না জেনে ত্রতিকর নিঃশ্বাসও নাকি ফেলেন। অবশা এথানে বলা উচিত হবে, রাজনীতির ব্যাপারে তার খ্ব একটা উৎসাহ ছিল না। এক-কালে তো হিটলারের জার্মানি ও মুসো-লিদীর ইতালিকে নিরে ডার উৎসাহের चारीध दिला ना. এवर সেই উৎসাহকে किन्त করে ছাকে নিরে পাশ্চাতা ব্রশ্বিকীবীদের বে-প্রচাত আন্দেশের কারণ ঘটে, ভার বিশ্তারিক বিবরণ মিলবে রমার্গ রক্তির **ন্দারত ভারের**ী'তে ৷

তবে রাজনীতির ব্যাপারটা আলাদা, এবং সে-সন্বচ্চে পরে তিনি নিজেকে সংশোধন করার ক্রন্টাও করেন। কথা বেটা এখানে, সেটা হল, রবশিক্রনাথের অতি বড় শাত্রও তাকে মানব-প্রেমিকের বিপরীত কোনো আবা দিতে যাবেন লা। এবং সোটা বদি সজ্য হয় তো প্রেম্ন প্রশানীও বাভাবিক ঠেকবেঃ তা হলে তার শোষ উদাহরণে শুধু বাজিগতভাবে এক শার্মার্থিক মুছির কেন তিনি এত বড় বিলাসী, কেন এত আত্মকেন্দ্রক তিনি? তবে কি মৃত্যুর মুখোন্থি বলেই ভিন্ন কিছ্ম কার্মার সময় নেই কবিনেই অবার সময় নেই কবিনেই কবিনেই প্রেমার সময় নেই কবিনেই ক্রেমার সময় নেই কবিনেই ক্রেমার সময় কবিতাতেও খ্রে-ফারে একই প্রস্থাপে বার বার আস্যাজন ই উদাহরণ তো রয়েছেই, কোথাও বলাহন ঃ

আম্ত্রের দংখের তপস্যা এ-জীবন---সত্যের দার্গ মূল্য লাভ করিবারে, মৃত্যুতে সকল দেনা লোধ করে দিতে।।

আবার কোথাওঃ
এই হার্নান্ধত খেলা জ্বীবনের

এ-মিথ্য কুহক, শিশ্বেল হতে বিজ্ঞািত পদে পদে এই বিভূমিকা.

দঃখের পরিহাসে ভরা।

ভয়ের বিচিত্র চলচ্ছবি— মৃত্যুর নিপুন শিশ্প বিকীণ আঁধারে।।

তক এখানে কবিতার গাণাগান নিয়ে নয়, কারণ বাজি-জীবনের কবিতা হিসেবে 'শেষ লেখা' মহৎ কাব্যের স্থীকৃতি পাবেই, এবং শ্ব্ 'শেষ লেখাই' বা কেন, শেষ পর্যায়ের ভার প্রায় সব লেখাগঞ্জিও, সে-শ্বীকৃতি থেকে বণিত হবে না তার সার। জীবনের রচনার অনা কিছু কিছু অংশও। প্রখন বা স্বাদন যেটা জাগবে, সেটা রবীন্দ্র-নাথের জীবনব্যাপী ত্বন্দরও, সেটা তাঁর মানব-প্রেম ও আত্মকেন্দ্রিকতা নিয়ে। মানব-প্রেমিক যে কথনো আত্মকেন্দ্রিক হতে পারবেন না, তা নয়, কিন্তু **লেখা'য় ও আরো বিশেষ করে 'তো**মার স্বান্টর পথ রেখেছ আকীর্ণ করি ক্ৰিতাটিতে এমন কিছা প্ৰকট আভাস जारह या भारत भाषाभाषाती तवीन्यतार्थत्रहे নয়, তাঁর সারা জীবনেম্বও গোটা বছবা ও मर्गातत अक्षा साम ध्यम। अरः स्यर्क् **বছ**বা বা দর্শনের সেই মোটা অংশচি সামাজিক মান্বকে দস্যাৎ করে একমাত্ত ব্যক্তিস্বরূপের অধ্যাধভাবেই পরামশ **प्राक्टर**, शहेका माला मिट्ट कारापटे।

একদিকে তেনাম স্থির পথ'-এর
মতো কবিতা, অনাদিকে বৃহত্তর মান্বের
প্রতি উৎসগীকৈত কম'ময় জীবন, কী করে
এই শৃহ দোকার পা রেথে রবীশূলাথ
চলতে পেরেছিলেন, সেটা বৃষ্তে গোলে
বি-প্রমান্তের ক্ষা তিন্তি, সেই ল্যাভাকে

ব্যতে হবে। এ-প্রস্পো মনে পড়ছে জা-প্ল সার্ত্তের একটি সাম্প্রতিক সাক্ষাংকারের रुशा. अवर मार्च गांपड मेन्स्म . किय খাদসিক জগতের বাসিন্দা, তাঁর একটি-দটি छीं व आलाइमाब जारमबं मूर्न रहेकाउ পারে। সম্ফোৎকারটিতে সার্ভ বরেন রে: গত মহাযুদ্ধের পরেই এককার ডিনি লৈখেন. হো-কেনো জার্গার যে-কোনো পরি-দ্যতিরই উল্ভব হোক না কেন, প্রতারক হবে কি হবে না, এ সিধাযুক্ত গ্রন্থান দ্যাধানতা শান, যের সাব সাবাই প্লাকবে। থাজ কিন্তু সার্গ্র ভারতে গিরে আইংক উঠছেন, মনে গনে বলছেন, প্রথমন একটা সাংখাতিক মিণ্যা কথা জিনু ,সেমির লিখতে পারলেন কী করে? মেদিন ফ্রাসী-দের কাছে যে-দ্রটি প্রশন ছিল, তা শাদা-कात्नात्र घट्टा भ्नर्ष, दम् वर्षा नम् वर्गे-इत छाता आर्थाम व्यवस्तास्यतं विस्तार्ध দড়িাবে, নয়তো জার্মানদের সংগে সহ-যোগিতা দেখিয়ে প্রভারকের আখ্যা পারে। আৰকের সমাজ ভগংকরভাবে জটিল, তাই मान, त्यत अन्नश्रात्मा का किन, द्याँ वा ना नग्न, 'दर्गा...किरञ्ज वा 'ना...किरञ्जा नमन्त्रा काञ भाग्द्रदा।

থানিকটা একই যুৱিতে বলা চলে, রবাস্ত্রনাথের সময়ের প্রশ্নগরাল ছিল সোজা. তখন বৈদেশিক শাসনাধীন দেশে হাৰ্গ বা ना अवर कारना वा भरनत भानारगर हिन অতি চিহ্নিত। তখন ঐকাশ্তিক মানব-প্রেম ও রাদাসমাজোচিত বা উপনিষ্দস্পভ অধ্যাত্মভাব হাত-ধরাধন্দি করে একসংশ্য চলতে পারত--আজ আর একেবারেই ্না। এমন-কি মানব-প্রেমের প্রকৃতিটাই গেছে বদলে। কারণ যে-উন্বিংশ শ্রুক্তীর রনেসাস-এর প্রচা প্রিপ্রকা ফল রবাশিদ্রনাথ, এবং বহু মহৎ অবদান সত্ত্ত যে রনেসাস-এর একমার পরিচয় তথাকথিত মধাবিত বাব্ সংস্কৃতিহ অভাতানে, সেই রমেস'ল-এর সকল মল্যেষেধ আজ ধ্লায় জ্বনিষ্ঠত—আজ ভন্দরলোকেরা প'ন-**মন্দে**-মানে 'ছোটলোক' হয়ে যাছে: অবক্ষয়ের গ্রাসে অতীতের সো**ল্য**বাৈধও ল ত

তাই যে-বিরাট বাজিম রবীন্দ্রনাথের এবং তার কাব্যের যে-মাহাত্মা, যার অতি বিশিষ্ট পরিচয় 'শেষ-লেখা'য়, তার প্রতি কটাক্ষপাত এখানে উন্দেশ্য मका। भारा वाश्मा कारवात थाताय-रवमन वाहनक्शीरक, তেমনি বন্ধবো, তেমনি মনের দ্রভিতত-আজ রবীন্দ্রনাথ আমাদের কাছে কেন এত অন্য জগতের, কেন ইতিমধ্যেই এত পরি-তাত ও এক অর্থে আকর্ষণবিহীন, তার कडकग्रामि कात्रम अथाति मन्तिर छात-ছিলাম। যে-দেশ বা ভামখণ্ড রবীন্দ্রনাথের কাব্য, 'শেষ শেখা' জার শেষতম সীমান্ত--কিন্তু আমাদের অগ'নপোড বাত্যাবিক্ষ কোন মহাসাগরে আজ. প্রতি ম.হ.তে যতই এলোচেছ, সে-ভূমিখণ্ডও শ্বা, স্থিয় অলোচরই ইচ্ছে না, তার সংগ্র আত্মীরতার वाध्यम् । तम स्मागरे दिस बटाइ।



কাছের মান্য সম্পর্কে আমরা বেমন জানি অনেক, তেমান আবার অনেক কিছুই অঙ্গানা। রবীন্দ্রনাথও আমাদের কাছের মান্য। তাঁর কথা লেখা হয়েছে চুকাচেরা অনেক। পণ্ডিতেরা বিচারে মেপেছেন কবিকে। ক্লমে তাদের ক্ষমতা হয়েছে শেষ, কিন্তু রবীন্দ্রনাথের অনেকটাই থেকে গেছে মাপের বাইরে। তিনি তো অনেকদিন আমাদের মধ্যে নেই। বেশ একটা কাল পৌরয়ে এলাম আমরা। প্রথিবীর অনেক কিছা বদলেছে। ন্যায় নীতি আদশের ব্যাখ্যা হচ্ছে নতুন করে নতুনভাবে। সমাঞ্জ-জীবনে এসেছে বিবর্তন। তব:ও সেদিনের রবীন্দ্রনাথকে আমরা আজও প্মরণ **করি।** আজও তাঁর জন্মদিনে উৎসবের অনত থাকে নতুন নতুন বই বেরোয় নানা আলোচনায় ভরে ওঠে পত্র-পত্রিকার পাতা। তাঁর কাছে কি আমাদের চাওয়ার শেষ হয়নি এখনও?

এবার কতকগ্রিল নতুন বই বেরিয়েছে। তাতে রবীশ্রনাথকে যে আরও নতুন করে জানবার আকাশকা যে মেটেনি তা বোঝা যাক্ষে ম্পাট।

ववीम् अणि अभीका :

श्रीकृत्रात वरम्माभाशास

ডঃ শ্রীকুমার বদেনাপিট্যায় মারা গেছেন
সম্প্রতি। তার ব্রবীন্দ্র স্বান্টি সম্মীক্ষা প্রথম
খণ্ড বেরিয়েছিল ক্ষেক বছর আগে।
বাংলা দেশে তার মন্ত বিদেশ সমালোচকের
সংখা খ্বই কম। তিনি যা কিছু লিখেছেন
তার মধ্যে আছে নতুন তথ্য। প্রথম খন্ডে
কাল সীমা ছিল স্নীমত। ছিতীয় খণ্ডে
আরও পরিবাণ্ড। রচনা বৈচিতাকে বিস্তৃতভাবে বিশেলষণ করেছেন। সম্ভবত এটিই
তার শেষ রচনা। দ্বিতীয় খণ্ড বেরিয়েছে
কিছুদিন আগে।

শ্বিতীয় খণ্ডের ভূমিকায় লিখেছেন ডঃ বন্দ্যোপাধ্যায় ঃ "রবীনদ্র প্রতিভার প্রথম স্নিশ্চিত বিকাশের বৃগে উহার বৃত্তপরিধি আপেক্ষিকভাবে স্নুসংহত। ফলে বখন কুণ্ডি ইতৈ প্রথম প্রুপপরিণতি লাভ করে বা নদী বখন পার্বভাসভক্ট হইতে ম্ভিলাভ করিয়া অবিজ্ঞিন ধারায় সমতলভূমি দিয়া প্রথম প্রবাহিত হয় তখন আভিস্ক স্ব্যমা বা পরি-জন ভ্যবশ্বনই উহার প্রাণশভির সার্বক্ষ প্রতীকর্পে আবিভূতি হয়। প্রতিভার

আদিম উন্মোচনপর্ব অস্ত্রনিছিত সম্ভাবনা-গ্লিকেই পূৰ্ণ বিক্ষিত করিয়া উহার **গভ'কোষস্থ** কেশরদলই সৌন্দর্যসম্ভার বিস্কৃতি ও বৈচিত্র নির পণ করে। পরবতী^{*} পরিণতি স্তরে নানা শাখা নদীম্ভানদীর সহিত মিশিয়া উহার স্রোতোবেগ **বধিত ক**রে, নানা বাহিরের প্রভাব মূল প্রেরণার সহিত্যুক্ত হইয়া উহার মধ্যে জটিলতা সঞ্চার করে, ভূগোলের নানা আঁকা বাঁকা সংস্থিতি উহাকে **SIR45**1 টানে তির্যক পথে আকর্ষণ করে। করিয়া সমাদ্র সংগমের আসলতর প্রত্যে উহার রক্তে চাঞ্চল্য জাগার ও উহার ঐক্যকে র্থাণ্ডত করিয়া বিভিন্ন সন্তার সমন্টির পে উহার স্বর্পকে গহনচারীরূপে প্রতিভাত করে। কাজেই মহাকবির স্থিতী রহস্য-উন্মোচনে যতই অগ্রসর হওয়া যার অন্:-সন্ধানকার্য দ্রেহতর হয়। আদিম ভাগীরখী-ধারা হইতে যতই পন্মা, মেঘনা, রহাপতে প্রভৃতি বিভিন্ন কলোলিনী প্রবাহ বিশ্লিণ্ট হইয়া পড়ে ততই উহার ধারাবাহিকতা ও অন্তঃসংগতি আরও প্রাংগ হয় ও গভীরতর সংশে**ল্য** দাবী করে। সতেরাং প্রাকৃতিক নিয়মেই আমার দিবতীয়াধের কাজ আরও স্ক্র অভিনিবেশ ও সমী-করণের দাবী জানাইবে।"

রবীন্দ্রনাথের গদ্যরীতির ভাষাতাত্তিক ব্যাকরণগত এবং আলংকারিক বৈশিশ্টা সমাকর পে দেখান হয়েছে। রবীর্দ্দনাথের প্রবন্ধমূলক রচনা কাবা, উপন্যাস এবং নাটক নিয়ে ডঃ বন্দ্যোপাধ্যায়ের আলোচনা স্বতন্ত ভাবনা এবং যুদ্ধিপূর্ণ। রবীন্দ্র গুদ্ধের ততীয়-পর্বে' বিস্তৃত বিশেলষণ করেছেন সাহিত্য সমালোচনা ভাব্ৰতাময় রচনা, রাজনীতি সমাজনীতি এবং প্রসাহিত্য নিয়ে। নৈবেদা, স্মরণ, উৎসর্গ, জীবন দেবতা. স্বদেশ, মরণ, শিশা, থেয়া এগালিকে রবীন্দ্র সাহিতোর তৃতীয় পর্বের স্থিট হিসাবে নির্বাচন করা ছয়েছে। কবি রবীন্দ্রনাথের শিল্পীসতা সমালোচকের বিশেলষণের মধ্য দিয়ে জীবন্ত হয়ে উঠেছে। শারদোৎসব, রাজ্ঞা, অচলায়ত্তন, ডাকঘর, ফাল্যানী, প্রারশ্চিত্ত, মুকুট আলোচনার তন্ত্রনাটক এবং অন্যান্য প্রসংখ্যের সমীক্ষা নিঃসংখ্যহে উলেখবোগ্য। রাজবি, চোখের বালি, নৌকার্ডুবি, গোরা, চতুর•গ্র ঘরে বাইরের व्यादनावनात्र द्ववीन्द्र केमनाहमद स्वाटन्य এवः

ভাব ও আদশের বিসময়কর প্রকাশ ঘটেছে
প্রীবদেরাপাধ্যায়ের মননশীসন আলোচনায়।
রবীন্দ্রনাথের ছোটগলপ নিয়ে অনেক
আলোচনা হয়েছে এযাবং। বর্তমান গণেথ
রবীন্দ্র ছোটগলেপর বৈচিত্তা ক্রমনুসন্ধান
করেছেন প্রবীন সমালোচক। রবীন্দ্রনাথের
গলেপ আছে জীবনের কথা, আছে সমাজ্ঞ
সমালোচনা আর অতিপ্রাকৃত ঘটনা।

এই স্বৃহং গ্রন্থখানি রবীন্দ্র সাহিত্যে অনুরাগী পাঠকের দিগদশনের কাঞ্চ করবে। স্দৃশ্য বৃহং কলেবর বইটির দাম কুড়িটাকা।

রবীশ্র বিচিশ্তা : অর্পকুমার বস্

মোর নাম এই বলে খ্যাত হোক, আমি তোমাদেরই লোক আর কিছু নয়.

এই হোক শেষ পরিচয়।

শেষজ্ঞনীবনে সম্ভবত ফেলে আসা দীর্ঘপথের দিকে ফিরে আর অনাগন্ত ভবিষ্যতের
দিক তাকিয়ে ঐ কথা বলেছিলেন রবীন্দনাথ। অগাধ স্থিতীর মহিনোম্জনে অধ্যার
পেরিয়ে এসেছেন তিনি। সমাধিশ্য কবির
চোখে প্থিবীর বাস্তব স্বর্প তখন স্পন্ট।
অনায়, অবিচার, উংকোচ, প্রলোভন অত্যাচারে ব্যথিত হয়ে উঠেছিলেন কবি। স্পানম্ক বধিরদের জনা ছিলেন উংকণ্ঠত।
শক্তিয়ানের দান্ডিক আস্ফালনে আতংকিত।

রবীন্দ্রনাথের শেষ জীবনের এ হোল পরিচয়। প্রথম জীবনে রবীন্দ্রসাধনার অধ্যাত্মবাদ যে প্রভাব ফের্লেছিল তা স্পন্ট। তব্ৰ তাঁর জীবনের সামগ্রিক সাধনার একটি ঐকাস্ত লক্ষ্য করা **যায়। স্**নিট গভীর এবং গম্ভীর। বিচি**ন্ন পসরায় ভরা** শিল্পীমনের অনুভতি আর ব্যঞ্জনার স্বরূপ-নির্ণায় ধৈয়াসাপেক দীঘাকালের ব্যাপার। রবীন্দ্র সাহিত্যের অনুভাবনা ও চিত্রগালির পর্যবেক্ষণ শরুর হয়েছে কবির জীবিত অবন্ধা থেকেই। আজন্ত তা চলেছে নিব্ৰ-বিচ্ছার ভাবে। ডঃ অর্ণকুমার বসার সম্প্রতি প্রকাশিত 'রবীন্দ্র বিচিন্তা' রবীন্দ্র-সাহিত্য বিশেলষণে একটি স্মরণযোগ্য সং**যোজন**। वहें ि विदारे करनवर ना हरनं वह विवरत আলোচনা করেছেন গ্রন্থকার। রবীন্দ্রনাথের চিত্তককেপ নদী, রবীন্দ্রনাথের স্বদেশপ্রেম সংগাতে রবীন্দ্রকারো প্রেম. নাটকের

ন ও রাজাতত্ত্ব, রামমেহন ও রবীশ্রনাথ,
ক্রীজনাথ ও বিবেকানন্দ, হৌবনের শান্তদরীজা মানসী, সৌন্দর্যের সোনার তরী,
রবীশ্র-কাব্য-দিনাশত আলোচনাম শ্রীবস্ব,
অসাধারণ মননাশীলতা এবং বিশেলহণী
ক্ষতার পরিচয় পাওয়া যায়। গভীর
বিবরে উচ্চারের প্রবংধ লেখবার চেন্টা নয়,
শ্রন্টার জ্বীবনসত্য আবিশ্বারে সমালোচকের
নিশ্রা নিঃস্বেদ্যে উল্লেখযোগ্য। বইটির
দাম দল ঠাকা।

कार्धभारत वर्गान्स्रमाथ :

গৌরস্কর গণ্গোপাধাার

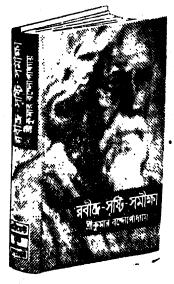
দীঘ'জীবী মানুষ রবীন্দ্রনাথ। চার্রাদকে ছিলেন। তার আত্মীয়াশ্বজন বন্ধ্বান্ধ্ব करशकाका किम খ্যাতি। यप्र:श মান্যের আনাগোনা ঘটেছে জীবনে। বিচিত্র তার স্থিট আর বৈচিত্রময় তার দৈনাশন জীবন। প্রাত্যহিক জীবনের তুছ ঘটনাপঞ্জের বাইরে কেটে যেত তবি সময়ের অনেকটা। তবৃত তার নিজের একটা জগৎ ছিল। সেখানে তিনি অভিভাবক, গুরুত্ব-বন্ধঃ। সেই জগতের খবর নানা ঘটনায় মধ্রে, কখনও বা বিবাদময়। কবিগ্রের কাছা-কাছি থাকার দক্তে সৌভাগা ঘটোছল যাদের, তাদের বিষর্গে পাই অন্য একটি মান,খের পরিচয়। সেই অদেখা অঞ্চানা বহু, পরিচিত নামের মানুষ্টির সালিধা আমাদের রোমাণ্ডিত করে। কবি রবীন্দ্র-নাথের জগপ্তলাড়া খ্যাতির আড়ালে, মান্য त्रवीन्त्रनाथ म्लब्धे हरः ७१वे।

গৌরস্ক্র গণেগাপাধ্যার আটপোর ভাষার আটপোরে রবীন্দ্রনাথের এক অননা ছবি একছেন। সাজ পোশাক আহার বৈচিন্না, বিশ্রাম, সাক্ষাংকার এবং আনন্দ-বাগ অভিমানের মহেতে চিকিৎসক, বাবসায়ী, জমিদার, শোকভাপ মহেতে, পরিহাস-প্রিরতা, ধেরালথ্লির মহেতে এবং আরো নানা মহেতের অভ্রব্যা ছবি আছে বইটিত। ক্ষাভিন্নব এবং চিঠিপন থেকে এই ঘরোরা পরিচয় তুলে ধরা হরেছে। বইটির কাছে বইটি অম্লা।

बर्बीन्स्नारथंत छेलनाज : राह'ना शक्रामनात

রবীন্দ্রনাথের উপনাস নিয়ে কম বই লেখা হয় নি। এর মধ্যে অধিকাংশই অতি সাধারণ স্তরের আলোচনা। নতুন সতা আবিস্কারে সমালোচকের ক্ষুরধার চিণ্ডা-শৃত্তির মৌলিক প্রকাশ ঘটেছে স্বল্পই।

রবীদ্যুপ্র কথা-সাহিত্যের অতি রেমাণ্ডধমীতা এবং রবীদ্যুপ্র কথাসাহিত্যের অতি বাস্তবতা বা অস্ফান্ডবাতাকে রবীদ্যুনাথ কথনও মেনে সেন নি।
মানবমনের ম্থ্র আর স্ক্রা মনোবত্তির
ম্বন্দ্র এবং মানব-জীবনের বৃহত্তর সমস্যার
সমাধান ও আদর্শ প্রতিষ্ঠার চেল্টা রবীদ্যুনাথের উপন্যাসে উপস্থিত। মানবজীবন
সম্পর্কে তর ধ্যানধারণা প্রবন্ধে কাব্যে,
নাটকে বেমন পাওয়া বায়, তেমনি আছে
উপন্যাসে। সামাজিক, রাজনৈতিক এবং
ভ্যুধ্যান্ত্রিক তিনধারার বিভক্ত এই চিন্টা-





ধারা: রবীন্দ্রনাথের সমাজচিন্তায় ভারতীয় ঐতিহা ও সংস্কারের সঙ্গে আধুনিক যাভিবাদের সমন্বয় চেন্টা স্পন্ট। লেখিকা খ'্রিয়ে সব দেখেছেন কবির উপন্যাসে। অঙ্ডদ মি শ্রীমতী মজুমদার পভীর দিয়ে সব কিছু বিশেলখণ করেছেন। সব-থেকে বড়কথা, রবীন্দুনাথের উপন্যাসে বিদেশী উপন্যাসের ছায়া **१७१२(१४**न অনেকে। কিন্তু তার বিশেল্যণ করেন নি। লেখিকা তুলনামূলক আলোচনা করে তার সভাত। বিচার করেছেন। বিভিন্ন উপন্যাসের পাঠাণ্ডর নানান সংস্করণে পরিবর্তনের কথা লেখিকা আলোচনা করেছেন। নারী-জাতি সম্পর্কে রবীন্দ্রনাথের একটি নিজম্ব ধারণা ছিল। লেখিকা নৈপ্লাের সংশা তা উপলব্ধির চেণ্টা করেছেন। রবীন্দ্রনাথের উপন্যাসের আঞ্চিক, রচনাকৌশল, লেখন-ভুগ্নী চরিত চিত্রণ ও ভাষা মহিমানিয়ে কমই এত উন্নত স্তরের আলোচনা এর আগে চোথে পড়েছে। ওপরের চারটি স্কুশ্য বই-এর প্রকাশক ওরিয়েণ্ট ব্রক কোম্পানী।

ভারতে জাতীয়তা ও আন্তর্জাতিকতা এবং রবীন্দ্রনাথ: নেপাল মজ্মদার

আগে বইটির দুটি খন্ড বেরিয়েছে।
বর্তমান খন্ডে ১৯০০—৩৫ খ্রঃ ভারতে
জাতীয় ও আনতজাতিক আন্দোলনের
বিভার ধারা ও গোষ্ঠীর পালাপালি
রবীন্দুনাথের রাজনীতিক চিন্তার কালান্কুমিক আলোচনা করা হয়েছে। ১৯০০—
৪৪ সালে চলছিল বিদ্ববাপে বাবসাবাগিজো মন্দা ও অর্থনৈতিক সংকট।
রাজনীতির জগতেও দুর্বোগের কালোছায়া। ইউরোপে ফ্যাসিবাদ এবং হিউলারী
নাংসীবাদের অস্কুদয় ঘটে। সাম্বাজ্যবাদী

শক্তিরা পররাজ্য গ্রাসে তৎপর হয়ে উঠতে থাকে। সেই সংখ্য বিশ্বশানিত আন্দোলন ব্যাপক ও বিস্তৃত আকার নের। রবীণদ্র-নাথও জড়িত ছিলেন এই আন্দোলনের সংকা। আণ্ডজাতিক সংকট, বিশ্ব**য**টনা-প্রবাহ এবং বিশ্বশানিত আন্দোলন ভারতে বিভিন্ন নেতার ওপর কি প্রভাব ফেলে. এবং তাতে রবীন্দ্রনাথের মনেরই বা ফী প্রতিক্রিয়া ঘটে সবই আলোচনা করা হয়েছে এই খণেড। পূৰ্ণ স্বাধীনতা এবং আইন অমান্য আন্দোলন চলছে তখন দেশ-ব্যাপা। পরাক্তাত ব্টিশের বিরুদ্ধে আন্দোলনে কংগ্রেস আপোষ মীমাংসার পথ নেয়। প্রতিক্রিয়াশী**ল সাম্প্রদায়িক** দল-গুলি দেশের প্রগতিশীল সংগ্রামকে বিপর্যস্ত করে। রবীন্দ্রনাথের মানাসকতায় রাজনীতি সম্পকে' জটিলতা থাকলেও তাঁর প্রগতিশীল মনের পরিচয় স্পণ্ট। রাশিয়া দ্রমণের পর তিনি সমাজতকের দিকে ঝ'ুকে পড়েন। গান্ধীর ওপর আম্থা থাকলেও তার क्रीयसम्भ'न ও অর্থনৈতিক মতবাদকে কবি মেনে त्म नि । त्रवीग्त्रनाथ ছिल्म अ कियाम. সামাজ্যবাদ ও ফ্যাসিবাদ বিরোধী। এর বিরুদ্ধে তীর ঘূণা জনেমছিল তার মনে। এ সময়ে বিদেশে গিয়ে ভারতে ইংরেজের নুশংস দমননীতির বির**ুদ্ধে ভাষণ দে**ন। দেশের অংধকারময় ভবিষাতে তিনি চিন্তিত হতে ওঠেন। সভর বছরের বৃত্ কবি সভিয় রাজনীতিতে অংশ নিভে না পারলেও গভীরভাবে সাড়া দিরেছেন। দেশের রাজনৈতিক সমস্যায় ও অর্থনৈতিক প্রনগঠনে শিল্প সংস্কৃতি ও শিক্ষা সংস্কারে, এবং ধাস্তব জীবনের স্থস্যা

স্মাধানে কবির নিজন্ব দ্র্ণিটভণাণী ও মত্ত প্রকাশ গোরেছে। বর্তমান খণ্ডে রয়েছে তারাই পরিচয়। বিদেশ প্রমণের ফলে সাল্লাজ্যরাদী শন্তি সম্পার্ক এবং তাদের বিশ্বত প্রচাল্লবারস্থায় কবি ক্ষ্ম হয়ে-

. The state of the

্রনিগলে মজ্মদার দীর্ঘ গবেষণার अविश्वासीयाम् अरे अधिनय आत्मश्चा तहना করেছেন। জারতের ভাতীর জীবনের ও আৰ্ড্ডাটিড প্ৰিবীর একটি ঐতি-হার্কিক **অধ্যানের** প্রেক্ষাপটে রবীক্তমানসের বিশেলবৰ এর আগে কখনও হয়নি। ভাছাড়া ভাগতের রাশ্মীয় ও অথনৈতিক ক্ষেক্তে বৰীন্দ্রচিণ্ডার সঠিক ম্লায়নও চৌথে পড়েন। রবীস্তমানসের বিকাশকে ধমেরি আবরণে য'রা আবৃত করে রাখতে চান, তাঁরা এই বইটি পড়বার পর রবীদ্দ্রচরিতের মহতুকে উপলব্ধি করতে পারবেন। সমাজবিজ্ঞানীর দৃ**ষ্টি**ত সাহিতে৷ **मधा**रमाठना বিশেষ 🕏 📺 গুযোগ্য। বইটির প্রকাশক চতুণেকাণ ब्राहेर्ड निमिर्टेख।

कविरमञ्ज टकार्थ :

সৰ আছে, যথারীতি। লাবণা অমিত রার রোজ / পাহাড়ে বেড়াতে যায়। স্কুরিতা গান গায়, মিনি / সহসা বয়সে বাড়ে। কার্লীওয়ালার মত কত আশা নিরাশায় দোলে। দিন যায়। কাামেলিয়া ফোটে।

সব আছে যথারীতি। এবং তুমিও আছ,
তুমি।/অথচ এখানে দেখ জল নেই,
একফোটা জল/পাবে না কাথাও:
খ'লে আকাশের বৃক্ক চিরে-নেই।
কেবল পাথর আর শানাতার খেলা।
নদী নেই।/নেই কিছু নেই।
সোনার তরীর গানে লেখা আর
ছবে না কখনো।

— লিখেছেন পূর্ব বাঙ্জার কবি
মনজনুরে মওলা। রবাদ্যনাথ এখনও
ও'দের উদ্দীত করে। প্রাণটেতনো ভরপরে
করে তোলে। নতুন লক্ষে পোঁছাবার
ইশারা জানায়। শামসনুর রহমানের কণ্ঠে
শোনা বায়—

বেমন রেটিয়ের তাপে ক্যোপ্সার মদির মারালোকে। হাওয়ার নিশ্বরে অথবা প্রাবণে

অক্লান্ড বর্ষণে বেশ্চে থাকি মাঝে মাঝে নিজেরই অস্কাতে।

তেমনি তোমার

কবিতায়, গানে প্রতিধননি হরে কাগে আমাদের সভার আকাগে।

রবীন্দুনাথ সমগ্র বাঙ্কার বিভন্ত বাঙ্কার মন ডিনি ৷ ডাই ওপারের কবিরাও ইম্পান্তাসকর্মে প্রথম নিবেদন করেন্ কবিকে। অনেক নিষেধ বাধার বৈড়া
ডিঙিয়ে আকও ও'রা রবীন্দ্রনাথকে মনে
করেন নিজেরই লোক। সৈরাদ আলী
আহসান, শামসার রহমান, সামাউল হক,
জিয়া হারাদার, মহমাদ আজজামান, আল
মাহমাদ, মনজারে মওলা, নিরামত হোসেন,
সারত বড়ারা, ফজল শাহাব্দাদীন
মাহব্ল হক মালাকুর রহমান চৌধারী,
চন্ডীপদ চক্তবভী দিলভার ন্প্রবি

নিবেদিত কবিতার একটি সংকলন স্ফুতি বেরিরেছে এ পারের বাঙলায়। স্ফুলনা করেছেন দেবদুলাল বন্দোপাধ্যার, প্রগবেদ সেন এবং শশধ্ব রাষ।

সংক্লমটির নাম 'স্থাবিত'। প্রকাশস্থান ৩০।৪ দীন লেন। ছাওড়া—১।
দাম এক টাকা। ওপারের বাঙলার
কবিলাও এ ধরনের সংকলন বের করছেন
এ পারের কবিলের।

- विश्वक वर्षेक

মাথা ঠাণ্ডা রাখার কাজে "মহাভৃঙ্গরাজ" অদ্বিতীয়।

দুর্মনৈ মহাভূসরাজ

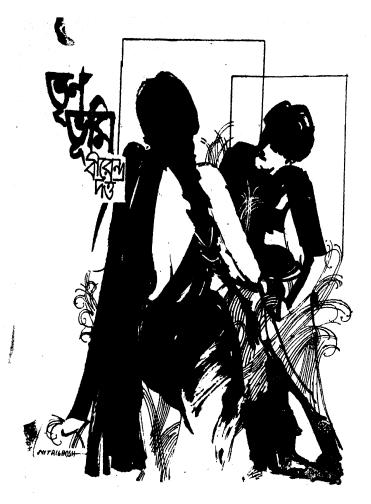
মাথার তেল বিশুদ্ধ আয়ুর্বেদমতে ক্যালকাটা কেমিক্যালের আধুনিক কারখানায় তৈরি। ভূমিশো মাথার তেলে আছে ভূঙ্গরাজ পাতার রস, তিল তেল এবং আরো ১২টি গাছগাছড়ার নির্যাস। এ-সমস্তই মাথা ঠাণ্ডা রাখে। চুল আরো

> বিশুদ্ধ আয়ুহ্ৰদমতে তৈকি **ডুই(পি** সুগন্ধি মহাভূদকাজ মাখার ভেল

সজীব করে।



TC-15 BEN



বনশ্রী তার নতুন প্রেমিকের কাছে চলে গেছে।

কাল শেষ রাতে দ্'চোথের ঘ্ম ওকে
অচেতন করার ঠিক আগে যেন কোন শ্না
নিজনি প্রান্তরে দ্রাগত অংফ্ট কংঠধর্নির মত নিজের মধ্যে থেকেই কথাটা
শ্নেছিল মণিময়। একবার নয়, একাধিকবার। কথাটার সন্দো হাজার হাজার বিচিত
পরিচিত-অপরিচিত রহসাময় শব্দ জড়িয়ে
মণিময়ের সারা শরীবের ক্লান্তিতে, ব্বেকর
নিজ্ত ংপদনে, নিশ্বাস-প্রশ্বাসের প্রবাহে
বহুবার ধর্নিত হয়েছে। বন্দ্রী কাল রাতেই
ওর নজুন প্রেমিকের কাছে চলে গেছে। নতুন
কেউ বনশ্রীর ঘনিষ্ঠ হয়েছে, আদ্যাজ করেছিল মণিময়। তাকে চেনে না, কোনদিন
দেখেনি, দেখার ইছেও হয়নি মণিময়ের।

এতদিন ওর প্রয়েজন ছিল শুধ্ বনশ্রীকেই। বনশ্রীর হাসি, কণ্টণবর সহজ্প সরল উল্লাসিত কথা, আচরণ, সপ্পাস্থ, গভারতম অরগ্যের চপল হারণার মত চোখ মণিমরকে ভর্তকর এক ভালবাসার মারার ধরে রেখেছিল। বনশ্রীর কাছে মণিমর এতদিন কি চেরেছে, তা স্পাট নর; কিন্তু

বনশ্রী কাছে থাকলে, নিয়মিত ওর সংগে দেখা হলে মণিময় যেন এক ধরণের আগ্রয় প্রেন্ডা। বন্দ্রানের আন্তান্ত বাহিন্দ্র, নিয়মিত খবরের কাগজপড়া, রাজনীতি, আখ্যায়-স্বজনদের যাণ্ডিক বাবহার—সব কিছুর অবিশ্বাস, অগিথরতা, আন্দেষ্ট্রতা আর একঘের্মোম মণিময়কে কুনশ বাচার ভূমি থেকে বিরম্ভ বিচ্ছিন্ন করে তৃলীছল। বন্দ্রী যেন সে বিভ্লিন্নতায় এক বিরাট কঠিন সেতু।

এখন বনশীর বয়স কত? চাঁৰবণ পরে হতে চলে ছ। মাঁণমায়ের সবেমার চোঁরিশ পার হল। জব-পরা তেবা-চোদ বছরের কিশোবীকে দেখছিল মাঁণমায়। বল্পা মাুহাসের বোন। তথান ভাল লাগত বনশীরে। এমন পরিক্রম প্রদেশীর খাুব কম কিশোমীর মধেষ্ট চোখে পড়েছিল মাণমায়ের। সে এক যাগ আগের ভাললাগা! সেটা যে এতকাল ধরে ক্রমণ গলীর ভালবাসা হয়ে এমনভাবে মাণমারেক ঘিরে ধরবে, মাণমায় তার জান্য প্রস্তুত ছিল না একট্বও।

্ আর সেই বনশ্রী তার নতুন প্রেমিকের কাছে চলে গেছে। কাল রাতে ওদের বাড়ি

গিয়েছিল। বনশ্রীর কলেজের পরীক্ষা লেছে কোন এক মফদ্বল শহরের আত্মীরের বাড়ি উৎসব আছে। সেথানে চলে যাবে আজ সকালেই। এক সণ্তাহের ওপর সেখানে থাকবে। সেখানেই নতুন প্রেমিকের সংগ্য দেখা হবে ওর। শহরের প্রান্তবতী সব্দ্র মাঠ, াখীদের বিচিত্ত শব্দ, চার পাশের ঘন পাডার গাছ-গাছালি, অফুরুত হাওয়া আর আকাশের নাল মাখানো রোদের মধ্যে বনশ্রী নতন প্রেমিককে পাশে নিয়ে নতুন হয়ে ঘরেব। কাল রাতে বনশ্রীর বাড়িতে ওর সামনে বসে ওকে দেখতে দেখতে মণিময় স্পন্ট ব্যতে পেরে-ছিল বনশ্রী ওর নতুন প্রামকের কাছে চলে গেছে। অনামনস্ক বন্দ্রী। মণিময় জানত, বন্দ্রীর বয়স হয়েছে, অভিজ্ঞ হয়েছে এত-দিনের নানারকম ভালবাসার অন্ভৃতিতে। তা-ও মণিময়ের সংগ্র এতদিনের পরিচয় থাকার কারণেই সম্ভব হারেছে। আর সেই ভালবাসার গোপনতম শিক্ষায় বনশ্রী আরও োন প্রেমিকের আগ্রয়, প্রতিশ্রতি, সাহস পেয়েছে ৷-

কিন্তু এমনভাবে শ্না শুকনো কুমার
মত হয়ে যাবে মণিময়, তা ভাবেনি, ভাবার
প্রয়েজন হয়নি। বনশ্রী ক সন্দেহ করতে গিয়ে
কেনন নোরো মনে হয়েছে নিজেকে। ভালবাসার অধিকার জোর করে জানাবার ইছে
মনে জাগতেই নিজেকে বিশ্রী ধরণের কর্ণ
অসহায় অপ্যানকর মনে হয়েছে। কণ্ঠন্বর
ভারী করে, দীর্ঘ নিঃশ্বাস চেপে অভিমান
জানানোর মত কথা গৃছিয়ে নিয়ে, রেম্ভোরা
বসে বনশ্রীর হাত হাতের ম্পেয়া ধরে ভালবাসঃ জানাবার কথা ভালাক গিয়া মনিয়া
বিশেব মধ্যেই হেসে উঠেছিল নিঃশ্বেন।

বরস হয়েছে মণিমারের। কিন্তু বনশ্রী
বিদ্যান চ্বিশ্ব বছরেও সেই কিশোবী। কোন
ভাষী কথা বললেই হে স উভিয়ে দেবে। এ
নার হাসাবার ভালাবাসা। শুধ্য কাল রাতে
নারের অনায়নক বনশ্রীর মাথের বিকে
ভারিরে এক কঠিন রেখা দেখেছিল সাম্প্রার।
দ্যাদিকের চোয়ালে সেই রেখা ঘ্রিকা
বানশ্রীর বিগাপন অভিজ্ঞাতাকে স্পাট করে
ভালাভিন। কাল রাতে এক স্পার অনামানক্ষ
বনশ্রীকে মঞ্চশল শহরের নুন্তুন প্রেমিক্টির
কাছে রেখেই মণিময় বেরিয়ে এসেছিল।

বনগ্রী হাদয়ের জটিলতম কয়েকটি শব্দ
অন্ভব করতে করতে মণিময় সিপারেট
নেতে ভূলে গিয়েছিল। শ্কনে। কণ্ঠনালী
শিরশির করছিল। নিজেকে বড় ছফাত মনে
হয়েছিল। তব্ সিপারেট ধরাতে একবারও
ইচ্ছে হয়নি। বাইরে বেরিয়ে মণিময় একটা
দিগারেট ধরি য়ছিল। কদিন গ্মোট গরম।
কাল রাতে আকাশ ছেয়ে মেঘ এসেছিল।
কিণ্ডু বাতাস ছিল না, একট্ও ব্লিট হয়
নি। শ্কনো ঘাম সারা শরীরে নিয়ে মণিময়
সিগারেট টানতে টানতে একা কিছটা
হে'টেছিল। এফন বিরাট আকাশের মত
শানার মধ্যে হাটা মণিময়ের আনেকদিন
হয়নি। এক সময়ে একটানা সিগারেটের
ধেরায়য় মণিময়ের ব্ক, নাক, জ্বলো করলে

প্রতিথে আগানের উরোগ গ্রিমে বেরিরে এলে রশিমর টাক্সি করেছিল। ট্রাক্সির দরলা বন্ধ করতেই র্যাশমর একটা সরে বনোরল। ইউাৎ মনে হরেছিল, পালে বনশ্রী বসাধে।

মৃত্তের প্রাণ্ড মাছ। প্রমৃত্তেই
পালে ভাকিরে দেখল, আসন শুনা। কখনো
একা নয়, একমার বনশ্রীকে নিয়েই মণিমর
বহুবার ভাকি চেপেছে, লারা কলকাতা
দারে বেডিরেছে। তাই কাল মৃত্তের ভূল
হরোছিল বনশ্রীর কথা ভেবে। একটা, পরে
ভাইভারকে অনেক দ্রের একটা ঠিকানা
দিরে ভেবেছিল, চৌরাণ বছরের মণিময়ের
এভটা সেন্টিমেন্টাল হওয়া ছেলেমান্ত্রি,
বোক্মি।

গাড়ি চলতে সারা করলে মণিময় মতুন একটা সিগারেট ধরিয়েছিল। চারপাশে তাকিয়ে ওর কেন যেন মনে হয়েছিল, চতাদকে ওর পরিচিত ঘনিষ্ঠ কেউ নেই। কেউ ব্রিঝ ওপর থেকে একটি বিশাল শ্রা পাত নিক্ষেপ করেছে। সে পাতের মধ্যে মণিমর একা চুপ করে বসে। আর সেই পায় দ্রত গড়াতে গড়াতে মণিময়কে म्, चिटे-ম ছীন, বাকশক্তিহীন, নিঃ*বাস-প্র*বাস-রস্কচলাচলহীন একটি স্থবির মান ষের কাছে নিয়ে চলেছে। মণিময় তথন একটা কাঁদতে চেয়েছিল. দ্'চোখের পাতার সীমা-বরাবর কেউ ব্রিষ আগ্রনের তাপ দিচ্ছিল চোথে সুমা টানার মত। এতট্যকুও জল পড়েন।

কাল অনেক রাতে ফিরে মণিমরের খুম হয়নি। অনাদিন এমনিতেই ঘুমের ওয়ুখ খেতে হয় মণিময়কে। কাল ভার রাত প্রশাস্ত পর পর কয়েকটা বড়ি খেরেও ঘুমেতে পারেনি। আর ঘুম হয়নি বলে মণিময়ের যে খুব কট হয়েছে তা নয়। শুধু নিজেকে বড় অসহায় মনে হয়েছে। বার বার মনে হয়েছে, বনশ্রী কাল রাতেই তার নতুন প্রেমিকের কাছে চলে গেছে। এই চিম্তার প্রেম্বিত কান সিম্পান্ত আসতে পারেনিবল এ থেকে ম্বিভ পাওয়ার জন্যে ঘুমোতে চেমেছিল মণিময়। ঘুম আসে নি ভোর রাতেও।

তা ছাড়া কালকের গরম আরও হাজার-গ্রণ গ্রমোট মনে হয়েছিল মণিময়ের। ট্যাক্সি থেকে নেমে অনেক হাটতে হাটতে মণিময়ের মনে হয়েছিল, এই অসহা গরমে শহরের প্রতিটি বাড়ির ইণ্ট পড়েছে, ফটেপাথ থেকে আগ্নন উঠছে। মণিময় তখন একট্ন সব্জ খারুছিল। যাথে মাঝে সব্জ মিঃসপা বৃক্ষ চোখে পড়েছে, কিন্তু তাতে তৃণ্ড হয় নি। ব্ৰবিধবা কোন বিশাল তৃণভূমি মণিময়কে আকর্ষণ করছিল। অন্থকারে ঢাকা, অথবা, শ্বে ভারী নিথর জ্যোৎদনায় স্লাবিত হওয়া কোন ভূণভূমির উপর মণিময় কিছ,কাল বসতে চেরেছিল, হয়ত শ্যেও পড়ত। কিন্তু সে ইণ্ছমি কোধাও পার নি। কলকাতায় কোথাও নেই। কলকাতা বেমন বহুদিন পবিত তুল-ভূমিকে গ্রাস করেছে, কার্ল রাতে বার বারমনে হয়েছে মণিময়ের, ফলকাতা ব্ৰি ওকেও প্ৰাস ক্রেছে। এক সমরে হয়ত ওকে চিবিরে ওর राज्यात्मारक ग्रेम नाहेन, नाहेद्रेरभाग्ये, छान-

হোসির লেই বিশাল ব্যক্তির লোহরে ফেনের মত করে দেবে!

মগ্রিময় এক অন্ত ভরে নিজের খরে किर्तिष्म । मत्रका-कामाना यन्य करत, भाषा জোরে ব্রিরে, আলো লিভিরে मद्रभ दिष्टामात्र भद्दश बदुष्मादक क्रिकांबन । थ्यम হর্মান জ্বোর রাজ প্রবশ্ব । এক সময় পোড়া সিগারেটের ট্রকরোর ছড়ি হওরা আসটো नित्रक विद्याना **व्यक्त स्नारम** कानाना **प**रन দিয়েছিল। ঠান্ডা বাডাল মুখে-ফ্রেকে নিয়ে মণিময়ের কেন যেন মনে পড়েছিল এই সাতে। এ সময়ে যদি মা পাকত। ছোটবেলার মণিমর ভীষণ দ্বেশ্ত ছিল। কাউকে ছম পেজো না। চারপালে অজন্ত গোলমাল তৈরী করে ভয়কে দারে ভাড়িরে দিত। বিস্তু কোন এক সময় হঠাং অকারণ ভয় পেলে মণিমন বেমন ভয়ত্বর এক অসহায়তায় শ্বে মার কাছে এসে মায়ের কোলে গ'রড়ি মেরে বসে মাকে ভালবাসত, আদর করত, মাকেও আদর এখন মা থাকলে হয়ত করতে বলত, সেই আলম্যীকু পেত। মণিমদের নিৰ্দেক কাল ভার রাজে কেমন এক रतिहल। শিশ বলে মনে बंदे প্ৰিবীতে সে-ই একা একটি শিশ্ব-ত্ৰ একমার মারের আরম চারা

বোনের বিয়ে হমে যাওয়ার পর, মৃভার ক্ষেক মাস আগে মা মণিময়কৈ বলেছিলেন, থে।কা, অযথা তুই সব চিন্তা করিস, গ্রম হয়ে বসে থাকিস। নিজের জন্যে **কিছ**ুই কর্রাল না। জন্মটা যেন অভিশাপ। তাই প্রমাণ করছিল। বলে রাখি বাবা, এই বয়সের ছেলে ভালবেসে অনর্থ ঘটায়। তই रयम का करत वीत्रत्र ना, कथथरना ना।' भा মণিময়ের সমস্ত বিষয়ে নিরাসত্ত ভাব দেখে নিজের মত একটা কিছু ভেবে চাপা কালাৰ্ক কে'পে উঠেছিলেন। কাল ভোর রাতে সংশা সংশা মণিময় বালিশে দুংচোৰ ঘষতে ঘ্মে দ্'চোথ বন্ধ হওয়ার আগে মায়ের কথা মনে পড়েছিল। কিন্তু কেউ তো এখনি তাকে বলছে না, 'তুই যেন তা করে বসিদ ना. कथथाना ना'--- **এই क्था मान প**ড়ाর সংখ্য সংখ্য মনিময় কলিশে দ্ব'চোৰ ঘৰতে ঘষতে সেই যে উপড়ে হয়ে শুয়েছিল, সকাল ন'টার আগে **ঘ্র ভাঙেনি।**

এই মাত্র ঘুম ভাঙতে মণিময় টাইম-পীস দেখল। ব্ঝতে পারছে, অতিরিভ গরমে ওর মাথার বালিশ ঘামে ভেজা। দ্'চোর্য কয়েকবার জোরে জোরে বন্ধ করে, আবার থকে হঠাং-ঘুম-ভাঙার জনালা অনুভৰ করল। ভোর রাতের বড়ি-খাওয়া-ঘ্ম এমন অসময়ে অকারণ আচমকা ভেঙে যাওয়ার মণিময় মাথা থেকে পা **পর্যক্ত** অস্ভর ভারে সিথর হয়ে রইল। মাথার সজিাই যেন এক বিরাট কোঝা সপালো। কপালের দ**ু'পালের** শিরা হঠাং-ভাঙা **যুমের** অস্বস্থিততে দপ-দপ করছে। নিঃশ্বাস চেপে দ্'চোথের পাতার ছ্ম আরও কিছ্কেণ ধরে রাখতে চাইল মণিমর। চোখ একবার থুলদেই ঘরের পাতলা আবদ্বা অন্যকার চোপে জড়িয়ে যেতে পারে। তাতে আর अक्षेत्र या राव ना, भीनमन नातनः।

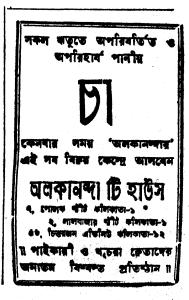
আর ওঠারই বা গরকার কি? এম তেই
মনিষর বেলার ওঠে। মা উঠানে বাগদ ডেকে দের। এখন ছরিপন নেই। গত পরশ্বনিক ছটি নিবে এর মামে গেছে। ডেকে চেরার কেউ নেই। ভার প্রশান কপেন্তোল্ডের কেরালী। একটা সম্প্র অফিস গোলেই হলা লা গেলেই বা কভি কি? ক্যান্তরাল নিজ বাবে, বাক। মণিমার বিড্-বিভ্ করতে পারের বালিশটা মুখের প্রপর্ট চেপে ধরল। দ্বোবে মারও ধন

্ সভেগ সভৈগ মণিমর বাইরের দরজার কঁড়া নাডার খবদ খনেল। প্রথমে ভাবল, পাশের ফ্লাটের বা গলির সামনের বাডির मत्रमात क्षा नाष्ट्रहः क् जन जनमातः? এত সকলে কে আসতে পারে? মণিমর আবার কড়া শীড়ার শব্দ শনে বিরক্ত হল। হরিপদ কি গ্রাম ছেকে ফিরল? বলে গিয়েছিল দু-তিন দিনের মধ্যেও ফিরতে পারে। তা বলে এসমরে? এখন তো ওর আসার সময় নয়! এবার কড়া নাডার শব্দ আরও জোরে হতে এবং দরজায় দ্র-তিনবার ধাকা দেওয়ার জোর শব্দ হতেই মণিময়ের ব্রুঝতে বাকি রইল না, হরিপদ ফিরেছে। হরিপদ জানে, এসময়ে বাব, ঘুমে অচেতন। তাই এভাবে না ডাকলে সারাদিনে হয়ত দরজা খোলাই যাবে না।

বিছানা ছেড়ে বাইরে বেরিয়ে দরজার থিল খুলল।

দেখল মণিময়, সামনে দাঁড়িরে এক মহিলা। পিছনে রিকসাওয়ালার হাতে ভারী বৈডিং, আর ছোট একটা চামড়ার স্টেকেশ। মণিময় হঠাং কেমন বোকা হরে গেল। মহিলাটির দিকে একভাবে তাকিয়ে থাকল। মাথা অসন্ভব ভারী বলে দ্ব'চোখের ঘ্ম একট্বও সর্রোন।

'কি দেখছ?' মেয়েটি হাসতে হাসতে বলস। 'চিনতে পাবছ তো? না চিনলে বলো এখনি, অন্য পথ দেখি।'



মানিক্স এবার অলপ হাসল। 'ভেডরে ন। হলে সাবে কেন?'

বার, না চিনলে, না চেনার ভান করলে
বারিকে কাষাকে অপমান করা হর না কি?'
মারেটি করা বলতে বলতে বরে চুকুল।
বিকলাঞ্জনা মালগুলো দালানে রাখল।
আলেই ভাড়া দেওরা হরে গেছে বলে
বাড়াল না, বেরিরে গেলা।

আমি কিম্পু সতিঃ সবাক হরে গেছি অন্তসী, ভূমি এমনভাবে কোন খবর না দিরেই চলে আসবে ৷ দ্-তিনটে হাই ভূলে মনিমর মদল, 'ডা হাড়া এডিদন পরে ঠিকানা পেলে কোধার ?'

ইস, কি তাড়াতাড়ি ভূলে বাও তুমি?' বেডিং আর স্টেকেলটা দেরাল ঘেবে রাখতে রাখতে কলল, মনে পড়ছে না! হাওড়া ভৌলনে আমি ট্রেন ধরতে চলেছি। আর তুমি ওদিক থেকে কলকাতা আসার বাসে বসেছিল ফিরবে বলে! সেই সময় দেখা। তুমি তোমার ঠিকানা বললে মনে নেই?'

ত্ৰেকদিন আলে অতসীয় সংশ্য হঠাং বেখা হওয়ার কথা আবছা মনে পড়ন মণিমনের। হাা, মনে পড়তে বেন। ওহ সে তো বহুর তিনেকে আলের কথা। মুখে বলা ঠিকানা তোমার মনে ছিল। স্টেক।

অতস্বী হাসল, শ্বনে রেখে কি খ্র অন্যায় করেছি!

না, তা কেন?' মণিমর হাসুদ। আমি কিন্তু একা আসতে বলিনি, অতসীর সিখিতে চকিত দ্লি ব্লিয়ে নিরে বলল,

রবিন ব্লু-র সাফ কথা



আপনার জামাকাপড় নামমাত্র খরচে হবে ধবধবে সাদা

রবিন ব্লু-তে কাপড়-চোপড় হয় অসাধারণ সাদা।
সাদা কাপড়-চোপড় এমন আগাগেড়া ধবধবে সাদা
হওয়া আর কোনো নীলে সন্তবই নয়। মার এই
এতটুকু রবিন ব্লু-তে আগনার এক গাদা কাপড়-চোপড়
হেসে খেলে হবে ধবধবে সাদা। আর সবচেয়ে
বড়কথা, রবিন ব্লু কাপড়ের পক্ষে সম্পূর্ণ নিরাপদ।
নির্ভয়ে বাবহার করা যায়। সূতরাং সবসময় আগনার
কাপড়-চোপড় সাদা ধবধবে রাখুন।



রবিন ল্লু-স্বাভাবিক মনোরম শুক্ততার জন্য

শর নামক ভদুলোকটি কোথার? ছেলেমেরে। ওদের আনোনি কেন?'

অতসী মণিমদের খেকে দ্'ভ' অনাদিকে ফেরাল। সে সব কথা পরে হবে। তোমার প্রিলশী ব্যাপার বংধ রাখ তো। আমাকে একট্ জিরোতে লাও। সারারাত ট্রেন জার্ণি, তার ওপর শ্রেন লেট। এখানে এসে তোমার বকবকানি। ভালাগে না।'

'কোখেকে আসছ?' মণিময় ঘরের মধ্যে ত্কল। 'এ হরে এসো।'

জাম্ই স্টেশন থেকে উঠেছি মিথিলা এক্সপ্রেসে সেই রাত নটার। হাওড়ার আসার কথা ছটা কুড়িতে। এলো এই একট্ আগে। গাড়ি কি লেট, তার ওপর গ্রম! ইস, যা কণ্ট হয়েছে টেনে!

র্মাণময় অতসীকে ভাল করে দেখে নিল। 'যাও, স্নান-টান সেরে নাও তা হলে।'

'সে কি। আমি একা তোমার বাড়ির সব চিনব কি করে? তোমার মা, সেই ছোট বোন সব কোথায়! গ্রামে গেছে ব্যক্ষি? আর তুমি এখন একা ছোটেলে থাচছ।' অতসী একবার সারা বাড়িটার দ্ণিট কুলিয়ে নিল।

'দ্রে।' মণিময় বাসিমাথে একটা সিগারেট ধরাস। 'কেউ নেই। বোনের করে বিয়ে হয়ে গেছে। মা গেছেন মারা, আর চাকর শ্রীমান হরিপদটি দিন পনেরের ছুটিতে গ্রামে। এখন তুমি কি করবে ভেবে দেখ।' মণিময় একটানা কথাগালী বলে বিছানায় গা এলিয়ে দিল। অতসী ওর শেষ কথাটার অন্য কোন অথ' করল কিনা, মণিময় অতসীর মাথের দিকে তাকিয়ের বাঝতে গ্রেটা করল।

অতসী করেক মুহার্ত কি ভেবে ঘরের মধো চোথ ব্লোল। হঠাং বলস, পারে কিছু ভাবা যাবে। এখন বাথরামে জল পাওয়া যাবে তো? সাবান গামছা সব বের করা আছে? না, আমাকে বেভিং খ্যুল বের করতে হবে! সেও এক ঝামেলা।'

মণিময় পাশ ফিরে শাতে যাছিল। বলল, 'হরিপদর দৌলতে ওসবের গ্রুটি নেই। এমন কি রাল্ল।ঘরে চা, জলখাবার থাওয়ার মত সব কিছাই পাবে হয়ত, একটা ঘাজে নাও।'

মণিময়ের শোয়ার ভঙ্গি দেখে অতসী হেসে ফেলল। 'আর তুমি এখন কি করবে?'

'কি আবার।' হাই তুলল মণিময়। 'নতুন করে একটু ঘু'ময়ে নি। মাথার মধ্যে ভীষণ এক ভার চেপে আছে। তোমার সব ইয়ে গেলে বোলো, স্নানে যাবো। অফিস আছে।' মণিময় এবার যেন নিবি'কার নিশ্চিত ভঙিগতে পাশ ফিরে শ্লো।

অতসী সতি ক্লান্ত। মণিমহকে
ম্বিয়ে দেখার স্যোগ নেই এখনি। আর
এক ম্হা্ত দাঁড়াল না। ঘর থেকে বেরিয়ে
গেল।

মণিময়কে আরও কিছ্ সময় খুমোবার স্যোগ গৈরে অতসী ছোট-খাটো অনেক কাজ সেরে নিল। মণিময়ের একতলার ফ্রাটে দ্টি ঘর। ঘরের সামনে চওড়া দালান।
ওপাপে রাহাঘর, আর এদিকটার বাধর্ম।
মণিময় একটা ঘর ব্যবহার করে। আর
একটা ঘর নােংরা। নানা জিনিসপত্তর ঠাসা
সে ঘরে। অথচ জিনিসগলো অন্য
জায়গায় সাজিয়ে-গ্ছিয়ে ঘরখানাকে ভালভাবে ব্যবহার করা যায়। দ্টি ঘরের মাঝখানে দরজা। মণিমর ওর ঘরের দিকে
থিল এ'টে দরজা বন্ধ করে রেথেছে।

ন্নানে খাবার আগে খুর্ণিটয়ে দেখে রাম্রাঘরে এলো। সম্ভবত হরিপদ যে অবস্থায় রেখে গ্রামে গেছে, সেই অবস্থাতেই সব জিনিসপত্তর পড়ে আছে রামাঘরে। মণিনয় ব্রিঝ কোনদিন নিজে চা করে খেত্তে গিয়েছিল। অতসী মুখ টিপে হাসল। একরাশি ভিজে চায়ের পাতা ছাঁকনিতে পড়ে আছে। প্রয়োজনের বেশী এটো কাপ-ডিশ ওল্টানো ছড়ানো, স্টোভের কালি-ঝ্ল মাখানো কেটলি মুখ থোলা অবস্থায় উপ্ড করা। কিছু গৃইড়ো দুধের পাউডার আর খোলা-মুখ চিনির ডিবে ঘিরে পি'পড়ে থিকথিক করছে। অত্সী রাশ্রাঘরে বিশ্রী পরেনো চায়ের গণ্ধ পেলো। মনে মনে একটা কৌতৃক অনুভব করল। নােংরা কাপ-ডিস, চায়ের বাসন-পত্তর নিয়ে অতসী দনানের ঘরে ঢুকল।

মণিময়কে ঠেলে তুলে বাধর্মে পাঠিয়ে অন্তমী নিজেই চা করতে বসেছিল। নিজে সংগ্যাকিছা নোনতা বিষ্কুট এনে-ছিল অন্তমী, সেগালি শেলটে সাজিয়ে মণিময়ের ধরে তুকে দেখল, মণিময় চেয়ারে যসে খবরের কাগজে চোখ ব্যুলোছে।

'আজ অফিস যাবে তো!' অতসী চায়ের কাপ সামনে ধরে বলল।

মণিময় সামনে থেকে থবরের কাগজ সরাল। অবাক হয়ে অতসার দিকে তাকাল। 'না যাওয়ার কি কোন করেণ আছে?'

না, ভাবছি যেভাবে খবরের **কাগজ** পড়ছ**়না**ও, চা ধর।'

মণিময় হাতে চায়ের কাপ নিল।
এসব করতে গেলে কেন? আমি ভাবছিলান,
বাইরে থেকে চা এনে খাওয়াবে। ¹

'থাক মশাই, সে চা আজ নয় কাল সকালে হয়ত খেতে পেতাম। যা ঠেলতে হয়েছে ঘুম ভাঙানোর জনো! উফ!'

মণিময় হেসে উঠল জোরে। অভসী মণিময়ের উ'চু করে বসানো ভক্তপোষের গায়ে হেঙ্গান দিয়ে দাঁড়াল। চায়ে পর পর কমেকটা চুম্ক দিয়ে বলল, 'কটায় অফিস?' শ্বখন হোক গেলেই হল মণিমর কাপের প্রান্ত থেকে ঠেটি সাররে বলল, 'তবে একট্ পরেই বেরুব। কিন্তু আনি তো হোটেলে খেরে নেব. তোমার খাবারটা কি এনে শেব হোটেল থেকে?'

কিছ্ দরকার নেই। তোমার শ্রীমান হরিপদ যা রামাঘরে রেখে গেছে, তাতেই ভাতে-ভাত চাপিরে দির্মোছ স্টোভে। এবেলা এই খেরে যাও। সন্ধোর না হয় ভাল করে রামা করা যাবে।

় মণিময়ের চা খাওয়া হয়ে গিয়েছিল। কাপ-ডিস রেখে সতিাই অবাক হয়ে অতুসীকে দেখতে লাগল।

কি দেথছ বোকার মত?' অতসী যেন একসংগ্য দৃষ্টি ও কণ্ঠদ্বরে ধমক দিয়ে উঠল।

'ভয় পাচ্ছি স্থায়ী রেশন কার্ড করতে হবে নাতো।'

'সেই আগের মতো ফাজলামি করার শ্বভাবটা গেল না দেখছি।' অতসী সোজা হয়ে দাঁড়াল। ভূব, কু'চকে বলল, 'তা ছাড়া, যতদ্রে মনে পভছে, তুমি তো এত কথা যলতে না! কি ব্যাপার? কিছু হয়েছে নাকি?'

মণিময় কোন কথা না বলে অতসীর দিকে তাকিয়ে রইল।

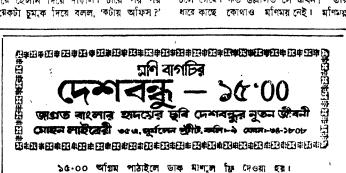
'ঘাক্', তুমি তৈরী হয়ে নাও। ভাতটা চাপিয়ে এসেছি দেখি।' অতসী দরজার দিকে এগোল।

মণিময় অতসীকে দরজার আড়াল হণ্ড দেখেই বলল, ভাড়াতাড়ি এপুসা অতসী, ভোমার কোন কথাই শোনা হয়ন।

অতসীর দুতে শদ-শব্দের সংগ্রে হাসির শব্দ কানে এল। 'বস আস্ছি।'

অতসী চলে গেলে মণিময় নতুন করে সিগারেট ধরাল। মণিময় তো এত কথা বলত না! শুধু বনন্তী পাশে থাকলে মুখ্র হ'তে ভালবাসত। এখন কেন ? মণিময় আবার এক শুনোর মধ্যে ভাসতে লাগল। মনে হ'ল, চিন্তা থেকে সে মাজি পাবে! অতসী তার প্রনো বান্ধবী। অতসী, সত্যি, তুমি এসে আমার অনেক উপকার করলো। মণিময় হৈড়ে-বিড় করল।

অন্যন্দক হয়ে মণিময় বেশ কয়েকবার পর পর সিগারেট টেনে ধোঁয়া ছাড়ল। চোণের সামনে একটা ধোঁয়ার ভাসমান আকাশ তৈরী হয়ে গেল। বনগ্রী এখন অন্য প্রেমিকের কাছে চলে গেছে। কত উল্লাসিত সে এখন! তার ধারে কাছে কোথাও মণিময় নেই। মণিমু



এখানে এই ঘরে একা। অথচ কিছুদিন আগে প্রমুক্ত নিশ্রী এই ঘরে সকাল, দুপরে গুলুপ ক্ষরে কাটিয়ে গেছে। একদিন যেন ঠাট্টা করে र्माणमञ्ज वर्णाञ्चल, 'काल এসো ना ही। मन्त्राज থাক্ব না।' 'কোথায় যাবে!' 'ট্রেনে করে কোথাত।' 'সেই সাধ্যবীর কালে 'সেই বাশ্ধবীর কাছে द्यापाउ।' বুঝি?' বনশ্ৰী গদভীব, অনামনদক, অসহায় হয়ে গিয়েছিল। বনশ্রী জানত, মণিময়ের এক বাশ্ধবী কোলগরে খাকে। অভিনে কাজ করে। মাঝে মাঝে মণিময়াক ষেতে বলে ওর বাড়িতে, যদিও মণিময় একটি দিনও সেখানে যাওয়ার তাগিদ বোধ করেন। মণিময়ের মজা শেগেছিল কথাটা কলে। বনশ্রী এর পর কয়েক দন কথা বলেনি। বনশ্রীকে এমনি করেই চিনেছিল মণিনয় আপন করে।

এখন যদি বনশ্রী শোনে, অভসী ওর
বাড়ি এসে উঠেছ। আজ থাকবে। অভসীর
সংগ্র মদা করে গলপ করছে, আন্তা দিছে।
বনশ্রীর কিছা মনেই হবে না। কোন দংখ বা
ঈ্ষাওি হবে না। ভালবাসায় পরাজিত
মলিমর লম্পট হয়ে গেলেও বনশ্রীর দংখ
নেই। বনশ্রী এখন স্বার্থপির। হয়ত এইভাবেই
স্বার্থপির হতে হয়়। মাঝে মাঝে মানময়
বনশ্রীকে স্বার্থপর বলে রাগাত, ঠাট্টা করত।
ঠিক এই মহেল্লে গ্রাত্থপর শন্দটা
মনিমরের মংখের রেখায় কেন যেন এক
কঠিনতা স্পটে করে ভলল।

মণিময়ের দু'আঙ্বুলে সিগারেটের আগ্রনের তাপ লাগ্ডেই সচেতন হল। হঠং মনে হ'ল এই চেয়ারের গা ঘে'ষে বনশ্রী মাঝে মাঝে দড়িত। কেমন আপন হয়ে। তাকাত মণিমানের দিকে। এখনি বাঝি বনশ্রীকেই দৈখল সে! মণিময় হাসল। না? দ্বেটোখে অনিদাৰ আলস্য কাটেনি এখনো। একটা আগেই তো অতসী এসে দাড়িয়েছিল। বন্ত্রী রোগা, ছোট-খাটো চেহারাব। মতসার থেকে ফসা রঙুটোনা চোখ-নাক, মুখ অতসীর থেকে অনেক ভাল। অত্সী তা নয়। ওব বয়স হয়েছে। বয়স হ'লে বনশ্রী ঐরকমই হবে! তব্ এই সময়ে যেন অতসীকেই ভাল লাগছে। অতসী অনেক প্রনো বাশ্ধবী। বড় একা মণিময়। অতসার সংগ্ৰহ কিছু কথা বলে কদিন ব্যটানো খাবে।

চেহারার একটা আজকের অভসীর আবছা ছবি চোখের সামনে নিয়ে মণিময বারো বছর আগের অতসীকে ভাবতে বসল। একসংগ্র এম-এ পড়ত অতসী পাশ কোসের গ্রাজ্বয়েট ছিল, পড়ত ইস্লামিক ছিপ্টি আন্ড কালচার। মাণিময় মডার্ণ হিশিউর ছাত্র ছিল। একটা দল নিয়ে ইউনিভাসিটির লন, করিডোর, গোলদিখিব ভিতর, কফি হাউস, কলেজ ষ্ণীটের ফ্রটপাত সর্বত্র আন্তা **জমাতে**।। ্মের্ড্রের মধ্যে অত্সী, রেখা, স্কেন্দা, অরুণা, প্রতিমা, মুক্তি জিল: ছিল মণি-ময়ের বংধ্ সাহাস, পার্থা, সলিল, অনন্ত । দলের মধ্যে অতসী তেমন মোটেই সান্দরী ছিল না। ময়লারঙ হলেও নাক-মুখ চোখে মোটামাটি সাঞী ছিল। মধাবিত্ত খরের মেয়ে। সামান্য আয়োজনে সাধারণ শাড়ি, জ্বামা গ্রিরে পরে আসত। পাতশা থকথকে চেহারা ছিল। দলের থেকে আলাদা করে প্রণয় করার মত মেষেও ছিল না মতসী। তবে ভীষণ আন্ডাবাজ ডিল।

ফিছ্ৰ ইয়ারের শেষেই হঠাং অতসীর বিয়ে হয়ে খায়। বিহারে ওর এক দাদার বাড়ি থেকে বিয়ে হয়। তাই বন্ধুদের কেউই বিয়েতে খেতে পারে নি। বিয়ের পরেও খেজি-খবর রাখতে পারে নি। বিয়ের পরেই পড়াশ্না ছেড়ে দিয়ে বাংলাদেশের বাইরে চলে যেতে হয় ওকে। দলের আর সকলেই পরীক্ষা দিয়ে পাশ করে। মণিময় সিক্সেথ্ ইয়ারের শেষে পরীক্ষা না দিয়ে চাক্রুগিতে চাকে পড়ে।

সেই অতস্থার সংলী দীঘদিন বাদে হাওড়া সেইশনে দেখা।দেখা হয়ে যাওয়াটা ছিল আচম্কা। মনিময় তখন আগের তিনখান। বাস ছেড়ে একটা ফাঁকা বাসে জানালার ধারে বসে। অতস্থী সামনে রাস্তা ধরে সেইশনের দিকে যাছিল।

্ততসী না? এই অতসী!' মণিময় হঠাৎ ডেকে বসল।

থমকে দড়িল অতসী। একেবারে মণিময়ের জানালার সোজা, একটা, দরে। আরে! মণিময় ?' এগিয়ে এল। ইস্, কর্ডদন পরে দেখা!'

"বাসে উঠে এস, পাশে বসার জায়গা আছে।'

'পাগল হয়েছ, আমাকে এখানি। টেন ধরতে হবে।'

'কোথায় যাবে?'

'চন্দনগরে মাসির বাড়ি। ওখন থেকে আজ রাতেই হাওড়া স্টেশনে আসতে হবে। ট্রেন জমিভির দকে পাড়ি।

'তোমার বর কই? ছেলে-মেয়ে ফটি?' কপালের সি'দূব চোঝে পড়তে মণিময় অকারণ কিছু কথায় সাংসারিক হয়ে উঠিছিল।

অতসী হাসস। 'বর কমক্ষিতে ছেলেমেয়ে আপাতত দুটি।' পালটা প্রশন
অতসীর। 'তোমার খবর কি? বিয়ে করেছ?'

ানহ্।' একটা হাল্কা রসিকতা করতে
স্কৃষ্টিছল, সমনে এক ভদ্রলোককে আসতে
ক্ষেত্রপথার বাড়িতে।'

'ঠিকানা কি? গেলে মর্গসমা আর তেমার সেই ঘোনটির দেখা পাব তো?'

মণিময় খাড় নেড়ে 'হা' বলল। ঠিকানা দিয়ে বলল, 'দেখে তো মনে হচ্ছে চাকরী কর। কিসের?'

অতসা হঠাং হাতঘড়ি দেখল। ইস্, আমার দেরী হয়ে গেছে। নির্ঘাং ট্রেন ফেল করব। এত সব খবর এখনি দেওয়া যাবে না। চলি মণিময়, একদিন বরং কলকাতায় এসে তোমার ওখানেই উঠব।

'সে আমার ভাগা! তবে একা নয় কিন্তু, চারজনে এসো! না আসলে চুক্তেই দেখো না!'

অতসী হেসে ফেলল। "আছ্ছা চলি।' অতসী দুত হটিতে লাগল। বাঁ-হাতে ছোট

একটা চামড়ার স্টেকেস, ভানহাতে কিছ-ব্যাগ। স্টেশনের মধ্যে ঢোকার আগের মুহুত পর্যত মণিময় অতসীর চলে-याख्या लका करतिष्टल। भीनभरस्य भरन इरस-ছিল, অতুসী আগের থেকে অনেক্ মোটা হয়েছে। সারা মুখে, চেহারায় বয়সের ঈষং ভার লেগেছে। তব্ পোশাকে, চলার, কথা ফ্রায় কোথাও দশ বছরের বিবাহিতা দুটি সম্তানের জননীর ভারী স্বভাব স্পন্ট নয়। কিন্ত মণিময়ের যেন মনে হয়েছিল, অতসীর দৃণ্টি, চোখের কোল, মুখের রেখা মার কণ্ঠদ্বরে যেন চাপা বিষদতা মাথানো রয়েছে। সেই সপ্রতিভ হামি, আর চণ্ডল দ্বিট, আড্ডাবাজ স্বভাব কেউ ব,বি এর মধ্যে থেকে মুছে দিয়েছে। বিয়ে হলে, সন্তান হলে বা বয়স হলে মেয়ে-প্রেষ— সবাই বুঝি এরকম হয়? নাকি, অতসী জীবনের খুদেধ হেরে যাচ্ছে, বা 7573 যাওয়ার অসহায়তায় এমন কর্ণ গোছে?

মান্যের অভিজ্ঞতা মান্যকে শরীরেমনে ব্রি কঠিন করে তোলে। অতসীও
কি কোন অভিজ্ঞতায় এমন র্ক হয়ে
গেছে: মণিময়ও কি বন্দ্রীর প্রেমের অভ্নিজ্ঞান কঠিন ইরি
উঠেছে: চাপা শ্রাসকর্গে মণিময় সোজা
হয়ে বসল। নিতে যাওয়া সিগারেট ধরালো।
মতসীর চিন্তার মধ্যে বন্দ্রীকে মনে হর্তই
মণিময়ের মাধাতার শিগ্রন বেড়ে গেল।
চোম ব্রে সিগারেট টান্ত লাগল।
মণিময় পাথার নীটেও ঘেমে গেছে।

'কার কথা এমন বিভোর হয়ে ভাবছ?' 'তোমার।'

'সতি।' তাখলে তো ভয়ের কথা!' 'আপন্তি থাকলে ভাবত না।'

মতুন করে তেনে পর্যুত চাইছ নাকি?' বর্ষটা মেতারে গ্রাক্সে নিমে খ্রের ক্যোচ্ছ, বলা যায় না, এক সময়ে দুম্ করে ভালবেসে ফেলতেও পারি।' মণিময় শব্দ করে হেসে উঠন।

থত্নী সামনের মোড়**টায় বসে** পড়ল। দেখ মেয়েদের বয়সের **প্রসংগ্রের** ধারে-কাছে থেও না কথনো, ঠকবে।

্মানে ?' মণিময় হঠাৎ কথাটার **অর্থ'** ব্রুতে না পেরে ভুরু কোচকালো।

'আমার বয়স কত বলতো?'

'আমার চৌঠিশ তোমার তা হ**লে** একঠিশু কি বঠিশ হওয়াই বাজ্নীয়।'

'ৰতিশ। বলো, এই বয়সে নতুন করে কি প্ৰেম হয়?'

'ভাল জমে।' বলেই মণিময় হো-হো করে হেসে উঠল।

অতসী মণিনয়কে দেখাল। গোলাদিঘির
মধ্যে ঘাসের ওপর দল নিয়ে গোল হয়ে
বসে আড্ডা দেবার সময় মণিময়কে কোন
দিন এটরকম শাদ করে হাসতে দেখে নি।
অথচ কত পালটে গেছে! মনে পড়ে মণিময় গোলদিঘির আড্ডার কথা!

মণিময় নতুন একটা সিগারেট ধরালো। 'থ্ব মনে পড়ে। আমরা কতদিন হাসতে হাসতে নিজেদের মধ্যে এক-ওর সঞ্চে গোপন



CMVS 6 203 Ben

প্রেমের মিথো কাহিনী বলতাম, আর দলের কেউ তাই কারোর সংশ্য প্রেমে পড়তে পারত না। তাই শধ্যে আড্ডার দল হিসেবে ছিল ইউনিক, তাই না?'

তা ঠিক। তবে আমার মনে হর, শেষ দিকে কেউ কেউ গোপনে প্রেম করতে স্বর্ করেছিল। তাই নয়?'

'হয়ত। ঠাট্টাচ্ছলেও তো সব কথা বলে ফেলা যায়।'

'একট্ আগে তুমি সেই ভেবে ভাল-বাসার কথা বলে ফেলেছ নাকি? সত্যি করে বলতো?' অতসী চোখ বড় বড় করে তাকাল।

'এখনো সেই প্রনো আন্তাবাদ মেয়েটা তোমার মধ্যে আছে দেখে ভীষণ ভাল লাগছে অভসী।'

'অথচ দেখ, ইচ্ছে করলেই কিব্তু ঠিক সেই আড্ডা তুমি আর দিতে পারবে না। বয়স হয়েছে না?'

আমার কিব্তু তোমাকে পেরে ভীবণ ভাল লাগছে। আমি ক'দিন যেন হাঁপিরে উঠেছিল্ম কারোর সপ্যে কথা বলতে না পেরে।

অতসী সন্ধানী দৃণ্টি দিয়ে মণিময়ের দিকে তাকাল। 'উ'হ, সদেহ হচ্ছে। কোথাও কোন ধাক্কা থাওনি তো মণিমর? তোমাকে দেখে মনে হয়, তুমি কোন গোল-মালে পড়েছ।' অতসী গলা নামাল। অভিভেন্ন মত বলল, 'প্রেমে বার্থ' নাকি?'

মণিময়ের এতক্ষণ পরে আবার বনশ্রীর
কথা হঠাং মনে পড়ল। এক ধরনের চাপা
বিরন্ধি শনেরে মধ্যে পাক খেতে লাগল।
অতসীকে ব্রুতে দিল না। ওর কথাটাকে
চতুরভাবে এড়িয়ে গেল মণিময়। সিগারেটে
একটা টান দিয়ে বলল, 'আসল কথাটাই তোমাকে জিল্ডেস করা হয় নি অতসী!
হঠাং কলকাতায় কেন?'

মণিময়ের আগের প্রস্কা থেকে সরে
যাওয়ার কৌশলটা অতসী আদৌ ধরতে
পারল না। সহজভাবে বলল, 'একটা নাসিংএর ইন্টারভিউ দিতে এসেছি। কাল দ্পুরে
ইন্টারভিউ।'

'একা চ**লে এসেছ, সংশে কাউকে** | **আনো**নি।'

'সোমনাথ তো শিলগ্যাড়িতে থাকে বড় ছেলেকে নিয়ে। আমি ছোট মেটেটাকে নিয়ে নাসের কোয়াটারে থাকি। মেয়েকে পালের এক নাসের জিম্মায় রেখে দ্বতিন দিনের জনো এসেছি। কে আর আসবে বল ?'

'সংগ্ৰানা আসার জনো দৃঃখ **হল্ছে** তোমার? আমি কিন্তু ভয় পাছিছ।'

অতসী মূখ টিপে হাসল। 'ৰাকে? আমাকে?'

'তোমাকে! ইস্! বরং আমাকেই তুমি ভর করবে। আমি একজন অবিবাহিত পুরুষ। ডাই—'

অতসার মুখ ইষং লাল হল। চিবুক একট্ কাঁপল চাপা লভ্জায়। তোমার সেই আগের মত বা তা বলে ফেলার স্বভাবটা লোল না স্থাছ। পাশের বাড়ির বলি কেউ শোনে! তার ওপর চাকর-বাকর কেউ এখন নেই। সারা বাড়িতে আমরা দ্ঞানে একা!
'তা ঠিক। চাকরটা থাকলে এত সব
কথা বলাই যেত না। ও নিশ্চরই কিছু
ভেবে বসত।'

fa ?'

'কি আবার! তোমাকে ভাবত আগের প্রেমিকা!'

'ওকে এসব ভাবতে ট্রেলং দিয়েছ নাকি? তাই বে কেউ আস্কুর, ঐ একটি ভেবে বসবে?'

'বরে গেছে।'

না, না, ভাবগাঁতক তো ভাল নায়। সময় বনুষে হোটেলই দেখতে হবে দেখছি। জাও না পেলে ফ্টপাড। তব্ কিছ্টা সেফ!

অতসাঁর চোথমুথের আর কথা বলার ভাগা দেখে মণিময় আগের মত শব্দ করে হেসে উঠল। অতসাঁও চাপা হাসি সাম-লাতে পারল না।

দ্রজনের হাসি থামলে অতসী বলল, 'এই, অফিস যাবে না?'

'তোমার রাষা হয়ে গৈছে নাকি?' 'কখন। শুধু ভাতে-ভাত তো।'

মণিময় বাইরে দালানের দিকে একবার ভালাল। 'এই উঠছি। বাপোর কি জানো, অনেক দিন পরে আগেকার দিনগালোর মত একটা দিন পেয়েছি। নণ্ট করতে ইচ্ছে করছে না।'

'কিম্তু যা গরম। তার ওপর যত বেলা বাড়ছে, পাখার তলাতিও আর বসে থাকতে হৈছে করছে না।' বলেই অত্সী একট্ নড়ে বসে শারীরিক অম্বস্তি বোঝালো।

'ইস্, যদি বৃণিট নামত এখনি!' মণি-ময় ঈষং উচ্ছনিস্ত হল ৷

ক্ষোমার তো আবার সব্র ঘাসের ওপর ব্ণিটর শব্দ শুনতে ভাল লাগে থ্ব, ভাই না? বিজ-বিজ শব্দ। আমার ওথানে এসো। কোয়াটারের সামনে বিরাট ফাঁকা খাসে ঢাকা জারগা আছে। ব্যি নামলে যা ভাল লাগে, থাকলে ব্যুখ্ব।

মণিময় অবাক হয়ে অভসীকে দেখল।
'ভূমি সব মনে রেখেছ তো?'

অতসী হাসল।

তোমার কথাও মনে পড়ে অভসী। কফি হাউসে বসে থাকতে থাকতে হঠাং বৃষ্টি নামলে তুমি অনামন্তক হয়ে হাত বাড়িয়ে জানালা থেকে বৃষ্টির গ্রেড়া হাতে নিতে! তাই না?'

'তথনি খাব পেকে গিয়েছিলে দেখছি। আরেদের সব শক্ষা করতে তো!'

'অথচ দেখ, তব্ তোমাকে ভালবাসায় ধরতে পারি-নি!'

'ইস্, আমিই বা এলোতাম নাকি? তোমাকে আমার ভালই লাগত না!'

'কেন?' মণিময় অতসীর চোখে চোখ রাখল। 'তোমার সাহস তো কম নম? আমারই বাঞ্চিতে বসে আমাকে একথা বলছ?'

অতসী হেসে ফেলল। 'তৃমি আর কি জানবে? এভারেজ মেয়েরা সব সময়েই হিন্দী সিনেমার নায়কের মত ছেলেদের মধ্যে হালকা হ্রোড় দেখতে ভালবাসে। তাদের প্রেমিকের মধ্যে সে রকম না পেলে এগোতে চায় না। তুমি তখন থেকেই এত কম কথা বলতে, আর গদ্ভীর, দাশনিক ছিলে।

'আমারও তো তাই কোন মেয়েকে ভাল লাগে নি।' বলেই বনশ্রীর কথা হঠাং মনে পড়ল। বনশ্রী বৃদ্ধি সেই রক্ম এক এভারেজ মেয়ে—যে কেবল হিন্দী সিনেমা দেখে তার নায়কদের মত প্রেমিকদের আদর্শ কল্পনা করেছে এতদিন? তা-ই কি চেয়েছিল মণি-ময়ের মধো? হঠাং বিস্বাদ হয়ে গেল ভিতরটা।

অন্তসী সোজা তাকাল মণিমরের দিকে। 'অবশা এটা হয় কম বরসে। বেশী বয়সে এসব থিতিয়ে আসে।'

'নিজের কথা ভেবে শব্ধরে নিচ্ছ?' মণিমার একট্ বেশী হাসজ। 'আগে তুনি ঠিকই বলেছ, মেফেরা চল্লিশ বছরেও খ্রিক থাকে।'

'বাজে বোকো না তো। একজন বিবা-হিত ভদুমহিলার সামনে এসব কথা বলে না।' যেন ধমক দিল অতসী।

'শাসন করছ?'

অতসী উঠে দাঁড়াল। 'নাও, দ্নান করো তাড়াত্যড়ি। একসংশ্য খেয়েনি।'

'ওঃ, ছুলেই গেছি। তুমি সারারাত ট্রেন জা'ণ' করে ক্লান্ত, তাই না?' উঠে দাঁড়াল মণিমর। 'আমি অফিস বেরিয়ে গেলে তুমি বরং লম্বা একটা ঘ্ম দাও।'

ভাত থেলে তবে ঘ্ম আসবে। তার আগে দ্ব'চোথে একট্ও ঘ্ম নেই। শ্ধ্ ক্লান্তিট্কু জড়িয়ে আছে সারা শরীরে।' বলতে বলতে অতসী পিঠ-বৃক ঈথং দ্মাড়ে-ম্চড়ে চাপা ক্লান্ত সরাতে চাইল।

মণিমর ঘর থেকে বাইরে যাছিল।
থমকে দাঁড়াল। ঘুমোবার কথা মনে হতেই
কি একটা প্রস্কৃণ মনে পড়ে গেছে। অভসী
দিকে তাকাল। 'তাই তো! কথাটা ফাই
হয় নি। ডোমার শোবার কোন অস্বাবধে
হবে না তো?'

অতসী মণিমরের চোখে গ্রেখ রাথল।
মণিমর হঠাং নিজের মধ্যে আড়ণ্টতা বোধ
করল। চিন্তার এক জটিলতা পাক থেরে
গেল। অতসী নীরব। মণিমর অতসীর দিকে
তাকিরে বলল, তাহলে এক কাজ কর।
তুমি আমার বিছানার শোও, রাত্রে আমি
দালানে শোব এখন।

বিষয়টা এমনি জটিল, অস্বস্থিতকর,
অতসী চাইছিল না মণিময়ের সংগ্র এ নিয়ে
কোন আলোচনা হোক। সারা বাড়িতে
মণিময় আর অতসী থাকবে, আর কেউ
নেই। এরকম কোন ভাবনা কোন সময়েই যেন
দ্বনের মধ্যে না আসে। অতসী তা-ই
চাইছিল। মনে পড়লে আর কিছু নয়,
মণিমর আর অতসী দ্বলনেই অর্থনিতকর
লক্জার পড়ে যাবে, কিছু বলতে পারবে না।
দ্বনের মণ্যে অতি অন্তর্গ্য বন্ধুর মতন
সব রকম ঠাটার সম্পর্ক বটে, তব্ একটা
জারগার অতসীর চ্প করে যাওয়া ছাড়া
গতান্তর নেই। তা ছাড়া, মণিময়ের মা বা

.বোন, কেউ না কেউ থা । ই—এটা ভেবেই এসেছিল। এখন নেই বলে অতসীর দিক খেকে শোয়া নিয়ে কথা বলা বা হোটেলে চলে বাওয়া কোনটাই সম্মানের হবে না মণিময়ের কাছে।

করেকটি কথা মৃহ্তে ভেবে নিরে অতসী বলল, 'সে সব তোমার ভাবতে হবে না, পরে ভাবা যাবে। শৃধ্ মনে রেখ, দৃশ্রে আমি একট্ ঘ্মিরে বের্ব। ফিরে রাধব দৃজনের। ভূমি বেন বাইরে খেরে এসো না। কখন ফিরবে?'

তাড়াতাড়ি ফিরতে চেন্টা করব।

ঠিক আছে বখন পারো ফিরবে, তবে রামা-বামার ব্যাপারটা আমার ওপর ছেড়ে দাও।'

মণিমর হাসল। কোন কথা না বলে কলঘরের দিকে এগোল।

বিকেলে মণিময়ের ফেরার আগে অভসী একা অনেক কাজ করেছে। দুপ্রের দ্যায়ক ঘ্ৰিয়ে একটা কাজ সারবে বৌরয়ে**ছিল। তাড়াতাড়ি কাজটা সেরে বাড়ি** ফেরার পথে কিছু আনাজ, মাছ কিনে নিয়ে এসেছে। মণিময়ের শোবার ঘরের ছোট ঘরটার জিনিস-পত্তর সরিয়ে দালানের এক কোণে জড়ো করে রেখে ঘরটা পরিষ্কার করে ধ্য়েছে, মুছেছে একাই। একটা তত্ত-পোষ ছিল, সেটাকে পরিক্কার করে এপর অভসীনি**ফের হোল্ডঅলে**। আনা বিছানটো পেতে**ছে যতা করে। ঘরের কোণে** কাপড়ের ঢাকা-পরানো একটা টেবিল ফ্যান ংলোমাথা অবস্থায় পড়েছিল। পাখাটা খারাপ নয়। অতসী সেটাকে একটা ট্রলের भएमग्रे ठिक ওপর বসিয়ে পলাগ রেখেছে। মণিময়ের শোবার ঘর স্ভের করে গ্রাছয়েছে। রাগ্রাগরের সামনে দা**লানে একটা** প্রনো টেবিল আর দুটো চেয়ার বেখে খাবার টেবি**ল বানিয়ে দিয়েছে। সব** হয়ে ছিল ছোট ঘরটায়।

থেন একটা নেশার ঘোরে অতসী এত কাজ করেছে গড়িয়ে আসা দ্পার থেকে সম্প্রে পর্যন্ত। এরই মধ্যে রামা সেরেছে। ভাল করে সম্প্রেয় স্নান করার জন্যে বাথরুমে এল অতসী। ওথানে হাসপাডাল থেকে ফিরে সম্প্রেয় স্নান করার অভোস। তার ওপর কলকাডায় আজ যা গরম। মনে হর রাত দশটার পরেও একবার স্নান করতে ইবে।

কলঘরে দনান করতে করতে অতসী
নিজের মত করে নানা কথা ভারছিল। কিল্ডু
বাইরে এসে দেখল, চাপা গুমোট গরম বেশ
নরতে শুরু করেছে। আকাশ ছেয়ে ঘনমেদ।
হু হু করে মাতাল হাওয়া বইছে। মনে হয়ঃ
একট্ব পরেই ভীষণ ঝড় উঠবে। সকালে
যানমরের কাছে শুনেছিল, কলকাতায় আজ
প্রার সাত-আট দিন এরকম অসম্ভব
গুমোট গরম চলেছে। আকাশে বিদ্যুৎ
চমকালো। দুরে গুম গুম করে মেঘ ডেকে
উঠল। অভসী দালানের থামে হেলান দিরে
দাঁড়িরে মেঘ দেখল। মলিমরের এখন ফিরে
আসা উচিত। বুল্টি নেমে এলে আসতে
গারবে তো? একট্ব বুল্টিতেই তো কল-

কাতার থ্রীম-বাস অচল হয়ে পড়ে। একবার মেরের কথা মনে পড়ল। এ রকম বড় এলেও ওথানে ভর নেই। কি ভেবে অভসী ব্যাসভার নিঃধ্বাস ফেল্ল।

একট্ পরে মণিমর বখন ছিরল, অতসীর প্রসাধন শেষ হরে গেছে। জানালার সামনে দাীড়েরে অতসীর নিজেকে বড় একা, নিঃসল্গ মনে হচ্ছিল। ব্কচাপা কণ্ট ওকে অস্থির করছিল বারবার।

মণিমর ধরে চুকে অবাক হরে বলল, 'এসব কি করেছ অভসী?'

িক আবার?' অতসী সহজ ঠাণ্ডাগলায় বল্ল।

'তোমাকে এসব কৈ করতে বলন। তুমি একাই বা এসৰ করতে গোলে কেন?'

ক্ষতি কিসের? আমাকেই তো থাকতে হবে?'

শ্বানে!' যদিমর চাপা কৌতুকে ফ্লে উঠল। 'প্থায়ী একটা রেশন কার্ড তাহলে সতিটে করাতে বলছ!'

'বাও, আবার সেই কথা। সব বিষরে ঠাটু।' একট্ থেমে বলল, কোথার এত কণ্ট করে সব পরিষ্কার করলাম, একট্ প্রশংসা করবে, তা না!' দ্বোষ্টাখ পাকলে অতসী।

মাণময় এখার অভসীকে দিপর দুভিতে দেখল। সকালের সেই ক্লান্ডি অতসীর শরীরের কোথাও নেই। দুটি সম্ভান হয়ে গেছে অতসার, কেউ এই মুহুতে দেখলে তা ভাববেই না। ভারী খোঁপা করেছে ভিজে চুল জড়িয়ে। এতক্ষণ পরে মণিময়ের লক্ষা পড়ল অতসীর শরীর। কোমর থেকে পা পর্যাত ঈরং ভারী মনে হয়, কিন্তু নাক, মুখ, চোথ, গ্রীবা, বুক, পিঠ এমন পরিমিত দ্বাস্থ্যে উজ্জ্বল অতসীর. মণিমর এই প্রথম যেন তা নিঃশ্ৰেদ অন,ভব বিবাহিতার করল। বৃত্তিশ বছরের বুঝিবা আলাদা যৌবন আছে। বনশ্ৰীর বয়স চহিবশ, रमश्रम মানে উনিশ-কুড়ি। কিন্তু এমন স্থির চোখে-মূথে যৌবনের আলোয় এমন শাস্ত শীতলতা কোন দিন ওর শরীরে দেখে নি মণিময়। তিরিশের ওপরে মেরেদের বরস হলে মেয়েরা বৃথি সদ্য-সবৃজ-হওয়া গাছের মত স্কুর হয়? মণিমর নিজের পছন্দ মত একটা উপমা তৈরি করে অভসীর পরিচ্ছন শরীর দেখল।

'কি ভাবছ? প্রেমিকার কথা?'

চমকে উঠল মণিমর। হাসল। 'সত্যি অতসী, তুমি আমাকে রীতিমত অবাক করে দিরেছ!

'আমাকে দেখে তাই ভাবছ? তাহলে চলো, আরও অধাক হবে।' বলেই অভসী মণিমারের হাত ধরে টানতে টানতে পাশের ঘরে নিয়ে গৈল। 'দেখ তো, অতিথির শোবার মত হরেছে কিনা।'

মণিমর এবার হতবাক। অতসী যে এমন অসাধ্য সাধন করতে পাবে, ভাবেই নি। একবার হর আর একব র অতসীকে দেখল মণিময়। শতিয়, সোমনাথবাব্কে এবার স্বর্ধা হচ্ছে। 'থাক, সব কথা স্পন্ধ করে বলতে নেই মলাই।' মুখে-চোখে, হাতের জাস্পাতে চট্নল ভাব করন্ত অভুসী।

হেলে উঠল মণিমর। অতস্ত্রীত।
'রালা লেব করে ফেলেছ?'
'কথন!'

বিল্তু এখনি তো খেতে বসা বার না।'

কে বলেছে খেতে। বরং চা করি
একট্,'

'এমন ঠাণ্ডা বাডাগ বইছে, এ সমরে চা-পান তো উত্তম প্রস্তাব!' এ বরে এলো মণিময়। 'কিল্চু আর একটা প্রস্তাব আছে অতসী।'

'f क ?'

ভূমি ওঘরে শ্বেড পাবে না। এ ঘরে আমার বিছানার শোও, আমি বরং ও-ঘরে শ্বিছা।

'কেন !'

'ও ঘরটার ই'দ্রে আরশ্লা আছে, তার ওপর আনেক দিন ব্যবহার করা হয় মি। ছুমি গেল্ট, তার ওপর ভদুমহিলা। তোমাকে তো ও ঘরে শুতে দিতে পারি না।'

চিব্রুক ভূলে মণিময়ের দিকে তাকিরে ছিল অতসী। মণিময়ের বলার ভিঞ্চি দেখে অতসী হেসে উঠল। 'তুমি যথন এ বাড়ির মালিক, তথন আব না করি কি করে? দেবে ও ঘরে আমার অস্থিধে হত না।'

'থাক, মেয়েরা সব সময় নিজের স্বিধে-অস্বিধে ব্রুতে পারে না। তাই এক এক সমত ভীষণ ঠকে যায়।'

'খুব যে!' অতসী চোখ পাকাল। 'আসছি, আগে চা-টা নিয়ে আসি। তার পর দেখা বাবে।' অতসী রামাধরের দিকে এগোল।

'সেই ভাল। আমিও মুখ হাত ধুরে তৈরি হয়ে নি। মণিমর জামা-কাপড় বদলাতে বাস্ত হল। 'ইউনিভাসিনিতে আড্ডা দেবার সময় মাঝে মাঝে থেকদ





निर्धे बाह्यका किंव बनाएं, दहरतानव क्वान बरब गैमाएं, का कवाब ना छहा?' बाह्यनीक न्युनिर्द्ध बनन बनिवद्ध।

স্থানাঘর থেকে অতসীর **হালির** শিক্ষ

দালানে মাধুর পেতে সামান্য গ্রেছে
স্কুলনে দেয়াল ছে'বে বসল। মাণমরই বৃদ্ধি
দিল, এমন হু-হু হাওরার ঘরের মধ্যে
বসতে ভাল লাগছে মা। আজ আবার
স্পিন্ন। সারা আকাশ মেহে ঢাকা থাকলেও
জ্যোৎস্নার হাতকা আত্তরণ বাইরেটাকে
বহাসমর করে তুলেছে। গুনুমাট গরমের পর
চার পাশের ঠাও্ডা পরিবেশ বড় ভাল
লাগছে।

সামনে কিছু মুড়ি, ছাজা আর চারের কাপ নিধে বসল মণিমর অতসী।

মণিমর বলল, 'দালানের আলোটা বরং নিভিরে দাও। হাক্টা অন্যকারটা খারাপ লাগবে না। ভাছাড়া খরের আলোও জান-লার গরাদ দিরে মাদুরের ওপর পড়লে আমরা দুক্তনেই দুক্তনকে দেখতে পারো।'

অতসী হাসতে হাসতে উঠে দাঁড়িয়ে দালানের আলো নেবালো। বসতে বসতে বলল, 'হঠাং এমন হাস্কা রোমান্টিক হচ্ছ কেম? ছেলেমান্টিব করতে ভাল লাগছে ব্যক্তি?

দালান অন্ধকার হতেই ওদের দ্রুনের মার্থানে থরের উচ্জাল আলো জানালার গরাদ ডিন্সিরে মান্বের ওপর পড়ল। ম্পাট করে দ্রুনে দ্রুনের মুখ-চোখ দেখতে পাচ্ছে এবার।

মণিয়ম আর অতসী দ্বজনেই হঠাং চুপ করে গোল। কি বেন ভাবতে ভাবতে দ্বজনে মুঠো করে মুডি খেরে চলল নিঃগুলে। চা ঠাণ্ডা হরে বাবে বলে দ্বজনেই চা খেরে নিয়েছে নিঃশেষ করে। খালি কাপ সামনে পড়ে আছে।

অতসী বলল, কি হল? কথা বল এমন চুপ করে বসে থাকতে একট্ও ভাল লাগছে না।' বলা শেষ করে বাতাসে উড়ে পড়া কমেকটা চুল চোথের ওপর থেকে সরালো।

মণিমর অতসীর দিকে সোজা ভাকাস। 'তাস খেলবে?'

ভাসের খেলা জানি না।'
ভাসের কোন খেলাই না?'
'একদম না।'

বিশ্বরা চুপ করল। ইউনিভাসিটিতে
পড়া বংশ্-বাংশবীদের সব থবর দিয়েছে
'তসীকে। অসমীর নাসের চাকরী দেওরার
কাহিনীও পোলা হরে গেছে সকালে থাবার
টেবিলে বলে থাবার সময়। আর ছি কথা
বলার আছে? আবার কিছুক্ষণ নীরব থেকে
মাড়ি থাওরা নের করল। অসমীর থাওরা
আগেই পের হরে গেছে। বাইরে প্রকল্পেন বাডাস বইছে। মাঝে মাঝে বিদ্বুহ
চমকাক্ষে! ক্রেনের পশ্চীর শন্ধ।
অসমী-মণিমরের জন্ম লাগতে ঠাকড়া ভাতটা।

'আন্সরা কি এরকম চুপ করে বসে বাকব?' অভাগী হাসবার চেডা করে গারের অঠিকটা আক্তো করে কড়িয়ে নিল পিঠে। 'শক্ষেড়া আর কি? আর কিছু কথা তো বলাব বেই।'

'সাতি চাই ?' অন্তলী নিজের মধ্যে অবাছন চমকাল। 'তেচানৰ আনেক কথা আমি জানি না, আমার কথাও তুমি জান না। অথচ এত বছর পরে আমানের দেখা মানিময়। এখন কি কোন কথা বচার নেই ?

অধিমন্ত একট; অবাদ হয়ে ভাকাল অকলীয় দিকে। কি জানতে চাইছ বল ?'

'তুমি কেমন আছা, কেমন ভাবে দিব কাটোক্ছ?' ভাতসী থামতা। 'আমিও বা কেমন আছি, কেমন ভাবে দিব চলছে! এটাও তোমান্ত জানতে ইক্ষে করে বা!'

অতসীর কণ্ঠবন্ধে কি বেন এক বিষরজ্ঞা মেশানো আছে—মনে হল মালমরের। মালমর অতসীকে সম্পূর্ণ করে দেখল। বসার ভাগতে অতসীর শরীর ভাঙ্কা। মাথা সাঁচু করে বসেও মালমর অতসীর সারা শরীরে বন বরসের ফ্লাম্ডির সংগ্রুগা শীতল বিষরতা মেশানো অন্তেম করল। মালমরাড়ি নিঃশ্বদ্ধা বদ্দের মধ্যে যেন শন্দের অতিরিক্ত করেকটা শব্দ হল। অতসীকে মনে হল বড় আপান, বড় অপতর্কণা। সচকিত্ত হল।

আমি তো বেশ ভালই আছি। দেখে ব্ৰতে পারছ মা?' মণিময় শ্কুনো পাতার মত হালকা হওয়ার চেণ্টা করল মনের গভীরে।

অতসী আবছা অংশকারে মণিময়ের মুখের দিকে তাকাল। মণিময় অনাদিকে মুখ ফিরিরে সিগারেট টানছে। অতসী পলায় ছোট শব্দ করে হাসল। 'আমার মনে হয় ভূমি একটুও ভাল নেই শ

'কেন?' মণিমর হাসবার চেণ্টা করল।
করেক মহুত' বনশ্রীর মুখ, স্বভাব ছবির
মত স্থির করে ভাবতে চাইছিল। অতসীর
দিকে চোখ রেখে বলল, 'তোমার মতন বিয়ে
ক্রিনি বলে?'

শা তা নয়, কাউকে ভালবাসতে চাইছ বলে!

'কাকে, তোমাকে?' মণিমর মড়ে বসল। বেশী হেসে অতসীর দিকে কৌতুককর দৃশ্টিতে তাকাল। 'আপত্তি এখনো নেই।' মণিমরের মনে পড়ল, ঠিক এইভানে ইউনি-ভাঙ্গিটিতে আন্ডা দেবার সময় মেরেদের সংশা প্রেমের কথা বলে ঠাট্টা করত।

অতসীর গলা ঠান্ডা, ঈবং গন্ভীর। 'এড়িয়ে বেভে চাইছ?'

অতসাঁর বলার ভাগতে মণিমর অবাক হল। অভানা ভর বেল ভারপালের দাঁভিল অথকার জড়িরে মণিময়কে বিরে ধরছে। মণিময় সারা মুখে লব্ডা বজার রেখে বলল, আছো, কি বলতে চাইছ বল ছো? খ্ব চালাক তুমি। এইবার লেপ্তের কথাটি বলে দি আরু কি?

'বনশ্রী কে মণিমরা' জতসী চকিতে মণিমরের দিকে তাকাল। ওর চোখে কিছ্ ধরতে চাইছে।

মণিমর ভিতরে চমকে উঠল। জন-মেশানো অন্ধকার বেল শীতলতর হরে উঠেছে ওর মধ্যে। আর সপো সপো মনের গতীরে কেউ বেন মরা মাছের চোখের রত তাকিয়ে আছে একভাবে। 'কেউ সা।' ফিলাকস করে বলতা। মলিনামের স্থানির মাটির লিকে, অন্যানালক। সিলালান মানার। একটা চাপা বিয়তি মলিনালক ক্রিয়ের। করছে।

অতসী সমমের কিছা তথারী সমার চুপ করে রইল। আমি আমি অপিমার চন তোমার সমন্ত কিছা। আমি বাুকতে পেরেছি।

কি করে।' বেদ আদেক গ্রে তথকে মণিমার বিজ্ঞাস করে উত্তর শলেতে ভাইল।

ভূমি ভোনালন এত হ্নেলাড়ে ছিলে
না, এত কথা, হালকা ঠাটা ভরতে না—
আমরা বধন এডসংগে আছা দিতাম।
তাই না? তোমাকে দেখেও তাই মনে হয়।
অথচ আজ সকাল থেকে দেখাই, ভূমি
ভীবণ কথা বলই, যা বলার নয় তাই বলে
ফেলই। তথান সন্দেহ করেছি।

'আর কিছ্।' মণিময় সহজ হবার চেন্টা করল।

আজ বিকেলে ঘর গ্রেছাতে গিছে বনশীর ফটো দেখেছি। ফটোর পিছনে এর নাম সই করা। কয়েকটা চিঠিও চ্যুাঞ্-পড়েছে। তবে ভয় নেই, একটিও পার্ডিন। শংধ, ওপরে ঠিকানায় হাড়ের লেখা দেখে ব্রেছি।'

মণিময় এখন পাধরের মত শিধর। কিবলবে ব্রুপতে পারছে না। অতসী কিব্রুপতে পারছে না। অতসী কিব্রুপতে পেরছে, বনশ্রী এখন অন্যপ্রেমিকের কাছে। ওর দিকে শিধর দ্বিততে তাকিরে থাকা অতসীর চোখের মণির একেবারে ভিতরে তাকাল মণিময়। নিঃশ্বাস চেপে বলল, সে এখন আঘার কাছে নেই অতসী, আর কোনদিন সে আসবে না। মাদুরের ওপর আঙ্গুল ঘ্রতে ঘ্রুপত মণিয়য় বলল। একটা কালো দাগের চারপাশে ব্রুকার রেখায় আশাক্র রেখায়

'ব্ৰুডতে পারি মণিমর।' অতসীর চাপা দীবনিঃশ্বাস পড়ল। মণিমর সে নিঃশ্বাসের শব্দ শ্নতে পার্দান। ব্যস্ত্রী একসময়ে বলল, 'আমি এ কথা বলৈ তোমার কণ্ট দিলাম মণিমর?'

'না।' মণিমর কথাটা বলতে বলতে ঘাড় নাড়ল। 'লেনে ভালই করেছ। অন্তর্কণা আউকে বলার মত একটা আশ্রয় খু'ল-হিলাম। তানা হলে—' মণিমর আর কিছু বলতে পারল না।

অতসী মণিমরের অবনত ভাগার দিকে তাকিরে রইল।

বাইরে হাওয়ার বেগা কমে এসেছে।
আকালের কালো মেখ আরও ঘন। চারপাশ
বেন থমথছে হরে আসছে। জ্যোপন্সায়
অতি স্ক্রে আস্তরণে বেন কালি
মাখানো। ক্রিরবির করে বরে ব্যওয়া
শীতল হাওয়ার তেউ ওসের নুক্রনতে
তেকে দিল।

মণিমর অন্যমদন্ক ছিল। হঠাৎ সচেত্রক হরে অতসীর দিকে তাকাল। অতসীর ভান হটি, মোড়া। বাদিকের হটি, মুক্তে মাদুরের ওপর কেলে রেখেহে। ভানদিকের হটি,র ওপর খুড়ান রেখে ঘাদুরের দিকে ভাকিরে কিছু ভাবছে। গিঠের ওপর বিকেলের নাধ্যরণ অভানো ভিজে খোঁলা

1

আধিখোলা। বুক খেকে কাপড় সরে গেছে।
মণিমর বহিল বছরের বিবাহিত অতসীর
প্রীবা, পিঠ, বুক, হাতের ড়ৌল, ভারী
নিতস্ব এক পলক দেখল। ব্য়স তিরিপের
ওপর গেলে, বা বিমে হয়ে গেলে ব্রিবা মেরেদের আলাদা সৌল্মবি ভয়ংকর এক
আকর্ষণ শক্তি আসে। ম্ণিমরের হৃদয়ে
ব্রিবা ভর গভীর হ'ল।

র্ণ কি ভবছ ?' র্যাণমরের কণ্ঠস্বর লঘ্। অতসী ভিতরে চমকে উঠল। র্যাণময়ের দিকে না তান্ধিয়েই বলল, 'কিছ্ না।' কথাটা চাপা কণ্ঠস্বরে ফ্যাসফ্যাসে শোনাল।

মণিমর হাসবার চেণ্টা করল। 'ও সব ভাবনা ছেড়ে দাও অতসী। জ্বীবনে স্থা হওরা ব্যাপারটাই একট্ জটিল। এই যে ছমি ছেলেমেরে স্বামী নিরে এত স্থা, অনো সব সময়ে যে তা-ই পাবে, কেউ কি গ্যারাণ্টি দিতে পারে?' মণিময় অতসীর দিকে তাকরে রইল।

অতসীং'এত স্থী' কথাটা শ্নেই মণিময়ের দিকে তাকিয়ে ছিল। মণিময় কথা বন্ধ করতেই বলল, 'আনি, এত স্থী তোমায় কে বলল!'

[°]না হওয়ার তো কোন কারণ দেখি[°] যা!'

'ওঃ, তোমার ধারণা! তাই বলা' অতসী চুপ করল। একট্ পরে হঠাং ঈষং হালকা কপ্ঠেই বলল, 'তুমি আগে হাত দেখতে না, মণিময়?'

'কবে!' মণিময় অবাক হবার ভাণ করল। 'আমাকে আবার ঠাট্টা করতে চাইছ ?' 'বাঃ, আমারা যথন একসংগ্যা আন্ডা দিতাম, তুমি সকলের হাত দেখতে না?'

মণিমর জোরে হেসে উঠল। 'আরে, সৈ তো তোমাদের মত মেরেদের স্থেদর স্কের হাতগুলো ধরার জনো! বল তুমি, এই স্থোগে একটা মেরেকে কত তাড়াতাড়ি কাছে আনা যায়!'

'বাজে বোকো না মণিময়।' যেন ধমক দিল অতসী। 'তুমি বলেছিলে না, মান্ধের ভাগা, জানার ব্যাপারটা ভীষণ ইন্টারেছিটং! একবার হাসপাতালে কি এক অস্থে এক মাসের ওপর ছিলে। তথনি এসার বিষয়ে পড়াশনা করেছ, বলানি? আর আমি তো দেখেছি, তুমি অনেককে অনেক কথা ঠিক বলে দিতে!' একট্ থেমে বলল, 'প্রতিমাকে বলোছিলে, তিন মাসের মধ্যে ওর মায়ের ম্তৃত্য হবে। আমায় বলোছিলে, তোমার বিয়ে হবে ব্টেরে হঠাং, আর তা-ও তিন মাসের মধ্যে। দুটোই কিন্তু একেবারে ঠিক ঠিক ফলেছিল। কি, মনে পড়ছে?'

মণিময় হেসে উঠল। 'এমনি ঠাটা করে বলেছিলাম। আন্দাজে চিল মারা। ইস্ ডোমরা কি বোকা দেখ, সামানা কথাকেই এত বিশ্বাস করে বসে আছ!'

'বাকৈ বোকো না।' অতসী মলিমরের চোথে চোথ রাথল। 'বিয়ের পর আমার কি হবে, তা বলনি তথন।'

মণিময় ব্রাক, অতসী ওর ভাগা সংপর্কে সভিত্ত কিছু শুনেতে চাইছে। একট, শৈক্ষীর গুলায় কৌতুক করতে চাইলে। 'দেখছ না অতসী, ভিন মাসের কথা বলে ঐ 'তিন' শব্দটা দ্বেশনের বেলাতেই বলতে চেয়ে- ছিলাম। আগলো মান্যের জাবনে ঐ তিন-ই সতা। আর তা-ও হল জ্যার তিন তাসের মত। মেনন দ্বোধা, রহসামার, তেমনি এক অন্তৃত আাকসিডেন্ট। ঐ তিনকে না ধরা পর্যক্ত কেউ কিছ্ বলতে পারে না। মান্যায় এই মহেতে বনশ্রীর নামের তিন অক্ষর নোবছিল। আর আশ্চর্যভাবে অতসার নামের তিন অক্ষর বার বার স্পন্ট করে দেখল।

ভাল কথা বলতে পার, এ ভো আমি তোমাকে আগেই বলতাম। এখন বাকে কথা ছাড়। আমার হাতটা একটা দেখা। বলেই অতসী জানলার গরাদের ছায়া দিয়ে কাটা আলোর মধ্যে হাত মেলে ধরল। আমার জীবনে সূথ আছে কিনা!

মণিময় অবাক হল। অতসীর কণ্ঠদবর একট্ কঠিন শোনাল। 'সুঝ' শব্দটা যেন প্রচ্ছম বাংগা ছড়িয়ে গেল। 'তুমি স্থিত। কিহু শুনতে চাইছ?'

'সত্যি' মাথা হে'ট করে নিজের করতলের দিকে তাকিরেই উত্তর দিল অতসী।

মণিময় ওর সামনে ঝ'্কে-পড়া অন্তসীকে দেখল। গলার সর্ হারের সজ্যে লকেটটা ব্কের খাঁজে আটকে আছে। সামনের কাপড় শিথিল হয়ে একপাশে সরে গেল। অন্তসীর নিঃশ্বাস-প্রশাসে ভারী ব্ক উঠছে-নামছে। মণিময় সামনে আপোর মেলেধরা হাতের দিকে তাকাল। নরম, কোমল হাত। আলোর আশ্তরণে করতলের স্বক বিশাশ্য মাথনের মত মস্ণা। মণিময় ওর হাতের ম্ঠি ভান হাতে নিল। কর্বেথার দিকে তাকিয়ে বলল, 'সত্যি, কিছ্মুমনে নেই আমার।'

'যা মনে আছে।'

অতসীর হাত ঠান্ডা, করতল অনেক উক্ কররেখা অনেক স্পৃতি। অওসীর হাতর ভরে মন্মিরের মনে হল, অতসীর হাত মন্মিরের হাতের মধাে নিভরিতা চাইছে। হাতের মুঠি তুলে ধরল আরও সামনে। ঠাটা করেই বলল, 'ভীষণ সুখী তুমি অতসী। স্বামী, ছেলে, মেরে নিরে অফ্রেন্ড স্থ তোমার। এ সুখের শেষ নেই। আর সোমনাথবাব্রু কদিনের মধাে তোমার কাছে আসবেন। হাতের রেখায় তা স্পৃতী।'

চাপা, গলার অনেকটা পাগলের মত থিলখিল করে হেসে উঠল অতসী। এক বটকার মণিমরের হাতের মধ্যে থেকে হাত সারিরে নিল। 'সতিয়, তুমি সব ভূলে গেছ মণিমর!' হঠাৎ গশ্ভীর হয়ে গেল। 'আমাকে মিথ্যে সাম্থনা দিছে?'

'মিথাে!' মণিময় সত্যিন অবাক ছলা। একট্বা ভয় পেলা।

অতসী চুপ করে গেল। হাতটা কোলের ওপর মৃত কোন জীবের মত ফোল রেখে বাইরে তাকাল। পেনসিলের সীদের মত রঙ্গ বাইবে: হড়ারা-শাটা সিসোন্টর উঠোনের ছ:া-ছানা অধ্বর্ধাঃ র আবরণ ঠান্ড। বাতাস শ্রক খাচ্ছে। বেন গরমটা জাবার চারপাশে নেমে আসতে।

'সোমনাথ কোনদিন আমার কাহে আসবে না মণিমর। প্রয় বছর তিনেক সে আসে নি। ছেলে নিয়ে বাইরেই আছে।'

'আরু তুমি!' অস্ফাটে বলল মণিময়।

'আমি মেরে নিয়ে বড় একা।' থাফল অতসী। 'একজন মেরের পক্ষে একা থাকার যে সুখ, সতি। তাতে আমি সুখী মণিময়।'

কিম্তু কেন? মণিময় বলতে চেয়েছিল। অতসীর ম্থের রেখায় চোখ ব্লিয়ে তা আর বলতে পারল না।

অতস্থিক-ফিস করে বলল, 'আর কিছুজিভেয় করোনা, আমি বলতে পারব না।'অতস্থি দুহটিবে মধ্যে মুখ রেখে নিকুমে হয়ে গেল।

মণিময় কিছ্ সমূর অতসীর চোয়ালের এক পাশের রেখা, চিব্ক দেখল। অনেককণ কোন কথা বলল না, অতসীও না। এখন একটাও বাতাস বইছে না।

বৈশ কিছা সময় পরে মণিময় স্বগ্তোভির মত বলল, 'বৃণিট বোধ হয় হবে মা আরে। ইস, গ্রম একটাও ভাল লাগছে না'

'আমার ওখানে চলে এস মণিমর। এসময়ে বৃণ্টি প্রায়ই আসে। ভীষণ ভাল লাগবে ভোমার।' অতসী যেন সম্পূর্ণ অন্য একটি মেয়ের মত কথা বলল।

'তৃমি তো সকালে বলছিলে, তোমার কোরাটারের সামনে তৃণভূমি আছে!'

'এসো না, সভিস কিনা দেখবে!' বৃদ্ধি
নামলে সে ভারগাটার শব্দ, গব্ধ, রঙ কত
ভাল লাগে! তৃমি গোলে অনেক রাত পর্যাব্দ ওখানে বসে গব্দপ করব।' থামল্ অভসী। 'আমি তো গভীর রাত পর্যাব্দ আদের ওপর একা শ্রে থাকি। জীবনে ঐট্কুই বা আরাম পাই। জানো, চারপাশে অনেক দর্বে-দ্বে পাহাড় আছে!'

মণিময়ের ভাল লাগছে অতসীকে। 'সভিা যেতে বলছ? একবার গিয়ে যদি ভাল লেগে যায়, আরু ফিরে না-ও আসতে পারি।'

'আপত্তির কি? পরেনো বংধ্র নতুন করে সাজিয়ে নেব।'

মণিমর অতসার কথা শুন্দ কি শুন্দ না. ব্কের 'থেগ হৃদরের শন্দের বেশী কিছ্ শব্দ ধরে সমরের কিছু বেশী সমর বনশ্রীকে ভেবে নিল। 'আমার কলকাতা ভাল লাগে না. একটাও না অতসী। সব্জ বাসের ওপর হাটতে বড় লোভ।'

অতসী মণিময়ের দিকে তাকাল। এলার যেন ফিস-ফিস শব্দ হল'। 'সতিয় এসো তাহলে।'

মণিমর অওসীর কণ্ঠদ্বরে শিহরিত হল। সারা শরীরে চকিতে যেন ঠাম্ডা স্লোত বইল। দিথর হরে বসে রইল কিছ্কেল।

আচমকা মেদ গলন কানে বাসতেই সন্বিং ফিরে এল দ্বেনের।

অভসী বলল, 'ব্লিট নামবেই। চল, বেরে নি। বড় হুম পাছে।' 'চল।' মণিমর উঠে দক্ষিল। 'আমারও বেন ব্যম পাছে।'

প্রস্তুনে অলপ করেকটি কথাবাত্রির মধ্যে থাওরা শেষ করে বখন শহুতে এল, তথন গহুডি গাড়িব কৈটি নেমেছে। হঠাং ঝাড়র মত আসা এলোমেলো বাতাসে ব্লিটর কেটিট বিক্ষিত টা বিবাহং চমক আর মেম গঙ্কাম একসংগা চারপাশ্ কিপিরে তুলছে মাঝেনাথে।

কথন শা্রেছে অতসী, দা চোখের পাতা একবারও এক করতে পারে ন। ব্লিটর ঝাপটার জনো জানালা বন্ধ করে দিয়েছিল। বাইরে তুম্ল বাতাস। অন্ধকার ঘরে জোরে পাথা ঘরেলেও এক ধরনের অস্বস্থিকর গরম অন্ভব করল অত্সী। বিছানার ওপর উঠে বসে অতসী গারের জামা, রা খ্রেল ফেলল। চুলের গোছাকে খোপা করে বাঁধল। দ্ব চোখ জারালা করছে। অতসী জল খেতে চাইল। মণিময় শোবার আগে ঘরের কোণে কু'লোর কথা মদে করিরে দিয়েছিল। অতসী অধ্বকারে ঠাহর কবতে পারে না তাই উঠল না। অথচ व्यात्मा अन्तामात्म सन था । शात वामन्ति। विन না। ভুকু অত্স্তী সংকোচ বোধ করল। এথন রাত কতটা কে জানে। মণিময় যদি বাঝাতে পারে, অতসী এখনো ঘুমোয় নি! অতসী কিছা সময় বসে থেকে শায়ে পড়ল। ম'ণ-ময়ের বিভাগা। মণিময়েব বালি**ল** মাথার নীচে। অভসী অভ্জুত একটা গণ্ধ পেল। মণিময় কি ঘুমিয়ে रठार गत्न रज् পড়েছে? নাকি তার মতো এখনো নিপ্রা-कौन! अ**उ**जीत कर्शकरी दाई **ऐ**लेन। কোরার্টারে থাকার সময় বিভানার মেরেকে পাশে নিয়েও কেমন এক-এক সময় ৫র নিজেকে নিঃসংগ মনে হড়। এই মুহুচুর অতসী দে রক্ম এক নিঃসংগতার মধ্যে এসে দ্যিত্যৈছে। কুম্শ মনে হচ্ছে, মণিময় সেন গুর শরীরের সংখ্য চাদরের মধ্যে জড়িবে रमहरू। ना. प्राथिश, भा। व्यक्ति युद्धाहै। অতসী বালিশে মৃথ গ'ড়েজ নিঃশ্বাস রুখ্ধ

বিনা সম্ভোপচারে

তার্কা থেকে
আরাম পারার
জন্য
ভাডেনসা
বারহার করুন!

করে রেখে অনেককণ পরে আন্তে-আন্তে কথন চাপা নিফ্রাস হৈড়েছে, অভস্বি ধ্যোল নেই।

...কে ওপালের শিক্ষা নাড়ল : মণিময়? मा अगिमज्ञ, खाल ना, अधन मा। रकार्मानन না। আমাদক ভাকছ মৰিময়? অতস্মী উঠে বঙ্গল। বিছানা ছেড়ে মেবের খড়িল। কাঁথ, পিঠ থেকে সমস্ত কাপড় সরে গৈছে। युक्तव छभव बाँठल यह अछमी मु ह्यार অজন্ত বুম নিরেই কপাটের দিকে গেল। रम्थल, मज्ञान रमरे त्व थिल मिरत ग्राहरू, তা একভাবে আটা। অতসী দর্জার কান রাখল। ওপাদ খেকে কোন দল শেন। যাচ্ছে কিনা, ভীত অতসীর তা শোনার বড় লোভ হল। বাইরের দামাল বাতাসের হিস-হিস শব্দ কানে আসছে। কেউ যেন দরজার শিকলটা ওপাশে বার-বার ছড়ির পেণ্ডু লামের মড় দোলাচেছ। অতসী খোলা ব্ক नतकात्र (५८७) थत्रका तक्ष-कता नत्रभार শীতলতা অত্সীকে বড় আরাম**িদছে**। আহা, মণিমর! এখনি দরজা খুলতে বলে। না। না, না, কিছুতেই পা মণিমর। তুমি ব্লিটর শবদ শ্নেছ? আমার ওখানে চল, ফাঁকা মাঠের কাঁচা খাসে সেই বিজাবিজ শব্দ नानत्व, चारमञ्ज भर्या श्रामात भारापात भार হালকা পোকার লাফালাফি দেখবে। এসব তুমি তো ভালবাস! তাই না? আর কাউকে সেখানে তুমি দেখতে পাবে মা. কোনদিন না। একট্ও ভর নেই তোমার। দরজার ওপর বুক চেপে অতসী বুঝি ছুমিয়ে

মণিময় যেন ধড়ফড় করে উঠে বদল। কত রাত হয়েছে কে জানে! কথন যুমিয়েছে? কিছুতেই ঘুম তাড়াতাড়ি ন। আসায় আজ সবচেয়ে বেশী মুমের বড়ি খেরেছে মণিময়। খাওয়ার সময় সময় আলে। জনলে নি, পাছে অতসী ব্ৰুতে পারে। আবার কেন ব্য ভাঙল? কেউ কি ডেকেছে? र्माणमञ्ज छेरकर्ग इतः व्यन्धकारुत्त मर्थार्ट দরজার দিকে তাকিরে রইল। কেউ যেন দরজার মাখা ঠকেছে। কেউ যেন কদিছে। দরজার ফাঁকে কালার শব্দ! কে? অভসী? তুমি আমার ডাকছ? না অতসী, আমি বাব না। ভূমি ভর পেরেছ? আমি তো সবই नेष्ट्रो करत क्लीइ। भीनभरतत ब्राक् न्त्रन्त् करत উठेग। अर्थान च्याता महकात। বালিশের নীচে ঘুমের বড়ি মেই। থাকবে কি করে? এটা বে অভসীর বিছানা! মনে পড়তেই মণিময় লাফিয়ে নেমে পড়ল বিছানা থেকে। এপাশ-ওপাশ ই'দারের প্রত সরে বাওরার শব্দ কানে এল: মণিমরের অপরিচিত ধর। এখনে বনন্তী একবারও আৰে দি। মণিময় অবাক হল, বিহানাটা বেন অভিপরিচিতের মত *আকর্ষণ করছে*।

জতসী কি কোৰ গাঁগৰ তেল নেখে ৰাড়ি থেকে বেলিয়েছিল ? নম্মৰ নালিলে এছ গাখ লিসের?

উত্ মণিমর ভাষণ এক অস্বলিঙ जान छव कर्म माता महादित । क्रम्यान मध्यहे কখন যেন গেঞ্জী খুলে ফেলেছে মণিময়। भारता रहेरिक काम यथ **हरत गार** कथन । অতসার শীতল হাজের স্পর্শ মনে পড়ল। না, অতসী, ওভাবে ভেকো না। মণিমরের श्रमीत जात अक्**टो क्**रमंत्र क्षि नवकाव 1 অথচ আলো জনালার সাহস নেই। কাল সকালে এ নিয়ে অভসী ঠাট্টা করতে পারে। অন্ধকারে হাত বাড়িয়ে উঠে দাঁড়াতেই মণিময় বেন জামালার **স্পর্ণ পেল।** বাইরে তুম্ল বৃণ্টি হওরার শব্দ কানে এল। भीवभाग कानालात अकरो। क्यारे चुला निना। ঘরে এতট্টক আলো এলো না। ঘরের মধ্যেকার কঠিন পাথরের মত জ্যাট ভাষকার শুধু ঠান্ডার নরম হয়ে গেল। মণিময় ব্ৰুক্ত, সে ভীষণ ঘেলে গেছে।

মণিময় ঘামের বড়ির জনো ওপাশে একট এগোডেই দর্জায় হাত লাগল। আরও ঘন হয়ে এলো দরজার কাছে। অভসী কি ঘ্মিয়ে পড়েছে? অভসী, ভূমি কি ঘুমোচ্ছ? মণিময় বিড়বিড় করল। বাইরের ব্যাণ্ট্র শব্দ, ঠান্ডা হাওয়া মণিময়কে বেন এক পাহাড়-ছের। তৃণভূষির মধ্যে নিয়ে চলেছে। সব্জ ঘাসে-ঢাকা তৃণভূমি শাশ্ত, মস্প। অবিরাম বিজবিজ শব্দ উঠছে ভার মধ্য থেকে। ছোট ছোট জলের স্রোভ ঘাসের গোড়া বেয়ে-বেয়ে চলেছ নিঃশব্দ। মণিমর যেন সেই শব্দও কানে গেল। আহে, কি আরাম! মণিময় এবার ছুমোতে পার্বে। আচমকা শিক্লে হাত লাগল। মণিময় শন্ত মটিতে শিকল চেপে ধরল। মণিমর "লাবার সময় শিকল তুলে বন্ধ করে নি া একভাবে ঝালে রয়েছে। থর-থর করে ভাগছে মণিময়। বাকের প্রতিটি শব্দে নতন ভর আর উত্তেজনা। মণিমরের মাখা বেন ছি°ড়ে পড়াছ।

এক সময়ে হঠাং শিকল থেকে সজোরে হাত সরাল। শিক্**লটা দ্রত করেক্**বার এপাশ-ওপাশ দ**্লতে-দ্লতে স্থর-গতি** হল। খোলা জানালাদিয়ে **প্ৰবলবাভা**স স্বং ভারী লোহার শিকলকে জ্মাপভ শিক্ষ-ভাবে দুলিরে **চলেছে। মণিমর কাছে থেকে** শিকলের নির্মিত শুল পুনের। যাড়া পে-ভূলায়ের মত একভাবে টিক-টিক শল উঠছে,কপাটের স্পর্ণ লেগে। মণিময় ব্যক্তর মধ্যে হাদরে শব্দের বেলী করেকটা শাল নিয়ে, অনেকটা **সময় ধ**রে **ওবরের বড়** ঘড়িটার পেন্ডুলামের শব্দের মত নিরুলের শব্দে সময়কে ধরতে চাইল। কপাটের ওপর মণিমারের মাথা, উত্মান্ত ভারতীরের ভক্ত দরজার রভের সম্পে মিশে গৈছে। মণিমর স্থির হরে দাড়িরে রইল।

मार्गित अरम्

खन्य सन्याखन



"বন্ধরা সকলেই তাঁর সন্গ প্রাথনা করে। তাঁর উপস্থিততে সরস ও সজীব হরে ওঠে যে কোন শ্রেণীর বৈঠক। মিশতে পারেন তিনি শিল্পীদের সন্গে শিল্পীর মত। আবার রাম-শ্যামের সন্গে রাম-শ্যামের মত। তাঁর মথে হাসির বলি ও হাসির গল্প জমে ওঠে অপ্রভাবে। এমন গশ্পিয়া মান্য আধ্নিক সাহিত্যিকদের মধ্যে আমি আর দেখিনি। অতিসাধারণ কথা তাঁর ভাষণ-ভগীতে হমে ওঠে অসাধারণ।"

প্রেমাৎকুর আতথা প্রসংগ্য উপরোদ্ধ ক্থাগ_লি লিখেছিলেন তাঁর আবাল্য সহেদ হেমেশ্রকুমার রায় 'এখন বাদের দেখছি' নামক গ্রন্থে। আমাদের সৌভাগ্য বে, এই न्हे लिथक्तकरे काम स्थापक प्रधान महिलान মিলেছে। উভয়েই তথ্য প্রবীণ, কিন্তু 🗣 প্রচণ্ড প্রাণ্শন্তির অধিকারী ছিলেন ৷ <u>হোমাণ্কর আভথারি সংখ্য বধ্ন পরিচর হল</u> তথন তিনি জয়াক্লান্ত থবে বেশী লোরাফেরা করতে পারেন না, ভব, কি মনের ভেরে। জীবন সম্পকে চির-উদাসীন প্রেমাংকুর আতথী তথন শেব থেয়ায় পাড়ি জমানোর কথা ভাবছেন। তথাপি সরসা রুসিকতা কিংবা ^{শিক্স} ও সাহিত্য বিষয়ে কোনো রকম আলোচনার তার আগ্রহের অভাব ছিল না। ^{আমরা} তার *নিজের ম*ুখে তার অতীত লীবনের অভিজ্ঞতার কিছ, কিছ, কাহিনীও ग्राजीहा

প্রেমাণকুর আভখারি রচনাবলীর সংখ্যা পরিমিত। যে করখানি উপন্যাস বা বেসব ভোটণদ্প লিখেছেন তার মধো আছে বিচিত্র-লোকের সংবাদ, জনেক ক্ষেত্রে তার পরিচিত জগতের ছবি। সবাই তাঁকে 'ব্যাডোদা' বলে ভাক্তো, কারণ তাঁর বাড়ির ডাকনাম ছিল ব্ড়ো, মান্ষেটি কিন্তু সঞ্চীবড়ে অনেক ছোকরাকেও হার মানিয়ে দিতেন। তবে মনের দিক থেকে তিনি ছিলেন প্রমপ্রাজ্ঞ তাই হয়ত তাঁর স্মাতিচারণমূলক এপিক উপন্যাস্টির নাম করেছিলেন 'মহাস্থবির জাতক'। প্রেমাঙ্করের প্রিয় কবি লিখেছেন---"এই জনমে ঘটালে মোর জন্ম জন্মান্তর"— প্রেমাঙ্কুরের জীবনে অনেকবার জন্মান্তর ঘটেছে তাই তিনি পরিণত বয়সে যখন এই উপন্যাসটি রচনা স্বর্করলেন তখন তার নামকরণ কর*লেন 'মহাস্*থাবর জাতক'। প্রেমা ক্ররে জীবনে সাফল্য আসেনি: কিন্ত **'মহাস্থাবর জাতক' তাঁকে খ্যাতির সবৈ'াত-**শিখরে প্রতিষ্ঠিত করেছে এবং বাংলা ভাষায় রচিত একশখানি উল্লেখযোগ্য গ্রম্থের মধ্যে 'মহাস্থবির জাতক' যে অন্যতম সেই স্বীকৃতি তার জীবন্দশাতেই মিলেছে। তার বন্ধ, প্রভাতচন্দ্র গণ্গোপাধ্যার লিখেছেন—'মহা-স্থবির জাতক' লিখে রাতারাতি প্রেমাণ্কুর पिश्विद्धा करत निम यमा शाहा।"

প্রেমান্দ্রর আতথী প্রসংগ্য অতিচমংলার ভণ্গীতে লিখেছেন পরিমল গোস্বাণী তাঁর 'আমি বাদের দেখেছি' গুলের। প্রেমান্দ্রর চরিত্রের এমন বৃ্তিনিন্দ্র বিলেরণ আর চোখে পড়েদি। পরিমল গোস্বামী প্রেমান্দ্রর আভর্মীর ঘনিন্দ্র সংস্পর্শে এসে-ছিলেন। তিনি একটি ম্লাবান কথা বলেছেন —'প্রেমান্দ্ররের মতো এত বেলী স্তরের সংগ্য সহক্ষে কোনো বাঙালীর পরিচর্ বটেছে কিনা আমার সন্দেহ আছে। শরংচন্দ্র চট্টোপাধ্যারের জীবনের সংগ্র চয়তো অনেকটা মিলবে। কিল্তু তব; মনে হয় শ্রেমাণ্কুরের অভিজ্ঞতা যেন তাঁকেও হার মানিয়েছে।"

আর প্রেমাংকরের 'মহাম্থবির জাতকে'র সংখ্যে বাঙ্জা সাহিত্যের আরেকটি প্রশ্ তুলনীয় তা শরংচন্দ্রের 'শ্রীকান্ড'। প্রেমান্দ্র যেন শরংচন্দকেও অতিক্রম করেছেন। শরং-চন্দের 'শ্রীকান্তের' মম'বাণী ব্যাখ্যা করেছেন মোহিতলাল, প্রেমাণ্কুরের 'মহাস্থবিরে'র ব্যাখ্যা করার মত লেখকের আজ অভাব घरिष्ठ । मतश्वनमुटे नाकि अकिमन श्रिमाक्ष्याक "তীর ভাষায় বংপরোনামিত ভিরুক্ষার করলেন সিনেমায় মেতে উঠে সাহিত্যের সংগ্র সম্পর্ক চুকিয়ে দেবার জন্য।" (দি**লীপকু**মার ম্বেথাপাধ্যায়—মরমী কথাগিলপী)—শর্ব-চন্দ্রের এই স্নেহের ভাড়নায় হয়ত প্রেমাণ্ড্র তার মারচাধরা কলমটি আবার ছাতে নিয়ে-ছিলেন। 'মহাস্থবির জাতক' বখন শনিবারের চিঠিতে প্রকাশিত হতে **লাগল তথন সবাই ठ**मश्कृष्ठ इरमन, जन्भकारमञ्ज भर्धा**ই एन्स**नामी लाकरक भवादे **धरस्य बात कब्रलम।** জাতকের তিনটি পর্ব শনিবারের চিঠিতে প্রকাশিত হয়: এখন চতুখ' প্রব' সংবোজিত চারখন্ডে সম্পূর্ণ মহাস্থবির প্রকাশিত হল। কবি উন্নাদেবী লেখকের থাতা থেকে প্রেস কলি করে দিয়েছেন এবং পরে তিনি সক্রে অবস্থার মুখে মুখে যেমনটি বলেছেন উমা দেবী ভাই লিখে নিয়েছেন।

মহাস্থাবির জাতকের প্রথম পরে এই শতকের প্রথম দিককার কলকাতার পরিচর

পাওৱা বাবে। বোড়ার ট্রানের কলকাতা, क्रमकाश्चार मानक्षम चान् माहे कामात नव-জাপ্রত রাজসমাজ। প্রেমাব্দুরের পিতৃদেব মহেশচন্দ্র আতথী ছিলেন আদলবাদী জান্ধ 'কুন্তু প্রেদের গ্লন্থ করার জন্য তিনি व्यवधा छर्गीकृत कराएक। मान्यीं व খারাশ ছিলেন তা বলা বার না, তাঁর शासानकात न्याहा, क्षांत त्यम व्यथार वितनत পিছনে অপহাত মাছের জনা ছোটা, পাগলদের প্রতিপালন, চা-বাগানে কথকেতা করতে গিয়ে এতকল হওরা প্রভৃতি মহেশচদের উল্ভট প্রকৃতির পরিচারক। এর কলে বড় ছেলে ধর ছেড়ে চলে গিয়েছিলেন, তিনি পরে বিদেশে বড় ডাভার হরেছিলেন। আর শ্বিতীয় প্রেমাংকুর বালক অবস্থা থেকেই ঘরের নাইরে বিরাট বিশ্ব যেখানে বাহ, মেলি রর সেই বাহার আলিংগনে ধরা দিলেন আরু কনিষ্ঠ জ্ঞানাব্দুর। তিনি শেষ পর্যক্ত প্রেমাণকুরের কাছেই শেষনিঃশ্বাস ত্যাগ করেছেন। ক্ষেত্র প্রবায়ণা উদ্বেগাকুল জননীর কথাওঁ প্রেমাণ্কুর লিখেছেন অতি স্কা রেখায়! কিল্পু এই রেখাচিত করেকটি ক্ষেত্রে আদ্ভত হয়ে উঠেছে, ইংরাজীতে যাকে বলে 'হাণ্ট' প্রেমাব্দরের মহাস্থাবরের অনেক-পালি আমাকে রীভিমত 'হাল্ট' করেছে। সহ-পাঠিনী মস্তার সংশ্য বিচিত্ত অবস্থায় তার স্বামীর মৃত্যুর মৃহ্তে সাক্ষাংকার। তিন প্রসা চরির অপ্রাদ দিয়েছিল যে স্বর্ণ তার পাগল হয়ে হাওরা। স্কুল-জীবনে টমরী সাহের এবং শ্যাম ও স্করেশ্বর পর্ব প্রভতি এক একটি চিত্র। ভারপর পাগলা সন্ম্যাসীর কাছে ইংরাজী কাব্যের সঞ্গে পরিটর লাভ। তিরাতার বছরের এই বৃশ্ধ ছিলেন পশ্ডিত, মদাপ এবং গাঁজাথোর। মদ খাওয়াটা শিংখছিলেন নিজের ছেলের কাছ থেকে। তিনি একদিন প্রেমাণ্ডরদের দুই ভাইকে মদাপানের দীক্ষা দাম করলেন। তথন প্রেমাংকুবিত বর্জ মার চোলং বছব। পাগদা সম্বাদীর কবিতা পাঠ প্রসংগ প্রেমাঞ্কুর প্রথম পরে' লিখেছেন--

7/

"কবিতার ভাষা বোঝবার মতো বিদ্যা আমাদের ছিল না। শ্রে ধরনি ও স্কুর মনের মধ্যে একটার পর একটা ছবি ফ্টিমে তুলতে লাগল। চোথের সামনে যেন দেখতে লাগল্ম আালাস্টারের কবি চলেছে দ্রে. স্দ্রে— তার অভ্যের যে চেতনা ভেগেছে তারই সম্পানে। চলেছে—চলেছে—কত দেশ কও মেরে এল তার কবিনে, তব্ সে চলেছে বিরাম্বিহীন।"

এই পথচলার পেয়েছিল প্রেমাঞ্করকে অভতহীন পথ প্রিক্রমা। এই পাণলা সম্যাদীর প্রেবধ্ গোডৌর্বাদও এক বিচিত্র চরিত্র। এই কালেই সভুবে ভালোবাসতে লিখেকে লেখক সেও ভালোবাসত লেখককে। আর এই প্রথম প্রেমের স্পর্শ সারা কীরনকে উদ্প্রান্ত কবে ভুলোছ। মালাবদল করে গণখব মতে বিবাহ হরেছিল ছয়ত, আন্টোনিক বিবাহ হল অনাজনের

পদের বছরে বরদে নালমত্তে প্রথম গৃহত্যাগ করলেন লেখক আর এবানেই প্রথম পর্বের সমাণিত। ছিতীর পর্বের প্রথমে কালীতে গ্রুমার সংগ্রে পার্চর। তার আরা প্রার সম্পোহত হরে পাড়া। গ্রুমার আদর। আড়ালে এই গ্রুমা বালকুমারী হয়ে উঠতেস আর নেই রাজকুমারীর আলিগানে আবস্থ হরে বর্মার কলেবরে পড়ে থাকা। এবং রাজকুমারী আদর করে বল্তেন গোগাল। এই রাজকুমারী গর্বের বিবরণ অন্য কোনো লেখকের হাডে গড়লে কি আকৃতি নিতে পারত তাই ভাবি।

নাই হোক রাজকুমারীর ভালোবাসা দীর্ঘস্থায়ী হয়নি। কাশী ছাড়তে হল।

ভারপর ছোট সাহেবের সংগে পরিচর।
কি বিচিত্র মান্ত্র এই ছোট সাহেব। ব্যাধিজ্ঞার দেহে কত সভু মন। আর তেমনই
মাহরসা মহিলা তার ভন্নী, লেখকের হাতে
দিদির্মাণর বে ছবি আঁকা হরেছে তা তুলনারহিত। ভারপর বৃন্দাবনে দিদির্মাণর সংগে
বে অবন্ধায় আবার দেখা হল তা নাটকীর।
এক অভিনর সমৃন্ধ ভারন্থা থেকে একেবারে
পথের ভিথারিগী। দিদির্মাণকে যথন প্রন্ন
করা হল ভোমার কি অর্থকন্ট আছে তথন
দিদির্মাণ বল্পন—'গোবিশের ইচ্ছার আমার
কোনো অভাব নেই।'

এইখানেই দ্বিভার পর্বের সমাপিত।
এই শ্বরের আর দর্নিট চরিত পেরারা সাহেব
আর ভার সম্ভজনোচিত দাদামশাই নবাব
সাহেব। এমন মানুব কি একদা সাত্যই
ধরাধামে বিচরণ করেছেন—এই প্রশন মনে
জাগে।

তৃতীয় পর্বের এক জারগায় প্রেমা॰কুর লিখেছেন—"মান্বের মধ্যে যতপ্রকার প্রেণী আছে—অথাৎ জ্ঞানী, অজ্ঞানী বিশ্বান, বৃশ্ধিমান, বিবেচক, অবিবেচক, ধৃত্, নিবোধ স্বোধ, দুবোধ—এদের কার্কেই স্লেফ দেখেই বোঝা যার না সে কোন প্রেণীর মান্বে। কিল্ডু একটি বিশেষ প্রেণীর মান্ব বারা পরশর্মাণার ছোঁয়া পেরেছে — তাদের দেখলেই চেনা যার। অল্ডত এই প্রেণীর মাত লোকের সাহচবের্গ আমি এসেছি তাদের দেখেই চিনতে পেরেছি।"

স্বাটের ম্যাজিশেট্ট সাহেব গ্যারাম্
সংপকে লেওক লিখেছেন—"জাবিন্দাচার
প্রাবালে আম্মরা বে মহাশ্রেবের দর্শনিলাভ
করেছিল্ম, আজ্ জাবিনসংখ্যার বিশেষ করে
তাকৈ করেল করে বাজি—হে মহাজন! আজ
হতে প্রায় অর্ধালতাক্ষা প্রেবি ব দ্টি দীন
ও তুক্ত বাঙালী বালক কম্পিত হ্দরে
সাহারের জন্যে আপনাদের ব্যারে গিরে
দাড়িরেছিলাম। স্বংখে সুখে ভাদের দিন
কটে গিরেছে। তাদের মধ্যে একজন বিদার
নিরেছে, আর একজন পথের শেবে এসে
অতিক্লান্ড করিছে।"

সেই অধ্ধবার দিনে ম্যাজিল্টেট গ্যারাম এবং তার বংশং পশ্চিতজী লেখকের রচনা-কোললে প্রাণবন্ড হলে উঠেছেন। পশ্চিতজী, শংকর ও দেবী বেন মতের মানুর নর। দেবীর মৃত্যুতে সব শের হল। লেখক বলেছেন—"পশ্চিতজী ও শংকরের ধবর পাইনি তবে দেবী আমান্ত ভোলে নি। बार्ट्स मार्ट्स न्यां क्रिकेट नतमी व्यवस्थ अरुन त्य खाबारक क्रस्ट निरंत करण बाह्य।"

চতুৰ পৰে আছে বোন্দাই গৃহরের বিচিন্ন অভিন্তানার বিশ্বনথ। সোধানে গৈনিক হ প্রসার মহারিতে বেতে কাজ করেছে।। হাগলদ্ধে বিভি করে বালের চলে তাদের কাছে পেরেছেন অবাচিত দেনহ, অথচ তারা নাকি ভাকাত। অনেক অপৌকিক কাহিনীও হভানো আছে এই প্রশেবর বিভিন্ন অংশ।।

প্ৰেই লিখেছ বে, মহাম্ববির জাতত বাংলা সাহিত্যের এক অবিস্মর্থণীর এখা। এই প্রশেষ প্রশাস্থা পরিচর লিভে বে পরিমাণ ম্থানের প্রবাজন সাম্বিরকপারের প্রেয়ার তা সম্ভব নর।

এই চার খণ্ডে সম্পূর্ণ প্রন্থটির মানুন পারিপাট্য প্রদাংসনীয়।

–অভয়ত্তর

মহাত্র্পবির জাতক (১ম. ২র, ৩র. ৪র্থ পর্ব একটো — মহাত্র্পবির (সেমাধ্রুর আতথা । প্রকাশক — মেসাস ইণ্ডিরান আমোসিরেটেড পার্বালাশং কোং প্রাইভেট লিমিটেড। কলিকাডা — ৭। দাম — বাইশ টাকা মাত।

সাহিত্যের খবর

প্রেমেন্দ্র নিহের কবিতা পাঠ: বাংলা কবিতার ইতিহাসে প্রেমেন্দ মিদ্র একাট উচ্জবুল নাম। বিশেষ দেশ, যে কবি সম্প্রদায় আবিভূতি হয়েছি , তাদের মধ্যে বোধ করি, প্রেমেন্দ্র মিদের বাগিতই সবাধিক। গতে ৩০ এপ্রিল সম্বায়র সবভারতীয় কবি সম্প্রেলনের দম্ভরে তিনি ম্বরচিত কবিতা পাঠ করে দোনান । দীঘদিন পর এমন একটি ঘানান্ট পরিবেশে কবির স্বকটে কবিতা পাঠ শোনান স্বাোগ পেমে আনন্দ পেরেছি। এ ছাড়াও উপস্থিত করেকদার্বিশিশ্ব প্রবিভ্ ত করে কবিত পাঠ করে উপস্থিত করেকদার্বিশিশ্ব প্রবিভ্ ত করে কবিত পাঠ করে উপস্থিত প্রেমেন্দ্র মানান। কবিতা পাঠের পর প্রেমেন্দ্র মিদ্রের কবিতার বিশিশ্ব সম্বাহর বাজেন। স্বা

আলোচনার উন্দোধন করে আলোক সরকার বজেন, প্রথম যথন কবিতা পড়তে আরম্ভ করি, তথনই প্রেমেন্দ্র মিয়ের কবিতা আমাকে সম্মোহিত করে এবং সে প্রভাব এখনও সমান। তার কবিতার মান সরে মান্বের প্রতি ভালবাসা এবং এই মানবি-কতা তার কবিতাকে একটি বিশেষ আন্বন্ধে পোছে দিয়েছে।

মণীন্দ্ৰ রার আলোচনার অংশ গ্রহণ করে
বলেন, প্রেক্তন্ত্র মিদ্রের কবিতা সন্বধ্ধে
কিছু বলা আমার পক্ষে কঠিন, কারণ তার
কবিতা নানাভাবে আমারে সম্পূর করে

আমান জোনেত নিয়ের ক্রিকার করি একাত নিক্রা তেনেত নিক্রা করি বিশ্বিকার করি বিভিন্ন করি বিশ্বিকার করি বিশ্বিকার করি বিশ্বিকার নিজার করি বিশ্বিকার করি বিশ্বিক

-উল্লেখ করেন। তিনি রাগন,—'একালে কোন কোন প্রয়াক্ষেত্র ও প্রেমেন্য ক্ষিতের ক্ষিতায় বংশক সংশক্ষ ইন্সাদি নেই বলে, তাকে - আধ্নিক ক্রিতার ইতিহাসে, স্তত্ত कतरण हान मा। अहा छिल्कमाञ्चरणापिट। কারণ সময় চেতনা এবং মানব চেতনা সমন্বলৈ সংশ্ব ভার মধ্যে হেভাবে ধরা भएएছ, তा जान्तका भाषाहै नहें। धरे **অভিনতের প্রতিবাদ প্র**রোজন।' আশিষ সানালে জার কবিতার প্রকরণ ও পর্ন্ধতি नित्र खालाह्मा कंदांठ शिद्य दाह्मन.-'অনেকে প্রেমেণ্দ্র মিত্রের কবিতাকে আভরণ-**হীন[া] বলেছেন। কিন্তু কবিভার বিচারে** একথা মেনে মেওরা যার না। তরি কবিতায় ছন্দ বা চিত্তকল্প ব্যবহারের পদ্ধতি আলাদা। কবিতাকে অকারণ ভালংকার পরিয়ে তিনি সান্দর করতে চার্নন কবিতার অত্যতি সৌদ্ধাকেই তিনি ফ্টিয়ে তুলতে ভোৱাতন। ভার কারকার যে ব্যাপি আছে। বাও অনুবারনায় অপেকা যাবে।

গৌরাপা ছোমিক উল্লেখ করেন বে, ছোটনেলা থেকেই হোমেন্দ্র মিছের কাবের তীয় রোমান্টিক ধর্ম তাকৈ মধ্যে করেছে।

নতীবাদত বহু আলোচনার ইন্সর্ভাবে হোমের বিবেদ ভবিতার বৈশিতী সম্ভাবে আলোচনা করেন। তিনি বনেন, জনেকেই কবিতা সেকেন, কিন্তু স্বাই সম্পূর্ণ হতে পানেন না। প্রেমের যিত্র সম্পূর্ণ করি। তিনি একজন মহং ক্রি।

আলোচনার গেনে প্রেমন্দ্র মিরকে কিছ্,
কিছ, প্রণন জিত্তেস করা হয়। এক প্রদেনর
উত্তরে তিনি বলেন,—'আমার কবিতার এমন
অলাকার ব্যবহার করতে চেয়েছি, যা
অলাকার বলে অনেক সময় চেনা বায় না।
সহজ হবার সাধনা করেছি সারা জীবন।'
অনুষ্ঠানে প্রেমন্দ্র মিরের ক্বিতা সন্বংধ
আরো অনেক তথা জানা যায়।

একটি মন্দোক্ত মুন্দারার : কবিতা এবং
মুনাহারা নানার জন্য যে এত লোক কলকাতাতেও উদ্প্রীব হয়ে থাকেন, তা জানা
ছিল না। সেদিন তা দেখে তাজ্জব যনে
গোছ। উদ্ভাষী এত সাহিত্যপ্রেমককেও
এর আগে কথনও দেখিন।

াত ২ মে সংখ্যার 'কলকাতার প্রেট ইন্টার্ণ হোটেলে এই মুশারারা বর্মোছল। উদ্যোধ্য ছিলেন বেংগল সাভিসি সোস্থাইটি! ভালের প্রসামার সন্যাপত এ হব জিবার কুপারার। আনুষ্ঠানের উল্লেখ্য করিব রাজ্যপাল শ্রীকার, এক বার্কার। করিব প্রার করিব সার্কার প্রায় করিব করিব মার করিব সার্কার করিব করিব মার করিব করিব করিব মার করিব করিব করিব মার করিব করিব মার করিব করিব মার করিব

এরপর ম্পায়ারা জারতে হয়। রাজ্য ভারতের বিখাছে উদ² করিবের ক্রমেকে উপস্থিত ছিলেন। রাশায়ারা ক্রমেকে উপস্থিত ছিলেন। রাশায়ারা ক্রমেক পরিচালনা করেন পভিত আনক্ষনারারণ মোলা। যে সাম করিরা এতে অংশ গ্রহণ করেন, তাঁলের মধ্যে ছিলেন ফিরাফ গোনখলারা, জো আনসারি, পভিত আনক্ষনারারণ মোলা, বন্ধার মেহেদী, পায়ায় ফতেন্রী, পাফাদানক সিংহ, জাবিন পালা, রাজ্য মেরারি, ইরাহিম হোস, গায়াক্ষনারালী, ইজাল আফজল, আল্কামা শিবলী, হাসান আসার, কামল আখতার, রাজ্ব আজিম, তবিস আজিমাবাদী প্রম্থ।

নতুন বই

এখনে সেই মুখ (দিবাজীবন কথা)—
সঞ্জীব সূরকার বিরচিত। প্রকাশক—
সাহিত্য-সদন — কলিকাতা — ৯ ।।
দাম—তিন টাকা মার।

ন্ধনবের পুরে একদিন এই ধরণীতে
নরদেহে অবতার্গি হয়েছিলেন। তার জন্ম
থেকে তিরোধানের কাল পূর্যণত যে সব
বিচিত্র লালা ঘটেছে তার কাহিনী অতিশয়
কৌত্রলোন্দীপক। সঞ্জাব সরকার কাবাধর্মী স্লোলত ভগ্যাতে যাগরের প্রোজীবনের ক্যা 'এখনো সেই মুখের' কাহিন্নগর্নালতে নতুন রাভিতে পরিবেশনে মুন্সিমানার পরিচয় দিয়েছেন। লেথক সেই
মহাজাননের আবিভাব বার্তা প্রস্থেগ
লিখ্ছেন—

'তিনি আসবেন। বিশ্ববিধাতার বিধান তিনি আসবেন। সতিয়ই তিনি এলেন। ঐ ছোট বেংলেহেম সহরেই হলেন ভূমিষ্ঠ।'

সকলের অগোচরে এই আবিভবি
তথন আমরা মদিনের কপাট বন্ধ করে
মন্ত অওড়াছিলাম। তাই আমরা শ্লিনি
সেই পুনা পদক্ষেপ। এই সন্ধ্যে আবার
বিড়াদনের করেকটি চিচা প্রথম আবার
মৃত্যু হল প্রাজিত, ধনী ও দরিদ্র, সেই
শ্রাভন কাহিনী, এখনো সেই মুখ প্রভৃতি

রচনাগুলি সাহিত্যরসসমূদ্ধ হঙ্গে সাথ^{*}কতা লাভ করেছে। এই **গ্রণ্ড**টির ভূমিকা লিথেছেন শৈলজানন্দ মুখো-পাধ্যায়।

কালোর তেউ (গ্রন্থ)—শিক্ষা গস্তু। প্রকা-শক্তঃ প্রশাসনি, ২০১-বি বিধান শরণী, কলকাতা ৬, দাম—তিন টাকা।

কাঁচের লংসার (উপন্যাল)—লিপ্সা দত্ত। প্রকাশক-ডি এম লাইরেরী, ৪২ বিধান সরণী, কলকাডা ৬, লাম-লাভ টাকা।

বাংলা ছোটগণপ যখন এগিয়ে চলেছে, বখন এ-নিয়ে চলেছে বিচিন্ন পরীক্ষানিরীক্ষা, তখন এই গলপ-সংকলনটি হাতে এলো। এতে সাথক প্লপ একটিও দেই। বা' কিছু আছে, তাদের সব ক'টিই হয় মাম্লী, আর না-হয় অবাস্তব ও অসম্ভব ঘটনার ভিড়ে অতি-নাটকীয়।

প্রথম গণপ 'রহসামরী'তে রহস্য জমে ওঠবার জাগেই উচ্ছনেস ও অবাস্তর ঘটনার জোয়ারে হক্চকিরে বেতে হয়। নায়িকা সাশিত ওরফে পালিয়া, ওরফে পিয়ার আত্মহত্যা ও দীর্ঘ কিটি বে কোনো কাল্ড-জ্ঞানসম্পম পাঠকের কাছেই বাডাবাড়ি বলে মনে হবে। 'অপরাজিডা' গণপটি সাথাক

হতে পারত। কিম্পু নারিকা দেবযানীর চিঠি পেরে নারক দেবাশীব-এর না দেবাশিস? ভাঙা মনে ক্ষণক প্রশিক করেছে। আত নাটকায়ভা শাং গলেপরও প্রধান হাটি। ট্রেনে রক্ত ও মনোবীণা দেবীর আলাপ, শিলিগাড়ির উৎসরে ওদের আবার দেখা এবং পরিশেষে মনোবীণা দেবীর বাড়িতে ওদের প্রশিক্ষিকা—সব কিছুই কেমন যেন অম্পুত, ক্ষরম্ভব ও অবিশ্বাস্য ঠেকে। পহযায়ীং, ভাঙা টেউ ইভাগি গ্রুপ সম্পর্কেও উক্ত একই ক্যা

পাতার পর পাতা প্রেয়ার মনগড়া
কিছ্ অভ্তত কাছিমী লিখে গেলেই খাদ
উপন্যাস হর জা কাঁচের সংলার সিশ্চরই
একটি উপন্যাস। কিন্তু যদি তা না হয়,
অর্থাৎ, যদি কোনো স্থিটকে উপন্যাসপদবাচা হতে গেলে এর চেমেও বেশি কিছ্
হতে হয় তো একে ঠিক কোন্ প্রায়ের
ফেলা যায়, তা জানা নেই।

এ-কাহিনীতে গোড়া প্লেকেই সংসার ভেঙে বসে আছে। লন্ডন-প্রবাসী বড় ছেলে কমল মেম বিয়ে করে উপ্র আধানিক। ছোট ছোল অমল লন্ডন থেকে ফিরে এলে আধ্নিকতাকে আরেকভাবে আকৈড়ে ধরেছে।



মা-কালাকে চরম কন্টের মধ্যে ফেলেছে ওরা,
তিলে ডিলে একটা পরিবারকে সর্বনাশের
মুখে ঠেলে দিছে। কিন্তু অবাক লাগে
ভাবতে, লেখিকার মুন্দারানার অভাবে
এই চিন্নু পাঠকদের মনে কোনো রেখাপাও
করে না। করং কোঁচের সংসার-এর মূল
কাহিনীর সলো সংগে বিচিন্ন সব ঘটনার
ভিড় পাঠকদের যেন দিশেহারা করে। উল্ভট
সংলাপ, অপ্ররোজনীয় মৃত্যু এবং উচ্ছন্তর
বাড়াবাড়ি ইখন যোগার এতে। পড়ে বারবার মনে হর, সংসারে ভালো বলতে কিছুই
কেই, বা আছে সবই খারাপ। কিন্তু সত্যি
ভি ভাই? সংসারে সভি কি শুধ্মান্ত
ভাঙা কাঁচের ওপর দিরেই হাটি আমরা?
কেবলই কাঁচের উক্রেরা পারে ফোটাই?

দীৰ্ঘতম সেতুতে আমি একা

কার্যাপ কর্মার ক্রিন্ত ক্রিন্ত কর্মার ক্রিন্ত কর্মার ক্রিন্ত কর্মার ক্রিন্ত কর্মার ক্রিন্ত কর্মার ক্রিন্ত ক্রিন্ত

ইদানীং বাংলা কবিভায় 'একা' শব্দের আধিক্য একটি গোপন বন্দুগার বিবর ৷ অবল্য রোদ্যাশ্টিক বিবাদ অনেক সময় এরকম নিঃস্পাভার অলক্ষ্য কারণ হিসেবে কাজ করে ৷

অর্থতী সেনগাশত এই কাবাগ্রশ্থে তর্ণ বয়সের প্রেমভাবনাকে সূর্থক শব্দ-বাবহার ও রোম্যাশ্টিক চিত্রনির্মাণে পাঠকের দরবারে পেণছে দিরেছেন। নিজেকে চিনেছ কি' কবিতায় তিনি লিখেছেন ঃ

বলেছে সে এনে, নিজেকে চিনেছ কি? চেনো তাকে আগে, চেনো সেই গ্রুতধন নিজন আধারের আলোয় আলোয়।

কথনো কথনো তাকে সম্মাসিনীর মতো উপ্সিনীন মনে হয়। কবিতা পাঠকের কাছে বইটি সমাদ্ত হবে। প্রচ্ছদ ও ছাপা ভালো।

লীল বাদ লাল ক্ল (র্যাবতা-প্রিতকা)—
আরাধনা গণ্ড।। প্রকাশক ঃ শ্রীপ্রবোধচল্ট চট্টোপাধ্যার, ৫৩ বার্ইপাড়া লেন,
কলকাতা ৩৫।। দাম এক টাকা।।

বাংলা কবিতার আরাধনা গ্ৰুণ্ড একেবারে নবাগতা। এই প্র্লিভক টি তাঁর প্রথম প্রকাশিত কথাসংকলন। ফলে, কবিতার নির্মাণে ও শব্দতরনে দ্বর্লতা ররে গেছে বংখন্ট। ভাবসংব্যের অভাব মাঝে মাঝে পীড়াদারক। ভূমিকার একালের একজন বরুক্ত কবি লিখেছেন ঃ "তাঁর কবিতাগর্মীল পড়লে অন্ভূতিমর অংবেগের উদ্দ্র্বশাশধর থেকে সংবেদনশীলতার অগাধ গভীরতার অবতরণ অনারাসসাধ্য হর। এইখানেই কবির হাতে জরপতাকা।" এ সংকলনের করেকটি কবিতা ভালো। আমরা ভার পরিগত রচনার জন্য অপেকা করবো।

সংকলন ও পত্ৰ-পত্ৰিকা

জব্ (নবহর্ষ সংখ্যা)—সম্পাদক উৎপক্ষ সেনগ্ৰুত ও স্ভোব উকিল। ৭২।১ শিশির ভাদ্ধী সর্থী, কলকাভা—৬। দাম ঃ কুড়ি পরসা।

সম্পাদক লিখেছেন ঃ "স্ন্রে ইওরোপ আমেরিকার মিনি-তরপা আজ বাংলাদেশের সাহিত্য আবহাওরাতে মিশ্রণ ঘটেছে। তারই প্রতিক্রিয়ার এখনে দেখা দিল 'মিনি' 'মিনি' রব।" এ সম্পর্কে বেশী কিছু মন্তব্য করতে আমরাও আর চাই না। পরিকাটির এ সংখ্যার লিখেছেন, প্রেমেন্দ্র মিন্ন, কিরণ-শুকর সেনগ্রুত, দক্ষিণারঞ্জন বস্ক্রে বীরেন্দ্রকল চট্টোপাধ্যার, মণীন্দ্র রার এবং আরো অনেকে।

ভক্স (জান্যাারী-এহিল)—সংপাদক মধ্-স্দন চৌধ্রী ও স্থাংশ্ ঘোষ। সংকোষপ্র গভর্মেণ্ট কলোনী, মহেশতলা, ২৪ প্রগণ। দাম ঃ পাচিশ প্রসা।

মনে হয়, পত্রিকাটি আগে বড় আকারে বেরোত। এখন অবস্থাদ্দেট আকার থবাঁতা ঘটেছে। এটি অণ্টম বর্ষের প্রথম ও দ্বিতীয় সংখ্যা। এ সংখ্যায় লিখেছেন শশ্কর পাল, স্ধাংশ্য ঘোষ, আয়েষা সেন, ভূপেশ্রনাথ মণ্ডল এবং আরে। ক্ষেকজন।

ঝিন্ক (দোল সংখ্যা)—সম্পাদক রঞ্জন বিশ্বাস ও স্বপন চক্রবর্তী। হাতিম-পাড়া মেন রোড, শিলিগর্ড়ি। দাম ঃ ২০ পরসা।

এটি কিন্দুকের প্রথম সংখ্যা। সম্পাদক
দাবী করেছেন ঃ "দাজিলিং জেলার প্রথম
মিনি প্রিকা।" লিখেছেন অপ্রকুমার
সকদার, চোসংলামা, মাকে পোলো, বন্ধী
বাগচী, মুপক চৌধুরী, বিশ্লব তাল্কদার
এবং আরো করেকজন।

সাহিত্য ও দিল্প সম্বন্ধীয় গ্রৈমাসক ব্পুশী কাংলা'র প্রথম সংখ্যার সমর বন্দ্যো-পাধ্যারের সাহিত্যে অবক্ষয়, বাদল খোবের বিশ শতক, এবসার্ড নাটক ও বাদল সরকার, তাপস বন্দ্যোপাধ্যারের তর্মে পরিচালকাণ এবং রামেন্দ্র দেশম্থ, শৃত্থসত্ত্বস্তু, শিন্ত চটোপাখ্যার, শংকরালন্দ মুখোপাখ্যার, নচিকেতা ভরম্বজ, পবিত্র মুখোপাখ্যার, পরিত করির কবিডাগানিল উল্লেখবোগ্য। নির্মানেন্দ্র গোডমের নিলামা গালপটিতে বৈশিন্ট্যের ছাপ আছে। পরিকাটির ভবিষাং সংখ্যার প্রতিশ্রুতিও আকর্ষণীর। সোমনাথ চট্টোপাধ্যার সম্পাদিত। ৭, চন্ডীতলা লেন রোড, আর্যপ্রাই, কলিকাভা-৪৮ থেকে প্রকাশিত। দাম এক টাকা পাঁচণ পরসা।

কালি ও কলম (তৈর ১০৭৬)—সম্পাদক বিমল মির ।। ১৫, বিক্কম চাট্ডেজ দুট্টীট, কলকাতা ১২ ।। দাম ঃ ৭৫ প্রসা ।।

আগেকার বৈশিষ্ট্য বজার রেখে কালি
ও কলমের নতুন সংখ্যাটি বেরিয়েছে।
এ সংখ্যার লিখেছেন, বিমলকাশিত
ভট্টাচার্য, অর্ণকুমার ভট্টাচার্য, আলিস
মজ্মদার, শিশির ভট্টাচার্য, অজিত
চট্টোপাধ্যার এবং আরো কয়েকজন।

লাইলো (দিবভাষী মিনি-পত্রিকা)—মন্পাদক শিবালীশংকর সান্যাল ।। ১০৮, কেশব সেন স্ট্রীট, কলকাতা ৯ ।। দাম ঃ ১৫ প্যাসা ।।

বজাইস হরফে ছাপা স্মৃতিত কাগজ।
বাংলার লিখেছেন, নজর্ল, তারাশুকর
বন্দ্যোপাধ্যাস, মণীন্দ্র রায়, বিমল মিদ্র,
স্নীল গাল্গলী, হরিনারায়ণ চট্টোপাধ্যার, কবিতা সিংহ, কাজী
সবসোচী এবং শিবরাম চক্রবতী।
ইংরেজীতে কয়েকজন কয়েকটি লেখা
লিখেছেন। প্রশ্ন উঠতে পারে কেন
আরু মিনি প্রিকা? সাহিত্যের সংগ্র

বিশ্ব, (এপ্রিল ১৯৭০)—সম্পাদক তপন রায় ও অঞ্জলি মজ্মদার । ১০বি, জনক রোড, কলকাতা ২৯ দামঃ ২০ প্রসা ।।

মিনি গলেপর পরিকা। লিখেছেন সমরেশ বস্, স্নীল গণেগাপাধ্যার, রমানাথ রার, দাবৈশিদ্ মুখোপাধ্যার, দাংকর চট্টোপাধ্যার, বৃশ্ধদেব গ্রু এবং বরেন গণেগাপাধ্যার।

এই সংখ্যাটি উৎসগ' করা হরেছে 'ফোহিনী

আড়ালের অল্পল প্রতিম কবিকে।'

করেকটি চমকপ্রদ বিজ্ঞাপন ছাপা

হরেছে প্রথম ও শেবদিকে। লিখেত্বেন

উত্তর বস্ত্র, মানবেন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যার,

অর্শাভ দাশগ্রুণ্ড, অমিতাভ

চৌধুরী এবং আরো অনেকে।







(७)

ক্তমে কিছু সময় কেটে গেল। কিছু

মাঠের শেষ শসকেণা ঘরে উঠে গেছে। বছর কেটে গোল। এখন চৈতের মাঝামাঝি।

व्याठे अथन प्र-म् कताङ्। भूकरना ভাষ্টে হাল বসছে না। স্বত চাহ্বাসের একটা বন্ধা সময়। মতদ্র চোথে পড়াছ সামনে, শাদা ধোঁয়াটে ভাব। শ্বেকনো কঠিন ক্ষম পাথরের মত উঠু হসে আছে। পাথ-পাধাল যেন সব অদ্শা অথবা সব জালে পুড়ে পেছে। মনেই হয় নাএই স্থ জানতে সোনাব ফদল ফলে। মনেই হয় না ্রখান কোন দিন বর্ধায় স্পাবন আমে। ্থাপ জপাল ফাকা ফাকা। গরীব দঃখীরা ধারা পাতা সংগ্রহ করছে। মুসলমান চাষী-নোরা এইস্ব ঝরাপাতা সংগ্রহের সময় আকাশ দেখছিল।

জোটনও আকাশ দেখছিল কারণ তার ্থন দুদিন। ফাক্রসাব সেই যে নাম্ভা হার পাঁচ বছর আগে সিগির নাম করে গছে আর ফিরে আর্মেন। আবেদালিও ন্মকাশ দেখাছল কারণ চাম্বাসের কাজ ্রক্ষারেই বন্ধ। নৌকার কাজ বন্ধ। গয়না নোকাৰ কাজ শীতের মুরশ্মেই বৃষ্ণ হয়ে গোছ। বৃতিট হলে নতুন শাকপাতা মাটি থেকে বের হবে, সেজনা জোটন আকাশ দেখছিল। বৃতি হলে চাৰবাসের কাজ আরুভ হবে, সেজনা আবেদাল আকাশ ্দুখছিল। এই অঞ্চল আকাশ দেখা এখন সকলের অভ্যাস। কচি কচি ঘাস, নতুন নতুন পাতা এবং ভিজে ভিজে বৃণিট্র—আহা মজাদার পাড়েড নাইষর याव्हात्मव नाथान। स्त्राप्तेन यनन, वृद् আইলে আবেদালি, তুই আমারে लिया गावि।

আবেদালি বলল, তর নাইলন যাওানব ভায়গাটা কোনখানে?

—ক্যান আমার পোলারা বাইচাা নাই।

—আছে, তর সবই আছে। কিন্তু কে-

অ তবে খোঁজ-খবর করে না। জ্ঞোটন আবেদালৈর এই দঃখজনক কথার কোন উত্তর দিল না। গতকাল আবেদালির কোন কাজ ছিল না। আজ সারাদিন হিন্দ্র পাড়া ঘ্রে ঘ্রে একটা কাজ সংগ্রহ করতে সারোন। এখন যুখ হছে কোথায়। সব কিছাতে টান পড়েছে। মাধে মাঝে আকাশে হত সব উড়োজাহাজ উড়ে যায়। কোথায় যায় কৈ জানে। কান্ত নেই ত থৈ ডাজ। আবেদালি, গোর সরকারের ছনের চালে तरुन इन लोगरा निसाइ। या भिन्द-সামানা যা কিছু। সে প্রসার কথা বলেনি। আবেদানি সারাটা দিন কার্ড করেছে-যেহত কামলার সংখ্যা প্রচুব এবং ম্সেকমান পাড়াতে ব্ভি-বোজগার কথ যার গর্ আছে সে দুধ বেচে একবেলা ভাত অনা বেলা মিল্টি আল, দেশ্ধ খাচ্ছে। আবেদালির गत् तर, क्रांम तर, ग्रंध, गटत आहि। গতর বেচে প্যশ্ত প্রসা হচ্ছে না। সারা-দিন থাট্নির পর গৌর সরকারের সংগ্র প্রসা নিয়ে কচসা হয়ে গেল। কুণসিত গাল निरंत हरन अस्मर्क आरवनीन।

আবেদালির বিবি জালালি তথনও পেট মেঝেতে রেখে পড়ে আছে। সারাদিন কিছ পেটে পড়েন। জব্দর আসমানদির চরে গান শ্নতে গেছে।

सामानि लिए माहित्व स्तर्थरे यनन,

আবেদালি কোন উত্তর করল না। সে পাইল্লান! তার পাশ থেকে ছোট প্রটালটা ঢিল মেরে মাঝতে ছাড়ে দিল। সামনে জোটনের হর। ছারের ঝাঁপ বংখ। জাকালি প্রতিলিতী দেখতে পেরেই ভাড়াতাড়ি উঠে বসল। এবং দাঁড়িয়ে খোলা কাপড়ের গাঁট যেব ्भएं गढ करत वीधन। অনামনশ্ৰ হ্বার জনা হ'কা নিয়ে বসল। আর জালালি খনাপাতা উঠোনে ঠেলে ঘোলা জাল পাতিল হাড়ি খল-খল করে ধ্যুক্ত গোলা।

আবেদালি কডক্ষণ হ'কা খাছিল টেব পায়নি। সৈ দেখল উনানের ওপালে ববে জালালি হাঁড়িতে চাল দিছে। ওর খান্টো কাপড়৷ দু হটির ভিতর দিয়ে পেটের খানিকটা অংশ দেখা যাছে। শালি মাণির, বড় পেট ভাসাইয়া রাখনের অভ্যাস। শরীর দেয় না আর। তব, এই ভাসানো পেট আবেদ্যালকে কেমন লোভী করে তুলাছ। আবেদালি বেশীক্ষণ বিবিশ্ব এভাবে কসে ্যক্তে দেখলে কখনও কখনও কলাইর ন্ত্ৰি অথবা একটা ফাঁকা মাঠ দেখতে পাষ। সে ফেব নিজেকে অনামনঙ্ক করার জনা বলল, জব্বইরা গ্যাল কোনখানে? কাইল খাইকা দাখিতাছি না।

कामानि आविपानित मूर्ण वृष्धि थवाड अवर्ष यान। प्र वनल अवरहेता श्लार বিবির গান শ্নতে গাছে। কাঠের হাতা দিয়ে ভাতের চালটা নেড়ে দেবার সময় জালালি বলল-গ্নাই বিবিদ্ধ গান শ্নতে আছার-তা ইসছা হয়।

এড অভাবের ভিতরও আবেদালন হাসি পাছে। এত দুঃখের আবেদালি বলল-পানিতে নদী নালা ভাইসা যাউক, তখন তরে লইয়া পানিতে ভাইসা যাম,।

কথাই য়েন জালালির এইসব আবেদালের ছাড়পত। মাঠে নামার অথবা চাষ করার ছাড়পত্র।

আবেদালির দিদি জোটন দাওয়ায় বসে সব শ্নভিল। এত স্থের কথা সে সহা করতে পার্যছল না। সে সন্তপ্ৰে ঝাপটা আনও টেনে চুপচাপ বৰ্মে शाक्त। त्वान कम सिर्हे--मार्थ, जालना শরীরে। আর চুলের গোড়া থেকে চিমটি কেটে কেট উকুন খ জছিল। আৰ জালালিক এত স্থেব কথা শ্লেই বেন চুলের গোড়া থেকে একটা উকুনকে ধরে एक्साउ भारता कालेल मृद्ध जनम প্রতিশোধর স্প্রা–মাগ্দার গাছের নিচে



মনজ্বের মুখ ভেসে উঠল। উকুনটাকে দু
নথের ভিতর রেথে থাপের ফাঁকে উ'ক
দিতেই দেখল, উঠোনের অনা পাশে
আবেদালি। জালালিকে সে সাপেট মেন বাঘ
ঘাড় কামড়ে অথবা থাবার ভিতর শিকার
নিমে পালালে;। জালালি লভার মত দু
পারের ফাঁকে কুলে আছে। গুলো উড়ে এসে
নাপটা মারল—উঠোন অপ্নরার হুরে ওঠার
মরের ভিতর আবেদালি কি করছে শিকার
নিমে দেখতে পেল না। সে রাগে দুঃথে
এবার মাঠের ভিতর নেমে ধ্লোর বড়ে
ভূবে গেল।

চৈর মাস। স্ভরাং রোদে খাঁ-খাঁ করছে মাঠ। প্রকুরগ্রেলাতে জল নেই। একমার সোনালি বালির নদীর চরে পাতলা চাদরের মত তথনও জল নেমে যাছে। মসজিদের কুয়োতে জল নেই। গ্রামের দৃঃখী মান্ষেরা অনেকদ্র হে'টে গিয়ে জল আনছে। সোনালি বালিব নদী'ত হড়। তুবছে না। নমস্দ্রপাড়ার মেয়ে-বৌরা সার বে'ধে জল আনতে যাচেছ। ওরা থেড়া দিয়ে জল তুলচে কলসিতে। টাবার প্রকৃরে, সরকারদের প্রেকুরে ঘোলা জল। গরা নেমে নেমে জল একেবারে সব্জ রঙ হয়ে গেছে। বড় দ্বেসময় এখন। সে বের হবার মুখে কলসি নিয়ে বের হল। সোনালি বালির নদী থেকে এক ঘড়া জল এনে হাজি সাহেবের বাড়িতে উঠে ষাবে। বড়ে। হাজি সাহেবের জন্য এত দৃঃখ করে জল বয়ে আনলে কিছু তেলকড়ি মিলতে পারে-পয়সা না হোক, এক কড়ি ধান। সে নেমেই प्रथम भारते काता स्थम इ. एवं इ. एवं शास्त्र । একদল লোক থাঁ-খাঁ রোদের ভিতর দিরে পালাছে। ওদের মাথায় বোধহয় ওলাওঠার দেবী। বিশ্বাসপাড়াতে ওলাওঠা লেগেছে। সে এতদ্র থেকে মান্ষগালোকে স্প্ট চিনতে পারছে না।

মাঠে পরেই জোটনের মনে হল— জার্লাল এখন উদোম গায়ে ঘরের ভিতব। উননে ভাত সেম্ধ হচ্ছে। পাতা, খেড় অথবা লডাপাডায় আগনে ধরে গেলে আগন্ন লাগতে কভক্ষণ! নদীর দিকে হেখটে যাবার সমর জোটনের এমন সব দৃশ্য মনে পড়-ছিল। চৈত মাসে আগনুন যেন চালে বাঁশে লেগেই থাকে। ভোটনের মন ভাল ছিল না সে সেজনা দুত হটিছে। সকলেই জল নিরে ঘরে ফিরছে, তাকেও তাড়াভাড়ি ফিরতে হবে। গ্রামে গ্রামে ওলাওঠা মহা-মারীর মত। যেসব লোকরা রোদের ভিতব পালাচ্ছিল তারা রমণ জোটনের নিকটবতী হছে। একেবারে সামনা-সামনি। জ্ঞোটন ভাড়াতাড়ি পাশে কলসি রেখে হাঁট, গেডে বসে পড়ল। গাগার পিঠে ওলাওঠা দেবী ्यात्क्रमः। भाषात्र करत्र मान्द्रसत्ता छाटकत्र वाणि বাজাতে বাজাতে নিয়ে বাজে। জ্লোটন ওদের পিছন পিছন বেশিদ্র গেল না। সড়কের ধারে সব মান্দার গাছ। মান্দার গাছে লীগের हेन्छाहात स्वत्वाहा स्वतिम सिहे बान्सात গাছে: হারার প্রামের দিকে উঠে গোল।

শংখ ফেলা শেখের সংগ্রা দেখা, কেলা বলল-জাটি পানি আনলি কার লাইগ্যা!

কিন্তু ফেলুর লক্ষণ ভাল না। সে
দাঁড়িয়ে থাকল সামনে। কেমন মুচ্চি
হাসছে। ওর একটা চোখ বসণেত গেছে।
মুখ কি ভন্নকর কুংসিত! গাড়িতে অর্ধেকটা
মুখ ঢেকে থাকে এখন। হাড়ুড়ু খেলার রস
মরে গেছে। গতরে তেমন শান্ত নেই ব্রি।
তব, চোখটা ভন্নকরভাবে কেবল জনলছে।
ফেলু মুচ্চিক হেসে বলল ছুণ্টি ভর ফ্রির
সাব তবে আর আইল না।

— কি করতে কন তবে! জোটন ফের থ্যু ফেলল।

ফেল্ এবার আনা কথা বলল। কারণ জোটনোন ম্থ দেখে ধরতে পারছে এইসব ঝোপ জণ্গলের ভিতর দাঁড়িয়ে থাকাটা সে পছন্দ করছে না। সে এবার খুব ভাল মান্ধের মত বলল, মান্ধগ্লাইন মাথায় কৈরা কি লইয়া ধাইতেছেন!

— গুলাওঠা দেবীরে কইয়া যাইডাছে।
— মাথাটা ভাইঙা দিলে কামন হয়?

জোটন এবাবেও দাঁত শক্ত করে বলতে
চাইল যেন. তর মাখাটা ভাঙম নিবংশা।
তাথচ মুখে কোন শব্দ করল না। লোকটার
কানা সকলের ভর ভর। কার মাখা কথন
নেবে, হাসতে হাসতে হাণে করে মাখা
কাটতে ফেলুর মত ওল্ডাদ আর নেই।
মান্বটাকে কেউ ঘটার না। মেন ঘাটালেই
সে রাতের অংশকারে বিশামিলা রহসালে
রহিম বলে কোরবানির খাসির মত গালা
ছিছে দেবে। কোরবানির দিনে মান্বেটা
আরও ভয়ণকর। স্ভয়াব জেটন শভ
ভাড়াভাড়ি সম্ভব এই ঝোল ক্লালের
ভিতর থেকে বের হরে আসতে চাইল।

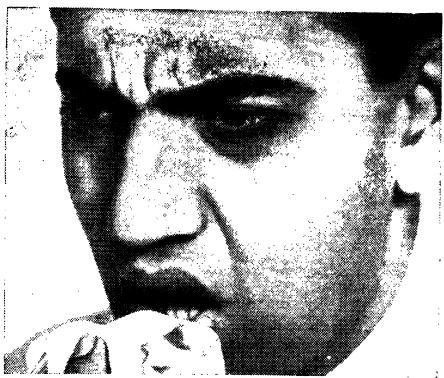
ফেল্ দেখল চৈতের শেষ রোদ বাঁশগাছের মাথায়। সামস্থান্দিন ভার দলবল
নিরে অনেকদ্র এগিয়ে গৈছে। এখন
সামনের মাঠ ফাঁকা। লভানে ঝোপ
আর শ্যাওড়া গাছের জপাল, আর
জগালের ফাঁকে ওরা দ্রুল। একট্ ফার্ডনাট করার মত মুখ করে সামনে খ্বল,
ভারপর ফিস-ফিস করে বলল, দিম্ মাকি
একটা গ্বাতা।

জোটন এবার মরিয়া হরে বলল, তর ওলাওঠা হইবরে নিবৈংশা। পথ ছাড়, না হইলে চিংকার দিয়া। বলা কেই কওলা নেই, এখন একটা হঠাং ঘটনার জন্য জোটন প্রকৃত ছিল না। ফেল্ হাসতে হাসতে কলল, রাগ করস ক্যানা তর লগে ইট্ মসকরা করলাম। ভারপর চারিদিকে চেরে হাসতে হাসতে বলল, শীতলা ঠাইরেনের ভর আমারে দেখাইস না জোটন। কসত আইজ রাইতে মাথাটা লইয়া আইতে পারি।

সামস্কুদ্দিন দলবল নিয়ে সংগ্র

বাছে। লাগের সভা হবে। শহর খেকে মোর্লাভ সাব আসবেন। স্তরাং ফেল্কে নেতা গোছের মান্ধের মত লাগছে। প্রনে খোপকাটা ল্বিগ। গায়ে হাত কাটা কালো গোল। আর গলাতে গামছা মাফলারের মত व'श्। त्र ब्लापेनरक श्रथ एक फिल। ওরা অনেকদ্র এগিয়ে গেছে। ওদের ধরতে হবে। সে আল ভেঙে হণ্ডদণ্ড হয়ে ছুটছে। মাঠ থেকে ওলাওঠা দেবীও গ্রান্মর ভিতর অদ্শা। তখন ধোঁয়ার মত এক কু-ডলী গ্রাম মাঠ পার হয়ে উপরের দিকে উঠে যাচ্ছে। সে যা ভাবভিল তাই। জন নেই নদী নালাতে। মাঠ শুকনো, পাতা শ্কনো। আরু সারাদিন রোদে পাতার ছাউনি তেতে থাকে, পাট কাঠির বেভা তেতে থাকে। জোটন কাঁথের কলাস নিয়ে দুত ছুটছে। সে দেখল পাশের গ্রাম থেকেও মান্ষেরা ছুটে আসছে। যারা সোনালি বালির নদীতে খাবার জল আন্তে গিয়েছিল তারা প্যশ্তি দুঃসময়ে আগ্নের উপর সব জল ঢেলে দিল।

কিন্তু এই আগনে, আগনের ১৯৩ আগন্ন বাতাসের সংগ্র মিলে-মিশে অশিক্ষিত এবং অপট্ন হাতের গড়া দব গ্হবাস ছাই করে দিতে থাকল। জোটনের ঘরটা প্রড়ে যান্ডে। আবেদালির ঘরটা সকলের আগে প্রভৃছে। আবেদালি জালালির অগোছালো শরীরটা সেই আগের মত সাপ্টে ধরে রেখেছে। নতুবা ছ**্**টে গিয়ে আগ্নে ঝাঁপ দিতে পারে। ওর কাঁথা, বালিশ মাদ্র কলাইকরা থালা, সানকি সব গেল। প্রভ়ে যাচ্ছে। ঠাসঠাস করে বাঁশ ফাটছে, হাড়ি-পাতিলের শব্দ হচ্ছে। আগন্ন গ্রামময় ছড়িয়ে পড়ছে। স্ত্রাং কাঁচা বাঁশ অথবা কলাগাছ এবং কাদা জল সবই প্রয়োজনীয়। চারিদিকে বীভংস সব দৃশা। যাদের কাঁথা বালিশ আছে ভারা কাঁথা বালিশ মাঠে এনে *েলল*। জালালি তথ্ন আমগাছের িজ বসে কপাল থাপড়াচ্ছে। প**্**বের বাড়ির নরেন দাস একটা দানিয়ে এসেছে। যে সব ঘরে আগনে লাগেনি, এবার লেগে ষাবে— হল্কা বের হয়ে লাশ্বা হয়ে যাছে, চাল থেকে চালে আগ্মন লাফিন্নে পড়ছে, সেই সব চাল কেটে দিছে। হর আলগা করে দিছে। বেন আগুন আর ছড়াতে না পারে। মান্ধেরা স্ব হ্মাড় খেয়ে পড়েছে, আগ্ন নেভানোর জনা। কুয়োর জল ফর্রেরেম গেছে। হাজি সাহেবের প্রেকুরে যে তলানি-ট্রকুছিল তাও নিংশেষ। মনজ্রদের প্রেক্তর শর্থ কাদা মাটি। এখন লোকে কোদাল মেরে কাদা-মাটি চালে ছ' ডুছে। তখন দুরে ওলাওঠা দেবীর সামনে ঢাক বাৰ্ছছিল, ঢোল বাৰ্ছছিল। বিশ্বাসপাড়াতে হরিপদ বিশ্বাস হিক্কা তুলে যারা গেল। সাইকেল চালিয়ে গোপাল ভারার ছ্টছে বাড়ি বাড়ি টাকার জন্য, র্গী দেখার চন্য। সে বেতে বেতে আগন্ন দেখে এইসব অশিকিত লোকদের গাল দিল। ফি বছর হামেশাই কোন না কোন দৃঃখী গ্রামে এমন হক্ষে। হাতুড়ে বাদা গোপাল ভাতারের এখন পোরাবারো। রুগী কামিরে অর্থ, গরীব



দলি-কাশিতে শরীর হর্বল হরে পড়ে -- আর পাচরকম রোগে ধরে 📝

স্থাস্থ্য ও শক্তির জেন্য ওয়াটারবেরিজ কম্পাউশু

নৰ্দি-কাশি চলে শরীয়ের রোগ- নিরোধক শক্তি কমে বার, শরীর চুর্বল হয়ে পড়েও অক্টান্ত বোগে আক্রান্ত হওয়ার আশংকা থাকে। নিয়মিত ওয়াটারবেরিজ কম্পাউও থান। ওরাটারবেরিজ রেড লেবেল-এ ররেছে কভিপর শক্তিনায়ক উপকর্ম বা হারানো কর্মশক্তি ফিরিয়ে আনে, জিলে বাড়ার, শরীয়ে রোগ- প্রতিরোধ ক্ষমতা গড়ে তোলে। এতে 'ক্রিয়ানোটি' ও 'গুরাকল' থাকার সহি-কাশির উপশ্য হয়। নেই কড়েই গুরাটারবেরিজ রেড লেবেল আশ্যাকে সূত্-স্বল রাখবে।

ওমাটারবেরিজ কচপাউত্ত -সবচেয়ে নির্ভরযোগ্য টনিক

श्वानीय मायार्टे जब छेरक्डे छेरणाम्न ।



জ্যাকদের ব্রুসময়ে অর্থ দিয়ে স্ফুদ। আলের উপর গোপাল ভান্তার এখন দাঁড়িয়ে দাঁড়িয়ে ভিং-ভিং বেল বাজাচ্ছে। বেন বলছে, কে আছ এস, টাকা নিয়ে বাও, অব্যুধ নিয়ে বাও। অর্থ দিয়ে স্ফ্রদ দেবে, শোধ করবে। ট

খড়ম পারে শচীন্দ্রনাথও ছুটে এনেছিল। জোটন, আবেদালি এবং গ্রামের অন্য
সকল সান্দ্রনার জন্য ওকে খিলে দাড়াল।
শচীন্দ্রনাথ সকলের মুখ দেখলেন। সকলে
এখন আবেদালি এবং জালালিকে দোখারোপ করতে শচীন্দ্রনাথ বললেন, কপালা।

সায়স্থিনের দলটা অনেক রাতে সন্তা দের করে ফিরে এল। গুরুণ থারে খ্রে সকলকে সাল্থনা দিতে থাকল। আগ্রান নেভানোর চেটায় বড় বড় বাঁলের লাঠি অথবা কাদামাটি নিক্ষেপ করে বখন ব্রল—কোন উপার নেই, সব জনলে যাবে—তখন গুরা মসজিদের দিকে চলে গেল। মসজিদ্টা এখন দাউ দাউ করে

চেথের উপর গোটা গ্রামটা প্রুড়ে বাছে। বিশ্বাসপাড়াতে এখনও ওলাওঠা দেবীর অর্চনা হছে। মাঠে সব চাবের জমিতে পোড়া কাখা পেতে বে বার ভস্ম থেকে তালে আনা ধন-সম্পত্তি আগলাছে। আগনে ওদের মুখ স্পন্ট দেখা বাছিল।

আগ্ন পড়ে এল এবং এক ঠান্ডা ঠান্ডা ভাব—জোটন শোকে আকুল হতে থাকল। ঘন অন্ধকার চারিদিকে। পেকে থেকে ধেণয়া উঠছে। সে অন্ধকারের <mark>ভিতর পোড়া ভঙ্ম ধন-সম্পত্তির আ</mark>শায় চুপি চুপি হাজিসাহেবের গোলাবাড়িতে উঠে এল। स्म नाकिस्त नाकिस्त द्र गोविन । स्म ঘুরেও গেল কতকটা পথ! পোড়া পোড়া গম্ধ। আশেপাশে সব দঃখী মান্ষদের হা-হ্তাশের শব্দ ভেসে আসছে। অধ্বারে ফোটন পরিচিত কল্ঠ পেয়ে বলল, ফুফা আমার ঘরটা পাল। ভালই হইছে। যাম **গিয়া বেদিকে চোখ যায়।** ঘরটার লাইগা বড় মারা হইত। ফকির সাব আর ব্রিঝ আইল না। এও বলার ইচ্ছা। যখন এল না তখন তার কার আশায় সে এখানে বসে থাকবে। পরিচিত মান্ষটা অন্ধকারে বসে টের পেল क्लांग्रेन अत्नक कर्ष्ण अभन कथा वलहा।

পরিচিত মান্যটি বলল, আবেদালির আফ্র দ্ফেরে নাই!

জোটন এবার ফিরে দ'ড়াল। বলল, কারে কি ক্যান কন। প্রথম মান্য। দিন নাই বাইত নাই থাদ্ থাম্ করে, কিম্চু তুই মাইরামান্য হইরা আফ্র দুফ্র দাথলি না। উদাম কইরা গারে গভরে পানি ঢাকলি।

জ্ঞাটন আরু দাঁড়াল না। সে বক্তে
বজ্ঞতে অধ্বন্ধরে হালিসাহেরের গোলাবাড়িতে চুকে গেল। বড় বড় গোলা সব
ভঙ্গ্ম হরে গোভ। ধান পোড়া মুসুরি
পোড়া গণ্ধ উঠাত। কোথাও থেকে এই
দুক্তসময়ে এবটা ব্যাপ্ত রূপ রূপ করে উঠল।

জোটন আগুনের ভিতর খোঁচা মারল
একটা। না কিছ্ বের হছে না। অগধকারের
ভিতর কিছ্ ছাইচাপা আগুন শুখু কতকটা
কলসে উঠে ফের নিভে গেল। সেই আগুনে
কোটনের মুখ পোরাতির মুখের মত—
লোভি এবং পেট সর্বন্দ্র চেহারা। সেই
আগানুনে জোটন অগধকারে পথ দিনে নিলা।
তখন ঢাকের বাজনা, ঢোলের বাজনা
ওলাওঠা দেবীর সামনে। তখন ছলিসাহেব
ভার তিন বিবির কোলে ঠাাং রেখে কপাল
চাপড়াকেন আর হাজিসাহেবের তিন বেটার
তিন বিবি, মাঠের মধ্যে চহা জমির উপর
বিছানা পেতে ওও পাতার মত অপেকা
করছে। বেন এটা ভালই হল। দিরে খুরে

লোটনের মনে হল এই অংশকারে সে
একা নয়। জন্য অনেকে যেন হাতে কাঠি
নিরে পা টিপে টিপে আগনেরে ভিতর

ঢুকে খেণচা মারছে। দ্র থেকে মনে হল
থর হান্তি সাহেবের একটা ঘর তথনও
জ্বলেনি। অথবা আর জ্বলবে না। সে
লাফিমে লাফিরে এগোল। সে খরের ভিতর
গতকাল অনেকগ্লো পাট দেখেছিল।
লোটনের পরান এখন ভাদুমাসের পানির
মত টল-টল করছে। আর তখন লোটনেব
পারের শা্ল অংশকার থেকে কে যেন
বলল, কেডা?

—আমি...আমি... ...
কোটনের মনে হল অধ্বকারে আর একটা মান্ত যেন তম্ন-তম্ন করে কি থাকছে।

জোটন বলল, তুমি কেডা? জোটনের মনে হল ফেল্ফেখ। সে অন্ধকারে সম্পত্তি চুরি করতে এসেছে। অথবা মাইজলা বিবির স্নে পীরিত তার। হাজি সাহেবের মাইজলা বিবিও এই রাতের অ-ধকারে যখন কেউ কোথাও সকলে মাঠে জেগে নেই, গেছে, কিছা ফেলে গেছে এই নাম করে ফিরে এলে ফেল্ল শেখ চুগি-চুগি চিনে ফেলবে। কার টের পাবার কথা! ফেল**্**সেই এক জনালা নিবারণের জনা, কি যে এক জনালা, উজানে যেতে, হাজি সাহেব ভোলা অঞ্চলের পাশে কোন এক সাগরের কুল থেকে এই মাইজলা বিবিরে তুলে এনেছিল। তখন সংশাছিল ফেলু। ফেলু ফুস্লে-ফাসলে টাকার লোভ দেখিয়ে হাজি সাহেবের तोकाয় এনে তুলেছিল মাইজলা বিবিকে। তখন হাজি সাহেব হাজি নন, তখন ফেল্র যৌবন কত বড়, ফেল্র কত নামডাক--জোয়ান মরদ ফেল্ফ পরিত করার অছিলা খ',জছিল মাইজলা বিবির সনে। বোধ হয় এখনও সংগোপনে গানটা গায় মাইজলা বিবি। যখন কলিম্বিদ সাহেব হজ করতে গেলেন এবং যখন হাজি হয়ে ফিরে এলেন ত্থন মাইজলা বিবির সেই গান গলার। একা আতাবেড়ার পাশে বঙ্গে-বসে গাইত। ঘাটে ফেল্বসে থাকত। সে ওদের তথন বড় দৌকার মাঝি-কার কারবারে ভাকে হাটে-বাজারে বেতে হয়, সওদা করে আনতে -হয়। তার মাইজলা বিবির মনে পীরিত, রুপারস করার উছিলাতে ঘাটের মাঝি হরে

সে বসে থাকত। কিন্তু কলিম্বলি হল করে अत्म नवदे रहेत (शहर शनः। तम यनमः মিঞা তোমার এই আছিল মনে। তারপর হাজি সাহেব ঘাট খেকে তাড়িয়ে দিল रम्म (क। त्म कर्वकात कथा! त्मरे स्थरक ফেল, আর হাজি সাহেবের বাড়ি পারে না। মাঝে মাঝে মাইজলা বৈতে বিবির মুখ ওর পরানে দরিয়ার বান ডেকে আনে। তথন সে একা একা প্রায় পাগল ঠাকুরের সামিল। সে গোপাটে অথবা অন্ধকার রাতে চুপি-চুপি অন্বথের নিচে নেমে আসে। ঝোপ-জপালে উব, হরে বসে থাকে। আতাবেড়ার পালে কথন উর্ণক দেবে মুখটা। বিবি আল্ল, আজকাল হাজি সাহেবের বাড়িতে আসে-যায়। ছোট বিবির স্লো আমার খাব ভাব। সেই বিবি ওকে ल-किट्य-इतिरय एउल मात्र, जान मार. মাস কলাইর বড়ি দ্যায়। আল, বলে ছোট বিবি দ্যায় -- কিল্ড জোটনের মন বলে সব ঘাইজলা বিবির কাজ। মাইজলা বিবির সনে পর্তিরত বড় ফেল্র।

জোটন বোঝে সব। আহা দেখায় ছেটে ' বিবির সংশ্য তার বড় ভাব — স্থী স্থী গলায় দড়ি ওলো স্থী ভাব।

আর ফেল্র যখনই ভাবের কথা মনে হয় তথন আর এক মৃহ্ত দেরী করতে পারে না। সে এই অন্ধকারে আগন্নের ভিতর মাইজলা বিবির মুখ মন শরীর দেখার বাসনাতে **বসে আছে।** চারিদিকে হল্লা—কে কোথায় ছটুছে—কৈ কোথায় আছে কে জানে। এই ত সময়। স্তরাং সে এখানে বসে বিবির উঠে আসাব তপ্রেক্ষায়— কি যাদ্য বিবির চোখে আর কি যাদ্য আছে এই মনের ভিতরে। এই মন কি যেন চাং সব সময়। ফেলু কি যেন চায় সব সময়। তার ঘরে যুবতী বিবি আলা, ফেলার বয়স দ্টে কুড়ির উপরে হয়ে গেছে—তব 💴 টা কি যেন চায় এত অভাব-অনটনেল ১তরঙ ভিতরটাতে কি পেতে কেবল ইসছা ইসছা করে। কিসে যে সুখ—এই আল্লুর জন্য সে কি কাশ্ডটা না করেছে! আলতাফ সাহেবের গলাটা দে হ্যাঁৎ করে কেটে ফেলেছে। পাট থেতের ভিতর আলতাফ সাহেব বাছ-পাট কেমন কাটা হয়েছে দেখতে এসেছিল। ব্যুড়া আলতাফ সাহেবের শেষ পক্ষের বিহিকে সৈ উদের পার্বণে পীরের দরগায় দেখে প্রায় পাগলের মত—িক করে, কি করে! কি করবে ফেল, ভেবে উঠতে পার**ল** না। তখন ফেল্বর যৌবনকাল যায়-যায়। সে তক্সাটের ফেল্। সত্রাং সে ঈদের আর এক পার্বণে মেমান সেক্তে চলে গেল আলতাফ সাহেবের বাড়ি। ওকে সে পাটের বাবসা করতে বলল— য্যান ফেল্ কত বড় মহাজন। সে দাড়িতে আতর মাখত তখন, ভাল তফন কিনে আনত বাব্র হাট থেকে। মন খ্ৰ থাকলেই ম্যাডেল ঝোলাভ গলায়।

ব্জো আলতাফ খেলার বড় উৎসাহদাতা ছিল। ফেল্র সংশু কত জান প্রচান, কত বড় খেলুড়ে ফেল্ফু তার বাড়ি মেমান হরে अल्लाहर-सिर्वि एकोन्ना एक्यूकः। एक्टनासाक रक्ट्रिक रत कारण अवरण अक्रिन ए किस्त দিল। ফেল্বে শারিতের হলাকলা সব ক্রম कारता। योक नेदाकं करणता कृष्टित वर्ष আলভাবের জােই বিবিকে কাছিমের মত युक्त बार्क लयान धकाना। जामु लयन मिर दरका शक्तिक स्माजनार्तन सक-सक করছে। আর আহরে তথন মনে পর্ভাছল তার ছোট বরসের কথা। বালিকা আম. रथना रमयरण रगरह--रा-पु-पु रथना। रकन् এসেছে খেলতে পরাপরদির হাটে। সেদিন হাটবার ছিল না, তব্ কি লোক কি লোক! দ্ৰ-দশ মাইলের ভিতর কোনো ববো পরেষ ভার সেদিন বরে ছিল না। মেলার মত প্রাঞ্জাণ-প্রাপাণে নিশান উডছিল — যান ইদ-ग्राज्य । रक्ष्य राष्ट्र रमनात्र शाम हिन। रथना भिर राज राजन्त अत्र-अत्रकात। আম্ব, বালিকা আম্ব সেদিনই কেমন ফেলুর ভाলবাসার পড়ে গেল। সেই ফেল, এসেছে মেমান সেজে—অলতাফ সাহেবের বিবি নিজেকেই বেন শ্ধাল, এই আছিল তর মনে। তারপর সময় ব্বেখ হাাঁৎ করে গলাটা কেটে ফেলল ফেল্। পাটক্ষেতের ভিতর হ্যাৎ করে কেটে ফেলল গলার নালিটা। হোমন সে কোরবানের দিন দশটা-পাঁচটা কোর-বানিতে চাকু চালায়, বিশমিলা রহমানে রহিম বলে, তেমনি সে বিশমিলা রহমানে রহিম বলে হাং করে নালিটা আলভাফ সাহেবের কেটে ফেলল। বেদিন সে বিবিকে বোরখা পরিয়ে নিয়ে আসে, সেদিন সে হাং করে গলা কেটে ফেলেছে কথাটা প্রথম कानान विविद्ध । आहा भारत वनन, এই আছিল তর মনে! বলে সেই বিস্তীণ মাঠের ভিতর হা-হা করে হেসে উঠেছিল। আম্তে দেখলে মনেই হবে না ফেল্র জন্য সে এত বড় হত্যাকান্ড হজম করে গেছে।

অংশকারে ফেল্ ও-পাশের একটা ছারাম্তি দেখছিল আর ভাবছিল। ব্রিঝ চুপিচুপি মাইজলা বিবি এসে গেছে। কিন্তু এখন
এ কি—কার গলা, জোটন মনে হর। সে ধরা
পড়ে যাবে, চুরি করতে এসেছে এই
আগ্নের ভঙ্গা ধন-সম্পত্তি থেকে — ভার
ভর ধরে গেল।

জোটন তিরস্কারের ভশ্গিতে বলল, নাম কৈতে পার না মিঞা। আমি, কেডা!

—আমি মতিউর। ফেল্ব বেন অংধকারে দাঁড়িরে মিখ্যা কথা বলল।

-তোমাগ আর মান্বপ্লান কৈ?

—আগনে দেইখ্যা পালাইছে। —তুমি এখানে কি করতাছ?

—সানকিডা খ'লেডাছি।
—হাজি সাহেব জানে না বে, বৈঠকখানা ঘরডা প্রেইড়া বার নাই!

—আগনে বড় ভর হাজি সাহেবর' লোকটা দরে থেকেই কথা বলছে। অগ্য-কারকে এখন ওদের সকলেরই ভর। গলাটা শশ্ট দর। গলাটা কথনও ফ্রির সাহেবের মত, কখনও মনে হাজে কেল্ই রতিউরের গলার কথা বলুছে। তারুপর মনে হল जन्मकार्य स्माको किया कृष्टित रगातस्य। अवर रगरतरे अक रगोछ।

ভোটন বলতে চাইল-ধর-ধর। কিন্তু বলতে পারল না। লে নিজেও একটা নানাকি খুলতে এসেছে অথবা কিন্তু চাল, পোড়া ধান হলে মন্দ হর না, পোড়া কাঁথা হলে মন্দ হর না—সে এখন বা পেল তাই নিরে আম গাহের নিচে জড় করল। জালালি সব লোটনের হরে সংরক্ষণ করছে। সে অন্থকার থেকে খুলে-পেতে আনতে আর জালালিকে বিরে আবার অন্থকারে খুলতে চলে বাজে।

তখন কালা ভেলে - আস্থিল বিশ্বাস-পাড়া থেকে। তথন ওলাওঠা দেবীর সামনে আর্রাত হচ্ছিল। ওলাওঠাতে আবার হরত কেউ মারা গেল। জোটন অন্ধকারে দাঁড়িয়ে সানকি, ভাঙা পাতিল অথবা পেতলের বদনা খাজতে-খাজতে সেই কামা শানছে, রাত তখন অনেক। মাঠের ভিতর দিরে কারা বেন নদীর পারের দিকে ছ্টছে আর গাছের নিচে ইতস্তত বে সব লফ্ জ্বল-ছিল—বাতাসে সব এক-দুই করে নিভে याटकः। मार्ट्य अक्छा माद्य शादितकन करनारः। হ্যারিকেনটা হাজি সাহেবের। মহামারী লাগলে যেমন এক অশরীরী বাতাসে ভেসে বেড়ার তেমনি এই ধরংসের অন্ধকারে জোটন ভেসে বেড়াতে লাগল। জোটন অন্ধকারে পা টিপে-টিপে হটিছে। হাজি সাহেব মাঠে এখন কেবল সোভান আল্লা, সোভান আল্লা বলে চে'চামেচি করছে। তিনি ঘুমোতে পারছেন না। মাঠের ভিতর তিনি তাঁর ছোট বিবিকে নিয়ে আছেন কে কখন কি করে যাবে—ভরে হুম আসছিল না। হাদের ভাঙা ঘর শুধু গেছে ছে'ড়া হোগলা বিছিয়ে ঘুম যাকেছ তারা। সকাল হলেই হিন্দ্ পাড়াতে রুজি-রোজগারের জন্য উঠে যেতে হবে এবং হিন্দ্র পাড়াতেই সব বাঁশ কাঠ। সব শনের জমি ওদের। ওদের থেকে চেয়ে আনলে ঘর এবং ঘর বানাতে-বানাতে খোর বর্ষা এসে যাবে। জোটন এ-সমর নিজের ঘরের কথা ভাবল, বর্ষার কথা ভাবল, ফেল্লু সময়-অসময় গ্ৰা দিতে চার, মদজারের মত চোখ-মাখ পরম ছিল না, চালের লাখান গড়বলি আছিল না-দিম তরে একদিন একটা গভো—এইসব ভেবে জোটন নিজের দঃখকে জোড়াতালি দিয়ে পোড়া ভাঙা ঘরের ভিতর থেকে আর একটা বদনা টেনে বের করতেই এক দেড়ি। रत्र जामानित भार्म अस्य वत्रम, मार्थ कि

জালাল ব্রিরে-ফিরিরে বদনাটি দেখল। কুপির আলোতে এত বড় একটা আলত পেতলের বদনা—সে কিছ্তেই নিজের চোখকে বিশ্বাস করতে পারছিল না। আবেদালি ঘাড় কাত করে তাকিরে আছে। সে হাত দিয়ে প্রায় বেন ছবুরে দেখল। — এক বদনা পানি, পানি আদ ডক-তক কইরা খাই। বদনা দেখেই ওর কেমন জল তেন্টা পেরে গোল। (क्यांनेन कल जानांक रणहाँ। क्यांनांक क्लल, क्यांच नार्वे। नीन क्रिक्ट विनार नाम !

ভোটন কল আনতে বেছে। আনেপালে কেউ নেই। আবেদালৈ ভাড়াভাছি
বলে পড়ল। ডারসর এক বাশ্লেড নিজে দেল
গালের কাছে। বলল, তর এক সাহসঃ ছই
বাইবি চুরি করতে। পরে নে গামাহা দিরে
মুখ মুখল। বামে গরুরে মুখ চুলকাছে।
সে আমগাছের গাঁড়িতে হেলাম নিজে
বস্তেই দেখল ভোটন জালের জন্য উঠে
বাজে। অনের বড় অভাব। নে আশ্বানর
এখন জল চুরি করতে বাজে।

জাগালি কিছুকণ চুপ করে থাকা। তারপর কছপের মত গলা লাকা করে দিলা। তারপর চিংকার করে ধলার, তর লাইগাইত নিশ্বংশা আগ্নে লাগলরে।

আন্দোলি চিংকারে ভার পেন্ধে গোল।
আমার লাইগ্যা বর্ণির।

এবার জালালি খল-খল করে উঠল, আমি সকলরে না কইছি ত কইলাম কি!

—কি কইবি?

—কম্ তাইন আমারে বরে জাের কইরা ধইরা নিছে।

—বরে নিছি, ভাল করছি। ভূই নাড়া দিরা রানতে-রানতে প্যাট ভাসাইলি ক্যান?

—তার লাইগ্যা ব্রিখ সমন্ত্র-অসমর নাই।
গোটা ঘটনাটাই আগন্তনের ফড।
আবেদালি এবার আরও ধন হরে বসল।
আমার ব্রিখ ইসছা হর না ঠান্ডা পানিডে
গোসল করি।

ফ্কিরসাব নিম্পাছ্টার নিচে বসলে। গাছটাতে একটা কাক উড়ছে না। সত্তরাং ফকিরসাব এ-গাঁরের **ঘরগ্রেলা দেখলেন।** বৈশাথ মাস শেষ হচ্ছে। এখন গাছে-গাছে আমের ভালো ফলন। ভিনি ভার মালা-তাবিজের ভিতর থেকে একটা বড় পটেলি বের করলেন। আরু গোলেতর ওজন দেখবার সময় মনে হল এবার গ্রামে কোরবানির সংখ্যা কমে গেছে। তিনি হাত পুনে বলতে পারছেন যেন সংখ্যায় কত তারা, বর্কার ঈলে এত কম কোরবানি **এই প্রথম আর এই** बनारे काकगर्नि गान्ड भर्म-भरम रामा হচ্ছিল। কাকগ্রিল উড়ে-উড়ে হররান হরে গোছে অথচ किছ्दे मिनट मा। उदा छट्ड-উড়ে এদিক-ওদিক চ**লে গেল। স্বভরাং** তিনি কিণ্ডিং নিশ্চিন্ত বোধ করছেন। কোথাও প্টলির ভিতর পান-স্পারি আছে অথবা চুনের কোটা খেকে চুন নিয়ে ঠোটে লাগাবার সময়ই সুখী পারনার মত অনেক দিন আগের কসমের কথা মনে পড়ে **লেজ**।

সামনে সড়ক। দুরে কেখাও আর্ক হিন্দুদের মেলা আছে। ফকিরসাব মনে করতে পারলেন হরত এদিনেই মরাপাড়া পার হলে ঘোড়দৌড়ের মাঠে মর্নশুমের শেব ঘোড়দৌড় হবে। একবার ঘোড়দৌড়ের মাঠে গেলে হর। কিন্তু অনেক মিন পর এদিকে আসার কসমের কথা মনে পড়ে দেল। সড়কের পথে গলার বলটা বাজিরে বোড়া शास्त्र । विश्वामभाष्यकं कान्द्र विश्वास्त्रव रक्षाक्र-नाम जनस्मा भीत्। रक्षाकारीय जन्हः कारणा कुठकुरत। कशारण माना जात्र रमामरीण कृष्टिक शामा भूगद्धाः द्याद्धात्र शमार्छ। ह्याद्वारो लक्क बद्ध न्ट्र हटन रनम । शीरनम रम्ब क्रम-यर्फ च-क्रम्टलन क्रिय, माफि-वर हकरम मिर्बर्स । बार्ल स्थापे स्थापे भारतेत बाका राष्ट्रास म्बद्ध। देवन्डच मार्जद ক্ষিত্র স্বাধনা মাথায় ভাষীরা পাটের ক্ষিতে निकास निकास जाता बराह्या गाएव मा। शारीन श्रा-अहे शाम शाहेबिन। केटहर धरा स्वाम श्री माकत्ना कावता दक्रते श्रीक्षा श्रीम माथा मराज धारकत अवर जानायत गार आद्भाव देखा काश्वा द्वान बहुत दुम्ब, मृह्य रुष्य-अन्म अवाय क्य, शरीय मान्द्रवता আগভাত লাকপাতা থেয়ে বাঁচৰে। বিশেষ করে এই সব প্রীম্মের দিনে ক্ষচি পাট পান্ডার লাক অথবা শ**্রে**লনি এক সামকি ভাতের जाला मण्य नह जावर मध्य कासवासिय लालक क्रिक्नामारनव भागगात निर्देश मध्य करव ताथा चारल, बधम स्टान एक्लिंग रंगस यस्टामन मन्यान জোটন বিবিকে ধরে নিজে গোলেজর মতই দ্রুতা ছবে ভখন স্মৃত্তক ধরে সামনের প্রামটার দিকে হাটা বাক।

মুশকিলাসানের আধারে তেল নেই।
দর্গার ছইরের নিচে রস্কুন গোটা ভিজান
আছে। তার তেল বড় উল্জাক আলো দের।
আর এ-অঞ্চল তিনি রাতে মুশকিলাসানের
লক্ষ্য নিরে ব্রতে পার্বেন না। দর্গার
গিরে লক্ষ্যে আবার তেল ভরতে হবে।
ফকির সাহেবেব ইচ্ছা ছিল রস্কুন গোটার
তেলে মুশকিলাসানের লম্ফ জ্বালাবেন এবং
ছোটদের চোধে স্মা টেনে আপতানা
লাহেবের করণাতে রস্পোর কাছে দোরা,
জোটনের জন্য দোরা ভিখ মেগে নিবেন।
ফিছাই ছল মা।

जनिक्रमत कृता (थाक क्षेत्रभा कन पूर्ण পা মালেন ফকির্লাব। ভারপর পতিহল এক ক্ষোড়া কাপড়ের জাতো, বার ফাকে **ক্ষমুপের পলার মডো বুজো আঙ্**লটা হবর ছুরে জালে এবং জুতোর ভিতর পা গলাবার সমর একটা ইন্টিকুট্ম পাৰি ডেকে উঠলে ক্ষিত্রলার ভাষলেন, বিদনটা ভালই যাবে। দোৰে আৰেদালির বাজিতে ওঠার মাধেই ভাউতে থাক্দেন, মুস্বিলাশান স্ব আসান ক্ষােল এবং এইসহ বলচ্ছে-বলক্তে উচোনে উঠেই তিনি ব্রুতে পার্লেন প্রবের দিনে **জো**টন বাজি নাই। তিনি যেন এই উটোন धवर स्वाल-क्रभागरक छेरणमा करत वगरणम ভাইনায়ে ভাইকা দিলে ভাল হয়। অনেক দুর থাইকা আইছি, আধার কবে আমা ঠিক সাই। ভাই ভাবছি আরে দিল হাছা। তার-**लब कारता डे**लंड खतमा मा करता मिरकार्ट হেছে ব্লিশ বাদের উপর বিভিন্নে রদে পঞ্জেন। খ্য সভপতে মালা-ভাবিত খালে टभावेका-भद्येकि भारम दाश्रहमस्। यसा टकास निहरू जाकारम्बन मा। एका जर्र डिक्ट कहा আছে, উকিল বলা আছে, মৌলভি সাবকে मना चाटब जात नद्-ठास्ट्र टे लाहा। कचित- ন্যৰ এবার গুলা খেকাৰি দিলে চোথ ভুলতেই বেখালেন, জালালি খোপ-জাপাল তেওে জোলাকৈ থবল নিতে ছাজি লাহেবের বাড়ির লিকে হটেছে।

স্থান্তর সাব ছেড়া তহনের উপর বসে আর্হলে সমন্তর হাছে সেই অসপটে মুখ দেখতে পেলেন। জোটন আসছে। আগের লাভ সম্বর্ধা কোন কলে। কাফরসাব জোটন নিজের বছে। কোটন নিজের করে। তিনি নানারক্ষ কলে পাল্ছন লা। তিনি নানারক্ষ কলে পাল্ছন লা। তিনি নানারক্ষ কলে কলে কথে দেখছে। ভিজা শনের মত চুল-কভ কথে খোলা বাঁধা। আর তিনি মুখ না ভূলেও যেন ধরতে পার্ছলেন জোটন রেড়ার ফাঁকে ফ্কিরসাবের মুখ হাত-পা অথবা সব অবয়ব দেখতে দেখতে তথ্যর

ফ্রান্সন্সার গাছ-গাছালিকে উদ্দেশ্য কল্পে কেন বল্লেন, তাড়াতাড়ি করতে হয়।

যরের ভিতর জোটন সরমে মরে যাচ্ছিল। ঘরের ভিতর ফিস্-ফিস শব্দ, আবেদালিরে আইতে দ্যান।

ফকিরসাৰ উঠোন থেকে বললেন, উকিল দ্যাখতে হয়।

জোটন এবার বেন গলায় শক্তি পাচেছ। ভাইবেন না। আবেদালি থাইরা সব ঠিঞ কইরা দিব।

ফাকিবসাম সভিত কোরবানি গোণ্ডের উপর হাত রেখে বললেন, ব্যালায় বালায় রওনা হইতে হয়। না হইলে গোণ্ড পইচা যাইব। বলে ফাকিবসাব গোণ্ডের প্রটলিটা নাকের কাছে এনে শর্কি বললেন, গোণ্ডে মশলা ন্ন দিতে আপনের হাত কেমন?

এবার ভোটন বরের ভিতর খিল-খিল করে ছেলে উঠল। বলল, বরে নেওরার আগে একবার পরথ কইনা দ্যাখতে সাধ বার ব্যক্তি!

—দ্যাথতে ইচ্ছা যায়, কিস্তু ব্যালা যে পইরা আইতাছে।

रकार्येन गण्ड भागिष्टन। शा्थ कुलकुड़ा করে হ'ছির ভিতর থেকে পান স্থানি বের করে মুখে প্রেল। ভারপর ঝোপের ফ'াকে ৰখন দেখল কালালি আসছে, হখন म्बल मिलारहेब जन्मब नारहत माथा खारक रताम मिट्रा बारक धर राधन कार्यमा विमारक মাঠ থেকে, মাধার চারা পাট কাছের আটি, খাসের বোঝা আর আবেদালি প্রবেল্ন দিলেও ঠাকুর বাড়ির কাছেল গেছে—ফেরার সময় এখন, হয়ত সে ফিরছে, তথ্য জোটন ঠেটি মাংগা করে বাব্র হাটের জুরে শাজি পরে **म्यान वास्त्र वास्त्र शत्क्रवारत मार्क्स** इमारह। दम अवग्रे दंगांगे स्वरक बाकू अदन ৰাকে মেখে দিল। পাডলা হাড় দিয়ে भारतीतम्ब मृक्टना खावता कमनीत कारत চাইছে অধৰা মনে হল, ক'ক্লসাবের ব্ভা राष्ट्र अवानी शामव श्रारा-आवत लाय, মিকা করনে এবং ক্রীবা মাঠের মতো উলোগ গালে রংগরস করনে। দীঘাদিনের প্রভাগা— আলার মাশ্রুল তুলতে এই ব্যাসেও গাঁহর কম ক্রোগল করনে মা।

বেলার গোলার আবেদালি এলা। বেলার বেলার করণীয় কাজটাকু আবেদালৈ করে ফোলাল। দু-চারজন গাঁহার লোক করা হয়েছে উঠোনে। আবেদালি সকলকে পান ডারেক খাঞ্জনল। আবিদালি সকলকে পান ডারেক খাঞ্জনল। হাজিলাকেবের ছোট কিনি একটা ক্রেডা বেরকা নিজ ক্রেট্রকে। আগ্রনের ক্রন্তম থেকে যে পেতাখের ব্যন্তাটা তলে এনেভিল, ফার্কবসারের পালে সেটা রেখে দিল ক্রেটন।

দুটো মেটে কলসী এ'নছিল জোটন लाक्लवरम्बद्ध वाद्य श्वारक-याबाद्ध ममय स्कारन जानानित्क राज्य कलमी अबर घरतत माधाना জিনিস্পত্র ভার্থাৎ প্রাইন্মের ঠদনে সংগ্রহ করা बाता भाषा, भारे काठि अबर महस्ये अज्ञानन्य দিয়ে দিসা তার ছে'ফা তফনে জোটন তার ভাঙা আশি: ঠাকর কাজির বৌদের পরিতার , 'ভাঙা কাঠের চির্নী, একটা সান্ধি " আর সম্বলের মধ্যে কিছা ভাতের শেউই বাধা প্টেলি হাতে তুলে নেবার সময়ই অন্যান্য-বারের মত আবেদালির হাত ধরে কে'দে ফেলল। এবার নিয়ে চার্বার নিকা এবং এবার নিয়ে চারবার জোট্ন এই উঠোন ছেড়ে বাপের ভিটা ছেড়ে গিঞা মানজের -সংগ্রে যোদার মা**ন্**র ভূলতে চলে গেছে। ফবিব্ৰদাৰ পটেলা পটেলি যন্ত্য নিয়ে বাধছে। পিতলৈর বদনাটা হাতে নিয়ে দ্বার ঘ্রিয়ে ফিরিয়ে দেখে বদনা থেকে পানি চুষে থেলেন। তারপর বাকি পানিটুকু ফেলে দিয়ে-বা-হাতে পেতলের বদনা, कार्य खालाबालि जुनः छात शहर प्रामीक-লাশান, মুখে আলার নাম অথবা রস্লের নাম নিত্তে নিতে শোপ ্র নেয়ে याट्यन। क्षापेन এक हाएव এकपे। भागेन নিয়ে আবেদালির ঘরে ঢ্কে বেরখাটা মাথার উপর তুলে দিল। আবেদালিকে **উट**ण्णभा करत बुनक, जानानित धाहेब्र-व्य ধরই-অ না ভাই। জালালিকে উদ্দেশ্য করে बलन, मधरा भक मृहेग्रा बाहेम्मा माह्या।

এসন কথা বসার সময়ই জোটনের চোথ থেকে জল পড়াছল। কত দীর্দ্দান পরে ফের এই নিকা এবং এদিনে সে তার মোট তেরটি সম্তানের কথা মনে করতে পরকা। যেন তাদের জনাই চোথের জল। কোথাও তার দীর্ঘদিন ঠাই হর্ম না। জোটন চতুর্ঘন্যার স্বামারি ঘর করতে থাকে এবং আল্লার মাশ্রনের জনা এই বারা। যদি কোন কারণে আল্লার দ্রবার শেব হয়ে বিরে থাকে তবে সে ফের ফিরে আসবে এবং সোনালি বালির নদাতি জগবা বিলে পালকে তুলে, বাড়ি ঘাড়া চিড়া কুটে, পরবে পরবে সেরক্ষ মান্তের কালে করে দুবেশ স্থাক তার দ্বন

ठष्टेशारमञ्जू ठम्प्रनाथ

नहींन मस

সম্প্রতি প্র' পাকিস্ভানে অবস্থিত চল্পনাথ পাহাড় ও মলিবাদি সামারক ঘটিতে পরিগত করার চাণ্ডলাকর দ্বাসংবাদ সরকারী মহলে স্বীকৃত হরেছে। এই নিবন্ধে চল্পনাথ সম্পর্কে তথ্যাদি প্রকাশত হল।

চন্দ্রনাথধাম বা সীতাকুণ্ড প্রধানতঃ শিবতীর্থ। চন্দ্রনাথ সর্বভারতীয় তীর্থস্থান র্পে স্পরিচিত। অবিভক্ত ভারতে এবং দেশবিভাগের পরেও পাকিস্তানী রেলওয়ের সাঁতাকুন্ড নামক অন্যতম শ্রেষ্ঠ স্টেশনের অদ্রে প্রদিকে অন্পম প্রাকৃতিক দৃশ্য সমঁদ্বিত উচ্চ শৈলপ্রেণী। তারই স্বৈচিচ শ্রের নাম চন্দ্রশেখর, উচ্চতার প্রায় ১২০০ ফিট। এখানেই চল্পনাথ শিব্যালির বিরাজমান। সৃীতাকুণ্ড স্টেশন কলকাতা থেকে ২৫০ মাইল, চাঁদপরে থেকে লাকসাম জংশনের কিছু দ্রে এবং অপর্ণিকে **চটুল্রাম থেকে প্রা**য় ২৫ মাইল দুরে অর্বান্থত। এই পর্বতপ্রেণীর বিভিন্ন ন্তরে भाषद्वत शारत अवः न्यक सदल्त धाता वा প্রাতোরা একাধিক কুল্ড বা জলাশয়ের কাছে বহন তীর্থ রয়েছে : সীতাকুন্ড, ব্যাসকুন্ড, গরাকুড্ড, বির্পাক্ষ ও স্বর্জ্নাথ শিব-মন্দির, উনকোটী শিববাড়ী, পাতালপত্রী, সহস্রধারা, মন্দাকিনী, জগুলার মন্দির, ভৈরব মন্দির, বাড়বানল, সরস্বতী শিলা, म्हिनाथ, इत्रातिती, अन्नामाम्थी अर्क्षाछ। এই তীর্থাগর্কি সীতাকৃত (বা চন্দ্রনাথধাম) নামে জনপ্রসিদ্ধি লাভ করে এসেছে যুগ ব্য ধরে। সারা বর্ষব্যাপী প্রকৃতির এই প্রােগানে শতসহল্ল হিন্দ্ তীথ্যান্তী নরনারীর সমাবেশ হত। তার মধ্যে শ্রেষ্ঠতম "শিবরাত্রি মেলা" উপলক্ষে প্রতি বংসর ভারতবর্ষের চার্রাদক থেকে লক্ষাধিক বাতী ও দশকের সমাগম হয়ে থাকে। চন্দ্রনাথ শিব্যান্দির অভ্যুক্ত পাহাড়ের চ্ডায় অবস্থিত বলৈ শিবরারি প্রা. রতাদি সম্পান হয় অপেক্ষাকৃত পাহাড়ে অবস্থিত স্বরস্ভুনাথ মাল্পরে ক্রমদীশ্বর শিবলিপোর मन्भूरथ।

্ এই ঐতিহামর এবং অপ্রব অধ্যাস্থ মহিমামণিত তীর্থকেল সন্পর্কে ধানা বাহিনী কিংবদতী প্রচলিত আছে। অতি প্রচলিন প্রথাদি থেকে জানা বার স্দ্র্র তেতাব্লে প্রিরাম্বন্দ্র সীচাদেবী সহ এই প্রা পার্বত্য ক্ষান্ন পরিক্ষার এসেছিলেন। বেবী প্রাণ জনুসারে মহামন্নি ভার্রাব্য তার ঐশ্রারক পরিবলে পর্বত্যাতে বাভবাদিন মিল্লিড এক কৃত্ বা জলাশর স্থিতি করেন। সভী দিরোমনি সীতাদেবী

এই কুম্ভে অবগাহন করেছিলেন, কালক্তম উত্ত অঞ্চল সীতাকুন্ড নামে পরিচিতি লাভ করে। পরে এই সীতাকুন্ডের বিলোপ-সাধন হরে বার এবং লুণ্ড কুণ্ডের প্রের্ম্থার সংস্লান্ত কিছু কাহিনী স্বগীয় উমাচরণ মুখোপাধ্যার প্রণীত "চন্দ্রশেখর মহাত্যা" গ্রান্থে (আনুমানিক 2800 শকাব্দ) এবং স্বর্গত অধরলাল সেনের "The Shrines of Sitakund" দ্ভপ্রাপ্য প্রতকে বৰ্ণিত হয়েছে। তিপরের মহারাজন কৃক্ষমণিক্যের সম-সাময়িককালের প'ৃথি ইত্যাদিতেও এ সকল ব্<u>তা</u>েতের থেজি রয়েছে বলে জেনেছ। "Chittagong Distriel Records" সরকারী গ্রন্থেও চটুগ্রামের প্রথম ইংরেজ শাসক আগমন কাহিনী Camp at Sitta Coon" অধ্যায়ে বাণিত আছে।

সীতাকুন্ডের অন্যতম শ্রেষ্ঠ স্বয়স্ভ্নাথ শিবমন্দির সম্পর্কে রিপ্ররা রাজ্যের ইতিহাস "রাজমালা" গ্রন্থে বণিত হয়েছে জনৈক নরস্কর এক স্পবিত শিবশিলা আবিষ্কার করেন। তা থেকেই এক মনোরম শিবলিপা গড়ে ওঠে, কোমও মন্ব্য হস্তের কার্কম তাতে ছিল না। সুপ্রসিম্ধ লিপাুরা রাজ শ্রীশ্রীধন মাণিকা ছিলেন একাণ্ড শিবভত্ত। প্রথমে ইনি এই শিবমাতি আগরতলা রাজধানীতে স্থানাস্তরিত করার চেম্টা করেন। কিল্ড ভার উদ্যোগ বিফল হয়। তাঁরই নেত্ত সীতাকুণ্ডে স্বয়স্তুনাথ শিব্যস্তির নিম্তি হয় ১৪২৩ भकारकः (है: त्रन ১৫০১)। সেই थেকে শত শত বংসর ধরে শ্বয়ম্ভুনাথ মন্দিরে শ্ৰীশ্ৰীশিবচতুদ'শীৱত ও মেলা অনুষ্ঠিত হয়ে আসছে।

সীতাকুণ্ড ও চন্দ্রনাথধামের ঐতিহাময় মন্দিরাদি নিমানে ও বাতীসাধারণের স্থ-স্বিধা ব্যবস্থায় স্বাধীন চিপ্রা রাজগণের ঐকাশ্তিকতা এবং অবদান বিশেষ উল্লেখ-যোগা। মহারাজা গোবিন্দ মাণিক্যের অর্থ-সাহাব্যে উত্ত্ৰুণ্য শৈল্পিখরে চন্দ্রনাথ মন্দির নিমিত হয়েছিল। কিল্ডু ১৮৪৮ সনে বিধনংসী ঝঞ্চাবাত্যায় ঐ মন্দির ভণ্ন হয়ে হায়। অতঃপর প্রখ্যাত জমিদার ও বাবসায়ী রামস্বদর এর সংস্কার ও প্রনিমিশি করে দিয়েছিলেন। উনবিংশ শতকের শেষদিকে ২৪ পরগণা জেলার খড়দহ নিবাসী স্ত্রিসম্থ জমিদার রামহীর বিশ্বাস তীর পুণাবতী বৃদ্ধা মাত্দেবীর বাসনা প্রণের উर्म्मरमा प्रमानका प्रमार्भात् अर्रिटधार छना প্রায় জাকাপিক নৈরে রায়ে এ৮০টি কালাবের সিণ্ডি প্রস্তুত করে শিববালা পথ প্রশস্ত করে দিরেছিলেন। অতঃপর ২৪ পরগণার অপর এক নেতৃস্থানীর বাছি টাকীর ধর্মপ্রাণ জমিদার সূর্যকাশত রারচৌধ্রী উপরোধ প্রসতর সোপানাদি বহু অর্থ বার করে সংস্কার করিয়েছিলেন।

সীতাকুন্দ্র বার্রীরা এই তীর্থ পরিক্তমার এসে সাধারণত প্রথমে ব্যাসকুম্ভে স্নান ও তপণি কার্য সমাধা করে পাদর্যস্থ ভৈরব দর্শন করেন এবং আক্রয় বটব্রক প্রদক্ষিণ করে অন্যান্য তীর্থ মন্দির বিগ্রহাদির দিকে যান। অদ্রে ছোট এক পাহাড়ের চ্ডার ব্যাসাশ্রমে শংকর মঠ অবস্থিত। এই মঠে সাধ্য সম্মাসীর ধ্যানধারণার উপয**্ত** একাধিক পাহা প্রস্তৃত কর। হয়েছে পর্বত-গাত খোদিত করে। মঠের প্রতিষ্ঠাতা ছিলেন শ্রীমং স্বামী রক্ষানন্দ। প্রায় চালেশ বংসর আগে যথন বর্তমান লেখক সীভাকু-ভ লমণে যান, তখন উ**ত মঠাধ্যক শ্রী**মৎ নীলানন্দ সরুবতী যুব-অতিথিব ন্দকে তার আশাবাদপূর্ণ পরমঙ্গেছে আপ্যায়িত করেছিলেন। এই পর্বতে অবস্থান করে চন্দ্রনাধধামের চতুদিকের অন্পম প্রাকৃতিক সৌम्पर्य (पट्थ आश्रद्धा पिरनद्र श्रद्ध पिन श्र्यूर्थ হয়েছিলাম!

সীতাকুত তথা চন্দ্রনাথধামের তীর্থ সংস্কার এবং মান্দর পথাদির বিবিধ উলেয়ন প্রকলেপ উপরোক্ত ধর্মনিষ্ঠ ধনী জমিদার্গণ ছাড়া চটুগ্রামের জেলা শাসক, সীতাকুণ্ডের জননেতা হরকিলোর অধিকারী, ঢাকা ভাগ্যকুলের প্রনামধন্য রাজা শ্রীনাথ রার এবং তার ভাতবর্গ রাজা জানকীনাথ রায়, রায়বাহাদরে সীতানাথ রায় প্রমূখ অনেক পরিশ্রম ও অর্থসাহায়া করে গিয়েছেন। শেষের মহাপ্রাণররের বদানাতার সীতাকশেড বিশাুণ্ধ পানীয় জল সর্বরাহের ব্যবস্থাও भारन সীতাকুণ্ড হয়েছিল। 2420 মন্দির্ভাদ উল্লয়ন কমিটি সংগঠিত হলেছিল তদানীন্তন জেলা ম্যাজিনেট্রট লী সাহেবের J. H. Lea. I.C.S. ১৯৩৬ সালে সীতাকুন্ড মেলা কমিটির উদ্যোগে এবং চটুগ্রাম ইঞ্জিনীয়ারিং ও है लिक ब्रिक ना॰ नाहे कारत नवीशक क कि সেন মহাশয়ের বহুল প্রচেন্টার সীতাকুন্ড মেলা প্রাণ্যন থেকে স্বরম্ভুনাথ, ভৈরব 🐰 ও কালীর্মান্সর পর্যান্ত রাস্তাহাটে বৈদর্ভিক আলোর ব্যবস্থা করা হরেছিল। ভেলা मा जिल्ला है भिः शान्यत (A S. Hands, ভার উদেবাধন উৎসব সম্পল্ল করেছিলেন। **চটুগ্রামের মহ**বসা মা**লিস্টেট** গ^{ুল} গুল রায় তথন মেলা কমিটির সভাপতি ছিলেন।

রেলগাড়ীর সেই বিক্সপিতটির কথা মনে আছে নিশ্চর! — চোর জ্বোচোর পাকেটমার নিকটেই আছে। হ্যা আছে, শ্বা রেল-গাড়ীতে নর, পাকেবাটে সব জারগাতেই। আমাদের জীবন ও জ্যাবিকার পাশাপালি। নিকটেই আছে — অভএব সাবধান।



दक्ष पार्ध्य

শ্রুতেই নিরাবয়ব শ্নাতা। বৈশাখী शील्बन निर्माण निर्माण विकास्त्रात्मा आकान খেকে কামেরা টিলট ডাউন করে এই অভি-পরিচিত প্রোমো শহরটার উট্টাম, টেলিয়াফের তার বেয়ে সদ্য কিশোরীর দ্রণভরা মুখের মত ক্ষত বিক্ষত বাস্তায় এনে সামানা সময় স্থির হল। ক্যামেরার अन्य टक्कारमात्र मन्द्रम माध्या वाम्क्ताप्रत्य সেতার, বা স্ব্রোদ নর—মেটির কার্থানার बानाहेरत्तर मुद्दे गीरे, पाछाना बारमद क्टाँबा छक्त, प्रात्मत अकटणता ग्रेस हो। १, थात्कात-कारकात, टोला, ग्रांकिन, ट्रिल्लात গতিমর উল্লাস, পানের দোকানে দোকানী-ক্ষেতার সরব ঝগড়া ও আধ্যানক সংগীতের বিচিত্র চোলাই। 'বিবিধ ভারতী'। কলকাতার য়ে কোম একটা মোড় হতে পারে— উত্তৰ, দক্ষিণ, প্র বা পশ্চিম। মোড় ছেড়ে পলিতে চ্কতে হবে। ক্যামেরা প্যান কবে সরু ফালি গলিটার রোগা, মোটা, বে'টে, टसरफ, विवर्ग, कण्काम मन्भारमञ्जू वास्त्रीत সারিণ লো স্পন্ট করে তোলে। ক্লোজ সেমি ক্লোক ছেড়ে একবার লংশটে ব্যাক-গ্রাউল্ডে ধরা গড়ে রাস্তার ধারেই করপোরেশনের ক্রানের ফোরারা। অস্পত্ত কতক্সা,লো রেখা **চলে ফিরে বেড়াছে। এবার অনাবশা**ক विकास कर्रांडेक बाह्य स्त्रात्थत कर्ना এकींडे 'कर्म' हाल शासका।

এক লাকে গলির মাঝখানে আমর।
চলে একেছি। ফোরারটো একটা টিউকল'।
রেখাগুলো আফুডি পেরে জেগে উঠেছে।
ছাঁজি, কলসী, জগ, বালাডি, সাজিরে উব্দ্রুলের বসে বা দাঁজিরে নানা বরসী কওগালো মেরে-মুন্দ খগজে জাড়েছে। পালেই একটা লাকে উঠে গোছে একটা সর্ জ্বাখলার ভাঙা-ভোরা সিন্দি। জামেরা এই সিন্দির মুখেই মার্বিটিকে ব্রকা।

শীর্ণ দূটি পা (ক্রোজ নট)। আন্তে ভাতের কাষেরা টিলট আগ করতে ধরা পড়ে—একটা প্রেননো হে'ড়া ধ্িচ ল্লিগর

মত কোমরে জড়ানো খালি পা। হাড় পাজরা সব বেরিরে এসেছে। গালার মাথা দুটো বেন অনেক কথে বুক আরু মাথা একসকেপ ধরে রেখেছে। খাড়া নাকের পাশে কোর্রবয়া দুটি চোখা বরসের ছাতেলা জমে কালো হরে আছে। মানুবটি এক পলক ঐ টিউবওরেলের সামনে জমে ওঠা জটলাটার দিকে তাকিরে হতাশ ভাবে হাতের বালতিটা মাটিতে মামিরে রাখলেন। কাধের গামছাটা একবার কেশবিরল মাথার বুলিরে নিলেন। ভারেপর আবার বালতিটা তুলে নিরে দেতোলায় উঠতে লাগলেন সির্ণাড় ডেঙে

কাট করে একবারে দোভালার বামান্দার।
লব্বা টানা বারাল্দা। বা-ধারে পর পর
অনেকগ্রেলা হর। উল্টোদিকে দুটি হর
পিছু রাহাঘর বাগর্ম। মান্ষ্টি বারাল্দার
এলে দাঁড়ালেন। এক কোণে প্রোনাে
খবরের ফাগজ দিলি-বেতেল একজাড়া
লোডজ স্যাডেল ও তাম্পিমারা বিদ্যাসাগরী
চাঁটর পালে নামিরে রাথলেন বালতিটা।
নামন্নার আওয়াজ পেয়েই কেন পালাপালি
হর-দুটির কোন একটি থেকে অসুস্থ
বয়ুক্রা এক মহিলার গলা ভেসে এল ঃ কি
আলো স্থান করতে পারলে না?

দৃষ্ঠিতে শ্কুনো গামছটো মেলে দিতে দিতে হুবাব দিলেন মানুষ্টি সংক্ষেপে—না, বালী। তারপর প্রথম হুরটি ছেড়ে ছিতীর হুরটির ভেজানো দরজা ঠেলে ভেতরে চুকে বললেন—হা ভিড়। মাছি গুলাতে পালে কিনা সংক্ষেহ। আমি কি করে পারব?

সাধারণ বে কোন মধাবিত্ত মান্বের লোওরার ঘর। কাামেরা প্যান করে আন্তেত আন্তেত ঘর্মটির পরিচর পশত করে তোলে—এক ধারে তেলাচিটে রংগুরা একটা কাঠের আন্তামারীর মাধার কাপালপারের ছাই উপু হ'বে আছে। পালে খানকরেক ইটের ওপার দুটো লিটলের ট্রান্ড। লোহার পোর্যুর চেকে বলেছে বিগত বৌবন ভাকনার ফালর। পালেই একটা ছেলির।

টোবল। বহুদিনের আনতার বুলো জনে আছে আর্মাটার। একটা চিরুলী, গোটা করেক কটি আর একটা চুল বাবার কিন্তে পড়ে আছে টেবিলে। কলো চিরুলীটার গারে করেকটা কাঁচা-পাকা চুলের কটা এ চুলের কট থেকে মিল্ল করে খুব ক্লোকে পদা ক্ডে ভেসে ওঠে একরাশ আল্মালা, চুলের বোঝা। কনেরা টিলট ভাউন করে-একটা ছাপরখাটের বাজ্তে লেহের ভার এলিয়ে দিরে একটি দীশ কর্ণ ছুডাল মুখ তাকিয়ে রম্বেছে দ্রকার দিকে।

ঃ ভিড় বলে রেজাই নদি এই গ্রুস স্নান না কর তাহলে বে গ্রুবীর গ্রুম হরে শেষ পর্যস্ত থারাপ একটা ব্যামো াধিরে বসবে। তোমার এমনিতেই পিতে: থাড। রোজ রোজ...।

क्या करें। त्याव इत्यात आगारे प्रतका इत्याद प्राप्त करिया आकारी एक प्राप्त नेप्रत्य स्थानारमा भाकारी एक प्रति क्रिक्ट क्रिक्ट राज करिया मा मा प्रति क्रान आहे इत्याद अम्बिट्स सा भीकृताद राजाका करावित्स शाकरका मा। भीकृताद राजाका करावित्स शाकरका मा। भीकृताद

কল আন কি হবে সা। খাটে বসা
মান্বটির প্রতিটি কথাই কেন ইতালার
গড়া—কি করে ঠিক হবে। এক বছরের বাড়ী
ভাড়া বাকী। নিতিতা বে লোক ন্বেলা
লাসাক্ষে এক মাসের মধ্যে বাড়ী ভাড়া
লিতে না পারলে বাড় খরে তুলে লেবে, সে
ঠিক করে দেবে কল? তুলি জনার কি ভাব
বলো তো। অসংখে পড়ে আহি বলে তো
তার অন্ধ বা কালা হরে বাইনি। সবই
দ্নতে পাই, টের পাই। কাল সংখ্যবেলা
তোমার বাইরে ডেকে মিরে গিরে পাঁচুবাবরে
ছেলে সমীর কি বলেছে সব আনি জানি।

ভূমি ভাষান এসৰ নিয়ে কেন মিছিনিছি ভেবে মরছা কলো ভো বালী। বলতে
বলতে মানুষ্টি খাটে এলে স্চীর
বলেন। ভারপর সাল্ডনা দেওরার সূরেই
বলে চলেন—বাড়ীওরালারা ভিরকালই ওসব
কথা ভাড়াটেক শ্নিয়ে খাটে। কেন

ভোষাৰ মদে নেই সেবার বালাগিন্ধ চেলুসে কৈ ইয়েছিল ?

आमात नद मान जारह । त रहा द्वार তিন বুগ আগের কথা। সুনয় তথানা ছম্মান। বাড়ীর সকলের অমতে বিয়ে করলে बर्टन वावा मामा जवाई रोगारक मृत्र करत দিলেন আমান্য নিয়ে গিয়ে উঠলে নীরেন-বাব্ৰ বাড়ীতে। বলতে বলতে দোলাটে চোখদ,টি স্বংশ ভরে बहुर । প'ছিল-তিরিল বছর আগে ছারিয়ে যাওয়া **ংমাতিময় অতীত যেন চোথের সামনে** कौर्यन्य इति धर्छ। मन्ठाल क्वानद्वारक व्य मुक करत्रकांग्रे कवि यहाँ किर्टिट बिनिस्त वार् -ब.म्थ. माभ्याम विधन्न कनकाण। मिर्ग-হারা মান্ব একটা আল্লর খ'্জে ফিরছে। ভারই মাকে এরা দ্বানে সংসার পাতার আরোজনে মন্ত। বন্ধার বাড়ীতে দ্দিনও টি'**ক্ডে পারেনি।** রাসভারী গৃহক্ত'। ছেলের সব অনুরোধ, অগ্নাহ্য করে ওদের ত্রাড়িয়ে দেয়। ধার-ধোর করে। এক কামরার একটি মর ভাড়া নিয়ে ওবা উঠে আসে। ব্বকটি কুটুডিও পাড়ায় আসিস্টান্ট ডিরেকটার হিসেবে কাজ করার ফাকে ফাকে **গম্প লেখে। স্ত**ীকে শোনায়। শোনায় কথ**্**-দের। **ডিরেক্টর**, প্রোডিউসার, ডিস্ট্রি-বিউটরদের দরজার দরজায় ফাইল হাতে धारत रिकास। यीम किंछे भारत, यीम काराज পছলদ হয় এই আশার। একদিন সেই ম্বংন সাঁতা হয়ে ওঠে। শাদ্য কাগজের ব্রুক খেকে পদায় জীবনত হয়ে ওঠে ওর বিশ্বাসের অভিজ্ঞতার দলিলখানি। সেই সংগো সিনেমার হল জাড়ে কানফাটা হাত-তালি, সিটি; দশ আনার লক্ষ্মীদের হৃদ্য-জোড়া ভালোলাগা বয়ে আনে প্রতিফা অর্থ, যশ। ততদিনে হর আলো করে, বাণীর াকাল জন্তে এসেছে একরতি সন্ময়। কসবার বাড়ী ছেড়ে ওরা উঠে আসে বাল**ীগঞ্জ স্থো**লে।

হঠাৎ রাস্তার ক্রটলা থেকে একটা তীর চীৎকার হাউইরের মত উঠে এসে ওপের অতীত ধুরের মুহে দিয়ে ক্রান্ত বাস্তাবের মুখোমুখি করে দিল! সানুষ্টিও যেন ডতক্ষণে অনামনস্ক হয়ে ছিলেন। এবার কি একটা কর্ত্রী কথা মনে পড়তেই স্তার দিকে তাকিরে তাড়াভাড়ি ক্রিলাসা করেন— ভূমি টাাবলেটটা খেরেছ?

ক্ষান্ত হাসিতে দীর্ণ পাতলা মুখাটি
বড়ে উঠল—হাঁ, খেরেছি। কিন্তু ওবুখ্
থেতে আর ভাল লাগে না। তার চেরে যদি
আবাদ লেই বালীগঞ্জ শেলনের বাড়ীতে
ফিরে বেতে পারতাম; দেখতে আমার সব
অন্থ লেরে বেত। এই ব্বকাপা বরে বে
কোন সুক্ষ মানুবাই অস্কুম্ম হরে বাবে।

শাশত অন্তেজিত গলার অসক্ত দারির দিকে তাফিরে মান্রটি বলেন বেতে তো চাই, ক্লিডু যাই কি করে বলো? আর নেই কোনো। কি করে ঐ ব্যালী রাধ্ব ? বোলটা বছর যে বাড়ীতে, কাটালাম, যাঁত তিন মানের ভাড়া দিতে না পারার জন্য এক

নোটিশেই উঠিয়ে দিল। কেন ভাতো ভূমি জানা রাতদিন পরিপ্রম करत अव-अवधे ্ছবির সিনারিও লিখে বিরেছি শেমেণ্টের বেলার প্রাপ্যের সিক্তির সিক্তি পাইনি। কড লোকে কড টাকা দেবে বলে দেয়নি, মেরে দিয়েছে। তব্জাগে ব্রুস ছিল। মনে জোন ছিল। লোকে বলত আমি কলম ছেয়িলেই না-কি ছবি ছিট করে। গণ্ডা গণ্ডা স্পার হিট ছবির সিনারিও আমি লিখেছি। কিন্তু বহুস বাড়ার गर्मा गर्मा रहेत्व रामाम मा रकमम करत কখন বাতিলের দলে আমিও পড়ে গোছ। আগে বাড়ীর সামনে ভোর না ছভেই প্রোডিউসারের গাড়ীর ভিড করে। বেড। এখন আমিই ভাদের অ**ফিলে বাড়ীতে উ**ट्यमात्री करत राष्ट्राष्ट्र। स्व या मारा वरन তাতেই রাজী হই। **তব**্কা**জ জোটে** না। কাল জাটলেও টাকা মেলে মা। **আহার তো** কোন দাম নেই আজ। তাই কন্টাকটের কথা মুখ ফুটে বলতে পারি না। পারি না বলেই কাজ হয়ে গেলে মিছো আখবাস দিয়ে প্রোভিউসার পালার। আর আমি. আমি...। শেষের দিকে ইষং উত্তেজনায় গলা ভারী হয়ে আলে মানুষ্টির। প্রবন্ধনার বেদনায় চোখের পাভা ভির ভির করে কাঁপে (ফ্রোজ)। চোখ বেরে সর একটা জলের ধারা গালে গড়িয়ে আসে। কথা শৈব হয় না।

কামেরা আর একটি সর্ব জলের ধারা অন্সরণ করে সামানা ওপরে উঠতেই বাণীর মুখ। পদায় ধরা পড়ে আন্তে <u>স্বামীর</u> থেকে ₿ল্টো-আহেত ম্খ দিকের দেয়ালে এনে ওর চোখদ,টি ড্রেসিং-টেবিলের ঠিক মাধার স্থির হয়। ওপরেই কিশোর न्नरः प्रशामकर्ष् হাসছে। হাসিট্কুর বরস বাড়ে না। চির-দিনের জন্যই সনেয় ওদের চোখে ছবি হয়ে গেছে। ভাড়াভাড়ি ছবি থেকে চোখ সরিয়ে এনে আঁচলে জলের দাস মূহতে মূহতে প্রসংগটা চাপা দেওয়ার চেণ্টা করে বাণী— তুমি খাবে না?

র এখন থাক। এখুনি বিজ্ঞানান, এজে পড়বেন। উনি চলে গেলে গুজনে এজসালে বাবোপন।

উদ্বেশ্য ছাইছট করে বাবী—লৈ ছো অনেক বেলা হলে বাবে: ছুলি বাবং এপুনি বা হোক দু মনুটো খেলে নাও । বলতে গিলেই হঠাং কেন বাবলৈ কনে পড়ে পেল —আছেই বিজনবাব্র টাফা দেওবার কথা না ?

ग्रकत्ना भनात अवाद जात्म- वर्ग ।

হ দেয়য়ি টেডা বিছন্ত। অ' ছাজালের মধ্যে এক হাজার 'দরেছেন। বাজী আরো গাঁচ হাজার। বলেছেন আজ দেবেন হাজার-দরেক। আর সান্টিং শরের হলে বাজীটা মিটিয়ে দেবেন।

মার দ্' হাজার—হতাশার তৈতে পুতে বালী। কি হবে তাতে? এক ক্রের বাড়ী ভাড়া নিতেই তে। পনেরোশ' চলে থাবে। তিন থাসের মুদি বাকী। গারলা, কাজভ সব বাকী। পালের বাড়ীর নিলীমা পাবে দুশ'। হাতে তো কিছুই থাকবে না।

পাঞ্জাবীর ঝুল পাকটে হান্ত গলিয়ে একটা ফাউনটেন পেন বার করলেন মান্বটি। তারপর আলমারীর মাধার ভাই-করা ফাইলের শত্প থেকে একটা ভাইল টেনে নিয়ে পাতা ওলটাভে ওলটাভে वन(नभ-कि करांव वन? स्त्रात्त निष्ट्र विक्र বলার উপায় নেই। গল্প, চিত্রনাট্য ধরে 😻 হাজার দেবেন বলেছিলেন। কথা **ছিলু** মালে मारम भौतम' करत निरंत बार्यम्। इस्त मान দ্বেলা ওর বাড়ী আর আছিলে ছটিছোটি করে মাত্র এক হাজার আগায় করতে পেরেছি। কিছ, বলতে গেলেই বলেন, মধ্যা এখনো বোগাড় হয়নি: জাপনি আমার দাদার মত। একটা হেল্প ক্রান। शास कीएरत बरत अमन करत चन्नामत करतन বে, কিছা বলজেও পারি मा।

ছোট পরিবারই সুখা পরিবার

স্কৃত্ব জন্মনিরক্তণের একমাত্র সহারক

काः मनन नाना'न-

गांत्रवात्र गांत्रकन्नन।

निवर्यमध्य : वामक मादिरक्षी, ८७ १७, करनक मीठि, कर्ना-५३

কিন্তু দা বললে চলবে কেন—গলার স্বরেই টের পাওরা বার বাণী কতথানি উর্ত্তেজিত। বিজনবাব, লাখ লাখ টাকার মার্গিক। তোমার মত একটা বুড়ো মান্বকে দিন নেই রাত নেই খাটিরে মার্হেন। এক-বারের জারগার দশবার লিখিবে নিজেন একই সিন। এত খাট্নীর কি কোন দামই নেই? না না, তা হর না। তুমি বলবে পাওনাগাররা আমাদের ছি'ড়ে খাছে, টাকাকটো দিরে দিন।

জবাবে কি একটা কথা মধ্যমূদন বলতে যাক্সিলেন ঠিক এমনি সমর তলার গাড়ী থামার আওয়াজ শোনা গেল। সজোরে পাভীর একটা বরজা বংধ হল। মধ্সেদেন রাস্তার খারের জানালা দিয়ে উপক মেরে वाण्ड इर्ज छेर्जन-विक्रभवाद, احتراف গেছেন। আমি পাশের ঘরে যাছি। তুমি শুরে একট্র বিল্লাম নাও বাণী। কিছু मन्नकात राम एकरका। यनाय यभारक रंभन, ফাইল হাতে নিয়ে বাস্তভাবে ধর ছেড়ে বেরিলো বান মধ্স্দেন। ততক্ষণে সিণড় থেকে আওরাজ ভেসে আসে...মধ্দা. মধ্যা া শোওয়ার অরের পালার ওপর **সশব্দে ভাকটা এসে আছড়ে পড়ে।** (ফেড षाडेंगे)।

১৯৭० **সালে আপ**নার ভাগ্য

বে-কোন একটি ফ'লের নাম বিশব্ধ। আপনার ঠিকানাসহ একটি পোষ্টকার্ড আমাদের কাঠে পাঠান। আগামী বারমাসে



আপনার ভাগোর বহুতারিত বিবরণ আমরা আপনাকে পাঠাইব ইহাডে পাইবেন বাবসাকে গাভ - লোকসাক চাকরিতে উর্মাদ বদলী ভগ্ন

বিবাচ ও স্থাস্মানির বিবাহণ—আব থাজিবে দাট গ্রেস প্রকাপ ইটডে আন্তরজার নির্দেশ । একবান দার্শীলা করিলেই ব্যক্তিক Pt. DEV DUTT SHASTRI Raj Jyotshi (AWC) P 8..86

পরের দৃশ্য। ফেড ইন। ফোরগ্রাউণ্ডে मध्जूपन, वाक है, कारमता। वाक्याक्टक খাকী রংয়ের টেরিলিন সাটে-পরা ঝক্ঝকে চেহারার বছর-চাল্লেকের একটি মান্ব। সিণ্ড ভাঙতে ভাঙতে ভদুগোক বখন উঠে আস্ছিলেন, তখনই শোন্ম ব্যক্তিল—কতদিন মধ্যা আপনাকে বলেছি এ-বাসাটা এবার পাল্টান। দিনেদ্বপরুরে যদি অমাবস্যা হয়ে থাকে, তাহলে মান্যজ্ঞন উঠবে কি করে? বলতে বলতে বারাদ্দায় এসে দাঁড়ালেন। পোথরাজ আর চুনীর আংটি-পরা কর্সা গোটা গোটা আঙ্বলের ফাঁকে আলতো করে বসানো ফিলটার-টিপ্ড সিগারেটের ডগায় একটা কলকে টান জ্বড়ে খ্ব আম্তরিক গলায় বজলেন-এ-বাড়ী আপনি ছেড়ে দিন। একবার ছোট ভাইকে অনুমতি দিন, এখনি একটা ভাল বাসা ঠিক করে দিচ্ছি। আপনার মত লোকের এরকম জায়গায় পড়ে থাকা ভাল দেখায় না। কি বলনে (प्रथव भाकि?

উত্তরে কোন জবাব না দিয়ে শ্বং একট্ ম্লান হাসলেন মধ্যুদ্ন। বসার ঘরের শিকল খংলৈ পালাদ্টো হাট করে দিয়ে বললেন—আসন্ন, ভেতরে আসন্ন বিজনবাব্।

মিক্স করে ঘরের ছেতরে চলে আসে ক্যামেরা। হাড় বার করা সোফা, কানাভাঙা কাঁচের টেবিল, দোমড়ানো জোনপরেরী পেতলের আসট্টে, ঝংলেডার্ড মোরাদাবাদী ফ;লদানী—সবই এলোমেলো, হড়ানো-ছिটানো। বিজনবাব্র হা-হা করে প্রাণ-থোলা হাসি, চেণ্চিয়ে কথা বলায় সারাটা ঘর যেন চুন, বালি, সিমেন্টের খনে-পড়া পলেম্তারার ভার নিয়ে ঠক ঠক করে কাঁপে -- इत्य **(भन** भागा। সইউই সারা। कुमाর-সাহেব সত্তর চেয়েছিলেন, পণ্ডাশেই রাজী করিয়েছি। এসব ফর্টো মাস্তানের কাস্তানী দেখলে গা রি-রি করে। তব্ভিসাট্র-বিউশনের জন্য সব সহ্য করতে হয়। ওদের আবার নামী স্টার না হলে চলে না। আমি র্বাল, আরে বাপ**্র গল**পই যদি না থাকে, সিনারিও বদি অচল হয়, ভাহলে হাজার গণ্ডা কুমারসাহেব বা মিসেস বোসকে নাও না কেন বই চলবে না। তা গরীবের কথা কে লোনে বলনে। উল্টে তাড়া লাগার। বাক্ষে সেসব কথা, আমি এখন টপ্-গীরারে, আপুনি শ্লীন সিগনয়ল দিলেই—।

আমি তো গ্রীন সিগন্যাল দিরেই রেখেছি বিজনবাব—ছোড়া সোফাটার হাড়-পাঁজরার চেপ্তে বসে ঈবং বিরম্ভভাবেই জবাব দেন মধ্নুদন।

ঃ হাাঁ হাাঁ সে তো আপনি দিরেছেনই দাদা। তবে কিনা, হিরোর রিকোরেশেট ঐ শেবের অংশট্রকু।

় ভাও রেভি। এই নিন। যা আপনা-দের হিরো চেরেছেন তাই করে দিরেছি। এই নিরে লাস্ট সিকোরেস্টা সাতবার পালটে দিলাম। ফাইল খালে কতগালো ক্লিপে গাঁখা আলগা কাগক এগিরে দেন মধ্সদেন।

কাগজের গোছাটা টেনে দিয়ে চটপট পাতা ওল্টাতে ওল্টাতে বিজন বলেন : আমেলা কি একটা। হিরোর বিদি এই চাই. তো হিরোইনের চাই ঠিক তার উল্টোটা। মাঝখান থেকে খেটে খেটে হালাক হই আমরা। ওদের বিকোরেস্ট না রাখলে ওরা চটে, আর রাখলে চটেন আপনারা।

বোবা ফেসে বিজনের কথাগ্লো শোনে মধ্সদেন। ক্যানেরা সেমি-ক্রোজ। একটা নতুন সিগারেট ধরাতে ধরাতে গলায় মধ্যেলে দেন বিজন : কিসস্ বোঝে না দাদা ক্রিসন্ না। পাবলিকে অজ্ঞাদ। সেই রোয়াবেই বলে কিনা এ-সিন চলাই না, এখানে একট্ লপচালপচি চালাক এসব হ্যানা-ত্যানা নানা কথা। সেসব আপনাকে কলতেও লক্ষা হর।

এই শেষ ভারালগেই মধ্স্দন নাড়া থেরে বান। ছিরোর বকলমে প্রোডিউসার আবার কোন নভুন করমারেস করে বসেন ব্রি। অমারিক ভদ্রতার মুখোসের আড়ালে নিডানভুন পাঁচ-পরভার চলে এই লাইনে। ভাই প্রসংগটা চাপা দিরে আসল কথাটাই খ্র ইডস্তত করে পাড়েন মধ্স্দ্ধ— আজ কিছু টাকার বড় দরকার বিজ্ঞাবার। আপনি বলেছিলেন দ্ব' হাজার দেবেন।

আশত একখান খান ইণ্ট বেন কেউ
ছ'ড়েড় থৈবেছে মাখার। ঠোটের ডগার
সিলারেটটা বুলে পড়ে। করেক সেকেন্ড
মার। ভার মধ্যেই নিজেকে সামলে নেন
প্রোভিউসার—টাকা ছাড়া কি জগং চলে
নান। কুটোটা পর্যন্ত কেউ নাড়তে চার
না। এই দেখন না, ভিসম্বিভিশনের



बारमणा प्रकारनात बना किमानम कराणा-द्वमानम प्राप्ताद कराणाव दिन्द्रण प्राप्त मृथ्य-य्य ब्रिजिटस बार्यान केमान क्यास गाखार त्यहें। त्यासम्पर्य क्यासम्पर्य दिशा राज द्वामी स्टारका गाम केमोम-कर्मानाको ध्वको राराम क्या नगास्म । नगास राजाल ध्वको व्याप्त त्या प्राप्त नगास जातम्ब ध्वक्यस त्याप्त त्या थाक। जामीन काम जातमान करातम स्था थाक। जामीन काम करातम स्था थाक। जामीन काम करातम स्था थाक। जामीन काम करातम स्था थाक। जामीन कामान जातम, जानम स्थानम द्वारस्य भव जानमा जात।

আড়চোখে মধ্সদেনের মুখটা পড়বার চেন্টা করলেন বিজন। মনে হল কথাগালো বুংসই হরনি। তাই আক'ত উদ্দেশে হেজে গিয়ে জিল্ঞাসা করলেন—সাদা বৌদির শ্রমীর কেমন?

ভাল নেই বিজনবাব। মধুস্দন যথন
ভাল না থাকার কারণস্পো বলে চলেইন
ঠিক ভার ওপরেই কাট করে বারান্দার চলে
আসে ক্যামের। দেরালের গারে হেলান
দিরে দাঁড়িরে আছে বালা। কান পেতে
শ্নছে সেই কর্ণ আত্নাদ—আজ তিমদিন ধরে হাটের বন্দার ছট্মট ক্রছে
আপনার বৌদি। ভাঙার ভাকতে পারিন।
প্রোনো প্রেসজিপসন দেখিরে দোকান
ধেকে ধারে গোটাক্ষেক ট্যাবলেট এসেছি।
জানি না ওর পক্ষে ভা ওব্ধ মা বিষ।
আজ আপনি আমার ক্ছিহ্ অন্ডত দিন
বিজনবাহ্।

শরীরের সমসত কট অগ্রাহ্য করেও
যে বিছানা ছেড়ে বারান্দার উঠে এসেছিল,
শ্বামীর ভিখারীর দশা দেখে সে বেন
আছুনের মত সমসত চেতানা হারাতে থাকে।
আঁচল খসে পড়ে মেঝেয়। চোখ বেয়ে
ফোটা ফোটা জল চিব্ৰ ছান্মে ব্রেজ
নেমে বাজেছা। সেই অবস্থার বারান্দার
বাণীকে রেখে খাট করে ক্যামেরা চলে আসে
ব্রের ভেতর।

থ্যাইড জ্লাপেল লেক জন্তে ইতাশ-বিহনে লেখকের মুখ শুধু। পূর্বার ওপর তেনে আনে বিজনের গলা—মধ্না আছই নশ হাজার জ্যাজভাবন বিদ্নেতি কুমার-সাহেবকে। মাইরি বলভি কাছে আর কিসন, নেই, গাড়ীর এই চাবিটা ছাড়া।

বধুন্দনের মানের ওপর আন্তে আন্তে একটা হাত এগিরে আনে। বিরাট একটা ভিজ্ঞাসা চিকের মত চারিটা ঠিক পর্ণার ক্ষম-ব্যাবর জ্লেতে থাচুক।

ক্যামেরা ট্রাকস ব্যাক। মিড-লটে পালা-পালি কনে লেখক ও প্রোভিউসার। তর্জবড় করে বিজনের জুর্থে হৈ কোটে—জামি বরহ কাল, বা না, পরলুর প্রোভাকলন ন্যানেজকর বলাইবাব্রকে দিরে পাতিরে ধেব। হার্ন,



প্রেরাপ্রির দ্ব' হাজার। আপনি কিসস্ব ভাববেন না। আজ চাল দাদা, এখানে এক-বার টমটনওরালাকীর ওবানে বেতে হবে। বােদিকে বলবেন আজ দেখা হল না।... এরপর একদিন এলে ছাটিরে...।

মধ্বনের কিছা একটা বলতে যাচ্ছিলেন ততক্ষণে চিডিয়া উধাও।

পদা অত্যে একটা বিভিন্নত ক্লান্ত ভীত মুখ্দিধর হয়ে থাকে কিছ্কেণ। তার ওপর আর একটি আচ্ছম মুখের ছবি ছেসে জাসে। বাইরে স্টার্টারের আওরাজ শো্মা বার। তাপর স্ব নিথর শাশ্ত। শোনা বার শংধ্ ক্ষেণ্টারী---এই-ভাবেই বার্মার চলচ্চিত্রের চিচক্রর: প্রতারিত হন। কাজ করিবের দেরার বেলার প্রশংসার স্কৃতিতে এইস্ব অভিযাদী মান্যেশহলিকে কাঁপিয়ে ফুলিয়ে মাতাল করে ভোলেন বিজ্ঞানবাব্র দল। তারপর দিন, রাড, সম্ভাহ, মাসের হাড়ভাঙা পরি-প্রমের ফসলটুকু করেনে গোলালাড করে হাসতে হাসতে মিখ্যা আশ্বাস দিরে বাদ---व्यक्ति बद्धर काल, मा मा, भराभ, बनादेवाब, एक निरंत भाविता स्थय। शा भद्रता यह सामाद्य। रमरे कान ना नंतन्द् जारंग ना क्लानिन्है। আর না এলেও এলের কিছু করার নেই। কারণ, কোন কন্ট্রাকুট মাকে না। থাকলেও क्टि करात त्मरे। वारमाहमस्य किरम्बद्ध जाक यह काकाम । माद्वती हुनाम आर्थे द्रात लाखे। किन्द्र त्व बाग्यकातूला नवतव বোষদের বিনিষ্করে ভিল ভিল করে স্বর্ণ-

প্রতিমাখানি গড়ে তুলেছেন, তারা আজ কোথার? মধ্সুদ্দের আশ্রের কোথার? ফিলেমর ঘোলা জলে বাল জ্বের প্রোভিউসার-কুমীরকে তো আর চটামো চলে ना। তारै অভাবে, मातिरहा, माञ्चनात অপমানে ক্লান্ত রিভ মধ্যুদন চোল্লের মত भागितः भागितः त्वज्ञान। जवः भूषः भूतः বলতে পারেন না কিছ্ই। যে গলিতে ভার বাস, সেখানকার অনি, গুরনা, ভাতার, হকার, বাড়ীওয়ালা, লোকাৰীর দল ভাকে ছি'ড়ে খার। তাদের আর দোব**াঁ**ক, তারা তো ফিলের লোক বলেই জীজার কত থাতির করে ধার বাকী রেখেছিল। তথন তো আর জ্ঞানত না প্রদীপের তলাতেই অন্ধকার **नवस्त्रद्धादम**िषन।

আদেত আদেত গোটা পদা জন্তে ভেসে থাকা দুটি বোবা মূথ ফেড আট্টট হলে বাল এক অপরিসীয় শ্রোভার। ফেন বৈশাবের মির্মাম দুশ্রের সারা আকাশ লাস করে কেলে।

--नाग्यसम्

বিবাহেরজন্য বাড়ীভাড়া বিবাহ উৎসব বা আন্দানিকের জন্য বাড়ী ভাড়া। দ্রেববাব ৫৫-০৭২২, ০৫-আর, রাজা শরীরের অস্থ হলে আমরা ভাবনার পড়ি। কিন্তু মন? মনের অস্থ আমরা আমল দিতে চাইনে, বলি ওসব আজগহুবি বিলাসিতা। কিন্তু সতিাই কি তাই? 'মনের কথা' বিভাগে পাবেন তার জবাব।



বিনোদ-কাহিনীর সমাপ্তি ন্যাখ্যাম, লক সাইকোথেরাপি

(তের)

বিনোদের রোগ-ইতিহাস থেকে তরে স্নার্তলের বিশিষ্টতা থানিকটা জানা গেছে, তার ভরের ইতিব্তু অনেকটা বোঝা গেছে। পাঙলভ-ল্যাবরেটরীর প্রীক্ষাম্লক আবেশ স্থির ইতিহাস থেকে আবেশের শারীর-বৃত্তিক ব্যাখ্যাও মিলল। এবার বিনোদের রোগের নিদান ও চিকিৎসা বিষয়ে আলোচনা করা চলতে পারে।

আনের এক সংখ্যার (৪৮শ) লিখেছি যে বিনোদের মাস্তদেক উত্তেজনার প্রাবশা ও নিস্তেজনার অভাব আছে: আর তার ইন্দ্রিয়ডি**ত্তিকতন্ত্র (প্রথম সাংকেতিক)** বাক্-ভিত্তিক (ন্বিডীয় সাংকেতিক) তল্পের চেয়ে অনেক বেশি জোরালো। শৈশব থেকে সে নিরাপস্তার অভাব অনুভব করে আসছে। বাবার প্রতি প্রশা আছে, বিশ্বাস, ভালবাসা নেই। মারের প্রতি মমন্ববোধ আছে, কিন্তু শ্রন্থার অভাব। পরিবারের দারিদ্রা ও বাবা-মারের মধ্যে সম্প্রীতি ও বিশ্বাসের অভাব বিনোদের চরিত্তকে বিশেষভাবে প্রভাবিত করছে। বাবার অসুখের থবর গাছিয়ে ফোনরে বলার ফলে পিতৃবন্ধনের সহান্-ভাত উদ্ৰেক করতে পেরেছে: তাই পরবতী-কালে নিজের অসম্পতা জাহির করার মধ্যে অনোর সহান্তুতি উল্লেক্স চেন্টা। সামন্ত-ৰুগাঁর পিতৃবদ্যতা ও গ্রেক্স-নিভরিতা পিতার বাবহারের ফলে খানিকটা করে ছলেও, এখনও বিনোদের প্রধান চারিতিক বৈশিষ্ট্য। গুরুদ্রোহিতা তার কাছে নৈতিক অপরাধ। ভাই ইউনিয়নের প্রতিবাদ মিছিল বা ধর্মবিটে সে যোগ দিতে পারে না। আবার थ-याम विद्वार विवान-विज्ञारवात्मक श्रञ्जाय त्यातक भारताभावि मान शासक भारत ना। অবাধ প্রতিযোগিতার এই সভাতার শ্ব্র বোগাতদেরই আছে বাঁচার অধিকার,—আর দশব্দের মত বিদোদকেও এই অভি-প্রচলিত ধারনা বিশেষভাবে প্রভাবিত করেছে। কিন্তু ওর সামস্ভব্রের ধ্যানধারণাপ্রট মনে ব্ৰেল্যা-মান্বের নিভাকি সামগ্রতিভাগ প্রেরণা কর্মান হতে পারে নি। সামস্ভব্যের किलांक्या-शावभाषात आर्था यहकाता-वहणात নিঃসংগতাবোধ ওকে আরো দর্বল ও অসহায় করে তুলে:ছ। আত্মাবশ্বাস ওর মধ্যে কোনোদিন দানা বে'ধে উঠতে পারে নি। একক প্রচেন্টায় অসাধ্যসাধন করার অভিনাস मात्य भात्य उत्क मृश्माह्मी উদ্যুদ্ধ চক্ষ করে তোলে: আবার পিতৃত্ব্য অফিস-বয় বা ঐ ধরণের কোনো গুরুজনের তির্যক দ্ভিপাতে, উৎসাহবাকোর অভাবে ওর সমস্ত উদাম, সমস্ত কর্মাক্ষমতা লোপ পায়। নিজের গতে বিনোদ প্ররোপরির সামণ্ড-তন্দ্রীয় পিতা। স্থ্রী এবং পরিবারের সকলের উপর একাধিপতা চায়: সামন্যতম বাধা বা প্রতিবাদে ক্লোধ-উত্তেজনায় অধীর হয়ে পড়ে। অস্ত্রতা ইদানীংকালে পরিবারের উপর আধিপত্য বিস্তারের একটা অস্ত্র হয়ে দাঁড়িয়েছে।

এই হল বিনোদের চারিত্রিক ও মানসিক বৈশিশ্টা। এখন রোগের প্রধান উপস্গ-গুলোর উংস অন্সম্ধান করা যাক।

দুই রকমের ভয়ে বিনোদ অস্থির। বম্মজারগার ভয় প্রথম দিকে বেশি ছিল, শেষের দিকে রন্তচাপর্টিধ ও মৃত্যুভয় ওকে পেয়ে বসেছে। ওর শৈশবের এমন কোনো বিক্ষাত ঘটনা ওর মনে এল না যা বিয়ে ক্রপ্রোফোবিয়ার হদিশ পাওরা যায়। রভচাপ-ব্ণিধর অবসেশন দুই ডাভারের ফল্টের গর্মানল থেকে এসেছে। কয়েকবার এই পরমিল ঘটেছে। (৪৮শ সংখ্যা ৭৬০ তৃতীর প্রভাবিত মহিতকে প্রবেশ করে নি। হয় थीत भौत कर्माचन। त्नरक्रोतीत त्न्नर-বণ্ডিত হয়ে বিনোদ অস্বস্থিত বোধ করছিল। ইউনিয়নের সহক্ষীদের উন্দেশ্য ও ঠিক্ষত ব্রতে পারে নি। গ্রপ-এরক্টিভিটি मण्याक^र अत्र कारनात्रकम शातनाटे हिन ना। নিজের সপো অনোর সম্পর্ক, নিজের সপো সমাজের সম্পর্ক সম্বদেধ ও অক্স ছিল বলা চলে। প্রতিবোগিতার দিকটাই ওর চেত্রখ পড়েছে, সহযোগিতার দিকটা নজরে আনে নি। ব্যক্ত-বিরোধের সমাজের আন্ত-মানসিক সম্পর্কের বৈপরীতা ধরতে পারে नि। जना बान्द्र उर कार्ड दत्र वन्द्र, मा दत्र

শ্রু, হয় ওর উপকার করবে, না হয় ওর অপকার করবে। আফ্সে সকলেই ব্যান্ত-. স্বার্থাকে কেন্দু করে ঘুরপাক খাচ্ছে, কাজেই সুযোগ পেলেই অন্যরা ওর ক্ষতি করবে। এই ভর, সন্দেহ এবং আবিশ্বাসের বোঝা নিয়ে বিনোদ পথ চলছিল। এমনি সময় ষটল ডেপটেীর আবিভাব। সেক্টোরীর নিরাপদ স্নেহছায়া থেকে সরে আসতে হল। ফলে, নিরাপতার অভাব এবং ভয় আরা বাড়ল। নির্ভার করার মত কোনো কিছ্ন আর রইশ না। এই সময় বাডীতেও নানা-রকমের অশান্তি ঘটছিল। ভায়েরা কিছুদিন থেকে স্ব-স্ব-প্রধান হয়ে উঠছিল। বিনোদের মাতব্রী মেনে নিতে চাইছিল না। পাদ পদে বিনোদ অপমানিত বোধ করছিল। করেক বছর আগেও যারা ওর চোথের দিকে তাকিয়ে কথা বলতে ভয় পেত, তারা এখন সমানে কথার উত্তর দিচ্ছে, চোথ লাল করে তাকাচ্ছে, অনেক সময় মারম্খী হয়ে এজিরে আসছে। মেয়েদের রামাঘর-কেন্দ্রিক তুক্ত ঝগড়া এক-একদিন ভায়েদের মধ্যে তুম*্ব* কলহে পরিণত হচ্ছে। শামনতভাগিতক মানসভায় যৌথ-পরিবার নিরাপত্তার দুর্গ', অথচ সেই যৌথ-পরিবার টি'কিয়ে রাথা যাচ্ছে না। এই স্তে বিনোদের মনে অস্বাস্ত ও ভীতি অনুপ্রবিষ্ট হয়ে ওকে অপ্থির করে তুর্লেছিল। যেদিন প্রথম ভয় পে:য় আফস থেকে পালিয়ে আসে তার আগের দিন পারিবারিক কলছ চরমে উঠেছিল: স্থার সংগ্ৰে এই ব্যাপার নিয়ে তক্তিতক কথা काठोकां वि घटिष्टिन। वितासित मही 'आनिष्-মেটাম' দিরেছিল ঃ 'হয় আমাকে বাপের বাড়ী রেখে এসে ভাইদের নিয়ে যৌথ-পরিবারের কাঠাম বছার রাখ, না হয় নতুন বাসা করে এক মাসের মধ্যে এই কগড়ার পরিবেশ থেকে আমার উম্থার কর।' যথন স্টোরর,মের আবছা অস্থকারে বিনোদ কাল করছিল, তখন তার মন পারিবারিক ব্যাপার নিরে বিশেষভাবে বিচলিত। আবার এদিকে, ইউ-নিরনের নির্দেশ অমান্য করে ডেপটেবর খেরাল মেটাতে গিরে আরো বেশি বিচলিত বোধ করল। সহক্ষীদের সমবেত কণ্ঠের **एकाशाम, महन इक, एवन छत्र विद्यु**ण्यरे .

ধর্নিত হচ্ছে। ভয় বাড়ল। যৌগ-পরিবারের নিরাপত্তার দর্গে ভেঙে পড়ছে, সেই পরে ইউনিয়ন কমীদের ক্রুম্থ গজন বিনোদকে তাড়া করে আসছে—এই রকমই ওর মনে হয়েছিল। সেক্রেটারী তাকে পরিত্যাগ করে-ছেন. ইউনিয়নকে সে আপন মনে করতে পারছে না, পারিবারিক নিভ'রতার অভাব ঘটেছে। স্টোরর মের আধা-অন্ধকার আলে-বাতাসহীন ঘরে নিজেকে মৃত্যুদণ্ডে দণ্ডিত 'কন্ডেমড্' সেলে নিব'াসিত আসামী মনে হল। মৃত্যুভয় অক্টোপাসের মত আটটা শাড়ে বের করে ওকে আঁকড়ে ধরতে এগিয়ে এল। উদ্বেগ উৎকণ্ঠার দর্ণ শারীরবাত্তিক পরিবত[ে]ন ওকে আরো ভয়াত⁴ করে তলল। এই সব সামাজিক ভয় সম্পকে ওর মনে म्लब्धे रकारना धादगा छित्र ना। कार्रक्ष इंद्रह-চাপব্দিধর ফলে আকিছাক মৃত্যু হতে পারে—এই চিম্তাই ভারে কেন্দ্রবিদা, হয়ে দাডাল।

এইভাবে বিচার আলোচনার ফলে ওর
মৃত্যুভয় ও বংধজায়গার ভয়:—এই দুই
ভয়েবই উৎস আবিংকুত হল। আত্তুক অব-সেশান দাঁভাবার একটি কারণের উয়েথ
আগেই করেছি। 'যাল্ফি বিভাট' সভিটেই
ওকে বিভাশত এবং চিকিৎসক ও চিকিৎসার
উপর অবিশ্বাস এনে দিয়েছিল। বিশেষজ্ঞের
কৈফিয়তে সায় দিলেও মেনে নিতে পারেনি।
কায়কবাব খন ঘন একই ধরণেব অভিজ্ঞান
মাস্তাকের হিথাতিস্থাপকতা কায়েয় দিল।
পারিবারিক ও অফিস্নমস্যার কোনো
স্থাধান না ঘটার ফলে আভক্ত ক্লমণ অব-সেশনে পরিণত হল। মাস্তাকের কয়েকটি
কেন্দ্র উত্তেজিত অবস্থানে নিভিক্স অনড়
ইয়ে থাকল।

আগেই ব'লেছি, আবেশকালীন অবস্থায় ^{ব্যাখ্যাম}লেক সাইকোথেৱাপি বিশেষ কাজে মাসে না। বিশেষজ্ঞরা অনেকেই এই মত পোষণ করেন। সব রোগীর বেলায় বা সকল ক্ষাত্র এই মত অদ্রান্ত, একথা বলা চলে না। ^{দাবারণত} দেখা যায় যে চিকিৎসক ভয় দ*ু*র ^{করবার} জন্য কেবলমার আশ্বাস দিয়ে চলে-ফন, রোগী আ**শ্বদত হচ্ছে না।** কি ধরণের ^{মাশ্বাস} ? আপনার প্রেসার স্বাভাবিক ^{মতাতেই র}য়েছে, প্রস্রাবে এ্যালবিউমিন নেই. লৈকট্রোকাডিওগ্রান্সে কোনো দোষ পাওয়া ায় নি। মিছিমিছি কেন ভয় পাচেছন? ইতাদি, ইতাদি। বিজ্ঞ ও বাঙিত্বশালী চিকিংসকের এই ধরনের আশ্বাসে একেবারে ^{াজ} হয় না, এ ধারণা ঠিক নয়। সাময়িক-ারে কিছ,দিনের জন্য অন্তত ভয়ের ব্রসন ঘটে। কিন্তু স্থায়ী কোনো ফল িবাস থেকে পাওয়া যায় না। অতি সামানঃ ারণে বা অনেক সময় বিনাকারণেই অলপ ^{চছ্}নিদনের মধ্যেই রোগী চিকিৎসকের কাছে দরে আসে। তথন হয়ত তাকে পাঠানো হয় েশ্যজের কাছে। তিনি 'ট্রাংকুইলাইজার'-র ব্যবস্থাপত্রের সভেগ আগের চিকিৎসকেব ^{থাগ}়ুলোই হয়ত আরো একট্ গ**ু**ছিয়ে লন। এ রকম হলে ফল পাওয়া যাবে না। ন রাখ্য দরকার, আম্বাস আরু ব্যাখ্যমালক ^{है.का:शर्}द्राभि এक किनिम नव। 'दाएँ ठिक

আছে, প্রেসার ঠিক আছে'— এই আশ্বাস শ্ব্য তখনই ফলপ্রস্হয়, যখন ভয়ের উৎস হার্ট বা প্রেসার। বেশির ভাগ ক্ষেত্রে ভয় হাট বা প্রেসারের উপর প্রক্ষিণ্ড, আসল উৎস অনাত্র। সেই সব ক্ষেত্রে আশ্বাসে ফুল হবে না, এটাই ম্বাভাবিক। প্রেসারের ভন্ন ওষ্ধ এবং সম্মোহিত অবস্থায় অভিভাবনের ফলে হয়ত দ্র হল; কিন্তু তার বদলে অন্য এক ভয়ের আবিভাব ঘটন এমন হামেশাই দেখা যায়। বিনোদের বেলায় ভায়র কারণ আমরা যেভাবে বিশেলষণ করেছি, তাকে ব্যাখ্যাম্লক সাইকোথেরাপি বলা চলে। বিনোদকে শ্ধ্ আশ্বাস দেওয়া হচ্ছে না. তাকে ভয়ের উৎসম্থের সংধান দেওয়া হচ্ছে। এই ব্যাখ্যা যদি রোগীর মনঃপ্ত হয়, সে যদি ভয়ের কারণ সঠিকভাবে ব্রুতে পারে, তাহলে কি রোগ-নিরাময়ের পথ প্রশাসত হবে? এর উত্তর এক কগায় पि उरा हरता ना। मरमह स्नेट स्य, महक्यारी, বন্ধ,বান্ধব, আত্মীয়স্বজ্ন ইত্যাদির সংগ্র সহজ স্বাভাবিক সম্পর্ক স্থাপনের দিক থেকে ব্যাখ্যাম্লক সাইকোথেরাপি খানিকটা সাহায্য করে। সমাজের শ্রেণীসংস্থান, শ্রেণীসংগ্রাম সামাজিক সংসর্গে নি**জের** অক্থান সম্পর্কে জ্ঞান রোগীকে অনেক-থানি শক্তিশালী করে। কিন্তু রোগী যদি নতুন জ্ঞানের পরিপ্রেক্ষিতে নিজেকে বদলাবার সংযোগ না পায়, তাহলে ব্যাখ্য-সাইকোথেরাপি প্রোপ্রাঁর ফলপ্রসূহতে পারে না। **স**মা**জ** ও সমাজ্যপত অনা ব্যক্তি সম্পকে দ্রন্টি-ভগ্গীর পরিবর্তনি প্রায় নতুন করে জীবন আরশেভর মত কঠিন কাজ। মনোবিদের নির্দেশ আর ব্যাখ্যার যৌত্তিকতা আজন্ম পোষিত ব্যবহার ও ধ্যানধারণাকে কয়েক সম্তাহের মধ্যে বদলে দেবে, এই ধরনের আশা কোনো ডিকিংসকই পোষণ করেন না। পরিবত নের ইচ্ছা মনে জাগণেও, পারিপাশিব'ক অস্বাবিধার জন্যে হয়ত পরিবতনের স্যোগ পাওয়া গেল না। রোগাঁর কর্মস্থানে যে-সব অস্ক্রিধা ও ভয়ের উৎস রয়েছে, সেগুলো চিকিৎসকের ইচ্ছায় বা রোগাঁর অভিলাসে রাতারাতি মিলিয়ে যাবে না। প্রেনো ভয়ের উদ্দীপক মস্তিককে প্রভাবিত করে আবার অবিশ্বাস, সন্দেহ জাগিয়ে তলবে। তা ছাডা, মনে রাখা দরকার, মদিতকের দিথতিম্থাপ-কতা নণ্ট হওয়ার ফলে নতুন দ্ণিটভগাী সহজে তৈরী হতে চায় না। সব থেকে বড় কথা, আবেশের কেন্দ্র যাকে আমরা "ইনার্ট একসাইটেব**ল**' বলে বর্ণনা করেছি সহজে স্বাভাবিক নিম্তেজনাধর্ম লাভ করে

এই সব কারণে বলা হরে থাকে যে
বাাখামানুলক সাইকোথেরাপী আজকের
আবেশ দ্রে করতে পারে না। কিন্তু আবার
এও ঠিক যে একমাচ এই বাাখামানুলক
চিকিৎসাই আরোগোর পথ খুলে দিতে
পারে, এবং পথকে স্গম করতে পারে।
ব্রেধর সমন্ধ যেমন শত্রশক্ষের শক্তিসামর্থের সঠিক সংবাদ মিথ্যা ভরকে অনেক

পরিমাণে দ্র করে প্রতিরক্ষা প্রস্তৃতিকে অনেকথানি সহজ করে তোলে; বাাখাম্লক চিকিংসাও তেমনি ভরের এবং উন্বেগের পরিমাণ অনেক কমিরে রোগীকে পরি-বেশের বিশেষ করে পরিবেশের অস্বাস্থাকর আবহাওয়ার বিরুদ্ধে সজাগ ও সংগ্রামী করে তৃলতে পারে। আর সৌভাগাঞ্জমে রোগীর পরিবেশে বদি চিকিংসার সমর অন্ক্ল অবস্থার সূল্যি হর তবে একমাত বাাখাম্লক চিকিংসাতেই রোগী আরোগ্য লাভ করতে পারে।

वितारपत विकास कि चर्ज ? विताप বুণিধমান ও অনুগামী বাভি। ব্যাখ্যার তাৎপর্য ও বৃদ্ধি সে মেনে নিল। বেশ একটা আগ্রহের সংশাই মেনে নিল। সেক্লেটারীর প্রতি মনোভাব কিম্তু সহজে পরিবতিতি হল না। আফসের সহক্ষীদের দ্চারজ্ঞন (যারা প্রতাক্ষভাবে প্রোমোশন ইত্যাদি ব্যাপারে প্রতিযোগিতায় লিশ্ছ) বাদে অন্যের প্রতি ওর মনোভাব অনেকথান वमनान । मानस्य, ভারের মাত্রা কমল। চিকিৎসার প্রথম দিকে কিছা, কিছা, গ্রাপ ঞাক্টিভিটিতে' তার আগ্রহ দেখা গেল। পারিবারিক অশাশ্তিও 'পৃথক হাড়ি' হবার ফলে किছ, টা कमन। करेसकी है **जानाती** আলোচনাসভায় অংশগ্রহণের প্রেসারের ভয় আপাতদর্গিতে অনেকটা কম মনে হল। এই সময় সম্মোহিত অকথায় কয়েকদিন মাত্র অভিভাবন চলছিল। একলা ট্রামে করে অফিসে যাতা-য়াত করতে লাগল। আমার কাছে নিয়মিত চিকিৎসার জনো আসা কথ হল। তবে যোগাযোগ বিজ্ঞিল হল না। পারিবারিক কলহ অথবা অফিসের কোনো অস্বাস্থ্যকর পরিম্থিতির উল্ভব হলেই বিনোদের দেখা পাওয়া যেত। একলা নয় সংগী নিয়ে আসত। ক্লুল্টোফোবিয়া ও আন্সাঞ্চক উপসগ্মাঝে মাঝেই দেখা দিত। দ্-একদিন অফিস কামাই হত: আমার সংগে দ্'একদিন ঘণ্টাখানেক ধরে নিজের সমস্যা নিয়ে আলোচনা করত দু'চার্রাদন বাদে আবার সহজ্ঞ প্রাভাবিকভাবে চলা ফেরা, অফিস যাওয়া স্ব্র করত। আগের মতন উপসগগ্নেলা দীঘাস্থায়ী হত না: আতংকের তীরতাও আগের তুলনায় কম। চিকিৎসায় চিকিৎসায়, বাাখাামূলক আংশিক ফল পাওয়া গেছে। সম্মোহন চিকিৎসার কথা হিসেবের মধ্যে আনছি না: কেননা মাত্র কয়েকটি অভিভাবন তাকে



দৈওৱা হ্রেছিল। সম্মোহন-যুত্র কোনোদিন্দই আনা বার্মনি। তবে হিল্টারিরার
উপস্পাপ্রলো মোটাম্টি দ্রে হবার ফলে
দ্রী-পুরের সংগে অনেকটা সহজ সম্পর্ক
ন্যাপিত হল। সামস্তব্দীর পিতার বা
ন্বামীর ভূমিকা এ ব্বেং অভিনর কর চলে
না, এই কথাটা সে ভালভাবে ব্রেছিল।

ব্যাখ্যামলেক সাইকোথেরাপির কোনো বাধা সভক নেই, কোনো ফর্মুলা বা নিদিপ্টি ফ্রুয়েডিয়ানদের অবাধ-পর্মাত নেই। অন্বংগ ইংংপদ্ধীদের শব্দ-অনুষ্ণ্য বা -বংনবিশেলবণ নিদিশ্ট নিয়মে বাঁধাধরা পথে চলে: সেই রকম কোনো প্রেনিদিট ছरकत्र मस्या এই চিकिश्मारक रफ्ला यात्र ना। ব্যক্তিকে 'ইনডিভিডুয়াল' মনে করেও ব্যাখ্যা-ম্লক সাইকোথেরাপিতে ব্যক্তিকে প্রেন-প্রির সামাজিক মনে করা হয়। এই জায়গায় ভার সংগে সমাজের আরো অনেকের মিল। এই মিল বা সাধারণ সামাজিক-মানসিকতা ব্যক্তিমকে প্রভাবিত করে কিন্তু পিণ্ট করে না রোগরি শ্রেণী-আন্রগতা, সামাজিক অবস্থান, সমাজ ও দুনিয়া সম্পর্কে ধারণা, চিকিৎসকের পক্ষে অবশাজ্ঞাতব্যা তার সুদ্বদেধ থানিকটা মুহ্তিকের টাইপ ওয়্ধ নিবাচনে ধারণা না থাকলে বিশ্বংখলা ঘটতে পারে অন্তত ওয়ুধের মাত্রা নির্ণারের দিক থেকে উত্তেজনা-নিস্তেজনার পরিমাপ বিচারের বিশেষ প্রয়োজন আছে। বিনোদের কাহিনী পড়ে পাঠকরা যেন না মনে করেন যে, এই প্রতিযোগিতাম্লক সকলেই ধ্বংসাত্মক স্মাজে নিউরোটিক হতে বাধ্য। কোনো কোনো মনস্তাত্ত্বিক এই ধরনের মতবাদ প্রচার করে থাকেন। সমাজই রু ম, কাজেই মান্ধও রুশন হতে বাধা। এ ধারণা ল্রান্ড এবং আপত্তিজনক। খ্রুবই অস্বাস্থ্যকর সামাজিক ও রাজনৈতিক পরিনিংগতির মধ্যে রাম-লেনিন, মোহন, বিদ্যাসাগর. তলস্ত্য,

আঞ্চকের রবীন্দ্রনাথকে পাওরা গেছে। रूप्त नमास्त्रक वहरू मृत्रक नःशामी मान्य মুখ্যাল ও রয়েছেন বারা সামাজিক भान-त्रद कन्तारभद कना नर्वत्र्य भग करत লড়াই-এ নেমেছেন। সমাজের বিরোধ দ্বন্দ্র, স্কুথতা অস্কুথতা, ভাল-মন্দ দুই দিকই রয়েছে। যার এই অভিজ্ঞতা ঝডঝাপটা হয়েছে তার পক্ষে নানারকম সত্ত্তে মানসিক সংস্থতা বজায় রাখা সম্ভব। উদ্দেশ্য জ্ঞানকে সাইকোথেরাপির প্রধান সম্প্রসারিত করা। দুন্টিভংগীকে বৈজ্ঞানিক করা। বিশেলষণী শক্তিকে তীক্ষা করে বিচারস্ক্রীশ্ব যুক্তিকে জাগিরে তোলা। বুন্দিধ বা বিচার ক্ষমতা থাকলে নিউরো-সিসের সম্ভাবনা নেই, এ ধারণা কিম্তু ঠিক নয়। তীক্ষা বৃদিধ, ক্ষুরধার বৃদিধ-মানসিক রোগে সম্পন্ন লোকেরাও "গ্ৰন্থ এয়কটি-আক্রান্ত হয়ে থাকেন। ভিটিভ"র পক্ষে আমার পক্ষপাতিত্ব দেখে কেউ যেন এ ধারণা পোষণ না করেন যে যারা দলবে'ধে কাজকর্ম করে, তারা বোধ হয় कार्तापनरे अम्बर्ध रश ना। সব'ক্ষণের রাজনীতিক কমী'দের মধ্যেও বহুরকমের উপরতলার মানসিক রোগ দেখা যায়। নেতাদের মধ্যে প্রতিযোগিতা, নেতৃত্ব বজায় রাখা, ইত্যাদি কারণের জন্য সাইকো-সোমাটিক বিশৃংখলার খ্বই প্রাদ্ভাব। রক্তচাপের ভয় নয়, সত্যিকারের 'হাই রাডপ্রেসার', কোলাইটিস, পেপ্টিক আলসার ইত্যাদি, ব্যবসায়ী প্রতিষ্ঠানের বড়কতাদের রোগ নেতাদের মধ্যে বিরল নয়। সাইকো-থেরাপিতে চিকিৎসক নিরপেক্ষ থাকেন না। অবাধ অনুষ্ণাপশ্যতির চিকিংসকদের মত তাঁরা নিরপেক্ষ থাকা প্রয়োজনও মনে করেন না। কিন্তুতাবলে প্রতোক রোগীকে কোনো মতবাদে দীক্ষিত করতে তাঁরা চান না। উপসর্গের পার্থকা, রোগীর শিক্ষা-

দীকা, ধ্যানবারণা, ব্যাখ্যায়হণ ক্ষাতা ইত্যাদি বিচার-বিবেচনা করে ব্যাখ্যাম্প্রক সাইকোথেরাপিকে ব্যাভর পকে উপবোগী করে তোলা হয়। সব রোগাীর পকে আবার ব্যাখ্যাম্লক চিকিৎসা উপব্ভ নয়।

সব রক্ষ মানসিক চিকিৎসার ক্ষেত্রেই চিকিৎসক এবং রোগার পারস্পরিক সম্পর্ক ফলাফলকে বিশেষভাবে চিকিৎসার প্রভাবিত করে। **এই সম্পর্ক** গড়ে উঠতে বেশি সমর লাগে না। ফ্রুরেভিরানরা এই সম্প্রের উপর প্রয়োজনের অতিরিক্ত গরের দিয়ে থাকেন। চিকিৎসক-রোগীর সম্পর্ক স্ক্রপ ও স্বাভাবিক হলে চিকিৎসায় স্কল লাভের সম্ভাবনা থাকে বেশি। বিনোদ, ¹ আগেই বলেছি বিনয়ী নম্ল এবং বৃণিধমান কিশ্তু রোগী হিসেবে মোটেই স্বিধার নয়। চিকিৎসকের বিরুদ্ধে বিনোদদের কোনো অভিযোগ থাকে না, চিকিৎসকের সব ব্যাখ্যাই তারা নিবিচারে মেনে নিয়ে থাকে. কিম্তু চিকিৎসকের নিদেশি তারা প্রো-পর্বি মেনে চলে না। চিকিৎসকৃকে শ্রাধা করেছে, কিম্তু প্ররোপন্রি বিশ্বাস করতে পারেনি বিনোদ। উপসর্গের তীরতা হাস পেলেই ডাক্তারকে এডিয়ে চলেছে সে। কিছ্বদিন পরে নিজের ব্যবস্থাপর অন্যায়ী নিজেকে চিকিৎসা করেছে। 'ড্রাগ্-এর্গাডক্ট' বনে যাবার প্রবণতা তার মধ্যে মাঝে মাঝে দেখা দিয়েছে। কিন্তু তার অনুভূতি আধিক ও কল্পনাপ্রবণতা তাকে রক্ষা করে এসেছে। ওষ্ধের দর্শ যে কোনো শারীরবৃত্তিক পরিবর্তনিকে সে ভয়ের চোথ দেখেছে এবং কিছ, দিনের মধোই একটি প্রতি আসন্তি ওষ্ধ ছেড়ে অনা ওষ্ধের দেখিয়েছে। এইভাবে এতদিন কক্ষা পেয়েছে। তবে ভবিষ্যতে কি ঘটবে বল ে । ।

—মনোবিদ্



অধ্যাপকদ-পতির ওপর রাগে ফেটে পড়ছিল চীনা। কলেল চলে ধাবার আধ-ঘণ্টা পরেই হঠাৎ বেন ধ্যান ভাঙে मृद्रम्कातः। ... अवस्तानः। आमातः श्रृत्रुपरदत ছবি! তাড়াহনড়ো বেরিয়ে আস্বার সময় একেবারে ভূলে গেছি। ওগো, ওঠ, ওঠ। শিগগির চলো!.....বলে অধ্যাপককে চাবির গোছা এগিয়ে দিয়ে ওরা চলে যায়। চীনা উঠে গিয়ে দরজা বন্ধ করে। স্বাতী মুখ তুলে ব্যাপারটা দেখেছে মাত্র। কোন মন্তব্য করেনি।

শোনা গেল। দুজনে প্রম্পর তাকাতাকি করল কয়েক ম,হুর্তা। তারপর প্রাতী বলল, প্রিলশ এল হংত। চল্যুন চীনাদি,

प्राभवा मौक बाहे। त्वाथ इव नित्यान्नद्वा द এসে গেছে ওদের সংগ্রা।

मामान करते धाम मत्रमा भागाएक জ্বতোর শব্দ শোনা বাচ্ছিল সি'ড়ির দিকে। দ্বজন কনদেটবল এগিরে আসছিল। চীনাকে দেখে তাদের একজন বলল, আপনারা বেরো-र्यन मा। चरत थाकून।

চীনা বলল, আমাদের লোকেরা কোথায়?

कनरण्ठेवलिं भाषा पानान। वनरङ পারছিনে। আমরা থানা থেকে আসছি। ওনারা হয়ত এখনও ফাঁড়িতে আছেন।

ওরা দক্তনে থামের গারে হেলান দিরে দক্ষিল। সিগ্রেট থের করে করালল। চীনা আর ব্যাতী সরক্রা বধ্ব করে দিল কের। দ্বাতী একবার বল্ল, আপনার দরজার ভালা पिरसंबिखन रहा?

চীনা একট্ব হেলে বলল, দির্মেছি মনে পড়ছ। ডাইনিং হলে যাবার সময়.....হাাঁ, मिरर्राष्ट्र।

দক্তনে বিছানায় বসল। স্বাতী বলল, ঘ্ম পেলে শ্বে পড়নে বরং। ওই বিছানাটাতেও শহুতে পারেন।



िनीगद्र काथम् दक्षां माम। हाई फेर्ठी इन बाबदादा। तम कम्भानाद विद्यानात एक राजा। বলল, আপনিও ঘ্যোন। ওরা এসে ডাকবে।

কিছুক্ষণ নীরবতা। তারপর ব্বাতী উঠে টে यननाम्भणे कितन पनः হাত বাড়িয়ে সিলিঙের উক্ষনে আলোটা निविद्या पिछा। शल्का नीलश्रात जावशासास ঘরটা রহসাময় হয়ে উঠল সংগ্য সংগ্য।

কতক্ষণ পরে চীনা ডাকল, ঘরমালেন? श्वाতী ঘ্মোয়নি। **জ্**বাৰ দিল, না।

একটা ব্যাপার আমার অভ্তত লাগছে কিন্তু।

কী?

জাকরাগপ্তের আঁধারমহলে ঢ্কেছিলেন শুভ নীরেন আর বিভাসবাব,। তারপর নীরেন আর ওই ভদ্রলোক বেরিয়ে এলেন শ্ভ থেকে গেল। ও'রা ভাবলেন, শ্ভ আগে বেরিয়ে চলে গেছে। এদিকে শভেকে পরে দেখা গেল মাডার হয়ে পড়ে রয়েছে। আমার অশ্ভূত লাগছে ঘটনাটা। সারা বিকে**ল** গেল, সংখ্যা গেল, শত্ত ফিরল না—অথচ নীরেনবাবরো...ু..

দ্বাতী সজোধে বলে উঠল, নীরেন চেপে যাছে আসলে। আমার দৃঢ় বিশ্বাস চীমাদি, ও ছাড়া কেউ শ্ভকে খুন করেনি। ও গোঁরার যত, তত ধ্রুপর। ওকে আর্নম

চीना वनन, की फलन?

স্বাতী চাপা গলায় **বল্ল, এক সময়** নীরেনকে প্রিশ খ্জত। কোথায় কী করেছিল নাক। ওর এক কথ্নে কাছে শ্বনেছি, নীরেন রাজনীতি করে-টরে। আই মিন্দে রাজনীতি নয়—রীতিমত বোমা ছোড়া দ্ট্যাবিং গ্রেডাবাজি।

हीना अकर्ट्स हूल करत श्वरक वलल, हरू পারে। কিল্ডু শভুকে সে কেন খ্ন করবে ? সেইটেই অম্ভূত লাগছে।

প্ৰাতী দ্ৰেক্ষেঠ বলল, করবে ৷ কল্পনার জন্যে।

कल्भनाद करना भारत?

একট্ ইতশ্তত করে শ্বাতী বলল, কল্পনা এত বয়ে গেছে জানভাম না। এখানে আসার পর হঠাৎ যেন পাগলের মত **যাচেছতাই কান্ড শরুর** করল। দিবোল্নর সংক্ষা মাথামাথি দেখে ওকে বকছিলাম। অথচ দিবোন্দ, বলল, নীবেনের সংশ্রেও নাকি খ্র গলাগলৈ করেছে কখন। ভারপর খোষে শাভর সংশ্যে শারা করেছে। কাল রাচে শভে আর কলপনা হোটেল ছেড়ে বাইরে কোথায় ছিল। ফিরল রাত আড়াইটে তথন। এবার ব্রতে পারছেন?

চীনা বজাল, হয়ত তাই। কিণ্ডু কম্পনা....

শ্বাতী একটা দীর্ঘশ্বাস ফেলে বলল, कल्लमारक । स्न करत्र छ।

ফের কিছ্কেণ নীরবতা। তারপর চীনা বলল, কী কুক্ষণে যে ছবিটা অকৈতে গেলাম। আমার ব্ক কাঁপছে।

ছবির স্থেগ এর কী সম্পর্ক? কল্পনা श्रम्भ कहला।

চীনা বলল, প্রথমে ধর্ন, মোডিঝিল मजिक्स्पत एम्बाह्न स्पर्ध म्यादेन कविछा। মধ্যারাতে বনের মাধায় উঠলে চাদ / ডোবার

ধারে পাতব হরিণ ধরার ফাদ / ...তারিখ লেখা ছিল নীচে ৮-২-৭০ তার মানে গত কালকের তারিথ। শুভই কবিতাটা দেখে-ছিল। ভারপর ওইদিন রাত্রে সে হোটেলের বাইরে ছিল অনেকটা সময়। কল্পনাও ছিল না। আমার মনে হচ্ছে কি জানেন?

স্বাতী কন্টে ভর করে মাথাটা **তুললা**। ..কী?

কিছু একটা আবিন্কার করেছিল শুভ। হয়ত কলপনাকেও বলেছিল সেটা। কিংবা হয়ত কল্পনাও কিছ, টের পেয়েছিল। তারপর ওরা কাল রারে ডোবার ধারেই গ্য়েছিল—না আপুনি যা ভেবেছেন তা নয়, সম্ভবত অন্য কোন উদ্দেশ্য ছিল ওদের যাওয়ার পিছনে।

তাহলে আমাদের বলল না কেন? বলাই স্বাভাবিক ছিল।

বলেনি—হয়ত নিছক তামাসার ব্যাপার চেবেছিল। হয়ত.....

স্বাতী ফোস করে উঠল।...আই কান্ট **আন্ডারুস্ট্যাল্ড, ইওর 'হ**য়ত'।

চীনা ফিসফিস করে বলল, আই সাস-পেক্ট বিভাসবাব্। আমার দৃঢ় বিশ্বাস সেই খ্ন করেছে শ্ভকে। ভাছাড়া কলপনাকেও...গড হেলপ আস্...বলে সে থেমে গেল হঠাং।

শ্বাতী উঠে বসল বিছানায়। বিভাস-বাব্র সংশো কিসের শত্তাছিল শ্ভর?

চীনা চুপ করে রইল। বল্ন?

চীনা তব্ চুপ।

ठौनामि ?

₹°?

বিভাসবাব; কেন শভেকে খনে করবেন? চীনা দুহাতে মুখ ঢেকে হঠাং পাশ ফিরল। স্বাতী দৌড়ে এল তার কাছে। সে রতিমত অবাক। পিঠ ধরে ডাকতে থাকল, চীনাদি, এই চীনাদি! আরে, কী হল বলবেন তো?

চীনা ঘ্রল এবার। নিম্পলক তাকিয়ে রইল কয়েক মৃহ্ত'। তারপর আন্তে আন্তে বলল, কথাটা কাকেও বলবেন না

না, না। বিলিভ মি। আপনার গা ছ्, एश नक छ।

বিভাসবাব; নীরেনের চেয়েও সাংঘাতিক লোক। আমি ওকে চিন। ও একটা জনুয়াড়ি। মদ আর মেয়েখান্য ছাড়া জীবনে আর কিছা বেংঝে না।

সে কি! আপনি চেনেন নাকি ওকে?

হা। চিন।

বলেন নি তো এতদিন! ম্বাতী ফালুসে উঠল। আর্শিদুন আমরা অমন একটা স্কাউ-দ্রেলের সংশা মিশেছি—তার কিছা না জেনে! আশ্চর্য! আপ্নার সাবধান করা উচিত ছিল!

চীনা একটা ইউস্তত করে বলল, বাঁলনি। তার কারণ, তাতে আপনারা আমার ভুল ব্ৰতেন।

কেন? ভূল বোঝবার কী আছে?

আছে। বলে হঠাৎ চীনা মিত্র হিন্টিরিয়া ৰোগীর মত কাঁপতে থাকল। জানেন? এক-সময় ওর সপ্যে আমার বিয়ে হয়েছিল। বছর দ্বই আগে আমাদের ডিভোস চুকে গেছে। আমি একট্ও ভাবিনি যে এখানে আমার এত কাছে ও এসে বসে রয়েছে। উঃ, আই...আই কৃড নট হেলপ ইট...আনএকস-পেকটেড!

দ্বাসী দ্রুদ্ভিত হয়ে গেছে। বলল, ব্রুবান্ম। তাই আপনারা প্রস্পরকে এড়িয়ে চলতেন দেখোছ। কিন্তু চীনাদি, উনি কেন শ্ভেকে থান করবেন?

সেইটেই ব্**ঝতে পারছি না। কি**ন্তু... 5 না বিভবিভ করে বলল...কিন্তু আমার কুমাগত সন্দেহ হচ্ছে, আধারমহঙ্গে ও শ্ভ-দের সংশ্য ছিল। ওর মত লোকের অসাধ্য কিছা নেই। শুধু ব্ঝতে পার্জছ না, মোটিভটা কী!...আছা স্বাতী, শ্ভর অনেক খবর তো আপনি জানেন। শভের কি 🛶 क्रुग्रात्थलाम् तमा ছिल कात्नन?

দ্বাতী মাথা দোলাল।..কই, শ্রনিনি

চীনা কী বলতে যাচ্ছিল, দরজায় করা-ঘাতের শব্দ হল।...ওই ওরা এল ব্বি: বলে সে স্থায়ুদেত গিয়ে দরজা খুলে দিল। তার পিছনে স্বাতীও ছুটে গেছে।

দ্বজা খালতেই দিব্যেন্দ্ৰকে দেখা গৈল। তার পিছনৈ একজন, পর্লিশ অংফসার। দিব্যান্দ্রকে গাছের গ্র'ড়ির মত খসখসে আর পাংশা দেখাছিল। সে নিঃশব্দে ভিতরে চাুক •বাতীর বিছানায় গিয়ে ধৢপ করে বসল[‡] প্রালশ অফিসার ঘরের ভিতরটা উর্ণক মেরে দেখলেন করেক মাহাত¹। ভারপর মাদ্র হোস বল'লন ঠিক আছে। অপেনারা রাতের মত মিশিচ্ছেত বিশ্রাম কর্ন। সকাল আটটা-নটার মধ্যে আপনাদের একট্ বিরম্ভ করন। আর দেখুন, এই সময়ের মধে প্রীজ হোটেল ছেড়ে কেউ নাইরে যাবার চেণ্টো করবেন না ।

স্বাতী সতকটা কৰিছে উঠল কম্পনাৰ **থেজি** পেলেডেন আপনার।?

্লা। ডা, আন্না চণ্টা কর**ছি। থ**য়াকু,

প্লিশ অফিসার চলে শেভ শ্বাতী দরজা বন্ধ করে দিল। তারপর 🛪 গটে পিঠ রেখে সোজা দাঁড়াল। শাস্ত অথচ ভিজে গুলায় প্রশন করল শন্তকে দেখলে?

দিবোশন মাথা দোলাল। খবে পরিশ্রান্ত মনে হচ্ছে তাকে। যেন কথা বলবার শ**ি**ওও হারিয়ে ফেলছে।

5ौना वलभ, किएम थान इएएछ? ७४ ডেডবডিটা এখন কোথায়? আর নীরেন বাব্রা?

দিব্যেক্স হাতের ইশারায় জলের গলাস দেখাল। চীনা পাশের টেবিলে রা**থা** জ^{েে} কু'জো থেকে ক্লাসে জল ঢেলে আনল: চকচক করে জলটা থেয়ে স্লাস চীনার হাতে দিল সে। চীনা গাসটা হাতে রেখেই ফের প্রদান করল, বলান—কী সর দেখলেন?

वर्नाष्ट्रा... पिरवाग्यः श्वाङीरक राउ ইশারায় করছে আসতে বলল। স্বাতী এল না। দিব্যেশ্য মাথার চুলে একবার হা^ত ব্লিয়ে নিল। দীর্ঘ-বাস ফেলল। তারপর আন্তে আন্তে বলতে থাকল, আমরা প্রথ ম গোলাম ফাড়িতে। সেথান থেকে পর্নির^ব আমাদের সেই আঁঘারমহলে নিয়ে গেল।
নির্দিদ্ধ দিরে নীতে নাম্বাম্ম। উচলাইটেয়
আপোর আমরা এগোজিলার। সে সাংগতিক
অপ্রকার কল্পনা করতে পার্থেন না। ওপরে
মন্তা উঠোন। আর শেরপ্রান্ত মোট পনেরটা
বুপটি বর। একট, লবা হলে হাদে মাথা
ঠেকে বেড। প্রতিটি বরে একটা করে কবর।
যাক্ গে, একটা বরে একলা ওদরজা
পরিরে একটা বরে পেন্টিলাম। আলোর

ছটা আসহিল একট্ আলে থেকে। পিরে দেখি, একটা হ্যাসাগু ক্রেছে মেকের। আর কবরের ওপর হ্রাড় খেরে পড়ে ররেছে শুভ।

দিবোলার হঠাৎ চুপ করলে তীনা বলল, তারপর?

লাশটা প্রথমে দেখতে পার জাঁধার-মহলের দরেরায়ান— ঠিক দারোরান নর, শাকে বলে সেবারেত। তার কাজ হল, সম্প্রার প্রতিটি ঘরে একটা করে মোমবাতি ছেবুলো নেওরা। কড়ে আঙ্লের সাইজ মোনবাড়।
...নিবোলন্ সাইজটা আঙ্লের নারের নারেরের বেশাল। কের বলতে বাকল, কাজেই আলো
থ্ব পশত ছিল না। নেবারেরের নারেরির কবরের ওপর শ্ভেকে দেখে চমকে ওঠে। প্রথমে ভোবছিল, কোন টার্নিল্টবাব্ মার্ডাল হয়ে এখানে পড়ে রয়েছে। এজন ঘটনা আক্রয়ের বটে নাকি এখানে। বাই হোক, সে ভারাভাকি করে সাড়া না পেরে পারে হাত দের। মধ্যে সধ্যে ভার সন্দেহ হয়।



ছভিরে পড়বে। আমরা সবাই সাসপেকট रक्षं याव। धावर... न्याकी अवदे बद्दको। अवरा

भूबीनात्मत् वार्भाव ।... हीना विश्व करण्डे त्रमाम । बद्धा निज्ञासिक क्षेत्राम् । एथएक नफुएक एमर्स ना खन्ना। अभिरक, भूत रवीम सम्बद्ध আমার নেই। খনচ জোগাবে কে?

MAC A

ন্যাতী নিভাকৈ ন্ববে বলল, সে দেখা बारव। कांबरका ना। कांब्र-भर्दानम यीन আমাদের আটকে রাখে, সে খনচ ওরা জোগাবে। আমার বত দায় শুধু কল্পনার জোগাবে। আমার বত দায় শ্বহ ছানো। ওর পাত্তা পেলেই আমি নিশ্চিন্ত জ্যান্ত হোক বা মড়া হোক. আই ওয়াণী

দিবোলা; আর চীনা দলেনেই বিশ্মিত- । দুখেঁ তার দিকে তাকাল।...

পোড়ো আমবাগান খেকে কৰেল যথন ফিনে আসহেন, তথন কেলাবাড়ির প্রধান क्षात्रे क्ष्यात वाकी बाक्का। मूब स्वटक भारमञ्ज्ञारिकां अक्यो घर बारमा रामा যান্তিল। তার উত্তরের জানালটো খেলা। আলো লক্ষ্য করে এগিছে আসছিলেন তিনি। मान भाग दानीवालन, अकरे, जातात वरेना रे ভারী কৌতুককর। ওই অম্ভূত লোকটি বে-ম্হুতে টের পেয়েছিল যে ইনি তিনি নন, সংখ্যা সংখ্যা আন্তমকা ক্ষিণ্ড যোড়ার মত शा-काका निरम वसवानाक रकर**६ र**मीकन। ছরিব্লা এ প্লোর কোন ভূলনা নেই।

কিন্তু ওখানে কোথাও তো কল্পনাকে আবিশ্বার করা গেল মা। হোটেলের পেছন দিকে এসে এবার সভক হলেন কর্ণেল। সম্ভবত দিবোন্দরো পর্বিশকে আগাগোড়া সৰ ফলেছে। এবং প্ৰালপত ব্যারীতি এই হাগান আর হোটেলের চৌহন্দী যিরে टक्टलेट्ड । या द्याया टाल, नाविद्यला अना তদক্তে নামছে না। সকাল ছলেই খেজি।-भाकि भारत् कराव। कंग्रिस सिएए शायात माधिम भाग्नेरकार्षे, दैनिया स्वास्थास আটকে বেতে চার—তা সত্ত্বেও টর্চ না হৈদলে অতিক**ন্টে কর্ণেল এগোচ্ছিলেন। পিছ**নের খিড়াকতে ঘুরুত সরু সি'ড়ি বেরে ওঠবার সমর তার মনে হল, ওপরে বারান্দায় পর্নিশ পাহারা দিক্তে না ভো?

এ একটা সমস্যা। তবে ওরা বারাম্পাই থাকলে সোজাস্ত্রি থিডকি দরজাটা নলবে পঞ্জবে না ওদের। বরং সি'ড়ি থেকে পা ৰাজ্বিয় কাশিশে উঠতে চীনা মিরর कानामात्र (भोक्ता वात्व। दिलीम कात्रमात्र গ্রাগবিহীন জানালা। খড়খড়ি সামাদ্য ফাঁক করে হাত গলালেই ছিটকিন **थाना बार्य।** ज्यना जारतकशन्य कार्ट्स বাধা থাকলে সমস্যা আছে। কাচের পালা ছিল কি? আৰু সকলে চীনা মিয়র যার অনেক সময় ধরে আন্তা বিরেছেন। তখন খনটার স্বক্রিছ, লক্ষা করেছিলেন। কিন্তু কাঁচের পালা?—কিছা মনে পড়ছে না তো।

ভার ওপর এই প্রচন্ড শীত। বয়সও **इट्सट्ट। टन टकान जान गाटन टनरे। उटर** কর্ণেল ভার জীবনে বহু স্বাসাহীসক কাণ্ড করেছেন। নার্ছ একটাও বেঠিক ছবার কথা नहा प्राप्तक कारक क्षेत्र मुख्यान किनि शा वाष्ट्रात्मस वीमिटकः। कार्निम म्लाम कत्रदर्श निष्मित स्त्रीनः श्रांत शाम न्याना एक्टम छेडेएमन।

थएथीवृश्वसामा कार्ट्स कामामाठी भारत शबा की अर्थमां कारहत शक्षा सा-নাঃ, ভাগা ভালো। পালটো ভাভা। বাইরে ब्यांक करक रक्छ किन इन्तक रख्य स्थानाह খানিকটা। হাত গালিকে ছিটকিনি খ্লালেন করেলে তারপর ক্লার নিঃশব্দে **য**রে ভেতর गीनका रगत्ममा भाव हात्र यूप्टे मीतह स्मर्थ। কোন আঘাতই লাগণ না।

ভিতরে জিনিবপত বেশি কিছা নেই মনে ছল্ছে। সাবধানে টের্চ জনলতেই অগোছাল ছবি, ছবির কাগল, ইজেল, অজন্ন তুলি, রঙের টিউৰ, কতকিছা নমরে পড়ল। বিছানার ওপর আগাগোড়া কবল ঢাকা দিয়ে কে শানে আছে দেখেই কর্ণেল চমকে উঠলেন। সে-কি! তাহলে চীনা প্ৰাতীকে ফেলে চলে এসেছে কখন?

আসবারই কথা। বার্ধকো ব্রিশ্ডম ष्टाए। की शुरता मृट्डा घन्डा कर्णामा वाहरत दिलान। धेर मध्य मिर्वान्म् ता थाना **থেকে ফিন্সে আসতে পারে।** কার্জেই চীনাও নি**জের য**রে এলে ঘ্যোতে পারে। ইস, কী **বোকামিই না হয়ে গেল!** চীনা সম্ভবত ক্লান্ত হয়ে বেঘোরে ঘ্যোচছ। বেচারার নিল্পী নার্ভে কতথানি সইবে? জেগে থাকলে এক্ষরি বিদয়টে কান্ড শ্রু হত। কর্ণেল এক অপ্রস্তুত অবস্থায় পড়ে ट्यट्क्स ।

এবং এখনও যে কোন মুহুতে চীনা জেগে উঠলে তেমনি সম্ভাবনা রয়েছে। থাক্, ওকে জাগিয়ে কাজ নেই। দরজা নিঃশব্দে খালে বেরোলে যদি পালিলের **সামনে পড়েন, একটা কৈ**ফিয়ৎ দেওয়া **কঠিন হবে** না। জিনি থে হোটেলের ভিতরে **ছিলেন, এটা তো প্রমাণ ক**রা যাবে।

দরজার কাছে আসতেই দ্বিতীয়বার ध्यकारणम कर्णल मीलाप्ति अवकावः पवस्ता ৰে বাইরে থেকে কধ!

ম্হ্তে ব্কের ভিতর এক্ষণক রক্ত নেচে **উ**ঠল। হ্দপিণ্ড একবার কে'লে উঠল। তারপর দ্রভে বিছানার দিকে এগিয়ে कन्त्रमणे अक्षोत् जूल रक्ष्मलन।

कल्लमा नारत बरारछ। भाषी ছোরানো। নাকে ঠোটের পাশে জমাট কিছ রক্ত। ছিম শরীর। আর তার ব্যকের ওপর সম্ভবত চীনা মিত্র সেই হারানো ছবিটা

কৰেল কয়েক মুহুত তিন্তত-তারপর জামালার দিকে এগোলেন। পালাতে হৰে একটো। তানা হলে...

কিন্তু সে সুযোগ নেবার আগেই चारमका मनका भूटन रंगन। मृहेरु रहेशात শব্দ ও আলো জন্মল। চীনা মিত্র দরকা বন্ধ করে ঘুরে দাড়িরেই কঠ। অস্ফুট কঠে বলে উঠল সে, কর্দেল।..পরক্ষণে বিছানার দিকে তাকিরে সে রুখণবাসে यञ्जा, क्लभ्या ।

कर्णन नीमाप्ति महकाद छीछे बाध्य त्यात्य कामा निरुक्त करणायमा ।

আক্রে ভালভাবে পরীকা করার পর সে অভাতিপি বেরিরে গিরে কাছের ক্যাড়িতে খবর দের। স্কাল দলটার যে তিনটি টাব্লিকটবার ভিতরে চ্রকেছিল, এ তাদেরই একজন। লোকটা ঠিক চিনতে প্রেছিল। ভারপর প্রিল আসে। প্রলিশের বাাপার কো ব্রুতেই পারছেন, থেজিথ্বর নিতে-নিতেই রাত নটা বেজে গিয়েছিল। সদর থানা পেকে অফিসার আসবার পর প্যালেস **হৈটেনে ওরা ফোন** করে।

াছীন বলন, কীভাবে খন হয়েছে দেখলেন?

দিব্যেন্দ; বলল, সকালে আরেকদফা সরেজমিন তদত করবে—ভারপর যগে পাঠাবে। তথ্ন জানা যাবে। তবে আপাতত या मेरन दल, गला पिटल माना हरहराह अटक। ও'রাও ভাই বলছেন। কারণ শভের চোধ-দ্বটো আর জিভ বেরিমে ব্র ভর্তকর काश्चर्छ। प्रेटिश्च जाटनाम् छत्र शकाम আঙ্বলের দাগ অনুমান করা বাচ্ছিল।...৫2, অন্তর্ভিক। জান্তার বাম আসম্ভিল দেখে। _ -ठीना वणने, मीरबनरायाता रकायोग?

পি:বান্দু মুখ নামাল।...এদের দ্রান্ত্রন্ত সদর খানায় নিজে গৈছে। জিগোসপ্রত করবে।

এতকণে স্বাচনী এগানো এনে সামনে দক্ষিণ। বলল, ভোষায় কিছা ভিগোস কর্মেন ?

করেছিল। পিবোল্ব একবার প্রাতীয় দিকে তাকিয়েই ফের মাখ নামাল।...আমি এখানে আসার পর যা সব ঘটেছে বা জেনেছি সবট বলেছি প**ুলিশকে। সম্ভবত সেইজনো** ওর হোটেলের ওপর গরেন্থ দিছে। সবাইকে জিল্যেস্টিল্যেস করবে নিশ্চর। আমার সংগ্রে আসামার ওয়া শ্ভর বিছানা জিনিসুপর প্রীক্ষা করেছে। দরজায় ভালা **अटि** फिर्झेट्ड । आमि बर्टनीड, शारनत चरत শোব। আমার এক আখাীয়া ওখরে আছেন।

চীনা পাংশমেশে বলল, তাহলে তে। वा एक दिविनाम, ठाउँ रन!

স্বাতী তীক্ষাদ্ৰণ্টে তাকাল **मित्क... की** एक विकास की नामि?

চীনা মাথাটা সামান্য দোলাল।...**তেম**ন किह्य मा। ध्रहे-मात्न-म्काम्डानम् तना

हाउदा

কুছ কুটির

क्षांकर्म, स्वास्त्राध्या राज्य करावि बाह्यसम्बद्ध अन्य मानस्य वयाच गरक राज्या गर्कम । श्रीक्रफाका । गाँचक बामसान नामी कविशास, अंगर वाचन उद्याप कराका पान्ती सावका। नाना । ००, कराका पान्ती स्ताब, जीनवाक------DPM 1-44-40651

১ থেকে ১৬ এপ্রিল অ্যাকাডেমি অব ফাইন আর্টসে তর্ণ শিল্পী বরেন বস্তুর ১৬ খানি ছবির প্রদর্শনী হয়ে গেল।

বরেন বসরে ছবিতে কালো রেখায় ফিগারের একটা স্টাইলাইজড রূপ খেজার চেণ্টা রয়েছে। রঙ অনেক সময় মোজাইকের মত করে বাবহার করা হয়েছে। কোন কোন ছবিতে বালির জমি প্রায় বিলিফের চেহারা নিয়েছে। রঙ অনেক জারগার সংযত ধ্সরের কোল খেসে গিরেছে। কিছু ভারতীয় প্রতীক ও দেবদেবীর মৃতি'র বাবহার দেখা গেল –তার মধ্যে গণপতি ও দুর্গাম্তি **উল্লে**খযোগ্য। বিষয়বস্তর গাম্ভীর্য অনেকথানি তবে চিত্রাপিতি রূপ কতথ নি সাফল্য লাভ করেছে তা চিন্তার কথা খেমন তিনটি লাল বাজীকরের মত চেহারাকে "কানিভাল অব লাইফ" বলা চলে কিনাবানীল চাঁদের মত আকারে মধ্যে শাদা নৌকার মত নক্ষা, তিনটি হুস্তপদ্ধিক্ষেপকারী মানবাকার মুডি একটি দংশনে দ্যত সপ ও একটি চতুম্পদ প্রাণীকে "লাইফ—আন আর্টিস্টস ইন্প্রেশন" ব:ল সকলে গ্রহণ করবেন কিনা তা निः मान्तरः वना याप्य ना। इतिशानित গ্রাফিক গ্রে মন্দ নয়।

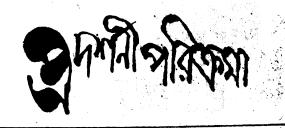
৫৪বি মহানিবাণ রোডের উত্তরুণা আর্টস অ্যান্ড ক্র্যাফট ইনস্টিটিউ:টর ঘরে বিনয় বন্দ্যোপাধ্যায়ের রূপকথ নিয়ে আঁকা ছবির একটি সিরিজ ৬ থেকে ১১ এপ্রিল প্রদাশত হল।

कारमा रतथा এবং অन्भ करस्रकि মৌল বৰ্ণে কয়েকখনি ছবি ভালই উংরেছে।

বন্দনা রায় এবং বাণী মিত্রের যৌথ প্রদর্শনীতে (আ্রাকাডেমি অব ফাইন আর্টস ১৫--২১ ম:চা) বাণী মিত্রের ফিগারেটিভ ও আবেম্ট্রাক্ট ঘে'ষা রঙীন ছোট গ্রাফিকসগ্রনির মধ্যে বেশ ম্রান্সয়ানার ছাপ পাওয়া গেল। ধুসর রঙের বাবহার বেশ ভালভাবেই করা হয়েছে।

বন্দনা রায়ের তেলরঙের কাজগালি সব সমনে স্ট্যান্ডার্ডের নয়। রিপ্রেজেন্টেশনাল ল্যান্ডকেপের জন্যে আরো একটা ড্রায়ং ও কম্পোজিশনের দিকে নজর দেওয়া দরকার।

টেতন্য কলাবিজ্ঞান কেন্দ্রের ছ'জন শিল্পী ৮ থেকে ১৪ তারিথ পর্যকত আকাডেমিতে যৌথ প্রদর্শনী করেন। বাণী-নাথ **ঘোষ দেব-দেবীর ছবি এ'কেছেন।** দিলীপ মুখাজি ছোট মাপের কয়েকটি মৌলক রঙের জ্যামিতিক ঘে'ৰা ডিজাইন উপস্থিত করেন। মুকুন্দলাল ভাদুড়ীর 'বল' ছবিটি কালো জমিতে হাল্কা লালচে রঙে আঁকা ইন্টারেস্টিং কাজ। শচীন্দ্রকুমার ব্যানাজি ডেট ক্যালেন্ডারের ওপর কিছ্ বিজাদ্তিকর রেখা ছড়িয়ে কাশীপ্রের হত্যাকান্ড জাকতে চেয়েছেন। শাকদেব চটোপাধানের রেখাধ্যী 'প্রিক্ত'টি মন্দ MRI -----



লেলিন শতবাষিকীর যুব উৎসবে রণজি দেউডিরামে বিভিন্ন অনুষ্ঠানের মধ্যে 🔸 একটি ছেলে হাসারসের 🛮 অভিনেতা ভান্ ৭ থেকে ১৫ মার্চ একটি চিত্র প্রদর্শনীর আয়োজন হয়। এতে লেনিনের কয়েকটি ফটোগ্রাফ ছাড়াও সোভিয়েত শিক্পীদের আঁকা লেনিনের জীবনের করেকটি ঘটনার ছবির প্রতিলিপিও ছিল। আর ছিল ভিয়েতনাম সংগ্রামের অনেকগ্রনি ফটোগ্রাফ। তাছাড়া কলকাতার শিল্পীরা তাদের আঁকা অনেকগর্লি ছবির প্রদর্শনী করেন। ভারতের <u>শ্বাধীনতাসংগ্রামের বিভিন্ন মুহুতে লেনিন</u> কিভাবে সহান্ভুতি দেখিয়েছিলেন তার একসারি পরিচ্ছন্ন প্রাচীরপত্ত ছিল। সতোন ঘোষাল, হরেন দাস, গোপাল ঘোষ, অশেষ মিত্র প্রমাথ শিলপীদের আঁকা কয়েকটি লেনিনের প্রতিকৃতি এবং লালমোহন মিফাীর করা একটি ভাষ্কর্য উল্লেখযোগা।

সাদার্ণ আভিনিউ-এর বিড়লা অব আট আলড কালচারে আকাডেমি সোসাইটি অব ওয়াকিং আটি দটস ওয়েস্ট বেশ্যল একটি বড় যৌথ চিত্র ও ভাষ্কর্যের প্রদশনীর অনুষ্ঠান করলেন। ২২ থেকে ২৮ এপ্রিল অর্থা অনুষ্ঠিত এই প্ৰদৰ্শনীতে দশক্ষন শিল্পী আটাত্ৰশথানি শিলপকত প্রদর্শন করেন। এ'রা, হলেন দারাদাস চাটোর্জি, **স**্বল সাহা, **অর্ণ** মুখাজি, সুচিতা দত্তরায়, . আনিমেষ সেন-গৃশ্ত, স্বরেন দে ও স্মরেশ চৌধারী।

শিল্পীরা ফিগারেটিভ ও নন-ফিগারেটিভ উভয় রীতিরই চর্চা করেছেন। দ্টাইলের বৈচিত্র্যও এ'দের এক একজনের কাচ্ছে দেখা গিয়েছে, রঙের ব্যবহারও মোটা-মটি মন্দ নয় কিন্তু খবে একটা পরিণত দ্ভিউভগা বিশেষ চোথে পড়ল না যদিও অনেক কাজকেই বেশ कम्পিটেন্ট বলা চলে।

তারাদাস চ্যাটাজির চারথানি পেণ্টিং- এ গ্রোটেম্ক-এর দিকেই ঝোঁক বেশী। দুর্খান ছবিতে তা বিশেষভাবে পরিস্ফটে।

স্বল সাহার ভাষ্কর্ম দুটি পূর্ব প্রদাশ ড। ক্যাকটাস নামে একটি গ্রুপ এবং লোহার রডের সাহায্যে করা কম্পোজিশনটি

অর্ণ মুখাজির পাঁচখানি গ্রাফিকের দ্বি ভারতীয় বিষয়বস্তু নিয়ে করা---মায়াদেবীর স্বংন। অনেকথানি অ্যাবস্ট্রাকট খেৰা কাল 'মেডিটেশন' সিরিজের কাজ-গ্রনিও ভাই। কোখাও ভারতীর ভাস্কর্য ছোৰা ফৰ্মত দেখা গেল। নিন্দাগ্ৰামের রঙ क्यादना व्यापे व्यापे थिन्छे।

স্ন্তিয়া দত্তরায়ের 'বার্ড সেলানের' অন্য ছবিগুলির वरम्माभाशास्त्रं मछ। মেজাঞ্জ কথনো রোমাণ্টিক कथाना ना জার্মাণ একসপ্রেসনিজয় ছে'বা। 'সলিচুড' ম্থাপতা-নি**র্ভার ফর্ম** 'লোকার'-এর মৃতিতি একসপ্রে**শনিকরের** ছাপ স্মপ্ট। রঙের ব্যবহার প্রশংসনীর।

অনিমেষ সেনগড়ে কিছু ছরিতে ফ্যাণ্টাসীর অভিবারি দেখি**রেছেন। যেম**ন 'আই অন হার বেড' বা 'ইনসাইড অব মাই হাট' ছবিতে। 'হার ছেসিং' ক্ষকটা লোকশিলপ ঘে'ষা কিন্তু বিশে**ষ জমে**নি। 'রেড লায়ন' কতকটা জাপানী **যে'বা**ু**ড়াজ** মন্দ নর। বাউলের ছবিটি চলনসই কাজ।

সংরেন দের একটি প্রতিকৃতি (ভাল্কর্ম) মন্দ হয়নি। 'স্পীড' ও 'কল্গোজন্ম' মাঝারি ধরনের **কাজ**।

সমরেশ চৌধুরীর মাদার আক্র চাইদেডর' নৃতি⁶টি তারের ওপর সিমেন্ট জমিয়ে ইন্টারেন্টিং কাজ। **অভিমানার** সরলীকৃত। তারের আরেকটি ক**েপালি**শন কতকটা ক্লে'র জুরিং-এর মত হা**ন্দা চালের**

২৬ জান্যারী নদান পাকে এই 'সিট আত্ত ড্র' প্রতিযোগিতার অনুষ্ঠান ইমেছিল শ্রীতারাশঙ্কর বন্দ্যোপাধ্যারের সভা**পতিছে**। কলকাতার প্রায় একশতের কাছাকাছি স্কলের ছাত্র-ছাত্রীরা এতে অংশ গ্রহণ করে। সিনিয়র জানিয়র এবং টাইনি এই ছিল বিভাগে ১৬ থেকে ৫ বছনের ছেলেমেরেনের তিনটি বিষয় আঁকতে দেওয়া হয়। একটি শীতের দৃশা, একটি বাজারের দৃশা এবং খেলা। তথাকেন্দ্র এদের **আকা একলো** বাঁচলটি ছবি ৪ মে প্ৰ'ল্ড প্ৰদী**ল'ত হয়।** তিনটি বিভাগে প্রথম প্রেফকার দেওরা হন যথান্তমে স্মিলা সেন, লহন সর্কার এবং র**্চিরা সেনগ**ৃংতকে। ছোট ছেলেজেরেনের ছবির বিচার করাও দরেছ কাজ। কারণ প্রক্রার না পাওয়া ছবিও কোন জংশে কম আকর্ষণীয় নয়। **খেলা নিয়ে বে** ক্রছ-রক্রমের ছবি কতরকম দুন্টিভগানী থেকে আঁকা হয়েছে। ছোট বিভাগের - শিল্পীরা প্রধানত প্যান্টেল 🧿 জেরনে কাল করেছে অন্য বিভাগে **জলরঙে। এদের সহজাত** রও আর কদেপাজিশনের চাত্তর্য জার স্থাপ্টি-ভণগীর স্বচ্ছতা **এক নজরেই চোধে পড়ে।** প্রদর্শনীর আরোজনের জনা কড়িক প্রশংসার দাবী করতে পারেন। 🛒 🧭

SIMI

বারা আমাদের কাছের মান্ত্র অবচ চির অচেবা,
আম-বাংলার সেই অগণিত সাধারণ মান্ত্রের আঁছের অবর
আমালে তাদেরই আত্মার আত্মীর বাংলার তর্বাত্ম
নাত্রী লেখক আব্দ্রে জন্মার এই সান্তর মেলার

जीतिक शिनाम

নমকা ভৃত্তে হাওমার আছুমোড়া ভাঙে বাশিননটা।
সংক্তের মতন ভালপালা বছানো বিবাহ চমবাজে আকালো।
ক্রন বিডালের মতো কটা নীলারে চেমিবটো চকচক করে
ক্রিল মত্যানের—তার লোসরা বিবি ভত্তরা আছুনের হাই তেওে
মানালস ভালাতে এলো উদােম ব্কথানাতে কাপড়-না-দিরে
বিজ্ঞিরিকাবে শোরা দেখে অথবা রাত এগারোটার পর
ক্রার হোজয়ায় কালের বেন ডাকাডাকি শ্লে। মত্যান জারে জারে
ক্রোর হোজয়ায় কালের বেন ডাকাডাকি শ্লে। মত্যান জারে ক্রোরে
ক্রোরাজান থেকে ম্থত্ত-কয়া সরো পড়তে লাগল সরে করে—স্লে
ক্রোক—মেমবাভির আলোতে তার পরিহান আর টুর্পিপরা নাড়িজরা চেহারার ছায়াটা দেওয়ালে দ্লতে লাগল। দলিক্রের কটো
দিরে লোকদ্ত্ন ভিতরে তাকিরেই ত্তিভ্তা। একটা মড়ার
রাখা, রাটিতে জাফরান গোলা; ভাতে পালকের কলম ডোবানো,
নামনে অরেবী অক্সরে দোয়া-তাবিজ লেখা কাগজপত্ত আর অলস
দিরার বেবিন-জাগা একটি র্মণী—প্রার বিবস্যা...

স্বভান সাহেব আছ নাকি গো—আপনি একবার বাইরে এস তো...আমরা ছাউড়ী গাঁরের লোক'...

দীর্ঘ হ' ফুট লম্মা কালো পীবহান-পরা গলায় হবেক রঙের কাঁচের মালা মস্তান সৈয়ন আঞ্জহার আলী দস্তগাঁর খান জাহান আল্ বন্ধবজিয়া খড়ম পায়ে দিয়ে এসে দাঁড়াল আলো মিয়ে: তীর আতরের গশ্ব ছড়ালো চারদিকে।

মুক্তান বৃদ্ধলৈ, 'তোমরা জাসবে আলার ফুকুলে আমি মুক্তান বৃদ্ধানের গুরুষা একাড়ে হরে মারে। এগারজন মরেছে বোধ হয়?'

'इ.ज.(तत किइ.हे अकाना तारे प्रश्रीहा'...

এবড়ো-খেবড়ো হলদে দাঁতে ফারফেরে দাড়ি চুলকে খল-থল করে হেসে উঠল মণ্ডান। ভর পেল বোধ হর লোক দ্জন। মল্ডান হঠাং জোরে গলা করে উঠল, 'ইল্!..ইল্...ইল্...হক্, লা ইলাহা ইল্লাল্লা, মোহজ্মদর রস্লাল্লা!'...

মুদ্ভাম ওবের দ্কেনের হাত ধরে টেনে আনল হোকরার ভিতরে। লোকস্কান প্রায় উলপা মেরেটির দিকে লোল্প চোথে ভাকাতে লাগল। মুদ্ভান একখানা লাল চাদরে মেরেটির আপাদ-ফুল্ফক ঢাকা দিরে বললে, 'বংলা ভোমরা। তোমাদের গাবে কুলেরার বিষ আছে। আজ না এলে কাল ভোরেই ভোমর। মারা বেতে।'

লোকদ্বেলন মণতানের কথার গুরে যেন এতট্কু হরে গেল।
কুল-কাটির মতন হরে গেল টেলিন্টো। মণতান বললে, 'গুর নেই,
কালাকে ভাকো। আমি ছোমাদের প্রাম থেকে 'এবা তাড়াবো। থবা' হল কলেরার দ্তে—বাল মেরেমান্য। ঐ বৈ! আমার ঘরে
একে দারে আছে। লনেবে এর মুখ দিরে সব ঘটনা বার করব?'

রুল্টান হড়হড় করে চল্লিল গক্ত কাপড় বার করার মতন তার গোটের ভিতর থেকে মুখল্ট আরবী সুরা টেনে আনতে আনতে জানডে লোক দুখলনের চার্দিকৈ ব্রেটে লাগল। লোক দুখলন সংলাহিত হলে গোল বখন মড়ার মাখাটা ভাদের মুখের কাছে নিরে নেরেটির ব্রেক্স মারখানে চালিরে দিলে। মেরেটির নর্ক্স একবার। তারশর গো-লো করে শক্ত করত লাগল।

মণ্ডাদ শাংখালে খল বেডি 'এবা'--কে মণ্ড করেছিল আউড়ী প্রতি-ক্ষম কাকে দুই দেখা বিশি ?'



क्षातार के हैं। बाद की एक मानन क्रमात । जाराना नगरम, नाक्षणी शास्त्र, जानन भागाँव गर्छ-मार्टनमा विवि गर्टाकरम ব্যক্তিভাৱে ক্রড কামি খগার দিন আগে লক্ষার পর ভার*্*সাক্তন দেখা করৈ ভার मार्कि गत बात मरनव मान्य का सार्वत क्रांटर बारे। कारका काबादक यहपात करना এলে অমি খিলখিল করে হাসতে হাসতে मार्कन मिरक बर्देण वाहे। दम्छ निवन निवन बार्डरक बारकः। जानगत्र कामाहक रास्टरक मा रमदेश चमरक महिक्दा बाहा। चरत किरत करन খৌল নৈয়ে বেখে স্বেদ জালার বউ তথ্য नावज्ञात्र क्टन क्टन कंग्रिल शहरू। बााशात কি। সে টলতে টলতে এসে বিহানার পড়ল। छात्र बंधेटक जय बनाम। बंधे बनाम, ध्या! রেকি। ভারপর জারের আলী ধরন। বাদ্ रारममः कतिम, सरमान, म्हार, धाराम, আন্বিয়া, আন্জ্যন, আথলিমা, আব্ মরেছে। তোমরা ফিরে বেরে দেখবে আর একজন মরেছে—ভাকে আমি 'ভর' করে जावि—रंत्र इन 'जारवज्ञत विवि'।

The state of the s

্ৰাকদ্ভন শ্তশিকত। ব্লালে, স্ব ডিক!

'এদের নাম কি?'

'একজনের দাম পিয়ার আর একজন ওহাব।'

কাঁদতে লাগল তথন লোক দুজন। মঙ্গতানের পারে জড়িয়ে ধরলে। 'মঙ্গতান বাবা আপানি আমাদের রক্ষে করো। আমাদের বাল-বাহ্যাদের বাঁচাও।'

মদতান বললে, 'জিতা রহ বেটা। জরো
মং।' মড়ার মাথাটা মেরেটির ব্লের ওপর
থেকে তুলে নিয়ে এসে জোলাতে প্রলে।
দ্জানকে খানিকটা করে দৈশ্বর লবপগ'্ড়ো
খাওয়ালে। ঠাওটা জল দিলে 'শম্করারিণ্ট খাওয়ালে এক ঢোঁক করে। তারপর পিঠ
চাপড়ে দিলে। বললে, 'গ্রাম বন্ধ করতে
যাব আমি, আড়াইশো টাকা দিতে হবে
আয়াকে। আর 'খালে খতম' করতে হবে।
এইমাত 'চিলে' গ্রাম বন্ধ করে এল্যু—
সেখানে বিরালিশজন মরেছে। একটা মড়া
'খানা' পেরে দেখি 'মালসা' গিলেছিল!'

হঠাং মেনেটি খিক করে হেসে উঠল। ডারশের উপড়ে হয়ে পড়ে হাসতে লাগল। শমকে দমকে। মসতান রাগে তার দিকে একবার তাকাল। মেরেটি বললে, মালসা কত বড় আর গাল কত বড়? হি হি হি।'...

মশ্তান বললে, 'বেঝি! মালসা কত বন্ধ আরে গলৈ কতে বড়! শস্তান বখন হাঁ করে, তখন সুনিয়া গিলে নের "

মেরেটি এবার হাসতে হাসতে উঠে পড়ে লৌড় মারলে। তার বাইরে বাবার ধর্কার হরোহল, থাকতে পারোন আর।

্ মশ্চান বুললৈ, খালা হার্মি, নেমে-মান্ত হল হোড়ার বিষঠা। হঃ ওরাই ডো দ্নিরাকে শোড়ার। বাবা আদনের শক্তিকের বাঁকা হাড় !...ছি, সাজে ভিনলো টাকা শক্ত করতে পার্বে? উল্লিখ্যকে ভো অনেক টাকা চেন্তেছ?

লোক মু'জন কালে, চলো ছুক্তর বাবা, আমনের বন্ধে করো। টাকা আমরা ক্রমের করে পারি লোব।

মন্তান তখন সাল কালিতে শঁলাৰী একটা বিরাট ফর্ল তাদের হাতে গাঁকে দিলে। বললে, 'এগালো কাল জোগাড় করে রেখ—'খাজে খতম' হবে কাল রায়ে। গ্রাম কথ করে দিরে আসব। চীকাকড়ি এনেছ কিছ্ ?'

'হা বাবা—এই পঞাশ টাকা আছে, এখন লও।'

ছোঁ মেরে টাকাকটা নিরে বলুকে
মান্তান, 'এখন বাও। মেরে-মান্বটার তাড়াতাড়ি কবর দরে কেরে। দেরি করো না
কো। ঐ মেরেটা 'আবেসন বিবি' না কি
কো নাম বললে? আমার একটা 'জান' পালা
আছে, 'এসম্ আজম' করে ডাকলেই ঐ
মেরেমান্বটার ওপরে 'ভর' করে—আর সব
বলে দের সেই। অবাক হবার কিছু নেই—
আমি কিছু জানি না—ইল্—ইল্—ইল্—ইল্—

ত্তি

লোক দ'জেন বাইবে বেরিয়ে এল যখন, হোজরা থেকে কড় উঠেছে তখন প্রচন্দ্র বেগে। চারদিকে অন্ধকার। করিলেই চাপার গাছের পাশে পথের ওপর দর্যিভরে অন্তর দেই মেরেমান্যটা! এলো চুল, গোল গোল বড় বড় দুটো স্তন—থোলা ব্কের কাপড় উড়ছে—বিদ্যুতের আলোর ভাকে মোহিনীর মতো দেবাছে। মেরেটি হাসছে। ওরা ৬ছ পেরে সালাম করতে করতে পালিয়ে গেল! মেরেটি খিলখিল করে হেসে উঠল। মস্তান এসে বললে, ছিনাল মাগা, জ্যান্ত করর দোব তোকে। লোকের সামনে ইয়ালি!

মেরেটি ঝড় আর বিদাং আর আকশে দেখতে দেখতে বললে, 'ব্রুর্কি!'

বাড়িতে ফিরে এসে বললে 'তুমি একটা জান', একটা শয়তান আলার নামে মিখে ভেলকি দেখাও, ব্জর্কি করো। এত বদি জানো তবে একটা ভেলে হয় না জেন? ম্বোদ আছে, ব্ডো হাব্ডা! े बन्दान हुन और बाता कर, स्वास राग्याहरू वाह केल, दल दल औ एकाणानको प्रदेश

ভালেতি বিষ্ঠাক বাভ সাজনে ধ্যার ।

আন্ত্রান্ত্রিক ক্রিন্তে সংজ্ঞ। বিভাগ বিকাশক
ক্রিনে বিজ্ঞান ক্রিন্তা বিজ্ঞান ক্রিনে বিজ্ঞান ক্রিনি বিজ্ঞান

মদ্ভান একটা শিশি থেকে হঠাও একট্ট কুলোতে কি কেন চালতেই কেল্লেটি চিবকার করে উঠে বলে। মদ্ভান ছয়েট কিলে মেলেটিকে পেড়ে ফেলে ভার নাকে করে কেল্ল। ফেলেটি হাত-পা নাড়ে কিছুক্ল। ভারপুর দীরব।

মন্তান হাসে। তারপুর ক্ল্যাল লাইট,
মড়ার মাথা, এক বাক্স প্রেড়া জাকরাল,
ছ্রি. দোরা-তাবিজ ইত্যালি ভাল ব্রুলি
ঝাপ্পার মধ্যে ভরে নিয়ে দোরে চাবি এটে
দিয়ে বেরিরে বার অন্ধর্কারে।

গহিন রাত। বড় বইছে। আবাগাস, খ্যাকিদিরাল, খ্যান ছুটে বেডে দেখা বার পথের পালে মাঠের ওপর দিরে। আবাদ মাসের অধেকি হয়ে গোলা, আকালে বুলি নেই, রোজ মেঘ হয়, করে বড় উ ঠ আবার আকাল পরিক্রার ঠেকেছে নীল খ্যাওলা আবা পাল পাল দ্বিত জল। গ্রামে সেই বিষাভ জলে লান, রাহা, খালা-মাজা, গর্ম শা-ব্দাকে, কথি কালি কালা—কলো লাগা বই জো! মাসতান জানে, ভারি বর্ষণ না হওয়া প্রকিত নিস্তার নেই।

একেবারে ভোন রাপ্তে যথম ক্লান্ড অবসাদে মান্য একটা ঠাণড়া পেরে ঘুন্দের কোলে ঢলে প ভূছে মন্তান এলো বাউড়ী প্রামের কবরুগথানে। পাশাপাশি অনেক নতুম কবর। ফ্লাশ লাইট ফেলগে। কলেকটা শিয়াল—কবর খুন্ডে মানুবের মাংস থাবার জন্য মাটিখলো মেখে ভূত হরে দীভিরে আছে। তাড়া পেরে ভারা সরে পেলা।



আদ্রের প্রাটার মধ্যে বার কতক কুকুর ভাকস।

আবেসন বিধিয় নতুন কবরটা দেখলে মাস্তাম। জামা-কাপড় খ্লে বকুল গাছে টাভিরে রাথলৈ। ভাড়াভাড়ি মাটি সরিরে তলপাতা, এড়ো আর পাটাতনের সদ্বা বাশ छोटन कूटन स्टाप्ट शक्ष्म करतात मरधा। भ्रफाड काकन चाल क्षिनान एक प्यंक স্বটা। যুবতী মেয়ে। পেটটা পিঠের সংখ্য চেপ্টে গেছে। দতি বেরিয়ে আছে। ভরুত্বর মূর্তি'! উঠে এল মুস্তান। একটা স্লাসটি কর গামলার টাটকা রভের মতো জাফরান গোপা নিয়ে জাবার কবরের মধ্যে নামল। সমস্ত কাফনটা সেই রঙে ভিক্তিয়ে ফেললে। ভারপর মড়াটার গালের মধ্যে থানিকটা काकन एर्राकटम अकठा वर्ष ठामठ मिरम टिटन ঠেলে ঢোকাতে লাগল। খালি পেটে চ্বক हनन काकन्ते। मन्डान प्यस्म ज्ञिक न्दर्श গেল। ভয় করছে নাকি তার? কি:সর শৃষ্ণ ! শিরাল ডাকছে ! ডাড়াডাড়ি উঠে এল সে। সব তুলে এনেছে তো? গামলা, চামত. জাইট—হাঁ সহ। এবার কবরটা বেমন ছিল हाना निरम्न मिरन। याम भव ठिक शाम!

একটা ভোবাতে গা-ছাতের মাটি বং সাবান দিয়ে ধুয়ে ফেলে জামা-কাপড় পরে বাউড়ী গ্রাম থেকে সে যখন অন্য গ্রামে একেছে তথন সকাল হল। একটা দোকানে চা থেলে। বললে, গিয়েছিল্ম ভাই বহু দূরে—ফলতার—কলেরা ছাড়াতে। রাস্তায় 'এযার কি কালা।"

'বাউড়ীতেও তো বারোজন মরল।'

'ছে' ছে'—একটা মেরে তেরে হাত কাফন গিলে বসে আছে ওদের গাঁরের কবরে। কাল রাভিরে গিয়ে তুলব। তোমবা রাত একটার সময় যেও সব, দেখবে।'...

মশ্তান বাড়িতে এসে দোর খুলে দেখলে তার স্থা তেমনি পড়ে আছে। মোগা নামিরে রেখে একটা ইঞ্জেকখন দিলে মেরেটির চিতোড়ে। কিছুক্ষণ পরে মেরেটির জ্ঞান ফিরল। গালাগালি করতে সাগঙ্গ। মশ্তান ব্রুতে পারে ওর মাথার একট, পাগলা ছিট এসে গেছে। আগেরটার মতন এও বোধহয় বন্ধ পাগল হয়েই যাবে। স্ক্রান করে রেখে না গেলে যৌবনের ভৃতিত খুক্তেত হনে হয়ে পালাবে মেরেটি। দুক্তাগ্য মস্তানের বে সে ক্ষম।

সময়টা কেমন যাবে

এশিরার প্রখ্যাত মহা জ্যাতিবিদ পশ্ডিত জ্যোতিব-রজ্লাকর শ্রীনিখিলেল ভট্টাচার্ব কাবা-ব্যাক্রণতীর্থা, জ্যোতিব-ভারতী দাল্লীর "প্লেলার-হাউল", ৬৯ ৷১, ব্যামী বিবেকানন্দ রোভ কোন্দিরা, লিবতলা) হাওড়া-৪। বাস রাট—৫২, ৫৮, ফিঃ— ৫—২৫ ৷

नाकार i—श्रकार नकान ১०हेस मरवा।

দ্বিরে কম্বা ঘ্র দিয়ে নিমে বিকেলে এল মসতান তার বাহারে বাঁকা কাতার কাঠি, সম্ভর তালি যারা কোলা, গলার রভিন কাঁচের মালা, মাথার জালি ট্রিপ, কার্ণো কম্বা পরিহান গালে দিয়ে। সুবই ভতিতে গদগদ। 'কদমুব্লনী' করতে লগাল সুবাই।

এক লাখ চকিবশ হাজার প্রগদ্বরের নামে ছোলা পড়িরে ফল-পাকড়, সদেদশ মিশ্টি দিরে 'থাজে খতম' শেব করতে রাত দশ্টা বাজল।

দ্-হাজারের উপর লোক জাটেছে মুহতানের কীতি দেখতে।

'থাক্ত থতমে'র ফলমেওয়া বিলি করা হল। পাঁচথানা গাঁরের হিন্দু-ম্-সলমান নবাই খেলে। বোতল শিশি ঘটিতে করে বহু দেকে জল এনে মস্তানের পাশে বসিরে রেখছে। মুক্তান একবার বিড় বিড় করে সমুস্তগ্র্নায় ফ্' দিরে নিলে। তাবিজ্ঞ করজ বিক্তি করলে শতখানের টাকার। তার-পর একা বের্লে অব্যক্ষারে। দেখিতে গেল কররখানার দিলে। ইঠাং গ্রামের শেষ প্রাত্তেতার আজান শোনা গেল। আবার দক্ষিণ—তারপর উত্তরে। মুক্তান ফিরে এল কিছুক্ষণ প্রেই। বললে, 'চল সবাই ক্রথনাায়, কোদাল লও নতুন কাফন চাই আর দশ বালতি পানি।'

সমস্ত কবর প্রীক্ষা করে দেখলে মস্তান হ্ম্মিড় থেয়ে পড়ে, কবরে কান দিয়ে দিয়ে। মতুন কবরের কাছে এল শেষ বেলা। বুললে, খিলে ফেল এই কবর!

মশ্তান নিজে কোদাল ধরে মাটি টেনে দিলে প্রথমে তারপর দ্-চারজন মিলে করর খ্বাড়ে ফেলে পাটাতানর বাদ তুলে দিতে মশ্তান নেমে গেল কবরে। উলংগ মড়াটাকে তুলে নিলে উপরে। মঙা সমুহত কাফন গিলেছে! হার বাবা!

কি ব্যাপার! তাম্পের কাণ্ড

মড়াটাকে সরিয়ে আন;ল ফাঁকা মাঠের মধ্যে। মুখ্যান একটা গামছা চাপা দিয়ে দিলে তার কোমরে। তারপর তার বুকে পা দিয়ে গালের মধ্যে থেকে হড়হড় করে রন্ত-রন্তিন কাপড় টে:ন টেনে বার করে আনগে। লোকের তো চক্ষ্মিধর!

মস্তান জোরে জোরে 'লাইলাহা' পড়তে লাগল।

বালতির জল ঢেলে স্নান করানো হল। মেরেটিক। আবার কাফন পরানো হল। 'জানাজা' পড়ানো হল। গোর দেওয়া হল নতুন করে।

ভোর বাতে গাঁরের চার কোণে লাল নিশান উড়িয়ে বিরে গ্রাম কর করে টাকা নিয়ে মুখ্যান বাড়ি ফির্বার পরে প্রচম্ড ধারার বর্ষণ নামল।

বাড়িতে ফিরে দেখলে স্থানীর জ্ঞাপনা-আপনি জ্ঞান ফিরে এসেছে। স্তা জ্ঞানালার বসে কড়ে তোলপাড় করা বর্ষণমুখর প্রকৃতির দিকে তাকিরে আছে উদাদ মনে। তালা খুলে ভিতরে এসে মস্তান তার ব্যলি- বাপ্পা নামিরে রেখে ভাকলে, 'কৃহ্রা-আমার 'সরাবন তহুরা'-এদিকে এসো। দেখো কত টাকা এনেছি।'

তহুত্বা বললৈ, 'রেখে দাও । মরলে পাকা কবর হবে। অনেক ' ভক আসবে। টাকা পড়বে।'

'লও, এসো, গোসা করে। লা বিবি । মন্দ্র মানুব হল বাজপাথি, সে কোথা থেকে কি ছোমেরে শিকার করে আনে তা মেরেমানুব-দের অতো বিচার করে দেখার দরকার নেই। চুরি-বাটপাড়ি করার চেরে তো ভাল। বোকা মুর্থ সমাজকৈ সবাই ঠকার। আমার সাহসংস্কৃমি তারিফ করবে না?'

'করি! কিল্ছু আমার ভর করে। সাপ্ডের যে সাপের হাতে মরণ হয়! তোমার যদি কলেবা হয়?'

হा-हा करत रहरत ७८७ भन्छान। वरन, 'আলা वौठात-धशना!'

দীর্ঘনিঃশ্বাস ফেলে তহুরা। ববে, 'আল্লা তোমাকে বাঁচাচ্ছে বললে আলার নামে কলক দেওয়া হবে। তুমি তো জানো তুমি কতবড় শরতানী করছ। আমাকে তিলেতিলে মেরে ফেলছ—শা্ধ্ টাকার জানো—নামের জন্যা—কী চাও তুমি? আমাকে কেন তুমি বিশ্বাস করো না? কেন বন্দা করে, অজ্ঞান করে রেখে যাও? আমি যদি বরে আগ্রন দিই তুমি যথন ঘ্যোও..'

মুক্তান হঠাৎ উঠে পড়ে তলোয়ারটা পেড়ে নিয়ে শানে তুলে কোপ বসাবার ভাগা করে ব'ল, 'এক কোপে এখনি দ্ব-টকেরো করে ফেলে দেব—চোপ!'

ঝড় ছুটে চলেছে গাছপালা চুরমার করে।
হঠাং বাজ পড়ল একটা, প্রচন্ড জোরে।
মুস্তান টাকা গুনতে গুনতে বললে,
কুলকাতায় যাব ওধ্ধপদ্ধ কৈনতে, রাম্লা করো।

জানালার দাঁড়িয়ে ছিল তহরে। হঠাং একটা মেয়ে ভিক্কতে ভিক্কতে ছুটে এ:লা: বাবা মসতান বাবা, আমার কোলের বাচ্চাটাকে সালে কাম ড়ছে—এসো বাবা—তোমার মুটো পারে ধরি...:

মসতান তথনি ছাতা মাথার দিয়ে চলে তোল মেয়েটার সংগা। যাবার সময় বলে তোল, 'তহুরা আজ থেকে তুমি ম্ভ-তুফি যা খুশি করতে পার।'

ফিনে এল মদতান রাড দৃশটার পরে। এ'স কাদতে লাগল—মদতানের চোখে জল। বললে, 'ছেলেটা বাঁচল না।'

ছেলের জনো ভাছলে মুম্ভানের প্রালে মায়ামমতা আছে? তহুরা অবাক। সে ম্বামীর কাছে এসে বসল। লাম্মর জালোভে লোকটাকে নতুন করে দেখতে লাগেল। মুম্ভান ভহুরার রক্ষ দেখে বললে, ভহুরা, আমিও মানুর, ব্জর্কি না ক্রলে চলবে কি করে!



AND THE PERSON

रधामा भ्रामा ७ वाजान

দ্বিত বাভাস ব্যাস্থ্যের করি করে. এটা জানা কথা। কিন্তু দুখিত খাতাস আবহাওয়াও বদলে দিতে পারে, শ্বহু দিতে পারে নয়, দিয়েছে এবং দিছে, গত কয়েক বছর ধরে বিজ্ঞানীরা এই আশ•কা প্রকাশ করে আসছেন। ব্যাপারটা এতদ্র গড়াতে পারে যে, স্থানীয়জ্ঞাবে কোনো একটি শইরের বা^ইঅঞ্লের শয়, গোটা মহাদেশের বা এমনকি লোটা বিশেবর আবহাওয়া বদলে ্ঘার্ক্সাও অসম্ভব নর। কলক তার লোকের মুখে প্রায়ই মন্তব্য শোনা যায় যে, 'কল-কাতার আবহাওয়া নাকি বদলে যাছে। কলকাতার সেটটবাসগলো ঘ-পরিমাণ ধোয়া ছাড়ে, কলকাতার আশেপাশে কল-কারখাদার চিমনি থেকে যে-পরিমাণ ধেঁয়া ওঠে তা একটি শহরের আবহাওয়া বদলে দেশার পক্ষে যথেন্ট কিনা বিজ্ঞানীরা গবে-যণা করে দেখবেন। যতে।দরে জানি, কল-কাতার বাঁহতসমসাা, পরিবহণ সমসাা ইত্যাদি অনেক সমস্যা নিয়ে কিছুটা ভাবনা-চিক্তা করা হয়েছে কিক্ড ধোয়ার সমস্যা নিয়ে কদাচ নয়, এমন কি ধোঁয়ার সমস্যাটি এখনো পর্যক্ত সমস্যার পেই গণ্য নয়। **हार्यित अभारत व**िष्ठे ना **एटल थन्**रतत कानराष्ट्र ফাটা জমির ছবি বৈরিয়ে থাকে, কিন্তু ওই পর্যন্তই, বাতাস দ্যিত হয়ে যাওয়াটা এই অনাব্হিটর একটা কারণ কিনা— একথা উঠেছে বলে কখনো শর্নি নি।

সমস্যাটা হালকা করে দেখার নয়।
আবহাওয়ার ওপরে দ্যিত বাতাসের প্রভাব
নিয়ে গত কয়েক বছর যেসব বিজ্ঞানী গবেবণা করছেন তাদের ধারণা, এই আপাতদ্ভিতে সামান্য কারণে বিশেবর আবদাওয়াতেও বড়ো রকমের অপল-বদল ঘটে
যেতে পারে।

একেতে বিজ্ঞানীর প্রধান আসামী
করেছেন বে পদার্থটিকে তার নাম কার্বনভাই-অকসাইভ। যে কোনো কার্বনগোচীর
জনলানী পড়েলেই এই পদার্থটি তৈরি হয়ে
থাকে। আশুকার কথা, বাতাসে কার্বনভাই-অকসাইডের পরিমাণ করেই বেড়ে
চলৈছে। গত শতকে ছিল প্রতি দশা লক্ষ্
ভাগে ২৯০ ভাগ, এই শতকে বেড়ে গিরে
হয়েছে ০০০ ভাগ। এই বিড়েখাওল্লার কল

প্ৰিবী তার ডেজের ভাশ্ভারটি পূর্ণ करत द्यंशमञ् त्मोत्र विकीतन स्थरकं। आवात প্ৰিবী তার উত্তাপের মান্রার একটা সমতা বজায় বাথে এই সংগ্রীত তেজের কিছুটা ज्याः भागतात्र महाभारता **इफ़ि**रंत निरम। কথাটা সহজভাবে বসতে হলে এভাবে বলা যায় ৷ পূথিবী তাপ পাছে সূৰ্য থেকে কিন্ত প্রো তাপ ধরে রাখছে না. থানিকটা ছেডে দিছে, এই যোগবিয়োগের ফলে ষেট্ৰক থেকে গেল ভারই ওপরে নিভার করে প**়িথবীর তাপমা**রা। এখন বাতাসে যদি কার্বন-ডাই-অকসাইও জমতে থাকে ভাহলে কি এই বোগে বা বিয়োগে কোনো হেরফের ঘটা সম্ভব? হার্ট, সম্ভব, তবে দুদিকে নয়, একদিকে। সূর্যের তাপ প্ৰিবীতে পেণ্ছবার সময়ে কার্য'ন-ডাই-অকসাইডের যাধা যৎসামানা, কোনোক্রমেই গ্রাহ্য নয়। অর্থাৎ যোগ হয়ে চলে পরো-মানায়। কিন্তু রীতিমতো বাধা স্থিত হয় বিয়োগের বৈলায়। বাতাসে কার্ব**ন-ডাই**-অকসাইড থাকলে প্থিবী থেকে ছেড়ে দেওয়া তাপের বেশ থানিকটা অংশ আত্মসাৎ করে নেয় এই কার্বন-ডাই-অকসাইড, ফলে গ্থিবী থেকে যতোথানি তাপ বিমৃত হবার কথা তা হতে পারে না। খুব ছোট আকারে এ ঘটনার একটি দৃশ্টাশ্ত হচ্ছে কাচের ঘেরা-টোপ দেওয়া বাগান তৈরির হটহাউস। কাচ <u> পাকার জন্মে যতোখানি</u> তাপ ছড়িয়ে পড়ার কথা তার চেয়ে কম ছড়ায়, তার ফলে ঘেরাটোপের মধ্যে তাপমাতার আধিকা ঘটে।

বাভাসে তাপমানা বেড়ে যাওয়ার দর্ন বিশেবর তাপমালা কতখানি বাডতে পারে. অনেক বিজ্ঞানী তার একটা হিসেব করার एक्टो करताहन। हिरमवर्ग कंप्रिन, कनना মেঘদভার বাতাল-সভালন ও আর্লভা ইতাদি কারণেও প্রথবীর উত্তাপের প**্জিতে লক্ষণীয় রক্ষের হের**ফের ঘটার সম্ভাবনা। এই কারণগ**্লোকে** হিসেবের মধ্যে দেখে এবং তা থেকে পৃথক করে কার্বন-ভাই-অকসাইতের হিসেবটি করা চাই। এই ছিলেব মতো, প্রথিবীর বাডালে कार्यन-छारे-जकनारेएकत श्रीतमान यीन रत প্রতি দশ লক্ষ ভাগে ৬০০ ছাগ, তাহলে প্রিথবীর তাপ বেড়ে বাওয়ার মাতা হবে ১-৫ জিগ্নি লেণ্টিয়েড। এমনিতে মনে হতে পারে ১-৫ ডিগ্রি সেন্টিয়েড পরিমাণ তাপ-शाता क्या-राषाणे अस्त किट माताचक मानाम नम्। योगा गानामग्रेटक कर्षे परन উড়িয়ে দিতে চান—বিজ্ঞানীয়া তাঁলের মনে কার্য্যে দিজেন যে, প্রিণীতে গড় হিম-যুল্টির স্থিত তাপমান্তা ও ভিন্তি খেকে ৯ ডিল্লি গ্রেন্টিগ্রেড কমে থাবার ফলে।

বাতাপে কার্যার ভাই-অকসাইভের পরিমাণ বেড়ে যাওয়ার ব্যাপারটা বেলার
করার মডো নয়, তেমনি নয় হুলার পরিমাণ বেড়ে যাওয়ার ব্যাপারটিও। বাতালে
বে ধ্লোর পরিমাণ বাড়াছে, বেতেই
চলেছে, এবং বে-হারে বাড়াছে তায় পরিবাতি
যে বিপর্যারকর হাতে পারে, এ বিবার বিভার
সন্নিশ্চিত তথ্য বিজ্ঞানীদের গবেষণা থেকে
সম্প্রতি জানা গিয়েছে।

গত করেক বছরে ওয়ালিংটনে ধ্লোর পরিমাণ বেড়েছে ৩৭ লতাংশ, সুইজার-ল্যান্ডে ৮৮ লতাংশ। অথাৎ প্রথম ক্ষেত্রে দেও গুণেরও বেশি, দিবতীর ক্ষেত্রে প্রায় দিবগুণ। গত পাঁচ বছরের মধ্যে নিউ-ইয়কের বাতাসে খ্লোর পরিমাণ বেড়েছে দলগুণ। আর দাধ্যু এইসব বড়ো কড়ো শহরে ময়; এমন কি হাওয়াই এলাকাতেও —বেসব প্যামীয় কারণে বাতাস ক্বিত হরে থাকে তার কোনো অপিতত্ব কেখানে দেই—

দপ্দট বোঝা যার, শিক্প বজো বাড়ছে,
মান্বের সংখ্যা বজো বাড়ছে, শহর-এলাকা
যতো বাড়ছে, বাতাস তভো দ্বিত হরে
উঠেছে। কারখানা-এলাকার গেলে সাদাচোখেই দেখা যার আকাশে-বাতাসে হলের
একটা মেঘ ভারী হরে বলে আছে কেন।

বাতাসে ধ্লোর পরিমাণ বেছে বাওয়ার ফল কি হতে পারে? সবচেরে মারাক্ত ফল স্মের তাপ প্রিবীতে পেশছতে বাধা পার। বাতাসের ধ্লো একটা ছাতার মতো আড়াল তুলে ধরে।

তথন কা হবে? সূব' থেকে প্ৰিৰীয়
বতোথানি তাপ পাবার কথা তা বাদ
প্থিবী না পার তাহলে প্রিথবীর তাপ
তবণাই কমবে। গতে দল বছরের অধ্যে
কমেওছে। আর প্রিথবীর তাপজারার হেরফের হলে অনেক বিকছ্ই হটে বাবার
সম্ভাবনা। হালে লক করা বাছের, বালিজ্ববার্র আর তেমন তেজ দেই। সন্দ্রের
রোজের গতি একট্ বেল্প্রালানেলো, এলব
ব্যাপার প্রিথবীর বাতালে ব্লোর প্রিয়াণ
বেড়ে বাওলা। সরালীয় করা বিলা তা নিরে
বিজ্ঞানে প্রেক্র ব্রুক্ত ব্রুক্ত আর্ক্ত আর্ক্ত

statist attell and

नामार्ग स्थाना गीवमान स्थाप नाक्षात क्कारान्य रेकीव दरत गावात मक अकीर मानका वाकारक नारत। वाानावीं वार्ड হলের ক্যাকে আত্তর করে ক্লার বাশ্য প্ৰতে প্ৰতে। শেৰ প্ৰতে তৈনি হয় দেব क्षा क्यामा ।

क्टलाव श्रीव्यान वीन क्य दर्गन दव ভাত্তা ব্লিগাডও হরে বেতে পারে। ৰজ্যে ৰজ্যে কাৰখানা-এলাকার আলেপালে अ बारभावीं जनगीत। वान रूब-कूगिंव আলেপালের এলাকার ব্লিগ্রাতের পরিমাণ निता छनन्छ हानारन इत्ररणा धरे छीवत সম্বাদ জাবিদ্কার করা বেতে পারে। ইণিক্সানার লা পোর্ণ নামে একটি জারগার কিন্তু ভাৰত চালালো হরেছে ও উভিটি नविष् इत्तरह । अहे कात्रभाषि भागित-त ইস্পাত কার্যানা থেকে বার্র গতির দিকে वारेन मृद्ध। क्राप्त वहद्वत प्राथा— ন্মারির কারখানায় ইম্পাত উৎপাদনের হার ৰভো ৰেডেছে ভারই সংশা তাল রেখে-এই জালগার ব্লিটপাত বেড়েছে ৩১ শতাংশ, বছসহ বৃত্তিশাত ৩৮ শতাংশ, শিলাব্নিট ২৪৫ শতাংগ। গোটা এলাকা बद्ध नद्र, न्यू थ्रे बादगाणितः।

আবার উচ্টো ব্যাপার্টিও ঘটতে পারে বৃশ্টি একেবারে না হওয়া। বাতাসে ৰীৰ হলোৱ পরিমাণ বেশি হয় অথচ আর্তা কম হর, ভাহলে খুলোর এক-একটি ক্লাকে আল্লয় করে বে পরিমাণ জ্লীর বাষ্ণ জমতে পারে তা ব্লিটর কোটা হরে করে পড়ার মতো বংগত বড়ো হতে পারে না। ফলে ধ্লোর পরিমাণ কম হলে যা বৃশ্চি হয়ে ধরে পড়তে পারত, হলোর পরিমাণ বেশি ছওয়ার দর্ন তা মেৰের আকারে আকাশেই থেকে হায়। অস্টেলরার কুইল্সল্যাক্তে চিনি কলের এলাকার এ ব্যাপারটি ঘটতে দেখা গিয়েছে। আৰ কাটার আগে এখানে আখের পাতা-গ্রেলাতে আগনে ধরিরে দেওরা হয়। ফলে विश्राप्ट अनाका कर्रफ जागरून करनार्छ गर्दर ৰূবে ও প্রছর ধৌরা ওঠে। এই ধেরা বাভালে ভেলে বে সব জারগায় পেছির শেখানে আশেশাশের জারগার তুলনার ब्रीकेशक जलक क्य।

ক্ষাতা শহরে কেটবানের নিঃসরণ-লল খেকে যে পরিমাণ কালো ধোরা ৰেনিয়ে আনে, সৰ মিলিয়ে ধরলে তার পরিমাশ নিতাশ্ত কম নর। এটা চোখে দেখার ব্যাপার। কিন্তু তার ফলে যে পরিবাদ কতি হরে থাকে তা শ্ধ্ চোধে स्तर्थ द्वाबा वात्र ना। त्मकत्ना ठारे বৈজ্ঞানিক তদনত। কিন্তু আমাদের দেশে स्थीता जात थुला अथरमा शर्यन्छ नमना। दिलालके भगा नह। छत्व विकानीया विभान ব্লুক্তেন বোরা আর ধ্লো এখন আর আৰ্থীলক সমস্যা নয়, গোটা প্ৰিবীর जबनार ल्यात आमता किन्द्र कींत्र मा कींत्र এই সমস্যা নিমে চিস্তা করার ও কাজ क्ता लारका क्छाव हरत मा अवर छाई क्ष जामहाक कार ।

ভেষক ও মহাকাশ কবেৰণার কলো বনির, শিশ্পালী ও আরও করেক জাতের প্ৰাইমেটস-এর সংখ্যা হতে কমে বাছে বলে হ্ৰানৱাৰি নিয়েছেন আন্তৰ্গতিক প্ৰকৃতি त्ररवक्त देखीनहरू। अक्सात वाकिन दक-बारपोर ১৯৬৭ नारत आहरमञ्ज सामगानी कता हरतरह ३,२८,००० जारशत वहरतत कुलनास न्यिकान ।

পঞ্চাশের দশকে পোলিও রোগের টীকা नित्त गटवनगत मार्किन व्यवताटच्ये ১৫ नक বানর লেগেছিল। এর বেশির ভাগটাই ছিল वाका वालत्र, वर्ष्मा स्टब वश्म वृत्ति कत्तल যাদের সংখ্যা দীভাত ৭০ লক্ষ। অধিকাংশ বানরই গিরেছে ভারতের উত্তরপ্রদেশ থেকে। ১৯৬০ সালের একটি সমীকার জানা গিরেছে, উত্তরপ্রদেশের শতকরা ৬৩টি গ্রামে ও মন্দিরে পাঁচ বছর বয়স পর্যণত বানর একেবারে লোগাট। লোকালরে থাকে না এমন বানরও গ্রেষণার জন্যে দরকার হয়। ফলে জলালের বানরবংশও রেহাই পাতেছ भा ।

কেনিয়া থেকে বছরে বানর রুতানী হয় ১৮,০০০। মার্কিন যুক্তরান্ট্রে ১৯৬৬ সালে শিম্পাজী আমদানী করা হরেছিল ৩০০, পরের বছরে ৪০০। একটি শিম্পাঞ্জী জীবনত অবস্থার ধরার জন্যে ৪ থেকে ৯টি শিশ্পাঞ্জী মারা পড়ে। ফলে একমাত মার্কিন ব্রুরাণ্টকে সরবরাহ করার জন্য বছরে শিম্পাঞ্জী মারা পড়ছে ১৫০০ থেকে ২৭০০। পশ্চিম ইউরোপ, সোভিরেত ইউনিয়ন ও জাপানের জনোও সম্ভবত সম-সংখ্যক। এই হার বাড়ার দিকে, কেননা মান-বের সপো শিংপাঞ্জীর শরীরণত মিলের জন্যে গবেষণার কাজে শিম্পাঞ্জীর চাহিদাই সবচেয়ে বেশি।

ভারতে নভুদ রেভিও টেলিকোপ

দক্ষিণ ভারতের উটকাম-েড টাটা রিসার্চ **ইনাস্টটিউটের** ফান্ডামেণ্টাল উল্যোগে ও পরিকল্পনায় যে নতুন রেডিও টেলিকোপটি নিমিত হয়েছে তার প্রথম काष्म मित्नत भव'तिकालत कनाकन ध_नवरे আশাপ্রদ। তেজন্তিয়তার পাঁচটি নতুন উৎস ধরা পড়েৰে এই টেলিস্কোপে।

ट्टिनिट्न्कार्भीं नजाकींक विभिन्छ, ममान দ্রছে স্থাপিত ২৪টি লম্বা ইস্পাতের স্তুম্ভের ওপরে নিমিত। রেডিও প্রতি-ফলনের তলটি তৈরি হরেছে ৫৩০ মিটার লম্বা হাজারেরও বেলি স্টেনলেস স্টিলের তারের সাহাযো। সমগ্র তলটি ১৪০ ডিগ্রী প্র্যুক্ত খোরানো বেতে পারে। জডরেন वाहिकद २६० क्रिं वाहिन वाहिनम्म রেডিও টেলিকোশের চেরেও এই রেডিও ভৌলদ্কোপটির ধরার ক্ষমতা প্রায় চারগরেণ ৰেশি।

शहरमारक कर कारमन्त्रमाथ द्वार

विभिन्धे ब्रमाबन विकानी अवर जाहार श्रम्बाहरमात शिव 'कामहाता'त बनाकम कः

Man I SECURITY THE WAY & ARRIVED THE PROPERTY OF **५० वहा वहारा भारताच** शावन करहराता। कारमण्डलाध्यम् हार्छ छ। क्यांक्रीयम् क्रांकरम न्यान्यत्म । ३३३३ माल कनकाण क्रिय-विम्हानरवाद ध्वन-धन-नि श्रवीकात विग्रन्थ রসায়নে তিনি শীর্ষপ্রান অধিকার করেন। मात जानद्रकारक जारदास किन अध्य विश्ववित्राम्म विकास कटनास क्रमानन বিভাগে কিছুবাল জ্বধাপনা করেন। ১৯২০ সালে ঘোৰ প্রকাৰ্তি লাভ করে তিনি ইংলভে গিরে নোবেল প্রেক্টার विकारी जात बराएँ स्विज्ञातन वायील श्रववणा करतम्। जिनि मारिक्षणीत् विस्व-বিদ্যালম থেকে বসারনে পি এইচ ডি ও ভি-এস-সি ভিশ্লী লাভ করেন। ১৯২৬ সালে স্যার রাক্ষসদের সংশ্যে একযোগে একটি গবেষণা নিবন্ধ প্রকাশ করেন, বা বোজাতার আধ্নিক ইলেক্ট্রনিক তত্ত্বের ভিত্তিস্বর্প।

> ডঃ রায় ভারতে উপক্ষার সংশেলঘণ গবেষণার অন্যতম পথিকৃৎ এবং এ বিষয়ে তার কৃতিত্বপূর্ণ অবদান হচ্ছে 'বারবেরিন' উপক্ষারের সংশেলষণ। ১৯২৮ সালে তিনি ভারতে ফিরে এসে লাহোর বিশ্ববিদ্যালয়ের রসায়ন বিভাগের অধ্যাপকপদে যোগদান করেন। এখানে তিনি একটি উদীয়মান গবেষক-গোষ্ঠী গড়ে তোলেন এবং তাঁর এখানকার কৃতী ছাচদের মধ্যে অন্যতম राष्ट्रन त्नादक भारतन्कात विकासी एः दत-शादिक त्थादाना।

শ্বিতীয় বিশ্বয*ে***শ্ব স্ম**য় ভারত সরকারের আমন্ত্রণ জ্ঞানেন্দ্রনাথ 'ড্রাগস ও দ্রেসিং' দশ্তরের অধিকতার পদ গ্রহণ करतन अवर सम्धरमास मिल्ल छ সরবরাহ দ•তরের সহ-অধিকতা হন। ১৯৫১ সালে সরকারী কাজ থেকে অবসরগ্রহণ করে তিনি বোম্বাই ও কলকাতায় একাধিক রাসায়নিক শিল্প প্রতিষ্ঠানে উপদেন্টার্পে যুক্ত ছিলেন। সরকারী কাজ থেকে অবসর*ে*ণের পরও তিনি ভারত সরকার এবং প^{্র}ামবংগ সরকারের শিক্প-উপদেল্টা ছিলেন।

ডঃ রায় ১৯৩৭ সালের ভারতীয় বিজ্ঞান কংগ্রেসের রসায়ন শাখার সভাপতির ক্রেন এবং ১৯৪৮—৫০ সালে ভারতীয় বুসায়ন সমিতির সভাপতি ছিলেন। তিনি ইনস্টিটাটে অব ভারতের ন্যাশনাল সারেশের ফেলো এবং ররেল ইনস্টিটটে অব কোমান্ট্র ভারতীয় শাখার সভাপতিও ছিলেন। ভারত, ব্টেন, আমেরিকা এবং জামানীর বিজ্ঞান পত্তিকায় তাঁর ১৮০টির অধিক গবেষণা-নিবন্ধ প্রকশিত হরেছে। এছাড়া প্রশাসন, পরিকল্পনা, সমাজ ব্যবস্থা, শিলেশামরন ইত্যাদি বিষরে নানা পত্র-পতিকার তিনি বহু প্রবন্ধ লিখেছেন। চিন্তাশীল লেখক এবং বকা হিসাবে তিনি বিশ্বসূহলে নুশরিচিত ছিলেন। - 99-41-6



শিল্প (পর্বে প্রক শিতের পর)

সিনেমা হল থেকে বোরয়ে কিছুটা নিশ্চিত মনেই এলাম চক্রপাণি মাণ্নর সংধারতি দেখতে। সংগ গোপালও আছে।

মণ্দিরে এসেছি। চক্রপাণির মণ্দির। সন্ধারতি তখনো আরম্ভ হয়নি।

দক্ষিণ ভারতের আরো মন্দির থেকে
এ মন্দিরটি একট্ স্বতন্ত ধাতের।
এ মন্দিরটে একট্ স্বতন্ত ধাতের।
এ মন্দিরটের সাধারনহে। আকারে ছোট
গলেও স্থেনর। তার মন্দিরট আছোদনগতে দক্ষিণ ভারতীয় র্গীতিতে রান্দিরতা
অভিনত রয়েছে, সভাই তা দেখবার মতো।

অবাক হলে চেয়ে থাকি। মন্দিরে অভাতরের অপরে কার্কার্য দেখে বিসময় অভিজ্ঞ হয়ে যাই।

মান্দরের আরতি শেষ হতে ফিরে এসোছ। এবারে আর সেই ছাপাথ্যনায় ন্য, হোটেলে।

এখনো সংপ্রণ হর্ষান হোটেল-বাড়িটি। কাজ চলছে। এতোদিন এটা কেবল রেন্ডোরীই ছিল, এখন আয়োজন চল্লেড এটিকে আবাসিক হোটেলে র্পান্ডবিত করার।

ধোটেলের হলঘরটিতে, যেটি তথনে। সম্পূর্ণ নয়, কাজ চলছে সেইথানেই আমা-দের জনো থাকার বাবদ্থা হয়েছে। রাতটা এখানেই কাটাতে হবে।

সময়ের সপে সবই মেনে নিতে হয়। যেমনই হোক, হোটেলের হলঘরের মধ্যে একটি তক্তপোষকেও আজ মনের মতো মনে হলো।

আমার তব্ও বিশ্রামের অবসর আছে:
কিন্তু স্থারার অবসর কই। তাকে যে
এখন রালার আয়োজন করতে হবে। ঘরের
কোনেট দেটাও জনালাতে বসলো স্থারা।
কিন্তু বাধা দিলে গোপাল। জানালে, নিতে
ভালো চুল্লি আছে, মিছে কেন এসব
কামেলা করা।

একট্বাদেই সে ওপরে চলে এলো। রালার কথা জিল্পাসা করতে মাথা নাড়লো। ওর ওই এক স্বভাব। সব কথাতেই মাথা নাড়বে।

2인 - 마른사용 스팅스, 그리고 있다는 말이 스^로바면 여러 전 호텔관측관등이 독개 경험적으로 보였다.

সংধীরা একট্ বিরত মনেই ওপরে ওঠে এলো। জানালে, নিচে সে রাল্লা করবে না। ভয় করছে তার।

-কেন কা হলো?

— কি জানি, পাঁচ ছ'জন যণ্ডাগোড়ের কালো কালো লোক নিচে জটলা করছে। কী যে বলছে তারা, কিছুই ব্যুতে পারাহ না। তাছাড়া অতো বড়ো উন্ম— গনগন করে জলেছে আগুন। আর এই সব ভয়ানক লোকজন, ওর মধো আমি একজন মেথেয়ান্য— কি করে থাকবো! আমি পারবো না নিচে রামা করতে।

—ভ্য় কি? বললাম, গোপাল না হয় সংশ্য থাকছে। এবারে সংধীরা কিছ্টা আধ্বস্ত হলো। গোপালের সংশ্য নিজে চলে গেল।

ওরা চ**লে যেতে চুপচাপ বনে রইলাম** একা।

রান্নার পালা চুকতে স্থারীর ওপরে এলো গোপালকে নিষে। স্থারীর খাবার পরিবেশন করতে আরম্ভ করলো। গোপাল দাঁড়িয়েছিল একানেত। জিজ্ঞাসা করলাম তুমি খাবে তো?

—না, আমি খেরে এসেছি। —সে কী!

গোপাল কথা না বলে নীরবে দীড়িয়ে রইলো।

খাওয়া-দাওয়ার পালা চুকলো। এবারে
নিশ্চিকে বিশ্রামের পালা। শুধু আজকের
রাতট্বকু। কাল ভোরেই তো চলে থেতে
হবে। কদিন থেকে এই তো চলছে।
আজ এথানে, কাল সেখানে। কোন নিদিতি
ঠিকানা নেই, শুধু যাখাবর মান্বের মতে:
পথ চলা।

গোপাল তথনো বাড়িবেবিল। জিজাসা করলাম, ভূমি কোষার থাকবে জনশাল?

গোপাল এদিক-ওদিক ফিরে ডাকালো। বললো, বারাম্পার আপনাদের দরজার বাইরে।

-- अमृतिस्थ शत मा रहा?

—না। জন্ত কণ্ঠে গোপাল বললে, তারপার সে নিঃশব্দে ঘরের বাইরে চলে গেল।

রাত। ছুম আসেনি তখনো। ছুম-ছুম
তংলায় জীবনের হিসেব করছি। হিসেব এমন
কিছু নয়—কদিনের এই ছুটে চলার
হিসেবটা মিলিয়ে নিছিছ মনে মনে। এরই
মধ্যে এক সময় কখন যেন ছুমেল্ল মধ্যে
আজকের সব চিন্তা শেষ হয়ে গেল।

ঘ্ম ভাঙালো রাত ভোরে। গোপালের ডাকে। সকাল সাতটার টেন ধরতে হবে, সে থেয়াল তার ঠিকই আহে। পাঁচটা বাজার সংগ্য সংগ্য সে আমাদের ভাক দিরেছে।

সকলে সাতটার ট্রেন। হাতে আর সমর নেই। এখনই সম্পূর্ণ ব্রতে ছবে হাবার আয়োজন।

সব কিছু গো**ছগাছ হয়ে বেতে গোপাল** গাড়ী ভাকতে গে**ল**।

ঘোড়ায় টানা গাড়ী। ধ্রপদী ছন্দে চলে।

্রোটেল থেকে স্টেশন। এমন কিছ্ দ্রের পথ নয়। হোটেল থেকে বেরোবার মাথ্যতে একবার ফিরে চাই হোটেল-বাড়িটার দিকে। ভাবি, জীবনের চলার পথে আমরা একটা রাভ কাটিরেছিলাম ওথানে।

ফোশনে পেশছেচি। টেনের কামরার স্থানত করে নিয়েছি। কিল্কু কী জানি কেন, গোপাল তখনো দাঁছিরে আছে, মুখ-চোখ দেখে মনে হয়, কিছু বলতে চায় লো। এক সময় কাগজ-কলম এগিয়ে দিলে। একটি কুণ্টা জড়ানো স্বে বললে, একটা সার্টি-ফিকেট সার।

-সার্টিফিকেট! কী হবে।

—আপনার একটা সার্টিফিকেট পেলে আমার অনেক কাজে লাগবে।

গোপালের মধের দিকে ফিরে চাই। ভাবি, আমি দ'কথা লিখে দিলে ওর যদি কোন কাৰু হয়, ভালোই তো!

সাটিফিকেট লিখে গোপালের হাতে দিলাম। গোপাল একবার আমার মুখের দিকে তাকানো। দেখলাম, এর দুটি চেথ কৃতব্যতার উল্জন্ম হরে উঠেছ।

প্রেটশনের ঘন্টা বাজলো। এনজিনের বাদ্যী উঠলো বেজে। বাদ্যীর সংকেত দিরে ট্রেন চলতে শ্রুর করলো।

গোপাল তখনো দাঁড়িরেছিল প্লাট-ফমে। জানালা দিরে মূখ বাড়িরে ছিলাম। হয়তো গোপালকে দেখার জন্মে। ্র্থক সময় গোপাল আমার দ্ভির অজিল হারিরে গেল অপস্রমান ছায়ার মাজা:

জীবনে চলার পথে এমনি কছে। মানুব আঙ্গে বায়। হয়তো অক্তাতসারে তারা মনের মধ্যে দাগ কেটে বায়। জীবনের চলতি পথের ছণ্দ তো এরই মধ্যে।

শীতার্ত আবহাওয়ায় যাতা শ্রে করে-
ভিলাম। বেলা বাড়ার সংগ্রা সংশ্রা সং আমেজট্কু হারিজে গেলা। নির্মোঘ আকাল, কুয়াশার জালট্কু সরে গেছে। স্থের আলো করে পড়েছে প্রকৃতির পটভূমিকায়।

চলতি ট্রেনের জনোলার ধারে বসে-ছিলাম। দৃণ্টি ছিল বাইরে। যেখানে উদার আকাশ—দিগদেতর পারে মাটি স্পূর্ণ করেছে।

অবাক হয়ে চেয়ে থাকি। দেখি দু'-চোখের তারায় চলমান ছবি।

মুহাতের জন্যে কতো ছবি স্পণ্ট হরে ফাটে হারিয়ে যায়। জীবনের হারানো মাহাতের সংশ্য তারাও যেন হারিয়ে যায়।

শুধু আমি দই--সংধীরার দৃণ্টিও তথ্ন বাইরে চলমান দুশোর মধ্যে সমানে ভুটে চলেছে। সে-ও দেখছে চলতি পায়ের ছবি।

পথ চলতে এই আনদন। ক্ষণিকের দেখা, ক্ষণিকের উপলব্ধি—তার্ট্ট্র মধ্যে ক্ষবিনকে মিশিয়ে দেওয়া।

বেলা এগারোটা।

চিদান্বর্মে টেন এসে দাঁড়ালো। টেন
থেকে নেমেছি। এসেছি শ্লাটফমের বাইরে।
একট্ দাঁড়িয়ে থেকে কোপায় থাবো প্রথমে
একট্ দাঁড়িয়ে থেকে কোপায় থাবো প্রথমে
এই কথাটা ভেবে নিয়ে ঘোড়ার গাড়ী
করেছি। ঘোড়ায় টানা টাংগা। আমাদেরকে
সওয়ারী করে ছুটে চললো নটরাজের
ফান্দেরের উদ্দেশ্য। গাড়ির ভাড়া ঠিক
করেছে হলানা। মিউনিসিপ্যালিটির রেটে
বাধা আছে।

চিদাম্বরমে শহরের রাজপথ ধরে চপেছে আমাদের টাপ্সা। এখানেও দেখার বিরাম মেই। চলতি পথে যেট্কু দেখার দ্'চোখ ভরে দেখে নিই।

নটরাজের মন্দির। যার কথা এতোদিন করেছি, যে মন্দির দেখার বাসনা এতোদিন মনের মধ্যে রেখেছি, সেই মন্দিরের সামনে এসে দাঁড়ালাম। শাড়ি থেকে নেমে চেয়ে থাকি মন্দিরের দিকে। তারপর গাড়িতে জিনিসপত্তর রেখে গাড়ির লাইসেন্স নাম্বারি সংশ্যে রেখে নন্দ্রপদে মন্দিরের দিকে এগিরে চলি।

দক্ষিণ ভারতের আরো মন্দিরের মতো এ মন্দিরের পথাপত্যকলা একই ধরনের! ফেট্কু পাথকিয় ভার গঠনলৈগীতে এবং বৈভিয়ো মলিদরের চারদিকে বা কিছ্ দর্শনীর,
দেখা শেষ করে নটরাজের মূল মলিদরে
প্রবেশের পালা। লক্ষ্য করলাম—আরো
দর্শনাখী বারা, ত্যরা সবাই নটরাজ দর্শনে
চলেকে খালি গারে এবং খালি পারে। গারে
শুধ্ একটি করে চাদর।

অগত্যা আমিও গারের জামা খুলে ন্দ্রীর হাতে দিলাল। বললাম, তুমি অপেক্ষা করো। আমার দেখা হরে গেলে, তুমি বাবে।

স্থীরা আমার হাতে কিছা প্রসা দিয়ে বললে, প্রেলা দেবে কেমন?

স্ধীরা দাঁড়িয়ে রইলো। আমি আরো দর্শনাথীর সংগ্যানিদরের ভিতরে চললাম, নটরান্তের মূর্তি দর্শন করতে।

বাইরে বারাপা , থেকে দেখলাম উচ্চ বৈদীর ওপর নটরাজের ম্তি। ছোট হলেও স্ফানর। দৃশ্পাপা আাদবার পাথরে তৈরি। যার পিছনে একটি দীপ-শলাকা জন্তার সংগ সংগ্য ম্তিটি যেন উল্ভাসিত হয়ে ওঠে।

ভাবি, কী বিচিচ এই রুপকলপনা। ন্তারত মহাকাল। স্থিত, স্থিতি, কালের ঈশ্বর।

দীড়িয়ে থাকি আচন্তল। প্রণাম করি। তারপর যাই দেবগুহে দেখার বাসনা নিয়ে।

এবারে বিসিত্তনা হয়ে পারি না। কোন মাতি নেই—শ্ধু পটে অকা আকাশ। মনে হয়,—সেই অর্প অবায়— সেই সনন্ত সন্তার প্রকাশ এই আকাশে।

জানি না আমার বাাখ্যা ঠিক কিনা—
জানতে চাইনে কারো কাছে—ভাবলাম,
ঈশ্বরওড়ের মলে কথাই এই। তিনি অর্পে
—িতিনি অবায়, তিনি অসীম অন্তে
বিরাজিত।

চিত্রিত আকাশপটের দিকে তাকিয়ে হিলাম। হঠাৎ মনে এলো, স্থারার কথা। সে আমার অপেক্ষায় আছে।

ফিরে এলাম মন্দিরঅপ্যান। যেখানে স্থোরা দড়িয়ে ছিল আমার অপেক্ষার।

এবারে স্থীরা গেল মলিরে। আর আমি দাঁড়িয়ে রইলাম তার অপেক্ষায়।

শ্নেছি, চিদান্বরমে আরো একটি
দর্শনীয় পথান আছে, ধেখানে ভরতনাটামের
১০৮টি মুদ্রা পাথের ক্ষোদিত রয়েছে।
আমি নাটক ভালোনাসি, নাটকের মধ্যেই
নিজেকে মিশিয়ে দিয়েছি, ভাইতো ভরতনাটামের মন্ত্রা দেখতে এতো আগ্রহ।

কিন্তু কী আন্চর্য! আমি দ্রদেশী পথিক, যা দেখতে আমার অদমা আগ্রহ, দেই দশনিীয় পানটির নিশানা জানাতে পাবলা না কেউ। শেষটা মুস্কিল আসান করলেন এক চন্ত্রাক। তার কাছ থেকেই জানতে পারসাম প্রের হ্রিন্য। মনের মধ্যে বে কৌত্তল জমা ছিল, অবংশবে সে কৌত্তলের অবসান হলো। ভরতনাটামের প্যারক আমার চোখের সামনে।

পর পর ১০৮টি ফলকে ভরতনাটামের মন্ত্রা। প্রের্থ আর প্রকৃতি—সীলায়িত দেহতন্। কতো বিচিত্র তার প্রকাশ। কতো বিচিত্র তার হল্প।

দ্'চোৰ ভরে দেখি, ভাবি বদি শিল্পী হতাৰ রঙ-তুলি দিয়ে এ'কে রাখতাম ভরত-নাট্যমের এই ধ্রুপদী ছন্দকে। বদি কামেরায় ছবি তুলতে দিত, তাহলেও হয়তো ছবি তুলতাম। কিন্তু এখানে ছবি তেলা নিবেধ।

কিন্তু অঞ্জনশিলপী আমি নই। অথচ মনের ক্যানভাসে চির্নিদ্রের জনো আকা হয়ে গেল সব কিছু।

এবারে চললাম আলামানাই বিশ্ব-বিদ্যালয়ের উদ্দেশে। বাইরে থেকে যতটুকু দেখা—নয়তো আর কিছু নয়। দেখে মনে হলো, আজ যে সম্ভাবনা দেখলাম, একদিন হয়তো তা পূর্ণ হবে দানা নতুন সম্ভাবনায়। বিশ্ববিদ্যালয়ের ভাইস-চ্যাম্সেলালের বাস-গৃহতিও দেখা হলো। স্ক্রে।

বিশ্ববিদ্যালয় দেখতে অনেক সময় গোল। খ'ুটিয়ে দেখতে গোলে আরো সময় যেতো। কিন্তু এই বেলায় আর তা সম্ভব নর্। সেই সকাল থেকে একটানা ঘ্রছি, দেখছি— এবারে একট্ বিশ্রাম চাইছে দেহ। স্ধীবাকে ক্লাত মনে হলো। ভারও মনে একট্ বিশ্রাম-চিন্তা।

বিশ্ববিদ্যালয় থেকে ঘোডার গাড়িতে সোজা দেউশনে চলে এলাম। ক্ষিধেও প্রেছিল খ্ব। ভালোমন্দ বিচারের অবসর নেই। দেউশন ভাটেফর্মে খাবার পাওরা যায়। ভাটেফরের একান্ডে বসে মাদ্রজী-

আজই প্রথম মাদ্রাজীখানার প্রাদ গ্রহণ করলাম। ভাত আরু ইডলিধোনা। অপ্রে স্ক্রান্মনে হলো। ২য়তো সেই প্রচণ্ড ক্ষ্যার মাথে বলেই।

•লাটফমে আরো মানুষের ভিড়। স্বাই অপেক্ষা করছে ট্রেনর জনো।

অবশেষে প্রতীক্ষার অবসান হলো। বেলা চারটেয় ট্রেন এসে দ'ড়ালো। ভিল্ল-প্রমণামী ট্রেন। ভিল্ল্প্রেম থেকে আবার মাদ্রাফণামী ট্রেন ধরতে হবে।

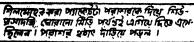
বেলা তথন চারটে। শীরের সূর্য পশ্চিমে চলে পড়েছে।

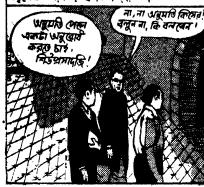
ংখালা জানলোর ধারে বসেছিলাম। দুলিট ছিল বাইরে।

গ্রাম-জনপদ-প্রাণ্ডর পেরিয়ে ট্রেন ছাট চলেছে। এরই মধ্যে চোখের প্রদায় প্রতি-ফলিত হয় চলমান জীবনের ছবি।

(ক্রমণঃ)

शिविसा कवि पवार्य • क्षाम्बर्धि अधि





















शियष्टाम थाक्रन



करनक जीवरम (वर्कान्नरनद श्रुप्टेमा ।

সেদিন বাস-ট্রামের জ্যামে পড়েছিলেন দ্বরং অধ্যাপক। খণ্টা পড়ার বেশ কিছ কণ পন্ন হাপাতে হাপাতে ক্লাসে । ছকলেন। লোল কল করলেন। কমেক মৃহ্তে চুপচাপ। ভারপর তিনি শ্রু করলেন বাস-রানের রোজকার দ্বিসিহ জীবন। একজন বলে ৰসলো, আমি কিন্তু স্যার, শব্দার ভিড়েও ঠিক নিজের জায়গা করেন। অধ্যাপক একটা হেসে বললেন, বিকস ইউ ডু নট টেক মাচ দেপস। তারপর আমাদের একজনের দিকে ইংগিত করে বললেন, কিন্তু ধর কথাটা একবার ভেবে দেখ। বংশাটি নিজের বাহাদ্বি শাহির করতে করতে গিয়ে চুপ্রে বেশা ওর সংগো আরেক বন্ধ; জড়িয়ে নিক্ষের দেহাকৃতিতে লক্ষায় লাল হলো। আর স্বাই হো ছো হাসিতে মন্ত্র ভেশে পড়লো।

সতিত্য, ভাববার মতো। একজনের দার্ণ ক্রিমজনে চেছারা। কি করে শরীরে একট্ মানে করা বার সে নিরে ওর ভাবনার অপ্ত নেই। আর একজনের ঠিক তার বিপরতি। মেদবাহালো সে ভূগাছে। কি ভূপারে মেদ কুমিরে দেহ প্রাভাবিক করা বার সে নিত্তে এর ভাবনার অপত নেই। এর কাছেই শ্রেছি, মেদ ক্যানোর কন্য





নাকি মাঝে মাঝে উপোস করে। এছাড়া আর কিছু ওর জানা নেই। আমানেরও জানা ছিল না। তাই সঠিক কিছু বাতলাতে না পেরে চুপ করে থাকতাম।

মাঝে মাঝে বেশ মজা হতো। ওরা
দ্'জন পরস্পরের দ্'থে দ:খী। আমরা
ঠাটা করে বলতাম, তোরা নিজেদের মধ্যে
মেদের আদান-প্রদান কর। ওরাও সে
ঠাটার যোগ দিত। তারপর একজন হরতো
বলতো, দাঁড়া, তোদের মডো যথন হবো
না, তথন এই রসিকভার শোধ তুলবো।
আমরা সমবেত হাসিতে ফেটে পড়তাম।
জানতাম, কোনদিন সম্ভব হবে না।

বিজ্ঞান আজ অনেক অবিশ্বাস্য সংজ্য আমাদের পেণছৈ দিছে। মহাকাশ থেকে চাঁদ মানুষের গতি ক্রমেই সহজ হয়ে আসহে। মেদবাহ্লা আর এ-যুগে কোন সমস্যই নর। সহজ প্রক্রিয়ায় এর হাত থেকে রেহাই পাওয়া সম্ভব। লিটল রামেল দুর্ঘীটে শ্রীমতী প্রভা খৈতানের ফিগারেট থেকে ঘুরে আসার পর এ-কথা নিশ্চিত-ভাবেই বলা যায়।

শ্রীমতী থৈতান কলকাতা বিশ্ববিদ্যা-লয় থেকে দর্শনিশান্তে এম-এ পাশ করেন। তারপরই তার সামনে এসে যায় বিদেশ-ভ্রমণের স_ংযোগ। তিনি পাড়ি জম[া]ন হলিউডে। নিছক বেড়ানোই উল্দেশ্য ছিল। কিন্তু এখানে আসার পর একটা জিনিস তাঁর মনে ধরে। তিনি লক্ষ্য করেন, মার্কিন মুল্লুক তথা পশ্চিমী দেশের সব মহিলারাই অত্যন্ত সৌন্দর্য-সচেতন। দেহের সৌন্দর্যকে <u> ব্যভাবিক রাখতে তাঁদের চেন্টার অল্ড</u> নেই। সে-তুলনায় আমাদের দেশের মেয়েরা অনেক পিছিয়ে আছে। তারা সাজতে-গ্রন্থত চার কিল্তু সর্বদা দেহ-সৌল্দর্য বজ্ঞার রাখায় তেমন সচেতন এবং বছবান নন। তাই গ্রিশের পরই ভারতীয় রমণীর দেহ-সৌন্দর্য ফিকে হয়ে আসে। অপরপক্ষে. পাশ্চাত্য রমণীর সৌন্দর্য বজ্ঞার থাকে প্রায় পণ্ডাশ পর্যনত। শ্রীমতী থৈতানের মনে ভোলপাড।

তিনি ভতি হয়ে গেলেন টেনিং নেবার উদ্দেশ্যে। দেহ-সৌল্ফর্য সঠিক রাখার কারদাকান্ন দেখে গিয়ে দেশে ক্যি কোন

मएजन : हिटाफिट्नटी वानवी नन्ती

কালে লাগেন। হলিউডের লেক উড বিউটি
কুলে ভতি হলেন শ্রীমতী থৈতান। সেখান
থেকে শিক্ষা সমাশ্ত করে ফিরে এলেন
দেশে। এসেই আর দ্বিধা করলেন ন। ছোটখাটো পরীকাম্লক প্রয়োগ শর্ম করলেন।
ফল পাওয়া গেল হাতে হাতে। ক্রমে নাম
ও খ্যাতি ছড়িয়ে পড়তে খ্ললেন
ফিগারেট। এখন সারাদিন লেকজনের
যাতায়াত। শরীরের বাড়তি মেদ কয়িয়ে
সবাই সহজ ব্বাভাবিক হয়ে বাঁচতে চায়।

কথায় কথায় শ্রীমতী খৈতান জানালেন. আমাদের ধারণ, ওজন কমাতে পারণেই বার্ডাত মেদের প্রকোপ থেকে বে'চে যাবো। কিন্তু এটা নেহাড়েই আমাদের অজ্ঞতা। এই অজ্ঞতার বশবতী হয়ে মেদবহুল অনেকে খাওয়া-দাওয়া কমান উপোস করেন। এ-কথা ঠিক, মেদ কমাতে হলে খাওয়া-দাওয়ায় নিয়মকাননে মেনে চলা উচিত। তবে সেটা নিজের ইচেছ মাফিক নয়। দেহের ওঞ্জন যেমন কমাতে হবে, তেমনি দেহসৌষ্ঠবত ফিরিয়ে আনতে হবে। মুখের কু'চকে-যাওয়া চমড়াটা টানটান করে মূখকে আকর্ষণীয় করা একটা বিরাট দায়িছ। ফিগারেটের সমস্ত কাজকে শ্রীমতী থৈতান বিবৃত করলেন, স্লেন্ডার বডি, ब्रिञ्क ম্টেপ, স্টেডি নাড'স আণ্ড দি ক্রিয়ার স্কিন অ্যাণ্ড স্পারকলিং আইজ। এই হলো **সঠিক নারী দেহ, যার কথ** আমরা ভাবি আর ব্রুপন দেখি। সেই দেহ-ই স্বাইকে উপহার দিতে চান শ্রীমতী খৈতান এবং তার ফিগারেট।

শ্রীমতী খৈতান সব খ্রিরে দেখালেন।
আর এটাই স্পন্ট হলো, শুখ গুজন
কমানোর জনা উপে স করলেই মেদ করে
না। এজন্য প্রয়োজন অনেক্রিছ্। তব্ মেদ
কমানোর কাজ দিয়েই শুরু করা হয়। এজনা
রোলার বরেছে। রোলারের নাম শুনে
আংকে গুঠার কোন কারণ নেই। এটা কেন
দৈহিক নির্যাতন নর। বরং ভারম্ভি।
এক্সারসাইজ সাইকেল, গুরাফিং আর
রোরিং মেশিন খেকে সহজেই অন্মান করা
বার শরীরের সর্বান্ধের চাজনা এর লক্ষা।
মেদ কম্ক কিন্তু সেই সপ্সে দেহ হোক
স্ঠাম। ডাই রয়েছে মাসল সংকোচনপুশ্তি। মুখের ক্রিচকানো চাম্ডাকে

স্বাভাবিক করার ব্যবস্থাও ররেছে। সংগ্র সংগ্রা চোথের স্বাভাবিক সৌপ্রত্বও ফিরে আসে। রক্ত-চল চলের স্বাভাবিকতা বক্তার রাখার জন্য রাভ সারকুলেটরও আছে।

ফিরে এলাম শ্রীমতী খৈডানের
চেন্বারে। মেদবহুল অনেক মহিলাকে
দেখলাম খুলিমনে চলে যেতে। হঠাং
জিজ্ঞাসা করে বিস বাড়াডি মেদ-এর কারণ
কি। ছোটু হেসে তিনি জানালেন, জমা এবং
খরচে হেরফের হলেই বাড়াডি ফাটে শরীরে
জমা পড়ে। তুলনায় এনার্জি কম খরচ হলেই
এই অঘটন ঘটে। কেউ বাদ রোজ এলকাপ আতরিক চা খান তাহলে দ্ব-চামচ
চিনির কালেবির তার শরীরে জমা
পড়েলা এইডাবে অতিরিক্ত কাালোরির জমা
হরে ফাট-এর আফারে আত্মপ্রকাশ করে।

চিকিৎসা এবং ভারেট দুটোই এক সংশ্য চলে। চিকিৎসার অর্থে কোন ওব্ধুপত নর,--প্রেক্তি মেসিনের বাবহার। তবে চিকিৎসার সমরে এবং পরেও ভারেট মেনে চলা অরণ্য কর্তবা। ভারেট মেনে না চললে দুধ্ চিকিৎসার ফল ফলবে না। হসং একটা ভার্ট চাপ দিয়ে আমার সামনে মেলে ধরলেন। ভারপর ব্রিয়ের বলতে শরে করলেন এখানে আসার পর ওজন কমতে দুরু করে। দেহের বিভিন্ন অংশও সুব্য হওরার পথে। কিন্তু মাষপথে বিচ্যাহ ঘটে। ওজন বাড়ে, দেহের বিভিন্ন অংশও।

क्तम अद्रक्य श्रामा ?

নিকেই প্রশন করে উত্তর দিকেন, ইতি-মধ্যে ডারেটে অনিরম ঘটেছে। এ ছাড়া আর কোন কারণ নেই এবং থাকতেও পারে না। রোগী অবদা স্বীকার করে না। তবে আমরা বসে না থেকে খোলখনর নেই এবং জানতে পারি মূল চুটি এখানেই।

আবার দেখুন এই চার্টটা। ঠিকমতো শুধ্ধ ওজনই কমঙে না দেহ সামলসাও রক্তি হচ্ছে। এখানে কোন অনিক্রম স্বটেনি। সবাই তো সমান নয়।

কথাটা ষোল আনা খাঁটি। মেদ বাড়ার সংগা সংগা থাওয়ার লোভ বাড়ে। আর সে লোভ পমন করা হরে পড়ে খুবই কঠিন। চিকিৎসা করতে এসে এর সংগা শুরু হরে বার জোর লড়াই। কেউ লেতে, কেউ হারে। বে লেতে সে সহজে সেরে ওঠে। আরে বে হারে তাকেও জিতে সারতে হর। সমন্ত্র কত লাগবে কেউ জানে না।

এমনিতে মোটে তেরটা সিঠিং-এর
দরকার। চার্লাও খব মডারেট। একদিন ছাড়া
একদিন সিঠিং। এতে ওজন কমে আট থেকে
দশ পাউশ্ভের মতো, শরীরের আরতন প্রাস্থ পার। তবে কারো কারো একট্ বেশি সমর
লাগে। তিন মাস থেকে এক বছর পর্যাত কোর্স আছে। শ্রীমতী খৈতান এবার
তার কর্মকেন্দ্র বিস্কৃত কর্মবেন আসামে।
বিহার ও ওড়িশার সম্ভ্রেনা আছে।

—शर्मीका



(अकाग, श

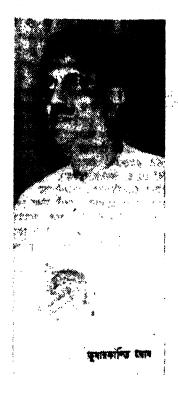




বেণ্গল ফিল্ম জার্ণালিস্টস্ এসোসিয়েশন-এর ৩৩তম বার্ষিক প্রশংসাপত্র বিতরণী উৎসব

৮ মে স্থ্যায় রবীশা সদন আছিম ুখে চলেছিল স্বাই—চলচ্চিত্র স্পর্টের প্রযোজক, পরিবেশক, প্রদর্শক, পরিচালক, চিত্রনাট্যকার, সংগতি পরিচা<mark>লক, বিভিন্ন</mark> কলাকুশলী, অভিনেতা ও অভিনেতী, र्विभन्छ (मधक, नाष्ट्राकात, जाःवाधिक, तास्त्र সরকারের পদস্থ কমচারী এবং জীবনের বিভিন্ন কেন্ত্রে বহু মাননীয় আম'কুত অতিথিব্দদ। রবীন্দ্র সদনের প্রেক্ষাণ্ট জনপ্ণ চয়র-প্রাণ্যণে অসংখ্য মোটর গাড়ী। একটি শাল্ড গা**ল্ডীর'প**্রণ শোক্তন পরিবেশে শরের হল বল্গার চলচ্চিত্র সাংবাদিক স্থেবর (বেশাল জান বিশ্টস্ আনের্সিরেশন-এর) ৩০ভয বার্ষিক শংসাপর বিতর্গী মঞ্জের উপর সভাপতির আসমে সংস্থা-সভাপতি অশোককুমার সরকার অতিথির আসনে তুষারকাণ্ডি হোষ, উদ্বোধকের ভূমিকায় প্রবীণ নট, রুষীন্ত্র ভারতীর ভূতপ্র' ভীন, নটস্র' ভঃ অহান্দ্র চৌধ্রী, বিশেষ অতিথিয়াপে







বর্তমানে নেপালের ভারতের রাজীদতে এবং পূর্বে কেন্দ্রীয় সরকারের তথা ও বেতারমন্ত্রী শ্রীরাজবাহাদ্রে এবং শ্ংসাপত-দারী বাঙলার সবাক ছবির প্রথম যুগের স্বনামধনা উমাশশী দেবী। সংস্থার সহ-সভাপতি কালীশ মুখেপাধ্যায় স্বারা সকলে মালাভূষিত হবার পরে সভাপতি উপস্থিত সকলকে সাদর অভ্যর্থনা স্বারা আপ্যায়িত করেন। এর পর নটস্হর্ অহীনদ্র চৌধুরী তাঁর উদেবাধনী ভাষণে বাংলার চলচ্চিত্র জগতের স্থেগ তাঁর সম্পর্ক বিষয়ে **কিছ**ুটা স্মৃতিচারণ প্রস্থেগ বলেন, চলচ্চিত্র সমালোচকরা হচ্ছেন শিলপীদের বন্ধ্, দাশনিক বিচারক ও পথপ্রদর্শক ্ফ্রন্ড, ফিলজফার আন্ডে গাইড)। চলচ্চিত্র-িংলেপর উল্লতিকলেপ বি-এফ-জে-এর গ্রামের প্রাথকতা লাভ কর্ক, এই আশা প্রকাশ করে তিনি অন্তানের উম্বোধন করেন। প্রধান অতিথিরট্রপ তুষারকাণিত ঘোষ চলচ্চিত্র সমালোচনার প্রথম যুগু থেকে বভূমান অবস্থার একটি টুলনাম্**লক ম**নোজ্ঞ বিবরণ দানের পরে ভারতীয় চলচ্চিত্র জগতে বি-এফ-জে-এর গ্রুছপ্ণ ভূমিকা সম্পকে কেম্প্রীয় ^{স্বকারের দ}্ভিট আক্ষ**ণ করেন। স্বশে**ষে শীরালবাহাদরে ভারতের জাতীয় জীবনে ^{বালো}র মনীষীদের সংথ'ক অবদ্যানর কথা





न्नविवास २८८म त्य

नकान ১०५४म

मिन्ने अन्त्राह्य

মাৰেণ ভারে ওজাস্বনী ভাষার উল্লেখ क्षाबाब भएक वरमम : हर्नाकरतन THE S ব্যক্তাই আত্তর্জাতিক ধ্যাতিভূবিত; তাই জিন এখানকার চলচ্চিত্রকারদের স্মরণ

क्ट्रानीत जीवनत

टबार्र पृष्टिक जिल्लाम अप्यू जिल्लाम अध्यापन बन्द **মূলার রার ৪ কালীপ্রদান বেহে ইত্যানি**

করিয়ে দিতে চান, দেশকে জাভীরতাবোধে উন্দ্রেশ্ব করতে চলচ্চিত্রের শক্তি অপরিসীম; বিদেশের সংখ্যে ভারতের ঐক্যবন্ধন প্রচেন্টার চলচ্চিত্র রাম্মদ্তদের থেকেও ঢের বেশী সন্তির ভূমিকা গ্রহণ করতে পারে। বক্তামালা শেষ হওয়ার পরে বি-এফ-জে-এর বিচারান,যারী শংসাপ্রাপক-দের মধ্যে শংসাপত উপহার দেন স্বনামধন্যা অভিনেত্রী উমাশশী দেবী। পশ্চিমবংশের বর্তমান রাজনৈতিক অবস্থার জন্যে বোস্বাই থেকে অধিকাংশ প্রাপকই আসতে অসম্মতি প্রকাশ করলেও অজয় সাহানী (ছিন্দী ছবির শ্রেষ্ঠ সহ-অভিনেতা), কে কে মহাজন (হিন্দী ছবির সাদা-কালো টিয়-গ্রহণে শ্রেষ্ঠ), মুকেশ (হিন্দী ছবির শ্রেষ্ঠ নেপথ্য গায়ক) প্রভৃতি ষে-ক'জন আসবেন বলে জানিয়েছিলেন, তাঁরাও ঐ ৮ মেতে বোম্বাই থেকে দিনের উড়োজাহাজ শেষ

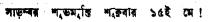
ब्रह्महर्क ना शाकात करना अस्त स्मीहरू পারেন নি। হিন্দী ছবির শ্রেণ্ঠা অভিনেতী ज्ञाजिनी भूटन निकासस्टिन ज्ञूत्व কানাডার ব্রেছেন বলে তার মা শ্রীমতী বিজয়া মূলে (বিনি একদা এই কলকাতায় চলচ্চিত্র স্পোর অফিসারর পে যোগ্যতার সংশ্য কাজ করবার সমরে চলচ্চিত্র জগতের কহ্মনকেই আপন অমায়িকতার প্রণে বল্ধছেস্টে আবন্ধ রেখেছেন) শংসাগর গ্রহণ করবার জন্যে তার বর্তমান কর্মপথল দি**ল্লী থেকে এ**সেছিলেন। শ্রেষ্ঠা সহ অভিনেত্রী শশিকলার শংসাপত গ্রহণ করে তার কন্যা আশা জয়েদকা। শংসাপ বিভরণের পরে চা-পানের বিরতি শে বি-এফ-জে-এর শ্রেষ্ঠ কম্বী-সদস্য হিসে সহ-সম্পাদক অশোক মজ্মদারকে সংস্থ স্তম্ভদ্বরূপ বাগীশ্বর ঝা প্রদত্ত <u>র</u>ৌপ পদক্তি প্রদান করেন শ্রীমতী উমাশা দেবী। হেমতকুমার মুখোপাধ্যায় গ সপ্নীতের পরে সভার কার্যসমাণিত ছোষ করা হয়। প্রসংগত উল্লেখ্য যে, অনুষ্ঠানের উদ্বোধনী সংগতি করেন বন্দ্যোপাধ্যার।

স্ট্রভিও থেকে

স্দীর্ঘ প্রতীক্ষার অবসান ঘটিয়ে বহু আকাণ্শিত বাংলা ছবি "কলণ্ডিকত নায়ক" আগামী ১৫ই মে রুপবাণী, অরুণা, ভারতী এবং শহরতলীর অন্যান্য চিত্রগৃহ সম্হে ম্ভিলাভ কর্বে। বেবী জ্ব প্রোডাকসন নিবেদিত ছবিটির কাহিনী রচনা করেছেন ডাঃ বিশ্বনাথ রায়। চিচ্নাটা ত পরিচালনা করেছেন স্থিল দ্ত। স্ক্রারোপে আছেন রবীন চট্টোপাধাং **প্রাণ্ডবয়স্ক্দের জন্মে সেন্সরের** ছাড়পর প্রাশ্ত ছবিটির প্রধান করেলটি চরিত র্পেদান করেছেন উত্তমকুমার গ্রপণা সেন সাবিহাী চট্টোপাধ্যায়, বিবা রায়, অন্পে কুমার, জেয়ংমা বিশ্বাস, ছায়া দেবী তর্ণকুমার জোণেদনা ব্যানাজী, উৎপল দত্ত, এন বিশ্বনাথন, বেবী ব'চন, মিহির ভট্টাচার্য এবং নুভ্যে মধ্মতী (বোদের)।

নেপথ্যে কণ্ঠদনে করেছেন মালা 🏋 নিমলা মিশ্র ও বাসবী নন্দী।

বলাই নন্দী নিবেদিত নব গঠি রামায়ণ চিত্রমের প্রথম চিত্রার্ঘ "মহাকা কৃতিবাস" বর্তমানে ম,বিপ্রতীকিত বাংলার ঘরে ঘরে আদতে রামায়ণ। সে রামায়ণ রচয়িতার জীবনকাহিনীই এ ছবির বিষয়বতু। রামায়ণ আমাদের ধর্ম^{গ্রা} তাই রামায়ণ আমাদের প্রা কি¹ কুত্তিবাস আজ বিক্ষাভেপ্রায়। সেই 🧖 বাসকে বাংলার জনগণের মনে জাগর রাখার সংকলেপ এগিয়ে এসেছেন্ ছবির প্রভারা। "জব-কুশ" খ্যাত **श्रीतहातक जरमाक हत्वीशाधा**त्र हर्रि পরিচালনার দায়িত নিয়েছেন। ছবি^{টি}





ভাষালে টেন্ডম • তাপণা • জাবিঞী-প্রকাশ- ভার্গ **ভারাদেরী জোপন্মা-ভরুণ উৎপল** ও নৃত্যে: **মর্থিটি (বর্জ**) ্রতা চার্ট রাই - লালেক রো: নিশ্বনাথ নাস্থ - গাভ : আমন্ ব্যাহিত

বিশ্ব-পরিকোলা: এস. বি. ফিল্মস্ •

ভারতী ब्र्, भवानी व्यत्र, शा স্কৃতিয়া - দেৱ - পার্বভী - জলকা - মারা - মারাপ্রি - মীনা - পৌরী - উদরন कनप्रनी - क्रिकी - न्यक्स (চল্দননগর) - চিত্রালয় (দ্রগপিরে - মেম্বর্ড (শিলিগর্ডি) স্বল্ধি কলেকে শ্রীমতী বিজন বোবলিক্তার: ছবির প্রধান সম্পাদক অবেলিন্ চ্যাটাজী: মেপথা ক্টস্কাতি আছেন মালা দে, হেম্বত ম্থাজী, ল্যামণ মাল, বনজর ভট্টাচার্ব, প্রস্ন বল্গোপাধ্যার, আলতি ম্থাজী, চক্লামী ম্থাজী, পিকট্ ভট্টাচার্য, অনুস বোবাল, মাধ্বী স্থল হত্যাদি:

এ ছবির ভূমিকাগ্রীল চিত্রিত করেছেন
নির্মার্মার, লিলি চছকতী, স্মাধ
খাজী, পশ্মা দেবী, গোপীরুক, তর্গ
মার, কল্যাণী মন্ডল, গীতা প্রধান, রবীন
নাজী, স্মিতা মিত্র, জৌংশনা ব্যানাজী,
লোনাথ ব্যানাজী, পশ্পতি কুন্তু, তারক
চোর্য, অদোক সেন, চিত্রালী মুখাজী,
লো মুখাজী, বেচু সিংহ, স্ফিত্রা,
ভূমিন ব্যানাজী প্রমুখ শিশপীবৃক্ষ।

মণ্ডাভিনয়

মাস্কানী ঃ ৮ মে কাল্পনিক মাট্য গোষ্ঠীর শিল্পীরা মিনাভার ভান্ চট্টো-পাধ্যারের মাসজ্ঞীবী' মাট্কটি পরিবেশন করেন। শিশির চক্রবতী ছিলেন নাট্নেশনার দারিছে। করেকটি বিশিষ্ট ভূমিকায় অভিনয় করেন অশোক রায়, মর্ল ভট্টাচার্য, বিমলেন্দ্ ভট্টাচার্য, অশোক রায়, মর্ল ভট্টাচার্য, বিমলেন্দ্ ভট্টাচার্য, অশোক রেট্রপাধ্যায়, শম্ভু দাস, শংকর দাস, চঞ্চল ভট্টাচার্য, অভয় চট্টোপাধ্যয়, মনোজ মাহার, বেপন রুদ্র, জয়দেব বসাক, মণি বিশ্বাস, হারক, মানসী ব্যানাজ্ঞি, রুমা প্রুহ, মালা

সংগম ঃ বোদ্বাইর স্পরিচিত সংস্থা সংগম' সম্প্রতি বালগণ্ধর নাটামন্দিরে াফলোর সংখ্য অভিনয় করেন বাদল ারকারের 'বক্লভপ্ররের র্পকথা'। র্ণার**চালনা করেন** চিত্র-পরিচালক বাস, ^{ভট্টাচার্য}। জ্যোতির্ময় মুখাজির ৰ্ণমঃ ালদার', অপুর্ব। মানিক দত্তর 'সঞ্জীব' ভালবার ময়। সুকৃতি রায়চৌধ্রীর মনোহর' অনবদ্য এক চরিত্রস্থিট। চমংকার মভিনয়নৈপ্রা দেখান তর্ব ঘোষ (ভূপতি), মন্রাধা চাটোজি (স্বংনা), সমর গালত মিঃ চৌধারী) ও ইন্দাণী মুখাজি कानााना ভামকার অশোক গাটাজি **বন্ধী ভোধারী ও অমল সে**ন মুঅভিনয়ের সাক্ষ্য রাখেন। আলোক-^{ন্দ্}পাত ও স**ল্গাত বথাবথ।**

ভটনস ক্লাৰের আলমগার : ২১ এপ্রিল ভন্তম মঞ্চে এই হাসপাতালের চিকিৎসক লের সংস্থা ভটনস ক্লাব চতুদাল বাধিক গতি-সন্মেলন উপলক্ষে আলমগার; ভিনয় করেন। আলমগার চরিত্রের দুত্ত রিবতনিশাল ক্টনৈতিক ব্যঞ্জনা প্রকাশে ই সাবলাল অভিনয় দক্ষতার পরিচয় ভাঃ রিমল খাসনবাশ দিয়েছেন তা তাঁকে খিবিলা দশ্যিকর স্মর্গে প্রতিশিক্ত বির্বাণকার বাঁ চরিত্রাণকনে ভাঃ নার্রেণ

ঐ চরিতের যোগ্য ব্যক্তির আরোপে ব্রেড **उच्छ**न्त । तास्त्रिश्ह চরিত্রাভিনেতা পরিচালক, ডাভার বাণী সেনগণত মেবাররাজ অধিপতির যে দ্যুতা ও উপারতার ছবি একৈছেন ভা অনুরূপ প্রশংসার দাবী রাখে। এছাড়া চরিতে স্ব'-ভারার সরেজিং ছোর. यज्ञानात्र, नादात्रण जिम, मण्यत्र जिन, ज्योजन व्यन्ता, जीनन अप्रीहार्य, नौशां तास-চৌধরেী, সাগর ঘোষ, দীপক বন্দ্যোপাধ্যার, प्रजाम मख. थीरतम भाग, म्रास्क्म इक्ष्यणी, পবিত্র ঘোষ, অতুলানন্দ্র দাশগণেত ব্যুথন্ট স্অভিনয়ের স্বাক্ষর রেখেছেন। শেবের দ্বই শিল্পী কৌতুকরস স্নিউতে বিশেষ দক্ষতার পরিচয় দিয়েছেন। স্ত্রী-চরিত্র শ্রীমতী গীতা দে, কাঞ্জল মনুখোপাধ্যায়, বীথি গাঙ্গালী ও অন্রাধা রায়চৌধ্রী চরিত্রগত অভিনয়ে উল্লেখনীয়।

৩ মে জ্বনপ্রিয় নাটাসংস্থা হৈ-চৈ-এর আসর (কাণ্ডনতলা, মুলিপাবাদ) নিখল দের নিদেশিনার পণ্ডদশ নিবেদন শ্রীভান্ চট্টো-পাধ্যায়ের 'আজ-কাল' স্থানীয় শ্রীভবন त्रणायाः विरागव नायाताः नतःन यासन्य करतमः।

নাটকের বিভিন্ন চরিয়ে সবঁলী রবীশ্র-

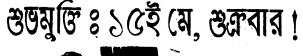


শভিতিন-নিয়াল্যভ নাজনলা]

ळाब्रिला

আঁভনৰ নাটকের অপ্ৰে র্পান্ত ।
প্রতি ব্যুক্তিও ও শনিবার ঃ ৬॥টার
প্রতি রবিবার ও ভূটির ফিন ঃ ৩টা ও ৬॥টার
। রচনা ও পরিচালনা য়
ক্ষেত্রায়ের পুত্ত

25 র্পারণে 25
অজিত বলোপাবার, অপশা বেনী, অনুভেন্দ্র
চটোপাবার, নালিমা বাল, ব্রভা চটোপাবার,
সভীন্য ভটাচার্মা, বালিকা বাল, ব্যাল লাহা, প্রেমাংশ্য বস্,, বালকী চটোপাবার,
দৈলেন ম্বেশাপাবার, গতিত বে ও





श्री ३ श्राष्ट्री ३ देन्सिता

শ্যামাশ্রী - মানসী - রমা - শ্রীমা - কুইন - জ্যোতি - র্পালী নৈহাটি সিনেমা - র্পমহল ও অন্য নাথ বার, নিখিল দে, অসীম মুখাজি, **লৈলেন ক্য**কার, কানাইলাল রার∴ নিথিল-রঞ্জন চৌধ্রী, সমর মজুমদার, বাসঃ চক্তবর্তী, সরকার, সবিতা রার ও দীশ্তি চ্যাটাজি অংশ গ্রহণ করেন।

অভিনয় দিক দিয়ে বিচারে নাটকের প্রতিটি চরিত্রই স্ক্রেভনীত। তাহলেও অবিনাশ, স্বিনয়, অমল, বাবল, চরিত্রে হথাক্রমে নিখিল দে, রথীন্দ্রনাথ রায়, অসীম মুখার্জি স্বাধীন পাণেডর অভিনয় ও অভিবৃত্তি মনে রাখার মত। অন্যানা ভূমিকার সূর্অভিনরের দাবী রাখেন রছ্—

বালো নাটমঞ্চ সংস্থানের সাহায্যার্থ

🗣 ৩রা—এই জনুন প্রত্যাহ সম্পা এটার 🗣 ০লাজনে রূপকারের অভিনয়

सासम क्रांकत

৪ঠা জনে নান্দীকারের অভিনয়

তিম পয়সার পালা

৫ই জান অনামিকার অভিনয়

जास्य जाश्रुत

(शिका) ৬ই জান বহার পীর অভিনয়

छ। त अधार

৭ই জ্বন বাংলা নাটমণ্ড প্রযোজিত

युष्टा द्वाक्रम

।। सिट्ट मना ३ व्यक्तिट्टम बटम्माभाशास ॥ धिकिं :

সীজন ৫০, ৩৫, ২৫, ১৫ ও ১০। প্রাণ্ডস্থান : ৰছ্র্ণী (১, মেহের আলি রোড, কলি-১৭; ফোন : ৪৪-০৯৮৭) নান্দর্শকার (৪৭/১, শ্যামবাজার শারীট, কলি-৪: ফোন: ৫৫-৭৮২৫) স্থা ৭টা থেকে ৯টা

निधिनतंश्रम होश्रद्धी, जर्माक - रेगरनन কর্মকার, মধ্মর-কানাইলাল রার। নারী-চরিত্রে রুমার ভূমিকার স্বিতা রায়, লভার চরিতে দীপ্ত চ্যাটাজির অভিনর বিশেব म् भृण्थलात् , मारी तारथम्।

্ঞাই সংস্থার নাট্যাভিনরের প্রধান मन्त्रम हिल भणित्वभ धवर क्यून नाएकीश রসের কিছ, খণ্ডম,হ,ত'। টিম-ওরাক' এক क्थान जन्द । अस्त मक्तम्का ज्ञान्त র, চিসন্মত। আলোকসম্পাত সম্ভোবজনক। আবহসপাতৈ প্রশংসার দাবী রাখে।

বিৰাসপ্তে: আগামী ১৭ মে '৭০ সাউথ ইন্টার্ণ রে**লও**য়ে মঞ্চে বেন্সলী ক্রাবের সৌজন্যে আর্ট থিয়েটার (কচিড়া-পাড়া) তুলস্বী লাহিড়ী বিরচিত ধাটক 'গণনায়ক' অভিনয় হইবে।

যাত্তার আসরে নতুন নাটক : উত্তর ক্লক্তার স্প্রাচীন সৌখীন নাট্যসংস্থা मान्धा भाषामादृश्यत ताताविश्य वाधिक **উৎ**मव উপলক্ষে দুদিনব্যাপী যাতা উৎসবের আয়োজন করা হয়েছিল বাগবাজারের নব-বৃদ্দাবন নাটমন্দিরে। ১৮ এপ্রিল সম্যায় অভিনীত হল সংখ্যের নাট্যশিক্ষক শ্রীবিপিন মুখোপাধ্যায় রচিত 'ভূমিলক্ষ্মী'। ভূমি বন্টন আইন আর ভার প্রয়োগ নিয়ে শাসক শন্তির প্রগতিশীল ও প্রতিক্রিয়াশীল শক্তির দ্বন্দর ও ভূমিহীনের ক্ষোভের পটভূমিকায় রচিত নাটকটি সংপ্রযোজিত ও সংঅভিনীত হয়ে অগণিত শ্রোতাকে বিমাণ্ধ করে। অভিনয়ে সংঘ তার পূর্বের টিম-ওয়ার্ক রেখেছেন এবং নারীচরিতে পরেষ দ্বারা অভিনয় ও বিবেক চরিত্র বজায় রেখে স্থেঘর সাংস্কৃতিক ঐতিহ্যের স্বাক্ষর প্রতি-ফালত করেছেন। অনুষ্ঠানে পোরোহিত। করেন শ্রীমক্ষথ রায় ও বিশেষ আতিথি উপস্থিত ছিলেন শীঅখিল নিয়োগী। শ্বিতীয় সন্ধ্যায় আসরুপথ হল 'সংসার' নাটকটি। এই দিনও দর্শক ম্বেধ-বিষয়ে সংঘকে অভিনম্পিত করেন।

ৰপোর ৰাইরে বাংলা নাটক: সম্প্রতি হিল্দ মিলন মল্দিরের ব্যবস্থাপনায় ২৬ এপ্রিল স্থানীর 'প্ররাসী' নাট্যসংস্থা রমানাথ লাহিড়ী দুগাবাড়ীতে দিলীপকুমার রারের

কাহিনী ও ধনজয় বৈরাগীর নাটার প 'অঘটন আজও ঘটে' নামক নাটক মণ্ড>থ করে নাট্যরসিক মহলে বেশ আলোড়ন স্তি করতে সক্ষম হন। ভিন্ন স্বাদের नाएंकिएत नाकरनात मृत्न ब्रुताह ननगठ অভিনয়নৈপ্না, আপোকের অভিনব্য ও বিষয়বশ্তুর প্রকাশের ভণ্গী তার জন্য কুতিদের দাবী রাখেন প্রয়োগ-প্রধান শ্ৰীঅমিয়কান্তি ভট্টাচার্য। অভিনয়ের কথা বলতে গেলে যুৱিবাদী 'অসিতে'র ভূমিকায় শ্রীঅমিয়কান্তি ভট্টাচার্য সংযত, সংবেদন্ শীল, ব্যক্তিজমর ও প্রাণবদ্ত অভিনয়ে সকলকে ম_্ণ্ধ <mark>করেন। 'সতী'র ভ</mark>ূমিকার কুমারী দীপালি দত্ত এককথায় অপ্র অমল, অরুণ, আনন্দ গিরি, গুরু রহমণ নন্দা কমলা ও শ্যাম ঠাকুরের ভূমিকা যথাক্রমে সর্বশ্রী দিলীপ দত্ত, সরোজ কুণ্ড রবীন মুখোপাধ্যায়, নলিনী চট্টোপাধ্যা অজয় চট্টোপাধ্যায়, অনিক্কান্তি ভট্টাচাং অনাদি দাস, শ্রীমতী শেষালী বদ্যোপাধাাঃ শ্রীমতী লতা বোস ও শ্রীঅশোককুমার বস, স্কুর অভিনয় করেন। এছাডা মিহির দাস, উদয়ন মুখোপাধ্যায়, কুমারী সীমা বোস, শম্ভ মাংখাপাধ্যায় 👳 শাহিত বহেনা-পাধ্যায় সূর্অভিনয় করেন। স্মারক, মঞ্জ-সম্জা আলোকসম্পাত ও আবহস্পাতির জনা সর্বশ্রী শ্রীতোষ চক্রবত্তী, অনিলরজন দত্ত, <mark>মধ্স্দন সেন, রবীণ্</mark>টনাথ দে, ন্র মহম্মদ ও দিলীপ বলেদ্যাপাধ্যায় প্রশংসা লাভ করেন।

विविध সংবাদ

রবীন্দ্রভারতী বিশ্ববিদ্যালয়ের সংত্য সমাবতন উৎসবে পশ্চিমবঙ্গ নাটক, সংগীত ও চার্কলা আকাদামী গৃহীত সিম্ধানত অনুযায়ী সম্মানপ্ত ও নগদ দু' হাজার টাকা প্রদান করা হয় ভগ্রকলা শিল্পা যামিনী রায়কে, নভাকলা উদয়শংকরকে এবং নাট্যকলা শিল্পী অহীন্ত চৌধুরীকে। উল্লেখযোগ্য যে এই প্রথম বছর পশ্চিমবণ্গ নাটক, সংগীত ও চার্-কলা আকাদামী এইভাবে গ্রাণজনদের সম্মানিত করবার বাবথা করেছেন।

র্থীন্দ্রসদন কর্তৃপক্ষ এবারেও ২৫ বৈশাখ (৯ মে) থেকে ৫ জ্বৈদ্র (১৯ মে) পর্যক্ত এগারো দিনে তেরোটি অনুষ্ঠানেং (প্রতি রবিবার দু'টি) মাধ্যমে রবীণ নাটক, নৃত্যনাটা ও সংগীতের আগ প্রবর্তন করে ১০৯তম রবীন্দ্র জন্ম বাবিকী উম্বাপন করছেন।

২৫ বৈশাখে একটি অনাডন্ব অনুষ্ঠানে রবীন্দ্র স্থানের উদ্বোধন করেন হিরুম্ময় বন্দে। পাধ্যায়। তি এই প্রসপো বলেন যে, রবীন্দ্র সদন কে^ব অন্জানের জ ন,তা-গীত-অভিনয় নিমিত হয় নি – রবীন্দ্রসাহিতে

সোরত

সংগতি ও ন্তা শিক্ষায়তন ২০, ল্যাম্সডাউন রোচ্চ, কলিকাতা–২০ ফোন ৪৭-৩৪০৭

ধু,পদ, থেয়াল, ঠাংরী, ভঞ্জন, রবীন্দ্রসংগীত, আধ্নিক, বেহালা, বাদী, সংবাদ, দেওার, গীটার তবলা, ভারতনাটাম, মণিপারী, কথাকলি, লোকনাডা এবং চিত্তকলা শিক্ষার উপন্তে শিক্ষায়তন, জেনারেল ক্লাস, ডিপেলামা কোর্স এবং ছারছারীদের জন্য একক শিক্ষার বিশেষ রুচসের ব্যবস্থা আছে। শিক্ষণে :--তিমিরবরণ, ভি জি খোগ, कमानी तात, लोद लाम्यामी, वर्ष्ट्रक नम्मी, भीता वरम्माभाषात्, मठीनाथ भूरशाभाषात्र, উৎপলা সেন, বাণী ঠাকুর, সুমিতা মুখে।পাধ্যায়, রডন ভট্টাচার্য, সিনন্ধা ছোষ, রুচিরা ম্বেথাপাধ্যার, গোরী গ্'তা, দীপালি রক্ষিত, মাণিক দাস, স্নীল দে ও মিসেস য্যান:টল অন্সংখান কর্ন—ভতি চলিতেছে। প্রিস্পিয়ল সংগীত বতু, লুভাঞ্জী নম্মিতা চট্টোপাধার।

जन्मीनात्र माधारम मान्याय द्रिय छ হ্দর ব্ভির অনুশীলনের ক্ষেত্র বিস্তৃত করাও এর স্বন্যতম উদ্দেশ্য। এই গ্রন্থা-গারের একটি বিশেষ অপা হচ্ছে— সপ্গীতের রেকর্ড সংগ্রহ। এই সংগ্রহে কেবল রবীন্দ্রনাথের যাবতীয় রেকর্ড নয়---পরেনো দিনের বহু দৃষ্প্রাপ্য রেকর্ড সংগ্রহ করা হয়েছে। দক্ত্রাপ্য প্রায় ২০০ থানা রেকর্ড দান করেছেন শ্রীগোরদেব ম,ুখোপাধ্যায়। প্রনো ও ন্তন রেকডেরি সংখ্যা প্রায় পাঁচশত। এই প্রসংশ্য রবীল্ড সদন পরিচালক সমিতির সহ-রভাপতি শিক্ষাসচিব কেসি সেনগ্ৰুত ঞ্লুলেন যে, পণ্ডাশ বছর আগে কিভাবে ুবিভিন্ন সংগীত এবং রবীন্দ্রসংগীত গাওয়া ্তি—বর্তমানের সংগতি গ্রেষকরা এই ান্থাগার থেকে তার কিছু তথ্য পাবেন। রবীন্দু সদন উৎসব স্মিতির সভাপতি মন্মথ রায় বলেন যে, বর্তমানে প্রায় ১২০০ বই সংগ্রহ করা হয়েছে, খার মধো রবীন্দ্রনাথের রচনা, রবীন্দ্রসাহিত্য সম্পর্কিত রচনা এবং অন্যানা দুম্প্রাপা রচনা রয়েছে। আগ্রহী পাঠকদের পক্ষে এগালি চিত্তাকর্ষক হবে। আপাতত রবীন্দ্র সদনের দোতলায় একটি ঘরে বই এবং অপর ঘরে রেকড', টেপ রেকড'র ও গ্রামোফোন যশ্র রাখা হয়েছে। কর্তৃপক্ষের পরিকল্পনা আছে যে, ছোট ছোট ঘর করে এক সংখ্যে যাতে একাধিক বান্তি রেকর্ডা শ,নতে পারে তার বাবস্থা করা। গ্রন্থা-গারের এই রেকর্ড বিভাগটি কলকাতার সংগীত শিক্ষাথী ও গবেষকদের পক্ষে নিঃস্পের্হ ন্তন জিনিস হবে।

গীতালি সুণগীত প্রতিষোগিতা গ গাঁতালি সুণগীত শিক্ষায়ন আয়োজিত ততীয় বাষিক সুণগীত প্রতিযোগিতা জ্বন মাসের প্রথম সুণতাহে অনুষ্ঠিত হবে। বিষয় : ক্রুন্সগাঁত, গাঁটার, বেহালা, সেতার, তবলা ও নৃত্য। মূল প্রস্কার বাতীত প্রেণ্ঠ প্রতিযোগীদের মধ্যে কঠ-সুণগাঁতে একটি তানপ্রা, গাঁটারে একটি গাঁটার এবং নুতো পাঁচশত জয়প্রী নুপ্রে দেওয়া হইবে। এছাড়া প্রেণ্ঠ সুণগাঁত শিক্ষায়তন ও শিক্ষককে প্রেম্কৃত করা হবে। বিশ্তারিত বিবরণের জন্য ২০ মের ভিতর যোগাযোগ কর্ম : পংক্জ সাহা, মধ্যক্ষ গাঁতালি—তবি, ললিত মিত লেন, গ্যামবাজার কলিকাতা—৪।

বাগবাজারের লথপ্রতিষ্ঠ শিল্পীদল
নিপ্রতি অনুন্তিত করে তাদের প্রথম বর্ধকৃতি উৎসব। এই অনুষ্ঠানে যাঁরা
মংশগ্রহণ করে অনুষ্ঠানটিকে সর্বাগগস্কুদর
করেত সাহায্য করেছিলেন তাঁদের মধ্যে
ক্রিথযোগ্য হলেন স্বশ্রী অনিল দত্ত,
ক্রিথযোগ্য হলেন স্বশ্রী মিত্র (বাশী),
শিক মিত্র গোর্ভিল্পলাল বোস (কাওয়ালা),
গাপাল মুখার্ভিল্পলাল বোস (কাওয়ালা),
গাপাল মুখার্ভিল্পলাল বাস (কাওয়ালা),
লাবেল লাহা, ছন্দা ধর, শিখা দত্ত,
লাপনা দত্ত, মুক্ত চাটার্ভিল্পতর্গে বোস,

সালাকরা তর্ণ পরিষদে সংগতি পরিবেশন করেন নিমালেশন চৌধারী



মিনতি দাস, কেদার সাউ ও রক্সা চ্যাটার্ক্সি, প্রতিমা দাস। অনুষ্ঠান পরিচালনা করেন পরেশ চ্যাটার্ক্সি।

গত ৬ এপ্রিল স্লিকির তর্গ পরিষদ-এর উদ্যোগে একটি মনোগ্রাহী বিচিত্রা-দ্নতান অন্তিত হয়, উত্ত অন্তানে বাংলা দেশের বিখাতি শিক্সীরা অংশগ্রহণ করেন। সমগ্র অন্তানটি পরিচালনা করেন ব্যালিক্সী নিমাই দাস।

ভারত চিচের প্রযোজনার আশোক বাগচী ও অলোক এন বাগচীর পরিচালনার দুইঙানি তথাচিত্র 'শান্তিপারে ও ডাঁড শিক্প' এবং 'বাংলার উৎসব ও প্রজাপার'ণ' প্রস্তুত হচ্ছে

পানের বই (স্বর্গাপিও থিওরি) পাওরা যায়। লিখিলে যে কোন প্রকারের বই দুতে ভি, পি করা হয়। এক্ষেক্সীও নেওয়া হবে।

শ্রীপৃস্তকালয় অ-৬৫, কলেজ স্মীট মার্কেট, কলি-১২





গতবাহর গানের অঞ্জিন বোর্ড গঠনের গোড়ার কথা লেখা হয়েছে কীজাবৈ আগে বৈতারে গানের শিলপীদের মনোনীত কবা হ'ত তারপর এই মনোন্যনের বির্দেধ দ্নীতির অভিযোগ উঠলে কীভাবে অভিশন বোর্ড গঠন করা হ'ল এবং এখন আবার এই অভিযান বোর্ডের বির্দেধ কী দ্নীতির অভিযোগ উঠেছে সেই কথাও।

অভিশন বোডের দ্নীতির অভিযোগ সম্পর্কে আলোচনা করার আগে সম্পত কারণেই একটা প্রশন তোলা যেতে পারে ঃ আগে যথন অভিশন বোড ছিল না, প্রোগ্রাম আাসিস্ট্যান্টরা শিল্পী মনোনীত করছেন তথনকার গানের স্ট্যান্ডাডের চেরে এখন বখন বাঁইরের সম্পাঁতজ্ঞদের নিয়ে গঠিত অভিশন বোড শিল্পী নির্বাচন করছেন তথন গানের স্ট্যান্ডার্ড কি উরাত হয়েছে? এর কোনো সহজ উত্তর আকাশবাণী কর্তৃপক্ষ দিতে পার্বেন বলে মনে হয় না। তবে বেতারে গাইবার অনুপয়্ভ অনেক শিল্পী যে বেতারে এসে গেছেন সে বিষয়ে তারা অনবহিত নন। ১৯৫৮ সালে আকাশবাণীর ডিরেকটর-জেনারেল গিশ ক্লাসের সম্প্রত শিল্পীর প্রোগ্রাম বৃষধ করে দিয়ে আদেশ জারি করেছিলেন। এ বিষয়ে লোকসভার প্রশান্তরকালে তদানীশ্রন বেতারমন্ত্রী ডঃ বি ভি কেশকর বলেছিলেন, অভিশনে পাস করলেই কোনো শিল্পী প্রোগ্রাম করার অধিকার অর্জান করেন না, এবং প্রোগ্রামের মানের উম্বাতির জন্মই এই বাবস্থা গ্রহণ করা হয়েছে।

১৯৬১ সালে আকাশবাণী কর্তৃপক্ষ স্থির করেছিলেন 'বি' ক্লাসের শিল্পীদেরও সাধারণত 'সোলো' প্রোগ্রাম করতে দেওরা হবে না। এবং তারও উদ্দেশ্য ছিল প্রোগ্রামের মানের উন্নতি করা।

কিন্তু যে প্রশন্টা স্বাভাবিকভাবেই শ্রোভাবের মনে এসে পড়ে : প্রোগ্রামের সামগ্রিক মান কি সতিটে উলত হয়েছে? গ্রোভারা সপো সপো বলবেন : না।

কারণ, অভিশন বোর্ড সব সময় নিরপেক্ষভাবে শিশপী নির্বাচন করেন না। অভিশন বোডের সদস্যদের যোগাতা সম্পর্কে সন্দেহের অবকাশ নেই, কিম্তু তাদের স্বার্থ যোগাতার সম্পে তাদের দায়ির পালনের পথে প্রতিবন্ধক স্মিট করেছে। এবং এই আভাস্টাই গতবারের আলোচনার দেওয়া হ্রেছিল।

অভিশম বোডের প্রায় সকল সদস্যেরই ছাত্রছাতী আছেন, এবং এই ছাত্রছাতীরা সকলে নিছক গান শেখার জনাই তাঁদের প্রকাশ ভতি হন না, তাঁদের প্রধান উদ্দেশ্য থাকে অভিশনের বৈতর্গণ পার হওয়া। রেডিওর প্রতি সকলেরই একটা মোহ আছে, সবে র্ঘান গান শিখাতে আরুভ করেছেন তাঁরও লক্ষ্য রেডিওর গাওয়া। এবং তাঁরা জানেন, রেডিওয় গাইতে হলে অভিশন বোডেরি বার আছেন তাঁদের ধরতে হয়, এবং ধরাটা সহজ হয় র্ঘাণ তাঁদেরই কাছে গান শেখা বায়। আরু অভিশন বোডেরি সদস্যরা অনেকেই যে এই সংযোগ নিয়ে থাকেন সেকথা অস্বীকার করার উপায় নেই।

অভিশনের বোডের সদস্যদের অনেকেই প্রায় দৃশামান সংগতিজগাং থেকে অবসর গ্রহণ করেছেন। তাঁরা অনেকটা টিকে থাকার জনাই 'ক্লুল' খলে বসেছেন, এবং সেই 'ক্লুলে' ছান্তছাত্রীর সংখ্যা বেশি হতে পারে যদি তাঁরা অভিশনে পাস করিয়ে রেভিওর শ্লোগ্রান্তমর ব্যবস্থা করে দিতে পারেন। এবং বাঁরা যক ছান্তছাত্রী পাস করাতে পারবেন তাঁদের তত নাম-ডাক হবে, ছাত্রছার্টী সংখ্যা বাড়বে, স্কুলের বাড়বাড়াত ছবে—অর্থ আসবে। তাই দে বার, অভিশনের বোডের সদস্যদের কারও ল কারও 'স্কুলে' ভূ হতে না পারলে অভিশনের বৈতর্গী পার হওয়া দ্বসাধা—এ ভাতি হলে অনেক প্রপাত্ত অনায়াসে গিরি লংখন করে যে

কিম্তু পঞ্চানেরই তো গিরি লংঘনের সাধ বেশি, তাঁরা রেজিওয় ভিড় করে আছেন।

অভিশন বেডে এই যে দ্নশীতি চলছে, স্থানীয় বেতার কর্তৃপক্ষ সে বিষয়ে বেশ সচেতনই আছেন। তাঁরা বেশ ভালো করেই জানেন, কোথায় দ্নীতি কিসের দ্নীতি। কিন্তু মৌচাকে খা দেবার সাহস তাঁদের নেই। তাঁরা চোথ বাজে থাকার চেণ্টা করেন, কেউ তাদের কাছে অভিযোগ করলে এড়িয়ে যাবার পথ খোঁজেন-এমন কি, বেতার কেন্দের লোকেরা অভিযোগ করলেও: আমি জানি, এই কলকাতা বেতার কেন্দ্রে এমন একজন সং. বালণ্ঠ অফিসার ছিলেন যিনি এই দুনৌতির উচ্ছেদ চেয়েছিলেন, এবং একের পর এক অনেক স্টেশন ডিব্রেকটরের কাছে অভিযোগ পেশ करत स्मोठारक घा स्मरत अहे मामी जिल मारलारकाम कहरा राज्या করেছিবলন। কিন্তু স্টেশন ডিরেকটররা কেউ-ই সাহসী হন নি। **তাঁরা প্রত্যেকেই ব্লেছেন, 'আমি** আর ক'দিন আছি। আমার **পরে যিনি আসবেন তাঁর কাছে র্যাপারটা তুলবেন।'** তাঁরা জানতেন, **অভিশন বেটেডর সদসাদের অনেকেরই দিল্লীতে শক্ত থ**ুটি আছে: সে খাটি সহজে নাড়ানো যাবে না-নাড়াতে গেলে হয়তো তাঁদের निर्द्धाः निर्दे नए एयए इरव।

কিন্তু দিল্লী কেন্ এই দুন্নীতিকে প্রশ্ন দিক্ষেন ্থাকা দুক্তর। রেডিও জাতীয় সম্পতি এবং কোনো ব্যবসায়িন এতিকান নয়। সূত্রাং ব্যক্তিত কিছু এখানে চলা উচিত নয়। রেডিওর প্রথম এবং প্রধান লক্ষ্য হওয়া উচিত প্রাগ্রাদের মানের উর্বাচনিধান—এবং তার জন্য সম্পত্রক্ষ দুন্নীতির মুল্লোক্ষেদ।

দিপ্লীর উচিত বর্তমান অভিশন বোর্ডা ভেঙে দিয়ে এমন সব সদসাদের নিয়ে নতুন অভিশন বোর্ডা করা যাঁদের 'দ্কুল' নেই, ছাচছাটো নেই, --সংগতিই যাঁদের কাছে প্রধান বিবেচা। তাঁদের যে গায়ক হতেই হবে কিম্বা গানের শিক্ষক অথবা সিনেমার সংগতি-পরিচালক হতে হবে তার কোনো যানে নেই।

আর তা যদি মা করা যায় তাহলে আগেরই মতো প্রোগ্রাম
এগ্রিকিউটিভদের উপর দিশপী নির্বাচনের ভার ছেড়ে দেওয়া
হোক, যে প্রোগ্রাম এগ্রিকিউটিভরা সপগীত বোঝেন তাদের
উপর। তাতে বিউরোক্তাসি হয়তো আসবে কিছ্টা কিন্তু দ্নীতি
কমবে অনেকটা। কারণ প্রোগ্রাম এগ্রিকিউটিভদের গানের প্রকা
থাকে না, ছাত্রছাতী থাকে না—ছাত্রছাতীদের অভিশনে পাস করিয়ে
টিকে থাকার দায়ও তাদের নেই। তারা হয়তো অনায়ভাবে
দ্ব-চারভন জানা-শোনা লোক কিন্যা বংধ্বাপ্থবের প্রে-কন্যা আর
ন্থীকে পাস করাকেন, কিন্তু সেই সংখ্যা এখনকার অভিশন বোডের
সদস্যদের অনায়ভাবে পাস করানো ছাত্রছাতীর সংখ্যার চেয়ে
অনেক কম হবে।

विर्थ क्रिक्ट वाकारम

উজ্জ্বলত্ম নক্ষ্র

আকাশে এখন সবচেয়ে বজনলৈ তারা হচ্ছেন গার্যফল্ড সোবার্স। চম ভারতীয় দ্বীপপ;ঞ্লের এই ক্রিকেট লায়াড়টি সম্ভবত সর্বকালের অন্যতম ব্যাটসম্যান ডন ব্র্যাডম্যানের খ্যাতিকেও ্রিয়ে গিয়েছেন। তাঁর এই উত্তেপ্য জন-্তার প্রধান কারণ ক্রিকেটের সব্ বিভাগে অসাধারণ দক্ষতা; কি ব্যাটিং, কি লিং, কি ফিক্ডিং কোনটিতেই তাকৈ বাধা-স্তরে ধরে রাখা যায় না। ব্যাট ধরলে গ^{ুন} ছোটে ুবল হাতে নি**লে প্রতিপক্ষে**র ীটসম্যানরা চোখে ধৃতরো । ফুল দেখেন, যার উইকেটের কাছে দাঁড়িয়ে ফিলিডং নিলে যু কোন দুরুছ ক্যাচ অনায়াসে ধরা পড়ে. র দৃষ্ধর্ব বাটসমাানদের ফেরং যেতে ্য। এমনি একটি খেলোয়াড একাই তিন-ন খেলোয়াডের মহডা নিয়ে কাজ করে লেন। তাঁর অধিনায়কত্ব ও 'কশলী দল িরচালনা প্রতিপক্ষ অধিনায়কের দঃপ্রকেনর নরণ হয়ে ওঠে।

চৌতিশ বছর বয়সের এই অমিতবিক্রম থলোয়াডটির দক্ষতা প্রকাশ পেয়েছে গ্রের ক্রডিনরত সমস্ত দেশেই, **সর্বপ্রকার** ।।বহাওয়াতেই তাঁর দক্ষতা অনতিক্রম।। ইণিডজ ভারত, পাকিম্থান, প্রেলিয়া, নিউ জল্মান্ড বা ইংলন্ড কোন াশই তাঁর নৈপ্রণাের ঘাটতি দেখা যায়নি। কথা আজু মৃত্ত কন্ঠেই বলা যায় যে হকেটের সকল বিভাগে **এমন সাবলীল** ক্ষতা আর কোন খেলোয়াডই ারেল নি।

কৃতিবের খতিয়ান নিলে সোবাসেরি াচিল্ল কডিছের তালিকা যে কোন সেরা দকেট খেলোয়াড়ের তালিকাকে ছাড়িয়ে एव। एकेन्छ स्वारङ वर्गाणिः । दर्गानाः मः-ভাগের পর্যালোচনা করলে দেখা যাবে ার এক অসাধারণ রেকর্ড—একদিকে সাড়ে ¹⁵ হাজার রাণ ও অন্যদিকে দে**ডশো** ^{ইকেট।} কয়েক বছর আগে অ**স্টেলি**য়ায় উথ অস্ট্রেলিয়ান টিমের পক্ষে থেলে তিনি ক মরশামে হাজার রাণ ও অধশিত ^{ইকেট জয়ের রেকর্ড' করেন পর পর দ}্ ^{না।} ১৯৬৬ সালেই টেস্ট **ক্রিকেটে প**র ^র একটানা যোগদানের গোরবে তিনি এক ^{ছীর} রেখেছেন—নিউজি**ল্যাণ্ডের থ্যাতনাম**। লোয়াড় রীড ৫৮টি টেন্টে পর পর ^{লার} যে রেকড করেছিলেন তা অতিক্রম াছেন সোবার্স। একই টেস্ট ম্যাচে ^{প্}রী ও পাঁচ বা ততোধিক উইকেট কৃতিম্বেও তিনি বিশেবর ন'জন

থেলোয়াডের অন্যতম— এই গোরব পেয়েছেন--জে এইচ সিনক্ষোর, किख ফকনার, সি ই কোলওয়ে, জে এম গ্রেগারী, ভিল্ল, মানকড়কে আর মিলার পলি উমরিগড় আর এ টেলার ও গার্হফল্ড সোবার্স ।

সোবার্স ক্লিকেটের সর্বকালের সেরা চৌকস খেলোয়াড় কিনা এ নিয়ে তথ্যাভিজ্ঞ মহল হিসেব-নিকেশ করে কি সিম্পান্তে আসবেন জানা শন্ত হলেও সাধারণ একটা প্রবল জনমত তার পক্ষেই যাবে। অনেকে হে'কে ভেকে একথা বলতেও দ্বিধাবোধ করেন না। তলনাম লক হিসেবে সোবাসের অনন্যসাধারণ রেকর্ড সে মতই প্রতিষ্ঠিত করবে সন্দেহ নেই। এককালে ডবলিউ জি গ্রেস তাঁর অসাধারণত্বে উম্জ_নল হয়ে দেখা দিয়েছিলেন। ক্লিকেট জীবনে তিনি মোট ৫৪.৮৯৬ রাণ ও ২৮৭৬টি উইকেট সংগ্রহ করেছিলেন। সে যুগে তিনি ইংরেজ জাতির প্রতিনিধি-ব্যক্তিকে প্রতিষ্ঠিত হয়েছিলেন।

শঙকর বিজয় মিচ

দক্ষিণ অফ্রিকার অরে ফকনার ছিলেন গ্র্গান্স বোলার। টেস্ট ক্রিকেটে তিনি ৭৫৪ রাণ ও ৮২টি উইকেট**ানয়েছিলেন**। ১৯০৬ সালে জ্জা হাস্টা যথন প্রথম নঃ হাজারের বেশি রাণ (২০৮৫) ও দুশোর বেশি উইকেট (২০৮) নিয়েছিলেন তখন হৈ-চৈ পড়ে গিয়েছিল। কেউ তার এ রেকর্ড ভাষ্গতে পারবে কিনা জিজ্ঞাসা করা হলে তিনি বলেছিলেন 'যেই করকে না কেন তাকে ক্লান্ত হতে হবে।' কিন্ত হাস্টের এই রেকর্ড এখন সোবার্সের রেকডে'র কাছে নবীন। এরপর ধরা যাবে উইফ্রেড রোডসের কথা। তিনি তার জীবনে সম্ভয় করোছলেন ৩৯. ৮০২ রাণ (গড ৩০-৮৩) এবং ৪১৮৭টি উইকেট (গড **১৬-**৭১) \$6 G উলির কৃতিছও অবিস্মরণীয়।

ঠিক (য **⊕** য্যগের খে**লো**াডের শক্তি সামথ্য যা দক্ষতা অপর আর এক যুগের থেলোয়াড়ের ঐ সব গুলাবলীর সংখ্য তুলনা করা সমীচীন নয়। কারণ পারিপাশ্বিক পরিশ্বিতি, যুগের অবস্থা ও অন্যান্য বিশেষ কয়েকটি বিষয়ের প্রতিভা নিভরিশীল। উপর খেলোয়াডের বিভিন্ন যুগে বিভিন্ন অবস্থা হলেও কতক-গুলি খেলোয়াড় সর্বযুগেই মাথা উ'চু করে থাকেন। এর কারণ এ'দের প্রতিভা रथलां टिक महक मारलील ও अनावाम माधा করে লোকের বিশ্ময় **উৎপাদন করে থাকে।** সোবার্স সেই ধরনের এক উ**ল্জনন দৃল্টান্ত**। স্থের কথা এই যে অতীতের নীক্ষীর হিসেবে গবেষণার বৃহত্ত না **হরেই সোবাস** নিজের যুগেই সকলের স্বীকৃতি পেয়েছেন। সোবাসের বৈশিণ্ট্য এ**ই বে ব্যাট** করলে মনে হয় স্বাভাবিকভাবেই যে কোন মারই তার ব্যাটের ডগার ফালের মত ফাটে উঠছে। কোন খেলায় বে সোবাসকৈ শ্রম করতে হচ্ছে এমনটা কোন সমরেই মনে হর मा। সোবার্স একটা খুব ফাল্ট বল : १एनन কিন্ত দেখে মনে হল একটা বেবাৰ। নিলেই বলটা আরও **ফাস্ট হত। তাছাড়া** বাাটে, বলে বা ফিল্ডিংয়ে অসাধারণ দক্ষতা দেখানোর পরও মনে হয় সোবার্স বেন পারো গা ঘামায়নি। এখনও প্র**চর শাল ওর** মধ্যে রয়েছে। অনে**ক সময় ঘটেছে তাই**। বিপদাপ**ণ্ণ দলকৈ একাই কাঁধে করে ভূলে** নিয়ে এসেছেন সাফল্যের শীর্ষদৈশে।

১৯৬৬ সালে ইংলডের বিরুম্থে টেস্ট ম্যাচে সোবার্স করেন ৭২২ রাখ গৈছ ১০৩-১৪), পতন ঘটান বিশক্ষের কৃদ্ধিটি উইকেটের। তার গড় হল ২৭-২৫ রাম এবং কাচ ধরে বিপক্ষের দশক্ষনকে আউট করে দেন। ম্যানচেস্টারের প্রথম টেস্ট মার্মচে ১৬১ ও ১০৩ রান করলেন এবং উইকেট নিলেন তিনটি। লড়'স মাঠে **ম্বিতীয় টেলেট** ৪৬ রান ও ২৬৩ নট আউট আর ৯৭ বালে এক উইকেট। নটিংহামে ভূতীয় টেল্টে ৩ ও ৯৪ রাণ এবং ১৬১ **রানে পাঁচ** উইকেট। **লা**ডসে চ**তৃথ টেল্টে ১৭৪**াও ৮০ রাণে আট উইকেট। **ওভালে পঞ্জ** টেস্টে ৮১ ও শ্না রান এবং ১০৪ রালে ৩ উইকেট। টেস্ট ম্যাচের **পরের খেলার** দটতা নিয়ে সোবাস সেবার যে **খেলা** দেখিয়েছেন ইংলন্ডের ক্রিকেট রসিক মহল তার উচ্ছাসত প্রশংসা **করেছেন। সার** ডোনাল্ড ব্যাডম্যান সোবার্সের খেলা দেখে বলেছেন, তিনি যে সকল খেলোৱাড়কে জানেন তাদের কেউই এত তীর বেগে বলকে মাঠের বাই<mark>রে পাঠাতে পারেন না—</mark> তার মারের মধ্যে থাকে প্রচম্ড শক্তি। ফ্রাঞ্ক উলির পর এমন শক্তিধর ন্যাটা ব্যাটসম্যান দেখা যায় নি। **তরি খেলাকৈ ক্লাসক্যাল** প্টাইলের বলা চলে না। তবে একটা অনবদা অনায়াস ছদের স্বাক্ষর তার বেলায় প্রতিভাত হয়। সোবাসের **ভ্রাইভ** দে**খে** আপাতদ,শিতত श्रात हर वन्ते सम মন্তর গাতিতে আছে কিন্তু ঐ বল বর্জন



গারফিল্ড সোবাস

কোন ফিপ্ডার আটকান, তাঁর হাত অক্ষত থাকে না কিংবা বাউপ্ডারীর বেড়ার গিয়ে লাগলে তার প্রচন্ড ভর ও শান্তর পরিচয় পাওরা যায়। তাঁর পুসে ও পুলগগুলিও দেখবার মত। হুক মারবার সময় তিনি বেন দেহের সমস্ট ভারসাম্য হারিয়ে বলের মধ্যে পতি প্রয়োগ করেন।

সোবার্স ওয়েন্ট ইণ্ডিজের দৈহিক সামর্থা ও মৃষ্ট জল হাওয়ার পরিবেশে গড়া একটি স্বাভাবিক প্রতিভা। এমন যুগো ভার আবিভাব যে যুগো তিন ভ্রমানত নামান্তিত , ভিকেট প্রয়া বিশ্বর প্রিকট মহলে চমকের স্থিত করেছে। এ'রা হলেন ওরেল, উইক্স ও ওয়ালকট। আবার সেই সপো বেলিং-এ এসেছেন সনি রামাধীন ও ভালেশ্টাইন। এই সমহত দিকশাল থেশোয়াড্দের প্রেষ্ঠ গ্রেকা আরও করার দিকে তার একটা ঝোক ছিল। মার দল বছর ব্যুসে সোবার্সা বা হাতে স্লো বল দিয়ে শ্রুর করেন—অবশ্য তথন কোন নিয়মিত টোণং তিনি পান নি। বয়স যথন মোল তথন একটা জাহাজী কোশোনাতে কেরালার কান্দের ফাঁকে ফাঁকে শিশন বোলিং করতে শিখন এবং তথনই সেথানে ভ্রমণরত এক ভারতীয় দলের বিব্রুশে বার্বাডোজ দলে শ্রান পান। এই খেলাতে তিনি ১৪২ রানে বটি উইকেট পান।

১৯৫৩-৫৪ সালে সোবাস ছখন

সতের বছরের তর্গ কিংসটনের সেবিনা भारक जिल्ला क्षेत्रक न्याम द्वभारत देश्गदेखा विद्राप्त काद्म्यकास सन् खारमधोरेन र्यमाउ शावासम् मा यार्ग शक्ष राज्ये छात् आक्राम स्थाम है সোবাসের। ব্যাটিং প্রারে তার দ নবম। তবে তিনি ২৮ ওভার বল করে এবং ৪টি উইকেট নিলেন ৭৩ রা ইংলন্ড ৪১৪ রাণ তোলে এবং একা ে राधेनरे कत्रकान २५६ द्राम। म. रेनि ব্যাট করে তিনি করেছিলেন ধথান্তমে 🛱 (অপরাজিত) ও ২৬ রাণ। এরপর তে জিকেট জীবনের মহন্তর সুস্ভাবনার শু তরি খলে যায়। তার প্রভাবহ ভার ব্যাস জীড়ান্রাগ ও প্রকৃতিদ্তু সাম্থা নৈপ্ৰণ্যের সহায়তায় তিনি ক্লিকেটের অবিসম্বাদী নেভারতে স্বীকৃতি ট্ করেন। ঐ সময় থেকে ব্যাটিং-এর ि জোর নজর দিলেন এবং তাতে এঃ भाक्ष्मा व्यक्ति कदात्मन य ১৯৫৫ সরি অস্ট্রেলিয়ার বিরুদ্ধে ওয়েস্ট ইণ্ডিজের হ্যা চতুর্থ টেনেট জে কৈ হাল্টের সংগে গোড় পত্তনকারী ব্যাটসম্যান হিসাবে খেল্যা-স্বযোগ পেয়ে গেলেন। অপ্টেলিয়া প্রথম ইনিংসে যথন ৬৬৮ রাম করেছে তথ তিনি মারমুখী হয়ে এমন খেলতে সাগণে যে সে যাগের শ্রেণ্ঠ ফাস্ট ঝেলিং জানি লিভওয়াল ও মিলারের বলে মাত ১০ মিনিটের মধ্যে ৪৩ রান সংগ্রহ করলেন।

ইংলন্ডে সোবাসা প্রথম তাঁর দেশের
ইয়ে থেলেন ১৯৫৭ সালে। ওগ্রুস্ট ইন্ডিজ
সেবার ৩-০ খেলায় রাবার খাইয়ে আমে।
সোবাসা এই সিরিজের প্রথম ইনিংসে ৩২০
রান করেন এবং গড়ে ৭০ রান দিয়ে
পাঁচটি উইকেট পান। এরপর সেফ্টাল
ল্যাঞ্চাশায়ার লাঁগে পেশাদার খেলেয়াড়
হিসাবে যোগ দেন এবং বোলিংয়ের প্রাঁড
ও স্কেন্ডের দিকে মন দেন।

১৯৫৮-৫৯ সালে ওকে ইন্ডিজ
দলভুক্ত হয়ে তিনি ভারত সকরে আসেন।
এখানে তাঁর খেলা ক্রমান্রতির পথে
এগোতে থাকে। ভারনের মাটিতে তিনি
বাঁহাতে গ্রেলি বােলিং করতে থাকেন
এতে তাঁর বাটসমান্রান্যপের কোন হানি
হয় নি। ভারতের বিরুদ্ধে তিনি মাট
৫৫৭ রান করায় তাঁর বাাটিং-এর গড়
দাড়ায় ৯২-৯৩ এবং ২৯২ সালে দশটি
উইকেট দখল করেন। ১৯৫৮ সালে পাকিথান সফরে গিয়ে পাকিন্ধানের বিরুদ্ধে
টেন্ট খেলায় ৩৬৫ নট আউট রান করে
বিশেবর ক্রিকেট মহলকে চমংকুত করেন।

১৯৬০-৬১ সালে অস্ট্রেলিয়ায় তিনি সাফ্রোর শীর্ষে এঠন এবং খাস অস্ট্রেলিয়াতেই বাাডমানের খ্যাতিকেও যেন ম্পান করে দেন।

সোবাস যে দেশেই থেলতে গিচেছেন তিনি যে দেশেই ক্লিকেট খেলতে গিয়েছেন একক ব্যক্তিছে তিনি প্রতিপক্ষকে দায়ত করে রেখেছেন। সমগ্র দেশের প্রতিনিধিব যেন তার মধ্যেই মূর্ত হয়ে উঠেছে। ওয়েন্ট ইণ্ডিক মানেই সোবাস, সোবাস মানেই ওয়েন্ট ইন্ডিক।



কলকাতার সাউথ ক্লাব কোটো আয়োজিত অনেষ্ট্রালয়া বনাম ভারতবর্ষের প্রণশনী টেনিস খেলায় যোগদানকারী এলান লেটান রে রাফেলস, জয়দীপ মুখাজি এবং প্রেমজিংলাল। সিঞ্চলসের খেলায় রাফেলসের বিপক্ষে জয়দীপ মুখাজি এবং প্রেমজিং-লালের বিপক্ষে এলান শ্টোন জয়ী হন। ভারতবের খেলায় ভারতবিধ জ্বিটি জ্বদীপ এবং প্রেমজিংলাল অস্ট্রোলিয়ার লেটান এবং রাফেলসকে প্রাজিত করেন। ভারতবর্ষ ২-১ খেলায় জয়ী হয়।



দশ ক

ডেভিস কাপ প্ৰাঞ্জের ফাইনাল

সাবাস জয়দীপ! সাবাস প্রেমজিংলাল!
বাগালোরে আয়োজিত ডেভিস কাপ
প্রতিযোগিতার প্র'গেলের ফাইনালে
অস্টেলিয়ার বিপক্ষে ভারতবর্যকে ০-১
থেলায় জয়য়য়ৢ করেছেন প্রেমজিংলাল এবং
জয়দীপ য়ৢখাজি'। এই জয়লাডের ফলে
ভারতবর্ষ মূল প্রতিযোগিতার ইন্টার-জোন
সেম-ফাইনালে খেলবার যোগাতা লাভ
করেছে। ভারতবর্ষের এই জয়লাডের মুলে
ন-শেলীয়ং ক্যাপটেন রমানাথন ফুজানের
অবদানও যথেকা ভিল।

ডেভিস কাপ প্রতিযোগিতায় ভারতবর্ষের কাছে অস্ট্রেলিয়ার এই পরাজয়
আন্তর্জাতিক টেনিস মহলে রাতিমত
ক্ষিক্রের উদ্রেক করেছে। ইতিপূর্বে ডেভিস
কাপের খেলার ভারতবর্ষের বিপক্ষে
অস্ট্রেলিয়া দূরার খেলে দ্বারই ভারতবর্ষকে লোচনীরস্তাবে পরাজিত করেছিল—
১৯৫৯ সালের ইন্টার-জোন ফাইনালে
৪-১ খেলার এবং ১৯৬৬ সালের চ্যালেঞ্জ

রাউদেও ৪-১ খেলায়। ভারতবর্ষের তুলনায় ডেভিস কাপ প্রতিযোগিতার অস্টেলিয়ার এবং সাফলা বহুগ**়ণ বেশ**ী। যেখানে ভারতবর্ষ ডেভিস কাপের চ্যালেঞ্জ রাউন্ডে মাত্র একবার থেকে রাণার্স-আপ হয়েছে সেখানে অপ্রেলিয়া ৩৭ বার চ্যালেজ রাউন্ডে থেগে ২২-বার ডেভিস কাপ জয়ী হয়েছে। ডেভিস কাপ প্রতি-যোগিতার ইতিহাস সংগাধিকবার কাপ জয়ের রেকড' অস্টেলিয়ারই। একমাত্র আমেরিকা তারের নিকট প্রতিশ্বন্দরী। আর্মেরকা ডেভিস কাপ পেয়েছে ২১ বার। ১৯৩৮ সাল থেকে ১৯৬৯ সাল পর্যাত্ত-যেখানে ৩২-বার ডোভস কাপ প্রতি-যোগিতা হওয়ার কথা, সেখানে ডেভিস কাপের আসর **বঙ্গেছে ২৬-**বার। দ্বিতীয় বিশ্বয**়**দেধর ফলে ৬ বছর (১৯৪০-৪৫) ডেভিস কাপের খেলাহয়নি। এই ২৬ বছরের খেলায় (১৯৩৮-৩৯ ও ১৯৪৬-৬৯) অস্ট্রেলিয়া একটানা ২৫-বার (১৯৩৮-৩৯ ও ১৯৪৬-৬৮) ভেভিস কাপের চ্যালেঞ্জ রাউন্ড অর্থাৎ ফাইনালে থেলে ১৬-বার ডেভিস কাপ জিতেছে। দ্বিতীয় বিশ্ব যুদ্ধের পরবতী অধাায়ে ডেভিস কাপের ২৫ বছরের খেলায় (১৯৪৬-৭০) অস্ট্রেলিয়া একটানা ২৩-শছর চ্যালেঞ্জ রাউণ্ডে খেলে ১৫-বার ডেভিস কাপ পেরেছে। স্তরাং এ হেন অস্টেলিয়ার উপয'ৃপরি দ্বারছর (১৯৬৯-৭০) চালেপ্স রাউন্ডের খেলা থেকে যাদ পড়া রীতিমত অঘটন। প্রকৃতপক্ষে গত দ বছর অস্ট্রেলয়া ডেভিস কাপ প্রতি-যোগিতায় শবিশালী দল তৈরী করতে পারেনি। তাদের প্রথাত থেলোয়াড়

এমাস্ন, শ্রেটালে, নিউকশ্ব **এবং রোচে** পেশাদার থেলোয়াড় দলে যোগদান করার অস্থেলিয়ার ডেভিস কাপ দল খাবই দাবল হয়ে পড়েছে। নতুন খে**লো**য়াড় অস্ট্রেলয়া তাদের অভাব প্রণ করতে পারেনি। যেহেত ডেভিস কা**প প্রতি**-যোগিতায় পেশানার থেলোয়াড়দের যোগদান নিষিশ্ব এবং পেশাদার টেনিস মহলে অস্টেলিয়ার খেলোয়াড্দের বাজারদর বেশী সেই কারণে ডেভিস কাপ প্রতিযোগিতার অনা দেশের থেকে পেশাদারী টেনিস অস্ট্রেলিরার বেশী ক্ষতি করেছে। ডেভিস কাপ প্ৰতিযোগিতায় তালেট-লিয়ার নবাণত খেলোয়াড়রা বি**পক্ষের** অভিজ্ঞ থেলোয়াড়দের কাছে বেশ কিছুদিন এইভাবে হার প্রীকার করবে। '১৯৬৯ সালে নথ' আমেরিকান জোনের ফাইনালে মেকসিকোর কাছে ২-৩ খেলায় এবং ১৯৭০ সালে প্রাণ্ডলের ফাইনালে ভারতব্যের কাছে ১-৩ খেলায় ছেরে যাওয়ার ফলে অস্টেলিয়া **উপয**়েপীর দ বছর চ্যালেঞ্জ রাউণ্ডে থে**লতে পেল**'না। এখানে উল্লেখ্য, ডেভিস কাপের পূর্বাঞ্চলের খেলায় অন্টোলয়ার যোগদান এই প্রথম। অন্য জোনের থেকে প্রেণ্ডিকের খেলার চাাদিপয়ান হওয়া তারা খুব সহজ ভেৰ্বেছিল।

খেলার ফলাফল

প্রেমজিংলাল ৬-২, ৬-৮, ৬-৩, ৩-৬ ও ১৪-১২ গেমে রে রাফেলসকে প্রাজিত করেন।

জয়দীপ মুখাজি ৩-৬, ৩-৮, ১-৪, ৬-০ ও ৬-২ গেমে ডিক জিলেলিকে প্রাজিত কুরেন।



২৯৭০ সালের অংতঃ কলেভ হকি লীগ এবং নকআউট চ্যাহিপরান কলিক।তা বিশ্ববিদ্যালয় ল' কলেজ।

এলান দেটান এবং জন আলেকজাণ্ডার ১৫-১৩, ৬-৪ ও ৬-৪ গেমে প্রেমজিংলাল এবং জয়দীপ মুখার্জিকে পরাজিত করেন। প্রেমজিংলাল ৮-৬, ৬-২ ও ৬-১ গেমে ডিক জিয়েলিকে পরাজিত করেন।

জয়দীপ মুখাজি বনাম রে রাফেলসের শেষ সিঞ্চলস খেলাটি অসমাণত থেকে বারা। মুখাজি প্রথম দুটি সেটে জয়ী হন। অপরদিকে রাফেলস জয়ী হন তৃতীর এবং চতুর্থ সেটে। শেষ পঞ্চম সেটে যখন খেলার ফলাফল সমান (৬-৬) ছিল তখন আলোর অভাবের কারণে খেলাটি পরিতার ঘোষণা করা হয়।

देखाँब-स्मान काहेनाव

ডেভিস কাপের ইন্টার-জোন ফাইনাল খেলার পরই চালেজ রাউন্ড অথাং ম্ল প্রতিযোগিতার ফাইনাল খেলা। ভারতংহা এপথাত ৬-বার ইন্টার-জোন ফাইনাল এবং একবার চালেজ রাউন্ডে যে খেলেছে তার ফলাফল নীচে দেওয়া হল। ভরতবায়ের এই সাফলোর প্রধান স্তন্ত ছিলেন রামাথন কুকান। তার পরই নরেগকুমার জয়দিপ মুখার্জি এবং প্রেমজিংলালের নাম উল্লেখ-বোগা। নরেশকুমার ১৯৫২ সালে, রমাথন কুকান ১৯৫৩ সালে, প্রেমজিংলাল ১৯৬০ সালে ভারতীয় ডেভিস কাপ দলে প্রথম নিবাচিত হল।

১৯৫৯: অন্থেলিয়া ৪ : ভারতবর্ষ ১
১৯৬২: মেক্সিকো ৫ : ভারতবর্ষ ০
১৯৬৫: অমেরিকা ৫ : ভারতবর্ষ ০
১৯৬৫: শেপন ৩ : ভারতবর্ষ ২
১৯৬৬: ভারতবর্ষ ৩ : নেক্রিজন ২
১৯৬৮: আমেরিকা ৪ : ভারতবর্ষ ১

চ্যাদেজ রাউণ্ড ১৯৬৬ : আমৌলিয়া ৪ : ভারতবর্ষ ১

अक अ काश काहेनाम

ম্যাপেস্টারের ওচ্ছ ট্রাফার্ড মঠে
আয়োজিত ১৯৭০ সালের ইংলিস ফ্টেবল
বাপের ন্বিতীয় দিনের ফাইনালে চেলসী
২-১ গোলে লিডস ইউনাইটেড দলকে
পরাজিত করেছে। চেলসী দলের পক্ষে এই
নিয়ে ভৃতীয়বার ফাইনাল খেলা এবং প্রথম
এফ এ কাপ জয়। অপরাদকে লিডস
ইউনাইটেড ইতিপ্বের্ণ মাত্র একবার
ফাইনাল খেলে রাণাস্য-আপ হয়েছিল।

উইদর্বল দেউভিনামে আয়োজিত
আলোচা বছরের প্রথম দিনের ফাইনাল
থেলাটি ২-২ গোলে ড ছিল। দ্বিভীয়
দিনের ফাইনাল খেলাও নিধারিত সময়
পর্যানত ড ছিল। ফলে অভিরিম্ভ সময়
থেলতে হয়। এখানে উল্লেখা, এফ এ কাপ
প্রতিযোগতার স্কৃষি ৯৯ বছরের
ইতিহাসে ইতিপ্রে মাঠ একবার দ্বিভীয়
দিনের ফাইনাল খেলায় অভিরিম্ভ সময়
থেলবের প্রয়োজন হয়েছিল।

এশিয়ান য্ৰ ফ্টৰল প্ৰতিযোগিতা

ম্যানিলায় আয়োজিত ৭য় এশিয়ান

য্ব ফ্টবল প্রতিযোগিতার ফাইনালে

য়লদেশ ৩-০ গোলে ইন্দোনেশিয়াকে
পরাজিত করে 'ট্ডকু আবদ্লে ট্রফি' জয়ী

হয়েছে। আলোচা বছরের প্রতিযোগিতায়
১৬টি দেশ অংশ গ্রহণ করেছিল। সেমিফাইনালে রক্ষদেশ ২-০ গোলে জাপানকে
এবং ইন্দোনেশিয়া ১-০ গোলে দক্ষিণ

ফোবিয়াকে পরাজিত করে ফাইনালে উঠেছিল। দক্ষিণ কোরিয়া ৫-০ গোলে
জাপানকে পরাজিত করে তৃতীয় প্রান লাভ করেছে।

अक्षि छेन्छ्यम मुन्दीस्क

কলকাতার প্রধানত ছকি, ফুটবল এবং ক্লিকেটে আগে থেকেই আপোৰে নাবি अलक चनात कनाकन ठिक रहा थात्क-এরকম অভিযোগ সাধারণ লোক কেন থোদ কর্ম-কর্তাদের মুখ থেকেও শোনা যায়। ত ব্যাপারে কর্মকতারি৷ এমনই ভাব দেখা বেন তাঁদের কিছা করার নেই, হাত-পা একেবারেই বাধা। কর্মকর্তার আসনই যাদের কাছে রাজি-রোজগার, সামাজিক প্রতিপত্তি বা বিলাসের একমাত্র অবলম্বন, তাঁরা এই নিয়ে কঠোর হঞ্তে দুনীতি দমন করতে চান না। কারণ ভোটের ওপরই ষে তাঁদের অং তত্ব। ভোট অন্য দেশেও কিন্তু সেখানের কর্মকতার আমাদের দেশের মত এতথানি ক্রীব নব। **এখানে शर्माकलात এकां** प्राचीनक पिक्रि। ইংল্যান্ডের পিড্স ইউনাইটেড ফুটবল ক্লাবের ষথেণ্ট নামডাক আছে। তারা ১৯৬৯ সালের প্রথম বিভাগের ফুটবল লীগ চ্যাদ্পিয়ান এবং ১৯৭০ সালের এফ এ কাপের রাণার্স-আপ। সদ্য সমাণ্ড ১৯৭০ সালের ফুটবুল লীগের কোন একটি খেলায় দ্বেলি দল গঠনের কারণে ইংলিশ ফ**্টবল ল**গি খেলার নিয়ন্ত্রণ সংস্থা লিডস। ইউনাইটেড দলকে ৫,০০০ পাউন্ড (৯০,০০০ টাকা) জরিমানা করেছেন। চিকিৎসকের নির্দেশ অন্যায়ী থেলোয়াড়-দের বিশ্রাম দিতে বাধা হয়েছিল বলে লিডস ইউনাইটেড দল যে কৈফিয়ত দিয়েছিল তা গ্রাহ্য হয়নি। লীগ নিয়ন্ত্রণ কর্তৃপক্ষের কড়া নিদেশি হল লীগের সমস্ত খেলাতেই দলের সাম্থা মত শক্তিশালী দল গঠন করতেই হবে, এর বাতিক্রম হলেই জারিমানা

ण्डारकार्ज काश करहेवल

বাংগালোরে গটাফোড া শ ফটেবল প্রতিযোগিতার ফাইনালে কলকাতার মহ-মেডান দেপাটিং ক্লাব ২—১ গোলে গত বছরের ডুরান্ড ফাপ বিজয়ী গোখা রিগ্রেড দলকে পরাজিত করে উপযুশিরি দুবার কাপ জয়ের গোরব লাভ করেছে। বিজয়ী দলের পক্ষে দেশ্টার ফ্রওয়ার্ড পাপায়া দুর্টি গোসই দেন।

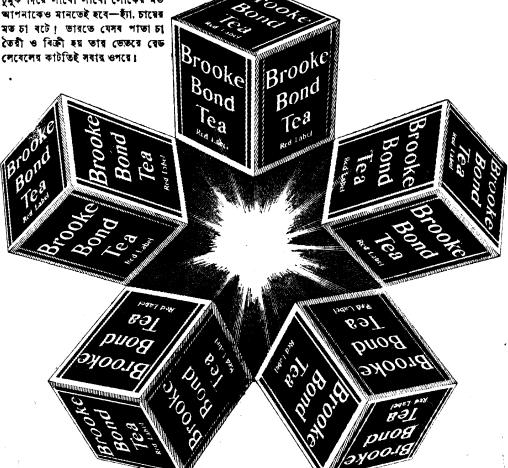
গোল্ড কাপ ছকি ফাইনাল

বোদ্বাইদের প্রথাতে গোল্ড কাপ হবি
প্রতিযোগিতার ফাইনালে বডার সিকিউরিটি ফোর্স (জল-ধর) ০-০ ও ৩-১ গোলে
কলকাতার প্রথম বিভাগের হকি লীগ
চাাদিপয়ান (১৯৭০) মোহনবাগান ক্লাবকে
পরাজিত করে উপযুদ্ধির তিনবার গোল্ড কাপ জরের গোরব লাভ করেছে—১৯৬৮
ও ১৯৭০ সালে সরামরি জয় এবং ১৯৬৯
সালে টাটা শেপার্টস দলের সংগ্রা যুশ্মভাবে।

वृश्चिख जूलता त्तर

প্রতি প্যাকেট থেকে চের বেশী কাপ চা
পেতে চান তো সন্তাদরের চা কিনবেন
না। মেড লেবেল কিনুন—বোল-আনা
সরেস চা। দেখে ও চেখে সমান মুখ
হবেন। চোল্ড ক্রক বণ্ড প্রেণ্ড—চাষে
চুমুক দিয়ে লাখো লাখো লোকের মড
আপনাকেও মানতেই হবে—হাঁা, চায়ের
মড চা বটে! ভারতে যেসব পাতা চা
তৈরী ও বিক্রী হয় ভার ভেডরে বেড
লেবেলের কাটভিট সবার ওপরে।





ক্লক ৰণ্ড ব্লেউ লেবিল – প্রতি পয়কেট খেকে প্রবৰন আরও বেশী কাপ আর সত্যিই ভালো চা

88 5392

কেটে গেলে, ছড়ে গেলে 'ডেটল' কেন সৰচেয়ে ৰেশি নিৰ্ভৰযোগ্য?



জীবাণুর সাক্ষাত যব ভেটল। চামডার ক্ষত্রের স্বক্ষা প্রেডিবের বার ক'রে দের ভেটল। হুডরাং কেটে পেলে ছড়ে পেলে ভিন্ত পেলে ভটলের ওপর ভরলা বাধুন—চট্পট্ লেনে কাবে। ক্যতে কি, বে কোনো ধর্যুদর কাটাকুটি বা ক্ষতে আপলার উচিত প্রধ্যিক নিফাপজা বিশ্বানের ব্যবস্থা হিলেবে ভেটল ব্যবহার করা। বাজিল নিভাবৈত্রিভিক প্রযোজনে—লাড়ি কামহিনা, গার্গল্ করা, মাধা ব্যা বা রান করতে ভেটল কাজে লাগাবে। আলই এক বোডল ভেটল বাড়িতে নিয়ে বান।

घटत घटत वतकात ८७वेन वितानका



বিশ্বের সক্ষান্তরে বিশ্বন্ত জীবাণুনালক



DAC IOR BEN

न्जन धकायन

কালিদাসের প্রমাণি বীক্ষাপ্র অনুবাদ করেছিলেন রবীক্ষ্যনাথ—সমুস্পর নেহারি। আর প্রমাণি বীক্ষাপ্র লেক্ষ্ক শ্রীস্থাবাদ্যমার চলবতী নুডন স্ত্রমণ-কাহিনী লিখলেন—

म्राम्ब निशांब

প্রচুর আলোকচিত্র-সমদিবত উপহারের উপা-লেম প্রন্থ: নিজে পড়েও প্রিয়ন্ত্রনকে উপহার দিয়ে সমান আনন্দ। ম্লা—৭-৫০

সবেষাত ন্তন প্রকাশিত হল : সবশ্তরের পাঠক-পাঠিকাদের জন্য গলেপর হলে অলপ পরিসরে বাংলার ইতিহাস

বাওলার কথা

কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের ইতিহাসের অধ্যাপক শ্রীনিদাধিরঞ্জন রায় কর্তৃক পরিদৃষ্ট ও পরিমাজিত। মূল্য ৭০০০

উপন্যাস-বসসিত ভ্ৰমণ-কাহিনী

त्रभग्राणि वीक्रा

রবীংদ্র প্রফারে সম্মানিত শ্রীস্বোধ চক্রবর্তী প্রণীত মোট ১৩টি পরের মূল্য ১১১-০০ ন্তন : ক্লাটি পর্ব — মূল্য ১০০০

न्जन প্रकामन

খ্যাতি যাদের

জগৎজোড়া

নিম'লেন্দ্রায়চৌধ্রী প্রণীত

বাংলায় বিশ্লববাদ

প[্]রবাধাত ও সংশোধিত চতুর্থ সংস্করণ **শ্রীনালনীকিশোর গ্রহ প্রণ**ীত

* *
প্রামাণ্য প্ৰ্য জীবনকথা ও অলোকিক
লীলা মাহ,স্মা

পরম যোগিনী আনন্দময়ী মা

— ১০-০ শ্ৰীগণেগ্ৰ চ্ছৰডী

ब्रवीन्छ**क्षी**यनी

শতাবদীর স্য

श्रीप्राम्भावक्षम वस्

এ. মুখাজা আনুণ্ড কোং প্রাঃ লিঃ
 বিংক্ষ চ্যাটাজা প্রাট, কলিকাতা-১২

५०म वर्ष ५० चन्छ



্য সংখ্যা ন্ল্য ৪০ প্রসা

Friday, 22nd May 1970.

भारतमात्र ४६ देशाच्छे, ५०१९

40 Paise

সুচীপক্ত

বিষয় भक्त साधक ২৬০ চিঠিপর २७२ माना कात्थ ----শ্রীসমদশী २७८ स्मर्णावसम् ২৬৫ ৰাণ্যচিত্ৰ --শ্ৰীকাফী খাঁ ২৬৭ সম্পাদকীয় १७४ क्नकाका--७% (কবিতা) --- শ্রীসতীন্দ্রনাথ মৈত্র ३७४ अथन (কবিতা) ---গ্রীআশিস সান্যাল २७४ नामान हावा (কবিতা) —শ্রীপ্রদোষ দত্ত ২৬৯ সাহিত্যিকের চোখে আজকের সমাজ -- শ্রীয়শোদাজীবন ভট্টাচার্য ২৭১ অভিনাত (গল্প) —শ্রীদীপক চৌধরেী २०७ मृत्थन मिना - আবদ্ধ জববার -श्रीरेगलकानम भ्रात्थाशायाय २४० जामात बन्ध् नजत्न २४५ मजबूज চরিতের অন্যদিক - আবদুল আজীজ আল আমান ২৯০ সাহিত্য ও সংস্কৃতি —শ্রীঅভয়ঙ্কর ২৯৩ নৰৰধেৰ সাহিত্যসভা —শ্রীতারাশুকর বন্দ্যোপাধ্যায় ২৯৬ নীলকণ্ঠ পাখির খোঁজে (উপন্যাস) —শ্রীঅতীন বন্দ্যোপাধাায় ७०১ निकरहेरे खाइ —শ্রীস*শ্বে*ংসূ ७८६ भरतत्र कथा শ্রীমনোবিদ ००४ हाम्रा भरक (উপন্যাস) - সৈয়দ মুস্তাফা সিরাজ ৩১৩ নিজেরে হারায়ে খ'ুজি (ম্মতিচারণ) -- শ্রীঅহীন্দু চৌধ্রী ৩১৭ মেঘ ও ময়ুর (গলপ) --শ্রীস,ভাষ ঘোষাল ৩২০ গোয়েন্দা কবি প্রাশর - শ্রীপ্রেমেন্দ্র মিত্র লিখিত -শ্রীশৈল চক্রবর্তী চিত্রিত --- শ্রীপ্রমীলা ৩২১ জগানা ৩২৩ ৰেতাৰল্ল,ডি --- শীশ্রবণক

প্রচহন: শ্রীস্বপন রায়

পি ব্যানার্জীর **প্রাম** চিকিৎসা

৩৩৩ আন্ডর্জাতিক ব্যাডমিন্টন আসর

৩২৬ জলসা

৩২৮ প্রেক্ষাগ্র

৩৩৬ খেলাধ্লা

৩ পিল টা: ২৫০ ১৬ পুরিয়া চূর্ণ ২-২৫ মলম ৩০ আ: ২৫০ বিনামূলো বিবরণী দেওয়া হয়

পি ব্যানার্কী

৩৬ৰি, শ্বামাপ্ৰসাদ মুখাৰ্কী বোড কলিকাতা-২৫ ৫৩, প্ৰে ষ্টিট, কলিকাতা-৬ ১১৪এ. আন্ডভোষ মুখাৰ্কী ঘোড কলিকাতা-২৫ আমার পরম শ্রন্ধের পিতা মিহি
জামের ডাঃ পরেশনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় আবিষ্কৃত ধারান, যায়ী
প্রস্তুত সমস্ত ঔষধ এবং সেই
আদর্শে লিখিত প্রতকাদির মূল
বিক্র কেন্দ্র আমাদের নিজ্ঞুক্
ডাক্তারখানাদ্বয় এবং অফিস—

- শীচিত্রাংগদা

—শ্রীনান্দীকর

—শ্রীদশক

— ^{শী}শ্বসনাথ রায়

আধুনিক চি'কৎসা

ডাঃ প্রণৰ ৰন্দ্যোপাধ্যায় লিখিত পারিবারিক চিকিংসার সর্বশ্রেষ্ঠ ও সবচেয়ে সহজ বই

89-6045, 89-2054, 66-8225



बास्मद वनवान : बार्बा ना कीन्न?

গত ২৭শে চৈচ সংখ্যার 'অম্ভ'এ চিঠি-পত্র বিভাগে ডক্টর সভ্যোন্দর্শন হোষাল ববীন্দ্রনাথের 'প্রাচীন সাহিত্য' জথা কাব্যের উপেক্ষিতা' প্রবন্ধে ভথাগত একটা সংশ্য় নিয়ে আলোচনার উদ্বোধন করেকেন।

বদতৃতঃ 'কাব্যের উ:পক্ষিতা' নিকেই গেন একটি কাব্য। **পড়তে পড়তে মনে চ**য় পাঠককে কাব্যলোকে টেনে নিয়ে চলেছেন কবি। রাজা দশরুথের সারিশাল রাজ-অন্ডঃপরে। ঐশ্বর্ষের ঝলক যেন সহসা ম্লান হয়ে গেছে। **কোলাহ্ণাম**্থর অণ্ডঃ-প্র নীরব নিথর! স্কাচিৎ রাজা দশরণ ও রাণী কৌশল্যার বেদনাতুর আতনাদ ভেসে আসছে। স্তব্ধতার মধ্যে শুধু তারই প্রতিধরনি। এ সবের দিকে কবির খেযাল নাই। তিনি খ'ুক্তে বেড়াচ্ছেন উমিশাকে। রাজহমের কোন নিভৃত কক্ষে ভূল্মণিঠতা উমিলা অবাভ বেদনায় ছটফট করছে? চোধে পড়লো উপাধানে মুখ ল্কয়ে ফ্রাপরে ফ্রাপরে কাদছে। স্বামী-সংগ-সুখ-বঞ্জিতা উদ্ভিন্নযোবনা এক বরনারী! এমনি অবস্থায় দিন যাবে, মাস যাবে. বছর যাবে। একটি দুট নয়; কবি বলেন, এমনি করে বারটি বছর অতিবাহিত हर्द।

...খাটকা সাগ্লো পন্ডিতমন্ডলীর জনৈক সভ্যের মনে। উমিসাকে এমনিভাবে কাটাতে হবে বার বছর তো নয়, চৌন্দ বছর! আদি কবির কাব্যে তো চৌন্দ বছরের কথাই উল্লেখ আছে; তম তম করে খ'লে দেখেছি আমি,--বিকচ্প কিছ্ব নেই।

ভক্টর ঘোষাল আমার পরিচিত বন্ধু! স্থাতকোত্তর পৰ্য যে তিনি महिरकात (वारमा) खशानना करत हरमहान স্কৃষিকাল। তার প্রশ্নটি বিশেষজ্ঞদের মডামভের অপেকা রাথবে ডাতে বিতকের অবকাশ নাই। বিল্ফেন সমীপে আমারও প্রশ্নটির বধাবধ জবাবের আবেদন র**ইলো।** ভক্টর বোষালের মনে খটকা জেগেছে, ब्राटमञ्ज क्रोप्स वस्त्र क्नवादमञ्ज পা-ভবদের বার বছরের অক্সাতবাস গ্রন্থিরে গেছে কিনা। রামারণ হেভাব্পের আখ্যারিকা, আর মহাভারত স্বাপরের। मरम रत्न करिकद्वा अधन नामक्षनारीम छन रनायक्त करतन नि। य गुरतत मरश वर्णना-

গত মিল নাই। তবে ক্ষিগ্রের 'চিচাপ্সদা' রচনার পরই বদি 'কাব্যের উপেন্ডিতা' লিখে থাকেন তাহ'লে 'বন্ধ' সংখ্যা জ্ঞাত-সারে লেখনিতে এলে বেকে পারে।

পিতৃ-সত্য রক্ষার জন্য রাম অন্তেজ শক্ষণ ও সীতা দেবীকে সংশ্যে নিয়ে চতদ'ল বর্ষের জনা বনে গেলেন এ কাহিনী কে না জানে! যাত্রাকালে বনবাসের ব্যাণিত স্বীকৃত হরেছি**ল চৌন্দ বহুর এতে** দিবমত নাই। তবে রামচন্দ্র যে ঠিক চৌন্দ বছর পরেই ফিরে এসেছিলেন এমন 'চুলচেরা' প্রমাণ স্ক্রে বিশেলবণ সাপেক-একমাত্র পান্ডতগণই দিতে পারেন। রাম বনবাস স্বেচ্ছায় বরণ করেছিলেন। বনবাসকালে সীতাহরণ আ**ক্রাম্মক ঘটনা। রাম** রাব**ণে**র যুন্ধ এই আক্ষিকতার পরবর্তী অধ্যার---অনিদিশ্টকাল ভার ব্যাশ্ভ। ষ্টেধ যবনিকা পড়লো রামের হাতে রাবণের মৃত্যুর সংগ্য **সং**গ্য**ায**়**শ্ব হয় এবং** সীতা উম্পারের সংবাদ পেয়ে অযোধাবাসী রাম-সীতাকে ফিরিয়ে আন্তে ছুট্লো। এই সকল ঘটনাবহুল পরিবেশে দিন, মাস, বছর হিসাব করে চৌন্দ বছর গণনা করা কি সম্ভব হয়েছিল**় কবিগরের** মতে যাওয়া ও ফিরে আসার সময়ের ব্যাণিত 'বার' বছরও তো হতে পারে!---

ডক্টর ঘোষাল দীর্ঘকাল 'লান্ডি-নিকেজন এ কাটিরেছেন। ব্যারং রবীলুনাথ বা তাঁর সেক্টোরীদের কারও কাছে এ প্রশন তুললে হয়তো সঠিক বা অন্মেয় একটা সিন্ধান্ত ডক্টর ঘোষাল পেতে পারতেন। এখন বিদ বার' সংখ্যা উল্লেখ করা রবীল্যনাথের পক্ষে ভুলই ইরেছে সাবাস্ত ইর ভব্তো শ্রম সংশোধনের উপার নাই। স্তরাং কাবের দোহাইরে 'সংখ্যাটিকে' বিদ 'আর্যপ্রিয়ালা' বলে গণ্যা করা হয় তাতেই বা ক্ষতি কি?

> হিদিব ছোৰ বাঁচি বিশ্ববিদ্যালয় বাঁচি—১

निकर्णेहे चाटह

অষ্ত-এর নিকটেই আছে' এই বিভাগটিতে বিভিন্ন সম্প্রদারের সমাজ-বিরোধী মানুবেদ কার্মকলাপ সম্বদেধ আলোচনা করে শ্রীসম্পিংস্ আমাদের ফুতঞ্চতাভালন হরেছেন।

ু সম্প্রতি ৪৬শ সংখ্যা অম্তের এই

বিভাগে প্রকাশিত পঞাশ টাকা ছাড্নে শীর্ষক আলোচনাটি পড়ে মন য্গপং বাধা ও বিরভিতে ভরে উঠলো।

শ্রীস্রত মজ্মদার প্রম্থ বেসব তর্ণরা আজকালকার তথাকথিত 'রকবাজী' ও 'মুম্ভানির' পথ গ্লহণ না করে জীবন-যুদ্ধে নেমেছে, পিভামাজ ও পরিবারের প্রতি কর্তব্য পালন এবং সুস্থ স্বাভাবিক জীবনধারণের জন্যে নানতম একটি চাকুরী যাদের একমাত দাবী, ভাদের বার্থভা ও পরাজরের ইতিহাস তো রোজই চোথের উপর দেখছি ও শ্নাছ। সরকারন কর্ম-চারীদের কর্তব্যে স্ববাংগান অবহেলা ও অভদ্র ব্যবহারের উদাহরণও বহু প্রাতন।

তব্ধ আণ্ডরিক ক্ষোভের সংগ্য বারে
বারেই মনে ছক্ষে যে চাকুরী নয়, তার কোন
প্রতিগ্রন্থিও নয়, সামান্য একটি সরকারী
রৌণং, তারই ইণ্টারভিউট্টুর সংযোগ
থেকেও এরা বিশ্বত হচ্ছে শ্ব্ম মান্য্রের
লোভ ও গাফিলতির জন্যে। দিনের পর
দিন তারা বিশ্ববিদ্যালয় কার্যালয়ে হটিাহাটি করেছে এবং কর্মচারীদের বর্বরোচিত
আচরণ সহ্য করতে বাধা হয়েছে। পরিণামে
ঘরে তুলেছে এই প্রবন্ধনার ফসল।

এ অবিচার ও অত্যাচারের প্রতিকার
করার কোন শক্তি আমার নেই, তব্
বাংলাদেশের সব বোনেদের পক্ষ থেকে
স্বত মজ্মদার তথা এইরকম প্রব[ি]্য সব
ভাইরেদের উপেশে আমার আন্ত[্]্ সমবেদনা ও শ্ভেছা না জানিবে থাকতে
পারলাম না।

মহারা গালাবিল কলকাতা-১৬।

আশ্তর্জাতিক নারী দিবস

'অম্ত' সাংতাহিক পরিকাটির আমি

গ্রাহক এবং প্রতিটি সংখ্যা আমি নির্মায়তভাবে পড়ে আসছি। সেই স্ত্রে আপনার
অম্তৈর ১০ চৈর শ্রেবার ৪৬ সংখ্যার
'অপানা' বিভাগে কেথিকা প্রমীলা কর্তৃক
'আশ্তর্জাতিক নারী দিবস'-এর মনোক্ত আলোচনাট্রু পড়লাম। এই বিভাগে
প্রতিটি সংখ্যার নারী সমাজের বিভিন্ন দিক
নিরে তিনি আলোচনা করে বাজেন। বার
ফলে আমরা বর্তমান কগতে নারী সমাজের
উত্তরোপ্তর উন্নতির দ্শ্য দেখতে পাছি।
প্রত্বদের ভূলনার আক্র নারীরাও পিছিরে
নেই। ভবিষ্যতেও হয়তো তাদের আরও
ভৃতিত্ব আমরা দেখতে পাবো। বাক এই



একটি ভূল আমার চোখে <u>আলোচনায়</u> পড়লো। এই ভুলট্কুর দিকে আমি লখিকার দৃষ্টি আকর্ষণ করছি। তিনি এক গারগার লিখেছেম 'প্যারাট্পার শ্রীমতী নুৰ্বা বন্দ্যোপাধ্যারের পথ ারে এগিরে আসছেন একাধিক জীবন—ভয় তুচ্ছ করা মহিলা। যতদ্র জানি শ্রীমতী দ্বা বন্দোপাধ্যার প্যারাষ্ট্রপার নন। তিনি প্রথম বাঙালী মহিলা পাইলট। বতামানে ইণ্ডিয়ান এয়ার লাইনদে কলকাতা শাখার ক্মারতা। প্যারাট্রপার হলেন শ্রীমতী গীতা চন্দ। অবশ্য বিমান চালনা করতে গেলে প্রথমে প্যারাট্রপারের যোগ্যতায় উত্তীর্ণ হতে হয় কিনা সেটা আমার জানা নেই। এবং শ্রীমতী দ্বা বদেয়াপাধ্যায় সে বিষয়ে সাফল্যলাভ করেছেন কিনা তাও বলতে পারবো না। তাই এ বিষয়ে লেখিকার কাছ থেকে কিছু জানার প্রতীক্ষায় রইলাম।

ত। ছাড়া আপনাদের নিকটেই আছে'
নতুন বিভাগটি আর একটি উল্লেখযোগ্য
আকর্ষণ। এই বিভাগের ৪৫ সংখ্যার বহুরূপে সম্মুখে তোমার' লেখাটি একটি অতি
বাস্তব ঘটনা। হিসেব একেবারে প্রাঞ্জল।
এরকম ঘটনা শহর-মফসবলে অসংখ্য ঘটছে।
যা সাধারণ মানুষ বুঝে উঠতে পারে না।
আপনারা পঠিকা মারফত সে চিচ জনসাধারণের কাছে তুলে ধরছেন এবং সবার
কাছে তা ধরা পড়ছে। এজন্য আপনাদের
অজন্ত ধন্যবাদ।

ক্ষিতীশচনদু দত্ত প্রধান শিক্ষক, মানিক ভান্ডার নিন্দা বুনিয়াদী বিদালিয়। কমলপুর, ত্রিপুরা

नववर्ष मःभाः अमरण

অশেষ ধন্যবাদ জানাই প্রথমেই অম্যতের নববর্ষ সংখ্যাটির জন্য। বাংলা সাহিত্যের ছোট গলপ আমাদের একাত গবের বিষয়। কিল্তু সাধারণ পাঠক এই ছোট গল্প সম্পর্কে কিঞ্চিৎ উদাসীন, কারণ বর্তমানের বিশিষ্ট লেখকদের ছোটগলেপর সংগে ভারা পরিচিত নন। আপনারা গত বছর থেকে বিশিণ্ট লেথকনের প্রতিনিধিত্ব-ম্লক ছোট গলেপর সংকলন বার করে একটা বিরাট দায়িত্ব পালন করলেন এবং বাংলা-সাহিত্যের শ্ভানুধ্যায়ী লেখক ও পাঠকদের ধন্যবাদভাজন হলেন। তবে সবচেয়ে আনন্দিত হয়েছি প্রদেধয় সাহিত্যিক নারারণ গণ্গোপাধ্যায়ের লেখা "<mark>কী নিরে কাকে নিরে গল্প"</mark> রচনাটি পড়ে। আজকের আনক তর্ণ লেখক ও যারা ভবিষ্যতে লেখক হবেন তাদের কাছে এটা একটা বিরাট সমস্যার মতো দেখাকে, কী নিয়ে ও কাকে নিরে গণ্প লেখা যায়। একটা অভ্যুত চিল্ডা দেখা দিয়েছে, গলেপর বিষয়বদত আর নেই বা শিগগিরই শেষ হয়ে আসছে। যেন এর পরে আছে নিঃসীম শ্নাতা। গদেপর ভান্ডার যেন থ্ব তাড়া-তাড়ি Saturation point এর দিকে এগিয়ে চলেছে। পাঠকরাও হয়ত তাই আতি কত বা হতাশাগ্রহত যে তাঁরা আগামী দিনের সাহিত্যিকদের কাছ থেকে আর ন্তন কিছু পাবেন না ও সাহিত্যের আসরে আর ন্তন শক্মান লেথক দেখা দেবেন না। কিন্তু প্রশেষ নারায়ণবাব, তাঁর এই লেখায় এই নৈরাশ্য কাটিয়ে দিয়ে একটি আশার আলৈ দেখিয়েছেন। তিনি বিষয়বস্তু ংগুরিয়ে গেছে বা যাচেছ, একথা মানতে রাজি নন। তিনি বলছেন, আমাদের বিভিন্ন বাংলা তথা ভারতবর্ষে এত জটিলতা রয়েছে গান্**ষের জীবনে, এত যন্ত্রণা এত** বিচিত্রতা রয়েছে জীবনে, এবং প্রতিদিন ন্তন করে এগ্রলি জন্মাচেছ যে তা নিয়ে এখন প্রচুর ভাল গলপ লেখা যায়। এবং তাই ঘটবে। প্রতিদিনই আমরা এক একটা ন্তন উপ-লাখিতে পোছাই। এই নতুন উপলব্ধ চেতনাই কথা-সাহিত্যিকদের লেখার বিষয়-বৃহত্ত **হবে। স**্তরাং **লেখা**র আরু বিষয় নেই বা থাকৰে না এটা একটা মিথ্যা আতঃক মাত্র। বাংলা-সাহিত্যের এক খ্যাতিমান লেখকের কাছ থেকে এই আম্বাসবাণী পেয়ে নৈরাজ্ঞা থেকে আশার রাজ্যে উত্তরীর্ণ হওয়া গোল। আমিও বিশ্বাস করি, যতদিন মানঃ্ষ থাকবে, মান,ষের মন থাকবে, ততদিন বিষয়ব**স্তুর অভাব হবে না। সাহিত্যের মা**টি বন্ধ্যা নয়, সে এর ভিতর থেকেই নতুনের *জন্ম দেবেই, এবং সাহিত্যের রথ কালেব* সঙ্গেই এগিয়ে যাবে।

তপন দাশগ^{ুত} কলিকাতা—৩২।

সাহিত্যিকের চোখে

'সাহিত্যিকদের চোখে আজকের সমাজ' বিভাগটি প্রবর্তান করে আদ্তে একটি সময়োপযোগী কর্তব্য সম্পাদনে বতী হয়েছে। পাঠকদের কাছে এজন্য পৃত্তিকা অকুঠ ধন্যবাদ পাবে।

সাহিত্যিকের চোখে আজকের সমার্প ঘটনা বা পরিস্থিতি তাঁরা শুধু আমাদের মত বাইরে থেকে দেখেন না, তার ভেডরে প্রবেশ করে তাঁদের বিজেবন শাঁহর সাহায্যে তার ম্লাায়ন করতে চেন্টা করেন, কার্য-কারণ সম্পর্ক আবিন্ফারের চেন্টা করেন। তাই আজকের এই দিশেহারা দিনে অম্ত যথন সাহিত্যিকদের বিচার-বিশেক্ষণ পাঠকদের কাছে পৌছে দেবার বাবশ্য করলেন, তথন অনেক আশা নিয়ে উদগ্রীব

কিন্তু দৃংথের সংশা বলতে হছে
তার্ত্ত তার কর্তবাে এগিয়ে এলেও সাহিতাকরা সে ডাকে সাড়া দিলেন না। বে
অকপট ম্লাায়ন তাঁদের কাছে আমরা আশা
করেছিল্ম তারা সে জিনিস উপহার
দিলেন না। অধিকাংশজনই ধরা-ছোঁয়ার
বাইরে থেকে কিছু বন্ধবাহান সাহিত্যিকস্লভ বাকাজালের আড়াল নিজেদের
ল্নিয়ে রাথলেন। মনে হ'ল মনোজাব
প্রকাশে অনেকেই যেন নিধাগুদ্ত। গজেন
যিত্র মহাশায়কে ধনাবাদ যে তাঁদের এই
প্রিম্থিতি বিশেলষ্ট্রের অক্সাতা অথবা
বহুবা প্রকাশের অনীহা অকপট ভাষার
দ্বীকার করেছেন।

সব্ধেকে বেদনাদায়ক ব্যাপারটি হ'ল,
আজকের সাহিত্যিকদের যেন কোনো প্রহায়
নেই বলে মনে হ'ল। যিনি নিজে কোনো
প্রত্যায়ে দৃঢ়ে নন্তিনি আমাদের পথের হদিশ
দেবেন িক ক'রে? প্রত্যাহানী ভাসমান
সাহিত্যিক সমাজ দেশের মনোজগতের কোন
দৃত্যক্ষিণের ইংগিত দিছে কে জানে।

এর একমাত্র বাতিক্রম বোধহয় নন্দগোপাল সেনগাংশত মহাশয়। তাঁর বিচারবিশেলখণের সংগ্র সহাশয়। তাঁর বিচারবিশেলখণের সংগ্র সহামত না হতে পারি,
কিন্তু তিনি যে শক্ত মার্টির উপর দাঁড়িরে
আছেন সেটা ব্রুবতে অস্ক্রিধা হয় না।
কিন্তু ব্যতিক্রম বাতিক্রমই। সকল সাহিত্যিক
যদি তাঁদের বিশ্বাস ও বিচার-শক্তি নিয়ে
এগেয়ে এসে অকপট ভাবে পরিস্পিতির
বিশেলখণ করতেন, তাহলে অম্তর এই
সম্যোপযোগী উদার্মটি সাথাক হয়ে উঠত।

দেবপ্রসাদ মুখোপাধ্যায় কলকাতা---১১।

গত সম্ভাত একই বিষয়ে একই প্রলেশকের আগে-পরে লেখা দ্টি চিঠি একসংশা প্রকাশিত হয়েছে, এক্সনো দুঃখিত। অ, সু।

मानिशिक्ष

সংবাদপরের ভাষ্য অনুসারে পশ্চিম-বংগ সরকার বহু আলোচিত ভূমিসমসাার সরোহার উদ্দেশ্যে একটি "গার্দপ্রণ" এই সিম্বান্তের নিয়েছেন। বিষয়বস্তু কেন্দ্রীয় সরকারের অনুমোদনের জন্য ইতিমধ্যেই পাঠানো হয়েছে। বর্তমান রাজনৈতিক ও সামাজিক ব্যবস্থার পরি-প্রেক্সিতে বিচার করলে মনে হয় এই সিন্ধান্ত সতি।ই একটা মহৎ প্রচেন্টা। রাজা সরকারের প্রস্তাব অনুবায়ী পরিবারপিছ, জমির পরিমাণ ৪৫ থেকে ৬০ বিঘার মধ্যে ধার্য করা হবে, এবং বগাদার কৃষকরা যদি হাল, গর, দিয়ে চাষ করেন তবে উৎপদ্ম ফসলের তিন-চতুর্থাংশ পাবেন। আর শুধু শ্রমদান করলে উৎপাদিত ফসলের অধেক বগাদার গোলাজাত **করতে পারবে। আরও একটি বন্ত**ব্য এই স্থারিশগুলির মধ্যে আছে। সেটি হচ্ছে বাস্তৃজ্ঞাম যেসব লোকের নেই অবিলন্দে তাদের পাঁচ কাঠা করে জমি দেওয়ার বন্দোবস্ত সরকার করবেন।

ব্লাম্মপাতর অনুমোদন পেলেই এই **সমুস্ত সিম্থান্ত কার্যকর করা হবে। কিন্তু** ইতিমধ্যেই রাজ্যপালের সহকারী শাসকরা জেলায় জেলায় জেলাধীশদের নিকট তার-বার্তা পাঠিয়ে দিয়েছেন। আদেশ--অবিলম্বে বেনামী-জমি উন্ধার করে ভূমি-মধ্যে (অবশ্য স্থানীয়) করা হোক. এবং যারা ফ্রণ্ট-আমলে বেজাইনীভাবে আইন-দ্বীকৃত জমির অংশ কেড়ে নিয়েছেন তা প্নর্ভার করা হোক। আবার স্বল্প-মালিকানা গাঁদের আছে সেই সমস্ত কৃষ্ককে কৃষ্ণিগণ দেওয়ার জনাও নিদেশি পাঠানো হয়েছে। এক কথায় এই সমস্ত কর্মসূচী রূপায়ণের মুখা উদ্দেশ্য হল কৃষিপণা উংপাদন বৃদ্ধি করা। অর্থাৎ খাদাসমস্যার স**ু**রাহা ও প্রামীণ অথ ন**িতর বনিয়াদ সাুদ্**ঢ় করা।

সাংবাদিকরা রাজ্যপালের ভূমি-বিষয়ক উপদেশ্টাকে প্রশ্ন করেছিলেন, কেন তিনি এই সমসত "প্রগতিমালক" সংস্কারের স্পরিশ করেছেন। য্তুফুটের প্রভাবের ফলেই তারা এই সব বাবস্থা কার্যকর করার জনা সচেন্ট হতে প্রয়াস পেয়েছেন কিনা? উত্তরে শ্ধু এই কথাই বলা হরেছে, ফুটের প্রভাবের কোন প্রতিভিয়ার বশবতী হয় এই সমসত হিস্থানত প্রহণ করা হয় নি। নিছক সমাজবাবস্থাকে প্রগতিম্থী করার উদ্দেশেই এই বাবস্থাসমূহ অবলম্বন করা হস্কে।

ষাহোক প্রশন দাঁড়াচ্ছে এই যে, পশ্চিমবংগ সরকাত মাথাপিছ, জয়ির

পরিমাণকে কমিরে পরিবারপিছ, ৪৫ থেকে ७० विद्या क्यात्र कथा म्यात्रिम क्रिक्त। ফ্রন্ট-আমলে মাথাপিছ, ৭৫ বিছা জমির পরিমাণকৈ কমিয়ে পরিবারপিছ ঐ জমির বরান্দ করার আইনান্স বাকথা অব-লংবনের চেন্টা চলছিল। অবশ্য দীর্ঘ তেরমাস দাপাদাপি করার পরও কোন **अतुकात करत**न नि। **भर्**ध् वावन्थाहे सन्हे একটি বিরাট বৈক্ষবিক পরিবর্তনের হুমুকি দিয়েই জীরা সারা রাজ্যটাকে গাতিরে রেখেছিলেন। নীরবে গ্রেগত ও আকুতিগত পরিবর্তন আনার জন্য বিধান-সভায় আইন উত্থাপন ম্রান্বিত ক্রতে পারেন নি। এখন প্রশ্ন হচ্ছে, পরিবার-পিছু জমির বরান্দ কথাটার সঠিক অর্থ কি? পরিবার বলতে কি বোঝাতে চাওয়া হরেছে? কিছুদিন ধরে পরিবার বলতে ধরে একটি সংজ্ঞা পাঁচজনের ইউনিট দেওয়ার চেণ্টা হচ্ছিল। এই সংজ্ঞার মধ্যে পিতা ও পাতের একামবতী পরিবারের कथाई উল্লেখ क्या शिक्र्म, अम्पे-यामला পরিবারের কি সংজ্ঞা হবে সেই প্রধন এসেছিল। জমির বর্তমান মালিকানা থেকেই শুরু হবে পরিবারের ভূমিকা, এবং নিদিশ্ট জাম যতই প্র্যাণ্ডর হোক না কেন তাদের মধ্যেই সীমাবন্ধ থাকবে। অর্থাৎ জমি ভাগ হতে শ্রু করলেই এদের মধ্যেই তা ভাগ হবে। জ্ঞামির ভাগ চালা থাকবে। বর্তমানে যে ফ্রাগমেণ্টেশন আছে তাও চাল, থাকবে। জ্ঞাম সম্বন্ধে যারা বিশেষজ্ঞ তাদের মতে জ্যাগমেন্টেশন ব্যবস্থা চালা, রাখার জন্য জমির মধ্যে যে সীমারেখা বর্তমান আছে ভারতের হিসাব ধরলে সেই সীমারেখার জমির পরিমাণ নাকি এক কোটি একর "আল" দেওয়ার জন্য দ'ডায়। অর্থাৎ এক কোটি একর উর্বর জমিতে ফসল कलात्ना यात्र ना। এই इटक अगागस्मरण्डे-শানের প্রতাক্ষ ফ**ল**। কোন বৈজ্ঞানিক পশ্থায় চাষের কথা না বলেও সাধারণ হিসাব মানুষ্ট মাম্বলী প্রথায় চাষ করকোও এই এক কোটি একর জমিতে কত ফসল ফলতে পারত! ভেবে দেখন ব্যাপারটা।

ফ্ল্ট-আমলেও পরিবারের কথা বলা হর্মেছল, এখন রাজ্য সরকার রাজ্যপতি শাসনেও এই পরিবারপিছ্য জ্ঞমির পরিমাণ আরও কমিয়ে ফ্রন্ট থেকেও একটা বেশী প্রগতিশীল সাজবার চেণ্টা করেছেন। কিশ্তু মৌলিক প্রশ্ন হঙ্গের, ৪৫ থেকে ৬০ বিঘা করলেও পরিবার কাকে বল্যেন তার সংজ্ঞা সম্পকে এখনও কোন তথা জন-সমক্ষে উপস্থাপিত করা হয় নি। তদ্বপরি যে সমস্ত জমিতে সেচের প্রোপ্রি ব্যবস্থা আছে সেখানেই বা এই পরিবারীপছ জ মুর পরিমাণ কত কিম্বা প্রুলিয়া বা বাকুড়ার ক্ষমি:ত মাটির ক্ত পরিয়াণ ভেমি এক-একটি প[্]রবার রাথতে সেই পার্বেন ব্যাপারে স্ব কোন বিশ্তারিত ব্যাখ্যা দেওরা হয় ?ন। আবার এই জমির মধ্যে কতট্বকু বাস্তু বা বাগান আর কতটাই বা ধানি জমি ছবে অদ্যাৰ্থি সে সম্পর্কেও কোন হদিস পাওয়া যায় নি। কৃষক পরিবার না হলে অৰ্থাৎ যাঁরা নিজহাতে জমি চাব করবেন্ না তাঁরা আদৌ জমি রাখতে পারবেন কিনা, এই সমুগত তথ্য সম্পরেও জনত সম্পূর্ণ অজ্ঞ। আবার চাবের জমিও আছে, অথচ কোলকাতার সওদাগরী অফিসে বেতন বাড়ানোর আন্দোলন করে তলবটা বৃদ্ধি করিয়ে নিয়ে যে নতুন শ্রেণীর স্থিত হচ্ছে সমাজে তাদের সেই অবাঞ্িড্া সুযোগ প্ৰমানায় বজায় থাকবে (বতমানী ষা অবাঞ্চিত) তারও সমাজব্যবস্থায় কোনো নিরাকরণ হয় নি। গ্রাসাচ্ছাদনের জন্য ফোনো একটি জীবিকাই গ্ৰহণ করা যেতে পারে। নতুবা দারিস্তা করা আকাশকুস্ম বেকারীর সমাধান কল্পনা ছাড়া আব কিছুই নয়।

অদ্যাব্ধি কত জমি কত পব্লিবানের মধ্যে বৈজ্ঞানিক ভিত্তিতে বন্টন করলে তাদের কৃষিভিত্তিক বাবস্থার উপর নিভার করে সংসার চালানো সম্ভব হয় সেইদিকে কেউ নজর দেওয়ার চেণ্টা করছেন না। সারা ভারতব্যাপী জমির প্নর্বন্টনের প্রশন নিয়ে শুধু তোলপাড়ই করা হচ্ছে। কিন্তু সঠিক মূল্যায়ন করে জমি বন্টনের কোন সমুস্থ ব্যবস্থা অদ্যাবধি গ্রহণ করেন নি কোনো রাজ্য সরকার। কেউ কেউ শ্বমির সীমানা নির্পণের প্রশ্নে বার বার সিম্ধানত নিচ্ছেন বা প্রনিবি'বেচনা করছেন। পশ্চিমবংগে রাজ্য সরকার যেভাবে ভূমি-সীমা নিধারণের কথা ঘোষণা করেছেন সেই বন্ধব্যের উপর ভিত্তি করে কোন অভিজ্ঞ ব্যক্তিই বলতে পারবেন না যে কত পরিবারের গ্রাসাচ্ছদনের চিরস্থায়ী ্রুদা-বস্ত হবে কিম্বা জাতীয় খাদা াংগ্রহের প্রদেন এই নয়া নীতি কতট্ 🖈 সাহায্য করবে। সমঙ্গত কিছ্নই অন্ধকারে ঢিল ছোঁড়ার মত। সকলেই বলছেন জমির সবেচি সীমা কমিয়ে দেওয়ার অতএব তাই করা হোক। কোন স্কিচিত্ত कार्यकर वातभ्था अवनम्बदानर क्रमा क्रिके সত্যিকারের আগ্রহী কিনা তা বোঝা কঠিন। আশা করি কেউ মনে করে বসবেন না 'সমদশী' জ'মর সীমানা কমিরে দেওয়ার প্রস্তাবে দর্রাথত। মোটেই তা নয়। वक्कवा शराष्ट्र, धकींग्रे सूच्छे, भारतकल्भना सहना করে কৃষিক্ষেত্রে কত সংখ্যক মান্য বা পরিবারকে নিয়োজিত রাখতে পারা যাবে বা তাদের শ্বারা খাদ্যসমস্যা সমাধান করতে হলে কি কি উপায় **অবলম্বন করা** উচিত এ হেন কোন প্রচেন্টাই অদ্যাবধি एमथा याएक ना। मृश् क्रिशीनएमत किए। জমি বা কিছা ঋণের টাকা দিলেই যেন সমস্ত সমস্যা অক্রেশে সমাধা হয়ে যাবে এমনি একটি ধারণার বশবতী সমস্ত দলীয় নেতারা কাজ করতে শ্রু

করেছেন। এই নীতি অবলন্দিত হলে আজ থেকে ১০ ৷২০ বছর পরে গ্রামীণ অর্থ-লীতির কি চেহারা দড়াবে বা কৃষক পরিবারের জীবনে কি অর্থনৈতিক প্রতিভিয়া স্থিত হবে সেই সম্পর্কে কোন সম্ভাব্য চিত্র পর্যান্ত ব্যক্তি হর নি। শুধু আজকে একটা আওয়াক উঠেছে বলেই তড়িখড়ি একটি রাজনৈতিক সিম্বান্ত নিয়ে প্রতিপক্ষকে টেক্কা দেওরার চেণ্টা হলে অঘটন ঘটবে। প্রত্যেক অভিজ্ঞ ব্যক্তিই জানেন ভারতবর্ষে জমির উপর চাপ তভাত বেশী, বিশেষ করে বাংলায় ত জনসংখ্যা ও আশ্রহপ্রথীর চাপ সম্ধিক। জমিবশ্টনের ব্যাপারে সতর্কতার সংগ্রে এগোনো দরকার। অদ্যা-বাধ ইকন্মিক্ হোল্ডিং বলতে স্থিতা-কারের কত একর জমি ব্রায় তা পর্যনত নিধারিত হর নি। কাজেই সমস্যাকে ধামা-চাপা দিয়ে ভূমিসমস্যার মত কঠিন সুমস্যাকে সমাধান করার চেণ্টা করলে ফল থারাপ হওয়ারই সম্ভাবনা বেশী।

ষাঁরা কৃষিজ্ঞীবী তাঁদের মধ্যে ঋণ-গ্ৰুততা আশুকালনকভাবে বৃদ্ধি পেয়েছে। সরকারী তহবিল থেকে ঋণদানের মাধ্যমে তাদের অথানৈতিক নাভিশ্বাস রোধ করা প্রায় অসম্ভব। কেননা দীর্ঘস্যতাই এই ব্যাপারে বিশেষ প্রতিবংধকতার স্থিট করে আসছে। অন্যদিকে জাতীয়করণ করার পরও ব্যাঞ্কগর্মল থেকে ঋণ পাওয়া সম্ভব নয়। কারণ গ্রামান্তর ত দ্রের কথা সদর মহকুমার শহরগুলিতে পর্যশত ব্যাৎক-সম্হের শাখা-প্রশাখা এখনও পর্যক্ত উল্লেখযোগাহাবে বৃদ্ধি পায় নি। তদ্পরি ঋণ গ্রহণের শতাবলীর দুস্তর প্রাচীর ত এসব অস্ক্রিধা দ্রীকরণের জনা রাজ্য সরকারের পক্ষ থেকে জর্বী নিদেশি পাঠানো হয়েছে। বিনয়ের সংশ্র সমরণ করিয়ে দিতে চাই যে এহেন নিদেশি ফি-বছরই পাঠানো হয়। সেই অফিসাররাই এখনও বহাল আছেন যারা বছরের পর বছর গডিমাস ও গাফিলতি করে সমস্যাকে আরও জ্ঞাটলতর করে তুলেছেন। সরকার যখন তাঁদের নয়ানীতি অর্থাৎ পরিবার্গপছ: 86160 বিঘার জমি নির্ধারণ করবেন তথন আবার কিছু জমি বেনামী হয়ে যাবে। আদালতে কিছু মামলা বাড়বে আর ভাগ্যবানদের কিছুটা অর্থ-প্রাশ্তি ঘটবে। ৭৫ বিঘার দখল এখনও সামলানো যায় নি এবং প্রায় দেড দশক পরেও বেনামী জাম উল্ধার করা সম্ভব হয় নি। আর প্রত্যেকবারই যথারীতি নিদেশিবলী পাঠানো হচ্ছে। হরেছে, অবিলম্বে বেনামী জমি উম্পার করে ভূমিহীনদের মধ্যে বেটে দেওরার জন্য। কিন্তু কাজের কাজ কি হবে তা অন্মানের বাইরে নর। সংবাদপতের সিরো-নামার স্থান পাওরা অবলা একটা বড় বাপার। এতদিন রাজনৈতিক নেভারা সেই স্বিধা নিরঞ্জাভাবে উপভোগ করছিলেন, এবার প্রশাসনের কর্তারাও এবিবরে এগিরে

'সমদশী'কে যদি জিজ্ঞাসা করেন তবে তার উত্তর হচ্ছে, যদি এইভাবেই জমি বন্টন করতে চান তবে একটি করে জেলা বা সদর মহকুমার সমস্ত জমির মালিকানা প্রথমে সরকারের হাতে নিয়েনিন। তারপর বৈজ্ঞানিক ভিত্তিতে সাত্যকারের চাষীর মধ্যে বন্টন করে দিন। তখনই প্রশন তলবেন, সংবিধানে যে মান্তের সম্পত্তির অধিকার সম্বন্ধে পূর্ণ-আছে তার প্ৰতিয়াতি দেওয়া যারা ωĒ প্রাশন তলবেন হচ্ছে, সংবিধান ভৌদের কাছে বন্ধবা মান ধের জন্য। সংবিধানের **क्र**ना মান্য নন। যদি সমস্ত জমি সরকারী মালিকানায় না এনে অর্থাৎ জমির উপর মরেটোরিয়াম না করে বল্টনের চেণ্টা হয় তবে আগের মতোই সেই বেনামী করার

প্রচেণ্টা চলবে। ফলে খুব কম চাষীই ক্রমিন পাবেন। শুধু কিছু আমূলার বাঙ্ক বাজান্স বাঙ্ক বাজান্ত কার্যকর করকে জনভার সাহায্য ও আন্দোলনও দরকার। শুধু আমলা দিয়ে এ কাল সমাধা করা দুরুহ। পঞ্চায়েং কিলাণ সমিতি ইত্যাদির সদস্য নিয়ে এই বাকথা কার্যকর করার কথা বলা হয়েছে। কিন্তু সেখানে প্রশ্ন হল্ছে দলীয় বাঙ্ বিবেশ্ব বাদ দিয়েও এ বাস্থান্ত এ সমুহত সংস্থাকে বাদ দিয়েও এ হেন পরিবত্নের কথা চিন্তা করা দুরুহ। এ এক জটিল সমস্যা।

যাই হোক, রাজ্য সরকারের স্পার্শসম্হ কিন্দা আরও কিছু প্রগতিম্লক
ছুমিবাকদ্যা আশ্ অবলন্ধনের উপর
জোর দিয়ে কেন্দ্রীয় সরকার মতামত বাত
করেছেন। বর্তমান রাজ্য সরকার কেন্দ্রীয়
সরকারেই পরোক্ষর্প। কাঙ্গেই আন্তরিকতাবশতই হোক বা রাজনীতির মারপ্যাতের জনাই হোক, এই ভূমি সংস্কারের
রাজনৈতিক ফলাফল কি দড়িয়ে সেটাই
সাগ্রহে লক্ষা করবরে বিষয়।

-- नगमनी

প্রকাশিত হল

द्रायम द्रष्टनावली

দ্বিতীয় সংস্করণ

প্রীযোগেশচন্দ্র বাগলে সম্পাদিত। রমেশ চন্দ্র দত্তের ছরটি উপন্যাস একতে: বংশ-বিজেতা, মাধবীকংকন, মহারাদ্য জীবন-প্রভাত, রাজপুত জীবন-সম্প্যা, সমাজ ও সংসার-কথা। এই সংস্করণে 'সংসার' উপন্যাসের পরিবর্তে' লেথকের জীবন্দশার সংশোধিত 'সংসার কথা' সমিবিন্ট হয়েছে। রমেশচন্দ্রের জীবনী ও সাহিত্য-কীতি আলোচিত। [টাঃ ১৩০০]

রচনাবলী সিরিজের অন্যান্য বই

ৰঙ্কিম রচনাবলী

শ্রীযোগেশচন্দ্র বাগল সংপাদিত। প্রথম থণ্ডে সমগ্র উপনাস (মোট ১৪টি) [যন্দ্রন্থ] শ্বিতীয় থন্ডে উপনাস বাতীত সমগ্র সাহিত্য-সংশ। [চী ১৭·৫০]। তৃতীয় খন্ডে সমগ্র ইংরেজি রুনা [চী ১৫·০০]

चिक्कम्प ब्रह्मावनी

ডঃ বিধীকূনাথ রায় সম্পাদিত। দুই খন্ডে সমগ্র রচনা। প্রথম খন্ডে (৫টি নাটক, ০টি প্রহ্মন, ৪টি কবিতা ও গানের গ্রন্থ ও ২টি গদ্য-রচনা—টো ১২-৫০.]। দ্বিতীয় খন্ডে (৮টি নাটক, ০টি প্রহ্মন, ৪টি কবিতা গ্রন্থ, ২টি গদ্য-রচনা ও ইংরেজি কবিতা) — টো ১৫-০০ ।।

श्रधानामन ब्रह्मावली

ডঃ ক্ষেত্র গা্পত সম্পাদিত। একটি খন্ডে ইংরেজিসহ সমগ্র রচনা (৪টি কাবাগ্রন্থ, ২টি কবিভাবলীর প্রম্থ, ৭টি নাটক ও প্রহসন, ৮টি ইংরেজি রচনা)— টো ১৫০০০]

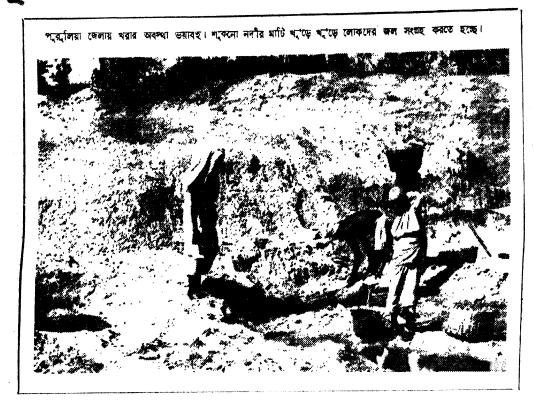
मीनवन्ध्र ब्रह्मावणी

ড: ক্ষেত্র গৃংশত সম্পাদিত। একটি খলেখ সমগ্র রচনা (৮টি নাটক ও প্রহসন, ২টি গলপ-উপন্যাস, ০টি কাব্য ও কবিতা গ্রন্থ) — টো ১০]০০ 1।

গিরিশ রচনাবলী

ডঃ রেথীন্দুলাথ রায় ও ডঃ দেবীপদ ভট্টাচার্য সম্পাদিত। প্রথম থক্তে ২১টি নাটক ও প্রহসন টো ২০-০০]।

প্রতি রচনাবলীতে জীবনী ও সাহিত্য-কীতি আলোচত সাহিত্য সংসদ ০২এ আচার্য প্রকল্পনেত : বলিকাতা ১





সোমবার ১২ মে। নয় দিল্লীতে ভারতীয়
যুত্তরাদেট্র সবেণিচ আদালত সংপ্রীম
কোটের তিন নম্বর কামরা। এজলাসে
বসবার ও দাঁড়াবার মত যতটা জায়গা ছিল
সব ভবে গেছে, কামরার বাইরে আরও
ডেক্টনখানেক মানুষ কিউ-এ দাঁডিয়েছেন।

বিচারপতি সিক্রির মুখ থেকেই
শোনা গেল সেই ঐতিহাসিক রায়।
পাঁচজন বিচারপতির স্বাসম্মত অভিমত—
ভারতের চতুর্থ গাল্টপতির্পে শ্রীবরাহগারি বেক্চট গিরির নির্বাচন বৈধভাবে
নিম্পন্ন হয়েছে এবং ঐ নির্বাচনের বিবংশে
যে-সব আবেদন করা হয়েছে সেগালি
ভাষাত্য করা হল।

গত ১২ জানুয়ারীতে শ্র্ হয়ে
মোট প্রায় ৫০ দিন যে মামলার শ্নানী
হয়েছে, রাত্মপতি, কয়েকজন মন্দ্রী, পার্লামেন্ট সদস্য ইত্যাদি সহ মোট ১১৬ জন
যে মামলায় সাক্ষ্য দিয়েছেন, যে মামলার
সাক্ষ্য নথিভূক করতে ১৫০০ প্রতা ব্যয়
হয়েছে তার উপর এইভাবেই ফ্রনিকাপাত
ছল মিনিট পাঁচেন্টেরও কম সময়ের মধ্যে।

যবনিকাপাত হল বললে অবশ্য হয়ত
তুল হয়। কেননা, বিচারপতিরা সংক্ষেপে
শ্ধু তাঁদের সিম্পান্তই জানিয়েছেন, এই
সিম্পাণ্ডের পিছনে যুক্তিগুলি তারা দেন নি।
স্প্রীয় কোটা গ্রীক্ষের ছুক্টিতে বন্ধ হয়ে
যাছে, আগামী ২০ জ্লাই ছুটি শেষ
হলে আবার কোটা বসবে। সেই সময়
আদালতের সম্পূর্ণ রায় প্রকাশিত হবে।
আব্দেনকারীদের আবেদন কি কারণে নাক্ধ
হয়ে গেল সেটা সে সময়ে বিম্তারিতভাবে
উল্লেখ করা হবে।

বাদ্মপতি নির্বাচনের বির্দ্ধে চারটি
আবেদন পেশ করা হয়েছিল। শ্রীআব্দুর্গ
গনি এম-পি, শ্রীরাম রেভি এম-পি,
শ্রীশিবকুপাল সিং ও ডাঃ ফ্লু সিং প্রত্যেকে
একটি করে আবেদন পেশ করেছিলেন।
এইসব আবেদনে অভিযোগ করা হয়েছিল
যে শ্রীগিরির প্রতিশবদ্দনী প্রাথনী শ্রীসঞ্জীব
রেভির বির্দ্ধে একটি কুৎসাম্লক প্রচারপর্নিতকা বিলি করে শ্রীগিরির সমর্থকরা
তার সমর্থনে এই নির্বাচনকে অন্যারভাবে
প্রভাবিত করেছিকেন এবং ক্ষেক্টিট

মনোনয়নপত্র অবৈধভাবে নাকচ করে দেওরা হয়েছে। মামলার শন্নানীর শেষ দিকে সওয়াল করতে উঠে শ্রীগিরির পক্ষের কেশাশ্লো শ্রীসি কে দশ্তরী বলেছিলেন যে, এই আবেদনগর্নাল হচ্ছে "রাজনৈতিক তামাসা" এবং এগর্নালর দ্বারা রাষ্ট্রপতিকে ও দেশের অন্যান্য নেতৃস্থানীয় ব্যক্তিদের হেম্ব করার চেণ্টা হয়েছে।

মামলায় ষেট্ৰুক প্ৰকাশ পেরেছে এনট্ৰুক্
হল এই যে, জ্ঞীসঞ্জীব র্রোজ্ঞর বিরুদ্ধে
ঐ নোরে। প্রস্থিতকাটি প্রকাশিত হয়েছিল।
কিন্তু আবেদনকার্যারা বিচারপতিদের সামনে
একথা প্রমাণ করতে পারেন নি যে, এই
প্রস্থিতক। প্রকাশ বা প্রচারের পিছনে
গ্রীগিরি বা তাঁর কোন প্রতিনিধির হাত
ছিল অথবা প্রধানমন্ত্রী শ্রীমতী গান্ধী ঐ
প্রস্থিতকা বিলি করেছিলেন। স্পণ্টতই তাঁরা
একথাও প্রমাণ করতে পারেন নি যে, ঐ
প্রস্থিতকা প্রকাশ ও প্রচারের ফলে নির্বাচন
কোনভাবে প্রভাবিত হয়েছে।

স্প্রীম কোটের এই ঐতিহাসিক রাদ বেমন রাদ্যপতি, প্রধানমক্রী প্রভৃতিকে সম্ভাব্য অপবাদ থেকে মুক্তি দিল তেমনি কতকটা পরোক্ষভাবে তাদের প্রতিপক্ষকে মিথ্যা মামলার দ্বারা রাদ্যপ্রধানকে হের করার অভিবোগে অভিযুক্ত করল। সেই অধ্যে এটা শুধু আবেদনকারীদের মামলাহ হার নর, শ্রীগিরির বির্শ্ববাদী শক্তিগ্রিলর রাজরও কটে।

ঐ রার সম্পর্কে বিভিন্ন মহলের থে প্রতিক্রিয়া প্রকাশ পেরেছে তাতে এই স্বরই ফুটে উঠেছে।

স্প্রীম কেটের এই রার বখন ঘোষণা করা হয় তখন রাম্মুপতি শ্রীগিরি দক্ষিণ ভারতে সফর করছিলেন। দিল্লী থেকে প্রধানমন্দ্রী শ্রীমতী গ্রাম্থী STISSICE TO টেলিফোন করে তাকে অভিনন্দন **জা**নান। শ্রীগিরিকে প্রশন করা হলে তিনি এই বৈষয়ে মন্তব্য প্রকাশ করতে অস্বীকার করেন। 'নরা' কংগ্রেসের সভাপতি শ্রীজগজীবন রাম বলৈছেন, 'সতোরই জয় হল।' রাজ্যসভাষ কম্যানস্ট দলের নেতা শ্রীভূপেশ গ্রুত বলৈছেন, এই রায় 'দক্ষিণপাথী প্রতিভিয়া'র পরাজয় স্চিত করছে। তাঁর মতে, 'এটা শ্ব্ব রাজ্যসভার নয়, সারা দেশেরই, প্রগতিশীল শান্তর রাজনৈতিক ও নৈতিক कर ।'

বোন্বাই শহরের উপকচেঠ ভিএরানি
নামে একটি জনপদ, প্রধানত তাঁতীদের
ক্যাত্রি বিজলীচালিভ তাঁতের অনেক
কারখানা রয়েছে সেখানে। শিবালী জয়ণতী
উপলক্ষে সেখানে একটি মিছিল বৈরিদেছিল। সেই মিছিল উপলক্ষ করে লাগল
দাপন। দেখতে দেখতে সেই দাংগার
আগন ছড়ালা দুই শতাধিক মাইল
দ্রবতী জলগাঁও শহরে, তারপর লমে লমে
মহারাদ্রের অন্যানা অঞ্লো। এক সম্ভাহে
মৃত্যুর সংখ্যা দাঁড়াল ১৩৬।

এই দাংগা সম্পর্কে তদংত করার জন্য বেশ্বাই হাইকোর্টের বিচারপতি শ্রীভি পি মদনকে নিরে বিচার-বিভাগাীর ক্ষিশন গঠন করা হয়েছে। কিন্তু ইতিমধ্যে এই দাংগা সম্পর্কে কতকগালি গারুত্বপূর্ণ প্রশন ও বেশ কিছুটা উত্তেজনার স্থিত হরেছে।

বারবার এভাবে সাম্প্রদায়িক দাপ্যা
হতে থাকায় ভারত সরকার বিশেষভাবে
উদ্বিশন হয়ে উঠেছেন। তাঁরা একটা
আদ্বর্য বোগাবোগ লক্ষ্য করছেন। সেটা
হল এই যে, জামসেদপরে, রাঁচাঁ, রাউরকেলা, আমেদাবাদ প্রভৃতি যে-সব শহরে
সম্প্রতি বড় বড় সাম্প্রদায়িক দাপ্যা হয়ে
গেছে সেগালি সবই শিলপপ্রধান শহর।
ভিওয়ান্ডিও একটি শিলপপ্রধান অঞ্জল।
শিলপপ্রসারের সপ্রে সাম্প্রদায়িকতার বিষ
ছড়াবার কি ধরনের সম্পর্ক রয়েছে তা
সরকারী কর্তারা ব্রেম উঠতে পারছেন না।

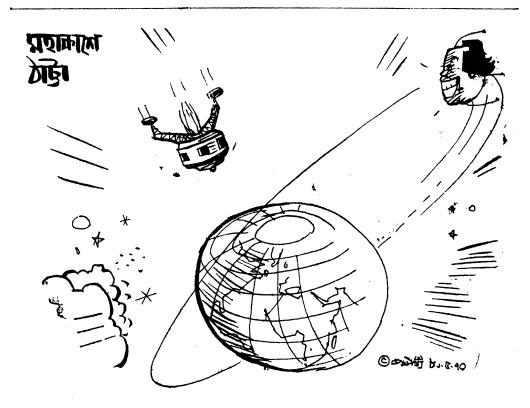
এই দাশ্যার শিবসেনার ভূমিকা সম্পরে
প্রশন উঠেছে। শিবাজী জয়দতীর যে
মিছিল বেরিয়েছিল তার উদ্যাক্তা ছিল
এই শিব-সেনাবাহিনী। ভিওয়ান্ডির
ম্থানীর নেতারা বে অভিরোগ করেছেন তা
বিদি সতা হয় তাহলে দেখা যাচ্ছে, এই
মিছিল থেকে কুংসিত শেলাগান দেওর।
ইন্টি-পাটকেল ছোঁড়া হয় আর তাতেই
দাশ্যা বে'ধে যায়। শোকসভায় জনসম্থ
নেতা প্রীঅটলবিহারী বাজপেয়ী অংশা
আন কথা বলেছেন। তিনি বলেছেন ব্

ভিওমান্তির মুসলমানর নাকি মিছি*লে*র সংস্থা গের্যা পতাকা নেওয়ার বিরুদ্ধে আপতি করেছিলেন।

প্রিল্পের ভূমিকা সম্পর্কেও প্রশন উঠেছে। প্রকাশ যে, শিবজেলী জয়রুতীর ঐ মিছিলের উপর নজর রাখার জন্য সোনন সাতাশ প্রিলেশ মোতারেন করা হয়েছে। এত বড় প্রিলেশ বাহিনীর উপস্থিতিতেও কি করে দাপগা বাধল সেটা আশ্চবের বিষয়।

স্বরাণ্ট্রমণ্টী চাবন দাংগা-উপদুত্ত অগুল থেকে ফিরে এসে রাজাসভার বলেছেন যে, ভিওয়াণ্ডিতে ঘাঁরা ফার থেয়েছেন তাঁদের বেশাঁর ভাগই মুসলমান আর জলগাঁওতে ক্ষতিগ্রস্তরা সকলেই মুসলমান।

জনসংঘ নেতা প্রীঅটলবিহারী বাজপেয়ী কিন্তু এই দাপা। থেকে সম্পূর্ণে
ভিন্ন শিক্ষা গ্রহণ করেছেন। যদিও তিনি
নবীকার করেন যে, দাংগায় ম্সেলমানরা
বেশী ক্ষতিগ্রন্ত হন তাহলেও, তার মতে
বার বার যে-সব দাপা। হচ্ছে সেগালের
জন্য দায়ী কিছু ম্সলমান যার। ভারতবর্ষের ম্সলমান সমাজনে ভারতীরদের
সপে মিশে যেতে দিছেন না। তার মতে,
ম্সলমানরা জমেই বেশী সাম্প্রদারিক হয়ে
উঠছেন বলে হিন্দুরা জমেই বেশী জ্পাী
হয়ে উঠছেন। তিনি বলেন, হিন্দুরা সাতেভারিণ বছর ধরে মার থেকেছেন, এখন আর
তারা এই দেশে মার থেতে রাজী নন।



ব্যাসে ভারতবর্ষে আরু কোন দাংগা কল্পকে পাৰ্লামেশ্ৰে এমন খোলাখুলি भ्रमणिम-विद्यार्थी, माध्यपातिक छेरसक्रमाव আগনে ভরা বকুতা দেওরা হরেছে কিনা সম্পেহ। এর আগে আর কোন বভুতা সম্পকে প্রধানমন্ত্রী শ্রীমতী গান্ধী এভবানি কোৰ প্ৰকাশ করেছেল কিনা সে বিষয়েও সন্দেহ আছে। শ্রীবান্সপেয়ীর তিনি 'উলপা ফ্যাসিবাদ'' বলে অভিহিত করে বলেছেন, সাম্প্রদায়িক উত্তেজনার আগননে ইন্ধন যোগাবার উদ্দেশ্যে পালা-মেন্টকে ব্যবহার করে শ্রীবাজ্পেরী দেশের নিদার্নণ ক্ষতি করছেন। তিনি **আরও বলেন** যে, কোথার কোন্ বালক একটা মারল অথবা কোথার কাকে খনে করা হল তা থেকে দাখ্যা বাধে না, শ্রীবা**জপেয়ী বে** ধরনের বক্ততা করেছেন তাতেই সাম্প্রদায়িক দাপ্যার পরিবেশ তৈরী হয়।

ক্ষ্যানিষ্ট মেতা প্রীভাগ্গে বলেছেন ৰে, প্রীবাজপেরীর বন্ধৃতাটা বেন একটা গৃহ-যুদ্ধের ইস্তাহার।

দিন্দ্রীর 'হিন্দু-তান টাইমস্' পতিকার
ঐ সংবাদের শিরোনামায় লেখা হরোছল,
'উই ক্যান বাট উই ক্যাননট'—'আমরা পারি,
কিন্তু পারি না।' প্রশ্নটা ছিল, 'ভারতবর্ষ কি পরমাণ বোমা বানাতে পারে?' কবাবটা ছিল পরিকল্পনা কমিশনের সদস্য এবং বিজ্ঞান ও প্রয়োগবিদ্যা সংক্রাণ্ড কমিটির চেয়ারম্যান ডাঃ বি ভি নাগচোধ্রীর।

দিল্লীতে একটি আলোচনাসভার ভাঃ
নাগচৌধ্রী বক্তা দিচ্ছিপেন। তাঁর মোদ্দা
বক্তবা হল এই যে, পারমাণবিক বিশ্বেষারণ
ঘটাবার মত বথেন্ট সদ্বল ও কারিগারী জ্ঞান
পারমাণবিক শান্ত বিভাগের আয়ন্তের মধ্যে
আছে; কিন্তু পারমাণবিক অন্ত প্রয়োগ
করার বাবন্ধা গড়ে তুলতে হলে তার জন্য
ঐ কিভাগকে ন্তন করে সম্পদ সংগ্রহ
করতে হবে।

চীন সম্প্রতি মহাকাশে কৃত্রিম উপগ্রহ ছেড়ে রকেটবিজ্ঞানে যে কৃতিছের পরিচয় দিয়েছে তারই পরিপ্রেক্ষিতে ভারতবর্ষে এই উদ্পেগাকুল প্রদান দেখা দিয়েছে—আমরা কি পারমাণবিক বোমা স্থানাব? পারমাণবিক বোমা বানাবার সামর্থা কি আমাদের আছে? সামর্থা থাকা সক্তেও আমাদের দিক্ষেদের পারমাণবিক অস্ত্র থেকে বিশ্বত করে রাথা সমীচীন হবে?

চীন হাইড্রোজেন শোমা আগেই ফাটরেছে। এখন চীনা উপগ্রহ স্মরণ করিয়ে দিকে, হাজার ঘোজন দরে মহা-দেশের বনধান অভিক্রম করে পারমাণ্ডিক অস্ত্র পাঠাবার বিদ্যা ও সম্বন্ধও তার আয়রে।

্প্রশন হচ্ছে, শিয়রে এই শ্রমন নিয়ে ভারতবর্ষ কি পার্মাণবিক অস্ত্র থেকে নিজেকে বণ্ডিত করে রাখ্বে ?

জান নাগচৌধারী তাঁৰ বন্ধতার বিভিন্ন সুস্ভাবনার কথা আলোচনা করে দেখান যে, ভারতবর্ষ যদি শাণিতর কাজে পার্মাণবিক শার্র পরিপ্রি বাবহা,রের সিন্ধান্ত করে, সম্প্রতি ওরাশিংটনে হোরাইট হাউনের কাছে বৃন্ধ-বিরোধীদের বে বিয়া সমাবেশ ও বিকোভ হর ভাতে একজন মিল্লো ভ্রমবিশ্ব বীশ্ব ভূমিকা হছেব করেছেন।



এমনকি বাঁধ নির্মাণ অথকা খাল খননের কাজে পারমাণবিক বিস্ফোরণ করতে চার, তাহলে তার কাঁচা মাল, সম্পদ ও কারিগরী জ্ঞানের বর্তমান সীমার মধো সেটা সম্ভব। কিল্টু ভারতবর্ষ যদি একই সংক্রা পার-মাণবিক শক্তির শালিতপ্ণ বাক্তার ও ব্লেখর কাজে সেই শক্তির ব্যক্তার করতে চার, তাহলে প্রশন দেখা দেবে, এটা করার মত বংগেট কারিগরী জ্ঞান এখন ভারত-বর্বের আয়ত্তের মধ্যে আছে কিনা।

ভাঃ মাগ্রেবিরীর ও অন্যান্য করেকজন বিশেবজ্ঞের অভিমত শোনার পর নয়াদিল্লীর এই আলোচনাসভার সমবেত বিজ্ঞানী, অর্থনীতিবিদ, দেশরকা সংক্লান্ত বিশেষজ্ঞ প্রভৃতি মোটাম্টি এই সিন্ধান্তে এসে
পৌছেছেন যে, ভারতবংশর এথন পারমার্ণবিক অন্দ্র তৈরী করা ছাড়া পথ নেই।
তাদের হিসাবে ভারতবর্ষ যদি আগামী
দশ বছরে ৩২৫০ কোটি টাকা খরচ করে,
তাহলে শ্বের যে পারমার্ণবিক অন্দ্র
তৈরী ও রকেট ছোড়ার বিদ্যায় সে দক্ষ হয়ে
উঠবে তাই নয়, দেশের অর্থনীতিও সর্বাদক
থেকে চাপ্যা হয়ে উঠবে।

নিয়া' কংগ্রেস দলের সভাপতি শ্রীজগ-জীবন রাম ইতিমধ্যে নয়াদিল্লীর প্রেস কাবে তার 'ব্যক্তিগত অভিমত' প্রকাশ করে বলেছেন যে ভারতবর্ষের পারমাণ্যিক অদ্য তৈরী করা উচিত। ০৮-৮-৮২



माम्भारतम् कनाःक

গত সম্ভাহে মহারাশ্রের নানা জারগার যে মর্মানিতক সাম্প্রদারিক হাপামা ঘটে গেল তা এই দেশের এবং জাতির ।
মুখে দুরপনের কলংকের ছাপ দিয়ে গেছে। সাম্প্রদারিক হাপামা এই দেশে নতুন নর। গত বংসর মহাত্মা গাশ্বীর জন্মভূমি
আমেদাবাদে ভরাবহ দাপার বহু মানুর প্রাণ হারার। অতি সম্প্রতি চাইবাসাতে সাম্প্রদারিক গোলযোগে প্রাণহানি ঘটেছে
অনেকের। তার রক্তের দাগ মেলাতে না মেলাতেই মহরাল্টে এই সাংঘাতিক হাপামা ঘটল। ঘটনার আকস্মিকতার এবং ভ্রাবহতার
সরকার প্রথমে হতচ্চিত হয়ে যার। পরে স্বরং স্বরাভ্রমন্ত্রী শ্রীচাবন ঘটনাম্প্রতে ছুটে যান এবং সেনাবাহিনী তলব করে কঠোর
হাতে এই হাপামা দমনের জন্য নির্দেশ দেন। কিন্তু তা সক্তেও ঘটনা ভীওয়ান্দি থেকে জলগাঁও এবং জলগাঁও থেকে থানা জেলার
বিভিন্ন স্থানে ছড়িয়ে পড়ে। নিহতের সংখ্যা শতাধিক। আহত হয়েছেন অনেক এবং সম্পত্তি নন্টের পরিমাণ করেক কোটি টাকা।

ভারতবর্ষে সব সময়েই যে হিন্দু ও মুসলমান পরস্পরের ওপর আক্রমণে উদ্যত তা মোটেই নয়। বরং তার বিপরীতটাই সত্য। শহরে ও গ্রামাণ্ডলে হিন্দু ও মুসলমান পারস্পরিক সহযোগিতায় ও নির্ভরতায় সম্প্রীতির পরিবেশে বাস করে। কৃষিক্রে, কলে-কারখানায়, সরকারী পদে এমনকি উচ্চতম পদেও হিন্দু ও মুসলমান এবং অন্যান্য সম্প্রদায় পরস্পরের সপ্যে সম্ভাবে ও সহযোগিতায় কাজ করছেন। ভারতের অর্থনীতিতে, রাজনীতিতে সকল সম্প্রদায়েরই বিশিশ্ট ও অর্থপ্র্ণ ভূমিকা আছে। সামাজিক ও গণতান্তিক চেতনাও এদেশে যথেন্ট উন্নত। বহু আন্দোলনে এদেশে হিন্দু ও মুসলমান সমান অংশাদার। বহু রাজনৈতিক দলে মুসলিমরা রয়্লেছেন নেত্পদে। দেশের জন্য তাদের দৃঃখবরণ ও তাগেস্বীকার তাদের হিন্দু সহযোগীদের মতোই ভূলনাহীন। অথচ আকস্মিকভাবে দেশের এক-একটি জায়গায় অতি সামান্য কারণে সাম্প্রদায়িক বিশ্বেষ ও মন্ততার আগ্রন জর্লে ওঠে। তথন এই আগ্রন থামাবার ক্ষমতা সাধারণ মান্বের থাকে না। সরকারকে তথন এগিয়ে এসে কঠোর ব্যবস্থা নিয়ে এই মন্ততা থামাতে হয়। কিন্তু এ তো সামারক বাবস্থা মাত্র। সংখ্যালঘ্ সম্প্রদায়ের সম্প্রীতি সরকারী নীতিনিহ'ব হতে পারে না। জনগণের আন্তরিক সহযোগিতা ছাড়া এবং পারস্পরিক নির্ভরতা ছাড়া সাম্প্রদায়ির সম্প্রীতি কথনো সম্ভব হতে পারে না। জনগণের মধ্যে যদি বিষ ঢোকে তাকে সার্থাবার দায়িছ কে নেবে? সরকারের পক্ষে একা তা করা স্ক্রেন নয়।

এই ঘটনাগ্লো ভারতবর্ষে হামেশাই ঘটছে। সাম্প্রদায়কতাবাদীরা বলে থাকেন যে, পাকিস্তানের হাত আছে এইসব কাল্ড ঘটানোতে। তাঁরা বলে থাকেন, মৃসলমানরাই নাকি এই দাংগার উপ্রানি প্রথমে দিয়ে থাকে। জনসংঘী নেতা অটলবিহারী বাজপেরী এক আল্ডুত যুক্তি দেখিয়ে বলেছেন, মৃসলমানরা জানে যে, এদেশে তাদের ভবিষাং নেই। তাই লড়াই করে ওরা মরতে চায়। ফার্সিস্ট হিটলারও ইহুদী নিধনের সময়ে এ ধরনের নানা যুক্তি দিত। আমাদের দুর্ভাগ্য যে হিন্দুধর্ম উদারতা ও সহিক্তার শিক্ষা দেয় যত মত তত পথের নির্দেশ যে-ধর্মের, তার ধ্রজাধারী কিছু লোক হিন্দুদের রক্ষার নাম করে এ ধরনের নৃশংসতাকে সমর্থন করছে। প্রধানমালী শ্রীমতী গাংধী ল্বার্থাহীনভাষার খোষণা করেছেন যে, তিনি সর্বাশত্তি দিয়ে এই ধর্মীর ক্যাসিবাদীদের মোকাবিলা করবেন। জনসংঘ, রাষ্ট্রীয় ক্রয়ং সেবক সংঘ এবং অধ্না মহারান্ট্রের শিবসেনা অতি নির্দাক্ষভাবে এই হাংগামার উপ্রানিদাতা। তাদের মতে মুসলমান মান্তেই পাকিস্তানের চব হিন্দুবিনেব্যী এবং প্রমত অসহিক্ত্ব। খারাপ লোক সব সম্প্রদায়েই আছে। কিন্তু আমরা ভূলে বাই যে, এই সাম্প্রদায়িক হাংগামায় সংখ্যালঘারাই শধ্যে নিপ্তিত হয় না, ভারতবর্ষের ক্ষতি হয় বিপ্রল। তার সুনাম ভ্লেণিতত করছে তারাই যারা ভারতমাতার নামে জয়ধ্বনি দেয়, হরিজনদের প্রত্যুব্যে মারে, সংখ্যালঘাব্যকের উৎপীভূন করে এবং মেকী দেশভন্তির প্রাকান্টা দেখায়।

এ সমস্তই দেশভাগের বিষময় ফল যার প্রধান দায়িত্ব অবশাই অবিভন্ত ভারতের চরম সাম্প্রদায়িকতাবাদী মুসলিম লীগের নেতৃব্দের। ভারত ও পাকিস্তানের সংখ্যালত্মদের এই পাপের জন্য প্রভত প্রায়শ্চিত্ত করতে হচ্ছে। এখনও দলে দলে পাকিস্তান থেকে সংখ্যালত্মরা বিত্যাভিত হয়ে আসছেন রাজনৈতিক ও অর্থনৈতিক কারণে। পাকিস্তান সরকারের উগ্র সাম্প্রদায়িক নীভিও ভারতের সাম্প্রদায়িকতাবাদীদের এই পাপকর্মে উস্কানি দের। কিস্ত তা হলেও ভারতের ঘটনার জনা আমরা ভারতীয়রাই দায়ী। পাক-ভারত মৈত্রী সম্পর্ক স্থাপিত হলে হস্তো এই ধরনের ঘটনা ঘটবে না। যতদিন তা না হর আমাদেব সর্বাদি দিয়ে এই অমান্যিক ঘটনার প্রতিবাদ করতে হবে এবং তার প্নর্বৃত্তি রোধ করার জন্য গ্রহণ করতে হবে কঠোরতম সরকারী ব্যবস্থা। নতুবা এ কলংক যাবে না।

कनकाठा—७৯॥ नजीनाना

নকলেই বুড়ো হল, শুধ্ বয়স বাড়লো না কলকাতার।

আটেরিশ অথবা পণ্ডাশ সালে যে সব ছোকরা কফি হাউস অথবা ভার্সিটি লনে টোবল চাপড়ে কথা বলভ আজ ভাদের দাড়ি পেকেছে, আজ ভারা সকালে অথবা সম্ধ্যার শেরালদ আর শ্যামবাজারে সজনে ভাঁটা কেনে।

বয়স সৰাবই বেড়েছে, শা্ধ্ কলকাডাই আজো বা্ডো হল না।

বে ট্রাম একদা থকথকে ছিল
তার শব্দে
আজ থানে তালা লাগে।
সেদিনের উজ্জ্বল নীল ভেট বাসগর্বিল
রোদে প্রড়ে ব্র্লিটতে ভিজে
আজ ধ্সর, ব্লান।

সকলেই বুড়ো হল
অথচ
কলকাতা আজো তেমনি
বেপরোয়া বেহিসেবী।
আজো তেমনি
বিকেলবেলার চুল উড়িরে
ফিভিলে যায়।
নীল লাল আলোর
সাঁতার কাটে
গোলদাখির উস্কর্জ জলে,
মরদানে বা গণ্যার ধারে প্রেম করে
কিংবা
মরা হেলে কোলে নিরে
আজো রাস্তা জন্ডে কদিতে বসে
স্থান্তের রন্তরাঙা আলোর।

বরস সবারই বাড়ল, অথচ কলকাতা আজো মুবতী ।।

এখন॥

আশিষ সান্যাল

এখন সমস্ত ভর ভেঙে দিতে হবে।

শত্পীকৃত কঠিন কুয়াশা

দ্হাতে সরিরে বেতে হবে।

মন থেকে

ব্যথতার প্রাশীভূত সমস্ত হতাশা
নির্ভায়ে সরাতে হবে দ্রুর বিশ্বাসে।

এখন সময় দ্বীপত তিত্তি প্রতিধানি নিবিড় উম্জন্ত ।
রাশীকৃত পথের প্রস্তর
আঘাতে ভাঙতে হবে।
নাহলে হ্দয়
ক্রমণ বিন্দট হবে বাঁচবার নীরব সঞ্জয়।

হে আকাশ!
গণগার মেঘনার ব্বেক বহমান ধর্নিত প্রবাহ,
হে ত্রিকালদশী দ্জর মহিমা!
এবার আঘাত হানো
ব্বেকর পাথরে।
ভাঙো সব সীমারেখা।
ভীর্তার নিম্ম ক্রাশা
দ্বৈতে সরিয়ে আঞ্জ শ্যামল উচ্চনাসে,
জাগাও আনন্দধারা ব্বেকর আঁধারে।

मायाम ছाয়ा॥

श्रामाच मख

প্রতিদিন আমার হারার কাছে লম্জার ছোট হ'রে বাচছ আমি
প্রতিদিন আমার হারা হু হু ক'রে বেড়ে বাচ্ছে আমাকে মাড়িয়ে।
ওকে সামলানো দার
কার্র দু'চোখের দালান পেলেই দামাল শিশ্র মতো
লাফিরে পড়বে ও
তারপর অশালীন অসভাতা করবে কিছুক্লণ
এদিক ওদিক হামাগ্ডি দিরেই
বন্ধ দরকার কড়া নাড়বে নিলাক্জের মতো।

প্রতিদিন আমার ছায়ার কাছে লম্জায় ছোট হ'রে যাচ্ছি আমি প্রতিদিন আমার ছায়া চরিত্রহীন হ'রে যাচ্ছে আমাকে ছাড়িয়ে ঘরে ফিরেও স্বস্থিত নেই সারারতে খেলা করবে নিরালোকে আমাকেই ছারে নির্ফার লাফালাফি 'দ্বার খোলো শ্বার খোলো' ব'লে।

अश्चिक्त हार्य अभि

আমি লিখি। লিখতে ভালো লাগে বলেই লিখি – কেবলমাত এইটাৰু বলেই খালাস পেতে চাইলে সমাজ তা মেসে মেৰে বন ? বনং জীবদের কাছে প্রতিমিয়ত ৰভ ্ৰিণ কমা হতেহ ভার সামান্যভম অংশমাত माय कराउ हार्रोड और मिथा मिट्रा। छात অৰ্থ এই নয় যে বা-খুলি খাষ্ট্ৰয়ালিপনা চরিতার্থ করাই আমার উদ্দেশ্য। আমি লিখতে পারি, লেখাটা আরত্ব করেছি দ্বীঘণিদুনের শ্রম আর অধ্যবসারের বিনি-মরে। এখন সেই লিখন ক্ষমভাটাই বাভে সমাজের হিতাথে না হলেও প্ররোজনে ব্যবিত হয়, লক্ষ রাখবো সেই দিকে। যোগ্যভার অপচয় যেন না ঘটে। যে কারণ জীবনের দিকে পিঠ ফিরিরে চলা বা বলা আমাকে সাজে না। তাই আমি যখন কিছ; করি তখন এই চলতি সময়ের ঘটনার আবতে প্রথর দৃণ্টি রেখেই করি। ফলে আমি ক্ষ বাপ্লকিত বা-ইছই নাকেন (কারণ একজন লেখকের প্রথম এবং শেষ मान्य। সংসারে অসংখ্য কাজ। তার মধ্যে লেখাটাও একটি। এবং বিশেষ একজনের কাছে বিশেষ একটি কাজ বা তার উল্দেশ্যসিন্ধির সহায়ক ছাড়া কিছ্ না।) পরি**ণামে দেল-কাল-সমাজ অর্থে** চিন্তিত হওয়া ছাড়া আমার আরে পাডি त्महै।

আমার কাছে আমার কালের শ্রে তা আন্ত নর। বরং অংশকার সেই দ্দিনে যথন যুম্পের দৌলতে বাজার থেকে চাল-ন্ন-কেরোসিন, এমন ভি কাপড় অবধি উধাও হরে শহর-গ্রাম শমশান ছতে চলেছে। ভ্রা-মৃত্যু-হাহাকারের ভেতরেই আমার জানোদর। সেই যেন প্রথম চোখ মেলে দশ্ম এক প্রথিবীকে দেখা।

আন-ব্দের নিবিশ্ব ফর্নাট কৈ বে
প্রথম থাইরেছিল বলা ভার। হতে পারেন
তিনি আমার বাবা অথবা মা। অথবা বাবামা বৃদ্ধনেই। অথবা দেল-ভাল-সমাজের
তাৎকালিক অবস্থা কিন্দা পরিকেশ।
হর্মডা ভা-ই। জ্ঞানে-অজ্ঞানে আমরা
প্রত্যেকেই প্রত্যেকের কাছে হাত পেতে
আছি। বে-মার আপম র্চি ও প্রয়োজনের
তাগিদে ধণ দান ও গ্রহণের পালা প্রশ

करत हरनोह। श्रीणात भाग कठिंगेल निर्माद भन-रम्माम-मीम् आत्राप्तीत। नरेरन कछ ठारेरा, कछ रमरा! मास्क र्वास्त्रवीरमञ्जू अछ रक्वन ठारेरा? एएवा ना किस्ट्रे?

সংসারে ভালো-মলের বোগ-বিরেজগ্ল-ভাগ করে ফল বা দড়িচছে আসলে
ভার নাম জীবন। আর এই জীবন কথনো
এক-রঙা নয়। হতে পারে না। হলে সেটা
ফ্যাকাশে হতেও বেশীক্ষণ লাগে না।
বৈচিত্র হাড়া সে বে চলতে চার মা, চলতে
পারে না। পারলে তাকে মৃত বলবো।
নয়তো সে পাগলের জীবন। কিন্তু
সংসারটাকে পাগলা গারদ ঘলি চেনে
সাহসে? লোকে বে আমাকেই দ্রো দেবে।
আমি তাই তেমন করে পিছিরে গড়তে
নারাজ। বরং আপনি যদি এক পা এগোন,
আমি যাবো দ্বেশ। কারণ আমি লেখক।

जीवना काम देशदेक त्यांत्म। स्वाता ब्राह्म महा गरमहे ब्राप्य हराइ अवर ११०-७ হয়তো। অথবা তা-ও বদি না হয়, নিছক কৌতৃহল মেটাবার ছলেই বাদ কেউ আমাদের নাচ-গান-বাজনা নিয়ে মেতে ওঠে তাতেই বা অস্থাস্ত বাধ করার কী আছে? অনেকের ধারণা স্বনালের যুল সিমেনা। **এবং वना वार्यना छा वान्याहै-बाकी** হিন্দি বা ঐ জাতীয় বাঙলা সিনেমা খাকে আসলে হলিউডের উচ্ছিন্ট বলেই বরা হর। এটা কেম্স ধারা বিচার? আমানেরটা কেউ নিচ্ছে শ্নতে পেলে আনলে জনমা ক'ব আর অনোরটা আমাদের ঘরে আসহে জানতে পেলেই ক্ষেপে উঠবো? তাছাড়া কি স্ **ভালো আর কিসে মন্দ হবে ভার বিচার** कि चाक धरे मन्द्राउदि क्या इरवा चार्चरत ठेकरण हरव मा रहा ? माकि रङ्गाद **করলেই ঠেকিরে রাখতে** পারবো সবাইকে? আমি বলি, এভাবে কে'দে-কেটে লাভ েই। বরং সমরের গোলার আজকের যাবতীয় ফলল ভূলে দিয়ে থানিক জিরিয়ে নেয়া ভালো। দেখাই যাক না কী হয়। এই তো রক্ষিতবাব, বললেন, বাড়িতে রেভিওটা যথন প্রথম আবেস তখন আমি শনেতাম কীতনি। মাঝে-মাধা সময় পোল উচ্চাঙ্গসভাগিও মন দিয়ে শ্ৰুনেছি। দাদা কেবল খবর শোনার আগ্নহে রেডিও খ্লতেন। বৌঠান চাইতেন রাম্প্রসাদী ভাটিয়াল। কালে-ভদ্রে দ্-একখানা অতুল-

Narmannigner /

সমাজে পথিকৃতের আগ্যম দাবীদার। আসল গোলমালটা কোথার চলেছে জানেম? আমাদের মগজে। সভ্যিকারের চিন্তা-ভাবনার ভাঁড়ারে কুল্পে এটে আছরা মাধ্যতার আমলের ঝুল-কালি মাধা হুদরা-বেগের বর-বরে পালা দুটো টান মেরে খলে দিরে প্রায় মন্ত অবস্থায় বসে আছি। বাছাদ্রে বলৈ ষেজে চেরেউঠে পড়ে লাগতে गिरतरे धक्कम कमाकत्मक करिय धरकराद्व শেকড় স্ম্ হাড়ম্ড করে পড়তে চাওয়ার আনদেই মশগ্রেল। মনের এমন হাল নর বে আমি আপনার কথা শ্নি, কিম্বা আপনাকে আমার কথা শোনাই। থৈক 'ডিডিকা' শব্দগ্ৰি যেন সংস্কৃত ভাষায় লাশ্ত অ-কারের মত। থাকলে আছে। না থাকলেও ক্ষতি নেই।

বিদেশে রবিশাকরের ভর হত্তে দলে-দাল। বাইরে আদ্ধা আদি আকবরের শ্রোতা আর হারের দংখ্যা অগ্রিন্ড। বাঙ্গার ভাটিয়াল, কভিন, রবীদ্দেশ্যতি অভার-

প্রসাদীতে-ও অর্.চি ছিল মা তার। আরু **एटल-प्रारा**श्वा? अपन्त कथा की वन्त्वा মশাই! আধ্যনিক গানের যাকে বলে পোকা! শ্বে কি তাই! ফাঁক পেলে সিলোন সেন্টার **খনে বস**তো। **খনুর**তে লক্ষ রাখতো এমন वााभावणे आभारमञ्ज कान अविध याट्य ना গড়ার। আর এখন কি হরেছে জানেন? ওরা ভর পার না। **আমরাও** আরে বাধা দেবার কথা তেমন করে ভাবিনে। বরং যে-ৰার ইচ্ছেমত **রেভিও খোলে আ**বার বন্ধও করে দেয়। আমি কিন্তু এক আন্চর্যা সিম্ফনি লক্ষ কর্মা**ছ এর ভেত্ত**রে। অথচ প্রথম-প্রথম বা ভেবে বিরম্ভ হরেছি এখন দেশীর সেটা আম্লক। গাম শালে ছেলে-মেরেগ্রলো বখে যায় নি সত্যি। চাল-চলনে अण्डेन्ट्र विनामाम महा इस मा कार्फेटक। वतः বাধা **পেলেই হয়তো ক্লেপে বে**তো। মানিরে রাখা কৈ চাট্টিখানি কথা মদাই। সংসারে এই নিয়ে একটা বাচ্ছে-ডাট কণ্ড শ্রে হতে পারতো। ছেলে-পিলেকে বাগ

স্বটাই কি হ্যুন্গ? তাহলে জ্যান্দিন ধরে চলছে কিসের জোরে, কাদের ভৱসার ?'

রক্ষিতবাব্র স্পো আমি একমত। অবশ্য গভালিকা প্রবাহে দেশসূম্প স্বাই एक्टरम हन्द्रक छा-७ वर्नाइट्स। किन्छु सा অবধারিত তাকে রুখবার সাধ্য কি আপনার-আমার সতািই আছে? কারো ছিল কোনো पिन ?

তাছাড়া কোনটা দেশী আর কোনটা रंग विद्रमंगी वना मृष्कतः। आभारमतः स्मरतन्त्रा আজ বিদেশী মেয়েদের পোশাক গায়ে চড়াচেছন। বিদেশিনীরা পছন্দ করছেন

ट्रियाप्त्र विभ-वात्र-व्यक्तकात्र। এটাকে খারাপ বলবো কেন? কোট-প্যাশ্ট পরাটাকে আজ আর কেউ বিদেশী বলে বর্জন করার কথা ভাবে না। বরং গারে কোট-প্যাস্ট মাখার পাগড়ী জড়িয়ে বদি কেউ দেশভব্তির পরাকান্ঠা প্রদর্শনে তংপর হন আমার চোখে তাঁকেই মূদে হবে নিতাশ্ত ভড়ি। নইলে। শিল্প বিশ্বৰ ষড দ্রত আর ব্যাপক হবে দেশ-বিদেশের সীমা-রেখাটাও ততখানিই হবে ফিকে। একদিন তা পায়ে-পায়ে নিশ্চিষ্ট হবে। আমরা এক হ'ব, একাণা হ'ব তখন। সুখী হ'ব কিনা তার জানাব দেবে কাল, মহাকাল। এমন

जिन जार्जर किना जामित, विकित र्कारमा দেশ তার নিজন্ব শিল্প-সংস্কৃতির গারে অন্যের পোশাক বা অলম্কার দেখে বিস্মরে. বেদনার, হাহাকারে পাড়ার মান্ব কেপিরে ভূলবেন। হরতো না। কারণ সেদিন প্রথিবীটা আমাদের কাছে আরো ছোট মনে হবে। কিন্তু পৃথিবী সম্পর্কে আমাদের रवाथ इरव विशाल, विश्वल, मरुभानम।

আমি ঐতিহাে বিশ্বাসী। স্বরুভূ বলে কিছ, আছে বা হয় তা মানিনে। এজনো বংগ্রো যদি মনে করেন, আমি ব্যাক-ভেটেড তাহলে বলার কিছু নেই। জীবনে মহন্তর সত্যের সন্ধান পেতে আমি অবশ্য ধর্মের কাছে **इ**.टर्डे यादेवा ना। আমার কাছে জীবন হরেই আছে। থাক্বেও। মহন্তর সত্যের সন্ধানে দৈনন্দিন জীবনের কাছেই হাত পেতে আছি। সমঙ্ভ ক্লোধ-অভিমান-উন্মা, প্রেম-প্রীতি-ক্লেছের বিনিময়ে আমি সেই পরম সভাকেই পাবো বলে আশা রাখি। আমার काष्ट्र छाटे किन्द्र टे कुन्छ नग्न। এবং এक्थाणे उ মানি, 'স্বার উপরে মানুষ সত্য, তাহার উপরে নাই'। হরতো বা দেখছি, যা শুনছি তা-ই শেব নয়, একমাত্র নয়। এর পরেও আছে। নিশ্চয়ই আছে। আর তার নামও জীবন।

দু'চোথ ভ'রে দেখেছি. সেই বিচিত্র क्रिन চলমান জীবনের म् रमा বছরের ইতিহাসে षणेना षण्डे নি. অন্তত ঘটে নি আদৌ⊸এত আলোড়ন, আবর্তনের কথা ভার্বোন দেশ। অথচ কি দ্রুতগতিতে পরিবতিত **एटिट न**र! একের-পর-এক সমাজ-সংসার-জীবনের গরেনো তটরেখা ধুরে-মুছে নিশ্চিক হ*ে* আবার নতুন করে গড়ে উঠছে। এই পরিবর্তনের সংশ্যে নিজেকে খাপ খাইয়ে নিতে গিয়ে হরতো সাময়িক বিপত্তি দেখা দেবে, অঘটন ঘটাও স্বান্ডাবিক। ভাই বলে পরোতন সমাজ-ব্যবস্থাকেই দুত বিনন্দির হাত থেকে টি'কিরে রাথতৈ চেরে কেউ বদি মরিরা হরে ওঠেন, অন্কম্পা ছাড়া ভাঁকে দেবার মত আর কিছুই নেই।

बर्च्स, मर्ज्डिक, मान्ना, रमम खान छ স্বাধীনতা—বড় অলপ সময়ে এভগুলি ঘটনা ঘটে গেল! যেকারণ দেশের, সমাজের মৰ্মানে আজ বিধনত, কর্ণ! এ আঘাত **এখ্নি সামলে ওঠা বাবে किনা বলা ভার।** এই আঘাতের স্মৃতি সহজে মৃছে ফেলা সম্ভব হবে কিনা তা-ও জানিনে। কিন্তৃ একথা ঠিক এ আঘাত সহ্য হয়ে যাবে একদিন। আজ কিন্বা কাল। কিন্তু এই আবাত সহ্য করার মূলে তো সেই চিরুতন বিশ্বাসই কাজ করে চলেছে। এবং আশা चारह, धर्कापन ध शर्थहे मुर्खापत्र स्मर्थ वा(बा!

तिश्वभिण वडवशत कत्रदल ফুরহান্স টুথপেষ্ট सार्छित (शालस्याश ଓ भौतिय ऋध तास कत

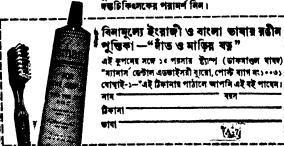
ভোট বড় সকলেই ফরহান্স টুথপেষ্টের অযাচিত প্রশংসায় পঞ্মুখ কারণ মাড়ির গোলযোগ আর দাতের ক্ষয় রোধ করতে ফরছাল টুথপেষ্ট আশ্চর্য কান্ধ করেছে। এই প্রাশংসাপত্রগুলি ক্ষেক্রি ম্যানাস এও কোং লিঃ-এর যে কোনো অফিসে দেখতে পারেন।

"দাঁতের রোগে কট পাচ্ছিলাম ···এমন जमन क्त्रहाम बावहान क'रन मिथि...এधम আর আমার গাড় নিরে কোন কট্ট নেই। প্ৰায় ২০ থেকে ২৫ জন লোক এখন বদলে করতাল ধরেছে। আলাদের বাড়িতে এখন করহাকের বেজার আদর।^{*}

🖰 — উদয়শন্তর তেওয়ারী, পাটনা।

"আপনাদের বৈক্যানিক পদ্ধতিতে তৈরি ফরহান্স পেষ্ট আমি আজ দশ বছর ধ'রে ব্যবহার ক'রে আসছি। এই পেষ্ট আয়ার शांकित भव तांग निवातन करत्रहा अथव আমাদের বাড়ির স্বাই নিয়নিভভাবে করহাল ট্থপেট দিরে গাঁত বুরুণ করছে।" ---- अन. अम. नान, मन्ना निन्नी।

দাঁতের ঠিকসভ যদ নিজে প্রতি রাজে ও পর্নিস अकाटन क्यूहाम हैबटनडे ७ क्यूहाम क्यन प्रशासना টুখ ত্রাশ ব্যবহার করুন আর নিয়নিডভাবে আপনায় क्किकिश्मरकत्र भन्नामर्ग मिन।



পুন্তিকা —"দাঁত ও মাড়িয় বদ্ধ" এই কুপনের সঙ্গে ১৫ পরসার স্ট্রাম্প (ভাকমাঞ্জন বাবদ) "ম্যানাস'ডেন্টাল এডভাইসরী বাুরো, পোন্ট ব্যাগ বং১০০৩১ বোদাই-১--"এই ঠিফানার পাঠালে আপনি এই বই পাবেন। M

টুথণেষ্ট–এক रछिरिकेश्मरकत ऋष्टि

455- 182 BH

ভিতীর মহায**ুখের সময় কুমারেশ গ্র**জ্ম-দার একজন ঠিকাদার ছিলেন। তথন তার বরস ছিল বিশ। ভারপর কলকাতার দক্ষিণে গ**ড়িরা অণ্ডলে** একটা কারখানা খ্লালেন। ছোট কারখানা। সেথানে যন্ত্রপাতি তৈরি হর। কারখানার ভবিষাংটা যে খুব উল্জ্বল সেই ধরনের কথা অনেকেই তাঁকে যখন-তথম এনে জানিয়ে যায়। যারা আশেপাশে থাকে তারা গত দশ বছর থেকে কার-খানাটাকে ঠিক এই রকমই দেখছে। এর মধোবড়হয় নি, ছোটও হয় নি। মজার-ভিন্দুর সংখ্যা ছিল পণ্যাশজন। আলো তাই আছে। রামনাথ আগরওয়ালা নামে একজন লোহার ব্যবসায়ী প্রায়ই কুমারেশ-বাবাকে বলতেন, 'একি ছেলে-খেলা করছেন श्राक्ष-भागत्वातः ? এथन वागताकक् । नहाः। টাকা বানাবার এই সময়, এই মওকা। এক কোটি টাকা মাটির তলায় প্র'তে রাথলে গভূপমেশ্টের লোক খ্ৰুলতে যাবে বাাণ্কের খাতায়। সেখানে পাবে কি? লাল কালি



দিরে লেখা বড় বড় অখ্য —আস্মে হাত মেলাই। কারখানাটাকে বড় কর্ম পাঁচ লাখ আমি দিচ্ছি। রামরাজম্ম চিরকাল থাকবে না।'

কুমারেশবাব্ রাজী হন নি। দশ বছর আগে যা ছিল আলো তাই আছে। ট্রার প্রতি লোভ নেই তার। বছরে দ্-তিন লাখ টাকার বাবসা হয়। যোধপুর পাকে দ্তলা বাড়ি করেছেন। বিঘে দেড়েক জমির ওপর বাড়ি। সামনের দিকে মহতবড় বাগান। গ্যারেজে গাড়ি আছে দ্খানা। কিন্তু সংসাশ্টা ফাঁকা। এক বছর আগে স্টা মারু গিরেছেন। সেই কারণে একটা গাড়ি পড়েখাকে গ্যারেজে। সম্তানের মধ্যে মাচ একটিছেলে। বিলেত থেকে ইজিনীয়ার হয়ে দ্-চারদিনের মধ্যে ফিরে আসবে দেবেশ। তারপর সে এসে রামরাজভের স্যোগ নেবে কিনা কুমারেশবাব্ তা জানেন না

এদেশেও যে শিলপাবিংঙ্গর শ্রুর্ হরেছে কুমারেশ মজ্মদার তার থবর রাখেন। কারথানা ছোট হঙ্গেও সেটা কারথানা। বছরে দু-তিন লাথ টাক্র



বাবসাও হর। হোধপরে পার্কের বাড়ি আর জমির মূল্যও আজকালকার বাজারে পাঁচ-ছ লাখ টাকার কম নয়। তার ওপরে একটা কারখানা তো রয়েছেই। সরকারী মহলে **এক সময়ে খ্**বই আনাগোনা করতেন। শিঙ্গবিস্কবের উত্তাপ উভয় পক্ষেরই গায়ে লাগত। তারপর পরিচরের নিবিভুত্ব যথন নিরাপদ হয়ে গেল তখন সরকারী মুরুবিবরা তার মহলেই আনাগোনা আরুভ করে দিলেন। বিরাটভাবে যখন পরিকল্পনা চলছিল তখন তিনি সহসা হাত-পা গাটিয়ে বসে বইলেন ঘরে। এমন কি কারখানাটার সম্প্রসারণও করলেন না। কেউ ব্ঝতে পারল না যে, তাঁর স্বাস্থ্য-শিরিবের দ্-একটা খ্'টি আলগা হয়ে গিয়েছে। সকলেই ভাবল, লোক্টি অল্পেতেই সুখী।

স্থী হয় নি শ্ধ্ ভবতোষ। অত্যতত উচাকাগদ্দী ছেলে। খ্রই একটা ছোট কাজ নিয়ে ঢ্কে পড়েছিল এখানে। তারপর লেদ মেসিন চালাতে চালাতে এখন সে একজন ওস্তাদ মিস্টা হয়ে উঠেছে। ওভারটাইম নিয়ে ভবতোব যা রোজগার করে তা প্রায় দ্তন কেরানীর মাইনের সমান। ছেলেটিকে খ্রই ভালবাসেন কুমারেশবাব্।

িতনি বলেন, তৈরি ভাত আর কেউ মারতে পারবে না, ভবতোষ। বড় কারখানায় গোলে আরো বেশি মাইনে পাবি।

'আমার তো ইঞ্জিনীয়ার হওয়ার ইচ্ছে ছিল, সার।'

'কতদ্র প্র'লত লেখাপড়া করেছিলি?'
'ক্লাস নাইন। আমার নাবালক রেখে
গাড়ির তলার চাপা পড়ে বাবা মারা গিরেছিলেন। আপনার কারখানার হর ঝাড়পে'ছ
করবার কাঞ্চ নিরে ঢুকে পড়তে হল। তখন
মাইনে দিতেন প'রতালিশ টাকা।'

'দেশ বছর আগের কথা। তথন প'য়তালিশ টাকার দাম ছিল ডবল। এখন কত পাচ্ছিস?'

'ওভারটাইম নিরে শ-দ্ই হয়, সার।
আপনি যদি কারখানাটাকে বড় করতে
পারতেন আমি তা হলে ম্যানেজার হয়ে
বসে পড়তাম।'

সিগারেটে গোটা করেক টান মেরে কুমারেশবাব্ বললেন, 'এ তো আমেরিকার ফোর্ড সাহেবের মতো কথা হল রে! বাঙালীদের মুখে ঠিক মানার না।'

মানার সার। আমি বড় হতে চাই— খুব বড়।'

'অতো বড় হয়ে কি কর্মবি, ভবতের ?
খ্ব বড় হওরার মানেই তো অনেক টাকার
মালিক হওরা। সতি কথা বলতে কি,
স্থে আর স্মেখভাবে জীবনবাপন করবার
জনা অনেক টাকার দরকার হয় না।' একট্
খেমে অভীত শ্ম্ভির মধ্যে ম্হুতের জনা
ভূবে গিরে কুমারেশবাব্ই বললেন, 'তোর
মতো বরনে আমিও লক্ষ লক্ষ টাকার
মালিক হওরার ব্ধন দেখভাম।'

হরেছেন তো, সার। প্রকাশ্ত বড় দোতলা বাড়ি গাারেজে দ্খানা গাড়ি, ইঞ্জিনীনার হওরার জন্য ছেলে গিরেছে বিলেতে। তার ওপর এই কারখানাটা তো আছেই। শুনেছি আপনি ব্লাক করেন না। করলে আরো লাখ লাখ টাকা আর করতে পারতেন।

ভবতোৰকৈ নিজের ছেলের মতোই ভালবানেন কুমারেশবাব্। বখন কাজ করতে এসেছিল তখন ওর বরদ ছিল পনরো। এখন প'চিশ। দ্-চারজন বড়লোক আত্মীর-বজন বে ছিলেন না তা নর। কিন্তু কেউ তো একটি মান্য গড়ে দেওরার দারিছ নিতে এগিয়ে আসেন নি। অতএব ওবেরোজগার করতে হল।

কারথানার সংলক্ষ্য দোতালার দক্ষিণ
কোণার তাঁর অফিস। ডার্নাদকে বড় একটা
হল-ঘরে কেরালাবার্রা বসেন। কুমারেশবাব্র অফিসটা আসলে একটা দ্-কামরার
ফ্রাট। সপে শুখু স্নানঘর নর, আলাদা
একটা রাহাঘরও আছে। আলাদা একজন
বাব্রিও আছে এখানকার জন্য। এটার
সপো যোধপ্র পাকের সংসারের কোনো
সম্পর্কাই নেই। স্ত্রী বর্তাদন বেচে ছিলেন
তখনো এই ব্যবস্থাই বলবং ছিল। যোধপ্র পাকের বাড়িটা ভাড়া দিয়ে দিলেও
তাঁর কোনো অস্ববিধে হতো না।

কারখানাটার সম্প্রসারণের প্রতি বিন্দ্-মাত উৎসাহ নেই তাঁর। বিকেলবেলা থেকে দেহটা যেন কেমন অসাড় হয়ে আসে। <u>গ্নায়্তন্তের ওপর নিজের</u> কোনো কর্তৃত্ব থাকে না। মনে হয় দেহটা অবশ হয়ে আসছে। দাঁড়িয়ে থাকলে পড়ে ফেতে চান। বসে থাকলে এলিয়ে পড়েন চেয়ারের গায়ে। বাইরে থেকে কেউ দেখতে পায় না বটে, কিন্তু ভেতরে ভেতরে একটা কম্পন অন্ভব করেন। রামগড় জঞ্জালের ঈষৎ অন্ধ-কারাচ্ছন পথটা সহসা ডেসে ওঠে চোথের ওপরে। তারপর দৃষ্টিগ্রাহ্য জগতটা নিমেষের মধ্যে একটা অসতা অনুভূতির মায়ালাল স্থিত করে। কোনো কিছুই আর সভ্য বলে মনে হয় না। সংগ্রাম করতে করতে বিছানায় শ্বয়ে পড়েন কুমারেশবাব্। পাপের বেতন মৃত্যু। তব্ ওয়্ধ খান, ইনজেকশনের খেচা লাগে গারে। মধ্যরাতি পার হয়ে যায়। তারপর হঠাৎ একসময়ে ঘুমিয়ে পড়েন তিনি।

এটা তাঁর পরেনো ব্যাধি। টের পাননি, কিন্তু বোধ হর রামগডের জল্পল থেকেই বীজাণ্টা তিনি সংগ্রহ করে এনেছিলেন। যথন টের পেলেন তখন প্রায় পনরো বছর পার হয়ে গিয়েছে। ভারতবর্ষ, ইউরোপ ও আমেরিকার বিখ্যাত চিকিৎসক্রা ভাকে পরীক্ষা করে দেখেছেন। কেউ তাকৈ আরোগ্য করতে পারেন নি। বিকেলের দিক থেকে স্নায় ডলের অসাড্তা অনুভব করতে থাকেন। একটা নিয়মিত ব'ধা সময়ের মধোই অসাড়ভার সৃথ্টি হয়। বিদেশের কোনো কোনো বৈজ্ঞানিক তাকে কেন্দ্ৰ গবেষণাম্লক প্রবেধ জিলখন্তন বটে কিন্তু ব্যাধির মালটাকে কেট খাকে বার করতে পারেন নি। ফালের খবর হয়তো তিনি ছাড়া আর কেউ জানেন না।

আজো নিয়মের কোনো ব্যতিক্রম হর না। তাড়াতাড়ি বাড়ি বাওরার জন্য বাস্ত হরে উঠলেন। দৃশ্রের মধ্যেই অফিসের জরুরী চিঠিপত্রগুলো সই করে দেন। বছর-খানিক হল একটি মেরে স্টেনোগ্রাফার 🖟 রেখেছেন তিনি। মিস নীতা বস্থাবোধ হর বছর পচিশ বয়স হবে। তার কাজ-কর্ম দেখে মুক্ষ হয়ে গিয়েছেন কুমারেশবাব্। তাঁকে কিছুই করতে হয় না। সবই করে নীতা বস্ব। মেরোটর সৌন্দর্য আর দেহ-লাবণ্যের কথা ভাবলেই তিনি অবাক না হয়ে পারেন না। মনে হয় নীতার প্রতি অবিচার করছেন তিনি। এমন একটি মেয়েকে গাঁড়য়া অণ্ডলে ধরে রাখা উচিত নয়। ভালহাউসি স্কোরারের আশেপাশে কোনো একটা স্বৃহৎ বণিক অফিসে ডবল মাইনেতে চার্কার পেয়ে যেতে পারে নীতা। একথা আজ কদিন থেকে তিনি ওকে বার বার করে বলছেন। কথাটাকে সে হেসে উড়িয়ে দের। দেবেশের আসবার সময় বত র্ঘানয়ে আসছে ততই যেন কুমারেশবাব, নীতার জন্য বড় একটা চার্কার জোগাড়, করে দেওয়ার জনা বাস্ত হয়ে উঠছেন।

পেয়েও গেলেন একটা। কক্স অ্যাণ্ড
কিঙ কোম্পানীর বড়সাহেব একজন
প্রাইভেট সেক্রেটার চান। মাইনে ভাল,
বাড়িভাড়া প্রেরা না পেলেও আংশিক
পাবে, অফিসে যাওয়া এবং অফিস থেকে
ফেরার জন্য কোম্পানি ওকে গাড়ি দেবে।
ভগবান দক্ষা করেছেন। মেয়েটার ভাগ্য কী
ভাল! নেচে নেচে কথা বলছিলেন ভিনি।
তার ওপর বছরে এক মাসের ছুটি। নীতা
চাকরিটা নেয় নি। এমন কি সাহেবটির
সংশা গিয়ে দেখা করতেও রাজী হয় নি।

কুমারেশবাব্ বর্লোছলেন, 'এইট্কু একটা ছোটু কারখানায় চাকরি করে পরকাল নন্ট করছ মা।'

'একদিন বুড় হতে পারে—'

আমার জীবনে নয়।

আপনার ছেলে তো ইঞ্জিন রার হরে ফরছেন। তিনি হয়তো কারখানাটাকে প্রকাণ্ড বড় একটা প্রতিষ্ঠান হিসেবে গড়ে তুলতে পারেন—'

'তুমি কেন ততোদিন অপেকা করে বসে থাকবে?' সন্দেহের দ্দিউতে নীতাকে একবার দেখে নিয়ে কুমারেশবাব্ই জিপ্তাসা কর্রোছলেন।

'তুমি কি দেবেশকে চেনো?'

'না।'

হাাঁ, তোমার কথাই ঠিক। তুমি এখানে কাজ করছ মাত এক বছর হল। দেবেশ বিলোড গিরেছে —মনে মনে হিসেব করে কুমারেশবাব, বললেন, 'চার বছর তিন মাস হল।'

চিঠিস,লো সই করে দির্মেছিলেন তিনি। নীতা দরজাটা টেনে দিরে বাইরে বেরিরে বাচ্ছিল। হঠাং কুমারেশবাব ডেকে উঠলেন, মিস বস্ক, নীতা—'

ইরেস সার—' ফিরে এল নীতা। 'একট্ বসো। তুমি কি ভবতোরকে চেনো?' 'চিনি সার।'

'একটি জিনিংয়াস—রত্য। ভাবাছ ওকে আমি বিলেত পাঠিয়ে দেব। হাতের কাজে ভবতোষ অন্বিতীয়—'

'ছেলেবেলা লেখাপড়া শেখবার স্থোগ পায় নি। বাবা মারা গিয়েছিলেন একটা মোটর গাড়ির তলায় চাপা পড়ে। আদালতে প্রমাণ হয়ে গেল, ভবতোষের বাবা আখ্য-হতাা করেছিলেন। ক্ষতিপ্রণ হিসেবে ওর মা একটি প্যসাও পেলেন না। আইন- আদালত ও সমাজ-ব্যবস্থাকে ধনারাদ না দিরে পারা যার না। গাড়ির মালিক একজন ধনীপোক। ঘুরের জোরে তিনি শাস্তি পেলেন না। কিস্তু ভবতোষকে পনরো বছর বয়সে চাকরি নিতে হল। নইলে মা আর একটি ছোট বোন না খেতে পেরে মারা যেতেন। অবিশ্যি ভবতোষ জিনিয়াস কি না জানি না।

'অবশাই জিনিয়াস—' একট্ নড়েচড়ে বসে কুমারেশবাব্ই বললেন, 'বিলেত থেকে এবার সে ইঞ্জিনীয়ার হয়ে ক্রিবে। ছেলেটাকে যে তুমি পছন্দ করো সেটা শুনে আমি খুলী হলাম। আছে নীতা, তুমিও কেন ওর সপো বিলেত চলে যাও না?'

'একটা বেজে গিয়েছে আমি এবার চলি সার।'

'হাঁ, একট্ পরেই আমার ন্নার্তক অবশ হয়ে আসবে। সারা দেহে দৌবলা অন্তব করব—বাই দি ওয়ে, তুমি বোধ হয়



আপনার পরিবারের স্বাস্থ্য রক্ষা করে।

- ভাক্তারর। "লিলি" ত্র্যাও বার্লি পান করতে বলেন।
- 🗨 ত্রীদ্মে এটি এক স্থস্বাতু, শীতল পানীয়।
- বাছাই করা অপক বার্লি দানায় বিজ্ঞানসন্মত উপায়ে তৈরী।

বিবি বাবি মিবস্ প্লাঃ বিঃ





আনে দ্বেচার দিনের মধ্যে দেবেশ ফিরে আনহে একটা দাঁড়াও নীতা, কথাটা কি সজিঃ ?'

'কোন কথাটা সার?'

তোমার টেবিলে ফাইলের তলার দেবেশের একটা ফোটো লুকনো ছিল—আই মীন, টেবিল সাফ করতে গিয়ে ছবিথানা ছাতে ঠেকে গিয়েছিল চাপরাশির।

কথাটা মিথ্যে নয়। অফিস ঘরের দেয়াল থেকে সেদিন ছবিখানা মাটিতে পড়ে গিরেছিল। হঠাৎ কালবৈশাথী শ্রুর হয়ে-ছিল কিনা। আমার কোনো উন্দেশ্য ছিল না, সার। আমার মাও থেতে পেতেন না। বিধবা মা কত কভা করে আমায় লেথাপড়া শিখিয়েছেন। আমি কি করে আপনার ছেলেকে ভালবাসার কণ্পনা করতে পারি?'

'দেবেশকে আমি অন্য একটি মেরের
সংস্পা বিয়ে দিতে চাই। এটা আমার বহুদিনের আশা। দেবেশও সেকথা জানে।'
মূহ্ত কয়েক চুপ করে বসে রইলেন
কুমারেশবাব,। অতীত চিদ্তার গুহুহাভাদতরে
প্রবেশ করবার প্র মহুতে তিনি বললেন, 'গত প'চিশ বছর ধরেই মেরেটির কথা
আমি ভেবেছি। আমার এক বন্ধুর মেরে।
বন্ধ্যি নেই। একটা জীপ গাড়িতে করে
আমরা দুই বন্ধুতে মিলে রামগড়ের
জাগলার মধ্যে দিরে রাচীর দিকে আসছিলাম। যাতা শুরু করেছিলাম দুপ্রের
ঠিক পরেই—'

হঠাৎ কথা বন্ধ করে দাঁড়িয়ে পড়লেন কুমারেশবাব্। ভয় পেয়ে গেল নীতা। কুমারেশবাব্রুর দেহটা যেন থেকে থেকে কে'পে কে'পে উঠছে। তিনি অস্ফথ মান্য নীতা তা জানে। কিন্তু ব্যাধির লক্ষণ-গুলোর সংগ্রাপরিচয় ছিল না ওর। সে ভাড়াভাড়ি এগিয়ে গেল কুমারেশবাব্র কাছে। তিনি ওর ঘাড়ে হাত রেখে বললেন, 'আমায় গাড়িতে তুলে দিয়ে এসো। নীতা, কাল সকালে একবার আমার যোধপরে পার্কের বাড়িতে এসো। অফিসে আসতে হবে নাকাল- ওর ঘাড়েভর দিয়ে সিণ্ডি দিয়ে একতলায় নামতে নামতে তিনিই বললেন 'আমার দেবেশকে ডুমি ছিনিয়ে শিয়োনা মা। আমি জানি, ভোমাকে দেখলে সে ভোমার প্রেমে পড়তে চাইবে—ডুমি সাঁতাই একটি লোভনীয় বস্তু—নিজের প্রতিশ্রতির কথা ডুলে যাবে সে ।'

প্রতিশ্রুতি ?' সি'ড়ির শেষ ধাপটাতে এসে দাঁড়িয়ে পড়ল নীতা।

'হাা। সে কথা দিয়েছে যতদিন না আমি সেই বাধ্বিতি মেরেটিকে খালে না বার করতে পারি ততদিন দেবেশ অপেক্ষা করবে। আমার ঠিকেদারি বাবসার অংশীদার ছিল অমল—নীতা, তাকে ঠকাবার জনা—অন্তব করছ কি দেহটা আমার কাপছে?"

'তথন হাতে অনেক টাকা এসে গিনেছে। দিবতীয় বিশ্বযুদ্ধের আগনে ইউরোপ-আমেরিকার লক্ষ লক্ষ লোক প্রেড় ছাই হয়ে যাত্তে—ছাই উড়ছে আকাপে। আমরা ছাই বিক্রি করেও টাকা রোজগার করেছি। রামগড়ের জন্সলে বদি একটা লোক খুন হরে বার তাতে প্রথিবীর আর কডটুকু গোকসান হবে? অমলকে আমি লীপ গাড়ি থেকে ঠেলা মেরে ফেলে দির্মেছিলাম, তারপর তারপর—গাড়িতে আমার তুলে দিরে এসো মা।'

গাড়িতে তুলে দিরে এল নীতা। প্রকাণ্ড বড় আর্মোরকান গাড়ি। গদির ওপর এলিরে পড়লেন তিনি।

নীতা জিজ্ঞাসা করল, 'বাড়ি পর্যস্ত পে'ছে দিয়ে আসব?'

'ত্মি কোথার থাকে। জানি না। যদি অস্বিধা না হয় তা হলে এসো। টাকা পেরেছি, কিন্তু টাকার থোঁচা সহা করতে পারছি না। স্নায়ত্তকা শিথিল হয়ে গেছে—কোলের শিশ্টাকে নিয়ে অমলের বউ বে কোথার আত্মগোপন করে গেলেন খ্বাজে গেপাম না। কত লোক লাগিরেছি তাকে খ্বাজে বার করবার জন্য—'

'অস্থটা তাহলে আপনার মনের?' গাড়িটা গড়িয়ার সীমানাটা পার হরে যাদবপুর পেণছে গিয়েছিল।

হাঁ মা, প্রথমে মনের অসুষ্ট ছিল।
তারপর ধারে ধারে স্নার্গ্লো আক্লান্ড
হল। শুধ্ দিনেরবেলা নর রাত্রে ঘ্মের
মধ্যেও অমলের কথা ভের্বেছ। আমি
অসুস্থ হরে পড়লাম। ব্যবসা-বাণিজ্যের
প্রতি আর আগ্রহ রইল না। কারখানাটা
কেন বড় করছি না সেই প্রশ্নটা প্রারই
ভবতোষ আমার করে। মনের কথাটা কাউকে
থ্লে বলতে পারি না। তোমার আজ্ব

'किन वलालन, मातु?'

'আমার শ্ধ্ মনে হচ্ছে দেবেশ তোমার প্রেমে পড়বে। তুমি ছিনিরে নেবে ওকে। আমলের জনা তা হলে কছুই আমার করা ইবে না। অমলের শ্চী আর মেরেকে আমি থু'জে বার করবই। মা নীতা, আমলের মেরের সংগ্র যদি দেবেশের বিরে দিতে পারি তাহলে হরতো আমার আমার্জনীর পাপের খানিকটা প্রার্থিচন্ত করা হবে। কে জানে হয়তো আমার লায়্তলের শিথিলতাও নাস পেরে যাবে।' নীতার দিকে বুটকে বললেন তিনি।

'আমায় কি করতে বলেন আপনি?'
'দেবেশ আসবার আগে ভবতোবকে
বিয়ে করে ফ্যালো। আমি তোমাদের দুজনকেই বিলেত পাঠাব। খরচা সব আমার। নয়তো—

'চুপ করে গেলেন কেন?'

নরতো এখানকার চাকরি ছেড়ে দাও।
সেই চাকরিটা এখনো নিতে পারো। বড়সাহেব অপেক্ষা করছেন। সাড়ে সাতশো
টাকা মাইনে পাবে। এখানে তোমার
ভবিষাৎ সীমাবন্ধ।

গাড়িটা যোধপুর পার্কে ত্রুকে পড়েছে। একটা স্নিদিন্টি উত্তরের জন্য অপেকা করছিলেন কুমারেশবাবু।

নীতা বলল, 'আপনার প্রথম প্রশতাবটা গ্রহণ করা আমার পক্ষে অসম্ভব—' শ্বিতীয়টা?' হ্যাঁ, এখানকার চার্কার আমি ছেড়ে দেব। কাল আপনি বড়সাহেবকে টেগিফোন করে জানিয়ে দিতে পারেন।

কৰে গিয়ে কাজে যোগ দিতে পারো?' 'আসছে মাসের পরলা তারিখ থেকে।' 'এখনো তিন সম্তাহ বাকী। প্রো াইনেতে তোমার আমি কাল থেকেই ছেড়ে

আবনো তেন স্কাহ বাকা। নুমো
মাইনেতে তোমার আমি কাল থেকেই ছেড়ে
দিতে চাই। দেবেশ ঠিক কোন তারিশে
এসে পৌছবে আমার লেখে নি। আমার
মনে হর দ্ব-একদিনের মধোই এসে যাবে।

গাড়িটা বাড়ির ভেতরে ঢুকে গেল।
কলকাতার বুকের ওপর শ্বে মাড়োয়ারীরাই এতো বড় বাগান তৈরি করে
শোখিনতা করতে পারে। বাঙালীরা
ট্করো-ট্করো করে উম্বৃত্ত জমিটা উচ্চ
ম্ল্যো বিক্রি করে দিত। তারপর মাটির
টবে করেকটা ফ্লগাছ প্রতে দিয়ে

গাড়ি থেকে নামবার আগে নীতা জিল্পাসা করল, আমলবাব্র দ্বী আর মেয়ের খবর কি পেরেছেন?'

দা, এখনো পাই নি। তবে পেয়ে
যাব। বিলেভ থেকে দেবেশও প্রতি চিঠিডে
এই খবরটা জানতে চাইত। শেষের দিকে
খ্রই বাসততা প্রকাশ করত। মনে হতো
এই খবরটার জন্যই যেন সে বসে আছে
বিলেতে দ

'এতো বাস্ততার কারণ কি, সার?'

বোধ হয়—বোধ হয়—' চুপ করে গেলেন
কুমারেশবাব্। নীতা নিজেও জবাবটা
জানত। অমলবাব্র দ্রী আন মেয়েকে
খুজে না পেলেই খুশী হয় দেনেশ। সে
হয়তো আসবার সময় একটি ইংরেজ বউ
সপো করে নিয়ে আসতে চায়: সপো না
এলেও হয়তো পরে এসে মেটেটি উপিদ্বিত
হবে এখানে। পিতার কাছে দেবেশ
প্রতিন্ত্রিভিটা বিদ্যাহে তা ঠিক। কিল্তু এ
খুগের শ্রীরামচন্দ্রই কি চার বছরের বেশি
প্রতিশ্রন্থিতী রক্ষা করতে পাগ্রতন?

একটা ট্যাক্সি এসে তেতরে ্ংলা।
গাড়ি থেকে নেমে পড়ল দেবেশ। পনার্তক্ত
শিথিক হয়ে পড়া সত্তেও কুমারেশবাব্
নেমে পড়বার জন্য ছটফট করতে লাগলেন।
নীতা দরজাটা খলে দিয়ে কুমারেশবাব্কে
বলল, 'আমার ঘাড়ে ভর দিয়ে সাবধানে
নাম্ন।'

কুমারেশবাব তাই করলেন। নীভার ঘাড়ের ওপর এমনভাবে ভর দিলেন যে, দেবেশের মনে হল, এই মেরেটির ঘাড়ের ওপরেই বাবার অভিতম্বটা যোলআনা নিভ রশীল। বিলেভ যাওয়ার আগে কোনো ওয়ার কিংবা ইনজেকশনের ওপর এতো বেশি নিভারতা সে লক্ষ্য করে যায় নি।

পায়ের ধ্লো নিয়ে দেবেশ বলল, তোমাকে থবর দিয়ে আসতে পারি নি, বাবা। প্থিবীর কয়েকটা বাজার আমায় ঘ্রের আসতে হল। এখন, আসছি সি৽গাপ্র থেকে ম

দেবেশ কথাগ্নলো বলছিল আর চেরে চেরে নীতাকে দেখছিল। তবে কি অমল-বাব্র মেরেটির সন্ধান পেরে গিরেছেন ৰাবা? এমন একটি মেরের জনা চার বছরের বেশিও অপেকা করা বার। মেরেটির মধ্যে শুখ্য সৌন্দর্য নেই, নির্ভরতাও রয়েছে।

ব্যাপারটা ব্যুক্তে পেরে কুমারেশবাব্
বললেন, 'এর নাম নীতা বস্। আমার
স্টনো—মানে এখন আর নেই। আসছে
মাসের পরলা তারিখ থেকে সাড়ে সাতশা
নিকা মাইনেতে অন্য কেম্পানিতে চলে
বাক্ষে। কোম্পানিটা প্রকান্ড বড়। আমি খ্র
ব্যুকী হরেছি, দেবেশ। আফ্টার অল
্ডিয়ায় ওর কোনো ভবিষাং নেই।'

্ আমাদের কোম্পানিতে কত পেতেন উনি ? ঞ্জিজ্ঞাসা করল দেবেশ।

ন : ' !ঞ্জজাসা করল দেবেশ। ''নাথিং--মানে মাত্র সাড়ে তিনশো।'

'দ্-এক বছর অপেক্ষা করলে আমরাও

শাড়ে সাতশো দিতে পারব। বারা, আমাদের
কাম্পানিও মন্তবড় হবে। প্রথিবরি বড়

বড় বাজারগ্লো দেখে এসেছি। মহাজনদের
সংগা পাকা কথা বলে এসেছি। দ্-একদিনের মধ্যে আমি দিল্লী যাছি। শিংপযণিচ্চা দফ্তরের ম্র্বিররা শ্নাল খ্লী
ছবেন। বাবা, আমরা ষদি ঠিক মতো কাজ
করতে, পারি তা হলে বাজারের কোনো
হাত্রব হবে না। ভারতব্যের রুণ্ডানিবাণিচ্চা বেড়ে যাবে অনেক। দেশের ভবিষধে
খ্র উচ্জ্যল—' নীতার দিকে চেয়ে দেবেশ
বলল, 'মিস বোস, পরশ্রিদ্ন অন্মি দিল্লী
যাব। দয়া করে একটা টিকিট কাটিয়ে
রাখ্যেন—'

বাধা দিয়ে কুমারেশবাব্ বললেন, মিস বোস আমার চেটনো। টিকিট কাটরে অন্য একজন কর্মচারী। তাছাড়া আসছে মাস থেকে নীতা কাজ করবে অন্য কোম্পানিতে—বাই দি ওয়ে, কাল থেকে নীতা অফিসে আর আস্থেনা। এ মাসের প্রেন মাইনেটাই দিয়ে দেব।

ঘাড় থেকে কুমারেশবাব্র হাতটা পরিয়ে দিতে যাচ্ছিল নীতা। হার্মাড় খেয়ে পড়ে যাচ্ছিলেন কুমারেশ মজ্মদার। ব্যাপারটা যেন নীতার অজ্ঞাতসারে ঘটে যাছিল। অনামনস্ক হয়ে গিয়েছিল সে। দেবেশ এসে বাবাকে ধরে ফেলবার আগে নীতাই আবার কুমারেশবাব্রেক সামলে নিল। বলল সে, 'চল্ম আপন্যকে পেণছে দিয়ের আসি। আমার ওপর এতো বেশি নির্ভার করলে পরে আমাকে আর ছাড়তে পারবেন না। আফটার অল আমি আপনার স্টেনো বই তে। আর কিছা নই।' ভারপর ব।ড়ির ভেতরে ঢ্কতে ঢ্কতে নীতাই বলল, পারো মাসের মাইনে যথন নিচ্ছি তথন বাকী তিন সপ্তাহ কাজ আমি করব। দে**বেশ**বাব্যর টিকিট আমি কেটে দেব। কাজ করতে আমার ভাল লাগে।

আবার ব্রি হোটা থেরে পড়ে যাক্সিলেন কুমারেশবাব্। পাশ থেকে দেবেশ একে বাবার বাঁ-হাতটা তুলে নিল নিঙের থাড়ে। দুদিকে ভারসামা রক্ষা করতে করতে এগিয়ে চললেন কুমারেশবাব্।

ভারপর ক্রেকটা মাস পার হরে গারেছে। অসহায় দ্ভিততে কুমারেশবাব্ তেরে তেরে দেখছেন বে, কারখানটো রাতা- গতি বড় হরে বাছে। এক মৃহুত্ও বনে
নেই দেবেশ। ভবতোব ওর দক্ষিণহস্ত।
অনেকগ্লো নড়ন নড়ন লেদ মেসিন
এসেছে। আরো নানারকম মেসিনের অডার
হয়ে গিরেছে। কারখানার আয়ডন বাড়ছে।
প্রমিকদের সংখ্যাও বাড়ছে। সেই সন্পো
ক্ষেকজন কেরাশীকেও চাকরি দেওয়া হল।
সবশ্খ গোটা ভিন টোলফোন। এতদিন
এগ্লো প্রায় নারব হয়েই থাকত। এখন
দিন-রাত বেজে চলেছে টেলিফোন। প্রো
ভবিস্টার দায়িছ নিয়েছে নীতা।

ভালহাউসি দ্বেকায়ারের বড় অফিন্সে সে
চাকরি করতে যায় নি। সেই একই মাইনেতে
সে তিনগুণ কাজ করে চলেছে। সকাল
ভাটটায় কাজ করতে আসে। কোনো কোনো
দিন রাত আটটায় বাড়ি ফেরে। ফেরার
মুখে গড়িয়ার সিনেমা হাউসের সামনে
দেবেশই ওকে নামিয়ে দিয়ে যায়। বাড়ি
গর্যশত নীতা ওকে নিয়ে যায় না। বেশে,
গাঁচ মিনিটের পথ। চলে যতে পারব। তা
ছাড়া আগেকার দিনের প্রেনে। একটা সর্ম্ ভাল। আপনার এই প্রকাশ্ভ বড় আমেরিকান
গাড়িটা ওখানে চ্কুক্রে না। আমানের
দেশের রংতার অক্থা বিবেচনা করে ওরা
গাঁডি তৈরি করে নি। নম্বন্ধার সার।

া সারাদিন তো সার সার করো, <mark>আবার</mark> এখানেও সার কেন?'

'কি বলব?'

'দেবেশ বলবে।'
'আপনার বাবা রাগ করবেন।' গাড়ির দিকে একট্ ঝ'্কে দাঁড়িয়ে নীতাই বলল, প্রতিগ্রহিতর কথাটা ভূলে যাবেন না।

ভূলি নি। বাবাকে আর ছ' মাসের সময় দিয়েছি। তার মধো যদি অমলবাবের পত্রী আর মেয়েকে খ'ুজে বার করতে না পারে তা হলে আমি আমার ইচ্ছান্সারে—' থেমে গোল দেবেশ।

^{'কি} করবেন? বিলেতের মেম্পাহেবকে থিয়ে করে ফেলবেন বুঝি?'

'বিলেতের মেমসাহেবকে বিয়ে করব!' অবাক হল দেবেশ।

'সেখানে কেউ অপেক্ষা করে বঙ্গে নেই?' 'না।'

'তা হলে চলুন, আজে রাতে কে'নো চীন হোটেলে গিয়ে খেয়ে আসি। গলপ শোনাব।'

দেবেশের পাশে **বসে** পড়ল নীতা।

দিনরাত গোটা কয়েক দালাল আসছে কুমারেশবাবরে কাছে। অমলের পরিবারের থাঁজ করে এরা। থোঁজ আনতে পারে না, শা্ম্ব টাকা থেকে চলেছে। পাপের প্রায়ণ্টিত করবার জন্য বদেবাস, প্রায়ণ্টিত না করতে পারলে তিনি সাক্ষাহরে উঠতে পারবেন না। অমলের মেয়ে দেবেশের জ্বী হয়ে আসক, এই সংসারের ভার নিক। বিষয়-সম্পত্তির অর্থেক-টাই তিনি তার নামে লিখে দিয়ে যেতে

সোদন সকালের দিক্টে হঠাং দৈকে।
এসে তার অফিস ঘরে তুকে পড়ক: এসেই
সে বলল, 'বাবা , আমার হিশ বছর করস
হল। ছ' মাসের মেরাদটাও পার হরে।
গিরেছে। এবার আমি বিরে করতে চাই।

'কাকে বিয়ে করতে চাও?' 'নীতাকে।'

'সেই জনাই ওকে এই কোম্পানি থেকে সরিরে দিতে চেরেছিলাম ৷ ছি ভি—কোন্ এক হাঘরের মেরে—'

এই সময় করেকটা টাইপ করা চিঠি হাতে নিরে ঘরে প্রবেশ করল নীতা। বলল, 'এগ্লো খ্ব জর্বী। এক্নি সই করে দিতে হবে সার।'

'দিচিছ। মিস বস্, তোমার বাবা **কি** করেন ?'

'বলেছি তো সার, তিনি মৃত।' 'কি নাম ছিল তার?' 'শ্রীজমলকুমার বসঃ।'

'কোন্ অমল?' সোজা হয়ে উঠে বস-লেন কুমারেশবাব;।

'যিনি রামগড় জংগলে মার। গিয়ে-ছিলেন।'

কুমারেশবাব্র দেহে বিদ্যোদ্র কম্পন
নেই। নীতার ম্থের দিকে চেরে রইলেন
তিনি। ওর ম্থের ওপরে অমলের মাথের
কোনো বৈশিষ্টা আছে কি? কোনো
বৈশিষ্টাই তিনি খাজে পাছেন না।হয়লো
মায়ের মতো হয়েছে। এওদিন পর মায়ের
চেহারাটাও তিনি স্থান ধরতে পায়েলান।।
তব্ সনায়তদা কমশাই শক্তিশালী হয়ে
উঠছে। দেবেশকেও আর প্রতিশ্রতি ভাগের
অপরাধ বহন করতে হবে না।

মাথা নিচু করে দীড়িয়েছিল নীতা। দেবেশের দিকেও চোথ তুলে চাইতে পার-ছিল না। টাইপ করা চিঠিগলো টেবিলের ওপর বেথে দিয়ে বেবিয়ে গেল সে।

কুমারেশবাব; বলালেন, 'দেবেশ, আমার অনুমতি তুমি পেয়েছ। শহেলানে নীতার সংশা বিয়ে হলে যাক তেমোর। একটু দীড়াও দেবেশ-শোনো, মেয়েটা ধাশ্পা মেরে তোল না তো?'

'তার মানে?' পর্যাশ্ভর হরে দাঁজিয়ে পড়ল দেশে।

'রামগড় জাধ্যকের গণপটা সে আমার কাছেই শংনেছিল। ২য়তো তারই সংযোগ নিয়ে থোমার মতো একটি ছেলেকে বিয়ে করতে চায়।'

ভাবে ওকে— সেই মৃহ্তে সারা দেহে প্রবল কন্পন অন্ভব করতে লাগলেন কুমারেশবার। তিনি নিজেই চললেন নীতাকে ভাকতে। আরো করেকটা প্রশন করতে হবে। পারলেন না। দরজার সংগ্রা খারা খেলে পড়ে গোলেন মাটিতে। সংগ্রা সংগ্রা ছানে হারিরে ফেলালেন। মল্লরেমিন্টারা ছাটে এল অফিসে: কার্থানা বংধ হরে গোল।

রামগড় জ্বংগলে সম্থা। হতে তথনো অনেক দেরি। বেলা মন্ত্র বারোটা।

SIMI SIMI

ধারা আমাদের কাছের মান্ব অথচ চির অচেনা, গ্রাম-বাংলার সেই অগণিত সাধারণ মান্বের আঁতের খবর জানাচ্ছে তাঁদেরই আত্মার আত্মীর বাংলার তর্ণতম নতুন লেখক আব্দ্ল জব্বার এই ম্থের মেলায়

পীরিনী বৃড়ীর বিচার

এক মান্য উচ্চু দলিকের ওপর বসে মোড়ল বড়ী ঢারা ছ্রিয়ে পাট কটেছিল আর সামনের তাল প্রেরের ভান হাতি ছা হাতি দুটি পাড়ে দাঁড়িয়ে ফেনা ভাঙছিল দুটি মাঝ বয়েসী ছসেলমান বাড়ের বউ। সম্পকে দুজনে জা। তাদের গালের ধান্তি, ভাষার চাতুরী, খরিশ কেউটের মতন অংশের দুল্নি— দবই লক্ষা করছিল মোড়ল বড়েট।

প্ৰিচন পাড়ের বউ লায়েলা বিবি বলছিল : 'কড়-কড় করে শ্রুগান' কেটে বাজ পড়ারে তার মাথায় যে মিছে কথা বলবে।'

পারে পাড়ের হালিমা বিবৈ বলছিল : 'মালসা-মালসা, সরা-শরা লউ (রক্ত) তেওে মরবে সে অটিকুড়ির বেটি যে সতিাকে আঁচল চাপা দিয়ে লাকোবে।'

দ্ম প্রেক্তই বিশ-পাচিশজন করে হোয়ে জাটে জটলা করছে। কেউ নীর্ব শ্রোতা। কেউ-বা কথা য্রিয়ে দিয়ে সাহায়া করীছল— উৎস্থিত কর্বছল উভয় প্রক্রেট।

লারেলা বলে ঃ ডাই যদি সাতী হাবি হাঁ লা মাগাঁ, তাবে চাতার লিছের সব কটা মেরেছেলে হয় মে কেন লা । চতার ম্বেণিই থালি সব পিলো-ম্রেণি-বাজা তোলে, আর মের ম্রেণির সব মোরণ-বাজা হয়। ঠিক আছে লো বেহালা সতাঁ, চাের ম্রেণি রাম্বিদের কাছে আসে তো গেইলো (গােয়ালে) ফেরে হাের পাছার কবিক পা্ডিরো দাগ দােব। তাের সতািগিরি থাকবে, তাের ম্রেণির সভািগিরি থাকবে, তাের ম্রেণির সভািগিরি থাকবে

হালিমা বলে, 'তোর বেটার মাথায় হাত দিয়ে বল। তোর মাথায় কোরআন শরীফ তুলে দেবে, 'তোকে মজিদেব (মসজিদের) ভেতর তাকে হলপ করে বলতে হবে, তোক পাঁচটা ছেলে-মেয়ের ভেতরে কাটা ঠিক খাঁটি লোককে বাপ বলে তাকে। কটা বাওয়া' আগতা! তোর পাছার বাহার, তোর চলন দেখে কোন যোয়ান ছেডি। না গাড়োলের মাতন চেয়ে থাকে। তুই নামাজ পড়িস লা, তুই বিশাটা রোজা কবিস লা? তোর হাতার মোর দেওর, তাকে দেখে মোর জভ্জা কি লা? মোর ভাতার তোর হাশার, তাকে দেখে মাথায় ঘোমটা দিস? এখাটে থাকলে তথাটে তুই নেবে যেয়ে উদ্যোগ হয়ে গা ধ্য ? গেরা বিপদ নেই লা—আপদ নেই লা? তোর ছেলে হবার সময় ভাকতে আদেবি নি লা। তরকারী চাইতে আসবি নি লা বাটি হাতে লিয়ে?

খোট জা সায়েলা : 'তৃত্যের মাথে কট' (কুন্ঠ) কোক।' 'হতার মাথে 'ফাল' (শেবতী। পড়াক।'

হৈতার বাপ মর্ক।

'তোর বেটা মরাক।'

প্রাকে ওলাউঠো হোক, হাঁফ কাশি হোক, ধ্কিড়ে বস্তত হোক, ফাটা বস্তুত হোক, কাল বস্তুত হোক, তোর মাথায় টাক শড়কে, তই বাঁ পায়ের গোলায় যা, চোর ভাতার থালভরা রাত শাপ্তে হাসপাতালে যাক—কলকাভার বিলের পাশ ভান্তার এলো দিক—তুই কোশজে ডেগ্র মর—ভোর পাটে বক্বি ছানা হোক, তোর মাধ্যান্য রাজির বাড়ি যাকে—

ক্ষেত্রত হৈ আলা তেই সেইজন কমা ককে সব শানে রাধ। বেটির লিজের গাল যেন লিজে মাখা পেতে নেয়।



শূপুর হরে গেছে। হাল লাঙ্ক করে ক্ষেত্র থেকে পুরুষের রাজ মানুর ধরে কিরে আসতে জানতে পারলে পুরুষেই জাপাতত জ্যান্তি দেয়।

হালিমা বলে, 'রইল লো বেটাখাকী, ঝোড়া চাপা রইল, মন্দ মান্য চলে যাক, বিকেলে আবার ঝোড়া ভুলব।'

প্রোরও এই থামা চাপা রইল আসিস বিকেলে। সাক্ষী রইলে গো পীরিনী মা। ভূমি বিচার করো।'

ছোট ছোট কম বরেসী মেরেরা গাল গিতে হয় কেমন করে, কদিতে হয় কেমন করে তা শিশে নেয়। থেলাখরে তারা তরে অনুকরণত করে।

পথ দিয়ে ব্কভরা দাড়িওয়ালা বৃড়ো নগেন মারা যাছিল। মোড়ল বৃড়ী বললে, জানলি বাপ নগেন, আমাদের এপাড়ার আবার এবছর বসনত কলেয়া হবে। এই রকম গালমাল যারা বাইরে বার করে ভেতটা তাদের কী! বজবজ থানার বিদিরা, রামচ্লুপ্রে গাঁরে ভয়ন্বরভাবে বসনতর মহামারি দেখা দিয়েছে। পঞাশাজন মারা গেছে। পালাপালি সব গ্রামে ছড়িয়ে গড়েছে। সরকারীবাব্রা এনে ভাল লোককে টিকে দিছেে সেও তিন দিন পরে থতম। সাতটা শীতলা ঠাকুর ভূলে শ্লো দিলে তব্ রেহাই নেই। অভি-

নগেন মাধ্য বলে, 'কেন আর বলে।
পীরিনী মা, সং গাঁরেই ঐরকম! চাষী-বাসী মাসলমানপাড়া, বাগদিপাড়ায় যা একটা বেশি।'

বিকাশে আবার গালাগালি শ্রে হল দ্যি কট্যের স্বামী দুজন মাঠের কাজে বেরিয়ে তেওে।

বোড়া তুলে সায়লা বললে, 'কইলো জোড়াবেটারে মাথাথাকী, আয় দা আজ রতে মোর ঘরে মোর বিছানায় শর্বি—মোটা করে বিছন। পোতে দোবখন।'

থামা তুলে হালিমা বললে, 'তেরে বাপ গর, চুরি করে জেল গেটেছিল মনে নেই লা?'

'ওলো তার ঘরে আগনে লাগকে লো, ওলো তার ধানের কটিড়তে আগনে লাগকে তোর গোলার ধান প্রতি পোকা হয়ে উড়ে থাক, তোর হোল গর্জোড়াকে ম্ভিতে বিষ থাওয়াক, ভার প্রেক্তরের পঠি সের দশ সের করে রাখা র্ই-কাতলা মরে ভেসে উঠ্ক।'…

তোর খরে মামলা চ্কুক, প্রেশ চ্কুক, ভোর খরে কাব্লি চ্কুক। তিন স্থেষ্ট না পেব্রুত তোর হাতের ছড়ি ভাঙ্ক।

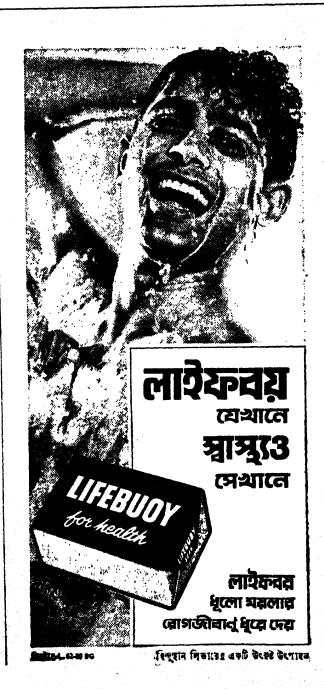
'গুলা বেটাথাকী বাপথাকী ভাই-ৰাকী, হাথাকী, ফুফুথাকী, থাকুখাকী, ভাতারথাকী, খুয়োরথাকী—'

পুট পা-পেছিনার বা, থব্-পাতালে বা, রসাজনে বা, পাহালানে বা, কববের বা, কালীবাটে বা, বাব্রেবাজি চাকরিতে বা, ভোকে কবান কর্ক, তুব্লে কর্ক, হরে কর্ক, বার কর্ক। পঠি ছাবালের মা হরেও তুই 'চাইট বজি' পিলে' মারে' 'সেনো প্রভার' মেখে টকি 'সাইসকোপ'-এ নাস— লক্ষা করে নে? তুই ছেলেদের মা—না বাজারের নাটি? ওইরকম পোবাক করলে তোর ভেতরে কি আছে মাম্ব কি আর টের পার নে? দ্' বস্তা ধান বেচে তুই বে 'লাইলনে'র 'ওলপা-বাহার' পাড়ি কিনেছিস কিসের জনো লা? শহরের বিবি হরে নগরে নাগর নাচাতে বা দা।'

সন্ধ্যা প্ৰশিত গাল থামল। স্বামী দক্তন

মোড়ল গিমার কাছ বেকে সব শলে প্রস্ দ্রুলনেই বেশ করে শলে। দড়ির চাব্রেকর বাড়ি ক্যালে। জনেশত উন্ন কুপিরে দিলে। হাড়ির ভাত তেলে দিলে গর্রে গামলার।

প্রদিন সন্ধ্যার দুটি বউ এল মেড্ল পিল্লীর কাছে বিচার করতে। পাড়ার স্ব মেরে-প্রেব্র এলে বসল। অনেকগ্লি হ্যারিকেন জনলভে চারদিকে। মেড্ল গিল্লীর উপরে নাকি সভাপীরের ভর হর। সাজা বিচার করে দের। সম্ভর বছরের বুড়ী।



তীক্ষ্যু নাক। পটল-চেরা চোখ। ট্কট্কে করসা। গারের মাসে এখনো লোল হরনি। চোখের দ্বিত এত ভাল বে ছ'তে স্তো লাগাতেও পারে। ব্রুটী প্রতি সম্ধার পাড়ার ছোকরা আরনাল গাজির স্কলিত সাপ-খেলানো স্বেরর প্রথি পড়া লোনে। রামারণ মহাভারত পড়া লোনে। কাসাসল আম্বিরা (নবীগণের জীবনী) তার সব জানা হরে গেছে। ইজরত ইউস্ফের কর্ণ কাহিনী শ্রনে তার দ্ব' চোখের জল করে।

ব্যুড়ীর বিচার তাই ঠেকে ফেলে দেবার শক্তি নেই কারো। বিচারে বসলে সে যেন জন্য মান্য হয়ে যায়।

দুটি বউ তার পাশে বসলে সে চোখ বুলে দুজনের মাথার হা**ত দিরে বনে** থাকে কিহুক্তণ। কে মিথ্যাবাদী বা দোবী এতেই সে ধরে নের।

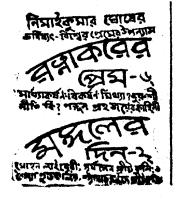
মোড়ল ব্ড়ী ওজা করে এলে প্রথমে দা' রাকাত নামাজ পড়ে নিরেছে। তার ছেলেরা একটা দারে বসে আছে। ব্ড়ী কথা বলেঃ

প্রেটে বউ লায়লা কথা বলবে।—কি নিরে ঝগড়া তোমাদের?'

नायमा यस्म, भारतीगढ वाका निया। আমার ম্রগির সাত্টা আপ্ডা বড় জারের মুর্গির তারে দিরেছিন, মুই। আমার মুর্গির আশ্ডা সব খেয়ে খেয়ে ফ্রিয়ে গেছিল। বলি সাতটা আন্ডালিয়ে আর ভায়ে বসাব? জাকে বলতে তার তারে দিতে রাজি হল। আমি আমার আন্ডায় হাঁড়ির কালির ত্যারা দাগ দিয়ে এসেছিন। বদি '(घाना' शए जार्ल वान बारव-वाका सात्र পাওনা হবে নে। তা পাঁচটা নাকি ফটেছে। পুটো ছোলা পড়েছে। আমাকে বাচ্চা দেবার সময় দেখি সব মোরগ ছানা দিয়েছে। জা বলে, তোর সব মোরগছানা ইয়েছে। আর ওয় দশটা আন্ডার নাকি স্বকটাই মার্রাগ-ছানা হয়েছে। এই কথা কাটাকাটি লিয়ে শেব অব্জি ঝগড়া।'

হালিমা বল এবার।'

ছালিমা বলে, 'ওর সাতটা আন্ডার যে পাঁচটার বাচ্চা ফুটোছিলা স্বকটো মোরগ-ছানা আমি দেখেছেন্ প্রথ করে করে। ভাই দিইচি।'



জেরা ঃ ব্যক্ত ভিন্ন কোটে তুমি কি রাত জেনো বলে থেকে থেকে দেখেছিলে?' 'সকালে দেখেছেন্ খোলার ভেতর থেকে নড়েচড়ে বের্ছেঃ'

্থকদিনের বাচ্চাকে কি চেনা বার ?' মাসথানেক বাদে দিরেছেন, একট্ট টনকো হতে!'

'বখন ধাড়ির সংগ্র বেড়াত সব চিনে রেখেছিলে?'

হোঁ, তিনটে লাল, দুটো সাদা।' 'হোঁ, তিনটো লাল, দুটো সাদা।' 'সব কালো।' 'থাকির রঙ?' 'কালো।' 'মোরণের রঙ?' 'লাল।'

'লারলার মোরগ-মুরগি কি রভের?' মুরগি কালো, মোরগ সাদা।' 'ডিমের খোসাগ্রলো আছে?'

হা। ঝটাকটি দিয়ে গেখে রেখেছি। চালের বাতার খোসা আছে। আন ত মা এলাচি।

ডিমের খোসাগ্রেলা আনা হলে ব্ড়ী আলোর সামনে সেগ্রেলা পর্য করে করে দেখলে। ভাঙা আমাআমি খোসা। কালি-লাগানো পাঁচটা ডিম। ঘোলা পড়া বাকি দ্টোর খোসাও নাকি আছে লারলার বাড়িতে। মুখ ফ্টিরে ডেডরের পচামি বার করে ফেলে দিরে রেখেছিল। তার বড় মেরে ফ্লঙ্গান ডিমের খোসার নানা রঙ দিরে সিকা' টাঙার বলে খোসা জমিয়ে রাখে। সে দ্টোও আনা হল।

বুড়ী সব দেখে বললে, জায়লার কালি মারা এই সাতটা ডিমের খোল এক জাতের --এক মরেগির নয়। কেন মা এক মরেগির আন্ডার আকার এক রকমেরই হবার কথা। এই যোলা-পড়া দুটো এক জাতের। যার সংখ্য মিল হালিমার আন্ডার। তলার দিকে বেশি ভারী মোটা মাথার দিকে সর **एक्ट्रिंग। यमन वर्ष्ट्याक्ट्रम्स म्राथत एडोन** হয়। কপালের দিকটা ছোট—গালের দিকটা ভারী। আর গরিব লোকের মুখের ডোল তেকোনানে। কপালের উপর দু'কোণের দিক, নিচে এক কোণ। তা লায়লার আন্ডা সেই तकम व्यवना छेटने निटन। बारे दशक, পচা ঘোলা-পড়া দ্টো বড় জা হালিমার-जना मुद्धांत कानि एटन मिट्रा मिट्रा द দুটোর বাচ্চা হরনি ভাতে কালি লাগিয়ে দেওয়া হরেছে। আর এই ডিমগলে থেকে ম্রুগি ছানা হরেছে—বার মুখ অলপ জায়গা নিরে কেটেছে। তাহলে দশটা বাচ্চা, মরেগি। পাঁচটা মোরগ। না দা—ভূল হচ্ছে, সাতটা মোরগ । এখনো দ্রটো মোরগ-ছালা হালিমার বাকার মধ্যে আছে বাদের ও বেটি চিনতে भारतमि । जात अकरे, वर्ष श्राम थता भएरव । এখন বিচার হল সাতটা বাকা দিতে হবে ছোট বউকে। বড় বউ পাৰে সাভটা। একটা থাকবে মসজিদের জন্যে মান্সিক। সেই মোরণ বড় হলে জবাই করা বড় বউরের कानगरबंद करना बर्रिय क्रियाद्वीयक शक्रक ভাত খাওয়াবে। বাও সব মুর্ণি কচা নিরে

মুর্রাগ বাচ্চা জানলে বুটি বউ
কৈচিড়ের মধ্যে করে। দুর্নটি চুর্বাড়ির মধ্যে
তাদের ধরা হলে মোড়ল বুড়ী—ইনসাল
মোড়লের স্থা—খালেদা বিবি পরখ করে
দেখে দেখে হালিমার মুর্রাগ বাচ্চার মধ্যে
থেকে ঠোটের উপর ফুলমতো বে দুটোর
সে দুটো নিয়ে হাতের তালাতে বাসরে
সবাইকে দেখালো। বললে, 'এই দুটো
মোরগ। লায়লা পাবে চারটে মুর্রাগ, তিনটে
মোরগ। হালিমা পাবে তিনটে মোরগ আর্
চারটে মুর্রাগ। একটা মানসিকের মোরগ—
পালবে বড় বউ—হাজতের চালও তাকে
দিতে হবে। এখন বড় বউ বল, তুমি কারসাজি করেছিলে কিনা? তোমার ছেলের
মাধার হাত দিরে বলতে হবে।'

বড় বউ অপরাধ স্বীকার করলে।

জায়ে জায়ে মিল করে দিলে মোড়ল द्र्जी। भवारे मन्द्रुष्टे रुख हत्न हात्न छस् করে এসে বৃড়ী ইশার নামাজ পড়তে বস্প। ঘণ্টা-দুই পরে তাকে খাবার জন্যে, বড় ছেলে থালেক ডাকতে এসে দেখলে মা আলো নিভিয়ে দিয়ে পড়ে ম্গিরোগীর মতন অজ্ঞান হয়ে কেবলই শরীর ঝাঁকাচ্ছে। এই অবস্থাকে সকলে বলে প্রীরণী বর্ডিঃ **ভর হয়েছে।** বাবা সতাপীর ভর করেছে। এরকম অবস্থা হয় প্রতি স্তাহে অন্তত **একবার করে। কোনো সম্ভাহে দ্**রোরও হয় নাকি। খ্ব উত্তেজিত হলেও হয়। মোড়ল **ব্ড়ীকে** ভার বড় **ছেলে পাঁজা**কোলা করে ধরে থাকে। বউরা আলো, জল নিয়ে আসে। ছাড়িয়ে দাঁতকপাটি দেয় কানে-নাকে পালকের সত্তস্তি দিয়ে। তারপর যথা-রীতি প্রায় সংজ্ঞাহীন অবস্থায় বকতে থাকে পারিণী বুড়ী।

মানুষের ভিতরে আছে কংকাল হাড়ের খিলেন। ব্বের মধ্যে আছে প্রাণ পত্মপাতার পানি। চোথের মধ্যে মণি, ডিমের মধ্যে কুস্ম, यन्त थाक मध् आत गग्ध, পাথর ফেটে চৌচির হয়ে ঝরণা নাবে আকাশ ফেটে দাবে বাজ তব্ আমাকে অন্ধকারে খ'ডে বেছাও নিজের পারে নিজেই গড় করো! মানুষ বেইমান আলো, সত্য, স্বদর্কে ভূগে ভালবাসছে কালোকে-সে আহাত্মক সে জানে না তার রঙ নিয়ে খেলা न्द् रहरन रथना। কিন্তু ক্ষেত খামার পড়ে রইল আবাদ করবে কে? वाकारन नाक्षन क्रफुर মাধার বি বিক্তি করে গাঁজা বাজা? স্মরণ রেখো আসছে কিয়ামভ পাহাড় পশত উত্তে ছুলের বতন मामा क्रेम्ट्रम क्रेन्ट्रम

মার ইতিহাস ভোমাকে পড়ভে ्रक्षा इत्या ात्थत्र भामित्व जयम त्रथत्व अव कात्नाः। জবে পণ্ডিত ভাৰতে रक खानी छावट তে তুমি পীর তে নিজেকে নেতা কলে । वामना র হয়ে ব্রে বেড়াত তোমার বাপ া হাডের মঙ্গা ি রক্তের বীয়া র গভ খনিতে তোমাকে হাড়ে চামড়ার জড়ালে? রের পোবাক তো তোমার কাপড় বাতেই তা **পড়ে থাকৰে!** িছলে কুন্তা া সব থাবার কুড়িরে খেডে , চলেছ পথে भाव करकामणे हरमर्थ मरभा টো তোমার নর :শের , राम्द्रभुत আলার। মূজা হল মদ্বাৰ াকে বাদ দিচ্ছ কিসের বদলে ধের বদলে তাড়ি? বৈ তোমরা মরো— তোমরা নণ্ট জিনিস আঁধার আনব আবার তারপর আলো।...

এই রকম লাচাড়ি চলে হাজার লাইন।
গ্রামের লোক কেউ তার অর্থ বেবেঝ না।
এসব নাকি তর-কথন। সিংধ-বাক্য। ব্ড়ার
জ্ঞান হলে নাকি কিছনুই মনে থাকে না।
তাকে পরিবালী বললে নাকি পারের খড়ম
ভূলে নেথায়। মহাভারত পড়ালোনের সময়
নুলতে থাকে। খুশী হলে হাততালি দেয়।
রাগ হলে থাখা করে।

প্রিরণী বৃড়ীর ভর হয়, ভর হলে কি
সব বলে শোনার আগ্রহে একদিন ফেতেই
বৃড়ী আদর করে কাছে বসালে। বৃড়ী
আমার দ্র সম্পর্কের আখ্রীয়া হয়। চাচাত
মামার দিদিশাশ্ড়ী। বৃড়ী তার ছেলেনের
ভাকাভাকি আর্মন্ড করলে ঃ 'গুরে খালেক,
মালেক তোরা এসে দেখ কে এসেছে! ভাব
প্রেড়া দে। মাছ ধর।'

একটা গোলাপ ফুল হাতে ছিল ভার হাতে দিতে বুড়ী সেটা শাক্ত আবদর আমার হাতে ফেরং দিলে।

বললাম, আপদি কেমন আছেন?' আমাকে 'ছুমি' বল! আমি হা।' 'প্ৰীয়লী মা বলৰ?' 'না, শুধু মা।' মা!'

वन् दवी।'

আমার সম্বন্ধে কিছা বলতে পারবে?' 'তুই হলি গোবর গাদার পদ্মফাল! কা-বন্ধার পেথা। বেণি ভার জন হাত প্রীরিধী বা আবার হাতটা তার মুখের ওপর চাপা দিরে চোধ কথ করে রইল। পরে বললে, 'তোকে এখন সব কথা বলা ঠিক নর। সামলাতে পার্রাব না।'

ঠিক পারব। আমাকে রাজা-বাদশা করে দিলেও ঠিক চালিরে বাব। শহনি না একট্যা

মা হাসল। কালে মোপনে, কানে ভানে।

আমি রোমাণ্ডিত হলাম।

ভর শেলাম।

আমার শরীর ধেন কাঁপতে লাগল।
চোধ থেকে আনন্দের অগ্র গড়াতে লাগল।
মা পটল-চেরা চোথে আমার মুখের দিকে
ভাকিরে রইল। বললে, 'আজ আমার ভর
হবে, বাঁ চোধ আর বাঁ হাতের কড়ে আঙ্কল
নাচছে। যখন ভর হবে আর আমার মুখ
থেকে কথা বেরুবে, তুই লিখিস তো—জ্ঞান
হলে শুন্র।'

সেদিন সতাই ভর হল রাত দাটার পর। আশ্চর্য সেসব বাণী। কোথা থেকে আসছে—কেমন করে আসছে? কেন আসছে? কাদের জনোই বা আসছে? সবটা লেখা অসম্ভব।

পরদিন সকালে লেখাটা ফ্রেশ্ করে ভার সামনে ধরতে চেয়ে রইল। বললে, পিড়া

বললাম, 'না।'

'কেন?'

আমার বাঁচবার উপায় বল।

মা হাসলে। বললে, 'শিবের মতন পাথর
হবি। রাগকে মেরে ফেলবি। দুনিয়ার বব
লাক তোর আপন দেহ, মাচি মেথর পণিওত
জানী সবাই যেন তুই নিজে, এমনি ভাববি।
কাউকে বেলা করবি না। কাউকে আঘাও
বিবি না। তওবা কর। আলা নেই একথা
ভাবিস না। অপ্রা হল মন্যাছ। সে তেকে
আড়াল থেকে সাহাযা করেছে। সে যাকে
কলা করে কেউ তাকে মারতে পারে না।
হজরত ইউস্কেকে তার অত্যাচারী ভাইর।
মেরে পাতকুয়োর মধাে ফেলে দিলে। তাকে
হুলে নিরে গেল মনির্ সওদাগর, বেচে
দিলে মিশরের রাজার কাছে। রানী তাকে
ভালবাসতে চাইলে নােরাভাবে। ক্ষেপে

গিরে উন্টে বন্ধনাম দিলে। জার জেল হনী।
সেথানে তার অলতরে এল আল্লার দ্রুক
জিরিলের ভর। সে স্বন্ধের মানে বলে
দিলে। পরে সাধক ইউস্ফু হল দেশের
উলির। তারপর রাজা। দুর্ভিজ্পের সমর তার
ভাইরা এলে সে চিনল। তাদের একজনকে
চোর গারে ফেলে আটকে রেখে বিচারের
সমর পরিচর দিলে। তবে কি তোমরা মনে
কর ইউস্ফু মরে গেছে? তারা বললে, ভবে
কি তুমিই ইউস্ফু সে বললে, আল্লা থাকে
বাঁচার সে মরে না। তার রাজপোরাক খ্লে
দিতে প্রশোরে আধ্য ব্বার কারে তা
আনলে। সেই পোরাক আনতেই বাবা বলে
উঠল, আমার ইউস্ফের গারের গাব পাঁজি
কোধা খোক।

পারিণী যা বলতে বলতে ভুকরে কে'নে
ফেললে। বললে, 'ডোর অম্থ বাপ মার।
গেছে, দে এখন জগতের সব মান্বের মথে।
ছড়িরে গেছে—ভাদের পথে অনেক কটা—
রক্ত ঝরছে। দ্ভিক্ত বেবছে। ভোর কাষ্টে
সবাই আসবে—ভাদের ফিরিয়ে দিস না।
ভাদের পেছনেই বাপ আছে অম্থ হয়ে বসে
—আশবিদের ভালা হাতে নিরে।'

মাকে তার বাণী পড়ে শোনালাম। মা অবিশ্বাস করে আমার গালে আলকোভাবে আদর করে একটা চড় মারলে। বললে, 'এসব কি আমি বলতে পারি! তুই বানিয়ে বানিয়ে লিখিচিস"

বললাম, 'আল্লার কিরে মা, তোমার প্রে হাত দিয়ে বলছি না।'

মা তথন আমাকে বাকে জড়িয়ে ধরে কপালে, চুমা খেলে। আমি বিদার নিলাম।

পথে আসতে আসতে মনে মনে **হাসতে** লাগলাম :

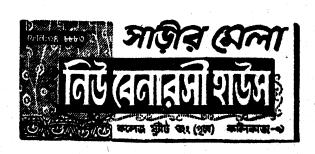
পীরিণী না ঘোড়ার ডিম!

মা—শংধ্ মা । মায়ের ব্কের ছেচ্ছেরের একটা চিচ্ন শংধ্ ম্তি ধরে বাইরে **প্রকাশ** পেয়েছে।

আটকুড়ির বেটি মরলেই তার কবরের পাশে লোকে মালসা, সরা উপত্তে করে দেবে: মাটির ঘোড়া বসিয়ে দেবে সারি সারি।

কিন্তু তার পটল-চেরা চোখদটো বে বাবের দ্বিটতে আমার দিকে চেরে রয়েছে? কি সর্বান্দা!

जानगुण जननाड





কথাটা সবাই জানে। একই দেশে আমাদের বাড়ী। কয়লাকুঠির দেশ।

চারিদিকে কাঁকর-পাথরের শাক্রনা ডাপা। বেখানে সেখানে ছোট ছোট করলার কুঠি। গাছপালার ঢাকা আর ধানের মান। মাথার ওপর অজয় নদী। গ্রীভ্যকালে অজয়ের শাক্রনা বাজি মর্ভ্যের মত ধু ধু করে।

সেদিক দিকে তাকালেই কোনও এক বাহাণী ভৈরবার ছবি চোপের সামনে হুটে ওটে। গৈরিকবসনা ভৈরবার উল্লেখ্য মার্ডি । রন্তবর্গ তেজোপাশিত চক্ষা আর শিশাল কটা। গলায় রাগ্রাকের মালা, হাতে বিশ্লা

বর্ধার কিন্তু অনা র্প! ছোটনাগপরের পার্বতা এলাকা থেকে গিরিমাটি ধোষা **জলের চল্নামে অজ**য় নদীতে। ত্ঞাত' মাত্রিকা শীতল হয়। শ্যামস্কের সে এক অপর্প রূপে প্রকৃতি যেন অকস্মাৎ তাই নেশ পরিবর্তন করে। অধ্যের জল দুকুল ভাগিয়ে দ্বার গতিতে হুটতে থাকে। বড় বড় লাল-লাল পলাশের ফুলগুলো তথনও সব **ধরে পড়ে**নি। বাকে থাকে নানারকমের আগশ্যুক পাখার দল কোন্ দূরে দেশ থেকে—উড়ে এসে জড়ে বসে। অদরে পাও পাণ্ডবের প্রতিষ্ঠিত পাঁচ^{টি} শিবের মন্দির—পাণ্ডবেশ্বর। তার ওপারেই কবি ঞ্যুদ্রের কেন্দ্রবিল্ব। এখনও মনে হয় ষেন সেইদিক থেকে গাঁতগোলিন্দর সূত্র ভেসে আসে—

...দেহিপদপঞ্জব মুদারম্! স্ক্রের তীরে চুর্নিয়া গ্রামে কবি মত্বন্দের জন্ম।

হার্গ, সে কবি হরেই জন্মগ্রহণ করেছিল। সব সময়েই তার সেই প্রসায় প্রথম্প মুখ্যানি আল্ও আমার চোথের সামনে কবেল করে। হাসি-হাসি মুখ।

হাসি যেন তার মুখে লেগেই থাকতো।
সেই বড় বড় দটি চোখ, চওড়া বুকের
ছাতি, ভার ক্বাম্থাস্থানর সেই স্নুদ্রেণিড
দেকের দিকে একবার যার নজর পড়েছে—
সারা জীবনেও সে স্মৃতি তার মন থেকে
মাছ যায়নি—সেক্থা আমি হল্ফ করে বলতে
পারি।

বেমন স্কুলর চেহারা তার তেমনি স্কুলর মন। সে রকম উদার হুদ্যবান আপনভোলা মান্য আমি আর দুটি দেখিন।

অভিজাত এক মুসলমান পরিবারের সুহতান সে।

অভিজাত কি***তু** বড়ই দরি<u>দ্র।</u>

বাড়ীর স্মথে পীরপুকুর নামে একটি পুকুর আর সেই পুকুরের প্রণিকে ছিল পীরসাহেবের সমায়িকেই আর পশ্চিমাদেঞ ছিল একটি ছোট মসজিদ।

অকন্থার দ্বিপাকে নজর্লের পিতাকে আজনিন সেই মাজার শ্রীফ আব মসজিদের সেবা করে শ্রীবিশানিবাঁহ করতে হরেছিল।

সেই পিতা বখন লোকানতরিত হলেন, তখন নিবতীয় বাস্তি কেউ ছিলেন না—িযিনি তানের সংসারের হাল ধরতে পারেন।

সংসারে অল্লবন্দোর সংস্থান নেই। নঙ্গরালের বয়স তখন আট কি নয়।

সেই অপরিসীম দঃখ-দারিদ্রের মধ্যে তার বাল্যজীবন অতিবাহিত হয়েছে।

তব্ কোনোদিন তার মুখের হাসি শ্লান হয়নি।

তার বয়স যথন দশ, তথন দেখলান—
গ্রামের মন্তব থেকে নিম্ন প্রাথমিক প্রশীক্ষার
প্রথম স্থান অধিকার করে সেই মন্তবেই
শিক্ষকতা করছে। আর করছে পতার
পরিতান্ত সেই 'মাজার সরীফে' মসজিদের
সেবা। অবসর সমরে সূর করে রামারণ
পড়াছে মহাভারত পড়াছে। 'লোটোর দলে ছোট
ছোট পালা লিখছে আর গানের সংপা
টোলক বাজাক্তে।

পদ্যে নাটক রচনা করে নাচ দিরে গান দিরে লেটো'র অভিনর করাতে গিরেই হলে। তার কবিপ্রতিভার প্রথম উল্লেম্ব।

এই সময় রামারণ, মহাভারত পড়া তার
খান কাকে লাগলো। কারণ—'লোনো'
কথাটার উৎপত্তি বোধ হয় নাটা থেকে। কবি
গানের মন্ত এর পালাগানে—বিপক্ষ দলের
গালটা প্রক্ষের উত্তর প্রভাততের 'চাপান'
থাকাতো। স্বান্ধে মূথে ছড়া
তৈর করে সূত্র দিয়ে নেচেগেরে সন্দো সন্দো
যে বত্ত ভাড়াভাড়ি জবাব দিছে পার্জাে
ভার বাহাদ্রী তত বেশি।

- সেদিক দিল্লে নজর্লের দক্ষতা অসাধারণ। তেরো চোদ্দ বছরের ছেলের পক্ষে এটা কম কৃতিছের কথা বছর চারেক কাটলো এমনি করে।

তারপর সোজা চলে গেল মাথব্রণ
দক্লে। কবি কুম্নরঞ্জন মজিক
সেথানকার হেড মান্টার। লেথাপড়া শে।
ইচ্ছা তার ছিল, কিন্তু কোনও স্থ ছিল না। সেথানে মান্ত একটি ব কাটিরে আবার সেই চুর্লিরা। বাড় তথন নিদার,ণ অলাভাব। মন আর না কিছুতেই। আবার 'লেটো'। নি পেলটোর জনা কেউ সে বছর একটি প্রনা থবচ করতে পারে না। ব্লিটর অভাবে দেশে দার্ণ অজনা। টাকা-প্রসা থবচ করে লেটোর আসর বসাবার সাধ্য কারও নেই।

নজর্ল হট্ হট্ করে ছারে বেড়াছে। নজরে প্তলো এক ক্লিচান গার্ড-সাহেবের।

—বাব্রচির কাজ করবে? রাল্লা জানে না। তাই তাই সই।

চুর্নুলিয়া, অন্ডাল, রালীগঞ্জ—তারপর আসানসোলের এক রুটির শোখান।

আসানসোল থেকে কোথায় গেল কি
হলো কিছুই আমার জানবার কথা নর।
আমি তখন রাণীগাল ইম্কুলের হাট।
রাণীগাল থেকে আসানসোল অবশ্য বেনি
দ্বের নর। একদিন গোলাম আসানসোল।
গিয়ে শ্নলাম—সেখানকার এক ব্রটির
দোকানে কিছুদিন কাল করবার পর কোথায়
যে দ্বাউ হয়ে গৈছে কেউ কিছু বলতে
পারলে না।

তার সংগ্র আবার আমার দেখা হলে। পকুরে দন্দন করতে গিরে।

সেও আমাদের সেই ঘাট-বাঁধানে। প্রকুরে স্নান করতে এসেছে।

জ্ঞানক দিন পরে দেখা। কেমন তেন রোগা হরে গেছে মনে হলো।

মুখের হাসি অবণা ঠিক ভেমনিই আছে।

সবই সে আমাকে বললে। আসনশোলের এক প্রিল্ম-ইস্সপে-কটরের সনজরে পড়ে গিরেছিল। তিনিই ভাকে নিয়ে যিরেছিলেন বহু মুদ্ধ দেশ-

विमिन्दर । स्मिथास्य काष्ट्रीय-नियमा मास्य কটি গ্লাম আছে—সেই গ্লামে।

একটা ইদকুলে ভাকে ভতি করে দেওয়া য়েছিল। স্কুলটা ছিল গ্রাম থেকে পাঁছ' ইল দুরে। জল কাদা ভেঙে সেই ইম্কুলে **ক বেতে হ**তো।

সে কি সহজ কথা! নজরুল गत भाषात्मा ना। भाषितः থান থেকে।

এসে আবার সে ভতি হয়েছে শিরাড়-🖟 রাজার ইম্কুলে। ফ্রি স্ট্রাডেন্ট।

এবার পাকাপাকি বলেনকত।

আমাদের সেই পঢ়ুকুরটার কাছে ছোট র্ট মাটির ঘর। সেইটিই ইম্কুলের ্মেডেন বোডি^{*}ং। মাত পাঁচজন ছাত্র ি। তার ভেতর নজর্ল একজন। র,সকে প্রসাক্তি দিতে ইয় না। তার শর রাজবাড়ী থেকে প্রতি মাসে সাতাট বে টাকা পায় :

भ.जन मृत्या जालामा हेम्क्टल शीफ। ারজন শিয়ারশোলে একজন রাণীগঞ্জে।খাব মার্থকাছি। বের্নার্ডং তে, আরও কাছে।

এইখানেই স্বা হলো আমাদের র্নাহতোর ১৮%। লেখা লেখা খেলাও লতে পারেন।

নজর্ল লেখে গান, কথিকা, আমি ল'থ কবিতা।

তারপর যথন আমরা মাট্রিক্লেশন মাসের হাত, হাফাইয়ারলি প্রীক্ষা চল্ছে। র্গালকে তখন নানারকমের **পোন্টারে** বজ্ঞাপনে শংর একেবারে **ছেরে ফেলে**ছে। -কে বলে বাজ্যালী নিবাঁখ, কে *ব*লে াশালী শাজহেনি : আসুন বাজ্যালী গলটান যোগ দিন। স্বাধ্বিদ্যা **লেথবার** ্বণ সংযোগ।

আমরা সে স্যোগ পরিত্যাগ করলাম

দৃজনেই নাম লেখালাম য**়**েখর ।তিয়ে। কাউকে কিছুনা জানিয়ে লাকিয়ে গালিয়ে গেলাম আসনশোল। সেখান থেকে দেশতা বিক**ু**টিং আপিস।

কিন্তু কেমন করে না জানি সব জ্ঞানা-র্থান হথে গেল। এবং তার ফ**লে জামার** ুকের মাপ হলো আধ ইণ্ডি কম। আমার म्हा**ह**ी ।

কাদতে কাদতে ফিরে এসে আবার সই স্কুল!

মার্টিকুলেশন পাশ করে আমি যথন লকাতায় পড়ছি, নজরলে ফিরে এলো গরাচী থেকে। যুল্ধ শৈষ হয়ে গৈছে। নঞ্জ-লের ছ্টি।

আমরা আমাদের সাহিত্যের প্রোগ্রাম ानरक निकास।

নজর্ল এক 'বিদ্রোহী' কবিতা নিয়েই দশবিখ্যাত হয়ে পড়লো।

নজর্ল হলো কবি। আমি হলাম গল্প-

এবার যা হলো সে সব কথা সবাই गानः नव्यप्रदेशव क्यांचीयत्वव श्रीवीध भाव इव अध्यव (११४४ - १७४८) वह क्टरकार



বংসরের ভেতর নজরুল তার আর্থ্ কর্মা শৈষ করে দিতে বাধ্য হয়েছে। কবি নজরুল অপ্রতিবন্দ্রী স্রাশলপী নজর্ল যথন তার খ্যাতির উত্তেগ শিখরে তথন তার স্থার रूटना मृतारतामा वर्गाधाः भक्ताघारक भुन्तर হয়ে গেলেন তিন।

তার চিকিৎসার জন্য নজরাল সর্ব-শ্বান্ত হয়ে গেল।

তার পরেই সে নিজে হলো অসংস্থ।

প্রিয়তমা পত্যীর রোগম্ভির জন্য সে হা করেছিল-না দেখলে তা বিশ্বাস করা যায় না। এলোপ্যাধি, হোমিওপাথী, কবি-রাজী—সব চিকিৎসাই যথন ব্যর্থ হলো ছখন চললো ভগবানের নিকট নিয়ত প্রার্থনা, প্রজা অচনা—আধিদৈবিক, আধ-ভৌতিক আধ্যাত্মিক ক্লিয়াকর্ম-ক্লিছাই বাদ र्शन ना।

নজর্লের মনের অবস্থা তথন এমনি মে কিছুই লিখতে পারছে না।

অর্থাভাবে বিপন্ন নজর,লের যা কিছন **ছিল সব গেল। মোটরগাড়ীটা বিভিন্ন করে** ফেললে। বালিগঞ্জে একট্খানি জায়গা কিনেছিল সেটি বিক্লি হলো লাইফ ইন্সও-রের পালিসিগলে 'সারেন্ডার' করলে গ্রামো-ফোন কোম্পানীর রেকডের রয়েলটি বন্ধক রাণলে বই-এর কপিরাইটা বিভি হয়ে গোল ৷

এককথায় বলতে গেলে নজরুলের তথ্ন আর কিছু নেই।

অনেক দঃখক্ষ্ট সহ্য করবার পর গ্রামোফোন কোম্পানীর কল্যালে তখন যদি-বা সে একটাখানি সংখের মাখ দেখোছল, এইবার তাও গেল।

সর্বহারা হয়ে তথন সে একরকম পথে পথে ঘারে বেড়াচ্ছে। কখনও পায়ে হেণ্টে কখনও বিক্সায় চড়ে পথ চলছে। কোথায় भारताष्ट्र नाकि कान् एन्यन्थात रेप्ट ७४।४ পাওয়া যায়, ছাটলো সেই অথ্যাত অবজ্ঞাত পল্লীগ্রামে। তিনদিন উপবাস করে ধর্ণা দিয়ে তথ্ধ নিয়ে এলো। অতাতত নিংঠার সংক্র সে ওষ্ধ খাওয়ালে স্তাকে 📁 🕟

किइ.इ इला मा।

যে-মাথে হাসি লেগেই থাকতো সে মাধ হলো ম্লান। নিতাম্ত নির্পায় অসহায়ের মত চুপটি করে বঙ্গে থাকে স্তারি শিয়রে, একদ, ভৌ তাকিয়ে থাকে তার মুখের দিকে। কি যে করবে কিছাই ব্রুতে পারে না।

এমনদিনে থবর পেলে ভারমণ্ড হারবার থেকে মাইলভিনেক দ্রের একটি গ্রামে এক প্রেতসিম্প সাধ্ থাকেন, তিনি নাকি মন্ত্র পড়ে এবং আরও কি-সব ক্রিয়াকাণ্ড করে দ্রারোগ্যা ব্যাধি নিরাময় করে দিতে পারেন।

্র্যান্তে টাকা নেই অথচ খবর নিরে জানলে সাধ্রে ঠিকে চুক্তি পাঁচশ' টাকা।

প্রথমে বারনা দিতে হবে প'চিশ টাকা, ভারপর সাত দিনের ডেতর রুগা বথন উঠে হোটে বেড়াবে তথন দিতে হবে পাঁচশ' টাকা।

অনেক বড়লোক অনুরাগী শতাবক ছিল নজর,লের। সূথের দিনে দিবারাতি বারা ভাকে ঘিরে থাকভো, তথন আর তার। কেউ পাশ মাডার না।

কাব্লিওলার ফাছে টাকা ধার করে নজর্ল ছাটলো সেই ভূতসিম্ধ সাধ্র কাজে।

রোগ সারলো না। ভূতসিম্প লোকটা বললে, সময় লাগবে।

তার বৃক্তর্কি তথন ধরা পড়ে গেছে। পাঁচনা টাকা আর দিতে হলো না। পাঁচনা তিরিশ টাকার ওপর দিরেই গেল।

কিন্তু পাঁচনা টাকা তথ্ন সংসারে থরচ
হয়ে গছে। দুই ছেলে সবসোচী আর অনিবৃশ্ব তথন কলেজের ছাত্র। দুবীর সেবাশ্রা্থার জনা মাইনে করা দুবি মধ্যে
আছে, অভ্যাপত অতিথি এবং পোষোর
সংখ্যা কম নয়।

রোজগার করতে হবে নজন্মলকে।

রোজগার তথনও সে কর্রাছল। কলিকাতা বেতারকেন্দ্রে নজর্ল তথন দেশী-বিদেশী নানান্ রাগ-রাগিনার সংগ্রিপ্রদের দ্রহ্ পরীক্ষা-নিরীক্ষায় অসাধারণ জন-প্রিয়তা অজন কর্রাছল। বেতারের সংগীত-বিভাগে সে অননাসাধারণ এবং যুগাতকারী বৈচিত্রার ভুলনা হয় না। হারামণি হর-গোরী, নবরাগ মানিক তাব পরিচয়।

অথচ ঠিক সেই সময়ে একদিন বেতারের শ্রোগ্রাম করতে করতে নজরুলের হঠাং বাক্রুম্থ হয়ে গেল। তার ছিল হাই রাড শ্রেসার। মানসিক দুম্দিট্ড। তখন তার সহোর মাত্রা অভিক্রম করে গেছে।

যে সর্বনাশা বাধি নজর্লের মত এক-জন প্রভারকবি এবং দ্বাশভ স্রাশলপীকে আমাদের কাছ থেকে চিরদিনের মন্ত দ্বে সারবে নিরে গেছে, সেই ব্যথির এইথানেই হলো ব্যথি প্রথম স্তেপাত।

দেশের এত বড় দৃ্তাগ্য আর কল্পনা করা বাং না।

ধীরে ধীরে সে রোগ তার বেড়েই বেতে লাগলো।

চিকিৎসার বুটি হলো না। এমনিক বিলেতে পাঠানো হলো, জেনেভার পাঠানো হলো। কিন্তু অর্থাভাবে সবই হলো এত দেরিতে যে, প্রতাকটি দেশের বিখ্যাত চিকিৎসকেরা সকলেই আফ্রণোষ করে বলতে লাগলেন, বড্ডো দেরি হরে গেছে। আর কিছুদিন আগে এলে বোধকরি বা কবিকে আমরা স্ম্থ করে দিতে পারতাম। এখন আর উপায় নেই।

কবির প্রতি দেশবাসীর এ ঔদাসীন্যের কথা আজ আর ডেবে কোনও লাভ নেই।

শ্রদাসীম্যের কথা যদি ভাবতেই হয় তো ভার্বাছ শ্রে তাঁদের কথা—যাঁরা তাঁদের ভাগ্যের জোরে নামের তালিকায় শার্ষপথান অধিকার করে বসে আছেন। কবি-সাহি-তিকদের দশ্চমাশ্রের কর্তা—সরকারী এবং বেসরকারী প্রকার বিতরণের সময় বিচারকের ভার পতে তাঁদেরই ওপর।

তাদের বিচারে নজর্ব অপাপ্তাতয়। সে-সব কথা বলতে হলে অনেক কথাই বলতে হয়।

কান্তেই সেকথা আজ বলবার কোনও প্রমোজন নেই।

আমি শৃধ্ বলবো সেই সব কথা— যেগ[্]ল বলার আন্ত একান্ত প্রয়োজন।

আমাকে কডলোক চিঠি লিখে টোল-ফোন করে জানতে চেয়েছে, নজরুল কতবার বিয়ে করেছে: গাঁরা জানে তাঁর পাঁচটি স্তানী। প্রতিবাদ করেছি। বলেছি তাঁরা ভুল শনেছেন। বিয়ে তার মান্ত একটি। এবং সেই একটি স্তানী নিয়েই সে তার জাঁবন কাটিয়েছে। সে স্তানী এখন আর বেণচে নেই। তাঁবই দাই জেল—স্বাস্থাচনী আর অনিরম্প।

আর একটি নামে মান্ত বিয়ে তার হয়ে-ছিল, কিন্তু সে বিয়েটাকে বিয়ে বলা চলে না। মজাফ্ফর আহম্দ-সাহেবের নালবলে ইসলাম' বইখানি পড়ালেই দেকথা আপনার। ব্যাতে পারবেন। তাতে বিস্তাবিতভাবে সব কথাই লেখা আছে।

ভারপর আর একটা কথা।

অনেকবার অনেকে আমাকে প্রশন করেছে—কবি নজর্লের আপনি অন্তরংগ বন্ধা। আপনি ধলনে আমরা যা শনের্নছি তা সতি কিন।"

—কা শ্নেছেন?

—কবি নজর্ল ইসলাম রোজ ক' বোতল মদাপান করতেন? এখনও নাকি তিনি মদ না পেলে চাংকার করেন?

বলেছিলাম, বা শুনেছেন সব মিধ্যা কথা। আমার কথা যদি বিশ্বাস করেন তো এইট্কুমাত জ্বেনে বান—নজর্ল জীবনে কোর্নিন মদ্য স্পশ্ করেনি।

তারা বোধ হয় আমার কথা বিশ্বাস করেছিল। যাবার সময় বলে গেল—তাহ'লে যা শনেছি তা মিথ্যা গ্রেক্তব! — আছে হা। মিখ্যা গ্ৰেব। নক্ষর্ব কোনোদিন মদ খায়নি আর ধ্মপান করেন।

সেদিন একটি পত্রিকায় দেখলাম—ছাপ্র হল্লেছে—নজর্ল ইসলাম রবীন্দ্রনাথে সঙ্গো দেখা করতে গেছে। জোড়াসাকে বাড়ীতে সির্ণাড়র ওপর চাংকার করটে করতে উঠছে—গ্রেজি! গ্রেছি!

রবাদ্দনাথের সজে মংখাম্থি দে হতেই প্রথম কথা!—আমার নাম কা নজরুল ইসলাম। আমার নাম বোধ অপান শ্লেছেন।

রবীন্দ্রনাথের সংশ্য নজরংলের সেই প্র দেখা। রবীন্দ্রনাথ বললেন, শংনেছি শং নর্তামার বিদ্রোহী কবিতা আ পড়েছি।

নজর্ল ইসলাম বললে, আমি আপনী হত্যা করবো।

রংশিলুনাথ মৃদ্ হাসলেন। বণলেনী তোমার হাতে আমি নিহত হতে যাব কোন্ট্ দঃথে?

নশ্বনুল বললে, কারণ আমার বিদ্যোহীর মত কবিত। আপ্নি- লিখীতে পারেন্মি।

্র'জনেই তখন উচ্চ হাস। করে ু উঠলেন।

্যিনি লিখেছেন এই কথাগ্রিল তিনি। নাকি শ্নেছেন পবিত্রালগ্লীর মুখে।

অথচ আশ্চর্য। পবিও কংনত এ-সব কথা কোতে পারে না। কারণ এর এক বর্ণত সভানয়।

পৰিত্ত নজবুলকে প্ৰথম নিয়ে গিয়ে-ছিল কৰীন্দ্ৰপথে কাছে। ভেড্ৰাসাবোৰ বাড়ীতে তাৱা যেদিন যায়, আমি ছিলাম ভাদেৰ সজো। কাজেই আমি সব কানি।

নজর,ল বিদ্রোহী কবিতাটি গ্রে লিখেছে। তার খ্যাতি তখন ছড়িরে পড়্ছে চারিদিকে। নজর,লের জেখা গান তাবই দেওয়া এক অভিনব স্থা অবেশ তখন গাইতে সূরে, করেছে।

নজার্জের খ্ব ইচ্ছা চার্টন্দ্রনাথের সংখ্য পরিচিত হবার।

এ-সব আপারে পবিচ্টা অমাদের দেওুব কান্ধ করে।

হঠাৎ পবিত একদিন এসে বললে, চল আজকেই নিয়ে যাব।

রবীন্দ্রনাথের সজ্যে অগ্রিম সে কোনও অপ্রেন্ট্রেন্ট্র করেছিল কিনা তথন ব্রুত্ত পারিনি। আমি নজরলের কাছে বসে-ছিলাম। পবিশ্র বললে, তুইও চল্।

আমারও যাবার ইচ্ছা ছিল, কিন্তু তথন আমি মাত কয়েকটি কয়লাবুটির নাঁওতালী গংপ লিখেছি। আমার কোনও পরিচয় নেই। আমি মাত নজরালের সহপাঠী বৃধ্ধা। সেই পরিচয় নিয়েই আমিও গেলাম তাদের সংগ্।

কাজেই আমি জানি নজর্ল রবীন্দ্রনাথকে গ্রেজি বলে কথনও ডাকেনি। আমি
আপনাকে হত্যা করবো' তো বলেইনি।
নজর্লের প্রাণপ্রাচ্য ছিল প্রচুর কিন্তু
কোনও প্রকার ওপত্য ছিল না।

এমনি সব মিথ্যা অপপ্রচার তার নামে বে কত হরেছে তার সীমা-সংখ্যা নেই।

১১৭० भारत वाशनात लाग

যে-কোন একটি ফুলের নাম লিখির। আপনার ঠিকানাসহ একটি পোণ্টবার্ড আমাদেব কাছে পাঠান। আগামী বারমাসে



আপনার ভাগোরে
বসতারিত বিবরণ
রামরা আপনাক
পাঠাইব ইতাতে
পাইবেন বাবসারে
বাত লোকসান
বাকবিতে উর্লক্তি
ব্যবহার ক্রান্ত্রন

সমাধ্যে বিবরণ—আর থাকিবে দৃষ্ট্রাচের প্রকাপ চইতে আত্মরক্ষার নিদেশি। একরার প্রীক্ষা করিলেই ব্যক্ষিকে পারিবেন।

Pt. DEV DUTT SHASTRI Raj Jyotshi (AWC) P B. 86 IULLUNDUR CITY

নজরুল সেদিন তার 'বিদ্রোহী' আবৃত্তি র শর্নিয়েছিল রবীন্দ্রনাথকে। চার পাঁচটি ন গেরেছিল। ভারপর রবীন্দ্রনা**থকে সে** নুরোধ করেছিল গান গা**ইবার জন্যে।** রবীন্দ্রনাথ দুটি গান গেরেছিলেন।

্তি করেছিলেন। নজর্লকে তার খবে ভাল লেগেছিল। ছিলেন, তুমি চারণ কবি। চল তুমি ার শাণিতনিকেতনে। সেখানে তোমার ু প্রাচ্ছদের সব ব্যবস্থা করে দেবো 🐉। খাবে-দাবে মনের আনন্দে গান ুব, গান গাইবে, কবিতা **লিখবে। আর**

নে খ্লী ঘ্রে বেড়াবে। নজর্ল ফিরকা**ল স্বাধীনতাপ্রির। জবাবে** বললে, আমি **ভেবে বলবো।**

াবীদূনাথ বলেছিলেন—নিশ্চয় ভাব**ে।** ার যদি ইচেছ নাহয় তো যাবে না। নার ইচ্ছার বিরুদেধ কোনও কাঞ্চ আমি তে বলবো না।

নজর,লের তখন থাকা-শাওয়ার কন্টের ্রন্ত ছিল না। থাকতো ম**জাফফর আহমদের** সংখ্যা তালত**লা লেনে। দ্জনেরই অবস্থা** সমানী। শীতকাল। গায়ে দেবার ক**-বল** ^{নেই।} মেঝেতে পাতবার বি**ছানা নেই।**

কি রকম ভাবে, **কি অকশ্যায় এই** াড়ীতে ছে'ড়া কম্বলের **ওপর শ্বেন-শ্বে** সে 'বিদ্রোহী' কবিতাটি র**চনা করেছে আমি** জানি। সাদা ফ্**লম্কেপ কাগজের ওপর** কাঠের পেশ্সিল দিয়ে লেখা। লিখবার জনে। না-আছে কালি, না-আছে কলম। कार्रुत रशिम्त्रनिं निर्शनित्थ रहाउँ शरा গেছে। তার জন্যে কোনও দৃঃখ দেই, অসন্তোষ নেই।

সেই দিল-দরিয়া মেজাজ আর ম্থের হা'স তার লেগেই আছে।

আমি কিন্তু চেয়েছিলাম সে শান্তি-নিকেতনে বাক।

किन्छु त्म राम ना किन्द्राउदे। দ্র'চার দিন পরেই সবক্ষিত্র ভূলে

এই তার চরিত।

কিন্তু দানান পত্ত-পত্রিকার, লোকের মুখে মূতে নজরুল সন্বধ্যে যে-সব মিথ্যা কথা প্রচারিত হচ্ছে, ভয় হয় ভবিষ্যতে আমরা বখন কেউ থাকবো না, তখন এইগ্রালই না সত্য হয়ে দাঁড়ায়!

वर्ष रश्वतात विष्यतमा कम नत्र। निष्यत প্রতিভার জ্বোরে যারা বড় হয়—যারা খ্ব ক্ম সমরের ভেতর জনগণের শ্রন্থা আক্ষণ করে—সমাজে (বিশেষ করে আমাদের এই বাঙালী সমাজে) এক শ্রেণীর পরশ্রীকাতর মান্ব আছে যারা তা সহা করতে পারে না। তার নামে নানারকম কুংসা রটনা করে আনন্দ পায়। প্রতিবাদ করবার মত কেউ যদি না থাকে তো সোনায় সোহাগা! তার নামের সপো নিজের নামটিকে জাড়ে নিজে বড় হবার চেণ্টা করে।

যে নজরলের সংগ্যতার পরিচয় হয়ত ক্ষণিকের, সেই নজর্ল সংবশ্ধে কথা বলতে গিয়ে অপরিচিত লোকজনের সামনে वर्ता वमाला - अस्तक मिन शास स्मिन काकौत मध्य (पथा श्ला। (पथलाभ मकान বেলা মদ খেয়ে হৈ-হৈ করতে-করতে পথ চলছে। আর একট্ব হলেই গাড়ী চাপা পড়তো, আমি দ্ব হাত বাড়িয়ে ধরে ফেললাম। বললাম, মদ খেয়ে-খেয়েই তুই নিজের সম্বন্দ কর্বি দেখছি। যথন-তখন ওগ্নলো আর ওরকম করে গিলিস্থে। এই বলে যথেষ্ট তিরুম্কার করলাম তাকে।

হি-হি করে হা**সতে লাগলো। লম্ফা-শর্ম** কিছ্নেই। তার্যদ থাকতো তো রবি ঠাকুরের চেয়ে বড় কবি হতে পারতো সে।

বললাম, ব্লবীন্দ্রনাথও খান। আমি निष्क रमर्थाष्ट्र । द्वाक अरम्धारवना-ध्र ভাল বিলিতি মদ — দুটি পেগের বেশি নয়। এই ব্রকম সংখ্যা দরকার।

এখন থেকে বছর-পাঁচেক আগে রহজ্যর কাছে কোন্ এক পলীগ্রামের একটি रेम्क्लात कराविका एक भागतान काम्या १-সব পালন করবে বলে আমাকে নিমল্যণ করতে এলো।

কিছ,তেই না বলতে পারলাম না। রাজী হয়ে গেলাম।

সন্ধ্যে সাতটায় সভা। বললাম, ঠিক ছ'টায় গাড়ী নিয়ে এসো। আমি বৈশিক্ষ**ৰ** থাকতে পারবো না।

জ্যৈত মাস। আকাশে মেঘ ছিল। বিকেল থেকে বৃষ্টি আরম্ভ হলো।

সতটা পর্যশত যখন গাড়ী এলো না, ভাবলাম বুঝি তারা আসতে পারলে না। ভালই হলো। বৃষ্টি-বাদলার দিনে যেতে र्माना।

নিশ্চিন্ত হয়ে বসে আছি। ছড়িতে তখন প্রায় আটটা।

খুব আওয়াজ করে একটা গাড়ী এসে দাঁড়ালো আমার বাড়ীর দরজায়।

জানলার পথে তাকিয়ে দেখি-অনেক-কালের পরেনো মডেলের ছোট একটি ফো**ড**ি গাড়ী থেকে সেই ছেলে দুটি নামছে।

বললাম, এখন আর গিয়ে কি হবে? এইখানেই তো আটটা বান্ধলো!

ছেলে দ্বি ছাড়লে না কিছুতেই। একেবারে কাঁদো-কাঁদো ভাব। —'আপ'A

নজরুল-রচনাবলীর মত নজরুল-সংগীতের স্বর্গাপিগ**ুলিও আমর**।

नজরুল-পক্ষঃ ২৫মে—১৫জুন

১১ই জ্যৈষ্ঠ কবি নজনুলের জন্মদিনের সম্মান্যংথ আমাদের প্রকাশিত সকল গ্রন্থে সকল ক্রেডাকে ২০% এবং প্রতক বাবসায়ীদের ২৫% কমিশন ২৫ মে থেকে ১৫ জনে পর্যাত দেওয়া হ'লেছ। এই ভারিখের মধ্যে পাওয়া মফঃম্বণের সম্দের অভীরে একই হারে ক্ষিশন। নজর্ল রচনাবলী আমরা খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশের ব্যবস্থা করেছি। আজ পর্যস্ত তিনটি খণ্ড বেরিয়েছে। মোট ম্লা ৪৫। নজর্ল-পক্ষের মধ্যে (২৫ মে-১৫ জন্ন) আশাতীত হ্রাস ম্পো মাত ৩৬ টাকায় খণ্ডগালি সংগ্রহ কর্ন।

নজরুল রচনা-সম্ভার

অবাশন্ট খণ্ডগুলি প্রকাশিত হচ্ছে। ১ম খণ্ড ১৫<u>: ॥</u> **২য় খণ্ড ১৫: ॥ ৩য় খণ্ড ১৫:** ॥

নজরুল-গাতির স্বরলিপিঃ খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশ করছি। ৫ খণ্ড বেরিয়েছ। মোট ম্ল্য ২৭.৫০। নজানুল-পক্ষে ৫ খণ্ড একতে নিলে মাত্র ২০, পাবেন। ১ম খণ্ড ঃ কমলদাশ গণ্ড ও ফিরোজা বেগমের স্ক্রবছার ৫০৫০ বেলরে জবা বল, কালো মেরের পারের **তলার প্রভৃতি ৪০টি শ্যামাসং** গীত)। ২র খন্ড: কাজী অনির্ভ্প ও ফিরোজা বৈগমের **লবরাগ** ৫-৫০ (নীলাম্বরি শাড়ী পরি, শাওন আসিল ফিলর, তুমি সংশর তাই চেরে থাকি প্রিয় প্রভৃতি ০০টি গান)। ৩য় খণ্ড ঃ কাজনী অনিরম্প ও বেচ, দত্তের সংরুষদার ৫-৫০ (রিম কিম রিম কিম রিম কিম ঘন দেয়া বরবে, গানগালি মোর আহত পাখীর সম, নাইয়া भीरत हालाও उतनी श्रकृष्ठि विशास गाः)। 8थ थन्छ : निष्ठाई चर्गत्कत गर्वेकील ৫-৫० (हरता ना मन्तराना पात रहरता ना ध नतरन পানে, মোর প্রিয়া হ'বে এস রাণী, আর কড দিন বাকী, তব গানের ভাষায় সংরে বংঝেছি প্রভৃতি ৩০টি গান)। ৫ থণ্ড : জগৎ ঘটকের

ৰেণ্কো ('বণকা, ও কে বাজায় বছায়া বনে, যবে তৃলসী তলায় প্রিয়া সন্ধা বেলায় প্রভৃতি ৩০ গান)। এ ছাড়া নজর্ল-বিষয়ক আরো করেকটি গ্রন্থ: আকারণ আজাজি আল্-আমানের মজর্ল-পরিত্রমা ১৫:॥ শৈলজানন্দ ম্থোপাধারের আমার কথা মজর্ল ৮:॥ খান মঈন্দ্বীনের যুগাল্লী নজর্ল ৬.৫০ 🛭 আবদ্ল কাদিরের 🏻 কবি নজর্ল ত্ 🗓 কটোল গর জন্য লিখনে :

হরুফ প্রকাশনী ।। এ-১২৬ কলেজ ম্বীট মার্কেট ॥ কলকাতা-১২

医乳腺管膜炎 机砂糖 能说滤槽或件。





আর শক্তিদায়ক পুষ্টি যোগানো

আরেক জিনিষ

আর কেমন মজা কোরে চিবিয়ে থেতে থেতে সেই পৃষ্টিলাভ করা যায়! পালে মুকো বিষ্ণুটে দুধ,গম,আর চিনির থাবতীয় উপকারিতা পাওয়া যায়— প্রোটনে আর ভিটামিনে একদম ভরপুর।



ভাইভো



বাদ্যদের পক্ষে সবিশেষ উপকারী

ভারতের সর্বাধিক বিক্রীড বিষ্কৃট

নজর্লের হত্যাকর

अर्पभी

न्यक्रियामां- क्रिन्ट्राम-(अशांक्रियासा एवंड्राम् । अपां अक्षित प्राविष् अव्याः

1 स्मिर हर हाम्पर ग्रामी - (हार प्रायक क्राया मजीन . (हार यक्षी + प्रकार कम्

सुट्टि किरापुर १४५/अभू॥ अप्टि प्राप्ति में त्रा प्रिका वैस्व सुन.

अर्प्शिक्ष भक्षी (यर् प्रिक्श श्रित।

গৈলে মিটিং আমাদের আরক্ত হবে না

রি। কবি সম্বদ্ধে আমরা বিশেষ কিছুই

দিন দা। আপনি তাঁর বধ্ধ। আপনার

হু ধেকে শ্নবো বলে অনেক কলেও

হু চাঁদা তুলে আমরা এই সভার

রোজন করেছি।

ফিরতে অনেক রাচি হবে ব্রত ছি। তব্ তাদের অনুরোধ এড়াতে না র গাড়ীতে গিয়ে উঠলাম।

्किट, गुत्र गिरसरे गाफ़ी रगन रम्स

ীটপ-টিপ করে বৃণ্টি পড়ছে। কাপড়ের -দেওয়া প্রনো গাড়ী। তার ওপর বির গেছে ডাউন হয়ে। ছেলে দুটি াা, ড্রাইভার নামলো গাড়ী থেকে।

জামিও নামতে থাচ্ছিলাম, দ্লাইভার কে সান্ধনা দিলে। – আপনাকে াতে হবে না সমর। এক্ষ্মি ঠিক করে লছি।

এই বলে তিনজনে ঠেলতে আরম্জ
করলে। ঠেলতে-ঠেলতে অনেক অভদ্র
মানতব্য করতে লাগলো গাড়ীর মালিকের
টুদেশে। — হারামজাদা কৃপণ-কঞ্জানের
কৈশেষ। জানে আমাদের মিটিং, তব্ বেছে
বিছে চারখানা গাড়ীর ভেতর সব চেয়ে
্যটা খার্পি সেই গাড়ীটাই দিয়েছে।

এकि छि एक तमाम, मेशा करते मिरमण्ड अहे सर्वको। तम रहेवा।

হে ইয়ো-হে ইয়ো করে কিছ**্ দ্রে ঠেলতেই** গাড়ী জার্ট হয়ে গেল।

ভারপর আবার আর একবার।—'তেল ফুরিয়ে গেছে।'

পেটোল-পাদেপর কাছে দাঁড়িরে তেল নেওয়া হলো।

্রমনি করে থামতে-থামতে গিয়ে যখন প্রণীছোলান, দেখলান — গ্রামের রাস্তার প্রণো ছোট একটি ইস্কুল-বাড়ী। চারিদিক লোকে-লোকারণা। দরজাগ্রলা পর্যাত লোকে ঠাসা। ভেতরে যাবার রাস্তা পর্যাত নেই।

মিটিং আরম্ভ হয়ে গেছে। মাইকের সামনে 'ভায়াসে' গাঁড়িয়ে কে একজন বন্ধৃতা করছেন। বজাকে দেখা যাচ্ছে না, তাঁর গঙ্গার আওয়াজ শোনা যাচ্ছে।

সামনের একটা ঘরে নিয়ে গিয়ে আমাকে বললে, আপনি একটা বস্ন সাার, আমরা লোকজন সরিয়ে রাস্তাটা ঠিক করি। আর একটি ছেলে বললে, ততক্ষণ

একট, চা খান।

বলেই সে বোধকরি চা আনতে গেল।
চা-খাবার প্রবৃত্তি তখন আমার নেই।
বক্তার কথাগ্লো আমার কানে এসে ধরক-ধরক করে বাজছে।

এ কীরকম মিথ্যা কথা বানিরে-বানিরে বলভেন তিনি?

বলছেন—কবি মোহিতলাল মজ্মদার মানসী মর্মবাণী পত্তিকার একটি প্রবংধ লিখেছিলেন। প্রবংধটির নাম—আমি'।

কবি নজর্ল ইসলামের 'বিদ্রোহী' কবিতা নিয়ে আমরা যথন খুব হৈ-চৈ করছি, সারা দেশে সাড়া পড়ে গেছে, স্বাই বলছে অস্ভূত কবিতা, ঠিক সেই সময় কবি মোহিতলাল আর শনিবারের চিঠির সজনীকাত দাস—দ্'জন এক সপ্তো প্রচার করলে—নজর্ল ইসলামকে নিয়ে তোমরা এত হৈ-ঠৈ কোরো না। আসলে সে একটি পালা চোর। তার বিদ্রোহী কবিতাটি আসলে মোহিতলালের 'আমি' প্রবংধর হ্বহু নকল। অর্থাং চুরি। অথচ নজর্ল তা স্বীকার করে নি।

শনিবারেব চিঠির সজনীকাত লিখলে

—নজর্ল আসলে কবিই নয়। গ্রায় অশিক্ষিত এবং মুখ'। তার গানগুলি সব রবীদ্দাথের নকল, কবিতাও তাই। আমরা তা প্রমাণ করে দিতে প্রস্তৃত।

শনিবারের চিঠিতে সজনীকাশ্ত বিদ্রোহী' কবিতার একটি 'প্যারোডি' ছাপিরেছেন—

আমি বাাং!

আমার লম্বা লম্বা ঠ্যাং!...

অনেকথানি কবিতা তিনি মুখন্থ বলেছিলেন। আজ আর আমার তা মনে নেই। মনে থাকা সম্ভব্ও নয়।

তার পরেই বলেছিলেন, একদিন
সংখারেলা ধর্মতিলা দুর্গীটের ওপর নজর্ম আর মোহিতলালকে তিনি নাকি অকথা
ভাষার গালাগালি করতে আর ছাতি নিয়ে
মারামারি করতে দেখেছিলেন। ছাতিটা
ছিল মোহিতলালের হাতে। তাই দিয়ে
নজর্মেকে তিনি এমন মার মেরেছিলেন যে
নজর্মেক ফ্টেপাতের ওপর শুরের পড়ে বলেছিল—আর আমি কখনও এমন কাজ
করবো না।

আমি আর চুপ করে থাকতে পারলাম না। নিজেই উঠে দাঁড়িয়ে ভেডরে যাবার জনো লোকজনকে ঠেলে পথ করে নিয়ে এগিয়ে যাজিলাম, এমন সময় মাইকের সামনে কে যেন বলে দিলে—

'আমাদের সভার সভাপতি এসে গেছেন। এক নি তাঁকে আমি এইখানে নিয়ে আসছি।'

বলবামাত বস্তার বস্তুতা বংধ হয়ে গেল। আমি সেই ভিড়ের পেছন থেকে চিংকার করে উঠেছিলাম — 'ও'কৈ যেতে দেবেন না। আমি যাচ্ছ।'

ভেতরে কিসের যেন গোলমাল উঠলো।
লোকজনের পেছন থেকে আমি কিছই
দেখতে পাচ্ছিলাম না। অনেক কণ্টে ভারাসে
ৰখন গিরে পেণিছোলাম তখন শ্নালাম—
যিনি এতক্ষণ বক্তা করছিলেন, আমার
মাম শ্নেই তিনি পালিরেছেন। কোথাকার
কোন্ একটি ইস্কুলের টিচার তিনি।
ছেলেরা তাঁকে টেনে ধরে রাখতে পারে নি।

পোলাবেন জানি। পালানো ছাড়া তাঁর কোনও উপার ছিল না।

আমি সভার মাঝখানে স্বাইকে জাদিরে
দিতে বাধ্য হলাম—তিনি বে-স্ব
কথা আপনাদের শুনিরে গোলেন তার এক
বর্ণ সত্য নর। মোহিতলালের সপ্রে
দজর্লের মনোমালিনা হরেছিল সত্য,
কিন্তু রাস্তার ওপর ছাতি নিয়ে মারামারি
তাঁরা ক্থনও করেন নি।

শনিবারের চিঠির সজনীকাশত
নজর্লের 'বিদ্রোহাঁ' কবিতার 'প্যারোডি'
একটি লিখেছিলেন বটে, কিশ্তু নজর্ল জারও লেখা কোনোদিন নকল করেছে কিশ্য কারও লেখা কোনোদিন অন্করণ করেছে — সজনীকাশত সেকথা কথনও লেখেন নি। লেখা দ্বে থাক, মুখে উচ্চারণ প্যশ্ত করেন নি।

মোহিতলাল এবং সজনীকাণত দ্বেনেই
আর ইহজগতে দেই। নজরুল বেণচে আছে,
কিণ্টু তার বিরুদেধ কোনও অপবাদের
প্রতিবাদ সে করবে না জেনেই এই সব
পশ্ভিতশ্যন্য ইতর এবং মিথাবাদী ব্যক্তিরা
নানা রক্ষের ম্খরোচক গণপ তৈরি করে
ভানের গায়ে অযথা কাদা ছিটোতে আরম্ভ
করেছেন।

সজনীকান্ত নজরুলের বিদ্রোহী কবিতার 'প্যারোডি' (আমি ব্যাং আমার কবা কবা ঠ্যাং) যথন লিখেছিল, তথন তাঁর সপো নজরুলের পরিচর পর্যন্ত ছিল না—কেউ কাউকে চিনতো না। শনিবারের চিঠির তথন প্রথম জন্ম। চিঠির আকারে ছোটু একটি কাগজে ছাপা হতো। তারই একটি কপি কিনে নিরে আমি নজরুলের ছাতে দিয়েছিলাম।

নজর্গের স্মৃতিশক্তি ছিল অসাধারণ। বার-কতক সেই 'প্যারোডি'টি পড়েই সেটি সে আগাগোড়া মুখস্থ করে ফেললে।

তার কাছে লোকজনের আসা-যাওয়ার

অশ্ত ছিব্ব না। তাঁদের প্রত্যেকের কারে হাসতে-হাসতে সন্ধনীকাশ্তর লেখা সেই বাপা কবিতাটি নজরুল গড়-গড় করে মুখন্থ বলে যেতে লাগলো।

তারপর প্রথম বেদিন তাঁদের দ্বেনের দেখা হলো, নজরুল হাসতে-হাসতে দ্ব হাত বাড়ির সজনীকাশ্তকে জড়িরে ধরে তারই বিরুদ্ধে লেখা কবিতাটি আগাগোড়া আবৃত্তি করে হো-হো করে তাঁর সেই শ্বভার্বাসন্থ প্রাণ্ডেখালা হাসি হেসে সজনীকাশ্তর মন থেকে বিশ্বেবের বাল্পট্কু

সেদিন থেকে তাদের দ্রেদের সে প্রগাঢ় বংধ্য যে না দেখেছে সে বিশ্বাস করবে না।

নজর্লের মন চিরকালই এমনি উদার। কারও বিরুদ্ধে এতট্কু বিশেষ সে কোনো দিন পোষণ করে নি।

সেকথা যাক।

ধ্য-নজর্প কোনো দিন কারও
বির্দেশ এতট্কু বিশ্বের পোষণ করে নি,
যার হৃদরের উদারতা তুলনাহীন, তার
সম্বশ্ধে যে-সব বর্বর এবং অমান্য
নিশ্দকেরা নানা প্রকার মিখ্যা গল্প তৈরি
করে প্রচার করছে তাদের প্রশ্নর দেওয়া
অন্তিত।

নজরুলের অনন্যসাধারণ প্রতিভার বিষ্ময়-বিমুখ্ধ হয়ে ঋষিকবি রবীন্দ্রনাধও লিখেছিলেন—

'অরংন বলিন্ট হিংল্ল নন্দার অনবদ্য ভাবম্তি রয়েছে কাজনীর কবিতার ও গানে। কৃতিমতার কোনও ছেন্টাচ তাকে কোথাও ন্দান করে নি। জীবন ও যৌবনের সকল ধর্মকৈ কোথাও তা অস্বীকার করে দি। মান্বের স্বভাব ও সহজাত প্রকৃতির অকৃণ্ট প্রকাশের ভিতর নজর্ল ইসলামের কবিতা সকল ন্বিধা-ন্বদের উধের ভার আসন গ্রহণ করেছে। তাই আবিভাব মাত্রই অসামান্য লোকপ্রিয়তা অন্ধনি করেছেন তিনি।'

জনাব আজহারউন্দিন থান লিখেছেন
'কবির জীবন সম্পর্কে নানার্প ভূরো
গ্রেব আমাদের মধ্যে প্রচলিত রয়েছে।
সেই গ্রেবকে বিশ্বাস করে আজও অনেক
মহলে কবির বিরুদ্ধে বিকৃত প্রচার চলো।

খবে সভা কথা।

কারণ তার প্রমাণ এখনও মাঝে-মাঝে পাচ্ছি। নজর কের অনেকগ্রনি প্রণ জীবনীয়াথ প্রকাশিত হরেছে। তারই জ কিনা জানি না—এখন সেই সব আজগু গলেগর হিড়িক অনেকটা কমে গেছে। এখন আর-একটি ক্ষেত্রে শব্দিত হ উঠাছ।

সেটি নজর্লের অনবদ্য স্থিত সংগতি আর তার স্রমাধ্য । নজর্ কবি-প্রতিভার মহস্তম এবং মধ্ বিকাশ তার গানে। বাংলা গানের ইতি তার অবদান চিরম্মরণীয় হয়ে থাকবে মু

আজকাল রবীন্দ্র সংগীতের পূ
নজর্বের গান গাওয়া হচ্ছে সর্বত্র। ত
গানের বিশেষজ্ঞ নই, তব্ মনে হয়
কয়েকজন গায়ক এবং গায়িকা নজর
স্বরের বিকৃতি এনে দিচ্ছেন।

সেদিক দিরে আমরা যদি ধ্রী
অবহিত না হই তাহলে আমার ভর হর
বাংলার সঞ্গীত জগতে নজর,লের চি
শ্বারী আসন বেখানে স্প্রতিষ্ঠিত, সেথা
নজর,লের গান হয়ত গাওয়া হবে বি
স্বের যে ইন্দ্রজাল নজর,ল রচনা করে
বেখানে তার অভিনবছ সেখানে আ
সতিজনারের নজর,লকে খা,জে পাব না

একে তো আমার ঘনিষ্ঠতম বংধু দেশত নজর্লকে আমি চির্নিদনের ছ হারিয়েছি, তার জন্য আমার দ্ব দ্র্তাল্যের আর সীমা-পরিসীমা দে তার ওপর তার গাদের স্বের যথন বিকৃষ্টি ছাপ পড়ে, আমার কানে তথন মনে যেন আগ্ন ঢেলে দিছে।

তাই নজর্লের স্বো-জগতের সা বারা স্পরিচিত সেই সব সংগীতজ্ঞ স্ শিলপীদের কাছে আমার সনিব⁶ধ অ রোধ—তারা যেন এর প্রতিবাদ করেন!

বিশ্ময়কর এবং অত্যাশ্চর্য কবিকলপনার অনারাস লীলার, স্কৃতি ছেপের
লেখার, বিচিত্র স্কেশর স্রেমাণ নজর্প
তার কবিক্মে নিজেকে বিলেরে দিয়েছে
সত্য, তার জীবনীকারেরা বিশ্তারিতভাবে
সেকথা লিপিবন্ধ করেছেন, তাঁরা
নিঃসন্দেহে ধন্যবাদের পাত্র, কিন্তু নজর্প
চিরজীবী হয়ে থাক্বে—আমার বিশ্বাস—
নজর্প-স্পাতির স্বেরর স্রেধ্নী বইয়ে
দেবন ফাঁরা — সেই সব স্রেশিলপীদের
কপ্টে।

এই প্রস্পে নজ্বলের 'সিন্ধ্র' কবিতার করেকটি লাইন—যে কবিতাগালি সে চটুয়াম থেকে ফিরে এসে আমারই হাতে তুলে দিরেছিল—আমি এইখানে তুলে দিলাম।

— চেনার বংশ, পেলাম নাকো
জানার অবসর
গানের পাখী বসেছিলাম
দ্দিন শাখার 'পর
গান ফ্রালে যাব যবে
গানের কথাই মনে রবে,
পাখী তখন থাকবে নাকো—
থাকবে পাখীর স্বর ।
ভূবো আমি, কাদ্বে ভূমি

১৫·০০ অগ্নিম পাঠাইলে ডাক মাশ**্ল** ফ্রি দেওয়া **হয়।**

(5)

प्त गत्र गा ध्रेख!

আন্ডায় জমায়েং-হওয়া সবকটি মানুৰ এক সপো উংকর্ণ হলেন। এক সপো হেসে উঠলেন। এবং আগতুককে অভ্য-হিনার জন্যে এক সপো উঠে দাঁড়ালেন।

আশ্চরণ! মান্ষটা আসার সংশ্য সংশ্য আসরের গ্মোট আবহাওয়ায় সাগ্রপ বস্তের মিঠেল স্পর্শা। আর তুহীন কাতরতা নয়—ফাগ্নের নবীন আনক্ষ। সেই আনক্ষে সবাই হাসতে চায়।

এক অণ্ডুত মজলিসী মান্য নজর্ল।

হাসি তখনো থামে নি, আবার সেই দরাজ কণ্ঠ শোনা গেল, দে গর্ব গা ধ্ইলে। সংগে সংগে গলায় আশ্চর্য ভাঙা-ভাঙা হাসি।

এই-ই নজর্ল। নজর্ল-মাদদের এই আসল পরিচয়। বাধা-কধনহীন। উদার এবং মূভ।

এই সংগ্রহাসারসিক নজর, লের সংগ্রন্থ আমরা কিছাটা পরিচিত হই। আন্তারাক এবং মজলিসী। এ তাঁর জীবনের একটি বিশেষ দিক। তাঁর চলার পথ কুস্মাস্তীপ নর। প্রতিমাহতে কত বাথা, কত যক্ষা। দৈনা এবং জীপতা! তাও মান্ষ্টির ম্থ থেকে কেউ কোন দিন হার্সিটি ম্ছে যেতে দেখে নি। শত দৃঃখের মাঝে থেকেও তিনি নিজে হেসেছেন এবং অপরকে হার্সিরে-ছেন। দিজে মেতে অপরকে মাতিয়েছেন। কি মজলিসে, কি আন্তার, কি বৈঠকে।

অথচ নজর্ল-জীবনের এদিকটি নিরে
আজ পর্যন্ত কোথাও কোন আলোচনা
হ'ল না। আমাদের বিশ্বাস, নজর্ল
জীবনের এদিকটি নিরে আলোচনা না
হলে মান্য নজর্লের প্রা রপ প্রকাশিত
হবে না। প্রা মান্যটাকে জানার জনো
হাসারসিক নজর্লের পরিচয় অনিবার।
করেকটি ঘটনার মাধ্যমে আমরা মান্য
নজর্লের এই দিকটির সংশা কিছুটা
পরিচিত হবার চেন্টা করব।

(6)

একদিন বিকৃতিবাব কণ ওরালিশ
শ্রীট দিরে হে'টে যাচ্ছিলেন। কিছুতিভূষণ
বশেদাপাধ্যার। সংগ্য পরিমল গোল্বামী।
যেতে-যেতে হঠাং তিনি থমকে দাঁড়ালেন।
কী ব্যাপার? ছুটে চলা একটা মটরের
দিকে তাকিরে ব্কে হাত দিলেন। তারপর
ব্ক চাপড়ে বললেন, 'মেরে দিরে গেল'।
অর্থাৎ ঐ মটরে একটা স্প্রী তর্বা
ছিল—তার চোখ বলদে দিরে সে চিক্তে
মিলিরে গেল। কী সাংখাতিক ঘটনা।

ঘটনাটি স্থ্ল কিন্তু দিলখোলা কিড়তিভ্যককে চিনতে আমাদের কোনই কর্ম হয় না।

আন্তা জমজমাট। সমানে চলছে হান্সি-হৈ-হাজ্লোড়। হঠাৎ নজবল উঠে দাঁড়ালেন। গম্ভীর হলেন। তারপর পথের দিকে তাকিয়ে থাকলেন। বংধ্-বাংধবও উঠে

আবদ্ধ আজীজ আল আমান

দাঁড়ালেন। কী বাপার। সবাই দেখলেন পথের ওপর দিরে আলত পা ফেলে দালত পদবিক্ষেপে এগিরে চলেছেন এক ভদ্র-মহিলা। সবাই হেসে অভ্যির। নজবুল শাস্ত ফলেই টেনে টেনে উচ্চারণ করলেন, গ্রেদেবের কবিতা।

নতুন করে হাসির হল্লা পড়ে গেল। হাসি তথনো থামে নি, দেখা গেল পথের উপর দিরে এক ছিপছিপে তর্ণী টগ-বগিয়ে দুতে চক্তল পদে এগিয়ে চলেছে।

নজন্ত সোলাসে কলে উঠলেন, সত্যেন দত্তের লাইন।

ব্ৰনে বাপোরটা। শাস্ত পদবিক্ষেপে
চলা গ্রেনেবের কবিতা নয়, টগরবিগায়ে
ছটে-চলা স্তোন দন্তের লাইন! স্তাই তো.
ছল-যাদ্কর স্তোন দন্তের কবিতার এমন
চটল পংল্বি অভাব নেই। আশ্চ্যা রসবোধ
ছিল নজর্লের!

(0)

রবিবারের সকাল। করেকজন প্রবীণ জ্ঞানী মানুর বুসে আছেন গশ্ভীর হরে। কারো মুখে জেম কথা নেই। সবাই বসে অপেক্ষা করছেন শ্রীমন্ডাগবত গীতার প্রবীণ বাাখ্যাতা শ্রীনবেন্দুনাথ রার মহাশরের সপো সাক্ষাতের জনা। মহানিবাণ রোডের এই বাড়ীটি অস্ট্রত এক গাম্ভীযোঁ নীরব হ'রে রয়েছে। বড় অস্বাস্তকর গাম্ভীযা। করেকজন জ্ঞান্দুর মানুষ—তব্ত একে অপরের সন্দো নীরবে গাম্ভীযোঁর প্রতিযোগিতা করে চলেছেন। সবাই নিন্চুপ। বথা বললেই বেন একে অপরের থেকে ছোট হরে বাবেন।

এই অস্বস্থিতকর পরিবেশের মধ্যে হঠাৎ এক ভদ্রলোক এসে হাজির। পারে মুগা কছেন চিলে-হাতা পান্ধারি। দীর্ণ কেশ। অট্ট ব্লাম্থা। শিশর মন্ত সরকা চাউনি ভরা দুটি বড় চোখ। হন্তস্ত হরে এসেই বললেন, নরেনদাকে একট্ সংবাদ দিন তো যে ভাঁর মুখ্জোমশাই এসেছে।

সেখানে বসেছিলেন বিভূপদ কীতি মশাই। তিনি বললেন, 'নরেনদা বাড়ী নেই—প্রাতঃশ্রমণে বেরিরেছেন, এখনি ফিরলেন বলে।'

6: I

তত্তপাৰে পা তুলে বসলেন আগতত্ত্ব।
তারপর কথাবাতার মধ্যে বরঃকনিষ্ঠ
বিভ্পদবাব্তে তিনি তুমি বলেই সন্বোধন
করলেন। কিন্তু পরক্ষণেই শ্রম সংশোধন
করতে চাইলেন। বললেন, তুমিই বললাম—
কিন্তু মনে করো না।

প্রবীশেরা তখন নড়ে-চড়ে বস্তুনর কঠিন গাম্ভীর আস্তে-আস্তে তরল হচ্ছের মনে-মনে বলছেন, বাঃ বেশ লোক তো—

বিগলিত বিভূপদ উত্তর দিলেন, 'আপনি বয়সে বড়। তাছাড়া রাজন। স্তরাং কী মনে করব।'

আগস্তুক হো-হো করে হেনে উঠকেন-দিসংখালা প্রাণ্ডালা হাসি। সে হাসির নিমলি প্রোতে সব মালিন্য ভেনে বৈভে চায়।

বল্লেন, 'আমি ব্রাহ্মণ! নরেনদা ভাই বলেন। অবশ্য রুসিক্তা করে। শুন্তা



মশাই' কলে তিনি বোঝাতে চান মুখ্যু যে মশাই'ট

বলেই আবার সেই প্রাণ্থোলা হাসি। গাম্ভীর্য থেড়ে ফেলে প্রবীণেরাও সে হাসিতে ওওক্ষণে যোগ দিয়েছেন। চমৎ-কার মান্য তো!

বিভূপদ জিজ্ঞাসা করলেন, তা হলে আপনি...

আমার নাম নজর্ল ইস্লাম।

মহুতে সমগ্র পরিবেশটা পালেট গেল। কোথায় সেই গাল্ডীর্য! কোথায় সেই প্রবাণতার খোলস! এক আশ্চর্য প্রাণ-বন্যায় সব ভেসে গেছে।

প্রাণ থাকলে গান জাগে। নজগুলেব আগমনে সকল মজ্জানুস সেই গানেরই জন্ম বনেছে!

(8)

সিরাজগাজের নাট-ভবনে অনুষ্ঠিত হল বেসারি মুসলিম তর্ণ সন্মেলন'। উনিশ শো বহিশ সাল। মোট সন্মেলন দু দিনের--পচিই ও ছরই নডেম্বর। মুল স্ভাপতি কাজী নজর্ল ইসলাম। বিশাল সমাকেশ। তর্ণদের মধো বিশ্ল উৎসাহ। দার্ণ প্রাণ-চাণ্ডলা ও উত্তেজনার মধো সম্মেলন শেষ হল।

স্কোলন শেষে কবি এবং বিশিষ্ট সম্মানীয় অতিথিদের খাওয়ানোর বাবস্থা হল। পাদেই প্রবহমান যম্না। তীরে স্মুদর বাংলো। এই বাংলোতেই খেতে ব্দেছেন কবি। যম্মার উচ্ছলতা ব্যিক কবির মনে দোলা জাগিয়েছে। তাঁকে অভ্যুক্ত খুশী-খুশী দেখাছে।

খাওয়া চলছে। পরিবেশন করছেন শিরাজী ও গিয়াসউদ্দীন সাহেব। পূর্ব বাংলা। আবার সিরাজগঙ্গ। ইলিশের জনো চিরবিখ্যাত। স্তুবাং খাদ্য-তালিকায় ইলিশের প্রাধান্য থাককেই।

প্রথমেই দেওয়া হল ইলিশ মাছ ভাজা। কবি একটি ভাজা মাছ শেষ করলেন। তাকৈ আর একটি দেওয়া হল। তিনি সেটিও শেষ করলেন।

তাঁকে যেই আর একটি দিতে গেলেন তিনি সংগ্রু-সংগ্রু পরিবেশককে পামালেন। গ্রেমিয়া বলালেন, আরে করছ কী, কবছ কী—শেষকালে আমাকে বিভালে কামভাবে যে। থাওরা ফেলে সকলেই হো-হো করেই হেসে উঠলেন। মৃহ্তুতে পরিবেশের মধ্যে একটি পরিত্র মাধুর নেমে এল।

প্রকৃতপক্ষে এই-ই নজর্ল। এই স্বাদর রসজ্ঞান কবিকে যথার্থ মজলিস করে তুলেছে।

शिखा एमर। এवात नहें त्रव्हा हरव मिताकी मारहर मकतमत भारठ नहें पि हल्लाह्म। कवित्र भारठ त्रवहा हरू मकरम नहें मृत्थ पिता এकी राम वनाठ हां हिल्ला। कवि महें मृत्थ पिता मकरठ मानत रामें राभाभा कथारक म्हम्बत्ता बाढ कत्रसमा। भाराकीरक छेल्लामा है। वलासमा, कि रु—्र्म की अ महे रु०्श भार रुगर त्राक्ष भारताल?'

আবার সকলে হো-হো করে ছেটে উঠলেন।

ভোজন-পর্ব স্থাপত হয়েছে।
কবি সদলে বসে বিপ্রায় কুর্ভেন।
এমন সময় আলাপ করতে এলেন এক ভু ভদুলোক। কবির সামনে এসে তিনি, র মুসলিম রীভিতে সালাম জানিয়ে বল্লেন, আছালামো আলায়ে কুম।

কবি তাকালেন। তাকিরেই বললেন.— দুর্গাদাসবাব; যে। তা দুর্গাদাসবাবুর মুখে আচ্চালামো আলায়কুম! বাপোর কী?

আগশভূক ভদ্রলোকের ছিল স্থের নারকোচিত চেহারা। তাকে দেখতে কিছ্টা দর্গাদাসবাব্র মতই। বাংলা নাটামঞ্জের বিখ্যাত দুর্গাদাস বন্দ্যোপাধার।

উপন্থিত সকলেই ব্যাপারটা উপলব্ধি করলেন। ভ্রালোক কিব্তু লক্তার কাল। তিনি অভাদত সংগ্রাচের সংগা বলালেন, আমি দাস নই—সৈয়দ। নিকটেই খামার বাড়ী।

ঐ দ্যাথ—আমি ভাবলমে ব্রেড দুর্গা-দাসবাকু এথাকেও ধাওয়া করেছে!

পরিবেশটা এমনই সংশর হরে উঠে-ছিল যে, কবির এই চট্ল রসিকতার সকলে হেসে গড়াগড়ি।

কবির দ্ভিটভগ্গী এবং র্চিরোধ চিরকালই উল্লভ ছিল। উল্লভ এবং অননা।

(6)

বর্তমান কালে, কেবল বর্তমান কালে কেন চির্কালেই. এমন কিছ্ পেথক থাকেন—বাঁরা ভাল লিখতে পারেন কিণ্ডু জনতার সপো মিশতে পারেন না। কেন মজলিসে বা আভার গিরে স্থাণ্ হরে পাঙ্গেন। ভীড় থেকে মুভি পেতেই তাঁরা বাসত। নিভালত পারিচিত জন ছাড়া তাঁরা মুখ খ্লাতে পারেন না। কিণ্ডু নজর্ল এগের বিপরীত। সম্পূর্ণ বিপরীত। নিজে মেতে অপ্রক্রে মাতানোর এক দুর্ভুভ কমতা ছিল নজর্লের। বলা চলে ঐশ্বারক কমতা। অপারিচিত জনের সংগ্রামাতে তাঁর কতকণা একবার বিনি কবির

এসেছেন—আর জোন শিল কী ভিনি সেরে বেডে পেরেছেন।

ক্ষিকী জলসায় ভিনি এমন স্ব বাতা বলভেন, এমন স্কের হাস্য-ভতার অবতারপা করতেন বাতে বটি সম্পক্তে স্বাই মতুন করে ভারতে হতেন। প্রেছি প্রবচ্চন্তর মধ্যে ব দ্বাত গ্রেছ ভিলা তিনি বৈঠকী র প্রতান হিজেন। কিন্তু সন্ত্র-তে বড় অন্ত্রিক অন্ত্র্য করতেন।

क (मक्था। াকবার অনেক ক'জন প্রগতিশীল बर्कां होड़े जनमात्र जात्राजन करत শ্ব দাওয়াং করেছিলেন। উদ্যোজা ূবেগম শামসক্ষোহার। বৈঠক বনে-্বানীপুর পুলিল হাসপাভালের তলার একটি খরে। প্রোভারা অখি-.ই নারী। আসর **জনজ**মাট। কবিকে থুশী-খুশী মনে হচ্ছিল। এই স্যোজ্যনে শ্হতেরি পিছনে ছিল তার কেনর সফলতা। নজরুল সারা জীবন राती काशतर्गत न्यन एएए अल्लाहरूः ार्गालम नातौता**७ भनात यौधन हिटा करत** 🏿 রে আসতে শরে; করেছে। সৌদন নিসার সকল আলোচনার মূলেই ছিল রী-জাগরণের কথা। সমবেত মহিলারা र्विट्क नार्ती-जागतन **जन्मट्ट किए, रका**त कत्ना जन्द्रताथ कामात्ममः। जात की আশ্চর্য সকলকে অবাক করে, কবি আকবর এলাহীবাদীর 'দেওয়ান-ই-আক্বর' বেকে একটি স্কের কবিতা সূর করে আবৃত্তি

আব্. ডির পর সবাই কবিকে তার অথ বলে দেবার জন্যে অনুরোধ জানালেন। কবি বলালেন, এ কবিতার শ্বামী তার বেগমকে জিজেন করছে, 'কী বেগাম—তুমি বে নেকাব (ছোমটা) খ্লে ফোলাছ?'

বেগনের উত্তর শোনার জন্মে সমবেড মহিলারা অস্থির। তাঁরা কবিকে জিজেস করেন বেগম কী বলল?

কবি মৃদ্ধ হেদে বললেন, তিনি ভো তোমাদের মত বাংলা দেশের ভরকাত্বে বেগম নন—দীশ্ত তেজে উত্তর দিলেন, ছা ঘোমটা খ্লেছি একং দে ঘোমটা পড়েছে শ্রাবের আক্রেলের উপর।

উত্তর শনে কবির সংশা সমবেত ছহিলারা সকলেই হেসে কৃটি-কৃটি।

(6)

র্হাচবান নজর্জের বৈঠকী হাসা-রাসকভার আরো কিছু পারচর নীচের আলোচনা থেকে পাওরা বাবে।

কবির মানের শিব্যা প্রশালতা দে। তার কমাদনে নিমালিত হরে এনেছেন কবি, কবি-পদ্মী, তার খবাশন্দী গিরিবালা দেবী, জাহানারা কেসম ও তার মা, কাসমউলীন এবং আরো অনেকে।

জন্মদিনের আসরটি সতিকারের একটি কৈকী জনসার রূপ নিরেছে। প্ররো ভাগে আছেন কবি নকর্ন। ছোট্ট-ছোট্ট কথার, চট্ল হাস্যরসিকভার ভিনি সারা আসর-টাকে সাভিরে রেখেছেন।

শেতে দেওরা হরেছে স্বাইকে। স্বার্ পাতে প্রথমে ব্যক্তি দিরে বাওরা হল। পাতে ব্যক্তি দেখে গশ্ভীর কঠে কবি ব্যক্তেন, এ কী কর্মে?

পালে ব্সেছিলেন পল্লী-কবি জাসম-উন্দান। কবি তাঁকেও বললেন, জাসম--ভূমি ল্ডি থেও না।

স্বাই উংকণ্ঠিত। জসিমউন্দীন জিলোস কর্তেন, কেন কবিদা?

ভারতবর্ধে ইসলাম ধর্ম এসেছিল আরব দেশ থেকে—বেল্ডিল্ডান পার হরে। সেদিকে ইপ্লিড করে সকৌতুকে কবি বললেন, বেহেতু বে-ল্ডি ম্থান (বেল্ডি-ম্থান) থেকে এসেছি—স্তরাং আমদের ল্ডি থাওয়া নিবেধ।

ছোট-ছোট মাটির পালে বিবিধ খাল্য-সামগ্রী নিমলিতদের সামনে রাখা হরে-ছল। কবি এক-এফটি পাল দেখিরে বলেন, এটি খাড়ি-মা, এটি মাসী-মা, এটি পিসী-মা ইত্যাদি। জাসমউন্দান রাতিমত কোতৃক অন্তব করেন। তিনি জিজেস করেন, তা হলে আমাদের ভাবী সাহেবা কোন্টি? কবি সন্দো-সন্দো পানীর জার্নটি বরে উত্তর বেন, এইটি। বেহেছু আমি তার পানি গ্রহণ করেছি।

খাওরা-দাওরা কেলে রেখে স্বাই নম-ফাটা হাসিতে ভেঙে পড়ক।

আর একটি স্কর্ণ রসিক্তা। কবির শুী তখন পক্ষাঘাতে আক্রন্ড। নিন্দের অধাপা সম্পূর্ণ অবশ।

কবি তথ্য গ্রামেট্রেয়নে কার্ছ করেন।
একদিন বিকেলে অফিল থেকে বধারণীত
বাসার ফিরে এলেন। এলে দেখেন বিস্কৃপদ
বলে আছেন।

কবি বরে এনে প্রথমেই কবি-শভাঁরি শিয়রে বসলেন। প্রতিদিনের হাত কুলল-সংবাদ জিন্তোস করলেন। তারপর বিভূপদ-বাব্র দিকে তাকিরে সকরণে কঠেবলান, 'জান বিভূপদ—তোমাদের বৌ-দি সতিসকারের অর্থাপিননী।'

সেদিন কবির কণ্ঠ থেকে হে কী অপরিসমি অনুরাগ আর বেদনা ঝরে পড়েছিল।

আমরা এই মানুবটির মুখ থেকে আর কোন দিন হাস্যরসিকতা দুনতে পাৰ না। চিরদিনের মত তিনি ভত্তম হলে গেছেন। বেচে থেকেও তিনি অনেক দুরের মানুব। নিরতির কী নিউরে পরিহাস !?

नकत्व-नन्डाव्ह नामन्त्र व्याचना

नজর্বল-বিচিত্রা

25.00

কবি নজর্ল ইসলামের উপন্যাস-নাটক-ছোটগল্প-প্রবন্ধ-কবিতা-গান প্রভৃতি সর্বপ্রেণীর রচনার স্ক্রিব্যাচিত সম্মিট। ভূমিকা-প্রেমেন্দ্র মিত্র।

বিজ্ঞাহী কৰি কাজী নজালৈ ইনলামের জন্যান্য বই নজার্লার প্রেমের কবিতা ৩০০০ নজার্লোর স্নিবাচিত কবিতা ৫০০০ নজার্ল-পত্রাবলী ৫০০০

শিশনাথ দে
সম্পাদিত
বাংলার একশাে একজন সাহিত্যিক-শিল্পী-মনীবীর নজর্ল
সম্পাদিত ক্র্তি-চিত্রণ। এ বই প্রকাশ করে সম্পাদক ও প্রকাশক
একটি জাতীয় কর্তব্য পালন করেছেন।' —দেশ

त्राह्काम् ॥ ১४वि मामाज्य व नीवे । बीनवाक-১६

भार्जि उभरके

রব্রিম ঝড়

বৈশাধ বাদ মোনী তাপস ভাহলে জ্যান্তকে কি বলা বার; সে উন্দাম, ভরতকর, অথচ ভরতকরের বেশে এক পরম স্নার । পাচিলে বৈশাধ রবীপ্রনাথের জন্মাদন আর জ্যান্ত বাস কবি নজর্লের জন্মাদন। প্রাথোজন এক পরেব্রের আবিভাবে বাংলা-দেশ বন্য হরেছে। নজর্লের জবিনী রচনা ক্লেছেন তার কল্লোলের বন্ধ্ অচিন্তাকুমার, এ গ্রান্থের নাম জ্যান্তর ঝড়।" এ ঝড় মনোহর, ছল্পোমর।

অচিন্তাকুমার নজর্ল প্রসংগ বলেছেন—শেল প্রসান প্রাণের পরিপ্রণ প্রতীক। নজর্লের ব্বার প্রাণদানি, তার সমস্ত স্থিতিক প্রগোদিত করেছে। ভাষার নেনেছে তীক্ষাতা, ছব্দে এনেতে জীবন-শাসন, ভাবে এনেছে বলা-বীর্য ওকঃ ভেজের উপর্যাশিত।

মজর্জ বা কিছু ছাঁণ তাকে সংহার করেছেন। স্বাধীনতা সংগ্রামের সৈনিক, তাঁর কাছে আত্মপর নেই, ছোট বড়ো নেই। একই আসরে বসে নজর্ল গাইছেন, 'এই শিকল-পরা ছল' তারপরই লাজন ফাঁকরের গান—জ্বান লাজন বলে, 'আয়ায় য়্মুখ সবস্ব মন-বিরাগাঁণ কিংবা মুর্রাশিদ বিনে কি ধন আছে সংসারে'—একটায় পর আরেকটা—ক্রাশিত নেই, বিরাগ নেই; তারপর হঠাৎ পেরে উঠতেন স্বর্রাত গান—'কাশ্ডারী ছু'শেররে'। এই নজর্ল। ক্রেলের আসরে তিনিই ছিলেন একেশ্বর। ক্রেলের আবিতাবে ক্রেলের অর্থালেরের তানিই ছিলেন একেশ্বর। ক্রেলের আবিতাবে ক্রেলের অর্থালেরের তানিই করে অক্সমাৎ এক নত্ন জ্রান্ডের পর্নাশের স্ক্রাশির করা বেন অক্সমাৎ এক নত্ন জ্রান্ডের প্রশ্বে সঞ্জীবিত হরে উঠত।

শকর, লের প্রথমতম সন্বর্ধনার এক বিবরণ লেখক দিরেছেন কলোলের কর্মনের আরোজিত এই সভার সভাপতিত করেন আচার্য প্রফ্রেচন্দ্র রার। ক্তা বিক্লেছিলেন স্ভারচন্দ্র: তিনি বলে- নজর্জের দ্বাম গিরি কাশ্তার-মর্র মর্জ প্রাক্মাতানো গান কোথাও শ্লিনি।

এ হোল নজর্ব থথন বাংলা সাহিত্যে প্রতিষ্ঠালাভ করেছেন সেদিনের কথা। কিল্পু রবীন্দাথের ভাষায় সন্ধাবেলার প্রদীপ ভারালানার আগে আছে সকাল বেলার সলতে পাকানোর প্রস্টাত। নজর্বাকে তাই মাজার মসজিদে খিলমত করতে হরেছে: গার্ডসাহেব তাকে চাকরী দিয়েছেন। কি কাজ করতে হবে— না শ্ব্যু গান শোনাবে। সেই গার্ডসাহেবই ব্লেছিলেন, গান কথনো ছেডো মা।

এরপর সেই আসমসোলের র্টির দোকানের কাজ নজর্লের। পাঁচ টাকা মাইনে। কিন্তু নজর্লের গানই তাঁকে নতুন পথে নিয়ে যার। সাইকেল চড়ে দারোগা সাহেব এসে ফললেন—চলো লেখাপড়া শিখতে হবে, লেখাপড়া না শিখনে বড় কবি হবে কি করে?

पारतात्त्र विकल्खाः **नार्ट्य** नलक्ष्मान्द निद्य शास्त्रन जीव साम अवस्ति अवस्ति। সেখানে দরিরাম স্কুলের সম্ভয়শ্রেণীভে ভতি হলেন নজর্ল। তারপর নজর্ল একদিন র্যিক্জক্লার আশ্রহ ছেড়ে আবার পথে বেরিয়ে পড়লেন। রাণীগঞ্জে ফিরে এসে শিরারশোল রাজ স্কুলে থাড়া ক্লালে ককরা ছেলের মত ভার্ত হলেন। সে ভালো ছার, **भारेत निरक दश मा, नाम, कार्ड गर्श, भिठाब-**শোলের রাজা সাড টাকা ব্যন্তিও দেবার ব্যবস্থা করলেন। সেই কৃত্তির টাকা ঘরে এসে স্পানমুখ ছোটভাইকে দেখে তার হাতে मित्र मिर्मान सक्तर्**मः मन्त्र** स्त्रगीर्ड উঠলেন আর একটা, গেলেই ম্যাট্রিক, এমন সময় লাগলে পূথা মহাযুদ্ধ। শৈসজানক ছিলেন নলবংকের সহপাঠী M. Carrel পরাম্প কাক তাকে যোগদানের স্বাক্থা করকেন। দৈলজানন্দ আনফিট হলেন ভবি আত্মীয়ের কারসাজিতে, নজরুল চলে গোলেন একা। এইখানে ফা**সীটা দরেন্ড** করে নিচ্ছেন এক মৌলভীর কছে। ভিনি
খুবাইনং-ই-হাফিজ অনুবাদ করেছে,
সেই নজর্কা ফিরে এলেন কলকা
ইভিমধ্যে ভার সব্ভপতে পাঠানো কবি
প্রকাশিত হলেছে প্রবাসীতে। নজর ।
রিকশা চড়ে একেবারে শৈলজানন্দের মেসে
এসে উঠালেন। ইভিমধ্যেই মুসলমান সাহিত্য
পাঁচকার সভো যোগাযোগ হরেছিল সেইখানেই গোলেন দুই বঙ্গতে।

ब्राज्यत रक्षत्र वर्ता महातान अक्टो नाव রেজিস্ট্রারের চাক্রীও পেয়েছিলেন, কিন্ডু সব ছেড়ে মাজফফর আহমেদ প্রভৃতিই পরামর্শে প্রোপ্রার সাহিতো মন দিলেন। ববিশ নম্বর কলেজ স্ট্রীটের মাসসমান সাহিত্য সমাজের **অফিলে অনেক প্**রোত[্] ব্যস্থ: আসতেন, আসতেন গোপীনাথ, বিউ-গিল মাস্টার। তি**নিই বার** করে **আকেপ** করতেন, এমন গান, গ্রামোলেলের রেকর্ড হল না? লোপরৈ আশা প্রে **इरहाइन** नजरुट्टात्र निर्धात कराठे । अवः भरतत कराठे নজনুকের কন্ত গানই 😸 রেকর্ড 🗆 হয়েছে 🖯 রবীস্প্রমাথের পরে আরু কোনো বাঙাক करित এछ शास्त्रस द्वकर्ण दस्मि।

এই নজবাল কলকাতার সাহিতিক সমাজকে জর করজেন। সত্যেক্তনাথ শস্ত বললেন—মাতিল-আরব আমার ভালে। লেগেছে কি স্বরং গ্রেন্থেবের ভালে। লেগেছে—রবীন্দ্রনাথত নতুন কবিকে বরণ করলেন।

কিন্তু নজর্ল, এক জারগার একভাবে বসে থাকার মানুষ নন। অসহযোগ আন্দোলনের মুখে তিনি কুমিলার হরতালের আবেশনে গান রচনা করলেন, পথে পথে গান করলেন।

भ्राक्षकायनः जारत्मम् यनतान-पि कत्रतनः? स्त्रकं मारिका ना नासनीकि??

সৌনন মজর্ল বলেছিলেন-ত্যা সৈনিক-সাহিত্যিক! অনুমি রাজনীতিবে সাহিত্যারিত করব Materials (Alberta)

এরপর কলতাল হক সাহেবের সহ-বোগিতার দ্বেনে রিলে খবরের কাগল বার করলের দ্বেনে রিলে খবরের কাগল বার করলের দ্বেন্যাণাবারকে দিরে লেখাবার, কিন্তু মূলককর বলের নার্যাদকভার একরকম জোর করেই সাংবাদিকভার টানলের মলফফর আহমেদ সাহেব নজর্লকে। এই দ্ববন্ধে নজর্লের সম্পাদকীর এক নতুন ইভিছাস রচনা করল। কলে নবযুগের জমানত বাজেরাশ্ড হল।

এরপর আলি আক্ষর আর তাঁর ভাপনী নারগিসের পর্ব। আলি আকবরের বাসনা ছিল নারগিলের সংখ্যা নজর্লের বিবাহ দ্বেন। কিন্তু বিবাহটা পাকাপাকি হল ্ব। নজর্**লকে সেদিন অর্থ পাঠিরে** সাহায্য ্রিছিলেন সংস্কৃত কলেজের অধ্যাপক ক্রকিরদাস বন্দ্যোপাধ্যায়, তিনি ফ্রকিনের আশীর্বাদে জন্মছেন, নজর্ল জন্মছেন্ তারাপীঠের আশীর্বাদে, ভাই ভার নাম তারাক্ষেপা। দূজনে আত্মীয়। 'বিদ্রোহী' द्विवर्णाति सार्ग्यकात् क्वीत्रापशामारक यथान -পা-ভূলিপি **অবস্থা**য় পড়ে **শ**্বনিয়েছিলেন **वृत्य की**द्वामश्रमाम নজর্ল তখন আশীর্বাদ করেছিলেন-'তৃমিই হিন্দ্র-মাসলমানকে বোঝাতে পারবে। তুমি এই অসাধ্য সাধন করবার জন্য জন্মেছ এই বাংলা

রবীশ্রনাথ এই কবিতা নজর্জের মুখে
শ্নে বললেন—'তুমি আমাকে নিশ্চর অতিকম করে বাবে। তোমার কবিতা শ্নে মুখ্
হরে পিয়েছি। আশীবাদ করি তোমার কবিপ্রতিভাগ বিশ্বজনত আলোকিত হোক।'
নজর্জ প্রণাম করলেন গ্রেদেবকে।

এরপর লিখেছেন বাসভাী দেবীয় আমশ্যাদে আপোর কথার—'' কারার ঐ লোহ কপাট—'।

এরপর প্রকাশিত হল "ব্যক্তেতুণ বিশেক মান্দেশ আহম্মদ নামক এক বন্ধ্ব আত্মদ নামক এক বন্ধ্ব আত্মিদ করলেন। এই পাঁচকাকে আশীর্বাদ করলেন, রবীন্দ্রনাথ, শরংচন্দ্র, বারীন ঘোর আর উপেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যার। রবীন্দ্রনাথ বিশ্বনাথ বন্ধ্যাপাধ্যার। রবীন্দ্রনাথ বারা অর্ধাচেতন। ১৯২২-এর বারই আগন্ট তারিখে 'ধ্যকেন্তুর প্রথম প্রকাশ। র্শ বিশ্ববের সংবাদ তথন এদেশে এসেন্ডে। এদেশের তর্শ সমাজের মুখপন্ত ধ্যাক্তা। নক্তর্শ ইসলাম দেশিন লিখে গেছেন—

সর্বপ্রথম ধ্মকেত্ ভারতের প্রে বাধীনতা চার। প্ররাজ-ট্রাজ ব্রি না, কারণ ও কথাটার মানে এক একজন মহার্থী এক একরকম করে গাকেম...

নজর্কের আনক্ষমণীর আগমান কবিতাটির জন্য প্রিলণ তাঁকে গ্রেম্ভার করল কৃমিলার। আসামীর কাঠগড়ার দাঁড়িয়ে নজর্ল বললেন—আমার তর নেই, দূর্য নেই, কারণ ঈশ্বর আমার সপ্রে আছেন।

সে যাত্রা এক বছরের সদ্রম কারাদাও হল নজর্পের। মজর্লকে হুগলী জেলে পাঠানো হল, তিনি অনশন করলেন। রবীদ্যনাথ টেলিগ্রাম করলেন—অনশন ত্যাপ করো, তোমার সাহিত্য ভোমাকে শবী করে—' সে টেলিয়ার পেলেন না বসর্ল, শাসকের কারস্বাকিছে।

এই আমানের ক্রান্ত, ইসলার।
ত্যানের রড়া নামক গ্রুগথাটিতে অচিস্তাকুমার প্রাণ দেলে তার বংশ্র কথা বলেনে।
কোনো তথা বাদ নেই, অথচ সব কথাই
বলা হয়েছে কাহিনীর আন্গিকে। এক মহাকবির জীবন ও কমের বিক্ষারকর ইভিছান।
যেন একটি পরমান্চর বিরোগান্ড নাটক!
নজর্ল আকও আছেন, কিন্ডু নেই। আজ
তিনি সমাধ্যান।
তপ্যচর্বার প্রাণাণা
তানি স্মাধ্যান।
তপ্যচর্বার প্রাণাণা
আছে। গ্রুগথানের বেথক নজর্লনে
নিব্রোক্ত এক স্কুমীর্য কবিভার ব্যরেশ্রেল—

ভূমি জাগ্ৰত, ভূমি উলিড, ভূমি স্বাদে-বোধে পরিপূর্ণ ভূমি দেখেছ সর্বময় সভ্যবস্তুকে বলো, যোবণা করো—

আমরা, অকিণ্ডনের দল, আমরা

সবা**ই স**ভ্য**বস্তু**। "

অচিম্ভাতুমার সেনগালেডর বৈজ্ঞান্তর বড়া বাংলা জীবনী-সাহিত্যে এক লাখাঁক সংবোজন।

-delight

হৈতে কর্ (নচিত নজর্শ জীবনী)—
আচনতাকুমার দেনগগেত প্রণীত।
প্রকাশক আদলধারা প্রকাশন। ৮,
শামাচরণ দে দুরীট, কলকাতা-১২।
শাম বারো টাকা মারা।

সাহিত্যের খবর

ব্ৰহাট সাহিত্য প্ৰতিৰোগিতা । বিদ্যান্ত গোড়ীর পরিচালনার একটি সারা বাংলা সাহিত্য প্রতিৰোগিতার আরোজন করা হরেছে। প্রতিৰোগিতার বিষয়—(ক) কবিতা—বে কোন বিবরে; (গ) প্রকশ্মন গ্রাম বাংলার দরেকথা এবং তার প্রতিষালিক লাভক উপার; (ব) আক্তিভ কবিলাককর বনাতা সেন'। প্রতিবাগিতার অংশগ্রহণের জন্য কোন ম্লালাগ্রে না। বোগারোগের কিমা—কর্মণ মাতি প্রতিবাগিতাণ (০র বর্বা), গুসকরা, বর্ধমান।

দেশবন্ধ্র চিন্তরজন দাস জন্মশতবর্ধ প্রকাশন কমিটি : আগামী ৫ নভেন্তর চিন্তরজন দাসের জন্মশতবর্থ উদবাপিত হবে। সেই উপজন্ধে একটি প্রকাশন কমিটি গঠন করা হরেছে। কমিটির সভাপতি শ্রীবসন্তকুমার দাস এবং সন্পাদক প্রীপ্রকাল-কুমার প্রামাণিক। শতুবর্ধ প্রকাশক কমিটি দেশবেশ্বর জীবলী, তাঁর ভাষণ এবং মচনা-বলী এবং সমকালীন বাভিদের অভিমত সহ তিমটি বই প্রকাশ করবেন:

একটি গৃশ্বাহানা গড়া ।। পিশং
সাহিত্যে কৃতিয়ের জন্য এবার স্বাধীরকাশ্র
সরবার প্রেক্টারে সন্মানিত হরেছেন
শ্রীসভীকাত প্রহ। ভিনি স্বভারতীর
কবি সন্মোলনের সভাপতি। গড় ও বে
সন্মার কলকাভার কলামনিনরে উর্ব সন্মোলনের উল্লোগে আরোজিত এক সভার
ভাবে সন্মানা জানান হয়। সভার
পোরোহিত্য করেন ওড়িশার বিশিন্ট কবি
শ্রীশানী রাউতরার।

আনুষ্ঠানের উদ্বোধন করে প্রীপ্রেমেন্স মিন্তু বলেন—'মোচাক সমিতিকে ধন্যবাদ বে আবার তাঁরা সতীকানত গত্তেকে প্রকাশা-ভাবে সাহিত্যের আসরে হাজির করেকেন। এক সমরে রঙমলাল পঠিকার সম্পাদক হিসেবে কাঁথে-কাঁথ মিলিয়ে কাল করেছ।' প্রধান অভিথি তারাণক্ষর কলোন পাধ্যার বলেন—সতীকান্ড গ্রেছর লেখা আগে যেমন ভাল লাগড, এখনও তেমান ভাল লাগে। ভার লেখার বৈশিষ্ট্য এই বে, তা পড়ার সমর আমার শৈষ্য রাম পঙ্গের বার। বহু বংসর বর্গেও আমি আমার শৈশ্বে ফ্রিনা

শ্রীভবানী মুখোগাথার বলেশসতীকাল্ড গৃহেকে আমার লাজকৈ মানুকে
বলে মনে হরেকে। আমার আলা করবো,
বে কাজ তিনি আরুল্ড করেকেন, তা আরো
ভালভাবে করকেন শ্রীদিকিলারজন বস্কু
বলেল বে, শিলুনের তিনি ভালবারেশ।
তানের জন্মই তিনি সারোটা জীবন উৎসর্গা
করেকেন।

প্রীঅরণাশন্তর রার সংক্রলনের পক্ত থেকে মানপর্যাট তাঁকে প্রদান করেন। তিকি বলেন—পর্বভারতীয় কবি সংক্রেলনের কর আনরাশত উ তাবতে পারিন। তিনি
কভাপতি হিসেবে তা সম্পন্ন করেছেন।
আটা তার পরিচরের একটা দিক। তিনি
শিল্ম সাহিত্যের অন্যতম প্রেয়াল—এটা
তার চরিত্রের দিকতীয় দিক।

শ্রীসংহের বহুমুখী প্রতিভার ক্থা উল্লেখ করে সব্সী শিবরাম চলবভারি মণীকা হার, আশিস সাম্যাক; শাহে শিক্ষা, নামস্ক্রমান প্রমুখন ভাষণ দেন।

সভাপতির ভাষণে শ্রীশচী রাউতরার বলেন-ভার ইংরেজি কবিভা আমি আগেই পড়োছ। বাংলার পড়োছ করেকটি বই। 'থেরার মানি লক্ষ্মীনাথ' আমাকে মুখ্য করেছে।

অন্তাদের প্রার্ভে প্রীমতী র্মা

গ্রহাতুরতার পরিচালনার কালকাটা ইর্ব করা'র করেকটি গান পরিবেশন করেন। পরে প্রীগ্রহের ব্রিট কবিতা ইংরেজি ও বাংলার আবৃত্তি করেন কথারুনে শ্রীমতী ইম্পিতা চলবতী' ও প্রীঅশোক মিয়। এ হাড়াও প্রীগ্রহের লেখা সকুন বিদের র্মকথা' নাটকটি অনুষ্ঠানে পরিবেশিক হয়।

नजून वरे

ব্যবহন পরিক্রা-আবদ্ধ আছীজ আল আমান। হরফ প্রকাশনী। এ-১২৬ কলেজ দট্রীট মার্কেট। কলকাতা-১২। দাম পনের টাকা।

কবি নজর্লের প্রণিপা জীবনীর
জভাব ররেছে আজো। তাছাড়া নজর্লের
সাহিত্য সম্পর্কে বাগপক ও গভীর
আলোচনার অবকাশ ররেছে। নজর্ল দীর্ঘদিন এক জারগার কটানান কখনও। বিক্রিপ্ত
জীবনের ঘটনার স্মৃতিও ছড়িরে আছে
এখনে-ওখানে। জীবনীকারের কঠোর পরিলমেই সেই উপাদান সংগ্রহ সম্ভব। কবির
নিকট সামিধ্যে কটিরেছিলেন যারা—তাঁদের
কারের কারের স্মৃতিকথা বেরিরেছে। এখনও
যারা আমাদের মধ্যে বর্তমান অবিলম্পে
তাঁদের দেখা কাছের মান্য নজর্লের

সম্প্রতি প্রকাশিত নজর্ল পরিভ্রমার' প্রথম থাডটি নানাকারণে উল্লেখযোগ্য।

দিবতীয় খন্ডে থাকবে নজর্ল জীবনী এবং তৃতীয় খন্ডে নজরুল সাহিতা। বর্তমান चर-छत मृष्टि चरण नखत्म युग धरा নজর্ল রচনার উৎস। কবিজীবনের বহু অজনা তথ্যে সমৃন্ধ থণ্ডটিভে 'বেতারে নজর্কা, সংগীতকার নজর্কা, 'মোহিড-माम, अञ्जनीकाग्ड सञ्जत्मं विद्वाध' 'নিব'চিন প্রাথী' নজর্কোর' পরিচয় স্পন্ট **করে তুলেছে। নজরুলের সমকালীন** বাংলা সাহিত্যের গতিপ্রকৃতির রূপরেখাটি এসেছে "বাভাবিকভাবে। রবীন্দ্রনাথ, শনিবারের চিঠি, আব্বাসউন্দীন সংরেশ চল্লবভা মান্মর্থ রায়, জসীমউন্দীন, ম্বুজাফফর আহন্দদ, শৈলজানক মনুখোপাধ্যায়, প্রাফাল-চন্দ্র রায় এবং আরো অনেকের সামিধ্যে নজর্ল চরিতের এবং সাহিত্যের প্রাস্থিতিক তথ্য নিয়ে আলোচনা করেছেন গ্রন্থকার।

গ্রন্থকার কবির জীবন ও সাহিত্যকৃতির বে বিস্ভৃত গবেষণা করছেন, তার জন্য সকল বাঙালীই তাঁকে সাধ্বাদ জানাবেন।

প্ৰকেশ্পন্ন ছল (কাব্যগ্ৰণ্থ)—শামস্ক্রের দে। নবজাতক প্রকাশন। ৬ এটাট্টাবীবাগান লেন, কলি-৯। দাম—তিন টাকা।

সং কবি কথনো সামাজিক দায়িছকে উপেকা কৰতে পাৰেল না। বিশেষত এখন এইন একটা সময় বখন জীবসের দাবীকে প্রতিন্ঠিত করবার কমে; মানুবের জীকে-সন্তায় নাড়া লেগেছে।

কবি শ্যামস্পর দের পদক্ষেপের ছব্দ
মান্ধের পথ চলার গান। ভূমিকার কবি
বলেছেন, আমাদের সারাটা জবিনই পথ
চলা। আমার পদক্ষেপের ছব্দ সেই পথ
পরিক্রমারই সম্পর।

আজ চারদিকে দ্নিয়া বদলের বে
ক্মকান্ড শ্রু হয়েছে এ পথ সেই পথ।
যে পথে প্রিবরির ইতিহাস লিখেছে
ক্ষবিন, সেই জীবনের চারদিকে অন্যার
শোষণ—লোবিড মানুবের প্রেক্টিড রোধ।
বিব এই শোষণ নিপ্নীড়নের মধ্যে দেখেছেন
দিন বদলের প্রেডিট বাতার।
তাই আর্ডকামনা—
থিরে পেতে চাই প্রিথবীতে ফুলের
সকলে। সাম্প্রতিক মানা বিষয় তার
কবিতার উপকরণ। প্রতিটি কবিতার স্বর্থ
তোরণ-শ্বার্থ গ্রেবর আ্রুক্তা—তার জন্মে
সংগ্রামে আহ্মন। আশার্থি কবিভবিব্যুতে
কবিনের ভেডরে দাঁড়িরে আরো গভীর কথা
আমাদের শোনাতে পারবেন।

গোরেন্দা পানু (কিশোর উপন্যাস)—স্মানত সোম। আধ্নিক প্রকৃতক প্রকাশন, ৪০, সীতারাম ঘোষ দুরীট, কলি-১। দাম ১-৭৫।

গোরেন্দা পান্ কিশোরনের উপযোগী একটি রহসা কাহিনী। তবে সচরাচর চোথে পড়া কোন রোমহর্যক হত্যাকান্ডকে কেপ্র করে প্রকাশ গোরেন্দা নিরে এর কাহিমী আর্যতিত নয়। পান্র নামে একটি পনেরো-বোল বছরের ছেলে এই কাহিমীর নারক। সে আর তার মাসতুতো ভাই পিন্ট, কিতাবে এক গভীর জন্সালের রয়ো থেকে চালের চোরাকারবারের বাটি আবিশ্বার এই ক্রেছিল এবং কিভাবে সমাজরোহীরা এই দুই কিশোরের সহারতার প্রকাশের হাতে বরা পড়েছিল ভারই রোমাণ্ডকর কাহিনী এই গোরেন্দা পান্র । কাছিনী গ্রন্থনে নানা রেটি আছে ভা সরেও যাদের জন্যে লেখা ভারা বইটি পড়ে আন্দদ পাবে।

নংক্তৰ ও পদ্ধ-পাঁৱত।
নিম্ন সাহিত্য (৪র্থা সক্তন্ম) সম্পাদ্ধ স্থাংশ্য সেন ও বিমান চট্টোপাধ্যার। ৩এ ৪৯ রামকুক এভিনিউ (এরটেনশ্বর, দ্বাণ্যার ৪। দাম ২০ প্রসা।

পহিকাটি গত চার পক্ষ ধরে বেরিরে আসছে নির্মিত। অক্তৃত ধরনের চটকদুন্ত কেথার আকর্ষণীর। এ সংখ্যার লিখেছেন স্কৃতি বক্সী, দেবপ্রসাদ মুখোপাধ্যার, রবাদ্য প্রুহ, মূলাজ বলিক, জজরা নকরী-মজ্মদার, স্ধাংশ সেন, ক্ষিতীশ দেবস্কৃতির, স্ল্পীপন চট্টোপাধ্যার ও অর্থ

কদশৰাণী (পৌৰ-টৈক ২০৭৬)—সম্পাদিকা কলাণী বন্দোপাধ্যায়। ১২, ভেলি-পাড়া লেন, কলকাতা-৪। দাম এক টাকা।

প্রছেদ ও অপাদ্যোভনতায় পাঠকের
মনোয়োগ আকর্ষণ করতে পারকেও
পারকাটির সম্পাদকীয় দ্র্তিটভঙ্গী এমন
কিছ্ চুমকপ্রদ নর। এ সংখ্যার উল্লেখযোগং
কেখা তিন সংগ্রীর ল্যাবরেটরী প্রসাজ্য সিম্পেছন গোডিম গ্লেড। অন্যান্য লেখাপ্রসাম মধ্যে আছেন কনক বন্দ্যোপাধ্যার, গোরা মির্টা, বাঁধন সেনগৃহত্ব, বাধীকুমান ও আরো করেকজন।

দ্টে বাংলার কবিতা (বিশেষ সংকলন)—
সম্পাদক অঞ্জন সেন। গি-২৩৯ লেক
রোড, কলকাডা-২৯। দাম: গণ্ডাল
পরসা।

ভামরা পরিকার বিশেব কবিতা
সংকলনটি বেরিরেছে দুই বাংলার কবিতা
নামে। এ সংখ্যার লিখেছেন অশোকরক্ষম
লাগারণে, সামস্র রছমান, আল মাম্য,
শান্ত চট্টোপাধ্যার, আবৃল হাসান, আবদুরা
আবৃ সারীদ, নাসিম্ন আরা মিন্র, কাইর্ম
চৌধ্রী, রতে,শবর হাজরা, দেবারতি দির,
ব্যেরতাভ লাশাগণ্ড এবং আরো করেকজন।
শান্তমবাংলার সংগ্র প্রবাংলার কবিবংশ্র সম্মিলিত উভারণে পরিকাটি
গারিকের ভারবেগকে শণ্ডা করে।



নববৰে'র সাহিত্যসভার ভাষণ দিচ্ছেন তুষারকাশ্তি ছোষ।

ফটোঃ অমৃত

আজ্ঞাের এই আনন্দ অন্তেঠানে সবাথ্যে প্রণতি জ্ঞানাই ক্রিগ্রেকে। গতকাল পেছে ২৫ বৈশাখ। আৰুও সারা মহানগরী এবং সারা অথণ্ড বংশদেশ অর্থাৎ রাজ-নৈতিক বিপর্যায়ে শিবধা-বিভক্ত বঞ্চার উভয়বঞা মহাকবি স্মরণোৎসবে ও প্রজায় নিমণন ররেছে। আমাদের এই অন্তঠানটিকে তারই অপাবলে মনে করাই উচিত। মহাকবির জন্মদিনে তাঁকে স্মরণ করে বর্তমান কালের স্মরণীয় ও বরণীয় সাহিত্য-দ্রুল্টা হারা তাদের আমরা অভিনাদেত করে থাকি। এক্ষেত্রে এই প্রশংসনীয় কমের সকল প্রশংসা এবং কবিপ্জার সকল প্রা বাংলার সংবাদপ<u>র</u>গর্নলরই একাশ্ভভাবে প্রাপা। বাংলা সাহিত্য বাংলার সংবাদপত জগতের পরিচালক ও সম্পাদকমন্ডলীর কাছে যে দেবা পেরে **এলেছে**ন তা ইতিমধোই আবিস্মরণীর ইতিহাসে পরিণত হয়েছে। সংবাদপ্রগর্মির প্রা-সংখ্যাগর্মির প্রেরণা বা তাগিদেই ইদানীং কালের বাংলা সাহিত্যের অনেক শ্রেষ্ঠ রচনা সৃষ্টি হয়েছে। সাহিত্য তাতে সম্পে হয়েছে। তারপর তারা উদ্যোগী হরে বখন এই সকল স্মরণীয় করেন তথন লেখকদের অভিনাদিত শ্বাভাবিকভাবেই আমাদের মত সাহিত্য-সেবীদের কন্ঠে স্বতঃই উচ্চারিত হয়— वाभनापन क्य हाक।

এইখানে আমি সমরণ করছি এই আনুষ্ঠান ও এই ব্যবস্থার প্রধান প্রবর্তক ও প্রাণপ্রে, ব স্বগীয় স্ধীরচন্দ্র সরকার মহাশারকে, আমাদের আনন্দময় অকম্পিত ধীর স্থির প্রের স্ধীরদাকে।

বৈশাথে একটি নববর্ষের আনন্দ অনুষ্ঠানের ব্যবস্থা করতেন সংধীরদা। সেই অনুষ্ঠানে এক বংসর স্থাপের বন্ধ, শ্রীযুক্ত অরদাশতকর রায়মহাশয় বাংলা সংবাদ-পদ্রের কর্তৃপক্ষকে আহ্বান জানান--বাংশার স্তিতিকদের মধ্যে ক্ষেক্জনকে নিবাচিত করে তাদের মালাচন্দনে ও তার সংগ্র কিছ্ সম্মানী দক্ষিণা দিয়ে তাদের অভি-নদিত করার জনা। তথন সবে রবীন্দ্র প্রস্কার এবং আকাদেমী প্রস্কার সরকার প্রবৃত্তি করে**ছেন। কিন্তু তাতে স**্বিচার ঠিক হচ্ছে না। বাংলাদেশে সভা-সমিতিতে প্রাতন কিন্তু মালাদানের প্রথা মাল্যসূলি সে কালের সেই রাজকদেঠর মালাও নয়। এবং তাতে স্বস্তির নিশ্বাস ফেলার মত কোন উপাদান ছিল না। নানান **অসক্তোবও সে**কালে স্ভিট হার্যাছল সরকারী প্রস্কার নিবাচন প্রথা নিয়ে। স্তরাং শ্রন্থেয় রায়মহাশয়ের এই প্রস্তাব শাধা সময়োপযোগীই, নয়, বাংলা সাহিত্যিকদের দর্মখ-দারিদ্র বরণের ষে একটি মহৎ ইতিহাস রয়েছে—যা' মহা-কবি মাইকেল মধুস্দনের অভাব, হাস- পাতালে শেষপথা পাতা থেকে কৰি হেমচন্দের শেষজাগৈনের দুখে থেকে, দেদিনের সেই সদা গ্রাধীন দেশে কবি সমালোচক মোহিতলাল মজুমদারমহাশরের অভাবের মধ্যে প্রলোকগমনের কথা প্রতিভ্রমণ করিয়ে দিয়েছিল।

সেদিন সংশা সংশাই অমৃতবাজাদ, আনন্দবাজার কর্তৃপক্ষ চারটি প্রেক্টার দেবার প্রতিশ্রতি ঘোষণা করেছিলেন। তার সংক্রে 'উল্টোরথ'-যা শুধ্ গলেপর এবং সিনেমার সংবাদের বাহক, তাঁরা বোৰণা করেছিলেন –কবিতার জন্য প্রথেধয় স্থারদামোচা**কের তরফ থেকে** বংসরের সেরা শিশ্বসাহিত্যিককে অভি-নত্র দেবার সংকলপ **ঘোষণা করেছিলেন।** সারা বাংলাদেশের **সাহিত্যিকরা এবং** সাহিতরসিকেরা সকলেই আনন্দিত হয়ে-ছিলেন এবং যদি এ কম্পনাও করি বে -জননী বৃপ্স-সাহিত্য-সরুস্বতীর মুখ্যস্তর কিণ্ডিৎ চকিত দীশ্তিতে প্রদীশ্ত হয়ে উঠে-ছিল—তা হলে তা নিতাম্ত মিথাা বলা হৰে না। তার আগে অ**ংশ্য স্বপ্রথম সাহিত্যিক**-সম্মান এবং শ্রেষ্ঠ-সম্মান বাংলার পরেষ-সিংহ স্যার আশ্বতোষ প্রবর্তন করেছিলেন তার মায়ের নামে জগতারিণীপদক। জগতারিণী পদক প্রথম পরেস্কার এবং তার প্রাণক মহাকরি ব্র*ী*স্তনার। তালুবর প্রবৃত্তি হরেছিল শরংচন্দ্র সদক ও প্রেম্কার। কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় নিরুদ্রণ করেন এটি। কিম্চু এই প্রেম্কার ঘোষণা নব্তর উৎসাহের স্তি করেছিল সেদিন।

ভারপর থেকেই নিয়মিতভাবে এই বৈশাথ মাদে এমনি একটি প্রীতিপূর্ণ অনুষ্ঠানে এই সাহিত্যিক সমাদর উৎসব চলে আসছে। এ বংসব বাঁরা প্রাপক, বাঁদের কাঠে ও ললাটে মালা-চন্দন ভিলকসহ সমাদরের কথাণ্ডং নিদশন অর্পণ করছি— ভাদের সপ্রে বাংলা সাহিত্যের প্রবীণ এবং নবীন উভয় প্রান্তেরই কীতিমান জন বারছেন।

কাজী আবদ্রে ওদ্দ, পরিমল গোশ্বামী নিষ্ঠাবান সাহিতাদেবক এবং শুর্ণীর কীতির কীতিমান সাহিতাদেবক। তাঁরা আমাপেক্ষাও বরুসে প্রবীণ, তাঁদের প্রণাম জানাই।

শ্রীষ্ট প্রবোধচন্দ্র সেনও কীতিমান জন। বিদংধজনের আসরেও তিনি উচ্জনেল বান্তি। আমার প্রীতি ও নমস্কার নিবেদন করি। শ্রীমান গৌরকিশোর আমার অন্জ-ভূলা প্রিয়জন। সাহিত্যক্ষেত্রে তার বৃদ্ধি ও প্রসার গভীর বিস্ময়ের সপো লক্ষ্য করে আসহি। আশীর্বাদ করি গৌরের কলম যেন সোনার দোত-কলমের কলম না হয়ে শন্ত এবং নিভীক কলম হয়।

শ্রীষ্ক তর্ণ সান্যাল পরিচরের সম্পাদক, ইতিমধ্যেই কাবাসাহিতেরে ক্ষেত্রে তিনি নিজেকে প্রতিভিত করেছেন। তিনি প্রতিভিত্তার সোপানে আরোহণ করছেন স্কমান্বরে। তাঁকে নমস্কার ও অগ্রজের অধিকারে প্রাতিপূর্ণ স্নেহ-সম্ভাষণ জানাই।

মোচাক প্রেক্রার প্রাপক সত্তীকাত গ্রহ মহাশয়কে প্রতীত অভিনন্দন জানাই। তার শিশ্পাঠা রচনার মধ্যে আমার শৈশবকে আমি ফিরে পাই। তার কবিবশের কথাও আমরা সকলেই জানি। তাঁকে মমক্রার জানাই।

সর্বাদেরে এই প্রাপক-জনদের দীর্ঘা আর্ এবং আরোগ কামনা করে প্রাথানা করি, আপনাদের কৃতিছে এবং সেবার আরও দীর্ঘাকালে বংগসরুষতী পরিতৃশ্ত হোন। এবং আমরা গৌড়জন আনন্দে আপনাদের সৃষ্ট প্রেশের মধ্পানে পরিতৃশ্ত হই।

আরও করেকটি কথা আছে, নিবেদন করব দেশবাসীর কাছে। প্রথম সরকারের কাছে। ক্ষেত্র সক্রানর কাছে। ক্ষরে প্রকারের কাছে, দ্বিভারত প্রকাশকদের কাছে। বংগাভারার ক্ষেত্র স্থাভারে সম্মানিত করবার জন্ম সরকার থা করে এসেছেন, তা নিভান্ত অকিন্তিংকর বলেই আমার মনে হর। ১৯৪৭ সালে দেশ ন্বাধীন হওয়ার শরই তংকালীন মুখ্যমন্ত্রী ডঃ ঘোষ ববীন্দ্রনাথের নামে ভিনটি প্রকল্বর ঘোষণা করেছিলেন। একটি সাহিত্যে একটি বিজ্ঞানে প্রভিটির মূল্য ৫০০০ এংং বাংলাভারার ক্ষিত গ্রেম্থের জন্য তৃত্যীকটি ইরেক্সী ভ্রমায়





তারাশশ্বর বন্দ্যোপাধ্যারের কাছ থেকে প্রস্কার গ্রহণ করছেন পরিমল গোস্বামী, সতীকান্ত পূহ, তরুশ সান্যাল এবং গোরকিশোর ঘোষ। • ফটো: অমৃত

লিখিত প্ৰতক্ষের জন্য। তারপর ভারতীর সাহিত্য আকাদেমী বাংলাভাবার রচিত প্রশেষর জন্য আর একটি প্রেক্ষার প্রবর্তন করেছেন। তারপর এই ছটি প্রক্ষার। কিব্দু আমরা অন্ভব করি আয়ও প্রক্ষার প্রবর্তনের প্রয়োজন আছে।

বাংলার প্রাদেশিক সরকারকে ক্ষরণ করিরে দেব তিনটি অবিক্ষরণীর বরেণ্য নাম।

প্রথম নাম—মাইকেল মধ্স্দন দস্ত
শ্বিতীয় নাম—ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগর
তৃতীয় নাম—বিংকমচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়।
অর্থ হোক পদক হোক এপেদর প্রণাশ্বরণীয় নামকে আশ্রয় করে বাংলা
্রিকারের কিছ্ করার প্রয়োজন—বেন পিড্বাত্ নামকে শ্বরণীয় করার মতই
ব্রহ্পণ্র এবং অবশ্য কর্তব্য বলে মনে
করি।

তারপর বাংলার প্রতক-প্রকাশকদের প্রত্যেক জনের কাছে এবং সমবেত প্রকাশক-মন্ডলীর কাছে, বাংলার সাহিত্য-রঘট-খারা বিগত হয়েছেন এবং যারা রয়েছেন, বারা আসছেন, আসবেন তাদের জন্য নিবেদন জানিয়ে বজাব,—আপনারাও কিছু কর্ন।

বাংলার নাট্যজগতের কা**ছে শেব** নিবেদন।

মাইকেল মধ্স্দন, দীনবশ্ধ মির, কিল্লীশচনদ্র ঘোষ—এই নাম তিনটি আজ্ঞও দানপ্ণ্যে সম্শ্ধ হয়ে ওঠোন। বাংলার নাট্যসাহিত্যও আজ্ঞও অনাদ্ত। কেন্দ্রের ভারাশকর বন্দোপাধ্যারের কাছ থেকে পর্বক্ষার গ্রহণ করছেন প্রবোধচন্দ্র সেন



সংগতি নাটক আকাদেমি এক্ষেত্রে যা করে থাকেন অর্থাৎ বাংলার নাট্য-সাহিত্যকে যেভাবে পাশ কাটিয়ে যান তাতে বাঙালা মাতেই দুঃখিত হন বলে মনে করি। এমনক্ষেত্র বংসর বংসর প্রত্যেকটি থিয়েটার যাদ এক-একটি সন্মিলিত অভিনয় করে তারই অর্থে বাংলার নাট্যকারকে—এই তিনজনের নামে সন্মানিত করেন তা হলে বাংলার রঙ্গামঞ্চ তার সেই ঐতিহ্য রক্ষা করে যে ঐতিহ্যের ধারায় বাংলার নাট্যপালা ।হ্ চ্যারিটি অন্টোনের বাবক্ষা করে অনেক মহৎ কর্ম করেছেন।

আমার সাল সন তারিখ মনে নেই, কিন্তু মনে ররেছে সেকালের কলকাতার দেওরালে পোচার পড়েছে—বন্যাবিধ্বস্থ অন্তর্গের অধিবাসীদের সেবার জন্য সাহাব্য-রজনী। দৃভিক্ষ বন্যা প্রভৃতি প্রাকৃতিক বিশ্বরে বাংলার রঙ্গামণ্ড অনেক করেছেন। নাট্যকার ও অভিনেতা-অভিনেত্রীর সম্মান-রজনীর কথাও মনে আছে অনেকের। কিন্তু নিয়মিতভাবে এক-একজন নাট্যকারকে সম্মানিত করার কথা হয়তো তাঁদের মনে হয় নি; সেই কারণেই আমি কথাটা মনে পড়াবার জনাই উত্থাপন করলাম আজ।

ভিক্ষা প্রার্থনা করেই আমি বন্ধবা শেব করছি না—আপনাদের সকলকে প্রীতি-নমস্কার জানিরে শেব করছি। শেব বাক্ষ উচ্চারণ করি—বাংলা সাহিত্যের জয় হোক ১৭



সামনের সারিতে বাদিক থেকে: পরিয়ল গোলবামী, ডঃ প্রবোধচন্দ্র সেন ও সত্তীকাত গৃহ। পিছনে দাঁড়িরে আনুত্র সামানের (বামে) ও গোরিকিশোর ঘোষ।



(9)

বোরখা গায়ে জোটন চলে যাচ্ছিল। এই जाश्रामा मकरन प्रथम, जार्वमीमा पिनि জোটন ফের চলে যাছে। কবে আবার সম্তান-সম্তাত প্রস্ব করে ফিরে আসবে, কবে আবেদালি ফের ওর দখিনদুরারি ঘরটা ভূলে দিতে দিতে বচসা করবে জোটনের সং**গা, তা যেন সকলের জানা।** হিন্দ্পাড়ায় মেয়েরা এই ঘটনায় থিল-খিল করে হেসে একে অপরের গায়ে গড়িয়ে পড়ল। দীনবন্ধর দ্বিতীয় পক্ষের বৌ খবর পেরে ড্যাফল গাছটার নিচে ছটে এসেছে। মালতি ঝোপের ভিতর বেথনে ফল খ'লছিল সে জোটনকে দেখতে পেয়ে চিৎকার করে ডাকল, বৌদি দেইখা যান কান্ড। জ্বটি একটা ফকিরের লগে কই যাইতাছে গিয়া। ঠাকুরবাড়ির বৌরা পর্যত পা্কুর পারে এসে দাড়াল। হাতে মাুদকি-লাশান,, বগলে কোরবানির গোস্ত এবং গলায় মালা তাবিজ—ফ্রিকাসাব উপরের দিকে চেয়ে চেয়ে হে°টে বাচ্ছেন। গায়ে শতছিল আলখেলা এবং কথার সেলাইর মত সেলাই সেখানে। যেখানে যে কাপড়ট*ু*কু পাওয়া গেছে তাই জড়ে দিয়েছেন ফকির-সাব। ঠিক এই আল্লার দুনিরার মতো--যেখানে যা পাওয়া গেছে এই দুনিয়ার জন্য তিনি হাজির করেছেন। এই মাঠ, গাছপালা পাথি এবং নদীর তীর, তর্মাজ খেত সবই যেন এক শতছিল সেলাই করা জোবা। বিচিত্র দোস মাটি এবং জলের রং-এ দুনিয়া রাঙিয়ে রেখেছেন। তিনি **এবার চো**খ ভূলে দেখতে পেলেন পিছনে জোটন বিবি-বোরখা পরে হ'াটতে কল্ট হচ্ছে ভার ভব্ रे एक्ना अथवे,क् त्वातथा अरत ना इत्व সম্মান থাকে না। তিনি তাকে **জোরে পা 5ानिएस इ**भाग्रेख वनस्मन।

জোটন বোরখার ভিতর পেতলের বদনা রেখে জোরে জোরে হাঁটার চেন্টা করছে। এই গ্রাম মাঠ ফেলে সে চলে বাচেছ, নরেন দাসের বিধবা বোন মালভিকে এখন কৈছু বলার ইচ্ছা। মালভির হাঁসগুলি শুয়াক পাাঁক করছিল মাঠে। পুরুষ হাঁসটার জন্য মালতির বড় কণ্ট। মালতির শরীর আর আপ্লার মাশ্মল তুলবে না ভেবে জোটনেরও ভিতরে ভিতরে কণ্ট হচ্ছিল।

মাঠ ভেঙে কখনও নদী-নালা আতি-ক্রম করে অথবা বাঁশের সাঁকোতে ওঠার সময় ফ্রকির সাব জোটনের হাত ধরে পার করে দিচ্ছিল। তিনি সওদা করে ফিরছেন। হাতে পানি ফলের মত মুশ্কিলাশানের লম্ফ, তিনদিকে তিনমুখ, কাজল জমানো গতে ছোট একটা কাঠি। চার ক্লোশের মতো পথ। জ্যৈষ্ঠ মাস বলে নদীতে জল বাড়তে সূত্র করেছে। ফকিরসাব জোটনকে একটা পলাশ গাছের নিচে দাঁড় করিয়ে সামনের হাটে সওদা করতে গেলেন। নতুন মেমান,, ঘর আলো করে রাথবে। দূরবতী কোন দরগার পাশে ফকিরসাবের ছই দেয়া ছোট মাচানের ঘর। সাজ লাগলে দরগার কবরে কন্ত মোম-বাতির আলো আলোতে খানিক সময় ঝোপ-জঞাল শাদা হয়ে থাকে। তথন তিনি কালো রঙের আলথেলা পরে মুশকিলা-শানের লম্ফ জেনলে অন্ধকার মাঠ ভেঙ্কে গেরস্থ ব্যাড়ির উঠোনে উঠে যান। মোটা গলায় হে'কে ওঠেন মাঠ থেকে। গভীর রাতে মানুষেরা ভয় পায়—মুশ্কিলাশান আসান করে বলতে বলতে উঠে আসেন। জবা ফুলের মতো চোথ লাল। রস্ন গোটার তেল চোখে মেখে চোখ জবা ফুলের মত করে না রাখলৈ—মানুষ রাতে ভয় পায় পয়সা দেয় না। তখন ফকিরসাবের মাচানে ফেরার ম্প্রা আর থাকে না। অস্থকারের ভিতর, বিচিত্র সব ঘাসের ভিতর অথবা জমির আলে আলে এক ভয়ৎকর রহসাজে গে থাকে। মনে হয় তাঁর এইসব অলোকিক রহস্যের ভিতর আল্লা কোথাও না কোথাও অদৃশ্য হয়ে আছেন।

বাজার করে ফিরন্তে বেশিক্ষণ সময় নিলেন না ফকিরসাব। হাট পার হলে লোকনাথ বন্ধাচারীর আশ্রম। পলাশগাছের নিচে এদে শুধোলেন, যাইবেন নাকি এক-বার বাবা লোকনাথের কাছে।

জোটন বোরথার ভিতর থেকে বলল, তবে চাইর পয়সার মিসরি কিনা লন। কিন্তু ককিলাৰ যেন সহসা কৰে করার হত কালেও নিরা বাম্ কি কইরা বাবার কাছে। তার চাইতে জাৈও মানে বাবার উৎসবে আম্বে আপনেরে নিরা। স্তরাং আর দেরি করা ভাল নর। বেলাবেলিতে পে'ছাতে পারলে হয়। আরও ক্লোণখানিক পথ। ওরা লােরে পা চালিরে হাঁটতে চেন্টা করল।

ফকিরসাব বললেন, ক'দিন ভার্বাছ একবার আপনের কাছে চইলা বাই। কিন্তু ভরসা আছিল না।

-ক্যান এই কথা কন!

—আমার হৈ ছোট। মেলা বন-জপাল কবর্থানা। বড় বড় শিরিশ গাছ। রায়ে ডর লাগতে পারে।

আপুনে আমার নয়নের মণি। বলার ইচ্ছা ছিল জোটনের কিন্তু এত তাড়াতাড়ি এখন ভালবাসাবাসির কথা বলতে পারল না।

এসময় বেলা পড়ে আসছিল। স্থ মেঘনার অন্য পারে অসত যাছে। মাঠের প্রুরে অজু সেরে নামাজ পড়াতে বসে গোলেন। জোটনও পাশাপাশি বসে— যখন কেউ নেই আশেপাশে—কেবল ফাঁকা মাঠ, স্থা অসত যাছে ত যাছেই, জোটন পা ডাজ করে ফাঁকরসাবের পাশে বসে পড়াল মনে হল তার সামানের প্রামটাই বাঝি ভার সেই প্রিয় স্লোমানপ্রে। তার প্রথম সাদি সমন্দের কথা মনে হল। গ্রামের সে বড় বিশ্বাসের ছোট বিবি ছিল। সেদিন সে যেন বেগম। তার সম্ভানেবাট হয়ত দ্রের মাঠে অবেলায় ঘ্রে বেড়াছে। জোটন নিজের প্রথম সাদি সমন্দের কথা ভবে আকুল হতে থাকল।

আশ্তানা সাবের দরগান্তে পেছি তেওঁ দের রাত হয়ে গেল। চারিদিকে কবরৎ না। চারিদিকে ঘন বন এবং মাঝে মাত নান বাধানো কবর, কেউ কেউ ফে রাতি জেনলৈ দিয়ে গেছে। আজ কি ার, বৃথি কেউ কবর দিতে এসে সব কবরে মোমবাতি জেলে দিয়ে গেছে। অন্ধনার রাতে লাঠি ঠকে ঠকে নিজের আশতানার ভিতর চুকে বললেন ডর নাইগ বিবি। আপনে বোরখা খ্ইলা ইবারে হাওয়া খান। কবরের আলো খাইকা আশানের লম্ফটা জন্নলাইয়া আনতাছি।

ফ্রিরসাব লম্ফ জ্বালতে গেলে জোটন বোরখাটা খ্লুল রাথল, অন্ধ্রনারে সে কিছুই টের ক্রতে পারত্ব না। এমন ঘন অন্ধ্রনার জোটন যেন জীবনেও ্মের্থন। একটা কুকুর ডাকছে না, একটা মোরগ ভাকছে না। সে দ্রুবতী কোন প্রামে আলো প্য ত দেখল না। যেন সে যোজন দ্রে চলে এসেডে! ওর ভরে আত্তেক কামা পাছিল। জণ্গলের ভিতর শ্কেনো পাতার শুধ্ খচ-খচ শব্দ। মত মানুষেরা ইতিমধাই বেন যুম্থের ফড্ডা দেবার জন্য যোজন দ্রুর থেকে জিন-প্রি হরে নেমে এসেছে।

তখন দুরে মুসকিলাশানের আলো এবং শেরালের চিংকার। ঝোপ অথবা গাছ-



CMV3-6-203 Ben

গাছালির ফাঁক থেকে ফাঁকরসাবকে কোন রস্কারের মতো মনে হচ্ছে যেন। সামনে অনেকগালি অজানি গাছ উধন্বাহা হরে আছে। তার নিচে নতুন কবর খোঁড়া হছে। জোটন নতুন কফিনের গল্ধ পাছিল। অথবা কারা যেন বলাবলি করছে, সোলেমানপ্রের বড় বিশ্বাসের ছোট বিবির প্রেলা স্পতানের ইন্ডেকাল হছে।

যারা কবরে কফিন নামাচ্ছিল জোটন পাচছে না। ফকিরসাব তাদের দেখতে চার পাশটা কেবল কি খালে মরছেন লম্ফের আলোতে। কবর দিতে যারা এসেছে তারা সব এখন ফিরে যাচ্ছে। জোটন এই প্রথম এখানে মানুবের সাড়া পেল। ওদের হাতে হ্যারিকেন। ওরা নিচের পথ ধরে মাঠে নেমে বাচছে। বড় বিশ্বাসের পেয়ারের ধন সকলের মুখে ছাই দিয়ে গেল। আলার বড় বিশ্বাসভাজন ছিলেন তিনি। বড় বিশ্বাসের নাম শুনতেই ছই-এর নিচে জোটনের মুখ শ্বকিরে গেল। সে ফকিরসাবের অপেক্ষার বসে আছে, এলে थवत्रों प्राप्त, कात्रम लाकगृति भए। एएए যেতে সোলেমানপ্রের বড় বিশ্বাসের কথা বলছিল। বাকি কথা অস্পণ্ট। বাকি কথা কানে আর্সোন। মান্বগালোকে এখন আর रमथा याटक ना। हाातिकनो भार्छ म्नाट म्लाङ हल याण्ड।

ওখানে কার ইন্ডেকাল হল, জিজ্জের
করতেই ফকিরসাব আশানের আলোটা
জোটনের মুখে তুলে ধরল। কিছুক্রণ মুখে
কি দেখল। তারপর খুব ঘন হয়ে
দাড়ালেন। বললেন, আপনের মুখে এই
কথা শোভা পার না বিবি। আপনে ফকিরসাবের শেষ বিবি। বলে আরও কাছে
মুখটা এনে ডদগদ চিত্তে দেখতে থাকলেন.
তারপর একসময় আবেগে বলে ফেললেন,
কথা দ্যান আমারে ছাইড়া যাইবেন না।

—যাম, না।

—ইবারে গোস্ত রাইন্দা ফ্যালান।

মাচানের নিচে নানা রকমের হাড়িপাতিল। ভাঙা এবং ভাল—সব রকমের।
মাঠে জলাশম। পিছনে নোনা-ধরা ইটের
প্রাচীন মসজিদ। ফকিরসাব লম্ফটাকে বাঁশে
ঝুলিয়ে দিলেন। সব জামা-কাপড়, মালাভাবিজ খুলে দুধু একটি নেংটি পরলেন।
ভারপর জলাশয় থেকে জল এনে দিলেন।
ভরা রামা হলে গোসত ভাত থেয়ে তাড়া-

জ: স্নেহলতা বস্তু জ্ঞান্ত, জিও জ: এস. এন. পাণ্ডে এমনি.বি.এস

থাবনের রহস্য
প্রাপ্তবয়ক্ষদের জন্য • মূল্য ৬.
থানবিজ্ঞানের রঙানও বহুচিত্রে
চিত্রিত তাতি আধুনিক সংস্করণ।

মোহন লাইরেরী ০০এ মুট্টেলন মুট্ট ক্রিকতাত - জ্ঞান্তর জির্মান্তর জির্মান্তর প্রাণ্ডির জির্মান্তর জির্মান্তর জির্মান্তর জির্মান্তর জির্মান্তর জির্মান্তর জি তাড়ি ছইরের চুকে মুখেম্থি কসে অধ্বারে গলপ আরম্ভ করলেন।

আর বখন অন্ধকার এই শরতানের রাজত্ব গিলে খাছে, বখন মনে হছিল এই খোপ-জন্সকোর ভিতর পরি অথবা জীনেরা হোটে বেড়াছে জখন একদল ধ্রত শেয়াল নতুন কবরের দিকে সন্তপণে এগিরে আসহে। দেমে আসার সময় ওরা পরস্পর মাংসের লোভে খাঁক খাঁক করছিল। জোটন বলল, আমার ক্যান জানি ভর সাগতাহে।

ফ্ কিরসাব জানেন, সোলেমানপ্রের
বড় বিশ্বাসের ছোট বিবির বড় ছেলে
কলেরার মারা গেছে, জানেন শেষালেরা
থাবার লোভে কবরে পা বাড়িয়ে গতা
থ্'ড়ছে। স্তরাং তিনি সাম্প্রনা দেবার
মতো আদের করে বললেন, শিষালেরে এত
ডরান! ডর নাই। অরা ক্ষ্ধার এমন
করতাছে। মনে আছে আপনের—পাঁচ বছর
আগে আমার একবার ক্ষ্ধা পাইছিল।
আপনে শ্টেকিমাছ দিয়া প্যাট ভ-ই-রা
থাওয়াইছিলেন। প্যাট ভরলে ছরা
হ্রাহুর্যা করব না।

জোটনের **স্ম**তিতে সব ভেসে উঠছে। সেদিন ফকিরসাব পরিপাটি করে ছেডা মাদ্বরে খেতে বর্সোছলেন। তিনি খেতে বসে দুবার আল্লার নাম উচ্চারণ করে আকাশ দেখছিলেন। আকাশ পরিক্কার। বড় তক-তকে সেই উঠোনে ঝকঝকে আকাশের নিচে বসে গব গব করে খেতে পার্রাছলেন না। যেমন পরিপাটি করে বর্সোছলেন, তেমনি ধীরে-স্বেথ এক সার্নাক মোটা ভাত শুটকির বর্তা দিয়ে কিণ্ডিত মেখে বেশ তারিয়ে তারিয়ে খেয়েছিলেন। ঠিক যেন এই মাচানের মতো। কোন জবরদািশ্ত নাই। নিচে একটা দ্বটো ভাত পড়েছিল, তিনি আঙ্বলের ডগায় তুলে সম্তর্পণে মুখে প্রে...যেন এই মোটা ভাত ফ্ররিয়ে গেলে আর পাওয়া যাবে না...আল্লার বড় অম্লা ধন। জোটনের এখন মনে হচ্ছে ফকিরসাবের খ্'টে খ'টে খাওয়ার স্বভাব চিরদিনের। এখন এই মাচানে বসে অন্ধকারে শরীর খ্বাটে খ্বাট থাওয়ার সথ। শরীরে শক্তি নেই। তব্ ফোকলা দাঁতে মাংস খাওয়ার মতো হাতটা যত্তত্ত নাড়ছেন। এভাবে ধীরে ধীরে জোটন বিবি নিস্তেজ হয়ে পড়ছে। এখন আর শেয়ালের চিৎকার কানে আসছে না। সোলেমানপরের বড় বিশ্বাসের কথা মনে পড়ছে না। তেরটি সশ্তানের জননী জোটন—এই অন্ধকারে চুপি দিলে কিছ্মতেই বিশ্বাস করা যাবে না। তার বড় বেটা কাফনের ভিতর হাত-পা শক্ত করে শরে অথচ জোটনের জননী হবার সেখ মরছে না। সে ফাকিরসাবের কোলে মাথা রেখে বলল, রাইতের ব্যালা চান্দের লাখান মুখখান একবার দ্যাখমু ফকিরসাব।

ধীর স্মিথর ফাঁকরসাব এই ম্হ্তের্থিটে থ্°টে থেতে এত বাসত বে, চালের লাখান ম্থখান, আপনে আমার নয়নের মুণি অথবা পানীর মতো গড়-বুলী কুইরা রাখতে ইচ্ছা বার—এ ধরনের কোন কথা। গলা থেকে উঠে আসছে না। জননী জোটন সে কথার উত্তর গেতে জবরদাস্ত করল না খ্'টে খ্'টে ভাত থেতে সেও বসে গেল।

ছোটকাকা नानर्दे भनर्देक भणात घर ধমকাচ্ছেন। সোনার পড়া হয়ে গেছে, ভ এখন ছ্বিট। স্তরাং ওর একা-একা বাইরে ঘরে ভাল লাগছিল না। সে পাগা জাঠামশাইকে মনে মনে খ্ৰজতে থাকল মা এখন রামাঘরে, তিনি আতপ চাউলে ভাত রামা করছেন। আতপের ভাত আ ভাঞ্জা আর কৈ মাছ স্কুলন্ধ ঘি সোনা ক্ষ্মার্ড ভাবল নিক্লেকে। সে জ ফুলের কুড়িছি'ড়ে নিল একটা। ও*ত্* পড়া শেষ হলে একসংশা মা খেতে দেৰ্বে সে এখন বাড়ির চারিদিকে জ্যাঠামশাং খ'জে বেড়াচছে। সে হে°টে যাচছে। বাগী দোপাটি ফুল ফুটে আছে। বেলফুলে গন্ধ আসছে। ঝুমকোলতা গাছে গাং म् लिছ्ल। नानावकरमञ्ज कर्न এই वाशास শ্বেত জবা, রক্ত জবা, চন্দনি জবা। ক রকমের জবাফ্ল। ভোরে সেবড় জেঠিম সংশা ফুল তোলার সময় সব ফুলের না ম্খনত করে ফেলেছে। সে যেতে যে দেখল, দোপাটি ফ্লুলগাছের নিচে যেসব সব্জ ঘাস রয়েছে, সেখানে জ্যাঠামশাই শ্য়ে আছে। সে চুপি চুপি ফ্লের রাজ্যে ঢুকে জ্যাঠামশাইর পাশে বসল। জ্যাঠামশাই মাথার নিচে হাত রেখে সম্তপ্ণে অন্য হাতটা প্রায় আয়নার মতো চোখের সামনে এনে ধরে রেখেছেন। যেন সেই হাতের তাঁর কিবদশনের ইচ্ছা। সোনা এবার চুপি চুপি জাঠামশাইর পেটের উপর চেপে বসল। তারপর উর্ণিক দিল পাতার ফাঁক দিয়ে। সে দেখল কত সব বিচিত্র রঙের প্রজাপতি ফালের মতে ডালে বসে আছে। সোনা ব্ৰাল, জাঠামশাই হাত দেখছেন না, গাছের সব প্রজাপতি দে**ুছেন।** সোনা তথ**ন পেটের উপর বঙ্গে ডাকল** জ্যাঠামশয়।

मगौन्तनाथ **উउत्र कतरणम ना। ग्**र्यः

সোনা ব**লল, তাম্ক খাইবেন? তাম্ক** আইনা দিম্।

মণীপুনাথ বললেন, গ্যাৎ চোরেভ লালা। সোনা বলল, আপনের ক্ষ্য লাগে না জ্যাঠামশার?

মণীপূনাথ বলল, গ্যাৎ চোরেত শালা।
সোনা এবার রেগে গিরে বলল, আমিঅ আপনেরে তবে গ্যাৎ চোরেত শালাকম;।

মণীন্দ্রনাথ এবারেও হাসলেন। তারপর
হাত তুলে মৃত সেই ডালে বিচিত্র রঙের
সব প্রজাপতিদের দেখিরে নিজে দ্বতিনটে
ঘাস মুখে পুরে দিলেন। তারপর দীর্ঘা
সময় ধরে মুখটা হাঁ করে রাথলেন—বেন
বলতে চাইছেন, আমার মুখ দ্যাখো, গছরে
দ্যাখো, আমার আলাজিভটা কত বড়
দ্যাখো। তুখন সামস্থিনন কি কাজে

এপাড়ার দৌকা নিরে উঠে আসছে। এথম ব্রাকাণ। ইপম এই সকালে নাও নিরে আউপ ধান কাটতে চলে গেছে। এটা ভাস্ত মাস।

মণীক্রমাথ, দোপাটি ফ্লের সব বড় বড় গাছ, গাছের ভিডর নিজেকে কেমম আড়াল করে রেখেছেন। কেউ দেখতে পাক্সেনা। সেই গাছের ঝোপে ত্রুকে গোলে না। কেবল মনে হর সেখানে সব ফ্লের গাছ আছে লার অজন্ত দোপাটি ফ্লে, লাল না হর করের করের করের করের লাল রঙের ফলে করেছে। আর বার রক্তিছে। আর বারে হাতের ক্রের করের নাকার রক্তির থাকে নোকার, বাদাম ত্রেল সোকাল গালির নদীতে এখন গিরে এইসব নোকা পড়বে। সাম্ ফ্তিমার হাত ধরে ছোটকতারে কাছে বাছে।

সাম ছোটকর্তাকে দেখেই বলন, কর্তা অপেনের ডে-লাইটটা নিতে আইলাম।

ছোটকত বিলালেন, ডে-লাইট দিয়া কৈ হৈব ?

- —ফ**্ল**নের সাদি দিতাছি।
- —কোন্খানে দিবি?
- --আসমানদির চর ৷
- বৈঠকখানার গিয়া ব'। আমি শ্যাথতাতি লাইটের অবস্থাটা কি।

সাম ফ্লের বাগান অভিক্রম কর র সমর দেখল বড়কতা দোপাটি গাছের ভিতর শুরে আছে। মাথার নিচে হাত এবং সোনা, বড়কতাকে জড়িরে দুর্বাঘাসের উপর শুরে আছে। সম্তর্পণি এরা উভরে গাছের ভিতর কি কেম খাজে বেড়াছিল।

ফতিয়া সামরে সপে হটিতে হটিতে সোনাবাবকে দেখতে পেল। বলল, আমি বাই বান্ধী।

- --रेक वार्वि?
- —বড় ঠাকুরের কাছে।

—বাও কিন্তু বড়কতারে ছাইর না। সোনাবাব্রে ছাইর না।

. এইসব ফ্লের গাছ, পাতাবাহারের গাছ এবং লেবরে ঝোপ পার হলে গ্রামের পথ। কতিয়া ব্যুরে গিরে সেই পথের উপর বসল। ভাকল—অ সোনাবাব্!

্রানা পিট-পিট করে ভাকাচ্ছে ঝোপের ভিতর থেকে। সে বলল, তুই!

्र —वांखीत नाम आर्रोड। फिक करन रहरम निन फणिया।

কৃতিযার কোলরে একটা বাব্রহাটের জাট পাড়ি জড়ানে। নাকে নথ চোট চোখ এবং পুর্মা-টানা চোগে। পারে ফল। কৃতিয়া নজুলে জগুরা হটিলে পারে ব্য ক্ম শব্দ হয়। গারের রঙ সব্ভ এবং কন পাতার রঙ মহেব। সোনা বলল, ভিতরে আইবি?

--- कि कहेता वास् ?

—ক্যান দোপাটি গাছগর্নার ভিতর দির আর।

ফতিমা ফালের ভিতর দিয়ে হামাগাড়ি দিল। সে লেবার ঝোপে চাকে সোনার পালে একটা পোষা পাখির মত মাথ করে ফালের মৃত **ডালে সেইসব প্রজাপতি** দেখন। আর অবাক ফতিমা—সে লক্ষ্যই করেনি, ঠিক পারের কাছে, একটা গম্ধরাজ্ঞ ফুলের গাছ, গাছটা ফ্রলে ফ্রলে সাদা হয়ে আছে, নিচে সেই আদিবনের কুকুর শারের শারে লেঞ নাড়কে। ফতিমাকে সামানা অপরিচিত মনে হত্তিল। কুকুরটা মূখ হাঁ করে খেউ খেউ করবে ভাবছিল—কিন্তু যা ভাব সোনাবাব্র সংগ্রুকুরটা আর কোন কথা ব**লল** না। মণীন্দ্রনাথ তেমনি শ্রে আছেন। ভালপালা অভিক্রম করলে অফ্রন্ত আকাশ, সেখানে মেখের ভিতর অনেকদিন আগের সোনালৈ বালির চরে নৌকার পালের মতো একখানা মুখ আকাশে ভাসতে দেখলেন। আর শেই অভ্যাসমতো একই কবিতার পাথিরা সারা মুখের উপর উড়াতে থাকল, তিনি যেন বলজেন, আই হয়ভ একজামিনতা আয়েশ্ড ডু ফাইন্ড অফ অল দাটে ফেন্ডার মি, দেয়ার স নান আই গ্ৰীভ টুলিভ বিহাইপ্ড, বাট ওনলি ভনলি দিং

ফতিমা নথ পারে পোলা পাথির মত ঝোপের ভিতর ব্যেছিল। সে পাগল সাকুরের কথা শ্নে হাসছিল। কছাই সে ব্যাত পারছে না। কিছা ব্যাত না পারলে ফতিমা হাসে। সোনা বলল জাঠামশাই ইংরাজি কৈতাছে। আমি যথন জাঠামশাইব মত বড় হমা, ইংরাজিতে কথা কমা। আমি এ বি সি ভি পড়তে পারি। কতিয়া পাল্টা গাইল-বাজী কৈছে আয়ারে-অ ইম্কুলে ভার্তা কইরা দিব। আমি-অ পঞ্চম_।

লোনা বলল, ভোরে কলাপাতার খাগের কলমে এ বি সি ডি লেখলাম। তারপর সে বলতে পারত, নিমলৈ চরণে, রছে বিভূষিত কুম্ডল করণে বললাম। কারণ পড়া শেষ হলে প্রতিদিনের মতো সোনা ঘাটে দাঁড়িকে থাজাপাতাগ্রিল কুচি কুচি করে ছি'ড়েছে। তারপর বর্ষার জলে ভাসিয়ে দেবার সমর সরুবতী দেবীকে প্রণাম করতে করতে বলেছে, আইছেন সরস্বতী ঘাইবেন কই— হাতে-পারে ধরিয়া বিদ্যাথানি লই। কিণ্ডু ट्रमाना किन्द्र देवल ना। कात्रग, जग्रोगमगात्र বড় বড় চোখে তাকাচ্ছে। কোনোদিকে চলে যাবার আগে তিনি এমন করেন। সোনা এবং ফতিমার কথা শানে থেন তিনি বিরয় হচ্ছেন: ফতিমা এক কথা বললে, সোনা দ্বৈথা বলছে।

—বাজী কইছে দশ্দিরহাটে বাইরা বই আইনা দিব। মসজিদের বারানদার বইসা আমি পড়মু।

পাগল ঠাকুর তথন বললেন, গ্যাৎ চোরেত শালা।

সোনা বলগ আপনে গ্যাৎচোরেড শালা।

এবার পাগল ঠাকুর সোনাকে জড়িরে ধরলেন। ভারপর সেই থেকা থেকে উঠে বাইরে এসে সোনাকে একটা প্রজাপতি ধরে দিতে সাহাযা করার সময় ফডিমা পালে পালে হাঁটাতে থাকল। সোনা সেই প্রজাপতি নিয়ে কোঁটার ভিতর করের রাখবার সমর বলল, এই প্রজাপতি লাগব তর?

—দ্যান।

-निर्विक करेता?



ফতিমার গলাতে পাথরের মালা। ফতিমা কোমরের কাপড়টার পাচি খংলে ফেলন। একটা কচুর পাতা তুলে আদল। গাছের ছायात मीफिरत निविष्टे भरन मुकल প্रजा-পতিটা কচুরপাতায় রেখে মুখটা বন্ধ করে দিল। তারপর ফতিমার আঁচলে বে'ধে দিয়ে রাবার জাঠামশাইর শিহনে ছাটতে থাকল। শৌল্যনাথ ওদের নিরে অর্জন গাছটা শ্বশ্ত হোটে সেলেন। এখন বর্বাকাল---मुख्यार नाख, नमी, बान्य धरे भ्या मामान ছগং। এখন কত তালের নৌকা, আনারসের দোকা, করলার নৌকা নদী ধরে নেমে शालका এই नमी आज नाउ प्रश्रामे मन হয় কোথাও না কোথাও পলিন শারে আছে। পলিনের স্মৃতি, পলিনের চোখ গ্রে-দেয়া নৌকার মত শাধা টানছে আর টানছে।

मीकरणत चात नामधे, शनधे, এখনও পড়ছে। ওদের ছুটি হয়নি। ওরা সোনাকে পুকুর পারে ঘ্রতে দেখে চটে গেল। প্কুরের অনা-পারে সোনা, পাগল জ্যাঠা-মশাই এবং টোডারবাগের সেই টরটরি মেরেটা। যেন এক হরিণশিশ্ লাফায় আর নাচে, সোনাকে পেলে ত কথাই নেই— শক্তনা দিন হলে মাঠে ছাটে গিয়ে বৰ গম খেতে হারিয়ে যেত। ওদের ছা্টি হর্মন। মোনার ছুটি হয়ে গেছে। ওদের রাগ বাড়-ছিল। সোনা মেয়েটার অচিলে কি যেন रवर्ष भित्रक्। खता एकरभ राजा। भन्दी বলল, দ্যাখল, সোনা ফতিমারে ছু'ইয়া मिला।

তখন অজ্নি গাছের নরম ছকের উপর সামনে বিজেন পিঠ রাখল মণীন্দ্রনাথ।

জমি, জমিতে জল থৈ থৈ করছে, দুৱে কোথাও ধান খেতের ভিতর কোড়া পাখি ভাকছিল। নদীতে নৌকা, গ্রামোফেরন গান-নদী আমারে ভাসাইয়া লইয়া যাও। আর বর্ষার অবয়বে শুধু এই যেন প্রার্থনা—আমারে ভাসাইরা লইরা যাও। সত্রাং এখন এই দ্ই বালক-কালিকার সংশে এই জলে ভেসে বেতে ইচ্ছা মণীন্দ্রনাথের। ফতিয়া ভাকল, সোনাবাব;।

সোনা বলল, কি!

—আমারে একটা লাল শাপলা কলে शिर्यन ?

— দিমানে। তথন সামা ফিরছে। হাতে তার ডে-লাইট। সে কিছতেই নরেন দাসের বাাড়র দিকে গেল না। সে সোজা প্রের পারে নেমে এল। এবং দুরে একবার চোথ তুলে গাছগাছালির ফাঁকে মালতিকে দেখার সময় মনে হল বাড়িটা বড় খালি থালি লাগছে। মালতি কি এখানে নেই! সে কি **শ্বশা**রবাড়ি চলে গেছে। ওর কেন জানি একবার বেহায়ার মত মালতিবের উঠোনে গিয়ে দাঁড়াতে ইচ্ছা হল। অংচ পারছে না। কোথায় যেন ক্রমে সংশব ওকে দ্রে সরিয়ে নিচ্ছে। সে তথন অনামনংক হ্বার জন্য ডাকল, ফতিমা কৈ গ্যালি?

ফতিমা সোনাবাব কে বলল, আমি হাই। সে ছুটে চলে গেল। সামস্থিন নৌকায় উঠে লাগি বাইতে থাকল। কি ভেবে ফাতিমা ধলল, বা'জী সোনাবাৰ, কইছে আমারে একটা লাল শাপলা ফ্ল দিব। সাম্ উত্তর না করে মেয়ের মুখ দেখল--মেরে তার বড় চণ্ডল। চোখ দুটোতে স্ব সময় দুকট্মির হাসি। মেয়ে এখনও অজ্ব গাছটার বিচে কি খ্জেছে। সাম্ দেখল, গাছটার নিচে কেউ নেই। ফতিমাকে বড় বিষশ দেখাছে।

তখন সোনা ক্ষার জনা এক লাফে রাহা।খরে *চাকে ধনবৌকে জড়িকে ধরল*। বলল, মা ভাত থাইতে माउ। क्र्या

ধনবৌ সোনার জন্য পিতলের মালসা থেকে সর আতপ চালের ভাত বাড়ছিল। বলল, পি'ড় পাইতা বস।

লালট্ খাচ্ছিল। সে পিট পিট করে ভাকাচ্ছিল। সোনার জন্য খার এমন সোহাগ ভাল লাগছিল না। মা ওকে বড় কৈ মাছ ভাজা দিয়েছেন। সে কছাতেই ক্ষোভ সামলাতে পারল না। বলল, মা. সোনা ফডিমার কাপড়ে কি বাইন্দা দিছে।

সোনা তাড়াতাড়ি ভয়ে মার গলা ছেড়ে বলল, নাগ মা।

লালট[ু] চিংকার করে বলল, মিছা কথা কইস না। সে পলটুকে সা**ক্ষী রাথল।**

পল্ট্রলল, তুই ফতিমারে প্রজাপতি ধইরাদিছস।

मागीवामा वाहेरत वर्छ मिछ बारस्त शना कार्णेश्रामका किन क्षत्र कुना महान दे दे

করে হুটে এলেন। ধনবো ভীত হরে পড়ছে। কারণ, এখন এই ভোরে শাশ্বভিঠাকুর্ণ জাতমান নিয়ে অন্ত বাধাবেন। বাছ विकारतत कथा वनारवन। कि व्यम्हित कथा. অমপাল ডেকে আনছে—আরও কত রকমের क्षा रत क बात। স্ত্রাং ধনবৌ ভাতের থালা রেখে বলল, সোনা বাইরে বাও। তুমি সান কর আগে।

সোনা বলল, না আমি সান করম, না। আমার ক্ষা লাগছে। আমারে খাইতে

ধনবেরি মাথা কেমন গ্রম হরে উঠছে। এই নিয়ে সারাদিন শশীবালা গজ 😁 कत्रदर। टम मृह शमाज्ञ वन्न, टमाना, चर्जर বাইরে যাও কইতাছি।

সোনা বলল, আমার খ্যা পাইছে খাম। খাইতে দাওে আমারে। লাক: বলল, না খাইতে পাইবি না, সান না করপে খাইতে পাইবি না। ধনবো লালট্রকে। পেতলের মালসাতে অবশিক্ট যে ভাত ছিল—সবই ধনবোঁ বাইরে বের করে দিল। মা**ছ** ভালা, ভাত সব আস্তাৰু'ড়ে ফেলে দিল। সোনার দঃখ বাড়ছে তখন। জিদ বাড়ছে। মা তার খাবার আশ্তা**কু'ড়ে** ফেলে দিয়েছে। মা তাকে স্নান করতে বলছে। সোনা পি'ড়িতে বসে থাকল।সে উঠল না। সে রাগে, অভিযানে হাত পা ছ, ড়ৈ কাদতে থাকল।

थन(तो तलल, ভाल १३व ना हमाना। তোমার পিঠে পড়ব কইতাছি। **ভাল চাও**ত উইঠা যাও।

বাইরে শাশ্য দিয়াৰুৰ শেৰ বাড়ছে। त्रानः কিছ,তেই করা ক্রমে উঠছে না। এই সব হেনস্থার জনা মাত্র সোনাকে দায়ী ভেবে, সোনার আঘাত করতে ধনবৌ অমান্যিকভাবে থাকল। সোনার দম বন্ধ হয়ে। ক সছে। সোনা কিছ্তেই পিণ্ড ছেড়ে উঠছে না। একালবতী পরিবার এবং সংগরের ভিল ভিন জনালা ধনবৌকে এই ম্হতে কুর্গসিত করে তুলল। সোনার চুল টেনে বাইরে নিয়ে এল। 🗕 খাড়ও কইরা। মথে যান রা পাকে না। ধনবৌ নিজে চান করে এক এবং এক কলসী জল ঢেলে দিল সোনার মাথার।

আর কাফিলা গাছের নিচে তখন সেই আশ্বিনের কুকুর। পালে মণীন্দ্রনাথ। মণীম্মনাথ সোনার কণ্ট সহ্য করতে পারছেন না। দঃখে নিজের হাত কাম**ড়ে ধরেছেন**। হাত থেকে রক্ত গড়াচ্ছিল।

ঘাটে ফতিমা, নৌকা বাঁধকে বলছিল, বা'জী সোনাবাব, আমারে ধইরা দিছে।

সে কেমন অনামনস্কভাবে বলল, জীবেরে কণ্ট দিতে নাই। ছাইড়া দ্যাও।

ফতিমা প্রজাপতিটাকে ছেড়ে দেবার জন্য আঁচল খালে দেখল, প্ৰজাপতিটা উড়াছ না, নড়ছে না। প্রজাপতিটা মরে গেছে।

(क्यूपा)





 ১০৮ টি দেশে ডাক্তাররা **ब्याम**किथनन करत्रस्म ।

● বেঃকোন-নামকরা ওবুবের ি च (काक्रारमङ्गेशालका वाव ।

D7-4244-14N



रक्फ "ध्रुत नामहरू"

— গোড়ার তেবেছিলাম বোড়ে র ম্ভাপতি বা সেকেটারীকে একটা চিঠি লিখব গৈরে থেয়াল হল, ব্যাপার্টা স্পো ভো শ্বে বেডিই নয়, খোদ ক্যালকাটা ষ্টোনভাসিটিও কড়িত। লিখতে হলে, চ্যান্সেলার, ভাইস-চ্যান্সেলারকেও লিখনে হয়। কিন্তু তাঁরা কি আমার চিঠিয় কোন গরেছে দেবেন, না কি আদৌ পি-এ, সি-এ-দের হাত ঘারে দেই চিঠি তাদের হাতে শেক্ষিকে? এরকম সাত-পাঁচ ভেবেই আর লেখা হয়ে ওঠে নি। এমন সময় ভাস্র-পো *ভাঙ্কা*হা ও না কি আপনাকে চেনেও। আপনি তো এসব বিষয়ে লিখছেন। দেখনে मा अप्रै। शिरत किया कतरण भारतन किमा?

হাত বাড়িয়ে জজয়ের কাকীনা চিঠিটা প্রাণিয়ে দিলেন। এই চিঠিটার কথাই ভাহলে অক্স দিন-করেক আগে বলেছিল। আদারওয়াইজ খুব লাজ্ব মুখেচারা চেলে, কলম পিষেই দিন কাটার। সাতে-পাঁচে থাকে না! দশটার আসে, পাঁচটার কিন্তে বার। গোটা অফিসে এক আমার সংগ্রেই বা দুটো কথা বলে। ভাও অফিসে নর। ফিরতি পথে হাঁটাতে-হাঁটতে ধমভিলা বা কলেজ স্থীটের ফুটপাথে বাদাম চিব্তে-চিব্তে।

বাড়ীর খবর কলতে চার না সহজে।

তিপে-তিপে আদার করতে হয়। অজ্যের
বাবা-কাকারা পচি ভাই। রাতিমত বড়
সংসার। অনেকগালো খড়েত্তো ভাইবোনা ঠাকুমার চেহারাটা ভূলেই গেছে
প্রার। ঠাকুমা গত আমিবনে গত হরেছেন।
সেই সঞ্জো অরেকট কামিলীর মাট-বল্টগ্রেলা সব আলগা হরে খনে গেছে।
কাকারা সবাই কেল ভালভাবে এসটাবজিলভ। কেউ সরকারী বড় পেরালা, কেউবা সাংবাদিক, কেউ অ্যাপক ও ছোটজন
মোডকাল রিপ্রেজনটেটিভ। এক অজ্যের
বাবাই একট্য হা ঝানুলার ভাল্ডেম। আটি
বাইদে একট্য হা ঝানুলার ভাল্ডেম। আটি
বাইদে এক-এ পাল করে খুলেনার একটা

কুলে কিছুদিন পজিমেছিলেন। মুক্তের
মাঝামানি হাকপালে ও কেন্ডল পরে মাঝার
সোলার হাট চাপিরে প্রেলক্তুর কাম্দগো হরে গেলেন। ভারপার সাভাশ-আটাশ
বহর ধরে এঘাট সেঘাটের জল থেরে পড়ক্ত বেলার আজ দক্ষিণ চন্দিল পরগদার
বংপাপসাগরের ভাছাকাছি খান-ক্রেক
ক্রীপের বি-ডি-ও হরে হাড় কথানা
জ্যেড়াক্ষেন; অবদ্য পোনে ভিনল টু সাড়ে
ছাল ক্ষেকে বতখানি সশ্ভব ভতখানি।

मा शाकरण व्यक्ततंत्र वावा मृत्यम् বিকাশ অনেক নিশ্চিত ছি**লেন। জানতেন** ভাইরা সবাই মি**লে-মিশে থাকৰে। তাই** একমান্ত ছেলে অজয় বি-এ পাশ করে মেজ-काकात रमोना आनार्शिती भाषात अक्षेत ফার্মে ত্কতে না ত্কতেই ছেলের বিরে দিলেন। **লক্ষ্মীপ্রতি**দার মত **হোটখা**ট মিশ্টি বৌ ঘলে এনে দেখেন লক্ষ্মী আগেই বিদার নিয়েছে। প্রা**বলে অজনের বিরে হল,** আদিবনে মা মারা গেলেন। এক শীতেই সব কটা কাকের বাচ্চা কোকিলের আগতানা ছেড়ে উড়ে গোল। তারা সবাই **ভূলে গেল** যে এই বড়দাই একদিন প্রোমোশনের স্ব আশা ত্যাস করে দ্ হাতে **য্ব**ি**নরে** এতগালো ভাইকে बाইরে-পরিরে মান্ত্র করেছিলেন। অসময়ে বে কেউ কারে। কথ नवः मृद्धन्तद्विकान विक्रोबात्तरेम**्ने**त मात পাঁচ বছর বাকী থাকড়ে তা ব্রেছেন: ব্রবলেও করার কিছু নেই। তাই প্রাণ্থ-লাগ্ডি চুকে যেতে বিল বছরের ছোট ভাই অম্লেশ্র হাড বরে অনুরোধ করে গেলেন—আগামী এপ্রিলে অজ্যের বৌ স্কৃতা-ফাইন্যাল দেৱে। আমার ওখান থেকে তো আর সম্ভব নর। তুই বদি দরা করে उत्तत अकरे, थाकरू फिन। मार्थ सामाराम् ছোট কাকা আর মা বলতে পারেন নি।

হোট কাকীয়া খ্ৰ স্বীবধের লোক নন। কলকাতার প্রোনো বাসাটা এখন তবিই সংক্রে। কারল ভাড়ার টাকাটা এখন এক্ষালী সংস্থার থৈকে আসে না; ছোট কাকাই কো। আড়াকে কাকীবা ল্লু নাচিত্র কাকাকে বলোছকো—তোমার নানকেবাদির কোন আজেল নেই। আড়াকের দিনে একটা মান্বের বাই-বর্চাই বেখানে প্রার বলো টাকা লাগে লেখনে ছেফে-বোরের ব্যক্তির ভোষার বাড়ে চাপিত্র দিরে কেটে পড়ালের।

কালা সাধান্য প্রতিবাদ করার চেন্টা করেছিলেম—ভা কেন? ব্যাপারটা তো নার সাত নাসের। পরীকা হলেই ওরা চলে বাবে।

কণ্ডার নিরে এটেল কাকীয়া — চলে বাবে। কোষার বাবে প্রিন? অকরের চাকরী কলকাভার। আর ভোরার বান্য থাকের সৈই কোন ধাপথাড়া গোকিশপ্রে। চাকরী বা ছাড্লে তো আরু বোগারোর সম্ভব বা।

কাকীয়াকে চটাতে চান না কাকা। ধৰ রেখে সার জানানোর স্বেরই বলেন—কেটা বড়দার ব্যাপার। আমি দাদাকে সাক বলে দির্মেছি, পরীক্ষার পর একদিকও না। তবে বাইথরচের জন্য অজয় মাল-মান লোরা দুশে করে দেবে বলেছে।

এর পর কাকা-কাকীয়ার তেতর আছা
কি কথা হরেছিল বা আলো দিন্তা হর, ভা
শোনার বৈর্থ অভ্যান্তর ছিল মা। বিশেষ
করে সদ্য-বিরে-করা ছেলেমান্তর জৌ কাত-জাত
বহরের বড় কাকা-কাকীয়ার জাতিল রমতত্ত্বর স্বল্কসক্ষান ক্ষেত্তন আনে ভালা
লাগে নি অভ্যান্তর। বিরম্ভ হরেই ব্রেছে—
নাথ কান ভরসা করে জেকো মা। চোখ
বেলে দেখো ভোমার-জারার জন্য ভালা
কাকীয়া কি করেন। বরং সম্মান্তর ছালা
কাকীয়াকৈ ভিজ্ঞাসা করে। ছোট কাকী
বি-এ বি-টি। ভীনও ভোমার মতই বিরের
পর এ রাড়ীতে একে পঞ্চালানা করেনে।

উপদেশের বক্তারে জানিকে ব্যক্তাকেও, তেতরের চাপা অভিযান ঢেকে 'রাখাত পারে নি অভার বিভিনার ক্টপার্য করে

হটিতে-হটিতে অদেক কথা ও আমার बरमार्ट-कारनन मामा काकीमा स्ववाद वि-ध পরীকা দিলেন সেবার কাকা শুরোদো কোম্পানীর চাকরী ছেড়ে একেবারে পরে বেকার। ছাতে এক পরসাও ছিল না। বাবাই কাকীমার টিউটোরিয়ালের মাইনে থেকে भरीकात कील **भर क**्षित्रहिस्तन। अवह ছার কটা টাকার জন্য ত্যনিকে এক সেট काएकन व्यामित पिएड भारति मा। भव জেনেও কাকা স্পিক টি নট। অথচ টি-এ ডি-এ হলেটজ মিলিয়ে কম করেও ন'ল টাকার ওপর কাকার ইনকাম। আমার আর তো আপনি জানেনই। সবশ্বত্থ মাত্র তিনশ পনেরো টাকা। এ থেকে কার্ডাকে বিই সোরা দ্লো। যাতারাত ভাড়া আর দ্-একটা ছোটখাট প্রয়োজন মিটিরে হাতে কিছাই থাকে না। বাবাকে জানাতে লজ্জা করে। **ভाববেন ছেলেটা অপদার্থ'। हाकরी-বাকরী** कतरह, विराम्भा करतरह, अधरना वारभद সাহাবানা হলে চলে না। সভাি আমি আশদার্থ । মেজো কাকার ছেলে রজা এবার ভান্তার হয়ে বেরুবে। আর আমি কিছুই হতে পারলাম না।

মধাবিক বাঙালী পরিবারের হানপিশ্ডের বপরপানিট্রু স্পতী কানে দানতে
পাই। সেই সংশ্য দীর্ঘানার, প্রার-জন্সা
জলের রেখা, কৌপানি, হতাশা কিছুই
বাদ বার নি। ব্যক্তন কাকা ও উল্জনজ্ ভবিরং খ্ডুতুতো ভাইপোদের পালে
নিজেকে বড় ছোর মনে হর। গোপন ইক্ষার
সামান্য বেট্রু বিলিক দিরে বার ভাতে
মনে হল ও চার আলাধ্য করে সংসার
পাততে, কিল্ফু ক্ষমতা নেই। পাছে কোন
পাততে, কিল্ফু ক্ষমতা নেই। বাছে কোন
পাততে, বিশ্বনা মাড়িরে ফেলি, ভাই
ভাটাতি প্রস্কার পালীনোর কনা ক্ষিপ্তাসা
করিনিক একসেট কোণ্ডেনের কথা বলভিলে অক্সে? ব্যাপারটা কি?

প্রদেশন জবাব রাস্ভার মেলে বি।
মানা কথার, ভিড়েড় ছারিরে গিরেছিলে।
শ্নেলাগ্র দিনকরেক বালে অফিনে। বলল
অজয় নিজেই। অফিনের পিঙন বনমালীর
কাছ থেকে ধার নিরে টাকাটা পাঠিরে
দিরেছে। দ্-এক দিনের মধ্যেই কোস্চেন এসে বাবে। ওরা একসপ্রেস ভাকে পাঠাবে। এর পর মাসখানেকও বার নি, হঠাৎ একদিন রাস্ভার বলল—আমরা এ মাসের শেবেই চলে যাজি দাবা।

চমকে উঠলাম—কোথার? কোথার হাচ্ছ তোমরা?

জ্ঞান মুখে জবাব দিল ক্লান্ত ছেলেটা— ভাবছি তানিকে এর দাদার জাতে রেখে আসব। দিজে একটা মেস-টেস দেখে উঠে বাব।

ঠোঁটের ডগায় যে প্রশ্নটা ঝ্লাছল, জিন্ত দিয়ে সেটা টাকরায় থেলে দিলাম, এসব পারিবারিক ঝ্ট-ঝামেলায় নিজেকে জড়িয়ে: কি লাক্ত? তারচেয়ে খ্ব সহজ্ঞ সরল নিক'ঞ্চি প্রশ্নটা করলাম — ডামির প্রীক্ষা কেমন হল অজয়?

সরাসরি কোন জবাব না দিয়ে থানিক-কল চূপ করে রইল। তারপর কথার ফাঁকে-ফাঁকে বলল—কয়েক দিন ধরেই আপনাকে বাাপারটা বলব-বলব ভাবছিলাম। লক্ষায় পারি নি।

কৌত্তল চাগিয়ে উঠল ভেতরে—কি ব্যাপার?

না রাল্ডার বলব না। চলুন না আছ কাকার বাসার। রোজই তো কলেজপাড়ার বান। ওখানে থেকে তো খান-করেক স্টপ মোটে। কাকীমার মুখেই স্ব শুনকেন।

সেই ব্যাপারটাই আজ অজয়ের কাকীমা ভেঙে বললেন। ভদুমহিলা কথা বলেন বেশ গ্রহিরে। কিন্তু বড় কাটা-কাটা। তানি সম্পর্কে ও'র পত্রবধ্। ঐ ছোট্ট মেয়েটাকে আমার মন্ড এক অপরিচিড বরুক লোকের সামনে দড়ি করিয়ে অসাফল্যের ইতিবৃত্ত না শোনালেই হয়তো ভালো করতেন। নিজে বে অক্রেশে বি-এ, বি-টি পাশ করেছেন, বছর বছর ফেল করেন নি লে কথাও শোনাতে ছাড়লেন না। আরে জানি? দুদ্বোর স্কুল ফাইন্যাল ফেল করার বন্দ্রপায় মলিন। কাকীমার এমনিতেই ফোটানোম বেন আরো কু'কুড়ে গেল। প্রথম বার পরীক্ষার এক মাস আগে টাইফরেড থেকে উঠেছিল। দ্বিতীয় বার বিষের প্রস্তৃতি, হৈ-চৈ সব মিলিয়ে মাথাটা গ্লিয়ে গিয়েছিল। তারপর বাপ মা নেই

ছোটবেলা থেকে দাদাদের দর্মন মানুব।
ভূবছেলা অবতেরে সেই বিশ্রী দিকটার
সপো কমা বলা যার না। তাই মুশে বে
মবাব দিতে পারে নি, ডারই যোগা উত্তর
দেওরার জন্য আপ্রাণ চেন্টা করেছে এবার।
সেই চেন্টার স্তুপাত কিন্তু এক
অস্বাভাবিক যোগাযোগের ফল।

মার্চের মাথামাঝি হঠাও ডাক-পিওন একটা চিঠি দিয়ে গেল। পোল্ট কার্ড সাইজের চিঠিটার এক পিঠে লেখা আরে তানির পরেরা নাম, ঠিকানা। উল্টো পিঠেই এক কোলে ইংরেজীতে টাইশ করা—

"আকাডেমিক ব্যুরো (কোল্ডে ডিপার্টমেন্ট)

৭৯.....গীট। কলকাতা।"

বাকী চিঠিটা হাতে লেখা, বাংক সাইক্রোস্টাইল করা। বস্তুষ্য মোটাম্বী: এ রকম—

"মহাশয়-মহাশরা,

১৯৭০-এর বি-টি, স্পে-অনার্স ১।ই, বি-ক্রম, ১।২, বি-এস-সি ১।২, বি-এ ১।২, প্রি-ইউ, হাং সেং, ও স্কুঃ ফাঃ পরীক্ষার **পাল্ট মিনিট সাজেদালা** এইমার বেরিরেছে। প্রতি পেপারে মার্চ দশটা প্রশন। গাড পরীক্ষার ৯৫ শতাংশ প্রশন এসেছিল। এবারও প্রচুর ক্রমন আসবে।

প্রত্যেক প্রবীক্ষার জন্য (সমশ্য বিষয়) ঃ ১৫ (ডাক মাশ্লে ১ দ্বতন্ত্র)।
চিঠি পাওয়ার দশ দিনের মধ্যে নিশে কনসেশনে দশ টাকার 'সাজেসান্স' পাওয়া যার (১১টা—৭টা)। অন্য কোন রাজে পাওয়া যাবে না। ডাকে -পাবার জন্য পরীক্ষা, বিষয়, নাম, ঠিকানা এবং নন্বর উল্লেখ করে এগারো টাকার মণি অভার উপরোভ ঠিকানায় পাঠালে হয়। ইতি—
তক্ষাপ্রেস ডাকে পাঠানো হয়। ইতি—
তক্ষাপ্রেস ডাকে পাঠানো হয়। ইতি—
তক্ষাপ্রেস ডাকে পাঠানো হয়।

চিঠির তলায় কোন সই নেই। ফলে
জানার উপায় নেই যে ক সেক্রেটারী। তবে
ঠাসব্লোন ঐ চিঠির শেষে একটা
রেকট্যাপালার বক্সের মধ্যে জর্বনী
ফ্টনোটে বলা হরেছে, "সম্বর রেজান্ট
জানার জন্য সাজেসালেসর' সংগে পাঠানো
'ফর্ম' পরীক্ষার পর ভাড়াভাড়ি পাঠান।'

ঐ প্নেশ্চট্ৰুই বড গোল বাঁধিরেছে।
বনমালীর কাছ থেকে ধার নিরে অজর
বৌকে সাজেসালস আনিয়ে সিরেছিল, ভার
সংগা সাইজোসটাইলড কর্মাও এসে
উপন্তিও। ফুর্মার ওপরেই ভিন্দিট গাইনে
বে বরবাট্রু লেখা ছিল, তার প্যারাফ্রেছিং
করলে মানে দাঁড়ার ঃ পেপার পিছ কুড়ি
টাকা। একসপো সব কটা পেপারের ছার্কাস
লানতে হলে কনসেশনাল রেটে একশ টাকা
মাত্র। তার পরে গোটা করেক কিল আপ
দি ব্যাক্ষ্য ও সব শেবে আল্ডার লাইন করা
একটা জর্বী বার্ছা—জন্য প্রয়োজনে

আবার এক দফা ধার করে মূর্যা জনা বিজেই স্কাল্ড-ব্রক্তানি করেন, স্কাল জিলে

निग्रानात्त्व अर कार्यम्यः विष्यानिक साहिती श्रामाप तथाक शास्त्रमः १०००

े विकः गारण्यत्र मध्यामी मान्यत्र अञ्चनातात्र कार्विनी

नान रमनाम

>0.00

R•@0

कर्मां ब्राइयामानाव

হিমৰভের দেব দেউল

বহু, চিত্রশোভিত সতিজনর প্রমণ কাহিনী

मद्राक्त शामित्राम्, २/७, महामाहत्रम तम खेरि, किन-५६

দেশাও করেছে, অবশা অনা প্ররোজনের ভাগিদেই। আরু কোন পেপারে বিশেষ ভর নেই। বত ভর তানির অব্দুক আরু ইংলিখ লেকেন্ড পেপারে। বাদ তান্দর, তদারকে ভরের কারণটা কোনরকমে কর করা বার। এবার ফেল করলে আছারি-সমাকে আর মুখ দেখানো বাবে না। বিশেষ করে কাকীমাকেই অব্দরের ভর বেশী।

স্বাক্রহীন সেরেটারীর সাক্ষাৎ মিলল কলেজ পাড়ার। মিউনিসিপ্যাল মার্কেটের মাঝবরাবর বে গালটা কাঁচা সক্ষা আর ভবিকরা ভাবের পাচিলের পাশ দিরে একেবেকে চলে গেছে প্ৰ দিকে, সেটাই স্ট্রীট। রোগা-পাটেকা, ঢাউস-কুমড়ো প্যাটার্শলেস বাড়ীগনের মাঝে একটা টার্নের মুখেই উনসত্তর নম্বর বাড়ী। একতলার সির্ণাড়র মুখেই একটা মিণ্টির দোকান। সি'ড়ির গারে ঝুলছে খানেক কোম্পানী, ইউনিয়ন আর কো-অপারেটিভের সাইনবোর্ড'। ঐ ভিড়ের মা**শেই অ্যাকা**র্ডোপ্লক ব্যারোকে থ্*জে বার করল অজয়-দোতলা বারান্দার পশ্চিম ধারের শেষ ঘর।

খুব বেশী হলে আট ফিট বাই ছ ফিট বড় জোর। তার মাঝেই খানকয়েক চিনের চেয়ার, চলটা ওঠা কাঠের টোবল, একটা শ্বরোনো রেমিংটন, দেয়াল-জোড়া কাঠের ब्राटक होन एम ७४। कारेलार भागा। यत ফাঁকা দেখে চুকরে কি চুকরে না ভাবছিল **অজয়। হঠা**ৎ চাপা কাশির থ্ক-খুকানি শতেন পেছন ফিরে দেখে দম নিতে নিতে সিগারেটের জব্বর টান সামলে নেওয়ার চেন্টা কর**ছেন এ**ক ভদ্রলোক। গোলগাল বেন াড়ের কোলী। সর**ু** পাড় পাড়লা খ্ডির ওপর ফিনফিনে আন্দির পাঞ্চাবী পরনে। ডান হাতে চারটে আংটি ও একটা সিগারেট মুটিয়ে ধরে আবার একটা কলকে টাৰ লাগা**লে**ন। নাক মূখ দিকে <mark>ধোঁয়া</mark> ছাড়তে ছাড়তে যে কথা কটা ব**ললে**ন, অঞ্জরের মনে হয় তার অর্থ—কাকে চাই?

কাকে চাই, কেন চাই, কি প্রয়োজন সব বলল অজয়। শুনেট্নে সংক্ষিপত একটা টান সিগারেটের গোড়ায় লাগিয়ে চোথের ইশারায় অজয়কে ভেডরে চুকতে বললেন ভদ্রলাক। নিজেও টেবিল খুরে দরজার দিকে মুখকরা চেয়ারটা টেনে বসলেন। স্বত্যে ধৃতির কোঁচাটা গিলেকষা পঞ্জাবীর ঝুলপকেট থেকে বার ভরে কোলের ওপর বিছোতে বিছোতে উদেবগ-হাঁন গলার জানতে চাইলেন—নম্বরটা কত?

আছে? —বেন প্রশ্নটা ঠিক মাখার তোকে নি অভারের। একট্ ভাবিচ্যকা থেরেই বলল—সেটা জানতেই তো এসেছি। বলেই ব্যুতে পারল ভুল হরে গেছে। কিন্তু ততকলে বেল কড়া ধাঁচের একটা গাট্টা প্রশ্ন হরে অজন্তের প্রস্নতাল্টাকে মাড়া দিয়ে গেল—মাথা খারাপ নাকি? এই তো দ্ৰ্যিনও পরীকা শেষ হর নি, সবে আটাশ ভারিখ। খাভাই বার নি পরীক্তের কাছে তো দশ্বর জানুবেন কি? বাল কর্ম তো জমা দিরেছেন, ভাতে রোল নাম্মর লেখেন নি?

আছে হা। ছলটা শ্বারে দেওরার জন্য অভাতাড়ি তানির রোল পশ্বটা উগরে দের অজর—নর্ধ পি-সি...।

ভালেক মর্ন দিছে বারকরেক সিগারেট টানলেন। ভারপর ট্রকরোটা একটা চারেছ ভাঙে গর্লৈ দিরে উঠে গাঁড়ালেন। কাইল রাাকের সামনে থাকে পড়ে নানা রংরেছ ফাইলের বণ্ডার যেন কি থাকেতে লাগলেন। মিনিট করেকের মধ্যেই একটা ফিকে নীল ফাইল টোনে বার করে ফিতে খ্লাডে খ্লাডে থ্কথ্ক করে ভিজ্ঞাসা করলেন— কি লাম?

তামি সারি ইন্দ্রাণী চন্ত্রবতী—নতুন কোন ভূক করে কেনার ভরে কেমন থতমভ খেরে বায় অঞ্জর।

ইন্দ্রাণী চক্তবতাঁ, নথা গি-সি...আপন মনেই গ্রেগ্ম করে নামতা পড়তে পড়তে বাাঞ্চের নোট গোনার মত ফরের তাড়া উল্টোতে উল্টোতে আবার চেয়ারটার এলে বসলেন ভদ্রলোক। দেখুন তো এটাই কিনা?— ক্লিপ আলগা করে একটা ফর্ম খাসরে নিয়ে অজ্বয়ের দিকে এগিরে নিয়ে বাভের লেখা চিনতে কোন কটা হয় নি অজ্বরের। খাড় নেড়ে জ্বাশাল—হাাঁ এটাই।

অন্দ আর ইংরেজীর নান্দা জানতে চেরেছেন তো? বিক আছে জ্বেলা কান্টা উইক নাগাদ থবর পেরে বাবেন।— বলেই ক্ষাটা ক্লিপে গ্লেখে কাইলটা বন্ধ করে দিলেন ভারলোক। বেন চ্যাপটারটা ওপানেই ক্রোজত হরে মেল।

কিন্তু দুখ্ মন্তর জানকেই ছো
চলবে নাং ভানির বৈ পাল করা চাই।
এবারও বাদি ফেল করে ছো কাকীযার
মুখ নাড়ার জান বেরিরে বাবে। অবচ
ভর ররেকে প্রোদশতুর: সব কিন্তু ভেবেই
অকা এসেকে। ভাই বলতে লক্ষা করলেও
অনেক কণ্টে জিডের ভলার লেখা ছিল
অনা প্রমাকনে?...।

সেনটেনস্টা শেষ হল মা। আর একটা সিগারেটের চুলোর আগনে ধরাতে ধরাতে করাতে বললেন—স্টো পেপারের ক্ষমা কম করে দুশো টারা লাগবে। তাও এথল না। সেই জানের গোড়ার। তথম আসবেন। দেখব কি করতে পারি। তবে হা আড়েভাল্স হাড়া কাজ করি না আমরা। পুরো পেমেন্ট আগেই আসনকে করতে হবে। বোঝেন্ট তো, অনেককে দিতেখুতে হর—হোট ছোট কাশি, এক রাশ ধোরার আড়ালে গোলগাল মেলল মুখখানা শ্রুক হাসিতে থিকথিক করে কাপতে লাগল।

তানির অন্ধের জের সেটানোর অধ্য শানেই মাথা বারে গেছে অজারের। জোগার

मजकात्मत्र कवाष्ट्रित (जन।द्वालत्र अर्घ

প্রখ্যাত সরেকার নিতাই ঘটক কর্তৃক কবির নিজস্ব স্করের স্বরলিপি

সঙ্গীতাঞ্জলি

(প্রথম ধণ্

করেকটি গজন, রাগপ্রধান, আধ্নিক, ঠুংরী, কীর্তান, বাউল, ব্যুদ্ধ ও শামাসপ্রীত এবং দেশাত্মবোধক গানের স্বর্গালীশ সংগীতাজালার অততর্ভ হইরাছে। কবির আলোকচিত্র ও হস্তাক্ষরের প্রতিশিশি সম্বলিত।

্য প্রথম খন্ডের নাম পাঁচ টাকা ।। দিবতীর খণ্ড ছাপা হইডেছে 👔

*

অপ্রকাশিত সংগতিবিচিতা ও নাটিকা দেবী স্তর্তি

কবির আসল পরিচর। তিনি মাজুসাধক। দেবনিজুতি নজরুলের এই আন্তর সপ্তার উচ্চানল পরিচর। তাদেশমাজুকার বন্দনাস্তুতি কবির এই সভাতি বিভিন্নর আন পাইরাছে। ইহা ছাড়াও আছে লুইটি সভাতিবহুল নাটিকা—বিজয়া ও ছরপ্রিরা। ডক্টর গোবিন্দগোপাল মুখোপাধ্যারের ম্লাবান জ্মিকাসহ ॥ য় দাম তিম টাকা মু

क्रवादाल त्कम

্ এ-৬৬ কলেজ শ্বীট মাকেট কলিকাডা—১২



পাবে এত টাকা? অলরেডি বনমালীর কাছে দ্ব দকার এক গাদা ধার হরে গেছে।
বাবার কাছেও চাওয়া যায় না। কোথ্ থেকে
দেবেন? মানসাঞ্চের গোলকধাধার পাক
খেতে খেতে কখন যে ছিটকে বাইরে
বেরিরে এসেছে টেরও পার নি।

বাড়ীতে অফিসে শ্বে ঐ একই
চিন্তা। টাকা পাবে কোথায়? এ মানের
শোবেই ওদের চলে যাওয়ার কথা। তানিকে
বাবার কাছে রেখে নিজে মেসে উঠলেও
দুশো টাকা বাঁচানো অসম্ভব। বড় জোর
টেনে ব্যুনে চললে গ'খানেক বাঁচাতে
পারবে। তেবেছিল তাই করবে, প্রয়েজনে
না হর বনমালীরই শরণাপম হবে আর
একবার।

কিন্দু বাবার একটা চিঠিই সব স্থান আপসেট করে দিল। স্থেদন্বিকাশ দু" মাসের মধ্যেই আলীপরে বদলী হরে অসহেন। লিখেকেন "স্ই মাসের কন্য তানিকে এখানে না পাঠাইয়া তোমরা থাকিও। আমি অমলেন্দ্র ওখানেই ভোমার কাকাকেও চিঠি দিতেছি।" দাদরে চিঠি পেয়ে ছোট ভাই যে রকম মুখ বে'কালেন তার অর্থ' একটাই—আপদ भिर्माष्ट्र कि**ष्ट**्र (७३ वाष्ट्र शिरक नाम ना । करन অজয় পড়েছে ফাপছে। মে মাসটা এখানে থাকলে ছোটকা'কে সোরা দ্বশো হবে। তাহলে তানির পাশের কি সব দিক ভেবেচিক্তে কাকীয়াকে গোপন करतरे काकारक -त्रिरकारतम्धे অজয়—মে মাসের কন্যমিবিউশনটা ছেড়ে দেন। পরে বে করেই হোক অজয় গ্যাপটা ফিল আপ করে দেবে।

কাকা খ্ৰ সংগোগনেই কাকীমার কানে কথা কটা তুলে দিকে কোণ্ণানীর কাজে ট্যারে বেরিরে গোছেন। কাকীমা এমনিতেই স্থেম্প্রিকাশের চিঠি পেরে ফু'সছিলেন্। সেই সংগে অস্করেব অনুরোধ শ্বদে ছটে জাল। তানিকে চাপ নিমে
আসল কথাটা জেনে নেওয়া
চিচাছেল—এ-সব নোংরামিকে প্রাপ্তর
দেওরাও পাগ। টাকা নিমে পাশ করবে,
এ যে বাপের জন্মেও খানি-নি। সেই
সপো নানারকাম কট্-কটিবা, ইলিভে।
কাকীমা তো ঠিকই করেছিলেন চিঠি
লিখবেন বোডের অফিসে। পরে অজর
বোঝানোতে কাল হরেছে। আমিও তাই
বললাম—লিখে ফল হবে না কিছ্। তখন
যেন অনেকটা নির্পার হরেই চিঠিটা
এগিরে দিরে বললেম—দেখন না এটা
নিরে কিছ্ করতে পারেন কিনা?

ফেরার পথে আমার বাস স্টপ পর্যক্ত এগিরে দিল অজয়। কোন কথা বলে নি, চুপ করে ছিল। মারা হল ছেলেটার জনা। বললাম—এরা চিটিংবাজ। তুমি কেন এর মধ্যে নিজেকে জড়াছে?

্যেন জবাব রেডি ছিল, শেলন কেনে বলল—এরা চিটিংবাজ ঠিকই। ভবে আপনাকে আমাকে ঠকাবে না। মার্কস ঠিকই জেনে দেবে, নন্বরও বাড়াতে পারে। জানি খবে নোংরা ব্যাপার। তব্ তানি বাতে পাশ করে তাই আমায় দেখতে হবে।

কোথায় যেন কথার স্বরে একটা মরীরা ভাব ল্যাকিয়োছল অজয়ের, তাই জানতে চাইলাম—এভাবে পাশ করাতে চাও কেন?

দুরে দোতলা বাস তখন ঝড়ের মত এগিয়ে আসছে। সেই দিকে তাকিয়ে অঙ্য বলল—আপনি কাকীমাকে বলবেন না. অফিসেও কাউকে না। আমার একার আরে **ठला अ**ण्डव नराः वावाः, काका कात्रस অনুগ্রহই আমি আর সহা করতে পারীছ পাড়ার কিম্ডারগার্টে ন স্পারিনটেনডেন্ট আমার কথা দিরেছেন, তানি পাশ করলে নার্সারীতে পড়াঞ্জ একটা চাল্স দেবেন। তাই ঠিক করেছি দ মাসের জন্য কাকার বাসায় আর না থেকে তানিকে ওর দাদার কাছে রেখে আসব। নিজে যে কোন একটা মেসে গিয়ে উঠব। খনচ কমিয়ে যা বাঁচবে তার 777071 বনমালীর জেল লোন যোগ দিলে তানি পাশ করে বাবে।

(এ লেখা ছেপে বেরোদোর অনেক
অনেক পরে দ্পুল ফাইন্যালের রেজান্ট
বের্বে। তানি পাশ করবে নিশ্চর।
চাকরীও হরতো একটা কুটে বাবে।
দ্বামী-দ্বীর বৌথ আয়ে বনমালীর ধার
শোধ হরে আর একটি নতুন সংসার পাতার
আয়োজন হরতো সম্পান ছবে। আর
স্বোগসম্থানী আলাভেমিক বুলো
এ রকম হাজার হাজার অজর-তানির বাড়
মটকে বিশ্বাস, বিবেক, রম্ভ শ্বেব নার
ক্ষেটি নাই আজ এদেশে?)

--निवरम्



নিবারণবাব্যর কাহিনী যৌথ-পরিবার ও নিরাপত্তা

(\$8)

বিনোদের চিকিৎসার ব্যাপারে তার জালৈশ্ব জীবনকাহিনী জানার প্রয়োচন হরেছিল; সব কেসে এত বিশদভাবে ছোট-বেলার ইতিহাস জানার পরকার হয় না। বিনোদ দীর্ঘদিন ধরে চিকিৎসার জন্যে আমার কাছে যাতায়াত করেও প্রোপ্রি স্থেহতে পারে নি। স্পেনা হবার আনুমানিক কারণগালে পাঠকরা জেনে-**ছেন। এ থেকে** তারা যেন এই সিম্বান্তে না আসেন যে রস্কচাপর শিধ বা হাটের অস্থের ভয় ব্ঝি প্রোপ্রি ভাল হয় না। মনে রাখা দরকার রোগ নিরমের অনেক কিছা শতেরি উপর নিভারশীল এবং মানসিক রোগের ক্ষেত্রে একই ধরনের উপসর্গ হলেই চিকিংসার ফলাফল একই রকমের হবে, এমন কোনো নিরম নেই। বিশেষ নিউরোসিস-চিকৎসার, অবসেশনের বেলার টাংকুইলাইজর বা অন্যান্য ওয়াধের বাবহারে বিশেষ ফল পাওয়া যায় না। বাাথা। আলোচনা. অভিভাবন, সংবেশন ইতাদি মানসিক চিকিৎসার নানা ধরনের পর্ণাত আমরা প্রয়োগ করে থাকি। রোগীর মাস্তদ্কের টাইপ, শিক্ষা-দীক্ষা ও ব্যক্তিছের বৈশিশ্টা অনুযায়ী বিশেষ ধরনের পশ্ধতির শরণ নিভে হয়। বিনোদের অবসেশন প্ররোপর্নির দ্র হল নাবলে ঐ ধরনের অবসেশন মাচেই দুরারোগা, এ আমরা মনে করি না। শৃণ্টাশ্ত হিসেবে একই ধরনের আর দুটো কাহিনী বিবৃত করছি। **এ'রা সম্প্**ৰ সক্রে হয়েছিলেন এবং এখনও সূত্র আছেন। এদের খবর আমি এখনও সেয়ে থাকি। চিকিৎসা করেছিলাম প্রায় ১৪।১৫ বছর

প্রথমে বলছি নিবারণবাব্র কথা।
আত্মর কাছে পাঠালেন এক ডান্তার বংশ্।
বরস ৪৫। রোগা পাওসা চেহারা। ভূগানেন
প্রার কৃড়ি বছর। একলা চলাফেরা করতে
পারেন না; একলা এক হরে থাকতেও
পারেন না। এক বিলিডি কোম্পানীর
আলাউন্টালট। চেম্বারে একলা বসতে

পারেন না, খাস বেয়ারা ট্রল নিয়ে ভেতরেই থাকে। দরোজা খোলা রেথে বাগর,মে যেতে হয়। সত্রী বা অন্য কেউ বাথর,মের দরোজা আগলে বসে থাকে। নিবাগণবাবার ভয় যে কোনো মুহ*ু*তে⁴ তার হাংপিদেডর ধাকপার্কান কথ হয়ে যেতে পারে। ডাক্কার ও আনুষ্ঠাগ্যক সাহাযোর প্রয়োজন যে কোনো সময়ে দরকার হতে পারে বলেই সব সময়ে তিনি সাহাযকোরী নিয়ে ছোরাফেরা করেন; অফিস-চেম্পার ও বাধরুমেও একলা থাকতে পারেন না। হার্ট ফেল করার ভয় থেকে একলা থাকার ভয় জনেছে, কিন্তু গ্রেড্ দুই ভয়েরই সমান। পাঁচ মিনিট একলা থাকতে হলেই দেহ-মনে ভয়ের উপসর্গ প্রকাশ পায় এবং হুদ্-যন্ত অচল, বিকল হয়ে এল মনে হয়। এর ওপর আছে পেটের গোলমাল। কোনো কিছুই হজম (?) হয় না। সব সময়ে পেটে বায়; ঘন ঘন ঢেকুর উঠছে, তবা বাহার চাপ কমে না। কয়েক-দিন কোন্টবন্ধতা চলে, তারপর সারা হয় পাতলা পার্থানা, মিউকাসে ভরতি। বারে বেশি নয়, তবে পরিমাণে বেশি ৷ কোলাইটিস্-এর চিকিৎসা চলছে। কোনো চিকিৎসাতেই কোনো ফল পাওয়া যাচে ना। इक्राप्यत अस्य म्,' त्वना त्थत्त यात्क्रन, প্রতিদিন 'ডুস' নিচেছন, তবুও কিছ**্মা**ত লাখব হচ্ছে না। পেটে বায়্র চাপ বাড়লে ভদুলোকের ভন্ন আরো বাড়ে. মনে হর হৃদপিশ্ড এখনন কাজা বন্ধ করে শিক্তির হরে যাবে। ব্যকের বাঁ-দিকে তীর বেদনা বোধ করেন এবং তখ্নি ভাক্তার ডাকতে হয়। খাওয়া-দাওয়ার কোনো অনিয়ম তিনি করেন না: আজে-বাজে কোনো জিনিষ খনে না, তা সত্ত্বে বায়্র উপদূৰ বাচ্ছে না। সকালে আধ ছটাক চালের ভাত ও মশলা না দেওয়া মাছের ঝোল, আফিসে দুটো মাত বাড়ীর সন্দেশ, আর রাত্তে খান চারেক গাওয়া ঘিয়ে ভাজা ল্ডি;—এই তাঁর সারা দিনের

অনেক ক্ষেত্রেই এই তথাকথিত 'কোলাইটিন' আর হুদপিল্ডের কিয়া বন্ধ হয়ে আকৃষ্মিক মৃত্যু হ্বার ভয়-একই রোগার মধ্যে দেখা যায়। 'কোলাইটিস'কে বাংলা, ভাষায় 'বৃহং-অন্ত-প্রদাহ' নাম দেওয়া যেতে পারে। পরিপাক যন্তের বিশ্ভথলা আমাদের দেশে খ্রেই ব্যাপক। আামিবা ও জিয়াডিয়াকে সাধারণত এই বিশ্বেশলার জন্যে দায়ী করা হয়। কিন্তু আগমিবা এবং জিয়াডি য়ার প্রচ লিড চিকিৎসাতে বেশির ভাগ ক্ষেত্রে সাময়িক ফল পাওয়া গেসেও সম্পূর্ণ আবোগ্য হবার সম্ভাবনা খুব কমই পাাথলজিস্টরা এর কারণও অনেক নির্দেশ করে থাকেন। 'এগামবিয়াসিস', 'ভিয়াডি'য়া-সিস'-এর নতুন অবার্থ মহৌষধ প্রতি বছরই দুটি একটি করে আবিষ্কৃত হয়: কিন্তু হিসেব-নিকেশ করে দেখা যায় যে আরোগোর হার । বাড়ে নি। অনে**ক সমর** বারবার পর্বাক্ষা করেও হয়ত 'এ্যামিবা', 'জিয়াডি'য়া' পাওয়া গেল না: তা সন্তেও ভারাররা হজম বা পাক্যন্তের গোলমালের जना कारना ना कारना ताश-जीवाण क দারী করে থাকে। এবং সেই মত চিকিৎসা**ও** চলতে থাকে। কোলাইটিস'-এর বেলাতেও মানসিক কারণ (পাঠ্য-প্স্তকে বলা হয়,— নাভাসি এলেড ইমোশনালে ফ্যাক্টর) ল্বীকার করে নিয়েও প্রচুর পরিমাণে হজমের ওব্ধ. বিরেচক, ডুস, এনিমা ইত্যাদির ব্যবস্থা দেওরা হর। তুস, এনিমা একেতে বিশেষ ক্ষতিকারক। অল্য-প্রদাহকে চিরুপারী করে তোলে। আৰুকাল অবশ্য এ-সব ক্ষেত্ৰে তর্ণ ভারারা অনেক সমর 'ট্রাংকুই-লাইজার' ব্যবহার করছেন, কিন্তু এইসব 'অবসেশন'-এর রোগীদের এতে কোনো উপকার হর না। আমিবিরাসিস্' 'জিরাডি'রাসিস' সময়ই 'কোলাইটিসের' নডই নাড্রাস এয়ান্ড ইমোশনাল ফ্যাক্টর'-এর সংখ্য জড়িত। নিউরোসিসের শরীরগত উপসর্গ। আবা**র** কোনো কোনো সময় এইসব আন্তর-যন্তের মহিত•ক-কোষকে উত্তেজিত করে মানসিক আহিথবতা, উদেৱগ ও ভয় স্**ভি** করে থাকে। এ-আলোচনা আমরা অন্য

এক সংখ্যার বিশদভাবেই করেছি। প্নর্জেথ নিশ্প্রোজন।

বিশ,গ্রহার **पद्ग**्र শাচন ক্রিরার পাকাশরের এবং বৃহদক্রের নিঃস্ত রস ला ७ ७८७ (कान्नत्मन् । ११४ क्ल ওঠে, তল পেটেও গ্যাস হয়। পাকাশয় ও হ্রপেন্ডের মাঝখানে বে পাতলা পরদাটি च्यारक रमणे क्रिक्न उभन मिक्क उक्के अवर হংগিশ্ছের উপর চাপ বাড়ে। রোগীর মনে হয় দম বন্ধ হয়ে আসছে। আত ক্ষণ্রত হয়ে নিবারণবাব, ডাক্তার ডাকতে **পাঠান**। "কোলাইটিস', 'এলামিবিয়াসিস', এইভাবে হ,দ্যন্তের উপস্গ তৈরী করে মৃত্যুভ্রের স্থিত করতে পারে। এ-ছাড়া 'রিফ্লেক্স-জনিত ব্ৰুক ধড়পড়ানি এই সময় ভয়কে আরো বাড়িরে তুলে জটিলতার স্থিত করে

নিবারশবাব্র ক্ষেত্রে 'কোলাইটিস' থেকে অন্য উপসংগরে উভ্তব। হার্ট সম্পর্কে সব ডাব্তারই একমত—কোন্যে গোলমাল নেই। তা সভ্তেও নিবারণবাব্র ধারণা যে কোনো সময়ে হার্ট-ফেল করে তার মৃত্যু হতে পারে।

আমার কাছে এলেন তিনটি স্থাট-ফাইল ভরতি রিপোর্ট প্রেসজিপশনস ইত্যাদি নিয়ে। ১৯৩৫ থেকে ১৯৫৫—এই কুড়ি বছরের মধ্যে কোলকাতার অশ্তত কুড়িজন সর্বোচ্চতলার বিশেষজ্ঞকে দিয়ে নিবারণ-বাব, বার-বার পরীক্ষিত হয়েছেন। বছরে তিন চারটে করে ইলেক্ট্রো কাডিভিগ্রাফ নেওয়া হয়েছে, কোনো অস্বাভাবিকত্ব ধরা পড়েনি। রঙ, থ্ডু, মল, ম্র পরীকার রিপোর্ট অসংখ্য জমেছে ফাইলে। এ-ছাড়া চিকিৎসকদের অভিমত ও মহারথী ব্যবস্থাপত মিলে সে এক বিরাট ব্যাপার। দাদা ভাষার আর নিজেরও প্রসার অভাব নেই। কাঞ্চেই তিন মাস অস্তর চেক-আপ ও চিকিৎসক পরিবতনি চলেছে। ডাঃ সরকার, রহ্মচারী, ভট্টাচার্য, রায়, রায়-रहोध्दती स्थरक সূত্র करत यान्ध-পূর্ব ও মুখ্য-পরবভাী যুগের সকল চিকিৎসকই এক বাকো বলেছেন—"না হে. তোমার **ছাটের কোনো ট্রাবল**় নেই। তবে হার্ট, পেটটা সারিয়ে ফেল। ভালো করে খাওয়া-দাওয়া কর। মাঝে মাঝে বাইরে থেকে ঘ্রে अत्र । अत्र ठिक इत्स यात्त ।" निवातगरात्त প্রতিক্রিয়া তাঁর কথাতেই শ্ন্ন। "ডাঃ বোস-এর ধর্মতিলার চেম্বার থেকে খ্ব থোশ মেজাজে বের হলাম। ডাঃ রক্ষচারীও ভ' সেদিন এই কথা বললেন। হার্টের কোনো দ্বলিতা বা অস্থ নেই। মিছিমিছি ভর পাওয়ার কোনো মানেই হয় না। আজ থেকে বাধরুমের দরোজা খোলা রাথব না। বাড়ী ফিরে স্থীকে নিয়ে কোনো সিনেমা দেখতে যাব। অনেকদিন সিনেমা দেখা হয় নি। মনের মধ্যে বেশ প্রতিতর ভাব। জ্রাইভারকে গাড়ী জোরে চালাতে বললাম। সে একট**্ব অবাক হয়ে আমা**র দিকে তাকাল। সাধারণত জোরে চালাবার ব্দন্য আমার কাছে ধমক খেরে প্রকে একিব্ডু শোভাবাজারের মোড়ে আসতে না আসতেই মেজাজ বিগড়োতে স্র্ হল। ডাঃ বোস ত দাদার বংশ, আমাকে অনেক দিন ধরে চেনেম, খুবই স্নেহ করেন। আমি ভয়কাতুরে, তাও জানেন। আমাকে আশ্বস্ত করার ছন্যে আসল অবস্থাটা গোপন করেছেন বোধ হয়। হাাঁ,.....সেইটেই ত ম্বাভাবিক। গ্রাফ্টা অন্য কাউকে দেখাতে হবে। পরেনো চেনাশোনা ডাক্তারদের কাছে আর যাব না। ওরা সবাই মনে করে আমি বাতিকগ্রহত। দাদারও তাই ধারণা। **একেবারে অচেনা, নতুন**, টাটকা বি*লে*ত থেকে এসেছে এমনি কোনো ডাস্থারের **কাছে যেতে হবে। সংশ্যে সং**শ্য আবার বুকের মধ্যে টনটন করে উঠল, পেট বায়তে ভরতি হয়ে গেল, নিঃশ্বাসের কণ্ট হতে লাগল, প্যালপিটেশন সূর, হয়ে গেল। বাড়ী পে"ছিনোর সংগ্র স্ভেগ--'প্নম্বিকোভব'। যা ছিলাম তাই হয়ে গেলাম।"

আনার করেক সপতাহের মধ্যে চেক-আপ, আর একটা কার্ডিগুগ্রাফ, আর একটা কার্ডিগুগ্রাফ, আর একবার জাশা-নিরাশার মধ্যে দোল খাওয়া। কিছুতেই হুদরোগের ভর থেকে পরিতাণ মিলছে না। বড় বড় ডাক্তারদের 'মাডে' বাণী সত্ত্বেও নিবারণবাব, ভয় পাছেন। কেন?

আগেই জানিয়েছি নিবারণবাবা পাশ করা এয়াকাউন্টান্ট। দক্ষ হিসাব-নবীশ। নিজের ব্যক্তিগত ব্যাপারেও খ্র হিসেবী। সমুশৃঙ্থল ও নিয়মনিষ্ঠ। যৌথ পরিবারের মধ্যে মান্ধ। বাবা-কাকারঃ আড্তদারী ব্যবসায়ে প্রচুর অর্থ ও প্রতিষ্ঠা অর্জন করেছেন। নিবারণবাবরো তিন ভাই। বড-ভাই ডাক্কার, ছোটভাই ইঞ্জিনীয়ার। বজ্ঞ ভাই সরকারী চাকরী করেন, বর্দালর চাকরী। ছোটভাই উত্তরপ্রদেশের এক শহরে চাকরী করেন। বড ছোট দ*্*জনেরই পৈত্রিক বাবসায় ও পৈত্রিক ভাগ-বাটোয়ারা করে নিজেদের অংশ বেচে দেবার ইচ্ছে অনেক দিন ধরে। কিন্তু কিছ,তেই বাপারটা ঘটে উঠছে না। ছ,টি নিয়ে কলকাতায় দু মাস একনাগাড়ে থাকতে না পারলে। হাপ্গামা মিটবে না। দিনক্ষণ ঠিক করে তিন ভাই যথন ভাগ-বাঁটোয়ারার জনা একত হচ্ছেন, তখনই আবার নিবারণবাব্র **অসম্খ**তা এত বেড়ে যাচেছ যে তাঁকে নিয়ে দু"ভাই হিমসিম থেয়ে যাচেছন।

তিনজনের আশতরিক ইচ্ছা পাকা সত্ত্বেও
আসল কাজ এগুচ্ছে না। আমার কাছে
বার বার নিবারশবাব এই কথাগুলো
খুরিরে ফিরিরে নানাভাবে বললেন।
'পাটিশান' এ বছরের মধ্যে না হলে তিন
ভাই-এর প্রচুর আর্থিক ক্ষতির সম্ভাবনা।
দুই ভাই-ই এখন কোলকাতার। দু' মাস
থাক্রেন। "কিন্তু মুজা দেখুন, আমি আবার
ঠিক এই সময়টাই অসুম্থ হরে পড়লাম।
আমি হাড়া খুড়াতুরে ভাইনের সঙ্গো,

এটার্ণ উক্তিলের সঙ্গে কথা বলার ন্বিতীর লোক নেই। ভাইরা হিসাবপত্তর বোঝে না।"

প্রথম রোগের স্ত্রপাত কখন হরেছিল? তখনও কি পারিবারিক ব্যাপারে এই রকম কোনো বিশেষ পরিবর্তনের সম্ভাবনা দেখা দিয়েছিল?

একট্ব চিম্ভা করে নিবারপ্রাব্ বললেন, সেই সময় বাবা-কাকাদের মধ্যে মামলা মোকর্দমার স্তুপাত হয় এবং আট দশ বছর মামলা চলার পর ওাঁরা আলাদা হয়ে যান। ইতিহাস থেকে বোঝা গেল নিবারণবাব্র রোগের স্তুপাত ও হ্রাসব্ম্থির সংগ যৌথ পরিবারের ভাঙাগাড়ার সম্পর্ক রয়েছে।

যৌথ-পরিবারের মধ্যে মান্ত্র হকা: ফলে নিবারণবাব্র মানাসকতা সামণ্ড-তান্ত্রিক ম্ল্যবোধের স্বারা বিশেষভাবে প্রভাবিত। শৈবব থেকে একান্নবভী যৌথ-পরিবারের একতার মধ্যে নিজের নিরাপত্তা-বোধ খ'্জে পেয়েছেন। তাঁর বাবাও তারই মত ছিলেন। ছোট-বড় দুই ভাই-ই বিদেশ থেকে শিক্ষালাভ করে অনড় ঐতিহের প্রতি আনুগতা ও মোহ থেকে মক্তি হয়েছে। তারা সচল পরিবর্তনিশীলতার মধ্যে নিজে-দের নিরাপত্তা খ'্রেজ পেয়েছে। নতুন যাগের সংগ্রামালাবোধের সংগ্রামাজনের মানিয়ে নিতে পেরেছে: নিবারণবাব পারছেন না। য্ভির দিক থেকে পার্টি-শনের বির্দেশ কোনো কিছাই বলবার নেই। ভাঁদের পরিবারকে আর কোনোক্রমে रमोश नक्षा हतन ना. এकाधनरी ए' नग्रहै। তিন ভাই তিন জায়গায় থাকেন কালে-ভদে দেখা হয় ৷ তাবশা ভাকার ভাই-এর চ্যকরী বাংলা দেশের মধ্যেই: প্রয়েজন-মতেই তাঁকে পাওয়া যায়। ভারের জনা মাসে একবার তিনি নিয়ম করে কোলকাতার আসেন: এছাড়া টেলিফোন-কল পরে কখনও-কখনও আরো ঘন-ঘন **অভাত হ**র। নিরাপত্তাবোধ নিবারণবাব্র দাদাকে যিরে। তাঁর ওপর নিবার<mark>ণবাবর</mark> বিশেষ নিভবিতা। শিশ্স্লভ দ্বলভার প্যায়ে পড়ে এই দিভরিতা। পার্টিশন হাল, নিবারণবাব, মনে করছেন, দাদা আর নিভরিযোগা থাকবেন না। তাছাড়া **পৈচিক** বাড়ী বেচে দেওয়া হবে। খন্দের ঠিক হরে গেছে। প্রনো বড়েী ভেঙে সেখানে নভুন ইমারত রুড়ে উঠবে। মা-বাবার সমৃতির সংসা জড়িত এই বিরাট বাড়ীর **কিছ**ুই **আ**র অবশিষ্ট থাক্বে না। অথচ পার্টিশন তাঁদের তিন ভায়ের দিক থেকে শ্ব প্রয়োজনীয় নয়, অপরিহা**র্য**। ভাগ-বাটোয়ারার নিধারিত সময়ের কাছাকাছি এসে দিবারণবাবরে অস্কেতা বৃশ্ধির কারণের মূলে পার্টিশন সংক্রান্ত স্বন্দর। পার্টিশন না হলে আথিকি ক্ষতি ঘটকে পার্টিশন হঙ্গে নিরাপত্তার অভাব বাড়বে। গত দশ বছর ধরে এই মানসিক টানা-रशास्त्रतम् मद्भा मदारहम छत्रलाकः।

আর্থিক দিক থেকে নিবারণবাব্ প্রোপ্রির আন্ধনির্ভার। তাঁর নিরাপত্তা-বোধ, বা এখন একমাত্র ডাক্তার-দাদার সংশ্যে জড়িত, সম্প্রেভাবে মানাঁসক শতরের ব্যাপার। সেখানে বৈষয়িক বা অনা কোনো শ্বার্থ দেখা বাচ্ছে না। নিবারণবাক্ অবশ্য মনে করছেন বে, তাঁর হার্ট-এর অস্থের জনাই স্ববিকছ্ গোলমাল। হাটের অস্থ সেরে গেলে দাদার প্রতি এই আকর্ষণ, এই আন্বাত্য আর থাকবে না।

নিবারণবাব্র সংগ্য সামন্ততান্ত্রিক আন্গত্য ও নিভরিশীলতা নিয়ে কয়েক দিন আলোচনার পর নিজের মানসিক দ্বেলতার কারণ তিনি হ্দয়পাম করলেন। যৌথ-পরিবারের উপর এ ম্পে নিভার করা **চলে** না। যৌথ-পরিবারই অচল। ভেঙে পড়তে বাধা, ভেঙে পড়বেই। তবে এই নির্ভারতার সপো তাঁর রোগের ু হ্রাস-ব্যান্থর সম্পর্ব ব্রুরতে বেশ কয়েক र्षिन प्रमय नागन। निवादगवादः स्वीकाद দিভ'রতা করলেন, দাদার উপর তার রয়েছে। সেটা অস্মেতার দর্ন। আমি বললাম, ঠিক উল্টো। নিভারতার দর্ন অস্ম্থতা, অস্ম্থতার দর্ন নিভরিতা নয়। নির্ভারতা কাটিয়ে উঠতে পারলেই অস্পতা সার্বে।

কিন্দু ভর, মৃত্যুভর মনের মধ্যে চিরশ্বায়ী বলেবকত করে বাসা বাঁধল কি
করে? আমার চেনা এক ভদ্রলোকের তিনবার স্থোক হরেছে; তা সত্ত্বেও সে ত'
দিব্যি তার বারসা চালিয়ে যাছে। আমি
ভান্তারদের পেছনে দৌড়ুছি, আর ভান্তাররা
তার পেছনে দৌড়ে তাকে ধরতে পারে
না। আমার ভান্তাররা বার-বার বলছে,
আমার হার্টের অস্থ নেই; তব্ আমি
ভাদের কথা মেনে নিতে পারছি না কেন?
যত্তি-বৃশ্ধি দিয়ে যা ব্র্মাছ, মনকে সেটা
বোঝাতে পারছি না কেন?

অবসেশনের মনস্তাত্ত্বি ও শারীর-ব্যক্তিক ব্যাখ্যা সহজ করে নিবারণবাব্বেক ব্বিয়ে দিলাম।

নিবারণবাব; অনেকটা আশ্বস্ত হলেন। পর দিনই এসে আমাকে উত্তেজিতভাবে বললেন, ছাটে'র অস্থের স্ত্রপাতের কারণটা এবার আমি ধরতে পেরেছি। বাবা-কাকাদের বিরোধে আপসের চেণ্টা পর্বাদনই ঠাকুর-হ্বার मामा मात्रा शान। तराम श्टराधिनः, किन्छ् কোনো রোগ ছিল না। সঞ্থ মান্য দ্বশ্বরে সেদিন রোজকার মত ঘ্রিমরে-ছিলেন; সে হুম আর ভাঙে নি। ডাভার-কাকা বলেছিলেন, — ভায়ে-ভায়ে লড়ায়ের চোট গিয়ে বাপের ওপরেই পড়ল। বাবা বলেছিলেন,—মন খারপের জনাই হার্ট-ফেল হয়েছে। আমি খুব ভয় পেয়েছিলাম। ঠাকুরদাকে আমি খ্বই ভালবাসতাম,

আমার হার্ট-এর অস্থের স্রপাত ঐ সমর থেকেই।...

...আশ্চর্য। কোনোদিন এভাবে ব্যাপার-টাকে বোঝবার চেন্টা করি নি। এইবার অনেক কিছা ব্যুতে পারছি।

হার্ট সম্পর্কিত দুম্মিচনতা এই সময় থেকে কমতে শ্রু হল। এই সময় থেকে সম্মোহিত অবস্থার অভিভাবন দিভে থাকি। বিনোদের নাভতিশ্যে প্রথম সাংক্রেডিক স্তরের প্রাধান্য ছিল, তব্ তাকে সম্মোহিত করা বার দি। নিবারণ-বাবকৈ সম্মোহিত করতে বেগ পেতে হর নি, যদিও তার মধ্যে ন্বিতীয় সাংকেতিক স্তরের প্রভাব বেশি। হ**জমের শারীরশ,ন্ত**, গ্র্মস্তিকের সংগে পাচন-ক্রিরার সম্পর্ক নিরে একদিন আলোচনা করলাম। র্শবিজ্ঞানী বিকফ-এর কটিকো-ডিসে-বিফেব্র मात्न. গ্রেমান্তব্দ-আস্তর্যন্তের সম্পর্ক নিরে পরীক্ষা-মিরীকার কথা বললাম। বিনোদবা**ের** উদেবগ ও ভয় আরো কমল। ডারার ভানবার, ভারার আ**লেকজান্ডার প্রম**্থ আমেরিকান লেখকদের দ্ব-একটা রোগী-কাহিন**ী পড়ে** শোনালাম। তত্ত্ব ও চিকিৎসার দিক থেকে পাভলভিয়ান বিকফ এবং ফ্রুরেডিয়ান ভানবার আলেকজাণ্ডার ইত্যাদির মধ্যে আশমান-জমিন ফারাক; তব্ৰ একথা স্বীকার করছি যে, রোগীদের কাছে সাইকো-সোমাটিক মেডিসিনের প্রবক্তাদের কেস হিস্মি'গ্রেলা ভয় দ্রে করতে অনেকখানি সাহায্য করে থাকে।

চার মাসের মধ্যে নিবারণবাব, স্পুর্ হয়ে উঠলেন। বে ভারার বন্দাটি তাঁকে পাঠিয়েছিলেন, তাঁর পাশে বসে, দশ বছর বাদে প্রথম নেমন্ডর বাড়ীর রামা খেলেন। মৃত্যুভয়ের সপো-সপো একলা থাকার ভর ও বায়্র চাপের ভয়, দ্র হয়েছে। গৈগ্রিক বাড়ী ছেড়ে এক বছরের মধ্যেই দক্ষিণ কোলকাতায় নিজস্ব গ্রেহ উঠে গোলেন। ভার আসেই মহজে আপসে পার্টিপান
হরে গেছে। এর পর একবার মার ভারেনাক
করেক দিনের জন্য আমার কাছে বাভারাভ
করেছিলেন। সেসমান নিয়াহীনভার ভূগছিলেন। নিবার্গবাব্র চিকিংসার ব্ব
ক্রেমারার কেফিন-ট্রেমাইড বাকশা
করেছিলাম। সেও ব্ব অলপ করেক
দিনের জন্য। আধ্নিক ট্রাফ্রেলাইজার
কাতীর ওব্ধ তথন বাজারে বিশেষ কিছ্ব
ছিল না।

রোগ সারানোর ব্যাপারে বৃদিও চিকিৎসাপশ্যতির বৈজ্ঞানিক ভিত্তি প্রধান ভূমিকা গ্রহণ করে থাকে, তব্ত ভাস্তার এবং রোগীর ভূমিকাও উপেক্ষা করার মভ নর। কোনো চিকিৎসক সব রোগ**ীর** বিশ্বাস উৎপাদন করতে পারেন না; সব রোগীকে ভাল করতে পারেন না। রোগীও ভাতারবিশেষেজ্ঞর সংস্পর্শে একে রোগ্-ম্ভি সম্পর্কে আশান্বিত হরে ওঠে এবং রোগ সারাতে বিশেষ ভূমিকা গ্রহণ করে। ভাতারের সংখ্য রোগীর সম্পর্ক নিরে অনেক কথা বলা হয়েছে; অনেক কিতাৰ लाथा इरहर्ष्ट; किन्छू व जन्नरक्त न्वान्तिक বিশেলবণ ও সামাজিক সম্পর্ক নির্ণয় কম नकरत भएएरह। छाडात-रताशी मन्भव निर्देत বিশ্তারিত আলোচনার ইচ্ছা রইল ৷ আমাদের দেশে প্রেনো সামাজিক ঐতিহার পরি-বর্তনের স্থো ভারার-রোগী সম্পক্তিরও পরিবর্তন ঘটছে। স্যার নীলর্ডন বা ভারার বিধান রায়ের সামণ্ডতান্ত্রিক পিতৃ-প্রধান সমাজে রোগ দিরামরের কেন্তে বে ভূমিকা ও যে অবদান ছিল; আজকের সমাজের পরিবর্তিত পরিন্ধিভিতে সেই ভূমিকা গ্রহণ করার চিকিৎসক নেই; সেই ভূমিকার সাফলোর আশাও স্ন্রেপরাহত। সমাজ বদলাচ্ছে, ভাঙারের সপে রোগীর সম্পর্ক বদলাছে; ভারারের ভূমিকাও भाग्गेएक्।

--बटमानिक

ছোট পরিবারই সুখী পরিবার

স্কুঠ্য জন্মনিয়ন্ত্রণের একমাত্র সহায়ক

ডাঃ মদন রাণা'র-

भात्रवात भात्रकन्नन।

পরিবেশক: জমর লাইছেরী, ৫৪ ৷৬, ক্লেজ স্থাটি, কলি—১২





।। मून ।।

ক্ষের সূর্য উঠেছে নিজামতকেলার
শীর্ষ দেশে। গাছগাছালির পাতার কুরাশার
মালনতা দ্র করছে বিচ্ছুরিত রোদ্ররিদ্যতাকে নিঃসন্দেহে, বিশেষত এই অমল
সকালে অলোকিক সমার্জনী বলে শ্রম হতে
পারে। সারাটি রাতের আবর্জনা জড়ো
করে যেন আগ্নেন প্রাড়িরে দেওরা হচ্ছে।
ভাই প্রতিটি সকালকে মনে হরেছে এতদিন,
একেকটি শ্রিচতার আয়োজন।

আন্ধ অন্তুতি অন্য রকম। স্ব উঠেছে। তব্ যেন অশ্চিতা খেকে গেল আন্ধ। আলোর সকাল এল। তব্ যেন অনেকথানি অধ্বার থেকে গেল।

শুধ্ থেকে যাওয়া নয়, স্প্তাতার পরিবর্তে আরো অস্প্তাতা, আরো কিছ্ অশ্বাচতা জেলে উঠল। প্রাক্রেরার, কিছ্ অশ্বাচতা জেলে উঠল। প্রাক্রেরার প্রতিটি মুখে তার ছাপ প্রত্যুক্ত নেই। চপলতা নেই। প্রতিটি মুখে সন্দেহ অবিশ্বাস ও সতর্কতা। প্রতাকে প্রত্যুক্তর দিকে আড়চোখে তাকাছে। তর পাছে। কারো একা থাকতে ইছে করে না। অথচ সন্দেহ অবিশ্বাস তাস—স্তরাং এসবের ফলাফল-ম্বর্প ঘূলা ওদের এক্য থাকতে দিছে না।

এক্ষণে সারা হোটেল ঘিরে প্রিলেশর বেড়াজাল। ওখানে জাফরাগঞ্জের আঁধার-মহলেও কড়া পাহারা। হোটেলের উত্তরে জণগলে বাগানের ভিতর ভাঙা মুসজিদ আর ভোবাটাও ঘিরে রেখেছে ওরা। ঘিরে রেখেছে মোতিঝিলের পালের জণালে সেই গম্বুজ্বরটাও।

সবাই টের পেরেছে, এত তৎপরতার ম্লে আছেন কর্ণেল এন সরকার। প্রিলশ সংপার বর্মাণের নাকি পিতৃত্বধ্ উনি।
বহরমুপুরে ট্রান্ডকল করেছিলেন শোনা
বাচ্ছে। স্পোদাল তদ্বত স্কোরাড আর
দ্বাদ ডিটেকটিভ অফিসারেরা এসে গেছেন
এক ঘণ্টার মধ্যে। আরও গ্রেব, কলকাতা থেকেও বিকেলের গাড়িতে বিশেষজ্ঞরা
আসছেন। শহরের সবখানে ফিসফিস,
কানাকানি গ্রেব আর সতর্কতা। সদরগেটের বাইরে ডিড় করে দাঁড়িরে আহে
অজস্ত লোক। এ শহরে এমন ঘটনার
নজীর নেই। বৈচিত্রাহীন শহরবাসীদের
জীবনে এ একটা আদ্বর্য প্রিল।

নীচের তলার ডাইনিং হলে ছড়িরে-ছিটিরে বনে ররেছে সবাই। এটা প্রিলশেরই আদেশ। দিবোন্দ, আর স্বাতী, দীপেন বোস আর ইরা, অধ্যাপক আর স্বেক্ষা জোড়া-জোড়া আলাদা টেবিলে বনেছে।
চানা একা একটা টেবিলে। কিছুক্ষণ আগে
আরও জিজ্ঞাসাবাদের জন্যে বিভাস আর
নারেনকে আনা হয়েছে। তারা একা পৃথক
টেবিলে বসেছে। সবাই চুপচাপ। চিন্তিত।
উদ্বিশন। মনের দিক থেকে সবাই আন্চর্মা
নিঃসংগতা বোধ করছে।

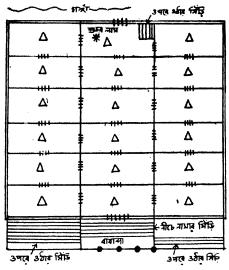
স্রঞ্চনের ঘরের পাশে বে-ঘরটার দারোয়ান থাকে, সেটা আসলে অভিথিবের ওরেটিং রুম। তেমান সাজানোগোছালো। কিন্তু কাজে লাগে না বলে একটা খাটিয়া পেতে বাহাদ্র সেথানে রাহিবাপন করে। আজ খাটিয়াটা বের করতে হরেছে তাকে। ওঘরে প্রিলা অফিসাররা বসেছেন। কর্মেণ্ড আছেন তাঁদের সংশ্রে। ওথানে বসেই স্বাইকে একে একে ডাকা হবে। জিগ্যেসপত্তর করা হবে।

স্বেঞ্জন উদ্বিশ্ন মুখে রিসেপসনে বঙ্গে রয়েছে। বাব্ চি খানায় তোরাপ হোসেন বাব্রিচ, গণগারাম ঠাকুর (অর্থাৎ সংস্কৃতি-সমন্বয়ের অপ্র দৃট্টান্ড!) রতন শ্ভ আর মানদা গম্ভীরম্বথে বসে আছে। রেকফাস্ট পরিবেশন শেষ। নিত্য ব্রাদ্ধ থাকে চারটে মাটন কিংবা ভেজিটেবল স্যান্ডউইচ ক্ষোড়া ডিমের মামলেট আর একপট চা কিংবা কফি। আজ চা-কঞি ছাড়া কেউ ছোর্য়ান কিছ_ন। না—কেবল नौरतनरे वतामठो वर्षन कर्तान। स्म म्लान হেসে অস্ফটেকপ্ঠে বিভাসকে বলেছে, ভীয়ণ ক্ষিদে পেয়েছে—ডোণ্ট মাইণ্ড। বিভাস মাথা দ্বলিয়েছে মাত্র। ওদিকে স্বদেষ্টার তো এ ক্লেছতা অসহনীয়—প্রত্যেকালীন অভ্যাসমত কিছু গংগাজল পান করেই ক্ষাস্ত রয়েছে। এখন তার ম্তিটি ধান-**স্তব্ধ। কিন্তু নাকে**র ভগা কুণ্ডিত। চোধ দুটি বোজা।

ওয়েটিং রুমের ঐবিলে দুটো ম্যাপ।
উটেকটিভ অফিসার সতাজিং গ্ৰুত,
স্থানীয় প্রিলিশ অফিসার অপরেশ ভপ্র
আর কর্ণেল নীলাচি সরকার তিনদিক থেকে
ক্*কে রয়েছেন ম্যাপের ওপর। মিঃ গ্রুপত
বল'ছলেন, প্রথমে এই ম্যাপটা দেখুন।
জাফরাগঞ্জের আধার মহলের ম্যাপ।.

ভাইনের দরজায়। আর শুভও ঢো/ক বাদিকেরটায়। নীরেন বা বিভাস কেউ একজ্যান্ত টাইম বঙ্গতে পার্রোন—বলেছে আধ ঘণ্টা বা তার কিছু বেশি হতে পারে, তারা ভিতরে ঘরেছে। অণ্ধকারে ঘুপাট ঘর আর কবরে-কবরে ঘুরে বেড়ানোর উদ্দেশ্য কী? তার জ্বাবও আমরা পেয়েছি। ওরা নাকি বেরোনর পথ খু'জে পাছিল না। সেটা অবশ্য খুব অস্বাভাবিক নয়। খাদিম অর্থাৎ সেবায়েত মহব্বে খা বলেছে, বাব্রা ঠিক সকাল দশ্টায় ভিতরে ঢোকেন। তারপর সে বাসতার ওপারের একটা দোকানে মোমবাতি কিনতে যায়। সেখানে কয়েক মিনিট দেরী হয়েছিল। তারপর সে যায় আবগারীতে—দোকান থেকে জাস্ট পাঁচ মিনিটের পথ। সেখানে সে গাঁজা কেনে। তারপর যায় মখদুম-পীরের আগতানায়—ধরে নিচ্ছি দ্ব মিনিটের পথ আবগারী থেকে। আস্তানার দরবেশের কাছে বসে অভ্যাসমত গাঁজা খাওয়া আর আড়া দেওয়ার সময়টাই সে সঠিক বলতে পারছে না। আমরা ধরে নিচ্ছি পনের মিনট—কিংবা কুড়ি মিনিট—তার বেশি কখনো নয়। কারণ, অতক্ষণ বাইরে থাকলে প্রতিপদে চাকরী হারানোর ভয় রয়েছে। সব সময় ট্রারেস্ট আসছে— বিশেষত শীতের সময় এটা। কালেই সম্ভবত আধ ঘণ্টা থেকে প্রয়তালিশ

তলার উঠেছিল যে সি'ড়ি বেয়ে—সেটা রমেছে শেষ প্রাম্তে। সেই ঘরেই শভের লাশ পাওয়া গেছে। অথচ নীরেন নাকি কিসত্ত দেখেন। এটা হতে পারে না। মহব্ব খা বলেছে, দৃজনের চেহারা বেশ পেরেসান (ক্লাম্ড) দেখা**ছিল। মহব,বের মতে**, এটা স্বাভাবিক। **ভিতরে গেলে অ**তিবড় সাহসী আদমীও দুক্লা হয়ে ওঠে—সে বহুবার দেখেছে। যাই হোক, মিনিট পাঁচেক নীচের বারান্দার দ**িড়য়ে ওরা শভের অপেকা ক**রে। সিগ্রেট খায়। দ্বটো সিগ্রেটের *ট্*কেরোও আমরা পেরেছি। দুটোই কিন্তু আধ-পোড়া অবস্থায়—থামে ঘধে নিভানো। থামর গায়েও তার চিহা রয়েছে। তারপর দ্ভনে পাশের সি^শড় বেয়ে ওপরে যায়। শ^{ুভ্}র নাম ধরে জ্বোরে ডাকে। সাড়া পায় না। নেমে আসে দৃজনে। সেই সময় কিন্তু দ্জনে ভীষণ হাসাহাসি কর্রছন। মহব্ব দেখেছে। ওরা হাসতে হাসতে থাদিমকে বর্থাশস দিয়ে চলে যায়। সে-হাসির কারণ আমরা ওদের মুখে শুনেছি। ওরা ভের্বোছল, শৃভ কৌশলে পড়েছে। সোজা কল্পনার কাছে গিয়েয আডা দিচ্ছে। হোটেলে ফিরে আসে ওরা একটায়। সেখানে কম্পনা বা काञ्चे শুভ সেই নাক দেখে প্রতা সন্দেহটা খাঁটি ধরে নেয়। এদিকে মহব্ব আর শ্ভর সম্পকে মাথাবাথা



suu দরজা △ কবর

• স্তম্ম शिक्ष अध्याना प्रमिक्ष वा आकान भिन्न विकास अपना अध्यान प्रमिक्ष वा अधिक वा अध

...স্বভাবত আমাদের যা মনে হবে বা পারিপাশ্বিক সাক্ষ্য যা পাছিছ, তাতে এটা ক্পান্ট যে বিভাস কিংবা নীরেন ছাড়। এ কাক্ষ অন্য কারো হতে পারে না। সিশিষ্ট্র নীচেই অর্থাৎ সামনের ঘরে প্রথমে ওরা তিনজন তুকেছিল। তারপর নীরেন তাকে বাদিকের দরজা দিয়ে, বিভাস মিনিটের মধ্যে মহবুব খাঁ ফিরে আসে।

তখন কবরের ওপরতলায়—তার মানে
মসজিদের প্রাশ্পণে দেখতে পায় বে'টেবাব,
অর্থাং নীরেনকে। নীরেন সির্গাড় বেয়ে ওপর
থেকে নেমে আসে তার কাছে। অন্যবাব;দের কথা জিগ্যেস করে। তার আন্দাল
এক মিনিট পরেই নীচে বাদিকের দরজ।
থেকে বিভাস বেরোর। এখানে লক্ষ্য কর্ন
ম্যাপটা। নীরেন নীচের তলা থেকে ওপর-

কর্বেনি-৷ কারণ ম্যাপটা লক্ষ্য কর্ন। নীচের তলার শেষ প্রান্তে ঘরটার একটা দরজা আছে--সেটা ভাঙা। ওখান দিয়ে বেরো**লে গণ্গার ধার।** তাছাড়া মহব্ব খা অতকণ ওখানে ছিল না। শুভ চলে গেলেও সে দেখতে পার্যান। আর সব-চেয়ে গ্রুছপূর্ণ ব্যাপার হচ্ছে, তখন সে রীতিমত গাঁজার লেশার টইট শ্বর।

চিত্র ১ - জীবার সহলের ওপর্যানার প্রদানিদ

বাৰ্মাপুৰৰ টুলে বলে অভ্যানমত বিনোভে মুক্ত কৰেছে।

नवारे प्रदान छेठेन। क्लॉन এक्टो इस्टे बहारनन। छात्रभद्र वनरनन, शाँ, वन्दन।

ফ্লোরে হেলান দিলে ধৌয়ার করেকটা

ীমঃ গ্রেণ্ডও সিহোট জ্বাললেন। এবার

বিভ তৈরী করার পর বললেন, ...তাহলে आसवा प्रथिव, नाधात्रण विठाएत वा शाहित-পাৰ্টিৰ কাকো ওয়ান অফ দেম ইক দি মার্ডারার। দুজনেরই এ্যালবাই অবশ্য **খ্বই স্বা**জাবিক। তা হোক। খ্নের মডুস অপারেডি, কিন্তু আমাদের ধারণার বিপক্ষে বার না। দূর্বল রোগা একটি বুরককে নীরেন বা বিভাসের মত শক্তসমর্থ যুবক অতি সহজেই গলা টিপে মারতে পারে। বাট মোটিভ? যে কোন হোমসাইডাল ইনসিডেন্টের পিছনেই যে নিশ্চিত মোচিত থাকতে হবে, আমি অবশ্য তা বল্ছ না। ধর্ন, মা ছেলেকে শাসন করতে গিয়ে চড় মাড়লেন, ছেলে বেঘোরে মরে গেল। প্রেমিক প্রেমিকাকে প্রেমাতিশয্যে এমন ঠেসে ধরল বে শ্বানরোধ হয়ে প্রেমিকা মারা পড়ল। এমন সব ক্ষেত্রে আমরা একে নিতাণ্ড এয়ার্কসিডেন্ট বলতে পারি। অবশ্য চতুর भूनीया अभन भूरवाण ना त्नम्र, अभन नम्र। যাক গে। আমাদের প্রথমে দেখতে হবে, কোন হোমিসাইডাল ইনসিডেণ্ট আসলে फिलिवादारे भाषीत वा धरनत छेल्परभारे খুন কিনা! ভারতীয় দণ্ডবিধির তিনশো দুই ধারার কথাই বলছি আমি। শৃভর म्कु त्व एंडिनवादत्वे भाषीत्, সেটা নিশ্চিত। বরং তা আরও নিশ্চিত হয়েছে

কর্ণেল অন্তস্বরে বললেন, হৃদ্, মিঃ ভন্ত শুধু মাথা দোলালেন।

মোটিভ একটা থাকতেই হবে। রাইট?

व्यात्त्रकृषि भाषात्त्रत च्छेमात्र-माछे ३ व

দা পত্তর গার্ল কলপনা! ফের এবার

মোটিভের প্রশ্নে আসছি। এ সব মার্ডারে

...একেনে শৃভর সম্ভাব্য খুনী বাদি বিভাস কিংবা নীরেন হর, অথবা ভারা দকেনই একাজ করে থাকে, কল্পনাকেও ভাদের একজন অথবা দুজনে একসপো খুন

থাগুড়া কুষ্ঠ কুটির

নবাঁহাকর কোঁরোবা, বাকরন্ত জনান্ততা, কালা, একজিয়া, সেয়েখালেন পাঁকর কথাতি বাহেরেরার কনা নাকরের কথা বিটা বাঁহারার কনা নাকরের বাহার ক্রান্তার বাংলা করা বাহার বাহার ক্রান্তার বাংলা বাহার কালাকালা—৯। বাহারা বাংলা গ্রেক, কলিকালা—৯। বাহার র বাংলাকার, কলিকালা—৯।

করেছে। কিন্তু কেন? অন্পন্ট **হলেও** একটা মোটিভ আমরা টের পাচ্ছ। এখানে ওরা আসবার পর আগের দুর্দিন ও দ্রোতির थ्योना **य**्धिनां है আহ্বরা দিবোশ্দর कार्ष **ण**्टर्नाष्ट्र-नौरत्रन-বিভাসও তা বলেছে। ওদের তিনজনের বর্ণনায় কোন অসপ্যতি নেই। এর একটা প্রসংগ ধর্ন। শভু আর কলপনা আগের রাত্রে হোটেলের বাইরে বেশ কিছুকাল বিভাস স্বার অঞ্চানতে কাটিরেছিল। বলেছে, ওরা পোড়ো বাগানে গিরেছিল। বিভাস নেমে গিয়ে আর শ্বভকে দেখতে পার্মন। কিন্তু কিছুক্ষণ পরে টর্চ জনুলে-ছিল কোথায় এবং কল্পনা আচমকা অন্ধকারে তার গায়ে এসে পড়েছিল। তারপর দলেনে হাসতে হাসতে পিছনের সির্ণড় দিয়ে द्या**रोल एक्दा। कन्मना नाकि** दर्लाइन. সে শুভকে হোটেলের জানালা দিয়ে দেখতে পের্মেছল। তখন সে ভীতু শুভকে ভর পাইয়ে দিতে নীচে নেমে যায়। বিভাস পরে সকালবেলা শৃভকে ঘরে ডেকে

कथाणे वरन। भूष रिक्त वरन, कन्मनाणे দার্ণ সাহসী। কিন্তু শ্ভ কী কর ছল ওখানে? শভে বলে, একটা কবিতা লিখঙে চেমেছিল সে—অন্ধকার তার বিষয়। তাই সরেজমনে গিয়ে নাকি অন্ধকারের রূপ দেখছিল। হরিব্লু! যাক গে। এসব অজ্বহাত কারো বিশ্বাসা নয়। ওদের প্রতি সবার সন্দেহ পড়ার কথা। এখন দেখা যাক, এতে কার ঈর্ষা হবে বেশি? প্রাপর যা শ্নেছ, তাতে বোঝা বায়. এখানে আসবার পর কল্পনা বেশ বেহিসেবী রীতিমত করেছিল। त्मनात्मना भ्र ফ্রাটিং! বিভাস মোতিঝিলের বটতলার मिरवानम् आत कल्लनारक हूमः, स्थर्ड দেখেছে। স্বাতী তাতে কুম্ধ হয়েছিল। বিভাস এবং নীরেনের মতে স্বাতী কাঞ্ছেই কল্পনা দিবোন্দ_্কে ভা**লবাসে।** শ্বভর সপো রাত্তিবেলা অভিসারে বেরোলে প্রথমে রাগ হবে দিবোন্দর। কিন্তু দিব্যোদর আঁধারমহলে ছিল না। তাকে স্বনিক বিবেচনা করেই বাদ দিচ্ছি। দ্বিতীয়জন थ्र' एक प्रथा याक। कल्पनात नाकि नृत সম্পর্কের দিদি স্বাডী এবং স্বভাবত সে कम्भनात भातास्त्रन। गाकशाष्ट्र-ए ना स्नानम्ब আমরা বেশ ব্যতে পারি, স্বাতীরও রাগ হতে পারে-ফদিও এতে তার খাদি হবার কথা: কারণ তার প্রেমিককে ছেড়ে অনার ঝ-কৈছে কল্পনা। কিন্তু স্বাতীর পারে ব্যথা—সে আঁধারমহ*লেও* যার[্]ন। এবার আসে নীরেনের প্রস্পা। বিভাস বলেছে, প্রথমদিকে নীরেনের সংগাও কলপুনা হলা-র্ঢাল করেছে। ম্যানেজার স্বরঞ্জন আমানের কাল রাত্রে বলেছে, গতকাল ভোরবেলা স্থীমং প্রের ওদিকে শুভ আর কল্পনা পরস্পরকে টানাটা^{নি} করছিল এবং নীরেন ওপরে থামের আড়ালে দাঁড়িয়ে তা দেখ-ছিল। আই সাসপেকট নীরেন।...

বলে গশ্ভীর মূখে থেমে গেলেন মিঃ গশ্ভে।

কপেল নিঃশব্দে চুরটে টানছেন। মিঃ ভর শুধু বললেন, এয়ান্ড বিভাস?

সে কথার কান না দিরে মিঃ গ্রেস্ট বললেন, এয়াড নাও দি মার্ডার কলপনা। সকালে স্বাতীর ঘরে দরজা কথ করে নাকি স্বাতী কল্পনা আর দিবোলা ঝগণা করছিল। বিভাস-নীরেন দ্বেলনেই বলেছে সে কথা। তারপর বিভাস-নীরেন আর শভে এক সপো ডাইনিং হলে চা শেষে বেরোর। আধারমহলে যার। বাট হোরাই আধারমহল? কে প্রথমে ওখানে যাবার বিভাস কথা তোলে? বলেছে, <u>নীরেনই</u> **ज्याधिम क्**थाणे। সম্ভবত প্রদেবর গ্রেম্ব না ব্রেই আমাদের বলেছে, হাাঁ, আমিই বলে-ছিলাম। হঠাং খেয়াল হল।...তাহলে ব্যাপারটা স্পন্ট হচ্ছে। সে ডেলিবারেটলি ওখানে গিয়ে ডেলিবারেটলি শুভকে খুন করেছে। আর দৃষ্ণনেই বলেছে, এমন কি মহব্ব খাঁও বলেছে, নীরেনই নিবেধ অগ্রাহ্য করে ভিতরে চ্বকে যায়।

মিঃ ভদ্র বললেন, কিন্তু কলপনাকে খনে করবে সে কীভাবে? টাইমফ্যাকটর ই তো আছেই—আছে শেলসফ্যাকটর।

মিঃ গ্ৰেম্ভ বললেন, নাখিং! হোটেল থেকে অধারমহলের দ্রত্ব হাফ কিলো-মিটার। অবস্থান হল নর্থে। এখন উত্তর থেকে দক্ষিণে বাতাস বইছে। মাত্র দুটো মিনিট সাইকেল'রকসোর পক্ষে যথেণ্ট। এখান থেকে ফের ওখানে ফেরার সময় সাইকেজরিকসোর পক্ষে ধর্ন চারগ্ণ, কী भौत्रत्व मग्रह लाश्चक। मार्छ हेक किर्काउन ট্র টোয়েশ্টি মিনিটস। সময় আরও কম लागरव, र्याप रम रहारकेरलड लारगासा **ध**रे জ্ঞালে বাগানের শেষ অর্থাং ইত্তর সীমায় নামে। ব্রুতে পার্রছ 🕆 🗟 নেমে-**इन ता जा ना इतन दा**ं । कि जे ना কেউ তাকে দেখতে পেত! এবার একটা সংগত প্রশ্ন ওঠে। তার এখানে আসার উल्मिमा की छिन? कल्पनारक धका ना পেলে তোখন করা যায় না। তা ছাড়া পিছনের সির্'ড় দিয়ে উঠলেও কারো চোখে পড়া সম্ভব। তা পড়েন যখন, তখন ধরে निष्कि हाएँम जिम्म स्म आस्म भि। धरै বাগানের ভিতরই কাজ শেষ করেছিল।

লাফিয়ে উঠলেন মি: ভদ্র।...কম্পনাকে ওথানে সে পেল কেমন করে? আর লাস্টা চীনা মিদ্র ঘরের বিছানায় এল কীভাবে?

মিঃ গৃংশত একট্ হাস্পেন।...
কলপনাকে ওখানে পাওনা নিছক কো-ইনাসডেণ্ট হতে পারত। তা হরনি। কলপনা
তখন ওখানে কোথাও ছিল। এমন জারগার
ছিল, বা নীরেনের জানা। এবার মনে
কর্ন, সেই কবিতাটার কথা। মধারতে
গাছের মাথার উঠলে চাঁদ/ছোবার ধারে
পাতব হরিশ ধরার ফাঁদ।...ভোবা ইছ দি
ভাইটাল প্রেণ্ট অফ দি কেন।

কর্ণেল এসমর তীক্ষাদ্রেট মি: গ্রেণ্ডর দিকে তাকিয়ে বললেন, ইয়েস!

- Algorija Magallika oli raja, raktiga matija 1997. j

সোৎসাহে গ্ৰুত বললেন, দীরেন
চেপে যাছে। কণ্পনাকে সে কোন ছলে
ওই জাবার ধারে উপস্থিত থাকতে বলেছিল। ওই কবিতাটার রহসা আর কিছে,
নর। এথনও হাতের লেখা সনাম্ভ করা হর
নি। হলে আমরা অবশাই জানব—ও লেখা
নীরেনেরই। আমার ধারণা, নীরেনের প্রথম
লক্ষা ছিল কণ্পনা। কারণ, সেও দিবোলন্ব

সপ্সে তার ছাটিং—এমন কি চুম্-খাওরার ব্যাপারটা দেখেছিল। সে স্বীকার করছে একথা। আমার অম্মান, কম্পনার মন্ত কোত্রকার ওই একটা ছল নীরেনের। গতকাল সকালে নীরেন কোন এক স্বোগে কম্পনাকে ওখানে বড়ে বলেছিল—বর্ন, কোন মজার জিনিস দেখানোর অজ্বাঙে। দিবাস্দ্র কাছে জেনেছি কম্পনার মধ্যে হীনমন্যতা ছিল প্রচুর। ইমফ্যান্টাইল

ব্যাপারও ছিল বিশ্বর। খোটো ছুল্ছে
চাইত না। তাছাড়া আরও অনেক
প্রবণতার কথা আমরা শুনেছি তার মুখে!
কাছেই কল্পনা ভোবার ধারে কথামড
গিরেছিল এবং নীরেনের পালার পড়েছিল।
মিঃ ভদ্র বললেন, এটা নিভাল্ড
অনুমান।

নো। নেডার। মিঃ গণেত বাকে এলেন ফের।...স্রেলনের বর শশ্ভ বলেছে, সেকাল সকালে তিন বাব বেরিয়ে বাওরার



শ্বর কশ্পনাকে পিছনের সিড়ি দিরে নামতে দেখেছে। তারপর সে ক্পালের ভিতর তাকে যেতেও দেখেছে।

্ৰ কৰেলৈ সোজা হলেন। বললেন, দ্যাইস ্বাইট।

হারী। মিঃ গ্রুপত বললেন।..তারপর যা ঘটেছে, তা প্রপত। কাজ শেষ করে দীরেন জাধারমহলে ফিরে যায়।

মিঃ ভদ্র কাঁচু-মাচু মাথে বললেন, কিন্দু স্যার—লাসটা চীনা মিত্র ঘরে এল কীভাবে?

মিঃ গাুশত একটা হেসে একটা ম্যাপ ধর্তেন সামনে।...এটা হোটেলের ম্যাপ। লেট আস চেক। কর্ণোল বলালেল, কিন্তু চীনা মিরার খরে কেন?

বেন একট্ন দমে গেলেন মিঃ গুম্ভ।
একট্ন ভেবে নিয়ে বললেন, সম্ভবত চীনা
মিত্রর অবিল ছবিটাই তাকে একাজে প্রলুখ
করে। এমন রোমাণ্টিক টাইপের খুনীর
কথা আমরা অনেক জানি। বোমাণ্টিক—
বিশ্ব বস্তু নির্বিকার এরা। ঠাণ্ডা মাখার
বেমন খুন করতে এরা গুটা, তেমনি রসিকতা
করবার লোভও ছাড়ে না। আবার এমনও
হতে পারে, নীরেন চীনা মিত্র কাধে দার
চাপাতে চেরেছিল। বোঝাতে চেরেছিল—
নিছক মডেলের জনাই চীনা মিত্র একাজ
করেছে।

অবলাই। এবার শব্দে প্রমাণসক্রো গোছাতে হবে।

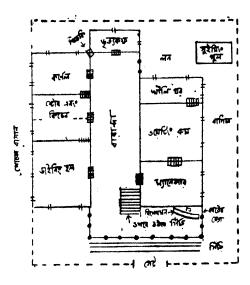
কর্ণের একট্ হাসলেন ৷..ফোরসেনিক একসপার্টরা হদি শৃত বা কল্পনার গলার নীরেনের আঙ্কলের হাপ না পার?

পাবেই।

সে তো পাবে। কর্ণেস বললেন।... ছাপটা যদি অন্য কারো হয়?

একটা চমকে উঠলেন গাঁহত।...আর কার হবে?

কর্ণেল নিভণত চুরুটে অণিনসংযোগ করে বললেন, চীনা মিহার হতে পারে 🖁



চিত্ৰত হোষ্টেল্ড নীকে তলা

विद्याभ कि जीता धिय विद्याभ कि प्रधानिक प्रधानिक स्वाप्तिक स्वाप

fix 8 - INICHE ANGONE

্ৰেকপ্নার লাস ডোবার ধারে ল,কিয়ে রাখা হয়েছিল, ভার প্রমাণও নিশ্চয় পাব আমরা। ভাঙা **মসজিদের** সির্গছর নীচে স্ভুজামত রয়েছে। ভিতরে আগাছা গাজিয়েছে। সেখানেই রাখা সম্ভব। তারপর সন্ধাার দিকে চীনা মিত্র ঘর ছেড়ে বেরোয়। ঘরে ফেরে একেবারে রাত দর্টোর কিছা পরে। নীরেন ফাড়িতে যাওয়ার আগ্রেই স্বার অলক্ষ্যে পিছনের সিণ্ড বেয়ে নেমে যায়। লাসটা এনে চীনা মিতের ছরে রাখে।...হাসতে-হা**সতে কর্ণেলের** দিকে কটাক্ষ করলেন মিঃ গণেত।... আমাদের কর্ণেল সায়েব যে পশ্বতিতে ওঘরে ঢাকেছিলেন, ঠিক সেভাবেই ওকাঞ্চটা সম্ভব। বিশেষ করে নীরেনের গারে **জেরে** আছে প্রচুর। ওর পারশোনাল ব্যাক-গ্রাউণ্ড শিগ্নির আমরা কলকাতা থেকে পেরে যাবে। আমার ধারলা কথনও মিথে। হয় না, মিঃ ভদু।

িমঃ ভদ্র নড়ে উঠলেন।..কোয়াইট আাবসার্ডা!

মিঃ গাুশত বললেন, সাটেনলি নট।
আমি একটা কেসের কথা জানি। এক
আটিনিট হতারে দৃশ্য অকিবার জনো
আশত মান্য খুন বরাত তার সহকারীকৈ দিয়ে। হতাকালীন মাডারার আর
ভার হতভাগ্য শিকারের মুখে-চোখে যে
অভিবান্তি ফুটে উঠত—দুভ ভূলি চালিরে
সে তা একৈ নিত।

মি: ভদু বললেন, বীভংস!

বীভংগ। বাট দিস ইজ দি হিউম্যাদ লাইফ। —মিঃ গ্ৰুত ফললেন।...এসব খুনীরা বড় রহস্যময় বিচিত্র জীব মিঃ ভদ্র।

কর্ণোল সরকার মুখ তুলে বললেন, তাহলে ইউ আরু ক্রাভিনসভ যে নীর্দেশ খ্নী? বিভাসের হতে পারে। প্রতীর হতে পারে। আদ্ভ ইতন দ্যাট প্রফেসর অর হিল্প ওয়াইফ...

একটা কন্দেইবল হুড়ুমুড় করে ঘরে চুকে বলল, স্যার, ডাইনিং হলের জানালা দিরে এই চাদরটা এক্নি পড়েছে। বঙ্গ লেগে আছে স্যার। জানালার নীচে দটিড্রে ছিল আমাদের সমাদার। তার গারে পড়ে-ছিল। লোকটাকেও সে দেখেছে।

তিনজনে একসংখ্য বলে উঠলেন, কে, কেসে?

कमान्त्रेयनिष्ठे यनन, धरे त्य याः हा प्रक क्षत्रामान-कानाः सामग्रेत ना की त्यन।

কর্ণেল হো-হো করে হেসে উঠলেন। স্থালিত গণ্ড হতভাব একেবারে।

(ব্রহাশঃ)



প্রব প্রক শিতের পর)

দেখতে পাই, প্রতিটি গ্রামেই রয়েছে
নানা প্রতীক মাতি। ভাবি, দেবতা কেন
এদেশের মান্বের প্রতিদিনের জীবনের
নিপো জড়িয়ে। মান্ব আর দেবতা কেন
এখনে এক হয়ে গেছে।

স্থারো দেখি, ক্ষেতে-খামারে কাজ করছে দর-নারী। দেখি নারী এখানে প্রেকের কর্মসিজানী। জীবনের কর্ম-কাশুকে তারা সমানভাবে ভাগ করে নিরেছে। আরো দেখতে পাই, নারী এখানে অবগন্টেনের আড়ালে হারিয়ে যার্মান। তারাও আলো-বাতাসের সামনে এসে দাড়িরেছে প্রেকের সংগ্য সমান অধিকারে।

দেখতে দেখতে দিনের আলো হারিয়ে গেল। হারিয়ে গেল বাইরের ছবি। দ্বিট ফিরিয়ে নিলাম ট্রেনের কামবার ভিতরে। দেখলাম, স্থোরা তখনো বসে আছে বাইরের দিকে তাকিয়ে। হয়তো দ্বিট তার আফাশের কোণে কোন উল্লাক নক্ষতের দিকে।

ভিক্তপরেম জংশনে পেণিছলাম্ সন্ধে সাড়ে সাডটায়। রাত দেড়টার আগে মাদ্রাজগামী টেন নেই। সাতরাং এই সময়ের জনো যাদ্রা বিরভি এখানেই।

কিন্তু রিটায়ারিং রুমে জারগা নেই। নাই-বা থাক। এইট্কু তো সময়। কেটে বাবে ওয়েটিং-রুমে। তা ছাড়া এমন স্পাট-ক্ষা তো রয়েছে।

সারাদিনের ক্লান্ত। দেহ-মন যেন একট্ বিশ্রাম চাইছে। ভাছাড়া শুখে, তো একদিনের ক্লান্তি নয়, কদিন তো এই চলছে।

রিফ্রেসমেণ্ট রুমে খাওয়া-দাওয়ার পালা চুকিরে নিই আমরা। তারপর একটা বিশ্রামের আশায় এসে বসি ওরেটিং রুমে।

ওরেটিং রুমের চেয়ারে বলে থাকাতে একটা ভানাও এসেছিল। তদ্মা টাটে গেল তেতিকাৰ কটা ব্যক্তে। টেন আসমে। ট্রেন আসার পর্বেলনে বারীরা কেমন যেন চগচল হয়ে ওঠে। এ চাগচল্য আমাদের মনেও।

ট্রেনের কামরার উঠেছি। বর্সেছি অলস ভাগাতে। বাকি রাতট্কু কেটে বাবে চলতি ট্রেন।

বশির সংকেত দিরে ট্রেন চলতে শরের করলো। চলতি ট্রেনের একটা নিজস্ম হলদ আছে। রাতে যেন এই ছল্টা আরো স্পন্ট হয়ে ওঠে।

দেখলাম, টেনের দ্বেনিতে স্থীরা ম্ম-ম্ম তল্যায় আক্ষম। আমারও দ্'চোখে তল্যার আবেশ।

তথনো ভোরের আলো স্পত হরে ফোর্টোন। ট্রেন এসে দাঁড়ালো এগমোর স্টেশনে। ঘাঁড়তে সময় দেখলাম। পাঁচটা।

স্টেশনে নেমেই মুখে-চোথে জল দিয়ে চায়ের তৃষ্ণ মেটাই। তারপর দিনের আলো দপত হয়ে ফটেতে সকাল সাতটা নাগাদ ফোন করলাম জীতেনকে। জানালাম, আমি এসেছি।

জীতেন জানালো, সে এখনি আসছে আমার কাছে।

সাড়ে আটটার জীতেন এলো। এসেই জিজ্ঞাসা করলে, আপনারা এখানে উঠেছেন কেন? না—না এখানে থাকা চলবে না। আস্নুন, আমি ভালো হোটেল ঠিক করে দিছি:

বলগাম, না, হোটেল নর জীতেন। আমরা এখানেই থাকবো। এই তো বেশ আছি।

ক্ষীতেন তব্ও বলে, না—সে হর না। বললাম, কেন হর না। এখানে অসম্বিধে। কিছু নেই, বরং অনেক দিক থেকে সম্বিধে। পা বাড়ালেই রাস্তা, কাছেই ট্যারি। ভাছাড়া খাওয়া-শাওর্মেও সম্বিধে। হোটেলের মতো वासिय क्षान्त्रका श्रेम होते। ह्याहोका बानका होता विशिष्ट (क्षान्त्राह्म ट्राम्स बाकि बाह्य क्षाह्म व्याहार होता। की बाह्य क्षाह्म क्षाह्म होता करें की

म्द्रीताक तारे क्येरे क्या कारण। जीटक क्यामा कारण, अवन कार कि कारक कारण।

— করাকার বার কি তারে। আক জা ভাবতি, শহরটা একরার বুরে দেশবো। বাজারটাখার করবো। জানো তো আমানের কিছু কেনাকাটার বাতিক আছে। জালাটা মারলাপুরের মন্দিরটা আজই বুরে জালতে চাই। আজ গাঁচ তারিখ। হাতে তো বুর্নিন সমর। এর মধ্যে পক্ষীতীখম আরু মহাবলীপুরম দেখার বাকথাটা করে কিও। মারাকে এসে এই বুটো জারগা না দেখে তো বেতে গারি না। আট তারিখে কলকাতা বাওয়ার জনো টেনে বাথা বিজ্ঞাত করে রেখো।

জীতেন বললে, নিশ্চরই। আমি সৰ বাবন্ধা করে দিচ্ছি।

জীতেন তার ক্ষেত্রজন কথ্যাথবকে ফোন করলে। কী কললে জানি না। তবে বা ব্যলাম, তাতে মনে ছলো—আমার প্রসংগাই ওর কথা।

এরপর চা-পানের পর জীতেন গাড়ি নিরে এলো। উদ্দেশ্য বাজারে যাওরা—কিছ্র কেনাকাটা করা। সেই সপ্ণে শহরটাও একট্র খাটিরে দেখা হবে।

ঘুরে ঘুরে দানারক্ষের জিনিস কিনগাম। স্থারার ঝোঁক ঠাকুরপ্জার তৈজস কিনবার। প্রজার নানারক্ষের জিনিস-পত্তর কিনলাম। দেখবার মতো। ধর্মিত চাদর থেকে আরম্ভ করে আরাে কিছ্ম কেনাকাটা করি। তারপর আছে আয়ার মেয়ের জনাে পছন্দসই কিছ্ম কেনা। তার জনাে কিছ্ম না নিসে নর। ভারতবর্ষের এতাে জায়গার এতাে জিনিস কিনেছি, কিন্তু এমন জিনিস চোখে পড়েনি।

কিব্দু বাজারে কেনাকাটা করতে গিরে হলো আর এক ম্পিকল। দাম দিতে হাই দোকানীকে, কিব্দু জীতেন বাধা দেয়। জিনিসগ্লো হাতে নিয়ে বলে, ওসব পরে দিলে হবে। ব্রুজাম না এর মতলবটা কি:

বাজারের পথেই রামসেশানের অফিসে প্রলাম। এসেই শ্নলাম, আস্ত্রে কাল থেকে আমাকে ও এনাক্ষী রামা রাওকে সন্বর্ধনা জানানো হবে। সম্বর্ধনার কথা শত্রন থলে ইইনি এমন দর, তব্ মনে হলো—এসেছি বেড়াতে, এখানে আবার এসব কামেলা কেন? তব্ মুখ ফ্টে কিছ্ল বলতে পারলাম না। ভাবলাম, ওরা আমাকে ভালোবালে বলেই তো সম্বর্ধনা দিঙে চার। ভালবালার দান মাধার ভূলে নিত্তে হবে। ्यक्रजाल, मृज्यस्ता एठा इट्ट-कामाटक विकट्सकारक इट्टिमा एठा?

্ৰক্তে হবে বৈকি। রাম্যেশান বললে, নিশ্চরই। এখানকার স্বাই আপনার মুখ খেকে কিছু শ্নতে চার।

রামসেশাদের অফিস থেকে এসেছি
মারলাপ্রেম মগিরে। শহরের মধ্যেই
মারলাপ্রেম মগিরে। শহরের মধ্যেই
মারলাপ্রেম আজ্র মান্রের ভিড়। এতো ভিড়
ভালো লাজে না। নিভূতেই বেন দেবতার
ভালা। তব্ মলিরে দেখলাম। মনে ডেমন
লাল কাটলো না। মলির থেকে বেরিরে
আর কোথাও নর, সোজা চলে এলাম
লেটাননের রিটারারিং রুমে। আজকের মতো
এখানেই প্রণিছেন পড়লো।

প্রদিন। তারিখটা ৬ই ডিসেম্বর।
ক্ষাল থেকেই চিন্তা আজকের সম্বর্ধনার
বাপারে। চিন্তা বলতে, একটা কিছ্ ভাষণ
দিতে হবে তো? কী বলবো। বসে বসে
ইংরেজীতে তার খসড়াও করে ফেললাম।
মোটামটি একটা কিছ্ দাঁড়ালো।

ষাইহাক ষথারীতি সম্বর্ধনা অনুষ্ঠানে আমানের নিয়ে বাওয়া হলো। আলাপ হলো এনাক্ষী রামা রাও-এর সপো। অনুষ্ঠানের সভাপতি ছিলেন মান্রাক্ষের বিশিষ্ট কংগ্রেস নেতা সভাম্তি। সভ্যম্তির সপোও ছনিন্ঠ পরিচয় হলো।

অনুষ্ঠান আমাদের দেশের যতো।
অনুষ্ঠানে উপস্থিত হয়েছেন শহরের
বিশিষ্ট নাগরিক। দেশ খেকে এতো দ্রে
এসেও আজ সন্বর্ধনা অনুষ্ঠানে এসে মনে
হলো আমি এদের কতো কাছের মানুষ।

সন্বর্ধনার উত্তরে আমাকে কিছু ভাষণ দিতে হলো। ইংরেজতিই আমার ভাষণ পাঠ করলাম।

তারপর বধারীতি প্রলবোগের পালা। এখানে অতিথিনের সপো আরো বনিষ্ঠ জালাপের স্থোগ পেলাম।

অনুষ্ঠানশেরে আমাকে ফিরতে হবে।
জাতেন আর কেণ্টবাব্ আমাদের সপোই
এলো। কেণ্টবাব্ বললেন, আসছে কাল
ভোরেই আপনারা তৈরি হয়ে থাকবেন।
পক্ষতিথিমি যাবো।

বললাম, ঠিক আছে তুমি যতো সকালে এসো না, দেখবে আমরা তৈরি হরে আছি তোমার অপেকার।

এর পর খানিক গ্লপগা্জৰ করে কেন্ট-বাব, আর জীতেন বিদার নিলে।

বাবার আগে কেণ্টবাব, আরো একবার ক্ষরণ করিয়ে দিলে আসছে কাল সকালের কথা।

সে রাডটা ফাটলো মিশ্চিন্ড জারামে।
বাভভোরে সূর্য ওঠার জাগে সুযৌরাই
জায়াকে ভাকলো। বললে, ওঠো-এখনো
ভূমোকের, পুক্তিবিধি ক্লেডে হবে হাঃ

শ্ব্যাত্যাপ করেছি। তৈরি হরেছি অব্প সমরের মধ্যে। স্থাতিতন, কেন্টবাই এখনো এসে পোছর নি। তবে বেশি সমর অপেকা করতে হলো না। স্থাতেন আর কেন্টবাই এসে গোল কিছুক্তের মধ্যেই।

মুলাফির চলো। বাওয়ার নামে প্রেরীরা তো পা বাড়িকেই আছে।

সংখ সারু ভোরের আলো ফুটেছ।

শহর—শহরতদী পোররে পল্লীর পথ।

পথের দ্খারে মনোরম দৃশ্যপট। এই
মৃত্তে বা স্পন্ট হরে ফোটে পরমম্বুর্ভে
তা হারিরে বার। মাঝপথে চিংলিপটে

জংশনে যাতাবিরতি। এখনে প্রাতরাশ
সারতে হবে।

চিংলিপটে রেলস্টেশনটি বেশ বড়ো। এখান খেকেই চলে গেছে কাণ্ডিভরম, এবং তিচিনাপঙ্গীর রেলপথ। স্টেশনের বিফ্লেস-মেন্ট রুমটিও সম্পর এবং পরিচ্ছর।

প্রাতরাশের পালা চুকিরে নিরেছি।
অর্জার দিরেছি দ্বপ্রের আহারের জনা।
পক্ষতিথিম আর মহাবলীপুরম থেকে
ফেরার পথে এখানেই মধ্যাহন্ডাজন করবো।
ফিরতে হরতো দুটো আড়াইটে হবে।
তা হোক।

চিংলিপ্টে থেকে রওনা হয়ে একেবারে
পক্ষতিথিম। পক্ষতিথিমে পৌছেই একনজরে চার্রাদকের পরিবেশে দৃণ্টিপাত
করি। প্রথম দশনেই ভালো লাগলো
জান্নগাটিক। চার্রাদকে ছোট ছোট পাহাড়—
স্বক্ষ অরণ্যে ঢাকা।

প্রথমেই দেখলাম একটি স্কুলর
জলাধার। শুনুলাম, যুগান্তে অর্থাং বারো
বংসর ধরে এই জলাধারে একটি বিরাট
শুঙ্খ আসে। যে শুঙ্খটিকে এখানকার দেবী
মন্দিরে স্বজে রাখা হয়। তাছাড়া এই
জলের নাকি দানা গুণ। এখানে শনন করনে
নানা জটিল রোগা থেকে মুক্তি পাওয়া বার।

জলাধার থেকে পাহাড়ের পাদদেশের মালরটাতে এসেছি। স্বৃহৎ মালর। নানা কার্কাবের ঐশবর। থাটিরে থাটিরে দেখি, ভাবি—কোন স্ব্র অতীতের প্রতিষ্ঠিত হরেছিল এই মালর। মান্য তার আরাধ্য দেবতাকে এই মালরে অভিবিদ্ধ করেছিল। তারস্ক্র ক্তোদিন তেছে, কালের কতো আবর্ডান, বিবর্তান—ব্য-য্গান্তর ধার কতো মান্য এসেছে, গেছে—মালরের পাধরে পাথরে হরেতা তা গাখা হয়ে আছে। মালর আর দেবতা—প্রাতন ইতিহাসেব নীরব সাক্ষী।

এবারে পাহাড়ে ওঠার পালা। পাহাড়ের গা বেরে সি'ড়িপথ উঠে গেছে ওপরের দিকে। এমন কিছ্ উ'চু নম, হয়তো পাঁচশ স্কুট কিংবা আর্ফ্লে: কিছু বেশি হবে।

পাহাড়ের নিশ্চপথ ধরে উঠছি। সব্দ হারা জড়ানো পথ। মনে হর বেন এক কুমানানের পুরু ধরে মার্কিট্র মারে মারে

নিবিতৃ ছারার মধ্যে থেকে চিকন রোদ একে পড়েকে। বেল লাগছে আলোছারার মিতালি।

পাহাড়ের ওপরে উঠেছি। ছোট মালর। মালারের চররে মানেদানীর প্রোহিত করেকজন। প্রোহিতরা পক্ষীবেবতার ভোগের আরোজনে বাস্ত। আরো কিছ্ বারীকেও দেশগায়।

পক্ষী-দেবতার উন্দেশে আমর্য়ও প্রো
নিবেদন করেছি। প্রের্ছিত একট্ দ্রের
গিরে পক্ষীদেবতার উন্দেশে। ভোগ নিবেদন
করে উক্তবণ্টে ভাক দিতে লাগলো।
দেখলায়, ভাক দ্রুনে দুটি স্কর পাখি উড়ে
এলো। পাথিগ্লো দেখতে ভারি স্কেনর।
গারের রঙ শাদা, ঠেটি আর পা দুটি হলদে।
দেখতে অনেকটা শংগতিলের মতো।

পাখিরা উড়ে এলো, আহার গ্রহণ করে আবার উড়ে গোল পাহাড়ের সব্জ গাছ-পালার আড়ালে।

প্রাণে বর্ণিত আছে এরা দাকি অভিদশ্ত দেবতা। তিকালজ্ঞ। যুগ-যুগান্তর যুব্ধে এরা নাকি পক্ষীরূপে এখানে অবস্থান করছে।

সত্য মিথ্যা যাচাই করার প্রবৃত্তি নেই। কিংবদনতী এই, তবে এদেশে এই জাতীর আরো অনেক পক্ষী দেখেছি।

পক্ষতিথিমি থেকে মহাবলীপরেম।

দক্ষিণ ভারতের অজস্র দর্শনীর প্রানের
মধ্যে মহাবলীপ্রমের প্রকীরতা আছে।
শ্নেছি, এখানে সাতটি প্যাগোডা আছে।
যার সংগা মহাভারতের নারক-নারকাদের
ক্ষ্তি জড়ানো। অক্ষত অবস্থার পাঁচটি
প্যাগোডা দেখলাম। খণ্ঠটি সম্দ্রের ধারে।
বার অনেকখানি অংশ আজ সম্দ্রগতি
বিলীন হরে গেছে। আর স্পত্মটির সংখ্ন
পেলাম দা। হরতো কালের গড়িত্ব সংখ্য
কোন একদিন তা হারিয়ে গেছে সম্ভোক্ষ

অখন্ড পাথর কেটে তৈরি হয়েছে এই প্যাগোডা।

সম্দের ধারে আলোকশ্চন্ড দেখলাম। যে আলোকশ্চন্ডটি নিষেধের বাণী উচ্চারণ করছে: এখানে এসো না। তোমার জনো বিপদ অপেকা করছে। সম্দে রয়েছে গোপন পাছাড়ের অশ্চিছ।

কিংবদন্তী আরে শান, সুন্র অতীতে এখানে নাকি দানবর। নের রাজধানী ছিল। মহাপরাক্তমশালী ছিলেন দানবরাজ। তারই আমলে নিমিতি হয়েছিল মহাবলীপ্রম। কিন্তু আন্ধ তার চিহ্মান নেই। শৃংখু এই কয়েকটি প্যাণোডা ছাড়া।

হরতো একদিন এই মহাবা ান্তম ছিল নানা ঐত্যবে ভরা। ইতিহা । নির্মান পরিহালে সেই ঐত্যবা হাচিত্র গেছে। হারিরে ক্ষেত্র দাসবরাজের রাজ্যানীর কিরে চাই চারদিকের পরিবেশে।
কাথাও কোন জনবসভিত্র চিহুমার নেই।
সদ্রে দৃশ্চি বায় শ্লাপ্রাম্ভর ব্-ধ্
ক্রেছে। তারই যাকে সম্প্রবেলার দাঁড়িরে
ব্যাহে এই কচি প্যাগোডা।

প্যাগোডাগালি দেখে আরো মনে হয়, রতো এগ্রেরা অসমাস্ত অক্ষরার পরিভান্ত করেছিল। নরতো এমন অক্ষরার থাকবে কুনো হয়তো কিংবদস্তীর সেই দাদবরাজের পতনের সংগ্য সঙ্গে এগ্রনির ক্ষেত্র পরিতার হরেছিল।

আন্ধ্র নেই দানবরান্ধ্র নেই। নেই তরি
মহাবলীপ্রেমের গোরব। অবাণিণ্ট আছে
শ্বে নাম। হরতো একদিন এই সম্মুক্তৈকতে
মাতি আর পাধরের নীচে থেকে
আবিক্ষত হরে ইতিহাসের কোন হারানো
শ্ব্তি।

বদেছিলাম সম্দ্র-সৈকতে একটি পাথরের ওপর। শ্নেছিলাম হান্নানো ইতি- शास्त्रत कामा। इंडोर इसक कारक स्वीतात जारक —की कार्यका।

-किस् मा। यहन केंद्रे मीकारे।

দ্ভিলাত করি দ্বে, বেখানে বিরাট পাথরে খোদিত সিংহ, হাতী এবং বঞ্চ মৃতি দাঁড়িয়ে বলছে, আমরা এখানে ইতিহাসের সাক্ষী হয়ে আছি।

এবারে ফিরে চলার পালা। সম্ফের কল মাথার তুলে নিলাম বাবার জালে।

রবিন ব্লু-র যে কথা সেই কাজ



এমনি ধবধবে সাদা হবে যদি ব্যবহার করেন রবিন ব্লু

রবিন ব্লু—তে কাগড়-চোগড় হয় আসাধায়ক সানা।
সানা কাগড়-চোগড় এমন আগাগোড়া ধবধবে সাবা
হওয়া আর কোন্সা নীলে সপ্তবই নয়। মার এই
এতটুকু রবিন ব্লু—তে আগনার এক গাদা কাগড়-চোগড়
হেসে খেলে হবে ধবধবে সালা। আর স্বতেয়ে
বড়কথা, রবিন ব্লু কাগড়েন গক্ষে সম্পূর্ণ নিয়ালন।
নির্ভারে ব্রক্তার করা। সূত্রাং সক্সমার আবনার
ক্রিক্তান্তানত্ত সালা ধবধবে রাখুন।



द्वित ह्र-कस्मिक सतात्रा ७ कवा जा

नायरमञ्जानसम्बद्धाः मीटः बीविदः गाँवे क्षणित निमाम प्राप्तिन्तः।

भूमा महत्र हरता त्रव किन्द्र। भूस्य कारत প্রলো সম্প্রের ভরপাউজ্নাসের শব্দ। मानव-बाद्याद्व नीयानिः न्वादम् बद्या।

মহাবলীপরেম থেকে আবার চিংলিপটে। हिश्मिन्द्र ल्डेन्ट्रब विस्मन्त्र ब्रह्म श्याहरूत्र जाहार्य शहन कडनाम।

ভারপর আবার বাইরের দিকে অটে **हका** ।

দেটশনের রিটায়ারিং ব্রুমে ফিরে আসার কিছুক্ষণ বাদেই জীতেন আর রামসেশান এলো। রামসেশান জানালে, আসছে কাল আমাদের জন্যে বার্থ বিজ্ঞার্ড করা হরেছে। স্কুরাং সেদিক থেকে নিশিচনত।

আজ আর বেশি কথা নর, গলপ নর। স্কাল থেকে এই স্থো স্থাস্ত একটাদা চলেছি-এবারে দেহ-মন যেন বিশ্রাম हाईएड ।

জীতেন, কেণ্টবাব, আর রামসেশান বিদায় নিলে আমরাও রাতের আহার গ্রহণ করে শ্যা গ্রহণ করি।

এবারে মডো প্রবাসে এই শেষ রাত।

৮ ডিসেম্বর। সকাল থেকেই বসে व्याचि तिरक्षित्रसम्बे त्रास्त्र वातामात्र। कान कारक भन रनरे, बरन थ्याक की कताया, ভাই ডারেরীর প্ভাটা কালির আচড়ে ভরে রাখছি। কদিন কি করেছি, কি দেখেছি স্বট্কু ভাষেরীর পৃষ্ঠার ধরে রাখার रुकी। मृथीता आभाद भारमदे वस्त्र आहि। भारक बारक कोंग-छों। कथा निस्त्र नमस्त्रत পতি চিহু দেওয়া। -

বেলা দশটা নাগাদ অরোরার গাড়ী নিয়ে এলো জীতেন। সেথানেই দেখা হলো কেন্টবাব্ আর রামসেশানের সপো। কথার মধ্যে একসময় জীতেনকে বলসাম, এবারে তোমার পাওনা কি বলো?

-किरमद भावना?

–দেদিন বে অতো কেনা-কাটা করলাম. ভার দাম তো দিই নি।

—৪সব কথা থাক। জীতেন বললে, আপনার কাছ থেকে জীবনে অনেক কিছ শেরেছি। ওট্কুর দাম নিতে বলে আমার কুতজ্ঞতা জানাবার স্যোগট্কু হারাতে प्रदिन ना।

কেণ্টবাৰ কেও আড়ালে ডেকে বললাম. श्रीरजनस्य क्रीम ब्रीयरत वरणा।

কেন্টবাব্ও জীতেনের সংস্যা কি चालाहना करा अल यमला, अ माम निएक চার না। বলে, একসমরে আপনার কাছ ध्यक् ७ जानक केशकात श्लाह । महरू मिर्दे कथा मान करते । जाननारक अकरे, কুত্ৰভা জানাৰাৰ অবকাশ পেরেছে।

শেষটা এ শিয়ে আর কোন কথা

क्षेष्ठे अमारका क्यां वाल भक्ता। प्रयुवद्व मर्ला ७ कालकाव काक कन्नरण। किन्दू सन्दराद ७८क ক্যামেরার হাত দিতে দিতেন না। একবার ছবি তোলা নিয়ে একটা মজার বাাপার हर्राष्ट्रण। जीर्डनरक अञ्चात रानेवीवाद পাঠান মতের ছবি ভুলতে কিন্তু ছবি লেব পর্যত হেজি হয়ে যায়। দেব, যথন ওকে জিজ্ঞাসা করে, এটা কি হলো জীতেন। ছাতেন বলে, কা করবো ওটা দড়ে গেছে।

—এটা নডে গেছে মানে। ও তো মরা।

वामाल नाम किन कीएउटनत कारमता। कात जानारे बीवणे ठिकमाला रहीन। यारे হোক, জীতেনের এই কথা নিয়ে অরোরা স্ট্রডিও-র রীতিমতো হাসাহাসি হতো। ওকে দেখলেই সবাই বলতো, মড়া দড়ে উঠেছে-পাগলা জীতেন।

প্রোনো কথা মনে হতেই হেঙ্গে

পরে ফ্রিল্যানের বেলা একটার সাংবাদিক এলেন আশার ইন্টারভিউ নিতে। নানা কৌত্হলী প্রমন উত্তরও দিলাম। তারপর সাংবাদিক বিদায় নিয়ে গেলেন।

সারাটা দ্বপ্রে অলসভাবেই কাটলো। विक्रम १८७३ थावात कथाहा भरन जला! আकरे स्ट्रांट इत्। जल्यात भत्रहे जन्ये न শেল থেকে কালকাটা মেল ছাড়বে। স্তরাং হাতের সময়ট্কু গোছগাছ করতেই কেটে যাবে।

দিনের বাকি সময়টাকু কেটে গেল দেখতে দেখতে। স্ব্যাটফর্মে ট্রেন দাঁড়িয়ে ছিল। নিদিশ্টি কামরায় গিয়ে উঠলাম। কেণ্টবাব্ রামসেশান--ওরা জীতেন, এসেছে আমাদেরকে বিদায় জানাতে। ছীতেন তো টিফিন কেরিয়ারে করে আমাদের রাতের খাবারটাকু আনতে ভোলেনি।

এই বিদায়ের মৃহতেটি বড়ো বেদনা-দায়ক। জীবনের চলতি পথে এই যে কদিনের জন্যে এখানে আসা কদিনের জন্যে নানাজনের সংগা ঘনিষ্ঠ মেলামেশা— বিদারের মৃহতে অভির পদার স্বকিছ বেন একই সপো প্রতিবিদ্বিত হয়।

ট্রেন ছাড়লো। পলাটফর্মে দর্গিড়রে ছাড নাড়তে আরম্ভ করলো কেন্টবাব, রাম-সেশান। আর জীতেন তো **একেবারে** পাথরের মতো দাঁড়েরে রইলো। ট্রেন ছাড়ার भारा एक परिवास कार निर्देश कार्य मजन হয়ে উঠেছে।

ধীরে ধীরে টেন স্গাটফর্মের বাইরে अरमा। अहे भारारण अस्तत भनाव रकत्न फेरला क्रिन्द्र म्युडि। म्युडि **नत स्वन** इनकित्।

करका क्रमशत मार्थाव, तरर्थाव करकी শহর। দেখেছি মান্দর, দেখেছি দেবালা ক্ষাণ্য কতো মানুবের সংস্পর্ণে এসোঁ এসেছে পরিচিতির মতো, আবার চলে গে অপরিচরের আড়ালে।

कीमन रव कथा कावि नि, जाक र कबारे क्षार्वाच। मत्मन मत्मा त्यत्क चर् বার করতে চাইছি, পরিচিত দুশাপাঁ পরিচিত মানুবের মুখ।

मत्न कामहा किन्द्र क्मन यन न হয়ে গেছে। হয়তো এমনি হয়। ক্ষ্ডি কালের গতির সংশ্র হারিয়ে বায় বিস্মৃতি আড়ালে। তারপর ভবিষাতের কোন হয়তো মন চাইবে বিশ্মতির দ্যার অতীতের স্মৃতি ছবিকে আবিস্কার ব

চমক ভাঙলো সুধীরার কঠাক কী ভাবছো!

গভীর শিংশবাস ত্যাগ করে বললাম-किंद्र ना।

সেই ম্হতে টোনের উধ্বিবাদে হতে **इला**त मन्महो स्थन्ड इ**रत** फेंटेला।

कालकाणे सम इत्वे हत्नाइ दाएउड অন্ধকারের বুক চিরে।

রাজমাহেন্দ্রীতে পেণছতে পরেরানে দিনের কথা মনে এলো। উনিশ'শ বিশ সালে আরো একবার এ পথে এসেছিলাম সেবারে রাজমাহেন্দ্রীতে নেমেছিলাম রাডে আহারের জনো। কিন্তু আহার তথনো শৈষ হর্মান এমন সময় টেন ছাড়ার সময়সংকেত " শ্বনে উঠে দাড়িয়েছিলাম থাবারের টেবিল ছেড়ে। কিন্তু শ্নলাম, আমার আহার শেষ না হওয়া পর্যক ট্রেন অপেক্ষা করবে। উচ্চশের ষাত্রীদের জন্যে নাকি এইরকমই নিয়ম। যাই হোক, আমার আহাঃ শেষ না হওয়া পর্যাত ট্রেন অপেক্ষ **করেছিল।** এবারেও স্টেশন স্প্যাটফর্মের্ট নেমে এলাম। কিন্তু প্রেরানো দিনের কোন চিহু খাতে পেলাম না। তখন ছিল টানা পাখা, এখন সেথানে বৈদ্যতিক পাখা। তা**ছা**ড়া স্টেশন স্ব্যাটফর্ম রিডেস্থেশ্ট রুয় স্ব্যক্তর্র আমাল পরিবতনি চোথে পর্ডলো। সেদিনের হাজমহেন্দ্রী দেটশনের সংখ্যা আজকের দেটশনের কোথাও কোন মিল নেই। শথে নামটার যা পরিবর্ডন হয়নি।

রাজমাহেন্দ্রীতে কণ্যিরতির পালা ফারোলো। আবার গোদাবরীর রীজ সেই টোনের উধ্বিগতির সপো নিজেকে ছাটিরে निख ह्या।

খ্ম-খ্ম তন্তার মাঝে মাঝে আক্র হয়ে পড়ছি। সুধীরার চোখেও তল্যা **ঘো**র[।] कत् अ म्राह्मात्य रम्थात स्मा। क्रांत्र वार्षि বাইরের দিকে। মাঝে মাঝে রাজজাগ ক্টেশন। নামগুলো পড়তে চেক্টা ক^{রি} किन्छू नामधे स्थाब करत राधात स्ट्रिड शाबिक मान्

(1948)



সৰাই বলে বাউণ্ডলে। ছয়ছাড়া।

আসলে নিজেকে নিয়ে ভাবার সময়
কই। আরু সে মনও নেই। তাই জক্মিনির
কথা ভূপে গিয়েছিলাম। জপ্মেছি এটা
ভেবে একদিন সভিট কেমন গর্ব অন্তব
করতাম। কিন্তু কথন যে এই গর্ব মৃত্তু
গৈছে টের পাই নি। আজ জপ্মের কথা
ভাবকেই কেমন যেন হক্সপা পাই। আমি

এ পর্যাত কতোটাকু দায়িত্ব পালন করতে পেরেছি জন্মদিনে এসব কথাই মূলে পড়ে। সেনামাসীকৈ বেশ মনে আছে। সোনা-মাসীর জকাদিনে ছোটবেলায় আমরা তাঁর আন্দ্রলের বাড়িতে যেতাম। তিনি আমাদের নিয়ে মন্দিরে যেতেন। প্রেলা দিয়ে প্রসাদ নিতেন। ভারপর সেই প্রসাদ স্বাইকে ভাগ করে দেওয়া হতো। এটাই যেন তার একমার দায়িও ছিলো। সতিন আমার থেয়াল ছিলো না যে আজ যোগোই ভুলাই। অন্দিন হলে এসময় আমার বাড়ি থাকারও কথা নয়। কিন্তু দিনটা স্মাতিসেতে। ঝিরঝিরে বৃণ্টি আর ভাসো नागिहाला मा। अत थादक अकडोना दिन কিছটো বৃত্তি হয়ে একেবারে থেমে যাওয়া ঢের ভালো। বিষয়তার বৃত্তে যেন আমি

ওর সংগ্র আলাপ হয়েছিলো মাংবল রক দেখতে গিয়ে। জন্দপন্তেরর বিখ্যাত মাধেরলি রক। আজে বহ**্ব দিন পরে** যাদবপারে আমাদের বাড়িতে বঙ্গে এই কথা মনে পড়ে যাওয়ায় কেমন আ**শ্চর্য** লাগছিলো। আমরা দুজনে মুখোমার হলে এলোমেলো কথা বলায় আমাদের ভাড়ি মেলা ভার। কথা বলতে-বলতে ছঠাৎ জবা হাতবাগে থেকে একটা বই বের করগো। প্রচ্ছদ দেখেই চিনে ফেললাম আমার প্রিয় কবির কাবাগ্রন্থ। পাতা ভল্টাতেই স্কবার গোটা-গোটা অক্ষরে **লেখা** মনে করিয়ে দিলো আজ আমার জন্মদিন। দেখে কেমন আনন্দ হলো। যাক প্ৰিবীতে অংশ্ত একজনের কাছেও এদিনটার অর্থ আছে যাকে দ্র বছর আগে নমদার শীণ ধারাম চোখ-মুখ ভেজাতে দেখেছি। এর- পর বৈ স্বং কথাবাতা হৈলো তা এতাই ব্যক্তিগত যে উল্লেখ করার প্রয়োজন দেখি দা। বরং এর পরের ট্রুক বলি। জবা গ্রন্থ করার করে করা করে করা করে করে করে করে করে করে করে প্রায় করে পাতা করে করে করেলা। একটা প্রায় করে করেলা। একটা প্রায় আঙলে রেখে জিজেস করলো। একটা প্রায় আঙলে রেখে জিজেস করলো—মনে হচ্ছে, গল্প? করে লিপ্থছো?

বললাম—ঠিক মনে নেই। জবা কিছ্ বললো না। অনুচ্চ গলায় লেখাটা পড়তে শ্রেহু করলো।—

'এ অঞ্জে তালগাছ খ্ব বেশী। নারকেল গাছও আছে। তবে তালগাছের মতো নয়। মাঝে-মধ্যে দ্য-একটা বাড়ি না থাকলে জায়গাটাকে অনায়াসে তালবন বলা চলতো। খব নিজন বলেই এখানে কখন যে সকাল সরে গিয়ে দুপুর আসে তের পাওয়া যায় না। কাছে কোন তালগাছের মাথার কাক ডাকছিলো। হয়তো এখনও বাচ্চা। দশছাড়া হয়ে ভয় পেয়েছে। শহরের **শেষে—বিশেষত দঃপ**ুরে—এই একটানা ডাক **চারদিক কেমন অসাড় করে তোলে। প**্রের পানায় ঢেকে গেলে যেমন নিস্তেজ হয়ে যায় অনেকটা সেই রকম। দাপরে ৮লে পড়লে টেলিগ্রাম এসেছে। বয়ে এনেছে একই লোক। অর্থাৎ তিরিশ-প'য়তিশের রোদে-পোড়া অক্লান্ত দেই মান্যটি। সেই

সবচেয়ে ভাল পরিবেশে নতুন আঞ্চিকে সঙ্গিত আদর্শ খার্ট গ্যালারী।

গ্যালারী ৬-এ সাকলাত শেলস কলকাতা-১৩ ইউনিক (ম্যাডান স্ট্রণটের গাইে)

ব্যকিং-এর জন্য যোগাযোগ কর্ন---।। পরিচালনায় : স্ভাৰ সিংহ রায় ।।

স্কল কড়তে অপরিবর্তিত ও অপরিহার্য পানীয়

5

কেনবার সময় 'অলকানস্বার' এই সব বিভয় কেন্দ্রে আসবেন

অলকানন্দ। টি হাউস

শোলক খীট বলিকাতা-১
 লালবাজার খীট কলিকাজা-১
 কিন্তবঞ্জন এতিনিট বলিকাতা-১২

ম পাইকারী ও ঘটেরা ক্লেডাব্রের অন্যতম বিশ্বস্ত প্রতিষ্ঠান ম

পরেনো সাইকেলের ঘণ্টি, গম-গমে গলার স্বর—টেলিগ্রাম, টেলিগ্রাম। তারপর অনেক-क्कन क्ट्रिं राष्ट्र। क्किं। क्रान्ड इट्रा क्थन যেন থেমেছে। মাঝে-মাঝে পাথির কাঁক অনেক দরে দিয়ে উড়ে যাছে। ঠিক যেন গণার হার। চিত্রা কোথার! দোতলার বারান্দার কোণে শ্ন্য পেরান্ব্লেটর। তার ভেতরে এক হাত সপ্রতিভ রোদ। হয়তো চিতা সেথানে দাঁড়িয়ে ভাবতে মৃত্যুকে একমাত্র মৃত্যুই অন্সরণ করে। যে ছেলে বাঁচলো না, পৃথিবীর আলো একবারের জন্যও দেখলো না, তার ছায়া সরতে না সরতেই চিত্রা এ কী শ্নলো! শৃত এতো তাড়াতাড়ি চলে যাবে ও যে কম্পনা করতেও পারে নি। অথচ সে সব দিন তো খ্য একটা দ্রের নয়। শিম্প তুলোর মতো আনন্দে উত্তেজনায় ভেসে-ছেসে বেড়াতো দিনগ্লো। শৃভ যথন বাড়ি ফিরতো আকাশের রঙ কমলালেক্র মতো হয়ে উঠতো। পোশাক ছাড়ার তর সইতো না। চিত্রার শরীরের প্রতিটি ডালপালার যেন শৃভ-র স্পংশ ঘুম ভাঙ্টো। শৃভ ×বণপ্তাভি করতো—মান্য দুটো জিনিস পারে। এক—ভালোবাসতে: ^নুই—বিশ্বাস করতে। আমাদের জীবনে যে আসংব ভালোবাসা আর বিশ্বাস এই দুটোই আমরা তাকে দিয়ে যাবো।

একদিন উদ্যোগী হয়ে শ্ভ পেরান্ব: লেটর কিনে এনেছিলো। চিতা ওর কাণ্ড দেখে শ্ধ্ অবাকই হয়েছিল। কিণ্ডু বিস্ময়ের রঙ থাকার কারণ কি? তখন তো চিতার আকাশেও নতুন জীবনের পদধ্মি।

যথন বাড়িটা একেবারে ফাঁকা থাকটো, তথন এক সম্ভূত উত্তেজনা গোপন অস্থের মতো ক্রমণ চিত্রাকে ভাঁষণ ক্রান্ত করে তুলটো। ক্রান্ত হতে-হতে ঘ্রিয়ে পড়াতো সেও এক সময়।

এর কিছুদিন বাদে একদিন গভীর রাতে চিত্রা যাকে পেলো তার প্রাণ নেই। প্রায় ভার হয়ে এলে সেজ পিসিমার দেওর আর শভে-র কয়েকজন কথা তাকে রেথে এসেছিলো মাটির কিছটো নীড়ে। শ্বভ তথন অফিসের জরুরী কাঞে বাইরে। ওর কাছে খবর পেশছলো দেরীতে। শক্তে যে চিঠি লিখেছিলো তার কয়েক হত চিতার মনে আছে—প্থিবীতে পরিসরের বোধ মান্ত্রের হয়তো কোন্দিনও হবে না। যেমন ধরো বিরাট পাহাড় আছে, অগাধ সম্ভ আছে, আবার তার পাশাপাশি আছে নানা জাতের পোকামাকড়। কেউ যদি এই সব দেখে ভাবে এখানে অনায়াসেই আরো এক জাতকের জায়গা হয়ে যাবে, তবে সে যে কতো বড়ো ভূল করবে আর ব্যথা তা তো আমরা ব্যতেই পারছি। ওইট্কু শরীরের মাটির ওপর জায়গা হলো না, মাটির নীচে যেতে হলো। তাই বলছিলাম মান্যে কোনদিনই হয়তো পরিস্রের <u>ব</u>োধ (भरत केंद्रय ना।

জ চিঠি পাষার পর থেকেই চিতা দিনপজী লিখতে শ্রের করে। বৈশাখের শেরে
সে লেখে—আজ কি অন্তুত প্রদেশর
সামনেই না পড়েছিলাম। সমর্কে ফ্রলিসর
কাছ থেকে সকালে আমার কাছে নিরে
আসি। ও কথন ঠাকুর-ঘরে ত্তে পড়েছে
খেরাল করি নি। লক্ষ্মীর ঘটের ওপর বে
কলা ছিলো সেটা ভূলে নিরে আমার কাছে
ছুটে এলো। তারপরেই আমাকে সেই
অন্তুত প্রদান মাসিমণি, ভূমি ঠাকুর্কে ঐ
ঘরে রেখেছো ঠাকুরের একলা থাকতে ভর
করে না ব্রিথ? আমি এর কী উত্তর
দেবা! আমার ভেতরটা থর-থর করে
কেপে উঠেছে। আমি স্পাট দেখতে পেলাম
উশ্বর কী চ্ডান্ড নিঃস্পা।

िह्या त्मार्थ-শীতের শ্রেতে ফাদারের সপ্যে আজও কুক্ষচ্ডা গাছটার 🦠 তলায় দেখা হয়েছিলো। ইদানীং লক্ষা করছি ওর মূথে ভাঁজ পড়ছে। বেশী কথা বললে হাঁপিয়ে ওঠেন। আজও তাঁর হাতে সর্ পেশ্সিল আর কাগজ দেখে কৌত্হল চেপে রাথতে পারলাম না। চারিদিকে ওঁহাট-বড়ো-মাঝারি-নানা আকারের সমাধি। নিস্তর্ভা সময়। হঠা**ং প্র**মন **কর্লাম**— আছে৷ আপনাকে যথন দেখি আপনার হাতে খাতা-পেশ্সিল কেন থাকে? ফালারের চোথ যেন আরে। উম্জ্বল হয়ে উঠলো। আমার দিকে অপলক চোখে কিছ্কেশ कांकिरत रथरक भौरत-भौरत वलरलन--कृति আমাকে এখানে দিনের পর দিন দেখেছো। শাুধ্য এখানেই নয় হার্টে-বাজারে মাঠে-ঘাটে বেড়াচিছ। কিন্তু মানুষের মুখ কিছুতেই আঁকতে পারছি না। কভোবার মনে হয়েছে এই বৃত্তি ধরতে পারলাম। কিন্তু আঁকতে গিয়ে হতান হয়েছি। তব হাল ছাড়ি নি। বাকী দিনগালোতে আমি চেন্টা করবো, প্রাণপণ চেন্টা করবো।

চিচা আগে স্বীকার করতে া। কলেজ জীবনে ইংরেজীর অধ্যাপক ঞ্জার শেকস্পীয়র পড়াতে গিয়ে মন্ত্রা করে-ছিলেন—জীবনের প্রতি বাঁকে-বাঁকে নাটক।

ও এটাকে তথন মেনে নিতে পারে
নি। প্রতিবাদ করেছিলো। কক করেছিলো।
কিবতু আজ অভিজ্ঞতা দিয়ে সে সব
স্বীকার করে। ব্রুতে পারে জীবনে কোন
চরিত্রই স্বয়ংসম্প্রানয়। একে অনোর
সপো কোন-না-কোনভাবে জড়িয়ে আছে।
তা না হলে তার আর শ্ভ-র জীবনে
সদানন্দ কাকার অস্তিছ (তা সে ব্রুড)
অবস্থ হোক) কেন ভূলে থাকা যায় না।

একবার ওদের বাড়িতে শকুন পড়ে।

দেখন অনেক রাত। উঠোন জুড়ে শকুনের
দাপাদাপিতে সবাই জেগে বায়। তারপর
সে কি প্রাণাদতকর চেটা তাকে উড়িকে
দেবার জন্য। অনেক বুদ্দি খেলানের পর
শক্ষন অবশ্য উড়লো। তবে সারা উঠোনে
রেখে গেলো অভিতম্ব। ছেড়া পালকের
ট্রকরো। মা বেশ করেক দিন ধরে বিষয়
হরে ছিলেন। সব সমরেই কোন জন্মপুলন

চিন্তা তাঁকে বিরে থাকতো। শেষে ঠাকুর-মশাইকে ডেকে শাস্তি-স্বস্ত্যয়ন করানো 🏋 লা। নেমশ্তম করা হলো কয়েকজন **ছুঁ**রণকে। সদানস্দ ছিলেন নিম্নিতদের স্থিন। ওদের বাড়ির উঠোনো সেদিন দতকে রোদ। উঠোনের একেবারে াণের দিকে কুলগাছটার নীচে ঘ্মিয়ে ড়েছিলো কান্র মা। হয়তো এতোক্ষণ নিলো-মন্দ দ্টো খাবার অপেক্ষার থেকে। কান্র মার কান্কে পাড়ার কেউ কোন-দিন দেখে নি। অসাড়ের মতো ঘুমোচ্ছিলো वर्ण व्यवरूष भारत नि कथन व्यक्ति काश्र् সরে গেছে। হঠাৎ চিত্রা কী একটা কাঞ্চে ঢ়াছাকাছি এসে পড়ে। কয়েক হাত द्वित्तरे एम्थरण स्मन एम अमानन्य काकारक। চিত্রা বিশ্মিত। সে পা টিপে-টিপে সরে ুর।

্ এই সদানন্দ কাকার অন্য দিকও চিত্রা দেখেছে। কী অপরিসীম পরিপ্রমে তিনি তিল-তিল করে বাগান গড়ে তুলেছিলেন। নতুন কারো সম্পে আলাপ হলেই তার কাছে নুতুন চারাগাছ আছে কিনা জেনে নিতেন। ভোরের বাগানে খরেপি হাতে কান চারা গাছকে বাঁচানোর আপ্রাণ চেন্টা করতে তাঁকে অনেকেই দেখেছে।

হঠাৎ সদানব্দ তার ভীষণ পরিচিত দ্মভূমি ছেড়ে মধ্যপ্রদেশে ঢাকরী নিয়ে ুলে যান। হয়তো জন্মভূমি, তার মানুষ, তার বাকের বাগান সদানন্দকে তেমন কোন বুতিশ্রতি দেয় নি-তিনি হয়তো কমশ ই সব ব্ৰুখতে পেরেছিলেন কোন বেদের .রীদ্রোষ্প্রনুল চেহারার দিকে তাকিয়ে, মানস সরোবর থেকে আসা পাখিদের অম্পন্ট সংলাপে। যাবার আগে পৈতৃক বাড়ি এমন কারো কাছে বিক্রী করতে চেয়েছিলেন যে তাঁর প্রিয় বাগানকে নণ্ট कत्रद ना. ভालावान्नात्र। प्रमानन्य यावात আগে বন্ধ্বপত্র শভের কাছে সব্বিক্তর বেচে দিয়ে যান। শভে তখন চিত্রাদের পাড়ার চলে আসে: তারপর পরিচয় থেকে পরিণয়।

সশ্তান হারানোর পর চিত্রা শুভ-র মধ্যে আশ্চর্য পরিকর্তন দেখতে পায়। শুভ

যেন হঠাৎ কেমন পরিণত হ**য়ে গিয়েছিলো।** সেই প্রাণচণ্ডল, আত্মবিশ্বাসী শভেকে আর কোপাও খ'্জে পাওয়া যেতো না। চিহা ছোটবেলায় হ্যারিওয়েট বীচার স্টোয়ের 'আংকল টমস কেবিন'-এর বাংলা অনুবাদ পড়েছিলো। সেই মেয়েটির নাম আজ আর তার মনে নেই। শ্ব্দু মনে আছে সে যথন ব্ৰতে পেরেছিলো তাকে প্রথিবী ছেড়ে চলে বেতে হবে, সে তার ঘন চুলের গোছা স্মৃতি-চিহ্ন হিসেবে ট্রকরো-ট্রকরো করে বিলিয়ে দিয়েছিলো তার প্রিয়জনদের কাছে। শৃভ যেন সেই মেয়েটির মতো নিঃস্ব হয়ে গিয়েছিলো। তার যেন <mark>আর</mark> নতুন করে পাওয়ার কিছু ছিলো না। চিত্রা নিজেও জানতো যে সে তার ভালো-বাসা দিয়ে শভুকে ফিরিয়ে দিতে পারে শ্বভর নিজ্ঞব জগতে। কিন্তু ভালোবাসার সেই অসীম ক্ষমতা সব মানুষের থাকে না। তাকে বোধ হয় ক্রমশা অজনি করে নিতে হয়। চিত্রা স্বীকার করে সে **এ** কাজে বার্থ হয়েছে।

মনে আছে ওরা দ্জনে একদিন বাড়ি ফির্ছিলো। বিকেলের আলো কমে এসেছে। সমানে ছোট মাঠ। সেখানে আলতো ভিড় দেখে ওরা এগিয়ে গিয়ে লক্ষ্য করলে। দাঁড়ে একটা পাখি। চওড়া তাকে দেখিয়ে আর লম্বা ঠোঁট। লোকটি বোঝাতে চাইছে যে অনেকেই ধনেশ পাখির নাম শনেছে. যদিও অনেকেই ভাকে দেখে নি। এই সেই ধনে**শ** পাখি। এর হাড়ের ট্রকরো হাতে বে'ধে রাখলে শরীরের যে কোন বাথা. বিশেষ করে বাত, সেরে যাবে। লোকটির হাতে ছোট একটা হাড়ের কুচি। আরু পাথিটা দাঁড়ে কেমন অবসন্ন হয়ে আছে। চিত্রার দুগ্টি এড়ায় নি শুভ কেমন উত্তেজিত হয়ে উঠেছিলো। আরো খানিকটা এগিয়েই ওরা দেখতে পেলো তিনজন ডাাং-গ্রেল খেলছে। তাদের কুষ্ঠরোগী মনে হয়। ফেরার পথ-ট্রকতে ওদের মধ্যে কোন কথা হয় নি।

অনেক রাতে আলো নিভিয়ে শুরে পড়লে শুভ যথন চিত্রার অসম্ভব কাছে সরে এসেছে, চিত্রার মনে হলো এই মৃহতে দুটো শরীরের নিয়মিত বোগ-সাজস শোবার ঘরের জমাট অম্থকারে একট্রত ডেউ তুলতে পারবে না। প্রত্যেকেই নিজের জন্য বে'চে থাকতে গিয়ে আবহমান অম্থকারকে বাঁচিরে রেখেছে।

ting dan dangkalikan menjadi salah berasal selah berasak berasa s

জ্বা একটা থেমে বললো—এর পরের অংশ লাল কালি দিয়ে দাগানো কেন?

वननाम-कान् जःगहो ? भर्षा छा। ও পড়লো—'চিত্রা প্রায়ই স্বন্দ দেখে। ম্বন্দের বিষয় মোটাম**্টি এক। তবে** আন্সিকের রক্মফের হয়। জেগে উঠেও সে বেশ কিছাক্ষণ ভূলতে পারে না যে সামনে-পেছনে নিবিড় দিগণত। দিগণেত সমরের অলোকিক শিকড় ছড়িয়ে পড়েছে। **মৃত** শ্বামী আর বিনষ্ট স্পতানের মুখ সে আর পৃথক করতে পারেনা। সেই সম্মিলিত মুখাবয়ব বিবর্ণ পেরাম্ব্রুলেটরে বসিয়ে সে হে°টে যায় যে কোন দিগদেতর দিকে। আকাশ তার অগণিত প্র-পরে, যের চোখের মণির মতো। তার মাথার ওপর চক্রাকারে ঘোরে সেই ধনেশ পাখি। তার মনে পড়ে মেঘের ট্রকরো উড়তে-উড়তে একদিন ঘরের কাছে আসে। আর তাই দেখে নেচে ওঠে ভিতর-বাডির ময়্র। অথচ মানুষের জীবনে যোগা-যোগের এই আনন্দ কেন নেই! মান্য কেন ক্রমশই জীবন থেকে বিচ্ছিন্ন হয়ে

আছে। এবার মনে পদেছে। ওট্রু গলপটা পেকে শেষে বাদ দিরেছিলাম।— চিত্তাকে জানালাম।

কিশ্ত ওট.কু থাকলে ক্ষতি কী? আমার তো বেশ ডালো লাগছে — ধ্রুবা প্রতিবাদ কর্মলা।

বললাম—ছোট গলপ তো জানি কোন বিশেষ জায়গায় শেষ হয়। আর ভাছাজা ওই অংশটা কৈমন বল্পবা প্রধান হয়ে পড়েছে।

জবা কোন উত্তর দিলো না। শংখ আফার দুটো হাত তার কোলে টেনে নিলো।



शायुका कवि पराभार •

সৈশ দিনাগুৱা গুচিক কৰা চিক্ৰিয়াৰ

बल्ह्यकृत छत्तिव कथाता १ एक भवागात्व क्रोका किछ मछ वर अकते विभाषात केरका व्यक्ति कार्यन अखिर हिल











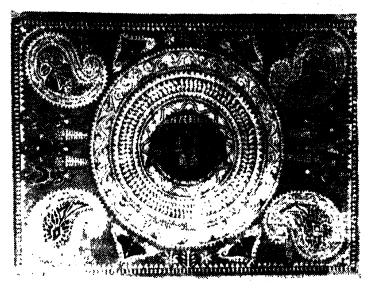








তত্তকথা



পিণ্ডির আলপনা

প্রজ্ঞাপতি ঘ্রঘ্র। হাসির রোল পড়ে বার। কিছ্টো আনদেরও। আরো, যদি সে বাড়িতে বিবাহযোগা কেউ থাকে। তাহলে তো রীতিমতো জল্পনা-কল্পনা শ্রে হয়ে যায়। প্রজাপতি উড়ে উড়ে বসে। ঘ্রে ঘ্রে। সবাই সেদিকে তাকিয়ে খ্লি-খ্রিশ কথা বলে। আলাপ-আলোচনা চলে। বাড়ি-শ্রুশ সবাই হ্রছি খেয়ে পড়ে।

প্রজ্ঞাপতির আগমন-নির্গামনে সব মথের মুখ নীরব হতে না হতেই বাড়িতে বিরের আসর জ্বমে ওঠে। এতদিন যা ছিল্ল জ্বলপনা-কণপনা, আলাপ-আলোচনা, এবার তাই সতি। বিরের কনে বার বার লগ্জার রাঙা হরে ওঠে। এদিকে বাড়ির সবার বাস্ততার সমামা নেই। কেনাকাটা, গয়নাগাটি, খাট-আলমারি। তারপরও আর একটা ভাবনা আছে। তল্কের ভাবনা। সবই এই প্রথারে পড়লেও মেরে বা নাতনির বিরেতে ইদরের নিবিড় স্পার্শার উরাপে এই অনুষ্ঠানকে সঞ্জাবিত করা চাই। ভাবনায় ওদের চোধের ঘুম বিদার নেওয়ার উপক্রম।

ত রা সব ভাবতে বসে বান। কিভাবে এই অনুষ্ঠানে আর একটা নতুনদের ছোঁনা আনা বার। এর আগে ছিল নাতির বিরে। তাই রকমফের বড়ি বানিয়েই ঠাকুরমা দায়িত্ব সেরেছিলেন। কিন্তু এবার আর তা ইবার জোনেই। নাত-জামাই যে তাহলে ঠাকুমাকে খেটিার অন্থির করে দেবে।
নার্ডানও কি ছাড়বে? এখন না হর চুপচাপ,
মুখ বুজে আছে। পরে ঠিক খুনিরে
বসবে। তাই ঠাকুমা কাজে হাড লাগান।
বড়ির গমনা বানান তিনি দিনের পর দিন
বসে। কতরকম গমনা। হার খেকে বাজ্
এবং বাজ্বখ্য সংই আছে। আর কত যে
বড়ির বাহারে বড়ি তার ঠিক নেই। ঠাকুমা
তো হানেন, ভোজনরাসক নাডজামাইকে
আগেই কাব্ করা দরকার।

ওদিকে দিদিমারও চিতার অত তেই।
নাতনিকে কিভাবে সাজানো যার সেকথা
তিনিও ভাবছেন। চোথে ভাল ঠাহর হর
না। নিজে হাতে স'্চে স্তে পরাতেও
পারেন না। তব্ তার মন মানে না। তিনি
বসে গোছেন কথা নিয়ে। ভবিষাতের ভাবনা
দিরেই তিনি শ্রু করেছেন। কি স্ফর্বর
তার নকসা! চোথ জ্বভিরে যায়। দিনের
পর দিন বসে তিনি নকসা তোলেন। চোথ
দিরে জল পড়ছে। তব্ তিনি দম্ছেন না।
হাতেব এক-একটি ফোড়ে স্ভিট হচ্ছে
অপ্র সোল্বর।

শ্বে ঠাকুমা-দিদিমা নর। এমনি অনেক কিছু দেবার আছে অনেকের। তাঁরা চুপচাপ বসে নেই। সারা বাড়ি লুড়ে বাস্ততা। সবকিছুর ফাঁকে তত্ত্ব সাজানোর বাস্ততার অনেকেই নিজেনের ড়বিছে দিয়েছেন। সবাই চাইছেন, তাঁর শ্রেষ্ঠ জ্লিনিসট্কু উপহার দিতে। আবার বেন জাগের সপো না মেকে সে বিষয়েও তাঁরা সচেতন।

এসবই সেদিনের ভাবনা। সেদিন ঠাকুমা-দিদিমা থেকে শ্রুর্করে সবাই বেরকম ভাবতেন আজ অবশা ভাবনা সেদিকে বল্প না। দিনের সপো সপ্সে ভাবনাও অন্য খাতে বইছে। তাই কুস্মিকার বাঙ্ডলী বিরের উপকরণ-প্রদর্শনীর আমশুণ পেরে আজকের কথাই মনে হচ্ছিল বেশি। প্রনো কথা ভাববার স্বোগ খ্ব একটা পাইনি।

কিন্তু প্রদর্শনীর আসরে হাজির হতেই মনটা থারে গেল। সানাইরে আলাপ হল্পে। একট্ দাঁড়িরে শ্নলাম। তথনো জানি না; ভেতরে কি বিরাট আসর বসেছে। সানাই শ্নতে শ্নতে ঢ্কে পড়লাম একেবারে প্রদর্শনীর থরে। আর ভারপরই বিস্করের পর বিস্কর এক রাখ বিস্কার একসংগা।

রীতিমতো বিয়ে বাড়ি। গুড়ের, বছরে আসর ভরে গেছে। বর-কমের বিরের পিটিড় মার বজ্ঞকুণ্ড পর্যাত প্রস্তুত। আমন্তিতেরা সব ঘ্রের ঘ্রের দেখছেন। আর সর্বনিক্তরে তত্ত্বাবধান করছেন কুস্মিকার পারিচালিকা শ্রীমতী উমা বস্।

বড়ির গরনা কন্ত রক্তমের। ঠিক আগেকার দিনের ঠাকুলা-দিদিমা বেরক্তম ভাবতেন। এছাড়া বড়িও আছে থরে-থরে। নাতকামাইরের রসনাকে ত্বত করার ক্ষম ওদের আন্তরিকতার অন্ত নেই। শুধ্ বৃদ্ধি ঠাকুমা-দিদিমা নর। ইতি লাগিরেছে স্বাই। তাই মশলার ট্রে-তে ধরা পড়েছে বিচিন্ন শিকপকার্য। লবংগ, এলাচ, দার্চিনি দিলে কত নকসা করা হরেছে। গৃহস্থ বাড়ির সমস্ত সম্পদকে সেখানে হান্তির করা হরেছে। নতুন জামাইকে পরিচর দেওয়া হরেছে শ্বশ্রবাড়ির।

কুলো আর পিণিড়র আলপনার অনেক দরের হারিরে বাওয়া বিষে বাড়ির আমেজ পাছিলাম। বর-কনের জনা সাজানো পিণিড় ছাড়াও কত স্কুদর শিলপভালে শোহিত পিড়ি উপহার দেওয়া ইয়েছে এই অনুষ্ঠানকে স্মরণীয় করে রাথার জনা।

র্মাল আর রিবনের সাজও বিয়ের তত্ত্বের একটি অনক্ষা দিক। বাপমার যদি পয়সা থাকে তাহলে তো কথাই
কেই। তাহলেও সর্বাকছর সপেগ যারে এই
স্ব নিলপকাল্প। ভিন্ন ভিন্ন সাধনায় অভিন্ন
হ্লেরকে ও'রা কাছে রাখতে চার। আবার
পয়সা না থাকলেও তত্ত্বের হাটি প্রশ হয়ে
বাবে এইসব উপকরণে।

এসব যারা করতে পারেন্দি তাঁদের
ছ্মিকা আছে বিরেতে। ছালনের কাজ আর
কনের চূল বাঁহা। চলনের কাজ বারের
অবশা-অংগ। একে আঁলো বর্জন করা
চলেনি। মনের মতো সাঞ্জানো হবে চলনের
বাহারী কাজে। চূল বাঁহা অবশা এরও
আগের পর্ব। প্রার শর্মর কাজ বলা চলো।
কনের বিভিন্ন খেপার করেকটি মডেল
প্রদর্শনিকে প্রণতা দিয়েছে। বিশেষ
চলনের সাজে বে সৌল্প প্রাণ্ডবিক হরেছে
তা সহজে ভোলা যার্মা। এই কাজ
প্রদর্শনীতে উপহার দিয়রছেন্ শ্রীমতী
জাজাবাই ভট্টাচার্য।

কিন্তু এখানেই তো তাত্ত্ব শুদ্ধ ইতে পারে না। বর-কনের প্ররোজনীয় জিন্ম তাই। তাই কসমেটিকস আর জালান্দ্রাপ্রাক্তর প্রাহরণ আছে। থারে থারে সাজান্দ্রা। জন্ম কর্মাটিকের কথা আজ আক অভিনাম করের নেই। প্রতি বিরোজই এর বাছলা কারে নজর এতার না। আরু সেদিনের তুলনায় এখন প্রপাধনন্তব্যের উম্লিভিও ঘটেছে এবং বৈচিত্রত বেড়েছে।

একটি জরির ব্রাউজপ্রিরে েকেকজের এক কৌত্যল। এত সংশ্বর ব্রাউজ আগাগাড়া হাতে তৈরি। লে এমন অবাক হবার কিছ



्षाधः निक कारलत रवशार्नेन

নয়। এর চেয়েও বড়ো কথা, এটি তৈরি করেছেন একজন সত্তর বছরের বৃংখা। নাতনিকে জবৈনের এই মহালানে সাজানোর কার্ফে তিনি দুরে সরে থাকেননি। বিরের থবর প্রথমার সংগ্রাস্থানন পর দিন বসে বানিরেছেন এই ব্রাউজ।

প্রদর্শনীতে আরেকটি জিনিষ প্রথান প্রেয়ছে যা অসংখ্যের মধ্যে সহজেই নিজেকে কিনিয়ে দিতে পারে। প্রেনো নোট আর চেক দিয়ে সাজানো একটি পিড়ি। এর একটু ইক্সিইটাস আছে। ১৯০৬ সালে এই পিড়িটি সাজানো হয়। লেভি মিল্টো পিড়িট সাজানো হয়। লেভি মিল্টো পিড়ির কাঁজ দেখে অভ্যন্ত ম্পাতিন সাধ্য সেটিকে প্রেক্ত করেই কাকত হলেন না, পাঠিরেছিলেন অস্টোল্যায়। সেখানে মাসজানের প্রশংসা কুড়িরে পিড়িটি ফিরে আলে আযার দেশে। এই দুন্টবা জিনিবটা নিঃসলেকতে প্রদর্শনীর ম্যাদা বাড়িরেছে।

ফ্লের আর ফলের ডালিতে তত্ত্ব সাজানো হরেছে নিখ্তভাবে। যেন কোষাও কোন চুটি না থাকে। ফ্লের জালিতে করেছটি চীপা ফ্ল প্রোপ্রি ক্রানে হরেছে পেশেন আর শশা চিড়ে। কিছু কোখাও এডট্কু ধরার উপাদ নেই। ক্রান্ত ফ্রেই ফ্লের গাণ্ধ নিতে গিরে বর-ক্রান্ত ফ্রেই ফ্লের গাণ্ধ নিতে গিরে বর-ক্রান্ত ফ্রেই করে। দেবীপ্রসাদ সরকারের ক্রান্ত বর্ষ করানো এই চীপা ফ্ল খ্রই প্রশংস্কীর। বিভিন্ন সর্কারেও তিনি বেশ

উন্নদ্র বছরের শ্রীনতী উনাশশী বস্থালিক বাড়ব গ্রন্নায় বথার্থা নাটিকে ধরে
নাখালে পোরছেন। সেই দন বা আজ লাতে
হতে চলেছে। বড়ি আর বড়ির গরনা নিরে
নাথা খামাতে আজ আর কেউ খ্ব একটা
রাজ্যনীপেন । অবজ্ঞ একদিন এট্কু না হলে
তত্ত্ হতো অপ্শ। শ্ধু ভোজারবা নর্গ এর
নিল্পন্বার জনাও।

কৃষ্ণ মিত্রের মশলার টে থেকে প্রের গেরুপ বাড়ির একটি র্পকণপ পাওয়া যায়। আর পিণ্ডির আলপনায় দীপা রায় শিল্পী মনের স্কার পরিচয় রেখেছেন। এমনি কৃতিত্ব র্মাল সাজানোয় চন্দ্রিমা রায়ের। এছাড়াও কোন কিছুই ফেলনার নয়।

প্রদর্শনী দেখতে দেখতে হাতের কাছে। শ্রীমতী উমা বস্কে পেয়ে যাই। একফাকে 🍂 জিলোস করি, এতসং পেলেন কোথা থেকে?

সেই হাসি হাসি অতিথি আপায়ন করা মাথেই তিনি বলালন, এজনা ততুসভলা প্রতিযোগিতার আয়োজন করি আমরা। প্রতিযোগিতায় ছিল ছয়টি বিষয়। যার সব-किছ है अथात शांकत कता शराल त्यान ও রিবন সাজানো, মশলার টে 🥤 ভূর গায়না, কুলোও পি'ড়ি আ**লপ**না। **অনেক প্রতি**-যোগী যোগদান করেছে। এ ধরনের প্রতিযোগিতা ছাড়া এরকম প্রদর্শনী করা খ্ব একটা সহজ্ঞ নয়। তাছাড়া অশিক্ষিত-পটাড় নিয়েই আমাদের মা-দিদিমা এবং প্রতিরেশী বিয়ের ততু, সাজাতেন। সেই ধারাটি ক্রেই লু-ত হয়ে যাতে। কিন্তু তাদেরই বংশধন আমরা আজ তত্ত্বের ব্যাপারে বহু লাংশে পরমুখাপেক্ষী। সেই লু-ত ঐতিহ্যকে যেমন তুলে ধরতে চের্মোছ তের্মান আরেকটি উল্পেশ্যও আছে।

কি সেই উদ্দেশ্য প্রশ্নহীন জিজ্ঞাসার তাকালাম শ্রীমতী বস্ত্র দিকে।

এরপর যদি কেউ উংসাহিত হবে এডাবে তত্ত্ব সাজান। আর বিভিন্ন মহিলাকে দিল্লে এই কাল্পান্নির করিয়ে সেন। তবেই আমার এই প্রদর্শনী সার্থক।

শ্ৰীমতী উমা বৃস্থ এখন আৰু হাসছেন না। চিন্তা করছেন।

A Sugar

-श्रमीणा



হবলন কেমিকাান এয়াও ফার্মাসিউটিক্যাল ওরার্কস্ নিঃ কলিকাতা - বোহাই - কানপুর - দিলী - বাছাক



খবর দেখেছেন? ২৬ এপ্রিল তারিখের কাগজে থবর বেরিরেয়ছিল (দল্লাদিল্লী থেকে খবরটি দিরেছিলেন প্রেস ট্রাস্ট অভ ইন্ডিরা), আকাশবাদীর দিল্লী কেন্দ্র থেকে নির্মান্ত সংস্কৃত ও বাংলা শিক্ষার আসর প্রচারিত হবে, ফলকাতা কেন্দ্র থেকে যেমন নির্মানত হিন্দী শিক্ষার আসর প্রচারিত হর। খবরে বলা হরেছিল, সংস্কৃত শিক্ষার আসর প্রচারিত হবে ২৬ এপ্রিল থেকে সম্তাহে দুদিন—রবিবার আর সোমবার: আর বাংলা শিক্ষার আসর প্রচারিত হবে ২৮ এপ্রিল থেকে সম্তাহে পাঁচ দিন—মাধ্যালবার, ব্রধবার, ব্রুস্পতিবার, শ্রুবার ও শনিবার। শিক্ষা দেওরা হবে হিন্দীতে, আর সংস্কৃত-বাংলা দুটি আসরই হবে প্রের মিনিট করে।

থবরটি দেখে বাংলাভাষীরা নিশ্চয়ই থবে খুলি হয়েছেন ध्वेतर आकामवानी कर्जनकरक धनावाम जानित्तरहन। वारनास्रावातक रकागंग्रामा कतात कता यथन श्रकारमा ও गामित गण हन्ना हरू প্রশংসনীয়। বাংলাভাষার উপর পূর্ব পাকিস্তানে অনেক অতাচার হয়েছিল, সেথানেও বাংলাভাষাকে কোণঠাসা করার চেন্টা হয়েছিল —কিন্তু পূর্ব পাকিন্তানের বাঙালী তর্নেরা রম্ভ দিরে সেই অত্যাচার প্রতিরোধ করেছেন, বাংলাভাবাকে কোণঠাসা করার সেই চেষ্টা তাঁরা ব্যর্থ করে দিরেছেন। তাঁরা প্রাণ দিয়ে বাংলাভাবাকে রক্ষা করেছেন। কিম্তু এখানে আমরা তা পারিনি। এখানে বাংলাভাষা কেন্দ্রীয় সরকার ও হিন্দীওয়ালাদের হাতে অত্যাচারিত হচ্ছে, বাংলাভাষাকে কোণঠাসা করার নির্মাজ চেন্টা হচ্ছে এখানে। धार धारे वारकारमाम्बद वारकार कारकारमाम्बद वारकारमाम्बद वारकारमाम्बद गर्लाएक श्रथायर वर्षा वर्षा दक्षा दक्षा विन्तीरक राज्या লেখা, তারপর ছোটো হরফে **ইংরেজী**তে আর বাংলাতে। বাংলাতে সকলের শেষে। কেন্দ্রীয় সরকারের অফিসগুলোতে বন্ত সাইনগবার্ড⁴ ্তার সবই হিল্পীতে <mark>লেখা, বাংলার প্থান নেই সেখানে।</mark> এমনকি, হে আকাশবাণী কলকাতা কেন্দ্র থেকে বাংলাভাষী গ্রোতাদের জনা বাংলাভাষাতেই অধিক অনুষ্ঠান প্রচাবিত হয় সেই কেন্দ্রেও বাইরে একবার মার আকাশী নীল হর্ফে 'আকাশকাণী ভবন' লেখা ছাড়া সারা বাড়িটার ভিতরে-বাইরে আর কোখাও কোনো সাইন-বোডে একবর্ণও বাংলা নেই, আছে হিন্দী আর ইংরেজী। চিন্দীর मांभे मृथः मारेनरवार्ष्णंत प्रसारे मौप्रावन्य थार्किनः अनुकारनव উপরেও পড়েছে। কলকাতা কেন্দ্র থেকে দিনে-রারে কতগলে। করে হিন্দী নিউজ ব্লেটিন প্রায়প্রচারিত হয়, কভগালো করে হিম্পী গান শোনানো হয়, ক'টা **করে হিম্পী কথিকা আ**র আলোচদা হাচার করা হয়, কী পরিমাণ ছিন্দী শিক্ষা দেওরা হয়—ভার মোটাম্টি একটা হিসাব ইতিপ্ৰে বক্তানশ্তি বিভাগে দেওয়া ্**ছরেছে। কোন্কোন বাংলা অনুকাদন কীভাবে কোণালে ছিন্দী** ्चत्रशाह्य कताता राज कान्य मेप्प्रभारत . को विखाल **हाथा** हरतहा अध्य प्रका गामक दिला गाम जनमा प्रकार प्रकार प्रकार হিচারিত বাংলা সংবাদে হিন্দী শব্দ ব্যবহার করা হচ্ছে এবং বাংলা

শব্দ হিন্দীর অন্তেরণে উচ্চারণ করা হচ্ছে। বাংলাকে হিন্দীর ধাঁচে টেনে আনার একটা প্রবল প্রচেটা দেখা যাছে আকাশ-বাণীতে। অথবা বাংলাকে ধীরে ধীরে গ্রাস করার।

ঠিক এই রকম সমরে আকাশবাণী কর্তৃপক্ষ দিল্লী কেন্দ্র থেকে নিশ্বমিত বাংলা শিক্ষার আসর প্রচারের বাক্ষথা করায় কেউ কেউ বিজ্ঞানত হরে পড়েছেন এবং এর পিছনে একটা উদ্দেশ্য থাজেছেন, এ-কথা অনুন্দ্রীকার্যা—তব্ আকাশবাণী কর্তৃপক্ষ প্রোতাদের অনেক অনুরোধ-উপরোধ আমল না দিলেও এই যে নকতঃপ্রগোদিত হরে রাজধানীর বেতারকেন্দ্র থেকে নিয়মিত বাংলা শিক্ষার আসর প্রচারের আয়োজন করেছেন তাতে তাদের ধন্যবাদ না জানিয়ে পারা যায় না।

বাংলা শুধা ভারতেরই একটি স্লুলিসত উন্নত ভাষা নয়, প্রিবীরও। প্থিবীর বহু দেশে এখন বাংলা পঠন-পাঠনের ব্যবস্থা হয়েছে। বহু দেশের কেডারকেন্দ্র থেকে নিয়মিত বাংলা অনুশোন প্রচারিত হচ্ছে।

করেকটি বড়ো বড়ো দেশের বেতারকেন্দ্র থেকে বাংলা অনুষ্ঠান প্রচারের সময় ও মিটার অনেকেরই জানা আছে, কিন্তু আনেক হোটো ছোটো দেশের বেতারকেন্দ্র থেকেও যে নিয়মিত বাংলা অনুষ্ঠান প্রচারিত হয়, সে-কথা হয়তো অনেকেরই জানা নেই। বিদেশের বেতারকেন্দ্র থেকে কী য়য়য় বাংলা অনুষ্ঠান প্রচারিত হয় সে-বিকরে কৌত্হল থাকা স্বাভাবিক, এবং আছেও অনেকের। সেই বারশে ছোটো-বড়ো কতকন্ত্রি দেশের বেতারকেন্দ্র থেকে প্রচারিত বাংলা অনুষ্ঠানের সময় ও মিটার পাঠকদেব জানিয়ে দেওয়া বেতে পারে। রেডিও পাকিস্তানের অনুষ্ঠান বহু গ্রোভা শন্তেন থাকেন, স্তরাং তার সময় ও মিটার জানাবার বোধ হয় দর্মার করে না।

রেডিও জাপান খেকে আগে সংতাহে তিন দিন—সোমবার,
ব্ধবার ও শ্কেবার রাত ১টা ১৫ মিনিট থেকে ১টা ৩৫ মিনিট
প্রবাদত ২৫ মিটার বাাল্ডে (১১৭০৫ কিলো সাইক্রে) ও ৩১ মিটার
ব্যাল্ডে (৯৬৭০ কিলো সাইক্রে) বাংলা অনুষ্ঠান প্রচারিত হ'ত। গত
৬ এতিল খেকে প্রতিদিন রাত ৮টা থেকে ৮টা ৩০ মিনিট পর্যনত
এই মিটার ব্যাল্ডগ্রিল্ডেই নির্মিড বাংলা অনুষ্ঠান প্রচারিত হল্পে।

রেভিও কায়রো থেকে প্রতিদিন বিকেল ৫টা ৪৫ মিনিট বৈকে ৬টা ৪৫ মিনিট পর্যাপত ১৬-৭৪ মিটারে (১৭৯২০ কিলো-সাইক্রে) বাংলা অনুষ্ঠান প্রচারিত হয়। প্রতি ব্ধবার বাংলা গানের অনুরোধের আসরও হয়।

ব্টিশ ব্যক্তাল্টিং কলোরেশন লন্ডন থেকে প্রতিদিন সকাল
৭টা থেকে ৭টা ১৫ জিনিট (রবিবার ৭টা ৩০ জিনিট) পর্যাল্ড ২৫, ৩১, ৪১ ও ৪১ জিটার ক্যান্ডে এবং শনিবার ও রবিবার হাড়া প্রতিদিন রাত ৭টা ৪৫ মিনিট থেকে ৮টা পর্যাল্ড ১১, ১৩, ১৬, ১৯ ও ২৫ মিটার স্থান্ডে (২৫-০১ মিটারে অধাৎ ১১.৯৫৫ কিলো সাইক্রে) প্রবাহা এবং প্রতি ব্যবার ১১.১০ ও ১৬ ফিটার ব্যান্ডে বেকা ৩টে থেকে ৩টে ৩০ মিনিট প্রাক্ত স্মতার্ক্তা জন্তান প্রচারিত হয়। বাতায়ন অন্তান্তি প্নঃপ্রচারিত হয় ৯টা ৪৫ মিনিট থেকে ১০টা ১৫ মিনিট পর্বত ২৫-০৯ মিটারে জ্বাবি ১১,৯৫৫ কিলো সাইজে।

ভরেস অভ আ্যামেরিকা প্রভাহ রাভ ৯টা ৩০ থেকে ১০টা ৩০ মিনিট প্রশ্নিত ১৩, ১৯, ২৫ ৫ ৩১ মিটার ব্যাতে এবং মিডিরম ওরেভে ১৯০ মিটারে অর্থাং ১,৫৮০ কিলো সাইফ্রে নির্মায়ত বাংলা অনুভান প্রচার করেন।

ফার ইণ্ট রভকাশিন কোম্পানি প্রতিনিদ সকাল ৭টা থেকে ৭টা ১৫ মিনিট পর্যপত ১৯-৪৯ মিটারে অর্থাৎ ১৫,০৯৫ কিলো সাইক্লে বাংলা অনুষ্ঠান প্রচার করে বাক্লেন। রেডিও মন্কো বিকেল ৪টা ৩০ মিনিট থেকে ৫টা পর্বান্ত এবং রাত ৭টা ৩০ মিনিট থেকে ৮টা পর্বান্ত, জাবার ৮টা ৩০ মিনিট থেকে ৯টা পর্বান্ত ১৩, ১৬, ১৯ ৩ ২৫ মিটার জাম্ভে এবং মিডিয়াল ওয়েকে ২১৭ মিটারে বাংলা অন্টোন প্রচালিত হর।

ভরেস অভ জারাদী (পশ্চিম জার্মামী) প্রতি একাণ্ডর ব্রুপ্তিতারে রাভ ৯টা ২০ মিনিট থেকে ৯টা ৪০ মিনিট পর্বজ্ঞ ২৫ মিটার বাাল্ডে (১১,৭৬৫ কিলো সাইক্রে) ও ১৯ মিটার বাাল্ডে (১৫,৭৭৫ কিলো সাইক্রে) বাংলা অনুষ্ঠান নর, সংস্কৃত অনুষ্ঠার করে বাকেন।

अन्द्र[©]क्षान-भर्या रहाहना

ঁই৪ মার্চ সকাল সাড়ে ৯টার বিশ্ব আবহাওয়া দিবস উপলক্ষে বিচিন্না'। প্রযোজক প্রথমে সরল ভাষার আবহাওরার প্রোভাস জ্ঞাপনের প্রয়োজনীয়তার কথা বলেছেন। তারপর আমাদের নিরে গেছেন দমদম বিমানবন্দরের আবহাওরা **অফিসে।** সেখানকার আবহবিদদের সঙ্গে আবহাওয়া সম্পর্কে' ভারৈ কথাবাতা শ্বনিরেছেন। ভার-পর আবহাওয়া নিশায়ের বিভিন্ন বন্দের সংক্র পরিচয় করিয়ে দিয়েছেন। সেই পরিচয় কতথানি সাথকি হয়েছে অর্থাৎ যন্ত্রগত্নি ও তার কার্যকলাপ কভখনি বোঝা গেছে, সে ভিন্ন প্রশ্ন-কিন্তু এই কলকাতারই বৃকে আলিপ্রে আরও একটি অতি প্রোভন আবহাওয়া অফিস যে আছে. সেটা তিনি ভূলে ছিলেন কেমন করে?

২৫ এপ্রিল সকাল ৭টা ৪৫ মিনিটে দিল্লী থেকে প্রচারিত বাংলা সংবাদ শেব হবার পর যথানিয়মে রবীন্দ্রস্পাতি শ্রে হ'ল। রবীন্দ্রসন্গীতের অনুষ্ঠান শেব হ'ল ৮টায়, এবং জনৈক ঘোষিকা রবীন্দ্রসংগীতের অন্বষ্ঠানের সমাশ্তি ঘোষণা করে তারপর ঘোষণা করলেন, "আকাশবাণী কলকাতা, এখন দিল্লী খেকে প্রচারিত বাংলা সংবাদ বিলে করে শোনানো হচ্ছে।" ছোবণাটা শনে দারুণ চমক লাগল ঃ পৌনে ৮টার শদিল্লী থেকে প্রচায়িত বাংলা সংবাদ বিলে করে শোনানোর" পর আবার ৮টার "দিয়নী থেকে बारमा मरवाम दिला करत्र (मासाला टाक्ड"! कारना विकास भरवात्र साकि? किन्छ करे. ৰোষণায় সে ব্লক্ষ কিছু তো বলা হ'ল না? আগেও তো কোনো নোটিশ পাওয়া যার নি। তাছলে ?...

্ভাবনা শেষ হতে না হতেই ঐ ছেছিলারই কাপুন আবার ছেছিত হ'ল, 'আকাশবাধী কলকাতা এখন লোকপাতি (লো-ক-পা-ছি মছ। 'লানাজ্ঞন শ্বাফন গপের।' নাপার কী পাল্লী 'লাক গুচা'বত বাংলা ক্রেছা করে শোলানো হতে বলে বে বোৰণা করা হ'ল সেই সংবাদের রিলে কই? শরুর হরে গোল লোক্সাতি, এবং পনের মিনিট পরে তা শেষও হ'ল। কিন্তু বাপারটা বে কী ঘটে গোল তা জানানো হ'ল না, খোষিকা ভূল খোষণা করে-ছিলেন এয়ন কিছুও বলা হ'ল না। আলোকজাশ্ডার হলে বলতেন, "সভা সেলকুস, কি বিভিন্ন এই কলকাতা কেন্দ্র।"

আমার এক প্রবীণ সহক্ষী বললেন,
"শ্নেছ ব্যাপারটা?" বললাম, "শ্নেছি।"
ভারণর ভিনি বললেন, "আমি বাজারে
গিরেছিলাম। ছন্ডদন্ড ফিরেলাম, ৮টার সমর
এক জারণার ফেতে হবে। খরে চ্কুতেই
কানে গেল, দিল্লী থেকে প্রচারিত বাংলা
সংবাদ রিলে করে শোমানো হছে। দানে
ব্য আন্দত হলাম। বাক্ এখনও তাহলে
আধ্বন্টা সমর আছে। কিন্তু ও হরি, একট্
পরেই বে লোক্সীতি শোমাতে আরশ্ভ
করল।"

হও এপ্রিল বেলা ১টার র্প ও রংশের আসরে প্রচারিত হ'ল প্রীক্ষারক্ষার মুখো-পাধ্যার রচিত কৌতুক নক্শা। "সেলামী"। বেশ রসাল হরেছিল নক্শাটি, উপভোগ্য। বাড়িওরালার আপাত নিদর্শরতার মধ্যে বে বর্লাক্তা ল্কিয়ে ছিল তা আক্ষেক দিনে সতিটে গ্লেভ, কিন্তু খুবই কাষ্য। স্ক্রের লেগেছে চার্লাটি। চার্লাটি ক্টিরছেন স্ক্রে প্রাহারধন মুখোপাধ্যার।

সামগ্রিক অভিনয় ও প্রবোজনাও প্রশংসমীয়।

এইদিন রাত ৭টা ৪৫ মিনিটে লেনিন জন্ম-শতবার্ষিকী উপলক্ষে। শ্রীনিম'ল সেনগণ্ডর সমীক্ষাটি উল্লেখযোগ্য। এই সমীক্ষায় তিনি গান্ধীর মত ও পথের সংগ্য লেনিনের মত ও পথের ভুলনা করেছেন। কোনোটিকে তিনি ছোটো করেন নি। তিনি রলভেন ভিংলা ভ্য পাল্লে অহিংসাকে। গান্ধীকী মাতাবরণ করেছিলেন চরম ছক্ষিণপথ্যী হিংসার হাতে, এখন তিনি আক্রান্ত হচ্ছেন চরম বামপন্থী হিংসার হাতে। থ্য সত্যি কথা।

বীসেনগ্রেভর ভাষার বাঁবনীন আছে, বছব্য ব্যালান্স করার ক্ষমতা আছে।

০০ এপ্রিল রাত ৮টার অভুলপ্রসাদের
গান শোনালেন শ্রীমতী প্রতিজ্ঞ মন্ত্রকার।
...বে অপ্র ভাষের জন্য অভুলপ্রসাদের
গানের প্রতি মান্ত্রের আকর্ষণ সেই ভাবের
অভাব দেখা গেল শ্রীমতী মন্ত্রদারের গানে,
একট্ মিন্টভারও। এই দুটি দিকে জার
একট্ মন্তর দিলে ভার অনুভান উপভোগাই হ'ভ। রাত সাড়ে ৮টার শ্রীমতী
বনশ্রী সেনগণতর রবীশুসপ্রাত মন্ত লাগল
না।

০ মে সকাল সাড়ে ১টার লিশ্মহলে ববীল-জরনতী উপলক্ষা লিশ্মেশের শিলিপার্ন্য পরিবেশিত শিল্ম্ রবীলুলার্থ" শীর্ষ আলেখাটি বেশ তথ্যসূলক। রবীল্য-নাথের নানা রচমা ও গান অবলক্ষ্যে এটি রচমা ক্রেক্সে তঃ গ্রেন্স্স ভট্টার্থ। গ্রন্থনাও তার।

শিশ্দের গানের অংশের চেরে কথার অংশই বেশি মনোরম হরেছিল। গানের অংশ বেম কিছুটা অবহেলিড ছিল। ভখু শিশ্দে দের মধ্যে প্রাণের সাড়া পাওরা সেইে,— উচ্চলডা, আমন্দ, উন্দেশতা খুলা। জিল্ড, দ্যুগ্রের সন্দোই বলতে হল্ডে, প্রশ্ননার মন ভরে মি। প্রশ্ননা মীরস, গানারর।

৪ যে রাভ সাড়ে ১০টার রবীন্দ্রসন্দীত শোনালেন শ্রীমভী স্থামিরা সেন। স্থলর লাগল। বেশ দরদ দিরে গেরেছেন শ্রীমভী সেন।

৬ মে বেলা ২টো ৪৫ মিনিটে প্রীলোপালচন্দ্র পারের রবীন্দ্রসংগীতও প্রশংসনীর। এই নবীন শিক্ষা বাটি গান গাইকেন এই আসরে—"মোর প্রভাতের এই প্রথম কণের…" ও "আমি কাল পেতে রই "। প্রথম গানটির চেরে শিক্ষার গানটিতেই ভাষ-রূস পাওরা কোল বেশি।

Seam

वरिना मरक्षित मार्थक जन्देशन। ব্রবীন্দ্রসদনে কানন দেবী পরিচালিত দব-श्रुठिक अरम्था উইমেন্স कानहातान जाएमा-লিরেশনের প্রথম বিচিত্রান্-তানের আশাতীত সাক্ষ্যলাতের কারণ কলারসিকদের শিদেপর প্রতি আত্তরিক অন্রাগ, কমীদের অনলস পরিভ্রম এবং সংখনেত্রীর গঠনক্ষমতা। থ্ব স্তের এ-সবেরই মিলিড যোগফল সেদিনের नार्धक नण्या। वद्गिम वार्ष आह भूग হ্রেকাণ্ড দৈখে খুশীতে মন ভরে না উঠে भारत् मा। कानन प्रवीत উर्ग्याधनी छाषर्ग জ্বা দেল – শিক্পকলার বহুধাবিস্তৃত ক্ষেত্ৰ এবং শিকাকেতেও—অৰ্থ অপবা **সাৰ্থ্যের অভাবে অনেক স**ত্যিকারের क्षेत्रकात नाथ क विकास घरते छहते ना। উইবেশন কালচারাল আসোসিরেশনের উল্লেখ্য এইসৰ সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠান দ্বারা **অভিন্তি অর্থে এ'দের সাধ্যমত সাহাব্য করা।** সভার স্থোরোহিভাকালে ডঃ রমা চৌধ্রী এই নতুন প্রতিষ্ঠানকৈ আশীর্বাদ জানানোর প্ররাপে ্কানন দেবীর সংগঠন-শক্তি ও স্কলপ্রকার কল্যাণমূলক কান্তে প্রাণঢালা ক্যারনাপ শের উল্লেখ করেন এবং তার সংযোগ্য নেড়াৰে লাক্ষা পৌছতে এ'দের **লেরী ছবে না—এই তার** দঢ়ে বিশ্বাস বলে জীয়ান। সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠান শ্রে হয় দ্রীট নুজ্য দিয়ে। একটি লোকন্তা—'এই নবান, ডিবতীরটি 'কাজ নেই'। অসিত চরৌপাধ্যার পরিচালিত ন্তাম্বয়ের মধ্যে **ভুলনামুলক াবিচারে প্রথম**টি উপভোগ্য। **স্পিতীরটির বিবরবস্ত হোল বে**কার बृद्दक्य व्यक्तिष्ठालात दमना ७ भाउना-४ता त्मक्तारम कृट्डे-क्या अक्नान्क कृत रकाठी দেশে দতুস করে বাঁচার প্রেরণা। উদর-**শক্ষা রাভি অন্স্ত ন্**ত্যাংশ স্থান-বিশ্বের মান্ত্রর। বিস্তু গান দিয়ে অতি ক্ষাপ্তা অপরিণত শিল্পকর্মেরই পরিচয়। - ন্জাবেশ-পারতী চট্টোপাধ্যার ও স্বাঞ্চত বস্ हम्बन्धर ।

প্রশরই মধ্যম্থ হয় 'বারো ভূত' প্রবাজিত এবং ইন্দুজিত'। প্রতিন্ডান নতুন, ক্রিলারা নতুন এবং তর্গে পরিচালক আলোক ও সপনীতদিলদা অর্জন মুখো-প্রায়ারও নতুন। এতগ্রিল আনকোরা নতুন, জ্রুণে সম্প্রদারের 'এবং ইন্দুজিত'-এর মত ক্রিলা এবং রুপক্ষমা নাট্যক রূপ দেব ব

Market St.



এই দ্বঃসাহস যে নিছক বার্থতায় পরিণত হরনি—সারা প্রেক্ষাগ্রের তুম্প হর্ষধর্নিই তার প্রমাণ। অভিনয় ও উপস্থাপনায় হয়ত কিছা বাটি ছিল। প্রথম প্ররাস হিসাবে তা এমন কিছা উল্লেখযোগ্য নয়।

ইন্দুজিং আরো প্রাণবদত হতে পারত। কবির সংলাপবর্ণন আরো চিত্তগ্রাহী হওয়া উচিত ছিল। এ-ভূল-চ্টি শুধুরে নিয়ে ভবিষাতে এরা হব হব প্রতিভার প্রণাঞ্চ পরিচয় দিতে পারবেন এই আশাই আমরা করব।

গ্রামেকান কোম্পানীর রবীদ্ধ-জরণতী উৎসব। কবিগ্রেরে আবিভাব-লম্নেক প্রতি বছর গ্রামোফোন কোম্পানী প্রণতি জানান সম্প্রি শিল্পীদের কাঠে কবির গানের নৈবেদ্য সাজিয়ে। এই গানগ্রিলর ভিস্কই অসংখ্য রবীন্দ্রস্পাীতান্দের প্রতি তারবীন্দ্রজরন্তাীর উপহার। গত সম্থ রবীন্দ্রসদনে আরোজিত এক উৎ রেকর্ডের গানগর্নিই ন্ব ন্ব কন্তে শিল্প গোরে শোনান সেদিনের স্পানীত্য নিমন্ত্রিত অতিথিদের। প্রশাসতবক ও সন্জ্যিত সারা মণ্ড যেন মন্দির হরে উঠে আর শিল্পীরা সেই পরিবেশের সপ্রো মিলিয়ে আরাধনার ভাবেই কবির গ অর্ঘা ২৫শে বৈশাখের উন্দেশ্যে নিয় করেছিলেন।

অনুষ্ঠান শুরু হর প্রতিপ্রতিত তর্ণ শিলপী বীধিন বন্দ্যোপাধারের দিরে। তরুণেতর গোষ্ঠীর মধ্যে অনুষ্ তালিকায় ছিলেন শ্বপন কুশ্ত, ঘোষাল, সুশীল মল্লিক, অর্থা দেন, প্র

The state of the

ম্থোপাধ্যার, দীপক্ষর চট্টোপাধ্যার। পরিপততর শিলপীদের মধ্যে সন্মিলা সেন

সাগর সেন। রবীন্দ্রসপ্সীতের উল্লেখ্য
তারকাদের মধ্যে হেম্বুত ম্থোপাধ্যার,
নিটিলা মিল্ল, শ্বিজেন ম্থোপাধ্যার ও

চিন্মর চট্টোপাধ্যার। সন্ধ্যা ম্থোপাধ্যার ও

আরতি ম্থোপাধ্যার আধ্নিক নানের জনপ্রির শিক্ষপী হরেও রবীন্দ্রস্পাতি ধাঁরে
ধাঁরে নিজেদের প্রতিষ্ঠিত করছেন।

সকল শিশ্পীই আপনাপন ষোগ্যতা অনুযায়ী উৎসব-সম্প্যাকে সুক্ষর করে তুলেছেন। তবে কানন দেবী গাঁও সবার রঙে রঙ মেশাতে হবে'-র রেশ সেদিনে উপস্থিত বহু শ্রোতার স্মৃতিতে আক্ষও অনুরণিত বলেই বোধহয় সম্ধা মুঝে-পাধ্যায়ের কপ্তে ঐ গান তাদের মনে কোন রেখাপাত করতে পারেনি।

এবারের উদ্রেখবোগা একটি সংবাদ হোল ই পি রেকর্ডে কানন দেবীর বিভিন্ন ছবিতে গাওয়া চারখানি রবীন্দ্রসঞ্গীত সন্ধালত হয়েছে। সম্ভবত সেই কারণেই সেদিনে বিশেষ অভিধির্পে কানন দেবী আহতে হয়ে শিল্পীমহল ও শ্রোভাদের আন্দের কারণ হয়ে উঠেছিলেন।

স্মেতীথের ন্ত্যেংসব। গত সম্প্রত স্বত্তিথের সমাবর্তন উংসব উপলক্ষে প্রতিষ্ঠানের পক্ষ থেকে অধাক্ষ শ্রীমতী নীহারকণা মনুখাপাধায় এক পরিচ্ছম স্ফার ন্তোংসবের আয়োজন করেন রবীক্ষ্যসদন মধ্যে। এই ন্তাসভায় পৌরো-হিতা করেন ডঃ স্নীতিকুমার চট্যোপাধাার এবং প্রধান অতিথির্পে উপস্থিত ছিলেন ডঃ তারাশংকর বন্দ্যোপাধাার।

একাধারে লোকন্তা, শাস্তীয় নৃত্য এবং ন্ত্যনাট্য 'জটায়; বধ' এই ব্যাপক নৃত্যান;-ষ্ঠানের অম্তর্ভুক্ত ছিল। শিক্ষক এবং শিক্ষার্থণী উভয়ের মিলিত অনুষ্ঠানের এমন স্বাশস্কর পরিবেশনা সচরাচর চোখে পড়ে না। কথাকলি, ভারতনাট্যম মণিপর্রীর বীর্য ও আরাধনার ভাব এবং লোকন্তোর সহজ, সরল আনন্দ দর্শকচিত্তে পরিব্যাশত **হরেছে পরিচ্ছ**ল্ল পরিবেশনার গংগে। তবে প্রতিটি অনুষ্ঠান এমন দীর্ঘ-বিলম্বিত না **হলে রসোপভোগ আরো** নিবিড় হয়ে উ^ঠতে পারত। বিশেষ অনুষ্ঠান ছিল বালকৃষ্ণ रमनत्मन्न भीन्नागनाम् 'छ्रागेस् वर्ध'। श्रधान ভূমিকার ছিলেন শ্রীমেনন স্বরং। নৃত্যের ভাবকত্র প্রয়োজনে কখনও কথাকলি কখনও অন্যাদ্য নতোর ছোরা লেগে চরিত ও বিষয়বদত জীবনত হ'য়ে ওঠে। মহাকাবোর ম্ল রুসটিও সমন্ত রক্ষিত। নৃত্য ছাড়াও রবীন্দ্রস্পারীত, অতুল্প্রসাদ ও নজর্ল-প্রতির অনুষ্ঠানে শিক্ষাথনীরা শিক্ষা ও অনুলীক্তের ্মনোগ্রাহ্ট ন্মনো পেশ क्टेंब्रन्।

रेल । स्कार नेपाल । क्यूबरेड । स्कार म्**टिवाण्यामा**

গ্রামোকোন কোল্পানীর রবীন্দ্র জরুতী উৎসবে বাণী ঠাকুর, ছেমন্ড মুখোপাধারে, বিষান বোহ, কানন দেবী, স্টিলা মিত, স্নাল মলিক এবং স্থানতা সেন





সংগ্রতি ক্লক্ষক্তম অব্যক্তি ভাষাল ব্যালের একটি দিশেষ মুক্তুতে দিল্লীয়ার।

ভাষালয়ের এক: স্ক্লীয়া ব্যাহ্ম

म् जिन्नान / म मिला हतीशाशाह

ट्यिकाग, श

ठित- न्यादनाठना

नाम्राकातम केतमकूमान

ছেড়া কথার শারে লাখ টাকার স্বংন দেখা আর কি! একটা পরেরানো লোহা বেচা-কেনার দোকান-কোনোরকমে নডবড করে চলছে। তাইতে বসে বসে ইন্দ্রজিৎ মুখ্জো স্ক্রুন দৈখে ধনী খিলপপতি হবার। ছোট ভাই দেবজিং দাদাকে সাহায্য করবার কথা চিম্তাই করে দা, সে ব্যবসার ধার দিরেও ফায় না। ইন্দ্রজিতের কিন্তু সুযোগ মিলে বার। মদ্যপ অমর সেনের কাছ থেকে পাওনা টাকা চাইতে গিয়ে সে পেয়ে যায় একরাশ সোনার গহনা; যে দেয় এই গহনা-গ্রিল, সে হচ্ছে অমর ম্বারা প্রতারিতা ও নিশ্হীতা রমা। রমার আশাছিল অমর ওকে স্থার মর্যাদা দেবে, বিশেষ যখন তারা कानीचार्छ मानावमन करत्रहाः। किन्छ एम-আশার জলাঞ্জলি দিতে বাধা হয়ে সে ইন্দ্রের হাতে গছ্দার বাক্স ভূলে নিয়ে নিজে বায় আত্মহত্যা করতে। ইন্দ্র তাকে বাধা দেয় এবং সমস্ত ব্তান্ত জেনে তাকে वाफ़ीरक निरम्न जारम। विश्ववा त्रऋगमीम भा তাকে ভূল বোঝেছ ও পরদিন তার ঘ্ম ভাঙার আগেই ঐ সন্দেভাজনা, অপরিচিতা ट्यार्ट्सिक वाफ़ीकाफ़ा करतन। भार्य, जारे नत्र, আগে থাকতে ঠিক করে রাখা মেয়ে ধীরার সপো ইন্দ্রজিতের বিবাহও দেন। ইন্দ্রজিৎ **এর মধ্যে भारताता माका**न বেচে দিয়েছে এবং গছনা কথকের টাকার গড়ে তলেছে লোহার কারখানা। তার স্বাসন আজ বাস্তাবে পরিণত হরেছে। কিম্তু যার অনুগ্রহে, সেই নারীটি কোথার? বড়ো অর্ডার পাবার লোভে সে দিল্লী গিয়ে হঠাৎ আবিষ্কার করল, সেই দর্মারী নারী আর র্মা নামে পরিচিতা নর, এখন সে বহুজনকাম্য, নৈশ ক্রাবের মধ্যমণি, লাসমারী রোজি। ইন্দ্রজিৎ চমকে উঠল। রুমার রোজিতে পরিণত হওরার মূলে পরেক্ষভাবে তার দায়িছ ররেছে ভেবে মনে মনে ব্যথিত হল। বিশেষ द्राक्ति वस्त वनन, छात्र ध-जीवन छात्ना नारा ना। दर्शाक रेन्द्रक्तिस्ट्रक मृद्रम् स्थ অডারটাই পাইরে দিল, তাই নয়, সেই বিরাট অর্ডার বোগান দেওরার জন্যে টাকাও বোগাড় করে দিল। কিন্ত কলকাতার ফিরে ইন্দ্রজিং দেখল, তার কারখানা টলমল: স্মীর বড় ভাই অবিনাশের খলতার সে রিভপ্রায়। দিল্লী থেকে পাওরা এক চিঠিকে ইন্দ্রজিতের বিরুদের কারে লাগিরে অবিনাশ প্রমাণ করতে চাইল, ইন্দ্রজিং লম্পট, সে দিল্লীর এক বিলাসিদীর পাল্লার পড়ে অধঃপাতের পথে পা বাড়িরেছে। চাক্ষর প্রমাণেরও সংবোগ মিলে গেল। অতএব স্ত্রী ভাই প্রাতৃবধ্ প্রভৃতি আপনার বলতে বে বেখানে



ছিল, সবাই বির্ম্থবাদী হরে দাঁড়াল। ছোট ডাই সম্পত্তি সম্পত্তি প্রভারণার অভিবােশে মামলা দারের করল। সেই মামলার কোঁসন্লী মিঃ চাকলাদার ইন্দ্রান্ধতের জীবনকে কলকময় বলে প্রতিপান করতে চাইলেন অকাট্য সব প্রমাণ উপস্থিত করে। ইন্দ্রান্ধতের পক্ষের কোঁসন্লী হালে পানি পাছেন না। এহেন অবস্থার ইন্দ্রান্ধতের পক্ষে দাক্ষীর কাঠগড়ার এলে দাঁড়াল— রোজি। এবং এর পরে কি হল, এট্কু অন্মান করে নিতে আশা করি কার্বেই কণ্ট হবে না।

শ্ব সোজাস্ত্রি একম্বী কাহিনী।
এবং বেশ দ্বলিও বটে। কারণ, বে-অবস্থা
স্থি হওরার ফলে ইন্দ্রজিতের স্থাী, ছোট
ভাই প্রভৃতি তার বির্ম্বাদী হরে উঠল,
সেই কার্থানার আর্থিক সঞ্চী স্টেছে

দিল্লী বাবার প্রাক্তালে ইন্দ্রজিতের অনেকগ্রাল রাগক (কোনো কিছু না-লেখা) চেক
সই করে বাওয়ার ফলে। বতই সংব্রিদপরারণ ও সরল অনতঃকরণ লোক হোক না
কেন, কোনো বাবসায়ীই এমন নির্বোধের
মতো কাল করে না। তাছাড়া অবিনাশের
বিশ্বাক্যাতকতার বির্নেশ সেই অনায়াসে
আইনের আশ্রর নিতে পারত। একটি
কোম্পানী প্রদন্ত চেকের টাকা আন্মাং করা
অত সহল ব্যাপার নর। অথচ এই আন্মাং
করার ওপরেই ছবির প্রার প্রেরা
নিতেনীটি দির্ভার করছে। এই অবিসংবাদী দুর্বালতা জন্যে চিন্নভাহিনীটি
ব্নিশ্বাহাও মনদশীল হরে উঠতে পার্মন।

অঞ্চ এই চিত্রকাহিনীর ওপরই নির্ভাৱ-দীল বেবী জনে প্রোডাকসন্স-এর নিবেদন ক্লাক্ষিত নারক' বে একটি পরম উপভোগ্য ম্যাসি স্থিত-প্রাইম অঞ্ছ মিস জনি রোডি



ছবি হয়ে উঠেছে, তার জন্যে অনেকথানি কৃতিত্ব দাবী করতে পারেন, চিন্তুনাটাকার-পরিচালক সলিল দত্ত এবং অবিসংবাদীভাবে নায়কোত্তম উত্তমকুমার। স্কোশলে লিখিত, ব্রুথনিটিকে এমন একটা গতি দিতে প্রস্তাম প্রেছেন যা কাহিনীগত দ্বকাতাকে যতন্ত্র সমভব চাকবার চেণ্টা করেছে এবং এব্যাপারে তিনি আংশিক সাফলাও লাভ করেছেন বলা যায়।

কিল্ড যিনি 'কলা 'কত নামক' ছবিটিকে চলচ্চিত্রাম্যেদীর পক্ষে অবশ্য দর্শনীয় করে তুলেখেন, তিনি হচ্ছেন নায়কোত্তম উত্তম-্মার। কোনোরকম বাকাঞ্চরণ না করেও নাত্র চোথের ভাষা দিয়ে অভিনয়কে কতদরে পর্যাণ্ড প্রাণবাত করতে পারা যায়, তার এক নবতম নিদর্শন তিনি রাখলেন এই হবিটিতে। এমন অস্তরম্পশী নীর্ব অভিনয় আমরা শ্ধ্ ভারতীয়ই নয়, প্থিবীর চলচ্চিত্রজগতে অতি অলপই দেখেছি। কথা যেখানে তিনি বলৈছেন. সেখানে তো কথাই নেই, কিন্তু যেখানে মাত্র বীরব অভিবাত্তির সহায়তা গ্রহণ করেছেন. স্থানেও তিনি যে কতথানি অসামানা, তা गक्क मा एवएल विश्वाम क्या कठिन। মব্দ্য তার এই অভিব্যক্তি পরিক্ষান্টনে াথেন্ট সাহায্য করেছেন আলোকচিত্রশিল্পী বজয় ঘোষ শিলপসম্মত আলোছায়া স্ভিট চর। 'অপরিচিতা'র নায়িকার**্পে** বি এফ জ এ আওয়ার্ড-পাওয়া শিল্পী অপর্ণা সেন য অতি-আধুনিক 'তথাকথিত' সোসাইটি ার্লের ভূমিকা করতে অত্যন্ত পারদর্শিনী, হার আর একটি প্রমাণ রেখেছেন এই ছবির রোজি'র ভূমিকায়। দিল্লীর নাইট ক্লাবের লেনাময়ী নায়িকা রোজিকে তিনি ম্ত শর ত্লেছেন অভানত সহস্ক স্বাচ্চন্দ্রের रिका। प्रर, प्रदल हेम्स्डिर प्रम्भटक द्वास्त्रित মাত্রিকতাকেও তিনি নিষ্ঠার সংখ্য

क्रिंग्टिस कुल्लाइन। धवर स्वधाने किनि तमा, —প্রতারিতা, নিগ্হীতা রমা, সেখানেও তার অভিনয়ের আশ্তরিকতা আমাদের মর্মকে ম্পর্ম করে। তব্বলব, রুমাবারেকির ছুমিকাতে এমন কোনো বিশেষ মৃহূত বা পরিম্পিত নেই, বেখানে চলচ্চিত্রজগতে সংপ্রতিষ্ঠিতা শিল্পী অপর্ণা সেন তার নাউনৈপ্রণের অসামানাতাকে প্রকাশের न्यांग प्रायहरू। माविती हत्वीशाशाय স্বারা স্থ-অভিনীত ধীরা চরিত্রটিকেও যথেশ্ট নাটকীয় পরিস্থিতির স্ক্র্খান করার সংযোগ করে দিতে পারতেন অনা-য়াসেই কাহিনীকার তাকে রোজির সামনে হাজির করে ইন্দ্রজিৎ সম্পর্কে অভিযোগ ভুলিরে। ধীরা ও রেজির মধ্যে সংঘাত ঘটিরে ইন্দ্রজিব ও রোজির সম্পর্ক সম্বর্ণেধ দশকিচিত্তে একটি কুহেলীর স্থি করতে

পারলে ফ্রিকেরিফনের্রিট তের কেশী সার্থক হরে উঠতে পারত। অপরাপর ভূমিকার তর্গকুমার (অমর দেন), বিকাশ রায় (অবিনাশ), জন্তুপকুমার (দেবজিং), উংপল দত্ত (মিঃ চাকলাদার), এন বিশ্বনাখন্ (ইন্দ্রজিতের পক্ষের বাারিস্টার), জোংশনা বিশ্বাপ (কবিতা), মিহির ভট্টাচার্য (পরিতাববাব্), পঞ্চানন ভটাচার্য (ভৃত্য মহাদেব), ছায়া দেবী (ইন্দ্রজিতের মা) প্রভৃতি স্বতাভনারই করেছেন।

কলাকোশলের বিভিন্ন বিভাগের কাজ উচ্চ প্রশংসনীয়। ছবির প্রায় সর্বচই আলো-ছায়া স্থিতিত বিজয় বস্ফু দক্ষভার পরিচর দিয়ে,ছন। কেবল দিল্লীর নাইট ক্লাবে মধ্য-মতীর ন্তা-দ্শাটিকে ঝলমলে আলো-কোল্জ্বল না করে ছায়াখন বিমর্যভাবাপার-রূপে উপস্থাপিত করাকে আমরা সম্মর্থন

সাধারণ মান্থের জন্যে যে পরিকল্পিত সমাজ, তারই এক অন্দিদ্যসূত্র্যর রূপ তুলে ধরেছে এই চিচ্ন....

রাজেন্দ্রকুমার নিমেটি



জ্যোতি _{নিয়ঃ}, ঃজেম ^{(ভাগ} ঃ প্রিয়া ^{তাগ} ঃ নাজ

ত্রেস ঃ মিত্রা : রূপালী ঃ ভবানী জন্ম - ৰাটা লিলেনা (বেহালা) (বাটালগর)

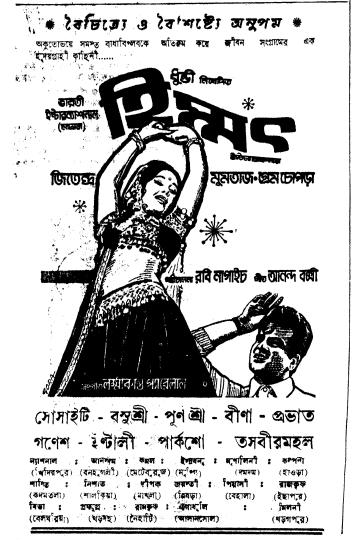
চিত্ৰপ্ৰী: খাজুনবছল : নৰভাৱভ : (খিসিরপ্রে) (মেটেব্র্জ) (হাওড়া) রঞ্জনী : জ্বা : চলচ্চিত্র : (জ্বাস্পল) (ব্যাসম) (কোর্যার) অংশকা ঃ চুন্দা (সালকিরা) (বারাকণ্রে) অন্রোধা : মে ঃ মহাবাদি (দ্বর্গাণ্রে) (ধানবাদ্যু (দিগওয়াদ্য) क्रमार्क शामीय मा। यदिक विकर्णनिया निर्माणना निकानवास वधाइत्य ज्ञरकान वास्क्रीयद्वी এবং অমির মুখোপাধারে রাথকতা লাভ করেছেন। ছবির তিনটি গানের মধ্যে প্রণব রাজ রচিত ও মানা, রে গাঁতি বিভার দিতে না চার্ম গান্ধানি স্থেব্র, স্ব্রীত 🧸 স্-त्र्यंत्रम्यं म्थ

নারকোত্তম উত্তমকুমার অভিনরদীত 'कंगिक्क 'नावक' ह्लाकित-त्रीमक्तात शहक वकी अवना मन्तीय किंद व-क्या आमता আহিবর করে বলছি।

विशव गरगद्व विद्वर-मिन्न क्या

আৰু পশ্চিমবশা থেকে জমিদারী প্রথা লাত। কিন্তু যখন জমিদারী প্রথা চাল, ছিল, তখন স্ব জমিদারেরই বাইজী পোষা রীতি ছিল কিনা, তা জানা না থাকলেও बाधाबानी शिक्छार्न-अब क्रक्र्या निर्देशन **ম্যান্তল্যান**' ছবির কাহিনীভুক চৌধ্রী बरामव रव दिन, रम-विवस्त स्कारना मरन्बर स्मिरे। जारे दर्गाथ, यन्नम्मयात सारवरे জামদারশ্র উদয়দারারণ চৌধ্রী বধারীতি ভালের ধাগানবাড়ীতে অধিভিতা হীরাবাঈ-এর কাছে চলে গেছে বেহালার সূত্র ভোলবার অভিনার। কিন্তু হীরাবাঈ-এরই কথার সে ফিল্লে জালে দঃবে ভ্রির্থাণা নবপরিশীতা वध् अधिकात कारक। भतीत्वत चरत्रत स्मर्क স্থিতার ব্যক্তিয়ের পরিচর পেরে সমিদার বসস্তমারারণ নাকি তাকে ছেলের বৌ করে ক্ষে ভূলেছেন তার উদ্দাম ছেলেটির রাশ টেনে ধরবার জন্যে। তাই স্মিতা অনেক जाशाजाशंना करत छेनत्र वानानवाजीबद्राया না হতে; কিন্তু বেহালা শিক্ষার জনোই হোক বা হীরাবাঈ-এর বাজিগত আকর্ষণেই হোক, উদয় স্থার কাকৃতি-মিনতিতে কর্ণ-भाष्ठ ना करतहे वाशानवाष्ट्रीत्व खरव शारक। এরই মধ্যে হীরাবাঈ তার প্রাপ্য অর্থ চেয়ে **वरम थद्रठ ठामावाद ज्ञाता। উपरा वान्नेकीरक** कून त्वात्थ अवर जात ज्ञाना मिणित नित তার সভেগ সম্পর্ক ছেল করবার জন্যে ব্যাহত इत्र। कार्ठान्यक कार अभगात अभीवाम सद्दा সুমিতা নিজের গ্রনগ্রেল ভার হাতে ভূপে जिल्हा । किन्छू शह्मा निर्फ शिल्ह सन्त हीता-वाजेरतत जाटक माछा ना निरंत भारत ना त्न श्रीक्षायामेत्वत कार्टर त्यात शास । क्षीत्रत বর্তমারারণ নিলামের দার বৈকে বসত-वाफीटक वीठावात करूमा भरववश्रत कार टबटर তার গহনা ভিক্লা করে বসলেন। অনন্যোগা म्यूमिका ब्युटि देवीब्रह्म भित्र शीवायोज्या काष्ट्र रशहक गरनाग्रीम शितिरह अर •বশ্বের হাতে সমর্পণ করল। কিন্তু তাঁ ব্যরংবার প্রশ্ন সম্ভেক্ত সে জানাতে পারল দ এত রাতে কোথা থেকে সে গহদাগর निद्र अन । करन वजन्छनातात्रम प्रदीपछा। তাদৈর বাড়ী ছেড়ে চলে যেতে কড়া হর দিলেন। বেদনাসিত মন নিয়ে হ্রকুম তাটি করবার পূর্বে সে পিস্শাশ্র্ডীকে জানি গেল-সে সম্ভানসম্ভবা। যে-কোনো উপাং সে তার সম্তানকে মান্য করে চৌধ পরিবারের বংশধরকে ফিরিয়ে দিয়ে যা এর পর বহু ঘটনার ভিতর দিয়ে স্ ডাক্তার খাষি বসরে সেবাল্লমে সেবি (নাসের) কাজ করতে থাকে া শাশ্তনাকে মানাষ করে তোলবার জ অপর্নিকে উদয় স্ক্রিমতার থেকি याताम्य त्वराला-वाकितात काक र শেষপর্যান্ত কেমনভাবে আবার চৌ পরিবারের ছেলে-বৌষে মিলন হয়ে ক নারায়ণের শেষজীবনে সুখশাদিত এল, তাই নিয়েই ছবির শেষ পয রচিত।

ঘটনাপ্রধান এই 😘 হিনীটির 🖟 বিন্দ্র হল স্থিত। ্রতটি। আদর্শ **শ্বী ও মায়ের** য়ুপে সুমিতা চ আকর্ষণ ভাষাদের দশকসমাজে আধ্নিকতা সত্ত্বে অপ্রতিরোধা। চিত্রকাহিনী বিনাসে অনেক পরি অবিশ্বাস্য এবং অয়োক্তিক বিবেচিত বস্ত্তনারায়ণ ও উদয়নারাখণের বহু, कलाभ ও সংলাপ সম্পর্কে হাজার মনে উদিত হলেও এই একটি চরিত্র कारिनीिंग्रेक समञ्जात গ্रहनर्याः **তুলেছে। তার ওপর এই ধ**রনের চরি যিনি আজও অপ্রতিশ্বন্দী, সেই চট্টোপাধ্যায় ভূমিকাটিকে এমন আ ভাবে মৃত করে তুলেছেন, যে চ **আকর্ষণ শতগ্র**ণে বধিত হয়েছে। জ পতে উদয়নারায়ণ বৈশে অনিল চটে অন্ত•ত স্বামীর ম্তিটিকে জীবন তুলেছেন। জমিদার বসত্তনারায়ণের १ ক্মল মিল্ল তার্ন প্রভাবসিম্ব স্-क्रदर्श्वत । छाङ्कात भारि बनात नर्मा অন্যায়বিরোধিতা—দৃহ-ই পরিক্ষাট



many the state of the state of



পাহাড়ী সান্যালের সংবেদনশীল অভিনরের
মাধ্যমে। নারেব গোবিন্দ ও তার সহকারীর
ভূমিকার যথাক্তমে কালী বন্দ্যোপাধ্যার ও
মূণাল মনুখোপাধ্যার দুর্নিট জনিবত টাইপ
সূথিট করেছিলেন। ললিতা চট্টোপাধ্যারের
হারাবাঈ বেশ কিছ্টা আড়ন্টা অপরাপর
ভূমিকার শ্যামল ঘোষাল (ডাঃ চাটোভির্ন),
অজয় গাণগ্রেলী (ললিত), সমরক্মার
(প্রফ্রেল), শোভা সেন (স্মিতার মা), গণগালদ বস্ (দান্ মিতির), গাতা প্রধান
(দান্র দ্রা), হারধন মনুখোপাধ্যার (যাত্রাদলের অধিকারী), গাতা দে (চৌধ্রীবাড়ার ঝি), কাম্ মনুখোপাধ্যার (মতিলাল)
প্রভৃতি উল্লেখযোগ্য অভিনয় করেছেন।

ছবির কলাকৌশলের বিভিন্ন বিভাগের কাজ মোটের উপর প্রশংসনীয়। চিত্রহণ বিজয় দে ছবির আগাগোড়া একটি সমতা (ইউনিফমিটি) রক্ষার কৃতিত্ব দাবী করতে পারেন। ছবিতে একটি নিরবচ্ছিন্ন গতি-প্রবাহ রক্ষায় সম্পাদক অমিয় মুখোপাধ্যায়ের দক্ষতা অনুস্বীকার্য। শিল্পনিদেশিনায় স্নুনীল সরকার তার স্নুনাম অক্ষুন্ন রেখেছেন। ছবির চারখানি গানের মধ্যে যাত্রাগান 'বিহুগী উল, দিল—ধেন, দিল শৃত্থধন্নি মালা দে-র শ্বারা স্থাতি। হীর:বাঈয়ের মাথে সংধ্যা মাথোপাধ্যায় গীত 'দর্বাদয়া, যে তে৷মায় এত জানায়' গানখানির ধরতা অত্যত আকর্ষণীয়ভাবে সম্ভাবনা-পূর্ণ বলৈ মনে হয়েছিল: কিন্তু তারপরে গার্নটি গতানুগতিকতার পথে এগিয়ে গিয়ে আমাদের প্রত্যাশাকে পূর্ণ হতে দেয়ন। অপর দুখানি গান যথাযথ।

রাধারানী পিকচার্স'-এর **অ,ভিজ্নান'** শবিতী চট্টোপাধ্যার-চিত্রিত সুমিতা চরিত্রটির দলো দশকিসমাজে জনপ্রিয়তা লাভ করবে।

निकश्चित्रतीत मध्करे

মাত গেল ৮ এপ্রিল আন্দেরিকার
ম্যাকাবেন্মী জব মোশান পিকচার আটস্
ম্যাক্ত সারেক্সেজ্ ম্যাগি স্মিথকে যে
বিবতে অসামানা অভিনয়নৈপ্রা প্রদর্শনের
ফুনা শ্রেক্টা অভিনেত্রীর প্রাপ্য অভ্যার
বারা স্কানিত করেছেন, সেই প্রাইম অব

মিল জীন রোডি" ছবিখানি গেল ১৫ মে ভারিখে তথানীয় গেলাব থিয়েটারে মৃত্তি গেয়েছে। কলকাভার চলচিত্রামোদীদের কাছে এহেন সৌভাগ বীভাত স্বার্গভ।

ছবির কাহিনীটি গড়ে উঠেছে
ফকটলানেডর এডিনবরায় একটি গোঁড়া
রক্ষণশীল ফ্রুলে ১৯৩২ সালে সংঘটিত
একটি কালপনিক ঘটনাকে কেন্দ্র করে।
রক্ষণশীল বালিকা বিদ্যালয়টিতে পড়াতে
আসেন একজন শিক্ষিকা: নাম তাঁর জীন
রোডি। কুমারী জীন রোডি 'সতা, শিব,
সংদর'-এর প্রোরী। তাঁর কথাবার্তা, চালচলনে যৌবনের উজ্জলতা। তিনি বিদ্যালয়রে বাধাধরা আইন-কান্ন মেনে চলেন
না। তিনি রাশ র্মে টাঙ্ভানে "সেফ্টি
ফাস্ট"—ছবির উপরে র্যাফেলের আঁকা

মাজেনা ছবিটি লটকে বিশ্বে জ্বলা ।

কবিনে নিৰাপতাই প্ৰথম নই প্লেক বুজে
নতা, সৌন্দৰ'। তিনি বলুনা সেকেলের বালন কথ্রশে বাবহার করেন; তালেন কুলে নিরে প্রাকৃতিক সৌন্দর' উপ্জেন্য ভারেন কল-ম্পুরি খেতে খেতে। ছার্মীরের কুলাই যে তিনি প্রভাব বিশ্তার করেনে ভারেন সহ-শিক্ষক - শিক্ষিতালেরও বৃথি জিনি আকর্ষণ করেনে প্রভাবিকভারেই। জার শিলিসস্ভাভ চালচলনে বিন্দু ভারে চিত্রাপ্রন শিক্ষক টেডি ল্যানে নির্মাণ ভারে হেলেমেরের বাপ হওরা স্ক্রেও ভারি প্রণারকামী। আর গান-বাজনার শিক্ষক ভারবাহিত গর্জন লোভার হল ভারিক

स्रोत

नीकाकन-रैस्स्री**श्रक** गामनामा]

7

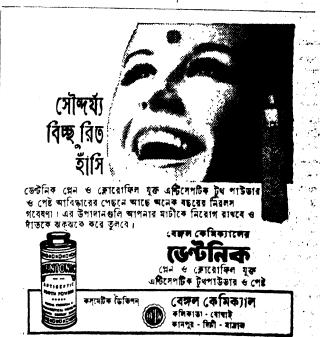
नकुत नाके



অভিনৰ নাটকের অপুৰ' ব্যুপ্তাৰ ব প্ৰতি ব্যুপ্তাৰ ও পানবার ৪ ড্রেইন্ড প্রতি রবিবার ও হুটির বিষার ৩টা ও ১০টার

> ॥ तहमा ७ गरितहालमा ॥ स्वयमातल श्रुष्क

৪৪ ব্লালনে ৪৪
আজত ব্লেয়সানার, অপশা দেবী ব্রুক্তেন্
চটোপানার, দীলিনা নান, গ্রেডান্টোপানার,
দাটান ভারনে, বালিকা বাল, বার্মা বালি, হোনানে, বাল, বালকা হটোপ্রামার,
লৈলেন ব্লেখাপানার, দটভা মে বিশ্বন



निकार नारिएरन। किन्दू कुमानी खारि अर्गित ग्रिकारमञ् कार्यादे शान्ताद क्यार्थ नांक निरक माञ्चाल; कातन, किनि घटनद्याटन শিক্ষা-শৈককার বে काट्यायंगरा क्या है हार का कि विवाद कता मार्टि ? िक्न व करमेरे मारशापनामा। मा बारताप জ্যে একবিদা ভাকে জোর করে করে চুমাই दब्दमं दक्कारमम् । अयर श्रद्धानुष्टमः याानासार्वे र्कार तर्भ रक्षमा कुषादी खारिका रकारमा श्राप्ती साक् (श्रापात । শীকাশীকতে व्यक्तातात्क वर्षनाचा शकाण क्यूटकर एक कता তিল ক্ষ্—স্যান্তি, জেনী ও বোনিকার कारक। धनर भट्टा न्याभावति धकति किठित আকারে প্রধানা শিক্ষরিয়ী মিস্ম্যাকের रगाष्ट्रस्त अन्। जसन्द्र रनद्य न्यास विज् মাকে মিস্ রোভিকে পদভাগে করতে বললেন। রোভি গেলেন রীভিনত কেপে: क्षथाना निकासकी बट्टान कि । स्थानक अपन



वीन २८ एवं भागे स्रहान (स्रायाः) स्रा

পতাব্দী-র নতুন প্রবোজনা বাদল সরকারের স্বাধ্নিক নাটক



निर्माणना नाग्रेकारतत अम्र भत्न व ७ ১৪ स्मृत स्वीम्स मरसावस मरक

ৰাংশা নাটমঞ সংখ্যেলয় সাহায্যাতা

માંગુજાર

ত্রা জনে বংশকরের নতুন নাটক লালেন ফকির

 ত্রা জনে বংশকরের নতুন নাটক লালেন ফকির

 ত্রা জন বংশকরের অভিনয়

 ত্রা অনামকার হিলি নাটক আবেধ আধুরে

 ত্রা বংশকার অভিনয়

 চার অধ্যায়

 ব্য জন নাটকতের নতুন নাটক অভিনেশ বংশকার নতুন নাটক আজিকেশ বংশকার নিবেশিত আজিকেশ বংশকার নিবেশিত ভালিকেশ বংশকার নিবেশিকেশ বংশকার নিবেশিক বিবেশিক বিবেশিক

মুক্তারাক্স দালনঃ ৫০, ৩৫, ২৫, ১৫, ৬ ১০,। প্রবান ২৪০শ থেকে হলে টিকিট সকলে ১০টা থেকে দখ্যা এটা दिनार विक्र कीरकत्र अनर माजक



কোনো অপরাধ তো তিনি বাতে তাঁকে আর শিক্ষিকার্পে রাখা বার না! তার ওপর শিক্ষাদানকেই তিনি জীবনের রভর্পে গ্রহণ করেছেন-ভাকে পদত্যাগ করতে বলা? না, তিনি কিছাতেই পদত্যাণ করবেন না; তাঁকে যদি প্রধানা শিক্ষয়িতী বর্থাস্ড করতে চেন্টা করেন, তাহলে তিনি আইনের সাহাব্য নেবেন। ব্যাপারটা তথনকার মতো ধামাচাপা রইল বটে, কিম্তু পরে ঘটনা আরও খারাপের দিকে চলে গেল। মিস্ রোডির কাছ থেকে প্রেরণা পেরে তার ছাত্রী মেরী ম্যাক্রেগর চলে গেল স্পেনে ফ্র্যাঞ্কোর দলে যোগ रमवाद करना; रमथात रम किছ्कमिन वारम মৃত্যুবরণ করল। রোভি মেরেদের কাছে ভার এই বীরের মতো মৃত্যুবরণের প্রশংসা করশেন। জেনী ও স্যান্ডি অংকন শিক্ষকের কাছে মডেল হতে গিয়ে তাঁর প্রতি আকৃষ্ট হয়ে তার সংগ্য যোন সম্পকা স্থাপন করল। স্যান্ডি তার এই পরিণতি সম্পর্কে আত্মবিশেশৰণ করতে গিয়ে আবিশ্বার **করল তাদের অকালপক্ষ**তার জনো মিস্ রোডিই দায়ী। এবার প্রধানা শিক্ষয়িতী মিস্ মাকে রোডিকে জানালেন্ স্কল পরিচালক সমিতি ভার পদত্যাগ চান। যথন রোডি অসম্মতি জানিরে বললেন, ছাত্রীরা তাঁকে চার, তথন মিস্ম্মাকে তাঁকে উল্টে প্রশন করলেন, ছাত্রীরা কি স্তিট্র তাঁকে চায় ? তিনি কি আ-বিষয়ে নিশ্চয় करत कारनन?—िमन् त्वाणि धम्राक দাঁড়ালেন, হঠাৎ বেন তাঁকে কে ছারিকাবিল্ধ ক্রল! – হাত্রীরা তাঁকে চার না? – না, তারা তাঁকে চার না; তার শিক্ষায় তাদের

নৈতিক অবনতি ঘটছে—একথা তাঁকে তাঁর মুখের ওপর জানাল তাঁরই প্রিয় ছাত্রী স্যান্ডি। তাঁর কল্পনার জগৎ তাঁর চোথের সামনে থান্থান্ হয়ে ভেঙে পড়ে গেল; এ-রক্ম অক্তজ্ঞতার ছা্রিা ম্বারা তাঁকে যে বিষ্ধ হতে হবে, া তাঁন ম্বানেও ভাবেন নি।

—এই আশ্চর্য চরিত্রটিকে আশ্চর্যতর ভাবে চিহিত করেছেন ম্যাগি স্মিথ। মিস রোডি শত আশ্তরিকতা সত্তেও শিক্ষিকার পে বার্থ হতে সিম্পান্তে যাতে উপনীত হওয়া যাং এমন ধরনের চালচলন মিস্ স্মিথ গোট থেকেই প্রদর্শন করেছেন। চরিত্রটি জীবদং রূপে উপস্থাপিত করেছেন তিনি। এ-রব স্বতঃস্কৃতি, অনুপ্রেরণাক্ত কাঁচং দেখা যায়। অধ্কার পরেস্কার ল করবারই মতো তার নাটনৈপ্রা। তর্ স্যাণ্ডির ভূমিকায় প্যামেলা ফ্র্যাণ্কলিন অভিনয়দক্ষতার পরিচয় দিলেন, <mark>রীতিমত বিশ্ময়কর। টেডি লয়েড,</mark> গ্ লোথার ও মিস্ ম্যাকের ভূমিকার যথার রবার্ট দিটফেন্স, গড়ান জ্যাকসন ও সিটি क्रम्मन का कार्य भारतील व कीर অভিনয় করেছেন। চিত্ৰত্ব, সম্পাদন শিক্স নিদেশিনায় যথাক্রমে টেড ট স্যাভেজ ৫ বিয়ান হাবাট र्पयम्ध्यार् यमनभीव দক্ষতা ছবিটিকে তোলায় ছবির পরিচালক দ**ীয়েমকে পরিপ্রে'** সাহায্য विदारमानी मारकत्र के स्थाप्तर विवि मणनीय ।

শেকার কথা

আন্তর্জাতিক ব্যাডিমণ্টন

বিভিন্ন খেলাখুলার আসরে ব্যাড-় স্থান প্রথম সারিতে। আগের া ব্যাডমিন্টন খেলার পদম্বাদ্যি এবং জনীপ্রয়তা অনেক থেড়ে গেছে। এক সময়ে ব্যান্ডাপ্রশটনের নামে লোকে নাক তুলতেন— ভাবটা এই বে, এ খেলা ছোট ছেলে-মেরেদেরই সাজে। লোকের আগের ধারণা वन्तरहा थनाय म्का कात्कार्य हाजाउ খেলোরাড়দের যে যথেক দৈহিক শক্তি এবং অফ্রাত দম দরকার তা খে-কোন উচ্-দরের খেলা দেখলেই বোঝা যায়। দৃই পক্ষ নমান শক্তিশালী হলে খেলোয়াড়দের কালো-যাম ছাটে যায়। বতমান ব্যক্ষায় ব্যাড-মিন্টন সারা বছর ধরেই চলতে পারে— পচিটা খেলার মত এ খেলার নিদিশ্টি কোন মরস্ম নেই। ব্যাভমিশ্টন একটি আদর্শ থেলা। ছোট ছেলেমেয়ে থেকে শ্রে, করে বৃষ্ধরা পর্যন্ত এই খেলার মাধ্যমে আনন্দ এবং দৈহিক পট্তা বজায় রাখতে পারেন।

বাাডিমিগটন খেলার সপো ভারতবর্ধের বে রব্তের সম্পর্ক আছে তা অনেকেরই অজ্ঞানা। ভারতবর্ধই বাাডিমিগটন খেলার জন্মভূমি। অতীতে ভারতবর্ধে পূলা খেলার বহুল প্রচলন ছিল। এই পূলা খেলারই নাম কালে হরেছে ব্যাডিমিগটন। নামের এই পরিবর্তন ঘটেছিল ইংল্যাম্ভে। ঘটনাটা এই রক্মঃ জনৈক ব্রিটিল মিলিটারী অফিসার তার লম্বা ছুটিতে যখন ভারতবর্ধ থেকে ব্দলে ফিরে বান সেই সময় তিনি গুণা ধেলার সাল-সরঞ্জাম সংগণ নিয়ে রেডে ভূলেনিন। তিনি ভারতীয় পুণা খেলার বিশেষ অনুরালী ছিলেন। একদিন চামের আসরে বংখ্দের নিমদাশ করে তিনি পুণা খেলার কলাকোশল হাতে-কলমে ব্যাখ্য করেন। এই খেলা দেখে উপাম্পত সকলেই একবাক্যে প্রশংসা করেন এবং তাদেরই উৎসাহ-উদ্দীপনার ইংল্যান্ডের খেলাখুলার আসরে ভারতীয় পুণা খেলা খ্যাডামণ্টন নামে জনগ্রিয়তা লাভ করে। প্রশারসারার

কেত্ৰনাথ রায়

কার্ডাণ্টর ব্যাডমিশ্টন গ্রামে প্রণা খেলা প্রথম হয়েছিল বলেই খেলার নাম দেওয়া হয় ব্যাডমিশ্টন। সারা প্রথিবীতে ব্যাডমিশ্টন নামটাই প্রচলিত। এমন কি ভারতবাসীত। ১৮৭৭ সালে কর্ণেশ সালবী মাডমিশ্টন ধেলার আইন তৈরী করেন এবং ১৮৯০ সালে ইংল্যান্ডে ব্যাডমিশ্টন এসোসিয়েশন প্রতিষ্ঠিত হয়। এর অনেক পরে ১৯০৪ সালে প্রণা খেলার ক্রমন্ড্রিম ভারতবর্ষে অল ইন্ডিয়া ব্যাডমিশ্টন এসোসিয়েশন প্রতিষ্ঠিত হয়। এর অনেক পরে ১৯০৪ সালে প্রণা খেলার ক্রমন্ড্রিম ভারতবর্ষে অল ইন্ডিয়া ব্যাডমিশ্টন এসোসিয়েশন প্রতিষ্ঠিত হল।

আন্তর্জাতিক ব্যাডামন্ট্র খেলার আসরে উল্লেখযোগ্য প্রতিযোগিতা হল এই তিনটি ---অল-ইংল্যান্ড ব্যাডামন্টন, টমাসা কাপ এবং



উবের কাপ প্রতিবোগিতা। প্রথমটি বারি-ণত অন্তোন, টমাস কাপ প্র্বদের দল্-গত এবং উবের কাপ মহিলাদের বর্তান্ত বি×্ব ব্যাডমিন্টন প্রতিৰোগিতা। স**র্জারী**-ব্যক্তিগত বিশ্ব ব্যাভামণ্টন প্রতি-যোগতার কোন বাৰন্ধা আছেও ছবল। অল-ইংল্যান্ড ব্যাডমিন্টন প্রতিবেশীগভার কোন খেতাব জন্ম বেলরকারীভাবে ব্যক্তিগত বিশ্ব খেতাব সরের সমতুল্য প্রাাকরা বিভিন্ন দেশের খ্যাতনামা খেলো-য়াড়রা প্রতিবছর এই প্রতিযোগিড়ার অংশ গ্রহণ করে থাকেন। স্বতরাং **আ**ন্ত-জাতিক ব্যাডমিনটন থেলার আ**সরে অল-**ইংল্যান্ড ব্যাডমিন্টন প্রতিৰোগিতার গরেছ অনেক বেশী। তিনটি বিভাগ (প্রেয় 🗝 মহিলাদের ভাবলস এবং মিকসড ভাবলস) নিয়ে এই প্রতিযোগিতার উন্বোধন ১৮৯৯ সালে। ১৯০০ সালের প্রতিযোগিতার প্রেয় ও মহিলাদের সিপালস খেলা প্রথম रवाक कता इत। नृष्टि विश्वत्यास्त्र स्टब्स



্ সুসান পিরাড (আমেরিকা)



জুডি হাসম্যান (আমেরিকা)



আরব্যান্ড কর্স (জেন্দ্রক)

১২ বছর (১৯১৫—১৯ ও ১৯৪০—৪৬) এই প্রতিবোগিতার আসর বসেনি। ফলে ১৮৯৯ থেকে ১৯৭০ সাল পর্যক্ত মোট ৬০ বার প্রতিবোগিতার আসর বসেছে।

এই অল-ইংল্যান্ড ব্যাডমিন্টন প্রতি-বোগিতার ইংল্যান্ডের স্যার জর্জ ধার্ট হলেন সর্বকালের শ্রেষ্ঠ খেলোয়াড়। এই প্রতিযোগিতায় সর্বাধিক ২১টি খেতাব জ্লারের রেকর্ড তারই, বা কোন খেলোয়াড় স্পর্শ পর্যন্ত করতে भारतन नि। ১৯০৩ थ्यक ১৯২৮ সালের মধ্যে তিনি এই ২১টি খেতাব জয়ী হন— সিপালস ৪টি, ভাবলস ৯টি এবং মিক্সড **ভাবলস্** ৮টি। প্রথম খেতাব পান ১৯০৩ সালে (মিক্সড ডাবলস) এবং শেষ ১৯২৮ সালে (প্রুষদের ভাবলস)। প্রুষদের **সিলালস খেতাব পান উপয**়িপরি ৪ বছর (১৯২০--২৩)। একই বছরের আসরে ১৯২১ সালে। তিনটি খেতাব পান আসরে তিনি ইংল্যান্ডকে আন্তর্জাতিক ২৯ বার প্রতিনিধিত্ব করেন। ১৯৩৯ সালে বিশ্ব ব্যাড়মিন্টন প্রতিযোগিতার উদ্দেশো স্যার জর্জ টুমাস, বার্ট ইন্টারন্যাশনাল ব্যাডমিশ্টন ফেডারেশনের হাতে একটি **স্দৃদ্শ্য কাপ উপহার** দেন। দ্বিতীয় বিশ্ব ১৯৪৮ সালের ब,स्थित ফला প্রেষ্টের দলগত বিশ্ব ব্যাডমিশ্টন প্রতি-হয়নি। তাঁর গোগিতার উদ্বোধন সম্ভব ব্যাডমিশ্টন रमख्या अरे কাপটি বিশ্ব প্রতিযোগিতায় বিজয়ী দলের প্রস্কার। তার সম্মানে কাপের নামকরণ হয়েছে 'টমাস কাপ' এবং সেই থেকে প্রের্বদের ব্যাডমিন্টন প্রতিযোগিতা দলগত বিশ্ব 'টমাস কাপ' প্রতিযোগিতা নামে স্ক্রপরিচিত।

अस्य (भू जून (भावार्ताणता)

সাফল্যের দিক থেকে এরপর আরার-ডেডলিনের নাম বিশেষ न्यास्थित स्थापक অল-ইংল্যান্ড ডেভালন উলেখযোগ্য। প্রতিৰোগিতায় মোট ব্যাড়মিন্টন খেতাৰ জয় করেন-সিপালস ৬টি, ডাবলস এটি এবং মিক্সড ভাবলস ৫টি। তিনি প্রথম খেডাব পান ১৯২২ সালে (প্রের্থ-দের ডাবলস) এবং শেষ খেতাব ১৯৩১ সালে (সিপালস ও ডাবলস)। ফ্র্যাণ্ক ডেভলিন এবং জি এস বি ম্যাক জন্টি ৬ বার পরেষদের *ভাবলস* খেতাব পান। একই বছরের আসরে ডেডলিন তিনটি করে খেতাব পান জিন বছর (১৯২৬— ২৭ ও ১৯২৯। প্রতিবোগিতার ইতিহাসে তার এই রেকর্ড **আজও অব্লা**ন আছে। তার দুই कन्ता **জ**্ডিডেভিলন এবং স,সান ডেভলিন আমেরিকার হয়ে অল-ইংল্যান্ড ব্যাডমিন্টন প্রতিবোগিতায় বিরাট সাফল্যের পরিচয় দিয়েছেন। পুরুষদের সিপালসের খেলায় সর্বাধিক খেতাব জ্ঞারের গৌরব লাভ করেছেন (৭ বার) ডেনমাকের আরল্যান্ড কপস।

মহিলা বিভাগে বিশেষ সাফল্যের স্ত্রে প্রতিযোগিতার ইতিহাসে চিরস্মরণীয়া হয়ে আছেন কুমারী এম ল্কাশ
(বিবাহিত জীবনে শ্রীমতী কিং এডামস)।
কুমারী লুকাশ মোট ১৭টি থেতাব পান—
স্পালস ৬টি, ভাবলস ১০টি এবং মিক্স্যুড
ভাবলস ১টি। একই বছরের আসরে তিনটি
থেতাব পান ১৯০৮ সালে। তিনি প্রথম
থেতাব পান ১৯০৮ সালে। তিনি প্রথম
থেতাব পান ১৮৯৯ সালে (ভাবলস)—
প্রতিযোগিতার উশ্বোধন বছরে এবং শেষ
থেতাব ১৯১০ সালে (সিজালস এবং
ভাবলস)। তার পরই আমেরিকার কুমারী
জ্বাভ ভেভলিনের নাম উল্লেখযোগ্য।



এডি চুং (মালরেশিরা)

কুমারী জন্ডি ডেভলিন (বিবাহিত জীবনে শ্ৰীমতী জি সি কে হাসম্যান) মোট ১৭টি খেতাব পান—সিশালস ১০টি এবং ভাবলস ৬টি। তিনি তাঁর আপন বোন সমোন ডেভলিনের (বিবাহিত জীবনে শ্রীমতী ফ্র্যাঙ্ক পিয়ার্ড') জ্বিতৈ ভাবলস খেতা পান ৬ বার। মহিলাদের সর্বাধিক (১৬ বার) সিশালস খেতাব জয়ের রেকড হাসম্যানেরই। মহিলা শ্রীমতী জর্মিড বিভাগে শ্রীমতী এইচ এস উবেরের নামও বিশেষভাবে উল্লেখ্য। শ্রীমতী উবের মোট ১৩টি খেতাব পান—িসপালস ১টি, ডাবলস ৪টি এবং মিক্সড ডাবলস ৮টি। তিনি একনাগাড়ে মিক্সড ডাবলস খেতাব পা ৭ বার (১৯৩০—৩৬)। প্রথম থেতা পান ১৯৩০ সালে (মিকুড ডাবলস) এ? ১৯৪৯ সালে (ডাবলস শেষ খেতাব মহিলাদের দলগত বিশ্ব ব্যাডমিশ্টন প্রতি যোগিতার সঞ্গে শ্রীমতী উবের **স্মরণীয়া হয়ে থাকবেন। এই** যোগিতায় বিজয়ীদলের প্রুক্তার হিসাপে তিনি যে কাপটি উপহার দেন তা তার এবং প্রতিযোগিতা নামে অভিহিত প্রতিযোগিতা উবের কাপ সূপরিচিত।

গত ২৪ বছরের খেলা

শিষ্তীয় মহায্দেধর ফলে ১৯
সাল থেকে ১৯৪৬ সাল পর্যক্ত ব
ইংল্যান্ড বাার্ডামন্টন প্রতিযোগিতা
ছিল। প্নেরায় ১৯৪৭ সাল থেকে সার্
হয়েছে। ১৯৪৭ সাল থেকে সার্
হয়েছে। ১৯৪৭ সাল থেকে ১৯৭০ সাল পর্যক্ত—এই ২৪ বছরের প্রতিযোগিতা প্র্যুদ্ধের সিশ্যলস থেতাব পেয়েছে ডেনমার্ক ১০ বার, মালয়েশিয়া ৯ বার
ইল্যোনোশিয়া ৪ বার এবং আমেরিক



ওই টিক হক (মালরেশিরা)

gastanian kan kanan k

क्नि कार्यस्य (एनमार्क)



눌 বার। উপয**্**পরি প্রুষ্দের সিণ্গলস খেতাব জয়-মালয়েশিয়ার ৮ বার (১৯৫০ -৫৭), ডেনমার্কের ৬ বার (১৯৬০-৬৫) ০বং ইন্দোনেশিয়ার ৩ বার (১৯৬৮— ৭০)। এই ২৪ বছর সময়ে আরলগেন্ড \$পস (ডেন্মার্ক) ৭ বার, ওয়াং পেং সান (মালয়েশিয়া) ৪ বার, এডি চুং (মালয়ে-শিয়া) ৪ বার এবং রুডি হাটোনো (ইদেনানোশয়া) তবার প্রেয়দের সিঞ্চালস খেতাৰ জয়ের স্তেবিশেষ ব্যক্তিগত কুতিত্বের পরিচয় দিয়েছেন। আরল্যান্ড কপস যে ৭ বাব সিজ্ঞালস খেতাৰ পান তার মধ্যে উপয^{়ু}পরি জয় ৪ শর (১৯৬০-৬৩)। এশিয়া মহাদেশের পক্ষে পুরুষদের সিংগলস থেতাব প্রথম জয় করেন মালয়েশিয়ার ওয়াং পেং সন্ন, ১৯৫০ সালে। এশিয়া মহাদেশের পক্ষে প্রেয়দের সিৎগলস ফাইনাগে প্রথম রানার-আপ হয়েছিলেন ভারতবর্ষের প্রকাশ নাথ। ১৯৪৭ স্তেলর সিংগলস ফাইনালে প্রকাশ নাথ ডেনমাকের কনি জেপদেনের কাছে হেরে যান।

গত ২৪ বছরে (১৯৪৭—৭০)
মহিলাদের সিঞ্চালস খেতাব জ্ব হরেছে
আমেরিকা ১২ বার, ডেনমার্ক ৭ বার,
ইংল্যান্ড ২ বার জাপান ২ বার এবং
ন্ইডেন ১ বার। ডেনমার্কের উপর্য্পরি
৭ বার (১৯৪৭—৫৩) সিঞ্চালস খেতাব
জ্বের পর ১৯৫৪ সাল থেকে আমেরিকার
প্রাধান্য সূর্র হয়। ১৯৫৪ সাল থেকে
১৯৬৭ সাল প্রাক্ত—এই ১৪ বছরে
আমেরিকা ১২ বার মহিলাদের সিঞ্চালস
খেতাব পার। আমেরিকার এই একটানা
খেতাব জ্বের প্রে দুখ্যার (১৯৫৯ ও

द्रीष शाळीता (हेल्मार्त्राभना)



১৯৬৫) বাধা দিয়েছিল ইংল্যান্ড। গত ২৪ বছরে (১৯৪৭-৭০) আমেরিকার জর্ডি ডেভালন (বিবাহিত জীবনে শ্রীমতী জ্ঞি হাসম্যান) মোট ১০ বার মহিলাদের সিপালস খেতাব জয়ের সূত্রে প্রতি-যোগিতার ইতিহাসে সর্বাধিকবার সিঞালস খেতাব স্বয়ের রেকড' করেছেন। তিনি উপর্যাপরি ১১ বার (১৯৫৪—৬৪) ফাইনালে খেলে মোট ৮ বার খেতাব জয়ী হন—এর মধ্যে উপয**ূ**পরি জয় ৫ বার (১৯৬০--৬৪)। ১৯৬৭ সালে मीरनाएन সিপালস ফাইনালে পরাজিত হন জাপানের ক্মারী নোরিকা তাকাগি এশিয়া মহা-দেশের পক্ষে তিনিই মহিলাদের সিপালস ফাইনালে প্রথম খেলেন। এশিয়া মহাদেশের পক্ষে মহিলাদের সিপালস খেতাব জয়ের প্রথম গৌরব লাভ করেন কুমারী ইরো জ্বক (ভাপান), ১৯৬৯ সালে।

১৯৬৯ সালের প্রতিযোগিতায় প্র্য্দের সিঞ্চলস খেতাব পান ইন্দোনেশিয়ার
র্ভি হাটোনো এবং মাহলাদের সিঞ্চলস
খেতাব পান আপানের ইরো জ্কি। ফলে
প্রতিযোগিতার স্দৃষ্টি ৬০ বছরের
ইতিহাসে এশিয়া মহাদেশের পক্ষে একই
বছরে প্র্যুষ ও মহিলাদের সিঞ্চলস
খেতাব জয়ের প্রথম নাজর স্থিউ ইয় এবং
দিবতীয় নাজর ১৯৭০ সালে।

১৯৬৮ সালের প্রতিযোগিজ্যর প্রজাভার ১৮ বছরের ক্লান্তার র্ডি
হাটোনো প্র্যুদের সিক্লান্তার র্ডি
জরের স্ত্রে এক অসাধারণ রেক্রান্ত স্থানি
করেন। প্রতিযোগিতার ইভিহাসে তিনিই
সর্বকনিষ্ঠ সিকালস খেতার বিজয়ী প্রেয়
খেলোয়াড়। আরও উল্লেখ্য তিনি তার
প্রথম যোগদানের বছরেই এই খেতাব জয়ী
হয়ে শেষ প্রথত উপ্যাক্তির ৩ বার
(১৯৬৮-৭০) প্রেষ্ট্রেন সিকালস খেতাব
জয়ের গৌরব লাভ করেছেন।

প্রুষ্দের ভাবলদের খেলায় বিশেষ কৃতিখের পরিচয় দিয়েছেন ভেন্মার্কের জে হ্যামারগার্ড হ্যানসেন (ডেন্মার্ক)



ফিন কোবেরো। তিনি মোট ৭ বার ভারলস খেতাব পেরেছেন—এর মধ্যে **ভে হাাম্যর-**গার্ড হাালনেদের জ্টিতে **৬** বার— উপর্যাপার জয় ৪ বার (১৯৬১—৬৪)। ডেনমাকের আরলাদ্ভ কপস ভারলস খেতাব পেয়েছেন খোট ৪ বার—এর মধ্যে এইচ বোর্চের জ্টিতে ০ বার (১৯৬৭— ৬৯)। মালয়েশিয়ার ই এল ছং এবং ই বি ১ং ভ্টির উপর্যাপার ০ বারেব (১৯৬১— ৫০) ভারলস খেতাব জয়ও উল্লেখ্যাগা।

মহিলাদের ভারলস খেলায় আমেরিকার

ন্তী ডেভলিল ও স্সান ডেভালন এবং
ডেনমাকের শ্রীমতী টীন আহম ও কুমারী
কিরপেটন থনভাল ভুটির সাফলা বিশেষ
উল্লেখযোগ। জুডি ডেভলিন মোট ৭ বার
ভারলস্ক খেভাব পান-এর মধ্যে স্মান
ডেভলিনের জ্টিতে ৬ বার। অপর্রাদকে
শ্রীমতী টীন আহম এবং থনভিল জুটি
প্র বার ভারলস্ব খেলাব পান।

মিঞ্জি ভাবলস খেলার ডেনমাকেরি খেলোরাড়রা বিশেষ কৃতিকের পরিচয় বিয়েকেন। পল হম এবং শ্রীমতী চনি আহম জন্তি ও বার এবং ফিন কোবেরো এবং কুমারী কির্দেটন ধন্তাল জ্তিও ও বার মিক্সড ভাবলস খেতাব পেয়েকেন।

অল ইংল্যাণ্ড বাডিম্প্রুন প্রত-মোগতার গড় ২৪ বছরের খেলার (১৯৪৭—৭০) ডেনমার্ক, মালরোপিরা, আমেরিকা, ইন্দোনেশিরা এবং জাপানের ক্ষেপা্যাড্রা বিশেষ কৃষ্টিছের পরিচর শিক্ষাকৈন স্কোলান, ভাবলন এবং মিল্লড ভাবলন খেলার স্থান দক্ষভার পরিচয় দিয়েছেন ডেন্মার্কের খেলোরাড্রা।



জাতীয় চীভা ও শুলি সংঘের (উত্তরসহরতলী জেলা কেন্দ্র) পরিচালনায় অখ্টা-দুশ বাধিক অনুষ্ঠানে ইণ্ডিয়ান খ্টাটিসটি-ক্যাল ইনভিটিউটের আমুকুঞ্জে শিশ্বদের

दथलाध्रला

বেটন কাপ

কাপ হকি প্রতিযোগিতার শল্যাটিনাম জ্ববিদাী বছরের (১৯৭০) कारेनाल वाष्यारेसम असम्बेल दान नन >-० शाल कनकाजात हैम्हेर्स्थन मनरक পরাজিত করে দিবতীয়বার বেটন বাপ ছামের গৌরব লাভ করেছে। রেলদল ১৯৫৪ সালের ফাইনালে বেশ্বাইয়ের টাটা ফেপার্টস ক্লাবের কাছে হেরে গিয়ে ১৯৫৫ সালের ফাইনালে উত্তরপ্রদেশ দলের সংগ্র য়্ম-বিজয়ী হয়েছিল। অপর্বাদকে ইস্ট-বেশাল ক্লাব ইতিপর্বে চারবার বেটন কাপ करी इत्याह-১৯৫৭, ১৯৬২, ১৯৬৪ (व न्य-विकशी साइनवाशानव मर्का) धवः ১৯५৭ সালে।

এ বছরের প্রতিযোগিতার কোরাটার ফাইনালে মোহনবাগান ১-০ গোলে বি এন दिन पनटक, उदाम्होर्ग दिन उदा ५-० लाहन সে ক'দ্রাবাদের এ ও সি (সেন্ট্রাল) দলকে এবং ইস্টার্শ রেলওয়ে এগগলেটিক এসো-সিরেশন ৩-০ গোলে মহীশ্রে দলকো

প্রাক্তি করে সেমি-ফাইালে উঠেছিল। ইস্টবেণ্যল বনাম গত বছরের যুক্ম-বিজয়ী কোর অব সিগন্যালস দলের খেলাটি তিন দিন ১-১ গোল জুছিল। শেষ পর্যাত টংস জয়ী হয়ে ইস্টবেশ্যল দল ফাইনালে খেলবার ষোগ্যতা লাভ করে। সেমি-ফাইনালে ওয়েস্টার্ণ রেলওয়ে ২-১ গোলে মোহনবাগানকে এবং ইস্টাব্ধগাল २-७ लाल हेम्डोर्न द्रमछ्य धार्म्माडेक এসোলিয়েশনকৈ পর্যাজত করে ফাইনালে खक्ते ।

ফাইনালে প্রথমার্ধের খেলা শেষ হওয়ার তিন মিনিট আলো ওয়েস্টার্ণ রেলদলের অধিনায়ক গারবক্স সিং পেনালিউ পাস থেকে জয়স্চক গোলটি দেন। যে আশা ও उम्मीलना निष्त्र मर्गक्ता काइनाम थाला দেখতে মাঠে গিয়েছিলেন তা প্ৰ হয়নি প্রথমাধের খেলা তব্ কিছ্টা উপভোগা হ্রেছিল; কিন্তু নিবতীয়াধের মাম.লি খেলায় দল করা সম্পূর্ণ নিরাশ হরেছেন। ए सम्होर्ग दिवान होते अप्रकारक म् लक्ष ছিল খেলোয়াড়দের সংহতি এবং সৈমি-ফাইনালে গত বছরের যুগ্ম-বিজয়ী এবং এ বছারর প্রথমবিভাগের হকি লীগ চ্যাম্পিরান মোহনবাগানকে প্রাক্তিত করার मलाय मृष् भारतायल।

বেটন কাপ হকি প্রতিযোগিতা ভারতীয়

খেলাধ্লার ইতিহাসে একটি প্রাচীনত নক-আউট প্রতিয়োগতা, উম্বোধন ১৮১ সালে: ক্যালকাটা কাস্ট্যস ১২ বার রে কাপ জয়ী হয়ে সর্বাধিকবার কাপ জয়েব রেকর্ড করে তা আজও অক্ষার আ তারা উপর্যুপরি তিনবার করে কাপ জ इर्स्ट्राइ— ১৯০४-১० आ वर ১৯৫ ৩২ সালে।

মেহারা কাপ

চালিত ১৯৬৯-৭০ সালের সিনিয়র আউট ক্লিকেট প্রতিযোগিতার ফাই গত বছরের বিজয়ী মোহনবাগান কাব ইনিংসের রানে বি-এন আর দলকে পর করে ১২ বার মেহেরা কাপ জ্বরের ট লাভ করেছে।

. मर्शक्रण्ड स्कार

২৫৭ রান যোহনবাগান ঃ পোষ্দার ১০১ এবং হাসান ৪৭ পি বসঃ ৪৬ রানে ৪ উইকেট) বি এন আর ঃ ১৬৩ রান (শা হিত া নট আউট ৪৪ রান। ব্যেশ ৪৮ রানে ৫ এবং স্বপন দে ২৫ ৩ উইকেট)।

অমৃত প্রালশার প্রাইভেট লিঃ-এর পক্ষে শ্রীস্থিয় সরকার কড়ত পরিকা প্রের, ১৪ আনন্দ চ্যাটাজি লেন, কলিকাতা-হইতে মুদ্রিত ও তংক্তুক ১১।১, আনন্দ চাটোজি দেন, কলিকাতা—০ হইতে প্রকাশিত।

A CONTRACTOR OF THE CONTRACTOR

क्षाफे लिथक ।। खाफे राज्या

विका जिल्ह

চন্দ্ৰখ্যত লোকে

बामाभागी समीह

कुषात्रो द्वा ए, जैश्वरत्रत्र वावान ७, वरा इरा ए॥

केनाश्चनात्र बद्धानावादात्रव

विकृषिकृष्य गृत्यानावप्रसाह

सिन्मरिंग ७॥ अकर भरत पूरे शास्त ८,

श्रमधनाथ विनाम

मीराववकान गृहण्डव

गारी निरताश

৩॥ সেই মরুপ্লান্তে ১১

সন্ভোষকুমার যোগের হিলয়ন ৪

बाम्स्य बम्द्र । रनका मुन्मनी रनका ८॥•

আশ্তোৰ ম্খোপাধ্যানের শ্বরংকৃতা ৬ বিদে

विदर्गाणनी 8

শ্রান্থান্থ সর্বারের শ্রান্থান্থনে ও্ হাসির অন্তরালে ৬্ দাদাঠাকুর ও॥•

॥ একটি বিশেষ ঘোষণা ॥

'পথের পণচালী' 'আরণ্যক'এর অমর সাকটা বিভাতিভাষণ বন্দ্যোপাধ্যায়ের

সমগ্র রচনা কয়েক খণ্ডে বিপ্রত হইয়া

বিভর্তি রচনাবলী

— প্রকাশিত হইতেছে —

বিভূতি রচনাবলী আনুমোনিক দশ খণ্ডে প্রকাশিত হইবে। মজবুত রেক্সিনে বাঁধাই রয়াল জাট পেজী সাইজে ছাপা—মূল্য সম্ভবত প্রতি খণ্ড ১৪, ধার্ম হইবে। ঘাঁহারা আগামী ২৯শে ভাপুর মধ্যে দশ টাকা জমা দিয়া গ্রাহক হইবেন তাঁহারা প্রতি খণ্ডের মূল্যের উপর শতকরা কুড়ি টাকা হারে কমিশন পাইবেন। প্রতি খণ্ড নগদ কিনিতে হইবে। জমার দশ টাকা শেষ খণ্ডের মূল্য হইতে বাদ দেওয়া হইবে। ভাকে বই লইলে ডাকব্যুয় প্রতিরিক্ত পড়িবে। ১লা ক্লোণ্ড হইতে টাকা জমা লওয়া শূর্ হইয়াছে। মনিজাডারে বা শোলটাল অভারে জমার টাকা পাঠানো চলিবে।

ইহার প্রধান ভূমিকা লিথিবেন :

আচার্য স্নীতিকুমার চট্টোপাধ্যায়

প্রতি থপ্ডে স্বতন্ত ভূমিকা থাকিবে—
লিখিবেন ঃ

॥ বাংলাদেশের শ্রেষ্ঠ চিন্তাশীল মনীষীগণ ॥

উপদেশ্টা পরিষদে আছেন ঃ আচার্য সন্নীতিকুমার চট্টোপাধ্যায়

কবিশেশর কালিদাস রায়

ডঃ স্কুমার সেন প্রমধনাথ বিশী

ভঃ রবীন্দ্রকুমার দাশগণেত গজেন্দ্রকুমার মিচ

ডঃ তারাপদ মাখোপাধ্যায়

প্রতি খণ্ডের শেষে গ্রন্থপঞ্জী ও অন্যান্স আবশ্যক টীকাদি থাকিবে।

মির

প্রথম তিন খ'ড বিভ্তিভ্ষণের আগামী জন্মদিনে প্রকাশিত হইবে

১০, শামাচরণ দে

শুনীট, কলিকাতা ১২

যোন : ৩৪-৩৪১১

68-8499

রবিন ব্লু-র সাফ কথা

- Harris Control of the Control of t



আপনার জামাকাপড় নামমাত্র খরচে হবে ধবধবে সাদা

দ্ববিন বলু—তে কাপড়-চোপড় হয় অসাধারণ সাদা।
সাদা কাপড়-চোপড় এমন আগাগোড়া ধবধবে সাদা
হওয়া আর কোনো নীলে সঙ্বই নয়। মাত্র এই
এতটুকু রবিন বলু—তে আপনার এক গাদা কাপড়-চোপড়
হেসে খেলে হবে ধবধবে সাদা। আর সবচেয়ে
বড়কথা, রবিন বলু কাপড়ের পক্ষে সম্পূর্ণ নিরাপদ।
নির্ভায়ে বাবহার করা যায়। সুতরাং সবসময় আপনার
কাপড়-চোপড় সাদা ধবধবে রাখুন।



রবিন ব্লু-স্বাভাবিক মনোরম শুভ্রতার জন্য

ARBC-30 BEN

- विष्णामस्त्रत्न वहे

শ্রীকথকঠাকুরের গণপসংকলন

অথ ভারত কথকতা ৩০০০

देवलाकानाथ भारभाशास्त्रत्र छेभनाम

ক্ষাব্ৰা

0.40

সমর্বজিৎ করের বিজ্ঞানাশ্রয়ী উপন্যাস **७ग्र॰कत त्मरे मान्**यि मीतिमहन्द्र हत्त्वेशा**धप्रतास**

ভয়ত্করের জীবন-কথা 2.56 আশ্বতোষ বন্দ্যোপাধ্যায়ের উপন্যাস

विकातित पृथ्यश्च २.४०

স্বপনব্ডোর গল্প-সংক্লন

দ্ৰপনৰ,ড়োর

কৌতুক কাহিনী ₹.80

শিবরাম চক্রবভারি গলপ-সংকলন

আমার ভাল্ক শিকার 0.00

চোরের পাল্লায়

চকর্বর্তি 0.00

প্রেমেন্দ্র মিত্রের উপন্যাস ও গলপ

यशृत १ श्री

৬.০০

মক্রমুখা

७.00

সাগরদাড়া [আগামী প্রকাশ]

গলপ আরু গলপ

२ - २ ७ 0.00

শ্ৰে যারা গিয়েছিল ড্র্যাগনের নিঃশ্বাস

२ - २ ७

সঞ্জয় ভট্টাচার্যের দ**্**টি বড় গ**ল্প**

নাবিক রাজপত্ত ও সাগর রাজকন্যা

₹.00

সংশীল জানার গণে-সংশাস

গণ্পময় ভারত

!প্রথম খণ্ড ৩০০০ ৷৷ দিবতী**য় খণ্ড ৩০০০**] গোপেন্দ্র বস্ত্র রহসা উপনাস

দ্বৰ্ণ ম, কুট

₹.60

বিমলাপ্রসাদ মুখোপাধ্যায়ের লেখনীতে আর্সে নভের অমর অরণা-কাহিনী

সাইবেরিয়ার শেষ মান্য ২০০০

ব্যক্ষিমন্দ্র চট্টোপাধ্যায়ের উপন্যাস

আনশ্মঠ (ছোটদের) স**ুখল**তা রাওয়ের গম্প-সং**কল**ন

वाविषुवित्र (म्(४ ० ० ०

विष्णामम लाहेरतनी आः लिः ৭২ মহাত্মা গান্ধী রোড ॥ কলিকাতা ১ ফোন : ৩৪-৩১৫৭

20E 44

ST THE



8वं मरभा

৪০ পর্না

Friday, 29th May 1970

म्ह्यात ५७३ टेकाण्डे, ५०००

40 Paise

সুচীপত্ৰ

न,जा		1448	रणचक
080	চিঠিপর		
७ 8३	भाषा टाटभ		সমদ শ ী
080	ৰ্যপৰ্যচিত্ৰ		শ্ৰীকাফী খাঁ
	দেশেৰিদেশে		
989	नम्भामकीय		
	शिक्त		—নিশিকান্ত
982	সাহি ভাকের চোখে আজা	क्य मधाळ	—গ্রীপ্রফল্প রায়
७७३	ম্বিতীয় প্থিৰী	(বড় গম্প)	শ্রীশান্তি পাল
004	নৰাগ্ৰৰ প'চিশ বছৰ ও না	हे। बारम्मन	গ্রীবিষ্ণ দে
	ग्रंथन काणा		—আবদ্ল জববার
	না.হত্য ও সংক্রাড		– শ্রীঅভয়•কর
	বইকুণ্ডের খাতা		— শ্রীগ্র ন্থদশ ী
	নলিক-ও পাখির খো জে	(উপন্যাস)	—শ্রীঅতীন বন্দ্যোপাধ্যায়
099	निक्छें हे आह		শ্রীস্থিৎস্
082	मत्नव कथा		- श्रीभरनाविष
948	षामा भए (त्रशा कारिनी)	—সৈয়দ মৃশ্তফা সিরাজ
OAR	विख्वातित्र कथा		—শ্রীঅয়স্কাস্ত
	পালাবদল	(পুৰুগ্ৰাচ)	শ্রীর্বাব দে
೦೩೦	अन्मनी श्रीतक्षमा		- শ্রীচিত্রসিক
020		(স্মৃতিচারণ)	—শ্রীঅহীণ্ড চৌধ্রী
6%0	रगारप्रमा कवि भवाभव		—শ্রীপ্রেমেন্দ্র মিত্র লিখিত
			—শ্রীশৈল চক্রবতী চিত্রিত
	ৰেভাৰখ্ৰ,তি		—শ্রীগ্রবণক
802	बारना नाउँक्य कथा		—শ্রীদ ্রলভ চক্রবত ী
80₹	প্রেকাগ্র		শ্রীনান্দ কির
822	ক্রলস্য		— শ্রীচিত্রাপাদা
	टथनाव कथा		—শ্ৰীকমল ভট্টাচাৰ্য
82¢	टब्राश ्मा		শ্রীদর্শক
	•		

शक्त : भौदूरभाभाम एर

ছোট পরিবারই সুখা পরিবার

স্বৃত্যু জন্মনিয়ন্ত্রণের একমাত্র সহায়ক

ডাঃ মদন রাণা'র--

পরিবেশক ঃ জমর লাইরেরী, ৫৪।৬, কলেজ স্ট্রীট, কলি—১২



ब्रवीम्प्रमाथ : अक्रि विषक

আম আপনাদের বহুল প্রচারিত গ্রেম্ত পতিকার একজন অনুরাগী পাঠক। ১লা জ্যেন্টে ১০৭৭ স্থালের ১০ম বর্গ ১ম বন্দ, ১ম সংখ্যাতে প্রকাশিত বিশিষ্ট কবি প্রবাধিক ও বিদেশ শিক্ষাবিদ ভক্টর লোকনাথ ভট্টাই লিখিত 'রবীন্দুনাপঃ একটি বিভক' আলোচনাটি পাঠে প্রভৃত ভানন্দ ও অপরিমিত বিক্ষয় বেধি করিছ।

রবীলুপ্রতিভা, রবীলুমানস, ও
ব্যক্তিম্ব অতল সাগরের গভীবতা ও
হিমানারের উচ্চতার সংগ্রেই একমার
কুলনীয়। তাই রবীলুমানসের সানক কিছাই আমাদের মাতা সাধারণ মানুবের
কাছে অজানা। সেই বিচিন্ন জটিল অজানা
মানসিকতার একটি নতুন দিক প্রবংশটিতে
যেভাবে য্রিসম্মাত দ্লিউভংগীতে
উন্মানিক হারেছে তার জনা লখকের নিকট আমার কৃতস্তা। রবীলুনাথ যে চির্বিসময়।
তা আর একবার নতুনভাবে জামারা উপলিম্ধ করিছ।

উমাশ করু বদ্যোপাধার, ভাটপাড়া, ২৪ পরগণা।

(1)

গড় পদ্মলা জ্যোষ্ঠের ভাষাতে শ্রীলোকনাথ ভট্টাচাষ' গ্রালয়ের 'রবীন্দ্রনাথ: একটি বিত্র পার্ষ নিবশাটতে রবীন্দ্রনাথের প্রতি আধুনিক বুল্পিক্টীবী,দর অপ-প্রচীন কৎসাপ্রচারের হাাখাজিনিত প্রবণতার একটি সাম্প্রতিক নিদর্শন দ্রতি-গোচর হল। নতুন মুল্যায়ন অবশ্যই কাণ্ডিক্ষড় বৈ মূল্যায়ন পল্পবগাহী চিন্তা ও অপ্যান্তির উপর প্রতিষ্ঠিত এবং ব্লিভ তথ্য অসম্থিত হয়েও ওদাতের প্রাণ্ডালনে মন্ত্র, কা বেদনার কারণ। তাধি-কাংশ ক্ষেন্তে রবীন্দ্র-সাহিত্যের অন্বাগী পাঠকের সে বেদনা আখাগত ক্ষোভই সমাণিত লাভ করে। আমাতের সম্পাদক ধত'মান কেন্তে সে বেলনার মার্ডিদানের বাৰ্ণণাপ্তৰে আগ্ৰহী দেখে সম্পাদক মহোদ'য়ার লাগালো। এবং मिट्ड है আলোচনার আহ্বামে সাভা র্ণবতকে'র উক্ত'র' নিবাধটির ऋीं हो। (ক্লানিনে সম্পাদক মহাশয়-প্রাকারে মতা-মত ক্যাপনের আহ্বান করেছিলেন কিনা, কিম্ভু কোনো সিরিয়াস আলোচনা পঢ়াকারে হয় না ৰ'লই এবং মধাসম্ভব ভাষা-সংখ্যাস চেন্টা করেও-বর্তমান লেখা ১০ প্রেটার নিবদেশর রূপ নিল, ছাপ্লে আন্তের ৫ প্তোনিতে পাৰে বোধ হয়। অবশ্য हानाटमा MAKALICE & श्रामम्भावात्व শ্ভ মদ **INIT** 200

লেখাটিতে দ্টি স্কশত ভাগ আছে।
প্রথমাধে (৫ম প্তার দ্বতীর ক্রান্তেরের
প্রণ পর্যাক্ত —লোকরাথবাব্র নিব্রশ্বটির
রমান্সরণ করে তার বছবা ও প্রালীগণক
টার ও ব্রিগার্লির অম্থাবন এবং লোকর
বিষয়ে আমাদের মডানত আপান। বাবনী
মার্শে—লোকনাথবাব্র ম্লা প্রতিপালা হৈ
হারির উপর দাঁড়িরে আহে, রবীল্য-দগানের
তল্প মহিমা প্রমাণের প্রস্পান, সেই ব্রিন্থর
অসারতার স্নাশিকত প্রতিপালন)।

আনার প্রেরিত নিবশ্বতি ছাপা ছওরা লা ছওরা সম্পূর্ণভাবে সম্পাদকের ব্যক্তিগত মার্চা, সে নিবলে আমাদের কিছুমার বঙ্গা মেই. থাকতেও পারে মা: তবে সেথক হিসেবে সম্পাদকের প্রতি লুটি হান্রোধ বেশাই রাথবাঃ—এক, ভিনি প্রক্ষটি মন্ত্রাহ কর প্রেশিন পড়বেন (দেখনের মোলিকলা কিছু আছে কিনা) এবং দুই অমনোমীত ছলে— দ্যা করে অহারণ সিলন্বের বিডম্বনা বাঁচিয়ে লেখকের ঠিকানায় ফেরং পাঠাকেন।

স্কুমার দাস. অধ্যাপক, জালিপ্রদ্রার কলেজ, জলপাইগাড়ি।

্লেখাটি আগামী সংতাহের অম্তে ছাপা হ'ব। জঃ সঃ]

ৰহিব'লো ৰাঙালীর লাংক্তিক প্ৰতিকান

বহিব তেগ ও বছিভার তর আনেক শহরেই যেখানে বাঙালীদের আন্তামার রাছে এবং দ্বেখানে নির্মাছত অনির্মাছত ভাবে সংকৃতি চুচালেল ক্রামান বাঙালী অধবাসীদের ঐকান্তিক প্রচেন্টার গড়ে উঠছে এমন সব প্রতিক্ঠান ও তাদের সভাদের সংগে ঘনিষ্ঠভাবে পরিচিত হ্বার একান্ত ইচ্ছা আমাদের আছে। অভিপ্রেড গোষ্ঠী থেকে সময়ান্তরে কোন মুখপার প্রজালিত হয় কিনা সেটাও জানা গেলে

সম্ভর পাঠক-পাঠিকারা এবং ।অপবা সংস্কৃতিপ্রিয় ভিনদশী বন্ধরো এ ব্যাপার আমাদের সপো সরাসরি নীচের ঠিকানার যোগাযোগ করলে কৃতক্ত থাকব।

স্ত্রিম'ল চট্টোপধার সম্পাদক, 'ভর্ণ অভিযান' গোষ্ঠী, ১৭, জাল্টিস ব্যাকানাথ রেডে, কলকাতা-২০ ১

নবৰষেৰ সাহিত্য সভা

এ বছরের নববর্ব সাহিত্য সকার জন্মপতি হিসেবে শ্রীভারাশণকর বজ্যো-পাধ্যার যে ভাষণ দিয়েকেন, কেটি কন্দ্র

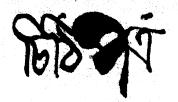
প্রক্রামের আরা সাহিতেন রেউম

থ্রমাণত না হলেও ভাষা ও সাহিত্যের

লগুণাতর পক্ষে তা অডাত প্ররোজনীর
রবীন্দ্রনাথ নোবেল প্রাইজ না পেলে বিশ্ব
সাহিত্য সভায় বাংলা সাহিত্যের স্নার বি
এতটা ব্দির্ঘ পেডে? বাংলার প্রের্বাসংহ
স্যার আগ্রেতায় মুখোগায়ায় সর্বাথ্য
রাংলা সাহিত্যে এ ধরনের কাডিমের জন
জগত্তারিণী প্রক্রার প্রবাতন করন এব
প্রপম এই প্রক্রার পেরেছিলেন রবীন্দ্র
নাগ। এই প্রক্রার পেরেছিলেন রবীন্দ্র
ভাগ। এই প্রক্রার পেরেছিলেন রবীন্দ্র
ভিসাতের স্টিট করেছিল সেনিন।

ত্রীরক্ল্যাপাধ্যায়ের এই মন্বর্ম ঐডিহাসিক
অ থই প্রমাণত হয়েছে। স্কুরাং এ বিষয়ে
কোন বিতর্কের অবকাশ না গ্রাই ভাল।

ब्रीवरम्माभाषारवृत्त सः नव अवकारा মুলাবান অংশ হল—বেশ িত্নি বাংল সরকার এবং প্রকাশক ্র কাছে আবেদন ক্রানিয়েছেন। বাংলা স্ক্রকার বাংলা ভাষা ও লাছিতোর জন্য যা **কলেছেন ডা** এতান্ত क्षिकित्वरक्षा ३१६५ महन सम्बन्धीन হ্বার সরকার দৃটি প্রস্কার রবীণ্ট্নাথে? নামে প্রবর্তন করন। এ বছর থেকে আ একটি প্রেক্সার দেওরা হাছে—বাংল ভাষার উপর লেখা কোন বিলেশীর মৌলিন शहबर्यना शहम्बद्ध क्रमा। वाम्, ध भर्य^{म्स्ट्}रे অথচ অন্যান্য প্লাদেশিক সরকার এ ব্যাপার जामक किस् करतरहम। जामिन शुक्ततारि তেল্প, হিল্প, পাঞ্চাবী প্রভৃতি ভাষা প্রাদেখিক সরকার অনেক প্রেক্কার দি থাকেন। কিন্তু পণিচনবংগ সরকারেন । লাপাৰে খ্য একটা সচেতনতা নেই সাহিত্য পৃষ্টিকা ও সংস্কৃতিমূলক কা সাহায়ের জন্য যত টাকার অপচর হ कात किन्द्रुणे बच्चा कन्नटनके ध्रतकम करसङ প্রস্কার দেওয়া বে'ছে পারে। ডাছা रक्न्यीय जबनारवर्थ अवहो बारको छ। প্রাদেশিক ভাষাগ্রিলর উসয়নের জন প্ৰক্ষেক্ত সাজাই চাপ দিশম ভাদেব প্ৰা मेका नित्र मात्र। श्रीग्रह्मक्य महाकाद धर



সচেন্ট হলে সাহিত্যসেবীদের কিছুটা উপকার হক্ত।

श्रीवरण्याभाषाम् श्राप्तांगक अवकाद्यक ৰভাৰ কারণেই তিনটি নাম স্মরণ করিয়ে ীলয়েছেন। নাম ডিনটি হল মধুস্দন, বিশাসাপর ও ব্যাপ্সভাত পুরা স্থানাপ্তরবাহার কর্ম্বের সম্পে কৃষ্ট মিলিরে আমরাও বলি---অর্থ হোক, পদক ছোক, এখনের প্রণা-গ্মরণীর নামকে জাপ্রয় করে বাংলা अवकारतत किए, करात श्रदशासन चारह। প্রকাশকসমাজ এবং পরিকাণোষ্ঠীও এ ব্যাপান্ধে এগিয়ে আসতে সান্ধেন। বিশেষ क्रम हव अवस्थ शकाभक छभरतन जिसकारमन भगत बहुमायनी श्रकाम करत बारकम, जीरनव কাৰে বিমাতি অম্বোধ তাদের বই বিজার भूनाका एथरक कक भाष्टारभ चीन क कारज বায় ক্রেন, তবে বাংলাদেশ ⁶চরকাল ফুডজ্ঞ-চিয়ে ভাদের দান স্মরণ করবে। নাট্যকার-দের সম্পক্তে শ্রীবন্দ্যোপাধ্যায় যে কথা ব.লছেন, তাঁর সংখ্যা আমি একমত।

শ্রীষন্দোপাধ্যায়ের সপো আমার আর একটি প্রস্তাব যোগ করার আছে: বাংসা সাহিত্যকৈ অবাজ্যালীদের মধ্যে প্রচার করতে হলে দক্ষ অনুবাদকের প্রয়ো-জনীয়তা আছে। সাহিতোর অগ্নগাঁতর মনা এর প্রয়োজনীয়তা অপব্রিসীয অনুবাদক নিষ্ঠার সংগ্যে একাঞ্চ করে शास्त्रा अथन वहर विरमणी यन्धर् निष्क বাংল। সাহিত্যকে ভালবেসে বাংলা থেকে থন,বাদ করছেন। অনেকে আর্থাভাবে ভাল অন্বাদ করতে পারছেন না। ভাগের জনাও সর্বায় যা প্রকাশকলান্ডলীকে একটি বা করেকটি প্রেম্কার ঘোষণার জন্য অনুরোধ ভানাজি। অন্যান্য ভারতীয় ভারার দিকে তাকিয়ে দেখবার অনুরোধ করি—তারা কৈ করছেন। কোন বিদেশী সেই ভাষার আগ্রহ প্রকাশ করলে তাঁকে স্কলারণিপ দিয়ে নিয়ে आन्द्रहरू का खावा थ्यांक जन्द्रशास्त्र करा। হিলার কবিতার একটি অনুবাদ সংকলন প্রকাশের জনা একজন বিশিষ্ট ইংকেজ কবিকে দিল্লী'ত রাখা ছরেছে বহুদিন।

প্রীভারাগণকর বল্দ্যোপাধ্যারকে পরিপেবে আহার ধনাবাদ জানাই, তার এই সমারোচিত ভারণের জন্য। এ ব্যাপারে সভিসভাবে এগিরে এসে দাবী করবার জন্য সাহিত্য-দরশীদের করে আবেদন জানাই।

আলিস সান্যাস, লাশানক, সৰ্বভাৱতীয় কবি সম্মেশন, ক্লিকাতা ঃ ০২

মহামতি লেনিন

하다 성도 전에 있는데 보다 하는데 함께 하는데 하고 있는데 되고 있는데 하는데 그렇<mark>게 함께 되는데 하는데 되었다. 그리다 그는 그는데 하는데 그렇게 함께 되는데 하는데 되었다. 생각이</mark>어 되었다.

অম্ত পত্রিকার ৯ম বর্ষ, ৪থা খণ্ড, ১১ল সংখ্যার প্রকাশিত শ্রীব্র হারেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যার রচিত শ্রহায়তি লেনিনা প্রকটির নিজ্নোভ অংশটির (৮২০ প্র) প্রতি আপনাল দুখিত আকর্ষণ ক্লাহি।

"১১২২ সালে কমিউনিল্ট ইণ্টারন্যালমাণের চতুর্ব কংগ্রেসে গোনিন যে পাচজন ভারতীয়কে বিশাষভাবে নিমণ্ডল
জানিয়েছিলেন ভারা হলেন মানবেগ্রনাথ
রার, প্রীপাদ অন্ত ভাগেন, নাগিনী গ্রুণ্ড,
স্ভাষ্চন্ত বস্তু ও চির্বজন দাস (দেশব্যধ্র প্রে)

স্ভাৰচন্দ্ৰকে লেনিন যে বিশেষভাবে আলপুল জামিরেছিলেম, এই দ্রুজ সংবাদ প্রথম জানা গোল। কিন্তু এই প্রসংগা স্বাভাবিকভাবেই কৃত্ৰণ ুলি श्रम कारगा প্রথয়ত-লেমিনের স্পা স্ভাষ্চদের ব্যক্তিগত পরিচয় ছিল কি? থাকলে, তা কোন পর্যায়ের ছিল? দ্বিতীয়ত-লেনিনের সংশ্যে, তাহলে লেনিন কোন কারণে স্ভাষ-চম্দ্রকে বিশেষভাবে আমন্ত্রণ জানিয়ে-ছিলেন? তৃত্বীয়ত-মাক'সবাদের প্রতি স্ভাষ্চলের কিন্তুপ মনোভাব ছিল? চতুথ'ড-১৯২২ সালে স্ভাৰচান্ত্র বয়স খুবই অলপ ছিল। স্তরাং স্ভাষচশের বোন রাজনৈতিক চিম্তাধারায় উদ্বাদ্ধ হয়ে লেনিনের মত নেতা তাঁকে বিশেষভাবে জানি:য়াছিলেন ? ্যামন্ত্রণ MUNITE স্ভাষ্চন্দু আলোচা কমিউনিশ্ট ইন্টার-ন্যাশনালের চতুর্থ কংগ্রেসে যোগদান করে-ছিলেন কি? যদি করে থাকেন, তাছ'ল তার বিশদ বিবরণ প্রয়োজন। মতত-মাদ স্ভাষচন্দ্র উভ্ত কংগ্রেসে যোগদান না করে থাকেন, ভাহলে ভার কারণ কি সভোগ-চাল্যুর অসমুক্থতা, না, ব্টিল সরকারের পাসপোর্ট নামজনে করা, না, উত্ত সভার যোগদানে তাঁর ব্যক্তিগত অনিজ্ঞা?

এ সদৰ্শেধ কোনও প্ৰায়ালা প্ৰভংকর অফিডছ জানা না থাকার, শ্রীবৃদ্ধ হীরেপ্তন থ মংখোপাধায়কে আপনারা পতিকা মারফং এ বিষয়ের বিশ্বদ বিবরণ জানাতে অন্রোধ করছি।

আমিতাভ রার : কলফাতা-৪।

मारथव स्मना

ক্ষমণ। ধানে পড়া গ্রামণি-সমান্দ স্ক্রেভাবে রূপ পেরেছে 'মুখের মেলায়'। অমাতের সম্ক্রাত এই বিভাগ নিঃসন্দেহ অপুর্ব সংযোজন। 'বাংলার ভর্গতম নতুন দেখক আবদন্ত ক্ষমান' সাহেব গ্রাম- বাংলার অতৈর খবরা-খবর শানিতে বে অভ্তপ্র পারদশী তা তার এ সংখ্যার প্রথম লেখা 'মোমিন কু'লোর সংসার' প্রমাণ করিয়ে দের।

চটকলের চাকরি চলে বাপ-বেটার যাওয়াতে 'মোমিন কু'লোর সংসারের' বে শোচনীয় পরিণতি হল তা নগরসভাতার ছা-পোষা মান্বের কাছে চিন্ন-কচেনা হলেও আমরা বালা গ্লামাণ্ডলের বাসিন্দা, আমাদের কাছে এ সমুষ্ঠ অচেনা নর। **ডবে** এই সকল মান্তের মুখছবি সাছিতের भ्कांत्र कर्ताहर प्रत्योह। साह निक श्राटक তাবশ্য এরা অচেনা এবং চির-**জনেনা।** 'যারা আমাদের কাছের মান্ত্র জবচ চিল্ল-অচেনা, গ্রাম-বাংলার সেই অগগৈত সাধারণ मान्यपत्र' हिनिद्य दश्यात दयक्तिन हासिक নিয়েছেন আবদ্যল জন্বার সাহেব, তার करमा छौटक 'भूगात्रकवाम' कामादे। अवर চিরণ্ডন সাহিত্যে তার প্রতিভার **সরগতি** কামনা করি।

লায়লার জন্যে মনটা কেমন-কেমন করছে। অন্য ভাষাভাষী এক মুসলমান কণাইরের সংগ্য তার বিবাহে বাধা অনুভব করছি। পরিপ্র-সমাজে লারীর সতীত্ব যে নেহাৎ 'মাটির পর্যুক্তরা' জ্য আলোচ্য বিভাগে প্রায় চোখে আঙ্কে লিয়ে দেখানো হ'য়েছে।

জন্মর সাহেবের মুখের **মেলার'** আরো নতুন মুখ দেখবার জন্মে **ভারতে** প্রতীক্ষা করছি।

> ञारकप**्न श** २**८ शवशन्**

(\$)

প্রথম বারই রং-এর তুর্বা। **মৃত্যের** মেলায় (অমৃত ১৭**ই বৈশাৰ ১৩৭৭)** মোমিন কু'জোর সংসারের যে বাস্তব চিত্র জন্বার সাহেব একেছেন, সভাই তা হারদ্ধ দপশী। প্রাম বাংলার চাষী, মজার, সেহ-নতী মানুষের দৈনিক্স বে'চে থাকার যন্ত্ৰণাকে কেন্দ্ৰ করেই ডিনি ভার স্থান চালিয়েছেন। আর ক্রেক্টি মার **অভিভেই** ফ্টিয়ে তুলেছেন একটি নিখ্ভে ক্ষেত্ৰ। ভাষায় রং-এর চমক আর চাকচিকা লা খাক, নিতাশ্ত সহজ, সরজা কথার আঁকা হাবিটি মনে করিয়ে দের হান্পব্যাক কৰে দট্র-ড্যামের' এ ৰেন একটি **করে সংস্করণ।** আশা রাখহি আব্দুল জাব্দার গ্রাহের এ'রকমের আরো অনেক ছবিই সমতের পাঠকদের উপহার দেবেন। আয়ু একন্য অমতের কর্তৃপক্ষকেও ধনাবাদ।

> —চিত্তনজন কৰ'কাৰ ক্লিকাডা—এই

मानास्थ

প্রকৃতির অমোঘ বিধানে এই রাজ্যে খর ও বন্যা পালাক্রম উপস্থিত হয়। ফলে, বিধাতার রুদ্রোমে একল্রেণীর মান্বের কণ্টের অবধি থাকে না। সরকারী প্রচেম্টায় সারা বছর ধরে থরার ও বন্যার জন্য রিলিফের কাজ চলে। বন্যাকে কিভাবে নিরব্রণ করা যায় তার জন্য পরিকল্পনা রচিত হয়। ঢিমে তেতালায় কাজও কিছ, किष्य एव। जात अकठो श्रवम वना। ना আসা পর্যন্ত বন্যা-নিরোধ প্রকলেপর কাজ আদৌ কিছ, হল কিনা তা বোঝা সম্ভবপর হয় না। থরার বেলায়ও তাই। অবশ্য বনারে কোন সংজ্ঞার প্রয়োজন হয় না। তার সর্বগ্রাসী রূপ দেখে ক্ষতির পরিমাণ যাচাই করা খুব কঠিন নয়। কিন্তু খরার বেলায় সেটা পরুরোপর্রি নির্ধারণ করা খুব কঠিন হয়।

খরার কোন স্থানিদিন্ট সংজ্ঞা जा:ह কিনা জানি না। বৈশাখ জৈছি মাদের দার্ণ অণিনবাণে যথন সমুহত জলাশয় শ্বিয়ে উঠে আর স্পো স্পো বৈশাশীর আকাণ্ক্রিত বর্ষণ বিলম্বিত হয় তখনই সকলে ভীষণ খরা হয়েছে বলে চীংকার করে ওঠে। সমদশরীর বস্তব্য হচ্ছে খরা তখনই বলা উচিত যথন সমস্ত জায়গায় মৌসুমী বায়; প্রবাহিত হয়ে বুল্টি নামে অথচ একআধটা পকেটে भ्वम् विषे বিরাজ্মান। মার্ত শ্ভদেবের বর্তমানে যে খরার কথা বলা হচ্ছে তাক তাপ**প্রবাহের ফল বলা যেতে** পারে। কাঞ্জেই বলছিলাম পর্রুলিয়া ও বাঁকুড়ায় বতমিানে যে তাপপ্রবাহ চলছে তাকে মনে হয় "फ्राউटे" वला ठिक नग्र।

কেউ হয়ত মনে করতে পারেন "ড্রাউট" । বললেই বোধহয় সেই তাপদণ্ধ অগুলের চর-ব্ভুক্স মান্যগ্রেলা রিলিফের সাহায্য । প্রসা থেকে বণিত হয়ে যাবে। সমদল । বার তথাকথিত টেন্ট রিলিফ, গ্রেট্ইশাস রিলফ ইত্যাদির বাবদ্ধা কবিলাকে করা দেয়ে এমন একটা ববদ্ধা কর্মকর করা হোক যাতে সেই অভিশণ্ড মান্যগ্রেলাকে চরকাল ধরে রিলিফের অনগ্রেহপ্ট হয়ে ছবিন্ধারণ না করতে হয়। রিলিফ বাবদ্ধা মালত অতীব বেদনাদায়ক ও আত্মসম্মান ছবিনকর। অনেকেই হয়ত জানেন না তি আর মা ভি আর কিঃ টি আরে সাহায়

পাওয়ার জনা দুই বান্ধিক ১০০ খনক্ট মাটি কটিছে হবে। অর্থাৎ রাস্তার কাজ কিন্দা অন্য কোন প্রকুর ইত্যাদি সংস্করণের কাজ করলে ও ঐ পরিমাণ মাটি কাটবার পর ঐ দুই ব্যক্তি ১১৫০ গ্রাম করে গম পাবেন। প্রেলিয়ার ও বাঁকুড়ার এই বাবস্থা চলছে। আর "জি আর" হচ্ছে একটি পরিবারের প্রধান পনেরো দিনে একবার চার কেজ করে গম জি পাবেন। পরিবারে বলতে পাঁচজনের ইউনিট বোঝার। আরও উল্লেখ করা দরকার, "টি আর" এর যে গম দেওয়া হয় তা সরকারের নয়। আমেরিকার "কেয়ার" নামক সংস্থার।

প্রে,লিয়া বা বাঁকুড়ার পাথর মাটির ১০০ ঘনফাট মাটি খরার দিনে কাটা নিশ্চয় মামুলী ব্যাপার নয়। শ্রহ মাটি নয়, তদ্বপরি অনাহারক্রিণ্ট অশক্ত মান্য। শাবলৈর হা পড়ার সপো সপ্রেই পাথারে মাটি থেকে ঝিলিক দিয়ে আগান বেরোয়। আর এই অসহ্য গরমে ΩŽ স্দুঃসহ পরিশ্রম করে কোন সংস্থ সবল মান্যকে পর্যাত অধিক মজাুরীর লোভ দেখিয়ে **এ কাজে নিষ**্ক করা সম্ভব নয়। অথচ এখন সেখানকার সংবিধান স্বীকৃত মর্যাদাপূর্ণ নাগারকদের পেটের জনালায় এই অণ্নিস্তাবী দিনে (মান্ম যেখানে ঘরের দরকা জানালা বন্ধ করে দিবানিদায় মশগলে। মাঠে-ময়দানে 'টি-আর'-এর বাব্দের কাছে ধনা দিতে হচ্ছে। কারণ তাদের ব'চতে হবে। কে জানে তা নিজেদের জনাই কিনা! হয়তো নেতাদের ভোট দিয়ে বিধানসভার সদস্য কিম্বা মণ্ট্রী হওয়ার জন্যই বাঁচতে হবে এদের। মনে করবেন না "টি আর"-এর যে নগদ টাকা ও গম দেওয়ার বাবস্থা আছে সেটাও ঠিকমত কাজ করতে পারকেও ঠিক ठिक स्थाल। সমদশী বলতে চায় না, সরকারী কর্মচারীরা কারসাঞ্জি করে এই म_ाः≈व बन्नाटक ठेकात। তব, कि य হয়ে शां कि करत रयन हिमान स्थल ना। यात যা পাবার কথা তা পার না। খরাক্রিণ্ট অণ্ডলে গেলেই শোনা ষায় সে অভিযোগ। সে কথা যাক। একটা অসমর্থ পরিবারকে ১৫ मित्र ८ किन गर्म मित्र जिल्ल जिल्ल ম্ত্যুর দিকে এগিলে দেবার নৈতিক বা আইনগভ অধিকার সরকারের আহে কিনা-

এই প্রশ্নটি আজকে পশ্চিমবাংলার বিদশ্ধ জনসাধারণের কাছে তুলে ধরতে চাই। শ্ব্ব তাই নয়, সমস্ত রাজনৈতিক দল— কি বামপন্থী কি দক্ষিণপন্থী-সকলেরই কাছে নিবেদন করছি এই প্রশ্ন। দেখা যাছে গত বাইশ বছরে কংগ্রেস কি যুক্তফ্রণ্ট সবরক্ষের সরকারই পশ্চিমবাংলায় কম বেশি সময় রাজত করে গেল। কিন্তু রিটিশ আমলে যে রিলিফ ম্যান্যাল তৈয়ার হয়েছে তার পরিবর্তানের জন্য কোন প্রচেণ্টা অদ্যাবধি হয় নি। শৃধ্ বক্তার ধ্যুক্ত ল স্টেট করে সমস্যাকে এড়িয়ে যাওয়া হয়েছে এবং একে অপরের কাঁধে নেষ চাপিয়ে নিজেকে "দেবদতে" বলে জাহির করার চেণ্টা হয়েছে। চার কিলো গম পাওয়ার পর বাঁকুড়ার বা প্রে,লিয়ার অখ্যাত গাঁথেকে কোথায় এবং কাকে দিয়ে যে সেই গম ভাঙানো হবে তার কোন ঠিকঠিকানা নেই, আবার সেই চার কেজি গম থেকেই 'সমস্ত কিছাুর ব্যবস্থা করাত হবে। বর্তমানে যাঁরা শহরে প্র**িন**য়ত দাবীদাওয়ার সনদ দেখতে পালে তারা একবার এই হতভাগা ভারতের বধানের মর্যাদায় পুষ্ট নাগরিকদের কং তাবনে ত?

হালফিল অনেকেই লক্ষ্য করেছেন কিম্বা সংবাদপটের স্তম্ভে দেখেছেন, জিনিসপতের লাম বেড়ে যাওয়ার লোকেরা অনাহারে বা অর্ধাহারে কাটাচ্ছে। কিম্তু আসলে কি তাই। ΩŽ দেখনে না প্রেলিয়া বা বাঁকুড়ার পীড়িত অণ্ডলে চালের দাম ১.৩০ থেকে ১.৪০ এর মধ্যে। এই চালের দাম কোলকাতায় বজায় থাকত তবে কোলকাতার নাগরিকরা উধর্বাহ 572 ন্ত্য করতেন না? ঐ সমস্ত - খরাগ্রুত অঞ্চলে জিনিসের অভাব আছে এমন নয়. ষার সবচেয়ে বেশী অভাব সেটা হচ্ছে রজত মাদ্রার। অর্থাৎ লোকে বেকার। টাকার মুখ কেউ দেখতে পায় না এবং সেইজনো চলছে অভাব। আর সেইজনোই খরার প্রচন্ডতার মাত্রা প্রতিমূহ্তে লোক উপ-লিখ করছে। কেননা থরা না হলে চাম-বাসের কাজেও গরীব লোকেরা কিছ, টাকা রোজগারের পথ পেত।

দেখা বাচেছ, প্রতি তিন বংসর অন্তর খরা আনুসছে। এজন কি কোধাও কোধাও



ফি বছরও আসছে। অন্র্পভাবে আসঙে বন্যা। আর এ সমস্ত প্রাকৃতিক দুর্যোগ যখন ঘটে তথন সরকার আর রাজনৈতিক দলের পোয়া বারো। কে**উ** বা জনসেবার খাতিরে আর্ড চাংকার করে চালটা-টাকটো পাইয়ে দিয়ে ভোটের সংখ্যা বাড়াবার নেপথে প্রচেষ্ট চালায়। আর সরকারী কর্মচারীদের ত কথাই নেই। গোমদ্তা ষেমন ভামদারবাড়ীর বার মাসের তের পার্বন লাগিয়ে রেখে নিজের আনন্দ বর্ধন করে, তেমনি প্রাকৃতিক দ্বেগিগ নেমে আসলে কম'চারীরা কাজ করবার মত বা জাতীয় সেবা করার বিশেষ সংযোগ পান নিজেদের আনন্দ বর্ধন করেন। অথচ কি রাজনৈতিক, কি সরকারী কোনো স্তরেই যাকে বলে 'সিরিয়াস' এমন কোন প্রকলপ রচনা করার চেণ্টা হয় না। ফলে ঐ সমস্ত অভিশৃত এলাকার মানুষের একটা কিছু **= থারী** উপকার্ও হয় না। অর্থাৎ থরা আসাক আর বন্যা আসাক, নিজের অর্থ-নৈতিক অবস্থার উপর নিড'র করে সেই ক্লিট মানুষ অদম্য উংসাহে বাঁচবার **লড়াই চালিয়ে যে**তে পারে না। প্রেবলিয়া **পশ্চিমবশ্যের অণ্তভুত্তি হয়েছে ১৯**৫৭ লালে তাথাঁৎ এক যুগের চেয়ে এক বছর **আগে। আর প্রতিবারে**ই এই জেলার থরা-ক্লিট অঞ্চলকে সাহায়া মারফং নগদে ও জিনিলে সাহাত্ত দেওয়া হয়। জ:না তার অদ্যাবধি অখাৎ বর্তমান ধরার প্রে মহেতে প্রতিত দুই কোটিরও অধিক টাকা अब्रवाणिक नाम करत वन्तेन क्या रसारह। এবারও ইতিমধ্যেই নাকি ১৫ লক টাকা বণ্টিত হয়ে গেছে। কিন্তু খরাকে যুঞ্চবার জন্য যে দঢ়ে প্রামীণ অথ'নীতির বনিষাদ তৈরী করা দরকার সেদিকে কোন নজর দেওয়া হচ্ছে না। নয়া শিক্স খোলা বা সেচের ব্যবহণা করে জমির উর্বরা শত্তি বাডিয়ে উৎপাদনের দিকে নজর দেওরার कान एक्कोर प्रथा याएक ना। जाएकाहना কর্ম, দেখবেন লেকচার দিয়ে আপনার মাথা ঘ্রিয়ে দেবে। কিম্তু পরিকল্পনা কার্যকর করতে বলান, অমনি উত্তর আসেবে টাকা কোথায় পাওয়া যাবে। এই রিলিফের জন্য ফি বছর এত টাকা কোথা থেকে আস্ত্রে? এ প্রদেশর জবাব কে দেবে। অন্-সম্ধান করে দেখনে প্রায় এক জায়গাতেই বছরাশ্তর থরা হচ্ছে। আর অন্র্পভাবে কিছ; জায়গাতে বন্যাও হচ্ছে। সাইক্লিক অডারেই সব ঘটনা ঘটছে। কোন ব্যতিক্রম নেই, যদি রাজনৈতিক দলগালি 'সিরিয়াস' হত তবে দীর্ঘ ও স্বল্পমেয়াদী পরিকল্পনা করে এই খরার মোকাবিলার জনা সাথকি প্রচেণ্টা চালানো যেত। কিম্ত তা হয়নি। বামপশ্বী হউন আর দক্ষিণপশ্বী হউন সকলেইর সমাধানের ধরন ছিল একই রকমের। দুগ্টিভংগির কোন ডফাৎ অন্ততঃ রিলিকের প্রখন অদ্যাহধি দেখা বার্যান। সকলেই আমেরিকান 'কেরার'এর টি গম দিয়ে ভোটসংখ্যা বৃশ্ধির চেন্টা করেছেন

সংবাদপতে প্রায়শ দেখতে পাবেন টেস্ট বিলিক্টের মাধ্যমে অমূক জারগার এত দীর্ঘু

রাস্তা তৈরী হয়েছে। প্রের ও ক্রো খনম করা হয়েছে। পরে, করা বা বাঁকুড়ার বতমান খরাক্লিণ্ট অঞ্জ অন্যাব্ধি প্রতিবার খরার সময় যত পঞ্জের বা ক্য়ো খনন করা হয়েছে তার লিন্ট যদি কেউ জোগাড় করতে পারেন তবে সেখবেন ঐ থরাক্লিম্ট অণলে এত খে'ড়াখুড়ি হয়েছে বে তার ফলে নিদেনপকে ২২টি সংয়েজ ক্যানে**ল** হয়ে গেছে। কিন্তু গিয়ে দেখনে তাঁর চিক প্যক্তি পাবেন না। অর্থাৎ প্রতিবারই সব কিছ; হয়, কিন্তু নিতান্তই **দায়সার**। গোছের হিসাবে কাজগার্লি সম্পন্ন করা হয়। ভবিষ্যাতের জন্য যাতে কাজে না লাগে এই প্রকলপগর্লিকে সেইভাবেই র্পায়ণ করা হয়। আর মহাকরণ থেকে টাকার **অভেক** , হিসাব বের হয় যে থরাক্রিণ্ট অণ্ডলের জন্য মহান্ডৰ সরকার অদাবিধি এত কোটি টাকা বায় করেছেন। জনতাও ওদিকে বাছবা, বাহবা দশপাল বলে উঠে। (যন্যার বেলাতে সেই বাঁধ, সেই খাল খনম ইত্যাদির ব্যাপারে কত টাকা খরচা **হল তার ফিরিন্তি** পাওয়া যায়। কোন ব্যতিক্রম হয় না।)

মোম্পা কথায় বলুতে গোলে একে বলে ধরা বা বন্যার রাজনীতি। এবং এ মাজ-নীতি চলবে। সমস্যার চিরতরে সমাধান করবার চেন্টা কোর্নাদন আলো হবে কিনা সন্দেহ। তা হলে জনতা নেতাদের প্রয়োজন সন্দেহে উদাসীন হয়ে যেতে পারে তো!

अध्या - नगर्य

মে মাসের দ্বিতীয় স্পতাহে মহারাছেরর ভিত্যাণিড, জলগাঁও ও আনান্য অঞ্চলে যে সাম্প্রদায়িক দাশা হয়েছে তার বিস্তারিত বিবরণ জান্ত পারার পর এখন এটা পরিকলের হয়ে উঠছে যে, এই দাশানি লিভানে প্রস্তৃতি ও পূর্বে পারকলপনা ছিল, যথেণ্ট হু'দায়ারি সঙ্গে এই দাশা নিবারণ করতে ও দমন করতে খালীয় কর্তৃপক্ষ বার্থা হয়েছেন এবং জাতীয় সংহতি পরিষ দর মাধামে দেশে সাম্প্রদায়িক সম্প্রীতি প্রতিষ্ঠার জন্য এয়াবহ যেসব চেন্টা হয়েছে সেগালি বার্থাতায় প্রযাবিষ্ঠা হয়েছে সেগালি বার্থাতায় প্রাবিষ্ঠা হয়েছে চেলাছে।

শ্বরাণ্ট্রমণ্ডী শ্রীয়াশোরণত রাও চারন লোকসভায় স্বীকার করে এন যে, জানোঁর সংহতি পরিষদ সাম্প্রদায়িক হানাহানি দমন করার জন্য যেসব প্রশাসনিক বাবদথা অবল্যবনের স্পারিশ করেছেন সেগ্রিত কাজ হয় নি, এখন সমগ্র জাতিকে সংখ্যা-লঘ্যদের রক্ষায় নিয়ন্ত্র করার উদ্দেশ্য সম্মত রাজনৈতিক দল কর্তৃক উপযান্ত্র পরিবেশ গড়ে তুলতে হবে।

লোকসভার এই বিতর্কে প্রবাদীয়ধ্বী একথাও বলেন্ডেন যে ভিওয়ান্ডিতে যে ধরনের সামপ্রদায়িক উত্তেজনা ছিল জল-কৃতিতে তাও ছিল না তব্বও যে জলগনিতে দাংগা হয়েছে তাতে সেখানকার প্রশাসনিক কর্তৃপক্ষের সমর্থনে তার কিছাই বলার নেই।

এই দাংগায় অন্যান্য ফেসব প্রতিজিয়া দেখা দিয়েছে সেগগলির মধ্যে আছে:—

কংগ্ৰেস দ(লব পাল্পামেন্ট সদস্যরা উদ্বিশ্ন হয়ে উঠেছেন। এর আগে **যথন আমেদাবাদে দাংগা হয়েছিল তথন** সেখানকার প্রশাসনিক কর্তৃপক্ষের বার্থাতার দায়িত্ব 'নয়া' কংগ্রেস দলের উপর আর্মেনি: কেননা, গ্রেজরাটের সরকার 'পরেনো' কংগ্রেস দলের হাতে। কিন্ত মহারাড্টের সরকার পরিচালনা করছে 'নয়া' কংগ্রেস দল, সতুরাং সেখানকার দাৎগার আগ্রনের আঁচ কিছা না কিছা এই দলকে স্পর্শ করবেই। দলের **এম-পি-রা এবিষয়ে অবহিত। বিশেষ** করে: তারা জানেন যে বোশ্বাই কপোরেশনে তাদের দলের সংগ্রােশবসেনার মাখামাথি অতঃপর দলের রাজনৈতিক মর্যাদায় আঘাত कत्त् कनना भशाताल्ये अहे मान्या राधा-বার মুখা দায়িত্ব শিবসেনা দলের উপরই এসে পড়ছে। (ম্বরাণ্ট্রমারী চাবন লোকসভায়

মধ্যে শিবসেনাকে দায়ী করেছেন, ধদিও তিনি সংখ্যা সংখ্যা কতকগঢ়ীল মুসলিম সংস্থার দারিছের কথাও উ**রেখ ক**রেছেন। ভাছায়া, প্রীচাবন শিবসেনা দলের তীর সমালোচনা করে বলে ছন যে. এই দল মহারাডেট্র প্রচণ্ড ক্ষতি করেছে এবং মানবিক ম্ল্যবোধ বলতে যা কিছ. বোঝায় ভার বিরোধী এই দল। ভারত সরকারের কোন মুখপার এর আঁগ আর কখনও সম্ভবত শিবসেনা দলের বিরুদ্ধে এরকম কঠোর ভাষা প্রয়োগ করেন নি।। নয়া' কংগ্রেস দলের কার্যকজন এম-পি প্রধানমন্ত্রী শ্রীমতী ইন্দিরা পান্ধরি সংগ্র দেখা করে সাম্প্রদায়িক পারিস্থতি সম্পকে ভারের উদ্বেগ জানিয়ে এসেছন। প্রকাশ, তারা প্রধানমন্তীকে এই প্রামশ দিয়েছেন যে, সাম্প্রদায়িক উত্তেজনার কারণ দার করে বিভিন্ন সম্প্রদায়র মধে। সম্প্রীতি প্রতিটো করার উদ্দেশ্যে কেন্দ্রীয় সরকারের একটি বিশেষ বিভাগ খেলো হোক। এইসব সংসদ সদস। প্রধানমন্ত্রীর কাছে । নলিশ করেছেন যে, সাম্প্রদায়িক সমস্যার মোকাবেলা করার জনা জাতীয় সংহতি পরিষদ তাদের বিগত কাধিবেশনে যেসৰ প্ৰদতাৰ করেছিলেন সেগ্লি কার্যকর করার ব্যাপারে রাজা সরকারগালির তর্ফ থেকে বিশেষ সাজা পাওয়া যায় নি। স্তেরাং এই সব সংসদ সদস্য মনে করেন যে, সাম্প্রদায়িক সম্প্রীতি প্রতিংঠার বিষয়টি বাজা সরকারগ**্লির হাতে** ছেডে না রেখে এবিষয়ে কেন্দ্রীয় সরকারকে আধিকতর প্রতাক্ষ দায়িত্ব গ্রহণ করতে হাব।

নয়া কংগ্রেস দলের পাণানোগটাবি
পার্টির সভায়ও বিষয়টি নিয়ে আলোচনা
হয়েছে। সেখানে সদসারা বিশেষ করে পার্টা-পা্শুতকগালের মধ্য দিয়ে ফেভারে ওর্গদের
ভিতর সাম্প্রদায়িক বিদেব্যের বিষ ছডি য়
দেওয়া হচ্ছে তার উল্লেখ করেন। একজন
সদসা সাম্প্রদায়িক দলগালির উপব
নিসেধান্তা আরোপের দাবী জানান।

পরেনে। কংগ্রস দলের চাবছন প্রতিনিধি দাংগাদ্পতি অন্তলগ্রিলতে গ্রে এসে একটি বিব্রিততে বলেছেন যে পদিও এখন গ্রাণ ও প্রেবাসনের কাজ ভালভাবেই এগাছে ভাইলেও মহারাণ্ট সরকার যে হাংগামার ঘটনাম্থলগ্রিলতে কার্যকরী ব্যবস্থা অবলম্বন করতে বাথ হয়েছেন সে বিষয়ে তারা নিঃসংস্পহ। 'প্রেনো' কংগ্রস দলের সাধারণ সম্পাদক শ্রীবেংকটস্ম্বায়া বংলছেন যে, সাম্প্রদায়িকতা মহারান্টেই দেখা দিক হথেবা অন্য কোন জায়গায় দেখা দিক সেটা ক্রটা ছাভীয় সম্সায় এবং এই ধরন্ত্রে দ্বভাগ্যজনক ঘটনা থেকে কোন পাটিরই সুবিধা নেওয়া উচিত নয়।

মজলিস-ই-ম্শাওয়ারতের উদ্দোগোগী তান্তিত ভারতের মুসলিম সংক্ষাগা্লির এক সভায় দেশের সাম্প্রদায়িক পরিম্পিতির সমাসোচনা করে একটি প্রস্তাব গ্রহণ কর হয়েছে। বলা হয়েছে যে, ভারতবর্ষে সংখ্যালঘ্ সম্প্রদায়ের উপর হামলা এবং ভ্রমাগ্র সাম্প্রদায়িক বিশ্বেষ প্রচার একট[্] স্চিণ্ডিত পূর্ব পরিকল্পনার অংশ। আমরা এই সিখ্যাদেত আস:ত বাধা হচ্ছি যে, পাইকারী মুসলমান-নিধনের একটা পরিকংপনা আছে', এই কথা বলে প্রুক্তাবে ভারত সরকারকে স্মারণ করিয়ে দেওয়া হয়েছ যে রাণ্ট্রসভের সদস্য হিসাবে গণ-হত্যা নিবারণ **করার জনা ত**াঁদের যে দায়িত্ব আছে সেটা যেন তাঁরা পালন করেন।

মহারাজ্যের এই দাংগার প্রসংকা রাণ্ট-সংখ্যে ভারতের বিরুদ্ধে ইতিমধোই গণহত্যার অভিযোগ এসেছে। অভিযোগকারী পাকিস্থান। প্রকৃতপক্ষে, পাকিস্থান ভারতের বিরুদ্ধে প্রচার চালাবার এই সুযোগ নিতে আদৌ কাপ'ণা করে নি দাংগার থবর বেরোবার সংখ্য সংখ্য নয়াদিল্লীতে পাকি-≻থানী হাই-কমিশনার দাবী করেন, তাংদেব প্রতিমিধিকে দাজ্যা-দুর্গত অঞ্জে সভের করার অন্মতি দিতে হবে। ভারত সরকার সেই দাবী প্রত্যাখ্যান করে ছন : . ENTER! পাকিস্থান বেতারে মহারাজ্যের াথক হয়ে ফলাভ करतः दला ছায়ছে । পर्गकभ्यासद সরকার সমর্থক যেসব দক্ষিণপশ্থী দল ভারতীয় মুসলমান,দং রক্ষা করার জন্ম অন্যান্য মুসলিম দেশগুলির সহযোগিতায় যৌথ আন্দোলন গড়ে ভোলার কথা বলছে তাদের সংবাদ এই বৈতার মারফং বিশ্তারিতভাবে প্রচার করা হ চছ। পাকিস্থান বেতারের খবরেই প্রকাশ যে, মারকের-এ-জম, শ-এ-উলেম-এ-ইসলাম নামক করাচীর একটি প্রতিষ্ঠান বলেছেন, দাংগাদ্বর্গত অঞ্জে মুসলমানদের দুশা দেখার জন্য **्वन्य**मा সম্মেলনের উচিত ভারতে একদল প্রতিনিধি পাঠান। পশ্চিম পাকি-প্রানের মুসলিম লীগ কাউণ্সিল পারিস্থান সরকারকৈ ভারতের বিরুদ্ধে গুণ্ছতাার অভি'্যাগ আনার প্রামশ দিয়েছেন।

মহারাভ্যের সর্বশেষ সংবাদ হচ্ছে, সেখানকার অবস্থা এখন শাস্ত। মে মাসের তৃতীয় সপতাহের প্রথম দিক পর্যস্ত অবশ্যা থানা, কোলাবা প্রভৃতি জেলার বিভিন্ন প্রান থেকে গ্রেদার, লাঠপাট, মারামারি ও খুনের

स्वादारम्भवारमंत्र केमकेश्वाक्षेत्रम्थान्यक स्तिकामिकिक महकादी निर्दालक विद्युल्य वात विद्यालक मृत्या।



থবর আসছিল। সর্বশেষ বে হিসাব পাওরা লেছে বে, এই দাপার মোট ১৫৭ জন নারা গেছেন।

ভিওয়াণ্ডির দাপার বেসব বিক্তারিত বিবরণ পাওয়া গেছে তাতে এখন ছানা যাজে যে গত ৭ মে তারিখে শিবাজীব ছন্মদিন উপলক্ষে সেখানে বে মিছিল বেরিরেছিল সেই মিছিলে কিছু লোক অনন্মোদিত ও আপত্তিকর ধর্নি দিয়েই এই দাপার অব্যবহিত কারণটি যুগিয়ে দিরেছিলেন।

ভিএয়াণ্ডি হচ্ছে মহারাণ্টের সবচেয়ে সমান্ধিশালী মিউনিসিপ্যাল শহর। বোল্বাই **শহর খে**কে ৩০ মাইল দুরে বোদ্বাই-আগ্রা সড়কের উপর অবস্থিত এক লাখ ৪০ ছাজার মান্বের এই শহরের পৌর-স্ভার বাহিক বাজেট ৮০ লাখ টাকা ভিওয়াণ্ডির এই সম্নিধর মূলে রয়েছে সেখানকার তাঁত শিল্প। সারা মহারাশের বত ্রতি রয়েছে তার অর্থেকই দেখতে পাওয়া যাবে এই ভিত্তরাণ্ডি শহরে। উত্তরপ্রদেশের ফোমিন মুসলমান তাঁতী ও অশ্বের তেলেণ্ ভিল্ম তাতীরাই প্রধানত এই সব তাঁত-भारताह काञ्च कर्त्वत । भारता श्रामनाभागतात य প্রাহান্য রয়েছে তার প্রমাণ, মিউনিসি-প্যালিটির ৩১ জন সদসোর মধ্যে ১৯ জনই মুসলমান। এই প্রমাণও আছে যে, তামির-ই-মিল্লাত নামক একটি সংস্থা শহরের হসেলমানদের মধ্যে কিছুকাল যাবং বিশেষ महिन्न करतरह। अन्तिमित्क, भट्रतत दिन्म्, भत

মধ্যে শিবসেনার প্রভাব বাড়ছে। এসব সত্তেও মোটাম,টিভাবে একথা সত্য বে, উভয় সংপ্রদায়ের স্থিরবৃদ্ধি লোকরা এয়াবং শহরে শাশ্তি বজার রাখতে সমর্থ হয়ে-ছিলেন। যেসব পালা-পার্বন উপলক্ষে শাশ্তিভগের সম্ভাবনা থাকে সেগর্কি যাতে নিবি'ছে৷ উদ্যাপিত হতে পারে তার रायम्भाभना कदात উप्प्यामा किन्द्रकाम यायर ভিওয়া-ডিতে স্থানীয় অধিবাসীদের একটি ক্মিটি গঠন করা হয়েছে। শিবাজী জন্ম-দিবস উদ্যাপনের ব্যবস্থা করা এই কমিটির একটি বিশেষ দয়িত্ব। কেননা, শিবাজী भम्भदर्द यामनयानसम्ब खानस्वत याथा এकरो। গ্রাভাবিক বিরূপেতা আছে এবং অন্যাদিকে জল্গী হিল্মুল শিবাজীর <mark>মধ্যে তাঁ</mark>দের ঐতিহাসিক নায়ককে দেখতে পান। এই বছরও শিবাজী জয়শ্তীর দিন ঐ কমিটি কতকগালি বিশেষ সভকতা অবলম্বন করে-

ছিলেন। কারা মিছিলের নেত্**ত করবেন** (উভয় সম্প্রদায়ের স্থানীয় নেতারা মাইকো-ফোন নিয়ে মিছিলের সামনে যাজিলেন), মিছিলে কি ধৰ্নি দেওয়া হবে (**ছ্চপড়ি** শিবাজী কী জয়', মারাঠীতে হিন্দ্-মুসলিম ঐক্যচা বিশ্বর আসো' এবং উদ্ভাত্তে ণ্ডুন্দু-মুসলিম ইত্তে**হা**দ জিন্দাবাদ'. মারাঠীতে 'ম্বত'র ভারতচা বিজয় আসো' এবং উদু'তে 'আজাদ হিন্দ জ্ঞিন্দাবাদ'. হিন্দভী পাদপাদশাহী সংস্থাপক ছবপত্তি িবাজী মহারাজ কী জয়' প্রভৃতি), মিছিলে কি পতাকা থাকবে (শুধু পতাকা, এমন কি শিবাঙ্গীর গৈরিক প্তাকাও নয়) সেসব কমিটি আগে থেকে স্থির করে রেখেছিলেন। কিন্তু মিছিলের শ্রেতেই বিভাট বাধল যখন ঐ মিছিলের পিছন দিক খেকে কিছঃ অননুযোগিত ও মুসলমান্দের প্রেক অবমাননকের ধর্নি দেওরা ছল। মিছিলের

अग्रतम

ভারতের কৃষ্টি ও সভাত। জানিতে হইলে অবশাই বেদ **পাঠ করিতে হইবে।** বর্তমানে বাংলা ভারার সমগ্র বেদ মালমলা, পদবিভাগ, অম্বর, অন্যাদ ও শব্দার্থানার বন্ধে ধণ্ডে প্রকাশিত হইতেছে। প্রতি খণ্ড তিন টাকা। প্রখ্যাত প্র-পাঁহকা ও পন্তিত্যান্ডলী কর্তৃক উদ্ভেশংসিত। অবিলম্বে গ্রাহক **হউন। বিস্তারিত** বিবরণের জন্য বোগাবোগ কর্ন-

প্রকাশক, বেদগুল্থমালা

२৯. जमानम रताङ, कनिकाणा-२७। **रकान : 8७-५७७%।**

নেভারা সতক করে দেওয়ার তথনকার মত
এইসর ধর্নিন বংধ হল বটে; কিন্তু মাইলথানেক যাওয়ার পর আবার সেসব শেলাগান
শোনা যেতে লাগাল। কিছু কিছু শেলাগান
লাকি এমন কুংসিত যে সেগালি ছাপানই
যায় না। এর মধ্যে অপেকাকৃত ভয় শেলাগান
হল হিন্দু ধর্মার জয় হোক।' (প্ররাভীমন্টী
চাবন বলেছেন, মুসলমানরা চোর' এই
শেলাগানও দেওয়া হয়েছে)।

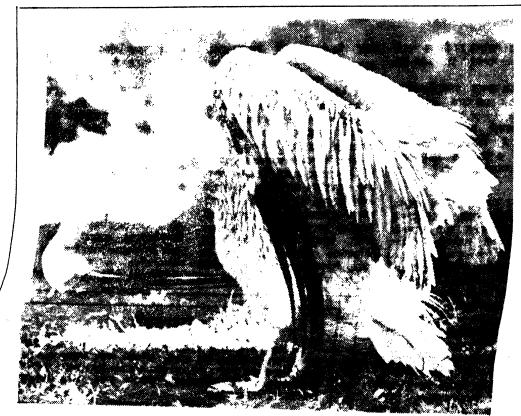
এই एनाशानरे इन উरवजनाद जान, কারণ। ঘটনার **যেস্ব বিবরণ পাওমা গেছে** তাতে প্রকাশ যে, প্রথম আক্রমণটা এসেছিল মুসলমানদের তরফ থেকে, পরে তারা নিজেরা এবং যথেন্ট ক্ষতিগ্ৰুত আক্রান্ত হয়েছেন হয়েছেন। যেসব সাংবাদিক **ঘটনাস্থলে** গিয়েছিলেন **তারা বলছেন যে**, উভয় সম্প্রদায়ের **লোকই যে এই দাংগার জনা** কতকটা প্রদত্ত ছিলেন তার প্রমাণ পাওয়া গেছ। একটি অনুমান এই যে, শহরের ২৫ হাজার **বাড়ীর মধ্যে শতকরা** ২৫ থেকে ৪০টিতে আক্রমণ অথবা আত্ম-রক্ষার মাল-মশলা মজ্ব । ছল। দাণগা বাধবার সংগ্র সংগ্র **যেভাবে মিছিলের উপর** আর্গিড বালব, বোমা ইত্যাদি এসে পড়তে আরদ্ভ করে তাতেই এই প্রেপ্রুস্কুতির কডকটা আভাষ পাওয়া যায়।

ভিওয়ণিতর দাংগা সম্পর্কে আর এইটি
খবর এই যে, ঐ শিবাজী জয়ল্টী মিছিলের
উপর মজর রাখার জন্য যে ৬০০ পর্মিলা
নিরোগ করা হয়েছিল তাদের কারের হাতে
লাঠি ভিন্ন অন্য কোন অল্য ছিল না
এবং দাংগার সময় তারা দাঁড়িয়ে দাঁড়িয়ে
দেখা ছাড়া আর কিছ্ করে নি। (প্রীচাবন
বলেছেন যে, ভিওয়ান্ডি শহরের সর্ম, সর্ম
গাঁলর মধ্যে যখন দাংগা চলছিল এখন
সশক্ষ প্রিলাণ্ড কিছ্ করতে পারও না)।

উড়িষ্বায় শ্রীবিজ্ব পর্টনায়ক ও তাঁর অনুগামীয়া একটি নতুন দল গঠন করেছেন। এই দল কোন সর্বভারতীয় দলের মণ্ডের থাকবেন। শ্রীপট্টনায়ক বলেছেন, যে, ভারতবর্ধের রাজনীতিতে এখন আর বলতবিকপক্ষে সর্বভারতীয় দল বলতে কৈছু নেই। তাঁর মতে, ভি-এম দের মত রাজাভিত্তিক দলের পক্ষেই ভবিষাং উজ্জ্বল। আপাতত তাঁর দলের নাম উৎকল্প প্রে মণ্ডের হতে পারে।

উড়িষায় শ্রীপট্টনারকের এই নতুন দঙ্গ পত্তন করার আগে 'নয়!' কংগ্রেস দলের সভাপতি শ্রীক্ষণজীবন রাম শ্রীপট্টনারককে, উৎকল প্রদেশ কংগ্রেস কমিটির সভাপতি প্রানিলমিণ রাউৎরায়কে ও কমিটির সাধারণ সন্পাদক শ্রীপি সি মোহাফিতকে দলের সদস্যপদ থেকে সাস্পাদক করেন এবং প্রদেশ কংগ্রেস কমিটিকে বাতিল করে দেন। তার্লাদকে, নারা কংগ্রেস দলের ক্ষণো যোগ ছিল্ল করে উৎকল প্রদেশ কংগ্রেস কমিটিও একটি প্রশ্তার মহেণ করেন।

রাজাসভার গড নিব'চেনের ব্যাপারে শ্রীপট্রনারক ও তাঁর অনুসামীরা 'নয়া' কংগ্রেস দলের কেন্দ্রীয় পার্লামেন্টারি বোডে'র সিম্পান্তের বিরুদ্ধে যে বিদ্রোহ ঘোষণা করেছিলেন তার জের **গ**ড়াতে গড়াতেই এত দ্বে গড়াল। উৎকলে এই বিদ্রোহের ফলেই সেথান থেকে দলের মনোনীত প্রাথী রাজাসভার নির্বাচনে হেরে গিয়েছিলেন এবং 'পারনো' কংগ্রেস দলের প্রার্থী সেই আসনটি লাভ করেছিলেন : কংশ্রেস ওয়ার্কিং কমিটি ও দলের কেন্দ্রীয় পার্লামেণ্টারি বোডেরি নিদেশি উৎকল প্রদেশ কংগ্রেস কমিটি বিষয়টি নিজেরা বিবেচনা না করে খেন তাঁদের উপর ছেতে দেন। উৎকল প্রদেশ কংগ্রেস কমিটি যথন তাদের এই নিদেশি লভ্যন করার সিম্পান্ত কর**লেন তখনই দেখা দিল চ**ড়োন্ড বিপদ।



প্রথম বর্ষণ নামার পর আলিপরে চিড়িয়াখানায় একটি পেলিক্যান।



আট বনাম ছয়

যুক্তফণ্ট বিল্ব হবার পর প্রান্তন চৌশ্দ শরিক ক্রমশই সমধ্যী দলগনুলোকে নিয়ে জোট বাঁধার চেণ্টা করছেন।
থতই দিন যাছে একটা বিষয় ততই পরিষ্কার হয়ে উঠছে যে, এই দলগ্লোর মধ্যে সতিয়কারের মিল থ্ব বেশি নেই। আদশের দিক দিয়ে দেখতে গেলে প্রান্তন যুক্তফশ্টের অনেক দলই হয় মার্কসিবাদ নয়তো গান্ধীবাদ অথবা সমাজবাদের অনুগামী।
মার্কসিবাদের নামে শপথ নিলেও দক্ষিণপন্থী কমিউনিল্ট এবং বামপন্থী কমিউনিল্ট পার্টির সম্পর্ক আদায় কাঁচকলায়।
দক্ষিণপন্থীরা বরং গান্ধীবাদী বাংলা কংগ্রেস কিংবা এক ধাপ ঝাঁঝালো মার্কসিবাদী সোস্যালিল্ট ইউনিটি সেণ্টার অথবা স্কুভাষবাদী ফরোয়ার্ড রকের সঞ্জো এক পাতে বসে খেতে রাজি। কিন্তু তাঁদেরই দল থেকে উল্ভূত মার্কসিবাদী কমিউনিল্ট পার্টির সংগ্র কোনোর্প সম্পর্ক রাখতে রাজি নন।

অনাদিকে মার্কসবাদীরা লেনিনবাদের নামে প্রতিজ্ঞা নিলেও দক্ষিণপথী কমিউনিস্ট, ও থাদের সংগ্য একদিন ছিল নাড়ীর যোগ, তাদের মুখদর্শন প্রায় বন্ধ করে দিয়েছেন। অথচ সকলেরই লক্ষ্য আবার সরকার গঠন এবং রাণ্ট্রক্ষমতার অংশীদার হওয়া। কমিউনিস্ট পার্টির সংগ্য অপর সাতিটি পার্টি মিলে মার্কসবাদী কমিউনিস্ট পার্টি-বিরোধী আট পার্টির একটি জোট বাঁধবার চেট্টা করছেন। বাংলা কংগ্রেসকে তাঁদের মধ্যে নেওয়া হবে কি হবে না তা নিয়ে এই মহলে সম্প্রতি জোর তক শুরু হয়েছে। পি এস পির যে-অংশ যুক্তমন্ট আছেন তাঁরা এবং এস এস পির একটা অংশ বাংলা কংগ্রেসকে আট পার্টির আওতায় রাখতে চান। এ নিয়ে আট পার্টির অন্যানা দরিকদের মধ্যে এখনও কোনো বোঝাপড়া হয় নি। বাংলা কংগ্রেস নেতা অজয় মুখোগাধায় গ্রামে-গ্রামে মার্কসবাদীদের বিরুদ্ধে প্রচার চালাছেন। অন্যানা দলের কর্মপন্থা সঠিক বোঝা যাছে না। আসলে তাঁরা আবার একটা বিকম্প ফ্রন্ট গঠন করে মন্ত্রিসভা গঠন করবেন অথবা নির্বাচনের জন্য আম্পালন করবেন এ সম্পর্কে সিম্বাদেত না আসাতেই নিজেদের মধ্যে বিল্লান্তি দেখা দিয়েছে। অজয়বাব্ বলছেন মার্কসবাদীরাই সব নন্টের গ্রোড়া। ও'দের সক্তো তিনি আর কোনো ফ্রন্ট করবেন না। কংগ্রেসীদের তিনি বাংলাদেশে ক্রন্স করেছেন। মার্কসবাদীদেরও তিনিই জন্ম করবেন বলে অজয়বাব্ মনে করেন। আট পার্টির অন্যানা লল অবশ্য এত স্পর্ট করে এই কথাস্বালা বলতে পারছেন না। মার্কসবাদীদের বাদ দিয়ে মন্ত্রিসভা গঠন করতে হলে প্রভাক্ষ বা পরোক্ষভাবে কংগ্রেসের সাহায্য নিতে হয়। এই ব'্নিক এ'রা কেউ নিতে চাইছেন না।

মার্কসবাদীরা অবশ্য চুপ করে নেই। কিন্তু এবাও পশ্য কোনো কর্মপথা দেখাতে পারছেন না। ওবা যেহেতু বৃহস্তম দল এবং ব্রুক্তন্টের আমলে এ'দের ক্ষমতাও খুব বেড়ে গিরেছিল তাই এ'রা আশা করেছিলেন যে রাজ্মপতির শাসন প্রবিতিত হলে জনসাধারণ বিক্ষুপ্থ হয়ে বাপেক আন্দোলন গড়ে তুলবে। কিন্তু কার্যত তা হল না। একদিন হরতাল বা জনসভা করলেই গণ-আন্দোলন হয় না। এ ধরনের আন্দোলনের ধারও কমে গেছে। কেরলেও ও'রা আশা করেছিলেন যে অচ্যুত মেনন মন্দ্রিসভাকে গণ-আন্দোলনের চাপে পদত্যাগ করতে হবে। কিন্তু তা হয় নি। কেরলের পরিস্থিতি থেকে মার্কসবাদীরা কিছ্মণিক্ষা নিয়েছেন কিনা জানি না। তাঁরা সমধ্যমী আরও পাঁচটি দল নিয়ে একটি জোট বৈধ্যেছেন। এ'দের সপ্পো রয়েছেন প্রান্তন পাঁচটি দল ওরাক্ষার্কার পাঁটি আর সি পি আই-এর একটি অংশ, বলগোভিক পাটি এবং বিশ্ববী বাংলা কংগ্রেম। এ'রা যুক্তফুন্টের পুনরুক্তনীবন চান না। অবিলন্ধে নির্বাচনের জন্য সি পি এমের নেতৃত্বে এ'রা গণ-আন্দোলন গড়ে তুলবেন বলে সিম্পান্ত নিয়েছেন। আট পাটির শরিকরাও বিক্তপ ফুন্টের কোনো আশা নেই দেখে নির্বাচনের দাবীতেই আন্দোলনে নামবেন বলে জানিয়েছেন। উন্দোশা যখন এক তখন এ'দের মধ্যে কোনো সংহতি না হওয়ার কারণ হল পারস্পবিক বিরোধ এবং অবিশ্বাস। তাতে আশব্দা হয় যে, যুক্তফুন্টের আমলে যে বিরোধ বাংলার রাজনীতিকে কল্মিত করেছিল আট ওছরের জোট আবার সেই মারাত্মক রেযারেরির মধ্যেই রাজনীতিকে টেনে নামাবে। রাজ্মপতির শাসন দীর্ঘকাল থাকুক এটা কেউ চান না। কিন্তু নতুন নির্বাচনের জন্য উপযুক্ত পরিবেশ গড়ে না ভুললে জনপ্রতিনিধিছ্মন্ত্রক সরকার গঠনের আশাও হবে সুদুর্পরাহত।

নিশিকাত

তোমার মন্দির মাঝে, হে স্ক্রের, অর্থরিপে ধরা এ-সন্তার সব কিছ্—তিলে তিলে সমপ্ল করা ঃ প্রতি পল, প্রতি কণা, প্রতি অণ্ম, প্রতি পরমাণ্ম, মনের ভাবনা যত, জীবনের প্রত্যেক জীবাণ্ম, পরম সার্থক তারা; হোক তারা যত অকিণ্ডন, হোক জ্বান, হোক খ্লি, তব্ তারা লভে উল্ভাসন অপার-দ্যীণ্ডর মাঝে।

জ্যোতির্ময়! মন্দির তোমার পরশ্রমানিক দিয়ে গড়া সে যে, পরশে তাহার র্পান্তরিত হয় যাহা রয় তার বক্ষ পরে; কালের অংগর্নল তারে পলকেও স্পর্শ নাহি করে, যায় তার সব শংকা; সে পরশে ভালো মন্দ আর আঁধার তালোর শ্বন্দ্র প্রজ্বলিয়া হয় একাকার; সেথায় জীবন লভে মরণের মলিন বাতাস, সে যে চির-স্কুদরের অস্তহীন জ্যোতির আবাস। প্রিয়তম!

যত দিই, যত আমি করি সমপণ, ততই নির্মাল হয় ঘোর দ্লান মতের জীবন ঃ
শ্ভাতার তারা সম, কল্বের কালোবিন্দ্বগ্রিল
ফাটে ওঠে পলে পলে; মানসের ধ্সর-ভাবনা
প্রভাতের মেঘসম হয় চির-লাবণ্যের সোনা;
প্রত্যেক মৃহ্তে মোর মৃতে হর আশ্চর্য-বিকাশে ঃ
উল্ভাসে অচিন্তা উষা, অভিনব সন্ধ্যালোক আসে,
সত্যের সৌন্দর্য লভি জাগে মোর দিবস-শর্বরী,
মোর ধমনীর প্রতি রক্তকণা ওঠে র্পান্তরি'।
হে স্ক্রের প্রিয়তম!

হে ভাস্বর, তুমি যে পাবক!
পরশে প্রোক্জনল করো যা তোমায় অর্ঘ দেওরা হোক;
তাই আমি যাহা দিই হিরন্ময় বহিং সম জাগে—
উদয় অস্তের পারে আরতির দীপ জনলি রাথে
তোমার মন্দির মাঝে চিরন্তন-শিখার লীলায়;
তাই মোর প্রতি কথা আনন্দের উৎসবে মিলার,
শান্বত জ্যোতির মন্দ্রে ঝাকারিয়া ওঠে মোর বাণী।
জনি আমি জানি, প্রিয়!

আমি মর্তাধ্বির আধার তব্ব বে আমার মাঝে ম্তিরাছে মন্দির ভোমার ঃ আত্মার লাবণ্যলোক, প্রকাশের প্রেম-প্রারণ; সেথা অধিষ্ঠিত তুমি।

আর্ঘে তাই ধরি অন্কণ তারি পানে মোর গতি, জীবনের র্পান্তর চাই, তানি কাম পাই অনিবাণ পদীপ জনালাই।

मिरिफिक्त फार्यः अभि

সাম্প্রতিক যে কোল একটি দিনের কাল বেকে রাহি পর্যস্থ কোনাটা সেখা বিক।

TEN-

ব্র থেকে উঠতেই চোথে পণ্ডল,
হলন্পানী হকার খবর কাগজ দিলে গেছে।
অম পাতার বড় বড় ছরুদে প্রথম খবর ঃ
টুই রাজনৈতিক দলের সংঘরে তিনজন
নহত, সতেরজন আহত: তার ঠিক
লাতেই ররেছে, চন্দিল পরগণার অম্ব
লমে পাঁচ ল' একর বেনামী জমি উন্ধার।
লম্ম পালে বেকার যুক্তের আবহত্যা এবং
উক্তর ফলফাতার বিভাগবার দেখিরে দশ
লাকার টাকা ছিনতাই।

প্রথম পাতাখানা উল্টে যেডেই জেতর **থেকে** আলো অসংখ্য খবর বেরিরে আসতে লাগল। যথা, পূর্ব পাকিস্তান খেকে আবার দলে-দলে উম্বাস্তু আগমন। চতু**র্থ পঞ্চ**-বাৰিকী পরিকলপ্নায় মহারাভের জন্য লেখানে বরান্দ আট শ উনহাট কোটি টাকা লেখনে পশ্চিম বাঙলার ভাগে মার ডিন **শ' বাইশ কোটি টাকা। কলকাতা উল্লয়নের** श्री अधानमन्त्री ७ खाळमा क्रिमान्त्रकार्छ নতুন করে ধর্মা। চ**রু**রেলের বদলে আবার পাতাল রেলের জনপনা-কন্পনা : সমীক্ষার জন্য সময় চাই : কলকাতাবাসীকে ধৈর্য-ধারণের উপাদেশ। ইঞ্জিনীয়ার স্নাতকদের সমাবর্তন বজন। তাদের দাবী: ডিগ্রি চাই না, কাজ চাই। কলকাতা কপোলেশনের কয়েক কোটি টাকা ঘাটতি বজেট **পেল।** বেকারিছে পশ্চিম বাঙলার শীর্ষস্থান চাপদানির চটকলে ক্লোভার ঘোষণা, রিষড়ার কেমিক্যাল ফ্যাক্টরিতে লক-আউট, কলকাতা থেকে **শ্বম_্ক** কেম্পানীর হেডঅফিস প্রধানতরের চেণ্টা। ইত্যাদি ইত্যাদি।

খবর কালজে আজকাল আর কোন গহস্য মেই। সারা গারে প্রার একই হবি একে রোজ সকালে ভারা হাজিবা দিছে।

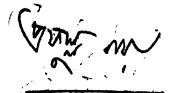
থবর কালজ শেষ করে এনেছি সেরে এসে জানাল, বাজারে বেতে হবে। স্কর্মন উঠে পঞ্চলম।

আন্দানের গলি থেকে বের্লেই সারি সারি বাড়িয়া দেওরালগানুলো আন অক্ত নেই; বিভিন্ন পাটির দেলালান থেরে আহে। দেলালানগুলো রোজই একরকন থাকে না; দু-চারদিন পরপর প্রনোগানুলো মুক্তে নকুন দেলালান লেখা হয়। প্রতিদিনই ওগুলো পড়তে পড়তে বাজারে বাই; আজও বাজি: বাদ্করের আন্ধান মতন এই শ্লোগানগ্লো বাঙলা-দেশের ইগানীংকালো নামারক্স রাজনৈতিক আলোকানের হারা বরে রেখেছে।

রাশ্তা ধরে থানিকটা এগিরে গেলে মোড়ের দাখার ফাটাচারের দোকান। অন্য-দিদের মতম আব্দও সেখানে গ্লেতানি চলহে। দ্বাচারকন বারুক লোক বাদ দিলে কুড়ি-বাইল বছরের একদশ যুক্ত করে আছে। সকাল থেকে মাধরাত পর্যান্ড চারের দোকানগ্রালা ওদেরই দধলে।

গুনের পরণে ডেন-পাইপ পাল্ট, চক্তর-চক্তর টা-লাটা, কোলরের জনার নিকে বেল্ট। বৈশিশ্টের জেজর গালের মাঝামাঝি পর্যাত স্পানিক মাজিগেটরনের মাজন মোটা জ্বালি।

শনানালের পাঞ্চারী ছেলে। স্বার মার লগাঁন মা; শুখ চিম। স্বর্পও কিছু কিছু জানি। স্কুল-কলেজে এক-আধজনের



নাম হরতো লেখানো আছে; তবে বার না।
বাদবাকি বারা, নেখানকার সংগ্রা সংগ্রা
নেই। চাকরি-বাকরিও করে মা। করবে কি,
আরাদের এই জন্তলে মতুম কোন কলকারখানা হচ্ছে না। যেগ্লো আছে, তার
বেশির জাগ কথা। বেগ্লো খোলা, সেখান
খাটাই, লে-অফ এবং বহুরক্মের অণাচিত।
গতএব ছেলেরা চারের দোকনি আশ্রর
করেছে।

প্রার্ট এনের মধ্যে দ্-দলে ভাগাভাগি
ছরে কিবো অন্য পাড়ার সংপা ওরা মারামারি লাগার! তথ্য বথ্যন্ত রড, ভাণ্ডা,
সোডার বোডাল এবং বোনার বাবহার চলে।
মিউনিসিপাল কি জেনারেল ইলেকসনের
সমর দেখা বারা, ওরা বিভিন্ন প্রার্থীর হরে
থাটছে। এনেরট কেউ কেউ, এবং এ পাড়ার
আরো অনেকে বারা এবানে বলে না, ভাদের
দেখি মাঝে মাঝে মিছিল করে মরনানের
দিকে চলেতে। সেই সমর্জী চারের দোভানে
ওদের দেখা বারা না, নিবভিনের পর জাবার

 का किर्य बारम । ममाबंबाक्किना मामा मन्दर्भ वरमाहरणम् अन्त स्वमारम्मन ? अपने कि?

সম্ভূপতে জন্মগাটা পান হলে বাজিলান; একটা হেলে সামনে এলে পথ জন্তে দক্ষিল।

मृत्य इति क्रिकेत वनन, 'नोतं, मृत्युत्रत्वना जानमात्र वाह्य वाद।'

ভরে ভরে ভিজেস করলাম, 'কেন?'

'তথন বলব।'

আর কিছু না **বলে বাজারে চ'ল** গেলাম। খি'চ লালার মডল ব**্রের ভেত**র একট্খানি শব্দা আটকে রইল। জামার কাছে ওলের আবার কী দরকার?

मृत्युत्त-

প্রায় সার্বাদিনট্ আমি বাড়িতে ধাকি। হয় লিখি নম পড়ি; ফিংবা আকাশেয় দিকে তাকিয়ে চুপ্তাপ বসে থাকি। দেখটে আন্যায় ভাবিকা।

দ্শের্বেলা খাওয়া-লাওয়ার পর সবে
লিখতে বর্সেছ, দরজার টোজা পড়ল।
খুলতেই দেখি, ভাক-পিওন। একটা খার
দিরে সে চলে লোল। চিঠিটা আরার মা
ভোট ভাইরের—একটা নামকরা প্রাইডেট
ফার্ম খেকে এসেছে। মালখানেক আলো কোট
ভাই এই কোম্পানিতে ইন্টারভিউ নির্মেছিল।
তবে কি চাকরিটা হরে গেছে? আশার এবং
উত্তেজনার থামের মুখটা ছি'ডে পড়ডে
লাগলাম। ভিরার সার, উই রিপ্রেট ট্...
অর্থাৎ 'অভীব দ্বেখর সন্পো জানাজ্য

এই নিমে গড় চার বছরে ছেন্ট ভাইপ্লের নামে বাইশবার এইবক্স চিঠি এক। ছব্দু এরা ভদ্রতা করে চাকরি না বেবার শবরটা জানেরছে। কিন্তু আরো দ্বুশ' বাইশ জারগার ছোট ভাই বে ইন্টারভিউ দিরেছে তার কোন খবরই নেই।

ছোট ভাইটা বি, এস-সি পাল করে চার বছর বসে আছে। এই মৃহুতে সে বাছি নেই। সকালবেলা উঠেই কোঝার বেরিরে গেছে। শানেছি, আজ বিকেলে মার্কি চাকরির দাবীতে এরা মিছিল করে মহাকরণের দিকে যাবে।

চিঠিটা রেখে দিরে **আবার লিখতে** বসলাম। আধ্যণটার মতম পার **হরেছে**; দরজার টোকা পড়ল। বির**ত হলেও খুলতে** হল। এবার চারের দোকামের সেই ছেলেটি তার পেছনে দশ-বারোটি সংগী।

জিন্তাস, চোথে ভাকানার। ছেলেটি
গলার ভেতরে জিভ কাত করে অক্তুত
উচ্চারণে তাদের দিককা ইডিজারে বা বলে
গোল, সংক্ষেপে এইরকম। ভিনারতি ব্যাপী
বিচিয়ান্টোনের ব্যবন্ধা করা হরেছে। বন্ধে
থেকে বড় বড় আটিক জালবে, অবেন্দী
ভাসবে, হান্য-কোত্তকা বন্দোকভ আহে।
আরু হবে বারা-উব্পর। ইনলবি ক্রেক্

সংস্কৃতির এই স্প্রাচীন বাহনটি আধা-থিরেটিকাল কিম্ভূত চেহারা নিরে নাকি জাতে উঠেছে। যাই হোক এইসব মহৎ কারণে আমাকে সামানা কিছু ডোনেশন দিতে হবে—মাত প'চিশটি টাকা।

দিনকয়েক পর-পরই ওরা চাঁদার জন্য হানা দেয়। উপলক্ষ নানারকম। কোনধার রবীন্দ্র-জয়ন্তী, কোনবার সরক্বতী-পুজো, কোনবার শিবরাতি।

এ-জাতীয় যুব-শক্তিকে চটানো কান্তের কথা নয়। অনেক কাকুতি-মিনতির পর পনের টাকার রফা হল।

ডোনেশন নিয়ে ছেলেরা চলে গেল।

विक्न-

সারা দৃশুর লিখে বিকেলে বের্লাম। রেক্ষই বিকেলবেলা বের্ই। কোনদিন গ্রুসস্গানেডে এসে বন্ধ্-বান্ধবদের সংগ্রুতা দিই। কোনদিন বাই কলেজ দুখীটে, বই-পাড়ার। কোনদিন বা পত্র-পত্রিকার অফিসে।

আছে এসংস্যানেও পর্যশত আসতে কম করে পনের বোলটা মিছিল দেখলাম। অজপ্র পতাকা তুলে অসংখা মানুন সারিবখতাবে শ্ধু হতিছেই, হতিছেই। মাঝে মাঝ অ্ভিবৈশ্ধ হাত আকাশের দিকে তুলে শেকালান দিছে।

মিছিলগ্লোর কোনটা ডক-শ্রমিকদের, কোনটা ছাতদের, কোনটা ব্যাংক কর্মচারীদের কোনটাতে বা স্দ্র বাঁকুড়া কি বাঁরভূম জেলার ক্ষাণ, গ্রাম থেকে এসেছে। সবারই কোন না কোন দাবাঁ আছে।

জল-কল্লোলের মতন শোনা বাচ্ছে, 'আমাদের দাবী—'

শানতে হবে, মানতে হবে।

'ইনকিলাব---'

'জিন্দাবাদ।'

রোজই বিকেলবেলা এসংলানেডের দিকে বেতে যেতে কত মিছিল যে দেখি। এ শহরে মিছিল ছাড়া একটা দিনও যায় না।

মনে পড়ছে, কে যেন বলেছিলেন, 'এ

শহর মিছিলের শহর, দুঃস্বশ্নের শহর।'

ভার নামটা এই মুহ্তে মনে পড়ছে না।

এসংল্যানেডে আস্তেই চোথে পড়ল,

মন্মেদেল তলায় মিটিং চলছে। উত্তেজিত
বন্ধার ক্ষ্ঠম্বর অসংখ্য লাউড-স্পীকারে

হাওয়ার হাওমার ছড়িয়ে যাছে।

প্রায় প্রতিদিনই এখানে মিটিং হয়। কোনদিন দ্ব গ্রামাণ্ডলের ক্ষাণদের নিয়ে, কোনদিন ভিরেংনামের ব্যাপারে, কোনদিন হা মাকেন্টাইল ফেডারেশনের ডাকে।

মাঝে মধ্যে সময় হাতে থাকলে দাঁড়িয়ে ছাঁড়িয়ে কিছ্কণ বন্ধতা শ্লে বাই। আৰু

আর দক্ষিলাম না; কলেজ স্মীটে কাজ ছিল, চলে গেলাম।

ब्राह्य-

জাটটা নাগাদ আমার এক প্রকাশক বন্ধ তাঁর গাড়িতে এসন্ধ্যানেতে নামিরে দিয়ে গেলেন। এখান খেকে আবার ট্রাম ধরতে হবে।

স্টাপেক্তে এসে শ্নলাম, ট্রাম বংশ হরে গেছে। যাতীদের সংগ্র কন্ডাক্টরদের কি একটা গোলমাল হরেছিল: ট্রাম বংশ ভারই পরিণতি। শ্ব্ব এই র্টেই নর, যে কোন র্টেই যে কোন সময় যে কোন কারণে গাড়ি বংশ হরে যায়। এর কোন প্রতিকার নেই। দিনের পর দিন এতেই আমরা

অগতা বাস-স্ট্যাণ্ডে চলে এলাম। আমর মতন করেক শ'লোক ওখানে দাঁড়িয়ে আছে।

দেউট বাস কদাচিং এক-আধটা চোখে পড়ে। সেগালোর অবস্থা অবর্ণনীয়; ভার ভেতর ছাচ গলাবার জায়গা নেই। গাড়ি-গালো দাড়াচ্ছেও না; সহি-সহি করে বেরিয়ে যাচেছ।

প্রাইভেট বাসগ্লোর অবস্থা আরো
ভরাবহ। সামনে-পেছনে এবং পা-দানিতে
মানুষ চলছে। এমনকি মাধারও কিছ্
চড়েছে। স্টেটবাসের মতন এই বাসগ্লো
হুস করে চলে বাচ্ছে না; স্ট্যান্ডে দাঁড়াছে।
আমার চারধারের লোকগ্লো গাড়ি আসামান্ত মশার মতন ছেকে ধরছে। একআধলন ওর মধাই জরাগা করে নিছে;
বাদবাকি বাইরে পড়ে থাকছে। এ বিপ্লে
ব্ছে ভেদ করে বাসে ওঠার মতন বাহ্বক,
মশা, বা কোশল আমার জানা নেই। আমি
দাঁড়িয়েই আছি।

লক্ষ্য করেছি, একজন প্রেট ভল্লোক বাসের জনা অপেক্ষা করিছিলেন। চেহারা এবং পোশাক-টোশাক দেখে মনে হর, ভালই চাকরি করেন। যে বাসটি আসছে তাতেই তিনি উঠবার চেষ্টা করছেন। দু-তিনটে বাস চলে যাবার পর যে বাসটা এল তাতেও বখন উঠতে পারলেন না, তখন ভদুলোকের মুখ দেখে মনে হল, গুল্ছের তেতো গিলেছেন। বিকৃত মুখে তিনি বললেন, 'শালা—'

এর পরেই বে বাসটা এল তাডেও উঠতে পারলেন না ভদ্রলোক। হিংল্ল মুখে উচ্চারণ করলেন,, 'শ্রোরের বাচা—'

তার পরের বাসটার পা ঢোকাতে গিরে
একটি লাখি খেলেন ভদলোক। খু'ড়িয়ে
খু'ড়িয়ে ফিরে আসতে আসতে এবাধ
অকথা একটা খিলিত দিলেন তিনি: দিরেই
হঠাং আমার সপো চোখাচোখি হরে গেল।
সপো সপো থতিরে গেলেন। একট্ চুপ্
করে থেকে আমার উদ্দেশে বললেন, 'সারাদিন অফিস করবার পর বদি ট্রাম-বাস না
পাওরা বার কেমন লাগে বলনে তো? ইত্যা
করে সব জর্নালিরে দি। কলকাতা শহরটা
একেবারে বাসের অবোগা হরে উঠেছে।
কেন মানুষ এখনে খাকতে পরে না।'

जातक बारत चानिक रह'रहे, चानिक रहेरूना काका करत वीक कितनाम।

এই একটি দিনের মধ্যে আক্ষর কলকাতা এবং ব্যাপক আথে গোটা পশ্চিম-বাঙ্গার মোটাশ্টি একটা ছবি ম্ছিত আছে।

খবর কাগজের সেই সংবাদগ্রেলা থেকে খুরু করে বাসস্ট্যান্ডে-দেখা সেই ভদুগোর্কটি প্রস্তুত সমুস্ত কিছুর ডেতর শুন্ বিক্ষোভ, অসন্তোষ, আর হতাশা।

এই একটা দিন শ্ব চবিশ ঘণ্টাতেই শেষ নয়। প্নরাষ্ঠানের মতন ঘারে ফিরে একই চেছারা নিয়ে, ঠিক একরকম নয়, আরো জটিল, আরো উত্তেজক হয়ে প্রতিদিন হাজিরা দিকে।

(मृहे)

পশ্চিম বাঙলার আজকের এই চেহারার দৈকে তাকাবার আংগ কয়েক বছর পিছিয়ে যাওয়া যাক।

আমার জন্ম দিবতীয় মহাযুদ্ধের কিছুবাল আগে; পূর্ব বাঙলায়। তার নিস্লা, তার ধান-কাউ:নর ক্ষেত্, তার পদ্মা-হোলনা - ধলেন্বরা - ইলমা - বুড়াগিগলা - শতিলক্ষা, তার রুপো-দিরে-গড়া অফ্রন্তর লাছ, সারি-জ্বরির ভাটিয়ালি রয়ানি, তার মহুছ, তার সরলতা হুদ্ম-দুমা, মানুবের থালো মানুবের প্রতি-বন্ধন, তার মাধুর্ব সিলিরে পূর্ব-বন্ধা সোদিন এক দ্বর্গ। সেই দ্বর্গের ছবি আমি আমার উপনাসে 'কেয়া পাতার নৌকোরে ধরে রাখতে চেডটা করেছি।

একদিন সেই চিন্দুধ স্থামা বস্থার দ্বতীয় মহাযুদ্ধের ছায়া পড়ল নাওলা-দেশের পক্ষে সেই বোধহয় প্রথম বহুং আঘাত। মন্যাছের সংকট সেদিন থেকেই ব্রি শ্রু। ক্ষেক্টা বগুরের ুধা সব হলট-পালট হয়ে গেল! পরল নিম্পাপ মান্যগ্লো বাতারাতি চোর, অসং এবং ক্টিল হয়ে উঠল। কালোবাজনিরতে দেশ ছেয়ে গেল।

য্দেশ্ব হাত ধরে একে একে এক দ্ভিক্ মহামারী। এই স্কুলা, স্ফুলা, দস্যে-স্কুল পরিপ্র দেশে হাজার হাজার মান্র মাছির মতন মরল। তার কিছ্দিন পর এল সাম্প্রদায়িক দাণগা। সারা দেশ রক্তের নদী হয়ে দ্লতে লাগল। তারপর দেশ-জোড়া রক্তাক স্তিকাগারে জন্ম হল একটি বিশেষ দিনের বার নাম পনেরই আগস্ট উনিশ শ' সাতচল্লিশ। থতিত দেশের ওপর দিয়ে স্বাধীনতার রথ এল ঘর্ষারিরে।

দেশ ভাগ করে ভাবা গিয়েছিল,
অভঃপর একটি সর্বারোগছর বটিকা পাওয়
গেছে। কিল্ডু কিছুই হল না ; সমস্যা নারে
সেই বরুফের বলটি, বত দিন বেতে সাগল
গড়াতে গড়াতে, ক্রমণ আরো আরো বা
ছতে লাগল। একদিন লক্ষ লক্ষ ছিলম্ব
মানুবের সংশা ভিটেমাটি ছেড়ে সীমাণ্ড এপারে চলে এলাম। দেশভাগের বাইশ তেইশ বছর পরও উদ্বাস্ত্ আসা বন্ধ হল
কই? আজও তারা আসছেই, আসছেই।
হয়তো অনশ্ডকাল ধরে আসতেই থাকবে।
আজকের পূর্ব পাকিশ্তানে নিরাপদে
ধাকবার মতন রক্ষাকবচ তাদের কেওঁ দিতে
পারেনি। অথচ তাদেরই জবিংমার দানে
দেশের স্বাধীনতা এসেছে। তাদের কথা,
মনে রাথার প্রয়োজনও ফ্রিয়াছ। কিন্তু
দেশভাগের সময় কী প্রতিপ্রতি দেওয়া
হয়েছিল, নেতার৷ হয়তো ভূলে গেছেন।
বিক্ষাতির অনেক স্থিবধ।

পশ্চিম বাঙলায় জমি আর ক্ষওট্কু?
তেলিশ হাজার বগামাইলের এই ভূষণেক এ
বংগের অধিবাসীরা তো আগে থেকেই
ছিল; তার গুপর কামক লক্ষ উম্বাস্থ্র ভার পাড়ল। তাছাড়া অন্যানা প্রদেশের কামক লক্ষ মান্ম তো আছেই। বিহার, উত্তর-প্রদেশ, ওড়িশা রাজস্থান আর মধাপ্রদেশের হাম থেকে জনবিকার সংখানে রোজ করেক ল করে লোক আসতে।

পশ্চিম বাঙ্কলায় জমি আর জন-সংখ্যার
হারখানে দৃশ্তর ফারাক। তাব ওপর রারেছে
ভূমি-সমস্যা। জমিদারি বিলোপ বিলা
কবেই পাশ ছয়ে গেছে। কাগজে-কলাম
জমিদারি নেই, কিশ্চু আইনের ফাক দিয়ে
লক্ষ্য লক্ষ্য একর জমি বেনামী করে রাখা
হ্রোছে। মাখ্যাতার আমলের কৃথি-বাবশ্ধা,
ভূমি বন্টনের মধ্যে এটি—সব মিলিক্ষ এ
রাজ্যের ভাড়ার চিরাদিনই বাড়ান্ড। তার
এক্ষয়ার বাঁচবার উপায় ছিল শিলেপর
দৌলাতে। কিশ্চু সে প্রেও অসংখ্য কাঁটা।

ভারতবধের সক্র টি ভোভলপ্নেট ব্যাৎকর প্রধান কাষালয় হয় বোশ্বাই নতুব। দিল্লীতে। কল-কারখানায় বারা লাগন করে তেমন একটি সংস্থাও কলকাতায় নেই। কলকাতায় কেন, পূর্ব ভারতেই নাই।ফলে প্রশিচ্ম ভারতের দাফিলাতে। এবং অ্যানি-বর্তে বৃলি উজ্লাড় করে দেবার পর পশ্চিম বাঙলার ব্যাতে যে ছিটেফোটা ভোটে সমল্যার তুলনার তা কিছুই নর।

তা ছাড়া আছে কেন্দ্রের লাইসে^{নি}সং নীতি। চাইবার আগেই মহারাদ্ধী গ্রেকাট, ছব্লিরানা কি পাঞ্জাব যেখানে ঢালাও লাই-সেন্দ্র পেয়ে যায়, সেখানে ছাজার আবেদন-নিবেদনেও পশ্চিমবর্ণা পাষাণসম কঠিন হ্ময় গলাতে পারে না। মহারাথ্রের থানা থাকাল এই ক' বছরে শত-শত নতুন কলকারখানায় ভরে গেছে। কিন্তু দ্যাগিরের মতন এখন সম্ভাবনাপ্শ জারগার অসংখ্য ইন্ডাস্ট্রাল ক্সটে এখন আগাছা ক্ষান্তে। তবে স্বীকার করতে আগতি নেই, টেড ইন্ডান্ন ক্মীদের কোন কোন কার্মকলাপ এ-রাজ্যে শিলেপর বিকাশে কিছু বাধা স্থিত করছে।

শ্বাধীনতার আগে এবং কিছু পরেও
পশিচম বাঙলা ছিল শিলপ-সম্প ধনী রাজা।
দেশের শতকরা পাঁচিশ জাগ শিলপজাত
সামগ্রী এখানে উৎপরে হত। এখন সেই
শ্বানটি দখল করেছে মহারাদ্রী। পশিচমবংগর উৎপাদন এখন শতকরা চৌল
ভাগ। তিন-তিনটে পণ্ডবার্ষিকী পরিকল্পনা
শেষ হরেছে; চতুর্ঘটি শ্রেহ্ হতে চলেছে।
পশ্চম বাঙলা শ্ব্ নীচের দিকে নামছেই,
নামছেই। এভাবে নামতে থাকলে একদিন
খামরা নিঃসংশ্রে স্বার পেছনে চলে থাব।

শ্নেতে পাই, পশ্চিম বাঙলার পাট আর ঢা পেকে সব চাইতে মেশী বৈদেশিক ম্না আসে। এ-রাজ্য আরকর এবং বিজয়কর হিসেবেও কোটি কেটি টকা দিয়ে আসচে। কিন্তু সেই টাকার কতট্কু অংশ এ-রাজ্যের কলালে থরচ করা হচ্ছে? পশ্চিম বাঙলার টাকার দিল্লীর রাজপথ যারো মস্থ হচ্ছে, বোম্বাইরের জলাহ আরো বাড়েছে। আর এই প্রদেশ? চার্রিশকে শুধ্ অধ্যকার আর অধ্যকার।

প্রতি বছর হাজার হাজার যুবক ইউনিভাসিটি থেকে, ইজিনীয়ারির কলেজ থেকে
তাসংখা টেকনিকালে আর টেলিং ইনিস্টটিউট থেকে বেরিয়ে আসছে। সেই তুলনায়
কর্ম সংস্থানের ব্যবস্থা বভট্কু? জের
টানার মতন প্রেনো বেকারমের হিসেবের
সংগা নতুন বেকারের সংখ্যা বছরেব পর
বছর যুক্ত হয়েই চলেছে।

এ তে। গেল শিক্ষিত বেকারদের কথা। এরপর আছে অর্থশিক্ষিত এবং অশিক্ষিত বেকার। তাদের সংখ্যা কত, কে বলবে?

এ রাজোর কোন্ সমসাটো মিটেছে? আন্তও হাজার হাজার উম্বাস্ত ক্যান্সে পশ্রে জীবন্যাপন করে চ'লছে। আজও দিন-মজ্বে সেই দিনমজ্বাই থেকে গেছে।
এই সেগিদও সাড়ে চার টাকা করে কিলো
চাল কিনতে হয়েছে লোককে। বংশ-হয়ে
যাওরা কারখানার প্রমিকের আত্মহতাার
থবর তো পার্নাই শোলা বার। দিনের পর
দিন কলবাতার রাস্তার হকার, ভিখিন
আর গণিকা বেড়েই চলেছে। ভন্নভাবে
বে'চে থাকার স্ব্বোগ দ্রুত এখানে কমে
যাছে।

শ্বাধীনতার পর এই বাইশ-তেইশ বছরে পরিদিথতি কোখার গিরে দড়িরেছে, ভাবা খার না। নিদার্শ এই দ্রসমরে মান্বের মান শ্ব হতাশা, বিক্ষোভ আর চ্ডাল্ড ফান্টেসন। প্রথমেই যে দিন্টির ছবি একেছি, সেই দিন্টা আরো কতকাল যে আসতে থাকবে, কে ভানে। মান্বের স্থোধ, বিক্ষোভ এবং হতাশা ধীরে ধীরে বিক্ষোভার পরিণ্ড হচ্ছে কি? আমার মনে হয়, দারা প্রিদ্যা বাঙলা জন্তে মাশাল হাতে কেউ যেন ভয়াবহ অগিনকাল্ড ঘটবোর জন্য হুটে বেড়াতে।

প্ডীভূত নৈরাশা আর বিক্লোভের এই উবর মর্থেকে পশ্চিম বাংলাকে কে আশাবাদের শামল তীরে পেণ্ডে দেবে? কার হাতে সেই সঞ্জীবনী? জ্বানি না,

।।তিন।।

আমার এক লেখক বংধ্ সেদিন হল-ছিলেন, 'এইরকম একটা এলোমেলো উদ্-দ্রান্ত সময় নিয়ে লেখা যায় না। আমি বাপা, দরজা-জানালা বংধ করে নিজেকে নিয়েই লিখে যাচ্ছি। ভূমিও তাই কর।'

কথাটা ভেবে দেখা দরকার। দর্গজা-জানলা বংশ করলেই কি বাইরের ঝড় পোক রক্ষা পাব? চার্বাদকে যদি আগ্রেন লাগে নিজেকে বাঁচাবার মতন 'সেফটি ভল্ট' ভাষার কোগায়?

বেণ্চ থাকার জন্য এই সমাজ থেকে
প্রতিদিন সাশ্লে গানে নিছি জ্বাচ ডার
দিকেই মাথ ফিরিয়ে থাকব? আমি যথন
এ সমাজেই আছি, আমৃত্য থাকডেও হবে,
তথন তার কথা না লিখে আমার মৃত্তি
নেই। তার কথা না লিখলে নিজেকেই ভো
অস্বীকার করা হয়।





বড় রাস্তা থেকে প্রথম বাকি ঘারেই **गिन** हो। यथात हो। भन्न हात कामरह, ঠিক সেই মুখে রমেনের সদর। রমেনের সদরের দিকে খাব আগ্রহ নিয়ে তাকিয়ে পরিমল হতাশ হল। দরজায় বাইরে থেকে তালা ঝোলান। যেন ঠোঁটে-আঙ্কল-ছপ-এর নিদেশ। অতঃপর সব উৎসাহের এখানেই শেষ হয়ে পরিমলের চলার ভণিগ শি**থিল হল।** সম্ভবত ওরা আজ দেশে গেছে। দেশ বলতে অবশ্য নখের মত এক-ফালি জমি আর ভাঙা ভিটে। তাই জ্ডে পাহারা দিচ্ছে ওদের ব্যুড়ো পিশে আর পিশি। কি আর পায় জমি থেকে, গোটা-**কত আম জামর্ল আ**র কলা বংসরাশেত। যাই হোক, আজ্জ আর মোটকথা কনকের সংগে দেখা হল না। অথচ কলেও কথা হয়েছে কনকের সংস্থা। ও একবারো বলেনি আজ ওরা থাকছে না। আসংল এসব ওর থেলা। কথা নিয়ে আচরণ নিয়ে। কনক रथनरङ कानवात्र। रथनारङ्ख।

যাক গে। পরিমল অপেক্ষাকৃত রুত-পুথ শেব করার চেন্টা করল। ক্রমণার্গালটা

এত অপ্রশস্ত হরে এসেছে যে একজন भागावे हमार शाम प्र-भारभव নোংরা দেয়ালে কাঁধ প্রায় ঠেকে বায়। জালা-কাপড বাচিয়ে পা ফেলতে ফেলতে म दुर রকে বসা অন•তকে দেখল পরিমল। আনঃ-শেষিত সিগারেটটা অনিচ্ছায় ফেলে বিরক্তিতে জ্কোচকাল। প্থিবীর তাবং নোংরা বস্তুর প্রতি অস্ফাটে কট্রি করল। এরকম ভাগাড়েও মান্ব খায় দার বাঁচে। এমনি ধোঁরা আর জ্ঞালের मत्या (थएकछ। जित्नमा थिएत्रहोत् ভাবতে গিয়ে ঠেটির কোণে পানের রঙের মত আলেতে। হাসি এল।কার কথা ভাবছে, সে নিজেও তো এহেন গলিরই বালিদদা। একেবারে মাঝ বরাবর। ত সাম বা ও পাশের কোন বড় রাস্ভারই নাগাল পাওরা যায় না তার নিশ্বাস নেওয়ার জনা। এরি মধ্যে সেও দিনের পর দিন যায়, আনশ্দ বেদনা বাথতায় মিখিত দিনগালিকে জুমাগত বহন করে নিত

এসব কথা বে পরিমল ঠিক সংকর্ম-

ভাবে ভাবতে পার্মাছল তা নর। কেবল
এই ধরনের মানসিক অবশ্বনে একটা
উপলব্দি তার চেতনার দল, খেলা
করছিল। বস্তুত মাথার ওপর মধ্যাতের
রোদ এবং শ্নোপ্রায় কঠর নিরে কোন
চিম্তাই তার মনে স্থির হতে পার্মাছল
না। এসময় অন্যত সাাকরা দ্র থেকে ওর
আবছা হাসির সম্যক অর্থ না ব্রেজ।
নিত্রেও পরিচিতির হাসি মুখে ফোটাল।

দ্পন্রের মাঝখান খেকে শরতের হালকা হাওরাতেও উক্তা ভেলে বেড়ার। দ্পাশের বরবাড়ির ছাদ কার্থিশ দেরাল পাঁচিলে হল্দ রোদের পদাঁ বিছারো। প্ররোজনীর বাডাস না খেলার ক্ষার গাঁলর আবহাওয়া প্রেমাট হরে থাকে। মাঝে ইতক্তত স্ত্পাকৃতি ক্ষানো মারকা থেকে ভাগসা গল্ধ ছড়ার। স্কুলে-না-বাওয়া কটি ছেলে হৈচৈ করে আনাচ-কানাচে ল্কোছার খেলছে। দ্-একটি উপাস কাকের ভাক মধ্যাহের বাডা করে আনো। এখন মানুবজন এড়িরে বেতেই চাইছিল পরিমল। ক্লাক্ত ক্রাতে প্রাক্তি

1

খ্ৰ দ্ৰুতই বাসায় ফিলতে চাইছিল। কিল্ছু অনস্তকে একেবারে চোখের ওপর দেখে **এक्ट्रेक्न** मा गाँक्ट्स भारत मा। **भवना** গেন্ধী আর চেককাটা লুপ্রি পরে রাস্ভার ধারের খ্পরি ঘরটার রোয়াকে বসেছিল অনশ্ত স্যাকরা। নামেই স্যাকরা। আসংশ কাজ ঘুটে গেছে কবে। তখনো গরীব ছিল অনণ্ড এখনো তাই, ডবে নিজের বাবসা উঠে গেলেও কি করে আন্তো সংসারটাকে টিশিকরে রেখেছে ভাবলে খাব क्रमा मद्भ दश। त्रीक वन्ध हरू बाद ভিথিরি হবার কথা সে একদিনো কারো কাছে হাড় পাতল না। অথচ এই কর কত লোকের সংসার ভেসে গোল আছ-হত্যা করে মরল। ধাকগে। এসব এখন। পরিমল অনশতর মাথোমাথি দাঁডিয়ে জলপ হাসল সৌজনোর মত করে।

—ইম্কুলের **হ**ুটি হল ? বিভিতে সু**খ** টান দিয়ে অনগত জিজ্ঞেস করল।

—হাাঁ। শনিবার বলে আজ দুপুরেই ছ্রটি। থেয়েদেয়ে জিরোচ্ছ ব্ৰি অনন্তদা ?

—হাাঁ, জিরো:ত কি দেয়। <mark>হাত উলে</mark>ট ভাপা করল অনশত। রাতদিন শালার সংসারের কচকচিতে কানফান ঝালাপালা হয়ে গেল। বে'ডে থাকাটাই যেন **অসহ**য় ইরেছে আমার।

নিঘাং আজ ঘরে কলহ হয়েছে অনশ্তর। ঘরভরা ছেলেণ্ডলে, স্থাী, অনুভুত শানিত পাবে কোথেকে। রক্ষ ুলের মধ্যে আঙ্কে চালাতে **চালাতে** দ্বের দিকে চেয়ে র**ইল পরিমল অন্য**-মনস্কভাবে।

—তোমরা ভাই **বেশ** আছ অনশ্ত দুখে করার মতন বলে উঠল, বে-থা করলে না। রোজগার **করলে** দ্যটো মাথে দিলে, বাস, ফারিয়ে গেল।

দাভিয়ে দাভিয়ে অনুভর বকুনি শ্নতে ভাল লাগছিল না পরিমলের, ভরা পেটে বসে অনেক পঁচালী পড়তে পারবে এখন অন•ত, কিন্তু পরিমলের আপাতত দেহ শ_ুক্ত ক্ষ্**ধাতুর। পরিমল** তাড়াতাড়ি

– আছে বইকি, অনুসভদা এই তো বাড়ি ফিরে দুটো মাথে দিয়েই আবার এতথানি পথ ভেঙে ছাটতে হবে সেই টিউর্শানতে। যে থেমনই হোক, কণ্ট করেই সবাইকে বাঁচতে হয়। বুঝেছ তো। চাল এবান কেমন।

--আ'র হার্ট রা, রহসোর মত করে চোথ ক'চকে বলে উঠল অনশ্ড. ভোমার সেই গাংগলীবাডির কি খবর হে।

- ওই একরকম। পরিমল কোনরকমে পরিতাণ পেতে চাইল, এক এক সময় তেমন মেজাজ থাকলে গা•গ_লীবাড়ির কথা নিয়ে বেশ জমিয়ে পাড়ার খাতিরের লোকদের সংখ্যা গলপ করে। কিন্তু এখন তাল সময় নয় নিজের ওপরই এখন বির্তি ধরছিল তার।

— **ठलक्ट्रम अनक्**रमाः **कथा**णे **६**९ए দিয়ে হনহন করে এগিরে গেল সে।

গলির এ জারগাটায় ক্সিড্র টিনের চাল দেওয়া বলিত। কিছু পাকা বাডি. একতলা কি লোভলা। বাঞ্চিন্রলির মধ্যে একটির এক্তলার পরিমলদের বাসা। দুর্থান ছোট খর। চাতালে চট আডাল मिरत द्वारा, यूर्णात्र जन्धकाद कन्नज्ञा। শ্যাওশা সমাজন উঠোন। বর এমন স্যাতি-সেতে কে ভাকের ওপর বই রাখলে ধীরে थीरत फिल्म क्यांनरकरन इसा बाहा। এই বাসার জনাই মাসে পঞ্চাপ টাকা করে গুনে দিতে হয়। এছেন মূল্যবান বাস-ম্থানেই অভএব ব্যাযোগ্য সমারোহের লপ্যে <mark>চলে পরিমলের সংসার। সং</mark>সার পরিমলের নর। তার দাদা বৌদির। পরিমল তার মধ্যে অন্তভূত্তি। ছিল ভাগ্যিস। নাহলে এই সাময়িক কর্মকান্ত ন্বিপ্রহরে আহার বিভামের জনা কার দোরে ছুটত এখন।

নীচু জীর্ণ সদর দিরে ঢুকলেই একটা ঠান্ডাভাব পাওয়া যায়। জামা-গেঞ্চী খুলে পরিমল উঠোনোর ওপর ফালি রোয়াকে বসল। গায়ে ফ্র' দিরে ঘাম শ্বকোবার চেন্টা করল। বড় ভাইবি মিতুকে কলডলা থেকে বেরিয়ে আসতে দেখে পরিমল বলে উঠল।

—আজ কি গরম দেখেছিস। আশ্বিনের অধেকি দিন হল, তব্ও গ্রেমাট।

—হা, মিতুসায় দিশ, তুমি তাড়া-তাড়ি চান করে নাও। চৌবাহ্যায় বেশী

উঠোনোর মাঝখানে দ'ডিরে গামছায় মাথা মূছছিল মিতু। মিতুর চুলটা অনেক লম্বা হয়েছে, ছোটবেলায় খোপা খোপা হয়ে ঘাড়ের কাছে দুলত। এখন মিতুর বয়স ও শ্রীরের সংগ্র মানানসই ধরনের দীর্ঘ স্ঠাম চুল ওকে আলাদা একটা কমনীয়তা দিয়েছে। ক্তৃত মিতু এবং মিতর চল কতটা বড হয়েতে আজই প্রথম যেন তালক করল পরিমল। দাদার এই মেরেটিকে সে সবচেয়ে ভালবাসে নমু সভা প্রভাবের জনা। অন্যান্য ভাইপো ভাইথির সংশ্ তেমন হ্দাতা নেই পরিমলের। আসলে ওদের মায়ের শিক্ষা ও শাসনের ওরা অবাধা হয়ে উঠছে

অনেক উছতে মাঝবেলার রোদ সোনা-রঙ হয়ে ইতস্তত ছড়িয়ে আছে, বাতাসে ঈষং উষ্ণতার ঝাঝ। দ্রাগত চিলের তীক্ষা ডাকে দুপুর নিঝুম লাগে। পরিংকার व्याकारण विक्रित्र जाना स्मरचरनत महाना শ্বলন্ত মনে হয়। হাতপা টানটান করে শরীরের আলসা ছাড়াল পরিমল। চৌৰাচ্চার নীচে থিভিয়ে থাকা জলে সংক্ষিণ্ড জ্লান সেরে নিল। তারপর क्लांटना स्थरक र्वात्रस्य धारम क्लान.

—বৌদির আলক সাড়াশব্দ নেই যে,কি

া —গলার জোর কমে জাসছে খে। আঁচলে হাত মুছতে মুছতে সর্যু বাইরে এল। সংসাজের চাপে হাপ হাড়তে পার্রছ না।

—আমি কিন্তু খেরেই থেরোব ভ্রিলে ওদের আজ বিকেলে কি প্রোগ্রাম আছে, সিনেমাটিনেমা থাবে বোধহর সব, দ্পর্র-বেলাই পড়িয়ে আসতে বলেছে। পরিমল খুৰ ভাড়াভাড়ি মাথা মুছে

—বেশ আছে, কিন্তু গাণস্পীরা। সরষ্চোথ আছ্ম করে ঈবং বিস্তৃত ঠোটের ফাঁকে কথাগঢ়িল: উজারণ করল। কেমন রাজার হালে খাজেটাজে—স্ফ্তি আমোদ করছে, ওসব লোক তপ্স্যা করে আসে, জানো।

বাইরে মিত এতক্ষণে মাথা আঁচড়ে বলল, এসেছিল। ट्ट्स स्कटन দাড়িয়ে --কাকাকে খেতে দেবে, না ৰক্ষক করবে?

— দিই। সরয্ ঘরে ত্কতে ত কতে বলল, একমিনিট কি বিশ্রাম আছে, এক-**ংলাস জল প্রশিত থেতে সময়** সর্যুর গলায় আক্ষেপ কাঁপছিল।

আসলে সরহরে কাজকর্ম কথা সব-কিছ,তেই একট, ঢিমে তাল। নিজের মশ্বরতার জনা সর্যাজ নিয়ে হাপিয়ে ওঠে। আজকাল মিতু বড় হওয়ায় মাকে তাভা দিয়ে থাকে।

পরিমল থেতে বসে কিছুটা অনামনস্ক ছিল। শনিবার দঃপংরের ভাতটা সে **স্কুল** ৮,টির পর বাডিতে এসেই খায়। তার জন্য বেলাও হয় বেশ থানিকটা। প্রনো হাত-ঘড়িটায় সভয়া দুটো বান্ধতে দেখে পরিমল খ্ব ভাড়াতাড়ি করছিল। থেয়ে উঠে এতটা পথ এখনি হনহন করে ছ্টতে হবে ভেবে মনে মনে থ্ব বির্লি বোধ করছিল। মিসেস গাংগলীর এত বয়সেও হৈচে করার সময় গেল না। এদিকে আবার একদিন মাস্টার কামাই করকো ছেলে স্কুলের পড়া তৈরী করবে না। **সন্ধ্যেবেলার বংধ**ুবাংধব ছেলেমেয়ের হ্রেলাড় পার্টিতে মন থ্'তথ্'ত করবে মিসেস গাগালীর। কি করে যে **একজন** সংসারের কর্নী প্রায়শই এরকম আমোদ-আহ্মদে গা ঢেলে দিয়ে থাকে কে জানে। थाकरव ना-रे-वा किन, भनक रवाकाल পরিমল। অভাব কি আছে আর কাজই বা কি। ভারী পদাননা ঘরের ভেতর গানবাজনা খাওয়া-দাওয়া অথবা হৃহ্ করে ছুটে চলা মোটরে পথ পরিক্রমা অথবা ছবিঘরের নি । ১৯৮ শীতল আরাম। এছাড়া গাংগ্লোগিমির জীবনে তার কিছ নেই। সমসত প্রিমণ্ডলটা শ্না ফাঁকা। ছেলেমেয়ে স্বামী কারোর ওপর তাঁর कान निराग्हण हरण ना, त्य चात्र निरक्कत्र পথে। পারিবারিক বন্ধনটা এখন কেবল সম্পর্ক আর সৌজনোর সাতোয় ঝালছে। মনের কাছে আকিড়ে ধরার মত আর কি আছে মিসেস গাংগ্ৰেণীর?

—এবার রেশনের দাম আরো বেড়ে গেল, ব্রুলে? পরিমলের পাতে হাতার করে ঝোকা তুলে দিতে দিতে द्वला।

্ৰু হু, জামভুষ বাড়বে। পরিষ্কাল আন-মনা উত্তর দিল।

—সমস্ত জিনিসের দামই ছো আগানুন হয়ে বাজে।

—প্রসার দাম কমে **রোগে এরকন** চয়।

—দিন দিন এমনি হলে কি করা বার বজর। পরিবালের সামনে আসনপিটিড় হল্লে বসল সরবা, বেগ রীত্তিমত একটা আলোচনা শ্রু করার ভাগতে। পরি-মলের আগ্রহণান্য মুখের দিকে জাকাল।

পরিমলের দৈরী হয়ে যাছে, সোগ্রাসে থালার ভাতকটি গেম করতে করতে বলল

— তুমি আর কি করবে। মান্বের দুর্দশা ক্রমণ বাড়বে, এতো জানা কথা।

—তোমরা তো বলেই খালাস। সরব্র গলা হঠাৎ একট্ উষ্ণ হরে উঠল। মেমন ভূমি হয়েছ তেমনি তোমার দাদা। ছাড-পা ছেড়ে বসে আছু সব।

পরিমল এতক্ষণে মনোযোগ দিয়ে প্রাতৃভারার মৃথের দিক্তে তাকাল। সরম্র সংগ্য কথাবাতার সূর থেকেই আন্ধ্র কিসের আচ পাওয়া বাচ্ছে তলিয়ে বোঝার চেন্টা করল। সরম্ উবং বেগের সংগ্য একপাশে মূথ ঘ্রিয়ে গিয়ে বলল—

থালো সৰ রাশ্তার রাশ্তার, সংগারে কি
দিয়ে কি হয় তা তো কেউ চেয়ে দ্যাথোনা।
এতগুলো কান্ডাবাকা ধাড়ি সবার খোরাক
লোগাতে হয় আমাকে, সে বিষয়ে তো
কারোর প্র্টি সইবে না কে জানে, এবার
আমাকেই হয়ত রোজকার করতে পথে
বেরোতে হবে।

একনিশ্বাসে জলের প্লাসটা খেছকরে থেলল পরিমল। কম্হতে ঝিম যোর রইল। অথাং সর্যুর কথার কি দেবে কিছাই ভেবে পেল না। আসলে এসব কথা শুধ্ নির্পায়তায় আঘাতকরা ছাড়া আর কিছুই না। সরষ্কি বলতে চাইছে সেটা এখন পরিংকার আলোর মতই তার দ্বিটতে প্রতিভাত इक्टिन। এবং সেই আলোর প্ৰথৱতা কিছুটা ধলসাচ্চিত্ৰ তাকে ভেতরে ভেডরে। **সম্ভ**যত সদ্য পেটভরা **শর**ীরে এসব দশ্বানিগ লো একটা বেশী করেই লাগে। কিম্তু সময়ের দ্বদপতা ও সর্যুর যুক্তিতে ছোর থাকায় পরিমলের মুখে এখন কোন-तक्र अভिवान वा कन्द्र कथा जन मा। निश्मत्म छठे शिहा मृथ श्रुता कन। আয়নার সামনে দক্তিয়ে চুলটাকে দ্বিতীয়-বার আঁচড়াতে আঁচড়াতে নিজের মুখখানা দেখল পরিমল। পান খেয়ে দাঁতগালোয় কেমন বিশ্ৰী ছোপ ধরেছে। আগে খেত না। ইদানীং মুখের মধ্যে স্বস্ময় পান थाकरम खाम मारग। निजारत्वे अस्य ভাল। আসলে বয়স হতে থাকলে একটা একটা করে অবলম্বন মান্য আৰুড়ে ধরে। অবলম্বন। পরিমলের জীবনে কোন অবলন্দ্রন নেই। বয়স বাড়তে বাড়তে ক্রমশ ব্যুড়ো হয়ে যাবে পরিমল, ভেতর বাইনের কাঠের মত শক হতে থাকবে একফেটি

জন সিগুনে সরস করার কেউ থাকবে না।
ভাইপো ভাইবি ? বডাই করো না, সব
ভানা গলালেই মুখে পাখার ঝাপটানি
মেরে উড়ে বাবে। মিতু খাছিল তখনও
বনে, প্রিয়ালের বিজে তেরে বনার।
তাকু ভৌমার কানের বাছে ভত্যালো
পাকারুল গেবেছ

দেশেকে লীরমল। দুখে পাকা নর,
ছুলের লামনের দিকের প্রশাসততা কপালের
কুঞ্ন, প্রকিরে আসা গাল, সবই দেখেতে।
বয়স কত হল, সহিত্তিশ ? সহিত্তিশ এমন
কিন্তু না, তব্ গাড়ির শির্মারিং-এর মত
পর্ভাতে লীবনটার্কে কেবলই মান্তড়ে
মান্তড়ে একমুখা নির্মাকার চালাতে
মান্তল এরকমই হয়। জীবনকে পাখ্র
আকলে এরকমই হয়। জীবনকে পাখ্র
আকলে গরিমল হ্রাপণেডর সমসত রাজকে
গাতল করে ফেলেছে, এছাড়া উপার মেই,
কিছ্মু করার নেই। মনের ভাব ঝেড়ে ফেলে
একট্ লঘ্ করে হাসলা সে।

—পাকরে না। জামাই আসার সময় ছল বে।

শ্বং, ভোমার খালি বাজে কথা।
অনাদিন হলে সরম্ও এসব কথার
যোগ দিও, হরত নানারকথ প্রস্তাবের স্ত্রপাত করত। কিন্তু আজ সে নীবরে রইল।
একপাশে কাত হয়ে ছোট আয়নার মধ্য দিরে
সর্যুকে দেখল পরিমল। অনামনস্ক হবার
ভান করছে সরম্ব। পরিমলও আর ঘাঁটাল
না ওকে। সরম্ব খালামেলা ম্বকে
একট্ ভয়ই করে সে। জানাটা গায় দিয়ে
আন্তে আন্তে বেরিয়ে গোল পরিমল। যেতে
গেতে ভাবল, বেরোবার ম্থেও আর কনকের
সংগে দেখা হবে না। দুটো উল্জ্বল কালো
চোখের আলতো কোমল ছোঁয়া মুখে মেথে

নিয়ে কাজে যাওয়া হবে না আজ।

পরিমলকে ঢ্কতে দেখেই মিসেস
গাংগালী বারান্দা খেকে নেমে এলেন যেন
ওরই জন্য অপেক্ষার ছিলেন। পরিমল একট্
বিন্দিত হল। বাড়ির সামনেটা একট্করো
ভ্রমি, ছোটখাট কটি গাছ লাগান। মাকখানে
ছোট পথ গোট পর্যক্ত। একপাশে গ্যাবাভা।
গাডিখান এমন কিছু নর, সাধারণ এামবান্দাডর তব্ এবই জন্য গাংগালীপরিবার
অংশত উচ্চ মধ্যবিত্ত সমাজে মাথা তুলে
দাড়িরো আছে। কভার অফিস, মেংরর
ক্রেক্স: ছেলেন ট্রকটিকি ব্যবসা আর
গিলারীর আছবীর-বংধ্রে বাড়ি, স্বকিছ্ই
এই মোটরের চাকার মস্শভাবে চলে যায়।

শেষ ধেলার তামাটে বোদের আভা বাওয়ার সংগ্ণ মিলে মিসেস গাঞালের স্মান্তত মুখ ও প্রীর ছুইরে যাচ্ছিল। একবার চোখ ভূলে দেখে মাথা নামাল প্রিমল ও'র সামনাসামিন।

আমার সংশ্য যাবে একট্র, ছিনা
ভূমিকার উনি বলকোন, সামান্য অন্রোধের স্বরে, আমার ফ্লাইভার
ভাসেনি আজে। ট্যাক্সিডে একা বেতে সাহস
হয় না

grand to distance

— इन्द्रन, स्नाथात्र वादनः। शाह्यस्य द्राथा मीष्ट्र कदतर छेखत निम्नः।

—বিশেষ সরকার পাছে খেল, এখনই মা গেলে নর, বিনেন গাঞ্জালী অপ্রয়োজনেই অনেই ক্ষানেন চাক্ষাকে পার্ডিয়েছি ট্যালিক ক্ষানেন

বিক্রেক নামন্ত্রীর সন্দে বেতে একট্র অন্তর্গতি ইরার করলেও সেটাকে আমল নিল না পারিকা। অনেকদিন পড়াতে পড়াতে ওপের সংকা থানিকটা আপনার মতন হুরে গেছে পরিমল। কথনো প্রয়োজনে ওপের সাংসারিক কাজেও সামিপ হতে হুরা তেমনি আবার উৎসবে-উপসক্ষে।

্র সময় রাস্তায় ভীড কম थारक। **भि**द्ध সামনের উইন্ডল্ডীনের ভেতর কোণাকুণি প্রতিফলিত মিসেস পাণ্যালীর মুখ দেখতে পাচ্ছিল পরিমল। খ্র চিল্ডিত মনে ছচ্ছিল তাকে। এমনি ফিটফাট মাঝ-বয়নী ভদুমহিলাকে দেখতে বেশ স্ক্রী মনে হয়। অভিজাত পরিবারের মেয়ে. পড়াশোনা জানেম। সাদার ওপর ব্রটিভোলা শাড়িতে, দামী ফেমের চশমায়, রগের ওপর উড়েন্ড খ্চারো চুলে আপাতত ওাকে ೂ ತ ৰড় বড় ছেলেমেয়ের মা বলে বিশ্বাস হচ্ছিল মা। মেলাজ ভাল থাকলে লোকের সংগ মিণিট বাবহার করেন। অক্তত পারমল ও'র বেশ স্নেহের পাত।

--পরিমল। কি বেন ভাবতে ভাবতে মুদ্র গলায় ভাকলেন।

—বলুন। পুরিমল নমু সংরে উত্তর দিল।

— ভূমি থোকার সংগ্র মাঝে মাঝে বেরাও, না? একটা ইতসতত করে মিসেস গাংগালী বলালেন। পরিমল একটা সতর্ক হয়ে ক' সেকেন্ড পেনে থেনে বললা, মাঝে মাঝে ভো না। অনেকাদন আগে দ্যু-একবাণ ওার এক বন্ধার কাছে নিয়ে গিয়েছিলেন চাকরীর জনা।

চুপ করে গেলেন মিসেস গাঞ্গলী। উপতে নিঃশ্বাস চেপে দুরুলন্দ্র দ্যিতিত বাইরের দিকে চেয়ে রইলেন ারিমলের মত নান্র, সামান্ত এক গৃহশিক্ষকেরও মায়া আনে ওর জনো। সংসারে উনিই সব, দায়িত স্বই ও'র, অথচ স্বলা কেমন অপাংশ্বের হয়ে থাকেন। স্বামীকে নাগালে পাওয়া যায় না, নিজের উচ্চতর চাকরী এবং নিজের চেয়ে উক্তজম শতরের মান্সদের নিয়ে সর্বদা বাঁহত থাকেন। ছেলেমেয়েদের মনের হদি**শ জানা নেই। বড় ছেলেটি** मध्यत्य नामात्रकम् ग्राक्य कात्म কিছা করার নেই। তথাঁজ নিতে গেলে পাতা দেৰে নান কাগ্ডা পৰিমলেৰ কাছেই উদ্বিশ্ন মায়ের মনে ধর্ণা দিতে এলেছিল। কিন্তু পরিমলও বেতনভূক শিক্ষক মানু। নিলের দিকটা সেও ব**জা**য় রা**থবে। এ**ক-জনের মন রাখতে গিয়ে অপ্রের **35**017 থাঁস করে: দেওয়ার অর্থাই ভার বিরাগভারুন হ'ওয়া, অর্থাৎ চাকরী নি**'র টানাটানি**। **ভলবে নেই পরিমল। পরিমল** काञ्चलाम् थाकरव ना ।



স্ত্রি-কাশিতে শরীর হুর্বল হরে পড়ে -- আরু পাঁচরক্ষ রোগে ধরে

স্থাস্যা ও শক্তির জন্য ওয়াটারবেরিজ ক্চপাউশু

সর্দি-কালি চলে লরীরের রোগ- নিরোধক শক্তি কমে বার, দ্বরীর চুর্বল চরে পড়েও অন্তান্ত বোগে আক্রান্ত হওয়ার আলংকা থাকে। নিয়মিত ওয়াটারবেরিজ কল্পাউত বান। ওয়াটারবেরিজ রেড লেবেল-এ ররেছে কতিপর শক্তিদারক উপকর্ব বা হারানো কর্মশক্তি কিরিয়ে আনে, জিলে বাড়ার, দ্বরীরে রোগ- প্রতিরোধ ক্ষমতা গড়ে তোলে। এতে 'ক্রিয়ারোটি' ও 'ওয়াকল' থাকার সহি-কালিয়া উপল্যন হয়। সেই ক্রেইও ওয়াটারবেরিজ রেড লেবেল আপনাকে সুহ-স্বল রাখবে।

ওয়াটারবেরিজ কচপাউও -গবচেয়ে নির্ভরবোগ্য চনিত

V TO

क्षानाव-माथाई कर केरजरे केरणावन ।

কিছুক্ণ চিন্তা कदार्ट 🖚 —म्हारचा, করতে মিসেস গাণগুলী বলে উঠলেন, আছা সোমানও কলেজ থেকে ফিরতে খ্ব क्षम्भीवर्थ श्रंत, छाहे ना?

তাই নাকি, কেন আপুনার মেলে কি बाउपेंकू थ्रकृ. त्व शक्षमार्थ किन्द्र हिनत्व मा भाग भाग वनन भारत्यन, अक्तिम नाष्ट्रि मा थाकत्म प्रोमवात्म जामत्र कि 9(7.4) ক্ষেত্ৰ পড়ে। মুখে কোন সাড়া দিলা না পরিমল, চোখ নীচু করে নিজের দিলা-রেটের ছোপধরা আগ্রান লুকোল।

—আমাকে নমিরে দিরে ভূমি এই ট্যান্সিটা নিরেই একবার বাবে?

—তামি, মানে **ও'র** *কলেকে* **? চকিত** विश्वास वनम श्रीतमम, कथाग्री भारतहे स्वत ওর অপ্রস্তত মনে **হচ্ছিল।**

 হাাঁ. ও তো জানবে না, হয়তো দক্ষিয়ে থাকবে, বাসট্টামে একা আসতে অস্বিধে *হবে শেষে*। তুমি শৃধ**্** ওকে যাড়ি পেশছে দিয়ে চলে যেও।

মিসেস গা•গালীর কথাগালি সন্-রোধের মত শোনাল। ভেতরে ভেডার **শংগণ্ট অস্বস্থিত বোধ করলেও কিছ; বলতে** পারল না পরিমল। সামানা সময় ওর দৃশ্টিটা নিজের নত মুখের ওপর অনুভব করল। মিসেস গা**ণ্যালী** হাতের ব্যাগ খাল-ছিলেন, বললেন,

—ট্যান্তির ভাডাটা ভোমার কাছে রেখে দাও কেমন?

ট্রফিকের লাল আলোর সামনে গাড়িটা কিছ্কণের জন্য দাঁড়াতে মিসেস গাগালী উসখ্স করে উঠলেন,

--সাডে তিনটের আগেই তুমি ওব **ফলেন্নে**র কাছে পে'ছিতে পারবে, তাই না?

পরিমল ঘাড় হেলিয়ে সম্মতি জানাল। সামনের আয়নার দিকে চোবা চোখে তাকিয়ে প্রশ্থের ভাব অনুধাবন করতে চাইল। ক্যান্ডার এত লোক দোকান ফেরিওলা যান-বাহন, কিছুতেই ও'র মন যেন সম্পুঞ্জ হ'ও পারছিল না। এক ধরনের মানসিক অদৈথার্য উনি কাতর হচ্ছেন বোঝা গেল। যাকগে, পরিমল ভাবল, ও'দের হতাশা চিণ্ডা সমসা: স্বকিছু নিয়ে গবেষণা অস্তত তার নি:জর পক্ষে অবশ্যকরণীর না।

সোমা কলেজের গেট থেকে বেরিয়েই অন্ত অতিরিম্ভ চমকালো। ট্যাক্সির মধ্যে একটা অম্ভিছের মত পরিমলকে বংস থাকতে দেখে। ছাতে সামানা কুণ্ডন তুলে বলে উঠব,

---একি, আপনি এখানে যে?

অনেকদিন ওদের বাড়িতে টিউপনি করায় পরিমলের সংশ্যে সোমার কিছুটো মুখের আলাপ ছিল, তাও প্রয়োজনীয় কোন বিষয়ে কথার মাধ্যমে। এভাবে পরি-চিত গণ্ডীর বাইরে একলা সোমার মুখো-মুখি পড়ে পরিমল কিছুটা নার্ভাস বোধ ধর্মছল। ট্যাক্সি থেকে বেরিয়ে এসে চোখ দুরে কেবে পরিমল বলল,

্ৰাজ আপনাদের ড্রাইভার অসে নি—

—দে তো আমি জানতাম, আসার সময় কো আমি নিজেই চলে এসেছি।

সোমার কথাগুলি কি কারণে ধেন भेषरः कठिन ଓ द्वार मानाध्विम । निद्धारकरे বেল অপ্রস্তুত বোধ করছিল পরিমল। মিলেস বাংগালীর উৎকর্মা তার মনে পড়ে শেল। ভাড়াড়াভি বলগ,

—**আপনার মা আমাকে পাঠালেন বাড়ি** পেণীছে দেবার জন্য।

—es:। দাঁত দিয়ে ঠোঁট কামড়ে সম্ভবত ক্লোধ দমন করল সোমা।

পরিষল ধ্র নিরীহ অনাসভ মুখ লরে রেখেছিল। দ্-একটি কোত্হলী মেরে **अप्रत मिक्क किला जाकान्त्रिल। क' गुर**्ट কৈ কেন ভেবে নিয়ে এবার বেশ সহল ভাগতে গাড়িতে উঠল সোমা।

পরিমল এবার স্বৃস্তি বোধ কবল। কাউকে চটিরে রাথলে সে শাশ্তি পায় না। বিশেষত বেখান চাকরির কের।

পড়াত বেলার রোদ ক্রমণ জ্যোনিতহীন **হওয়ায় ইভ>তত হল্**দ রঙ হয়ে ছাড়ুরে পড়াছল। **ছ**ুটম্ভ গাড়ির মধে বসে থির-থিরে হাওয়াটা ভাল লাগছিল পরিমলের। চাপাকস থেকে ছডিয়ে দেওয়া জলে পথ ভিঞ্নে থাকার জন্য বাতাস ঠান্ডা হয়ে আসছিল। পিছনের আস**্ন নি**শ্চপে বংস **থাকা সোমার দিক থেকে সাডাশ**ব্দ পাওয়া **থাছিল না। আপনমনে ধা**বমান গাড়িত বসে এসময় পরিমলের বাড়ির কথা মনে পড়ে গেল। প্রথমে মি চুর বিষয়, তারপর বৌদর সেই চিত্তদাহী ইণ্গিতগটল। ভারতে ভারতে ক্রমণ উক্ত হচ্ছিল পরিম লর মধোটা। **কিছুটা রাগে**, কিছু বা উপায-হানতায় একটা দুরোধ্য ব্লানি ওর শ্রীরে ছড়িয়ে যা**তিল। সরয্**র যুক্তি অবাটা কিন। **অথবা সরয় সংসারের দৈ**ন্দশার অতিরিক্ত কাতর কিনা এসব পরিমল যেন ইছে করেই ভারতে চাইছিল মা। আসলে ভেবে **লাভও নেই। অর্থাভাবে** সর্যার সংসার ভেসে গেলেও পরিমলের পক্ষে আন কিছু, করার নেই। সে ভালভাবেই জানে তো, তার দেশয়া খবচ তার একার পক্ষেই মাত্র কো**নমতে সংকুলান হও**য়া সম্ভব। বংখচ পরিমলের তো আর সামর্থাত নেই। গদিও সম্ভবত সূর্য একথা বিশ্বাস করে। না। বিশ্বাস করানোর চেণ্টাও সচেতনভাবে করা ধায় না, অভএব প্রায় মাঝে-মাঝেই সুর্যার এ পরনের ইণ্গিতবহ উভি শ্বনে হজম কৰতে হবে। সহ্য না করলেও চলে। না। হাজার হোক, নিজের লোক: অস্থ-বিস্থ দার্**বিপদেও তো ও**দেরই দরকার হয়। চামিনারের ধোঁয়ায় ভাবনাচিন্তা জ্ঞাট **হাথাটাকে খোলসা** করার চেন্টা কর্রছিল প্রিমল, এসময় পেছন থেকে আন্তে করে দিবধাগ্রস্ত স্বরে ডাকল সোমা—শনুনছেন?

–হাা, বলনে, চমক ভেঙে সাড়া দিল **পরিমল। একটকেণ** কি চিন্তা করে ছাড়া ছাড়া ভাবে সোম বলল,—আপনাকে একটা কথা বলব।

পরিমল উংকর্ণ হল। সমস্ত সত্ত সম্ভাগ করে দীতে দীত চেপে মুখথান কঠিন নিবিকার করে রইল।

—মা তো আনজ বেরিয়েকে, না?

–হাা, আমি সপে এসেছিলাম ও'র। সোমার **শা**প্রকৃত গলার স্বরে পরিমন্ত য্গাপং কোতুক এবং কোত্হল করছিল।

–দেখুন, আজা আমার এক বদধ্য স্রেগ এক জায়গায় দেখা করার কথা আছে। সোমার কথার ভাগা এবা থানিকটা হাসি-হাসি 🥱 অন্তর্গুণ মটে इ किल।

—তাই নাকি। পরিমলের মাথের রেখ সামান্য কাঁপল, মিসেস গা•গভেরীর উদ্বেগ e ছটফটানির কথা এবার স্পর্ট তার মনে

— আপনার কি **খানিকটা অংপকা** করার সময় **হবে? মানে যদি খ**ে অস্ক্রিধা না থাকে, স্পন্টতই এবার সোমার সারে মিনতি ঝর**ছিল।**

উদগ্র হাসি চেপে পরিমল প্রনে ঘড়িশ**়**শ্ধ কৰিজটা তুল**ল সামনে**.

— মিনিট প্রেরো সময় হতে পারে।

নিজেকে ক' মৃহ্তের জন্য এই মেয়েটির সময়ের নিয়ামক ভেবে গবিভ হাচ্ছল পরিমল। কিছুক্ষণ নিরত্তের থেকে সম্ভয়ত ভিতরের ক্ষোভকে দমন করল সোমা, তারপর একটা আত্মগত স্বরে টেনে-টেন বলল,—অচ্ছা, তাই।

সোমা মাথা নীচু করে চিন্তা ন্বত থাকায় পরিমল অলক্ষ্যে পেছন দিকে তাকাল একবার। সোমা কিছুটা ক্ষীণাণগী, বেশ একটা চলচলে কমনীয় ভাব আছে।ফ**িলয়ে** বাঁধা রক্ষ চুলে, হালকা রং ও ডিজাইনের শাভিতে যথেণ্ট আধনিকা লাগে সো**নাকে**। রাগতাঘাটে সর্বারই মেয়েদের দেখে মনে মনে বিচার ব্যাখ্যার দ্বারা ওদের চলতি, সেকেলে আধুনিক বা অভ্যাধ**্নিক ল**ংশে**জার একটা** বিভাগীয় ধারণা সে কলে াতে পেরেছে। এখন, এই পড়ব্ত বেলাব হল্প আভায় রাতানো সোমাক পরিমলের খ্রই ভাল লাগছিল। একটা <mark>বর্ণালী প্রজাপতির</mark> মতন। বুকের স্নায়**ুশিরার মধো, প্রায় সম**দত সতার মধ্যেই কেমন একটা ভাললাগার রস চু'ইয়ে নামছিল। পরিমল যে স্তরেই থাক সে কিছা স্থাবির নম, স্টিয়ারিং-এর চাকার মত ঘ্রিয়ে যৌবনকে নিংডে না ফেললে— পরিমল প্রায় হাপিয়ে পড়ছিল, এই ধরনের সব বোধ ভাকে কিরকম পীড়িত করছিল, ভাল লাগছিল না পরিমলের। বারবার সোমার দিকে তাকাশার জন্য চোখ অভিথর

এসব পাপ, পরিমল ভাবল, আমার মনের পাপ। সহজ হবার জন্যে স্পণ্ট করে ফিরে সোমার দিকে তাকাল পরিমল, যেন कालात कामणे पिरा काथ धरा कामण।

—কোথায় নামকেন **আপ**নি? ্ৰ (*ট্ৰহা*নাঃ)



"তিনি তাঁর ভশকিশ্রোতাদের মধ্যে যে জিবীবিষা আর মৃত্যুভয়ের উক্তাত সত। তাই যেন হাডুড়ি-নেহাইতে পিটিয়ে গঠন দিলেন নাটকের দ;শ্যপরম্পরায়, অভিনয়ের মধ্যে অন্তর্যুদেধর বিস্তারের বিবরণ থেকে থেকে উপ স্থিত করে--মদেকাতে ঠিক যেমনভাবে থেকে থেকে থবর আস্ছিল পার্টিসান্ দলের গৌরবাদিবত কীতিকিলাপের, চাপায়েভ ও তার সেনাব্যাহনীর। আবেগের এমন তীরতা তড়িংচালিত হল থিয়েটারের নাটাকমের মধ্যে দিয়ে যে নাটকটি হয়ে উঠল একটি জীবময় বস্তু, জীবন মত্যুর মধ্যে একটা লড়াই, যেন নাট্য-গ্তে যে দশকের। বসে সেই মান্যদেরই **জ**ীবন-মৃ**ত্যু**। তাদের কাছে নাটর্নাভনয়ই হয়ে উঠল আপ্ত কাজের উদ্দীপিত ডাক, বঞ্তারই মতো, হাতে হাঙে প্রফিতকা বিলির মতো বা খবরের কাগজের জর্রি সংবাদের মতো....."

কিন্দু ঐ কথাগালি প্রযান্ত মান্দেরতে মান্নারহোজের থিয়েটার প্রসংগ্র—বিশ্লবের পরে।

যদি—হাাঁ, আমরা বলাবলি করতুম, যাদ
শ্বেধ্ অবস্থা বাবস্থাটা পাল্টে যেত,
নাট্যান্দোলনের অবস্থাত এবং সামাজিক
জলবায়্ত ! এই মনে হওরাটাই এক বছর
বরসের ভারতীয় গণনাট্যসম্পের পক্ষে
প্রশাস্তলাভ যে অংমাদের মনে এই রকম
চিন্তা এল, ঘেঝাঘেমি ভিড়ে ব'সে ব'সে,
নোংরা ছোট একটা হলের মধ্যে, শোচনীয়
একটা মণ্ডের সামনে, তাও অনেক খাতির
জমিয়ে গলাকাটা দরে এক সন্ধ্যার জনো
ভাড়া নিয়ে, চতুদিকৈ আমাদের কলকাতার
রিটিশ সামাজিক দীন হীন স্লানির মধ্যে।
পরে নয়, বিশ্লবের অনেক আগেই।

দশকিদের ভিড় তাঁদের আবেগেংসারিত গভীর উদ্দীপনা পেশাদার থিরেটারের বৈরিতা, প্নরভিন্থের জভে,; নানা
লোকের নানা জায়গা থেকে তাগাদা—
এ সবই প্রমাণ করে বাংলা নাটাজগতে
আমাদের নাটাসংঘের প্রায়বৈশ্সবিক কৃতিত্ব,
বিশেষত সভের এই তৃতীর নাটক নবামনর।

আমরা আগে কথনও থিয়েটারের শহর কলকাতাতেও দেখি নি শণ্ডু মিত্রের মতো এমন দ্বাবলদ্বী ডিরেকটর ও অভিনেতা-আভিনেত্রী দল, তার মতো অণ্ডদেশিটর নিশ্চরতা, সামাগ্রিকতার উপরে এই কর্ড্ছে, সমুদ্ত নাটাপ্রযোজনাটিকে নানা অভাব ও বিপত্তির মধ্যেও এমন সংহতভাবে দেখার ক্ষমতা অথচ প্রথমানুপর্থ ছোটখাটো সব কিছাই, এমন কি অভাবত্রটিকেও নাটোরই কাজে লাগাবার প্রতিভা। দেখি নি বিজন ভট্টাচাথের মধ্যে একাধারে নাটকরচিয়িতা

विकः एम

তথা-প্রযোজক এবং প্রচন্ড অভিনেতা। এবং মুখাপোন অভিনেতা-অভিনেত্রীর কুদালবও ছিল বিস্তৃত, সবাই স্বেচ্ছাকমী কিন্তু আশ্চর্য তাঁদের স্বভাবোৎসারিত সাযুদ্ধার যোথ মেজাজ, যা বাবসায়ী থিয়েটারে পাওয়ায় প্রশাই ওঠে না।

প্র্ণুতকাকারে নবাশ্ল-কে বলতে হয় একটি নাটকীয় ইতিব্তু, বাংলার একটা ভয়াবহ নাটকীয়তায় মম'ভেদী সময়ের---১৯৪২-এর অগস্ট আন্দোলন থেকে তেতালিশের শেষ অবাধ অত্যাচার ও তার প্রতিবাদ, এবং তার শাহ্নিততে আরো অত্যাচার, জ্বাবে মাটিতে ফসলে আগ্রন-লাগালো, খাদ্যাভাব, বন্যা, রোগ, গৃহ-হীনতা-একটার পরে একটা। এদিকে তখন অনেক স্বাধীন ভূখণেড চলেছে ফ্যাসিস্ট-বিরোধী বিরাট সোভিয়েত যুল্ধ। নাটামণে তাই বইটি হয়ে ওঠে পরোক্ষ ও প্রতাক্ষ একটি গাঢ়বম্ধ একাগ্ৰ প্ৰতীক-এমনই মাহাঝা আন্তরিক নাটাপ্রযোজনার, যেথানে শারীরিকতার সংবেদন হয়ে ওঠে দৃশ্য ও প্রাব্য এক একাধারে মমবিদারক ও হুদয়-তাপসন্তারী শিল্পবিন্যাস, বৈশ্লবিক এক শিলপর্পায়ণ যা আবন্টাক্ট-মন্য মায়ার-হে।লেডর প্রশংসা পেত,---আবার অভিনয়ের বাদতবতার জন্যে পেত স্তানিসলাভদিকরও তারিফ।

শদ্ভূমিত্র সমস্ত রচনাটির মূল সূর বেধে দিলেন খুব সরল উপায়ে, সামান্য সাজসরঞ্জামের সাহায়ে এবং বিবিক্ত ইতি-ব্,ত্তটি পেয়ে গেল শিল্পকমের সমগ্রতা। একেবারে প্রথম দ্লোর চমকপ্রদ বিশ্বেধলা, হটুগোল মাত্র এবং প্রবল উন্দীণিতর মাত্রা দশকিদের মনের তার চড়া পদায় বে'ধে দেয় এবং তখনই মন প্রস্তুত হয়ে যায় সমুহত নাটকটির বিন্যাসের জন্যে। তারপরে উচ্চগ্রাম ভেঙে পড়ে ঘোর দ্যোগে আহত এক গাঁয়ের সংসারে। বিজনবাবরে চ্ডোত অভিনয়ে আমরা দেখি গবিভ আবেগে উদেবলিত বৃদ্ধ কতাকে, দেখি দুটি ভাইপোকে, তাদের তুর্ণী বৌদের, ক্ষুধাত শিশকে, দেখি আত্মণ্থ শাস্তমতি গ্রামের মোড়লকে, অভিনয়ার্থে কঠিন চরিত্র কিন্তু শম্ভবাব্র শব্তিমতায় উত্তীর্ণ। সকলেরই মুখের সামনে অনাহার ও গৃহহীনতা, আর চতুদিকৈ মৃত্যু অপঘাত, অনাচার। থেকে থেকে নেপথ্যে শ্বযাগ্রার চীৎকার প্রযোজনার তীবতা ও রুপাঞ্গিক সচেতন চারিল্য আরো চড়া করে ভোলে। খুবই সপতেভাবে, কারণ নাটকের গঠন একটা জটিলতা, এমন কি উদ্ভাশিতকরতা সমেত বাস্তবজ্ঞীবনের টাইপ-সত্যের খ্রণটনাটিতে ভতি এবং ভাষা ও বাচন প্রাণবৃত দেশজরীতিতে বিনাসত. র্পায়ণে তীক্ষায়িত, মানায় উচ্চাক্ত এবং তা মোটেই কারিকেচরের **অতিশয়োক্তিতে** নয়, আবেগের প্রাবল্যে **আপাতশিথিল** কাঠামোর সংশ্যে এক সারে **অপ্যান্তিত। তাই** প্রথাসিম্ব বা টিপিকল স্নেখের উপস্থিত যে কোনো টাট্কা জমির দিকে শকুনচক হেনে—চাষ করতে নয়, মালিকানার লোভে, কেনাবেচা করতে। তার স**েগ হাত মেলার** জনগণের আরেক শত্র, শহরের চোরা-আড়তদার, যার গৃংতকারবার শুধু ধান-চালের পাহাড় বানিয়ে নয়, বৈ আবার গ্রামছাড়া অসহায় মেরেদের নিষ্ণেত্ত কারবার করে।

গ্রাম থেকে শহর, শহর থেকে গ্রাম।
মধায্ণের মৃত্যু থেকে আধুনিক অপঘাত।
নিছক থাদোর প্রশ্ন, সভাতার কটি মৌলিক
ম্লাবোধ, ক্ষ্ধার মধোও ও নিবারণককথার
মধোও মানবিক ভব্যতা, জীবন ও মৃত্যু-

দশকদের যতই সামরিকভাবে হোক তড়িংসপশেই রুপানতরিত করে তোলে এবং
দশক্রিয় হরে ওঠে সেই সব মানুব বারা
শব্ব ব্যাখ্যা করে না, বাদের মনে হয় যে
ভারাও বাস্তবের চেহারা পাল্টে দিতে
পারে।

জগ্গী মায়ারহোল্ড বলতেন বে, নাটা-শালার বাস্ত্র সত্য (क्(भ ওঠ মঞ্জে নর শ্রোতাদের দশকদের মনেও। তাই শম্ভূবাব্র সাফল্য অন্তিত হল রিভ চটের পশ্চাৎপটে এবং মঞ্চে সরাসরি উপস্থিত ক্রে কলকাতার যে মান্যকে অপমানকর তথনকার সব লপারখানা, সরঞ্জামহীন দৃস্থ-সেবার হাসপাতাল, অমান, যিক আড়ি-পাতা कात्मता-हाटा সংবामम्पत्रे ति वा मानान, কালোবাজারি, বিয়েবাড়ির সেই ভোজ ওদিকে বাইরে রাস্তার মোড়ে আস্তাকু'ড়ে বাস্ত্হারা ভিক্কদের। এই সব কিছ্ই আমাদের চোধক নকে ধারা দিরে বার আর আমাদের হৃদরব্তিকে ধাওরা করে, মনে গোথে বসে। আর এটা কাউণ্টারপন্দেন্টেড বা প্রতিস্বরিত হয় খাঁটি দেশজ ভাষায় যখন মনে করায় যে এইসব ভিক্কাবন্ধ মান্বেরা শ্ধ্মার হতভাগা গ্রামের লোক, যারা হরদে:র ছেড়ে এসেছে নিছক খাদের পশ্বানে, বারা মোটেই শহরের ভিক্রাক-ব্যবসারের হাজার হাজার লোকের সংগ্র তুলনীর নয়, কারণ এদের মাটিতে কাজ এদের স্বভাবের ছটি গড়েছে। পরিণামে এরাও স্বাই জমিতে ফিরে বায় এবং সন্মিলিত হয় মরিয়া আনন্দে বাংলাদেশের

সাবেক কিন্দু বাস্তবে দ্র্ল'ভ সেই মিলিভ চাবে, ও ফসল কটার গাডার। নাটকটি শেব হর এক চিত্র রচনার, সকালের প্রথম আলোর লাভিহাতে প্রামবাসীদের ন্ত্যে একং উদ্যাদ বৃদ্ধ প্রবীণ জোড় বাঁধেম সেই স্থিভাবী প্রাম-বৃদ্ধটিরই সংগ্রা-সমস্ত দ্গাটি প্রতিপ্র্রুক হর প্রথম দ্লোর সেই অপিনার রাত্রির সংগ্র

বলাই বাহনো, বৰারীতি শোনা সেছে वित्राच जन्माकाहमास, বির্প মস্তব্য, প্রারই মূল বিবেচ্যটির দিকে মদ না দিয়ে —এমনকি পরিচয়-পত্তেও। বস্তুত, নাটকটির প্রবল সাথকিতা সম্ভব হয় নাট্যকার-প্রয়েজক-অভিনেতারা সকলের অসামানা একাত্মতায় এবং সেটা ভারতীয় নাটাশালায় এক অগ্নণী কৃতিত্ব, বার কথাটা সোভিয়েত দেশের গ্ৰীজনেরা বলেন : একটা বিশেষ चारकम्भ बागारक राम, প্রযোজককে कानरकरे रूरव भारत काँत नागिमकरक नत्र, তাঁর দশক-ছোতাদেরও, জানতে হবে এবং স্ভানশীলভাবে সেই জ্ঞানের সাক্ষাং প্রয়োগ করতে হবে। শম্ভুবাব্রা বিজনবাব্রা তাদের প্রোভূপক্ষকে আদতেন-আমাদের বন্দী ও বিরুশ্ধ পরিদ্যিতিতে বতটা গভীরভাবে জানা সম্ভব। সোভিয়েত অভিজ্ঞতার পাঠ থেকে এটাও তাঁরা জানতেন যে, নাট্যাভিনর শৃথ্য পরিচিত চাল্ অনুষপো নির্ভার করে না, নব নব দৈবপ-লব্দিতে মননের শক্তিও তাতে সৃন্ট হয়, মানুষের আত্মসচেতনতাকে নাট্য নব-জীবন দেয়, মানুষের অনুষ্পা ও সংলাগ-তার ক্ষমতা জাগিয়ে তে'লে।

ঐরকম সব ভাবনা মাথায় এসেছিল व्यात्र । 'নবাম'—নাটকের **প্রবোজনা মনে এমনই ধারা দিয়েছিল**, আবেশের প্রবল শক্তিমন্তায়, বে আজও সেই অভিভৱতার রৌদ্রে বন্যার আমাদের মন স্বতঃই ফিরে যার, শিলেপর অভিজ্তর এমনই ক্ষমতা। নাণ্যনিক অভিজ্ঞতা এই-রকমই প্রবল হয় যখন আট নন্দনশিলপ এবং বধার্ঘ জীবনের আবেগমর উপলব্ধি, আমাদেরই, এই মানব-জীবনেরই উপলব্ধি, তার ভুরাকহতার, তার কার্ণ্যে এবং আন্চয তার মহিমাগৌরবে একাকার হয়ে বায়। যেমন বাস্তব জীবনে В ঐতিহাসিকভাবে সমরণীয় মৃহ্তবিশেৰে সগরোখিত হয় নীলক-উ-বিৰ ও অমৃত--যথা ৪৭-এর ১৪ই।১৫ই আগল্ট মনে কর্ন তেমনি লিক্পক্ষেপ্ত সমন্থিত হয় এইরকম ম্হ্ত'। 'নবাম' আমাদের ইতিহাসের করেকটি মৃহ্তেকৈ আধ্ত করেছিল माण्टेकद्र स्नाबात्र, नाणेत्रद्रां स्नाम प्रत्य ४२। ৪০-এর সেই বেদনাক্ষর ক্রিনায়ণের

সংগ্য একার অভিনরের কর্ত্যেও আবেগে।

সৰ সময়ে হয়তো নাটকের শ্বচনা বা প্রযোজনা আর অভিনয় বছাই দক হোক, এরকম প্রবল শক্তিমন্তা ও একতার বোধ জাগাতে পারে না। সক্ষরত শিল্পাতিরিভ কিছ বিবেচ্য তথা বাস্তৰ ঐতিহাসিক বা সামাজিক পরিস্থিতির মানবিক নাটা খ *শিক্ষা*প্রস্টার আশ্তরিক कर्भा করে। তার অর্থ এ নয় ঢ প্রভাবিত নবাল্ল-র দীর্ফ্থায়ী মর্মাস্পদ্শী নক্ষনে চিন্তশ্রন্থিতে কিছ্ আপতিক ব্যাপা ছিল। আমাদের চোখ ও কান আমাদের বঞ্চনা করেনি।

রবীন্দ্রনাথের শতবিধ কিন্ত একক ও কীতির পরে বোধহ क्यानिन्छे-विद्यारी लचक-निल्ली(नद গননাটোর প্রগতি আন্দোলনই নানারকারী कर्मा करते कर कर मायका अर्जन कर् সেই সাত-আট বছর ধরে **এবং** भरहे বৃহত্তর প্রভাব রেখে বায়। গলেপ কবিতায় চিচুশিলেপ তার ছবি পাওয়া याम् ध्वरः। ন্তেগানেও। জ্যোতিরিন্দু মৈরের নব 🤄 **জীবনের গান, বঞ্জার গান প্রভৃতি সংগী**লী স্থিত আৰুও আলোড়ন তোলে এবং নাটৰে ও নাট্যমণ্ডে আজ এক দিশারী জয়স্তদ্ভ 🖯 আর নাট্যরচনাতেই তো লেখক সে জা সেত্-वन्धन कंद्ररक भारतम अनमाधावरभद्र मरनद স্ভেগ ৷

কিন্তু নাটাপ্রযোজনার প্রাণবন্ত আন্দেরা-লন ছাড়া নাটক লেখকের হাত-পা অনেক-টাই বাঁধা থেকে যায়। বাস্তবিৰূপক্ষে প্রাণবৃহত দ টাসাহিত্যে নাট্যশালাই সয়ে ওঠে নাটকের প্রাণ, তাই नाष्ट्राभ: शब्द আন্দোলনে সাহাষ্য পান নাটক কেবা कि शामा कि भागा। এইরকম সম্ভাবনা দেখা যাছে বাংলায় व्याभारमञ् শতভাঙনধরা সামাজিক জাতীয়-জীবন সত্তে। শ্ব্ কলকাভাতেই তো কোন্না ১০।১৫টি নাট্যলল আছে, বাঁদের নাট্য-প্রয়াস প্রায়ই চমকপ্রদ এবং মাঝে ম ঝে গভারভাবে ভূপিতকরও বটে। বহুরুপী ও শশ্ভূমিত যে প্রযোজনার মান অরজান করেছেন, তা কলকাতার গবের বিষয়। তেমনি আছেন নান্দীকার ও অভিডেশ বন্দ্যোপাধ্যার, সবিতারত দস্ত 😮 তাঁর রুপ-etaকার গোষ্ঠী, বিজন ভট্টাচার্যন্ত অসাধারণ ধীরক্ষে পূর্ণ তাঁর দানা রচনা প্রযোজনা। 🧺 এখন বোধহয় আশা করাটা পাগলামি হবে না বে, ব্যবসায়ী খিলেটার ও ব্লিখমান থিয়েটারের শিক্পকৃতিম্বের ও আর্থিক নিশ্চিতির অভাবের তফাংটা কমে আসবে। মিলিড ন টাসংস্থার চেন্টা তো সেই আশার पिरक्दे छाकिता



SIMI

স্রমী বিবি যেরাক্ম

ব্বের বাড়ি ব্লুল্তে এসেছিল সরমী বিবি! ব্রু
কুলসমের একটা মেয়ে হবার পরে 'সোড' রোগে 'বিছেন'ধরা
আবন্ধা' হলে স্রেমী—ছোট বোন এল অচল সংসার সামলাতে।
তার ভালিম-ভার বৃকে বোনাইয়ের পাপ-চোধ ছেন বিধে সেল।
'শতেক কথায় সভী ভোগে!' স্রেমীর আর দোষ কি! বোনাই
জামির মাল্লক 'হাসথোল' মান্ষ। সদাই হাসি-ইয়ারকী। সদাই
তার পিছনে ভানভান করে। থালাবাটি মাল্লত গেলে ঘাটে গিরে
হাজির। গোমালে গোবব তুলতে গেলে, গরুকে খড়-খোল-জুবি
দিতে গেলে সেথানে হাজির, তালগাছ কাটতে গেলে ভাড়ি নিয়ে
চল সংগ্র মাঠে গারু বাঁধতে গেলে কুয়াশার মধ্যে সেথানেও তাকে
ধরবে আর রাত্রে দিবির পাশে খ্যোলে মিনসেটা উঠে এসে
চুপিচুপি হাতে-গায়ে-পায়ে হাত দিয়ে দিয়ে যেন জলের মধ্যে
আন্দ্রে স্থানা মাছ খাজে বেডাবে!

একটা ভয়ানক আতৎেক যেন সারারাত চোখে-পাতায় করতে পারে না সার্মী। অংশকার ঘর। তন্তাপোষটা মচ্মচ্ করে: ভবিনপতি বোধহয় নামল। মেথেয় তাদের বিছানা। মট্ করে হটির শব্দ হল। বসল বোধহয় মশারীর পাশে। তারপর পারে হাত পড়ল। হাতটা কাপছে।

স্ব্ৰমী পাছেডিয়। ডাকে যেন ঘ্যজাঙা **জড়ানো গলায়ঃ** ব্ৰু: ৬ ব্ৰু:...কি মৱশের নিদ বাবা।

আবার চুপচাপ।

মোটা দুর্গান্ধ কেরেসিনের কুপটি। জ্বালায় জামির মল্লিক। বিভি ধরায়। ছারপোকা মারে। সুরুমী বলে, 'মিননে বেন চং!'

্থারে ধের শালী, ছারপোকাতে থেয়ে ফেলছে তোদের!

ভাই মোর পায়ে হাত দি**চ্ছিলে**?'

'দুপ শালী!'

্বির্কে বলে দোব। ওরকম জনলাতন করলে জাল আমি চলে যাব।

জামির বলে, 'ভোমার পরাণে দরা নেই!'

ফালো নিভিয়ে দিয়ে বাইরে চলে গিয়ে অন্ধকারে জারার জালজাল করা আকাশের দিকে চেয়ে বসে থাকে জামির। ধানের গোলার পাশে ই'দরে-ছ';চা দৌড়র। সারমীও ব্রেষাতে পারে না বোধহয়। গরমে ঘাম হচ্ছে। বাইরে এসে গারের আঁচল খলে ছাওয়া দেয় তালপাতার পাখা নুলিয়ে। তারপার একটা ঝাগেলা পেতে দাওয়ার শরে পড়ে। ঘুমিয়ে পড়ে বোধহর। নাকি ভান!

জামির এসে বসে তার পালে। পারে হাত দেয়। কোনো সাজা করে না স্বরমী। কিন্তু ধ্মনত মান্বের বেরকম আচরপে জাগা উচিত তার বোধহয় সীমা পান হরে বায়! তাই সাজা দিতে বাধ্য হয় সে। ধড়মড় করে উঠে বসে। জামিরের হাত চেপে ধরে চোর ধরার মতন করে। 'কে তুই রায়!'

চুপ! চুপ মাই তোর বোনাই!' ভাকব বাবেকে!' 'তোলালু পালে ধরি!'



সুত্রিমী আর ফেন পারে না। লোকটার কাকুতি-মিনতি দেখে তেওে পড়ে। বেন একটা চেন্ট তাকে ধাকা মেরে ফেলে নিয়ে বানের তোড়ে ভাসিয়ে নিয়ে বেতে চার। আর সে ব্রুগতে পারবে না। ভূবে বাবে। ভিলিয়ে বাবে।...দিদি দুঃখ পাবে।...

় তব্ সেখানেই আবার শ্রে পঞ্ সন্ত্রমী। কাদতে থাকে ফোস ফোস করে বালিশে মুখ চেপে। জামির অন্ত্রম করে মাথার মুখে হাত ব্লোতে ব্লোতে বলে, ভূমি কোনো না স্ত্রমী, ধান বেচে. খড় বেচে তোমাকে সোনার হার গড়িয়ে দোব। পাছাপেড়ে শাড়ি কিনে দোব। র্পার মল, ভাবিক, গোট গড়িয়ে দোব।

সূর্মী বলে, 'তোমার বউকে দাও। ভাকে কি ভাল লাগে না? একই তো জিনিস! এক তরকারী, দুটো বাটিতে করে দিলে কি দু'রকম স্বাদ লাগে?'

জামির বলে, 'ও ব্ড়ী হরে গছে! রোগী। তুমি থাকো। তোমাকে বিয়ে করব।'

'বনুনে বনুনে সতিন হয় ব্ঞিন ? বউ দরে গেলে তার বনুনকে বে' করতে আছে। শালীকে নন্ট করলে বউ তালাক হয়ে ধায় জানো?'

'হার হবে। তোমাকে আমার চাই। কুলসম মর্ক।'

'त्नारक कि वनाव?'

'বলকে। সংসার ছারেখারে থাক, তোমার রূপ, তোমার 'যৈবন' আমাকে পাগল করে দিয়েছে। তোমাকে চাই ই।'

স্ত্রমী বোধহয় ভয় পেলে। উঠে দিদির কাছে গিয়ে শ্রে পড়ল। দি িক জাগালে। জল খাওয়ালে। বাচ্চার ক'থা পালটে দিলে।

कुलनम जात घर्षारत ना । जाहे न्यस्मी नर्याण वर्ष ककरें घर्षारस त्मस।

সকালে জামিরের মেজাজ কড্রা হয়ে গেল। থালি-থামথা হেলে গর্টা ক পিউত লাগল। স্রুমী ঝটিগাট সেরে ভণনীপতিকে জামবাটি ভরে পাশতা থেতে দিলে, কিন্তু সে এল না। কুলসম বাইরে থেকে আসার সময় সামনে পড়তে জামির বললেঃ মারিস্ নি? প্রুলাউঠো ধরেছে, কবে লিয়ে বাবে ভোকে?

কুলসম বলে, 'আমি মরলেই তো তোমার হাড়ে বাতাস লাগে। 'জনু-জাহান' ঠাণ্ডা হয়। আজ্লারও কি ঢোখ আছে, সে ৰে অন্ধ! মরণ কি মোর দেবে?'

স্রেমী হঠাৎ একট্ খেলাতে চাইলে ভুন্নীপতিকে। দিদিকে শ্নিয়ে বললে, ব্ব মুই ঘর যাই। ভোদের সংসার তোরা দ্যাখ।' সে কাপড় পরতে গেল।

কিব্ছু জামির কিছু বকলে না। খড় এনে বসে বসে পাকিরে কলাই রাখা 'প'(ড়ো' বানাবার জনো বিভিন্ন বিন্নীর মতন ছোটা তৈরি করতে লাগল উঠোনে বলে। কুলসম কোনো কথা বললে না। শ্বের পড়ল গিয়ে। বাচ্ছাটা ককিয়ে চলুচছে।

স্বর্মী শাড়ি পরে নিয়ে বেরিয়ে গেল খিডকি দিয়ে।

জামির চেরে দেখলে শ্ধে একবার। তারপর সামনের মাঠের মাঝখানে ধ্বথন চলে সেছে সে, জামির দৌড়ল। ধ্রলে তাকে এসে।

'এই শালী, চলে হাচ্ছিস, রাধ্বে কে? তোর বুনকে দেখবে কে?'

'কেন, আমি কি তোমাদের দাসী? লোক রাখতে পার না? ছাড়ো, হাত ছাড়ো।'

'আর, চলে আয়।' হাত ধরে হিড়াইছে
করে টানতে টানতে যেন দৌড়র জামির।
দেড় মাণে ধানের বসতা একাই যে মদ্দমানুষ মাথার তুলে নিতে পারে তার হাত
ছাড়ানো শক্ত! মাঠে মেয়েরা বিরি কলাই
তুলছিল, হিন্দু মেয়েরা হাসতে লাগল দাশা
দেখে। কিস্তু একটি ম্সলমান বড়ী বলাল,
'সোমত্ত শালীর সংশ্য ম্সলমান-ঘরে অবাধ
মেলামেশা-ঢলাঢলি করা নিষেধ। দ্যাখ—
মজা দাথে!

জামির তাদের শানিকে হোকে হোকে বলে, 'বউ পালাচ্ছিল গো মা-মাসিরা। ধরে আর্মছ। যাবে কোথা শালী, পর্যালশ তুলে ধরে আরব।'

সরমী হাসে, কাঁদে, গাল দেয়। কিন্তু ছাটডেও হয় ভাননীপতির সংগ্যা। গোঁয়ার বাঁড়ের মতন সে টেনে নিয়ে চলেছে। শেষে কামডে দেয় তার হাত। রক্ত বার করে দেয়। শ্বরসী ক্ষেপে গেছে। কেননা হাল-বাড়ির ঢোলামাটিতে তার পায়ে চোট লেগে গেছে। কিন্তু অশ্বর্ধা তব্ও হাত ছাড়ে না জামির। হাত বদলে নেয়। অনা হাতটা মাধায় ঘষ্টেও থাকে। ফাঁ দিতে থাকে। ফাঁ লিতে থাকে। কাঁটা জায়গাটতে।

নিজের বাগানের উপর টেনে তৃংল আনলে হঠাৎ স্বেমী বলে, 'এই মিন্সে ছাড়ো, তোমার পায়ে পড়ি, এই আমি নাাংটো হয়ে গেছি...দোহাই আলার...তৃমি বা চাও দোব...ছাড়ো'...

ছেড়ে দিতে কাপড় পরে নিলে স্রুমী। কিন্তু হঠাং আবার পালাতে গেলে ভাকে দৌড়ে ধরে এনে শ্নো চাগিয়ে তুলে ধরে একেবারে বাড়ির মধ্যে আন্তেল।

কুলসম ছেড়েনেড়ে উঠে বসল ঘরের মধ্যে। দৃশাটা দেখে কপালে হাত চাপড়ে আবার শংরে পড়ল। কাঁদতে লাগল ডুক্রে ডুক্রে। বাচ্ছটা ককাচ্ছে দেখে একবার ভাবলে ওর গলাটা চিপে দেবে নাকি। বাচ্ছটাকে বকে তুলে নিরে এসে দোলার ব'স থামার তাকে থামার স্বস্মী। দিদি কাঁদছে কেন? সে চলে বাচ্ছিল বলে? তাই ভাবে অবশ্য স্বস্মী।

সেই রাত্রেই সর্রমী আর বাধা দিলে না আমিরকে। জয়ানক এক আনন্দের ব্ন্যায় বেন সে ভেসে গেল। বাছিনী যেন মানুবের রভের প্রাদ পেরে পাগল হরে গেল।

সে আর ঘরে ফিরে বাবার নামও করে না। প্রকাশ্যেই দিদিকে একদিন বললে, তোর মন্দ-মানুষ আমাকে নন্দ করেছে।'

ভূপ, কাউকে বলিসনি। ঘরে চলে বা।
আমি তো এবার একট, সেরে উঠেছি—
বেমন করে হোক কাজ-কাম করব। হালীর
মাকে বলিচি, কাজ করে দিয়ে যাবে।

কিন্তু স্বেমীর চোখে কেমন যেন এক চাতুরী-ভরা হাসি। দে আর যেতে চার না। দিনির ব্রেকর ওপরে যেন চেপে বনেছে দে। ভানীপতির সংক্ষা তার প্রণয় আর লুকোনো রইল না পাড়ার কারে। চোখে।

এক রাতে ওদের ধরলে কুলসম। বোনকে ঝাঁটার বাড়ি ঘা-দুই দিলে। বেরো, দুর হ, হারামী।

জামির কুলসমের টু'টি টিপে ধরে জিব বার করে ফেললে, বললে, 'তুই দুর হয়ে বা মাগী। তোকে তালাক দিচ্চি।'

সকালে মেয়েকে কোলে নিয়ে মায়ের কাছে গিয়ে কোনে পড়ল কুলসম। মা শুনে ছুটে এল। সুরমীর চুলের ঝুণিট ধরে মাটিতে পেড়ে ফেললে, 'হারামী, ভোর এই ব্যাভার!'

জামিরবললে, 'ওর দোষ নেই মা, আমি ওকে 'নষ্ট' করেছ। ওকে লিয়ে আমে যর করব। তোমার বড় মেয়ের তালাক হয়ে গেছে।'

শাশাক্ত বলে, 'ছুমি একটা মান্যের বাচ্ছা, তাই তোমার মুখে ও কথা বেরুতে লক্জা হল না।'

কিন্তু স্বমীর হাত ধরে টানাটানি করলেও সে আদৌ ভণিনপতির ঘর ছেঞ্চে এখন আর যেতে রাজি নয়। অগত: তার পিঠে লাগি 'মরে জামিরের শাশ্রি পাড়ার মোলা, রেইস, কোলেমান স্বাইকে ভাকতে গেল বিচারের জন্যে।

সম্ধারে সময় বিচার বসল।

মোলা শাধোলেন, 'জামির তুমি কি তোমার শাশাড়ির কাছে বলেছ বে তোমার বউকে তুমি তালাক দিয়ে শালীকে নিরে ঘর করবে?'

'হাঁ, মোলাজী।' 'স্বুমী বিবি কি রাজি?'

সূরমী বলে, 'ব্বুকে তালাক না দিলেও সে তালাক হরে গেছে এমন কাঞ আমার সঞ্চো আমার ভণ্নপতি করে ফেলেছে।'

'রেইস' মানে প্রধান বলে উঠাল,
'দ্বালনের মাথা মানিজ্যে ঘোল চেলে গাধার চড়িয়ে কলকাতা শহরে পাঠিরে দাও। সেখানে ওসব কাজ করলে কেউ কিছ্ব বলবে না।'

'ক্ষানো জামির, এর কি দ'ড?'

হজ্বের বা বলো।' হাত কচলাতে লাগল সামির মজিক। চ্যাপটা মুখে ই'তকু'তে চোখ দুটো তার পিঠ'পঠ করতে লাগল। ভাবটা বেন স্রমীর 'বৈবনে'র বেলার বিনিমরে সে যে কোনো শন্ত সালা নিতেও এখন প্রস্তুত।

ছলসমের দেন মোহরের টাকা দিতে ব্রে, আর একলো টাকা জরিমানা, অথবা গালীর সপো তোমার সাদী পড়াবার দিনেই গামের সমস্ত লোককে খানা খাওরাতে হবে।

্রার হে'কে দিলেন সাদা দাজ্ঞিল। বৃশ্ব মোলা সাহেব। ্লামির রাজিঃ

্দু সবাই অবাক। একজন বললে, খার
সাথে বার মাজ মনশ কিবা ইয়ে কিবা কী?
এখন কি আর পাতলা রস আছে, জাম
মহরির কু'দো হারে গেছে!' শাধ্য শাশ্ডি
ক্পানে করাঘাত হেনে কাঁদতে লাগল।
সংশো সংগ একশো পাঁচিশ টাকা দেন
মোইর বাবদ নগদ বার করে এনে দিলে
ক্রামির মোলার পারের কাচে!

প্রকাশ্যে বড় বিবিকে তিন তালাক কেওবানো হল। সবাই চলে যাবে কিন্তু ইছি পাশের বাড়ির বাব্দ্রান দ'র্জ' বুড়ো লোকটা বলে ফেললে, 'মোলা সাহেব যাবেন লা. ওরা যে ক'রাত এক সপ্তে থাকরে করেই পাপ বাড়িরে, গ্রামে কলেরা হবে, জার চাইতে আজই—এখন সাদী পড়িরে বিলে বান। জায়ির ইচ্ছে করলে কালই স্কাইকৈ খানা খাওয়াতে পারে।'

্রপ্রতাষ্টা সবাই মেনে নিলে। স্বেমীর সংগো সাদী পড়ানো হয়ে গেল জামির মালকের।

জামির অংধকারে একান্তে টেনে থনে বাবজোন দক্ষির দাড়িভরা মুখে চুমো থেরে বললে, 'চাচা, তোমার কেনা গোলাম হয়ে রইন্ মুই। আমার বাপের মতন কাজ করেছ তুমি।'

বাব্জান দজি বললে, 'তুই শালার বেটা গমন কাজ করলি, এখন কি করি বজা!

পর্দনই জবাই করে, খাসী মুর্বগ কেটে মণ্থানেক চালের ভাত রে'ধে, ডাঞ মাছের মাথা দিয়ে আলু ঘণ্ট, মাছ ভাজা তিন রকম্মাসে রালা করে জামির মঞ্চক খাইয়ে দিলে পাড়ার সমস্ত লোজজনকে।

শালী বউ হয়ে গেল. বউ পর হয়ে গেল ভার কোলের দূধের বাচ্ছাটা নিয়ে!

ভাজা কোটা করে থেতে খেতে মা'টাও
একদিন মারা গেল। কিন্তু কুলসম আর
নিক্ সে'ধল না। পার্ব মান্বের ওপরে
তার ঘণা ধরে গেছে। বাটা নগরের পানে
ন্থার বিখ্যাত ধনী এবং পরহেশগার
মান্য তারিক মোলা সাহেবের বাড়িতে সে
দাসীর কাল করতে চলে গেল। চোখে জল
মুছতে মুছতে সে ধান সিম্ধ করতে,
কাপড় কাচতে, রালা করতে লাগল।

बहर भार इता ज्यान इ.इ. करा।

কুলসমের মাধার চুল পাকলো। তর মেয়ে ইল ব্বতী। মেরেটা মাঝে মাঝে আসত জামির মজিকের কাছে। কুলসম এলেও জামিরের বাড়ির সদরে মাখা গলাভ না। দর্জিদের বাড়ি থাকত। বোনে বোনে দেখা নেই।

স্বেমী ডেকে পাঠালে কুলসম বলে 'ছেনালের মুখে মারি কটি।'

স্ক্রার কোলে তখন দ্টো মেয়ে।

বড় মেরের সাণীর জন্যে টাকার দাবি করতে এসেছিল কুলসম। বাব্জান দার্জ অনেক বোঝাতে, মোলার নির্দেশে জামির টাকা দিলো। বড় মেরের সাদি হয়ে গেল ন্পাতেই। ভারেক সাহেবরাও সাহায্য কর্তান।

স্রমীর কিম্তু মেজাজটা তিরিকি হতে থাকল দিন দিন। জামিরকে সে তোরাজাই करत ना। वर्ल 'वाँग-कार्ठ रवहा टोका, তালপাতা, গড়ে কলাই বেচা টাকা, আমড়া, শাঁকাল্যু, কলা, আডা পে'পে বেচা টাকা, ঘ'ুটে কণ্ডি বেচা টাকা, আমার সংুদের ोका--वात करता भव भिनाम। मा **१८**न তোমাকে ব'টি দিয়ে 'কুইচে' ফেলব। বড় মেয়ের বিয়েতে ক'শো টাকা দিয়েছ? কার টাকা? আমি মেয়েমানুষ হয়ে কোথা জন एएक जान बाहिक हान कहा है, निस्न ভাঙা কোপাই কাছা সে'টে, চোর পড়বার ভয়ে বালাম ছোরা লিয়ে রাত জাগি--ভূ'ড়ো মিনসে শ্ধে তাড়ি গিলে ঢোল হয়ে পড়ে থাকবে। জমিদারের প্যায়দা এঙ্গে খাজনার জন্যে বাকুলে চনুকে 'কুরশী বিবি —স্বুরুমী বিবি' বলে তাশ্ব—গ্রহার বেটাকে কাটারী লিরে তাড়া করতে মারকেতেতী দেড়ি! স্বেমী বিবি বস্ত জালিয়াদ! খাল তার টাকাটাই মিন্টি!

জামির বলে, 'মাগাঁ, তোর বন্ধ ফড়ফড়ানি! সনেনা দড়ির চাবকের বাংড় মেরে তোর 'কাবলা' ফাটালে তবে রাগ বার! বড় মেরেটা কি বাওরা আল্ডা? আমার মেরে লর? রামনগরে মেরেমান্মের ভাইরেল নাচ দেখতে বেতে তুই ছেনাল ঘরে সি'ল কাটবার মাম করে মোর যত টালাকড়ি ছিল বার করে লকুলি! জামি নি মুই?'

স্কুমী হঠাং জামিরের সামনে হাঁটার ওপরে কাপড় চাগিরে তুলে ধরে নাচতে থাকে ঘ্রপাক মেরে। বলে, 'মরি মরি! কি আবদারের কথা! ম্ই নাকি মন্দমান্বের টাকা চুরি করিচি! তোমাকেও তো চুরি করিচি! কি আদরের কথা! বড় মেটেটা ওর! আমার গ্নো বানে ভাসা। তবে বড় গিমিকে ফের পারে ধরে আনো না!'

জামির বলে, 'তার পারে বা আছে ভোর কপালেও নেই। ব্ন হয়ে ব্নের সংসার বে ভাঙে তার ইহকালেও সূখ নেই—প্রকালেও সূখ নেই। তোর টাকা কোথা থেকে এল দর্নি? বাপের বাড়ি থেকে এনেছিস? কুলসম তো কক্ষনো একটা প্রসা শিস্তান'। আর তুই সব টাকা দথল করোছদ।'

আরে ব্ডো 'ঢোস্কা' তুমি তো কথে এবার পটক তুলবে, তথন কি আমি আরু





কিটা 'লিকে' সে'ধ্ব? গতেরে রেথেছ কিছে?' নিজের শরীরটা দেখার সর্বমী। সর্বমীর পেটের দটি মেরের বিয়ে দিরে অক্সদিন পরেই জামির পেটের বল্পায় আছাড় কাছাড় করে 'বিনি ভিকিক্ষেয়' মারা গেল। হাসপাতালে নিয়ে যাবার কথা বলতে কুরশী বললে, 'টাকা কোধা? মিনসে কি আমাকে টাকা দিত?'

ছোট জামাইটা বাড়িতে পাহারা দেবার জনো রইল। ক্ষেতে থামারে কাজ করতে লাগল। সে তাল গাছ খেজুর গাছ কেটে রস নামার গড়ে জনল দেব, ডাঙা কোপার, বনজগাল কাটে আর মেরের পেটে প্রতি বছরে একটা করে বাছ্যা পরদা করিয়ে থথন কু'ড়ে গর্ব মতন আলো মেরে গেল তাকে স্বমী থাটা মেরে তাড়িয়ে দিলে।

মেয়ে ঝগড়া করলে তাকে আলাদা করে দিলে। জন খাটতে বৈর্ল সে।

স্রুমী একাই অলোদা খায়। একটা হাফপ্যাণ্ট (বোধহয় তার ছোট জামাইয়ের) পরে এলো গায়ে হ্মহ্ম করে নিজের ভাঙার মধ্যে কোদাল পাড়ে, জল বয়, গাই লাগায়, পাট কাটো। পড়োর লোকজন আসে জনালানী কাঠপাতা কিনতে। এক মাঠো নরেকেল পাতা চার প্রসা দাম, এক ঝেড়া খ'ুটে চার আনা, গেছো পান এক গোছ চার জ্ঞানা। কাঁচা ব্লো আমড়া, মোচা, স্বেনা, আম কলা বাতাবীলেব, কঠিল, তাল, নারকেশ, নে'না, আতা, খাম'লে;---যখনকার শা-সব মাথায় করে বয়ে নিয়ে বিক্লি করতে ছাটে ধায় স্বিমী। র তে মেয়ের খেকাটাকে কাছে নিয়ে:শোষ। প্রায় কুড়িটা কথি। পেতে মোটা করে বিছানা পেতে রেখেছে তক্তা-পোষের ওপরে। তার ভ'লে ভাঁজে টাকা আছে। টাকা আছে, তক্তাপোশর বাক্সর মধ্যে। ঘরে সি'দ কাটার ভয়ে কটি।-পালা খিরে দিয়েছে বনেদের পিছনে।

ছোট মেরে হা সন বানার দুটি গেংবর বিরে হরে গেল। কুলসম শেষ জীবনটা জামাইবাড়ি থেকে স্থেই মারা গেল। মেজ মেরের বর বাটালগ্রের কারখানার প্রমিক। জাল স্পতা পায়। সে এলে স্রমী বিবি মারাণ জবাই করে খাওয়য়। হাসেন বানার দুটি মেরের বিরের খন্ড অবশা সারমীই দিরেছিল। হাসেন বানার ছেলেটার গোঁফ গাজিরেছে, ভাল জনমজার হয়েছে। কুরশীর জবরদন্তি, এখনো তাকে ব্ড়ীর সংশা খরের মধ্যা শাতে হবে! আর ব্ড়ী তাকে সারারাভ খ্যোতে দেবে না।

সুরুমী বিবির কাছে কত টাকা আছে?

লোকে বলে, অনেক।

ত্বে চোর পড়ে না কেন? চোরেরা স্কুলনীকে ভয় করে। সে একট্ কুকুর ভাককেই বলম নিয়ে তেড়ে হে'কে বেরিয়ে জালে। কুন্ গোলাম রা...'

সর্বমী বিবির কাছে লোক আসে স্থে টাকা নেবার জন্যে। তার ভাগেন বড়লোক মণ্ডাক মোলার মতন লোক, পাঁচ হাজার টাকা চায়! জমি কিনবে। অভাব পড়ে গেছে টাকার। মাস ছয়েক প্রেই দিয়ে দেবে।

কত স্দ দিবি?

'টাকায় দ্' পয়সা।'

'অত টাকা মোর কাছে আছে হাঁলা হাসেনবান্?' মেয়ে টাকা গ্নেতে জানে। বললে 'হবে। কাল সকালে এস দাদা।'

রাতে স্বাই ঘ্যোলে মেঝের মটি খ্লে একটা মাটির কলসী বার করে স্রেমী বিবি আর তার মেয়ে। জয়নালকে সেদিন আর ঘরে খাতে দেয় না।

এক কৃড়ি এক কৃড়ি করে প্রথমে পাঁচ কৃড়িতে একশো টাকার থাক দের হাসেন বান্। দশশো হলে এক হাজার। এইরকম পচটা যারি!

স্রেমী বলে, 'মনে রাখিস মা এই টাকার জনে। বিনি 'তিকিজের তোর বাপ মারছে তব; টাকা ছাড়ি নি...অনেক কণ্টের টাকা... স্বেটা হিসেব করে লিবি।'

সেকালের অনেক কচি। টাকা রয়েছে। মেয়ের হ'তের দিকে সদাই লক্ষা রাথে সরেমী বিবি। দশটা টাকা পেট কাপড়ের মধ্যে লাইকে' ফেল্লেই হল।

মণ্ডাঞ্জ মোলা টাকা নিয়ে গেল সকালে এসে। কোনো সাক্ষী বা লেখাপড়া নেই। বাকে সায়ের কামাই নেই। বাকে পাঁচটা টাকা ধার দিয়েছে প্রতিদিন একবার করে তার বাড়ি যাওয়া চাই। কথা শোনানো চই। শেষে তার বউ কি রল্লা করেছে দিতে বলো। সাতসকালেই একটা ভাঁড় হাতে নিয়ে পাড়ার বাড়ি বাড়ি যাবে মুর্রাগর রু'ড়ো গ্লেবার জনো ফেন চাইতে। কেউ ধাদ সাদস্যেত টাকা মিটিয়ে দিয়েও থাকে তব্ তার রেহাই নেই। সুর্রমী বলবে, বিপদের সময় টাকা চাস, এই যে ছে'ড়া কাপড়া পি'ধে খাছি, কই দাদিকে তো একটা ছ' খেতে ঠেটি কিনে দেবার ম্যান্নাদ হয় নে।'

বি-এ পাশ বিষ্ট্রাব্, সম্ভাগত লোক, দেখা গলেই স্বুরমী বলবে, হাঁ-রা বিষ্ট্, ড্ট 'পেসভন্ড'বাব্, গলি, গ্লোকে 'লিলিফে'র মাল দিসনি কেন? মোর কি আছে:

ছোট জামাই 'জুবে' সামনে পড়লে ব্যুড়ী বলে, গোলামের বেটা যেন সং! মাগ নেই, ছেলে নেই. আঠারোটা 'টোকা'র জনো ডাঙার দিয়ে ফি করিয়ে বলদ হয়ে এলে! এখন পাড়ার ছ'ড়েদের খারাপ করে বেড়াবার মতলব!' ডুবে কিম্তু কৈজ্ব ট' শব্দ করে না—ব্ড়ীকে সে ভর করে। কছ্ব বললেই এক্ষ্মিন পটাস্করে গালেচ্ড মেবে দেবে! সোজা মাখা হেণ্ট করে চলে যায়।

স্ক্রমীর সংশ্যাদেখা হলেই স্বাই ভাবে অ্যান্ত্রা মুখ খারাপ করতে, ক্ষাড়া করতে ভার জ্বড়ি নেই ভূ-ভারতে।

তব্ পেটে ব্যথা উঠলে যত রাতই হোক মেয়েরা লম্ফ জেবলে নিয়ে ডাকতে যাবে সুরুষী বিবিকে। পোয়াতি থালাস করানোর ব্যাপারে সে নাকি ওস্তাদ। যে মোলাজী তার সাদী পড়িয়েছিলেন তাঁর ম,তার পরতার স্ক্রী ছেলেরা প্রায় ভেসে যায়। কিন্তু বিধাতার কি বিধান, মোলাজীর বড় **एट्लि**डें अत्नक करणें तिशामणा मिर्थ नावि কবি-সাহিত্যিক হয়ে গেল! বৃড়ী তাথে বড় ভালবাসত। তাদের ঘর বংখবার জনে টালিখোলা কিনতে বিনা সংদে দেড়গো টাকা ধার দিলে! টাকা শোধ দিলেও একটা কাপড় দেয়নি বলে বড়ী তারও ভূত ভাগিয়ে দিতে কসার করে না। আর ছোট ছোট ছেলে-মেয়েদের ওপরে তার দরদ অপরিসীন। ভাদের কাউকে মারতে দেখলে সে কেপে ষাবে। তার বাড়িতে কারো ছেলেমেয়ে গেটে সে কাকে-খাওয়া পে'পে, বাদ্বড়ে-খাওয়, ভাম, শিয়া ল-খাওয়া কঠাল —এইসৰ হাতে দেবে। গুড় বা অংমসত্তু দেবে। আর বিয়ে বাড়িতে কন্যার গায়ে হলচে দেবার সময় সারাবাত নাচ গান করবার জনেন ডাকে: করশী বিবিকে। স্ব্রমী লক্ষ্য শর্ম উড়িয়ে দিয়ে নাচ্বে গাইবে ঃ

আধার ঘরে চাঁদের বাসর
নেটের মুশারী
ভার ভেতরে শায়ে এ কেনা
নবীন কিশোরী
চাঁদ সদাগর গায়ে দিল হাত
কন্যে যেন ঘ্যে মরে কাত্
ভ্রম মিনসে করে কি!
ছি ছি ছি!
ম্থের ওপর মথে রেখে সে
কাটিয়ে দিলে রাছ!!...

বিষের কনে লক্ষার বৃদ্ধীশ চিমটি কাটে। মেয়ের। খিলখিল করে হাসে। তারপর আদিরসের হাঁড়ি যেন হাটে ভেগো দেয় স্বেমী বিবি।

বিয়ের পর যুবতী শালী থাকলে বরুকে দেখায় কুরুশী বিবি : 'ওটা এখন, পরে এইটা হে মিন্সে!'

শালী হয়তো বলে, 'হাঁ তোমার মতন স্বাই!'

'সবাই লো সবাই। লাজে কই না। বোনাই কক্ষনো ভন্দরলোক হয় না লো!'...'

তার কথার মাত্রা সীমা ছাড়াতে চাইলেই কেউ হরতো পঢ়ি মারে: 'ও সারমী দাদি, ভোমার বাড়িতে খ্ব চে'চামেচি হচ্ছে, চোর পড়েছে বোধহয়'...

জমনি একটা লাঠি কিন্তা কাটারি
ম'কে নিরেই মালকোঁচা মেরে অংধকারেই
দৌড় মারে সরেমী বিবি, 'কুন্ গোলান্মর
বাটা রা।—জামির মালকের ভিটের পা দের—
হারামীর ছাঙ্গালের নাড়ীভাড়ি বার করে
দোব ভড়াড়া করে এক শড়কি মেরে!

ज्यानगुज जन्मान

मारिज्य उमर्मिल

একটি ঐতিহাসিক রহস্য

শতাব্দীর পর শতাব্দী ধরে ইভিছাস
আর সেরপীয়র বলেছেন যে, নরদেহে
পিশাচ ওতীয় রিচার্ড টাওয়ার অব লন্ডনে
রাশকুমারদের হত্যা করেছেন। এই লোকটি
মারি শয়তানিতে শয়তানকেও পরান্ধিত
করতে পারতেন এবং একমান নরক ভিয়
্রামা কোনো স্থানের তিনি অযোগা।
কোথাও ত'র ঠিই নেই।

কিন্তু সভ্য কি তাই? ইতিহাসের
এ এক স্গভীর রহসা। একদিকে আছেন
স্যার টমাস মোর, পশ্চম এডওরার্ড এবং
তৃতীয় রিচার্ডের রাজস্কালের কাহিনী
তিনি ১৫১১ খ্ন্টান্দে লিখেছেন। আর
উইলিয়াম সেপ্পশীয়র ভৃতীয় রিচার্ডেকে
শয়তান জ্বে কুচকী এবং টাওয়ার অব
লন্ডেরে প্রিস্মাদর হত্যাকারী কলে
এ কৈছেন, আর এই ধারণাটাই সাধারণ
মান্বের মনে গাঁখা রয়ে গেছে। কিন্তু
হত্যাকারী কে?

কিন্তু ইতিমধ্যে প্রচর প্রমাণ সংগ্হীত হয়েছে বার ফলে রিচার্ড কল-কম্মুভ হতে পারেন, বাটেল অব বসওয়ার্থে যে হেনরী টিউডর তাকে পরাজিত করে সশ্তম হেনরী নাম গ্রহণ করে ইংলন্ডের শাসনভার প্রহণ করেছিলেন, তিনিই নাকি আসল হত্যাকারী।

র্ণদ ম্যারেচ্ছ মেড ইন হাডা নামক হাম্মে হিউ রস উইলিরামসন বল্ছেন যে, সপ্তম হেনরী তার প্রের অভিশণত বিবাহের প্রাক্তালে সিংহাসনের পাল্টাজেনেট উত্তরাধিকারী ডিউক অব ক্লারেলেসর পরে এডওরার্ডকে হুডা করেন, ইনি চতুর্থা এডওরার্ডকে হুডা ভাই। সপ্তম হেনরীর প্রে প্রিস্ক অব ওরেলস আর্থারের বিবাহ শিবর হরেছিল ম্পেনের নুপ্তি ফার্ডি-নাদ্দ্রর দৃহিত্য ক্যার্থারন আর্কানের স্পো।

এই বিডক' কিভিং বিচিত্ত ধরনের। সাত্তম হেনরী বদি আল' অব ওয়ালউইক প্রভাগেকে হতম করতে পান্তেন ভাহণে কি তিনি এডওরাডের দুই প্রকেও ধরা-ধাম থেকে সরিয়ে দিতেন না?

চতুর্থ এডওয়াডের বখন মুজু হর
১৪৮০ খন্টান্দের এপ্রিল মাসে তখন
তার তেরাে বছর বয়সের পত্র পশুম
এডওয়াড সিংহাসন পেলেন, তার পিতৃবা
রিচাড অব ক্লণ্টার করোনেশন না হওয়া
পর্যক্ত লড প্রোটেকটার হিসাবে কাজ
চালিয়ে গোলেন। এই ক্লণ্টার কিশোর
সন্ধাটকে টাওয়ার অব লণ্ডনে পাঠালেন,
সেখানে কিছু পরেই পাঠানো হল তার
ছোট ভাই রিচাডকৈ এই ছেলেটি তার
জননী এলিজাবেথের সংগ্য ওয়েচ্ট
মিনিস্টারে ছিল।

১৪৮৩ খৃশ্টাব্দের ২২শে জনে,
রবিবার, করেনেশনের দিন ধার্য হল।
কিশ্চু সেইদিনে অভিষেক হল না। তার
পরিবতে বস্থতাবিশারদ সর্য্যাসী শ
সেল্টপলস ক্রসে উপদেশ দান করলেন, ইনি
লন্ডনের লড মেররের ভাই, আর লড
মেরর ছিলেন ক্লস্টারের দলভুত্ত। তিনি
বিক্ল অব উইসডমা থেকে—

"Bastard slips shall not take deep rest" **এই वागी निराम छेशाम मान क्यारम**ा। আর উপস্থিত সম্প্রান্তদের কাছে কি কারণে যে অভিবেক সম্পন্ন করা গেল না তা কাছ করলেন। সংবাদ শানে ড' সকলের চক্ষ্মির। চতুর্থ এডওরাডের সংগ্র কিশোর সম্রাটের জননী এলিজাবেথ উডভিনের বিবাহ অসিম্ধ কারণ এর ব্যাভিচারী এমন অভিযোগ বতুমান। এডওরার্ডের সম্তানরা স্তরাং চতুর্থ অবৈধ সম্তান আর সেই কারণে রাজ-মুকুটের অধিকারী হলেন রিচার্ড অব ণ্লস্টার। এমন কি চতুর্থ এডওয়াডের জন্মের বৈধতা সম্পর্কেও তিনি সন্দেহ প্রকাশ করলেন। এডওয়ার্ড যে তরি পিতা ডিউক অব ইয়কেরিই পরে এ বিবয়ে তিনি সংশয় প্রকাশ করলেন। অনেকের মনেই এই সন্দেহ জেগেছিল আগে থেকেই, এই কথার তা দ্যুতর হল। কিন্তু এই তথাই বদি সত্য হয়, ভাহদেও তার পথম সম্ভানের সিংহাসনের অধিকার করে না। কারণ চতুর্থ এডওয়ার্ড করেন নি, তিনি শেষতম ল্যাংকালটারীয় সন্ধাট বংঠ হেনবীকে বৃদ্ধে পরাজিত করে সিংহাসন অধিকার করেন।

তিনদিন পরে ১৪৮৩ খৃণ্টাব্দের ২৫শে জনুন তারিখে পালামেন্টের আধি-বেশন বসল, তাঁরা ঘোষণা করলেন চতুর্থ এডওয়ার্ড আর এলিজাবেথের বিবাহ অসিম্ধ, তাঁদের সম্ভানাদি অবৈধ এবং সেই কারণে একমাত্র বৈধ অধিকারী ছালেন লার্ড প্রোটেক্টার, তাকেই রাজমুকুট ধারণের লুনা অনুরোধ জানানো হল, তিনি প্রথম-দিকে একটা কপট অনিচ্ছা জ্ঞাপন করে অবংশ্যে এই অনুরোধ মেনে নি**লে**ন। তাকৈ তথন তৃত্যয় রিচার্ডবিপে সিংহাসনে অভিষিদ্ধ করা হল, কিন্তু উৎসব এবং তৎসংক্রান্ত মিছিলাদি ত্মান্তিত হল দশ্দিন পরে ৬ই জ্লাই তাবিখে।

এর অঞ্পকাল পরেই টাওয়ার অব লগডনে প্রিণসদের অবস্থা এক বিশ্রী আকার ধারণ করল। তারা যেন মহাশানো মিলিরে গেল। কি হল তাদের? তাদের कি টাওরার অব লন্ডন থেকে সেরিফ হাউনের আবাসে প্থানাস্তরিত করা হল? কারণ আশংকা ছিল যে, তাদের হাতিয়ারর্পে ব্যবহার করে অপর কেউ সিংহাসন নিজে টানাটানি করতে পারেন। অস্ততঃ কোনো-র্প ঐতিহাসিক প্রমাণ প্রয়োগ না করে লেখক হিউ রস এই সম্ভাবনার ইণিগত করেছেন। কিংবা প্রিম্পদের **টাওনারে** শ্বাভাবিকভাবে মৃত্যু ঘটেছিল? অথবা তাদের হত্যা করে টাওরারেই কক্ষণ করা হয়? তাই বদি হয়, তাহলে এই হাণিত आप्य बना राजी तक े वेदान क्रिक्स না ভেন্নবী টিউডর বিনি তাঁকে পরাজিত করে সিংহাসনে বসলেন? এ'রা দ্জনেই এই কাল্ড করতে পারেন। দ্জনেরই অভিসন্থি পরিকার।

রিচার্ড জানতেন তার প্রাতৃষ্পত্রের যদি বে'চে থাকেন তাহলে একদিন তার বিরুদ্ধে একটা বিরোধী শব্তি গড়ে উঠতে পারে। প্রকৃতপক্ষে প্রথমতম সন্দেহভাজন তিনি। বথন প্রিস্সদের টাওয়ার অব লন্ডনে আর থেলা করতে দেখা গেল না তখন বিশপ্ অব এলি এবং জন মটন প্রচার করলেন যে, প্রিস্সদের হত্যা করা হয়েছে এবং ভাদের খ্লাতা রিচার্ড-ই এই কাল্প করেছেন। জন মটন ছিলেন ল্যাঞ্কান্টার-শুম্বী।

হেনরীর অভিয়াশ্বটা তেমন পশ্ট নয়। গ্রিপ্সভাশি চতুথ্ এডওয়ার্ডের জোপ্টা কন্যাকে বিবাহের প্রস্কাব করেছিলেন তিনি, কিন্তু চতুর্থ এডওয়ার্ড এবং এলিজাবেথ উডভিনের প্রভি প্রযুক্ত এগাক্ট শুব ব্যাসটার্ডি তুলে না নিলে এ বিবাহ সম্ভব নয়। ভাই এই আইনটির নাম ভালিকা থেকে কাটা হল এবং প্রকাশো এই এগাকটের বহুনুংসব করা হল। তথনও যদি রাজকুমারাশ্বর জনীবিত থাকেন ভাহলে হেনরীর পক্ষে বিষম সংকট, কারণ ব্যাসটার্ড এগাকট বাজিল হওয়ায় ওরা বৈধ সন্তানের মর্যাদালাভ করেছে। এলিজা-বেথের সংশা ভার ভাই দ্টিও বৈধ হিসাবে শ্বীকৃতি পেয়েছে। পশ্যম এডওয়াডা এখন অনাগত সন্ধাট হিসাবে গ্হীত হতে পারেন। তাই হেনরীর পক্ষে পথ পরিক্লারের জন্য দুই ভাইকে অবলুশ্ত করা সম্ভব। পথ পরিক্লার রাখার জনাই এই হত্যার প্রজ্ঞোক হরেছিল।

ন্বিতীয় চার্লাসের রাজস্কালে, ঘটনায় প্রায় দুই শতাব্দী পরে, এই হত্যারহস্য প্রায় সমাধানের পথে পেণছৈছিল : কিন্তু শেষ পর্যন্ত দেখা গেল বিতকের আর এক ধারালো সূত্র আবিষ্কৃত হয়েছে মাত্র। ১৬৭৪ খুন্টান্দে হোয়াইট টাওয়ারে যাওয়ার সি'ডিটা যথন মেরামত করা হচিত্ৰ তথন আবিষ্কৃত হল দুটি কিশোরের কল্কাল, সির্ভর নীচে পাথর চাপানো অবস্থায় পড়েছিল। त्रशाल সার্জান অর্থাৎ রাজবৈদা প্রয়ং প্রীক্ষা করে অভিমত দিলেন যে এই কঞ্চাল দুটি হতভাগ্য এডওয়াড' এবং তার ভাই রিচার্ড' অব ইয়কেরিই বটে। কঞ্চাল দুটির অস্বাভাবিক অবস্থান এই সন্দেহ স্রীভৃত করল যে, রাজকুমারদের মৃত্যুর পিছনে ঘাণিত চক্রাণ্ড আছে। দিবতীয় চার্লস এই অভিমত মেনে নিলেন। রাজ-বৈদ্য যা বলেছেন তা বিশ্বাসযোগ্য।

তারপর কংকাল দুটি নতুন করে
সমাধিপথ করা হল ওয়েস্ট মিনিস্টারে
হেনরী দি এইটথ চ্যাপেলের প্রাণ্গাণে। এই
অপরাধের জনা দারী করা হল তৃতীয়
রিচার্ডকে। লাতিন ভাষায় সমাধি ফলকে

লেখা হল—"এই ঘ্ণিত কমের জন্য জন্ম চরিচের খ্ডো-মলাই রিচাড সম্পূর্ণ দারী, তিনি জোর করে সংহাসনে বসার লোভে এই হত্যা করেছিলেন।"

স্তরাং তৃতীয় রিচার্ড বিরোধী এই টিউডর স্ত্রের তথাই স্বীকৃত হল। কিটারে এই ধারণা সৃষ্টি হল এবং ক্রমনিকাশ সম্ভব হল এই প্রশন উঠতে পারেণ

'দি ম্যারেজ মেড ইন রাড' গ্র**ন্থের** লেখক হিউ রস উইলিয়ামসন এই চিত্ত-চমকপ্রদ রহস্যের স্থাচীন জট ছাড়াবার চেণ্টা করেছেন। ইংলন্ডের ইতিহাসে এই কাহিনী এক প্রমাশ্চর্য কাহিনী। লোভ এবং ক্ষমতা অধিকারের নেশা মান্ত্রকে কোথায় নামিয়ে নিয়ে যায় এই কাহিনী ভারই এক বিচিত্র দুটোল্ড। গ্রন্থটির ঐতিহাসিক মূল৷ আছে এবং কাহিনীটি কোত্রলোদ্ধীপক তাই আগামী বাবে শেষাংশট্কু আলোচিত হবে। ঐতিহাসিক এবং উপন্যাসকার দুইপক্ষই এই কাহি-নীতে অনেক রঙ চড়িয়েছেন। হিউ রস উইলিয়ামসংনর তথ্যভিত্তিক আলোচনা এই রহস্যকাহিনীর আকর্ষণকে দ্যুচ করে তুলেছে।

—অভয়ুুুুক্র

MARRIAGE MADE IN BLOOD: By HUGH ROSS WILLIAMSON: Published byMichael Joseph; Price: 35 Shillings.

সাহিত্যের খবর

পরলোকে কাজী আবদ্ধ ওদ্দ।। থবরটা শোনার সঙেগ সঙেগই মনটা কেমন যেন ভারাঞালত হয়ে উঠলো। কাজী আবদুল ওদ্বদ আর নেই। গত ১৯ মে সন্ধ্যা সাতটায় তিনি পরলোকগমন করেছেন। চোথের সামনে ফাটে উঠলো কয়েকটি বিগত মহতে। প্রথম যেদিন তাকৈ দেখেছিলাম-বোধ হয়, আজ থেকে আট-দশ বছর আগের একটা দিন। গিয়েছিল ম তাঁকে একটা আলোচনাচক্তে যোগদানের জন্য অনুরোধ জানাতে। আশব্দা ছিল মনে অনেক—দেখা हरव कि ना अथवा मिथा हरन कि वनरवन। কিন্তু যথন দেখা হল, তখন এক মৃহ্তে সমস্ত ভয়-ভাবনা কোথায় যেন উবে গেল। কি সহজ, সরল, অনাডম্বর মান্**ষ্টি**। কোথাও এতট্কু অভিমানের চিহু নেই। কাজীসাহেব ছিলেন সকলেরই প্রিয়।

বেশ কিছ্দিন ধরেই তিনি অস্থ ছিলেন। বিছানা ছেড়ে প্রায় উঠতেই পার-তেন না। হাত-পা সব স্ময় ক'পতো। এ- বছর গিশিসরকুমার প্রক্ষার পেরেছেন তিন।
মাঠ করেক দিন আগে যথন এই প্রক্ষার
প্রদান করা হয়, তথন তিনি উপস্থিত
ছিলেন। তার হয়ে প্রস্কার গ্রহণ করেছিলেন শ্রীমতী কোহিন্র বেগম। অন্তান
মন্ত থেকে শ্রীত্বারকান্তি ঘোষ তার
অস্ক্থতার কথা জানান। কিন্তু তিনি যে
এত তাড়াতাড়ি ইহলোকের মায়া ছিল্ল করে
চলে যাবেন, তা ভাবতে পারিন।

আল থেকে প'চান্তর বংসর আগে কাজী আবদ্দে ওদ্দের জন্ম। কর্মাজীবনের স্ত্রপাত অধ্যাপনার মাধ্যমে। প্রথমে ছিলেন ঢাকার, পরে চলে আসেন কলকাতার প্রেসি-ডেন্সি কলেলে। অধ্যাপনার ফাঁকে ফাঁকেই চলে তাঁর সাহিত্য সাধনা। তাঁর রচিত উপন্যাসগ্লির মধ্যে তর্শ আজাদী' নদীবক্ষে ইত্যাদি বিশেষ উল্লেখযোগা। কিন্তু তাঁর প্রধান পরিচয় সাহিত্য ও সংক্ষতিম্লক গ্রেষণা গ্রন্থ রচনার জন্য। বাংলার জাগরণ', শাণবত বুণা', 'শারংচন্দ্র

ও তারপর', হজরত মহম্মাদ ও ইসলাম', কবিগ্রুর গায়টে (২ খণ্ডে) প্রভৃতি তার বিশিষ্ট গ্রন্থ। তার অনাতম প্রধান কৃতিত্ব কোরাণ শরীফে'র বাংলায় অন্বাদ। ইংরাজীতেও তার অজস্র রচনা প্রকাশিউ হয়েছে।

কাজী আবদুল ওদুদের আর একটি
পরিচয় না উল্লেখ কর ল বোধ করি, ভরি
সম্পর্কে অনেকটাই অজানা থেকে যাবে।
তিনি ছিলেন আজন্ম সাম্প্রদায়িকতাবিরোধী। অথচ ধার্মিক। তথন তিনি
শরংচন্দ্র ও তারপর গ্রন্থটি নিয়ে বাল্ড
ছিলেন। ফিরেছেন সবে ঢাকা থেকে।
জিজ্ঞেস করেছিল্ম, 'কেমন দেখলেন
সেখানে?' কেমন যেন একটা হতাশার স্বর্গ্র্
শোনা গেল তার কপ্টে। উত্তর এড়িঃ
গিয়ে তিনি বললেন—"একই ভাষার কথা
বলি অথচ দেখুন, আমরা আজ দুই
দেশের নাগরিক। ধর্ম মান্ত্রকে বিজ্ঞির
করবে—এ আমি সুইতে পারি না। ধর্ম

নর আসলে কি জানেন, ধর্মের দায়ে রাজনীতিই আমাদের এত দ্বের ঠেকে দিরেছে।" কাজী ওদ্দের অভ্যরতম প্রদেশের মর্মবেদনা আজো ইতিহাসে কান দাত্রে পশ্চ শোনা বার।

ভাষা ব্যবহারের বহুবির সমস্যা।
গাহিত্যস্থির ক্ষেত্রে ভাষা একটি গ্রেছপূর্ণ শক্তি। সাহিত্যের অক্ষেদ্য ভাষা হল
চাষা। প্রতি লেথকই তাই সাহিত্যে ভাষা
ঘ্যবহার নিরে নানা পরীকা নিরীকা করে
ধাকেন। সম্প্রতি মন্ফোতে রুখ লেথকদের
চতীর কংগ্রেস হরে গোলা। এতে স্বচেরে
বেশি আলোচনা হল সাহিত্যে ভাষা
ধ্যবহার নিরে।

প্রখ্যাত রুশ শেখক লিওনিল সোবোলত
চাবাকে একই সংপ্য লেখকের বংধ এবং
ইংপডিক আখা দেন। তিনি বলেন—
নিজের লেখা সম্বংধে প্তথ্যতে লেখকনাতেই জানেন, একটি বিশেষ শব্দ, বিশেষ
সেই শব্দটি যা চিন্তা, আবেগ বা চিন্তহলেগর স্ক্রেতা সব থেকে সফলভাবে
প্রতিফলিত করতে সমর্থ, কেমন করে আ
কবলই তাকৈ এডিংর চলে। কি সাংঘাতিক
ইংলিয়ে থাকে তা অপ্রয়োজনীয়, প্রচলিত,
নিজনাহনি শব্দের অন্তালে।

ীমধাইল আলেকসিরেভ ভাষারে লকপীর রঙ-মেশানোর পাতের সপ্তে তুলনা করেন। তিনি বলেন—'সাহিত্য-লিকপী এই নানা রঙের পাচ থেকে বহুবিধ রঙের আলোছায়া নিয়ে এ'কে তোলেন তার

চিত্রকশ্প।" সোভিয়েত কবিভার বিকাশের উপার সম্পর্কে বলতে গিয়ে তিনি মন্তবা করেন—"ভাষাকে আমরা কাব্যমর বিকাশের সহায়ক ও বাছন বলেই গণ্য করি। ...ভৰে ভাষার কাজ শ্ব্যু এট্রকু নর, আরো বেশি। বৃক্ষ বা করলা বেমন সৌরতেজ প্রতিফলিত করে, তেমনি প্রতিটি শব্দ জাতির আস্থিক শস্তির প্রতিক্ষি। এই আত্মিক শক্তির নিশ্কাশনই কবির কাছ।" ভাষা যে সাহিত্যের উচ্চ শিলপগ্রসমন্বিত স্বচেরে প্রয়োজনীয় অপা, একথা উল্লেখ করলেন সুখ্যাত বালমিক কবি দাভিদ কুগ,লতিনভ। সাহিত্য এবং কবিতার ভাষা এবং শব্দ নিয়ে যাঁরা পরীক্ষা নিরীক্ষা করতে ইচ্ছুক, তাঁদের পক্ষে বিষয়টি অনুধাবন প্রয়োজনীয়। শব্দ শিশ্বর হাতের থেলনা নয়-শব্দের সংশ্যে জড়িয়ে আছে দেশ ও জাতির যুগ-য্গান্তরের ইতিহাস।

जाजरक আমেরিকান ক্ৰিডা **সম্পর্কে।। আজ্ঞ**কের আমেরিকান কবিতা কোন পথে--সে সম্পর্কে একজন তর্ণ অস্ট্রেলিয়ান কবি-সমালোচক কয়েকটি উল্লেখ্য মশ্তব্য করেছেন। পোরেটি অস্ট্রেলিয়ার' বর্তমান সংখ্যার 'অস্ট্রেলিয়ান-আমেরিকান কানেকসান' নামের এই অভি সংক্ষিত আলোচনাটি করেছেন জেমস টিউলিপ। তিদি লিখেছেন—'১৯৪৫ এর পর থেকে আমেরিকান কবিতার যে গতি-প্রবাহ চলেছে, সে সম্বল্ধে আমার সাধারণ ধারণা হল, তা স্ক্যু কৌতৃক্বোধের প্রেরাবিচ্কার। দশ-প্রের বছর আগে বখন লাওরেল নিজেকে নিরেই কবিতার বিদ্রুপ করড়ে শ্রুহ করলেন, তথ্য কু-ল্যুপর এত এলিরট প্রভৃতি; বা সাংকেডিকভার অভিযানিক অর্থ কবিতা থেকে অভাহতি হল। পঞ্চাশ এবং বাটের নশকে আমেরিকার কবিতা হরে উঠেছে লিটারেল। অল্ফৌনিয়ার সাম্প্রতিক কবিতা এদিক দিরে স্বতল্য।" প্রবন্ধটিতে সাম্প্রতিক আমেরিকান কবিতা সন্বধ্যে কিছু কিছু মন্তব্য আছে। যা সাহিত্যরসিককে ভাবিরে ভুলবে।

কশ্বেডিয়ার মার্কিন আল্পের প্রতিবাদে ।। কশ্বেডিয়ার মার্কিন আল্কেমণের বির্দেশ ভারতের বিভিন্ন প্রাত্তর লেখক ও ব্নিশ্জাবীরা প্রতিবাদ আগ্রণী হয়েছেন দিল্লি এবং কলকাভার লেখক ও ব্নিশ্জাবীরা। তাঁরা শ্র্ম্ সংবাদপতে বিবৃতি দিয়েই জ্বাস্ত হননি, প্রতিবাদ সভাও আহ্নান করেছেন। দিল্লির সভার ভারণ দেন নাগার্জন্ন, অম্ত প্রতিম প্রম্থ।

কলকাতার গত ১৫ মে স্ট্রেণ্টস হলে ।
তই ব্যাপারে একটি সভা হর।
পৌরোহিত্য করেন শ্রীপ্রেমন্দ্র মিন্ত। সবস্ত্রী
সভোলনারারণ মজ্মদার, ডঃ বৃন্দদেব
ডট্টার্যাই, বেদ্ইন চকবতী, মণীলা রার,
তর্প সান্যাল, শ্রীপেন বলেনাপাধ্যার,
মানিক মুখার্জাই, ধনস্তর দাশ প্রমুখ মার্কিন
আগ্রাসী নীতির বির্দেধ মন্তব্য রাখেন।
শ্রীমন্পালাচরণ চট্টোপাধ্যার একটি শ্রন্টিত
কবিতা পাঠ করেন।

নতুন বই

স্থিতিত-ৰাতালন—(প্ৰকথ সংকলন) অর্ণ-কুষার মুখোপাধায়ে প্রণীত। প্রকাশক ক্লাসিক প্রেস। কলিকাতা—১২। দাম বারো টাকা মাচ।

বাংলা গণানীতির ইতিহাস, বাংলা
সমালোচনার ইতিহাস, উনবিংশ শতাব্দীর
বাংলা গীতি-কবিতা প্রভৃতি প্রশংসিত
গ্রন্থাবলীর লেখক ডক্টর অর্ণক্মার
ম্থোপাধ্যায় রচিত সাহিত্য-বাডায়ন
গ্রন্থাটিতে বাংলা সাহিত্যের বিবিধ প্রস্কাগ
আলোচিত হয়েছে। এই আলোচিত য় ধারাবাহিকত্ব অনুসরণ করা হয় নি, ফলে
প্রতিটি রচনা ব্রম্পানকতার স্চুনা নামক
প্রবাধে বিভিন্ন তথা সমাবেশে ঈশ্বরচন্দ্র
গ্রুতের দেশক ঐতিহা প্রীতির ম্ল্যায়ন
করা হয়েছে। ঈশ্বরচন্দ্রই বাংলা সাহিত্যের

আধ্নিকতার স্চনা এই বস্তবা লেখক সপ্রমাণ করেছেন। এরপর বারাপানা কাব্যে আধ্নিকতার প্রতিষ্ঠা সম্ভব হল, এই বীরাংগনা কাব্যকে শ্রীঅর্রাবন্দ ভান্ধিলের রচনার সমগোতীয় বলেছেন। শিল্পসংগত এই লিরিকধর্মী কাব্যের শিল্পসোল্যর্থ উপভোগা। এরপর বাংলা সাহিত্যের গোড়ার যুগের প্রাণ-পরেষ অক্ষয়চন্দ্র সরকারের ঃ মনন ও শিক্প এবং ভূদেব মুখোপাধ্যারের মনন ও শিল্প সংক্রান্ড প্রবন্ধ দুটি সুলিখিত। এই দুই মনীবীর प्रारमाहनात्र श्रद्धावन हिन । न्यिखन्यमारमत ঐতিহাসিক নাটক, কাব্যাদশের বিরোধ त्रवीन्त्रनाथ **७ श्वित्खन्त्रनान श्ववन्य म**्रिएंट নতুন দ্ভিউভগার পরিচর পাওরা বার। এছাড়া এই গ্রন্থে বিভূতিভূষণ, বাংলাদেশে

শেশুপীয়র চর্চা, বাংলা শিশ্যুসাহিতা,
প্রভৃতি বিষয় আলোচিত হয়েছে। শেব
প্রবংধ অশুলালতা ও সাহিতা'-এ অজন্ত তথ্য সমাবেশে লেখক নিজের অভিয়ত প্রতিষ্ঠিত করেছেন। গ্রন্থটি বাংলা সাহিত্য-পাঠক এবং ছাত্র-সমাজের পক্ষে বিশেষ উপযোগী বিবেচিত হবে সম্পেহ নেই।
গ্রন্থটি স্মা্চিত।

দিল্লী নৰ নৰ বংশে—সাজেশ্যুলালা হাণ্ডা প্ৰণীত। অন্বাদক— অজিত দক্ত। প্ৰকাশক : দাশগা্পত আদেড কোং প্ৰো) লিমিটেড, ৫৪ া০, কলেজ স্থীট, কলিকাতা। দাম ৬ টাকা মাদ্ৰ।

১৯৪০ থেকে ১৯৫০-এর মধ্যে বিশ্ব-জগতে অনেক পরিবর্তান ঘটেছে, দিল্লীর রুণামণ্ডেও অনেক অদল-বদল ঘটেছে, কুশীলব পালটেছে। এই প্রিবর্তানশীক লাটকে বিজ্ঞানি ছুম্ফুল প্রস্কুল রম্যরক্রমার আজিকে পর বিজ্ঞানি শবর্ণের পরিচর বিরেছেন রাজ্ঞালাল হাজা। প্রস্থাটির মুল সংক্রমণের যে জনহিরতা আছে তার প্রমাণ একাবিক সফ্রমণ। বাংলার সম্পার ভাষার প্রায় মেলিকের মুজ জানুবাদ করেছেন অজিভ সন্ত। মুল হিল্পির স্কুলি অজ্ঞা রেখে ভিনি জানুবাদ করেছেন। প্রস্থাটি স্থাপাঠা এবং তথ্যসম্পা। মুলুণ এবং প্রভেদ মনোরম; সেই জানুপাতে দ্যা অনেক ক্যা।

ৰাঙালী মলীখায় শিক্ষা চিত্তা ও লাখলা— অধ্যাপক সুখ্যায় সেনগণ্যুত প্ৰণীত। প্ৰকাশক—মড়াৰ্গ বুক এজেন্সী (প্ৰা) লিঃ। কলিক্যতা-১২। দাম পাঁচ টাকা মান্ত।

জাতীয় শিক্ষা আন্দোলনে যে সব वश्रीव भनीवीव व्यवमान অবিস্মরণীয় তাদের সম্পর্কে আলোচনা কদাচিৎ হয়। তথচ মনীবীদের শিক্ষা চিল্ডা বিষয়ে প্রিবীর অন্য প্রান্তে যথেন্ট আলোচনা হরে থাকে। লেবারতন : শিক্ষণ মহাবিদ্যা-সারের অধ্যাপক সংখ্যার সেনগতে এক ছিলাবে এই পথে প্রথমতম। সামমোহন, रमरवन्त्रमाथ, ेविमात्राभात, जूरमय महर्या-রবীন্দ্রনাথ, স্বামী পাধ্যার, বঙ্কমটন্দ্র, বিবেকানন্দ, 🥈 স্যায়ি गृत्मान, স্যার আশ্তোৰ, শ্ৰীঅগ্ৰিক ও জাতীয় শিক্ষা-भारतम প্রভৃতি বিষয়ে ঠিক এই ধরনের व्यात्माहमा व्याता रखाल किमा बामा मिटे। **এ**ডগ্রে**ল** মনীমীর শিক্ষা চিল্ডা ও সাবনার ধারা একতে পরিবেশনের ফলে গ্রন্থটির মর্যাদা বৃদ্ধি পেয়েছে। এতগর্বল মনীষীর শিক্ষা চিন্তা প্রসংগ একই প্রন্থে থাকায় গ্রন্থটি 'রেফারেন্স বৃক' হিসাবে হাতের কা**ছে রাখা প্রয়োজন হবে। ইংরাজ** এদেশে শিক্ষা বিশ্তারে সহায়তা করেছেন কিন্তু তার প্রেকিছ্ই যে ছিল নাতানয়, শিক্ষা ব্যবস্থা ও শিক্ষান্ত্রাগ এদেশে ছিল। ১৭৭৪ থেকে ১৯৫৬ পর্যন্ত যে বিশ্বনিশ্বনার কো অজন্ম প্রামাণিক তথ্য সম্ভারে সমৃন্ধ করে লেখক এই প্রন্থ রচনা করেছেন সেই কারণে তিনি অভিনশ্দনবোদা। গ্রন্থটি স্মৃন্দ্রিভ এবং দাম অপৈকাকৃত কম।

বিজয়ান্দ্র — (ক্রীপ্রীকিজরকুফ গোস্বানীর জীবনালেখ্য) প্রথম খন্ড। প্রীরাইমোহন সামস্ড, এম-এ, প্রণীত। প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপ্যারীমোহন সামস্ড। ২৪।১ ঘোষ কেন। কলিবাতা-৬। দাম—আট টাকা মার।

শ্রীশ্রীবিজ্ঞরক্ত গোল্বামী প্রভুর জীবনা-লেখা লিখিছেন তারই একজন গ্লেম্ণ ভন রাইমোহন সামণ্ড। এই খল্ডে স্বামী বিজ্ঞাকুকের জন্মকাল ১৮৪১ খেকে ভাজা সমবেদ প্রচামক পদ তালে আবাৰ ১৮৮৬ বৃত্তীক্ষ প্রচামক পদ তালে আবাৰ বৈছে।
মহাজা বিজয়ক ক্ষামাইণ ক্ষেত্রিকালি
মহাপ্রকুষ ক্ষামার্য ক্ষামার্যক ক্ষামা

বহুচিচ ও তথা স্বাগত এই প্রথটি শ্রীশ্রীবিক্ষক প্রভুর অনুরাগী মহলে উপবৃত্ত স্মাদর লাভ করবে এবিবরে আমরা নিঃসন্দেহ।

তিনি আলছেন— (বিচিচ্চ কাহিনী)— বামদেব মুখোপাধাায় প্রণীত। প্রকাশক — শিক্ষারিচী প্রকাশনী। ১৬ এ, সুইনহো দ্বীট, কলি-৪২। দাম আড়াই টাকা।

"বান্ডেল গীজায় যাওয়া আমার কাছে তীৰ্থবাহা" এই কথা বলেছেন ভূমিকা প্রসংশ্য এই গ্রন্থের লেখক। এরপর তিনি ব্যাদেডল চাচের ঐতিহাসিক পটভূমি বিধ্তে করে বলেছেন—"একটি ম্লচনিত থেকে থসে পড়া বিচ্ছিন্ন করা পাতার মত करब्रकीं वन्हें। व्याम कृष्टित यीनद्वत श्रीक्र व्याचात्र श्रामा निर्देशमा कत्रात्र बन्ना लिथक हिरम्द किर्णु भद्दर ब्रीवह्नस প্তি শ্ৰেশাশীল। সেই कात्रण शर्माजेत ম্লা বৃদ্ধি পেরেছে। তার ভরিবসাংলতে এই কাহিনীর মধ্যে বৈচিত্তা আছে এবং আপিকে নতুনত আছে। কাহিনীর গতি কোথাও বাহত হয়নি, বরং পাঠককে শেষ পর্যকত টানে। 'তিনি আসছেন'—এক নতুন প্রাদের পর্রাতন কাছিনী।

ভিলোজিওর— কবিতা অনুবাদ ও সম্পাদনা পানৰ দেনগণেত, শক্ষেপারী প্রকাশক, ১৭২ IOG আচার্ব জনদীশ বন্ধ রোভ, কল-১৪। হাম—ভিন টাকা।

দীৰ্ঘদিন পর হেনরী ভিভিন্ন ডিরোজিওর এক গ্রেছ কবিতা এবং ভার অন্বাদ বাঙলা ভাষায় প্রকাশিত হয়েছে। এ দেশে ডিরেডিজওর কাব্যাদর্বাদ করেছেন <u> ত্বিল্যুনাথ</u> ইতিপূৰে ठेक्ट्र धवर সত্যেদ্রনাথ দত্ত। সম্ভবত পদ্মব সেনগা, তই তৃতীর অনুবাদক। মূলের শব্দানুগতা এবং ছলোরীতি ষথাসাধ্য বজার রাখবার চেণ্টা হরেছে। 'হে ভারত, স্বদেশ আমার' বিখ্যাত अंदिक्श আরো অনেকগ্রিস কবিতা এই **গ্ৰেম্থ প্ৰকাশ পেয়েছে**। ভিজেভিতর প্রথম কাবায়ুম্থ 'লোরেমস্' ১৮২৭ সালে প্রকাশিত হয় যথন ডিনি हिन्दू कर्नाक ज्याभा क्राह्म। ১४०১ সালে তার মৃত্যুর পর বহু লেখা সামারক

পরিকার বেশ করেও বছর বরে প্রকাশিত হরেছে। সে সব কবিতার কিছু এই রাজের সংক্ষাতিত হরেছে। এবেলে বেলপ্রেমের বারা প্রথমে শরিকারের নির্মাতিত বিশ্বার বিভার একলো হরান। এ প্রকাশি গরেকার ও অনুরাগীরের পক্ষা ব্যাহার একলো হরান। এ প্রকাশি গরেকার ও অনুরাগীরের পক্ষে ব্যাহার ও অনুরাগীরের পক্ষে ব্যাহার ও অনুরাগীরের পক্ষে ব্যাহার ও অনুরাগীরের পক্ষে ব্যাহার ও

সংকলন ও পদ্र-পহিকা

পিলান্দ্র বৈশাথ ১৩৭৭। ক্ষতারম। ২২।২।এ বাগবাজার দ্রীট। ক্ষকাতা —তিন। দাম : পঞ্চাশ পরসা।

কবিতাপ্রধান পত্রিকা শিলাশ্রার পশুম সংকলন বেরিরেছে এই বৈশাথে। সাম্প্রতিক মননশীলতার কাগজতি পাঠকের মনোযোগ আকর্ষণ করবে। লেথকদের মধ্যে আছেন বিনর মজ্মদার, শক্তি চট্টোপাধ্যার, গোত্ম মুখোপাধ্যার, মোহিত চট্টোপাধ্যার, এবং আরো কয়েজল। পত্রিকাটির সম্পাদক, অমল মুখোপাধ্যার, কণাদ, গণ্ডেগ্যপাধ্যার ও গুণব চক্রবতা।

> পাছিলে বৈশাধ (মিনি সংকলন)— সম্ভূম্মীপা প্রভেষ্টা। এ । ১২৪ কংকর-বাগ কলোনী। পাটনা-১। দাম পাঁচশ প্রসা।

বিহার থেকে প্রকাশিত এই প্রথম
মিনি সংকলনটি লেনিন ও রবীন্দ্রন কে
নিবেদিত। কবিতা, গলপ, প্রকথ সবি নিছে
এবং লিখেছেন, জিয়া হারদার, ২বন দক্ত,
অসীম ভৌমিক, জীবনময় দক্ত, অভিক
ঘটক, শ্যামলী সরকার প্রভৃতি। এই
পতিকাটি পরিচ্ছা এবং প্রতিগ্রন্থিময়।
রচনাগ্রনির মধ্যে ম্বিসমানা আছে। ছলি।
স্বন্ধর।

প্রথাপা (স্থানক ব্রীয় বত ও আনির ময় পত) হয় সংখ্যা এপ্রির ১৯৪০। এ ১২০, ক্রেববাগ ক্রোটা, প্রটেনা — ১। বাহ পঞ্চল প্রসা।

বিহুল বৈকে প্রকাশিত এই প্রগতিশীল হৈমাসিক পহিকাটি উমাশ্যই বৈশ বৈশিশ্যী অক্সম করছে। পূর্ব পাকিকথানে মিকিন্দ্র রচনা বলে মুন্তিত প্রাপালী মুসলমানের ব্বেশে প্রত্যাবত্তম এই সংবার সম্পূর্ণ। এ হাড়া স্পালকুমার বিশ্বাস, শ্যামলী সরকার, জীবানশ্দ মুন্সী, দিলীপকুমার মিহ, স্ক্লিডাত রাহ, রমা বোর প্রভৃতির রচনাবলী স্ক্লিখিত এবং স্থ্পাঠা। পহিকাটির অধিকতর উর্গতি কামনা করি।

उत्रक्षं भाग

প্রার বিরালিশ বছর ধরে নির্রাষ্ট্রত প উপন্যাস লিখে আসছেন শ্রীব্রে জালাদ্দর বন্দ্যাপাধ্যার। কথনো বিপ্রায় কর্মনা বিপ্রায় কর্মনা বিপ্রায় কর্মনা বিভাষ কর্মনা। তিনি স্কেনশীলভার ক্লান্ডিহীন। ক্রেটার মডো অভীত-ভবিব্যাডের দিকে চোধ রাখতে রাখতে এসিরে এসেহেন বর্তমান ক্লান্ডিহার ব্যাতিক্রায় হাতিক্রান ব্যাহের ভবির উপন্যাসের তারে শতরে।

্রথন তার বরস ব্যহান্তর বছর।

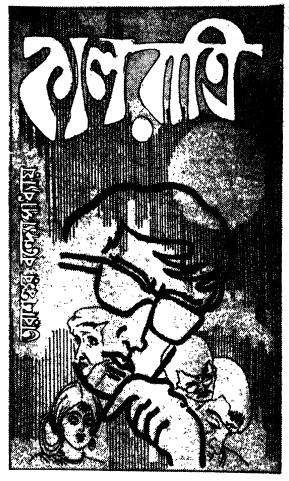
মনে পড়ে প্রায় এক ব্রুগ আগে জনৈক তর্প সমালোচক মতত্ব্য করেছিলেন, তার্নাপক্ষর বিশেষ অত্য ওবধি নব, বাংলা-কাহিত্যের বনস্পতি।

এই মণ্ডবের ভাষণ আলোড়িত হরেইন্নার সেদিন। ব্বেছিলায়, বনপাতির
মড়োই বাংলাদেশের মাটির গভারে তাঁর
লিক্ষ্ণ প্রসারিত। বহু দ্রের হাওয়ার
পাশ বেষন বনপাতি অনেক আগে পার,
তেমীন ভারালক্ষর এদেশের ক্ষিক্ত্ গ্রামীণ
ক্ষাক্ষ্ণ প্রমানতভালিক্ষ বাবন্ধার পলনসংখ্যা উপলাক্ষ্য করেছিলেন সকলের
আগেই।

পরে ভাবতে চেন্টা **করেছি, ভার** জীবনের বিকাশ ও বৃশ্ধির কালটা।

প্রথম বিশ্ববন্ধের সংকটের দিনে তারাশক্ষর ছিলেন তর্ণ। সারা প্থিবী, বিশেষ করে সময় রুরোপ তথন জীবন-জিজ্ঞাসায় জটিল। তার ছোঁরা শেগেছিল বাংলাদেশের সাহিত্যেও। কিন্তু রুরোপীর গ্রেমশাইদের কাছে দীকা নিতে রাজী হন্নি ভারাশংকর। জীবনরসের সাধনার মান ছিলেন তিনি। বিশেলবংশর মনো-ভূমিতে প্রবেশ না করে গোটা মানুবের সালিধা কামনা করছিলেন ভাতাত সাহিতের আন্ত রক্তাবে। হরতো উত্তেজনাকেন্দ্র কলকাতা থেকে দুরে থাকার জনাই তাঁর চিন্তা ও চেতনার উৎসে স্থিত হর্মন জটিলজা। কিন্তু সামাজিক ক্ষাক্তার বিবেকী সংবাদ সাড়া ভালিরে-ছিল তার শিলপীপ্রাপে। জান্তত হরেছিলেন তিনি 'গণাদেকতা'র অভার্থনার।

এই প্রবল জীবনরোধ ও সমরচেতনার জনাই বাংলাদেশের সচেতন পাঠক ও সমালোচকরা প্রথম দৃথ্যি ফিরিরেছিলেন তার দিকে। সকলেই দেখেছেন তার উপন্যাসে সমালোর সার্থাক চিত্রর্প। এজনাই কামিবিরোধী আলোলনে তার সাহচ্চা ছিল অনেকের কাছে ম্লাবন ও আকাজিক।



অনেকে তাঁর উপন্যাসের আঞ্চলক বৈশিশ্টা ও মানবচরিত্রের নিজ্পন ওপর বিশেষ প্রেছ পিতে চান। স্পেহ নেই, রাঢ় অঞ্চলের মান্য, তাপের দ্বার্থ পৌর্ষ ও আদিমতা, বৃত্তি ও প্রবৃত্তি— সবই তাঁর শেখার সজীব হরে উঠেছে। খাল্লী-দেবতা' উপন্যাসের স্তুপাত করেছেন তিনি রাঢ়ের মাটির একক বৈশিশ্টোর চিত্র পিরে। তার্যাশক্ষর লিখেছেনঃ

> "বাংলাদেশের কুফাভ কোষল উবর ছুমি প্রকৃতি বর্তমান বেহারের প্রাণ্ডভাগে বর্ত্তিক আসিরা অফসাং রুণাণ্ডর গ্রহণ করিয়ছে। রাজ-রাজেশ্বরী আমপ্রা কট্ডেন্বর্গ পরিত্যাগ করিয়া বেন ভৈরবীবেশে তপ্পচ্বার মান। আসমতল গৈরিক বর্ণের প্রাণ্ডর তরপায়িত ভাপাতে দিগাণ্ডর নীলের মধ্যে বিল্শ্ভ হইয়া গিলাড়ে মধ্যে মধ্যে বনকুল আর খৈরি-কটিরে গ্রেম, বড় গাহের মধ্যে দীবা

তাল গাছ তপশ্বিনীর <mark>শীণ বাছরে</mark> মতো উধর্লোকে প্রসারিত।"

এই স্থানচেতনার সংগ জড়িরে ররেছে তারাণগুরের কালচেতনা, মাটি ও মানুবের প্রতি মমন্থবোধ। রাঢ় অগুলের নানাজেণীর মানুব, তাদের ভাষা ও বাচনভাগি, হনো-জগতের প্রবণতা, ওখানকার লাল মাটির রক্ষেতা, শালবনের দীর্ঘ প্রসারিত বান্তি, মাঠ-ঘাট-মালদর, কাহার-বাগদী, কুলি-কামিন, চাবী-জমিদার, বোল্টম-বাউল, বেদে-বাউরি-সাপ্রেড, রক্ষেমীতি ও অর্থা-নীতি তাঁর বাস্তবতার কেল্টার পরিরশ্ভল তৈরী করেছে। এসব নিরেই ভারাণগুরুরে বিকাশ ও বিবর্তন।

স্বাণতি শ্রীকুষার বন্দোপাধ্যার তার কালচেতনার একটি বিশিষ্ট দিক প্রসংগ লিখেরেন ঃ

> "আমাদের সামাজিক ইতিহাস-লেখক ও উপন্যাসিকগণ একট কথা বিশেব ক্ষরণ রাখেন না বে, যধ্যবংগ

হইতে আরুভ করিয়া গত দুই-তিন শতাবদী জমিদারবংশই প্রদেশের প্রাণ-শক্তির কেন্দ্রস্থল ও আধার ছিল। এই কাৰ্যত স্বাধীম, অপ্ৰতিহত প্ৰভাষ ভূস্বামিকুলের আদশ আকাজ্যা, বিলাস-বাসন, আগ্রিড-অত্যাচার, ্বাংসলা, সৌদ্দর্যরুচি ও গ্রেণ্যাহিতাকে কেন্দ্র করিয়াই আবতিত হইয়াছে। গত দুই-ভিনশত বংসরের দেশকে ব্ৰিতে হইলে জমিদার্দিগকে ব্ৰিডে হইবে—ভাহদেরই কেন্দ্র-বিকীরিত শত্তি দেশের প্রাণ্ডদেশ পর্যণ্ড বিশ্রুত হইয়াছে। জনসাধারণের বিশেষ কোন আত্মনিধারণশাড় আত্মশ্বাতন্ত্রা বা ना-क्षिमात्रुट्मत প্রভাবই তাহাদের প্রাণম্পদ্দনের গতিবেগ ও ক্রিয়াশ**ীলতার** বৈশিশ্টা নিদে"শ করিয়া দিতে। लिएनव मधा य দ্ধবি, নির্মশ্ভখলার পরিপশী বিদ্রোহণতি হড়ান হিল, GIFT জমিদারদের অত্যাচারের শ্বারাই উত্তোজত হইয়া ঐক্য e সংহতি লাভ করিত। জমিদারদের দানশীলতা নদী-প্রবাহের ন্যায় দুই ধারে শ্যামলতা বিস্তার করিত। তাহার দৃশ্ত পৌরুষ জাতির শব্তিকে উদেবাধিত ও সংঘবংধ করিত, তাহার ক্রমপ্রসারিত দাবিদাওয়া জনসাধারণের বৈষয়িক বৃদ্ধি ও স্বভাব **সম্ধ** চতুরতাকে তীক্ষাতর করিরা **তৃলিত। স্তরাং জাতির** মুখপার ও নেতা হিসাবে এই অভিজাতবর্গের সাহিত্যে ও ইতিহাসে न्धान **चार्ट**।"

তাই বলে তারাশণ্কর কথনো
জামিদারদের সম্পদ ও শান্তর চিত্রই শুধ্ আক্রেননি, বরং তাদের ধরংসের ছবিই এ'কেছেন। যাশ্তিক সভাতা ও প'্রজিবাদের কাছে সামশ্ততন্তের পরাজয়চিত্রই অণ্কত হরেছে 'কালিন্দা, 'জবানবন্দা' প্রভৃতি

১৯৭० সালে আপনার ভাগ্য

বে-কোন একটি ফুলের নাম লিখিয়। আপনার ঠিকানাস্ত একটি পোর্ভকার্ড আনাক্ষর কাছে পাঠান। আগায়া বারমাসে



আপনার ভাগোর
বস্তারিত বিবরণ
আমরা আপনাকৈ
পাঠাইব: ইচাতে
পাইবেন বাবসারে
গাভ গোকসান
নকারিতে উর্লিদ বদলা ভলা

সম্প্ৰিয় বিবরণ—আর থাকিবে দুক্টগ্রহেস প্রকাশ হইতে আত্মরকান নির্দেশ। একবাদ পরীকা করিকেট ব্যক্তিক পারিবেন Pt. DEV DUTT SHASTRI Raj Įvotski (AWC) P B. 86 JULLUNDUR CITY উপন্যাসে। যে আলোর তিনি সামশ্তবাদের পতনচিচ একেছেন, সে আলো প্রদীপের নয়, শেষ-প্রক্রিত চিতার। হয়তো তার মধ্য কিছুটা হাহাকার আছে। কান পাতলেই শোনা বাবে ধর্পের ও প্রাসাদ বিদীর্ণ হ্বার শক্ষা। তারাশশ্বর এই শক্ষ শুনতে পেয়েছেন ধ্রপেস্ত্পের ওপর বাজিয়ে।

একদিন তারাশগ্জরকে প্রশম করে-ছিলাম : প্রাচীন জমিদারী বাবস্থার পতনে কি আপনি দঃখবোধ করেন? এই দঃখ কি আপনার ব্যক্তিচিত্তের, না শিলপী-সন্তারও?

গভীর মমতার সপো তারাশ°কর বলেন, জানি, যা অনিবার্য তাকে ঠেকানো যাবে না, তার পতন হবেই। তব্ তার প্রতি আমার শিলপীপ্রাশের সহান্তুতি আছে। তাকে আঁকড়ে থাকতে চাইনি আমি, আসম কালকেই মনেপ্রাণে গ্রহণ করেছি।

তারপর একট, থেমে বললেন,
ম্ভারামবাব্ খাটটের মলিকদের বাড়ী
গেছেন কথনো? যাকে মার্বেল প্যালেস
বলে লোকে জানে। এখন সেই বাড়ীটা
শ্না, খাঁ-খাঁ করছে। অথচ এক দন
লোকজনে ভতি ছিল অন্দর-বাহির। বড়কতার ঘ্ম ভাঙলে, তার খড়মের শব্দে
সারা বাড়ীটা চণ্ডল হয়ে উঠত।

একটা উপমা দিয়ে বললেন, ঐ বড়কতা ছিলেন বাথের মতো। অরণোর নিশ্তখতার তার বাস। তব্ তার প্রতি আমার একটা মোহ ছিল।

প্রসংগঞ্জমে মনে পড়ে তাঁর ক্ষেকটি গলেপর নাম—বাদ্করী 'বেদেনী' দারী ও নাগিনী' 'তারিণী মাঝি' 'ডাইনী' প্রভৃতি। সমস্ত রকম নীতিজ্ঞানকে বিস্পান দিয়ে এইসব গলেপর প্রতিটি চরিত্র যেন আদিম বর্বরভায় জেগে ওঠে। মনে পড়ে 'বেদেনী' গলেপর ক্ষেকটি লাইন। তারাশংকর অবিস্মর্ণীয় শিলপসাথ কতায় এশকেছেন উল্লেশিকর নায়িকা রাধার একটি বিশেষ মুহুতের ভাষাচিত্রঃ

"কালো সাপিনীর ক্ষীণতন্
দীর্ঘাণিগানী বেদেনীর সর্বাংগ থেন
মাদকতা মাখা।... দে থেন মাদর
সম্দ্রে নান করিয়া উঠিল। মাদকতা
তাহার সর্বাংশ বাহিয়া করিয়া করিয়া
পড়িতেছে। মহায়া ফ্লের গণ্ধ থেমন
নিঃশ্বাস ভরিয়া দের মাদকতা,
বেদেনীর কালো র্পও তেমনি চোথে
ধরাইয়া দের একটি নেশা।"

বিংবা গ্রামীণ কুসংস্কারের অনদা চিত্র ভাষা তালের ক্রেকটি পংত্তি ঃ "একটা ভাষা তালের স্তালো ডগার…তীক্ষাগু প্রাক্তি বিশ্ব হইরা অ্লিতেছে বৃন্ধা ভাষনী। আকাশপথে বাইতে বাইতে ঐ গ্রামীনের মন্ত্রপ্রহারে পক্স্পক্ষ পাখীর মত পড়িরা ঐ গাছের ভালে বিশ্ব হইরা মরিবাছে।"

এক্তবেই কবিনের, সমাজের, সমরের— সক্তা ও আর্মার্ক্স-ক্রাম্থ ও শাণ্ড—আগত ও বিগত—যুম্থ, দুর্ভিক, মহামারী,

স্বদেশী আন্দোলন—সমস্ত দিকের আরুত ও লোকায়ত হরি এ'কেছেন তার্মালক্ষর। কালরাটি

সংগ্রেতি বেরিয়েছে তাঁহ করন আন্দ্রান কালরাহি'। গ্রামীণ কিবো বিগত্তারের কাহিনী নয় এ উপলাস। অতিংশাশ্রমিত বর্তমান ও একালের নগরজীবন তার পট্টুম। আজকের অস্থিরতা, উন্পামতা, অসহায়তা, বিপথায় ও মূলাহীনতার কারণ-অন্সংখান করতে গিয়ে তারাশাশ্বর যেন অভিত্তের শিক্ত ধরে টান দিয়েছেন।

তারাশংকর বলেন, আমার এ উপন্যানে যে কালরাহির কথা বলা হরেছে, তার স্ট্রেপাত ১৯৪৭ সালের ১৪ আগস্ট। আঞ্চত্ত একটানা অংধকারের মধ্য দিরেই আমাদের দিন চলে যাছে। হরতো এ কালরাহির প্রস্তুতি দ্রে, হরেছিল আরো অনেক আগে। এখনো তার উদয়কাল আসে নি।'

আমি তার বলার ভণিগ লক্ষ্য কর-ছিলাম। একালের অনিদেশাতা যেন ভাষা পাছিল তার কণ্টেশ্বরে। তিনি বলালেন, 'কলোল আমলে আমরা বিবাহের চেয়ে বড় জীবনকে কামনা করেছিলাম সাহিত্যে। অনেকে চেয়েছিল 'প্রাচীর ও প্রাণ্ডরাকে সমান করে দিতে। কিন্তু প্রাণ্ডরে ইংস্করা যায় মা, প্রাচীর দিয়ে অন্দর তৈরী করে নিতে হয়।'

এ উপন্যাসের নায়ক অংশ্মান কার ডায়েরীতে লিখছে: 'আজ সীতা চলে গেল। কালরাতে সে এখানে ছিল। আমি তাকে জোর করে আটকে রেখেছিলাম।'

তারাশণকর লিখেছেন ঃ 'সাহিত্যে আমরা এ সতোর সহজ প্রকাশ গ্রহণ করতে পারি নি, কিন্তু আজ সমাজে তা বলে তো সত্যা—সে মুখ লাকিরে অন্ধকার গ্রহার আত্মগোপন করে থাকবে মা। মান্বের দেহ লোবে কোবে এই প্রশৃত্তি রিপ্রায় উঠতে চাচ্ছে ও উঠাই আন্দর্য—১৯৪৭ সাল পর্যাপত এ দেশ—বেন আরে একরকম ছিল। তার আগে এ প্রবৃত্তি ছিল, ছিল না কে বলবে?'

অংশ্মানেরও পতন ঘটেছে ঐ একই
সময়ে ঃ স্বাধীনতালাভের ঘণ্টাখনেক
আগে সে নিজে প্রুণ্ট হয়েছিল। সেই রাপ্তে
তার বাবা মারা গিয়েছিলেন। তার মান
হয়েছিল—অভিশশত হয়েছে সে। এই
পাপে। ভাবতে ভাবতে সে বেন ভেঙে
পড়েছিল। যে-সভাকে সে সভা বলে
মানছে তারও উপর ভর দিয়ে সোলা হরে
আর দাঁড়িয়ে থাকতে পারে নি।...

কেন এমন হল। একা তো সেই দ্বৈধ্ব নম—সারা দেশেরই এই একই অবস্থা। নিজের জীবন দেশের মান্বের জীবন বিচিত্রভাবে একটা আশ্চর্য উগ্র চেহারা নিমেছে। প্রাচীন সবকিছুই যেন অসহা মনে হচ্ছে। বুকে যেন অকসমাৎ কোম প্রস্কুত আশ্নেরগিরি জীবস্ত হুরে উঠে অশন্যুশ্যর করছে।...

শব্ধ এ দেশই বা কেন? সারা বিশেষধ্ব সকল দেশের অবস্থাই তো তাই। জবলংছ; মান্বেরা কেন জনসভে। দেছের জুধার মনের জন্ধার—জনসভে।

এ হয়তো এই কালেরই আগ্নে। এই থে
কাল—১৯০১ সাল খেকে এই ১৯৬৯ সাল
পর্বশত এইকালে বেন কালেরই ব্রুক্থানকৈ
বিদীপ করে ভিতরে সঞ্চিত বহু বহু
কালের আগ্ন ফেটে বেরিয়ে—এত কালের
সর্বাক্ত্র জালিয়ে দিছে। এরই মধ্যে সে
এবং সাতা।

₹

সবচাইতে আশ্চর্য লেগেছে 'সীতা' চরির্চাট। সে একালের শহ্রে মেরে। অংশ্মান কখন তাকে সারা রাত আটকে রেখেছিল, তখন তার কাছে সাত। নীরবেই আ**খ্যসমপণি করেছিল। এবং** সে আত্মসমপ্রের মধ্যে কোন কুন্ঠা বা কোন কার্পণা ছিল না। শৃধ্ব নীর্ব হয়ে ছিল। সে নীরবতার অর্থ সে ব্রেছিল। কিল্ডু ব্যঝেও জীবনাবেগকে সে সংহত করতে পারেনি। সীতাও এ যুগের মেরে। সে তার থেকেও অবিশ্বাসী এবং তার থেকেও উল্ল বিদ্রোহাত্মক আবহাওয়ার মধ্যে মান্য। এক সময় সৃীতার দুটো আঙ্বলে সিগারেট খাওয়ার জন্য গাঢ় নিকোটিনের ছোপ ধরেছিল।'

তার অতীত সম্পর্কে থেকৈ করে নি
অংশ্মান। প্রথম পরিচয়ের স্তে জেগেছিল সীতা হিন্দু নয়, বাভালি জীশচান।
বন-ছটি চুলওরালা এই মেয়েটি অংশ্মানকে ভালো বেসেছিল। অংশ্মানও যে
বাসে নি তা নয়। কিন্তু বাাপারটাকে
ভালরে দেখে নি কথনো। সে তাাগ থেকে
ভোগকে বেশা ভালোবাসে।

ভার।শৃংকর বললেন, একটি যুবকের
কাছে একটি যুবতী ক্রমশ বাংধবী থেকে
প্রি-বাংধবীতে পরিপত হবে—এটাই তো প্র'নিধারিত। পরস্পরের ভালোবাসা শেষ পর্য'ত দৈহিক বংধনে ধরা দিতে চায়। আগোকার দিনে বিবাহের মধা দিয়ে সমাজ ভাকে ফ্রাকুতি দিতো। এখন বিবাহবংশন অসহা হলে বিচ্ছেদ প্রযাসত হয়ে যায়।

তব্ অংশ্মানের সংগ্ণ রাত কাটিরে সীতা যেন হঠাং অনা মানুষে পরিণত হয়েছে। সে সি'থিতে সি'দ্র পরে আজ-রক্ষার কথাই প্রথম ডেবেছিল। অংশ্-মানের কাছে চেয়েছিল বৈধন্তাবে একটি শিশ্র মা হবার অধিকার। কিন্তু সে সি'দ্র নর, একট্ লালকালিও সি'থিতে পরিরে দিতে সম্মত হব নি। সীতা নিলেই খানিকটা লালকালি সি'থিতে দিরে চির-কালের মতো বেরিরে গিয়েছিল।

কথায় কথায় তারাশংকরবাব বললেন, এখন প্রতিনিয়ত জীবনের প্রতিশ্রতি ভণ্গ

সীতা উগ্র আধ্নিকা হলেও তার
মধ্যে একটা নিরুতন নারীপ্রকৃতি ছিল।
বাস্তবকে অস্বীকার করার সাধা ছিল না
তার। মৃত্তি, স্বাধীনতা প্রভৃতির প্রতি
আন্গেতা নিরেও সে আস্ত্রিকভাবেই
গৃহস্থী। না হলে ১৯৬২ সালের পর

কলকাতা শহরের কোনো আধ্নিকার পক্ষে রানাঘাটে যাল্টারী নিরে পালানো সম্ভব হত না।

चम् उ

অনাদিকে অংশ্মান এই বিপর্যস্তকালের ও স্থাবিরারিক ঐতিহোর দিক দিরে
তার গোড়া হওরাই উচিত ছিল। কিংতু
হর্লন। হরতো চিরকালই মেরেদের চেরে
ছেলেরা অনেক বেশী বেপরেয়া ও বহিমাুধী হবার গভি রাখে। অংশ্মানের
চারিকিক বৈশিন্টো সদাঅতীত ও আসম
ভবিষ্যতের ছারা পড়েছে প্রেরাপ্রিঃ।

তারাণাণকরবাবে, বললেন, 'এ কালের ছেলেদের আমি নিদ্দা করতে পারি না। তাদের দোব নেই। তারা পথ পাছে না। এমন কি তাদের সামনে কোন আদশ প্রতিত নেই।'

জি**জে**স করলাম, একে কি সমাজের পত্ন বলা যায়?

বেশ দ্ট্ডার সংশ্য বললেন, না, পড়ন নর-পরিবর্তান। এখন দেশ পাল্টাছে, সমাজ পাল্টালেছ। এই তো সেদিন কাগজে দেখলাম, কয়েকটি ব্রাহ্মণ মেয়ে করেকটি শ্দু ব্বক্কে বিয়ে করেছে। ভার মধ্যে আমি কোনো দোব দেখি না।

আমি অবাক বিস্মান তাঁর মাথের
দিকে তাকিরেছিলাম। বাহান্তর বছর বর্দক
স্রুটা ও শিশপার মাথে এ কোন্ নিমাম
সতোর প্রকাশ ? সমাজ ববর্ডানের কঠিনতম সংকটের মাহাতেও তিনি বেন স্থির,
ভয়ংকর উদাসান, অথচ প্রাক্তনের প্রতি
আসালি ও বর্ডামানের প্রতি সহানাভূতি তাঁর
এতটাকু কম নয়।

0

জারাশব্দরবাব আমার হাত খেকে উপন্যাসটি চেয়ে নিয়ে থানিকটা অংশ পড়ে শোনালেন। আমি চুপ করে শ্নীছলাম্ঃ

'১৯৬২ সালে অজয় নদের দক্ষিণ তটের উপর দেবগ্রাম গ্রামখানির, (গ্রাম-খানির নাম দেবগ্রাম) প্রধান জন হিল চৌধ্রীরা। উপাধি চৌধ্রী, জ্লাতিতে বাহ্যণ, গোৱে কাশ্যপ অর্থাৎ চাট্যুক্ত। বাংলাদেশে গ্রামীণ সমাজের মধ্যে নিঃস্ব খেটে খাওয়া মান্য থেকে সম্পদশালী ভূসম্পত্তিশালী হর পর্যান্ড অনেক শ্রেণী. অনেক ধাপ বা সি'ড়। দিন আনে দিন খার, না আনকো উপোস যায় থেকে দিয়ে থার থেরে ছড়ায়, ছড়ানো ভাত কাকে খায়, কুকুরে খায় যে ঘরে সে ঘর পর্যক্ত মন্টে মঞ্ব কৃষাণ চাকর চাষীভূষি জ্লোত-দার পর্যত বহু ধাপ--জোতদার-মহাজন --- জমিদার। এর সপ্সে আবার স্থাতের **एए** शीरमात्र काएत खाए. इ.१-जळ्.१ —ব্রাত্য থেকে নবশাক পর্যদত অনেক শ্রেণী, উপরের ডিনটে শ্রেণী সচরাচর কারন্থ বৈদা রাহ্মণের মধ্যেই সীমাবন্ধ।'

লক্ষা করছিলাম, ভারাশংকরের ইতি-হাসচেতনা সমাজবিকাশের ধারা বেঙে

প্রায়শ উৎসম্বা। কেননা, তাঁর বান ও মানসিকতা ধ্রপদী চিচতনে বিশিষ্ট। কোনো ঘটনাকেই বিজ্ঞিয়ভাবে ভারতে পারেন না তিনি। বে দ্বিটি দিয়ে তিনি যৌবনে প্রপ্রেছন, সে দ্বিটির আলোকেই দেখেছেন সমস্যাকে। কেবল পাটভূমি আলাদা, বদল হরেছে বহিদ্পোর। এজনোই অংশ্বেমনের মডো শহরের যুবকের পরিচম্ন দিতে গিরে তিনি প্রতাবর্তন করেছেন নব্দ্রামের সামাজিক পরিবেশ। হয়তো অংশ্বানের সন্তার গভীরে সেই সমাজের ক্লীশপ্রোভ রজের করেছাল প্রতিধনি তোলে। আর ঐ একই কারণে তাকে দিতে হয়েছে তার মা শোভা চক্রতার (পরে চৌধ্রী) প্রেপিনিচা।

পড়া থামিয়ে জারাশ করবাব্ বললেন, উপন্যাসটির ৯০ ।৯৪ ।৯৫ প্রতা ভালো করে পড়ে দেখবেন। পড়ে দেখলাম, দ্বিতীয় বিদ্ববৃদ্ধ থেকে বর্তমান কাল পর্যক্ত সামাজিক ও রাজনৈতিক জীবনের তথা দেওয়া হয়েছে পংজিতে পংজিতে। তিনি লিখেছেন:

'দ্বতীয় বিশ্বযুগ্ধ থেকেই দুনিয়ার সমাজের যাতার বা থিয়েটারের সাজানো আসর ভেঙে গেছে। অত ডিকালের পৌরাণিক ঐতিহাসিক নাটকের আমল চিরদিনের মতো শেষ। গ্রীনর্ম থেকে রঙ মুছে সবাই বেরিয়ে এসে থোলা মাঠে ময়দানে নেমেছে। পয়সা বদলে নয়া পয়সা হয়েছে। মান্বের জ্ঞানের রাজ্যে পার-মার্ণবিক বিস্ফোরণ হয়েছে। পারমার্ণবিক বোমার আঘাতে নাগাসাকি হিরোসিমার মান্বই শুধু মরে নি, সেথানকার সমুস্ত প্যাগোডাগ্লো এবং ভৈতরের দেবতা-গলে। ভেঙে গেছে। পৃথিবীতে কালো-বাজার নামে নতুন একটা বিরাট বা বিশাল বাজার আপনাআপনি পথের ধারের হাটের মন্ত বদে গেছে। ...চোরা-

ब्र्भरमारकत जनगीत वार्जावादी

त्रभागां

জুন সংখ্যার লিখেছেন

। শৈলজানক মুখোঃ, অজিতকুমার বন্ধু
(অ.কু-ব), শ্রীবের,পাক, প্রেক্সন সরবার ও শ্রীবের,পাক, প্রেক্সন সরবার ও শ্রীবের বাজাগুরু, ।।

। এছাড়া ছবি, ভবিষাম্বাণী, প্রশোক্তর, নতুন গানের ম্বর্রালী, ডাজারবাব্র চেন্বার ইডালি ।।

সম্পাদক: রডীশ রাল্প

সম্পাদক : রডাম রার ঠিকানা : ১২এ, লাট্বাব্ লেন, কলি-৬ কোন : ৫৫-২০৯৭ বার্জীরের আলেপালে রাচির প্রথম প্রহন্ত শ্বিতীর প্রহরে কালো টাকার মেরেলা দেহ রচেছে।... আবার দেহ কেনাবেচার নেশাটাও বড় একটা কম নেশা ময়। কারণ মুন্ধ মিটবার পরও যে এই কারবার ফলাও হয়ে চলেছে। সে এই নেশার ঘোরেই বেশী চলেছে।

' 'অংশ্মান বলে—যার চোথ আছে, মন আছে, অন্তুতি আছে সে নিশ্চমই ব্রুতে
পারে যে গোটা প্থিবটিটই একটা বিরাট করারে পরিপত হয়েছে, সে কররে গোর দেওয়া হয়েছে ঈশ্বমের করের।

ঈশ্বনের মৃত্দেহকে সেশানে যুম্পের মড়ার শত্বে ফেলে মাটি চাপা দিয়ে লিখে দেওয়া হয়েছে—হজভাগা জ্জ্জাভপরিচয় বিরুতদের সমাধি।

'

তারাশব্দর ব্রবতে পারেন, একথা
বলার সাহস আছে অংশ্মানের। অন্য কারো
পক্ষে তা সম্ভব নয়। অথচ ঈশ্বরের কবরে
পা রেখে দাঁড়িয়ে আছে সবাই। পর্রোহিত,
প্জক, পাদ্রী থেকে সব মান্যই অম্বস্থিত
বোধ করছেন। কেনশা, তার বাবার নাট্কে
দলের সভা দিবকিংকরের কাছে প্রথম
দিখেছিল মদ খেতে। সেই তাকে অভসীর
ম্থে তুলে দিরেছিল। পনের বছর বয়সে
নামীদেহের প্রথম আম্বাদ পেয়েছিল সে
অভসীর কাছে। তারিখটা ছিল ১৫ আগস্ট
১৯৪৭ সাল।

1 4 4 4

ত্বি আমাদের আলোচনার মাঝখানে এলেন এক ভদুলোক। তারাশ-করবান বললেন, ওকে জিজ্ঞেস কর্ন, অনেকটা বলতে পারবে। আমার এ উপন্যাসের প্রফু দেখেছে মনোযোগ দিয়ে।

বললাম, বলনে, কালরারি সম্পর্কে আপনার মতামত কি?

তিনি সংক্ষেপে বললেন, আয়ার মনে হয় এ উপন্যালের প্রতিটি মান্বই কটিদত। কেউ স্যাক্তিফাইস করে নি, কিন্তু ক্মপ্রো-মাইস করেছে সকলেই।

তারাশভকরবাব্কে জি**জেস করলা**ম, অংশ্মানের মধ্য দিয়ে আপনি কি বোঝাতে চেলেছেন?

—বিবাহবজিত প্রেমের আলেনানান কতথানি বাস্তব, তাই আমি আংশুমোণের মধ্য দিরে দেখাতে চেয়েছি। এখন বিচার হতে পারে, হেলেটি কডখাঁন কালোপবোগী কিংবা মেরেটি কালোপযোগী ইয়েছে কিনা।

আপনার কি মনে হর, এ **কালের** যুবকদের কোলো নির্দিণ্ট **আদর্শ আহে**?

—তারা দিগশ্তহ**ীনতঃকেই একটা** আদর্শ করে নিতে চাইছে।

আপান সীতা চরিয়ের হার দিলে যে সমস্যাটার কথা বলতে চেমেছেন, ক্ষদ্র কোনো উপন্যাসে কি ভার কোনো ইলিকড

—'ফরিরাদ' উপনাসে আমি এ
সমস্যাটাকৈ ধরতে চেরেছি য়ারের চরিত্রে
মধ্য দিয়ে। অবল্য একট্ ভিমর্পে।
'কালরাত্রি'তে আমি তিন ধরমের মেরের কথা
লিখেছি। এক ধরনের মেরে অতসী—সে
সহক্রে কারো সপ্যে নিকেকে জড়াতে চার
না। দ্বতীর ধরনের মেরে হলো, ভাঙা
ঘরের কর্তার নাতনী। তৃতীর ধরনের মেরে
দাদার শালী, যে ফরেদ অফিলারকে বিরে
করে স্থী হতে চেরেছে। সীতা এদের
কারোর মত নর। তাকে অন্যভাবে আকবার
ইন্ডা ছিল আমার।

তারাশঞ্চরবাব্ বললেন, এ বই লিখে আমি অনেক গাল খেরেছি—বিশেষ করের মেরেদের কাছ থেকে।

জিজেস করলাম, আজকের সামাজিক অস্থিরতা ও অনিশ্চয়তার জন্য কি আপনি কোনোরকম অস্বস্থিত বোধ করছেম?

—না, কোনোরকার জন্মতিত বোধ কর্মছ না। আমার সব লেখার বিষয়কত্ত্ সমরকেন্দ্রিক। আজকের রাজনৈতিক ও সামাজিক পরিবতনের কথাটাই কালরাচির প্রধান অবলম্বন।

á

এখন যদি কেউ প্রশ্ন করেন, তারাশংকরের উপন্যাসের ধারার 'কালরারি'র
শ্থান কি? তাহলে অনেকশণ ভাষতে হবে,
কিন্তু সঠিক উত্তর দেওয়া কঠিন। প্রথমত,
এ উপন্যাসের আভিগন্ধ কিছুটা আলাদা
রক্মের—বিভ্নমী ধরনের পিরামিডিক্যাল
কাহিনীব্তকে অনুসরণ না করে, অনেকটা
হৈখিক পশ্যতির অনুসামী। শিক্তীরত,
একটা মহাকাব্যিক গাশ্তীর্য এর অভ্যঃশ্রোত
হিসেবে কান্ধ করলেও একালের নগারলীবনই তার প্রধান অবল্যনা। সংলাপে
বর্ণনায় কোথাও কটিলতা দেই।

তারাশত্বরবান্তক জিল্ডেস করতাম,

শালরাত্তির সপো আনা কোলো উপন্যালের কি সাদ্ধ্য আছে?

তিনি বলেন, 'আমার উপন্যাস বে
ধারার চলেছে, এ উপন্যাস সে ধারার নর।
তবে বিশ্বটো মিল আছে মুন্দুকুর নিতারক'
দাশতপদী' 'উন্ডারণ'-এর রুলে। মুন্দুকুরে' বে সমস্যার স্থেপাত 'কালরাচিতে' তারই
মুন্পুক ইণ্লিত। অন্যতর্গ উপন্যাসের গীতা
নামে একটি বে মেরেটি অথের লোভে অন্য মেরে সাম্পাই করতো, 'কালরাচিতে তারই
পরিপতি দেখিরেছি।'

অনেক দিন আগে আমি ভার উপ-ন্যাসকে ভাগ করেছিলাম তিন্টি স্থ্তা পর্বে। সেই হিসেবে 'কালরাচি' ত্তীয় পর্বের অব্তর্ভুত্ত। সময়ের হিসেবে বৰা বায়, ১৯২৭ থেকে ১৯৩৯ সাল প্য'ন্ত 'চৈভালী ঘ্ণি' 'পাষাণপ্রী' 'নীলফ-ঠ' 'রাইকমল' 'আগন্ন' প্রভৃতি উপন্যাস প্রথম বিশিষ্ট পর্বের রচনা। এই পর্বে তার মানসলক্ষণের প্রকাশ ঘটেছে রাড় वाश्वात গোষ্ঠী, সম্প্রদায়, ও সাহিতো অবহেলিড বিশিষ্ট শ্রেণীর সামগ্রিক জীবনচিত্র প্রকা-শের প্রয়াসে। দ্বিতীয় পর্বে তিনি ধরতে চেয়েছেন আদিমতম প্রবৃত্তির শক্তি, লালসা ও লোলহান ভোধের স্বর্প। কোনো খণ্ড চিত্তে নয়, এক-একটি সম্প্রদায়ের সাম-গ্রিক ছবি, ঐতিহা ও সংস্কার, ভৌগোলিক <mark>অবস্থানে। আকারে, আর্মন্তনে,</mark> বৰ্ণ নায় বিশ্তারে বিপ্লে সম্মতি পেয়েছে তাঁর উপন্যাস। দেশ-কাল-গোষ্ঠীর সমগ্ৰহা **ফর্টিয়ে তোলবার চেন্টা করেছেন** काता একটি কিংবা দুটো চরিত্রের নির্ধারিত প্রাধান্যে। ১৯৩৯ থেকে ১৯৫০-এম সধ্যে **লেখা 'ধান্তী** দেবতা' 'কবি' 'গণদেবতা' 'পঞ্চাম' 'সন্দীপণ পাঠশালা' হাসলো-বাঁকের উপকথা' 'নাগিনী কনারে কাছিনী' প্রভৃতি উপন্যাস তার এ পর্বের ফসল। প্রধান চরিতের চারপালে करतरह जनरना ग्रांथ, जक्कत छत्रभावरक्तर লাভীয়তাবাদী আন্দোলন ও দেশবিস্তৃত रञ्जनाभर्छ ।

১৯৫০-এর পর সম্পূর্ণ নতুন ভাব-কলপনার **জাগ্রত হরেছেন তারাশ**়কর। প্রথম পর্বের মতো আম্গিকপ্রধান ছোট উপন্যাস লেখেন নি আর। ন্বিতীয় পরের থেকেও সরে এসেছেন জনিবার্যভাবে। সামান্য দ্ব-একটি উপন্যাস ছাড়া রাজনীতি-বজিভি লেখার দিকেই ভার প্রধান কেকি পড়ে। 'আরোগ্য নিকেতন' 'রাধা' 'বিচারক' 'সম্ভূপদী' মহাদেশতা' 'উন্তরারাল' '**ভা**বান-বন্দী' প্রভৃতিকে হাজির করা বাদ এই ধারণার নিদর্শন হিসেবে। অবশ্য মাঝে मारक जरमरेह मान्मा, ग्रन्थ, রাজনীতির প্রসংগ। গ্রাম-পটভূমিকে ছাড়িরে তারাশ•কর **टाथ कि बिराएक्न नगत-जीवरनत फिरक।** এমনো হতে পারে, নারকচরিয়ের সন্ধানেই ব্গৰকাণার অস্থির হরে উঠেছে একালের প্রতিটি মানুষ। **'কালরারি**'র পারপার বা সকলেই প্রতাকভাবে একালের অংশীদার।

১৫·০০ আঁয়ান পাঠাইলে ভাক **মাল্ল ফ্রি লেওরা হয়।**

--



(8)

শীতকাল এলেই মানুবটা কিছুদিন বেন ভালো বাকে। ঠান্ডার কনা মণীন্দ্র-নাথ গায়ে ব্যাপার ছড়িয়েছেন। আগের মত বালি গারে থাকছেন না। এমন ইরে ভালো হতে হতে একদিন হয়ত বথাৰ্ট ভালো হয়ে যাবেন। তথন কোৰাও দুক্তন চলে বাবে এক সপো—কোন তীৰ্ঘে অথবা বড সহরে। অথবা সেই যে বলে না এক মাঠ আছে, মাঠের পালে বড় দিখি আছে, দিখিতে বড় বড় পশাফলে ফাটে থাকে. বড়বো গ্ৰীক পাৱানের এই নায়ককে নিম্নে একদিন বথাপটি সেখানে চলে মান ৰটা ভাল হলেই জলদানের মিমিছ কোন জলছত্তের পালে দাঁড়িয়ে থাকবে। তথন হরত কোথাও দারে গীর্জায় ঘণ্টা বাজ্যে প্রেহিতেরা মদ্য উচ্চারণ করবে-পাণল মান্ৰ মণীন্দ্ৰনাথ কোন হ্যামলক গাছের নিচে দাঁড়িরে সোনার ছরিণের দেখবেন।

বছবো মান্যটাকে এমন ব্যভাবিক দেখে এক বাটি গল্প দুধ নিলে এক। সংক্ষান্ত্ৰ গড়ে, মত্মান কলা। কিছু গল্প মান্ত্ৰ। বড় আসন পেতে সে মান্ত্ৰটাল কৰা অপেকা কলতে থাকল।

লেই আদিবদের কুকুরটা মণীক্টনাথের লাক্টের কাছে ব্রের ব্রের ক্রিছল। লোলা দশিলের বারালার পকছে। কুকুরটা মাকে মাকে বেউ কেউ করছিল। লালকবা গাইটার নিচে দুটো দশীতের ব্যাং ক্রপ ক্রপ করছে। মণীক্টমাথ গর্ম দুখ, মতামান কলা, নতুন গড়ে মেখে থেলেন। কিছ তার প্রিন্ধ কুকুরকে দিলেন। ভারপর উঠে আসার সমন্ন মনে হল লোনা চুলি চুলি পড়া ফেলে এদিকে আলছে। বড়কতা খ্র খ্লা—ভিনি, কুকুর এবং লোনাকে নিজে দশিতের ভোরে বার্টে নিজে লোনাকে।

ওয়া সোনালি বালিয়া নদীতে এলে দামল। এখন জলে তেমন দ্রোভ নেই। জল কমে গেছে। যেন ইচ্ছা করলে ছেটে পার হওরা হার। পারের পরিচিত মানুবেরা **मामा अवर मनीन्यमाध्यक चानाव निना।** আনে পাশে কৰ মুসলমান গ্ৰাম। ওকেই प्तरबंदे मामि ब-भारत घरण बण। स्मोकाश कुकुषणे जन्माना जामि नामिता छैठेए। সোমার অনেক্দিনের ইচ্ছা-- কোন ভোরে, পাগল জ্যাঠামশাইর সংগ্রে প্রাম মাঠ দেখতে বের হবে। প্রতিদিন জোণের পর জোশ হে'টে म नार्व अथवा अन्यात्र कार्वामणार कार्य সৈনিকের মন্ত বাড়ির উঠোনে উঠে আলেন, পারে পারে বিচিত্র নদী নালার চিহ্ন থাকে. গরমে তরুমাল এবং শীতের শেষে আধের অটি সশে আদেন। সোনার কারে মানুষ্টা বনবাসী রাজপুরের মতো। কড রক্ষেত্র গল্প লোমার ইচ্ছা এই মানুবের কাছে--পাণাল বলে অন্ভূত অন্ভূত গলপ শোনাতেন। নিজন নিঃসপা মাঠ শেলেই, বলডে থাকে। পাসল বলৈ গ্লেপর चाक्रक मारे लावक मारे।

জাঠামশাই বলতেন, পশ্মগ্রন্থুরে বাবি ?

জ্যাঠামশাই বলতেন, ইলিশমাহের বর দেখবি?

ভারপর কোন উত্তর না পেলে বলতেন, রুণচনি পক্ষী দৈখনি?

শোদা কোন উত্তর করত না। উত্তর করলেই বলবেন, গাং চেতে শালা। তব্ একবার সে ধ্ব সাহস সঞ্চর করে বলোক্তা, তারি পশ্বীরাক্ষ ঘোড়া দ্যাথম্। দ্যাথাইকেন।

মণীক্ষনাধের কো বলার ইছা, তোমার পত্মপ্রের দেখতে ইছা হর না! ইলিশ-মার্কের বর দেখতে ইছা হর না! রুপচান পক্ষী ন্যানো না! ন্যানো কেবল পণ্যীরাজ বোড়া। পংখীরাজ বোড়া একটা আনারও লালে। পাই কোঝা! বলো নেলার দিকে একটা প্রশনবোধক মন নিয়ে তাকিছে-ছিলেন।

সোদার পণ্থীরাজ ঘোড়ার কথা মনে হল না। সে আৰু প্ৰভা ফেলে চলে এসেছে। মা, ছোট কাকা খ'লেছেন। সোনা কই গ্যাল, দ্যাথেন পোলাটা কই গ্যাল-সকলে খ'্লবে। সোনার ভারি মজা লাগল ব্যাপার্টা। মা ওকে কভিমাকে ছ'ুয়ে দেবার জনা মেরেছে। শক্ষা বলেছে ওপা জাত ধর্ম গোল। ওকে সকলে অথথা হেমস্থা করেছে কডদিন। नामार्गे, भनारे, शहर, धाकरे, विष्य, क्यार्टि কান ধরে ওঠ বোস করিয়েছে—আজ ওরী সকলে ভাব,ক। সে, জ্যাঠামলাইর সংগ্র বাড়ি থেকে চুলি চুলি বের ছরে পঞ্জ। পাণল বলে তিনি দ্ধে হৈসেহিলেন। পাণল বলে তিনি তাকে এই বাচার জনা উৎসাহিত করেছিলেন। বেন বলেছিলেন, কোষাও না কোষাও পংখীরাজ খোড়া আকাশে উড়ে বেড়ায়, কোথাও না কোথাও শ**েজ্য ভিতর শংশকুমার পালিরে থাকে** আর কোথাও না কোথাও বিনাকের ভিতর চম্পক্ষণরের রাজকন্যা সাপের বিশ্বে ঢলে আছে। ভূমি আমি দেখানে চলে যাব লোনা। সকলের জন্য বড় মাঠ খেকে সোনালি ধানের ছড়া নিয়ে আসব।

আহা ওরা কত গ্রাম মাঠ ফেলে চলে বাছে। বত ওরা এগাজিল তত আকাশটা কমে দরের সরে বাজে। সোনা ফ্লাস্ট হরে পড়ছে। সে ক্ষ্মার অবসমে হরে পড়ছে। সে অকাশ ছ'তে পারছে না কিছুতে। ওর কতদিনের ইচ্ছা জাঠামশাইর সপ্পে বের হরে সে, বে আকাশটা নদীর ওপারে নেমে গেছে—সেটা ছ'রে আসবে। কিন্তু কি করে বাদু বলে আকাশটা কেবল সরে বাজে।

কৈছা পরিচিত লোক এই নাবালক দিশাকৈ পাগল মান্ধের সপো দেখে কিন্দারে কলে উঠল, দোনাবাবা, আপনে!

জাঠীরশয়র লগে কোনখানে ঘাইতাছেন। इंटिएड कच्छे इब्र ना!

সোনা খুব বড় মানুষের মত ঘাড় नाष्ट्रा वनम, ना।

কিন্তু মণীদানাথ এক সময় ব্ৰুতে পারলেন সোনা আর যথার্থই হটিতে পারছে না। তিনি ওকে কাঁধে তুলে নিলেন। এখন সূর্যের উত্তাপ প্রথর। ঘাসের মাথায় আর শিশির পড়ে নেই। স্য মাথার উপর উঠে গেছে। এ-সময় ওরা, কোথাও যেন ঘণ্টা বাজছে এমন শ্নতে পেল।

সোনার মনে হল ব্বি সেই পঙ্খী-রাজ ঘোড়া। সে হাততালি দিতে নিতে বলল, জ্যাঠামশয় পঙ্খীরাজ ঘোড়া!

আশ্বিনের কুকুরটা সহসা চলতে চলতে থোম পড়ল। সে কান খাড়া করে শবদটা শ্বনল। শবদটা ফেন এদিকে এগিয়ে আসহে।

মণীন্দ্রনাথের এখন বাড়ি ফেরার কথা মনে পড়ছে। সেই ঘণ্টাধর্নি শানেই ব্রিঝ বাড়ি ফেরার কথা মনে পড়ে গেল। ডাল-দিকে এক দীর্ঘ বন। বনের ভিতর দিয়ে হাঁটলে ফের সেই সোনালি বালির নদী পাওয়া যাবে, নদীর পারে তর্ম্ভ খেত। এখন হয়তে তরম্বের লতা এক দৃই করে বিছিয়ে যাচ্ছে ঈশম। আর তথন বনের ভিতর কত রকমের গাছ। সেই ঘণ্টার শব্দ ক্লমে নিকটবতী হচ্ছে। বনের ভিতর কত রক্ষের ফলের গাছ-- স্ব চেনা নর। তব্ গম্ধ গোলাপ জামের, লটকন ফলের। সব ফল এখন প্রায় নিঃশেষ। সোনা গাছে গাছে কি ফল আছে উ'কি দিয়ে দেখার চেন্টা করল। তারপর ফাকা মাঠে নামতেই দেখল, এক আজব জীব। অতিকায় জীব। ওর গলায় ঘণ্টা বাজছে। সোনা চিংকার करत উठेन, जे मार्यन जारीयमा ।

কুকুরটা ছাটতে চাইল, এবং ষেউ ঘেউ করে উঠল। জ্যাঠামশাই কুকুরটাকে ধরে রাখলেন। দোনাকৈ কাঁধ থেকে নামিয়ে পাশপাশি যেন তারা তিন মহাপ্রাণ সেই আজ্ঞব জীবের জনা প্রতীক্ষা করছেন। কাছে এলেই ছ্টতে থাকবে তারা, অন্য পথে চলে গেলে কোন ভয় থাকবে না।

সোনা বিষ্ময়ে कथा वलएं भाराष्ट्र ना। আসলে এত বড় মাঠ এবং এক বিরাট জীব—এ-হাতির গণ্প সে মে^ঞ-জ্যাঠামশাইর কাছে শ্নেছে। জমিদার বাড়ির হাতি। হাতিটা দুলে দুলে ওদের দিকে নেমে আসছে। কাছে এলে ওর মত বয়সের এক বালক হাতির মাথায় বসে অংকুশ চালাচ্ছে দেখতে পেল। যে ভয়টাুকু ছিল প্রাণে তা একেবারে উবে গেল। সে আনন্দে চিৎকাব করে উঠল, জ্যাঠামশয়!

জ্যাঠমশাই কতদিন পর যেন কথা বললেন। — এটা হাতি।

সোনা বলল, হাজি!

জ্যাঠামশাই বললেন. ওটা মুড়াপাড়ার হাতি।

কিন্তু এ-কি! হাতিটা যে ওদের দিকেই ধেয়ে আসছে। বড় বড় পা ফেলে উঠে আসছে। এত বড় একটা জীব দেখে

আর এমনভাবে এগিয়ে আসছে দেখে সোনা ভয়ে গ্রিটায়ে গেল। একেবারে ওদর সামনে এসে পড়ছে। জাঠামশাই নড়ছেন না। কুকুরটা ছুটাছুটি করছে। সোনা ভাবছিল शालाट्य कि ना. इ.जेट्य कि मा। अथह ध्वेड ব্দু বিশ্বত মাঠ পিছনে—সামনে ঝোপ— সে কোন দিকে ছনুটে যাবে স্পির করতে পারল না। ভয়ে সে শ্বধ্ জ্যাঠামশাইকে क्रीफ्रा ध्रवण। वनम, क्राठामणज आधि বাড়ি বাম্ন।

জ্যাঠামশাই কোন উত্তর করলেন মা। তিনি এখন শৃধ্ অপলক হাতিটাকে দেখছেন। যত নিকটবতী হচ্ছে তত তিনি কেমন মনে মনে অস্থির হয়ে উঠাইন।

সোনা, জাঠামশাইকে এবার হাত কামড়ে দিতে চাইল। মান্যটা ওর কথা শ্বতে পাচেছ লা। সে বলল, আমি মার কাছে যাম। বলে কাদতে থাকল।

কিন্তু কি আশ্চর্য হাতিটা ওদের সামনে এসে চার পা মুড়ে বশংবদের মত বসে পড়ল। মাহ ুত, জ্যাঠামশাইকে সেল।ম দিল। তারপর হাতিটাকে বলল, সেলাম দিতে। হাতিটা **শ'্ৰু তুলে সোনাকে** সেলাম দিলা

জসীমের ছেলে ওসমান সামনে বসে। জসীম পিছনে। সে বলল, আসেন কর্তা, হাতির পিঠে চড়েন। আপনেগ বাড়ি দিয়া আসি।

ওরা এতদ্র এসে গেছে যে জসীয প্যশ্তি ব্রুষ্টে পার্কাছল কেলাবেলিতে পাগল মান্য এই নাবালককে নিয়ে ঘরে ফিরতে পারবে না। সে তাদের হাতির পিঠে তুলে নিল। সোনা হাতির পিঠে ২সে মেজ-জ্যাঠামশাইর কথা মনে করতে পারছে। তিনি মুড়াপাড়া থেকে বাড়িতে এলেই এই হাতির বিচিত্ত গলপ করতেন---হাতিতে চড়ে একবার ও'রা শীতলক্ষা নদী পার হয়ে কালীগঞ্জে যেতে এক ভয়ংকর ষড় এবং ঝড়ে একটা গাছ উপড়ে এলে এই হাতি গাছ রুখে মেজ-জ্যাঠামশাইকে মাত্যু থেকে রেহাই দিয়েছিল। সোনার এমন একটা বিরাট জীবের জন্য মায়া হতে থাকল। এখন মনে হচ্ছে তার, হাতির পিঠে চড়ে সামনের আকাশ অতিক্রম করে চলে যেতে পারবে। হাতিটা হটিছে। গলায় বণ্টা বাজছে। পিছনে আদিবনের কুকুর। সে পিছনে ছুটে ছুটে আসছে। কত গ্রাম, কত মাঠ ভেপো, ঝোপ জপাল ভেপো ওরা হাতির পিঠে—যেন কোন এক সওদাগর বাণিজ্ঞা করতে যাচ্ছে—সম্ত সাত শ মাঝির বহর...সোনা বৃদ্ধ জারের মত ঘরে ফিরছে।

জসীম সোনাকে উদ্দেশ্য করে বলল, কথন আপনেরা বাইরে হৈছিলেন।

(ञाना वनन अहे एकाइरवना। —মুখত আপনের শ্কাইয়া গ্যাছে। --थ्या नागरः, किन्, थारे नारे।

খাইবেন? বলে জসীম পাকা পাকা প্রায় দূধের মতো সাদা গোলাপজাম কেচড় रथरक जूरन मिन।

মিষ্ট এবং স্কাদ্ গোলাপজা**ম**।

নোনা প্রায় থাচ্ছিল কি গি**লে ফেলছিল** বোঝা দায়।

ভখন হাতিটাকে দেখে কিছ, গাঁরের নেড়ীকুকুর চিংকার করছিল। কিছ, আবাদী মান্ত্ৰ বাব্দের হাতি দেখছিল-মুড়াপাড়ার হাতি, হাতিটাকে নিংর জসীমউন্দিন প্রতি বছর এ-অগলে ঠিক হেমন্তের শেষে, শীতের প্রথম দিকে চলে আসে। বাড়িবাড়ি হাতি নিয়ে জসীম খেলা

क्रमीय सामारक छल्ममा क्रद्र वनन, কর্তা, পাগল জ্যাঠামশক্তর লগে যে বাইর इटेट्लन-र्याप जाभरतरंत कानादेश ठाटेन অনা কোনখানে চইলা বাইত?

-- যায় না। জ্যাঠামশর আমারে খ্ব ভালবাসে।

জস্মি বলল, পাগল মাইনসের লগে বাইর হইতে জর লাগে না?

সোনা বলল, না। লাগে না। জ্যাঠামশয় আমারে লইয়া কতথানে চইলা ষায়। একবার • হাসান পীরের দরগায় আমারে রাইখা আইছিল, না জাঠামশয়! সোনা পাগল জ্যাঠামশাইকে সাক্ষী মানতে চাইল।

মণীন্দ্রনাথ ঘাড় ফিরিয়ে সোনাকে দেখলেন। যেন এখন কত অপরিচিত এই বালক। বালকের সংক্র কথা বলা অসম্মান-জনক। তিনি তার চেয়ে বরং সামনের আকাশ দেখবেন। আকাশ অতিক্রম করে আরও দুত চলে যাওয়া ধায় কি না অথবা যদি তিনি আকাশ অতিক্রম করে চলে যেতে পারেন-সামনে এক বিরাট দ্র্গ পাবেন, দুর্গের ভিতর পালন-ভিান এইসব ভেবে হামাগর্ড় দিতে চাইলেন হাতির পিঠে এবং ক্ষ্মু সেই বালক ওসমানকে তুলে অঞ্কুশ কেড়ে হাতিকে নিজের থুশিমত চালিয়ে নিতে চাইলেন— হাতি আমাকে নিয়ে তুমি দ্রত হেংট পলিনের দেশে চল-সেই কোমল ংক্ আমি আর কোথাও দেখছি না।

জসীম চিংকার করে উঠল, কর্তা আপনে কি করতাছেন, কর্তা! ওসমান পাগল মান্যটার দিকে তাকিয়ে ভয় পেয়ে গেল। সে তার অঙ্কুশ কেড়ে নিতে আসছে। সোনা পিছন থেকে একটা পা চেপে ধরল। জাঠামশয় আপনে পইড়া যাইকেন। মণীব্দুনাথ আরু নড়তে পার্লেন না। তিনি কর্ণ এক মূখ নিয়ে সোনার দিকে তাকালেন। তিনি আর নড়তে পারছেন না : কারণ সোনার চোথে এমন এক যাদ, আছে যা তিনি কিছ,তেই ঠেলে ফেলতে भारतन ना। माठे भात रहन न्यूद তিনি দেখলেন, প্রের বাড়ির নরেন দাস মাথায় কাপড়ের গাঁট নিয়ে বাবরে হাটে शास्त्रः। शास्त्रित शमाय घण्टा वाकाष्ट्रम वरम গ্রামের সব বালক বালিকা ছুটে এসেছে। আর নরেন দাসের বিধবা বোন মাশতি সেই শ্যাওড়া গাছটার পাশে দেখল বড় বড় সামিয়ানা টাপ্যানো হরেছে। শতরঞি পেতে দেওরা হরেছে। মিঞারা, মৌলভিরা এসে হুড় হচ্ছে। আর এই গ্রামের সর্বত্ত, অন্য গ্রামের গাছে গাছে, মতে মতে শৈতাহার ব্যক্তিরে চলে গেছে সামস্থিদনের
লাকেরা অথবা তার ভান হাত যাকে
লা বার—সেই ফেল্ দেখা তাতে কিছ্
শব্দ লেখা ছিল। লেখা ছিল—পাকিস্তান
ক্রিপাবাদ। লেখা ছিল, লড়কে লোগে
শাকিস্তান আরে লেখা ছিল নারায়ে
তক্ষির। মালতি নারারে তক্ষর এই
শব্দের অর্থ জামত না। এক্সিন সে
ভেবেছিল, চুপি চুপি সামস্থিদনক অর্থটা
জিজ্ঞাসা করবে।

মালতি এবার নিজের দিকে তাকাল।
রেইরের লাবণা জমে বাড়ছে। শংমীর
মৃত্যুর পর ফের ঢাকার গত নাসে দাংগা
হরে লাভে। ওর শবশরে এসে বলে গেছে,
ঢকার শীগারীরা, কুট্টিরা বড় বদলা নিজে।
কিদিন থেকে মালতি থ্নী। সাম্রে তুই
চাতে গাছে ইস্তাহার ক্লোইরা কি করবি।
চাম্কে উদ্দেশ্য করে মনে মনে গাল দিল
চালতি।

সামিয়ানার নিচে ম্সলমান গানের সোকেরা জড় হচ্ছে। সিলিঃ জনা বড় বড় উন্ম ধরানো হচ্ছে। বড় বড় তামার ডেকচিতে দুধে জলে চালের গাড়। সোধ হচ্ছে, গোপাট ধরে হাতির পিঠে রাজার মতো তথ্য পাগল মান্য ঘরে ফিরে আসছেন।

মালতি দেখল হাতির পিঠে পাগল
সকুর বাড়িতে উঠে আসংছে। ঘণ্টার
আওয়াজে যে বেখানে ছিল ছুটে এপেছে।
এই ঘণ্টার শব্দ কোন শত্ত বাতার মতে।
এই ঘণ্টার শব্দ কোন শত্ত বাতার মতে।
এই আপলের সকল মান্যের কানে বাজতে।
ওরা মনে করতে পারল, সেই প্রমণ্ড হাতি
লক্ষীর সতো বাপ নিয়ে শ্ভ বাতা। নিয়ে
তাদের দেশে চলে এসেছে। এই হাতির
জনা যারা গেরন্থ যৌ, যারা কোনকালে
একা একা ঘরের বার হর্মনি তারা পর্যাভ্র সব ছোট বালকের পিছে পিছ,
সকুর বাড়ির উদ্দেশ্যে হাটতে থাকল।

অথবা হাতিটা যখন পর্রাদন উঠানের উপর এসে মা মা বলে ডাকবে তখন সং গেরস্থ বৌদের প্রাণে 'এই হাতি আপনার ধন তথেবা 'এই হাতি মালকামু'ৰ মডে এই হাতি বাড়ির উঠানে উঠে এলে জমিতে সোনা ফলবে এবং ভিন্ন রক্ষের উচ্ছনাস ওদের। ওরা হাতির জনা, মাথায় কপালে लाल प्रचाद कमा जिम्हें ग्लास दिस গেল। হাতিটার কপালে সিন্দার দিতে হবে, ধান দুর্বা সংগ্রহ করে রাথল সকলে: আর মালতি দেখল হাতির পিঠে পাগল মানুষ হাততালি দিছে। হাতির ⁽প্র **সোনা, क्रीटमा** स्मान वाद्दक भार रशहर किह्न वनाक स्थान, जामाहत विकास क्रिक নেন সোনাব্যব,। ফতিয়া হাতিটাত পাংশ পাশে হাতির পিঠে ওঠার জন জ^{ু তে}ল আর তথন ফতিমার বাজা সালস দেন শামিরানার নিচে বড় বড় অক্ষার ইম্বতার निर्शिष्टन डेम्स्नाइ निश्नम्। तप तप् इत्यक्ष লিখভিল-পাকিল্ডাম জিল্মাবাদ।

মান্তি এই সব দেখাত অথার আফল গাণনার মানে, বাসে কোন তালোল কোন ফোনা। দে চিংকার করে বলাতে চাইল,

সামতের তুই শ্যাশটার কপালে দরেশ ভাইক। আনিস না।

হাতিটা প্রুর পার **ধরে উঠে যাবার** সময় আমের ভাল, অ**জ'নের ভাল এবং** জামগাছের ভাল অর্থাৎ নিচে বা পেল সই মট মট করে ভালপালা ভেপে পর্ভ বিরে মূখে পরের দিতে থাক**ল। আর সেই স্থল**-পদ্ম গাছটা, যে **গাছের নিচে বলে পাগল** মান্ত্ৰটা স্বচ্ছ আকাশ দেখতে ভাগো-্যসতেন—সেই গাছটা প্ৰ**ণ্ড মট মট কৰে** ভেঙে হাতিটা মূথে ফেলে কট করে শব্দ, প্রায় কাটা নারকেল থে**লে মান্ত্রের মতে** যেমন শব্দ হয়, হাতির **মূদে ব্যল্পক্ষ** গাছের ভালপালা কা**ণ্ড তেমন শব্দ তুলছে।** জসীম বার বার **অব্দুশ চালিয়েও** হাতিটাকে দমিয়ে দিতে পার**ল না। হাতি**টা शाष्ट्रिक रहरहे श्रद्राहे रफलन। **जारन श्रद्राव** পাগল জাঠামশাই হাত কচলাতে থাকলেন। তার এই স্থান্সপশ্ম গাছ, তার সংখ্য এবং নীরব আত্মীয়ের মত **এই স্থলপদ্ম গাছের** মাকুমতে তিনি ব**ললেন, গাাং চোতে শালা।**

মাঠের ভিত**র শামিয়ানা টানানো।** ্রোলা মৌলভিরা আসতে **শ্বর, করেছে।** ধানকাটা হয়ে গেছে বলে নেড়া নেড়া **দব** মাঠ। শসা বলতে কিছ**ু কলাই গাছ, মশ,রি** গাহ। ফেল, শেখ সব জ্বাড়িদারদের নিরে বড়বড়গত করছে। **হাজি সাহেবের** চাকর দ**ুধ ফোটাচেছ। বড় বড় ভাষার** ডেকচিতে দুধ **এবং জল, জলে চালের** গ'্ডো, মিন্টি, তেজপাতা, **আখরটে, এলাচ,** দার্ভিনি, জাফরান, লবংগ। প্রেনো তত্ত-পোষের উপর ছিন্ন চাদর পাতা। আর হাজি সাহেবের তিন ছেলে উজান গিয়েছিল ধান কাটতে, তথন একটা খ্যাস এনেছিল উক্তান থেকে। সেই খ্যাস পেতে প্রধান ্মালভি সাবের **জন্য একটা আসন করা** হয়েছে। সৰ ম**্সেশমান চাৰাভূষা লোক হুমে** শামিয়ানার নিচে জ**ড় হচ্ছিল।**

শচীন্দ্ৰনাথ জানত, এমন একটা ঘটনা গটবে। সামস্থিদ ভোটে এবারেও হেরে গ্রেছ। লীগের নাম **করে এবারেও সে** ্মলনান চাষাভূষো **লোকের সব ভোট** নৈতে পারেনি, শচীন্দ্রনাথ কংগ্রেসের পক থেকে দাঁড়িয়ে এবারেও ইউনিয়নের প্রেসিডেণ্ট হয়ে গে**ল। সূতরাং সে এমন** একটা **ঘটনা ঘটবে জানত। সামসঃশিন** ভাকা গোছিল। সাহাব**্দিন সাবের আসার** কথা। এত ব**ড় একটা মান্বে আসবে** হিকা এদেশে, একবার ওরও ইচ্ছা সামিয়ানার নিচে **গিয়ে দাঁড়াতে।** किन्छ গোটা ব্যাপারটাই ধ্**মর্ণিয় করে রেথেছে।** ্বাধ হয় নিম**ন্ত্রণ করলেও সে বেতে পারত**

সে হাতিকৈ প্রেকুর পার ধরে উঠে লাসার সময় এ-সব ভাষছিল। অসীম হাতিটাকে এখন উঠোনে ভূলে আনছে। হাতিটা কাছে এলে সে বলল, অসীম ভাল যাহ ?

্লাছি কতা : ক্ষমীন হাতিটাকে সেলাম দিতে বলল।

_মাইজা দা ভাল আছে**ন** ?

ক্সীয় একট্ নুয়ে কাল, মুকুরে ভীল আলম।

—আনেক দিন পর ইদিকে আইলা।
—আইলাম। আপনেল দ্যাখতে ইসহা
হইল, চইলা আইলাম।

—वाद्ता द्वि अथन वाणि नाहे? । —ना। वाद्वा गका गारह।

সোনাকে এবার ছোটকাকা বললেন, হারে সোনা তর ক্রা পার না? অরে নামাইলা দে কসীয়। অর মার ত গালে হাত দিয়া ভাবতেছে, পোলাটা গ্যাল কৈ?

হাতিটা পা মুড়ে বলে পড়ক। সোমা নেমে দেল। গ্রামে এখন এই হাতির জন্ম উৎসবের মতো আনন্দ। জসীমের হেলে ওসমান দেনে গেল। সকলে ভিড় করে দাড়িয়ে আছে। জসীম পাগল মানেবকৈ উপ্লেখ্যা করে বলল, কর্তা নামেন।

পাগল মান্ব তিনি, তিনি এই কথা দুধ্ হাসলেন। তিনি নেমে যাওয়ার এতট্কু চেন্টা করলেন না। এই হাতি তার প্রিল প্রকাশম গাহ খেয়ে ফেলেছে। বেন প্রকাশম গাহটা কত দিনের ক্ষতনালের প্রকাশম কালেই তিনি কাহাকের সেই অলোকিক শব্দ শুনতে পেতেন। কাণ্ডান মান্ত্রে উঠে নিশান ওড়াছে। কাহাকটা পালনকে নিমে কলে তেসে গেল। আর হাতিটা সেই ক্যাতিরত্ব সব চেটে প্রেট খোর এখন চোখ ব্রেক আছে।

শচনিদ্রনাথও অন্রোধ করল ছাতির
পিঠ থেকে নামতে: কিন্তু পাগল
মান্মে তিনি—হাতির পিঠে সমাাসীর
মত পাশাসন করে বসে আক্লেন।
এতট্কু নড়লেন না। লোর করতে
গেলে তিনি সকলের হাত কামড়ে
দেবেন, অথবা হত্যা করবেন সকলকে এমড এক ভণিগ নিয়ে ম্থলপাম গাছের দেশর
চিন্টুকু দেখতে থাকলেন।

লসীম দেশল হাতির পিঠে বছ
কর্তা বসে কেবল বিড় বিড় করে
বকে যাচ্চেন। তিনি কারও অনুরোধ
রাশ্বনে না। শচীন্দ্রনাথ বার বার
বলহে, দু চার জন মাতব্যর মান-ব
হাতিটা ঠাকুর বাড়ি উঠে আসতে দেখে জড়
হরোছল—ত্রোও বলহে, বড় কর্তা নামেন।
হাতিটা অনেকটা পথ হাইটা আইছে, আরে
বিভাম ন্যান। বড় কর্তা ন্বেশপ করলেন
না, তিনি বরং হাতিটার কানের নিচে সা
রেশে যেন বলতে চাইলেন, হেট্ হেট্।

তথন হাতিটা ইপ্সিত পেরে উঠে লগৈল। পাগল মান্য বড় কর্তা হাতিটা নিয়ে বের হয়ে পড়ল। স্ত্রসীম ভাকল, কর্তা এইটা আপনে কি করেন! কর্তা আঃ কর্তা।

বাড়ির প্রায় সকলেই বিপদ ব্রুক্তে
পেরে পিছনে হুটেল। ততক্ষপে হাতিটা
প্রুর পার ধরে নিচে নেমে যাছে। প্রের
রাডির মার্লত দেখল, পাগল ঠাকুর ম্ডাপাড়ার হাতিটা নিয়ে য়াঠে নেমে বাছে।
মাঠে নরেন দাকের জমি পার হলেই সেই
নামেডা গাছ গাছে ইসভাহার ঝ্লাভ গাছে
গাছে সমস্বিদন ইস্তাহার ঝ্লাভ

এক বাকা বল্ছে, পাকিস্তান জিলাবাদ।
লড়কে লেপে পাকিস্তান। অধবা নারারে
তক্ষির এবং এমন সব অনেক কথা লেখা
আছে—বা মালতির দুটোনের বিধ।
মালতির চিংকার করে বলার ইচ্ছা, সামুরে
তর ওলাওঠা হর না কান!

তখন হাতিটা নরেন দাসের জমি পার হয়ে মাঠের উপর দিয়ে ছটেছে। পিছনে ছোট ঠাকুর, জসীম, জসীমের পুঠ ওসমান **হ**টেছে। গ্রামের কিছ**ু ছেলে ব্রে**ড়া ছুটছে। ওরা সকলে হৈ হৈ করিছল--কারণ একজন পাগল মান্য এক অবলা হাতি নিয়ে মাঠে ছোড়দৌড়ের বাজী জেতার মতো ছ্টছে। কিছুদ্রে গেলে সামস্থিনর শামিয়ানা টানানো মণ্ডপ। মন্ডপের বাইরে খোলা আকাশের নিচে বড় বড় ডেকচি—ফেল, শিলি চড়িরেছে। মোলভি সাব আজান দিয়ে এইমাত মঞ্চে উঠে নামাজ পড়ছেন। যারা দ্বে গাঁ থেকে সভায় 'ইস্লাম বিপল' ভেবে সিলির স্বাদ নিতে এসেছে অথবা ইসলাম এক হও এবং এই বে কাফের জাতীয় মান্ত্র, বাদের পারের তলায় থেকে সংসারের হাল ধরে আছি—কি না দুঃখ বল, এই জাতি তোমাদের কি দিয়েছে, জনি তাদের. ভামদারী ভাদের-ভাকিল বল ভারার বল সব তারা—কি আছে তোমাদের, **নামাজ** পরার পর এই ধরনের কিছা কিছা উল্লি-या तरह উर्ज्ञिक्सात कन्य त्तर-मान्द्रशाला কান খাড়া করে মৌলভিসাবের, বড় মিঞার এবং পরাপরদীর বড় বিশ্বাসের ধ্যীক বভুতা শোনার সময় পেছনে ফেল, শেখের চিংকারে একে আনোর উপর ছিটকে প**ড়ল**। সেই সাকরবাড়ীর পাগল সাকুর এক মন্ত হাতি নিয়ে এদিকে ছাটে আসছে। সকলে है है कंदर थाकन। जिनि भागन मान्य, হাতি অবলা জীব-সারাদিনের পরিভাষের পর হাতিটা ব্যাঝি ক্ষেপে গেছে। হাতিটা পাগলা হাতির মত শাড়ে উচু করে চিংকার করতে করতে সেই শামিয়ানার ভিতর চাকে সৰ লণ্ডভণ্ড করে দিল।

ফেল, শেখ তামার বড় ডেকচীগালির পাশে লাকিয়েছিল। ভিতরে দাধে জলে **চালের গ**ুড়োতে টগবগ ফুটছে। সেই মন্ত হাতি ভিতরে চুকে গেলে সকলে নানাভাবে মাঠের উপর দিয়ে ছাটছে। সকলে দৌড়ে দৌড়ে নিজের প্রাণ রক্ষা করছে। সামস্থান্দিন আতংক ভাঙা ভরুপোবের निट न्यक्तित अफ्न। एकन्य भागाव्यिन. **পালাতে গি**য়ে হাতিটার একেবারে সামনে **পড়ে দোল।** হাতিটা সহসা ওকে শহিড়ে **জড়িরে ধরল** এবং ধরার জন্য একটা হাত **ट्रिंट (भन**। अकटन हिश्काद कराइ म्युत. কৈউ কাছে আসতে সাহস পাকে মা, হার হার ককছে, একটা মান্ত চাতির পারের নিচে ব্যক্তি চলে গেল। মণীনদনাথ ছাত্তির পিঠে বসে গালে হাত দিয়ে লাভি কছটাক কি করতে পালে যেন এমন কিছু *দ*দ্ধ-ছিলেন। যেন তিনি জোপে রণন। তাদিস देश करात प्रथम काराया प्रथम कार्य होने বেন এমান হওয়া উচিত ফেল্র। পাগল

ঠাকুর এবারে কের হাতির কানের নিচে
পা নিরে খেঁচা বারতেই একান্ড বদংবদের
মত কেবা্কে মাতির উপর প্রভূলের মতো
দাঁড় করিরে নিকা। সলো সলো তিনি
হাতিটকে এই ম্থান কাল পার পরিত্যাগ
করে চলে বেতে বললেন। আরু হাতিটাও
ম্থান কাল পার পরিত্যাগ করে বাঠের
উপর দিরে হুটতে থাকল।

তখন সূৰ্ব অভত বাছে। তখন সোনালি বালির নপীর চড়ে স্টেশনে তরমুজের কভা নিভিন দি<mark>রে সাফ করে</mark> দিভিজ্য। হেমণ্ডকাল শেব হয়ে বাচ্ছে। সূৰ্য পশ্চিমে নামতে থাকলেই ঘাসে ঘাসে শিশির পড়তে থাকে। জসীম কর্রাছল, আর হাতিটার পিছনে ছটেছিল। বাব্দের হাতি—সে এই অঞ্জলে হাতি নিয়ে ঘুরতে এসে কি এক বিপদে পড়ে গেল—সেই বিস্তীর্ণ মাঠের ভিতর থেকে পাগল মানুষ বড় কতাকৈ হাতির পিঠে তুলে না নিলেই এখন মনে হল্ছে ভালো হত। সেই যে তিনি **হাতির পিঠে** চডে বসংলম আরু নামতে চাই**লেন মা। এখ**ন কি হবে! হাতিটা **রুমণঃ মাঠ ভেঙে গ্রা**মে. গ্ৰাম ভেঙে মাঠে পড়ছে। উপৱে মণীন্দ্ৰনাৰ বলে বলে হাতে তালি বাজাতের। গ্রামের ছোট বড় সকলে পিছনে ছাটে ছাটে বখন হাতিটার আরু নাগাল পেল না, বখন হাতিটা নদীর চড় পার হরে অংশকারের ভিতর অদৃশ্য হয়ে কেতে থাকল—তখন মণীন্দ্রনাথ চুপচাপ বলে খেকে ব্রালেন---আরু ভর নেই। হাতিটাকে কৌশলে ভিনি যেন বলে দিলেন, অবলা জীব হাতি, তুমি এবার ধীরে ধীরে হাটো। ভোমাকে আমাকে এখন আর কেউ **খ'ুভে** পাবে মা।

রাত হরে গেছে। এটা কোন মাঠ হবে, বোধহর দানোদরদীর মান হবে। আর একট্ গোলেই মেখনা। নদীর পারে বড় মঠ। অংশকারে এখন মঠ দেখা বাচ্ছে না। শ্ন্য বিশ্বলের মাধার একটা আলো জনলতে দেখা বাচ্ছে।

শচীব্দুনাথ তখন বাড়ীর ভিতরে. আরো সব মানুরজন একেছে। জসীম উঠানে দাঁভিয়ে কদিছে। এত বড় হাতি निरा भागम ठाकूत काथाय निदारन्तम श्रह পেল। সে মাহাত হাতির—বাবাদের হাতি, লক্ষ্যীর মতো পরমত হাতি—এখন কি হবে, সে ভেবে কুলকিনারা পাচ্ছিল না। উঠোনের উপর গ্রামের লোকেরা কি করা বার পরামর্শ করছে। প্রামে গ্রামে এখন খবরটা পেণছে গেছে। ঈশম লণ্ঠন হাতে আবার বের হরে পড়েছে এবং প্রায় একদল মান্ৰ ল্উন হাতে সোনালি বালির নদীর চরে নেমে বাচ্ছে। তারা জ্বোরে জ্বোর ডাকছিল। জলীয়ও বেশীকণ অপেকা করেনি। সে ওসমানকে রেখে একা একা **त्रिट मन**गेत मर्का समात समा काँस গামছা ফেলে দে'ড়াতে থাকল।

সামস্থিত লাঠন হাতে মাঠে দীজিয়ে আছে। ফেল্ড্ খাব বেশ্চে গেছে এ-বারা। ওকে ধরাধরি করে বাড়ীতে নিরে বাওরা

হরেছে। একটা ভছনছ ভাব এবং পাগল ठाकृत रेक्श करत असन अक्टी चडेना ঘটিরেছেন বেন, বেন ভিনি জানতেন সামস্পিনের এই বে ইস্ভাহার ব্যালয়ে স্বার্থপর মান্তের মতো একই সংসার থেকে विक्यि ह्याद्र वामभा—धेर्रे वामना छात्र, नद्र, পাগল মান্ব তিনি, এইট্কু ভেবে গোটা উৎসবের মতো এক ছবিকে তছনছ করে চলে গেছেন। সামস্থিদনের আপ্রাণ চেন্টার পর্ন এই যাঠে এত বড় একটা জলসা হড়ে পারছে। এত বড় জলসাতে শহর থেকে মোলা মৌলভিরা এসেছিল। ওরা এখন হাজিসাহেকের বাড়ীতে উঠে. ভোবা ভোবা, কি এক বেমাফিক কাজ হরে গেল--সামস্থিদিনের ইচ্ছা হল এখন সে নিজের হাত নিজে কামড়ার। আর মনে হল গোটা ব্যাপারটাই এক বড়যক। যেন ছোট ঠাকুর আবার ইউনিয়নের প্রেসিডেণ্ট হতে চার। আবার কংগ্রেসের পক্ষ থেকে ছোট ঠাকুর দাঁড়াবে এবং কবিরসাবকে ধরে এনে কংগ্রেসের পক্ষে বন্ধ এক বন্ধতা। সে ভাবছিল এমন একটা হাতি পাওয়া বাবে না সেদিন। হাতির পিঠে ফে**ল**ে বলে পাকরে, অথবা ফেল্ফের দিরে মণ্ডলে আগনে ধরিরে দিলে বেন সব আলোদের শোধ নেওয়া বাবে। লণ্ঠন হাতে সামস্থিন জন্বরকে দিয়ে স্ব তৈজস্পর, ভাঙা ট্রা টেবিল, ছে'ডা শামিয়ানা এবং বড সভরগ একসভো করে মাঠ খেকে বাড়ীতে ভূলে আমার সময় এসন ভাবল।

তথ্য বাড়ীর বৃশ্ধ মানুষ্টি প্রশ্ম করেছিলেন—তিনি অভিশার বৃশ্ধ বলেই বরের ভিতর করে প্রশীপের মানু আলোডে সামানা কাসছিলেন, এখন আর তিনি তেমন বেশী ধর বার হন না। অধিকাংশ সময় ধরের ভিতর খাটে একটা বড় তাকিয়ার উপর ঠেস দিরে শারে ধাশেন। অভিশার গোরবর্গ চেহারার এই মানুষ্টালৈন গোলবোগ শানে বজ্বেশিকে প্রশম কর্লেন কি হইছে বড়বো? উঠানে এত গণ্ডগোল ক্যান?

वर्ण्यो अमीतभन जात्मा अकरे, छनत्क पिन । **जिन कार्र्यत चत्र । जामाना पिर्**त एनव হেমশেতর ঠাণ্ডা ভেলে আসছে। লণ্ঠনের আলো সংসারের এই বুড়ো মানুষ্টি একেবারেই সহ্য করতে পারে না। সভেরাং যরে মৃদ্র প্রদীপের আলো থাকে। বড়বে। এই সংসারে বৃষ্ণ ব্যারের দেখাশানা করার সময় প্রায়ই জানালার দ্রের 🕆 সব মাঠ দেখতে পার এবং সেই মাঠে সংসারের এক পাগৰ মান্ত্ৰ ক্সান্ত্ৰে হে'টে হে'টে কোখায় যেন কেবল চলে যেতে চাইছে। উঠোনের সেই গণ্ডগোল, মান্যেটার এভাবে হাতিতে চড়ে নির্দেশ হরে বাওরা এ-সব বড়বৌকে বড় বিষয় করছে। মান্ত্রী আবার ক্ষেপে গেল। ভোৱেও বড়বৌ এই মা**ন্**যক থেতে দিরেছে—ভালোমান্বের মত থেরে প্রতিদনের মতো নিরুদ্রেশে চলে গেছিল এবং সংসারের ছোট এক বালক সোমা সংগ দিরেছে মাঠে মাঠে এবং গ্রা<mark>তন গ্রাহে</mark>ন তারপর কোন এক দরে গ্রাম থেকে মাঠ ভেঙে সোনার হাত ধরে এই পাগল মান্য গ্রামের উন্দেশ্যে ফিরছিল তখন জসীম আসহে হাতিতে চড়ে। কসীমের ছেলে ওসমান হাতির পিছনে—ওরা দেখল সেই वर्ष गाँठ अकृत बाड़ीत शामन ठाकुत छाउँ এক বালকের হাত ধরে কোথায় যেন চলে যাচ্ছে। এই মান্যটার জনা ভলাটের मकरनद कण-कांद्रण अमन मान्य रश ना, কথিত আছে তিনি দরগায় পীরের মতো এক মহৎ প্রুষ। জসীম পাগল ঠাকুরকে হাতির পিঠে তুলে বলেছিল, চলেন বাড়ি দিয়া আসি কর্তা। জ্বসীম, সোনা এবং পাগল মান্যকে বাড়ী পেণছে দিতে এই কাল্ড। বড়বৌ খ্ব দুঃখের সংগ্য বৃংখের পায়ের কাছে বদে সব বলল। বৃষ্ধ পটের হাতিতে চড়ে নির্দেশ হয়ে যাওয়ার घर्षेना ग्रांत भाग भित्राजन ग्रांद्र। याण्यत म्द्रांथ এक अभामाना कणे स्ट्रांटे उठेटहा বড়বৌর কাছে ধরা পড়ে ষাবেন ভাবতেই माथ चातिए जानाना नित्र मास अध्यकात দেখতে থাকলেন। এই শেষ সময়ে এক তার পাগল ছেলে মাঠময় ঘ্রে বেড়াক্টে এবং সব দঃখের মূলে তিনি—তার জিদ, এ-সব ভেবে তার দঃখের যেন অবত ছিল না। তিনি বললেন বৌমা জানালাটা বংধ কইরা দ্যাও। আমার বড় শীত করতাছে।

- এको। कम्त्रल शास्त्र मान् रावा।

না জানালাটা বংধ কইরা দ্যাও।
বড়বৌ জানালা বংধ করার সময়ই
দেখল কামরাঙা গালের ওপারে যে বড়
মান, ঝোপ-জুগালের ডিতর থেকে দেখা
যাক্ষে সেখানে জানক লান্দা, বড়বৌ
ব্রল, এইসব মান্য যাক্ষে জাধকারের
ভিতর পাগল মান্য এবং হাতিটাকে

আর জসীম অধ্যকারে ডাক-ছিল হাতিটার নাম ধরে লক্ষ্মী আকল্পনী। সৈ সকলের আগে ছুটে ছুটে হাছিল। ইন ভার ঘরের বিবির মতো এক রমণী অধ্যকারে নির্দেশণ হয়েছে অথবা সেরা মান্য পাগল গাঁর নশাসই চেহারা, গোরবণ ঠিক পারের মতো এক মান্যের সপো ভার পোয়া হাছি, ভার ভালবাসার লক্ষ্মী চলে গেছে। সে প্রাণপণ ভাকছিল, লক্ষ্মী অলক্ষ্মী। আমি ভর লাইগা চিড়াম্ডি তুইলা রাগ্ছি, লক্ষ্মী, অলক্ষ্মী, তুই একবার অধ্যকারে ডাক দিহি, মাঠের কোন আন্ধাইরে তুই বইসা আছুস একবার ভাইকা কা দিহি। আমি পাগল ঠাকুরের মত ভরে লইয়া থরে ডিরম্।

মত তরে লংখা বাস বিস্কৃত্য বিজ্ঞা এত কুশম বলছিল, আরে মিগ্রো এত উত্তালা হইলে চলব কানে। বড়কতা বড় মানুষ। হাতি অবলা জীল, ভাশবাসার জীব। তিনি হাতির মত পোষা জীব লইলা পলিনবৈ থাজতে বাইর হইছেন। জসীম বলল, পলিন, কোন পলিনের

কথা কন!
—আরে আছে মিঞা!
ভঙ্গীম কলা হটিতে বড় কন্ট। কিবস।
ক্রীয়া বলা হটিতে গারি।

A. 1862

क्रेनम यनन, यस मान्यत्यत्र केवा स्वयत्वद ब्रास्थ छान ग्राहर ना। अथवा स्वस ইল্মের বলার ইচ্ছা-মিঞা তল্পটের লে।ক क्ना काल व-कथा। क्रीम वका कि कद। তুমি জান না কতা ফাকু পাইলে নৌকাৰ, ना इत इप्रिंट इप्रिंट निद्धाल्याल यान। তারপর ঈশম এক বর্ষার কথা বলল। এক वर्षाकाटन भागन ठेक्स त्मोका मिरा তিনদিন নির্দেশণে ছিল ভার গণপ কর্জ। সোমালি বালির মণীর জলে তখন লোত ছিল। তিনি একা লোতের ম্থে নৌকা ছেড়ে বৰ্সেছিলেন। যেন এই নাও তাকে ফোর্ট উইণিয়াম দুর্গে অথবা গণ্গার জেটির পাশে বড় এক জাছাঞ্চ, জাহাঞে পলিনের স্মৃতি—পাগল মানুৰ বলে তিনি মনে মনে বিলের ভিতর বড় এক কলকাতা শহর বানিয়ে বঙ্গেছলেন এবং সারাদিন সারা মাস ধরে যেন তিনি সেই বিলের জলে भौजगरक भौद्रक्षिष्ट्राम्मः। विरागद करन ०व দ্বন্দ ভালে, দ্বশেন সেই বড় কলকাত। শহর গাড়ী খোড়া হাতির মিছিল, জার रकार्षे छेरेनियाम मन्त्र, मन्दर्शन भारण ट्यमित्रसम् इन-कार्कन श्राकः। गर्छत মাঠে সাহেবরা উদি পরে কৃচকাওরাজ করছে। পাগল ঠাকুর হে হে করে ছাসডে হাসতে শ্ৰে বলছিলেন, গ্যাৎ চোতে শালা। কারণ তাঁয় প্রতিবিদ্ধ জলৈ দৈখা বাচ্ছিল, जात किन्द्र रम्था वाटक ना। भवत्रों निर्मास क्रमन करनत निष्ठ चारामा हरत लाग। छत প্রতিবিদ্ধ এখন শ্রে পরিহাস করছে, হার বেহুলা জলে ভাইন্যা বায়রে, জলে ভাইসা शास्त्र ।

नवहे स्वत करण एक्टन शाक्ति। এठ বড় বিল, এই অঙ্ধকার চারিদিকে, क्लानाक्ति करकरकः छटक छटक टकानाकिया পাগল মান্ৰ মণীন্দ্ৰনাথকে এবং হাতিটাকে चिर्त ধরতে। মণীন্দ্রনাথ হাতির পিঠে চড়ে विट्रां शास शास ब्राटे विकासिका। বিলের জলে শ্ধে অধ্যার, অংশকার। হেমশতকাল বলে ঠান্ডা বাতাল উঠে তালছে। পাকা ধানের গণ্ধ মাঠে মাঠে। এই অংশকারে হাতির পিঠে বলে পাকা ধানের গন্ধ পাচিছলেন। আর আকাশে কড হাজার নক্ষর, পাগল মান্য প্রতিদিনের মতো হাতির পিঠে বসে সেইসব নক্ষয় দেখতে দেখতে, **বেন সেইসব দক্ষতের কো**ন একটি তার প্রিয় প্রিলনের মূখ-তিনি হাতিতে চড়ে অথবা নৌকায় উঠে কিছাতেই আর সেই প্রিয় পলিনের কাছে অংখবা হেমলক গাছের নিচে পেছিতে পার্লেন না। তিনি হাতি**টাকে সম্বোধন করে** বললেন, হ্যা লক্ষ্মী তুমি আমাকে নিয়ে প্রিলনের কাছে যেতে পার না! সেই স্ফের মৃখ--- यदनाद जलाद **উৎসে ভূমি** आমাকে लिएड निष्ठ भाव मा!

সহসা এই পাণাল মান্যের ভিতর প্রের ক্ষ্তি তোলপাড় করলে তিনি আর ক্ষিয়ে থাকতে পারেন না, মনে হয় আর কিছেদ্র গোলেই সে তার প্রির হেম-কর গাছটি খালে পাবে এবং সেই হেমকর গাছের নিচে সোনার হারণটি বাঁধা আছে।

এইভাবে কতদিন কতভাবে একা একা মাঠ বেকে লাঠে গ্রাম খেকে গ্রাম এবং এমন তলাট নেই এ-অগুলো তিনি বেখানে একা-একা চলে বাদন না, তরপর এক সমার কের মনে হয় সেখানে আর তিনি এ-লীবেমে পোছাতে পারবেন না। স্তরাং সেই এক বড়বোর মুখ এবং তার দুংগের হাব পাগাল মানুব মণীলুনাখকে উন্দিশন করে তোলে। তিনি ধীরে ধীরে বাড়ির দিকে হাতিতে খাকেন। তথান মানে হয় হাতিতে আখবা নৌকার কথনও সেই হেমলক গ্রাহের নিচে পোছানো বাবে না। সোনার হরিগেরা বড় বেখা দুতু দেড়ার।

क्रमीय, क्रमय এवर नरतन मारमत मन्छ। সারারাভ লণ্ঠন হাতে খ'লে হাতিটা এবং মান্তটাকে বার করতে পারল না। ওরা স্কলে ভোর রাতের দিকে ফিরে এসে-ছিল। আরও দ্টো দলকে শচীশ্যনাথ পূবে এবং পশ্চিমে পাঠিয়ে দিলেন। খবর এল, যারা উত্তরে দেখেছে, তারা আবার দক্ষিণেও দেখেছে। নানা মান্ত নানা রকমের খবর দিল। কেউ বলল, অধ্বস্থ গাছের নিচে গত রাতে পাগল মান্ত্র এবং হাতিটাকে দেখেছে, কেউ বলল, বারদীর মাকের উত্তরে একদিন দেখা গোছে মান্বটাকে। উত্তর খেকে খবর এল, পাগল মান্ত মণীন্দ্রনাথ ছাতিটাকে দিয়ে সব আংখের খেত খাইরে দিচ্ছে। কেউ কিন্তু হাতিটার নাগাল পাতে না। স্প্তাহের শেষ দিকে আর কোন থবর এল মা। সকলেই তখন বলল, না আমরা পাণল মান্ত্ৰ এবং ছাডিটাকে দেখিন।

বাড়ীতে প্রায় সকলের মুখে একটা मारक्त हिं। कि**ड ला**द क्या वनहरू मा। লালট্, পলট্, সোনা সারাসিন বাছীতেই থাকছে। প্রুর পাছের অজ ন গাছটার নিচে দাঁড়িরে ওরা প্রতিদিনই হাতিতে চড়ে মান্বটা ফিরছে কিনা দেশত। বিকালের দিকে জ্যাঠামশাই মাঠের ওপর থেকে উঠে আলবে প্রতীক্ষার অজন্ন গাছটার নিচে বলে থাকত। সংশ্য থাকত **সেই আশ্বনের কুকুর। ওরা প্রি**র মান্বটির জন্য গাছের নিচে বসে সারা বিকেল, যুডক্ষণ সম্ধ্যানা হত, যুডক্ষণ গোপাট অভিক্রম করে মাঠের বড় অধ্বত্থ গাছটায় অণ্ধকার না নামত, ততক্ষণ অপেক্ষা করত। আর এ-ভাবেই একদিন कुकृत्रहो एएडे एघडे करत डेर्जन - कुकृत्रहो কেবল চিংকার করছে—সূর্য তখনও অস্ত বায়নি। তথন ওরা দেখল কুকুরটা দৌড়ে দৌড়ে মাঠে নেমে হাচ্ছে। আবার সোনার कारक छेटे जामरक। उन्ना प्रथम भूरद्र बार्ट व्यक्तान्त्र मिरह कारना अक्टो विन्म्द्र মতোকি কাপছে। ক্ৰমে বিন্দুটা বড় হছে। হতে হতে ওরা দেখল এক বড় ছাতি বাছে। সোনা চিংকার করে বাড়ির দিকে দৌড়ে গেল, হাতিতে চইড়া জ্যাঠা-য়গর আইতাছে।

শ্বামের সকলে দেখল পাগল মান্য, ক্লান্ত। বিষয়। চোখে মুখে অনাহারের ছাপ। তিনি হাতির পিঠে প্রায় মিলে প্রেছেন। হি:তিটা হটি, মুড়ে বসে পড়ল উট্টোনে। কৈন এই হাতি আর কোথাও বাবে না। এখানেই বসে থাকবে। জসীম বলল, কর্তা নামেন। লক্ষ্মীরে আর কত কট দিবেন।

গ্রামের সকলে অন্রোধ করল নামতে। কিন্তু তিনি নামলেন না।

শচীদ্রনাথ বললেন, তোমরা সকলে বাড়ী যাও বাছারা। আমি দেখি। বলে, সে হাতিটার কাছে গিরে ধীরে ধীরে বলল, বড়দা, বড়বৌদি করদিন ধইরা किट्टे बाह्र माहे। स्वीतिक कछ जास कर्णे निरंदन।

কিন্তু কোন লক্ষণ নেই নামার। শচীক্রনাথ বলন, সোনা তর বড় জ্যাটি-মারে ডাক।

বড়বো ছ্মটা টেনে স্থলপত্ম গাছটার নিচে এসে দক্ষিল। সচীন্দ্রনাথ বলল, আপনে একবার চেন্টা কইনা দ্যাথেন।

বড়বো কিছু বলল না। সেই সজল উন্থিন এক চোধ নিয়ে হাতির সামসে গিয়ে বড়িল। সংশে সংশে মণীকুনার্থ হাতি থেকে নেমে বছবেকৈ অনুনরণ কর্মেন-তিনি এখন এক সরল বালক বেল। তার এখন বড়বোর দুই বড় ফোখ ব্যাভিরেকে কিছুই মনে আসহে না। বর তকে নেখবেন, তার প্রির জানালাটি খোলা। তিমি সেখানে দাঁড়ালেই ভার প্রিয় মাঠ দেখতে পান। এবং তখন মনে হর মাঠে বড় এক হেমলক গাছ আছে, নিচে পলিন দাঁড়িরে আছে। এতাদন অকারণ তিনি নদী বন মাঠের ওপারে পলিনকে খালেনে।



আজ তিনি এক সুদৃশা হাত্যাড় কিনেছেন, এতে তাঁর কী বে আনক হয়েছে—বলার কথা নয় ! আর এ জনে। অভিনক্ষন তাঁর নিজেরই প্রাপা। চাটাড়া বাজ গুপে নিয়মিত টাকা জমানোর অভ্যাসের ফলেই এ জিনিষ সভার্য হয়েছে !

চার্টার্ড বাজ গুণে বিভিন্ন ধরণের সঞ্চয় পরিকল্পনার বাবছা আছে। এর প্রতোকটিতেই মোটা সুদ পাওয়া যার, কলে জাগনার টাকা বেড়েই চলে ক্রমাগত। কাল্লেই, চার্টার্ড বাাছ গ্রুণে টাকা জমানোটা সত্যিই লাভজনক। এতে দরকারের সময়ে টাকার জনো ভাকতে হল্পনা। প্রতো আনন্দ কেন ?



দি ঢাটার্ড ব্যাক্ত গ্রপ

ক্ষি ভাউাও ন্যাক্ষ ১৮৫০ সালে বলগীর সাব কাসার সীমানর সামানের ইবিসার

argeria, ratere, articoles, articole, contra, finit, arenya, vapos, agai finit, antico-ar-antic mint afron man



कानी भाषात मार्क रहोरयन

মাছ কিনতে গিয়েছিলাম দ্ব বন্দরে।
বন্ধ্র বিষ্ণে সম্প্রান্ত জাল মাছ চাই। বাত
জ্যো নালামে দর হে'কে চুবজিবোরাই
পোনা, কাতলা আর ছোট এক ট্রের্কার
বাগদা নিয়ে ফাস্ট ট্রেনে ফিরছি কলকাতার।
জ্ঞানালার ধারে বসে পুযোজ বৈশাথের
তৈরবী বাতাসের তার-সান্ই তারিয়ে
তারিয়ে উপভোগ করছিলাম। একের পর
এক স্টেশন সাইনবোর্ডের মত চোথের
পদায় ধারা থেয়ে সরে সার যাত্তে
আর বড় জোর পঞ্চাশ মিনিট। গাড়ী ইন
করল শ্রীকৃষ্ণপুর স্টেশনে।

ঃ কে ঝ্নু না?

যে নামে গছ তিন বছরে বাড়ীর বাইরে কেউ ডাকে নি, নিজেই ভুলে গিরেছিলাম যে পোষাকী ভাবিক্রী নামের আড়ালে আত সংক্ষিত্রত দু আক্ষরের একটি ডাকনামেই গোটা ছেলেকেলাটা দিবা কাটিয়ে দিয়েছি, সেই নামে এই অজ্ব ইন্টিদানে কেউ আমায় ডাকতে পারে, এ ভাবতেও পারি নি। হালকা ঘুমের চটকা গেল কেটে। বহিরে তাকিয়ে দেখি গোটা কালাটা জুড়ে কালীপাড়ার প্রসিম্ম বেকার কাল্যান ভটিব মত গোল গোল দুটি চোম কিলাসা ভিত্রে প্রেটিল করে আমার দিকেই তাকিয়ে আছেন।

ঃ কি ব্যাপার তুই ইদিকে?

ঃ বংধ্র বিয়ে। মাছ কিনাত গিয়েছিলাম ্বুপার্টো এই ফিরাছ--আলদেমিট্রু চোধের পাতা থেকে মুছে গেল। তা তুমি এথানে ?

েসে কি রে। তুই কিসস্ জানিস না? ঘাড় নাড়লাম—না, কিছু না।

ু আয় নেবে আয়।

ঃ না দাদা, এখানি টেন ছাড়বে। সারা রতে যা ধকল গেছে। এখন এই মাছটাছ পেণিছে দিয়ে বাড়ী ফিরে ঘ্মবো। ভূমি বরং ঠিকানাটা দাও, পরে যদি কোনদিন আসি নিশ্চয়ই দেখা করব তোমাব সংগ্

ধ্র, টেন এখন ছাড়বে নাকি? এক
ফার্লং পথের তার লোপাট। এই তো সবে
খবর গেছে হেড অফিসে। মিনিমাম তিন
চার ঘণ্টার ধাক্রা। তার ওপর আঞ্জ লোট
হলে, আর হবেই, অফিস-বাব্রা নিশ্চরই
বড় রকমের একটা হামলা করবেন স্টেশন
মাস্টারের ওপর। বাস তাহলেই হরে গেল।

সারাদিনে আর গাড়ী চলবে না। আয়ার বড জর্বী কাল ছিল কলকাডার। দেশীলন ওয়াগানটা খারাপ হওরায় ডেবেছিলায় টেনে বাব। এক সম্ভাহ ধরে সাডশো বফ্টা গম গো-ডাউনে পড়ে আছে, ওরাগানের অভাবে চালান আসছে না। এদিকে আয়ার কাজ কার-বার সব বংধ। কড লোকের পেমেন্ট আটকে আছে। তার চেরে ভো ভোর ব্যাপারটা সিরিরাস না।

. এবপর ট্রেনে বঙ্গে থাকাটা নির্থক।
কাল্মা তে বাজে কথা বজেন নি, তার প্রমাণ
পেরে গোলাম প্রার সপো সপো! গোটা
টেনটার যাত্রীরা সব 'জ্যাটফর্মে নেমে
এসেছে। দৃহতে অত্তর মাত্তরালা, তরকরিওরালা, তাড়িওরালাদের জটলা জমতে
শ্র্ করেছে। এই টেনের নাইনটি ফাইড
পার্সেট প্রাস্কোরই ব্যাপারী। সবাই
যাচ্চে কলকান্ডার। সপোছিল বধ্বর ছোট ভাই। ওকে শাছের চুর্বভির ওপর চোধ
রাখতে বলে নেমে এলাম।

গিলেকরা পাডলা আন্দর পাঞাবী
ফ'ডে ভাল থাওরাপরার ফাইন চবির
চেকনাই পরতে পরতে ফুটে উঠেছে। এই
সেই কাল্দা। টাম রাস্তার থারে, সিনেমা
হলের গা-খেবা গলিটার নাম করপোরেশন
যাই দিক না কেন. স্বাই বলত কালীপাড়া।
নেই পাড়ার স্কুল-কলেজর ছেলেছাকরাদের একছেট নেতা ছিলেন কাল্দা।
সারাটা দিন মোড়ের চারের গোকানে বসে
পাড়াটা কনটোল করতেন। ফোর টেন হাইটে
কাল্ডমাণ মেমেরিরাল চ্যালেজ শাল্ডে
টাম নামানো থেকে কালীপ্রোর ভাসানে
চীংপ্র থেকে বাান্ডপাটি ভাড়া করে আনা
স্বই ছিল দাদার এভিয়ারে।

রোগা, চাঙা, রণলাছিত মাকুল্ম্থো কাল্দাকে কেউ কোর্মাদনও চাকরী করতে দেখে নি। চাকরীর ক্যা উঠলে এড়ানোর সেন্য প্রেফ কেটে পড়তেন। অথচ লোকটা কোর্যালফারেড। পাসকো্সের আঠস গাল্বটে। শুনেছি কাল্দার বাবা নাকি কাল্দাকে আমিতি ঢোকাতে চেরেছিলেন। ফোরটি নাইনে ইন্টারমিডিরেট পাস ক্যার পর সব বিষ্ঠাক। দেরাদ্ন থেকে ক্যা তালিরে ফিল আপ করে পাঠানো সারা। ইংরেছী আর অক্কে লেশ্লাল কোচিংরের জনা দ্ব দ্বল্ম তিউটর রাখা হল, দ্ব মাসের জনা। হঠাৎ একদিন পাড়ার হৈ চৈ পঞ্চে গেল। কি বাপোর? ক্যালকাটা প্রতিশের সাক-ইন্সপেক্টর বিজন সফাদারের ছেলে কল্লোল বাবার পকেট সাফ করে ক্লিন উধাও।

দ[্] মাস বাদে আাড়ফিশন টেস্ট শেষ **२ एक काम**्मा किरत এলেন। শুনলাম माम्राक स्मरम উद्देभाषेठे विकित्त <u>वेगर</u>ण করার অপরাধে দ**্বরাত সরকারী অতিথি-**শালায় ছিলেন। তারপর ছাড়া **পেয়ে বালা**--শোরে এক উকিলের বাড়ীতে **আশ্রন্ন মেন**। দ্মাস ধরে কয়লা ভেঙে, বাসন মেকে, জুতো সাম করে হাতে কড়া পড়ে গিরে-ছিল। নাড়ীর জ্ঞান টনটনে। ক্যা**লেণ্ডারের** ত্যাক্ষউন্টস মিলতেই অরিজিন্যাল পশ্ব-তিতে ঘটে ফিরে এসেছেন। স**েলা নিয়ে** এসেছেন উকিল মনিবের দ্ব একটা মেমেল্টো একটা দামী পাক'ার আর রঙচটা মরলা পার্স । খালি পার্সটা কাল্পা ভোল্লাকে দান করে দেন। পাকারিটা রাখেন **নিজের জনা। বলতেন আমি হ**িচ্ছ বাঙা**লী** টোয়েন—নিজের জবিনের অভিজ্ঞভান ফসলে বাংলা সাহিতাকে সম্প করে বাব।

শ্বদেশী সাহিত্যকে সম্বাধ করার তাগিদে কাল্পা বাংলা অনার্স নিরে বি-এ পড়তে গোলেন। প্রের গভাধারিশীর মুধে থবর পোরে দারোগা দফাদারমশাই নিজের প্রবেশপথে একটি বড় সাইনবার্জ লটকালেন--কর্মোলের প্রবেশ নিবেধ।

অফ্রন্ত প্রাণশন্তি কাল্যার। ছোট ছোট ভাই-বোনগ**্ৰো স**ৰ **চোখের সামলে** দিয়ে টপাটপ পাশ করে, চাকরী-বাঞ্চরী জুটিয়ে বা বিয়ে-থা করে সেটলড্ গেল, তব্ একট্ও ঘাবড়ান নি। চারেকের চেণ্টায় প্রাইভেট कार्गिन्छरछउ হিসেবে ঠেসে পর্বিয়া ট্রকে পাশ করে, পার্মানেন্টাল মোড়ের চায়ের দোকানে বঙ্গে পাড়ার দারোগাগিরি শরুর **করে দিলেন।** লোক থবে খাঁটি। বখনই সার আপদ-বিপদ হত চেলা চাম ডাদের নিয়ে পাশে প্রীক্টাতেন। মড়ার খাট ব**ওয়া থেকে প্রীক্ষার** হলে মাল পাঠানো সব দারিছ மன் বইতেন। ফিফটি প্লিট, সিক্সটি সিক্স, তেরো বছরে কোন পরিবর্তন দেখিনি कान्यात् ।

প্রীকৃষ্ণহুরের স্পাটকর্মে সেই **কাল্-**দাকে দেখেই রীতিমত চমকে গোলাম। চক-

চকে ক্ষেত্র কিডের পাল্পশ্র থাপে বোদার গুপচানো খিয়ের মত চবির দলা ঠেলে উঠেছে। সরু পাড় ধর্নতর কোঁচা সহসেছে মাতিতে। বা হাতে সিগারেটের ট্রিন কারে লাইটার। ভান হাতটা বাড়িয়ে অসিটি কাছে টেনে নিলেন কালন্দা—তারপর বাদে তোর সংখ্যা দেখা?

•লাটফমের শেষে <u>সাইকে</u>লরিভ্সার नाहरान्त्र थाएत स्थानात हारेनात माकान। काम्पाक प्रकेर्ड सिथ कराक-জ্ঞন খন্দের তাড়াতাড়ি বেণিটো ছেড়ে উঠে পেল। উন্নের ধার ছেড়ে দোকানী লাকে সামনে এসে দাঁড়াল। কাঁধের গামছা দিয়ে রগড়ে বেণির ময়লা যতটা পারে সাফ করে একগাল কৃত্ত্থের হাসিতে 🖟 মাখ জ্ঞাসিয়ে বিনীত <mark>গর্</mark>দীয় **জিজ্ঞা**সা <mark>করেন</mark> **কি** দেব বাব**্**? ^{*},

ः माछ, मृत्यों हा माछ। आत किस् ना वाव्हें?

ঃ না তোমার নোকানে আর আছে কি? পার যদি মাড়-ভান্ডারে লোক পাঠিয়ে কিছ ভাল মিণ্টি আনাও।

भरकरे स्थरक मानिकांग वात क्यानन কাল্যা। এতক্ষণ দুড়িরে দুড়িয়ে দান্যর্ খাতির-পদার দেখুছিলাম। মিণ্টির क्था भूटम यननाम---

ह माना किए और ना । माधा हारी नाउ शामान फेरलम कानाना, भाषात हाराव লোকানে বসে বেভাবে ব্যুক্তাতেন ঠিক সেই ভাবেই—হুপ কর। ট্রেন কখন ছাড়বে তার रमहे ठिक। राजा बाष्ट्रल साकात्नत्र मिणि-ফিণ্টি ব্যাপারীরা সব সায় করে দেবে। ভাষার বাড়ী এখান থেকে প্রায় দেও মাইলু। তোকে নিয়ে ৰাড়ীতে গেলে কোন ভবনা ভিল না। কিন্তু তোর পকে যাওয়াও ম্পিকল। সংশে মাছ আছে। তার, চেরে মিশ্টিই আজ খা। ঠিকান্টা দিয়ে দেব, আসিস অন্য কোনদিন। চাস ভাই খাওৱাব্য ভোদের ঐ কল-কাডার বরফঠালা মৃছে নারে, টাটকা প্রকুরের পোনা। কচি পঠার মাংস। আর তোর বৌদি বাড়ীর দুধের ছানা কেটে मालाभ यानिस्त रमस्य। विस्कृतन अद्भूतित्र थारत वरत भारतात् भारत पिरा, शास्काणा ভাড়ি চার্থাব, দেখাব কি ফাইন লাগে। ওসব বিলিভি-ফিলিভি কিসুস্থ না ওৰ প্ৰাশে ৷ অবিশি ডোর শদি সহানা হয় তাহলে সে ব্যবস্থাও আমার আছে--ওল্ড টাভার্ণ, র্য়াক আন্ড হোক্লাইটের বোতল সর্বদাই কোডি রাখতে হয়। কখন সাহেব-স্বোরা এসে পড়ে বলে যায় না তো।

আড়চোথে তাকালাম কাল্পার দিকে। দ্রীমের ভাড়া জ্বটত না বলে কতদিন গাল-মৃত্যু থেরেও পাড়ার নির্মালদার মার্ল্থালিটা চেরেচিন্ডে এসম্প্রানেডে ইংরেজী ছবির আগাম টিকিট কিনতে মেড।। সেই শোক মার জিন বছরে জমি, বাড়ী, পরুরর, মদ, ৰৌ ও সেই সংগ্য কিলো দশেক চৰ্বি **জনুটিরে বের্লেড**। দিভিদ দুবেলা চালের বরাশ জোটাতে বে হিমসিম খেরে বেত, নে এখন কত ক্যাজ্যালি দিশি বিলিডি মালের নাম আউড়াছে। চাকরি করে এসব दश्र मा। इरल्ख जिन वहरत्र निम्ठत्रहे मा। কম করেও মোটা মাইনের' ঘ্ৰের চাকরীতে প্রজার ক্রাটাতে ডিরিশ বছর লোগে ভাল্দা কৃত কম সময়েই সব লেহেন।

क्रिकानीम याक्रीम रम्बनाम। भूरकारना দিনের মতই, শেলটে ঢেলে গরম চানের তেজ মেরে একটা একটা করে চাখতে চাখতে কাল্দা জানতে চাইলেন, কি করছি? বল-লাম। ব্যাপ্তের কেরানী শ্রনে নাকটা একট্ কু'চকোলেন। বিরে করেছি জেনে খুশী হলেন। তারপর প্রোনো পাড়ার হাল , জানতে চাইলেন। বললাম তোমরা উঠে শাওমার পর পরই আমরাও পাড়া ছেড়ে ইন্টালীতে চলে গেছি। তবে এখনো মাধে-সাঞ্জেময় পেলে বাই। পর্রোনো পাড়া আর নেই। অনেক বদলে সর্ গলি চওড়া হয়েছে থানিকটা। পাড়ার তোভেলা এডভোকেট এখন কাউন্সীলার। সেই রাস্তা বাড়িয়েছে, টিউবওয়েল বসি-য়েছে, আলোর ব্যবস্থা করেছে। নীতুরা পাড়া থেকে উঠে গেছে। গোপালবাব্র ছেলেগ্রুলো, একটাও মান্তব হয় নি। দিন-রাত মদ গিলে মস্তানি করছে।

ः आत व्यन्यः, भ्यक्षात्र, कीम्यः, अता कि क्त्रति अञ्चलाग ?

💛 🖫 योगि । धक्रो क्यावित्रज्ञाल । कार्स्स् আকাউন্টদ ক্লাক। ব্লু গেঞ্জির দোকান দিয়েটের কালীঘাটে। আর স্কুমার বেলের অ**ফিসার**।

া স্কুমার রেলে আছে?—মনে হল, থবরটা পেয়ে যেন কাল্মা উলসে উঠলেন — काम तिले? काशास वरण?

ঃ গাড়ে নরীচে।

ं । গাড়ে নরীচে! ওর পত্ররো নামটা কি বলত।

ঃ স্কুমারবিকাশ দাস।

ঃ ও হরি: আমাদের সেই স্কুমারই ভাহলে এস বি দাস। রিসেন্টাল বদ্ধি আমার হয়ে এসেছে। ওর কাছেই তো দরকার।

স্কুমারের কাছে দরকার কাল্দার? স্কুমারের অফিস গার্ডেনিরীচে। কাল্ট্রদার আম্ভানা এই শ্রীকৃষ্ণপূর। দ্যের মাঝে যোগস্তুটা কোথায় ব্ৰুতে না পেরে জটিল ধীধার সমাধানের আশায় তাকালাম मामात्र मिटके।

ঃ বৃষতে পারলি না? পাহাড়পুরে এফ সি আই'রের গো-ডাউনে আমার সাত শোবশতা গম পড়ে আছে। আর ইদিকে গমের অভাবে আমার সব কাজ-কারবার বন্ধ হওয়ার জোগাড়। লোক পাঠিয়ে-ছিলাম। শুনেলাম ওয়াগান শেই। আগে যিনি ছিলেন, তার সপে খুব থাতির ছিল. প্রয়েজনে সরকারী কাজ কথ রেখে আমার ওয়াগন আদার্ট করতেন। নরা অফিসার এস বি দাস খ্ৰ জবরদত্ত লোক, হাতে মাথা কাটে। ডাই আৰু নিজেই যাহি গার্ডেনরীচে। ভালই হোল তোর रमधा श्टान ।

্ চা-মিণ্টি শেষ ইয়ে গিয়েছিল। মুমালে म्हरू म्हरू वनानन, आत कि খাবি ?

े उत्तर किन्द्र मा कान्द्रण। ठन विक्र কৰিক গিকে হাওয়াং বাই চেডাটো शहरकारो । मृत्यासम्बद्धः नार्वास्त्रीमान्यः । तैताः

ा । जो जो करनाइमा ध जहार रेलक-प्रिमिपि अलाख माकानीता अप्नरकर नार्म নেয় নি। ফলে ফ্যান-ট্যান মেই। আমাদের সাইডে এখনো তার বার নি। আমি কিন্তু ভারনামো বসিয়ে নিয়েছি।—নিজের কৃতিছে र्यम छेरथाङ्क रमशाला कानामारक।

ু প্রাটফরে পা দিয়ে তভানী ও বুড়ো पार्क्ट्रत्वत्र विक्रितं काम्रमाम् ग्राकीन भएता वर्गीकरत्र विनवे वाजिस्त धतरतम कान्याः নে,...্থা∟ আমেহিকান কিনিস্⊍্জামার আবার শইতা সিগারেট পোষায় না।

্ৰেল তো দেখতেই পাচিছ। জুতোর চামড়া থেকে সিগারেট টিন, স্বা প্রভ মেড ইন ইউ কৈ ছাপ। কিন্তু এই ছাপটা এল কোখেকে? লাইটারের শিখায় সিগারেট ধরাতে ধরাতে ক্লিক্রাসা করলাম : তুমি কি গমের বাবসা করছ কাল্দা ?

ঃ না রে না। তোর কাল্যাে বাবসা করে না ৷ ওসুৰ, চাকুৱী-বাজুৱী, বাৰসা-ট্যাবসা আমার সহা হয় না। করি সোস্যাল ওয়ার্ক।

🛫 ঃ সোসালে ওয়াক ?

্জামার প্রশেনর ক্রথেটি খুব স্পুষ্ট হয়ে উठेन--'रमामान उहार्क' करत कि **জ্মি,** বাড়ী, গাড়ি, প**ু**কুর, কাঁডি টাকা করতে পারে। ট্রসকি দিয়ে সিগারেটর ম্বের ছাইট্রু নেড়ে, জ্লপিটোয়া হাসিতে মুখটা কাপিয়ে কাল্দা বললেন-

ঃ হাাঁরে সোশাল ওয়াক'। ন্যাপানটা তোকে বলা দরকার, শোন। সিক্টি সিক্সে বাবা মারা গেল : তোরা জার্নাতস কি খরচে লোক ছিলেন বাবা। এক প্রসাও রেখে যেতে পারেন নি। অবিশ্যি রেভে **সেলে**ও আমি পেতাম না। বাক গে সে কথা। ছোট ভাইগুলো সব আলাদা হয়ে গেল ৷ বাণী আর বীণার বিয়ে বাবাই দিয়ে গিয়েছিলেন। মা গেলেন মেজভাই বাবলবে কাছে বোকা-রোতে। আমি তো কিছুই করতাম না। অভিনাৰী গ্ৰয়াজ্মেট। চাকরীর ^{প্রে}বারা করিনি কোনদিনও। বাবা মারা যাওয়ার পর একটা কিছা, করা বড় জর্বী হরে উঠল। নিঞ্জের পেটটাতো চালাতে হবে। ভাইদের কাছে হাত পাততে লম্জা হল। কিন্তু कति कि? यसम हत्य शास्त्र । এম নিতে বাজার যা টাইট তাতে আমার মত বিশ্ব-रवकात्ररक ठाक्ति प्रारव रक? भारत भारत প্रक्र-प्रेय एएए, प्रेडिमीन करत वा म् পুরসা রোজগার হত তাতে আর কুলো-ছিল না। আড্ডা-ফাত্ডা হৈরে <u>পেলে কলেজ পাড়ার পাবলিশারের ছরে ছরে</u> প্রক্রের কাজ খ**্রে** বেডাডার। সুধারেই लया रखालन जनिस्त्र मरना। जीननरक क्षांत्र मान जारह?

ি ঠিক জনে করতে পারলাম লা। ধাড় নেড়ে জানালায়—না, সমে পড়ছে নি।

ই আরে আমাদের পাড়ার পেছনে, বালমেতলার প্রেলা-মণ্ডপের উন্টোদিকের বাড়াীটারে। কুঞ্জলা, মানে কুঞ্জ সেন, আমাদের
প্রেলা কমিটির পামান্দিট ভাইস প্রেসিডেলট ওরই সেজ ছেলে আমাদা। একটা
পাজাবী পাবলিশিং কনসানের সেলস
রিপ্রেলেনটোটিভ। অবরে সবরে কলেজ পাড়ার
বই বিপ্রির ধান্দার ঘ্রে বেড়াত। গুখানেই
আমার স্পো দেখা। দ্-চার বার দেখা
হওরার পর নিজে থেকেই আমার বলল
দাদা একটা কাল করবে?

াকি কাজ?—জানিস তো ধুন্ কাজের নামে আমার গারো কেমন আলোর্জি বেরোড। তাই ভরে ভরেই জিল্লাসা করলাম, পাতে কোন গাড়ার পড়ি।

নলল-সোশ্যাল ওয়ার্ক। ভূমি ভো দাদা চিরকালই পাডায় সোশ্যাল করেছ, তোমার আডজতা আছে, পারবে। তারপর আঘার কথা কোন স্কোপ না দিয়েই একদিন জ্বোর করে ধরে নিয়ে এল এই শ্রীকৃষ্ণপ্রে। এখান থেকে দেড় মাইল উত্তরে চক গোবিন্দপরে। বেশ বড় গাঁ। প্রায় পাঁচ ছশো পরিবারের বাস। এতবড় গ্রাম অথচ গাঁরে কোন টিউবওরেল त्ने रव रमारक कम **भारत। वर्षात्र माठ-**थाउँ **ভেসে যায়, অথচ জলনিকাশী কোন নালা** त्नहे। त्नाना कटन थान भक्त नग्हे অথচ খরার সমর সামান্য জলের অভাবে মাঠগুলো সব খালি পড়ে থাকে, চাব হয় না। ব'বানো রাস্তানেই। ব্যায়াসে যে কি কণ্ট বলে বোঝাতে পারব না। একটা প্রাই-মারী স্কুল প্যশ্তি নেই। নেই ভারার বা জিসপেনসারী। বিশ্বাস হবে **না যে** আজ্যকর দিনেও, যে গাঁকর মাত্র বেড় মাইজ দক্ষিণে ইলেক্ট্রিক রেল চলে, সে নায়ের এই অবস্থা। এই অবস্থা শ্বং ঐ গাঁকেরই না আশপাশের বিশ্টা গাঁরের @क्टे हाल।

জানলাদের আদি বাড়ী এই চক গোবিশ্ব প্রে। কুঞ্জনার ঠাকুদা ছিলেন জামদার। মুল্ভ অবস্থা। কিছ্তু পরের জেনারেশন দ্ হাতে মুল্লা লাটাত গিনে সব খ্টারেছে। ফলে কুঞ্জনা চাকরীর খোকে কলকাতার আসেন। এখন এব সব কটি ছেলেই ওয়েল এসটাবিলিশ্ড।

তানিল গোড়াহ ছিল কো পানাঁর হেডতাফিনে, নিল্লাটিড। ওখানে এক বিদেশী
ওয়েলফেরার মিশানের সপো ওর মোগা মাগ
হয়। তারা পারাবে, ইউ পিটে সেলফহলপ প্রতিমি গ্রাম সাহায়। নিয়ে গারের
কেলাতে বাস্তা। ব্যামই তানিকের
মাথার এল নিজের গারের কথা। কথানাতা
বলে ব্রেতে পারল ভাল একটা চা শালি
সাভিস প্রান্ন দিতে পারলে নিশ্রের
সাহায়া পারে। কোম্পানীর বড়কভারি
বলে করে রাজী করিয়ে কলকাতার বিজিওন্যাল অফিনে বদলি হার এল। কিন্তু
নিজের কাজ হেড়ে একটানা বেশীদির গারি
পারে থাকা ওর পাক্ষ সম্ভব্ন নর। তাই
শালের নিয়ে এল।



ঃ কিন্তু ভোমাদের •ল্যানটা কি?— বিজ্ঞাসা করলাম আমি।

ঃ দাঁড়া, দাঁড়া। সব বৰৰ। **অ**ভ ব্য=ত হোস না।—জন্পেস করে দামী সিগারেটের গোড়ার টান লাগালো কাল্যুদ। গলগল করে ধোরা উগরাতে লাগল মূখ দিয়ে, নাক দিয়ে। আন্তে আন্তে আবার সূতো ছাড়তে স্রু, ক্রলেন ঃ সৈক্সটি সিক্সের নভেন্বরে আমি এখানে এলায়। নিশ্চরই তোর যানে আছে সারা দেশে ফ্ডের তখন কি জাইসিস। শ্হরেই রেশন মেলে না তো গাঁরের লোক थार्थ कि? अक भारत हात्तव नव महोका, সাড়ে নটাকা। পালি মানে ব্ৰঝিস ভো? আড়াই সেরে এক পালি। অধিকাংশই ভাগ-চাবী। খরায় মাঠের ধান গেছে জনলে, ভাগে পার্যান কিছুই। কোন কাজ নেই। খরে ঘরে দৃভিক। ওরেলফেরার মিশনের সাহেবদের নিয়ে এল অনিল। তারা সব দেখে-শানে অনিক্ষের স্ক্রানে সার দিরে গেল। রাস্ক্র বানাও, টিউকল বসাও, মজা প্রের সংস্কার কর, পাল কাটাও, স্কুল বিলিডং গভ। ্পালট্ট করা শেগাও, স্যানিটরী পারখানার উপকারিতা বোঝাও। সব বৃধি রস্থিকির যাদের জিনিস ভাদের দিরেই কাজ করাও। স্ব দরিদু বেকার চাষীকে টেনে আন কাজে: গাঁরের চেহারা পালেটই ফেল।

ভ্রম এসব ভারগায় দিন-মজ্বীর রেট ছিল আড়াই টাকা আর এক বাশ্ডিল বিভি। কাল টাকার বদলে সবাইকে গম দেওরা হরে মাথাপিছা ভিন কিলো।—বলতে বলতে একটা থালেন কাল্দা। নিজে ধাররে, আমার একটা সিগারেট দিলেন। ভ্রমণে প্রাটেশম দেশি লোকে গিজগিজ বছে। বৈশাধের উঠাত বেলার বোদের থারে তাড়ির হাড়ি উপতে লাদা গাভিলা বেরিসে এসেছে। লোকেরা রাশ্ডার ধারের পানা-প্রুর থেকে আঁকলা ভরে জল এনে

হাড়ির ভেতরের তেজ মানবার করছে। মাছওরালারা রীতিমত অসংক্র হরে উঠেছে। লগন-গার মাকেটিটা বু স্ব হাতছাড়া হরে বার**। অফিস-বারীরা** দাপা-দাপি করছে। ভাকিরে দেখি ভাষাদের গাড়ীর পেছনে সাভটা বারে আর আটটা ত্রঠারোর ট্রেনদ্টো লাইন লাগিলেছে। েলের কম্চানীরা পাগলের মত ছোটাছ:্টি করছে। সবাই অশান্ত, বাস্ত অধৈয[়]. এক কাল্যুদা ছাড়া। মাটিতে ক্রটোলো ভোঁচার খ'ুটে পাম্পশরে জগা জাড়রে যাচেছ, মরগা লাগছে, কোন ভ্ৰেপ নেই: ঠান্ডা গলার ৰলে চলেন-আমি হল্ম গ্যাংমান। দেড় শা টাকা মাইনের কুলির সদার। টাকাটা দিত খিশ্ম। অনি লয় পলান অনুযায়ী সার্দিন এ-গাঁরে, এ-গাঁরে ব্লাস্ডা বানাই, খান্স কাটাই প্রকৃর পরিষ্কার করি, টিউনওয়েল বসাই। সদেধ্যবেলা জানলদের কাছ।।ড়বাড়ীর দাশানে বসে টাল দেওয়া গমের বস্তা খালে যেপে মেপে তিন কিলো মজরে । দি। সে-কৈ লাইন, ভুই কদপনাও করতে পার্রবি 🚁: এক একদিনে বাট সত্তর কুইল্টাল বি:ল হায় গোছে, ক্তা শেষ, তবা্ও খাঁই মেটাডে ≄াহ না।

: কিন্তু তুলি তো দাদা **শ্ধ্ অপরের** কোনো বলেট বেড়াতে, নিজের দিকটা সাললাকে কি করে?

ু ওরই ফাঁকে। সোণ্যাল ওয়াকের বে কি মধ্য, গোড়ারা তো টের পাইনি। ড্রান্তর ফড় থেটে মরেছি। নিলনের ওরাকান বোগাই হরে শ্রীরকাপ্যার এটেসাছ, করীতে চাশিন নিমে গোছি চক-গোসিকাপার। থাকেবা বিশ্বী গাঁরের হাজার হাজার বেকার চালীর পনিজের কাজ নিজে কর" সকীরা খাটির কেই গাম বোগাঁ দি রাছি ভাগের রামে। তথা খেরাকেই হারনি যে, অপ্রাক্ত শৈক্ষা বিশ্ আর নিজের বেকারা অধ্য। অবৈলিঃ হো খুলতে দেৱী হরমি বেশী। খুলে দিল গোবিকাপ্রের র্যাভফারেড রেশন শপের ফালিক। বলল—দাদা সবার জনাই তো করছেন, এবার নিজের জনা কিছু কর্মা।

ছ' মাসে ভোল পাল্টে গেল রে। গঙ্গে গাঁকে চৰীর অভাব কটো মিটেছ ক্রিক মুন্তিকল, তবে আমার আজ আর ক্রিক অভাব নেই।

ঃ কেন এক্ত হে রাস্তাঘাট বানালে, কল বসালে তার কোন পুরুল নেই— জিঞ্জাসা করি অমি।

ঃ ধরে। ক্যাশ নেই, শ্বেহ্ গমে কি কিছা হয়। রাস্তা বা বানাই ধর্বায় সব ধরে ৰার। **টিউকল** যে গাঁ**রে অন্তত** পরিটা भवकात, रमशास्य अवेका शरमा कान्यम रहे एक वल । शहरमात्री न्यूरंलक वार्जी वानारनाव धना शास्त्र भारे **मृश्ः कामायति, 'आ**ते हासीरमंत निक्कापत शास्त्र बानात्ना रेपे। त्रिर रेपे পোড়ানোর কয়লা পাব কোথায়। এক-একটা খড়ে এক-একটা বাড়ী কলাগাছের মত নেভিরে যার।। গোড়ার সারক্ষ্যাস গম বেচে **৫কটা ডিসপেনসারী করেছিলা**ম, কম্পাউন্ডার পাইনি। ডাক্টার আসতে চায় मा। यान कि कि कि? तक प्राप्त वल-ঐ তো সৰ চাৰীদের অবস্থা। তাই এখন সার সত্য ব্যবেদি, নিজেরটা নিজেই কর।

ঃ তার মানে?

ঃ মানে তোকে একটা ফিরিন্ডি দিছি,
তুই নিজেই হিসেব করে দেখা ভিসেত্ত্বর
ট্রা, লীতের আর ধরার সময় ফি মাসে
মিলন সাতলো বলতা থম পাঠার। ব্লেগার
গাঠার না আক্রমাল, কারণ চারীরা খেরে
হুল্টাল। এখন এখানে গায়র লর কে-জি
পিছ্ পাচালী পরসা। সাতলো বলতা থেকে
ফির পারে মা। টের পেলেও বলসে না
কিছ্। বলবে কি? খেতেই তো পেতে
না, তব্ তো কিছ্ পাছে। পাছের পোলি
টি'কে আছে। চালের যা দর—এক পালি
সোরা চার সাতে চার টাকা।

এখন এদের রেট বেড়েছে। এক বেলার মজরে ডিন টাকা বাবো পরসা আর এক বান্ডল বিড়ি। ক্যাশ তে। দিই না দিই চার কেজি গুমা আমিই গুমা দেওয়ার মালিক। চটাল কিসস্য পাবে না। তাই কেট ঘটাতে সাহস পার না। লোক ঠিক করা আছে। আলপাশের গাঁরের মডিংচাইড রেশন শপ্ মুদির দোকান। রাডদ্পরে, মাল পাচার করে দি। তবে বাবা ক্যাশ ভাগাম হুমা না পড়াল মাল ছাড়ি না। বজে দি টাকা আর থলে নিয়ে আসবে তবে

३ शाल (कन नामा?

: মিশনের বাগে যে ছাপ মারা আছে — গম্ভীর গণায় বাগোরটা ব্রবিষয় দেম কাল্দা— এ ছাপ দৈখিয়ে যদি হেউ ঃ ব্ৰেছি। ভাষাস গেলে 🔏 🎖

ঃ আ হাজান সাড়ে চার, পাঁচ তো হাজেঃ সন্তর পরসা তেজি দরে এবন বংলার দার হিসাব করে দেব। ওর থেকে বু আঙুছি হাজার লোকাল লাভার আর ক্রকার্ড ক্রিনিকাকানের পার্ব নী মেটাতে ধেরিকে বাম।

s এখাদে আবার তোমার কাব্য-জাঠারা কবে এলেন? —এবার সাধ্যিই আমার অধাক হওয়ার পালা।

ধ্র বাজা বুন্ধ। লোকাল থানাব দারোগারা প্রফেশনালি আমার বাঝর ভাই
মা?—বলেই হো হো করে ছেলে ওঠন
কাল্মো। তেনাদের সম্ভূত না করলে বে
হাবে রাড় পড়বে।

কলিছো হাসলেও, আমি পারি না। কোথাই জানি একটা ভরের পানা পেকে থেকে লাফিরে ওঠেঃ ধর দালা মিশন যাদ টের পার। জনিকবাব, যাদ জানতে পারেন?

হাসি থামিয়ে, সিলেকর ফ্লকাণা র্মালের গদানের খাঁকে খাঁকে জমে ওঠা ঘাম মৃছতে মৃছতে বলেন ঃ সে পথ মেরে त्तरथिष्ट ना। गौरत्रत माथाप्नत मूथ वन्धः তার অনিলকে তো এর জন্য প্রতি মাসে হাজার টাকা দি। ওর কি আর মুখ খোলার জো আছে। আমি যা নি, সে তো তামার প্রাপ্য। দেড়শো টাকা মাইনেয় 🏻 🛊 আর এত কাজ হয় রে। যতই বলি না কেন কিছা হয় নি, গাঁরে গাঁরে ছারে দেখ কিছা কান্ধের নিশানা পাবি। তিন বছরে কম করেও প'চাত্তরটা মজা প্রকুর ফাটিরে फिराफ़, **भाम काणिराहि शाह पर माहेल।** প্রত্যেক গাঁরে ফি বছর খরার সমর দুটো তিনটি করে <mark>টিউকল বসাই। প্রাইমারী</mark> ম্কুল বিলিডং করে দিয়েছি সাত আটটা। যে সব গাঁয়ে **লোকে রাস্তা বলতে আলপথ** ধুমত সেখানে দেখ গিয়ে ক্ষেন ইটের রাস্তা বানিয়ে দিয়েছি। এর জন্য বিশ্ব কথ মেহনং করতে হরেছে আমায়। দিন দুভার মাটি কেটে ইণ্ট তৈরী হয়েছে; পঞ্জার আগনে ধরিরে ই'ট পোড়ামো হয়েছে। তবে সেই ইণ্ট বঙ্গেছে বাস্তায়। কে করেছে এ সব? এই, এই তোদের কাল্যা, क्ट्राल नकानात—केटउकनाइ ट्याला ट्याला মাকুন্দ গাল দুটো **থরখর করে কালে**। ব্কের মাঝখানে আখুল স্কৃতে স্থানকালপাত ভূলে গিয়ে চে^গচয়ে ওঠেন কালন্দা-তার বিনিময়ে বদি নিজের জন্ম কিছ, নিই, তবে কার কি বলার আছে বল কোনু শালা নিচে সাহেবদের নজর পড়েছে এদিকটাছে। অংশভন্ড বিশটা সেন্টারে এখন এই চলছে। সব সেন্টারেই খে**লি মিয়ে** দেখ একজন করে কাল্যা বসে আছেন। সবাই रक्षा रुद्राल काल। रक्षम काल? अक्षे প্রসেদ।

আমাকে আর প্রশ্ন করতে হয় না।
নিজেই প্রশন করে, সবার দিরে কলেন
নাল্য বাজ করে একণ কন। বাকাটা
পেটোরা লোক দিরে টিশুসা না
ভাবাত্টাও, আ দেখতে ইবে বিভাগ প্রবাহটাও, আ দেখতে ইবে বিভাগ দিকে ভাকালেন কাল্যা। তারপর রাপ করে
গলার স্বাটা পালটে ফেললেন—স্কুমারের
সংগ্র তার দোলিত এখন কেমন?

ঃ মোটাম টি।

ঃ দ্যাধ এ-সব ওয়াগন-টোয়াগান জোগাড় করা বড় ঝক্কির বাপোর। সবাই নের কিছু কিছু। না দিলে গম গো-ডাউনে পড়ে প্রচে। ওদিকে কাফ কারবার সব ওঠে শিক্ষো। সাহেবরা জানতে পারলে খয়রাতি বন্ধ করে দেবে। ভাই নিজের গাটি-গর্চা দিয়ে রেল্বাব্রদর তুণ্ট করে মাল আনাই। ভালই স্কুমার যথম আছে তথন আর কোন চি**ন্তা নেই, কি বলিস** ? তোর তো খ্ব বৃশ্ব, ছিল। আমি তোদাদা হয়ে আর ঘ্**ৰ-ট্ৰের কথা বলতে পাবি** না। তুই যদি একট**় বলে দিস। বে**শীনা ওরাগানেই আমার মাল পেণছে যাবে। ওর আগে যে ছিল, ডাকে যা দিতাম, তাই দেব। ফি মাসে পাঁচশো। ভূইও বাদ যাবি না। ঐ নেগোশিয়েশনের জনা-বল'ত वनरङ ब्लाकातना भ्लाउँकरमेर्ड भट्ति एथर ম্**ণিব্যাগটা বার করলেন** কাল্মা।

হাতটা চেপে ধরে চে^{ৰ্ণ}চয়ে উঠি--হচ্ছে কি? মাথা খারাপ হয়ে গেল নাকি তোমার।

চার পালের চবির ভাজ দ দ উত্তেজনার বেরিরে আদ্যা গোল গোল চাথ দুটো কেমন মিইরে গেলে। দু হাচ গুমার হাতটা ক্ষড়িরে ধরে অন্নরে ভেঙে পড়েন কাল্যা—কড় উপকার হয় মাইরি। ভোষা যদি একটা হেলপ করিস।

মাস গেলে যার পাঁচ হাজার টাকা ইনকাম, গাঁরের লোকের কাছে যিনি দেবভা, তিনি এই অজ্ঞাত অথ্যাত স্টেশনের প্ল্যাটক্মের সামানা পৌনে চারপো টারা মাইনের এক কেরানীর হাত জড়ির ধারে অন্নের করছে—একট্ হেলপ কর মাইরি কানে আসতে উর্জেজিত জমতার বুল গর্জান, গাড়ি হেড়ো, জলি হোড়ো আডি হোড়ো। গাড়ি করন ছাড়বে তা ঠিক নেই। হালতে হালতে বললাম—ও-সহাড়া চল গাড়ীতে গিরে বসি।

ভারপর ফাল্ট ক্লানের মাল্যলিধারী। থার্ড ক্লানের কামরার মিজের পাশে বসি বললাম—আগো কলকাভার পোছোই। সে সেখানে নিরে কি করতে পারি।

-निषर



জলাতংকের অবসেশন ম্রারির কথা

ম্রারি কেন্ডীর সরকারের অফিস-ক্ষী। দৈছিক স্বাস্থানিয়ে গ্র' করতে পারে মুরারি। ল'বা চওড়ায় মানানসই চেহারা। মুখে সব সময় মিভিট হাসি। দেখে মনেই হবে না যে এর মনে কোনো উপ্ৰেগ বা অশান্তি আছে। চাক্রীস্ত্রে প্রারই বাইরে যেতে হয়। ঠিক টেবিলের চাকরী নয়। নানা জায়গায় ঘোরাফেরা ও নানালোকের সংগ্রে মেলা-মেশা মুরারিকে চাকরীসূতে রোজই করতে হয়। অগ্নতি ব²ধ_্-বা²ধব; হৈটে আজন मित्र मिन क्टिंग्डे यात्र। अत क्टिंश वङ्ग कथा। অনেকের সংগে মির্লোমশে কাঙ্গ করতেও ভালবাসে। বাকপট্ব এবং কর্মপট্ব দুইই। भव तकम काक कात्म--क्यूरा समाहे थारक চণ্ডীপাঠ।

অবন্ধাপার ঘরের ছেলে। কোলকাতার নিজেদের বাড়ী। দেশের জানজানা থেকে জাল আয় হয়। একাপ্রবাতী
পারবার। তিন ভাই-এর মধো ম্রাবি
কানিষ্ঠা বড় ভাই আর ম্রাবি বিবাহিত।
মেজাদা বিশ্লে করেনান, করবেনও না। বড়
ভাইয়ের একটি সন্তান, ম্রাবি
নিমেদ্তান। একাপ্রবাতী প্রবারে কাড়াকাটী নই এ বড়দেখা যায় না। ম্বাবিদের পরিবারকে এদিক দিয়ে সতিই আদর্শ
পরিবার বলা চলে।

এ হেন ম্রারি পায়তালিশ পেরিথে আমার কাছে চিকিৎসার জন্যে এল। প্রথম দিন কথরে মুখে রোগ ইতিহাস শ**্নলাম**। থাহর দ্য়েক ধরে ভূগছে। অনেক চিকিংসা হয়েছে তবে ঠিক মনোচিকিংসক যাকে বলে, সে রকম কোনো ডান্ডার এপয^{়ি}ত **দেখানো হয়নি। অফিস**ডাক্তার শ*হরে*র বৈদ্য-বিশারদদের কাছে পাঠিয়ছেন: তাঁরা রোগব্তাশ্ড শ্নে ভূর, কু'চকে বলেছেন **ফানি' কিন্বা 'সিলি'। মল** মৃত্ৰু রক্ত ইত্যাদি **পরীকার পর তাঁরা থাংকুইলাই**জার ভিয়ে-**হেন এবং কেউ** কেউ মুরারিকে ম_ানর **ভান্তারের কাছে যেতে উপ**দেশও দি'য়ছেন। অফিস-ডান্তারের সংগে বোধ হয় কেনো **সিকিরাটিনেটর** আলাপ-পরিচয় ছিল না ভাই তিনি ও দিকটা একবারও চেন্টা করে **एक धर्माम । वन्ध**्रिके अदमक्को स्कातकवत्रप्रीष्ठ করেই আমার কাটে নিরে এসেছেন।

নিক্সের রোগ-উপসর্গের কথা বলতে গিয়ে মুরারির **লক্ষা ছচ্ছিল। অভি**জ চিকিৎসকদের মত মরারি বলল—সতিটে অফিসের এক সহক্ষী কে কুকুরে কামড়ায় নিয়মমাফিক জলাতঃক-প্রতিষেধক ইঞ্জেকশন দেওলা হল্ল, কুকুরটির ওপর নজরও রাখা হয়। কুকুরটির কোনে। রোগধরা পড়ল না, সেদিব্য সূত্র শ্রীরে বহালতবিয়তে হবিডাক করে আগের মতই ঘোরাফেরা করছে। অফিসের সহক**ম**িট থোশমেজাজে আড্যা জমার, কিন্তু মুরারি ভার সংগে মিশতে পারে না, তার *স্পর্শ* বাচিয়ে চলে, তাসের আড্ডায় বসে না পা*ৰে* সংক্ষারি ছোঁরা তাস ও'কে ছু'তে **হয়।** যার মূখ থেকে সিগারেট টেনে নিয়ে ঘন খন টান দিয়েছে, যার কাম্ড দেওয়া সিঙাড়া নিয়ে ট্রপ করে গলায় ফেলে দিয়েছে, তাংক এখন কৃষ্ঠরোগাঁর মত ভয় পায়। 🗰 জলাতংকের। ওর ছে**রা লাগলৈ মরোরি**র মলাতংক হবে—এই ভয়।

বৃষ্ধুরা প্রথমদিকে হাসিঠাটা করে 😘 ভয়টাকে আমল দিতে চার্মন। কি**ন্তু কয়েঞ** সংতাহ পরেই তারা বিশিষত ও হতবাঞ হয়ে ম্রারিকে নিয়ে ডান্ডারী প্রামশে'র জন্য নানা জায়গায় দৌড়াদৌড়ি স্বরু করেছে। অফিস-ভাক্তার, আ**ত্মী**য় **ভাক্তার**, বৃধ্য ডাঞ্চার সকলে নানাভাবে ব্যক্তিথে ম্রারিও ব্যেছে; ওদের কথামত জলাতংকের ইতিবার ডান্ডারী কেতাব থেকে বারবার পডেছে, **পাস্তুরের জ্বীবনী প্র্যুক্ত** ম্মুখস্ত হয়ে গেছে, কিন্তু আতংক কটাল না, যেমন ছিল তেমনিই ররে গে**ছে। য**ুলি দিয়ে, বুদ্ধি দিয়ে, যুক্তিমীন ভরকে দুর করা যায়নি। বরং **ক্রমশ ভয়ের পরি**ংধ (तएडे हलाइ। রাতের খুম, মনের শান্তি নণ্ট হতে বসেছে। আফিসে **ৰেতে** ইচ্ছা করে না। গেলেও **ঘ্রে বেড়ার**, চেয়ারে বসে না। क छाति? एत्र ঐটেতেই একটা আগেই সহক্ষীটি এসে বুর্গোছল। সহক্ষীর সংগে চোখাচো খ হয়ে গেলে লড্জা পায়। তার কুশ**ল প্রশেন**র জবাব না দিয়ে অনা দরজা দিয়ে বেরিয়ে _{যার।} এত সাবধান সতক থেকেও জলাতংকের ভয় তাকে ।**হাড়ে না। বাড়ী** গিয়ে আফসের সব কাপড়জামা বাইরের ঘ্রে রেখে, জীবাণ্নাশক সাবান মেখে

হণ্টাখানেক ধরে স্নাম করে, ভবে **বাড়ীর** জিনবপত্ৰ হাত ঠেকার। ভাইবিকে খুৰ ভালবাসে। অফ্সি থেকে ফিরলেই তাবে কেলে তুলে নিয়ে আদর ব্রত, ভার মুং ২ পকেট থেকে বিশ্কুট কিন্বা অন্য কিন্তু নিয়ে গ_ে'লে দিত। এখন বা**ইরে থেকে** কোনো কিছু বাড়ীতে নিয়ে বার কলাতংকের জীবাণ, কখন খাবার জিনিবের সংগে বাড়ীতে ঢুকে বঙ্গে—এই ভরে ও অস্থির। নিজের অসুখ ভাইবি অথবা দ্বীর দেহে সংক্রমিড হবে,—এ**ই ভ**রে তাদের মন খুলে আদর করতেও পারতে না। জীবন দুঃসহ र स হাসিখ্সি জোরান মানুবট। আমার ভাছে রোগের কথা বলতে বলতে **ভরাত**় বিম**র্থ** হয়ে উঠস। ভার **মংখচোখের চেছারা** পার্টেট গেল। এখন বা**ড়ীর লোকদের** নিরেই ওর যতকিছা দুশ্চিস্তা। ওর জনো **থ্**কু (ভাইঝি) আর বিনীতা **(দ্যী**। পীড়ত হয়েনা পড়ে।

আগের দুটি রোগাঁর এই সংক্রমণসম্ভাবনা-ভাঁতি ছিল না। এই স্তয়টা
মুরারির বিশিশ্টতা। আগের দুখান নিজের
রোগ-ভয় নিরেই অস্থির ছিল। মুরারির
বর্তমান ভর অনাকে রোগগ্রন্ত করার;
বিশেষ করে খুকু আর বিনীতাকে।

আমার কাতঃ যথন এসেছে, তখন নিয়মিত ঘ্মের ওবংধ থাচেছ, তব্ভ ভাল খ্য হচ্ছে না। অফিসে যাজেছে **ভবে কা**ঞ্চ করতে পারছে না। নি**ক্লের অফিলে** (বে সহক্ষীিটকে কুকুরে কামভে, ছিল, তার আর ম্রারির কাজ একই কামরায়) চেরারে বসতে পারে না, টেলিফোনে হাত দিতে পারে না। কয়েক মিনিট **অন্তর রুমালে** হাত মূহতে হয়। <mark>জীবাণ, কোনো পথে</mark> অন্প্রবিষ্ট হল কিনা, এই চিল্চাডেই অস্থির। সকালে বাড়ীর বাজার **করা ছেড়ে** দিয়েছে। বাজার এক দো**কানদারের দে**বভী আছে, (লিউকোডারমা) বলে বাজারে বেভে চার না। শ্বেডী সংস্থামক নর মরোর বোৰে, তব্ও ভর কাটাতে পারে না। সে कि बाज ना रव बनाजरक रहान किछारव সংক্রামিত হয়? **জানে, তব্**ও ভয় পায়।

জনাতংকগ্রন্ড রোগীর লালা বিদ কাররে রব্বের সংগ্যে সরাসীর মেশে, তবেই তার জনাতংক হতে পারে,—এত আমি জাৰি। তবু কেন ভর পাই? সহক্ষীকে সুকুরে কামড়ে ছিল দুই বছর আগে; এখন আর তার রোগ হবার স্দ্রেতম সভাবনাও নেই জানি। তব্ ভর তাড়াতে পারণিঃ मा दिन? वाफी किरत हममा, मनिवाश, রুমাল ইত্যাদি নিয়ে এত বাসত হয়ে পাড় কেন? রোগের ভাইরাস চলমায়, মনিবাাগে ब्रामाल बीएस ब्रामांच, व यंत्रानंत जानगावी চিন্তা মন থেকে তাড়াতে পারছি না কেন?' সব অবসেশন রোগী এই ধরনের চিল্কা করে। ভাতারকে এই রক্ম প্রদন করে। রোগের কারণ, উপসর্গের ব্যাখ্যা না জানা পর্যশ্ত তাদের অস্থিরতা কমে নাঃ টাংকু-লাইজার দিয়েও অস্থিরতা কমানো বায় না। কাজেই জন্যদের মত ম্রারিকেও *অবসে-*শনের শারীরবৃত্তিক ব্যাখ্য ও সম্ভাব্য মনস্তাত্ত্বিক কারশ জানাতে হল। 50 আলোচনার পর মুরারি বেশ খানিকটা আৰ্থনত হল।

অন্যকে রোগগ্রুত করে দেবার ভর, ·aবং তার বির_ন্থে নানারকমের লড়াই ছরোরিকে অস্থির করে তুরোছল। মনের মধ্যে কি কোনো অপরাধের ভাব পোষণ করছে ম্রারি? সরাসরি একদিন তাকে জিল্লাসা করে বসলাম; এমন কোনো কার্ম্ব করেছ কি, বার জন্যে তুমি অস্বস্থিত বোধ করই? নিক্ষের কাছে নিজেকে অপরাধী मत्न एटक् ? मा, ध्रत भ्यताना फित्नत कथा নিরে মাখা ঘামানোর দরকার নেই। কংর দেপেকের মধ্যে বা কিছ্ ঘটেছে, সেই সব মনে করবার চেম্টা কর। এই মর্মে সম্মোহিত অকশায় অভিভাবনও দিলাম अक्रीम्म। मुजाति महरक्षरे मस्माहिक हन। অবশ্য অভিভাবনের কোনো প্রয়োজনই ছিল না। খটনাটা ম্রারির স্মৃতিতে বেশ উল্লেখন হয়েই জেগেছিল। বলবার ইচ্ছেও হতিহল, লক্ষার ধলতে পার্রাছল না। আমার দিক থেকে উৎসাহ দেখাতে খোলাখনি ঘটনাটা বিবৃত করল। ৰলবার সময় বরাবর **७ मण्डात प्र**्थ सिंहू करत ब्रहेग। **थ**्य আশ্তে, অনক্ষে **ল্বনে জানাল** সেই অধঃ-পতনের কাছিনী। কোলকাভার বাইরে এক মাঝারি শ্রেণীর ছোটেলে মাত এক-ক্রান্তর কথা। সে রাতে ওর মাথায়, ম্রারি বলল, হুইদ্বিদ্ধ বোডল থেকে ছিপি গোলা পেনে, সৰ্বদেশে সেই দৈত্যটা চাকে পড়ে-ছিল। করেক **হণ্টার জন্যে বাইরের কড়ে**র नशरण भाष्मा पिरत, खत्र माथात्र मरशा, अत মনের মধ্যে, ওয় গেছের ওপর দিয়ে বড় করে লেল। অভাবনীর, অভিন্তানীর প্রকোপ সেই বড়ের। করেক ঘণ্টার মধ্যে আমাব সতা বিধনসভ হয়ে দেল। এই প্রথম, এবং এই শেষ; এরকম ঘটনা আমার জীবনে আর ৰটবে লা। এই হোটেলের ছারা আর बाज़हीन, माज़त्वाल ना।

কিশেব নাউকীরভাবে ঘটনাটা বিব্ করল ম্বারি। বেরেটি কে? এই প্রশেনর উত্তরে কিছুকণ চূপ করে বেকে বলল বে, অনেক দিল থারে মেরেটিকে ও চেনে। ওর ক্রুমেনালীর হোটেল-বালিকের ক্রী। সেই রাজের আলে কোনোবিদ ও ভাবেদি বে ওর এই ধরনের সংপর্ণ গড়ে উঠতে পারে।
বংধরে অনুপশ্চিতার সুযোগ নিরে ও কাঁ
করে এই ধরনের ঘ্লা কাজে লিক্ত হতে
পারল? সেই থেকে ভর, লক্জা, ক্যানি ও
ঘ্লায় মুরারি অস্থির হরে পড়েছে। এই
সব ব্বগতোত্তির পর সেদিন বেশ উর্জেজভভাবে ও আমার ঘর থেকে বেলিরে গেল।
ঘটনটোর সঠিক তারিথ বলতে পারল না।
এমনকি, জলতাংক ভাঁতি আগে না এই
ঘটনাটা আগে; তাও ষদে করতে পারল না।

দিন তিনেক পরে ম্রারি এসে করেকটি
নতুন তথ্য সরবরাহ করল। জলাতংকের ভর
সবে মনে চ্কেছে, এমনি সমর হোটেলের
ঘটনাটি ঘটে। তার অবসেশনের মৌল
কারণ ছিসেবে এই ব্যাপারটিবে
গ্রহণ করা চলে না। তবে জলাতংকের ভয়
এর করেক সশ্ভাহ পরে থেকে খ্রু বেডেছে,
এ কথা বলা চলে।

পরের দিনই ও ছোটেল থেকে, এক-বকম পালিরেই কলকাভার চলে আসে। এই ব্যাপারের পরে যৌদ ব্যাধির তাড়নায় জলাডংক-ভীতি অনেকটা নিম্ভেজ হয়ে গেল। পারিবারিক চিকিৎসককে কোনে। জানাবার সাহস হল না। কছ, হাসপাতালের আউটভোরে এবং দু চারজন অপরিচিত ভারারের কাছে গিয়ে প্রসাধ চাইল। করেক সম্ভাত ধরে যৌনব্যাধির ভর ভূতের মত ওকে ভর করে রইল নানাভাবে রম্ভ পরীকা করা হল, স্মন্যানা পরীক্ষাও বেশ ঘটা করেই চলতে থাকল। সব প্রীকার যম নিশ্চিতভাবে জানিয়ে দৈল বে ম্রারির দেহে যৌনবাধির জীবাণ্,-গাইরোকিট, করাস,—কিছ্ই অনুপ্রবিন্ট হয়নি। স্পতা তিন চার পরে ধীরে ধীরে এই ভয়টা কমতে থাকল। কিন্তু অন্য ভয়টি মাথা চাড়া দিয়ে উঠল। জলাতংকের ভয় এবার ভীরভাবে দেখা দিল।

ডখনও প্রফিত মুরারির দুটি আভি-ব্যবিদ্য **কথ** খ**্ৰে পাছিলাম** না। তার মাধ্যমে অনোর দেহে রোগ-সংশ্লমিত হবে,--এই ভর কেন? আর একটি ব্যাপারণ একট্ অস্মৃত মনে ছাজ্জ; 'নৈতিক অধঃ-পতনের' উপর জতি গরেকে স্থাপনেরই বা কারণ কি? আজকালকার ব্রক্দের মধ্যে যৌন ব্যাপারে নীডিবোধের খুব**ই কম। রঙ-বেরজ্পের** সা**ইক্লাজির প**র-পাঁৱকার এবং বৌল বিকারগ্রস্ত নারক-নারিকা নিমে লেখা গণ্প উপন্যাসের চাহিদা থেকেও এটা ৰোকা বাছ। জানেক রোগী মিজে খেকেই ঘৌন-জীবনের ইভিহাস বলতে থাকে, ভাদের মধ্যে অনেক সময় নাটকীয় ভাব, বাহাদঃগ্রিয় ভাবও দেখতে পাই; কিন্তু ভালের বেশির ভাগই পর-নারীতে উপগত হওয়া ব্যাপারটাকে খ্র সহজভাবেই গ্রহণ করেছে মনে হর। ভারারের কাছে বেশ রসিলে বৌন্দীবন च्**रल श्व**नात कन्छे। क्रता। निकेरवाजिएन সংগ্রে বৌন-জীবদের নিগঢ়ে সম্পর্ক আচহ-এই চলতি ভাৰত লাম্ভ বারুলা খেকে তারা বৌন-ইভিহাদের বিবরণ দিভে व्याश्रमी ७ छेरमामः। स्वर्गमा काम् स्मरतहे দেশা বাদ্ধ বে মনোবিকারের সংশে এই সং
ইতিবাসের কোনো প্রভাক বোগাবোগ নেই।
পরোক প্রভাব বিশ্তর অবশ্য অনেক সময়
করতে পারে। তবে ভাদের মনোবিকার
বতী তাদের বোনবিকারের জন্ম লালী,
বোনবিকার মনোবিকারের জন্ম ভাতী লালী,
নয়। এ আলোচনা বান্ধাতির ক্রবার ইজে
রইল। যাক, বর্ডামান প্রসংশাই আবার
ফিরে আসা বাক।

অনাকে সংক্রামিত করতে পারি, এ ভর্ম
অপরাধ বোধেরই অভিবাজি। ছোটেলের
ঘটনাটি কি এই অপরাধবোধের জন্য দারী?
না, আরো কোনো কারণ রঙ্গেছে এই
অপরাধবোধের মূলে? ছোটেলের ঘটনাটিকে
একট্ বোশ গ্রুত্ব দিরেছে কি মুরারি?
তার কারণ কি? অপরাধ্যন্যক্তা নর ওঃ?

হোটেশের সেই রাতির দ্বলিতা প্রকাশের জনো নিজেকে এত বেশি জপরাধী भ्रताति वनम रेष वन्ध्रानीत छत्रकः स्वरक নিমশ্রণ আসে মি, ইশারা ইপ্সিতেও নর। সেই প্রোপ**্রি দারী। সে বে বন্ধ্রপদ্ধীর** দেহশ্রীর প্রতি আকৃণ্ট হবার ফলেই এই অবা**হিত ব্যাপারটা ঘটেছে, তা মর। অন্য** একটা তাগিশও ছিল। সে জানতে বা ব্ৰুখতে চেয়েছিল ভার যৌবন নিঃলেষিত কি না? স্থারি কাছ থেকে সে সঠিক খবর জানতে পারে মি, কেননা স্থাী লাজ্যক এবং অতিমান্তায় তাপহীন, শীতল। সন্দেহ এল কেন? ভারারদের কথা থেকে। অনেক্রীসন বিয়ে হয়েছে অথচ সম্তান হচ্ছে না; —এই উদেবগ অনেকদিন ধরে পর্নীভৃত কর্মছল। বয়স প্রায় পঞ্চালের কাছাকাছি ছতে চলল। তাই ঠিক করল, এর কারণ নিয়ে এখার ভালরকম অন্সম্থান চালাবে। স্থাকৈ মামা-ভাবে পরীক্ষা করে ভারাররা রার দিংগেন বে ওর সম্ভানধারদের ক্ষমতা প্রেলপ্রির আছে। বন্ধ্যাদের কোনো লক্ষণ ভাঁরা ওর মধ্যে পেলেন মা। তারপর চলল অন্সেশ্বাম পর্ব ওকে নিয়ে। মারানির সম্ভান-উৎপাদনের ক্ষমতা আছে কিনা, ভার বীৰে' यरथण्डेत्रश्थाक भाकाना आरह किना, जम-গ্ৰনিৰ যথেষ্ট মান্তায় সচল সন্ধিয় কিনা?---এই নিয়ে ল্যাবরেটরিতে বীর্য পরীকা रल। भरीकाद रुल जानान्त्भ रुल मा। ব্য-ভারারের পরামর্শে এইসব পরীকা-অন্সন্ধান চলছিল, ডিনি রিপোটটা দেখে ভূর্ কেচিকালেন। ওর জ্ঞা কিছু বীর্ঘ-वर्षक अवस्थ विदर्भ मिरणना। अवस्थ द्वान ? **তবে कि**—? ना, **एकम क्लिइ मन्** —ভাতারবাব, আম্বাস দিলেন। **মোটিলিটি** ঠিক আছে তবে সংখ্যার ছেল শলেন্ সামান্য किए, कम महा इत्तर । ভाषात्रवादात्र এই কথার মুরারি চোধে অন্ধকার দেখল। কিন্দু ল্যাবজেটরির ভাতার বলল কেন যে সব ঠিক আছে। এই ব্যাপারে তাম জ্ঞান 🕏 চিকিংলক ভাতারবাবরে বেকে বেলি:। এইসৰ চিম্ভা করেও হডালার ভাব ্ব पर्निक्कारक गर्ब क्या रचन मा। शरबंद्र निम পরিবারের পরিচিত ভারতের কাছে গৈরে

and the second second

সব কথা 'খ্লে বলল। তিনি রিপোটটা দেখলেন. টেলিফোনে ল্যাবরেটর ব পরীক্ষক-ডাক্তারের সংক্র कथा बन्दिन्। ম্রারিকে রীতিমত কঠোরভাবে ভংসিনা করলেন। কেন সে সব ব্যাপার ও'র কাছে থেকে গোপন রেখেছে? ল্যাবরেটরিতে ফোন করে জেনেছেন যে জার ধারণা 🏓 পরীক্ষকের ধারণা হ্বহ্ এক। ম্রাদ্রির কোনো 'ডিফের্র' নেই। চিল্ডার কোনো কার**ণ নেই। তবে '**কনফার**মেশনের'** জনো আর একটি ল্যাব্রেটরিতে পরীক্ষা করাতে বললেন। সেই ল্যাব্রেটরির পরীক্ষার প্রায় একই রকম রিপোর্ট পাওয়া গেল। সংখ্যার দিক থেকে সামানা কিছ্ কম, কিন্তু এর জনো সম্ভান উৎপাদন আটকাতে পারে না। ভদ্ৰাক অন্য দিক দিয়ে কিছু জিজ্ঞাসাবদ কুরকোন। প্রশনগালো যৌনশান্ত (পোটেনাস) দং<u>কা</u>দত। যদিও মুরারির 'পোটেন্সি'র এবং আকাজ্ফার কমতি ছিল না় কিল্ড ডাক্তারের প্রশেনর উত্তর দিতে দিতে **তার** মনে হল, যে সে নিবীৰ না **হলেও** নিঃসম্পেতে আক্ষম, শক্তিহীন। **ল্যাব্রেটার** রিপোর্ট থেকে মনে যে উদেবগ চ**ুকেছিল**, এবার সেই উদেবগ আতংক হয়ে ভাকে আবিষ্ট করল। ভয়ে আ**ত্তর হয়ে পড়ল** মুরারি।

তার অক্ষমতার জনোই সর্গতাম হক্ষে
না। এই সংশ্বহ তাকে প্রের বসল।
নিশ্চরই, পারিবারিক চিকিৎসক তাকে
প্রেক্তাকবাকের ভোলাতে চেরেছেন, ল্যাবরেটার
পরীক্ষকরা একট্র রেখে ডেকে করা
বলেছেন। তারই দোষ। তারই জন্যে প্রী
স্বতানের মা হতে পারছে না। মা শা হতে
পারা নিশ্চরই স্থাীর পক্ষে মুমান্ডিক
বেদনাদায়ক। স্থাীর মনোকন্টের জন্য সেই
দায়ী। স্থাী অনেক বোঝাতে চেণ্টা করল।
মারারি প্রথম দিকে কিছুই ব্রুগ না।
সভিটে হয়ত অফিসে চাকরী করা দেরেরা
স্বভান ধারপ ও পাল্নের হাল্যামা

পোরাতে চার না। প্রথমদিকে স্থার অনুরোধ ও নির্দেশে তারা নানাভাবে মিরুল্যদের চেন্টা করেছে। স্থার দাভিস্তার জারণই হরত এই সম্তান ধারণের ভর। নিংলকে নানাভাবে আম্বাস, দিল্ মুরারি। উদ্বেগ-আতংক অনেকটা ফোক্রের জার্ম্বার। উক এমনি সমরে সহক্ষপিকে কুকুরে কার্ম্বারা জলাতংক রোগের উপস্পর্গনিমে অভিস্কে স্ক্রেলার ক্রিক্রান্ত ক্রিক্রের ক্রিক্রান্ত ক্রেক্রের ক্রিক্রান্ত ক্রিক্রের ক্রিক্রান্ত ক্রেক্রের ক্রিক্রান্ত ক্রেক্রের ক্রিক্রান্ত ক্রেক্রের ক্রিক্রান্ত ক্রেক্রের ক্রিক্রান্ত ক্রেক্রের ক্রিক্রান্ত ক্রেক্রের ক্রেক্রের ক্রেক্রের ক্রিক্রান্ত ক্রেক্রের ক্রের্নির ক্রের্নের ক্রেরের ক্রের্নের ক্রের্নের ক্রেরের ক্রের্নের ক্রের্ন

থর জীবনের এই কাহিমী শোণার
পর ব্রুডে পারণায় তার অপরাধ্যন্যতার
কারণ। প্রেরা বছর বিরে হরেছে, এর
মধ্যে স্টাভে স্পতানের মা করতে না পারার
ম্রারি নিজেকে অপরাধী মনে করে
আসাছল। মিজের অক্ষমতার চিশ্তা
জলাতংকের চিশ্তার মিশে বাবার পর
অপরাধ্যাধ অন্য প্রে আত্মপ্রকাশ করেল।
স্টাকে হরত কথ্যাছ রোগে সংক্রামিত
করেছে, এই চিশ্তা পরবতীকালে স্থাকে
ছরত- জলাতংক রোগে সংক্রমিত করিছে,
এই চিশ্তার র্পাণ্ডরিত হল।

বন্ধন্তানি সংশ্ তাবেধ সংশ্ক শুলাপ্নের মালে ছিল অক্ষমতার পর্ন ছীমমনাভা নিরসনের প্রচেটা। সে জানতে বা ব্ৰুডে সেরেছিল বে তার বোবন দিগ্লেষিত কিনা? সে বে নিবীর্বা ঝা বোমশ্রিছান,—এটা বেমন সে বিশ্বাস করেছিল, তেমনি আবার এই অপবশ, এই কলকে প্র করবার চেটাও চলঙ্গিপ মানসিক শতরে। বন্ধ্পত্যী সেই ঝারে বতটা তার ছীন্মমন্তার শিকার হরেছিল, লালসার তেটা নর।

নগ্ৰেত্তীতে উপগত হবার পর যৌম-ব্যাশির ভরে দে অভিভূত হল কেন? कथ्नाति एम जानकिम्म थरत जान, यन्ध्रतक्थ ভागভाবে क्रांस। मुख्यानद्रहे নৈতিক চরিত উচ্চস্তরের, তালের মৌনব্যাধি থাকার কথা দর। এটা কি জলাতকে ভরকে আর একটা ভর দিয়ে अन स्त्रवात छन्छ।? **এ**क कि एमटक धारी कारक के मन वना চলে? নিবীর্বতা বা বৌনশ্রিছীনতার ভর बनाउरक्त छत्र,—दाहेगां द থেকে প্রজেক্শন। জলাতংকের ভর থেকে যৌন-ভয় সফেন্ডারী প্রজেক্তান বাহির অব্দেশনের পরিধির একে অথবা বৈস্তার ও র্পাণ্ডর ব**লে ধরব**? भारतात थात्रगा**णे**हे जठिक वरण शक्त इस। रक्मभा आद्वा किश्नीमन भरत निष्ठ-কোডামার এবং ফুওরোগের ভর ওকে আবিশ্ট করেছিল। এরকম আভংকের র্পোন্তরণ অন্য রোগার বেলাতেও रगरह ।

প্রাথমিক তর সত্তান উৎপাদনের অক্ষমতার দর্নে ভরের গৈছনে ছিল প্রে নামক নরক থেকে গ্রাণ মা পারার তর। মন্ পরাশনের দেশে এ তর এখনও বিদ্যান।

ব্যাখ্যম্ভাক সাইকোখেরাপি এবং সম্মেহিত অবস্থার অভিভাবদের সাহাবের ম্রারির খানিকটা সম্থ ইরে ওঠে। ম্রারির লটা এই সমর অভ্যাস্থা হর। এই ঘটনার পর ম্রারির জলকংকের ভর ও অসানা রোগের ভর করেছ সম্ভাতের মধ্যে একেবারে দ্র হরে বার। রোগ-নিয়ামরে, খামার মনে হর, এই ক্ষেচে প্রভৃতি আম্লা চিকংসকের কাল করেছিল। লটা অভ্যাস্থা না হলে ম্রারির সম্পূর্ণ আরোগা হত কিনা, সে বিবরে আমার ব্যেণ্ট সম্প্রুছ

-बार्मावर,





(अशासा)

হালৈ শৃষ নিরেই ওয়েটিং রুম থেকে হেবিছে এলেন কর্নেল নীলাদ্রি সরকার। জিলেনসপত্তরে সময় তাঁর উপস্থিতি প্রতিশেষ বাছনীয় না হতেও পারে।

আৰু সেটা টেরও পেলেন যেন। তাঁকে বৈরিলে আসতে দেখে ওারা কেউ কোন আক্রেণাও তো করলেন না।...ওরেল। প্রিলিশ সোজ দেরার জব।—মনে মনে একথা ভারলেন কর্দোল। আরও ভারলেন, গংত জ্যোহে বৃগতে হয়। উভিয়ে দেবার মত তথা লোহে বৃগতে হয়। ক্রেণা পোস্টমটম বিশ্বের আরু ফোর্সানক এরপাট্দের বিশ্বের প্রাক্তির প্রাক্তির বাক্রের বাক্রের প্রাক্তির বাক্রের বা

হবে। ওর বাঁচোয়া নেই। তবে হঠাৎ ওই অধ্যাপকের রক্তমাথা চাদরটা এসে গ;়ুস্তকে ভ্যাবাচ্যাকা খাইয়ে দিয়েছে। এ আক্রমণ অভাবিত ছিল। শেষ অধিদ সতাজিৎ গৃংত এটা রুখে নিয়ে বলছিল, চাদরের রক্ত যে কংপ্নার, সেটা আইনত প্রমাণ করার মত জোর কোন ডাক্তারের নেই। অধ্যাপক যদি এটার সংগত ব্যাখ্যা দিতে পারেন, তাহলেই আইন খুসি। বিছানার চাদরে রস্ত। তা নিজেদেরই রম্ভ হতে পারে। অবশ্য রান্তর গ্রুপ রয়েছে। কিন্তু তা দিয়েও আইনত কোন ডাইরেকট প্রমাণ হয় না। যে খুন হয়েছে তার রস্ত ফদি বি গ্রুপের হয়, যাকে খুনী বলে সন্দেহ করে তার কাপড়ে যে রক্ত পাওরা গেছে তাও যদি বি গ্রুপের হর— বড়জোর সেটা হবে পারিপাশ্বিক সাক্ষার ভাল্ডগ'ত মাত্র। চিকিৎসা-বিদ্যা এক্ষেত্রে নাদর। খুনী আলিবাই দিতে পারে নানা-

রকম। এবং অজস্ত্র মানুষের গারেও বি
গুণ্পের রহু রয়েছে। তাছাড়া...গণ্ড আরও
বলালুল, সম্প্রতি আ্যামেরিকান দেশরসেনিক এক্সপার্টরা আরও সমস্যার সম্মুখীন
হারছেন। মানুবের সমজাতীর প্রাণী অথাৎ
গরিলা, বানর ইত্যাদির রক্তর সম্পো
মানুবের রক্তের পার্থক্য টের পাওরা কঠিন
আছে: খুবই নিপুণ বিশেলবণের ফলে
প্রুব-নারীর রক্তের পার্থক্য নিগার করাও
কিছুটা সম্ভব—কিন্তু সব ক্লেরে নয়:নানা
বিষয় বা অবস্থার ওপর নিশিচ্ড সিম্খান্ডটিল
লির্ভার করছে। কাজেই আইনে এপালো
কোনটাই ভাইরেকট এভিডেম্প নয়:
প্রফেসর-ফ্যান্টটের ইক্ত নাথিং।

ভাঠিক। গ্লেডর মধা আছে। অভিজ্ঞতা আছে। কর্মেল ভাবলেন।...কিন্তু তা সত্ত্বেও একটা ধাধা থেকে বাক্সে তার নিজের মনে। তার একটা হচ্ছে, গত রাতে

रखाना शरक कार्य **जन्मक र**णावर्गित व्यक्तिय अपर नक्तामा। क्रम श्राटक वनकी श्रीकृतिकार विका स्मर्यास्त्र । की विका **७८७ : न्यिकीय नात्माद एटम् । टन**ऐ কবিতাটা। ভোষা, ইরেন, গ_্ত ভিক ৰ শক্ষেপ, জোৰা ইজ দি ভাইটাল পৰে-ট তৰ বি ভেস। ভূতীয় ব্যালার ঃ হোটেলে ক্তব্যুক্তে অক্ত চুরির ঘটনা। স্বাতীর একসাটি বুডো সেল বিভাসের বাঘটবে। ৰজ্পন্ত উৰ্ভাস হায়াল। চীনা নৰ বিহৈত্য । উপেৱাশটা কে স্বাভীর ব্যাগে 🎮 দিরেছিল। পরে ছবি চুরিত্ন রাজে শূলক্লেখ সেটা ফেব্ল খোওয়া গেছে। ভার-রি <mark>হল মিসেস ব্যানাজির গ্রেলেবের ছবি</mark> ক্ষা লে ছবিটা পাওয়া গেল তার স্বামীরই ন্ত্র বিচিত্ত সব ব্যাপার।

্ৰীটাৰ ক'ৰ্ম'ল চমকে উঠলেন।...মাই ্রিক্স : সি^নড়ির মাধার নাকি একটা কলার প্রভেছিল—সাত ভারিখ রারে। **াতীর** ধারণা তার পিছন **থেকে কে** 🗮 🕶 ৫টা ছ- ডে দিয়েছিল। তার 🕩 লে 🐃 🐂 শ্লিপ করে গড়াতে গড়াতে **্লিশীক্ততে প**াড় যায়। কী উন্দেশ্য ছিল **এর গৈবনে?** স্বাতীকে ওই আশ্চর কৌশলে কি **ভেউ খ**ন করতে চেরেছিল? খনে ৰৈকি। স্বাতী ধ্ব শৃৱস্থৰ খেলোয়াড় स्मारक मा इतन **अठ छे** द्वारक श्रीकृत নীত পঞ্চলে নিৰ্যাৎ ভাষ লাঙ্স বা হাটে গুরুত্তর আঘাত লাগত। এই সৈকেল নহাৰী বাড়িগলোৰ প্ৰতিটি ডলা দায়্ৰ উ'দু—**ইটালিয়ান স্থাপতে**র **থাঁচে** তৈরী। লেডালা থেকে একতলার পড়লে কারো হাড়গোড় আম্ত থাকবে না।

কী উন্দেশ্য এর? প্রণয়ৰ্টিত ঈর্বা? কিন্তু ভা বলি হয়, তাহলে ভোবা প্রসশ্য অবাদতর হয়ে পড়ে।

মাং, ডোবা ইজ দি ওমলি ফ্রাওখানেই সব ধাধার সমাধান লুকিয়ে রলেছে।......

বারাল্যার দ্-প্রান্তে দ্ব্বন করে চারজন সেপাই দাঁড়িয়ে রয়েছে। কনেল নিজের ঘরে গেলেন না। সোলা ডাইনিং হলে ঢ্কুলেন। দেখলেন অধ্যাপক মাথা ঝুলিয়ে দিয়ে নিবলা মনে ধ্তির পাড় খুণাছেন। জানালার পাশেই তার চেয়ার। ভদ্যালার গ্রথনও ছব্ত টের পানিনি—তার কীর্তি প্রিলেশের ক্রারস্ব। বেচারা!

থামের পাশে চীনা মিত একা। কনেল তার কাছেই গোলেন। তান্ত কতে বলালেন হ্যাক্রো গালা। ভোল মাইন্ড। বসছি।

না, না। বস্ম। চীনার উদ্দিশন মুখটা বদলে গেলা। প্রশাসত হাসিতে ২ র উঠল আবার।...কৃষি-বলছি। এক মিনিট।

চীনা উঠে দেল কিচেনের কাউণ্টার। কনেল চারপাশটা লক্ষ্য করাছলেন। বিভাস

हाला शनाव नौरवस्त की त्यावाताव छन्छ।
करावः। नौरवस्त्व ग्रूपणे कृशीक्ष त्यावाद्यः।
कावव्रका माना। भावात हुन विमान्त्रका। ध्व किर्देशक माना। भावात हुन विमान्त्रका। ध्व किर्देशक माना गाँछ त्या ग्राणवा। ध्व करित येण पाछा हरत त्यादः। अभारम त्यान-मानीण त्याव भावा हरत पाठावः। ग्रूप नौष्ठ कर्त की स्वादः चान्कक्ष्यः। मीर्ट्यान मानामाना वाहरतः। च्याणी जात मारवानम् छ। हाना शनाव की यनाव्यान करातः।

কী দুক্তালা বেচালাদের। প্রমোদক্রমণে এলে বিপদে পড়ে গেছে। কর্মেল বাস্তকটে বলে উঠলেন, আনে, আর! তুমি নিজেনিয়ে এলে বে! গুরা স্ব কোথার?

চীনার ছাতে ট্রে: কফির পট। কাপ? মৃদ্যু হালল লৈ।...

সামনাসামনি বসে দ্বানে কফি থেতে থাকল। কর্নেল বললেন, এবার ওদের ডাক স্বা হবে। দেখা বাক্ কার ঝ্লি থেকে কী বেরোয়।

চীনা বলল আপনাকে বলা দয়কার---
থকটা আগে লক্ষা করলায় প্রফেসর ক[†]

থকটা...

কর্নেল হাত তুলে বাধা দিলেন।...জানি। একটা রক্তমাথা চাদর ফেলেছেন। সেটা প্রলিগের হাতে চলে গেছে।

চীমা চমকে উঠল।...আশ্চর্য! প্রফেসর ব্যানান্ধি...সে নির্বাক হরে গেল হঠাং।

কর্মেল আরো চাপা গলায় বললেন,
কাল রাত্রে ডোনার ধারে যে লোক¹³
এর্মেছল তোমাকে তার কথা থাগেই
বলেছি। তুমি বলছিলে বে সে প্রফেসরের
জনোই ওথানে এসেছিল। কেন একথা
তোমার মাধায় এসেছিল?

চীনা তীক্ষাল্ডে তাকাল। একট্ খ্ৰাক্ত বলল, ওার মাধায় প্রোভত্তের বাতিও আছে। সম্ভবত উনি ম্লিগাবাদের নবাবী মহাফেক্সখানার কোন বিশেষ দলিল হাতাতে চান।

कर्त्नन भाषा स्तर्फ वनःनत, बाहरे, बाहरें।

দৃশ্বনেই অবদ্য খুব চাপা গলার কথা
বলছে। মাছের লোকদের পক্ষে তা শোনা
বা বোঝা বেশ কঠিন। চীনা বলতে থাবল,
আগের রাতে কে নীচে মেইম স্ইেচ অফ
করে রেথেছিল। তারপর নাকি বাহাদ্রে
গ্যাথে যে প্রফেসর ব্যানাজি স্বঞ্জনবাব্র
দরজার দাঁড়িয়ে রয়েছেন। আমি বাহাদ্রেকে
জিগোস করেছি সব। বাহাদ্রেক থাকা
প্রফেসর বাটার পেকে এস্ভিকেন ফন—
বার মানে ওপারর সিণ্ডি বেরে নামেনাম।

ভাই না∳?

হান। সেন্দিন ভারিশ ছিল ছিল্টু আট ফেরুরারি। সেই কবিভান নীতে লেখা ভারিশা

देतान, देखन।

হে কোন কারণেই হোক, নৈ নারে কারণিপিথ হর্মন। কারেই পানের নারে প্রক্ষেসরের ওখান পেশিহনের কথা ছিল। তার মানে গত রাতে।

হাাঁ, গতরাত্রে তাঁর বদলে আমি শিবনে হান্তির হলাম। কর্নেল একটু হান্সলেম।... এদিকে শুভ খুন হবার সংশাদে প্রফেলন থার সাহস পেশুলম মা বেরোমন্ত্র।

ইনি বুচকুঠে কিন্মিস করে বলল,
কর্মান বিন্ধানিক করি বাবিরেছিলেন।
ক্রান্তরি বর্মানিক করিছিলেন তো বেরিরে
গেলেন। তার্মানিক তিনি কেনার ছিলেন,
আমরা জালি না নিজেন হার ছিলেন ক না—এর কর্মান কর্মান বলবেন না। প্রামানে গোলার ধারে পোছনর পর ক্রান্ত লোকতির দেখা পেলেন না। তথ্ন...

ক্ষেত্রি প্রথম কর্মের, ক্ষেত্রমার ালান্দ এল ক্ষেত্রেকে? কে স্থানকং?

বিলাছি। রঙ্গালা চালনৈ সূচটা আঘার সব বাঁলার সাল্লাধানা ভুরেছে এতক্ষণে। ক্ষণপানা কাল কোন সাল্লাধানা করেছে। কেরতায় কোনকে হাতানোর বড়বলটা কানকে পেরেছে। ওই কবিতাটা পাভুতর ছড়ো কারো লেখা নয়। অধ্যাপককে নিয়ে এমন তার্যাশা শুভর মত সরল বোকা ছেলের পক্ষে খ্বই সম্ভব। শুভ যেম এই কবিতাটা রণিয়ে বলতে চেয়োছল, অধ্যাপক মশাই, সব জানি আমরা! বাস, অধ্যাপক ভয় পেয় গেলেন। এবার পরপর সাজিরে যাছিছ ঘটনাটা।



रमक्षकाम म्यूचरनत्र शादा পিছন-পিছনই ৰেন্দ্ৰিয়ে বান গতকাল। পৰে বলছিলেন, বামনাৰ পৰে - গিবেছিলান। - ওটা - মিথো। **एका 'दियाजाव अत्मन्न भारता क्वीब्राजन।** আধারগহল আমি দেখে এসেছি একদিন। शहर क्रमान चारक हात भारता दिया काम काकामाञ्च मीकृत्म दक व्यक्तः त्वरमाञ्च করা বার। দেবতোব ওখানে যেভাবে হোক ঢাবে কাছ শেষ করে এই জলালের ভিতর দিরে ফিরে আসেন। বিড়বির সি⁴ড়ি ছক্তে रक्के भथ। এक मिनिए न्यस्य करत्र निष्टे, ভখন কে কোধার ছিলাম ৷...হারী, আপুনি ছিলেন আমার খরে। আমরা ছবি নিরে আলোচনা কর্মছলাম। দরজার পদা আছে বাইরের কিছু দেখা বার না। স্নানেকারের নীচে থাকবার কথা। দিবোলা স্বাতীর ছরে। বোসবাব্রা**ও** নিজের ভ**ছরে। বারাল্য** र्याका। कन्नना...कन्ननात्क निरक्षत्रः धरत्रहे পোরছিলেন-কারণ বারান্দার খুন করা সমভব নর। কেউ টের পেরে বাবে। শ্ভেদের ঘরে তালা দেওরা ছিল নিশ্চর—কারণ, ওরা বেরিয়ে গেছে। এদিকে অশ্ভূত চুরির ব্যাপার চলছে—যার ফলে ওরা সতর্ক ছবেই। দিব্যেন্দ্রে কাছে আলাদা চাবি ররেছে।... চীনা কফিতে চুমূক দিয়ে ফের বলতে थाकन।...वनरवम, नदौत्र जामस्य भूम क्या কি সভব হল?ুআমরাজানি; মিসেস शामार्कित किछोद अनुभ नरतरह। भूत;-লেবের ছবি চুরির ফলে ভরণ্কর শক থেরেছেন ভদুমহিলা। এধরণের ধর্ম-বাতিক বাদের আছে, ভাদের স্বভাব আমরা জামি। বাই ছোক, কল্পদাকে খুন করে দেবভোষ ভই চাদরে জড়িরে—ধর্ন, খাটের নীচে চ্ছ ক্রে রাখলেন।...জাস্ট এ মিনিটা বলে চীনা করেক মৃহ্ত ছেবে নিয়ে ফের বলল আমার ধারণা কম্পনাকে ভার ঘরে আসতে বর্লোছলেন দেবতোবই। তার আপ ক্ষীর কাছে ব্যাপারটা গোপন করবার জন্যেই গ্রের্দ্বের **ছবি চুরি করেছিলেন নিজে।** তিনি জানতেন, এ-কাজ করলে মিসেস ব্যানাজির জিটো জন্ম বেড়ে বাবে। উনি অন্তান হয়ে পড়ে থাকবেন।...

কর্মের মৃদ্ধ মৃদ্ধ হাসভিলেন। এতক্ষণে বললেন, তোমার ছবি ছুরি কে ক্ষল? ক্ষণনার ট্রারাণ? স্বাতীর জ্বতো? ক্লার খোসা কৈ ছুক্টেছল স্বাতীর পারের সামনে? আন এই মিলেস বোসের চুলইবা কে কাটল?

ত চীনা নিশ্বিষয় জবাৰ দিল, সৰ—সৰ্বই প্ৰফেসনের ক্যিতি।

বাট ছোরাই?.....কর্মেল ঈবং বংক্রেনে টেবিলে। কের বললেন, কেন?

চীনার সোলা জবাব।... আমানের তর পাইরে দিতে চেরেছিলেন। আইদার আমরা হোটেল ছেড়ে বাব চটপট, অর শেকি হরে পড়ব—সন্ধার পরই বে-বার ছরে ড্রুকে থাকব। চুল কাটার বাাপারেই মতলবটা স্পন্ট হরেছে। ভূত-প্রেডে নাকি এমান কাল্ড করে থাকে। ছিলাদের এমান কাল্ড করে থাকে। মহিলাদের এমান করে চুল কাটার ঘটনার সপ্পে ভূত-প্রেডের কিংবদশ্ভী ওতপ্রোত হুড়ানো। বাজেই নবাবী প্রাসাদের ভূতের আমরা পালাব—এই ছিল ও'র ধারণা। জারগাটাও তো বিশেষ করে ঐতিহাসিক—আই সে, ক্র্বিড পারাণ।

চীনা হাসল। কণেল চোথ বুজে দ্নে-ছিলেন। এবার বজলেন, কিণ্ডু আমি কাল সকালে বখন ডোমার বারে ছিলাম, কণ্ণনাকে গিড়বির সিণ্ডিতে নামতে দেখেছিলাম। ডোমাকে কলেছিও সেকথা।

চীনা সংগ্য সংগ্য স্ত্যাবাচ্যাকা খেল।... ডাইতো! ভূলে গিরেছিলাম কথাটা।

কর্নের বললেন, তোমার কাপনার বাহাদ্বির দিছি চীনা। অবেটিভ বলছি না, কিন্তু প্রমাশ-সাপেক।

চীনা চিন্তিত মুখে বলল, ধর্ন, কল্পনা কোন কারণে নীচের বাগানে গিরেছিল তারপর ফিরে এসেছিল। এবং প্রফেসরের কথানত তাঁর হরে গিরেছিল।

দ্যাট ডিংগন্ডস। নো এভিডেন্স। কর্মেন মাখা দোলানেন।..প্রমাণ কী?

চীনা মিত্র মুখে অসহারতার ছাপ।
সে কলল, কিন্তু অধ্যাপককে সন্দেহ করার
হলেন্ট বৃদ্ধি আছে কি না! তাঁর হোজুস
অপারেন্ডি আমরা জানি না বা ধরুত পারছি না, কিন্তু ওদের দৃজ্জনকে খুন
করার পিছনে একমান্ত তাঁরই বংলুকী মোটিভ
রয়েছে। খুব সংগত মোটিভ।

জা আছে। কিন্তু মোটিভ তো নীরেনেরও বেশ সপাত।

की स्मिछे।?

প্রতিহংস। চারতার্থ ।

চীনা বলল, আমিও জেবেছিলাম সেটা। প্ৰাচীয়া মুখে প্ৰদেষি, ও হংকা প্ৰাচ্ মুখ্যান টাইপ হেলে। জাল্ট আন ইন-টোলেকচুৱাল মুখ্যান। প্ৰেলিকের খাডার ওর নাম আছে। বা ক্লেছে, এমন জবলা ক্লিকেট্য

সৰ্বনাৰ! কৰেল আঁতকে উঠলেন। ...ভাহলে ভো প্ৰিলপের সিখ্যানত আরও শতু হল। যে গড় শেভু লা প্ৰেণ্ডৰ বন্ধ!

ক্ষিত্র আমার বিশ্বাস, সে থ্ন কর্মোন। ওই ডোবাটাই হচ্ছে আসল রহস্যের উৎস।

করেল তীক্ষাদৃল্টে ওর দিকে ভাকালেন।....জামানও তাই মত।

কাল রাজে ভোবার থারে আপনার ৩ই অক্তুত অভিজ্ঞাভার পরও আপনি নীরেন;ক এর সংগ্য কভাতে চাইছেন?

ৰা, না। আমি চাইছি না। প্ৰিলণ। আমান ধারণা.....

কথা শেষ করার আগেই চীনার শুখ দিরে বৈরিরে গেল, বিভাস?

কর্মেকের চোধের কোলে কোতৃকের বিদ্যুৎ থেকল।....গতরাতেই ডোমাকে বলেছি, আই লাইক ইওর ডিভোসভি হাজ-বালভ—বেচারা বিভাস। সেও ডোমার গত গ্ণী শিলপী। আমি জানি, দুই শিলপার একবরে জারগা হর না। এককিউজ মি... বাল হেসে ফেললেন কার্নল। উঠে রাড়াকেন এডক্ষপে।.....ওরা সব বী ভাবছে হরত। আমরা এডক্ষপ ফিসফিস করাই।

চারপালে তাকিরে নিলেন করে'ল' এখনও ঘরে কারো ডাক পড়েনি। সম্প্রবত হোটেল স্টাফ নিরে ব্যক্ত হরেছেন '্তা

না, ডাক এল। একজন কলে াত্র এসে ভাকল, দিকোল্বাব্ কে—আনুন।

দিব্যেন্দর মুখটা হঠাৎ ক্রেমন সাদা দেখালা। কর্মেল লক্ষ্য করলেম। দিবোলস্ প্রাডীর দিকে কটাক্ষ করে বেরিরে গোলা। ক্যমল প্রাডীর টেবিলো গোলেম।.....এর-কিউন্স মি, আপনার সপো ডো ভালো আলাপ হরমি। দে সে—দ্বিদিনেই বন্ধ্য চেনা বার। আমিও একজম বন্ধ্য আপনালেম—বাট ভেরি...ভেরি ওণ্ড ফর্ মেকিং ক্রেভিলিপ উইখ লা ইয়াং গালাস!

হাসতে হাসতে বনে পড়লেন করেল।

থবাতী সসংক্ষাতে নড়ে উঠল।.....মা, না।
বস্ন করেল। আপনার সংগ্য আলাপের

এত ইচ্ছে করছিল। কিন্তু একে হটিবুর
বাথা, তারপর এইসব ভরণকর কান্ড।.....
ল্বাতীর চোথ ছলছল করে উঠল।.....
টীমাদির কাছে আপনার কত প্রশংসা
শ্নহিলাম।

কর্নেল চুন্নট বের করে ধরালেন। ভারপর বললেন, হতভাগ্য কেরেটির কলে

হাওড়া কুষ্ঠ কুটির

মেন্দ্র : ৮ব-৮০৪৮। আন্তর্গ বার্থিক। বার্থিক। এর মেন্দ্র ব্যার্থিক। বার্থিক। এর মেন্দ্র বার্থিক। প্রক্রেক। বার্থিক কর্মার অনুমার কর্মিক। বার্থিক। কর্মার অনুমার সাম্পর্কার কর্মার কর্মার প্রক্রেক। সাম্পর্কার

ग्रंत कर्ण हरू योग्छ भारतस्य নি। জীবনের স্থাদ পাবার আগেই वर्गी टक्टफ हटन ट्यून।

न्याजी स्थानमामा स्थानेत, त्वान्यस्थ

কনের বললেন কিন্তু সিল ইছ ক, মাই কলি। নিট ইয়ে সভিনি। ভিতি दन एक हैनदि नी भी।

ক্ষেত্ৰির সম্বোধন শ্লে স্বাতী মুখ न अपनगरिश्वन करणे वनम, जाशास्त्र ताम कृषि यनायन।

বাইট। কর্নেল বললেন।....আজা ্রা তো তোমার বোন ছিল? কেমন

ৰ বিশ্বাস ফেলে প্ৰাতী জ্বাব দিল **পূলক অমি জর্মন নেগ যা জামেন গ**প ি কশ্লাকে একম্হ্রত ডেপথের 👣 🕶তে চাইতেন না। আজই সকালে ট্রাত্ক কল করে থবর দিয়েছে 🎁 🖏 শ্যাশায়িনী একরকম—তব্রখবর মাই স্মাসবার জন্যে বাস্ত হরেছেন 🕶। এসে পড়বেন খ্ব সম্ভব। ভয়ে **ভোফোন** ধরিনি। আমার *ধরতে* विद्यान निर्मादाण्यः वल्ला। भारतम् भूत्था-ৰ আৰু দীড়ানোৰ সাহস আমাৰ নেই। প্রতাকী বলব, ভেবে প্রিছ না। কৈনিকাং দুব তাকে? তার নিরেধ न्द्रानीम्। कृष्णनारक मर्ल्या निरुग বছিলাৰ।.....**,**বাড়ী কে'দে ফেলল।

करनेन जाएकमा पिरहा वनात्मम, एउक हैंगे हैं कि बाहे शान । ज़िया कि वत्त्र? ভোষার ভো ছাত ছিল না এতে।

ন্বাতী কম্পিতন্দরে বলল, কিন্ত এমন যে একটা মারাতাক কিছা বটার, আমি ज्ञानम् **करविकासः।** कन्नितः स्व[ः] मिलिर মৃত্যুকে ডেকে আনছে—আমার ইনট্রুমন তা বলছিল।

यम की? करनंग छेश्कर्ग इंट्राना। হ্যা। স্বাতী অনুসকটে বি**লঁত**ি থাকল।.....करুপনা ছিল ভারণ ম্বটোরা মেরে। ছেলেবেলা খেকে দেখেছি "ও" এত ভীতু আর বোকা ছিলা স্কুলকলৈ জ রেজাল্টও যাব ভালো ছিল না শৈষ্থান মা বললেন, থাক , আর প্ডাশ্রনোয় কাজ स्तरे। फिशिकारम् त्र कारेनावः देशातरे अन करनक इंग्जिलन। मा वलकत्त, क्रा তো আর চাক্রীকরতে যক্তে না 📖 📭 😽 ামে উনি যাঁদিয়ে গেছেন, তাই যথেটে।

करमञ्जू द्वाधाः पिरलम् ।..... এक र्वधामितः । কংপনার নামে সম্পত্তি রয়েছে! ****

হাাঁ। বেশ। বলে যাও।

कल्भनाव भर्या जातक ध्रास्त्रत . एकक म किन। दीनमनाठा एठा पात्न किन। অথচ সেটা থাকবার কথা আমারই। **७%त जोशांत या दिरं**टम **हिल. वेलांत** सग्नः। মায়ের বত আদর, যত লক্ষা তো ওর ওপর। ফুলে, আমার ভ্রীরণ দুঃখ্র হত। মারের চােথের আড়ালে ওকে আমি কত नियां करतीहा त्यात काथ भ्रतह

भ्याणी यनए७ धाकन।.....७ स्मा विमा আমার সবচে**রে বড় প্রতিম্বন্দরী।** প্রয়ে वद्रज 'वाक्काब जर्भा जर्भा रज स्वावसी ्रितरकष्टे यहाद विकास सन् रक्षा । अन्नरकाः कारिय कान-छावर्छ नियमता। यद्भागाम्पर्यान्तरका मन पढ़ने शामरकर्माशीतः क्लाएक गाँउन्हें रनाम। ७८क १८का मधमा शर्म रिहारी গড়ে ভুক্তে চাইলান। ওর বরজেও থাক, এই ইয়েছ আমায় পেয়ে বৰ্গেছিল। শুভা সপ্যে আলাপ করিয়ে দিলাম। নীরেমের সপোও দিলাম। অবশ্য সবই স্বায়ের অজ্ঞান্তে ঘটছিল। কিন্তু দেখলাম, কল্পনা যেন কিসা, বোঝে না—কিংবা ইচ্ছে করেই ওসব এড়িয়ে থাকছে। এখানে আসবার পর হঠাৎ দেখি, ও "কেমন বদলে - গেছে,৷্ की व्याविक कि कारन, कम्भमा द्वीष्टिम्क ক্ষা কিলা পোটের স্বোরন সংস্থাতির আরম্ভ করল সবার সংগো। শ্রেষ , प्रांचि पिरवान्य रक्ख हाएन ना।.....

করেল বললেন, ব্রেছে। দি বার্কি-গ্রাউন্ড ইঙ্গ জিয়ার। এখন, একটা কথার জবাব দাও। আমি তোমাণ হিতাকাশ্কী। দেবে তো?

वन्म। एव ना कन? খুনী বলৈ কাকে সন্দেহ কর তুমি? স্বাতী ঝটপট জবাব षिन ।.... नीरत्रनरकः

কেন?

क अंट পারে। কল্পনার স্থিকে: 🚁 ও**ন্ধ** িরিফিছির টান ছিল লক্ষ্য করেছি। बारेहे। यहनं कर्त्तन क्रिंग्लम।

ः (दः ? ५६न व्याम्म । मीरभम रवाज न्योत पिरक क्याक कर्ता 🗀

छेल । द्वित्रक छान । निर्दाणहरू स्वरी राज না ফিরতে। সভ্তব স্বার ছেরা শেষ ্না হলে কাকেও কিবতে দেবে না। মিঃ গ**েত**র खनण्ड भ्याप्ति त्यम् अन्यूडः। डिनितान्छे। ভাষ্ট্রে, ভারতে, ক্রম ল, গোলেন

क्षित्रका क्षास्टिक स्थान । देवा सम्बद्धिक नव्या जासूस क्ष्मण । देवा को केन्द्र इस स्वयून (छा। जासस আর এক মহতেও এখানে থাকতে করছে না। অথচ ওরা বেডে দেবে না!

কর্নেলেরে চুর্টটা ছাত খেকে গেল।.....বাই জোভাবলে ভিনি হরে টেবিলের নীচে হাত বাড়ালেন।

देता वनन जोवा कर्नन मास्त्रक, আপনি অভাগিখবাস করেন ? **ञक्तांक् ऋदि।** १४ म

ইরা"**ভ**ীত भगाর **राग्ध**, আমার চুল देकरणे क्रिका न्युरमञ्जूष्टम ? १००० मद्भक्ति।

मरम मरम खाँछ करेंचे शांत्र हानीहरनम कर्त्नवा कांत्रव होमान्न क्यांठा बटन अट्ड देवात प्राथात धर जानामा कृतना ব্যাপিটি "পারের" নকল। ওর খাখালেড়া

किन्यु वर्षात हेन्द्र मूक्तात एक पुरित्रम रिवादमब रहजारजंब मौट्ड टबरक অনিহটি≂াহাডেশ "বরণেন, ভা তার **ব্যোদ্ধককে** গ্রে**কান্ট**্র**ক্ষর**। একবার - निरक्त **परत : बाउबा** ক্মন্টেবল ডাক্ছিল, দীপেম হোল জিনিবটা ডাকে উৰ্জেছত ক্ৰছিল পলকে ~~॰शन**्याः । जातुरुयं , .हीःशन**्दामः

त्रा' थिक वर्णाष्ट्र :

म्ताञ्जाल

श्रीमिणीशक्षांत्र द्राय

আত্মার আনন্দের ভোজ হল সংস্কীত। তাই সংগীত-সাধকের বারে চিরদিন রসপিপাস,র আমন্ত্রণ।

মনীষী শ্রীদিলীপকুমার রায় সংগীতের জগতে যে সুর-সরণী সৃষ্টি করেছেন তা এক আনন্দর্মর দিব্য-জগতের দিশারী। ভারতীয় ও পাশ্চাত্যকলা-কৃষ্ণির কল্যাণ্ডম মিশ্রণ ঘটেছে তার মধ্যে। তার স্কীঘ সংগীতসাধনার অমৃত-মাধ্র বারত স্ব-রসিকেরা দ্ররলিপির মাধ্যমে অন্ধাবন করতে **পারেন**্থি**সেজন্য** 'স্তুরে কাব্য সংসদ' শ্রীদিলীপকুমারের সংগীতের একটি সংকলন গ্রন্থ প্রকাশ করেছেন। গতিকার ও স্কুরকার দিয়া প্রক্রমারের ব্যাপক ও বিস্তৃত স্বর্নকৃতির পরিচর বাতে গাঁভ-রাসকেরা এই প্রস্তুকের মাধ্যমে লাভ করতে পারেন তাই এ প্রথম প্ররাস।



ब्र्श आएफ काम्शानी ১৫ বণ্ডিম চ্যাটাজি শ্রীট, কলকাজ-১২

क्षिम क'रत खत्रमा त्राथि।

कान क्लिक

বদলে বাজ্যে কেবল ভূমি আনবয়ত বদলে বাজ্যে বল পাধর কেমন করে ভোমার উপর ভরসা বাধি!

আকাশ থেকে সূর্য করছে প্রতিদিনের রোদের ভাপমালা বাড়ছে পাহাড়ের বৃক কেটে নদী নামছে সমুদ্রে। নিডা আশীর্বাদের অহংকারে আল্পা হ'লে বল পাথর কেমন ক'রে তোমার উপর

ভরসা রাখি!

खबमा राषि?

উফ এবং হিমের আন্দোলনে দিনের সূর্য রাভের প্রবাসী সকালবেলার অপর্যাপ্ত গৌরবে রঙ বদলার অবব্যহিকার নরম মাটি ক্ষতে ক্ষতে পথ আটকার লোভের দিখিল উপ্তাকার হিমবৃহ ক্ষা হাত বার।

लाल अक्रकात्र॥

म् शांष्क दाव

আর্তনাদ করে উঠলাম, 'থামাও, থামাও।' थामन ना, ब्रान्क ब्राह्म ज्यादक राग्यक श्राह्म । মান্য জন্ত বর বাড়ি শহর গ্রাম বিকট চিংকার করে ধন্তে পড়ল, ভারপর ভীষণ বিবর্ণ ভাপের ছোঁরার গ'লে দলা পাকিরে গেল। আবার আতনাদ করে উঠলাম, 'থামাও, থামাও।' কোন উত্তর দিল না। গতি ভীৱতর হল। মেঘে মেঘে গম্ভীর ঘর্ষণের আওয়াজ হল, আছডে পড়ে সমুদ্রের তেউ ভীষণ শব্দে ফেটে গেল, माणि काटेन, भारारफ भारारफ आगरमत रूजा দাউ দাউ করে উঠল। জিভ্যেস করলাম, 'কে ভূমি?' কেউ সাড়া দিল মা। य्थवन्य जात्नाताततत गरेला कर्तन छेठे इत्रे धरना राखना। কে'দে ল্টিরে পড়ে বললাম, খামাও, খামাও, একবার, শুখ্র এক মৃহতে থামাও। থামল না। দিন গেল। कांहरल जाग्रान मागिरत जन्धकात माम हरत छेठेम।।

दमथादभाना॥

विकासकृतात गर्ड

বখন বেভাবে দেখি, সেই দেখা নর—
বখন বেঘম শব্দ কথার বাহার
কান পেতে প্রিন,
সেই শব্দ কথার্থ, বেন তাও নর,
একেকটি মৃহ্তে দেখা, কিংবা শ্ব্রু শোনা
মধারাতে হ্ম ভেঙে, আকাশের নীলবীথ দেখা
হাজার কথার মধাে তােমার চােখের দিকে
তাকিরে হঠাং—
ইথার তরকা সােতে ভাসমান স্পারলানিক
নাব্দের অনস্ত বাদ্য শানতে শ্বুনতে শ্বির হ'রে বাওয়া—
সেইসর দেখাশানা চাই।
সমরের কালপরিমাণ
এইসর দািটারদলেন মাপ্ হিসেবনিকেশ
কানেন সালে বালাক পালা।
তিন্দার তেমন বালাক পালা।
কাথার তেমন বালাক পালা।
কাথার তেমন বালাক টেপ-রেকর্ডার?

সাহিত্যিকর চোখেত্যাপ্তরি সম্প্রাদ

আক্রকের দিনে সাহিতো, শিশেপ এবং
বিন্দে একটা অনিশ্চরতা এবং অপাশ্চির
ক দেখা বিরুদ্ধে । কবিনের প্রেনা
ক্রনাথগ্নেলা আমানের কাছ থেকে বিনে
ক্রন্তের বাজে। সামনে এনে দ্বিভাকে
টা চরম অসহিক্তা এবং হতাগা কেন।

নিশ্চরই এর কারণ আছে। আমরা
লমরটার মধ্য দিরে চলছি সেটাকে
লীক্ষক বলা বার। একটা ব্যা শেষ
লাতে, আর একটা অসাহে—এর মাঝবার এ ধরনের অভিযুবতার ভাব আসাই
লাতাবিক। প্রোনো বিশ্বাস আমালাতাবিক। প্রোনো বিশ্বাস আমালাতাবিক। আবার তেমন করে সাড়া
লাও আবারে মতুন ব্যা সম্পর্কে
লাও আবারের মনের অবচেতন
বালা বেথে আছে। তাই এ ব্যাভাবা এবং অসহিক্তা।

্ৰাহিতা জীবনেরই প্রতিরূপ, ভাই ন্নালেও সেই ব্গ-ধলাগার क्या कारमध्य। कारना निम्हिण প্রভার, रुवाता न्रिर्मिण श्रेष्टामा আয়াদের স্কানন কোনো শ্ভে-সংকেতের দ্যোতনা জানছে না। আমরা যেন পরীক্ষা-মিরীকার ভেতর দিয়ে প্রতিনিরত উন্দিন্টকে খ'ুজে किर्माष्ट्—रवमम करत 'शाशा चाँएक चाँएक তাই সাহিত্যে কোন ক্ষেরে পরশ পাথর'। शहर স्थित लिया वाट्य मा। मजून नित्न ৰারা লিখছেন তালের মধ্যেও কোম বিরাট বিচিত্রের পদধর্নি শোনা বাচেছ না— এ্যন কথা আমরা সব সমরই রাজনৈতিক ক্লেন্তে অনিশ্চরতা মনের ভেতরে অনেকখানি হতাশা QA দিরেছে। কোন বিরাট শরিমান মেতৃত্ব এগিরে আমাদের পথ-প্রদর্শক হিসেবে আসহেন না। বাঁরা শাসক হিসেবে গদ[ি]-রান, তাঁরা নিজেদের মধ্যেই ভূল বোঝাবাঁৰ নিরে ভাটিলতা বাড়িরে ভূলছেন ; नवाच-कौरामद्र आकारन बाजत मृदर्शालव ব্দৰ্টার প্রাভাস দেখা বাছে। আমাদের পারের তুলার শক্ত মাটি বেন ধীরে ধীরে লৱে ৰাছে, সেধানে ভাঙানের স্কঃ রেখা

रमथा निरम् । कारकर जीवरम स অনি-**দচরতা আর অলাণ্ডি, লাহিত্যে**, ভারই कारमा हात्रा भरकरहा अटक अकारमा काहरूत भटकरे मन्द्रव मह*िचाचकाम मकाट*न थव-रवत काशक भ्रामाना इस भ्रम मत छावाछी ; इत्र मश्यमं सत्र शुरुकाराक्षीत स्वतः महस्य সাহিত্য এবং মহৎ স্থিতীর প্রেরণা যদি সাহিত্যই লীবনভিত্তিক বাস্তব্যুগিন ছরে খাৰে, তবে এমন বিপর্যস্ত অবস্থা কোন মহান শিলেপর উদ্দীপনা জোগাবে? জীবনের ওপরেই সাহিত্যের ভিত্তি। সে ভিত্তি প্রতি ম্হুতে অনিশ্চরতার আত্তকে ফাপডে থাকে তবে সে স্থিতি-শীল সাহিত্য লোগাৰে কোথা থেকে?

उपनार तनी

কিল্পু এ ডো অথকারের দিকটা। এই
অথকার তো জীবনবাদী মান্বের শেষ
কথা হতে পারে না। স্তরাং আমি জানি,
এ দ্বোগ থাকবে না। এ আনিশ্চরতার
ক্রাণা কেটে গিরে পরিপ্র প্রভাগার শ্রু
স্চনা দেখা দেবে। দেবে ক্লিন্টর মান্ব
কথনও অনিশ্চরতা নিমে বেলী দিন বেতে
থাকতে পারে মা। ব্লানো ক্রীভাই মান্ব
বের স্থাচিশ্ডাকে বেলী দিন ক্রাণাজ্য
করে রাথতে পারে মা। আপনা থেকেই মান্ব
বের জাগ্রত শ্রুক্তিথ জলালের মভ

যা র্চিহনৈ, তাকে এক আধবার হরতো কোত্হলী মন প্রশ্ন গিতে পারে; কিন্তু তা কথনও বীর্ষপানী হতে পারে না: বা গোডন-স্কার ভাই টি'কে থাকে তার ক্ষতাবস্কার জীবনীপজির জোকে। যা স্কার তাকে গামামা পিটিরে আছে-ঘোষণা করতে হর না।

বা হঠাৎ আমদানী, র্তিহীন ক্লেতার পোবাক, তা একেবারেই সামায়ক উত্তেকলা মাত। স্বাভাবিক নিয়মেই তা আবকলার আপ্রর পাবে। হাউণ্ট লিও টলস্টর,
ভিকটর হলো, রীপ্রলাথ, পরংচস্ট,
এপের ক্লম্লীলতার চার্ক দিরে সাহিজ্যের
আসর মাত করতে হর্নান। দিকের স্তা
দিরেই তাঁরা প্রতিতিত হরেছেন।

অবখ্য আগনারা প্রশন করতে পারেন, সাহিক্ষে অন্দালতা বলতে আপনি কি বোনেন? বে কোনো বিবরেই বাদ রুনো-ত্তীপ হর তা সাহিতা। তবে সব স্থিকট দ্ভিতিপা প্রতার গাঁৱর উপর নিতর্গদীল। নিবাচিত বিবর কিতাবে পরিবেশন কর-বেল সমন্ত রাসক বাহি ভারই গিকে তেনে থাকবে। কি বলহেন তার তেনে কেনে করে বলমে এইটো সাহিত্যের রসস্থিত প্রতীক।

আমি জানি বিকৃতিই জীবন সন্থ। বে জীবজীবী সাহিত্যের আমরা জনিশ্চরতা দেখার আজ—কালই হরতো মতুন শর্তিমান সাহিত্যিকের বলিন্ট পদস্ঞারে তা কেটে বাবে।

শ্বিতীর মহাব**ুদেধর পর ফরাসী অব**-করের বে চিত্র করাসী সাহিত্যে করেট উঠে ব সেটাই তো আর সভা নর: পরবত্রী কালে পরিপ্র' প্রত্যাশার আলোর তাদের সাহিতা ও জীবন প্রণতার শহুত চেজনার मनबर्भ ब्र्भावित श्वाह । द्र्भ जीवाम ब्रात्थत भव व जन्के तथा भिरतिष्टन छ। ভাষের সাহিত্যে এবং জীবনে ছারা ফেলে নি—তাদের প্রাণ-দান্তিকে গণ্গা, করে দিজে পারে মি। নতুন জীবন-প্রবাহের স্লাবন ভাদের জীবন ও সাহিত্যকে পরবতীকালে পরিপ্রতার দিকে টেনে নিরেছে। আমা-দের এই য্গ-সন্ধিকশের অনিশ্চরতার লংশ কেটে গিরে মেঘমতে আলো সাহিতাকে করতে মতুনকালের পদস্ভার ধর্নি বরে নিমে আস্বেন্ ন্ব-ব্লের অভি-ষাত্রী সৈনিক দল। এ'রা আস্বেনই-কোন ভাকের বা আবাহনের অপেকার তাঁরা করে शाकरवन मा

MM (3)



विकारीम (भारतारी

'এই যে দাদা, কেমন আছেন? বিশ্ব-ক্ষ্বাব্ জিজেস করলেন ভীড়ের মধ্যে. কলেজ স্থাীটে। আমি তার দিকে কেবল জবাব দিলাম ক্যালফ্যাল করে তাকালাম, না। বিশ্ববন্ধ্বাব্ আমার দিকে দ্ব এফ পা এগিয়ে এলেন, তারপর একট্র বেশ জোরেই জিজেস করলেন, 'কি মশাই, কালা হরে গিয়েছেন নাকি?' আমি বেন কথাটিকে শ্নতেই পাইনি এমনি ভাব করেই রইলাম। তিনি এবারে আমার নিকটে এসে আমার কানের কাছে মুখ নিয়ে বেশ উচ্চগ্রামে গলা থেকে বাজখাই আওয়াজ বার করলেন : 'কে-ম-ন আ-৫ছ-ন?' আমি তব্ও চুপ। কান ধা কা করতে লাগল, হঠাৎ যেন বাথাও বোধ হল, কিন্তু আমি নীরব। কেবল দুহাত দিয়ে এমন ভণ্ণী করলাম যে তিনি ব্রুখলেন আমি তাঁর একটি কথাও শূনতে পাইনি। এবারে <mark>অবশ্য তাঁর মুখোভাবের পরিবর্তন হল।</mark> रव मृत्य किंगिर विस्मात्र এवर स्माध-কাদন্বিনীর জমায়েত হচ্ছিল একট, আগে, সে মুখ একটা কমনীয় হল। কপালের দ চারটে ভাজ এবং দৃই চোখের মাঝখানকার জারণার ভাঁজে কিছ্ ঘাটতি দেখা গেল। বক্ষেলাম তিনি খাসি হলেন। তাতে আমিও খুসি হলাম। তিনি আর কোনো কথা বলবার চেণ্টা না করে আমাকে পরিভাগে করলেন। আমিও হাঁফ ছেডে বাঁচলাম, কেননা, আজকাল আমি কেমন আছি সে কথাটা বলতে ভর পাই। কেবল আমি কেমন আছি নয়, লোনো কথাই আমার আর বলতে ইছে করে না। কবিতা গ**ল্**শ

উপন্যাস রাজা উজীর ইত্যাদি বহু বিষয় নিয়ে আগে যেমন উৎসাহের সভেগ পাড়ার এবং বেপাড়ার চায়ের দোকানে চিংকার করে গলা ফাটাতাম এখন আর তা করি ना। फल्न हारमत पाकात्नरे याउमा ছেড়ে দির্মেছ একেবারে, সেদিনকার ঘটনার পর। আসলে, সেদিনকার ঘটনাটি ঘটবার আগের দিন পর্যাত কেউ যদি আমাকে জিল্লেস করতেন, 'কেমন আছ হেমেন?' তাহলে আমি বেশ হাসিম,থেই জবাব দিতায়, আর বলো কেন, একেবারে সময় পাতি না। একটা বই পড়তে পার্রাছ না এক পাতা লিখতে পারছি ना।' কিল্ড আর নয়। সেদিনের ঘটনার পর থেকে কেবল আমি কেমন আছি নর অন্য কোনো বিষয়েই আমি আর টু শব্দটি কর্রাহ না। তা সেজন্য কেউ বাদ আমাকে कामा, वश्यकामा, ठेना वा जना व কোনো বিশেষণে ভূষিত করেন, তাঙে আমার যেটাুকু এলে বাবে তাতে আমার খুব আপত্তি নেই। আমি শুনতে পাছি, আমার নামে এই বিশেষণগ**্রাল** এরই মধ্যে বালারে চলছে। তা চলকে, কিন্তু আমি তব্ শান্তিতে আছি।

এইবার সেদিনকার ঘটনাটা বলা প্ররোজন মনে করি। সেট্কু বলবার আগে আপনারা একটা কথা নিশ্চর জানেন আশ্-কাল এই বাংলাদেশে প্রভ্যেকেই কিছু না কিছু রাজনীতি করছেন। প্রভ্যেকে না হলেও অনেকেই। সেদিনকার ঘটনা ব্রুভে এটা মনে রাখা বিশেষ প্ররোজন।

वर्षेनाचे वर्कीष्टन ठारम्य लांकारन-विक

আমার পাড়ার চায়ের দোকানটি সেটিতে ব্যব্বাব্ন যতাদন ছিলেন ভাল চা এবং টোষ্ট পাওয়া বেত। দিতেন তিনি আমাদের। চার পাঁচ হয়ে গেলে একবার খ্ব আন্তে করে ম করিয়ে দিতেন—ওহে হেমেন তোষ হিসেবে স'চার টাকা দাড়িকেছে. বীরেন, সোমবারের মধ্যে জুল গোটা চারে টাকা দিও ব্ৰুকে? 🤫 ধরনের ব্যবহার। কিন্তু যেমা তিন অস্কে হ प्राप्त हत्न रभरनन, जौद नाद्रभास र ভাশেন বিশাকে বসিরে, তথনি পরিবতি আবহাওয়া স্তর্ হল। চারের দাম পো পরসার জায়গায় আঠারো পরসা টোস্টের দাম হল কুড়ির জারগার পাচি চাঙ্গের কাপও আফুতিতে রাভারাতি ৫ হরে গেল, আর ধার একেবারেই বন্ধ ব দিল। তাই আমরা পাড়ার দোকানে বে या अग्रा सम्भ कत्रमाम । धकरे রাস্তা--সেখানে অনেক দোকান, একটিতে গিরে বসে চারের অর্ডার আর বেশ মৌজ করে একটা সিগাং ধরালাম। আমার আশেপাশে करमको। र्जियल करत्रक भूक् रहरन श्रर ভাবে কত কি কথা বলছে। আর ঠিক সময় রাস্তা দিয়ে দেখলাম বাচ্ছেন, আর আমি বললাম, ও নিমলিব কোথার যান?' নিম্লিবাব; আমার অফি काक करतन व्यक्तक मृत्त भारकन राष ল্টেশান দিরে যেতে হর হ্যলীর নিম্লবাব্ও আমাকে বললেন, আমি এক ভয়লোকের স



যাচ্ছি, আপনি করতে কেমন আছেন?' বললাম, 'ভাল।' নিমলিবাব্র হৰ ভাড়াতাড়ি ছিল। তিনি হটিতে হতিতেই বললেন, 'পরে দেখা হবে অফিলে, **ক্ষেন?' বলে** তিনি বেশ জোরে পা চা**লি**রে **দিলেন।** আমিও দরজা থেকে ফিরে এসে **চারের কাপ** দেখতে পেয়ে সেটার হ্যাণ্ডে**ল** ধরণাম। এক চুম,ক খেতে যাব, এম**ন সমর** পালের টেবিল থেকে একটি ছোকরা বলল, **পাদা, কথা**টার মানে কি দাঁড়াল?' আমি **চতা অবাক।** অন্য একটি **ছোৰরা আ**শ্তিন গ্রুটিয়ে আমার কাছাকাছি এসে গেল। আমি এবারে স্তব্ভিত। আম্তিন গোটানো এমনিতে খুব খারাপ বা ভীতিজনক কোনো वाशित्र नग्र। আমি নিজেও বহুবার আম্ভিন গর্টিয়েছি। কিম্তু এক একটা পরিবেশে সেটার অন্য রকম অর্থ এবং রূপ নের। আমার তখন মনে হল জনা রক্ম রুপ নিচেছ। আমি বল**লাম**, कथाणेत कि भारन मौफान ?' चारता এकी है ছেলে উঠে এল আমার কাছে। আস্তিন ছিল না তেমন বড়। একটা বংশ भागें भरत दिल रक्वन। এमে यनम, **अकरे,** भावधारन **रमा**उ 'কথাবাতাগ্ৰেলা হয় !' আমামি বললাম, 'আমি তো কিছুই ব্ৰুছে পাৰ্বছি না!' কে যেন বলল, 'ন্যাকো! ব্ৰেন্তে পারছেন না?' আমি বললাম, 'না-তাছাড়া আপনাদের এরকম অভ্য কথা-বার্তার অর্থ কি?' শ্বনে তারা হৈ হৈ করে উঠল, বলল, পোকটা একে রি-আকশনারি, তার উপরে প্রতিক্রীয়াশীল!' আমি বললাম, **ব্যাপারটা একট**্ব ব্ৰিয়ে দেবেন?' এ^{কটি} ছেলে, খুব সম্ভবত আমার প্রতি কপা করেই আমার সামনে একটা চেরার নিয়ে বসে

পড়ল। সে হাতের ইসারায় তার *ব*ংধ্দের দ্রে বেতে বলল। ব্ঝলাম এই হল এদের সদার। এর চেহারা বেশ ভালই, কেবল এकरें, अकरें, स्थींता स्थींता माणि जारह, बाह হাতে বড় একটা চুর্ট। আমি এর আগে অত কম বয়সের কাউকে অত বড় চুরুট টানতে দেখিন। সে আমাকে বলল, **আমরা** একট্র আগে শ্নলাম আপনি আপনার চেনা কাকে বললেন ভাল আছেন?' আমি বললাম, ভা...ভা...তাতে কি ভামার হরেছে—আমার চেনা লোককে যদি আমি বলেই থাকি?' ছেলেটি খ্ব আন্তে আন্তে বলল, 'এর একটিই অর্থ' হতে পারে।' আমি বললাম 'কি অৰ্থ' ছেলেটি 'আপনি **রাখ্ট**পতির শাসনে ভা**ল আছেন,** এর অর্থ **হচ্ছে** আপনি হচ্ছেন অ-**গণতালিত** কেউটে সাপ!'

'কেউটে সাপ?' আমি অবাক হয়ে প্রধন করলাম।

আপনি কেউটে সাপ, আপনার বংশ সমেত সবাই কেউটে সাপ। অর্থাং কি-না আপনি এমন একটা শ্রেণী থেকে এসোচন বে শ্রেণী হল জোডদার-শাসক-প্রমিজ্পতির সমর্থক। এবার কথা না বাড়িরে কেটে পড়র।' আমি বিললার আমার চা...।' বেলেটি বলল, ডা ফা আরু থেতে হবে না।' আমি চারের কনাই দোভারে এরেছি। অতঞ্জ আমি আমার ব্র বদলালাম, অর্থাই বদলাতে বাধা হলাম। বললাম, দেখুন দামা, একটা কথা বলি—আমি সভায় সভিয় ব্র বারাপ অবস্থার আছি। বাড়িওলার লগো গোলমাল চলহে মাঝে মাঝে কল কথা করে দের। বাড়িওলার দ্টি দুর্শান্ত ছেলে আহে—আমার নামে কোন চিঠি এলে লেটার বস্তু থেকে নিরে ছি'ড়ে ফেলে। ভারের কুকুর আমাকে মাঝে মাঝে বাক্সাক্তর্দার বাছি।

कथाणे अकरें राजातारे वरलिएलाम । চারের দোকানের অন্য প্রান্তেও তার আওয়াল পেণছৈছিল। সেদিকে যে একগ্ৰে যুবক বৰ্সেছিল, ছঠাং তাদের এ**কজন বলল,** অর্থাৎ লোকটা বিধানসভা ভাঙতে চার ! थत अरक, स्मरत शानामा करत रहा " কথনো বিধানসভা ভাঙতে চাইনি—একটা বিধানসভা ভাঙা কি সোজা কথা, কত কুলি-মজ্বর যলুপাতি লাগে। ওরকম **ক্**থা আমার মনেও কখনো স্থান পার্যান, কেননা বিধানসভাতির ডিজাইন বেশ তাছাড়া বেশ ম**ন্দ**ব্তই রয়েছে। **কিন্তু** সে कथा व्यात वनार्छ भावनाम करे? न्हेर টেবিলের দুই দলের মধ্যে এই নিমে মানা কথা কাটাকাটি বচসা টেবিল ভাঙা-ভাঙি চলতে লাগল। আমিও এক চুম**ুকে চা-টা** খেয়ে দাম না দিয়েই (দাম নেবার লোক কাউকেই সেখানে দেখতে ्भवाघ मा এমনকি বেয়ারাগ্যলোও উধাও হরে গিলে-ছিল!) সেখান থেকে চাচা, আপন প্রাণ বাঁচা মন্ত্র জপ করতে করতে বাজির দিকে দৌজ্বাম।

এই হচ্ছে সেদিনকার ঘটনা। এতই
সাধারণ ঘটনা যে খবরের কাগচ্ছেও পর্রাদ্য
সেটা বেরর্মন। যদিও পরে দেখেছিলা
দোকানটি একেবারে ভেঙে চুরুমার হঙ্কে
গিরেছে, আশে-পাশের দু পাঁচটা মোটা
গার্ডিকে ভাঙা হরেছে, এবং দুনৌছলা
এগারোজনকে গ্রেডর আহত অকশ্যার হাস
পাতালে পাঠানা হরেছে।

এই ঘটনার পর থেকে আমি রাস্চার ঘটে সাবধানে থাকি। তাতে লোথে আমাকে কালা মনে করে কর্ক, বোবা মথে করে তাতেও আপত্তি নেই, কিন্তু আদি ভাল আছি কি নেই, সে কথাটা কাউথে বলি না।



SIMI

र्हागमा वनः जन्म भीवन जल्म जात्रा जीवन

লক্ষ লক্ষ তলোয়ার মাটি ফেড়ে আকাশের দিকে মাখা তুলে লক-লক করছে, আলো পিছলে দিয়ে ঝলমল করে উঠছে, ঢেউ খেলিয়ে দোল খাছে সাগরের জলের মতন।

नथाইरात या वर्त, 'छ खतान-वन।'

আসলে হোগলা বন। বাদা অণ্ডলের ভাবার 'হোঁকোল বন'।
স্থানর বন অণ্ডলের সেই এক হোগলা বনের মধো এক
দংগল বাগদি ভিয়োর ভাহুক পানকৌড়ির মতন ঝোড়া কাঁথে
নিয়ে 'জল-ভাটি' 'দুগা' বিড়ি', 'দুপাটি মাছ' খ'ুছে বেড়ার।
ভীষণ কালো মজবুত তাদের চেহারা। লখাইরের পাঁচ ছওয়ালের
মা অথচ সাত দিন পরে-পরে একবার সিথিতে একট্ 'থেলোল'
কাঠি দিনে সিশ্র না ঠেকালে তার নিটোল আর তাগড়াই বক
দেখলে কার বাপে ব্রুতে পারে ও মেয়ে পাঁচবার পাঁচ কলসী
খ্ন ভেঙেভে! বালি হাঁসের মতো একবার ভূব মেরে উঠলেই
'একেবারে চকচকে! বয়েসের পায়ের ছাপ পড়ে নি তার গতরের
ভাচাট মাটিতে।

হোগলা বনের মধ্যে এক কোমর জলে দীড়িরে মেরেপরেষগ্লো কলবল করে কথা বলছিল। হাত চালিরে জল-ভটিট
আর্থাং শাম্ক সংগ্রহ করছিল সবাই। কলপো কটিয়ে উর্ব্ ছিল্
বাচ্ছিল। তলার জলে মাঝে-মাঝে জল-ডুম্বে, হুল্যুদফ্লেন্ডরা কাঠকোলার গাছ। জলসংলক্ষ সেই গাছের গায়ে শাম্কে বসে থাকে।
জলে একট্ নাড়া পেলেই শাম্কগলো মুখ ছেড়ে দিয়ে তলার
তলিয়ে যার। মাঝে-মাঝে নরম পানকোট্টি গাছ স্তি শাপলা রভ্
শাপলার গাছ। পদ্মবম। শাল্কে অর্থাং শাপলার মাল ভেউট বা
ভেটি ভোলে মেয়েরা। দ্ব্র্গাবড়িং হল গ্রেণ্ডি, দ্ব্র্ণাটি মাছা হল
বিন্তুক।

হঠাং লখাইয়ের মা চিল্লে ওঠে, 'ওমাগো! পায়ে মোর কি চিপটে ধরেছে! দেখ না লো মাগাঁরা! উঃ! বন্ড কামডাচ্ছে।'

মাগারীর সবাই খিল-খিল করে হাসতে থাকে। মাছের সম্পানে ঘারে বেড়ানো পাঁচকালা চৌকি হাতে ছিদাম এগিয়ে এসে লখাইয়ের মায়ের কোমর থেকে ডোবা পায়ের তলার হাত ডবিরে কতকক্ষণ হাতড়াতে লাগল। মেয়েদের মধ্যে হাসি-মন্কারা চলাচলি শার হল।

লখাইয়ের মা একবার বলে উঠল, 'দেখ, মিনসে আবার কোথায় হাত দেয়!'

ছিদাম বললে, 'শালা, চেংডা মাছ!' বলে সে ইরাবাগাতোক গারে-শাওেলা-জমা প্রেরানো একটা গলদা চিংডি দু' হাতে জলের মধো থেকে তলে আনলে। বড-নড দাড়া মেলে মাছটা ছিদামেব হাতে চিপটে ধরতে লাগল। লখাইরের মা এক ঝাপটা মেরে মাছটা ভার হাত থেকে কেডে নিরে ঝোডার শাম্বকের তলার লাকিরে রাখল। শাম্থের ধারালো মুখ লেগে হাত কেটে গৈল। সেখানটা চুবতে লগল লখাইবের মা!

> ছিদাম বললে, 'দেখলে কান্ড!' মধনা বললে, 'দেবকারী দিস মাসি।'

লখাইরের মা মালটার উল্লেখ্য থ্-থ্ ছিটিয়ে দিয়ে বললে,
শ্রেলয় লালবে বাবা, থ্-থ্! থ্ডি!'...



म्राप्त अभ-अभ करत कि स्वत भक्त स्टब्ह् ना?

> সবাই চুপ। কান পেতে থাকল। ছিদাম বললে, 'বাছ!'

সবাই তাড়াতাড়ি এক জারগার সরে এল। ঝোডার তলা থেকে দা বার করলে। ব্যোর মত ধারালো হে'লো বার করলে লখাইরের মা।

ছিদাম পীর, দ্লাল, গোবিদ্দ-সবাই চৌকি সড়কি হাতে নিয়ে দাড়াল। গোবিদ্দর কাঁধে হাত দিলে অবিবাহিত। সোমত মেয়ে ডালিম।

হগৈৎ সবাই দেখলে একাই একটা ভাশভা হাতে নিয়ে লথাইদেব বাপ আসছে জল ভেঙ্গে ঝপ-ঝপ করে শব্দ তুলে হোগলা বনের মধ্যে দিয়ে।

পাঁর, হে'কে বললে, 'দুস শালা! তুই এসচিস, সাড়া দিবি তো, মোরা মনে করি বাঘ। স্কৃতি ছ'্ডালই শালা টের পেতিস! জেলখানা থেকে বেরিয়ে সোজা চলে এলি বউয়ের খোঁজে?'

লথাইয়ের বাপ কাছে এল। স্বাইকে এক চোখ দেখলে। বড়-বড় গোফ রেখেছে সে। মাথায় কেঁচকানো বিরাট এক শুত্রক চুল। টাকি থেকে বিজি বার করে দিলে সকলকে। তাড়ি থেয়ে নেশায় চুর হয়ে এসেছে। চোথ দুটো কুচের পানা লাল। লখাইয়ের মাকে বললে, 'চল শালী, ঘরে চল!

তুই যা মিনসে, মাই ইক্ষ্মিন যাই বলে! আধ ঝোড়া জলভাটি হয়েছে 'স্বের্ল'। তিন্টি ছাওয়ালের রাজকাড়ে' দিতি কুলোবে নি!'

ূই চ' তো! টাকা লেইচি। চাল কিনিস। কাটার 'মংস' লেইচি, গামছার বাঁধ' ফাছে, দাবার খাটিতে বোধে টাভিরে রেখে এইচি, কুন শালা না লিয়ে পালায়। চলা তুই'—

লথাইয়ের মায়ের হাত ধরে টান দেয় তার জেল-ফেরং ইয়া তাগড়াই চেহার। মণদ মানুষ--হরিপদ।

ভীর্র মা বৃ্ড়ী বললে, 'যা নালা বউ, কদিন পরে মান্যডা এল। যা, ঘর যা।'

লথাইরের মা পশ্ম তার ঝোড়ার মধ্যে থেকে গলদা চিংড়িটা বার করে ছিলম ঠাকুর-পোকে বললে, লিয়ের লে তোর মাছ, মোদের নাকি 'মাংস' এনেছে মিনসে।'

হরিপদ হঠাং মাছটা কেড়ে নিলে। চোথ বাংগলে।

ছিলম হাসলে। বললে, 'না বৌদি, তুই লো তোর পা থেকে মুই ছাইড়িছি বটে, তোরই পাওনা!'

থেকিয়ে উঠল গ্রিপদ, 'তবে? মাগীর আসনাই!'

পদ্ম বললে, 'ঢ্যামোন মিনসের কথা শোন্!'

ছবিপদ পদ্মর হাত ধরে হিড়হিড় করে টান্তে-টান্তে হোগলা বনের আড়ালে চলে এল। জল পার হরে ডাঙার উঠতে আধ ঘন্টা সমর লাগকে। তার আগেই হরিপদ জড়িরে ধরে পন্মকে। সাম্কের ঝোড়া নিয়ে বেসামাল পন্ম। গালাগালি করে।

মাতাল মিনসের আর তর সরনে। খালভরাটা যেন বুনো ভাল্ল্ক। ওলাউঠো, হি-হি-হি. আরে এই তুই ঘর চ' এগ্গে— বলি এগ্লিন ছ্যালে কি করে?'

'তুই ?'

'মুই !' হাসলে পশ্ম। তার ছাাঁচে-গড়া भ्यत्मत कारला भ्यत्थ, भाषा-भाषा गाँउ আর চোথ দ্টোতে ধেন বিদ্যুৎ চমকালো। তারপর ঝোড়া মাথায় তুল নিয়ে হঠাৎ ছাট মারলে পদ্ম: হরিপদও ছাটল তার পিছনে। নেশায় সে টলছিল। হোগলা বনে জড়িয়ে গিয়ে বার-দুই পড়ে গেল। হোগলা गाष्ट्रत ज्लाशात-धात्र लाल कार्षे रनन খানিকটা। সে পড়ে গেলেই পদ্ম খিলখিল করে হাসতে লাগল। হরিপদর ইচ্ছে করতে লাগল ওর নাড়ী-ভূডিটা বার করে দেয় ভাত্তার এক হুড়ো মেরে। ষেমন বার কবে দিয়েছিল বদমাস গোকুল গায়েনের। मानारक **प्रांत रकरन** म् वहत रहन स्थाउँ এল। পাঁচ বছরের সাজা ছিল। জেলখানার এক বিখ্যাত ডাকাত বুদ্ধি দিলে আপীল কর। আপীলে তার বেকস্ব খালাস হয়ে গেল।

পদ্ম আর হরিপদ জল ছেড়ে দ্কনে ডাশ্যায উঠল।

হরিপদর পারে বেড় দিয়ে হোঁতো জোঁক ধরেছে দেখে পদ্ম শিউরে উঠল। বিরাট 'লাম-ক্রলা কা'লা ঘোটে চামানব হোঁতো জোঁক। ছাড়াবে কি করে! হাত দিয়ে টানলে হ'ড়কে যায়।

হ'রপদ বলে, দাঁত দিয়ে ধর শালী! 'অস্থ' থেয়ে মোটা হয়েছে। শালা এক পো' অস্ত থেয়েছে বোধহয়। ধানপাতা থাকলে তাই দিয়ে ধরা বেত। দ'তে দিয়ে ধর— টেনে ভোল!'

'ওয়াক্ খুঃ। ছি! মোন বেনা করে।' 'তবে হে'লে। দে, কেটে দিই।'

কেটে দিতেই ফিনকি দিরে বস্তু বাছ হতে লাগল। যত বেগে জেকিটা বস্তু টান-ছিল সেই রকম বেগে বস্তু ফিনকি দিরে ছুটে বেরিয়ে আসতে লাগল।

এখন উপায়! হরিপদ চেণ্টা করতে
লাগল আগ্যাল দিয়ে খিমচে লোকটাকে
দ্' খণ্ড মংখকে টোনে তুলতে। কিল্তু রঙ্গ লোগে আরও হড়হড়ে হয়ে গেছে তোলা গেল না।

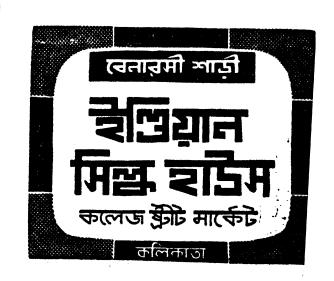
অগতা বাধ্য হয়েই পদ্ম দক্তি দিয়ে কামড়ে জোক টেনে তুলে ফেলে দিলে। গালে তার নোনা রক্ত ভরে গেল। খুখু করে থাথা ফেলতে-ফেলতে মুখে জল দিয়ে এল ভিজে কাপড় চটপটিয়ে।

রক্ত তথনো গড়-গড় করে বার হা**জঃ।** জোক যতটা রক্ত থেয়েছিল ততটা **আরে** বার হবে। এক মাসেও আর ঘা ভাল হবে না। কেবল চুলকোতে থাকবে।

ওরা দ্লনে মাঠ পার হয়ে চলেছে।

জল শ্কোনো ধ্.ধ্ ক্ষেত। জাল কেটে ঘাস জন্মাছে ছবাকার হয়ে মাঝে মাঝে। মাটিতে দন্দ ফুটে গেছে। স্বৰ্ধ লাল-লাল বাচ্চা ককিড়াদের গতা। মাঝে মধো হরকোচ আর বনৰামা, সোনাকটি ঝোপ। গ্লেপ্ড লাভা জড়ানো গায়ে বাবজ গোঁয়া, ক'লক ফুলের গাছের জন্গল। বা দ্রে বাগদিপাড়া। ছোট-লাই ছিটে কেড ঝ্রেড। ভালনার ছাউনী। বর্ষাকা বাবন চারদিক ডুবে যায় তথন যাতায়াতে একমার বাহন হল তালগাছে থেকে তৈ করা ডিপি।

ওরা দৃশ্লেনে ঘর ফিরে এল। লখাই: মায়ের পচিটা ভেলে-মেয়ের মধ্যে প্র দুটো কলেরায় মারা গেছে। বাকী তি



क्षारमा भारम निष्म छन्न स्ट्रामाथा চেহারায় মাটির দেওয়াল হেলান দিয়ে বসে আছে। বাশকে দেখে ভারা ভয় পেলে। হরিপদ হেলে-মেয়েদের ধরতে যেতেই তারা ভরে কে'দে উঠল। পশ্ম একটা গামছা পরে কাপড় হাড়তে-হাড়তে বললে, ভোনের বাপরে, বাবা হয়, ভয় কি!'

ছেলে-মেয়ে তিনটে মাকে জড়িয়ে ধরলে। বড়টাকে পদ্ম বললে, कनकी छेन्द्रका महाहकात करन ताथ। मरत ষাবে। আজ 'মাংস-ভাত 'আঁধা' হবে।'

'ভাত 'আঁধা' হবে মা!' বড়টা শ্বধোলে। 'হী।'া

'কতদিন ভাত খাইনি মা?'

কি জানি বাবা, মোর কি মনে আছে? **চার-প**াঁচ চাঁদ হবে। শা্ধাু শামা্ক গোলিড়, বিনাক, তাল, কটু শাকপাতা থেয়ে আছি মোরা। পরসাকোথা পাব যে চাল গম কিনব? চাল-গম জন্মর 'নোকে'রা খায়--वफ्राक्ता भारा।'

হরিপদ টাকৈ থেকে ভিজে-যাওয়া रताष्ठेश्रात्मा वात्र कत्रतमः मशाम प्राकाः। **रक्र**लथानाइ थाकरल कास कंदर । मिरन ह' আনা করে রোজ পেত। সেই জমানো টাকা। গরীডভাড়া আর তাড়ি থেতে দ্ব-তিন টাকা বেরিয়ে গেছে। আর মাংস কিনতে দ্ব্র' টাকা। চারবার করে গ্রেণ দেখে দ্ব কুড়ি পাঁচ টাকা আছে।

होकान्टना द्वारम শ্ৰেতে দেয় ছরিপদ। কচ্চপের মাংস কু.চাতে বসে পক্ষ। তার আর একটাও শাড়ি নেই যে ছেন্ডা ভিজেটা আজড়ে পরবে। থাটো গামছায় তার বড়সড় চেহারা ধরে না। বুক বেরিয়ে থাকে, সুডোল সুগোল, য্বতীদের মতন। হরিপদ তাকিয়ে থাকে। পায়ের জোক-ধরা ক্ষত মুখটাতে চুন লাগিয়ে দিয়ে নাাকড়া জড়ায়। ছেলে-মেয়েদের খ্রুরো দ্ব-চারটে করে পয়সা দিয়ে বললে, 'যা তোরা, দোকান থেকে किइ किरन था यारा।

মাঠ পার হয়ে দোকান অনেক দ্রে। ছে**লে**রা যেতে পারবে না। তাই হারপদ টাকা নিয়ে চাল আর বাজার-হাট চলে গেল।

ফিরে এল ঘণ্টা দুই পরে। একটা মোটা শাড়ি কিনে এনেছে ছ' টাকা দিয়ে। পদ্ম খুদা। রাহাা করে। তারা ঠিক জানে না আৰু আবার কতদিন পরে পেট পুরে ভাত থেলে। থেয়ে উঠেই তারা শক্ষে প্রভাগ খেজার পাতার চাটাইয়ে। এত থেরেছে যে কেউ নড়তে পারছে না। আড়াই কে জি চালের ভাত আর এক কে জি মাংস থেয়ে ফেলেছে পচিজনে। তিনটো বা**ল্ছা আর** দ্ধ মেরে-মদ্দতে।

ছেলেয়া ঘ্মিয়ে পড়লে ছবিপ্র পশকে কাছে টানে। : ~

পদা দীয়ানহাল ভেলে আমাকৈ माहार्थ करिए बर्ज ।

কিন্তু পঞ্চালটা টাকা আর কডাদন চলতে পারে মোটা 'গাব-দানা' (রৌছর বিচির মতন) চাল, শাম্কের তরকারী খেরেও মাস-দটে পরে হরিপদর হাত খালি हर्स याग्र।

आवात मार्यः माभाक शास्त्रा भारतः হয়। দুরে আবাদ আঞ্জলে চারের ক্ষেতে জনমজনুরি করবার জন্যে বাবে হরিপদ, ছিদাম, পার যুক্তি করে রোজই তাল ঝোপের মধ্যে বসে। কিম্বা দশ মাইল উত্তরে ভদুপল্লীতে ডাকাতি করতে যাবে কিনা সে কথাও তোলে হরিপদ। কিন্তু माउशा आत इत्स उक्ते ना।

পশ্মর কাছে আসে ভালিম। গোবিদ ওর মনের মান্ত। পদম মাসি যদি ভালিনের मंद्रभा म् कुष्डि हाकात मध्या विस्ताता चरित्र দিতে পারে তাহলে একটা শাড়ি বর্থানন रमस्य लारिक्म। जालिस्पत्र मितक काथ नर्फ ছরিপদর। কিন্তু কাকা বলে মেয়েটা। পদ্ম আর ডালিম উঠোনে বঙ্গে ইণ্টের ওপরে শাম্ক রেখে কাটারি দিয়ে ঘা মেরে-মেরে ভেন্সে পোটাটাকু হাস ছানাদের দিয়ে মাটি-ট্রক কেটে নিয়ে চুবড়িতে রাখছিল। সেই-গালো শিলে রোগড়ে ঘষে নিয়ে হলাদ ফাখিয়ে **ধু**চে এনে নুন দিয়ে জল দিয়ে ভট্টট করে উনোনে চড়ানো মাটির হাঁডিচে ফোটাতে থাকে ঘণ্টা খানেক ধরে। ভারপর সিন্ধ হলে পি'য়াজ লঙকা দিয়ে ক্ষে নিয়ে আর একট্ ফ্টিয়েই নামিয়ে নেয়। আঁশট গদেধ চারদিকটা ভারে যায়। তারপর মার্টির শানকিতে অথবা টিনের খোরায় ঢেলে নিয়ে থেয়ে নেয়। পার্যধরা ঝাঁপা-ভরা তাভি খায় তার সংখ্য।

ছিদাম এক ভাড় গ'জা ফোটা কড়া তালের তাড়ি এনেছিল। শাম্ক রালা হলে তাকেও খেতে দিয়েছে পদ্ম। খেতে-খেতে গদপ করে হরিপদ আর ছিদাম।

ছিদাম বলে, 'কলকাতা কি রক্ম র্য়া र्शत-मा?'

'সে এক রকম! খালি পাকা ঘর-বাড়ি আর গাভি-যোডা।মেম সাহেব বাব: বিবিরা ফুতি করে ঘুরে বেড়াচেছ। জানা কাপড় দেখলে বোঝা যাবে তাদের কারার টাকা কডির অভাব নেই। সবাই বাব**ু**! মেয়েদের কি পরীর মতন চেহারা মাইরি! বগল কাটা জামা। নাই বার করা ফাঁকা

'কলকাতা কুন্দিকটাতে **হ**বে?'

'ঐ 'ওওর'-পাবে। 'আগাশ' সাদা হয়ে चाट्य विषिटक।

े प्रारक अर्कापन लि-याँच ?'

'যাবি? তাছলে সেই পাথরপিতিমের দিকে যেয়ে ভন্দরলোক বা ক্লোভদারনের ক্ষেতে ক্ষেত্র মজারি করে সংযোগ বাঝে ভাগের যরে ভাশাতি করে বেতিন ধরা পড়ি ভাছলে ৰূপালে জেল লেখা থাকলে কলকাতা দেখা মিলতে পারে।^{*}

তৰে চল, কালাই দল বে*্ৰ পাথৱ-পিতিমেয় কাজে ঘাই।'

अछाई शर्तामन जब कक्षम श्रावर मृत পাথর-প্রতিমার দিকে চলে গেল বড় বড় চাষী জোডদারদের চাবের জন-মজনুর খাটবার জনেয়। গোষিদ্দ শুধে যায় মি। ভার বাপ কোথা থেকে তাইচুং ধান চুরি করে আনতে ভারই চাষ করেছে। মাবাল-ডাঙা জমিতেই চায়েন হয়ে ধান ফলেছে। কাঠায় আড়াই মণ ধান হবে। ধান মেন বিছিয়ে দিয়েছে। দশ কাঠা জায়গাত যা ধান হ'বে ভাতেই ওদের সম্বছনের খোরাকী হয়ে বাবে। হরদম জল বইছে গোবিন্দ। ভালিমঞ্জীর সংগা জল বইছে কলসী কাঁথে নিয়ে। সৈ মাকি আর ভাব মা বাবার কাছে যাবে না-ৰ'টার বাড় হরদম মার খেয়েও।

গোবিন্দর বাপ অথকে ব্যুক্তা হালে। ঠিক আছে, থাক। এক বছর বাদে-বাদে বাদনে ঠাকুর আসে। সামনের মাসেই আস্বে। তথন বিয়ে হবে।

পদম শাম্কের মৃটি চিবোতে চিবোতে অব্ধকারে আঁচল ঝাপটা মেরে জনুরত ত তিনটে ছেলের গায়ের মশা তাড়াতে তাড়াতে উদাস মনে দেওয়াল ছেলান দিয়ে ভাবতে থাকে কবে মিনসে আবার ফিরবে। পেটে যে তার আবার একটা বাচ্ছা এল! লোকটা যদিনাফেরে গতর ভারী হলে এই অবোলাদের নিয়ে সে কি উপাং করবে? হোগলা বনের মধোয়বি তা रकউ∷रे সাপে কাটে, বাঘে নিয়ে ধায় : ্বাদের কৈ হবে? এই জনুর গায়ে বাচ্ছ াড়ে আছে এক ফোঁটা বালি নেই তি কিংসা নেই।...

হঠাৎ একদিন ছিদাম এল।

পদ্মকে জড়িয়ে ধরে কললে, **বে**দি তুই কদিবিনি বল--হরিদা আর প্রীর্ জোতদারের বলনুকের গ**ুলি খেয়ে** মারা গেছে! ভল্লটের চাষী লোকরা জোভদারের বাড়ি ঘেরাও করলে। খাব কাটাকাটি মারা-মারি হল। হরি-দা আর পরিরে লাস 'প্লুলুস' নিয়ে গেছ।'

মাথা কুটে কুটে পদ্ম কীদতে লাগজ। ছেলেদের জনুর। লোকটা আর কক্ষনো ফিরবে না। তার হাত ধরে হোগলা-বন থেকে টেনে ঘরে আনবৈ না।

ছিদাম জারতণ্ড ছেলেগ্রেলার কপারে ছাত দিয়ে দেখলে একবার। ভারও ছাত জখম ছয়েছে। দটেটা টাকা নিয়ে পশার আঁচলে বেশ্ধে দিয়ে বাডিতে চলে গেল ছিদাম।

পদ্ম ব্যক্ষ ফটিয়ে কদিতে লাগল সারা রাত। তার পেটে আর একটা বাচ্চা এসেছে। চিরকাল এবার তাকে ছেলে-মেয়েদের নিায় শাম্ক খেয়েই থাকতে হবে। জলভটির মতন চিরকালই তারা হোগ্লা-বনের জলে ভাসতে থাক্বে।

- - आवम्रा अववात



গড়ুন শক্তি–বোঝাই পেশী দিনে মাত্র ৫ মিনিটে ! তু সপ্তাহে নির্দিষ্ট স্মফলের গ্যারাণ্টি দেওয়া হচ্ছে অন্তথা এক পয়সাও লাগবে না!

এটা পরীক্ষিত সতা! বে পৌরুব নারীর কামা, বুলওয়ার্কার তাই দিনের ক্রত, সহন্ধ, শ্রম-হীন বুলওরার্কার ব্যারাম অস্তাসের

দিৰে আপনার শরীরের প্রত্যেকটি পেশীকে পূর্ব করতে পারে-পড়ে মুধাতে গাহাব্য করে চেত বেলারে। বারবেশান, গভার বেলাবহুল তকাহাতা আপার অনুভব করতে ও গেবতে বুক করবের, আলবা বুক; চওড়া, শক্তিবালী কার্য, সমতল, ইম্পতে কঠির পেট; বাঁটি এক প্রসাও দিক্ষের না। সম্পূর্ব বিবরবের জন্য আরই কুপর শক্তি-স্তত্পুল্ড পা—সবই দিনে মাত্র ৫ মিনিটে। মাত্র দশ পাঠান। কোনো বাধাবাধকতা নেই।

তঞ্জংটা আপরি অনুভব করতে ও দেখতে সুরু করবেন, অন্তথা

कालमात नवन १६.१६.८० वा७० वाहे द्वावमा दबन, बुन ७वार्कात कालमाटक नामानदीरसम् यम ७ श्रामनक्ति विरक्त लाउन

বুক বেড়েছেং হ'সিএম উপর হাত ২২ সিএম, উক্ ব্যান্থ কিছিল। বিষয় ও পাছের ওলি ত সিএম। (এস.এ., বিউ বুর তাড়াতাড়ি পাঠিছে পিন। বিস.এ. বিউ বুর তাড়াতাড়ি পাঠিছে পিন। বিস.এ. বিউ বুর তাড়াতাড়ি পাঠিছে পিন। বিস.এ. বিউ বুর তাড়াতাড়ি পাঠিছে পিন। বিস্কার বিশ্বর বি অ. (প.) আমার জাববের সঠিক গুরুতে সাহাবোর আব্দির্ঘার স্থান প্রাপ্ত করিছে বিশ্ব স্থান खुरवात अक्तम हान्ति। ((क. धत. कि., अलक्त)

া শান্ত পশা পাঠাব। কোনো বাধাবাধকতা নেই।

(**) Mail Order Sales Pvt. Ltd. 15 Mathew Road, Bombay 4

কিনে মাত্র পাঁচ মিনিট সমন্তে বে অবিস্থাস। ব্যৱকার্ত্তার আমান্ত
স্কীয়কে মেরেকের প্রিস্থাপ প্রশাস বিশ্ব প্রিস্থাস।

ক্যান্ত্রটি ক্ষেত্র জ্যান্ত্রক স্কর্প্ত প্রস্থাস।

ক্যান্ত্রটি ক্ষেত্রক জ্যান্তর্ভাকর ক্ষান্তর্ভাকর আমান্ত
স্বান্ত্রটি ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্ত্র্ভাকর ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্ত্র ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্ত্র ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্ত্র ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষান্ত্র ক্ষান্তর্ভাকর ক্ষা

मारिश्र अश्रम्

হিপি প্রসঙ্গণ

অপরিচ্ছল জামা কাপড়, মাথার চুলে তেলের অভাব, ত্ল, ত্ল, নেত। গামে-মাথায় ধালা পোষাক-পারচ্ছদ কিম্ভত পুরুষের মাথে অয়তাবিধিত দাড়ি, মেরেদের মাথার इन जीवनाञ्च, भारत हुन्भन, भारत कृत्यन আর কাঁচা সোনার মত গায়ের রঙ--এরা কারা? এই প্রশেনর জবাব একালের বালকেরাও দিতে পারে—এরা যে হিপি তা সবাই জানে। এ'দের যত্ত-তত্ত শ্রন ও হটুন দরে ভোজন, মর্ণটা গোমতী তীর ছবে কিনা বলা কঠিন এবং এরপরই বা কি ঘটবে তা কেউ বলতে পারে না। এবাই হিপি। এদের আচার আচরণ দেখে মনে হয়েছে হিপিরা এমন কিছু নতুন কান্ডকার-খানা করেনি, আমাদের ব্যাঘচর্ম পরিহিত, গাঁজা-ভাঙসেবী, *মশান-মশানবিহারী ছাইমাখা ভোলানাথ প্রথিবীর আদি-হিপি। তাঁর নানাবিধ আচরণ ত' হিপিদেরই মত। মাদকদ্রবাপ্রীতিতে ছিপিরা তাঁকেই অনুসরণ করছেন।

হঠাং স্বাই দলে দলে হিপি হয়ে গাঁজা ভাঙ থেয়ে তুরীয়ানদেধ মাতল কেন? এর পিছনে একটা সামাজিক কারণ বর্তমান এবং সেই কারণটি অনুসম্ধান করেছেন বিখ্যাত সমাজ-বিজ্ঞানী ডাঃ ইয়াবলোনস্কী তাঁর সদা প্রকাশিত গ্রন্থ হিপি-ট্রিপ বা হিপি যাত্রায়।

তিনি বলেছেন, 'মার্কিন রংগাড়্মিতে এক বিচিত্র রঙদার ও মনোহর নাটক স্কুর্ হয়েছে। এর অংতনিবিহত ঘাত-প্রতিঘাত বা নাটকীর আক্ষানের পিছনে আছে প্রেম', 'অবাধ-যৌন বিহার' (তার আচরণাইক্ আর্ম্মান্তিক), আর ধর্মীর আচার-আচরণের অংগ হিসাবে গাঁলা-ভাঙ সেবন। এর ফলে মার্কিন সমাজের স্বাভাবিক জীবন্ধভারার এবং সামাজিক নীতির একটা ব্যাক্তভারী প্রিবর্তন মটেছে।' ডাঃ ইয়াবলোনসকীর এই বিজ্লেষণের
এক'ট বিশেষ মূলা আছে, হিপিদের নিয়ে
অনেকরকম লেখা প্রকাশত হযেছে, কিন্তু
এই জাতীয় যুটিপুর্ণ বৈঞানিক মূলায়ন
আর চোখে পড়েনি। বোগনিগায় করার
প্রে রোগলক্ষণ বিচার করাই বিধি।
লেখক রোগলক্ষণগুলি বিচার করেছেন,
গভীরতার দিক থেকে এই গ্রুখটি অননা।
একটা সামাজিক আলোজনের হেতু নিণ মে
তিনি যুখেন্ট মনীয়ার প্রিচার দিয়েছেন।

লেখক ভূমিকায় বলেছেন-

"I donot pretend to be completely objective. In fact I am a Social Scientist who considers it amost impossible to be totally objective in the study of human behaviour. There are simply toomany personal and situational variables in the human condition for a Student of Society to-become fully detached".

নিরাসন্ত ভংগীতে সমগ্র বিষয়টির বিচার
কঠিন। লেখক বলেছেন, যে-সমগ্র তিনি
হিপি যাত্রাগ্রতী থলেন তথন যোনএকগামীর প্রভৃতি বিষয়ে তাঁর মনোভংগী
আরও পাঁচজন মার্কিন নাগরিকের মতই
ছিল, মার্কিন সরকারের সামগ্রিক
ম্লাারনেও সেই দ্যিউভংগী কাজ করেছে।
মাদক্রব্য সেবনের ব্যাপারে সরকারী বিধিনিষেধও তিনি সমর্থন করতেন। তিনি
আরও বলেছেন যে, খিপি যাত্রা সর্বা করার
প্রে তিনি কখনও অত্যাধক মদ্যপান
করেনীন বা কোনো প্রকার নিষিক্ষ মাদক
প্রব্যাদিও সেবন করেন্নি।

সমগ্র গ্রন্থ টর বিচারে এই বান্তিগত কৈফিয়ং পাঠ করা কর্তবি। অনেককাল আগে আমরা বিং দেম বাাক এলাইভ' নামক একটা এ্যাডভেণ্ডার কাহিনীমূলক ফিন্ম দেখেছিলাম, এই ফুলেখ সেই ফিল্মের মত কিছ্ কিছ্ চমক পথানে স্থানে আছে, তবে, তার জনা লেখককৈ ধনাবাদ দিতে হয়, কারণ সেই সব অংশ সভাই কিমায়কর। মারি-জুয়ানা সিগারেট সেবনে ভয়, আত্তক এবং পরিশেকে সিম্পানত গ্রহণের কথা ববানায় লেখক কোনো প্রকার ব্যক্তিগত লক্ষ্ম প্রকাশ করেনি। সপত করেই সব লিখেছেন। স্থাকৈ সংগ্রানির বিবরণও দিয়েছেন বিংহু গোপন না রেখে।

পেণ্টতা এবং সারলা-ই ডাঃ ইয়াব- লোনসকীর রচনার সর্বোক্তম গুণ। এর ফলে অনেক হুটী-বিচ্যাত ঢাকা পড়ে গেছে। এই আন্দো**লনের গতি**ফা 🙄 এবং অংগ বিনিশ্চয়তা প্রকাশে লে 🕆 শক্তিমতার পরিচয় দিয়েছেন, কিম্তু আঞ্দা**লনের গতি** ও প্রকৃতি যেখানে দর্বল সেইখানে তিনিও দুর্বল। এই আন্দোলনের পিছনের পটভূমি বিচারসূত্রে ইতিহাসকে যেভাবে গ্রহণ করা উচিত ছিল তা সবলি যথায়থ অনুসরণ করা হয়নি। **লেখকের য**ুক্তির সমর্থনে জ্বে এল মরেনো বা রবার্ট মেরটনের উধ্তি দেওয়া হয়েছে অজস্ত্র। কিন্তু রুশো, রবার্ট ওয়েন গাঁবন, ইমারসন, থোরো, ওয়ালট হাইটম্যান প্রভৃতির কোনো উল্লেখ নেই। এবং শুধু তাই নয়, প্রাচীন রোম থেকে আধ্নিককাল পর্যশ্ত সংঘটিত বিশ্লবের ইতিহাসকে অবজ্ঞা করা হয়েছে।

এর ফলে হিন্প আন্দোলনকে তার নিজস্ব র্পেই গ্রহণ করতে বাধ্য করা হয়েছে। বর্ণনা হিসাবে গ্রহণ করতে পাঠকের বাধ্যে না, তবে ইতিহাস হিসাবে স্বাকার করতে আপত্তি উঠবে।

হিপি আন্দোলন মোটেই ঐকাবন্ধ নর, কতকগলে আদর্শের কথা অবশ্য সাক্ষাংকার স্ত্রে বারবার উল্লিখিত হরেছে। প্রকৃতির বক্রে ফিরে বাওরা বা ব্যাক ট্ নেচার' প্রভৃতি বাদ দিরে বৃদ্ধি একটা মোটামুটি

সিখাল্ডে পেশহাতে হয়, তাহলে একটা বিজ্ঞান্তিকর অবস্থার পড়তে হর। 'টিচার' এবং ছাই প্লিষ্ট শিক্ষক এবং প্রেছিত সম্পর্কে অনেক কথা আছে। আর আছে শিশ্বকৈন্দ্রিক সাংস্কৃতিক বিষয়ে এই बाल्मामत्मत्र धक्छा माथातम आरवमन।

ছোটু শিশ্বো নেতৃত্ব ভার নেবে' এই জনাপেক্ষিক পাশ্চাতানীতি যদি এর পিছনে থাকে, তাহলে শিশ্বদের জেহাদ বা শিশ্ব-দের খেলাখ্লার মধ্যে যে অবাস্তব দিক আছে, তাকেও গ্রহণ করতে হয়। নঞ্জর্পক দিক খেকে ছিপি জীবন অনেকক্ষেত্রে পৌদাদারক, নোঙরা এবং বীভংস মনে **হয়। সংবাদপতের পৃষ্ঠায় যে সব ভদ্র এবং** ভবা বিবরণ হিপি প্রসণেগ প্রকাশিত সেইটাই কিম্তু সব নয়। উত্তর ক্যালিফোর্ণিয়ার **একটি গোষ্ঠী সম্পর্কে কোন এ**কটি সাশ্তাহিক পরে যে রেমাণ্টিক বিবরণ দেওয়াহয় তাল্ইস গোলডিং লিখিত **'লড**ি অব দি ফুলাইজে'র দ্বংস্বাশনময় বণ'না মনে পড়ে।

বেদনাময় ব্যক্তিগত সম্ধান, উদ্দেশ্যহীন यद्दा दिकारना, आया-विधदरमी भाषक स्मधन, চেতনময়ভের অবসান, বাহ্যজ্ঞান লুতে করে আচ্চনের মত পড়ে থাকা, দারদায়িত্ব মূত্র হয়ে জীবন যাপন মোটেই স্কুত্তার পরি-চারক নর: অনেক সমর শিশ্বদের প্রতি অবংহলার পরিচয় পাওয়া যায়, তখন মনে হয় হিপি বাউ-ডুলেপনার তাংপর্য আমেরা মোটেই ব্ৰতে পারিন।

ডাঃ ইয়াবলোনসকীকে ধনাবাদ যে, জিন সবক্ষেতে ফাঁদে পা দিয়ে বসেননি। তাঁব সিম্থান্ডগর্ল মানবিক এবং স্থবেদনশীল। তিনি তাঁর বিশেলষণকার্য সমাজবিজ্ঞানীর দ্বিউকোণেই সম্পন্ন করেছেন। তিনি হিপি আন্দোলনের প্রবন্ধা নন আবার ভার প্রচারকও নন। তিনি অযথা নিন্দার ভারে তাঁর বক্তব্যকে আচ্ছন্ন করেননি। **ধৈর্য এবং** অধ্যবসায়ের দ্বারা তিনি বার বার ঠিক স[ু]র্রাট ধরার চেণ্টা করেছেন। তিনি প্রশন করতে বাধ্য হয়েত্হন যে, এই সব মানুষের মনে থে কি উদগ্র আগ্রহ, আবার সূত্র, থেকে অপিন আবিম্কার/দিয়ে বেন তাঁরা নতুন ৰাণ গড়তে চান। অথচ মাৰ্কিন সমাজে ত' সবই আছে। স্বই-ড আবিষ্কৃত হরে আছে, এ আবার নতুন করে কিসের উদ্যোগ !

কিন্তু সেই সংশ্য তিনি মন্তব্য कर्त्तरहन-

"I was impressed with the eloquence of some of the 'love-seekers' and frankly dismayed with the chaos, poverty and violence that dominated much of the

হিণি আন্দোলন আৰু শ্ধ্ৰ মাৰ্কিন সমাজ নর তার সংক্রামকর অনাত ছড়িয়ে পড়ার সারা প্থিবীকে ভাবিয়ে তুলেছে। লেখক অনেক নতুনদিকের সম্থান এই প্রম্থে দিরেছেন। ছবিগ্রবিত বিক্ষয়কর।

THE HIPPIE TRIP: By Lewis. Yablonsky. Published by Peaga-sus: : Price 6.95 dollars.

সাহিত্যের খবর

পরভেজ শাহিদীর নামে ।। আর এক-🐃 কবির নামে কলকাতার একটি পথ **চিছিত হল।** এবারের এই নামকরণে একটি বৈশিশ্য আছে। যার নামে রাণ্ডার নতুন নামকরণ হয়েছে, তিনি একজন অবাঙালী কবি-উদ', ভাষার বিশিষ্ট কবি পরভেজ শাহিদী। কলকাতাই ছিল শাহিদীর কর্ম-ক্ষেত্র। কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ে তিনি সংদীঘদিন উদ্বে প্রধান অধ্যাপক হিসেবে কাজ করেন। কলকাতার সংশ্যে স্থাপিত হরেছিল তার আত্মিক বন্ধন। তিনি যখন প্রায় শ্যাশায়ী, তখনও তাঁকে কলকাতা এবং বাংলা সাহিত্যের নামে উচ্ছনসিত হতে **দেখেছি। তাই তাঁর নামে রা**স্তার এই নামকরণ করে কলকাতা তার কর্তব্য পালন

সম্প্রতি পরভেজ শাহিদীর দ্বিতীয় মৃত্যু বার্ষিকী উপলক্ষে এক স্মরণসভার **আয়োজন হয়। এর উদ্যোক্তা ছিলেন 'প**র-ভেজ কমিটি। এই অনুষ্ঠানেই কলকাতা কর্পোরেশনের ডেপর্টি মেরর প্রীনীলরতন সিংহ আনুষ্ঠানিকভাবে পূর্ব কলকাতার সাক্রাস রেনজ-এর নতুন নামকরণ করলেন 'প্রভেজ শাহিদী রেনজ'।

প্রাক্তন মন্দ্রী আন্দ্রের বেক্তাক থান কবির প্রতি শ্রুখা নিবেদন করে বলেন--**তিনি ছিলেন উদ**্ধি বাংলা সাহিত্যের সেতৃস্বরূপ।' মেরর শ্রীপ্রশাস্ত শ্র কবির माला छात्र म्मीर्च भित्रक्रत्वत्र कथा উলেখ করেন। সভার ভঃ এ এম ও গণি এম-এল-এ,

কবির একটি কবিতার ইংরেজী অনুবাদ পাঠ করেন। প্রসংগতঃ উল্লেখা, ডঃ গণি কবির একাধিক কবিতার ইংরেজি অনুবাদ করে একটি গ্রন্থ প্রকাশ করেন। **পরভেঞ্জের কবি-**তার একটি বাংলা অনুবাদ পাঠ করেন 🔊 শ্যামলকাশ্তি চক্রবতী। সভার প্রারশেভ সকলকে স্বাগত জানান মহম্মদ ওয়াসিম।

বাংলায় পরতেজ শাহিদীর অনেক কবিতাই অনুদিত হ**য়েছে। সেই সব কবিতা** সংকলিত করে এবং কিছু কবিতা নতন অনুবাদ করে যদি প্রকাশের ব্যবস্থা 'পরভেজ মেমোরিয়া**ল কমিটি' তাহলে** বাঙালী পাঠক-পাঠিকার কাছ থেকে তাঁরা অসংখ্য ধন্যবাদ পাবেন এবং কবির প্রতিও যোগা সম্মান/প্রদর্শন করা হবে।

बार्कातकान भीतकाम ब्रम्क जिल्हा ।। মিচিগান স্টেট ইউনিভার্সিটি কর্ড্ প্রকা-শিত 'মহফিল' পৃত্তিকার একটি বিশেষ সংখ্যা প্রকাশিত হয়েছে প্রখ্যাত পাঞ্জাবী কবি শ্রীমতী অমৃত প্রিতমের উপর। **ভারতীর** সাহিত্যর্গিক মারেই এ সংবাদ শানে আন-শ্চিত হবেন। শ্রীমতী অমৃত প্রিতম পাঞ্জাবী সাহিত্যের একজন বিশিষ্ট লেখিকা। এ পর্যন্ত তার ৪১টি গল্প, কবিতা, উপন্যাস ও প্রবশ্বের বই প্রকাশিত হয়েছে। 'অমাড' পত্রিকায় তাঁর সংগ্রে একটি সাক্ষাৎকার প্রকাশিত হয়েছিল।

শ্রীমতী প্রিতমের সাহিত্য জীবনের স্ত্রপাত হয় অতি অলপ **বয়সেই। এ সম্বন্ধে** এক সাক্ষাৎকারে তিনি বলেছেনঃ--আমার বাবা ছিলেন একজন লেখক এবং আমিই ছিলাম তাঁর একমাত্র সম্তান। আমার **বথ**ন বয়স এগার বংসর, তখন মা মারা যান। খব একাকী তথন আমার দিন কাটত। সেই আমি একাকীত্ব ঘুচোবার জন্যেই

তখন লিখতে শরে করলাম। কিম্তু সেই সময়ের রচনা ছিল তার খুব অপরিণত। 'পাণর গাঁতি নামক কবিতার বইটি প্রকাশের সপো সপো তার কবি খ্যাতি ছড়িরে পড়ে। আর জম্বিয়া ভাটান' বইটি প্রকাশের স্বারা তিনি নিজের কাব্য জগতে স্থায়ী আসন প্রতিষ্ঠা করেন। এই বইটির মধ্যে ভারত বিভাগের বেদনা ফুটে উঠেতহ। ব**ইটির প্রথম** কবিতা 'ওয়ারিশ শাহ'। এমন কোন পাঞ্চাবী নেই, যে এই কবিভাটি পড়েনি বা শোনেনি। প্রসপাতঃ কবিতাটির অংশত অনুবাদ ভূলে ধর্মছ।

'একদিন এক পাঞ্চাব তনরা কে'দেছিল निमाद्ग, সেই কামার কাহিনী নিয়েই লিখেছিলে

তুমি কাবা; আৰু দেখ চেয়ে লক্ষ তনরা কাদিছে **ठक मिट्**क

ওয়ারিশ খাহ! তোমাকেই তারা **ज्ञाकरङ वाक्**रवाद्व।

হে অগ্রন্ধলের বন্ধ। পাঞ্চাবের দিকে চেরে দেখ আ**জ**। প্রতিটি গ্রামের সীমানা এখন মাডদেছে পরিপ্প,

নদীজলধারা রক্তপাবিত আছে।

ভারতবিভাগের প্রেক্ষাপটে তারা করেকা উপন্যাসও রচিত হরেছে। এর মধ্যে বিশেষ ভাবে উচ্চেথযোগ্য 'ডঃ দেব' উপন্যাসটি উন্ন পত্রিকাটিতে আরো কয়েকজন ভার তীয় লেখকের উপর বিশেষ সংখ্যা প্রকা कत्रत्वन वरण काना लारह।

भरतारमारक कम भाषात ।। श्रह्मा আমেরিকান সাংব্যদিক ও ঔপন্যাসিক 🗷

j. 150

গান্দার গত ২৯ মে ফলন্দির। প্রেসিবিট-রিয়ান হাসপাতালে পরলোক্ষমন করেছেন।

ভীন্ন জন্ম আমেরিকার চিকালো শহরে **১৯০১ जारमञ्ज ७० जागण्ये। ১৯**६२ সালে ডিকাগো বিশ্ববিদ্যালয় থেকে পি এইচ ভি ডিগ্রি নিমে ইউরোপ ভ্রমণে বান। ফিরে এলে ডিকাগো ডেইলি নিউকে' বোগদান करमा । छेड मरम्या छोटक इस्टरमान । यावान অনুমাত না দেওয়ায় তিনি ১৯৩৭ সালে এর সংখ্যা সমস্ত সম্পর্ক ছিল্ল করে সম্ভন বান। এরপর তিনি ইউরোপ ও মধাপ্রাচোর बर. तर्म मारवामिक हिरमत्व व्याम करत्न। এই সময়ে তার চারটি উপন্যাস প্রকাশিত হয়: তিনি প্রিবীর প্রায় সর্বচই करतास्त्र धरा भीषयीत सार्क किन्छावित उ রাজনীতিবিদদের সপো সাক্ষাৎ করেন। এই **সাক্ষাক্ষোরে** ভিত্তিতে তিনি যে সব গ্রন্থ রচনা করেন, তাই তার খ্যাতির প্রধান কারণ। তিনি বেসৰ রাখানেতার সংগ্যে সাক্ষাৎ করেন তীদের মধ্যে ডেভিড লয়েড জর্জ, লিয়ন ষ্ট্রটম্কি, ডি ডেলেরা, চিরাং কাইশেক, সম্রাট হিরোহিতো, মহাত্মা গান্ধী, শ্রীক্ষবাহরলাল বি**শেষ উচ্চেথযো**গ্য। ১৯৩৬ সালে তাঁর ইনসাইড ইউরোপ' প্রকাশিত হয়। সে নার্যরে ইউরোপে সংকটের বে বন্দ্রারা নেমে এসেছিল, গান্ধার তার রন্দে তার বিন্তৃত এবং বাশ্তর বর্গনা দেন। 'ইনসাইড এশিয়া' এবং 'ইনসাইড গাটিন আমেরিকা' প্রশ্ব দুটি প্রকাশিত হয় বথারুমে ১৯০৯ এবং ১৯৪৯ সালে। ন্যিতীয় বিন্তৃত্বশুদ্ধের সময় তিনি মান্টার জেনারেল আইসেন্স্রাঙ্গারের জেনারেল লটাফের জনাত্রম সদস্যা ছিলেন। ১৯৫৮ সালে তার জন্যতম প্রখ্যাত প্রশ্ব ইনসাইড রাশিরা প্রকাশিত হয়। ১৯৪৯ সারে প্রশাশিত ডেগ বি নট বি প্রাউড' প্রশ্বে আছে মার সতেরো বংসর বয়সে রেশ বন্দ্রারে মৃত তার প্রেরর কথা বিশিত চারারে মৃত তার প্রেরর কথা বিশিত চারারে

তার পরলোকসমনে বিশেষ করে সাংবা-দিক কগতের বে বিরাট ক্ষতি হল তাতে সন্দেহ দেই।

এশিরার সাহিত্য । । আমাদের নিকট প্রতিবেশী এশিরার অন্যান্য দেশের সাহিত্য সন্বব্ধে আমাদের ধারণা খ্রই সামাবন্ধ। ইরাক বা ইরাণের ভাষা কি? লেখকেরা কোল ভাষার লেখেন? বিশ্বনাথিক।
সাহিত্য কোল পথে ? আমরা একল নিমে
খুন একটা মাধা বামাইনা। আর এ কারকেই
বাধ হর, এলিরা ভূখতে আমরা কলল
বিজ্ঞিয় হরে পড়িছি।

কথাস্লো মনে পড়গো কাইরো থেকে প্রকাশিক জ্যাক্রো-এশিরান রাইটিংল নামে পরিকার একটি কলি দেখে। এশিরা ও আফ্রিকার সহিত্যের বিভিন্ন অনুবাদ এবং সাহিত্য আন্দোলন সম্পর্কে অনেক ভ্রম্বা চোধে পড়ল।

ফিলিপাইনের প্রখ্যাত তর্ব লেখিকা जिल्लम कुरेजिरनात्र अक्ति मकूम केशमान **शकानिक इरसरह। मात्र नाहेक नि उद्देग्छ** আই গো। ওমর থৈয়মের সেই বিখ্যান্ত লাইন शिराहे **উপ**न्यारमञ्जलामः। कृष्टिनी ख σē রোমান্টিক **উপন্যাসের অম্র্প। এক** काहिसी। ১৯৪১ সালে कानान 40.0 আক্রান্ত হবার সময় থেকে কাহিনীর ' স্তপাত। আর শেষ হয়েছে ১৯**৬০ সালে** ভিরেতনাম য্তেধ এসে। সমকালীন ফিলিপাইনের সমাজীবন উপন্যাস্টির মধ্যে উম্ভাসিত।

পশ্চিম পাকিস্তানের সাহিত্য

পাঞ্চিতানের দুই অঞ্চল প্রচলিত ভাষায় নাডকৈ পার্থক্য अभिद्रहे । প্ৰ' অপুল। পাকিস্তান বাঙ্গা ভাষাভাষী লাহিছোর ভাষাও দাধারণত বাংলা। উদরিও **প্রচলন আছে। আর** পদিচম পাকিস্তানে উদ্বিষ্ট ব্যাপক প্রসার। সাহিত্যের ভাষা কোথাও পাুশতো, কোথাও পাজাবী, কোথাও সিন্ধী এবং কোথাও বালোচী। **আটাক্ষ নদী থেকে দক্ষিণে করাচী** পর্যাস্ত বি**ল্টোর্ণ এলাকায়** আজ্বাল পাঞ্চাবী ও সি**শ্বী উভয় অঞ্লের** ভাষা বাবহুত হয়ে **থাকে, তথ্য**বিদরা এই অঞ্চলকে উদ**্**র क्रमक्रीय वरण प्रस्य करत्ने। प्रज्ञान খাণমনের পর সর্বপ্রথম ঐ এলাকায় উদরে **११५ जन १३। जाउनी कार्यमी अपर स्थानी**श ভাষাণানীলর সংমিশ্রণে উদ'্ ভাষার উৎপত্তি। সিন্ধী, পাঞ্চাবী এবং উদুর বুনিরাদ সম্পর্কে আলোচনা করলে বোঝা ষায় এই ভাষাগ্ৰলি প্ৰকৃতপক্ষে এক এবং েকা একই ব্নিয়াদ থেকে সম্প্রসায়িত। তবে পরবভাকালে তার পরিবর্ধন বিভিন্ন পরি-বেলে হওরার এবং তার মধ্যকার কোন-কোনটা নানা অভাবনীয় অক্থায় পড়ার হলে ভাষার গঠনপার্থতি বিভিন্ন আকার थामन करम, धारा भाषा-श्रमाथानाज रैययमा স্থিট হয়। প্ৰেণ্ডাত গঠনপণ্ধতি সিন্ধী 🦥 🎃 পালাবীর নিকটবতী — উদ্ভৱ ততটা ্রভার। কিন্তু এ সম্পর্কে এই কথাটি স্মরণ স্থান উচিত, সিন্ধী এবং পাঞ্চাবীর মতো প্ৰিভাও উদরে বৰ্ণমালাডেই লেখা হয়ে TR# !

পশ্চিম পাকিস্তানের বিভিন্ন অঞ্জের সাহিত্য এবং উদ'্ সাহিতা ম্লড একই একই সমাজ-মানসের এবং প্রতিক্ষ্রি। গত এক হালার বছর ধরে মুসলমানরা এই উপ-মহাদেশে যে সভাতা গড়ে তুলেছে, ভাকে উন্নত ও বিস্ভৃত करतरह जर जात्मत अक्रणोत्र जह लिएन যে স্ভু মানসিকতা গড়ে উঠেছে, ভার প্রকাশ যথেষ্ট পরিমাণে পাওরা বার উদা সাহিত্যের বদওলতে এবং অনেকাংলে পশ্চিম পাকিস্তানের ভাষাগ্লিতে। মূল বিষয়ে ঐক্য থাকায়, চিল্ডার ক্ষেত্রে कार्यकारमा तरहास मध्या। मास् व्यावमृज লভিফ ভীটের 'রিসালা', খোশহাল খান খটক এবং আবদুর রহমান বাবার 'কালাম'. ব্লেছে শাহর কাবা এবং ওয়ারিশ শাহর 'হীররানঝা' স্থানীয় বৈশিষ্টাময় এবং প্ৰশত্তা পাঞ্চাবী, সিন্ধী প্ৰভৃতি বিভিন্ন ভাষায় লেখা ইলেও তা সাধিকভাবে একই সভাতার প্রতিক্ষাি পদিচম পাকিস্তানী সাহিত্যের অন্যতম বৈশিশ্টা শ্থানীয় পরি-বেশের প্রতিফলন। যেমন, প্রশক্তো সাহিতে। সীমানত প্রদেশ এবং সেখানকার উপজাতীয় অধিবাসীদের জীবনবাচার ছবি পাওরা ৰার। তাছাড়া, কঠিন পর্বতমালা 🔞 পাধর-জাচিপৰে পথ-খাট, উপতাকা এবং ব্ৰহ্মা পাহাড়ী অন্তল স্পন্ট হয়ে এঠে প্লেডো সাহিত্যের চিত্রকলেপ। এই রক্ষ পাঞ্চাতী সাহিতাও সে অঞ্জের প্রতিক্ষবি। ভার উপমা ও দৃশ্টান্ত স্বই দৈনন্দিন কথাবাড়া बन्दर रम्पारम रचे 'ब्राजम' 🔹 'ब्रेणक'-बन्न

দাসতান বর্ণনা রয়েছে, তা গ্রামজীবনেরই
কথা। রানঝা অথবা মীরবার মর্মবেদনা এবং
তাদের প্রেম-কাহিনী ওয়ারিশ শাহ এবং
পিল্ল শাহ বেভাবে শব্দের ছুলিতে
একেছন তা প্রতাক পাঞ্চাবী নওজোয়ানএরই মর্ম-কাহিনী।

প্রণতো ও পাঞ্চাবীর নতো সিন্ধী এবং বালোচী সাহিত্যেও ্রছে স্থানীয় র্প ও পারিপাশিব'কের **জীবনত ছ**বি। বিশ্তৃত বাল্কাময় মাঠ, তরপা-সংকুল সিল্ধুনদ্ পশ্পোল, জয়াট মেছপ্লৈ, কারিবর্ষণ, ক্ষেত-খামারের সঞ্চীবতা---তা সাধারণ লোকেদের দৈন্দিন ক্ষীবনের ঘটনা-প্রবাহ প্রস্কৃতি পাহ আবদ্ধল লভিফ একান্ত সহজ ভাষায় ও ন্যাভাষিক-ভাবে আপদ রচনায় অত্যন্ত চিন্তাকৰ'ক-ভাবে বর্ণনা করেছেন। শাহ আবদ্দা লতিফ হাড়া অন্যান্য সিন্ধী লোক-গাথা ও লোক-কাহিনীর মধ্য দিয়ে নিজেদের ভাষনা প্রকাশের চেণ্টা করেছেন **এবং দেখানকার সমাজ-বাবস্থার উলে**খ করে তাকে চিত্তাকর্ষক করেছেন। পশ্চিম সাহিত্য আরো অদেব পাকিস্তানের **এগিরেছে। মুগের ছাপ পড়েছে ভার ও**পর ক্ষতাশালী সাহিত্যিকদের আত্মপ্রকাশে পাকিস্ডানের এই অঞ্জের সাহিত্য বিশেষ मग्रन्थ ।

and th

নতুন বই

ক্ষেণ্ড (জীবনী)—প্রভাকর মাচরে ।। জনবোদ হ ক্ষিডীপ রার ।। সাহিত্য জভাদেমী, নিউ দিলীঃ দাম ২-৫০ টাকা ।।

প্রেমারণ (জীবলী) - প্রকাশচন্দ্র গ্রুত ।।
জনুবাদ ঃ সুখাকাদ্য রারচৌধুরী ।।
সাহিত্য অঞ্চাদেমী, নিউ দিলী ।। দাম
২-৫০ টাকা ।।

শ্বীকার করতে বাধা নেই, একজন শিক্ষিত বাঙালির সপ্যে রুলেপীর সাহিত্রের পরিচর বতটা ছনিন্দ্র, প্রতিবেশীদ্বের নৈকটা সভ্তেও ডামিল-তেলেগ্র-ছিল্পী-উদ্বি-উডিয়া-অসমীরা প্রকৃতি প্রাদেশিক সাহিত্রের সংখোগসম্পর্ক ততটা ছনিন্দ্র নার। সাহিত্রের পরিপ্রিট সাধন ও তাদের মধ্যে পরস্পর সহযোগ্য বৃদ্ধির উদ্দেশ্যে প্রকাশ করেছেন 'ভারতীর সাহিত্যকার প্রক্রক্রমালা'।

এই সিরিজের ন্বিতীয় বই প্রভাকর মাচনের 'কেশবস্ত' এবং সণ্ডম গ্রন্থ প্রকাশ-চন্দ্র গালেজর 'ত্রেমচন্দ'। মূল বই সংটো ইংরেজীতে লেখা। সম্প্রতি বাংলায় অন্বাদ করেছেন যথাক্রমে ক্ষিতীশ রায় ও স্থা-ক: • তে রারটোধারী। পাঠক হিসেবে আমা-প্রথম বিষময়, বইগালির মাদ্রণ ও অপ্যসম্জা। मृत्या वहेरातह अञ्चःश्रक्तम भाभा स्टब्स् আন্মানিক থ্নটীয় দিবতীয় শতকে তৈরী এক**টি ভাস্ক্রের প্রতিলিপি। ম্বিতীয়** বিসময়, কেশবস্ত সম্পর্কে। ১৯৬৬ সালে তার জন্মশতবর্ষ প্রতি উৎসব হয়ে গেছে। কিন্তু বাণ্যালি প'ঠকের সংগ্য তাঁর কবি-ভার অপরিচয়কে উপেক্ষা করা যায় कारमात्रकार ।

'কেশবস্ত'-এর ভূমিকার প্রভাকর মাচকে লিখেছেন 'উদ্ব' ভাষীর কা'ছ হালী रयमन, वाश्वाभीत कारह रयमन भध्नपूपन पछ, তামিল ভাষীর কাছে যেমন म् द्वकाणा ভারতী বা গ্লেরাটীর কাছে নম্দ, তেমনি হলেন কেশবস্ত মারাঠীদের কাছে।' লেখক গ্রন্থটির ভূমিকার লিখেছেন কেশবস্তের বিভিন্ন দিক সম্পর্কে সাতটি প্রবন্ধ, যথাক্রমে (১) ক্লীবনা, (২) কেশবস্থাতের প্রেমের কবিতা, (৩) কেশবস্তার প্রকৃতি প্রেম, (৪) কেলবস্ত ও সমাজসমসা, (৫) অন্-বাদ, (৬) অভিনবত্ব ও (৭) সমালোচকের দৃণ্টিত কেশবস্ত। শেষের দিকে ছাপা হয়েছে নিবাচিত কবিতা'র কিছা অন্বাদ ७ श्रम्थशक्षी ।

প্রেমচন্দের রচনা অবল্য বাংলি পঠিকের নিকট আদৌ অপরিচিত নর, কিস্তু তার কীবন অনেকের কাছেই অক্সাত। তার বিখ্যাত উপনাাস 'গোদান' বাংলার অনুদিত হরেছিল প্রার দুই বুল আগে। হিল্পী সাহিত্যের গোকি ছিসেবে তিনি আগতিয়ান। প্রেমচাদ নিকের জীবনকে তুলনা করেছেন 'সমতল ভূমি'র সংশা। 'উত্তর ভারতের বে-অণ্ডলে তিনি অন্তেমচাদেন এবং যেখানে তার কর্মান্ত্রীকন অতিবাহিত করেছিলেন, সেখানেকার প্রত্যক্ষ দশনের ভিত্তিতে' তিনি লিখে গোছেন প্রায় তিন শো ছেটেগ্রুপ ও বারোটি উল্লেখযোগ্য উপনাাস।

এই প্রশ্বের লেখক প্রকাশচন্দ্র গৃত্ত প্রথাগত প্রধাততে তাঁর জীবন কিংবা সাহি-তারে পরিচর দিতে চেন্টা করেন নি। দেশ-কাল ও লাতীয় জীবনের অগ্রগতি ও বিকা-শের সন্পো সন্পো তাঁর জীবনের সংখ্যান্তির বিষয়টিকে বিশেলবল করেটান সভরে স্তরে। সাধারণত জীবনী-ভাতীয় গ্রন্থে জীবনের অস্তর্গণ পরিচরটা থাকে উহ্য। এ গ্রা-তার ব্যতিক্রম। বরং বহিষ্টিনার অস্তর্গ্রান্ত হিশ্বে সর্বাদাই প্রবর্গমান খেকেছে ইনার-লাইফ।

আমরা সাহিত্য অকাদেমীকে অভিনদন জানাই, বই দুটো প্রকাদের জন্য। কেননা, আমাদের বিশ্বাস, সাহিত্য সম্পর্কে আলোচনায় যেমন মানুষ সাহিত্যক সম্পর্কে আগ্রহী হয়, তেমনি লেখকের জীবনী পাঠে উৎসাহিত হন লেখা সম্পর্কে।

বই দুটোর অনুবাদ স্বাচ্ছদদ ও সাবলীক। প্রচ্ছদ পরিকল্পনা সত্যঞ্জিং রায়ের।

আভিশশ্ত প্রেম (উপনাস)—নিখিলরঞ্জন মাইতি। কুনকুম প্রকাশনী। ১০৩ চবি, সীতারাম খোষ শুটীট, কলিকাতা-১। ম্লা তিন টাকা আট আনা।

নিখিলবাব্র এটি 'সম্ভবত প্রথম
প্রকাশিত উপন্যাস। উপন্যাসটি কাছিনীনিভ'র। প্রফেসর মিলন চৌধারীকে ভালবেসে ছল সংজাতা মুখার্জি। নিজেই গায়ে
পড়ে আখারীরতা করেছিল সংজাতা। স্বাতা
তার ভালবাসাকে মানবিক চাওয়া-পাওয়ার
উধের্য প্রতিষ্ঠিত না করে প্রশাস্ত রায়্রে
বিয়ে করেছিল শাস্তীরভাবে। তাই বিবাহিত
জাবান তার না এল স্থা, না শাস্তি। প্রক্যের ভাবনা-চিস্তার মারপাতে জাবন
কাটল তার। কিক্তু যখন ভুল ভাগাল,

ভখন তার হৃদেয়াকাশে নেমে এসেছে রাভের অধ্বকার। সে এক অভিশণত প্রেমের নামিকা, কাতির সূবা চিরদিনের মত অকত বৈতে বদেছে। অভিশণত প্রেমের এই মূল আখানকে বংগেত আক্তরিকতার সপো এবং কৌললী লেখন-ভণিগমার মাধামে লেখব ফুটরে তুলতে চেড্টা করেছেন। প্রথম থেওে শেষ প্রথমত ঘটনার আকর্ষণ প্রেম মাত্রাতিনি বজার রেখেছেন। অধ্যা চটকদা কিংবা যৌন-উত্তেজনা নেই। পরিণত বিলও না হলেও কাহিনীর গতি ক্রছেল দেশী সরল এবং ভাষা প্রাজ্ঞল—সাধার পাটকের পক্ষে যা উপেক্ষণীয় ন্য। ছাণ প্রছেদপাট ও বাঁধাই স্কুন্সর।

ওরা ক্যাকটালের ফ্লে (উপনাাস)—সবি বস্। বিচিত্র প্রকাশনী। ৭, নব কুণ্ডু লেন, কলিকাতা-৯। ম্লু টাকা।

আৰকাল গল্প-উপন্যাসে वामाই विश्वय थाक ना। नानाविश्व आणि ও মতবাদের গোলকধাধার বিবর্বস্তু অসহারের মতই ঘ্রপাক থেরেই মরে। । সাধারণ পাঠক চমংকৃত যদি বা হম, মিং একটি গলেপর রসাম্বাদন করতে না ং যে প্রচন্ড অতৃণিত ভোগ করেন, খ বিন্দ্রমাত্র সন্দেহ নেই। উপন্যাসটি এদিক দিয়ে এক **ব্যা**ঘ উপন্যাসটির বিষয়ব**স্তু নতুন ধরনের।** ও অন্যান্য নেশার ব**স্তু নিয়ে যে বেস** জাল বিশ্তার করা **হয়েছে, উপন** ঘটনার মধ্যে তা অতি মুন্দীয়ানার সাজান হয়েছে। বাস্তব **জগতের ছা** সাহিত্যবস্তুতে রূপাশ্তরিত করবার, চ দেখা পাত-পাত্রীকে ক**থালিলেপর চরিত্র** তোলবার দৰ্গি**ট লেথিকার রয়েছে, এ** কথা নয়।

উপন্যাসের প্রধান চরিত্র ক্রম্ভ ।
সমাণলার এবং নোংরা ছ্পিত আ
সংগে তার ঘনিন্ঠ সম্পুরুষ। ।
দুনীতিপরারণতা স্বাভাবিকভাবেই
উঠেছে। দুনীতিপরারণ হলেও লে
বাংসলা হারারনি, বে কারণে ভার
স্পুরুষী কন্যা হেমলতাকে সুপুরুষ
সরিয়ে রাখবার আপ্রাল চেন্টা আ
রজতের প্রতি শিরিনের ভালবালা
বিষার সৌরভের মতই। লেক্ডিয়ের
প্রকাশতিশ ও সংলাশ অবক্রয়েই
প্রকাশতিশ ও বাধাই সুন্দর।

ৰইকুণ্ঠেরখাতা

চিঠিপতে মোহিতলাল

ভলতেরারের সেই মোক্ষম উন্তিটি জ্লানা আছে সকলেরই—মানুৰ ভাষা পেরেছে মনের কথা গোপন করার জনো।

কথাটা যদিও বিদ্রুপ করে বলা তব্ব সাহিত্যের ক্ষেত্র অন্তত স্বীকার করতেই হবে পাঠকের সপো একটা অসপট আড়ালা থাকে সাহিত্যিকেব! তাকে সংযত হয়ে কথা বলতে হয় অনেকের সপো, বহুরে উন্দেশ্যে। বিশেষকে পেণছে দিতে হয় নিবিশোধের সীমানায় ব্যক্তিকে নৈব্যক্তিকতার স্তরে।

কিন্তু চিঠিপতে সকলেই নিরাবরণ, সম্প্রচ্ছম এবং মান্ডারক। কেননা, চিঠি হালা, এক ধরনের ঘরোয়: আলাপ, পরদাতা ও পর্ত্রাপকের মধ্যে সংলাপ বিনিম্বরে মাধাম। স্থানগত ব্যবধান সত্ত্বে পরস্পরের ম.ধ্য থাকে না তৃতীয় প্রশ্নের উপস্থিতি।

প্রসংগক্ষে মনে পড়ে, প্রথমা দ্বর্গীর কাছে লেখা নজবলের একমাত চিঠিটির কথা। অন্য কোনো পাঠক-পার্টিকা জ্বটবে জানা থাকলে হরতো সে চিঠি তিনি আনো দিশ্রতন না, কিংবা লিখরেও তাঁর ভাষা হতো অনারকম।

ঐ একই কারণে আমাদের আবিণ্ট করে
কটিসের বান্তিগত চিঠিগালি, রবীণদনথের
ক্রীকে লেখা চিঠি আমাদের এত আগ্রহ
সঞ্জার করে। টি এস এলিঅটকে বোঝার
কলো আমরা পড়ি এজরা পাউণ্ডের কাছে
লেখা ভার চিঠিগালি।

মোহিতলালের প্রগ্রেছ

অবশ্য চিঠিপত্ত যে সবস্থয় মধ্যর উপলব্ধ ধারক হবে, তার কোনো মানে নেই। লেখকের মানসিকতাও চিঠির বন্ধবাকে নিয়াশ্যিত করে আনেকথানি। মোহিতলালা মঞ্জুম্দারের প্রতাবলীকে হান্তির করা যায় তথ্যর অভিবাত্তির উদাহরণ হিসেবে। তিনি আছ্মেবিবেক কিংবা অভ্যুখি বান্তিত্ব নন, যুক্তিবাদা সমালোচক, আ্থাসচেতন কবি, গ্রুপদী চিত্তনের অন্গামী। আর সংগ্রাকিছ্টা মিল আছে মাইকেলের। সেই প্রবল পারুষ, সেই নিয়তি-তাড়িত জীবন।

্তব্ দৃইজনের বাজিত দ্বেরকা : 'মোহিতলাল অধীর, অসহিক্ষ্, বিচারশীল, দুপ্তবাদী, আত্মপ্রতারসম্পর মধ্যদ্দ অধীর, অসহিক্ষ্ চিন্তাহীন, সরল।' Kailes Chandra Ghas Rosal Barusa Po (24 Pargs) 2008

paramicas far minis amo

THE THE MAY SOUN - MISS IN - MISS IN

Les of con in a wealth - forth and the state of the fight of the distant fine of the state of th

মাস করেক আগে বেরিছেছে আজহার-উন্দীন খান ও ভবতোখ দত্তের সম্পাদনার মোহিতলালের পরগ্লো টিঠিগ্লি সংগ্রহ করেছেন আজহারউন্দীন খান।

ভূমিকায় শ্রীখুক্ত ভবতোষ নপ্ত লিখেছেন: "ত'র পত্র একাশত ব্যক্তিগত নিভ্ত-চারণ নয়, আবার বস্তুগোরবহান অলস কল্পনার শিল্পরচনাও নয়:... মোহিতলালের পত্রে বস্তবাই নড়, এবং সে বক্তবা এমন যে তার অভিধা শুখু লেখক বা উদ্দিন্টের মধ্যে বন্ধ থাকে না। এইজন্যেই মোহিতলালের পত্রের নৈবাজিকভার গ্র্ণ আছে, সাহিতামাত্রেরই যা উৎকর্মের ক্রেন।

বারিগতভাবে মোহিতলালের সংগ্র পরিচয়লাতের স্থোগ হর্মি আমার। দ্র থেকে যেট্কু জেনেছি, ভাতেই প্রশামেশানো এক ধরনের ভর ছিল তাঁর সংপর্কে। কেন ভানি না, মনে হতো, মুখোম্থি বসে তাঁর দুপো কথা বলা চলে না বেশিক্ষণ। প্রসংগক্তমে ভবতে। যবাব কিশেছেন ঃ
'প্রবচনাতেও মাহি তলালের পের ক্র অমাদের মতো দ্বিধাগ্রুত সংশয়বিচলিত দ্বপিচেডা আদশান্দদেন ক্ষত-বিক্ষত বাঙালী পাঠককে বিশেষভাবে আকর্ষণ করে। তাঁর লেখায় কোনো দ্বিধা নেই, অনিশ্চয় ধারণা নেই। যা বিশ্বাস করেছেন, সে বিশ্বাসের প্রতিকে কোনো ইউদ্বেত্তার বছপাতেই টলাতে পারেনি, হোন না তিনি গােধী, হোন না তিনি রবীন্দ্রনাথ।'

এই সংগ্রহের চিঠিগন্নিল পড়তে পড়তে কেবলই ঝনে বাজে এক বার্থ পৌর্বের জনালা, প্রবল আদর্শবাদী একটি মান্বের হাহাকার, তীক্ষা ব্রিবাদী সমালোচকের কঠিন ভংশিনা ও দীর্ঘশবাস। কথনো তাকৈ মনে হয় রুম্ধ, কথনো ব্যাহিত, কথনো ভাইকারী। ভিন্তু কোথাও নেই অনুভাগের ছিটেকটা। চিটিবলুলির ভাষাও তেমনি কক্ষা। ভবড়োববাবুর মতেঃ ভাষা ভাষা সালকারা নটা নর, ব্লাক্সোভিতা কঠোরা ভৈর্মী।

বিশেষশ-প্রসংশ শ্রীষ্ট নত লিখে-ছেনঃ ক্ষমও কথনও তাকৈ গোড়া অংধবিশ্বাসী বলে মনে ধ্ওয়াই ন্যাভাবিক। মনে হ্যা, তার মন যেন একটা জারলার গিমে অচল-প্রতিত হথেছে। জগতের প্রবাহ মির্ঘির বিধানে যে অবশাস্ভাবী পরিলামের লিকে এগিয়ে চলে এসেছে, তিনি কিছুতেই তাকৈ স্বীকার করে নিডে পারছেন না।'

হয়তো এটাই ভার বার্থভার প্রধান কারণ, শ্ববিরোধিতার উৎসভূমি।

তব্ কথনো তিনি আত্মশন নন, গরাবরই পাঠকসচেতন এবং নিকস্ব বিশ্বাসের
কাছে দারিত্বশীল। জীবনকে তিনি শাসন
করেছেন, অনোর কাছে নাতিস্বীকর
করেনিন। প্রবল আত্মশীদাবোধে সর্বদাই
শ্বশাসিত। শ্বভাবতই চিঠিপগ্রেও প্রকাশিত
ইয়েছে তার সেই অপরাজেয় মনোভাবের
থর দীশিত।

আজহারউদ্দীন খানের 'নিবেদন'

'নিবেদন'-প্রসংগ্য শ্রীযুক্ত আজহার-উদ্দীন লিখেছেনঃ প্রকৃতপক্ষে লেখকের প্রবেদীই তার জীবন ও সাহিতোর শ্রেষ্ঠ ভাষ্য ও মধোপমৃত প্রতিচ্ছবি।'

সেজনো তিনি বছর দশেকের চেডার সংগ্রহ কান মোহিতলালের শতিনেক চিঠি। কেবল সন্দেহ ছিলঃ 'যে-দেশে স্বায়ং রবীন্দ্রনাথের চিঠিপত্রের কার্টিত নেই, সে-দেশে মোহিতলালের প্রস্কান্ধর প্রকাশক পাওরা সোজা ব্যাপার নয়! তদুপরি মোহিতলাল মতান্তরকে মনান্ডরে নিয়ে গিয়ে দেবজার নিবাসনদন্ত হাতে তুলে নিয়েছিলের, স্বাইকে শুলু করে তুলে-

প্রায় এক দশক আগে প্রকাশিত 'বাংলা সাহিত্যে মোহিতলাল' গ্রন্থ লেখার সময় আজহারউদদীন সাহেব তাঁয় অনেকগ্রিল মুল্যবান চিঠির সন্ধান পান বলা যায়, ঐ চিঠিগ্র্লিই তাঁর এই সন্কলন প্রকাশের প্রধান প্রেরণা।

তব্ কাজ করতে গিয়ে তাঁকে অস্থিয়া ছোগ করতে হারছে অনেক। 'বাংলা সাহিত্য মোহিলাল'-এর ভূমিকায় দুঃশ করে লিখেছিলেন ঃ মফশকে বসে এ জাতীয় বই মচনা করতে গিয়ে নানা প্রতিকৃদ্ধতার মধ্যে পড়তে হয়েছে। হৃদ্যতা ও অন্দারতা, আগ্রন্থ ও বিমুখতা দুই-ই পেয়েছি। নাম করতে চাইনে, কবির কয়েকজন ঘনিষ্ঠ মধ্যে কাছ থেকে সহযোগতা ও সহয়েতা প্রাথনা করেও অন্তত সোজনের খাতিরেও জারা আমার কোত্ত্তে বিংবা চিঠির জাবার দেননি।'

দশ বছর পরে, প্রগ্রুছের নিবেদনেও তিনি সেই ক্ষোভই ভাষাণ্ডরে প্রকাশ করেছেনঃ "আপাত্রদ্ভিতৈ আপনারা ধাদের নাম করবেন, তাদের নাম আমি জানি, তাদের কাছে মোহিতলালের অনেক ম্পাবান চিঠি আছে। কেন জানি না, যোগাযোগ করলেও চিঠি দিতে তাঁরা কুন্ঠিত। বানের কাছে চিঠি পাবার প্রত্যাশা ছিল বেলা, তাঁরাই বিমাধ করেছেন সবচেয়ে বেশা।

তার এই অন্তি-উক্ষ ,মন্তব্যের মধ্যে
আমি সন্ভব করি, জাতীয় সংকটের
আরেকটা দিক। বাঙালী পাঠক ও বংশিং
লীবাদের নির্মায় উদাদীনাও অনেক সমর্
কি রকম আঘাঘাতী হনে উঠতে পারে, এও
ব্যায় তার অন্যতম নিদর্শন: তা হলে,
এতদিনে বের্নো উচিত ছিল, শুন্ধ
মোহিতলাল মার, আরো অনেকেরই প্রাক্যাজের প্রাচীন দলিলক্তি। এ ব্যাসির
গান্চমক্র প্রাচীন দলিলক্তি। এ ব্যাসির
গান্চমক্র প্রাচীন দলিলক্তি। এ ব্যাসির
গান্চমক্র সরকারই বা কি করছেন?
বাঙালী গবেষকরা কি এখন পি এইছ ডি,
ডি-লিট পাওয়ার্ম ব্যাপারেই ব্যাকত
লাইরেরাগি,লি কি কেবল গলপ উপন্যাসেই
ঠাসা হবে?

তব্ আজহারউদ্দীন সাহেব কৃতজ্ঞতার সংশা দমরণ করেছেন, অধ্যাপক তারাচরণ বসুর আগ্রহ ও সহযোগিতার কথা। মোহিতলালের অভীবন সুহুদ জীবনকালী রায় ও কালি-কল্যা-এর সম্পাদক মুরলীধর বসুছিলেন প্রগুছে প্রকাশের ব্যাপারে বিশেষ উৎসাহী। ভারা কেউ-ই বইটি দেখে যেতে পারেনান।

কেননা, প্রগাছছ ছাপা হতে সময় লোগছে প্রায় এক ব্যুগ। বাংলা বই ছাপার ইতিহাসে বোধহয় একেও একটি স্মরণীয় ঘটনা বলা ধায়। গামতন্য লাহিড়ী ও তংকালীন বংগসমাজ-এর প্রথম সংকরণ ছাপতেও নাকি প্রায় এক দশক সময় লোগছিল।

भग्नगृत्व्यत्र न्याचन्ता ७ खमाना श्रमभा

এই সঞ্চলনে গৃহীত হয়েছে ১৯০টি চিঠি। সঞ্চলকের অনুমানঃ 'সারা জীবনে তিনি যত চিঠি লিখেছিলেন, তার অধে কও এগালি নয়।' সেজনো তিনি আবেদন জানিয়েছেন, 'মোহিতলালের চিঠি যদি কারো কাছে থাকে, তিনি যেন অনুগ্রহ করে' তার প্রতিলিপি প্রকাশকের ঠিকানায়, তার নামে পাঠান। 'সংখ্যায় বেশী হলে থতে থকে প্রকাশ করা হবে।' বইটি প্রকাশ করেছেন জিক্সাসা। ১ কলেজ রো কলকাতাঃ

এই প্রস্থের চিঠিপ্রলিকে ভাগ করা হয়েছে পাঁচটি ভাগে। প্রতিটি ভাগের শিরোনাম আলাধা। যথাক্রমেঃ

- ১। সাহিতাচিন্তা : ৪০টি চিঠি ২। দেশ ও সমাজ: ১৮টি চিঠি
- 0। निल्ल-पर्मानः ७ हि डिडि
- ৪। ব্যক্তিচরিত্র ও **আন্তজ্ঞতিনঃ ২**টি চিঠি

৫। विविधः १३पि विठि

প্রচ্ঞাপকদের মধ্যে ররেছেন প্রবোধস্য সেন, ধীরেন্দ্রনাথ মনুখোপাধ্যার, বনম্ফুল, কুম্মুদরঞ্জন মল্লিক, বত্তীশুনাথ দেনশ্যুক, দিলীপকুমার রায়, বিভুতিভূষণ মনুখেন পাধ্যার, দিভিন্দুচন্দ্র বন্দোপাধ্যার, গৌরী
দাক্ষর স্কুট্টার', মুরলিধর বসু, পরিমন্দ্র লোশ্বামী, জবিনকান্দ্রী রাম, শিক্ষান্দ্রীলা নাম, সংরাজকুমার রাম্টোধ্রী, জচিন্ডা
কুমার সেনক্ষ্ণত, মানিক্ষন্দ্র দাল, ভারাচ্যাণ বস্তু এবং জারো অনেকে।

সংকলকের বিশেষ নিন্দার গাঁকির
পাওয়া যায় গিয়য়-সন্জায় ও তথাগঞ্জী
প্রথমনে। প্রতিটি চিঠিয় আনুষ্যাপ্তম পরিচয়:
সামিবিন্ট হয়েছে পরিলিন্টে। এজনো যে কি
পরিমাণ পরিশ্রম ও ধৈর্যের প্রয়োজন হয়েছিল, তা অনুমান কয়াও কঠিন। আমাদের
দেশে, একক প্রমাসে, ব্রুকম লেথকই
ভানুর্প কাজে সকল হয়েছেন।

প্রসংগ্রহমে সমত্বা (মাসক্ষেম ভারত'।
সম্পাদককে দেখা মোহিতলালের চিঠিটি।
ভার স্টে ধরে আক্সামউদ্দীন ববংশবিক্রেন্দ্রলাল বিরোধের মতো নজর্লমোহিতলাল কিন্দ্রদতীর আবরণ উল্মোচন
করেছেন। তাতে তিনি দেখিয়েছেন,
নজর্লের সংগ মোহিতলালের ঝগড়াঝাটি
যাই হোক, ভালোবাসাটা ছিল আজীবন।

'কল্লোজ ছ্গ' পড়ে মোহিতলাল অচিশ্তাকুমার সেনগংশতকে লিখেছিলেনঃ 'আমার সহিত নজর্লের পরিচ্য ও কাহার সহিত যে সম্বাধ দড়িইয়াছিল, তাহার একটা মোটাম্টি সতঃ বিবরণ আপনিই নোধহয় সর্বপ্রথম প্রকাশ করিলেন নজর্ল সম্বাধ্য আমি যে কঠিন মৌনরুং অবলম্বন করিয়াছি তাহার একাধিক কার্ণ আছে। আমার জীবনে ওইটাই প্রথম বা 'শক'—তাহার পরিমাণ বা গভীরতা অনে ব্রিবে না।'

তব, স্বীকার করতে হবে, আজহাণ উন্দীন সাহেব অসঙেকাচে মোহিতপাঙে সব চিঠিকে এ সংকলনে জারগা দিং পারেননি। কারণ হিসেবে বলেছেন: 'সমকাল এবং সমকালীন সম মোহিতলালের খোলাখ: অস্বাস্তকর পরিস্থিতির উম্ভব ই পারে-এই আশ•কায় কাউকে বিরত[া] কিংবা প্রকাশককে আথিক ক্ষতিগ্রন্ত ক আশতবিক ইচ্ছানাথাকার কিছন সম্পূর্ণ বাদ দিতে **হয়েছে; করেকটি চি** অংশবিশেষ বজনি, কোন কোন স্থানে ? ধ্যম-পরিচয় গোপন রেখে প্রকাশ ক হয়েছে। তাই কোন কোন **পতে** 1 অসংগতি লক্ষ্য করা যাবে।

এই অসম্পূর্ণতা সত্তেও আয়ার

হয়, 'মোহতলালের প্রস্কুত্র'

সাহিত্যের এক ম্লাবান সম্পূদ। যে
পোর্ব ও অনমনীয়তা নিয়ে মোহিত্ত আবিভাব, য়ার জন্যে তিনি ক্রমাগত ত্
বংশ্-বাংশবহীন ও নিঃসংগ হয়ে
ছিলেন, সেই একরোখা ব্যক্তিরের জনা
উত্তাপ অনুভব কবা বায় করেকটি টি
এখনো অনেক কাহিনী অপ্রকা ্তিরা নোভিলেভা লেনিনয়াদ বিশ্ব-বিলালেরের ভারতীয় ভাষাতত্ত্ব বিভাগের অঞ্চলা। এ বছর তিনি পশ্চিমবংশ সরকারের রবীন্দ্র প্রস্কারে ভূষিত হলেজেন। তার বাঙলার লেখা এই সাম্প্রতিক নিবংশটি 'অম্তে' প্রকাশের জনা গাঠিরেছেন।

त्याि । इत्राच्या । इत्राच । इत्राच । इत्राच । इत्राच । इत्राच ।

ए बा ना कि का का



রুশ দেশে বাঙলা ভাষা ও সাহিত।
চচার দীর্ঘ ঐতিহা আছে। রুশ প্রযটক ও
সংগীতকার গেরাসিম লেবেদেকের নামের
সংগা তা যুত্ত। আঠার শতকের শেষভাগ
বেশ করেক বছর তিনি বাঙলাদেশে বসবাস
করেছেন। এক সময় তিনি ভারতচম্দ্র রায়ের
বিদ্যাস্থ্রের কার্য রুশ ভাষার তরজমা
করার প্ররাসও করেছিলেন। উনিশ শতকে
মন্টেলা বিশ্ববিদ্যালয়ের অধ্যাপক শ্বতর
পোরোভ ও পরে সেন্ট পিতার্সবার্গ বিশ্ববিদ্যালয়ের
বিদ্যালয়ের অধ্যাপক ইভান মিনায়েভ
রুশিরার বাঙলা সাহিত্য চচা আরও
একধাপ এগিয়ে নেন।

বিশ শতকের গোড়ার দিকে ব্লেশিয়ার সবচেরে জনপ্রির ভারতীয় লেখক ছিলেন রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর। ১৯১৩ সালে নোবেল প্রেক্লার পাবার পর থেকেই রবীন্দ্রনাথের রচনা ইংরেজি থেকে অন্বাদ করে নানা রাশ পত-পতিকায় প্রকাশ করা হতে থাকে এবং পরে এক্যিক ক্যাসংকলনে তা প্রথিত হয়।

১৯১৭ সালের অকটোবর সমাজতালিক মহাবিশ্ববের পরই অবশা নির্মাত বাঙলা ভাষা ও সাহিত্য-চর্চা সম্ভব হয়। ১৯১৮ সালে ভি, আই, লেনিনের আছবিত একটি ভিক্তি বলে কিয়েভ

(র্জাইন) ও তালখদে (উজ্ফেকিস্তান) প্রাচ্যবিদ্যান্তর্য ইনস্টিটিউট স্থাপিত হয়। পরে প্রাচ্যদেশের আধ্নিক ভাষা, সাহিত্য, অর্থনীতি ও ইতিহাস চর্চার জন্য মন্তেকা (১৯২০) ও পেত্রোগ্রাদেও (বর্তমানে লেনিনগ্রাদ) অন্বর্প ইনস্টিটিউট স্থাপিত হয়। কেনিনগ্রাদে প্রাচ্যবিদ্যা ইনস্টিটিউটে প্ৰথম বাঙৰা শিক্ষক ছিলেন দাউদ আলি দত্ত (প্রমথনাথ দত্ত)। লেনিনগ্রাদ বিশ্ব-বিদ্যালয়ের পাঠক্তমে বাঙ্গা প্রবর্তন করেন আকাদেমিশিরান ফিরোদোর সেরবাংকের। ১৯২৬-২৭র শিক্ষাব্যর্য তিনি মিখাইল তুবিয়য়নশ্কিকে বাঙলা পাঠরুমের দায়িরভার অপশি করেন। বিশের হাগে ভূবারানস্কিই প্রথম বাঙালী লেখকদের রচনা সরাসরি রুশ ভাষায় তর্জমা করেন। তিনি বিংকম-চল্মের বলেনমাভরম ও রবীন্দ্রনাথের ভ 'জীবন-স্মৃতির' অংশ-বিশেষের ভরজমা প্রকাশ করেছিলেন। ত্রিরানস্কি রবীন্দ্রনাথের গোরা, নৌকাড়বি, তার মাটক, ছোটগাল্প ও প্রবন্ধ্যাদির রুশ তরজমার সম্পাদনা করেন, ভূমিকা লেখেন **७ ग्रीका क्र**ा करतन । वित्यव ब्राल जरनक चन्दापक, विकामी ७ लाभक व्रवीमानात्थव প্রতি আকৃষ্ট হয়েছিলেন। আনাতোলি লনোচার্ক্তিক, সেগেই ওল্পেনবার্গ ও

অধ্যাপক ভি তান-বোগোরাজ এইসব রচনার
মধ্যে লেখার উপকরণ খ'বজে পেয়েছিলন।
রবীন্দ্রনাথের কবিতায় স্বসংযোজন সরেন
এম, ইপ্পোলিতোভ-ইভানো এস,
ভাসিলেকো ও এ, দ্জেগেলনোক প্রম্ব

গত ২০ ৷২৫ বছরে সোভিয়েত ইউনিয়নে বাঙলা চর্চায় নতুন জোয়ার এসেছে। এখন মস্কো, লেনিনগ্রাদ ও রিগায় (লাতভিয়া) বাঙ্লা পড়ান হয়। সেনিনগ্রাদ বিশ্ববিদ্যালয়ে ১৯৪৮ সাল থেকে নির্মিতভাবে বাঙলা ভাষা ও সাহিতা পড়ান হচ্ছে। মঙ্কো ও লেনিনগ্রাদের বাঙলার ছানুরা রবীন্দু রচনাবলীর একটি আট-খণেডর (১৯৫৬-৫৭) ও পরে একটি বারো-খান্ডের সংস্করণ (১৯৬০-৬৫) প্রকাশ করে। ঐ সময়ে তাঁর উপন্যাস, ছোটগল্প ও নাটক আলাদা গ্ৰন্থ ছিসেবেও প্ৰকাশিত হয়েছে। পঞ্চাশ ও ষাটের দশকে আজার-বাইজানি, আমেনিয়, বাশ্বকির, বিয়েলো-বুশীয় লাডভিয় লিথ্যানির মোলদাভিয়, তাজিক, তাতার, ভূক মনিয়, যুকুটেনিয় ও একেতানিয় ভাষায় রব**ীন্দ্রনাথের রচনা প্রকাশিত হয়। লা**তভিয় প্রজাতল্যের সংস্কৃতি কমী কার্ল ইগলে রবীন্দ্রনাথের বহুসংখ্যক রচনার তরজ্মা করেছেন।

পেভিকোভার বিক্ষাসন্ত্র সম্পক্তি লেখা বইটি প্রক্ষা। এবছর বইটি রবীন্দ্র প্রক্ষার পেরেছে।

Бонкимиондро Попаддхай жизнь творчество

शकारमञ्ज यद्दानं रम्ब मिट्य धारः শাটের ব্লোর প্রথম দিকে সোভিদেতে বেসব ৰাংলা **গ্রন্থের তর্জ্**যা প্রকাশিত হয় তার মধ্যে ছিল বঙ্কিমচন্দ্র চট্টোপাধ্যারের রচনা-বলার একটি স্থেতে সমাত সংস্করণ। कारक किल-विस्तृक, ताक्रितिःह, हन्द्रामध्यत, を沙引を撃撃 **पैटेल, टे**न्मिता, तकनी छ ক্ষলাকান্ত। তাছাড়া ছিল উনিশু শতক ও नमकालीम कविष्ठात अकृषि সংक्रम ११०थ ৰাতে অণ্ডভুত হয়েছে জীবনানন্দ দাশ, **অমিয় চলবতী, হোমেন্দ্র মিল, বিকা** দে বিমলচন্দ্র ঘোষ, সুভাষ মুখোপাধ্যায়, স্কাত ভট্টাচার্য প্রমুখ আরও অনেকের **ভবিতা ; শরংচন্দ্র চট্টোপাধ্যার**, তারাশংকর वरमानायात्र, ब्रानिक वरमानायात्रत गरन উপন্যস্ নজনুল ইসলামের কবিতা। পূর্ব পাকিস্তানের সমসামায়ক সাহিত্যের **55। হয়ে থাকে এদেশে। জুলিমউ**ন্দীন ও বেগম স্বিফ্যা কামালের কবিতাও রুশ **काशाह अन**्भिक हाराष्ट्र। भाषिता कामाल 'মহান লেনিন' নামে একটি কবিতা সম্প্রতি লৈখেছেন, তাও আমরা জান।

সেভিয়েত দেশে বাঙলা ভাষা চর্চাব স্বদিক এই প্রবাদে আলোচনা কর। সুভ্র নয়, তাই এখানে আলোচনা শুধু লেনিন-ভাদ বিশ্ববিদ্যালয়ের মধোই সীমাবম্ধ য়াধা হচ্ছে।

লোননায়াদ বিশ্ববিদ্যালয়ের ভারতীয় ভাষাতত্ব বিভাগ ঢাকা ও গ্রেছসাহী বিশব্বিদ্যালয়ের অধ্যাপক ও গ্রেষকদের সংগ্রেছাগ্রেষণ রক্ষা করে চলেছে, বিশেষ করে যোগাযোগ রক্ষা করছে প্রে পাফিস্চানের প্রবীণ কবি জানিমউদ্দান, ভাষাতাত্তিক মহেশ্যদ শহীদ,লাহ, মৃহিন্যদ এনাম্ল হকং, আমদুল মায়ান ও আবদুল হাই*। তার যে বই এবং ঢাকা বিশ্ববিদ্যালয়ের সাহিতাপত্র সাছিতা পত্রিকাশ আমাদের পাঠান তা পেকে আমরা জানতে পারি পূর্ব পাকি-স্তান সাহিত্য ও ভাষাত্রের চর্চা কর্পাত্রের।

এখানে আমি আর কলকাতা বিশ্ব-বিদালয় ও বিশ্বভারতীর সংগ লেনিন্যাদ বিশ্ববিদালেয়ের যোগাযোগের কথা নতুন করে বলব না, উভয় দেশের শ্বাপেই দীর্থ-কলে ধরে দে যোগাযোগ অব্যাহত বংগছে তা স্বিদিত।

ষাঙলা সাছিত্যের ঘেদর দিক নিয়ে এই বিশ্ববিদ্যালয়ের ভাষাতত্ত্ব বিভাগ কাল করছে তা যেমনই বিচিন্ন, তেমনই সংখ্যায়ও অনেক। বাঙলা ধ্পদী সাহিতা ও সমস্সাময়িক লেখকদের রা যা উভয়ই এর মধ্যে পড়ে। গত কয়েক বছরের মধ্যে বর্তমান লেখিকা নিন্দোক রচনাসমূহ প্রকাশ করেছেন: 'উনিশ শতকের বাঙলা গদোর সংকলন', 'দশম থেকে অণ্টাদশ শতকের বাঙলা সাহিত্যের ইতিহাদে বিষয়ে নিবন্ধ', দ্বাভিশ্বচন্দ্র চাট্রাপাধায়ে: শ্বীবন ও রচনা-

বলী" এবং আরও কিছু প্রব**ণ্ধ** (বাঙ্কা দেশে গোকির রচনার অনুবাদ, ভারত ও পাকিস্তামের বাংলা লোককথা, শতকের বাঙ্লা সাহিতেরে ইতিহাস)। লেনিনগ্রাদ বিশ্ববিদ্যালয়ের এলেনা প্রসালিনা এখন শান্তিনিকেতনে বাঙলা ঝালিয়ে নিচ্ছেন। তাঁর অধায়নের বিষয় **হল** রব*ী*ন্দ্র নাথ ঠাকুরের নাটক ও মানিক বাস্টা-পাধ্যায়ের রচনাবলী। ভিকতর ইভব্যালস তাঁর স্নাতকোত্তর অধায়নের বিষয় হিসেবে रवर्षः निरशरक्षन त्रवीम्त्रनाः धत्र উপन्यात्र । ১৯৭০ সালের জান্যারিতে শা+িত ভটা-চার্য 'গোর্কি' ও ভারত'' বিষয়ে থিসিস ১৮না করেন লেনিনল্রাদ বিশ্ববিদ্যালয় থেকে স্নাতকোত্তর পাঠক্রম শেষ করে তিনি স্বদেশে ফিরে গেছেন। গত বছর আমাদের বিভাগের স্নাতকোত্তর ছার্রা 'পলাতক' নামে সমসাময়িক বাঙালী লেখকদের একটি ভোট গলপ সংকলন প্রকাশ করেছেন।

আমাদের ছাররা তাদের বার্ষিক পবীক্ষা পরে ও স্নাতকের থিসিসে নানা বিচিত্র বিষয়ের আলোচনা করে থাকেন। এই বসন্ত কলে ভিন্দোমার জনো তাঁরা যেসব থিসিস পেশ করবেন তার মধ্যে আছে ঃ বিভূতি- ভূষণ ব ল্যাপাধ্যায়ের ছোটগলন, ন ংকোপাধ্যায়ের উপন্যাস 'লাল 1 ব্যক্তিনাথের ব্যাক্তা, বাঙালারি লো কেলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের অধ্যাপক ভোষ জট্টাম্ম সংগ্রেকি)।

লোননগ্রাদ বিশ্ববিদ্যালয়ের ভ
ভাষাত আ শাখার উদ্যাপে ভি আই লৈ
জামা-শতর্ষ প্তি উদ্যাপিত হয়।
আন্ত্যানে বহামান লোখার। ভি
লানিন ও বাছলা সাহিত্য বিষয়ে
নিবাধ পাঠ করেন। এই প্রবাধে আ
করা হয় সেইসর ব্যিখান ধে
বিষয়ে (হীরেল্নাখ মুখোপাধারে ।
নাথ বায় গোপাল হালানার। ভ
ভারা বাদ্যার প্রভাব অপ্রিস্ম।
ভারা বাদ্রার প্রভাব অপ্রিস্ম।

এদেশে বাঙলা-সাহিত্য সম্প্রেক আগ্রহ আছে—তাই সোভিয়েত গ ছাচরা এবিধরে মনোযোগ দিয়ে থা

্*এ'রা দ্ব'জন মারা গেছেনুই আনে।



(50)

় মালতীর দিনগ্লি মন্দ কাটছিল না।
রিখিত আসার পর পরই মালতীর মান
ইল ওর কি যেন হারিয়ে গিরেছিল জীবন
থেকে, কি যেন নেই, সংসারে কি না থাকলে
ক'কা ফাকা মনে হয় এমন এক জিনিস
রঞ্জিত ফিরে আসার সংশা সংশা মালতির
কীবনে ফিরে এসেছে।

শীতকাল বলে বেলা ভাড়াভাড়ি পড়ে আয়: শীতকাল বলে জলে বাঁশ পচা গথ্টা তেমন তীক্ষ্য মনে হচ্ছে না। আর শীতকাল বলেই গ্রামের সকলে সকাল সকাল জল নিতে চলে আসে কুয়োতে।

চাষের কয়ো লম্বা। গলা পর্যত দাঁড়ালে দেখা যায়। কয়োতলা পার হলে ৰাশঝাড। ঈশম শন্ত বাঁশ থাজছে। রঞ্জিত একটা করে বাঁশ কোপ মেরে আলগা করে দিচ্ছে, আর ঈশম সেই বাঁশ টেনে বের করে **কণ্ডিগ**ুলি ছে°টে দিচ্ছিল। যারা জল নিতে এসেছিল ওরা বেশীক্ষণ ক্য়োতলায় অপেক্ষা করল না। বড়বোর সেই নির্কাদন্ট ভাইটি ফিরে এসেছে। সরু গোঁফ, লব্বা চোখ আর বিদেশ বিভূ'য়ে থাকে বলেই इश्रुष्ट भ्रतीरत এक धर्तन्तर भागम नावना। মালকোচা মেরে ধৃতি পরেছে, চুল কোঁকড়ানো, মাথার মাঝখানে সির্ণথ-লম্বা মানুষ রঞ্জিতকে এখন আর দেখলে চেনাই ষায় না, বাপ মা মরা সেই বালক এত বড় ছয়ে এখন মশাই হয়ে গেছে।

যারাই জল নিতে এসেছিল তারা সকলেই প্রায় বালতি ফেলছে কুয়ার ভিতর এবং জল তুলে আনার সময় রঞ্জিতকে দেখছে। স্দেশনি এই য্বকটিকে সকলেই একনজরে চিনতে পেরেছিল, কতদিন আগের কথা যেন, কেউ কেউ ডেকে ওর সংশা কথা বলল, যাদের সংশা সংশার কিল, সে বাদের দিদি বলে ডাকত, পাড়া-পড়েশী, যারা এক সময় ওকে কেই-ভালুরানা দিয়েছিল, মা মরা ছেলে বলে যারা ওকে সামানা ভালমান হলে ডোকে

থাওয়াতো তারা জল তুলে নিচে নেমে গেল এবং ওর সপো কথা বলে ঘরে ফিরে গেল।

মালতী এল সকলের শেষে। এর কাঁথে
কলসী, পরনে তাঁতের শাড়ী। মালতী থে
বিধবা, এ-শাড়ী পরলে মনে হয় না। মনে
হয় কুমারী মালতী সথ করে এখন জল
তুলতে এসেছে। মনে হয় মালতী এই
মানুষের সামনে সাদা থান পরতে লক্জা
পায়। সে এসেই সোজা কুয়োতলায় কলসী
রেখে যেখানে রক্জিত বাঁশ কাটছিল সেখানে
গিয়ে দাঁড়াল।—কি এত বাঁশ! এত বাঁশ
দিয়া কি হইব!

রঞ্জিত বলল, জলে ভিজিয়ে রাথব। লাঠি হবে, পাকা বাঁশের লাঠি।

সোনা আশেপাশে ছোটাছ্টি করছে। সে এই নতুন মান্যটিকে কথনই ছাড়ছে না। মান্যটি তাকে কত দেশ-বিদেশের সব অশ্ভূত গণপ বলছে। অণ্ভূত সব ম্যাজিকের কথা বলছে।

সোনা বলল, পিসি রঞ্জিত মামা রাইতের ব্যালা ম্যাজিক দ্যাথায়।

মালতী আর একট্র নেম গেল। ষেখানে ঈশম বাঁশের গণ্ডিতে দা রেংথ কাটা বাঁশ, ঝাড় থেকে টেনে নামাচেড় সেখানে গিয়ে দাঁড়াল এবং বলল, তর মামার কথা আর কইস না!

রঞ্জিত মালতীর দিকে তাকাল না। সে
বাংশার কণ্ডি কেটে সাফ করছে। সে দা
তাকিরেই হাসল। কারণ মালতীর কোন
রহস্যজনক কথা শ্নেলেই শৃংধ্ সেই
দশ্যটা মনে পড়ে। সৌদন মালতী রাগে
অথবা ক্ষোডে কিংবা হয়ত উত্তেজনায়
কোপে কেপে উঠছিল। চোথ মুখ লাল,
চোথ ভিজা ভিজা, যেন মালতীর দব
সতীত্ব রঞ্জিত কেড়ে নিরেছে। প্রায় মালতী
কোণে ফেলেছিল। রঞ্জিতের সেই কথা মন
হয় আর মনে হয়—মালতী তোমার সেই
দশ্যটা মনে পড়ে না! মালতী তুমি
দিদিকে আর কিছ্ বলনি ত। রঞ্জিত এবার
মালতীর দিকে সহজ্ঞ ভাবেই ভাকাল।
বলল, মামার কথা বলতে নেই কেন!

রঞ্জিত এমনভাবে তাকাল, মালতারও সেই দুশ্টা মনে পড়ুক এমুন এক ইচ্ছা। স্বতরাং মালতী আর कद्रम ना। त्र इस्म छत्र हत्म शाम। हत्म গেলেই সব শেষ হয়ে ধায় না। ষেতে বেতে বড়বোদির সংশ্যে গল্প করল। বড়বৌ এবং ধনবো ঢেকিতে ঠাকুর-ভোগের জন্য ধান ভানছে। ভানা ধান ঢেকির মাথার কাছে বসে শলীবালা ঝাড়ছিল। পাগল ঠাকুর আজ কোনদিকে বের হয়ে যায়নি। উঠোনে আপন মনে পায়চারী করছেন। মালতা উঠোনে এসেও বাঁশের কোপ শানতে পেল। এই বাঁশ দিয়ে কি হবে. বাঁশ দিয়ে লাঠি হবে! তার তোড়জোড় হচ্ছে। মানুষ্টার শরীর হাত পা মুখ সারাক্ষণ কেন জানি বুকের ভিতর নড়ে-চডে বেডাই। এখন মানুষ্টাকে দেখার জনা ছলছুতো ক'র কেবল এ-বাড়ীতে আসা। কি আর কাজ মালতীর নরেন দাস এখন আর বাড়ীতে নেই। অম্ল্য মাথায় ভুরে শাড়ী নিয়ে বাবুর হাটে গেছে নরেন দাসের সংগা। এখন বাড়ীতে শুধু শোভা, আবু আর মালতী। আভারাণী আছে, কিল্তু এত নিরীহ যে মনেই হয় না একটা মানুষ বাড়ীতে আছে। আভারাণীকে রঞ্জিত বৌদি বলে ডাকে। রাতের বেলায়, যথন শতি বলৈ সকলে শুয়ে পড়ে, যথন रैवर्ठकथानाव महीन्त्रनाथ लालहा अलहा क পড়াতে ব'সন তথন রঞ্জিত নিজের ঘবে বসে সামান্য হয়বিকেনের আলোতে কি স্ব বড় বড় বই পড়ে। কত পড়ে মান্য্রটা! মান্যটা এখন কম কথা বলে, বেশী কথা বললে মালভীর দিকে তাকিয়ে একটা হাসে, যেন অজ্ঞ লোকের কথা শানে হাসছে। তথন অভিমানে মুখটা লাল হয়ে ওঠে মালতীর। মানাষ্টা তথন অপবাধীর মতো চোথ করে তাকায়। তাকালেই কিছ, দৃশ্য, ভয়ে মান্যটা নির্দেদ্য ভ্রে গেল।

মালতী একদিন বলেছিল, এত ডর প্রে,ষ মাইনসের ভাল না।

---আমার আবার ডর কিসের?

—- ভর না! মুথে কইলেই কি স্ব কওয়ন ধায়।

---আমার কিন্তু মনে হয়েছিল তুমি দিদিকে সতিয় বলে দেবে।

—আর কিছ্মনে হয় নাই ত! —আবার কি মনে হবে?

ক্যান মালতীর নামে কত কথা ম'ন হইতে পারে।

— আমার আর কিছু মনে হর্মান

মলতা। আমি তারপর অনেকদ্ব চলে

গোছলাম। আসামে চলে যাই। সেখান

থেকে ফিরে আসি দু বছর পর।

কলকাতায় লাহিড়ীমশাইর সপে দেখা।

তিনিই আমাকে প্রায় টেনে তুলেছেন।

বলতে বলতে থেমে যেত রঞ্জিত। স্বণন

দেখতে শিথে গেলাম। এ-সব এখন খুব

তুক্ত মনে হর। বাধ হর বেশী বলা হরে গোল। তার গোপন জীবনের কথা ব্রি কাস হরে গোল। সে সহসা থেমে তারপর আর কিছু বলতে চাইত না। নিজের কথা ভূলে গিরে বলত, বলো তুমি কেমন আছ। তোমার সব খবরই আমি রাখতাম। তুমি বে এখানে চলে এসেছ তাও। কিন্তু তারপর?
—তারপর আবার কি। বেন বলার

—ভারপর আবার কি। যেন বলার ইচ্ছা, তারপর যা আছে সে তো দেখতেই পাচছ। এই নিয়ে আছি। -- जामद्रक काम प्रांच मा रकन?

--সাম ্ ঢাকা গ্যাছে। লীগ লীগ ক্ইরা দ্যাশটারে জনালাইরা দিল।

—সাম্ভবে পার্টি করে!

--পার্টি না ছাই! মালভীকে খুব হিংপ্র দেখাছিল। মালভী কলল, লাঠি ত বানাইতেছ মেলা। কিন্তু লাঠিতে মাথা ভাঙতে পার কর্টা?

--- সাঠি তো মালতী মাথা ভাঙার জন্য নর, মাথা রক্ষা করার জন্য। আমি ভেবেছি, এখানেই মূল আখড়া করব। তারপর
আরও তিনটে হোট ছোট আখড়া খুলব।
একটা রাম্মালীতে, একটা সম্মালীতে আর
একটা বারদীতে। তারপর সেখান খেকে
বারা দিখে ফেলবে তারা আবার তিনটে
করে নতুন আখড়া খুলবে। গ্রামে গ্রামে
আখড়া খুলে আমাদের প্রতাককে লাঠি
খেলা ছোরা খেলা সব লিখে নিতে হবে।
নিজের মাথা নিজে রক্ষা করার জনা এসব
করাছ। অনোর মাথা ভাঙার জন্য মর।



মালত কিমন লংজা পেল বলে।
তারপর বলল, তুমি আমারে দুই চারট কৌশল শিখাইয়া দ্যাও। আমারে লাঠি থেলা শিখাইলে তোমার আবার জাত যাইব না তঃ

—জাত বাবে কেন।

— আমি মেরেমান্ব। অবলা জ্বী।

—অবলা জীবদেরই বেশী শিখতে হবে। আরশ্ভ হোক, স্ব গোছগাছ করে নি। খেলা জয়ে উঠুক।

—থেলা শিখাইবে কে?

—আমি।

—তুমি আবার এইসব শিখলা কবে? —এক ফাঁকে শিখে ফেলেছি।

—তুমি কত না কিছ্ জান! ক্রুনা কিছ্ করতে পার!

—আমি কিছ.ই করতে পারিনি মালতী। কত কিছ. করার আছে আয়াদের। তুমি সব জানলৈ অবাক হরে হাবে।

—আমারে দলে লও না।

—मन (भारत कानधारत?

—এই যে তুমি লাঠি খেলার দল করতান্ত।

দল কথাটা বলতেই রঞ্জিত কেমম সদ্যুক্ত হয়ে পড়ল। দল বলা উচিত নয়। কারণ সে এথানে গোপনে কিছুদিন বসবাস করতে এসেছে। সে বলল, মা কোম দল ক্রছি না মালতী। আমার দল ক্রার কি আচে।

—ক্যান বেদি যে কইল তুমি দ্যাশের কাজ কইরা বেড়াও।

তা হলে দিদি ভোমাকে সব বলেছে।
বলে সামানা সময় চুপ করে থাকল রঞ্জিত।
সকালবেলার রোদ ওদের পিঠে পড়াছল।
ওরা দীনবন্ধরে বড় ঘরটার পিছনে দাঁড়িরে
কথা বলছিল। লালট, পলট্ সোমা
সকলেই ওকে ঘিরে আছে। ওরা মালতী
পিসিকে দেখছে। মামা, মালতী পিসিক
মুখের দিকে তাকিয়ে কথা বলছে।
পিসি মাটির দিকে তাকিয়ে কথা বলছে।

্মালতী কিছু বলতে যাচ্চিল। সে দেখল এইসব ছোট ছোট ছেলেদের সামমে বলা ঠিক না। মালতী আর কথা না বলে চলে গেল।

খ্ব গোপনে কাজ করছিল রঞ্জিত। সে লাঠি থেকা ভিতর বাড়ীর উঠোনে, জ্যোৎসনার আবাসোয় আথবা মৃদ্র **হার্যার**-কেনের আলোতে শেখাবার চেণ্টা করছে। रयन क्लि ना सारन। रक्क वस्रती, धमरनी, পাগল ঠাকুর **সাক্ষী থাকত। সো**না **লালট**্র, পলটা যামিয়ে পড়লে উঠোনে লাঠি খেলা আরম্ভ হত। **কিম্তু একদিন রাডে সোনা** খাক্তে গিরে দেখল পালে যা মেই। **না** কোথার! সে ব্যুম থেকে উঠে বস্তা। দরজা रथाना। উঠোনে नाठित ठेक ठेक जन्म পাছে। জ্যোৎনা রাড। আবহা আলোডে সে ব্ৰুতে পাৰল মা এক কোণায় দাঁজিক আছেন। সে নেয়ে দরজা পার হরে মারের कारक हरन रनन। जाहे ननजम शास्त्रद যোয়ান লোক রঞ্জিত মামার কাছে লাঠি

থেলা শিথছে। অন্য পাশে কারা ষেন--বুঝি মালতী পিসি, বুঝি কিবপী দিসি এবং ননী, শোভা, আব্। ওরা কাঠের ছোরা দিয়ে খেলছিল, খেলা শিখছিল। মা এবং বড় জ্যাঠিমা পাশে দাঁজিরে খেলা দেখছিল আর বোধ হয় পাহারা দিচ্ছিল, এদিকে কেউ আসছে কিনা লক্ষ্য রাখছে। লাঠির ঠকাঠক শব্দ উঠছে, শির, বছেরা, কটি এমন সব শবদ। ছোট মামা কেমন মশ্বের মতো তালে তালে বলে যাছেন। মাঝে মাকে ছোট মামা লাঠি বরাভে ব্রোতে এত বেগে এদিকে থেয়ে আসছেন যে টের পাওয়া যাচেছ দা ছোট মামার হাতে লাঠি আছে। কেবল বন বন শবদ, তিনি ঘুরে ঘুরে, কখনও ডান পা তুলে, কখনও বাঁ পা জুলে, বেনু মানুষ্টা এই লাচির ভিতর रव'रा धाकात तहना भ'राज रशराहर, মান্ৰটা লাঠিটাকে নিজের ভান হাত বা হাত করে ফেলেছে, যেম্ম খুশী লাঠি চালাছে। সোনা, মাঝে মাঝে লাঠির ভিতর ছোট মামার মুখটা হারিয়ে যাছে দেখতে পেকা।

সোনাও খুব উত্তেজনা বোধ করছিল ভিতরে ভিতরে। সামান্য কাক জ্যোংস্না। কামরাঙা গাছের ওপারে তেমনি বিস্তৃত মাঠ নিঃস্ণ্য জ্যোৎদনার শহরে আছে। পাগল জ্যাঠামশাই দাওয়ায় বসে হাত কচলাচ্ছেন আর মাঝে মাঝে ক্ষেপে গিয়ে সেই এক উচ্চারণ। সংসারে যেন এক আপদ লেগেই আছে। কেউ কাউকে বিশ্বাস করতে পারছে না। ছোট মামা মাঝে মাঝে ছুটে হাচ্ছিলেন মালতী পিসির দিকে। মালতী পিসি কাঠের ছোরা নামাতে গিয়ে কোথায় ভূল করেছে म_्धरत पिरम्बन । प्राथशात भारम अव वर्ष वर्ष লাঠি দড়ি করানো। তেল মাখানো বলে লাঠিপ্লি এই সামান্য জ্যোৎস্নায়ও চকচক করছে। কেউ লাঠি ঘ্রাতে ঘ্রাত পরিপ্রাম্ভ ছলে, লাঠিটা দাওয়ার রেখে উঠোনের উপর দু পা ছড়িয়ে বসে যাছে। ছোট মামা হাতকাটা পাঞ্জী পায়ে অনবরত দৃগ্টি রাথছেন স্কলের উপর। সোনা আর কাফিলা গাছের পালে দাঁড়িয়ে থাকতে পারল গাংলে হুটে মারের পাশে গিয়ে দাড়াল।

ধনবৌ বলল, তুমি সোনা!
—আমার ভয় করতাছে।

ত্তরের অধ্যকারে সোনা একা শ্রের থাকতে ভয় পাচ্ছিল। সে ফের বলল, মা এইটা কি হইতাছে!

--माठि रथमा।

রাজিত দেখতে পেল সোনা ছাছ থেকে উঠে এসেছে। সে সোনাকে কাছে নিয়ে বলল, ভূই খেলা শিখনি?

—শিখম। খ্ব আগ্রহের সংশ্য কথাটা বলল সোনা।

— কিন্তু অনেক সাধনা করতে হয়।
সোনা সাধনা কথাটার অর্থ জাচেন না।
সে মাকে বলল, মা সাধনা মানে কি মা?

র্কাঞ্চত বলল, ধনদি কি বলকে। আমার কাছে আর। সাধনার মানে হচ্ছে তুমি যা করবে, একার্গ্রচন্তে করবে। কেউ ভোষার এই ইচ্ছার কথা জানবে মা।

—আমি কাউরে কম্মা।

—হ্যা বলতে নেই। বদি মা মল, ডবে তোমাকে শেখাতে পারি।

ল্যাখনে আমি কাউরে ক্যানা।
রিপ্ত জানত এইসব ক্যার কোন অর্থা
হর না। এইসব বালকদের রিজত পারে,
তব্ ওদের একাগুচিন্ত ক্রার জন্য মাঝে
রিজত নামাভাবে বল্পতা
স্তরাং সোনা, পলটা, লালটা, এই ললে
এসে ক্রমে ভিড়ে গেল। ওরা খেলার চেরে
ফাইফরমাস খাটায় বেশী উৎসাহ বোধ
করত। রাত বন হলে কোনদিন সোনা
ব্যিমেে পড়ত। ওর খেলার কথা মনে
থাকত না। ভোর হলে মামাকে বলত, আমি
ভোষার লগ্যে কথা ক্যানা।

—কেন কি হল ? —তুমি কাইল আমারে খেলাতে সও নাই।

—ভূমি তো ব্যিরে পর্জেছলে।

সোদা মাঝে মাঝে মামার মতো অথবা বড় জ্যাঠিমার মতো কথা বলতে চেণ্টা করত। মামা কেমন স্চতুর মান্বের মতো ম্পত্ট এবং ধীর গলার কথা বঙ্গে। মালতীর ইচ্ছা হত রঞ্জিতের মতো কথা বলতে। বড়বৌদি এবং এই রঞ্জিতের কথা এত মিশ্টি যে মনের ভিতর কেবল গুন গনে করে বাজে। ওদের কথা একটাকু কক^ৰল নয়। মালতীর মনে হত ওর কথা বড় কর্কশ। সে সেজনা যতটা পারে রঞ্জিতের সপো কম কথা বলে। রঞ্জিতও আজকাল কাজের কথা ব্যতিরেকে অনা কংগ বলতেই চায় না। সে তাকে বাড়ী পে'ছে দেবার সময় বলত, ভোমার খ্র একাগ্রতার অভাব মালতী। ভূমি খুব বেন অনামনস্ক। খেলার সময় অনামনত্ক হলে মাথায় মুখে কোনদিন লেগে **যাবে।**

মালতী তখন কোন উত্তর 🕬 😥 🗕 না। কি উত্তর করবে। এই খেলা যেম নিতা তার সংগলাভের জনা। যেন এই মান্য এসে গেছে তার, এখন আর ভয় কিসের। রঞ্জিতের সব কথা সেজন্য সে চুপচাপ শ্লে যেত কেবল। কোন কোনদিন **মালতীকে** ম্বান্তাবিক করে ভোলার জন্য সে এই অঞ্জের ভাষা ব্যবহার করত। তখন আরও গা *জরলে বে*তো মালভীর। এইসব গ্ৰামা আণ্ডলিক ভাষা বেমন কৰ্কণ তেমন শ্ৰীহীন। য়ঞ্জিড এমন ভাৰায় বললে, ভার কাছে আর কিছ, চাইবার থাকে না। মালতী বিশ্বস্ত হয়ে বলত, তোমার আর ঢং করতে হবে না রঞ্জিত। ইচ্ছা কর**লে** আমিও তোমার মতো কথা বলতে পারি। তুমি বা ভালো করে বলতে পার না, তা বলোনা। বড় থারাপ লাগে। ভোমার সংখ্য আমি ছেলেবয়স থেকে বড় হরেছি।

রঞ্জিত কেমন অবাক হল ওর কথা শনে।—'ভামাকে মালতী আছে গ্রাম্য বলে ধরাই হায় না। মালতী বলল, তব্ বার বা, তার তা।।
আমার ম্থে তোমার ভাষা মানাইব ক্যান।
তুমিও বা ভাল কইর। কইতে পার না, তা
কইতে বাইর না। বড় খারাপ লাগে শ্নতে।
সোনা বলল সুমিরে প্রতিক্রিক

সোনা বলল, ঘ্মিরে পড়েছিলাম, তুমি ডাকলা না ক্যান।

—ঠিক আছে, আব্দু রাতে তো**মাকে** ডেকে তুলব। কিন্তু শূর্ত আছে।

—শর্ত! শর্ত কথাটাই শোনেনি সোনা। সে বলন্স, ছোটমামা শর্ত কি!

—তুমি সোনা শ্ধ্য মাঠ দেখেছ।

—মাঠ দেখেছি।

—श्रुम (मरथ्छ।

—ফ্রল দেখেছি। সোনা মামার মতো ছথা বলতে চেণ্টা করল।

ু —আর সোনালি বালির নদীর চর শিখেছ।

—চর দেখেছি। তরম্ভ খেত দেখেছি। —কিন্তু শর্ত দ্যাথোনি।

--सा।

্ —শত বড় এক দৈত্য। এই দৈত্য কাঁধে সাপলে মান্য অমান্য হয়ে যায়। আবার অমান্য মান্য হয়ে ধায়।

—তোমার দৈতটো কি কর ছোটমামা?

—আমার দৈতটো অমান্ধকে মান্ধ
হতে কয়।

--দৈতটো আয়ারে আইনা দণও না।

নত হও। বড় হলে এনে দেব।
জিত এই বলে সোনাকে কাঁধে ত্ৰে যাবাতে থাকল। বড় উঠোনে লাঠি খেলা য ছোৱা খেলা হয়। চাবধাৰে বড় বড় ন কাঠেব ঘৰ। পালবাড়ীৰ উঠোন খেকে কছা, দেখা যায় না ভিত্ৰে। বাড় হলেই দুঠানটা যানুহে মানুষে ভাব যাবে।

আন্তা বেড়ার ওপাশ থেকে একটা চোখ ্রাপলকে দেখছে রঞ্জিতকে। রঞ্জিতের পশীবহুল শ্রীর দেখে চোথটা **কেমন** গৈকজন কনে যাছেছে। র**ঞ্জিতের থালি** । রঞ্জিত সোনাকে কাঁধে নিয়ে ঘ্রাচেড। িখনও সোনাকে দুহোত ধরে ঘোরাচেছে। ুসানা খ্ৰে আনন্দ পাচিছল। ওর মাথা ব্রছিল। কিছক্ষণ ঘরিয়েই সে সোনাকে মাটির উপর ছেবড় দিছে। সোনা টলছিল, দা হাত বড়িছে। আবার আবার কর**ছিল।** শচীন্দ্রনাথ উঠোন পার হয়ে যাবার সময় দেখল, রঞ্জিত সোনাকে নিয়ে উঠোনে খেলা করছে। শচীন্দুনাথ কিছু কোল না। সকালবেশা পড়ার সময়। কিণ্ডু সোনার প্রীক্ষা হয়ে গেছে। সে প্রীক্ষায় থবে ভালো করেছে। সোনার সমতিশক্তি প্রবল। এই সকালে উঠোনের উপর মামা ভাগেনকে নিয়ে এমন মত দেখে মনে মনে খাসি হল। শীতকালে ওদের মামাবাড়ী যাবার কথা। ধনবৌ ওদের পরীক্ষা হয়ে গেলেই বাপের বাড়ী যায়: শীতের সময় খুব কয়াশা হয় মাঠে। কলাই গাছে কলাইর শার্চি। আব ছাঠে হাঠে শহেবি ফ্লে হলাদ গোলা বাঙ্ব

শীতের দিনেই যত খাবার রকমাবী খাবার। পিঠা পায়েস দখন কাড়ী বাড়ী। তথ্য বড় বড় গেরস্থবাড়ীতে বাস্তু প্রা। ভেড়া বলি, তিলা ক্ষরা আর ডিলের অব্বল। নানা রক্ষের খাবার। তখন বাজারে গেলেই বড় পাংদা মাছ—কি সোনালি রং, আর কি বড়ো বড়ো। কালি-বাউশ, বড় ৰাগদা চিংড়ি আর দুখ। শীত এলেই অঞ্চলের গাভীরা ভাদের সন্তিভ দুখ সং ঢেলে দেয়। তখন অভাবটাও পল্লীতে পদ্মীতে জাকিয়ে কলে থাকে না। তখন সংসারে সংসারে আনন্দ উৎসব। দুঃখী মান-বেরা তখন কাজ পাম পেরস্থবাড়ীতে জিনিবপরের দাম সম্ভা হরে বায় আর তথনই লালট্ প্রট্ গ্রামের স্ব ছেলেদের সংশ্য মাঠে নেমে গিয়ে গোলাছটে খেলে। শহুবহু মাঠ, ধান टकराडे নেওয়া হয়েছে - বলে নরম মাটির উপর শ্কনো নাড়া, পা পড়লেই খড় খড় শব্দ। তখন যত পার ছোটো। ছুটে ছুটে পড়ে যাও মাটিতে-কিন্তু শরীরের কোথাও এত-ট্ৰকু আঘাত লাগবে না।

শচীন্দুনাথ স্মাতা বেড়ার পাশ দিরে বাংনর সময় দেখল, মালতী দাঁড়িয়ে আছে। কাফিলা গাছের নিচে দাঁড়িয়ে কি যেন করছে। শচীন্দুনাথ বলল, ভুই এখানে?

—আঠা নিম্। বলে কাফিলা গাছ থেকে অ'টা তুলে নেবার মতো অভিনয় করল। বস্তৃত মালতী এই গাছের নিচে দাঁড়িয়ে একজন মান্যকে ওপালে বেড়ার ফাঁকে চুপি চুপি দেখছিল। কেউ এলেই খাটে খাটে যেন গাছ থেকে আঁঠা নিচ্ছে এমন ভাব চোখে মুখে। সে এই করে প্রাণভরে রঞ্জিডকে দেখছিল। ভোরে উঠেই মালতীর হাতে বা কাজ ছিল, বেমন উঠোন ঝাড় দেওয়া আর বাসন ঘাটে নিয়ে বাওয়া তারপর হাসগুলো ছেড়ে দেওয়া—এইসব কাজ করে দেখল আর কিছ্ করণীর নেই। আভারাণী রালাঘরে চিড়ার ধান ভিজিরে রাখছে। চুলি চুলি সে ঠাকুরবাড়ী চলে এল। মালতী আতা বেড়ার পাশে একট্ সময় অপেকাকরল। প্রথম উর্ণক দিতে সাহস পার্যান। একটা কিছ; অছিলা দর-কার। বেড়ার সপ্সে কাফিলা গাছ। গাছ থেকে একট্ একট্ আঠা ঝড়ছে। সে একটা পাতা নিয়ে দাড়িয়ে গেল। কেউ দেখতে পেলে ব্ৰুবে মালতী আঠা নিচেছ গছে থেকে। সে আঁতা বেড়ার ফাঁকে উ^{*}কৈ দিল। মরিয়া হয়ে সে উকি দিয়ে র**ঞ্জিতকে দেখতে থাকল। অপমানক**র ঘটনা ঘটে ষেতে পারে এই নিয়ে, কলংক পর্যানত রটে ষেতে পারে এই নিয়ে, সে তাও ভূলে গেল। নরেন দলে বাড়ীতে নেই অম্লা বাব্র ছাটে শাড়ী বিজী করতে গেছে, তাঁত এখন কাদিনের জনা বংধ স্তরাং মালভীর প্রায় ছ্টির দিন এগ,লি। সে এইসব দিনে খেলে, বেড়িয়ে, পাড়য় পাড়ায় ঘারে তে'ড়'লর আচার মাথে স্বাদ নিতে নিতে বেশ কাটিকে দিতে পারবে। তার পরই পরে প্রাক্তার মেলা । সে এবার রঞ্জিতকে নিয়ে প্রেশিজার মেলায় চলে যাবে। ভারপর সেই মেলার **न्यान्या**र्व সারকাসে হাতি, সিংহ, বাঘ মাঠে মাঠে হোডাদীত এবং মন্দিরের এক পালে ডোম-

দের শ্রের বাল এসং দেখে, জিলিপি
রস্পোলা মুখে পুরে সারামাঠ ছুটে বেরিরে

—িক বে এক আনন্দ, কি বে এক সুখ ংসত করে মনের ভিতর—ব্রিথ সুখের জন্য এই মান্ব রঞ্জিত এখন তার জীবনের সব কিছু। সে মরিরা হরে বেড়ার ফাঁকে একটা চোখ রেখে দাঁড়িয়ে থাকল।

বিকালের দিকে যখন বেলা একেবারেই
পড়ে এলা, বখন বৈঠকখান্দার উঠোনে আলো
মরে গেছে, সোনা, লালট, পলাট, বখন
একটা একটা করে বাঁশের লাঠি তুলে নিরে
প্রেনার বরে সান্ধিরে রেখে দিচ্ছিল—
তখনই গলা পাওয়া গেলা। পর্কর পাড়
থেকে ডেকে ডেকে উঠে আসছে কে!

বৈঠকখানার উঠোনে এসে ডাফল, রঞ্জিত নাকি আইছে?

শাচীন্দ্রনাথ সামাত্তক দেখে সামানা বিস্মিত হল। কিছুদিন আগে জমি সংক্ষান্ত বাাপারে শাচীন্দ্রনাথ সামাত্তক গালমান্দ কবে-ছিল। কথা কাটাকাটি হয়েছে। সেই সামাত্র ক্ষের এ বাড়ীতে উঠে এসেছে বজেই বোধহর সংক্ষোচিত না হয়ে পারছিল না। সে ব্যাভাবিক হথার জনা অন্য কথা টেনে আনল। বলল, তর মায় নাকি বিছানা থাইকা আর উঠতেই পারে না।

--পারে না কতা।

—তারিণী কবিরাঞ্জের কাছে একবার বা।

—গিয়া কি হইব কর্তা। বোধহর শীতটা পার করতে পারম্ না।

—ত্বু একবার গিয়া দাখে। যদি তাইন একবার তার হায়রে দেইখা যান। আমার চিঠি নিয়া যা।

সাম, বলল, দ্যান চিঠিঃ **,পাঠাই।** দ্যাখি কি হয়।

—দ্যাথি কি হয় না! তৃষি পাঠাইবা। পিসিরে অচিকিংসায় মারবা সে হইতে দিমুনা।

সাম্র মুখে সামান্য প্রসল হাসির রেখা ভেসে উঠল। ওর ছাটা গেফা এবং আনত সামান্য নরে-খ্ব লক্ষ্য করলে বোঝা যায় থ্তনির নিচে সেই ন্রট:কে যেন সাম: গোপনে লালন করছে। এক সময় সামার মাথে বড বড দাডি দেখে শচীম্পুনাথ বলে-ছিল—তরে দেখলে সাম: পিসার কথা **মনে** হয়। শচীন্দ্রনাথ সামার বাবার কথা মনে করিকে দিয়ে সামত্রক মহান করে তুলছিল যেন। তারপর কর্তাদন গে*চে*হ, মা**লত**িকে ইচ্ছা করেই বড় দাড়ি দেখিয়ে যেন প্রতি-শোধ তুলতে চেয়েছিল। তারপর একসময় মনে হয়েছে, প্রতিশেধে কোথাও কারো জন্য অপেক্ষা করে থাকে না, সময় একে সং জ্ঞার মতো মনে হয়, হাসাকর মনে হয়। নিজের ছেলেমান;খীর কথা ভেবে লম্জায় মুখ ঢেকে দিতে ইচ্ছা যায়। স্তরাং এখন সাম, আবার ভদুগোছের যেন। বিশেষ করে শিক্ষিত, মাজিতি র**্চির প**রেষে যেন এখন সাম ৄ। ওর তফন, ভোরাক:টা, ধানলাছের মতোরং তফনের। আর গায়ে হা**ল্ল**া ণ্যাঞ্জি, পরুহাতা সার্ট**া সে এবার শচীন্দ্র**-নাথের দিকে না তাকি**রেই বলস, শোনলাম** রঞ্জিত ফিরা আইছে?

——ই আইছে। এডদিন কলিকাভার **আহিল, আ**বাল কিয়া আইছে।

The second state of the second se

সাম্ম আর শচীস্থনাথের ক্ষম্য অপেকা করল না। ভাকল, কৈ ঠাকুর কৈ গ্যালা। একবার এদিকে শাইর হও। দেখি চেহারাটা। ভূমি আমারে চিনতে পার কিনা দেখি।

র্রাজত বৈঠকখালার উঠোনে একে কিছনে কল ভাকিয়ে থাকল।—তুই সামা না?

—তাইকে দেখাৰ ভূইকা বাও নাই। —ভূকৰ কেন!

— কি জানি বাংা, জুমি কোনখাদে চইলা লেলা। কোন চিঠিপত্ত নাই। বড় বেং-ঠাইরেনের লগে দ্যাখা হইলে কইছি, রঞ্জিতের চিঠি পাইলেন নি! এক্কেবারে নির্দেশ্য গ্যালা। কোন চিঠিপত্ত নাই।

রঞ্জিত বলল, ভিতরে এসে বোল ।"

সঞ্জি বেলাতে ঘর বইসা বাৰ্কনা?

—সাঁজ বেলাতে ঘর বইসা আৰুবা। চল মা মাঠের দিকে যাই।

এটা মৃদ্য কথা নর। মাঠের দিক বলতে

সেই সোনালি বালির নদীর চর। সেই
নদী, এক আবহমান কালের নদী। কথার
কথার রঞ্জিত সাম্কে অনেক কথাই বলল,
অনেক দিনের অনেক কথা। এক ফাকে
মালতীর কথাও।

জ্যোৎসনা উঠে গেছে, পরিচ্ছন্ন আকাশ। ওরা আলের উপর দিয়ে হটিছিল। এই সব যব গম খেত পার হলেই নদীর চর ৷ সাপের মত বিস্তৃতি নিমে এই চর মাঠ এবং নদীর মাঝে শহুয়ে আছে। তরমফুরে লতা খুব ছোট বলে এবং বাতাস দিচ্ছিল বলে অম্পণ্ট জ্যোৎম্নায় দ্ব থেকে একপাল খরগোসের মতো মনে হচ্ছে। ওরা যেন নিরুত্র সেই বালির চরে ছুটে বেড়াচ্ছল। নদীর জ্বল নেমে গেছে। কি আর জ্বল-রকমের, মনে 53 এক গাড়ী'। হয় গর পার হয় হটি, নদীর জ্বলে কাপড় পর্যদত তুলে নেমে গেল। স্ফটিক জল। নিচে নুড়ি পাথর, মাথার উপর আকাশ। সাদা জ্যোৎখনা, নদী পার হলে গ্রাম. কিছ. ঘন বন এবং আরও পূবে ছেটে গেলে এক বাঁশের সাঁকো পাওয়া যায়। সেই সাঁকোর উপর মালতীকে নিয়ে একদিন সাম, এবং রঞ্জিত চলে গিয়েছিল। নদীর জল ভেগে মাঠ ভেঙে চুকৈর ফল, টক টক মিণ্টি মিশ্টি ফল, আনতে ওরা চলে গিরেছিল। তারপর ওরা ফেরার পথে বড় মাঠ পার হতে গিরে পথ হারিয়ে সারাক্ষণ মাঠ ময়, প্রাম মর ঘারে ঘারে সম্পার সময় বাড়ী ফিরলে নরেন দাস ধমক দিয়েছিল। ওদের দক্রেনকে নরেন দাস জাঠি নিয়ে তেডে গিরেছিল। ওরা বাড়ীতে ঢ্কলেই মালতীকে কাল দিয়ে ততিখনে পাঠিয়ে দিত।

তথন সাম্ বলেছিল, ঠাকুর একটা যদ্পি দ্যাও।

র্মানত বর্লোছন্স, নরেন দাস মাছ খেতে ভালবাসে।

-- कि बाह ?

—ইচা মাছ।

সেবার ভাদ্র কি আদিবন রাস ভিল।
ঠিক এখন মনে পড়ছে না ওদেব। বর্বার
ভাশ সেতে বেতে আরম্ভ করেছে। ভালের

निक्त ज्य बन्छ चान शहरू मृत्रू क्राट्ट। प्रशंभ करन। करनव शास रक विन, नगी व्यवदा नगरतं भागारक भागरन स्वन चौरह। थान थरत माहगर्दान उन्यम बारर। ठिक জারগা মতো জলের মিচে চাই পেতে রাখতে পারজে মাছে চাই ভয়ে বাবে। চিংড়ি মাটে स्टब्स् बाटव । एक वर्ष्य श्राममा विशिष्ण । किन्द्र राष्ट्र करते। दिरागव करत ज्ञान रशारमत छत्र, বোক এবং জনজ কটি পতকোর ভয়। अता जब कृष्ट् करब शास्त्र तज्ञ्च लागेत राजन মেৰে মাছ ধরার জন্য সাঁতরাতে থাকল। পচা জল সাভিয়ে খালের বড় বটগাছটার নিচে চাই পেতে সেই বটনাছের ডালে ওরা সারাক্ষাত পাহারা দিরে পর্যদন প্রার দুই **থ**ুডি গুলদা চিংডি মরেন দালের উঠোনে এনে ফেলভেই চকিতে বেন ফল উঠেছিল, ञातः जन्न कन्नस्त्रग्रे। कि । त्रहे त्व 🛚 छेस्टरः চক্ষিত চোৰ দেখেছিল নরেন দাসের, সেই रब*्रामारक भरतम*्नाम, विवती शामन्य मरतम দাস, লোডে আকৃপাকু করেছিল—আর কোন দিন কখনও ছোট মেনে মালতীকে ধরে রাখেনি। মালভী প্রায় সমবয়সী বন্ধ্-দের সংগ্র এই অঞ্চলের সর্বন্ন ছুটে বেড়ি-য়েছে।

এই মালতীর জন্য ওরা নানারকমের
দ্রুগাহসিক কাজ করে বেড়াত। সেই
মালতী এখন কত বড় হয়েছে। রঞ্জিত
হাঁটছিল আর ভাবছিল। ভাবতে ভাবতে
এক সময় বলে ফেলল, মালতী বড় স্কুলর
হয়েছে, কতদিন পর দেখা। মালতী এখন
কি লম্বা হয়েছে।

সাম্ এবার ম্থ তুলে তাকাল। বলল, অরে নিয়া বড় ভয় আমার। একদিন রাইতে দেখি অম্লারে নিয়া আনধাইরে হাঁস খালতে মাঠে বাইর হইছে।

রঞ্জিত বোধ হয় কিছুই শুনছিল না। মালতীকে সে প্রথম দিন দেখে চমকে গিয়েছিল। ওর মূখ থেকে যেন ফসকে বের হয়ে গেছিল—কি স্বন্দর তুমি! কিন্তু বলতে পার্রেনি। কোথায় যেন ওর মনে এক অহ•কার আছে, আত্মত্যাগের অহ•কার। তবু মনের ভিতরে ভাল লাগার আবেগ সময়ে অসময়ে থেলা করে বেড়াচ্ছিল। সামার সপো দেখা হতেই মনে হল, এই মান্ব, একমার মান্ব হাকে তার ভাল লাগার কথাট্কু বললে কোন ক্ষতির কারণ হবে না। সে জলের কিনারে হে'টে যাবার সময় মালতীর কথা বলছিল : নিমলৈ জলের মতো মালতী পবিত হয়ে আছে এমন সব বলার ইচ্ছা। জলে জ্যোৎসনা চিকচিক করছে। জলের শব্দে ছোট ছোট মাছেরা ছ**্টে আসছে পারের** কাছে। দর্গীড়রে গেলে সেই সব কুচো মাছ পায়ে ঠোকর মারছি**ল**। प्रक्रमटे धार प्रमय प्रमय अटकवादा हुन মেরে যাচ্ছে আবার কথা উঠলে নানারকমের কথা, কথায় কথায় রঞ্জিত বলল, তুই নাকি লীসের পান্ডা হয়েছিস!

সাম, এ-কথার কোন জবাব দিল না। কাবণ কথাটার দিদের বোধ চয় রঞ্জিতের অবজ্ঞা আলে। সে যেন ঠিক এখন শচীল্য-নাথের মতো কথা বলতে। শচীল্যনাথ অথবা অন্যান্য হিন্দু বাড়ব্বর ব্যক্তিয়া ওর দল স্পুন্তে বেমন উল্লোচক্তা রক্ষা করে থাকে ঠিক তেলনি বেন রঞ্জিত ওর পাটি স্পাকে অবজা দেখাতে চাইল। স্ভেরাং সাম্ অন্য ক্থার চলে আসার জন্য বলল, চল উপরে উইঠা বাই। চরে বইসা হাওরা খাই।

রঞ্জিত চরে উঠে এগিরে গেল টিডারপর সামনা সামনি পাঁড়িরে বলল, কিরে জবাব পেলাম না বে!

—ও-কথা বাদ দাতি ঠাকুর।

— কেন বাদ দেখা আছও কি বলতে বাছিল। সহসা বেন সাম, বলে ফেলল, ওটা আমার ধন্মের কথা। বলেই হাত ধরে রঞ্জিতকে টেনে বসাল। ছাইয়া দিলাম। সান করতে হাইব না ত! রঞ্জিত এমন কথার হা হা করে হেসে উঠল। কিন্তু হাসতেই কেমন বিবল্প হয়ে সোল রঞ্জিত। তারপর উন্বিশন চোথে পরস্পর পরস্পরের মুখ দেখল কিছুক্লণ। সব বেন কেমন গোলমাল হয়ে বাছে। সাম, এবার ধীরে বলল, কতদিন আছ ঠাকুর? বলে দ্রে নদীর জল দেখতে থাকল।

—ঠিক নেই। যতদিন পারি ধাকব।
বলার ইচ্ছা যেন আত্মগোপন করে আছি।
যদি ধরিয়ে না দিস তবে বোধ হয় এবার
এখানে অনেকদিন পর্যশ্ত থেকে যেতে
পারব।

সাম্ এবার ওর দিকে মুখ ফেরাল। এখন সে আর এই বালিয়াডি দেখছে না। নদীদেখছে না। এবং এত যে রহস্যময় গ্রাম মাঠ ফসল পড়ে আছে, তাও দেখছে না।সে শৃধুরঞিতের মৃথ দেখছে। সে রঞ্জিতের মূথে সেই ছায়া দেখছে—বোধ হয় আত্মত্যাগের অহৎকার এই মানুষের মুখ, অন্য মানাধের ধর্মে কর্মে একেক ং বিশ্বাস নেই। সে মুখের <mark>কাছে মু</mark>ং 🗸 য়ে বলল, আমার মাইয়াটারে ভোমাকে দ্যাথাম, ঠাকুর। মাইয়াটা **এখ**া ঠিক মালতীর ছোট বয়সের মত হইছে। কেবল ছুটে ছুটে বেড়ায় গোপাটে: মাইয়াটারে দ্যা^থলে, আমার, তোমার ক[ে] মনে হয়। তুমি আমারে ঠাকুর অবিশ্বাস কইর মা, অবহেলা কইর না। বলে কেমন দঃখের সংশে হাসল সামু।

—মালতী বলল, তুই ঢাকায় থাকিস, দেখানে পাটি করছিস!

—মালতী বড় অবজ্ঞা করে ঠাকুর। মালতী আমার লগে আর প্রাণ খুলে কথা

—ব্বি অবিশ্বাস করছে।

—জানি না ঠাকুর। বিশ্বাস অবিশ্বাসের কথা জানি না।

ঠিক তথনই জোণেশার ভিতর মনে হচ্চিল এক মান্য, পাগল মান্য হে'টে নদী পার হচ্ছে। ওপারে গ্রামের ভিতর লন্ঠন জনলভিল জলে সেই লন্ঠনের আলো ভাসছে। পাগল মান্য মণীন্দ্রনাথ নদী পার হচ্চিল বলে জলে সমানা চেউ ট্টেশ্ছ। আলোর রেখাস্লি ছত্রখান হরে গেল।

(কুমশঃ)



नव कर्षे शाश

क्रमा म्युटका भागमा छात्रात् । भागम ছাড়া আর কি নইলে সকালে হাসপাতালে रव बर्गीरक प्रत्थारोध दाश मिरक्स. এधासा ম্যাচিওর করেনি, দু মাস বাদে আসবেন তখন কাটিয়ে দেব, সেই যখন বিকেলে চেব্বারে এসে স্থিপ পাঠায় তথন কোন জ্ঞানগম্যিওয়ালা লোক ক্ষেপে গিয়ে চেচাতে পারে? রুগার মুখের ওপর কুচি কু'চি করে স্লিপ ছি'ড়তে ছি'ড়তে পাগলা ভাতার নৈনিতাল আলু চোখদুটো আলতা-গোলা করে গজায়-এখানে এসেছেন কেন? नकारन ना रमनाम, मः, मान वार्ष हानशाखारन আসবেন। ভেবেছেন হাসপাতালে ভাঙার-ৰাব, ফিজ নেননি বলে আপনাকে ভালো করে এগজামিন করেননি। চেম্বারে এসে বোল টাকা ফিজ দিলেই ভালো করে দেশব? খ্ৰুব দিতে এসেছেন? যান, বেরিয়ে ৰান, বেরোন এক[ু]ণি। প্রায় ধাক্কা দিয়েই বার করেন আর কি। নেহাৎ জ্বনিয়র মাঝে পড়ে বাধা দেয়, স্যার আপনি কম্ন। আমি 🗷 বে বাইরে পাঠিরে দিচ্ছি। তাই সে বাতা রুগী কোন রকমে পালিয়ে বাঁচে।

রুগী তো পালিয়ে বাঁচে, কিল্ডু দাদার সজভার ঠেলায় বৌদির বাঁচা দায় হয়ে উঠেছে। কর্তাদন দাদার অবর্তামানে আমাদের কাছে প্রার কাঁদতে কাঁদতেই রশ-বৌদি বলেছেন, আপনারা ভাই ও'কে একট্ বল্ন। এ ভাবে বদি রুগীদের গালিগালাজ করে ভাড়িয়ে দেন, তাহলে প্রাকটিস জমবে কি করে? ডাহলে আর কলকাতার হাসপাডালে च्यागेहरू था कि नास्त न कहत হল কলকাভায় এসেছেন, বলতে পারব না কোন দিন একসংশ্যে নন্দ্রইটা টাকা নিয়ে বাড়ী ফিরেছেন। অথচ নিত্যি চেম্বারে ষাওরা চাই। ফি সম্পোয় কম করে দশ বারোক্সন রুগী দেখেন, অথচ টাকার বেলায় কোনদিন বহিশ, কোনদিন বড়ঞোর আট-চিল্লিশ। ব্যস। এর বেশী এক প্রসাও না। এদিকে বললে বলবেন, সবার তো দেওয়ার সামর্থ্য থাকে না। কলেজের মাইনে তো মোটে তেরোশ। তার থেকে টাব্স. প্রভিেণ্ড ফ্লাণ্ড বাবদ কাটা বার শ-দেড়েক টালা। কি করে এই টাকার এতবড় সংসার চলে বলুন তো?

কোথার লাগে কর্মাপউটার। মানসাভেকর

বা দৌড় তাতে মৃহুতে অংকটা করে
ফোল। মাইনে ধরা বাক সাড়ে এগারো ল।
চেশ্বার থেকে গড়ে বিদ বিরশ টাকাও রোজ
আসে তাহলে বিশ দিনে কত হর? ন'শ
বাট। আছে না হর চারটে রবিবার কি দ্
একটা দিন বাদই দিলাম। তাহলেও আটশ
সাড়ে আটশ তো নিশ্চমই আসে। তাহলে
হল গিরে সবশ্যধ দ্ হাজার। উরি ব্যাস!
অতগুলো টাকা একসংশ্য কথনো চোথেও
বোধনি। আমার মাইনের পাঁচ গ্লেরও
বেশী। তব্ বলে কি বেদি সংসার নাকি
চলে না।

দাদাও তাই বলেন। বলেন মানে चामारमञ्ज कारहरे मारक मारक धारमञ्ज कथ। দ্র একটা বলেন। আমরা তিনজন দাদার কাছেই কলেন্দে পড়েছি। কলেন্দ্র হস্টেলের একই ঘরে ভিনটে খাটে পাশাপাশি শায়ে ক্তদিন রাম, বিজা, আর আমি স্বাম দেখেছি বড় ডান্তার হব। রাম এখন শ্রীরাম-প্রের বাবার সাজানো প্রকৃরে নিজের প্রাকটিশের চারা ফেলছে। কখনো সখনো শেরালদার বা দাদার এই জ্ঞাট বাড়ীর ড্রইং রুমে দেখা হয়। বলে প'্টি খলসে এখন টপাটপ উঠছে, পোনা ম্গেলও উঠকে করেক বছরের মধ্যে। বিজ, এদেশের ব্যাপারস্যাপার দেখে, লিটার্কোল ভয় পেয়েই বিলেভ চলে গেছে। যাওয়ার সময় বলেছিল, এফ আর সি এস পড়তে বাছে। রণদা বললেন, তোর মৃক্তু। ও গেছে চাকরী করতে। ফৈরবে না আর। তা ছাড়া ওর যা ক্যালিবার তাতে এক আর সি এস হতে इल क्य करत शास शास পরীকা দিতে হবে। বার এম বি বি এস পাশ করতে গিয়েই দটো দাঁত সমেত মাথার চাদির ফরটি পার্সেণ্ট চুল খনে গেল তাকে আর রয়েল কলেজ অব সার্জারীর ফেলো হতে হবে না। আরু আমি পৈড়ক টাকাকডিব টানাটানিতে পড়ে থার্ড ইরারে উঠে পড়া ছেড়ে সেই যে ধর্মতলায় এক সওদাগরী ফার্মের অধন্মের হিসব নিংয় নাড়াচাড়া করেছিলাম, আকো তাই চালিয়ে শ্রু निहेश ফাঁক যাচ্ছি। भागाता प्राप्तीत. য়াঝে श्राप्त পেলে কাম' सम्भ সশাই লেক গার্ডেননের ক্ল্যাটে যাই। হাতের কাছে

আর কাউকে না পেরে বৌদি জোড়েন কারা, আর দাদার হাত থালি থাকলে ভান্তারী দুনিমার ভেতরের থবর সবই পাই। রাম আসে মাঝে মাঝে। প্রাকৃতিল চালা, করার তাগিদেই নাকি সম্পর্কটা বজার রেখেছে। সেখানেই দাদার দৃঃখ। বৌদি কিস্টু রামের একজাম্পলটা তৃলে ধরেই বলেন, দেখ তোমার ছাত হয়ে একটা মফ্স্বল শহরে বলে স্বা রোজগার করছে, তার সিকির সিকিও তুমি রোজগার করছে, তার সিকির সিকিও তুমি রোজগার কর না কলকাতার থেকে। কৈ র্গার মন ভোলাতে রাম তোমার দ্বলতাট্ক তো কাজে লাগাতে ছাড়েনা। জানে তৃমি মাফটার, র্গা পাঠালে অনুরোধ ঠেলতে পারবে না। এই স্ব্রোগেও ওর আথের গৃছিয়ে নিচ্ছে আর ভোমার কি ফরদা হচ্ছে শ্নতে পারি?

বৌদকে শোনাতে গেলে যে যুদ্ধির ধারালো দিকটা ভোঁতা হরে যাম কামার, ফোঁপানিতে আর চাপা আরোশে দাদা তো জানেন, তাই আমি গেলে যেন একট্ হাঁফ ছেড়ে বাঁচেন। বলেন অমলা ভূই আমার প্রবলেমটা ব্যবি। ভাই ভোকে বলেই মনটা ছালকা করি।

কথনোসথনো বােদির কালার বেসামাল হরে গিরে দাদাকে থাঝাই, আপনি কেন মিছিমিছি অনেস্টির বােধা বয়ে মরছেন। কৈ আর কেউ তাে এসব করে না। এদিকে আপনার সংসার চলে না। আড়ালে আপনাক সবাই কি বলে জানেন।

প্রাণখোলা হাসিতে ঘরের গুমোট এক
দমকার কাটিকে দিরে বলেন, জানি। কলে
পাগলা ভান্তার। বলে অধ্যাপক কল্ক।
মুখ্জো এক নন্বরের পাগল। কল্ক।
আমি কারোর তোরাক্তা করি না। শুধু ভর
পাই কোনিদন না আবার ভোর বৌদর
কারোর গুতোর নোংরা পথে পা দিরে
ফেলি। সভ্যি অমলা, সংসার চালানো বে কি

সংসার চালানের দাটো অন্তত এক স মান্টারমশাক্রের কাছ থেকে শেখার আমার কোন দরকার নেই। ছ বছর কলম ঘরড়াতে হবড়াতে ডিনাশো বিরাশী টাকা বাহাছ প্রসার পেণছে জেনেছি সংসার কি বন্দু। বরদ্ধা অবিবাহিত দ্, দুটি বোন বার খাড়ে, বেবার বি-এ পাশ উঠিত যুবক বার ভাই, বার বা হাটের অস্থে প্রার পণ্যা, বাবা বিগত তার আর জানার কি বাবী থাকে? তব্ দাদার ফিরিস্ত শ্নতে হয়,—

ঃ বেহালাম যে মেণ্টাল হসপিট্যালটা করেছি আমল, ব্যাল, গত তিন বছর ধরে হাজার লেখালেখি করেও তার জনা এক পরসাও সরকারী গ্রাণ্ট বার করতে পারলাম না। গ্রাণ্ট না পেলেও হাসপাতাল তো চালাতে হবে। নিজের মাইনের প্রায় টোরেণ্টি ট্ টোরেণ্টি ফাইভ পার্সেণ্ট বার ছাসপাতালের পেছনে। অবিশ্যি অন্যান্যরা সবাই সাহায্য করে বলেই কোনরকমে হাসপাতালটা টির্ণকরে রেখেছি। তা ছাড়া ভুই তো জানিস আমার খ্রুড়তুতো ভাইদের অবস্থা। ওরা মনে করে, আমি বড় ডাক্তার। **টাকার অভাব নেই। তাই যথন খুলী** হাত পাততে পারবে। গড়ে কম করেও একশ দেভূশ ওদের দিতে হয়। এ ছাড়া জনুমিরারের মাইনে, চেম্বারের খরভাড়া, লাইটের বিল, ফোনটোন হ্যানাত্যানা নানা ঝখাট। এটা জানবি, ভারুরের ঠাটবাট মেনটেন করতেই তার আয়ের ফরটি পার্লেট বেরিরে যার। ফলে ব্রতই পার্বছিস কেন ভোর বৌদি কাদে।

ঃ তাতো ব্রুতে পারিছি দাদা। তবে কেন আপনি এত চেণ্টাচরিত করে মফস্বল ছালপাতালের দারোগাগিরি ছেড়ে কলকাতায় এলেন, নেটাই বে ব্রুতে পারিছি না।

বিবাহেরজন্য বাড়ী ভাড়া বিবাহ উৎসব বা অল্প দিনের জন্য বাড়ী ভাড়া। দেববাব, ৫৫-০৭২২, ৩৫-আর, রাজা নবক্তক জীট কলি-৫।

১৯৭০ সালে আপনার ভাগ্য

বে-কোন একটি ফ্লের নাম লিখিরা আপনার ঠিকানাসহ একটি পোন্টকার্ড আমানের কাভে পাঠান। আগামী বারমানে



আপদার ভাগোর বিস্তারিত বিবরণ আমরা আপনাকে পাঠাইব: ইহাতে পাইবেম ব্যবসারে লাভ - লোকসাঞ্ চাকরিতে উর্লেভ কলনী, ক্রম্ম

সম্ভাপত বিষয়স—আন বাজিবে গ্নেট প্রচেক প্রকাশ হটাতে আছরজায় নির্দেশ।একবার প্রকাশ করিকেট যাজিতে পারিবেন। Pt. DEV DUTT SHASTRI Raj Jyotshi (AWC) P B. 86 IULLUNDUR CITY

চট করে জ্বাব না দিরে, আল্ডে আল্ডে যেন চিন্তা করেই বলেন ডাভারদা, একট্র-খানি পড়ানোর আর নিজের পড়াশোনার লোভে। তই বে'চে গেছিস অমল বে তোকে ডাক্টার হতে হর্মন। এটা যে আঞ্কাল কৈ পাপের সাইন হয়েছে তা তুই কম্পনাও করতে পার্রবি না। মজাটা কি জানিস চোর কিন্তু মাত্র কয়েকজন, অথচ দোষটা পড়ে স্বার ঘড়ে। বদনাম হচ্ছে প্রফেশনের। আজকাল তুই ফুটপাথের ভিথিরী থেকে পার্ক স্ট্রীটের ম্যানস্যানওয়ালা, বে কাউকে জিজ্ঞেস কর দেখবি সবাই বলবে, বাঘে ছ'্লে আঠারো, প্রিলশে ধরলে ছত্তিশ, উকিল পারলে চুরাম, আর ডাক্তার একবার বাংগ পেলে রুগার সর্বাঞ্গে বাছাত্তর খা বার করে ছন্ডবে। অথচ এই বেলাতেই আমি সিঁএম ও'র চাকরী ছেড়ে ফলকাতার ছুটে এলাম। কিন্তু কি লাভ হলো বল তো? যে ভরে পালিরে এলাম, লে ভরটা তো আ**জো গেল না। ভূতের মত তা**ড়া **করে** ফিরছে।

- ঃ কিন্তু ভয়টা কিসের ভাতো বললেন না আমি প্রণন করি।
- ঃ ভয়টা পাপের, অধ্যের। ছাচজীবন থেকে দেখেশনে হাপিরে উঠেছিলাম। কোনদিন, বিশ্বাস কর বড় ডাঙার হতে চারনি। হব কি? বড় হওয়া মানে বদি রুগী ঠকানো হয় ডো, সে বড় হওয়া আমার পোষারে না। আমার বাপ খড়ো সবাই অধ্যাপনা করেছেন। আমার তিন প্রেকে দিকক। কিল্ডু কলেজ-জীবনে করেজজন দামী ডাঙার-শিক্ষকের জমাটি পসারের গোপন খবর পেরে চমকে গিরেছিলাম। কেন শ্নেবি?

দাদা হাসলেন। আমি ভাহা মধ্যবিত্ত।
নুন আনতে পাশ্তা ফ্রেমে, তাই বড়
মান্বের আসল রহসা জানার অদম্য
আকাওক্ষা সর্বদাই বুকের ভেতরে লুকিয়ে
থাকে। বিশেষ করে যে প্রফেশনে পা
বাড়িয়েও পিছু হটতে বাধ্য হয়েছি, তার
বড় বড় চাইদের কেছা শোনার সুযোগ
পোলই কানটা বাড়িয়ে দি। দাদা বোঝেন
কিনা জানি না, তিনি তাঁর বাজিগত বেদনার
বোঝা হাল্কা করেই বোধহয় ভূপিত পেতে
চান,—

তথন থার্ড ইয়ারে পড়ি। তুই বােধহর
সবে অ আ ক থ দিখছিস। বিখ্যাত
সাজেন, নামটা দুনেছিস নিশ্চর, অচ্যুত
মুখার্জি আমাদের পড়াতেন। রেজান্ট থারাপ
না করণেও দেখেছি সাার আমার একদম
প্রুদ্দ করতেন না। কারণ কি ব্রুতে
পারতাম না। পরে ব্রুতাম। আমাদের
কলেজে অনেক অবাঙালী ছেলে পড়ত।
তাদের প্রসা। তাদের দেখতাম প্রারই
সাারের বাসার বা চেম্বারে বেতে। দুধ্
হাতে না। না না প্রসাকড়ির বাাপার না।
বেত র্গী নিয়ে। দেশ থেকে আখারিক্যজন
কেউ কলকাতার অপারেশন করাতে এলেই
তারা তাদের নিয়ে সারের দরজার হাজির

হত। স্যারের কনসালটেশন কি জিল চৌৰটি টাকা। তিন চারবার ভিজিট দিশেই স্যার খুশী হরে বেতেন।

স্যারকে থুন কাবার জনাই:একবার আমার এক জাস মেট, কুসেকের বার হয়েও কলেজ-হালপাতালে সালার একটা অসা-রেশম বা করিরে পেল স্যারের নিকাব নার্সিং হোমে। কন্ত দিল জানিস?

জিজ্ঞাসা করি কত?

অপারেশন বাবদ চারপো। একদিন
নাসিং হোমে থাকার জন্য একশ। সব মিলিরে
ওর প্রার পাঁচশো সাড়ে পাঁচশো বার হল।
যে জন্য হল, সেটা কলেজ-হাসপাডালে
করালে ওর এক প্রসাও লালত না। আর
ঐ অপারেশন ভো বে কোন হাউস সাজনিই
আকহার করে থাকে।

আমি চমকে উঠি, এর জন্য সাড়ে

শ্লান হাসিতে গশ্ভীর মান্বটার মার্ কর্শ দেখার। বলেন, হাাঁ, এর জনা সাড়ে পাঁচশো। আর ঐতেই কেলা ফতে। তুই ডাজার না হলেও, একদিন ভালারী পড়ে-ছিল। জানিস ভাজারীতে প্রাকটিকাল আর থিমোরিটিকালের পালা প্রার সমান সমান। সারে নিজে এগজামিনার। ঐ ছেলেটি বখন ভাইভা ভোঁমিতে আপারর হবে, তখন কি তার স্যারের কোন উপার থাক্বে পাস না করিরে? প্রশেনর জ্বাব দিতে পার্ক বা নাই পার্ক, নন্বরের স্বরে ঢাাঁড়া না পড়ে পাস মার্কস জমা পড়বেই। এবং পড়েও ছিল। সে এখন বদল্ব জানি গ্রুজরাটে চুটিরে বাবসা করছে।

নিজের ছাত্রজীকনে এ ঘটনা কৃত ঘটতে দেখেছি। আৰু দেখি এটাই প্ৰায় প্রথায় দাঁড়িয়েছে। তার মানে এই নর যে সবাই এই ভাবে ব্যাক্ডোর বিজনেস চালাা তবে অনেক বড় বড় চহিকেই চালাত দেখছি। আর চালাচ্ছেন তার কারণ গ**তর্ণ**-মেণ্ট হাসপাতালে আটাচড বড় বড় ডান্তারের প্রাইডেট প্র্যাকটিশ স্মালাউ করে। হাসপাতালে কনসালণ্টন্ট ছিসাবে বড় জোর প'চান্তর, একল' টাকা আলোওরেল্স বাবৰ পান। ওতে ও'দের **পানের শরচাও ও**ঠে না। কিন্তু ক্ষ **পথেই রুগী আসে প্রাই**ভেট চেম্বারে। এক-একজনের আস্ডারে বিশ-ত্রিশটা বেড **থাকে। র**ুগ**ীরা ভা জানে।** জানে বলেই যথন হাসপাতালে হত্যা দিয়ে পড়ে থেকেও ভতি হতে পারে না তথ্নি ছুটে যায় চেম্বারে। তিন-চারবার বেলে ব্যৱশ বা চেবিট্ট টাকা পছাতে পারদে একটা বেডও আদার হর।

জানিস ভাষার ঘোব, রার বা চৌধুরী
দের মাঞ্চলি ইনকাম কড? কম করেৎ
চারাশ-পঞ্চাশ হাজার টাকা। তুই, জানী
বেমন প্রজার সমর প্রেরানো জামা-কাঞ্দা
বদলাই, সেইভাবে গাড়ী বা বাড়
বদলান। আর থা বদলানোর দুখ্টাক্ত সরা

সর্বদা অনুনিমন ভাষার, হাউল-সার্জেন আর পড়্রা ছাতদের চোখের সামনে ভাসতে থাকে: বড়র দৃণ্টাম্ভ অনুনারণ দরে হোটরাও। ভেমনেস্টোপন এফেক্ট নার কি: কচুলাছ কাটতে কাটতে গরাও ।কালন ভাকাভ হয়ে উঠবে। উঠবে নাই বা কর?

নিজের চোধে বা দেখেছি ভার আর কটা বটনা ভোকে বলছি লোম। বর্ণনা বে ক্যার আগেই ভেতর বেকে একলোট মন সিম্পাড়া আর চা এসে লোন। রিরে ভারিরে সিম্পাড়া চিব্তে চিব্তে নিমাড়া ক্রলান। সাদা বলে চলেক্তন—

লেৰাক্সই পাশ করে বেরিরেছি। হাউসক্রেন্ । আমার কন্ তথ্ন বিখাত

মি ভারকদান ভট্টাচারের হেসে

ভেলাল ভট্টাচার । বাপের মত অত

নেশ মা থাকলেও ভক্টর ভট্টাচার

টাম্টি পশার অমিরেছিগেন। তাঁকেই
বহি, চেম্বারের রুগীকে হাসপাভারে

ারেট করে ভার-পাঁচপো টাফা পেনেপ্টের

ব ক্যা? সরকারী হাসপাভাল। হাস
গালের বা পাওনা তা তো পেনেপ্ট মেই, ভাছাড়াও ভাড়াভাড়ি ভাড়া

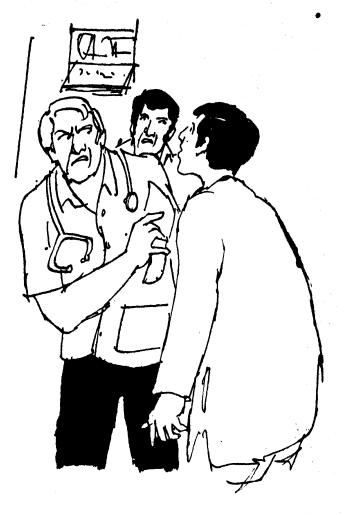
মা সুরোগ আর ভক্টর ভট্টাচারের

মামী ভাজারের হাতে কাটানোর আশার

স্লোটাকা ভাকে ধেসারত সিতে হল।

মজার ব্যাপার, এমন অনেক ভারাবের ব্যানি, হাঁদের নাম আছে। কিল্ড **শ্ব নাসিং হোম** নেই। নাসিং হোম তে দামী ইনস্টুমেণ্ট আসবে কোথা া। অন্যের নাসিং হোমে কাজ করতে ভাগে কম পড়ে যাবে, তাই তারা ণাতালে বসেই কাজকর্ম সারেন, আর রে বসে সেই কাজের মাশ্ল আদার া। আহচ নম্যাল কোসেই ঐসব র হাসপাতালে ভতি হওয়া উচিত ভতি হলে ঐসব নামী ডাক্তাররাই ঃ অপারেশন করবে। শুখু অনিশ্চরতা অন্ধ্র হয়রানির হাত থেকে নিষ্ঠাত ার জন্য রুগীদের এতগংলো টাকা দিতে হয়। এর পরেও কি তুই বলবি া রগৌ সেরে গেলেও ডাক্তার ভট্টাচার্য নমাদের এই প্রফেশন সম্বন্ধে কোন ধারণা নিয়ে ফিরবে? আমাদের তো কোন বিজ্ঞাপন নেই। রুগীরাই দের জাবিদত বিজ্ঞাপন। মুখে মুখে া প্রচার করে বেড়ার অমাকের কার্ছে 📢 в. না না, হাসপাতালে না, চেম্বারে। দাটাকয়েক ফিন্ত দাও। বাস তাহলেই বৈশের দরজার পৌছে যাবে।

কলকাতার কথা ছেড়ে দে। এখানে এখনো তব্ কিছু আড়াল-আবড়াল আছে। ফেবলে সে-সবের বালাই নেই। তুই তো গানিস এই কলেজে আসার আগে আমি ছলাম রঙ্গপ্র ডিস্টিক্ট হসপিটালের নীফ মেডিক্যাল অফিসার। সি এম ও ছসেবে খ্ব কাছ থেকেই ওথানকার অনেক



নামী ডাক্তারদের কাজকর্ম দেখেছি। দেখেছি বলেই পালানোর জন্য অত ব্যস্ত হয়ে উঠেছিলাম।

রঙ্গপুর তো বেশী দুরে দয়। থার্জ কালে কলকাতা থেকে ভাড়া বড় জালে চার টাকা পঞ্চাশ কি পায়বট্ট হবে। নিজেই একদিন দেখে আয়। বাসেও যেতে পায়িয়। ভারে সাতটা নাগাদ এসপ্লানেড থেকে চাপবি, দশটা সাড়ে-দশটার মধ্যে পেণিছে যাবি। লেট্শনের গায়েই বাসগ্মটি। টেন থেকেই নাম, কি বাস থেকেই নাম, দেখবি সপো সপো রিক্সাওরালারা তোকে হেকে ধরবে। আর বদি একবার জানতে পারে বে তুই অসুম্থ, বাচ্ছিল হাসপাডাকে চিকিছে করতে, ভাহকে দেখবি তোকে নিয়ে কেমদ দেখাল-কুকুরের লড়াই বেধে বাবে।

দ্রে দ্রে গাঁ থেকে দরিদ্র চাবী-মজ্বের দল আসে চিকিৎসার আশার। ডিন্টিক্ট হাসপাতাল। এখানে না এসেও উপায় নেই। গোটা জেলাতেই আর কোন ভাল হাসপাতাল নেই। তাছাড়া জনা-বিশেক কনসালটেন্ট আর হিল-চলিশব্দন জনিরর ডাভার রয়েছে হাসপাতালে।

গণ্গার পাড় ঘে'বে প্রেরানো বাড়ী ভেঙে নতুন পেলায় বিল্ডিং উঠেছে হাস-পাতালের। স্টেগন থেকে রিক্সায় লাগে বঙ্জোর চার আনা।

ভূগেও ভাবিস না রিক্সাওরালারা র্গাদের নিরে সোলা হালপাভালে আসতে চার। ভার আগেই হাসপাভাল আরু কোর্টের মান্ত-বরার প্যারালাল ট্র্পালা আর একটা রাম্চা চলে গেছে বেনেপাড়রে দিকে। ভিশিক্টে হস্পিট্যালের ভাবড় ভাবড় নামী কনসালটেন্টদের অনেকের চেন্বারই এই বেনেপাড়ার।

রিক্সাওয়ালারা র্গার প্রাথমিক চিকিৎসাট্কু পথেই সেরে নের। পেটের না ব্কের, মাথার না চোধের, কোথার ব্যামো শুনে, কন্দিন ভুগতে ভেনে কলে

দৈৰে বৈষ না বোস, মিভির না গাংগলেী, देशन, खाहादात काटह गाटन ठिक श्रव। সেই সপো ফিসফিস করে শ্নিরে দেবে---হাসপাতালে গিয়া কি অইব। অইখানে গিয়া দ্যাখাইলে জীবনেও রোগ সারব না। ভার চেরে চলেন স্যান ভারারের চেম্বারে লইরা বাই। দুই-তিনবার চ্যাম্বারে দ্যাখাইলে ভতির ব্যবস্থা ভারারবাব, নিজেই কইর্য়া দিবেন। কিস্ত্র ভারতে অইব না। হুধু হাসপাতালে গিরা এক-খান সিলিপ করাইবেন। দ্যাথবেন পঞ্চাল-খান সিলিপের মধ্যে আপনারটা হ্যাণে পড়লেও কেমন সূর্বং কইর্য়া ব্যবস্থাপতি বৈবাক হইয়া যায়। বল ভো অমল. পেসেণ্টের জন্য রিক্সাওয়ালার এত মাথা-ব্যথা কিসের?

বললাম, ব্ৰুতে পারছি, কোন কমিশন-টমিশনের ব্যবস্থা আছে। তাই না দাল ?

একেবারে পাকাপাকি বন্দোকত।
টাকার চার আনা। ডাছারের ফিল্প বাদ
পাঁচ টাকা হর, তাহলে একটা রুসী
পোঁছে দিলেই রিক্সাওরালার কমিশন
পাঁচ সিকি। রিক্সার ভাড়া নিয়ে ভাই
রিক্সাওরালারা বিশেষ কামড়া-কামড়ি
করে না। জানেই তো কমিশন বাঁধা। ওদের
যত কগড়ামাড়ি পেসেন্টকে নিয়ে। আগে
ভাগে পেসেন্ট-সওরারী পাকডাতে পারে।

কন্পিটিশ্ন শৃথ্ রিক্সাওয়ালাদের
মধ্যেই সীমাবন্ধ নর। ডান্তাররাও কেনে
কর্মাত বান না। ডান্তার বোস বদি দেন
টাকার পাচিল পরসা, ডান্তার চৌধ্রী ঝট
করে রিক্সাওয়ালাকে রেট বাড়িয়ে দিলেন
তিরিশে। নাও এখন ঠ্যালা সামলাও। ভূমি
বত বড় ডান্তারই হও না কেন র্গী বাবে
বে বেশী ক্ষিশ্দ দেবে তার চেম্বারে।

ওখানে ভাছারদের এফিসিরেন্সির ব্যারো মিটার তো বিক্সাওরালারা।

বলতে বলতে একটু থামলেন ভান্তারা ।
ভারপর আবার শুরু করলেন, এমন অনেক
ভান্তার ওখানে আছেন, বাঁদের কম করেও
মাল গোলে আর পাঁচ-ছ' হাজার টাকা। মনে
রাখিস ওটা কলকাতা না। বড়লোক বিশেব
কেউ থাকে না। থাকে তোর আমার মত
মধ্যবিত্ত সাধারণ মানুষ আর গাঁরের থেটেখাওরা চাবী-মজ্লুরের দল, বাদের মাখা শিক্
রোজগার বছরে চার-পাঁচলো টাকা হবে
কিনা সন্দেহ। ভারাই ঘটিবাটি, ভদ্লাসন
বেচে, বন্ধক রেখে ভান্তারবাব্দের খাঁই
মেটাক্ছে। না মিটিরেও উপার নেই। কারণ
সহজ পথে ওখানে চিকিৎসার স্বুযোগ
পাওরা বড় মুন্সিকল।

আর বড ডাক্সরেরা? গাড়ী, বাড়ী, ধানজমিতে তাদের একেবারে টইট্মুব্র অবস্থা। তাঁরা কেয়ারও করেন না যে তাদের নিয়ে রেল-স্টেশনের গায়ে, চায়ের দোকানে বা ভাটিখানায় রিক্সাওয়ালারা কাজিয়া করে, চেচায় কোন্ বাব্র কমি-শনের রেট কত। তাঁদের মাথা ঘামাতে গেলে চলে না। কিন্তু আমার মত, যারা বড় হতে চায় না, শুধু ডাক্তার হতে চায়, তাদের খে না খামিরে উপার নেই। মান-মর্যাদা বাঁচাতে, ঐ বীভংস ব্যবস্থা থেকে মুনন্ত পাওয়ার আশায়, স্কে পরিবেশে পড়া ও পড়ানোর লোভে পালিয়ে এসেছিলাম কলকাতার এই কলেন্ডে। কিল্ড আমি পালালে কি হবে, লোভের ভূত তো আমায় ছাড়ে না। ছাত্র, হাউস-সাজেনিদের অনেকেই ভাবে স্যার বোধহয় খুশী হকেন রুগী-টুগী চেম্বারে পাঠালে। আবার রুগীরাও বিশ্বাস করে না বে. হাসপাতালে গেলে সতিটে ভারারবাব, ভাল করে দেখবেন। তাই সকালে যে রুগীকে হাসপাতালে ভাল করে দেখেটেখে অ্যাজভাইক দিলাল, সন্দোর দেখি সেই এসে উপন্থিত চেত্রারে। ভূষা ভূই বল, মেজাল কি তিক থাকে? আমি কি প্রাকটিল পরে করার আগে পাশ্য নিবীন বে, অসং পথ থেকে দুরে থাকব? আমার কি সামাদাতম নীভিবোধও থাকতে সেই? এরা ভাবে কি বলত? মাজে মাজে তাই কেপেটেশে গিরে গাজাগাল টালাগাল দিরে ফোল। প্রেন কলিগরা, ছারুরা, পেলেপ্রা এমর্নাক ভোর বৌদি প্রত্ত আমার বলে—

ফিরতি পথে ঐ পাসলের কথাই ভাব-ছিলাম। বৌদির বাড়ীর **অবস্থা ধবে ভাল।** ব্যারিস্টারের মেরে। বাপ বিরে দিরেছিলেন জামাইয়ের অবন্ধা দেখে নর, পরীক্ষার রেজান্ট দেখে। আশা করেছিলেন তার জামাইও একদিন বিশ-হাজারী মনস্বদার হয়ে উঠবে। কিন্তু নিৰ্দোভ **এই মান্**ৰটিং বোকামি দেখে বৌদি, এমনকি ছেলে-মেরেরাও আজকাল অসহি**ক, হরে উঠেছে।** একশ বছর প্র্যাক্টিশ করে, কলকাতার নামী কলেজের শিক্ষক হরেও <mark>বে লোক বাড়</mark>ী বানাতে বা গাড়ী কিনতে না পারে, সে ভো বোকা, বৃশ্ধ্, পাগল। চোখের সামনে অন্যরা যখন 🍳 সংবোগেই কাড়ি কড়ি টাকা জমিরে, ফ্র<mark>ীজ, রেডিওগ্রাম, ডজ</mark>, **ब्राह्म का है** ज्ञाना कित्न, मानवित्न्वीक्रिक বিলিডং হাঁকিয়ে 'রইস' হয়ে উঠেছেন*ু* তথনো কিনা রশদা মুখুজো, এম-বি, বি-এস, এফ-আর-সি-এস, শ_চিবাইগুল বিধবার মত চীংকার করছেন—তকাং বাও তফাং যাও। কিম্তু আঞ্চ যদি রণদ মুখুজোরাও না থাকে, ভাহলে কাল কোন ভরসায় আমাদের মত গরীবগাবো মান্ত-গুলো হাসপাভালে খাবে?

-निषरम्





প্রসেনজিতের অবসেশন নাট্যকার ও নায়ক

(59)

ু **ভারারের অন্ত**রলোকে অন্তর্গ্য হয়ে **বেশ করতে চান** অনেক রোগী। **শিশ্তত্যের প্রদর্শনী অন্তর্গতা** বাড়ানোর শাম: ভাকারের অন্তরজগতে প্রবিষ্ট হবার **শেশেট । এ'দের** পাণ্ডিত্য আরোগ্য-ভের পথে বাধা সৃষ্টি করে না. বরং **দেক সময় সাহা**যাই করে। আবার কিছা **মহে এমন লোক আ**ছেন, যাঁরা চিকিৎসিত शक्त करा (इश्रंड भव किए,त करा) कात्र व ারুথ হওয়াটাকেই দৈন্যপ্রকাশ অপমান-नक राज मान करतन। वादा शानिक हा **াহির করে** ডাক্তারকে অপদ**স্থ** করতে চান। ভারের চেয়ে অনেক বেশি খবর রাখেন, টা প্রমাণ করে নিজের কাছে নিজেকে বড় রতে চান। এ ক্ষেত্রে প্রায়ই চিকিৎসায় <mark>ঢ়ানো ফল পাও</mark>য়া যায় না। চিকিৎসার াঝ পথেই এবা অনেকে তিত্ততার স্থি त्त्र. ि किक्श्मा वन्ध करत मिरत थार्कन, থেবা কোনো কিছ, না বলে, তিওতা ্রিট না করেই যাতায়াত বৰ্ধ করেন। 'দের একজনের কথা বলছি।

নজরে পড়বার মত চেহারা। দ্র থেকে
বংতে ভাল লাগবে, কিম্তু কাছে গিয়ে

ালাপ করতে ইচ্ছা হবে না। চেহারার নাথ।
শতার এরকম নিলাল্জ প্রকাশ থার কম

শযা যাম। চল্লিদের কাছাকাছি হয়েছেন,
লে পাক ধরেছে, কিম্তু চোথে দৃশ্ত

যাবনের তীক্ষা উম্জন্ন চাহনি। গোরবণ

হিকাম, উমতনাসা ভদুলোক যেন অনোর

পের নেভৃত্ব করার সহজাত অধিকার নিয়েই

ক্রেছেন; অন্তত তার এই রকমই ধারণা।
স্রলোকের নাম জানতাম। নানা স্ত্রে ওার

ক্রেটে নামারকমের কথা শ্নেছি। তারি

ক্রেটা উৎস্কা ছিল মনে মনে

—ছম্বীকার করতে পারব না। তিনি

এলেন; আগে থেকে সময় ঠিক করে। সপো জনতিনেক ভক্ত সহকারী। একখানা নাটক লিখেছেন, নাটকটি মনস্তত্ম**্লক**: আমার সংগে একটা দিশোর ঘটনা নিয়ে আলাপ করতে চান। তাঁর এক বন্ধ**ু নাকি** বলেছে দশোটা অতিনাটকীয় **হয়েছে। ঐ** সামান্য কারণে নায়কের পক্ষে **ঐ রক্ষ** মারম:খী হয়ে নায়িকা**কে খুন করতে যাওয়া** মোটেই মনস্তভুসম্মত নয়। ভদ্রলোকের ভঞ্জের মধ্যে একজন আমাকে অনেকদিন ধরে চেনে। তার আত্মীয়-পরিচিতদের মধ্যে আমার কয়েকজন 'প্রান্তন-রোগী' বিদামান। সেই নাট্যকার-পরিচালককে মনস্তত্ত্বের বিচারে আমার সাহায্য নিতে পরামশ দিয়েছে। এরকম 'অনরারী আাডভা**ইসরের'** কাজ এর আগেও করতে হয়েছে, কাজেই 'আপয়েণ্টমেণ্টটা'কে রুটিনমাফিক বলে ধরে নিয়েছিলাম। নাট্যকারের নায়কের সমস্যা যে নাট্যকারের নিজপ্ব সমস্যা ঘুনাক্ষরেও তার আভাস পাইনি। কাজেই সহজভাবেই মাট্যকারের সংশ্বে আলোচনার বসে গোলাম।

আলোচনাটা চলল নরহত্যা, আছহত্যা, জিঘাংসা, বিরংসা ইত্যাদি নানা ধরনের অখবাভাবিক ব্যাপার নিরে। কিছ্কাণের মধ্যেই মনে হল, বোধহয় নাটাকার প্রসেনজিৎ মর্যাপারান চিন্তায় আবিন্ট হয়ে নাটকটি লিখেলেন। প্রপাতিপাথী বলে খ্যাঠ ভদ্রলোকের মনে এই ধরনের চিন্তা বাসা বোধেলে ব্রুতে পেরে একট্ বিন্মিত বোধ করলায়। মানবপ্রকৃতি সম্বন্ধে নাটকেই খানিকটা ফুয়েভের, খানিকটা কিরেকের্ন পারের পার আর একদিন মানবপ্রকৃতি সম্বন্ধ আলোচনা চলল। প্রসেনজিতের ধারণা ও মতামত আমি মেনে নিতে

পারলাম না, উনিও আমার 'তথাকথিও প্রগতিবাদী' ও 'জড়বাদী' ধারণাকে বাংগ করতে ছাড়লেন না। নাট্যকার প্রসেনজিতের বস্তব্যের সংক্ষিতসার পাঠকদের অবগতির জন্য উম্পৃত করছি।

"মানুষ মানুষের প্রতি সর্বদাই বিদেব্যভাবাপল। মানুবের হিংসাপ্রবাধ শাশ্বত ও সনাত্ম। জন্মের সপ্তে জড়িত এই জিঘাংসাবৃত্তি এবং সমাজস্ভাতা জিঘাংসাকে অবদমিত করার চেণ্টা করে সফল হয়নি। অনথকি এর ফলে নিউরো-সিসের প্রাদ্বভাব বেড়েছে: অবদমিত জৈব-প্রবৃত্তি নানাধরনের 'কমপ্লেক্স' স্^{তি} করেছে। বিনা কারণে বা সামান্য কারণে উত্তেঞ্জিত হয়ে প্রেমাম্পদকে আঘাত করা বা নিজেকে হত্যা করা আপনাদের মত লোকের কাছে অস্বাভাবিক মনে হঙে পারে, কিন্তু আসলে এইটেই স্বাভাবিক। আমার নায়ক জীবনযুদেধ জয়ী হতে পার্রোন: তার ব্যর্থতার কারণ সে ব্রুতে পারছে না, তার অন্তর্দাহ আলেকহল ট্রাংকইলিজারে কমছে না। এ ক্লেন্তে ভার জিঘাংসা প্রবৃত্তি জাগবেই, জাগতে বাধা। তার ভেতরকার নেকড়ে (যে নেকড়ে আপনার আমার অবচেতনায় এখন হয়ঙ জ্মতন কাটছে) বেরিয়ে এল এক ঝড়ের সন্ধায়। এমনি এক সন্ধায় বছর পাঁচেক আগে তাদের প্রথম পরিচয় হয়েছিল। পঠি বছর ধরে আমার নায়ক রাজনীতির সংস্তব ছেড়ে, নায়িকাকে বিবাহ করে সংসারী ह्यात खरना, अर्थ ताखगारतत नाना क्रणी করেছে। সফল হয়নি। নায়িকার সমাজে প্রবিণ্ট হবার জন্য আর্থিক সাফল্য, নিজস্ বাড়ী, গাড়ী, একাল্ড প্রয়োজন। সে **সাফল্য** সে লাভ করতে পারেনি। নায়িকার **সমাজ** তাকে গ্রহণ করেনি। এদিকে তার পরেনা

সমাজ, ভার পুরনো বন্ধরা, পার্টির নহৰুমীরা ভাকে পরিত্যাগ করেছে; टक्नमा, तम, छाएमत भएछ, मृतिशायामी ব্যক্তিবার্থ সম্প্রদা। এক সময় বিশ্ববের শ্বপন দেখেছে, বিশ্ববের আগনে বার্ণিরে भएक आकार्याक रमस्य करभना करहरह। পাঁচ বছর আগেকার সেই সম্প্রায় একটি মেরের সপো পরিচয় হওয়ার ফলে তার শ্বশন ব্যর্থ হয়েছে, তার জীবনও ব্যর্থ হতে চলেছে। অর্থ-প্রতিপত্তি লাভ না করে, নারিকার সমাজে মাথা উচু করে চলবার মত শত্তি অভান না করে সে নায়িকাকে গ্রহণ করতে পারে না। আবার পরেনো জীবনেও ফিরে যাওয়া চলে না। এই ভীর "বাশের সমাধান দুভাবে হতে পাবে। সুইসাইড কিন্বা হোমিসাইড। সুইসাইড-**होटे जन्भ-भांत माह्यकात्रापत प्रधारम मा**न আসবে। আমি পন্থা হিসেবে 'হোমিসাইড' স্মীচীন মনে করেছি।"

একেবারে মাম্রিল ফ্রন্ডেটার ধারণার ভদ্রলোক ওতোপ্রোতভাবে জড়িত। আমার কাছে মতামত নিতে এসে তাঁর মতামত জার করে আমার ওপর চাপিরে দিরে, আমার কথার কর্পোত না করে, নিজের পক্ষ উক্তকণ্ঠে সমর্থন করে, ডজনখানেক সিগারেট ও কাপ চারেক চা শেব করে নাটকার সাম্পোসাল্যারে নিরে নাটকীয়-ভাবে প্রশ্বান করলেন।

িবতীয় দিনের আলোচনার নাটাকার উচ্চতর মার্গে অবস্থিত ছিলেন। এদিনে তিনি তুললেন অনস্ত দেশকালের কথা।

"অনত দেশকালের প্রেক্তিতে আমানের অভিতর, আমানের জবিন, আমানের দৈনিদ্দন বৈচে থাকা, বে'চে থাকার লড়াই, অভীন্টাসিদ্দর প্রচেষ্টা; —এ সবের উদ্দেশ। কি? আসমি ত' মনের মাষ্টার, কোনো মানকে ঠিকমত চালাতে পেরেছেন কি? কোনো মানুষের সঠিক লক্ষের সংধান জানেন কি? অভিতরের মোলিক বিচ্ছিল্লতা আপনার মত 'স্পারফিসিরাল' জডবাদীকে ভাবিরে তোলে না আমি জানি; কিল্ড আমি এ চিল্ডাকে পাশ কাটিরে বেতে পারি না,

হাওড়া কুষ্ঠ কুটির

সর্বপ্রকার চর্মরোগ, বাতরন্ত, অসাড়তা,
ফুলা, একজিমা, সোরাইসিস, দ্বিত
কতাদি আরোগোর জন্য সাক্ষাতে অথবা
পরে ব্যবস্থা ব.উন। প্রতিন্টাতাঃ পশ্চিত
রালপ্রাথ শর্মা কবিসাক, ১নং মাধব ঘোর
কেন, খ্রুট, হাওড়া। শাখাঃ ৩৬,
মহাদা গশ্বী রোড, কলিকাতা—৯।
কোম ঃ ৬৭-২০৫৯।

যেতে চাইও না। ব্রেরাদী, বাস্ত্রাদী বলে খুব গুমোর আপনাদের, আসলে আপনারাই অবাস্তব, যুক্তিহীন। অস্তিছের সমস্যাই মানুবের আসল সমস্যা। হিন্দুদর্শন এই সমস্যা নিরে অনেক ভেবেছে, অনেক কিছু বলৈছে। আপনারা আধ্বনিকতার নাম করে সেসব অগ্নাহ্য করতে চান। আধুনিক চিম্ভাবিদরাও অনেক কিছু লিখেছেন, তারাও আপনাদের মতে 'রি-আকশনারী'। किरहर्कि शाखिक ना भानरि हान, ना भानर्न, কিম্ভু কাম, সার্চের বস্তব্যকে খণ্ডন করার কোনো ব্রি আপনার থলিতে আছে কি? আমি জানি, নেই। মৃহ্তবাদী আপনারা। মান্বকে দিয়ে অথহীন জীবনের রথ টানাবার জন্যে তাকে তত্ত্বে মদে মন্ত করে, শ্লোগানের চাব্রু মেরে স্পিরিচুয়াল চিন্তা থেকে সরিয়ে রেথেছে**ন।"...**

খণ্টাদেড়েক ধরে পরমার্থিক আধ্যাখিক নানাধরনের উচ্চমার্গের জ্ঞান বিতরণ করে ভদ্রলোক বিদায় নিলেন। এ-দিন নাটক নিয়ে কোনো কথা তুললেন না। তবে ক নাটকের মনস্তাত্ত্বিক সমস্যা ছাড়া, তার নিজের আলাদা কোনো সমস্যা আছে: একবার বোধহয় এইরকম মনে হয়েছিল।

দিন সাতেক পরে ভদ্রলোক একলা এলেন। এবার সরাসরি নিজের বন্ধবা শেশ করলেনঃ—দেখন, আমার নিজের একটা অস্বিধা হচ্ছে। জীবনে একটা সমস্যা দেখা দিয়েছে। জানতে এলাম আপনার চিকিংসায় সে অস্বিধা দ্র হতে পারে কিনা?

—অস্বিধা কি না জানলে কোনো উত্তর দেওয়া সম্ভব নয়।

ভদুলোক বিশদভাবে তাঁর অস্থাবিদার কাহিনী বিবৃত করলেন।

বুম হচ্ছে না। আলো ঘ্মোনো অভাস। কিন্তু বছর তিনেক ধরে আলো নিভুতে সাহস হচ্ছে না। অথকার হলেই ভয় পাই। না, এখনও বিয়ে করিনি। একলা থাকি। চাকর পাশের বারান্দার শ্বয়ে থাকে। আলো জনলিয়ে তানক রাড অবধি লেখাপড়া করি। কিন্তু সারারাত ত না ঘ্মিয়ে থাকা যায় না। দিনের বেলায় চেট্টা করে দেখেছি। ঘ্রুতে পারি भा। চোথ ব'্জলেই বিপদ: —সেই ভয়। চোখ মেলে घ्रम्यात প্রাকটিস্ করে দেখেছি। ঘ্ম আসে নি। আপনি ডাভার তব্ মনে হচ্ছে আপনি হয়ত আজগ্রি মনে কর্বেন। তাই ভরের কথাটা বলতে পার্রন্থি না। যেটাকু শনেলেন, তা থেকে আপনার কি ধারণা হল, বলুন! পারবেন আমার চিকিৎসার ভার নিতে?

— বেট্কু শ্নেলাম, তা থেকে কিছ্ট বলা চলে না। আপনি মুলায় এত জ্ঞানেন, আর এট্কু জ্ঞানেন না বে রেখেচেকে বললে ভারারের পক্ষে চিকিৎসা সুম্ভব নয়।

-- কিল্ড আপনাকে বিশ্বাস করি কি করে? আপনি বৈ আমাকে নিয়ে বংশ্ব- বাশ্বদের স্থেগ হাসিটাট্টা ক্রবেন লা আপনি বে আমাকে হের ক্রবার ক্রা আমার চেনাকানা মহলে সব ক্রিবে দেবেন না, তার গ্যারাণ্টি কোথার?

—তা হলে অনা ভাষারের করে বান। বাকে বিশ্বাস করতে পারছেন না, ভাকে দিয়ে চিকিৎসা করালে কোনো ফল হবে না। আছা, নমস্বার।

ভদ্রলোক ওঠবার কোনো লক্ষণ দেখালেন না। মুখ নীচু করে কি বেন ভাবলেন, তারপর বেশ একট, বুক্কতঠেই বললেন,—শ্ন্ন ভা হলে বলছি। জানি কোনো কল্লদা হবে না, তব্ব না বলে পারছি না।

এবার ভদুলোক মোলারেয় হাসি টেনে নিয়ে বলতে লাগলেম ঃ

—দেখ্ন, সভি কথা বলতে কি.— ভরটা এত আজগ**ু**বি আর অবাস্তব বে দিনের বেলার ভাবতে গেলে হাসি পার। যে শ্নেবে সেও হাসবে। মজাটা হচ্ছে এই যে আমি জানি অবাস্তব জানি আজগ,িব: তব্য এ ভয়ের হাত থেকে পরিবাণ পাছি না। অধ্যকার হলেই, কিবা চো**ধ ব',জলেই** মানে হয় নিঃশব্দ পদস্যারে অব্যব্দারের ভেতর দিরে কে বেন **এগিয়ে জাসছে।** कात्मा मध्य घत्न इय अक्छन कात्मा मध्य মান হয় আনেকে দল বৌধে এগিরে আসছে। তাদের চোথমুখ কিছাই দেখতে পাজি না, তব্যও মনে হয় ভাদের চোখে স্ব্রভ আলো, তাদের মুখের মধো চকচক কবল্ছ ধারালো हाताहे 'कामाटेस': (कक्ट्र मील, वा मिस्ट আমবা খাবাব সময় খাদদেবা ভিল্ল করি ' ভাদের নখগলো বাঁকানো। আমার গারের লোম থাড়া চাষ ওঠে, ভয়ে হাত পা অবশ হায়ে বায়, চাংকাব করে পা শর বারালনাং চাকরকে ডাকবার ক্ষম^{ান্ত} **পাকে না** সাইচ টিপে আলো নলভেই মাভি মিলিয়ে যার আমার ভ_{ংব} দুর হর। অসহ যদ্যণা পাচ্ছিঃ হার্ডমানে এমন দটিভার্বা যে দিনের বেলাডেও কোনো নিজনি গলি মধ্যে ঢাকতে ভর পাই। ঢাকলেই মনে হা কে যেন পিছা নিয়েছে। আমার পারে সংখ্যে পা মিলিরে, আমার উপর রেখে, আমার পেছন পে**ছন আসছে। আ**টি থামলে, সেও থামছে। করেক মাঙ্গ আণ একটা গলির মধ্যে চাকে, আমাকে শে পর্যাতত ভয়ে ছাটতে হয়েছিল। দৌড়ে ক বাস্তার পড়ে তবে বচিলাম। সেই খেল বড় রাসতা, ভিড়ের রাস্তা ছাড়া আর চী না। কিল্ড গলি না হর এড়িরে চললা কিন্তু রাহ্রিকে, অন্ধকারকে ভ' এড়িরে চা যায় না।

ভদ্রলোকের মুখের হাঙ্গি চলে গি কিরকম একটা বিষয়তার ভাব ফুটে উঠেটে পুর্বপরিচিত, বাকাশেলবদক নাটক

ì

প্রদেশজিতকে বেন চেনাই বাজে না। তিনি বলে চললেন:--

—আমি বিশ্বিটা লিখে এনেছি পড়ে দেখাৰো। কিছু যদে হয় সা আপনি কিছু উপকাৰ কৰকে পালবেন।

े देवन है जाएन त्यत्कष्टे आधार जन्मएन विद्युत काल्या एकम ?

্নাৰ আপ্নানের জাপ্তামেণ্টাল কাজাইটে মলোই স্থল। ভারা ওরা। জাপ্নার মিলাবাম্থি দিয়ে ওদের আপ্নি কাই শার্মেন না। ভূজ ভারাগনোলিস কাইটা নিশ্চরই। সেই মাম্লি ব্লি কাইটাকো। ভীর আপ্নার সমাজ-বাস্তবে জাল্পার পরিবেশ। আপ্নার রোগ কাইটাকো, ভুর হয় রোগ সারাভে ভূল

্রান্ত্র, আপনাকে আবার বলছি ব্যাক্তিক, ভালারের কাছে লান।

বিশারা আপনার থেকে বেশি পণ্ডিও বি তাই বা জানলেন কি ক'ব ? কাছে চেন্টা না করে আপনার টিই এনেছি ভাবলেন কি করে ? সাঁতা বি জানন, আমাদের দেশে মনের কিবলার হয় না। মনের ভালারদের ইতিবালি জান থাকা দরকার, তা মান্ত্রীক কার্রই নেই। 'ট্রানকুই লজার মার্কি ভালেপানটি'—এই ত' আপনাদের বিভালি সহস্রদল পশ্মকে আপনারা মার্কি করে বন্দে আহেন।

্রান্দর ছবে ব'সে আমাকে এবং আমার হৈনা নিরের যথেন্ট অপমান আপনি রেইছেন। এবার আপনি দয়া করে আপনার বিষয়ে দুদ্দার ডাভারদের দিরে চিকিংস র বিষয়ে কর্ম। আছো, নমস্কার।

্জন্তনাক এবারও চুপ করে রইলেন। বিল্ল কোনো তাড়া আছে বলে মনে হল া⊹কিক্তু আমার তাড়া হিল। সেদিন আর কানো কথা হল না।

শ এর পর সপতাছ তিনেকের মধে।
স্থালোক বার ছয়েক আমার কাছে এলেন।
মামাকে আক্রমণ করে কোনো মণ্ডবা আর
শানালেন না। মনে হল ব্বি তার
চকিৎসার ফল হবে।

এই ভয়ের উৎপত্তি তিন নর, প্রায় বছর গাঁচেক আগে। তবে বছর প্রেক এর গীছতা কম ছিল। ব্যুমের ওব্ধে কাজ হত। গাঁজেই তত বেলি বিব্রত বোধ করেন নি চিকাংলার কথাও মনে হরনি। ভয়ের প্রথম বৈশাত হাজারিবাগে। স্বুরমার আকস্মিক তুরি পর থেকে এই ভয় চ্যুকেছে প্রস্মেক্তর মনে। সরেমা জিল তাঁর করেবা গাঁজিকা। স্বুরমার সংক্ষা নাটাকার অন্তেক্তর মনে। সরেমা জিল তাঁর করেবা গাঁজিকা। স্বুরমার সংক্ষা নাটাকার অন্তেক্তর হানিউতা প্রের অনেকেই

জানত। স্বেমার স্বামীকে জনেকে আকারে देर्राभरक कामारक क्रमों करबट करे ঘনিষ্ঠতার কথা। ভিনি বিশ্বাস করেন । ন। मतकाती विकाशात को लाकृति श्रामम-জিতের বিশেষ ভব্ন ও অস্তর্ধণ ক্ষয় ্ নিঃসণ্ডান স্বেমা অভিনয় নিয়ে নিজেকে ভূলে থাকুক স্বামী এই চাইভেম। বিষেধ न, यहत भर क्षत्र भग्जाम क्षत्रावत महत्र স্কুলার জীবন সংশর হয়েছিল। ভারার্থ অপারেশনের সময় প্রামী-প্রার স্থাও নিয়ে, স্বেমার স্তানধারণার স্ভাবনা বংশ করে দেন। এর পর বছর দুরেক সুরয়। 'মেলানকলিয়াতে' (বিবাদ রোগ) ভোগে ভারারদের নির্দেশে স্বামী স্ক্রমাকে চলা ফেরার অবাধ স্বাধীনতা লান করলেন। वस्थः अरमगीकाण्यक शरद ७८क व्यक्तिमस রতী করালেন। প্রথমটার স্বরমার আপত্তি ছিল। পরে আভিমর তার নেশা হয়ে। ক্লমণ প্রসেম্ক্রিডের দ্লের স্বেসিবা হয়ে উঠল। প্রামীর মন্ত প্রসেমজিতের ভর হরে উঠল। ন্বামী विकामात्रिक काटक खाक वंशास, कान रमधारम धारकम: आत न्ही धिरहाग्रेरियर नरनात नर्वन प्राप्त भारत निक्री वरण्य तींगी হাজারীবাণ আহরে বেড়ান কিম্বা রাড পর্যানত রিহাসালে ব্যাল্ড থাকেন। শ্বামীর অগাধ বিশ্বাস ও অপার ভালবাসার মূলা সূরমা ব্রুড। কিল্ড ভা সত্ত্তে, প্রসেনজিতের ব্যক্তির, অভিনয়দক্ষতা, অগাধ পাণ্ডিতা ওকে ধীরে ধীরে আরুণ্ট করতে লাগল। প্রসেনজিত অনেক নিজের মনোভাব গোপন করতে পেরেছিলেম্ কিন্তু লেবের দিকে নিজেকে সংযত রাখা আর সম্ভব হল না। প্রকাশ্যে সার্মাঞ প্রেম জানালেন সারমা সাভা দিল না। কিন্তু সরাসরি প্রত্যাখ্যানও করতে পারন না। তারা দৃ**জনে রিহাসালের শেহে** লেকের ধারে বঙ্গে থাকত, গণগার ধার দিয়ে ঘারে বেড়াত। দলের লোকেরা এই খনিষ্ঠতা নিয়ে অনেক কিছু জলপনাকলপনা করছিল। ভার বেশির ভাগই অবিশি। মিথো। কেন্না ওদের প্রেম সরেমার চেণ্টাতে কামনা-কল্মিত **হতে** পারেনি। প্রসেনজিতও বন্ধ্যুপদ্বীকে সম্ভোগের সামগ্রী করকার চেণ্টা করেন নি কোনো দিনই। সরেমার প্ৰামী স্বটা না হলেও অনেকটা ব্ৰুতে পেরেছিলেন। দুজনের ওপরই ছিল তার অটাট বিশ্বাস। ওদের অবাধ ভালায়েশাই তিনি কোনো বাধা স্থিতীর চেম্টা করলেন না। কিন্তু দেদিন হাজারিবাণে একে 'ব যে হল প্রদেনজিতের: তিনি নিজেই জানের না। ওদের মোটরগাডীটা কয়েক ঘণ্টা আগে পেশীছেছে, দলের আনোরা ট্রেন্ আসভো পুলেনজিত সুর্মা আরু দুটি ছেলে গাড়ীতে এসেছে। ছেলে দটো এসেই শহর দেখাতে কবিয়ো পড়বা। কান্ট্রন খ্রান্ প্সেনজিত আর **স**ার্মা। করিভারে বংস আলামী ডিন দিনের প্রোগ্রাম মিয়ে আলো-রুমা করতে চাইল। কিল্ড সারুমার দিক থেকে সাড়া নাই। সে ক^{দিন} **ধরেই আন্যান**। ও বিম্ব'। টিকিট বিক্লী মদদ হয়নি,

वर्गामारेकाववा कामित्रहा । अवदी शाक्त-বিলের খসড়া তৈরী করছিলেন প্রসেনজিত।. হঠং সমস্ত আলো নিভে গেল। চাকর এসে জামাল, সাংলাই লৌগনে গড়বড়। এরকম মাৰে মাৰেই হয়। তবে আধঘণ্টা তিল-**ब्लाहार्डे (तस दर्शन क्रम्बाद श**करक हत्व मा। स्मरे जन्धकाता हुठार श्रामनीकाएत गाम হল ভার ভেতর থেকে পশটো বেরিয়ে আসহে। এ পশ্টা ভার পরিচিত। আজ পাঁচ, ছয় বছর ধরে লড়াই করছে এটার সংশা। অনেক কণ্টে ভাকে এভারন দ্যিয়ে রেখেছিল। আজ বোধ হয় আর পার্বে মা। বলে বসলেম ফিসফিস করে, ভান্ন পালিয়ে या अनुत्रमा। काजरे, अध्यहे अहे बार्ट्स ট্রেনেই কোলকাতার পালিছে **বাও।**'..কার विष्यु-जीत भरत भराष्ट्र ता। कारकाका भराष व्यातना व्यतनन महा हमहे। भारतब ्रह्महाब थानि। टकाथाम रशन जाममा? जीकाहै কোলকাতায় ফিয়ে গেল নাকি? মা কোল-কাতার বায় নি। তার জন্য নিদিশ্ট খরেই তাকে পাওয়া পেল। খুমালে। খামের ওলধ নে খেতই। আৰু একটা বেশি করেই स्थात्राह । तम चाम जात कारक मि ।

প্রসেমজিতের পশ্ডিত প্রসেমজিশ্ডর ধারণা ভার ভেতরের পশটো বোধ হয় বেলিলে এসেছিল। তিনিই সরেমাকে ইত্যা করেছেন। কেন হতা। করলেন? আতারক র তাগিদে। মান্য আসলে নেকডে, হায়েনা ও শ্কর। মাতার রহসা জানবার জানা বোধ হয় হত্যা করেছেন আমার মত বর্বার জড়বাদী হয়ত বলবে প্রসেনজিত মনের রোগে ভূগছে। মনের রোগ নয়, আআায় কত হয়েছে। সে কত সারানোর ক্রমতা জড়বাদী ডাক্তারদের নেই। স্রমার স্বামী, আমার বন্ধার ধারণা সারমা আজহতায় করেছে। মাস-থানেক ধরে তার পরেনা 'মেলানকলিয়া' আবার দেখা দিয়েছিল। প্রক্রেন ব্যক্তে পারে নি সরেয়ার ব্যাহাী পেরেছিল। প্রসেমজিতের শেষ দিনের কথা-গ্ৰেলা এখনও মনে আছে :

—সেই থেকে ভয়। অন্ধকারের ভয়।
মাজাভক। কিংত ওরা কারা? স্বশার
প্রভাষা না আমার নিজের ভেতরকার সেই
পশ্টা? মাঝে-মাঝে ওরা অনেকে মিজে
আসে কেন? ক্ষ্পিত আ্থাগ্লো প্রেত-লোকে গিরো দল বাধে বোধ হয়। আপানার
মত ভাতার দিয়ে আমার চিকিৎসা হবে মা।

সেই শেষ। প্রসেমজিত আর আরে মি। কেসটা নিউরোটিক অবসেশন কিনা আছার বংশেত সালত আছে। হয়ত চিকিৎসা করপেও সারত মা। পশ্ডিত রোগাীর কথা বলতে গিয়ে প্রসেশিকতের কথা ছনে পশ্ড গেল, তাই অবসেশন প্রসংগাই কাহিমীটা বিবৃত কর্ষলাম।

ওনার নায়ক্তক উমি নিজের টি ছাল আঁকতে চেয়েছিলেন। —মনোবিছ





मना क

বিশ্ব ফ্টেবল প্রতিযোগিতা

গত ৩১শে মে মেকসিকোতে ৯ম বিশ্ব
টবল প্রতিযোগিতার আসর বসেছে।
থানে শেষ লীগ পর্যায়ের থেকার ১৬টি
শ সমান ভাগ হয়ে চারটি গ্রপে থেকাছে।
তি গ্রপের লীগ চ্যাশিপরাম এবং রামাস'মাপ দেশই শ্রধ কোয়াটার ফাইনালে
থলবার যোগাতা লাভ করবে। এই
কায়াটার ফাইনাল থেকে নকআউট প্রথায়
থলা হবে। ৭ই জ্বন পর্যন্ত যে লীগ
থলাগ্লি হয়েছে তার ফলাফল ধরে
তিমানে বিভিন্ন গ্রপে এই রকম অবস্থা
টিড়িয়ছে ঃ

নং রশে : রাশিয়া এবং মেকসিকো লীগ তালিকার শীর্ষ ব্যানে আছে। দ্বিট করে মাাচ থেলে উভয়েরই ৩ পরেট করে সংগ্রীত হয়েছে।

ংনং মুন্দ : লীগ তালিকার শীর্ষ স্থানে আছে উর্ন্তারে এবং ইতালী। দুটি করে মাচ থেলে তারা ৩ পরেণ্ট করে সংগ্রহ করেছে।

নং গ্রেশ : লীগ তালিকার শীর্ষ থান
নিয়েছে রেজিল, দ্টি থেলায় ৪
পয়েণ্ট। খিবতীয় স্থানে আছে ইংল্যাণ্ড
এবং র্মানিয়া—দ্টি করে ম্যাচ থেলে
প্রতাকের ২ পয়েণ্ট করে সংগৃহীত
হয়েছে। গতবারের বিজয়ী ইংল্যাণ্ড
০—১ গোলে রেজিলের কাছে হার
স্বীকার কংশছ।

3**নং গ্রুপ** : লীগ তালিকার শীর্ষপথানে আছে পেরু এবং পশ্চিম জার্মানী— দটি করে মাাচ খেলে ৪ পরেণ্ট করে সংগ্রহ ক'র্ল্ড।

1 পর্যাত তিনটি দেশ—'রজিল (০নং গ্রাপ) পের এবং পশ্চিম জার্মানী (মনং গ্রাপ) খেলায় কোন পরেণ্ট নন্ট করেনি।

ট্যাস কাপ

কোয়ালাদামপুরে আরোজিত প্রেষ্ক্রদের দলগত ৮ম বিশ্ব ব্যাণ্ডিশটন
গতিযোগিতার ফাইনালে ইলোনেলিয়া

১—২ থেলায় গতবারের (১৯৬৭) বিজয়ী
গোলয়েশিয়াকে প্রাজিত করে পূর্বে
বরাজয়ের প্রতিশোধ নিয়েছে এবং মেট
নরবার 'টমাস কাপ' জয়ের গোরব লাভ

বিশ্ব ফ্টেবল কাপ ঃ তনং মুদে ইংল্যান্ড বনার মুমানিরার বেলার একটি দ্শা—ইংল্যান্ডের গোলরক্ষক গর্ডন বাংকস বলে মুদ্দি নেরে দলের বিপদ দ্বে করেছেন। বেলার ইংল্যান্ড ১-০ গোলে ক্ষরী হয়।



করেছে। এথানে উল্লেখ্য, ১৯৬৭ সালের काहेमाल हैल्मानीमहा ৩--৪ থেলায় মালয়েশিয়ার কাছে হেরেছিল। দশকিদের প্রচণ্ড বিক্লোভের ফলে জাকাত য আয়োজিত ১৯৬৭ সালের ফাইনাল খেলা মাঝপথে বৃদ্ধ হয়ে যায়। এই সল্ল মালরেশিয়া ৪—০ খেলায় এগিয়েছি**ল।** জাকাতায় দ**শকদের এই বিক্লো**ভ ঘটনার পরিপ্রেক্ষতে আণ্ডজাতিক ব্যাডমিণ্টন ফেডারেশন ১৯৬৭ সালের অসমাণ্ড ফাইনাল খেলার আসর যে স্থানান্তরিত করেন তার প্রতিবাদে ইদেদানেশিয়া প্রাত-যোগিতা থেকে লেব পর্যন্ত নাম প্রত্যাহার कार त्या भाग मानासम्बद्धाः विकासी र्घावना कता इरा।

প্র্যদের এই দলগত বিশ্ব ব্যাডমিন্টন প্রতিযোগিতার উদেবাধন ১৯৪৮৪৯ সালে। এ প্রশ্ত মাত এই দুটি দেল

টমাস কাপ' জয় হয়েছে: মালমেশিয়া
৪ বার এবং ইন্দোনেশিয়া ৪ বার। এ বছর
থেকে চ্যালেজ রাউন্ডের থেলা উঠে গেল।
আগে টমাস কাপ বিজয়ী দেশ প্রবর্তা
প্রতিযোগিতার মাত একটি আসরে (হা
চ্যালেজ রাউন্ড নামে অভিহিত ছিল)
থেলতো।

আলোচ্য বছরের ফাইনালের প্রথম দিনেই ইন্দোনেশিয়া ৩—১ থেলায় এগিয়ে য়ায়। নিবভীয় দিনের প্রথম সিঞ্চালস খেলায় উপয',পরি তিনবারের (১৯৬৮-৭০) অল ইংল্যান্ড সিঞ্চালস খেতাব বিজ্ঞারী রুদ্ধি হার্টোনো জয়ী হয়ে ইন্দোনেশিয়াকে ৪—১ খেলায় অপ্রগামী করেন এবং ন্বিভীয়

সিণ্গলনে ম্লেজাদি লয়ী হরে স্বলেশক ৫—১ থেলায় লয়ব্ত করেম। ফলে বাক ৩টি খেলার গার্হ্য লোপ পেরে বার।

ফাইনাল খেলার কলাকল প্রথম দিলের খেলা

সিকালন ঃ এশিরান চ্যান্পিয়ান ম্বাকানি (ই ন্দানেশিয়া) ১৫-৯ ও ১৫-৫ প্রেক্টে মালয়েশিয়ান চ্যান্পিয়ান পি গ্রাকারক পরাজিত করেন।

লিংগলন : উপর্যুপদ্ধি ও বারের আলইংল্যান্ড চ্যান্তির্মান রুডি হাটোনো
(ইন্দোনেশিরা) ১৫—১২ ও ১৫—২
পরেণ্ডে আবদ্ধে রহমনকে পরাভিত
হবেন।

ভাৰলল : র.ডি হাটোনো এবং ইম্প্রন্থার্কন (ইন্দোনে শমা) ১৫--১ ও ১৫--১১ পরেণ্টে তান আইক হ্রাং এবং নগ তাই ওয়াইকে পরাজিত কর্মেন।

ভাৰলস ঃ নগ ব্ন বী এবং পি স্থালন (মালয়েশিয়া) ১৫—৭, ১৩—১৫ ও ১৫—১০ পয়েণ্টে ইলরজাে এইং মিন্তারজাকে পরাজিত করেন।

শ্বিতীয় দিনের বেলা শিশালন: র,ডি হাটোনো (ইলোনেলিয়া) ১৭—১৬, ১২—১৫ ও ১৫—০ প্রেন্টে গ্লালনকে প্রাক্তি করেন।

সিণ্ণালস : মালজাদি (ইপেনানোলরা) ১৫—৫ ও ১৫—৫ পরেন্টে আবদ্ধল রহমানকে পরাজিত করেন।

ভাৰলদ : হাটোনো এবং গ্ৰান্তান (ইংগো-নেশিয়া) ১—১৫, ১৭—১৬ ও ১৫— ৬ প্রেণ্টে নগ বলে বী এবং গ্ৰাণালনকে প্রাক্তিত করেন।

সেমি-কাইনাল

্**মালরে**শিরা বনাম ডেনমার্কের সেমি-কাইনাল খেলাটি খুবই প্রতিম্বল্দিত্তা-মলেক হয়েছিল। প্রথম দিনের খেলার মালবেশিরা ৩-১ থেলায় অগ্রগামী হয়। সকলেই ভেবেছিলেন, চারবারের টমাস काभ विकशी भागत्रिभिता महत्वहै एछन-মার্ককে পরাজিত করবে। কিন্তু ন্বিতীর দিনের প্রথম দুটি সিপ্সলস খেলায় জয়ী হরে ডেনমার্ক খেলার ফলাফল সমাদ ত—৩) করে। মালয়েশিয়া তৃতীয় সিপালসে জয়ী হরে ৪—৩ খেলার অগ্রগামী হয়। ডেনমার্ক ন্বিতীয় দিনের প্রথম ভাবলসে জরী হলে প্নেরায় থেলার ফলাফল সমান (৪—৪) দাঁড়ার। শেষ ভাবলস খেলার মালমেশিয়ার অধিনায়ক ব্নবী এবং গ্রণালন ১৬ মিনিটে ১৯৭০ সালের অল-ইংল্যাপ্ড ডাবলস চাাম্পিয়ান টম বার্চার ও পল পিটারসেনকে পরাজিত করে স্বদেশকে ৫—৪ খেলায় জয়যুক্ত করেন।

অপর দিকের সেমি-ফাইনালে ইন্দো-নেশিয়া ৯-০ খেলায় আমেরিকান-জোন বিজ্ঞানী কানাডাকে পরাজিত করে ফাইনালে के देविका।

हैश्लाम्फ बनाम विभव धकामभ मल

দক্ষিণ আফ্রিকান ক্রিকেট দলের ১৯৭০ সালের ইংল্যাণ্ড সফর বাতিল হওয়ার ফংল স্থিব হারভে যে, পার্যঘোষিত পাঁচটি টেস্ট মানেচ দক্ষিণ আফ্রিকার পরিবর্তে বিশ্ব धकामम मरलद मान्य देशमान्य प्रमा थलातः। **ইংল্যানেড**র বিভিন্ন কাউণ্টি ক্রিকেট দলে **বিভিন্ন দেশের যেসব খাতেনামা খেলোয**াদ বর্জমান মরসুমে থেলভেন তাঁদের থেকেই বিশ্ব একাদশ দল তৈবী কৰা হতে। কিকেট শেলার কর্মকাশারা আশা কবেন ভারত-रही शहराहे निप्रक अल शांकिकराहात **च्यान्तरकाञ्च तथाकाशास्त्रसम्बद्धाः अन्यसम्बद्धाः** हम्हण्यकारा तथाकाशास्त्रास्त्र स्टेन श्रीहरीने राज्ये শেলা বর্ণমান আন্দোলনকে আনেকটা ठीलमा कतात्।

नेश्नाएन्फ्रत विक्रित ****** 2-5 FATAIL रसञ्जन শেলাবাড় বর্দমান মনসামে খেলছেন, ভাদের দাম এখানে দেওয়া হল :

क्रांस्ट्रमं १ सात्राक ^{हे प्}वर्तीतात। **्रम्म हैनियक :** शंगती । जाराज, लगन्ज नितंत्र कार्रेष्ट्र सारमध्य द्वासान नद्यीयन्त्र ূ<mark>রর মার্</mark>শাল জ্যান হোল্ডার এবং ह्वांइन कानगाउँ।

भारित्यकाल : श्रीलाम श्री प्राप्तकाल प्राप्तकाल ক্রীটনিস আম্মেদ আসিফ ইকবাল এবং ইন্তিখার আলাম।

ভিত্ত : ক্রাইড ইনম্যাম।

অন্তেট্যিকা : এট্যালান কনোলী এবং গ্রাহাম যালকভার। **নিউভিল্যান্ড ঃ** শ্লিম টার্মার।

দক্ষিৰ আছিকা ঃ মাইক প্রোক্টার, বেরী রিচার্ডাস এবং ছিলটন খ্যাকারম্যান।

পাঁচটি টেম্ট हेरलाएफ्द्र दिशक ক্রিকেট খেলায় ওয়েস্ট ইণ্ডিজ এবং নটিংহামসারার কাউণিট ক্রিকেট দলের অধিনায়ক গ্যারী সোবাস বিশ্ব একাৰণ দলের অধিনায়ক নির্বাচিত হয়েছেন। বিশ্ব अकामम क्रिकिए मन गर्छत्नत छल्मला गांती সোবাস' (অধিনায়ক), ফ্রেডী রাউন (ইংল্যান্ডের প্রান্তন অধিনায়ক) এবং লেসলী এমস (ইংল্যাণ্ড দলের প্রান্তন উইকেট-কিপার)—এই তিনজনকে নিয়ে একটি কমিটি তৈরী হয়েছে।

আগামী ১৭ই জন লড্স মাঠে আয়োজিত প্রথম টেস্ট থেলায় বি=ব এकामम मरल এই ১১ জন খেলোয়ाড় নির্বাচিত হয়েছেন ঃ গ্যারী সোবাস



গার্রফল্ড সোবার্স

(ওয়েন্ট ইণ্ডিজ ও নটিংহামসায়ার) অধিনায়ক, ফার্ক ইঞ্জিনীয়ার (ভারতবর্ষ ও ল্যাঞ্চাসায়ার), ল্যান্স গিবস (ওয়েস্ট ইণ্ডিজ ও ওয়ারউইকসায়ার), ক্লাইভ লয়েড (ওয়েন্ট ইন্ডিজ ও ল্যাঞ্কাসায়ার), ইন্তিখাব আলাম (পাকিস্তান ও সারে), রোহন কানহাই (ওয়েস্ট ইণ্ডিজ ও ওয়ারউইক-সায়ার), গ্রাহাম ম্যাকেঞ্জি (অস্ট্রেলয় লিন্টারসায়ার), মাইক প্রেক্টার æ (দঃ আফ্রিকা ও গ্লস্টারসায়ার), বেরী রিচার্ডাস (দঃ আফ্রিকা ও হাম্পসায়ার), এডি বার্লো (দঃ আফ্রিকা), আর জি পোলক (দঃ আফিকা)।

টেম্ট খেলার তারিখ

১ম টেস্ট (লডসি): জন ১৭—২৩ २म रहे (रप्रेचेडीक) : ख्लारे २-- १ ৩য় টেল্ট (এজবাস্টন) : জ্বলাই ১৬-২১ ৪থ টেক্ট (হেডিংলে): জ্লাই ৩০-আগস্ট ৪

৫ম টেক্ট (ওভাল) : আগস্ট ১৩—১৮

ফেডারেশন কাপ

পশ্চিম জামানীতে আয়োজিত মহিলা-দের দলগত ৮ম বিশ্ব টোনস প্রতিযোগিতার ফাইনালে অন্টেলিয়া ৩ - ০ খেলার পাঁচ্চা জামানীকে প্রাজিত করে চতুর্থবা ফেডারেশন কাপ জয়ী হরেছে। ইতিপ্রে তারা এই কাপ জয়ী হয়েছে ১৯৬৪ - ৬ এবং ১৯৬৮ সালে। এপর্যন্ত এ ফেডারেশন কাপ জয়ী হয়েছে মাত এই দুর্ন দেশ-আমেরিকা ৪বার (১৯৬৩, ১৯৬৫ ৬৭ ও ১৯৬৯) এবং অভ্রেলিয়া ৪বাং আলোচা বছরের প্রতিযোগিতার একদিবে পশ্চিম জার্মানী ২ সেমি-ফাইনাঙ্গে ১ খেলায় গত চারবারের কাপ বিজ্ঞা আমেরিকাকে প্রাক্তিত করে। অপর্রদিনে সেমি-ফাইনালে ব্রটেনের বিপক্ষে অস্টেলি জরী হয়। ফেডারেশন কাপের উদ্বো ১৯৬৩ সালে।

বিশ্ব-বান্দেকট বল প্রতিযোগিতা

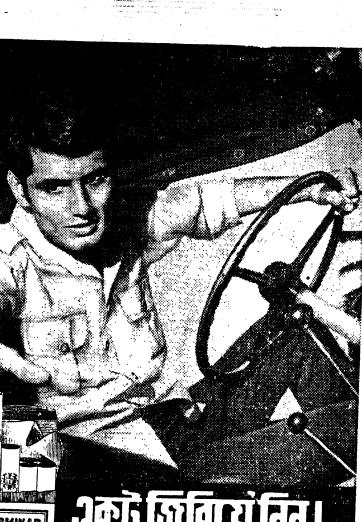
যুগোশ্লাভিয়াতে আয়েচিত বিশ্ব অপেশাদার বাদেকটবল প্রতিযোগি যুগোশ্লাভিয়া স্বৰ্ণ বেজিল বৌপা রাশিয়া ব্রোঞ্জ পদক জয়ী হয়ে এখানে উল্লেখা, রাশিয়া গতবার এই ৪ যোগিতায় স্বৰ্ণ পদক জয়ী হয়েছিল আমেরিকা আলিম্পিক গেমসে বান্ধেক প্রতিযোগিতার সাচনা থেকে (১৯৩৬) ৭ বার (১৯৩৬-৬৮) প্রণ্পদক জয়ী অসাধারণ কৃতিছের পরিচয় দিয়েছে।

১৮৯১ খৃণ্টাব্দে আমেরিকার জেমস এ নেই সিম্থ এই বাসেকটবল প্রবর্তন করেন এবং প্রথম খেলা হয় ১ খৃষ্টাব্দের ২০শে জান,য়ারী।

প্রথম বিভাগের ফ্টবল লীগ

কলকাতায় প্রথম ^কভাগের হ লীগ প্রতিযোগিতার লালকায় ক বি এন আর ৬টি কেনায় ১০ পয়েন্ট করার সূত্রে শীর্ষস্থান অধিকার আছে। দিবতীয় স্থানে আছে রেলওয়ে—৬টি খেলায় ১ পয়েণ্ট। বছরের লীগ চ্যাম্পিয়ান এবং শীল্ড মোহনবাগান ২টি খেলায় ৪ পয়েণ্ট করেছে। অপরদিকে গত বছরের [;] আপ ইস্ট্রেণ্গল দলের উঠেছে ৩টি ৫ পয়েণ্ট। তারা উয়াড়ীর সঞে গে অবস্থায় খেলা ডু করে একটা পয়ে করেছে। মহমেভান স্পেটিং তিনটে ৬ পয়েণ্ট 'সংগ্রহ করেছে। মোট দলের মধ্যে লীগের খেলার অপরাজিত আছে এই চার্রটি দল– রেলওয়ে, মহমেডান স্পোর্টিং, ইস এবং মোহনবাগান। লীগ একেবারে নীচের দিকে আচ্ছ টেলিগ্রাফ—৬টি খেলায় ২ পয়েণ্ট।

(৭ই জুন 🔊





अकरे जितिएयं तित! अकठी ठावसिताव थात

এতে পাবেন টোস্ট-করা খাঁটি তামাকের স্বাদ।

जितिस्ति। दिवं शास्त्र इटनाई वाङ वेत विक्री वातरवत सर्था मते रहता दिन्ही।

CMVS-6-203 Ben

কেটে গেলে, ছড়ে গেলে 'ডেটল'

কেন সবচেয়ে বেশি নির্ভরযোগ্য?



জীবাপুর দান্ধান্ত যম ডেটল। চামড়ার ক্ষতভ্বের মরলা পূর্ণোগুমে বার ক'রে দের ডেটল। ক্ষতরাং কেটে গেলে হড়ে গেলে ডেটলের ওপর ভরসা রাধুম—চট্পট্ সেরে যাবে। বলতে কি, যে জোনো ধরমের কাটাকুটি বা ক্ষতে আপনার উচিত প্রাথমিক বিয়ালভা বিধানের বাবছা হিলেবে ডেটল ব্যবহার করা। বাজির নিভাবেমিতিক প্রযোজনে—দাড়ি ভাষানো, গার্গন্ করা, মাথা থবা বা রামাকরত্তে ডেটল কালে লাগবে।
ভালাই এক বোতল ভেটল বাড়িতে নিয়ে যান।

ব্যার ব্যার করকার ভেটল নিরাপস্তা



বিখের সবচেয়ে বিশ্বস্ত জীবাণুনালক

DAC IOR BEN

न्कन श्रकानन

भूग्पत्र निशांत्र

প্রে বাঙ্কার হিমালয় থেকে পশ্চিমে আরব সাগর তাঁরে সোমনাথ এবং উত্তরে কামনার থেকে দক্ষিলে কন্যাকুমারী পর্যাত এই বিশাল দেশের আন্চর্য ঐশবর্যের আকর্ষাণীয় আবিন্কার। প্রচুর আলোকচিত সন্বলিও উপহারের উপাদের গ্রন্থ। মূল্য ৭-৫০

রম্যাণি বীক্ষার লেথক শ্রীস্বোধকুমার চক্রবতী প্রণীত

উপন্যাস-রসসিত্ত দ্রমণ-কাহিনী

त्रभग्राणि वीक्ष्य

রবীণদ্র প্রফলারে সম্মানিত
• শ্রীস্বোধ চক্রবত্তী প্রণীত
মোট ১০টি পরের ম্লো ১১২-০০
ন্তন : কণাটি পর্ব — ম্লা ১০০০

ভারতীয় শিল্পকলা বিষয়ক ভারতের শিল্প ও আমার কথা

26.00

শ্রীঅধেণ্দ্রকুমার গণেগাপাধ্যার
বাংলা সদীত সন্বন্ধে তথ্যসমূদ্ধ প্রদথ
বাংলা সংগীতের রূপ ৮০০০

স্কুমার রায় ভারতীয় সভ্যতার মর্মবাণী

শাশ্বত ভারত

দেবতার কথা ঃ ঋষির কথা অস্তরের কথাঃ উপদেবতার কথা

ছোটদের জন্য ভারতের বিভিন্ন রাজ্য নিয়ে এক একখানি দ্বয়ংসদ্প্র ভ্রমণ কাহিনী

আমাদের দেশ

উড়িখ্যা: আপ্র: মাহস্র: আমিগনাড় প্রতিথানির মূল্য ২ ৫০ শ্রীস্বোধকুমার চক্রবর্তী প্রণীত

NATES .

এ. মৃথান্ত ি আছি কাল আন্তর্গ কাল আনুষ্ঠান কাল

্ঠ*া*ল বৰ্ণ ১৯ খণ্ড



दम मरपा ग्रामा

३० नम्म

Friday, 19th June 1970.

महत्त्वात, श्रेत आयात्, ১००० 40 Paise

भूछोश**ज**

প্তা লেখক ৫৮০ চিত্তিপত্ত --- শ্রীসমদশ্রী ६४२ नामा कात्म ६४८ सामानसम्ब -- শ্ৰীকাফী খাঁ-৫৮৬ ৰাশ্যচিত্ৰ ८४० जन्भावकीम ৫৮৮ শেৰ চড়ইভাতি (কবিতা) —শ্রীজগন্নাথ চক্রবতী (কবিতা) —শ্রীদীপেন রায় ৫৮৮ নিৰ্মাণ ८৮৮ टर शिव कामाव मृत्य (কবিতা) —শ্রীসোমেন্দ্র গণ্গোপাধ্যায় ৫৮৯ সাহিত্যিকের চোখে আজকের সমাজ —শ্রীসন্তোষকুমার ঘোষ —শ্ৰীছবি বস্ ৫৯২ জাতকথা —আবদ্বল জবকার ৫৯৫ মুখের মেলা ৫৯৮ রবীশ্রনাথ : বিতকের উত্তরে —শ্রীসরিংকুমার বন্দ্যো**পাধ্যায়** (রহস্য কাহিনী) — সৈয়দ মুস্তাফা সিরাজ ৬০০ ছায়া পড়ে ---শ্রীঅভয়ঙ্কর ৬০৫ সাহিত্য ও সংস্কৃতি ৬০৮ নীলকণ্ঠ পাখির খোঁজে (উপন্যাস) --শ্রীঅতীন বন্দ্যোপাধ্যায় —শ্রীসন্ধিৎস ৬১৩ নিকটেই আছে --শ্রীমনোবিদ ৬১৭ भारतत कथा —শ্রীপরিতোষ গ্রুত ७२० धत्नत्र कथा : खालाच्ना ৬২২ দিৰতীয় প্থিৰী (বড় গদপ) —শ্রীশান্তি পাল (সম্তিচিত্রণ) ---শ্রীঅহীন্দ্র চৌধ্রী ७२० निकार शतास थ'्रीक (গল্প) --শ্রীঅশোককুমার সেনগ্রুত ৬৩২ হেমণ্ডের শস্যভূমি ৬৩৬ গোয়েন্দা কৰি পরাশর —গ্রীপ্রেমেন্দ্র মিত্র রচিত -- শ্রীশৈল চক্রবর্তণী চিগ্রিত --গ্রীপ্রমীলা ৬৩৭ সংগ্ৰা ৬৩৯ বেতারল্লকি -- শ্রীশ্রবণক —শ্রীদিলীপ মৌলিক ७৪২ नार्वेमरणक् मरणारनव -- শ্রীনান্দীকর ৬৪৫ প্রেকাগৃহ --শ্রীচিত্রাণ্যদা ৬৫১ জলসা

श्रष्ट्रम : श्रीभ्यभन तारा

পি ব্যানাজীর তা ক্রিক্র ক্রিয়া চূর্ণ ১৬ পুরিয়া চূর্ণ ২২৫

৬৫৩ আল্ডজাডিক ব্যাডামণ্টন

७৫৫ स्थलाश्ला

ত পিল টা: ২৫০ ১৬ পুরিয়া চূর্ণ ২.২৫ মলম ত আ: ২.৫০ বিনামুল্যে বিবরণী দেওয়া হয়

পি ব্যানাৰ্জী

৩৬বি, শ্বামপ্রেসাদ মুখার্কী বোড কলিকান্তা-২৫ ৫৩, গ্রে ষ্টিট, কলিকান্তা-৬ ১১৪এ, মান্ডগোৰ মুখার্কী রোড কলিকান্তা-২৫ আমার পরম শ্রন্ধের পিতা মিহি
জামের ডাঃ পরেশনাথ বন্দ্যা
পাধ্যায় আবিষ্কৃত ধারান্থায়
প্রস্তুত সমস্ত ঔষধ এবং সো
আদর্শে লিখিত প্স্তকাদির ম্ব
বিক্রয় কেন্দ্র আমাদের নিজস্
ডাক্তারখানাদ্বর এবং অফিস—

—গ্রীক্ষেত্রনাথ রায় —গ্রীদর্শক

আধুনিক চিকিৎসা

ডাঃ প্রণৰ বন্দ্যোপাধ্যায় লিখিত পারিবারিক চিকিৎসার সর্বশ্রেৎ ও সবচেয়ে সহজ্ঞ বই

89-4045, 89-2054, **44-82**25



म्द्रभन टमना

(4)

আপনাদের জানাই আমার আশ্ভরিক প্রীতি ও শ্রুভেচ্ছা। এবার আবদ্ধ জববার মহাশ্রের মুখের মেলার বিষয়ে কিছ ালখছি। অম্তের বেল করেক সংখ্যা থেকে আবদ্ল জন্বার মহাশ্রের লেখা মুখের ংমলার প্রতিটি রচনার মধা দিয়ে আমাদের গামনে ভেলে উঠছে অসংখ্য মাখ। তানের ধ্বেউ আজকের সমাজে কাল্যাল, আবার ।কউ ধনকুবের। এদের মনের আকা•ক্ষা iaকেক বর্নের। কে**উ** চার কল-কহনিভাবে দাচতে, আর কেউ চার কলভেকর সাগরে ড়বে বাঁচতে। আর এদেরই জীবনের ইতি-ংচস হাজির করেছেন অমতের দর্বারে শ্রীজন্বার সাহেব। একটি বিষয়ে আমি অবগত হতে পারছি নাবে জব্বরে **সাহেব ম্সলমান সমাজের কাহিনীই লি**পি-यन्थ करत हरनरहरू। भूषः कि ग्रजनमान :ন্মাজেই এর্প **অবস্থা? আর** কোথা কি এর্প নেই?

পরিভাব নাগ বেলাকোবা, জলপাইগাড়ি।

(२)

কান কোন রচনা শুরুতেই সাথকিতার পরিচর বহন করে। আবদ্বল শুবারের শুনুথের মেলা' তারই জ্বলন্ড নিদর্শন। যে সব মুখের সপে পরিচর হোল তারা আমাদের চেনার মাঝে চির অচেনা। সেই অচেনা মানুবদের বাস্তব ছবি আমাদের চোথের দামনে মেলে ধরে তাদের চেনার থে শুরোগ লেখক দিলেন তারজনা তিমি নিঃস্পেদ্ধ ধনাবাদাহ'। আমাদের নগর-দভাতার সামা ছাড়িয়ে যে এমন ধ্বসেপড়া আমীল সমাজ আছে এ যেন আমরা প্রার ভূলতে বঙ্গোছলাম। সাহিত্যের প্রতাধের সূচনা করলেন।

সহজ্ব সরক ভাষার এমন রচনা প্রকাশের জন্য লেখক ও অম্তের কর্তৃপক্ষ উভয়েই প্রশংসার যোগ্য।

> দীতা বারচোধ্রী কলিকাতা—২০

> > (0)

অনেকদিন আগে জন গাম্থারের লেখা ইনসাইড আমেরিকা পড়ে ব্রুগপং বিদ্যিত ও আদান্দিত ইরেছিলায়। ঠিক সেই ধরণের অনুভূতি আমি অনুভব করি আবদুল কবারের লেখা মুখের মেলা' পড়ে। গাল্থারের লেখার আমেরিকার পোন্ট মটের করা ছবি দেখে অনেক আমেরিকাবাসী আহত হলেন, স্বীকার করতে বাধা হরে-ছিলেন বে এর খেকে বাস্তব ছবি একমার আপটন সিনক্রেরার ছাড়া আর কেউ আঁকডে পারেননি।

কবিতার বইতে সভোলনাথ দত্তের
আঁকা গ্রামের ছবি দেখে মুন্ধ হরেছিলাম।
এবং তা আমার মনের লম্ভিলটে কেবল
সন্লর ছবি হরেই বিরাজ করেছিল। কিন্তু
জবারের লেখা পড়ে এই প্রথম চির
অবহেলিত গ্রামবাংলাকে ভালবাসতে
লিখেছি। এই ভালবাসার রঙে শুর্ম আমি
নর অনেক সাধারণ পাঠকের মনই রঞ্জিও
হয়েছে—এইখানেই লেখকের কৃতিছ। পরিশেষে সম্পাদক মহাশরকে আমার অসংখ্য
কৃতক্ততা ও ধন্যবাদ জানাই অম্তর মত
এমন একটি স্কুর সাপ্তাহিক উপহার
দেবার জন্য।

শ্বেক লেনগ্ৰেক সেন্ট লেভিয়ার্স কলেজ, কলকাতা-১৬।

(8)

আমি আপনার বহুৰ প্রচারিত 'অমৃত' পত্রিকার নিয়মিত পাঠক। বর্তমানে বাংলা গল্প, উপন্যাস, প্রবংশ বিভিন্নভাবে পরীক্ষা-নিরীক্ষার মাধ্যমে অগ্রসের হচ্ছে। আমাদের জনজবিনে আমার পাশের উপেক্তি মেহ-নতী মানুষের জীবনসংগ্রামের এবং জীবনযাপনের শে চিত্র জব্বার সাংহয 'মুখের মেলা'য় দিক্তেন তা প্রশংসনীয়। আজকের দিনে যখন সাহিত্য অনেক ক্ষেত্রে শহর্থেবা হরে চলেছে, তখন গ্রাম্বাংলার মাটির মান্ব যারা, অতি নিকট অথচ উপেক্ষিত হরে আছে বারা, তাদের স্নিপ্ণ আলখা মাখের মেলা'য় পেলাম তা বাংলা সাহিত্যে গৌরবের দাবী রাথে। 'ম্থের মেলা'য় মোমিন কু'জোর সংসার' আমার বেশ আ**লোড়িত করেছে। এ**রপর মোমিন কু'জো এবং **এরপানের ম**ত মানুব-দের প্রতি আমাদের মনোভাব এবং দ্রিট-ভশার পরিবর্তন হওয়া প্রয়োজন। অবক্ষয় জজরিত সমাজের আসল চিত্রপু ফাটিলে তুলেছেদ লেখক। লেখক মোমিন কু'লোর সংসারের এক জারগার লিখেছেন কপাল তার বে ভারতের মতন এমন একটি প্রবাতন সভাদেশে প্রায় ছাম্পানো বছর र्वाक स्वरंक कीवरन नाकि ककाना अक्रो ভালিম কিংবা একটা বেদনা কি ভিনিস **टब्टल ट्रिटब ट्यटक शास्त्र मि।" এक**प्रि विद्राष्टे

ক্ষর্য প্রকাশ পেরেছে উভিটির দাগ্যমে। লেখক উৎকৃত্য এবং প্রুম সমার্ক প্রতিউদার পরিচয় গিরেছেন সমুখের মেলারে।

মুখের মেলাছ আবলাছি হেন গ্রের রহস্য নিমে চোলেছ সামসে ভেসে উঠেছে লেথক নিড্ত গ্রামবাংলার হুদেশপান কান পেতে শুনে বে-ভাবে সাহিত্যের উপালীব করে তুলেছেন তার জন্য লেখক আবদ্ধ অব্যারকে প্রাীয়াম থেকে আন্তরিক অভি নাদন জানাই। জন্যার সাহেবের সপো হে গ্রামবাংলার আঘিক যোগ আছে ত নিঃসন্দেহ। আর পরিশোবে এই উৎকৃষ বারাবাহিক সংযোজনের জনা সম্পাদক মহাশয়কে বন্যবাদ জানাই।

> **চন্দ্ৰ সিংইরার** রোহিয়া, হুগলী

(4)

সাপতাহিক 'অমৃত' পাঁৱকার (20: বর্ষ, ৫ম সংখ্যা) প্রকাশিত সর্বশ্রী খালিম উদ্দিন আহ্মেদ ও কুমারেশ চক্লবত ী চিটিটি **পড়লাম।** हीया ज अस्ताद 'মাুখর মেলা'র ওপর ছে া সাুচিন্তি कारनाहनाहि भिः मस्मदः नग्रधादी। मिष সত্যিই আজকের সাহি ্য শহরে সাহিতা– তাতে আকাশ-বাডাস নেই, কাদামাটির স্থা নেই, নেই কোন বেদনারসে নেয়ে ওঠা গ্রামা **জ**ীবনের প্রতিক্ষবি। আছে শুধু নগং জীবনের 'লোহার পাজরে ই'টের খাঁচা দার্ণ মমব্যথার যক্ষ্যাকাশে ক্লিণ্ট জবিন চিত্র। তাইতো শরংচ**েন্**র 'গফুরমিঞ হারিয়ে বাচ্ছে, বিভূতিভূবণের স্ক্রেণাকাক হারিয়ে যাতেই, হারিয়ে যাতেই ওপের আনন্দ-বেদনার শরিক আরো কত সাম-ন काना मान्द्र। खता आक कामार्गत मरन কোণের বাইরে। সাহিত্য-পরকলার এইস হারিয়েযাওয়া মান্যগ্রেলার জীবনছবি আ কোনদিনই কি প্রতিবিদ্বিত হবে না?

খেমে যাওয়ার আগে এইসব অব
হেলিড, প্রপীড়িত ও সমাজের বৃহদাংশে
অংশীদারদের মসীলিশ্ত জীবনকাহিনী
রুশকার শ্রীআবদ্দ আত্মার বেজা
তেপান্তরের মাঠ পেরিয়ে, সাজ সম্বদ্ধ
তের নদী পাড়ি দিয়ে ঘ্রদত রাজকন্যা
জীরনকাঠির স্পর্শে জাগিয়ে তোলার কার্
সচেন্ট হয়েছেন, সেজনো তাঁকে আমর
অকুঠ প্রশংসা পাঠাছি।

ভূমারকাতিত দাস ক্রেচেদা, মেদিনীপরের।



''সাহিত্যিকের চোখে আজকের সমাজ''

'সাহিত্যিকের চোথে আজকের সমাজ' পৰায়টি চাল করে 'অমৃত' কর্তৃপক্ষ কাছে বিশেষ ধন্যবাদাহ হয়েছেন। বর্তমান বাংলা সাহিত্যক্ষেত্রে, বিশেষ করে উপন্যাস ও ছোটগলেপর ক্ষেত্রে **এই নিরে আলোচনার অবকাশ ও প্রয়োজন** আজ বিশেষভাবে উপলব্ধি করা হাচ্ছে। কেননা আজকের বাংলা সাহিত্য বিশেষতঃ উপন্যাস ও ছোটগল্প পড়ে অনেক পাঠকেরই মনে ছওয়া স্বাভাবিক যে অধিকাংশ লেখকই ষেদ লেখার উপাদান আর খ'ুজে পাচ্ছেন দা। আমরা হেন এখনো সেই দ্বিতীর মহাবৃদেধর পরি-বেন্টানতেই আটকে আছি। ফলে আৰুকের লেখাগ্যলো হয়ে চলেছে গড়ান্গতিক, বলিষ্ঠতা-বলিতি, ছারাজুল এবং সমাজের সংগতিবিহীন। অবশ্য এর ব্যতিষ্ক্রমও নিশ্চয়ই আছে। কিন্তু এর অর্থ কি এই যে আজকের সমাজ সার্থক সাহিত্যের উপা-দান যোগান দিতে পারটছ না (?) অথবা লেথকদেরই সমাজ-প্রজার অভাবে দারা সমাজ থেকে তাঁদের প্রয়োজনীয় উপাদান সংগ্রহ করতে পারছেন না (१)। প্রথমটি নিশ্চরই স্বীকার্য নয়। কারণ সমাজে ভাটার টান যত প্রবলই হোক না কেন সাহিত্যের উপাদান দেখানে একেবারে নিঃশেষ হয়ে বার না। পাণ্চাত্যের শ্রেষ্ঠ সাহিত্যগুলোই তার প্রমাণ। শ্বিতীয়টি সতা হলে একথাই ব্যুক্তে হবে, সাহিত্যিকরা (স্বাই নদ) নিলেদেরকে সমাজ থেকে খানিকটা তফাতে রেখে চলেছেন। বডামান সমাজের সামাগ্রক রূপ ফুটিয়ে ভুলতে তারা যেন থানিকটা কৃশ্বিত। কিল্পু ভেবে পাই না, কেন এই কুঠা? সভািই কি বভামান সমালে সাহিত্যের উপাদানের অঘটন চলছে। অথবা বা পাওয়া হাচেছ তা নিয়ে মহং সাহিতা রচনা করা যার না ভেবেই সাহিত্যিকরা এ ব্যাপারে শ্বিধাগ্রন্ত > আমার এ প্রদমগ্রনার উত্তর হয়তে। লেখকরাই বথার্থভাবে দিডে পার্বেন চ

'আম্ত'-র আলোচা পর্বারে বেসব সাহিত্যিক আৰু পর্বাতত নিজেদের মৃত্যুমত বাছ করেছেন প্রকৃত্য রারকে বাদ দিলে আর কেউই বেন এ ব্যাপারে বৃত্ত ধ্রুমত রাজি লন। তাদের মৃত্যুমতও কেমন বেন অপপার্থ। জানি না এ তাদের ইচ্ছাকৃত না আন্তর্যায় সম্পূষ্ বাতিক্রম। গর্ভ ১৫ই জ্যৈষ্ঠ, ১০৭৭ সংখ্যার 'অমুতে' প্রফলে রায়ের রচনাটি বলিষ্ঠতা ও স্পন্টবাদিতার সম্বজনল। রচনটি পড়বার মতন এবং পড়ে ভাবৰার মতন। আজকের সমাজবিম্থ সাহিত্যিকদের প্রতি শ্রীরায়ের এ এক বলিষ্ঠ প্রণন। শ্রীরায় সমাজের প্রতি লেখকের কর্তব্য সম্পর্কে এক মূল্যবান জিজ্ঞাসা রেখেছেন রচনাটির रमशारम। वाश्नारमणात क्रमवर्धमान रेनदामा আর বিক্ষোভের মাঝে আজকের দেখকরাও যেন বিব্ৰত। ঠিক স্থিতিশীল হতে পারছেন না। তাই তো শ্রীরায়ের লেথক-বন্ধার বন্ধবা : "এইরকম একটা এলোমেলো উদত্রান্ত সময় নিয়ে লেখা যার না। আমি বাপা দরজা-জানালা বন্ধ করে নিজেক নিয়েই লিখে যাছি।" কিল্ডু এই কি সভিকোরের সহিভিত্তের পথ? মরের কোণে নিজেকে আৰশ্ধ করে এভাবে আত্মকেন্দ্রিক সাহিতারচনার মান থাকলে কি লেখকের দায়িত্ব ও কভবিবোধের পরিচয় দেওয়া হয়? কেননা সাহিতো প্রত্যক্ষ বা পরোক্ষ ভাবে সমাজ থাকবেই। সমাজকে এগিয়ে চলার পথ দেখানোতে লেখকের দায়িত্ব আনেক-থানি। তাই তো শ্রীরায়ের প্রশ্ন : "দর্জা জানলা বন্ধ করলেই কি বাইরের ঝড় থেকে রক্ষা পাব? চারদিকে হদি আগনে লাগে। নিজেকে বাঁচাবার মতন 'সেফ্টি ভলট আমার কোথা? বে'চে থাকার জন্যে এই সমাজ থেকে প্রতিদিন মাণ্লে গ্নেনিজি, অথচ তার দিকেই মুখ ফিরিয়ে থাকব? আমি ৰখন এ সমাজেই আছি, আমৃত্যু থাকতেও হবে, ঔখন তার কথা দা লিখে আমার মুভি নেই। তার কথা না লিখলে নি**জেকেই তে। অস্বীকার ক**রা **হ**বে।" ধনাবাদ প্রফলে রায়কে তার এই মালাবান অপ্যালিসংকৈতের জন্যে। আধুনিক সাহিত্যের ম্লমন্ত্র যদি 'মানবম্ভির বাণী'ই হয় তবে আমাদের আলা বাঙালী আৰা-কেন্দ্রিক সাহিত্যিকরাও শ্রীরায়ের প্রশন-গ্রনিকে সামনে রেখে সাহিত্যে তাদের नेमाधारनंत रुग्धा कंत्ररंदम । खाइरन वाःनाः সাহিত্যও উপকৃত হরে মানবম্ভির পথে এগিয়ে যেতে পারবে।

> অধেন্দি, চল্লবত**ী**, কলকাতা—৫০।

বেভারস্কর্তি

গত ১৫ই জৈতের অম্তে বেতার-প্রতি বিভাগে শ্রীপ্রকাকের লেখা পড়লাম। লেখার শ্রুটা বেশ ভাল লেগেছে। শেবের करमकी वाहरतम् कथा वाप निरम वना या বে, লেখক যথেণ্ট ব্যক্তির সাহাব্যে তাঁ বন্ধব্য প্রতিশ্রিত করার চেন্টা করেছেন প্রকাশভশারি দিক থেকেও **শ্রীশ্রবশ্রে** লেখা নিঃসন্দেহে উৎকরের পরিচর বই করে। কিন্তু রচনার শেষে, হয়ত বা অসা ধানতাবশতই দেখক অতি অবাশ্তর একা বাক্য-সংযোজন করে সমস্ত রচনাটি উৎকর্ষ অনেক কমিয়ে দিয়েছেন। **লে**ছে লাইন ক'টি তিনি নিজেই লিখেছেন, 'এক অপ্রাসন্থিক...'। 'কথাটা হয়ত অ**প্রাসন্থি**ৰ 'একটু অপ্রাস্থািক হলেও লিখছি' ইতাা শব্দচয়ন করে অনেক অপ্রাসন্থিক কথ जारंगक तहनात ए किरस एनसा थास, ध শাধ্মার ঐ সব শবদগাক্তের উপস্থিতি গাণেই কথাগালো বেশ প্রাসন্থিক হ ত্ত ।

ডঃ অম্কচন্দ্ৰ অম্ক, এম-এ, পি-এ! ডি, লেখকের মতে, এরকম লেখা ভূল। 'এ ক্ষেত্রে ডঃ বাহাল্য মার এবং বজনি কর উচিত'। ভুল আর বাহ,লা—এ ব দ্'টোকে সমাথভ্যাপক ধরে নিলে লেং কি ভুল করবেন না? বাহুলা হলেই কি বজানি করতে হবে? বাহ্লা বজানি হয় বা বাঞ্নীয়, কিন্তু বাহ্লাটা ভূল হ কেন? সব বাহাুলা যদি বজনীয় হয়, উ বোধকরি শ্রীপ্রবণক তার নিবদেধর চ লাইনটি বন্ধন করতে পারতেন, যেখ তিনি লিখেছেন, 'বলা বাহ,লা, ত ইংরাজ্বীর অধ্যাপক নয়'। বলা ষেথ বাছ,লা সেখানেও শ্রীশ্রবণক বলার লে সামলাতে পারেন দি কেন? নামের অ পি-এইচ ডি, ডি-ফিল বা ডি. এফ থাকলে নামের আগে ডঃ যোগ করা বাহ্ বিশ্ববিদ্যালয়ের নাম-করা প্রবীণ অধ্যাপ রাও এর্প অনাবশাক ডঃ বাবহার ? থাকেন, দেখক তা দেখেছেন। দেং অস্বাভাবিক নয়, কারণ সত্যই ज्ञ (?) **अस्मरक्रे करत**न। **क**निक বিশ্ববিদ্যালয় কত্কি প্রকাশিত করেকং প্রুক্তকে দায়ের পিছমে 'পি-এইচ ডি' গ নামের আগে ডঃ—এ দ্'মের ব্যাপৎ প্রচ দেখেছি। কিল্ডু লেখক দাবি করেছেম ইংরাজীর অধ্যাপকগণ এ ভূল কং करतम मा। धा छिष एथएक हैरतार অধ্যাপকদের প্রতি এক ধরনের পক্ষণা श्रकाम भारकः।

> অজয়কুনার চরবর্ড ফালত পদাখাবিদ্যা বিষ ক্যিকাতা বিশ্ববিদ্যা



ঝাড়ুমাঝগ্রানের নৃশংস হাত্যাকান্ডকে
কেন্দু করে আবার নতুনভাবে ভূমি-সমস্যার
প্রশ্নটা তীরভাবে দেখা দিয়েছে। যদিও বা
সংশ্লিভ দলগালি এই অকংপনীয় অমান্ষিকতাকে একটি স্থানীয় ঘটনা বলে উল্লেখ
করে ঘটনার গ্রেম্থ লাঘব করতে প্রয়াস
পাচ্ছেন তব্ও একথা বলতে হয় যে এটা
মোটেই মাম্লী ব্যাপার নয়। এর ম্ল অনেক গভীরে। পটভূমিকা বিশেলখ্য করসেই দেখা যাবে জমির ক্ষুধাকে ম্লধন করে—সে জোতদারের হোক বা ভূমিহীনেরই হোক—দলীয় আধিপত্য বিস্তার বা অক্ষ্ম রাথার এ একটি জবরদস্ত লড়াই।

লক্ষ্য করবার বিষয় এই যে, যাঁদের
সমর্থকরা নিহত হয়েছেন তাঁরা কিশ্চু
প্রথমে এই নারকীয় ঘটনাকে একটি স্থানীয়
ব্যাপার বলে মোটেই লঘুভাবে দেখেন নি।
বরণ, একটি পরিকল্পিত রাজনীতির
প্রোজেকশান বলেই চিহ্নিত করেছেন।
দুই দলের দুই শীর্ষনেতার বৈঠকের প্রই
মুল্যায়নে হেরফের ঘটছে।

ঘটনার পাটভূমিকাটা কি সে সম্পর্কে অবহিত হওয়ার প্রয়োজন আছে। 'সমদশ্রী' ধাদ নিজেব সংগ্রেতি তথেয়ে উপর নিভ'র করে আদ্যোপাশত বিবরণটা নিবেদন করে তবে নেতারা মিথ্যাবাদী প্রতিপন্ন করবার প্রয়োজন পর্যান্ত বোধ করবেন না। কাল্ডেই সংশিলণট দলগ্রিলার নেতারা সংবাদপত্রে প্রকাশের জনা যে লিখিত বিবৃতি দিয়েছেন সেইগ্রিল কনা যে লিখিত বিবৃতি দিয়েছেন সেইগ্রিল কনা যে লিখিত বিবৃতি দিয়েছেন সেইগ্রিল করেই সহ্দম পাঠকরা ব্রুতে পারবেন সত্য ঘটনা কি। এবং ব্র্জেলায়া সংবাদপত্র আদেশি নাউকে হেন্দতা করবার চেণ্টা করেনি সেটাও ব্রুতে কেউ অপারগ হবেন বল্লে য়য়ে হয়ে না।

ঝাড়মাসগ্রাম ঘটনার অংশীদার দুই দল। প্রতন যুক্তফুলেটর দুই শরিক। বিশ্ববী সমাজতদাী দল ও মাক্সবাদী কম্মানস্ট পার্টি। অন্যান্য দলগ্রিল যে সমস্ত বিবৃতি দিয়েছেন তা অংশীদার হিসাবে নয়। ঘটনার নৃশংসভাকে নিন্দা করে তাদের কাছে আপাতদ্বিটতে যে দলকে দোষী বলে মনে হয়েছে তাদের আরমণ করে বছবা রেখেছেন। সে যাহোক, দুই সংশ্লিষ্ট রাজনৈতিক দলের নেতারা কি বলেছেন সেই বঙ্কবাই এই ঘটনার প্রধান উপজীব্য। যেদিন এই নৃশংস হত্যাকাণ্ড অনুষ্ঠিত হয় সেদিন আর এস পি'র তিন নেতা যথাক্রমে সর্বশ্রী ননী ভট্টাচার্য এম-এল-এ, নিখিল দাস এম-এল-এ, ও সৌরীন ভট্টাচার্য উত্তরবংগে উপস্থিত ছিলেন। আর শ্রীমাথন পা**ল কলকাতায় ছিলেন। ঘট**নার দ্বদিন পরে প্রথম আর-এস-পি'র তরফ থেকে নিন্দা করে শ্রীমাখন পাল এক বিবৃতি দেন। সেই বিবৃতিতে শ্রীপাল বলেছেন যে এই জঘনা হত্যাকাশ্ডের নিন্দা করবার মন্ত "শক্ত ভাষা" তাঁর জানা নেই। মার্কসবাদী কম্মানস্ট পার্টির নেতারা (অবশ্য স্থানীয়) শরণাথীদের জাম থেকে উৎখাত করবার জন্য সাম্প্রদায়িকতা ও প্রাদেশিকতার উপ্করি দিতেও কসার করেন নি বলে শ্রীপাল অভিযোগ করেন। তিনি আরও বলেছিলেন, কতকগালি নিঃম্ব শরণাথী যাঁরা দ্ব' দ্বার বাস্তুচ্যুত হয়েছে—একবার পাকিস্তান থেকে আর অনাবার সর্বনাশা তিস্তার বন্যার—হত্যা করা কি শ্রেণী-সংগ্রাম? শ্রীপাল আরও বলেছিলেন যে য়াক'সবাদী কম্যানিস্ট নেতৃত্বের ভেবে দেখা উচিত তাঁরা কোন পথে চলেছেন। অবশ্য শ্রীপাল সরকারী গাফিলতিয় কথা উল্লেখ করতেও ভো**লেন নি। শ্রীপালের বন্ত**ব্য সংবাদপর অফিসে সে^শছবার সং**ল্য সং**ল্যই তার দলের অন্যতম প্রধান নেতা শ্রীননী

ভট্টাচার্য, শ্রীসোরীন ভট্টাচার্য মারফং উত্তর বণ্গ থেকে ঘটনার বিবরণ দিয়ে আর একটি বিবৃতি পাঠিয়ে দেন। উল্লেখ্য, প্রিদিন শ্রীননী ভট্টাচার্য শিলিগর্ভিতে সাংবাদিক-দের কাছে ঘটনা সম্পকে কোন বিবৃতি দিতে **অস্ব**ীকার করেন। কারণ তিনি তখনও অকুম্থল পরিদর্শন করে প্রকৃত তথ্য সংগ্রহ করতে পারেন নি। কাক্সেই পরে ষে বিবৃতি দিয়েছেন তা ঘটনাস্থল পরি-দর্শনের পরেই ব'লে ধরে নেওয়া ফেতে পারে। তিনিও মার্কসবাদীরা সাম্প্রদায়িকতা ও প্রাদেশিকতার উম্কানি দিয়ে জনতাকে উত্তেজিত করে ঐ জঘন্য হত্যাকান্ড সংঘটিত করেছেন বলে অভিস্থাগ করেন। তাঁর তথ্য থেকে আরও জ্ঞানা যায় যে, ঐ এলাকার বাস্তৃহারাদের একটি বড় অংশ আর এস পি'র শিলিগ্রড়ি জনসভায় যোগ দিতে ধাওয়ার স্থােগ নিয়ে মাক'সবাদীর। এই বর্বর অভিযান চালায়। শ্রীপাল ও শ্রীভট্টাচার্য উভয়েই বলেছেন যে সাম্প্র-দায়িক ঘটনার সময় যে অমান্ষিক বর্ণরতা সংঘটিত হয়েছিল, ঝাড়মাঝগ্রামের ঘটনা তাকেও হার মানায়। দুই নেতার বিব্তিই ছিল ঘূণায় পরিপূর্ণ। আরও তথ্য প্রকাশ পায় যখন শ্রীনিখিল দাস অকুস্থল পরি-দর্শন করে এসে কলকাতায় শ্রীমাখন পালের মাধামে তডিঘডি সাংবাদিক সম্মেলনে আর একটি বিবৃতি পেশ করেন। শ্রীদাসের বন্তব্য উল্লেখ করে শ্রীমাথন পাল সাংবাদিক-দের বা বলেছেন, তা অনুরূপ : ঝাড়মাঝ-গ্রামে যে জমিতে বাস্তৃহারা পরিবারগালি নতুনভাবে বাস্তু নিৰ্মাণ করেছে সেই জমি সরকারের খাস জমি। ঐ জমি খাস হওয়ার আগে স্থানীয় এক ম্সলমান জোতদার এ জমি "ওয়াক্ষ্ দেটটের' অশ্তর্ভুত্ত কলে भावी करत निर्कत मथल त्रांशिक्तन। পরে প্রমাণিত হর যে ঐ জমি "ওরাকফ্ সম্পত্তি" নর। ফলে, সরকারের খাসজামতে

পরিগণিত হয়। ঐ জমির পরিমাণ ১২২ একর। পরে ঐ ব্সলমান ফোডদার ১৯জন লোককে বর্গাদার সাজিয়ে কৌশল করে বেনামীতে ঐ জমি নিজের ভোগ-দখলে রাখে। ইতিমধ্যে তিম্ভার বন্যায় তিম্ভার চরে যে সমদত উম্বাস্তু নতুন করে শীড় বে'ধেছিলেন, তারা আবার দ্বিতীয়বার বাস্তহারা হন। সরকারের তরফ থেকে প্রেরার বসতি স্থাপনে সাহাষ্য করার জন্য ক ভঘাৰগ্ৰামের ঐ সরকারী জামতে দ্ব একর করে জমি দেওয়া হয়, এবং তথন থেকেই স্থানীয় লোকের সংগ্র ঝগড়ার স্**রুপ।ত**। শ্রীদাস ঐ স্থানীয় লোক কারা তার উপরও স্মালোকপাত করেন। ঐ দ্থানীয় লোকের বেশীর ভাগই নাকি মাইগ্রেটেড ম্সলমান। তবে কিছু নাকি স্থানীয় অধিবাসীও আছেন। সেই ম্সলমান জোতদার তখন থেংকই উদ্বাদ্তুদের বাদ্তুচাত করবার জন্য নানারক্ষ কৌশল অবলন্বন করতে থাকে। তার পরে মাক সবাদী কম্যানিস্ট পার্টির শরণাপল্ল হয় ৷ এই দীঘদিনের মধ্যে আরও ক্ষেক্বার এই জমির অধিকার নিয়ে এই জোতদার ও তার সাংগপাংগদের সংগ বাস্তহারাদের ছোটখাট লডাই হয়েছে, এবং শান্তির প্রস্তাব কার্যকর করার জনা সভা-সমিতিও অনুষ্ঠিত হয়েছে। সুফল ফলেনি। অবশেষে এই নরংমধ যজ্ঞ। শ্রীদাসের বিবৃতি থেকে আরও জানা যায় যে আক্রমণকারীরা বাস্ত্রারাদের প্রায ৪০টি কৃটির জনলিয়ে দিয়েছে, আর সেই আগনে তার দিয়ে হাত-পা শক্ত করে বেশ্ধ কিছ, লোককে প্রভিয়ে মেরেছে। নারী ও শিশ্বরা পর্যক্ত অব্যাহতি পার্যান। শ্রীদাসের মতে প্রায় ১৭।১৮জন মিহত ছয়েছেন এবং শতাধিক আছত হয়েছেন। এই আহতদের মধ্যে গভবিতী নারীও রয়েছেন। আর এস পি'র প্রত্যেক দেড়াই ব'লছেন এটা একটি পূর্ব-পরিকলিপত আक्रमन। मश्चर्यः नः। ফल्, भार्यः वाक्कु-হারারাই নিহত ও আহত হয়েছেন।

শ্রীপাল শ্রীদাসের তথ্য বিশেলখণ করে বলেছেন যদি ১৯জন বর্গাদারকেও দ্ব্ একর করে জমি দেওয়া হত ৪০ বর বালতু-হারার বর্গাত স্থাপনের পরও উল্বৃত্ত খাস জমি থাকত। অনেকবার এই প্রস্তাব বেওয়ার পরও এই সমসারে সমাধান করা যারনি। বরুও এ জোড়দার স্ব্যোগের অপেক্ষায় ছিল। আর এস পি নেডার। ইড্ডাগা উন্বালতুদের তাদের সমর্থাক বলেই দাবী করেছেন। দলের দরদী কম্বী বলে দাবী ক্ষামার্কান।

আর এস পির বছবা সংবাদপতে প্রকাশিত হও্টার পরই অন্যান্য বামপ্রপর্য দল এই জঘনা ঘটনার নিক্ষা করে বিবৃতি দিয়েছেন। এবং তাদের বছবা বিশেষণ করলে দেখা যাবে আর এস পি যে সম্পন্ত তথ্য পরিবেশন করেছেন তার উপর নির্ভার করেই জ্ঞারা ছটনার ঘ্লার্যনে ক্রেছেন, এবং দোবী-নির্দেশির সাবাদ্ত ক্রেছেন।

প্রার প্রকল ব্যারপানী সংস্থা বছবা প্রকাশিক্ত হয়ে বাওয়ার পর মার্কস্বাদী ক্ষ্যানিন্ট পাটি তাদের লিখিত काशरक श्रकारमञ्ज कमा रुगम करतम। বিবৃতিতে তারা কি বলেছেন তাই নিম্নে श्रीतर्वित कता इव। भाक्तरामी क्यानिन्छ भारित राज्य कमिष्ठि काळीत स्ट्रीयक त्य अ.ज्यासकारमञ्जू चान व्यासका मन्त्र न्धानीय दलाक छ क्रिक्ट नात्कृताबादक मध्या अक मुर्जाशास्त्रक मार्ग्यंत्र कला ১১सन লোক নিহত হয়েছেন ও বিছ সংখ্যক লেকে আহত হয়েছেন। কিণ্ডু এটা আশ্চরের বিষয় যে কিছু সংবাদপত্ত রাজ-र्मिएक रम्खा मधारीिक এই घरेनारक मून-ধন করে মার্কসবাদী কম্মনিস্টরা আর এস পি সমর্থকদের আক্রমণ করেছে বলে সি-পি-এম-এর বিরুদেধ এক সাংঘাতিক প্রচার অভিযান শুরু কুরেছে। এটা একটি জঘনা মিথাা তথা তাই প্রমাণ করবে।

সেই খাস জাম স্থানীয় দরিদ্র কৃষকদের অধিকারে ছিল। তারা ভাগচাষী প্র'তন মধান্বছভোগীর। জমি খাস হওয়ার পর ভারা যথানিয়ম চাষ করে যাচ্ছেন। কিল্ডু গত বংসর ক্রান্তির হাটের এক দুণ্ট লোকের প্ররোচনাম কিছু বাস্তৃহারা ঐ র্জামতে অন্ধিকার প্রবেশ করে কু'ড়েঘর তৈরী করে। দরিদু ভাগচাষীরা তথন জলপাইগ্রাঞ্জর ডেপ্রটি কমিলনারের কাছে আবেদন জানায়। পরে ডেপ্রটি কমিশনার তাদের বলেন যে, মার দশ একর খাস জমি বাস্ত্রার দের দেওয়া হবে এবং অবশিষ্ট জমি তাদেরই থাকবে। এই মীমাংসা সি-পি-আই ও সি পি এম নেতাদের সামনেই হয়। ক্ষিত্ত কিছঃ লোক ৰাস্ত্হারাদের সমস্ত काभिष्टे मध्यम क्याब श्रासाहमा एवस। या ल. কিছু সংঘৰ হয়। গত ২০শে এপ্ৰিল জবরদখলকারীরা আরও কিছু বেশী সংখ্যক কু'ড়ে নিমাণ করে এবং ভাগাষীদের মার-ধর করে।

প**্রলিশ আরমণকারীদের নির**স্ত না করে দ'লন ভাগচাষীকে গ্রেন্ডার করে। ২৩শে এপ্রিল প্রায় এক সহস্ত চাষী মিছিল করে জলপাইগ্রড়ি যায় ও সহকারী ডেপ্রটি কমিশনারকে তাদের আক্রমণের হাত থেকে রক্ষার আবেদন জানায়। তিনি অবশ্য শ্মিটির সীমানা চিহ্নিত করে দেবেম বলে প্রতিজ্ঞতি দেন। এপ্রিলের শেষ থেকে জ্বনের প্রথম সম্ভাছ পর্যাত করেকবার চাৰীয়া ডেপটুটি কমিশনার ও তার সহকারীর कारक श्रीकितिथ भावकर आर्वमन करवाह. টেলিফোন করেছে জমির সীমানা নির্ধারণ করার জন্য এবং তাদের রক্ষা করার জন্য। কিন্তু জবরদখলকারীরা মাল থানার ভার-প্রাণ্ড অফিসারের সক্রিয় সহায়তার আরও ক্ষম দখল করতে থাকে। চাষীদের আকুল **आरवमस्य रक्षमा कर्ष्णभक मुख्या स्था**नि। चर्चेमा ग्रफाटक शाटक। ७३ खाम मकाल ३३। ह यथम हायाता हाय समाधिक फाएनत निरक्रानत কৰিতে, অবরদ্ধলকারীয়া ভাগের আক্রমণ करत: श्रीवाहा प्रावदक श्रवा करत ও फाउ माञ निवास करना और सम्मा अस्त्रक्रमात अ्चि करता पृष्टे शक्क रमाक क्यारत एत.

वर्षा । अस्य निर्माण किस्त लाह समारामि वर्षे ।

> ষদি কাউকে দোষী বলে ধরা হয় ত সে হচ্ছে জেলা কতৃপক্ষ। তাঁরা সমস্যা জাইয়ে রেখেছেন। আর প্রতিপ্রতি । কাজ করেন নি। এখন দুক্তম চাপা দেওঃ জন্য নিরাপত্তা ও কেন্দ্রীয় রিজার্ভ পর্নি আমদানি করছেন। রাজ্যের জনস্থা নিশ্চয় ব্যতে পারকেন, কি ঘটনাকে বে করে সংবাদপত্ত ও কিছু নেতা সি-এমকে দোষারোপ করছে। এই ঘটনা ঘ না যদি না সরকারী কর্তৃপক্ষ ডি তেতালা তালে কাজ করতেন, এবং অব অনুষায়ী দ্রুত বাবস্থা গ্রহণ করতেন।

> পশ্চিম বাংলার বামপাণীদের ম হবীকৃত নীতি হ'ছে, কোন অছিলায় ভ চাষীদের খাস জমি থেকে জবরদ্দিত উয়ে করা যাবে না। এক্ষেত্রে বিশেষভ উদ্লেখযোগ্য যে ভাগচাষীরা এখানে সমস্ত জমি বাস্তুহারা জবরদখল করেছি৷ তাঁদের সঙ্গে একটি সমঝোতা করার হ সর্বদাই আগ্রহী ছিলেন। আর এস নেতৃত্ব সময়মত সহযোগিতা করতে পা নি, কিন্তু এখন মার্শসবাদী কমার্ন সমর্থকদের আক্রমণকারী বলে, এবং জে দারদের সাহাষ্য করছে বলে, ভি'ত্তা অভিযোগ করছেন। এটা দঃখের বিবর করছে তথনি তাদের জোতদারের লোক: আছিছিত করা হচ্ছে। অদ্য করেকটি দ এই সূত্র ধরে অভিযোগ চালিয়ে যাচ্ছেন

মার্কাসন্ট কম্বানন্ট পার্টির ব কমিটি পরিষ্কারভাবে জানাতে চার, ত সমর্থকরা আন্তমণ করে নি, কিম্বা একটা পরিকী সংঘর্ষও নর। তাদের আগের মতই এই সমস্যা সমাধানের সহবোগিতার প্রতিপ্রতি দিচ্ছেন।

দুই দলের বিবৃতির বয়ান তুলে হল। ব্যান থেকে এটাই প্রমাণিত হয় কেউ না কেউ নিশ্চয়ই সভ্যকে গে করেছেন। অবশা তানেক সময় সভ্যক্তে করবার জন্য মিথ্যা বলতে হয়। এম সভাদ্রণ্টা যুধিণ্ঠির পর্যন্ত ধর্মকে করার জন্য অসভ্য বলছিলেন।

যা হোক, এই দুই বিবৃতি প্রক্
হওয়ার পর শ্রীমাথন পাল ও শ্রীপ্
দাশগাপত মিলিত হরে বলেছেন যে, বা
একটি স্থানীয় বাগপার। অথচ দুই দ্
বন্ধবার মধ্যে একটি বিশ্বাট নীতি
সমস্যার উপল্প লোর দেওয়া হরেছে। ব
দু-দলেই সাংবাদিক ছাড়াও প্রকা
শাসনকর্তপক্ষকে দায়ী করেছেন। '
বটনার স্তপাত হরেছিল তখন বথঃ
শারকই সুবে-বাংলার গদীতে জ্বরদস্ত
আসীন ছিলেন। তখন তারা কিছু ব
পারেন নি। 'সমদশী'ও বলবে প্
নিশ্চর দোষী। কারণ মারপিট যে হবে এ
প্রলিশের আগেই জানা উচিত ছিল।

ाल विद्नल

বিপদ ব্রুলে মন্ত্রিসভার আয়তন
বাড়াও দলনদলের রাজনীতির মধ্যে
ভারতবর্ষের বিভিন্ন রাজে। মন্ত্রিসভার
সংকট নির্মনের দাওয়াই হিসাবে এটা
একটা নির্মাত ফ্রম্লায় পরিণত হয়েছে।
এক সংতাহে দ্বাকন ম্থামণ্টী এই
দাওয়াই প্রয়োগ ক্রেছেন।

দ্কেনের মধ্যে পাঞ্চাবের শ্রীপ্রকাশ সিং বাদল এই দাওরাই প্রয়োগে এমন বাড়াবাড়ি করেছেন যে, সেটা একটা কেলেংকারির প্রায়ে গিয়ে দাঁড়িয়েছে।

গত ২৭ মার্চ যথন বাদল মন্ত্রিসভা গঠিত হয় এখন এই মন্ত্রিসভার সদস্য ভিলেন মার্চ তিনজন। তারপর গত দশ সপ্তাহে পাঁচবার মন্ত্রিসভার সম্প্রসারণ করে এখন এই তিনজনের দলটিকে স্ব'-শাম্থ ২৯ জনের একটি বাহিনীতে পরিণত করা হয়েছে।

বাদল মণ্ডিসভা হচ্ছে অকালী দল ও জনসংঘের কোয়ালিখন। অকালী দলের সদসাসংখ্য ৫২, জনসংঘের ৫। পাঞ্জার বিধানসভার মোট ১০৪ জন সদসোর মধ্য এই ৫৯ জন হচ্ছেন সরকারের পক্ষে। আর এই ৫৯ জনের মধ্যে ২৯ জন হয় মণ্ডী, রাষ্ট্রমণ্ডী, উপমন্ত্রী অথবা পালামেণ্টারি সেকেটারি। অর্থাং প্রতি দ্বজনের একজন হচ্ছেন মন্ত্রিশত্ত্বীর সদস্য।

বিধানসভার কংগ্রেস সদস্য শ্রীউমরাও সিং ঠাট্টা করে বলেছেন যে পাঞ্জাবের মস্টীদের মর্যাদা এখন তহশিলদারদের সামিল। রাজ্যে যতজন তহশিলদার প্রায় ততজনই মস্ট্রী।

কিন্তু ম্থামন্ত্রী বাদল তার মন্তিসভাকে এভাবে ফ্লিয়ে-ফাপিয়েও তার নিজের দলকে সন্তুট রাখতে পারছেন বলে মনে হচ্ছে না। অকালী হরিজন এম-এল-এ
গ্রীদিলীপ সিং পান্ধি বলেছেন যে, মন্তি-সভায় হরিজনদের উপযুক্ত মর্যাদা দেওয়া হয়ন। তিনি দলের মধ্যে একটি পৃথক গোষ্ঠী গঠন করবেন বলে জানিয়ছেন।
শ্রীরবীন্দর সিংকে রাণ্ট্রমন্ত্রীর পদ দিয়ে অপমান করতে চাওয়া হয়েছিল বলে তিনি শপথ গ্রহণের অনুষ্ঠান থেকে উঠে চলে এসেছেন। জনসংঘের সাতজন সদস্যের মধ্যে চারজনকেই মন্তিমন্ডলীতে নেওয়া হয়েছে বলে দলের একাংশ ক্ষাব্ধ।

মন্দ্রসভার আয়তন বৃদ্ধির প্রতিবাদে ও দপতর পছন্দ না হওয়ায় একজন মন্ত্রী পদত্যাগ করেছেন।

সর্বশেষ সংবাদ হচ্ছে যে, অকালী
দলের সম্পাদক শিরোমণি গা্রুন্বার
প্রবংধক কমিটির সভাপতি সম্ত চম্মন
সিংহের 'ডিক্টেটরি'-র প্রতিবাদে পদত্যাগ
করেছেন। তিনি রলেছেন যে, যেভাবে
মন্ত্রিসভার সম্প্রসারণ করা হয়েছে ও
যেভাবে মন্ত্রিসভার সদস্যদের মধ্যে দশ্তর
বন্টন করা হয়েছে, সেটা গভীর ল্ড্জার
বিষয়।

সাংবাদিকদের প্রশেনর উত্তরে মুখ্যমন্দ্রী বাদল বলেছেন, 'এখন আর ন্তন কোন মন্দ্রী নিয়োগ করা হবে না।' সাংবাদিকর তার এই বিব্তির যে ব্যাখ্যা করেছেন সেটা হল, আপাতত আরও কিছু পার্লামেন্টারি সেক্টোরি নেওয়ার এবং অদ্রভবিষতে আরও করেকজন মন্দ্রী নেওয়ার রাস্তা মুখ্যমন্দ্রী খোলা রাখছেন। মন্দ্রিপের পদাকাক্ষী সকলকে স্থাকরে নিজের গদী রক্ষ্য করে। করা নিবতীয় মুখ্যমন্তীটির পক্ষে ক্রমেই কঠিন উঠছে তিনি হলেন বিহারের শ্রীদারে প্রসাদ রায়। তার সপ্তেগ রয়েছে কংগ্রেস' ছাড়া আরও ছয়াট দল। এই দলের মধ্যে আবার কম্মানিস্ট পার্টি। এস পি ও ভারতীয় ফ্রান্টিল দল মন্দ্রিসর থেকে মন্দ্রিসভাকে সমর্থান বিষয়ে। বাকী যেসব দলের উপর মুখ্যমন্ত্রীরামকে নিভার করতে হচ্ছে সেগ্যক্ষান্ত নিভার করতে হচ্ছে সেগ্যক্ষান্ত কিন্তুর করতে হালের স্থান তানের ক্রমের স্থান জনা লালাছিত। মান্দ্রিভারে প্রসার জনা লালাছিত। মান্দ্রিভারে প্রসার জনা লালাছিত। মান্দ্রিভারে প্রসার জনা লালাছিত। মান্দ্রিভারে তারা কথন কি করে বসেন টিনেই।

একদিকে এই বিপদ, অনাদি প্রোনো' কংগ্রেস, এস এস পি দ্বত জনতা পার্টি ও জনসংঘ দল প্রীরা মিন্সিভাকে উল্টে ফেলে দিতে সচে এই দলগুলি মিলে নৃত্ন 'সংযুক্ত বিধাং দল' গঠন করেছে। এস এস পি-র প্রীরা নন্দ তেওয়ারি এই 'সংযুক্ত বিধায়ক দলে নিবাচিত হয়েছেন।

ভারতীয় কম্যানিষ্ট পাটি যদিও চায় বে, সংষ্ট বিধায়ক দলের এই নয়া জে দারোগাপ্রসাদ মফিসভাকে হটিয়ে দি ভাহলেও তারা শ্রীনারোক্যপ্রসাদ রাং সরকারের কার্যাকলাপ সম্প্রেণ খা্ব সন্ত্ নয়। তারা কোয়ালিশন সরকারের স্বাম কমিটির সভার যোগ দিক্তে না।

স্তরাং, শ্রীদারোগাপ্রসাদ রায় নিখিচ। হতে পারছেন না। নিজের শক্তিব্দি তাগিদে তিনি শ্রী এল পি শাহীকে মদি সভায় নিয়েছেন। শ্রীশাহী নিজেকে লো मन मायना प्रथितहरू। मृत्रीय जामत "নয়া" কংগ্রেস প্রাথী "প্রোনো" কংগ্রেসকে वर् एकार्छेत्र वावधारन शतिहात पिरायहरू।

মধ্যপ্রদেশে কংগ্রেসের এই সামুকা া সেথানকার মুখ্যমালী শ্রীশ্যামাচরণ শর্ক্তের হাত শঙ্ক করেছে।

বিপরীত দিকে, হরিয়ানায় "শয়া" কংগ্রেস দলের হার সেখানকার মুখ্যমকী শ্রীবংশীলালের পক্ষে উদ্বেগের কারণ হয়েছে। সেখানকার তিনটি আসনে উপ-নিব'াচনে দুটিতে "নয়া" কংগ্ৰেস "প্রানো" কংগ্রেস দলের কাছে হেরেছে, একটিতে জিতেছে। যে দুটিতে "ন্যা" কংগ্রেস হেরেছে সে দুটি ঐ দলের হাতে क्ल।

"প্রোনো" কংল্রেসের বাঁরা নিবাটিত হরে এসৈছেন তাদের মধ্যে একজন হলেন <u> शिर्तण्याती लाल। भूशमन्त्री यश्मीलाल</u> বলেছিলেন, শ্রীহরদ্বারী লালের জয় ক "পর্রানো" কংগ্রেস দলের জর বলে গণ্য করার কারণ নেই। কেননা, মান্ত্র যেমন করে পোশাক বদল করে তেমীন করে শ্ৰীহ্রদ্বারী লাল দলৰদল करत्रक्त। ম্থামন্ত্রী বলেছেন, ইচ্ছা করলে প্রীহরশ্বারী লালকে "নয়া" কংগ্রেস দলেও নেওয়া বেড; কিন্তু না নিয়ে ভালই হয়েছে। কেন্না. তিনি মন্তিসভার যোগ দেওয়ার পর একটি র্মান্তসভা আট দিনে **আর একটি দ**ই মাসের মধ্যে ভেঙে গিয়েছিল।

মুখামণ্ত্রীর এইসব মণ্ডবোর জবাথে শ্রীহরণবারী লাল তাকৈ চ্যালেঞ্চ 🕶 🗷 বলেছেন যে, ডিনি **বংশীলাল মন্দ্রিসভাবে** হঠিয়ে দেবেন।

তান্তিক কংগ্রেস দলের সদস্য বলে পরিচয় দিচ্ছেন। কিন্তু এই দলের নেতা সম্প্রতি ঘোষণা করেছেন বে, দল ভেঙে দেওয়া হয়েছে। প্রকৃতপকে, দারোগাপ্রসাদের সর-কারকে সমর্থন করা হবে কিনা সেই প্রশেন লোকতান্ত্রিক কংগ্রেস দলের মধ্যে মতভেদ দেখা দিয়েছিল। এই মতভেদের মীমাংসা করতে না পেরেই দল ভেঙে দেওয়ার সিম্ধান্ত ঘোষণা করা হয়েছিল। এখন মুখ্যমন্ত্রী আশা করছেন যে, শ্রীশাহীকে মন্ত্রিসভার নিয়ে ভাঙা লোকতান্ত্রিক কংগ্রেস দলকে তাঁর সঙ্গে রাখতে পারবেন।

মধ্যপ্রদেশের উপনিবাচনগর্বিতে নিয়া কংগ্রেস' দল চমকপ্রদ সাফল্যলাভ করেছে। বিধানসভার যে-ছয়টি আসনে উপনিবাচন হয়েছে, সেগ্লির মধ্যে পাঁচটিতেই 'নয়া' কংগ্রেস জয়ী হয়েছে।

ঐ পাঁচটি আসনের মধ্যে গারোথ, নিম্চ ও নরসিংগড়-এর আসনগর্বালতে 'নয়া' কংগ্রেসের সাফল্য বিশেষ **কৃতিত্বের বিষয়।** প্রান্তন দেশীয় রাজ্যের এলাকাভুক্ত মধ্য-ভারত অঞ্চলের এই তিনটি কেন্দ্রই জন-সংঘ ও গোয়ালিয়রের রাজমাতার শক্ত ঘটি বলে পরিচিত। দীর্ঘকাল ধরে এই তিন্টি আসন জনসংঘের দখলে ছিল।

বিধানসভার কাটাপি আসন থেকে নির্বাচিত হয়েছিলেন রাজ্যের প্রাক্তন মুখামল্রী শ্রীশ্বারকাপ্রসাদ মিশ্র। সুপ্রীম কোটের রায়ে তাঁর নিবাচন বাতিল হয়ে যাওয়ার পর যে উপনিবাচন হয় ভাভে শ্বারকাপ্রসাদের ভাই "নয়া" কংগ্রে**স দলের** প্রার্থণী রূপে প্রতিশ্বনিশ্বতা করেছেন। তিনি দাদার মত বৃহৎ বাবধানে জিততে পারেন নি বটে; কিন্তু কঠিন প্রতি-শ্বশিষ্টায় জয়লাভ করে দলের সাফলা এনে দিয়েছেন।

ম্বেওয়ারা কেন্দ্রে "নরা" কংগ্রেস দলের স্পো প্রধান প্রতিম্বন্দিতা হয়েছিল সংঘ্র সোস্যালিন্ট পার্টির। সেখানে কংগ্রেস প্রাথণী এই কেন্দ্রের পরোতন প্রতিশ্বন্দ্রীর সপো ভোটের ব্যবধান বহুগুৰে বাড়াডে সমর্থ হয়েছেন।

মধাপ্রদেশে শ্ব্ব বিধানসভার আসনেই নর, লোকসভার আসনেও "নয়া" কংমেস ১৯৬৯-৭০ সালের

বিজ্ঞানে রবীন্দ্রপর্রস্কার প্রাপ্ত

भानव कल्यारण त्रें नायन 🚥

শরৎচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়ের

25.00

একরে শরংচন্দ্রের গল্প, উপন্যাস, নাটক প্রবংধ ও চিঠিসতের বিভিন্ন স্বাদে স্বাদ, এই সংকলন গ্রন্থ পাঠক-পাঠিকাকে আনন্দ দানে সক্ষম হবে বলেই আমাদের বিশ্বাস। মেজদিদি পণ্ডিত মশাই কাশীনাথ শ্ৰীকাশ্ত নিষ্কৃতি দামঃ২.০০ ৩য় ৫.০০ ৪**খ** ৫.৫০ দামঃ৩.০০ দামঃ৩.০০ দামঃ**৫.০০**

বিমল মিত্রের

নারায়ণ সান্যালের

কথাচারত মানস 👐

नागहरूभा ३.००

সতীনাথ ভাদ্ডীর

গোরীশৎকর ভট্টাচার্যের নতুন উপন্যাস

শ্রীস্নীতিকুমার চট্টোপাধ্যারের

देवदर्भागकी

२व महान ७.৫०

াদগ্ভাশ্ত জাগরী

त्रम्थ यायावत

দাম : ৯.০০

১১শ ম্দ্রণ ৫.৫০

প্রমথনাথ বিশীর ৰাঙালী ও ৰাংলা সাহিত্য

8र्थ मात्र 8.৫०

বিমলকৃষ সরকারের ইংরেজী সাহিত্যের ইতিবৃত্ত

অমল মিটের কলকাতায় বিদেশী রুপ্গালয়

ও ম, न्यायन ২ন্ন পরিবর্ধিত সংস্করণ ১২০০

পাম : ৬.০০

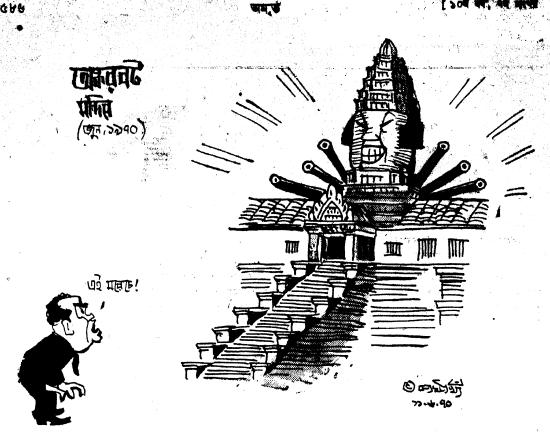
বিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যায়ের নবসগ্ৰ্যাস

বরযাত্রী

সমরেশ বস্ত্র শ্ৰীমতিকাফে ৩র ম্রে ৭.০০

वश बास्त्र ७.६० **्य मास्य ५.००**

প্রকাশ ভবন : ১৫, ক্তিকম চাট্জের স্মীট, কলিকাতা—১২



প্রধানমন্ত্রীর মরিসাস সফর

শ্রীমতী ইন্দিরা গান্ধী প্রধানমক্রী মরিণাস সফর করে আসার এই করে শ্বীপরাম্মের সংগ্য ভারতবর্ষের ছনিষ্ঠ সম্পর্ক আর এক ধাপ এগিয়ে গেল।

মাত্র আট লক্ষ অধিবাসীর বাসভূমি, ১২৫০ বর্গমাইল পরিমিত এই রাশ্রের সপো ভারতের ঘনিষ্ঠ সম্পর্ক বজায় রাধার দুটি বিশেষ তাগিদ বুরেছে। প্রথমত মরিশাসের অধিবাসীদের প্রার অধেক হচ্ছেন ভারতীয় বংশোশ্ভূত। সেদেশে শাড়ীর মেলা, মন্দিরের ছড়াছড়ি আর ভারতীয় ভোজান্তব্যের বহুলে প্রচলনের মধ্যে ভারতীয় প্রভাব সম্পেণ্ট। আজ ষখন প, খিবীর বিভিন स्मरभ ভারতীয় বংশোশ্ভতদের সমস্যা নিরে ভারভবর বিত্তত হচ্ছে তখন ছরের পালে একটি দেশে ভারতীর পিতৃপরে,বের স্কামরা নিজেদের অধিকারে স্বপ্রতিষ্ঠিত আছেন, এটি দেখার জন্য ভারতবর্ষের আগ্রহ থাকা শ্বাভাবিক।

ন্বিতীরত, ভারত মহাসাগর অঞ্চলকে পার্মাণবিক বোমার অধিকার থেকে মুক্ত রাথার ব্যাপারে ভারত ও মরিশাস সমান আগ্ৰহী।

মরিশাসের পক্ষে ব্যাপারটি খ্বই জর্রী। কেননা, যদিও মরিশাস ভারতের মতই গোণ্ঠীনিরপেক্ষ রাণ্ট্র তাহলেও ভার युक्त छेशत अकि युक्ति त्नीवीं तरहाइ এবং তার পার্শবরতী একটি দ্বীপ ব্টিলের দখলে আছে। ১৯৬৮ সালের মার্চ মাসে চুত্তি অনুবারী ব্রেটন মরিশাসকে স্বাধীনতা দেন তার একটি সত' হিসাবেই ব্টিশ সরকার ঐ নৌষ্টির উপর নিজেদের কর্ডার বেখেছেন এবং পাশ্ববিত্রী একটি শ্বীপকে মহিলাস থেকে বিভিন্ন करद निरक्तरमञ्ज व्यथिकारत सार्थरहरू। মরিশানের আশক্ষা এই বে, স্রাজের প্রাণ্ডল থেকে বৃটিল লৈন্য সরিয়ে নিয়ে আসার পর ঐ শ্বীপে পারমাণবিক ঘটিট তৈরী করাই হচ্ছে বৃটিশ সরকারের আসল

धरे क्षत्राणारे नकनीत हा प्रधानवन्ती শ্রীমতী ইন্দিরা গাল্ধীর পট্টিদনরনপী मित्रमान नक्टबर भन्न जीत अवर मित्रमारन्य

প্রধানমন্ত্রী শিউসাগর রামগোলামের ল্বাব্দরে বে বিবৃতি প্রকাশিত গরে**ছে** ভারে ভারত মহাসা**গরকে পরমাণ** বোমা খেবে মূভ রাখার দাবীর উল্লেখ ্রা **হরেছে।**

এই সফরের ফলে অন্যাদকে অগ্রগতি হয়েছে সেগ্রাল ছল্ছে, মরিশাসের অথনৈতিক উলয়নের পরিকল্পনা রচনার ভারতের পরিকল্পনা ক্ষিশ্ন সাহাব্য করবেন এবং দুই দেশের ব্যবসায়ীরা হোখ উদ্যোগে কলকারখানা গতে সম্ভাবনা পরীকা করে দেখবেন।

সম্পূর্ণ ভিন্ন আর এক দিক ্লান্ডারত-মরিশাস সম্পর্কের এই সাহায্য করেছেন প্রধানমন্ত্রী ইন্দিরা গান্ধীর কনিন্ঠ পতে শ্রীমান সময়। তিনি এই সফরে মারের সহবারী ছিলেন। श्रकाण, जीत्क भवित्रारमंत्र स्थायस्य मात्राण পছন্দ হয়েছে এবং ভারও সে দেশের मारात्व काम (मार्थि । मारात्व मार्भ তার বহু, ছবি স্থানীর পতিকাগুলিতে প্রকাশিত হয়েন্ড এবং তিনি বেখানেই ताहार द्वाराहर्त करत परमाना श्राप्ता प्रदान পরিচর করিরে দেওরা হরেছে :

32-6-10



উলয়নশীল দেশের সমস্যা

রাষ্ট্রপতি শ্রী ভি ভি গিরি জেনেভার আনতর্জাতিক শ্রম সম্মেলনের ৫৪তম অধিবেশনে পশ্চিমের স্বচ্ছল দেশগারে প্রতিনিধিদের সামনে এশিয়া-আফ্রিকা ও অন্যান্য উরেরনশাল দেশের সমস্যার একটি বাসতব দিক অতান্ত জোরালো ভাষার তুলে ধবেছেন। সেই সমস্যা, বলা বাহ্ন্স, ক্রমবর্ধমান বেকার জনসংখ্যার কর্মসংস্থান। শ্রীগিরি আজীবন শ্রমিক আন্দোলনে সংগ্যা ব্যক্তি। রাষ্ট্রপতির উচ্চপদে নির্বাচনের পরেও তিনি শ্রমজীবী মান্বের কথা একদিনের জন্যও বিস্মৃত হননি। আনতর্জাতিক শ্রম সংস্থার জন্মলণন থেকেই শ্রী গিরি এর সংগ্যা জড়িত। ১৯২৭ সালে তিনি প্রথম এই সন্মেলনে ভারতের শ্রমিক প্রতিনিধির পে প্রথম বন্ধতা দেন।

এই দীর্ঘ সময়ের ব্যবধানে প্রথিবীর চেহারা অনেক পরিবর্তিত হয়ে গেছে। ইয়োরোপীয় সামাজাবাদ কয়েক শতাদ এই দেশগালোর ওপর যে-আধিপত্য বিশ্তার করেছিল দিবতীয় মহায়ালের পর একে একে বিভিন্ন দেশ থেকে সেই প্রভুম্বে অবসান ঘটে। আফ্রিকা ও এশিয়ার অধিকাংশ দেশ আজ স্বাধীন। জনজাগরণের ফলে মান্মের আশা-আকাজ্যাও ব্র্থিষ পেরেছে। স্বাধীন দেশগালোতে হয়েছে শিক্ষার প্রসার। অর্থনৈতিক ও বৈষয়িক উলয়নের পরিকলপনা নিয়ে এই দেশগালে আজ দীর্ঘ শতাব্দীয় বঞ্চনা ও অনগ্রসরতার প্রতিকারে বন্ধপরিকর। কিন্তু জনসংখ্যা ব্র্ণিধর ফলে সীমাবন্ধ আথিক ক্ষাসকল কর্মক্ষম মান্মের চাহিদা, কর্মসংস্থান ও ভবিষাৎ নিশ্চিতি প্রাদান এই দেশগালোর পক্ষে সম্ভব হচ্ছে না।

আজকের যুগে তাই প্রয়েজন হল জাতিতে জাতিতে এবং লোতির ভেতরে মানুষে মানুষে বৈষমা দ্র করা। রাষ্ট্র আন্তর্গাতিক শ্রম সংস্থার সমবেত প্রতিনিধিদের স্মরণ করিরে দিয়েছেন যে, প্থিবনীর যে-কোনো অগুলে দায়িদ্রা অন্য অগুলে সম্মিধর পক্ষে বিপদস্বর্প। আজকের যুগে কোনো একটি জাতি শুখ্ নিজের সমস্যা ও চাহিদা মিটিয়ে নিশ্চিব বাস করতে পারে না। তাকে এক অখন্ড দ্বিনারার অংশীদার হিসেবে বাস করতে হবে। এশিয়ার সমস্যা বিশেষণ প্রসংগ্র রাষ্ট্রপতি বলেছেন, জনসংখ্যা বাড়ছে এ-কথা সতা। কিন্তু তার জন্য অযথা আত্তকগ্রহত হয়ে কোনো লাভ নেই। উমত ধ কর্মসংগ্রান নাতি অনুসরণ করে এই জনসংখ্যাকে উৎপাদনশীল কর্মে নিযুক্ত করতে পারলে যে-কোনো দেশের অর্থনিতি উমরনে তারা সহারকশন্তির্পে পরিগণিত হবে। আজকের যুগে দেশে দেশে যে ছান্তরোহ এবং তারগুণার বিক্ষোভ দেখা দিয়েছে তার মূলে আছে সমাজ-বাক্থার বৈষম্য এবং কর্মসংস্থানের অভাব। একে উপেক্ষা করলে চরম ভল করা হবে। রাজ্পতি বলেছেন, প্রথিবীর নানা দেশে, বিশেষ করে অনগ্রসর দেশগ্রিলতে কোটি কোটি মানুষ সমাজ-বাক্থার হাটি স্থ আজ বিক্ষুপ্র। গণতান্ত্রিক সমাজ-বাক্থাকে যদি রক্ষা করতে হয়, তাহলে এই বঞ্চিত জনসাধারণের জন্য কর্মসংস্থান তাদের জীবন্যান্ত্র মানোমন্তরনে সকলকে তৎপর হতে হবে।

এশিয়াতে বর্তমানে বেকারের সংখ্যা হিশ কোটি। আগামী এক দশকে আরও ২২ কোটি লোক বেকারের দলে যুব্
হয়ে সমস্যাকে তীরতর করে তুলবে। রাষ্ট্রপতি তাই গ্রামীণ ও ক্ষুদ্র শিলেপর প্রসারের ওপর জাের দিয়েছেন। উল্লত ও
শিলপপ্রধান দেশগালোতে যেভাবে মূল ধনতলগ্রধান শিলপ প্রসার হচ্ছে অনুসত দেশে তা অথনিতিক পরিকল্পনার ভিত্তি
হতে পারে না। ক্ষুদ্র কুটিরশিলপ এবং কৃষি-শিলপ কর্মস্চিত্তীর ভিত্তিতে অনুসত দেশগালোর বৈষ্যিক উল্লতির পথ প্রশ্বতে হবে। প্রাচাদেশে জাপান এই পশ্বতি অনুসরণ করে পশ্চিমী দেশগালোর সংগ্যা বৈষ্যিক উল্লতিতে পালা দিতে সহ্ব
হরেছে। বৃহৎ শিলেপ মূলধন বিনিরাগে না করে গ্রামে কৃষিকমের পাশাপাশি ক্ষুদ্র কটিরশিলপকে অথনিতিক উল্লয়ন
পরিকলপনার ভিত্তি হিসাবে গ্রহণ করলে সমস্যা সহজতর হবে এবং কৃষিপ্রধান দেশের উল্লয়নও হবে হ্বান্বিত।

রাষ্ট্রপতি একজন প্রবীণ প্রমনেতারপে নিজের জীবনের অভিজ্ঞতা থেকে যে বন্ধবা উপস্থিত করেছেন তা ভারত পক্ষে বিশেষ তাঙ্পর্যপূর্ণ। আমাদের অর্থনৈতিক পরিকল্পনার গোডার দিকে বৃহৎ শিল্পের ওপর নজর দিয়ে জনুদ্র দিও কৃষিকর্মকে অবহেলা করা হয়েছিল। তাই চতর্থ পশুবাধিকী পরিকল্পনার শ্বারপ্রান্তে এসে আমরা এক বৃহৎ বেক সমসারে সম্মুখীন হয়েছি। রাণ্ট্রপতির এই বন্ধবা আন্তর্জাতিক প্রায় সংস্থাব প্রতিনিধিবা নিশ্চয়ই পার্ডসহকারে বিবে কর্মবেন। আমাদের দেশের সরকারও বেন রাশ্বপতির বন্ধব্য থেকে তাঁদের ভবিষ্যৎ অর্থনৈতিক কর্মসূচীর ইণ্গিত গ্রহণ ব

Y ...

শেষ চড়,ইভাতি॥ জগনাথ চলবতী

তুমি আমায় নাম ধরে ডাকলে, যেন প্রথম, এবং তখনই আমার হাতের পাঁচটা আঙ্ক ধনস্থন করে উঠলো,

তোমাকে গ্লি করলাম।

ভূমি এখন পালক ছাড়ানো যোরণ, নিঃস্বর, বালির উপর তোবড়ানো মুখ এবং আমি, বাচপহীন চোখ, মুখোমুখি, নিশপিশ-আঙ্বলে সদ্য বারুদের ধোঁরা। তোমার ছুটি আর আমার মনে আপাদমস্তক ভর।

তাহলে এই আমাদের শেষ চড়্ইভাতি। ধারুদের সম্দে তোমার ভেলা ভাসিরে দিলাম। তুমি জানতে ভালবাসা একদিন তোমাকে ভূমিশব্যার নিরে যাবে,

এবং আমাকেও।
কিন্তু পিকনিকের বিকেলে তুমি একেবারে অব্ঝাতোমার রক্তে বসম্তকাল এবং
হাতঘড়িতে ছোট কাঁটার উপর বড়ো কাঁটা;
তোমার অব্ঝা পেশীর মধ্যে আমি থরগোশের
চেয়েও নরম:

তুমি আমাকে হত্যায় বাধা করলে। তুমি এখন স্থিয়। আমি অস্থিয়। আমার জন্য ভেবো না, আমার শেষবারের মতো ভাবতে দাও।

বিশ্বাস করো, আমি খ্ব ভালো নেই, মাথার উপর কোনো ছাদ আর নিরাপদ নর, এখন আমার সব গান্তবাই পিছনে। পুমি শান্ত, হয়তো স্থী; আর আমার মনে আপাদমন্তক ভর।

আঙ্লের ফাঁক দিয়ে বাদি পালাতে পারতে কী হত?
ভাহলেও আবার ভূমি, আবার আমি।
কাল, পরশ্ব, বা কোনো পিকনিকের বিকেলে
যখন ভোমার হাতে প্রতিহিংস্ নিরিখ,
এবং আমি পাপীরসী, মুখোশের মধ্যে আমার মন,
এবং মনের মধ্যে ছম্মবেশ,
ভূমি না পেরে না পেরে হাতভাতে হাতভাতে
অবশেষে গ্লিল করতেই।
আমি ভোমায় সে-স্যোগ থেকে রেহাই দিলাম।

তুমি এখন নেই, জানি না হরতো আছো, কিন্তু আমার মনে আপাদমন্তক অশরীরী ভর— পাছে ভালবাসার কাছে হুণা হার মানে, পাছে তোমায় নাম ধরে ডেকে বাস!

निर्भाग ॥

मीरभन बाब

ক্ষ্যের সেতৃতে মুখ ম্তি যার গড়ি সেই প্রেম আমার বাঙলার জল-মাটি টেনে মাখানো রোদ্দ্র, একদিকে খরস্রোতা অনা নদী মরা জলধারা দ্বারে আকণ্ঠ টান খাড়া-ব্লিট জলের ভিতরে।

টান খাচ্ছে হৃদ্পিও মৃত রতে নীল ভালোবাসা, গৃহাত বাড়িয়ে ধরি মাটি তিল কিছু না কিছু না পড়ি যাতে ধরে উঠি এই দেশ স্বদেশ আমার— চালচিত্তীন মৃত্তি হাট্যু জলে ডুবে তা মুরার।

অন্ত শ্রেমের উত্তি হুদায়ের সংবেদদে মেথে কার কাছে বাই ফলো! তেওে দেশ পড়ি প্নের্বার।

दर शिश यामात मृःभ॥

रमोदमान्त् गरण्गानाशास

কে তুমি আমার দুংখ,
গাঢ় নীল চোখ তুলে
চিরদিন বুকের কাছেই শুরে থাকো?
অনুভবে পরান্তব,
বড় অসময় দেখো বড় অন্ধকার।
সামানা আনন্দ দাও,
জ্বংশাংশার মতো কোনো সুখ এনে দাও প্রিয়তম, হে দুঃখ আঘার ই তুমি এক ত্বিত জোয়ার।
কোন দ্র অরণোর অগ্তরাল খেকে তুমি ডাকো?
তে প্রিয় আমার দুঃখ গাঢ় নীল চোখ ভুলে
চির্লিদন বুকের কাছেই শুরে থাকো।

সাহিত্যিকর ঢোখে মুস্সাস

"সাহিত্যিকের চোথে আলকের সমাজ"—
এই শিরোনামার তলার পরিপাটি আসন
পেতে বসা তো গেল, কিন্তু একটা
কাটছে না। প্রথমত, সাহিত্যিকের চোথ, সেকি
সমাজ-বহিভূতি আলাদা কিছু নাবি। স্কর্পরঅস্কর, কুংকুতে বা আয়ত, নীল,
অথবা পিণ্যল—বাইরের বাাপারটা আর
দশ-বিশটা মানুবের বা, সাহিত্যিকেরও ভাই।
দ্যাথে যে, সে সাধারণ, সকলের মতোই
এক লোক: সেই দেখাটাকে যে লিথে রাথে,
তার সেই ভাগট্কুর নাম 'সাহিত্যিক'।

এই পর্যপত লিখে নিজেকে বলছি
তিওঁ কণকাল'। নিছক দেখাটাই সে যদি
লিখত, তবে সাহিত্যিক হত খালি কলমনবিশ বা ম্নদি। দেখাটার সংগ্য ভাবা,
চোথের সংগ্য মনও সে মেলার আর মেশার
কিনা, ওইখানেই চমংকারিত্ব তার ম্নশিয়ানার। তাছাড়া, পঞ্চেন্দ্রের প্রথমটির কাজ
যদিও ভাকানো, তব্ ডাকানেরেও রক্মাফের
কত: ভ্রুটি কিংবা কটাক্ষ, কখনও আঁখি
দুটি উৎস্ক পাখি, কখনও নায়-নত,
কখনও-বা সরসীর ঘত: অথবা প্রিমার
মতো সিন্ধ জ্যোৎস্নার বিস্তারিত। এইসব।

আবার, দেখা মানে তো তাল আনা?
সেই অন্তৃতি স্নাম্পথে পরিবাহিত হতে
ছতে কীঘটে কে জানে। প্রামণ দেখি যা
পোছল বা অবশেষে বেরিয়ে এল, তা
বিলক্ষণ পরিবাহিত। নতুবা দ্রের নীল
অরণা কদাচ একদণ্যল বনা হততী হত কি,
স্থাসত কি দিনের চিতা হরে বেতে
পারত?

এক্ট্র দ্রে সরে ব্যক্তি: এই প্রসংখ্য আমার সওয়া**ল এখনও শেষ** হয়নি **কিল্ছ।** সাহিত্যিকের **চোখে সমাজ? বেশ।** किन्स কোন্ বয়সের সাহিত্যিক, এবং दकाम সমাজ? 'আজকের' বলে সমাজকে না 25 একটা খ'্টিন্ড বাঁধা গেল, তব্ম সমাক্ষেরও বে অশেষ স্তর। কোনা স্তারের ভাকা'বন সাহিত্যিক ভাকালেম বসে, তাঁর ীমাজের জ্যোনও মীচ বাংলার कार्यालाय, साचि अस्क्यादेत अक्रीन টিনারের চডোর? আথবা ডিনি কি আসবেন রাস্তার রেখ্যান ক্রালেখি-লাখা-মাখি সব একাকাৰ : এই নিয়ে श्रम्म, जामक कारनद कर्ना।

প্রথমে সাহিতিকাদের গোলক্ত কিচার করা বাক। বাংলার অসুবিধা কম, কারণ লেখকদের বেশিরভাগই এসেছেন সেই শ্রেণী থেকে, বে শ্রেণীকে বজা হমে থাকে মধ্যবিত্ত। কুলপতি রবীন্দ্রনাথ অবশাই ব্যতিক্রম, কিন্তু কথার বলে ব্যতিক্রমই না বন্দুর প্রমাণ!

ফলে মধ্যবিত্ত <u>মানসিকভা</u> সাহিত্যের মুশে মুমো। এই মধ্যবিস্তরাও আবার প্রধানত শহ্রে, অন্তত বসবাসের স্বাদে বেশির ভাগই বাকে বলে 'কল-কান্তাইয়া'; সেকালে যাদের বাব**্ বলা** হত. र्वान उ একালেও যাদের ভদুলোক বলি, এ'দের অনেকেই ম্লক্ত গ্লমীণ, তথা দীর্ঘ-কাল শহরবাসের বলে প্রায় সকলেই অন্ত'ন করেছেন ন্বিতীয় একটি সংস্কার, मृचिं-ভণ্গী বা অভ্যাস---সেই 'দ্রাশা' নায়ক কেশরলালের মতো। বদলে-যাওনা চোথ নিয়েও অবশা পিছন ফিরে ভাকানো চলে, কেউ কেউ ভাকানও। স্মৃতি-রোমক্থন করেন। তারও একটা আলাদা স্বাদ-আমেজ ধরাই পড়ে না। ঐতিহালিক ছাপ-নারা উ ন্যানেও না। এবং সেই ঐতিহাসিক উ ন্যাসও ইদানীং রচিত হয় কদাচিং।

আসলে, ছাবে রাখে ভেবে দেখোঁ
আয়রা লিক্তিমন্য এক শহুরে সম্প্রদা।
কোটি কোটি মানুবের মধ্যে বারা নিতাল
সংখালছিক—আয়াদেরই ভাব-ভাবনা র
সংস্কৃতির পরকলা পরে আর স্বাইকে
কৈছুকে দেখছি না তো! আয়াদের র
ধরন-ধারন অনোর উপর চাপাছি। বেড
একদা পোরাণিক কাছিনীতে দেবতা
উপর মানবিকতা চাপানো হত।
লোকের, অন্য সতরের জীবন নিরেও ব
যথন লিখি, তখন তাদের বেশভ্যা
মুখের ভাষা মালাতে একট্ম মালিনা
সারল্য দিই বটে কিল্ড ভিডরটাকে আমা
নিজের মত করে সালাই।

যাদের কথা তারা সেখানে বসে লি এ-রকম হত না গ্রামের প্রাণ কলমের হ কুটে বের হত। আমাদের সাহিং দুভাগা, এই প্রতাশা প্রার প্রতি হং কলে দুধের বদলে পিট্লি; ফলে ব মাত্রের জীবন-দর্শন। কুপের মাব্যমন ক্পেকে, আমরাও—কলকাতার মাণ্রিখাল্লরী করেকটি প্রাণী—তেমনই চৌহন্দিটাকেই বিশ্ব কলে ঠাউরেছি।

(২)

কাজেই কথাটা উঠছে, কোন্ দেখবে কোন্ সামাজিক স্তর্কে। ং



আছে, ভিন্টেজ-মদোর মতন, কিচ্ছু তা
টাটকা-সব্জ সব্জি হর কদাচিং; একট্ব পাঁত, একট্ব নারস্ত সেই সোরজ, প্রাণে ধালক তাতে থাকে না। শহর থেকে 'জ্যাপ্তি' বাব্রা যেমন প্রামে বান কথন-সথন, শহর-বাসাঁ লেথকেরাও তেমন প্রামা পটভূমি নিয়ে লেখেন কথন-ও-কথনও—ওটা চেজ, লেখার রুচি আর স্বাচ্থ্য ফেরাবার কোশলা। মখন গ্রামের কথা লেখেন, তথন এ'দের এক-একজন যেন প্রেক্তম্ম-কথক এক-এক জ্যাতিসময়।

খনি-খেত-মাল্রের কথাও মাঝে আসে, রাণ্টিক পরিভাষার যাকে বলা যায় স্মান্থ কালে, রাণ্টিক পরিভাষার যাকে বলা যায় স্মান্থ কালার করি, করা। স্তান্টি-গোকিপপার-কলকাতা আমাদের কথাসাহিত্যের অচলারতন। সেটাই প্রান্থাবিক। যার মধ্যে আছি যা প্রত্যাক্ষ করিছি তাকে মুখ্য-উপকরণ করবই বা না কেনা তবে কিলা এর ফলে সাহিত্যের মান্থানিক। বা কেনা তবে কিলা এর ফলে সাহিত্যের মান্থানিক। বা কেনা তবে কিলা এর ফলে সাহিত্যের মান্থানিক। বা কেনা তবে কিলা এর ফলে সাহিত্যের মান্থানি বা কেনা তবে কিলা এর ফলে সাহিত্যের মান্থা। যে-ভারত এত শত বছরের এত আঘাতের পরও স্বভ্যানে স্থিত, তার র্পটি

কাল কোন্ কালকে? ভাৰীকালকে কি
হবে একালের পরকলা এটে? ব
প্রসংগও অনিবার্য উঠে পড়ছে। অন্যত্ত ।
করেছি, পরের বরসকে এই বংসের ট
বসে যেন ভাল করে ঠাহর করতে পারি
বাইবের কিছুটো ভাল ঠেকে, অনেকটা
কিম্বু ভিতরটাতে চোখ রাবে কী ব
দিয়া কোনও রঞ্জনর্দিম ভো নেই। ন
রাজ মিশে নড়নকে যদি পর্মধ
পারতুম! হার, ভাহলে তো এই থোল
বদলে ফিরে আসতে হবে।

এই বাপসা চোথে আনেক কিছুই
করতে পারিনে। এ-ব্লের রাজ
এ-ব্লের প্রণর, এ-ব্লের রান। প্রেম
কালেও কৃত হত, এ-কালেও, আন্সান
হয়। কিল্পু কোনও বান্ধবী ক থাওরাতেই ছবে' বাল কোনও যে কালের করিডরে ধাওরা করছে, ছেলেটি 'প্রমা নেই' বলে চাহি-চাহি হ এমন গদ্য-দৃশ্য আমাদের কালে ভাবাই না। তথন প্রেট ফুকি থাকলে ব খাক্ত [©]চোরের মা-র কালা, তখন মেরে দেখলে ব্রেকর শিরে শিরে ইমন বইত। আরে আলাপে তুই-তোকারি? ছিলই না।

তাই বলে বেশি-বর্মীরা কম-বর্মীদের
নিরে লিখবেন না তা-ও কি কখনও হয়!
লিখবেন, তবে সেই লেখা ঘন ঘন শ্বাস,
বা রক্তে মথিত হবে না, তার তাৎপর্য
মিহিত থাকবে অন্যতা। তেমনই মাথার
জ্ঞানে পরচুলো পরে রায় দিতে বসাও
সাক্ষবে না। তার চেয়ে কম-বর্মীরা কম-

বয়সের কথা লিখ্ক হে-যার ক্ষমতা আর অন্ভব-মত। আমরা বরং আমাদের এই বয়সের কথা লিখি, বিচার করি এই বরুসের যত বাসনা, বিশ্বাস আর আধেরী বস্ত লাভ করা যার।

"Know then thyself; presume not (others) to scan."

—এই আমার মটো।

আতিশযা, বিকৃতি, ঘটেই থাকে, বথন জোয়ার আসে। ভাটায় আবার সব নেমে বার, শ্ধ্ পলিস্তর পড়ে থাকে। বারে বারে এই হর—সমান্তে, এবং সমান্তেরই প্রতিফলিত সাহিত্যে। তবে মিছে ফ্রোতের তোড়ে ডেসে-আরা আবর্জনা নিরে ভেবে ভেবে মাথা ধরিয়ে ফেলা কেন? মনে করি, উনিশ শতকের গোড়াতেও, প্রাচীনেরা ইয়ং-বেশ্পলদের বাড়াবাড়ি দেখে এইরকমই ভাবিত হতেন, ভারতেন জাতি-ধর্ম সব গেল, কিন্তু দেখুন ফেনা নিক্তে থেকেই করে থিতিরে গিনেছে, কিছু তো রসাতলে



বায় নি। এবারেও সনাতন মুল্যবোধ-টোধ
গেল গেল বলৈ হাহাকার অলরেণ। বাকে
্ল্যবোধ বলছি, তার সতিটেই বলি কিছু
ন্ল্য, কিছু
সারবাদ্ধ থাকে, তবে তা
টিকবেই, অন্তত ফিরে আসরে। না
বাকলে, ত্রিরতরে বাবে। একদিন তো
মুশোর টাকা পকেটে প্রে বাজাতাম,
ওটাই ছিল স্ট্যানভাভ করেন। আজ
ভাগলেন নোট দিরেও তো দিবি চলছে।
ক্পালে আকলে ধাপার মাঠেও ফ্লকপি

আসলে বরুকদের যেটা বাভে সেটা र**म भागीनक निर्वा**जन। अधारत निष्ठात বিধানে **এ'রা কবে** স্বীপাস্তরে চলে যান। বিদেশ **কালক্রমে বিদেশ হয়ে** যার। বিদেশে গৈ**রে কি কেউ স্বদেশের** মতো জল-হাওয়া নেই বলে নালিশ করেন? উদাসীন পর-নময়ে, পরিজনদের স্বারা নায়ে-সম্মানিত **তাজে-প**রিতার বয়সে একটা भाष्ट्रजाम्प्रेट्सट पेत थटा घटा, অঞ্চীণ রোগে বেমন খাল্য, হানি-পড়া চোখে তমনই সামারক আচার বাবহারও সয় না। দব তি**ত্ত লাগে। পরিবে**শের কা**ছু থেকে** যা মলে তা কর্ণার পেনসন; পেলামের ডোল্' অপমানের মত ঠেকে। প্রত্যাঘাতের **শ্হার র্প নেয়** অভিমান। কিন্তু **্মিখমান জন সয়ে** আসেন, নিজেকে **শ্বটিয়ে নেন, দেখেও দেখেন** না, **শ্বনে**ও না শোনেন। নিজের শান্তি, সকলের গাশ্তির জন্য এই ব্যবহারিক বাণপ্রস্থই তো ভাল! আগামীকালে যারা বে'চে থাকবে, আগাম**ীকালের ভাবনা তাদের।** তিনকাল খোয়ানোরা তো আগামী কালে থাকবেন না৷

বদলে যাচ্ছে পরিবারের আকার-প্রকার। সেকালের যৌথ পরিবার একালে আর "সুখী পরিবার" না। এখানকার সুখী পরিবারের ছাঁচটা বড়ই ছোট, তার রঙ যেমন টকটকে, তার প্রতীক তেমনই চোখা. কোণাকাটা। অনেক ছেলেমেয়ে দাদা-দিদি ভাই-বোন কাকে বলে তা জানে না. जानत्व**रे ना**—निरंतास्थत कन्नाल কভ সম্পর্কের সম্ভাবনা নির্মুখ হয়ে যাছে। 'ঠাকুরমার ঝুলি'-র মতো কিছু কোনও দিন কি লিখিত হবে? ছেলেমেয়েরা ভার মানে ব্রথবে? ঠাকুরমা ষে কী জিনিস, কোলে নিয়ে ঘ্য পাড়ানো আর কানের কাছে ছডা—তারা তার ঘনিষ্ঠ শ্বাদ পাবে কী করে: ছোট্ট যে-ফ্লাটটিতে **তারা বড় হচ্ছে, সেখানে বড় জোর বাবা** আর মা. কখনও বেডাতে আসেন মাসী-**পিসী বা কাকারা।** ঠাকুরুমা তো সেথানে থাকেন না! নাতনিকে শালী বলে ডেকে কোনও দাদ্ধ আজ খদি পার পেয়ে যান তো তার ভাগাকে ট্রবা করি। বেখানে প্রেমজ, বর-কনে একই শহরে এ-পাড়া ও-পাড়ায়, সেখানে তার্দের ছেলে-ट्यट्सबा मामाव राष्ट्रि গিয়ে মাস্থাদেক কাটানোর মজাটা জানেই না ওই আর একটা পাট উঠে গেল; বাচ্ছে।

ভাঙন আরও নানা রকমের ঘটছে—
ধরা যাক বিবাহ-বিচ্ছেদ। সব শিশ্ম কি
তার বাবা আর মা দু'জনকেই পার, অথবা
চেনে? সে-ও একটা অভাববোধ। তা-ছাড়া
ভাদের তৈরী হওয়ার বয়সে কত ঘটনা,
কত দৃশা তারা তো চোখের সামনেই
ঘটতে দাখে, যা খার, কাদা শ্রিকরৈ ক্রমশ
কঠিন হয়।

অন্য সম্পর্ক **থাক**—দাণ্ণতা জীবনই ধরা যাক। স্বামী-স্থার দু'জনেই যেখানে চাকুরে, একজনের ডিউটি দিনে একজনের রাত্রে, সৈখানে ও'রা পরস্পরকে পান তো? পেলে কতথানি, কতক্ষণ > একজন যদি इन भिन्भी, अनाखन भागाना ? प्रहेबन प्रहे রাজনৈতিক দলের? অসংখ্যা দৃণ্টাম্ত দিতে পারি, জটিশতা ক্রমেই বাড়ছে। বহ গ্রহিণীর দিনমানের একটা বড় ভাগ কাটে গ্রের বাইরে—অনেক প্রভাব, অনেক সংস্পর্ণ, পরিচয়, অনেক ছাপ ভল ঠিকানা চিঠির পিঠে ডাক্ঘরের ছাপের মতো পড়ে। বিশেষ এক সামাজিক শতরে নিত্য পার্টি, পার্টির পর পার্টি, সেই জীবনই রুত হয়ে যার, তারই মধ্যে দাম্পত্য বাঁচে হয়ত শাধাই কেতাগত ভাবে, জৈব অথে। হয়ত শেষ পর্যত কিছুই বাঁচে না।

সভোৱ তৈরী न्ध्ज-म्का नाना মাকড়শার জালে এ-কালের জীবন আটকা। ত্রু তো শুধ্র নাগরিক জীবন থেকেই টাটকা কয়েক নমুনা দিলাম, গ্রামবাংলা বা মফদব্রের মুখন্তীও যে দ্রতে বদলে যাছে, অথ নীতি, প্রমনীতি, জোড-জরি নিয়ে যত সংকটের উম্ভব হচ্ছে, তার উলেখ कर्तनाम ना। ग्रांक्नारी वक-वक्षे। হাইওয়ে থালে দিছে দিকের পর দিক-মন্দ্ৰহ দৈন্দিন জীবনের উপরে ভারও প্ৰবল অভিযাত। **এই সৰ মিয়েই এখ**নকা**ৰ** कीवन, मधाक--नदा मिह कीवन निराहे সাহিতা, অখ**ন**ড **অথবা** चन्छाका व । বে-সাহিত্য স্পীবনের প্রতি বিশ্বস্ত ও সং. জনচিত্ত ভাই অধিকার করে। প্রকৃত সাহিত্য সম্ভাব-শতক বা সদৃত্তি-কৰ্ণাম্ভ নর, ছিলও না কখনও। বিষয়বস্ত কিংবা পরিণামের নীতি বাকটি মহং বলেই সে-সাহিত্য যে মহৎ হবে, এমন কোনও কথা নেই। অমহৎ, এমনকি দ্ভিতৈ অসং কথাকত নিয়ে লেখা সাহিতাও মহৎ হয়, হয়ে থাকে। মূল শ**ত**ি হল জীবন। তবে সে-**জীবন** বহিরপা জাবন কেনই বা হবে। নিরালার বসে মরমী এবং বরসী লেখকের বে ভাবনা যাপন, সেই অন্তলীন মনোমরভাও আর এক জীবন: সং-সাহিত্যের তা-ও উপাদান হতে পারে।

त्रात्पारिष । प्रतिवर्गिष । इस्प्रेस । त्रात्प्यम् SAMSAD ENGLISH—BENGALI DICTIONARY

Propo : Microsoft formation

সাম্প্রতিককালে জ্ঞান-বিজ্ঞানের উপ্লান্ডর **ফলে যে শশ্সমাহ প্রচান্ড হইরাহে** সেগ্রিশিস্থ প্রায় ৫,৫০০ শব্দ ও প্রবচন এই সংক্রমে সংখ্যোক্ত হইরাছে। ইংরেজি ও বাঙলারে উচ্চারণ-সংক্রম ও শব্দের বাংপান্তি দেওয়া ইইয়াছে। ইচলিত সকল অভিযান-গ্রালর মধ্যে এই অভিধানটি সর্বাশ্রেণ্ড বালয় নাবী করা বাইছে পাছে। ১২৭২+১৬ প্র ভিনাই অক্টেন্ডো আকার মন্তব্যত বোডে বাঁধাই। [১৫-০০] আমানের অন্যানা অভিযান

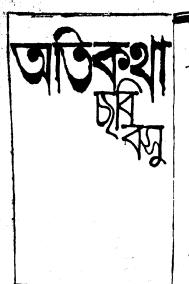
সংশোধক : ড: শ্রীসাবোধচন্দ্র সেমগাল্ড

সংসদ বাংগালা অভিধান

৪৩ হাজার শালের পদ অর্থা প্রয়োগের উদাহরণ বাংপতি, সন্নাস ও পরিভাষা সম্বাজত বহু প্রশাসিত কোষগ্রন্থ। [৮٠৫০] SAMSAD BENGALI - ENGLISH DICTIONARY বাঙলা-ইংরেজি প্রশাসা শব্দকোষ। [১২٠০০] LITTLE ENG BENG DISTIONARY সর্বাদা বাবহারের উপরোগী সর্বব্যুস্তারীর অর্পারহার্থা কোর্য্যাথ। [সাধারণ বাধাই ৫০০০। বোডা বাধাই ৭٠৫০]

সাহিতা সংসদ

তহএ, আচার্য প্রফল্লচন্দ্র রোড। কলকাতা—১





স্টেশনের বিরাট চম্বরটার ঢোকবার মথে পানের দোকানটার আরশিতে নিজের থথে দেখে সে একট্ থমকে দাঁডাল। কপালটা দেখে ত চোখ ট্যারা হবার জোগাড়। রক্ত জানে ভালাশিটে পড়েছে ঠিক যেন কাজলের টিপের মত।

তার এই ধন্দ ভাবটা পেছনের লোক কেনই বা বরদাসত করবে। মুক্ষথর খেকুরে গলাটা শুনিয়ে দিল—কিংগা মুক্তা সোলে নাকি রুপ দেখে?

কথা দেখ বাকি শ্নলে পিত্তি জালে যায়, ইচ্ছে হ'ল ছাার ছাার করে কথা শানিয়ে দেয়—দেথবনা তোমার গাণধর হাতখানার কীতি।

কিন্তু না সে কথা সে বলবে না। বিশেষ করে আজই যখন সব চকেব্কে যাক্ত। এতদিনই যখন সইতে পেরেছে তখন আর একট্নকণের জন্য.....

মাধার কাপড়টা গায়ে হেলিয়ে দিয়ে বলে

—গাড়ী ফেল হবে ব্লিঃ?

সংশা সংখ্যান মুখ্য বিশ্বিমরে বার। ঐ একটা কথাতেই বাস। কাঠি দিয়ে দাঁত খোঁচাতে খোঁচাতে মন্মথ বলে—জল খাই এস।

—তা খাও পেট বোঝাই করে জল খাও যত পার। পেটের হাওড়টা ভরবার মত যত জল ধরে নিরে নাও। স্বামীর দিকে আড-চেটেখ চেম্ম সে দেখে। খোঁচা খোঁচা আদ-ভাঁচা আমপাকা দাড়িগোঁফ। চড়ান চোরাল আর কলে পড়া ঠোঁটে কেমন একটা বেরাড়া ভবঘারে ভাব—এবার যে যার পথ দেখি কিবল।

শ্বে দমক মেরে বৌ ঘ্রে দাঁড়ার। মাথার ঘোমটা খনে পড়ে দ্বটো আরম্ভ চোখে আগ্রন ছোটে।

—যাবে যাও তা স্মাবার অত ঘটা করে পেছন নিয়েছ কেন।

লার পাগল, নিজের জনলায় মরি, কে বাঁচল কে মরল কারও কথা ভাবতে বয়েই গোল।

তারপর স্টেশনেই ভিড্ডের মাঝে মন্মথ কোথাম বৈ হারিরে গেল তার দিশা পেল না বোটা। তথন চোথের আগন নিভে তব্ত জলের ধারার ব্ল গলা ভেসে যার। আবার এই হাজার মান্বের সামান চাইপট চোথমুছে শাশ্ত হতে হয়। অনিসাক্ষী করে বিরে করা পরিবার ফেলে কতজন নির্দেশ হরেছে, কেউবা অভাবে গলার দড়ি দিয়েছে। তার কপালেও এমনি একটা কিছু হল তা এমন ঘটা করে ইন্টিশানে এনে বিদার নেওরা কেন। যেন ওরা দশ বছরের সংসার করা দ্বামী-দ্বা নয় যেন নেহাতই পথেঘাটে পরি-চয়। দ্রপাল্লার গাড়ী চেপে যে ধার জারগায় চলে ধাবে। মনের ফাটল মনেই মিলিয়ে যাবে।

কিন্তু ধ্মকেত্র মত মানুষটা আবার উদয় হল ঠিক তার গা ঘে'বে—অমন কাপড়ের পাটুটিল পারা হয়ে থেক না।

—সে আমি বুঝব'খন, আর দরদ দেখাতে হবে না। থতমত খেরে মত্মথ ভার কর্কশ গলাটা সাধামত নরম করে—এতবড় জামগার হঠাং একটা কিছ্ জুটে বেভে পারে।

শনে গলা ফাটিরে হাসতে সাধ হয়।
থেমন সে একদিন হাসত। আর কি বিপদ
হাসলে ওর চোখে জল আসে। আশেপাশের
থরের বরসী গিলারা এ হাসি বরদাসত করত
মা। বলত—মেনেমান্ব আবার অত হাস্নি
কেন? ঘরের লক্ষ্মী পালার এ হাসিতে।
হেই মা সক্ষ্মীঠাকর্ন, হাসি কেড়ে নিরেছ

कारी श्राप्त करने पृष्टि विकारन रूप हन कि सामाद्र श्राप्त सन्त्राह्य

কামী ব্যক্তে এডবড় জ্বারগার ওর
বরাং হরত জিরুবে কিন্তু কেম্পুন করে তাত
বলোন। থবে জতুবড় এই কল্ডাতা শহরে
আর্ক্রনার মৃত বরসংসার থেকে তারা বিগার
হল কেন সে কথা ত তাকে কেট বলোন।
অরের বুল বছরের বিয়ে করা পরিবারকে
আজ নিজের পথ নিজে দেখতে হবে এ
কেমন্বারা তার কামা। তাবনার চাপে
ভিডের মধ্যে হাতড়াতে হাতড়াতে সে
ঘডিটার নিচে এসে ঠেকল। আপিস হুণ্ট
হরেছে। একটার পর একটা লোকাল টেন
ছাডহে। টিকিট ঘরের সামনেই আগল্ডা
মেইন্স্বিব্রের ভিড়। এর মধ্যে অনায়াস
লাইনে দাড়িরে একটা টিকিট সেও কাটতে

কিন্দু কোথাকার টিকিট? মনে পড় ছ রাণাঘাট, পালাটোধ্রী পাড়া। দশ বছর মাগে সেখান খেকে তার মামা বিয়ে দিরে-ছিল। ভারপর মামা মরেছে। মামী বেন্চে আছে কিনা তাও সে জানে না। ওরা দয়া করে তার বিয়ে দিয়ে জন্মের মত বাপের বাড়ির সম্পর্ক চুকিয়ে দিয়েছে।

কাজেই ওথানকার টিকিটও কাটা চলে
না। আছো মন্মথও ত কোন ট্রেনে উঠে বসতে
পারে। তবে বাবে কোথার। চা-বাগানে,
করলাথনিতে শ্নেছে হাজার লোক খাটে।
শহরের কারখানার ছটিটে লোককে তারা
কাজ দেবে? দিলে বড় ভাল হয় যে মন্মথ
ভাকে ছেটি ফেলে দিলেও।

মন্দ্রথর নামে পাথরচাপা মনটা আবার টস্কালো, হা্শ করে কল টেলার মত জল উছ্লোল, আবার সে চোখ মোছে। এইটা মিশকালো পাজামাপরা মানুষ তার চোথের জল দেখে পারের কাছে সরে এসেছে।

কটমটিয়ে চেয়ে মাথার কাপড সে টানল। তারপর উত্তর্গিকে এগিয়ে এল যেখানে অনেক মান্য, অনেক ভিড দম আটকানো বাতাদের চাপ। আর যাদের মুখ চোখে পড়ে সেসব মুখেই বুঝি মধ্মথর ছাপ। ফাাকাসে মিয়োন মুখগুলো ঠিক রঙচটা প:ুত্লের মত। মন্মথর বউরের কাল্লা দেখে তারা থমকে দাঁডাবে না, কি বলবে? কিছ,ই বলবে না। দূরে দূরে কোত্হল না আর কিছ্ন। এমনতরো আকছার দেখছে শ্নছে। বলবে--বানানো গণ্পকথা, সরে পড় ভালয় ভালর। স্বামী পালিয়েছে? আহা কি ভাগ্যিমান প্রেষ, তার চেয়ে নিজের কাঁদ্রনি পেটে চেপে থাকাই ভাল, কিল্ড মান,ষ্টা বলৈছিল হয়ত ভাগ্যি ফিরে থাবে, একটা কি**ছ**্ স্রাহা হবে। স্রাহা মানেটা বটে কি? হাতবদল? এ পুরুষ থেকে ও প্রবের হাতে। মাথে ঝাড়া মার অমন ভাগোৰ। আশেপাশের পরেষগ্রনাও মন্মধরই গোরের। তাদের প্রতিপক্ষ খাড়া করে আফ্রোলে বউটা ফ'্সলতে থাকে। সব কিল মারবার পেরীসাই। ইচ্ছে করে ঝাড় ঝাড উচ্ছের ঝাড়কে ছেন্টে বিদায় করতে। উত্তেজনার ব্যক্টা ধড়ফড় কর্রাছল। হঠাং कारभ शक्रम मुहाबजन श्रामिण कात्र थरत

নিরে বাজে। সংগ্যা সংগ্যা তার ধ্বাস বাধ্য হবার জোগাড়। ওরা বাদ সক্ষাধকে ধরে নের, হরভ নাম দেবে প্রকটমার, কিংবা জনামাজিক মানুষ বলে তেনা কি তার বউটা শুখ্র পাটপাটে করে চেয়ে দেখবে। তার কি করবার কিছুই থাকবে না।

মাধার ওপর গাঁক গাঁক করে কথা
বিশ্বি হছে। অমাক পলাটকমা অমাক ট্রেন
অমাক প্রায় হাড়ছে, আসাহে, কথাসাগারে
বিজ্ঞার হাড়িছে বেন ফাটছে। একটা গামগাম
আওরাজে কানে তালা ধরে থাবার ছোগাড়।
কোলাপসিবল গেটের ওপিঠে গাড়ীটা এল
ফাসতে ফাসতে। কোথাকার গাড়ী কে
লানে? তবে পেট বটে একথানা। কোথার
ছিল এই বছাখনরা। এ জগাত এত মান্বত
থাকতে পারে বটে।

হ্মদো হ্মদো পা ফেলে কাঁধে বাঁথ বরে নেক জর ফত সন্তপণি এগিং থাছে জনাদশেক মান্ব। ঝ'ুকে পড়ে দেখল— ভাইত জলছানাই বটে। কি হবে মিডিমাডা গন্ডা গন্ডা বিরেবাড়িতে হারা হেলাফেলা।

বছর পাঁচেক আগে মন্মথ তার কারথানার হেডবাব্রে বাড়ীতে একটা বিরের
নেমন্তকে বউকে নিরে গিরেছিল, কি পেল্লমাইজের মিডিট, আহা মনে করেও সূখ।
সেদিন কেন আরও বেশি থারান ভেবে
আজকের থালি পেটটা তার গুলিত ওঠে।

মেজেতে ঢালাও মান্য শুরে বসে রয়েছে। তাদের মাঝখানে এক-একটি সংসার — হাঁড়ি-কুড়ি, ঘর গেরস্ত। বাড়িওরালা না-হা তাদের বাড়ি-খেকে দরে দ্র করে খেদিয়েছে, কিন্তু খালা-বাটি, বিছানা মাদ্র কি দোশটা কঠল? সে সব বেবাক তার নিজের সম্পত্তি।

মন্দ্রথাক বলেছিল—চলনাগো এসব বে'ধেছেদে না-ইয় রাচতাঘাটে ফটুলাগুই দ্যু-চার্রদিন কটোব। তোমার চেনা জানা ইয়ার বংধ্য দেখলে ত বয়েই গেল।

তারা ত' সব কিল মারবার গোঁসাই।

শ্নে ত বাব্র কি রাগা। দ্ম-দাম
ভাতের মেটো-হাঁডিটাকে লাখি মারল। ন্চার মুঠো ভাত বা ছিল মে'জতে ছডিয়ে
পড়ল। ভাত ত নর, অল্ল: ম্বরং মা

আনপ্শার গায়ে লাখি, তা কখনও সয় ?

—তমি নিব্বংশ হবে। বারবার সে
দিবিঃ দিয়েছে। শুনে মন্মথ ফ্কে-ফ্ক করে
বিড়ি টেনেছে। যেন বংশ বজায় থাকুক বা
না থাকুক তার কিছাই যায় আসে না।

গোটা বেলাটা দাজনে দা-মাখো হয়ে বলে থেকেছে পার্কের দক্ষিণ কোণার।

শেষ বিভিটা জাং করে টেনে স্বামী বালা—এ-জগতে কে কার, যে ব্যামন পারি চরে থাব। ভাত-কাপড়ের আলায় আয়াব গাঁরে এটি,লি পোকার মত আর লেগে থেক না,

আবে বউ ?

যতকণ থরে ছিল ততকণ তার তেজ ছিল। ঘর ছেডে পথ নেমে কোঁচো পানা হরে গোণাঃ। খেলা-পিত্তিতে ব্রুটা জনলে জনলে থাক হারুছে। দম দেওরা ক'লর পাতলের মত প্রামীর সংগা চোখ ধাঁধান ইন্টিশানে শুন্ধ এলে জুটেছে। কিন্তু স্নাহা কথাটাৰ অর্থ কী?
এখানে কি জন্টবে বল দিকি? মেন্তে-চোনৰ
হাতে পড়বে? গ্র-দ্ব সে কি খ্কী? এর
পাকা পাকা চোষ কান দেখে কে না জানবে
যে জি দশ বছরের সংসার করা ঝান্
গিমী! সাধা কি কে তাকে ফ্সলাবে?
প্রিলণ মানবে কেন তার কথা? ছাকিম
কেনই বা পাঠাবে কোন আশ্রয় শিবিরে।
মন্মথ যাই বল্ক সে জানে এ-পথ তার
বাধ।

মান্যজনের পাশ কাটিরে সৈ এক।

তৃতীয় গ্রেণীয় বিভাম-ঘরের দিকে, এবার
বাবে, আর ত চলতে পার ছ না। মনে
পড়ল গতকাল ভাতের হাড়ি ভাগার পর্কী
থেকে কুটোটি অবধি থারনি। মন্মথর প্রেকট
হাডড়ালে কি আর কিছু পাওরা বৈত না
হয়ত যেত। আসল কথা, মনের ঘোরা।

বেণ্ডের ওপর ছেলেকে শাইরেছিল বোটি ওকে দেখে তাকে কোলে তুলে নিরে জয়াগা করে দিল—

—বসনা ভাই। এই ত জায়গা রুহেছে। তখন বসল আরাম করে। ইচ্ছে হচ্ছিল পা-দুটো তাল বসে, কিন্তু সেটা বাড়া-বাড়ি ঠেকল।

—ভূমি কভদুর যাবে গো?

—যাব ফরাক্সার, বউটি হাসল। একটা, টোল খেল গালে। আসমানি রঙের রোলেক্স ডুরে শাড়ী, মাথার সি'দ্রে আর কপা.ল এই ধ্যাবড়া এক সি'দ্রের ফোটা?

—ফরাক্তা আবার কোন দেশ?

ওর অজ্ঞতায় বোটি মৃচ্**কি হাসল।**—আমিও জানতাম নাকি। **উনি বাঁধের** আপিসে কাজ করেন তাই ত**ুজানলাম।**

—কোলে ত' দেখছি কচি ছেলো। তা যাচছ কার সংগ? দিনকাল ভাল নয়, একা একা যাত্য ঠিক না।

বিজ্ঞের মত সে মন্তবা করল।

—না-গোসপো দেওর আছে। বাপের বাড় এসেছিলাম তা মাস সাতেক হরে। ছেলে ছ' মাসের হ'ল। বাব-বাছি করে বাপের বাড়ী হতে শ্বশ্র বাড়ি ছ্রে ঘরে ফেরা হ'ছে।

- খরের মান্যটিকে ছেড়ে এতদিন!
ও ফস করে বলে বসল। তারপর
রিসকতায় দ্জনেই হেসে উঠল; যেন
দ্জান দ্জনকে কতদিন চেনে। সমবয়সীর
মানর কথা জানাজানি হয়ে যাবে এই
মাহাতোঁ। বউটির হঠাৎ মান হয় তাই ত'
তারও ত কিছু জান। দরকার তাই বলে—

—তুমিও নিশ্চয়ই তাকৈ ছেড়ে যা**ছ**

—মোটেই না। যাছি দুজনে ননদের বাড়ি শ্যামনগরে। শৃধ্যু হাতে কট্মবাড়ি কি বাওয়া সাজে। তাই দশটা টাকার সন্দেশ আনতে গেছেন।

—তা বটে।

বউটি ছেলেকে চাপড়ে ঘ্ম পাড়ার।
সামনে দিরে নতুন বিয়ে হওরা বর-বৌ
বালেছ, লাল শাড়ী পরা গয়না মোড়া বউ
তার পারে আলতা, রুপোর মল। বরের
পোলন পোছন আড়েই পারে বৌ চলেছে।
বরের গারে সিংক্রের পাঞাবী, মাখাছ

জোলার টোপর আরে তাদের সপ্পে কুলিব মাথার নতুন টাঙ্ক, বিছানা থেকে একটা নতুন মিঠে গণ্য ওদের সামনে হাওয়ার স্ক্রেজালের মত মিশে রয়েছে।

তাইত রাগ করে কাপড়-জামা ফেলে এক হল্ডে চলে এল। বাজে তারও কিনের চেলিটা ছিল।

ংথাকার মা এই বউটি বলৈ—বরের বাপনে বরেদ হরেছে। মাথার হাঁ-হাঁ করছে টাক। বউটা বড় কচি।

—না অমন কি আর বরস? প্রুব-লানুষ ওদের চেহারাই অমনি কড়া।

এমন সময় বউটির দেওর এল হল্ডদত হয়ে। চোপা পাাণ্ট পরনে হেলেটির। এক মাথা রুখু চুল আর গাল বংং জুলফি।

এক ঘটি জল আর দু-থিজি পানদিয়ে কলে—বউদি খোকনকে নিয়ে এবার ওঠ। আমি কুলি ভাকি টেন এসে গেছে।

বউটি একটি পান ওর হাতে দেয়-

—ওদিকে এলে আমাদের কাছে এস কেমন? হেডবাব, মুখ্জোর নাম করলেই স্বাই চিনবে। একা-একা থাকি, সব কুলি-কামিন। জন্ম লোকের বসতি তেমন একটা হর্মন। কথা বলতে না পেরে প্রাণ আই-টাই করে।

পানটা মাথে দিয়ে ও ধেন নিংড়ে রস বার করে তার ছিবড়ে গিলে ফেল্ল। কত-কালের চেনা-জানা ধেন বউটি। তার হাতটা ধরে বলে—

--কান্ধ থালি আছে নাকি ভাই তোমাদের ঐ ফরাক্কায়।

পানের রাসে রাঙা ঠোঁট উলটে বৈটি বলে—কালের খবর কাজের লোক জানে। আছো ভাই জিল্লেস কবর খন। তবে কার কন্যে বলত?

বেটি থমকে ওর চোখে চোখ রাখল।

ওর গলা কাঁপল, চোখের প্লক নেমে আসল—আমার এক আত্মানির জনাবলছি। আজ ছমাস বেকার বসে আছে। দেখ না সেই পাট-কলে কাজ করত, মোটা হুতা ঘরে আনত। এককাঁড়ি লোক দুম করে ছটিই হয়ে গেল।

—বলব'খন ও'কে। কত লোক ত তাকৈ জিজোস করে। আচ্ছা চাল ভাই।

—ছেলে কোলে বান্ধ-পাটিয়া নিয়ে বউটি দেওবের পিছ পিছ চলে গেল।

সেও এগোল এই গমগমে শব্দের মধ্যে। এখন আর পারে বাধা নেই। পানটা থেয়ে প্রাণ বে'চেছে।

— আপনি কোন শ্ল্যাটফরে বাবেন দিদি?

--এই যাব আর কি...

—সংগ্যার লোককে ব্রিঝ **খ্**কজে পাছেনে না?

— एक वर्षाः ? वर्षेषे क्रेमिणिया हात्र।

—তবে ভুল করেছি। ছেলেমান, ব ছেলেটি ভিড়ের মধ্যে মিলে বাম।

ও হয়ত সতি। তাকে সাহাব্য করতে
এসেছিল। নিশ্চরই কোন পড়ুরা ছেলে
চবে। দিদি বলে ভাকল আরু সে দুম করে
মান্যটাকে অবিশ্বাস করে বসল। স্বাই
সম্পর্ক স্থিত করতে চায়। ছেটেকেটে
কেলতে চায় ক্লেনা?

বেশ ঠান্ডা ঠান্ডা মনে হচ্ছে। শীত করছে। থামের গা ঘে'ষে অটি হয়ে দাঁড়িহেছিল। ভারপর এগিয়ে এল কোলাগসিবল গেটের দিকে। কি ভেনে পিছোল। টিকিটবাব্রা সব নিজেদের মধ্যে কি বলাবলি করছে। হয়ত তাকে বেরিয়ে যেতে বলবে মাথার ওপর ছাতওয়ালা এই আশ্রমট্কু থেকে।

ইতিমধ্যে বিকেল গড়িয়ে সম্পো, সম্পো
গড়িয়ে রাত হুমেছে কত। লোকাল টেন,
সব একে একে ছেড়ে গেছে। ছিড়ের সেই
আড়ন্ট ভাবথানা ক্রমণ কেটে একট, ফিকে
গানা বোধ হছে। সবাই যাছে আসছে,
কেউ দাঁড়াছে না, শুধু পড়ে আছে সে
আর গাটিকয় বাদতুহারা পারবার। ওঃদংও
ধাব ৪ ক্লাফণ নেই হাতে তার মত ওাদবও
সংসার কাটি হারিয়ে গেছে।

কুষাশা আর ধেষায় রিজের ওদিকটা অপপত ঠেকছে। মান্যজন, বাস, গাড়ী চলছে আবার ব্রিয় চলছে না। সাদা-কালো আঁকা-ব্যুকা ওরা ঠিক বায়ক্ষোপের ছবির মত। এর মধ্যে মান্যথা নামে যে মান্যটার ব্কেব গোডায় শ্রের সে দশ বছর কাটিরেছে, সেও একটা ফ্টিক হয়ে মিলিয়ে গেল।

কি স্কুদর বাস মাগো, আন্তে আন্তে সে শ্বাস টানল। ফুলের দোকানটা কথ হয়ে যাছে। যোটামোটা গোড়ে মালা। গুছে গুছু টকটকে তাজা গোলাপ।

কম বন্ধসী আইব,ড়ো মেরেটি এই এত গোলাপ কিনল। সংগার ছেলেটি বলে—আমার হাতে দাও, কটা লাগবে।

—ইস, কটার ভয় করলে চলে বৃথি? এমনিতে বৃথি কম লাগছে।...

মেরেটির চোখে ঝকথকে খাসি। গারের ওপর তার চলের লম্বা বিন্নি। ছেলেটি একটি গোলাপ তার চুলে গ্লেদিল।

—এই এখানে অসভ্য কোথাকার।

ওদের কথা আর হাসিতে কেমন চাপা-বহসের বুন্নি। এমন ট্রুরের ট্রুরের কথার অর্থ কি হতে পারে সে ভাবতে লগল।

হবে হয়ত ওরা নিকটবংগ্র ময়ত ভালবাসাবাসির লোক। ঠিক বার্তেকাপে যেমন দেখা যায় তেমনটি।

মেরটি বলে—চলনা একট্ব কফি থেরে নিই। নেমশ্তরে থাওনার পর কফিটা হা জমবে...বলতে বলতে মেরেটি থমকে হার। চোথে পড়ে আধমরলা শাড়ী জড়ান শহর ও গাঁরের মেশামেশি এক বউ তাদের কথা গিলছে। ওদের স্বশ্নের জগংটা বৃথি খাদ-খাদ হরে তেতে পড়ে, ছেলেটির ফন্ট খ্রে তাকে ঠেলতে ঠেলতে নিমে বার হের্মেটি রেস্ট্রেলেটর পিকে। ওলের পেরমে শেহন ও এগিরে বার। তেতেরে বপর্যেপ চালর মোড়া টেবিল আর চেরার, জালের দরজা ফার হরে আবার জুড়ে গোল। তার মধ্যে মিলিরে গোল বৃথি একজোড়া সালা লক্ষা

বাতী আসছে রাশি রাশি। অঞ্চর
মান্য কাঁধে পিঠে রোচকা-ব্'চকি নিরেঠেলাঠেলি করছে। দেহাতী মেরে-প্রেম্
যাবে গণগাসাগরে, কণিল মুনির আশ্রম
দর্শনে। এদের মাঝে হারিয়ে গেলে কেউ
তাকে খা'জে পাবে না।

বোটা এটা-সেটা ভাষতে ভাষতে কোলাপণিসবল গেটের লোহায় মাথা দিয়ে মেক্টেতে বঙ্গে পড়ল। সেই মেটেটি কি এখনও ফলেগ্লা ব্বেকর কাছে চেপে ধরে গলগল করে কথা বলাগছ? বাপস্ এত কী কথা ঘেন খই ফ্টেছে।

আর দেখ দিকি ফরাক্সার সেই বউটির সংশা কথার পার আদ্ধ এই এতক্ষণ সে বোবাটি হতে রয়েছে। ফরাক্সার সেই বউটির মূখ চোখের সামনে ভেসে ওঠে। পান খাওয়া ট্রকট্রক রাঙা ঠোঁট, আর কপালে এই ধাবড়া সিশ্র ফোটা। সিশ্র গাঁড়রে নাকে পড়েছে। পড়বে না বাস্তবিকই শ্বামী সোহাগিনী বউটা। সে ওর চোখের চাউনিতে, মুখের ভৃশ্তিতে প্রকাশ পেরেছে।

কিন্তু ওয়া ঐ দেখ, ওর ৰূপালেও কালসিটে। কোথায় সেই সিদরে কোটা, সারা কপালে ভ্যাবভাবে করে চেয়ে রমেছে জমাট বাধা একটা রম্ভের ভেলা।

তারপর কী তেলিক দেখছে সেঁ এ-বউ ও আর কেউ নক, নিজের হ'ও নিজে চেনে না কী লম্পার কথা! জ্পের ঘটি আর তাবক শোড়া পানের খিলি এনে মধ্মথ বলছে—ওগো শ্নেছ, ও পক্ষাবোঁ। খোলাকৈ কোলে নিকে চটপট এস। ট্রেন এসে গেছে। ওদিক কুলিরা মাল তুলতে লেগেছে।

নতুন টাম্ক, নতুন সম্জা, শোকার দোলনা আর সব ছাপিরে বেল ফ্লের মুম করা প্রধান

হঠাৎ মাঘের কনকনে ছাওরায় খ্রের চটকটা ভেঙে বারা। দেখে নেহাতই মেজেতে সে ঘ্রিরে পড়েছিল। পাগে বলে ডাকছিল ডাকে দশ বছরের সংসার করা সেই চেনা মানুবটা।

কপালে হাত দিরে দেখল ফ্লোটা এখনও তেমনি ররেছে। সবই বলি তেমনি থাকবে, তবে এতক্ষণ সে কি করছিল?

—ওগো চল এবার ফেরা বাক। আরু
আর কিছু হবে না। না-ছোক ক্ষতি নেই।
গ্রামীর হাত ধরে আধ-ঘুমো পদ্ম-বৌ
ফৌশনের ঐ বিরাট চম্বরটা পেরিয়ের রাশক্ষম
নামল।

SIMI

গন্ধ-ভেদালী

গোণালী বা গণ্ধ-ভেদালী পাতা আনতে বলেছে মা। রোগা ভাইটা পথ্য পাবে আজ। গিভিমাছ, কাঁচকলা আর গোণালী পাতার ঝোল নাকি খ্ব উপকারী। শিরীন গাছটাকে ভাল করে চেনে না। মা বলেছে, 'কবরস্থানের জংগলে, আমাদের আনারস-বাড়িক কাছে দেখিস, লতানে গাছ, কালচে সব্জ একট্ লন্বাটে পাতা মল্চে' দেখলেই যেন এক দ্গুণিধ পাবি, যা আন গে।'

ক্রম্থানের নিজনি জংগল। শত শত সদীর্ঘ দেবণার গাছ আকাশ-ছাওয়া-সব্জ-পত্ত-সম্ভারে সমাজ্য। আম, জাম করোমচা, থিরিশ, বাঁশ কলাগাছের নিবিভ জড়াজড়। দেবদার, বনের নিচে কবর্রপথান। কবরের গর্ত বা জ্বোল পড়ে আছে চারদিকে। চারদিকে লতা-গ্রুম খাস-আগাছা। মাঝে মাঝে সর্ 'স'থির মতন পায়ে-চলা অম্পণ্ট পথ। আম কডোতে. নারকোল বা পাতা কুড়োতে আসে ছেলেমেয়ের। দক্ষিণ দিকে আমির আলী মণ্ডলের প্রুর, ফ**লের বাগান।** বড় বড় পেয়ারা পেকে আছে। গাছভরা পাতি**লে**ব্। আনারস পেকে আছে অনেকগুলি। ভালিম সবেদা, বেল, পে'পে, কলা পেকে আছে গাছে গাছে। কেউ একটাতেও হাত দেয় না। মোড়ল ভাষণ পাজি লোক। চুরি করার সময় ধরতে পারলে সাবাড় করে ফেলবে। মোড়লের জমিতে সদ্য রোয়া ধান বাড়ির মধ্যে দিয়ে একটা লোক খনা ক্ষেত্ত থেকে কাজ সেরে আসছিল একবার—তাকে ধরে এনে কাপেত দিয়ে একটা কান কেটে নিলে আমির আলী মোড়ল: অনেক টাকা ঢালা সত্ত্তে মোডলের তিন মাসের জেল হয়ে গেল! সেই সময় পাড়ার ছেলেরা যা একট্ব সূথ করে মোড়লের থাগানের নারকোল, কলা, আনারস, পেয়ারা, লেব,, কটাল ধরংশ কর'ত পেরেছিল। মোড়ল এখন চৌকি দিতে আন্সে—চুপচাপ বনের মধ্যে বসে থাকে। ধরতে পারলেই মুশকিল। ।

শিরীন দেখলে কবরের গার্ড থেকে দুটো শিয়াল ঋণুপ-ঋুপ করে ওদিকে বাঁশবনের মধ্যে চলে যাচ্ছে পিছন ফিরে মাঝে মাঝে তাকে দেখতে। শিয়ালগালো এই নিজনি সা্শীতল ছায়াখন জন্সালের মধ্যে আরামসে সারাদিন শুরে খামোর আর রাত নামলো খারে বৈড়ায় খাদোর সংখানে। মরে গোলে মানুষকে এখানে কবর দিয়ে গোলে ওরা কবর খাঁড়ে খেয়ে নের। তাই জমপেশ করে বাঁশ আর ক'টা দিয়ে কবর দিতে হর। আশ্চর্যা, যে কারো কারো কবর ওরা আবার আদে ছেবি না! দিনের বেলা পাড়া থেকে মারগাঁ নিবে পালিয়ে এসে এই নির্চানে বলে বলে খেয়েছে, কত সব শাদা কালো আর রাঙা রাঙা পালক পণ্ডে আছে।

শিরীনের ভয়ে গা ছমছম করছিল। পাটা ডেকে উঠল কটিল গাছের ওপরে। বিভালের মতন গোল গোল কটা চোখ, ঠেটিটা যেন নাক—চাাপুটা মুখ—মাথা নাচিয়ে শিরীনের দিকে ভেংচি থাটে! তারপর একবার ছৌ মেরে যায়। খিরিশ গাছের কোটরে বোধহয় ওদের বাচ্চা আছে। বাচ্চা পেড়ে নেবার ভয়ে ওরা ঐরবম চিংকার করে। একবার শিরীন দেখেছে, বিরাট একটা কেউটে সাপ গাছ বেরে জড়িরে উঠে নারকোল গাছের কোটরের



মধ্যে মুখ ঢুকিয়ে পাখির বাচ্চা খাচ্ছে আর এক ককি শালিক এসে চিৎকার জনুড়েছ। ছোঁ মেরে খোপর দিরে অস্থির করে তুলছে সাপটাকে। সাপটা মাঝে মাঝে মুখ বার করে ছোবল হানতে চেন্টা করছে।

মা বলেছে, 'থ্ব সাবধানে পা ফেলবি মা। চন্দ্রের বোড়া শরের থাকে ঘাস জভালের মধ্যে।'

শিরীন দেখলে তাদের আনারসগ্সো গাছ থেকে ভেঙে এনে কারা বাঁশতলাটার নিচে বলে ছারি দিয়ে ছাড়িয়ে আরাম করে থেয়ে গেছে।

কতকগুলো পাতার গাব পাইকল কে।
এটা তো বন-তুলসী, এই হল ভেট, কালকাস্থেদ, কালমেঘ, বিশল্যকরনী। গোদালী
গাছ তো লতা গাছ! গাছটা সে ঠিক চিন্তে
পারছে না। থালি হাতে গোলেই মা
গালাগালি করবে'খন। বলবে'খন, 'বে' দিলে
ছেলের মা হয়ে যেতিস, তোর জাড়ি মেরের
ছেলে হয়ে গেল, যোল বছরী হয়েও তুমি
এখনো খোলায় খুদ খাও, মালায় দুধ
খাও!...'

মোড়লের বেড়াটার থারে দাঁড়িয়ে সে
পাকা ফলগ্লো দেখছিল। কত পাকা লেব পড়ে আছে গাছতলার বিছিরে। হঠঃং দেখলে আমির মোড়ল—ডাঞ্চার মধ্যে রয়েছে! কলাবনের মধ্যে বসে বসে, হে'ট হরে পড়ে কি বেন করছিল! ভাকে দেখে এগিরে এল। শ্থোলে, 'কে লো ব্ল, শিরীন না? জঞালে কি মনে করে ভাই?'-মিন্টি করে কথা বললে মোড়ল।

শিরীন বললে, 'গোণালী পাতার জন্যে এসেছি যোড়লদা। খাঁলে পাছিল না আমি' গাছটা ঠিক মতন চিনি না।'

'গো'দালী গাছ?' গাঁধ-ভেদালী? এইতো আমার বাগানের মধ্যে কড হরে রয়েছে। ক'গাড়ি চাই তোর? আর লিরে বা।'

স্কল অভূতে অপরিবতিতি অপরিহার্য পানীয়

5

কেনবার সময় 'অলকানদ্দার' এই সূব বিভন্ন কেন্দ্রে আসবেন

व्यवकावका हि शाउँ म

পালক বাটি কলিকাতা-১
 গুলালবাজার বাটি কলিকাতা-১
 ও৬, ভিত্তকান এতিনিউ কলিকাতা-১২

। পাইকারী ও খ্রুচরা ক্রেডার্লের অলভেম ্ফিন্ডেড প্রতিখান ।। াঁক করে বাব? বেড়া-বে! তুমি-দাও! 'ঐ তো, ঐ ফাঁকটা গলে আর। আর চাট্টি ফল দিচ্ছি। পেরারা লিবি? ডালিম লিবি? পাকা আনারস দুটো লিয়ে বা।'

শিরীন একট্ দ্বিধা করলে, ইতস্তত করলে। মোড়লের চোথ-মুথের ভাষা পড়তে চেন্টা করলে। এই নির্জনতা। সোমত ডাগর মেয়েছেলে। যৌবন শিউরে উঠছে দেহে। ইম্কুলের মাস্টার দ্বাল দাদামশায় ঠাটো করে বলে, 'তোর খুব স্ফর বর হবে রে শিরি! তোর চোথ দ্টো ভাল। চেহারার গড়নটাও ভাল। আমাকে মনে ধুরে তো বল, ঘর-সংসার, মান-ঈ**ম্জং** স্ব ফেলে রেখে তোকে নিয়ে দেশাস্তরী হই!' শিক্ষীক বুলৈছে : মাজে কাই তোমার বাড়ো!' স্নামির আলী মোড়ল পচিওয়াত নামাজ পড়ে! কপালে দাগ হয়ে গেছে! রোগা ভাইয়ের জনো গে'দালী পাতার ঝোল চাই। ফলগ্লো দিলে সে খেতে পারে। ভারী টাইফয়েড গেল। ডাক্তার ফল থেতে দিতে বলেছিল।... পয়সার অভাবে গরিব বাপ তার আনতে পারেনি। বেড়া গলে ভৈতরে গেল শিরীন। মোড়ল হাসতে লাগল। দুটো ডালিম পেড়ে তার বুকের ডালিমের ওপরে হাত ছ'ইয়ে কাপড়ের মধ্যে রাখতে দিলে! চারটে বড় বড় পেয়ারা পেড়ে দিলে ছোট মতন গাছের ডালে উঠে। পেয়ারা দেবার পর্জাতী আনারস ভেঙে দৈলে। লেব্ল দিলে আঁট দশটা। আঁচল ভরে গেল! গন্ধ-ভেগালী পাতাটা দিলেই এবার চলে যাবে সেট কিছ্তু মোদল ভার চিবাক ধরে শ্ধোল, 'কি, খ্মী তো! ভারী স্কের : তেয়েমার: মুখটা তো!' বলেই সে ুতাকৈ ধৰে চুমো থেতে গেল!

শিরীন ভরে থেন একেবারে কেমন হয়ে গেল! 'মা'—বলে একবার চিৎকার করে উঠল। মোড়ল হাত ধরে টেনে নিয়ে গেল কলাবনটার ভেতরে।

'আহা, ছাড়ো না মোড়ল-দা, ছিছি, কেউ দেখতে পাবে যে! মাকে বলে দেব।'

'বলে দিলে আমি বলব আমার বাগানের ফল চুরি করেছে!'

'আমি চুরি করেছি? তুমি তো ডেকে
দিলে!' ফলগলো ছড়িয়ে পড়ে গেল আঁচল
থেকে। মোড়লের তাজা দীর্ঘ শরীরের রব্ত
তথন মর্ভূমির মতন গরম হরে গেছে।
দেন জোর করে শিরীনকে মাটিতে ফেলে
দিল। শিরীন চিংকার করতে গেলে তার
মুখ্টা চেপে ধরে রইল। শিরীন কাদতে
লাগল। হাতের চুড়ি ভেঙে হাত কেটে ছল
বার হতে লাগল। মোড়লের দাড়িগুলো
শিরীনের মুখে বুকে ফুটতে লাগল।
তব্ সে হঠাৎ জোরে এক লাখি মারলে
মোড়লের ব্রুকের ঠিক মাঝখানটাতে।
মোড়ল পড়ে গেল উলেট।

শিরীন উঠে পড়ে শাড়ি জড়াতে জড়াতে কেউটে সাপের মতন ফ'্সতে লাগল: হারামীর বাচা, তোর মা ব্ন নেই। তোর সোমত মেরে আছে না?' একটা আনারস কুড়িরে নিরে জোরে ছ'্রেড় মোড়লের মুখে মারলে সে। মোড়ল তীক্ষা চোখে এখন পরিন্থিতি ব্ৰুচ্চে চেণ্টা করলে। বললে, ডোর পারে ঘাঁর শিরীন, কাউকে বালস না। তোকে একণো টাকা দোব, শাড়ি দোব, পরনা দোব। ভোকে সাদি করব। ভোর দেহ এত সুক্ষর। এত নরম।...'

তুপ কর শরতান! আমি একনি পাড়ার সব লোককে বলছি। বিচার ডেকে তোর মাথার ঘোল ঢালব। পাঁচ থারে করে তোকে গাধার পিঠে চড়িয়ে সাত গেরাম ঘোরাব!'...

তথন কুম্ধ এবং হতাশ মোড়ল হঠাৎ ছুটে এসে আবার ধরুলে শিক্তীনকে আর চিংকার করে ছেলের নাম ধরে ডাকতে লাগল, 'আসগার আলী রে! — দৌড়ে আয় —চোর ধরেছি—

শিরীন দেখলে, উল্টো বিপদ!

মোড়লের ছেলেরা তার বাপের দরাজ গলার চিৎকার শুনতে পেরেছে। লাঠি নিয়ে তারা ছুটে আসছে।

শিরীন হাত মোচড়াতে থাকে। বলে, ছেড়ে দাও মোড়ল-দা, তোমার পারে ধরভি।

'আর ছাড়া যায় না! এখনো বলে দিছি
আমি তোমাকে নণ্ট করেছি এটা যদি বলো
তোমার জীবন 'বরবাদ' হয়ে যাবে!' কেউ
তোমাকে আর ঘার তুলবে না!'

মোড়লের ছেলেরা এসে পড়ল হই হই করে।

মোড়লের বড় ছেলে আসগার দেখলে ছারী মজা! শিরীনকে প্রেমে ফেলবার জনো সে কত কার্যাকান্ত্র করেছে, শেষে পাট্টা জলপি প্যশিত রেখেছে, তব্ মেরেটা পটেনা! ভারী দেমাক দেখাত টিউকলে জলের করে। যাবার সময় ঠোঁটে বঙ দিয়ে খোঁপায় ফ্ল গ'্জে! কিন্তু এখন? ডা হাত ধরলে আসগার। ফলগ্লো দেখিরে বললে, 'এসব কি!'

'তোর বাপ দিয়েছে!'

'মোর বাপ দিয়েছে ?' মোড়ল তখন চলে যাছে। আসগার চুম্ খাবার ভণ্গী করে বললে, 'সোনামণি!'

সবাই হেসে উঠল একসংগা।

ঠাস করে গালে চড় মারলে শিরীন। হাতে কামড়ে দিয়ে নিজেকে ছাড়িয়ে নিয়ে বেড়া গলে সে পালিয়ে গেল।

ছেলেরা তাড়া করলে, 'ধর শালীকে! ধর শালীকে! থানায় নিয়ে চল!'

চোটামেটি শুনে শিরীনের মা বাইরে বেরিরে এসেছিল। মেরের ছে'ড়াখে'ড়া কাপড়, কাঁকড়া চুল, রন্ধ-মাথা ছাত-মুখ দেখে আঁতকে উঠে বললে, 'কি হরেছে শিরীন!'

শিরীন মায়ের ব্বের ওপর ঝাঁপিরে পড়ে শুধ্ একবার 'মা' বলে উঠল! তারপর দীরব। সে অজ্ঞান হরে গেল!...

মোলাদের বাড়ির বত মেরেছে'ল লোকজন সুবাই জুটেল। মাথার জল-ঢালা হতে লাগল লিরীনের। মেরেদের আক্ষান্ত মোড়লপাড়ার স্বক্টা ছেড়াি শিরীনকে একা জঞ্চলের মধ্যে গৈরে ধর্যণ করেছে।

শিন্ধীনের মা আন্দলিমা বিবি হাত-পা ছড়িয়ে সূত্র করে কাদতে বসলাঃ 'হার আমার কপালা রে আল্লা, তোকে একলা কেন বনজকালো পাঠান মাগো, হার বাবা গোদালী পাতা, তোর মনে এই ছ্যালো! মোর মন্দমান্ত এখন ঘরে ফিরে মোকে কি বলবে! কাঁচা মেরেটার মাথা আমি খেন গো!...'

পুরুষরা লাঠিসোটা ছোরা বল্পম বার করতে লাগল। কেন্টু শেরানের মুখ থেকে আসল কথাটা শোনা দরকার। সে সমুস্থ ছোক। কাছের চটকল থেকে শিরীনের বাপ দুপুরে থেতে ফিরুক।

म्द्रभद्दत म्द्रं भाषात मरक्षा 'म्द्रभूटक-মাতম' শ্রে হয়ে গেল! প্রথমে মেয়েরা গাল পাড়তে লাগল মোলাপাড়া থেকে। তারপর বের্ল মোড়লপাড়ার মেয়েরা। দ্'পাড়ার দ্' দল মেয়ে কোমরে কাপড় জ।ড়য়ে যেন লড়াইয়ে নেমেছে। একবার সামনে আসছে আবার পিছিয়ে যাছে। পরে বের্ল প্র্যুষরা। লাঠি সভৃকি বল্লম হাতে। শিরীনের বাপ আনসার আলী মোলা বল্লম নিয়ে বার বার ছুটে যেতে গেলে তাকে শিরীনের মা কোমর জড়িয়ে ধ:র টেনে রাথতে লাগল। শেষে যথন মোড়ল আমির আলী তার দলের লোকদের পিছনে সরে যেতে বলে একাই খালি হাতে সাহস-ভরে এগিয়ে এসে বলতে লাগল, 'মাথা গরম করিস নি আনসার, তোর মেয়ে বাগানের ফল তুলেছিল কিনা হলপ করে বলতে বল—আর আমিও বলছি—তোর মেয়ের গায়ে কেউ হাত দেয়নৈ বাপ—! তোরা ক ঐ মেয়েছেলেটার কথা শত্নে আমাকে মার্রাব? একটা বিচার করবিনি? তখন আনসার হঠাৎ তার স্থাকৈ এক ঝটকায় ছিটকে ফেলে দিয়ে বলম নিয়ে ছুটে গিয়ে মোড়লের পেটে ব্রেক খ্যাচাখ্যাচ খর্চতে লাগল! মোড়ল চিংকার করতে লাগল! রভ! রভ! আসগারের ছেলেরা ছুটে আসছে দেখে মোলারাও খোলা তলোয়ার তুলে নিয়ে ছ্টেতে লাগল সামনের দিকে। হে'কে বললে, 'খামোস! এগুলেই বাপের সংগ্রে-সাধী হবে! একটার জায়গায় দশটা পড়বে!'

মোড়লের লাস পড়ে গেল!

আনসার চলে এল বাড়িতে। মোড়ল-পড়োর কামা-গোল পড়েছে। মোড়লকে মেরে ফেলেছে খনুনে ভরেই আবার অজ্ঞান হরে গেল শিরীন।

প্রতিশ এল সম্ব্যার পর।

আনসার আলীপুর কোটে হাজিরা দিজে চলে গেছে। বড়দারোগা রিপোট লিখতে লাগল। লাস্টা ঝংলার মধ্যে মুড়ে বাঁখা হল। ভ্যান গাড়িতে ভোলা হল।

विकारत ज्ञानमारतम् इ-मामः रक्षण इन ।

ধর্ব পের চাইতে মানুৰ খুন আনেক বড় অপরাধ—(ব্ৰুখ বাধিতে রাজা বা রাখা-প্রধান লক্ষ লক্ষ মানুৰ মারলে তার বিচার নেই) শিরীনের ওপর ব্যতিচারের প্রমানের জনো বেশি সাজা হল না।

ফল হল, শিরীনের আর বর জন্টল না। আনদার জেল থেকে ফিরে বাধ্য ছরেই মোড়ল আমির আলীর গোীরারগোবিল্দ মূর্থ ছেলে আসগারের সঞ্চো শিরীনের বিরে দিয়ে দিলে! আসগার মহা খুলী হরে ঢোল বাজাতে লাগল ঃ ছ'্ডি তোর 'মুখ দেখি তোর, 'মুখ' দেখি তোর, মুখ' দেখি তোর, কনের মারের 'ধড়' ধাম্সা! তুই কি 'ইরের' ঘাড় ডেঙেছিস!'... [ঢোলের ব্লি, ইলেকের জায়গার অণ্লীল শুজা] শিরীন তার বরের 'ছেরন' (ছিরি—ল্রী) দেখে না হেসে পারলে না!... এর নাম হল জীবন:!

-- जावगुजुः सम्बाद

মাথা ঠাণ্ডা রাখার কাজে "মহাভৃঙ্গরাজ" অদ্বিতীয়। ভিশিলে মহাভৃঙ্গরাজ

মাথার তেল বিশুদ্ধ আয়ুর্বেদমতে ক্যালকাটা কেমিক্যালের আধুনিক কারখানায় তৈরি। ভূমিশে মাথার তেলে আছে ভূঙ্গরাজ পাতার রস, তিল তেল এবং আরো ১২টি গাছগাছড়ার নির্যাস। এ-সমস্তই মাথা ঠাণ্ডা রাখে। চুল আরো সজীব করে।

> বিশুদ্ধ আয়ুর্বদ্মতে তৈরি **উম্পূর্ণ** সুগ্রিক মহাভুদ্ধরাজ মহাভুদ্ধরাজ মাধার তেল



C-15 869

त्रवीन्ध्रनाथ : विकटक त्र উख्टब

"মবীদ্রনাধ ঃ একটি নিতর্ক" পরি'র
আনুরাচনার প্রিলোকনাথ ভট্টাহার্য মূলত বা
প্রতিপাদন করতে চেরেছেন তা হল রবীদ্রনাথ সেকেলে কবি। ভার মূলারোধ ও
কবিক্লানার বৈশিক্ষ্য বর্তমানকালের সংশ্ নাম বিভিরেছেন। আমুনিক বসনের লগে
নাম বিভিরেছেন। আমুনিক বসনের লগে
নাম বিভিরেছেন। আমুনিক বসনের লগে
নাম বিভিরেছেন। আমুনিক বসনের ভর্তারা
ভিন্ন অপ্রালাক্ষ্য ও জালাক্ষ্যকর। বর্তমান র্লা পরিবেশে আম্বান এক কৈশ্যাকিক হিলোলের রবো বাল কর্মিল-ভার বেশাশ্য কবোনান থা কিছা ভারেছ আম্বান বৈশ্বনিক শিরোপার স্কুমহান করে থাকি; সেহেতু লোকনাথবাব্দ্ন আলোচনাটিও বৈশ্বনিক বলব না ক্রম?

8-11-6

আলোচনার আরক্তে প্রীভটাচার বলছেন যে রবীন্দ্রনাথের প্রতি আমাদের জনীতা সত্ত্ৰেও বৰ্তমানে আমল্লা আমানের সৈণ্টিমেণ্টাল দূৰ্বলভার জন্য অৰুপটে তা প্রকাশ করতে পারি না; অখচ ওদেশের शान्क अपन समाबादन दशरतांक्त कि अन क्षिनबर्टेटक "काटक कुरून बाबट्ड"। हि क्रञ এলিয়াই ক্ষাল বিলেডী কান্যবোশায় ভাকে **छेळेख्य चा जीवेक मा स्वयमक बनाटक शांत्र** এই টাটকা উনিশলো সম্ভরেও ইংয়েজী ক্ষবিহার চর্চার এলিবট একটি চলত ও ক্ষীবনত শক্তি। ক্লবে 'পোলেটিক টেল্ট'-এর মাহাত্মবলে হে কোনও কবিরই কাবাখ্যাতি হৈ জনে জনে ও ভালে কালে পরিবর্তমান त्न क्या अथम वहा कीर्ग अक क्रिटगाउ পরিগত হরেছে। যে উইস্টান হিন্তুগ স্বভেন

১৯৭० भारत जानबात्र लामा

্তে-কোন একটি কালের নাম লিখিয়া আপনার ভিত্তালানর একটি পোন্টকার্ড আনাবের কারে পরাম । জাগার্কী ব্যবহানে



আপদার শুরুবার বদভারিত নিবরব আমরা আপদারক পাঠারিব উরুবার পাইকেন বাবসারে পাঞ্জ লোকসান রাক্তরিক উর্বাচি ব্যক্তরী প্রকর্ম বিক্তরিক ক্রম্ম

Scient feet and office and office

अक्रिम स्थापिक जिल्ला क्योरिज कार्य গিয়ে তার নতুন কবিস্তায় এলিয়াই ভবিষ পরাক্তি লেখিয়েছিলেন, সেই प्राप्ताह जारात अलित्रहे-शतराती हेरातजी ক্বিভার নতুন স্বাদ ও স্বিমভির জন্মদাতা হিলেবে চিহ্নিত। ভাতে কি হয়েছে? ছাতেই কৈ স্বাহ্ম করে অভেনের এসিরট वानीशा वीषणी काविनीमता जनकः क्षेत्र 'মড়ান' ফিকশ্ন" প্রবেশে সম্তব্য করেছেন হে সাহিত্যে সাভূপার টেনডেনলৈ তির স্তল। এক ব্যক্তানিতত্ব কৰে একটি সাহিত্যধারার প্রভাব বিগত হলেও ভা সম্পূৰ্ণ বিস্থিতি হয় না। ভালাতিগ সজোৰ বুলে যে সাহিত্য সম্বধ তা প্ৰেৰাৰ উন্বোধিত হতে বাধ্য। এজন কি রিচার্ড'লন ---ফিলিডং-এর প্রভাব যে স্ব্র জংগ ডরোখি-রিচার্ড সন-ভালিনির। **छेन्दर**म् ওপরই দর্ভেছে এমন প্রবাপও দেওয়া বার। बाठे या मखरत्नत मनरकात कृतिया मखन कारनत सरक रव तक्षमणानारे अपानान ना रक्त রবীক্ষরাথের দীপিত তাতে মিরমাণ হয় না। সমালোচনার ধারাকে তিথা বিভালৰ করে-

निवरक्षात बल्काभाषात्र

ছিলেন মাধ্য আল'কড ঃ পালোনাল এন্টিমেট, হিন্টারকাল এন্টিমেট ও বিজেল এন্টিমেট। আনাক্তার রীতিকে অন্সর্ক করে বখন আমরা রবীশ্যকাবের বিজেল এন্টিমেটে প্রকৃত্ত হই তখন রবীশ্যনাথ সকল অনীয়া ও অবনোলোগের সীমানা হাড়িরে এক অক্তর ও অবার আলোকবিশযুভে অবন্ধান করেন প্রোক্তরেল প্রশানিকতে।

"শেষ লেখা"র "ভোমার স্থির পথ রেখেছ আক্রীপ করি" কবিতার খেব লাইন "শাশ্তির অক্স অধিকার"কে নিছে বিতক **স্থানেত্ৰন প্ৰৰশ্বসায়।** তিনি মলছেন ঃ "ৰক্ষ ৰবিকাৰ কৰাটা তো বন্ধ বাভাৱাতি নিশ্চন, তাছাড়া : সেটা পাছে কে এবং শাণিতটাৰই বা শ্বর্ণ কী?" তিনি त्रयोग्तमात्थव धरे भाग्ति चम् स्वरूक धक মনগড়া কল্পনা ও জীবৰ ও প্রকৃতি বিরোধী धक विश्वा मान्यनात्र्र निर्माण करत्रस्य। তিমি এও বলেছেন ঃ "এ পাশ্ভি একাশ্ড প্**লাডকের।"** রোমাণ্টক ক্ষিরা প্লাডক ন্দাভক প্ৰায়ের ছালুয়া এ সমস্যা নিয়ে মাখা দালাল। লোকনাখৰাব, তেমন এক বার্লী প্রতা ভূললেন ুক্লে আয়ার প্রতা লেখালেই। স্বীন্যকানোয় বিষ্ঠানে "লেক क्षाचा" क्षेत्राच्य मीविद्या चारक टमबाज 'পাল্ডির অক্স অধিকার' লাভের বাণীটি केकाबन बचीन्यनारमञ्ज भएक स्मानमे

প্রভাগিত, তেরনই সমরোরিত। অংশিকশার তার সমস্ত কবিজাবিদে সাংস্কর কর্মা, সংগ্রাক্তর করা, অবিহন্নে সংশ্ কালেন্ডের মুখোমুনি সংবর্থক কথা বলে এক্সেক্তর। ব্যাকার একটি কবিভার কবি বল্যাক্ত

> 'উ্থানের সাক্ষানে ন্তেন সম্ভাতীর সামে দিতে হবে পাছি।''

के कविकास करेंद्रे बारम आयात वनरहन ह

"মুভন উবার ব্যাপনায় খুলিডে বিকাশ কড আয়।"

इदीन्तरिन्छात्र व कायनापि न्यक्रके म्र তা হল শালিত, শ্বিতি ও সংস্থারের व्यक्तिकार बट्टे म्द्रार्थन अधिबादका मना দিয়ে, কঠিল লংপ্রামের অবলালে, রাত্তির তপদারে পরপারে। ভাই কোনো সমসাকে এভিয়ে গিয়ে অথবা পাশ ফাটিছে নয়, তার **अटला युष्य करत, जारक क्षत्र करत्**र इयोग्तमाथ भाष्टि ଓ म्यून्सम् बासूनम् कन्नमा करतम । "रनव रमधा" वयम जिर्ध्यक्रम তখন তিনি জীবনের লেনবেন প্রায় চুক্তির निरम्बद्धानः कर्द्धात्र क्षीयम् अस्त्रात्कत्र केस्प्रस्थ সভা ও স্কারকে করেছেল অধিকার এবং **এই जाविन्दारतम् यथा निराहे नास-नरसरम** পরম শাস্তি। স্থিয় পথ বিভিন্ন স্থানা-कारन आकीर्न, क्यीबरन भक्षा नेबन्दारनत कौप ठातिपरक विदारका बाहरदा रूप् जगरकत मिथा हम्मा क जमनास्मत कृदकरक অভিত্রম করে, আপন অন্তরেশ্যকে নিশ্বত জ্যোতিকের আলোকে আলোকৈত ্রুরে मान्य बचन असम मराज्ञा मुख्या हुनु তথনই লাভ করে প্যালিভয় অধিকার"। এ বাধী কৃষিত্র পঞ্জীয় উপ্রতিক नकाछ: अ क्यमहे मिहक सम्बद्धा व नीह-जाता चारभारवत क्या मत्। इनहे क्टब 'প্ৰীডাঞ্জি'র কালে মুব্ৰীন্দ্ৰমাথ 40 ब्रिटमम : "बाबाब दबमा क्रहे क्यांडि

वरण द्यंग बाहे या प्रत्यीय या प्राक्रीय कृतमा काम माहे।"

"গীতালাল'র ভরলারিত জাবেন 'শেষ লেখা'র পেশিতে হয়েতে আছও ্বন নিক্ত ও ব্যক্তিগালিত।

তবের লেনে প্রতিট্টার বৈ প্রকর্ম উপাপন করেচান তা বল বিশ্বনিটারের কীবনে আত্মবলিক বালীক্তির সংল্ নানবচ্চেমের ক্ষান্ত। তিরিক কবির আক্ষ্ বলক্তা বে অপ্রক্রিক বিশ্বনিটার জাক্ষাক্ষাক্ষ্য ক্ষিতিই ক্ষাক্ষ্য

নাখের মত কবি বিনি, ভার প বালীর गुरुत हमाकामहामा मद**्रम्यस्य करा**द्यम् সংখ্যত তাৰ জানবাহেছেও (বৈ মান্ত্ৰ আছে नामि মাটির কার্যকারি/ভারি **10**178 रभएक चाकि) न्यरकारमाविक व हार्बीमरक লাথ'ক কৰিকল্পনা কৰাচ প্রসায়িত। আংশিক ও বশ্ভিত নর, সে আপন জীবন-यहान्छ इक्न्यूलय महते, किन्छ न्यीत मखान छे:म त्याक क्रमणेहे यह भाषातिक ও वहः বলায়ত এক প্ৰাৰম্ভ সভায় উত্তীপ িঅভিনেত্ৰী ৷ 'ভবীন্দুনাৰ বিদেব <u>''ভামি'র</u> : **भक्ष्मी: बाविटाः विभिट्यः विभिन्नः व**र्था MEMBERGATION WEREEN LANDS

'পথে ও পথের প্রান্তে'র এক জারণায় কৰি সিজেই বলেছেন ঃ "আমার নিরস্তর ভিতরে ভিতরে একটি 575 र्थत्व त्राथरक इरम्रस्ट। स्न नाथमा **काक्त्रनं-प्राप्टरात्र जाधना, निरक्टकं** न्दन আমি রা**খবার সাধ্যা। আমাকে** रथर 🕶 त्राधना।.....याभिष নেবার বড়োটাকে আমার থেকে সরানোই জীকনের সবং থেকে বড় সাধনা, তাহলেই আমাদের ্থান্ডভের স্বচেরে বড় অপন্নানটাই সংগ্র ্তুর। অভিতৰের অপমান্টা হচ্ছে, ছোট খুচিয়ে থাকা, সেটা পদ্ম পাথিকেই শোভা शास्त्र।"...

বিবাহবন্ধনই (বিক্রমিন-বৈপরীভোর লেশান অব অপোজিটস্) সাবভোম কবি-ক্ষুনার শ্রেষ্ঠ অধিকার, সে অধিকার রবাল্যনাথের আছে, যার বলে তিনি "প্রিকীর" প্রতিমান দুই মেরুর দৈখিছে পান ("অল্লার্ডা ভূমি ভীৰণা/অল্-প্ৰা ভূমি স্ক্রী")। আত্মপ্রেমে রবীন্দ্র-নাথৈর যে সাধনার উদ্বোধন, মানরপ্রেমে তার উত্তরণ ও পর্ণতা। একে অপরের প্রতিম্বন্দরী নয়, তারা প্রকৃত অর্থে ম্পারের পরিপারক। সমগ্র ব্ৰবীন্দক বিন প্রা'লাচনা করলে যে সতাটি প্ৰক্ৰিক আত্মজিজ্ঞাসা ঠয় জাছল ক্রবির 200 প্রসারিত হয়েছে বিশ্ববিদ্যালার। alia-विश्वक विद्यास्य জীবনের সংগ্র क्रेमा-পোডেনের লীলা চলেছে কৰিব জীবনব্যাপী। **প্রসংগ**় পরিপ্রেকিত • পরিণতির ধারা থেকে বিশ্বত করে কোনো একটি ট্ৰান্ত বা পঙ্টি বা একটি প্ৰাণা কুবিতাকে আমরা সঠিক অনুধাকা করতে পরি ন। কবিকীবনের কোন क्ला क्लारि क्षांबक ह्हान मिरोहे विद्यार्थ। কবি টেনিন্ন তাৰ 'ইন মেমোরিয়াম'এ यत्तरहरू ब कार्याचा एककामा शाहरू সরোজ ব্যারেন সভ' নর তেমনি "ভোমার স্মির পথ আকীণ করি" কবিতা, তথা সময় "দেৰ দেখা" কাৰা স্বীস্থানাখের वावियांनरमय न्यूट्टे रनव देन्छादाव श्रीरे त्व त्कारमा श्रम श्राम, श्रमीन्य श्रमान्क कीयमदक्षां स्टब्स स्टब्स स्टब्स्सने । घटर जारिणिक त्य कथा जानवास 573 र्वेशन म कथारे य मकरनत करत VIII.

ইংরেজ-গাসিত ভারতকরে ও উনবিংশ শক্তপীর রেনেবাইবের ফলপ্রতিক্তে বে

वर्व निवाध श्यमण्डीम स्त्रथा मिरसीच्या, নাকি তার অতি সহক 'হাাঁ' ও লা' দিরেছিলেন এমন অভিযোগ শ্ৰীয়ন্ত ভটাচাৰ্য। ডিনি একথাও व. हाइ मियाक्त्र আবহাওয়ার লালিত রবীন্দ্রনাথের মানবপ্রেম ও আধাাদ্বভাব সহজ সমীকরণ লাভ করেছিল। শ্রীভটাচার্যে র এমন সিম্পাক্তে ক'জন সায় দিকেন জানি না।। কবির 'মুড্' ও কবির কাজের 'ইন্টে-লেকচুরাল মিলিয়া, কাব্যরচনার প্রাধান্য পেতে বাধা, তবে তাই সব নয়। মহং কবি न्थान ও সময়ের সীমাকে ছাড়িয়ে ওঠেন আপন ঐতিহাচারিতার গুলে ও **শ্ব**ীয় কালোতীণ প্রতিভার বৈশিষ্টে। রবীন্দ্র-সাহিত্য শুধুমার উনিশ্শতকীয় রেনেসাস বাহিত কতকগ_লি ভাবনায় অথবা সে য,গের কতকগ, লি সর্গ সিন্ধান্তের সহাবস্থিতিভে এমন atal. ধারণা পো**ষণ ক্রলে আমরা** व्याभारमञ সাহিতা**ক্রম্পিরই অবমাননা করব। রহা**ণ্দ্র-নাথ আমাদের সাহিত্যে বিরস ব্যতিভয় কারণ তিনি বখার্থ অংশ ঐতিহ্যান্সারী ও ইতিহাসবোধে উদ্দীপ্ত। ইভিহাসবেধ

a perception, not only of the pastness of the past, but of its preserb"....."The historical sense, which is a sense of the timeless as well as of the temporal and of the timeless and the temporal together, is what makes a writer

প্রসংগে টি এস এলিয়টের সংজ্ঞা

र्शांश्यानस्यानाः १

traditional.
"(Tradition and Individual Talent)".

কে বললে আধ্বনিক পাঠকের কাছে পরিতার এর আকর্ষণহীন ? য়বীন্দ্রনাথ উৎকোন্দক বিশেকারণা **कोरनवन्त्र**गात कतरमहे जधवा शामिकहात উৎপর্যাড়ত হলেই কবিতার আধ্রনিকতার অন প্রবেশ घोटना यात्र अभन शात्रणा ज्यारमी न्यान्याकन নর। বোদ্লেরার, ভালেরী, ছোল ভার-লিনের নেতি চিম্তার অথবা একসিস্টেন-সিয়াল আতির মধ্যেই আধুনিকতা বেচে থাকে না। এখন "অবক্ষয়ের করালগ্রাসে অতীতের সোল্ধাবোধ লুক্ত" এমন কথা कि निम्दियाम वना याम?

🐃 নিষ্ঠিক ক্ষতিয়ে মুপেছতেশ হয় বৈনা-িশক জীবনৰ কি প্ৰতিনিশ্বিত ভাই**্থ**কৃত আধ্যনিকতা এর। সমধালীসভার তাপে আৰ্বিকভার প্রভেদ সুস্তর। সম্পালীন সাহিত্য একটি কালের ভথাকে করে পরি-বেশন, আৰু বে সাছিতা কালায়ত উথাকে ভিত্তি করে জালাস্তরী সভয়ক দ্বপ্রকাশ তা চিয়ারত, এবং বেহেতু সে कार्ड আধ,নিক'ঙ নে ৰটে। বৰীন্দ্ৰকাষ্য সাহিত্যকারের আধ-নিক, কারণ সকল মাদিতকাতার উপরে হৈ আহ্নিকাৰোধ চিন্নবিয়ালয়ান. माथ ट्रारे चान्छिकाटवाटवत करतन करावान। ভার জীবন বিশেলবণ 'ভিটিকাল' कथरना 'निनिकान' नद्र। नामनिक विठाउँ রবীপ্রমাধ কৰিপ্রেণ্ঠ, তিনি কোনোকারেই **ামউজিয়াম**ি পিস্' হ্ৰ 和 [চরবভারা চিরকাল নিবারণ চক্তবত্তী । वर्यान्त्रमाथ ज्य जमहरू व्रवीन्त्रमाथ शक-

विश्वप्तिण वडवणत कत्रत्त कत्रशस्त्र देशक्ष्ट साद्धित शालत्यात्र ଓ मॉल्य क्षय द्वाध क्दत

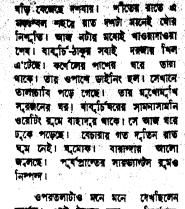
अफार्ट

ক্ষমণ টুবণেট বাড়িয় এবং গাঁতের গোনবোগ রোধ ক্যার অন্তেই বিশেষী প্রক্রিয়ায় তৈরী ক্ষা হয়েছে। প্রতিদিন রাজে ও প্রদিন স্কালে ক্ষমণে টুব-১ পেট দিয়ে গাঁড যাজনে যাড়ি সুস্থ হবে এবং ইডে সঙ্গ ও উজ্জল ধৰণৰে সাধা হবে।

माजिम न	हरणाची प पुण्यास्त्री	मन गर्	> शक्रमान	ह्यांचा (१	गमग	म पंच
"गामान विभागात	ভেটাল এভভা গাঠালে আপ্রি	रेगण गारा व्यद्दे परे	ा, (लाक वा) नारवंद्य	मंबर ३००	क) (बीर	life> and
साय -	1.00		i yaye ya	- 17	1	4.3
টিকাৰা 🥆				. 1.		
कांबा					A.7	



011-101-00N



ওপরতলাটাও মনে মনে দেখছিলেন কর্ণেল। একই নৈশব্দ আর হরত। স্বাতীর ঘরে দিবোসন্ আর স্বাতীর मा भूरतरहरू। मिरवान्म्, एतं चत्रहा व्याक শ্না। বিভাসও হয়ত ক্লান্ত হয়ে শ্রে পড়েছে। যা দুর্ভোগ না গেল বেচারার! অধ্যাপক-দম্পতি, বোসদম্পতি আরামে নিশ্চিতে ঘুমোনর আয়োজন করছে। আর চীনা? চীনা কী করছে? ওর ঘরে কল্পনার লাস পাওয়া গিয়েছিল। প্রত্যেকে ওকে নিষেধ করল ওঘরে শতে। সুরঞ্জন ওকে বোসদম্পতির পাশের থালি খরটা দিতে চেয়েছিল, চীনা জেদ ধরস। বেচারার একপ্রস্থ বিছানা গেছে! এসে নিয়ে গেছে। তাই আরেকপ্রস্থ বিছানা रकाशाष्ट्र करत मिए शरहर**् স**्तक्षनरक। কিন্ত কর্ণেলের উদ্বেগ যে ওঘরে বিছানাতেই চীনা শোবে কেমন করে? কী দঃসাহসী দ'্দে মেয়ে রে বাবা।.....



এ রাত আগের রাতের মতই ঠাণ্ডা, তেমনি অন্ধকার আর রহসামায়। কিল্কু কিছ্ তথাং ছিল। অন্তত পালেসহোটেলের পরিবর্ষের এই ঠাণ্ডা অন্ধকার রাতটাকে মনে হচ্ছিল ভারম্ভ অথচ ক্লান্ত, নির্দেবগ অথচ নিম্পান। আজ সবার চোখে ঘ্রের বড় আদ্রের ছেওিয়া। শোক-দৃংথ বিপর্যায়ের ঝড় শোর হলে তবেই এমন নৈশব্দ আর পবিদ্র শানিত নামে মান্ষের মনে। শুর্মনান্বের মনেই বা কেন তার দৃশেছদা পট্ডাম ওই নিস্গাও যেন শান্ত আর শৃন্ধ হ ব ওঠে। হয়ত একেই বলে টাজেভির দিবা মহিমা।...

কর্ণেল সরকার তাঁর ঘরে আরামকেদা-রায় কিমোক্ষিলেন। দুরে সদর গেটের ঘণ্টা-



धेरीम धकरे, विश्यिक इरमन कर्राम। **हीनाव क जन्नाकारिक एकएस्य कि एक**न ९६७ कारन बाह्य? जागायीकान अकारन नवारे भ ट्यार्टन ट्याप स्व-वास कालगातः DE बाद्य । श्रीलम जम्मांक मिस्स्ट । সাক্ষীদের নামে কোটোর সমন যাবে সংবোগমত। সে বাই হোক, এ অভিশত জারগার আর কারো একদণ্ড কাটানোর ইছে দেই। কলকাতা থেকে শ্ভর একমাত গারজেন—ভার দাদা এসেছিল - স্বাতীর মারের: সংখ্য। সে কিন্তু একবারও এদিকে व्यार्जान । <u>"श्रे</u>षानद्वाउँ थ्याक्ट विद्य*ाता* । হাতিস্বাই বড়-ছব পেরেছে ুএ পরেনো गर्*वदेशकः । ज्ञानसम्बद्धाः मह*्या महिला, भर्मा स्ट জমাটিতেই এমন ভাঙন ধরে গেল? হয়ত रहार्छन्छ। উঠে शारा। कान थरक कर्नाना ट्राफ्ट्रेंच रकमन करत मिन कार्गाद रम? কর্ণেল আশ্বাস দিয়ে কলেছেন, না, না। रम्भरत, ठिकहे काता ना काता अरुन शारत। আজকাল খুনজখম সবার গা-সওয়া। তাছাড়া স্বঞ্জন, আমি তো রইলাম!...ফের একটা **চণ্ডল হ**লেন কর্ণেল। কেন চীনারা এত জেদ ওমরে রাভ কাটাতে? দিনের দিকে বেচারা ঘরে ঢোকার সাফোগ পায়নি। প্রিশ পাহারা ছিল। বিশেষজ্ঞরা খুর্ণট-নাটি পরীক্ষা করেছেন বিকেল অব্দি। কারণ মর্গের রিপোর্টে বলা হয়েছে, কলপনার মৃত্যুর কারণ শ্বাসরোধ নয়— কোন ভোঁতা নিরেট জিনিস দিয়ে মাথার পিছনে আঘাত করা হরেছিল। অবশ্য শ_{ন্}ভরটা নিছক শ্বাসরোধ। কিল্তু আশ্চর্য, তার গলায় যে আঙ্কলের ছাপ পাওয়া গেছে, তা भौরেনের নয়। অন্য কারো। গ্রুতকে ফোন করেছিলেন কর্ণেল। গ্রুত বলেছেন, কল্পনার মৃত্যু ওঘরে হয়নি। অন্য কোথাও হরেছিল। তারপর চাদরে জড়ির ওকে ওখানে নিয়ে গেছে খ্নী। এবং प्रायणे घाएक ठाभारतात स्रात्म ठामश्रणे অধ্যাপকের ঘরে ফেলেছে। গ্রুতর ধারণা— যদিও এখনও প্রতাক্ষ প্রমাণ মেলেনি, খুন হয়েছে বাইরের ওই পোড়োবাগানে। আর 'রাইগর মর্নটিস' এবং অন্যান্য দিক খেকে ভারতারের ধারণা, খুনটা প্রায় সামানা আগে-পরে হয়েছে—বড়জোর একঘণ্টার ব্যবধানে। খনের সময় সকাল দশটা থেকে বার্টার মধ্যে রাখা থেতে পারে।... ছড়ির কথাটা আপাতত চেপে রেখেছেন কর্ণল। এটা व्यवना रवबारेनी। किन्छू व्यात এकरे, ज्ञान-'বার বাঞ্জি আছে। তাহলেই ঘড়িটা गर्निमारक 'रंभगोरक 'रंगरक ।...काम छाठे দাঁড়ালেন। একবার চীনার ছরে যাওয়া कर्त्यती अंदन रहाइ। की कर्त्राइ रूप र्याप কোন মতলব ছিল, লুকোল কেন তার कारह ?

কপেলি সাবধানে দরজা খুলে বেরো-লেন। বারান্দার নিজনিতা থমথম করছে। জ,তোর রবারসোল কোন শব্দ হতে দিছিল না। সিণ্ডি বেরে উঠে বাবার সংগ্যে সংগ্য তার মনে হল, তিনি চীনা মিত্র ও বিভাসের ঘরের সংগমে অধাং বিভূকি দরজার কপাট-मृद्रको माना बन्ध ছराज रमध्यकान ।

त्रान्यम्याःम जीशस्य कार्णमः দরজার কাম পাতলেন। নীচের ঘ্রদত সহ मिपिष्ठ देवता एक रूपन स्मरण वार्ट्य । पत्रकाय বিলভ খোলা। কে গেল পোডো বাগানে এত রাত্রে? কী উদ্দেশ্য তার?

পরক্ষণেই ডার্নাদকে চীনা মিত্রের দরজাটা थ्रात राम। हीना ভाढा गमाय यमाह, गा. নানা— ভূমি যাও, ভূমি হাও...এবং বিভাস প্রায় ধাক্কা খেয়ে বেরিয়ে এল এবং সশব্দে কপাট ক্ষা হল। কর্নেল সকৌতকে बरम উঠमেন, शास्त्रा, मारे वरा। भूफनारें।

বিভাস অপ্রস্তুত হয়ে পড়েছিল। কোন ' রকমে পাড়নাইট বলে সে উদ্ভাতের নত নিজের ঘরের দরজা ঠেলে ঢাকে পড়ল।

কর্ণেন্স একটা ইতম্ভত করে চীনার দরজায় টোকা দিলেন। একবার, দ্বার, বারবার। মূথে চাপা হাঙ্গি। কর্মেল ধৈরের পরীক্ষায় অবতীর্ণ বেন। ক্রমাগত টেলি-গ্রামের শব্দ তুলছিলেন। অবশেষে দড়াম করে দরজা খুলে গেল। এবং পর্দার ভিতরই চীনার কণ্ঠশ্বর বাজল, আঃ কেন বারবার বিরক্ত করছ? এত জ্বালিয়েও তোমার আশা মেটেনি? ফের এসেছ এখানে...

পদা ভূলে কর্ণেল বলেন, দুপ্তমুলাইট মাই গালাঁ!

চীনা ভূত দেখল। করেক ম,হ,ত তার মুখটা জনলে রইল। তারপরই আচমকা দৌড়ে গিয়ে বিছানায় **ঝ**ুকে পড়ল। ভার পিঠ ফুলে ফুলে উঠছিল। নিঃশ্ৰেদ কাদ-ছিল চীনা মিত।

কর্ণেল দরজ্ঞাটা কথ করে আন্তে আন্তে তার কাছে গেলেন। পাশে বসে পিঠে হাত রেখে বললেন, চীনা শোন! আল্ট এ মিনিট মাই গাল'!...ও ইয়েস, ইরেস। আই ফিল ফর ইউ। বাট চীন:... একটা ব্যাপার ছরেছে শোন। ডেরি স্টেম।

हीना मृथ कुनन ।...की है

কর্ণেল বললেন, এইমাত্র কেউ খিড়াকর मि'फि मिरत नामन।

कथाणे रंगानामात हमरक डेर्रंग हीना। ...जाहे नाकि? ...जाहरन मीरक কামড়াল সে।

তাহলে কী?

চীনা উঠে দাঁড়াল। চোখ মাছে নিরে विक्रा, अहम अवर्षे, जाकरवन ?

শিকাসকে ?

কেন?

ও আমার একটা কথা বলছিল এইমার। কান দিইনি তথন। ... চীনা স**লজ্ঞ হা**সবার চেট্টা করল। ওর কতকগ্রেলা পিকিউ-লিয়ার অভ্যেস আছে। একসময় আমি রাগ করলে ওইরকম অম্ভূত অম্ভূত গ্রন্থ শোনাত। আমায় বন্ধ ছেলেমানুৰ ভাবে कि ना!

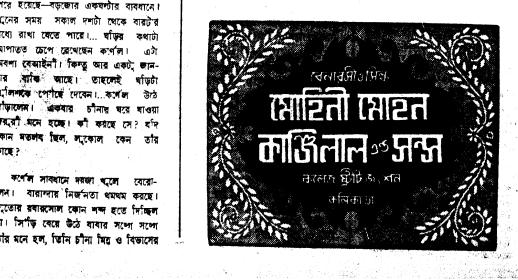
তুমি সৃতি। বন্ধ ছেলেমান্ত।

চীনা এবার সতিয় হেসে ফেলল। হয়ত তাই। ও সূরে ধরে শৃভর কবিতাটা আবৃত্তি কর্মছল। তারপর বর্লাছল, চ**লো ওই** জানালার কাছে দাঁড়াই। এক অপূর্ব রহস্য দেখাব। সব রহস্যের অবসান হবে।

म्प्रिशः वरम कर्णम इन्छमन्छ छिरमन।

আধঘণ্টা পরে:

পোড়ো বাগানের ভিতর খবে সম্ভূপুণে অপেকা বর্গছলেন কর্পেল নীলাদ্র সরকার বিভাস সিংহ আর স্বয়ঞ্জন বসাক। ভাঙ্গা



বিলাভদের পাঁচিলের এ পালে ও'রা দাঁড়িরে
ক্রান্তনা ুকুকপক্ষের ভাঙা চাঁদটা উঠতে
ক্রেটা আছে। ডোবাটা নাছপালার ভিতর
ক্রান্তনার অন্দা। তব্ অন্ধনারের একটা
বিভিন্ন প্রক্রা আছে। জল থিতিয়ে পড়ার
প্রক্রান্তনার মত্তা মসজিদের চম্বরটা
ক্রান্তনার করছে। ওখানে বে একজন মান্বই
বলে রয়েছে, তাতে কোন ভূল নেই।

আলেপালে কোথাও সত্যজিৎ গ্ৰুণ্ডরা
রক্তেছন। হোটেল এবং জ্বপালে বাগানের
প্রান্ধ সারা বাউন্ডারি ঘিরে প্রিলল তৈরী।
ক্ষেত্রল প্রিলিডর প্রান্ধিটি রাড বা
ক্ষেত্রনিজামতের সমালতরাল, সেখানে কোন
প্রিলল নেই। বেখানে-বেখানে আছে,
তারাও গাছপালার আড়ালে ঝোপেঝাড় ওং পেতে সত্র্কা। ভীষণ হিম। বি-কৃত্ উত্তেজনার স্বাই বেন উক্তা অন্যুধ্ব
করছে।

জ্বাট তারিখের মধারাতে ভোবার ধারে
বা ঘটবার কথা ছিল, তা আজ দশ তারিখে
ঘটছে। বিভাস টের পেরেছিল। সেই
ট্করো কাগজটা এখন কর্ণেলের প্রেট।
ইংরেলী হরফে লেখা: ডোণ্ট ফেল ট্ডে এগট
টেন-থারটি পি-এম। বিসাইড দ্যাট মস্ক—
সেইম শ্লেস। কাগজটা লনের ওদিকে
জড়ানো পড়েছিল। একটা ঘরের জানালা
দিরে না পড়তে দেখলে বিভাসের কৌত্হল
হত না।

প্রথম আলোর সংক্তে দেবেন কর্ণেল। রুখ্যুন্যস প্রতীক্ষা। সেকেণ্ড গোনার পালা শুধ্য। এক...দুই...তিন...চার..পাঁচ ... সারা পূথিবী ঘোরতর প্রতীক্ষার স্তথ্য।

হঠাৎ পিছনে একপাল শেয়াল ডেকে উঠল। করেকটা পোচা কাছে ও দ্বে ভাকল। যেন করেক মিনিট ধরে স্তথ্ধ নিঃক্ম হিমরাতির বনভূমি তোলপাড় হল। মবাই অন্যমনস্ক হয়ে পড়েছিল। হঠাং

विता अखाश्राह्य राज्य श्वात्व आवास शावाव जता राज्याव कक्व !

DOMINA

कर्तक लका कर्तरकार ग्रांड वक्षी नह, मृद्धी। हाशान्यदत्र कथा वनास् ।

সংক্যা সক্ষো টার্চ জ্বালালেন ক্রেনি ।
দুটো মুর্তি চিকান্ত স্থির। তারপরই
চারদিক থেকে অজস্র টার্চের আলো। গদভীর
গল্পনা: খবরদার! যে-বেখানে আছেন,
দাঁড়িরে থাকুন। নড়বার চেন্টা করনেই
আমরা গ্রিল ছু'ড়ব।

একটা সাট্টকেসপ্রমাণ প্রাকেট হাতে
নিরে দাঁপেল বোস নিশ্চল পাবাণ। পাশের
লোকটি বয়সে প্রোচ। পরনে ধাতি, গায়ে
চাদরকড়ানো আন্টেপিন্টে। মিঃ গাশুত লাফ
দিরে চম্বরে উঠতেই সে হাউমাউ করে পারে
ক্রডিরে ধরল। আমার কোন দোষ নাই
স্যার। মলয়বাব্ আমাকে এই প্যাকেটটা
পোঁছে দিতে বলেছিলেন। প্রিচটা টাকা
মজারী স্যার...বাবা গো! ব্টের লাথি
খেরে সে চুপ করল।

উত্তরপ্রাণ্ড ঘ্রে সবাই এল প্যালেস-ছোটেলে।

ডাইনিং হলের দরজা থোলা হল। বাব্চি-ঠাকুররা সবাইকে জাগাতে হল। হিটার জেনলে চা-কফির আয়োজন। উত্তে-জনা এসে বেচারাদের বিরক্তি দুর করেছে।

ওপরে সবার ঘ্র ভেঙেছে বি। হৃক্ণের মধ্যে। প্রতিটি ঘরের দরজা গৈছে খুলে। সবগালো আলো জনলছে প্যালেসহোটেলে। সামনাসামনি গণ্গার ওপারে যে গ্রাম— সেখানে গ্রামবাসীরা জেগে থাকলে তাদের চোখে বড় বিচিত্ত দৃশ্য ভাসত।

প্রথমে দৌড়ে এল ইরা বোস। স্বামীর দিকে দৌড়ে যেতেই একজন সেপাই বাধা দিল। সে ফুর্ণিয়ে কাদতে থাকল। থামে হেলান দিল। চীনা তাকে ধরে একটা চেয়ারে বাসিরে দিল। এসেছে দিবোদন্ব, স্বাতী, স্বাতীর মা এবং অধ্যাপকদম্পতিও। দেবতোবের মাওটা অস্বাভাবিক গম্ভীর। সাদেকা হাঁ করে তাকিরে আছেন দীপেন বোসের দিকে। তার দ্পাশে মিঃ গাশ্ত আর ভদ্ব। পিছনে আরও করেকজন অফি-লান সামানা দাকে ক্সেছেন কর্পাল আর বিভাস। স্বরন্ধন কিচেনে বাস্ততা তুলেছে।

দীপেনের টেবিলে সেই প্যাকেটটা খোলা হরেছে। অবিশ্বাস্য! একরাশ সোলার বটি। বিদেশী ছাপ মারা। স্মাগলড্ গোল্ড। প্রাসীমান্ত থেকে প্যাকেটটা বরে এনে-ছিল দীপশ্রী স্টোর্সের মালিক। বরাবর এই কারবার চলে আসছে। সোনার বদলে এখান খেকে খায় ঘড়ির পার্টস কেমিক্যাল দ্রব্যাদি, নারকোটিকস—কত ক্ষী!

স্তাজিং গাণত একট্ কেসে বললেন, কেসের এই দিকটা আমি অবশ্য ভাবিনি— বদিও মনে হয়েছিল, ভোবা ইজ দি ওনান ভাইটাল পরেন্ট! বেচারা নীরেনের জনো আমার দুঃখ হচ্ছে। কিন্তু অকথা বা প্রমাণের কাছে আমি তো অসহার। কী করতে পারি! কেসের মন্তুল অপারেণ্ড আমার এখন প্রো নতুন করে সাজাতে হছে। বেসক পরেন্ট পরিক্টার হছিল না, এবন তা পরিক্টার। আর কোন অম্বিধেনেই। গোড়া থেকেই একটা ব্যাপার আমার ভারাছিল। নীরেন একজন স্পিন্দির্ভ বৃদ্ধান ছেলে। কিন্তু অত বোকার মত কাজ করল কেন? সে প্রেন্টটা এখন ক্রিয়ার। অধারমহলে একজন চতুর্থ ব্যক্তি বারু বিক থেকে বাছনীর। সেই হছে খ্নী।

কর্ণেল একটা হেসে বললেন, কে সেই চতুর্থ ব্যক্তি, আশা করি এতক্ষণে পরিস্কার হরেছে।

সারটেনলি। মিঃ গ্রুণ্ড টেবিলে থাপপছ
মারশেন।...গোড়া থেকে ব্যাপারটা সালানো
যাক। একদল ছেলেমেয়ে এথানে বেড়াতে
এল। হোটেলে উঠল। সেই হোটেলে কিছু
অন্তৃত চুরি ঘটতে থাকল—যা ভোতিক
উপদ্রব মনে হতে পারে। বিশেষ করে শেষ
অবদি চুলকাটার ঘটনা। এর অর্থা ছিল একটাই। বোডারিদের ভর দেখানো অর্থাৎ
যেন হোটেল ছেড়ে পালিয়ে যায়। লক্ষা
কর্ন, দীপেন এসেছে সাত তারিথ সম্ধায়।

ইরা ফোঁস করে উঠল। আমরা আসবার আনেক আগে কল্পনার টুপরাস হারিয়ে-ছিল। আমরা আসার পর ম্যানেজার বলল, একট্ সাবধানে রাথবেন জিনিসপত্র। ম্যানেজার, ম্যানেজারবাব্! ইরা সাক্ষী মানতে স্রঞ্জনকে ডাক্ছিল।

মিঃ গণুশ্ত মাচকি হেসে বললেন ওয়েট ওয়েট। টা্থ বাস্টা ছোট জিনিস। ইপার বেড়ালে নিয়ে যেতে পারে।

চীনা কী বলতে ঠোট ফাঁক করল, কিশ্চু কংগলৈর চেগখের দিকে ভাকিরে নির্মত হল।

গ্ৰুত বললেন, যাই ছোক। ধরে নিচ্ছি ওই ট্রুণন্তাস হারানোর খবরই দীপেন বোসের মাথায় একটা আইডিয়া এনে দিল। ইজ ইট ইল্লাঞ্জিকাল কর্ণেল?

কর্ণেল মাথা দোলালেন।

সে কাজ সুরু করল সংশ্য সংশা। তার
দ্বীও যে স্বামীকে সাহার্য করেনি, এট
অসন্তব। চুল কাটার ঘটনা লক্ষ্য কর্ন
অনোর চুল কাটার রিস্ক আছে—যদিং
অনোর অলক্ষ্য জিনিসপা চুরি করা সহশ
তার আগে আট তারিখের স্কাল থেনে
রাটি অবদি ঘটনাগুলো বিচার করা যাক
মোতি-বিলের মসজিদের দেরালে লেখ
কবিতাটা আশা করি আপনাদের মনে
আছে। আমাদের একস্পার্ট প্রমাণ করে
হেন, ও হসতাক্ষর শুভেরই।

ইরা হৃড়মুড় করে বলে কেলল, শৃত্ আমার সপো গিরে আমার সামনেই ওট লিখেছিল। বলেছিল, কাকেও বলবেন না। বেশ জীমরে ভুলব এখার। মিঃ গণ্ডে বললেন, আর আপনি আপনার স্বাধীর কানে কথাটা কুলে দিলেন।
বাস, অমান লৈ লডকা হল। ভাহলে ভি
ওরা আহার স্বাদ্যান টের সেনে হোছে?
এমন কি ওই ভারিশ রাহিবেলা সীপেদ
বোস কাপলে ভোবার কাছে কোথাও
শভ আর কাপনার সামনে পড়ে বার। ফলে
ভাবে বারা হরে কিরতে হরেছিল।

ইরা মাধা-পিল।...আমি কিছু বলিন। খোলাকবরখানার খেটে পড়িলে পুঞ নিজেই সব বলছিল। জিগোস কর্ন না চনাদিকে।

এনিওয়ে! গ্ৰুণ্ড হাত ভুললেন।...সে সতক' হয়েছিল। কিন্তু কথামত ভোবার যাবার সমন্ধ্রাধা পেয়ে ক্ষেপে গোল দ্জনের ওপর। ওরা যখন জেনেছে, আরও রটে গেলে সর্বনাশ হবে। কাজেই দুটিকেই সাবাড় করতে হবে। সে সুযোগ **খ**ুজতে থাকল। মন্ন তারিখ সকালে দিব্যেদ্য-স্বাতী-কল্পনার ঝগড়াঝাটির খবর হোটে-স্বাই জেনেছিল। কলগনা-শুভর রাদ্রে উধাও ছওয়া নিয়ে কানাকানি ठळळळळ । आधात शात्रणा, भौत्रिम एव कम्भमात ব্যাপারে বেশি তৎপর সে জেনে থাকবে। ন তারিথ ভোরে নীরেনকে থামের আড়ালে দীড়াতে দেখেছিল সে। তখন সুইমিং भ्रात्वत् उथातः कन्भना-भाष्ठः दिखाण्डिन । তারপর সে সুযোগ খুজতে থাকল। নীরেন-শৃভ-বিভাস বেরিয়ে যেতেই সে হয়ত থিড়কির দরজা দিরে নেমেছিল নীচে।

দীপেন গঞ্জগজ করল। কোন প্রমাণ নেই।

কান করলেন না মিঃ গা্শ্ত।...ৰাগানে

ুকেই লাকিলি সে পেয়ে যায় কল্পনাক।
অভাবিত স্যোগ। প্রশ্ন উঠবে, কল্পনা
ওখানে কী করছিল?...কল্পনা যে ওপথে
নীচে নেমেছিল, তার প্রমাণ আমরা পেয়েছি
কর্পেলের কাছে—বর শশ্ভুর কাছে। তাঁরা
ওকে দেখেছিলেন। কিন্তু কল্পনার
উদ্দেশ্যটা আপাতত জানা বাজে না।

কর্ণেল পরেউ থেকে আচমকা একটা লেভিজ হাতর্ঘাড় বের করে টেবিলে এগিরে দিলেন। ...কণ্ণনা সম্ভবত এই র্ঘাড়টা খ্রাক্তে গিরোছিল। র্ঘাড়টা রাত্রে পৌড়নর সমর আছাড় খেরে হাত থেকে খ্রে গিরে থাকবে। টাইম ইনডিকেশন ইজ জাস্ট টেন থারটিফাইভ। প্রথমে আমি ভেবে-ছিলাম, এটা সকাল দশটা পার্মিশ— কল্পনার খ্রা হ্বার সমর। কিন্তু তা নর, সেটা পরে ব্যুক্তাম।

বাঘের মত থাবা বাড়িরে ঘড়িটা নিলেন মিঃ গাুপত। উত্তেজিত কন্ঠে বললেন, এ ঘড়ি আপনি কোধায় পেলেন?

আৰু সকালে এই ঘরে। দীপেনবাব্র পারের কা**ছে পভোছল।**

আই সী! বলে মিঃ গণ্ড দীপেদের মুখটা একবার দেখে নিলেন। ্দীপেন প্রতিবাদ করল, ও ঘড়ি আমি দৌশীন।

মিঃ গা্পত বললেন,...তাহলে বোকা
বাজে, বাহেবর সামনে শিকার নিজে থেকেই
এনে গিরেছিল। কলপনাকে খান করে সে
কোনে কোষাও বাহিবর রাখে। তারপর
চলে বার শা্ভাবের উল্লেখ্য। আঁথারমহলে
গিরে ক্রিভাবে শা্ভাবে খান করল স্বার
অলক্যে—এটাই আপাতত ধাধা।

কংশে বলকেন, সেও বাঁধা নর।
আরমানি গাঁজার গাইড আমার আজ বলেছে, কে একজন সেই সমার ওখানে গিরেছিল। তাকে পাঁচটাকা বর্থাপন দিরে তার ওখানে খাকার কথা কাকেও বলতে নিবেধ করেছিল। তারপর...

মিঃ গানুশত ঠোঁটে আগগাল রেখে বল-লেন, শ্লীজ কর্ণেল। পরে শানেব।

কর্ণেল হেলে উঠলেন।....লোকটার চোখে ভিউ ফাইন্ডার ছিল।

দীপেন বোস বলল, আমার কোন ভিউ ফাইন্ডার নেই।

দেবতোৰও সশব্যাদেত বলে উঠলেন, আমারও নেই কিম্ছ।

দিবোলা একটা কেনে বলল, আমার একটা ছিল। সেটা আজ সকাল থেকে খাজে পাছি না। সকালে জেরার সমর মিঃ গাুশ্তকে সেকথা বলেছি।

ইয়েস। মিঃ গ্ৰুত সায় দিলেন।

কর্ণেল বললেন, শুড্রে খুন করার সময় ধন্স্থান্স্তিতে সেটা ভেলো বার। প্রায় স্বগ্লো ট্রুক্রো খুনী কৃড়িদে বাইরে কোথাও ফেলেছিল। শুধু ফাটলে কিছু রয়ে বার। এই দেখন।

পকেট থেকে মোড়ক বের করতেই গতে সেটা হাতিরে নিলেন। তারপর বল-लन, धूनी भौराय रवाम हरन धन काम সেরে। এখন দোষ চাপাতে হবে কায়ো কাঁধে। সে এমন লোক খড়েল, যার স্পন্ট মোটিভ রয়েছে। এমন লোক রয়েছে মাত্র দুজন। নীরেন পালিত আর দিবোদন্ চৌধ্রী। দিবোদদ্য বলিণ্ঠ, খেলোয়াড় ছেলে। কিন্তু তার এ্যালিবাই প্রতাক্ষ-সে প্রায় সারাক্ষণ স্বাতীর কাছে। রয়েছে। এদিকে **নীরেনের ব্যাক**গ্রাউন্ডও তার জানা – আমরাও মেটা আজ জেনেছি—সে থুনে মাস্তানটাইপ যুহক। সবচেয়ে মস্ত পয়েন্ট, সে শভের সংগ্য বেড়াতে গৈছে। ব্যস! দীপেন বোস সম্ধার পর আরো স্কুযোগ পেল। স্বাই শুভ-কল্পনার উধাও হওয়া দিয়ে মশগুল। নীচে ভাইনিং হলে রয়েছে। সে তিনটে কাজ করল পর-পর। একটা रुज, फुञ्जिटकरे हार्वित जाहारण भौतिरसर्व ঘর থালে চাদর চরি। পরেরটা হল সেই চাদর নিয়ে খিড়াক-পথে বাগানে গৈয়ে কলপনার লাসটা ভাতে জড়িয়ে চীনার ঘরে পে'ছৈ দেওয়া। তিন নদ্বর হচ্ছে, রঞ্চ र्घाश्रिता हानत्रहा अक्षाभरकत चरत भाहात।...

সংশেকা কী বলতে বাছিল, কর্ণেল হাতের ইসারার তাকে থামিরে বললেন, মিসেস ব্যানাজি তথন একা ছিলেন-মরে। উনি কাকে খনে চ্কুতে সেখেছিলেনও। সকালে চাৰ্ছটা পাঙ্যা বেল খাটের নীতে। এপা বোকাছ মড সেটা এই জানালা গলিয়ে ফেলতে গেলেন।

न्द्रांच्या नात निरंत जनन, दाँ, दाँ। करन

কর্পেল ভাজে ধামালেন কের।...মিঃ গ্রুণত, ভারপর কী হল বল্ন?

আড়ামোড়া দিরে সজাজিং গণ্ণেত হাসতে হাসতে বললেন, আর কী! তামাম পোব। দি এন্ড! দীপেন বোস দীরেনকে ফাঁদে ফেলে নেকস্ট স্ল্যান করেছিল আজ রাত্রে। কিন্তু তার স্তুলাগাঃ

কলে'ল মিটিমিটি হাসছিলেন। ভাহলে নীরেনকে ছেডে দিক্ষেন?

जातरहेनील।

দীপেন বোসের বিরুদ্ধে চাজী আনছেদ?

द्याबारे नहें?

কলেল নীলাদ্রি সরকার উঠে দাঁড়া-লেন। একটা কথা মিঃ গ্লুন্ত। আপনারাও শ্লুন্ন। দাঁলেন বোস গোলত ন্যাগলার—এটা প্রত্যক্ষ। সে হাতেনাতে ধরাও পড়েছে। এবং এটা থ্রই সতা বে ওই ডোবাপ্রসালাই ছিল এ কেসের গ্রুহুপূর্ণ কেন্দ্র। এক-জন স্মাগলার তার দিরাপ্রার জন্য খ্নকরতে পিছপা হয় মা—তাও অন্বাকার করিছি না। কিন্তু আমরা জানি, যা প্রতীক্ষ-মান তাই বাস্ত্র নয়। দুটো ঘটনার মধ্যে যতই যোগস্ত্র থাক, কারণ বে একটাই থাক্রে, তার মানে নেই। প্রখ্যাত 'কাকতালীর' যোগের কথা আমরা জানি।...

হলশ্ব্দ লোক র্ম্পাবাসে ত্যক্রির আছে কর্ণেলের দিকে। দুরে ঘল্টাছাড় বাজল এগারবার। কর্ণেল নীলাদ্র সরকার ফের বলতে থাকলেন। ...লেডিজ এয়াম্ড জেল্টলমেন!...

(আগামী সংখ্যার সমাপ্য)

था रश म

এখন বাংলা ভাষার সমগ্র ঋণ্বেদ म्ल, भर्मावकाण, व्यन्यस, व्यन्द्वान ও শব্বার্থ ব্যাখ্যাসহ 4C*55 W. S প্রকাশিত হইতেছে। ১ম ও ২র খণ্ড প্রকাশিত হইরাছে। ৩র খণ্ড যালুমা। প্রতি খণ্ডের মূল্য তিন गिका। अभश सर्भ्यम ध्वक्म भर-छ . मन्भूर्ण **इट्रेंदाः ग्रा**हकरमद्र **ज**ना বিশেষ স্বিধা। প্রতি 4-5 স্বতদ্যভাবেও विकास হইতেছে। প্রখ্যাত পর-পরিকা ও পশ্চিত মন্দ্ৰণী কৰ্তক উচ্চপ্ৰশংসিত। বোগা-वाश करम :--

পরিতোষঠাকুর, বেদগ্রহুমালা

২৯, সদমন্দ রোড, কলিকাতা-২৬।

एस९कात साम वर्ण्य अक जितिय



আর শক্তিদায়ক পুষ্টি যোগানো

আরেক জিনিষ

আর কেমন মজা কোরে চিবিয়ে বেতে থেতে দেই পুষ্টিলাভ করা যায়! পার্লে মুকো বিষ্কুটে চুধ,গম,আর চিনির যাবতীয় উপকারিতা পাওরা যায়— প্রোটিনে আর ভিটামিনে একদম ভরপুর।



ভাইভো

शाल श्रीका विश्वार

বাদাদের পক্ষে সবিশেষ উপকারী

ভারতের সর্বাধিক বিক্রীত বিষ্টুট

भाध्वा उस्स्विधः

नाः कर्जिक ঐक्यात भात्रिष्य

হিশ্দিকে রাষ্ট্রভাষার প্রাধান্য দানের ফলে সারা ভারতে একটা আণালক সংকীণতা মাথা তুলেছে। হিন্দি এবং তামিলের বাচনিক লড়াই সহজে বিসম্ত হওয়ার নয়, এবং খানিকটা সেই একটিমাত্র কারণেই ইদানীং তামিলনাডের আঞ্চলিক রাজনীতি সর্বভারতীয় মতাদশে প্রতিষ্ঠিত নয়। একটা কথা কিন্তু এইসব আত্মকলহের স্রোতে হারিয়ে গেছে, কয়েকটি পূর্ণ দ্বাধীন বা আধা-দ্বাধীন হিল্ফু রাণ্ট্র সেকালে ভারতের বিভিন্ন প্রান্তে আত্ম-কলহে এবং আত্মবিধনংসী সংগ্রামে লিপ্ত থাকলেও দু হাজার বছর আগেও ভারতীয় সংস্কৃতির মধ্যে একটা ঐকাস্ত্র ছিল। আণ্ডলিক এবং পারিপাশ্বিক অবস্থার প্রয়োজনে তার রূপ কিণ্ডিং পরিকডিভি হলেও মূল কাঠামো অক্স রয়ে গেছে। সাম্প্রতিক্লালে নানাবিধ গ্রেষণায় প্রমাণিত হরেছে এই অবস্থা দক্ষিণ ভারত সম্পর্কেও বিশেষভাবে প্রবোজা।

শ্বিতীয় শতাব্দীতে তামিল বণিক এবং
শাসকাল সংস্কৃতকৈ 'লিংক ল্যাংগ্রেজ'
হিসাবে ব্যবহার করে দক্ষিণ-পূর্ব এশিরার
সাংস্কৃতিক বিজয় অভিবানে বেরিরেছেম !
কিছ্কাল আগে মান্তাজে ওয়ার্লাড তামিল
কনফারেসে অনেক দেশের পশ্ভিতজন
উপস্বিত হরেছিলেন। সেই সম্মেলনে
অধ্যাপক আঁ কিলিওজাট এই ধারণার
সমর্যনে অজন্ত প্রমাণ প্রয়োগ করেছেন।
এই কালের অনেক প্রে তামিল শাসনব্যবস্থা এবং সামাজিক আকৃতির সংগ্রে
উত্তর জারতেন সমাজ শাসন ব্যবস্থার
পার্থকা ভিল্ অতি সামান্য।

প্রাচীনকালের তামিল পশ্ভিতমণ এই ধারণা সমর্থন করেছেন। ভারতবর্ধের বিভিন্ন প্রান্তের পশ্ভিতগণ ইদানীং ভারতের সামগ্রিক সংস্কৃতি বিবরে গবেষণা না করে মন দিরেছেন বে বার আঞ্চলিক প্রাধানা প্রমাণের প্রয়োজনে ও আঞ্চলিক সংস্কৃতির বৈশিষ্টা প্রকাশে। এর ফলে সর্বভারতীয় সংস্কৃতি বিষরে গবেষণার ক্ষেত্রে উৎসাহের অভাব দেখা দিরেছে।

নইনার স্বেক্সনীয়ান অশেষ পরিশ্রমসহকারে লিখেছেন সংগম পোলিটি', এবং এই গ্রন্থটি ভারতীয় সংস্কৃতির পরিচয় **প্রকাশে** অনেক প্রয়োজনীয় তথোর সন্ধান দান করেছে। এই কাজ করতে বসে তাঁকে অজস্ত্র প্রাচীন তামিল গ্রাম্পর মূল থেকে পাঠোম্ধার করতে হরেছে। তিনি অন্বাদের ওপর নির্ভর না করে প্রায় দ্ব' হাজার বছর আগে দক্ষিণ ভারতে কি জাতীয় সংস্কৃতির প্রচলন ছিল তার পরিচয় দিয়েছেন। তিনি তামিল এবং বিদেশী গবেবকদের ভঞ্জের প্রতি নিভ'ব-শীল। গড় বিশ বছরকাল ধরে দক্ষিণ ভারতে অ'নক প্রভাতাত্ত্বিক আবিন্কার-অভিযান চলেছে, তার ফলে অনেক নতুন তথাও স্কৃত হরেছে। পদ্ধিণ ভারতীয় আকুণ্ডির সংস্কৃতির প্রামৈতিহাসিক পরিচরও আজ্জ আর দ্রশন্ত মর।

দক্ষিণ ভারত এবং তামিলনাডের প্রাচীন ইতিহাস বিষয়ে সকলের সমধিক আগ্রহ। এইসব তথ্য সংগ্রহীত হরেছে সংগম সাহিত্য ভাস্তার থেকে। এই সংগম সাহিত্য প্রায় পাঁচ থেকে সাত স্ক্রান্দী কালের মধ্যে পরিব্যাপত।

그렇다 그 말하다 이 하는 것이 나는 이 나는 것 같습니다. 얼마를 다 나는 것 같습니다.

ভাঃ স্ত্রনানীয়ানের মতে সংগম কথাটি
সংস্কৃত এ বোষ্ধ 'সংগ' থেকেই সম্ভবত উম্পূত। তবে দক্ষিণ ভারতে বে কিন্তাবে ও ঠিক কি অথে এই কথাটি প্রচলিত হল তা লেখকের জানা নেই। 'সংগম' অথে 'ঝ পশ্ভিতজন সংগম, এই প্রশ্ন ভার মনে এসেছে! বোষ্ধ সংঘ শুধ্ সাধ্যেশ্ব আস্তানা নর, সেই সংঘ ছিল বিশ্পজনের সমাবেশ।

প্রাচীন পাণিতর রাজানের প্রত-পোষকতার বেগাই নদীর তাঁরে মাদ্রাই অঞ্চলে ছিল আন-বিজ্ঞানের ক্ষেন্ত। আজকাল যার নাম 'আকাদেমি'। সপানের কবি এবং পণিততজনের প্রচেন্টার অজন্ত সাহিত্যসম্ভার প্রকাশিত হরেছে। এইসব গ্রম্পের সামগ্রিক বস্তুবা ধর্মনিরপেক। জার নইনার স্তুজ্জানীরানের এই গ্রম্পে প্রাচীন ভামিসনাদের সম্পক্ষে অসেক আতব্য ভব্য পাওরা বার।

প্রথম পরিছেদে—সংগ্রের উংপতি

এবং সংগম ধ্রেগ প্রকাশিত গ্রাথাদির করা

আলোচিত হরেছে। সম্ভম শভাকাতি

প্রকাশিত 'আপপার' রচিত ভেজারাম' গ্রাক্থ সংগ্রের উল্লেখ আছে। তামিল সাহিত্যে

সংগ্রের প্রতিশব্দ হিসাবে 'অভাই',

কুড়াল' 'ভোগাই' প্রভৃতি ব্যবহৃত হরেছে।

এইসব শক্ষান্ত্রির অর্থ সভা, সমাবেন,

সম্মেলন। আরু একটি নাম 'প্রেরকভা'

এর অর্থও প্রার একই প্রকার, সক্ষেক্ষ।

একত সমাবেশ।

নবম শতাব্দীর এক ভাবো আছে স্ব, বিভিন্ন সমরে প্রার ভিনটি সপার বভারার ছিল। বন্ধনন্দী বে প্রাবিড় সপার প্রতিষ্ঠা করেন সোঁট জৈন মতবাদ প্রচারের প্ররোজনে প্রতিষ্ঠিত হয়। এটি তামিল সপাম নর।

স্পাম সাহিত্যের আদি পর্ব সম্ভম
শতাব্দী। এই কালের দশটি কবিতা,
আটটি কাবা সংগ্রহ এবং আরো আঠারোটি ছোটখাটো ফ্রন্থ, দুটি মহাকাবা ইল্লানগো
আদিগলের 'সিলাপড়িকরম' ও মণি-মেখলাই' ক্রিন্টান যুগের কিছ্ আগের এবং একেবারে প্রথম দিকের।

ন্বিতীয় খণ্ডের পরবতী হয়টি পরিছেদ রাণ্ট্রনীতি, কেন্দ্রীয় শাস্ত্রস্থা, ৰুখ, সামরিক সংগঠন, বিচারব্যবস্থা ও অর্থনীতি প্রভাত বিষয়ঘটিত। রাজা ছিলেন শাসনব্যবস্থার কেন্দ্রবিন্দ্র। একটি সামাঞ্জের ধারাবাহিকত্ব রক্ষায় প্রথম সম্তানের উত্তরাধিকার স্বীকৃত ছিল। পরবতীকালে ছেরা (বর্তমান কেরল) অণ্ডলে মাড়তান্ত্রিক সমাজব্যবস্থা প্রচলিত হয়। কথনও বা শ্নাসিংহাসন সম্পূর্ণ অপরিচিত ব্যক্তিকে অধিকার করতে দেওয়া হত, এ'দের নিৰ্বাচন হত হাতির সাহায্যে, হাতি অনুগ্রহ করে যাঁর গলায় মালা দিত তিনিই অভিবিক্ত হতেন। বিজয়ী শাসক অভিবিক্ত হতেন রণক্ষেরে। য**ে**খ পরাজিত হলে রাজা তথন জাপানী কায়দায় স্বয়ং আজ্-বলিদান করতেন। রাজা সিংহাসন ত্যাগ করতে পারতেন, কিন্তু তাঁকে কেউ সিংহাসনচাত করতে পারত না। তুলাভার', 'জন্মবাৰি'কী', 'অভিষেক' প্ৰভৃতি রাজকীয় পাটন মহাসমারোহে অন্তিত হত। রাজপ্রগণ রাজকমে নানারকম দায়িত্ব পালনের ভার পেতেন। রাজার শৈশবকালে কোনোরকম অভিভাবক সরকার গঠনের বিধি ছিল না।

রাজসভা (অভাই) বসত প্রতিদিম পটুমহারাণী উপস্থিত প্রাভঃকালে। থাক্তেন সভার। রাজাকে রাজকর্মে সাহাধ্য করতেন দুটি পরিষদ, তার সদস্য ছিলেন পাঁচজন, মন্দ্রী, প্রেরোহত, সেনাপতি, দ্ভে এবং গুণ্ডচর, অপর পরিবদের সদস্য সংখ্যা আটজন। তারা হলেন হিসাবরকক, করণিক, অর্থভান্ডারের প্রধান, নগরমগ্রার (সমাজকল্যাণ বিধারক নাগরিক), পদাতিক প্রধান, হস্তিবাহিনীর প্রধান ও আম্ব-বাহিনীর প্রধান। এই দুটি বিভিন্ন পরিবদের কর্মধারার সন্ধান পাওয়া যার্যান। সমাটকৈ সাহায়া করতেন মল্টীবর্গ এবং অন্যান্য রাজকর্মচারিব্রুদ। চেরাচোলের রাজা ও পাল্ডেয় রাজের নিজম্ব প্রতীক-চিহ্ন ছিল। অশোকের ধর্মচক্ত জাতীর। এইসব প্রভীক ভরবারি, লাঙল, ছন্র, অশ্ব, দামামা, ইন্তি ও রখ প্রভৃতি, আরো কিছ; পরে বৃত্ত হয়, ভবে এই আট রকম প্রভীকই ভিল মুখা। অভিবেকের পর সন্তাট রাজয় ক্রতেন তার নাম 'মণ্ডিমাননার' বা মাণ্ডলাম'। সম্ভবত এট কথাটি থেকেই মন্ডল মান্ডলিক ফ্রাডেল পড়ভিব উৎপত্তি।

ৰাভারাতের স্মস্তিধার কন্য রাজা সুবুর অঞ্চল স্বরং হেতে পারতেন মা। সেই সৰ অণ্ডলে তাই ছাঁৱ প্ৰতিনিধি গ্রামীণ শাসনব্যবস্থার জন্য দায়ী থাকতেন। গ্রামীণ প্রায়ন্তশাসনের সেই স্তুপাত। গ্রামের প্রবীণ এবং অভিজ্ঞ ব্যক্তিরা শাসন-বাবস্থার ভার গ্রহণ করতেন। পাট্রিপটের মত পৌরশাসনবাকথা ছিল না, তবে প্রতিদিন রাজপথে আড়ু দেওয়া হত, নতুন করে বালি চাপান হত। সাধারণের वावशास्त्रंत्र कता ताक्षणश, क्रूण, श्रूष्कांत्रणी, উদ্যান এবং পান্ধুশালা নিমিত হত। জন-সংখ্যার কোনো হরিশ পাওয়া যায় শা, তবে স্ক্রিটীয় শতাব্দীর বিখ্যাত তথ্যকার প্রিনির মতে 'পালস্ম্পুদ্ম' নামক (তাম'-পণীর একটি শহর) অণ্ডলে প্রায় দু' লক্ষ লোকের বসবাস ছিল। গাছের তলায় <u> পথানীয় জনপরিষদ বা</u> আভাই-এর অধিবেশন অনুনিষ্ঠত হত।

চারণগণ শোষ ও বাঁথের প্রশংসা করে
গান করতেন। যুদ্ধে মৃত্যু হলে নিশ্চিত
দ্বর্গলাভ (তুরক্তম), তাই তাদের নামে
ধ্যারক মর্মারফলক স্থাপিত হত। রাজার
জ্ঞান টোটেম বৃক্ষ বা কাবল্যরা স্থাপিত
হত (বৃষ্কান্টের মত), এইসব বৃক্ষ
অপ্সারণ করলে গভীর পাপের কারণ হত।
নো-বাহিনীর অস্তিড ছিল, তারা তামিল

এবং অ-তামিল সমাজ থেকে বংগাছীত হত। সকল শ্রেণীর মান্ত্র সাহিতা, দিশ্প ও বিজ্ঞান বিবরে শিকালাত করতে পারত। মাজা ন্বরং ন্যায়াখীশ হরে বিচার করতেন। ভূতীর পর্বে আছে সমাজবাবন্ধা এবং সমাজবিধি বিবংক বিবরণ।

লেখক বলেছেন, চেরা, চোল এবং
পার্নাজর এই তিন অগুলের সাধারণ ভাষা
ভাষিল হলেও তাঁরা নিরন্তর ব্যক্তিহাহে
লিশ্ত ছিলেন—এই কথা বলার অর্থ এই
বে, শুধ্ ভাষার সূত্র দিরে গাঁথলেই ঐক্য
অক্রে থাকে না।

সাংস্কৃতিক ঐক্যের বা বা উপকরণ এবং উপাদান তা সবই ছিল এদেশের মান্বের তব্ অস্ত্রুল এবং অস্ত-বিভিদের অস্ত ছিল না।

গ্রন্থটি বিরাট তাই আংশিক পরিচয় মান দেওয়া গেল। প্রাচীন ভারতের রাষ্ট-নীতি বিষয়ে গ্রন্থটি অনেক নতুন তথ্যের সংধান দান করেছে।

—অভয়ৎকর

SANGAM POLITY: By N. SUBRAHMANIAN Published by: ASIA PUBLISHING HOUSE—BOMBAY, PRICE Rs. 35/- only.

সাহিত্যের খবর

উनगारबच्छि ।। বৰ্তমান ইতালীর অন্যতম শ্রেষ্ঠ কবি জ্বসেপে উনগার্বোত ইতালীর মিলানে প্রলোকগমন করেছেন। ইতালীয় সাহিত্যে আধুনিক কাষ্য আন্দোলনে তিনি অন্যতম দিকপাৰ বলে বিবেচিত। 'শাুম্ধ কবিতা' আন্দোলনের তিনিই ছিলেন প্রধান প্রবন্ধা। তাঁকে অন সরণ করে এগিয়ে এসেছিলেন সেকালের তর্ণ কবিরা। নোবেলু প্রেফ্রারলাণ্ড কোলাসিমোদো ছিলেন এই তর্ণ কবি-গোষ্ঠীর অন্যতম। দুঃখের বিষয়, উন-গারোত্ত কোন আন্তলাতিক পরেন্ডার পার্নান। তার কবিতার বিদেশী অনুবাদ মাত প্রকাশিত হয়েছে করেক বছর **আ**রো। গত মার্চ মানে তিনি ব্যক্ত আবরও' পুরস্কার সাম।

উনগারেন্ডির কম ১৮৮৮ খাঃ আলেকজান্দিরার। ১৯১২ খাঃ প্যারিসে বাম
উচ্চতর শিকার কমা। প্রথম মহাযুক্তে তিরি
ইতালী ও ফ্রান্সে ছিলেন। সেই সমরেই তরি
প্রথম কবিতাগ্রুত্থ প্রকাশিত হয়। ১৯৩৬ খাঃ
রাজিলের একটি বিশ্ববিদ্যালারে তিনি
ইতালীয় সাহিতোর অধ্যাপক নিমুক্ত হম।
১৯৪২ খাঃ চলে আলেন রোমে। সেখানকার
বিশ্ববিদ্যালারে আধানিক ইতালীয় পড়াবার
দায়িত্ব পড়ে তরি উপর। তিনি ইউরোপীর

লেখক সমিতিরও দীর্ঘদিন সভাপতি ছিলেন।

বাংলার কিম্তু উনগারেতিঃ অনেক কবিতা অন্দিত হরেছে। 'সম্প্র সম্প্র দশ দিগম্প্র প্রমেথ তার কবিতার একাধিক সম্পর অন্বাদ সংকলিত হরেছে। তার উপর করেকটি প্রবংধও বেরিরেছে বিভিন্ন সমরে।

वाश्मात প্রাচীনভয় ব্যাকরণ ।। বাংলা ভাষার প্রাচীনভম ব্যাকরণ কোনটি? সম্প্রতি লণ্ডন বিশ্ববিদ্যালয়ের বাংলা অধ্যাপক ডঃ ভারাপদ মুখোপাধ্যার এই বিষয়ে একটি নতন তথ্য পরিবেশন করে-एक । मन्डित वारमा वाक्रतावत up वि প্রাচীম পাণ্ডালিপ পাওয়া গেছে। এর লেখক ফোর্ট উইলিয়য় কলেলের পশ্তিত মৃত্যুক্তর পাশ্ভূলিপি থেকে বিদ্যাল কার ৷ श्री का লেখকের মাম ছাড়া আর কৈছ জামা বার্রীন। **उत्त जन्माम क्या एटक्, शब्दीर ১৮०**० থেকে ১৮১১ সালের মধ্যে রচিত। ল'ভানের 'ইণ্ডিয়া হাউলে' পাণ্ডলিপিটি পাওয়া গে**যে**। গত শনিবার এশি**নাটিক সোনাইটিতে এক** অনুষ্ঠানে ডঃ মুখোপাধ্যার মূল পান্ডুলিপির ফটো খাঁট কপি উপন্থিত সকলকে দেখান। মুদ্রিত বইটির একটি কলি তিনি লাভীর অধ্যাপক ডঃ স্ক্রীতিকুমার চষ্ট্রোপাধ্যায়কে উপহার দেন।

क्रफींब काब स्मेहे ।। देखाराज्य এ বংগের শ্রেণ্ঠতম ঔপন্যাসিকদের অন্যতম ট এম ফুট্রে গত রবিবার, ৭ জান ৯১ বংসর বন্ধসে পরক্ষোকগমন করেছেন। ভার শিক্ষাজীবনের 'স্ত্রপাত হয়' কেন্টের টেনবিকে। এরপর চলে আসেন কেমবিকের किरम कलात्न। अथान जीव स्व वन्ध्रातान्त्री गर्फ छठ, जौरमत व्यत्नरकरे भत्रवजीकाल ইংরেজি সাহিত্যের দিকপাল হরে ওঠেন।

ক্ষেত্রিক পড়াশোনা শেব করে তিনি প্রথমে যান ইতালীতে এবং পরে গ্রীসে। সেখানে ইংরেজি সাহিত্যের অধ্যাপকর পে কাজ করেন। ১৯০৫ সালে প্রথম উপন্যাস 'হোরার এঞ্জেলস ফিয়ার ট্র ট্রেড' প্রকাশিত হয়। শ্বিতীর উপন্যাস লেখেসট জাণি' প্রকাশিত হয় ১৯০৭ সালে এবং তৃতীয় উপন্যাস 'এ রুম উইখ এ ভিউ' ১৯০৮ সালে। এই উপন্যাস তিনটি ইংরে^জ

সাহিতো একটা প্রচন্ত আলোড়ন স্থান্ট করে। কিছ,কাল পর তিনি ভারতে আসেন এবং মহারাশ্মের তুর্কোজ রাও দেওয়ান (৩র)-এর প্রাইভেট সেরেটারী হিসেবে কাজ করেন। প্রথম মহাযুদ্ধের সময় তিনি মিশরে তিন ব্যুর কাটান এবং সেই সময়ের অভিভাতা নিয়ে একটি গ্রুথ ब्रह्मा करत्रमः।

তার বিখ্যাত উপন্যাস 'প্যাসেজ টু ইন্ডিয়া' প্রকাশিত হয় ১৯২৪ সালে এক বছরেই বইটির সংতম মুদ্রণ প্রকাশিত হয়। ভারতবর্ষ সম্বদ্ধে বিদেশীরা সাধারণতঃ যে ধরণের বই লিখে থাকেন, এই বইটি তার থেকে সম্পূর্ণ আলাদা। ভারতর দুঃখ ও বেদনা এবং ভারতের মহতকে তিনি ফুটিয়ে তুলেছেন। ১৯২৭ সালে 'আসপেকটস অব দি নোভেলে'র উপর ক্লাক বৰুতা করেন। ১৯৫০ সালে 'দি হিল অহ দেবী' নামেও

তার একটি উপন্যাস প্রকাশিত হর। এছাতা তিনি বহু, জীবনী গ্লম্ব, সমালোচনা এবং প্রুস্তক আলোচনা গ্রন্থ লেখেন। তার একাধিক কাহিনী চলচ্চিত্রে রুপারিত হয়েছে। শাশ্তারাম রাওমের সহযোগিতার **ाँत 'এ भारमञ्ज हे स्वार्मातका' वहाँ**हें চলচ্চিত্রে র্পায়িত হয়ে খ্বই জনপ্রিয় হয় এবং লাভনের শেলাক সিনেমার প্রায় এক বছর প্রদৃশিত হয়।

ভারতবর্ষের সাহিত্যের ফল্টারের সহান্ত্তি ছিল অপরিসী**ন**। ১৯৬২ সালে তিনি উদ্ভোষার উল্লভির জনা হারদরাবাদের আজ্মান-এ-ভারেক্রী-হিন্দ সংস্থাকে এক হাজার পাউন্ড দান করেন। বিভিন্ন সংস্থা তার সাহিত্য-সাধনার প্রীকৃতি হিসেবে বিভিন্ন সময়ে বিভিন্নভাবে তাকৈ সম্মানিত করে।

নতুন বই

কৰিগ্ৰু বৰীন্দ্ৰনাথ (দিবতীয় খণ্ড)---কাজী আবদ্দ ওদ্দ প্রণীত। প্রকাশক : ভারতী লাইরেরী। ৬, বাংকম চ্যাটাদ্রি স্মীট, কলিকাতা-১২। দাম — আঠারো

সদ্য পরলোকগত মনীষী কাজী আবদ্য ওদ্দের 'কবিগ্র্ রবীন্দ্রনাথ' প্রকাশিত হয় ১০৬৯ সালের প্রথম দিকে। সেই স্ময় লেখক প্রতিশ্রতি দিয়েছিলেন এর পরের বছরই দ্বিতীয় খণ্ড প্রকাশিত হবে। আরো অনেক প্রবন্ধ গ্রন্থের অদুন্টে যেমনটি ঘটে থাকে, এই গ্রন্থের ক্ষেত্রে তার ব্যতিক্রম হয়নি। প্রকাশকের উৎসাহের অভাবে গ্রন্থটির ২য় খণ্ড প্রকাশে বিল্ন্ব হয়েছে। বর্তমান প্রকাশককে ধন্যবাদ. তিনি অগ্রসর হয়ে না এলে এই গ্রন্থ অমুদ্রিত থেকে যেত। কাজী আবদুল ওদ্দ একজন বিদাধ সমালোচক ছিলেন এবং রবীন্দ্র-কাব্যের অন্যতম ভাষ্যকার হিসাবে তিনি শ্রন্ধার আসনে অধিষ্ঠিত। এই প্রদেশ তিনি রবীন্দ্রনাথের চিরকুমার সভা' থেকে শ্রু করে 'শেষ লেখা' পর্যাত বাবতীয় রচনা, এমনকি 'কবির আঁকা ছবি' নিয়েও আলোচনা করেছেন। সমগ্র পর্বকে তিনি দুই অংশে ভাগ করেছেন 'চিরকুমার সভা' থেকে 'গীডিমালা', এবং নোবেল প্রাইজ লাভ প্রতির নামকরণ করেছেন 'বৈরাগা সাধনে মুভি সে আমার নয়' (প্ ১-০৫৮); এবং ু'গীতালি' থেকে গুলার লোখা ও উপসংহার (প**্**৩৫৮-৬৬৮)-এই পর্বের নামকরণ করেছেন 'পান্থ ভাষ পান্থজনের সখা হে--'। भावमा এইप्लार्ट पार्ट शर्द विखान कवात কোনো কারণ তিনি ব্যাখ্যা করেননি।

তবে মনে হয় যে, কবির এই দুটি পর্বের মধ্যে যে মাল সার লেখক লক্ষ্য করেছেন সেইভাবেই ভাগ করেছেন। প্রথমোক পরে আছে কবির দানাবিধ প্রবন্ধাবলী, নন্ট-নীড়, চোধের বালি, গোরা প্রভৃতি উপন্যাস; চিরকুমার সভা, রাজা, অচলায়-তন, ডাক্যর প্রভৃতি নাটক * সমরণ, শিশ্য, খেরা, গীতাঞ্জলি ও গীতিমালোর মত কাব্যগ্রন্থ এবং আত্মজীবনী 'জীবনন্মতি'। প্রায় সাড়ে তিন্দা পৃষ্ঠায় এইসব গ্রন্থের পরিচয়, বিশেলষণ ও ব্যাখ্যা করেছেন লেখক। এবং বলা বাহুল্য স্ফুলিভ ভশ্নীতে এইসব বিশিষ্ট গ্রন্থের পরিচয় তিনি বেভাবে দিয়েছেন তার দৃশ্টাণ্ড বাজার-চলতি রবীন্দ্রচর্চায় বিরল। ১০১১ থেকে ১৩১৬-১৭-১৮ সাল পর্যাত কবির জীবনের এক বৈচিত্রাময় কাল, সেটি এই পর্বের সংশ্যে জড়িত। কাজী সাহেব শুধু গবেষক বা সমাকোচনার দ্ভিটতে নয় রসিক পাঠকের দ্রুণ্টিতে সমগ্র পর্বটির পরিচর দান করেছেন এবং আশ্চর্য সার্থকতা লাভ করেছেন।

এর পরবতী পর্যায় ১৩২১ থেকে ১৩৪৮, অর্থাৎ কবির তিরোধানের কাল পর্যান্ত রচিত সমগ্র রচনাবলী আলোচিত रतरह। এই পর্বের মধ্যে আছে বলাকা, পলাতকা, লিপিকা, শিশ, ভোলানাথ, প্রবী, মহুরা, বনবাণী, পুনুষ্চ, বিচিতিতা, প্রপট্ট, শ্যামলী, আকাশপ্রদীপ, নব-জাতক, সানাই প্রভৃতি কবিতাগ্রন্থাদি: ফাল্মানী, মুভাধারা, রভকরবাী, নটীর প্ৰা, তপতী, চডালিকা ও শামা প্ৰভতি নাটক: চড়রঞা, খরে বাইরে, শেষের কবিতা, যোগাবোগ, চার অধ্যার, সব্দ্ধ পত্র যুগের

ছোটগলপ, এবং শেষজীবনের লেখা 'তিন সংগী', আর সেই সংগো আছে মানুষের ধর্ম, রাশিয়ার চিঠি, কালান্তর, সভাতার সংকট প্রভৃতি যুগান্তকারী র**চনাবলী**। কাজী সাহেব এই স্দীর্ঘ**কাল মধ্যে** সামগ্রিক রচনার বিচার করেছেন এবং সেই সংগ্যার উপাধি ত্যাগ, কবি**র আঁকা** ছবি, শব্দতত্ত্ব, বাংলাভাষা পরিচয়, ছংক প্রভৃতি স্বকিছার বিস্তারিত আলোচনা করেছেন। সাহিত্য-রসসমূদ্ধ এমন সর্বাণ্য-স্কুন্দর আলোচনা গ্রন্থ কদাচিং চোখে পড়ে। প্রকৃতপক্ষে কাজী সাহেবের কবি-গ্র, রবীন্দ্রনাথ' ১ম খণ্ড থেকে **২য় খণ্ডটি** যেন অধিকতর সম্ভধ এবং ম্ল্যবান হয়েছে। রবীন্দ্রনাথের সামগ্রিক সাহিত্য-সাধনার পরিচয় এইভাবে পরিবেশন করা যে 'ক অসীম পরিশ্রম ও অধাবসায়ের ফল তাই ভেবে বিস্মিত হতে হয়।

ভোরের গোলাপ (কাব্যগ্রন্থ) — গিগরধারী কুণ্ড রচিত। প্রকাশক**ঃ অজয় গাল্গো**-পাধ্যায়। ৫৯. বেদিয়াপ**্**কুর **রোড, কলি**-কাতা-১৪। দাম — তিন টাকা মাত।

লেখক বতমান সমাজের মানুব, ভাই তাঁর কাবাগ্রন্থে সমকালীন সমাজের ছবি ফোটানোর চেন্টা স্বাভাবিক। **অভিযু**র প্রতি মহেতে ক্লভ দেহ নিরে ভিনি অশাস্ত হয়ে ঘরছেন ধরংসের সালিখে। দ্রংখবাদ সমস্ত কবিতাবলীকে আক্রম রেখেছে, তব্ দীঘদিন অপেকা করতে হবে, আরেকটা জীবনব,শ্বের পথ চেরে'--এই চন্দলতা হয়ত কাটবে। অস্থির যুগের প্রতিকৃতি এই ভোষের গোলাপ। কবিতা-गानिय मरश्च किन्द्रो भविषयाद वान



(55)

ফেল্ দাওয়ার বসে গজরাজিল। বাঁ হাতে এখন আর একেবারেই শাস্ত্র পাছে না। হাতটার দিকে তাকালেই ভাষ্ট্র এক আক্রোশ ব্রু বেরে উপরে উঠতে থাকে— তুমি ঠাকুর, পাগল ঠাকুর, তোমার পাগলামি ভাইপা দিম।

হাতটা ওর বাঁ হাত। কব্দিতে ছোর নেই। কালো পোডা বিশীর্ণ 16 ধরে আছে কন্দির চামড়াতে। দু পাশের মাংস ক্তির ফ'লে ফে'পে আছে। যেন পাশে মাংস বেড়ে একটা মোটা গিণ্ট হয়ে বাচ্ছে। কালো তার বাঁধা। কালো তারে মল্য পড়া সাদা এক কড়ি ঝ্লছে। কড়ির গলার ফাটো করে হাতে বাঁধা সাতো নিয়ে যেল, কেবল গলরাচ্ছিল। কিছ, কাক উড़्डिन উঠোনে, किছ, শালিশ পড়াइन মাচানে আর বিবি গেছে পশ্চিমপাড়াভে এক*িশলি তেল* ধার করতে। ফেল**ু আ**ছে মার পাহারার।

উঠোনের উপর শীতের রোদ পিটকিলা গাটাইর জালের কাঁক দিরে নিচে এসে নামছে। এই সামান্য রোদেই ফেলু মাচানে মাছ হড়িজ বসে আছে। তারপর জার্মিক সামনে খালা-ভোবা এবং ক্ষার্ম, ক্ষামিতে কোন ফলল হয় মা। হোট্ট একখন্ড ক্ষার্ম কোন্য বাজীর উত্তরে এই ক্ষার্ম, বাঁশ গাজের হায়া ক্ষামটাকে বড় অন্যবার করে রেকেছে।

ভর গলার কালো তার বাঁধা। গলার চৌকো রুপোর চাকতি। সব সমর পালোরাদের মতো চেহারা করে রাখার সব কেবরে। কেবরে বােঁবন নেই, কিব্তু এখনও পত্ত বাড় গলা দেখলে, বাড় গলা হাত দেখলে, তাম্বর বনে বেতে হর। মানুর্টার রুখ ফসলহীন মাঠের মত। রুক্ত, লাবলাহে বন্দ সমর পুড়ে বাজে। এক চোখে তাম্বাল মুক্টা কেপে উঠে। চোখের ভিতর মান্ আছে, মণির ভিতর সব সময় নৃশংস এক ভাব। সুখাঁ পাররা আকাশে উড়তে দেখলেই ধরে ফেলার সথ, দুই পাধা ছি'ড়ে দেবার সথ। এবং ঠাং খোড়া করে দিতে পারলে গাজার গীদের বারানদারের মতা চালের লাখান মুখখান এমন সব বলতে থাকে।

ফেল, বঁড় হা-ডু-ডু থেলোরাড় ছিল।
তথম তার দ্ই হাতের উপর শত্র পক্ষের
কি আক্রোশ! ঐ হাত হেভাবে পারো
ডেঙে দাও। থাবা মারলে ফেল, সকলে
বাবের ভর পার।

চছরে খেলা হচ্ছে। গোপালদি বাব-দের দল খেলছে--দল টাকা আগাম, আরও पन रक्षमात थे वास्पत भएना थाना भ**र**क দিতে পারলে। কিন্তু হায়, কে কার থাবা महकाता। रक्षमः इतिहा। अकवात अ-माधात আবার ও-মাখায়। সে খবে প্রত ছটেতে ভালবাসে। দাগের উপর পড়েই সে লাফ দেয়, বেন সে লাফ দিয়ে আসমান ছ'ুতে চার। ঐ গুর কারদা। শক্ত হাত-পা পেশীতে সূর্যের আলো বলমল করত। কালো খ্যটো প্রাণ্ট কালো গেজি আর র্পোর ভাষা গলার, যেমন লম্বা ফেল, তেমন কুংসিত মুখ শরীর-মনে হয় তখন ফেল; जर मा नंदन अथवा जाहा जाहा वर्त-श মা ইশ্বরী বলে ঝাপিয়ে পড়বে। দুই পায়ে কাইচি চালাও—ফেল, যে ফেল, সে পর্যত পাহাড়ের মতো মুখ থ্যুবড়ে পড়বে। তখন ফেলুর কোমরে বলে উল্টোডাবে এমন এক মোচড় দিতে হবে কেন বাজের থাবা र्वाजानात इस्य यात्र। यात्रामत वात्रनात मात्य बाहे नितंत हव त्याना त्यहे त्याना। খেলার লেবে টেরটি পাওয়া যার না. रक्ना कावाल महीत क्रथम हरसरह।

নেই ফেল, বনে বনে এখন হাত দেখছে। কাক ডাড়াছিল এবং ডাঙা হাডের দিকে তাকিরে কড়ঠাকুরকে উদ্দেশ করে

গাল পাড়ছিল—পাগলামির আর জায়গা পাওনা ঠাকুর, তোমার পীর্রাগরি ভাই•গা দিম্। তারপর সে হ্স করল। একটা কাক ফের এসে ঘরের চালে বসৈছে। কাকটা সেই থেকে জনালাতন করছে। কাক একটা নয়, অনেক। ধরে ফেলেছে সে ব্যারামী माठाती प्राम_्ता कार्य भन्म, दरह साम्ब। গিটে গিটে ব্যাদনা। হাতির **শ**ুড় ওর সব শক্তি নিয়ে চলে গেছে। কিল্ডু ফেল্র জনলত দুই চোখ, বিশেষ করে পোকায়-খাওরা চোথটা এখন বড় বেশী ভরত্বর দেখাছিল। কাকটা বোধ হয় সেই **চোখ**টা দেখতে পার্যান। সে চোখটা দেখাবার জনা খুরে দাঁড়াল। কাকটা উড়ে এসে উঠোনে বসল। চোথটা দেখতে পায়নি। সে **এবার** তেড়ে গেল—তুমি আমারে পাণল ঠাকুর পাইছ! বলেই সে ডান হাঙা উচু করতে গিয়ে দেখল, হাতটা প্রধোপ্রির নিরাময় হয়নি। বাঁ ছাতটা পশ্য, হয়ে যাচ্ছে। ভান হাতটা নিরামর হচ্ছে না। বিবি গেছে এক শিশি তেল ধার করতে আর লে খরের মাণের মতো কসে আছে মাছ পাহারার।

বিবির উপর রাগটা বাড়ছিল। একটা পাটকাঠি দিয়ে প্রশান, হাতে কত আর কাক-পালিখ তাড়ানো বার! কাক-পালিখ, মাছের লোভে বারণাখি পর্যাক্ত উড়ে আসতে পারে। বারণাখির কথা মনে এসে গোল। হাজি সাহেবের পাঁচনের খোঁচা, সময়ে অসময়ে সেই সালেহের পাঁডিনের খোঁচা, সায়য়ে অসময়ে সেই সালেহের পাঁখ কুরে কুরে খেলে, হাজি সাহেব পাঁচনের খোঁচা মারেন মাইজলা বিবিরে আর প্রতাপ চলের নাভিতে তেল মাখানোর অভ্যাস, অভ্যাসটার কথা মনে আসতেই কেল্ ভাবল ওরা লাক চল মর, ওরা বাজপাধি মর, ওরা লাল নদীর ক্রমল। বড় মাছ বালে ওয়া খার মা।

সব কমি ভিনাত, ওদের। স্থাদিদে দ্বিদিনে কামলা খাটলে পরসা। কেলুকে গোর সরকার বড় ভর পার। সে ফেলুকে ভার পার প্রভার সৈধে নার, এবন গভারের কাষলা ওর করে কত বাঁঝা আছে। তর ফেলু নাভি মৌরনে ভারবা সোলিও রাতে বিবাতে কোথার চলে বৈড। দরকার পড়লে কৈ লগটা টাকার বিনিমরে লগটা মাঝা এন দিতে পারে—সেই কেলু কি ভাষ্কার, একটা কাক ভাড়াতে পারতে না। ফেলু রাগে হতালার লাভিটা ভান হাতে কাড়তে থাকল বার বার।

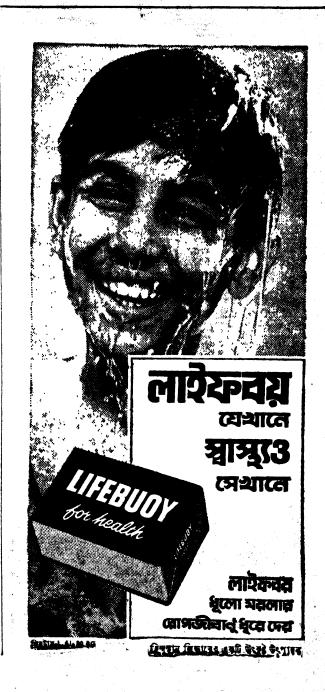
রোলে মাছ শ্রকানো হচ্ছে। ছোট अकृषा फेट्टान निद्ध रक्ता बरा अकृषा পেরারা গাই। নতুন বিবি হরে এসেছে। চার-পাঁচ সাল হল সে বিবিকে, বরস আর कछ विवित्र, अक कृष्टि शरत, कि मू-अक বছর বেশি হতে পারে। কটা বৌবদের ওল বিবিশ্ব বড় বেশি ছিল। পাড়ামর রসিকতা কত—বিবিটা আলতাফ সাহেৰের। কি করে, কে কখন আলভাফ সাহেবের লাস পাট খেতে আবিশ্কার করেছিল কেউ জানে না। তারণের বছর পার হয়নি ফেল্ আলতাফ সাহেবের খ্বস্রত বিবিকে ধরে এনে তলেছে। কেউ রা-টি করেনি। ফেল্ বভ দাপ্যাবাজ মানুষ। ভরে বিস্মরে কেউ ওকে ঘাঁটাতে সাহস পায় না। সেই ফেল্ফ এখন এক কাক, সামান্য কাকের সংগ্র পেরে উঠছে না।

মাছ রোদে শাকাচ্ছে। এক ফাঁকে একটা কাক এসে মাছ দিয়ে উড়াল দিল। দঃখে হতাশার ফেল, কাকটাকে তেড়ে গেল। কোমর থেকে লাভিটা খালে গেছে, সে প্রার উল্পা হয়ে কাকটার পিছনে ছুটতে গিরে দেখল, প্রায় সব কাকগ্রিল ওর মাছের माजात्न वरत माह थाएक। तारा मुश्य त्म ছে'ড়া তফনটা তুলে আর হটিতে পারল না। প্রায় হামাগর্ড়ি দেবার মতো হে'টে গিয়ে দেখল, কাক যে সামান্য কাক্, সেও ব্যব্ধে ফেলেছে ফেলুর আর শতি সামর্থ্য নেই। সে মরা মাছগুলোর চোথের দিকে নিজের পোকায় খাওয়া চোখটা খুলে দাঁড়িয়ে থাকল। সে নডতে পারছে না। নডলে বাকি করটা মাছও আর থাকবে না। ওর ডাদ হাত সন্বল, বিবির উপর সংসার। মাছের এ-অবস্থা দেখলে বিবি তাকে কুপিয়ে কাটবে। সে মাচানের পাশে বসে মাছ-গলোকে ফের ছড়িরে রাথল। পর্টট মাছ, চেলা মাছ। ইভদততঃ ছড়িয়ে রাখলে বিবি এসে ধরতে পারবে না। কাকে এসে মাছ নিরে গেছে। সাম, ফের ঢাকা গেছে, ফিরছে मा। नागृत भात काह त्थरक धक काठा थान এনেছে ধার করে, সেও কি দিরে শোধ হবে, কবে, কিভাবে কাঞ্জ করতে পারলে শোধ হবে সে বৃ্ঝে উঠতে পারছে না। একমান ব্ৰতী বিবি আলু সৰ দেখেশনে

আন্ত্র উপর এ-সমর তার কেমন মারা হতে থাকল। সে লুভিটা তুলে এবার প্রল। আনু বেগাই, বড় মনোরম নাম। কিল্টু আনুটার শরীরে এত বেলী তেজ— প্রায় কেন, সুরকারদের তেজী ঘোডা—লুকা মাঠ পেলেই কেবল দেখি।তে চার। বড় মাঠে কেবা, এখন আর বোড়ার চড়ে মুটতে পারে না। কোমরে টান ধরে। সমানে মুটতে দেবে বড় অবল আবল লালে শরীরটা। আরু কেবল গৈরে বলে, মর্নদ আমার। ঠেকে ফেকে দের পিঠ থেকে, মাটিতে মুখ্ হাঁ করে রাখে ফেকা,। তখনই একটা সদেশহের কোড়া পাখি কেকা,কে কুরে কুরে খার। সে অতি কল্টে কেন নদীর

চর পার হতে হতে ভাকহে, আমা, আমারে পাগল ঠাকুর আমারে কানা কইরা দিছে।

ছোটু গ্লাম। করেক বর মুস্কামন পরিবার। হাজি সাহেবের বাড়ীতে চারটা চার-দ্রারী নতুন টিনের বর উঠেছে। কিছু গাই গর আছে; বড় দুটো মেলার গর্ আছে। ডারপর সাম্দের কিছু জমি, নরাপাড়ার মাঠে ওবের কিছু জমি আছে। সমবংসর সাম্দের ঐ ফসলে চলে বার।



W. 14. জ্যাত্ৰ কাৰি পাটো কৰি বাকলে কাৰ कि गारम भागम मिक्राबारमना यक ট্রেরম্ম। সভেরাং অভাবে অন্টনে থান, থৈ, ৰ্মীক স্বাই চলে আলে। ভারণর আর বারা चार्थ क्षात्र जनाहे चाक्षात वान्ना। शहरमग উপর লিভ'র। আবেদালির জাম লেই। লাত্ৰ জীবকাংশ জান ভাগচাৰ করে। केन्द्र क नामा। यस स्वन्द्र अवना विनिन्न काको। भागा विथि नेभारमा । मागारमा আভাবেতা পার হলে হালী সাহেবৈর গৈলোবাড়ী এবং পরে একটা বেতঝ্যেশ জার আডাফলের একটা বড় গাছ: গাছের নিচে ভাণ্যা কু'ড়ে ঘর-কোন আদ্যিকাল থেকে বিবিটা সেখানে পড়ে গোঙাচ্ছে। কি रयम अक बारिश विविधारक एक स्कामनिक **क्षान्यानस्य भारतीमः । अत्र अक्षांत भन्यम्** এক ভরমুক্ত কেন্ত। সেই ক্ষেত্তে বলে থাকে मान्द्रवर्ते। अथम भौरखन्न निम, अदेशव निम পার হলে প্রীক্ষের দিন আদবে। ডখন বেদ क्रेमम मक्तानरबद्ध घटका। ठाकुमवाकृषि यान्ता ञ्रेग्रम क्रम्यक विक्रि क्षम्य, जात गर्य ग्रेका ভূলে লেৰে ছোট ঠাজুনের ছাতে। এর গর্ব লে জমি থেকে ছোট ঠাজুরের হাতে কর টাকা ভূচে দিতে পারল।

হামের পর গ্রাম অথবা বিশ্বতীর্ণ মাত।
ম্পল্যান গ্রামগ্রিতি হাহাকার বেন।
কোনো কোনো গ্রামে হাজি পাহেবের মতো
ধনী আছেন, তালের সমুখ আনা ধরনের।
তরা, ওলের হেতেরা উজানে বার, পাতের
বারসা করে কেউ। মলজিনে ইন্সারা বিরে
তরা লিমি চড়ার। এইপব নেখে অভ্যা
করের রড় ইসহা একবার বড় একটা থাও
বামার। সেই মাও নিরে পাতের বারসা
করার সথ। পাতের গালাল অথবা বড়ে হতে
পারলে রড় সমুখের। বা করে হাজি সাহেব

আরু হিল্ম্-রামগ্রিস দিকে আকাথ—
প্রের বাড়ীর সরেন লাস—তার জামি আহে,
তাতের বাঙ্গার সরেন লাস—তার জামি আহে,
তাতের বাঙ্গার সাহে। বানবন্ধর বৃট্ট ডাড়,
গুই বউ। স্বেথ আহে লোভটা। আরু
তার্কর বাড়ীর মান্ত্রেরা শোলা বার
তার্কর বাঙ্গার মান্ত্রেরা শোলা বার
তার্কর পাগল মান্ত্র। মেজ ঠাকুর, সেজ
ঠাকুর পাগল মান্ত্র। মেজ ঠাকুর, সেজ
ঠাকুর প্রশাল রাজ্য বাড়ির নাক্রের
লোক। তারপার বাড়ির নাক্রের
লোক। তারপার আহে তেরের,
কাজ আছে। তারপার আহে তেরের,
কাজ আছে। তারপার মাবিরাক্তিরের বড়

মার্ক পার্থ। ইক্রা করলো করা প্রার্গ কোনার ক্রিকে আন্তর্কত পারে। ক্রিকে পার একনার ন্যালাকার মিঞালোচনরা বালিকে ক্রিকে ক্রেকে—তেন বালিকার ক্রিকারী। নাম বার কাপ মেডেল নিকো নাইনকে কর কি। করা কোনার পার্ব মার্কে নিকো বার লি কলো মিঞা-কার্টনার্মা কোটো বার্কি কিনে কার্কি কলো

শেৰে পড়ৰে কৰিয়াল বাড়। প্ৰভাগ মাৰি ধনী লোক, বিশ্বাসপাড়ার সাঠে काष्ट्रेमात बार्क धार म्बाराममानित बार्क्स স্ব সৈরা জাল্পাল ওর। লেখে ভুজার দ্যাথো গৌর সরকার—শালীর সনে পরীরত বার, যে হন ছাইতে গেলে জলপান করতে दनम मा, व्य मानूब नृदन ध्वयः नाननात पक स्टब्स्-अनारास ज्ञाप म्हरूपत स्वाप গুমাি ক্য— কৈবল টাকা টাকা, টাকা পেলে লে ভার সিজের কলিজা পর্যাত বিক্রি করতে পারে। কেল; ভাষতে ভারতে দতি লভ করে জেলল-ডেমা-র মলাইরা জবাই করতে পারলে পাশ্তি। লে টিংকার করে উঠল, ঠাকুম পাগল ছমি! ডেমোর পাগলামি— লে আর বলতে পারল না, ভাকগ্রিল ওকে जमाधमान्य स्मर्थ स्मा छेटोरान स्नरम अरमध्ये स्म इत्म इत्म इत्स्य व्यवस्था किन्द्र म्हार्थ म्हान्भात्र...विविधा ध्रथनख वित्रक्ष मा कि सहस्य अध्यन ! शांस नारश्रदश रहाँगे देशलाँ कि जान्दत 7717 इपि, बाशहरू हाता। तम हिरकान करत खेठेग. **ছালার ভাওটা আলারে ভরা**য়। হালার বিষি আমারে ভয়ার না সে বিবিকে **খ্য ক্রবে ভেবে পাগলে**র **ল**তো ट्टरंग केंगा रम शक ग्रहणेत मिटक ভাকিরে বলল, পোড়া হাড কি ভাল হইব লা আলো! সে ব-িহাতটা কোনো **বৃক্তম ভাল হাডে চোধের সামনে ভূলে আনল। দেখল কব্দির চান**ড়া কু'চকে श्राद्ध। स्मामा कीचा, कीचरक कानाकृष् र्याथा कारना कान पर्नाह। घरन एन এই रक्ता, नेगरमत विवित्त मरका भभाइ हरत বা**ছে। লে উঠোন বেকেই পা**গলের মতো চিংকার করতে থাকল, আমন্টর, আম:়া

ভাষা আবেদালির বিধি জালালি বাজে বাজির নিচ দিরে। বাল ঝাড়ের নিচে দালি জালালিকে দেখে মনে হল বিলে দেয়ে বাজে জালালি। এখন গরীব-গরবাবের সামনের স্থানার সময়। আলিবন-কারিকে সামনের স্থানার আর জয়াণ-দোরে, বিলোল জাঁমতে কট করে থানের ছয়া পর্যুক্তের স্থানে কেটে কেটিড জরা वात्र। अथम बार्ड किंद् छाई। कींका बार्ड। स्व नात्रत कांका द्वाँन। अथम नार्ट विका रमरम वाक्ता भागारका केंद्रा कांका। माना्क कुंकर विराम निरम रहे केंद्रका। रम बालाजिरक राट्य बलान, कांक्, कांक्रा ना

জালালি বাসহাটা বগলে নেখেছে।
মাখার ওর একটা পাডিল হিলা। পাডিলটার
জন্য মূখ দেখা বাজে সা। পাডিলটার
মাখার হিল বলেই হরত দেশুর ক্যা ওর
জানে বার্নাল। ক্ষরণ গৈতিও ক্রাণ্ট্রী
স্করণ জালাল পাডিলটা মুখ বেক্
মামরে এলে বললা, কি কও সিঞা। আমারে
কিন্তু কও নাকি!

—আরু কি কর্ম। বলে কেন্দ্র হৈ ফোলু লে প্রশিক্ত পাই গরাম হজে মতুথ নিবোধের হালি-লিয়ে ভাকাল।

-किंद्र क्ट्रेंट शक ?

—আম_ন গেছে এক দিশি জ্ঞান জানতে। জাইডাছে নাঃ

বলে, क्रामानि বলল, আইবনে। জালালি দড়িল না। সে কের পাতিলটা মাথার দিয়ে মাঠে থেমে গেল। বড় মাঠ সামনে। বাঁ পালে সোনালি বালির **ন**দী, নদীর চয়। চর পার হয়ে লোজা উত্তরম্থো হটিলে সেই বিল। ফাওসার বিল। বিলে একবার **উপায়কে কানা ওলা**য় ধরেছিল— এত বড় সিলা এ-পরগণাতে কেন, এ-रजनारक दक्षि जात रुन्हे। अक्यात विरनत জলে ভূমীয় ভেনে এসেছিল, বড় এক অবসর সাপ ভেলে উঠেছিল। তাম্বসর এই বিশের নানা রকমের কাছিমের গলের, সঞ্জাড মাছের গল্প এবং দ্বাভে সম্ভাতিলা মধ্-করের গণপ কিংশদণিতর মতো এ-**আগ**্রণ **হড়িয়ে আছে। সেই বিলে জালালি বাছে** শালকৈ ডুলতে। দৰ্য জালালৈ ার, জনেক এমন প্রায় হাজার হবে। ওর: প্রা**র্ভ ক**লে जानवा अहा कारत कारत रेक्ट इरल बार्ट्स मन्याम मन्याम किरत जामरूव। मृहशी মান্দ্ৰেরা শীতের তোরে শালকে ভূলতে বের হরে বাজে। বেলা উঠোলে গাভিরে नाफ़िता नव तन्यदिनः

আবেদালৈ এ-সমান্ত দেলেন্দ্র আসবে।
বর্ণা, লন্নং, হেমানেত সে ক্রিক্টা নৌকার
মানি, লীত, প্রীক্ষ আর ক্রেক্টা হিলাবপাড়ার কামলা, বাটাবে) এই তো প্রাম—
প্রামে মান্ত সাম্ভ্রু হাতাবার মান্বের মতো
চলাকেরা করতে পারতে। যত সাম্ভ্রু রাতাবার
মান্ব হরে যাতে, বত হিলাব ব্রক্তেরা
সাম্বেক সন্মান দিরে কথা বলতে, তত কেল্ব
সাম্ব্র প্রতি আকৃতী হছে। সে বেন ফেল্বের
বালা হরে বাতে ক্রমে।

বৈন এক মান্ব মিলে গেছে সমাতে,
মান্ত এক মান্ব বৈ এইসৰ ভচ্ন হিন্দ্ৰ
পরিবাজের মান্বনের চেরে কোন অংগে
কম বার না। লাম্ম ঢাকা থেকে এলেই
কেল্ড ব্র হাত করা বেকে বার। সে এর
ভাঙা-বাক সংগকে নালিল দেবার সমত্র



William Property and the second की नीवनात्व विकास कर अवस्थात चीका करन भार क्षेत्रीका बद्धा किन्द्री त्व पूर्व स्थानाटक भारत। मान्य tres sit ut tree uniter जिल्लाकारमः द्वारक बाह्यस्य जना अक्रो मानेगा अदि । जानेशा छ। कथा भागतन में क्रिक चारन-धर्मामा अन्त्रमात्री

Sayes .

100

5.65 MAG. 10 y. 10. E

. . . 4. 3.5

270 san zel a S 100 1 94 为基础4.5 . Jak **"快声"**" William . 2000 B Barrel ger tar≱mi 10 (4) 14 台,鹤 家门,就是

Sant Park

गरानी कार्यकात यस नारमः सम्बद्ध गरानी মান্ত্ৰ ভাৰতে লে প্ৰায় ভার গোটা স্থ-कारिकटक एकरव एकरमधिने। काल क्षेत्रा कन तकारमंत्र राजवान-सर्वात्रम् हाहे। जात्र कारा কর ব্রক্তার বিশ্বর ছাই, সাল্ভ ক্লতে বলতে উত্তেজিত হয়ে পথত। আমাদের करा राम, और राम, बाँग्रे काम शर व्यावादिक क्या हत्व । व्यावादिक प्रदेशक क्या बर्द। जीवकारण बाग्द्रव कथा जावजाहे अह

व्यक्तित्व ।

मान, मधन वहेराम कावात रहेरा देखा कथा बनाएक बाह्न क्रमा ग्राम वहा, एकन्द्र जब रक्ष्म जे जक बाबदरका निकास रक्षरक माचित्र त्राया कारण कारणे ध्यामा-মোলভির চেরে কম ধ্যানির ইটো নাও কিল্ড राज रकर७ कि रहा शामा काकादीने बाह्य रमारक बाबास केनस केक्ट्सा दम ब्हुम् कारण । वर्णन, राजान काक्षां, आक्षण मान



. .

ক্ষেত্র দেখ। সে মাথার উপরে ভান হাতে পালকভিটা বোরাতে থাকল।

বারে। তানদই বাহুরটা হাম্পা করে ভারকা। হাড় কের করা বাহুরটার মুখ দিকে কিন্দার লালা পড়ছে। বাহুরটার মুখ দিকে লাকে। করে লাকে। করে থাকা ভারকা করে করে বাবে। ভারতা হাতে একটা কাল পাওরা গেল। এত বেলারও বাবন আমু ফিরে এল না, বাহুরটা ক্রার হাম্প করেছে তবক নিরে তবে মাঠে নেমে হেতে হর। খেটাতে বেধে দিলে কিহু বালপাতা খেতে পাবে। ঘাসপাতা খেলে শন্ত হবে বাহুরটা।

আম্ আসছে না! কি করা বার?
সে ভাড়াভাড়ি ডান হাতে মাছগ্রিল তুলে
ফেলল। যরের ভিডর মাছ রেখে কাঁপ বল্ধ
করে দিল। সে বাছ্র নিয়ে গোপাটে নেমে
গেল। খোঁটা পং'তে দিলে দেখল কাভারে
কাভারে লোক বিলে শাল্ক তুলতে বাক্ষে।
সব ম্সলমান বিবি, বেওরা। ওরা এঅণ্ডলের সব ম্সলমান গ্রাম থেকে নেমে
বাক্ষে। আর এই ভো সামনে বিশাল বিলেন
মাঠ। হাইজাদির সরকাররা প্রেকুর পাড়ে
বাস্তুপ্তা করছে। ভেড়া বলি হক্ষে। ঢাক
বাজ্ঞে, ঢোল বাজ্ঞে।

বাস্তুপ্রের জন্য ঠাকুরবাড়ীর ছোট ঠাকুর বের হরে পড়েছে। সে হিন্দু গ্রামে উঠে সব হিন্দু গেরেম্থ বাড়ীতে বাস্তু-প্রায়ে তিল-তৃত্বসী দেবে। বাস্তুপ্রভার ঢাক বাজছে—প্রা-পার্বাগে ঘ্রের বেড়াবে, মধ্য পড়বে। ইন্ম আজ বাবে না। সে কাল বাবে। চাল কলা এবং অন্য তৈজসপর সব বেধি আনবে।

সরকারদের বাস্তৃপ্জায় কত লোক
এসেছে নতুন খাড়ী পরে—কপালে সি'দ্রের
টিপ, হাতে সোনার গহনা, পরনে গরদের
খাড়ী আর ওদের কেমন মিশ্টি চেহারা—
কি স্কর মুখ! একেবারে হান হেমতে
সোনালি বালির নদীর চর। প্জা হছে,
পার্যণ হচ্ছে। কুট্মের মতো ঠাকুরনড়ীর

হাগুড়া কুষ্ঠ কুটির

সবাপ্রকার চর্মারোগ, বাতরন্ত, অসাঞ্জা, ফুলা, একজিমা, সোরাইসিল, দ্বিত জতাদি আরোগোর জন্য সাক্ষতে অথবা পরে বাবন্ধা লউন। প্রতিতাতাঃ পাত্তির রাজ্যান পর্মা কবিবাল, ১নং মাধ্য ঘোর লোন, ব্রুট, হাওড়া। পাখাঃ ৩৬, মহাদা গাল্বী রোড়, কলিকাতা—৯। কোন ১৬৭-২০৬৯।

বড়বোঁ, ধনবোঁ প্রকুর পাড়ে নেমে এল।
জামর ব্বে ছোট এক কলাগাছ, নিচে
ছোট ঘট, ঘটের উপর নারকেল আর
চারধারে সব টাবেলা—বেন ডোজা প্রবেদ্ধ
অভাব নেই। তিলা কলমা শীতের বত খাল্যদ্রব্য সব ওদের আরবেঃ।

আর কি জনালা, জনালা নিবারণ হর মা জলে, জালালি জলের দিকে নেমে যাবার कना भारतेत ७-भारण व्यम्भा रस्त बास्क्। আর কি জনালা, বাছ্রটা কতকাল আর ঘাসে মুখ দিছে না। শীতের বাস— শিশিরে ভিজে আছে ঘাস। বতক্ষণ রোদ ভালভাবে না উঠবে, বতক্ষণ হিম খাস থেকে ভালভাবে না মরে যাবে ততক্ষণ বাছ্রটা ठान्न मीज़ित्त थाकरव, चारत मृथ रमस्य ना। সে রাগে দৃঃখে বাছুরটা বাস খাচেছ না रता लाउँ नाथि वीजरत पिन। वाद्यांग দ্-হাট্য মুড়ে মুখ থ্বড়ে পড়তে পড়তে र्विक राजा कारण अर मरन इच्छिल रक्वल ভাড়াতাড়ি খাসক'টা না খেরে ফেললে, এক ফাঁকে হাজি সাহেবের খোদাই বাঁড়টা অথবা গৌর সরকারের দামড়া গর্টা এসে চেটে-পূটে এই ভাজা ঘাস খেরে ফেলবে। এই ঘাস সে যেন মাঠে নেমে আবিষ্কার করে ফেলেছে। ভাড়াতাড়ি বাছুরটা যাস খেয়ে ফেললে আর কেউ এসে ভাগ বসাডে পারবে না। কিন্তু বলিহারি যাই হালার মাণী আহা ভাগে এক বাছার এনেছে! এমন এক মরা বাছ্র বার কপালে সুখ নাই, গায়ে বল নাই, আছে কেবল ছড়ানো ছিটানো অথবা ধ্যাবড়ানো স্বর্ময়, পাড়াময় —আন্তর কথা মদে হতেই সে সব ফেলে গাঁয়ের দিকে উঠে যাবে ভাবল। এক দিশি তেল ধার করতে এত দেরী!

দ্রে ঢাক বাজছে, ঢোল বাজছে। ওর कारन वर्ष्ट्र रवर्ष्ट्रभ नाशर्ष्ट्र भव्नको। कार्नानिएक দেখা বাচেছ। অনাহারে জালালি কাতর। এখন ফাওসার বিলে নেমে বাবার জন্য প্রতাপ চন্দের ঘাট পার হচ্ছে। সে, সামনে বেসব জমি আছে, শ্যাওড়া গাছের বন আছে তা অতিক্রম করে কেনেদের প্রুর-পাড় ধরে হটিছে। সেই এক বিস্তীণ নাঠ, মাঠের সব জমি প্রভাপ চন্দের। সেইসব জমি পার হলে। কাওসার খাল। খালের পারে পারে বত ছবি পড়বে—পাটের আবের, এমদকি করলার জমি, জমি স্ব গৌর সরকারের। তারপর বত জমি, সব জমি হাজি সাহেবের। হাজি সাহেবের ভিন বিবি, ছোট বিবির বয়স আর কভ-এই এক কুড়ি চার-পাঁচ হবে। হাজি সাহেব উদের দিনে তিন বিবি অসজিদে নিয়ে वावात সমর চারিদিকে নজর রাখেন। সতক নজর। কেউ ভিছা নজর দিরে গিলে रमनन किना एएरथन। जन्छतारन किन्द्र एनथा বায় কিনা, হেই হেডা কি হইছে। নজরে লালসা ক্যান, বলে হয়ত একটা পাঁচনের খোঁচা মারেম মাইজলা বিবিয়ে। খোঁচা দিয়া কন, বিবিরে, আঃ সোনার বিবি, পথ দেইখা र्हि। छथन क्वम क्वम कामि मस्त स्त्र

সে গোপাটে দাঁড়িরেছিল। বড সেই অধ্বৰ গাছটার নিচে বিভিন্ন সব ঘটকিলা গাছের ঝোপ, পাতারাহারের জ্ঞাল। শীত-কাল বলে জপালের ভিতরটা শ্বকনো খট-খটে। ভিতরে ঢাকে গোসাপের মডো মোপের ভিতর সম্তপূর্ণে **প**ড়ে থাকলে হয়ত মাইজলা বিবিরে দেখা হাবে-কারণ, ও-পাশটার হাজি সাহেবের অন্দরে পত্রুর। কোপের ভিতর থেকে উ'কি দেবার আগ্রে চারপাশটা সে দেখে নিল। বাদিকে আবে-দালির ঘর, কেউ এখন খরে নেই। আম-গাছটার নিচে ভাঙা ধর এখন খালি। দক্ষিণ-দ্যারী ঘরে সেই কবে জোটন বাস করত, এখন জ্লোটন নেই বলে বয়ণর বৃষ্টিতে কড়ে ঘরটা একেবারে মাটির সঞ্মে মিশে গেছে। কিছু ঝোপ জংগল, বেড-গাছ আবেদালির বাড়িটাকে সব সময় অন্ধকার করে রাখে। কোন রকমেই শীতের সূর্য আবেদালির উঠোনে নামতে চার না।

আর এইসব খর উঠোন এবং ঝোপ-জপাল পার হলেই-হাজি সাহেবের আতা-বেড়ার ও-পাশে ডিন বিবির গলা কারের চুরির মতো জলতরপা বাজিরে চলছে। ক হাসে! হাসতে হাসতে মনে হয় হালার म्ह्रीनहा शिना **क्यानर्य। मिशिएफ यस** नन्या টান ধানক্ষেতের সাদা আলের মতো। আর ভুরে শাড়ি হটিরে নিচে বেশীদরে নামতে চার না। ঝোপের ভিতর থেকে ফেল্মেরিরা হরে একার উ'কি দিল। হাত পঞ্চা হয়ে যাছে, ডান হাতটা কোনোরকমে कारक नागरक अथनल, करव अहे हाछ भवन्छ भन्मा, हरत बारव—रन द्यात এकते। মরা সাপের মতো বোপের ভিতর পঙ্কে থাকল। ঝোণের পাল দিরে ঘটের পথ। হাজি সাহেবের অন্দরের প্রকৃরের পানি কি কালো। পানি দেখলেই বিবি বৌদের পেন্ট জনালা ধরে। তলপেটটা শির শির করতে থাকে। কালো পানির টানে চুলি চুলি সময়ে-অসমরে মাইজলা বিবি খাটে দেখে चात्म। এलেই भन कत्त्र हाछ शत् स्कलाय. ধরে ঝোপের ভিতর টেনে—ফেল, আর অপেকা করতে পারল না। সে কজপের মতো এবার গলাটা ভূলে ধরল। সে মরা সাপের বতো বেশী সমর শিকারের আলার ৰোপের ভিতর পড়ে থাকতে পারছে **अ**'।



আট ডজন স্যুট ও শালপাত

একটা বাজতে না বাজতেই বেয়ারা এসে লাইট-ফানগ্রলো পটাপট নিভিয়ে দিয়ে গেল। খোলা ফাইলের ওপর পেপার কথেন। ঝালান্নমেশানো বিশ পয়স। জ্ঞোড়ার শশাতে টিফিনটা বেশ জবর হছা।

সাত মিনিটেই টিফিন শেষ করে মোড় থেকে ফিরে এল। সিড়ির মূবে দাড়িরে এপাল ওপাল দেখে সভাং করে নন্-ঝাল-মেলানো শশার জলট্কু শালপাতাব শেলট থেকে টেনে নিল। লেটটা বার-দ্রেক শ্নো পাক থেয়ে লিফট আর সিড়ির মাঝে করিভোরে ভূমিশব্যা নিল। রথীন ফিরে এল সেকশনে।

এবার কাড়া পঞ্চাশ মিনিট ধরে চলবে টুনো ট্রাম্পস, প্রি ম্পেডস, ফোর হার্টস, হাঁকাহাঁকি, যতক্ষণ না বেয়ারা এসে আবার লাইট জনালিয়ে, ফ্যান চালিয়ে ঘোষণা করে খেল খতম, কাঞ্চ শ্রে। কিন্তু গীতেশদার টোবলের কাছে এসে রথীন ব্ৰুতে পারল আজ গোড়াতেই খেল খতম হয়ে আছে। অ্যাকাউণ্টসের মিত্তির এসে গীতেশদাৰে উম্প্ৰে দিয়েছে। তিন পারুষে বনেদী কেরানী গীতেশচন্দ্র পাল তেড়েফ,ডে গল্প ফাদতে বসেছে। নাহ, লোকটাকে নিয়ে আর পারা গেল না। নেহাং ভাসটা খেলে ভাল তাই বাদ দেওয়ারও জো নেই। গণেপর বাই প্রচণ্ড। **এक्बस्य मृह्यागः (शलादेः दल। এक्ट्रे शन्भ** সাজ্যমবার ারপিট করে কানের পোকা বার ক্রেরে দেরে। তবে । মানুষ্টা । খাটি। সাতে পাঁচে নেই। না থাকার কারণটা त्रशीन गुप्तरक, जैयर गुए। সরকারী আন্দারটেকিংয়ের কলকাতার এই সেলস ডিভিশনে বদলী হয়ে আসার আগে দাদা ছিল স্কভানপুরে কোম্পানীর ফাকটদীতে। একটা বড় ঝামেলায় জড়িয়ে পড়তে বড়সাহেবের পা কড়িরে. কে প্ৰ नाक्ष्मात्म कानग्रात्म र्यापित সিরিরাস অসংখের সাটি ফিকেট দাখিল করে পালিরে এনেছে। এনেই জমিয়ে তলেছে তাবের আন্ডা, আর সেই সংগ্র গকেশ্ব মজালাণ। অভিন্তার পেটটা সর্বদাই আইঢ়াই করে। একটা টুর্সাক দিলেই তাসফাস কুলে গিরে ঝোলা ঝাড়তে বসে বার গাঁতেশদা। কবে কোঝার কোম সাহেব কত লাখ টাকা ঘ্র থেরে কোশ্পানীকে একেবারে লাটে তুলে দিরে-ছিল সেই সব ঝাল-মশলাদার গল্প। টোবলের চারপাশে কালগদের ভিড় ঠেলে কানটা বাড়িরে দিল রথীন।

শ্নতে পেল গাঁতেশদা বলে চলেছে, ভারপর ব্যাল মিভির, পারচেজের স্পারিনটেনডেনট আপ্রফ সাহেব ফাইনটা গাঠিরে দিল পি ও থি বক্সী সাহেবের কাছে। কি হল, ভূর, কোঁচকালি কেন.

আমতা আমতা করে জ্ব কৌচকানোর কারণটা মিন্তির খোলসা করে, পি ও প্রিটা কি দাদা?

মিত্তির বেন দার্ণ একটা হাসির কথা বলৈছে, হো-হো করে হাসতে গিরে কেশে-টেসে একেবারে একাকার কাণ্ড। কাশির বেগটা একটা কমতেই, রামালে म्पो মুছতে মুছতে দাদা গম্ভীরভাবে বলে, থেয়াল ছিল না যে এটা একটা পুত্ৰে ডিভিশন। স্লেফ বি**রু**বিটোর ব্যাপার। তা কেনাকাটার কিছু না থাকলে তোরা জানবি কি করে যে পি ও থি কাকে বলে। সে ছিল আমাদের স্ফোতানপ্রে। এলাহি সব কান্ড কারখানা। দেখলে মাথা খ্রে যাবে। বছরে সাত আট কোটি টাকার মাল কেনা হয় সেখানে। কোম্পানীর পারচেন্দ্র ডিপার্ট মেশ্টটাই তোদের এই সেলস ডিভিশনের ভবল। একজন ,দেটারস আনভ পারচেজ ক্লটোলারের আন্ডারে म्य-म्यटिंग म् भाविमएजेनएजन्छ । একদ্বন স্টোরস. অনাজন পারতের। **जा**गाव পারটেক স্পারিনটেনডেন্টের আ ভারে সিনির্য রয়েছে চারগণ্ডা ব্নিরর পারচেন্স অফিসের। তিনন্ধন সিনিয়ন ক্রাস ওয়ান, সাডটা জ্বনিরর। এ-ছাড়া ক্লাস ট্র इकन। এकम वारतायन क्राक् म्हिला-টাইপিন্ট, বেলায়াটেয়ারা সব মিলিয়ে।

বলতে বলতে একট্ন থামল গাঁতেশদা, কাশিটা বেড়েছে! পাঁচ ফ্রট সোচা দুই ইণ্ডি শরীব্ন বেন, খসখনে কাশো মধ্যের সিলি- **শ্ডারটা। তার ট্র-থার্ড ঢাকা পড়ে গেছে চেরার** टॅरियल। याकी**डा टाउक इटाइड अक्डो क**ाल প্লীভ সার্ট, হাফ হাতা সোয়েটার মাফলার। দাদার আবার **আলার্ভিক** ত্রংকাইটিস। শীতকালে কাশেন কম। বর্মা পড়তে না পড়তেই হে'পো রুগীর মত দম গোটা আইকানো ধক্থক আওরাজে তিনি অফিসটাকে জানিয়ে एम द আছেন। মেবিলের ওপর সিরাপের শিশি, ট্যাবলেটের প্রান্তা এখনও প্রজ্ঞো

-কাণির:ফ্রোটা একটা কমতেই পীতেশ-দার গলা শনেতে পেল রথীন, এক একজন ः আফলার এক একটা আইটেমের ইনচার্জ ৮ যেমন ধর মেনন সাহেবের হাতে ছিল সব-दक्य रेलकप्रिकाल ग्रह्मात क्वाकाग्रह ভার। কৈমিক্যাল দেখতেন টি ডি পাঁকড়ে। আর আমার কর্তা সি বকসীর হাতে ছিল মেকানিক্যালের সমুস্ট পারচেজ। গণ্ডা গণ্ডা অফিসার, কে কোনটার ইনচার্জ তাই বোকার স্থাবিধের জন্য আইটেম ওয়াইজ অফিসারের কথর। মেকানিকাল তিন নবর, তাই সাহেবও পি ও থি। আর আমি **তথন তার** আ-ডারেই কা**জ** করি। সি**কসটি সিকসের** শেষদিকের ঘটনা এটা।

খ্ব নীচু গলা ছলেও, রখীন স্পর্কী শ্নতে পেল কালের ছোকরা ক্লার্কী বারীনের টিস্প্নিটা—ভারপরেই গীতেলদা ব্যাঝ কলকাভার চলে এলেন।

অবিশ্য এসৰ ছোউখাট কথা পারে
মাথেন না গাঁতেগদা। জানে এটা ছোকারা
বদ-অভ্যাস। বরস হলে কেটে বাবে। ভাই
উতাপের একটা হাসিতে বারীমকে
নির্বাক করে দিয়ে কেম শ্রু করে, ট্রান্সফর্মার ডিপাটমেন্ট খেকে একেনরে প্রইং
সমেত রিকুইজিশন পাঠিরেছে। স্পারিকটেনডেনট আন্তদ্ধ সাহেবের বর থেকে কিরে
এসে বক্সী সাহেব বলকোন, পাল, দেখা
তো টাস্সফর্যারের আ্যাসিসটান্ট স্পারিকডেনটকে লাইনে পাও কি-না?

ট্রানসক্ষারের মেজ কর্তাকে লাইনে দিতে না দিতেই বন্ধী সাহেব বুলাকেন

অ্যানড কোম্পানীর কলকাতার স্রেশ রিপ্রে**ভেনটোটভ**কে একবার খবর পাঠাও তো। ব্যক্ষাম, নিশ্চয়ই আবার কোন বড় মাছ উঠেছে জালে। নইলে ভেন্ন ভিপার্ট মৈন্টের মেজ-কর্তা, সাম্লায়ারের রিয়েজেনটেটিভের খেজি পড়ে কেন? চুপ-চাপ স্ব দেখে যেতে লাগলাম। জানি ফাইল শেষ পর্যন্ত তাৈ আমার কাছেই ভাসবে। বাইরে চিঠি, চা-পাটি যা যাবে সবই এই শর্মার হাত দিয়েই ইস্ফু ভখনই বোঝা যাবে ব্যাপারটা কি?

আন্দাক্ত যা করেছি, ঠিক তাই। ট্রান্সফ্মান্তের মেজকতা লাইন ছাড়তে না ছাড়তেই স্কুরেশ আনেড কোং-এর খোদ মালিক এসে হালির।

তবে যে দাদা এক্ছনি বললেন, কোম্পানীর রিপ্রেজেনটোটডকে ডেকে গাঠিরেছেন আপনার সাহেব, তা মালিক এল কোথ্ থেকে?—চিড়বিড়িরে উঠল বারীন। ছোকরার ভারী সদেহ বাতিক।

বার বার বাধা পেরে দাদার দ্রুদ্টো একবার শুধ্ কু'চকে উঠল। একটা কাশির বাড় গালে ফেলে চ্বতে চ্বতে কাঁথর-গলার দাবাড় দিল গাঁতেলদা, থাম দিকি। অভ ভঙ্গড় করিস না। তোর তো সবতাতেই সক্ষ: আগে শোনই না।

মিত্তিরও মওকা পেরে বারীনকে একহাত নিল, এত সন্দেহ কিসের রে? দাদা
কি গ্লে ঝাড়ছে? এ-তো সব লাইফের
এক্সিপিররেল্স। তোর দ্ধের দাঁতই এখনো
পড়ল না, ব্রবি কি করে কোথার মালিক
নিজেই হর রিপ্রেলেন্টোটভ।

যা বলেছিস মিত্তির, ছে'ড়া স্তায় গিট বাঁধতে বসেন দাদা, কোম্পানী ছাই। মালিকের নামেই কোম্পানী। সংরেশ আগরওয়ালা ধ্রুবধর বিজনেসম্যান। একাই **চারটে কোম্পানী** চালায়। নিতা নতুন অর্ভার ধরার মতলবে প্যাড ছাপিয়ে কোম্পানীর সাইনবোর্ড পাল্টে ফেলে। কোম্পানীগুলোর অফিসিয়ালি হেড-কোমাটার কলকাতা। আসলে মালিক যেখানে কোম্পানীও সেখানে। আগরওয়ালা **নিজেই কোম্পানীর রিপ্রেজেনটেটিড। ওর** বিজনেসই ছিল আমাদের মেকানিক্যাল পার্টস ইত্যাদি সাংলাই করা। আর সেজনাই সারা বছর স্পতানপ্রে থাকত।

আমার কর্তা বক্সী ঝানা অফিসার।
এমনিতে থ্বই কোরালিকারেত। আই
আই টি-র মেকানিকালে গ্রাজনুরেট। গভর্ণমেকেইর টাকার জার্মানী থ্রে এসেছে
একবার। কোলা বছরেই সিনিরর ক্লাস
ভরান। কাজটা ব্রুত ভাল। অনানা
অফিসাররা যে নাল আনতে বছর খ্রিয়ে
কিলে বক্সী ভাই আনাত দ মাসের মাধা।
ফলে আন্তথ্য সাহেবও খ্রে প্রুল একেই
চোধ-কাল আইটেমের ফাইল একেই
চোধ-কাল বাজে ঠেলাকা বলাকীর কাল।
ভবে বস্ত্রীর ভালজান ছিল দার্গ। এতে

বছর একসভা কাল করেছি, কথনো দেখিন অভিট ওর কোন পারচেন্তে অবজেক-শন দিয়েছে।

র্থীন নিজে ইণ্টারনাল অভিটের লোক।
সব তাতেই খ'্তখ'্ত বাই। তাই শেব
কথাগ্লো শ্রেই ওর কান খাড়া হরে
উঠল। বলল, দাদা একট্ ঝেড়ে কাশ্ন
তো। আপনার বকসী সাহেব কি ভাবে
অভিট এড়াতেন?

হাসতে হাসতে জবাব দিল দাদা—সে
কথাই তো বলছি। এখন শ্ধু শুনে বা,
পরে প্রশন করিস। তারপর ব্রুপল,
আগারওয়ালা তো এল। কিউবিকেলের
ভেতরে বসে ওদের কি কথা হল ব্রুলাম
না, তবে দিন দ্রেক বাদেই সাহেবের
তুলাট দেওক্সা ফাইলটা পেলাফ্য—এই এই
ব্যোপ্সানীগ্রোক ইমিডিয়েটিল চিঠি
পাঠাও। সাড়ে সাত হাজার অরেল সাঁল
চাই, আকেরভিং ট্লেপিমিফক ড্রইং।
ওদের কোটেশন পাঠাতে বল।

এবার মিত্তিরই বাধা দিল, অরেল সীলটা কি দাদা?

ব্যক্তিয়ে অয়েল সীল হোল, দাদা দিল, এক ধরনের রবার বা চামডার চাকতি। মাঝখানে বড় একটা ফুটো, সাইডে পেরেক বা ক্ষ্ম ঠোকার মত গোটা ছোট ছোট ছণাদা। জেনারেলি কয়েক মেটাল পার্ট জয়েন করার म, हो। সময় বসিয়ে দেওয়া হয়, যাতে মাঝে তেল লিক নাকরে। এক একটার দাম বড়জোর চার আনা। না থেমেই বলে চলে গীতেশদা চাই সাড়ে সাভ হাজার পীস। কোম্পানীর নামগ্ৰ লো দেখেই ব্ৰলাম **हाना** किं লোটা কোথায় ? সাতেক কোম্পানীর নাম দেওয়া আছে। न्, हो। थ, वहें वर्ष। खन्ना व्यवस्था সীল भाग-काकातातरम् । भाग-काका राज्य । তবে স্ট্যান্ডার্ড সাইন্ধের মাল চালান দিয়েই কুলোতে পারে না তো স্পেশ্যাল ডিজাইন অন্<mark>যায়ী বানাবে কি। তাছা</mark>ড়া এসব খৃচরো অর্ডার ধরলে ওদের পোষায় মা। ওদের চাই লাখ বে-লাখের অড'ার।

বাকী পঠিটার মধ্যে একটাকে বকসী
সাহেব লাল্ট ডেটে চিঠি পাঠাতে মুখে
বলে দিলেন, বাতে আর লোটেশন পাঠাতে
না পার। ফলে, পড়ে রইল আর চারটে
কোশনানী হার মালিক ঐ সুরেল
আগরওরালা। সাহেব আলেল করেছেন,
আর আমি তো হ্কুমের গোলাম। পাঠিমে
দিলাম চিঠি।

একুণ দিন সময় দেওয়া হল। শেষ
পর্যাত কোটেশন এল মাত ঐ চারটে
কোপানী খেকে। বা ভেরেছিলাম ঠিক
গাট বড় দুটো বা যেটাকে লাল্ট ডেটে
চিঠি পাঠিরে ছিলাম, একটারও কোন
জবাস আমে নি। ভখন আমি যে চারটে
কোপানী কোটেশন পাঠিরেছে ভাগের

1

নান, বাম দামের বিশিষ্ট তৈরী করে
বকসীর কার্ছে ফাইল লেস করলাম।
আগরওরালা একই জিনিবের চার রকম
দাম পাঠিরেছে চারটে ফোল্পনীর নামে।
একটা কোল্পানী লিখতে তারা এক টাকা
সহিতিদের কমে মাল সাম্পাই দিতে
পারবে না ব্নাম্বর কোল্পানীর রেট
এক টাকা পাচিদ। তিন নাম্বর চার পিস
পিছ্ একটালা বারো। আর চার মান্বর
এক টাকাতেই রাজী।

ব্যস। অভীর পেল চার ন্ত্র কোম্পানী। তারাই লোয়েস্ট প্রাইস করেছে। নাও এখন কি করবে অভিটের বাবার সাধ্যিকিযে বকসীর টিকি ছোঁয়। কাগজেকলমে সব ঠিকঠাক। দেখে মনে হবে সতািই বুঝি জিনিষ্টার দাম এক টাকা থেকে এক টাকা ছ আনার মধ্যে ভারে করছে। চার-চারটে কোম্পানীর কোটেশন। মালটার দাম যে মোটামটে এই হতে পারে, সবাই তাই বুঝবে। ভাছাড়া লোয়েন্ট প্রাইস কোট করেছে যে কোম্পানী তাঁকেই অর্ডার দিয়েছে স্কুলতানপ্র সেণ্টাল *ইলেকণ্ডিক্যালস*। কারুর বলার কিছু নেই। আর এই স,যোগে আগরওয়ালা চার আনার মাল এক টাকায় বেচে, নমাল প্রফিটের ওপরে আরো বারো আনা এক>ট্রা প্রফিট পিস-পিছ, লুটে নিল। তবে ঐ বারো আনার মধ্যে আমার কতার শেয়ার ছিল ছ আনা।

বাগীনটাকে দাবিয়ে রাখা মাসিকল। স্বোগ পেয়েই ফস করে উলসে উঠল, গভর্নামেণ্ট আন্ডারটেকিংয়ে মাল কিনতে গোলে টেন্ডারকল করতে হয় না ব্রিফ?

ধীরে বারীন भौदत । কল বরতে হয় ত:ব HM-**गेकात अस्ता** स्था বিশ হাজার একি তোদের এই প্ৰ'চকে সেল্প ডিভিশন পেইছিস যে সারা বছরে কালি, কলম, দোয়াত, কাগজ আর গোটা কয়েক লাল-নীল পেশ্সিল কিনধে। এখানে ছটা ফাান কিনতে গেলে তোদের ঐ পারচেন্সের স্কুমার চোন্ধবার ছোটে ম্যানেজারের খরে। আর স্বতানপ্রের ফ্যাকটরীতে একজন ক্লাস টু অফিসার দেখেছি ছ হাজার টাকার মাল ওপরওয়ালার পার্রাম-শন ছাড়াই কিনতে পারত। আর এটা তো ব্ৰিস ফ্যাকটরীতে এত ফাইল চালাচালি, টেন্ডার ভাকাডাকি করতে গেলে প্রোডাক-শন বন্ধ হরে যাবে। তাই অফিসারদের ঐটুকু ক্ষমতা ওথানে থাকেই। যেমন আমার কতার দেখেছি দশ হাজার টাকা পর্যানত বুসের কনকারেন্স লাগত আর সেই সূথোগেই বক্সী সাহেব টাকার চার, ছ আনা কমিশন মারতেন। কমিশনই যদি না পাবে তো বেছে বেছে ঐ আগর-ওয়ালাকেই বা অর্ডার দেবে কেন। ভাহলে তো আরো অনেক্সালো ছোটখাট এনলি-শেউড জেন্টন কোম্পানী ছিল বারা মূৰ मा नित्र हात इ जानाएउँ प्रामणे मान्नाई দিতে **পারত। সে থেকেই এক** আধ আনা ন্মাল প্রফিটও কোম্পানীর থাকে। কিন্তু বন্ধীর তাতে কি শাভ? সাতশো সাড়ে বারোশ দেকলের মাইনেয় তো আর লুধি-बानाव वाफी वानात्ना याद्य ना। म्हीद नात्य গাড়িও কেনা চলে না। বন্ধীর ফ্লাটে দেখেছি ফ্র**ীজ রেডিও**গ্রামে ঘর-ঠাসা। একটা মদের লোস দেখলেই চমকে কি গড়ন আমে কি পাতলা। কম সত্তর পটাত্তর টাব্দা ভব্দন। বউ চোথের পাতার কি সব गद्रमिष् अ किनियं अपरान देश ব্লাকে দেড়ুশো পোনে দুশ পর্যন্ত একটা টিউবের দাম। কম করেও সাত আট ডজন সাটে ছিল সাহেবের। রোজই নতন নতন টাই **হাঁকিরে অফিলে আসতেন**। এত সব খনচ কি গভগমেন্ট দেবে না ঐ মাইনের হয়? ফলে ব্যাক্ডোরেট পর্যিয়ে নিড সাহেব। আর ব্যাক্ডোরের গাড়াকলে বন্ধী শুধু ক্লাস ওয়ানই একেবারে পরলা নদ্বরী।

দাদা **একটা থামল**, ভারপর কলের খুণিটনাটি বোধহর মনে कानिएस निरम एक्स न्यू कर्मन, রিপিট অর্ডার কাকে বলে জানিস ? রিপিট অর্ডার হচ্ছে একই মাল ইচ্ছে হলে তিন মাসের মধ্যে পারচেজ অফিসার জরুরী প্রয়োজনে একই কোম্পানীর কাছ থেকে পারে। তার জন্য ওপরওয়ালার পার্রামশন লাগে না। এই ধরনা আয়েল কেস্টা। আস্লে प्रान्मसम्भा व ডিপার্ট'-মেণ্টের চাহিদা ছিল পনেরো অয়েল সীলের। এখন এক টাকা করে দাম হলে পনেরো হাজার পীসের দাম পড়বে পনেরো হাজার টাকা। আর দশ হাজারের বেশী হলেই পারচেজ স্বপারিনটেনডেনটের সুপারিশ চাই। বক্সী ঘোড়েল रम धे नाहेराहे शन ना। আগরওয়ালার সঙ্গে কথাবাতা শেষ করে ফোনে ফর্মারের আর্নিস্ট্যাপ্ট স্বপারিনটেন-एउनऐरक वनन-विकृष्टे जिनान লিখেছেন এথানি সাংলাই চাই। যদি **খাব আজে** দিস থাকে তাহলে অর্ডারটা দ্ব-ভাগে ভাগ করে দিন। একানি আনিয়ে দিছি। একসপো আনাতে গোলে দাম যা পড়বে দেখাই তাতে বড়সাহেবের কন্ফারেন্স नागदा शिक्षिकि मध्य नच्छे श्रव।

ত্বীপ্রক্ষমারের মেজকর্তা তো আর
হাসে মুখ দিয়ে চলেন না। তিনিও
ইপ্সিতটা ব্যক্তেম। সুপো সপো প্রোনো
রিকুইজিশমটা ফোরং নিয়ে নতুন রিকুইজিলন পাঠালেন হু খেপে, সাড়ে সাত
হাজার করে। সেজনা চার্জ করলেন ফাইড
পারসেও কমিশম অর্থাং পনেরো হাজার
টাকার মালে তিমি পোলেন সাড়ে সাতশো
টাকা। বল্লী পোলা সাড়ে পাঁচ হাজার।
আর সব দির্থান্ত্রেও আগরওয়ালার
বাড়াত নায়ন হলা নিট পাঁচটি হাজার।



টাকা। একটা ছোট পারচেজেই এত মধ্ ভাহলে বোঝ লাখ বেলাখে কত থাকে।

কথার তোড় থামিয়ে গীতেশদা এক-বার প্রোতাদের মুখের ওপর চোখ ঘুরিয়ে দেখে নিল কার कি রি-আকশন। তারপর মাফলারের পাাঁচটা জন্পেস ফরে গলায় আটিতে আটিতে বলল, এবার বৃশ্বলি তো মিত্তির, কেন সরকারী আন্ডারটেকিংগ;লো বছর বছর এত লোকসান দেয়। যদি চার আনার র-মেটিরিয়ালে গভর্ণমেণ্টকে বারো আনা গড়া দিতে হয় তাহ*লে* প্রোডাকটের দাম কত পড়বে হিসেব করে দ্যাথ। এখন ব্রুতে পার্বাছস তো কেন তাদের এই সেলস ডিভিশন খদেরের অভাবে থা খা করে। কারণ কাস্টোমার তো আর বোকা বৃশ্ব নয় যে জেনেশুনে এক আনার মাল চার আনায় কিন্ধে। সেম প্রোডাকট প্রাইভেট কোম্পানীগুলো সিকির সিকি দামে বেচে বছর বছর ব্যালাস্স সীটে লাখ লাখ টাকা প্রফিট দেখাছে, শেয়ারহোল্ডার-দের ডিভিডেণ্ট দিছে। আর ওদিকে স্বতানপ্র সেপ্টাল ইলেকট্রিলালসের তো ঢাকের দায়ে মনসা বিকোনোর खबन्धा ।

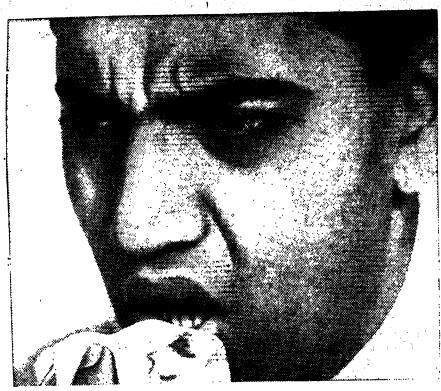
তাতো ব্যবসাম দাদা। তবে আপন্ধি কেন ও সোনার খনি ছেণ্ডে এই ছাইগাদার এসে পড়ে রয়েছেন?—ফিচলেমিতে ধর্মীন ওলতাদ। ফাঁক পেরেই ফুট কাটতে শ্রে করেছে—শুধ্ কি কলকাতাম থাকার লোভেই না কি কোথাও ফে'সে গিচে—।

বারীনের সেনটেনসটা আর ক্ষা প্লাই হোল না। তার আগেই মিত্তিরের বাজখাই গলার এক থাপ্পড় চড়াৎ করে বেজে উঠল, আহ কি হছে বারীন। বৌদির চিকিছে করানোর জনাই তো দাদা নিজে থেকেই ট্রান্সফার নিয়ে এসেছে। তাই না গাঁতেশদা?

যা বলেছিস, কোনরকমে সংক্ষেপে
মিত্তিরকে জনাব দিয়ে ঘড়াং ঘড়াং করে
রমাগত কেশে চলে গীতেশদা। বেয়ারা
ভাগদিশ কোন ফাঁকে এসে যে লাইট জনলিয়ে
ফান চালিয়ে দিয়ে গেছে প্রোভারা কেউ টের
পাম নি। মাানেজারের ঘরে 'বাজার' টেপার
আওয়াজ হতেই যে বার টোবলে ফিরে
গেল।

রথীন পেপার ওরেট সরিরে আবার ফেলে রাখা ফাইলটার পাতা ওল্টাতে শুরু করল। থেকে থেকে একটা আক্ষেপের মাডি সেদিন প্রের বিকেলটা রথীনকে জনালাল, কাজে মন বসতেই দিল না—এর চেয়ে যদি সূলতানপ্রের ফ্যাক্টরীতে বক্সী সাহেবের জান্ডারে কোন কাজ জুটত তাহলে আর শালপাতা চেটে দ্বপ্রের ক্ষিধে মেটাতে হৈতে না। কালি কি হওয়া যার না?

--निधरनः



স্ত্রি-কালিতে শরীর ত্র্বল হরে পড়ে -- আরু পাঁচরক্ষ রোগে ধরে

শ্বাস্থ্য ও শক্তির জন্য ওয়াটারবেরিজ কম্পাউণ্ড

সাদি-কালি হলে শারীরের রোগ- নিরোধক শক্তি করে বার, শারীর প্রবঁল বার পড়েও অঞ্চান্ত রোগে আক্রান্ত হওয়ার আশংকা বাকে। নির্মিত ওয়াটারবেরিজ কলাউও থান। ওয়াটারবেরিজ রেড লেবেল-এ ররেছে কডিশর শক্তিকারক উপকরণ বা হারানো কর্মপান্তি কিরিয়ে আনে, জিলে বাড়ার্য়, শারীরে রোগ- প্রতিরোধ ক্ষমতা গড়ে তোলে। এতে 'ক্রিয়ারোটি' ও 'ওয়াকল' বাকার সাহি কালিছ উপশ্য হয়। সেই জড়েই ওয়াটারবেরিজ রেড লেবেল আলনাকে প্রস্থানকল রামারে।

उगाणिताचातिक कञ्माउँ -मन्द्राव निर्वतावामा हेनिक्

बहामात-मामार्ड कर कराने करणामन ।



প্রেমের অবসেশন অনাদির সংকট

(24)

এবার অনাদির কথা।

অনাদি প্রেমের অবসেশনে ভুগছে। নীলিমা তাকে ভালবাসে না কেনেও সে নীলিমার চিণ্তা থেকে মৃক্ত হতে পারছে না। স্বপনে জাগরণে নীলিমা তাকে আচ্ছন করে রেখেছে। কোনো কাব্দে মন দিতে পারছে না, অফিসের কাজকমে ভূল হয়ে যাতেছ। ঘুম নেই, খিদে হয় না। নীলিমার জনো আথিক ক্ষতিও কম হচ্ছে না। মাঝে মাঝে 'ইনস্পেকশন ট্যুরে' বেরুলে টি-এ, ডি-এ বাবদ বেশ কিছ্ বৈধ-রোজগারের সম্ভাবনা থাকে। শ্রীর খারাপের অজ্হাতে 'টার প্রোগ্রাম' সে কোনোমতে এড়িয়ে চলেছে। কিন্তু আথিক ক্ষয়ক্তিকে খ্ব বেশি আমল দিচ্ছে শা অনাদি। তার আসল সমস্যা নীলিমার চিন্তা থেকে মৃত্ত হওরা। সেই সমস্যা সমাধানের জন্য সে আমার শরণাপল্ল। নীলিমার চিত্তা তাকে আন্টে-প্রতেঠ বে'ধে রেখেছে। এই চিম্তা না ছাড়তে পারলে তার শান্তি নেই। আর একটা অন্রোধ আছে। সে নীলিমার মনের থবর জানতে চায়। মাঝে মাঝে কেন তার মনে হয় নীলিমা হয়ত তাকে আচার-ভালবাসে? নীলিমার হাব-ভাব ব্যবহার রহস্যে ভরা। সেই রহস্য ভেদে মনের ও সে আমার সাহাফ্য চাম। নিজের সঠিক সংবাদ জানবার আগ্রহে সে আমার কাছে ছুটে এসেছে।

দীর্ঘ তিনপ্টার এক আথাবিবরণী আমার হাতে দিরে অনাদি আমার মুখের দিকে তাকিরে বর্সেছল। লদ্বা রোগা বৈশিল্টাহীন চেহারা, বরস মনে হল তিরিলের কাছাকাছি। মুখে দ্-একটা বসল্ডের দাগ। তিনপ্টার সংক্ষিণ্ডসার পাঠকদের অবগতির জনা করেক লাইনের মধ্যে বলবার চেল্টা করেছি। শেবের লাইনের মধ্যে বলবার চেল্টা করেছি। শেবের লাইনে লিখেছে বদি আমি ভার সমস্যা সমাধানে সাহারা না করি, তবে আত্মহত্যা ছাড়া ভার আর কোনো উপার থাকবে না।

আত্মহনন হতাল-প্রেমিকদের পকে এমন কিছু অসম্ভব নয়। কাজেই বিবলি গোপন করে মোলারেম কণ্ডে বলতে হল,—তোমার মনের খবর না হয় তোমার সংগা আলাপ-আলোচনা করে থানিকটা জানতে পারলাম; কিন্তু মেরেটির মনের সংবাদ জানতে হলে তোমাকে রাজ-জোতিষীর শরণাপয় হতে হবে। যাকে দেখলাম না, জানলাম না, তার মনে কি আছে বলা আমার পক্ষে সম্ভব নয়।

—কিন্তু জ্যোতিবীদের ওপর আমার আম্থা নেই। কবচ-মাদ্লিতে আমার বিশ্বাস নেই। আপনি আমাকে ত্যাগ করলে আমার, ঐ হা বললাম, আছাহত্যা ছাড়া আর কোনো রাম্তা খোলা থাকবে না।

বেশ করেক বছর আগেকার ঘটনা।
কিন্তু তথনকার দিনেও অনাদির মত কেস
্বে কমই চিকিৎসার জন্যে আসত। অনাদিজাতীর ব্বক এখন আরো কমে গেছে মনে
হয়। এখন সমাজ বা পরিবার থেকে প্রেমিকপ্রেমিকার মিলনে বাধা দেওয়া হয় না।
বাধা দিলেও তর্ণ-তর্ণীরা সে-বাধা
অগ্রহা করে। এখনকার অভিভাবকরা প্রেম্কে
বাাধি বা অপরাধ মনে করেন না। আমি
অবশা শিক্ষিত মধাবিত্ত শ্রেণীর মানসিকতার সংশা বেশি পরিচিত। অনাদের খবর্
বেশি রাখি না। আরু এ-সম্বংশ্ধ কোনো
সমাজতাত্তিক গবেষণা হয়েছে কিনা জানি
না। আমার মণ্ডবা প্রোপ্রির ব্যক্তিগত
অভিক্রতাভিত্তিক।

সামাজিক বা পারিবারিক প্রতিবন্ধক-তার দর্ন প্রেমিক-প্রেমিকার ই^িসত মিলনে বাধা স্থিত হলে যে-পরিস্থিতির উল্ভব হয়... তা নিয়ে নাটক-নভেল ক্সনেক **लिशा इरहारह। अधनः ७ इरह्म ना, अधन**ेनह। পাচিশ-বিশ বছর আগে রোমিও-জ্বলিয়েট, দেবদাস-পার্বতী শিক্ষিত তর্ণ-তর্ণীকে বেভাবে প্রভাবিত করত, আজ আর তা করে না। সে সামাজিক পরিবেশ নেই, সে মান-সিকতাও বদলেছে। এসব কাহিমীর নারক-নারিকারা অবশ্য অনাদির মত অবসেশনে ভোগেননি। ভারা সামাজিক বাধা-বিপত্তির বিরুদ্ধে সংগ্রাম করার সুবোগ পাননি, অথবা সংগ্রাম করে সাফল্য লাভ করতে পারেননি। এ'দের কোনোক্তমে রুংন বলা **इटल भा। यहर जिल्लीका अरेजर कारिनी** নিরে রসসমূপ সাহিত্য সৃষ্টি করেছেন।

13.4 কিন্তু অনাদির মন্ত অবলেশুনের রোগীরা ডান্তার ছাড়া আর কার্র সূত্ান্ভূতি আকর্ষণ করতে পারে কিনা সম্পেহ। এদের নিমে বোধহয় উচ্চপ্রেণীর কাব্য-কাহিনী রচিত হতে পারে না। একজনের **মণ্ডিম্ক** য়ান্ড ক প্রকোভ-আম্ব্র; অন্যজনের আবেশগ্রস্ত। প্রেমের প্রক্ষোভ সদর্থক প্রক্ষোড। আমি বাকে ভালবাসি, সে-ও আমাকে ভালবাসে:—এই বিশ্বাস, এই অনুভূতি, মানুষকে মহিমান্বিত করে। প্রেমের প্রক্ষোভ চিত্তলোক আলোড়িত করে প্রেমিক-প্রেমিকাকে জীবনান্গ করে, আরো বেশি মানবিক করে। তাই কাব্যে **এ'দের** আত্মহনন মহান আত্মত্যাগর্পে চিহিড হয়। এই আত্মত্যাগ সামাজিক স্থাকার ভেঙে ফেলে মানুবে মানুবে মিলনের পথ প্রশাসত করে। কিম্তু প্রেমের অবসেশন খ্র কম ক্ষেত্রেই মহন্তর প্রবৃত্তি জাগিরে তোলে, वदार अवस्मारानद करन जाना , अविश्वान, হিংসা ইত্যাদি ইতর মনোবৃত্তি উদ্দুশ্ধ হয়। অনাদির উচিত খোলাখ্লি নীলিমার সংশ্ আলোচনা করে নীলিয়ার মনের কথা काना।

অদাদির প্রো ইতিহাস শেষার আগেই তাকে এই ধরনের অনেক কথা বললায়। কথাগলেলা রুড় না হয়, সেদিকে আমার নজর ছিল। ওকে আখাড়া করা আমার উদ্দেশ্য নয়। আমার ইচ্ছা, নীলিমার কাছে ও প্রেমানবেদন কর্ক। নীলিমা ওকে প্রভাগোন করলে ওর অবসেশন কৈটে বেডে পারে।

—আপনি আমাকে হিপ্নটাইজ করে
নীলিমার চিন্তা আমার মন থেকে বৃত্ত করে
দিন। ওর কাছে আমি প্রেম জানাতে পারব
না। ও আমাকে প্রজাখান করলে আমি
লঙ্গায় আর ওর কাছে মুখ দেখাতে পারব
না।

—কিন্তু ষতকাশ না ত্মি সপট জানতে পারছ যে নীলিমা তোমাকে ভালবাসে না, ততকাশ নীলিমার চিন্তা তোমাকে আবিন্ট রাধ্বেই।

—হিপ্নটিজয় করে, আমি শ্লেছি, স্বকিছ, করা বার। ি পুরি কুল খনেত্ব। দীলিমার প্রতি
আক্ষাণকে তুমি জীইরে রাখতে চাও
বলেই ওকে সরাসরি প্রেম জানাতে ভর
প্রাক্তঃ ও-অবস্থার হিপনটিজনে কাজ হবে
নাঃ ভূমি ওকে ভূলতে চাও না?

—না, না, আমি ওকৈ ভূলতে চাই।
কৈন্তু উপার খাজে পাছি না। আপনি
স্বটা শুনলে ব্ৰুতে পারবেন কেন আমি
ওকে পশ্টভাবে কোনো কিছু জিলাসা
করতে পারছি না। দরা করে আমার কেসটা
প্রোপ্রি শ্নন্ন।

প্রেমের কাহিনী অনেক শ্নেছি,
আনেক পড়েছি। অনাদির কাহিনীতে কি
আর নতুনত বা বৈচিত্র থাকবে? অনেকটা
নিশ্প্র উদাসীনতা নিয়ে শ্নতে শ্বে
ক্রেলায়। অনাদি অনুভেলিত একবেরে
সংক্রেবল চলল।

🐃 — শৈশবৈ মা-বাবাকে ছারিয়েছি। তাঁনের চেহারাও মনে নেই। এক আত্মীয়ের বাড়ীতে মান্য হয়েছি। তাঁরা, বিশেষ করে জাঠাইমা আমাকে নিজের 78 প্রার ুমতন দেখতেন। লেখাপড়ায় মোটামুটি ভাল ছিলাম। স্কুল পেরিয়ে ইউনিভারসিটির শেষ ু <mark>পরীক্ষা পর্যতত</mark> পাশ করতে কোথাও আটকারনি। স্কলারশিপের টাকা আর টিউশ্নির রোজগার থেকে নিজের পড়ার " খরচা চালিরে শেবদিকে জ্যাঠাইমাকে কিছ, কিছ, সাহায্যও করতে পারতাম। জাঠা-মশায় মারা খাবার পর জাঠাইমা অভাব-^{*} অন্টনের মধ্য দিয়ে সংসারটাকে কোনোমতে চালিরে নিয়ে চলেছিলেন। বছর-দশেক আলে নীলিমা এই পরিবারের আশ্রয়প্রাথী হয়ে এসে কমে পরিবারের অতভুক্ত হয়ে লেক। নীলিমা এসেছিল শিয়ালদার শরণাথীদের আস্চানা থেকে। ওর মা-বাবা প্রায় একসংখ্যই কলেরায় মারা যাবার পর, এক টিকিটবাব, ওকে আশ্রম দিলেন। আমাদের বাড়ীর পাশেই তার বাসা। কয়েক মাস সেখামে থাকার পর এক রাচে টিকিট-বাৰরে বাড়ী থেকে পালিরে এসে জ্যাঠাইমার কাছে ও আশ্রর চার। ক্যাঠাইমা আশ্রর দিলেন। কি হয়েছিল জ্যাঠাইমাই জানলেন। ,আংমি কিছ, জানলাম না, জানতে हारेमाम । । गिकिन्यायः दक्त कानि मा, . ट्लारनात्रकम रगान्याग क्यानम ना। নীলিমার বরস তখন পনেরো-যোলো। আমি স্বোর এম-এ আর ল'এর ফাইনাল পরীক্ষা দিয়েছি। পাশ করেই একজন সিনিয়রের সাকরেদী স্বীকার করে নিয়ে যাতারাত আরুভ করলাম। জ্যাঠাইমা নীলিমাকে নিয়ে তাঁর বড় ছেলের क्रमेन्थन राम्याहे हरन शास्त्र । यहत-ুনুয়েক হল ও'র ছেলে ওখানে চাকরী ক্রছিল। আমি মেসে গিরে বাসা বীধলাম। বছর-আন্টেক আগে বভাষান চাক্রীভে বহাল হই। জাঠাইমার সংগ্র বোগাবোগ क्यमें जिथिन गरा अन। नवास्त्र स्थापन টেম্বত ভিডাছা ভার চিনি ্ৰেপ্ডায় িচিঠিতে জেনেছিলাম **অসীমের** একটা

জার্চাইমার বন্ধু মেন্ডের) সংল্য নালিমার বিরে হবে। নালিমা কলেকে পড়ছে। এর পর বছর-বুরুরেক কোনো খোলখনর রাখিন। ওবের স্মৃতি প্রান্ধ রাখান। এর্মান সমর হর্মাই এক টোলারাম। নালিমা জানিরেছে, হাওছা কৌলার বাবেব মেল প্রাটেন্ড করছে। গাড়ী এসে বাওরার পর ক্যাটন্ড করির, এর্মান সমরে একটি মেরে জানতে চাইল, আমার নাম জনালি কিনা। মেরেটি প্রশম করে জানাল বে সে নালিমা। জাটাইমার খোল করতে জানলাম জাটাইমা মাস্তিনেক আগো গত হ্রেছেন। অসামের সম্বন্ধে কোনো খবরই বলল না। আমি বিব্রত বোধ করলাম। অনাদি থামল।

ধৈর্য রক্ষা করা ক্রমণ কঠিন হরে
দাঁড়াক্ষে। এসব অবসেশনের রোগাঁদের
ভালভাবেই কানি। বাধা দিলে এরা থামবে
না। কোনো জায়গার আটকে দিলে, আবার
গোড়া থেকে তার ক্লান্তিকর গলপ দার্
করবে। বাধা না দিরে দানে যাওয়াই
ব্নিধমানের কাজ। তব্ও একবার বললাম,
—এত মহাভারতের কোনো দরকার আছে
বলে ত মনে হক্তে না। আমি বর্তমানের
ঘটনা জানতে চাই। এসব অতীতের সংশা
তোমার অবসেশনের কৈ সম্প্রত

—আর বেশি নেই। গত দ্'বছর ধরে
আমার অতীত আমি রোজ তরতার করে
খ'্জে দেখছি। নীলিমার প্রতি আমার
আকর্ষণের কোনো নিদর্শন সেখানে পাওরা
যায় কিনা, আমাকে জানতে হবে।
আপনাকেও ব্রুতে হবে আমার ভালবাসার
মূল কোথায়?

वाथा मिख्या वृथा। खन्न कथा च करलहै हननः।

—নীলিমাকে কোথায় নিয়ে তুলব, সৈদিন পাটেক্মে দাঁডিরে ভাবতে লাগলাম। নীলিমা ব্ৰুতে পারল আমার মনের কথা। একটা কার্ড আমার হাতে দিয়ে বলল, সেই ঠিকানায় তাকে য়েখে আসতে। কোল-কাতার কোনো জায়গা সে চেনে না, তাই আমার সাহায়। সরকার। একটা ট্যাক্সি করে দীলিমাকে মিউ আলিপুরের সেই ঠিকানায় নিয়ে গোলাম। কলিংবেল টিপতে একটি অলপবয়সী মেয়ে বেরিয়ে এল। নীলিমা কাডখোনা তার হাতে দিতে সে जन्मधी जामाला। वनन् विः भाक्छानी, অথাৎ কাকাবাৰ; টোলগ্ৰায় করে নীলিয়ার খবর জানিরেছেন। সে অনারাসে মালপত নিবে উপৰে উঠে আসতে পারে। আমার নিকে জিল্লাস, দ্বিটতে ভাকাল মেরেটি। नीजिया येजन, आयात्र नाना; आयादक ल्पेनम त्यस्य मिता अत्मत्यमं। जाबात्यन्थ ভিতরে বাবার জন্য দূলনে পীড়াপীড়ি করল, আমি রাজি হলাম না। একটু বোধ হর রচ্ছাবেই ভাবের অনুরোধ প্রভ্যাখ্যান করে, সেই ট্যাক সিলেই মেনে ফিরে এলাছ। পাৰ্ডাশীকে সামি চিনি**া আমানের ব**ৰে আকিলের মানেজার। কেন জানি না, বেনে কিরে এলে অবসাদে সেহন্দ তেনে গড়ল। কিছু না থেকেই শ্রা নিকান। লাজ্যাত বুম হল না।

मारे प्राप्त-जनागि मनागार्कन गर आर्या करत हमन, एनरे त्थर स्वीनत ভাগ রাতেই ঘুমুতে পারি না বিশ্বসাদে ক্রান্তিতে আক্রম থাকে মন। হ্যা, বা বলছিলাম। দ্বদিন পরে অফিসে এলে শ্নি বুশ্বে অফিস থেকে একটি বাঙালী ভারে আমাদের অফিসে বদলি হয়ে এসেছে। পাবলিসিটি ডিপার্টমেন্টে। দেখা হয়ে গেল সেইদিনই। লাণ্ডের সময় সোজা আমার টেবিলে চলে এল। আমি নিউ আলিপরের ওর খেজি নিতে ঘাইনি বলে কোনো অনুযোগ করল না। শুধু ওকে কাছাকাছি কোনো সম্ভা লাঞ্রে জায়গা দেখিয়ে দিতে বলল। এইদিন থেকে, না সৈই স্প্রাটফর্ম থেকে, ঠিক বলতে পারব না, আমি ওর প্রতি আরুণ্ট হতে লাগলাম। স্ক্রী স্কার্ম তন, সাঙলাদেশের পথেঘাটে খুব বিরল নয়। কি ওর বিশিশ্টতা বার জোরে আমাকে দূৰ্বার বেগে আকর্ষণ করছিল? আমি খুব মিশ্যুক নই, মেয়েদের সংগ এড়িয়ে চলা আমার প্রভাব। আত্মীয়-প্রজনের বাড়ী যাওয়া অভ্যাস নেই। তবে চাকরী উপলক্ষে অনেক অনাদ্মীয় মেয়ের সংকা আলাপ क्द्ररेख इरहारह। छारमद्र भरश म् ' এक्क्रमरक रबभ मान्त्रती बरलाई घरन इरहारह। जारनह প্রতি কোনো আকর্ষণ অনুভব করিমি। তবে ও কেন্ কি ভাবে আমার মনকে এইভাবে প্রভাবিত করক । এর মত স্মার্ট, চালাকচত্র মেয়ে, আমানের অফিসেই আরো দ;' একটি রয়েছে। তাদের দিকে 🛚 ত কোনোদিন ফিরেও তাকাইনি, অথচ 🛭 ওকে দেখবার জনা এত আকৃলি-বিকৃলি কেন? विना कार्राम, विमा श्राह्माकरम, धरमञ्ज ডিশার্টমেন্ট্টা রোজ অন্তত্ত একবার ঘ্রের আসি। হা, একটা কথা বলা ছয়নি। প্রথম দিন লাণ্ড থেতে বসে, হ্যাণ্ডব্যাগ থেকে একখানা মৃত্ত শিল্মোহর করা লেফাপা বের করে ও আমার হাতে দিরেছিল। জ্যাঠাইমার শেষ চিঠি। ও वरनिह्न - नाम्पे रहेम्पारम-पे। स्मरम भारत রাত জেগে চিঠিটা পড়েছিলাম। অনেকবার। ক্যাঠাইয়ার চিঠিতে জানলাম নীলিকে অসীয অপমানিত করেছে।... **অবাধ মেলামে**শা আর মেরেটার সারলোর সংযোগ নিরেছে। ওয় দেহ অপ্ৰিত করে, ওকে বিয়ে করতে চারনি। উপদ্মত es farmiausan ঘটনার উল্লেখ করে, ওর নামে মিধ্যা অপ্রাদ দিয়েছে। টিকিটবাব্র রক্ষিতা বলে ওকে বিশ্রুপ করেছে। মৃত্যুপব্যার বলে জাঠাইমা চিটি লিখেছেন। চিটির বিবর্শকর বিল্ল- বিস্পু দীলিকে বুলেননি। নেকের দিকে
আমাকে (বিদ্যুলকার দা থাকে) ওকে
বিরে করতে অনুবোধ জানিরেকেন। আবার
দপো সপো রিকেন্দেন বে বিরে করা বোধ
হর নীলির পক্ষে সম্পুর্ন নর। পরেবজাতর
প্রতি ওর বৃণা ওকে বিশাসে চালিত না
করে শুরু প্রইট্কু দেখতে বলেকেন।
পাকডাশীকে বজাকরে ওকে কোলবাতার
বর্গনি করার বুলোকত জাঠাইমাই
করেছিলেন্ন বন্দেকে থাকা নীলিমার
চলবে না। অনাদির জীবনকাহিনী এডকংশ
আমার আন্নাহ স্থিত করেছে। বললাম,—

हिठित काटना किए, है नी निमा सात मा? छाद नाम्हें एक्टोएम्स्टे वनन कन?

জাঠাইমার তিন বিবে ধেনো জমি আর বাসরহাটের এক বিবের বাস্তু আমার নামে লিথে দিরেছেন, তাই বোধ হয়।

তোমার আকর্ষণ ত' বলছ, চিঠি পড়ার আগে থেকেই। ভাল করে ভেবে বলছ কি? আমার ত মনে হয় ঐ চিঠিই তোমার মনে আলোড়ন তুলেছে। এ চিঠির কথা তুমি ওকে জানাছে না কেন? তুমি কেন ধরে নিয়েছ বে নীলিমা তোমাকে ভালবাসে না। নীলিমা কি অন্য কার্ব প্রতি অন্বস্ত বলে তোমার মনে হয়?

বড়সাহেবের গাড়ীতে আমি তাকে দ্ব' একদিন সন্ধ্যার পর দেখেছি। অফিসের আলো দু' একজনও দেখেছে। বড়সাহেবের 'লেডি কিলার' হিসেবে স্নাম আছে। তার স্ত্রী চিরর্মনা। অসীম অহাচিতভাবে চিঠি লিখে নীলিমার অনেক কীতির কথা আমাকে জানিয়েছে। তার কথা অবশ্য আমি বিশ্বাস করি না। আর অফিসের ঈর্যাকাতর গ্রন্ধবেও আমি কর্ণপাত করতে চাই না। নিজের চোখে দেখেছি বলগাম বটে, কিন্তু তা দিয়ে কি প্রমাণ হয়? মেয়ে আর ছেলে গাড়ীতে করে বেড়ালেই তাদের মধ্যে খারাপ সম্পর্ক আছে--- এ আমি মনে করি না। তাছাড়া পাবলিসিটি অফিসার বা ডিপার্ট-মেণ্টের কাউকে নিয়ে আমাদের বড়সাহেবের ঘুরে বেড়ানোটা বাবসায়িক কারণে যে নয়, তাই বা কে বলতে পারে? আঙ্গকাল আর আমরা একসপে লাগে যাই না। তবে ছুটির দিনে সকালে মাঝে মাঝে ওর টালিগঞ্জের বাসার গেলে আমাকে খুবই আদর আপ্যায়ন করে। কোমরে কাপড় জড়িয়ে নিজের হাতে আমার জন্যে ওমলেট ভাজতে লেগে যায়। আরু কে থাকে সেই বাড়ীতে? এক মাঝ-বয়সী মহিলা, প্রবিপোর লোক, ওদের शास्त्रहे वाजी जिल। नीनिया जानरे यारेल পার। ওই এখন আশ্রর দিয়েছে। একদিন ওর আশ্ররের দরকার ছিল। মহিলাটির ध्यहे हेळा नीनिया विदा करत, आयारक এ-নিরে দ্ব' একদিন বলেছেন। কিন্তু বিয়ের করা কিছতেই ওর কাছে আমি তুলতে প্রবির দা। নিজের কথা নয়, অন্যের কথাও নর। অফিলের এক ছোকরা আমাকে ওর

অভিভাবক ঠাউরে আমারে মুরুলি পাকড়াও করেছিল। আমি ভাকে বিলিভি কারণার প্রোপোজ করতে বলেছিলাম। কোনো ফল হয়নি। তাকে নিয়ে মাঝে মাঝে সিনেমায় বেড, সেটাও বন্ধ হয়ে গেছে। ছেলেটি চাকরি ছেড়ে চলে গেছে। আমি দিনে একবার করে ওর চেহারা না দেখলে অস্থির হরে পাড়। মনে হর দিনটা ব্থা रभन। रवम हनहिन धरे ब्रक्म आगा-निवाणात प्लानात मेथा जिल्हा जिन्हात्ना। অফিসের ছোকরাকে ও প্রত্যাখ্যান করতে স্তিট্ আমি খুলি হরেছিলাম। মনে আশা হয়েছিল। একদিন হয়ত নিজে থেকেই আমাকে সিনেমা যাবার নিমল্রণ জানাবে। হয়ত অসীমের অভ্যাচারের কাহিনী একান্ডে বসে আমাকে বলবে। অপ্রাবিগলিত ওর মুখখানা আমি আদর करत माहिरा एमच। न्यन्न एमध्य द्यन চলছিল। কিন্তু আর পারছি না। ভাই আপনার কাছে এর্সেছ। ওর চিন্তা থেকে আমাকে রক্ষা কর্ম। ওকে ঘ্ণা করতে শিথিয়ে দিন। না হলে আমি আত্মহত্যা করতে বাধ্য হব।

এতক্ষণে অনাদির কণ্ঠে উত্তেজনার আভাস পেলাম। খ্ব চেষ্টা করেও উত্তেজনা দমন করতে পারছে না।

—এমন কি ঘটেছে যে আছহতাক কথা
মনে হবে? ও তোমাকে বিরে করতে রাজী
হবে বলেই ও' মনে হয়। খোলাখ্লি ওর
মতামত জিল্পাসা না করে আমার কাছে
এসে কালাকাটি করছ কেন? তোমার
উপারতার জনো ও নিশ্চরই তোমাকে শ্রুখা
করবে।

উল্টোও ত হতে পারে। ওর জাবন-ব্রাণ্ড এক জানে অসীম, আর জানি আমি। অসীমের কাছ থেকে ও আঘাত পেরেছে, সেইস্কন্যে আমাকে বিশ্বাস করতে পারছে না। অন্য বর্ণ্ধ্রের বতট্কু আমাক দিজে, আমাকে সেট্কুও দিজে না। তা ছাড়া বিরে হলে, ও ভাবতে পারে, আমার কাছে ওকে চিরকাল ছোট হরে থাকতে হবে!

—তোমার কথার পেছনে বংশ্ব হৃত্তি আছে। কিন্তু সমস্যা মামাংসার আর কোনো
পথ নেই। ওর কাছ থেকে নিম্ম
প্রত্যাখ্যানই শুধ্ তোমাকে মোহমুক্ত করতে
পারে। প্রত্যাখ্যান না করে বদি জ্যাঠাইমার
ইছে পূর্ণ করে, তা হলে ত' কথাই নেই।
তুমিও বাঁচলে, নাঁলিমাও বাঁচল। হ্যাভ কারেজ ইয়ংম্যান।

—না ভাতারবাব্ গুর প্রস্তাখান আমার মোহমুত্তি হবে না। আপনার সাহাব্য হাড়া আমার বাঁচার আর কোনো উপার নেই। আমার কাছে প্রভাক প্রমাণ আছে; প্রমাণ মান্র তিন্দিন হল আমার হাতে এনেছে— বে নীলিমা বড়সাহেবকে ভালবানে। ভালবাসা চুন্দ্ৰনে আলিপানে অভিযায় হয়েছে। শেক্ষার বড়সাহেবের লালসা মিটিরেছে। বড়সাহেবের বরস ওর থেকে অভতত পাঁচিল বছর বেশি। আই ডেফিনিটলৈ নো দাটে সি ইফ মর্রবিড। তব্ আমি ওকে খ্লা করতে পারছি না। তাই বলছিলাম ওর প্রত্যাখ্যানে আমার মেহে ভাঙ্তবে না, আমার অবসেশন কাটবে না। আপনি আমাকে খ্ম পাড়িরে সাজেসশন দিরে ওর আকর্ষণ থেকে আমাকে বঁটান।

আমি হকচিকরে গেলাম। না-দেখা মেরেটির প্রতি তার ঘৃণা অন্তব কর্লাম। অনাদিকে জিজানা করলাম, তোমার প্রমাণ অস্ত্রাস্ত, তুমি ঠিক জানো?

स्म विवरहा कारना मल्मह स्मर्ट। বড়সাহেবকে নিজের হাতের লেখা নীলিমার ভলনথানেক চিঠি আমার হাতে **এসেছে।** বড়সাহেব মাঝখানে দ্বীর চিকিৎসার জন্য তাকে নিয়ে ভিয়েনার গিয়ে মাসখানেক ছিলেন। চিঠিগুলো সেই সময়কার। স্কীর্ঘ প্রেমপরের লাইনে লাইনে প্রেমিকার আকুলতা ফ'টে উঠেছে। অদর্শনে দিন মাস মনে হচ্ছে, মাস বছর মনে হচ্ছে। কিন্তু ডাকারবাব, একটা কথা চিঠিতে আছে যেটার অর্থ আমি ঠিক ধরতে পারছি[°]না। বড়সাহেব বোধহয় বিবাহের প্রস্তাব হয়ত তিনি লিখেছিলেন, ক্রী করেছেন। আর বেশিদিন বাঁচবেন না, অথবা ইসলাম ধর্ম গ্রহণ করে বিবাহ চলতে পারে,-এই রকম কিছ্ ছিল তার চিঠিতে। উত্তরে নীলমা কাকতিমিনতি জানিয়ে বিবাহের প্রস্তাব প্রত্যাখ্যান করেছে। কেন?

-তোমার কি মনে হয়?

থ্যমনও ত' হতে পারে বড়সাহেবক্তেও
সতিকারের ভালবাসে না; সামীরক আসংগলিপ্সা চরিতার্থ করবার সংগাী হিসেবে গ্রহণ করেছে তাকে। কিন্দা চুন্বন আলিকানেই পর্যবিসত ররেছে ওদের ভালবাসা। নীলিমা আরু বেশিদ্বের এগতেও চায় না। তাই বিবাহে ওর অসম্মতি।

—বিবাহের প্রস্তাবটা ফাঁকি আক্রমারি। দীলিমার মত মেয়ে সেটা বোঝে। তোমার জাঠাইমা ঠিকই ধরেছিলেন। বিবাহের প্রস্তাব খাঁটি হলেও নীলিমা বিয়ে করবে বলে ফনে হয় না। প্র**্যজ**্ঞাতির ঘূণা বিশেষ ওকে বি**পথে নিরে গেছে।** তুমি ঠেকাতে পারোনি। ও মেরে ভোমাকে কেন কাউকেও ভালবাসবে না। **ওকে** সরাসরি প্রেম জানাওনি ভালই করেছ। হা,ি তোমাকে আমি যথাসাধ্য সাহায্য করব। আশা করছি তোমার প্রেমের অবদেশন কেটে যাবে। নীলিমার করণ জীবন ইতিহাস, এবং জগঠাইমার চিঠি থেকেই ভোমার মনে নীলিমার প্রতি ভালবাসা জন্মেছে। এ ভালবাসা সহান্ভতির ভালবাসা। এ ভালবাসা ছোট নর।

-बदनाविकः

মনের কথা ? আলোচনা

19 7 7.45

আমি আপনার 'অম্তে'র একজন নির্মায়ত পাঠক এবং মনোবিদ লিখিত 'মনের কথা'র ধারাবাহিক প্রকাশ অনুসরণ করে আসছিলাম। এসম্পর্কে শ্রী আর 'প্রাদাশির আলোচনাটিও পড়েছি। এ-বিষয়ে দু-একটি কথা অম্তের পাঠক-পাঠিকাদের সামনে রাখা প্রয়োজন মনে করি।

c

্প্রথমেই বলৈ নেয়া ভালো, আমি মনো-কিন্তানী নহ বা মনোরোগ-বিশেষজ্ঞ নই। তকে সম্মোহত হওয়া বা সম্মোহত করা দ্ব-ঝাপারেই কিণ্ডিং অভিজ্ঞতা রয়েছে।

া সাঁতা কথা বলতে কি প্রীবানালিরে
আলোচনাটি পড়ে তাঁর সঠিক প্রতিপাদা
বিষয়টি কি এবং তাঁর চিন্তা-প্রক্রিয়া কোন্
ধরনের ব্রেছ-বিব্ত তা পরিব্নারভাবে
ব্রেছ উঠতে পারিনি। তবে মনে হল, তিনি
বেল একট্র অসহিক্ হয়ে পড়েছেন এবং
সন্মোহন বে কোনমতেই ঘ্রম নর তাও
বলতে চাইছেন। সম্ভবত এই অসহিক্তার
জন্মই তাঁর সমগ্র লেখাটি এমন অসংলগন
হয়ে পড়েছে।

্রকোন প্রবন্ধের মধ্যে যদি 'তত্ত্ব, তথা ও **বিজ্ঞানুগড়ভাবে চুটি' থাকে**, তবে তা উম্মোচিত করার স্বাধীনতা যে-কোন পাঠক-পাইকার রয়েছে। কিন্তু তাঁর আলোচনার **িশত**ীর অনুচ্ছেদের প্রথম পর্যন্ততে তিনি বলভেন : মনোবিদ মহাশয়কে সবিনয়ে **নিবেদন হে, তিনি সন্মোহক ও সংবে**শিতের **সম্পর্ক সম্বন্ধে ও সম্মোহ**ন বিজ্ঞান সম্প্রকে বেসব তথ্য বর্ণনা করেছেন, তা वहा बाग भार्यता अवनाहे वहा गुर्ग न्दर्दन, कारण মনোবিদ সম্মোহন সম্পর্কিত খ্যানধারণার বিবর্তনের এক সংক্ষিত বর্ণমা দিতে শারু করেছেন-ৱেইড ইত্যাদি থেকে এখন পর্যশ্ত ফ্রায়েড. ইর্ ইভ্যাদি প্যশ্ত। পরবর্তী সংখ্যা-**গ্রলোভে পরবত**ী বিজ্ঞানীদের মতবাদ উল্লেখিত হবে এটাই স্বাভাবিক ও যুৱি-**যুক্ত। এর্প অবস্থা**র এই আকস্মিক **'স্বিররে নিজেন'-এর অর্থ**িক? 'তারপর গড়, ৩৫।৪০ বছরে। অনেক, পরীকা-নিরীক্ষা গবেষ্ণা হয়েছে এবং অনেক নতুন আবিশ্বারও বৈজ্ঞানিক সভার পে স্বীকৃত हरिक्टि। त्रि जकने जरवान जीत क्रामा स्मर्ट লেখে বিশিষ্ঠ বিশিষ্ঠ আমিও এই **অপ্ররোজনীর র**ুড় ভাষণ ও ব্যক্তিগতা

Section in Section in Sec

আক্রমণে। মনোবিদ একটি ছন্দানম। এর প্রশান্তর্বালে যিনি লিখছেন, তিনি কতট্টুকু জানেন না তা শ্রীবাানাজি কি করে জানলেন? আমি অবশ্য মনোবিদের অসংখা প্রবশ্ধ ও বই-এর সংগে পরিচিত, তা সত্তেও এখানে তাঁকে কোন অভিজ্ঞানপত্র দেবার প্রয়োজন দেখিনা। শ্রুমনে হয়, কোন লেখকের বন্ধব্যকে খন্ডন কয়ার পরিবর্তে তিনি অনেক কিছু জানেন না যা আমি জানি—এই স্বতঃসিম্ধ সংক্ষিত্রসার উপস্থাপিত করে সত্যই কি কোন লাভ হয়?

গ্রীব্যানার্জ ইলেকটো এনসেফেলোগ্রাফ ইত্যাদির উল্লেখ করেছেন। এগুলোর নাম প্রপৃত্তিকার কলাণে আজ সবাই জানে। তিনি শৃধ্য নাম উল্লেখই করেছেন, কিন্তু কিভাবে এগুলো আলোচা বিষয়টিকে প্রভাবিত করেছে তা দেখাননি, বেমন তিনি নানা প্রপৃত্তিকার নাম তুলে দিয়েছেন, কিন্তু কোন মন্তিত্তক-বিশেষজ্ঞের অভিমত তুলে ধরেননি।

শ্রীবানান্তির প্রধান আপন্তি সম্মেহিত
অবস্থাকে ঘ্ম বলায়। সম্মেহিত অবস্থা
ঘ্ম তো নিশ্চয়ই, যদিও সাধারণ ঘ্মের
সপ্তে এর কিছ্টে পার্থকো রয়েছে। একে
বলা যায় partial sleep, induced sleep,
suggested sleep এবং এই তিনটি শব্দর
মহিতকের সম্মোহিত অবস্থা বোঝানোর
জনা বাবহৃত হয়। আমি আরো একট,
এগিয়ে যেতে চাই: তথাকথিত জাগ্রত
অবস্থায়ও মহিতকের
বা সম্মোহিত থাকে, ঠিক য়েমন সাধারণ
মিদ্রিত বা সম্মোহিত অবস্থায় মহিতকের
অংশবিশেষ সম্পূর্ণ সজ্ঞাগ থাকে।

যুম এবং সম্পোহন হল মাস্ত্ৰুক্তিরা এবং বিষম্যি শারীরব্তুবিদের উপজীব্য বিষয়। কেন্দ্রীর স্নায়্ত্ৰুক্তের এই উচ্চতর অংশের প্রক্রিয়ারাজির অন্শালন কোনানিই বাধাম্ক ছিল না, খাজও নেই। যেহেডু বিষয়িট এখানে নিজ প্রজাতিরই মাস্ত্ৰুক্ত বোর ননের আপ্রয়ভূমি) সেহেডু এক্ষেত্রে গবেবলাকালীন অনেক সময়ই গবেবক মাস্ত্ৰুক্তিরায় বস্তুগত ম্ল্যারন্ করতে গিরে নিজ নিজ প্রবণতা অন্যায়ী ব্যক্তিগত ধ্যান্ধানার আরোল করে বসেন। এটি স্বাভাবিক এবং স্বাভাবিক বলেই অত্যান্ত কঠোরতার সন্পোর প্রাক্তির প্রক্রান্ত্রী ব্যক্তির বিশ্বত্রী ব্যক্তির বিশ্বত্রী ব্যক্তির বিশ্বত্রী ব্যক্তির বিশ্বত্রী ব্যক্তির বিশ্বত্রী বিশ্বত্রী

ট্রুর জন্য জন্ম চাইছি, কিন্তু মনো-বিজ্ঞানের ইতিহাস এই দুঃখেরই ইতিহাস।

1.70 · 李明 (1000年) · 共產門之

মশ্তিককোষের দ্টি বিপরীতধমী গ্র तरमञ्जू क exitation and inhibition; বাংলায়, উত্তেজনা ও নিস্তেজনা। এবং এই গ্রেপর্টির সাধারণ প্রবণতা হল মহিতদ্কের কোন বিন্দৰ্ভে উৎপন্ন হলে তা পাৰ্শ্বভৰী অণ্ডলে ছড়িয়ে প্ডা। অনেক বছর আগে Strumpel ্নামে এক চিকিৎসক এমন এক রোগীর সাক্ষাৎ পান যার অধিকংশ ইন্দিয়ে বিকল। প্রকৃত প্রস্তাবে বহিবাস্তবের সপো সে মাত্র দুটি অটুট ইন্দিয় মাধ্যমে সংযোগ স্থাপন করতে পারত। একটি চোথ ও একটি কান। চিকিৎসক এদ্বটিকে ঢেকে দিলে রোগীটি **হ**্মিয়ে পড়ত। পরবতী-কালে অধ্যাপক গ্যালকিন গবেষণাগারে অন্রুপ অবস্থা সৃণ্টি করাতে সক্ষম হন। কুকুরের দ্বাণ, শ্রবণ ও দর্শন স্পর্কিত ইন্দ্রিয়গুলোকে বিকল করে দেয়া হল অর্থাৎ ভার fili olfactori, n. optici ও দ্টিকে ক্ষতিগ্রস্ত করে দেয়া cochleae হল। দেখা গেল যে, কুকুরটি দিনে ২৩ই ঘণ্টা নিচিত হয়ে রইল, শ্বহুয়ত মৌলিক জৈবিক প্রয়োজনজাত উন্দর্শিক প্রভাবে সে জাগরিত হত, যেমন মলম ্র ত্যাগ, কর্ধা। এ হল অক্রিয় ঘ্ম। সাধারণ ঘ্মকে বলা যার সক্লির ঘ্ম, যা নিস্তেজনাম্লক প্রক্রিয়ার পরিপতি। এই নিম্ভেজনাম্লক প্রক্রিয়া মন্তিদেকর উচ্চতর অংশে উৎপন্ন হয়ে ধীরে ধীরে নিদ্নতর অংশে বিস্তার नाष्ट्र करत्र धार्यः द्वागी य्शियतः भएए। धक्रि দীয়া উষ্পতি দেয়া বাক।

"I shall now submit to you one of the numerous cases investigated by us in the course of thirty five years. Let us take a dog which is falling into a state of drowsiness, sleep or hypnosis A certain period of time passes, and you give the dog food. You see that its tongue tunctions very slowly and awkardly. But as time goes on, you observe in the course of the experiment that although the dog turns towards you, it brings its head to the food with great difficulty. Convequently, the inhibition or sleep has already seized other points of the skeletal movement.... And finally

you observe the onset of a general passivity of the skeletal masculature: the dog hangs limply in the loops, it is in a sta e of sleep. Thus, inhibition gradually develops before your eyes in a very obvious and concrete manner: at first it affects the tongue, then it spreads to the cervical muscles, from there to general skeletal masculature until, finally, sleep sets in. When you observe this development you can hardly doubt that inhibition and sleep are one and the same thing". (I. P. Pavlov, Selected Works, 1955)

এখানে , বিশেষভাবে উল্লেখ করা প্ররোজন বে, গভাীর নিম্নর ক্ষেত্রেও সমগ্র মান্দতন্দক ঘুমায় না, কোন কোন রিন্দর জাগ্রত থাকে। দেখা গোছে বে, গালীর ঘুমে আছেম মা পাশের শিশ্বসন্তানের অক্ষ্ট কাকলীতে জেগে ওঠেন, অথচ প্রতিগোচনবোগ্য অনা উচ্চতর শব্দ হলেও তার খুম ভাঙে না। অর্থাৎ এরকম ক্ষেত্র ক্ষাভানিক কিমান্ত সম্মোহনের বিশেষ গ্রাম বাক্ষা কেন্দ্র হল point on duty: সম্মাহিত অবন্ধান ব্যান ক্ষাল্য বেন্দ্র বিশ্বন ক্ষাল্য কেন্দ্র কলা নাম্যের মান্দ্রক্ষর আ সক্ষাল্য কেন্দ্র কলা নাম্যের মান্দ্রক্ষর আ সক্ষাল্য কেন্দ্র কলা নাম্যের মান্দ্রক্ষর আ সক্ষাল্য কেন্দ্র কলা ক্ষাল্য ক্ষাল্য ক্ষাল্য ক্ষাল্য ক্ষাল্য কলা ক্ষাল্য ক্ষালয় ক্ষাল্য ক্ষাল্য ক্ষালয় ক্ষাল্য ক্ষালয় ক্ষালয়

সম্মোহনও সেই একই নিস্তেজনা-ক্রিয়ার পরিপতি।

"Hypnosis, for example, is sleep which develops very slowly, i.e. it is first confined to a very small and restricted area and then begins to spread further and further until it finally descends from cerebral hemispheres to the subcortex, leaving untouched only the centres of respiration, of the heart-beat etc. though somewhat weakening hese too. (Pavlov — Selected Works, 1955)

সম্মোহিত অবস্থা শুধু মানুৰ নর, মনুষ্যেতর উচ্চতর প্রাণীদের মধ্যে উৎপক্ষ অভিভাবন করা বার। মান,বকেই क्रधाव आशासा শ্ধ্ কথার প করা বায়, কারণ সংক্রেন্ত গ্রহণক্ষম ন্বিতীয় সাংক্রেন্ডক তল্ম (second signalling system) মানুবের মণিতব্কেই বিবৃতিতি হয়েছে। এই ধরনের সম্মোহনকেই suggested sleep বলা হয় এবং মানসিক ও নানাপ্রকার মানস-গৈছিক রোগ নিরামরের ক্ষেত্রে এর প্রচলন। এ-ধরনের চিকিৎসাকে Sleep Therapy ও সন্মোহিত অবস্থা इस । য়স্তিকের অধিকতর অংশে ছডিবে ভাষাং নিশ্তেক্ষার জ্ঞান-ক্তর পরিব্যাণ্ডি ঘটলে rapport নক হয়ে বার এবং সম্মোহিত অবন্ধা সাধারণ নিদ্রার পরিগত হর। গুণগডভাবে নিলা ও সম্বোহিত অবস্থার কিছু বৈশিন্টা থাকলেও এন্তের পারস্পরিক রুপাস্তর বটে।

"... the suggested sleep of man is a private case of his hypnotic sleep, the hypnotic sleep

is a private case of conditioned reflex sleep, while the condition reflex sleep is one of the varities of natural sleep'. (K. Platonov— The Word As A Physiological And Therapeutic Factor, 1959)

শ্ৰীব্যানাজি ঠিকই বলেছেন যে, সম্মো-হনের তিনটি স্তরভেদ ররেছে। অবশ্য স্ক্রেভাবে বিচার করতে গেলে আরো নানা উপবিভাগ সম্ভব। ভূতীয় স্তরের সম্মোহিত অবস্থার মান্ত ভার পারিপাদিব'ক সংপর্কিভ বোধ ছারিরে ফেলে এবং জাগ্রত হবার পর কোন অভিভাবনই মনে করতে পারে না---বদি না মনে রাখার জন্য বিশেষভাবে অভি-**खावन एवता एत। कार्यहे घरना**विष ख বলেছেন, ঘুদ্ধ থেকে উঠবার পর সংবেশিত সব ভূলে যায়—একখা তৃতীয় স্তর সম্পর্কে সম্পূর্ণভাবে সভা। শ্রীব্যানার্ভি বলেছেন বে সম্মোহিত অবন্ধা হল 'গভীরতম একাগ্রতাপূর্ণ অকশা (super-concentrated এই বিশেষণটি বিষয়ীগত (subjective) ভাবসঞ্জাত : মন্তিকের তং-কালীন শারীরবৃত্তিক অবস্থা সম্পর্কে এর প কোন বিশেষণ প্ররোগের প্রশনই ওঠে না। আশ্তর্বাস্তব ও বহিবাস্তব থেকে প্রতিনিয়ত অসংখ্য উন্দীপক মস্তিকে বাহিত হচ্ছে। Reticular substance & অনেকটা অভিভ বকের মত কাজ cortex করে: অপ্রয়োজনীয় উন্দীপককে অগ্নাহ্য করে এবং প্রয়োজনীয়গালোকে স্বীকৃতি দিয়ে জীবতক্তকে সঠিক নিদেশি দেয়। অর্থাৎ এভাবে মন্তিকে একটা heightened বর্তমান থাকে। নিদ্রিত tonus" বা সন্মোহিত অবস্থার মস্তিকের এই চিত্রটির পরিবর্তন **যটে। স্বল্পপরিস**রে विभागकार्य वना जन्छव नहा। कि.न माना्रवह গুরু মাস্ডম্কটি বদি অস্থোপচার করে অপ-সারিত করা হয়, তবে কি অবস্থার স্থি ছবে? সে প্রায় সব সময় ঘুমিয়ে থাকবে। নিপ্লিত ও সম্মোহিত অবস্থার মাস্তদ্কের এক বিশাল অংশের কোবরাজি ব্যিমরে কয়েকটি অঞ্চল। त्रतरह, ज्ञांश त्रतरह কাজেই জাগ্ৰত অকম্থার stimulation internal external সেখানে পে[†]ছাতে পারছে না। এককথার বেশীর ভাগ মহিতক তখন শাহত, অচণ্ডল: জাগ্ৰত শুধ্ rapport Zone points on duty গুলো। এ বিন্দুগুলের মাধারে প্রদান অভিভাবন বিশেষভাবে শত্তি-শালী হয়ে ওঠে নানা কারণে। প্রকৃতপক্ষে বৈশিশ্টা সাম্বাহিত অবস্থার -₹₹ cortex এর এক নিদিন্ট অচ্চলে তখন কেন্দ্রীভূড উত্তেজনা (exicitation) ওঠে এবং ভখন অপরাপর অংশের tonus थारक मूर्यन, बाद करन अन्धे नঞर्यक আবেশ (negative induction) আন্তর্গান্তব ও বহিবাস্ডব থেকে আগত উদ্দীপক-भटलाहक महिन हट्ड एन्स मा।

সে বাই হোক, সংম্মাহন সম্পর্কে প্রা 🖼ान अध्या जनारिक्क्षण। मान्य और বাচ্ছে সভা, কিন্তু নিজ মন্তিন্কের অধি-कारमहे अज्ञाना এवर कनम्बद्धान এই প্ৰিবীতে বে কত লক লক মান্ত মার্নাসক রোগে অপরিসীম কট পাজেন ভার ইনতা নেই। এই সেদিনও মনোবিদ্যা দর্শনিশারের অহতগতি ছিল। সকল পূর্ব-স্রীদের প্রণাম করেও এ-কথা বলতেই হবে ৰে, ঈভান পেগ্ৰোভিচ পাভলভই হলেন প্রথম বিজ্ঞানী, যিনি মনোবিদ্যাকে বিজ্ঞানের স্তরে উল্লীত করেন। তার মনোবিজ্ঞান মন্তিদ্বের শারীরব্যত্তকে ভিত্তি করে গড়ে উঠেছে। বিবর্গীগত খ্যানধারণা সেখানে অচল, বডক্ষণ প্যতি না তার বস্তগত ভিত্তি আবিষ্কৃত হয়। প্রথমদিকে ইংলণ্ডের চর্চ পাভলভীর চিন্তাধারার বিরুদ্ধে ফতোরা জারী করেছিলেন। আ**জ অবল্য** অবস্থা সম্পূর্ণ পরিবতিতি। পা**ভলভীর** মতবাদকে আশ্রয় করে সোভিয়েত শারীর-वृत्त, मत्नाविखान ७ मध्यत अन्मान विखान অভতপূর্ব উল্লভি লাভ করেছে। মনোকি শণতই পাভলভীর মতবাদকে অনুসরণ করে লিখছেন। শ্রীব্যানার্জি ভাতে এন্ড অসহিক, হয়ে পড়লেন কেন বোঝা দু:ফ্কা। ব্যবিশত আক্রমণ না করে তিনি তার বস্তব্যকে ব্যক্তিপ্রমাণসহযে গে খণ্ডনের চেন্টা কর্ন না-আমরা অম তের পাঠিকারা তাতে আনন্দিত হব। অসহিষ্ট্রতা তো আঞ্চ জীবনের সর্বশ্তরে। অণ্ডভ চিশ্তাবিদরা যদি তাথেকে মৃত্ত থাকর रिक्त ना करतन, जरव जा वज़रे खरतन कथा।

<u>শ্রীব্যানাজির</u> সৰ্ব শেষ সম্পর্কেও কিন্তু, বলতে চাই। গুলার চল-মান এক নৌকার মাঝি ভার প্রেকে চপেটা-যাত করলে, শোনা বার, শ্রীরামকুক নিক প্रकेरमर्ग कथा जन्छव कर्ताष्ट्रक्म। अ रेन complete identification -এর নিশ্বন ! শ্রীরামকৃষ্ণ বিশ্বাস করতেন প্রথিবীর সকল কতু ও তিনি অভিন, কাজেই আঘাত ভার লাগবেই। বর্তমান প্রলেখক ঈশ্বর-বিশ্বাসী। কিন্তু তা বলে মন্তিক মন্দ-ক্রিরার জনক ও **জীবতকোর সর্বোচ্চ** নিয়ামক এই পাভলভীয় ভত্তকে অস্বীকার করি কি করে? আরু বিজ্ঞান ও ইশবরুক প্রতিপকর্পে দাঁড় করানোর বা কি श्राज्ञन? जशार्षाक्रका । व विकास मुर्हि ভিন্ন জিনিস। প্রথমটিকে বিজ্ঞান আখ্যা দিলে অধ্যাত্মভিত্তার মহাদার হানি বা বৃদ্ধি কিছুই ঘটে না। ব্যৱস্তিভাবে আৰি এরপে ইচ্ছাকে অপ্রয়োজনীয় বলেই ফল क्ति।

श्रीतरणाव शर्मण,



(भूव' संगीनरंगत भन्न)

—আন্দান ধুব অস্থিতে হবে বোৰ-হয়, আৰাত্ত সচেপ খ্যুতে? বোৰহুল পরি-বালের বিশ্ববিদ্ধ প্রায় লাভাসে খ্যুত সেবেই কাল সোৱা।

লা বা, অসুবিধে কিসের। ফোলমতে বিহুটের বছ কলা পরিমল, মসে বানে বাল, আপ্রান্ত মারিধে থাকতে কানুন্ত বে আপুনিধে হয় না, হতে পালে না একথা আপুনিধ বিহুটি আনেল বেনন, আনিও আনি।

লোকা আলে আন্ত ট্রুবর চর্চাল পারে
ক্রমান্ত্রন আন্ত কেলা ক্রিব্রু কেলা আন্ত আক্রমান্ত্রন আন্ত কেলা ক্রিব্রু কেলা আন্ত আন্ত্রনারী। আক্রমা রাশকটো ক্রমান্ত্রন বন্ধ আন্ত্রান পড়ে লোমা বললা, — আন্তা ট্রাম্বি ক্রমান্ত্রন । ক্রমান্ত্রক আর হাট্য বাবে। পরিমাল একটা এলিকো ট্রাম্পির বৈধি করল, তাড়াতাড়িই পেরে গেল একটা। বেলী দেরী মা হওরার লোমা খুমী হরেছিল। দরজা খুলো নিতে তেওনে উঠে বলল লোমা ভারণার কলে উঠল, নাম্বিনে বিরাট হওরার মধ্য—ে কি, বাইরো শশকেল কো, তেওনে এক কারলা বাক্তে।

গাড়ী চলতে শ্বহু কৰাৰ পৰ লোৱা কিছু ব্যৱস্থা গচল ইনিক।

—আপনি এর কা কা কাল চকন কানে রো। লাজকে না নাজনা কোন কালেনের সহপারীয় সক্রম কেন্দ্রিক কালে, এজাবে মান্য নোনা।

--नार्कीन ट्रंबन प्रयो जाहर करते नार्वाचन केवस विश्व, जोस्ट्रॉब्स मीत, करव जोटेटबाक्टन क्या क्या व्यवस्थ क्राम्स सह।

—আপনি কি প্রধাননা-বার্থনাক্রকর জালিকা করে বেথেকো নাক, বিভিন্ন বিভিন্ন সেনেটেন্স হৈছা করেন ক্রিকা ক্রিকাল করে হামান ক্রিকা প্রকাশ ক্রেকালাক আক্রম ক্রেকা আক্রমন ক্রেকা এবার ক্রিকা নাক্রম আক্রমন নাক্রম প্রকাশ ক্রমন

-area servere chall to be from any our server serve

Coloronia delle sensoni di disconi Coloronia delle sensoni di fondi signi Coloro della sensoni di disconi di disconi

The control with the service of the control of the

অসভা সৰ বাদা-গাদা ছেলেদের সামলান, তাই ভাবি। ভার ওপর আবার টিউপনি। ক্লট্ৰে মড মোটা মাৰ্মায় ছেলেকে नामनाका। जान्हा, बन्देरक नकाटब छात्र-मार्च जानभाव?

-- एकम जागरेव मा । ७ रवण भाष्यः।

—हाहै। अक मन्बरसर काम। अस्कर হাতের জন্য আপনার মত থৈব'লীল लाकरे मतकात। जाजला त्मरे दाखरे ताथ-एत शकुण्डिएक अञ्चलम रेखनी करत निर्देश एक्स, छाई मा?

পাঁজ গলেশ বোধহয় *द्*नाधर(क रनामारह । जानान क्या क्षे माहरूक दकान नभ्गी श्रारताकम दिन । अर्थे किंद्री नवत কোনমতে কাটাবার জনা। কেন সোমা এত উচ্চত এরকম খনিষ্ঠ হতে চাইছে, তার কারণ খ্রাজন পরিমল এরে মনে। আতেত করে বলল -- আপনি কোথার বাকো?

—परेरात लाकाता

—এড দরে এলেন ভাইলে? পরিমল विन्यतः हान्यतः भातनः मा।

-- अर्थाम । धा अवस् ः सावित्यः । छान লালে না। মুখ টি কি একট্মানি এছসোর হাসি হাসল লোমা। করিমল ওয়া মোটিভ क्रियुक्ते जान्सक क्रियुक्ति प्रदूर कियू यक्षण मा।

—মিতুর বি খবর। লোমাঁ জপ্লাস্থাপক श्रम्भ कर्त्रण।

—ভাল। প্রার মিবিকার উত্তর দিল পরিমল। চকিড দ্ভি কিরিরে সোমার मिरक रमधन। ताकशिष **यम हरत या**त्रा বিকেল। পথচারীদের আনা-গোনা কিণ্ডিৎ স্বায়াল্ল, শিথিক। আৰহাওয়াল হালক। খোলা-মেলা বেড়ালোর ভাষ। লোমার মেজাজেও। অপরাহের মোলারেয় আলো লোমার স্বাপো পড়ে ক্ষেম একটা আলাদা দানুতি বিজ্ঞান্ত করীছল। লোমার চোথ-মুখ কোন চাপা উল্লেখনার দাঁপিডতে क्षक्षक क्षत्रीवन। जामरमञ्जू जाजरम गाछि চালাভে থাকা ভাইভারের নিস্সূত্ ভাগ্<u>য</u> পেলীব্যুল প্রান্তের শক্ত বাড়, কবি ও বাডের চওয়া, কব্দী, দেখল পরিষ্ণা धारका छेनान विरक्तातना गाविनएड धक्रि व्यक्त व क्रांक्टिंग त्मश्रम लाम कि कार्यत ? والجالة فيأتم

—মিজু বেশ ইটোগলেণ্ট। একে, এই বরসে লেখাপড়া ছাড়িরে দিয়েছেন কেন? रनामा जानारनव नृतु बाक्न मा।

পরিয়ালের याथा रहमाजनका व ছাল্কা হয়ে আসম্ভিল। মাথা খ্ৰেডে পারে বিল্যা, ভাবল একবার। সোমার কথার दाशन। ri -

—काबारका अंध बद्धा स्वटबरना जे বয়নেই লেখা-পড়া হাড়তে হয়। হাসতে राजी क्यांक मार्थ्य एक रक्षा द्वार

— ७ कि? जानमात्र कि शांधा शताह? बाबाब गय् जनसान्छ जावग्राटक नवन कतात कमा मू-आढ्राल मण प्रिटश श्रामीहरू र्शातम्बर्गः। वाष्ट्रः स्टब्स् स्वतः, माः। विक्यः सतः।

-मा जावात जि। शात बबदक हैठेन লোমা। আপনার হবে লাল, কপালের লিরা ফ্লে উঠেছে, নিশ্চর শরীর থারাপ সাগছে व्यागमात्र ।

পরিমল উত্তর দিল লা, দু-ছাতের क्टिनाम क्लारन धनन।

---ইস, জাগে জামলে আপমাকে জাসতে -वनकाम ना। दनामा जारकन करान।

—কি**ন্তু আপনি কোখার বাবেন তা**তো वेणाद्यम ना। क्विया हालाइन।

बाध किरन अवके प्रशासन शामन লোমা, ভারপর বলল, আপাতত আমার এইখালে নামার ইচ্ছে। স্লাইভার রাখো।

পরিবাস চারিদিকে চেয়ে দেখল ভাল করে। গোধ্বির কিছ্ রঙ মাঠের *প্রা*লেড সিদ্ধেরর হোলির মত ভডিরে আছে ৷ ইতন্তত পাথীয় ভানার চন্দ্রলতা। চৌরণগীর আলোগ্রাল क्रकारक भ्रद्र क्टब्रट्ड। मान भीन ज्युक इन्द्रम পনের আপো মৃহ্তের্ মৃহ্তের্ জনলে আবার নেভে। মাথে মাথে হাওনার খ্র্ণ मार्केत बहुरलाञ्च अप्र कुरल महत्त्व महत्त्व मिणिदम बाम । मार्केस बादम दनदम - गाफिछा হৈছে দিল লোমা। ওর ভাৰভণিগ হঠাৎ কেমন গম্ভীর প্রয়েপ্পলাম बक्रा সিন্ধান্ত নেবার মত মনে হচ্চিল। পরিমলের আগে আগে চলে লোমা কিছ্টা म्रुटत मारकेत घरना अदन मोक्रामः।

- अथातिह दीन अकरें, स्कान। इनन्छ গাড়িতে আপনার বোধহর মাথা যুরে গিছেছিল, ভাই না, সোমার গলাই আত্মীয়-ভার সূত্র খেলা করছিল। মনে মনে খুব নরমধ্যের করাছল পরিমণ। এরকম সম-**ৰেদনায় আচুকি-ঠ শোনায় জন্য বে** আরো কিছ**ু অস্কুৰ হতে রাজী ছিল।** সোমা খালের ওপর বসভে লেও ওর মুখেমুখি बनन, हबन किन्द्र न्यूबन हत्तर ।

—আপনার শরীর ভবিশ দ্বলি, এর धक्रो काक्ष्या इत्रा फेडिक श्रीतम्बन्धान्।

क्ष म्लाप्टे करत मात्र वरत क्षेट्रे शबन क्षांक्ल दलाया। चीनद्रत काला काताव भारत-বেশে লোমার সামদে বলে বলে ভিডরটা কেমন শিউরে উঠল পরিমলের। এই বিশাল মাঠের পটভূমিকায় নিজের করে অশ্ভিদ্ব নিয়ে, যাবতীয় পাছপালা, অনা-মুনে বেড়াতে থাকা মান্ত্ৰ, শব্দ প্ৰতিশব্দ, ধ্সর বিরাট আকাশ এবং চারিদিকে আছ্য করে আসা আবছায়া ইত্যাদি रमधरेष रमधरे के मामरक मामरक श्रीतमका निरमत सीयनवाती मिश्तभाषात सायात মতুন করে উপশীব্দ করতে লাগল। জাপন शारमञ्ज वनामा अहे त्याय जान निरंकतरे शोकरतन घरवा चूर्यकरत चूर्यकरत ऋख করতে লাগল। চতুদিকি খুব বিশ্বস্তু বলে थानिकण मृद्रत मृद्रत न्याह्य स्थीताट कुताथा শ্তর আশ্তে আশ্তে ব্তরেধার মন্ত ক্ষমে উঠতে দেখা গেল। দুরের **আলো**গ**ি**ল বেন চমংকার স্ক্র মসলিলের ওড়ুমার-**णका क्रेबर जम्मून्यतम वरम घरम व्यक्तिम**। ৰাতাৰে **অভ্যন্ত নামান্য শবিভা**তার আভান।

—नरव करत थरक फेटरहरू, अनक কুরাশার বসে থাকা ঠিক না। বেশ অভিয়ে जावधानी शलाह वनन जामा । जाहा **७८** দক্ষিতে পরিমলও উঠল নীরবে।

—বিপ্ৰাম কৰে খাদিকটা সক্ৰে বোৰ করছেন তাই না? ওর গলা মমতাপরারণ লাগহিল, চলুন একটুখানি হেটে বাই ভারপর গাড়ীতে উঠব। আপদার কর্ট हरव ना रखा?

—मा, क्रीन छेखत निम शीतवन। बदन মনে ক্যিকম म.स्याधा कामस्य कावा অকারণেই ক্র হছিল। লোমা আৰু ভার স্ব গতি **বেদ সির্**ল্যণ **ক্ষাত্র। আপন**্ খেনালে কলের প্রতুলের মত ভাষি ছ্রিক্ত কালই ডো সোমা ভার মত পশ্চিমক मन्भूग विन्याक हरत आवात आक महन খেলার মাডবে। ভাবল বটে কিন্দু ভোন-রক্ষ বিদ্রোহী হল নামন। কে জানে হরত



— अशामिरे। अरे कींक राज्या।

িশুনে জালতে পারছে না কোথার কোন ্ৰীনামুদ্ৰ হৈ পুড়ে বেডে পারে। থানিকটা হাটিছে হটিতে সোমা প্রশ্তাব করল, ्रान्याम्या धकरे, किंक स्थल नित्र स्क्रण ু হতে পারি কিন্তু।

रहाना धनव किन्द्र चाहतपर भूव स्थाका-

বিশ্বভা নিয়ে করছে। হরত নর, নিশ্চরই।

🗝 🏸 🛶 मा, बाथा निर्देश राजन । পরিমল। ুওংকোন মহিলার সঙ্গে কোনদিন कीए হাউনে বার্মান, কনকের সক্রেও নাণ আদৌ करिंक हाफिर्ट्रिक कम वात रगरह।

्राटकात स्ट्रांक जनामनक कार्य अक-শার চারদিক দেখল লোমা। তারপর অপেকাকত বিরল্ভীভ কোণের টেবিল খ্ৰ জৈ গিয়ে বসল। পরিমণ্ড বসল। ঠিক ল্বোম্মি নর, একট্ তেরছাভাবে রাখা COMICS !

-- अकरे, कॉक रथरन जाननात कतकरत লাগবে। হাতের স্কুদ্শ্যে ব্যাগ টেবিলের গুপর রাখতে রাখতে বলল সোমা, **পরিমলকে করমরে রাখাই আপাতত তার** ঁ মূখা উদ্দেশ্য। দাতের ফাকে সক্ষম ভাপতে লা পেরে মুখ নামিরে नविमन ।

—হাসছেন! কটাকে জ্ভণে সরব ా ছুরে উঠল লোমা। পরিমলের নিঃশব্দে একট্ সন্দেহা-द्यांत्रव किंगाणे पार्थ। ় ভূর মনে হল ওর গলা।

পরিমল — 🖚 ই ছাসহি না তো। ভাকাল, আপনাকে একটা কথা বলব?

—অনেকগুলোও বলতে পারেন। দীতান জাগে কফিটা অডার দিই।

ক্ষিক আর স্যাত্তইচ অর্ডার দিল বোলা। কণালে ভাজ ফেলে তাকল।

-करे कि वज्ञादन वजीवरणन।

পরিষণ ক মুহুত ইতন্তত ভারণর আন্তে করে বলল,—আপনার বেরোনোর উদ্দেশ্য এখনো জানতে পারলাম না, প্রনো কব্দিঘড়ি চোখের কাছে আনল ্র বিশ্ববিদ্ধার প্রেম স্থার দেড়ে ঘণ্টা হতে চলল।

ट्रामा धक्ये, थमकारमा। निराम व উল্লেখ্যটা নিয়ে মনের মধ্যে নাড়াচাড়া **ক্ষরতা সম্ভবত।** ভারপর বলল, —উদেদশ্য আলে একটা ছিল নিশ্চরই, কিন্তু পরে रम्प्रे चात्र ब्रहेन मा। मिर्च्य कथाग्रहा ্হেলালী, মড লাগড়ে চুপ করে গেল সোমা।

> —আমি অন্যকিছু ভেবেছিলাম। আমাদে মিয়ে আসার কারণ হিসেবে।

> ্ৰথাটা অন্যরকাই ছিল। আপনার बाबनाव चून ट्रम्हे।

- देशधान रामा कतात कथा हिना। भौजन मिद्रीष्ट বরোরাভাবে প্রাণ

100

-- अधिकाम हरू । जिल्लाम ভাকাল, আসেনি?

THE WAY

-- वार्ड क्या नावात कि वाद्य। रि-रि করে হেসে উঠন লোমা, দেখা ুহলে কি আর আপনাকে সামনে নিবে বলে কবি থেতাম ?

পরিমল সামান্য গম্ভীর হল। একটা উচ্ছ, তথল মেরের খেনালের বলি ছতে राष्ट्र जारक। स्कारक गरन गरन वर्धकरिया উঠল। আমি বাডীর টিউটর. একটা স্বতল ম্বাদা আছে। আদ এই মেরেটা আমাকে কু-প্রয়োজনে নিজের উল্লেশ্যসিম্পির জন্য নাকে দড়ি দিরে কলের পত্তুলের মত অথবা বানরের মত খোরাচ্ছে। ভাবতেই খেলা এল পরিমলের। অনেকক্ষণ দ্রজনেই চুপচাপ রইল লোক-জনের আনাগোনা দেখল, চাপা হৈ-চৈ শ্বনল তারপর কফি আসতে দ্বজনেই নীরবে থেতে থাকল। এক সময় সোমা ফিসফিসানি স্করে বলল,

 সেদিনকার ঘটনায় আমার সব ব্যাপার নিশ্চয় অনুমানে ব,ঝেছেন। আমার ভয় হরেছিল, পাছে বাড়ীতে বলে দেন।

পরিমল সামান্য শব্দ করে শাশ্ত হাসি হাসল। সোমা বল**ল আ**বার.— এখন বুৰোছ আপনি নিভরিযোগ্য। ভাই আর ভয় হয় না। লক্ষ্যভ করে না।

পরিমল চেয়ে চেয়ে দেখল লিশরে মত অবলীলায় কথা বলছে ও।

—আজকে ছটার সময় থাকার কথা ছিল। আয়ার তো ছুটি। বাড়ী থেকে বেরোবার সুযোগ কম। তাই একটা বই কেনার ভীষণ দরকার এরকম ভান করলুম। পরীক্ষা কিনা। সেজন্যেই আপনাকে টেনে আনল্ম। না হলে—এতে কুণান তুলে সামনে দেয়ালের দিকে দ্রমনস্ক দৃণ্টিতে খানিক তাকিয়ে রইল সোমা।

—একা একা ট্রামে বাবে মা ব্রতে দেয় না। পরিবারের প্রেটিউজ जाए । আর একা টাক্সিতে উঠতে আমার নিজেরই ভর করে।

পরিমল কোন কথা বলছিল না। সমস্ত বরের গ্রেম ছাপিয়ে তার কানের কাছে সোমার কথাগ্রিল যেন অর্থহীন অথচ স্কর প্রলাপের মত বাজছিল। টেবিলের ওপর আর্থিকব্রিক কাটতে থাকা সোমার আঙ্ক দেখল সে।

—মা আপনাকে বিশ্বাস করে। কেন জামি না, মনে মনে বেশ নিভরিতা

নয় ও স্ক্রেফরে হাসল পরিমল। আমপ্রশংসা শোনার লক্ষা দমন করতে।

णातगर विष्यु शक्त गड़ाब वर्ड ठीकड ,ভালাতে বলন,

—কিন্তু ডিনি, বানে আপনার সংগ্র चारममाम ? থার দেখা হবার কথা,

বিদ্যাগবিধিজ্ঞের মত ঈবং উচ্ছা,ল হাসল নোহা, ভারপর বলল,—কে জানে। হরত এসেছিল। হরত কেন, নিশ্চর এসে-ছিল। আজ পর্যাত কথনো ফেল করেনি। আমিই ত এলাম না।

—धरनम मा? श्रीतमरनत চোপ লোমাকে প্ৰবিক্ৰণ করছিল, কেন এলেন

–বারে, আপনি কি? আজকে ছটা খেকে সাড়ে ছটা পর্যান্ত মাঠে রইলাম না আমরা। ভূলে গেলেন?

– ও। পরিমল ঘটনাটা মনে মনে সাজাবার চেন্টা করল। কিন্তু কেন করলেন

— কি জানি। সোমার দৃতি দূর-কিতারী হল। মনে হল আমার একটা তচ্ছ সংখর খেয়াল মেটাতে অনিচ্ছুক আপনাকে টেনে আনলাম। এই দুৰ্বল অসংস্থ শরীরে হর আমাদের থেকে দ্রের টেবিলে অথবা অন্য কোথাও আপনাকে অপেকা করতে হতো, ভন্ততার জন্য আপ[া]ন ডিস্টার্ব করতে আসতেন না। দেখা হলে ও কডকণ ডিটেন করাত কে জানে। এই সব ভেবেই আমার থুব খারাপ *লাগল*। তাছাড়া ঘটনা অন্যরকম ঘটলেও আজকের সম্পেটাও তো মন্দ কাটল না, কি বলেন: কেমন শাশ্ত নিরুদ্বেগ।

—অনেকক্ষণ হয়ে গেল, এবার তো ফেরা উচিত।

পরিমলের চারিদিক আবার ক্ষেম নিজন হয়ে আসছিল। ্বলো নিঃসংগ তার ভার আবার তাে ঘিরে ধরছিল সেই নিঃসংগতার পণার স্বচ্চ रथरक इमन এको। मृथ, সোমার মুখ স্পন্ট হয়ে উঠাছল। জানি না একি খেলা কাতর হয়ে ভাবল পরিমল। কডক্ষণ এ? স্থায়িত। পৃথিবীতে আর কোন ব্যক্তি বি ছিল না। অথবা হয়ত পুতৃল তৈরী করা। পক্ষে পরিফলের মনের মাটিই সর্বাপেক্ষ গ্রহণীয়। মনের মধ্যে মুখটা ক্রম্শ ব্যাপ্ত কিন্তৃত হয়ে ছেয়ে আসছিল। তাড়াতাড়ি কফির কাপ শেয় করে পরিমল কেম-বিরতের মত বলে উঠল, অনেকৰণ হয়ে গেল, এবার তো ফেরা উচিত।

হেলেবেলার মফল্বলের স্কুল টীমে ছেলেরা ভাল ফুটবল থেলত। পরিমন কোনদিন ওসব দিকে দক ছিল না। যে সা ছেলেরা খেলোয়াড় ছিল তাদের খবে খাতিব ছিল স্কুলে। পরিমল লেথাপড়ার ভা**ল্** হয়েও কোনদিন তাদের নাগাল ধর্থে পার্রেন। জীবনের কোন খেলাডেই সাক্ষা মাঠে নেমে পড়তে পারল না পরিমল र्गार्त्राम्टक श्रमथाम উरस्काना, मर्नकाम

আনন্দোলাস, হার্যাজতের অনিশ্চিত নাগর-লোলা, এসৰ জীবনে কখনো আৰু উপডোগ कड़ी हम ना। अकरमंत्र करना अब किहा सह। ভাবলে ক্ষীণ হাসি আসে ঠোঁটে। তারতেরে পরিমল নিভুতে স্বার সংগ এভিরে মাঠের সরত্ব পারে চলা পথ দিরে আপনমনে শনিদিশ্টভাবে হে'টে গেছে, লিচুগাছের মরম কচি "সাভার কাছে প্রজাপতির অস্থির পাৰার ৰাশ্ট নিশিসের চেরে দেখেছে। ধ্সর হরে আসা শেব বিকেলে পর্ভুরের শীতল শ্বছ জলের ধারে বলে কাটিয়ে দিরেছে কভক্ষ। আত্মচিতা নিবিরোগ। এসব গোলমালহীন কাজেই বরাবর পরিমল আত্রমিরোগ করে এসেছে। আত্রও যেমন। সাধারণ একটা স্কুলমাস্টারি জোগাড় করে দিতে পেরেছিল কপালজোরে। এখনও গ্রীম্মদ্পুরে ক্লান্ত গাভীর রোমন্থনের মন্ত নিস্তরণা কাটিয়ে দিচ্ছে জীবন। .

আপনার কি ইরেছে বলুন তো,
আজকাল কেমন অনামনস্ক থাকেন?
সহক্মী শিক্ষক অজিত সামস্ত স্টাফর্মে
বসে মস্তব্য করল। দোকানের সর্ চারের
গেলাসটা একেবারে ম্টোর ভেতর ধরে
রাখা ব্যর। হাতের চেটোর মধ্যে উত্তাপটা
পরথ করতে করতে পরিমল প্রায় ভাষাহীন
চোখ তুলে তাকাল। দাঁতের ফাঁকে সামান্য
নরম হাসল। —কেন, আপনার সেরকম মনে
হর।

—মনে হয় কি, চোখের সামনে দেখছি
আপনি দিন দিন কেমন ব্জোটে হয়ে
য়াচ্ছেন। কি এমন বয়স আপনার, আক্ষেপ
করে উঠলেন অন্ধিত সামণত, আমরা তাই
বলাবলি করি। আমরা স্টাফেরা।

বলাবলি করে। পরিমলের আড়ালে
কেউ তাহলে তার বিষয় আলোচনা করে।
পরিমল তেমন নগণা নর তাহলে। মুঠোর
ধরা গেলাসে চুমুক দিল পরিমল। জানলার
বাইরে স্কুলের একচিলতে মাঠ দেখা ঘার।
মাঠের সব্রুজ ঘাসের ব্রুকে মধ্যাক্রের রোদ
গড়াগড়ি খাজে। চারিদিক আলোর আর
হাওরায় ভরা। প্রেজার ছুটির পর এই
দ্ একদিন মোটে স্কুল খ্লেছে। বাতাসে
এখনো শরৎকালের শিউলির গন্ধ পার
পরিমল। এমন ভেসে ভেসে যার অনেক
দিনের ফেলে আসা স্মৃতির কাছে, উন্মন
ছেলেবলার।

— চাকরীর ক্ষেত্রে এরকম হলে চলে না।
আমি বংশ,ভারেই বলছি। সামস্ত ঘে'সে
খে'সে পরিমলের অনেকখানি কাছে সরে
একা। অস্তত চটপটে ভারটা রাখতে হবে।
আটেনশনের ভাগ্গিটা থাকা দরকার, আসল
কাজ কিছু হোক বা না হোক। চোথ টিপে
ইপ্লিড করল সামস্ত, না হলেই ত কর্তাবের
সব মুখ হাঁড়ি।

—কি ব্যাপার কর্ম ছো? কিছু খবর আছে নাকি?

—ববর রাশতে হর দাদা। শুনেছি আজকালের মধ্যেই আপনাকে ওপরত্মসা থেকে ওরাদিং দেওরা হবে। অমনোবোগের জনা। আপনার ক্লাশ নেওরা ইরেগ্লোর হচ্ছে, পড়ানোর নেগলিকেন্স, হাতরা ক্লাশে অসম্ভব হৈটে করার স্ব্যোগ পার। পেছন থেকে কারো ছাটড়ামি আর কি, ব্যক্তনন না? সবই পলিটিকসের ব্যাপার।

বোঝার আর চেণ্টা করল না পরিমল।
দিন দিকে দিকের ভেতরের শিখিল ভাবটা
যে অপরিহার্ব হরে উঠেছে তা তো আর
নিজের কাছে অঞ্চানা নর। জীবনের সব
দিকেই ফিটনেসএর প্রশ্নটা এখন তার
কাছে এক সমস্যা। শরীরটাও। আসলে
শরীরটাই যেন বাদ সাধে। কে জানে। দিন
দিন পাঁকরের ভেতর কেমন যেন জার কমে
যাছে। প্রতিটি পদক্ষেপ স্থালিত হরে যেতে
চার।

—একটা বিরেটিরে কর্ন না। রসিকতার হাসিতে পানরঙা ঠোঁট উজিরে বলল সামত। শরীরে বল পাবেন। মনেও। সারাজীবন এমন ছমছাড়ার মত পরের ঘরে থাকলে চলে?

—আর্পান বিরে করে শান্তি পেরেছেন? কিরকম অর্থাহীন দুন্টিতে সামশ্তর মুখের দিকে চেয়ে প্রশ্নটা করে ফেলল প্রিম্ল।

সামান্য থতিরে গেল সামস্ত। তারপর
একট্ ভেষে নিরে বলল,—তা র্যাদ
বলেন, অস্বীকার করব না। মুখে
যতই আক্ষেপ করি, হয়ত এই বাজারে
ছেলেপ্লেগ্লো ঠিকমত মান্য হছে না,
অভাবের জনা পরবারও মাঝে মধ্যা খোঁচা
দেয়, তব্ বলব ঘরে অস্তত নিশ্চিস্ততাট্কু
খা্জে পেরেছি। জীবনে প্রসা ছাড়া আর
কোন প্রক্রম ত নেই। আর প্রকৃত শান্তি
কারই বা আছে বল্ন, স্বরং রাজারও না।

অবসরের সময়ৢট্রুকু শেষ হল। ঘণ্টা পড়ে গেছে। এবার ফ্রাসে বেতে হবে। উঠতে গিরে অবসাদ বোধ করল পরিমল। খুব স্ক্রুভাবে মাথাটা ঘ্রল ক মুব্ত্! দ্হাত ছড়িরে পরিমল আলস্য ছাড়াল। ঘর ঘেকে বেরিয়ে বাবার আগে কি ভেবে থমকে দাড়াল সামন্ত তারপর বন্ধ্র মত কানের কাছে মুখ এনে ফিসফিস করে উঠল,

—নিদেন একটা প্রেমটেমও তো করতে পারেন।

হেন্দে চলে গেল সামন্ত। পরিমলও হাসল। সামন্তর বলার ভালাতে। ক্লানে গিরে চেন্টা করল মনোযোগী হবার। কিন্তু ক্রে ছেলেগ্লো পরিমল সম্প্রে কেমন
যেন নিরসংশর হরে গেছে। ছেন অনারাসে
যে কোনরকম উক্লেলতা ভরা করছে পাত্র
তার পিরিরভে। পরিমল অনাইরে চেরে
থাকে বেণিভরা উক্লেরা শর্তান্ট্লোর
দিকে। একরকম ইউনিকম পরা প্রার্থ একটা
ব্যাটালিরন। অথচ এরাই অন্য টিচারদের
ক্লালে কেমন আতান্কত নির্দেশ হরে আছে।

—একটা গণ্প বছাছি লোক। বুটাৰকল চেচিয়ে বলার চেন্টা করল। কিছু সাঞ্চা পেল না। প্রাণালে গান্ডীর ইবে পঞ্চা বোঝাবার চেন্টা করল, নিজের কাছেই হাস্যাকর ঠেকল সেটা। অভ্যান্তর কারা বাজলে বেরিয়ে এসে মাজির কান নিজ পরিমল। হেভমান্টার ওয়ানিং লাকে। একেবারে ছাড়িরে ভো দেবে লা। এইভাবে কোনমতে দিনগালো কাটিরে দিতে পালনেই হল।

ছ্টির পর রাস্তার এলে হালকা যদে করল। এতদিন নিজের বিষয়ে বিছয়ে 🖛 🗗 🕫 আম্থা তব্ৰু ছিল। সংগ্ৰহ, সংশ্ৰের rाना ইত্যাদিও ছিল। এখন **ভার সবট্টু** মুছে গিয়ে একটা ভারহীন বিশ্বাসের অবস্থার মধ্যে এসে দীড়াল: পরিমলের শরীর মনে সতি৷ আর কোন শর্ম প্রতিষ तिहै। जर किए स्थीनर्ज मिथिन। जान কোন আশা দেই তার কাছ থেকে কারো কিছ**্ পাওয়ার নেই। চোখের দিগত থেকে** যাবতীর রঙিন বস্তুপ্**র মুটেই** আজ পরিমল শ্বেমার বে'চে থাকার একটা শ্বে অনুভূতির নৈর্বান্তিকতার মধ্যে এসে দাঁড়াল। দুরে ট্রাম আসছিল। **পরিমলের** একটা অশ্ভত ধারণা হল বে হয়ত সে **হাত** ए भारत हो भ थाभरत ना। का**तन भृषिवीर** छ তার অপ্তিম নিতা**ণ্ডই অবাঞ্নীর।** হাস্যকর এবং হাস্য**করভাবে কর্ণ।**

তথনো অফিস ছ্টির সময় মূর বলে
টামে বসার জারগা পেল পরিমল: তার
মাথার মধোটা কিরকম জমাট লালছিল:
এ সমর একট্খাদি কোন পাকে বসলে
কাজ দিত, অথবা ময়দানে। কাজন পাকে কথা
কাজন পাকের কথা ভাবতেই মেয়ার কথা
মনে হল। বিপরিপ করে নামা কুরাশার
বিলীন অপরাহে বিশাল নাঠের নিক্তেও
বড় বড় গাছের গারে জড়িরে আনা
আবহায়া, মাটির নীক্তে বানের জানুনা
আবহায়া, মাটির নীক্তে বানের জানুনা

শ্রীনিভাইপদ বন্ধ বহু পরিত ও উভ্যান্তিভ নব ভারত (নাচ্ছ) ২-০০

প্রাণ্ডিম্থান—হিল্পোল **স্টার্যারী** কলিঃ-১২ ও অস্যাস্য প**্রত্তালয়** শিক্ষে কিছু চণ্ডল লিবলিবানি, একেবারে
ক্ষের মধ্যে রক্তরোতে বেন তা অন্তুত
হরা আর সামনে সেই ধ্সর হরে আসা
পরিষ্ণতলের মার্থানে ছবির মত সোমার
ক্ষিত্ত।

বাইরে রাজপথে লোকজন ক্রমণ পিছলে
পিছলে পেছনে সরে যাছে, ট্রামের জানলা
দিক্তে লক্ষ্য করল পরিমল। বিকেলের
জালো নরম হরে আলতো ইভিয়ে আছে
দ্ব চলন্ড যানবাহন বাড়ীখর, প্রাসম্ভাবের
গুপর। বেন পার্থিব সর্বাক্ষ্য হঠাং
দীশ্তি হারিয়ে মাড়েমেড়ে হরে বাছে।
গাড়ীর ভেতরটা শান্ত। কিছু বর্ণসম্থ
পোশাকের মেরেকে বিকেলের রঙে আশ্চর্য
মানিরেছে।

—িক রে, চিনতেই' পারছিস না যে। পিঠে হাত পড়তে চমকালো পরিমল।

—কে? ও, সিতৃ। কথন উঠলি? বাধ্যক দেখে পরিমল হাসি আনল মুখে। কিচ্চু নাস্ত্রিকপক্ষে সে ঈবং উত্যন্ত বোধ করল।

—চিকিট কাটিসনি তো?াসতু জিঙেস করল।

—না। পরিমলের এতক্ষণ একবারো এ বিষয় মনে পড়েনি।

—আমি কেটে নির্মেছ, সিতৃ দুটো টিকিট দেখাল, অনেকক্ষণ উঠেছি তো।

অত এব পরিমলকে এখন বন্ধু ব বলার রাখতে সারা পথ বকবক করতে হবে অবাদতর। অথচ বহুদিন যাবং সিতুর সংগ আর ভাল লাগে না পরিমলের। বর অনথক হামবড়াই ভাব আর মেরেদের প্রতি অতিরিক্ত আকর্ষণ বথেণ্ট বির্মিক উৎপাদন করে বলে। পারতপক্ষে পরিমলা ওকে এডিরে চলতেই ভালবাসে।

পরিমল জানলার ধারে। তার ও সিতৃর মাঝখানে একটি লোক। সিতৃ রও ধরে দাঁড়িরে। পরিমল ঘাড় উ'চু করে কথা বলাছল।

- जूरे वयता स्मरे न्कूलरे व्याध्म?

—হ:। পরিমল ছোট করে উত্তর দিল। তোর কি খবর।

—আমার তো, জানিসই। হৈহলার বেশ
কাটছে। শাটের কলার অনাবশ্যক নাড়াচাড়া
করল সিতু। স্বত্নচিতি রক্ষ চুলে আঙ্বল
ছোরাল। রিজাভ বাাতেক ভাল সোসা ছিল
সিতুর, চাকরি পেয়ে অনেক চনমনে আর
অহকোরী হরেছে। সিতুকে মেয়েঘে'বা
বললে ভাটি দেখিয়ে বলে—অক্ষমেরাই
ওক্থা বলে থাকে। কামে একটা মানানসই
বাকুনি দিলে চারিদিক তাকিয়ে সিতু বলে
উঠল, তুই দিন দিন এমন ঝিমিয়ে বাচ্ছিল
কেন বল ত ? ব্যাপার কি তোর।

বির্বন্ধিতে গা রিরি করে উঠস প্রিমলের। নিজের শ্রীবিক্তীন চেহারা, নিভালত বৈশিশীয়েনি প্রিক্ষণ এবং ক্লানিডার কালিমাখা মুখ বেন সবাই চণিত দ্বিটাতে দেখে নিক্ষে এরকম মনে হল তার। কানের পাশে গরম কাঁকের মত লাগল এক কলক। ইক্ষে হল যাড় শক্ত করে ফিরিয়ে রাখে। কিম্তু ছেলেমান্বী হবে তেবে পারকা না।

— কি রে জবাব দিছিল না, কি হরেছে তার? একেবারে পঞ্জিরের মধ্যে পর্যত্ত বেন থ'চিচের দিছিল সিতৃ। ওর গলটো কেমন কঠোর মমতাহীন তাজিলোর মত কানে বাজছিল।

—িক আবার হবে। কৈফিয়ং দেবার মত বলল পরিমল, কদিন আগে থ্ব অস্থ গেল। থ্ব অস্থের কথাটা জোর দিয়ে বলল।

—না কি? দেখেও তাই মনে হচ্ছে।

পরিমল আশ্বনত হল। অস্কেথ হওরা ও তার জন্য বিমিরে বাওয়া নিশ্চর লোক-চক্ষে হেয় নয়।

—তোর সংগে দেখা হরে ভাল হল।
ঠোঁটে আঙ্লে চাপল সিতু, একটা কথা
তোকে বলার ছিল, মানে তোরই ভালর
জনা।

খানক আগ্রহ নিয়ে তাকাল পরিমল।
চেনাজানা একটা ফার্মে সিতৃ চাকরি করে
দিতে পারে, এরকম একবার শুনেছিল সে।
মনের মধ্যে কিছুটা আশ্বাস সংশ্রের দোলা
নিরে তাকাল।

—এখন বাড়ী যাচিছ্স ?

__राति

—ধ্যুং। তাচ্ছিল্য করল সিতা এই বিকেলবেলা ঘরের কোণে মুখ গ্রেকতে যাব। তার চেয়ে চল নেমে পড়ি।

শরীরের অবসাদ মনের ক্লান্তির পাহাড়ের কথা ভাঙতে পারল না পরিমল। অনিচ্ছা গোপন করে ঘাড় নাড়ল ওর প্রশ্তাবে।

কলকাতার রাস্তা বিকেলে জমজমার্ট থাকে। বস্তুত সার্যাদন ধরে বিছানো রোদের ছটাগ্লি শহরের পিঠ থেকে আম্তে আম্তে তুলে নেওয়া হলেই পথচলতি মান্বের গায়ে পায়ে এক ধরনের চণ্ডলতা থেলা করে। ট্রাম থেকে নেমে পরিমল ক'ম্হুত নিশ্চুপে এইসব দেখে। এই শীতলপার্টির মত বিছিরে আসা ক্লম্থারী বিকেলের বাস ট্রাম উন্মুখ ফেরিওলা সন্ধানী ভিথারী।

—থ 'মেরে কি দেখছিস? সিতু ওকে ঠেলা দিল।

-क्टे किए ना छा।

—পূই মাইরী সম্মাসী হরে যাজিল। এদিকে সব ভাল জিনিস মা দেখে কোখার ব্রের দিকে চেয়ে আছিস। -कि क्लीव वर्लाझीलें।

—চল আনে কোথাও বনে চা খাই। নিতৃ চলতে চলতে ফাল, তুই তেরে দানার ওখানেই আছিল তো?

—হাা, সে তোঁ বরাবরই।

—বেদি দেভাবেই আছে? সেইরকম আরেসী আর বিশ্বত্ত?

মাঝে মাঝে দুর্থের কোডের সমর
বন্ধুদের কাছে বরের কুলা বলে কেলেছে
পরিমল, অথক ভাল মনে থাকলে ভাল
কথাটা আর বলা হরে ওঠেনি। মনে
পড়েনি। ভার বৌদির সম্বংগ্ধ ওদের ধারণা
খারাপ করে রেখেছে বলে নিজের ওপরই
রাগ হচ্ছিল পরিমলের। এবিবরে তার আর
কথা বলতে ইচ্ছে ছিল না।

—না, হার্ন, ঐ একরকম আছে। বেমন থাকা হায়।

—বাসায় থাকিস তো অনেকক্ষণ। ঘারের খবর রাখিস না কিছ্ব?

এমনভাবে চোথ কুচকে হাসল সিতৃ ষে পরিমলের শরীর জালে উঠল। পরিমল মাঝে মাঝে সংসারের ওপর বিতৃক্ষ হয় বটে কিন্তু আসলে তো সে বাড়ীকে বাড়ীর মান্যগালিকে ভালবাসে।

--তোর বড় ভাইঝিটা তো বেশ বড়সড় হয়ে উঠেছে রে।

চমকে সিতৃর দিকে তাকাল পরিমল। কান ঝাঝা করছিল ওর। সিতৃর মুখটা ইতরের মত লাগছিল ওর। ওই মুখে মতুর নাম উচ্চারিত হওয়াটা সে প্রথপ করহিল না।

—বড় হয়েছে মানে াশ উড়তেও শিখেছে।

—সিতৃ! নিজের গলায় বে এত চাপা গজনি থাকতে পারে পরিমাস নিজেও জানত না। কিব্তু সিতৃ অনামনস্ক থাকায় গ্রাহা করল না।

—প্রাষ্ঠ ত এখানে ওখানে ঘ্রতে দৌখ ওকে, একটা লক্কাপায়রামার্শ ছোকরার সংগো। সেকি চঙ তার, ব্রুলি...ওকি, পরিমল?

পরিমল ততক্ষণে শক্ত করে ওর পার্টের কলারটা চেপে ধরেছে। মুখে উত্তেজনার গনগনে আগ্নন। কৌশলে মুখু সরিয়ে ওর কেমক্কা অ্বিটা সামলে নিল সিতু। তারপর আশেত আশেত জামা থেকে ওর হাতটা ছাড়িরে দিয়ে আশ্চর্য শাশত করে হাসল।

— শোরে তুই আমার সংশা পারতিস না পরিমল। আমি কিছু মনে করিনি। সাঁত্য কথা শুনলে সবারই এরকম হয়। বা বাড়ী হা। তোর মন ভাল নেই একসম।

(आशामीवाद्य ज्ञाभा)



(পূর্ব প্রকাশিতের পর)

পাপ্তুঘাট থেকে কমাপিনাল ক্যারিয়িং **ম্পোরেশনের গাড়িতে শিলং-এর উদ্দেশ্যে** রওনা হলাম সকাল সাড়ে সাডটার।

আমাদের পথ আসাম ট্রাণ্ক রোড। জাড়হাট হয়ে নান্পো এসে পেশছে **দশিকের যাত্রাবিরতি। রোড ক্লিয়ারেন্স না** <u> পাওয়া পর্যান্ত অপেক্ষা করতে হবে</u> সামাদের।

বেলা দশটা। রোড ক্রিয়ারেন্স পেয়ে আমাদের গাড়ি চলতে শ্রে করলো শাব'ত্য পথ ধরে। সপি'ল গতিতে চলে :গছে পার্বত্য পথ। হিমালয়ের অনাত্র ব্যমন, এখানে ঠিক তেমন নয়। পথের ধারে থাদ এখানে স্বল্ল স্বগভীর নয়, মাঝে নাঝে অধিত্যকার ওপর দিরে চলে গেছে।

আঁকাবাঁকা পথ। চড়াই-উৎরাই পেরিয়ে নলৈ গেছে। মনে হয় এ-পথ গেছে নির্দিণ্ট ঠিকানায়, কোন নিসগ'-সৌন্ধ্যের

শিল্প:-এ স্ট্যাণ্ডে পেণিছেও শেষ নয়, আমাকে যেতে হবে লাইট্রংল্লা অন্দি। বাড়তি একটি টাকা দিতে ওই গাড়িই আমাকে পেণছে দিলে নিদিশ্ট ঠিকানায়।

নিদিন্টি ঠিকানায় পেণছে ঘড়িতে সময় দেখলাম। বেলা একটা বেজে পনেরো মিনিট !

কাদিন পর পরিবারের লোকজনের সপ্যে মিলিড হওয়ার মধ্যে একটা আনন্দ আছে। হাই হোক, থানিক কথাবাতীয় পর ন্দানাহারের পালা চুকিরে ভাবলাম, একট্র ব্নিয়ে নিই। কিন্তু শ্বাগ্রহণ করতেই হলো এক ঝামেলা। নিশিসতে লোবার জো কি! দার্ণ মাছির উৎপাত। ওই দিনের रामारकरे सभारती ग्रेष्टारक दरमा।

একটা কথা বলতে ভূলে গৈছি। আমি বখন এসে পোছেচি, তখন বেশ ব্থিট

হচ্ছিল। বিকেলের দিকে আকাশ পরিকার হলো।

স**ুতরাং আর চুপচাপ** ঘ**রে বলে থাকা** নয়, বেরিয়ে পড়লাম ট্যাক্সি নিরে। সংগ্র বাড়ির সবাই আছে। বিডন ফলস, বিশপ ফলস, শিলং লেক, বোটানিক্যাল গাড়েন, **क्यारमञ्जीन एक एएथ यथन छा। कन रक** চক্রবতীর বাড়ী এলাম, তখন সুস্ধ্যা উত্তীর্ণ হয়েছে।

ডাঃ চক্রবতী বেশ মজলিশি মান্য। প্রবাসে আমাদের জন্যে উনি ধ্রেণ্ট করেছেন।

কথাপ্রসংখ্যা ডাঃ চক্রবতীকে বললাম, আসছে কাল চেরাপর্জি যাবার জুনো একটা গাড়ি ঠিক করার কথা।

ডাঃ চক্তবত কথা দিলেন।

পর্যাদন। তেইশে এপ্রিল। সকালে বাড়িতে এক কাশ্মীরি ফেরিওলা এলো। তার কাছে নানা জাতের পাথরের মালা ছাড়া আরো কিছ, জিনিসপত্তর। একটি এ্যাম্বারের মালা কিনলাম তিরিশ টাকা দিয়ে, আর ফাইবারে তৈরি একটা মণিপরেী মাফলার।

একট্ বাদেই ডাঃ চক্রবতী ট্যাক্সি নিয়ে এলেন। আমাদের মুওনা হতে পৌনে এগারোটা বাজলো।

চেরাপ্রজীর পথ চলে লেছে আপার শিলং-এর ওপর দিরে। ভিছ্ পথ অভিলয় করে ট্যাক্সি দীড়ালো, এ্যালফ্যাণ্ট জল-প্রপাতের কারে।

এলিফ্যাণ্ট জলপ্রপাত দর্শন করলাম। खांका नागाना। আমরা সমতলভূমির মান্ব-পাহাড়ের যা-কিছ, সৌলব' আমা-रमत माण्डिक आकर्षन करत, मनरेक करत অভিভূত।

এবারের পথ পরম রমণীয়। সাপাল গতিতে পথ চলে গ্ৰেছে। দুখিপথেই পড়লো সৰ্জ পাইনের নিবিড পাহাড়ের গায়ে পাইনের ছারার সব্জ বাসের কাপেট। চলতি পথে অবাক ুচোৰে চেরে থাকি, সব্জ-সৌস্ববের দিকে।

এই পথে যেতেই দেখলাম, কয়লা সংগ্রহের কাজ চলছে। পাহাডের গার্মে माजना करते कराना बाह्य करन जाना हराई। আরো দেখলাম, ভূমের কারখানা, পাথর প্রতিত্বর এখানে চুন তৈরি করা হয়। বৈ সিলেট চুল' কলকাতার বাজারে আর্বা

रमधरण रमधरण भथ क्रितरा करना 🔩 চেরাপজেীতে পেশছে চারদিকের পরিবেশে দ্বিশত করি। চেরাপ্রজীর উচ্চতা সমূদ্র-भूष्ठे **थ्यटक हात्र हाजात कि**हे। हिन्नकारनात ব,ন্টিকরার Chai. চেরাপজে — চারদিকে নিবিড় সব্জ বনভূমি, সব্জ প্রাহাড়— मार्थः आकारमञ्जू मौनन्नक गका **धारक**ः चन्नः । काला स्मरा

তেরাপ**্রভীতে একটি প**ৃহা <u>দেখলাম_{ে প}</u> র্যেট সতি।ই বিস্ময়কর। গ্রহার ভিতরে বটের ব্রির মতো কী যেন ওপর থেকে নেমেছে। ওগুলো কিন্তু পাথরের। স্তি।— দের্থবার মতো। ভারতে বে এমন গ্রেছা আহে একথা আমি আগে কখনো শ্রনিন।

এরপর এলাম মসওয়াহির দেখতে। বড় রাস্তার ধারে দাঁড়িরে দুর ष्यक्ट प्रथमाम। कार्ष्ट्र याख्यात शथ स्मर्ट। **उरत रा** शहा बाग्न मा अग्रम नत् । वाहे हाक. দ্র থেকে দেখলাম, স্টেচ্চ পাহাড় থেকে জলধারা নেমে আসচে প্রবল কলোক্ত্_রসে। শ্নলাম, জলপ্রপাতের প্রচণ্ড উচ্ছবাসের স্বা। পাহাড়ের ওপর থেকে জলধারা পড়ছে ১৮০০ ফুট নিচে।

এখান থেকে দেখা বায় टीएएव সমতলভূমি। বিহনলদ, শ্টিতে ছবির ম**ংভা** মনে হয়। দাঁড়িয়ে দেখলাম। কয়েকটি ছবিও তোলা হলো এখান থেকে।

ফিরতি পথে टिमाम्द्रवत रम्या মিললো। কলকাভার বড়তলার ও-সি যতীনবাব্র দেখা পেলাম অপ্রত্যালিজ-ভাবে। জিজ্ঞাসা করলাম, এখানে কি বেড়াতে এসেছেন!

शाँ, ना-किस्ट राजम मा वजीमवावः। ভাবলাম, প্রিলেরে লোক-ওরা কোন क्थाई क्लर्ड हाम मा। इत्रडा काम काम নিয়ে এসেছেন।

এরপর শিলংশিখরে ওঠার পালা ৷ **এनाम ७। मागत भूके त्याक हु**' हानात ফটে ওপরে ভিলংগিশর। এখান থেকে-भिनर महरवत मृगाप्ति वरका अन्यदाः

শিলংশিখর থেকে ব্যাণ্ড স্ট্রাম্প্র । তারপর হ্যাপী ভ্যালী হরে বাড়ি ফিরে

বাড়িতে চারের আসর বসলো। আসরে ডাঃ চক্রবতীও ছিলেন। ওখানেই কথা উঠলো, 'পাইন উসলা' দেখার। কিন্তু সেদিন যাবো কি বাবো না—সেটা ঠিক হলো না।

চা-পানের পর সেদিনের মতো ডাঃ চক্রবর্তী বিদায় নিলেন।

আমিও ক্লান্ড। এবারে একট্র নিশ্চিন্ড বিপ্লামের অবসর খেজা।

পরদিন চনিবশে এপ্রিল, বাড়িওরালা। ক্ষিতীশ ভট্টাচার্য এলেন। সকালে তাঁর সংশ্য থানিক গদপগ্রেক্তবও হলো।

স্কাল থেকে বাড়িতেই ছিলাম।
বারাণদার ডেক-চেরারে বসে নানা এলোমেলো চিন্তার জাল ব্নছিলাম। এর মধ্যে
মাঝে মাঝে স্ধারা এসেছে, বসেছে, তার
সংশ্য কথা বলেছি, গল্প করেছি। ছেলেমেরেরা এসেছে কাছে। তাদের সংশ্যেও হাসাছাসি করেছি।

এমনি করে সকালটা কেটে গেল।

দুপুরে দেড়টা নাগাদ ডাঃ চক্রবতী গাড়ি নিয়ে এলেন। বললেন, চলুন—পাইন-উসলা যাবো, আমার গাড়িতেই। এক্রনি তৈরী হয়ে নিন।

মিনিট-পনেরোর মধ্যে তৈরী হরে নিলাম। বেলা তখন দেড়টা।

বেলা সাড়ে তিনটের পেশ্ছলাম আমানের গতবাস্থানে। পাইন-উসলার। পাহাড়ের রমণীর পরিবেশে চ্মংকার জারগা। চারদিকে জড়িয়ে আছে প্রকৃতির গভাঁর প্রশাস্তি।

এখানকার ভাকবাংলোটি বড়ো স্ক্রের।
ছবির মডো⊅িরফেসমেণ্ট র্মটি ভাকবাংলোর সংলপন। সবাই মিলে চা-পান
করলাম। তারপর এদিক-ওদিক ঘ্রের দেখার
পালা।

সাগর-পৃষ্ঠ থেকে ছ' হাজার সাত।শ ফুট ওপরে দাঁড়িরে দেখাছ চার্রদকের পরিবেশ। সিলেট রোড দেখতে পাল্ছি, যেন পাহাড়ের গারে একট্ সর্ব ফিতে ছড়িরে আছে।

ভাকবাংলোর বারান্দার দাঁড়ালে শ্রীহট্টের সমতলভূমি মন্ধরে পড়ে। দ্র থেকে ভারি সংন্দর লাগে দেখতে।

পাইন-উসলা দেখা গেব হলো। ফিচে এলাম দিলং-এর নিদিন্ট ঠিকানার। ডাঃ চন্ধ্বতী বিদার নিলেন আমাদের পৌহে দিরে।

ভাঃ চরুবর্তীর শ্বপরে মিঃ এ কে ভট্টাচার্বের বাড়িতে গোলাম। আলাপকৃশলী
মান্ত্র। সহজেই অন্তর্গা হরে উঠতে
পারেন। মিঃ ভট্টাচার্বের বিরাট বাবসা
আহে। কলকাতার চিত্তরন্ধন এভিনিউ-তে

ও'দের ব্যবসাকের শাখা অবিদ্য ররেছে। ধনী হলেও ভট্টাতাবে'র মধ্যে একটি সংক্ষর মানুব দ্যাকিরে আছে।

এখানেই কথা উঠলো দেবীতীর্থ কামাখ্যা বাওয়ার। একটা গাড়ির কথাও জানিয়ে রাথলাম। আস্তেহ কালই বাবো।

এখানে মিলেস চক্রবতী ও মিলেস ভট্টাচারের সংস্পাও দেখা হলো। মিলেস ভট্টাচার আর তার শাশনুড়ির সংস্থা দেখা হলো।

পর্যদন পাচিশে এপ্রিল। সকালে ডাঃ
চক্রবতীর কাছ থেকে বিদার নিরে কামাধ্য
যাত্রা করলাম সপরিবারে। বাসার রইলো গোকুল। ভূত্য হরেও বে আমাদের পরি-বারের একজন হরে গেছে।

গোহাটির পথে ড্রাইভার জানালো, বশিষ্ঠ আপ্রমের কথা। গোহাটি থেকে ছ' মাইল দ্বৈ বশিষ্ঠর আশ্রম।

ৰাচ্ছি ৰখন এই পথে—কেনই বা বাকি থাকে বশিষ্ঠ আশ্ৰম বাওয়া।

ভ্রাইভার আমাদের নিয়ে চললো বশিষ্ঠ আশ্রমের পথে।

স্থাতা বাদ্দিত আগ্রমটি দেখবার মতো।
খরলোতা পার্বতা দদী তিনদিক থেকে
আগ্রমকে বেন্টন করে রেখেছে। দুরুত জলধারা ছুটে চলেছে প্রবল কলোচ্ছালে।

গুপরে আদির দেখলাম। মদির-চ্ডোটি উপ্তৃ-করা ধামার মতো। কামর্প অঞ্চলের প্রতিটি মদিরের গঠনদৈলী একই ধাঁচের।

মন্দির দেখলাম। কোন বিগ্রহ নেই। বিগ্রহ না থাক—তব তো দেবতার উদ্দেশ্যে তৈরি হরেছে এই মন্দির।

এবারে নীচে এলাম। মাটির নীচে ঘর। দেখলাম, এখানেও কোন বিশ্রহ নেই।
শ্বেধ্ একটি পাথর বসানো। শ্বেলাম—
এটি একটি আসন। হরতো বলিষ্ঠ এখানে
এই আসনে বলে তপস্যা করেছিলেন।
পরবতীকালে হরতো আরো অনেক মহাপ্রব এই আসনে বসে সিশ্বিলাভ করেছিলেন।

কামর্প—তন্ত্রসাধনার পীঠভূমি। তন্ত্র-সাধনা—দক্তিসাধনার এক রূপ।

বশিষ্ঠ আশ্রম দশ্দান্তে, গোহাটি ফিরে এলাম। গোহাটিতে প্রথমে এলাম পানবাজারে, সভী সিনেমার সামনে, এন ক ভট্টার্ট এটাভ সিনেমার সামনে, এন ক ভট্টার্ট এটাভ সিনেমার অফিসে। ভাচ চক্রবভী এই অফিসের মোহিনীবাব্বে দেওরার জন্যে একটি চিঠি পাঠিরেছেন আমার হাতে। সেটি মোহিনীবাব্বে দিরে এলাম।

ভাড়া মরেছে কামাখ্যা বাওরার। স্ভেরাং এখানে আর অপেকা নর চললাম কামাখ্যার পথে। পথের হু'বারের দুলাপট মনোমা। সামান্য পথ দেখতে দেখতে কুরিরে এলো। গাড়ী এসে দাঁড়ালো কামাখ্যা পাহাড়ের পাদদেশে। দেখলাম, সামনেই পাহাড়ের ওঠার সি'ড়ি পথ।

এসেই পা-ভার খেজি করলাম।

সামনের এক পোকানদার জালালো, আমানের পান্ডা এতোকণ অপেকা, করে একট্ট আলে ওপরের দিকে উঠেছেন।

ুজগত্য নিজেরাই চলতে আরত্ত করলাম পাহাড়ের সি^{*}ড়ি পথে।

সিন্দি-পথ উঠে গেছে ওপরের দিকে।
মাকে মাকে থাড়াই সিন্দি। তবে বাতীদের
স্বিধার জনো লোহার রেলিং আর রড
দেওরা আছে। স্তরাং উঠতে কোন অস্বিধ্ দেই। তবে হাত আর পারের
জোর থাকা চাই।

এইসব তীথেরি পথে মান্ব এক ধরনের শত্তি পায়। কতো অশক্ত বৃংধ-বৃংধাকেও দেখেছি, ওই পাহাড়ের সিন্ডি-পথ ধরে উঠে চলেছে। আমরা কেন পারবো না।

ওঠার পথে আমি যদিও এক আধবার থমকে দাঁড়িয়েছি, কিন্তু স্থানীরা একবারের জনোও দাঁড়ায় নি। ভান্, মাঁরা—ওরাও কতো স্বচ্ছদে উঠে চলেছে।

দেড় ঘণ্টা লাগলো পাহাড়ের ওপরে উঠতে। উঠেই এক নজরে দেখলাম, দেবীর মন্দির।

মণিদরের চমরের কাছেই একটি কুন্ড।
জালের রঙ গাঢ় সব্জা। শ্নলাম এই পবিচ
কুন্ডে সনান করে মণিদরে বাওয়া বিধি।
কিন্তু আমরা সনান করলাম না। কুন্ডের
জল মাথায় দিয়ে মণিদরে এলাম।

ওপরের মণিদরে কাজাখ্যা দেবীর স্বর্ণম্তি। নীচে গর্ভামান্দরে বোনী-পীঠ। বাহাল পীঠের অন্যতম। এখনে কোন ম্তি নেই। ফ্রাচন্দনেসাজানো একটি পাথর খন্ড। এখানেই পড়েছিল বিষয়ে চক্রে থন্ডিত স্তীর দেহাংখ।

প্জা দিলাম। প্রণাম জানালাম দেবীর উদ্দেশ্যে।

প্জান্তে বাইরে এলাম। পান্ডা
নিরে গেলেন তাঁর বাড়িতে। এখানেই
পান্ডার বাড়িতে দেবীর প্রসাদ গ্রহণ
করলাম। একে অনেক বেলা হরেছে
ভারপর শরীরের ওপর দিয়ে কম ধকল
বার নি ৷ পরিভূন্তির সভ্গে গ্রহণ করলাম,
ভোগপ্রসাদ। পান্ডাঠাকুর বললেন, এবারে
আমাদের বারীনিবাসে বিশ্রাম কর্ন।

মন্দিরের কাছেই বারী নিবাস। সংকর পরিক্ষা। বারী নিবাসে এলাম বিপ্রামের উদ্দেশ্য।

কিন্তু বিদ্রাম নিতে মন চাইলো না। পাহাড়ের শিখরে উঠবার আগ্রহ।

বেমন ইচ্ছে, ডেমন কাজ। স্বাই মি'জ পাহাডের দিখরদেশে উঠতে আরম্ভ করলাম।



কি পড়াগুলায়, কি খেলাপ্রুলায় !



কিছুদিন আগেও ওর কিছুই ্যন ভাল লাগত না। সব সময় কেমন মনমরা, আর থিটথিটে। ইস্কুলের পডাপ্রনো বা ধেলাগুলো কিছুতেই গা নেই। অগতাঃ বাড়ীর ডাক্ডারকে দেখালাম।

ভাক্তারবাবু বললেন, "ভাববেন না, আপনার মেয়ের কোন অসপ হয় নি। তথু এই বাড়ন্ত বয়সে ওর কিছুটা বাড়তি পুষ্টি চাই। ওকে রোজ হবলিক্স থেতে দিন।"

ছরলিক্স থেয়ে মেয়ের আশ্চর্য উন্নতি হ'ল। ওর ফুতি আর উৎসাচ আবার ফিরে এসেছে। ইন্ফুলের রিপোটও এখন পুব ভালো।





হরলিক্স বাড়াই শক্তি যোগায়।

শাহাড়ের ওপরে দেবী ভূবনেশ্বরীর मन्मित्र। न्ना मन्मित्र। এখানেও কোন মৃতি

পাহাড়ের শিখরদেশ থেকে চারদিকের দশ্যোবলী অভ্যনত স্থার। বিশেষ করে উচ্ছল বলাপত্রেকে দেখবার মতো। চেরে চেরে দেখি। দেখতে পাই, রহ্মপত্রের ছোট শ্বীপটি বেথানে উমানন্দ ভৈরবের **মান্দর।**

িদেবী কামাখ্যা এখানে ভৈয়বী, ভৈরব উমানন্দ।

পটিকরে রইলাম পাহাডের শিশর-দেশে। অবাক বিসময়ে চেয়ে চেয়ে দেখি 🤟 চার্রাদকের অন্যথম প্রশাবলী।

কিন্তু দৃশু দন্ড দাড়িয়ে দেখার অবসর কই। আমাকে যে আজই ফিরতে হযে।

🕬 নীচে মন্দিরের কাছে নেমে এসেছি। এবারে আমার চলার পালা।

আৰু আমি একাই বাবো, নরতো আর সবাই এখানে গ্লাকবে। ् मृथीबादक ্বললাম, প্রণ্যের অংশটা ভোষাদের বেদি পড়বে—তীর্থ স্থা:ন ভাগ্যেই এ-তো ভাগ্যের কথা। ঠিক রাতিবাস, া আছে—তোমরা থাকো।

म्थीद्वा की यन वलरा याष्ट्रिल।

বললাম. কোন চিন্তা নেই—এথানে নিভ'রে থাকতে পারো। তাছাড়া গাাঁড় তো আছে, কাল বাবার পথে গৌহাটি শহরটা ভালো করে দেখে যেও।

ওরা সবাই রইলো। আমি একা ফিরে চললাম।

পাশ্চুতে পেণছে ড্রাইন্ডারকে বললাম, ভূমি ওদের ঠিকমতো পেণছে দিও। দেখো কোন অ**স্থবিধা যে**ন না হয়।

ড্রাইভার বললে, কোন চিন্তা নেই, আপনি মনের মধ্যে কোন চিন্তা রাথবেন मा।

পাস্তু থেকে আমিনগাঁও।

ফর্ণির স্টীমারে উঠেছি আরো **বারীর** अट्टा ।

পথপ্রমে ক্লান্ড আমি। তারপর এক-নাগাড়ে চলাফেরার দর্ন ক্ষিধেও পেরেডিল থ্ব। স্টীমারের দোতলার ক্যাণ্টিনে থেতে বসেছি।

আমার কাছ থেকে একট্ট তফাতে, আর একটি টেবিলে দেখলাম, একজন শ্বেতাংগ পার্যকে। দেখেই মনে হলো মিলিটারীর কোন জাদরেল ব্যান্ত। তিনি একা নন, তার আশপাশে আরো ক্রেকজন সৈনিক-श्रुद्ध ।

মিলিটারী অফিসারটি শ্বেতাপা টেকিলের পালে দাঁড়িরে মদাপান করছেন। টেবিলের ওপর বেশ করেকটি বোডল সাজানো। মদাপানে ইয়তো কিছ্টা

উন্মাদনাও এসেছে। সপালৈর সপো ভারি-পলায় কি যেন বলছেন। আর কথার মারে মাঝে থানিকটা করে তরল পদার্থ গলার मया एएन मिल्हन।

षम्माना रिर्मानकश्रद्भवता, ভালের অফিসারটির অবস্থা ব্রুতে পেরেছে। काता मुद्रत विमा, कांच देगातात फारमत क्षाकरक। रेनाबास यमाक हारेरक, करत महारा भार क्यात चारह-यरहा थूमि भान क्रा।

স্ত্রাং আর কি!

পানের আসর আরো জমে উঠলো।

এরপর ওরা নিজেদের মধ্যে আলোচনা व्यातम्क क्तरमा। कथा गर्त धवर व्यक्तंकिश प्रतथ मत्न रहला, कान निमीयमान भरवत প্রমিকদের নিয়ে ওরা কথা বলছে। খেসব কথা কানে এলো, তাতে ব্ৰুক্তাম, ওরা द्यामकरणत काळ रनटच वित्रष्ठ श्राहरू ध्वर धामकता रा कृप्, ठिक मरा कानान-বেলচা চালাতে চার না, এইটাই ওদের কথার বিষয়।

পান্দু থেকে আমিনগাঁও।

न्गेरीमात्र चाउँ एथरक रन्गेनारन अर्जाहः।

গাড়ির মিদিন্ট কামরায় উঠতে বাবার সময় একজন অপরিচিত বাঙালী ভদুলোক আমাকে বললেন, আপনাদের টেনে একজন क्रिनारत्न वारक्त।

বললাম, জানি--কিন্তু আমি তাঁদের চিনি না। বলে নিদিশ্ট কামরার উঠেছি।

ছাটেল্ড ট্রেনের শব্দের মধ্যে একটা ছল্দ **व्यारहः। मृत्र व्यारहः। स्मर्टे हन्म व्या**त मृत्त्रत ভাষা শ্ৰেতে শ্ৰেতে এক সময় আমি গভীর ব্যমে আচ্চার হয়ে পড়ি।

এসে পেণছলাম দেড়টার भिज्ञानमा ल्पेनता ल्पेनम थरक गाक्ति নিয়ে সরাসরি বাড়ি।

বাড়িতে পেণছে জানাহার সেরে একটা বিশ্রাম। তারপর আবার সেই পরেরানা প্রতিবা-রপামণ্ডের পাদপ্রদীপের সামনে গিয়ে দীষ্টানো।

এলাম নাট্য**ভার**তীতে। লেদিন ^{পি} ডবল, ডি-র ১১২তম রজনী।

অভিনয়-শেষে দুর্গাদাস বললে, রঙ-মহলের ষণ্ঠীবাব, আমাকে তাদের ওথানে **फाकरहन। की कांत्र वर्ष्ट्या एडा? अ**थानकात তো এই হাল। "রিহাসাল" নাটক কি হবে ব্ৰুতে পারছি না।

বললাম, আমি কি বলতে পারি বলো। তুমি যা **ভালো ব্**ৰুবে করবে।

সময় শনি-রবি চলছে পি **ख्वन**ुष्डि। ज्रन्ताना **पिन जना गाउँक।** ुःथीराम् मर्युरमात्र सत्तरकी नापेक धेनिन উল্বেখন হলো মিনাভার। তারিশটা হলো उनीवटन विका।

व्योक्टनके स्थानमद्त नाग्रेनिक्करन গিরেছি 'রিজিরা' বিহার'লি দিতে। গিরে দেখলাম, মঞ্জের ওপর প্রবোধ গহেকে যিরে करतकान वरमा की खन रएए।

ইভ্রুততঃ করছি, ভিতরে যাবো ক্রিনা, এমন সময় প্রবোধবাব, ভাকলেন, এসো-सक्न मार्धक शक्त रहत्त्व।

मञ्जून नार्रेटकद्व साथ कालिक्ती। नाठी-कारतत माम, छात्राभक्त वरम्माभागाः। স্বর্যচত উপন্যাসের দাটারূপ ভিনিই मिरहरक्न ।

প্রবোধবাবরে কাছে শ্নলাম, তারা-শংকর সিউড়ীর নিম্লশিব বন্দ্যোপাধ্যারের व्याचीय এवः ভारमा स्मर्थन।

সেইদিনই প্রথম দেখলাম, তারাশংকর বল্দ্যোপাধ্যায়কে। যে তারাশংকর পরবর্তী কালে কথা-সাহিত্যের ক্ষেত্রে একটা যুগ मृष्टि करत्रस्म।

ষাই হোক, ও'দের নাটক শোনা চলতে থাকলো।

আমি এলাম ভিতরে, যেখানে 'রিজিয়া' রিহা**সালের আসর বসেছে**। রিজিয়ার উদেবাধন **ৰজনী আসন্ত** । আস**তে** পয়লা

পরলা মে সকালেই ফট্রভিও যাবার তাগিদ ছিল। স্ট্রডিও পেশছলাম সাড়ে দশ্টায়। মেক-আপ নিয়ে তৈরি হয়ে নসে আছি। অন্যান্য শিল্পীরাও তৈরি। কিন্তু ক্লোরে যাবার ডাক আসছে না।

শ্বনলাম, ছবির ক্যামেরাম্যান কাঞে ইস্তফা দিয়ে চলে গেছে, তাই এ বিদ্রটে। তক্ষ্মির অন্য ক্যামেরাম্যানকে নিয়ে আসা হ**লো। কাজও শরে, হ**েল প্রটো পণ্ডার মিদিটে। কিন্তু আবার 🗁 বিদ্রাট। একটা সট নিতেই দেখা গেল, পিকচার নেগেটিভ নেই। আবার গাড়ি ছুটলো ফিল্ম আনতে। নতুন করে শার্নিটং আরম্ভ হলো ৪টা ৫০ মিনিটে। ৫টা ৫৫-তে কাজ শেষ করলাম। থিয়েটারে থাবার তাড়া রয়েছে। আজই নাট্যনিকেতনে 'রিজিয়া' আরম্ভ হবে।

সাডে সাতটার 'রিজিয়া'র উদেবাধন হলো **দাট্যনিকেতনে। সেদিনে বভি**য়ারের ভূমিকার ছিলাম আমি, লৈলেন চৌধুনী নেমেছিলেন বীরেন্দ্রসিংছের পালালাল আর ঘটকের ভূমিকার ছিলেন নরেশ মিল্ল এবং ভূমেন রায়। সমরেন্দ্রের ভূমিকা ছিল উৎপল সেনের। নাম-ভূমিকার ছि*লেন* প্রভা, আর **रहणात থেকে বে-মে**রেটি নতুন এলেছে, চলচ্চিত্রে এবং মণ্ডে অভিনয় করে ইতিমধ্যে কিছুটা পরিচিতিও পেরেছে, সে ছিল ইন্দিরার চরিতে। মেরেটির নাম

অভিনয় সেদিন আরো ভালো হতো, বদি সবাই 'পার্ট' মুখন্ধ করতো। কিন্তু কেউ-ই তেমন পার্ট মুখন্থ করেনি। স্বাইকে নিভার করতে *হরেছে প্রশানীরের ও*পর। আমি ভিক্মতো তৈরি হরে নেমেছিলাম।
ওটা আমার চিরদিনের অভ্যাস। মঞ্চে নৈমে
প্রশালাকের ওপর কান রাখবো, এটা আমি
ভাবতেই পারি নাং। তবে কখনো কখনো
এমনধারা ঘটোন এমন নর। যাই হোক,
রিজিয়া অভিনয় দশকরা মোটাম্টি নিরেভিল। বভিয়ার বারকয়েক হাততালিও
পেরেছিল সেদিন।

জোড়াসাঁকো রাজবাড়িতে বিবাহের উৎসব উপলক্ষে নাটকাভিনরের আয়োজন করা হরেছিল। অভিনয় হরেছিল কণাজনে। রাত এগারেট্টার অভিনয় শরুর হয়ে শেষ হয় রাত তিনটেয়। সেদিন তারিখ ছিল ২ মে।

প্রদিন ৩ মে, ছনুটির দিন। নাটা-ভারতীতে পি ডালেন্ডি-র দুটি প্রদর্শনী ছিলা।

এরই মধ্যে নাট্যভারতীতে 'সরলা'র নতুন করে অভিনরের ভোড়জোড় চলছিল। ৭ মে 'সরলা' নতুন করে উদ্বোধন হলে:। সরলা সে-ব্লে যথেষ্ট আলোড়ন স্মিট করেছিল।

সেদিন ভূমিকালিপি ছিল আক্ষণীয়। গদাধর-আমি, বিধ্যুভূষণ-দুগ্রাদাস, শান-ভূষণ-সংক্তাষ দাস, নীলকমল-কুমার মিত্র, সরলা—সাবিত্রী, প্রমদা—স**ুহাসিনী।** সে-রাতে অভিনয় শ্রু হয়েছিল ৭-৩০টায়। এই প্রসংশ্যে বন্ধা দরকার, সে-রাতে গদা-ধরের চরিতে আমার আভনয় দশকি-মনকে খ্লি করেছিল। কিন্তু এই হাল্কা রসের চরিত্রটি সম্পর্কে আমার অভিজ্ঞত। অন্য কথা বলে। এই চরিতে বানীবাব্র অভিনয় আমি দেখেছি--সে-অভিনয়ের তুলনা হয় না। এছাড়া আমি শ্রুনেছি, এই গদাবর চরিত টিতে বেলবাব্র (অম্ভলাল মুখো-পাধ্যায়) অভিনয় ছিল নাকি আরো স্কলর এবং প্রাণবন্ত। উনিশ শতকের শেষে সভবত ১৮৮৮ খৃঃ সরলা প্রথম অভিনীত হয়েছিল, আর সে-রাতে বেলবাব; নেমে-ছিলেন গদাধরের ভূমিকায়।

মে মাসের দিনগুলো এইরকমভাবে চলছিল। এর মধ্যে ২৫ মে তারিধটি কিছ্টো দ্বতদা। ঐদিন ছিল পি ভবলা ডি-র ১২৫তম রজনী। কিন্তু ঐদিন মঞে গিরে শ্নেলাম, দুংগাদাস আসেনি, তার জারগায় অভিনয় করবে 'হট্'।

দুর্গাদাসের জারগার হট্।

भूरत खराक हजाय। हुए, अक्जन क्षम्भुणात्र।

দুর্গাদাসের জারগায় সে অভিনয় করবে কেমন করে। শ্নলাম এর আগেও নাকি হট্ দুর্গাদাসের বদলি হিসাবে অভিনর করেছে।

ৰাইছোৰ অভিনয় হলো। বলা বাহুলা, দুৰ্বাদাস আদেনি বলে, কিছু টিকিটের মুলা কেরত দিতে হরেছিল। , বলতে শ্বিধা সেই, ঐ দিনেই মনে হর্মোছল, পি ভবলা, ভির আর, আর বেশি-দিন নর।

ছাব্বিশে-সাতালে মে, দ্বিদনই সারা রাড ধরে রিহাসাল চলেছিল নতুন নাটকের। নাটকের নামও রিহাসালা। নাট্যকার অরুক্লান্ত বকসী। তবে এটা মোলিক নাটক নয়, বিদেশী নাটক, He who gates slaped এর ছায়া নিয়ে লেখা।

২৬ রিহাসালের উল্বোধন রজনী। উৎসাহী আটারসিকদের ভিড়ও হর্মেছস সোদন। নাটকের প্রথম দিকটা ভালেই জমেছিল, কিম্চু শেষটা তেমন হরে ওঠেনি।

মে ক্লাসটা ফ্রিয়ে গেল। দিনগ্লো কতো তাড়াতাড়ি হারিয়ে যায়।

২ জন শিলং থেকে আমার পরিবার-বর্গ ফিরে এলো। কথা ছিল, আমি ওদের আনতে বাবো। কিন্তু কাঞ্জের চাপে আমি বেতে পারবো না—কথাটা ওদের আগেই জানিয়ে দিয়েছিলাম। তাই আমার অপেক্ষায় না থেকে নিজেরাই চলে এসেছে।

৪ জন ছিল বিহাসালের তৃতীয় অভিনয় রজনী। ঐদিন দ্রগাদাস অন্পশ্বিত। শ্নেলায়, দ্রগাদাস নত্ন কথাটের কথা তৃলেছে। নতুন কন্মান্ত না হলে সে আভনয় করবে না। রাধানাথবাব্ তাকে বলেছেন, এ সম্পর্কে তিনি ভাবছেন, কিন্তু দ্রগা যেন অভিনয় কথা কানে নেয়নি।

পি ভবল, ডিভে দুগা অভিনয় করতো মিঃ সেন চরিতে। ঐদিন অন্রোধ এলো, আমি যেন ঐ ভূমিকাটি অভিনয় করি।

আপত্তি জানালাম। দুর্গাদাসের জন্যে ওই চরিত্র--ওটা আমার পক্ষে অভিনয় করা সভব নয়।

শেষটা অনুরোধ এলো নানাদিক থেকে। মন্তের সাধারণ কমী থেকে আরু-৩ করে স্বাই অনুরোধ করলো। শেষটা দা করতে পারলাম না।

শচীন সেনগ্ৰুতর ভারতবর্ষ নাটকটি বেতারে অভিনয় হলো ৬ জুন। নাটকে আমি ছাড়া দ্বাদাস, স্নীল, সর্ব, উষা—এরাও ছিল।

৬ জনুন তারিখের আরো একটি সংবাদ যে সংবাদটি নাটক বা চলচ্চিত্রের নয়। সংবাদটি নিতাকত ঘরোরা—এ তারিথেই ভানরে ম্যাট্রিক প্রীক্ষার খবর বেরোলো। চারটি সাবজেকটে লোটার পেরে ভানর ফাস্ট ভিভিশনে পাশ করেছে। ভানরে থবর পেরেই যারপরনাই আনন্দ পেরেছিলাম। দের্গিনে বাড়িতে ভো রীভিমতো উৎসবের সমারোহ। এই প্রস্লো একটা মন্ডার ঘটনার কথা মনে পড়ছে। আমার এক উকিল বংশ্ব, যে দাকি আগে-ভাগে পরীক্ষার ফল জানতে পারতো, তাকে ভান্রে রোল মন্বর দিয়ে-ছিলাম। প্রথমটা আজ না কাল করে দেখটা থবর জানিরেছিল। বলেছিল, ভান্ন সেকেও ডিভিশনে পাশ করেছে। এই থবরটা আম শিলং পাঠিরেছিলাম। ফল হয়েছিল, ভান্ন থবর পেরে মন মরা হয়ে গিরেছিল। থবর পেরে সে নাকি ভালো বতে কথা বলতো না, বেড়াতো না—দিনরাত বসে থাকতো।

ফল প্রকাশিত হতে ব্রুপ্সাম, কেন সে মনমরা হয়ে থাকতো।

যাইহোক, খবরটা কর্তব্য ছিসাবে উকিলবাব্টিকেও জানিরে দিরেছিলাম। মন্তব্য নিম্প্রয়োজন।

এরপর আবার সেই একই দিনের প্নরাব্তি। কখনো, পি ডবল, ডি, কখনো রিহাস'লের অভিনয়। নতুন কিছু নেই

১৯ জন তারিখে একটা চাপালাকর
থবর প্রকাশিত হলো, অভিনেতা জ্যোতিপ্রকাশ বিয়ে করেছে শীলা হালদারকে।
জ্যোতিপ্রকাশ অন্পদিনেই ব্যেক্ট নাম
করেছিল। নিউ থিয়েটাসের ভাজার ছবিতে
তার অভিনর সমরণীয় হয়ে থাকার মতো।
ঐ হবিতে আমি তার দাদ্র ভূমিকর
ছিলাম। এ ছাড়া রাজনতকীতেও জ্যোতিপ্রকাশ স্কার অভিনর করেছিল। তার
মতো অভিনেতা যে শীলা ছালদারকে বিয়ে
করেবে, এটা ধারণার বাইরে। শীলা ছিল
নত্কী। কথনো কথনো অভিনয় যে করতো
না তা নয়।

সপ্রতাশিত হলেও সেদিনের থকা ছিল তাই।

কলকাতা শহরে তথনো ব্লাক আউট
চলছে। সম্পার পর থেকে মহানগরী একরক্ষ অধ্যকারে ঢাকা থাকে। আ নকদিন
থেকে এই অবস্থা চলছিল, কিন্তু এবারে
কলকাতার থিয়েটারগালোর প্রদর্শনীর সময়
পরিবর্তন করা হলো। বেলা একটার
ম্যাটিনী শো, আর শেষ প্রদর্শনীর শ্রে;
হবে বেলা পাঁচটার।

এতো যে নাটক অভিনর হচ্ছে, তার মধো শাজাহান কিব্তু উল্লেখযোগ্য ব্যক্তির । যথন শাজাহান অভিনীত হচ্ছে, তথনই দর্শকরা সেই আগের মতো আকর্ষণেই ভুটে আসছে।

এরই মধ্যে দুটি বাংলা ছবি মুছিলাভ করলো। বড়ুরা-সরব্ অভিনীত আরের প্রাণ মুরিলাভ করলো উত্তরায়। ছবির পরিচালক ছিলেন বড়ুয়া সাহেব। আর সুশীল মজ্মদার পরিচালিত 'প্রতিশোধ' মুদ্বি পেল রুপ্রাণী চিত্রগ্রে।

(Party



শ্বাকন বন-পাররারা হাতের তালির
শব্দক ভর করে নাং মুখে হা-হা রে-রে
শব্দক প্রতিষ্ঠ নাঃ মাটির বিছানার দেহ
লুটিয়ে দেওরা ধানের অটির উপর বনে
শ্বার ভানা গুটিয়ে অবিরত ঠেটি ঠুকে
চলে শ্বাকীশানভে । মুখে কোন শব্দ না।
লালিকাতিকার চড়েই দোরেলা কিঙে টুন-

ট্নি কিংবা হল্দ, সব্দ্ধ নীল, লাল ক্র্নে পাথির পাল কিন্তু শব্দ করে। ফ্রড্রে ফ্রড্রে ওড়ে, একবার এখানে একবার সেখানে। যেন হেমন্তের এই অবাধ প্রসাভাগ্ডারের মালিকানা নিরে ভারা বড় বেশ্রী বাসত, উদ্ধল। আপেপাপের মহুরার ভাবে টিয়া চান্ট্রী করে এবং ব্লাল্ড্রিমর উদ্দেশে

কাংশতখালা পাশে রেখে আলের উপর বসে হ'কো টানতে টানতে বুড়ো প্রাক্তীন দেহখানা নাড়িয়ে বলে, থাক থাক কেনে গো। ই বাবা পাখে আর কত খাবেক। আঁ বতুই খাক্ না কেনে আউর ঠিকি হবেক।

Mark Contract

আহা চৰি তো ইমার লেগে লয়গো। উ স্ব অবলা জীবেরও যে বটেক।

সোনা হেণ্ট হরে খান কাটতে কাটতে
থক্ষকার। সোনা হর। কোমরটা সোজা করার
কেমন বেন ন্যান্টা। হাতটাও প্রাহাই পার।
দেহখানা টাম-টান করে আছুমোড়া ভাগ্যার
মত ত্শিত। গারে অটিসাট করে বাখা নীল
গাড় কাপড়খানা। নতুন। বছু এবনও
টকটকে। খলে, বালি অ ভালমান্য, বলো
ত দিলে কখাট বিস্তুক একট্সা ভেবেছ
মাখ-বাদলার কথা। ছপ-ছপ জল, দড়ে
সাপ-খ্প, কাদা পামে হাতে, খানিকটা
ম্থে ঢোকে। তখন—তখন কুথা থাকে গো
তুমার উরা?

ভূড়াক-ভূড়াক इ, का ব্ডো কাঁচাপাকা টানে। চোপসান कारना খোঁচা-খোঁচা দাড়িভার্ত म,थथानार ফিকে হাসি ঠোকরায়। অক্সক্ষণ रूপ करत थारक। मृथ (थरक **र**्रका अतास। হাসিখানা তখন গাল থেকে কালো ঠেটে, ছোপপড়া দাঁত মোটাজিভ বেরে গড়ার। বলে, লা, সিউড়ীতে থেকে তুর জ্ঞানগমিয় টেক টেক হ্ন-ছেক খ্না। কথাটতু মিছে र्वानम नारे। किन्छूक र्रेगिरे एवा नितमरत। রাজ্যির ই লিয়ম চলছেক।

সোন। ততক্ষণে হে'ট হয়ে আবার ধান কাটায় মন দিয়েছে। বুড়োর কথা পর্যত কান বরাবর তার পে'ছিয় না যেন। অথবা সোনা স্পত্তিঃই বোঝে রাজাময় ওই নিয়মের কথা। হেমশ্তের শসাভূমি উজাড় **করে** নেবার মত অগণন প্রাণী আছে, কিল্ডু অসমধ্য ঘোর বর্ষায়, কাদা ছপছপ, সাপখোপ, রোদ, ঝড়ে পাশে কেউ নেই. কেউ থাকে না। কিংবা কে জানে সোনা বোধকরি ওসব ভাবে না। কথার পিঠে কথা বলাতেই তার স্বস্তি। তাসলে সোনার সহ্যের সীমাটা যেন বড় ছোট হয়ে গিয়েছ। হাত বাড়ান ধায়না,পা বাড়ান যায় না, সেই সীমায় শ্রীরটার আড়মোডা ভाष्ट्रा भर्यक्ठ ना। ठिक प्रवहात्म थाका मार्ग। जात शक्ता नागलहे जनमा। এकरे. থষা খেলেই তির্নাতিরিরে মহিতকের কোষে কোষে বাসা বাঁধে। তথন মূখ ফসফস। কথার যোগ্য উত্তর ঠোঁটের ডগায়। সন্দেহ নেই হয়েছে সিউড়ী থেকে ফেরার পরই এমন তার। যেন দুটি বছর সিউড়ী নামের মফল্বল শহরটা, যেখানে গোনাগ্নতি বাস, টাাক্সি একটা সিনেমা হল এবং দালান-কোটা, ছোটবাঞ্চার নিয়ে এ অঞ্চলটাকে নিয়ন্ত্রণ করছে, সে যেন সোনার মনের ভেতর একরাশ বিদ্যেব, শিবর থড়খড়ে কথাকে উজাড় করে দিয়েছে। বোকা ভার, মেয়েটার থোলস ছাড়িয়ে আলাদা একটা খোলস প্রিয়ে বলেছে, সোনা, বা এবার ভোর গাঁরে

যা। হেমিপিসী পনিখাওয়া লাল মুখের টেটিখানা বে°কিয়ে বলেছে, বলি মরণ আমার, তা এলি কেনে লো ইখানে আবার। আ न,त्थन ब्लाटन होहे। हाहे। कृद्धः भावि ना ্হট। তু সিউড়ীতে ৰাক গা যা। তা হাালো টকিছিনেমা লো,ছিনেমাকবিন গেইছিলি? বাজা সোপর বটেক কিম্তুক। মানিকমেসো বলেছে, বলি আসাট হল কথ্ন? আমরা ভাবলম ভূ সুখ ছেড়ে আর আসবি নাই। কানের কাছে ফিসফিসিরে এককালের প্রাণের বন্ধ্য মেনী বলেছে, বলি হাটি এলি কেনে আবার গাঁয়ে। আমি কিম্তুক একবার গেলে আর আসব নাই ইখানে। সোনা ম্পণ্টতঃই টের পেয়েছে শহর ছেড়ে আবার গানে ফিনে আসায় সকলেই বিস্মিত। ফেন এক ঐশ্বর্যময় সুখশাদিতর জগতকে ছেলার হারিয়ে সে এখানে এসেছে। কিন্তু সোনা তো জানে—সোনা তো পাক্কা দুটো বছৰ সিউড়ী বায়বাবাদের ঘরে থেকে পেরেছে লাসলে সবই সমান। প্রথমে রায়-বাব্দের ডাক তার কাছেও স্বথের শিহরণ এনে দিয়েছিল সাত্য কথা। স্বামী হারিয়ে বাপ-মা হারিয়ে নিঃস্থ্য একক কাকার ঘরে বসবাসের সেই সময়টা তো তার কাছে আদপেই সুখের ছিল না। স্তরাং বাইরের একবার হাতছানিতেই সে পা বাড়ি য়েছিল। আসলে চেনাজানা জায়গা থেকে সোনা এক অপরিচিত জগতে যেতে চেরে-ছিল। হ্যা, নিজেকে বাঁচাতেই। অস্ততঃ সোনার তখন নিজেকে বাঁচানই বড় इ स দীড়িয়েছিল। গাওঁয়াপরার অভাব ছিল না। গায়ে শক্তিসামর্থা থাকতে খাওয়াপরার অভাব কি! গতর খাটালেই ভাত। কাকার মুখের দিকে চেয়ে থাকতে হত না। কিস্তু শ্ব্ব তো খাওঁয়াপরা নফ, সোনার ভাবনা ছিল অনাদিকে। তার নিজেকে নিয়ে। নিজের যৌবন শরীর নিয়ে। যে শরীরে বয়ার ক্লউপচান নদীর জলের মত অথৈ যৌবন। কালো দীঘল দেহের রশ্বে বুণ্টে প্রুষহরিণ আক্ষণের দ্বিণবার অস্ত্র। কমনীয় মুখে, ঠোঁটে, চিবুকে, বাছুতে আশ্চর্য মাদকতা। যাকে ঘিরে তখন অসংখ্য পত•গ। তখনও ব্কের ভিতর সোহাগোর চিহ্ন আঁক, রাতে বিছানায় সেই প**ृর**ুষের কণ্ঠদ্বর। মাত্র একটা বছর, একটা বছর বিমে, দুরুত সেই পুরুষের স্ভগ ঘর। তারপর ভয়ংকর অসুখ মানুষটাকে ছিনিয়ে নিল তার কাছ থেকে। চতুদিকি শ্না করে অধ্কার আর হাহাকারে ভরিয়ে ভুলল। মাস ছয়েকের ভিতর একসপো ৰাবা আর মা। সোনাকে এই ভ্যুম্কর পৃথিবীতে একলারেখে যেন ×বামী পিতামাতা সরে গেল, শাস্তি দিতে। হাাঁ, সোনা তখন জানত শাস্তি। শাস্তি। জানত এ তারই পাপ। কিন্তু কেমন পাপ?

কি পাপ? হাাঁ, সোনা ভাও জনত। জনত অদৃশ্য বিধাতাপুরুষ ভার শাভার দোলা नात्मव नात्न जिंक नित्य स्त्रत्य मिसिक्न সোলা ভার গাঁরের প্রুৰ রামা বান্দরি পিরিতে মলেছে। বিরের পরও রীশবাদানের ধারে এক অন্ধকার সন্ধ্যার সে রাম বান্দীর द्रक्त छेभत्र.....। এवर कान्छ वर्षारे स्त्राना ভয়ে হিম হয়ে গিমেছিল। বিধান্তার আর কোন শাস্তি ভার মাধার উপর নামবে? কোন শাস্তি? সোনা কি সহ্য কর্মজ্ भारत ? ना, ना, ताएक काकात बरत विकासके তার ঘুম আস্ত না। ছোটু জানালার সামনে সে দাঁড়াত। শেয়া**লের হাঁক লো**না **বেছ** তখন। আকাশে নক্ষ্য ফুট্ড। কথনএ সাত-চোরা পাখির ভাক। গাঁমের পথের বুজুরও সাড়া দিত। চারিদিক গভীর বুমে ভূবে। সোনা তখন কদিত। দ্'হাতে মুখ ভেল্লৈ নিজেকে বাঁচানর চেণ্টা করতে করতে সে থরথর করে কশিত, হেই ঠাকুর, হেই ভগমান, যথ্ন আমার পাপ বটেক 🖰 ভখ্ন আমাৰে কেনে লিলে না ঠাকুর? কেনে লিলে না? অধ্যকার তারাজনলা রাত সাড়া

ঈশ্বর কিংবা অন্ধকার তারাজ্বলা রাজ সাড়া না দিলেও সাড়া দিয়েছিল রাম। রাম বাংদী। পাটাল ব্ৰু। কালো লব্বাচওড়া চেহারা, ব্বে চুল লাপালের বেটা ধরে 🔆 সারাদিন চবে ক্লাম্ত হয় না শরীর। পনের বিঘে জমি চাৰ করে। বুক টানটান করে वार्लाइन, कुन, छत्र नाहे छूत्र जाना, जामि তুকে বিয়া করব। সাপ্যা হবেক আয়াদের। সোনা শোনেনি। দু'কানে আ**পালে : ১**চাপা দিয়েছিল। লোভ। যৌবনের **লোভ। ৰৌ**বন বড় ভয়ংকর। বড় তার জনালা। পাপ বড় ভর•কর। বড় কঠিন তার শাস্তি। **নইলে ছট-**ফট করে অমন জোয়ান মানুৰটা শেৰ ্ছয়ে হায়। যার হাতে ধরা পড়ে ক্ষ্*লে পা*নির মত অবস্থা হত তার শরীরের তার ৰৌবনের সেই মান্য অমন করে বিছানার স্থাকাশে শক্তিহীন অসহার হরে বার। এবং তখন সোনা প্পণ্টতঃই অনুভব করেছিল তার লোভ তার বৌবনের **লোভ। অনুভব** कर्त्ताष्ट्रम तारमर्त क्यु क्यु मृ 'हो। कारथन মধ্যেকার গোল তারার বে **উল্লাস ভটফট ব্রুছে** তা ভালবাসা নম তার **অসম্বে ডার** পালে দাড়িয়ে শাণিত নর সাক্ষনা নর, লোভ--তার যৌবনদেছের **উপর মান্দ্রটার নিদার**্শ লোভ আঁকা হমে আছে। কেন্দ্ৰ ক্ৰেন্দ্ৰ গিয়েছিল ভার দেহ। নিজের ভেডর নিজেকে চেকে রাথার শাম**েকের মত আপ্রার্গ প্রস্তালে লে** ঘেমে উঠেছিল।

শ্ব্ রাম নম জারও **অনেকার্টনা** আগ্রহী হাত ভার দিকে এগিরে জালীরকাঃ এ গালের লর ভিন্সালৈর। হবেনু প্রভান

THE RESERVE THE RESERVE TO

বুলি কেওঁ জানত কে কে বেন। কালত ডাই
ক্রেন্তিন। নেলা কলিছিল, না কালা সালা।
ক্রান্তিন। নেলা কলিছিল, না কালা সালা।
ক্রান্তিন করব নাই। আমান লেগে ভাবতে
ইন্তেজ্ব নাই। কালা নর ভবন সকলোই বিশ্বিক
ইন্তেজ্ব নাই। কালা নর ভবন সকলোই বিশ্বিক
ইন্তেজ্ব নাই। কালা নর ভবন না। ভাল চোধে
ক্রান্তিন নাইনি আবার আগ্রান বার্থিক
ক্রান্তান ক্রান্তিন চালার আগ্রান বার্থিক
ক্রান্তান নিজেকে ফেলার আকুল বাসনা।
এবং ভবনই নায়বাব্দের ছোটাগানী
বলেছিল, ও সন্না চল বাব্ আমার সংলা
ক্রিক্তী, কল। কাসনকোলন থাবি, ফাইক্রমাল বাটবি।

ি যিউড়ী ছাকে সুখ না দিলেও ত্ৰসিড निरंक्षिण। शक्षा शक्ष्म चक्रना कारूगा चक्रना মানুৰ বীমান রাস্তা, ঘোষাঘোষি ভারবাড়ী, देखाः चिक चाला, पाकानभावे, माहेरकन রিক্সান ভোঁভোঁ, বাস মোটরগাড়ীর পদ একং মেলার মত মানুবের ভিড় তাকে শিলার খেলা পাওনার মত সব ভূলিরে রেখেছিল। ভাষণারও সেসব গাসওয়া হয়ে বেতেও १काम मृह्य स्वाधः मत्न चारमिन। এन वधन সে বি**ছানার পড়ল অস**ুস্থ হরে। গা পুড়ে থেতে থাকল। ভারারবাব্ এলেন। ওষ্ধের শিশি এল। এবং তখন তার চোখে প্রিকী আবাৰ এক মতুৰ বুলে ধরা দিল। চতুদিক কি **তীৰণ শ্ন**ন। একটা সাম্মনার হাত নেই। ক্ষপা**লের উপর কোন উন্দি**ন্দ দ্বাস পড়ে मा। जन्द्रभ बाक्कनः। किन्द्रु विभिन्नः। निरह গৈল ভার শরীর খেকে অনেক্ষিক্ত। বাকে নিমে ৰড় ভর ছিল ভার সেই ঐশ্বর্য। যেন অসুৰ এলে তাকে সবকিছা থেকে মাডি দিল। নিজের ভেডরে নিজেরই গড়া **যে ७३०कत कथन एन वन्धन खाल**ना करत निल। কিন্তু ভাতে কি পরিভৃশ্ভির শ্বাস পড়ল সোদান? ভাভে কি ব্ৰুকো ভিতর সুখের হিজ্ঞাল বইল? ভাতে কি ভরভাবনাহীন এক নতুন জীবনের স্থাদে মন তার ডরে উঠল? না, বরুক্ত ছল একেবারে বিপরীত। পাপ নর ভয় সর্বাস্তর চিস্তানর সোমা এক আল্ডৰ শ্নাজগতে সাঁডারজানা নেই এমন মানকের কলে পড়ার মত হাত ছ'ুড়ে পা ছ'্ডে কি বেন আঁকড়ে ধরতে চাইল। এক-पिम यनन, मा जामि जात देशारम शाक्य नाहे। गोरक बुद्ध वाव।

এখন মরা বিশ্বকার জরা হেয়তের শেষ বিজেল। দুশুর কথন বেন নিঃসাড়ে ভার আঁচল গাটিলে নিরেছে। ডিমের ফুসুনের রস্ত ইড়ান্ডভারিকাণ্ড রোদ। পশ্চিমের দিলান্ডরেখা বরাবর বিশাল লাল সূর্ব। রাখার উপরে ভার মেবে বিভিন্ন কর্পর ছড়াছড়ি। এসকা হালারো পাখির বাক প্রসাক্তর ক্লেড্রে নাড়ে ফেরার উল্যোপী। ভারের ভোলাইলে ভতুর্দিকে প্রেণ। দিনাকেড খালের জালে ঠেটি ছবিরে পালা পালা কাল। গর্র গাড়ীতে শসাকুনি কুন্য করে বরের
পথে মান্বেলনও। বাভাস শীকের বাঙা ফিসকিস করে শোলাতে বাকে ভাগি বাংলই।
এবং এ সভা লোনা ব্যুক্তন পাকের দালে
নানা ভিত্তা তৌধ্বীপ্রতানর পাকের দালে
শিবর হরে দাঁড়িয়ে বাকে। এ প্রেই লোনা
ভাবে রাম হনহন করে হটিতে হটিতে বাসের
দোকানের সিকে বাবে।

রামকে দেখে সোমার গলা দিরে কেনন
লাল বের হর: ইডিমধ্যে দিগান্তরেখার
একাকার বিশাল স্বে! পাখিলের ক্ষারবে
অবলাই চছুদিক আন্দাত। গাম গাইতে
গাইতে কার বেম পথ হটিয়ে শব্দ ও কাতান
শীতের সপ্রে মাধামাথি করে দ্বোকানে করে
দের:। আরু সোমা ক্লাক্ত মিক্টার। ছুপচাপ
দাড়িরে থাকার কলে পারের পালা
ভাবি। করি। একট্ উক্তান ব্যানের
করে টের পার ক্তেকটা ভার হিম হরে
যারমি। টের পার ক্তেকটা ভার হিম হরে
যারমি। টের পার ক্তিভাটা ভার হিম হরে
যারমি। টের পার কি বেম পাওরার বাসনা
মুঠো যার্টা আন্দান ভার চছুদিক্ত ভালেতে।
রক্তের মধ্যেও গালীর প্রত্যালার স্বের রিনারিন
করে বাজাতে থাকে।

— আর তুমি! রাম ধমকার। চোধ বড়বড় হয়। তারপর বলে, তা তুলি এলেছ সিটি মুউনছিলো আমি। তুলার ফাকি খুলি অসুখ হুন্ছিল!

ব্ৰুকের ভেডর একটা ব্যথান চেউ, হরত বা অভিযান ছলাং করে এঠে। লোনা বাড় নাড়ে খবে আন্তেচ। বলার সাথ হর ডিনদিন আসাহুদ পেল আমার, কিন্তুক ভূমার কি একট্স, সমর হল না আমার লেগে! কিন্তু বলল না সে কথা লোনা। দ্রোথ ভূলে ডাকাল না পর্যান্ড। কড কি বেন ভেরেছিল, কড কি বেন বলবে সে, কিন্তু কিছুই মুখ দিকে বের হয় মা। চারপাল নিজান। আখকার নামান্ত্র। বড প্রের আর অভাবার আভাবার বার্ত্তা শ্রে তার এক গভার প্রভ্যানার উন্তর্গ হয়ে থাকে।

— কুষা চললে ? মামকেটাকে চুপ করে। থাকতে দেখে সোনা ভিজ্ঞানা করে।

- अमम्कान।

—**可** i

সার কোন কথা নেই। দুজনেই চুপচাগ।
ইতিমধ্যে সংখ্যা তার অংথকার আঁচল বিছিয়ে
দিছে চতুদিক জন্তে। চৌধ্রীপ্রেরের
পাশে এ পাশটার অংগদন শলাক্তেড়। কিত্
এখন লব শ্যাে। খাল কেটে খালারে তুলেহে
মান্র। খাঁ থা করতে লক এই সংখ্যার। আর
শব্দও বেন ব্রিটে আসহে। সারাদিন কতাল
ম্পর করে থাকা অকর শব্দ এখন বেন
যুখের বাজাে চলে বেকে চার।

নেহের প্রতিটি রেখার সমপ্রকার ভণানার সোনা দায়িতে থাকে? বুলে কোন কথা জোগার না ভার। অথবা নে মুখে আর এখন কোন কথা আনতে চার লা। ক্ষানাট সক্ষার জিং বান্তভী ভার

Constitution of the consti रशीवश्वत निर्देश भारतीय वान्यकात बोह्मी, नीचा क्या, हा पाई लाहा एका निष्क करमुद्ध। जाद क्यन कान क्या नहा। लामा अभा जा**धक होता। अदे** लागेक बहरका मध्या और शहरूबनहीत्वत क्रीयनकम 'नावित बद्धा निकारक श्रीवंदव विष्ठ असूर्व रम्मिक रका कान्निस्त्र निस्त्रिका। स्काम क्या मह। मीनवादक जन्माव भाषिता कानाव भक्त कुलीब्स । अधेनहें- बतेनहें, ब्रिट्स विजित बहै रकारोब जाखबाक कार्त्वत । जाब क्रम मान्यकी चारक पर् शास्त्र ब्राह्म मेर्ट्स...। व्याः स्माना स्वेम पश्चितिक भारते मी अकीकार तक त्वम कर्मका उन्तम स्टब कर्छ। हिम সংখ্যার বাড়াস দেহের কোরে কোরে শীড় ঢালে, তব্বস্ত কি ভীষণ উষণা যেম ফ্র**টছে। শরীরের ভিতর প্রত্যাশার** কৈ निमाद्ग्य चारमाक्न।

রায় একবার কালে। তারপর বলে, তা দেহিট তুমার বাডা খারাপ হনে-চেইছে।

-- बर्द् । बद्ध भाष्य क्रांत स्माना ।

—তুমাকে পেথমে আমি চিনতে লেরেছি। লাকপুথোরের অটে সিদিন ছিলে, আমি তখন পেরিক্স মেছিলাক। বিশেবস হছিল না তুমি বট। দীর্ষাশ্বাস ফেলে রাম। ভারপর অন্ধকারের দিকে তাকিরে থাকে।

रमाना क्या रेटन भा।

একট্ চুপ করে থেকে রাম বলে, তা তুমি ভালই করেছ গো, গাঁরে এলেছ। উ সব সিউড়ী-মিউড়ী আমাদের প্রাবেক কেনে। আমরা গাঁরের মান্ব।

লোনা কি রামের কথার মধ্যে থেকে किन्द्र काम्युक्त कारक भारत ? रमन्द्र पिन रमन्द्रे রাম সেই সোনা স্ব কি এখনও অট্টে? ताम कि फथन **अहे शनात कथा यनफ**े ताम ফি ডখন গাঁরের আর পাঁচটা মান্বের মত ছিল? সোনা-সোনা ডো ওই কথার ভিড়ে वक्षेत्रकरता मन्त्रमञ् कृष्टित भाष्ट हा। যাকে নিয়ে লে আরও উক হয়। বাকে সে ফ্টেল্ড প্রত্যালার রয়ের ভিতর ফেলে দিতে পারে। বড় জনলা ভার। সাঁভার না-জানা মানুষের জলে পড়ার মন্ত এক ভর•ক্রতম রাজে: সে হাড ছ'্ডুছে পা ছ'্ডুছে। দেহখালাকে অভলে ভলিয়ে বেড়ে না দেওৱার আপ্লাপ চেপ্টাম অবিরত সংগ্রাম করে চলেছে। পাপ মর অতীতের চিন্টা নর আগামীকালের শানিতর জর নর, সে এখন বভিত্তে চার। সারা দেহ অন্তে তার সমপ্ৰের আকুল বিস্তি ব্যাস-বাৰ क्ष्यान दक्त मिन्द्र। क्ष्यान दक्त क्रीशरह व्याम्रद्रम् मा काव निरम् । कावश्व गरीरे बनिष्के वाह्य शकीत वन्यत्म द्वारम दक्कारक मा कारक। रमाता कारम कारक कार भ्याम नेत

. विश्व कालक क्याना कात स्वर All and an actual

ক্ষা ক্ষেত্ৰীৰ হয়ালাৰ দৰিবভাগ কি म अवि अपना कर्मा का नांचीयनार व

क्षा कार्य कार्य किर्माणन स्टा

- - - Think the state of the st क्रमात्रक गरेत स्मृति हैता। इस क्रमाना न्छना वित्र अपनित्र क्षित्रकार प्राचनात्व प्रवर्गी-स्त्रीक वित्रस्त क्षेत्री क्षत्र) सूत्र व्यथा मात्र म्, अल्पासकाना त्या, अन्ती पर्योजन काकान परंदा के अवस मानाम केना उनक विस्त कि क्रिके अरोपक कामात्र भाग देशाना बात्र।

्राह्मी क्यांचा अप-भा नामरन क्रीभारत -w/

नाम करणाव स्थापनीय महत्यामहीन क्यान के कार्या कार्यात कार्यात । कार्य क्रिज गाम् । अन्य बाच विद्या जानना-बारशीय रंग्य वसा वसा, स्वया ? स्वया ?

्राम् वनवृक्षा नाराम वरण, या।

कारिय कात्र भोत्रीय नाष्ट्रे एमा । महिरा করতে পার্রাছ নাই। তখন বাডা ভুল यहा हमझाविसाम। अन्त्य यहम्हरू भागीय का व। यूर्वि जाबारम रचना करा मातः। क्षांना बामा नावा निरूप बार्म।

क्षात करा राज्य नार्वाचा क्षात्र गाउ पान्यः प्रवासः यस्त्रः।

-411

—স্কা কথাট ব্ৰুতে লারছ। সোনা बारका किया हराव शकीता प्रशंकत केवजात नाजाएन मह, छोत्र शाह अक अनह हिश-श्चराह कुलकुल करत वहेरछ बहुद करहरह।

-नाः प्राथ कानाव गरम।

-- किन्कुक माजा क्याहे छ बणना गा। बलीर क नामात्र कुल रान गोरेक। जन्मन कुमात स्था ग्रीन नारे जामि। जामारत रक्षमा करत मा**ও ला। माना धत्रधत**् करत কাপে। বলে, আমি আর পারছি না। व्यक्ति है शील व्यक्ति नाहे त्या, कृषाय कारक अस्तिहाः

बाब कार्यकारत स्वानात रमश्रद साकी क्टब सम्गोन्त्रीय। अन्यकाता चक् अन्यको । क्षकी वाकान बात। बद्दब दकान क्या লোগার না ভার। ছুপ করে থাকে। চারি-निक्क कार्यकार कार्यक बल देश। मृत्य महान লোকানের চাতালে মাতালনের কলমব শোলা বার। অনুনে গাঁরের কুকুর ভাক शास्त्र । द्वाम काश्ताशमाध्य यदन, विश्वक লিটি আৰু হৰার লয় গো। এতেককাল জেবে-ছিলম—বিয়া করব মাই। এখন কিন্তুক म्बन रहक करिया शिक्तिक मालगा कर्वत व्यक्ति।

-- পিতি!

বকে ফেটে খেন সোনার শব্দ বের হয়। পিডি, বিধৰা পিডি ভার অচেনা নয়। मन्नीरत कार्ये से स्वीतम, भारतमां करण शास्त्रत तक, क्यांस क्यान मृत्य द्यांगद द्यांशाता वस, रनरकत बरम्भ तरा, भारत्व आकर्षाम रतथा-গ্ৰহেণা হাভহানি লেখ। পরাজিতা, সেথানে পরাজিতা লোনা। ভার পাশে দাঁড়িরে সে রামের চোধের ভারার জাকা লোভের দিকে একমুঠো ছাসি ছ'বড়ে বলতে পারে মা, দেখা দেশ গো, সামার পালে। অসংখ ভাজে

निश्रम्भ करत्र मिरावस्य। भटना करता मिरावंडा कारक। ब्यास एक्के मा, एकके ब्यान्ट्रम था। किन्द्र वर बाला विश्व ग्राम व्यवहार शहर। र्व बाम भागाण यूक ग्रेमकीन साहा कारन भारत करणात शरुका **कड अवस्ति,** गुरुवा कृष्ण निरंत यह वर्षिय जावि न्यूना, यद्भ छाएक कविरत कुमक। मा दर्ममा न्नकिकार छोत পার তার সম্পদ ভার ঐশ্বর্ণ কর MIS अथन मुना अ कृति।

সোলা বিভবিক করে, ভুমি শাও লোট भगन काम करन वाद।

রাম কব্ দক্তির।

-वाक त्या । त्यामा त्यम त्याका त्यालाहा बाम भारत भारत प्रतिष्ठे।

418 4545

प्रमाण्डव माना मनाएकक स्थाता जिल्ह इता मीक्ट्रा थाटक। माबाब क्रम्ब काल्ट्रावा। गीक सम्भगत। सम्भगतः व्यामानिक विका ष्ठाविनिटक कान्छव निकासका। अतिविन्दक कन्छरीम भामाखाः हार्रिकालः सर्वे सामान्त्र দীৰ্ঘণবাদ। কেমন কেন শীত নামে। হেমান্ড भारतामञ्ज समय वाकाटमस एउनेटसः एकटिस লেনার। ব্যুক্ত কলির। व्यवकारतक स्वयं स्वयं बाह्य व्यवस्थात शानीम्पा एटा जाकारमत रिस्क ही यूप করে আছে।

त्माना दिसक्तामात्र विद्यत्र महीस द्रवत হেমদেতর শ্রা শস্কেরে দক্ষির প্রাকে। বাসনার পাখি সসাকেরে সমাকণা আহরণের करना क्रीपे केरिकरक मापि भद्द माप्ति हमेन লেভে, এখন জন্মজারের ভিতম দিরে रकाशाह स्थ्य प्रमाद स्थात भाषा मा प्राप्त **ब्रेट्ड वाह्य :**



शियुक्त कवि प्राथा - क्षा प्राथिति

















Der to





কামিনের জীবন

করি সারি বাওড়া। টালি-বাওলা হোট এটা ব্যৱ: এদের বাকস্থান। স্বার্থ-প্ত এবং ভাকং সংকরে নিরে ওরা এবাসেই বাস করে। সোজা হরে পাঁডানো কঠিন। মাথা নাঁচু করে ড্কুডে হয়। বসা-শোলা চলে কিন্তু পাঁড়ানো অসম্ভব।

এটাই রেওরাজ। এভাবেই প্রেক্ত প্রশ্বরার ওরা কাল করছে। কেই এখান থেকে সরে যেতে পারছে না। সবাই থেকে যাছে। এমনি মোহ এই কালের। আলপারের চোথ যেমন মান,বকে সম্মোহিত করে, তেমনি এখানকার অফ্রুক্ত কালের আগ্রান। সহল জীকিকার এমন দ্রেক্ত হাতছানিকে উপেকা করা খ্রই অসহলঃ, ওরা ভূলে এসে কড়িয়ে পড়ে। আর হাড়াতে পারে না।

সেই কোন ভোরে কলের ভে বালতেই ওরা বেরিয়ে পড়ে। রাতে তৈরি করা বাসি র্টি আর চা দিরে নাদতা করে। আবার কেউ কেউ আরো ভোরে অর্থাৎ অন্ধন্দর ফিকে না হতেই ওঠে উন্দুদ্ধে হাড়ি বাসিরে দেয়। ফ্টিরে নেম ভাত-ভাল। ভাত-ভাল হতে হতে থাওয়ার অবসর আর বেশি থাকে না। কোনকমে নাকেম্থে দ্টো গ্রাকে বেরিয়ে পড়ে। হাজিরাম লেট হলে সির্নের কাজ বরবাদ। ওদের তো কাজের উপরই পরসা।

ওরা কোলিয়ারি-কামিন। এভাবেই
কাটে ওদের জীবন। শীত-গ্রীক্ষা-বর্ষা বার্
মাস। জীবন ওদের কাছে যন্তের সামিল।
শ্বাভাবিক জীবনবোধ ওরা অনেক দির্ল
হারিয়ে ফেলেছে। কোলিয়ারি কামিনের
থাতায় নাম ওঠার সালো সংগে।

খাদে যাওয়া ওদের আইনে আটকায়।
খাদের নিরেট অন্ধকারে জাঁবনের আদিমতা
কুর্গাসত হয়ে উঠতে পারে। তাই এই
নিষেধাজ্ঞা। খাদে কাজ করে ওদেরই
প্রের্বা। তারা করলা কাটে। টাল ভার্তি
করে ওপরে চালান পাঠায়। তারপর শ্রেহ্ম ক্যিনদের কাজ। পাথ্রে ক্রলা
র্পান্তরিত হয়। ওরা সেই করলা ঝুন্
বাঝাই করে ভুলে দের অপেক্ষামান ওরাগনে
অথবা লারিতে।

প্রচন্দ্র দাতি ওরা হ্-হ্ করে কাঁপে।
দাতি নিবারণের উপক্ষণত কোনমন্তেই
ব্যথেণ্ট নর। আর এই কাজ তো পারে
প্রচুর জামাকাপড় চাপিরে করা সম্ভব নর।
করলা পোড়ানোর আঁচে ওরা নিজেনের
উত্তপত করে নের। আর আছে কাজের
তাড়া। দাঁতের কথা ওরা ভাইবার.

and the state of t

অবসর পরে না। সর্বার তাড়া লাগার। বর্তী দলবে'থে কাজ করে। এতেই ওরা শীতকে ভলে বার।

দ্রেমন শীত তেমনি গর্ম। দুই-ই
একেবারে চরম। শাঁতে তব সামলানো
বার। কালের চাস থাকে। আর আরু
করলা শোড়ানোর আচি। কিম্পু গ্রীথ্রে
তাই হরে ওঠে অভিনাশ। প্রচাড লু চলো
গালে অনুলা ধরে। মুখ কলসে বার।
চামড়া শুড়ে বার। ওদের রুটিনওরারে
তা বলে কিম্পু কোন কাঁক নেই। তেমনি নেই
ফাঁকিরও কোন নুবোগ। এরই মধ্যে কাজ
করতে হর। শেটের তাড়া যে স্বচের
বড়ো ভাড়া। কাজে ফাঁক দিলে পেট
উপোসী থাকবে।

তাই শীত বেমন ওরা উপেক্ষা করে তেমনি গ্রীক্ষকে ওরা বেপান্তা করে ছাড়ে। তেতেপুড়ে কাল করে ওরা। ওরাগন ভার্ত করে আর লার বোঝাই করে। লুলাগে। চিকিৎসার বন্দোবস্ত অবশা আছে। কিন্দু বেংবারে প্রাণ হারানোর নজারিও কম নেই।

তারপর আসে বর্ষা। প্রচণ্ড ব্লিট্ট দুর্বু হয়। কোলিয়ারি আইনে কোন কোন কোলিয়ারি আইনে কোন কোন কোলিয়ারি এসমর কথা থাকে। বর্ষার জল সে সমর খাদে পানন আনে। প্রমিকের জীবন বিপম। খাদে কাল বংধ। ওদেরও র্ট্টে-রোলগার নেই। নামমার হরতো কোম্পানীর কাছ থেকে কিছু পার। সে সমর ওরা অন্য কাজের চেল দেখে। আর বুসর খাদে করলা কাটা চলে দেখানে ওরা বুসর ভিজতে ভিজতেই কাজ করে। অস্থাবিসন্থের সম্ভাবনা প্রভি মৃত্তে। জীবনকে হাতে নিমে ওরা জ্য়া খেলে যায়। হারালিতের প্রশন ওঠে না। পেট ভরানো আর জীবনধারণই দেখানে বড়ো হরে ওঠৈ।

খাদে বারা কাজ করে সেই ওদেব প্রেব্ধদের তব্ কাজের স্বিধা অনেক।
শতি-গ্রীক্ষ ওদের ততথানি কাব্ করতে পারে না। কারণ, ওরা থাকে খাদে।
সেশানকার তাপমালার শতি-গ্রীক্ষের কোন হেরফের বিশেষ হয় না। বরং খাদ থেকে বার্মিরে এলেই ওদের অস্বাধা। তথনই শতি ওদের জাপটে ধরে, গ্রীক্ষা উক্পবাসে ওদের কাব্ করার চেন্টা করে।

অবশ্য জীবনের ভর ওদের অনেকখান।
নানারকম গ্যাসের হাত থেকে ওরা নিস্তাব
পার না অনেক সময়। তারপর কভরকম
দুর্ঘটনা তো আছেই। সে ভূলনায় কামিনদের
জীবনে দুর্ঘটনা কম। তব্ ওরা নিশ্চণ্ট
হতে পারে না। কারণ খাদে কাল করছে

ভাৰেই প্রেক্ষা। ভাৰের জীবন বাদ সংশার হয়, তবে ওদের জীবটার নেমে আসে হাহাকার। প্রচম্ম ক্রিহারতার বেদনার ওরা গুমারে ওঠে।

ইদানীং তব্ কাজকরের সুবিধা হলেছে। ঠিক ঠিক কাজ অনুমারী দালসা গাওমা বার। গোলমাল বে কিছু বা হর এমন নর। আগে এই সুবিধা ছিলা না। আর ওদের বিবেচনার এটাই হলো অবচেরে বড়ো সুবোল। স্তাই তাই, কালু করতে এসে বদি কাজের মজারি না পাঞ্চার বার, তবে দ্বংশের অবধি থাকে সা। ক্রিমনার আশ্বস্ত, এখন আর দে অবার ছব্লানা। সরকারী আইনকান্ন আর প্রামক ইন্তুলেঠন ওদের অনেক্যানি নিশ্চস্ত করেছে।

এবেলা-ওবেলা কাজ ওলের নর। সার্রাদিন কাজ চলে। এবই মধ্যে একট্ জিরিরে
নের। সকলে একসংগ্য বসে। দু'দেও
কথা বলে। হাসি-গলেপর ফোরারা ছোটে।
গল্প করে ওরা ব্ডো সর্গারকে নিরে।
আবার কোন ছোকরা বাব্ কাকে বৈশি
অনুগ্রহ করে, সে নিরেও ওদের হাসি-ঠাট্রার
অলত থাকে না। কোলিকারি ক্রান্থনের
জাবনে এও একটা দিক। সেখানে মিশ্ছিদ্র
অশ্বনার আজও বাসা বেধ্ধ আছে।

धतरे मध्य कल म्य-प्राप्त वशा हम। ওরা নিজেদের অভাব-অভিযোগের প্রসংগ जूल कमन जानमना इस शुरु । माने शहर । বাড়ীতে রেখে আসা সেই তেন্ট্র গ্রহলেটার কথা। ভৌবাজতেই বে মা**কে জড়িয়ে ধরে।** কিছুতেই আছকে সে তার **মাকে কাছ**েড়া করবে না। এমনি বারনা ভার নিতা তিরিশ দিন। মায়ের উপায় নেই। তারও মাঝে মাঝে মনে হয় কাজকম্মো ছেড়ে ছেলে নিয়ে ঘরে বসে থাকতে। কিন্তু উপায় নেই। সবাই যখন একে একে বেরিয়ে পড়ে। তখন সে আর থাকতে <u>পারে:না । ছেলেকে</u> জোর করে কোল থেকে নামিয়ে ছট্ট দেয়। পিছনে ভাসে ছেলের কালাবিক্ত কঠাবর। এমনি আলাপ-আলোচনার মৃহ্তে ভার অল্ডরের সেই বেদনার একতারাটা রিনরিনিমে ওঠে। সে হঠাৎ কেমন আনমনী হয়ে বার।

তাই ওরা চার ছেলেকে রাখবার জন্য বেবী প্রেশ হোল । ক্ষামা তাহলে ছেলের সম্প্রেশ শংকাছীক হরে নিশ্চিত কাল করতে পারে। আর কাজের ফার্টেক হাকে ভাকে দেখেও আসতে পারে। কিন্তু সে সংযোগ অনেক কোলিরারিতেই নেই। অথচ এই স্মৃবিধের দাবী জানিকে আসতে ওরা দ্বীয়াদিন। বাদের রাড়িতে ব্ডি আছে

그 그 있는 경기에 가는 가장 가장이 있다. 저는 나를 다

ভাগের ভব্ আশংকার কিছ্ থাকে না। विक्कु बारमंत्र क्षष्ट अनुरवाग-अनुविधा रनहे। ভারা অপরের ভরসার নিজের ছেলে পাছত ্রেখে আসে। ছেলের জন্য মনটা ভাই সব সমরই কেমন করে।

💲 এই ভাবনা আজ সকলের। শহুরে আফিসের কমী মারেদের বেমনি ওদেরও তেমনি। অথচ কারো সমস্যারই (कान मुद्रापा शक्क ना। जककार लिएव धौधीन অস্থির। কাজটাই বা তফাং। এই কাঞ্চের क्रमदर्श्य अहा काकिन आहे आवहा दक्तानी। किन्छ न्यामी-न्युटांत क्रायनात

मण्डार अक्षिन अरम्ब स्थि। बान-वाकि पिन अक्ष्रोमा काम। जञ्जारहत कारबंद হিসেবনিকেশ চুকিরে পাঞ্জনাশভার মিট-মাট হয় স্পতাহাতে। টাকা হাতে একেই द्मणाणास्य भागा। जात् स्वरंक् वाकि थाटक भरत्रस्का प्रोमाण प्रारंक्ष निरंगाय राज যায় সম্ভাহে একদিন মৌল করার আনপে।

তারপর আবার অণ। চড়া বুদা রোজসারের টাকা শেষ। এমনিভাবে পরেইপরশ্বরাম ওরা রবে চলে এক অভিশশত জীবন ।

े कामिन वर्ता, आमात स्मर्थ हरन कामिन रहर्रें भारत काल कत्रवा अध्यक्त समामित উম্পার নেই।

हर्शार कावना अस्त्र महा रहा, अ मीवन থেকে উন্ধার কত দরে?

—श्रमीना



ক্ৰুম্স ইণ্টাৰুম্বান লিমিটেড, বেছে-২৫

विनाम्हणाः ! - सार्थमात्र विनाम्हणात्र मृत्यत्र शृत्रिकणात्र करना আজই লিখুন-ডিলাট-০, শ্বেঃ বন্ধ ৬৮৫২, বোল্বাই-১৮ ইম্সংশক্তির আসবেন স্কুল পরিদর্শন করতে। হেড্যান্টাররুশাই আগেই সব ক্লাসে নোটিল পাঠিরে দিরেছেন। তবু নিশ্চিত
ইতে পারেননি। নিজে প্রত্যেক ক্লাসে ঘ্রের ঘ্রের সকলকে তৈরি
ইরে আসতে বলেছেন। ক্লাস-টিচাররাও ছারুদের জনে জনে
বলেছেন ঃ কাল ফুস্টা জন্মাপ্যান্ট পরে আসবে, খালি পারে
আসবে দা, পড়া জালো ম্থান্থ করে আসবে..ইত্যাদি ইত্যাদি
গং বাধা একগান্ধ কথা।

ইব্দপেক্টর এলেছেন। ছাচরাও মান্টারমণাইদের নির্দেশ-মতো আর নিজেদের সাধ্যমতো সাজগোজ করে, পড়া মুখন্থ করে, তৈরি হয়েই একেছে। বাইরে থেকে সাধ্য আর সামর্থার মধ্যে ফাঁক রাথেনি কোখাও। খান্টারমণাইরা মনে কনে খ্লি। ছেউমান্টার-মশাই আরও খ্লি। মনের বধ্যেও, মবের বাইরেও। কিচ্ছু...

ইস্সপেক্টর আলে স্কুলবাড়িটা খ্রে খ্রে দেখলেন। মালা-চাপরাশার দৌলতে মরলা-আবর্জনা ছিল না জোগাও। সব পরিস্কার। ইস্সপেক্টর খুলি প্রকাশ করলেন।

তারপর ক্লাস দেখতে গেলেন। উচু দিকের একটি ফ্লাসে প্রবেশ করতেই ছাররা সসম্প্রমে সশব্দে উঠে দাঁড়াল। ইন্সপেক্টর বসতে বললেন। তারা বসল। নিঃশব্দ করেক মৃত্তে।

নৈঃশব্দ ভঙ্গ করলেন ইন্সপেক্টর। জিক্সাসা করলেন ঃ তোমরা ইংরেজী বই এনেছ?

একটি হেলে শশব্যকে একখানা বই এগিরে দিল। ইক্সপেক্টর বইটার পাতা ওলটাতে লাগলেন। এক জারগার এলে খামলেন। বে-ছেলেটি বই এগিরে দিরেছিল, তাকে জিজাস্য করলেন: শেলী কে জানো?

ছেলেটি স্থাণ্র মতো দাঁড়িরে নিশ্চল। কঠি।..ইম্সপেক্টর দেখলেন সকলেই নিশ্পদ, চোখে ভাদের ভীভিবিহনল ছালা। শুখ্য একটি ছেলে হাভ ভুলেছে। ভিনি ভার দিকে ভাকালেন। বলালেন ঃ বলো।

ছেলেটি ক্ষিপ্রবেগে বলে উঠল: আমার মামাতো বোদ স্যার, কলকাভায় থাকে।

এবার ইন্সপেক্টর নিশ্পন্দ। কাঠ। খানিকক্ষণ।...তারপর তিনি মান্টারমশাইরের দিকে তাকালেন। মান্টারমশাই বিরত, বিমৃত। জ্বোর করে বিমৃত্তা অনেক্থানি কাটিরে অপ্পন্ট স্বরে ব্লালেন ঃ কবিতাটা এখনক পড়ানো হরনি সার্।

ইন্সপেক্টার বইটা ফিরিরে সিলেন। আর একটি ছেলের কাছ থেকে বাংলা বইটা চেরে নিলেন। পাতা ওলটাতে ওলটাতে বইটা বে সিরেছিল তাকে জিল্লাসা করলেনঃ দেশবন্ধ্যু কৈ ছিলেন?

হেলেটির ঠোট নড়ছে, কিন্তু দক্ষ বের্ছে না। স্পর্ট বোলা বাজে, সে জাওড়াজে ঃ দেশবন্দ্নেবেলবন্দ্রন

বেতারপ্রনাত

ইণসপেক্টর ভাকে সাহাষ্য করনের ঃ চিভরঞ্জনের সাম ' শ্নেছ?

আবার ছেলেটির ঠেটি মড়তে লাগল, ক্ষিত্র শব্দ বের্তা লা। পশ্চ বোঝা গোল, লে হাডড়াছে ঃ চিন্তরজন...চিন্তরজন...

ইন্সংশক্তর সারা ফ্লাসটার ওপর দিরে একবার চোধ ব্লিরে মিলেম। সকলেরই ঠেটি নড়ছে, দব্দ বের্ছে না। দুখ্ একটি ছেলে অনেকটা সপ্রতিক হরে হাত তুলে বনে আছে। তিনি তাকে জিল্পানা করলেম ঃ জানো?

্ছেলেটি তড়িংবেশে উঠে দাঁড়িরে বলল ঃ হাাঁ, স্যার । মিহিজামের কাছে চিন্তরক্ষন। সেখানে রেলের ইঞ্জিন তৈরির কারথানা আছে। আমার কাকা সেই কারখানার কাজ করেন।

ছেলেটি একসংশা এতগুলো কথা বলে বিষয়গরে যুব ফুলিয়ে পর্টিড়য়ে রইল।

ইন্সপেক্টরের কণ্ঠ রুখ্ধ হরে গেছে। দুন্টি তার নিশ্বর ।
নিথর দুন্টিতে তিনি মান্টারমশাইরের দিকে কিছুক্রণ তাকিরে
রইলেন। মান্টারমশাই সেই দুন্টিতে প্রেড বেডে লাগলেন।
ইন্সপেক্টর কিছু বললেন না। ক্লাস্য থেকে বেরিয়ে গেলেন।

পাঠক, এইবার আপনি ইন্সপেক্টর সেজে আস্নে আবাল-বালীর স্কুলের কলকাতা রাণ্ডের ঘরে ঘরে। জিজাসা কর্ম আকসারর্পী ছাচদের (কিন্তু তাদের 'তুমি' বলে সন্বোধন কর্মেন না যেন, তাহলে মানহাদির দারে পড়বেন) ঃ ভারতের ব্যাধীনতা আন্দোলনের ইতিছাস জানেন?

তারা বিরত মুখে, ইতদততঃ করে জবাব দেবেন ঃ ইতিহাস? হাাঁ, পড়েছি দকুলে থাকতে—অশোক, কণিম্ক, লাহ্জাহান, লড়া বেণ্টিক...

জবাব প্রে কিছ্মিণ আপ্নার মুখে কথা সরবে না। বিক্রারের ছোর কাটতে সময় লাগবে। ভারপর আপনি বলবেন ঃ আমি ভারতের স্বাধীনতার ইতিহাসের কথা জিল্লাসা করছি।

তারা আমতা আমতা করে বলবেন : শাধীনতা, ব

व्यानीन कार्यन : शी।

উত্তর পাবেন : কেন, আমরা চেচা ক্রাবীন হরেছি। আপনি জিল্লাসা করবেন : ক্রী করে এই ক্রাধীনতা এল?

उत्तर जामत्व १ त्यम, जात्मानम करतः। शहाचा गाम्यी जहिरम जात्मानसम्ब म्याता जामारमस न्याधीनका करन निरम्नस्म। আপনি জিজাসা করবেন ৪ আর কেউ আন্দের্জন করোননি? উত্তর প্রবেন ৪ হার্ট, করেছেন—স্কর্মলাল, ক্ষর্মলাল, ক্র

আগনি আর থাকতে না পেরে জিজানা কর্মবর্গ হ স্ভাব বোন?

সংশা সংশা চটপট উত্তর আসবে ঃ হার্ট, হার্ট্রের বোস... স্তার বোস...নেডালী ২০শে জানুরারী...

আপনি অতিষ্ঠ হরে উঠবেন, জিজ্ঞাসা করবেন ঃ রাস-বিহারীর দাম শ্রেছেন?

সপ্রতিভ, সহস্যা উত্তর শ্নেবেন ঃ রাস্বিহারী? হাাঁ, হাাঁ, দক্ষিণ কল্কাতার রাস্বিহারী অ্যাভিনিউ বলে একটা বিরাট, চওড়া রাস্তা আছে। রোজই তো বাই সেই রাস্তা দিরে।

আপনি এবার কী বলবেন, খ'্জে পাবেন না। চুল্ ছি'ড়তে ইচ্ছে হবে, আঙ্গে কামড়াতে ইচ্ছে হবে, প্রচণ্ড রোবে ফেটে পড়তে ইচ্ছে হবে। কিন্তু সে-ইচ্ছে আপনি প্রেণ করবেন না। দার্গ ঘ্ণার, একটি কথাও উচ্চারণ না করে আপনি প্রথম হবেন না। ছবং হেড়ে বেরিরে আসবেন। আর কোনোদিন ও-মুখো হবেন না।

কী, বিশ্বাস হচ্ছে না? একবার পরীক্ষা করেই দেখন না।
জিজ্ঞাসা করেই দেখন না আকাশবাণীর, মা দিল্লী কেন্দের কথা
করিছ না, ক্লকাতা কেন্দেরই কতারা ক'জন রাসবিহারী বস্ব রাম স্থানেন। জানলে কি আর তার জন্মদিনটা এমনি অনাদরে জবহেলার অতিবাহিত হত। ্বতারকাগতের জন্তিনেস্তাটা খুলে দেখন তো কোণাও একটি বারের ক্রাও তার নাম দেখতে পান কিনা। প্রাকেন না—কোণা নান, প্রকরাত্ত নাগ জবচ ঐদিন নজর্ক ক্রাওতী উপলক্ষে বেক্টেড ক্রাড ক্রাড নাগ তেতে পড়েব ক্রাড ক্র

ক্রথের বার্নির ক্রমনিনের আর মৃত্যুদিনের করেকদিন আনে থেকেই সমস্ত বিভাগীর অনুভানে দানা অনুভান প্রচারিত হয়-চলে পরেও করেকদিন ধরে। কিন্তু হতভাগা রাসবিহারীর ক্রম দিনের কথা কর্তাদের মনে থাকে না। একটা অনুভানও তা নামে বরাস করার প্রয়োজন অনুভূত হর দা।

২৫শে মে রাভ সওরা ৮টার প্রনিধারিত আধ্নিব গানের একটি অন্তান বাতিল করে সেই জারগার রাসবিহারী সম্পর্কে একটি কথিকা প্রচারিত হয়েছে। কথিকাটি হয়তো শেব মৃহ্তে স্থির হয়েছিল। বেতারলগতে তাই তার উল্লেখ ছিল না। সংবাদপতে বিশেষ ঘোষণাও দেওয়া হরনি।

এত বড়ো একটা বেতার কেন্দ্রে এতগালো অনুষ্ঠানের
মধ্যে রাসবিহারীর মতো একজন মান্বের জন্য আর একট, জারগ
কি হত না? বেতার কর্তৃপক্ষ তার জন্মদনটা সমরণ রেখে তার
নামে করেকটি স্পরিকল্পিত অনুষ্ঠান কি করতে পারতেন না?
এই প্রনের জ্বাব পাওয়া যাবে কার কাছে? এই লম্জা, এই
কলম্ক ঢাকবার জারগা পাওয়া যাবে কোথায়?

अन्द्रण्डोन-अया दिलाहना

২০ মে সম্ধ্যা ওটায় গাঁটার বাজালেন শ্রীমতী (যোষণাল্ল অবশা শ্রীমতী বলা হর্মন) প্রগতি সেনগৃহতঃ তিনি রবীন্দ্র-স্পানতের স্ক্র বাজালেন। বেশ মিণ্টি, স্ক্রেলা হাতা।

बर्रेषिन ब्राप्ट १वा ८८ মিনিটে সমীকার কলকাতায় কলেরার প্রাদৃ্ভাব **সম্পর্কে বললেন শ্রীবিভৃতি দাস। কলে**রার **কবল থেকে রক্ষা পাবার জন্য অনেকগ**্রিল াবস্থা গ্রহণের কথা বললেন তিনি। কিন্তু তার মধ্যে কতগ্লো জনসাধারণের ্যহণীয়? জলের অভাব জনসাধারণ মটাবেন কেমন করে? কপোরেশনের জলে চারা ক্রোরিনই বা মেশাবেন কীভাবে? শৃহরের আবর্জনা পরিকার, সে-ও কি জনসাধারণকৈ কোমরে গামছা বে'ধে, হাতে **या्ष्रि-रकामान निराह्म क्रतरक शर्व ? काशान** ঘটা করে একটা কপোরেশন রাখার কী দরকার? সরকারেরই বা ভূমিকা কী? জন-সাধারণকে উপদেশ দেওয়া ভালো, কিন্তু সেই ্উপদেশ পালন করা তাদের পক্ষে কতথানি সম্ভব, একবার বিচার করে নিয়ে তারপর উপদেশ দিলে ভালো হয় না? সেই সংশ্ কপোরেশন ও শ্লুকারও বাতে ভালের দারিষগ্লি পালন ^সকরেন, তা-ও দেৰে নিলে ঠিক হয় না?

সমীক্ষার পরে ক্থানীর সংবাদে ব্রীদেবদুলাল বন্দ্যোগাধ্যার কুল্কাতর বন্দ্রে

ni garanta ya kata da waka ka

'বাজ'ম্যান'-দের ধর্ম'মটের থবর দিলেন।
'বাজ'ম্যান'-রের বাংলা কিছু নেই? বাংলা বললেই তো আমাদের মতো লোকেদের ব্রুড়ে একটা, স্ক্রিধা হয়।

২৪ মে সকাল সাড়ে ৯টায় শিশ্মহলে
নেহরুর শিশ্পুপ্রীত সম্পর্কে আনন্দউম্জন্ন পরমার, নামে একট অনুষ্ঠান
প্রচারিত হল। এতে শিশুদের সম্পর্কে
নেহরু যেথানে যা বলেছেন, শিশ্বা তা
মুখ্যথ বলার মতো বলে গেল। মনে হল,
তারা অনেক কন্ট স্বীকার করে খবরের
কাগজ আর অন্যান্য পরপতিকা আর তার
রচনা থেকে উন্ধৃতিগুলি সংগ্রহ করেছে।
এটা কি তাদের পক্ষে সম্ভব? অনুষ্ঠান
রচনার আর একট্ প্র্যাক্টিকাল হলে
ভালো হয়্ন না? অনুষ্ঠানটি এমনিতে কিন্তু
মন্দ্র লাগেনি।

ু এই আসরে পরে গান শোনাল দেবী বর্মণ। বেশ লাগল। ্

আসরের পরিচালিকা নজরুল সম্পর্কে বলতে গিরে এক সময় বললেন, 'কবি অস্ক্থ, অনেকদিন ধরে অস্কথ।' কডদিন ধরে, সেটা বললে বোধহয় ভালো হত। বলার দরকারও ছিল।

এইদিন রাত ৭টা ৫০ মিনিটে ম্থানীর সংবাদে শ্রীপীযুর বন্দ্যোপাধাার 'পপালার গভনামেন্টের' বাংলা করলেন জনপ্রির সরকার'। 'পপালার'-এর অর্থ কি সর সমরেই জনপ্রিয়? অভিধানটা একবার দেং নিলে হয় না? আর কতকাল এমনি ক শ্রোতাদের ভূল জিনিস দেওয়া হবে?

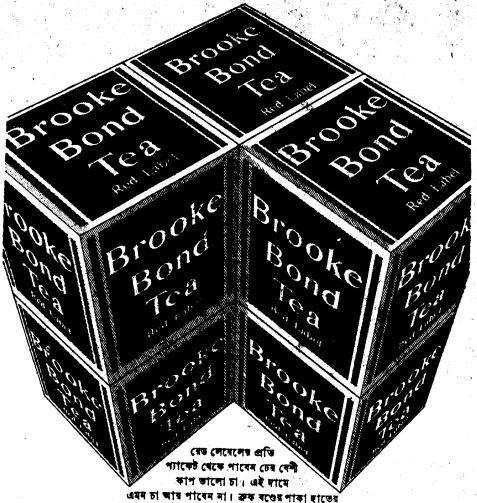
২৬ মে সকাল সাতে ৯টার প্রচারি হল বিচিত্রা'—অলকেন্ বোধ নিকেত্র সম্পর্কে। প্রবাজনা গ্রন্থনার ছিলে প্রীলিবপ্রসাদ অনিহারটী। অনুষ্ঠান বৈমন প্রয়োজনীর ডেমান স্করে। শিশুরে কেন জড়ব্র্নিথ হরে জন্মার, কেমন করে শিশুদের জড়ব্র্নিথ হরে জন্মানো রোকরা যার, জড়ব্র্নিথ হরে জন্মানো নাশ্ব্র দের জীবনে প্রতিষ্ঠিত করে তোলার জন ক্রীভাবে চেন্টা হচ্ছে এই অলকেন্দ্র বোধানো হরেছে এই অল্ডোনে। কিছ ডিমোল্যট্রেশনও দেওরা হরেছে।

অনুষ্ঠানটি তৃথ্যমূলক, জ্ঞাতব্য। এথে সমাজের অনেক উপকার হবে এবং অনেকে জীবনে ভরসা পাকেন বলেই বিশ্বাস।

২৯ মে রাত ৭টা ৪৫ মিনিটে সমীক্ষায় ডঃ অ্যালবাট জুন একটি মার প্রমাণ্ডকে আলাদা করে নিয়ে ছবি তোলার বিষরে বললেন শ্রীশশ্বর চক্রবভণী। বলাটা বেশ শ্বচ্ছ, সহজবোধ্য। বেশ ধীরে ধীরে, সহজভাগাতে এমনভাবে বললেন তিনি বে, অল্প অব্দ বিজ্ঞান-জ্ঞানারাও ব্রুবতে পেরেছেন বলে মনে করা বেতে পারে।

LAND FREE

अला हो क्रम ध्रवहा



এমন চা আর পাবেন না। ক্রক বণ্ডের পাকা হাতের রেও — থেয়ে পরিস্থৃত্তি, আর প্রসাও বাঁচে। ভারতে বেন্ব পাতা চা বিক্রী হয় ভার মধ্যে রেড লেবেলের বিক্রীই ভাই জন্ম স্বচেয়ে বেন্দ্র।

ক্লক বণ্ড রেড লেবেল – প্রতি প্যাকেট খেকে পাবেন আরও বেশী কাপ আরু সত্যিই ভালো চা

নাটমণ্ডের মণ্ডোৎসব



বহুর্পীর চার অধ্যাদ

বিশ শতকের এই দশকের প্রেক্ষাপটে দাঁড়িয়ে এ কথা নিশ্বিধান বলা যায় যে আজ বাংলা থিয়েটায়ে শিব্দচিস্ভার এক আশ্চরণ ব্যাণি**ত ঘটেছে, বার**ীমধ্য দিরে দ্বাতন্ত্রো সমাশ্রতর হয়েছে দেশের জীবন-নিষ্ঠ সংস্কৃতি। দ**ীর্ঘ প'চিশ বছ**র ধরে ব্যবসায়িক প্রতিষ্ঠানের বাইরে বে সব নাটাগোষ্ঠী অবি**রত নাট্যানঃশীলনে রত**। তারাই তাদের আন্তরিকতার জ্বালতে ভরে **এনেছে या किছा शोबावत माना अब करन** দেশের শিক্সসংস্কৃতির মান হরেছে উল্লভ। কিন্ত যারা অনলস পরিভাষ করে নাটা-সংস্কৃতির একটি নতুন অধ্যায়ের স্চুনা করেছেন এবং যাদের উদাম প্রচন্ত ঝড়ের আঘাতেও থেয়ে যার্রান, তাঁদের চো**খে এ**ক অনিশ্চরতার মেঘ জয়তে শার**ু করেছে।** মনে জেগেছে এক প্রশ্ন-সামগ্রিকভাবে শিষ্পচর্চার একটি সমেংহত কেন্দ্র কোথার যেখানে শিল্পীরা স্বকীয় চিন্তার আলোর নতন্ত্র অনুশীলনে ব্যাপ্ত থাক্তে পারেন ? কোথায় এমন একটি জাতীয় মণ্ড যেখানে খুশীমতো প্রগতিশীল গোষ্ঠীগুলো বিভিন্ন ধরনের নাটানিরীক্ষা করতে পারেন? প্রশ্ন প্রশ্নই থেকেছে. সমাধানের কোন পথ খ'র্ভে যার নি। তাই ক্ষোভ জমতে শুরু হয়েছে অনেকদিন ধরে, কিন্তু বার বার চরমতম গ্রদাসীনের কাছে তা হরেছে মর্মান্তিক-ভাবে প্রতিহত। সরকারী কর্তপক্ষ নাট্য-গোষ্ঠীগঢ়ীলর অসাধারণ কমনিষ্ঠার সংগ্র লচেত্রনভাবে পরিচিত থেকেও নির্বিকার থেকেছেন। এটা সতি খুবই এক আদচর্ব ব্যাপার। গোরব বারা বরে আনকেন, গোরবালিকত বোধ করবার স্বােলা থিরে-টারের অজিজি এই সম্পদকে চিরাম্চনারের আজিজি এই সম্পদকে চিরাম্চনারের আজিজি এই সম্পদকে চিরাম্চনারের অর্কালির নাথা বাবে না স্পিচিম্ম বারের অর্কালির নাথা বাবে না স্পিচিম্ম বাবের অর্কালির নাটাসাধনা কি অবহেলার, উপেকার্ক শাক্রানা পান্ডার মতো থরে বাবে? এই প্রম্নাহ্বালা গভীরভাবে আলোলিত করলো বিশেষ করে বাহ্বালাকার করলো বিশেষ করে বাহ্বালাকার বাংলা দেশের প্রস্থাত

দিলীপ মোলিক

এই নাটালোক্তী চারটির দেক্ষে তারই
ফলপ্রতিশ্বর্প প্রতিথিত হোল বাংলা
নাটমণ প্রতিক্তা সমিতি'। উলোশা,
যে-ভাবে হোক বাংলার পরিবাদত দিলপচর্চার জনা একটি দ্থারী মন্ত গড়ে তোলা।
নাংলাদেশের সংক্রতির ইতিহাসে এ বেথি
প্রক্রতী এক বলিততম পদক্ষেপ।

আমাদের দেশে যাঁরা বিক্ষিণতভাবে
নানা ধরনের শিলপচর্চা করে চলেছেন,
তাঁনের একটি জারগার মেলতে পারলে
প্রভাবের মধ্যে চিন্তা ও অনাভতির সেতুবন্ধন হল এবং লাভেই দেশের শিলপসংক্ষিত্র সামগ্রিক্তি একটি চেহারা

পরিক্তুট হরে ওঠে। বাংলা নাটমণ্ড সমিতির লক্ষা হোল, কিডাবে এই মিলনের **একটি কেন্দ্র স্থারীভাবে প্রতিভি**ত করা বায়। এই লকাকে বাল্ডব রূপে দিতে क्रिके हरमाइ व्यविद्युष्ट। गढ बहुद नार्काश्यव ও বিভিন্ন লোকের দান থেকে সংগ্রীত হরেছে লক্ষাধিক টাকা। এবারেও কয়েকদিন আগে 'কলামন্দিরে' অনুষ্ঠিত হোল পাঁচ-দিনব্যাপী এক শৈদিপক সংব্যায় মণ্ডিত **নাটোৎসব। এবারে শাঁখতির ভা**ন্ডারে অর্থ এসেছে প্রায় চলিশ হাজারের মতো। জনসাধারণ যে একটি জাতীয় মণ্ড প্রতিংঠার বাাপারে অতিমান্তার সচেতন হয়েছে. u থেকে তা নিশ্চিত বোঝা যায়। পাঁচ-দিনের এই মাট্যাৎসবের মধ্য দিয়ে সাধারণ মান্বের নাট্যপিপাসা যে গভীরতা লাভ করেছে, ভার নজীর ধরা পড়ে। প্রতিদিনের সম্ধ্যা ও রাতের আকাশ থেকেছে ঝড আর বৃষ্টির মেঘে ভরা। কিল্ড বাইরে অশাল্ড বর্ষণ সত্ত্বেও মাটক চলেছে প্রেকাগ্রে।

এবারের নাটোৎসবের শ্র হয় রপকারের নতুন নাটক লাজন ফকির' দিরে।
বাংলার বাউল সংপ্রদারের মধ্যে বিশেবভাবে
পরিচিত লাজন ফকিরের আধাাত্মিক
লীবনের ক্লমবিবর্তান ও সমাজের ক্লরে
বিধান থেকে পাওয়া চরমতম বিপর্যরকে
কেন্দ্র করেই প্রবীণ নাটাকার মন্মথ রার
লোলন ফ্রিক্রণ গাটকটি গড়ে তুলেকেন।
এ নাটকে বেমন অধ্যাত্মিটিনর কথা

जनामिकांत्र जाटन जान्द्रत



আছে, তেমনই আছে তখনকার সমাজ-জীবনের এক পূর্ণাপ্য চেহারা। **সংলাপের** ভাবগৃদ্ভীরতায় ও কয়েকটি অসাধারণ মহার্ড সাম্ভিতে নাটকটি শ্রীরায়ের পরিণত নাট্যচিত্তার একটি সম্পদ হোতে পেরেছে। নাটকটির নিদেশিনার দায়িত্ব বহন করেন সবিতারত দত্ত; নিদেশিনায় তাঁর আশত-রিকতার অভাব কোথাও চোথে পর্ডেনি। কিন্তু শিল্পীদের সামগ্রিক অভিনয়ে দ'এক জারগায় শৈথিলা চোখে পডেছে। প্রয়োজনমত অনুশীলনের অভাব বোধ হয় এর মলে। সংলাপের প্রাণোচ্ছলভার ও স্পাীতের স্থারে 'লালনে'র চরিত্রটিকে সহজ ও সরল করে তুলেছেন সবিতারত **पछ। जनाना প্রযোজনা**য় তার **कर**ण्ठ স্বরের বে দার্তি তা এখানে ততোটা স্পন্টতা না শেলেও 'লালন'কে বুঝে নিতে আমাদের এতটাকু অস্থাবিধে হয়নি। এই নাটকের একটি আশ্চর্য আকর্ষণ হোল শ্রীমতী ভূম্পিত মিত্রের 'মতি' চরিত্রচিত্রণ। বাচন-ভংগি ও বিভিন্ন মৃহ্তের ভাবপ্রকাশে তিনি নিজেকে সম্পূৰ্ণ এক নতুনভাবে প্রকাশ করেছেন। চরিত্রের অতলে মিশে না সেলে বোধ হয় এমন নিবিড্ডা আনা বার না। 'সিরাজ সাঁই' চরিতে স্বক্তন্দ অভিনয় করেছেন রসরাজ চরবতী। মধ্য

A. S. Carlotte and A. S. Salamaker, Salamaker and A. S. Salamaker

দত্ত'র 'নিবারণ', গীতা দত্ত'র 'তৃক্সসী' মোটামাটি উল্লেখযোগ্য।

ন্বিতীয় দিনে পরিবেশিত হোল 'তিন 'নান্দীকারে'র পরসার পালা'। রেখটের 'দি থি পেনি অপেরা' অবলম্বনে এ নাটকের প্রযোজনা ইতিমধ্যে বাংলার নাট্যজগতে আলোডন এনেছে. প্রশংসাও পেরেছে যথেন্ট। ১৮৭৬ এর ক'লকাতা মহানগরীতে বাস করতো মহীণ্দ্র নামে এক দস্য: তারই দৌরাজ্যের কাহিনী নিমে এ নাটক। অভ্যুত সব ঘটনার সংগ্র মহীন্দের যোগ এবং সেই ঘটনাকে কেন্দ্র करतहे नाउँकीं मरा उष्ट्रिक हात उर्छा মহীশের অনেক মণ্তব্যে গভীরতর সামাজিক ব্যঞ্জনা আমাদের একই সংশ্বে হাসায় এবং ভাবায়। নাটকটির রূপান্তর ও নিদেশিনায় অসাধারণ শিল্পনৈপ্রণোর পরিচয় রেখেছেন শ্রীঅঞ্চিতেশ বন্দ্যো-পাধার। রসাল সংশাপে ও নাচে-গানে তিনঘণ্টা যেন মনটা ভরে থাকে। প্রতিটি শিল্পীই নিখ'ডেভাবে চরিত্রকে রূপ দেবার চেন্টা করেছেন, এবং তাই টিমওয়াকে কোথাও এতট্কু শৈথিল্য স্পন্ট হোতে অঞ্চিতেশ বল্দ্যোপাধ্যারের भारतीय । 'মহীন্দ্র' একটি সমরণীয় চরিত্রচিত্রণ। অবাক করেছেন অসিত বন্দ্যোপাধ্যার বতীন্দ্র-

নাথে'র ভূমিকার অভিনর করে। গতি। এতো ব্যান্তাবিক ভংগিমার অভিনর সকরাচর চোঝে পড়ে না। লভিকা বসুর মালতী-মালা'ও চমংকার। 'পার্লুবালা' চরিত্রে কেরা চক্রবভী' প্রভ্যাশিত অনুভূতি দিডে গেরেছেন, রুপ্রপ্রাদ সেনগ্রেণ্ডের 'বটকুক', চরিত্রোপযোগী। এমন একটি প্রয়োগসফল ভালো নাটক কমই দেখা গেছে বাংলামধ্যে।

হিন্দী নাটকও বে বাংলা নাটকের সংখ্য তাল মিলিয়ে চলে স্বকীর বৈশিভেট প্রোক্তরের হয়ে উঠেছে, তার স্বাক্তর চিহিত হরেছে তৃতীয় দিনে 'অনামিকা' প্রযোজিত "আধে আধ্_{বে}" নাটকে। মোহন রাকেশ রচিত এই নাটকের কাহিনী গড়ে উঠেছে একটি পরিবারকে কেন্দ্র করে ব্যক্তিসন্তা যেখানে শ্বিধা বিভৱ। প্রত্যেকেই সেখানে নিজের নিজের অসম্পূর্ণতার নিদার_শ বশ্রণার গ্মরে কে'দে উঠছে। অসাধারণ বাস্তব জীবর্নান্ঠ নাট্কটিকে প্রাণবন্ত করে ভোলার ব্যাপারে নাট্যনিদে শক শামানস শিল্পবোধ নিঃসংশরে প্রশংসার नावी শিল্পীতালিকার ছিলেন কৃষ-কুমার (স্বামী), প্রতিভা অগ্রবাল (স্বাী), ইয়ামা অগ্রবাল (বড় মেরে), আভা জালাম (ছোট মেরে), কল্যাণ চ্যাটাজী (ছেলে)।

পরের দিন। মঞ্চে আধো আলো অম্পকার। এলান ভ্ঞার্ড দুটি চোমের দিকে চোধ রেখে অতীন আবৃত্তি করছে—

> প্রহর শেবের আলোর রাঙা সেদিন চৈরমাস, তোমার চোধে দেখেছিলাম আমার সর্বনাশ।

সে এক অপুর্ব মুণ্ধ শিহরণ অনুভতি-লোকে এক আশ্চর্য স্পাদন। নাটকের নাম 'চার অধ্যায়'। প্রীতি আর স্মৃতির দোলনে বারো বছর পরে আবার 'বছরেপী' এই নাটকটি মণ্ডম্থ করলো। সংলাপের সেত-বন্ধনে শম্ভু মিহের 'অতীন', আর তৃষ্ঠি মিতের 'এলা' মণ্ডে এমন একটা মারা স্থিট করে বা থেকে মনটাকে চেণ্টা করেও সরিয়ে নেওয়া বার না। আপ্সিকের কোন বাহার নেই, কলা-কৌশলের কোন চমক নেই, শাধা দাটি হাদরের বিভিন্ন মাহাতের অনুভূতির আদানপ্রদান। এরই মধ্যে নাটক, এরই মধ্যে আনন্দ বিপদের সীমারেখা ধরে 'অতীন' আর 'এলা'র প্রাণময়তার সংগ্র মিশে যাওয়া। এই সতেই নাটকের প্রাণ-বশ্তর সংখ্যা পরিচিত ছওয়া যায়। 'দেশের আত্মাকে মেরে দেশের প্রাণকে বাচিরে তোলা বার'...এই ভয়ংকর মিখ্যার বিরুদ্ধে 'চার অধ্যার' হোল প্রবল প্রতিবাদ। মৌল সতাকে অবিকৃত রেখে 'জতীন', 'এলা' বলেছে প্রাণের কথা, বার মধ্যে আময়া

নিকেশের অনুষ্ধ কর্মের প্রতিষ্ঠারে।
রাজীনুনাথের কান্যবিদ্যুত ভাষা বে আন্তর্গ রাজন নাট্ডের প্রাণ হোতে পারে বৃহত্ত্বী ভার অধ্যায়ে একমা প্রমাণ করেছে।

চার অধ্যারে'ন আবেদন আকও
কর্মিকে বার নি। নাটকের শেবে দদভ্
বিচের দোকাবহ বোদগা চার অধ্যাদের
ক্ষিকের সম্ভব্য এখাদেই দেবে আবাদের
উদ্দিশন করেছে। আমরা বদ্যো আরো
বহুরকারী অভিনতি হোর এ নাটক!

एगरबर निहमत माडेक द्यान 'वाश्ना নাটমন্ত প্রতিষ্ঠা সমিতি' প্রযোজিত স্মুদ্রা-हाकन'। श्रथस्यर् বলি এ নাটকের द्वाराजना इत्हरू व्यनाधातमः; प्रत्रू कपिन এই নাটকটিকে কি সহজ স্বাভাবিকভাবে মণ্ডে পরিবেশন করা হরেছে তা ভাবলে পজি অবাক হয়ে বেতে হয়। প্রেকাগ্রহের লব আলো নিভে খেলে লোনা গেলো কলির ঘণ্টা, আর ঢাক-ঢোলের আওয়াজ। <u>প্রেক্ষাগ্রহের বিভিন্ন দিক থেকে কেউ</u> ত্কছে ঢাক, ঘণ্টা নিয়ে, আর কেউ মঞাল-ষট নিয়ে। ওদিকে মণ্ডের পর্দা সরে গেছে। সারি বেংধে দীড়িকেছেন শিল্পীরা। 'জন্ম প্লা' খারে হোল, দভটিকে স্থাপন করা ছোল। তারপর স্তথেরের ভাষো বারা শ্রু হোল নাটকের।

প্রশাননা খেকেই নাটকের প্রতি আকর্ষণ খারু হরেছিল এবং সে আকর্ষণ ছিল শেব পর্যন্ত অট্ট। এর জন্য দশ্যে পরিকল্পনা, লগগীত, অভিনর সব কিছুই অপ্রেছে কেলেকেলে কেলেছে। এব্যাপারে নির্দেশক অজিতেশ বন্দ্যোপায্যারের শিল্প-চিন্তা অভিনন্দনবোগা। বহু চরিত্রের এই প্রচৌন নাটকটির প্রযোজনার সেকালের প্রাণাণ চেহারা ও বিশেষ মেজাজট্কু কুটে উঠেছে।

বিশাধ দত্তের 'মনুদ্রারাক্স'এর নাট্য-কাহিনী গড়ে উঠেছে একটি রাজনৈতিক भग्रेक्शिकारक मिरतः। ক্টমীতিবিশারদ চাপক্ষের নির্দেশে চন্দ্রগঞ্জে মনদ বংশ ধবংস করে নিজেই বসেছেন মগধের সিংছাসনে। মগধের সবাই চাপক্যের যগে. কিন্দু তবু তার মদে খুণি দেই, স্বান্ড দেই। ভূতপূর্ব মন্দর মন্দ্রী স্নীতিক বিস্থান রাজণ রাজস এখনো আসেনি রুদ্রবন্তের দিকে। চন্দ্রবন্তের রাজস্বকে নিন্দণ্টক করার জন্য চাপক্য রাক্সকে স্পুশক্ষে আম্বার জনা চেন্টা চালান। কেমন ক্রে চাপকা রাক্সের মন্ত্রা(বা শীলমোহর) नश्चाह करत करें अरुम्धेश नक्क ह्यात्मन टनरे कारिनीरे बरतर बाहाबाकनः भागेरक।

এই কাছিমীটিকেই স্বাভাবিকতার সংক্রে ব্রুপে মুর্ভ করে ভোলেন নাটমুগ नामाकारस किंग लगनत बाला



সমিতি'র শিল্পীরা। অভিনরের ব্যাপারে সৰ্বাগ্ৰে ৰাৰ নাম উল্লেখ করতে হয় তিনি হোলেন 'চাণক্যে'র র্পদাতা শ্রীশম্ভু মিত্র। তাঁর অভিনয়ে এতট্বকু আতিশ্যা তিনি কোথাও প্রকাশ করেন নি। শাসত, ক্ট-কৌশলী, স্থিতধী বান্ধণ চরিত্রের ভাবসংগতি বজায় রেখে অতাশ্ত সহজ সরল বাচন-ভংগিতে অভিনয় করেছেন বলে তাঁর 'চাণক্য' বার বার দশ'কদের আংল:ত করেছে। এ চরিতের অভিনয় শম্ভূমিতেয় শিল্পী-জীবনের এক অবিক্ষরণীয় স্থিট হয়ে থাকবে, আর ভাবীকাল তাঁর এই **চরিত্রচিত্রণ নিয়ে গর্ব কর**রে। নাটকের আর একটি মুখ্য চরিত্র রাক্ষসের ভূমিকায় অভিনয় করেছেন কুমার রায়। নির্শোভ, বংধ্বংসল, প্রভুভন্ত, তপস্বীর রূপটি ভাগোভাবেই পবিষ্কৃট করেছেন। অজিতেশ বল্যোপাধ্যারের চল্দ্রগ্রুপ্ত'র মধ্যে দেখাবার কিছুই ছিল না। তব_েও শ্রীবন্দ্যোপাধ্যার ভাবগাম্ভীর্য ফোটাতে পেরেছেন। অন্য ক্রেকটি চরিত্রে অভিনয় করেন সম্ভোব দত্ত (জীবসিন্ধি), কালী-প্ৰসাদ ঘোৰ (মলরকেড়), দেবছোষ ঘোষ হিমাংশ, চ্যাটাজী (ভান্ডরারণ), (जिल्धार्थक), बाह्यक्षज्ञान रजनगर्न्छ (विद्राध গ্রুম্জ), পদার্শতি বোস (চন্দ্রন দাস), কেয়া চক্রবর্তী (প্রিরদীশকা)। স্ত্রধার ছিলেন श्रुकाभम तम्।

'বাতক'রেখনী শশ্ভ ভট্টাচার্যের নভেও মনকে আর্কুট করেওই। নাটকটির বুশ্যে

পরিকল্পনার জন্য থালেদ চৌধ্রী প্রশংসার দাবী রাখে।

নাট্যোৎসব তো শেষ হোল। কিন্তু আসল কাজের এখনই হোল শ্রু । নাট্যপ্ত সমিতির ভাশ্ডারে যে অর্থা এখন পর্বাচ্চ সংগৃহীত হরেছে তা দিয়ে কিছু কাজ আরুত্ত করা বায় ঠিকই, কিন্তু আরো অনেক অর্থের দরকার। এ ব্যাপারে সরকারের আনুক্লা কাত জাসে সেদিকে চেন্টা করা উচিত এবং জনসাধারণ হারা নাটক ভালোবাসেন তাঁদেরই এ কাজে অগ্রণী হোতে হবে। প্থিবীর প্রতি দেশে সরকারই প্রতিন্ঠা করেন ন্যাশনাল থিয়োটার'। আমাদের দেশেই বা তা হবে না কেন?

কাজ নিম্নে এগিয়ে বেতে হবে। একটি
সংস্কৃতি কেন্দ্র স্থাপন করে সেখানে
সবরকম শিলপার সমাবেশ ঘটিরে একটি
পূর্ণাণ্য সংস্কৃতির চেহারা পরিস্কৃতি
করাটার দার আমাদের সবারই। নাটাচার'
শিশিরকুমার ভাদ্যুড়ীর ন্যাশনালা খিরেটারের স্বান্ধ্র সফল করে পরিপ্রশভাবে
ভারতবর্ধীর খিরেটারের একটি প্রাণমর
রূপকে তুলে না ধরতে পারলে ভবিবাতের
বাছে আমাদের দেবার আর কিছু থাকরে
না। এটাকে জাতীর কর্তবা হিসাবে মান
করে আভ সবাইকে প্রতিপ্রতি নিতে হব্দ বে রে নেশান ইজ মোন বাই ইটস লেকজ্ব

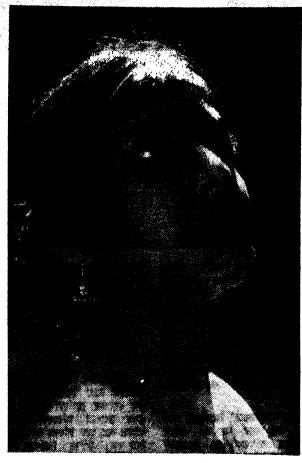
जिन्नाग्र

প্ৰেণিন, পালী পরিচালিত রবীন্দ্রনাথের শ্বার পর চিত্রে বিলারে ভূমিকার মধালভা রাজেশ্বরী রারচৌধ্রী।

व्याधानिक जार्जाहकान नाहेक क कर्डेड स्टाइडी अन्यक्रिय

आधानिक बार्किनी नाग्रेक्षगटण खक्छेत হেনরী পপ্কিন একটি প্রখার স্পো উক্তরিত নাম। শুধু মার্কিন মুলুকেই नत्त, रेश्नरफ्छ स्मन कृष्टि रहत शरत न-फन টাইমস পত্রিকার নিউইয়ক'ম্থ নাট্য-সমালোচক হিসেবে তার খ্যাতি অজন্ত। আমেরিকার মিনিয়াপোলিসের স্প্রেসিম্ধ টাইরন গ্রেথার থিরেটারের ইনি হচ্ছেন সাহিত্য পরিচালক, গুথেরি থিয়েটার ছে-নাটক অভিনয় করবে, তা ইনিই নিবাচন করে দেন। নাট্যসমালোচক হিসেতে ইনি নিউইয়ক টাইমস, লাইফ, থিয়েটার আট'স, ওয়াল্ড থিয়েটার প্রভৃতি পরপতিকার প্রচর প্রবন্ধ লিখেছেন। এ'র অন্যান্য কাজের মধ্যে উল্লেখযোগ্য হচ্ছে 'নিউ বিটিশ জ্বামা' 🗷 **'কন্সাইজ এন্সাইকোপিডিয়া অব মডার্ল** জ্ঞামা' বই দ্'থানির কৃতিদপ্র' সম্পাদনা। ডঃ পপ্তিন আগে শিক্ষকতা করেছেম त्राउँशाण' विश्वविष्ठालय, कृष्ट्रम करलब, ব্যাণিডস্ বিশ্ববিদ্যালয় ও নিউইয়ক বিশ্ববিদ্যালয়। বতামানে ইনি নিউটয়ভোৱ বাফেলোতে অবস্থিত স্টেট ইউনিভাগিটি অব নিউইয়কে ইংরাজীর অধ্যাপক। ১৯৫৯-७० माल युनहारे वृत्ति निता ইমি ফ্রান্সের লিয়ে ও ক্লারমোত-ফেরাদ বিশ্ববিদ্যালয়ে নাটক সংক্রান্ত বভূতা দেন। এ সময়ে তিনি ইংলন্ড, ইটালী, হল্যান্ড এ বংগোম্লাভিয়াতেও বড়তা দিরেছিলেন। গেল ১৯৬৮ সালেও তিনি বভুতা প্রসম্পেই চেকোন্সোডেকিয়া, পোলান্ড, র্মানিয়া, হাপেরী ও যুগোম্লাভিয়া পরিভ্রমণ করেন। সম্প্রতি ডঃ পশ্কিন ভারতে এসেছেন এখানকার নাটাজগং সম্পর্কে কিছু অভিজ্ঞতা লাভ করতে এবং সংগ্র সংশ্রে আমেরিকার তথা প্থিবীর বর্তমাধ মাটাজগং বিবরে আমাদের কিছু শোমাতে। ভার মুখ থেকেই শোনা গোল, ভারতে আসবার আগে তিনি দ্রে প্রাচোর জাপান, কিলিপিন, থাইল্যান্ড প্রভতি দেশের নাট্যা-ভিনরাদি সম্পরেণ বডটা সম্ভব পরিচয় नाक करत धारमदाम । कनकाणात ७ ७ व काम, बात कहे मानिम अवस्थात्मत बारशहे তিনি বিশ্বরূপা খিরেটারের "বেগম মেরী तिल्हाम" ও कलार्धान्यद्व जन्मचित मार्हेगर-সবের অন্যতম 'মহোরাক্স' অভিনয় দেখে THE PL

নাটাকার, নাটাপ্রাহাকক ও পরিচালক, নাটালমালোচক, নাটাবিবরক অধ্যাপক শুকুতির এক নির্বাহিক সমাবেশে ভঃ



পপ্ৰিম গেল ৬ ও ৭ জুন ভারিখে ৰথাক্ৰমে "আমেরিকান থিরেটারের বডামান গতিপ্রকৃতি" ও "বডায়ানের বিশ্বরুপায়গু— প্রতিফুতি, বৈশিশ্টা, নবপ্রবর্তনা" সম্পর্কে বস্তুতা দেন এবং প্রতিদিন বস্তুতা শেহে जात्नाहमा ७ श्राप्यास्त स्वाग रामा। বর্তমানের মার্কিম নাট্যকগৎ সম্পূর্কে বড়তাদান প্রসংখ্য তিনি বলেন, বর্তমানের নাট্যাভিনর মাস-জ্যাপীলের (বৃহৎ জনতার প্রতি জাবেদদের) কোনো ধার ধারে দা, তার দৃণ্টি আল সীমিত দশকের প্রতি वारमंत्र कारह रन कारना विरामव जानमा वा বৰুব্য উপস্থাপিত করতে চার। আক্র আমেরিকান থিয়েটার রডওয়েকেই বোঝার না: আজ তার পরিধি বিশ্বত হরে 'অফ-রডওরে', 'অফ- অফ-রডওরে' পার হয়ে রিজিওনাল খিরেটারে গিয়ে পেণী**ছেছে। অথচ অফ্-রডও**রের माणि शताब भाग निय**ीत वि**भववारश्वत পরে। এবং প্রথম প্রথম 'আক'-রভওয়ে'র কোনো অভিনেতা-অভিনেত্ৰীর পকে ভার গ্রাসাজ্ঞাদন নির্বাহ করবার হতো উপার্জন कदाल महसूर दिन। शकाम मनदक्क धना

প্রধানত শেরপীরর, ইবলেন, শেক্স স্থ্রী-ডবার্গ প্রভৃতি ধ্রুপদী দাট্যকারদের রচনা অভিনয় করত। পণ্যাশ দশকের শেব দিকে ও বাটের দশকের গোড়ার বিকে এই ধারার পরিবর্তন ঘটিয়ে মতন নাট্-कातरमंत्र बठना मधन्य कता भावा हता और नमरत्रहे ज्यान वित "जः त्र्योति" अवादम অভিনীত হয়: বদিও বইটি প্রথম অভিনয় করার গোরব হচ্ছে পশ্চিম ব্যক্তিনের (১৯৫৯ সালে)। ১৯৬০-এর সমকে দেখা গেল, বছরের লেরা দলটি নাটকের ছব্যে একটি অফ-রডওরে'র মাটক আন পোল: 'অফ্-রভওৱে'তে অভিনীত নিজে নাটা-कारतत्र ब्रह्मा विश्वास्त्र 'शृहिन्तिसास' शृह्यस्त्रीतः লাভ করল এবং আর একথালি আক্ রডওরে'র নাটককে কেওয়া হল নাট্য-मधारनाष्ट्रकत (खार्चानिकिन्त्) भूत्रकात । जांक विद्यांतक जांकर्स 'অফ'-রডওয়ে' करतरब १ (५) तक-विकेषिकताल अवर (४) मन्त्रीकं मार्डकारिकारका अथम रक्षके निर्देश माठीकाव बराबम रव कमनन। जाकरकत नाग्रेक नवीत महत्त्वकः মুলক: মানুৱেছ ছবেছ বিভিন্নতাবোধ,

ৰুম্ চাটোকি পরিচালিত বারা আকাশ নিশতা ঠাকুর এবং রাকেশ



নিবলতাবোধ নাটকের উপজীব্য। মানুব बान, दवन जरभा আত্মিক বোগাবোগ আপনের জন্যে উন্নতা বা হিংসা-পরারপতারও আশ্রয় নিচ্ছে। "হ'ল আফ্রেড অব জান্ধানিয়া উল্ফ ?" নাটকে তারই পরিচর মেলে। মাদকসেবীদের নিয়ে রচিত জ্যাক গেলবারের বিখ্যাত নাটক ক্রেকসান" এবং বিখ্যাত রক-মিউজিক্যাল-স্বর "ছেরার" ও "ইরোর ওন দিং" (টুরেল-**ভূখ** ना**रें जननन्त**न) 'अय-उ७७(स'दरे म्बं ।

🧓 "অফ্-অফ্-রডওরে" থিয়েটারের জন্ম হরেছে মাত্র বছর আণ্টেক। এথানে অপেকারত অন্পবয়সী ও দুঃসাহসী নাট্যপ্রেমীদের ভীড়। এথানকার বেশীর ভাগ নাটকই প্রীক্ষানিরীক্ষাম্লক, যাদের

ভিতর দিয়ে বারি-স্বাতন্তা ফটে ওঠে। মিস এলেন স্ট্রাট, যিনি নাকি মেয়েদের খেলাধ্লার উপযোগী পরিচ্ছদ প্রস্তৃতের কাজে বিশেষজ্ঞতা অজন করেছেন, তারই পরিচালিত "কাফে-লা-মামা" এদের প্রধান বচিত কর্মকের। জা-ক্রদ-ভ্যান-ইভালী "আমেরিকা হুরুরে" এই অফ্-অফ্-ব্রডওয়ে'রই নাটক।

"রিব্রিন্তন্যাল থিয়েটার" গড়ে উঠেছে ুনিউইয়ক থেকে দ্রেবতী সানফান্সিস্কো, লস এঞ্জেলস্, ফ্রোরিডা প্রভৃতি শহরে। এসব জায়গার অভিনেতা-অভিনেহীদের একমার কামা হচ্ছে অভিনয় করবার সুযোগ লাভ করা: জীবনে নিরাপত্তা বাবস্থার জনে তারা আদৌ লালায়িত নয়। আগে নিউইয়কে'র ্বাইরের থিয়েটারগ**াঁল** রডওয়ে থেকে আগত দ্রামামাণ দলগুলির জনো উন্মুখ হয়ে থাকত: কিন্তু এখন তারা নিজেরাই নতন বইয়ের প্রয়েজনা করতে বাসত। অ্যাণ্টনী পার্রকিন্স ছিলেন একজন নামকরা অভিনেতা; তিনি এখন এক রিজিওন্যাল থিয়েটারের পরিচালক। এর পর আছে এরিণা থিয়েটার, থিয়েটার ইম দি রাউন্ড প্রভৃতি। ওরাশিংটন শহরের সাফলাম-ডিভ নাটক "গ্রেট ওয়াইন্ড হোপ" আমেরিকান নাটাকারের কামা তিনটি প্রস্কারই প্রিটজার জিটিকস এবং আইরিশ প্রস্কার লাভ করেছে।

সবশেষে তিনি এক প্রশেনর উত্তরে জানান ওয়াশিংটনের কেনেডি সেণ্টারে ন্যাশনাল থিয়েটার গড়ে উঠবার সম্ভাবনা দেখা দিয়েছে। 'জনসন' পরিচালিত সরকার म्यादा दिक्किश्वनाम थिएएछोद्दशः निव भवि-চালনার জন্য ন্যাশানাল ফাউন্ডেশন ইন আট'স্' প্রতিষ্ঠিত হয়েছে। এ ছাড়া সরকার একটি ব্রডওরে খিরেটাবের পরি-চালনভার গ্রহণ করেছেন বিদেশী থিয়েটার সম্প্রদারের অভিনর ব্যবস্থার জন্যে।

सामका का शन् किन-वह महा नागे-स्थानात कान्नरक व्यवस्त्र संशास्त्र केनक्र त्स्रम् कविष

किर्माक बहुशन कारणविकास क्षेत्र सम्महक

সম্প্রতি আমেরিকান ইউনিভাসিটি লেন্টার-এর উদ্যোগে "আমেরিকা যুক্তরান্টের দিব'কি ব্যার চলকিটোতহাস" সম্পর্কে তিন্দিন্ব্যাপী যে আলোচ্নাচল বসেছিল, ভারই অভভূতি কমস্চী ছিসেবে একেবারে ৯৯০০ সাল বেকে শরে করে ১৯২১ সাল প্রশিত ভোলা চলচ্চিত্রগর্নির মধ্যে বেশ উল্লেখযোগ্য কিছু ছবি চিত্রা-মৌদীদের দেখানো হয়েছিল। এর মধ্যে ছিল ঃ এডউইন, এস, পোটার-এর দি লাইফ অৰ জ্ঞান জামেৰিকান ফায়াৰুম্যান (১৯০০), नि द्वारे बनाबि (১৯০০) छि. ভাবলা, হিফিথ-এর দি লোনলি ভিলা (১৯০৯), বি লোনডেল অপারেটার (১৯১১), চালি চ্যাপলিন-এর দি ইয়ান্প (১৯১৫), ম্যাক সেনেট-এর এ ক্লেডার ডামে (১৯১৭) এবং উইলিয়াম এস হাট-এর দি টোলগেট (১৯২০) ও হেনরী কিং-এর **উলেব্ল ভেডিড (১৯২১)-**এর নির্বাচিত অংশ। এ-ছাডা চলচ্চিত্র-রসিকদের ডি. গ্রিফিথ-এর "हेम हेलादबन्न" (১৯১৬) এবং ভগলাস ফেয়ারব্যা কস-এর "मि **धी माल्किन्नान"** (১৯২১) ছবি দুখানিও সম্পূর্ণ দেখানো হয়। এই আলোচনাচক্রে আমেরিকার নিবাক ছবি সম্বধে একটি প্রারম্ভিক বস্তুতা দিয়েছিলেন সত্যক্তিৎ রায় এবং বিশেষ করে কমেডি िहर **ज्ञन्भरक राम्बर्ग किमानम मामग**्रन्छ। এর ওপর বিভিন্ন দিনে টীকা-টিম্পনী দেন এবং আলোচনায় অংশগুহণ করেন ঃ শমিক বন্দ্যোপাধ্যায়, শীতলকুমার গু,প্ত, মনুজেন্দ্র ভঞ্জ, লিপটন কোম্পানীর প্রচার বিভাগের বিশ্বনাথন, অতন, বসু, নিম্মাল, বসু, এবং অরুণ প্রামাণিক। প্রথমে যা মাত্র চলত ছবিরূপে সাধারণ দশকেন কাছে বিস্ময়ের কারণ হয়ে উঠেছিল, সেই ব্দিনিসই অচিরে কাহিদী রুপারণের কাজে কেমনভাবে বাবহাত হল এবং আরও পরে ডি. ডাবলা.. গ্রিফিথ-এর সান্টিধমিতার স্পলে একটি জীবত শিলেপর পর্যারে উল্লীত হল, ভা চাক্ষর দেখার সুবোগ দিয়ে এ-ইউ-সি চলচ্চিত্র-রসিকদের ধন্যবাদের পার হয়েছেন। বিশেষ করে আমরা ধন্যবাদ দেব : এ-ইউ-সির পরিচালক মিঃ রণ, ডি, ক্রিফটনকে এমন একটি সাথাক আলোচনা সভার আয়োজন করার জন্যে। অবশ্য নির্বাক চলচ্চিত্র দেখাবার আরোজন স্কিশ্ব হয় তখনটু, যখন চলচ্চিত্ৰগুলিকে নিৰ্বাক যুগের গতিবিশিষ্ট করে দেখানো সম্ভব হয়। ঐ সময়ে ছবির গতি ছিল প্রতি মিনিটে बाहे करहे। এখন হচ্ছে প্রতি মিনিটে নৰ্বই ফুট। এই দেড়াগভিডে নিৰ্বাক ছবিকে অবথা হাসাকর বলে মনে হর: বেটা না হওরাই বাছনীর।



ণীতাতপ-নিয়ুদ্রিত मार्गेगाना]



काक्सर माहेट्य कराव श्रातिक প্রতি ব্রুস্থতি ও পনিবার : ৬।টার श्रीष्ठ बाँचवात क द्वांतिक विमा ठाउँ। क क्षाणित

॥ तहना । भविष्ठाणमा ॥ CHARLES TO THE

१३ व् भावत्व १३ क्रीक्षक बरम्याभाषाम्, क्रांभगा स्मयी भारकारः इंद्रीशाबाब, मीजिया गण, गृहका ठटहालागा লক্ষ্মীলা ক্ষ্মীয়াৰ ক্ষমিকা কাস, প্ৰায় माना, श्रामारन्द्र बन्द्, बाजन्छी हरहोत्राशास हेन्स्सन बहुरवानावात. गीका स र्वाच्या स्थार ।

बारक कि अब रमार्क वायवी क्रवणीरक निर्माण मिरक्स भारतकावक मानील विन्ताम। कर्णा । सम्ब



স্ট্রডিও থেকে

ঠৈতালী লোব ছওয়ার ফলে বিশ্ব**জিতের** হাতে কোলকাভার আর কোনো ছবি রইল না। (তপেশ্বর প্রসাদের 'প্রতিবাদ'এর কাজ শেষ হয়নি কটে, তবে বাণিও নেই বেশী) धक्यात वरन्वराज विश्विष्ट निर्म स्व इतिका করবেন সোট ছাভা।

সে ছবির নাম নিশ্চরই জানা আছে সবার। তবুও বাল ছবির নাম 'র**ভাতলক।**' বিশ্বজিৎ ও'র বিপরীতে নায়িকা হিসাবে কন্টাকট করেছেন সন্দেরী হেমা মালিনীকে। এবং এ-৫ শ্নেলাম নায়িকাকে বাংলা শেখানোর জন্য বিশ্বজিৎ একজন মাস্টারও রেখেছেন ানজের থরচায়। এ প্রসংখ্য একটা কথা জানাই, হয়ত আপনারা অনেকেই জানেন না হেমা মালিনীর মা বাংগালী। অবশ্য হেমা ছোটবেলা থেকে অনা পরিবেশে মানুর হওরার দর্ন বাংলা ভাষাটা তেমন করে আয়ন্ত করতে পার্রোন, তাই সহ্দয় প্রবোজক বিশ্বজিতের এই ব্যবস্থা গ্রহণ।

'র**ভাতলক'** পরিচালনা করবেন বিশ্ব-জিতেরই অভিন্ন হাদয় বন্ধ, অজয় বিশ্বাস আর সংগীত পরিচালনার দায়িত নিয়েছেন হেমণ্ড মুখোপাধ্যায়। কাজ বন্ধেতেই হবে।

धर्यात अक्रो क्या दला श्रदासन। দানধ্যান সম্পর্কে বিশ্বজিতের যথেন্ট স্থাম আছে। বাংলাদেশের দর্শক তাকে বাংলা ছবিতে আগের মত আর না পেলেও চিত্রজগতের প্রতি অব্যাভাবিক দুৰ্ব'লতার কথা তিনি জানেন। বাংলা চিত্রজনত বিশ্বজিজের কাছ থেকে न्द्रसम्यः वरत्रद्र संद्राक्यात किन्द्र मान स्म्बात जागारे करत कि? जिन हों श्रासना

Agricultural de la companya de la c

সংবাদ জেনে বন্ধের দর্শক ও চিত্রজগত তাঁকে কতটা সম্মান দিল্লে তার থেজি এখানকার দর্শক রাখে না কিল্ড বোলকাতার বিশ্বজিং ছবি করছেন:-এ

সংবাদ এথানকার সাধারণ দর্শক ও চিত্র-श्रद्धल गाणा काणिरतस्य व्यत्नकथानि। क्षेत्रः তার কিছু সাড়া বিশ্ববিদ্ধ নিজের মনেও যাখতে পারছের জাগা ভরি। 👙

কালেই তিনি কি পারতের বা স্থত-তিলকের বাল কোলকাভারেই কোলা জাঙা প্টাডিওর করতে? হয়ত খরর বিদ্যালয় হবে, क्षिण्ड मुक्ता नाव बाती बारणाह[े] हिन-জগতের কথা তার অন্ডাত একনার ভাষা উচিত। জানি কোলকান্তার রাজনীতি আছে. নোংরামি আছে, তবাও এখান মেকেই নিজান বন্ধে গেছেন, তার জনপ্রিরভার বলৈছে। এখানেই। সভেনাং তার কাছ থেকে বাঁলো रमण वरमदारण्ड म_र-এको मारमद **आणा**ई गृथः करत मा. तृष्णि-रहाष्ट्रणारस्य **अव-स्थानी** কানাগলিও অন্তত খ**্ৰে গেতে চার**া

গ্রাম বাঙ্লার চিয়ণ্ডন সমেরেখ-সংখ্যত আর কুসংস্কারের বিরুদ্ধে "বাছবিশ ভাষার" একটি মূর্ত ভেহাদ। পানীয়ালের সব্জস্পরের আডালে বে বেশনা আর কালা রয়েছে, এই ছবির কাহিনী তার ছবে বিষয়বস্তু। দীনবন্ধ, চট্টোপাধ্যার 🖟 🖷 স্কুমার বস্প্রযোজিত চিন্তারণ প্রোভ্যক সংস-এর প্রথম অর্থা 'লডীশু ভারমা ছবির করেকটি গান শৈলেস রাজের সংশ্রে ইণ্ডিয়া ফিল্ম ল্যাবরেটারতে ইভিম্নার বাণীকণ্ড হয়েছে। চিত্ৰ মঞ্চের **অনহিত্র** সাংবাদিক দিলীপ দত্ত এই ছবির কাছিলী

শ্রকবার ১৯শে জ্ব শ্ভারম্ভ রামসীতার অপর্প লীলা-বৈচিন্ন-মহাবলী হন্মানের দ্বেশি বিজয় অভিবাদ...



মিলা নিউ সিনেয়া ब्र भागी हेन्हेली - भूवीमा - कम्भना - शीभक - श्रीनामभूत हेकीस - ब्राह्य क्रीकृष - गरुष्काय क्रेकी - देनदाहि निरनमा ও अन्याना विद्यार्थ

কুমেলীর সেটে সুমিতা সান্যাল এবং ক্যামেরাম্যান সেমেশন বার্ম।



রচনা ও পরিচালনা করছেন। চিত্রনাটাসম্পাদনা-চিত্রগ্রহণে আছেন যথান্তনে
পরিতোষ চন্তবতী, রবীন দাস ও শংকর
গ্রহ। বাঙলা চলচিত্রের প্রথ্যাত শিল্পীসমন্বরে গঠিত এই ছবিতে করেকটি নতুন
মুখ দেখা যাবে। বর্তমান ইংরাজী মাসের
তৃতীয় সম্ভাহে কাহিনীকার-পরিচালক
দিলীপ দত্ত তার ইউনিটসহ, বহিদ্শা
গ্রহণের জন্য বীরভূম যাত্রা করছেন বলে
দোনা যাছে।

বহুদিন বাদে কলকাতার সব স্ট্রিউ-গুলোর কাজ চলছে দেখতে পেরে ভালো লাগল। অনেকদিন এমনটি চোখে পড়েন। কনক মুখাজীর 'দাবী', বিজয় বসুর 'নবরাগ', বিভৃতি লাহার 'রঞ্জরী অপেরা', সলিল সেনের 'রাজকুমারী', স্নাল বসু-মাল্লকের 'জয়-জয়ণতী' ইত্যাদি নিয়ে পাঁচটা স্ট্রিউএই জয়-জয়াট।

হযতো আবার আসছে সপ্তাহে মন্দা যাবে স্ট্রভিও পাড়া। তাতো হয়ই! জোয়ার ভাটাইতো নিরম। তবে এখন বে স্কুপ দ্বাভাবিক স্কুলর হাওয়া বরে চলেছে সারা সিনেমা রাজ্য ভিরে চিরদিন এমনটি চল্ক এটাই কাম্য।

—নিৰ্মাণ ধর

মণ্ডাভিনয়

চলন্ডিকা'র 'সতিতাল বিদ্রাহ'ঃ
প্রাধীনতার শৃংখল ছি'ড়ে মুক্তির দাবীর
কথা যোদন আকাশ বাতাস ধর্নিত করেছিল সে সময়টা আমাদের জাতীর
ইতিহাসের এক গোরবমর অধ্যায়। বাংলার
যে সব নাটক এই অধ্যারের ঘটনাকে
সংঘাতের দ্বারতার মুখর করে তুলেছে
সাত্তাল বিদ্রোহ' তার মধ্যে বিশেষভাবে
উল্লেখযোগ্য। কালি, মহুরার আবেশে নীড়
বে'ধে যেসব সহজ, সরল সাত্তালেরা বাস
করতো, যাদের দিন বরে যেতো মাদশের
ভালে তালে, তাদের ওপরও এসে পরলো

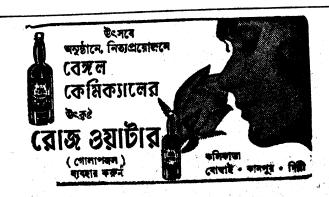
নাটকের প্রতিটি শিল্পী আন্তরিকভাবে চরিত্রের অতলে ডেবুব যেতে পেরেছিলেন বলে নাট্যাভিনরে প্রাণের ছোরা ছিল সব সমরেই। সাওতালদের দুর্বোধ্য ভাষা কি অনারাসে শিল্পীরা আরত্ত করেছিলেন। এই সব ব্যাপারেই নির্দেশক স্বোধ রার্টোধ্রীর নিঃসীম নিন্তাই স্পণ্টতা পেরেছে। অভিনরে বিশেষ নৈপ্রণ্য দেখান যারা তারা হোলেন প্রভাত ঘোষ (কিন্তা), স্বভাষ মিত্র (সিধ্র), স্ব্বাধ রার্টোধ্রী (কান্), মনতোষ বস্ব (ম্বেরী), রমেশ রার্টোধ্রী (মহেশ), সমীর কর (রিচার্ডাসন), দাণিত চক্রবর্তী (তুফানি)।

অসাধারণ অভিনয় করেন অলিনা মিত্র স্ব্ৰিয়াণ চরিতে। চরিত্রটির সাথে তিনি নিজেকে একেবারে বিলীন করে দিতে পেরেছিলেন। শ্রীমতী মিত্রের চরিত্র-চিত্রণ নিঃসন্দেহে সমগ্র নাটাপ্রযোজনার একটি বিশিষ্ট সম্পদ। অন্যান্য করেকটি ভূমিকার ছিলেন অমর ঘোষ, অজিত মুখাজ্ঞী, মাথন ঘোষ, সাব্ব কর, রতন ঘোষ।

নাটকটির মঞ্চসম্প্রা প্রভাবিকতার প্রাণবন্ত হয়ে উঠেছিল।

กอนผลการ সমাজ-দর্পণঃ সম্প্র থিয়েটার সেশ্টারের বার্ষি ⊭ ডংসব উপলক্ষে সংস্থার তর্ণ নাট্যকার দিলীপ দে রচিত প্রমাজ-দপ্রণানাটকটি স্থানীয় নৃত্য গোপাল স্মৃতি মন্দিরে সাফল্যের সংক্রা মণ্ডস্থ হয়ে গেল। নিদেশিনা এবং সংগীত পরিচালনার দারত্বে ছিলেন বথাক্রমে পণ্ডান্ন ভট্টাচার্য ও বাস্বদেব গোস্বামী। বর্তমান সমাজ ব্যবস্থার নানা সমস্যা ও সমাধানের এক স্কুদর প্রতি**ক্**বি প্রশানীত হরেছে এ নাটকে। অভিনয়ে কৃতিত্ব প্রদর্শন করেন বাসণ্ডী ह्याग्रेखी, त्य्रमारमः यत्रः ७ मिनीशः सि । অন্যান্য ভূমিকার ছিলেন মণোল দত্ত, শৈলেন মুখাজী, পালালাল চ্যাতাজী, উদর রার, আশা দেবী, সভা দেশী, নিতাই দত্ত, नक्तीतक्षत याताकी उ श्लातन छहाहार्य। অনুষ্ঠানে সভাপতি ও প্রধান हित्त्व छेशीन्थछ हिल्लन एवनातावन गर्ण । अवर जारवामिक इत्यन्त्रकृक लाज्यांमी

চন্দ্রালিকাঃ বর্ষমান গত ও জ্ন রারে কেডারেশন ক্ষ্ম মেডিকেল রিপ্রেজেনটে-টিভস এসোলিরেশনন অফ ইন্ডিয়ার ৭ম বাংসারিক উৎসব উপলকে বর্ধমান রেণ্ডরে



विकारिकारन मुर्जावन नीरवन्त्रनाथ स्ना-ক্ষুত্র শরিচালনার ভারতীর ন্তাকলা মলিবের চন্ডালকা ন্তানাটা প্রদািত হয় ৷ শ্তানাটো প্রকৃতির ভূমিকার কুকা बाब, भारतन कृषिकात न्याना रामना छ। उ অন্যান্য ভূমিকার মানসী ছোব, রত্যারলী रवाय, तिक्कू. छाम, जुनै, जात्वा एम, कुका হালদার, প্রবিমা হালদার, মিডা পাল ও চৌধরে । প্রভিনয় করেন। সংগীতাংশে সংগীত পরিচালক নিম'লেন্দ্র विश्वाम, भौता क्रोध्या ও कालन वाम দশকিদের অকুণিঠত প্রশংসা অর্জন করেন। কাজল রায় মেডিকেল রিপ্রেক্তেনটেটিভস এসোসিরেশনের-এর পক্ষ থেকে শিল্পীদের অভিনাদন জানান। সংস্থার সম্পাদক অসিত চক্রবতী উদ্যান্তাদের ও উপস্থিত দশক-भ फलीएन सनावाम कानान।

विविध সংবাদ

রাজবল্লভণাড়া ব্যায়াম সমিতি: গত ২২ মে মহাজাতি সদনে 'রাজবল্লভপাডা ব্যায়াম সমিতি' প্রখ্যাত সাহিত্যক ভারাশতকর বন্দ্যোপাধ্যায়ের সভাপতিছে উদযাপন করলেন তাদের ৬৩তম বাধিক উৎসব। প্রচীন রীতি অনু**যায়ী সমুদ্ত** প্রেক্ষাগৃহটি স্কুসন্জিত করেন এরা। বেদ পাঠ, প্রাণতবাচন ইড্যাদিতে **স্চনা হয়** শ্বভ উৎসবান্তোনের। উদ্বাধনী সংগতি পরিবেশন করেন শার্মণ্ঠা ঘোষ। স্বাগত সম্ভাষণ জানান সামাত্র সভাপতি জননেতা ^{খ্র}।হেমন্তকুমার বস্তু। তংপরে অনুষ্ঠিত হয় যে গ্রায়াম প্রদর্শন, আবৃত্তি, নৃতা, গীত ইত।।দি অনুষ্ঠান। সভাপতি ডঃ তারাশ•কর বদেগাপাধাায় মহাশয়ের ভাষণের পর সাংস্কৃতিক শাখার সভারা অভিনয় করলেন 'ভোলানাথ কাব্যশাস্থীর পৌরাণিক নাটক 'বামনাবতার'। শিশ্য-শিল্পীগণের নাচ গান অভিনয় দশকিদের বিমোহিত করে রাথে। নটেকটির পরিচালনা করেন শ্রীপ্রভাতকুমার ঘোষ। সংগতি ও নৃত্য শিক্ষক শ্রীহরিদাস মাথে।প্রধায়। সংগীত পরিচালনা শ্রীনলিনীকান্ত করণ। অভিনয়ে অংশ গ্রহণ করেন সর্বশ্রী সুনীতি দাস, কার্তিকচন্দ্র দাস, শুমিন্টা খোষ, কুঞা দাস, ঝুমা ঘোষাল, প্রভাত ঘোষ, দীপালী দাস, দলোল ঘোষ, বীরেন্দ্র ঘোষ, শিবরঞ্জন ভট্টাচার্য, শিবস্কের সিংহ, কানাই ঘোষ, রাধিকা-মোহন মুখাজিল, রবীলু দে, রুবি ঘোষ, मार्थना पछ, मूथमा मौ, भिश्वा, माला, यूना, মন্দিরা, জয়া রীণা, কলপনা ইতাাদি। অন্ত্ঠানে প্রস্কার বিত**্ণ করে**ন শ্রীহেমণ্ডকুমার বস**্। প্রথাতে নট হ**রিপদ দাসের আকৃষ্মিক পরশ্রেকগমনে শ্রন্ধাঞ্জলি নিবেদন করেন শ্রীশিবনাথ ভট্টাচার্য ও শ্রীগোকুল মুখাজা'। পদ্ধার বিশিষ্ট কবি-রাজ গ্রীহেরন্বনাথ শাস্ত্রীপ্রাণাচার্য উপাধি প্রাণ্ড হওয়ায় সম্বর্ধনা জ্ঞাপন করা হয়। পরিশেষে ধন্যবাদ জানান সমিতির অন্যতম

এখানে পিয়ার-এর সেটে পরিচালক অভিনেতা দিবগৈ মাধার্মি অপণা সেনকে নির্দেশ দিকেন। ফটোঃ আম্



প্তিপোষক প্জাপাদ স্বামী ত্রিপ্রানন্দ মহারাজ।

তর্শ অপেরার হিউলার: ২০ জনুন মহাজাতি সদনে তর্ণ অপেরার হিটলার অভিনীত হবে সম্ধাা সাডে ছটায়।

'আমৰা সৰাই': সম্প্ৰতি চেতলার আমরা স্বাই এক মনোজ্ঞ রবীন্দ্রসংগীতা-ন্র্পান করেন তাঁদের নির্ক্তস্ব প্রাংগ্র পিয়ারীমোহন রোডে। এই সংস্থার শিশ্ বিভাগ, শ্রীঅমিত রন্ধের নিদেশিনায় ভাক-ছর' মণ্ডম্থ করে। শিশ্ব শিক্সীদের মধ্যে অমল, পিশেমশাই ও স্বধার অনবদ্য অভিনয় দশকি মন জয় করে। এই অনুষ্ঠানে অকুঠে প্রশংসা পায় 'ঋত্রকা'। শ্রীমতী কুমকুম দত্তের নৃত্য পরিচালনায় কুমারী মনমনে দত্ত ও কম্প্র সর্বাধিকারী বিশেষ দক্ষতা দেখান। কণ্ঠসংগীতে শ্রীমতী অনুরাধা ঘোষ ও বুলাই রুক্ত বিশেষ কৃতিছ দেখান। সর্বপরি যন্ত্রসংগীতে শ্রীরামমোচন ভট্টাচার্য সমস্ত অনুষ্ঠান্টিকে প্রাণবন্ত করে তোলেন।

রবীণদ্র-জয়ন্তী: লণ্ডনে 'সাগর পারে
পঠিকার ওরফ থেকে রবীণ্ড-জয়ণতীর
আয়োজন করা হস ৩১ মে। সভার প্রধান
অতিথি হন ডেম সিবিল থন'ডাইক।
লা কণ্টিনেন্টাল সিনেমায় শাণ্ড পরিবেশে
শ্রীমতী থন'ডাইক রবীণ্ডনাথের মৃতিতে
মালা পরিয়ে দেন। তারপর বলেন, যুক্ত
ববীণ্ডনাথের কথা। কবিগুরে লণ্ডনে এলেই
ভানের সংগ্য দীঘা সময় কাটাতেন। নিজের
কাবতা পড়তেন। গান শোনাতেন। তিনি
আরও বলেন, রবীন্টনাথের ক্বিতা শুধ্ব
ভারতের জন্য নয় স্ব' দেশের স্ব'কালের

ডেম সিবিল থনভিাইকের বয়েস ৮৮।
লাঠিতে ভর করে অতি কল্টে দাঁড়াছিলেন।
কিন্তু ববীন্দ্রনাথের কবিতা আবৃত্তি করতে
করতে অন্ত্রাণিত হয়ে ওঠেন। হাত তুলে
নাচের ভংগীতে বলে যান। তার স্কেলিত
কন্টে প্রোভারা মুখ্য হয়ে থাকে। তারপর
রবীন্দ্রসংগীতের অনুষ্ঠান হয়। অংশ গ্রহণ
করেন হবিত দাস, স্গত দাস, পশ্পা ধর,

নটেক

व. एक	
॥ শচীন ভট্টাচার্য ॥	
সন্থাটের মৃত্যু	0.60
আশ্নেয়গির	0.60
ু॥ ভোছন দৃহতদার ॥	
অন্তর্গীণ	२.9६
অমর ভিয়েতনাম	0. 00
॥ পৃথ্যীশ সরকার ॥	
न वंशाङ्क	0.00
কন্যালগ্ন	२ .9७
॥ শ্ৰহসত বস্ ॥	
রায়	২.৭৫
॥ কলোল মজ্মদার॥	
আষাঢ়ে ঝঞ্চাট	२.१७
॥ অমরেন্দ্র দাস ॥	
এর শেষ নেই	২ ে ৫০

পরিবেশক ঃ **অমর লাইরেরী** ৫৪/৬ কলেজ স্থীট, কলি-১২

The state of the s

ক্ষান্ত বিশ্বস্থার শীংটকার পালার ক্ষান্ত্রীয়কার লাগ্তিগোপাল





ছবি বিশ্বাস স্মৃতি প্রেস্কারপ্রাম্ত ঝিণিক ুপোকার কামা নাটকের একটি দৃশা।

মানুলা বিশ্বাস ও মজান্তী সরকার। তবলা বাজান প্রস্ন রায় ও প্রস্ন চক্রবতা। এই ক্রেক্টানে 'সাগর পারে' পাতিকা আত্মপ্রকাশ করে। পাতিকার প্রছেদপট সৈয়দ মাজতবা আলোর আঁকা। বাংলা দেশের ছবি। স্ব কেশা উচ্চ মানের।

আদিক ১০ টাকার কিপিততে লাভ কর্ন কল ওরালড লটাকভার্ড টানজিপ্ট (জাপান মডেল) ভবল প্রানজিপ্টর নাইট-লালপ ফিট করা। ইংরেজীতে আপনার অভারে পাঠান । Allied Trading Agencies (A.C.) P.B.2123, Delhi-7 त्राप्तः गार्ट्यः गान्तम् विकासः क्रिकारं गर्ट्यः गर्दः च गोन्द्रः गृहे राक्ष्यः व्यापः विकासः गर्वः क्ष्यान्तिः व्यापः क्ष्याः गोर्द्यः। विकासः गर्द्यः क्ष्याः क्ष्याः व्याप्तः क्ष्याः व्यापः क्ष्याः व्यापः क्ष्याः व्यापः क्ष्याः वर्षः क्ष्याः क्ष्याः व्यापः वर्षः गर्द्यः क्ष्याः वर्षः क्ष्याः क्ष्यां वर्षः क्ष्याः। गर्द्याः क्ष्याः वर्षाः क्ष्यां क्ष्यां वर्षः वर्षः

রবীন্দ্র-সর্বাচী । গত ও ও জ ক্রে আসান্দ্রনাল রবীন্দ্রজ্ঞানসন সামিতির উলোলে ভুলাক ইনান্টিটিউটে কবিন্দ্রের মড়োসক্তম জন্ম-সর্বাচী অন্তিটক হর। ক্ষাণাড়িক ক্ষুক্ত বিশালাক ক্ষুক্ত নামার ক্ষা ক্ষান্ত ক্ষান্

वदादत वार्निम रमनाय

আরে নার দশীনন বাদি। তিরিশে জন্ন
সংখ্যার বালিনের জন্পালানট প্রেক্তাথ্য
শহরের নেয়ন আরু আমদিরে সন্ধানত
আতিথিনের নিমের মন্ধারত হরে উঠবে। সব
আরোজনের প্রার শেষ। উৎসবের প্রধান
রীআলকমেত বাওলার বখাসখ্য চেল্টা করছেন
মুদ্ধি বহুরের তের্প এই চিরোৎস্থকে
সাকল্যমিন্ডিত করে তুপতে। আরোজনের
মহড়া দেখে মনে হর কাঁবা ভেনিসের
তুলনার বালিনি আর এতউ্কুও পিছিরে
নেই। বিশেষভাবে গ্রণগত বিচারে।

এ পর্যাত আঠাশটি দেশ আমন্ত্রণে সাড়া দিয়েছে। কেউবা এক আবার কেউবা একাধিক ছবি নিয়ে উৎসবে বোগ দিচ্ছেন এবার। 'লা: ইম্মরতাল' ও 'ট্রান্স ইয়োরোপী-য়ান এক্সপ্রেল' খ্যাত ফরালী চিচ্চ পরিচালক আলা বোৰ গ্ৰিলেং এর 'লা ইডেন এবং আপ্রে' ধরাসী প্রতিৰোগী ছিসাবে নামছে আসরে। গ্লিলেং-এর ছবি বালিসে এই প্রথম নয়, এর আপে গুবার তার ছবির প্রদর্শনী ছরেছে সেখানে। রুনিভাসিটির একদল ছাত-ছাত্ৰী তাদের বোহে মিদান **জাবন, প্রেম-ভালবাসা, মৃত্যু, রাজনী**তি নিয়ে ছবির পণ্প। আমেরিকা পাঠাচ্ছে এবার দুটো ছবি---'ডারানোসিস ইন ৬৯' ও 'আউট অফ ইটা।' প্রথম ছবির পরিচালক ব্রায়ান দ্য পালয় গত বছর 'গ্রিটিং স' ছবির জন্য রৌপ্য ভল্লফে পেয়েছিপেন। সত্যজিং-বাব্র কাৰে শহেরছিলাম 'মিড মাইট কাউৰয়' **ছবির নায়ক জন** ভয়েট নাকি স্ফার অভিনয় **কর্মেছলেন**— অসম্ভব অনেকের আশাছিল সেরা অভিনেতার প**ুরঙ্কার বৃত্তি ভলেটের হাতেই** যাবে। কিম্ভু যে কোনো কারণেই হোক তা হয়নি। এৰারে আমেরিকা খেকে জন ভরেটের ছবি আসহে 'আউট অফ ইট।' দেখা বাক এবার কি বটে? শোনা বাচেছ 'মিডনাইট কাউব্যেশ চাইতেও ভালো অভিনয় করেছেন মাকি এ ছবিতে।

কভালী এবারও পাঠাছে দুটো ছবি।
বার্ণাডো বেয়োল্নীশর 'দি কনফর্রিফট'
(আলবার্ডো আরভিরার ভাহিনী) আর
ভিত্তো রাসের 'লা উর্লো।' আলকের
ইভালীর ভিত্তবাতে আল্ডোনিওমি বা
ফোর্রানর চাইতেও কোনো কোনো মইলে

বেশ জোর পলার নাম দুটি বলা হচ্ছে তা হল এক—বৈটোলনুসি অপরটি বেলোলিওর। দি কনফর্মানটা মোরাভিয়ার জনপ্রির উপনাস। কেটোলনুসি যথাসম্ভব সাছিতা-রস বজার রেখেই চিন্রায়িত করেছেন কাহিনীটিকে। কিন্তো রাসের ছবি কিছ্টা স্ববিদ্যালিশিটক ধাঁচের আ্যাডকেঞ্যর।

গতবারে স্ইডেনের 'মেড ইন স্ইডেন' প্রক্তৃত হরেছিল। এবারে সেখান থেকে আসছে 'কালে'ক হিস্টোরয়।' পরিচালক—রয় এন্ডারসন। ইনি ইতিপ্রে বো ওয়াই-ভারবার্জের 'আাডলেন-৩১' ছবির সহকারী প্রয়েজক ছিলেন। এটাই তার প্রথম ছবি। যদিও প্রথম ছবি। বাতে এবার অক্ষ্ম থাকে সেদিকে দ্ভিটরেশেই ছবিটা নির্বাচিত হয়েছে আশা করা

অন্যান্য যে কটি দেশ ছবি পাঠাছে তারা হোল বেলাজয়াম (গ্রান্ড গ্রুইগনন্ধ-পাট্রিক লিদ্রা), ইস্রায়েল (এ াস্টমার ইন দি ডেড সাজন –মাদে ি রাম্ –কালোস দাউরা, আর্জার্টনা লেন হেরিডে রোম—ডেভিড সিট্ডেল), প্রেজিল (ও প্রফেডা দা ফোম—মানিয়্ন ভালোর দিনরাহি।' কানাডা ম্পোমলাভিয়া, বিটেন, নেদারল্যান্ড, অস্ট্রেন্ডার ছবি পাঠিয়েছে—এখনও প্রাক্ত উৎসব প্রদর্শনী হয়নি সে সব ছবির। তবে প্রতিরোগতায় এসব দেশও থাকছে নিশ্চিড।

সপতাহব্যাপী ইয়ং ফিলম বিভাগে এবার দেখানো হবে ল্যাতিন আমেরিকার যে কটি দেশের ছবি সেগ্রিল হলো বলিভিন্ন, মেক্সিকো, উর্গ্রেম, প্রেজিল, আর্জেন্টিনা ও ভেনিজ্বয়েলা আর রেট্রোন্পেকিটড বিভাগে দেখানো হবে ফ্রেড প্র্যান্টায়ার ও জিজার রক্তাসের 'টপ হ্যাট', 'স্ইং টাইম', 'কেরার ফ্রি' স্যাল উই ভান্স', 'বি গে ডিডেন্স', 'বর্ণাতা' ও অন্যানা ছবি।

সব মিলিরে এবারের আসম বার্লিন মেলা নজুন চমক নিমে নতুনভাবে হাজির হবে। প্রস্তুতি জোর চলছে। ব্রটি সেই এতটুকু।

_factories



তানদেন পাল্ডের স্মৃতিভপ্র : তাদ-লেন পাল্ডে স্মৃতি পরিষদ ও বদ, ভট্ট গণগীত-সমাজের পক্ষ থেকে কয়েকনিন আগে উত্তর কলকাতার বিজয় ভট্টাচার্যের া্হসভায় জাতীয় অধ্যাপক ডঃ সত্যেদ্দনাথ গস্র সভাপতিছে স্বর্গত পণ্ডিত তানসেন পাণেডর মৃত্যুবাধিকী উপলক্ষে বত্নান গুগের কয়েকজন বিশিণ্ট **ध**्रभगीत्क নন্বর্ধনা ভরাপন করা হয়। সভারশ্ভে দংগীত-সমাজের সাধারণ সম্পাদক শ্রীকৃ**ঞ্**-ফালী ভট্টাচার্য মঞ্চালাচরণ এবং রমা **ভট্টাচার্য ও পাপিয়া সরকারের জাতী**য় ডঃ সত্যেন্দ্রনাথ পর । পুণীদৈর মাল্যদান করেন। সম্বাধিত মুপদীদের মধ্যে ছিলেন সর্বশ্রী যোগেন্দ্র-নাথ বল্দ্যোপাধ্যায়, বিষ্কৃপ্রের সত্যকিৎকর বন্দ্যোপাধ্যায়, গৌরীপর্রের বীরেন্দ্রকিশোর রায়চৌধ্রী, সেনী ঘরানার মহম্মদ দ্বীর থা, হরেকুটীরের উদয় ভট্টাচার্য', কলকাতার **জয়কৃষ্ণ সান্যাল ও জনাব ফহীম্নিদ্দন** ডাগর। এরপর উস্ত ধ্রুপদী সাধকদের মূপদ সংগীত এবং বীরেন্দ্রকিশোর রায়-চৌধারীর ধ্রুপদাঞ্সের সারশৃশ্পার বাদনে এক মর্যাদাগম্ভীর পরিবেশ গড়ে ওঠে। এ'দের সংগ্র স্যোগ্য পাথোয়াজ সংগত ফরেন শ্রীরাজীবলোচন দে।

সবশ্যের অনুষ্ঠান এ-উৎসবের প্রধান উদ্যোক্তা বিজয় ভট্টাচার্য ও জনাব ফহী-মন্দিন ভাগরের যৌথ আলাপ ও ধ্পেন গানে মুক্ধকারী অনুষ্ঠান মনে রাথবার মত।

সভোদ্যনাথ বস্ তাঁর ভাষণে সংগীতের প্রাচনি ঐতিহ্যবক্ষার সংগ্য নব ্পস্থিট প্রস্তাসের ত্বারা তার জীবনীশন্তি ব্দিধর প্রপর জার দেন। প্রধান অতিথি হারেন্দ্র-নাথ গাংগালী প্রশাদ সংগীতের আলোচনা প্রস্তাপ ভাগর ঘরানার বিখ্যাত গ্রেণীদের এবং পাণ্ডেজীর জ্যেন্ট প্রাভা নাসির্দ্দিন ধাঁর আশ্চর্কা সংগীতের প্রসারে সপ্রত্থ ভিরেশ করেন। পরিশেষে সভার উপস্থিত গ্র্থীবৃদ্দ ও অতিথিদের ধন্যবাদ জ্ঞাপন করেন বারেন্দ্রকিশোর রারচৌধুরী।

লোভয়েত শিল্পী ঃ পেনারড'-এ সম্প্রতি সাংস্কৃতিক সফরে ভারত সরকারের অতিথির্পে ভারতে আসেন দুই সোভিয়েত শিক্পী—অটার গডেকিক ও মির্জা জাদে-হিম। কোলকাতায় থাকাকালীন একম:১ 'সোরভ' সংগীত-প্রতিষ্ঠান আয়োঞ্চিত 'রবীন্দ্রজয়নতী' অনুষ্ঠানে এ'রা উপস্থিত হয়েছিলেন। উভয় শিলপীই ভারতের প্রাচীন শিলপ ও কুন্টির প্রতি শ্রন্থা জ্ঞাপন করে বলেন, গত বছর স্লতান গাজী বেকভ কোলকাতায় এসে এখানে সংগৃহীত ভারতীয় সংগীতের উপাদান অবলম্বনে রচিত তার সংগীতের একটি ডিস্ক সৌরভ-এর সম্পাদিকা নমিতা মুখো-পাধ্যায়কে উপহার দেন।

প্সারভ'-এর ছারছারীরা গীটারে ও সেতারে রবীন্দ্রস্গীত এবং করেকটি কণ্ঠ-সংগীতে রবীন্দ্রগীতি পরিবেশনের পর প্রেম ও প্্জা' শীর্ষক একটি গীতিনাট্য আলেখা মঞ্চম্থ হয়। সংগীতাংশে বাণী ঠাকুর, কল্যাণ মুখার্জি, রুচিরা মুখার্জি, তন্ময় চট্টেপাধায়, দিনংখা ঘোষ এবং অন্যান্য স্বাই এবং দ্তো ছিলেন দীপালি রক্ষিত, অসমিয় ঘোষ ও মণিকা দে।

বীবাপাদি বঙ্গীত ব্যাহ্ম : দক্ষিণ
শহরতলীর বেহালার শোধিন নাট্যসংস্থা
বীণাপাণি সংগীত সমাজের সভাগণ গত
০০ ৫ ৩১ মে যথাজমে প্রকাশ চট্টোপাধ্যায়
ও অতুল চক্রবর্তীর পরিচালনায় শচীন
সেনগ্রুপ্তের 'সিরাজন্দোলা' ও বিধায়ক
ভট্টাচার্যের 'মাটির ঘর' নাটকদ্খানি
ম্থানীয় এ পি রার ইনভিট্টেটে সাফল্যের
সহিত মণ্ডম্প করেন। গোলাম হোসেন ও
শংকরের ভূমিকাদ্টিতে প্রাণকত অভিনয়
করে রথেন্ট নাট্-নৈপ্ণা প্রদর্শন করেন
স্নীল ভট্টাহার্য। সভ্যপ্রসয়, অলক, উৎপল,

म्बनागत विवादम् मन्त्रीक महत्त्रासम्बद्ध স্রসাগর হিমাংশ, সংগতি সম্মেশনের দশ্দিনব্যাপী একাদশ বাৰ্ষিক নিশিষ্ট ভারত সংগতি প্রতিযোগিতা বালিগঞ্জ স্থিত তীৰ্থপতি ইনস্টিউলানে বিশেষ সাফলের সংগ্র সম্প্রতি অনুষ্ঠিত হরেছে। ভারতের বিভিন্ন প্রান্ত থেকে প্রচুর সংখ্যক প্রতি-যোগী এ-বছর প্রতিযোগিতার অংশগ্রহণ করেছেন। যে সকল সংগতিবিদ বিচারকের দায়িত্ব পালন করেন, তাদের মধ্যে ছিলেন দ্বিজেন চৌধ্রী, বিভূতি দ**ত্ত, রখ**ীন क्षीयुती, अप्तार नाताश्य, कृत्यम महामा-भाषााय, স्कृतिका भित्त, **आवाधना बरम्या**-भाषाात्र, कुक्कन्त्र वरन्त्रा**भाषात्र, मृश्यित्रा** মাুখোপাধ্যায়, কা**লীপদ দাস, হিমন্থ**েরাঙ্গ-চৌধ্রী, নীহার্রবিন্দ্ **চৌধ্রী, স্নীল**-রঞ্জন বস্ত্র স্বপন মুখোপাধ্যায়, কাল্ড মৈত্র, গৌর বসাক ও আরও অনেকে। বে সকল প্রতিযোগী বিভিন্ন বিভাগে প্রথম স্থান অধিকার করেছেন, **তাঁদের নাম দেওরা** इस :

থেয়াল ঃ কৈকেরী রার, কল্যাণী আচার্য, তোড়া সরকার, সবিতা সিংচ। ভলন ঃ সোনালী রায়, ক্রণনা মুখালি ক্রিতকা চক্রবতী, রীণা মণ্ডল অধিকারী, তপন ঘোষ। রাগপ্রধান ঃ বৈ কেরী রাজ,

বিশ্ব বিশ্

একটি শ্বৰণীয় স্পান্তিসর : বোধহর
মাস-দ্ট আগে কোলিকা' নিবেশিও
আলোকতহা বন্দোপাধ্যারের একটি একদ
স্পান্তির আসরে উপস্থিত হ্যার ও
পিলপীর নিজন্ম রস্তোককে প্রত্যক্ষরার স্থোগ ঘটেছিলো এবং তার আবেগ
ও প্রকাশবাভিত্যের বিশেষ ধারাটির স্পো পরিচারে আনন্দ শিরোছিলো। এবার নিজ্পীর্পে তাঁকে দেখলাম বিন্তৃত্তর ক্ষেপ্ত
প্রবীন্ত্রসদর্শের একক আসরে। অনুন্টান্টির
পরিবেশক কালীঘাট তর্শ সংখ।

আংগরবারেরই এক সংস্করণ হলেও, শিক্সীর গারনাশিক্সী এবার ম্বগ্রথ আনশিস্ত এবং শক্তিত করেছে।

আনদিনত এই কারণে বে, কবিগরের দিগন্ত ভাবলোককে ক্রম-উন্মোচনের যে দ্বা ভিন্দবোধ থাকলে প্রতিটি গানের ক্রমাধানী প্রোতার অন্তরে স্টারিত হতে পারে নিন্দা অন্দালিন ও ষ্থাধথ অধ্যারন ব্যারা সেই ভিন্দবোধের অধিকার এই ভারণে বে সম্ভাবনার উল্কাল আম্বাস পারের লোল, মাঝপথে তা হারিরে যাবে না

এই ধরনের রবীদ্যস্পাতির আস্তের অবভারদা বোধহম অলোকতর্ই প্রথম করলেন এবং তার আত্মবিশ্বাস ও লিল্প-কৃতি উল্লেখবোগ্য সাথাকতার তাকে অবণাই পোছে দিয়েছে। নৈলে রবীন্দ্রসদনের মত বিরাষ্ট্র প্রেক্ষাগৃহ দীর্ঘা দুখেন্টাব্যাপী পরি-প্রাক্তমন্ডলী নিরে অমন নিঃশৃন্দচারী ইরে থাকত না।

অনুষ্ঠান শুরু হোল ব্রহ্মসংগীত নিরে।
ভারপর কবির অপরিণত বরসের বাধনহারা
উক্তনেরের গান (বাই, বাই ছেড়ে দাও)
ভাবগভারতা (তেকো না আমারে)।
অনুভব-বৈচিত্রো (যেতে যেতে একলা পথে)
ভোতুত-গাতি, রামপ্রসাদীর বিচিত্র অনুভবের পথ বেরে পোছল 'থেলার সাথাঁ।
বিদার্ভবার থোলো'-তে।

প্রার প্রতিটি গানই আপনাপন ভাবে বেশ ভরেকটি সরস মৃহুর্ভ রচনা করেছে। শিশার আছি এই ধারতে পরিপত্ত শিশার আছি এই ধারতে পরিপত্ত করবার সহায়ক হরেছে। প্রেরণা কর্তে বলিউভারও অভাব নেই, স্বেরে শ্শাতাও শৃশা করবার মত। কিন্তু নিজ্প বার্তিই প্রকাশের আভ-ব্যাকুলভা, রবীন্দ্রনাবের সম-সামারিক প্রোভা ও এখনকার প্রোভাবের বধ্য মতালৈকোর স্থিতির আশ্পন্য আছে।

उदीना-রব শিল্প সালা তে কারণ, বাছিমেরই সম্পূর্ণ প্রকাশ। ध्यास শিল্পীর নিজ্ফ বাজির প্রকাশের স্বোস খুবই কম। রবীন্দ্রনাথকে উপদান্ধিই এখানে প্রধান। শিল্পীর আন্মোপলম্পির প্রকাশ-মাধ্যম এ সঞ্চীত নয়। কিন্তু সেদিন অশোকতর্র গান শ্নতে শ্নতে মাঝে মাঝে মনে হয়েছিলো নিজেকে প্রকাশের তাগিদে তিনি রাবীশিক সীমাকে লংখন করে বাচ্ছেন না ছাই রবীন্দ্রনাথ নিজের গান সন্বৰে অভিমানার প্ৰশ্কাতর ছিলেন বলে শানেছি। জোহাদ হয়, তবে গোড়া রবীন্দ্রসংগতিপন্থীরা এ প্রগতিশীলতা কতটা পছল্ফরবেন জামি না অথচ শিল্পীর স্কন-প্রয়াসকেও তুচ্ছ করা যায় না।

আর একটা কথা। নিবিড় रु/अ লোতাদের মনকে অবগাহিত করার অকম্মাৎ কোতক-চরম भ,र,एक **ब्रम्हा**नि গীতির অবতারণা ' একট थ**ो** जिन कि? योग ७ शत्रम्हर्र है शिक्शी এ ক্ষতিপারণ ঘটিয়েছেন 'এসেছিলে তব্ আস নাই' ও 'পিনাকেতে লাগে টব্কার' দিরে। ভাব থেকে ভাবাণ্ডরে যাবার অনারাসদক্তা অভিনম্পনীয় নিশ্চরই। কিন্তু অশোকতর্বাব্র ওপর আমাদের আশা অনেক, ভাই ভার অনুরাগী প্রোভা হিসেবে অনুরোধ জাদাব—ভবিষ্যতে ভার-সামার দিকে আর **একট্র নজর** রা**থতে**।

সঞ্গত-সঞ্গীতে কুমার বীরেন্দ্রনারারণ (বাঁশী), দীনেশ চন্দ (সেডার), রমেশচন্দ্র ও জহর দে (তবলা) বিশেষ উল্লেখের দাবী রাথেন এইজনো বে, অকেন্দ্রেশনের প্রলোভন সংঘত করে এ'রা প্রতি গানের ভাষান,সারী হয়ে উঠেছেন বতট,কু প্ররোজন ঠিক ততট্কু বাজানোর মধোই নিজেদের সীয়িত রেখে।

গত ১৬ ও ১৭ মে কৃণ্ণিতীথের নিবার্ষিক অন্তান প্রতাপ মেমারিয়াল হলে
সম্পন্ন হরেছে। প্রথম দিনটি রবীল্য-দিবস
হিস্যাবে পালিত হয়। অন্তানে প্রধান
অতিথি হিসাবে উপন্থিত ছিলেম প্রীশচীন
সেনগ্রুত। গত দুর্শিনবাপ্যী অনুতানে
কবিগ্রের ন্তানাট্য লামা ও শাপমোচন
অতিনীত হয় সংস্থার সভ্য ও সভ্যাগণ
কর্তা। বনিও বহু-অভিনীত এই ন্তানাট্যন্ম স্ক্লেম সকলেই ব্যেক্টার রাবে।

नावा क स्थापना क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका बद्धाका बहुताक के द्रमकारी राजाद मुका mer of School conficer state Dust क्रमीया देन यत्यकी - टामरमा फर्जन क्राइट्स । म्भारिक भागान-दीमकी व्यव-প্ৰা দৰ্, বছদেন-জীনবলোপাল চলবতী, **उद्धीत्र-शिक्षीर**गन पर ७ काणेन-শ্রীসমরীশ মুনসী দশকদের প্রচুর জানন্দ मिर्फ र्गरहरूम। श्रीमकी विक्रमी मान-গুরুত্তর জীবন প্রমূলণ্ণ গাল্টি বেদ नर्गकरमञ्ज बाखिरम् बार्थ। अन्याना कृषिकाम याता जामधंदश करताहर वंशाहरे स्टा শ্রীমতী দেকবাদী গহে, বাবলী রায়চৌধ্রী গাগী ভট্টাচাৰ, বুমাপা নিয়োগী, প্রতিভা ভট্টাচাৰ্য ও স্থাীতে প্ৰতিমা ভট্টাচাৰ্য, শোভনা ভট্টাচাৰ, শুণা নিয়োগী ও ठााछा वि দ্বিতীর দিনের স,মিতা অনুষ্ঠানে শিশুশিক্পীদের দিয়ে স্বপন-প্রী' রূপকথার রূপায়ণ সভাই একটি অপূর্ব সৃষ্টি। শিক্সীরা স্বভাবতঃ স্ব সমালোচনারই উধের, কারণ এরা এও ছোট र्य, अरमन तकी इक्ष्मार अक्टो मार्यना यान গণ্য হবে। এতে অংশগ্রহণ করেছে-কুমারী भागा लाञ्चाभी, देवलाशी मख, गागी नख, প্রালী বোস, ঝুমা মুখার্জি, রাতৃলা इक्क्किनी, भिला भाल, भिशा भाल, भ्रास्त्रा শ্রাবণী পা**লচৌধ**্রী, মি^{লে} মুখাজি". মুখাজি, চন্দ্র সেনগংগত, শন্পা ঘোষ, न्भात भा**लकोधा**ती. लीला तासकोधाती. ছব্দা সেনগাণ্ড, চক্দনা ব্যানাজি । সমগ্র অনুষ্ঠানের নৃতাপরিচালনা করেছেন শ্রীগোরীপদ ম**জ্**মদার।

গত ২৬ বৈশাখ, শবার, স্ভাষ সরোবরে 'পলিপ্লট' ভাশাংশ কা নিকেডনে রবীস্টজরুকটী পালন না হয়। সভার সর্বাপেক্ষা আকর্ষণীয় বিষয় ছিল জামান, ফেণ্ড, রাশিয়ান, চপ্যানিশ, ইতালীয়াণ, ইংরাজী, সংক্ষ্ত, বাংলা, হিন্দী ইত্যাদি দেশী ও রিদেশী ভাষার রবীন্দ্রসংগীভ পরিবেশনের দায়িত্ব গ্রহণ করেছিলেন বহুভাষাবিদ প্রীরজগোপাল মুখোপাধ্যায়। উপস্থিত জনমন্ডলী বিদেশে রবীন্দ্রসংগীত প্রচারের বিষয়ে আলোচনা ও উৎসাহ দান করেন। রবীন্দ্রনাথের 'প্রার্থানা' কবিতাটি রাশিয়ান ভাষার আব্তি করা হয়।

ন্ত্রিভানে নজর্ল জনতীঃ গত ২৫
মে নজর্ল জয়ণতী দিবস উপলক্ষে থিদিরপুরে স্রবিতান সংশ্যা এক রিন্টাপ্র্ণ
ঘরোরা অন্তানে কবির উলোলে প্রীতি ও
প্রাথা নিবেদন করে। প্রীপ্রভাতভ্রণের পরিচালনার সংশ্যার নিদ্পারা করেকথানি
স্নির্নিটিত নজর্ল গাঁতি পারবেদন
করেন। প্রতিভানাধাক প্রীর্নিদন বস্ক্র
অন্তান পরিচালানা করেন এবং এক ভাবদে
নজর্কের বহুম্বী প্রতিভান ক্যা এবং
তার মানবপ্রীতির ক্যা বক্ষেন।

द्रिकिशिकश्र





মনোজ গ্র (ভারতবর্ষ)

দীপ, ঘোষ (ভারতবর্ষ)

আন্তৰ্জাতিক ব্যাড়িমণ্টন

ক্ষেত্রনাথ রায়

এশিয়া মহাদেশ বিশেষ সাফল্যের পরিচয় দিয়েছে খেলাধুলার এই তিনটি আশ্ভর্জাতিক আসরে—বিশ্ব টেবল টেনিস প্রতিযোগিতা, পরেষদের দলগত আনত-জাতিক টমাস কাপ বাাডমিন্টন প্রতি-যোগতা এবং সম্প্রতি মহিলাদের দলগত আশ্তর্জাতিক উবের কাপ প্রতিযোগিতা। বিশ্ব টেবল টেনিস প্রতিযোগিতায় জাপান. টমাস কাপ ব্যাডমিণ্টন প্রতিযোগিতায় মালয়েশিয়া ও ইন্দোনেশিয়া এবং উবের কাপ প্রতিযোগিতায় জাপান তাদের বিরাট সাফল্যের সূত্রে আন্তর্জাতিক খেলাখ্লার মানচিত্রে এশিয়ার নাম উৎকীর্ণ করেছে। ফ্টবল, বাদেকটবল, ভলিবল, টেবল টেনিস প্রভাতি খেলা নিয়ে যেমন সরকারীভাবে বিশ্ব প্রতিযোগিতার আসর বসে ব্যাডিমিণ্টন **খেলার লে রকম বাবস্থা আজও হ**র্মন। তবে এ নিয়ে ব্যাডমিণ্টন খেলোয়াড় বা **খেলার অনুরাগী**শের কোন থেদ নেই। আন্তৰ্ণীতক ব্যাডমিন্টন প্ৰতিযোগিতায় টমাল কাপ এবং উবের কাপ কর বে-সর-কারীভাবে বিশ্ব খেতাব জয়ের সমত্লা হিসাবে স্বীকৃতি লাভ করেছে। প্র্যদের দলগত টমাল কাপ প্রতিবোগিতার উদ্যোধন ১৯৪৮ সালের হরা নভেম্বর (ডেনমাক ৰন্ম আয়ারল্যান্ড)। মহিলাদের দলগত উবের কাল প্রতিবোগিতার উদেবাধন অনেক পরে, ১৯৫৬ সালের ৩০লে আগস্ট (मानव यनाम हरकर)।

Carlo Service Company

বিশ্ববিশ্রত ব্যাভীমন্টন খেলারাঞ্জার জর্ল টমাস, বার্ট (আয়ারল্যান্ড ও ইংল্যান্ড) প্র্যুবদের দলগত বিভাগের খেলায় বিজয়ী দলের প্রেশ্রের দেন তা তাঁরই নামে উংপ্রশিক্ত হয়েছে। মহিলাদের দলগত বিভাগের খেলায় বিজয়ী দলের কাপটি দান করেছেন শ্রীমতী এইচ এস্ উবের, আমেরিকার বিশ্ববিশ্রতা ব্যাভীমন্টন খেলায়াড়। এই দৃষ্ট প্রতিবেশিতারই আসর বসে দৃ বছর অন্তর। এই দৃষ্ট আনতর্জাতিক প্রতিবেশিতা বথাজমে ট্রাসকাপ ব্যাভীমন্টন প্রতিবোগিতা বথাজমে ট্রাসকাপ ব্যাভীমন্টন প্রতিবোগিতা নামে সমধিক জনপ্রিয়তা লাভ করেছে।

প্রেষ্টের দলগত আন্তর্জাতিক
ব্যাডমিণটন প্রতিযোগিতার এ পর্যক্ত একমাত্র এশিয়া মহাদেশের মালরেশিয়া এবং
ইন্দোনেশিয়া উমাস কাপ' করী হরেছে—
মালরেশিয়া ৪ বার এবং ইন্দোনেশিয়া ৪
বার। গত আটবারের টমাস কাপ ব্যাডমিন্টন
প্রতিযোগিতার রানাস্-আপ হরেছে—ডেনমার্ক ৩ বার, মালরেশিয়া ২ বার, থাইলান্ড
১ বার, ইন্দোনেশিয়া ১ বার এবং আন্দেবিকা ১ বার।

প্র্যদের দলগত আন্তর্গতিক বাত-মিন্টন প্রতিযোগিতার স্টনা থেকে মানরে-শিয়া উপর্পির ৩ বার (১৯৪৯, ১৯৫২



ও ১৯৫৫) টমাস কাপ জমী হয়। এই তিদবারের প্রতিবোগিতার মালরেশিরা বে ৩৬টি মাাচ থেলে তার ফলাফল দাঁড়ার—জম ২৯ এবং পরাজয় ৭। যেসব থেলোরাড় মালরেশিরাকে উপর্পুপরি তিনবার টমাল কাপ জরে সাহাযা করেছিলেন তাঁলের মধ্যে এরাং পেং স্নুন, ওই তিক হক, লা ডিক হক, ওং লিম, চাং লিমং, এডি চুং, টেক চেই, টি এস খুন এবং ও পি লিম—প্রস্থিতার নাম বিশেবভাবে উল্লেখবোগ্য।

ইন্দোনেশিয়াও উপর্যাপির ডিনবার (১৯৫৮, ১৯৬১ ও ১৯৬৪) টমাস কাপ জনী হয়ে মালমেশিয়ার রেকডেরি সমান ভাগীদার হয়েছে। ইন্দোনেশিয়ার এই উপ-র্যাপির তিনবার টমাস কাপ জরের প্রাথান অবলম্বন ছিলেন—তান জো হক, ফেরী সোনেভিলে, এডি ইস্ফ এবং ভান কিং গোয়ান।

উপযা্পরি ওবার টমাস কাপ কর এবং ১৯৫৮ সালে রানাস-আপ ইওরার পর মালরেশিরা পরবর্তী দুটি প্রতি-যোগিতার খ্বই শোচনীর বার্থভার পরি-চর দের। ১৯৬০-৬১ সালের প্রতিবাগি-ভার এশিরান জোনের হল রাউপ্রে মালরেশিরা ২—৭ পেলার আইল্যান্ডের করে প্রাক্তিত ইর এবং ১৯৬০-৬৯ সালের

ত্রিলোকনাথ শেঠ (ভারতবর্ষ



প্রতিযোগিতার ইন্টার-জোন সোমফাইনালে তারা ২—৭ খেলায় ডেনমার্কের কাছে হেরে বার।

প্রবাদের দলগত টমাস কাপ প্রতি-যোগিতায় ভারতবর্ষ উপর্যুপরি দ্বার (১৯৫२ 🛎 ১৯৫৫) हेग्डोत-स्कान कार्रेनारम উঠে বিশেষ কৃতিত্বের পরিচয় দেয়। এই ইন্টার-জ্বোন ফাইনাল খেলার পরই চ্যালেঞ্জ রাউণ্ড বা প্রতিবোগিতার ফাইনাল খেলা। ১৯৫১-৫২ সালের প্রতিযোগিতায় ভারত-বর্ষ ৬-- ত খেলায় ১৯৪৯ সালের রানাস'-আপ ডেনমার্ককে পরাজিত করে পরবতাী ইন্টারজোন ফাইনালে আমেরিকার কাছে অলেপর জন্যে ৪—৫ খেলায় যে হের্গেছল তা থবে অগোরবের হয়নি। ১৯৫৪--৫৫ সালের ইন্টার-জোন সেমি-ফাইনালে আমে-রিকাকে ৬-৩ থেলায় হারিয়ে পূর্ব পরা-জয়ের প্রতিশোধ নেয়, কিন্তু ইন্টার-জোন ফাইনালে ভারতবর্ষ ৩--৬ খেলায় ডেন-ম:কেরি কাছে হেরে যায়। টমাস কাপ বাাডমিন্টন প্রতিযোগিতায় এ পর্যান্ত এই তিনজন বাজালী খেলোয়াড় খেলেছেন— মনোজ গাৃহ এবং দৃৃই ভাই—দীপাু ঘোষ ও রমেন ঘোষ। ১৯৬৬-৬৭ সালের প্রতি-যোগিতায় দীপ্র ঘোষ ভারতীয় দলের অধি-নায়কম্ব করেন। গত পাঁচটি প্রতিযোগিতায় (১৯৫৮-৭০) ভারতবর্ষ শোচনীয় বার্থতার পরিচয় দিয়েছে—চারটি প্রতিযোগিতার প্রথম খেলায় এবং একটির দ্বিতীয় খেলায় ভারতবর্ষ হেরে গিরে প্রতিযোগিতা থেকে বিদায় নিয়েছে। যে তাইল্যান্ডের বিপক্ষে ভারতবর্ষ উপয'়পরি দাবার (১৯৫২ ও ১৯৫৫ সালে) জয়ী হয়েছিল তাদের কাছেই কিন্তু উপর্যাপরি দ্বার (১৯৫৮ ও ১৯৬১) रहरतरह श्रथम तार्षेट्यत रथनारा।

हेमान काश कारेमाल

वस्त	ि कारी	বিক্তি	દયના
>>8>	भागदर्शाणका	ডেনমাক'	H-7
>>65	भागदर्शा भया	আমেরিকা	9
2266	মালরো শরা	ডেনমাক	∀ −2
2268	ইন্দোনে শ্রা	মালয়েশিয়া	৬ 0
2962	ইন্দোনেশিয়া	তাইল্যাণ্ড	_ bo
2248	ইন্দোনেশিয়া	ডেনমার্ক	6-8
>569	মালরোশয়া	ইন্দোনেশিয়া	80
>>90 2	ইল্দোনেশিয়া	মালয়েশিয়া	6 2

, দুণ্টবা ঃ মালয়েশিয়া বনাম ইন্দোনিশারার ১৯৬৭ সালের চ্যালেঞ্জ রাউণ্ড অর্থাৎ ফাইনাল খেলাটি দর্শক্ষের ইন্টার-ন্যাশনাল ব্যাডমিশ্টন ফেডারেশন এই খেলার আসর জাকার্তা থেকে নিউজিল্যান্ডেম্পানালটেরত করার ইন্দোনেশিয়া প্রতিযোগিতা থেকে নাম প্রভ্যাহার করে নেয়। খেলা পরিত্যন্ত হওয়ার সময় মালয়েশিয়া ৪০০ খেলায় অগ্রগামী থাকায় তাদের বিজয়ী ঘোষণা করা হয়।

মহিলাদের দলগত আশ্তর্জাতিক ব্যাডমিণ্টন প্রতিযোগিতার স্চনা থেকে আমেরিকা উপর্যন্পরি ৩বার (১৯৫৭, ১৯৬০ ও ১৯৬৩) উবের কাপ জয়ী হয়ে যে বিরাট প্রাধান্য বিশ্তার করেছিল তা সহজে নত্ট হবে না বলেই পণ্ডিত মহলের বম্ধ ধারণা ছিল। আমেরিকার বিপক্ষে ফাইনালে খেলে ডেনমার্ক হবার (১৯৫৭ ও ১৯৬০) এবং ইংল্যান্ড ১বার (১৯৬৩) রানার্স-আপ হয়েছিল। কিন্তু ১৯৬৬ সালের চ্যালেঞ্জ রাউপ্ডে জাপান ৫--> থেলায় উপয**ু**পরি তিনবারের উবের কাপ বিজয়ী আমেরিকাকে পরাজিত করে সারা প্রথিবীর ক্রীড়ামহলকে হতবাক করে দেয়। উবের কাপ প্রতিযোগিতায় প্রথম যোগ-দানের বছরেই জাপান যে এরকম অভাবনীয় কান্ড করবে তা কেউ কল্পনা করেনান। এই সময়ে আন্তর্জাতিক ব্যাডমিন্টন আসরে জাপানের কোন নামগম্ধ ছিল না। অপর দিকে আমেরিকা ছিল উপর্যাপরি তিন-বারের উবের কাপ বিজয়ী এবং আমে-রিকার অধিনায়ক শ্রীমতী জর্ভি হাসম্যান ৮বার অল-ইংল্যান্ড সিংগলস খেতাব জয়ের স্তে বিশ্ববিশ্রতা ব্যাডমিন্টন খেলোয়াড। জাপানের অধিনায়ক কমারী নোরিকো তাকাগি ছিলেন আশ্তর্জাতিক ব্যাডমিশ্টন আসরে সম্পূর্ণ অক্তাত থেলোয়াড। চ্যালেঞ্জ রাউন্ডের খেলায় তাকাগি ১২—১ ও ১১--৭ পয়েন্টে শ্রীমতী জ্বভি হাস-মাানকে হারিয়ে দিয়ে রাতারাতি বিশ্বখ্যাতি मार्छ करतन। ১৯৬৯ সালের রাউন্ডে জাপান ৬--১ খেলায় ইন্দো-নেশিয়াকে পরাজিত করে উপযাপির দ্বার উবের কাপ ক্রয়ের গোরব লাভ করেছে। উবের কাপ প্রতিযোগিতার এখন এশিরা बहारमर्भव करा-करकात।

छेत्वत काश कारेनान

বছর	विकामी	ৰিজিক	त्थना
১৯৫৭	আমেরিকা	ডেনমার্ক	4-5
১৯৬০	আমেরিকা	ডেনমাক'	4-2
১৯৬৩	আমেরিকা	ইংল্যাণ্ড	8-0
७७८८	জাপান	আমেরিকা	4-2
>>6	জাপান	ইন্দোনেশিয়া	b5

টমাস কাপে ভারতবর্ষ

খেলার ফলাফল

228A-82	ঃ পর	জয়—১ম	রাউ েড
কানাডার	কাছে ২	—৭ খেল	ाश्च
2962-65		াইল্যান্ডের	বিপক্ষে
5-0 C	.चणात इन्द्रीलग्रात	বিপক্ষে	
খেলায়	*. 28 A 14 15 15	14 164	90
জয়—ডে	নমাকে'র	বিপক্ষে	b0
7 शतनाञ			

পরাজয়—আমেরিকার বিপক্ষে ইন্টার-জোন ফাইনালে ৪—৫ খেলায়।



नाग्रः नाएंकात्र (छात्रख्य)

১৯৫৪-৫৫ । জয়-তাইদানেডর বিশক্তে ১-০ খেলার

জয়—প্ৰাক্তিকানের বিপ্ৰকে ১—০ খেলার

জন—হংকারের বিপক্তে ৯—০ বেলার জন—আমেরিকার বিপক্তে ৬—০ থেলার

পরাজয়—ইন্টার-জোম ফাইনালে জেন-মার্কের ফাছে ৩—৬ থেলার ১৯৫৭-৫৮ : गताबद-छाहेगार-छन्न विश्रक ५--४ एकाम

>>40-6> 1

শরাজর—ছাইল্যান্ডের বিশক্তে ৩—৬ খেলার

১৯৬৩-৬৪ s জর—দক্ষিণ আফ্রিকার বিপক্ষে ৭—২ থেকার

भताकत्र—बामदर्शाभवात विभएक ১—। दश्माव ১৯৬৬-খ৭ ঃ
পরাজন-মালমেশিরার কাছে ১-৮
থেপার
১৯৬৯-৭০ ঃ
পরাজন-ইলোনেশিরার কাছে ২-৭
থেপার
রূপীয় ঃ ভারতবর্গ ১৯৫২ ও ১৯৫৫
নালের প্রতিবোগিতার ৩র আর গেরেছিল
থবং ১৯৫৫ সালের প্রতিবোগিতার ভারত-

वर्षक मरमाज गृह ध्रवर शकासम रश्याकी

जारकाम ब्राणितनंत गरेना शर्थ

दशदर्शक्दलम् ।

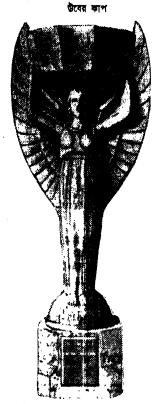
. .

मध्य द

বিশ্ব ফটেবল প্রতিযোগিতা

মেকসিকোতে আয়োজিত ৯য় বিশ্ব মুটবল প্রতিযোগিতায় ১৬টি দেশের শেষ াীগ পর্যায়ের খেলা শেষ হয়েছে। চ্যাম্পি-য়ান এবং রাণার্স'-আপ হিসাবে কোয়ার্টার ফাইনালে ওঠে: ১নং গ্রনে থেকে রাশিয়া ও মেকসিকো, ২নং গ্রুপ থেকে ইতালী ও উর্গ্য়ে, ৩নং গ্রুপ থেকে ব্রেজিল ও ইংল্যাণ্ড এবং ৪নং গ্রুপ থেকে পশ্চিম জামানী ও পের্। এই যে ৮টি দেশ কোরা-র্টার-ফাইনালে খেলবার যোগ্যতা লাভ করে এদের মধ্যে ৩নং গ্রুপ চ্যাম্পিয়ান ৱেজিল এবং ৪**নং** গ্রুপ চ্যাম্পিয়ান পশ্চিম জার্মানী লীগের খেলায় প্রো ৬ পয়েণ্ট সংগ্রহ করেছিল। এই ৮টি দেশের মধ্যে ইউরোপ মহাদেশের অন্তর্ভুক্ত হল এই **ठावीं** एमम-- देश्लाा॰फ, त्रामिशा, श्रीम्ठम জামানী এবং ইতালী: বাকি এই চারটি रमम- रहिक्का, प्रकिमत्का, छेत्रशास धरः পের লাভিন আমেরিকার অভডড়াঙ্ক: সত্তরাং লড়াইটা দাঁড়ার ইউরোপ লাতিন আমেরিকা। চার্রাট্ট কোয়ার্টার ফাই-নাল খেলার মধ্যে দুটি খেলার একই মহা-দেশের অন্তম্মন্ত দেশের খেলা পড়ে रवसन रहीकन वसाध रणहा अवश शः कार्यासी वनाम हैरनाान्छ।

১নং গ্রাপ								
	द्यका ।	संग	ভুহ	ांब	न्दः	ৰিঃ	ન ઃ	
রাশিয়া			2					
মেকসিকো			5	0	đ	0	Ġ	
বেল <mark>জরায়</mark>	•	5	0	2	8	đ	২	
সালভেডোর			0	. 0	0	۵	O	



খেলার কলাকল

রাশিয়া	ò	:	মেকসিকো	0
বেলীজয়াম	, 0	:	সালভেডোর	o
রা শিয়া	8	:	বেলজিয়াম	۵
মেকসিকো	8	2	সালভেডোর	0
. ব্যাপি য়া	•	:	সালভেডোর	0
মেকসিকো	>	8	বেকজিয়াম	Ó

રના શાળ								
	খেলা	सम्	Ä	₹1		T:	विः	%
ইতালী		•	2	২	0	۵.	0	8
উর্গ্রে		•	>	5	۵	•	2	0
স,ইডেন		ð	\$	>	۵	2	8	0
ইল্লায়েল		0	O	•	>	>	0	2

-

ইতালী	5		স্ইডেন	0
जेत ्ग्रस	•	1	ब् द्यात्त्रल	0
ইডালী	0	1	रेक्षा (त्रम	0
ই তালী	0	1	खेब ्गाटब	0
रेखारतन 🕆	>	1	স্ইডেন	۵
স,ইডেন	5		छेत्र ,शरुरा	0
ইতালী	0	1	रेतार्थन	0

OR 279

	খেলা	ज न	Ā	হার	=বঃ	বিঃ	213
रहिक्क	•	0	0	0	¥	•	6
ইংল্যা•ড	. 0	2	0	>	R	>	8
র্মাণিয়া	•	>	0		8	Ġ	*
চেকো	•	0	0	. 0	2	٩	0

খেলার ফলাফল

8		रहरकाः	5
5	ı	त,यानिया	0
R	1	(ठ.काइ	>
5	:	ट्रेश्ना ग्छ	q
9	:	র্মানিয়া	Ş
>	:	চেকো:	0
	\$ \$ 5 0	5 ; 2 ;	১ ঃ রুমানিরা ২ ঃ চেকোঃ ১ ঃ ইংলাণ্ড ৩ ঃ রুমানিরা

৪নং গ্রন্থ

মরকো	9	0	2	•	¥	b	3
ব,লগে রয়া	•	0	>	•	¢	۵	۶
পের্	٠.0	₹	0	2	9	¢	8
পঃ জাম1নী	•	•	0	0	30	8	৬
	्यभा	6.4	3	215	-पइ	(41	715

रथनात क्लाक्ल

পঃ জামানী	è		মরকো:	۷
পের	٥		ব্লগেরিয়া	₹.
পের	0	:	मद्राका	0
পঃ জামানী	Ġ	:	বুলগেরিয়া	R
পঃ জামানী	0	1	পের,	۵
মরকো	5	17	ব্লগেরিয়া	>

একটি খেলায় এক দলের ৪টি গোল ৫টি গোল — পঃ জার্মানী (বৈপক্ষে ব্লগেরিয়া) জেকিল বনাম ইংল্যাণ্ড : রেজিলের জাইরজিনতা (এনং) তাঁর ছেওলা ললের জনস্তুক শোলটি লেখছেন। ইংল্যাণ্ডের বিজিন্ত করে আছেন। জেকিল ১—০ লোলে ক্রী হয়।



৪টি গোল — রাশিরা (বিপক্ষে বেলজিরাম) ৪টি গোল—মেল্লিকো (বিপক্ষে সালভেডোর) ৪টি গোল — রেজিল (বিপক্ষে চেকোঃ) একটি খেলার সর্বাধিক গোল

৭টি--পঃ জার্মানী ৫ : ব্লগেরিয়া ২ গোলের খতিয়ান

(প্রতি মুদে প্রতিটি দল তিনটি করে মাচ খেলেছে এবং প্রতি গ্রুলে মোট খেলার সংখ্যা ৬টি)।

১নং হংশ : ১৫ গোল ২নং হংশ : ৬ গোল ৩নং হংশ : ১৬ গোল ৪নং হংশ : ২৪ গোল

ব্যক্তিক স্বাধিক গোল ৭টি — গারহাড**়ি ম্লার (পঃ জার্মানী)**

र्गार्विहेक

ি লারহার ম্লার (পঃ জার্মানী)
 —বিলকে বল্পেরিয়া এবং পের;।

পৰাধিক গোল

প্রক ঃ ১০টি—পঃ জার্মানী (৪নং রাপ) বিপক্ষেঃ ৯টি—এল সালভেডোর (১নংরাপ) ৯টি—বুলগেরিয়া (৪নং রাপ)

বিপক্ষে গোল শ্ন্য

১নং গ্রুপে মেক্সিকো এবং ২নং গ্রুপে ইতালীকে কোন দল গোল দিতে পারে নি।

टबना प्र

চারটি গ্রুপের মধ্যে একমাত্র তনং গ্রুপের কোন খেলাই জু হয় নি।

कांग्राहीत काहेनान

রে জন	8	:	পের	ŧ
ইতালি	8	2	মেকসিকো	۵
পঃ জামানী	•	:	ইংল্যাণ্ড	2
উর_গ্রে	۵.	1 1	রাশিয়া	0

লেমি-ফাইনাল ভেজিল বনাম উলুগ্নে পঃ জামাণিী বনাম ইতালী

শেষ লীগ পর্যারের খেলার বে চারটি
দেশ গ্রুপ চ্যাম্পিরান হরেছিল তাদের মধ্যে
রাশিরা বাদে বাকি ডিনটি দেশ সেমিফাইনালে উঠেছে। ২নং গ্রুপের রানাস্কাপ উর্গুরে অতিরিক্ত সময়ের খেলার
১—০ পোলে ১নং গ্রুপ চ্যাম্পিয়ান

সেমি-ফাইন রাশিয়াকে পরাজিত করে থেলবার যোগাতা লাভ করেছে। গ্রুপের লীগ চ্যাম্পিয়ান ইতালী রানার্স-আপ উর্গাঃয় সেমি-ফাইন থেলবে। অপর কোন ্রপের চ্যান্সি এবং রানার্স-আপ ্রেশ এইভাবে ত ফাইনালে খেলবার বোগ্যতা লাভ ক পারেনি। ইতালি যেথানে লীগের ডি খেলায় মাত্র একটি গোল দিয়ে চ্যাম্পিয়ান হয়েছিল সেখানে মেকসি বিপক্ষে কোয়াটার ফাইনাল খেলায় ৪ গে:লে জয়ী হয়েছে। তাজ্জব ব্যাণ পশ্চিম জামানী ১৯৬৬ সালের জ্ল কাপ বিজয়ী ইংল্যান্ডকে অতিরিভ্ত সা খেলার ৩-২ গোলে পরাজিত করে ' পরাজয়ের প্রতিশোধ নিয়েছে। সালের ফাইনালে পশ্চিম জামানী ২ গোলে ইংল্যান্ডের কাছে হেরেছিল। এব কোয়ার্টার ফাইনালের প্রথমার্ধের দ ইংল্যান্ড >--০ গোলে এবং খেলা ভা ২০ মিনিট আগে পর্যণ্ড ২—০ গোলে গামী ছিল। নিধারিত ৯০ মিনিটের চ **উভনপক্ষ मृति क**द्ध गाल मिर्सिश्ल।

CON MAIN

म्राम्ब दमशाब

পুবে বাঙ্গার হিম্যুলর থেকে পণিচমে
আরব সাগর তীরে সোমনাথ এবং উন্তরে
ক'ম্মীর থেকে দক্ষিণে কন্যাকুমারী
পর্যাপত এই বিশাল দেশের আন্চর্য ঐশ্বর্যের আকর্ষণীয় আবিশ্বার। প্রচুর আলোকচিত্র সম্বালত উপহারের উপাদের
গ্রুপ্ত। মূল্য ৭-৫০

রম্যাণি বীক্ষার লেখক শ্রীস্ট্রোবকুমার চলবভী প্রণীত

উপন্যাস-বসসিত ভ্ৰমণ-কাহিনী

त्र अग्राणि वीक्रा

রবীণা প্রক্রারে সন্মানিত শ্রীস্বোধ চকবর্তী প্রণীত মোট ১৩টি পরের মূলা ১১১-০০ ন্তন ঃ কবটি পর — মূল্য ১-০০

ভারতীয় দিশ্পকলা বিষয়ক ভারতের শিচ্প ও আমার কথা

\$6.00

শ্রীকর্ষেন্দ্রক্ষার গগোপাধ্যাদ্র
বাংলা সহীত সংবধ্যে তথ্যসমূদ্ধ প্রদর্থ
বাংলা সংগীতের রূপ ৮০০০

স্কুমার রায় [া] ভারতীয় সভ্যতার গর্মাবাণী

শাশ্বত ভারত

দেবতার কথা : ঋষির কথা অস্বের কথা : উপদেবতার কথা

ছোটদের জন্য ভারতের বিভিন্ন রাজ্য নিরে এক একথানি স্বয়ংসম্পূর্ণ শুমণ কাহিনী

আমাদের দেশ

উড়িব্যা: অন্ধ: মাহস্রে: তামিলনাড় প্রতিখানির ম্লা ২০৫০ শ্রীস্বোধকুমার চকবর্তী প্রণীত

প্রকাশক ঃ

এ. মুখাজী জ্যান্ড কোং প্রা: জিঃ ২ রঞ্জিম চ্যাটাজী শাটি, কলিকাডা-১২ 201 ad 201 ad



ुध्य शरकाः मृज्यः

্ল৪০ পরসা

Friday 26th June, 1970

न्द्रम्बाव, ১5ई जावार, 5099 40 Paise

मुछोश उ

	51 / A		
প্ৰহা	ব্ৰন্ধ		লেখক
990	চিত্রিপন্ন		
७७३	माना कारम		—স্মদশ্বী
608	दमरणीयरमरम	1.0	—শ্রীপ্রভরীক
866	बाष्णिकत		-শ্ৰীকাফ ী খাঁ
66 9	সম্পাদকীয়	/	
994	ৰদি বেতে হয়	(কবিতা)	শ্রীপবিত্র মনুখোপাধ্যায়
৬৬৮	এখন সময় হোলো		শ্রীসত্য গৃহ
৬৬৮	লে গেছে	*	—- শ্রীরঞ্জিত রাষ্টোধ্রী
৬৬৯	সাহিত্যিকের চোখে আক্রেক	র সমাজ	— बीमणीन्स दाम
890	তেরোই আবাঢ়		—শ্রীতারাশক্ষর বন্দ্যোপাধ্যায়
৬৭৩	জীয়ন বস	(গ্রন্থ)	—গ্রীঅন্তিত মুখোপাধ্যায়
७२४	मृद्रथत स्मणा		आन्त्व क्रव्यात
442	রবীন্দ্রনাথ : বিভক্তের উত্ত	7	—श्रीज्यक्षश्यद्भारम <i>वरम</i> ग्राशाक्षात
৬৮৬	সাহিত্য ও সংস্কৃতি		
920	ৰইকুণ্ডের খাডা	4, 11	—শ্রীগ্রন্থদদী
ల ৯ల	নীলকও পাথির খোজে	(উপন্যাস)	—শ্রীকতীন বন্দ্যোপাধ্যায়
ዕ ልል :	निकारेड आरब		—শ্রীগ্রন্থদ্দার্শ
908	मत्नत क्षा		—श्रीमत्नाविष
906	ছালা পড়ে (রহ	স্য কাহিনী)	— সৈয়দ ম _্ শ্তাফা সিরাজ
905	•		—শ্রীঅহীন্দ্র চৌধ্রী
928	বিতীয় প্ৰিৰী		—শ্রীশান্তি পাল
956	প্ৰদৰ্শনী পরিক্লা ^{জা}		—শ্রীচিত্তর্রাসক
9≷ 0	গোয়েন্দা কৰি প্রাশর		—শ্রীশৈল চক্রবড়ী চিহ্নিড —শ্রীপ্রেমেন্দ্র মিত্র রচিড
985	ज न्त्रमा		— শ্রীপ্রমীকা
१२७	বেতারস্ত্রন্তি		—গ্রীপ্রবণক
958	क्रमा		<u>শ্রীচিত্রা</u> পাদা
920	প্রেক্ষাগৃহ		— <u>व</u> ीनान्मिकद
905	क्राहेबन अञ्चल		- শ্রীবিশ্বনাথ মনুখোপাধ্যায়
900	ट्यमात्र कथा		-শ্রীকমল ভট্টাচার
908	व्यक्ता		-শ্ৰীদৰ্শক

शक्त : श्रीमानव वक्रमा



মহামতি লেশিন ও ভারতবর্ষ

"অমৃত" পাঁৱকার গত ১৫ই জ্বৈষ্ঠ, 2099 সংখ্যার किविश्व বিভাগে শ্রীঅমিতাভ রায়ের চিঠি ও তারপরে শ্ৰীগোতম চটোপাধ্যা**নের উত্তরটিও** পড়লাম। কিন্তু আমার মনে হয় শ্রীয়ার যা জানতে চেয়েছিলেন তার সঠিক উত্তর প্রশেষ মুজাফর আহম্মদের "আমার জীবন ও ভারতের কম্যানিক পার্টি" বইশাদিতে কিছ,টা পাওয়া বায়। সম্ভবত মানবেন্দ্র बाह्य नीमनी १६७७ बांबकर हिन्द्रहरू मान 🗷 **ज्ञाबरुपु बज्ञा अन्यदर्ग । अविवद्याग** हरतिहर्मन। बारे दहाक, वर वरे वरे व्यक्ति किहर অংশ উন্ধৃত করছি। 'স্কাৰ বস্র নামীর পরখানি (এম, এন রায়ের লেখা চিঠি) প্রথমে আমার নিকটে এসেছিল। আমি তা ভূপেন্দ্রকুমার দক্তকে দেখাই।...উৎসাহতরে তিনি বললেন, 'ল,ভাষের প্রথানা আমিই তাকে পেণীছরে দেব। কিন্তু ফিরে এসে তিনি আমার জানালেন বে, স্কোষ পর-খানি নিল না।' আমি পঞ্জাম মুম্কিলে। এই পর নিয়ে সভোষ বসরে সপো আমায় দেখা করতে বলা হ'রেছিল।...আমার সংগা আগে তাঁর কোন পরিচয়ও ছিল না। ডব্ও আমি একদিন সভোবের নিকটে গেলাম। তিনি বল্লেন, যাঁরা তাকৈ পর লিখতে চান তারা যেন সোজাসর্ভিল লেখেন। (৩২৩-২৪ পঃ) কিল্কু পরে সরাসরি তাঁকে আমল্লণ জানান ছয়েছিল কিনা তা এই वहेरत উद्धाध जहे।

তবে '১৯২১ সালের ভিলেন্দর খাসে আহমেদাবাদে ইণিডয়ান ন্যাশনাল কংগ্রেসের ৩৬-বারের অধিবেশনে মালবেন্দ্রনাথ নায় ও অবদী মুখাজী ন্যাজনিত বে-ইন্তা-হার বিতর্গিত হরেছিল তা ছিল ভারতের কম্ম্নিন্ট পার্টির প্রথম প্রকাশিত ইন্তাহার।'

"১৯২২ সালের বালিন মুগে ভারতের ক্যুদ্রনিন্দ পাটির একটি বিশিষ্ট কাল হছে ইন্ডিয়ান ন্যাশনাল কংগ্রেসের গয়া অধিবশেনের বিবেচনার জনা একটি প্রোগ্রাম পাঠান। এই সমরে রাম অনেককে পত্র লিখেছিলেন। চিত্তরজন দাশকে লিখেছিলেন, তাঁর পুত্র চির্মুজনকে লিখেছিলেন এক স্ক্রাক্ষসন্ত বস্কেও লিখেছিলেন।"
(৩২২ প্র)

ইভিছালের নিক হতে বলে রাখতে হবে বে গরার পাউনি হোগ্রামটিই ভারতের কমানিক পাটির প্রথম প্রোয়ামটিই ভারতের কমানিক পাটির প্রথম প্রোয়াম । অমৃতিন্যালার পাঁচকা লই বাই কালাকে ভা হাপাও হয়েছিল...কংগ্রেম কিন্দু ভার কোম উল্লেখ কোথাও করেছেন বলে বলে বলে পড়ে না।

অবশা হাজ আমলে জাতীর মুহাজিজথানার (National Archievas) দলিলগালি সাধারতের জনে উলাভ হুওরার
তদনীত্তর এই সম্প্রকীয় বহু তথা জানা
বার। উপরের উলিখিত অংশগালে
অনেকের কৌখ্ছল মেটাতে পারে ভেবে
ভুলে দিলাম।

সভ্য বস্ ক্লকাতা-২।

स्थानात करा

আমি আপদাদের সমাধক প্রচারিত

অমাতে পরিকার একজন নিম্নামিক ও অন্রাগাী পাঠকা ১ জাঠে ১০৭৭ সালের
১০ম ধর্মা, ১ম খন্ড, ১য় সংখ্যাতে প্রকাশিত
শুক্রবিজয় মিরের 'খেলার কথা ঃ জিকেট
আকালে উল্লান্ত হলাম তেমান নিরাশ
হলাম। কারণ লেখক ক্রেকটি জারগার
কতকগ্লি তথ্য অসম্পূর্ণ রেখেছেন।
সেগলি আমি আপনাকে জানাছি এবং
শুক্রবিজয় মির মহাশিরকে পরিকা মার্যাহ
মেগলির রেকড জানাবার জনা সবিমরে
অনুরোধ ক্রীছ।

- (১) আৰু প্ৰশ্নত সোবাস একাদিষ্কত্ম কতকগুলি টেন্ট খেলেছেন?
- (২) ১৯০৬ সালে জর্জ ছান্টা ২৩৮৫ রান ও ২০৮টি উইকেট নিরে যে রেকর্ডা করেছিলেন, লেখক জানাছেন সোবার্সা সে রেকর্ডা জণ্য করেছেন। এ সম্বংশ্য এখনও পর্যান্ড সোবার্সের রেজর্ডা কি?
- ৩) ১৯৬০-৬১ সালে অস্ট্রেলনার সোবাদের সাফলোর মন্ত্রীর কি? গোপালপদ দে, ধ্রনিয়াখালী, হুগলী।

मारे रमधुरका अक वरे

সাশ্র্যতিক আমাদের দক্ষেনের হাতে দুখানা বই এসেছে। একটির নাম সম্প্রা হণালাপ লেখিকা প্রভাৰতী বেবী।
অপরটার নাম 'প্রথম বসক' লেখক স্পূৰ্ণন
চৌধুরী। দুই বই-এর শুধু আহিদীপত
মিলই নেই আদাত আক্রীরক মিল ররেছে।
কাহিনীলারের পাচ-পারীর নাম এক, প্রায়া
এক অধ্য তেখক, দুখন। স্বচাইতে
ভাংপর্যপূর্ণ ইছে এই বে বাটি বই-এইই
প্রকাশক একজন জানিক প্রশাহত ভালুকার।
একই বই-এই চেখাক অনুভাই করে অনুভা
মারকং জানান তো আমাদের মতো অনুভাই
পারক-পাঠিকার সংশারের নিরসন ইতে
পারে।

ৰাণী সাহা ও বিভয় ভাল্কদার নৈহাটি, ২৪ প্রগণা।

'आमान सन्धः नव्हत्राण'

গন্ত ২২ মে 'অম্ত' প্রিকার (১০ম বর্ব, ১য় বন্দ, ৩র সংখ্যা) ব্রীশৈলজাননদ মনুখোপাধ্যারের আমার বন্ধ নজর্ল পড়ে খুবই আনন্দ পোলায়। গ্রক ্রে শৈলজান দদবাব, নজর্লের ছাতি তম বালাবন্ধ। সেই হিসাবে ভিন্ন তা নজর্ল) বালাকল খেকে আরুদ্ধ ক ব্রুমান অবক্থার কথা মেভাবে ফ্টিরে তুলেছেন তাতে প্রভিটি পাঠক-পাঠিকাই ভার প্রশংসা করবেন।

তব্ও একটি প্রদন আমাকে খ্বেই বিচলিত করে তুলেছে। তা হচ্ছে নজমূল কি সাঁতাই বেভারে প্রোক্তাম করতে গিরে বাকরুখ হমেছিলেন ?

জানি না, শৈলজানন্দবাৰু এর উজর কি দেবেন। তথে আমার বতদ্বে মনে ইম---বথন কালী নজর্ল ইসলাম তার শারীর গুরারোগ্য ব্যাধির জন্ম বিভিন্ন শ্বাদে খ্র-ছিলেন, তথনই কোন বাজি ছলে-বলেকৌশলে তাকে কোন জিনিস থাইরেছিলেন
এবং ডার ফলেই তিনি হরেছেন বাকর্ম।
বখন কোন লোক কিংকর্ডবিন্ত্ হরে
পড়ে ভখন লে খ্র জোর পাগল ইতে
পারে, কিন্তু ডা বলে বাকর্মী হবে কোন?

ৰাই ছোক, গৈলজানন্দ্ৰাব্য কাছে আমান সনিবাধ অনুযোগ, জিন বলি এই বিষয়ে কিছু আনেন (প্ৰকৃত সভানটনা) ভাইলে কোনন্দ্ৰ নিজা বা কমে ডিনি





যেন অবিলম্বে 'অম্ত' পঠিকার মারফং' জানান। কেলা, নজুর্জের খনিন্টতম বংধ অনেকেই ছিলেন, কিন্তু তাঁরা এই বিষয়ে কিছু বলতে নারাজ।

পরিলেকে, মান্তের সম্পাদক মহাপার ও বৈল্যজানন্দ মুদুধাপাধায়কে নমস্কার কানিরে আবার চিত্তির বছন্য শেব করলায়। কর্নপ্রিজন চটোপাধার কর্নজাত্য-৩০।

Western.

গত ৮ জৈক প্ৰকাশিত D'T, FIDE অংশনা বিভাগটির মধ্যে কুলুমিকার নাঙালী विटाम छेशकाल अमेलियीय अन्वरम्य लिथिका श्रमीणा अत्मक्ष जालाहमा करत्रहरू । अहे আলোচনা আমার হবেই তাল লেগেছে। আমি বর্তমান বলোর । মেরে। তাই বিগত **पिरतं अ्तक म्युग्पद क्रिनिम जन्दस्थ** বাঙালী হয়েও আমি আৰু চাই অপানার পরিচালিকা প্রমীলাকে আমি অতিশহ বিনরের সপো অন্যরোধ করছি, যদি তিনি ঐ বিভাগটির মাধ্যমে রুমাল ও রিবন সাজানো, बनावात हो, बीज़त शहना, कृतना ও পি'ড়ি আলপনা সম্বদেধ কিছু কিছু প্রণালী আমাকে জানাতেন তবে আমি খুবই কুততে হতাম। উল্লেখিয়া সম্বশ্ধে আমি খ্ৰই উৎসাহী এবং আমি মনে কৰি আমাৰ মত আরও অনেক উৎসাহী বোন আছেন याँता धे अभन्छ विषय अन्वत्य कान्यल हान। আমি আশা করি অম্তে মাধামে আমি ঐ সমদত বিষয়ের উপকরণ ও সক্ষা প্রণালী কানতে পারবো।

> লক্ষ্মী চক্তবত**ী** কলকাতা-৩২।

দাহিত্যিকের চোখে 'আজকের সমাজ

আপ্রমার বিশিষ্ট সাহিত্য পত্রিকার
(বৈশাথের ১৭ তাং-এ প্রকাশিত সংখ্যার)
প্রীথ্রা মহাশেবতা দেবীর চোখে আজকের
সমাজের ব্যৱসম্মত বিশেলব পড়ে
থ্বই ভাল লাগল। বর্ডারানে সাহিত্যকদের
কর্মানিটার অকুপট উন্মোচন ও ভালনা
ক্রেডের নিভান প্রকাশ আমাকে ভার প্রতি
প্রাধিক করে ভুনেটো।

আজকের পূর্ণিবীতে মানুষ আরু যা থেকে ছোক, স্নাহিতা থেকে প্রেরণা নিরে সং ও মহান হুতে রাবে না ক্রেরণা নিরে সং ও মহান হুতে রাবে না ক্রেরণারে তিনি সে কারণার লো নির্দেশ ক্রেছেন, সেগনেলা হুছে, (৯) সাহিত্যিকদের রাজনৈতিক তাৎকাণকডার মৈতে উঠা অধাং ব্যধ্মগ্রিত এবং (২) নিজেকে (লেখকসন্তাকে) একটা জানাগানা ছাঁচের মধ্যে ফেলে দিশ্চিক্ত হুওরা।

লেখিকার মতে এরই ফলে সাহিত্যিকরা দলে দলে গোড়ীতে গোড়ীতে কামনার কামনার জাগ হরে বাজেন। দবিণতি করেশ তালের স্থানী সাহিত্যে পূর্ণা সমাজের কথা আর পাওরা বাজে না। সমাজেকে শূরকে বাধা করার মত কঠ তাঁদের হারিরে গোছে।

শ্রীযুৱা মহাশ্বেতা দেবীর বছবোর সংশ্ব আমি একমন্ত। আমিও মনে করি, বড়ামান সাহিত্যিকরা কেবল শবিচচা কবে এর চেরে বেশি কিছু লাভ করতে পারেন ना। इरज-थाकात्र माध्मारक छाता वाद्यकः মনে করছেম বলেই স্থিত তীদের মহত্ত্যত হচ্ছে। যাঁর সাত্তিক প্রতিষ্ঠা নেই, সেই সংস্থার আশ্রয়ে যেতে বাধা[্]চন, তা সে ভাৰণত ৰা চিন্তাণত বা রাজনীতিক হে কোন প্রকারের সংস্থাই হোক। আমাদের সমরণ রাখা প্রয়োজন যে সংস্থা সন্তার পরি-পরেক হলেও বদলের কাজ করে না কথনো। সন্তার বিষ্ঠান অস্ত্রনিহিত আবেশজনা. সংস্থার পরিবর্ডাদ পরিপাদেবর চাপের পরিণাম। আছাড়া 'বিদাং গতিতে' পরি-বৰ্তমান সাংস্থানিক জীবনে কোন কিছুই থিতিয়ে উঠতে পারে না, ধরবার মত কোন क्टिंहे अधात िएक शास्त्र ना तरनह কনভেনশান-এর ঔরসজাত যে সমুস্ত মূলা সত্তার মধ্যে থাকে, তাদের পরিগ্রহণ একান্ড প্রয়োজন। মূল্যের আসল উৎস সমাজ নয়, তা সত্তা। কিন্তু কথা হচ্ছে, সত্তাকে সেখানে দ্বীকারই করা হয় না, হতে থাকার সাধনা যেথানে অনুপশ্থিত, যেখানে বরণযোগ্য 'স্পার' পাওয়া ভার, সেখানে ভাই ম্লোর धर्यं । व्यक्तियार्थं श्रुता क्रेटं ।

আমার মনে হয়, সাহিত্য-সংসারের এই অবশ্বাটাকে যদি একবার পাঠকের দ্ভিতিত দেখা যায়, তাহলৈ শ্রীবার্ত্তা মহাশেবতা দেবীর চিস্তার পরিপ্রেক আরো এমন কিছ্ পাওয়া যাবে যাতে সব কিছু মিছিরে আমরা দেখতে পাব, সাহিত্যিক এই অসমথেরি দায়িত্ব কেবল সাহিত্যিকদেরই নয়।

-ধরা বাক, এথানে সুম্প্র পাঠক বদি সাহিত্যের দরবারে জীবনের প্রতি উদ্মুখ হওরার প্রাথনা ানরে এসে দীড়ায়, তাহলে সে সেখানে কতথানি স্বিচার আশা করতে পারে? প্রথম দৃশ্টিতেই সাহিত্যের ভূগোল দশলৈ সে ব্রতে বাধ্য হবে, বেবছার সে अक्टो मन्दर्णेत मन्द्राधीन इद्वरका सम्बद्ध পাবে সাহিত্যের দেশ শতধ্যাবভর আর বিশ**ুখ র**সের প্রবাহ কীণরোতা। একে সাহিত্যের বৈচিত্র বললে ভূল হবে। কারব এই বিভাজনের পেছনে রয়েছে উন্দেশ্যের বিরোধ। একদিকে रवीमकार्यपन्य नक রচনার নিল'ব্জ হাতছানি, তারই পালে উপন্যাসের (जारिशमा अनगंभी । अभागितक উल्लामिक ग्रावश्यासभी সাহিত্যের অনাকর্ষণীয় ভদগত গাল্ডীর্য পাশে ছাচে-ফেলা সাহিত্যিকের ভাত্তিক আলাপন। এ অবস্থা দেৰে পাঠক কিছাটা অস্বস্থিত বোধ করণ্ডো বাধা। সে ক্ষীণস্লোভা সহিভারসপ্রবাহে অবগাহুন করতে বায়, ডাহলে দেখতে পাবে সম্ভরণ করার মত বিস্তৃতি ও গভীরতা এতে নেই। এ অবস্থার জন্য দায়ী কেব**ল** লেখকরাই নয়, পাঠকরাও। কারণ সাহিতা-গুলায় অবগাহন করে নবজীবনে উপ্যুক্ত হওয়ার মত অখন্ড পাঠকসমাজও যে আজ আর নেই। এখানেও ভাশ্যনের প্রক্রিয়া সক্লিয়, এখানেও দল, গোণ্ঠী আৰ বিচ্ছিন্নতা। কিছুদিন আগেও ৰে সাহিত্য নানাভাবে সমাজকে প্রভাবিত করতৈ পারত তার কারণ তথন অখণ্ড পাঠকসমার বলতে একটা কিছু ছিল। রাজনীতিতে যেমন জনসাধারণ কথাটা আজ লোক-শ্রতিতে পরিণত হয়েছে. এর **স্থলে এসেছে** দল ও গোষ্ঠী, তেমনি অখণ্ড পাঠকসমাজও আৰু স্মৃতিমাত। ভাই চিড-খাওরা ব্যক্তি যেমন কোন কিছ্তেই সাড়া দিছে পারে ना, आफारिरतारथत भरशा **७ ग्विशात भरशा** প্রবির হয়ে থাকে, তেমান বিখণিডত পাঠক-সমাজ আর সাহিত্যিক আহ্নানে সাড়া দিতে পারছে না।

> বৈনয় রাজ্ চিশ্রের

मानिशि

পশ্চিমবংশে আবার মন্দ্রিসভা গঠনের জকপনা-কল্পনাকে ধীরে ধীরে বাস্তব রূপ দেওয়ার প্রচেন্টা চলেছে। অতীব স**ন্**তপ্ণে নয়া-জ্বোট স্থাণ্ট করে একটি গণতাথিক সরকার প্রতিষ্ঠার জনো হাচ্চফিল বিভিন্ন দলের নেতাদের মধ্যে মন নেওয়া-দেওয়া চলছে। অবশ্য, প্রকাশ্যে একথা কেউ স্বীকার করবেন না। আগামী মধাবতী নির্বাচনের দাবীর উপর জোর দিয়ে একটি বাতাবরণ স্থান্ট করার উদ্যোগ পর্বের পেছনেই রয়েছে আর একটি মরকার গঠনের পরিকল্পনা। পারিপাণিবকৈর বিভিন্নতা. ম লায়নের মধ্যে পার্থকা যথেন্ট প্রতি-বংধকতার সন্টি করলেও এ ব্যাপারে যাঁরা অগ্রণী হয়েছেন তার এখনও দমে নি। অন্যান্যবার কর্মস্চীর ব্যাপারে মতানৈক্য দেখা গেছে। এবার কিন্তু অদ্যাব্ধি কর্ম-সূচী বাধা সূণ্টি করছে বলে মনে হয় না। সরকার গঠিত হওয়ার পর বদি কর্ম-স্চী রূপায়ণে ব্যথ হয়, বা প্রস্তাবিত গণতান্ত্রিক সরকার রাজ্ঞা পরিচালনায় অক্ষম হয়ে পরে, তবে পশ্চিম বাংলার ভবিষাৎ গ্ৰান্ধনীতিতে এক ভয়াবহ প্ৰতিক্লিয়া দেখা দিতে পারে—এই আশ৹কায় শতিকত হওয়ার ফলেই প্রচেন্টা শম্বক গতিতে চলছে বলে অনুমিত হয়। প্রশাসনিক ও রাজনৈতিক নেতৃত্ব দেওয়া আদৌ সম্ভব কিনা সেই বিষয়েও গবেষণা চলছে। কারণ, যারা এই প্রচেণ্টা চালাচ্ছেন তারা একথা বিলক্ষণ জ্ঞানেন যে লালদীঘির দশ্তর তাঁদের কাছে আদৌ কুস্মাস্ভীর্ণ হবে না। সরকার গঠন করার অবাবহিত পরেই আসবে হিংসান্মক আন্দোলনের স্লাবন। কর্মসূচী রুপায়ণের পথে আসবে দৃষ্টর বাধা। সবল হাতে এ সমস্ত দমন করে এগিয়ে যাওয়ার মত মানসিকতা ও নেতৃত্ব সম্ভাব্য সরকারের থাকবে কিনা তারই পরীক্ষা-নিরীক্ষা বৰ্তমানে চলছে।

রাষ্ট্রপতি শাসন প্রবর্তিত হওয়ার
পরও কেন বার বার সরকার গঠনের চিন্তা
আসছে এ প্রশ্ন অনেকের মনে নাড়া দিতে
পারে। কারণটা অতীব স্বাভাবিক।
প্রস্কার করলার ঘটনা উল্লেখ করলে
উত্তরটা পরিক্লার হরে যাবে। করেক সপ্তাহ
আগেই কেরলার বিশ্লবী সমাজতল্টাদলের
কার্যকর সমিতি এবং ঐ দলের কেন্দ্রীর
ক্রমিটির এক বৈঠক গ্রিবান্দ্রমে অন্তিত
হয়। পাঠকরা জানেন, কেরলা আর এস

পি সেখানে রতমান ফ্রন্ট সরকারের শরিক হলেও মন্দ্রিসভায় যোগদান করে নি। তাঁরা বলেছেন, বে মহেতেই বোঝা বাবে সেখান-কার সরকার ইন্দিরা কংগ্রেসের সমর্থনের উপর নিভারশীল তথনই সমর্থন প্রত্যাহার করে নেওয়া হবে। অধিকস্তু, কেরালার সরকারী দলগ্রিলর মধ্যেও অন্তর্শ্পর প্রবল হওয়ার ফলে সরকার বেশ সংকটের মধ্য দিয়েই চলেছে। একথা অবশ্য ঠিক. আইনানুগ পশ্থায় কেরালার বর্তমান সরকার কতকগালি বৈশাবিক কম'পন্থায় ইতিমধোই হাত দিয়েছেন এবং সমস্ত বাধা বিপত্তি অগ্রাহ্য করে ধীরে ধীরে এগিয়েও যাচ্ছেন। কিম্তু তব্ও আর এস পির তরফ থেকে মুখ্যমন্ত্রী শ্রীঅগ্রুত মেননের কাছে নাকি স্নিদিশ্ট প্রস্তাব দেওয়া হয়েছে যে তিনি বদি অবস্থার গ্রুতর অবনতি উপদস্থি করেন তবে যেন রাজ্যপালের কাছে মধ্য-বতী নিবাচনের দাবী জানিয়ে মন্তিসভা ভেঙে দেন। প্রস্তাবের অন্তর্নিহিত উদ্দেশ্য হল, রাজাপাল অচ্যত মেনন সরকারের প্রস্তাব মেনে নিলে তাঁকেই কেয়ার-টেকার সরকার **जीनास याज** निर्माण पार्यन। करन स्मर्ट সরকারের ব্যবস্থাপনায় নতুন নির্বাচন অনুষ্ঠিত হলে সি পি এমের সংখ্যাধিকাতা কমতে বাধা। ফলে নতন করে বর্তমান মোচার সরকার গঠিত হলে প্রতিনিয়ত সংকটের সম্মুখীন হতে হবে না। বর্তমান মোচার শরিকরা নিবাচনে ভাল ফল করতে পারবে বলেই আর এস পির ধারণা। কেননা বর্তমানে ফেভাবে তারা জনকল্যাণমূলক কাজ করছেন তার একটি শভে প্রভাব কৃষক, শ্রমিক ও মধ্যবিত্ত শ্রেণীর উপর পড়তে বাধা। এ তথা এখনও আলোকপ্রাশ্ত না হলেও এ ফরম্লার কার্যকরিতা বর্তমানে পরীক্ষাকরে দেখা হচ্ছে।

পাঠকর। হয়ত প্রথম করতে পারেন, কেরালার অবন্ধার সপো পশ্চিম বাংলার মিল কোথার? মিল অবশা এখন নেই। কিন্তু দেই অবক মেলানোর জনোই বর্তমানে এই রাজ্যে চেন্টা চলছে। বিশেলবণ করলে দেখা যাবে, বাম কম্নানিস্টদের সাংগঠনিক শত্তি ও সংগঠন কেরালার চেব্লে পাঁচম বাংলার বেশা। বিগত ফুল্ট সরকালের সময় তাঁদের শত্তিই শুধ্ তাঁরা এই রাজ্যে বাড়াতে সমর্থ হননি স্কংহত করেছেন অনেক-শান। বাজেই রাজ্যপালের শাসনকালে অবিলন্ধে বিদ্ মধ্যবতা নির্বাচন অনুতিত

হয়, বাম ক্যুন্নিস্টদের ধারণা তীয়া একক-ভাবে লড়াই করণেও তাদের বর্তমান বিধান-সভার শক্তি হয়ত বজায় রাখতে পারবেন। নিৰ্বাচন বতই দেৱীতে জন্মিত ছবে, वाक्रोर्नाष्ट्रक शर्यायकक बहुल घटन करतन. বাম কম্মানিশ্টদের হালে গড়ে ওঠা সংগঠন-भूमि क्रायेटे मूर्यम ७ अवरमस्य म् ॰ ७ रस যাবে। আর বিধানসভা ভেঙে দেওরার দাবীকে যদি কার্যকর করা যায় তবে অনা কেউ মন্মিসভা গঠন করে ফেলবে এমন একটি দুশ্চিন্তার হাত থেকেও পরিৱাণ পাওয়া যায়। তাছাডা জনসাধারণের অর্থ অপব্যয়ের কথা তুলে বিধানসভা ভেঙে দেবার আন্দোলন করলে আম জনতার কাছ থেকে একটি নৈতিক সমর্থন পাওয়ার আশাও প্রবল। এ প্রসংগ্য অন্য দলের কথাও মনে রাখা দরকার। রাজনৈতিক মহল মনে করেন, জনতার পকেট কাটা যাচ্ছে বশে परांग्न विश्वालक हास काता प्रमा **पार्टिंग**-লনের জন্য ডাক দেবেন, তা নয়। আসল প্রশন হচ্ছে বিধানসভা ভেঙে নাদিলে যে কোন মুহুতে বিকল্প সরকার কায়েম হলে বিরোধী বলের সংগঠনের ম্**লে আঘাত** পড়বার আশুফা **প্রবল। আপাতত এই** ভাবনা নাকি মাক'সবাদী কমার্নিস্টলের সমাধক বিচলিত করেছে। কারণ, **বে** প্রস্তাবিত সরকার গঠনের নেপথা প্রচেণ্টা চলছে সেটা কংগ্রেস সরক্ষাত হবে না. মূলত বামপণথীদের**ই ম**িশ**ান্তা হবে। আর** যারা মণিচসভায় আসতে পারেন তাদের **ज्यानक्ट्रे भागिन गर्नेन ७ नमार कर्ना**व कोशन जस्तरभ्य जस्मूर्ण अहाकित्रहान। তাদের অনেকেই মার্কসবাদী লেনিনবাদী শিক্ষার নূমিকিত, এবং সমস্ত বামপদ্ধী কৌশলের সংখ্য তাত্ত্বি ও বাস্তব দিক থেকে খ্ৰই পরিচিত। কথাই আছে, যেমন শনু তেমনি সৈনিক নিষ্ট করাই বাছনীর। भाक नवानी कम्यानिक्रोतित शास्त्र अ दाका তুলে দিয়ে অন্যান্য পূর্বতন শারকরা ও আর তাঁব গাটিয়ে ফেলতে পারেন না। কাজেই বিকল্প সরকার গঠনের এই প্রচেন্টা।

এখন প্রশন হচ্ছে,—এ সরকার গঠন কি
প্রকারে সম্ভব? এবং গঠন করকেও কারা
এই সরকারের দারিত্ব নিতে পারেন। কংগ্রেস্
ও মার্কসনাদী ক্রম্যানিন্দরে দক্রের্ পক্রে সরকার গঠন অসম্ভব। বতুমান অবস্থার কংগ্রেসের কোন গোডাই এই চিম্টা মনে The second second

न्यान निरंक आएतम मा । माह्य नवानी ক্ষ্যালিউদের ভারক থেকে প্রীজ্যোতি বস্ **य्वक्र वे शतकात भक्तात क्यान यक भश्रदे এই क्रमी करबोहरमध। करब का मर्जिका-**गृत्वहे अक्षणाच करताक । अक्षणाच वारमा करमान स्नाका श्रीकालक बारगानामात व বভারাদের অক্টবাম এই প্রচেন্টা কলেন মি। व्यनामिटक कार्केवारमञ्ज भरका न्यूपि क्षान्य मिरक টানা-পোডেৰ চলছিল। প্ৰথমত, চৌশ দলের প্রেক্তন ব্যক্ত-উবে প্নের্জীবিত করা। ব্রিতায়ত এই প্রদতাৰ কার্যকর করা जन्छ्य का बटल संशावकी मिनीहरू। व्यवना নিৰ্ভিন কৰে হৰে বা হওৱা উচিত, জন্ট-বাৰ্মেৰ কৈনি পৰিকই জন্মবৰি তা म्यानिकिकार्य बरकनं नि । किन्छ अक्रि विवरत और रकार्टेड जनका भविकरे धक्यादिका चीनमा करमरक्रम रव, करश्चरमत रकाम **জাটোরই প্রভাক্ষ**্বা পরোক্ষ সাহাত্য নিরে তারা **সরকার গঠন করবে**ন না। এখন ত দেৱ এই ডিনটি বৰবোর প্রতিরিয়া विटम्मवन कता वाक। क्रीन्न महित्कत क्वटन्ट्रेन পনের ক্ষুবিনের কথাত উপর বার বার জোর দেওয়ার ফলে রাজ্যের প্রশাসনিক কেতে **এकपि माठम ध्यंग्यात अ्चि श्राह्म, अक्या** অন্ট্রায়ের শরিকরা বছমানে উপলব্ধি क्तरक भावत्कम यत्म भाग करा। जीतन करे व्यागाह्मस यहा क्यां हातीहरूत ज्ञाक महत्त्रहे একটি ভাষের ভাব দেখা দিয়েছে। কারণ প্রতি পদক্ষেপেই কর্মচারীরা তাদের কাল **ভবিষাং প্রভূদের মনোরঞ্জনের সহায়ক হবে** কিনা সেই কণ্টি পাথরে যাচাই করে দেখবার ফলে সৰ কিছাই বিলম্পিত হচে: কেন বিশেষে পরিতারও হয়ে যাছে। এবং ফ্রন্ট প্রনর জনীবিত হলে বাম কম্যানস্ট্রাই আবার প্রশাসনের মধার্মাণ হয়ে উঠবে একথাও কর্মচারীরা আন্দান্ত করে নিয়ে এক পা এগিয়ে যাওয়ার ভান করে দশ পা পিছিয়ে বাচ্ছেন। আর এই খ্লম্থ কর্মপশ্যা প্রচারের अबर्तन्त भाग भणना य्रीगतत याटक ताच्ये-পতি লাসমের বিরুদেখ। অণ্টবামের এই অবস্থা থেকে প্রচারের স্বিধা হতে পারে वरहे, किन्छू चहेमाश्चवाहरक अभाकाल আনার পারিপাশ্বিক গড়ে উঠছে না। যা কিছ, লাভালাভ ড়া বাম কম্মানিস্টদের তহবিলেই জমা পড়াছে বলে অনেকের ধারণা। আর মধাবতী নির্বাচনের জন্যে সমন নিয়'ণ্ট নিম্পারিপের প্রশেনও অঘ্টবাম বিলাম্বিত লয়ে চলছেন। বারণ—আর এক⁶ট নির্বাচনে লড়বার মত অগনৈতিক সামণ্ট এই মোচার মধ্যে সাতটি দলের নেই বলে प्रस्तरकत शातना। फ्रम् श्रीत स्कारे वीधात **भरक** जंबनेशा अथनक भरताभर्गत जनक्त इति ওঠেমি। বাংলা কংগ্রেস নেতা শ্রীঅজয় মুখান্দ্রী-অবশ্য একটি সাবিক তাশ্যিক মোচার কথা ইতিমধ্যেই তুলেছেন। ভিনি কংগ্রেল ও ধামক্ষানিক দুই দলের ৰেট্ৰ ভটাৰ ৰাক্ষার জনো আগ্ৰহও প্রকারী করেছেন। আপাতদ্রক্তিত মনে হয় শ্রম খালি অন্ট্রামের প্রতিই ঝ কেছেন। क्षिक का स्टब्स्क अधिकारवादमात कविशार

दावनीवित विक कि हरत अवधा वासकरकरे ভাৰিত করেছে। অভীতে কেরালায় বা इर्ट्सरक छात्र भूमवाकिमत्र इरात आगश्का रबरक अरे बाकारक मूळ बाबनाव प्रवाहनार विकाल महकार महत्वा और ग्रामा है। शक्रिकरमस निम्हत्तरे बदन खादक दक्षाणात व প্ৰশিক্ত ক্ষুদ্ৰেক দকাৰ দ্বাদ্যীপতির পাসন প্রবর্তিত হওরার ফলে^{ট্}রাজনৈতিক অবস্থার ৰে অনিশ্চয়তা দেখা দিয়েছিল তার অবশাস্তাবী ফল হিসাবে উলয়নমূলক কাজ ৰাৱে বাবে বাহত ছয়েছে। পশ্চমবৰণ এখনই অদ্যান্য রাজ্য থেকে সর্বক্ষেতেই অনেক পিছিয়ে আছে। আবার রাণ্ট্রপতি भागरनव ग्रेना-रभार्करनव रेपना भावा हरन धरे बारकात व्यवस्थानीरम्ब क्लार्ज् रव हत्वश्र দৃঃখ আছে তা রাজনৈতিক নেতারা বিলক্ষণ উপলব্দি করছেন। একমত হ**ন** বা না হন, একথা সভা, বে স্বৰ্গত ডাঃ বিধানচন্দ্র রাজের নেতৃত্বের অবসান ঘটার পদ থেকে পশিচ্ছবাংলার কোন পরিকণ্পনা বার্গতর ক্ষেত্রে কার্যকর হয়নি। কংগ্রেসের भ्य भाषामनी श्रीक्षमानन्त सामान আমলেও নর। বদ্যুতপক্ষে তখন থেকেই পশ্চিমবাংলার বাজনীতিতে অনিশ্চিত অবন্ধার শিলান্যাস হরেছে।

অণ্টবাম যথন দুই কংগ্ৰেলের প্রত্যক্ষ ও পরোক্ষ সাহায়া নেবে না বলে অণ্যাকার-ৰন্ধ, তথন কি স্তু অবলন্বন করে আর **এकটি पिकल्भ সরকার সম্ভব? রাজনৈতিক** भर्गातकक भरत मान कताहर रा अध्येतास्मत নেতারা য'দ বাংলা কংগ্রেসের সংকা সহ-মত হন তবে বিধানসভায় সংখ্যাপরিষ্ঠতা অর্জন করবার জন্য দটে কংগ্রেস থেকেই অনেকে বেরিয়ে এসে একটি প্রগতিশীল ব্রক গঠনের সম্ভাবনা উজ্জবল হয়ে উঠবে, তথন কংগ্রেসের সমর্থন নেওয়ার যে প্রশন তা আর থাকবে না। নয়া ফুল্ট পশ্চিম-বাংলার শাসনভার হাতে নিতে পারবে। অধ্নাল হত যুক্তফুণেটর ৩২-দফা কর্ম-স্চীকে ভিত্তি করে কয়েকটি দফায় যদি কিছু পরিবর্তন করে সময় ভিত্তিক পরি-কলপনা ও অগ্রাধিকারের প্রশনকে মেনে নিধে আর এস পিও এই জোটে আসতে গররাজী হবে বলে মনে হয় না। আর লোকসেবক সংঘ না এলেও এই জোটের বিরোধিতা कत्रत ना रामहे भातना। छार वहे स्माउं গড়ে তুলবার জন্য ইতিসধ্যে একটি সর্ব-ভারতীয় প্রচেণ্টাও নাকি হচ্ছে। কেউ কেউ বলছেন এস এস পি বলি বাম কমানিস্টদের সংখ্যে আঁতাত বন্ধন করে কেরালায় অচ্যত प्रमान नवकाराव नशरवाणी हरू वाक्री श्र তবে আর এস পি পশ্চিমবংকা আন্ট্রামের সংগ্ৰে সহযোগিতার হাত বাডিরে দেবে।

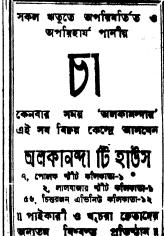
এদিকে আবার খবর শোনা বাচ্ছে যে বাম কম্মান্টদের মধ্যে গ্রহীবাদ দাকি প্রবল হয়ে উঠেছে। নিদেনপক্ষে বিশস্তন আইনসভার সদস্য নাকি বর্তমান দলীয় দাতির সপো সহয়ত হতে পারছেন না। বাম কম্মান্টিরা বর্তমানে যে মিলিট্যাটি লাইন নেওবার জন্যে প্রিছ গ্রেণ্ট সংগ্রনেই

উঠে পড়ে জেপেছেন, বিশেষণ বহুলে দেখা যার তাঁদের ঘোষত কর্মনীতির সংগ্য বা আদর্শগাত ঘোষণার সংগ্য অনেক জায়গায় ছার মিল নেই। সংগঠনকে মলবুত রাথবার উন্দেশে। তাঁরা যে জ্বণাঁ দ্বিভিভিগ্য গ্রহণ করাছেন আখেরে তা ক্তট্কু ডিভিডে-ড দেবে সে সম্পর্কে নিজুন্ভাবে চিম্তা করবার যথেত অবকাশ রয়েছে।

বা হোক, অভ্যবামের সংখ্য বাংলা কংল্লেস, আর এস পি ইত্যাদি দল যোগ দিয়েও বদি কোন সরকার গঠিত হয় তাও বেশীদিন চলবে বলে রাজনৈতিক ভাষা-কাররা মনে করেন না। বিগতে ফ্রন্ট আমলে দুষ্টীয় সংগঠন বাডাবার অস্পবিস্তর কায়দা এ'দের অনেকেই পিথেছেন। আবার সেই নৈশায় যদি পেয়ে বলে ভাবে ত কথাই त्नरे. वांकवाद्व स्नामास स्नारांगा। किस् কিছু কাল্ল-কর্ম' ভাহলে প্রথমদিকে করতে পারক্ষেত্ত পরে আর বিশেষ এগতে পারা যাবে না বলেই অনেকের ধারণা। কারণ নয়া জোটেরও কোন গ্রেণত পরিবর্তন হবে ना या जाममांगर जिल शाकरत ना। गृथः এইটাকু লাভ হতে পারে যে কেয়ার-টেকার সরকারের দায়িত্ব নিয়ে সম্ভাব্য সরকার নিৰ্বাচনে কৈছু ভাল ফল লাভ করতে পারে। সেও পুনঃ পদত্যাগের পারি-পাশ্বিকতার উপর সম্পূর্ণ নিভ'র করবে ৷

এ থবর যথন কলকাভার বাজারে অবপবিশ্বর শোনা যাঞ্জে তথন শহরবাসীর জন্যে
আরও একটি সপেদশ পরিবেশিত হয়েছে।
সেটা হঞ্জে স্পরিচিত শ্রীআশু ঘোষও নাকি
প্রমরার আসরে নেমেছেন। তরি প্রচেণ্টা
নাকি চলছে বাম ক্যানিস্ট ও কংগ্রেসের
কিছু সদস্যকে নিয়ে একটি নতুন জোট
স্থিট করা। স্রণ্টার প্রয়াস কডদ্রে সাফলামণ্ডিত হবে জানি না, তব্ও বলতে হয়—
'এত ভংগ বংগাদেশ, তব্ রঙা ভরা।'

-সময়পণী



मुद्रालका मार्किंड वास्ट्रात मान्यम कर्केड व्यवस्था काट्या काट्या विवाद स्थानसम्भा सिनंदी क्षेत्रमा गान्यी वर्षण निर्द्रात । विवाद कार्नापटक या वा करदाम (म) कविधित स्थानसम्भ ट्रिकेट स्थानसम्भागक त्याव क्रिकेटलान्य स्थानसम्भ



न्ति विस्तृत

and the second

'বোদ্বাই থেকে দিল্লী'', 'সমাজতান্ত্রিক সত্তর প্রভৃতি দেলাগানের মধা দিয়ে নয়া-দিলীর মবলংকার হলে নিখিল ভারত কংগ্রেস ক'মটির (নয়া) যে অধিবেশন হলে গোল সেটা সারা সংতাহ ধরে সংবাদপত্র পাঠকের দৃটি আকর্ষণ করে রেখেছে।

এবারকার এই অধিবেশনের স্বচেরে
লক্ষণীয় বিষয় হল, একদিকে নরা কংগ্রেস
যখন গণতন্ত, সমাজতন্ত ও ধর্মানিরপেকতার
আদর্শে বিশ্বাসী সমদত দলের সহযোগিতা
আহনান করেছে এবং শ্রীস্তক্ষণাম প্রমুখ
নেতারা যখন দক্ষিণপশ্বী সংহতির বিরুদ্ধে
বামপশ্বী সংহতি গড়ে তোলার কথা বলে
ছেন, তখন নরা কংগ্রেস দলের ভিত্রের
কিন্তু মত ও দ্ভিউভগার বিন্ত্র পার্ধকা
দেখা শেছে।

সবচেরে গ্রেত্র পার্থকা দেখা গেছে নকশালপথী আন্দোলন সম্পর্কে কি দ্নিউপা নেওয়া হবে সেটা ম্থির করাব ব্যাপারে। আর এই বিষয়ে সবচেয়ে বেদী ক্ষান্ত নিয়ে ফিরে এসেছেন পাণ্চমবংশর প্রতি নধিরা। তাদের অভিযোগ এই যে, অধিবেশনে গৃহীত প্রশতাবে দক্ষিণণথী প্রতিক্লিয়া ও সাংপ্রদায়িকভাবাদের বিপনের উপর যতটা ক্লোর দেওয়া হয়েছে, সেই তুলনায় নকশালপন্থীর বিপদটাকৈ আমলে আনা হয়নি।

একজন পর্যবেক্ষকের মতে, এ-আই-নি-সিতে এবার পশ্চিমবংগার সদস্যরা যতটা প্রাধানা পেরেছেন নিকট অতীতে আর কথনও ততটা প্রাধানা তারা পাননি। পশ্চিমবংগার এই সব সদস্য মবলংশার হলের অধিবেশনক্ষেত্রে বক্তৃতা করতে উঠে-ছিলেন প্রধানত বিভিন্ন বিষয়ে দলের নেতা-দের বামঘোনা মধ্যপশ্ধার বিরোধিতা করার জন্য।

গশ্চিমবংপার সদস্যরা বোঝাবার চেণ্টা করেন যে, সি-পি-এম ও নকলালপ্রথানের মধ্যে খবে বেলী পার্থাক্য করা ঠিক নর। আন্দর্শ আম্পার বলেন, দুই দলের তফাৎ

ण्यः नारमः श्रीकृषी स्थाय वर्त्यनः নকশালপম্থার আডালে মাকসিবাদী ১৯৪৯ সালের রণদিবেদ লাইন চালাচ্ছে শ্রীঘোষ পশ্চিমবভগর ক্রাপাল শ্রীশাণি দ্বর্প ধাওয়ানকে 🐃 ্য় নিয়ে যাওঃ দাবী তুলে বলেন যে, রাজ্যপাল ভ মশ্তিত ও বিবেক শ্রীজ্যোতি বসরে কা বাধা দিয়েছেন। শ্রীতর্পকাশ্তি ঘোষ वर्षा आत्कर्भ करत्रम या. नकमालभाषी कार कमाभरक माध्याव 'वामभन्धी इठेकाविए বলে অভিহিত করা হয়েছে। তার নিজে মতে এই কার্যকলাপ দেশক্রেহিতা ছাং কিছু নয়। পশ্চিমবশ্যের আরও দৃক সদস্য শ্রীমতী ইলা পালচৌধরী ও শ্রী শং কুমার থালা এই বলে ছ্ব'শিরার করে দে যে, নকশালপন্থীদের বিরুদ্ধে ব্যবস্থ অবলম্বনের ব্যাপারে দিবধা করা হলে সা পশ্চিমবংগই হাতছাড়া হয়ে হাবে। নলিনাক্ষ্য সান্যাল প্রস্তাব করেন যে, যে স গ্রামে নকশালপন্থীদের উৎপাত দেং দিয়েছে, সে সব গ্রামে উপযুক্ত তালি দেওয়া ও উপযুক্ত অন্তে সন্দিত্তত প্রতিরো বাহিনী গঠন করা ছোক।

পশ্চিমবঙ্গের সদসারা শুধু তাঁথে বস্থৃতায় এসব কথা বলেই ক্ষান্ত থাকে এ-আই-সি-সির সদস্যদের মধ্যে একটি অবলৈতিক ক্ষান্তীর বাজাকে পদ্ধদের নোট বিলি করে তাতেও তারা একই অবস্তুক করা কাজে। এই স্বর্জার কোন রবনের ক্রতিমত প্রকাশ করেছেন।

माटो এই वटन महत्त्व **अकाम क**ता হরেছে বে, কেন্দ্রীয় নেতারা রাষ্ট্রীয় স্বরং-সেবক সম্প ও জনসংখ্যে সমালোচনা করে বকুতা দিয়েছেন, অথচ সি পি এম-এর লোকরা ও নকশালপশ্বীরা পশ্চিমবংশা কংগ্রেসকমী দের হত্যা করা সত্তেও তাদের কার্যকলাপের বিরুদের কঠোরভাবে কিছা বলা হয়নিঃ সিপি এম-এর লোক ও নকশালপন্থীদেই মধ্যে পাথকা ইতটা দৃশাত ততটা বাস্তব নর। ছফাংটা শ্ব্ব পশ্বতি ও সমরের ব্যাপারে, উদ্দেশ্যের ব্যাপারে নর। যুত্তফ্রন্টের আমলে স্বরাষ্ট্র দশ্তর মার্কস-বাদীদের হাতে থাকতেও নকশালপন্থীদের কার্যকলাপ দুত বিস্তার লাভ করেছে, ছাট্র ও শ্রমিকদের মধ্যে মাওবাদী সাহিত্য বিলি করা হয়েছে এবং প্রকাশ্যে অস্ত্রশস্ত্র তৈরী করতে ও কেনাবেচা করতে দেওরা হয়েছে। পশ্চিমবংগ প্রদেশ কংগ্রেস

পক্ষ থেকে প্রস্তৃত এই ুনোট-এ রাজ্যপাল শ্রীধাওয়ানকে পশ্চিমবংগ থেকে সার**য়ে** নেওয়ার দাবীও রাখা হরেছিল। কিন্তু প্রধানমন্ত্রীর শিবির থেকে চাপ দওয়ার শেষ পর্যাত পাশ্চমবংগর নেতারা নোট থেকে ঐ অংশটি বাদ দেন। প্রধানমন্ত্রীর শবির থেকে পশ্চিমবংগার নেতাদের একথা বিশেষভাবে বোঝান হয় যে, রাজ্ঞাপা**ল** কেন্দ্রীয় সরকারের হয়ে কাজ করছেন। তাঁকে সরিয়ে নেওয়ার দাবী তোলার মানে হচ্ছে কেন্দ্রীয় সরকারকে বিড়ম্বনার মধ্যে ফেলা অথবা তাঁদের বিরুদ্ধে অনাস্থা প্রক:শ করা। তাছাডা পশ্চিমব**েগর 'নয়া' কংগ্রেস** নেতাদের একথাও মনে রাখতে বলা হয় বে. এর আগেরবার যখন রাজ্যপাল শ্রীধর্মবীরকে দিয়ে পশ্চিমবংগে শক্ত হাতে শাসন চালান হয়েছিল, তখন সেই কাজের ফল পাঁশ্চম-বংগের কংগ্রেসের পক্ষে ভাল হয়ন।

নকশালপণখীদের সম্পক্তে কঠোরতর মনোভাব অবলম্বন করার জনা পশ্চিমবংগার সদস্যরা যে দাবী তোলেন সেটা মবলংকার হলে একমাত কেরলের কিছু সদস্য ছাড়া আর কারও সমর্থনি লাভ করেনি। পশ্চিমবংগার সদস্যরা যেসব সংশোধন প্রশত্তবে এনেছিলেন, সেগালি সবই অহাহ্য ইয়েছে। শ্রীস্রক্ষাণাম বলেন, পশ্চিমবংগার জনসাধারণকে যেসব অসাবিধা ভোগ করতে হচ্ছে, সেগালির দর্ন পশ্চিমবংগার মান্বের প্রতি এই সভার পূর্ণ সম্পন্ধ রক্ষেছে। সেই কারণেই প্রশ্ভাবের মধ্যে আমরা বলেছি বে, আইন ও শৃংখলা বজার রাধতে হবে।

নেতারা অতি-বাম বিপদের স্বর্প উপলব্দি না করার পশ্চিমরুপোর সদস্যরা ক্ষুম্ম হরেছেন আর দলের বামুখেবা সদস্যরা ক্ষোভ প্রকাশ করেছেন সরকারী কার্ব-কলাপের মধ্যে মৌলিক অর্থনৈতিক সংস্কার সাধনের বাাপারে বংগুণ্ট তংপরভা বা আন্তরিকতা দেখা যাঞ্ছে না বলে।

নন। কংগ্রেসের অন্যতম তর্ণ তুকী' শ্রীমোহন ধাড়িরা তীর আন্তমণ করে বলেন বে, বোদ্বাই এ-আই-সি-সি-র শ্রীত

कियार राज्या हरू, राग्यान साम न्यान यात ना। जिनि बंदगेन द्य, बाणनारमंत्र कीका বিলোপের ব্যাপারে বলি অস্ট্রিয়া দেখা দিলে থাকে, তাহলে কংগ্রেসের উচিত ঐ প্রশ্নে সরকার থেকে পদত্যাগ করে নির্বাচক-মণ্ডলার সম্মাধীন হওয়া। <u>শ্রী</u>কালী মুখালি প্রদান ভোলেন, বছ প্রাণীর প্রতি-নিধিদের নিয়ে গঠিত কংগ্রেস কি করে সমাজতাশ্যিক বিশ্লবের নেতৃত্ব क्रिक्ट ? শ্রীমতী সাবিহাী নিগম ক্ষোভের সংগ্রে করেন্ 'এই সৰ বাধাধরা বুলি ও প্রস্তাৰ আমরা গত ২০ বছর ধরে পানে আসছি। আর্থ-নৈতিক ও রাজনৈতিক প্রস্তাবগঞ্জ

ভাষমান্ত চিতার প্রকাশ হাড়া আর কিছ্
নর। গোলার একজন সদস্য কলেন বে,
বোশ্যাই অবিবেশনে গাছীত প্রশানাতা
ভাবজর করার সন্পর্কে বে রিপোর্ট দেওরা
হবেছে সেল্লি সন্পর্কে বে রিপোর্ট দেওরা
প্রধান করেন, 'এই রিপোর্ট দিরে আমানের
মেনির দেওরার চেন্টা করওছন কেন!' তিনি
দের্থনি বে, রুতানী বাগজ্য রাদ্ধীরাক করের
প্রতিস্কৃতি সন্তেও গোরার আক্রিক লোহার
অবেট্র অথাং ৮০ কাক্ মেট্রিক টনের বেশী
রুতানী করার অনুমতি সামুক্ত রাজপরিলারের লোকদের দেওরা হরেছে।

করেক দিন আগে বে, 'খ্যে এ-আই-সি সি-র' অধিবেশন হয়ে গেল সেখানও নরা'

ভারবি-র জনন্য জর্ম্য

ध्यष्ठं कित्रा धन्नुप्ताना

• দ্বতীয় পৰ্যায় •

ভারবি-র অনন্করণীয় শৈলীতে

চি শ টি খ শেড

রবীল্ড-সমকাল থেকে সাম্প্রাতককালের

চি ল জান প্রোষ্ঠ ক বি র

সমগ্র কাব্যসাধনার শোভনস্পের সংকলন

কবিতা-প্রেমিক বিদেশ পাঠকের জন্য একটি নির্দিণ্ট মানের গ্রুণথনার, স্থোগ্য নিতৃত্ব সম্পাদনার ঝালা সাহিত্যের সম্পর উল্লেখ্য কবির স্নিবাচিত কবিতার এই সংরক্ষণীয় গ্রুণথনালার পরিকণ্পনা। প্রকাশ-বন্টনের স্বিধাণে এই চিশটি খন্ড তিন পর্যায়ে প্রকাশিত হচ্ছে। প্রথম প্র্যায়ের দুর্শটি খন্ড ইতিমধ্যে প্রকাশিত। শ্বিকীয় প্রায়ের রয়েছে:

_	
অমিষ চক্রবতীর শ্রেষ্ঠ কবিতা	₽.00
সম্বয় ভট্টাচার্যের শ্রেষ্ঠ কবিতা	₽.00
অর্ণ মিতের শ্রেষ্ঠ কবিতা	9.00
দিনেশ দাসের শ্রেণ্ঠ কবিতা	७.00
মণীন্দ্র রায়ের শ্রেষ্ঠ কবিতা	\$.00
অরুপকুমার সরকারের শ্রেষ্ঠ কবিতা	\$.00
রাম বসরে শ্রেষ্ঠ কবিতা	৬.০০
অলোকরঞ্জন দাশগ্রণ্ডের শ্রেষ্ঠ কবিতা	७. ००
আলোক সরকারের শ্রেণ্ঠ কবিতা	७.००
শক্তি চট্টোপাধ্যায়ের শ্রেষ্ঠ কবিতা	৬.০০
	with amount and

সর্বশ্রেণীর পাঠকের স্মৃত্তিধাথে দিকতীয় পর্যায়ভূত্ত দশটি থড়ের ম্লা, এককালীন অথবা নিন্দার্শ ডিনটি কিচ্ছিতে অগ্রিম পরিলোধের শর্ড-সাপেক্ষ, ৬৫-০০ টাকার স্থলে মাত্র ৪৮-০০ টাকা নির্দিট হয়েছেঃ

১১ ज्ञाहेरत्रत मरश ১५.००

১১ जगरम्पेत मरश ১७.००

১১ সেপ্টেম্বরের মধ্যে ১৬.০০

প্ৰতক বিক্লেভাদের ক্ষেত্র ৬৫·০০ টাকার স্থানে ৪৫·০০; ডিনটি কিন্তি ১৫·০০ ছিসাবে পরিশোধা। ভাকে বই নিলে উভর ক্ষেত্রই ভাকস্কর স্বতন্ত।

फार्विव ১०।১ विका हाएँद्रका निए, क्नासका ১२



কংগ্রেস সরকারের নেতাদের এই ধরনের সমালোচনা শনেতে হয়েছিল। সেই সমালোচনা শন্নতে হয়েছিল। সেই সমালোচনা শন্ন প্রধানমন্ত্রী স্ত্রীমতী ইন্দিরা গাংধী এক ক্রুম্ব হয়েছিলেন যে, তাঁর সরকারের কার্যকিলাপ পছন্দ না হস্তে তাঁকে পালামেন্টারি পাটির নেত্রীর পদ থেকে সরিয়ে দেওয়ার জন্য তিনি সমালোচক-দের চ্যালেঞ্জ করেছিলেন।

এবার অর্সাহক্ সমালোচকদের জবাব দেওয়ার প্রধান দায়িত্ব গ্রহণ করেন প্রীওয়াই বি চাবন। তিনি বিশেষ করে প্রীথয়াহন ধাড়িয়ার মন্তবাগালির উল্লেখ করে বলেন, বোম্বাই কর্মস্চী রুপায়ণের ব্যাপারে দায়িস্থানীয় নেডাদের আন্তরিকভার যদি সমালোচকরা অবিশ্বাস করেন, তাহলে আমি ভাদের বলব, তায়া পাটির সংশেগ ভাদের স্পক্তা নুতন করে বিবেচনা কর্ন।

নির্বাচকমণ্ডলীর সম্মুখীন হওরার
জন্য শ্রীধাড়িয়া যে দাবী তুলেছেন, তার
উল্লেখ করে শ্রীচাবন বলেন যে, 'এটা কোন
বিচক্ষণ সেনানায়কের যুখ্য পরিকল্পনা নর।
আমরাং কি পরাজ্যের জন্য পরিকল্পনা করে হুল্লের জন্য পরিকল্পনা
করে? অথবা জয়ের জন্য? কোন সেনানায়ক
পর্যুল্যের জন্য পরিকল্পনা করলে জোন
বংশ্যমান সৈনিকই তার অধীনে থাকতে
চাইবেন না। ভথম নির্বাচন করতে হুবে
সেই সমর্ট্য দেতালেরই বেছে নিছে প্রের্থীমোইন ধাড়িয়ার আন্তর্রিকতা আমি
ভ্রীকার করছি। কিন্তু তার বিচক্ষণতা
আমি ভ্রীকার কর্মাছ না।

অসহিষ্ণ সমালোচকদের সমালোচন'র উত্তরে শ্রীচাবন, শ্রীমতী ইন্দিরা গাণ্ধী ও দরকারী নীতির অন্যান্য সমর্থকরা যা বলেন ভার মূল কথা হল, গণতদে এই সব ঘাপারে ধীরে ধীরে অক্সসর হওয়া ছাড়া উপায় নেই।

শ্রীমতী গাখা বলেন, 'বোদবাই কার্যসূচী র্পায়ণের ব্যাপারে সরকার যা করেছেন বা বা করেছেন বা বা করেছেন বা বা করেছেন বা বা করেছেন করার করেছেন করেছেন করেছেন কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান করিছে বা বা করিছে বা করিছে বা করিছে বা করিছে বা করার করেছে বা করার করেছে পারার বাব করারাদের করার করিছার বাবকার বাবকার

কেন্দ্রীর সরকারের অর্থ বিভাগের রাণ্ট-মল্লী শ্রী পি সি শেঠী বলেন যে, শহরাওলে সম্পত্তির উচ্চসীমা নির্ধারণ করে দেওয়ার ব্যাপারে একটি মডেল বিল তৈরী করা রাষ্ট্রীয়ন্ত ব্যাৎকগ্রীলর ভাষা ষণ্ডব'তী' বো**ড' সম্বর** ঘোষণা করা। হবে এবং সেগ্রিলতে স্থায়ী বোর্ড গঠনের পরি-কলপনা পালামেন্টের আগামী আধ্বেশনে **এ**क्टि उँवा (भग कता हर्द। **अक**ि বাবসায় কমিশন শীঘ্য গঠন করা হবে বলেও তিনি জানান। সাধারণ বীমা রাখ্যায়ত-করণ সম্পর্কে তিনি বলেন সরকার ও যে নেত্ত ব্যাৎকগ্রাল রাগ্যায়**ন্ত**-পরেছেন, ভারা সাধারণ বাঁমা রাণ্টারত ভরার প্রতিষ্ট্রতি ভণ্গ কর্ষেন দা। আমধা হাজীর স্থেগ মোকাবেলা করেছি। এখন অমরা কি একটা ^{পো}পড়ের সামনে কুকড়ে থাৰ অথবা দিশ্লা কৰ্ম স্থান

মক্ষণালপণ্ডী দর স্কানের ব্যাপাণ্ন প্রিচমব্তা ও কেরলের স্ক্ষারা যে দাবী তুলেছেন এবং অর্থনৈতিক \$2 7.51 র পারণের বিষয়ে কিছু কছ, সদস্য ব অসহিষ্ণতা প্রকাশ করেছেন, তা বাপ আরও দুটি বিষয় এবার এ-আই-সি-সি অধিবেশনের উল্লেখযোগ্য বৈশিষ্টা হিসাবে চিহি,ত হয়েছে। প্রথমটি হল, আধা-সামরিক সাম্প্রদায়িক সংগঠন । হসাবে রাখীর স্বয়ংসেবক সঞ্চ ও জামাত এ-ইসলামি-র নাম करत जाएमत कार्यकनान वन्य करत प्रमुख्य क বিষয়টি সরকারকে বিবেচনা করতে বলা হয়েছে। শ্বিতীয় উল্লেখযোগ্য বিষয় হল. আলাপ-আলোচনার মধ্য দিয়ে ভিরেতনাম সংঘাতের অবসান ঘটাবার পথ যাতে সংগম হয় সেজনা ইন্দোচীন থেকে মাকিন সৈশা र्गातारा नित्र याख्यात कथा वना एत्सा ।

লক্ষ্য করার বিষয় যে, ওরাকিং কমিটির
তরফ থেকে এ আই সি সি-র সামনে বে
সরকারী প্রশতাব রাখা হরেছিল, জার মধ্যে
সাম্প্রদায়িক সংগঠন নিবিধ করার অথবা
ইল্টোচীন থেকে মার্কিন সৈনা সরিবে নিবে
যাওয়ার প্রসংগ ছিল মা। অধিবেশনের
মধ্যে উত্থাপিত সংশোধন প্রশতাবের ভিতর
দিরে এই দুর্টি প্রসংগ চুকিরে কেবল ইর।

রাখীর প্রথমেক স্থা, সামাত-ই-ইসলায়ি প্রভৃতি ধরুনের সংগ্রনক আইনত নিবিশ্ব করার প্রশাসিতে যে প্রতিব্জা আহে, সেক্ষা উপলাধ করেই নিবিশ্ব ভারত কংগ্রেস কমিটির প্রশাসন স্বান্ধারী নিবেশাজা জারীর বাবী না ভূলে ও সম্পর্কে প্রশাসন সংকারের বিবেশনার স্বর্জনের ব্যবহান

-47-019



ভারত সরকার নীরব কেন

গাড় তিন চার মাস ধরে প্র'পাকিস্তান থেকে ক্রমাগত বন্যার স্রোতের মতো হিন্দ্র উদ্বাস্ত্রা আগছে। প্রথমে মনে হরেছিল স্থাড়াবিকভাবেই দৃঃস্থ লোকেরা বেমন সব সময়েই পাকিস্তান ত্যাগ করে পান্চমবংগা আশ্রর নের, এও তেমনি। কিন্তু এখন দেখা বাচ্ছে প্রতিদিন গড়ে এক হাজার থেকে দেড় হাজার উদ্বাস্তু আসছে বনগাঁ, বেনাপোল দিরে। ইতিমধ্যেই পঞ্চাশ হাজার উদ্বাস্তুকে কেন্দ্রীয় সরকার বাংলার বাইরে বিভিন্ন জারগার প্নব্রাসন দিবিরে পাঠিয়ে দিরেছেন। আরও চিশ হাজার উদ্বাস্তু বসিরহাট ও হাসনাবাদে অপেকা করছে।

লক্ষ্য করার বিষয় যে, আগে যেমন রাজনৈতিক দলগুলো উদ্বাস্তুদের পুন্ধাসন এবং পাকিস্তানে তাদের নিরাপন্তার দাবিতে আন্দোলন করত, এবার এ বিষয়ে তাদের উৎসাহ কম। এমন কি আগে বিভিন্ন স্বেচ্ছাসেবা প্রতিষ্ঠান যেমন উদ্বাস্তুদের সাহাব্যে এগিরে আসত, এবারে তাদের সংখ্যাও কম। তার ফলে উদ্বাস্তুরা কেন আসতে এবং কীসের আশার আসতে এবং এসে পড়লে তাদের জন্য কী ব্যবস্থা নেওয়া দরকার এ সম্পর্কে আগ্রহ প্রকাশে কারো যেন মাথাব্যথা নেই। বহুদিনের প্রেনা ক্ষত তা যতই যক্ষণাদারক হোক যেমন গা-সহা হরে বার, বাংলাদেশে উদ্বাস্তু সমস্যাও যেন তেমনি হয়েছে। এরা হতভাগা। পাকিস্তান সরকার এদের বিতাড়িত করছে। ওখানেও তাদের জন্য বলবার নেই কেউ। বাড়িতে আবাছিত আত্মীর এলে তাকে একবেলা খাইরে গাড়িভাড়া দিরে বিদের করার মতো অবস্থা হয়েছে এই উদ্বাস্তুদের। বাংলাদেশের মাটিতে পা দেবার সংগ্যে সংগাই এদের কোথার কোন ম্লেকে পাঠানো হবে তার জন্য দিল্লীর সংগ্য লেখালেখি শ্রুর হয়ে যায়। অন্যত এরা কীভাবে থাকবে তা দেখার দারিস্বও পশ্চিমবঞ্চা সরকার নিচ্ছেন না।

দেশবিভাগের পরিণতি যে এর্প শোচনীয় হবে তা ১৯৪৭ সালে যে ক'জন দ্রদশী ব্যক্তি ব্রুতে শেরেছিলেন গাঙ্ধীজী তাঁদের অন্যতম। দেশ-ভাগ তিনি রোধ করতে পারেন নি। নেতারা তাড়াতাড়ি ক্ষমতা পাবার জন্য অধীর হয়ে পড়েছিলেন। এ-সব সড়েও একথা ভাবতে বিস্ময় লাগে যে, পাকিস্তানের এক অংশ থেকে যখন সমুস্ত সংখ্যালঘুকে উচ্ছেদ করা হয়েছিল তখন অন্য অংশে সংখ্যালঘুরা থাকতে পারবে এই ধারণা নেতাদের কী করে হয়েছিল? এই আদ্রেদ্শিতার খেসারত এখন পূর্ব পাকিস্তানের ভাগাহত সংখ্যালঘুদের দিতে হছে।

এই উন্বাস্ত্রা অধিকাংশই হল কৃষিকাবী, মংস্যাকীবী ও অন্যান্য প্রামীণ শিল্পের সপ্যে বৃত্ত। এরা কালেভপ্রে নিজেদের গ্রামের বাইরে পা দের। রাজনীতির ধারেকাছেও এরা ষার না। অর্থের সম্বল এদের নেই বললেই চলে। দেশ-ভাগ হয়েছে, দফার দফার সংখ্যালয়দের মেরে পিটিয়ে তাড়িয়ে দেওরা হয়েছে পাকিস্তান থেকে। এরা কিন্তু ভিটেমাটি আঁকড়ে বাপপিতাম হর পেশা সম্বল করে পাকিস্তানেই পড়েছিল। নিজের জন্মভূমি কি মান্য সহজে ছাড়ে। পাকিস্তানের সামরিক সরকার তব্ এদের থাকতে দিল না। এবং শ্ব্র এরাই নর, এদের পিছ্র আরও লক্ষ্ণ ক্র উদ্যাস্ত্র সীমান্তের এপারে চলে আসবার আশংকা। ভারত সরকার এ বিষয়ে কী চিন্তা করছেন তা আমাদের ক্রিকাস্য।

নবাগত উদ্বাস্ত্দের সম্পর্কে সরকারের করণীর দ্বিট। প্রথমত, এদের স্পুঠ্ব প্নর্বাসনের ব্যবস্থা এবং দ্বিতীরত, পাকিস্তান সরকারের কাছে এ সম্পর্কে কিফিন্নং তলব করা। পাকিস্তানের নাগরিকদের সরকার তাড়িরে দিছে, এর দারিক্ট পাকিস্তানকেই নিতে হবে। ভারত সরকার এখনি বিবরটি রাভীসন্থের মানবাধিকার কমিশনের নজরে আনতে পারেন এবং এই উদ্বাস্ত্ আগমন কথ করার জন্য পাকিস্তান সরকারের সম্পো কথা বলে তাদের ওপর চাপ স্থিত করতে পারেন। গাকিস্তানে আমাদের বে হাইকমিশনার মহোদের আছেন তিনিই বা কী করছেন ? তিনি কি এ সম্পর্কে তদস্ত করে উদ্বাস্ত্দের দেশত্যাকার আসল কারণ, তাদের ওপর অত্যাচার ও নিরাসন্তার অভাব সম্পর্কে বিশদ তথ্য পাঠাতে পারেন না? ভারত সরকারের এই নীরবতা উদ্বাস্ত্দের দ্বেষ্ঠ শুধু বাড়াবে না, তার পরিণামে সাম্প্রদারিক প্রতিক্রিমাশীলদেরও নন্দ্রমির স্ব্যোগ্র ক্রেরা হবে। কোনো দেশেই সংখ্যালঘ্রা লাছিত হোক ভা আমরা চাই না। পাকিস্তান সরকার হে চক্রাস্ত করছে তাকে কর্ম্ব করার জন্য অবিকাশ্বে ভারত সরকার অগ্রণী হরে পাকিস্তানী সংখ্যালঘ্রদের অধিকার রক্ষার সহারতা কর্ন। নাক্ষ্বা পাকিস্তানের অবিশিক্ত করেণ্ডের জন্মান সংখ্যালঘ্রদের ভবিবাং অন্যকার।

यमि त्यु इस्र।।

भीवत बद्धानायाक

বলি যেতে হয় তবে ব্যুকা এই আন্ত্ৰের ক্তে বলের বারার বিজ্ঞানে না বল কী রক্তাত হলে জুলনে নিবিত্ত করে মাথা? আমি এই সম্দ্রে বাবো না সম্দ্র আপন দক্ষে চুর হয়ে আকে ক্ষম্হীন? মেটাতে পারে না ত্বা যে রক্ষ মান্ব মেটার, আমি এই উদাসীন দেবতার প্রায়ের প্রার্থনা জানাবো না, ওইখানে উপ্রেক্তিত মান্বের মহৎ হদর

যদি ষেতে হয় তবে ধাবো ওই মানুষেরই কাছে বক্ষ বা পারে না তা যে দিতে পারে সম্দু যা দেয় কিম্বা দেবতারা অনায়াসে

তা সে

দিতে পারে, দিতে চায়
ব্যক পেতে বক্স নিতে পারে
আমাকে আশ্রয় দেবে ভেবে নিজে হয়েছে দংগীচ

এখন রক্তান্ত হলে বৃক্ষ নয়

মান্ধেরই ছায়ার দাঁড়াবো

टम रगटह ॥

बीअक बास क्रीश्रजी

আজকের বাংলাদেশে যেন সেই নিতাপালাতক
নির্দেশ কলামে বার মেজে নি ঠিকামা—
শোক্ষের বিবিধ দুদো বাবহুত সংগীতের মতো,
অম্থির পারের মিচে—ছিল বার ম্পির আজ্ঞাবহ
অনুগামী আমাদের কৈশোরের স্কুতি।

সে পেছে ব্লিটর মতো চারপাশে নিজেকে ছড়িয়ে, প্রচলিত এইসব মুখ্-জনপ্রতি।

এখন সময় হোলো॥

मका गार

তুমি যে দাশদার করে ভাকো, সমর দেখবে তো ভাকলেই তো অপ্রস্কৃত সময়ে হর না আর কুমারসভ্তর তথম কুরাশা ছিলো, শরীরেও ছিল না উত্তাপ পাতা ঝরে ঝরে পথে অলিখিত নিঃস্বতার কর্ণ প্রস্তাব সব্জিনীন ছিলো এবং আমিও

সবজনীন ছিলো এবং আমিও পরিপ্রা অপর্ণা, শ্রেনীছ তোমার পিনাক, একট্ব দাঁড়াও না, আমার সাজপোষাক করা নেই, সর্বাধ্গের গেরুরাই দ্রোপদীর শাড়ীর ফুচন

আমি যাবো, তোমার জনোই যাবো, অস্তিকে আমার
তোমার তপস্যা জনে জনে
হয়ে গেছি আমিই তুমি যে! দেখো, রিক্ত হয়ে আছি
গাঁতের কুয়াশা আর শিশিরের জলে
ধ্বের গেছে প্রগলভ সব ছেলেমান্বী, আম
এখন সম্তান চাই, স্টাম বলিন্ট আর দান্ব বিনাশী
সম্তান, গেরুস্ত হবো আমি
ব্লেঘ্লি ভরা থাকবে পায়রা প্রেরোনা তাল দরজার শিকোর
এবং কোল জন্তে বদি থাকেও লম্ভান
চুম্ন দিয়ে দিয়ে ভাকবো বাব্দ্ভা...আ..,আ,া..,আমার বৈভব

সারা শরীরে কী ওঠে শিহরণ, বাজে ছোমার পিনাক বসন্ত ঝাউ গাছে পড়ে হেসে কৃটিকুটি তুমলে পলাশ গ্নেছে সেইট,কু দুংপুর বখন আর্ত কোলিলের স্বরু সম্ভাবে কোলা পশ্নেরেই হয়েই সার্ব

भवीत झारमं मा मम. (भाग मा सरकत मावना परत भारका-चारवे थारका मा खरूमक घरमाम मारम म्याकीनका खाटक स्क्रांस करा माधर्थ ना निरंत वाहरत बरोरक मा करत भारत भ्रावस्था बरकर

এখন সময় হোলো, শ্লা হুদুর; বিষ, ভঙে লাও ডোমার বৌবনে।।

वाकरकत्र नमान

আত্ত্যে সমাজ বে থাবই উইটেপিড তা সাম্মান স্বাই জানি। কিন্তু কেন এই: অস্থ্যিকতা তাই নিরেই নানা ম্নির দানা মতাঃ

আসলে কোনো পরিপিথী ছব একদিনে বটে না। আমরা সচেতম থাকি বা না। আমরা সচেতম থাকি বা না থাকি, অনেক দিন আগে থেকেই চলে ভার আমোজন। বহু বটনার বিল্লা-প্রতিক্রিয়া আর টানাপোডেনে সমাজের র্বার্থা অদলবদল ঘটে, ঘটতে থাকে। এইটেই চিরকালের নিরম। কিন্তু মাঝে বাজে ইতিহাসের বিশেষ বিশেষ সমদে তার গভিটা হর দ্রত্তর, এলোমেলো, পরস্পর্যবিরোধী। তথনই আমরা চমকে উঠি, হেচিট খাই। প্রণাম করি, ক্লের এই অপিন্রবার)।

यहा बार्ज कार्काञ्चक प्रदेश स्टान এই জাপাত দ্তেজ্ব বিশ্ৰেপলায়ও জারণ थारक। जाब अ कातरमब किक्फ क्रीक्टम থাকে অতীয়ে। তাই আক্রের সমার **खेरत्किन्द्रक अन्त्रका बनाव भटना भटनाहे टंडरब** দেখতে হয়, আলয়া অথাৎ বাদের বরুদ চল্লিলের ওপর ভাবের দারিত ভট্টোথান। रकनमा, बारमब निरत्न ज्ञाबरकत कावना, रमहे ८ जरुभवज्ञनी इंबरनटमरावत्र नहा, छात्रा रखा আৰাদ থেকৈ পড়েম, ভাষা জালাদের घटतारे कटकाटक, व्याधाटमसरे खासानटर्भ सामान रतारक। द्वारि मीन किया जास मार्ट शारक. নে গলাভির বীজাগা কি আমানের রচের मध्यकि विकाला ? जाजारमञ्जू जीवनगाता 🐠 আচৰণের যথে যটো গোলোমাল ও আৰ-প্রকারণা হিল স্ববিদ্ধারট তো এরা আক্রম সাক্ষা। ভাই কথা ও ভাতের সেই দক্ষে काताक गापि अध्यक्ष कामग्रीहरू बहुत क्षांगष्ठ म्यारेमा परिता अक विश्वमानक शास्त्रक निरुष्ट श्राटम भारक, रमाच रमक **कारक** ह

ক্ষিণি আৰ্ম্বাও নে দেখ্যাৰ কণ্টজাৰ আন্তর দিনে আন্তাদের প্রে-কলাদেশ্ব অঘাটার দারিতে দিনেছি ভা নোটেই নর। আন্ত্রা কড়ে হীল, কাপ্তেব্, রডুলববাজই ইই---এ-হান্তহীলতা আ্লাদেরও অনাধা। আলাদের আ্লাবাও ভো কোপরানা বরেই অক্সপ্রভারণার লাবিন কাটিনেছি। কিন্দু দ্বোরোপা বাধিকে ভাপা দিনে রাখনেও পরিলাদের বা ঘটার ভাই বটে। অন্তর্থব—!

এ-পার্বাদ্যান্তর মাথানার বাবার লাকা লাকে, সরাজ্যাত্তিক ভারত অন্যাক্তর বাবার অন্যাক্তর বাবার বান্তাব্দর বাবার বাব

স্বোগ মেলে ভা-ও জেপিন্র এগোড়ে भारत ना। काणा ह्वांभन्न काशहे हम रवीनताम, कालगीतनान, मान्यवाह बहाजन वावर नामानम निर्माणहरूमा सून शक शक टकरामि । छब्द शब्द निरुष बिरुषणी बाबि म्परमणी शकुरमंत्र सम्बन्धा स्टब नवाटस अकरी मकूम धरारमञ्ज अधारिक दक्षणीय केन्स्रय करेग 🧖 क्यार्मिशित करत् जीता स्वरमानव स्मधान गफ़ा रगथात्क्रम, अवर रगरे व्यवस्थाने द्रामा व्याचात्र दक्षाणि, व्यास दम्हे आर्थन दक्षे दक्ष শিক্ষ, উক্সি, ভারার, ইজিনীয়ার, विकासी अन्द हा, रक्षे द्वके मिल्ली, कवि, मार्गिकामुक । दिन्दिमी को मंगावरखता বালোনেদে ভো বুটেই, বাংলার বাইরেও পেলেন প্রীয়কার স্থান স্থোগ। বেশ একটা আত্মারী স্বাহ্মগতার আমেজ এল ক্ষীবলৈ। তারই প্রতিফলনে এ প্রত পোৰকভায় শিক্প-সাহিত্যের মধ্যেও এল একটা নতুন উন্দীপনা। কিন্তু যেহেতু এদেশের শতকরা সত্তরভাগ মান্য চাষী বা **ठारबंद जरम्ब चर्च, अबर स्वरंद्य कृषि-**वाबन्धान टाटल नरेन संवादशीन जीवनाती ও জ্যোতদারী প্রথা, রুবহেতু কল্কারশালা न्यानरम् नद्रयान दिन नीमहन्य, होहात

Laly Ay

লোহা-কারখানা ছাড়া হলে খিলপ প্রায় **अक्**ष्टिक विन मा, श्रदश स्वरूप बावना शास्त्रहें ছিল দালালী বা কচিমাল চালালেয় ঠিকেদারী; বেহেতু ভারতের অন্যান্য প্রদেশেও লেখাপড়ার প্রসারের স্থো স্থো তৈরি হল ন্যানীয় ব্লিফ্টীয়ী লান্য এবং তাদের চালে সম্পুতিত হতে হল প্রযাসী वाक्षाणीट्यत्र-कारकारे प्रधानित्यक्ष त्यारे व्यव-বুল সুৰ্যাদেশ্ৰৰ দোলালি আভাৰ মডোট क्रमच्याची वीभ्यित श्रेष प्रश्रात क्रम्यकाटक বিলিয়ে বেলে বাকল। আবলা অর্থাৎ একালের চামিলোক্তর বয়স্ক্রা সেই আলম বিপ্রবিদ্ধের কাল্যলিকর বাদ্ধে। কালেই जाजादनय जन्मजिद्दनंत स्नदमा सामना सी **উत्तराधिकात स्वरं**शीय का **लहरूने ज**न्द्रस्था। এ দিয়ে সামাদের মতো ব্যক্তিল-হয়ে-য়েত্তে-थाका मानद्वद्वात कार्त्व भारत, किन्य यात्रा আলাদের শর্মভী-বারা মতুন ভরে বভিত্তে अध्यक्ति जात्मक व्यक्ति दश्या । अहे दश्याना अन्तरे क्यागांक दश्यो श्रह्मद्व चांक वार्तामक CHECK

অবিশ্যি এ-স্বল্যার একটা জনা দিক
আহে, সেটাও কেবে দেখা দর্ভার । বাংলাদেশ এবং জারতের একটা বিদেশ সমলা
আহে সেটা বিশ্ব । কিব্লু আভাতের নিমে
দোটা প্রিবর্তী। বিশ্ব আভাতের কিবে
বার্তীয়ের বারা বেবেরে। ভার স্থেপাও
আমানের বোগ আক্

वित्यव कांत्रजा स्थाप क्या निर्मास का गृह्य रुगहे स्माप्त गण्डिक्ट कांत्रण शास्त्र ना, नातार्थ कांक्सकाकितहे जम्भाग हरते वाहा। कार्यके कांकरका स्थापत सा श्रमान कांग्याता

का बाबारम्ब इनरम् । व्यारमापन कुनारम्। नकरमरे कारनन, विकास ७ शरवाण বিদ্যার অভ্তপুষ্ দিগণ্ডবিশ্তারের কলে जानादमक क्रिका ७ स्टूब्स्ट्रियारथत क्रमार कुनकानाम अग्रहेशानहे घटी वाट्या। काराजा প্ৰিবীর মানচিত্তের দিকে ভাকালেই বোঝা ধায়, পত মহাধ্যেশের পর থেকে জীবনের বাস্তব পরিস্থিতিরও যুগাস্তকারী রদবদল ঘটে গেছে। ভারত, চীন ও গোটা দক্ষিণ-পূর্ব এশিয়া তো বটেই, অস্কার আফ্রিকাও সাম্মজ্যবাদী শিক্ষা ভেডে স্বাধীন মহিমার শিরদক্তি বাড়া করে দাঁড়িয়েছে। এদিকে প্রথিবীর আধাআাধ অংশে আজ সমাজতন্ত্র কারেম হরেছে, এবং ভারতসহ অনা বহু উলয়নশীল দেশেও সমাজতন্ত্র আজু মূল লক্ষা হিসাবে প্রতীত। আবার এরই সভেগ প্রায় একয়েগ ধরে ঘটছে ভিনেতনালের রহার সংগ্রায়, জডি-সম্প্ৰতি বাৰ প্ৰসাৰ ৰটোৱে কাম্ৰোভিয়াৰ माणिटक । श्रीमाक संबाद्यादात् संबन्धाक व्यक्तिशक्ति। अक्षेष्ठ तान्धेनश्य आह्य, काम লাড়ীয় নিরাপতার সমদ আছে, এবং সেসবের মহিলা ক্ষতিকৈ গদংগদ ভাষার কৃষ্ণীরায়ত্ব বিদর্জনও আরে। চাপা দেবার ও ধেকিঃ দেবার এই ক্ষাণ পলেচ্ডারা ভেদ করে जाकरकत भावितीत धेर कन्छ।मात्रभाका আলেকের চোথেই ধরা পঞ্জতে। বিশেষ করে यामात्रात कारसः, बाबा धहे शामिकीकारक নতুন করে বাদ করতে এলেছে ভালেছ কাছে। কেল ভারা এই জক্ষ লিখেশ্ব দায়িত্যীল খোলস্টাকে জাইছে দাখৰে? COMP ?

তাই তো ভারা দাবি করে, ভালেশ্ব भिका-वाक्शाम की छात्मम मिथात्मा शत् তার পাঠকম স্থির করার সময়ে তাদের क्थाल भूमरूज হবে; स्काना वर्षक्या अकुन দিনের চাহিদার বিষয়ে সচেত্র লম: এবং সে-দাবি তারা আদার করে। আরু ভেত্র দেখুন, ঘুখনি আমরা ভালের দে-দাবি ছেলে নিয়ে সিলেবাস কলিটিতে ভাদের ভাকি তথ্যন আমরা এ-ও মেনে নিই যে, আনাদী দিদের ভিত্তার ক্ষেত্র থেকে আমলা পিছিলে भरकृषि धनः जामहा याक्रिल रस्त माक्रि। অৰ্থাৎ দেখা দিয়েছে একটা জেলায়েলাক গ্যাপ'—আমাদের ও আমাদের পরবতী भटनट्रत्यस मदश्रा अक्फो महाराजा । असर ज्ञ्यरानहे कारमम, भामाचा स्करम नामाय-करमारे मन् মানব-সমাজেও শিক্ষাৰম্পার ভিড মরে নাজা 799 1

আল সালা প্ৰিবটি পাল হচ্ছে চেই অস্থিয় মুগলন্দির ভেজ্ঞ সিরে: আমানের বংলা ও ভারজ পিরিরে-পঞ্চা চেপ বচ্ছ তার সলস্যা আরো জাঁটিল, আরো ভারতত্ব

কিন্দু রাহি বতো গাটে হোল, সংযোগরের পদ আবরা গ'লে পাবই— নতুন চেডনার উন্দীত আচনের ব্যবভারে ওপর আমার সে আম্বা আহে ∤



ব্যক্ষ স্মরণে

'বহ্বুগের ওপার থেকে আবাঢ় এল আমার মনে', ববীন্দ্রনাথের গানের এই কলিটি প্রার প্রত্যেক বংসর আবাঢ় মাসে 'বন্ধিমচন্দ্রকে' স্মরণ করতে গেলেই মনে পড়ে বায়। বিশেষ ক'রে আজকালকার দিলে। বে কালে *'বলে*মাতরম' এই মহান ধর্নিটি মানুবের মন থেকে প্রার মুছে গিরেছে এবং তার জারগায় বিস্লব দীর্ঘ-জীবী হোক বা ইনকিলাব জিন্দাবাদ শ্লোগান লেখা হরেছে এবং কারেমও হরেছে-সেই কালের আজকালকার দিনে। তব্ননৈ পড়ে তার কারণ আবাঢ় মাস ব**িক্মচন্দ্রের জন্ম মাস**। আ**জ থে**কে ১০২ বংসর আলে ১২৪৫ সালে ১০ই আবাঢ় ইংরিজী ১৮৩৮ খৃণ্টাব্দের ২৭শে জন নৈহাটি কঠিলিপাড়ার তাঁর পৈত্রিক বাড়ীতেই (সভবতঃ) তিনি ভূমিষ্ঠ হয়ে-তার পৈতিক বাড়ী আজও বিদামান। এই বাসভবনেরই একাংশ (ঠিক একাংশ নয় একটি পৃথক অংশ, সম্ভবতঃ এটি তাঁদের অথবা একক তাঁর বাইরের বসবার ঘর বা বৈঠকখানা হিসেবে নিমিত হরেছিল) এই একাংশকে পশ্চিমবলা সরকার স্বাধীনতার উত্তরকালে কিনে নিয়ে বাংকমচন্দ্রের নামাণ্কিত ক'রে তাঁর বাবহার্য জিনিবের ও গ্রন্থাবলীর একটি খুলেছেন। এটি ছাড়াও সংগ্ৰহশালা নৈহাটিতে খবি ৰণ্কিম কলেজ নামে একটি **কলেজও হরেছে। তথাপি বিগত দশ-বারো** বা চৌব্দ বংসর আমরা বেন ডাকে ঠিক স্মরণ করি না বা করতে চাই না।

আমরা তাঁকে বিদ্যুত হরেছি এমন
ধারণা আমি করতেই বোধ হর পারি না।
বাংলা ভাষাভাষী বাঙালীর ছেলে বাঙালী
বিক্ষাচন্দ্রকে বিন্দুত হবে কি? বিক্ষাচন্দ্র অবিন্দারনার। বাঙালা ভাষা ও সাহিত্যের ক্ষেত্রে ইম্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগর, মাইকেল মধ্যুদন, প্রবি বিক্ষা এবং মহাক্ষি
রবীন্দ্রনাথকে বাঙালী কি বিক্ষাত হুদ্ভ

পারে? সেমনে আমি করি না। তব্ও অভিযোগ আছে বাংলা সরকারের বির মে। বাংলা সরকার, বাংলা ভাষাকে সরকারী দশ্তরে তাঁক প্রাণ্য মহিমাণ্যিত মাত্ মর্বাদাটি দেবার প্রশ্তাব করেছেন করেক বারই কিন্তু বিচিত্র বিস্মারের কথা এই বে, আছও তা কার্ষে পরিণত করেন নি। গণ-অভিযান আমরা করি নি: ভাষাও দীনদুর্বল নয়। সরকারী কর্মচারী ও গণ-প্রতিনিধিগণের এই ভাষার অপার্গসমতার জন্য তাঁরা বাঙলা ভাষার আসনে আস্কুঙ ইংরি**জীকে বলিয়ে রেখেছেন। এ অভি**রোশও করা বার বিংকমচন্দ্রের প্রসংগ তলে ৷ বিংকমচন্দের কলকাতার বাসভবন সরকার কিনেছেন—কিন্তু আজও সেখানে এই বিরাট প্রে<u>র্বের</u> যোগ্য সম্মান সম্বে কোন

जानामध्कन बरम्माभाशास

শ্মরণশালা করতে পারেন নি। সেও হ'তে
পারে বা হবে কিছু কালের মধা।
নিশ্চরই হবে। গণতলের আমলে বেখানে
একটা বাড়ী কেনা হরেছে সেখানে ওই
বাড়ীতে সাহিতোর হাশ মেরে কিছু ক'রে
গণ-তোবণ করতে কেউ ভূল করবেন না।
কেবল দ্ভিসোচর করার অপেক্ষা। ওদিক
দিরে অকম্থা বাই বা বেমনই হোক—
বাঙালী বিশ্কমচন্দ্রকে ভূলেছে একথা
প্রমাণিত করে না। আমার মনে হছে,
বে বিশ্কমচন্দ্রকে ভোলা বার না তাকেই
আমরা হল্ম অবহেলার ভূলতে চেন্টা
করি। ভূলতে চালিছা।

বৃদ্দিমচন্দ্রের কাল ১৮০৮ থেকে
১৮৯৪ সাল পর্যত—তাঁর সাহিত্য জাঁবন
দুর্গেশ নন্দিনীর রচনাকাল ও প্রকাশ কাল
১৮৬৪—১৮৬৫ শ্রুটান্দ থেকে ১৮৯৪
সাল পর্যাত। তাঁর জাঁবনকালের পরিমাশ
প্রার পঞ্চাম বংসর তার মধ্যে তাঁর সাহিত্য
জাঁবনের পরিমাশ
২৫ বংসর। দুর্গেশন্দিন্দী প্রকাশিত হ্রামা মার বাঙ্গাল

সাহিত্যের অদৃশ্যলোকে ধর্জা পতাকা উন্দ্রীন হয়েছিল, বদি বলি তার সংশ্য শৃত্য ঘণ্টাধননি সহযোগে একটি মুপালা-রতির থালা জনালিয়ে ভাগ্যবিধাতা বংগ-সরস্বতীর আর্রতি নিস্পল ক'রে আশীব্যদ করে বলেছিলেন-বিশ্ব-সারস্বত মণ্ডপে তোমার আসন নিদিশ্ট হল—তুমি আৰু থেকে এখানে ব'স-তা হ'লে বাড়িয়ে বলা হবে না। সমস্ত ঘটনাটি খতিয়ে দেখে উপক্ৰি করতে বিষ্যায় বোধ হয়। অনেক পিছনের কথা থাক; নবযুগ থেকৈ গণনা করা যাক। নবযুগ যাকে বলি—সেই রামমোহনের কাল থেকে বণ্কিমের কাল পর্যন্ত কাল খুব পরিসর বা দীর্ঘ নয়। রাম**াহনের পর** ফোর্ট উইলিয়ম কলেজের একটা পর্য আছে—তারপরই বিদ্যাসা এक्स्नि, दर्ग-পরিচয় থেকে সীতার বনবাস পর্যাত একটা প্রাথমিক কৃষিকর্ম' অথবা একটি পত্তনের প্রাথমিক ক্মগ্রিল করলেন। তার সংগ্যে সংগাই এলেন মাইকেল তার আশ্চয় মেঘনাদ বধ কাব্য নিরে। তারপরই বিষ্ক্ষচন্দ্রের আবিভাব। এখানে বিবেচনার বিষয় এই যে বাংলা কবিতা ও কাব্যে একটা সাহিত্যের ভাষা ছিল।

তার প্রমাণ প্রবাদ বাকো আছে, ছড়ার আছে, ধাঁধার আছে—এমন কি শুভকরের কাঠাকালী বিদ্যাকালীতেও আছে। বাংলা গদোর বৈ নমনা উইলিরাম কেরী প্রমুখ পাদরীদের সংগ্রহের মধ্যে পাই তা থেকে বিক্সমচন্দ্রের ভাষার দ্রহ অভ্ততঃপক্ষেরেটা শতাম্বী। (আলাল প্রভৃতি এবং ভূদেব রচনার কথা এখানে বিচার্ব বিষর নিশ্চর কিম্তু ভাতেও বিভক্সমচন্দ্রের আবিভাবের বিক্সরকে কোনক্রমে লঘ্ন করা বার না।)

শহ্র ভাষা নর-উপন্যাস নামক ন্তন বে সাহিত্যকর্ম এল ভার আলিক ব্যাকরণ ভাষাবেগের আশ্চর মধ্র স্ক্রাপ্রকলে-গোলেবকাগুলীর ক্ষেত্র জন্মাল ক্ষেম্ম করে সে প্রশন নিয়ে কোন বাড়াবাড়ি গুরেবণা আমরা করি নি—(ভালোই করেছি বলে

बटन एको जानमा जाएक छाएन निराधित म्मान मिरहीय क्षेत्रे यान हम गरन ज्ञान अयम् द्याः अयम घट्टाः चाम्नेदमतः मण्डे पटिटा ।

थात्राच बीकुमान वरणनानाचार करेर वन्ननावरका क्रेन्सारना **हरमाब क्षया जेनमान** प्राथमानामा जन्मदर्भ बरमद्भन- 'मृदर्भभनीमनी आधा-দের উপন্যাস সাহিত্যে একটি মুডন অধ্যার न्यानमा निवादक। द्व अब निवा केदाव कर्नातारी भूगानी कर्माना क्रिया-ভিলেন ভাষা প্রকৃতপকে রোমালের রাজ-**शथ धावर यम-प्रेशनाटिम श्रथम विन्यमिटनाटे** এই রাজপথের রেখাপাত করিয়াহিলেন।"

इनीन्त्रमाच वीव्यवहरमुद्ध श्रम्था जानाएड গিয়ে উচ্চনলিত হয়ে উঠেছেন। আমার ধারণা এ উচ্চাসকে তিমি ইচ্ছা কমেই সংযত করতে চান নি—ছার সাজিতে ক্ল ছিল অত্তরে উচ্ছবসিত প্রশা ছিল—সেই উচ্ছৰসিত প্ৰখ্যা বশেই দুই হাতে তবি যত ফুল ধরে ডভ ফুলই বন্দিমের **छिल्माना केला भिरा ए॰७ श्र्ड कराइन।** এথানে তার কিছুটা উত্ততে না করলে आभाव यक्ष्या ठिक भौतम्बद्धे इत्य ना। धरर ব**িক্মচন্দ্রকে স্মরণ ক্র**ডে ব**লে তার** जन्मारक ब्रेगीमुसारवत खेकिक श्रष्टन मा कत्रता विकास भ्यत्भ साथात साधर त्याक আর খড় মাটি কি মম'র খন্ড থেকেই হোক কোন হুমেই গড়া বাবে না। ডিনি वनरहम-"भ्रत कि हिन (অর্থাৎ বণিকরের প্রে') এবং পরে (বণিকমের পরে) কি পাইলাম ভাহা দুই ফালের সন্দিশ্যনে দড়িইয়া আমরা এক মুহুতেই অন্তৰ করিতে পারিলাম। কোথায় গেল সেই অন্ধকার সেই একাকার সেই স্ক্রিণ্ড —কোধার গোল সেই 'বিজয় বসণ্ড' সেই 'গোলেবকাওলি' সেই বালক ভুলানো কথা, কোথা হইতে আসিল এত আলোক এত আশা এত সংগীত এত বৈচিত্রা। বংগ দর্শন যেন আবাঢ়ের প্রথম বর্ষার মডো— ধ্বনিঃ। স্মাগ্রো রাজ্যুমতে JAK ম্যল ধারে ভাব বর্ষণে বংগসাহিতে।র প্ৰবাহনী পশ্চিম্বাহিনী সমুদ্ভ দ্বী নিবারণী অঞ্চনাং পরিপ্রেডা প্রাম্ভ হইরা যৌবনের আনন্দবেশে বাবিভ হইডে লাগিল। কত কাব্য নাটক উপন্যাস কত প্রবৃধ কর সমালোচনা কর মাসিকপর কর সংবা**দপদ্ধ বন্সভূমিকে জা**গুড় প্রভাউ কলমৰে **মুখান**ত কৰিয়া তুলিল। বণ্সভাষা সহসা ৰাশ্যকাল হইতে যৌৰনে উপনীত হইল ৷"

ব্যাৰ্থাচনৰ ন্ৰহান্ত বলাভাৰার সহিত যেদির নবহোঁবন প্রাণ্ড ভাবের পরিবর সাধনু করাইয়াছিলেন সেই দিনের সর্ব-ব্যাপী প্রকৃত্মছা এবং ভারতে উৎসব আম্রেছ মনে ভারে। সৈ লম সার মাই। वाक माना लावा माना बंख माना वारमाहेंगा আসিরা উপ্রিক্ত হট্টরাছে। আজ কোমদিন ৰা ভাবের স্লোড মন্দ হইয়া আলে

काम विम या परनकावृत्त नीवन्द्रके प्रवेता 631 1

बहेरून रहेरा बहेरू बंगर बहेरून श्वमा जायमान । किन्तु माद्रम समाप्त बद्दान एउड़ा मन्डर महिल हम सूचा न्याम কৰিতে হইবে <u>ক্ৰিম্</u>য়া **আন্তর্যাল** সৰ্বদাই ভাষা ভলিটাইটি

अदेशात्म कात अवस्थानेत केति विभाष করব। সে উভি অনুস্থা পাশ্চিতভাই জীৱজারী —আই সি এস স্বাহ্মীক সংক্রা করি। তীর মতে শীলফুচনুদ্র সাম প্রথমবের man of the 18th Century

বাজ আমার কৰা ঠিক ভাই।

मिनकारुग्यस्क म्बलन क्या जामारमम কতব্য। সমূহত বাঙালী জাতির বাদা রাজনীতিতে মেতেহে ভারা ভাই নিমে त्याच बाक, बाजा कृषियिकांच बर्गात्कल काला তাই ঘটান-মারা মরবাড়ী গড়বেন-টাকার হিলেৰ ক্ষৰেন-স্যাম THEFT WE'A: আপনাপন কমে ভারা শ্বত শাসুদ। এমন কি ভাষা যাঁরা শিক্ষা দেল–যাঁরা শিক্ষ তীদেরও বলি আপন কমেশ্ব মধ্যে অবকাশ মা-পাম নাই পেলেম। किन्छ योजा कटम <u> নাহিত্যপর</u> माशिक्षक, यरिन्द्र যাদের সাহিত্য চচার বা সাহিত্য রস-ভোগের জন্য প্রতিষ্ঠান আছে তারা বেন বিষ্কমচন্দ্রকে সমরণ করেন। আমি জানি স্নিশিষ্ট হৈ বিশ্বমানন আবিশারণীয় তাকে বিশ্বত হইনি হ'তে वामन्न পারিলে। শৃধ্য শীষ্ট্রবাছ বা প্রবাহের মত লামরিক একটা বিক্লোভের প্ৰবাহে আজ আমনা বিপৰ্যত ও বিস্তান্ত হয়ে বিশ্মতির থেকেও বড় অপরাধ করতে

বসোহ ভাবে অস্থাকার করতে চাত্তি क्षणी कर्राष्ट्र।

বিশানিত ছলে জাতীয় চরিতে শাতির দ্ৰুলভার উপর অপরাধ আরোপিত করতে পাইটোম। ীকৃত্ব এ তা লয়। এ আমাণের মুক্তন কালের সাহিত্যকারদের অপরাধ।

योश्याबारणस्य अक्षां चलतारमा क्या माम-गाम ভিনি প্রভিন্নি-नीमक्रांट्य शक्ष्य निरत्यस्य,-जीव स्त्रीक्षांचि ধরণামতা জীবনৈর সংস্থ গড়িয়া শক্ষে जम-क्रम मद्र-किष्ट किष्ट स्माक स्टीबे উপর সাম্প্রদায়িকভার দার-দায়ির চান্দার্ডে **हान। दन रकता रागात कथा और त्य छात्र** জন্য দারী করেও তাকে আমন্ত্রা মহান শিশপীরতেপ সমর্গ করতে পারি। তার লেই আলোচনার মধোই তার ন্যাভি আমানের সন্মূপে লাগ্রত হয়ে সভাতে পারে।

முகிர ম্ভি ডাব प्रयोग्यमाध আমাদের মন লোচনের সন্মাৰে ভূলে বরেছেন; তার ছবি আমনা দেখেছি কিন্তু সে ছবিই। রবীপ্রনাথের পশ্চিত্রের মধ্যে তিনি জীবন্ত হয়ে উঠেছেন।

একটি সভার धीमारित्रण्ड वाश्वतारत किटनान बदीन्छमाच विकाहन्त्रक स्टबन ছিলেন-এবং সেই স্মৃতি খেকেই লিখে-ष्टिलम-''यासम्' खनीत घरशा अकि का দীঘঁকার উজ্জনত কৌতুকপ্রকৃত্র মুখ--গ্ৰন্থধাৰী শ্ৰেটি প্ৰেহ্ৰ—চাপকান পৰিষ্টিভ বক্ষের উপর দুই হস্ত আবন্ধ করিয়া দাড়াইরাছিলেন। দেখিবামানুই যেন তাঁহাকে সকলের হইতে স্বতন্ত্র এবং আত্মসমাহিত বলিয়া বোধ হইল। • • •। মনে



THE PARTY OF THE P

পাছে প্রথম দশনেই তাহার মুখলীতে প্রতিভার প্রথমতা এবং বালন্ডতা এবং স্বালোক হইতে তাহার একটি সুন্ত শ্বাভন্য ভাব আমার মনে অভ্কিত হইনা গিয়াছিল।"

রবীশুনাথের মনের মধ্যে আপন রুপ ও পুলের যে ছাপ তিনি অভিকত করে গেছেন, রবীশুনাথ তাতে যেন অভিভূত। তথাচ এইটিই তার বিচার। এবং এই বিচারই নিঃসংশরে সত্যের বিচার। চক্ষ্ণ কর্প মন সব কিছু দিয়ে বিচার হরে গেছে এখানে। কোন কালে কোন ভাবাশেদালন চালিভ বিরুপতার যদি এই ম্ভিকে আমরা মসী লেপন করে কালো করে দিই বা অবহেলার ইছ্যা করে বিস্তৃত হতে চাই—তবে তাই কি সতা হবে? বা মানব জীবন কি তাই মেনে নিতে পারে?

এই অসাধারণ মান, ষটি সম্পর্কে আর একটি দুর্লন্ড সতা আছে।সে সতাটি হ'ল এইঃ—বিনি বড় প্রছটা তিনি সর্ব সমরে বড় দুটা নন। বিনি অসাধারণ শক্তি ও প্রতিভাশালী শিল্পী তিনি সকল সময়ে স্ক্রা শিল্প সমালোচক নন। শিল্পবোধ এবং শিল্প সমালোচনা এক কথা নর। বিধাতা, যিনি সব কিছুরই স্রণ্টা তিনি म विधेशालाञ्च ব'সে স্কুরের সংগ অস্করকেও গড়ে বসেন। সে গড়েম भिल्पत्रे श्राज्ञाल-रेक्ट् करत, अम्बन्द्रक ग'ए जूल म्रन्पत्रक जूल शत्न। किन्जू मान्द्रस्य क्रिक्ट का नश् मान्य अच्छोरन्य অধিকাংশেরাই নিজের শিল্পের সমালোচক হ'তে পারে না। সেথানে বোধ বা এই সমালোচনা ব্লিখটি খেই হারায়। এবং এই ধরনের বিদ্রান্তির দায়ে দায়ী হয়ে সমা-লোচনার আদালতে প্রভীরা কাঠগড়ায় দাঁড়ান বাধ্য হয়ে। বাংলা সাহিত্যের ক্ষেত্রে

गुलन हुन्ही-विकाशम्म अवर वर्षान्हमाथ এই দূৰ্বজ্ঞা থেকে মুৰ্টা ভারা চাঁদের মত এক পতে বেকে বাকে বলে ভবন ভাসিরে चारमात्र •मायम बहेता मिरत चमाभार्ट व्यथकार्यक यहन करतम नि। मृत्यंत्र भठ তারা সহীদক ছেকে আলোকমর। শুধু আলো নর জীবন্ময় উত্তাপও আছে ভালের মধ্যে। বাংলা সাহিত্যের এই দ্বজনের প্রথমজন-বিক্মচন্দ্র ন্বিতীয় জন রবীন্দ্র-নাথ। বাৰ্কমচন্দ্ৰ শুধু বাংলা সাহিত্যে উপন্যাস ও গলপ সাহিত্যের স্রন্থীই নন---ধর্ম ও দশন ুসাহিত্যের বনিয়াদ পত্তন করেই তিনি ক্ষান্ত হন নি: বাংলার সমালোচনা সাহিত্যের প্রথম পত্তনকারও তিনি। ব্যগ্য-রঙ্গ সমালোচনা এমনকি আজকের যুগের যে সমাজদর্শন বা তত্ত্ বিশ্বসমাজতত্ব হতে চলেছে সেই সামা সম্বন্ধেও তিনি প্রবন্ধ রচনা করে বিংশ শতাব্দীর পূর্বেই বঞাসাহিতোর অন্তড়ান্ত করে গেছেন। বিগ্কমচন্দ্র এ-দিগন্ত থেকে ও-দিগল্ড পূর্ব-পশ্চিম উত্তর-দক্ষিণ সর্ব-দিকে ও দিগদেতই তাঁর দৃষ্টি প্রসারিত করেছেন এবং বা দেখেছেন সকল কিছুকে তাঁর চৈতন্য ও বর্ম্ধির ম্বারা বিশেলধণ-প্র্বক গ্রহণ করে বাংলা ভাষাভাষী জ্ঞান-ভাণ্ডারে সঞ্চিত করে গেছেন। তিনি বাংলা সাহিত্যের অবিস্মরণীয় মহাজন।

এককালে এই বিরাট পুরুষকে নিয়ে অনেক বাক্রুম্ব হরে গেছে। অভিযোগ বলতে গেলে যা বলেছি তাই। এবং এর উত্তরও দিয়ে গেছেন সে কালের পন্ডিত-জন, রসিকজন, সমালোচকগণ, সর্বোপরি মনীবী জনেরাও। আচার্য শ্রীকুমার বলেরা-পাধ্যার, আঁচার্য সমালোচক মনীষী এবং কবি মোহিতলাল মজুমদার, আচার' স্নীতিকুমার, ডঃ স্কুমার সেন প্রভৃতি: ঔপন্যাসিক সমালোচক শ্রীযুম্ভ প্রমথনাথ বিশীও এ ধরনের আলোচনার অংশ গ্রহণ করেছিলেন। আজ এই ১৩৭৭_ু সালের আবাট মাসে অকস্মাৎ বঙ্কমচন্দ্ৰকে মনে পড়ে গেল। মনে পড়ে গেল অবিস্মরণীয় চিগ্রকলপকে মনে করে।

"মা বা হইয়াছেন।"

সেই র্গটি আজ সারা দেশে যেন মাটিতে
পা রেখে আকাশে মাখা ঠেকিরে নিজেকে
প্রকাশিত করেছেন। রুপ হয়তো নানাজনে অন্যর্পে কশ্সনা করতে পারেন কিন্তু
এমনভাবে উপস্থিত করে এমনই গুই
"মা বা হইরাছেন" এই কয়টি কথার ব্যক্ত
করতে পারতেন না।

থাক। ওই কথাস্ত্রি নিমে নিবশকে দীর্ঘ করব না। হতেসবর্ষন-মন-ক্রুখ রস্ত ভ্রমা ভ্রমত দেশের কথা ভারতে গিরে ওই ছবি মনে পড়ল-ওই কথা ক'টি মনে পড়ল। সঙ্গো নজো এতথ্যিক কথা মনে হলা এর সংশা মনে পড়াই ৩২ বছর আলের করা। ১০৪৫ সালের ১৩ই আর্ছা বাংকর শত-বার্ষিকীর করা।

ৰ্যাণ্ডম শত-বাৰ্ষিকীতে যে উৎসৱ 🔏 সমারোহ বাঙালী করেছিল—তা আৰও বহুজনের মনে রয়েছে। বপারি সাহিত্য পরিষদ সে সময় উদ্যোগী হরে বিক্রম রচনাবলীর শত-বার্ষিকী সংস্করণ প্রকাশ ক'রেছিল। সমগ্র দেশ কৃতজ্ঞ হরেছিল এই महर क्यों के खना। এই भठ-वार्विकी সংস্করণের ভূমিকা লিখেছিলেন আচার্য বদ্নাথ সরকার। বিজ্ঞাপ্ত হিসাবে একটি নিবশ্ধ লিখেছিলেন-দাশনিক 'হীরেন্দ্রনাথ দত্ত মহোদয়। তথম তিনি সাহিত্য পরিষদের সভাপতি। তার এই 🛒 নিবদেধর প্রথম অঞ্নট্কু উন্ধৃত কর্রছি। এর থেকে ৩২ বংসর পূর্বে বাঙালীর বণ্কিমচন্দ্র সম্পর্কে চিন্তা ও মনোভাবের পরিচর পাওয়া যাবে।

বিজ্ঞাপতিটির সেই অংশ—এই ঃ— "১২৪৫ বঙ্গান্দের ১৩ই আষাঢ় মঙ্গালবার (১৮৩৮ খুটোবদ ২৬শে জনুন) রালি ৯টায় কটালপাড়ার বিংকমচন্দ্র জন্মগ্রহণ করেন। বাংলা সাহিত্য-পঞ্জীতে সেটি ক্ষরণীয় দিন ঐদিন আকাশে কিয়র গণ্ধর্বেরা নিশ্চয়ই দ্বদ্ভিধ্বনি করিয়াছিল - দেববালারা অলকো প্ৰপৰ্ণিট করিয়াছিল-- স্বৰ্ণে মহোৎসব নিম্পন্ন হইয়াছিল। এই বংসরের ১৩ই আষাঢ ব্যুক্তমচন্দ্রে জন্ম শত-বাৰ্ষিকী। এই শত-বাৰ্ষিকী **স্ফো**ল্পন্ন ক্রিবার জন্য বংগীয় সাহিত্য পরিষং নানা উদযোগ আয়োজন করিতেছেন-দেশের প্রত্যেক সাহিত্যিক প্ৰতিষ্ঠানকে এবং বিশিষ্ট সাহিত্যিকদিতক উৎসবের অংশভাগী হইবার জন্য আমলুগ করা হইতেছে। সারা বাংলাদেশে বেশ সাড়া পড়িয়া গিয়াছে। বংশের বাহিরেও নানা-ম্থান হইতে সহযোগের প্রতিশ্রুতি পাওয়া যাইতেছে।"

বহিশ বংসর পর আজ্র আষাঢ় মাসে সারাদেশ বহিকমচনদ্র ও ১৩ই আয়াঢ় সম্পর্কে-নীরব উদাসীন।

আকাশে চলমান মেঘপুঞ্জের দিকে
তাকিরে দেশের কথা ভাষতে ভাষতে
হঠাৎ একটি ভরতকর মৃতি কম্পনাকে
আশ্রর করে ফুটে উঠল। তার—সংগ্র
কৃতি কথা—।

"মা-বা হইয়াছেন।"

বঞ্চিমচন্দ্রকে মনে হল। মনে হ'ল ১৩ই আবাঢ় তাঁর জন্মদিন।

"বহু যুগের ওপার থেকে আয়াঢ় এল আমার মনে"—গানটির কলিটির মতই মনে হ'ল তাঁর কথা। তাকৈ প্রণাম জানাই। তিন অবিনশ্বর এবং অবিন্মরগাঁর।



● যে কোন নামকর৷ ওবুবের

DZ-1676 R-BEN

(बाकाटनके भाश्या बाव।

বাছি ভাষার হাসে ছলেও প্রবের
মান্ত হোটবেলা থেকেই। গ্রামের বাড়িতে
লোট ভনেক বেলী বরলে। থবা মারা বাবার
পর্ক বখন ভামজমা দেখালনো করার দারিছ
মান্তে এলে পড়েছিল। অধাং বাড়া হরে।

শ্বিতো দে জন্য প্রামে বাবার দরকার হলে
মনে হর, কোনো বাধ্য বাধকতা আমাকে
গুরুষাক্কা দিরে প্রামের দিকে ঠেলে দিছে।
আছাড়া কলকাতা আমার কমাক্ষের
হলেও মাঝে মাঝে আমাকে ছাটে গিয়ে
আমার প্রামের কাছে বিপদে হাতা পাত্রতে
হলৈছে: অবশা আমার গ্রাম আমার বিপদোশ্বার করেছে। দ্বাসময় কাটিরছে, অর্থলাহাব্য করেছে।



দ্-চার দিন কাটানোর পক্ষে গ্রাম মাদ্দ নর। বিভিন্ন অভূতে ভারু বিভিন্ন সোদ্দর্থ… কিন্তু এক সোদ্দর্ম আসে। কী বস্তেতর শালবন, কী গের্লা ভাঙার প্রপারে দুর্ঘেদির, কী মাঠভতি সব্জ ধান...বড় জার দ্-চার দিন মুন্ধ চোধে দেখা বার... ভারিত্র ক্ষে নীল আকাশে স্কুপ্ট নক্ষ্য-

মেলে।

রাজী দেখে অনেক দার্শনিক তত্ত্ব মনে আসে...কিম্তু দেও বড় ক্ষ্ণম্থায়ী।

গ্রাম আমার কখনোই দীর্ঘকাল ভাগো লাগে না। দীর্ঘকাল গ্রামে বাস করতে ইবে ভাবলে মনে হয় আমি পাগল হয়ে যাব। এই দুন্দিকভার হাত থেকৈ আমাকে মাঝে মাঝে রেহাই দিয়েছে বে কয়জন, তাদের মধ্যে প্রথমেই উল্লেখ করতে হয় হাবু পাত্র নাম।

হাব পাতর কাছে গিলে অমি মন হালকা
করতে পেরেছি...লে জনো গ্রামে বে কাদন
কাণিয়েছি, হাব পাত আমার দীর্ঘ সময়
জন্তে থেকেছে।

আমি যথন বিপদে আছাহার তথন এই লোকটির সাহচর্য আমাকে অনেক জরসা জাগিরেছে...কারণ বাঝি নি। আমি সঞ্চা-জাগতের মানুষ্ শিক্ষার আলোকে আলো- ক্ষিত্র আরু হার পার অশিক্ষিত অন্ত এবং আরু চাবী তাকেই অমার ক্ষমা অক্ষাতনা উচিত, কিন্তু বাস্তবে ঘটেছে ক্ষমার

উপদেশ বা জ্ঞান বিতরণ করে হার,
কাল আমাকে ভরনা লোগার নি—সে-রক্ষ কুলাহন সে কখনো দেখার নি...আমি
শুবু তাকে দেখে, তার কাজকর্মের সমুশ্ পারিচত হরে, ওর কাছ থেকে গুরু আগোভরেই সাহস সংগ্রহ করে নিরেছি...

সারা সকাল ও সারা দুপুর টোনে ও বালে কাটিরে ধা থা রোদ ভেডে সেবার কলকাতা থেকে যথন বাড়ি গিরে পেটিবলার তথন প্রায় বিকেল। মাঠ শ্না...রোদে পুড়ে বাছে দিগণত। মনে হচ্ছে থড়ের চালগলো থেকে এই ব্যি আগ্নের শিখা নেচে উঠবে ...বিকেল হতে চলেছে, তব্ যতদ্র চোদ গেল ততদ্র জনপ্রাণী বা পদ্পাধি দেখতে প্রায় না।

বাড়ি পেছি ছাত পা ও মুখ ভালো
বারে ঠাণ্ডা কুমার জলে ধুয়েও সারা পরীর
ও মাথার উত্তাপ যেন এতটাকু কমল না।
আজকাল সকালে ঠাণ্ডার ভরে চান করতে
পারি না...কশকাতা থেকে চান না করেই
বেগিরেছি, রাশ্তার কোথাও চান করার অবসর জোটে নি...টোন থেকে নেমেই সপো
সপো বাস ধরতে হয়েছে...কেবল মাঝখানে
দুটি ভাত নাকে মুখে গোঁভার ফাঁক পেরেছিলাম...বিকেলেও সদি লাগার ভরে চান
করতে পারলাম না... মাথা বা বা করিছল...

জার মধ্যেই চা খেতে খেতে গ্রামের দ্রবস্থার পাঁচালী শ্নলাম. মারের অনটনের ফি রিস্তর ফাকৈ **ফালে।** অনেক দিন পরে বাড়ি আসহি, কের্মন ধান-ধ্ন হয়েছে থবর রাখতাম না। বাবা মারা যাবার পর থেকেই আমাদের **অভাব অন্টনের কথা শ**্ননে আসছি, তার সংগ্র নতুন থবর পেলাম, এ বছর মাঠকে-মাঠ ধান পোকায় সাবাড় করে দিয়েছে...যে ভামি মায়ের আন্তর প্রধান উৎস সে জমি এবার বিরুপ...ঘরে সম্বংসরের থোরাক নেই...কী করে বছর চলবে, ঘাড়ে এক পশ্য মেরে, এক ছেলে কলেজে পড়ছে...তার পিছে কড়ি-**ক্র্যিড় খরচ...ই**ত্যাদি ইত্যাদি।

দেশলাম, সত্যি সতি আকৃষ্মিকভাবে মারের গাল দুটো বসে গেছে, মাথার প্রায় সব চুল সাদা হয়ে গেছে, চোথেমুথে প্রগাই দুর্শিচণতার ছাপ।

মাথায় আমার রক্তস্রোত নাচানাচি করতে লাগল।

আমি নিজের বিপদেই দিশেহারা, পরস্তু বায়ের অভিযোগ।

জার অভিযোগের লক্ষ্যুপ্রল যে ছেলে, সোটা মা মুখ ফুটে না বললেও বুর্গতে পার্রছলাম...কারণ তথন আমার অবস্থা। উলোমলো।

হাব্দার কাছে যাবার ইচ্ছে হল হঠাংই... ভাষকাম, সেখানেও যদি হাহাকারের মম্বিদারক চিংকার শুনি ?

তব্ মারের ২০।২৫ বিঘে জমি অগতে ...হাবু পারের তো তা-ও নেই! হাবু পারের কৰি আৰু ব্যৱসায় কিল আই আৰু আৰু

হ' বিহৰ ভাতা। তাল-ভাৰ কৰে নিম্নে কৰিছে।
মোট কুড়ি বিহেৰ চাৰ সভামানে কৰিছে।
আনত বেৰি ভাৰ কৰছে; বাপ-কেটাৰ ইপানীয়
বগড়া-বাটি চলছে বলে চাৰও কৰিছে।
বিষয়ে হাৰ্মা...

Torrest.

হে চাৰী মাৱ কুড়ি বিৰে সোট চাৰ্য করে তার অবস্থা এ বছর নিশ্চর মারের চাইতে অনেক বেশি শোচনীয়।

তাহলে ৰাই কোখার...

जारक् जान्तीकरनक राष्ट्रि...

আখ্যান্তরা কাছের মান্য কিন্তু মনের।
মান্য নার। ছোটবেলার আখ্যান্তিকনার বাড়ার সক্ষেত্রর বড়ার সক্ষেত্রর করে বাছে... হয়তো আখ্যান্তরের সালের সালের সংঘাতটা অনাখ্যান্ত্রের ত্রুনার অনেক বেলি।

কীত্হল আমাকে টেনে নিয়ে গেল হাবু পাচর বাড়ি।

লোকটাকে বিভিন্ন অবন্থার সেপেছি

....দেখেছি তার অদম্য উৎসাই
ছবীবনের অন্ক্ল ও প্রতিক্ল অবন্থার

...বড় কোত্ত্ল জাগল এই প্রচণ্ড দ্ববংসরের
বিপাকে লোকটাকে কেমন দেখন।

্রুক্তেক মিনিটের পথ থালি পারে আল তেঙে হাব্দার বাড়ির সামনে গিরে ভাক দিলাম।

মাটির দেয়াল খড়ের চাল, ঠিক রালতার জগরে যেখানে হওয়া উচিত বৈঠকখনা দেখানেই গোরালখন। রাল্ডায় দুটি মর্খটে কাড়া ও দুটি রুখন গাই বাধা, একটি কাড়ার কাঝে ঘা—ঘারের উপর করেকটি ডাঁল উড়ছে। বাড়ির পালে শুনা খালার এক ফালি, ভার এপালেই একটি ছোট পচা ডোবা, করেকটি ছাল চরছে। বাড়ির একদিকে মাখা ঢাকা দেওরা চাল—কাঠের কারখানা করেন্ডে সেখনে...দরলা জানলা চেলার বেক্ত থেকে সূর্ করে লাঙল ও গর্ব গাড়ি পার্বাল্ড হৈরি করে হাবুদা এই কারখানায়। এখানে দেখানে নানান আকারের কাঠের ট্করের, ও গাঁবুড়া ছড়ানো।

একটা গাম্ছা পরে হাব্ পাত বরের ভিতর খেকে রেরিয়ে এল। মুখ ভিতি বরস ও অভিন্তার গভীর দাগ, ছোটো কিন্দু ভৌক্য নাক। বড় বড় চোথ দ্বটি লালতে। বে'টে-থাট ছোটো মান্মিটি...ছেথে মোটেই সরল প্রকৃতির মনে হবে না। মেদহীন দেছ... ভব্ পেটের চামডায় অভস্র কুগুন।

সারা জীবন বির্ম্প শক্তির সংগ্য অবি-লাশত লড়াই করার জন্যে শরীরটা একটা চাবুকের মত দৃংত।

আমাকে দেখে হার্দা নাবলীল হাসিতে মথে ভরিরে দিল, এস, এস। কথন এলে— বলতে বলতে খরের ভিতরে ছুটে গিরে একটি স্ফোর চেয়ার নিয়ে এসে গামছার খুট দিয়ে মূহে দিল। একটা আলপাভার পাধাও এগিনে দিল…

কলে আমি চেয়ার প্রসংখ্য প্রথম করলায়...

কোন গাঁরে এই মহুরা গাছের গ'নুড় কে আগ্রহ করে ফেলে রেখেছিল—কড সম্ভান্ত बार्यको प्राप्त साथी को जिल्ला तरक करन की प्रमाणिक अस्त सामक की की बारकार जिल्ला इसके देवीड करकार प्राप्त करने प्रशिक्षांत्र विकास करने साथ साथ साथमा

্বে বিষয়েই হাবনা বসবে, সে বিদ পাঁচন কি বিল-চলিশ বছর আনোকার কথাই হোক...একেবারে স্কার্যিতস্কার কানা বদ সেবে না।

এত বিশ্বত্ত ও এত তুহু প্রস্কা কী করে হাব্যে মনে রাশে, ভেবে আমি ভিরকাল আশুকা হরেছি...

আমার মুখের দিকে তানিকে হারুনা ব্যব্দ ক্রিল আমি অন্যমনক হরে পঞ্জেই, তথ্য সে প্রশ্ন করল, তারপর থবর কী। হেলে-মেরেরা বৌমা...ওরা সব ভালো ভো?

হা ওরা ভালো। আমার খবর খ্রে খারাপ...ভাগ্যবিপর্যন্ন ঘটে গেছে...

কলকাতা ছাড়ো... কলকাতা ছাড়ো... ওখান থেকে চলে এস—এস দ্?' ভাইছে কিছু করি।

এখানে কিছ্ হবে? আলার কঞ্চে ভাচ্ছিলোর সূর...তুমি কিছ্ করতে পারছ? কেমন ধান পেলে এবার...

हार्गात मृत्य मृह् एक त कारणा हाना पर्यक्त राजन.....

স্বাইকে ভিজ্ঞাসা করো, আমার কথা ওরা
শুনেছে কিনা...শুনে নাই...সোনাঝরর
কাদিতে পরথম পোকা দেখা গেল, তথ্নি
স্ব্বাইকে বলেছি, ওষ্ধ লিয়ে স...ওব্ধ...
নিজের নিজের কাদিতে ছড়াতে থাক...কেউ
আমার কথা কানে লিল না...

তুলি ছড়িয়েছিলে? আতার কথায় কড়া সূত্র।

নিশ্চয়...ঠোট বিকৃত করে হাব্দা জবার বিলা ... শুধু একা কি বাঁচা বার ভাই?
শুধু একা বাঁচা বার না...শুধু একা বাঁচা বার না... শুধু একা বাঁচা বার না... শুধু একা বাঁচা বার না... শুধু একা বাঁচা বার কালে কর্ম বার আমার কালিতে ওব্ধ ছড়ালম...পোক নাশ কর্মার আমার কালিতে পোকা চলে ত নার...কত ওব্ধ ছড়াবে রোজ রোজ?...বাদ দাও...তোমারে আমি চাষ ক্রে বাঁল নাই...তোমার শ্বারা চাষ বে সম্ভব লর, সে কি আমি ব্রিঝ না?

নতুন স্পানে জড়াতে চায়।

আমাকে দেখলেই হাব্দার উস্ভাবনী

শক্তি বেড়ে বায়। অথবা তার স্বতঃস্ফৃত্

জীবনীশক্তির প্রাচ্থেন্ন কন্য সর্বদাই হাব্দার

মাধার নতুন নতুন স্পান নতুন

নতুন পরিকস্পনা গঞ্চাঞ্জ করে।

বছর পনের আগে যখন আমি একটানা
বছরখানেক সমর গ্লামের বাড়িতে ছিলাম,
তখন আমার কর্মাক্ষমতা দেখে হাবুদা
উল্পীপিত হরে, অল্লাকে দিরে মানির
দোকান করতে মেতে উঠেছিল। আমাকে
ক্রিক্ করতে হবে না, দাড়িপালা ধরতে
হবে না, বসে থাকা...হাবুদা নিজে অথবা
তার ছেলে স্বাক্ছি করবে। আর আমাকে
ক্রিক্পারের মারক্সাড়ীদের কাছে একবর্মি
নিরে গেলেই হল...এক হাজার জন্ম প্রভাধলে তিন হাজার চাকার মাল নিরে আরঙে

THE PERSON STREET, ST. CAS.

ভার পরা রা, কভন হাত্রের সে ভিত্তা বরণে করির নৈই। করি রে কোনো-ভালে বর্ণির গোডান করিছ পারি না... অবার হান্তিকভারে সংগ্রহ ইবাবনা মেলে না...এড ভিত্তা করার বিদেশ্যের হার্ণার কেই।

তাছাড়া এ ত্রাটের সেন্ড্রন বড় গরীব...তাদের রুরজ্মতা বড় নগণা এবং নগদে সঙ্গা করার থশেরও খুব বিরল...এ সব বিসদের কথা হাব্দার মাথার জানত

্রিলনমাত আমার কালের কাছে হার্না স্কুলস্ক করত...কর না, করেই দ্যাখ না... ক্ষমুক দোকানী কত কম সমরে কত উমীত করেছে...কত জমি করেছে...পাকাবড়ি ভূলেছে ...জার আমরা পারব না?

বলা বাহ্লা আমি হাব্দার প্রকাবে সার দিতে পারি নি...ক্সকাতা পালিরে সিরেছিলাম...

বতবারই আমি বাডি এসেছি ততবারই শনেছি হাব্দা নতুন কিছ্ করছে জার জামাকে সেই নতুন-কিছ্র সংগ্য জড়াতে হাব্দার উৎসাহ অপরিসমি।

আবার কী করতে চাও? আমি হা**সতে** হাসতে বললাম...

পাদপ নিয়ে এস, ভাড়া খাটাব ..ছাব্দার প্রস্তাব।

পাদপ এখানে অনেথেই ভাড়া নেৰে।
এদিকে সেচের বড় অভাব। গ্রামের পাশেই
একটি জীবণত খাল বয়ে চলেছে, ভাতে সারা
বছর জল থাকে এবং খালটি খরস্রোতা...
দশ মাইল দ্বে মাতির তলা খেকে উথিত
দশি দ্বা এই চাঁপা খালের উৎস...এই খাল থেকে জল সেচ করতে পারলে দ্বাপাদের
জমিতে সোনা ফলবে সন্দেহ নেই...

আমি কিন্তু কলকাতা ছেড়ে এখনে আসতে পারব না। দেখাশ্না কে করবে ক্রিন

্রেন, আমি। হাব্দা ব**লল**।

তুমি কোনটা করবে হাষ্দা? চাষ, না কাঠ মিস্টার কাজ, না দশকনের খালার ঘ্রবে, না পাশ্প দেখবে:

অনেক কটিল কাজ একসপো হাব্দার মাথার ঘোরে চিরকাল।

চাষের বাপারে, প্রাথশানিত বিরে ইত্যাদি উংসবের ব্যাপারে এমন কি কার গর্ মোব কিনে দিতে হবে পাংচ্দ করে—তারও ব্যাপারে হাব্দাকে সবাই চার। আর ওর সংশ্য কেট কোনো কার্ল করার আগে পরা-মর্শ না করলে—হাব্দা ভীষণ অপমানিত বোধ করে। সে যেন গ্রামের ধর্মপিতা...

দশজনের তৃচ্ছাতিতৃচ্ছ কালে-কর্মে
হাব্দা নিকেক জড়িরে বহু সমর অপবার
করে, তাতে তার বউ ছেলেরা খুবই
অসক্ত্র্য অভাবী সংসার বেখানে প্রতিটি
হুহুত সন্বাবহার করতে পারলে, কোনে
রক্তন সংসার চালানোই প্রায় অসক্তর,
সেখানে বহু সমরের বহু অপতর বউ বা
হলের কেই ব্যাহ্ করের বহু অপতর বউ

all fine basins and con-

रायाल करीर क्षेत्र बारा रायाल राद्या नवक्य गीव सामरक क्ष्याक...च्या कलारक गीव निरत नाहाया कराक...

.....নিজে এক মানলা লড়তে গিয়ে গৈছক হ' বিৰে কমি হাচিয়েছে...কিছু কিতেহে তো ...

িলেই মামলা কেতার পর থেকে হাব্দের মানে একটা কথা বখন-জ্বন প্রতি পাওয়া বাদ্ধ...কেলিওক আমি হই নাই ভাই...

কেই একই স্বে ছাব্লা আমাকে বললৈ, সে আর কী কঠিল ব্যাপার! সব কেবৰ...ভূমি আমাকৈ এব্লো চিনতে পারকো না...

এই আফশোস হাব্দার চিরকাল...ও মরে গোলে স্বাই চিনতে পারবে...কী লোক ছিল এই গ্রামে...দশটা গ্রামের লোক ওথন হাড়ে-হাড়ে হাব্দার উপবোগিতা উপলব্দি

আমি একট্ রেগে লেলাম,...আরে বাবা, সব শিক্ষাই একটা সম্ভব-অসম্ভব আছে ভো...

্তুমি কিনে দিবে কি নাকল!

ধ্যক লাগালাম...তুমি নিজের সংসার নিরেই অস্থির...তার উপর আবার পাশ্প:

কিনে দিমেই দ্যাখ, আমি সমালতে পাৰি কি না...

হাসতে হাসতে বাড়ির ভিতর চলে খেল বাব্দা…করেক মিনিট পরে ফিরে এল দ্ঃ-হাতে দ্ঃ-কাপ ধ্যায়িত চা নিরে∴চা দিয়ে টাক থেকে বিভি বের করল…

নায়ে চুম্ক দিতে গিয়ে আমি নাক সিণ্টকলাম... बारपा शान कार छका द्वारिकार, क्रमा द्वा प्रदेख ? क्षमाचा निर्देख

ं कालाने, जेर्डनंत्र, स्थेन ज्यूनंत्र शरकारः । ब एकाएँ यथम रक्षे हा रबक्र मा ग्रा वाग्नता शाका, कथन शाब, भारते बात हो পাওয়া বেড। এ থানার ব্যন কেউ পাল্পর সাহায়ে ক্ষেতে জলসিভনের চিন্তা করত मा छथम हात्नात ब्रांच शन्भ कारहात क्बान हैएक् श्रकाण ल्लातहा महन-महनारेन्टन शर्वे बारे बार शत्ना हरन-काष्ट्रा किनाक: তার কাড়ে বহু দ্রের খন্দের আলে গর্ম থাড়ি কিনতে, মামলা-মোকন্দ্রার কালে हार्मा अत्मक्शत क्षणात मगद (शरह...रह. লোক্রে সংশ্ মিশেছে হাব্দা, ভাদের কাষ থেকে বহু নতুন পরিকল্পনা সংগ্রহ করেছে, শ্বে, সংগ্ৰহই করেনি, কাজে লাগাবার চেডাও করেছে। নতুন কিছু অভিনব কিছু হাবদো বরাবরই চট করে গ্রহণ করতে পারে।

চা শেষ করে বিড়ি ধরিরে ইললাম, ব্যাপার কী জানো, এখানে কিছু হবে না। কলকাতায় কী হল?

তাও ঠিক...কলকাতার কুড়ি বছর
কাটিরেও তো আমার কিছু হল না। আসকো
বরীবদের কোবাও কিছু হবে না...সবাই
তো সম্পদের পেছনে ছুটছে, সমর মন্ট করছে, বার্থ হচ্ছে...সম্পদ পাক্ছে না...
জানে সবাই বড়লোক হতে পারে না.. তব্ আফশোস করতে করতেও সম্পদের শিশুছ ব্যা ছুটে ছুটে হ্রান হবে, ফ্রান্ড হবে,
অসুথে পড়ার এবং একজন সামান্য গরীবের মতই মারা বাবে...

ওখনে কিছু হবে না...আমি কলসাম। এখানে এস, দ্যাখ কিছু হয় কি না?... হাব্দায় নিশ্চিশ্ত জবাব।

হঠাৎ হিংক্ততা আমার মনে লাফিছে উঠল, খোঁচা দেব—ওর হাহাকারটা আমার মারের মত চোথের সামনে তুলে ধরব, প্রামে বাস করার আনন্দটা কী, হাব্দা একবার নতুন করে মর্মে মর্মে উপলব্দি কর্তৃ।



्रिक्यम बाम रिमाल क वहत, बनारन मा स्क्रिक

িক্তক স্বেট ছাব্দা উত্তর দিল, সে জন্ম মনেছে নাকি।

আমু জানতাম। এখনই গ্রামের চ্য়েরীরা

কর্তার দরে শেষ পৈড়ক ক্ষিট্টেকু বেচে

ক্রেরার জন্যে খলের খাজতে...ঘটি-বাটি

ভো অনেকেরই ঘর ছেড়ে চলে গ্রেছ...
ক্রামনে যে ভরতকর দিনগালো ঘনিকে
আসছে, তাদের সপো চাষীরা পূর্ব
পরিচিত। এটাই তো আর প্রথম দ্বেংসর

নর। অনেক থরা অনেক পোকা আনক অতি
ব্রুটির অত্যাচার সরেছে চাষীরা। ভিটে-মাটি
বেচে কেউ কেউ সন্ত্যাসী হরে চলে গ্রেছ
ক্রেরা দিকে চলে গ্রেছ কত জনমজ্ব

থাটতে, ভিজের ঝ্রিল কাঁধে নিয়েছে
ক্তেজন...বহুবার জাগ্যের মার খেরে

চন্ত্রীরা আজ সবাই ভাগ্যবাদী।

্ হাব্ পাচ একট্ ভিন্ন ধরনের। প্রেন-প্রি ভাগ্যবাদী সে নয়।

অন্ধোকিক জিয়াকলাপে ওর বিশ্বাস অট্ট, কিন্তু সে ব্যাবরই আশা করে, মুট্চমত একটা কিছু করতে পারলে মা-লক্ষ্মী তার ঘর জুড়ে একদিন বস্বেনই বস্বেন।

ব্যবসা করেছে, রেলে কার্পেণ্টারের চাকরি করেছে...চাষ তো তাদের বহা প্রেছের জাবিকা...অনেক কিছু করেছে হাবুদা...প্রচণ্ড বার্থ হামেছে বহারার ... দেনার দায়ে ওর বাড়ির সকলের চুল পর্যাণ্ড বিকিয়ে আছে...তব্ত হাবুদা নতুন কিছু ভাবছে—এই অভাব-অনটন অসহায়তা এবং অপুমানের হাত থেকে সে একদিন-না-একদিন পরিপ্রাণ পারে।

র সর্বাংশ আভ প্রাচীন বর্টগাছের

মত সহস্র অভিজ্ঞতার ভাঁজ ব্রাডপ্রেশারে
প্রায়ই শ্যানামী মাথা ঘোরে, পা টলে

রাক্ত একেবারে ঘুণোতে পারে না মাথে

সিক্তি একেবারে ঘুণোতে পারে না মাথে

স্বাহ্

আপনার গৃহের আপনার গৃহের স্বাস্থ্য রক্ষার জন্ত LEUKORA জেপনিহার্য্য এডকো নিমিটেড গো: এডকো নগাঃ ভিলো-প্রগালী মাৰে মনে হয় মন্তিক আৰু কিছু টিন্তা ক্ষতে পালছে না

তব্ একটা নতুন প্লান হাবদের মাথায় ঠিক মাজামাতি করছে— হাব্দা সারা শরীর ও সারা মন দিয়ে সবাইকে ব্রিথানে কেডাছে, এইটা লাগতে পারলে আর ভার ভাবনা নেই, বাকি জীবন সে নিশ্চিস্ত।

আমি ওকে বরাবর অবাক হরে দেখে গেছি।

আর নিজের বিপদ কাটিয়ে ওঠার সাহস পেরেছি মনে মনে।

নীলকুঠির ধারে হাব্দা সেদিন আমাকে টেনে নিমে গিয়েছিল। দেখিয়েছিল, সবাই যখন দ্ব'ংসরের ভবিষাং চিশ্চার মুহামান তখন সে বিপদ থেকে উম্থারের রাম্ভা বের করতে পেরেছে।

নীলকুঠির পাশে দু বিছে ছামতে চালি ধান বুনেছে হাবুদা। আপ্লুল চার উ'ছ ধানের চারাগালি খন সব্জ...জমিটা আকরে একটা ডিপি নৌকোর মত...এই ধান উঠবে ভাল মাসে...মখন রাজার ভাশ্ভার ঘাল তখন হাবুদা এই চালি ধানের পালাই বাধার খামারে...

এই প্রচণ্ড ধরনে বাঁচবে গাছগন্লো? আমি প্রশন করলাম।

এই যে কুয়া...কুয়া কেটেছি...

গের্যা ডাঙার দোখাঁশ বেলেমাটি...
এইখানে নাঁলকুঠির পাশেই হাব্দা হাড়ার
রামবাব্দের কাছ থেকে ছ বিদে ভাঙা
নামমার মালো খারদ করছে, একটা ছোট
পানুর কেটোছ...এই কুয়া কেটেছে...পয়সার
অভাবে কুয়াতে পাট বসাতে পারে নি...
বাধাতে পারে নি...এইখানে ছোটখাট এগ্রিবালাচারাল ফাম করবে হাব্দা।

ওই ছোট প্রকৃষ্টাতে বানের ঢল নামে।
নতুন গের্থা জলে আছ ডিম ছাড়বে, এ
বছর বর্ষায় হাব্দা আছ পাউস করাবে এই
প্রকৃষে। মণ দ্য়েক আছ পাউস করাতে
পারলে ডিম বেচে মুঠো মুঠো টাকা...

আর এই নলিকুঠি..

ছাতগালো কবে পড়ে গেছে, টি'কে আছে কোমর অঞ্চিন হু হাত চওড়া দেরালা, এখনো আট-দশটা কুঠুরির চিহ্ন করেছে... যদিও নানান গাছে আর পরগাছায় চেকে আছে সেগালো...আর নিশ্চর বড় বড় যিষ্ধ্র সাপের আছা...তব্ এসব সাফ করতে ক'দন!

এইখানটা সাফ করে বাডি করতে প্রাম থেকে হে'টে আসতে মিনিট পাঁচ সমন্ধ লাগো গ্রাম থেকে কিছু দুরে টে। বাস করা যাবে। জার হাব্দা লোকালায় বাস করতে পারছে না ভীষণ ছোট হরে গেছে মান্ধেব মন ইদানীং কার্ম্ম মতের সংগ্র ভার মিলছে না

নিজেই ইণ্ট পোডারে...সে আর কী কঠিন ব্যাপার, কী জানে না হাহ্দা! বাডি তৈবি করাব সমঙ্গত বীতিনীতি ওল্প জানা আছে

একেবারে মনের মত বাড়ি করবে পৈত্ক প্রেনো বাড়িটা তার কোনোদিন্ট প্**ছন্দ নর।** ভাষ্ট্রের সুখ্রের এক ক্লাক ছা বিজে কান নেক্লের কাল কেনে ক্লাক্লিকা ছোট প্রকুর অথবা সাড়ে ডিন বিজেক কুটির প্রকুরটা...কুটির প্রকুরের ডলার রুমেছে অমর কাশা...স্বক্লার কেবল একটি পালেন্দ্র... নিজের কাল চলাবে...ডাড়াও খাটারে... নিজে বখন পালন্টা কাহার করবে, ডার দায় ভাষ্ট্রির ক্লেরে হাবলা...

চিন্ন সৰ্জ কৰে ৰাখবে হাৰুলা ভাৰ এপ্ৰিকালচাৰাল কাৰ্ম!..চাকেৰ কাঞ্জে কোন মবদ পালা দেবে ভাৰ সংশা!

ঠিক কৃড়ি বছরের ব্রকের মড় নাচতে নাচতে হাব্দা আমাকে তার পরিকাল্পনার চমংকারিত্ব ব্যাখ্যা করে বোজাতে লাগল। তথ্ন তার বরুস ঠিক বাট বছর।

আমি ওর দিকে ফাকির সাগ্রহে দেখ-ভিলাম...ভাবছিলাম.. বডকণ মান্য একটা কিছা করতে চাইছে তডকণ সে যুবকের মত সতেজ।

চোখ ফেরালাম। সি'ড়িক থাপের হাত উ'চু-নিচু আদিগদত জমি থা-থাঁ করছে... বালসে বাছে মাটি...বাম্প উঠছে...গরম গাওয়ার গারে কাঁটা দিছে.. বতদ্রে চোখ বার পড়ে আছে রুক্ষ নীরস মাঠের পর মাঠ...দ্রে চাবাদের খোড়ো চালগালি মান হচ্ছে খেলাঘর...

আসম দ্ববিসরের তুলনার বিছে দ্ই ভাষির সামানা চালি ধান যে কী নগণা রুসদ্ আর সেই রসদের উপর নির্ভার করে বার্দার এগ্রিকালচারাল ফার্মের কী কর্ণ পরিকাপনা... উপরবুতু চালি ধান উঠকে সেই ভার মাসে...এই পাঁচ-ছ মাস বে-সম্পুরের মত অভাব চোগের সামনে ভেসে উঠকে... সে-সম্দ্র পাড়ি দেবার জন্য ভিঙি নৌকোর মত চালি ধানের জমির উপর কী করে তরসা করছে হার,দা...

এই সব ভেবে চোথে জল আসাৰ কথা…কিন্তু জল এল না, ববং বড় হাসি পেল আমার।

হেসে ফেললাম।

হাব্দা আমার হাস ক্ষাহা করে কঠিন মুখে বলে উঠল, ভাই আমি কোনোদিন ফেলিওর হই নাই...বে-কালেই হাত দিয়েছি, সে-কাকেই সাকসেসফলে হইচি।

হাব্দার কাছ থেকে আবার ন্তুন কিছু করার উদদীপনা সংগ্রহ করে কলকাতার ফিরে এসে অনেক নতুন কিছু কর্লাম...বিশেষ সাফলা অর্জন কর্লাম কিলা জানি না অদম সাহস আমাকে বার্থতা হজম করার ক্ষতা জোগাল।

দু বছর বাদে এই সেদিন জাবার বাঞ্ গেলাম।

মান্দের মুখে শ্নেকাম বারবার ডেকেও
আজকাল হাব্দার পাত্তা পাওরা যার না।
বাকে বখন-তখন : দেখা বেত ভাকে অতি
বিপদেও ডেকে পাঠালে একবারও আসে না।
অথচ হাব্দা নাকি সুস্থই আছে।

গেলাম হাব্দার কাছে...সূর্ব তথন হেলে পড়েছে...শালবন থেকে গর্-মোবের পাল নিরে ফিরছে রাখালেরা...মাঠে মাঠে জাপ্যি দেওরা ধানের আটি,...গাড়িছে কুরে নিৰ্দে বাজে বাল...কেউ কেউ নাথা যোগাই কলে বল্লে নিৰ্দ্ৰে আসতে।

হাব্দা আগরের এক পালে ক্যান্বিসের
থাটিরা পোডে গ্রের আছে, ব্রুক্তর উপর
বাজতে টালজিলীর রেডিও...বড় হৈলে
রেলের অফিসে পিওন—সে গিরেছে
রেডিওটা বালার জনো। চোখ বাল করে পড়ে
আছে হাব্দা...পালেই তার দ্ব বছরের
নাতি আপন মনে খেলা করতে নান গাবে...

বাড়িতেই শুনেছি...আমি চলে খাবার
পার হাব্দা মাছ পাউস করাতে গিরে বেশ
লোকসান দিরেছে...গত বছর তার ছেলে
বাপের বুন্দির সঞ্জো নিজের বৃন্দি মেশাল
দিরে মাছ পাউস করিরে লাভ করেছে। যে
বছর হাব্দা মাছ-পাউপে লোকসান দের
সেই বছরই আরেকটা ধার্রা খেরেছে ওরা।
চাঁপা খালের পালে দেড় বিঘে জমির মাটি
ভাটাতে গিরে আনক টাকা খরচা করে
দিরেছে হাব্দা...অবলা জমিটা এখন তিন
ফসলা হরেছে...

কিন্তু ছাব্দা সেই থেকে বাড়ির বাইরে বেরোয় না বড একটা।

একেই প্রেনো দেনা...তার উপর মাছ-পাউস ও মাটি-কাটার দেনার দায়ে হাব্দা নাকি কিছুদিন মাথা তুলে চলতে পারেনি।

কিন্তু ওর মেজ ছে'ল বাবার প্লান নিজের মতে ভেডেচুরে কাজে লাগিয়ে এক বছরের মধোই অনেক দেনা শোধ করে দিয়েতে।

স্ত্রাং হাব্দাকে আমি প্রফ্লেই দেথব আশা করেছিলাম।

কিন্দু যে আমাকে দেখলে শিশ্ব মত নাচানাচি করত সেই হাব্দা কোনো রক্ম উঠে খাটিয়া ছেড়ে দিয়ে শ্কনো মুখে আপায়িত করণ...রেডিওটা বংশ করল না... ওটা বেক্সেই চলল।

প্রশন করলাম উৎকন্ঠার সংশো...কেমন আছ হাবাদা!

ভারি মুখে জবাব দিল...যেমন দেখছ... তবে যে বিকেলবেলা শুমে? শ্রীর ভালো তো?

দিনেরবেলা কখনো হাব্দাকে স্থির হয়ে দ্দু দুক্ত বঙ্গে থাকতে দেখেছি বলে মনে পড়ছে না।

শরীর আমার খুবই ভালো...এখন তো আর কুনো অনিয়ম নাই, কুনোখানেও তো বের!ই না!...মন খুব খারাপ...

কেন...শ্নলাম, তোমার ছেলে উল্লাত করছে চড-চড় করে...

ওদের কথা আমার কাছে বোলো না... চাব,দার মুখ রাগে থমথম করতে লাগল... ভারি আমার বাহাদ্র চইচে...মাতব্বর ছইচে...

ভাষোই তো...এবার ওদের এপর ছেড়ে

প্রায় চিংকার করে উঠল হাব্দা, দহড়ে দ্বে কি? কাড়িয়ে লিজেচে। আমাকে বিছ্
করতে দিবেক নাই। আমি নাকি সব লোকসাল করে দ্বে। আরে ভাই...তিনটা ছেলেক
মানুহ করল কে...কে বড় ছেলের রেলে
চকরি করে দিইচে...কে আমার মেনের বিজ্ঞা

একটা লোক আছে, যার আমি কিছু কবি নাই?

্হাব্দা উন্তেজনার ভোতলাতে লাগল... হাপাতে লাগল...

বললাম...ভালোই ডো...এবার ভূমি বিপ্রাম নাও...সারা জীবন ডো খেটে মরেছ, এসার থাও লাও ঘুমোও বেড়াও...রাগ করছ কেন, ছাত চিংকার করছ কেন...আবার থে ব্লাড:প্রাদার হবে...

আমি খ্ৰই সুস্থ নইচি...৬২ বছর বয়স হল মান্তর...সতর বছরেন আগে আমার বাপ-পিতাম' মরে নাই...বস একট্ চা করতে বাল...

সংস্থ লোকের মতই হাব্দা সহজ পদক্ষেপে হে'টে গেল।

ফিরে আসার পর বললাম, আমার তো তেমোর কথা শন্মে তোমার ছেলেদের উপর মোটেই রাগ হচ্ছে না হাব্দা...

হাব্দা শ্ন্য দ্ভিটতে আমার কথা শ্নতে লাগল।

আমার তো ভীষণ হিংসে হতে
হাব্দা...ঝুণিক নেই, বিপদ নেই, মার
খাবার ভয় নেই...কেমন নিশ্চন্ত জীবন...
রোগ নেই, সম্প আছ...খরে মা-সক্ষমী
আসছেন—এর চেয়ে আর বেশি কী কামনা
করতে পারে মানুষ!

আমার মুথের দিকে হাব্দা স্তীর বিক্ষয়ে তাকিমে ছিল, যেন সে অলতত শ্বামার কাছ থেকে এমন কথা শুনবে, একে-বারেই আশা করতে পারে নি...আমি ওব কর্মের অংশীদার না হতে পারলেও, কোনোদিন ওকে নিরংশাহ করি নি...।

ওর সাফ'লা তারিফ করার লোক এক-মাত্র আমিই ছিলাম।

মলিন মুখে হাব্দা চাপা দীঘ'শ্বাস ছেড়ে বলল, তুমিও বলচ! আমি কিছু করব নাই! আমার কিছু করার নাই!

চা থেয়ে উঠে আসার সময় পর্যন্ত ইাব্দা আর মুখ খুলল না। 'আবার এস' বলতে দূলে গেল...

আমি ওর মন হালকা করার জন্য লগ্ স্বের বললাম, বিগ্রাম কর...সেই তো সাত বছর বয়সে বাম্নদের রাথালি থেকে জীবন স্বর্ করেছিলে...কত বড় ঝড়-ঝাপট সহা করেছ...আর কী! এখন বিশ্রাম কর...ধর্ম- কর্ম কর...পরলোকের কাজ হবে^{ন্}রেক্সক একদো কহর সংখ্য সমীরে বে'তে ভাক্তা...

हाव्यात काह खाक काटना नाका रभगाम ना...कम्धकारत शत्रात ग्रंप रन्या याष्ट्रित मा—हाद्ना एवं स्वरक स्वरका আনতেও ভূল গিমেছিল...বাড়ি কিরে আসার সময় হাব্দার কথাই ভাবছিলাম... আৰু যা মান্য জগতের কামা, মান্য জগতের কাম্য হোক আরু নাই হোক...জন্মত আমার কাম্য...আমি এক ভূবত মানুৰ খড়কুটো ধরে বাঁচছি...একটা ছি'ড়ে যাছে, আরেকটা খড়কুটো ভাৰতে করছি...আর সর্বদাই উংকস্ঠা...কথন বতমান থড়কুটো হাত থেকে ছিলে যায়...তখন হাব্দো নিশ্চিশ্তর ভারন মাটি পেয়েছে...ওই রকম সময় সামার যদি আজই আসে, তাহলে বেশ হয়...বাকি জীবনটা নির্দেবগে কাটিয়ে দিই...

হাব্দাকে সতিয় সতিয় হিংলে হল ।
কলকাতায় এসেও কাজে মন দিছে
পারলাম না...কী দীর্ঘ কী প্রচন্দ কাঁ
নির্বাচ্ছিম লড়াই...মৃহুত অবসর নেই...
মাঝে মাঝে ভাবি...মিস্তিকে কতগানি
কোব আছে? এত জটিল এত বিচিত্র চিক্তা
কী করে একটা মিস্তিকে বলে চলগ্রে...

হয় তো কিছ**ু বিপ্রাম পেলে আরও** কত বিপ্লে চিম্না নিরে থেলা করতে পারত আমার মম্ভিম্ক।

বাড়ি থেকে কলকাতা **আসার দিন্**সাতেক পরে মারের **চিঠি পেলাম...**জানলাম, হাব্দা মারা গেছে...শেব সমরে
হাব্দা খ্বই নাকি আমার নাম করেছে,..
আর বড় আশ্চর্যের কথা মারা বাবার দিন
পর্যাত সে স্থ্য সবল ও সক্ষম ছিলা।
যোদন বিকেলে মারা বায় সেদিন সকালে
ভ-সাতটা গর্-মোবের লাব কেটেছে...লে
জাব তিন দিন চলবে। এতট্কু হাঁপামীন,
তেট্কু ক্লান্তি বোধ করেনি হাব্দা।

মন বিষয়ের উঠল ইণ **যাদ সেনিক**হাব্দাকে বিশ্রাম করতে **পরামর্গ না**দিতাম, তাহলে বোধহয় লোকটা এত
ভাড়াতাড়ি মারা যেত না...শেখ পর্বত বিনা কারণে অথথা একটা খ্লের দারে পড়ে গেলাম!



পরিবেশক ঃ খার, ডি, এর এও কোং, ২১৭, বিধান সরণী, কলি-৬ জোন ৩৪-৩৮৩৬ Grace

কিং এণ্ড কোম্পানীর সেকল শাধারা উবধ বিভাগ প্রতিদিন নকাল ৮টা হইতে রাল্লি ৮টা পর্যন্ত খোলা থাকে

SIMI SISS

তালপাতার পাখার ছবি

°टानङ्गानदनदाकिनौना !...*

र्शंजनाहा, बाग्राभद्रत, वाशानर्विषया, स्मोथानी, काभानभद्रत, চক্তীপুর, কাশীপুর কয়েকখানা গ্রাম জন্তে শন্ধ তালবন। কালো কালো দীর্ঘ রেখা, মাথায় ছাতার মতো পাতা—অপ্রে দৃশ্য! আমনধান চাবের উক্ষাক্ত মাঠে দাঁড়িয়ে দেখলে দেখা যাবে চারদিকের আকাশপটে শুখু তালগাছ আর তালগাছ! মাঝে মধ্যে নারকোল, স্প্রির, আম, কটিলে, জাম, জামরুলের বাগান। বাঁশনী ভেলকো আর তল্তা বাঁশের জঞাল। মাঠের মাঝে ভেড়িতেও তালগাছের সারি। থেজার গাছ, বাবলা গাছ। মাঝে মাঝে ভোৱা। শ্কনো ভোবার মাঝখানে বাঁশ-জন্ট্লাই অথবা কণ্ডির বোঝা দাঁড় করানো। কাছেই হুগলী নদী। বর্ষায় রাজ্যের 'ভেক্টি' (ভেকুট), বোয়াল, ভাঙন, পারশে মাছের 'মাাতা' বা ডিম আসে খালের নোনা জলে। ভাদ্র আশ্বিনেই ভেক্টি মাছের ঝাঁক ভাসে ভোবাগ্যলোয়। তথন ব'ড়াশিতে জ্ঞাশ্ত প'্টি মাছ অথবা চিংড়িমাছ গে'থে ডোবা থেকে ছিপ ফেলৈ মাছ ধরে উজাড় করে ফেলে লোকজন—চুরি করে। তাই ডোবার মাঝখানে **ডাল**-পালা বাঁশকণি পোঁতা আছে—ছিপে ভেক্টি মাছ লাগলেই চোঁ **করে** টেনে নিয়ে গিয়ে জড়াবে ঐসব ডালপালায়। তথন আরু মাছ ভোলা থাবে না। তব্ সাপের ভয় উপেক্ষা করে বর্ষায় এইসব ভোবা স্বেকে মাছ চুরি করে কতলোকের সংসার চলে।

হাঁসনাচার মাঠে দাঁড়ালে দেখা যাবে গ্রামের বড় মুসজিদের মিনার--বিরলাপুর জুট মিলের গলগল করে কালো-ধোঁয়া-উশ্গীরণ-করা বিরাট চিমনী, ক্যালসিয়াম কারবাইভ ফ্যাকটরী আর মোড়লপাড়া মোল্লাপাড়ার খোলার ছাওয়া, টিনের ছাওয়া মাটির ঘর। এক আধটা পাকাবাড়ি।

হাঁসনাচা আর মায়াপরে গ্রামের মাঝ দিয়ে চলে গেছে চওড়া কংশ্রুটির বিরলা বাহাদ্রে রাজপথ। প্রের ধারে ধারে হিন্দ্ৰেথানী, চুলিয়া, ওড়িয়াদের বাসাবাড়ি। বিরাট মোটা মোটা রুপোর মল পায়ে হিন্দ্রম্থানী মেয়ে—লাল কাপড় পরা—গায়ে হাতে উদ্বির নক্সা-ফেন গড়াচ্ছে পথের ধারে। মাল্রাসা আর হাইস্কুঞ্জের ধারের টিউবওয়েলে ভাড় জমে আছে মেয়েদের। পথের পাশে পাশে রাজ্যের চা দোকান। বাইশকুটরীর বেশালয়। কুষ্ণচূড়ার রক্তরভিন ফুলে ফুলে পথের দু-পাশ লাল। তাইচুঙ ধান ফলেছে বিশায়করভাবে কোথাও কোথাও, যেখানে জল আছে কাছেপিঠেয়। বিরলা ডেয়ারী ফার্মের গর্-মোবের জনো খড় কিনে বয়ে নিয়ে যাচেছ হিন্দ্রখানীরা মুসলমানপাড়াটা থেকে মাথায় করে। রক্তকেরা কাপড় শ্রকোতে দিয়েছে মাঠে। চা দোকান-গুলোতে তাস পিটছে রিকসাঅলারা। গাঁজা টানছে অনা কেট কেউ বা। হ্রপরীর মতন স্ফ্রী মেরেদের নিয়ে কোশ্পানীর শাদা অ্যামবাসাডর মোটরটা সাঁ করে বেরিরে বার। চুল্তপ্যা**ন্ট** পরা চ্যাংড়া চাষীর বাড়ির বথাটে ছেড়িরা স্কেনরী মেরেভরা মোটর আসতে দেখলেই ট্ইপ্ট নাচ জোড়ে—শিস মারতে মারতে। এরা স্ব হিল্প সিনেমার পরিণাম ফল-নয়া ফলছাতি!

কিন্তু এত হাজার হাজার—লক্ষ লক্ষ তালগাছ কেন এইসব গ্রামগ্রেলায়। শীতের সময় তালপাতা কেটে নেওয়া হরেছে সব



গাছের। শিরেম্লে শুখু তীক্ষার একটি করে পাতা আছে। বাকি সব পাতা গেল কোবায়?

মোল্লাপাড়ার মধ্যে এলেই দেখতে পাওয়া বাবে তালপাতার পাথা তৈরি করছে रमना त्मरत्रभूत्य दश्या, काणती, काँठि চালিয়ে। বাড়ি বাড়ি ভালপাতার পাথার कातवात । शतका यथन माम्द्रवत आर्ग 'आरे-ঢাই' করে, হাতে চাই একটা ভালপাতার পাথা! সেই তালপাতার পাথার কারবার হাসনাচা, মায়াপ্রে, মৌথালি গ্রাম জুড়ে। কুমারী, বিধবা গরিব-বেওয়া বউমান্বরা তালপাতার পাথা নিয়ে গিয়ে বাড়ি থেকে 'কুসি' লাগিয়ে এনে আবার দিয়ে যাকে মাঠ পার হরে। সেইসব তৈরি পাথায় আবার রঙের তলি টেনে ছবি আঁকছে কেউ কেউ। বাঁখারী চে'ছে কাঠি তৈরি করছে লোকজন। বড় মিন্তি চকচকে ধারালো হে'সো মেরে ভেজানো 'মুটি' কেটে সাইজ করে দিচ্ছে। সবায়েরই 'ফ্ররোন' **কাজ।** হাজার-করা দাম।

পোষ-মাঘ মাসে যথন ক্ষেত থেকে ধান উঠে যায় কিছু লোক পাড়ায় পাড়ায় তালপাতা কিনতে আসে। পঞ্চাশ টাকা হাজার দরে তারা পাতা কেনে। পাতা মানে এখানে 'মুটি'। একখানা পাতা থেকে দ্রটো করে 'মর্টি' বাঁধা যায়। গোটা পাতাকে মাঝামাঝি চিরে ফেলা হয়। তারপর মাথা-তলা ছে'টে ফেলে কচি পাতা দিয়ে জড়ো করে বে'ধে নিলেই 'মুটি' তৈরি হয়ে গেল। সকালে কাটার পর বিকালে 'ম্টি' বাঁধার স্ময়েই পাতার সব্জ-প্রাণ-অংশ শ্বিয়ে যায়। বেশি পাতা হলে জ্যোৎদনা রাতে সেই কনকনে শীতে গামছা গায়ে দিয়ে বিভি টানতে টানতে খোলা মাঠে কদেই काङ करत लाकग्रला। अत्मरकत्रहे भर्थ বস্ত্র দাগ, গলায় তক্তি বা মাদ্রণী, পেটে পিলে-লিভার পোড়ানো চাকা চাকা দাগ, পরনে ল্যুজা, বাপি মতন চুল, ঘষা কাঁচের পানা চোখ। দেখলেই বোঝা যায় ওরা মুসলমান। বিশেষ এক ধরনের ভাষা। একই গ্রামে, একই পাড়ায় বাস অথচ হিন্দু মুসলমানের ভাষার শব্দ ব্যবহার আলাদা। 'न्द्रक' (न्द्रीकरश), 'रशीनरस' (शानिस्र), 'করেচে' (করতেছে), কান্তেছ্যালো (কাদতে ছিল), 'আসাম' (ফেন), 'ভা' দে' (ভাত দে), 'ওসরা' (দাওয়া) 'এগ্নে' (আণিগনা, আঙ্নে, এগ্নে, উঠোন) লেউ' (রক্ত), 'যেডি' (विन), 'निता' (नरेशा, नितश), 'शानि-णना' (জল গড়ানো), 'ভাত থসানো' (ভাত বাড়া), 'গোন' (পথ), 'ঠে'টি' (আটপোরে কাপড), 'কতেণি' (গ্রাউজ) ইত্যাদি। গ্রামা মূর্থ মুসলমানদের ক্রিয়াপদ ব্যবহার বিকৃত-छारव अनातकम।

আতাহার মোল্লার দলিজে মেরেমর্দ যারা পাথার কাজ করছে ২ নাই মুসলমান। ওদের প্রকৃত ভাষা যা তা অনেকেরই পক্ষে দুর্বোধ্য। যেমন বড় কাঁচি চালিরে আরশাদ মণ্ডল কাজ করতে করতে বলছে, মাংস বললেই তো হবে না যাদ্ব, তার ভিংরে বহুর কিসমের নাম আছে। সিনা, টকর,

রম্পোট, চেক্লা, রেওরাজ, রিপ, খিরি, मीन, द्यान्द्रज्ञ, गान्ता, छर्जाप, अश्रम, शिन, बा बान, ग्रहरा, गर्नान-कष्ट कि! त्मारमञ्ज कथा मार्टन शास्त्र-- अरमञ्ज श्रीतकनरमञ्ज कथा भारति? 'आक्षा' 'शक्' मारत 'ताका গর, 'আমাঘড়' হল রামাঘর। ওজনকে বলে 'রোজন'। মোরা বলি পানের 'বোরোজ' 'অরা' বলে 'বরোন্ধ'। মোরা বলি, 'পেলিয়ে' আর চাচা 'লুৱে' পড় 'হাঙা'র ভিংরে 'र्'रेक्ष' या। जिन्दा नव्य थाला वन्छ ছ্যালো 'অস্মায়ে' 'ছেরাবন' মাসে মোর ঝিকে লিয়ে যেতে এল মা মোর জামাইটা। কি 'সাল্ন' রাধি কি 'সাল্ন' রাধি ভেবে মুই 'হাঙা'য় (মাচায়) উঠে দুটো 'আণ্ডা' 'পান্ন্' (পাড়শ্ম)!'

আরশাদের কথা শন্নে মেয়েরা সবাই ट्टरम छेठेन। आद्रभाम थुव कारमद माक। কথা বলছে বটে কিন্তু কাঁচি চলেছে তার অত্যন্ত দ্রতচ্ছদে। পাঁচ টাকা হাজারে সে ম্বির মাথা গোল করে পের্চিয়ে দেয়। কতকগ্রলো মেয়ে পা মেলে বসে পা দিয়ে সেই পাতাকে মেলে চেপে ধরে ঝাঁটা কাঠি বা বালের সলা দিয়ে ছ'চ ফ'ড়ে সেলাই করে দেয়। পয়লা এককাঠি তারপর দ্'কাঠি সেলাই ফেড়াই দিতে হয়। পাড়ার মেয়েরা বারো আনা শ' হিসেবে যেস্ব তৈরি পাথায় তালপাতার কু'চিকু'চি নক্সা দিয়ে ফেরত দিয়ে যায় সেইগ্রেলায় বিচিত্র ছবি আঁকে আতাহার মোল্লার ছেলে বরজাহান। বরজাহানকে দেখতে থ্রই স্ফার। শাজাহান বাদশার যুবককালের ছবি যেন সে। বরজাহান যখন গান করে, **প**ুর্ণথ পড়ে, বাঁশি বাজায় সবাই যেন মোহিত হয়ে শোনে। সে ছবিও আঁকতে পারে চমৎকার এবং বিচিত্রর। কতলোকের দোকানের এমনি-এমনি সাইনবোড লিখে দেয়! তার চোথ দুটো দীঘল, বিকশিত, দীর্ঘ পল্লব আর নীলাভ। নাকটা থাড়া, পাতলা, মস্প তীক্ষ্যাপ্র। চল ঢেউখেলানো, কাসো, সতেজ। গায়ের রঙ পাকা গমের মতন। কণ্ঠস্বর থবে নয়, স্পন্ট, মাজিতি। সে মস্গলে হয়ে একমনে তুলি টেনে নানান ফাল এ'কে যার পাখার। একটার আঁকার সময় অন্যটার কি আঁকবে ভেবে নের। গোলাপ, পদম জবা মাকল ধানশিষ, খেজুর ছড়ি, লতাপাতা, মসজিদ-মীনার, ময়্র কত কি! বাপের ধান জমি, ডাঙা জমি, বাগান-বাগিচা আছে, টাকা-পয়সা বা খোরাকীর অভাব নেই, তাই প্রথমটা অসংস্পে ছোরাফেরা করে ভাল করে আর পড়াশোনা করতে পারকো না বরজাহান। এখন অনুশোচনা হয়। ক্লাশ এইটের ফাইনাল পরীক্ষায় সে ফেল মারলে অংক। গোপনে গোপনে সে নাকি আবার কবিতা লেখে! মা মারা যাবার পর অন্য মা এল সংসারে। তার মেজাজ গেল বিগড়ে। পাথার কারবারটার দেখাশোনার ভার চাপালে বাপ তার ঘাড়ে। কেতথামার বাগবাগিচা দেখা-শোনা করে তার বাপ আতাহার মোলা। नकून मा अरमस्य छात्रहे राज्ञभी। जारक मा

ৰলে না বরজাহান। মেরেটা ভার বুড়ো বাপকে পছল করে না।

ভাগার মেয়ে ফুলজান কাজ করতে করতে থিকাখল করে হাসে-গরিব চাচা মতেহার মোলার মেরে সে। চাচা মামলা ক্রবে করে সর্ব উভিয়ের দিয়ের আন্দ্র দুর্শনায় পড়েছে। সোমত মেয়েটার সাদি প্রবিত দিতে পারছে না। ফ**্রলন্সান সংরেলা কেহেনে** কোরআন শরীফ পড়তে পারে। ক্লাশ সিন্ধ পর্যাত পড়েছে মাদ্রাসা-ম্কুলে। অভাবের সংসার, তাই মায়ের সঞ্চো চাচাদের কাজ করে। বাপ নানান সমাজ-কল্যাণ করে বেড়ার। বিরলা কোম্পানীকে সে মিল অঞ্চলের পাশের সমস্ত ধানজমি তার বেচে দিয়েছে, কোম্পানীর অফিসে গেলে নাকি থাতির করে মূর্থ মান্য হলেও চেয়ার দিত আগে। এখন আবার চাচার রঙ বদলেছে। ইউনিয়নের নেতাদের **সং**শ্য তার দহরমমহরম। জমি বেচে চাচা **নাকি প্রায়** এক লাখ টাকা পেয়েছি**ল কিন্তু খ**রচা হয়েছে নাকি তার লাখেরও উপরে। এখন যুক্তি অটিছে কোম্পানীর বিরুদেধ মামলা লডবে কম টাকায় জমি কিনেছে বলে ! তাকে নিয়ে একটা কবিতার **বই লিংখছে** বরজাহান। ঐ প'ৃথির মতন প্রার ছকে। भारक भारक काला काला प्राचन काला प्राचन বরজাহানের মূথের দিকে তাকিয়ে থাকে. আর বরজাহান তাকালেই সে দীর্ঘশ্বাস ফেলে কাজে মন দেয় তখন বরজাহান তার ম্বরচিত কবিতা আবৃত্তি করে :

ঘোড়ায় চড়িয়া মর্দ হাটিয়া চলিল। জমি নাহি বেচ চাচা সকলে বলিল।। চাচা না শ্নিল তারে আলীপ্রে টানে। জমি বেচে টাকা ঢালে,

দারোগাকে আনে।।
পোনামাছ ধরে দেয়, কিনে দেয় আন্ডা।
তব্ নাহি দারোগার মাথা হয় ঠাব্দা।।
চাচার ভাগর মেয়ে ফ্লেজান নাম।
মোর ম্থ পানে চেয়ে ভূলে য়য় কাম।।
'হোং!' বলে ফ্লেলান তার হাতের
পাথা দিয়ে বরজাহানকে ঝাপটা য়ায়ে।
চাচী হাসে। বলে, 'বেশ তো বাবা, চাচার
জনো যেতি অত দঃখ তবে ফ্লেজানকেই
তুই বে' কর না।'

বরজাহান হাসে। বলে, 'আমার বাপ আমার বিরেতে বিশ হাজার টাকার বেডুক দাবি করে কত মেয়ের বাপকে ভাগালে আর তুমি কি বলছ চাচী? বাপ শুনলে তোমাদের কাজ বন্ধ করে দেবে! ফুলজান দেখতে ভাল, ঝিন্কের মতন চোখ, ভিল ফুলের মত নাক, দুধে-আলতাগোলা রঙ্গ...

> 'গাল দেব দাদা!' 'কৈ গাল, দিবি?' 'জানি না, বাও!'

শন্সলমানের মেরে গাল দিতে শেব দি তুমি এখনো? তাহলেই তুমি পরের ঘর করেছ! শোনো, খালভরা, গোলাম, হারামী, —তই আরশান দাদ্র ভাইপো জামাই অম্ত' পতিকায় 'পারিনী ব্ডার বিচার' লেখাটাতে ম্সলমান মেয়েদের গালাগালির বহর হা দিয়েছেন।'

क्ष चटन, एनई जापूनगावाद हिं? ब्यानियात्र पर्व ?"

W WP ्रिक्ट्राच्या स्टब्स लाटस लाटम नगास्टक **स**्थि - সের ব্যক্তাহান। স্বাই বেতে চলে বার।

क्रांग्राम ग्रंद धका करन करन करि ভাকে। ভাদের রাহা হর্নন আজো। ভার মা वंब्रजाहात्मव काह त्यांक धाकरें। ठीका कात দিরে দোকানে আটা কিনতে পাঠিয়েছে रहाउँछाईद्य ।

े वदक्षादान न्नान करत्र त्यारा धारम पराय क्रमसान धकारे मीनरक वरन वरन नाम নীল সব্জ রঙ দিয়ে ফ্ল পাতা আঁকছে। ্ কাছে এল বরজাহান। বসল তার कार्ड ।

ফুলজান তুলি টানা বৃধ্ব করে তার মুখের দিকে তাকিয়ে হাসলে স্থান একট্। रथएड बारव ना?'

' কি খাকো ?'

ি মুখটা স্থান, শা্কিয়ে গেছে কুল জাটির মভো হরে গেছে ফ্লজানের ঠোঁট দুটো। বললে, 'এস, আমাদের বাড়ি দুটি ভাত থাবে।'

'ATI-1'

^{'क्ल} 'दक्न ?'

ু চাচী নিশে করে। বলে, আমি माकि'...

'कि?'

'ডোমার সংশ্যে আছি!'

ে ভাছা। এসো। থাকাথাকি পরে হবে। আরে, এসো না।' হাত ধরে টানাটানি **করলেও ফুলজান থেতে বায় না।** শেষে হাত ছাড়িয়ে নিয়ে পালায় সে নিজেদের वाषिट्र ।

সন্ধ্যার পর আতাহার মোল্লা এসে বসে **দলিলে। দীর্ঘাকার জালিদার ট্রপী মাথা**য়। **লব্বা মেচাকের মতন ঝোলা** দাড়ি। গারে পরিহান। এসে বসে রোজকার মতন সে কাসাসল আন্বিয়া' প'্থিথানা খ্লে স্র করে পড়তে থাকে। সবাই মন দিয়ে শোনে। এক সময় বিচিত্র ফুল-আঁকা গেলাসে করে গ্রহম দুধ কিম্বা চা দিয়ে যায়, বরজাহানের महमा। वर्त्रकाशानरक अ (त्रा। करनरमञ्ज रमञ 🛥ক খ্রির করে গরম চা।

্রাত দশটা পর্যক্ত কাজ চলার পর **সবাই চলে যায়। গা হাত ধ্**রে থেয়ে নিয়ে এলে বাইরের খরে চুপচাপ বদে থাকে बब्रक्कारान। तम रवन वन्मी! कारना मृथ **সেই, শাশ্তি নেই** তার মনে। পাখার **পাইকের আসছে প্রতিদিন, টাকাগ**্লো নিয়ে নিচ্ছে তার বাবাজী। সংমার সোনার গরনা গড়াচ্ছে। পাকা ধর গাঁথা হচ্ছে ভাদের। ফুলজানের আজ আর সারাদিন रदाध एक भाखता रल ना।

়**চাচার প্লা** শোনা যায়, 'গরিবরা **ৰেভাবে একজো**ট হয়েছে বড়লোকদের অ'ব **ভারা রাখবে না। জ**মিজমা আর এক কাঠাও কেউ রাখতে পারবে না চাষীরা।'

্রচাচী বলে, এখন 'লেকচার' থামাও হ্রক্রের ! জাম তোমার নেই, অতো ভাবনা কিলাৰ ?'

WINTER BYISTY वन्धावादनक दक्कि बायांत नात मदन वर्ग एक देशम कीनदृष्ट अद्भा गढकाशात्मव स्थान-লোড়ার ! শুখু কোস-কোস করে নাকের man 1

लाव भ्रात्म बन्नाराम । खाम्हर् !

'क् ना जुमि? अधन?'

'দাদা! - আমি আর থিদে সইতে পার্রাছ না!' কে'দে ব্বে বেন চলে পড়ল ফুলজান বরজাহানের।

বরজাহানেরও চোখে জল এসে গোল। মাথার তার হাত ব্লোতে লাগল। মুখটা ধরে চুমু খেলে। ফ্লজানের নোনা চোথের জলের ফে'টা মুখে এল তার।

गाष्ट्रपात वलाल. 'अस्ता। **यामात चरत** মুড়ি, কলা আছে খাও।'

ঘরের মধ্যে গেল ফ্লজান।

টর্চ জেবলে মাড়িবার করে দিলে তাকে বরজাহান। কলা দিলে এক ছড়া। দ্যভিক্ষের ক্ষুধার সে বেন গোগ্রাসে গিলতে मागम ।

বললে, ভাইটার জন্যে কিছ, নিয়ে যাব।'

'সে নিয়ে যেও। তুমি এখন পেট ভরে খাও।'

'দ্ব দিন আমি কিছব খাই নি।' বলে ममञ्ज रामता क्याना।

'দ্পেরে খেতে গেলে না কেন?' কি করে যাই, মা ভাই শ্কিয়ে

থাকবে!'

'তারা তো আটা কিনে এনে রুটি করে খেয়েছিল?'

'মা, ভাইকে দুখানা রুটি দিয়ে গা শ্তে যেতেই বুড়ো বাপ সব রুটি ক'খানা চুরি করে নিয়ে পালিয়ে গেছিল যে!'

'চাচীও তাহলে সারাদিন না থেয়েই আছে?'

'হাঁ।'

'তবে মুড়ি নিয়ে যাও। কিম্তৃ **কাল** मां प्रिंग प्राप्त विश्व क्या विश्व मान क्या ছচ্ছে গোপনে—'নেকি' হচ্ছে!'

'তবে থাক, চলে যাই।'

আরে খাও।'

'না. কেউ দেখতে **পাবে।**'

'আচ্ছা ফুল, তোমাকে যদি আমি विदन कति?

क्रमञ्जान किছ्दे वमार् भारत ना। শ্ব্ব তার অপর্প র্পকুমার চাচাতো मामात वृत्क भूथ घरव!

তারপর এক সময় মায়ের আর ভাইরের জন্যে মন্ডি নিয়ে পালিয়ে বার সে—নিজেকে এক রকম জোর করেই ছাড়িয়ে নিয়ে। তারপর আর বরজাহান ঘুমোর না। আড়বাঁশি বাজায় ফাল্যানের মিঠেল হাওয়া-ভাসা মাঠের মাঝখানে বসে। ফ্লজান তার বাঁশি শনে আর ঘরে থাকতে পারে না। মা **খ্**মোলেই আবার সে পালিরে আসে বরজাহানের কাছে !...

কিন্তু বাস্তবের স্বর**্প আলাখা।**

Topic क्षांकार व्याप्तमेश गटक सामग्राका कार्यका কলে বতেইৰে জোলা চটকটোই কাৰ্যকাৰি বুলাচ-ব্ৰেল সম্বিদ্যের ইম্মিটি করা এক ছ বড়িয়া মৌৰাকীন কাছ বেছিক মানু লক शासन होका मिरत अस्त क्याणारवर महा-वालगरेत स्वरत स्वतान की ६ ठड करत। म् छकारक टर्नात ना करह हैमाहाकी मान भौठित होका नित्र मानिक भीवा करमधा भाके कविदय मिटल हाला है

म्बाकान क्टेंब-क्टी माध्य कूछ भागार्थ হয়ে গেলেও তাকৈ ধরে-বে ক্লিফ্লে-চড়ানো णां ७-एवता विकनात गर्था गर्या मार्थ्य 'থসমালরে' পাঠিরে দেওরা হল!

भारतात गत्-छता हिम्मून्थानी स्थाष्ट्री বাসাবাড়ির মধ্যে বড়ো ডেউকি-ভরা ওড়িয়া মৌলভীর ঘর করে দিন তিনেক পরে আবার ফিরেও এল ফুলজান!

বরজাহান চুপটাপ! কেবলই মনে হরেছে তার চাচাকে গলা টিপে মেরে ফেলে দেবে একদিন। অথবা বাপের বন্দক্রটা নিয়ে গুলি করে সাবাড় করে দেবে! কিন্তু ফ্লেজান ৰখন হঠাৎ ঘাটে দেখা হতেই তার মুখের দিকে চেয়ে ভুকরে কে'দে উঠল, 'দাদা, একি হল! আমি মরে যাবো! আমি🖁 গলায় দড়ি দোব!' — তথন সমস্ত জগৰ যেন অন্ধকার হয়ে গেল বরজাহানের: ट्राट्थ।...

তালপাতার পাথায় ফুল আকুতে-আঁকতে কেবলই সে ভাবতে লাগল, কেন এমন হয়! এই প্রমিল! জীবনটা ভর• দঃখ পেতে হবে ফালজানকে! চাচাকে একশো টাকা দিলে সে কি আর ওড়িয়া মৌলভী জামাইকে তা ফেরং দিয়ে ফুলজানকে আর ফিবিয়ে আনতে পারবে? যে সাদি একবার পড়ানো হয়ে গেছে, তাকে আর নস্যাৎ করার সাধ্য আছে কার?

্ কিন্ত সম্তাহখানেক পরে আবার ফ্লজানকে নিয়ে গেল তার পাকা মাথা ব্যুড়ো সোয়ামী। আর ক্রে দিন পরেই সে তার মিলের 'স^{্ত}্স' (প্রভিডেণ্ড ফাল্ড) তলে নিয়ে ফুলজানকে নিয়ে চলে গেল কোন সন্দূর বালেশ্বরে!..পাথি উড়ে চলে গেল!...

বাপ একটা কুংসিত কালো মেয়ে **যোগাড় করে অনেক টাকার লোভে** বিয়ে দিতে চাইলে বরজাহানের। বরজাহান বে^{*}কে বসল। বাপ তেরিয়া হে'কে বললে, 'ত্যাজা-পত্র করে বাড়ি থেকে তেড়ে দোব আমার কথা না শুনলে। যে ছেলে তার বাপমারের কথা শোনে না তার মরণ ভাল।'

বরজাহানের ঝিনুকের মতন স্কর দটো চোথ থেকে জন পড়তে লাগল টপ-টপ করে তার আঁকা তালপাতার পাথার ছবির ওপরে! ফালের ছবিটা ছি*টা*ক বিকৃত হয়ে একটা বাড়া মুসলমান-চাচা অথবা বাবা কিম্বা সেই ওড়িয়া মৌলভীর ম,থের মতন হয়ে গেল। হাত দিয়ে ছি'ড়ে দ্মড়ে বরজাহান দরে করে পাখাটা ছ'ড়েড় ফেলে দিলে আরশাদ মোডলের মাথের ওপরে ১,

⁴--जावन्द्रण कववात

त्रवीन्प्रनाथ : विভবের উভরে

রাজা —ওছে ইন্ফাবনের গোলাম।
গোলাম—কী রাজা সাহেব?
রাজা —তুমি ভ সন্পাদক।
গোলাম—আমি ভাসন্থীপ প্রদীপের স্থান দক আমি ভাসন্থীপ কৃতির রক্ষর।

রাজা কৃশ্টি। এটা কি জিনিষ? মিল্টি শোনাক্ষে না তো?

গোজাম না, মহাবান্ধ, ও মিন্টিও নর,
সপন্টও নয়, কিন্তু বাকে বলে
ন্তন নরতম অবদান এই কুন্টি
আন্ত বিপন্ন

मकरन --कृष्णि, कृष्णि, कृष्णि

রবীন্দাথের তাদের চিত্রেভন, হরতন, ইস্কাবনের সংগ্য সূর মিলিয়ে আমরাও কি বলবো রবীন্দ্রকৃষ্টি বিপ্রস্ন? তাঁর প্রতি অনীহা আমাদের বেড়ে চলেছে।

ওরে ও লক্ষাণ, এ কী অ**লক্ষ**ণ, বিপদ ঘটেছে বিলক্ষণ !

একদিন কবি গেরেছিলেন যথন পড়বে না মোর পারের চিক্ত এই বাটে বাইবো না মোর খেরাতরী এই ঘাটে চুকিয়ে দেবো বেচাকেনা.

মিটিরে দেব কেনাদেনর '
বন্ধ হবে আনাগোনা এই খাটে

ৰুধ হবে আনাগোনা এ**ই ঘাটে** তথন আমায় নাই বা মনে **রাখলে**

তারার পাদে চেরে **চেরে** নাই ক আমার ভাকলে

একথা আমরা মানিনি, न्द्रीनीन । কবিকে নিয়ে জল্পনা-কল্পনার, বিশ্বয়ের সীমা নেই আলাপ-আলোচনার কাশ্ডি নেই। প্রায় নব্দই বছর ধরে কবিকৃতির সমালোচনা চলছে নির্বাধ। বঞ্জিম, অক্ষয় সরকার, চন্দুনাথ বস**্, হরপ্রসাদ শাস্ত**ী প্রভৃতিতে যার শুরু, কাব্যবিশারদ, সুরেশ সমাজপতি, শ্বিজেদলাল, মোহিত মজ্ম-দার, অঞ্জিত চক্রবত্তী প্রভৃতিতে বার বিকাশ, আজও স্বদেশীবিদেশী বহ মনীধীর লেখায়, আলোচনায় বিশেষণে সেই ধারা সচল। তাই আ**লও তার সম্বন্ধে** বিতক' উঠবে এটা শু**ধ, স্বাভাবিক নর**, সংঠু। বিতকটি । তুলেছেন । গ্রীলোকনাথ ভট্টাচার্য 'অমুতে' (দশম বর্ষ িব্রভীর भृश्या)--वावाद द्रवीन्यूनाथ ? **भकरनद** मा হয় অনেকের রবীন্দুনাথের প্রতি অনীহা বৈডে চলেছে। এ অনুমান হরতো সতা, হয়তো সভা নয় কিন্তু কোন তথা বা তত্ত্বের উপর এর মূল ভিত্তি তা **লেখক জানা**ন নি। এই ভালে, জাজমেন্ট-এর পেছনে অব-জেকটিভ ড্যাটাগলে কি তার কোন উলেখ তিনি করেন নি। খরে নেওয়া বেতে পারে এটা তার সাবজেকটিভ আনেসমেণ্ট. পারিপাশ্বিক আবহাওয়া থেকে অনুমান, কতক্যালৈ মহলের বাড্যাবিক্ষার্থ পরি-মশ্ডলের বায়, চাপের হিসাব। মূল প্রশন-पित्क धकरे, शङीब्रह्मात् एक्पल, कठकार्यान

म्र(भिक्षको क्षाम ध्वरम भएक। स्वयम (२) রবীন্দরচনাবলীর বিজয় কি কমে যাজে? বিশ্বভারতীর তহবিল ইতিহাসলক্ষ্মীর কি সাক্ষ্য? (২) মাসিকে সাণ্ডাহিকে দৈনিকে, সভাষ-সমিতিতে, আসরেবাসরে তীর সম্বন্ধে অনীহার প্রকাশ কি কঠোর ও কট, সমালোচনায়, না নীরবভার, না रेष्णाकुछ अवस्टलाय, ना छत्। एएव छेमा-দীনো, (৩) তার নাচগান গলপ কবিতা, ভাবভাষা ভগাী আগিকের প্রতি উত্তর-প্রুষরা বা হাংরি ও আংরি ইরংমেন ও ওমেনরা উদাসীন ও নির্ংসাহ হয়ে পড়ে-ছেন? আজি হতে শতবর্ষ পরে কোন কবির গান গাওয়া হবে? কালের নিরমে, আহিক গতিতে বছরের পর বছর যার, এক-একটি পণিচলে বৈশাৰ আসে, জেনারেশন গ্যাপ বাড়ে নতুন ধ্যানধারণা দূল্টিভগ্ণী আদশ কর্মকৌশল মানব্যনকে স্মাক্ত্র করে, নতুন করে প্রো**তনের ম্ল্যা**রন হয়। এতে আশ্চর্য হ্বার কিছু নেই। কিল্ডু সতাি-কারের কবি বা সাহিত্যিক দুন্টিপথের বাইরে মিলিয়ে যান না। তাঁরা বর্তমান

म्बारम्द्रमाद्य बरम्हाभाशाग्र

কালকে পেরিয়ে কালাভীত না বলি কালা-তিরিক যুগে পে'ছে যান। যেমন গেছেন সেকালের ব্যাস-বাল্মীকি হোমার ভাজিল, েলাটো এরিস্টটল, কালিদাস চন্ডীদাস থেকে আজকের বৃত্তিকম গায়টে বা মধ্য-যগের ডাপ্টে শেকসপীয়র। অর্থাৎ তারা হয়ে গ্রেছেন ক্যাসিকাল-বর্তমান কালের সংগ্ৰহ্মাধ্যভাবে সম্প্রভানা হলেও রস জোগান, প্রেরণা দেন। সে হিসাবে তারা চিরকালের ও সমকালীন। জানি ইটারন্যাল, ইউনিভাসাল ভেরিটিস এসব কথাগুলি আপেক্ষিক বা রিলেটিভ, তব, আমার ঠাকুদার যুগে দাশ, রায়ের পাঁচালীর সম-সাময়িক যা মূলা ছিল তা কমে গেলেও সাহিত্যের ইতিহাসে সেটা একটি স্মারক-লিপি। কার্র জীবন স্বল্পস্থায়ী, কার্র দীর্ঘ, তা নিয়ে যেমন দীর্ঘনিঃশ্বাস ফেল-বার প্রয়েজন আছে কিনা জানি না তেমনি নির্মম হবারও কোন আয়োজনের দরকার নেই। (৪) পর্ণিচশে বৈশাথের জন্মজরন্তী উৎসবের উন্মাদনা, জলুৰ জমক বাহ্যাস্ফোট হয়তো কমে যাচ্ছে, হয়তো কোথাও সাম-য়িক উত্তেজনার বংশ কবির প্রতিকৃতি ধ্লোয় গড়াগড়ি দিছে। কিন্তু কবি তো শ্ধু ছবি নন শ্ধু পটে লিখা নন, যে তাতেই আমরা ধরে নেবো বে তার প্রতি আসাদের অনীহা বিবধমান। একথা ঠিক ষে, কবিকে ব্ৰেখি না, চিনি না, পাড না। সে আগ্রহ নেই, সংগ্রহ নেই, চিম্তার উদার আতিথ্য নেই, বিচারের নিদিশ্টি মানদশ্ড ेखहै। मुद्द दकामब दब'ट्स टकटन साहे छीना कुनारक, करण्यारमध्यत सङ्का, पिएक। मा इस বিজ্ঞানোচিত ভাবভগানৈত বলি কাফ-কার মত সমতুলা তিনি নন, রাজিবার রিক্ষের মত অতলম্পশী শভারতা তার নেই। শেষজীবনে তিনি বার্থ লিওনাড়ে। বা প্ৰেকিনের মত। তার লেখা**স**় ভৌণী-বজিত সমাজগঠনের ইণ্গিত নেই, নীচ-তলার লোকদের স্বীকৃতি নেই, আছে লুধ্ একটা রোমাণ্টিক অ্যাওয়ারনেস-স্পাক-সেপটেন্স বা আইডেণ্টিফকেশন নয়, শুংর একটা সরল বিশ্বাসের ছবি। তখন তাঁকে আজকের সংগ্য মিলিয়ে নেব কি করে? —এবার ফিরাও মোরে বললেও তাঁকে ফেরানো যাবে না। তার জীবনদেবতা তথন ছলনাময়ী, কাবো তার প্রকাশ সারলো সংযমে-গাম্ভীয়ে অনবদ্য 😮 অনস্বীকার মহিমার মণ্ডিত' হলেও। এই ধরনের সমা-লোচনা একট্ স্ববিরোধী নয় কি? কাব্য কি শ্বং ধর্নির আলোক, রসাত্মক বাকোর সমষ্টি, না মিল্টন যাকে বলেন সিম্পল, **म्याप्याम शामारा**हे, तमान्यामन कर्ववात छ করানোর ও পরমার্থ বস্তু প্রকাশন সম্র্থ রীতি, না আমেরিকান কবি এড়ইন মার্ক-হ্যাম যা বলেন-

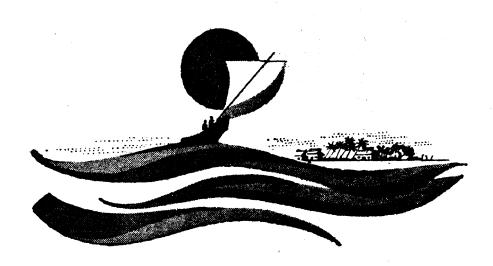
"Something more than vital is to be released, something organically rhythmical that has not need of embelleshment or conventional device to make its poetic nature explicit."

এ কথাও বলি যে তার হিউময়নি সম জীবনরসে জারিত বোধ নয়। তামস-প্রবেগের খর ধারা নেই এখানে, ওয়ালপার-জিসস নাইট নেই। তার মানবকেন্দ্রিক **ভিন্তা** ম্মান এয়ান্ড ইটসেলফ' নয়। একটা ভাষা-ভাসা ডিভাইনিট অফ হিউমার্ননিট, হিউম্যানিটি অফ ডিভাইনিটির থেরাতরীতে ব্যওয়া, উপনিষ্দের চিন্ডায়, মর্মীদের বার্তায় পুন্ট জীবনবাদ যেখানে সমাজ-চেতনা বা বাভিচেতনার ভাল: বা নার্ম সম্বন্ধে কোন স্পণ্ট ধারণা নেই। কার্যু-কুছে-লিকায় সব ঘুলিয়ে গেছে, জীবনের গণ-চেতনা ভাষা ও ভাষোর মধ্যে ভূবে গেছে। (৫) এই প্রসংগ্রেই আর একটি প্রন্ন ওঠে যে কোন্ রবীন্দ্রনাথের প্রতি আমাদের অনীহা বেড়ে চলেছে। খ্যাত **অখ্যাত বাথ** চরিতার্থতার জটিল সংমিশ্রণে নানা রবীন্দ্রনাথের একখানি মালা' গে'থে তুলেছি। সেখানে বসে আছেন শুধু পোয়েট, প্রেট্রিয়ট প্রফেট নন, নাট্যকার, সর-কার পথচারী, আলাপচানী, শিক্ষান্ততী, সমাজসংস্কারক ওয়াইজমাান আফু দি ইস্ট্র ভাষার ইন্দ্রজালে যিনি বকুব্যের প্রাসাদ গড়ে তুলেছেন, যিনি বলেছেন

ছরের মধ্যলশব্দ নহে তোর তরে নহেরে সম্ব্যার দীপালোক নহে প্রেয়সীর অভ্যান্তার্থ বিদ্রেশ নবীন বীর
প্রথারের শাসন নাশন
বারে বারে দেখা দিবে
আমি রচি তারি সিংহাসন
তারি সম্ভাষণ
বিদ্রান একরাতোর উপাসক, অভ্যঞ্জার
মারখানে রয়ে উশানকে ভাকেন না নটরাজকে। সেই কবি, না যিনি পেলবতার
কোমলতার আবাহন আনেন চাপ্তলার
দোলে, রজিম হিলোলে, কমিনীতে

রমণীতে ধরণীর ধর্মণীতে বসন্দের মধ্রের কণ্পনায়। ইনিই কি শিলাইদ্দে নিবাসী পন্মাবাসী জমিদারস্থান ফিউডাল বারেন? আবার ডিনিই কি ভূবনভারের ত্রনজয়ী বংশীধারী বার সন্বন্ধে উন্থানিত হরে উঠেছিলেন, রোদেনস্টাইন, এম্প্রন্থ, ইরেটস, স্টার্জ ম্বর, মে সিনক্ষেয়ার, স্টগাংঘার্ড রক্, নেভিলসন, এজরা, পাউণ্ড, ভ্যানম্ভী প্রভৃতি। গাঁডাজলি' এককালে তুম্বা আন্দোলান স্ভি করেছিল। একনসন

বিশ্বছেল বে, ১৯৯০ সালের ভিলেন্দর
মানের ব্ব মালবিতে দেখা গোলো
বে রবীদুনাথের গীতাগালিই একমাছি
কবিতাগ্রুছ বা ছিল ১৯৯০ সালে ওরান
ভাক দি বেস্ট ব্রুক যদিও নোবেল প্রাইছ
ভাকে দেওরা হ্র নভেন্ব মাসের শেবে।
তারপর শাধ্য গীতাগালি নর, দি গাডেনিনর,
দি কেনেন্ট ম্না, দি পোল্ট অফিস, চিচা,
দি কিং অফ দি ভাক চেন্বার, সাধনা,
গার্সোন্যালিটি, সাইছং অফ শিপ্তং প্রভৃতি

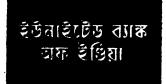


পুराषीयृषङ्गावादिती तनी

বিশ্চার ক'রে মাছিকে
সঞ্জীবিত ক'রে তেকে—
দু'ক্ল তরে ৩ঠে
শস্সশভারে। নদী বরে
আনে মানুবের থবে থবে বুৰ
ও সমুন্থির সম্ভাবর।
ইউবিআই-ও তার প্রমা
১৫০টি শাখার মাজকে
শন্দিম বাংলার আছিকি
সম্ম্পিতে সাহার।
ক'রে চলেকে। নদীর রাজই
ইউবিআই তার সেবার
হস্ত প্রসারিক ক্ষরতে

वारकात घटन घटन ।

নদী ভার নানা শাগ্র-প্রশাপ্র





হেড অফিন : ২, নরেক্স চক্র দন্ত সরণি, কলিকাড়া-১

-

নানা বই শুধু ইংরাজীতে নয়, CEP99. জার্মান, স্ইডিশ, ডাচ, রাশিয়ান, ইতা-नियान, হিব্ৰ, হাণগারিয়ান, চেক. ব্লোশ্লাভ প্রভৃতি কতো ভাষায় অন্দিত হর। ফরাসী আঁদ্রে জিদের মুক্তব্যুসহ অফরান্দ্রে লিরিক, কেপটাউনে এ-ড্রাঞ্জের রবীন্দ্র-দর্শনের ব্যাখ্যা, জার্মান ভাষায় উইনটার্রনিজের ও আলবার্ট সোয়াইত-পারের ববীশ্তকথা, ডাচ ভাষায় নোটো সেকোটোর বায়োগ্রাফিক্যাল শিটস আমে-রিকান ব্রন্থোটন অফ বিবলিয়োগ্রাফি বা কাউন্ট হাব্যান কেই সার্লিং-এর ট্রাডেল ডায়রি অফ এ ফিল্সফার ছিলেটিভ আন্ডারস্ট্যান্ডিং বা ইতালীয়ান লা পোয়েজি ডি রবীন্দ্রনাথ টেগোর শেশভারের চেঞিং ইস্ট প্রুস্তকে রবীন্দ্র-চিম্তা সম্বশ্ধে আলোচনা রবীন্দ্রনা**থকে** সমধিক আলোকমণিডত করেছিল। আবার সেই যগেই এক দেশে তার পাস্তকগালি নিষিম্পত হয়েছিল আণ্টি-সোস্যাল শেকসপিয়রের সংখ্য। সেইজন্য वरक -2 (bg. আমরাই কি তাকৈ আসনে তলেছি 4 দেবতা, এবং তাঁকে ঘিরে নিভেজাল স্তোকবাকা ও বৈচিত্র ট্যাবার বাসিফালের মালা দিয়ে সালিয়েছি? জানি ইয়েটস, এজরা পাউ-ড রোলা প্রভৃতি যারা তাকে আকাশে তুলে-ছিলেন বিশ্বের একটা প্রচন্ডতম লেখক ও প্রচন্ডতম মান্ত্র বলে, তারাই তো তাকে নামিয়ে দিয়ে গেছেন 'গতগোরব হ'ত মহিমা' করে। আর আমরা সেই পরেনা **স্তবস্তৃতির কচকচানি চালিয়ে যাচ্ছি। হ্যাঁ,** রবীন্দ্রনাথকে ডিবাৎকড করবার চেণ্টা হয়ে-ছিল, আজও হচ্ছে। কিণ্ডু তার শেখার মধ্যে, ব্যক্তিছের মধ্যে, প্রেরণার মধ্যে যে সতা আছে তার মূলা দিতেই হবে। স্বীকার **করি** যে, রবীন্দ্রনাথকে নিয়ে যতটা **হৈ**-হ্ৰোড় জয়•তী বাধিকী আলাপ-আলো-**চনা** হয়েছে, প্রশস্তির ঝড় বয়েছে 'গ্রহণ' হয়নি। এই ধরনের বাহা উচ্ছনাসের উপর প্রাকৃতিক নিয়মেই প্রতিক্রিয়া হতে বাধ্য, যদি না অনজেকটিভ বিচার বিশেল-ষণের মাধামে সেই স্থিশীল মননশীল সন্তার হার্ড কোরটি খ'্জে তাকে যুগো-পযোগী করে নিতে না পারি। সে দোষ আমাদের, রবীন্দ্রনাথের নয়। তাঁর বুচি, তার ধ্যান, তার অন,ভৃতি, তার সৌন্দর্য-চেতনা, স্বাজাতাবোধ, বিশ্বপ্রেম, মানবিকতার মূল্যবোধ, তাঁর **অন্যায়ের** বিরুদেধ প্রতিবাদ, তার দৃংতভংগী, তার অনমীয় ব্যক্তিছের কাছে কতট্বক পাঠ নিয়ে জাতীয় মানসকে প্রজ্ঞাবান করতে পেরেছি আমরা? একথা সাঁতা যে, তাঁর জীবনবোধ বিচিত্রপথে গেলেও সর্বত্রগামী হয় নি। **কিন্তু** তাঁর মনে ঐকতান বেজেচে

শিজে যা পারিনি দিডে নিত্য আমি থাকি তার খোঁজে সেটা সতা হোক

বিশ্লা প্থিবীর কডট্বুর জানি, একথা ভারই। শতশত সামাজ্যের ভণনস্ত্প পরে বারা কাজ করে, বারা বীল বোনে, পাকা थान कार्टे, हान धरत थारक जारमत বিস্তৃতভাবে বলেন নি কবি একথা ঠিক। কিন্তু মহাকাল সিংহাসনসমাসীন বিচার-কের কাছে প্রার্থনা জানিয়েছেন-শকি দাও, শক্তি দাও মোরে, কপ্টে মোর আনো বল্ল-বাণী। বহুতরের সূর সেখানে মিপেছে। জীবনের নানা উত্থানপতনের সংগ্যে মুখো-ম্থী হওয়াই জবিনের ধর্ম। সেখানে অপ-রাধবোধ (দি কোশ্চেন অফ গিল্ট), বা মান-সিক যল্ঞা, সংশয় সন্দেহ (যার কথা বলে-ছেন সোরেন, কিথেকে'গার্ড' মার্টিন হ,ইতগোর, জ্যাপল সার্ত্রে, বা আলবেয়ারে কাম্) সেইগ্রলিই সব নয়। রবীন্দ্রনাথের মনেও দ্বন্দর এসেছে, কিন্তু শা্ধ্ ভয়ের আঘাতে বিচিত্ত চলচ্চিত্ত ছবি হয়ে নয়, আঘাতে বেদনায় জজ্ঞাসা হিসাবে।

The solitary enjoyment of the Infinite in meditation no longer satisfied me and the texts which I used for my silent worship lost their inspiration without my knowing it. I am sure I vaguely felt that my need was spiritual self realization in the life of man through some disinterested service (Religion of Man-Hibbert Lectures)

রবীন্দ্র-জীবনে ও সাহিত্যে বারে বারে ঝতু পরিবর্তন ঘটেছে, শেষ লেখার (আমি শেষের যুগের লেখার কথা বলছি) তার প্রকৃষ্ট প্রমাণ। তোমার স্থান্টর পথা কবিতাটি শুধু বিশ্বাসের অংগীকার বা অস্বদিত্রবাধের অস্তিবাদ না এই কবিতাটিই তার জীবনবোধের লাস্ট টেস্টামেন্ট? নানা মন্তব্য সংগত। একট্ব আগিয়ে গিয়ে শেষ সম্ভবের এই কবিতাটা পড়ন

কলপাশ্ত যখন তার সকল প্রদীপ নিবেয়ে
স্যান্টির রঙ্গমণ্ড দেবে অধ্বর্ধার করে
তখনো সে থাকবে প্রলায়ের নেপথ্যে
কঞ্পাশেতর প্রতীক্ষায়।

মৃত্যুর পূর্বে তাঁর একটি সত্য (হ্যুত্রে মৃত্যুভীতির জন্য, বাস্ত থেকে অব্যক্ত চলে বাবার এই যে উত্তেজনা মান্ধকৈ পীড়িত করে বারে বারে, বার জন্য সে চায় অন্তরে সান্ধনা), নানা অভিজ্ঞতার মধ্যে প্রতিভাত হয়েছিল, ধর্ননিত হয়েছে যে প্রাণ অবিনন্ধর আজু যা বায় কাল তা ন্তন করে আবিভূতি হয়—নাথিং এন্ডস, অল বাট বিগান। কিন্তু এই যে বিবর্তন এতা সম্পূর্ণ নয়—

প্রকাণ্ড স্বংসর পিশ্ড বিকলাংগ অসম্পূর্ণ অপেক্ষা করিছে অধ্বকারে

(রোগশ্যায়) রক্তলোল্পে হিংস্র নিযোষ অপেক্ষা করে আছে নৃতন জীধনের প্রত্যাশায়। দুর জন-মের আদি পরিচয় তিনি পেয়েছেন।

বৈরাগারত সম্যাসীর মতো স্কুরে ও অস্কুরে ভেদ নাহি করে শুধ্ জ্ঞানজিয়া বলজিয়া তার

এই ধারা বেরেই তিনি স্থির আথ-তাতীকে আহনন করেছেন ছলনাম্মী র্পে, যে নানা ছলনার স্থির পথ আকীর্ণ করে রেশেছে। কিন্তু ছলনাম্মী (একে কি প্রকৃতি বলবা) যুগ যুগান্তরের আবর্তনের প্রাণ- ধারার মধ্যেই উৎসারিত, সব স্থিতীর অর্পত-রালে তার প্রাণের শুপদ্দন আছে। সারা পূথিবীবাাপী সভ্যতার সংকর্ষের দিনে অবিচার অত্যাচার অনাচারে ক্ষুম্ম কবি শাশ্তির যে অক্ষর অধিকারের কথা বলে-ছেন সেইটেই তো তাঁর সমুস্ত জীবনের অভিজ্ঞতার প্ররুপ, যে মান্ধের উপর তিনি বিশ্বাস হারান নি—

মান্ত তপাবী বেশে চিতাভক্ষ শ্যাতলে এসে প্থান লভে নিরাসক্ত মনে ধ্যানের আসনে এটা শ্ব্য আত্মকেণ্ডিক স্তাকবাকা নয়। নানবপ্রেমিক রবীশ্বনাথ আত্মকেশ্বিক এর অর্থ কি? কন্ট্রাডিকশন আসে কোথা থেকে। শাশ্তির অক্ষয় অধিকার আর শাশ্তির লালিত বাণী শোনাইবে বার্থ পরিহাস কি একই কনটেকস্ট-এ লেখা—একটিতে অন্তরের শান্তির মথা উন্দিন্ট হয়েছে আর একটিতে বহিরপের শাণ্ডি। রবীন্দ্রনাথের পর্যায়ের কবিতাগালিকে বিচ্ছিন করে পড়া যায় না। একথা ঠিক তিনি রোমান্টিক কবি। তব্ এই যুগের কবিতাগুলির বৈশিশ্টা তিনি যুগবাস্তবের নৈকটো আগিসয়াছেন, তৃহতা ও কুশ্রীতার মধ্যে অর্থ পেরেছেন, নামহীন খ্যাতিহীন জনগণের শরিক না হলেও তাদের কথা ভেবেছেন। কিল্ড তিনি সংগ্য সংখ্যে এক প্রাণরহ্সাকে— হয়তো সেটা intutive মানুষের চিন্তা-

not so much the ideal of socialjustice but to rediscover the essence of his nature.

সমালোচক বলছেন, তখন দেশ ছিল বৈদেশিক শাসনাধীন, দেশে হাঁ, না ভালো-মন্দর মূল্যবোধ ছিল অতি চিহ্নত। তথন ঐকান্তিক মানবপ্রেম ও উপনিষদস্কভ বা রান্স-সমাজোচিত অধ্যাত্মভাব হাত ধরাধরি করে চলতে পারতো। আজ পারে না। **এম**ন কি মানবপ্রেমের প্রকৃতিটাই গেছে বদলে। কারণ যে রেনেসাস-এর পরিপক্ত ফল রবীন্দ্রনাথ তার পরিচয় তথাক খত মধ্যবিত্ত বাব্সংস্কৃতির অভ্যুত্থান, সেখা**নে আ**খ অবক্ষয়ের করালগ্রাস। মধ্যবিত্ত মহোমান। সেখানে রবীন্দ্রনাথের বিরাট ব্যক্তির, তার বিবৃত সমস্যা ও সমাধান আজকের যংগের মান্ত্রকে তৃশ্তি দিতে পারে না. শাশ্তির অধিকার দিতে পারবে না, তাকে প্রবান্তত হতেই হবে। সেইজনা এই যগের সপে ও আগামী 'য্গের সংকা রবীন্দ্রনাথের আত্মী-য়তা আরো ছিল **হবে।' কথাগ়লি নিছক** উড়িয়ে দেবার মত নয়। কি**ল্ড কোন** রবীন্দ্রনাথকে আমরা বিচার করতে বসেছি? কোন নিরিখে কোন মানদক্তে? তার সব চেয়ে বড় পরিচয় তিনি কবি, ডায়েলেকটিসের উপাতা বা সোসিওল**জির কাখাতা নন।** তার সবচেয়ে বড় কামনা, থে কবির অন্তর াদয়ে তিনি সমস্ত **জীবের সংগা প্রকৃতির** সঙ্গে একটা সেন্স অফ আইডেনটিফিকেশন পাবেন, যেটা ক্লাস স্ট্রাগলের উধের্ব

মোর নাম এই বলে খ্যাত হোক ঐ
ত্যামি তোমাদেরই লোক
আর কিছু নয়
এই মোর শেষ পরিচয়

ত্যা এই মোর শেষ পরিচয়

এই ধরনের সমীকরণ, চিন্চাধারাই বোধহর ভারতবর্ধের সমালচেতনার শ্রেন্ঠ অভিবাত্তি। পথের প্রান্তে আমার তথি নয়

পথের দু'ধারে যে আমার দেবালয় সেইখানেই নত হতে চেয়েছিল তাঁর মন-শক্তি धक्रो तृहत्वत, महत्वत कात्रह,-त्य স্বর্গের হাইকোটে বসা কোন পরম মাহে-শবর প্রচন্ড পরাক্রমশালী দেবরাজ নন। রাত্ম গণ গোটেবি উধের এক শক্তি। সে শাৰ অভ্যের, তাকে বলা হোত ধর্ম, যা ধরে রাখে-ওয়ে অফ লাইফ। জানি, এখনি বলা ছবে বে, এই ধরনের রোমাণ্টিকধর্মণী কন্যিউশন অফ চিন্তাপ্রণালী হাচ্ছে ভাল্জ আতে হাডওলজিস বা প্রতিক্যা-শীল। কারণ আজ সমাভ সংস্থা নয়, চেতনা আনম্পিত নয়, দেহ ও মন বিকৃতভণ্যুর ও উপবাসী। হয়তো প্রতিটি ধ্লিকণায় শতব্ধ হয়ে আছে বাখিতের দীর্ঘশ্বাস। কবির সাইজ্যোগাফিক মনে ভার ছাপ পড়তে বাধা। রবীশ্রনাথে যে চেতনা রোমাণ্টিক ভগব-<u>দ্ব্যাণিততে লাকিয়েছিল তার প্রথম আধার</u> প্রকৃতি, তারপর এলে প্রেম্ব (এর্থাৎ মিনি প্রকৃতির অধীশ্বর) তারপর নেমে এলো মান্যে-মান্যে-মান্যে মিলিয়ে মহা-দেবতায়—দি হাইল কেমন ফাল সাকেল--এটা শহুহ সেণ্টিমেন্টাল লাজ্যার নয়, কেলট্টেক মিসটিসজম বা মেটারলিংক ি,-বালজয় নয়। রবীণ্ট্রকারের মাণে আশ্মানী শাড়ীর সংগে কটালের ভৃতি, পঢ়া আমানি মাহের আঁশ, মরা বিড়ালের দেহ আছে, দেখার মধ্যে পরীক্ষা-নিংগীক্ষা আছে, বিশ্তু তার আদি ধান-মাতিকৈ তিনি পরিত্যাগ করেন নি। এই যুগ তার অন্ভৃতির দুই কোটি—একদিকে কালিৰ স্থানত ও অন্তান্ত প্ৰবাহৰ ন্মধ্য ঈশ্বরনিরপেক্ষ অন্যভৃতি আর একদিকে বৈদাণ্ডিক স্থের উপর প্রতিষ্ঠিত সেখেম অন্ভতি। ব্যক্তিগত বিশ্বভ্রনেশ্বরের স্থান त्महे तनामहे छल। यदा छात कमछेन्छे, স্ক্যারেকটার, কনটেকসট এবং কলাট ব বদলেছে। শাুধাু জাবিই শিব নন, শিবের সেবাই প্রজা। একদিকে প্রীড়নের যদ্যদালে চেতনার উদ্দীশ্ত প্রাম্পণে বিশেবর ভৈরবী-5কৈ অণ্য-পরমাণ্য প্রচণ্ড মন্ততা, আব একদিকে মানবের দার্জায় চেত্রা দেহ-দুঃখ হোমানলে প্রচণ্ড আহাতি, অপরাজিত বীহ' নিভী'ক সহিষ্যাতা--দ্ই মিলিয়েই রবীশুনাথের শেষ অভিজ্ঞতা।

সতা যে কঠিন কঠিনেরে ভালোবাসিলাম। সেকথা কথনো করে না বঞ্চনা আমৃত্যু দুঃখের তপস্যা এ জীবন তাইতো তিনি নিজেই বলে গেছেন যে তিনি কোন মেহ নিয়ে আসেন নি আমাদের সংম্থে এতদিন যে দিনবাচির মালা

গে'থেছি বসে বসে

তার জন্য অমরতার দাবী করব না

তোমার ক্ষাত-নিয়ত বংসরের

সূর্য-প্রাদক্ষণের পথে

যে বিপরে নিমেষগ্রিল উন্মীলিত
নিমীলিত হতে থাকে
তারই এক করে অংশে কোনো
একটি আসনের
সভামলা যদি দিয়ে থাকি

সভামলা যদি দিরে থাকি ভবে দিরো ভোমার মাটির ফোটার একটি ভিলক

আমার কপালে সে, চিহু যাবে মিলিয়ে যে রাত্রে সকল চিহঃ পরম অচিনের মধ্যে যায় মিলিয়ে

হে উদাসীন প্থিবী—
আমাকে সম্প্ৰণি ভোলবার আগে
তোমার নিৰ্মাম পদপ্ৰান্তে
আজ রেখে যাই আমার প্ৰণতি

বেশ কয়েক বছর পূর্বে একটি মন্তবা বেরিষেছিল, যতদ্র মনে পড়ে বিংস-এ ১৯৬১ **লালে**—

Are they trying to brainwash the bard of Santi-niketan-

তাতে বলা হয়েছিল--

Like the six blindmen of Hindusthan describing an elephant wone blind man who touched the ears imagined the elephant to be shaped like a fau, the other who felt one of the mighty legs thought it was like a pillar, while the third who managed to catch hold of the tail described it something like a wriggling snake. They were all equally right and all were equally wrong

মনে পড়ছে রবীন্দ্রনাথের নিজের কথা।—
কিছুকাল ভারের দেবে মালাচন্দ্রন, খাওয়ারে
পেট ভরিয়ে, সাণ্টাগো প্রনিপাত কররে,
তারপর আসবে তাকে বলি দেবার প্রোদিন—গ্রন্থক্যর থেকে ভন্তদের পরিচাণের
শাভ্রন্থন। প্রো জিনিস্টাকে একথেয়ে
করে তোলার মাতা অপবিত্ত অধামিকিতা
আর কিছু হতে পারে না...ভালো লাখ্যর
এভালান্দ্রন আছে। শান্তিল,খ মানুক্ষেরে
ভিজ্ঞালখন বৃভুক্ষেরে যারা প্রথম দেন সেই
রবিঠাকুরের দলকে চুপ করতেই হবে।
ফভলি আম ফারোলে আভাই আনতে গ্রে।

উরশীর শবচ্ছেদ করে একদিন এক সমালোচক দেখিয়েছিলেন যে ইউরোপীয় ছিনানের ভারতীয় নটীর ছন্মবেশেই তিনি প্রতিভাত। একদিন তার 'ইউরোপিয়ানাই ছিল দোবের, এবং বিদায়ের আনন্দনাড়াও খণ্ডরানে। হয়েছিল

আমি নিশ্চয়ই কোন রুপে
দ্বর্গ থেকে টসকে
জ্বন্দেশ্রিক বিধাতার হাত ফসকে

আবার শ্নেছি রবীন্দ্রনাথ যথেণ্ট আধ্নিক নম। তিনি বেদ-বেদাণত উপ নিষদ আওড়ান শাণিতনিকেতনের বেদীতে বসে তত্যাস প্রচার করেন। আসলে খারা লোকোত্তর প্রেষ তাদের চেতনা বহুতর প্রেষের চেতনার সমণ্টি। বিভিন্ন এমন কি বিরোধী ধারা মিলে কি অপর্প অভিনব ঐকভান সৃণ্টি কর্তে পারে তার পরিচর রবীক্ষনাথের প্রতিভা।' তাঁকে নিকে एएल-विट्रमान माहाण्डितिक उक्तान या প্রকাশ হয় নি তা নর, বেমন ভাষ্টাটে ১৯২১ काल काउँग्डे क्वें क्रिंगार्ज्ञाल कर्ड्ड স্কুল অফ উইজডম স্থাপন এবং হিতো-পদেশ ও পণ্ডতদা অনাকরণে ভাষায় সংবাদ পরিবেশন। বিনি এলেন প্র গগনের 心中面社 তিনি জ্যোতিক সতাসনাতনের একটি দীপ্ত প্রতীক। আবার এ ধরনের কথাও কিছ_e-দিন থেকে শ্রনছি যে রোলা-রবীন্দ্রনাথের সম্পর্কে বেশ একটি চিড় খেয়েছিল এবং তার আদি দিনপঞ্জীতে তা লিপিবশ্ব আছে। আমরা শ্ব্ব ভূলে যাই ষে রেলার প্রশাস্তর উপর যেমন রবীন্দ্রনাথের প্রসিম্পি নিভার করে দা, তেমনি রোলার সাহিত্যিক ও মানবিক আভিজাত্যও স্বতঃ-মফুর্ত। এমন কি একথাও বলা হয়েটেছ খে, রবীন্দ্রনাথ গান্ধীজীর সম্বন্ধেও বিরুষ মনোভাব পোষণ করতেন (শ্রা মতের जारेनका नग्न-कथाधि वावशात्र कता शर**ाह** প্রেক্ডাইসভ আন্ড ম্যালেসাস বা তাঁর রাাংকর ছিল (ফরাসী ভাষায় র্যাংকার কথাটির অর্থ বিটারনেস) এ ধরনের তক-বিত্রের শেষ নেই। একথা হয়তো সতা রবীন্দুনাথকে আমরা বাচিয়ে রাখতে পারি নি স্জীব সমালোচনার মাধামে। কিণ্ডুতার অর্থ নয় যে পরিবর্তনশীলের যুগের আলোকে তাঁকে প্রতি যুগেই নতুন করে মল্যোয়ন করতেই হবে। অর্থাৎ আমার যুগের ধ্যান-ধারণা যুক্তিবাদ প্রতিবাদের সংশ্য তার বঞ্জ যেট্রকু মিলবে সেই মডিফায়েড রবীন্দুনাথকেই গ্রহণ করব। আমরা ভূলে যাই যে, কবিকে ব্রুতে গেলে শ্বাধ্ ক্রিমানস নিয়েই গবেষণা করলে চলে না। ব্*ৰ*তে হয় যাগের ইতিহা**দকে**, জাতির ঐতিহাকে পারিবারিক পারি-পাশিব'ককে জীবনযাতার পারম্পর্যকে-কবি শুধু স্রণ্টা নন—দুন্টা। সেখানে **ভার বা**টি শাধ্য অভিতরের গণিতত্ত ন্য। ছাই বারে नारत यहान यहान कहे 🗢 😢 खर्ठ-रह গ্ণী কোন অপ্ৰ **র**্পটি ভূমি সকল কালের জনা স^{্থি}ট করলে। **সরু**ম্বতীর শ্বেত শতদল সুব দল বেদলের **মাদলের** উধের—এই প্রতীতি আৰু হারিয়ে **যাকে**। তব্য সেই শাংবত মানববেদীতেই প্রকৃত সাহিত্যিককে বসিয়ে আমরা বলবো—জন্ম হোক মানুষের ঐ নবজাতকের, ঐ চিন্ন-জীবিতের।

এই বিশ্বাস হয়তো বিংশ শতাব্দীর শেষভাবে বা একবিংশ শতাব্দীতে ছারিমে বাবে, হবে ম্লাহারা। কিন্তু কে জানে শ্বাবে, হবে ম্লাহারা। কিন্তু কে জানে শ্বাবার প্নের্জনীতে হবে না? কাল হারা কথা বলবেন, তাঁরাই কি শেষ কথা বলবেন? তার পরের পরেররা আসবেন না? এ চিন্তা হয়তো রোমান্তিক একস্ট্রাভাগাঞ্জা, হয়তো তাই, হয়তো তাই নর। মান্বের উপরে বিশ্বাস হারানো পাশ, যেদিন হবে না, সেদিন আস্কু না কতি কি?







वाछा जानिएक कि ना हित्न तिर्वन





বতে ও বালোটে শোভন হিমাহান কেমিলন-এব জাতো নতুন দেখাবে দাঁঘাদিন। বাটাৰ এই স্থানভাক দিনতব সায়েব পাতা দিনাধ বাথতেই তৈবি। স্বার্থকার বাথতেও কোনো ঝামেলা নেই— ভিত্তে কাপড়ে মৃত্যু নিলেই হয়। Bata স্যানভাক*

শ্লেজিগ্টাড' রেড মার্কান বাটা অন্ত্যোগত বিধি মতো বিভিন্ন প্রভিন্ন প্রসমূত

मार्ग्धित अरम्

ग्राभारमत अखद्राहन

প্রায় চল্লিশ বছর পূর্বে প্রকশিত হয়
গ্রাহাম গ্রীনের প্রথম উপন্যাস 'দি ম্যান
উইদিন'। তারপর প্রকশিত হয়েছে তার
নাটক, গলপসংগ্রহ, প্রবন্ধ সংগ্রহ এবং
আট-নখানি উপন্যাস। সাহিত্যকর্ম হিসাবে
এই হিসাব নিঃসন্দেহে প্রশংসনীয়, আরো
উল্লেখা যে, তিনি আজো লিখছেন এবং
আশ্চর্য লিখছেন।

গ্রাহাম গ্রীনের—'দি কর্মোডয়ানস' একটি সম্প্রতিক উপন্যাস এবং উপন্যাসটির বিশ্তারিত আলোচনার প্রয়েঞ্জন আছে।

তানেককাল আগে দি হোরাইজ্বন' নামক পাঁত্রকায় বিখাত লেখক আর্থার কলভার মাশেল গ্রাহাম গ্রীনের সাহিত্যকর্মের আলোচনা করেন এবং এই আলোচনাটির শিরোনাম ছিল 'গ্রাহাম ইন গ্রীনল্যান্ড'। গ্রীনল্যান্ডের প্রীন শহরটি বানান গ্রাহাম গ্রীনের উপাধি অনুযায়ী।

গ্রীনল্যান্ড নামক কলপলোকের ডৌগোলিক অবস্থান, প্রাকৃতিক পরিমন্ডল প্রভৃতি সমন্বয়ে তিনি এক অপরূপ মান-চিত্র এ'কেছিলেন। তারপর কিছুসংখ্যক দায়িত্বীন স্মালোচক কোনোরকম ঋণ ম্বীকার না **করেই কথা**টি যথেচ্ছ বাবহার करतास्त्र, करन 'शौननग़'फ' कथां हि माहिका ত সাংবাদিকতার ক্ষেত্রে একটি কথার কথা হয়ে দাঁড়িয়েছে। একদা স্পুষ্ক হলেও এখন সময় এসেছে কথাটি স্যত্যে পরিহার করার। এর কারণ গ্রাহামের জগৎ ভার চিম্তাধারা, রচনাশৈলী ও আলিক যদিচ অপরিবতিতি রয়ে গেছে অথচ তাঁর জগতের পরিধি পরিবতিত হয়ে সীমানা হয়ে **७**८७ म् ज्ञानाती। গ্রাহামের জগং অথচ সেই পরিচিত জগৎ, বে জগতের আমরা সবাই অধিবাসী। 💝

গ্রাহামের অভিজ্ঞতার সঞ্চয় বিচিন্ন, প্রথিবী পরিক্রমা করে তিনি এই অভিজ্ঞতা অর্জন করেছেন। জনসন বা হাজলিটের মত তার সাহিত্য জাবিনসম্পর্কিত। জাবিত রিপোটারদের তিনি প্রেরাধা, তার রচনার বিশ্বজনীনতা আছে, একদিন হয়ত এই কারণেই তিনি সাহিত্যের সর্বোচ্চ প্রেক্ষার লাভ করবেন। তবে বলা কঠিন, সমরসেট সমকে ত নোবেল প্রাইজ দেওয়া হয়নি।

রীতিগৃতভাবে তিনি বাস্তববাদীর চেয়েও অনেক উধেন', কিম্পু রচনার ভিত্তি—বস্ত্বাদ। গ্রাহামের বিরুদ্ধে যে অভিয়োগ সমালোচকরা করে থাকেন তার পিছনে আছে একটি বিষয়ে অজ্ঞতা। ক্যার্থালকবাদের বিশ্বাসীদের সংখ্যা পৃথিবীর অনা যে কোনো ধর্মামতের চেয়েও বেশা। আর এই অনেক শাখা-প্রশাখা সত্ত্বেও এই মতবাদটি বেশ প্রাণবন্ত। সব ক্যার্থালকরাই যে এক ধরনের হবেন এই আশা করা অন্টিত আর তাই যদি হত তাহলে কবে এই ধারটি লাত হয়ে যেত।

ক্যার্থালক উপন্যাসকার হিসাবে গ্রাহাম গ্রীনের নিজের ম্থান ঠিক কোথার ? প্রথমত গ্রাহাম গ্রীন খ্ন্টীয় ধর্মমতের ধর্ম নিরপেক্ষম নামক বস্কুটির বিরোধী। গ্রাহাম গ্রীন বলেন—

"St. Paul observed that secularised theology conforms itself to the world, making this world the only reality. But the faith is not be seated down and even though not necessarily themselves theologians."

এই মতবাদের খণ্ডন করবেন বাঁরা আধিকারী কান্তি। উপন্যাসকারকে তাই বলে বে বাশ্তবতা বর্জন করতে হবে একথা বলা খান না। তাঁর কাজ হল জাগতিক অভিজ্ঞা-তার বাাথ্যা করা, শ্ধ্র তার বাহ্যিক ঘটনা-বলীর ধর্ণনা করে ক্ষান্ত হলে তাঁর দায়িছ শেষ হয় না।

নিউমান যাঁকে বলেন—'এবরিজিন্যাল ক্যালামিটি' সেই বিপর্যায়ে গ্রাহাম বিশ্বাসী বলে অন্মান হয় তেইয়ার দ্যু সারদা প্রভৃতি মনীধীবৃন্দ কলিপত খুন্টীয় বিবর্তনিবাদে তিনি বিশ্বাসী নন। হেনরী ক্ষেমস ডেভিল বা অশ্যুভের প্রতি বিশ্বাসী ছিলেন, এই দানবিক শক্তির ক্ষণতা অসম। অন্ধকার থেকে উৎসারিত বিশ্বাসী।

সহজ সমাধান গ্রহণ করতে গ্রাহাম গ্রীন রাজী নন, তাই তাঁকে দুঃখবাদী মনে করা সহজ। তবে প্রকৃত অবদ্থা তা নর। অনেক তীক্ষা ও অপ্রীতিকর উদ্ভি গ্রাহামের রচনার আছে। তাঁর কাছে এই বদ্কুটি ছিংসা, নিষ্ঠারতা এবং অমংগলের সমত্রা। নরকে বিশ্বাস থাকলে দ্বগোঁ অফ্তিম্বেও আদ্যাবান হতে হয়। গ্রাহাম গ্রীনের উপান্যাসে বেদনা স্কুপণ্ট তার কারণ বেদনা, এমনই এক সত্য বস্তু বে, একমাত রোমাণ্টিক ছিল্ল এই বেদনাকে অস্বীকার করতে পারেন না। চরম পরিশতিতে তিনি বিশ্বাসী।

গ্রাহামের বাইটন রক' অনেকের কাছে
বীভংস মনে হয়েছে, কিন্তু বীভংস হল
এর কাহিনী অংশ। 'পাওরার আ্যাক্দ
শেলারী' তাঁর সাথকিতম উপন্যাস। গ্রাহাম
গ্রীন একনামকত্বে বিশ্বাসী নন, কিন্তু তাঁর
কাছে কম্মনিন্ট মাগ্রেই অতিকার দানব বলে
মনে হর্মন। তিনি জগংকে জানেন এবং
অনেক বেশী মাগ্রার তিনি সহন্দীল,
বিলোধীর প্রতি ব্যা এবং স্বর্ধার অন্তর্

গ্রাহামের 'দি কর্মেভিরানস' উপল্যাসটির আলোচনা প্রসলে এই ভূষিকাট্<u>কুর</u> প্রফোজন আছে মনে করি:

এই কাহিনী বলছেন জনৈক বাউন, সংগ্ণ সংগ্ণ লেখক বলেছেন বে, বেহেছু ব্রাউন একজন ক্যাথালক, একথা মনে করা ঠক হবে না বে, ব্রাউন লেখকের বেনামদার। লথকের কথাটি সতা বলে মেনে নিতে হর, কবে রাউন বাছিটি অফিন্টিংকর হলেও রীতিমত ব্যাখনা। লেখকেরই নিজ্প্যালিত একজন বিচক্ষণ পর্বাবেক্ষক তবে তার আচরণ এবং বহিরণ্য ভগ্ণী একাল্ড-ভাবে তারই নিজ্প্য। স্চনার টমাস হার্ডির উন্থাতি দেওরা হরেছে—

".... Aspects are within us, and who seems Most kingly is the King."

রাউন হাইতিগামী একটি **ওলন্দারু**মাল জাহাজের বাত্রী, বাবে পেটে -জপ্রিপেন, সেখানে ভার একটি হোটেল আছে,
এখন অবশা হোটেলটি থালি! আছেন, তিনি
নিরামিবালী, মদদানবিরোধী, একবার
মার্কিন প্রেসিডেপ্টের পদের প্রাথী হারছিলেন, তাঁর নাম স্মিথ। তিনি এবং তাঁর
স্পানি ভূমিকা বেদনামাই বংগের। পাশবিক
জগতে তাঁর বিভালত আদশ্বাদী। তৃতাঁর
হারীটির নাম জোনস।

তিনজনের নাম সাধারণ বাউন, স্পিথ, জোলা। কারো সংগো কারো সংগো না সাংবাগ না পালােলেও কোথাও একটা যোগসাতে বরেছে, এরা সরাই বৈদ্যক। বিদ্যুক্ত বিদ্যুক্ত। বিদ্যুক্ত বাহাও বঙই পার্থকা থাক অংকরে স্বাই বেন সমান, স্বাইকার চরিত্রতাত বৈশিষ্টা এক ধরনের। এদের গোনো বাঁধাধরা ধর্মান্ড নেই, কেউট ধর্মের সংকার্থ গণভীতে বাধা নাম, এরা স্বাই মৃত্ত চিন্তার ধারক, কারো কোনাে

কৰন নেই: স্থিকের একটু অসপন্ট ধারণা আহেছ ভবে তা নিতাসত ফি'কে, রাউন সন্পূর্ণ বিজ্ঞানত মান্দ্র, তার স্বান্তভগ আটছে। জোনস আধা-দ্বে'ভ ভাতবিশেষ। জাহাজের ভকেই এদের চরিত অপর্ণ: ভগাতৈ বিশেলবিত হরেছে।

ভাষাত্র তীরে লাগার অনেক আগে থেকেই রাউন বথাসাধা চেম্টা করেছে স**ৰুলের অন্ডন্নে আ**তংক সুন্দি করতে। পোষ্ট-জ-প্রিপের অধিনায়ক বর্বর অত্যা-চারী। সিম্ম এসম বিশ্বাস করতে রাজী নয়। হিট্যার ত এর চেরেও থারাপ ছিল, ক্ষেম হিটলারের চেরে থারাপ আর কি ছতে পারে? অথচ হিটলার ড ছিলেন **শ্বেতা•গ। শ্বে** গারের চামড়ার রঙ শাদা বা **কালো হলে কিছ**্মেতসে যার না, যে পিশার্চ, সে শাদা হলেও বা কালো হলেও ছাই। রাউন বলডে চার বে, সে রঙের **জন্য কিছু বলছে** না, রঙটার কি আসে বার, আসলে এরা অতি খারাপ। এর ফলে সিমধের বিশ্বাস আরো দুঢ়ীভূত হয়। রাউনের সামবহুল হোটেলের একমাত অতিথি *হলেন স্মি*থ দম্পতি। লাতিন আমেরিকার একটি রাজ্যের রাজ্যন্তের স্তী মার্থার সঙ্গে রাউন প্রেমচর্চার মন্ত। ওদের দীবনের মডো এই প্রেমলীলাও সম্পর্ণ নির্থক। এদের কারে। অভ্তবে প্রকৃত প্রেম নেই, বেছন কারো মনে কোনো বিশ্বাসও নেই! এরা সবাই বালিক মানব, ঘটনা-পরস্পরার ক্রীতদাস। ঘটনার খাড-প্রতিখাতে ওরাও নড়ে-চড়ে,—অসভা টনটনস ফ্রাকউট সম্পর্কেও এই কথাই বলা বার, সেও ত অবস্থার দাস।

নিয়ো কম্মানন্ট ডাঃ মাণিওর বতক্ষণ না আবিভাবে ঘটছে ততুক্ষণ পর্যাহত এক-ক্ষম প্রকৃত কমিটেড' মান্বের সাক্ষাং মিলতেই না। ডাঃ ম্যাগিওর প্রকৃতি-বৈশিক্টা এমনই বে, সমকালের ভয়ংকর ঘটনাবলীর প্রতিক্রিয়ার অংশভোগাঁ। ডাঃ ম্যাথিও সমগ্র ঘটনাপর্বের কমিক দশ'ক নন, তিনি ইাজিক অভিনেতা, কাহিনীর তিনি কেন্দ্র-বিশ্বতে অধিভিত এবং তার আবিভাবের সংকাই কাহিনীর গতি দুভেত্র হরে ওঠে। উপনাসের বিনোদনরীতিও প্রসারিত হয়, জোনস মারা গেল, সেই সমর সে মেজর জোনস, এবং মারাও গেল মহাসমারোহে! বিশ্বত ক্রমণ তথনত সেই সন্মোহের শিশিরের চন্দ্রাও কলে আছে। ব্রাউন ডাঃ ম্যাগিওর কাছ থেকে শেষ প্র প্রেলনে, তিনি লিখেকেন

"Communism is more than Marxism just as Catholcism is more than Roman buria. There is mystique as well as politique".

রাউনের ডাঃ মাগিও বিশ্বাস মা
হারাতে অন্বোধ করছেন—বিশ্বাস
হারানে পাপ—বে বিশ্বাস হারার তার
একটা বিকল্প থাকে, কিংবা মুখোলের
অভ্যানে এ কি সেই বিশ্বাসট্কু অনার্শে
আসে? আমরা সবাই ত মুখোলের
আড়ালেই আছি।

কিন্তু রাউন ও বিদ্যুবকদের অনভ্য, ভার বিচরণক্ষেত্র সমতল, উচ্চু নেই, খাদ নেই। সে চলেছে—অনতহীন পরিক্রমা, বলছে— একদা অনাপথ নেওয়া সম্ভব ছিল হয়ত, এখন অনেক দেরী হয়ে গেল।' গ্রাহাম গ্রীনের উপনাাস পঠিককে ভাবার এবং নতুন চিন্তার প্রেরণা দেয়।

--অভয়ত্ত্ব

THE COMMEDIANS (A Novel) F
By GRAHM GREENE: Published by Bodley Head: Price 25
Shilkings.

সাহিত্যের খবর

সাঁওভালী সাহিত্য ।। সাঁওভালী ভাষা ও সাহিত্যের সংখ্য আমাদের পরিচয় তেমন নিবিড় নর। অথচ বাংলাদেশের জন-সমাজের একটা বিরাট অংশ এই ভাষার ধারক ও বাছক। ইদানিং এই ভাবার কিই বি**ছ, সাহি**তাও রচিত হচ্চে। তাছাড়া রবীন্দুনাথ ও কয়েকজন বিশিষ্ট বাঙালী রচমাও সাঁওতালী ভাষার লেখকের অনুদিত হয়েছে। কথাগুলো মনে পড়ল জ্বন কলকাতার তথ্যকেন্দ্রে গত ১৩ সাঁওতালী লিটার্রের আন্ড কালচারেল সোসাইটির উদ্যোগে অনুষ্ঠিত ৩% বার্ষিক সাঁওতালী সাহিত্য ও সংস্কৃতি সম্মেলন সভার পৌরোহিত্য कर दश প্রস্থেগ ৷

ডেপ্ট্রি মেরর শ্রীনীলরতন সিংহ এবং প্রধান অতিথি ছিসেবে উপস্থিত ছিলেন শ্রীপামালাল দাশগুপ্ত।

সভার সাঁওতাল সংস্কৃতির ঐতিহা সম্বন্ধে আলোচনা করেন শ্রীদিলীপ সরেন শ্রীটি কে রাসাজ ও শ্রীইজিকাাল ছেক্ষরম। সম্পাদক শ্রীনাথানিরেল ম্রেথ্ এম এল এ ধনবাদী শিলপতিত্তিক সমাজের প্রভাবে কিন্তারে এই ভাষা ও সংস্কৃতি সংক্টের ম্থে এসে দাঁডিরেছে, ভা বর্ণনা করেন। সাঁওতালী গাম ও আব্দ্রি পারবেশন করেন। শ্রীনাথানিরেল হেক্ষরম, শ্রীরবীন উ্তু, শ্রীচরণ হাঁনদা, শ্রীতেরৰ ম্রেথ্, শ্রীমতী প্রিস্কিয়া উন্তু, শ্রীমতী মিরোলা হেক্ষরম প্রম্থ। এই প্রসংশে আর একটি কথা বলা ভাল, সাঁওতালী ভাষায় বেমন বাংলার অনুবাদ আঞ্চ ভেমনি বাংলাতেও কিছু কিছু সাঁওতালী কবিতা অনুদিত হরেছে।

সাধ্যক্ত কৰিডার প্রেম 11 রুশ গালপ-সাহিত্য সম্বধ্যে সাধারণভাবে মনে করা হরে থাকে বে, তা মূলতঃ পলিটিকসের ফসল। কিন্তু সোভিরেতের কবিতা সম্বধ্যে একথাটি অনেক রুশ কবিতা সেন্দ্রকাত প্রদর্শিক কংগ্রেসে প্রখ্যাত কবি আর ফিরোন্দারোভ বলেছেন : 'রুশ কবিতা বে সম্বকার বিবরকে বিশ্বজনীন তাৎপর্যে মণ্ডিড করেছে, তার মধ্যে প্রেম অন্যক্তর গ্রেম

প্রেমই হল রুশ জনগণের নৈতিক আদর্শের উদাইরণ। ফাশিলম সংপর্কে রুশ দেশের মান্ত্রিক প্রথম ঘণা অন্তব করে এসে-ছেন্-একমান প্রেমই তার সংগ্ণ ভারসামা বজার রাখতে সমর্থ।" একালের রুশ কবিতা স্বাধ্ধে উৎসাহী পাঠকদের এই উদ্ভিতি অনেক খোরাক জোগাবে বলে আশা করি।

শাহিত্যিক দেশৰুখ: এ বছর চিত্রজন দাশের জন্মশতবাষিকী উদযাপিত হবে। দেশবংধরে সাহিত্যিক অবদানের কথা এ-কালে কেউ আর তেমন উল্লেখ করেন না অথচ বাংলা সাহিতো তাঁর অবদান নিতাশ্ত স্বল্প নয়। কেবল পত্রিকা সম্পাদক র**্**পেই নয়, প্রবন্ধ ও কবিতার ক্ষেত্রেও তিনি একটি বিশিষ্ট স্থান অধিকার **করে আছে**ন। 'নারায়ণ' পতিকায় তাঁর একাধিক ম্লোবান প্রকাশত হয়েছে। 'মালণ্ড', 'মালা' *সাগর সংগতি প্রভৃতি গ্রন্থে তাঁর কবি প্রতিভা উম্ভাসিত হয়ে উঠেছে। তার কবিতার বৈশিষ্ট্য আলোচনা করতে গিয়ে তানৈকেই বৈষ্ণব প্রভাবের কথা উল্লেখ করেছেন। ঋষি অর্রবিন্দ ডার 'ফালা' কাবা-গ্রন্থটি আলোচনা করতে গিয়ে তাঁর কবিতার গভীরতর অনুভাতির কথা উল্লেখ করেন। জন্মশতবর্ষে তাঁর কবিতা ও প্রবন্ধের একটি সালভ সংস্করণ প্রকাশ করা খাুবই द्याराजनीय रख एम्था पिखार ।

'সর্বোদর সাহিত্য প্রদর্শনীঃ সর্বোদর
সাহিত্যের এক প্রদর্শনীর আয়োজন হরেছিল সন্প্রতি বোদবাই শহরে। এর উদ্যোজ।
ছিলেন বোদবাই সর্বোদম মন্ডল।
প্রদর্শনীটির উদ্বোধন করেন প্রথাত
সাহিত্যিক শ্রীগ্রোবদাস র্কার। তিনি
তাঁর ভাষনে আচার্য ভাবের প্রতি গভাঁর
শ্রুপন নিধ্যেন করেন।

করেকটি ইতালীয় উপন্যাস: ইতালীয় লাহিতো সম্প্রতি প্রকাশিত কমেকটি উপন্যাস ও ছোটগল্প গ্রন্থ বিশেষ আলোড়ন স্থিত করেছে। এর মধ্যে প্রথমেই নাম " করতে হয় গিংগতালি আপিনোর কথা। আপিনোর খগতি প্রধানত দ্বিতীয় মহাযাদেধর পরেই। সাহিত্যের সমস্ত শাখাতেই তাঁর সমান প্রতিপত্তি। কবিতা, গণপ, প্রকথ বা শিশ্ সাহিতা—সর্বাই তার রচনা আজ স্বীকৃতি লাভ করেছে। বর্তমান বইটি আসলে তিনটি ছোট উপনাস সংকলন। আর এই উপনাস তিন্টির প্রকাশ কলি বিগতি পনের বছর। এতে তাঁর সাহিত্য প্রতিভার ক্রম-পরিণতিও স্পন্ট হয়ে উঠেছে। প্রথমটির নাম আকটিমো স্টোরি (১৯৬৬-৬৭), দ্বিতীয়টি 'আলট্রে স্টোরি' (১৯৬৯-৬৬) এবং তৃতীর্যাট 'মেটারি দি প্রোভিন-িসয়া (১৯৫৭-৬৩)। প্রথমটিতে লেখক াঁচতিত করেছেন শিণপভিত্তিক সভ্যতাকে। দ্বিতীয়টিতে দেখা যায় বিভিন্ন দিক –যেনন, শ্রমিক শ্রেণীর সংখ্যা সম্পর্ক, প্রাচীন যুগ বা আধুনিক হিপিদের কথা। তৃতীয়টিতে ইডালীর একটি বিশেষ অণ্ডলের জীবনধারাকে ফুটিকে ভোলা

িশবতীয় যে গ্রম্থটি বিশেষ আলোড়ন

স্থিট করেছে তার মাম সারস'। গ্রচয়িতা গিওগিয়ো বাস্সানি। প্রকাশিত হয়েছে মিলান থেকে। এই উপন্যাসটি রচনা প্রেরণা তিনি কোথায় পেলেন তা 'লা ফিয়েরা লিতারারিয়া' পত্রিকার সম্পাদকের সংশা এক সাক্ষাংকারে বর্ণনা করেন। তিনি বলেন—'এক শীতের সম্পায় আমি ফিরারা অঞ্চলের একটা ছোট শহরে ঘুরে বেড়া-চ্ছিলাম। এভাবে বেড়াভে বেড়াভে একটা দোকানের সামনে এসে দাঁড়ালাম। সেই সময় দোকানের সামনে সাজান বিভিন্ন জিনিসের একটা সারস আমার চোখে পড়ে। আর তথনই মনে হল একে নিয়ে একটা উপন্যাস লিখতে হবে। আমি উপলব্ধি করলাম, আমার উপন্যাসের প্রধান চরিত্র হবে এমন একটি মানুষ যে ওরকম স্ফরে গতিহীন এবং বস্তুজীবনের দ্বেখ-বেদনা থেকে ্বন্ধ থাকতে চায়। দেখক এই অন্ভব থেকে উপন্যাসের চরিত্র স্বন্দরভাবে ফ্টিরে তোলেন। এতে একটা মান,যের শেষ দিনের কাহিনী বণিত। মানুষ্টির বাস্তব জীবনে ধন সম্পদের কোন অভাব ছিল না। তব**ু** তার মনে জীবন অসহনীয় এবং তার এক মার সমাধান খুজৈ পেলেন আত্মহতাার মধ্যে। বইটি এ বছর ইতালীর 'বেস্ট সেলার তালিকাস্তুত্ত হয়েছে। আসলে, বইটির বস্তুকা বিষয়ের সংখ্য একমত হতে না পারলেও এর কথার ভাঙ্গাটির জনাই জনপ্রিয়তা অর্জন করতে সমর্থ হয়েছে।

শোলোখনে পান্ধনি বংসরে পদার্শন।।

গত ২৪শে মে বিশ্ববাধনত রুশ লেওক
মিথাইল শোলোখন্ড পান্ধনিট বংসরে

পদাপাণ করেন। শোলোখন্ডেব
রচনা আজ প্রথিবীর বিভিন্ন দেশেই
সমান্ত। একদা মাকসিক গাঁকি তাঁর
রচনা সম্বন্ধে লিখেছিলেন:—ব্শিধ্যান
ইউরোপীয়েরা শোলোখন্ডের রচনাবলীকেই
বাস্ত্র বলে মনে করেন। আকেন্দ্রি
তল্পতার্ভ বলেভিলেন:—ধাঁরে বহে ডন্দ্র

গ্রন্থের লেখক স্থীর প্রতিভার সোভিরেত
সাহিত্যে প্রশাসী সাহিত্যের সংগ্য বাল্ডববাল্ ঐতিহার মিলন ঘটারে জনগণের
নতুন গণ্যের পথ উদ্মাক্ত করেছেন।
সোভিরেত সাহিত্যের মুখ্য আশাআকাৎকাকে চমকপ্রদভাবে প্রকাশ করার
সংগ্য সংগ্য তিনিই শিল্পপ্রভাট এবং
সমাজতান্ত্রিক বাল্ডবতার নিপ্রণ র্শকার
হিসেবে স্বীর জননা স্থিটশীল ব্যক্তিম্ব

"ডন নদীপারের ছোটগলপ" তার সাহিতাজীবনের স্ত্রপাত। েসই নদীর তীরে তীরে সোভিয়েত কর্ত্য বিস্তারের সেই প্রথম বছরগ্রিলতে যে প্রচণ্ড সামাজিক সংগ্রাম চলছিল, এই গণ্প গ**ুলিতে আছে** ভারই প্রতিক্রায়া অকটোবর বিশ্বব ও গৃহয় খকালের জন জীবন ও জনগণের সাহচর্যে রইলো ন যারা সেই বিপথগামীদের জীবন ট্রাঞ্জেডিঃ মহাকাব্য এটি।" কবিত অহল্যাভূমিতে বার্ণত হয়েছে যৌথ থামারের উচ্ভব, গণ-মানসে নব-চেতনার উল্মেষ এবং গ্রামা-যৌল সমাজ-রূপান্তরের প্রায় অলোকিক কাহিনী। 'ধারে বহে ভন রচনায় তিনি জীবনের পনেরটি বছর বাং করেছেন। উপন্যাস্টিতে অস্থাম নৈপুণ্যে অণ্কিত হয়েছে খেটে খাওয়া মানুষের নিখতে মনস্তাত্তিক প্রতিকৃতির নিস্পের প্রাণ্ময় বর্ণনা এবং গীতিময় বিষাদপ্শ ঘটনাবলী ও হাসির দ্রেশার নাটকীর বিবরণ। যুদ্ধে তিনি সঞ্জিয়ভাবে অংশ গ্রহণ কর্বোছলেন। তার সেই সময়ের রচনার পাওয়া যায় ফ্যাসিজিমের বিরুদ্ধ সর্বরাপী ঘূলা।

তর্ণ লেথকদের কাজে তাঁর আবেদন, তাঁরা যেন মানুষের হাদরের যথাসমভব কাছাকাছি থাকেন। কারণ ধেথকই জনগণের বিবেক এবং জনগণের হাদ লেখাও অধিকার পাওরা তাঁদের শক্তে দুর্লাভ দোহাদ্য ব্যতাতি কিছা নহ।

नजून वरे

ভারতের সাধক চিত্রাবলী—সংপাদনা ঃ শণকর-নাথ রায়, প্রাণিতস্থান ; প্রাচী পার্বালকেশনস, ৩ এবং ৪ হেয়ার স্থীট, বেওলা, কলিকাতা—১। মূলা—দশ টাকা।

ভারতীর সভাতার এক বড় বৈশিণ্টা এ সভাতা করেক হাজার বংসর প্রাচীন হলেও, এর ফ্রোতধারা আজো খণ্ডিড হর্মান, ব্য়ে চলেছে অব্যাহতভাবে।

মিশর গ্রীস, ব্যাবিজন, রোমের প্রাচীন সভাতার পতন ঘটেটা বহুকাল আগে, কিছু ভারতীর সভাতা তার অপুর্ব প্রাণ-শক্তি নিরে আজো বে'চে আছে। পাশ্চাতোর মনীবী ও ধর্ম-সংস্কৃতির গবেককদের অনেকেই ভারতের অণ্ডজীবনের এই বৈশিষ্টা সম্পর্কে বিজ্ঞার প্রকাশ করেকেন। ভারতীয় সভাতা ও ধর্ম-সংস্কৃতির কাঞ্জ্যী প্রাণ প্রবাহের মুলে রয়েছে এদেশের
সাধকগোষ্ঠীর প্রভাব। যোগী, বেদালতীতাশ্বিক ও মরমীয়া সাধকর্পে তার
আমাদের জনজাবিনে ছড়িয়ে আছেন যত
বুগ ধরে। বুম্ধ, শংকর, রামান্জ থেবে
শ্রে, করে বিশে শতকের বিবেকাননদ
অরবিন্দ অবধি এই সাধকদের বহুমুখী
কল্যাণধারকেই বিস্তারিত দেখা যার।

অধ্যাত্ম ভারতের বিশিন্ট নেতাদের
মনোরম চিচুসংগ্রহ বা অ্যালবাম
সম্পাদনা করেছেন রবীন্দ্রপর্কেলরপ্রাত্
যশস্বী লেখক শক্রনাথ রায়। আট শেশারে ছাপা এই চিচুসংগ্রহের ছবি-গর্মি মনোরম। অধ্যাসন্দার স্ক্রি ধ দিন্দ্রস্ত দেখিব প্রশ্বার দাবী রাজে ্রিকরনাথ রারের স্বর্রাচত, জ্ঞানগর্ভ মিকাটি এবং সাধকদের সংক্ষিত জীবন শরিচিতি এই আালবামের বড় আকর্ষণ।

বেংগলী লিটারেচার [মে ১৯৭০]— সম্পাদক: আশিস সান্যাল ।। ৫৩, বিধানপল্লী, যাদবপ্র, কলক্ষ্তা—৩২ দাম—দুটাকা।

মূলত ইংরেজী ভাষার বাংলা সাহিত্রে প্রচার ও আলোচনার উদ্দেশ্য নিয়ে বেংগলী লিটারেচার প্রকাশিত হলেও বিদেশী ভাষার সাহিত্য সম্পর্কে অনাগ্রহী নয়। নানারকম প্রতিক্লতা সত্ত্বে পরিকাটি আপন লক্ষাে অবিচল। এ সংখ্যায় প্রেমেন্ড মিরের ছোটগণ্প সম্পর্কে স্থানর একটি আলোচনা লিখেছেন অবনীভূষণ চট্টো আশিস সান্যাল লিখেছেন পাধ্যায়। স্থারাম গণেশ দেউস্কর সম্পর্কে একটি প্রবন্ধ। তাছাড়া আছে বিষয় দে. মণীন্দ্র বায়, সাভাষ মাখোপাধ্যায়, গোপাল ভৌমিত, লোকনাথ ভট্টাচার্য, জগলাথ **চকুবভ**ী, ণামসুর রহমান. অলোকরঞ্জন দাশগুত শৈশির ভট্টাচার্য, অমিতাভ চট্টোপাধ্যায়. কুফ ধর, তুলসী মুখোপাধ্যায়, আশিস গান্যাল ও আরো অনেকের কবিতার অনুবাদ। প্রাদেশিক ও আন্তর্জাতিক বিভাগের লেখকদের মধ্যে আছেন জিওুঞ্ জনসন, জেমস ব্যারেট, ম্যারিয়ান এম ম্যাডার্গা, রবাট টমসন, সত্বিকাত গহে, প্রীতীশ নন্দী, দীপাকর রায়, এস তেংকট নারায়ণ, সঈদ প্রেমী, হাসান অসোর এবং গালিব। স্মালোচনা এবং সংক্ষিত সংবাদের বিভাগ দুটি আকর্ষণীয়। আমরা পত্তিকাটির বহুল প্রচার কামনা করি।

গদেশ কৰিছা । এপ্ৰিল-জন ১৯৭০)— সম্পাদক : কৃষ্ণোপাল মলিক। ১৭।১ ডি, স্য' সেন স্থীট, কল-কাতা—১২, দাম : দেড় টাকা।

করেকটি ভাষার অক্ষরলিপিসহ চমংকাব
প্রক্রদ নিম্ন প্রকাশিত হয়েছে গালপ
কবিতার এ সংখ্যাটি। পাঁশ্চমবংগার একটি
লেখাও নেই। বাংলা গালপ ছাপা হয়েছে
একটিই। লেখক পাকিস্তানের বাসিন্দা।
আদিবাসী, প্রাগৈতিহাসিক ও আধ্ননিক
ভারতীয় সাহিত্যের অনুবাদ ছাপা হয়েছে
শেষের দিকে। বাকি সবই বিদেশী লেখার
অনুবাদ। লেখকদের মধ্যে আছেন এতুইন
মুয়ের, এডিথ সিটওয়েল, কনস্তাশিতন
কাভাফি, আলা বোস্কে, আলী মামুদ
ভাহা, জাভিয়ের হেরো, লাস্ গুস্টাফসেন

হো চি মিন, হেরেনালো তেলে, গাটের কুনার্ট, রমেশ শ্রেণ্ড, ইউকেনিও ফালার প্রান্ত হালান মানতের, ম

তরণ প্রথম বর্ষ প্রথম সংক্রান]—
সংপাদক: অধিবনীকুমার মণ্ডল ও
পরমেশ চক্রবর্তী ।। ১১৯, বিশিন্দবিহারী গাংগলৌ স্ট্রীট, কলকাতা—১২ ।। দাম: ৩৫ পরসা ।।
সংপাদকীর ঘোষণার বলা হরেছে।
"আমরা চাই, অপরিচিত সাহিত্যরুক্তীকে
সৃতির প্রেরণা দিয়ে সাধারণের ক্ষান্তে

"আমর। চাই, অপ্রিচিত সাহিত্যক্রদ্দীক্ষে স্থির প্রেরণা দিয়ে সাধারণের কাছে পরিচিত করাতে।" মনে হর, সম্পাদক্ষের এই ইচ্ছা প্রথম সংখ্যাতেই কিছুটো সক্ষা হয়েছে। লেখকদের মধ্যে আছেন. স্ক্রীক সাধ্যে, স্মন্ত সরকার. সঞ্জীব আছে, স্বত রায়চৌধ্রী, দেবেশ্বর বিশ্বাস এবং আরো অনেকে।

रे এম ফরস্টার

সামাজ্যবাদী বৃটিশ রাণ্ট্রশান্তর প্রজা ছিলেন এডওয়ার্ড মরগান ফরস্টার। ওনের উপনিবেশ ভারতের বিষয়ে ফরস্টারের মনোভাব কিন্তু রাজভক্ত প্রজার মত ছিল নাংছিল না বলেই লিখতে পেরেছিলেন কালজয়ী উপন্যাস 'প্যাসেজ ট্ ইণ্ডিয়া'। প্রায় আট বছর লেগেছিল উপন্যাসটি লিখতে। দ্বার ভারতে এসে মিশেছিলেন, ভারতীয় জনসাধারণের সংক্রে। উপন্যাস্টি যেমন তাঁকে প্রথম শ্রেণীর কথাশিলপীর স্বীকৃতি দিয়েছিল, তেমনি এর ফলে তিনি সামাজাবাদের সমর্থকদের অপ্রিয় হয়ে-ছিলেন। ভারতবাসীর স্বাধীনতার ওপর গ্রুত্ব দিয়ে ফরস্টার তাঁর চারিত্রিক ব**লিন্টত।** এবং শিল্পগত আদর্শের প^ররচয়কে *শ*পষ্ট করেছিলেন। পরে আরো দ্বার ভারতে এসেছিলেন তিনি।

ফরস্টারের লেখক-জীবন শ্র, বি-এ
পাশ করবার পর। অন্যতম প্রেরণাদাতা
ছিলেন জি এল ডিকিনসন। সাহিত্যজীবনের আগে থেকেই ইণ্ডালি আর ভার
সাহিত্যে ছিল ফরস্টারের অকৃতিম অন্রাগ। প্রথম দ্খানি উপন্যাস 'হোয়ার
এঞ্জেলস ফিয়ার ট্লেডি' এবং 'এ র্ম
উইথ এ ডিউ'-এর পটড়াম ইতালি।
প্রকাশিত হর ১৯০৫ খ্লে এবং ১৯০৮ খ্লা
ফরস্টার তখন ছিলেন ইতালিতে।
কেনিক্সকেন্দ্রীক ত্তীয় উপন্যাস দি লঙ্ক-

গেষ্ট জারনি' বেরোয় ১৯০৭ খং। ১৯১০
খং চতুর্থ উপন্যাস 'হোভার্ড'স আদ্ভ প্রকাশিত হওয়ার পরও কিন্তু ফরস্টার প্রপ সাহিত্যস্বীকৃতি পান নি। সাধারণ একজন শেখক হিসাবে তথন পর্যাত্ত মিলেছে সমালোচক প্রীকৃতি। ব্যথিত চিত্তে ভার হতাশাকে নিয়ে ফ্রিয়মাণ হয়ে পড়েন ফরস্টার। মহৎ কিছু স্থিটর উদ্দীপনার ছটফট করছেন, অথচ নিজের সামর্থ' সম্পরে একমান্ত নাটক দি হাট অফ বোসনিয়া' বেরোয় ১৯১১ খং।

বিক্ষত শিল্পী ভারতে এলেন ১৯১২ খাঃ। ফিরে গেলেন ১৯১০ খাঃ। শাধা দা চোথ মেলে দেখে গেলেন ভারতকে। তাঁর প্রকৃতি, মানুষ, জীবনধারা এবং প্রাচীন সংস্কৃতিকে মনের মধ্যে একে নিয়ে ফিরে शिक्षित भ्वतिस्था। ১৯২२ ७ २७ थः দ্রখানি ফিচারধমী বই লিখলেন ফারে।স আশ্ভে ফারলিন' এবং 'আলেকজান্দ্রিয়া : এ হিস্টি গাইড'। ভারত থেকে ফেরার পুরে প্রথম বিশ্বযুদ্ধের সময় কিছুকাল ছিলেন কাররোয়। বই দুখানি ভারই ফল-শ্রতি। দেশে ফিরে নিউ স্টেটসম্যান এবং স্পেকটেটারে ফিচার লেখেন। ^{ন্ট্র}ক হের্ডেডর সম্পাদনা করতে থাকেন। গ্রহণ উপন্যাস লেখা রন্স। আনেকে ধারণা করলেন হয়ত আর লিখবেন নাং কিন্তু ফিচার লেখা আর সম্পাদনা **অন্তর থেকে**মেনে নিতে পারেন নি **ফরস্টার। বেদনাহত্ত**অম্তরের ক্ষণিক সাম্প্রনা হিসাবে **গ্রহণ**করেছেন এই সব রচনাকে।

কিন্তু ইতিমধ্যে নিজের অক্ষমতাকে কাটিয়ে, কালজয়ী সৃষ্ণির দিকে বে ভার গোপন পদক্ষেপ ঘটেছে সাধারণ মান্ত্র তার খবর জানত না। **জানতেন করেকজন** বন্ধমোর। অবশা দিবতীয়বার ভারত্যারার সংবাদে অনেকে উৎসাহী হয়ে ওঠেন। ধারণা করলেন, এবার হয়ত এমন কিছ পাওয়া যাবে, যা ফরস্টারকে সাহিত্যে স্থায়ী আসন দেবে। ১৯১৩ খঃ ভারত থেকে ফিরে লিখছিলেন একথানি উপন্যাস। লেখা শেষ করে ১৯২১ খ্যু ভারতে এলেন। অসহযোগ আন্দোলনে এ দেশের মানুতের মুল্লিকামনার উদ্দীপ্তস্বরূপ দেখলেন ফরস্টার। দেশে ফিরে গেলেন। জানাজানি হোল নতুন উপন্যাসের কথা। উদাগ্রীব প্রতীক্ষার পর অবশেষে বেরল 'এ প্যাসেজ ট্র ইন্ডিয়া ১৯২৪ খস্টাকে। ফরন্টার সতিকোর একজন মহৎ ঔপন্যাসিক হিসাবে দ্বীকৃতি পেলেন।

সম্পতি কাঁব জাঁবনাবসান ঘটেছে। এতে সচিতত্য-জগতের ক্ষণি গোড়াও আমরা ভারতবাসীরা হারালাম একজন অকুটির বাধ্বে।

—সাংবাদিক

इंक्र्छं भाषा

रगारममा উপন্যাদের ছদ্মবেশী লেখক

দ্বনামে নয় ছম্মনামে উপন্যাস লিখে ধথেন্ট খ্যাতিমান হয়েছেন এয়ন বাঙালি সাহিত্যিকের সংখ্যা কম নয়। বিদেশে তার নজীর আছে যথেন্ট।

সংক্ষিক 'পেন নেম'-এর কথা বলছি
না। ও ব্যাপারে পাঠকের কোত্তল অপরিসীম। তাঁরা 'পরশ্রাম'ক খোঁল করতে গিরে
চিনে ফেলেন রাজ্পেথর বস্কে। ঐ একই
কারণে, আড়ালে ঘাতে যায় কানিকে' 'যাবনাশ্ব'
স্থাপদশ্লী' 'বিক্লমাদিত্য' 'মাল্লনাথ'-এর।

কিন্তু মাশকিল হয় প্রের নামের বেলা। সহজে তাঁদের আড়াল ভাঙে না। কে আর জিজ্ঞেস করে, নিবারণ চক্রবতাঁর আসল নাম কি,? কখনো কখনো লেখকের ডাকনামটাই জড়িয়ে যায় সাহিতাখাতির সংগা। অনেকেই জানেন না, মানিক বল্যোপাধ্যায় আর নারায়ণ গণেগাপাধ্যারের পিছ্দত্ত নামের হিসিস।

একদিন দেববম্যিও হয়তো দশাই হতো ৷ আসল 77 সাহিত্যের করতো ঐ নামটি। সমতলবাসী বাঙালি পাইকের মনে তিনি সদেহ জাগিয়েছেন, প্রথমত অচলিত একটি নাম গ্রহণ করে, দিবতীয় **জন্য। হয়তো**, ভবিষ্যতে এমন আসবে, যখন তিনি জমবেশে আর তেমন **শ্বচ্ছণদ** যোধ করবেন না, কিংবা পাঠবের ওংস্কাই তাঁকে টেনে নিমে আসবে প্রকাশের আলোয়।

মাসখানেক আগে, তিনি আমাকে জিজেন করেছিলেন ঃ "আমার কি ছন্ম-মামে লেখা উচিত ? নাকি শৃধ্ নিজের নামেই লিখব?"

আমি তাঁর সংশারের সদ্তির দিতে পারি নৈ বোধ হয়। বললাম : "লেখার ধরণধারণ বখন আলাদা, তখন দ্'নামে লিখাতে আপত্তি কি? কালক্টি'তো স্কামে বিখ্যাত হরেও ছম্মনাম ত্যাগ করেনিন।"



न्दनाट्य ७ इन्यमाट्य

অম্তের পাঠক-পাঠিকাবের কাছে তিনি
দ্'নামেই পরিচিত--স্বনামে এবং ছন্মনামে।
অবশা এই নাম-বাবধানের দ্বৈতচারণায় যে
ল্কিয়ে আছেন একই বান্ধি, তা হয়তে।
জানা নেই অনেকের। তিন-তিনটি ধারাবাহিক লেখা ছেপে অম্তই তাঁকে জনপ্রিঃ
করেণ্ড--পাঠক এবং প্রকাশক মহলে।

তিনি বলেন : "ভেবে অবাক হই বই প্রকাশের জনা আমাকে কথনো বেগ পেতে হয় নি। অম্তে যথন 'নীল দরিয়ায়' লিখছিলাম, তখন সাহিত্যিক মনোজ বস্থানিজেই বইটি ছাপার ব্যবস্থা করেন।"

দেবল দেববর্মা নামে তাঁর প্রথম বই 'রাত তখন দশটা।'

এ সম্পর্কে তিনি বলেন ঃ "উপনাসটি ধবন অমতে ধারাবাহিকভাবে বের্ছেল, তথন বাক-সাহিতোর শচীনবাব্ বিশেষ কোত্হল প্রকাশ করেন এবং তিনিই বের করার প্রস্তাব দেন।" ছম্মনামে তাঁর দ্বিতীর উপন্যাস স্কম্ম-কারের ম্থ[া]

জিজ্ঞেস করলাম, আপনার প্রথম উলেখযোগ্য লেখা কোনটি ?

উত্তর দিতে গিয়ে দিবধায় পড়লেন দেবল দেববর্মা। বললেন: সে তো স্বনামে লেখা! সে কথা কি বলা উচিত?

বল্লাম : বল্ন, পাঠকের তা **পানা**

সংকাচ কাটিরে উত্তর দিলেন তিনিঃ কানাই লাটের গলপ।' প্রবাসীতে লিখে প্রেম্কার পেরেছিলাম।

প্রথম প্রকাশিত বই কোনটি?

— 'যাদ কোনোদিন।' সেটিও বেরিকে ছিল প্রবাসীর প্রেলা সংখ্যার 'হে কথ্য বিদায়' নামে। ছোট বই। স্থাদেও পাণ্ডে তার ছিন্দী অনুবাদ করেছেন।

বন্দর মনে পড়ে, অম্তবাজার পৃথিকার তিনি করেকটি গঙ্গ জিখেছিলেন রেক্বীতে। জুবাঙালি পাঠকবের কাচে সন জনপ্রিরক্তা পেরেছেন 'পিনু কর্মাপটিশন' প সিলেকসন' পিনু গুরেচ' লামে ভিনটি কপ লিখে।

জিজেস কর্মলাম, আপুনার জন্যান্য বুইবুলোর নাম কি পঠিকরা লানেন ?

-জানেন বোধহর। আমার শ্বিতীর
ই ইতিহাস কথা কর'-জমগকাহিনীকুলক লেখা। তৃতীর বই 'নাচনহাটির জন
সাবে' -কোনো পহিকার বেরোর্রান, সরারার পাল্ডবিলিপ থেকে ছাপা উপন্যাস।
বাধহর, আমি সাহিত্যিক স্বীকৃতি পাই
এ বইটি লিখে। বিভিন্ন প্রপৃতিকার ভালো
রিভিন্ত বেরিরোজ্ল। আর ভি বনশল বইটির
চিত্রব্য কিনেছেন। হরতো কোন একদিন
্পোলি পর্দার তার চিত্রর্গ দেখা যাবে।

তারপর একট্ থেমে বললেন, হার্ট,
নিমার চতুর্থ বই 'র্প হলো অভিশাপ'
থকে আমি অনেক পালটে গেছি। এর আগে
হলোগন্যাস লিখিনি কখনো। সেই প্রথম
গ্রধ্নাম।

কেন লিখলেন?

্তা মুখাকিল। তবে প্রতাক কারণ
্তাল দ্টো—(১) একটি পরিকার অন্রেথ
(২) প্রকাশকের চাছিদা। আমার প্রকাশক
তখন একটি সিরিক্তে কিছু গোরেশ্দাক
কাইনী (বা ক্রাইম স্টোরি) প্রকাশের কথা
ভাবাত্তলেন। পঞ্চম বই 'নীল দরিয়ায়'—
জলপসা্দের কাহিনী। মণ্ট-সংতম বই তো
জানেনই। ও দ্টো দেবল দেববর্মা ছম্মনামে
লেখা। এ ছাড়া আমার একটি ছোট উপন্যাস
আছে, গ্রন্থাকারে বেরোয় নি. য্ণাম্তরে
বেরিক্তিছিল 'অথৈ জলে মানিক' নামে।

আমি চুপ করে তাঁর কথা শ্নছিলাম।
তিনি ইংরেজীতে লেখা একটি টাইপ করা
পাণ্ডুলিপির পাতা ওন্টাছিলেন। জনৈক
ভদ্রলোক (নামটি মনে পড়ছে না) তাঁর
তৃতীয় উপন্যাস 'নাচনহাটির জনসাহেব'
অনুবাদ করেছেন ইংরেজীতে। বোধহয়
বেরুবে।

जन्धकारतत श्रंथ : कारिनी

আমি তাঁর সংতম বই অন্ধকারের ম্ব'
প্রভিলাম। কাহিনীটি এই রক্ম :

প্রসাশপ্র হাসপাতালের ভান্তার অশ্বর রারের শ্রী নীপা রার, খেতে যেমন স্ফরী, তেমনি অসাধারণ তার শরীরের গঠন। অভিনরের প্রতি আকর্ষণ তার দীর্ঘ-কালের। আগে অভিনয়ও করেছে দ্'একবার। অনেকদিন পর সে ভার্তা হল কলেছে। বাংলার অধ্যাপক নীলাদ্রির সংগ্য তার ভাব ছিল এককালে। নীলাদ্রি নিক্তেও নাটক- প্রেমিক মান্তে। স্কেরতে পোলা ও সেশার
স্থান নীপার সংক্ষা নীলালির আর্থার বোগাবোগা হর সাত-আট্র বহর পর। টাউনা হরে
নাটকের মহলা শ্রুর হল। দীলারি ভার
পরিচালক, নারিকা নীপা রাহ্ম ভার নারক
স্কেশনি চেহারার এক ব্রক—ভার নার
দেবরাজী মিন্তা। চৈতি নামে অনা একটি মেরে
নীপাকে ইবা করে দেবরালের সংগ্যা বেশা।
ভাষ সাব আছে বলো।

যোটামনিট এই কাহিনীর মধ্যে বিশেষ কোনো জটিলতা নেই। হঠাৎ অব্বর রারের বাসার মধ্যরাত্তিত চিন্ধ পড়তে শরুর করে। প্রথমে একটি, তারপরে আরো দুটি। অন্বরের মনে সন্দেহ জাগে। প্রতি মাসেই এ ঘটনা ঘটেওছ। সে প্রিলশকে ব্যাপারটা জানার। এর আগেও নাকি পলাশপুরের একটি বাড়ীতে মাঝে মাঝে এরকম ঢিল পড়তো। শেব পর্যানত চিলা পড়া কাধ হয়, সে বাড়ীর একটি ব্বতী মেরে আত্মহত্যা করার পর। অন্বর রায় নীপাকে সে কথা জানায়। কিন্তু নীপাই বা কি বলবে? সে তো জানে. णिन रक्रांन ? रक्त रक्रांन ? তার নায় বীরেন মোদক। নীপার প্রথম বয়সের প্রণয়ী। একবার নীপা বীরেনের স্থেগ পালিয়ে গিয়েছিল কয়েকদিনের कता। দ্বামী-দ্বীর মতো বসবাসও করেছিল।

ঘটনায় রহস্যের আভাস ঘনীভূত হয় ঐ বীরেন মোদককে নিয়ে। আসলে সে র্যাক্মেলার। প্রতিন সম্পর্কের কথা ফীস করে দেবার ভয় দেখিয়ে সে নীপার কাছ থেকে টাকা আদার করে। আৰু, তাকে
নীপার পেছনে নিয়োগ করে, তারই কাকা
নরেশবাব, বাতে নীপার সংসা অধ্বর
রানের বিবাহবিক্ষেদ হরে যার। কেননা,
বিবাহবিক্ষেদ হরে গেলে নীপা তার পৈতৃক
সম্পত্তির অধিকার হারাবে।

এই জটিলতার মধ্যে বিশাদ হরে দেখা দের ইতিহাসের অধ্যাপক অনিমেষ দত্ত।
আসলে সেও একটি প্রতারক। প্রকৃত নাম স্রেশ্বর নদদী। দুর্ঘটনায় নিহত একজন অধ্যাপকের সাটিফিকেট নিরে সে অন্য একটি কলেজে অধ্যাপনা করতে গিলে ধরা পড়ে যার। নীপার প্রেশ্বর শিরেন মোদক ছিল তার ছাত্র। নীপার স্পেশ্বর মাদককে নদীর ধারে দেখতে পেরে স্রেশ্বর নদদী চমকে ওঠে। ধরা পড়ার আদেকায় সে-ই মর্যাফন ইনজেকশান দিরে নিপাকে হত্যা করে।

এখানেই কাহিনী শেষ। মাঝখানে আছে আরো কিছু সংক্ষিত ঘটনা—
নীলান্তি, দেবরাজের সংগ নীপার করেকটি
ম্থান্ত মাহাতের দৃশা, চৈতি নামে
মেরেটির কাষ্ঠিকলাপের বিবরণ। বাকি
ঘটনা, পা্লিশ ও গোরেশ্যা বিভাগের দাই
বিভাগীয় প্রধান—স্বত ও রাজীবের
অন্সংধানের অল্ডগত।

উপন্যাসের শেষে লেখক রাজীবের মুখ দিয়ে কলেছেনঃ "এই আলোর মুখটাই তে। আমাদের সব পরিচয় নয়।

সদ্য প্রকাশিত :

न्त्रीतकान न्त्र्याभागान-प्रसुद्धत राउहा-- ७.

দুই যুগের দুই চিচতারকার সন্ভোগের জগৎ সুধীবজনের অসাধারণ লিপিকুশলতার
পশ্চ হরে উঠেছে। যৌনক্ষ্ণার দাছে যে মান্য ভয়ঞ্চর নিষ্ঠার হয়ে ও ৯ পরে
সেই এক মান্য মমন্তবাধে কেমন বিচিত্র হয়ে যায়—তারই আশ্চর্য চিচ্ন সন্ভোগের
দাইময় জগৎ থেকে সমবেদনার শাশ্চ, মহিমায় পরিমণ্ডলে উত্তরণের অসামান্য
কাহিনী 'সমুদ্রের হাওয়া।'

ন্তাৰ চলত্ৰ'-জবাব দিহি—৪,

বর্তমান সমাজের উপর দিরে যে সব ভয়াবহ ও বীভংস ঘটনা আর শাপ অগোচরে ভূবে আছে মান্য, তাদেরই কথা নিয়ে এক বিচিত্র উপনাস 'জবারদিহি'। তারাশাকর বন্দোপাধায়—জবল্ব বহুল বহুল—৫।। শভিপদ রাজগ্রে—বাতের পাথিরা—৬্ অচিণ্ডাকুমার সেনগৃংত—আবণ্ড আমির শ্রীগোরাংশ ১ম—৮।। ২য়—৮৷ তয়—৭।।০ ভেল কার্ণেলি—প্রতিপত্তি ও বন্ধুলাভ—৪।।০ শূণিচণ্ডাহীন নভুন জীবন—৫।।০ একালের অভিনয় উপযোগী নাটক

উৎপল দত্ত—ফেরারী ফৌজ ৩, কল্লোল ৩, ধনঞ্জয় বৈরাগী—এক পেয়ালা কফি ২॥০, আর হবে না দেরী ২॥০ দীপক চৌধ্রী—ফরিয়াদ ৩॥০

জরতী চরবতার — রাজসাক্ষী (বদ্দুম্থ)

গ্ৰন্থবিকাশ : ২২ ১১, বিধান সরণী, কলিকাতা- ৬



কৰে ভিতৰে গাত অন্ধবৰ্তে আৰু একটা কুৰু কুৰিকে আছে। সেটি অন্ধবাৰেৰ কুৰা ভাগি ভালো, সেই মুখটা আম্বা লেকে পাইনে। নইলে, হাসিমুখে সকলের সংশ্ব আমরাই কি কথা বলতে পার্তাম?"

क्ष्मक द्यवस्थात मध्या कामान

দেবল দেববর্মা বলেন : আমি 'আ'ধ-কালেন অনুষ' লিখতে শ্রুর করি ১৯৬৯ লালেন অনুলাই মাসে। পরের মাস থেকে আনতে ধারাবাহিক বেরোর।

একট্ব থেমে বললেন: রাত তথন
দেশটা বখন লিখতে শ্রু করি, তখন মনকে
ঠিক করে নিয়েছিলাম, রহস্যকাহিনী লিখব
সিরিরাসলি। আজগুরিব কাহিনী লিখব
না। আমি আগাধা ভিশ্টির বই পড়েছি।
কৈতৃ কখনো বিদেশী কোনো গলেপব
কর্বন্ধ করিনি। রাত তথন
দুমিকার পরিক্ষারভাবে ঘোষণা করেছি,
আমার গলেপ কোনো বিদেশী গলেপর
ভারা পাওয়া যাবে না।

আপনার গলেপর উপজীব্য কি ?

—আমার গলেপর প্রধান উপজীবা হলো সাজিকারের ঘটনাবলী। আমাদের দেশে বে সব খুন হরেছে বা হচ্ছে, যেসব ঘটনা সংবাদপতে কিংবা প্রভাশ জার্ণালে বেরোর, ভাই আমি উপন্যাসাকারে লিখি এবং লিখেছি।

বিবাহেরজন্য বাড়ী ভাড়া বিবাহ উৎসব বা অলপ দিনের জন্য বাড়ী ভাড়া। দেববাব, ৫৫-০৭২২, ৩৫-আর, রাজা নবকৃষ জীট কলি-৫।

১১৭० भारत वाशवात छागा

বে-কোন একটি ফ্লের নাম লিখির। বাপনার ঠিকানাসহ একটি পোণ্টকার্ড বায়াদের কাভে শাসন আগামী বারমাসে



আপনার ভাগোর
বস্তারিত বিবরণ
বামরা আপনাকে
পাঠাইব: ইহাতে
পাইরেম বাবসারে
নাড - লোকসারে
চাকরিতে উন্নতিবিবাহ ও সংখ-

সম্পাদার বিবরণ আর গাতিবে গাড়ী গ্রাহণ প্রকোপ চইনত আত্মবাকার নির্দেশ ৷ একবান প্রকাশ করিলেই হাঝিতে পারিবেন ৷ Pt. DEV DUTT SHASTRI Raj Jyotshi (AWC) P. B. 86 JULLUNDUR CITY

তিনি একটি উদাহরণ দিরে বৃত্তান । বেমন ধর্ন, আমার ছোট উপন্যাস অবৈ জলের মানিক'। তাতে হংগুতা অনেক রং চড়িরেছি। কিব্ছু মূল ঘটনাটি বাস্তব, তা হলো পাটনার। অবলা ঠিক ঘটনামাকিক কোনো কিছুই সাজিরে লেখা যার না।

তা হলে ?

আমি চেণ্টা করি ঘটনাটাকৈ অবিকৃত রেখে তার ওপরে সাহিত্যের রং দিতে। কেন না, আমার উদ্দেশ্য তো কেবল খুনের কাহিনী বর্ণনা করা নয়, বরং সেই ঘটনা ঘটতে হাবার আগে খুনীর মানসিকতা ও অদ্ভদ্যানকৈ পরিক্ষাট করাই হলো আমার কাল।

'অধ্ধকারের মূখ' লিখতে গিয়ে কি আপনি কারো কোনো রকম সাহায্য নিমেছেন ?

—হ্যাঁ, নির্মেছ। আমার এক ডাক্তার
বংধরে কথা মনে পড়ে। সে এখন বাংলাদেশে নেই। আছে মহীশুরে। তার কাছে
খুনেছি, হতাকারী যদি মরফিন দিরে
কাউকে মারে, তাহলে রক্তে তার কোনো
হদিস পাওয়া যাবে না।

আপনি কি এ উপন্যাসে কোনো সামাজিক সমস্যার কথা বলেছেন ?

—বলোছ। একটা নয়, দুটো। তাদের সংগো জড়িয়ে আছে থাচরো আরো অনেক সমসা।

প্রথম সমস্যাটি কি ?

--পুথম সমস্যা হলো, এ উপন্যাসের নায়িকা নীপার মানসিকতা। সে স্করী, র্পসী এবং বহিম খী। সাংসারিক ছেলে খেয়ের জীবনে সে যদি স্থী হতো, ঘটনাস্ত্রোতে মা হতো কিংবা নতুন কোনো তার্বতিত হতো, তা হলে প্রেনো শ্ম.তি এসে তার নতুন সংসারকে ভাসিয়ে দিতে পারতো না। সে একটি পরিবারে একা নিঃসংগ। স্বভাবতই সহস্র স্মৃতি এসে তাকে বারবার আলোড়িত করতে সংসার তার কাছে বাসি না হয়ে গেলে পড়'ত যেতো না হয়তো সে কলেজে টাউন হলের নাটকে অংশগ্রহণ করতো না। নেই। রায়ের দোষ অবশ্য এতে অন্বর পরিবারগর্বাল আগেকার সেই একালবত এখন ভেঙে গেছে। ফলে, বর্তমান জীবনের নিস্তরংগতা থেকে ম্বিত পাওয়ার প্রনো স্মৃতিকে আঁকড়ে ধরত চেয়েছে নীপা। এবং সেখানেই শেষ পর্যন্ত ফিরে যেতে চেয়েছে।

দ্বিতীয় সমসাটি কি ?

--এক কথায় এ প্রশের উত্তর দেওয়া যাবে না। সম্মান, মর্যাদা ও শিক্ষাগত মানের সংগ এ প্রশ্নটি জড়িত। আপনিও হরতো জানেন, জাল সাটিফিকেট নিয়ে দ্'একবার দ্'একজন লোক বিভিন্ন কলেকে অধ্যাপনা করে যথেষ্ট খ্যাতিমান হয়েছেন এবং পরে দৈবদ্ধিপাকে ধরা পড়ে হাজত বাস করতে

বাধা হলেছেনা আমার মনে প্রশন জেগেছে তা হলে শিক্ষার কি কোনা ন্টাম্ডার্ড নেই कालात मार्डिकिक्ट नित्त वनात्म कथा। गर कताण काहरानत कारण त्नात्मत्र हरक भारत নীতির কাছে দোবের নম। এ উপনালের স্কেৰর নক্ষী মৃত জানমেৰ সভেব DIG वशानना इन्धनास्य वाकाणा वाण्डेक् क्य हिन ना। तम हैकि हात्मत्र श्रेथम द्यनी भाउदा हात्मत्र मएडाई जमान स्मयादी जमान स्मानी। भूषः १७ নিভাসিটি তাকে ডিপেলামা দেৱ নি বলে या किस् लामरान । সামाजिक स्वीकृषि পেলে হয়তো স্ব্রেশ্বর নন্দীকে অনিমেব म्ह जाकाछ दाला मा। क्याला, খুন করে নিজের লক্ষা ঢাকবারও প্রয়োজন হতো না তার কোনোদিনই।

বললাম, অর্থাৎ ?
অর্থাৎ, আমি রহসাকাহিনীকে
সোস্যাল প্রোরেম-এর সংশ্য বক্ত করে
দেখতে চাই। সংবাদপদ্রের পাতার নির্মান্ত
চোধ ব্লোলেই ব্রুতে পারবেন, গত করে
কহরে আমাদের দেশে খ্নেযথনের সংখা।
আনক বেড়েছে। ১৯৬২ থেকে ৬৭ সালের
মধ্যে এ ধরণের ঘটনা ঘটেছে সবচেরে
বেশী।

'खाधकारबब माथ'-এव देवीमाणी

বাংলা সাহিত্যের বিশিষ্ট দিকপালদের সংগ হয়তো তাঁর নাম এক নিঃশ্বাসে উচ্চারণ করা যায় না। ্রতিভার প্রকারভেদে তিনি আলাদারকম। কিম্তু পাঠক-স্বীকৃতি পেয়েছেন নিঃসন্দেহে।

ভামতে প্রকাশের সময়, কেউ কেউ ভাভিযোগ করেছিলেন, এতে রহসেরে ভাগ কম, বড্ড বেশী প্রেমের গলপ হয়ে গেছে।

দেবল দেববর্মা বলেন গ্রামিও ভাই
চেয়েছিলাম। মানুবের নে স্বটাই
সাসপেন্স নয়। বহসে ,সেরও একটা
বস্তুভিত্তি অবশাই থাকাব। ভার পালগালীর
আকাশ থোকে উড়ে আসে না। এই প্রিবনী
তেই তাদের বসং স। ঘটনাক্তমে ভারা ক্রমশা
অস্বাভাবিক হয়ে ওঠে। সেই জনোই প্রভোধ
কেথকেরই সেন্স অব প্রোবেবিলিটি থাক
দ্বকাব।

জিজেস করলাম : কি রক্ম ?

—আমাদের দেশে রহস্যগল্প বলতে বোঝানো হয়, ব্যাৎক ডাকাতি, টাকা ছিনতাই দুত্পাপা হীরেজহরতের নির্দেদশ কাহিনী কিম্তু বাস্তব জাবিনে এমন ঘটনা আর ঘ करें।? पीर्यकाल शास्त्रनाकारिनी 200 পড়ে আমাদের একটা ধারণা তৈরী 57 গেছে। বইয়ের শ্রেতেই থাকে রহস্যের আভাস, সব সময় চমকের যেন চার্রাদকে খ্নীর পেছনে ঘ্রে বেড়াট প্রতিশ আর গোরেন্দাদের চোখ। আ সেই ধারণাটা ভেঙে দিতে চাই। সেজনে আমার নায়ক-নায়িকারা স্বাভাবিক। 'আস কারের ম্থ'এ অলোকিকভার আভাস বং সম্ভব কম, সমাণ্ডিতেও নেই র্পকর পরিণতি।

-Brain



(58)

বধম মদ খুলিতে উবাদ বর না তথম
ভাকে আম্। আর বধম উজামে মন নদীর
মতো মাতাল তখম ডাকে, আম্ বেগম। পেট
প্রে থেতে পারলে ডাকে, বেগমসাহেবা।
ফেল্ বেগমসাহেবার জন্য পাগল, আর
পাগল এই মাইজলা বিবির দুই স্ক্রাটনা
চেথের জন্য। ঘাট থেকে তাড়িরে দেবার পর
এই অন্বথের ঝোপ ওর মতো নিরালন্দ মান্বের সামান্য আপ্রর। সে খোপের ভিতর
একটা মরা গো-সাপের মতো সেই থেকে
পড়ে আক্রে—মাইজলা বিবি এ-পথে এখনও
ঘাটে এসে নামাছ না।

এখন দীতের দিন। জাম থেকে সব
কলল উঠে গেল বলে মাঠ ফাঁকা। কেবল
নরেম দাস অথবা মান্ধ-বাড়ির শ্রীশচন্দ্র
প্রভাগ চন্দ কামলা দিরে নিছু জামিতে
তামাকের চাৰ করছে। মার সব উর্বরা
জামি থাকলে সেখানে শোরাজ রস্ন এবং
চিমাবাদানের গাছ দেখা বাছে। এই পথে
কেন্দ্র বড় এখন আসবে না। এলেও ঝোপের
ভিতর যে একটা মান্ধ শিকারি বেড়ালের
মত ওং পেতে আছে টের পাবে না।
জালালির শরীরটা এখন মাঠের শেবে
অদৃশ্য হরে গেছে। প্রের বাড়ির মালতী
গর্ম নিরে একেছে গোপাটে। সে গোপাটে
গর্ম খেটা প্রেড চলে বাছে।

সন্ধনারদের হাট পারে তেমনি হাক নালছে, টোল বালছে। মাঠে মাঠে বাস্ত্-প্রার নিশান উড়ছে। ঠাকুরবাড়ি, পাল-বাড়ি এবং বিশ্বাসপাড়া বোদকে তাকানো রাজিল সব দিকে সেই ঢাক-ঢোলের বাজনা আর মের অথবা মোবের আর্ডডাক। মোর বলির সমন হলে সরকারদের পণ্ডাশ্জন ডাকী একসংশ্য ছররা ছোটবে। সে এবার একট্ কাত হরে গলাটা কছপের মতো যেন বাড়িরে দিল। মনে হল মাইজলা বিবির মূখ শরীর ঝোপের অন্য পাশে—ঠিক ঘাটের পথে নেমে আসতে ভেসে উঠেও উঠল না। মরীচিকার মতো ঝিলিমিলি করছে শৃধ্য। আহা ভেতরটা কেমন করছিল ফেলুর।

তথন হাইজাদির সরকারের। করজােড়ে গামছা গলায় দাঁড়িরে আছে। মেবের চামড়া এবং মাংস নিতে বারা দাঁতলকার পার থেকে এসাছল, তারা ঘাটের অনা পাড়ে দাঁড়িরে। মাঠে মাঠে উৎসব আর ঝােশের ভিতর ফেল্। সে মাইললা বিবির মরীচিকা দেখার জনা খােশের ভিতর কছ্পের মতে। গলা ভূলে রাথল।

মালতী গোপাটে গরুর থোঁটা পাঁতে জড়াতাড়ি শোভা আবুকে নিয়ে ঠাকুর-ব্যান্তর ঘাটে ম্নান করতে চলে গেল। বাস্ত্-প্জা বলে স্কাল স্কাল আভারাণী স্নান করেছে। মাঠে অম্ল্যু কলাগাছ প'্তে এসেছে এবং দূর্বাঘাস চৈচি চারিদিকটা পরিচ্ছার করে শ্বকনো আমের ডাল, বেল-পাতা সব পেড়ে এনে ব্যরকোষে রেখে দিরেছে। গোটা তিনেক জমি পার **হলে** ঠাকুরবাড়ির ভিটা জাম। সেথানে বড়-বো धनरवो भकान भकान स्नान करत हरन এসেছে। সোনা, ঠাকুরঘর থেকে কাঁসি নির্দে ছটেছে। সেনা, কাঁসিটা জোরে জোরে বার্জাচ্ছল। পুরুরের জলে কচুরি পানা, কলমিলতা এবং শীতের সময় বলে গাছে কোন ফল নেই, ফাল বলতে কিছা শাতির ফুলে, ফুমেকো লতা, শেষত জবা, রাঙা জবা। বাস্তৃপ্জায় রাঙাজবা দিতে নেই। শেবত-জন্ম কে ভোর না হতেই গাছ থেকে চুরি করে নিমে গেছে। বড়-বৌ সাঞ্চিতে সামান্য ফ্ল সংগ্রহ করতে পেরেছেম। খুলে পেতে
কিছ্ দেবত জবা, কিছ্ অতসী ফ্ল আর ব্যাকো লতা। বেলফ্ল কিছ্ আছে। শীতের জনা ফ্লগ্লি তেমন ফোটে না ভাল, ফ্লগ্লি কুকড়ে আছে—অসমরের ফ্ল বড় হতে চার না।

তখন জালালি সমস্ত গরীব মান্যবের সপো সেই বড় বিলে. বিলে—এ-পারে দাঁড়ালে যার ওপার সেখা যার না, যে বিলে ভিন্ন ভিন্ন সৰ কিংবদন্তী ররেছে, বিলের চারপালে নল থাগড়ার বন. मारक मारक উত্ छाछा, आवात मृनम्म अक्द নিয়ে গভীর জল, কালো জল বড় গভীয়---সেখানে মান্য যেতে নৌকা ৰাইতে ভন্ন. তেমন বিলে নেমে যাচ্ছে জালালি। **জলের** ভিত্র কি এক দৈতা থাকে বৃধি, কিং-বদশ্তীর দৈত্য। ওর শেট**িশঠ** জোপেনা রাতে ময়্রপণ্থী নৌকার মতো। যেন এক জলে ভাসে, জ**লে ভেনে নৌৰু** যায়, ময়্রপংখী ভে**দে যায় ভারপর** মানাবের সাড়া পেলে টাপ করে: **জলো** নিচে ভূবে যায়--হার, মান্তবের অপব্য ব্লিখ। অজ্ঞ মান্ত্রের বিশ্বাস, সংস্টেক্তি ঘটনার মতো ঘটনা মেই। দু**ণ্রে**ু**রাতে** চরাচরে যথন মান্ত্র **জেগে থাকে ন্য**ূর**থন** সারা বিশুটা পাঁচ দশ জ্বোশ জুক্তে জনের ভিতর ভূবে থাকে, বখন জ্যোৎস্মায় ফস্লের মাঠ ভরে থাকে তথন **কলে এক মন্রপণ্থী** নাও ভাসে—ভিতরে রাজকন্যা **এক**ে **চা**প বেনের প্রবধ্ হবে হরতো, বেহুলা-লক্ষ্মীন্দরের পাঁচালি মান্যবের বিহন্দতা জাগায়।

নেক। বিলের জলে তেলে **উচনে** আলোতে আলোমর। বেন্ মাঝ বিলে আগ্নে ধরে গেছে। তেলা বিলে

নেই

917

into

YCE

Ö

tte

ीं द

বাবার আগে আলালি জনটা প্রথম মাজার দিল, পরে মুখে জল দিল, তারপর গোস্যাপের মতো জলে ভেলে লেল। শীত কম্কন্ করছে কিন্তু পেটের জনালা কড়
জনালা, জনালা নিবারণ হর না জলে। কবে
আবেদালি গেছে, মাস পার হরে বাবে প্রার,
মুরে এল না এখনও। এলে দু-চার হুশ্ভা
পেট পুরে খাওমা। তারপর ফের উপোস।
জালালি জলে ভাসতে থাকল। ফ্ং করে
জল মুখে নিরে হাওয়ার ভিতর জল ছাুড়ে
দিতে থাকল।

সব মান্ব সাঁতার কেটে বেখানে শাপলা শাল্যকের পাতা ভেসে সেদিকটার চলে বেতে থাকল ক্রমণ। বড় শালুকের জন্য সকলের লোভ বেশী। এ-ज्ञाल कि जारह, कि स्मेरे, क्लिंड क्र क्लास्म না। বরং কি নেই, কি থাকতে না পারে এই বিস্ময়। সেই এক সালে হাজার হাজার মান্ব প্রীপ্জার মেলা থেকে ফিরে আসার সময় দেখেছিল—বিলেগ ঠিক মাঝ-খানে কালো রঙের এক মঠ ভেনে উঠেছে। **छेऽदेख** ভেসে উঠতে किह, উপরে त्यस গুল ৷ ভারপর নিচেনেমে অদুশ্য হরে শেল। প্রায় শ্বনের মতো ব্যাপারটা। বারা দেখেছে, ভারা মন্তের মতো বিশ্বাস করেছে, হারা দেখেনি তারা আজগারি গলপ মনে করেছে। আর যাদের অলোকিক ঘটনার আছে তারা খবরটাকে নিয়ে নতুন किश-বদশ্ভী সৃষ্টি করেঞ্ছ। মনে হয় বৃষ্টি ঈশার্থা সোনাই বিবিকে নিরে এ-বিলে ল্বিকের রয়েছে। সেই লাহাজের भरातभाषीत हारमत मौफ कारमा রভের মঠের মতো জলের উপর ভেসে ওঠে মাঝে মাঝে। শ্ব: একট্লেখিয়েই যেন ডব मात्र। रवन वरम, मार्ट्या मार्ट्या আমি এখনও বুড়ো বরসৈ সোনাইরে নিরে স্থে আছি বিলের ভিতর। তোমরা আমার অনিষ্ট করলে, আমিও ভোমাদের আনিষ্ট করব। সেই ভয়ে ভরা ভাদরে সোজা বিলের মাঝে কেউ নোকা ছাডে না। এ-বিদ্যু বড ভনত্বর। বিলের ভল নেই, জলের নিচে মাটি নেই। শংধ্ যেন অন্ধকার আর প্রাচীন সব লতাগ্লম নিয়ে চুপচাপ জলের ভিতর ভূবে আছে। ভয়ে এ বিলে কেউ নৌকায় বাদাম দের লা। বড় নিভূতে যেতে হর, বেন ইশার্থার কাল খ্রম ভেডে না বার।

অগুলের মানবেরা এ-বিলকে দানবের মতো ভর পার। ঈশম বে ঈশম সে প্রশ্ত এ-বিলের পাড়ে এসে পথ হারিরে ফেলে-ছিল। কি এক জীন পরী পিছু লেলে ওকে রাতের বেলার অজ্ঞান করে দিরেছিল। সেই কিলে গরীব দুংখী মান্বেরা পেটের জনজা

्रात्रिक सर्वामा युप् पर्वामा, सर्वामा মরে না জলে। জলের ভিতর ভেলে - ছিল कार्गामि, तक करन ज्वाम रगरमेर रगरमेर जन्म निराद्रभ হব । किन्छ हात ভিতর, কাদার ভিতর কোথাও শাসকের গন্ধ নেই। রোজ রোজ তুলে নিরে গেলে কি আর খাকে! কিছু মরা সাপলা পাতা সামধ্যের জলে উল্টে আছে। শীতের रिस्टेंग শাপনা ক্ল আর কোটে না। শাপনা কটেন कारना कारना कम इस्तरह। स्न म्ट्रिंग कम সতিরতে সতিরাতে সংগ্রহ করে। ফেলল। এবং জলের ভিতরই জালালি ভাসতে ভা**নতে খেতে গাকল। ভিতরে এক ধরনে**র কালো কালো বাচি, এক ধরনের সৌদা সৌণা পৃষ্ধ, স্বাদ বলতে মার মার কিছ, না, খেতে হয় বলে খাওয়া। পেটের ভেতর कराना शाकरन कि स्थर जा जय याहः লাল আলুরে মডো লেখ করে খেডে হয় শালকের ভিতরটা। একট্ ন্ন मिट्डा, কোন কোন সময় তেতিলের অল্প त्यामा যেবল দিলে প্রায় অন্যতের মতো न्दाम् । লোভে সাঁভার দিভে থাকল, জালালি। সামনে দুটো শাল্ফ পাডা জনের ভিতর ভূবে আছে। লভা দুটোধরার জন্য সে জলের ভিতর ডুব দিল। জলের নিচে নেমে গোল। অনেক নিচে, লতা ধরে ধরে.¹আল-গোছে তা ধরে ধরে—জোরে টান লতাটা ছি'ড়ে বাবে, লতা ছি'ড়ে (1)(0) সৰ গেল, যাদরে হরে নেমে যাবার সিডিটা ভূলে নেবার মডো হবে। সভেরাং সন্তপ্রি জলে ভূবে বাবার জন্য, অন্ধকার মাটিতে হাতড়ে বেড়ানোর জন্য ভুব্যবির মতো বৃড়বৃড়ি তুলে প্রার হারিরে। গেল। জলের নিচে বড় ভর। ভরে চোখ খুলছে না **जानानि। काथ थ्नरनरे मत्र इत** कान যাদ,করের रमर्टम ं সে গেণছৈ গোৰে ৷ জলের নিচে জলজ খাসেরা তাকে নেচে নেচে ভর দেখায়। নীল অথবা সব্ভে মনে হতে হতে একটা কালো কুংসিত অন্ধকার চারণালে তেকে কেলে। সে এক ^ভবাসে জলের নিচে ভূবে নিমেবে জল কেটে উপরে ভেলে উঠল। তারপর, কত দীর্ঘকাল পর আকাশ মাটি এবং সূৰ্য *দেখতে* পেরেছে এমন নিশ্চিকত খ্বাস নেবার সময় মুখটা খুশীতে উল্লেখন হয়ে **উঠছে**— সোলার চেরেও দামী একটা বড় শাল্ফ ওর शास्त्र ।

পাতিলটা চেউ খেরে খেরে একট্ দ্রে সরে গেছে। সে পাতিলটাকে টেনে এনে লাল্টের লেকড়গর্লি প্রথম কারড়ে ছিড়ে দেখল শালকেটা বত বড় ভেবেছিল —টিক তত বড় নর। লাল্টেটা বোধ হর রক্ত শাললার। গোঁত শাললার শালকে কেশ মিন্টি। সালা শাললার শালকে কর্ম কেশি। মত লাপেলার পালুকে অলপ তিতাকাৰ বাকে। তবু পালুকটাকে পরিচ্ছার করে বুৰ বাক্তরে সলে পাতিলের ভিতর রেখে পাড়ের দিকে ভাকাল। কেউ আর পাড়ে পাঁড়িকে দেই। যে বার মতো পালুকের খোঁকে কলে তেনে মুক্তে চলে বাকে। আবেদালি আনে দা, কতকাল আনে না, সেই যে কবে গর্মণা দৌরার মাঝি হরে চলে গেল—আর আনে না, কবে আনে না, সে বাবুর হাটে তাঁতের কাল নিরে ভালে গেছে। জোটন এলেছিল একটা মুর্রিগিটা উড়াল দিকে সেই বে হাজি-সাহেবের বাড়িতে চলে গেল, আর এল নাও হালি সাহেবের হোটবিবি কোভল করে ফেলল মুর্রিগির পলাটা।

বিলের জলে দঃখী মান্বেরা শাল্কের থেতিক ভেলে বেড়াজিকে। চার পাশের প্রাম থেকে দৃঃখী ফান্যেরা হে'টে এসে নেমে গোল জলে। বেলা বেলিতে সকলে ছেড়ে উঠে বাবে। এই শীতের শেবে আর যখন শালকে থাকবেনা, সখন জলের উপর পার কোন শাল ক পাতা ভাসবেনা এই বিলের জল শাস্ত নিরিবিলি, তথ্য ঝোপে জপ্পধে অথবা জলের উপর বালি-হাঁস ভাসবে। নানা রকমের পাখি, **লাল**-নীল পালকের পাথি, জলপিণি ভিন্ন ভিন্ন সৰ বক। ছোট বড় চকা**চকি**ডে প্রার বিলটা ছেরে যাবে। তখন মড়োপাড়ার জমিদার বাব্দের ছেলেরা হাতিতে আসবেন, তাঁব, ফেলবেন বিলের এবং ভোৱে অথবা জ্যোৎস্নায় পাথি শিকার করে তাঁব্তে পাখির মাংস, ওরা **পীতের** শেষে মাসাগিক কাল পাথির হাংগ্র ব্রন-মহোৎসব চালাবে।

প্রবিদ্যকালটাই জালালির বড় দুঃসমর। প্রার মাটিতে পেট দিয়ে পড়ে থাকতে হয়। বৰ্ষা এলে ধানের জমিতে পাটের জমিতে व्यातनामित्र कास्त्रज्ञ व्यन्त थात्कना। वर्षा শেব হলে, জল কমতে থাকলে, শাপলা ফুল ফটেতে থাকলে মাটির নিচে অতার মডো প্রির এই শালকে, দঃখী মান্বদের, নিরুল মান্বদের একমাচ সম্বল এই শালুকে, বর্ষা এলেই মাটির ভিতর জন্ম নিতে থাকে। এই ৰুলা ক্ষমি আর মাটির অস্তরে শালুক व्याभनात चित्र धन—रक्न रक्कारङ নেই, অবকা করতে নেই। বনে থাকলে তেবে বেড়ালে প্রে:। জালালি পাতিলটার সব্দে সব্দে ভেসে বেড়াতে থাকল! ভুব দিলে তথম অন্য কেউ হাত বাডিরে প্রতিস বেকে শালুক ভুলে নিতে পারে।

সামনে শ্বে জল, প্রার অনন্ড জল-টাশি। শালুজের লোভে সে খুন কৈন জলে এসৈছেও বোধ হয়

থর পর আর শালকে নেই। नित्व भाषपात्मद्र करा वी नित्क न्यांक्रिक क्या। नामरानत करन कि राम नद रकरन द्रविकारक। कि एटन जान-नक शकान नाम ছবে হর তো। বড়-বড় মাছ, থানের মজো ক্ষাবা গ্ৰার মাহঃ কালো কুচকুচে, মাধার बद्ध काम जिभाग लामा बक्ष, भारत ক্ষমণার সাপের মতো চরা ওর ভর লাগছিল। তব্মনে হয়, ভরে হোক বিক্ষারে হোক কেউ এতদরে আনে নি। কেউ আসে নি বলেই বোধ হয় কিছু ইতদতত শাল্ক এখনও পড়ে আছে। সে ভর থেকে রেহাই পাবার জন্য চোখ बद्भाव करनत नित्र पुर पिन। किन्छु निरह মনে হল, চোথ থলেতেই মনে হল-বড় একটা গজার মাছ ওর দিকে তাকিরে আছে। লেজ নাড়ছে। স্থির। গ**জার মাহটা** জালালিকে দেখছে। জলের নিচে আজব একটা জীব, বোধ হয় মন্ব্য কুলের কেউ হবে-প্রায় ব্যাঙের মতো নিচে নেমে আসছে। প্রাচীন সব জলজ খাস এবং প্রক্ষেলতা—লতার ভিতর মাছটা মূখ বার करत रत्ररथरह। कामानि काथ ध्रनतिर শ্বধ্ মাছটার মৃথ দেখতে পাছে। কালো ভর•কর মূখ একবার হাঁ করছে, আবার জল গিলে মুখ বন্ধ করছে। জালালিকে মাছটা এতটাকু ভয় পাছে না। বরং जानानिकटे छत्र भारेता नित्ज्।

হায়, পেটের জনালা বড় জনালা, জনালা সহে না প্রাণে। ভরে বিক্সরে জালালি জলের নিচে এতটাকু হয়ে আছে। তব লোভ সামলাতে পারল না জালালি। আর একট্ব নিচে গেলেই মাটিতে হাত লেগে ষাবে এবং শাল কটা আয়ত্তে চলে আসবে। দমে আসছিল না। সে তাড়াতাড়ি শ্বাস न्यात क्रमा जम करते प्लिम छेठेम। मम নিল, একটা সময় ডেসে থেকে বিভাষ নিল। ফের ডুবে জলের নিচে চলে কে**ডে** থাকলে দেখতে পেল, সব্ৰে এক দেশ, নীল কলের গালিচা পাতা। অন্ধকার, *ক*মে অস্থকার ঘন হয়ে আসছে। তারপরই লতার গোড়ায় ঠিক মাটিতে ষেখানে শাপলা পাতার লতা এসে থেমে গেছে হাতটা ঠেকে গেল। অন্ধকারেও টের পাচ্ছিল জালালি মাছটা মুখ হাঁ করে এগিয়ে আসছে। অতিকায় মাছ। তবু একটা মাছ, সে **বড** ষ্মতিকায় হোক, বড় হোক, সে মাছ। একটা মাছ, সামান্য মাছ, তুমি মাছ যত বড়ই হও-আমি মন্ব্যক্লে জন্মে তোমাকে ভয় পাব! বোধ হয় সে এমন কিছ্ ভাবতে-ভাৰতে শাল্পকের গোড়া চেপে ধরল। তারপরও সে দেখল মাছটা সব্জে রঙের ঘাসের ভিতর মুখটা নাড়ছে। থ্ব সভপণে মাড়াহ আর জালালিকে দেখছে। জালালির শাল্কটা হাতে পেরে সাহস বেড়ে গোল ! লে অংশেশ করল না। লে আর একট্ বিটিয়ে গেলি। মাষ্ট্য এবরে পিছু হটে বিটছে। লে এবার আর পেরী করল না। বিখন মাষ্ট্য ভয় পেরে বাছে তথন আর ভূবে থেকে কি ইবে। লে ফোন করে জল কোটা শুনুকের মত পিঠ ভাসিরে দিল।

रमरे करव अकवात कामानि करनत निक्क शीन इति करत भना हिट्न धरतेष्टिन, কবে একবার মালতীর পরেবে যাঁসটাকে কড়ের कारक न्यूफ़िटन ननम मारन धरर ठेगा ह চিবিয়ে আলোর দুনিয়া বড় স্কুথের ছেবে বড় একটা ঢেকুর তুর্লোছল-এখন শ্ধ্ তার কথা মনে আসছে। সেই মৃত হাসটার মতো মাছ, মাছটার চোখ সারাকণ জলের নিচে স্থির হয়ে ছিল। যেন এক বড় অঞ্জার সাপ ওকে গিলতে আসছে এমন মুদ্রে হল। কিন্তু সাপ হলে সব জায়গাটা এতক্ষণে স্থাবনের মত তোলপাড় হতে আরম্ভ করত। এত দিথর থাকত না। সে এটাকে মনের ভর ভাবল। জলের নিচে চোথ খুললেই মনে হয় সব বিচিত্ত গাছ-গাছালি যেন প্রাণ পেরে তার দিকে থেরে আসছে। সে সহজে সেজনো চোথ খ্লতে চায় না।

সব্জ রঙের কদম ফ্লের মতো ঘাসের অন্ধকারে জালালি ব্রুতে পারে নি কি ভার দিকে এগিয়ে আসছে। সে বেশ সূথে একটার পর একটা ডুব দিয়ে গভীর জলের ভিতর চলে যেতে থাকল। ঠিক ভূব্রীর মতো জলের নিচে ভূবে যাকে, জলের উপর ভেসে উঠছে। তেমন অসংখ্য মাদ্ৰে এখন পাড়ে দাঁড়ালে দেখা যাবে, জলের ভিতর তারা ডুবে যাছে, জলের উপর ভেসে উঠছে। কখনও শাল্ক পাচ্ছে, কখনও পাচ্ছে না। আর ঠিক কখন পাবে কেউ বলতে পারছে না। সব শাপলা লতার लाए। मान्क थारक ना। फरन मन्हो বিলের জলে ছড়িয়ে পড়ছিল। সূর্য উপরে উঠে গেছে। দুরে চোখ মেলে তাকালে. **শ্**ধ্ গভীর জল—শাশ্ত এবং কালো। সেথানে এক শীত্র ঠাণ্ডা খর রয়েছে যেন। ও-পার দেখা যাতেছ না। অননত জলরাখি কত প্রাচীন কাল থেকে ভিন্ন-ভিন্ন কিংকদিত নিয়ে বিলের ভিতর ভেসে হৈছে। শীডের সমর জলের আরো কালো হয়ে ওঠে। শীভের সময় চারপালের নল-খাগড়ার ঝোপ খেকে পাখিরা অন্যন্ত উড়ে যার এবং ঝোপের ভিতর যেখানে জল থেকে জমি ভেলে উঠেছে দেখানে বিষাপ্ত সাপেরা গতেরি ছিত্র মরার মতো শীতের ঠা-ভার **পড়ে** शारक। श्रीष्यप्र करा, वर्षात करा उराव প্রতীকা। বর্ষা জলে পড়**লেই অথবা** বস্তকালে যথন সূর্য মাথার উপর কিরণ ের তথন বিষার সাপ সব মাঠ থেকে জলে নেমে বার। জলের উপর ভেসে বেড়ার। দ্জের গজারী বন থেকে তখন কিছা মনাল সাপ পর্যাত এই জলে নেমে আলে। জালালি জলের ভিতর দেখছিল লাল চোৰ দ্বটো ওর দিকে সারাক্ষণ তাকিয়ে **থাকছে।** কিছুই স্পত্ট নয়। কারণ অন্ধ**কার বড়** প্রকট**্রালের** গভীরে। নীল অথবা স্**ব্**রহ রঙের ঝোপের ভিতর যদি আরও দুটো শাল্ক খাঁজে পাওয়া বায় - প্রলোভনে জালালি একটা পাতি হাঁস হয়ে গেল আর জলের ভিতর ভূবে-ভূবে লাল চোখ দুটোকে भद्रण रथला एरशास्त्र थाकल।

তখনও ফেল; ঝোপের ভিতর শুরুর আছে। নেমে আসছে, আসছে না। এলেই খপ করে ধরে ঝোপের ভিতর টেনে নেবে। কামরাপা গাছের ছায়ায় বিবির শরীর দেখা যাচ্ছে, যাচ্ছে না। এদিকে রোদ **মাথার** ওপর উঠে এল। অথচ বিবির মূ**খ দেখা** গেল না, অংগ দেখা গেল না। মাঠের ভিতর বাস্তু প্জার ঢাক-ঢোলের বাজনা কথন থেমে গেছে। পর্কুর পাড়ে বড়বৌ। সোনা মাঠের উপর দাড়িয়ে কথা নেই বার্ড**ে নেই** কাঁসি বাজাচ্ছে—টাাং টাাং! প্জা পাৰ্বন শেষ। এখন সব তিল তুলসী, **বারকোষ, নৈ**বেদ্য এবং তিলা কদমা আ**র অন্যান্য** ভোজদূব্য বাড়ি নিয়ে যাওয়া। বড় **লালা** পাথরে পায়েস—ধনবো সাদা পাথরে পা**রেস** আর নারকেল নিয়ে যাচ্ছে রঞ্জিত। **মাঠের** ভিতরই প্রসাদ বিতরণ হচ্ছে। গ্রামের **যুবা** প্রেবেরা, বৃশ্ধ, বৃশ্ধারা প্রসাদ নিয়ে **চলে**



মাছে। তারপর হ্যাক্তাকের আলো জননৈবে রাতে। সরকাররা পর্কুরের পাড়ে চার পাঁচটা **হ্যা^{জা}ক জ**নলাবে। পথের উপর ডে-লাইট জনলবে। তখন মাঠে-মাঠে আরও সব **হ্যাশীকের আলো**, আলোতে এই মাঠ এবং **প্রাম সকল** এক সময়, মাত্র এক রাতির জান্য ভূবে থাকবে। আর ভেড়ার মাংস এবং আতেপ চাউলের সংগণ্ধ মাঠময় কী যে **গম্ম ছ**ড়াবে। ফেল্র জিভে জল এদে **গেল। রঞ্জিত এখন অন্য জ্মিতে মালতীকে** দেখছে। মালতী বড় বাস্ত। সে কিছ্ লোককে বাসয়ে খিচুড়ি পায়েস খাওয়াটেই। শীতের রোদে বেশ : আমে*জ* - আসহিল। উত্তরের ঠান্ডা হাওয়ায় বেশ শতি-প্রাতি ভাব। সকলে পেট প**ুরে খেরে রৌ**ট্রের ভিতর ঘাসের উপর যেন প্রায় গড়াগড়ি मिटक ।

আর সোনা তথন কীসি ফেলে লোপাট ধরে ছাটছে। ফতিমা 🐉।পাটে ছাগল দিতে এসে ইশারাতে সোনাকে ভাকল। যেন ফতিমা শীতের ঠাণ্ডার একটা কচ্ছপ আবিশ্বার করে ফেলে**ছে**। **ক্ষ্পেটাকে ধরার জন্য সে সোনাকে ডাকছে।** এখন শতিকালে শীতের জনা কচ্চপেরা বৈশিক্ষণ জলে থাকতে পারে না। পাড়ে **উঠে রোদ পোহায়।** অথবা জমির ভিতর कष्ट्रा न्किस्त थारक। लाज्यालत कारन মাটির ভিতর থেকে কচ্ছপ উঠে আসতে পারে। কিন্তু ফতিমা সোনাকে সে-সবের কিছ্ই দেখাল না। অশ্বত্থ গাছটার নিচে সোনাকে টেনে নিয়ে গেল। ঝোপের ভিতর কি আছে দ্যাখেন। বলে ফতিমা চুপি **দিল। বুঝি মান্য হবে, পাগল ঠাকুর হবে। ছতিমা অন্তত তাই ভেবেছিল। সোনাবাব,র** পাগল জ্যাঠামশাই যিনি রাতে-বিরাতে, কোন্দিন খাব ভোরবেলা উঠে মাঠ পার **হয়ে, সো**নাল বালির নদী পার হয়ে निর্দেদশে চলে যান, সেই মান্ষই হয়তো আজা বেশী দ্র না গিয়ে এই অশ্বত্থের নিচে মটকিলা ঝোপের ভিতর শ্রয়ে-শ্রে পাখির সংখ্য গল্প করছেন। ছোট মেয়ে **ফতিয়া, সাম্রে একমাত মেয়ে ফতিয়া জানে** লা- এই মান্য পাগল মান্য নয়, এ-অন্য मान्य रक्ल, रमथ। रक्ल, रमथ এथन छ চুপচাপ সেই পরানের চেয়ে প্রিয়, মরণে ভোলা দায়—সেই এক বার সম্তি পরমাশ্চর্য যুবভীকে খপ করে ঝোপের ভিতর টেনে নেবার জনা আত্মগোপন করে व्यादह ।

সোনা ঝোপের ভিতর উকি দিরে
ভাকস, জাঠামশ্র। কারণ যথন সব দেখা
যাচ্ছে তথন পাগল মানুর বাতীত আর
কে হবে! এই অগুলো তিনিই ত একমার্ট
মানুব যাঁর কাছে এই মাঠ, গাছ-গাছালি
এবং প্রবের দিনে উৎসব স্ব স্মান।

ফেল্ এত নিবিন্ট বে কতক্ষণ খেকে অপেকা করছে থেয়াল নেই। কার বেন গলা, কে যেন ঝোপে উকি দিরে পিছনে ডাকছে। হাত পিঠ মুখ ফেল্র দেখা মাজেনা। ঘন ঝোপের বাইরে শুধু পা দুটো দুশামান, এই পা দেখে ধনকভার ছোট পোলা টের পেরেছে মানুষ আছে ঝোপের ভিতর। ওরা এখন হামাগ্ডি দিরে চ্যুকছে। আগে সোনা পিছনে ফতিমা। সে তাড়াভাড়ি ধড়-ফড় করে উঠে গেল। ঝোপ থেকে পাগলের মতো ছুটে বের হরে যাবে ভাবল, কিল্ছু তাড়াভাড়ি করলে ধরা পড়ে যাবে, সে কি বেন হাতড়াতে থাকল। ওর কি যেন হারিরে গেছে।

সোনা এবং ফতিমা ব্রুতেই পারে নি, এমন একটা দীরস মান্য ঝোপের ভিতর ল্কিয়ে থাকতে পারে। সোনা বলল, আপনে!

ফেলার কি হারিয়ে গেছে এমন চোখে-ম্থে। সে বলল ঝোপের ভিতর শিক্ড-বাক্ড় খ্রেতাছি।

—কি হইব?

—হাতটা জোড়া লাগব।

সোনা বলল, পাইলেন নি?

--নারে কর্ডণ পাইলাম না। কৈয়ে স্ব म, कारेशा थारक, तरल रकन, कंडियात पिरक কটমট করে তাকাল। ঝোপের ভিতর ফতিমা এবং সোনা। ফেল্ব্লানাবাব্কে কিছ্ুবলল দা। শহুধ্ ফতিমার দিকে তাকিয়ে মনে-মনে গছরাতে থাকল, শাম, মাইয়াটারে বড আসকারা দায়ে। মাইয়:-টারে ইংরাজী শিখায়। এত অধর্ম ভাল নয় মনে হল ফেল্র। আর সংগ্র-সংগ্র পাগল ঠাকুরের মুখ ভেসে ওঠে, মুখ ভেসে উঠলেই ভিতরের সেই অধন্মটা জেগে ওঠে। হাতের দিকে তাকালে দঃখের সীমা থাকে না।ফেল**ুর প্রতিপত্তিকমে যাচেছ।সেই** যে বিবি আল্ল; সে পর্যন্ত তেলের নাম করে হাজি সাহেবের ছোট বিবির কাছে চলে গেল। ছোট বিবির কাছে গেল কি ছোট সাহেবের কাছে গেল কে জানে! এখনও সে ফিরছে না। ফেল; তাই ভাবল, একট্ তাড়াতাড়ি করা যাক। বিবির কথা মদে হতেই সে পা চালিয়ে হ**টিল। তা**ড়াতাড়ি করতে গেলে বড় বাগের ভিতর দিয়ে সোঞ্চা উঠে যেতে হয়। পথ নেই, শুধু বাঁশের জঙ্গল। কিছু বৈতগাছ এবং চারপাশটা অন্ধকার। দিনের বেলায় হে^{*}টে বেভে পর্যত্ত গা ছম-ছম করে। পাশেই গ্রামের কবর-थाना। रक्न, इन-इन करत शैर्धिक। वौ হাতে একেবারেই শক্তি নেই। কব্দিতে মল্ল-পড়া কড়ি ঝুলছে। যদি বিবি এখনও সং করে বেড়ায় সে বিবির পেটে একটা লাথি

মারবে। তার শারীর এবং দীত শক্ত হরে বাছে। আর তক্ষ্মিন দেখল বিবি তার বাগের অংধকার থেকে বের হরে আসহে। কিন্তু হাতটা, হার হাতটা—পণ্যু হাত নিরে সে কিহু করতে পারল না। বাগের অংধকার থেকে বের হতেই সে মুখের উপরে তর্গকর চিংকার করে উঠল, তুই আন্ম্।

আন্দ্রীড়াল না। এমন মান্হটাকৈ স আর ভয় পায় না। পাশ কাটিরে হাবার সমর বলল, তুমি মান্হটা কামনতর! কইলাম হুম করতে কাওয়া আর তুমি বাগের ভিতর ঘোরতাছ।

---তুই এহানে ঝোপেজপালে **কি** করতাছস?

—সঙের লাইগাা তোমারে খেজিতাছি।

—আঃ। বিবিটাও ইতর কথা কইতে
শিখা গাাছে। কারে লাথি মারে ফালা।
নিজের পেটে লাথি মারে! ফেলা্ রাগে
দঃখে নিজের পেটেই একটা লাথি মারতে
চাইল। বিবিটা প্যাপত ধরে ফেলেছে ফেলা্
প্রথা হরে গেছে! স্তরাং কে কার পেটে এখন লাথি মারে। আরু প্রম কুলান এক যুবতী কন্যার মতো বাগের ভিতরে ভূব দিয়ে জল খাছে, একাদশীর বাপও টের প্যাছে না। ফেলা্ কেমন কাতর গলায় বলল,
তুই মনে কর্দ আমি কিছা ব্রিম না!

— আর তুই মনে করস আমি-অ কিছু ব্বি না। ফেলুর মুখের উপর **শামটা** মারল।

—ভূই যুবতী মাইয়া, তর *বেংখা*র-না আছে কি ক'। বলে ফেল, 🐲 আর বাড়াল না। একটা দ্বে কঠিল গাছে সোনা, ফতিমা নিচে। কঠিলে পাতা অঞ্জা ভাল ভেঙে দিছে ফতিমার ছাগলটাকে। গোলমাল বাধালে অথবা চিংকার চেচামোচ করলে এখানে ওরা ছুটে আসতে পারে! **ছ**्राउँ এলেই এ-সব कथा ফौস হরে বাবে। সে অশ্বত্যের ঝোপে আত্মগোপন করেছিল, গাছে তখন কাক উড়ছিল না, মেলার পর্ যাচ্ছে, গলায় ঘণ্টা বাজছিল আর **ঘানের** ভিতর পড়ে থেকে মাইজলা বিবির সনে সঙ্জ — সব টের পাবে যুবতী মেরে আন্ন:। সে চুপচাপ আল্লর শ্রীরে আশিটে গণ্ধটা এবারের মতো হজম করে গে**ল**। সে পাগলের মতো চিংকার করতে থাকল, গোসল, কইরা বাড়ি ঢুকবি। না হয়, ভর একদিন কি আমার একদিন। আর এই হচ্ছে করায় যাবভীয় রাগ গিরে প্রান্থ পাঞ্চল ঠাকুরের উপর, সে এক হাতীতে চতে ওর দেই হাত ভেঙে এখন মাঠে মরদালে পাখি **अ**फ़ारक, अवर वाजारन कर् भित्र भित्र किल

रिय मुश्शानित फिरक मवारे ठाकिस्त আছে তিনিই বলবেন





कात्रपष्टा **ः** स्टब्रमीन स्मा



হেজনীন স্নেন্দ্র যোলায়েম হাজা পরল সেরা বিউটি ফ্রীমেরই মডন ।
আপনার মুখখানিকে দিবি৷ সুন্দর নিটোল লাবণো ত'রে দের।
অপরাশ ডক্রণ কোন হাছিতে আপনার মুখখানি নির্মল হয়ে ওঠে।
ছোটোখাটো লাখ অভি অস্ক্রন্দে চাকা পড়ে বার--- আপনার মুখে
দুটে ওঠে এক সিন্ধ কমনীর আভা।
আছেই আপনার ছেজনীন স্নেন্দ্র সলে পরিচয় হোক--- দিনের পর বিশ্ব ,
সে পরিচরের সার্থকভা আপনার মুখখানিকে কুলের মন্ত সহক্ষ
স্বন্দর করে কুলের।

হেমনীন স্বো-তক্লণের স্বপ্নমাখানো স্বাভাবিক কান্তির উৎস



বাদে । সেই মান্বকৈ বাসে পেলে পরি
না বানিরে ছাড়ছে না। রাগ এবং বিদেব
তকে কুরে কুরে খাছে। বিবি আন্ম এই
ক্যোপজপালের ভিতর এতক্ষণ ভেল আনার
নাম করে, ওকে মাছ পাহারায় রেখে এলে
কি করছিল সব বেন জানা।

কিন্তু অসহার ফেল; দ্হাত উপরে ভুলতে গিয়ে দেখল, সে নাচারি, বেরামি মান্ব। এমন জবরদস্ত বিবির সংখ্যা সে ব্যবি ইহজীবনে লড়তে পারবে না। লড়তে পারলে বোধ হয় এই অন্ধকার বাগের ভিতর धारत धक शकारका या श्राप तर्थ त्रा অগত্যা ভালো মানুবের মতো আনুর পিছনে পিছনে, যেন সে এবং আল, মেমান বাড়ি থেকে বাগের ভিতর দিরে ফিরছে-কোন ভারকতা নেই, পরস্পর ডেমনভাবে হটিছে; মাঠে তখনও ঢাক বালছে, ঢোক বাজছৈ। মালতী প্রসাদ বিভরণ করছে মাঠে। কাগজের লাল নীল পতাকা উড়ছে বাতাসে। মাঠের ভিতর শাদা ধবধবে গরন পেরে মালতী, নিষ্ঠাবতী, ধর্মাধর্ম **বার** একমাত্র সম্বল, বে স্কলের মতো হাঁস পরে বড় করছে, পরেব হাসটার জন্য বার মম্তা আর বর্ষার যে চুপচাপ নিঃশঙ্গে বুণ্টি ভিজে সারারাত ধরে, সেই ব্রতী মালতী, বিধবা মালতী এখন বাস্তুপ্সার পায়েস থাওয়াছে স্কল মান্ৰকে।

গাছের ভালে সোনাবাব্। ফডিমা
দুখ্টু প্রজাপতির মতো চারা কঠিল
গাছটার চারপাশে ঘ্রহে এবং লাফাছে।
ছাগলটার জন্য সে ভালপাতা সংগ্রহ করহে।
সোনা ছাগলটার জন্য ভাল ভেঙে দিছিল
গাছের। কঠিলে পাতা খাবার জন্য ছাগলটা,
হোটু এক বাচা ছাগল দু-পারে ভর করে
লাফ দিছিল। সোনা ছাগলটার পাতা
খাবার আনশে, গাছের সব কচিকটা ভালপাতা ভেঙে ছাগলটার দিকে ছুড্ড দিছে।
ছাগলটার পাশে এখন পাতার ভাই। সোনা

হাগুড়া কুষ্ঠ কুটির

সর্বপ্রকার চর্মরোগ, বাতরন্ত, অসাড়তা,
ফুলা, একজিমা, সোরাইসিস, দ্রিত
কর্তাদি আরোগার জনা সাক্ষাতে অথবা
পত্রে বাবস্থা লউন। প্রতিষ্ঠাতাঃ পশ্ভিত
রাজপ্রাপ শর্মা করিরাজ, ১নং মাধব ঘোর
লেন, খ্রেট, হাওড়া। শাথাঃ ০৬,
মহাথা গাদধী রোড, কলিকাতা—৯।
ফোনঃ ৬৭-২৩৫১।

লাফ দিয়ে গাছ খেকে দেৱে পড়ল।
পড়তেই কানের কাছে মুখ এনে কিসাঁফল
করে বলল, যাইবেন সোনাবাব;?

1

—কোনখানে ?

—বকুল ফল আনতে বাইবেন? —ফজনুর?

—বেশি দ্র না। বলে, আঙ্ল ভূলে দেখালো, ঐ বে গ্যাখছেন না হাসনে পাঁরের দরগা, দরগার ভাইনে ট্যাবার প্রস্কান, আমলা বাম্ প্রক্রির পারে।

—ছোট কাকা বকব।

—ৰাম্ আর আম্। এক দৌড়ে বাম্ এক দৌড়ে আম্।

লোনা চারিদিকে তাকাল। শ্ৰা-त्नहै। পার্বণের দিনে কারো কোনো লক্ষ্য লালট্র পলট্র > ছোট কাকার म्(का রামার জন্য গেছে। CS 113 মামা গেছে সরকারদের বাস্তৃপ্জাতে। লোভা, আবু, কিরণী বাস্তুপ্জার প্রসাদ रथरत्र रवफ़ारकः। भाकाभार्याभव मिरन दक কোথার যার-কে কার খবর রাখে! পাগল জ্যাঠামশাই ভোরে কোনদিকে বের হরে গেলেন, কেউ টের করতে পারেনি। সোনা মনে মনে ভাবল, বেশি দেরি হলে সকলে ভাববে, সোনা গেছে জাঠামশারের লগে। স্কুতরাং সোনা বোঁ বোঁ শব্দ করতে থাকল মুখে। তারপর ওরা মাঠের উপর দিরে ছুটতে থাকল। বড় মাঠ, উত্তরে গেলে হাসান পীরের দরগা। দরগার পাশ দিরে সাইকেলে গোপাল ডান্তার নেমে আসহে। গোপাল ভারার ওদের দেখে ফেলবে ভরে ওরা দালানবাড়ির খালের ভিতর নেমে গোল। দ্বজনে চুপচাপ মাথা গ'বলে উব্ হয়ে বসে থাকল। এত বড় মাঠের ভিতর সোনা এবং ফতিমাকে একা একা ঘুরুঙে **দেখলে আশ**ংকার কথা। তুমি সোনা, সেদিদের সোনা, একা একা এত বড় বিশাল বিলেন মাঠে নেমে এসেছ-কি সাহস তোমাদের! চল চল বাড়ি চল। অথবা কিছ; তিরস্কার। কিংবা বাড়িতে খবরটা পেণছে দিলে ছাটবে, ঈশম ছাটবে, ঈশম তার প্রিয় তরম্জ থেত ফেলে ছ্টবে। আর মাঠের ভিতর দাঁড়িয়ে অথবা বিলেন মাঠে নেমে शिरत छाक्**र्य, स्नानायाय, के** भग्नात्नन! **जः** সোনাবাব; !

করে একবার সোনা একা একা তরম্ভ থেতে নেমে গিরেছিল—কবে, সেই কতকাল আগে, সোনা প্রথম গ্রামের বাইরে বের হরে দক্ষিণের মাঠে—সোনালি বালির নদীর চরে তরম্ভ থেতের ভিতর হারিরে গিরেছিল সঠিক মনে নেই, কিন্তু সেই তরম্ভ থেত, মালিন মাছ, এবং বড় মিঞার দুই বিবি— দুর্গাঠাকুরের মতো মুখ, নাকে নদ দুর্লছিল, কি এক রোমাণ্ড যেন জীবনে, সোনা এখন সেই এক রোমাণ্ডর লোভে ছুটছে। ফতিমা কাপড়টা গামছার মতো করে পাচি দিরে পরেছে। শরীরে ফতিমার ভাষা সেই। কোদ ফক দেই। খালি লাঃ নাকে নৰ দ্বাহে ফতিমার। কানে পেতলের মার্কাড়। নাকের বাশিতে সোনার নাকচারি চাবির মুখ্টা চাগটা চাবের মতো। কর্মাত নেই বার্তা নেই সোনা ফতিমার নাকটা চাগটা করে ধরে নাকের ভিতর সেই চাগটা চাল কি করে বাশিতে আটকে আছে দেখল। ফতিমার ধ্ব লাগছিল নাকে। কিন্তু সোনাবাব্, ছোট্ট সোনাবাব্,—গরীরে বার চলনের গণ্য লেগে বাকে আর মাথার কি সুমুখ্য গণ্য। সোনাবাব্, তার নাক উল্টে বাশিতে এখন চাগটা চানের ম্ব উিক দিরে দেখছে।

ফতিমার শরীর শিরশির করে আনদে কশিছিল। সে বলল, সোনাবাব; চলেন। গোপাল ভারার গ্যাহে গিরা। দুরে মাঠের আলে গোপাল ভারারের খণ্টি বাজছে। षात धान्यत्व यथम भना त्नरे, यथन बाठ ফাঁকা, শুধু মাঝে মাঝে ছোট ছোট ঝোপ-জপাল দাঁড়িয়ে আছে তথন হুটে যাওয়া ভালো। ওরা ছোটার সময়ই দেখল, ট্যাধার প্রকুরের নিচে যে মাঠ আছে সেখানে পাগল জ্যাঠামশাই। তিনি হদ হন করে বি**লের**ী দিকে হে'টে যাচ্ছেন। সোনা আর মহুতে দেরি করল না। সে যেন জ্যাঠামশাইকে মাঠের উপর আবিম্কার করে ফেলেছে তেমন গলার**ু** ডাক্স, কি**ন্তু** মানুষ্টা হন **হন** करत दर्दे याटक रा याटकरे। जाक रजन বাজহে তো বাজছেই। বাস্তৃপ্জার মোৰ বলির খাঁড়াতে রক্ত লাগছে তো লাগছেই। আর সোনা ফতিয়া, মাঠের উপর দিরে হুটেছে তো ছাটছেই। ওরা ছাটছিল আর ভাকছিল। ওরা ঢিবির উপর উঠে ভাকল, জ্যাঠামশায়! কে কার কথা শোনে! জ্যাঠা-মশাই প্রকুরটার পাড়ে পাড়ে যে বন আছে তার ভিতর অদ্শ্য হয়ে গেলেন।

সংসারে কত কিছু ঘটে, কত কিছু খটে না। ফসল ফলে না সব সময় মাঠে। এখন কোথাও রক্ষে মাঠ, াাঝাও জামিতে তামাকের পাতা দেখা যাতে পে'য়াজ রস্ক আল, বাঁধাকপি উচ্ জনিতে—পুকুর থেকে জল তুলে পেয়াজ আল, বাঁধাকপির চাৰ করছে বড় গের**স্থ প্র**ভাপ চন্দ। আলে আলে দুই বালকবালিকা ছাটছে। <u>ঢিবি থেকে</u> নেমে মাঝিদের বড় জমি পার হয়ে ছটেছে। **অকালের ফল বকুল ফল বনের ভিতর।** ওরা বকুল ফলের অন্বেষণে ছুটে যা**ছে।** ফতিমা ফল কুড়াবে, সংগে সোনাবাকঃ আছে, ভর দ্বপন্রের রোদ রয়েছে, আর শীতের সূর্য মাথার উপর বলে ওদের এতট্কু শীত করছে না। থালি গায়ে **থালি** পারে ছটেছে। যেন দটো খরগোশ ভাড়া रभरत यस्त्र मिरक भाषात्व्ह।

সহসা মনে হল সোনার, ওরা বছ বেশি দুরে চলে এসেছে। এত বড় বন সামনে। সোনা ভরে এতটুকু হরে গেল! ওরা আর বাড়ি বুঝি ফিরে বেডে পারবে না!

(इम्मान)



गप्यनगणे गुटश्रव

ৰাগরী বাকে ট বা রাজা কাটরা থেকে আনতে গৈলে কিলো গড়ে আট, সাড়ে আট, সাড়ে আট, নর কথনো-সখনো সাড়ে নর। দ্-এক কিলোর জন্য রোজ-রোজ অদ্দ্র যাওরা শোবার না গেলেই তো গাড়ীভাড়া লাগাবে চার-ছ আনা। তঞ্ছাড়া ঠেলাঠেল, ভিড়, গ্লেতাগ্লিত তো ট্রামে-বাসে লেগেই থাকে, দুখ নিরে আসা বড় ম্লিকল।

তাহলে দৃষ কোথায় পাস শ্যামক।
শুনি তোর দোকানে রোজ দেড়-দৃ হাজার
কাপ চা কাটে, ডবল হাফের প্রায় ফাঁকা
কাপটার তলানিট্যকু সড়াৎ করে টেনে নিরে
জানতে চাইলেন ভারকদা। হাতির কোঁচাটা
ভাঁজে-ভাঁজে সাজানো কোলের ওপর। হাফ
সম্মাসনে বসে দৃশ্র দেড়টার বরাম্দ
কাপটা শেষ করে আড়চোধে কাউন্টারের
দিকে ভাকিয়ে প্রশ্নটা রিগিট্ করেন দাদা—
দৃষ পাস কোথ্যেকে?

মাথা দ্বিলয়ে-দ্বিলয়ে রেজগী গ্রুমছিল **শ্যামল। থা**ক দিয়ে সাজানো পাঁচ নয়া দশ <u>নরা, সিকি, আধ্</u>লি সব টেবিলের ওপর। বড় বড় দুটো এনামেলের বাটি ভর্তি এক পরসা পুরু পরসা। ওগুলো বাসায় নিয়ে বার। দোকানে বঙ্গে গনেতে গৈলে দিন কাবার হরে যাবে। স্নান-খাওয়া মাখার **উঠবে। আবার চা**রটে বাজতে না বাজতেই বেরতে হয়। তিনটি বয়, দ্জন কারিগর রেখেও হিমাসম খেয়ে যাছে। বিকেল হতে ना इराउटे प्लाकारन छिए उपरान खरहे। **চপ. ফ্রাই.** ডেভিল. মামলেট, মোগলাই পরতীর সভেগ চায়ের যোগান দেওয়া যে কি **কঠিন সে এ**কদিন কাউন্টারে বসলেই **যালমে হবে। ক**তদিন আটটা বাজতে না বাজতেই চা ফরিয়ে গেছে। তথন লোক **পাঠিরে চা আনালে। এক বি**্ট হ্যাঞ্গামা। একেই দিন-রাভ হেড কারিগর গজ-গজ করছে, লোক কয়। তার থেকে কাউকে টেনে এনে চা কিনতে পাঠালে সতি৷ থ্ৰ **অস্কৃতিধে হয়। মিজেও দোকান ছেড়ে যেতে** শারে না। একটা বাদেই নাইট শো শার্র 🗷 ইছনিং শো শেষের ভিড় দ্যটো কোলা-কুলি করবে ভার দোকানে। ভাই শামলের

রিকোরেন্টে তারকদা দিক্সেই রোজ গুনুহরে দোকান বন্ধ করে বাড়ী বাওরার পথে চাটা দিরে যান। এই সমন্ধ কেনাকাটা, বাজার-গর নিরে একট্—আধট্, গন্দ চলে। তারকদাকে চারের পেরালা ঠেকিরে দিরে জ্যারক থ্টরো ও টাকার হিসাব মেলাতে বসে। ফাকে-ফাকে তারকদার স্কটো-একটা প্রশেমর জনাব দের।

তারকদার প্রশ্নটা শ্বিতীরবার করে বেতেই গোনাগাঁথা থামিরে মুখটা একট্ তুলল শ্যামল। হাসতে-হাসতে বলল, আমি তো দুধ কিনি না পাই।

এই মাশ্সীগণ্ডার বাজারে নিভানিদ দেড়-দু হাজার কাপ চারের দুখ বিদে প্রসার পাছে খুনে হাক শম্মাসন থেকে একটা ঠ্যাং আপনা-আপনিই চৌরলের তলার নেমে গেল ভারক্ষার—বলিস কি রে! মামুটা কে?

মামুকে আপনি চেনেন তারকলা, গালভাসানো হাসিটা স্ক্রু হতে-হতে ধারাকো
রেডের মত ঠেটি দুটোর সেফটি-রেজরে
খাপে-খাপে আটকে রইল। নারান ছোব,
আঁপনার পোকানের উল্টো দিকে বার দোকান নারারগশ্রী। ওখান থেকেই চালান আসে। মাসে দ্ব কতা দ্বি।

ভারকদা যেন দিজের কানকে কিবাস कताल भारतका मा। यहन कि भागमा ? धे নারান <mark>ঘোষ ওকে ফ্রিন্তে দুধ সাম্</mark>কাই करत ! म्राट्यमा थरम्मरतन्त्र मर्ज्या अक खाद পরসার জন্য ঝগড়া না করলে বার পেটের ভাত হজাম হয় নালে কি নামালে চারলো সাড়ে চারশো টাকার মাল মিমি মাগনা শ্যামলকে জোগাচেছ। কথাটা অবিশ্বাস্য হলেও শ্যামলকে বিশ্বাস না করে পারেন না তারকদা। ছেলেটাকে ভালো করেই চেনেন। চেনেন ওর বাপকেও। অভি ভাল-মান্ব। সাতে পাঁচে থাকেন না। সিনেমা হলের ম্যানেজার। সামান্য আর। আজকাল শ্যামল ভাল রোজগার করছে তাই, নইঙ্গে আলে তো একেবারেই চলত না সংসার। কতদিন ভারকদার দোকানে

क्टब्राट्स क्टब्साव-ट्राटन नृद्धी जाह शबद्ध रच मा जाहकवाद्।

শেলে বুটো বানে রতীল আর প্যারল।
পাড়ার প্রশাম করে বেড়াত। কতানন
সকলে দোভান খুলতে করে দেখেছেন
বড়টা মাল খেরে করপোরেলনের কাঁচা
দ্রেনে মুখ খুকড়ে পড়ে আছে। রাল্ডাঘাটে
মান্থলনের ভিড় ভাড়ি-হাঁড়ের গাঁজিলার
মত ভখন উপচে উঠেছে। অন্যান্য দোকানদাররা রাগ করলেও ওর বাপের কথা বলে
করে ভারকলা নিজেই ছেলেটাকে টেনে
ভূলে রাল্ডায় কলে নিরে ফেল্ডেন। একট্র
রাদে প্যামল এসে দাদটিকে নিরে কেড়ঃ
দুপুরে পোভাম বংশ করার মুখে মুখে
রতীশ-শামলের বাপ, হল-এ বাওরার পথে,
ভারকলার কাহে ছেলের দুখ্যুতির ক্ষম্ক
মাপ চেরে নিতেন।

ওদের অত্যাচারে গোটা পাঞ্চাট অতিপ হরে উঠেছিল। অন্য দোক্ষালারদের কাছ থেকে জার করে নিত্য-পূজা আদার করলেও তারকদার দোকানে ওরা কথনো ঢোকে নি। তবে অত্যাচার করত বটে ঐ নারান ঘোরের ওপর। দাও দল টাকা সিন্নেমা দেখব, কি কিশ টাকা ছাড় মাজের দোকানে কাকি পড়েছে। না দিরেও উপরুদ্ধ মেই।

বড় লোকানী নারাম বোৰ। ব্যাৰ, रक्षिन, माथम, हा, कींग, িমত্ক পাউডার, সিগারেট, বিস্কুট, টফির পা**ইকার**: **খনে** খরে সাজানো টিন, কৌটো, **আর প্যাকেটের** মাঝে বলে বিস্কুটের খালি টিনে ভালা তাড়া নোট *যুসহ*ে দিনরাত। **দোকানের** সামনে সকাল খেকেই লাইন পড়ে বার খ্*চরো দোকা*দীদের। সা**ইকেলে চেলে** काश-कोश **मृह्यत्क त्यत्क खात्न मान** কিনতে। রতীশ-শ্যা**মলকে ভটালেই দোকালের** नामत्न रङ्गा रूप । यान भएनत वाद्य कर्या তাই বাকে পাড়াস, খ লোক নারান যোব না বলে নারদ ঘোষ বলে আড়ালে, সেই লোকটিই ছেলে দুটোকে বাৰা বাছা বলে থাতির করে দু দল টাকা হামেশাই হাতে গ'বলে দিত। ক্লিন্তু ভাই বলে দু বন্দল 900 PE

পরিছা দ্ধ, একেবারে ফ্রিটে! বিশ্বাস করতে চান না ভারকদা।

রেজগাঁগুলো একটা পার্লাথনের বাগে ভরে মুখটা ভাল করে বে'ধেছে'দে নিল্ ল্যামল। তাকিয়ে দেখল রাহামর ধোরা-লাখলা সারা। করিগররা গেছে রাস্ভার কলে স্নান সারতে। বয় তিনজন আগেই বিপার নিয়েছে। এবার দোকান বংধ করে ল্যামল বাড়ী কিরবে। কিন্তু ভারকদার শুটার নাম নেই। গোল গোল চোখে ওর দিকেই তাকিরে আছেম্। স্পন্ট অবিশ্বাসের ছাপ মুখে চোখে।

ক্যান্দের ড্রন্থারটায় তালা মেরে উঠে এল শাষল। উল্টোদিকের একটা চেরার টেনে নিরে মুখোম্থি বসে বলল, আপনি এত অবাক হচ্ছেন কেন? ঘোবের এতে কোন লোকেসান নেই। বরং না দিলেই ক্ষতি হবে।

কেন? তোরা তো আজকাল আর গংকামি করিস না। রতীশটা এরারফোর্সে লাম লিখিরেছে, তুই দোকান দিরোছিস। তবে কেন নারান যোব তোকে খাতির করবে? —দোজাস্কি প্রশ্নগ্রেলা ছব্তে মারেন তারকলা।

বারে করবে না কেন? অবাক হরেই বলে শ্যামল, ঘোষ কি আর নিজের পরস্থায় ফেনা মাল আমার দিচ্ছে?

खाद बादन?

শীকান। মানেটা ব্ৰুগতে হলে আমি যা বিন্যানয় করছি ভার জবাব দিন আগে। বিশেষার শোকানের চা আচে কোণ্ডেকে?

ৰাবোন ৰোভ খেকে আমি নিজে কিনে আনি, চটপট জনাব দেন ভারকদা ঐটাই ভো চারের হোলদেশ মার্কেট।

चान न्द्रथम दशकातमा भारक है हरू टना काळेनन्द्रका । **ং**বে ঠাণ্ডা গলায় बद्धा हत्व भाग्रामा **मिप्राम** गडग'-লেক্টের লো-ভাউন্। চাল, গুম, চিনি, দ্ধ লৰ ওবানে কমা হয়। ওখান থেকে চালান **বার শহরে ও**্গারৈর স্ব রেশন সংগ। **বিক্ক পাউভার বার হাসপাতালে, স্কুলে। লানেশই তো দৃধ আনে** আর্মেরিকা, **অন্তেলিয়া, নিউজিল্যান্ড** থেকে গিফট **হিলেবে। এদেশের অনাথ আতুর** যারা এক **रहाक गृथ कथरना भारति मि छाएमत सन्ता।** হাসপাভালের রুগী বা স্কুলের ছেলে-कारतरमञ्ज जना। উफ़िशास वना। दशन, कि ভর্মবন্দ ভেলে দোল, কি বিহারের মাঠ-

প্রীনিভাইপদ বস্ত্র
বহু পঠিত ও উচ্চপ্রদর্গেত
কর ভারত (নাটক) ২-০০
প্রান্তিশ্যন—হিন্দুখন লাইরেরী

ক্ষিড-১২ ও অন্যান্য প**্ৰতক্ষালয়**

ঘাট থরার ফেটেফ্টে চৌচির, অর্মান দেশ-বিদেশ থেকে বস্তা বস্তা থররান্তির মাস চালান আসে। সেই সপ্সে আসে গাঁড়ো দ্ধ।

বলতে বলতে একট্ থামল শ্যমল।
তারপর কি ভেবে নিয়ে ফের শ্রু করল,
আপনার বোধহয় মনে নেই তারকদা, বাষাট্র
সালেও বাজারে গাঁড়ে দ্ধ বিকোত
তেরা আনা পাউন্ড দরে। তথন রেশন
টেশন ছিল না। বাষাট্র শেষাশেষি সব
কিছ্ রেশন হরে গেল। খোলা বাজারে
মেলে না কিছ্। চাল, গম, চিনি, স্কুজি,
ময়দা, দ্ধ কিছ্ না। এক মালের মধা
দ্ধের দাম তেরো আনা থেকে পাঁসালিকি
হয়ে গেল কালো বাজারে। তথন দাদা আর
আমি পাড়ায় মন্ডানী করতাম।

মুখ্যানী করতাম। গুড়োমি করতাম।
পাড়ার পোকে ভর করত। সুরচেরে ভর
পেত ঐ ঘোষ। ওর দোকানেই হামলাটা বেশী হত কি না। আপনাকে লুকোবো না দাদা। এখন লাইন ছেড়ে দিরেছি, ভাই বলছি—জোর-জবরদাহত করজেও আগে কখনো চুরি করি নি। চুরি শেখালো ঘোর, আপনাদের নারদ ঘোষ।

সবে রেশন চাল্ হয়েছে। জিনিসপতের দাম দিন দিন হতুত্ব করে বাড়ছে। ব্রুম্থের জন্য সারা দেশ ঝেটিয়ে চাল গম এনে গভৰ্ণমেশ্ট গো-ডাউনে গো-ডাউনে 🕶 🤋 করছে। বিদেশ থেকে আসছে খাবার দাবার, ওষাধপত্তর, অস্ত্রশস্ত্র আর মিল্ক পাউডার। য্দেধর হিজিকে দাদা এয়ার ফোরে নাম লেখাল। আমি রইলাম পড়ে। দলবল নিরে পাড়ায় পাড়ায় হামলাবাজী করে বেড়াই। বাড়ীতে বাবা দেখলেই গালমন্দ করে ভূটা ওড়ান। সেই সময় একদিন সন্ধোবেলা পাঠিরেছি ছোবের সাগরেদ কাল কে रमाकारन कठो ठाका **ठा**टेएड। काम मर्जे. ধারে বোডল দিচেছ না। কাল; ফিরে এল টাকা নিয়ে। ফ্রেশ করে কচ্ছপের মাংস আর মা কালীর চলামেত দিরে মুখ ফেরাচ্ছি কাল্ল ফিস ফিস করে বলল—ওপতাদ রাতে একবার **ঘোষের দোকানে হেও। বোধহ**র কাজটাজ আছে।

তা গেলাম রাত্তিরে। নিজনি রাস্তাহাট। দোকানপাট সব বন্ধ। দেখি ছোর তথনো কোলাপসিবেল সেটের আধখানা খালে রেথে বাতি জনালিয়ে বলে ক্যাশ গ্নতে। কর্মচারীরা কেউ নেই। আমাকে দেখে প্রথমে চমকে উঠল। তারপর কোন্দিন**ও** যা করেনি, র্শেদিনই তাই করল। নিজে উঠে এসে কাউণ্টারের পাচিল সরিয়ে ভেডরে ডেকে নিয়ে একটা খালি প্যাকিং বাস্ত্র দেখিয়ে বলল—বয়। তর লগে কথা আছে। আগে তর জনা একট**ুচা আ**নি। বলে দোকান-টোকান ফেলে রেখে খোষ বাইরে পা বাড়াল। ভেবে দেখন ভারকদা, দে সময় আমি কি চীজ ছিলাম। সেই আমার সামনে বিস্কুটের টিন ভর্তি নোটের ভাড়া রেখে নারদ যোৰ চলল চা আনতে। খাভিয়ের

বছর দেখে খ্রাকা লাগল। এক ধ্যক লাগিয়ে বললাম দিলাগী ছাড় মাম্। কেন ডেকেছ তাই বল।

পরজা মন্বারর শ্রাভান। সহজে কি
পথে নামে। কাজের কথা না বলে, আমার
স্লুক সন্ধান নিতে শ্রু করল। গ্রুডামি
করে মাস গেলে বড় জোর একশ সোয়াশ
আর শ্রেন ব্যান চুক চুক করে উঠল।
বলল, আর অভ মাল খাইস না। এই বরুসে
বেশী খাইলে, লিভার এলের প্রচায বাইবে।
যেন কত পিরীতি কালের স্টেটা যাইবে।
যেন কত পিরীতি কালের সন্ধা। তথ্ন
আমি প্রো মালের লাকে। স্ব কথা কানে
চ্কুছে না, নেশা ১টি যাছে। খ্ব এক চোট
ম্থ খিতিত করে বললাম—কান্তা ছাড়
খোষ। কি বলবে বল, আমার কান্ত আছে।

আনে কাইজের লাইগাই তৈ। তরে জাইক্যা আনাইলাম, ফিস ফিস করে বলদ ঘোষ—একটা কাইজ যদি কইরা। দিস, আগাম পাঁচশো দিম।

পাঁচশো টাকা। মাইরী তারকদা বিশ্বাস করতে পারি নি। বলে কি শালা? পাঁচশো দেবে আমাকে? আমি দশ বিশের খন্দের। এক সংশ্য পাঁচশো কেন হাজার টাকাও দেখেছি, সে সিনেমা হলে। ছেলেবেলার বখন বাবার সংগে গিয়ে কাউণ্টারের পাণে বসে পাকতাম। ভারপর বড় হয়ে তো আর চাকরী জোটাতে পারলাম না। বাঁ চোথে কম দেখি বলে আমিতিত নিজ না। ব্যাকিং নেই শালা, ফ্টোমাদারীকে কে প'ছেবে বলো? বাবা বলোছল হলের গেটকিপার করে দেবে। শ*্নে চেলার* বঞ্ল মাইরী ওস্তাদ তুমি গেটকিপার হলে আমরা সিনেমা দেখাই ছেড়ে দেব। তাই সেটাও र**म** ना। स्वास्थाणा ततानतरे ভाम, **७३** পেতাম না কিছ,তেই, হংর গেলাম মস্তান। <u>কেই আমাকে পচিশো টাকা? মালের</u> নেশাটা কেন্টে যাচ্ছিল। চোখ পাকিয়ে বললাম - রাসকতা কোর না ছোব। তোমার দোকান-টোকান সব ভূড়ে দেব।

সংশ্য সংশ্য নারদ ঘোষ আমার হাত প্রেটা জড়িরে ধরে মিহিগলার নাকী স্বের বলল, রিসকতা নর রে শামল, বিশ্বাস কর। বলে টিনের মধ্যে হাত গালিরে এক গোছা মোট বার করে আমার হাতে গ'্জে দিরে বলল, এই ল আগাম। আইবার তর বিশ্বাস ত হইল। কাজ শেষ হইলে বাকিডা দিমনু। বাড়ী গিরা গাইন্যা দেখিস।

ততক্ষপে নেশাটেশা সব মাধায় উঠেছে।
একগোছা নোট হাতে নিয়ে ফাল ফাল
করে তাকিকে বইলাম ঘোবের দিকে। কানে
আসছে ঘোবের কাকৃতি মিন্তি—কাইলটা
বাবা কইর্যা দে। আরো দিম্। বিদ পাকাপাকিভাবে কাম করস ত মাস গ্যালে হাজার
টাকা পাবি। আরো চাইস ত আরো দিম্।
ব্যাটা বতক্ষণ কোঁকাজিক তার ফাঁকে আমি
গ্রেন দেখলাম দশ টাকার সাইলিগটা নোট
আছে ঐ গোছে। গোনাগ্রিন শেষ করে
মেলাকের মাধার বল্লাম—রাজী। কাজটা
কি বন্ধ

चम, उ

কাজটা কি জান তারকদা? দুধের ব্যবসা। নারদ ঘোষ তাই বলেছিল। সরকারী গো-ডাউন থেকে বশ্তা বশ্তা দুধ সরাতে হবে। এক বশ্তার থাকে প'চিশ কেজি মাল। এক কেজির এখন দর আট টাকা থেকে সাড়ে ন টাকা। এক বশ্তা মানে কম করেও দুশো টাকা। এক এক রাতে আমরা চল্লিশ পঞাশ বশ্তা মাল পাচার করতাম।

ব্যাপারটা রিম্কি হলেও ইন্ডি। ঘোষ আগে থেকেই বন্দোবস্ত করে রাখত। যেদিন যেদিক থেকে মাল সরাতাম সেদিন পাঁচিলের সে দিকটার দেখতাম মাম,দের কভা গার্ড। দশ বারোজন খাকী হাফপাাণ্ট আর একটা ফ্রপ্যাণ্ট লাঠি সোঠা নিয়ে দাঁড়িয়ে থাকত। আলোগুলো আগে থেকেই নিভিয়ে দিত বা আমরা ঢিল মেরে বাল্ব ফাটিয়ে দিতাম। সঙ্গে সংগে ইসারা পেয়েই ওরা গোটা জায়গাটা কর্ডন করে ফেলত। আর আমরাও পাঁচিল টপকে টপাটপ ভেতরে সে⁹ধতাম। পাঁচিলের গায়ে কপি-কল ফিট করে কতা কতা মাল এপারে এনে ঘোষের লরীতে চাপিয়ে দিলেই কাজ খতম। লরী বোঝাই মাল তখন কোন গ্লেমে যেও জানতাম না. দেখতাম দিন मुद्दे वार्ष एका है एका जारकर है, हिस्त वा কোটোর ভর্তি করে কাউণ্টারে ফেলে বিক্রী করছে ঘোষ। আমরা চলে আসার সময় গোটা দুই পেটো ফেলে আসতাম। সেরকমই নির্দেশ ছিল। সপো সপো ভেতরে হৈ চৈ পড়ে যেত। গোটা দকোর ব্যাৎক ফায়ার। আমরা ততক্ষণে দূর্লভ শার দোকানে বসে বোডল খুলছি।

এক এক রাতের জনা ঘোবের খরচ হত বড় জার হাজার দ্ই আড়াই। আমাদের গোড়ার দিত পাঁচশো করে। পরে রেট বেড়ে হল হাজার। হারা আমাদের পাহারা দিত, আবার সরকারী মাইনেও পেত তাদের বরান্দ ছিল হাজার থেকে দেড় হাজার। আর পঞ্চাশ বন্তা মাল বেরোলেই কম করেও ঘোষের আর দশ হাজার টাকা। এবার প্রফিটটা হিসেব করে দেখ। ঘোষ আজ চার চারটে বাড়ীর মালিক। পাড়ার দ্ব দ্বটো দোকান, গোটা তিনেক বাস খাটছে নানা রুটে। এতসব কি ঐ বিস্কৃট আর লজেকুন্স বেচে হ্রেছে মনে কর? সব ঐ দুধু বেচা টাকার।

শ্যামল থামতেই তারকদা মুখ খ্ললেন, তুই বা বললি সব তো পাশ্ট টেনস। এখন তুই দোকান করেছিস। লাইন ছেড়ে দিইচিস। দুধের কণ্টোলও উঠে গেছে। তুবে ছোব কেন এখনো তোকে খাতির

ু কৈ বলল পান্ট? উলসে উঠল শ্যামল। আমি লাইন ছেড়ে দিয়েছি ঠিকই। কারণ



আজকাল লাইনে ভীবণ কম্পিটিশন। পাঁচ সাতটা পার্টি ঘ্র ঘ্র করছে। প্রিলশ ধরবে না। নিজেরাই খেরোখেরি করে ধরিরে দেবে। সেই ভয়ে এক মওকায় হাজার পাঁচেক টাকা জোর করে আদায় করে লাইন ছেডে এসে এই দোকান খ্ৰেছে। তাছাডা কনট্রোল তো প্রেরাপ্রির ওঠে নি, আধা-আধি এখনো আছে। তাছাভা কনটোল থাক না থাক চাহিদা বে পরিমাণ তার সিকির সিকিও যোগান নেই। ফলে ছোবের ব্যবসাও চলছে। আগে ছিল একটা ঘোষ। এখন পাড়ায় পাড়ায় ঘোষেদের ফলাও কারবার। আর হবে নাই বা কেন? হাজার হাজার হোটেল, রেস্ট্ররেণ্ট, মিণ্টি আর চায়ের দোকান যেখানে সেখানে বরান্দ মাফিক মিল্ক পাউডারে একশ কাপ চা इर्ट किना जरण्यह। छाटे दिशी पाटम श्यामा বাজার থেকেই কেনে। মালটা কোথা থেকে আসে কেউ খোঁজ নেয় না। ওরা দাম দিয়ে মাল পেলেই খুশী। আমি দাম দিই না। আমার সাগরেদ কাল, এখন দল চালার। কাল, আমায় খাতির করে, তাই ঘোষও করে। ব্যাটা টাকা দিতে চেরেছিল—মাসে মাসে আড়াই শ। আমি সাফ বলে দির্রোছ, টাকা চাই না. মাসে যত দৃধ লাগবে তাই দিলেই আমি খুশী। বোষ ভাই দিচেছ. মানে দু বৃশ্তা মিক্ক পাউডার। বলতে

বলতে উঠে দাঁড়াল শামল। ভান হাতের কম্পাতি চোথ পড়তেই চমকে উঠল—উরি বাস! আড়াইটা। উঠুন দাদা। আবার চারটে বাজতে না বাজতেই বেরোতে হবে। আপনার চারের দামটা কাল দোকানে দিরে আসব।

শ্যামল বখন দোকানে তালা ঝোলাকে তখন ট্রামে চেপে বাড়ী ফিরছেন ভারকদা। সিনেমা হলের উল্টোদিকে বড় মিণ্টির দোকানের সামনে ফ্টপাথে একদল ভিৰিন্ধ একপাল কাচ্চাবাচ্চা নিয়ে ঠাটাপোড়া রোন্দরে বদে আছে করেক ট্রকরো রাজী ল্কি, কচুরী আর এক হাতা করে পচা ভালের আশার। কালো র**্ন ক্রার্ড** শিশ্বগালো খেতে না পেরে পেরে চিমাসে মেরে গেছে। এরা কোনদিনও দ্বধ পার দি। পাবেও না। এদের বরাদদ দৃষ রাতের অংধকারে সরকারী গ্রদাম সাবাড় করে কালোবাজারে বেচে নারান বোষরা সহরের ব্বকে বাড়ীর পর বাড়ী হাকাছে। শ্যামলরা তারই ছিটেফেটার স্বাদে মাতাল হরে মস্তানী, গ**্ৰ**ডামি ছেড়ে চুরির পথ ধরেছে। ভাবতে ভাবতে কেমন অন্যমনস্ক হয়ে পড়েছিলেন ভারকদা। পট করে ভাবনার জাল ছি'ড়ে গেল একটা ভাকেই। সামনে দড়িয়ে কণ্ডাকটার। টিকিট।

-পশিংস্



ধনপতির গর্ব প্রের্থ-প্রধান সমাজ

(22)

স্তেরোর ও আঠেরোর আহিনীর প্রসেদজিত ও অনাদির অবসেশন সংপর্কে কিছু আলোচনা পাঠকরা দাবী করতে পারেন। ধনপতির রোগব্তাশত শুরু করার আগে সেই দাবী প্রধার চেন্টা করা যাক। না হলে, রোগ ইতিহাস রহস্য রচনা বলে মনে হতে পারে।

প্রসেনজিত কেন অন্ধকারকে ভয় পায়? কেন তার মনে হয় যে তার ভেতরের পশুটা বেরিয়ে এসে স্রমাকে হত্যা করেছে? স্ক্রমার শ্বামীর দৃঢ় ধারণা প্রদেনজিত সরেমার মৃত্যুর জন্যে দায়ীনয়, অথচ প্রসেনজিত নিজেকে অপরাধী মনে করে অসহা মানসিক যন্ত্রণাভোগ করছে। --কেন? পাঠকদের মনে এইসব প্রশ্ন ম্বাভাবিকভাবেই আসতে পারে। **প্রসেন**-জিতকে ভালভাবে জানবার স্থোগ পাবার আগেই সে চিকিৎসা বন্ধ করে দিয়েছে; কাজেই তার মনের থবর অনেকটাই অজানা রয়ে গেছে। অনুমার্নাভত্তিক কারণ নিধারণ ছাড়া-এক্ষেত্রে আমাদের আর কোনো কিই করবার নেই। প্রসেনজিতে_র অস**ুস্থতা** নিউরোটিক অবসেশন কিনা, এ নিয়ে আমি অনেক ভের্বোছ। অবসেশন কোনো কোনো উন্মাদরোগের (সাইকোসিস) আনুসঞ্জিক উপসর্গ হয়েও দেখা দিতে পারে। হয়ত, প্যারানইয়া জাতীয় উম্মাদরোগে ভুগছিল। ডোলউশন (দ্রান্তি) এই রোগের প্যারানইয়া আলোচনা প্রধান উপস্গ'। প্রসংগ্যে অবসেশন ও ডোলউশদের শারীব-হাত্তিক ও মনস্তাত্ত্বিক পাথক্য বিশ্লেষণ করার স্থোগ পাব। বর্তমানে এইট্রু भएस, यरम ताथा श्राराजन, य श्राप्तर्भाषात्वत মান্তিকে প্রথম ও নিবতীয় সাংক্তেক শ্তর পর≯পর নিরপেকা; শিল্পীমন ও দার্শনিক মন স্ব-স্ব প্রধান হয়ে কাজ করে অন্ভূতিপ্রবণতা য্ভিব্লিধর প্রভাবাধীন নয়। একদিকে প্রবৃত্তিবাদী ও অস্তিবাদী ধ্যানধারণায় আচ্চন্ন মস্তিম্ক, অন্যদিকে আবার অতিমান্তায় সংবেদনশীল शम । परम्बक्कार अः भशाकृत এই धतरनत ব্যক্তির বিশেলবণী ক্ষমতা প্রায়ই থাকে না। এদের পাণ্ডিতা এদের জ্ঞান অনেক সময়ই धारमत कारक अधश्रमभारतत जारमा नत्र, বিজ্ঞান্তকারী অন্ধকার। মৃত্যু-রতিবাদধমী নাটক ভদুলোককে বিশেষভাবে প্রভাবিত করেছে, আবার দেশবিদেশের জীবনধমী নাট্যকাররাও **প্রসেনজি**তকে **অ্চপুস**্কুর নাড়া দিয়েছে। নাট্যকার প্রসেনজিত নিজের **স্পৌবনের ট্রান্সেড**ী নিয়ে নাটক লিখতে পারবে **কিনা জানি না। যদি লেখে** তবে সেই নাটকে তার "আত্মার ক্ষত" দশকিদের কাছে মেলে ধরতে পারবে ৷ ফরাসী দেশের এবং আমেরিকার কিছ, নাট্যকার "ভেত**রের পশ্**টাকে" নিয়ে যে সব নাটক **লিখেছেন, সেই** সব নাটকের চরিত্র প্রসেনজিতকে আবিষ্ট করেছে, অভিভাবিত সংবেশিত করেছে। নাটকের করেছে. কল্পলোক প্রসেনজিতের কাছে সভা হয়ে উঠেছে। প্রসেনজিত শুধু নাট্যকার নয় সে শক্তিশালী নটও। कम्भारक विष्ठतम करत रवज़ाराष्ट्र मधे প্রসেনজিত। প্রসেনজিতের থেকে অনেক বেশি খ্যাতিমান, বাংলাদেশের এক সর্ব'-জ্বনপরিচিত অভিনেতাকে এক রাত্রে আমি অভিনীত চরিতের সংশ্যে একাদা হয়ে নিজেকে তাঁর জীবনের এক শোকাবহ ঘটনার নয়ক কল্পনা করে অন্তাপ করতে শ্বনেছিলাম। তিনি কয়েক পেগ হুইফিক সেবনের পর সাময়িক মস্ততায় ভূগছিলেন।

এইবার অনাদির কথা। তার বাণ্ডি-জীবনের ইতিহাসে, বিশেষ করে কৈশোর যৌবনের ইতিহাসে প্রথম দিনই আমার কাছে কিছু অসপাতি ধরা পড়েছিল। সব খাটিয়ে বলার ঝোঁক, শা্বে অবসেশনের নয় অনেক রোগীর পক্ষেই অনিবার্য। কিন্তু সব রোগী অনাদির মত অতীত জীবনকে অত বেশি গ্রেছ সহকারে ডাঙারের কাছে তুলে ধরে না। বেশির ভাগ ক্ষেত্রেই চিকিৎসকের নির্দেশে রোগী নিতাশ্ত প্রয়োজন ঘটলে, অতীতের ঘটনা মনে আনবার চেম্টা করে। অনাদি কিম্ভু গলপলেথকের কারদায় জীবনকাহিনী লিখে এনেছিল, এবং বেশ ফলাও করে কাহিনীর মারফভ নিজেকে জাহির করবার চেণ্টা করেছিল। জাহির করতে চেয়েছিল নিজের নিঃসপাতা ও একক-জীবনের বিভূষনাকে। দশ-বারো বছরের আগেকার ঘটনা মনে করতে গিরে সকলেই প্রায় বর্তমানের সপো খাপ খাইয়ে অতীতকৈ পুনরুজ্জীবিত করার চেণ্টা করেন। অবশ্য একা**ণ্ডভাবে** বিষয়মিত ব্যক্তির কথা আলাদা। যাঁরা নির্মিতভাবে প্রতিদিনকার ঘটনা ডায়েরীতে লিপিবন্ধ করেন মা, তাঁদের পক্ষে অনাদির মত বর্তমান ও অতীতের মধো সংগতি রাখার চেণ্টা দেখা যায়। সংগতি রাখতে গিয়ে কখন যে অসংগতির স্থিট **হয়েছে**. ভারা ব্রুতেও পারেন না। কখন যে ইতিহাস ব্যক্তিগত ভাবাবেগ দ্বারা প্রভাবিত হয়ে বিকৃত হয়ে গেছে। ধরতে পারেন না। জ্যাঠাইমার চিঠিখানা প্রভবার পর আমি ব্যুঝতে পারলাম অনাদি কেন অভ বিশদ-ভাবে মিজের অতীত ইতিহাস বলবার চেষ্টা করেছে। সে যে শ্ব্রু আমার সহান্তুতি আকর্ষণ করতে চায়, তাই নয়: সে অতীতের একটি ঘটনাকে চাপা দিতে চায়। বিশ্তারিতভাবে খ**্**টিনটি বিষ্ত করে সে নিজের অপরাধ গোপন করতে চায়। জ্যাঠাইমার চিঠিতে ইংগিতে সেই অপরাধের উল্লেখ ছিল। অনাদি কয়েকদিন পরেই দ্বীকার করল যে মেয়েটির প্রতি তার প্রেম হঠাৎ সেদিন হাওড়া ফলাট-ফর্ম ফ'রড়ে আবিভৃতি হা । টিকিটবাব্র হাত থেকে আত্মরক্ষার তাগিদে মেয়েটি যখন জ্যাঠাইমার আশ্রয়প্রাণী হয়, তখন থেকেই অনাদি তার প্রতি প্রবল আকর্ষণ অনুভব করতে থাকে। জীবনে উদ্ভিল্লযোবনা **মেয়ের** সালিধালাভ এই প্রথম। তাছাড়া মেয়েটিকে অন্য মেয়ের মত সমীহ বা শ্রুণা করারও প্রয়োজন নেই: কেননা তার অনুমান তার দেহের পবিত্তা নণ্ট হয়েছে। মনে **ম**নে মেরেটিকে নিরে অবাধ মিলনের কল্পনা করা চলতে পারে। আর তাই করতে শ্রুর করল দারীসংগবণ্ডিত অনাদি। এক নিস্তম্ধ দুপুরে জ্যাঠাইমার অনুপশ্থিতির সুযোগ নিয়ে অনাদি মেয়েটির কাছে নিজের কামনার কথা খোলাখুলি প্রকাশ করে মেরেটি তার অভিলাষ পূর্ণ করল না বটে. কিম্তু এ নিয়ে কোনো সোরগোলও **তুললো** না। জ্যাঠাইমা খানিকটা আঁচ করতে পেরে-ছিলেন। কদেব যাওয়ার আগে **অনাদির** কাছে তিনি আকারে ইংগিতে নিজের गल्मरहत्र कथा शकाम करतम धरार लाजा- ন্তি ভানতে চান, দে এই ধরনের ফেরেকে বিয়ে করতে রাজি আছে কি না। অনাদি উত্তর দিতে পারে নি। তখন ভার রোজগার ছিল না। মেরেটির মৌনভার কিণ্ডু তাকে উৎসাহিত করে এবং স্যোগ্ পেলেই তাকে প্রেম জানাতে খাকে। এমনি সময় হাড়াছাড়ি হয়। জ্যাঠাইমা নিজের ছেলের সপ্পে মেরেটির বিবাহের কথা ভাবেন নি। ভার ছেলে বিবাইের আশ্বাস দিরে মেরেটিকে বিপ্রথে নিরে যায়।

অনাদির অবসেশনের কারণ বোঝা এখন অনেকটা সহজ হবে। এই একটি মেরেকেই অসম্বৃত অবস্থায় অনাদি করেক-বার দেখেছে। বশ্বে থেকে যদিও কোনভাবে পতাদি লিখে প্রেম নিবেদন করে নি. তব্ভ অনাদি ধরে নিয়েছে মেয়েটি তাকে ভালবানে। দীর্ঘ দশ-বারো বছর ধরে মেয়েটিকে খিরে চলেছে তার উদ্দাম কল্পনা। অন্য কোনো মেয়ের দিকে তাকায় নি, তাকালেও মনে হয়েছে তার কল্প-প্রতিমার তুলনায় সব মেয়েই নিকৃষ্ট। আত্মীয়-স্বজনের সংগ্র বিশেষ সম্পর্ক না থাকায়, বিয়ের তাগিদও আসে নি। স্থালত বেশবাস মেয়েটির এক দুপুরের নিদ্রিত অবস্থার শিথিল দেহ-বিন্যাস কলপনার রখেগ রখিগন হয়ে প্রতি রতে স্মৃতিপথে জাগরিত হরেছে। তার র্মান্ততেকর কোষে প্রভাবে ম্রান্ত হয়ে গেছে সেই দুপ্রের ছবি; সেই ছবির तर किছ्, उरे म्लाम २ एक ना। हिम्छा-छाउना ও কল্পনা এখানে কণ্ডিশন্ড দিটম্লাসের কাজ করে চলেছে; রিফ্লেক্স অব্যাহত রমেছে। অনাদির মাদতভেকর টাইপ কোন ধরনের? সে দ্বান্ধ (ইর্নাহবিটার) এবং ইন্দ্রিয়ান্ভূতি-প্রধান ম্পিতকের অধিকারী। মেরেটির নিজের হাতের লেখা ডজন-থানেক প্রেমপত নিজের চোথে দেখা সত্ত্তে তার আবেশ ও মোহ ভাঙ্গতে বেশ সময় লেগেছে। দশ-বারো বছর ধরে, বলতে গেলে, যার ধ্যান করে এসেছে, তার সালিধ্য যে ওকে অতি-মান্তায় বিচলিত করে তুলবে, এটাই স্বাভাবিক। এই ধরনের অবসেশন কাটতে সময় লাগার কারণ, প্রেমিকার সামান্যতম অতিসাধারণ সদয় বাবহারকে প্রেমিক প্রেয়ের ইঞ্ছিত বলে মনে করে; প্রতাা-খ্যানকে অনাভাবে ব্যাখ্যা করার চেন্টা করে। এমন কি, রুড় ব্যবহার বা অপমানে সাময়িকভাবে হতাশ হয়ে পড়লেও, একে-বারে হাল ছেড়ে দিতে চায় না। নানা ধরনের লজিক দিয়ে প্রেমিকা যে তাকে ভালবাসে, এই ধারণাকে প্রতিষ্ঠিত করার চেষ্টা থাকে অনাদির মত অবসেশনের রোগীর। ভয়াবিষ্ট রোগী যেমন ভয়ের কারণ নেই প্রেরাপ্রি মানতে পারে না বা স্বীকার করতে চায় না; প্রেমাবিষ্টও তেমনি তার ভালবাসার কারণ নেই, একথা সহজে মানতে চায় না, স্বীকার করতে পারে না। এর কারণ, মৃষ্টিতুক কোবের কিছ্ব অংশের অনড় অবস্থা (ইনার্টদেস)।

জনাদির প্রেমিকা মেরেটিকে দেখবার কা জানবার স্বোগ আমার হয় নি। তবে এই ধরনের অন্য দ্-একটি মেরেকে আমি দেখোছ এবং বিশেষভাবে জানবার স্ব্যোগও পেরেছি। এরাও নিউরোটিক। উদেবগ ও নিরাপত্তার অভাববোধে পর্নিড়ত। অনোর বিশেষ করে প্রেষের দৃণ্টি আকর্ষণ সাধারণত নিরাপত্তার অভাব দ্রে করার উপায়। পুরুষ-প্রধান সমাজে এরা সহজেই দু-চরিত্র প্রেবের শিকার হয়ে পড়ে। এই-ভাবে এদের ভালবাসার ক্ষমতা নণ্ট হয়ে যার, পরে,ষের প্রতি বিশ্বাস হারিরে ফেলে। ভাল-না বেসে অনেক সময় ভালবাসার ভান করে। পরেবের স্তবস্তৃতি প্রেমগ্রন্ধন শ্বনে যায়। হয়ত প্রশ্ররও দিয়ে থাকে। ক্রমণ পুরুবের কাছ থেকে আঘাত পেতে-পৈতে এদের মন কঠোর হরে ওঠে। উদ্বেগ উৎক-ঠার ভার ক্রমণ বাড়তে থাকে, ক্রমণ প্ররোপ্রি আত্মকেন্দ্রিক আত্মভরী হয়ে পড়ে। কোমল প্রবৃত্তিগনলো শনুকিয়ে বায়। বিবাহ করলে নিজের ও স্বামীর জীবন বিড়ম্বিত করে তোলে। বিবাহ না হলে অন্যাদক থেকে জীবন বিপন্ন হয়। যৌবনের আকর্ষণী ক্ষমতা চলে বাবার উপক্রম হলে এরা আরো অসমে হয়ে পড়ে। নিজেকে অসহায় ও বিপল্ল মনে করে। দ্-একজন মেরে ডনজ্যান হরে সমাজের ওপর প্রতি-শোধ নেবার চেন্টা করে। আমার নিজের চিকিৎসার অভিজ্ঞতা থেকে বলতে পারি যে, মেয়েদের এই দূরবস্থা ও মনোবিকারের মূলে শতকরা ৯০টি ক্লেটেই প্রের-প্রধান সমাজের নারীর প্রতি ঔদাসীনা ও বিষম ব্যবহার।

সংক্ষেপে ধনপতির রোগব্তাস্ত বলছি। প্র্যের নারীর উপর আধিপতা করার প্রবণতা নারী ও প্রেয় দ্ফানকেই যে অস্থে করে; — এই কাহিনী থেকে সেটা আরো স্পণ্ট হয়ে বেরিরে আসবে।

ধনপতি ভয়ের অবসেশন নিয়ে চিকিৎসা করতে এল। পণা, হয়ে যাবার ভয়ে সে অম্থির। বয়স প্রায় ছত্রিশ, সওদাগ**র**ী অফিসের কেরাণী, দুটি সম্তানের পিতা, শ্বী ও বিধবা মাতার প্রতিপালক ও আভি-ভাবক। মা অনেক দিন যাবং বাতে শ্যা-শারী। ধনপতি বছর দুয়েক ধরে এই ভয়ে ভগছে। প্রথম দিনের কথা তার মনে আছে। ট্রেন থেকে হাওড়া স্টেশনে নেমেই তার মনে হল, পা আর চলবে না। শিষের মত ভারী হয়ে গেছে। সে দক্ষিণ-পূর্ব রেলের দৈনিক যাত্রী। তাকে ধীরে-ধীরে বঙ্গে পড়তে দেখে চেনা দ্-একজন এগিয়ে এল। তাদের কাঁধে ভর দিয়ে কোন রকমে ল্যাটফর্মের বাইরে আসতেই অসাড় ভাব চলে গেল। কিন্তু ভয় গেল না। এর পর মাঝে-মাঝেই এই রকম অসাড়তা দেখা দিতে লাগল। পঞা, হয়ে যাবার ভয়ও দিন-पिन वाफ्टल माशम। वन्धः खासात तप्थ-भारत বললেন, - ও কিছ, নয়। ধনপতি সেকথা মেনে নিতে পারল না। অফিসের ভান্তার न्नारा-विरमवरस्त्रत कारह পাঠালেন। বিশেষজ্ঞের পরীক্ষাতেও বিশেষ কিছু ধরা
পড়ল না। কিপ্তু করেক মিনিটের মত চলংপান্তরহিত হরে পড়ার ঘটনা ক্রমণ বেড়েই
চলা। সপো-সপো ভর। তখন সবাই
একবাকো অভিমত প্রকাশ করলেন—এ
মনের অসুখ; মনের ভান্তারের কাছে বেডে
হবে। তাই আমার কাছে আগমন। এখন
নির্ভার করা চলে, এরকম একজন সাথী
ছাড়া ধনপতি রাশতাঘাটে চলতে পারে না।
আমার কাছে যখন এল তখন একজন সহকমী সপো ছিলেন। এবার ধনপতির
জবানীতে বলছি।

—रकारना त्रकरम धोरकृटेनाटेकात स्थात অফিস করছি। ওব্ধ ছাড়া ঘুম হর না। ভয়টা ঠিক কিসের? মৃত্যুভয় ঠিক নর; তবে অজ্ঞান হয়ে রাস্ভাঘাটে পড়ে যাবার ভয়ে আমি অম্পির। আমার আসল ভর পঞ্চা হয়ে শব্যাশারী হয়ে পড়ার। অন্যের উপর নিভার করতে আমি ঘুণা করি। মায়ের মত বাত ব্যাধিতে ভূগছি না, আমি জানি। মায়ের অস্থ করে পণ্ডাশ পেরিয়ে। আমার পঞ্চাশ হতে এখনও দেরী আছে, কিন্তু খুব দেরী নেই। ঐ রকম যদি হয়,— আমাকে কে দেখবে? আর সংসার বা চলবে কি করে? ছেলে দুটো নাবালক। স্তীর কথা বলছেন? তিনি চাকরি করেন। ছেলে দুটোকেই দেথবার সময় তার নেই। আমার কিছু ভাল-মন্দ হলে তিনি দেশবেন কি করে? তাঁর সময় কোথায়? বছর চারেকের চাকরী, এখনও নাকি পারমানেণ্ট হয় भि। ছুটি নেওয়াও চলবে না।

ট্করো-ট্করো করে ধনপতি তার পারিবারিক ইতিহাস জানাল। বছর আন্টেক হল বিয়ে হয়েছে। স্থাীর বয়স এখন আঠাশ। বিরের পর ধনপতিরই উৎসাহে ও সাহাযো স্থা স্কুল ফাইনাল পরীকা দির পাশ করে। তারপর স্থাীর এবং মারের

था (श फ

এখন বাংলা ভাষায় সমগ্র খন্দেশদ
মূল, পদবিভাগ, অন্বয়, অনুবাদ ও
ও শব্দার্থব্যাখ্যাসহ খন্দে খন্দে
প্রকাশিত হইতেছে। ১ম ও ২য়
খন্দ্র প্রকাশিত হইরাছে। ০য় খন্দ
বিলা। সমগ্র খন্দের মূল্য তিন
টাকা। সমগ্র খন্দের জন্য
বিশেষ স্বিধা। প্রতি খন্দ্র জন্য
বিশেষ স্বিধা। প্রতি খন্দ্র স্বতন্দ্র
ভাবেও বিক্রম হইতেছে। প্রখ্যাত
পত্র-পন্নিকা ও পন্দ্রিকমন্দ্রী কর্ত্বক
উচ্চপ্রশাংসিত। যোগাযোগ কর্ন: ---

পরিতোষঠ কুর, বেদগ্রন্থমালা ২৯, সদানন্দ রোভ, কলিকাতা—১৬। অবতেই, একরকর জোর করে ভাকে ভাৰণীতে চ্যুক্তর দের। দেশস-ওম্যানের চাৰ্মী। এক কে পানীর কাপড়-কাচা সারান বিক্রীর কাজ। বাড়ী-বাড়ী গিয়ে লৈলের কাছ থেকে অভার নিতে হবে। **শাইনে সামানা। তবে কমিশনের হার বেশ ভারী। দাীর** চেহারা ভাল, স্বাদরীই বলা ছলে। প্রেনো দিনের বাঙালী মেরেদের মত লাজ্ক স্বভাবের মেরেটি কিছুতেই এ হাৰুৱীতে মানিরে নিতে পারল না। ব্যালালী তিন মাস পরে হিসেব-নিকেশ করে ভাকে চাকরীতে রাখার যুক্তিসংগত कान्नम् भी एक राज्या ना । स्वामीतः रमकाकरक ব্দনীতা খ্বই ভয় পেত। মেজাজের কথা <u>শামী মহাশর আমার কাছেও স্বীকার</u> क्राइटन। কোন এক নাম-করা জমিদার **বংশের গরম রভ তার ধমনীতে প্রবাহিত,** ভাই তিনি মেজাজী। আগের দিনের মত মেজাজ দেখাবার গোমস্তা কর্মচারী প্রজা ইন্ডাদি নেই বটে, কিন্তু মেজাজ ড' আছে, আর মেঞ্চান্ধ বিস্ফোরণের ফল ভোগ করতে আর কেউ না থাক, স্মীত রয়েছে।

্ এবার ক্ষী আমাকে বা বলেছিল তার ক্ষাতেই বলছি।

কিরের পর থেকেই ওকে আমি ভয় পাই। মেজাজের জানাও বটে আর গরে,- **রশাই গিরির জনো**ও বটে। অনবরত উপ-দেশামৃত দান করে আমাকে কালা করে **দিরেছে। আমি ক্যান্ডাসারি চাকরী করতে চাই নি: জো**র করে আমাকে ঐ চাকরীতে **চ্রকিরেছে। বলেছে**, তার একার রোজগারে সংসার চলছে না বলে সে আমাকে চাকরী **করতে বলহে না।** টাকার অভাব আছে, কিন্তু দেশের ভাল্ক বেচলে সে অভাব **দ্রে হয়ে বার। পরে জেনেছি তাল**ুক-মলেকের কথা সব বানানো। আমাকে **শ্বনিভ**র করে গড়ে তোলা আমার স্বামীর **মাকি একাণ্ড কামনা। দ্বী দ্বামীর রোজ-পারের উপর নিভরিশীল হলে, স্বামী-**শ্বীর মধ্যে খাঁটি প্রেম-ভালবাসা থাকতে পারে না। সম্মর্যাদাসম্পন্ন না হলে, স্ফাকে **স্বামী ভালবাসতে পারে না। স্মী-পরেরের** সমান অধিকার পরিবারে ও সমাজে প্রতিষ্ঠিত করতে চায়, তাই নাকি আমাকে স্ক্যানভাসারি করে হোক, যেমন করেই হোক, **রোজ**গার করতেই হবে। প্রথম তিন মাসে আমি তিরিশ টাকার সাবানও বেচতে পারি মি। স্বামীকে ভয়ে-ভয়ে মিথে। বলে এসেছি। তাকে যা বলেছি, সেই হিসেবমন্ত তিন মাসে, আমার অণ্ডত দেড়শ টাকা ক্ষিশন হওয়া উচিত। তিন মাস পরে ম্যানেজারের ঘরে যখন ডাক পড়ল, ভয়ে আমার পা ঠক-ঠক করে কপৈছে। প্রামী **উদগ্রী**ব হয়ে রাস্তায় দাঁড়িয়ে আছে। কমিশনের টাকা আর স্থায়ী নিয়োগপগ্র নিরে আমি কতক্ষণে নামব, এই প্রতীক্ষার। चामात्र छत्र मात्निकात्राक नत्त, न्यामीत्व। व्यामात्र व्यवस्थि व्याख व्यत्नक मृत्रथ व्याखः।

এর আলে এই রকম জলজ্ঞানত মিখ্যে কথা কোন দিন বাল নি। আমার স্বামী রেগে গেলে রাস্তার মাঝখানেই আমাকে অপ--মানিত করতে পারে। বাড়ী গেলে যে কী হবে সে চিন্তাই করতে পার্রাছলাম না। মানেজার আরো দ্-একবার আমাকে দেখেছেন। তার চাহনী দেখে ব্ৰেছি সে আমাকে স্নেহ করতে শ্রে করেছে। তাকে সব খুলে বলি যদি নিশ্চয়ই একটা উপায় হবে। এই আশায় ব্রুক বেংধে ম্যানেজারের খরে ঢাকলাম। ম্যানেজারের নির্দেশে একটা চেয়ারে বসলাম। চোখ দা তুলেও ব্রুতে পারলাম ম্যানেজার সহান্তৃতির দৃণ্টি নিয়ে আমাকে দেখছে। স্বামীর কাছে ভয়ে মিথ্যা বলৈছিলাম, সেই মিথ্যাকে সভা করার চেন্টায় আর এক গাদা নতুন মিথ্যা বললাম। স্বামী অসমুস্থ, সেই জন্যে মন দিয়ে সাবান বেচার কাজ করতে পারি নি। আজ ডাক্তারকে অত্তত দেড়শ টাকার মত না দিতে পারলে, তিনি আর ও্যধ-পত্ত জোগাতে পারবেন না বলেছেন। অথচ আমার কমিশন বাবদ মাত্র দশ টাকাও পাওনা হয় নি। বলতে-বলতে আমার চোখে জল এসে গেল। ম্যানেজার সতিয়ই লোক ভাল। আমি সেই দিনই দেড়শ টাকা অগ্রিম পেলাম। নতুন পদে বহাল হলাম। 'শো-রুম আর একজিবিশন ডেমনজ্টেটরের' পদে। মাইনে তিনশ থেকে শুরু। এইভাবে মিথ্যার বেসাতি দিয়ে আমার চাকরী জীবন এবং বলতে গেলে, বিবাহিত জীবনেরও শারা। এখন আমি স্বামীর চেয়ে রোজগার বেশি করি। পয়সার অভাব নেই, কিন্তু শাশ্তির অভাব ঘটেছে। যখনই বাইরে যেতে হয় স্বামী আপতি তোলে অশান্তির স্থি করে। প্রথম-প্রথম ভয় পেতাম। এখন আর আমি ভয় পাই না। এখন আমার চাকরীই ×বামীর চক্ষ্শ্ল হয়েছে। আমাকে ম্যানেজার স্নেহ করে, আরো দ্ব-একজন হেড-অফিসের বড়কতা আমার কাঞ্জে খুশী। স্বামীকে এসব বলি নাং কিন্ত সে দিন-রাত আমার নামে কুৎসা রটিয়ে বেড়ায়। আমার ছেলেবন্ধ,ু মেয়েবন্ধ বাড়ীতে এলে তাদের সংখ্যে দুবাবিহার করে। এমন কি আমার বাপের বাড়ীর আত্মীরস্বজনরাও তার দ; চক্ষের বিষ। আমি এখন সহাকরি না। কেন করব? ম্বী-প্রেকে খেতে দেবার ক্ষমতা ছিল না তাই আমাকে চাকরী করতে পাঠিয়েছিল। মুখেই খালি বড়-বড় কথা। এখন<u>ও</u> রোজ**ই** শোনায় যে ও আমার অভিভাবক, ন্যাযাত. ধর্মত, আইনত। স্তী-পুরুষের স্মান্ধি-কারের বুলি আর ওর মুখে শোনা হায় না। আগে-আগে আমি বাইরে গেলে, ছাটি নিয়ে স্বামীও সেখানে গিয়ে হাজির হত। मानाভाবে काজ-कर्पात विभारश्ला मृण्डि করত। ভয়ের রোগে ভোগার পর **থেকে** আর যেতে পারে না। ওর এই অসুখটা সেরে গেলে আমি ঠিক করেছি, আলাদা বাসা করব। আমাকে ত নিজের, **ছেলে**-মেয়েদের ভবিষ্যাৎ ভারতে হবে। ওর

বাঞ্চীতে আমার প্রেশ্টিক নন্ট হছে।
প্রোমোগনের আশা চলে বাছে। ওর জন্যে
আমি দিন-রাত অশান্তিতে ভূগছি। আমার
মিরেন (আধ-কপালে মাথা ধরা) কিছুতেই
সারছে না। ক্রমী-শ্রীর কথা থেকে রোগব্যাণত বোঝা গেল। ধনপতির রেগিন
হাওড়া ন্টেশনে প্রথম অবল ভাব অনুভব
করে, তার আগোর রাগ্রে অনীভা অফিনের
কালে বাইরে চলে বার। কোথার বাক্রে
সঠিকভাবে স্বামীকে এই প্রথম না জানিরে
বাইরে গেল। এই খেকে ব্যামী-শ্রীর
সম্পর্ণ তিত্ত থেকে ভিত্ততর হরেই চলেছে।

নিজের ভয়ের কারণ মানসিক এটা ধনপতি ব্ৰেছিল। কিন্তু রোগের সংগ্র ন্বামী-স্তার বিবাদ-বিসম্বাদ, এত নিবিত্ত-ভাবে সম্পর্কিত সেটা আগে ব্রুতে পারে নি। রোগীর মহিতম্কের টাইপ, প্রার-কোর্দোরক, (অতি-উত্তেজনাপ্রবণ) আত্ম-সংযমের ক্ষমতা কম। সাতাই পডাশনো করে, প্রগতিবাদী মতামতও পোষণ করে। কিন্ত স্থা-স্বাধীনতা বলতে সে বোঝে স্বামীর নিদেশিত সীমিত স্বাধীনতা। বামীর অর্থাৎ পরেষ নাতেরই অভিজ্ঞতা ও জ্ঞান বেশি, সূতরাং দ্বী তার কর্তব্য-অকর্তবা, ভাল-মন্দ সব ব্যাপারেই স্বামীর পরামশ নিতে বাধ্য দা হোক, পরামশ নেওয়া তার পক্ষে সর্বতোভাবে বাঞ্চনীয়। मृत्थ न्दीकात ना कद्रात्म छ, निर्द्धत् दश्यात কৃষ্টি-সংস্কৃতি সম্পকে সে গবিত। তুলনায় তার মতে স্ত্রীর পিত্রুল অনেক নিকৃষ্ট। ধনপতির ধারণা হয়ত মিথ্যে নয়, কিন্তু এই ধারণা প্রকাশ করী মানে স্বামী-স্তার সম্পর্ক কৈ বিষয়ে তোলা। ধনপতি দেনহ-প্রবণ, স্ফীকে ভালবাসে। কিম্তু ভালবাসা প্রকাশ করতে জানে না। খা দুটি। এক তার মেজাজ, দুই তার 🐭 নূল প্রামীত বা শ্রেষ্ঠত্ব বোধ। এই শ্রেট্র বোধ বজায় রেখে তারা স্থে-স্বাস্ততে থাকতে পারত; যদি না সে স্তাঁকে স্বাবলম্বা, স্বান্ভরে করার মহান লায়িছবোধে উম্বান্ধ না হত! আর তার স্তী হীনমন্তাবোধে পীড়িত। তার ভয় ও হীনমন্তা দ্রে না হলে, যতই সে রোজগার কর্ক, সত্যিকারের স্থানভার হতে পারবে না। শাশ্ত নিরীহ প্রকৃতির মেয়ে অনীতা। প্রনো দিনের পরি-মণ্ডলে স্বদরী ব্দিধমতী কমঠি বধ্ হিসেবে যশ অর্জন করত। আজকের শ্বন্দ্র-বিরোধের সমাজে অব্যবস্থিত-চিত্ত স্বামীর ঘরণী হয়ে মানসিক অশান্তি ও আন: বাঁশ্যক মিগ্রেনে ভুগছে। স্বামীর দেওই ডমিনিয়ান স্ট্যাটাসে সে তৃস্ত নয়: আবা বিদ্রোহ করে পূর্ণ স্বাধীনতা পেতেও তা

ধনপতির ভয় স্থাকৈ স্বাধীনতা দি সে উন্মার্গগামী হবে; আবার স্বাধীনত না পেলে বিদ্রোহ করবে। স্থান হ স্বামীর শাসনকে আবার অন্য দিকে প্রস্থাধীনতাকে।

—यत्नरि

...কোন হত্যাকান্ডের ব্যাপারে আমি বে তদত পশ্বভিত্ন পঞ্চপাতী, আগে সেটা পেণ্ট না ব্যুলে আপনারা আমার কোন क्यारे बुबर्ड भारतम ना। कार्रे फिला भूजू क्रीए।

– প্রতিটি মানুবের জীবনে দুটি वानाना-वानामा त्कर वात्ह। এकपि इराह তার সম্পূর্ণ কারিগত ক্ষেত্র, অনাটি ভার পারিবারিক ক্ষেত্র। অর্থাৎ মানুর একইসপো দুই জগতের বাসিকা। দুটি কাকরাউতে তার গতিবিধি।

...ভাই বখনই কোন মান্ব খুন হর, আমার পশতি বলে—অদ্দা খ্নীর পিছনে লেড়ি দিও না, খনে হওল মান্বটিব नाक्शाकेक त्यारमा। त्रभारतदे भूतीरक भावता शासः। এवः এই वााकशाखेन्छ मृत्यो।

আর্লাছ। সে খুন হয়েছে। সুভরাং

আমাদের দেখতে হবে তার কাকপ্রাউণ্ড কী। প্রথমে ধরুন, তার পারিবারিক ব্যাক্সাউল্ভের কথা। কিছুটা স্বাভীর এবং অনেকটা দ্বাতীর মারের কাছে আর্মি তার বর্ণনা পেরেছি। স্বাতীর বাবা নিশিকাস্ড রার ছিলেন ধনী মান্য। আনুসাপ্সিক চরিত্রগত দোৰ ভার বিশ্ভর ছিল। তাসত্ত্বে মান্ত্রটি হ, দরবান ছিলেন সম্পেহ নেই। মৃত্যুর অংগ স্বাতীর মানের কাছে একটি শিশ্র থোঁজ দিয়ে বান-বে তখন তার বিধবা দিদির কাছে পালিত হচ্ছে। নিশিকাত যে শিশ্বটির নামেও তার সম্পত্তির একটা বিশেষ অংশ রেখে গেছেন, স্বাতীর মা তখনত জানতেন না। যাই হোক, সাধনী লা তার স্বামার ইচ্ছেমত দিশ,টিকে নিয়ে এলেন এবং লালন-পালনের দায়িত্ব নিলেন। সেই শিশ্ব আমাদের কম্পনা। কম্পনার চেহারা ও আচরণে কিছ্ম ছিল। স্বাতীর মা তার প্রতি ক্রেনহে অংশ হরে পড়লেন। এমন কি নিজের মেরের প্রতিও অমনোযোগী দেখা গোল ভাকে। বিষব্যক্ষর বীজ তখনই চোণের আড়ালে ক্ষপ্নাকে কট দিত বা উতাত করত নানাভাবে। এমন কি একদিন ধাকা মেরে সিণ্ড থেকে গড়িরে ফেলে দিয়েছিল। খুব অদেশর জনো বে'তে যার কদপনা। ভাছাড়া স্বাভীর চেরে কদপনাব ক্রেরা স্কর, ক্রভাব মিণ্টি। ক্রাডীর গড়নে ও স্বভাবে প্রুয়াল রুক্তা আছে। সবাই কল্পনার অন্পরাগী, স্বভীর নর। প্রকৃতির নিরমে স্বাতীর এই গুড় প্রকোভ বহিত্বতি আত্মকাশের



করল। সে কৃতী খেলোয়াড় হরে উঠল।
আপনারা শ্নালে অবাক হবেন, আমানের
সামনে যে স্বাতী উপস্থিত—সে খেলাখুলোর
প্রার প্রভাকটি কেতে দক্ষ। সাঁভার, দৌড়,
লাফ থেকে সূত্র, করে ভীর-বর্ণা-রাইফেল
ছোড়া, তলোরার চালনা—স্কবিশ্বরে ভার
খ্যাতি আছে।...

হলের সকলে স্বাতীর দিকে তাকাল। স্বাতী চোধ নামিমে নথ খুটেতে থাকল।

কল্পনার পারিবারিক জীবদের কথা বলতে গেলেই স্বাডীর প্রসংগ অনিবার্ব। স্বাতী ভার সংশ্যে একেনে দ্বে**ছ**দা। দ্বাভীর বহিম, খীনতা কিম্পু ভব্ শ্বাভীকে সেই ঈবা' ভূলতে দিলনা। ওরা ব্রতী হরে উঠছিল। স্বাতীর সংখ্য বহু ব্ৰক্ষের মেলামেশার সংযোগ ঘটছিল। কিম্ডু স্বাতীর বাড়ি আসবার সংযোগ পেলেই পরিশামে দেখা গেছে, তারা সবাই কল্পনার অনুরাগী হয়ে উঠেছে। স্বাতী অক্ষম ক্রোধে ছট্ট্ট্ট করেছে নিরশ্তর। শ্রুনেছি, কোন কোন বিবার সাপ এমনি ক্লোধে নিজের লেজ मर्गन करतः। निरम्भकः मर्गन करतरहः न्यांजी। একটা উদাহরণ দিই। क्ल्ननारक মডার্ণ গা**র্ল করে তুলবার অব্দ**হাতে সেই শুভ বা নীরেনের সংগ্রে আলাপ করিরে দির্ফেছিল। প্রতী সম্ভবত দূরে থেকে গুদের মেলামেশ। প্রত্যক্ষ করে নিজের ক্ষতস্থান খুণটে রন্তু-পাতের অম্ভূত স্থ পেড। কিন্তু সবচেয়ে আঘাত বেশি ব্যক্তল তার, রখন মাত্র মাস-খানেক আগে সে মায়ের কাছে জানডে পারল বে কম্পনা ঠিক তার সমান সম্পত্তির মালিক! স্বাতীর মাও অবাক হয়েছিলেন। দ্বাতীর আঠারো বছর পূর্ণ হলে নিশি-কান্তবাধ্র আটেণী কথায়ত উইল সম্পূর্ণ করেছিলেন ও'র কাছে। ব্যস, স্বাডী চরম আঘাড হানতে গ্ৰন্থত হল।...

হলে অম্বত্তি গ্রেন স্বর্হণ। কর্ণেজ ইপ করেছেন। রুখ্ধবাসোঁ মিঃ গুম্ত বলে উঠলেন, তাহলে স্বাতী ইজ দা মার্ডারার?

কর্ণেল মৃদ্ধ হেলে। হাড তুললেন। ... लाउँ मि किनिम क्लीक। धवात मिरवानन्त्र প্রসংগ্য আর্মাছ। *কংপনার ব্যাক*গ্রাউ[্]ড চপণ্ট করতে তাকেও আমাদের দরকান। দিব্যেন্দ্ নিশিকান্তবাব্ ফার্মের কর্মচারীর ছেলে। দারিদের মধ্যে সে মান্ত হয়েছে। নিশিকাল্ডবাব্র মৃত্যুর আগে থেকে সে স্বাতীদের বাড়ি যাভায়াত করত। শ্বাতীর সাপো তার একটা দিকে দারুন মিল। সেও নিশ্বে খেলোরাড়। স্বাতী ভার প্রেমে পড়ল-খবে স্বাভাবিক নিয়মে নয়: কল্পনার সংশ্য প্রতিশ্বন্দিরতার জয়লাভ করার উম্পেশ্যে। কল্পনাকে সে দেখাতে চাইল, তারও প্রেমিক রখেছে। সে প্রেমিক স্প্র্য, বলিষ্ঠ, খ্যাতিমান। এদিকে প্রেমের দেবতার দৃষ্ট্মি: একদা স্বাডী সতি৷ সতি৷ গভীর প্রেমে আসভ হল मि(दामम् द्र ।

...দিবেন্দর্ কিন্তু মনে মনে কন্পনারই অনুরাগী। দিবোন্দর উক্তাকাংক্ষী। জীবনে শ্বাম্ মানের প্রতিষ্ঠা চার না, সাম ধনের প্রতিষ্ঠাও। তাই সে শ্বন্দের ভূগাছিল —সে কশনাকে ভাষাদে, কিন্তু কলা নিভাও
আছিতা মেরে। তাকে পেলে বনের আলা
নিভাল। তারপর হঠাং একদিন সে বখন
ভানল, না কলালাও স্থাতীর সমান
সম্পত্তির মাজির, তখন মনে মনে প্রস্তুত
হল। স্বাতীর বড়িয়ানে কলানাকে পাওরা
বেশ কঠিন ভাছাড়া ভার মাও চটে বাবেন।
পার হিসেবে ভড়াপনে গিবোপন্কে স্বাতীর
জনো তিনি নির্বাচিত করেছেন।

...অবশ্য ভাতেও পার পাওরা বেড। ক্ষিত্র মুশক্ষিল বাধলা উইলের সর্ভানিরে। নিশিকাত ব্ৰিমান মান্ব ছিলেন। তিনি জাদতেন, স্বাতী-কল্পনা বিরাট সম্পত্তির উত্তরাধিকারিশী জানলে বহু চতুর অজগর চোখে মারা নিরে জন্মনর হবে। ভাছাডা মিশিকাল্ড সেকেলেপ্ল্থী। এদিকে স্থার প্রতিও তার আন্থা ছিল গভীর। উইলে সর্ভ রইল যে ভার শহীর নির্বাচিত পাত্রের সপো স্বাতী বা কম্পনার সামাজিক বিরে স্কুলনা হলে তবেই ওরা তার সম্পত্তি পাৰে। নরত সে সম্পত্তি বাবে ভার স্থাীর অধিকারে। শহীর অবর্তমানে তা বাবে কোন এক বিশেষ সামাজিক প্রতিষ্ঠানের **হাতে।** স্বাতী-কন্সনার বিরের আগে তাঁর স্থাীর মৃত্যু হলে পাত্র নির্বাচন করবেন তাঁর

আগামী সপ্তাহ থেকে ধারা-বাহিক প্রকাশিত হবে লীলা মজ্মদারের নতুন উপন্যাস প্যামি

আটেনীবন্ধ পরমেশ চাকলাদার। , উইলে আরও একটা উল্লেখনোগ্য সর্ভা রয়েছে। বিরের আগে দ্বাতীর মৃত্যু হলে কল্পানা, কল্পনার মৃত্যু হলে স্বাতী এবং উভরের মৃত্যু হলে স্বাতীর মা ভাদের সম্পত্তি গাবেন।...

মিঃ গৃণ্ড মন্তবা করকেন, পিকিউলিয়ার! বন্ধ গোলমেলে দলিল!

কর্ণেল বললেন, অতিসাবধানী বিষয়ী মান্বের পক্ষে এই উইল থ্ব প্রভাবিক বলে মনে করি আমি। বাইহোক, ফ্যা**মিলি** ব্যাকপ্রাউণ্ড আশা করি পরিক্কার হরেছে। বৰ্লোছ স্বাতী চরম আঘাত হানতে প্রস্তৃত হল। এবার সে কখার আসছি। স্বাতী মুদ্র মনে বড়বল্ট করল। **শুভ আর নীরে**মের সপে কম্পনার কিছ, মাথামাথি হরে সেছে ইতিমধো--অবশা কল্পনা ভখনও ভার হীনমনাভার দর্ম বেশ আড়ন্ট। স্বাভী চাইল, ইভাবসরে বাইরে কোথাও কন্সনাকে নিয়ে বাওয়া বাক-বেখানে শক্ত-নীরেন দ্ৰজনেই সপো থাৰুবে এবং পৰ্যাণ্ড সূৰোণ দেবে বাড়ী—য়াতে কল্পনা **६** दमस একজনকেই জীৱনস্ণাী হিসেবে বেছে নেয়। মজার কথা, শহুভ আর নীরেন---

ব্যানীর সাধারণ পরিবারের ছেলে।
প্রাতীর মা পাত হিসেবে প্রকারেই দার্থ
অপ্রক্ষ করেন সে জানড। ভার করে
কলপনা সংগতি হারাবে।... অবশেরে
প্রাতী ভার কলকল নিয়ে মুর্লিদাবাদ এক।
এ প্রযোগবালার সব খরচ ভার।

্ৰেথার তাহলে আমরা প্যালেল হোটেল অনিদ পেশিছে পেছি। কল্পনা-স্থাতী-দিব্যেন্দ্র-নীরেন-শুভ -- *অবলে*রে বিভাস-বড় চমংকার মেলামেশা। জনবািশ্ত म्द्रवाग। किन्छ् मान्द्रवद मन वक् जास्त জিনিস! প্রকৃতিয় খ্য কাছে এলে এই मात्रिष्यीन निश्मारकां भित्रत्वरण स्वन्नमा হঠাৎ বদলে গেল। তার আফুল্টভা কেটে গেল। সে <mark>রীতিমত ফ্রাটিং শুরু করল</mark>। বাস্, স্বাতী সংখ্য সংখ্য ছড**ব্**নি**খ। সেই** প্রাচীন নিষ্ঠার ঈর্বাবোধ আরেক বিভিত্ত চেহারার তাকে গ্রাস করণ ৷ সে সইতে পারছিল না শৃভ-নীরেন-এমনি ভার দিব্যেশ্য ও কম্পনার গ্রাসে নিক্ষিণ্ড হবে! এ ইবা নারীহ, দয়ের স্বাভাবিক ইবা। দে যা চেয়েছিল, তা সতি৷ সতি৷ **ঘটতে** দেখল বখন, অবস্থা দুঃস্থ হল ভার কাছে। কল্পনা শৃভ বা নীরেনকে বিরে করে বসলে সম্পত্তি হারাবে ঠিকই, কিন্ডু তাতে যেন স্বাতীরও বড্ড হার হবে। সে তখন কল্পনার গারজেনের ভূমিকা নি**ল।** অসহায় স্বাতীর পক্ষে এই ছি**ল স্বাভাবিক।** কিন্তু সকচেয়ে আঘাত লাগল ভখন, বখন আট ভারিখে মোতিঝিয়ের বটভলার দিবোন্দরে সন্ধো আপন্তিকর অবস্থার সে रमथन कल्मनारक। আগত্ন सदस्य উঠन স্বাতীর মগজে। ...কিন্তু না, স্বাতী ভার **ब्र**ात कम्पनारक रूखा कर **কথা ভাবে**মি। সে এখান থেকে তার নিরে পালাভে চাইছিল। নর তারি সে পাডডাড়ি গোটাত। কিন্তু হ'ট্যুর বাথা, দিবোপনুর জেদ, তারপর কল্পনা সকাল থেকে উধাও, … শবাতীর যাওয়া হল না সেপি**ন**া…

মিঃ গণুত বললেন, আট তারিখ রাজে শ্ড আর কল্পনা হোটেলের বাইরে কাটিরেছিল করের ঘণ্টা।

কর্পেল জবাব দিলেন, হাা। ভাতেও একই প্রতিজিয়া স্বাতীর মনে। অথাৎ কল্পনা সভিঃ এবার বাজি জিতে নিরেছে। দিবাদের হোক, শুভ হোক বা নীরেন হোক-শ্বাতীর কাছে তখন সবই এক। তবে দিবোল্যুর সপো কল্পনা উবাও হলে সে বেশি আঘাত শেত, এই বা।

্বাই হোক। এবার আমরা আর্সছি হোটেলের কিছু অন্তুত ঘটনার প্রসন্দো। চীনা মিল আমার একটা কথা বলেছিল। অনামনন্দকা মারের মনোবোগ আকর্বপির জনো উপোক্ষত শিশ্ব অনেক সমর কিছু অন্তুত কাজ করে বসে। গৃহস্থালীর নামা জিনিস বিশ্বংথল করে। বেমন ধর্ম, হাতের কাছে খুস্তীটা মেলে না—ক্ষেপ্তাল সেটা রারেছে কাপড়ের বাক্সে। অক কোর্স, এটা শিশ্ব মনসভন্তের ব্যাপার। কিস্তু অনেক বরুক্ষ হাম্বেছি হুটেনে এই

শিশ-মনস্তত্ত্বরে গেছে। প্রথমে খটল কল্পনার ট্রথরাশ চ্রির ঘটনা। ট্রথরাশটা অবশ্বে দেখা গেল চীনা মিতের স্ব্যাগের मत्या तरहरू। अठा देन्द्रत-त्वकारनत कीकि नग्र, भान-त्यवरे। धरे ह्यार्टेस्न धकरकाण ডিভোর্নড ব্যামী ও দ্বাী বাস করছে। অৰশ্য কনডিশানাল ডিভোস'। আর এক মাস সরেই তাদের লিগ্যাল সেপারেশনের কাল শেষ হচ্ছে। এর মধ্যে যদি তাৰের মিলমিশ না হয়, তাহলে তাদের মধ্যে আইনত চরম ভিত্তোস চুকে বাবে। মঞ্জার কৰা, সেই কৰে ফিন্তু আলাবাদী স্বামুী করলেন কাঁ, ক্ষ্ম কিন্তু হতাশ দ্বীর न् निष्य जाकर्यान्य जाता निष्यत है श्रेष्टानहि স্ফ্রীর ব্যাগে সাচার করলেন। কিন্তু সরে বিলক্ষণ লক্ষা পেলেন, সাহসেরও অভাব ঘটল—ভাবলেন এতে যদি শাী আরও চটে যান, আশা নিম্ল হবে। সভেরাং তিনি **इंग्रे करत क**ल्लात है,थडार्गां र्मातरह रक्त-লেন সুযোগমত। বিভাসবাবু! আশা করি, সমর্থন করছেন।

বিভাস স্কল্ড মুখে বলল, হাাঁ সার। কল্পনার রাশটা এখনও আমার কাছে শুকানো রয়েছে।

্চীনা মিত্র ফোঁস করে উঠল, বা রে! অক্তৃত লোক তো!

কর্ণেল শ্বং করলেন।...এর পর ষা
সব হারাল, স্বাভীর কেডস বা ইরা বোসের
চূল—সব কিন্তু এমনি পৃথিক-পৃথিক
বান্তিগত হস্তক্ষেপ। খুলে বলি, স্বাভী
কেডস পায়ে দিয়ে সংশেক্ষা দেবীর ঘরে
চুকেছিলেন। উনি তখন প্জোয় বসেছেন। এটা সাত তারিখ সন্ধারে ঘটনা।
স্বাভী হয়ত নিতান্ত কৌত্রলী হয়েই
গিয়েছিল ওঘরে...

र्वाणी प्राप्त प्रजल এएकारा। स्मार्-करफे दलल, कल्पनारक थेइकाइलाम।

...যাই হোক, স্কুদর্শা ভীষণ চটে গেলেন এবং স্ব্যোগমত এ কমণ্টি করকেন। বিভাসকৈ তিনি সইতে পার-ছিলেন না। কারণ তাঁর স্বামীর আদরের ভাইপো দলোল চেহারায় বা চালচলনে অবিকল বিভাসের মত। তাই বিভাসের বাংচাবেই জ্বতোটা ভূবিয়ে রাখলেন। মিসেস ব্যানার্জি?

সংদেশ্বা নাক-মুখ সি'টকে বললে, বে; করেছি!

অপপট হাসির গ্রেপ্তন উঠল ঘরে।
কপেল বলতে থাকলেন।...এর পর ঘটে
চুল কাটার ঘটনা। একাল নী বনের। স্ব আট তারিথ সম্ধায় ইলেকটিরি ফেলের সময় একট, দুট্মি করতে চেরেছিল স্মেকার সপো। কিন্তু অম্ধকারে ভুল করে চুপি-চুপি পর্দা তুলে সে অবাক হল।
ইরা বোসের ঘর! সে আরও অবাক হল,
ইরা মোমবাতির আলোর চুলের ম্বাপি
ম্কেছে। তার মাথাজোড়া টাক। ইরা
তন্মর হয়ে চুল গোছাজিল। বস, দীরেন পিছল থেকে ক; নিরে একসংশা মোম-বাতি নিভাল এবং কগোছা চুল কেটে ফেলল। ইরা ওকে ভুত ভেবে দৌড়ে বেরিরে এল বর খেকে। কিছু গোপন রেখে কিছু বলল স্বাতীদের কাছে।...

ইরা বোস গর্কে উঠল, গ্রন্ডা, সম্ভান ; ইতর কোথাকার!

স্কেকাও জের টানল।...আমি হলে আঁতুড় বরে গলার ন্ন ঢেলে মাগতাম।

কর্ণেল বললেন,,,তারপর ছবি চুরি চীলার ছবিটি চুরি করেছিল বে, সেই কাপনার খ্নী। সে প্রস্পো পরে আস্ছি। স্লেকার প্রেদেবের ছবিও সে চুরি করে-ছিল। কারণ সে জানত, স্বদেকা হিন্টি-तिसात रताणी अवः भृत्युष्णण्डामः। अवः দে আরও জানত, অধ্যাপক দে**বতে**।ৰ यानां क्या शहीन नवादी द्वालन হাতাতে বাস্ত। স্বেক্ষার রোগ বেড়ে বাবে ছবি চুরির ফলে এবং ফিট হরে পড়ে থাকবেন তিনি। সেই সুৰোগে খুনের কিছ, চিহ্ন তার ঘরে পাচার করতে পারবে একেবারে দিনদ্পর্রেই। দেবতোৰ দলিলের ব্যাপার গোপন রাখবার জন্যে এই খুন করেছেন — সেটা সে বেভাবে হোক প্রতি-পল করবেই, এই ছিল ভার লক্ষীম। এই भटना गर्**छ-कन्मनात वाामात कफ़्रिस मिना।** শত্তর সেই অশ্ভূত কবিতা, মধ্যরাত, ডোবা, শ্ভ-কল্পনার মধা রাত্রে অল্ডর্ধান-স্ব মিলিয়ে দোষ পড়বে অধ্যাপকেরই কাঁধে। খনের একটা সপাত পটভূমি এবং মোটিভ মিলবে এতে।...

…কিন্তু একটা চুটি ঘটল। ছবিটা তার ঘরেই হঠাং অবিকার করল স্বাতী। সংগ্রু সংগ্রু সেবং দিতে গেল বথাস্থানে। স্পেকা তথন ফিটপ্রস্তা, দেবতোষ তাঁকে পরিচর্যায় বাসত। স্থ্যা পেল না সে। তথন মানদার শরণাপার হল। বি মানদা কোন এক ফাঁকে রেখে এল অধ্যাপকের বাগে।

...এদিকে এ ছবিটা হাতছটে হওরাতেত খুনী বাসত হয়ে উঠেছে। শ্বিতীয় ছবি অর্থাৎ চীনারটা সে এমন জারগার লুকোল

—এটা আমার অনুমান অবশ্য, শ্বাতী ভার
বৌজ পাবে না। শ্বাতী নিশ্চর অবাক
হরেছিল। কিন্তু নে ভেবেছিল, এটা
নিতাত দুক্মি।

মিঃ গাণত অধৈবা হরে বললেন, এবার খনীর কথার আস্থন কর্মোল।

কর্পেশ বলজেন, ইরেস। এসে পড়োছ।
তবে শুখ্ মনে রাখবেন, দাঁপেন বোস বা
তার গোড়ত স্মার্গালং আজ রাত দলটা
আস্থা আউট অফ পিকচার ছিল। কেউ
এ ব্যাপার জানতনা খ্যাক্তিরেও। কিচ্ছু
এটা ঠিক—একই ডোবার ধারে প্রফেসর বা
দাঁপেন বোসের কারবার। প্রফেসর জর
পেরে চেণ্টা ছাড়ালেন। কারব পার্ড পার্কার
লিখে ছান্টোচিত ডেপোমি শ্রে ক্ষালা।
কিন্তু দাঁপেন বোস দেখল, সে নিরাপদঃ
অবল্য সে শেবরকা করতে পারল না, এই
বা দৃশ্ব ——হেনে উঠলেন কর্পেল।

...লেডিজ আছে জেন্টনমেন! ব্নীর প্রথম নকা ছিল কিন্তু স্বাডী।

সবাই চমকে উঠেছে সংশা-সংশা। শ্বাতী সোজা হয়ে বসেছে।

...হাঁ। প্রথম চেন্টা করল সে স্বাভীর ওপর। কিন্তু সে জানত, স্বাভী শবিমভী মেরে। গারের জারে ভাকে পারা কঠিন। জন্য প্রক্রিয়া—বথা স্টার্টাবং বা প্রোটকাট কিন্দা অগত্যা পরেজনিং করারও বংশত কবি রয়েছে। স্ভরাং সে স্বাভাবিক কিন্তু স্পান্ত একটা উপার খাজান। সাভ তারিশ সন্ধ্যার স্বাভী বখন সবে সিন্দ্রিভে পারাছাতে যাছে। পিছন থেকে কলার খোসাছাত্র যাছে। পিছন থেকে কলার খোসাছাত্র মারল। স্বাভী পা পিছলে গাড়িরে পড়ল। খ্নীর উল্পান্য ছিল, তাকে ওঠানোর ছলে গলা টিপে ধরবে কিন্বা...

...হাাঁ, এখানে যদিও গারের **জোরের** প্রশ্ন আসছে—আপনারা ভূলবেন না, মানুৰ যত গরিমানই হোক, আকস্মিক **পতনের**

শ্রীত্বারকান্তি খোবের
বিচিত্র কাহিনী
ও
আরও বিচিত্র কাহিনী
গড়ে' আনন্দ পাবেন

মৃহতে সে সম্পূর্ণ অবশ হরে পড়ে এবং এই ছিল খুনীর পক্ষে অভাবিত সুবোগ।

...কিন্তু সংগা-সংগা শব্দ শুনে
সারঞ্জন দৌড়ে আসায় স্বাহাগ বার্থ হল।
আট তারিথ সকাল থেকে দেখা গেল এক
অভাবিত ব্যাপার। কম্পনা তার সংগও
ফ্লাটিং শ্রু করেছে। সে কম্পনার প্রতিই
বেশী আসন্ত ছিল। ম্বাতীকে খ্রু করেল
কম্পনা উইলের সর্তসম্মত তার অংশের
মালিক হবে। অভএব কম্পনাকেই সে বিরে
করবে। কিন্তু ম্বাতী ক্ষীবিত থাকলে সেটা
অসম্ভব। তার মাও চটে বাবেন।

.....অথচ দ্বাতীকে কীভাবে খ্ন করবে সে ভেবে পাছে না। হঠাং শৃভ একটা বিচিচ পরিস্থিতির স্টিট করল। একটা প্রবাদ আছে, সর্বনাশ সমংপম হলে পশ্ভিত বান্তি অর্থেক ত্যাগ করেন। অগত্যা সে ভেবে দেখল, কল্পনাকে পাওয়া অসম্ভব দ্বাতী বর্তমানে; কিল্কু স্বাতীকে পাওয়া খ্বই সম্ভব কল্পনার অবর্তমানেও। কপ্পনা মরলে তার সম্পত্তি স্বাতীকে বর্তাবে। বাস, সম্পত্তির লোভ তাকে গ্রাস্ করল—তার বা্থাতার অন্য এক সাম্থনা আনল।

শ্রিশ্থিত অন্ক্ল। ডোবারহসা

জমে উঠেছে। নর তারিখ সকালে এক ফাঁকে
সে বেরিরে পড়ল। বেরোনর প্রধান কারণ,
কল্পনা হোটেলে নেই। সে কল্পনাকে এক।
পেতে চাইছিল—অথচ কল্পনার পান্তা নেই।
তবে কি শ্ভদের সন্দে গেছে? সে ভিউফাইন্ডার নিয়ে বেরোল। ভিউফাইন্ডার
নেওয়ার উদ্দেশা স্পন্ট। দ্র থেকে দেখবে
বা লক্ষা রাখবে। কিল্ফু আধার মহলে গিয়ে
বখন আবিন্ফার করল যে দ্জনে বেরিয়ে
এল, শ্ভ থেকে গেল—হয়ত কল্পনাও তার
সন্দো রয়েছে, সে মৃহুতে শ্লান ঠিক করে
ফেলল। এ স্যোগ মোক্ষম। শ্রু কল্পনাকে
খনে করলে তার ওপর কারো সন্দেহ হতে
পারে, কিল্ফু শৃভক্তেও শেষ করলে দায়টা

ভোষারহস্য এবং পরে অধ্যাপকের কাঁষে গিয়ে পড়বে।.....

...খুনী কিন্তু একা পেল শ্ভেকে।
কাল শেষ করে ফিরে এল রিকপোর। মোট
মিনিট লগেক সময় হ'তে লাগল। পথ এবং
সমরসংক্ষেপের জনো সে শোড়ো বাগানের
ভিতর এলা। আশ্চর্য, সেই সময় অভাবিত
পেরে গেল কন্সনাকে—ছাড় খ'লেতে
বেরিরেছে সে। গলা টিপে মারার পরিপ্রম
সে টের পেরেছে—নাড প্রশান কর্মার
সে টের পেরেছে—নাড প্রশান সংলা খ্র
সহজ পথা নিল সে। একটা ই'টের সাহারে
করল। কন্সনা নিশ্চন সর্বশিব্তে আয়ার
করল। কন্সনা নিশ্চর বিশ্বিত আয়ার
করল। কন্সনা নিশ্চর বিশ্বিত আয়ার
করল। কন্সনা নিশ্চর বিশ্বিত আয়ার
করল। কন্সনা নিশ্চর বিশ্বত, শতান্ডিত
হর্মেছল—অত সরল ভীতু মেরে; ...কর্পেল
দীর্ঘন্মাস ফেললেন। ...বাকিটা বর্ণনা
আনবশ্যক। আপনারা মিঃ গ্রেভের বর্ণনার
সপ্যে একমত হতে পারেন।...

হলঘরে অস্বাভাবিক স্তন্ধতা। করেকটি মুহুত মাত। তারপর স্বাতীই ভাঙা গলার চেচিয়ে উঠল, কে—কে খুন করেছে কম্পনাকে?

কর্ণেল নীলাদ্র সরকার আগুল তুলে বজ্রনিযোধে বললেন, দি মার্ডারার ইঞ্চ দেয়ার—দিবোল্দ্রায়চৌধুরী!

দিবোদনু পাল্টা চিংকার করল, শাট আপ! শাট আপ ইউ ওল্ড ফ্র্ল!

ততক্ষণে তার দ্পাশে প্লিশ। সামনে মিঃ গ্রেতর রিভলবারের নল।

প্রদিন স্কালে।
দেউপনে গিরে ওদের বিদায় দিরে
ফরিছপেন কর্ণেল নীলাদ্রি সরকার।
নীরেন, স্বাডী, স্বাডীর মা,
অধ্যাপকদম্পতি, স্বাই ফিরে গোলেন।
ইরা বোস একা গেল আলাদা কামরায়।
দীপেন বোস ততক্ষণে প্রিজনভানে
বহরমপ্রের পৌছেছে। দিবোদদ্ মুর্নাম্দাবাদ থানার হাজতে রয়েছে। চীনা আর
বিভাস প্যালেস হোটেল আপাতত ছার্ডোন

দেশা বাছে। কর্ণেক প্রপার বারে-বার্ ফিরে আসহিলেন পারে হে'টে।

প্যালেদ্ হোটেলের সামনে এব প্রকাষ বারে গান্দ্রকরালা দেবতপাথ বাধানো বাটের কাছে তিনি থবনে দাঁড়ালেন। পালাপালি বলে রয়েছে বিভাগ আর চীনা। হাতে হাত, আঙ্কুলে আঙ্কুর্ করতলে করতল।

সামনে শনীতের ননীলাত গণগা। শির্মাণ করে বাতাস বইছে। জলে কাপন। বাসে পাতার কাপন। গাছপালার কাপন। প্রকৃতি জগতে একটা অপর্প শিহরণ চলেছে বেন।

এবং নিজের দারীরেও সেই শিহরণ,
অন্ভব করছিলেন কর্ণেল সরকার। বেন
বা প্রকৃতির এই কাপনের প্রতিবিদ্দ পড়েছে
জলের নীচের ওই ধরথর প্রতিবিদ্দেবর মধ
সারা জীবজগতেও।

বিভাস আর চীমা অস্ফুট হো
উঠল। সপ্তে সপ্তে। কণে কণে কের মনে হ
জীবনের ওপর শুধু কি মৃত্যুরই নিরশ:
ছারা পড়ে চলেছে? মৃত্যুর ওপরেও ট
জীবনের ছারা পড়ছে জুমাগত। ওই চে
ছারা পড়েছে! বিভাস-চীনার এক বেদনামৃত্যুর ওপর আজ এতদিনে তাদে
জীবনের চণ্ডল ছারা পড়ল। নতুন জীবদে
ছারা মৃছে দিলা একটি মৃত্যুর—একা
বিচ্ছেদের ক্ষণকালটিকে। পৃথিবী জুড়ে এ
ধারাবাহিক ছারা পড়ার ইতিহাস!

আজনীবন নিঃসপগ কর্ণেল নীলা সরকার হয়ত গভার দৃঃথে কিংবা স্ একটি দীঘশবাস ফেলে হোটেলের দি পা বাড়ালেন। পিছনে বিভাস গান গে উঠেছেঃ

> আমরা যারা এসেছিলাম হারিয়ে যাবার ংগার নিশীথ রাকে শাতাঝরা বনে অংধকারের ভেলার। যাব আলোর উপক্লে....

> > [শেষ]





(প্রে প্রকাশিতের পর)

৩০ জনের কথা মনে আছে। ঐদিন ভান, প্রেসিডেন্সী কলেজে আই, এস, সিতে ভাত হলো। বিষয় হিসাবে বিজ্ঞানটাই তার কাছে প্রিয়।

ঐ ৩০ তারিখেই একটি নতুন দাটক শোনা হলো নাটাছারতীতে। মনোজ বস্ব তাঁর পলাবন নাটকথানি নিজেই পড়ে শোনালেন।

দার্টকের গণপটা সবারই ভালো লাগলো: কিন্তু সংলাপবহুল বলে মনে হলো অনেকের। হাইছোক, মোটামটি যখন ভালোই লেগেছে—তখন নাটকের দূর্বলি দিকটা পরে ঠিক করে নিলেই চলবে। বিহাসলি তো চলুক।

কদিন আপে অভিনয়ের সময়স্চীতে যে পরিবর্তন করা হয়েছিল, নতুন করে আবার সময়স্চী বদলানো হলো। প্রথম প্রদর্শনী আরম্ভ হবে বেলা দুটোয় শেষ প্রদর্শনী সম্ধা সাড়ে ছটায়।

শ্লাবন নাটকের রিহার্সাল শ্রু হলো ৭ জ্লাই।

ঐ দিনেই খবর পেলাম বিশ্বস্তস্তে,
রঞ্জয়ভালের নতুন নাটক 'রক্তের ডাক' দার্শ
আলোড়ন সৃথি করেছে। বলা বাহুল্য
দুর্গাদাস তথন রগুমহলে যোগ দিরেছে।
বাংলা রগ্গমণ্ডের ভালো খবর পেলে মনটা
স্বভাবত থ্লি হয়। কেননা, আমরা
থিরেটারের মান্য—জীবনের ভালো-মণ্ডের
সংগ্গ জড়িরে নির্মোছ নাটক আর মণ্ডকে—
সৃত্রয়ং ভালো খবর পাওয়ার মধ্যে আনন্দ
থাকে বৈকি।

আরো একটি নতুন দাটক, কবি
কালিদাস মিনার্ভায়ে উদেবাধন হলো
১৯ জুলাই। ঐ দিনেই ছিল নাট্যভারতীতে পি ভবলার ভির ১৪৯তম
জভিনয়। রাণীবালা ছাটি নিয়েছিলেন

শ্বাদেখার কারণে—ঐ দিনের অভিনয়ে তিনি যোগ দিলেন। সাতটায় অভিনয় শ্রে হয়েছিল। সেদিন রণগালয় প্রাছিল প্রায়।

পর্রদিন ২০ জলোই ১৫০তম অভিনর। সেদিন দশকিপ্রে ছিল রপ্যালয়। অভিনয়ও জমেছিল। অভিনয় শ্রে হয়েছিল বেলা চারটায়।

অভিনয় খেবে ৸তুন নাটক প্লাবন রিহাসাল শ্বু হলো। রাভ তিনটে প্যাপত চললো রিহাসাল। তারপর ফিরে এলাম বাডি।

এরপর পর পর তিন রাত •লাবনের রিহার্সাল চললো। কোনদিন রাত তিনটের আগে রিহার্সাল শেষ হতো না।

যে কোনও নতুন দাটক মঞ্চপ হবার আগে অভিনেতার মনটা সে-ই নাটকের কথাই চিচতা করে। কী জানি—কেমন হবে নাটক। বিচারটা তো দশকি সাধারণের। দশকের বিচারে উত্তীর্ণ হতে পারাটাই গ্রো আসল কথা।

যাইহোক, ২৪ জুলাই ছিল *লাবনের উদ্বোধন রজনী। সংধ্যা সাতটায় শুরু হলো অভিনয়। তিনঘণ্টা পনেরো মিনিটের নাটক!

সেদিনে এক নতুন অভিজ্ঞতা হলো।
এর আগে নতুন দাটকের উদ্বোধন রজনীতে
দেখেছি দর্শকর্দের মধ্যে কিছুটো চাঞ্জা
থাকে, অনেক সময় কিছুটা হৈ-চৈও হয়
অভিনয় চলাকালে। প্রশংসা বা নিন্দা—
যাইহাকে নানা মন্তবাও কানে আসো। কিন্তু
আন্চর্ম অভিজ্ঞতা হলো আমার। সেদিন
শান্ত মনে দর্শকরা নাটক দেখলেন। এতট্টকু
হৈ-চৈ দ্রের কথা কোনও ট্করো মন্তব্যও
কানে আসেনি।

প্রশন জাগলো মনে—তবে কি নাটকটা ভালো লেগেছে। হয়তো তাই। লার্ণ দ্শিসতা ছিল নাটক নিয়ে।
কী হবে, কে জানে। ডাছাড়া দাট্যভারতীর
ভিতরের অবস্থাও ভালো নয়। রাধানাথবাব্ তো একদিন গোপনে আমাকে বলেই
বসলেন, দাদা—ভাবছি সবাইকে এক মাসের
নোটিশ দেব! এভাবে আর কদিন থিয়েটার
চালাবো। হয়তো কোন মতে খরচটা উঠছে
—কিন্তু এ অবস্থার থিয়েটার চালানো কি
সম্ভব?

বললাম, অপেক্ষা করে দেখুন। এর মধ্যে নোটিশ দেওরার কথা চিস্তা করবেন না। প্লাবনের ফলাফলটা একবার দেখা দরকার।

চিন্টাটা কেবল রাধানাথবাব্র নর,
আমারও। হয়টো অন্যানা অভিনেতাঅভিনেতীদের মনেও এই একই চিন্টা।
থিয়েটারের ভিডরের থবর তো আমরা
জানি, নাটক বদি চলে তাহলে ধেমন আলে,
না চললে সে অবস্থাটা ভাবাই ধার না।
একটা থিয়েটার আর্থিক অন্টনে বংধ হয়ে
গেলে, দুঃখটা যে কোখার বাজে তা
বোঝানো বায় না।

ষাই হোক, গুলাবন আমাদের স্ব দুফিক্তার অবসান ঘটালো।

শ্লাবন দশকের বিচারে উত্তীর্ণ হলো। দার্ণ স্থাতি পেল। স্তরাং আপাতত দ্শিস্তার শেষ।

শ্বাবন অভিনীত হতে লাগলো পূর্ণ প্রেক্ষাণ্ডে। পাঁচল থেকে সাতালে জ্লাই পর পর তিন দিন শ্বাবন অভিনন্ন হলো। প্রতিদিনই আলাতীত দর্শকসমাগম হয়েছে। আর নাটক এবং অভিনয়ের উল্দেশ্যে বরিতি হয়েছে সাধ্বাদ।

বাইশে প্রাবণ ইংরেজী ৭ আগস্ট, দিনটি শুন্ধ বাংলাদেশ এবং বাঙালী জাতির নয়, সারা বিশেবর মানুখের কাছে বিয়োগ-বাথায় চিছিত দিন। ঐদিন কবি রবীশ্চনাথের মহাপ্রয়াণ ঘুটে।

রবীশ্রনাথ অস্ম্থ—এ খবর কদিন আগে থেকেই শোনা যাচ্ছিল। কিন্তু মৃত্যু সংবাদটা সব সময়ে আকস্মিক। রবীশ্রনাথের মহাগ্রয়াণের সময় দৃপুরে বারটা বেচ্ছে দশ মিনিট।

রবীন্দ্রনাথের মৃত্যু-সংবাদ ছড়িরে পড়ার সপো মহানগরীর জীবনযাতা দতব্দ হয়ে গেল। বন্ধ হলো অফিস্-আদালত, দুক্ল-কলেজ। বন্ধ হলো থিয়েটার, সিনেমা।

রবীন্দ্রনাথকে শেষ দর্শনের উদ্দেশ্য জোড়াসাঁকো বাড়িতে ঐদিন কলকাতা শহর ভেঙে পড়েছিল। অরোরা ফিল্ম কপো-রেশন, এর আলো রবীন্দ্রনাথের অনেক ছবি ভূলেছিল। ৮ আগদ্ট সেইসব ট্করো ছবিকে একসপো গ্রখিত করে ধারাবিবরণী বোগ করা হলো। ধারাবিবরণীতে আমিই কণ্ট দিয়েছিলাম। এরই মধ্যে আর একটি ঘটনা। পোটল স্কালনিং। ১৫ আগস্ট থেকে পোটল র্যালনিং প্রেয়ু হর।

এদিকে শনি-রবি বথারীতি প্রাবন অভিনীত হচ্ছে নার্টানকেতনে। অন্যান্য দিনে বিভিন্ন দাটক মঞ্চপ্থ হচ্ছে।

১৭ আগস্ট রবীন্দ্রনাথের তপণি দিবস।
ঐদিন রঙমহলে এবং নাটানিকেতনে
অভিনয়ের প্রেব কবিগ্রের স্মৃতির
উদ্দেশ্যে তপণি করা হলো।

১৭ আগস্ট শ্রী ও প্রবী চিচ্নগ্রে ম্ভিলাভ করলো ভারতলক্ষ্মী পিকচাসের 'অবতার' ছবিখানি। ঐ ছবিতে আমিও অভিনয় করেছিলাম।

ঐদিনেই আই-এফ-এ শাঁল্ডের ফাই-নাল খেলা অনুষ্ঠিত হলো। মহমেডান স্পোর্টিং ২ গোলে বিজয়ী হয়েছে। প্রতিপক্ষ কে ও, এস, ডি কোন গোল করতে পার্রোন।

২০ আগন্টের একটি ঘটনা। তটিনীর বিচার অভিনয় হচ্ছে নাট্যভারতীতে। অভিনয় দেখতে এসেছে দুর্গাদাস। কিন্তু অবাক কান্ড, সে টিকিট কেটে এসেছে সাধারণ দর্শক হিসাবে। কর্তৃপক্ষ জানতে পেরে দুর্গাদাসের কাছে গোল, তার ঢাকা ফেরত দিতে। কিন্তু দুর্গাদাস জানালো, দে-তো ম্ব-পরিচয়ে এখানে আসেনি, এসেছে সাধারণ দর্শক হিসাবে।

দুর্গাদাস কিছ্ সময় দশকিদের মধ্যে ৰসে থেকে অভিনয় দেখলো, তারপর খেয়াল ফুরোতেই চলে গেল।

অভিনয় আর অভিনয়, এর মধ্যে মাঝে মাঝে বৈষ্যিক ব্যাপারেও জড়াতে হয়। গ্রে দুর্ঘীটে থানিকটা বসতবাড়ির জমি সেদিন রেজেন্ট্রী করা হলো হিন্দুন্থান কো-অপারেটিভ সোসাইটির কাছ থেকে। রেজিন্ট্রেশনের তারিথ ছিল, ২৭ আগন্ট।

২৯ আগস্ট বর্ধমানের মহারাজাধিরাস্থ বিজয়চাদ মহতাব লোকাস্তর গমন করলেন। পরিচিত কারো মৃত্যু-সংবাদ পেলে মনটা খারাপ হয়। কিস্তু সময়ের সপে আবার প্রই স্মৃতির আড়ালে হারিয়ে যায়।

আগস্ট মাস্টা শেষ হয়ে গেল।

সেপ্টেম্বরের প্রথম দিন, নাটাভারতীতে মহেন্দ্র গ্রেতের 'কঞ্চাবতীর ঘাট' নাটকের রিহাসাল শ্রেহ্ হলো।

নতুন নাটক, বিষয়-বৈচিত্যও আছে।
ভাছাড়া নাটকের আমার ভূমিকাটিও বেশ
মনের মতো। অনেকদিন পর একটি ঘটনাবহ্ল নাটক পাওয়া গেল। তবে নাটকখানি
বিহাসালে পড়ার সপো সপো যথেণ্ট
পরিবর্তান করা হয়েছিল।

এর পর বেশ করেকটা দিন কাটলো।
প্রতিদিনই যেন একই দিনের প্নেরাব্রি।
এর মধ্যে একটি নতুন খবর হলো
১৮ আগস্ট স্টার ধিরেটারে মদনমোহনের
উদ্যোধন।

আদিকে ১৯ তারিখে নাটাভারতীর দেউজ নিরে একটা ঝামেলা হলো নান্বাব্র সংগো। কংকাবতীর ঘাটের দ্শালভারে ব্যাপারে আমি নিজে কয়েকটা ক্ষেত্র দিরেছিলাম। কিন্তু বাদ সাধলো নান্বাব্র। তার কথা, আমার পরিকল্পনা মতো দ্শাল্ট তৈরি করা অসম্ভব।

কিন্তু আমি তা মানতে রাজি নই। অগত্যা মহেন্দ্র গ্লেডকে বললাম, দ্টারের পটলবাব্যকে যদি পাওয়া যায় তবে সে নিশ্চয়ই পায়বে এই দৃশাপটের ব্যাপারে আমাদের সাহায্য করতে।

মহেন্দ্রাব্ আমার ক্থামতো শ্টারে সাললবাব্র কাছে গেলেন পটলবাব্র ব্যাপারে অনুরোধ করতে। শ্টার ক্তৃপিক রাজি হলেন। পটলবাব্ কংকাবতীর ঘাটের দৃশ্যসক্লার দায়িত্ব নিলেন।

তবে একটা কথা দিতে হলো, নাট্য-ভারতী যেন পট্লবাব্র নাম বাবহার না করে। পট্লবাব্র ভালো নাম পরেশ বোস। বিজ্ঞাপততে তার নাম নাট্যভারতী বাবহার করোন, দিয়েছিল বোস স্ট্রভিও-র নাম।

যাইহোক, আপাতত একটা ঝামেলা চুকলো।

কিন্দু সহজ পথ ধরে কি সব চলে।
২০ আগন্ট রিহাসলি চলছিল কণ্কাবতীর
ঘটের। দীর্ঘ সময় ধরে রিহাসলি। কিন্দু
শিলপীগোন্টীদের মধ্যে কেমন যেন
শিখিলতা। যে শৈথিলা নাটকের পক্ষে
ক্ষতিকর। বিশেষ করে নাটকের উন্দোধন
রক্ষনী আসল্ল—এবং যে নাটক নিয়ে অনেক
প্রত্যাশা—সে নাটকের শ্রেত্তে যদি এমদ
শিথিলতা দেখা যায়, তাহলে ভাববার কারণ
বৈকি!

ক॰কাবতীর ঘাটের উদ্যোধনের দিনটি এগিয়ে এলো। ২৫ আগস্ট নাট্যভারতীর পাদ-প্রদীপের আলোয় এলো মহেস্ফ গণ্ণতর কংকাবতীর ঘাট। দিনটা ছিল মহাপ্জার আগের দিন। দুর্গাপঞ্চমী।

সাথ'ক নাটক, সাথ' অভিনয়। কঞ্চাবতীর ঘাটের ওপর আমার আশা অনেক।

২৬ তারিথ ছিল দেবীর বোধন। ঐ
শ্বভিদিনটি নাট্য-প্রযোজক প্রবোধ গৃহর
কাছে নিয়ে এলো অশ্বভ বার্তা। নাট্য-নিকেতন থেকে তাঁকে উচ্ছেদ করা হলো
ঐ দিনেই।

২৭ আগস্ট, মহাসশ্তমী। ঐদিন হিল শাবনের একুশতম রজনীর অভিনয়।

এ-ছাড়া রাধ্ লাহার বাড়িতে দ্রোং-সব উপলক্ষে নাটকাভিনয়ের আরোজন করা হুরেছে। সপ্তমীর রাতের নাটক ছিল শাজাহান এবং সন্দামা।

°লাবন অভিনয় শেষে আমরা রাধ্য লাহার বাড়িতে গেলাম। সম্প্রমীর দিনে হরি ভঞ্জ পরিচালি ইন্দ্র মন্ভিটোনের ছবি। 'শ্রীরাধা' মন্তিলা করলো।

মহান্ট্মীতে ছিল কংলাবতীর খাটে শ্বিতীর অভিনয় রজনী। ঐলিন শ্রাহ অভিনীত হরেছিল শ্বিতীর প্রদর্শনীয়ে রাধ্য লাহার বাড়িতে ঐ রাহের নাটক ছিব পি ডবলাই ডি এবং চৈতনালীলা।

মহানৰমীতে কংকাবতীর ঘাটের তৃত রঙ্গনী। প্রেকাগ্ছ সেদিন ছিল প্রু দশকিরা উচ্চনিত করতালিতে অভিনঞি করলো কংকাবতীর ঘাটকে।

কংকাবতীর ঘাট অভিনয় শেষে লাহ বাঞ্চিতে যেতে হবে। সেখানে আজ্ঞধে নাটক পি ডবল্য ডি আর মধ্মালা।

প্জার পালা চুকলো।

বিজয়াদশমীর সানাই বাজলো মহ নগরীর প্জামণ্ডপে।

বিজয়াদশমীর দিনটি বড়ো আনদের ঐদিন প্রতিমা বিসর্জন শেষে প্রি পরিজনদের মিলিত হওয়া—শ্বভেচ বিনিময়, এর মধ্যে যেন একটা আনদে সার জড়িয়ে থাকে।

মাসগালো কতো সহজে হারিয়ে যার সেপ্টেম্বর মাসটাও ফ্রারিয়ে গেল।

অক্টোবর তিন তারিথ — ঐদিনেই ৫ স্থীটের বাড়ির ভিত্তি স্থাপনা করা হলো

দঃসংবাদ আসে নিঃশব্দ পদ-সঞ্চারে

৮ অক্টোবর থবর পেলাম, আফ থিমেটারের ডিরেকটর চেয়ারম্যান অ্যাটর্ণ সতীশ সেন গিরিডিতে মারা গ্রেছেন।

কিন্তু অভিনেতার জীবনে শোং প্রকাশের অবসর কই। নিজেরা আনন্দ পা না পাই, আনন্দের সমুধাদ ও তো আমাদে কাছে। রঞ্চামণ্ডে বে ভাশ্ড উজাড় করে দিং হয়।

রেন্ডারেণ্ড স্থীর চ্যাটাজী, মোহন বাগানের নামকরা ফ্টবল খেলোয়ায ছিলেন আমার শিক্ষক। ৮ অকটোবর নাট ভারতীতে শ্লাবন দেখতে এলে স্পরিবারে।

অভিনয় শেষে ও'রা ঘ্ণায়মান মণ্ড বাবস্থাও দেখে গেলেন উৎসাহ নিয়ে।

অকটোবরের আট তারিখেই গৈলজান। পরিচালিত কে বি পিকচার্সের 'নিদ্দন' ম্বিলাভ করলো র্পবাণীতে। নিদ্দনী আমিও অভিনয় করেছিলাম।

কংকাবতীর ঘাট চলছে দর্শক এব স্থীজনের আশীবাদ নিয়ে। দুশুকদে উচ্ছনিসত অভিনন্দন আর প্রশংসা—নাটকে শিল্পীদের মনে নতুন উৎসাহের জোলা এনে দিরেছে। আশাদের মধ্যে যেট্কু ভূ ষোঝাব্ঝি, ছিল—ভাও নিঃশেষে ধুমে মুহ প্রেছে। হাঁ৷, 'এভারেডী' হলেই নিশ্চিস্ত





এভারিটা নং ১০০০

ট্র্যানজিস্টারকে ক্ষয়ক্ষণ্ডি থেকে বাচিয়ে শক্তি যোগানোর জন্যে বিশেষভাবে ভৈরী রাউণ্ড ব্যাটারী

- বহুদল আৰু চাৰ্ রাখার একটান। শক্তি বোলার।
- नव्यशास्त्रित क्षिक्ति स्वित्ताथ क्यांके तथा
 निर्मारक ।
- वरे गाणिकी मानित्य प्रतापा प्रक्रियंत्र व निर्वास प्राध्याक भारतन ।
- বেদন এর কর্মকুশ্বতা বেদনি দীর্ব এর
 ভাবিত।

बकारतकी मर ১०१० काजिटब कालनात है।गबक्रिकात स्थरक सक्ता रष्टरब क्षणत काक लाटबब ।

সমস্ত রক্ষ ট্র্যানজিস্টারের জন্মই পারেন 'এডারেডী' ঝাটারী।

. UC 3776

্, নাট্ট নিয়ে কারো সমর্থন আগে পাইনি, কিন্তু অভিনয়ের সাফলো তা পেলাম। এই সমর একটি কথাই মনে হয়েছিল— Nothing suend like success

নাম ছিল তার বিউটি।' শুধু আমার নম, সে ছিল আমাদের পরিবারের স্বার প্রিঃ। সেই বিউটি' মারা গেল ১০ অকটারর।

াবিউটার নামেই তার পরিচর। পাঁচ বছর ধরে নে আমাদের ছরে ছিল। এছর থেকে সেঘরে ঘর থেকে ছাদে, ছুটে বেড়াতো থেরলে-খালিতে। আদর করলে ব্যক্তর কাছে উঠতো, ধমক দিলে অভিমান করে চুপটি করে বসে থাকতো—সেই বিউটি মারা গেল।

কদিন থেকে বিউটির শরীর ভালো ছিল না। কিল্ডু কী যে হলেছে কেউ-ই ধরতে পারে না। ডাছারের কাছে নিবে যাওয়া হলো দেদিন। ডাছারে দেখেশ্বে বাকথা দিলেন।

বিক্রমা করে বিউটি আলছিল ডাকাবের কাচ থেকে। কালীঘাট ব্রীচ্ছের কাছে এসে ও বিক্রমা থেকে লাফিরে পড়লো। ছুটে এলে। গোপালনগরের মোড় প্রবিশ্ব। গুখানেই ওকে ধরে ফেললো গোকুল।

ভারপর সপে করে বাড়িতে নিয়ে এলো।

কিন্তু বাড়িতে এসেই খেন কী হলো
থিউটিব সিড়ি দিয়ে তরতর করে উঠে
গোল ওপরে চারওলার সিড়ির ওপরে
চাতালে শা্মে পড়লো। স্বাধীরার মাথের
দিকে অপলক দান্টিত চেরে রইলো
বিইটি। কী খেন দেখতে লাগলো। স্বাই
ভাষাক হয়ে গেছে সেই মাহাতে বিউটিকে

আরে। **অবাক করে গেল** সে, যখন স্থাবীর দিকে চে**রে থাকতে**ই সে নিঃশ্বাস তাগে করলো।

বিউটি **ছিল জামদের পরিবারের** আনরের কুকুর।

ভাগাঞ্চাশত কৰেই বজ্জাম বিউটিকে থেন ডাদটবিনে ফেলে দিও না। একে এই বাড়িব মাটির নীচে কবৰ দিও।

বিস্তৃ কে খেন বললে, ওকে গণগায় ভাসিয়ে লাও। তাই হলে।

প্রথমেশ বড়ুয়। পরিচালিত উত্তরায়প ছবিটি মুক্তি পেল ২১ নভেম্বর উত্তরা এবং প্রবীতে। আমিত ঐ ছবিতে অভিনয় করেছিলাম।

ি ২৮ তারিখে নাটানিকেতন নামটা মুছে গোলা শিশির ভাদ্মুড়ী তাল নতুন নামকবণ করপোন শ্রীবেস্কাম! নতুন শিশুলীদের নিথে জনীবন বংগা নাটক উদেবাধন হলো স্বীবন্দাসঃ

নাট্যনিকেতন নামটা তখন ইতিহাসের প্রভায়। ভার শাহ্রনায় নতুন নাম শ্রীরকাম। নাটাজগতে এ ধন্তদের ঘটনা নতুন নর।
ডিসেম্বরের আট তারিপটি কালো
তাক্ষরে লেখা থাকবে। ঐদিন জাপান বৃশ্ধ ঘোষণা করকো ব্যেটন ও আমেরিকা যুক্ত-রাম্পের বিরুম্বে।

বারোই ডিসেম্বর অভিনয়ঞ্গতেও একটি দুসংবাদ—গতকাল অভিনেতা মনো-রঞ্জন ভট্টাচার্য সম্মাস্রোগে আলাশ্ত হয়েছেন। তাঁর বাম অংগ পশ্সা হকে সেছে।

প্রির অভিনেতার এই অস্ম্থতার সংবাদটা নাট্যঞ্গতের সকলের মনের ওপর রেখাপাত করলো। মনে ননে ঈশ্বরের কাছে প্রাথনা জানাল্ম মনোরঞ্জন-বাব্বেন স্ম্থ হয়ে ওঠেন।

অভিনয়কগতে মনোরঞ্জনবাব্র মতো মান্য হয় না। মনোরঞ্জনবাব্ ধারে ধারে সংস্থ হয়ে উঠে, আবার অভিনয় করতে আবস্ত করলেন।

বেশ কিছ্দিন থেকে কলকাতা শহরের মান্সদের মনে একটা দৃঃস্বান জড়িয়ে-ছিল। সে দৃঃস্বানের কালো ছায়াটা এবার শহরবাসীকৈ অকটোপাসের মতো জড়িয়ে ধরলো।

জাপান বার্মা দখল করেছে—শ্র্ম্ কলকাতা শহরবাসী নম প্রতিটি ভারতীয়ের মনে আতক্ষের সৃষ্টি করেছে।

শহরবাসীদের মনে ভরটা আরো বেশি।
কারণ সবাই জানে যুন্ধের প্রথম লক্ষাস্থল
গ্রাঃস্থান শহরগালি। তারপর ইংরেজ
যথন শহুপক্ষ তথন ইংরেজ অধিকৃত
ভারতের ওপর আক্রমণ ঘটাও নতুন কিছ্
নয়।

ভ্যানক দ্বংশ্বংন জড়ানো দিনটি ছিল ডিসেশ্যরের পনের তারিখ।

এরই মধ্যে সংবাদপরের প্র্টায় গ্রেছ-প্র্ সংবাদ হয়ে প্রকাশিত হলো থাই-ল্যান্ডের দরিয়ায় এ এম এস প্রিচ্ন অফ ওটোলস এবং রিপাল্স-এর ভরাভূবি। জাপানীরা জাহাজ দ্টির উপরে উড়ে এসে সরাসরি বোমা বর্ষণ করে। জাপানী সেইসাইড দেকায়াডের' ব্রুধরীতি ছিল এমনই।

শ্ধু একটা দিন, ১৬ ডিসেম্বর শহরবাসীর আত্তক যেন চরমে পেশিছলো। শ্রে
হলো শহরভাগের ধ্ম। কোলকাতা শহর
ছেড়ে মান্য পাগলের মতো ছুটেছে, শহর
থেকে দ্রে-যেখনে যুগের উতাপ সহজে
পেশিছবে না।

যুগ্দের আতংক যে থিয়েটারগালোর করের ক্ষতি করেছিল, তা ভাবা হার না। শহরবাসী ছুট্তে প্রাণের ভাগিদে, সেখানে আনক্ষ উৎস্বের অবসর কোথার?

এতার মধ্যেও রঙমহলে রক্তের ভাকের জাবিলী উৎসব জন্মিত হলো ২১ ডিসেন্বর। প্রতিদিন স্কালে সংকাদসতের প্রথম প্রতী না দেখা পর্যাত ধ্বস্তি নেই। ব্যথ্যের পতি প্রকৃতি কোনদিকে বাচ্ছে, জানতে

তেইলে ডিসেম্বর প্রভাতী সংবাদপতে? শৈরোনামার প্রকাশিত হরেছে, জাপানীর ব্যাপক বোমাবর্ষণ করেছে রেণ্যান শহরে।

ওদিকে যুদ্ধের বিভাষিকা, সেই সংগ ভারত জাড়ে এক রাজনৈতিক ঝণ্ফার পূর্ব-লক্ষণ সুচিত হচ্ছে।

চাব্দে ডিসেন্দ্র সারা ভারত হিন্দ্র মহাসভার সভাপতি বার সাভারকর ভাগল-পরের পথে মুপোরে গ্রেপ্তার হলেন। বিহার সরকার সে সময়ে নিরাপভার তাগিদে হিন্দ্র-মহাসভা নিষিত্ধ করেছিলেন।

সাভারকর মহাসভার সম্মেলন উপলবে ভাগলপুর আসছিলেন।

প'চিশ তারিথের থবর হংকং-এ? প্তন। সেই সংশ্ব আরো একটি সংবাদ ডঃ শামাপ্রসাদ মুখার্জিকেও গ্রেণ্ডার কর হয়েছে ভাগলপুবের পথে।

এদিকে থিড়েটার মহলেও নান দুখিচুক্তা। এই অবস্থায় কি করে থিয়েটা: চলাবে। থিয়েটার যদিও বংধ হয়নি, কিন্দ্ এন্ডাবে লোকসান সহা করে আর কতোদিন

রাধানাথ মল্লিককে দঙ্গুর মতো চিল্কি দেখলাম। আঠালে ডিমেন্বর তারিথে যেদি সকলেই খবরের কাগজের পাতার পড়েছি রেগনে শহরে জাপানী বোমার শিকা হয়েছে ছর শতেরও অধিক নিরীই নাগরিব সেদিনেই রাধানাথকে বলতে শ্রনভাম এ ভো অবশ্বা। আমি ভারতি থিয়েটার বিকরে চলবে। অন্য খবচের কথা থব মল্লেলীর বাড়িভাডাই বা দেব কোখেকে।

চিন্তাটা একা রাধানাথের না আমাদেরও।

দিনটা ছিল বংসরের শেষদিন আনম্পের কি দৃঃশের জানি না—তবে আমা কাছে বংসরটা শেষ চলো ভ্রানক দৃঃস্কংগ্ন মধ্যে।

প্রদিন।

১৯৪২-এর প্রথম দিন। রবীন্দুনাথে একটি লাইন মনে পড়ে ঐদিনটির কং স্মরণ কবলে।

্নবহর্ষ এলো আজি দুযোঁগের ঘন অভ্যকার

তব্ভ দিন আসে প্রতিদিনের নিয়মে।

শিলং থেকে ডাঃ চরবতী এসেরে
ডার আত্মীর-প্রজনদের সংশ্য দেখা করতে
সেইসংশ্য আমাদের সংশ্যও দেখাসাক
করে বেতে চান। শ্নকাম উনি বংগ বাজেন। ইতিমধ্যে নামেরও ভালিকাভূ
হিরেছে। ব্দের ভয়ে মানুর পালাছেছ, আর সেই সময় একজন পরিচিত মানুর যুদ্ধে বাছে<u>শুনে</u> কিছুটা বিস্মিত হলাম।

নতুন বছরের প্রথম দিন্টিতে ছিল ক॰কাবতীর ঘাটের ৪৩ ও ৪৪তম অভিনয়।

ষথারীতি অভিনয় হলো। অন্যানা বছর ইংরেজী নববর্ষের প্রথম দিনটিতে রুপামণে তিল ধারণের জারগা থাকে না, আর এ বছর প্রথম দিনেতে দশকিসংখ্যা হারপরনাই সীমিত। এভাবে নাটক আর কদিন চলবে?

মনটা আরো খারাপ হলো, যখন রাধানাথবাব, এসে জানালেন, থিয়েটারের
দূরবস্থার কথা। বাড়ি ভাড়া বাকি, তারপর
থিয়েটারের এই রকম অবস্থা। কি করে যে
চলবে। কথা প্রসংস্য বললেন, ভাবছি,
এবারে আটিস্টিদের দক্ষিণা কমাতে হবে।
নইন্দে চালাতে পারবো না।

রাধানাথবাব, আমাকে ডাবিয়ে তুললেন। বললাম, সাধারণ আটিস্টরা কিই বা বেতন পান। তাঁদের বেতন নাই বা কমালেন। তার চেয়ে আমার দক্ষিণা বরং কমিয়ে দিন।

রাধানাথবাব্ আমার মৃথের দিকে
তাকালেন। বললাম, আমি তো স্কামরে
থিয়েটার থেকে অনেক পেরেছি। আমার
দৈনিক পাওনার হিসাবের অংক যদি কিছ্
কমালে থিয়েটার চলে, তা হলে চলকে।
আমার পাওনার অংক কমলে তেমন
অস্ক্রিধে হবে না। কিক্তু সাধারণ কমী
এবং শিল্পীদের কম দিলে ওদের চলবে না।

রাধানাথবাব্ তব্ বললেন, ভাবছি বৈতদের তিন ভাগের একভাগ কমাবো।

বললাম, তবে একবার বলে দেখুন।

রাধানাথবাব কথাটা বললেনও। কিন্তু কমী বা শিল্পী কেউই রাজি হলে। না।

এরপরেই রাধানাথবাব্ মুলজীবাব্র সংগ টেলিফোনে ধোগাধোগ করলেন। কী কথা হলো, জানি দা। তবে মুলজী সিক্কা নিজেই এলেন।

রাধানাথবাব্ তাঁর কথা জানালেন।
কিন্তু সব শোনার পরেও ম্লজীবাব্
কালেন, আমি এভাবে ক্ষতি সহা করতে
পারছি না। বারজোরজী ম্যাডানের সপেগ
আমি একটা বলেনকত করেছি। তিনি
বলেছেন, রীতেন কোম্পানীকে ভাড়া
দেবেন। ভাছাড়া রীতেন কোম্পানীর হয়ে
গ্যারান্টার হবেন স্থলাল করনানী।

জিজ্ঞাস। করলাম, রীতেন কোম্পানী কি করবে হাউস নিয়ে? থিফেটার না সিনেমা!

—না, তারা খিয়েটারই করবেন। ম্লজনী বললেন, আরো একবার ব্রিয়ে বললাম, ম্লজনীবাব্—একট্ ভেবে দেখ্ন, একজন থাকতে আর একজনকে হাউসটা দেওরা কি ঠিক হবে। তাহাড়া এইরকম একটা সমত্র— সেটাও তো একবার ভাষকেন ? ম্লেকাবাৰ্কি ভাৰলেন, জানি না। যাবার সমতে বলে গেলেন, আমি বেন কাল একবার তাঁর বাড়িতে যাই, দেখা করতে। সেখানেই কথাবাতী হবে।

বলে মুলজীবাব্ বিদায় নিলেন।

যাই হোক, তারপরেও খানিক সমর
চুপ্চাপ দাঁড়িয়ে থেকে ভাবলাম, নাটাভারতীর কথা। ভাবতে মনটা থারাপ হলো।
কতো উৎসাহ নিয়ে নাটাভারতী চলছে—
এই থিয়েটারে রাধানাথবার্রও অবদান
কম নঃ—শেষটা থিয়েটারটা অথাভাবে হাত
ছাড়া হয়ে যাবে?

চিন্তা ভারাক্রান্ত মন নিয়ে থিয়েটার থেকে বাড়ি ফিরছি।

র্য়াক আউটের রাত। কালো ঠুসি লাগাতে ল্যাম্পপোস্টের বালবগ্রুলো যেন অম্ধকারকে বিদুপ করছে।

রাতের অধ্ধনারে বাড়ি ফিরছি। ফিরতি পথে বার বার মনে হলো, আজ নতুন বছরের প্রথম দিন। কিন্তু কোখায় নতুন উৎসাহ। সব কিছু যেন শিতমিত আর নিশ্প্রভ হয়ে গোছ।

প্রদিন। ২ জান্যারী। সকালে ডাঃ
এল কে চত্রবভী এলেন গোপালনগরের
বাড়িতে। সকলের সংগ্য দেখাসাক্ষাৎ
করলেন। বার বার তাঁর কথার মধ্যে একটা
কপা স্পত্ট হয়ে ফ্টলো, তিনি যুদ্ধে
হাচ্ছেন।

য**ু**দেধর কথার মনে পড়ে **ঐ**।দনই ম্যানিলার পতন হয়েছিল।

ম্লজীবাব্ আমাকে দেখা করতে বলেছিলেন, দেখাও করেছি।

ম্লজী আমাকে সাদ্রেই গ্রহণ করলেন।

বললাম, এটা কি করলেন ম্পজীবাব,
পাঁচ হাজার টাকায় দেউজ বিকিয়ে দিলেন।
যার রিভলবিং দেউজের দাম দশ হাজারেরও
বেশি। ভাছাড়া অমন নতুন সাজ-পোশাক
তাও ছেড়ে দিলেন ঐ টাকার মধ্যে। ভাছাড়া
টাকাও তো পাননি ম্রলীবাব্র কাছ
থেকে। কারনানী গ্যারাণ্টার হ্য়েছে এই
পর্যন্ত। রাধানাথবাব্র কাছ থেকে এভাবে
দেউজটা না নিলেই ভালো করতেন।

উক্রে ম্লজীবাব বললেন, কেতা কোথায় পাবো! তাই দিয়ে দিলাম।

বললাম, তব**ুও একট**ু ভেবে দেখলে পারতেন।

মূলজীবাব আচমকা এধরনের প্রস্তাব করবেন, এটা ভাবিনি। বললেন, বেশ ডো আপনিই নিন না নগদ টাকা দিয়ে। এক-বারে না পারেন, না হয় দুটো ইনস্টলমেপ্টে দেবেন। কী রাজি আছেন? আপনি নিলে কোন গ্যারান্টার লাগবে না। বল্লনা, আপনার কথাটা শ্নতে খ্রহ ভালো লাগলো। কিন্তু আপনার প্রক্ষার মেনে নেওয়া আমার পক্ষে সম্ভব নয়।

শ্নে ম্পজীবাব একট্ হাসলেন।
স্থিতা, এ বাপারে আমার কিছু করার
নেই। অগমি অভিনেতা, সাজ-পোশাক পরে
বং মেথে অভিনয় করাই আমার ধর্ম। কোন
বাবসাগত বাপারে আমার জড়ানো অকশভব।
অভিনয় করবো, না বাবসা দেখবো! স্তরাং
ম্লজীবাব্র প্রস্তাবে আমার রাজি ছওরা
কোনমতেই সম্ভব নয়।

ফিরে এসে রতীনকে ব**ললাম ম্লজ**ী-বাব্র কথা।

রতীন শ্নে বললে, সেকি— **আপনি** গাজি হলেন না কেন?

—আমার পক্ষে এ কি সম্ভব।

—আপনি নিজের কথা ভাবছেন কেন, আমরা সবাই মিলে চাঁদা করে টাকা সংগ্রন্থ করতাম — আমরাই চালাভুম থিরেটার।

সেবই তো ব্রুলাম! কিশ্চু অভিনম করবে না ব্যবসা দেখবে। তাহলে সব হেড়েছুড়ে ব্রিকং-এ বসতে হর। পারবে অভিনয় ছাড়তে? যা তুমিও পারবে না, আমিও পারবো না—তার মধ্যে যাওরা কেন? অগত্যা রতীন চুপ করলো।

যাইহোক, কাজ কারো অপেকা করে না। ঐদিনেও মীনাক্ষী ছবির স্বাটিং-এ নিউ থিকেটার্সে গিয়েছি। স্বাটিং চলছে। ওথানেই ডুলসী চক্রবর্ডীর মুখে শ্নলাম রীভেন কোম্পানী নাটাভারতীর দখল নিয়েছে।

কথাটা শোনার কিছুক্রণ বা**দেই নাট-**ভারতী থেকে রভীনের ফোন পে**লাম।**রতীন বললে, মুরলীবাবা এসেছেন **সভ্**সেনকে সপে নিয়ে, নাটাভারতীর **দখল**নিতে। আমি এখন কি করবো?

বলসাম, তুমি আমি কি করতে পর্মশ্ব এ অকপ্থায়। কিছুই করার নেই।

ফোন ছেড়ে দিলাম তখনকার মতো।

বিকেল সাড়ে পাঁচটার স্ট্রভিওতে আবার রতীনের ফোন এলো। এবারে নতুন কথা বললে। বললে, ম্রলীবান্ বলকেন, শিশ্পীদের বেতন কিছ্ কমাতে হবে। আমি তাঁকে কি বলতে পারি বল্ন। না পেরে, আমি বলোছ আপনার কথা। বলোছ, আমি বলোছ বা বলকেন, তাই হবে।

ফোনে বেশি কথা সম্ভব নর। **ভবুঙ**বঙ্গলাম, ঠিক আছে আপাতত রাজি হরে
যাও। আসতে শনি রবির **অভিনর** তো
হোক, ভারপর ফলাফল দেখে যা হোক
কিছু ভাবা যাবে। এখন সামারকভাবে রাজি
হওমা ছাড়া উপায় কি বলো। তারপর
আমরা আলোচনা করে যাহোক একটা ভিক

् वरम रकान रहरफ मिनाय।

(क्ष्यम्ह)



(পূর্ব প্রকাশিতের পর)

আশপাশে কজন কোত্রলী লোককে
জমতে দেখে আর কথা বাড়াল না পরিমল।
আচমকা পেছন ফিরে হন হন করে চলে
যেতে থাকল। সিতুর বিচ্পের হাস্টিট নিরপায় ক্ষাভের মতন কামড়াতে লাগল ভার স্বাধিগ।

---কনক।

ধরের মধ্যে তথনো আলো জনলেন।
বাড়ির ভেতর দিকে একতলায় নীচু সিলিং
সাতিসাতৈ ঘর। প্রায় পরিমলের ঘরের
মতন, তবে কিছা আসবাব আছে। বাইরের
আলো থেকে এসে দরজায় ত্তে কোনকিছাই স্পত্ট দেখতে না পাওয়ায় ক' মাহাত্ত
থমকে দড়িলে পরিমল। ওপাশের গালর
দিকে কাঠের জানলা দুটো খোলা থাকলেও

অপরাহার মৃত রং না এসে কেমন একটা ধুসর কুয়াশার আশতরণ বিছিয়ে থাচ্ছিল। কড়িকাঠের ঝলে জমা কোণে, প্রনো আমলের খাট আলমারি চেয়ারের আনাচেকানাচে ঝুপসি হয়ে থাকা অন্ধকার আশত আশত স্বকিছ্কে ঝাপসা করে দিছিল। জানলার ঠিক নীচে চেয়ারে বসে কনক কি একটা সেলাই করার চেন্টা করছিল। পরিমালকে ঢুকতে দেখে ভাকাল। —িক ব্যাপার আজ যে বড় সাহস করে অন্দর মহলে চলে এসেছ।

কনক মুখ টিপে অলপ হাসছিল। বস্তৃত পরিমল কখনো সখনো রমেনের অহনান ছাড়া ওদের শোরার ঘরে পারত-পক্ষে ঢৌকে না। —না, ইরে হয়েছে, . পরিমল আমত আমতা করল, রমেন কোথায় ?

রমেনের বউ বোধ হয় কলতশায় গ ধুছে। বালতি মগ এবং জলের শৃষদ পাওয় মাজেছ। রমেনের বউকে সাধারণত পরিমণ পছদদ করে না। ওর সিদিণ্ধ, বে'ধানো, ও একট্যু অনা ধরনের থটখটে চাউনীর কারণে

—কোথাও গেছে বোধ হয়, কনক বলল স্মাড্ডো দিতে। ফিরতে রাত হবে মনে হচ্ছে। কেন, কিছ্ম দরকার ছিল?

রমেনের ছেটে ছেলেটা খাটের ওপ: ঘুমোছে। আবছায়া রেখায় ওর ক্ষুদ্র ক্ষীণ শরীরটা দেখা যাছে। অন্য বাচ্চাগ্রেল নিশ্চয় কোন পার্ক বা গলিতে খেলতে চলে গেছে। আপাডভ ছরে পরিমলের মুখো ্মনিথ প্রায় একাই কনক। কনকের চোখ-দুটো স্বচ্ছ লাগছিল।

—•। तकम अन्धकारत वरत वरत कि राजनार के दृष्ट् ।

— লাদার নতুন বাজার জানো কাঁথা।
জানলার দিকে মুখ ফিরিয়ে বলল কনক।
এ কথার ওর গলায় যেন হতাশা ও অব-সাদের সূর শ্নলা পরিমল। দাদার সং-সারে থেকে তার ছেলেমেয়ে মান্য করা
ছাড়া কনকের সম্ভবত অনা কোন নিয়তি
নেই।

—কনক তোমার খুব কংট, না? পরিমল হঠাং অসংলগন বলে ফেলল।

শ্রনে কনক ফিরে ভাকাল ওর দিকে, কোন কথা বলল না। শ্বং/চোখে একধরনের প্রশনস্টক দুটিত খেলা করল ভার।

—পরের সংসারেই কেবল থেটে **যাচ্ছ** তুমি। নিজের ভবিষ্যৎ না চেয়ে।

কনক স্থির নির্বাক চেয়ে রইল পরি-মঙ্গের দিকে, ওর এই অপ্রাস্থিপক কথার সঠিক বছবাট্টক অনুধারন করার জন্যে।

পরিমল অকমাৎ গবভাবসনুলভ মাঝপথে কথার থেই হারিরে চুপ করে পেল।
এবং এরপর কি কররে, কনকের অপভাক
দৃষ্টির সামনে থেকে বেরিরে চলে যাবে
কিনা ভেবে ইতস্তত করতে লাগল। ওর
ভাগতে চেনা চগুল ভাব দেখে কনকের
ঠোঁটে আখহা হাসি বিস্তৃত হল। কনক
পরিমলের মৃথের থেকে চোখ নামাল না। সে
যেন মৃথের রেগায় প্রোপ্রির মনের
কথাট পড়তে চাইছিল। ঘন হয়ে আসা
সংখ্যার মত থরের আবহাওয়া অত্যতত
বিষয় ও ভারাত্র মনে ইওয়ার পরিবাল
ভাড়াভাড়ি বলে উঠল, বড় তাধ্বরর হয়ে
এসেছে। আলোটা জরাল কনক।

কনক মংথরগতিতে প্রিমলের পাশ কাটিয়ে আলোর স্টুচের দিকে গেল। ওর ক্লোত অভিল ভূলের গণ্য বাহার স্ক্রে একট্ স্পুদ্দন প্রিমলের গা ছায়ে দিল। শির্মিরিয়ে উঠল প্রিমল।

—বোস পরিমলদা: দাড়িয়ে রইলে কোন? আলো জেনলে খ্ব প্রান্তাবিক গলাতেই বলল কনক। কনকের এই গুণটা আছে, যে কোন অবস্থায় নিজেকে স্থির করে রাখতে পারে।

—এটা কি বই? মেঝে থেকে একটা বই তুলে বলল পরিমল, নিতাশত কথা সাজাবার জনো।

—গলেপর। পাড়া থেকে চেয়েচিতে
আনি। ভাগিসে একট, লেথাপড়া শিথিয়ে
দিয়েছিলে। তব্ দ্ একটা ভাল বইপত
পড়তে পাই। ওটাই আমার বিশ্রাম। নিশ্বাস
ফেলবার শ্থান।

হালকা গলায় বললেও কণা শেষ করে।
কনক সাতাই শ্বাস ফেলল বড় করে।
পরিয়ল মনে মনে যদিও এর যথাপতা
প্রোপ্তির শ্বীকার করল না। কনক
পাড়ায় বা অনাত্র অনেক বাড়ীতে যাতায়াত
করে। ছোট বড় নিবিশ্বেষ মেলামেশা
করে। এবং, যে বিষয়ে কনক সন্বন্ধে গরি-

মলের মনে একটা স্থানী দাগ আছে সেটা হল যাবক মহলে ওর প্রতিপত্তি। কনকের স্বাধীন চলাফেরা ও স্বাছস্প বাবহার হোমন দমিরে রাথে পরিমলকে তেমনি আকর্ষণও করে প্রচন্ড তীরভার। বস্তুত কনকের বাব-হারে ওর মন ও আকাম্ফা সম্মধ্যে সমাক ধারণা লাভে অসমর্থা বলেই পরিমল ওর সম্বধ্যে যতটা লোভী ঠিক ততটাই ভীত।

ু —তুমি আরও পড়লেই পারতে, মিছি-মিছি ছেড়ে দিলে।

—বাধা হরেই ছাড়লাম। তোমার দিক থেকে আগ্রহের অভাব ছিল বলে। আর সেটাই ম্বাভাবিক। অনর্থক খাট্নিক আর ভালবাসে।

কনক থাটে শোরা ঘ্রুফত বাচ্চাটাকে ঝ'ুকে পড়ে আদর করছিল। কনকের মুখে এরকম পথ্ল কথা শোনা কাম্য ছিল না পরিমলের কাছে।

—ওকথা বলছ কেন, পরিমল প্রাণপণে কনকের তুল শোধরাবার জনা গলায় যথেন্ট কাতরতা আনল। তুমি কি জান না যে আমার কাছে এটা নিছক পরিশ্রমই ছিল না। অব্তত তোমার বিষয়ে—

পরিমল আবারও থেমে গেল। এরপরের
শব্দগ্রিল কি হবে ভেবে না পেরে। কনক
কিছ্ সাড়া দিল না। পরিমল পেছন থেকে
চেয়ে চেয়ে ওর ঝ'কে পড়া শরীরের
স্বিনাসত ভাঁজ ঘাড়ের কাছে জড়ো করা
এলো চুল গালের একপাশ ও বাহুর ভাঁজ দেখল। এসবই ওর সাজানো, একবার
ভাবতে চাইল পরিমল, নিজেকে দুর্গম অলভা করার জনা। মনকে বশ করতে না
পেরে পায়ে এগোল পরিমল। ওর
গায়ের সালিধা দাঁড়িয়ে ভেতরে ভেতরে
তোলপাড় হয়ে গেল।

—তুমি সত্যি বোঝ না নাকি। কনকের ভান কাঁধে নরম করে হাত রাথল পরিমল। তুমি আমার কাছে সবার থেকে আলাদা

—চূপ। কনক সহসা এপাশ ফিরে ফিস-ফিস করে উঠল, বৌদি কলমর থেকে বেরোচ্ছে।

দ্মহতে পরিমলের ম্থোম্থি দাড়িয়ে কনক দরজার কাছে চলে এল। তারপর সামানা হেসে মুথ ফিরিয়ে বলল,

—না ভয় নেই। বৌদি বোধ হয় ছাদে উঠে গেল সোজা। তুমি আছ বলে এঘরে ঢুকল না। বাতিক।

—আমি তাহলে যাই। অপ্রস্তৃত হবার মতন বলল পরিমল।

—না। এত ভীরু কেন তুমি। জোর দিয়ে বলল কনক। ধীর পারে ঘরের মধ্যে এসে দাঁড়াল। পরিমল ঘরের সর্বদিকে তাকিয়ে নিল একবার। কম পাওয়ারের আলোয় চারিপাশ কেমন নিক্ম নিরালা হয়ে আসছিল তার কাছে। পরিমল বলল, আছো কনক তুমি কি আমাকে প্রোপ্রির ব্রুতে পার?

—তোমাকে ব্ৰে আমার লাভ? লঘ্ চপল গলায় বলঙ্গ কনক। ওর ঠোটো দ্বোধ্য হাসি খেলা করছিল। দেখে দেখে সব্যঞ্জে আশ্ভূত ও অসহা একটা ভাব ঘ্রপাক খাজিল পরিমলের।

—ত্মি আমাকে নিয়ে শুধু মজা দেখ। অভিযোগের সারে অর্থহীনভাবে কথা-গুলো বলল পরিমল। কনক একথায় কোন সাড়াদিল না। পরিমল অপলক চেয়ে চেয়ে কনকের উজ্জ্বল চোথ আশ্চর্য রহসাময় হাসি লক্ষ্য করছিল। কনক যদিও **স্থি**র হয়ে ছিল তব্ পরিমল ভাবল কনক অতাত মৃদুপ্রায় দ্লক্ষা গতিতে তার কাছে চলে আসছে। কনকের অপ্রে দেহবিভগ্গ এথনি তার সমস্ত সন্তার অংশীভূত হয়ে যাবে: এক পা এগিয়ে কোন পাথর অথবা মর্তি দেখার মত করে ওর গালের ওপর আলতো দুটো আঙ্লে রাখল পরিমল। ক**নকের** দ্বিট আন্তে আন্তে সরল হয়ে এল। ম্থের হাসি মিলিয়ে গিয়ে আবেগের লালচে আন্তা সঞারিত হল।

—পরিমলদা, হাওয়ার মত স্বরে ফিস-ফিসিয়ে উঠল কনক। এবং তৎক্ষণাৎ যেন ঘ্যা থেকে জেগে উঠল পরিমল।

—তোমাকে একটা কথা বলব। কনক চেয়ারে ভর দিয়ে হেলে দাঁড়িরেছিল। পরিমান অপলক চেয়ে দেখছিল ওকে। এখনি ইচ্ছে করলে সে ওর অধীশ্বর হতে পারে। কঠিন করে আঁকড়ে ধরতে পারে ব্কের মধ্যে।

 পরিমলদা, তুমি কথা বলছ না কেন। ওর জামার ব্বের কাছটা করে ধর্রেছল কনক। ওর গলায ওর হাতে এত রক্তস্রোত আঙে এই প্রথম অন্তব করল পরিমল। কনকের কথার কোন উত্তর নাদিয়ে পিথর হয়ে পরিমল দেখছিল, কনক ক্রমণ কত ঘনিষ্ঠ অত্যাজা হয়ে উঠছে। ওর খুলে থাওয়া এলোচুল পরিমলের সমসত প্রথিবীতে সম্ধার মত দুক্ল ছাপিয়ে আসছে। কনক কেবলই ওকে নিজের কবলে আত্মসাৎ করে নিচ্ছে কুন্ডলী পাকানো সাপের মত। দ্পাশে ঝোলান পরিমলের নিরালম্ব দৃই বাহা বেয়ে অননভুত অম্থিরতা ব্বের মধ্যে স্থারিত হচ্ছিল।

আপনি কি জানেন প্রাণ_{্ন}র পাটক সংখ্যা এখন আন্মানিক ৭০ ০০০ ?

পত্ৰাণ্ড

সম্পাদ্ধ

অমির চট্টোপাধ্যায় / আশীষ্ট্রর্ মাধোশাধ্যার

জুলাই সংখ্যা ১লা ধেরুছে। দাম ২০ পয়সা ১২২এ বালিগঞ্জ গার্ডেম্স, কলিকাতা-১৯ —তুমি খুব নিৰ্বোধ। কিন্তু আজকাল কেন জানি আমার ভয় হয়।

ट्रांशिएफ विमार द्यान कनक भास যসল পরিমলের ব্কে। পরিমলের সামনে ক্রমণ প্থিবীর অনাসব রূপ রঙ যাবতীয় অন্ধকার মুছে আসছিল। আর কিছ্ন না ভেবে কনকের দ্ব কাঁধে হাত রাখল পরিমল। সেই মাহাতে ঘ্য ভেগে রমেনের বাচ্চাটা চীৎকার করে উঠল। ছিটকে সরে এল পরি-মল জাগ্রত সময়ে ফিরে এল তংক্ষণাং। কনক ওর দিকে তাকিয়ে রইল খানিক, কিছু বিস্মিত কিছুটা অথহীন দ্ভিতৈ। তার-পর বাচ্চাটার পরিচর্যায় এগিয়ে গেল। যা বলতে চেয়েছিল বলতে পারল না। পরি-মলও আর শোনার চেম্টা না করে বর থেকে বেরিয়ে এল নিঃশব্দে। জ্বতো পরার আগে বড় করে শ্বাস ফেলল একটা। বিষাদের, অথবা মোহম; ভির, কে জানে।

— চারিদিক এত অন্ধকার কেন বৌদ। চৌকাঠে হোঁচট খাবার মতন হয়েছিল বলে উত্যন্ত গলায় বলল পরিমল, বাড়ীতে কেউ নেই নাকি?

সশ্যেবেলা রাস্তায় কুয়াশার জনোই হোক অথবা অন্য কোন কারণে চোখদুটো জনলে যাছিল ওর। সস্তায় কেনা সোয়েটারের ভেতর শরীরটা শিরশিরিয়ে কপিছিল। টিউশনি ফেরং পথ চলতে ওর মনে হয়েছিল মাথার মধ্যেও ব্রি কিছ্ ধোয়া খামোকা ঢুকে যাছে। এবং সেজন্য মাথা ও শরীরের ভেতর কেমন অস্ভুত অস্বস্থিত বোধ করছিল। সরমল রায়াকে উঠে বাইরের আলো জনালল। সরম্ স্পত্বত রায়াযরে উন্ন ধ্রাছিল। প্রমায় ধেয়ায় গশ্ম নাকে আসতে অভাস্ত বিরস্ক বোধ করল প্রিমল। ঈশং রুচ গলায় বলল,

—বাড়ী নয়তো নরক। পোড়োবাড়ীর মতন। ঢাকলে অসমুস্থ বোধ হয়।

ঘরে চুকে নিজেও আলো জনালল না
পরিমল। অভ্যাসমত আন্দাজে শ্যার ওপর
পা এলিয়ে দিল। ওপাশের জনলার কোল
দিরে গলিপথে জনালা কপোরেশনের আলো
তেরছাভাবে মেঝে এসে পড়ছিল। তাতে
ঘরের ভেতরটা কেমন আবছা রহসামর্য লাগছিল। একট্কুল চেয়ে পেকে চোথ বন্ধ করল পরিমল। চোথের ভেতরটা এখনো
জনলা করছে। অনর্থক ভারী লাগছে
মাথাটা। আক্ষকাল দেহ প্রায়ই এমন বিরোহ

মাসিক ১০ টাকার কিল্ডিকে লাভ করনে

অল ওয়ার্ল্ড গ্রানাজ্য (জাগান মডেল) ডবল স্পীকার বাণ্ড ৭ ট্রানাজ্যুত্র নাইট-লাঙ্গ ফিট



নাইট-ল্যাম্প ফিট কবা। ইংরেজীতে আপনার অভার পাঠান। Allied Trading Agencies (A.C.) P.B.2123, Delhi-7 করতে চাইছে। মেজাজ শুশে তিত্ত করে।

সরব্ এদিকে এল আঁচলের চাবি দ্বিরঃ। ঘরের আলো জেবলে দিল এসে। রহস্য করে হাসল একট্র।

—ওরকম মোজেক করা বারান্দা দিয়ে হে'টে এলে নিজের ঘরবাড়ী স্বারই খারাপ লাগে।

পরিমলের এমন বুক্ক কথার বিনিমরে সর্যু হাস্যপরিহাস করছে। ঘটনটা একট্ব অন্যরকম মনে হওয়ায় চোখ খ্লে তাকাল পরিমল। সর্যার পরণে পটেভাঙা ফর্সা শাড়ী, চুলটা আঁচড়ে বাঁধা, অন্যাদনের মত তালপাকানো নয়। আজ যেন তাকে অনেকদিন আগেকার সর্যু বলে মনে হচ্ছিল। যথন এতথানি সংসারী হয়নি। অন্যা কেউ রাগ করলে হেসে ভুলিয়ে দিত।

—ঠাটা হচ্ছে, না? পরিমল মাথার নীচে হাতে ভর দিয়ে উ'চু হয়ে শ্লা।

—ঠাট্রা নয়, সত্যি বলছি। তুমি বলে তাই কিছু করতে পারছ না। আমি হলে তো ও বাড়ী ছেড়ে আসতুমই না। কোন-রক্মে একটা স্ববিধে করে নিয়ে মাটি কামড়ে পড়ে থাকতুম।

সরয্ অনেক দিন পরে অমন উজ্জ্বল করে হাসছিল। পরিমলের ভাল লাগছিল। তব্ ওর কথার নিহিত অর্থ কিছুটা আন্দাজ করে সামান্য অপ্রস্তৃত বোধ করল।

—ইয়াকি হচ্ছে? কাজকর্মা কিছু নেই?
—নেই আবার। সর্যু ঠোঁট ওলটালো।
আমার জীবনের শেষ আছে, কাজের নেই।
চা খাবে, না পড়াতে গিয়ে ভাল চা থেরে
এসেছ?

—আজকে এরকম খোঁচা দিচ্ছ কেন বলত? যাও চা করে আন।

পরিমলের মন বেশ লঘ্ লাগছিল।
সর্য্ চলে যেতে ওর খ্ব একা মনে হল।
আশ্তে আশেত উঠে ঘর থেকে বাইরে এল
পরিমল। বারাশদার নিশেতজ আলোটার জনা
চারিদিকে কেমন একটা ব্কচাপা বিমর্থ
ভাব ছড়িয়ে ছিল। একটা কথা বলার
লোকের অভাবে যেন হাঁপ ধরছিল ব্কের
ভেতরটায়। রায়াঘরে সর্য্র কাছে চলে
এল পরিমল।

—মিতুটা কোথায় গেল বৌদি?

—এই বেরিয়েছে একট্র। সরযু কাজ করতে করতে অন্যমনস্ক গলায় উত্তর দিল।

--ভরসম্থোবেশা পাড়া বেড়াতে গেছে? তোমার বাদবাকি অপোগণ্ডগুলো কই?

— ওঃ মেরেটা ভাল আর ছেলেগ্লো অপোগণ্ড না? সরযু কৃত্রিম কোপ দেখাল। ভারা দুজন মাডারমশারের বাড়ী পড়তে গেছে আর ছোটটাকে পাশের বাড়ি পাঠিরে দিয়েছি, জালাতন করছিল বলে।

পরিমল যদিও ভাবছিল মিতু কনকের বাড়ি গোলঃ তব স্বরে ঈয়ং গান্ডীর্য ফুটিয়ে বলল, মিতুটা বড় আড্ডোবাজ হরে গোছে ত?

চারের কাপ পরিমলের হাতে দিতে গিবে ব্রহণ মুখের দিকে চাইলু । —তোমার চোখ অত লাল কেন, গা দেখি। গারে হাত দিরে আক্রেপ করে উঠল সরয্, ইস আবার জার বাধিরে বসেছ তো?

—তাই চোথ জনালা করছিল, মাথ ভারী-ভারী।

—এরকম দ্বিদন ছাড়া জ্বর ভাল নর তোমার। থব সাবধানে থাক।

—এর চেয়ে সাবধানে আর কি করে থাকুর।

—না হয় চিকিংসা করাও। তোমার চেহারা দিন দিন শা্বিকে বাচ্ছে। দীয়াও, আমার হরে ট্যাবলেট আছে কি না দেখি।

সরয্ নিজের ঘরে তাকে আলে। জনলল। পরিমলও তাকল। খাতের বিছানার দিকে এগিয়ে গেল হঠাং।

—একি, ঐ সিগারেটের প্যাকেট কার, বেদি?

চকিতে সরয্পেছন ফিরল। তার মুখ ঈষং বিবর্ণ দেখাচ্ছিল।

—এরকম দামী সিগারেট এ বাড়িতে কেউ খায় না। খ্ব শীতল গলায় বলল পরিমল। বিছানায় সদা পাতা পরিচ্ছল ফর্সা চাদরের ওপর প্যাকেটটার দিকে একদ্ন্টে তাকিয়েছিল। গশভীর, অপ্রসন্ত্রা

—শ্যামল এসেছিল। আচমকা বলেই যেন গলায় নিশ্বাস আটকে থেমে গেল সর্বার ।

—কেন? হঠাং? অতিরিক্ত বিসময় নমন করতে পারছিল না পরিমল।

—এমনি। কেন আবার। সরষ্ যেন এড়িয়ে যাবার পথ খ'জছিল।

—এমনি, অকারণেই, শ্যা**মল এল** এবাড়িতে?

—িক হয়েছে তাতে

দাতে ঠোট চেপে কি যেন **ভাষছিল** পরিমল। মেঝের াপর পায়ের বুড়ো আঙ্গুল অম্পির ঘসছিল। হাতে ধরা চায়ের কাপ ঠান্ডা হচ্ছিল।

—শ্যামল তাহলে প্রায়ই আসে আজ-কাল, কি বল, থেমে থেমে গম্ভীর গলায় উচ্চারণ করল পরিমল।

—হ্যাঁ, মাঝে মাঝে আসে। **স্পন্ট করে** বলার চেণ্টা ক্রল সরয্।

—তার জনো ফর্সা জামাকাপড় পরা হয়, বিছানা বদলানো হয়, এথানে বসে সে সিগারেট পর্যণত খায়, তাই না? পরিমলের শ্বর ক্রমণ উষ্ণ ইচ্ছিল। সরব্ধু ওর ক্থার কোন জবাব দিল না।

—এসব আমাকে জানাওনি কেন?
সরস্থ অনর্থক জানসার বাইরে গাঁসর দিকে তাকিরেছিল। তার চোখ আসলে কিছুই দেখছিল না। গরিমল উত্তেজিত গা বিষয়ে ্ৰল, চুপ কৰে রইলে ৰে? বাড়িতে কি টে আমি: জানতে পারি না কেন?

— তুমি তুমি সহ। করতে পারবে ।
লা চাকিতে মুখ ফিরিয়ে এক নিশ্বাসে
লা ফেলজ সরয্। পরিমল হা কুচকে এর
হথের রেখা নিরীক্ষণ করল। সরয্ তার
থার জের টানল।

— নিজে অক্ষম, তাই ঐ ছেলেটির বাড় বড়িটাকাপ্রসা সবকিছ,কে তুমি হিংলা রুব। ওকে দেখলে ম্থ তেকো হয়ে যায় ছুহামার।

—এসৰ কথা তুমি নিজে বলছ? পরি-মলের চেতনা আন্তে আন্তে ভৌতঃ হয়ে আস্ছিল!

- না শামল নিজেই বলেছে।

্ত। পরিশল শ্না দৃশ্টিটাকে ঘরের কালচে ছোপ ধর। সিলিং দেয়াল জানালার ওপর দিয়ে ঘ্রিয়ে আনল। সর্যা প্রস্তুত হয়েই যেন দাঁড়িয়েছিল, আরো কথার জবাব দেবার জনা।

্—মিতু কি শামলের সঞ্চো মেশে? প্রিমল ধীর প্রের বলল।

—বাড়ীতে আসে যথন মিশতে দোষ কি:

প্রিমল আরও হতাশ ভাশ্যা গলায বলস্

্মিত ওর সংগ্য বেড়াতেও যায় বেটি হয় ?

—-থ্য কম, ঢোক গিলে সরষ্ ব**লল,** ভালে নিয়ে দুদিন। তাও আজ গেছে পূলা—-কিনতে। শামল বলছিল সবজা-কানলগিণুলোয় পূলা দেও্যা দূরকান। ভাল দেখায়।

পরিমল শাদত অথচ কঠিন চোথে চেয়োছল সরযার দিকে।

্শ্যামল কি মিতুকে বিয়ে করবে বলে কথা দিয়োছ?

—তেমন না, তবে নিজুকে ও পছন্দ কয়ে।

—পছফ করে বলে একটা লোফাবের সংগোছেড়ে দেবে?

—পালো তুমি মেহেটা বড় হচ্ছে একটা বিষয়ে দেবার ক্ষমতা নেই। শোষে কোন বিস্তুর ভোটলোকের সংগ্যা কোরেই যাবে। শ্যামলের প্রসা আছে চেহারা ভাল, আর ও ছেলের থেকে কথা আদায় করতে হলে সংগ্যা দুদিন খ্রতে হয় অমন।

—ছিঃ, চাপা গজন করল পরিমল, একথা বলতে তোমার লক্ষা হচ্ছে না?

—লগ্জা তো তোমারও হওয়। উচিত ঠারুরপো। পাঁচ বছর ধরে একটা অসহায় মেরেকে ক্লিমে রেথে ওাদকে বছলোকের নিদনীর সংগা রোজ মোটরে বেড়াছ। ময়দানে ছাওয়া খাজ। কিছু খবর রাখি না ভেবেছ? শামলের মুখে সব শুনেছি, সরব্র কথার বাঁঝে থমকে গিরোছল ভ্রিমল। সরব্ মুখ ছুরিয়ে খুমুক্ত বেচারী কনক তো এসব জেনে একেবারে হালই ছেড়ে দিরেছে। মূখ অধ্যক্তর করে থাকে। এ বাড়িছে আসে না পর্যস্ত।

এক বটকার ঘর খেকে যেরিয়ে গেল সরব্। পরিমলকে একটা শ্না অন্ভৃতির মাঝখানে দাঁড় করিয়ে রেখে। পায়ে পাঙ্গে ঘর থেকে বেরিছে এল পরিমূলও। মাথার ভেতৰটা কিবকম লখু মনে হচ্ছিল। যেন চি॰তা করবার সক ক্ষমতা নণ্ট হয়ে যাছে। নিশ্বাস এত গ্রম লাগছে, মনে হয় গায়ে প্রচুর উত্তাপ। ড্ঞায় গলা শ্রুকনো তব্ इन एएम १५८७ ट्रेक्ट रम ना। উप्पनभारीन রাসতায় চলে এল পরিমল। কুয়াশার স্বচ্ছ পদার ঘেরা রাস্তার আলো 21,361 দেখার। সম্পত পাডার উন্ন ধরানো ধোঁয়া ওপরে ওঠার পথ পায় না। বাতাসে ঠান্ডার ভামেল ঘুরে বেড়ায়। বুকের মধ্যে শীতের শিরশিরানি ভাব অনুক্ষণ গুড়গড়ে করে।

— রমেন। রমেনদের দরজার বাইরে এসে

ডাব্দল পরিমল। তার স্বর খ্রে মৃদ্ ও
ভাগা। তার মনে হল সে যেন স্বশ্নের
মধা কথা বলার বাথা চেন্টা করছে। দ্বার
ভাকতে রমেন শ্নেতে পেল। সদর থেকে
নেমে এসে পরিমলের ম্থোম্থি দড়িল।

—ভেতরে যাবি না?

—না। প্রিমল দ্বে রাস্তার মোড়ে থকথকে ইরে জমে থাকা ক্য়ালা দেখছিল। রমেন এ কুডকে চোখ ছোট কবে ওর দ্রমন্থক দ্বিট ভার্লেশহীন মা্থ দেখল।

—তোর কি হয়েছে? প্রশন করণ মেনঃ

--- किष्ट् सा। कसक आएए? किष्ट् फुर्भिका सा करतहे वलल প्रतिभल।

—হঠাৎ কনকের খোঁজ করছিস যে? রুমেন সামানা গশভার প্রচ্ছত্ত গলায় বলল।

— এর সংশে আমার একট্ দরকার এছে। থুব দরকার। যেন মিনতি করল পরিমল। দেখা করার অনুমতি পেতে।

—ও নেই এখানে। দেশে চলে গেছে কদিন হল।

--কেন : হঠাং :

—হঠাংই। পিসিমা ওব জনো একটা বিষের সম্বন্ধ দেখে রেখেছিলেন অনেকদিন ধবে। ও রজী ছিল না। হঠাং কিরকম ওব মন হল, সম্মতি জানিয়ে চিঠি লিখে দিলে।

পরিমলের মাথার ভেতর ভীষণ হাল্ফা লাগছিল। সম্ভবত জার ক্রমণ বাড়ছে। রমেনের কথাগুলো ওর মনে যেন কোন দাগ কার্যছিল না।

—আমিও বেশ আশ্চর্য হয়ে গেছি। যত তাড়াতাড়ি সম্ভব চলে গেল ও। দেখা-শোনা সব ঠিক হয়ে গেছে এতদিনে।

· —ওকে ফেরানে৷ যাবে না? আছেত প্রদন করল পরিমল।

—না। জানিস তো কিরকম কেনী। চিঠিতে শীলখেছে সামনের মাসেই বিরে। অফিসের ছ্টি পেলে আমিও চলে যাব এবার।

—ও। পরিমল কি বলতে গিরে থেমে গেল। এর শরীরের সমস্ত হাড়ুম্বলি ঠক্ঠক করে কাঁপছিল। বুকের ওপর দুখ্য আড়া-আড়ি রেখে সোজা থাকার চেণ্টা করছিল।

——আমার খ্র আশা ছিল তোর ওপর।
আক্ষেপ করে উঠল রমেন। আমার ঐ একটা
বোন। বাপ-মা হারা। তোকে ৫...আছা
ইলানীং যেন তোর বাপারে ভীবণ ডিল্যাপরেণ্টেড হয়েছিল। ডোর কথা উঠলে ঘর
ছেড়ে চলে যেও প্রশ্ত। কেন, তুই কিছ্
ভানিস?

—না। পরিমল বাড**ী ফেরার জন্য** প্রেছন ফিরল। তার দাঁড়িয়ে, **থাকার ক্ষমন্তা** লোপ পাছিল।

-পরিমল। রুমেন ডাবল পেছনে।

পরিমল সাড়া দিল না। যেন হা**ওয়ায়** ভেন্সে চলছিল সে, শরীর এড ভারহীন লাগছিল। জাগ্রত চৈতন্যের শেষ সামার এসে নিজের বিছানায় শুয়ে **পড়তে পারল** পরিমল। স্বশেনর ঘোরের মত কড় কি কথা বলতে চাইছিল সে। অসফটে স্বরে। ভৌট দুটো কেবল কেপে কেপে বাচ্ছিল **ভার।** মাঝে মাঝে পরিচিত কোন স্বর কানে একে চোথ মেলছিল পরিমল। দাদা বৌদি মি**ডু** সবার মুখ দেখছিল। ভারপর সেই **মুখ**-গুলো যেন আন্তে আন্তে দুরে পথের মোড়ে সরে গিয়ে থকথকে জমে থাকা ক্যাশার মধ্যে মিলিয়ে বাজিল। **আসলে** তার চেতন ও অচেতন স্বশ্নে **ক্রমাগড়** দ্বন্দেত্রর ফলে কোন ছবিই তার **মনে স্থির** হতে পার্বাছল না। বংধ চোথের **আড়ালে** তখন অনা দুশা দেখছিল পরিমণ । সিনেমার পদার মত। দৃশা**গলে বেন ভাল** করে মন্ট হবার আগেই হা**ওয়ার পাথার** ভর করে দ্শ্যাম্ভরে চলে **যাছিল। অঠার** হয়ে পরিমল হাত উ'চু করে সেই **জীকত** ম্বানকে ধরতে চাইছিল। কি**ন্তু ফার্থ ছাছিল** বারবার। কথনো দেখ**ল পরিমন্ত কনককে** পাশে নিয়ে দূরন্ত রাস্তার ঝডের পাড়িতে মোটর চালিয়ে যাতে পরিমল। কনকো মাথে অপ্র পরিকণ্ডির দ্যু**ডি। প্রক্রেই** ছবেটা সরে গিয়ে সোমাকে দেখলার খার কর্ণ মধ্র সূরে গান গাইছে স্মেমর চারিন দিকে গাছপালার **পরিমণ্ডলের মধ্যে ছাওরার** দ্যবারভার মধ্যে, আবছা **ছবির মড**ঃ মহতে পরেই দেখল মিছু তার কোলের कार्क व्यक्तिः भए कार्त्व कार्त्व कार्रकः থোলা দীঘ[ি] দুল **ছড়ানো পিঠে। ওর সমস্ত** শরীরে বণ্ডনার আক্ষরে **লেখা শ্যামলা দত্ত ও**র সর্বনাশ করে চলে গেছে। **অভ্যান্ত লাভে** ভয়াবহ দৃশাটা মন থেকে **তাড়াতে চাইক** পরিমল। জোর করে। আন্তে আন্তে **ইন্দির** সঞ্জাগ হ**চ্ছিল ওর। চেতনা স্বাভাবিক্তার** আসছিল। চারিদিক চেয়ে দেখল ভোরের আলোর আভা ঘরে চিকমিক করছে যাতটা কেটে গেল কোথা দিয়ে। চোথ কিরিয়ে সরম্র রা**ত্রি জাগ্ররণ ক্লাম্ত মুখ দেখতে** ্পল পরিমল টভারপর 'চোর্ম্ব ব্রন্তে একটা *বাস ফেলে ভাবল অমন ভাল টিউশনিটা এবার ছেডে দিতে হবে।

(ME) '

3 भग्या अधिक्या

গৃহসম্জার সৌখীন উপকরণের ছোট-খাট প্রদর্শনী বখন সাধারণ প্রদর্শনীগুছে হয়, তথন সেগালি একটা পরিবেশবহিভূতি **অবস্থার দেখতে হ**য়। কিল্তু শর্বরী এবং আলো দত্তের ম্ংশিক্সের প্রদর্শনম্লা অনেকথানি পরিবতিত হয়েছিল ২০ লেকসপীয়ার সরণীর অমলেন্দ ও উমা নারের বাড়িতে অনুষ্ঠিত হওয়ার। হরের বেখানে যে জিনিসটি রাখলে স্কুর দেখায় **সেইভাবে সেগরিল** সাজানো হয়। মাটির বহুবর্গে রঞ্জিত ফুলদানি, ল্যাম্পস্ট্যান্ড, ফলাধার, দীপাধার, ট্রে এবং আরো বিভিন্ন ধরণের কাবহার্য কম্ভুর স্ক্রেচিসম্মত গঠন-वावर छेन्छ्यम ह्याथक्र एकारमा রঙ অভ্যাগতদের আক্রণ্ট করেছিল। তাছাডা জিনিসগ্রালর দামও ছিল খ্য কম, যাতে সকলেই কিছু না কিছু প্ৰদাসই জিনিস কিনতে পারে। তাই প্রদর্শনীর শেষে অলপ কিনিষই অবশি**ষ্ট ছিল। এই ছ**রোয়া क्षणानी ५६ ज्ञा यन्तिक हता।

দিল্লী আট কলেন্দের সিনিরর লেক-ভারার ফাল্যানী দাশগম্পত অনেকদিন পরে **কলকাতা তথ্যকেন্দ্রে তার** ১২থানি ছবিব একটি প্রদর্শনী করলেন। ইতিপূর্বে তাঁর প্রদর্শনী দেখা গিয়েছিল আটি স্টি হাউসে। বর্তমান প্রদর্শনীতে জল-রং রঙীন কালি ও প্লাম্টিক পদু মিশিয়ে ডিনি খুব উক্তনল ক্তগালি ছবি তৈরী করেছেন **বাফে জল-রং-এর কাজে** একটা পেণ্টিং-এর গাণ এসেছিল। শ্রীদাশগাশত দৃশ্য-জগতের কতগালি কর্ম থেকে আ্যবস্থাকশনে পেছিবার চেণ্টা করেছেন। এতে ছবি সম্পূর্ণ म्दर्वाक्ष रक्ष अर्फ़ान , विरमय करत्र निज्ञा দ্শা থেকে করা আ্যাক্ট্রাক্শনটি অভাত সংগঠিত হয়েছে। ছবিগ**্লির মধ্যে সা**দা রেখার আনাগোনা নকশাকে বেমন একদিকে সমৃত্য করেছে অন্যদিকে কোথাও কোথাও অনিচ্ছা সত্ত্বেও একটা স্টেনসিল এফেট এনে গিরেছে। তাঁর ২, ৩, ৬, ৯ এবং ১৬ নশ্বরের ছবিগালি বিলেষভাবে উল্লেখ-বেলে। প্রদর্শনী ৬ থেকে ১০ জনে খোলা हिन।

বিশ্বলা আকাডেরিতে ক্সানভান নিকপী।
সোপ্টার ১০জন নিকপীন ,৩২টি পের্কিং
স্কারিং ও প্রাক্তিকর প্রদর্শনী ৯ থেকে
১৪ই জনে অনুষ্ঠিত হরে সেল। গোপ্টার
কাজ এবারে গতবারের চেরে কিছু উন্নত
হলেও কাজের কানের অসমতা এখনো

প্রিক্ষ্টে। এপ্রের অনেক কালে এখনো সমকালীন শিলপী গোষ্ঠী ও ক্যালকাটা গ্রপ্তের হাতার ররে গিরেছে। আলোক ভট্টাচার্যের একটি স্তুমিং খুব নিখ্যভাবে আকা। বরেন বস্কুর ছবিতে প্রতীক-ধর্মি তার একট, বাহ্মা দেখা যার। অশোক বিশ্বাসের "কোড় বিফোর মিরর' এবং 'সীটেড ফিগার' পরিছের ডিজাইন। বলাই কর্মানরর 'ইমেজ' ছবিটি জল-বং-এর কাজের একটি স্মুন্সর নিদর্শন। রঙের বাবহার রোমান্টিক। মানিক তাল্ক্ষার—লোক ধরণের ছবি করেছেন।

গালারি ইউনিকে ৮ থেকে ১৪ জন বি, আর পনেসরের ২২থানি অয়েল স্কেচ প্রদাশত হল। ছোট গ্যালারিতে ছবিগ,লি একট্র খন-সন্মিকশ্ব হয়ে পড়ায় দেখার পক্ষে কি**ছটো অসূবিধে হয়েছে। শ্রীপনেস**রের ছবির অধিকাংশই নিসগ' দৃশ্য অবলম্বনে। কথনো কথনো অস্ভুত রসের অবতারণাও হ্রেছিল-যেমন 'এ ওয়াইজ অ্যানিম্যাল ব্যুক্তি স্যাড়ার দি হোমো স্যাপ্তিনস' ছবিতে। ৫ নম্বরের কম্পোজিশনে কালো রেথায় আঁকা ফিগারটি খ্ব মানানসই লাগল। ১০ নদ্বরের ছবির স্ব⁹ন্ময়তা এবং 'লস্ট সিউ' ছবির গগনেন্দ্রনাথের আমেজ ভালই লাগে। তবে তাঁর 'টেম্পল এগেনস্ট এ সোলেম কাই' এবং 'হ,ইস্পারিং ডিটি' অনেক সংগঠিত গাম্ভীয়মর এবং শক্তি-শালী কাজ। ছবির নির্বাচনে আরেকট্ স্ত্রক থাকাল প্রদর্শনীর সামগ্রিক মানের সমতা বজায় রাখা সহজ হত।

অ্যাকাড়েমি অব ফাইন আউসের সংগ্রহে একটি প্রাতন বন্ধাদেশীয় স্কল সংযেক্ষিত হয়েছে। ৬৪টি বিভাগে ৬২টি প্যানেৰে ভাগ করা ছবিটি প্রায় ১৫০।২০০ বছরের পারোন। যদিও ছবিটি বেশ স্বেক্ষিত অক্থায়ই আছে। সম্ভবত ট্রুগ্ বংশের কোন রাজার আসনের অভিষেক ও অন্যান্য রাজকীয় **উৎসব এই ছবির বিষয়বঙ্গু। চি**ল্লে রাজা-রাণী ও পরিষদবর্গকে বাঘ শিকার, হলা-কর্ষণ উৎসব, নৌকাবিহার, হাতীর লড়াই. বেবতহুত্তী বন্ধন ইত্যাদি ঘটনায় অংশ গ্ৰহণ করতে দেখা যায়। লাল স্বুক্ত, হলদে কালো ইত্যাদি কতকার্বাল মৌলিক বর্ণো मेर्ड ६ भागिक्स स्वयाभारत जीका सिमिट्स-

চার ম্রালের মত এই ছবিটি প্রাচীন ম্বে সাজ-পোষাক ও সামাজিক র্নীতি-নীতি একটি উজ্জ্বল নিদ্দান। ছবিটির নিখ্নত পারিপাট সর্বদাই শিল্পীর কুণজতা মনে করিবে দেয়।

১৫ থেকে ২১ জন পর্যশত আকাদিম

অব ফাইন আটস মোহদলাল শর্মা ও এ

এস নারায়ণ নামে দুই তর্ণ শিশ্পীর
প্রদর্শনী অনুষ্ঠিত হল। এ'দের মধ্যে

শ্বৈতীয়জন মোটামুটি নিজে নিজেই কজ শিখেছেন। ছোট ছোট জল-রং এবং প্যাস্টেলে আঁকা করেকটি ছোট দ্শোর মধ্যে ২১, ২২, ২৪ নন্বরের ছবিস্কি মন্দ নয়। দু-একটি কু'ড়ে খরের দ্শো প্যাস্টেল পরিচালনা একট্ অপারণত।

মোহনলাল শর্মার জল-রং ও তেল-রঙের কাজগুলি সন্দক্ষ ভাবে করা, তবে মিথিটভাব বেশী। অনেকগুলি নিসগ দৃশ্যু বেশ একট্ কালে-ভার ঘেষা। উষা-অনির্শেষর কাহিনী নিয়ে দৃটি বড় তেলারঙের কাজে একট্ সম্ভার ইলাম্মেশন ঘেষা ভাব এসে গিয়েছে। কেবল রাজ-ম্থানের ক্প থেকে জল তোলার একটিছোট দৃশ্যু সুটিনিতত ও পরিণত ধরণের কাজ।

৭ নান্বর চোরগণী রোডের ২০ নান্বর সুইটে সংশতাষ রোহাত । র পট্বজিঞ্জতে ১২ থেকে ১৫ মে িশ্র চিচ্ছালিলপালৈর পণ্ডাশখানির মাত ছবির একটি প্রস্পানী হল। ৫ থেকে ১৫ বছরের ১২।১৩ জন ছেলেমেরের জেয়ন, জলরং প্যাস্টেল ইত্যাদির আঁকা ছবিতে চিরাচরিত নিস্পাদ্য খেলাখ্লা রাস্তাঘাটের ছবি ছাড়াও দ্ব চারটি অন্য ধরনের বিষয়বস্তু দেখা গেলা। যেমন রেস্ট্রেস্ট, ছোটেল, প্রস্পানী-গ্রুহ, ইত্যাদি বিষয়।

২২-শ পাল্লীর সিঠ আগাণ্ড জ্ল চিঠ প্রতিবাগিতার প্রকলার বিভরণের অনুষ্ঠান কলকাতা তথ্যকেল্লে ২ মে হরে গোল। প্রকলার বিতরণ করলেন শ্রীমতী আলাপ্ণা দেবী এবং সভাপতি ছিলেন শ্রীচিল্তামণি কর। বিচারকমণ্ডলীর মধ্যে ছিলেন প্রফ্রচন্দ্র লাহিড়ী, চিল্তামণি কর, সত্যজ্জিত রায়, স্নীল পালা, ইন্দ্র দৃহিন্ধ, আমিনা কর, গণেশ হালোই ও নির্মাণ দত্ত।

-1988/99

্যলকাতায় তিনজন পট্যয়া। এসেছিলেন

কিছুক্ষণ আগে এক পশলা বৃদ্টি হুমে লছে। আবারও বৃদ্টি আসতে পারে। বৃত্তরাং তাড়াতাড়ি বাড়িটার ভিতর চুক্ লেলাম। আমেদাবাদ থেকে তিনজন পট্রা এচেছেন এথানে। ওরা পট দেখিয়ে আঞ্চ

বাংলা দেশের পর্টাশন্প সম্পর্কে আয়ার
ধারণা সামিত। তব এই দেশের জলমাটিতে সেই স্প্রাচীন ঐতিহা এখনও
টিকে আছে জেনে এবং তিনজন পট্যা
এসেছেন এই মহানগরীতে, ওরা আজ পট
দেখাবেন, দেব-দেবীর যুন্ধ বর্ণনা করবেন,
দুর্গাপটে অথবা মনসাপটে নানারক্ষের
গলপ গাথার ছবি আঁকা থাক্বে ভাবতেই এই
বর্ষার প্রাচে প্রাচে দিনটা সহসা আয়ার
কাছে মনোরম হয়ে গেল।

বড়স্প্রচীন ঐতিহাযারুমে লুপ্ত হবার মুখে। ওদের অর্থাৎ যারা **এসেছেন** নানা বর্ণের পট নিয়ে এবং আরও আ**ছে হলের** ভিতর সংগ্রহ করা পট—িক দীর্ঘ **জার লম্বা** চোখ অথবা নাক, কান, **মুখ.** ওদের শিল্পকলা মঙ্গলকাব্য থেকে নেওয়া বলা যায়, ওরা অন্সরনাশিনী মহিষ-মদিনীর ছবি আঁকতে পট্, কবে কোন काटन थारनभ्वरतत ताङा भूगशा स्मरत किन-ছিলেন-পথে শ্নলেন পিতৃদেব অস্থে, **তিনি যোড়া ছ**্টিয়ে দিলেন। শহরে **চুকে** দেখলেন তিনি পট শিল্পী গান গাইছে-এত যে জীবনেব জয়গান হাঁকছ তোমরা, **এত** যে বড়াই কর ব'চার অথবা য**েখর**. **ল্যাখো**, সেই ভাহ•কারের মাথা চূ**র্ণ করে** নরকের পাপ খণ্ডন হচ্ছে।

মান্যের মন বড় সংস্কারে আবস্ধ। থানেশ্বরের রাজা আরও জোরে খোড়া থন্টিয়ে দিয়েছিলেন। গান শ্নেতার ভয় হয়েছিল পিতৃদেব হয়ত বে'চে নেই।

সেকালে, সেকালে বলছি কেন, একালেও
এই পট্যারা এক স্বদর লোকশিলেপর
মারফত গ্রামের মান্বদের শিক্ষা বেখানে
তেমন স্কাভ নর অথবা সংস্কারজাত
মান্র বেখানে বিশ্বাস করতে ভালবাদে,
এই পটের সব গ্লেকতিন প্রবংশ ওদের
পাশখন্ডন হবে, পাশখন্ডনের জন্য বাড়ি
বাড়ি ওরা এখনও প্রায় ধর্মপ্রচারকের মতো
সত্যাপরি আর মনোহর ফাস্বের কাছনী
বর্ণনা করে বেড়ার। কথনও ওরা গান করে
রাক্ষা কর্তৃক জটার বধের পালা, বাজীক্রীবের ব্ধা। এখন বর্ণনাবহুল গ্রামীণ

চিচ্ন বড কম দেখা যায়। আমাদের সামনে বসে ওরা এখন গান গাইছে। কত গুণীজন এসেছেন এই সাহিত্য পরিষদের ভবনে। এসেছেন প্রম্থেয় স্নীতি চট্টোপাধ্যায়, অল্লদাশংকর রাম, স্কুমার সেন, তুষারকালিত ष्यायमगारे, एक एक एमन, मिक्नात्रक्षन यम्। সকলের কিনা জানি না আমার কিন্তু মনে হরেছিল যেন কতকাল আগে শোনা পদ্ম-প্রেণের মতো বেহুলার ভাসান গাইছে বিজয় চিত্রকর। লক্ষ্মীন্দর-বেহ্মলার গল্প। ষেন এক বর্ষাকালে নৌকা বেয়ে যাচছ আর কেউ সূর ধরে পদ্মপ্রাণ পড়ে বাছে। আলো পাখার নিচে বসে সেই স্দ্রে প্র্-বণ্গের কথা মনে হয়। ধান গাছ আর বর্ধার জল এবং ডাহ,কের শব্দ, নিরিবিলি নিজনি গ্রামে কে যেন সূর ধরে নিয়ত পদ্মপর্রাণ পড়ে চলেছে, সেই সরে করে পড়া পদ্মপারাণের লক্ষ্মীন্দর, বেহালা, চাদসদাগরের হ্বহ্ বর্ণনা দিলেন বীরেন চিত্রকর তাঁর হতে অ°াকা পটে। বিষহরির প্জা দিতে যে অপারক, সেই চাঁদ-সদাগরের। উপরে এক বিশালনয়নার ম্তি, নিচে চাঁদ সদাগর। তার প্রদের বিধবা বউ—সব সারি সারি ক্রমে নিচের দিকে সাজানো। আরও নিচে ভেলার বঙ্গে বেহ,লা, কোলে মৃত প্রামী, যে নদীতে ভেসে ভেসে চলে যাছে।

আলা পাথার নিচে আমরা হারা বসে-ছিলাম তাদের কাছে কতটা এই বর্ণনা মহিমময় আমি জানি না—আমার কেবল মনে হয়েছে মেলা অথবা পালা পার্বনের কথা এবং এইসব পট্যারা মেলায় যেন ঘুরে ফিরে হাত নাচিয়ে পটের বাাখ্যা করছে, আমরা যেন কোন মেলায় উপস্থিত হয়েছি. স্বৃদ্র গ্রাম থেকে এসেছে দ্বাছা কাচের চুড়ি কিনতে চাষা বউ, অথবা ভূরে শাড়ি পরে ছোটু বালিকা জিলিপি খেতে খেতে ছুটে থাচ্ছে, মেলায় এসেছে পটুয়া, পট নিয়ে **গান গাইছে। রামায়ণ মহাভারতে**র গলপ অথবা রাম-রাবণের যুখে বর্ণনা করে যাচ্ছে আর ওরা কেউ জিলিপি থেতে থেতে, কেউ হাতের দুগাছ সোনালি রঙের চুড়ি দেখতে দেখতে রাম-রাবণের যুদ্ধের বর্ণনা শানতে শানতে মাশ্ধ হরে হাছে। আর ওরা নিজেদের জীবনে এইসব আখ্যায়িকার হ্বহ্ পূর্ণ বিকাশে ক্রমে এভাবে ভূবে যায়। এইভাবে এক প্রাচীন শিল্প আমাদের জন-**জীবনে বে লোকশিক্ষার ভার নিয়েছি** আৰু তালুত হতে বসেছে।

তিনজন পট্যা এসেছিলেন, দেখলেই মনে হবে ওদের শরীরে আর তেমন ঋজ্বতা নেই। দোমড়ানো চেহাড়া। অভাবি মান্য। জামা গারে ওঠেনা সাধারণত। কলকাতায় আসবে। আহা কি বড মহান নগরী এই কলকাতা! ভাব চার্ণকের নগরীতে এত সমারোহ! ওরা জো বেশী দ্রে যায়নি। খ্ব জোড় ওরা হয়জে। গেছে মহিষাদলের রাজার বাড়ি, কারণ ওদের বাড়ি যেতে গেলে সেখান থেকে পার হে'টে দশ ক্লোশের উপর যেতে হয় অথবা আরও দ্রে এমন এক জনমনিষার দৈশে বেখানে মান্য নিশীথে শ্ধে নক্ষরের **আলোতে** আহার করে। ওরা অর্থাৎ এই তিন পট্রা বীরেন, পণ্ডানন এবং সেই তর্ণ যুবক যে এখনও কঠিন স্বর গলায় বে'ধে রেখেছে—সে গাইছিল নহ ষের আখ্যান। রাজা নহার সম্পর্কে যার গান গোটা পরিষদের হলকে মাঝে মাঝে কাঁপিয়ে **পিচ্ছিল। দেখলেই** মনে হবে ওদের, ওরা জোর এসেছিল তমল্ক শহরে অথবা পাশকুরা রেল দেটশনে। কিন্তু রেল দেটশনে এসেই যখন ওরা ট্রেণের কামড়ায় চড়ে বসল- তখন ওরা নিজেরাও বুঝি কিছু সময়ের জন্য নহুব হয়ে গিয়েছিল। এক রাজার বাড়ি দেখেছে এখন কলকাতায় হাজার হাজার বাজার বাড়ি, যার শেষ নেই, যার সীমা নেই। এত_,সব রাজা**র** ৰাড়ি দেখে ওরা বিশ্মিত অথবা এমন যে 📽 নগরী, যার আলো ওদের চোখে আশ্চর্য রক্ষের নীল মনে হয়েছিল। ডায়ানে ওঠে ওরা এখন নিজেরাও ক্বি নীল হয়ে গেছে অথবা তিনজন তিন নহুষ হয়ে বসে TILLE I

এইভাবে আমাদের পর্টশিল্প, যে সব পটে রয়েছে জটায় কর্তৃক রাবণের রথগাস, রাবণ সভায় হুনমান, তারকাস্র বধ, রাম-সীতার বিবাহ এবং সেই যে ১৯৩০ সালে কাকদ্বীপে জাহাজডুবী হল, কত লোক ভেসে গেল সাগরেরি জলে, পটে এমন সব ছবির বর্ণনা দিয়ে পট্যারা কত না রোজগার করত একদা—আজ মতপ্রার এই শিল্পকে আবার জনসমক্ষে তলে ধরার জনা সাহিত্য পরিষদ অনেক ভাল কাজের ভিতর আরও একটা ভালো কা**ল** করলেন। নিজেকে নিজে আর কি অভিনন্দন জানাবো। তব**ু যারা এই উৎসবের** মালে ছিলেন, যেমন ডেভিড স্নাকাচি, তারাপদ সাঁতরা এবং হীতেশরঞ্জন সান্যাল তাদের অভিনন্দন জানানোর গৌরবে নিজেকে গোরাবন্বিত মনে কর্নছ। এবং তিন্দ্র শিল্পী এসে আমাদের এই জড় শহরে গ্রামের ফল ফ্লের শোভা একে গেলেন মাহতের জনা তাদৈর আর অভিনন্দন জানিয়ে খ্র সহজ চালে বাজিমাত করতে চাইনা।

–ৱুপকার

शियिका कवि भवात्राव • लिल ह्या कि





















विट्रिटेन जाथात्र निवार्तन उनाती

পুর্বের জীবনে নারী বিরাট প্রেরণা।
ত আরু অবসাদ হখন চ্যারিদিক থেকে
বনকে নিরাশার খন অত্থকারে ছেরে
ল তখন নারী তাকে বোগার উপ্পীপনা।
ুব ফিরে পায় হ্তবল। নতুন উপ্যথে
র লাভ করে অভাবিত সাফল্য।

এমনি প্রায় সব ক্ষেত্রেই। পৃথিবীর
সংখ্য বিরাট প্রতিভার পেছনে দাঁড়িরে
প্রবণা জ্বণিরেছে মহিমান্বিত নারী
লীরচ। লেনিন শতববে প্রথমেই মনে ভিড়
করে আসে মাদাম লুপ্শ্বায়ার কথা। বিশেষ
সর্বপ্রথম সর্বহারা বিশ্ববের কীতিমান
প্রেষের জীবনে মাদাম লুপ্শ্বায়ার
অবদান অবিশ্বরণীয়। বিশ্ববের প্রথেই
লেনিনের সংগ্য তাঁর পরিচয় ঃ পরিগর।
লিনিনের সাধনাকেই তিনি নিজেরও সাধনা
বলে গুহণ করেন। আর সারা জীবন
লুপ্শ্বায়া ছিলেন তাঁর সংগ্রমী-সহারক।

ভারতের প্রথম প্রধানমন্ত্রী জওহরলাল নহর্র ক্ষেত্রেও এই কথা খাটে। পরা- ≱ীনতার বিরুদেধ সংগ্রামে দিনের পর দিন র্তান কাটিয়েছেন কারান্তরালে। পারি-ারিক জীবনের কথা হয়তো তাঁর মনে শড়তো। দেশের চিত্তা বেশিক্ষণ মনে স্থান পতে পারতো না। এট্কু সম্ভব হওরার প্রছনে কমলা নেহরুর অবদান খুব সামানঃ নয়। তিনি স্বামীকে স্প**ন্টই** বলতেন, আমার চেয়ে দেশের চিন্তাই তোমার কাছে বড হওয়া উচিত। একবার কমলা নেহর, গ্রেতর অস্ম্থ হয়ে পড়েন-প্রায় মৃত্য-শ্ব্যায়। জওহরলাল জেলে। রিটিশ সরকার তাঁকে স্ত্রীর সংগ্রাহালত হওয়ার অনুমতি দিতে রাজী হয় সত-সাপেকে। কিন্তু কমলা নেহরুর পরামশে তিনি সে প্রস্তাব ঘূণার সংগ্রে প্রত্যাখ্যান করেন।

শুধু রাজনীতি নর, জীবনের অনেক ক্ষেত্রই নারীর প্রেরণা প্রের্থক এগিয়ে যাওয়ার সাহাষ্য করে। হয়তো একটু থেজি নিলে দেখা বাবে কোন কোন মান্বের সাফলোর আসল চাবিকাঠিটি হলো তার প্রী। আবার শুধু স্থী কেন, সামগ্রিকভাবে গোটা নারীসমাজত এ-কাজে অনেকথানি অহাণী। মনে করা বাক, আজ থেকে পঞ্চাল বছর আগে ব্রিটনে ভোটাধিকার আন্দো-লনে নারীসমাজের তৎপরতার কথা। সেদিন তাঁরা দাবীর প্রতি সাধারণের দ্ভি আকর্ষণের জন্য হাউস অব ক্যন্সের রেলিং-এর সংশ্যে নিজেদের শৃংখলিত করেছিলেন। এ-ঘটনা থেকে এটাকু অনামান করা বাম নারী বেমন কাছিগত জীবনে প্রেরণা তেমনি নারীসমাজ। এরই প্রতিভিয়া আজ রিটেনের নারীসমাজ ভোগ করছে। মহিলা নিবাচন প্রাথী, পালামেণ্টের মহিলা সদস্য বা মহিলা মল্টী-এ-সবে আমনা এতো বেশি অভাস্ত হয়ে পড়েছি বে এগ্লি আর খবরের একটা বিশেষ মর্বাদা আমাদের কাছে পার না। বিশেষ ভারত এবং সিংহলের প্রধানমদ্দ্রীদ্বরুই যখন মহিলা। অবশ্য একথা সভ্য যে ৱিটেনে এখনও প্রধানমন্দ্রী, পররাশ্রমন্দ্রী বা অর্থা-মশ্রীর মডো কোন গা্রাছপা্র্ণ দপ্তরে কোন মহিলা রাজনীতিবিদের স্থান হয়নি। আর অদরে ভবিষাতে এরকম সম্ভাবনাও সে দেশে নেই। ১৯২৪ সালের পর থকে অর্থাৎ হাউস অব কমন্সে প্রথম মহিলা আসন গ্রহণ করার পর থেকে এপর্যত ছাম্বিশজন মহিলা মন্ত্রী নিযুক্ত হরেছেন। করেকজন ক্যাবিনেট মূল্যীও ছিলেন এ'দের মধ্যে।

অনেকের ধারণা যে, অপেক্ষাকৃত কম গ্রেফুপ্ণ দৃশ্তরগ্রিলই শ্ধু মহিলা মন্দ্রীদের অনা সংরক্ষিত আছে। কিন্ত এ ধারণা খুব ভূল। বর্তমান মন্দ্রিসভায় একটি গ্রেম্পশ্র্ণ পদে অধিষ্ঠিত আছেন মিসেস বারবারা কাসল। তিনি ফাস্ট সেক্টোরী অব স্টেট এবং সেক্টোরী অব স্টেট ফর এমস্করমেন্ট জ্ঞান্ড প্রোডাকটি-ভিটি পদে রয়েছেন। এই দম্ভরের কাল্প হলো শ্রমিক-মালিক এবং রুণ্ডানি বৃণ্ধি সংক্লান্ড। বথেন্ট কঠিন কাজ। তিনি মন্ত্রী হিসাবেও নিজের যোগাতা সাপ্রতিভিত করতে পেরেছেন ইতিপ্রেই। পরিবহন দৃশ্তরের মন্ত্রী হিসাবে তিনি এমন কিছু আইন প্রণয়ন করেন বাতে যথেণ্ট সাহ-সিকতার প্রয়োজন। কারণ এসব অপ্রির আইন প্রণয়ন করে জনপ্রিয়তা হারানোর সম্ভাবনা কম নর।

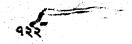
মণ্ডিরে রিটনের মহিলাদের ভূমিকা তেমল গৌরবমণিডত না হলেও সামগ্রিক ভাবে রাজনীতিতে তাদের গ্রেম্ব অসীম। এদিকটা বিশেষভাবে ধরা পড়ে সাধারণ নির্বাচনের মৃহুতে। এটা অবশ্য ভেমন নতুন কথা নয় বে, নিৰ্বাচনপ্ৰাৰণী ৰা মন্ত্রীদের নির্বাচনে স্ত্রীর সাহাব্য পাবেন। এটা অধিকাংশ দেশেই সতিয় যে, নির্বাচনের সময় তারা বাড়ি বাড়ি গিরে ইস্ভাহার বিলি করেন, ভোটারের সংশে আলাপ-আলোচনা করেন এবং চিঠিপত লিখে নিবাচনী অভিযানে সাহায্য করেন। আরো নানাভাবে তাঁরা স্বামীদের সাহাব্য করে থাকেন। তারা স্বামীদের কেন্দ্রে মহিলা সংস্থায় বন্ধতা দেন, স্কুলের ছেলেমেয়েদের প্রস্কার বিতরণ করেন নানাবিধ অর্থ-সংগ্ৰহ অভিযানে অংশগ্ৰহণ করেন এবং বিভিন্ন অনুষ্ঠানে স্কলের সপে মেলা-মেশা করেন।

অবশ্য এমন স্থাও আছেন, বাঁরা মান করেন, রাজনৈতিক বা সর্বজনীন ক্লিয়াকাণ্ডে তা সে যে জাতীয় হোক না কেন, তাঁরা নিজেদের যত কম জড়িয়ে ফেলকেন তাঁদের স্বামীদের পক্ষে ততই মঞ্চাল। তাঁরা মান করেন, এসব অনুষ্ঠানে দৈবক্তমে তাঁরা এমন মন্তব্য করে ফেলতে পারেন বা তাঁদের স্বামীদের পক্ষে ক্ষতিকারক হবে।

এসব তো আছেই। কিন্তু সাধারণ
নির্বাচনে রিটেনে মেয়েদের পক্ষে হা স্বচেরে গবের তা হলো বে নির্বাচনের
প্রচারকার্বে তারাই মুখ্য অংশ নের।
রাজনীতির চাকাকে চলমান রাখতে হাজার
হাজার মহিলা এভাবে কাজ করে চলেকেন।

অনেক মহিলা নিব'চিন কেন্দ্রে পার্চি এজেণ্ট নিযুক্ত হন। এটা কোন সৌধীন কাজ নর। সকল পার্টিই অনেক ভেবেচিনেক তাদের এজেণ্ট নিযুক্ত করেন। কারণ, এজেণ্টদের উদ্যোগ, ব্যক্তিত ও শরিপ্তদের উপর প্রাথীদের জর-পরাজর অনেকথানি নিভার করে।

পার্টি এজেন্টদের মধ্যে অনেকেই প্রের্দির কমা এবং বেতনভোগী। তাঁরা বথেন্ট শিক্ষিত এবং প্রের্দির কমা। পার্টি সদর দশ্তর থেকে সাফলোর সাটিন্টিককেট দেওরা ইয়। এই সাটিন্টিককেট বাঁর আছে, ব্রুতে হবে তাঁর নির্বাচন সংক্রান্ত আইন-কান্ন ভালোই জানা আছে।



নির্বাচনী এজেণ্টদের চাই থৈব',
স্মৃতীক্ষা নজর বিশ্বস্ততা, এবং লোকজনের সন্দো মানিরে চলার ক্ষমতা। ক্রমেই
দেখা যাক্ষে মহিলারাই ভাল এজেণ্ট হতে
পারেন। বর্তমানে ব্রিটেনে সম্বরজন প্রাথীর
নির্বাচন কেন্দ্রে মহিলা এজেণ্ট ররেছেন।
এপের মধ্যে ৬০ জন প্রমিক দলের, সাজজন
রক্ষণশীল দলের এবং ৩ জন উদারনৈতিক
দলের। ১৯৬২ খেকে ১৯৬৯ সাল পর্যশ্য
প্রমিক দলের জাতীর নির্বাচনী এজেণ্ট
ছিলেন মিস সারা বার্কার। তাঁর কাজ ছিল
সারা দেশে পার্টি সংগঠনের ভদারকি
করা।

কেন্দ্র এজেন্টই তাঁর এলাকায় পার্টির মুখ্য সংগঠক। তিমি তাঁর দলের ন্থানীর এম-পির কার্যকরী সহকারী এবং কেন্দ্র সমিতির সম্পাদক। এজেন্টদের কেন্দ্র এলাকায় বাস করতে হর। কিন্তু নির্বাচন-প্রাথী বা পার্লাফেন্ট সদস্য অনেক সমন্ত্র তার নির্বাচনী এলাকার বাস করেন নাব সেজনা এজেন্টের কাজ ম্পানীর পার্লা-মেন্টের সদস্যকে ভার এলাকার সমস্যা ও প্রবৃণতা সম্পর্কে ওরাকিকহাল রাখা বাতে তিনি উপযুক্তর্পে জনপ্রতিনিধিত্ব করতে

থানি সময়েও একেন্টাদের ফান্ড থাকতে হয়। কিন্তু নির্বাচনের মুখোমনুথি তাঁর কান্ডের চাপ পড়ে থান বর্গে এবং কাজও হয় বিশেষ ধরণের। এসময় একেন্টাকে তাঁর প্রাথীর ম্যানেজারের ভূমিকা নিতে হয়। নির্বাচনের আইন-কান্ন এবং কলা-কোনাল সম্পর্কে তিনি সম্যক্ষ জ্ঞানের অধিকারী। তাই নির্বাচনী অভিযানের ব্যবস্থা, সভা আহনান, ধরে খরে প্রচার, পোন্টার ইন্ডাহার—এই সমন্ডই এক্রেন্টাদের তদারকিতে হয়ে থাকে।

রিটেনের নির্বাচন কঠিন নিরমে বা এবং এজেন্টদের কাজ হলো সমুস্ত নির ঠিকমতো প্রতিপালিত হচ্ছে কিনা নহ রাখা। বিশেষভাবে তাঁকে দেখতে হ নির্বাচনী বার আইনসিম্থ হচ্ছে কিনা প্রতোকটি খুণ্টিনাটি খরচের হিসেব রাখতে হর।

এজেন্টদের আর একটি কাজ হলে পাটির জন্য অর্থ সংগ্রহ করা। এ-কাট তিনি করেন মেলা, শিলপকর্ম বিক্রয়, পাটি ইত্যাদির মাধামে এবং সমর্থকদের কাছে আবেদন করে।

এসব 'ঘর গোছানো'র কাজ মেরের।ই এখন ভাল পারে। এজন্য এজেন্টদের মধ্যে মেনেদের সংখ্যা বাড়ছে। পার্টিস্লিভ মেয়েদের উপরই গ্রুছ দিচ্ছে দিনে দিনে — প্রদীলা

वाय्यत वाठात

আমের ছে'চা চাটনি—কাঁচা বড় রসালো আম দুটি, চারশোগ্রাম চিনি, গোলাপি আতর, বড় এলাচ চারটি। আমের মুখটি বভ করে কেটে পাঁচ সাত মিনিট জলে ভিজ্ঞিরে রেখে, ভারপর একটা মোটা কোরে খোলা ছাড়িরে কেলতে হবে। খোলা পরিকার কোরে ছাড়াসো হবে, আমের গায়ে বেন ৰোলার স্ব্ৰ স্ব্ৰ গাগ না থাকে। এইবার আমের গা চেচে চেচে শাস সব কেটে (এकर्टे, स्वाठे। स्वाठे। ठाँठा चट्टा) शामन'त জলে ভিজিয়ে রেখে সপ্সে সংগ্রে আর একটি পাত্রে ভূলে অথবা একটি ব্'ড়িতে রেখে জল व्यक्ति व्यक्ता। जन वाद्य लाक्त वार्टनावारे। শিলে আমণ্টোল থে'ডো কোরে নিম। শিসটি সোডা জনবা তে'ভুল দিয়ে বেল কোরে ধরে সেওরা দরকার আম ছে'চবার আলে। আমগর্তি ছেডা হয়ে গেলে একটি পরিত্রার কাপড়ে রেখে মিংড়ে আমের কাঁচা রস কিছ্ বার কোরে নিম। রস বার করার পর আমের পরিমাণ অন্যামী পার মিরে ভাতে **ठातरना साम डिमि जिम अवर के एक्टा जाम** সবটা নিজে বৈশ কোনো চিসির সপো মেথে নিরে ভারপর উদাদে বসিরে দিন ৷ দেখা বাবে আক্তেভালেত কটেছে এবং আয়ের রস বেভিয়ে আসছে। বিদ দেখা বার রস তেমনভাবে বেব্ৰুছে না, তাহলে আধ কাপ জল দিন। কিছ্কেল কটেতে থাকুক ও মাৰে মাৰে নাড়তে থাকুন, একট্ৰ সময় मामिटत बायान, जानात छेमारन हफ़िटत निमा এইবার দেখা বাতে ফুটতে ফুটতে বেল খন হরে আসহৈ ও হাতে কোরে দেবলে ধোলা-बार्य **व्हेट**के लागरह। व्हेटके मा लागरन আরো ক্রিকণ ফুটবে। স্তা বোলে ধুব বেশী বেন ফোট্যনো না হয়। 💍 কড়াপাৰু **হলে রং লাল**ফে মত হয়ে যাবে। এইবার

আচার ঠান্ডা কোরতে দিন। ঠান্ডা হয়ে গেলে একট্র খেয়ে দেখা দরকার যে, মিঘ্টিটা ঠিক হয়েছে কি-না। আচারের নিয়ম হল চিনি কম হলেই শীঘ্র নন্ট হয়ে যাম। টক থাকংল আর একট, চিনি দিয়ে ফুটিয়ে নেওমা, চারদিন রোদে দিন। এরপর বড় এ**লাচের** দানাগর্বল বেশ পরিজ্ঞার কোরে ছাড়িয়ে দানাগুলি আলাদা আলাদা কোরে এর মধ্যে দিন, তিন চার**্ফোটা আতর দিয়ে** নেঞ্-চেড়ে তুলে রাখন। কিছুদিন যাবার পর ঐ বড় এলাচের দানা ও আতরের সংমিল্লগে ভারীসক্রমর একটা স্বগন্ধ হয়েছে এবং স্বাদও চমংকার **হবে। আমের** এই **ছে'**চা চাটনি কোরতে চিনিও কিছু কম লাগে যদি আমগ্রিল থ্ব টক না হয়।

আবার ঐ ছে'চা চার্টনিতে বড় এলাচ আতরের বদলে, একটা ছোট শকেনো লংকা, সামান্য সাদা জিরে একট্ ছেজে নিষে গাং'ড়িয়ে ওতে দিলে আর একরকম চমংকার স্বাদ হর।

আমের খোটাই আচার—দ্বিট বড় কাঁচা
আম, চিনি পাঁচশো গ্রাম, দেড়শো কিসমিস,
পঞ্চাশ গ্রাম আদা গোটা প'চিশা তিরিপ
লব-গ, বড় শুকেনো লক্কা দেড়খানা। প্রথমে
আমের মুখাটি কেটে জলো ভিজিবের রাখা,
আঠা খরের গোলে খোলা ছাড়িরে ফোলা।
ভারপর আমের গা চে'চে লখা লখা টুকরো
কোরে দেগর্লীলকে ছোট ছোট আকারে
টুকরো কোরে নিতে হবে। গা চে'চে
আমের শাঁসটা নেবার পর অটিটা আলাদা
হরে বাবে। আঁটি আলাদাই থাকবে। টুকরো
আমগ্লিল জলে ধরে, জল ঝারিয়ে রাখ্নে।
কিসমিসগ্লিল বেছে জলে খুরে আলাদা

শুকিরে নিন, লবংগর ফ্লগালি রাখা খেকে
ছাড়িরে আলাদা রাখন, আদার খোসা
ছাড়িরে লব্বালন্বিভাবে সর্ সর্ কোরে
কুচিয়ে আলাদা রাখনে, শুকনো লংকা দেড়থানা বিচি ও শির বাদ দিরে খ্ব সর্ সর্
কোরে গোলমত কুচিয়ে নিন।

এইবার অ্যাল,মিনিয়ামের পারে ঐ চিনি. আধ কাপ আন্দাজ জল দিয়ে বসিরে দিন। রসটি ফাট ধরলে আন্তে আন্তে আমের ট্রকরোগ**্রিল** ছেড়ে দিন। কছা পরে পরে নাড়তে **থাকুন। চামচ** া কাঠের *খ*্রান্ড দিয়ে। **মাঝে মাঝে** সাম**রে** একট**ুরেখে** ফের ফুটভে দিন। এই রকমভাবে দ**্বেত**-বার নামিমে ফাটিয়ে নিতে হবে। প্রথমে নামাবার পর কিসমিসগলে দেওয়া হবে, দ্বিতীয়বার নাৰাবার পর লবংগ, আলার কুচিগত্নি দিরে আর একট্ গাড় কোরে নিয়ে নামিয়ে রা**খন। হাতে কোরে নি**রে रमश्रान वन्नो **ह**ऐ हत्ये नागर**स** विन्मा अवर আদা, লয়প্দ মিলে হোল একটা সমেপ্ধ বেয়াছে কি-মা। এইগালি হলে বোৰা বাবে আচারটি তৈরী হলে এলেছে। **চার পাঁচনিন** द्यारम भित्र जन्मात कृष्टिम् नि मित्र त्याबाह्य ভরে দিন। এই খোট্টাই আমের আচারটি থেতে বড়ই চমংকার। কিসমিস লবজন আদার এবং কৃত্যার সংগ্রিপ্রকে এর স্বাদ হয় जनारकम । जारनक जमक क्राह्मा भाकरमा লম্কার বদলে আস্ত আস্ত পলেরো, খোলটা कौठा लक्ष्म स्मात्वय मिरक निरम माश्रित मिल আরও ব্যাদ ভাল হয়। লাচি, রাটি, পরটা দিয়ে খেতে হয়। করীর, সিপ্যাতা সিমাকি ইত্যাদি দিয়ে ৰেড়ে হলে, চিনিয় ভাগ কর निरम जाना जन्कात कृष्ठि धक्ये, त्यमी किस কোরে থেড়ে দিলে ভবেই বেশী ভাল नागरव। — रश्यका महिक

বেতারশ্রাত

जन्द्रकान-भर्या त्लाहना

কথাটা কি "মন্তের সাধন কিংবা দরীর "?... "বৃন্ধং দরণং গছামি"-র পরের টা কি "ধর্মাং দরং গছামি"? প্রথমটার চন" স্থালে "পাতন" হবে দা তো? গীয়টার "ধর্মাং" স্থালে "ধন্মং"?

২৪ মে বিকেল সাড়ে ৫টার গলপ-র আসরে "ভগবান ব্শেষর কথা" তে গিয়ে শ্রীঅর্ণকুমার চক্তবতী বিক্রে সাধন কিংবা শরীর পতন" লেছিলেন, "ব্শেং শরণং গচ্ছামি"-র পরে শ্রমাং শরণং গচ্ছামি" বলেছিলেন। ভাই এই প্রশন।

শ্রীচক্তবত বিশেষর "দৃই অনাতম শিষা"-র কথাও বর্লোছলেন। "জনাতম" অর্থ কি "বিশিষ্ট"? না বোধ হয়। 'অনাতম" অর্থ "বহুর মধ্যে এক" বলেই তো জানি। তাহলে "দুই অনাতম শিষা" অর্থ কী দাঁড়ায়?

কৃথিকাটি এমনিতেও বিশেষ চিত্তা-কুষ্ক হতে পার্রোন।

রেডিওর বড়ে জিনিস বেটা—বলা, সেই বলা হয়নি এতে, পড়া হয়েছে। একটা কৈছু দেখে পড়া। তাই তেমন থুলি হওয়া যায় দি।

স্ক্রিণ্টটা অবশ্য মোটাম্টি ভালোই বলা চলে।

২৫মে স্বাল ৭টা ৪৫ মিনিটে রবীন্দ্রসংগতি শোনালেন শ্রীমতী কৃষ্ণা গ্রেচাকুরতা। বেশ লাগল। শিল্পী বেশ আর্ডারকভাবে, দরদ দিয়ে গেরেছেন।

২৯মে রাড ৮টার আখল ভারতীর কার্যক্রমে নাটক "তপস্বী কন্যা"। মূল কানাড়ী ভাষার রচনা শ্রীবেব্দটেশ আরেপারে, বাংলা র্পাণ্ডর শ্রীপ্রদ্যোড-কুমার সরকার।

নাটকের নামে এইরকম সব ক্লান্টিকের পদার্থা কর্ণাধ্যকরণ করে শরীর মনকে কন্ট দিরে লাভ আছে কিছু? শ্রুক্তবার নাটকের দিনটা এর্মান করে মাটি না করলেই নর? কেন্দ্রীর সরকারের নিরমে অথিল ভারতীয় কার্যক্রম বখন করতেই হবে এবং ভাতে নাটকের নামে এর্মান সব পদার্থ প্রচার করতেই হবে তখন শ্রুক্তবার নাটকের সন্টাকে রেহাই দিরে অন্য কোনোদিন ভা

করা বার না? আলৈ তো অখিল ভারতীর কার্যক্রমে নাটক প্রচারিত হত বৃহস্গতিবার, শ্রুবার দিনটা প্রশিলা বালো নাটকের জনাই বরাম্প থাকত। এখন আ্বার ডা করা বার দা!

০০মে স্কাল ৮টার শ্রীমাখনলাল সরকারের লোকগীতির মধ্যে মাটির টান পাওরা গেল, মাটির স্বর। ভালো লাগল।

০১ মে সকাল ৭টা ৪৫ মিনিটে
শ্রীমতী ঋতু গ্রের রবীন্দ্রনগণীতের
অন্তানটি ভালোই লাগল। অন্তান শেষ
হলে ঘোষকা ঘোষণা করলেন, "এতকণ
রবীন্দ্রনগণীত শোনালেন ঋতু গ্রে। আজ
রাত ১০টার, ১০টা ০০ মিনিটে আবার
ইনি রবীন্দ্রনগণীত শোনাকেন।" কিন্তু
রাত ১০টার এবে রবীন্দ্রনগণীত শোনা
যার নি। রাত ১০টার মণ্যলবার ছাড়া
প্রতাহ সংবাদ পরিক্রমা প্রচার করা হর,
এদিনও তা-ই হয়েছিল।

এইদিন সকাল সওয়া ৮টায় আধ্নিক গান শোনালেন শ্রীমতী উৎপলা সেন। বেশ লাগল।

স্কাল সাড়ে ৯টার শিশ্মহলে প্রচারিত হল একটি নকশা—"ফ্লের দেশে"। রচনা প্রীঅশোক দাঁ, পরিচালনা প্রীগোরাণ্য ডৌমক, আর পরিবেশনা প্রবৃংধ শিশ্ আসরের শিলিপবৃন্দ। স্বুরসংযোজনার ছিলেন শ্রীপ্রিয়লাল চৌধ্রা, কিন্তু গোড়ার ঘোষণার তাঁর নাম বলা হয় নি।

নকশাটি শুনে বতথানি থুশি হওরা বাবে ভাবা গিরেছিল, ততথানি থুশি হওরা বার নি। কথা ভাবা মাঝে মাঝে শিশ্দের উপবোগী ছিল না, কথাগুলো বেন বেশ কণ্ট করেই তাদের বলতে হরেছে। তারা অনেক সময় নিশ্বাস বণ্ধ করে মুখন্থ বলার মতো বলেছে। তবে গানের অংশ খুনে খুশি হওরা গেছে। শিশ্বা গেরেও বেন আনক্ষ পেরেছে।

ু নক্ষাটির বিষয়বস্তু মোটাম্নিট প্রশংসনীয়।

১ জুন সকাল ৭টা ৪৫ মিনিটে ছিল রবীন্দ্রসগাত। যিনি গাইলেন তাঁর নাম রণ গুছ ঠাকুরতা, না রাণা গুহে ঠাকুরতা? বেতার ঘোষণার বলা হয়েছে রণ গৃহ ঠাকুরতা, তার বেডাক্সগতে ছালা হয়েছে রাণা গ্রহীাকুরতা। তবে কেতার আর বেতারজগতের কাণ্ডকারখানার সংগ্র বারা পরিচিত তারা বিলক্ষণ ব্বেছেন ভদ্রলোক রাণা নন, রণ। বণ বেতারজগতের কারখানার গিরে রাণা হরেছে। কেমন করে হরেছে?— ইতিপ্রে অনেকবারই এই বিভাগে বর্গোছ যে, বেতার পণ্ডর থেকে বেতারজগতে দশ্তরে অনুষ্ঠানসূচী বার ইংরেজীতে। ইংরেজীতে রণ কিংবা রাণা, বাই লিখুন না কেন লিখতে হরে Rana

বেডার দপ্তর রণ ভেবে Rana
লিখে পাঠালেন, আর বেতারজগত দশ্ভর
তাকে রাণা ভাবলেন, রাণা ছাপলেন। কারও
ভাবনার মধ্যেই দোষ নেই। স্ভরাং উভর
পক্ষই নট গিলাট ক্লীভ করতে পারেন।
তাহলে গিলাট কারা?—কেন, আমরা,

কিন্তু আমরা শ্রোতারা তো বেতার
দণ্ডরকে বলতে পারিঃ মণাইরা অনুষ্ঠানস্চীটা বাংলার লিখে বেতারজগতে
পাঠান—অন্তত, বেসব জারগার গোলমাল
হবার সম্ভাবনা সেইসব জারগার ইংরেজনীর
পাশে র্যাকেটের মধ্যে বাংলা লিখে দিন!
কারণ, এই রকম গোলমাল তো এই প্রথম
হল না, এর আগেও অনেক বার হরেছে—
এবং তা নিয়ে দেখাও হয়েছে এই বিভাগে।

২ জন বেলা ১২টা ৫০ মিনিটে দিলীর খবর এল কবন্দ হরে। তার মাধাটা পাওয়া গেল না। মাধায় বে থাকে আকাশবাণী, এখন খবর পড়ছি...,' এই খবরে তার কিছুই ছিল না।

৬ জুন সকাল সাড়ে এটার দিল্লী
থেকে প্রচারিত বাংলা থবরে টেলিকমিউনিকেশনের বাংলা করা হল—টেলিবোগাযোগ। ইংরেজী বাংলা মিলিরে জ্বলাপে
এই রকম একটা জলাখিচুড়ি করার কোনো
দরকার আছে কি? প্রো বাংলা করা বার
না? টেলি-র বাংলা তো দ্রঃ টেলিকোন—
দ্রভাব, টেলিগ্রাফ—দ্রলিখ, টেলিভিশন—
দ্রেকণ (দ্র+ইক্ষণ), টেলিভিশন—
দ্রেকণ (স্র+ইক্ষণ), টেলিভিশন—
বিক্লা ইড্যাদ।..আর লিউকোফার
জিনিসটা কী? উচ্যারণটা সঠিক হওলা কি
বাঞ্নীয় নর?

হালোকান ভিত্ৰ সভাৱল অবশ্বীঃ
বৈগাধে বৰীল্য-জয়স্তীর রেগ না মিলাতেই
কেন্দ্রা এল জন্ম কৰি নজর্গের আবিভাব লগনকে স্বরুগ করে। বিদ্রেছী করির
গতন-মধ্যের রোমাণ্টিক গিলাটকেই প্রুপ্তে
এল পি ভিত্ৰ বাদ গিলে বনজর ভটাচার ও
মানকেন্দ্র মুখোপাধ্যার ছাড়া তেমন
সং-ইভিভিত গিলপীকেউ নেই। কিন্তু
এগা বে প্রভিন্নভিবাহী সে বিষয়ে সন্দেহের
কোনো অবশ্বাহ নেই।

এস পি ডিচ্ছের মধ্যে উল্লেখযোগ্য আকর্ষণ হলেন ডাঃ মঞ্জাল মুখেপাধার। বহুৰাল পূৰ্বে নক্ষ্মল-গাড়ির অন্যতমা গাৰিকা হবিমভীর <u>শীমতী</u> भा क्ष भ_र-विश्वार्क भान---'येबा यान *मर*न र অতিথি এবং 'গ্লেৰাগিচাৰ মুলম্বি গান দটে প্রীমতী মুখোপাধ্যারের প্লাণবংক উচ্চলতা। গাইবার আবেগ এবং পরীশীলিত কপ্টের স্রেলা ইণ্গিতে যেন প্রাণ কেন্টে নের। शक्रदान्त जीतिक रेर्राभको ७ नतात प्राफ त्यावात कारिशनी অক্তা রেখেও সারের স্বচ্ছল প্রবাহ তারিফ 'यता-क,ल-मल'--शानी'डेड উপসংহারিরে সংগতি 'চোখে কি মারা'র অণ্নেশণ যেন গানটির বন্তব্যের প্রতি আলোকপাত করে। শেফালী ঘোর—গাঁত 'তোমার ম্থের ফুলদানীতে' 300 'এলে। স্ক্লানাইয়া'—স্ত্-গাঁত। গ্লপণী-গায়েন-ৰাষা-বায়েনের স্বিখ্যাত واهجاها व्यन्त्र त्यावारमत 'ना विरिदेख मार्थ' 'কর্ণ কেন অরুণ জাখি' ল্লোতাদের জানন্দ रमृद्य ।

প্রবা দত্ত ভার বথাযথ মান বজার রেখেছেন 'আআর বালার সমর হোলো' ও 'পরদেশী মেঘ' গান কুটিতে। প্রতিটি গান শ্রীমতী আংগ্রুবালার পরিচালনাধীন করে কোম্পানী প্রবাগা কর্নিপ্র শিক্সীর প্রতি সম্মান প্রকর্পান করেছেন।

পাঁছভি-মাল-পিচপাঁ ধনপ্তর ভট্টাচার্য তাঁর ক্ষ-মালার জনকোল দুটি ভাজমুলক গান বেছে নিয়েছেন। পান দুটি ছোল চিরনির কাছারেও' ও 'কোথার ভূই খু'জিস্ ভগবান'। বলা বাহুলা শিচপাঁর ন্যতঃক্ষ্মুত' ভূজির আবেগে এ গান মর্মান্সপার্শ হতে সমল লাগেনি।

ন্দুটি ই লি ভিচ্ছের সধ্যে একটিতে মানবেশ্ব ব্যুক্তাপাধ্যারের কণ্টের চারখান গান ক্ষাক্ষকে রা হর', কেন্দো আর্ম্বর' আসিলে ভাণ্গা ঘরে' এবং থেলো খেলোগো নিক্পার দ্বকীয়ভার বাড।

অন্যটি কবিপত্র কাজী স্বাসাচীর

সংগাতি পম কঠে কবির তিনটি স্পুদ্দ কবিতা হৈ স্বাধান্তমান, বাদ আর বাদ্য না বাজে এবং 'জাতের নাম বজ্জাতি'—বেন কবির জাতুরের বিচোহ, অভিমান ও অবসম্ব মনের ক্লাসত হৈরাগাকে জীবনত করে তুলেহে। একটিমাত এল গি ডিন্দেই ফরেজা বেগমের দশখানি গানে নজর্লের রাগলকাতি, আধ্নিক গান, জানা-সংগতি, চিল্পীতি, গজল, জানেনী ও ভামগীতির বিভিন্ন ধানার সংলা প্রিটিত হবার স্থোগ মেলে।

প্ৰে ও হল সম্প্ৰতি শ্ৰী ও শ্ৰীমতী নীলেন্দ্ৰ হালদার আয়োজিত মধ্য কলি-কাতার নিৰেদিত লা্ন 😻 ছম্ম অনুষ্ঠান একটি সম্বাকে দ্বে-ছন্দের দোলার যেন উতলা করে **ভূলেছিল। আসর** সূত্রে হয় রবিশংকরের তর্প শিলা সলিল চক্রনতীর সেতার মাধ্যমে। ইনি স্বরু করে 'বেছাগ' पिटतः। **कामारभन्न करःभ म्यान्यकः। ११**-७त মুখটি আলাউন্দিন বরাপোর গ্রুপদী মর্যাদার প্ৰণ। জ্ঞানের সংগ্ রবিল•কবী বৈচিয়েরও অভাব নেই। বিশ্তারে আর একটা সামঞ্জসাবোধ এলে প্রথম শ্রেণীর শিল্পী পৰ্যায়ে উল্লীড হড়ে এ'ৰ দেৱী হবে না। মীড়ের কাঞ্চ ও বাঞ্চ প্রখংসা শিল্পীজনোচিত মেজাকের করবার মত। ছিল গেমের পরিচয়প্লাচুম 🕯 ধ্ন দুটিতে। উপমূক্ত তবলা সংগড়ে এ অনুষ্ঠান সম,^{দ্}ধ **ক**রে জুলে[।] হলেন কমলেশ মিত্র। সংগতের পরই যাদ্কর কমলেশ মিতের 'ত্রলা-তরঙগ'--ছম্পের আধারে সার-তর্গেগর এক আশ্চর্য স্ক্র প্রকাশ। ইনি বাজান 'কি**রবাণী**'। তাল্র প্রতিটি আঘাতে প্রতি স্বর যেন कथा महाम अस्ते। स्वात भवत-अधान्यतसस सहस्र थता रक्त तारगत कत्न प्राश्नाती शिक्टान्तिन्हे र्मास्त्र चाल स्मतात वाल्लाचा। ग.म. ट्रोका कथनक मृत्क शनकीत निवादम मर्देवत क्वा**लका, इटल्ल्स निम्ना**र र्पतिह कल्पनात हितास युगश्रह **FIF 9** कमनीसकात अक विविद्यासम श्रीतविश श्रीती করে।

আসল-উৎসহ

ক্সাগালী ००(मा स्नून मन्धा शाह রবীন্দ্র-সদনে আয়োজিত একক 可有真可-বিভিন গীতির অনুষ্ঠানে পর্বাহের नक्षत्रज्ञ-मरीफ भौतरवजन करारवज **भ**ीरतम বস**্। শিক্ষীর সংজ্ঞা** সকলেশীয়ে **স**ক্ত যোগিতা স্বৰেন বাধাকাত নন্দী (क्या) অলোক দে (ৰাণী)। আবৃদ্ধি 🐞 ভাৰেং থাকৰেন কাজী সৰাসাচী **७** एकम् नाम বন্দ্যোপাধ্যায়। আগামী ३१८ण जन कालकारो हेन्स क्यांत्र स्वीत्रंत्रमण्डा प्रमाम-सर्व भूष्टि छेशमन छेशलाल ह्या। नाटोच्न छक भूषीका खन्द्रकास करदारा ।

NA BIANGE 1 দ্বীক্ষণ ক্লিকাতার প্রতিহিত (70) भिक्शीरशास्त्री नरवानद গত একটি বিচিতান ঠান ও সম্পান্ধ 'বর্ষামণ্যাল' নাজানাজানের মাধ্যমে ছ প্রথম বধের অনুষ্ঠান উদ্যাপিত কা বর্ষামঞ্চলের স্কুলার ছিলেন श्रीवर्गरतण्यतः । **हरद्वोभाषात्र, जन्यमाद्व** পাধায় ও শ্রীমতী স্নন্দা দত্তকীধ ন্তা পরিচালনায় কুমারী বণদনা **ভট্ট** ও সংগতি পরিচালনা ও রবীলুসেও তহাবধানে ছিলেন খ্রীসৌরেন পাল। ন ও সংগীতাংগে অংশগ্রহণ করেছিলেন সুন বন্দনা ভট্টাচার্য, িচতা জাট্টাচার্য, ध्राधाकिः, बदारम শ্মিং रक्षीभक. মুখার্জ, বীরেং া **ट्राशाक्षात्र, श**्री ভট্টাচার্য, তাপস াচার্যা, সম্পাশ্ত ভট্টা আল্পলা ভটুা ে, দিখা দলচৌধানী মালা ঘোষ। সমগ্র অনু**ন্ঠালটির বাক** श्रीनियाना ছিলেন ভট্টাচা

বনীন্দ্র-জংশোৎসর : সংগ্রাভ র
নারায়ণং,র হিন্দু-ছ্যান কেবলস ক্রা
উদ্যোগে মহা সমারোহের সংগ্রা রবী
হারণ্ডী উৎসব উদযাপিত হয়।
অনুষ্ঠানের এক বিশেষ আকর্ষণ বি
কুলটির স্নাবিখ্যাত সাংস্কৃতিক সংস্থা উটি
চক্র'নিরেদিত নৃতানাট্য উৎসবে অত্যাবে
প্রাসমাপেন্দ্রনাথ লাহিভূটী রবিত ও প'
চালিত এই পরীকাল্লাক নৃতানাট্য
ম্বাভিনরের ওপর প্রতিভিত এবং ও
প্রোগ-চিন্তার এক উক্তলেণীর শিল্
স্থির দাবী লাখে। প্রজ্ঞনায় বিচে
প্রীকাল্লাক লাহিভূটী।

সম্প্রতি চেতলার 'আমরা স্থাই' এ মনোজ্ঞ নবীন্দ্রসংগীত অনুস্ঠাল করে তানের নিজম্ব প্রাপ্তারে।

এই অন্তালে অকৃত প্রশাস পার 'অভুরণা'। নৃজ্যে কুষারী মা পার 'অভুরণা'। নৃজ্যে কুষারী মা মান দত্ত ও চন্দ্র সর্বাধিকারী কৃতিবে পরিচয় দেন। নৃজ্য পরিচালনা করেন শ্রীমত মানমান দত্ত। কন্তসংগীতে প্রীমতী অন্বর্ণ ঘোর ও ব্লাই রক্ষা অনবলা। বল্যসংগীবে সাদের সহবোগিতা করেন শ্রীনালনেত্ত

-िश्याप्शन

घ हैना

মণান্তিক সেই দুখটনাৰ খবৰ আৰু
নই সানেন। সকলেই কেলেছেন বাখিও
মেন নীখানাম। সেই াপ্তমন্দাবিলোকে
তে' আমবাও কাৰাই স্বাহানে হ্লাফের
কান বেদনা।

গত বান্ত ছনে সকলে নাজিলিতের
ব সোনাবার কারে গোরাবাড়িত এক
স্পিত্র জানি বুর্ব টিনার প্রাণ হারিরেকেন
তিনানা ভিন্নভিন্নের বীন্ত্রী কারের
ন্ম (চটোপাধান) শ্রার বীত্রজিত
টোপাধান, আন চ্ডিলা বর্তার বান্তরাকে
তালের কম্যা আট বছরের টিনার ইত্যোক
তব্য চলে সেত্রে। ব্রীনতী বর্স্থ আইজ
অবশ্যার এখন ভিক্রেগিররা হালপাভালে
সারোগোর পথে।

স্বাদ ছটার তাঁরা বথস বাড়ী খেকে বিরেটিছলেন বাগডোগরার পথে বিবাদ ধরার জনা পথ অথন ছিল লাল্ড। যানে মনে হরড় জানছিলেন স্বাট যিলে জলকাডার ফরে চহলেরেরেনের সংখ্য মিলবেন জাবার। কণ্ড ভাগোর পরিহাসে ভা আর হরে উঠস মা।

্দুদিন বাদে শ্রীমতী যস্ত্র আচল ফিরে এলেও ডিনি এখনও জানেন মা যে প্রিয়তম শ্রামী আর চোখের মণি টিনা ज संशास्त्र प्राप्ते । विद्या प्रण्डाक्यास्त्रः आग्नास्त्रा कार्याप्ता इरस्यक्ष करिकः। कार्यि सा, अव कार्यास नक्ष कार्याच्याप्तिक कर्याच्या कि इरव ? एम मुस्स्य सहस्यक्ष क्षरूक्षमतीसः।

ন্ত্ৰীঘড়ী বাবেছা বাসু আভ্নন্তকে ভালবালকেন ব্যক্তাল দিছে। কিন্তু বিবাহিত
কৰিলে সুখ্যালিকৰ আলায় সেই ভালোবালায় বালং ছেছে পামায় সংগ্ৰ বালান চলে
গিটোছলেন প্ৰথমে কৰে ও প্ৰে বালান ।
প্ৰিয়ন্তম পামায় আৰু ভিন সম্ভানের
সংলারে ভিনি ছিলেন আলল বাভা। নিশ্বেক
প্রাচটোপায়ায় শুনুষায় আদর্শ
পামা বিকেন না, ছিলেন আনলা পিতাও।
সেই সুক্রম আলোয় সংলায় নির্যান্তই এক
ক্রম্বানে অসমনার ইবে সেন্তুঃ ও অসম্বান
সম্বান্তম আলায়ায় ব্যক্তায়ঃ

ক্রীচটোপাধার কর্মান্সীবনে হিলেন প্রিন্টিং টেকনোলাজ্ঞন্ট। ক্ষমান্তার এক বিদেশী ফারো উচ্চপদে অধিক্তিন্ত ছিলেন কিনি।

শ্লীমতী বলু অভিনীত ছবিগ্রেলণ মধ্যে জনপ্রিয় করেকটির নাম হলো রাইকল, 'গ্যাললী', 'গাংকরমারারণ রাজ্ঞ', 'লদচালেও মেলা', প্রভৃতি ৷ ভার স্বাল্ফা চিতারণ



ছটোছল সভাজিৎ রারের 'অরপেক্স দিনরাটি' ছবিতে।

আমীকন্যাখারা প্রীমতী বস্কুকে
সাক্ষনা জানাবার ভাষা নেই, আমাদের একমাত্র কামনা ডিনি শীদ্ধ আরোগা লাভ কর্বএবং পিত্যারা জীবিত দ্বটি সম্ভানের
কান্তে ফিরে যান।

প্রেকাগ্রহ

চিত্ৰ-সমালোচনা

कालगरभन्न भवरत ज्ञागरभन मान्य

সভাযাণ ও সভাযাগের মান্য সম্পর্কে আমাদের সকলের মনেই একটি ৰম্পন্ন ল **बाबना जाएह। एनरे बादनाह मर्टन फालक-**থানি মিলে যায় জিল্মনগর নিৰ্বেদ্ত "প্রচান" ছবির নায়ক গণগার मामाजिशा, जर, मर्जानके, मेन्दर्शयन्त्रामी প্ৰতিষ্ঠী প্ৰামাধ্যক হক্তে গণ্যা। পৰ্ত **উপক্তাকা**য় **অ**র্বাস্থন্ত গ্রাম **পণ্ডারেতে**র बारमण भिरताधार्य करत रत्र करनरहः नश्रदा বে-কোনোও একটি শিক্ষিতা আধানিকা তর্ণীকে বিবাহ করে গ্রামে নিয়ে যাবার উল্লেখ্যে। কিন্তু এই সারস্রোভরা যাবক লাদেনা, শহুরির সমাজ কি কোটিলোভর<u>া</u> धनः जात्वा रम कात्मचा जात भनारा बन्धाना দৈবার জনো গহারে শিক্ষিতা ভরাণ⁸া ज्यास्त्री मामासिङ सहा: এখানে शामास्वर ম্লা নির্ণিত হয় তার বেশভ্যা পাড়ি-বাড়ি-অর্থপ্রাচুযোর নিজিতে ভার পবিচ হাদর ও সভজার মাপকাঠিতে মর। কিন্ত गश्या सिहस्त जानशाहक ভাগ পাৰেনা। সহ দয়ভা ও লামব্ভাবোধ্ব नमात्रको हर्य हम कर्तमा घरकार बरेस हरभागक নরককুণ্ড থেকে উন্ধার ক'রে ভগিনীর

সন্মান বের, নিরপরাধ প্রোচ, খঞ্চ ছ্লেয়বান বারিকে অন্যায় পীড়ানের হাড খেকে রক্ষা করে আন্দায় করে ছোলে। গণার সাহসের कारना चकाव स्नरे। छारे त्र बन्तातकातीत्रद সম্ম্থীন হয়ে প্রতিবাদ জানার এবং সভা উম্মাটন করে। <mark>শিক্ষিতা তর্ণী বর্</mark>থা আশ্চর্য হয়ে বার এই মান্ত্রটিকে দেখে, তার অপ্রিয় সভ্যকেও দাপটের সপ্যে জাহির করবার ক্ষাতা ভাকে করে মুন্ধ। বাকে সে এতদিন ভালৰাসভ, সেই ৱাজৰে প্ৰকৃত রূপ বেদিন তার কাছে ধরা পড়ক, সেদিন থেকে তার বন পরিপূর্ণভাবে গিয়ে পঞ্চল গণ্যার ওপর। বর্ষা বর্ম সকলকে জনাক करत मिरत क्षेत्रमार्गा स्वायमा कराम, स्म গণ্গাকেই বিবাহ করতে ইচ্ছকে, তথন ভার ভাই রাকেশ ভাকে নালা রকমে নিয়নত করবার চেন্টা করল এবং শেষ পর্যাত द्यकाम करत निका भन्नाक छन्नी हच्ना अक-জন বারবণিকা হাড়া আর কিছু নর। বর্ধা भएन शरर्शनकात्र। स्वयम करत वस्था धरे প্রহেলিকা থেকে উত্থান্ন পেল, কেমন করে সেই গোপন সভা প্রকাশিভ হ'ল বে, तारकभरे हम्भाव चाना जीवरमव करता मानी এবং কোমন করে শেষ পর্যান্ত সংগা ভার আদর্শের প্রতি অট্ট থেকে চম্পার জীবনের গতি পরিবতিতি করল ও সভ্যে বরাখাকে বিবাচ ক'লে লিভের শহরে আগলনের উদ্দেশ চরিতার্থ করল, তাই মিশাই ছবির শেষ উত্তেজনাপ্রণ অংশটি চন্পাকে পতিভান্তি অবস্থান বাধ্য করার জন্য রাকেশই দারী, এই স্ভা প্রতিপাল হওরার পর থেকে "পাহচান" ছবিটি যদি অধ্না প্রচালত অধিকাংশ হিদী ছবির ধারাপথে গিরে লেই থ্ন-ক্ষম নাজালাছি ধ্নস্তাধনিজ্ঞর লোমহর্যক স্পান্বলীর অবভারগা না করে অভাগত সহজ্জাবে রাকেশের মনে অপরাধ্বোধ জাগ্রত কল্পে তার হৃদ্যের পরিবর্তন ঘটাতে পারত, তাহ'লে ছবিখানি মান কাহিনীর ক্ষিক দিরে হিদ্দী চলচ্চিত্র জগতে একটি স্থানতীয় অবদান স্ব'লে কীতিতি হ'তে পারতঃ

বর্তমানকালের লোমন-কার্লমান্ত-মাঞ্জ সেতৃং-প্রবর্তিত মাকুবাদ অধ্যানিত সমাজে বাস করেও মানুবের মন যে আজও সভা-বাবের আদর্যান্ত প্রতি প্রতান করিছিল থাকে, তার প্রমাণ এই "পহচান" ছবির অবিসংবাদিত জনপ্রিমন্তা। চুলাচিত্রের মাধারে গণগার মজো একটি মানের মানুবকে উপহান দেবার করে আলবা জাহিনী ও চিত্রনাট্যকার শচনীন ভৌছিক এবং আলা সেগাল-এর কাছে আক্রিক কৃতজ্ঞতা অনুভব করিছে।

অভিনরে চমংকৃত করেছেন স্বলোজকুলার এই গংগার চরিপ্রচিন্তগে। লালালিধা
মান্রবিটকে তিলি বাচের জুলাতে জীক্ত করে ভূলোরেল। 'গংগা' তার চলাক্তলীবনে একটি অবিস্মরণীয় ল্গিন্ট হরে রইল। চম্পার ভূমিকার চাঁদ উসমানীর হ্পর- সক্ষেত্ৰণ বাঁচ আঁচনরও অত্যান্ত প্রশংসনীর।
ক্রতারিকা চল্পার ব্যথাবেদনারক তিনি মৃত্যু
ক্রটের প্রয়েক্তন। বর্ষাবেশে ববিতা চিচ্ক্রটের প্রয়েক্তন বিটিয়েছেন; নাট্য-নৈপ্র্যাের
পরিক্তর দেবার স্বেগ্য তাঁর অলপ।
অবসরপ্রাান্ত কারার-রিগেড আঁফসারক্রশে
করেজ সাহনী তাঁর সহজাত
ক্রিজারকুশলতার পরিচর দিরেছেন।
প্রতিবেশী-কর্ন্যা রানীর ভূমিবাার ডেইজি
ইরাণী অভিমর ও ন্তে দর্শকর্নার্থ
আকর্ষণ করেছেন। হীনচরিত রাজেশবেশে

পরিচর দিরেছেন। অপরাপর ভূমিকা

रिगरमण्ड्यात्र मण्डावनाशूर्ण

সম্পকে বিশেষ কিছ^{্ৰ}বলার নেই। ছবির কলাকোপলের বিভিন্ন বিভাগের কাজ উচ্চ প্রশংসার কোগ্য। বিশেষ করে চিচ্নেছণে ও পিল্পনির্দেশনার কৃতিছের স্বাক্ষর রেখেছেন ব্যাক্রমে কে. এইচ. **কাপাদিলা ও স্**থেক্ত্র রার। এস, কে, প্রভাকর লিখিত সংলাপ পরিস্থিতি অন্ৰোরী উপভোগাতার স্থি কারেছে ৷ ছবির আটখানি গানের মধ্যে ''গৈসেকী পহচান ইছা", "বাস এহী অপরাধ মৈ হর बाब क्रमण इर्ण, "जवरंज वड़ा मामान छटी হৈ জো সমৰে নাদান মুৰে" প্ৰভৃতি নীরজ এবং ইন্দীবর ব্যামালক রচিত গানগালিকে শংকর-জর্কিবণ সম্মোহনী সূর আরা नम्ब करत्रक्रम।

ফিক্মনগর নিবেদিত এবং সোহনলাল কাওঁরার প্রযোজত-পরিচালিত ইন্টমান কলানে তোলা "পহচান" মনোজকুমার অভিনীত গণগা চরিচ্চির জন্যে অসাধারণ কাঠিরভালাভ করবে।

বিশ্বরীভধনী শৈত-ভূমিকার রাজেশ খালা

ভোলা তার খঞ্চ ভণনীর বিবাহের জনা কথা উপার্জন করতে এসেছে শহরে এবং বিলাতী ব্যান্ড দলে হুর্গ ও ক্লারিওনেট বাজাবার কাজ নেয়। সংগে সংগ্রে গানও



শীভাতপ-নিয়ক্তি মাটাশালা |

ton min



অভিনৰ নাটকের অপুৰ' রুপারল প্রতি বৃহস্পতি ও বানবার ৫ ৬॥টার প্রতি রাববার ও ছুটির ফিন ৫ ০টা ও ৬॥টার ৪ রচনা ও পরিচালনা ৪

ग्रहमा ७ शीवकानमा । दनवनावास्त्र ग्रन्थः

क्ष ग्रंभागतः क्ष मोक्स प्रत्यागानाम्, क्षभागी रचनी, प्रत्यानः इद्वेशियसम्, ग्रीस्था राज् , ग्राह्म इद्योगानामः, श्रीस्थ क्षेत्रामं ग्रीस्था राज् , ग्राह्म नीया, दश्यारम्, यान्, ग्रीस्था दर्ग क्ष स्ट्यामामाम्, ग्रीस्थ दर्ग क्ष মা আউর মমতা/নুত্র



গার। এই বাজনা ও প্রাণখোলা গানের দৌলতে সে শহরবাসীর বিশেষ 8672 গোয়েন্দা-প্রালশ রীতার মন হরণ করে। অবশা রীতার মনে হয়, লোকটি আসলে **ভোলা নয়, অঘটনঘ**টনপট; রঞ্জিতকুমার। কারণ ওদের দক্রেনেরই আবিকল এক চেহারা। ভোলা প্রথম যেদিন রঞ্জিতকুমারকে দেখে. সে বলেছিল, আমরা এক বাপ বা**ু**মায়ের **एक्टन ना इ**राइंड अभन अक एम्थरण कि करते? এতো তাম্জব ব্যাপার। কিন্তু ভদুমুখোশ-ধারী রঞ্জিতকুমার তার আসলর প প্রকাশ ना करत स्थानारक अर्थाताय करत जानम দেওয়াতে লাগল, যাতে ভোলা আচার-আচরণে-কাবহারে প্রোপর্রি রঞ্জিতকুমারে পরিণত হ'তে পারে। শিক্ষাগুণে ভোলা একদিন হাবহা রঞ্জিতকুমারের ধারণও করল। কিন্তু যেদিন সে দৈবক্তমে জানতে পারল, রঞ্জিতকুমার - আসলে হচ্ছে একজন ঠগ, জুয়াচোর, চোরাকারবারী, সেদিন থেকে সে ভার ভদুম,থোশটাকে টেনে ছি'ড়ে ফেলবার জনো বৃষ্পরিকর হল এবং তা সম্ভব হল যেদিন দুজনেই হীরা-তছর্পের অভিযোগে-আদালতের কাঠগড়ার দীড়াল ও বথন সব সাক্ষ্য প্রমাণ বৃথায় বেতে বসেছে, তখন ভোলার অনুরম্ভ কুকুর মোতি এসে আলগ ভোগাঞ্চে সনাত করল।

দুই বিপরীত চরিত্তের অভিনয়ে রাজে খালা তাঁর নাটনৈপ্রণার পরিচর দিয়েছেন নায়িকা রীতা (যার ানল নাম লীক বেশে মমতাজ নাচে ানে, অভিনয়ে ত পারদর্শিতার আর একটি প্রমাণ রেখেছে ভোলার খঞ্জ ভণনী বেলার চরিত্রটি অন্তর্দপশী করে তুলেছেন নাজ ও সংবেদনশীল অভিনয়ের মাধ্যমে। 'সার বঢ়ী' ছবির অন্যতম আকর্ষণ হচ্ছে মো কুকুরের ভূমিকায় রক্সীর আশ্চর্য অভিন অপরাপর ভূমিকায় পারভীন পাল (ভো ও বেলার বিমাতা), বিনোদকুমার (পারি ইনস্পেকটার), কমল কাপুর (পুরি চীফ), ফরিয়াল (জেনী) প্রভূতির আছি উল্লেখবোগ্য।

ছবির কলাকোশলের বিভিন্ন বিস্তান কাজ বংগণট প্রশংসার বোগা। একই অ নেতার শৈবত ভূমিকার অভিনরের নিশ্ব চিত্রগ্রহণ নিশ্চরই কৃতিদ্বের পরিচার ছবির কণ্ঠসংগতি, বাদ্যসংগতি এবং আ সংগতি—কল্যাণজী আনন্দক্ষীর স্ব

মনোমোহন দেশাই পরিচালিত ডি ' ফিল্মস-এর নিবেদন সাক্ষাবটো' রা খামার শৈকত ভূমিকার অভিনর ও সং সমুখে হরে জনতিরকা লাভে সমুর্থ হরে

म्हेरिए ३ ८थर क

THE PART WITH THE CO.

আপাউড ডপনিবাবুর বাইরের কাল
শব। সেম্পার (ধাইশে জনে) খেকে
এন্টির দু নশ্বরে ইনডোরের কাল খুরু
করেছেন। টানা আট দিনের কাল। ডারপর
তাবার রাস্ডায় বেরোবেন। ঘটণড বৃদ্ধির
মধ্যে কতগুলো দৃশা আছে—ভার মধ্যে
একটা হোল নামক আরুণ নাসকা রুণ্র
সংগে একদিন গেছে ভিক্টোরিয়ায় বেডাডে,
এমন সময় এল ক্ষ্ম্ম করে বৃদ্ধি।
গ্রুতির সেই বেরসিক রোমান্টিক্টায় সেই
কলে ভানের মমের অসকগুলা বন্ধ দরজা
সেদিন খলে গারেছিল দুজনার কাছে—
ইত্যাদি অনেক ভাইটাল সানের টেক্ ছবে
বৃণ্ডির মধ্যে।

তপনবাব, ইনডোরের কাজ শেষ করে অপেক্ষা করবেন ব্রুণ্টির জন্য। তবে রথের দুদিন আগে পরে তো বৃণ্টি হবেই সেই সংযোগটাই মেবেন তপনবাব;। ভারপর আবার ইনাডারের কাজ। এবং তিনি আশা করেন সেপ্টেম্বর নাগাদ কাজ শেষ হুটে যাবে ছবির। প্রধান চারটি চরিতে আছেন দ্বর্প দত্ত (অর্ণ), মৌস্মী চট্টোপাধ্যায় (রুণু) দিলীপ বস্ব (টিকল্ব) ও অপণা সেন (উমি') এ ছাড়াও আছেন ভাষ্কর চৌধুরী, মূণাল মুখে।পাধ্যায়, য'টুই ধন্দ্যা-পাধায় প্রমুখ। স্বর্প দত্ত, তপনবাব্র 'আপনজন' ছবিতে কাজ করার পর থেকে কলকাতার চিন্রমহলে বন্ধ অফিসে স্টার্ হিসাবে চিহ্নিত হয়েছিলেন। যার ফলে ভার ছাতে পর পর[্]পতাপাুর', **'মেছ ও** 'রৌম্র', 'স্বর্ণ'শিখর প্রাশ্গণে' ইত্যাদি ছবি-গুলো এসেছিল। খ্রীদত্ত তার জনপ্রিয়তার কদর রাখার জন্যই সাধামত প্রাণ দিয়ে চেণ্টা কর্মোছ'লন। তপনবাব, **আবা**র ও'কে নিয়ে কাজ করছেন। এ ছবির চরিত স্বর**্প** দত্তের চেহারা ও চরিত্রের সংগ্রামিলে গেছে। তাই তাঁর অভিনয়ও হচ্চে প্রাণকত। 'আপনজানে'র পর আবার স্বর্পে দত্তের প্রচণ্ড অভিনয়দী•ত ছবি হবে তপন সিংছের এই 'এখনই'। 'বালিকা বধ্র' মৌস্মা যে আরু কিশোরী নেই, রাতিমত তর্ণী হয়ে গেছেন তার প্রমাণ 'পঞ্জিতীতা'-তেই পাওয়া গেছে। তপনধাব্যর এই ছবিতে মৌস্মী যে চরির করছেন সেটি ছোল এক নিম্পাপ সরকা তর্গীর উম্পান অথচ শাস্ত, প্রাণময় অখন চিন্তায় গভাঁর সেই তর্ণী।

তপ্রবাহর জলে ক'দিন আগে দ্ নন্দর ক'ড়িওর দেখা হওরার জিস্তোস করেছিলাম 'আপনজন' আর 'এখনই'ডে ফারাক কোথার? উত্তরে জানিরেছিলেন—
নাসল ব্যাপার জালকের ব্যাপার
আজকের ব্যাপার আলকের ব্যাপারটা
বাধ আসকলকের এই ব্যাপারটা হিল,
এখানেও আছে। তবে পথটা জালাদা।
কতস্পৌ চরিত্র তাবের পাওরা না-পাওরার
ক্ষা, আখা বঙ্গার গণপ—আর সেই পথ
বার আজকের সমাজের গলসের দিকে
আঙ্গা স্থানো।

মুখাল লেন এখনও পর্যাত্ত প্রটাওবর পথে পা লেন নি। কাল চলছে বাল্ডাবাটে। নিজের বাড়ীজে ও অন্যান্য জারগার। বাড়ী থেকে সম্পূর্ণ বিজিম শ্রীসেন। অন্যর আছেন।

একজন জাধাবেক্স ব্ৰকে এন ইন্টারভিউতে বাওলা নিমৈ ছবির কাহিনী। প্রীকার ভাক এসেতে এক নামকরা সাহেবী নামা থেকে। স্বালে ঠিক করল সে সাট্ট প্রে ক্ষরস্কত সাহেব সেজেই ইন্টাইভিউতে বাবে। কিন্তু ৰন্ধ বাংধারের দরজা: আঁতপাতি করে থ'রেলও নিজের মাপনত নাই
নে পেল না। ভাই পরলোকগত বানার নাই
পরবে ঠিক করল, ফিন্তু রেখা গোল নেটিও
বড় ইক্ছে। ভাই লেখ স্কর্মার ভাই এ নাটক্রেড্রা বানাকেই বেকে ইন। ইর এ নাটপোলা-ছবির গলস এটাই। এর সলো পানিপান্ধার কাটালিখন চানা হির্মান করা,
না, গ্রেমিকা বোন গ্রন্থতি রস্কেরেন আন
বাবেগ্রাউন্ডে আছে আজকের ক্লেকাতা।
ম্পালবাব, নভুন চিন্তাম নতুন প্রকর্মান
নতুন ভবি আঁকছেন কলকাতার, কলকাতার
প্রাণ-য্বসমাজের, কলকাতার রাজনাটিওর,
কলকাতার ব্যথা বেদনা আনন্দের।

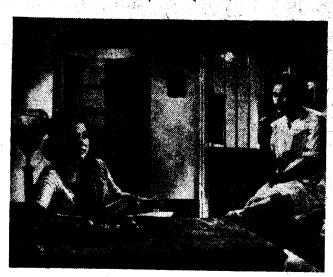
প্রযোজক হেমেন গাণ্গনে ও প্রার-চালক তপন সিংহ এক সাংবাদিক সাক্ষাংকারে জানিয়েছেন যে, তাদের নবতম চিদ্র প্রাণিনা মাহাডো প্রমিক জান্দোলন ও বর্তমান যুগের স্বান্ধাতিক চেতনার

छछसूङि छक्रवात २७८म जून

প্রেমের মহিমার মহিমান্তিত এক সামাজিক কাহিনী, যা আপনার পরিবারণ্থ সকলের চিত্তে দোলা দিবে



প্যারভোইস - জেম - বস্ত্রী - বীণা - প্রাত্তী - নাজ এবং সহর ও সহরতক্ষীর অনাত্র —ছি ফিফ ডিডিবিউটর্স পরিবেশিত— শপথ নিলাম/নবাগতা স্নেন্দা দাশগুণতা এবং সমিত ভঞ



ৰিরোধী বলে যে অপপ্রচার হরেছিল, তারই পরিপ্রেক্তিত তারা সেন্সরের ছাড়পরপ্রাণ্ড ছবিশানিকে বিভিন্ন রাজনৈতিক, শ্রমিক ও ট্রেড ইউনিয়নের নেতৃবন্দকে ভিন্ন ভিন্ন সমরে দেখিয়ে তাঁরা তাঁদের অবিমিল প্রশংসাই লাভ করেছেন এবং এ'দের মধ্যে একজনও ছবিখানি সম্পকে বিন্দুমান্ত वित्रः न नमात्नाञ्चा करत्रमीन । श्रीनिश्ह আরও ব্যানিয়েছেন সাগিনা নায়ক মাহাতো চরিত্রটির প্রতি তিনি অত্যানত আকৃণ্ট হয়েছিলেন এবং ঐ চরিত্রটিকে সম্যকভাবে ছবির মাধ্যমে ভুলে ধরবার জন্যে তিনি তাঁর মনের মতো করে কাহিনীর অদল-বদল করেছেন, কোনো রক্স মতামতের স্বার্না প্রভাবিত না হয়েই। আমরা আশা করব 'কলাৰ্কিড নায়ক' ছবির প্রদর্শন শেষে যখন 'সাগনা মাহাতো' মুক্তিলাভ করবে, তখন ছবিটি যেন নলমত গোষ্ঠী নিবিশৈষে সকলেরই প্রিয় হয়ে ওঠে।

হেমতকুমার মুখোপাধার আজ থেকে তিরিশ বছর আগে চলচ্চিত্রজগতে প্রবেশ করেছিলেন নেপথা সংগতিশিলপী হিসেবে। ১৯৪৬-৪৭ নাগাদ তিনি সংগতি পরি-

প্রকাশিত হয়েছে নাট্য-বান্মাসিক ॥ সম্পাদকঃ গণগাপদ বস্



নবাম-স্মারক-সংখ্যা : দ্বিতীর সংকলন

● এই সংখ্যায় ●

॥ পর্নমরিল ॥ নাটক

য়েটস / স্ধীন্দ্রনাথ দত্ত বিজ্ঞন ভট্টাচার্য

॥ **সমসাময়িক চোখে** ॥ বি**ক**্দে, অমৃতবাজার পাঁ<u>র</u>কা

॥ প্রশিষ্তি ॥
মনোরঞ্জন ভটুচার্য স্তেত বন্দোপাধারে
অর্থ মিত্র, জলি কল্ দিলীপ রার,
দেবীপ্রসাদ চট্টোপাধ্যার, নীহার দাশগাংশত, সবিতারত দত্ত, শশ্ভু মিত্র

। প'চিশ বছর । বিশ্ব দে, সপেতাষকুমার স্থাব, চিন্তরঞ্জন স্থোব, গাঁতা বন্দ্যোপাধ্যার, শুমীক বন্দ্যোপাধ্যার

এই বিশেষ সংখ্যার সংগাদনা ঃ চিত্তরঞ্জন ঘোষ

এ সংখ্যার দাম আড়াই টাকা

 পরিবেশক : পারিজা রাদার্শ

 (কলেজ স্ট্রীট-হ্যারিসন রোড জং)

—**বহ_্র, প**্নি— ১১-এ নাসির,ন্দিন রোড, কলিকাতা-১৭ ফোন**ঃ** ৪৪-৫২১১ চালকের ভূমিকা গ্রহণ করেন। পরিচালক হেমেন গুশ্ত তাঁকে বোদ্বাইয়ে নিয়ে যান হিণদী ছবির সংগীত পরিচালনা করবার জন্যে। চিত্র-প্রযোজকর্পে তিনি আত্মপ্রকাশ করেন 'বিশ সাল বাদ' ছবির মাধামে। ১৯৭০ সালের জ্বনে তিনি বাংলা ছবি 'অনিন্দিতা'র পরিচালনার দায়িত্ব গ্রহণ করেছেন। হেমন্তক্ষার সর্বক্ষেত্রই যেমন সাফল্যের মুকুট ধারণ করেছেন পরিচালক র্পেও তিনি তেমনই সাথাকতা লাভ করবেন, এই কামনাই করি।

র্ন ফিল্মদের প্রথম প্রয়াস রবীন্দ্রনাথ ঁ সাড়াজাগানোর কবিতা ফাঁকির ঠাকুরের চিত্ররূপ দিচ্ছেন পরিচালক রুণ্ চক্রবতী। চিত্রনাট্য ও সংলাপ রচনা করেছেন 'পারা হীরে চুনি' খ্যাত পরিচালক অমল দত্ত। সম্পাদনার দায়িত্ব বহন করছেন রয়েশ যোশী। সংগীত পরিচা**ল**না **ক্**রছেন विकासिक २, स्मिन थी, कम्बेमान কর্ম চন কিশোরকুমার, বনশ্রী সেনগ্ৰুপ্ত। কয়েকটি মুখ্য চরিতেরূপ দেবেন শুমিত ভঞ্জ বিম্লব চম্দ্র, উৎপঙ্গ দত্ত, কনক দেবনাথ, গীতা দে, বিদ্যা রাও, ছার্যা দেবী ও বিনার ভূমিকায় নতুন শিল্পী সোমা। <u>শিক্ষ</u> নিদেশনা ও চিত্রগ্রহণ করছেন গৌর পোন্দার ও কেন্ট চক্রবতী।

মণ্ডাভিনয়

ক্লান্ড ব্লেকর : মঞ্জের আলোর হাঁসি
কালার দোলন তুলে যাঁর। আমাদের অন্ভূতিলোকে স্পন্দন তোলে, তাদের নেপথ্য
জীবনের ক্লান্ডর ইতিহাস নিয়ে গড়ে
উঠেছি শৈলেশ গৃহ নিয়েগাঁর 'ক্লান্ডব্পকার' নাটক। সম্প্রতি গ্রান্ট অ্যাডভাটাইন্দিং রিক্লিরেশন ক্লাবের শিলপাঁরা 'ক্টার'
থিয়েটারে এই নাটকের প্রাণবন্ড প্রযোজনার
নজাঁর মেলে ধরে নাটান্রাগাঁদের অকুন্ঠ

প্রশংসা অর্জন করেছেন। অফিস ক্লাবের
নাটাপরিবেশনার মাঝে মাঝে যে শৈখিলা ও
প্রাণময়তার অভাব পারস্ফাট হয়ে ওঠে, এ
প্রযোজনার তার বিপরীত ছবিই সক্ষা
করেছি। নাটকের প্রতিটি মুহুতে শিল্পীদের
আশতরিকতা হয়েছে সোচ্চার এবং সেই স্কের
সামগ্রিক অভিনয়ের ছপ্দের সপের দশকিদের
হয়েছে নিবিড় সেতৃবন্ধন।

সংঘাতসম্মধ কয়েকটি নাট্যমুহ্ত স্থিত করে দশকদেব কোত্হলকে শৈব পর্যাত অটাট রাখতে নিদেশিক পিক লা, নিয়োগীর নিষ্ঠা ও শিল্পবোধ নিঃসন্দেহে श्रमश्मात मानी वास्थ। মুখ্য কয়েকটি ভূমিকায় দশকদের উপলম্খিকে আলোড়িত করে তোলেন ারা হোলেন চ্নী, বন্দোপাধ্যায় (রল[ি] .), বাসন্দেব ভাদ,ডী (বিজলী সেন দীপতক্র (चक्कर), किशलस वर्गन (शित्न), अन्न সরকার (প্রবীর), প্রতিমা পাল (ন'ন্দতা), শিখা ভট্টাচার্য (সাধ্যা)। অন্যান্য কয়েকটি চরিত্রে অভিনয় করেন ভক্তকুষ প্রভাস দাস, নারায়ণচন্দ্র ঘোষ, বেণ**্ন** মৃথো-পাধাায়, ধীরেন রায়, রবীন চক্রবত**ী, গোবী-**শংকর বাস্ম, বটকুষ্ণ মণ্ডল, রবীন বস্ম-মল্লিক ও ঝুমা ম্থোপাধাায়। আলোক-সম্পাতে স্বর্প মুখাজী মূলস্কানার পরিচয় রাখেন। ডি সি চন্দ্রের আবহসংগীত গোটাম্টিভাবে নাটকটির মেজাজট্রককে মূর্ত করে তুলতে পারে।

জননামক শিবাজী: শিবাজীর মতো প্রাক্তমশালী, বীর, বোখ্রা ও দেশপ্রেমিকের গৌরবদীশত জীবন 'বে সর্বকালের স্ব-দেশের লোকের মনকে আকৃষ্ট ক্রমতে পারে, সে বিষয়ে এতট্ক সন্দেহ মেই। সম্প্রতি গোটলীসার শিক্সীরা ক্রমেন্ডলে জননামক শিবাজী' নাটক পরিবেশন করে এই স্তা-কেই ভাস্কর করে তুললেন। মারাঠা শক্তির উত্থান ও পতনের পটভূমিকায় শিবাজীর সাহসিক্তা ও সংগ্রামকে অব্লন্থন করে नाएँ कि अश्वाट शत्कृ छेद्धं । जाहे नाएँ क्य প্রতি ট মুহুতে বাস্তবের র্য়ন্তম কঠোরতায় মুখ্র হায় উঠেছে, ঐতিহাসিক নাটকের ভাতনাটকীয় উচ্ছনাসে স্থাতি হয় মি।

প্রয়োগপরিকর্পনায়ও ক্রননার হ শিবাজনী বৈশিদেটার নজনীর মেলে ধরতে ्भाताक। विस्मय स्ट्रांकी हिन्दान । उन्हा অতিবিশ্ব প্রাধান্য না দিয়ে সমণ্টিগত অভ--নবের মধ্য দিয়ে সমগ্র প্রবেশ্বনাতিকে প্রাণ-বত করে তেলোর চাণাই অধিকতর পরিষ্**ট। এদিক** দিয়ে **'নটল**ীলা'র भिव्यक्ति अभारमार्व कार्यी निम्ह्यके পারেন তিত্তির দিক দিয়ে প্রথমে অবাক করেওন প্রবীণ অভিনেতা 75.5 대가 বন্দ্যোপাধ্যায়, তিনি ব প দিরেছেন কুচক্রী 'উরৎগজীবে'র চরিতে। রামক ফের প্রাণের সংখ্য ধরি একামতা বাংলার অভিনয়জগতে আশ্চর্য একটি অধ্যায় সৃষ্টি করেছে 'ইরপাজীব' চরিত্রে তাঁর ^{হবচ্ছন্দ}, হ্বাভাবিক অভিনয আমাদের বিষ্ময়ে আবিষ্ট করে। মলিনা দেবীর 'জিজাবাট্র'ও দর্শক্ম'ম গভীরভাবে রেখাপাত করে, তবে 'নিবাজী' চরিত্রে সমব চাটাজীর কাছে প্রভ্যাশা ছিল আরো অনেক। 'সর্থা'র ভূমিকায় র'্ণ্ব বড়ালের কয়েকটি বিশেষ অভিবাত্তি উল্লেখযোগা: ম্কল সরকার ও স্নীত মুখাজীর 'রঘাুুুুমাথ' ও 'আফজল খাঁ' হয়েছ চরিত্রপ্যোগী। অন্যানা চরিতে ছিলেন শিশির মত, অমল বিশ্বাস, অবনী মা্খাজী, হিমাংশা পরিতোষ রায়, হরিদাস চ্যাটাজী রাষ, বিনয় চক্রবতী', শান্তি ভট্টাচার্য', বিশ্ব-নাথ সোম, রণজিং রায়, মারারী চ্যাটাজি, মকেল ধর, রুবী মিত্র, ন্পুরে ও বিশাপা।

ফাস: আই আই এম াস এমপ্সয়িজ এ্যাসোমিয়েশনের পঞ্চম বার্ষিক সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠান সম্প্রতি 'দটার' পিয়েটারে পরি-বেশিত হোল। এই অনুষ্ঠানের অন্যতম আকর্ষণ ছিল শৈলেশ গৃহনিয়োগীর 'ফাঁস' নাটকের অভিনয়। আন**ল বন্দো**।-পাধাায় নিদেশিত এই নাটকের টিমওয়ার্ক হয়েছে স্ভদর, তাই নাটকের স্পেক্ত পাতি কোথাও ব্যাহত হয়নি। শিল্পীদের স্বাধিক কৃতি ত্ব দাবী বাংখন 'সভাষ' ও. 'ডি, এস. পি'র ভূমিকায় যথাক্রমে অনিল বলেনাপাধার ও স্থান্ত ঘোষ। এ'নের প্রেই নাম করতে হয় কে এল চক্রবর্তী নেবীনকুলার) ও পীযুষ ভটাচাযের (সোমনাথ) 'বিমান' চরিতে ম্ণাল চক্রবতী **মোটাম**ুটি চরিকান্য অভিনয় কমেকটি দুশো তার আরো সংযত হওয়া উচিত ছিল। কয়েকটি টাইপ চরিতে স্মুজভিনয় করেন অমলকৃষ্ণ গাংগ,লী প্রবালকুমার বিশ্বাস, প্রবীর সেন, আলোক সেনগ^{*}ত। 'তরলা'র ভূমিকায় দীপালি ঘোষের অভিনয় হয়েছে অন্ন 'সোণালী' চবিতে অলোক। গাংগলীের আরো অনুশীলনের প্রয়োজন किन। जनगमा ভূমিকায় ছিলেন সাধন চট্টোপাধ্যায়, সংদেব কানাজী। मृत्याभाषात्र ७ अत्र्रानम्

আবহসংগতি নাটকের স্বকীয় গতি থেকে প্রমাই বিজ্ঞা থেকেছে। কিন্তু আলোক मन्त्राप्त अत्मरह मृत माउँकित वाक्षम।

সংস্কৃতিক অনুষ্ঠানে সভাপতি ও প্রধান অভিথির আসন গ্রহণ করেন য়থাক্রমে **व्य**िम मिनगुण्ड ७ नाताव्य गटगाभाशाहा। অনুষ্ঠানের শুরুতে প্রবীর সেন ও মণিকা मरखत त्रवीन्स्रमःगीं मर्गकरमत ह्याणाम् पि আবিষ্ট করে তুলতে পারে।

बन्गीस नरमम : थामादिया, सन्दर्भभारतत প্রবাসী বজাীয় সংসদের উন্বিংশ বাহিকী সাংস্কৃতিক সম্ভাহ গড ২৫ বৈশাখ শ্রে হয়। এই উপলক্ষে রবীন্দ্রদ্ধন্মাংসব, একাংক নাটক প্রতিযোগিতা, যাত্রাভিনয় এবং বিদ্রোহী কবি নক্ষর,লের জন্মদিন পালন করা হয়। ২৫ বৈশাথ 'রহু করবী' নাটক অভিনীত হয়। নাটকটি পরিচালনা করেন শ্রীন্বিজ্ঞেন গুল্গোপাধ্যায়। সূর্পার-ক্লিপত মঞ্চাজ্জা, আলোকসম্পাত এবং সামগ্রিক অভিনয় পথানীয় সুধীসমাজের প্রশংসা লাভ করে। ৩য় বার্ষিকী একাংক নাটক প্রতিযোগিতায় এবার মোট ৮টি দল अश्म श्रद्धम करता। अन्वमभूरत[्] भूत्रा्थ নাট্য সম্প্রদায় দলগত অভিনয়ের শ্রেষ্ঠ প্রস্কার লাভ করেন। এরা করেছিলেন— বিষয় স্কাল' নাটক। এই দাটকের श्रम त्नद्र होदल श्रीर्थानस्य वल्लाशाधाय এবং বুণি চরিতে শ্রীমতী সবিতা ঠাকুরতা ষথাক্রমে শ্রেষ্ঠ অভিনেতা এবং অভিনেতীর পরেম্কার লাভ করেন। প্রবাসী বণ্গায় সংসদ প্রযোজিত ভাষার নামটি রঞ্জনা' <u>শেষ্ঠ পবিচালনার প্রেম্কার লাভ করে।</u> এবং পরুক্রারটি পান শ্রীগোপী বস্। দ্বিতীয় শ্রেণ্ঠ অভিনেতার প্রেম্কার পান. জব্বলপুরের 'তরুণ নাটা সংখের' শ্রীনিশার্থ মিত। 'রভে রোয়া ধান' নাটকে 'কেশা' চরিতে অভিনয়ের জনা।

উল্লেখযোগ্য এই সংস্থাই প্রসংগত মধ্যপ্রদেশে সর্বপ্রথম বাংলা একাংক নাটক প্রতিযোগিতা প্রচলন করে। ১৬ অভিনীত হয়, আনন্দময় বুল্লোপাধায়ে বচিত 'পরিচয়' যাতা নাটক। পালাটি পরি-চালনা করে শিশির রায়। সামগ্রিক অভিনয় সৌকর্যে স্থানীয় দশক্দের যথেন্ট আনন্দ

আগামী শুক্রবার ২৬শে জুন-

মাতৃহ্দয়ের স্ধারসে সিঞ্ডিত এই মহান চিত্রকাব্যের উদ্বোধন !



ওরিয়েণ্ট ঃ কৃষণ ঃ প্রিয়া ঃ গ্ণেশ ঃ প্রারাষ্ট্রণট ঃ পাক্শো ভবানী : न्यामन्याल : পি-সন : शुष्पश्री : खग्रा प्राचन : नवत् भग्न : भिकाफिन : तिरक्ष है : प्यानम्म : नग्यहा : हनकित्म রজনী: রামকৃষ: শ্রীলক্ষ্মী: রুক্ষার ও অনাত্র!

০ ডোসানী ক্ষিক পরিবেশিক ০



বর্ধন করে। এরপর ২১ মে বিলোহী কবি

কলম্বেলর জন্মদিন পালন করা হয়। এই

লন্টোনেও সংক্ষাটি বৈলিণেটার দাবী

কলতে পারে। কারণ, জনবলপ্রে নজার্ল

গীত প্রসারের জনা এরাই সব্প্রথম অগ্রণী

হয়েছে।

গেল ১৬ মে সংখ্যার ত্যাগরাজ হলে
ইউনাইটেড ব্যাৎক তাব ইণিডয়ার গড়িয়ারাটি
শাখার ক্ষমাচারী সামিতি উংপাল দক্ত
বিবৃতিত বলিংঠ যাতানাটক গাইফেলাকে
শ্রোপ্রি হালার চঙে আসরম্প করে
আমিক ক্লাবগালির সাংস্কৃতিক কমাপ্রচেণ্টা

শ্বেত একটি অভিনৰ পদক্ষেপ করেছেন। জোছন দঙ্গিতদারের সাথকৈ পরিচালনা গ্রণে সমগ্র অভিনয়টি এমন হ্রেয়গ্রাহী হয়েছিল যে, কোনো দশকিই এই যাত্রাভিনয়টি শেষ পর্যশ্ত নাদেখে আসর ছেডে উঠতে পারেননি। শিল্পীদের মধ্যে যাঁরা যথেণ্ট কৃতিক্ষের পরিচয় দিয়েছেন, তাদের মধ্যে স্ত্ৰত চক্ৰবতী (যুগল), বিভূপদ সমাজ-পড়ি (ইনগ্রাম), পবিত্র ম্খোপাধ্যায় (কল্যাণ), কল্যাণ রায় (মধ্যু সিংগি), দেব-কুমার মুখোপাধ্যার (মানিক), কমল রায় (অবিনাশ), দ্বালাল আঢ়া (রহমৎ), ধীরেন্দ্র

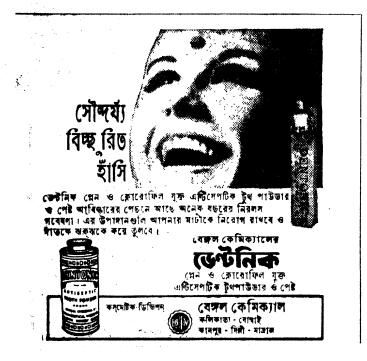
মুখোপাধ্যার (ভবানী), তপন চট্টোপাধ (বীরেন) এবং কুফা গৃহু (নিসবুম)-এর বিশেষভাবে উল্লেখবোগ্য।

विविध मरवाम

ল্লেণ্ঠ কাহিনীর জন্যে ১৯৬৮ সা রাণ্টীয় প্রস্কারপ্রাণ্ড হিলী ছবি 'ব্রু ২৬ জন্ম থেকে শহরের স্লেড্র চিত্রণ गर्निएक मर्जिनान कराय । ज म्याः भविष्ठानिक वह देग्वेद्यान कनार्यः ছবির বিভিন্ন ভূমিকার আছেন স্নীল। ওয়াহিদা রেহমান, क्यानीय, রেহ্মান ললিতা जाश्मी. পাওয় **স**্লোচনা প্রভৃতি শিল্পী। **সক্ষ্যা**ক। প্যারেলাল দ্বারা সারসংযোজিত ছবিটি: প্রেণিকুলর পরিবেশক হিচ ক ডি**স্ট্রিন্টটাস** ।

ভাৰত-চেকোশেলাভাক সংস্কৃতি সংস্থায় (পুষ্চিমবঙ্গ) উদ্যোগে গত হাই জ:ন মুজ্পলবার চক্রবৈঠক ক্লাবে চেকো: স্লাভাক অভিযাতী দল সাকরার চার্ঞন भण्मारक भण्यर्थना जानात्मा इहा। कान्स्टारन পৌরোহিতা করেন:জঃ এ: এম ও পণি। এই অভযাত্তী দলটি গত ফের্য়ারী মাসে প্রাগ থেকে পায়ে হে"টে জ্বাপান এক্সপো' ५०-त উप्परिका याहा करत्रन। গ্ৰহাক্তবাক্তান পেণিছাতে হলে তাঁদের ে কোট **২০.০**০০ কিলোমিটার পথ অতিক্রম ভারতে প্রবেশ করার আগে তাঁরা ইউরোপ ও এশিয়ার মোট বাশ্বটি দেশ করেন। এ দা গণিতজ্ঞ ও রসায়নবিদ্ হাড়া একজন ভারার ও আছেন। নেতৃত্ব করছেন ৩২ বছর বয়স্ক ীসজনেক ইয়া। তল্পীনের স্চনায় অভিযাত্রী দল তাদের বিভিন্ন অভিজ্ঞতার কথা বর্ণনা করেন এবং চেক পল্লীগীতি গোয়ে দশকি-দের যথেষ্ট আনন্দ দান করেন। বাষ'স্চীর মধো ছিল চিত্তপ্রিয় মুখো-পাধায়ের ববীন্দ্রসংগতি ও শ্রীভি এন ভাষিকারীর যাদ_্বিদ্যা প্রদ≠িল। এ ছাড়া শ্রীমতী জয়সতী গাধ্যালী। নৃত্য পরিবেশন যথেন্ট কুতিত্বের স্বাক্ষর

ঋষি অরবিন্দ বলেছেন, আমার জীবন বহিজ্ঞাতে কখনও এমনভাবে প্রকাশিত हर्यान, याटक ल्लाहक महरक्षके न्याटक भारत। কিন্তু বিশ্লবী অরবিন্দ সম্পর্কে কি সমান কথাই প্রযোজা? বেঃধ করি-না। অরবিদের ভারতভূমিতে পদার্পণ থেকে শ্রু করে রাজনীতির জগৎ থেকে তার অস্তধান প্রশিত তার জীবনের অংশ অবলন্বন করে ছাই বিশ্লবী অরবিশ্দ ছবি নিমিতি হচ্ছিল তর্ণ পরিচালক দীপক গ্লুস্ত স্বারা। সম্প্রতি শ্রীক্মলা ফিল্মস ছবিখানির স্বর্ণসভ লাভ করে পশ্চিচেরী আশ্রমে শ্রীমার আশীর্বাদ পেয়েছেন এবং ওথানকার কর্তৃ-পক্ষের-কিশেষ করে নলিনীকাল্ড সরকারের भवामग्राहरम हिटनाट्ये रवन किंग्रेस अप-वमन करत कवित स्थाय भर्यारस्य ग्राप्टिः भ्रात् कर्त्रहरून ५ जून थ्या ।



ফুটবল প্রসঙ্গ

হঠাং জনমতের হাওয়া অনুক্ল নান করে ব্টেনের ধ্রুধর প্রধানমন্তী -ড উইলসন যখন ১৮ই জ্ব সাধারণ াচনের তারিখ ঘোষণা করেন, তখন তারিখের বিরুদ্ধে যতগালি গারু-্রীর সমালোচনা হয়, তার মধ্যে একটা 🕦 ওই সময়টায় মেকসিকোয় বিশ্ব কাপ ্রতিযোগিতা সরগরম হয়ে উঠবে। অতএব াধারণ লোকে সেই দ্রদেশে আন্তর্জাতিক খলার লড়াই নিয়ে এমনি মেতে উঠবে যে. নজ দেশে ব্যালট বক্সের লড়াই তুচ্ছ করবে। নেতাদের গলাবাজি মাঠে মারা **বাবে। লোকে যখন সপ**রিবারে উদেবলিত আনন্দ উত্তেজনায় টেলিভিশ্নে দুনিয়ার সবচেয়ে দ্রেশ্ত ম্যাচগালি দেখছে, তখন দরজায় ভোটের ফেরীওয়ালারা এলে থেকিয়ে উঠবে। হয়তো খেপে গিয়ে উল্টো দিকে ভোট দেবার প্রতিজ্ঞা করে বসবে ৷

আমাদের দেশে, যেখানে রাজনীতি হচ্ছে জীবনমরণের প্রশন, সেখানে বহু হাজার মাইল দারে কয়েকটি ফাটবল ম্যাচ.-তা বিশ্বরক্ষাণেডর যত জাদরেল টিমের হোক না কেন্ এর জন্যে একটা সাধারণ নিবাচন বেপাতা হয়ে যাবে, প্রায় তামাশার মত শোনাবে।—তব্ ঐ বিতক' থেকে বোঝা যায় যে, এ-দেশের সাধারণ মান্ধের জীবনে ফুটবল কতথানি জ্বড়ে আছে এবং বিশ্ব কাপ প্রতিযোগিতার মত একটা আণ্ত-জাতিক হরোদদীপনাকে বিজ্ঞান কত দ্র থেকে, কত অগণিত মান্ধের ঘরে ঘরে পেণছে দিয়েছে। যাতে সারা ইউরোপ জাড়ে টোলভিশন দশকেরা সরাসরি মাঠের খেলা দেখতে পারে (অর্থাৎ ফিল্মে তোলা বাসি **थिना** ना इरा 'जीवन्ड' (थना) छात मर्या মেকসিকো গরম দেশ হলেও খেলাগ**়াল** ষ্থেণ্ট বেলা থাকতে, এমনকি দুপ্রের দিকে, আয়োজিত হয়। টেলিভিশনে খেলা দেখায় মাঠের উত্তেজনা ও উত্তাপ যদিও অনেকথানি হারিয়ে যায়, তব্ সেট্কুর ক্ষতিপ্রণ হয় প্রভৃত। ডুইংর্মে স্পরিবারে कारका-कांक इत्रु हे-हकला मः स्यार पिया তোয়াজে দ্বিনয়ার দ্বার দলগ্লির খেলা **দেখছেন। শ্রেণ্ঠ ভাষ্যকা**রেরা টিকা-টিম্পনী করছেন। দ্রবীক ক্যামেরায় মাঠের দ্রতম প্রান্তেও খেলোয়াড়দের কসরং বাদ পড়ছে না। গোল ছওয়া, কিম্বা তাক-লাগদনা গোল রক্ষা, ফাউল, পেনালিট, কর্ণার প্রভৃতি বিশেষ ঘটনাও দুঘটিনাগুলি মাঝে মাঝে চলচ্ছবির গতি শ্লথ করে বা স্থির করে <u>দেখানো হচ্ছে। নণ্ন</u> চোখে যা নাগালের ৰাইরে থেকে হেতে পারে, দরেবীক্ষ ক্যামেরায় তা প্রথান্প্রথভাবে প্রতীর-মান হচ্ছে। সবক'টি খেলা দেখাতে টেলিভি-শন চলছে সারারাত। ঘণ্টাকরেক বন্ধ থেকে আবার সকালে। নতুন ম্যাচ না থাকলে প্রানো ম্যাচের প্রেরাবৃত্তি ও ভাষা। কারো কারো মতে তাতে কাজে কামাই বাড়ছে। জাতীয় উৎপাদন ব্যবস্থা ঠোক্কর খাছে।

ইদানীং ব্টেনে ভালো কিম্বা মন্দ এমন কিছ্ই প্রায় হয় না যাতে কেউ দা কেউ মিঃ উইলসনের কসরৎ কিম্বা কারসাজি দেখতে না পান। বস্তুত যে-কোন অনুক্রা কিম্বা প্রতিক্ল জুংসই কিম্বা বেয়াড়া

বিশ্ব ফুটবল কাপ ফাইনাল এবং বুটেনের সাধারণ নির্বাচনের আগে যে পরিস্থিতি ছিল, তারই আলেখা বর্তমান প্রবেধ পাওয়া যাবে।

ঘটনাকে অবলীলাক্তমে কাজে লাগিয়ে নেবার প্রভাগপদার্যতিতে তিনি অদিবতীয়। স্তরাং এমন টিপ্পনীও শোনা গৈছে, মিঃ উইলসন ইছে করেই বিশ্ব কাপ প্রতিযোগিতার ভরা মর্গুমে নিবাচন ডেকেছেন। উন্ধ তথ্যে বিশ্বাসীদের যুদ্ধি অনুরূপ: মানুষ্ যথন খোস মেজাজে থাকে, তথন স্থিতবস্থাতেই খুশি থাকে। পরিবর্তনের ঝাঁক নিতে চার না। বর্তমানে বুটিশ অর্থনীতিতে প্রার অপ্রত্যশিতভাবে তেজিভাব এসেছে। জানে সম্যা প্রকৃতি দীশত রৌদ্রে ঝান্সাল করছে।

বিশ্বকাপ ও ইংলান্ড ১৯৬৬ সালে নিজভূমে বিশ্ব কাপ জয় করলেও মোদ্যা ওই আন্তর্জাতিক প্রতি বাগিতাটি ইংলন্ডের কাছে অপরাই বেকে গেছে। প্রতিযোগিতা শ্রু হবার ২০ ব্ছর পরে, রেজিলে ১৯৫০ সালে ইংলান্ড প্রথমবার যোগ দিরে শোচনীরভাবে ফুটকা ঐতিহাহীন আমেরিকার কাছে ১—০ গোলে হেরে যার। ১৯৫৪ সালে কোমার্টার ফাইনাল পর্যাত উঠে ইংলান্ডকে উর্গুল্লের কাছে হার দ্বীকার করতে হর। ১৯৫৮ সালে ব্টেনের তিনটি দল উত্তর আরার-ল্যান্ড, ওরেলস ও ইংলান্ড কোরার্টার ফাইনাল পর্যাত ওঠে। কিল্টু সেইনারেই ভাদের অগ্রগতি খতম হয়। ১৯৬২ সালেও বঠেটা কিল্টু সেইনারেই ভাদের অগ্রগতি খতম হয়। ১৯৬২ সালের কাছে হেরে যার। রেজিল ছিল সেবার পর্বাহে হেরে যার। রেজিল ছিল সেবার প্রক্রপর দ্বা বছরের কাপ বিজয়ী।

১৯৬৬ সালে ইংলপ্ড বিশ্ব ফুটবল কাপ বিজয়ী হলেও সেবারের প্রতিৰোগিতা गुत्र, इर धक मण्यास्मक शहमानद्र एक्ट्र দিয়ে। প্রতিযোগিতা শ্রু হবার আগে কে বা কারা কঠোর সতক'ভাবে **ফাঁকি** দিরে জ্বল রিমে কাপটি চুরি করে নিয়ে গিয়ে দুনিয়া জুড়ে চাণ্ডল্য সুন্তি করে। লেখ-পর্যাত এক প্রাতঃভ্রমণকারীর কৌত্রলী কুকু_র কাপটিকে একটি ঝোপের মধ্যে **খেকে** আবিত্কার করে। চোরের উন্দেশ্য কি ছিল —স্বর্ণলোভ না উৎকট এক বেয়াড়া রসিকতা ভা শেষপর্যক্ত জানা হায়নি। **এবারে প্রতি**-যোগিতা শ্বে, হবার ক'দিন আগে ইংল-ড দলের ক্যাপটেন ববি মূর মেকসিদোর পার্শ্ববিত্তী উর্গায়ের এক দোকানে একটি মণিহার তছর,পের দায়ে জড়িয়ের **পড়ে**ন। অবশ। রাশিয়ান থেকে **আরম্ভ করে** মেকসিকো সমাগত ছোট-বড় সব দল, সৰ

প্রকাশিত হল

মাঘ-চৈত্র ১৩৭৬

সারস্বত

সাহিত্য ও সংস্কৃতি বিষয়ক তৈমাসিক

এই সংখ্যায় আছে: প্রকাশ । তঃ অম্লাচন্দ্র সেন : ইতিহাসচচ্চার বৈজ্ঞানিক প্রপাণী।

ডঃ রমাতোষ সরকার ঃ রহসের কুয়াশাখেরা কোরেসার। কবিজ্ঞা । তঃ অশোকদেব
টোধ্রী অন্দিত দক্ষিণ অমেরিকার কবিতা এবং বীরেন্দ্র চটোপাধ্যার, ম্পান্ধ রাজ,
কল্যাণকুমার দাশগ্পে, গোরাঙ্গ ভৌমিক, তুলসী ম্থোপাধ্যার ও শিশির সামন্তর
কবিতা। গাংশ ।। মনোতোষ সরকার, তংগাবিজয় ঘোষ। প্রক্রনালার ।

হারাণচন্দ্র নিয়োগী ঃ বোম্ধ্যমা ঃ মার্কসীয় বিচার। দীপেন্দ্র চরবর্তী ঃ ক্ষেক্টি

সাম্প্রতিক কব্যাপ্রথ । চিছ্র ।। সেকুরাস ঃ ঘোড্সওরার।

প্রতি সংখ্যা ১ ২৫

গ্ৰাহক সভাক ৫.০০

সারুবত লাইরেরী ॥ ২০৬ বিধান সর্ণী । কলিকাতা-৬

খেলোরাড়ই এক অনুরূপ কোন ক্রিক্রা অস্ভ্র বলে ঘোষণা করেন। গভবারের বিশ্ব কাপ জয়ী ইংলন্ড দলকে লোড়াতেই একটা কেলে॰কারীর মধ্যে জড়িয়ে ফেলে নাজেহাল ও মিরমান করার উল্পেশ্যে ওই লাতিন আমেরিকান ফাঁদটি পাতা হয় বলে বহু লোকের ধারণা। যাই হোক বৰি ম্র সামরিকভাবে খালাস পেলেও ইংল'ড দল শেষপর্য'লত নিম্কৃতি পেল না। ৭ই যে জেজিলের বিয়ামে অভিনার্থপ্র খেলার আগের রাত্রে এক বিশাল লাভিন আমেরিকান জনতা তাদের হোটেলের नामस्य करणा हत्स महा हजा क्रमण निज। তাদের উদ্দেশ্য ছিল ইংলপ্ড দলকে সারা-রাভ জাগিরে রেখে পরের দিনের ম্যাচের শক্ষে ক্লান্ড করে দেওয়া। কর্তৃপক্ষ যদিও মাঝ রাত্রে খেলোরাড়দের হোস্টেলের শেছনের দিকে মুমোবার বশেষকত করে দেন, তব্ত হলাবাজদের উদ্দেশ্য বহুল পরিমাণ সফল হয়। পরের দিন ইংলণ্ড o-> গোলে রেজিলের কাছে হেরে যার। ওই ঘটনার পর থেকে ইংলণ্ড দলকে মেক্সিকান শহর থেকে ৩০ মাইল দুরে অপর একটি হোটেলে রাখার ব্যবস্থা হর। তবে হলা-বিখি,ত অনিদ্রাই সেই পরাজয়ের अक्रमात कातन नत्र। को एथलारि ছिल প্রতিবোগিতার শ্রেণ্ঠতম ম্যাচ। ইংলপ্ডের পরাজরের মূলে ছিল সহজ সুযোগ সম্বব্যহারে ব্যথতা। কিন্তু মোদ্দা কথা, देश्यन्छ-खिक्रात्मत्र यह्रवेश न्यान्मत्त्र देखिदारम **रहक्रिण है महिमाली** मल। এবার নিয়ে मूर्ति দেশ আটবার থেলার মাঠে মুখোম্যাখ ছরেছে। তার মধ্যে ব্রেজিল জিতেছে ৫ বার. ष्ट्र रातक र नात अन्य देशन क किर्लब्ह मात একবার।

देखरबन ब्राह्माक स्थापक काळीब गर्व

খেলার আনন্দ-জগতে আর পাঁচটা খেলার মত ফ্টবলেও উল্টো প্রাণের নায় নীতি চাল,। এখানেও স্বলের কাছে দুর্বলের পীড়নে ও পরাজয়ে হর্ষধনান ওঠে। স্ববিধাবাদী ও ফদ্দিবাজদের সাফল্যে **উলাস জাগে। তব**় অন্য বহু খেলার তুলনায় ফুটবলের সমাজগ্রাহ্য হতে বহু, णकाननी रमर्ग याम। रयमन धत्न, किरकछे, **শ্বর থেকে সমাজের উ**'চুতলার খেলা। তেমনি রাগবী। ১৮২৩ খ্ন্টাব্দে, রাগবীর এক পাবলিক স্কুলে একটি ছেলের হাত দিয়ে বল খেলার খেয়ালে তার উৎপত্তি। ক্ষিত্ তদৰ্বধি খানদানী পাৰ্যলিক স্কুসে গৃহীত ও অনুশীলিত ফুটবলকে তার বর্তমান সম্মান ও প্রতিষ্ঠায় উঠতে বহ শক্তাব্দী কেটে যায়।

এমন প্রমাণ পাওরা বার যে, চ্রীনেরা
খৃন্টকশের দুলো বছর আগে ফ্টবলের
মত একটা থেলা থেলতো এবং ২১৭
খৃন্টাব্দে রোমানদের মধ্যে একটা ফ্টবন
ফার্শিভাল বা উৎসব অনুন্তিত ছয়।
প্রাচীনেরা চামড়ার বল নিরেই ফুটবন
ধ্বেন্টেন। মধ্যযুগে ইংল্ডের চেন্টারের

रमारकता धकनम रख्य हामप्रारमत शांतरत कारमत धकमरमत प्राप्त निरंत भा मिरत খেলে। চতুর্দশ শতাব্দীর যোড়ার দিকে শ্বিকীয় এডওয়ার্ড জনভার হুলোড়ে कालिक मन्द्रायमा विद्यवस्मा कदा स्ट्रोयनारक य-बाहेनी बताब क्रमी करान। मिकाल স্যার টমাস ইলিয়ট নামে এক ব্যক্তি লেখেন, ক্টবল খেলা পাশবিক উল্লাস হাড়া আর কিছুই নর। চিরুতনী হিংসাকে চিরকালের कारमा बन्ध करत रमखता छेडिछ।' नन्छनन শতাব্দীতে ম্যানচেন্টারের একটি আদালত ফটেবল খেললে বারো পেনি জার্মানা ধার করে। কারণ প্রতি বছর এবদল ইতর ও বিশ্ৰেল জনতা কাঁচেই জানালা ভাঙে'. অবশ্য ম্যানচেন্টারের সেই জ্বন্থ বিচার-পতিকে তার জনো দোব দেওরা চলে না। কারণ, তখন খেলা মানে ছিল তিন-চার মাইল দুরে গোল পোল্ট এবং দু' দলে শ'থানেক করে লোক।

অবশেষে ১৮৪৮ সালে ইটন, হ্যারো, উইনচেন্টার, রাগমি প্রিউবেরীর বিশিষ্ট পার্যাসক সকুলের ছারুরা কেন্দ্রিজে মিলিছ হরে 'কেন্দ্রিজ বিশি' প্রশায়ন করলেন। ডাছে একটি খেলায় প্রতি দলে ২০ জন খেলোয়াড় নেবার প্রথা চালা হলো। ১৮৬০ সালে তা কমিয়ে ১২ জন এবং দেরপর্যাত ১৮৭০ সালে ১১ জন ন্থির করা হলো। ইংলন্ডেই প্রথম ফ্টেবল ক্লাবের পস্তন হয় ১৮৫৫ সালে সেফলেড। পর বছরে তৈরি হয় ফ্টবল এফালিরেন্সন। ১৮৭১ সালে ১৫টি ক্লাব নিয়ে এফ এ কাপ প্রতিবোগিতা চালা হয়। আজো ইংলন্ডের শ্রেণ্ড ফ্টবল

কিন্দু ফ্টেবলের স্ব আইনকান্ন,
সমিতি-সংঘ করা সত্তেও হাণগামা-হ্নজ্তের
সপো তার সম্পর্ক থেকেই গেল। ক' বছর
আগে তুরুকে ফ্টেবল খেলার একটা
হাণগামায় ৪০ জন লোক মারা যায়।
বভ্রমান বিশ্ব কাপ প্রতিযোগিতার ক্ষালফাইড, বা বাছাই প্রতিযোগিতার ক্ষালফাইড, বা বাছাই প্রতিযোগিতার ক্ষালফাটড, বা বাছাই প্রতিযোগিতার ক্ষালফাতন আমেরিকার হনভ্রাস ও এল
সালতাভোরের মধ্যে খেলার বিরোধ দুই
রাজ্রের মধ্যে খ্লোর বিরোধ দুই
রাজ্রের মধ্যে খ্লার বিরোধ দুই
রাজ্রের মধ্যে ব্যমার বায়। ওই সাংঘাতিক
ঘটনাগালি ছাড়াও কোথাও না কোথাও ঐ
খেলাকে কেন্দ্র করে মারামারি, হাতাহাতি,
বাতক ও পটকা ছোড়াছ্ডি লেগেই আছে।

কিন্তু সন্প্রতি পেশাদার ফ্টেবল থেলোয়াড়দের আয়টা হাউই-বাজির মত উধর্বগতি এবং ফ্টেবল থেলা একটি বিরাট লাজ্জনক শিলেপ পরিগত হবার পর থেকে অবস্থার পরিবর্তন হতে শ্রুর হয়েছে। আজ ব্টেনে কিন্বা পান্চতো ফ্টেবল-প্রিয় দেশ-গ্রিতে একজন প্রথম শ্রেণীর থেলোয়াড় তার ক্লাব থেকেই ১০,০০০ পাউ-ড (১ পাউ-ড বর্তমানে ১৮ টাকা) মাইনে আশা করতে পারে।

ওই অথের কোলীনা ছাড়াও বৃহত্তর লামাজিক পরিবর্ডাধও ফ্টবলকে সামাজিক

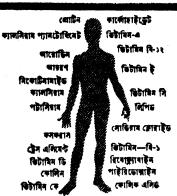
ইল্ডাং দিয়েছে। ফ,টবুল যে-জনতার ছিল সেই জনতা আজ সম্মাহ' হয়ে উঠ ১৮৯৭ সালে সি বি ফ্রে 'এন্ 🏋 কোপভিয়া অফ*ে*পার্টে' লেখেন 🗓 क्रांच्या राज्य नव'राजा वा श्रांचाजितस् थिना। जात आदिमन ग्रंथ, दिश्यशी কাছে।' আজু কোন এন্স্লাইকোপি^ত **रमध्यक्त ए हेवल नमध्यक्तमा नन्मटक**ी धतरनत कथा निश्रर्क नाहरन कूटनार ना, श्लर्राहितसाँ कथाराह भागात श्रीधकरमञ रकरत जात श्रासाका? ९६ ভাষাই টেলিভিশন ও বহুল প্রচারিত পরিকাগ,লির প্রধান ক্রেতা, তারা হ করলে তবে কোন কার্সম বা প্রের মনে লোভনীয় ইয়ে ওঠে। অভএব ভাদের য আরাধ্য, তারা যে লোকরঞ্জনী কারক চি তারকা ও রাজনৈতিক নেতাদের মত অং গণ্য হরে উঠবেন, তাতে আরু আশ্চর্য হব কি আছে?

গণসংযোগের যাদ্বের মিঃ উইলস্
সর্বপ্রধান বৃটিশ প্রধানমন্ত্রী যিনি সমারে
ওই জমকালো নবনায়কদের গ্রেবুছ স্থ
প্রথম উপলম্বি করেন। প্রতিবাদের ব
উঠবে জেনেও তিনি যেমন বিটল গায়ক
গোষ্ঠির চারজনকে ও-বি-ই খেতার
মুপারিশ করেন, তেমনি ফুটবল-জগবে
বীরদের সম্মানিত করেন এবং সংযোগ রং
করে চলেন। আজ তার ফলেই নটনটীর
জনেকেই আগামী নির্বাচনে প্রমিক দক্রে
সমর্থনে এগের এসেছেন। বৃটিশ ফুটব
থেলায়াড্রদের মধ্যে স্বচ্চের প্রিয়
সম্মানিত বাব চালটিন মেক্সিকে। থে
ভার করে প্রমিক দলের প্রতি তরি সম্যথ
জানিয়েছেন।

म्बिमात स्मना अकामन

রেডিও-টেলিভিশন ও সংবাদপর দৌলতে যদিও প্রাথা ব বিখ্যাত থেকে য়াড়দের পরিচয় আ আনতল' তক ও প্রাথবীর শ্রেণ্ঠ দেশে কারা পথ পাবেন, সে সংগ্ৰে সাবজিনীন সিংধা প্রায় অসম্ভব, যদিও চার-পাঁচজন সম্পরে কোন প্রশন? উঠবে না। তব্ব সে সম্পরে কলেকজন বৃটিশু সাংবাদিক একটি প্রস্ত দিয়েছেন। কিন্তু সে-প্রস্তাবে শ মেকসিকোতে যৌগদানকারী দলগালি ধরা হয়েছে। তাই হ্যাণ্ডের গ্রুয়েফ, স্ব ল্যাণ্ডের রেমনার এবং সবৌপরি উ আয়ারল্যাণ্ডের জর্জ বেস্ট ও পর্তুগানে ডিফেন্স, ভগটস্ (পশ্চিম জার্মান ইউ সি বি ও বাদ পড়বে দেশগুলি বাছাইয়ের প্রিয়োগিতায় উত্ত হতে পারেনি। বাকীদের নিয়ে দলটা হ অনুরূপ : গোলে, ব্যাণক (ইংলন্ড সেস্টোরনেভ (রাশিয়া), মূর (ইংলন্ড ফ্যাচেডি (ইতালী), মিডফিল্ড, পেটা (ইংলন্ড), রঙ্গা (উর্নুন্মে), ফরওয়াড রিভা (ইতালী), টসটাও (রেজিল), পে (রেজিল), প্রাতি (ইতালী)।

ি বিশ্বনাথ মুখোপাধ্যা



আপনার শরীরের জন্যে চাই ২৩টি একান্ত প্রয়োজনীয় 'খাদ্যগুণ'



দুধে আছে মাত্র ৯টি



(জোটিন, ভিটামিন ও ঘনিকল্যার্থ সংগ্রঙ)



এক কাপ কমগ্লান সম্পূর্ণ সুবম আছার। চিনি এবং পছলমত ভাগগন্ধ মেশান, বেমন—কফি. কোকো, ভ্যানিলা ইত্যাদি। (কমলানেবু আর পাতিলেবুর রসে মেশাবেন না)।

শরীরের সম্পূর্ণ পৃষ্টির জনো যে ২৩টি জীবনদায়ক ধাছাগুণ দরকার, শুধু কমন্নান – এই তার সব-শুলি আছে। শ্রেষ্ঠ প্রাকৃতিক জাহার ছুধ পর্যান্ত এতগুলি ধাদাগুণ যোগাতে পারে না।

বাড়ন্ত ছেলেমেয়ে, কাজে বান্ত বসন্ধ, বাঁরা মা হতে চলেছেন বা সবে মা হয়েছেন, প্রবীণ এবং খেলোরাড়দের জন্যে কমগ্রান আদর্শ। অসুথে বা রোগের পব সেরে ওঠার সময় কমগ্রান আদর্শ তরল আহার।

সারাপৃথিবীর ডাক্তাররা কমপ্লানে থেতে বলেন।

কমপ্লানের ২৬টি পুটিকর উপকরণ এবং এগুলো কিডাবে আপনার উপকার করেঃ

विद्यास्त्रिक-ठड व अन्त्वाव गर्छ कारत अव असम्बद्धाः महत्त्व ग्रह्मा

जिलिक-डेवन व डेस्तारहर वनीपृष केटा । कार्ट्याक्षाक्षरक्षके-नतीर नगावर्थकर व डेस्तारह

ক্যান নিয়াম—গড়ে কোনে কুছ সৰল বাত ও চাড়। ক্যান্তৰ্ভাল—পৰীৰের জনীয় আল, বাড় ও বাডের অভ

eniferin-ster esette afalası

ক্লোৱাইড (সি, এল-৬ন্ত স্কাকান্তে)---শেশীর ক্লোম বিশেষ ওলবপূর্ণ; বিশ বন্ন যোগ যতে।

পট্যজিরাছ:---এর অভ্যান দেবা দেও বার্নিক বিজ্ঞের: পেনীর মুর্বলভা । অধ্যান্তর:- প্রবাদ বাত ভোলে

আছিল্ল- প্র বছ গড়ে তোলে আইল্লাভিল- বাইবংগড়ের কারসায়া বলার সাধার পালে ওকরপুর্ব: এর বাইভি কলে বেবা বের ওলনের সমস্যা, প্রসত ।

নমন্ত্ৰা, নলমভ । ভিট্টাজিঅ-এ—চোৰ ও এশিংখনিছাল ভয়কে বছ ও নদম হাবে।

স্বাস্থ্য কাৰে। ভিট্যানিজ-বি-১--পুৰতে সাহায্য কৰে, প্ৰায়ু নবল বাবে এম বেবিবেরি মহিবেয়া করে। ब्रिटकाक्कारकावैश्व-पूर्व, क्रिक्श, और्वे काव तहार प्रकृतका राष्ट्रित

মিজোটিনামাইজ--- বৃহ ওইজন চাৰ্ডা গ'ছে তোলে। জ্যালয়ান প্যামটোখিনেট--- বাধু ও ক্ষেত্ৰ বাধে। কোলাইম--বৃহত্তে বৃহ বাকাবিক জিলা বা

লপ্রিচার। পাইরিভোক্তাইন (বি,৬)—পেশ্য উল্লেখন। প্রদাসত করে।

ভিটামিম বি-১২--নজুণ্গুলা বোৰ দৰে ভোলিক এমিড---নমুদ বক্ত কোৰ গঠনে সাহায্য

করে। ভিট্টামিন মি—বোগ আক্রমণ প্রতিবোধের শক্তি গ'তে ভোলে চুর্গান্তাপ রোধ করে।

ভিট্টানিম ভি—হাড় ও বঁকে সৰণ ক'তে জোকে। ভিট্টানিম ই—প্ৰকংশাদৰে সাধাৰা কৰে। ভিট্টানিম ক্লে—বস্তেৰ বাকাৰিক ক্লাট বাৰবাৰ ক্ষয়ত প্ৰনিক্ষিত ক'তে বোকা।

ট্রেল এলিমেণ্ট---ডিটারিনের গুণ লার্ড করছে এবং প্রন্থির প্রশ্ন ভাতের করু।

> ক্লান্তের বিসার্চ-এর জগৎ-বিখ্যাত সৃষ্টি



ক্রমান সম্পূর্ণ আহার পুষ্টিহীরতা থেকে আপরাকে রক্ষা করে

নিয়মাবলী

লেখকদের প্রতি

- ১। ঋমুডে' প্রকাশের ভানে সমুস্ত ক্রমার নকল বেখে পান্ডুগৈলি সম্পাদকের নামে পান্ডান আবলাক। মামোনতি বচনা কোনো বিশেষ ক্ষায়ে প্রকাশের বাধাব্যকতা কেই: আননোনীত বচনা সপ্রে ক্ষেত্রে ভাক-টিকিট আকলে ফেরড কেপ্রা হয়।
- হ। প্রেষিত রচনা কাগভের এক দৈকে
 সম্প্রীক্তর জিখিত হওরা আবদাক।
 অসম্পর্ক ও পর্যোধা হস্তাক্তরে
 জিখিত রচনা প্রকাশের জন্মে
 বিষেধনা করা হয় না।
- চ। রচনার সংজ্ঞা কোখকের নাম ও ঠিকানা না থাকলে অম্তের প্রকাশের জন্মে গৃহণীত হয় না।

এন্ডেন্ট্রদের প্রতি

এজেপ্দীর নিয়মাবলী এবং সে দম্পবিতি অন্যানা স্তাতবা তথা অয়তেশ্ব কার্যালয়ে পঠ শ্বারা জ্ঞাতবা।

গ্ৰাহকদের প্রতি

- ১। গ্রাহকের ঠিকানা পরিবর্তানের জন্যে আগতত ১৫ দিন আগে 'অম্ভেণ্ড কার্যান্সরে সংবাদ দেওরা আবদাক।
- হ। ভি-পিতে পরিকা পাঠানো হয় না। গ্রাহকের চীদা মণিজার্জাররেকে জমতেবে কার্যালয়ে পাঠানো আবশাক।

চীদার হার

শাৰ্ষিক টাকা ২০-০০ টাকা ২২-০০ যাশ্যাম্বিক টাকা ১০-০০ টাকা ১১-০০ হৈমাসিক টাকা ৫-০০ টাকা ৫-৫০

'অমৃত' কাৰ্যাপয়

১৯/১ আনন্দ চ্যাটান্ধি লেন, কলিকাতা—০

रकाम : ৫৫-৫২০১ (১৪ मार्टेन) 🚜

বাংলা সংবাদ-সা*তাহিক অনেক আছে

কিন্তু বিচার এক এবং অনন্য

দক্ষনিরপেক্ষ একমাত্র প্রগতিশীল সংবাদ-সাণ্তাহিক

বিচার

নৰপর্যায়ে আত্মপ্রকাশের মাত্র দশ মাসের মধ্যেই পাঠকমহলে দারুণ সাড়া জাগিয়েছে

এখন দশম বর্ষ চলছে

অভিন্ধ ও প্রথিতহণা সাংবাদিকদের ক্রেধার লেখনী বিচারা-এর বৈশিষ্টা। রাজনীতি আর প্রশাসনের হাড়ির খ্বর, ভাঁড় দত্ত নামের আড়ালে প্রখাত সাহি তাক-সাংবাদিকের বাংগ রচনা, বাজ পশ্ডিত-এর রাজ্য-রাজনীতির গ্রুতক্থা, বিচাগ্রেপতর ডা মরী-তে ওর্ণ বিপোটারের অপরাধজগতের চাঞ্জাকর বিবরং, সন্দাশন গ্রেপতর পাকিন্তান সমাচার, গ্রুণানন-এর বিতকম্পাক রচনা, নানা রাজের বিহ ইন্ড দি নিউজ অর্থাৎ সব খ্বরের পিছনের খ্বর, সেই সঞ্জে প্রশাক লাক মা ঠ-মানানে। এবং শংকরনাথা ও শ্বমা পরিবেশিত চিত্রভাগতের অজব তথা।

—ঃ বিশেষ আকর্ষণ ১—
'মেমসাহেব', ডিপেলামাট' গাতে গ্রীনিমাই ভট্টাচাযের অভিনৰ বারাবাহিক উপন্যাস

উইং কমাণ্ডার

প্রতি শান্তবার প্রকাশিত হয়। মূল্য প্রতি সংখ্যা ২৫ পঃ। গ্রহক/এজেন্ট্রা আজই যোগা যাগ কর্ম

সংস্কৃতি সাহিত্য মন্দির

৮৬এ, আঢার্য জগদীশচন্দ্র বস্যু রোড, কলিকাতা-১৪ টেলিফোন ঃ ২৪-৬৬৫৬

প্রভাতকুমার মর্থোপাধ্যায়ের অনন্যসাধারণ সাহিত্যকীর্তি রবীন্দ্র-জীবন ও সাধনার সর্ববৃহৎ আকরগ্রন্থ

রবীক্র-জীবনী

সম্প্রতি প্রথম খণ্ডের পরিব্রিণতি চতুর্থ সংশ্করণ প্রকাশিত হইরাছে।

এই খণেড ১৮৮১ ১ইতে ১৯০১ খণ্টাবন পর্যাশ **একাধারে** কবির ব্যক্তি জীবন ও সাহিত্যজীবন বিস্তৃতভাবে **আল্লাচত। শ্ধে** প্রেষ্কণ্ডর জনাই নয়, র্বীন্দ্র-কৃত্ত্লী পাঠকমা**রেরই একান্ড** অপরিহার্য গ্রুথ।

শতাধিক পৃষ্ঠাব্যাপী বহু নতেন তথ্যের সংযোজন এবং **বহু-থলে** রচনার ও তথ্যের পুনবিন্যাস বত্যান সংস্করণের বৈশিশ্টা।

কাপড় ও বোর্ড বাঁধাই ঃ ৩০·০০ <mark>টাকা</mark>

প্রভাতকুমার ম্বেথাপাধ্যায়ের আর একখানি গ্রন্থ

র্বীন্দজীবনক্থা

সহজ ভাষায় ও সংক্ষিত পরিসরে রচিত এই প্ততক রবীশ্রনাথকে জানিবার পক্ষে বিশেষ উপযোগী। ঘরে ঘরে রাখিবার মতো একথানি বই। মূল্য ৭০০০ টাকা।

['] বিশ্বভারতী

় ৫ দাবকানাথ ঠাকুর লেন । ক**লিকাতা ৭**

_ विद्यापरात वहै ামেন্দ্র মিত্রের উপন্যাস ও গণ্প **6.00** করমখ 6.00 যন্ত্র স্থ **२** • २ ६ ালপ আর গলপ 🚂 पुरक्त यात्रा शिर्छा ছन 0.00 ড্র্যাগনের নিঃশ্বাস ২০২৫ সঞ্জয় ভটাচায়ে র দুটি বড় গলপ নাবিক রাজপুত্র ও ২∙০০ সাগর রাজকন্যা স্শীল জানার গলপ-সংকলন গণ্পময় ভারত [প্রথম খণ্ড ৩০০০ ॥ দিতীয় খণ্ড ৩০০০] গোপেন্দ্র বসত্তর রহস্য উপন্যাস স্বৰ্ণ মুক্ট বিমলাপ্রসাদ মুখোপাধ্যায়ের লেখনীতে আসেনিভের অমর অরণ্য-কাহিনী जार्देवितियात रमध मान्य २.०० ব্হিক্সচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়ের উপন্যাস আনন্দমঠ | ছোটদের | ₹.00 শ্রীকথকঠাকরের গম্পসংকলন वाश पात्रव कशकवा ७००० ত্যৈলাকানাথ মুখোপাধ্যায়ের উপন্যাস **4-140** 0.60 সমর্গ্রজিৎ করের বিজ্ঞানাশ্রয়ী উপন্যাস ভয়ংকর সেই মান্ষটি 0.36 দীনেশচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়ের ভয়ুক্তরের জীবন-কথা **২・২**৫ আশ্তোষ বলেনাপাধ্যায়ের উপন্যাস বিজ্ঞানের দুঃস্বপ্ন দ্বপনব্র্ডাের গল্প-সংকলন স্বপনব্রড়োর ₹.४0 কৌতুক কাহিনী শিবরাম চক্রবতীর গল্প-সং**কল**ন আমার ভাল,ক শিকার 0.00 চোরের পালায় 0.00 চকর বর্তি স্খলতা রাওয়ের গ্লপ-সংকলন

विष्णामय नारेद्वती आः निः

৭২ মহাত্মা গান্ধী রোড ॥ কলিকাতা ১ ফোন: ৩৪-৩১৫৭

५०म वर्ष



公里 再2年日

म. ला

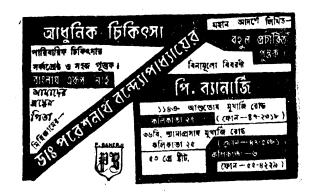
80 भागा

Friday 3rd. JULY, 1970. শক্তেবার, ১৮ই আমাচ্ ১৩৭৭

40 Paise

সূচাপত্র

প্তা		বিষয়	লেখক
980	চিঠিপত্ত		
983	भाषा टाटिथ	•	— <u>ล</u> ิโหมหาใ้
	দেশেবিদেশে		—শ্রীপ, ডুরাক
985	ৰ্যুঞ্গচিত্ৰ		—শ্ৰীকাফী খাঁ
989	সম্পাদকীয়		
488	প্रमीना नकत्त	(কবিতা)	– শ্রীঅচিন্তাকুমার সেনগ্রুত
485	সাহিত্যিকের চোখে আঞ্চকের	স্থাঞ	– শ্রীভবানী মুখোপাধায়ে
965	অখান্ৰতা'র বিপক্ষে		— শ্রীহ্বীরেন্দ্রনাথ মন্থোপাধ্যায়
960	মনমোহনের একদিন	(গ্রহণ)	শ্রীস্ধাংশ্ ঘোষ
968	ম্বের মেলা		– আবদ্ল জববার
965	ৰবীন্দ্ৰনাথ : বিতকের উত্তরে		শ্রী সাুশা মজ্মদার
460	જાાથ	(উপন্যাস)	শ্রীলীলা মজ্মদার
9७७	সাহিত্য ও সংশ্কৃতি		শ্রীমভয়ংকর
995	ব ইকু: ঠর খাতা		—শ্ৰীগ্ৰন্থদশী"
	ক,বতার অন্বাদ		— শ্রীআশিস সান্যাল
999	দিনগ্লি রাতগ্লি	।বড় গলপ)	শ্রীকল্যাণ সেন
980	निकर्षेष्टे चार्ष		শ্রীসন্ধংস্
	भारतम् कथा		- শ্রীমনোবিদ
950	নীলকণ্ঠ পাথির খোঁছে	(উপন্যাস)	শ্রীঅতীন কন্যোপাধ্যায়
928	নিজেরে হারায়ে খ'্জি	(স্ম্তিচারণ)	- শ্রীঅহীন্দ্র চৌধ্রী
424			- ଶ୍ରିଅभीला
802	গোয়েন্দা কবি পরাশর		শ্রীপ্রেমেন্দ্র মিত্র রচিত
			– শ্রীশৈল চক্তবতী' চিত্রিত
80€	ৰেভার ল ্ভি		—শ্রীশ্রবণক
৮০৩	छ लत्रा		শ্রীচিত্রাপাদা
A08	প্রেকাগ্র		শ্রীনান্দিকর
A22	ইউরোপের ছবি: ভিন্নরীতি		–শীশৈকত ভট্টাচাৰ্য
420	বিশ্ব কাপ রেজিলেরই		- শী্মজ্য বস্
A2¢	रथना श्चा		— শ্রীদশক
প্রচ	দঃ শ্রীপ্রসাদ		





রবীন্দ্রসংগীতের রেকর্ড

২২শে জৈচেঠর অম্ত পতিকায় জলসা বিভাগে কানন প্রকল্প সায়গলের রবীণ্দ্র-সংগতির বেকচের প্নেংগ্রকাশ সম্পক্ষে আপনাদের মন্তবা গামেফোন কোম্পানী এ-চাহিদা কিছুটা পূর্ণ করে অবশাট ধনাবাদাহ করছেন। কিছুতু সায়গলের গান নেই কেন? কানন দেবীরও আরো গান ছিলো ত। ভবিষাতে এবা এদিকে দূল্ট দেবন'—এর প্রতিবাদশ্বরুপ এই প্র লিখছি।

কে এল সায়গল প্রামোফোন কোম্পানিব লেবেলে একটিও বলীন্দ্রসংগীতের রেকর্ত করেননি। তিনি যে ছাটি রবীন্দ্রসংগতি রেকড়ে গেয়েছেন, তার স্বকাখানিই নিউ থিয়েটস-হিন্দুস্থান রেকডের লেবেল গাওয়া। হিন্দুস্থান রেকর্ড কোম্পানি ১৯৬৫ সালে অর্থাৎ পাঁচ বছর আগেই এम এইচ ১৬ मन्दर है भि दिकार्ज भारा-গলের চারটি রবীন্দ্রসংগীত প্রথপ্রকাশ **করেছেন। বাকি দুখনি গানও প**রে এল এইচ ২৯ সংখ্যক রেক্ডে ভারাই প্রকাশ করেছেন। সায়গলের গাওরা পর-ক'থানি রবীন্দ্রস্পাতিই প্নঃপ্রকাশিত ছয়েছে। সাত্রাং 'সায়গলের গান কই?' বলে একটি বিশেষ রেকর্ড কোম্পানির প্রতি —যারা সায়গলের রবীন্দ্রস্পাতি রেকড'ই করেননি—এমন প্রশন তোলা ঠিক কি?

কানন দেবীরও আরো গান ছিলো ত' — আপনাদের এই মনতব্য প্রস্পে জানাই কানন দেবী গ্রামোফোন কোম্পর্নির রেকডে একা চারখানি এবং অন্য গায়কের সংখ্য রবী•দুস•গীত দুখানি মোট ছ'খানা গেয়েছেন। সেই চারখানি গানই বতমানে গ্রামোফোন কোম্পানি প্রকাশ করেছেন। কানন দেবীর বাকি স্ব রবীন্দ্রস্পতি মেগাফোন কোম্পানির রেকডের গাওয়া। মেগাফোন কোম্পানি পাঁচ বছৰ আগেই ই জে এন জি ৫০১ সংখ্যক রেকডে কানন দেৰীর স্বারে বাবে পেমেছি/প্রাণ চায়/ আমার বেলা যে যায়/সেই ভালো'--এই চারটি গানের প্রথম ইপি রেকর্ড প্রকাশ করেছেন। পরবড়ণী কালেও তাঁরা কানন দেবীর আরো একটি ই পি প্রকাশ করেছেন। भ**ुक्रबा**ः कालन रमगीत 'आरता गान' भूरन'री প্রকাশিত হরে গেছে।

পাণক মাজেকেরও এটি দ্বিতীর এল পি বেকডা। প্রামেকোন কোপ্পানিই প্রথমে ভাঁও একটি এল পি রেকডা প্রকাশ করেন। পাক্ষমের গাওয়া বিখ্যাত গান প্রকাষ ন্যক্রস্থায়ের গাগুরে বিধ্যাত সরসী নীরে দিনের শেষে ছ'বছর আগে হিন্দ্থান রেকর্ড এল এইচ ১৪ সংখ্যক ই পি রেকর্ডে প্রকাশ করেন এবং পরে এল এইচ ২৯ সংখ্যক ই পি রেকর্ডে সায়গল ও হেমল্ছ সংশ্যক তাঁর 'আমি কান পেতে রুই' গানটি অন্তর্ভক্ত করেন।

আশা করি **এই চিঠিটি প্লকাশ ক**রে পাঠক-পাঠিকাদের সঠিক তথ্য জানাতে সাহায্য করবেন।

> কুমকুছ সোম নাগপরে ৩, মহারাগ্রাঃ

রবীন্দ্রনাথ: বিতকের উত্তরে

রবীল্যনাথ সম্বল্ধে লোকনাথবাব,র বস্তবা যা ব্যক্তাম ঃ—

- ১। বিদেশে 'শ্বিলকে' অংশাঠা বলতে প্রিতাড়া করতে হয় না, কিম্তু এবেশে রবীদ্যনাথ সম্বাধ্যে সেরক্ম কথা বলা অভাবিত্র।
- ২। আধ্নিক সংশ্কৃতি চর্চার দুর্ভাগে যে সজীব আলোচনায় রবীশুনাথকৈ আমরা জীইয়ে রাখতে পারিনি।
- ৩। রবীন্দ্রনাথের শেষ লেখার স্থান কিঃ

লোকনাথবাব্র মতে শেষ লেখার খেষ
কবিতায় যা বলেছেন তার সংশা রবীন্দ্রনাথের সারাজীবনের বক্তবাের অনেকটাই
মিল আছে। কিল্তু পাঠক এই কবিতা পাঠে
অস্বস্থিত বােধ করবেন। এমন্কি রবীন্দ্রনাথও এই অস্বস্থিতবােধের হাত থেকে
রেহাই পাননি।

শেষ কবিতা সম্বংশ লোকনাথবাব্র ক্ষেকটি প্রশনঃ (ক) এ ছলনাম্যী কি কোতুক্ময়ী, বা তার আখ্যীয়া? (থ) ছলনা সহ্য করার জন্য শান্তির অক্ষয় অধিকার লাভ-সেটা বাড়াবাড়ি। (গ) শান্তর ম্বর্প কি?

৪। এর পর বন্ধবা উপস্থাপনায় লোকনাথবাৰ্ত্ত অন্ধলিত বাধ জেগেছে। রবীন্দ্রনাথকে মানবপ্রেমী বলতে তাঁর আপতি
নেই—কিন্তু কেন এখানে তাঁর আথকেন্দ্রিকতা? তাঁর মতে রবীন্দ্রনাথ এই নুই
সতা, দুই নোকা (আআকেন্দ্রিকতা ও
'মানবপ্রেমী'ডে) পা রেখে চলতে পেরেছিলেন, কারণ তাঁর যুগে তা সম্ভব ছিল।
আজ তা সম্ভব নয়, কারণ আজ জীবন ও
জগৎ অত্যক্ত জাতিল এবং আজকাল ভ্রন্তে

৫। রবীন্দ্রনাথ খেকে আমরা দ্রের চলে এসেছি, ভাই রবীন্দ্রনাথ আজ আকর্ষণ-হীন। কারণ, রবীন্দ্রনাথ উলবিংশ শভকের রেপেসাসের ফল, এবং আক্ত তা অচল। আমার বিনীত ব্রথাঃ--

১। রবীন্দ্রনাথের স্ভির গভী অনেক, নানা স**্**রে নানাভাবে ডি[্] লিখেছেন, আধুনিক পাশ্চাত্য লেখক মত তাঁর লেখা হঠাৎ গঞ্জিয়ে ওঠা ক্ষণাখান 'ইজম'-আগ্রিত নয়। রবীন্দুনাথ লিখেছে 'মরণরে তু'হ্মম শাম সমান'। ভাব লিখেছেন, মরিতে চাহি লা আমি স্ফ ভুবনে'। এবং দুটোই সমানভাত চেয়েছেন। বিশাস রবণিপ্রস্থিতিক ত হঠাৎ বাসী হয়ে গেছে বলার সংযে আসে না। কারণ কখনও একড়াবে । স্ত্রে এক 'ইজম' বা সাম্প্রতিক রা নীতির আধারে জাঁর সাহিজ জিনি সা করেননি। রবীন্দ্রনাথ ঈশ্বরবিশ্বাসী ছিত্ত মান,খকে ভালবাস/ গভীরভাবে প্রকৃতিকে ভালবাসতেন, এবং তার ম সদভবত কোন 'নিউরো'সস' ছিল : রবীন্দ্রনাথের লেখা চোখ-ধাঁধানো পাঠককে চিম্তার অবকাশ দেয় এবং উদ্ব করে। তাছাড়া আমাদের ভারতীয় ং প্রাচাজীবন সমাজবিব্তনি পাশ্চাতাজীবন সমাজের তুলনায় অভানত শল্পণ্ডিতে চা আমাদের ভারতবর্ষ সঞ্জীৰ মহাকাণ দেশ। কিন্তু ব্যক্তিগতভাবে রবীন্দ্রনাথ **ভा**रला लागा वा मा सागात व्यक्तित क করি সকলেরই আছে:

হ। লোকনাথবাব্র অভিযোগ ব লাংশে সত্য, তব্ত র দ শ খানা খোড়ব খাড়ার মধ্যে এক-ব ানা স্তিকার ম শীল লেখাও তে বেরিয়ে আসে? রব নাথের কথায় সব মাকুল থেকে ফল হ না, অধিকা শুই করে যায়—এটাই নিয়া

ত। ববীশ্রনাথের 'শেষ লেখার' দিয়ে আলোচনা করার শক্তি ধরি না। তবলতে ইচ্ছে করে, 'শেষ লেখার স্থান নিকরা সতাই শক্তা। ওটা ঠিক রবীশ্রনাছবির মত, দেশী-বিদেশী কোন রীশুলনাছবির মত, দেশী-বিদেশী কোন রীশুলে যা বাধা যায় না। অভ্যন্ত একক। লেখায় অভ্যন্ত গভীর প্রজ্ঞাবান দার্গারবীশ্রনাথ সবচেয়ে সংযত ও স্ফুর বভাগানা মধ্যে প্রকাশিত। শেষ লেখা ববীশ্রনাথের শেষজীবদের কিছু কোলামর গদা বা গদাময় কাষ্য। এগ কবিতা ও গদার মধ্যতে বিজ্ঞান 'রিজিভবির জিনিস।

অস্বস্থিতবোধ সম্বশ্ধে লোকনাথবাৰ বলেছেন, সেটা বিশ্বজগতের কোন বি গভীবে গোলেই আসে। সেটা আম বিষয় উপস্থাপনার গুণ হতেও ও যেমন বিজ্ঞান গতিকে ভিক্মত ব্যাখ্যা ব পার্কেন, শেষ বিশেষবাপে এ এই দ

(\$)

যোগাম ইজ জি সামেইগাম অফ রেস্ট। কিছুকাল আগে ক্লালিক্যাল ফিজিক্স পারটিকলে ওয়েভ নিয়ে জন্বদিচবোধ পড়ে-हिला, कुत्राभग्रेष सकानिक्त अल मृत्याटक बिनितारक (कारेबान-अत शक नउं नम-निष्कर অ্যাল্ড মট লিভিং গোছের আর কি?) আধুনিকত্ব বিজ্ঞান আজও ম্যাটার ও ফিল্ড-এর অভবস্থিতবোধে ভূগছে। (ম্যাটারস আর ব্লুক্স অফ ফিল্ড)। এমনকি রবীপ্র-नाथक लाकमाधवाद मानवद्यभी ७ व्याध-কেন্দ্রিক দুটে-ই ালতে ছেলেছেন ও অব্যাস্ত-বোধে পড়েছেন। বিশ্বস্থাত কোথাও ওয়েল ডিফাইল্ড বাউল্ডি লাইন নেই। आमरभ इतीन्द्रनारशत आचरकान्त्रकाण अध्यत/कन्तिक हो -- अप्री काशा. भागवरश्चम তারই ছায়া। শ্বশিদ্রনাথ আতাকেন্দ্রিকতা ও মানবপ্রেমের বাউপিত্র রিজিজন-এ আছেন। आधारकिम्बका वा आधारश्रस्मत (हेर्गा) সার্বালমেশান হলে মানবপ্রেম, স্কুপার সাব-लिएममान **शरण जेन्दर अध जा**रन । (ठिक মনে পড়ছে না বামককদের কোথায় খেন এমন কথা বলেছিলেন) যাজ্ঞবদক ঋষিও তাই বলেছিলেন (নরাঃ অনুরে বিক্তসা কামায় ধিত কামায়...ইত্যাদি) মান্য নিজে:ক ভালবেলে স্থা-প্ত-পরিবার আঘাীয়স্বজন স্মাজকে ভালবাসে। স্কুলং জিনিস্টা न्दरमद्भा थत बरमाहे अञ्चित्रिकताम घरत शरहः।

কে) ঘোবনের কোজ্কমন্ত্রী শ্বাভাবিকভাবে বার্ধাকে। এসে ছলনামন্ত্রী হবে—এপ্তে
আরু আশ্চর্যা কি? আলোচা কবিভাটা পড়ে
আমার উপনিষদের কথা মনে পড়ে।
(হিরক্ষয়েনঃ পাটেন সভ্যাসাপিছিত মুখ্য
সভা ধর্মার দৃশ্টরে) আলোচা কবিভাট র
প্রথম, দিবতার, ভৃতবীয়, পঞ্চয় ও সশতর
(চতুর্থা ও বন্ধ বাদ দিয়ে) শতবক; ঘেন
একই ম্লা বছবোর ভিন্নরাপ প্রকাশ। আমরা
ছলনাজালে আব্দা, মোহবদ্ধ (ভূলনীয়
ছলপকেনচাসন্ত্রপ্রক্রসংশ্চরতি ম্থা…..
ইভাগি, খান্তের ফাক্রম অধিকার লাভি
করা বায়।

(খ) শানিত একটা সাবজেক্টিভ রিছে-লিটি। ও নিছে তব' করা ম্পক্তিন। সেটা অগতর থেকে আসে। 'শানিতর অক্ষয় অধিকার' অনেকটা বেছিদপ্নের বোধিলাও বলা যেতে পারে, বা আমাদের 'ম্কুজীব' বলা যেতে পারে।

B। এ সম্বদেধ আমরা ৩নং অংশে আলোচনা করেছি।

৫। রবীদ্রনাথের জীবন, লেখা সব-কিছুর আধার সাবজেকটিভ ফিলসফি। নেড মেটিরিয়ালিক্স দিয়ে বিচার করতে লেকে অসপণতি আসবেই। আন্নাদের হলে হয় রবীপ্রমাধ উনবিংশ দতাব্দীর রেপেসামের ফল (ফল অথে ইডলান্দান রনে কর্মাছ) নর, তিনি মিউটেশান। রবীপ্রমাধ উনবিংশ দতাব্দীর বাব্দ সংক্রতিতে যথেপ্ট সম্বালোচনা ও বাংশ করেছন তার দেখায়।

আজ আয়াদের খ্রাটাকে বলা যেতে পারে এফ অফ নিউরোসিস। লোকনাথবাব, এकथा ठिकहे वलाइन एर आधारमत ज्ञाम আৰু অত্যানত জটিল। কিন্তু ভাৰ সংকা কি আমাদের সীমাহীন আকাঞ্জা ও নীভিবেষ বিস্কৃতি আংশিক দায়ী নয়? আজকের पित्न अवधा क्वीत्वत बना विष्: विष्: गृह-বধুরা পার্ট টাইম জঘনা জীবনযাপন করছেন। ডঃ কার্ল ইয়ং বলেছিলেন, আয়াদের বেদার ভাগ লোকের আধ্নিক কালের স্বচেয়ে হড় সমস্যা হল আমাদের রিলজিয়াস আউটল্ক অফ **লাইফ** হারিয়ে গেছে বা ফেলেছি। আমাদের তাই মনে হয়, আমরা বহুলাংশে সাহদ হারিয়েছি। রবীদ্যনাথের যুগে তারা স্পন্ট करत हार्ने, मा. मका. शिथा। माश-अमात বলার সাহস রাখডেন। ভালমন্দর ম্লাবের তথনও জটিল ছিল, আজও আছে। দ্বার্থ-চক্রের বাহিরে আজ আমরা যেতে পারি না, তাই রবীন্দ্রমাথকে বা সেকালের মহতুর কিহাকে আজ আমরা সহা করতে পার্রাছ না, স্বীকৃতি দিতেও পাছি না।

> শ্যামল বসকে গোরক্ষপরে

ভেরা নেভিকোভার রচনা

আপ্নার বিখ্যাত ও জনপ্রিয়
সাংকাহিক 'অমাত'র ১০ম বর্ষ', ১ম খণেডর
৬ক সংখ্যায় জেনিনগ্রাদ বিশ্ববিদ্যালয়ের
ভারতীয় ভাষাতত্ব বিভাগের অধাক্ষা শ্রীমতী
ভেরা নোভিকোভার লিখিত 'সোভিয়েত
ইউনিয়নে বাংলা সাহিত্য চচ্চা' নামক
নিবন্ধটি পড়ে খুব আন্নিণ্ড হলাম।

প্রথিকীর বিভিন্ন বিশ্ববিদ্যালয়ে বংলা সাহিত। ও ভাষা সধপকে বিভিন্ন ধবনের কাজ শারা হয়েছে। সেইসব বিশ্ববিদ্যালয়ে বাংলা ভাষা ও সাহিত্য বিভাগে ভারপ্রাণ্ঠ অধ্যাপকদের এই জাভীয় কিছু কিছু লেখা ভবিষাতেও পড়তে পাব। আশা করি।

স্তেরাং শ্রীমতী তেরা নোভিকোভার উক্ত লেখাটি সংগ্রহ ও প্রকাশের জন্য সম্পাদক মহাশয়কে আন্তরিক ধনবাদ জান্টি।

> বিমলকুয়ার সেনগ;•ড কলকাজা-৪০।

সাম্প্রতিক সংখ্যা অমৃতে (২১ জৈছে, ১০৭৭) ভেরা নোদিকোভা লিখিত সোভিয়েত ইউনিয়নে বাংলা সাহিতাচা মিরুধটি পড়াছলাম। পড়তে গরে বিশেষ এক জারগার গিরে থেমে গেলাম। এতে শেখা হয়েছে, '...বিশেষ করে যোগায়োগ রক্ষা করছে প্র'পাকিস্তানের প্রবীণ করি জসীমউদ্দিন, ভাষাতাত্তিক মুহুদ্মদ শহীদ্মার, মুহুম্মদ এনাম্ল হক ও আবদ্ল হাই।' মুহুম্মদ এনাম্ল হক ও আবদ্ল হাই।' মুহুম্মদ এনাম্ল হক ও আবদ্ল হাইরের নামের স্পেগ ভারকাচিফ দিয়ে ফুটুনোটে বলা হয়েছে, 'এ'রা দ্জন মারা গেছেন কিছুদ্দিন আগে।'

আমরা জানতাম ভাষাতাত্ত্বিক মহম্মদ
শহীদ্রাহে ও আবদ্লে হই কিছুদিন আগে
নারা গেছেন। কিব্তু প্রখাত সাহিত্যিক
এনাম্ল হকের মৃত্যুর কোনো খবর আমরা
জানি না। এর সতাতা যাচাইগ্রের জনো
আমরা সংপাদকের নিকট সনিবাধ্য অনুরোধ
জানাছি।

ডাঃ নীলক্ষ পাল। সূহিথয়াপৌখনি, দাকিশিং।

(এটি ছাপার ভূল। মাছম্মদ শহী-দ্লোহ মাধা গেছেন। এনাম্ল হক জীবিত। আমবা তাঁর দীঘ জীবন কামনা করি। ভূপটি (পথিয়ে দেওমার জন্য পতলেথককে ধনাবাদ)

মুখের মেলা

প্রথমেই আপনাকে আমার আন্তরিক অভিনন্দন জানাই আবদ্ধে জন্বারের 'মাখের মেলা' উপহার দেওয়া**র জন্য।** লেখনীর মধা দিয়ে যে মানাৰের চরিতকে হ,দয়ে গে'থে দেওয়া যায়, তা ক্ষণবারসাহের প্রমাণ করলেন তাঁৰ রচনার মধামে। সাজ্য বলতে কি প্রথমে 'মাথের মেলা'র চরিমের প্রতি এতো আকর্ষণ ছিল না, অর্থাৎ এছো স্ফার হবে ভাবতেই পারিন। কিন্তু कसाकृषि अमारमाहना अर्फ क्लोड्स श्राह्म, এবং পড়ে দেখলাম। বভামানের জানিক-যাত্রর দিনে তিনি যে প্রায়-বাংলার এয়ন সাল্যর চরিত্র চিত্র ফ্রাট্রিয়ে তুলছেন এজনা তাঁকে আমার আন্তরিক অভিনাদন क्रानायन । আশা করি আরো নেশ ক্ষেক্টি সংখ্যায় 'মাথের মেজা'র চরি**তের** সংখ্য পরিচিত হতে পাব।

> প্থরীশক্ষার গ্ন আর্য প্রেস ভিনস্কিরা (আসাম) !

भामा टाटिथ

পশ্চিমবংশে "জনপ্রিয়" সরকার গঠিত হোক বা না হোক এই প্রশনকে কেন্দ্র করে রাজনৈতিক মঞে নয়া নাটকের পালা শ্রু হয়ে গেছে। শৃধু তাই নয় বিভিন্ন রাজ-নৈতিক দলের মধে। অবস্থার মল্যায়ন সম্পর্কেও বেশ প্রতিক্রিয়ার স্থান্টি হয়েছে। কেউ কেউ মনে করছেন কেন্দ্রীয় সরকার বা শাসক কংগ্রেস ইন্দিরাজীর নেতত্বে এই সমস্যাকটকিত রাজোর দায়িত্বভার গ্রহণে অনিচ্ছক ব্লেই একটি "জনপ্রিয়" সরকারের কাঁধে এই পর্বভার নাস্ত করে নিজ্প্র সংগঠন মজবৃত করার জনা আধিক সময় বিনিয়োগের জন। চিন্তা করছেন। পরিকশপনা হল এই যে, যাতে আগামী বিরোধী শক্তির সাথ'ক নিৰ্বাচনে মোকাবিলা করতে পারেন।

'সমদশাঁ'র ধারণা, শেষাক্ত পরি-কলপনা কার্যকর করার অভিপ্রায় ঠিক হলেও ইন্দিরাজী বা তাঁর শাসক কংগ্রেস রাজ্যের প্রশাসনিক দায়িত্ব এড়াতে চাইছেন না। সর্বভারতীয় রাজনাঁতির ক্ষেত্রে শাসক কংগ্রেস যে নাঁতি অন্সরণ করে আসাছেন সেই নাঁতি থেকে বিস্তুত হয়ে অনতিবিলন্দের একটি নির্বাচনের ঝ'্রিক নেওয়া সাংগঠনিক দিক থেকে যে যুক্তিযুক্ত নয় একটা তাঁরা বিলক্ষণ বোকেন।

রাজ্ঞা কংগ্রেসের সভাপতি শ্রীবিজয়সিং
নাহার ও সাধারণ সম্পাদক শ্রীতর্ণকাম্তি
ঘোষ স্পোভটভাবে ঘোষণা করেছেন যে,
বাংলা কংগ্রেস ও অভ্যাম যদি সরকার
গঠন করেন তবে তারা নিঃশতা সমর্থান
জানাবেন। ৬বে শাসক কংগ্রেস ঐ
সরকারে যোগদান করবে না। এই বন্ধবা
থেকে পরিক্ষার বোঝা যাছেছ শাসক

১৯৭० माल वाभवात एागा

বে-কোন একটি ফ্রলের নাম লিখির। আপনার ঠিকানাসহ একটি পোল্টকার্ড আমাদের কাভে পাঠান। আগামী বারমাসে



সম্ভিদ্ধ বিবৰণ—আন থাকিব দক্ষী গাছৰ পুকোপ চ্টাছে আত্মবক্ষাৰ নিৰেছিছ একবান প্ৰক্ৰীক কবিজাই কব্যিক পানিবন Pt. DEV DUTT SHASTRI Raj Jyotshi (AWC) P B. 86 IULLUNDUR CITY

"ব্যাসাস অফ কংগ্ৰেস যাকে বলে পাওয়ার" হাতে রেখে পশ্চিম বাংলার একটি বিশেষ ভূমিকা রাজনীতিতে পালনের কথা ভাবছেন। শাসক কংগ্রেস দল অন্যান্য রাজ্যে ক্ষমতা স্বহস্তে রাখবার জন্য অদ্যাব্যি যে সমশ্ত কৌশল অবলম্বন করেছেন, এই রাজ্যে সে সমস্ত সাথক বাস্তব অবস্থা র্প লাভ করবার পক্ষে অনুক্ল নয়। আদশগত দিক থেকে বাংলা কংগ্রেসকে সন্দো পেলেও কৌশলের দিক থেকে দক্ষিণপর্ন্থী কম্যানস্টদের শাসক কংগ্রেস অন্যাবধি সহযোগী হিসাবে পান নি। বিহারে দারোগা রায় মন্ত্রীসভার সমর্থক হয়েছিলেন দক্ষিণপূৰণী কম্য-নিস্টরা। কিম্তু সেটা বোধকরি এই কারণে যে সেখানে আজও তাদের শক্তি দ্বেল। রাজ্য প্রাশাসনিক যন্ত হাতে থাকলে থে কায়দা করে সংগঠন বাড়ানো যায় এই সত্য আজ অনেকেই বাঝে ফেলেছেন। বিশেষ করে বামপন্থীদের হাতে ক্ষমতা থাকলে ভ কথাই নেই। কারণ স্বাশিক্ত ক্যাডারের সাহায্যে গণ-সমর্থন আদায়ের ক্ষেত্র প্রস্তুত করে নেওয়া তাঁদের পক্ষে আদৌ কঠিন নয়। কিন্তু মার্কসবাদী ক্ম্যুনিস্টরা পশ্চিমবংশ্য প্রবল শক্তিধর হওয়ার ফলে দক্ষিণপশ্থী কম্যনিস্টদের 'বিহারী' কৌশল এখানে কাজে লাগছে না। এবং সেইজনাই দীর্ঘদিন ধরে তাঁরা প্রেবিতন যাত্তফালের প্রেরজেলীবন প্রদেন অটটে প্রভার নিয়ে রাজনীতিক বড়ে টিপছিলেন।

যা হোক বাংলা কংগ্রেসের সাধারণ সম্পাদক শ্রীস্থালি ধাড়া সি পি এম'কে বাদ দিয়ে শাসক কংগ্রেসের সমর্থনে একটি জনপ্রিয়' সরকার গঠনের প্রয়োজ-নীয়তার উপর জোর দেওয়ার পরই প্রায় সব দল, বিশেষ করে বাংলা কংগ্রেসের সহযোগী দলগুলির, মধ্যে চিত্তচাওলা ঘটেছে। কিতৃ গোপন শলাপরামর্শ চললেও ফরওয়ার্ড ব্লক এগিয়ে এসে জ্বোর দিয়ে বলেছেন যে, কোন দল বা দল-সমণ্টি সরকার গঠন করলে সেই সংখ্যালঘূ <u> পরকারকে ভার: মোটেই সমর্থান করবেন</u> না। এই "সমর্থান না করার" ঘোষণাটি কিন্তু রাজনীতির অভিধানে বিশেষ তাৎপর্যপূর্ণ। কেননা সমর্থন না করার অর্থ বিরোধিতা করান্য। এবং এই বস্তবোর মধ্যে আরও একটি "কিন্তু" রয়ে "নিরপেক্ষতা" গেছে।সেটা হচ্ছে এই, অবলম্বন করা। গুণী পাঠকরা হয়ত মনে করবেন, 'সমদশী' কথার মারপ্যাচে কোন কোন দশকে বেজায়দায় ফেন্সবার চেণ্টা করছে। হলফ করে বলতে পারি, উদেশা আদৌতানয়। বাংলা দেশে যে জটিল রাজনীতির থেলা চলছে সেথানে প্রত্যেকটি শব্দের বিশেষ প্রয়োগ সম্পর্কে সমাক ধারণা না থাকলে রাজনৈতিক সমীকরণের इपिन भाउरा भूउरे कठिन। এकपि मृच्छान्छ

দিলেই বন্ধবাটা ব্ৰুতে স্বিধা হবে। অবগত আছেন যে, আপনারা সকলেই পাৰ্লামেন্ট ভবনের সামনে সংযুক্ত সোস্যোলস্ট নেতাদের যথন নিম্মভাবে প্রিলশ মারধর করেছিল তথন সমস্ত বিরোধী পক্ষই গর্জন করে উঠেছিলেন। এবং শ্ধ্ তাই নয়, ইন্দিরা সরকারকে স্মর্থন না করার কথা বাঘা বিরোধী নেতারা বার বার ঘোষণা করে অণিনস্রাবী ব্যুতায় সভাকক্ষে যথেণ্ট উত্তাপ সূন্দি করেছিলেন। অর্থাৎ ইন্দিরাজ্ঞীকে বক্ততায় কেউ সমর্থন জানায় নি। এমনকি সরকারী কার্যকলাপের বিরোধিতাই করেছিলেন। কিন্তু কাৰ্যকালে, অৰ্থাৎ ঐ জঘনা প্ৰলিশী নিষ্যাতনের বিরুদ্ধে ষখন প্রতিবাদ জানিয়ে ভোট গ্রহণের সময় এসেছিল, তখন সেই বাঘা বাঘা বিরোধী নেতারা নীরবে পৃষ্ঠ প্রদর্শন করলেন। তাই বলছিলাম. সমর্থন না করার অর্থ সব সময় বিরোধিতা নয়। নিরপেক্ষতা বলেও রাজনৈতিক অভিধানে আর একটি অতীব গ্রেছপ্ণ শব্দ আছে। কাজেই ফরওযার্ড বুকের "সমর্থন" না করার ঘোষণার মধ্যে তাৎপর্য নিহিত থাকলে অবাক হওয়া চলবে না।

আবার ফরওয়াড ব্রকের বন্ধবোর সংখ্য দ্বিদ্ধণপূর্ণী কম্যান্সটদের বস্তবোর একটি যোগসূত্র আছে বলেই ধরে নেওয়া যেতে পারে। শ্রীসাশীল ধাড়ার বরুবাের প্রতিক্রযা কি সাংবাদিকদের এই প্রশেনর উত্তরে কায়দা করে উত্তর দিয়েছেন ডান কম্যানস্ট নেতা ডাঃ রণেন সেন। তিনি বলেছেন, "আমরা কোন হাইপোগিটিক্যাল প্রশেনর চ্চবাৰ দিতে চাই না। এ সমুহত প্ৰশ্ন তথনই বিবেচনা করা হবে যথন এগালি বাস্তব রূপ পরিগ্রহ করবে।" বন্ধু^রটে। সম্পূর্ণ রাজনৈতিক কৌশল পরি**প**ূর্ণ। আগে থেকে - একটি কঠোর মানভাব গ্রহণ করার পক্ষে ডান কম্মানস্টি নন। অবস্থা বুঝে বাবস্থা গ্রহণের পক্ষপাতী তারা। সকলেই জানেন, রাজনীতিতে সম্ভব ও অসম্ভব বলে কোন সাঠক নিদেশিনা নেই। অবস্থার হেরফের ঘটলে যে কোন প্রকারের সমঝোতা সম্ভব। আদর্শগত পার্থকা কোন বাধার স্মৃতি করে না। ভারতের রাজ-নীতিতে একথা অনেকবার প্রমাণিত হয়ে গেছে। তাই মুদিলম লীগের সংখ্য স্থা প্থাপনে আনেকেরই বিবেকদংশন হয় না। আবার ক্ষেত্রবিশেষে জনসংঘ কিশ্বা সকল বর্ণের কংগ্রেসের সংগ্রে মিতালি করতেও চিত্তে চাণ্ডলা দেখা যায় না। "End will justify the means" এর এখানেই সাথকিতা।

কাজেই দেখা যাচ্ছে প্রীস্পীল ধাড়ার
প্রস্তাব এখনো মাঠে মারা যায় নি। প্রায়
সমস্ত বড় দলগুলির মধ্যে এই প্রশন
এখনও নানাভাবে প্রতিক্রিয়র সৃষ্টি করে
চলেছে। 'সমদশাঁ' আগেও এই সম্পর্কে
বস্তব্য রেখে জানিয়েছে যে, বাম কম্মানিস্ট
ও তাদের সহবাচী দলগুলি ছাড়া আর
সমস্ত গাটিগালির মধ্যে সাধারণভাবে

একটি বিষয়ে সম্পূর্ণ ঐকামত আছে। সেটা হচ্ছে একটি সরকার গঠন করে বাম ক্ষ্যুনিন্টদের মতো কৌশল অবলম্বন ক'রে তাদের সংগঠনগর্নিকে তছনছ করে দেওয়া। মা হলে যে দলের অভিতম রাখা অসম্ভব হয়ে উঠবে একথা অন্যৱা সকলেই বিলক্ষণ বোঝেন। রাজ্যপালের শাসন বজায় থাকলে বাম কম্যানিস্টদের সংগঠনের উপর রাজনৈতিক আঘাত হানা কঠিন, এটা রাজনীতির একজন সাধারণ ছাতও লানে। অন্যদিকে ইন্দিরাজীর শাসক কংগ্রেসও নিশ্চিক্ত যে, রাজাপালের শাসন ণীর্ঘারিত করলে সমসত বামপ**ন্**থী দল-গ্রালর মধ্যে ঐক্য প্রনঃপ্রতিষ্ঠা হওয়ার সম্ভাবনা দেখা দেবে। কার্যত, ইতিমধ্যে তা ঘটেও গেছে। শাসক কংগ্রেস একথা বুঝে বিরোধী শিবিরে ফাটল না ধরাতে পারলে তাদের রাজনৈতিক ভবিষাৎ একেবারে অধ্যকার। তাই রাণ্ট্রপতির শাসনকাল বাড়িয়ে বিরোধীদের মধ্যে বোঝাপড়ার একটি ভিত্তিভূমি পাকা করে দেওয়ার খ্যাপারে তারা মোটেই অগ্রণী হতে পারেন না। সরকারী কর্মচারীদের লড়াইকে কেন্দ্র করেই বামপন্দবীরা পরোক্ষ-ভাবে একটি ইউনিট গড়ে তুলেছেন। সকলেই জ্বানেন বহরমপ্রের ঘটনাকে কেন্দ্র करत अतकाती कर्माठातीएत मरधा प्रवासीय চরমে উঠেছে। কিশ্তু তা সত্ত্বেও প্রতীক **धर्माधरेक प्रकल वामलिखी मलहे प्रमर्थ**न করেছেন। এবং শৃধ্যু এই নয়, রাজ্যপালের হমেকর যথায়থ উত্তরও তারা দিয়েতহন। ব্যবোর্ফোস বামপন্থীদের একচিত হওয়ার সূ্যোগ করে দিয়েছে। যদি রাজ্যপালের প্রামশ্দাতারা ধর্মঘট বে-আইনী হবে বা ধর্মাঘটীদের বিরুদেধ শাদিতমূলক ব্যবস্থা নেওয়া হবে ইত্যাদি হুমুকি না দিতেন তবে সমদশীরি মনে হয় ঝড় বয়ে যেত বটে, কিল্ফু কেউ তা টের পেত না। ভাছাড়া সরকারী তরফ থেকে বাধা না এলে বামপশ্বীরাও নিজেদের মধ্যে রাজ-নীতির প্যাঁচ থেলে যেতেন। অবশ্য ব্রোক্রেসির দোষ দিয়েও লাভ নেই। এরকম করাটাই তাদের ধর্মা। তারা ত আর রাজনৈতিক নেতাদের মত সিম্ধানত নিতে পারেন না। আইনের চৌহন্দির মধ্যেই তাঁদের আনাগোনা করতে হয়। যা হোক, এই ঘটনার পরিপ্রেক্ষিতে শাসক **কংগ্রেসের শ**িকত্ত হওয়ার যথেণ্ট কারণ আছে। এভাবে চলতে থাকলে আথেরে শাসক কংগ্রেস যে আবার বিচ্ছিন্ন হয়ে পড়বে সেকথা ভারাজানেন। এই পট-ভূমিকার পরিপ্রেক্ষিতেই শ্রীনাহার বাংলা কংগ্রে*সে*র ''গণতান্দ্রিক ফ্রন্ট'' গঠনের প্রচেণ্টাকে অভিনশন জানিয়েছেন। যাদ সরকার নাও করা যায় তব্বরকম ফ্রন্ট গঠিত হলে বিপদের আশুকা অনেক কম ইন্দিরাজী পশ্চিমবণেগর হবে। কাজেই দায়িত্ব এড়াতে চাইছেন একথা ঠিক নয়। ধরণ্ড আরও শন্ত হাতে রাজ্য তরণীর হাল ধরতে চাইছেন্ 👔

বাংলা কংগ্ৰেস "গণতান্ত্রিক ফ্রন্টের" कथा बंजरे स्माकाद्ध खांचना कद्दन ना कन, পশ্চিম বাংলার রাজনৈত্তিক পরিম্পিতিতে বাংলা কংগ্ৰেস সেই ফুন্টে শাসক কংগ্ৰেস আর নিদেনপক্ষে আদি কংগ্রেসও গাখা লীগ ছাড়া অন্য কোন দলকে পাবাৰ আশা করতে পারেন না। কেননা অন্য দল এ হেন জোটের কথা ভাবতেও পারবেন না। যদি ভাবতে পারতেন, তবে "জনপ্রিয়" সরকার গঠনের পথ আজই স্বাম হয়ে যেত। অনেকে হয়ত বলবেন, বাম কম্ম-নিম্টদের বাদ দেওয়ার কথা ত এস এস পি ও বিদ্রোহী পি এস পি-ও জোরের সংগ্র **বলছেন। কিম্তু সংগ্যে সংগ্যে দেখতে হ**বে, এস এস পি'র সর্বভারতীয় নেতৃত্ব শাসক কংগ্রেসকেও সমদ্ভিতৈ দেখছেন। আবার এ'দের রাজ্যশাথাগর্তি শাসক কংগ্রেসের প্রতাক্ষ ও পরোক্ষ সমর্থনে সরকার গঠনের বিরোধিতাও করেছেন। অতএব দেখা বাচ্ছে "গণতান্ত্রিক ফ্রন্টের" দেলাগানে যদি এটা একটি কৌশল মান্তই না হয়ে থাকে— ভবিষ্যৎ সহযোগী কোন ধামপন্থী দল হবে **বলে** মনে হয় না।

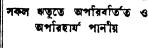
পরিক্লার বোঝা যাচ্ছে, একটি সরকার
গঠন যে প্রয়োজন একথা যাম-কম্মানন্ট
বিরোধী শক্তিগ্লি ব্রুখতে পারছেন। অথচ,
কি কৌশলে তা করা যায় এবং তাতে
বামপণথী নামের উপর কলক্কও আরোপিত
হবে না, সেই প্রশ্নই সকলকে ভাবিত করে
তুলেছে। আর র্যাদ সে চেন্টা সাথাক না
হয় তবে জোট বাঁধার বাাপারে সহযোগী
কাকে করা যাবে সেই বিষয়েও দলগুলি
ভীষণ চিম্তান্বিত হয়ে পড়েছে।

শাসক কংগ্রেস দলের একজন নেতা বলেছেন, দ্ব'একটা টাইম-বাউন্ড প্রোগ্রাম নিয়ে তা কার্যকর করে ফেলতে পারলে "কেয়ার টেকার" গভর্ণমেন্টের তত্ত্বাবধানে নিৰ্বাচনে নামলে ফল খারাপ হবে না। ফরওয়ার্ড ব্লকের নেতারা নাকি তাতে ভরসা পাচ্ছেন না। অন্যাদকে ডান ক্যানিস্ট্রাও আজ অর্বাধ ভিন্ননীতি অবলম্বন করায় এই রাজ্যের রাজনৈতিক চিত্রটা স্পর্যট হয়ে উঠতে পা**রছে** না। 'সমদশী' বলবে, পেটে ক্ষিধা মুখে লাজ রেথে কোন লাভ নেই। এটা নিঃসন্দেহ যে বাম কম্যানিস্টরাই এই রাজ্যে সকল দলের একক মোকাবিলা করার জনা প্রস্তুত হচ্ছেন। ভাই আঁরা আগেভাবে ইস্; স্থি করে নিজের হাতে নেতৃত্ব রেখে অন্যান্য দলগর্নিকে অন্সরণ করতে বাধ্য করছেন। ছারা যদি দীঘদিন এই কোশল চালাতে পারেন 'সমদশী' মনে করে অন্য দলকে 'তাহলে এ ম্রেত্কে বিলক্ষণ, বিপদে পড়তে হবে।

কিন্তু একটা প্রদান এই প্রসঞ্জে ভূললে চলবে না। সেটা হচ্ছে আজ পর্যন্ত সরকার গঠনের প্রদান বেশী মাথা ঘামাছেন বাংলা কংগ্রেস, ফরওয়ার্ডা ব্লক ও ডান ক্ষম্যানিট পাটি ৷ শাসক কংগ্রেস ত আছেনই। কিন্তু অভ বামের প্রেডি ঐ দুই অংশীদার ছাড়া অনার। যেন কাব্যে উপেক্ষিতা হয়ে আছেন। ভারটা দেখে মনে হয় যেন। অনারা এই 'বড় ভাইদের' কথায় উঠবেন, বসবেন। কিন্তু অবন্ধা মোটেই তা নয়। অনা সব বাঠ-বিড়ালী বাদ বিগজে বায় তবে সেতু বন্ধন অত সোজা হবে না। পশ্চিম বাংলার রাজনীতিতে এ ঘটনা অনেক বারই ঘটেছে।

যে রাজনৈতিক টানা-পোডেন চলাই ভাতে সরকার মোটেই গঠিত হবে কিনা জানি না। তবে কেউ যদি মাইনরিটি সরকার করেও বসেন তা যে চলবে একথা খানিকটা জোর দিয়েই বলা যায়। কারণ. তখন ইস্যাভিত্তিক সমর্থানের কথাই ডবল ছয়ে উঠবে। ধর্ন যদি বাংলা কংগ্রেপই সরকার করলেন এবং তাঁরা যদি কেনে প্রগতিশীল বা প্রতিন যুক্তফুটের ২২ দফার কয়েক দফা কার্যকর করার জন। বাবস্থা অবলম্বন করেন তখন যাবা বর্তমানে সমর্থন করবেন বলে অস্বীকার করছেন তাঁরা কি ভূমিকা অবলম্ধন করবেন? ইস্না-ভিত্তিক সমর্থানে সরকার অশ্ভত কিছুদিনও যে টিকে যেতে পারবে না, রাজনৈতিক হালচাল দেখে म कथा वला याग्न ता। याद्याक, ध्वरे ताक-নৈতিক দাবা খেলায় কে কি চাল দিক্তেন তা এখনও স্পন্ট নয়। তবে এটা বোঝা যাচেছ ১৯৬৭ সালের প্রোক্থা স্থির: প্রয়াস কম নয়। বাংলা কংগ্রেস ও দুই কংগ্রেস 'গণতান্তিক ফ্রন্টে' সল্লিবেশিত হাল আরও যদি দ্ব' একটা দল তৌদের সহযোগী হন তবে দিবধা-বিভক্ত বামপদ্ধী মোচ্য কিছ্সংখ্যক বেশী আসন গোলেও সরকার গঠন করতে পার্বেন কিনা সে সম্পর্কে সন্দেহ আছে। রাজনীতির गुग:१म्रो तमहे जाङीको भथ लक्का करतहे চালানো হচ্ছে।

-- नवमणी



DI

কেনৰার সময় 'অলকানন্দার' এই সব বিভয় কেন্দ্রে আস্বেন

वनकावना ि शिष्र

৭, শোলক খীট বলিবাতা-১ *
১, লালবাজার খীট বলিবাতা-১
১৬ চিত্তরঞ্জন এতিনিউ বলিবাতা-১২

॥ পাইকারী ও খ্চরা ক্রেতাদের অম্যতম বিশ্বস্ত প্রতিষ্ঠান॥

ाल विजल

পানাকী ও পাটনা, পখনো ওচন্ডীগড়, সর্বান্ন একই খবর। মাল্যসভা যায় যায়। আশু কারণ এক-এক জায়গায় এক এক রক্ষা। কোথাও সরকারী দলের মধ্যে আথকলহ কোথাও কোয়োলিশনের শবিক দলগ্লির পরস্পরের মধ্যে বিরোধ। দল ভাঙাছ, ন্তন জোট গড়ে উঠছে অথবা গড়ে তোলার চেণ্টা চলছে। পালামেন্টারি রাজনীতি এভাবে যোগ-বিয়োগের খেলায়

পাটনা ও লখনোতে যা ঘটছে তার
সংগ্রুপ প্রভাক্ষভাবে জড়িত রয়েছে "নয়।"
কংগ্রুপ দল। দু জাংগায়ই তারা প্রধান দল
এবং ক্ষমতার ভাগীদার। উদ্দিশ্ন প্রধান
মন্ট্রী শ্রীমতী ইন্দিরা গান্ধ্যী নিজে ঐ দুই
রাজধানীতে ঘুরে এসেছেন। কিন্তু তাতে
মন্ত্রিসভার বিপদ কমেছে অথবা অনাভাবে
অবন্ধার ইত্রবিশেষ হয়েছে বলে মনে
হয় না।

বিস্থারে শ্রীদারোগাপ্রসাদ রায়ের মার্ট্য-সভা পনেরো দিনের কম সময়ের মধ্যে বিধান সভাম দুটি চ্যালেজের সম্মুখীন হয়েছেন। প্রথমবার ১৭০-১০২ ভোটে জয়ী হয়ে শ্রীরায় তাঁর সবকারের সপক্ষেনিঃসংশ্য সংখ্যাগরিষ্ঠতার প্রমাণ দিতে সমর্থ হয়ে-ছিলেন। কিল্ডু দিবতীয়্বারের ভিভিসনে এই সংখ্যাগরিষ্ঠতা ৬৮ থেকে কমে মান্ত্র আটে এসে দাভিকেছে।

ইতিমধ্যে এমন কিছু কিছু ঘটনা গ্রাণ্টছে যেগ্রাল শ্রীরায়ের মন্তিসভার অফিতত্বে পক্ষে বিপঞ্জনক।সংযুক্ত সমাজ-ভদ্রী দল, 'প্রোনো' কংগ্রেস, জনসংঘ, ও >বতন্ত দল এর আগেই সংযুক্ত বিধায়ক দল গঠন করে শ্রীরায়ের মন্শ্রিসভাকে উচ্ছেদ করার সঞ্চলপ গ্রহণ করেছে। তার উপর আবার গত ২৩ জ্বন বিহার বিধানসভায় যে আকৃষ্মিক ডিভিসন ডাকা হল তাতে ক্ষমতাসীন জোটের অন্যতম শরিক ভারতীয় ক্ষ্য্যানিষ্ট পার্টিও সরকারের বিরুদ্ধে ভোট দিল। শ্বিতীয়ত, প্রজা-স্মাজতশ্রী দলের অস্ত্রবি'রোধের বিহার শাখায় শ্রীস্ব্যনারায়ণ সিংহের নেত্তে সাতজন fপ-এস-পি, এম-এল-এ আলাদা গোষ্ঠ**ী** তৈরী করেছেন এবং অন্মান করা হচ্ছে যে. দারোগাপ্রসাদ মন্দ্রিসভার উচ্ছেদ ঘটাবার ব্রত উদ্যাপনে সংযুক্ত বিধায়ক দল এই দলছাট পি-এস-পি গোষ্ঠীর মদং পাবে।

জনসংঘ নেতা শ্রীঅট্রাবিহারী বাজ-পেনী সম্প্রতি চন্ডীগড়ে বলেছেন যে, দেশে স্থায়ী সরকার গঠনের উদ্দেশ্যে তাঁর দূল অন্যান্য 'জাতীয়তাবাদী গণতান্ত্রিক' দল-গ্রালর সংগ্য জোট বাঁধতে উৎসত্ক। 'জাতীয়তাবাদী গণতানিক' দল বলতে তিনি কাদের বোঝাচ্ছেন তাও তিনি খুলে বলেছেন। তাঁর বিবৃতি থেকে এটা পরিষ্কার যে, আগামী নির্বাচনের পরিপ্রেক্ষিতে "পুরোনো" কংগ্রেস, জনসংঘ ও স্বতন্ত পার্টির আঁতাত গড়ে তোলার পরিকল্পনায় তাঁর দল উৎসাহী। সম্ভব হলে এস-এস-পি পি-এস-পি প্রভৃতি দলকে সন্থ্যে রাখতে তাঁদের ইচ্ছা। তাঁদের এই ভবিষ্যৎ পরি-কল্পনা বিহারের সংযুক্ত বিধায়ক দলের মধ্যে বীজের আকারে দেখা দিচ্ছে। এই বীজ যদি অংক্রিত হয় তাহলে সেটা হবে "প্রানো" জনসঙ্ঘ-স্বতুদ্র কংগ্রেস, আবৈতের প্রথম প্রীকা।

প্রকৃতপক্ষে, একটি মাত্র ঘটনা এখন পর্যনত শ্রীদারোগাপ্রসাদ রায়ের মন্তিসভাকে ক্ষমতার আসনে টি[্]করে রেখেছে। সেটি হল এই যে, সংঘ্র বিধায়ক দলের নেত। ্অথাৎ শ্রীরায়ের পর ন্তন মুখামন্ত্রী) কে হবেন সে বিষয়ে সংযুক্ত সমাজতশুনী দলের ভিতরে এবং সংযাত বিধায়ক দলের শরিক দলগালির মধ্যে মতৈকা হচ্ছে না। সংযক্ত বিধায়ক দলের নেতা হিসাবে শ্রীরামানন্দ তেওয়ারি এস-এস-পি দ'লর একাংশের নিকট গ্রহণযোগ্য নম। গত ১৩ জানুয়ারী বিধান সভায় ভোট গ্রহণের সময় এস-এস-পি দলের মাত্র অর্থেক সদস্য সরকারী প্রস্তাবের বিরুদেধ ভোট দেন, ব্যকী অধেকি কোনদিকেই ভোট ন্দিয়ে তাদৈর মত-বিরোধ প্রকাশ করেন। যাঁরা ভোট দেননি, তাঁদের মধে দলের হাইপও ছিলেন। যাঁরা সংযাস্ত বিরোধা দলের নেতা হিসাবে শ্রীরামানন্দ তেওয়ারির বিরোধিত। করছেন তাদের বস্তব্য হল, সংযাস বিধায়ক দলের নেতত্ব দেওয়া উচিত কোন হবিজন, উপজাতীয় অথবা মুসলমান সদসাকে, তেওয়ারজী কোনটিই নন তিনি একজন রাহ্মণ সম্ভান। পরবতী সংবাদ হল, সংযাত সোস্যালিষ্ট পাটির সর্বভারতীয় স্যার্মান শ্রীকপরিী ঠাকুর খুদি সংঘ্রু বিধায়ক দলের নৈত্য গ্রহণ করেন তাখলে রামানন্দ তেওয়ারিজী সরে দাঁড়াবেন। কিম্ত সংযার বিধায়ক দলের অনাতম শরিক জনসংঘ শ্রীকপারী ঠাকরকে গ্রহণ করতে রাজী নয়। জনসংঘ পাল্টা প্রস্তাব দিয়েছে যে, প্রান্তন ম:খামন্ত্রী ও লোকতান্ত্রিক কংশ্রস দলের প্রান্তন নেতা গ্রীভোলা পাসোয়ান শাস্ত্রীকে সংযার বিধায়ক দলের নেতৃত্ব দেওয়া হোক। সর্কার-বিরোধীরা যদি একজন সর্সম্মত

নেতার নাম শিথর করে ফেলতে পারেন, তাহলেই শ্রীদারোগাপ্রসাদ রারের মন্দ্রসভার প্রমান্থ ফ্রোবে। কেননা এখন যারা এই মন্দ্রসভাকে সমর্থন করছেন তাদের মধ্য এমন কিছু সদস্য আছেন যারা অন্ক্র স্লোতে নৌকা ভাসানর অপেক্ষার ররেছেন।

উত্তর প্রদেশে শ্রীচরণ সিংহের মন্তি-সভার সামনে বিপদটা বিহারের মত তড়টা আসম না হলেও সেখানকার রাজনৈতিক পরিস্থিতি দস্তুরমত জটিল। ঐ রাজ্যের কোয়ালিশন সরকারের বড় শরিক "নয়া" কংগ্রেস নলের সঙেগ ছোট শরিক ভারতীয় ক্রান্তি দলের সংযাত্তির প্রশন্টির চ্ডোন্ত মীমাংসায় যত দেরী হচ্ছে দুই শরিকে**র** সম্পর্ক ততই খারাপ হচ্ছে। প্রধানমন্ত্রী শ্রীমতী গান্ধী সম্প্রতি লখ্নো-এ গিয়ে ডার দলের প্রায় তিনশর কমীরি সংখ্যে এক বৈঠকে মিলিত হয়েছিলেন: সেখানে তার দলের কমীরা নাকি প্রধানমন্তীর কাছে ব'লেছেন যে, সরকারী ক্ষমতার সুযোগ নিমে ভারতীয় ক্রান্তি দল কংগ্রেসকে "গ্রাস" করে ফেলছে; "নয়া" কংগ্রেস দলভুক্ত মন্ত্রীরা অন্য শরিকের দলভ্ত মন্ত্রীদের তলনায় পিছনের সারির সদস্য হওয়ায় তাঁরা কোন প্রভাব রাখতে পারছেন না। এই কংগ্রেস কমীরা মনে করেন যে, দল বাঁচাবার জন্য "নহা" কংগ্রেসের সংগ্র ভারতীয় ক্রাণ্ডি দলেব সংঘ্রাক্ত প্রয়েজন। লখ্নোতে প্রধানমূলী শ্রীমতী গান্ধীব স্পা ম্থামন্দ্রী <u>শ্রী সং</u>শ্চন একঘনটা ব্যাপনী কথাবাতোর সময় পুধান্যক্ষী নিশ্চয়ই মাখা-মুকুটকে সেখানকার কংগ্রেস ক্ষাঁদির এই মনোভাবের কথা তাঁকে জানিয়েছেন।

এই সংযান্তির প্রস্তাবে যে শীচরণ সিং
অনিচ্ছাক তা নন। কিল যদি তিনি
ভারতীয় ক্রম্ভি দলের ভারতীয় চেয়ারমান তা ইলেও দলাক দিয়ে এই প্রস্তাব
মঞ্জার করিয়ে নেওয়া তাঁর পক্ষে সহজ
হচ্ছে না। ইলিমধ্যে দলের সাধারণ
সম্পাদক শীপুকাশবীর শাস্নী ও সম্পাদক
শ্রীএস কে সিং প্রকাশে সংযান্তির প্রস্তাবের
বির্ণেধ প্রচার করছেন। শ্রীএস কে সিং
বলেভেন যে, উত্তর প্রদেশের বায়কজন
ছাড়া দলের আর কেউ এই সংযান্তি চান
না : কেননা কংগ্রেসের বিকল্প হিসাবেই
এই দল গঠিত হংর্ছিল।

সংযান্তির বিরুদ্ধে প্রচার করার জ্বনা উরুর প্রদেশে ভারতীয় রুদিত দলের ভিত্তর থেকে শীএস কে সিংকে শাহ্নিত দেওয়ার দারী উঠেছে। শীচুকণ সিং কলেভ্না থে, কাষক মাস আগে শীএস কে সিংকে দলেব স্থানাক্রর পদ আড়াতে কলা ভার্মিতল দিনি কেই নির্দাশ ভ্যানা করাম কোঁব কাজ থেকে সম্পাদকের দায়িত্ব কেন্ডে নেওয়া হারাভ।

আর একটি খবর এই যে মহারাণ্ট, বিহার ও রাজস্পানে ভাবতীয় রাণিত দল ইতিমধ্যে সংয**ি প্রসা**বের বিরোধিতা করেছে। বিহারে "নরা" কংগ্রেসের নেতৃত্বে গঠিত যদিসভাকে সমর্থন করার প্রশ্নে লাক্ডাদিক কংগ্রেস দল ভেঙে গেছে। উত্তর প্রদেশে 'নরা' কংগ্রেস দলের সপ্রে সংযুদ্ধির প্রশেন ভারতীয় ক্রান্তি ফল ভাঙার উপক্রম হয়েছে। হয় সংযুদ্ধি ও পারণামে ভাঙন অথবা প্রক্ অভিতত্ব পরিণামে 'নরা' কংগ্রেস দলের সদস্যদের কোয়ালিশন ছেড়ে যাওরার সম্ভাবনা—এই উভয় সঞ্জন্টের মধ্যে এসে দাঁড়িয়েছেন মুখ্যমন্ত্রী প্রীচরণ সিংহ।

ইতিমধ্যে উত্তর প্রদেশের তথ্যসন্ত্রী শ্রীগেন্দা সিং পদত্যাগপর **পেশ** করেছেন। পদত্যাগপতে তিনি কোন কারণ দেখান নি। প্রথমে জানা গিয়েছিল. দিল্লীর একটি সংবাদপত উত্তর প্রদেশ সরকারের সমা-লোচনা করায় উত্তর প্রদেশ সরকার পত্রিকায় বিজ্ঞাপন বংধ করে দিয়েছেন, তারই প্রতিবাদে শ্রীগেন্দা সিংহের भएउग्राग। भारत तना 🛮 हाराष्ट्र ह्या. 'ব্যক্তিগত কারণে' পদত্যাগ कातन शाहेरहाक ना रकन, अर्थाटक्ककरनव বিশ্বাস, তার পদতাাগ কংগ্রেসের সংক্র বি-কে-ডি-র সংয্তির প্রস্তাবের সংগ্র সম্পক শানা নয়।

পাঞ্জাবের মুখামনত্রী শ্রীপ্রকাশ বাদল তার মন্ত্রিসভা রক্ষা করার বলতে গেলে দেওয়ালে পিঠ দিয়ে লড়ছেন। ২৯ জন সদস্যের মণ্ডিমন্ডলী গঠন করেও তিনি তাঁর মন্তিত্ব-কামী সদস্যদের সকলকে খুশী করতে পারেন নি। যাদের মন্ত্রী করা গেল না তাঁদের এখন অন্য বেডনভুকা পদ দিয়ে সর্ভুণ্ট রাখার পথ গ্রহণ করা **হচ্ছে।** এই উদ্দেশ্যে রাজ্যপালের কাছে একটি অভিনাম্স জারীর প্রস্তাব পাঠান হয়েছে যাতে এম-এল-এ'দের বেতনভুক সরকারী পদ গ্রহণের বাধা দূর করা যায়। বিরোধী দলগ**ুলি এই প্রস্তাবে তো তুম্বল** বা**ধা** দিকেই স্বয়ং রাজাপাল ডাঃ পাভাতেরে য়ে এই ধরনের একটা অভিনান্সের ন্যাযাতা সম্প্রে সংশয় আছে সেটা প্রকাশ পেয়েছে। রাজ্যপাল নাকি নয়াদিল্লীর কাছে জানতে চেয়েছেন, অডিনোম্স জারী সম্পরের মন্দ্রি-সভার মতামত জানতে তিনি বাধা কিনা, অথবা এ বিষয়ে তাঁর নিজস্ব বিচারবুদ্ধি প্রয়োগ করার অধিকার আছে।

কিক্তু শুধ্ দলের ভিতরেই অসক্তোষ
নর, কোয়ালিশনের দৃই শরিকের মধ্যেও
মন-ক্ষাকষি দেখা দিয়েছে। অমৃতসর,
গ্র্দাসপুর, জলখর ও কপ্রেতলা জেলার মোট ৪৬টি কলেজকে অমৃতসরের
গ্র্নানক বিশ্ববিদ্যালয়ের অকতভুত্তি
করার একটি প্রস্তাব হয়েছে। এই প্রস্তাব জনসংখর তীর আপত্তি। জনসংখ এই
বলে হুমকি দিছে যে, এই প্রস্তাব কার্যকর
করা হলে জনসংখ অকালী দলের সঙ্গো

এদিকে ভতপবে মুখামলী দ্বীগারনাম সিং রাজ্যপালের কাছে অবিলম্দে বিধান-সভার অধিবেশন আহ্বানের দাবী জানিরে ৭ সক্তাহে ৩য় মন্ত্রণ

এপার বাংলা ওপার বাংলা ১০·০০ চৌরঙ্গী মানচিত্র সাথকি জনম

२२ण महल ३२.६०

১४म म्स्य ७·००

8र्थ म्हल **७**-६०

নারারণ গণ্গোপাধ্যারের নতুন উপন্যাস

আলোকপর্ণা ১০-০০

কলকাতার ছেংল বিকাশ মজ্মদার চেয়েছিল বাংলা দেশের রূপ দেখতে। বেখানে সে এল, তানা শহর না গ্রাম। সেখানে মৃত সমাটের কংকাল নিয়ে শশাংক নিয়োগী আর নতুন ভাষ্ঠীর প্রতিভূ কানাই পাল। শগ্তা, বিশেষ আবে নীচতার কালো অংশকারে সব শ্বংন—সব মোহ চ্বাহাল বিকাশের।

আর বিকাশের জাবনে দুই নারী। একদিকে তিলে তি ল হারিয়ে বাচ্ছে মণার।ঃ
সেখানে বেদনার সমান্ত মন্থন। অনাদিকে সব অন্ধবার—সব শ্নাতার মধ্যেও
সূর্যমূখার মাতা পাপড়ি মেলছে আলোকপণা স্বেণা। এই দেশ কাল, এই
জাবনেরই মহাকাব্যস্তাত বিকাশ খটেছে আলোকপণার।

ধারাবাহিকভাবে প্রকাশিত হওয়ার সময় অগনিত পাঠক-পাঠিকার উদ্ধৃত্তিত অভিনন্দনে স্বীকৃত এই উপন্যাস আধ্নিক বাংলা সাহিত্যে এক জননা সংকোলন।

বিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যমের নতুন উপন্যাস

তাঞ্জাম ৪.৫০

"বাংলা, বিশেষ ক'ব পশ্চিম বাংলার পালী অন্তলের সেকালের একটি বিশেষ দিকের ছবি বড় স্কুলরভাবেই ফুটে উঠেছে আলোচ। উপনাসের মাধামে। লেখক মূলত কোতৃক রসের প্রফা কিন্তু সে কোতৃকও উপদ্যাহীন নয়। বাঙালারি জাতীয় বিশিক্ষার নানার্প নানা বৈচিয়াক ফুটিয়ে ভোলাতেই তার সাথকিতা। সিন্ধতা ও সর্লভার এমন অপ্র সমাবেশ খ্র কম্ই দেখা যায়।"

—মাসিক বস্মতী

ওৎকার গ্রেশ্তর নতুন বাংগরচনা

ব্যাপার বহুতর

"...আজকাল দ.নীতির ও অসাধ্তার যে তেউ এসে লেগেছে সমা কর সব শতবে তার শবর্প খ্লে দেখিয়ে ছন লেখক নিম'মভাবেই কিন্তু সে উম্বাটন নিম'ম হলেও নিষ্ঠার নয়। কারণ অন্তরালে রয়েছে লেখকের সরল প্রাণাজ্বলতা, বার ফ জ রগণ করার উল্পেশটোই বড় হ য় দেখা দেয়। সরস সাহিত্রের ক্ষেত্রে আলোচা প্রশ্বটি নিঃসন্দেহে এক উল্লেখ্য সংযোজন।" —য়াসিক বস্মুমতী দাম : ৫-০০

सराच्या २ जारच वर्षे

দ্বীকৃতি ৫০০০

बनक तन्त्र

আশ্তোৰ মুখোপাধ্যার

অধিকলাল

नज्न ज्रामन होन

২য় মৃদুৰ ৪∙৫০

তর মন্ত্রণ । নবরাগ নামে চিত্রে রুপারিত হচ্ছে।

বিহাল হিছের

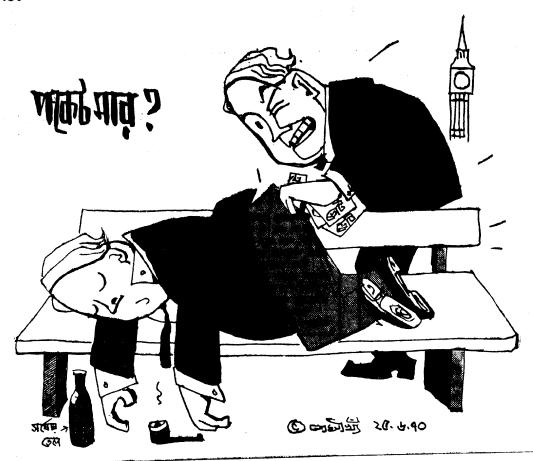
এর নাম সংসার স্ত্রী গলপসম্ভার

64 N.B4 F.GO

64 A.M. 8-60

শাম ১৬-০০

বাক-সাহিত্য প্রাইডেট লিমিটেড ৩৩, কলেভ রো, কলকভা-১



বলেছেন যে, বাদল মিলিসভা ইতিমধাে সংখ্যালঘ্ হয়ে পড়েছেন, তাদের আর টিকে থাকার অধিকার নেই।

গোয়ায় যে ক্ষমতার লড়াই চলছে তার সংগ্য কোন সর্বভারতীয় দল জড়িত নেই। ক্ষমতাসীন মহারাজ্বাদী গোমন্ডক দলের সাতজন সদস্য শ্রীদেয়ানন্দ বান্দোড়করের মন্তিস্থা থেকে সমর্থন প্রত্যাহার করে নেওয়ায় বিধানসভায় এই সরকার এথন সংখ্যালঘ্রহায়ে পড়েছেন।

প্রীবাদেশাড়করের মন্তিসভা বন্ধতে অবশা এখন তিনি একাই অবশিষ্ট রইলেন। কেনমা, আর দ্খন মন্ট্রী, আান্ট্রনি ভে ডি স্কা ও গোপালরাও মায়েকার, বিদ্রোহীদের সংগ্রা নাম শিখিকে মন্ত্রিসভা থেকে ইস্টকা দিরেছেন।

ডাঃ স্কর্ণ চেয়েছিলেন আজীবন তিনি
ইলেনানেশিয়ার রাজ্পতি হয়ে থাক্রেম।
তার সেই সাধ প্রত্থিত হয়ে না। কেমনা বছর স্কুরেক ধাবং তিনি তার মিজের বাড়ীতে প্রকৃতপক্ষে বল্দীর জীবন কাটাছিলেন। কিল্ড ধাবা তাঁকে ক্ষমতাহাত করেছেন তাঁরা তাঁর মাড়ার পর একটি সাধ পূর্ণ করেছেন। তাঁর জন্মন্দানে ছাত্রের স্মাধির পাশে একটি সাদাসিধা সমাধিতে ভাঃ স্কণকৈ শামিত করে অলপ কথার তীর এই পরিচয় লিখে রাখা হয়েছে ১— 'ইলেদানেশিয়ার জনগণের ম্থপাত বং কার্ণোকে এখানে সমাধিতথ করে রাখা হয়েছে।'

বেণচে থাকতেই ডাঃ স্ফের্গ তাঁর এই স্মাধ্যম্পল নির্বাচিত করে গিয়েছিলেন এবং এই প্রিচ্যালিপি লিখে রেখে গিয়েছেম।

৬৯ বছর বয়দে ভাঃ স্কণেরি মৃত্য বিশ্ব রাজনীতির মণ্ড থেকে একটি বশাচা সরিয়ে নিয়ে গেল। জাভার ও বালীদ্বীপ-বাসির িশ**ক্ষ**ক সম্তান স্কর্ণ বালাকাল থেকে রাজনীতির িনজেকে অনেক বিতকের **সং**শ্য জড়িয়ে করেছেন। নায়কে পরিণ্ড সাম্রাজ্যবাদের সংগ্র লড়াই করতে গিয়ে **म्थलमात्राम**त **अ**(७५) জাপানী **সহ**যোগিতা করেছেন, একই সঙ্গে কম্মানিল্ট, মুসলিম ধমীয়ি সংগঠন মাসজনুমি পাটি ও সেনাবাহিদীর সংখ্য ছাত মিলিয়ে এক^{টির} বির্দেধ আর একটি শক্তিকে চালিত করেছেন। বহুবিস্তৃত হালার হাজার দ্বীপ-মালাকে একটি দেশের মধ্যে গ্রথিত করে তিনি দেশবাসীর 'বং কার্ণো' (ইন্সো-নেশিয়ার ভাষায় 'ব্ং' শব্দের অর্থ ছচ্ছে ভাই) সম্ভাষণ লাভ করেছেন, আবার ক্ষমতার মদিবায় মত হয়ে তিনি তাঁর দেশকে প্রতিবেশীর সংশো বিশদক্জমক সংঘরেষি কিনারায় নিয়ে গৈছেন। ১৯৬৫ সালে ইখন সেনাবাহিনী ক্যুর্নিস্ট 🐣 ্থাম দুয়ন করল তথন থেকেই স্কলে । নতনের শ্রে। তাঁর বির,দেধ অভিযোগ, কম্যুনিস্টরা জোর করে রাণ্ট্রক্ষমত; দখলের যড়যন্ত্র করেছিলেন এবং স্কুণ নিজে সেই ষ্ড্যন্তের শরিক ছিলেন। শেষ পর্যতে ১৯৬৮ সালের মার্চ মাসে জেনারেল স্হাতে1ি তাঁকে সরিছে নিজে প্রেসিডে**ণ্টের পদ গ্রহণ করলেম। সেই** থেকে ডাঃ স্করণ মিভ্ত জীবনযাপন কর-ছিলেন। শেষ জীবলে এমনকি তাঁর চতুর্থ ও প্রিমতমা পত্নী জাপানী কন্যা শ্রীমহী রভাসরি দেবীও তাঁকে ছেড়ে গিয়েছিলেন।

তার সেই পতাী অবশা জাকাতার মিলিটারি হাসপাতালে তাঁর মৃত্যুশব্য-পাশ্বে এসে উপস্থিত হয়েছিলেন। সম্পে এমেছিলেন তিম বছরের বর্ষসের মেধ কাতিকা'কে যে জন্মাবাধ নিজের বিখ্যাত পিতার মুখ দেখোন।

—প্ৰেম্ব

26-6-90



শ্বাগত মহারাজ

গত সংতাহে পূর্ব পাকিস্তান থেকে অবিভন্ত ভারতের মুন্তিযোখা শ্রীটেলোক্য চক্রবর্তী (মহারাজ) কিছুদিনের জন্য কলকাতার এসেছেন। পশ্চিম বাংলার তাঁর আত্মীয়স্বজন আছেন। সে কারণে স্বাভাবিকভাবেই এদেশে আসবার ইছ্যা তাঁর থাকবে। কিন্তু তার চেয়েও গভাঁরতর আকর্ষণ অবিভক্ত বাংলার মাটির প্রতি। ৮২ বংসরের জীবনে শ্রীটেলোক্য চক্রবর্তী যে আদর্শের জন্য সংগ্রাম করেছেন এবং এখনও করছেন তাতে জাতিবৈরিতা বা সাম্প্রদায়িকতার কোনো স্থাননেই। গহারাজ একজন সমাজবাদী নেতা। পাকিস্তানে গণতান্দিক সমাজতন্ত প্রতিত্তার জন্য তিনি বহু দৃঃখ কন্ট নির্যাতন সহ্য করে সংগ্রাম চালিয়েছেন। এ জন্য সামরিক শাসকদের কাছে তাঁর প্রেস্কার জুটেছে, কারাবাস।

কারাগার এই বিশ্লবীকে কোনোদিন তাঁর সংকলপ থেকে বিচ্যুত করতে পারে নি। ব্টিশ কারাগারেই তাঁর কেটেছে বিশ বছর। পাকিস্তানী কারাগার, তাই, তাঁর কাছে নতুন নয়। শ্রীচরুবত ীর এদেশে আগমন একটি তাৎপর্যপূর্ণ ঘটনা। তিনি দেশত্যাগ করে আসেন নি। অনেক নেতাই পূর্ববঙ্গ পরিত্যাগ করে অনেক আগেই চলে এসেছেন। মহারাজের মতো কিছু আদর্শবাদী বরেণা নেতা এখনো পাকিস্তানে আছেন। এ'রা জন্মস্কে সংখ্যালঘু সম্প্রদায়ের হলেও পাকিস্তানের নির্যাতিত মান্ষেরই সংগ্রামের সাথী। পাকিস্তানের সামরিক সরকার বহুবার নানা মিখা অভিযোগে জড়িয়ে মহারাজকে বিপদে ফেলবার চেন্টা করেছে। অন্যায়ভাবে জেলে প্রেছে। কিন্তু ব্টিশ শাসনের কাছে যিনি মাথা নোয়ান নি, আয়ুব-ইয়াহিয়ার কাছে সেই হিমালয়সদৃশ উন্নত শির নত করবার কোনো প্রশ্নই উঠতে পারে না।

মহারাজকে পশ্চিম বাংলার মান্য আন্তরিক ব্যাগত জানিয়েছে। পাক-ভারত উপমহাদেশের গণতাশ্যিক চেতনাসম্পার মান্য কোনোদিনই চৈলোকা মহারাজের মতো সর্বত্যাগী বিশ্ববীদের ঋণ বিস্মৃত হতে পারে না। শ্রীচক্তবকী পশ্চিমবঙ্গে পদাপণি করেই বলেছেন, দীর্ঘ বারো বছর পর পাবিত ভারতভূমিতে এলাম। এই উপমহাদেশের প্রতি দ্লিকণায় বিশ্ববীদের সমৃতি ছড়িয়ে আছে। তাদের আঞ্চানের বিনিময়ে ভারতবর্ষ ও পাকিস্তান স্বাধীন হয়েছে। নিজেদের ভূলের জন্য দেশভাগ হয়েছে। কিন্তু সেজন্য এখন আর দুংখ করে লাভ নেই। উভয় রাজ্যের শুভবৃশ্বিসম্পার মান্যের মধা সম্প্রীতি স্থাপন। মহারাজ নিশ্চয়ই এসে লক্ষ্য করেছেন যে, তাঁকে ভিসা দিতে পাকিদ্তান সরকার গড়িমসি করলেও প্রতিদিন হাজার হাজার গরীব উদ্যাস্তু পাকিস্তান ছেড়ে পশ্চিম বাংলার একে আগ্রয় নিচ্ছে। এখানে এসে ওরা কোথার যাবে, কীভাবে বাস করবে তা অনিশ্চিত। তা সত্তেও এই উদ্যাস্ত্রা পাকিস্তানে আর থাকতে পারছে না। মহারাজ পাকিস্তানের একজন সম্মানিত নেতা। বহু সংগ্রাম তিনি করেছেন তনায়ের বিরুদ্ধে। তিনি যথন দেশে ফিরে যাবেন তখন তাঁর দেশের গণতান্তিক সমাজবাদী-চেতনাসম্পার মান্যকে যেন তিনি বলেন সংখ্যালঘুদের এভাবে বিতাড়ন পাক-ভারত উপমহাদেশের সম্প্রীতির পক্ষে বিয়াস্বরণ। বিনা কারণে এই দুঃস্থ খেটে-খাওরা মান্যার্জ ব্লেছেন, 'পাকিস্তানের সকলেই ভারত-বিশ্বেষী নয়। আমরা সমমর্যাদার বন্ধ্যপ্তি আবহাওয়ার বাস করতে চাই।'

পাকিস্তানে সাধারণ নির্বাচনের প্রস্তৃতি চলছে। এই নির্বাচন পাকিস্তানের রাজনৈতিক জীবনে খ্রই গ্রেছপ্র আয়ুব থার মৌল গণতল্যকে বাতিল করে প্রাশ্তবয়স্কের ভোটাধিকারের ভিত্তিতে এই প্রথম পাকিস্তানে নির্বাচন অনুষ্ঠিত হতে চলেছে। পূর্ব সাংলার মান্য যদি এই নির্বাচনকে কাজে লাগিয়ে একটি গণতান্তিক সরকার প্রতিষ্ঠার সক্ষম হর ভাহলে, আমাদের বিশ্বাস আছে যে, দুই দেশের মধ্যে সম্পর্ক হুদাত্ব হবে। কিন্তু তার আগে অবিলম্বে সংখ্যালঘূদের বিতাড়নের বিরুদ্ধে পূর্ব পাকিস্তানে জনমত সংগঠন করতে হবে। নির্বাচনের আগে সংখ্যালঘূদের বিতাড়ন সামরিক সরকারের একটি রাজনৈতিক কোশল। পার্ব পাকিস্তান যে জনসংখ্যার ভিত্তিতে প্রতিনিধিদ্ধ দাবি করছে তাকে নস্যাৎ করার জনা দীর্ঘদিন ধরেই সংখ্যালঘূ বিতাড়ন চলছে। পাকিস্তানের গণতন্তের সম্ভাবনার ব্যাথেই এই চক্লান্ত বার্থ করা প্রয়োজন।

अभीमा नजत्म

অচিন্ত্যকুমার সেনগ্রুত

জৈনের মড়ের পঞ্জরে তুমি এক অচপল বিদ্যাৎশিখা, এক মৃত্যুঞ্জয়ী আশেনয়ী আশা নজর লের আশালতা-তুমিও এক বিদ্রোহিনী সীমাতিকা•তা •লাবিনী স্লোত**স্বতী** কত দ্রদ্রগম পথ পেরিয়ে কত বাধাবিপত্তির প্রাচীর ভেঙে দিয়ে চলে এসেছ মিলতে তোমার নদীনাথে, তোমার প্রাণদ প্রের্ধে একমাত্র মন্সাম্বের অধিকারে। তোমাকে না হলে যে নজরুলের হত না উম্ঘাটন, হত ন। উন্ভাসন, মিলত না এই সাফলাপা্ণতা। তাতেই তুমি উন্মণন-নিমণন তাতেই তুমি উন্মীলা-প্রমীলা। তুমিই তো তার খরস্থেরি ছায়া, অণিনবীণার বীণা, বিষের বাশির বাশি, তার স্বহারার স্বেশ্বরী তার সমস্ত তপস্যার তাপ, সমস্ত কল্লোল-কোলাহলের ছন্দ্, তার সার্বভৌম সামাবাদের খবংসহা শান্তি, মানবভাবাদের মৃশ্যয়ী মমভা।

কত অশ্রহনাত শোকসন্ধ্যা এসেছে জীবনে বাঞ্চিত প্রাণধনের ঘটেছে অকালবিদায়, কত দৃঃখদারিদ্যের নিশ্ছদ্র অমানিশা আচ্ছন করেছে সংসার, তব,, হে স্বতা, সে প্রলয়ঘোরঘটায়ও তুমি রয়েছ শাশ্বতী স্মিডজ্যোৎস্না, তুমি বতচাত হওনি, নজর্লকে তুমি স্থির রেখেছ, **রেখেছ** তার স্থির সিংহাসনে। তুমি যে স্বার্থসাধিনী ভূমি তো শ্ধ্ স্থের সহচরী নও, দীর্ঘ রুক্ষ পথে দৃঃথেরও সহযাতী। ভূমি ভার আতিতে আতা, আনন্দে প্রমন্দিত, ভার মৌনে মৌনী, বিষাদে স্লানম্থী, ভূমিই তো সার্থক পতিরতা— তার সমস্ত গানের অলিখিত স্বরলিপি। কী বিপলে তোমার বৈভব, ভ্যাগ আর তিতিকা, নিষ্ঠা আর নিনিমেষ সহিষ্কৃতা। দুটি পশ্মপত্রবিশাল চোখে একটি মণ্যল আলোকের দীপ। তারপরে কী দার্ণ বিধিচক্রে তোমার অধা**জা পজা, হয়ে গেল**, তথনো তুমি অধ্যতিগনী শ্য্যালীনা, ব্ৰত্কশা, তথনো তুমি স্বামীৰ 🦈 দ্বটি হাতে, তোমার সাধ্যের পরিধির 🗀 निमारम वामरल শারনে শিশিরে তুমি এক মধ্মতী প্রশান্তবাহিতা বিকল্প-বিকার-শ্ন্য নিস্পৃত্ত নিশ্চল তোমার অস্তিত্বই এক অপরাক্তেয় আশ্বাস— আর নজর্ল তখন যোগদ্রণ্ট উন্মাদ श्रिश्च ७ धर्रमालालाम्, সব ছি'ড়েখ'বড়ে ভেঙেচুরে নস্যাৎ করে দিচ্ছে— কিন্তু, কী আশ্চর্য, ভোমার কাছটিতে এসে বসছে চুপ করে থেলাভোলা গৃহাগত শিশ্র মত, তোমার দুই চোখে আরোগ্য-স্বাগত প্রশন দুই হাতে স্নেহের শ্রাবণ লাবণি সরল নিম্প মুখখানিতে অনাগত স্বিদনের স্বংন আঁকা। তুমি নজর্লকে পরিচ্ছল করে প্রসাধন করে দিচ্ছ সেই প্রসাদনাই তোমার আরাধনা ভয়ংকরকে সাজাচ্ছ স্বন্দর করে। যার স্মৃতি নেই তার বৃষ্ধি ফলগাও নেই, তোমার সমৃতি আ**ছে অথচ প্র্শসামর্থা নেই**, দ্রংখের মন্দিরের তলে প্রতীক্ষার থালায় তোমার শা্ধ্র সংক্ষি•ত সেবার নৈবেদ্যরচনা। কে সেবা নিচ্ছে কোথায় তার অনুভব? সেই তো তোমার আদিগণত যশ্তণা— কিন্তু সেই যশ্তণা তো রিস্ততার বিশহুক্ত হাহাকার নয় সেই যদাণাই তো তোমার সকালের প্রার্থনা म**्भरत**्वत **७९भवरमा**खा नन्धाःत **वामकगन्**का নিশীথ রাচির স্মান্তীর প্রণতি।

বক্তকে সভন্ধ করে রেখে, হে বিদ্যুংবহিং,
তুমি মিলিরে গেলে সহসা।
তোমাকে নজরুল অন্ধকারে খা্জতে বেরুল,
দেয়ালে তোমার ছবির কাছে এসে
তাকাল অবোধ চোখে।
ওখানে নয়, দাঁড়াল এসে উন্মুক্ত আকাশের নিচে
দেখল তুমি চিরদার্তি তারা হয়ে গিয়েছ—
আরেক অরুশ্ধতী।।

সাহিত্যিকের চোখে ১৯৯৯

সাহিত্যিক একটি বিশেষ ানন, তিনিও মানুব। পঞ্চদত্যিমারে করার সোভাগা একালের সাহিত্যিকের 🕃 । তাছাড়া সাহিত্যিকও সমাজবংধ ীব, তাঁর সংসার আছে, স্ত্রী, পুত্র কন্যা <u>ইত্যাদিও আছে। সাহিত্যিকের ঘরের</u> দ্বাই ত' আর সাহিত্যিক নয়, তারা শাবা ্যান্ব, স্তরাং সামাজিক সমস্যার ডেউ যরে এসেও প্রবেশ করে। সাহিত্যিকের গতান কলেজে বোমা থেয়ে হাসপাতালে ্যায়, মেয়ে অবাঞ্চিত যুক্তের সংগ্য উধাও হত্তী কুমবধ্মান বাজারদরের সংগে ভাল রেখে চাহিদার হার বধিতি করেন। ফলে সাহিত্যিকের পক্ষে নির্বিকল্প সমাধির সাযোগ নেই। তাঁকে সব দেখতে হয়, শ্নতে হয়। একট্র বিশেষভাবেই দেখতে হয় কারণ তিনি তৃতীয় নয়নের আধিকারী। সাহিতিকের অবস্থা তাই চিশংকুর মতো। ঘরেও নয় পারেও নয়, তিনি 'যেজন আছে মাঝখানে' তাদের দলে। পতাকা হাতে নিয়ে সাহিত্যিক মিছিলে যোগ দিতে পারেন না। ভদু মান্ত তিনি তাই তাঁর দাবী-দাওয়াট্রক পেশ করতে কুন্ঠা হয়। কিন্<mark>তু আর সব শ্রেণীর</mark> মান্যের মত তাঁকেও **য**্গিপাকে পড়ে দিশেহারা হতে হয়। সাহিতে। তার প্রতিফলন হয়ত হয়, হয়ত হয় না। হয় না তার কারণ অনেক ক্ষেত্রে যা প্রীতিপদ নয় তা প্রকাশে সাহিত্যিকের স্বাভাবিক অনীহা।

সমাজ কি সতাই পরিবর্তিত হরেছে?
আজ থেকে একণ বছর আগের 'সংবাদ
প্রভাকর' নামক ঈশ্বর গ্লেডর বিখ্যাত
সংবাদপত্রের পাতা উপটালে দেখকেন সমস্যা
সেকালেও কিছু কম ছিল না। সেকালের
রাগী তর্গের জনা নাম ছিল। আর
সেইকালে তর্গরা জনা কোনো কিছু
সামনে না পেরে মিশনারীদের শ্রার
প্রক্রেথ হরে পরমকার্ণিক যীশরে আগ্র
গ্রহণ করেছে। তবে সেকালে চক্ষ্লক্ষাম
বালাই ছিল, একালে সেই চক্ষ্লক্ষাট্কু
অপতহিতি।

আধ্নিককালের নাঁতি ও প্রকৃতির
দুভে পরিবর্তনি ও সমাজকালিনের
র,পালতর যে একটি সমসাা, সে কথা প্রতিক্রিয়াশীল আর সংক্রারপথী উভয় পক্ষই
অস্বীকার করবেন না। এই পরিবর্তনি কিছু
মান্য রক্ষণশীলোচিত স্তক্তা আর
অনুশোচনার চোথে লক্ষ্য করেন, আবার
অনেকে এই পরিবর্তনের মধ্যে আশা ও

আনন্দের আভাষ পেয়ে উৎসাহ ভরে তাকে বরণ করতে চান। যৌনতত্ব এবং পারিবারিক জীবন সম্বন্ধে আমাদের মনোভংগী শৈশব থেকেই ভাবাবেগ মিল্লিত হয়ে একই স্তে গ্রথিত হরে আছে। ঐতিহাসিক ও বৈজ্ঞানিক সম্পাদত অনুসারে বিচার বিবেচনা না করে যৌনতত্ব এবং যৌন সম্পর্ক বিষয়ে আমরা মনে মনে একটা নির্দিণ্ট ধারণা করে নিতে বাধা হরেছি। কিন্তু জীবনে বা প্রত্যক্ষ, অসংখ্য ঘটনাব্রোতে যা অন্তর্মক করে, বা সন্ত্য প্রত্যক্ষ, তার হাত থেকে নিম্কৃতি কই?

সকলেই চায় জীবনটা মদ্যাক্লাস্তা তালে
মস্ণ গতি চলকে। কিন্তু তা সন্তব নয়,
সমস্মায়িক সমাজ-জীবনের প্রভাব ব্যক্তিগত
জীবনে বিশেষভাবে প্রতিফলিত হয়।

আরমণ করে, তারপর রখন স্নির্দিষ্ট ও পরিবর্তনোপ্যোগী অন্ক্ল বাতাবরণের স্চনা হয়, তথনই সামানা সংগ্রমে, ক্ষণিক সংঘরে, পরিদ্যতি অন্যারী বাঞ্চিত পরিবর্তনের গতি নির্দ্রণ করা বা আয়রাধীন করা সম্ভব হয়। বিশ্বর বছ্ব প্রেই বিশ্বর শর্ব হয়। বিশ্বরের পরিগতির এক চরম অভিবারি এই ক্ষণিক সংঘর্ষ।

প্রাচীন সমাজ আজ ধ্বংসোশন্ধ, প্রাচীন নীতি আজ নিঃদ্ব। দ্রুত পরিবর্তন ও রুপান্তরের ফলে নবানীতি ও নবান্যায়ের উৎপত্তি। এই বিদ্রোহী মনোভগাীর স্চনা প্রথম মহাযাৢশেধর পর। এই আলোড়ন আজ প্ৰিবীকৈ আলোড়িত করেছে. প্রাচীনপন্থী ভারতবর্ষও দেই আলোড়নের বাইরে থাকতে পারে নি। বেট্কু বাকী ছিল তাসম্প্ৰিয়েছে ম্বিতীয় যুদ্ধের পর। আগের কালে যা শালীনতা ও শিশ্টাচার বহিভূত মনে হত, সমাজে তাই স্বাভাবিক হয়ে উঠেছে। রক্ষণশীলতার রক্ষাক্ষর ভেঙে হয়ে গেছে। প্রাচীন একালবভা পরিবারের যে আদর্শ অবশিষ্ট ছিল তা ধ্য়ে মুছে গেল। বার্নাড শ'র নায়িকা চীংকার করে ওঠে— llissaliance

assertation -

সমাজের এই ম্লগত পরিবর্তন ও র্ণাস্তরের সর্বপ্রধান কারণ আমাদের অর্থনৈতিক সামর্থ্য ও অসামর্থ্যের উপর নিভার করে।

এই অর্থনৈতিক কারণ আমাদের সমাজে এমন এক ভরংকর পরিস্থিতি সৃণ্টি করেছে যার ফলে পৃথিবী আজ এক সর্বাগ্রাসী বিশ্বারের মূথে এসে পড়েছে। সদ্য পরলোকগত মনীবী বাট্টান্ড রাসেল ভার বিখ্যাত "মারেজ আজ থেকে অনেক বছর আগ বলেছেন—

"I ere are at the present day two infinitial schools of thought, one of which derives everything from an economic source while the other derives everything from family or sexual source, the former school that of Marx the latter that of Freud."

পারিবারিক জীবনের সংহতিতেদ, আধ্নিক বিবাহ, অনুষ্ঠানের অবমতি ও ওংসহ আধ্নিক তর্পের বিদ্রোহ, আমানের সামাজিক সভাতা ও সংস্কৃতির র্পাত্রের অন্তম কারণ!

গ্রীন্দ্রের আকাশের আকস্মিক কাল বৈশাখীর মত বিশ্লব কন্সেনাছীত আকস্মিক বটনামান্ত নর। কোনো বিশ্লবই সামরিক ইণ্ডিত বা আইনগত সিন্ধান্ত মাথায় নিয়ে সংসাধিত হয় না। বিশ্লব স্বপ্রথম জীবনের সকল দিক, সকল কোণ "Oh home! home! parents! family! duty! how I loathe them! How I like to see them all blown to bits!" পারিবারিক সংহতিভেদ সম্পূর্ণ হল।

এই চিত্র সাহিতো কিছ, কিছ, প্রতি-ফ্লিড হয়েছে। অশ্লীল! অশ্লীল! বলে চীংকার করলে হবে না, আজ থেকে গ্রিশ বছর আন্ধে যা অশ্লীল মনে হত তা আঞ্ **দলীল। আ**ক্ত যা অম্লীল তা কালই ম্লীল মনে হবে। সাহিত্যিককৈ যদি বাস্তবধ্যাী সাহিত্য স্থিট করতে হয় তাহলে তার পক্ষে রক্ষণশীলের শ্রচিবায়্গ্রস্ত রক্ষাকবচ এ'টে সাহিত্য স্থি করা সম্ভব হবে না। সাহিত্যিক সভতার দিক থেকে ভিনি পতিত হবেন। ভাই সাহিত্যিক যা **লিখছে**ন ভা নিয়ে হৈ-চৈ করা নিছক অপরিণত মামসিকতার প্রকাশ। ন্বিতীয় মহাব্রুণের পর প্থিবীর সর্বদেশেই সাহিত্যে যৌন বিকার ও সামাজিক বিকৃতির লপ্ট বর্ণনা শ্রে হরেছে। ইতালীর নিও-রিয়ালিজ্ম বা মার্কিন দেশে**র কোনো কোনো লেখকের** রচনা পাঠ করলে এ-দেশের শ্রাচ-বাগীশরা হয়ত হার্টাফেল করবেন। **জীবনে**র বিচিত্র রূপের রিপোর্টার **সাহিত্যকার।** रिंकि एवं कित्शा**एँ कहमा करतम, छै**शामात्मत দিক থেকে সংবাদপতের রিপোর্টার থেকে তার পার্থকা অতি সামান্য। পার্থকা শংধু এই যে সংবাদপত্র রিপোর্টার শিক্স সংগত त्रहमात समा भाषा भाषाम मा। किन्छ সাহিত্যিককে তাঁর রচনাটি শিলপ সংগত করার জন্য িচিম্তা করতে হয়। রচনাকে কলেজয়ী করতে হলে এই "শিলপ সংগত" হওরার প্রয়োজন রয়েছে। সাহিত্যকার যদি জীবনের দিকে বেশী করে তাকিয়ে থাকেন তাঁকে তাঁর জন্য অপরাধী হরা উচিত হবে না বরং জীবনবিম্থ হলেই ত' তাঁকে আঁকণিৎকর মনে হবে।

আমরা বড় এ যুগের তার্ণানিয়ে বেশী বিচলিত বোধ করছি, হয়ত একটা বিশ্বতও হয়ে পড়ছি। এ যুগের তর্গের সংগ্রে অন্যকালের তর্গের পার্থক্য এই যে এরা সংস্কারমান্ত এবং শিক্ষিত। আগেব যুগের তর্ণদের মধ্যে এই বস্তুর অভাব ছিল। রাস্তার ধারে চায়ের দোকানটায় **ছ'.চালো জ**েতো আর ডেন পাইপ পরা বড় বড় ঝুলপিওলা ঐ ছেলেগুলি যে অতত পক্ষে গ্রাজ্যেট এ আমি মুখ দেখে বলতে পারি। ওদের কাজ নেই, ওরা বেকার। বাড়িতে দু মুঠো দু'বে**লা** জোটে না। চাওলা ভালো লোক, সম্ভায় এবং ধারে চা দেয়। ওরা এথানেই আছা জমিয়েছে। মাঝে মাঝে চাঁদা তলে জলসা করে পারলে রবীন্দ্র-নজরলেকে জড়িয়ে একটা সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠান। কি**ল্ডু ওদের** চোখের সামনে ভবিষাতের কোনো স্কান কি রচনা করা সম্ভব হয়েছে ? পশ্চিমের ছাত্রদের উত্তেজনা আর অ**ভাখানের সং**শ্য আমাদের ছানুদের অভাত্থানকে এক সূতে গটিছড়। বধিলে ভূল হবে।

আমেরিকার ছাত্রর আন্দোলন করটে তাদের স্বদেশের বিদেশ সম্পর্কিত ভূমিকা নিরে। বিশেষত ভিয়েতনাম যুদ্ধ নি শাদা-কা**লো**র পার্থক্য নিয়ে।

ভারতের ছাত্তের দাবী অনেক কম। বেলা দুম্ঠো অল, মাথার ওপর এক ছাদ, আর একটা আগ্রসম্মান সংগত ক সংস্থান। সূত্রাং পৃথিবীর সব দে*চে* তর শের বিদ্রোহের কারণ এক নয়। সরক একেবারে সাধ্বাবা হয়ে বসে আছে কিছ, জানি না বাবা, যা অবস্থা, এক কল্ট স্বীকার করো, স্বার্থ ত্যাগ করে তবেই আগামী চিশ বছর পরে তোমার্টে কল্যাণ ২াব। এই ভদ্ডামি এ যুগে তর্ণকে কেপিয়ে তুলেছে। এখন ছাত্র যুবক সমাজকে ডেকে দুটো শুখর্নে উপদেশ দিয়ে বাভি পাঠানোর কা অভিক্রানত। তাই এ যুগের ছাত্র ও যুব সমাজ আখালাগ ্হত্তর কল্যাণের জন স্বার্থ ত্যাগ হাত্র বড় কথা সানুনরে বিরম্ভ হয়, াত্স করে। এ-সব বুলি **এখন ফাঁক**। আওয়াজে পরিণত।

কিছুদিন আগে একটি গ্রামে যেত হয়েছিল। 'বেশী দূর নয়, কলকাতা থে দশ বারো মাইলের ভেতর। গরীব গ্রাম হিন্দু-মুসলমান দুই ধ্যমিতাবলম্বী মান্ যুগ যুগ সহাবস্থান করে এসেছে। কখন দাপ্যা-হাজামা হয় নি। বেশ শাশ্তির নীড় কিশ্ত গ্রামটিতে স্বাধীনভার পর তেই বছরে সরকারী তহবিল থেকে তেইশ মাদ্রাও খরচ করা হয় নি। গ্রামের একম মাইনর স্কুল বাড়িটা পড়ো পড়ো, সেথা কিছ; ভাগ্যবান ছেলে পড়ে। আরও কি বাইরে বারান্দায় ম্লান মূথে বসে পড়া-প থেলা দেখে। সেই শাহিতময় গ্রাম্ মানুষ দেখলাম এইবার ভীষণ উত্তেগি হয়ে উঠেছেন। তাঁরা একটা কিছ, কর জনা যেন ছটফট করছেন। তাদের সমা**ে** আজ পরিবতনি শুরু হয়েছে।

ফর্দ অনেক বাড়ানো যায়। এদি ওদিকে কত কি দেখছি। কত বৈচিত্র। অভাবিত কান্ড। এমনটি কি আগে ছিব আগে ত' কখনও এমনটি ঘটে নি। এই কথা অবাশ্তর। ভালো করে বিচার কর দেখা যাবে সবই একটা নিদি'ণ্ট ধা চলছে। আজ যাকে আমরা নৈরাজা বল আগের যুগে তার নাম ছিল অরাজকতা

আজ আমাদের ব ঝতে অথনৈতিক, ব্যবহারিক সামাজিক. সংযম ও বাধা একদা भक्तिभानी छिल. আজ তা অবল ্•ত। দেবচ্ছাকৃত প্রবৃত্তি ও নি এমন একটি আভ্যন্তরীণ শক্তি করতে হবে যা মান্যকে সহজ ও রাখতে সমর্থ হবে।

আমার মনে হয়, এই আভাশ্ত শক্তি গড়ে উঠেছে। বর্তমান যুগের থে মোহ, ও বয়স্কদের মুর্খতা সত্তেও ং मत्न कीत जाश्रीनक युव-भक्ति : স্মুখ ও স্বাভাবিক তারুণাের : প্রথিবীর ইতিপ্রের্ব পরিচয় ঘটে নি ৷ সাহিত্যিককেই সৰ্বাগ্ৰে

জানাতে হবে এই তারুণ্যকে।

तिश्वभिण वडवशत कत्रत्ल ফুরহান্স টুথপেষ্ট साद्धित लालेचात्र ७ पॉलित ऋघ ताध क्त

ভোট বড সকলেই ফরহান্স টুথপেষ্টের অযাচিত প্রশংসায় পঞ্চমুখ কারণ মাড়ির গোলযোগ আর দাতের ক্ষয় রোধ করতে ফরহান্স টুথপেষ্ট আশ্চর্য কাজ করেছে। এই প্রশংসাপত্রগুলি জেফ্রি ম্যানাস এও কোং লি:-এর যে কোনো অফিসে দেখতে পারেন।

^{'ল}গাতের রোগে কট পাচিছলাম···এমন সময় কর্ছান্স ব্যবহার ক'রে দেখি…এখন আর আমার গাত নিরে কোন কটু নেই। প্রায় ২০ থেকে ২৫ জন লোক এখন বদলে कत्रहान शरद्राष्ट्र। जामारमद्र वाफ्रिक अथन **কর**হাকের বেজার আদর।*

- উদয়শহর তেওয়ারী, পাটনা।

"আপনাদের বৈজ্ঞানিক পদ্ধতিতে তৈরি ফরহান্স পেষ্ট আমি আজ দশ বছর ধ'রে ব্যবহার ক'রে আসছি। এই পেষ্ট আমার মাডির সব রোগ নিবারণ করেছে। এখন আমাদের বাড়ির সবাই নির্মিতভাবে করহান টুখপেট দিয়ে দাঁত বুরুশ করছে।" --- अन. अम. लाल, नहां विश्वी ।

দাঁতের ঠিকমত যতু নিডে প্রতি রাজে ও পর্বিন সকালে ক্ষুহান্স টুখণেট ও কয়হান্য ভবল অ্যাক্ষান টথ বোল ব্যবহার করুন আর নিয়মিডভাবে আপনার र्व मिन।

,	A	দন্ত চিকিৎসকের পরামর্শ বি	वेश ।
	25 S	বিনামূল্যে ইংরাজী ও বাংলা ভাষার রঙীল পুন্তিকা — "দাঁভ ও নাড়ির যত্ন " এই কুগনের সলে ১৫ পরসার স্ট্র্যুপ (ভাষমাঞ্জ বাবদ) "ম্যানাস ডেটাল এডভাইস। বাবো, পোন্ট বাগ নং১০০১ বোদাই-১—"এই ঠিকানার পাঠালে আপনি এই বই পাবেন।	
l I	200	नाम हिकाना	বরস
		छाता	A-7

<u>ফুরহা</u> ন্স	ট্ থপেষ্ট–এক দন্তচিকিৎসকের	જાઉં
------------------	--------------------------------------	------

46F- 182



সাহিত্য শিশপ ইতাদি ক্ষেত্র যাঁরা প্রদান তাদের শ্বকাম সিংধর স্বাপেই নিবাস্থির কিঞ্চিৎ প্রয়োজন আছে, কিন্তু উৎসত্ত্বেও সামাজিক পরিবেশ সম্বদ্ধে উদান্দ্রীন হয়ে থাকা তাদের পক্ষে যে সম্ভব নর তা দেদশিপামান হয়ে দেখা গিমেছে রবীন্দ্রনাথের চরাচরব্যাপত আবিভাগে। যুগ যুগ ধরে মানবতাই যাদের গরিমা হয়ে ওসেছে, সেই শিক্সীরা মান্দ্রের ভবিত্রা সম্বদ্ধ অনীহা পোষণ করবেন কেমন করে?

'আফিকা' প্রায় ব্যৱশ বংসর স্বের্ করেছিলেন র্বীন্দুনাথ স্মর্ণ 'সভোর বর্বার লোভ' 'নান করল আপ্ৰায় নিশ্ভিক আমান্যতা' এবং চেয়ে-ছিলেন যে আধ্নিক জগতের 'মান্ব-ধরার দল' যেম সাম্বৎ ফিরে পেয়ে 'ওই মানছার। খানবার স্বারে গিয়ে ক্ষমা প্রাথনা করে। মান, সের উপর বিশ্বাস হারাতে অস্বীকৃত মান্য তার বলে তিনি আশা করতেন যে 'লোভ জটিল বন্ধ' থেকে মাডি অজন করবে—শ্হ্ বিচলিত হাতেন যে সম্বৃদ্ধি স্ণারের সম্ভাবনা বত্রান সমাজের পরিম্থিতিতে প্রায় বিলীম্মান বলৈ হয়তো ঐ ম্ভির ম্লা দিতে মান্দকে প্রায় নিঃদ্ব হয়ে পড়তে হতে

র্বীন্দ্রনাথ বার স্চনা দেখে গিয়ে-ছিলেন, তাই আজ কয়েক দশক জগতের অধাধিক আয়তন জ্বড়ে সমাজ ভূমিকশ্বের চেয়ে প্রচণ্ড আর জীবনে আলোড়ম এনেছে, এ শয়া-আফ্রিকা-লাডিন আমেরিকার বহু যুগের স্বৃণিত ভেঙেছে। এই সাম্ভিক জাগাতির গরিমা **ভিরেংমাম-এ সম্ভল্লে হয়ে দে**খা দিয়ৈছে —সংশ্য সংশ্য কোথাওই মান্য সম্পূর্ণ কল্পেন্ত নহ বলে এ গরিমারই অনিবার্য কিণ্ডিৎ আন্ধণিগকর্পে **লক্ষণ**ও নামাক্ষেতে বহুদেশে আজ প্রকটী। জাগং ও জীবনের রূপান্ডরপ্রয়াসের এই ছে ঐতিহাসিক মহাযক্ত তার অসম অথচ প্রমিত সৌন্দর্য করে আমাদের সাহিতে। বিশৃত দেখনে পাওয়া যাবে ওে জা'ন?

ু কথা মনে আসার কারণ হল এই যে

নভেন্বর মাসে দিল্লীতে আন্তো-এশিয়ার লেথক সম্মেলন হবে বলে স্থির হংমছে এবং সেজনা সম্ভবত পশ্চম বাংলার কিন্তু পরিমাণে আয়োজন আরুভ হয়েছে। এ কপা বিশেষ করে এই মুহুতে মনে পড়ার আর এক কারণ এই যে ২৬শে জন্ম

शीरतन्त्रमाथ ग्राचानामाग्र

দক্ষিণ আফ্রিকার মাজিদিবস সর্বাচ পার্কারের জমা আবেদন সম্প্রতি এদেশে প্রেণিছেছে। তাশতত রবীশুনাথের দেশ এ বাপোরে সোৎসাহে সাড়া দেবে আশা করা অসংগত নব। যত এবং পারের বিশ্বল পার্থকা সব্বেও মহাআ গাখ্যী দক্ষিণ আফ্রিকার যে ক্যকান্ডে জিশ্ত ছিলেন আক্র সেখাম- কার মৃত্তিযোশ্ধারা তার সম্পূর্ত প্রদাংসা শেকে বিরত যে নয়, এ কথা জানাও আমাদের প.ক প্রয়োজন।

আজকেরই (২৪শে জুন) কাগজে থবর রমেছে যে রক্ষণশীল দল বিলাতে শাসন-ক্ষমতায় বসার ফলে শীষ্টই 'লেবার' পাটির আমালের লুকোচুরির ভান ছেডে 'বর্গর খোলাখুলিভাবে দক্ষিণ আফ্রিনা আর্রাজীসিয়ার মতো বলবিন্দেবই ফার্নিস্ট দ্রোচারী দেশে অভ্যান্ত পাঠানো হবে। সাম্রাক্ষাবাদ যে ভেক বদলাবার অভিনয় বেশ কভ্রেল চালানো সত্তেও প্রকৃতপক্ষেবদলার মডলেব রাথে না এবং তাকে যে এদনার মডলেব রাথে না এবং তাকে যে এটাই আজ বিশেষ করে মনে পাডবে।

জ্ঞানিকা এখন আর 'ছায়াচ্ছর' নয়--

তৈলোকানাথ চক্রবর্তী (মহারাজ)

জীবন স্মৃতি ৪০০০

মহান বিশাৰীর আশ্চর্য আঅজীবনী

অণিনযুগের প্রথাতে নেতা নরেন্দ্রকুমার চক্রবতীর

নজর্ব লের সঙ্গে কারাগারে ৪-০০

জসীম উদ্দিনের শ্রেষ্ঠ কবিতা

6.00

নকসী কাঁথার মাঠ ৩০০০ সোজন বাদিয়ার ঘাট ৫০০০ ঠাকুরবাড়ীর আভিনায় ৫০৫০

বেজাল পাবলিশার্স ১৪ বহিকম চাটোজী শ্রীট, কলি-১২

অভূতপূর্ব বেগে সেখানে স্বাধীনতার পত্তন ঘটেটে দেশে দেশে, ন্তন কিরণে ন্তন জীবন যাপনের বন্ধ্র স্চনা নানার্পে সেখানে দেখা যাছে; এখনও অধ্বকার কাটে নি. এখনও পথে বহু বাধা, এখনও শত্রপক্ষের অজস্র চক্রাশ্ত ও দৌরাব্যা। এথনও আত্মশক্তির স্ফরেশ অত্যন্ত আংশিক। কিন্তু রবীন্দ্রনাথের জীবদ্দশায় যা ছিল প্রায় অকল্পনীয়, তাই ঘটেছে ঐ মহাদেশে দক্তিণ আফ্রিকা, রোড্রীসয়া, আপ্রোলা, মোজান্বিক, গিনি-বিসঃ প্রভৃতি দেশে প্রতাক যুষ্ধ চলছে সাম্রাজাবাদের সংগ্রা, আর অনাত্র স্থাপিত হয়েছে বিভিন্ন স্বাধীন রাণ্ট্র, িনয়ত মোকাবিলা করতে যাদেরও অবশ্য পরোক্ষ আঘাতের হচ্ছে সামাজ্যবাদের বিপক্ষে। লম্ডন, লিসবন, ওয়াশিংটন, আর বন, প্রিটোরিয়া, সল্সেবরি থেকে পরি-চালিভ এই সহস্রফণা বিরোধিতার সংগ্র লড়ছে উদীয়মান আফ্রিকার অমোঘ জন-महिता

দক্ষিণ আফ্রিকার মুব্রিবরতীদের সংগ্রে বহুকাল অগ্রণী ভূমিকার রয়েছেন ভারত বংশোশ্ডর ডকটর য়ুসুফু দাদু এবং অনা অনেকে। সেখানে আমরা দেখেছি নোবেল্ শান্তি প্রস্কার যিনি অসম্ভব প্রতিবধক সত্ত্বেও পেরোছলেন সেই প্রাতঃস্মরণীয় 'চীফ' লুখুলিকে। সেখানে নেলসন মন্ডেলা এবং অনা বহু সম্জন যাবছলীবন কারাবাসে দশ্ভিত কিশ্বা অহরহ উৎকট বিপদকে তুচ্ছ করে আত্মগোপন অবশ্থায়

॥ নিতাপাঠা তিনখানি গ্ৰন্থ ॥ সার্কা-রাম ক স্বঃ

—সম্নাসিনী শ্রীদ্রামাতা রাচত—
আৰু ইন্ডিয়া রেডিও বেতারে বলেছেন—
বইটি পাঠকমনে গড়াঁর রেখাপাত করাব বংগাবতার রামকক্ষ-সারদাদেবীর জীবন আলেখার একখান প্রামাণক দালল হিসাবে বইটির বশেষ একটি মলো আছে বহুনিস্রোভিত স্পত্ম মুদুর্গ—৮

গে বীমা

যুগাশ্ডর:—াতনি একাধাতে পরিব্রাজিক। তপাশ্বনী, কমলী এবং আচাযা। ঘটনার পর ঘটনা চিত্তকে মংশু কার্যা রাখে। গৌরীমার অলোকসামান। জীবন ইতিহাসে অম্লা সম্পদ্ চইয়া থাকিবে। বহুচিরশোভিত পঞ্চ মুচ্ছদ্—৫;

माधवा

বেদ, উপনিষৎ গাঁতা বহাভারত প্রভৃতি শালের স্প্রসিদ্ধ শৈক্ত বহু স্পেতার সাড়ে তিন শত বাংলা 'ফম্মা' ও প্রতাইঃ সংগাঁত প্রমেথ সন্মিকিট হইয়াছে।

ৰস্কুষ্ড ৷ ৰলেন—এমন মনোরম স্প্রা গাঁতি পশ্চিতক বাঞ্চালার আরু দে' ২ নাই পরিবর্ষিতি পশ্চম সংস্করণ—৪'

শ্রীশ্রীসারদেশ্বরা আম্রম ২৬ গৌরীমাতা সরণী, র্ফালকাতা ৪ ঐকাশ্তিক সংগ্রামে লিশ্ড। অসম শান্ত অথচ অসম সাহস নিরে ম্বির্মে নিরড আফ্রিকা আন্ত দাবী করছে আমাদের ঐকা-শতক সহারতা ও সমর্থন। ভারতবর্ষ মেন কিছুতেই এ ব্যাপারে তার কর্তব্য থেকে স্থালত না হর, তা নিশ্চিত করার দারিছে এদেশের লেখক ও শিল্পীদেরও সজ্ঞানে ও সোৎসাহে অংশীদারী করতে হবে।

এখানে শ্ধ্ সংকীণ অর্থে রাজ-অথ্নীতি সমাজনীতির প্রশন নীতি. জাড়ত নয়—জীবনের মূল কথা নিয়ে বাদের কারবার তাঁদের কাছে প্রধানত জাড়ত মানবনীতি। সবচেয়ে নিদার্খ যে অভিশাপ সাম্বাজাবাদ এনেছে তা হল (রবীন্দুনাথের ভাষায়) 'অমান্ষতা'। তাঁর দ্বদেশেও সাম্বাজ্যবাদের তান্ডব বড় কম হয়নি, কিন্তু তার সবচেয়ে নান, নিলান্তি. কদৰ্য প্ৰকাশ দেখা গেছে এশিয়া, আফ্ৰিকা, লাতন আমেরিকায় আর এদের মধ্যে আফ্রিকাকে যেন আরও বিশেষ করে মন্বোতর প্রচার করে যাত্রণার বানানো হয়েছে। শ্বেতকায় যারা নয়, সভাতার বিচারে তারা ধর্তব্যের মধ্যে নয় বলে সামাজাবাদের শাসন ও শোষণ তাদের ক্ষেত্রে মানবীয় কোন অনুভূতির ধার ধারে নি। এদেশে আমর। আর্যগরে গবিতি হয়ে মাঝে মাঝে ভাববার চেণ্টা করেছি যে আমাদের গায়ের বংটা একে-বারে কাফ্রীর মতো নয়, গৌরকান্তি পূর্ব-প্রেষ্টের উত্তরাধিকার ছিটেফোটা পেয়েছি কিন্তু তব্ও আমরা হলাম (কিপলিংয়ের সংজ্ঞা অনুযায়ী) 'the lesser breed without the law' ! নানা ঐতিহাসিক কারণে এবং বিশেষ করে প্রায় দ্বাণা 'গৌরাংগ দেখিলে ভূতকো বছর ধরে ল,টাই' প্রবৃত্তি এদেশের সমাজপদ্ধিরের মধ্যে থাকার ফলে আফ্রিকার তুর্নীয় দহন আমাদের হয়তো সহ। করতে হয়নি, কিব্যুন্লগত কথা হল এই যে ইতি-হাসে আমাদের স্থান, আমাদের ম্যানা, আমাদের ভবিষাং নিভার করছে আফ্রিকা এবং অনাত্র 'আমান্ষতা'র বিরুদ্ধে সংগ্রামের উপর—য়ে 'অমান্যতা'র অপর নাম হল সাম্বাজ্যবাদ।

আলজিবিয়ার মাত্তিযুদেধ বহু লক্ষ প্রাণ উৎসর্গ করতে হয়েছিল। মেই সংগ্রামের সংক্রা একাতা হয়ে Franz তাঁর স্বল্পায়া জীবনে আণ্ন-শিখার মতো যে কটি রচনা রেখে গেছেন. তাতে অপর্প সাহিত্যগুণমণ্ডিত ভাষয়ে পাশ্চাত। সামাজাবাদের এই অমান্যতার স্বরূপ উদ্ঘটিত দেখা যায়। প্রাচীন গ্রীস এবং অচিদ্য খৃষ্ট**ধ্য থেকে** আহ ত মানবভার বুলি যাদের মুখে সতত শোনা গিয়েছে, তাদেরই প্রতাক্ষ ও অপ্রতাক্ষ আন্কুলা যে সামাজাবাদের পিছনে থেকেছে তাত সন্দেহ নেই। শেবভকায় সভাতার বাইবে মানবর্মাহ্মা যে সম্ভব্ তা প্রায় সর্বাক্ষাত এই মানবভাগদীনের ম্বর ও আবচেত্র গ্রাহণীকা**র করেনি**— ঐতিহ্যিক জন্মণান ব্যাণ্ড গেকে শাস্ত্রেল কতে তালিবার সভেও ইয়ার প্রতিভূতি ভগতে মানুষের গার্ম।

অগ্যাভূ কিছ্তেই খেন ধ্যানধারণার যাদ্যরে উল্ভট নিদর্শন হিসা হ্রমি, সাজিরে রাখা ছাড়া 'প্রাচা' জগতে সংস্কৃতির ম্ল্যায়নকে অবাস্তব মনে ক শ্ব্ধ্ কৃষ্ণ আফ্রিকা নয়, আ र्त्यक । আফ্রিকা সন্বন্ধে এই ধারণা প্রচলি থেকেছে-চানারা তো 'পীত আতৎক' ভি আর কিছুট প্রায় নয় আর ম্লিটনে উৎসাহ সত্ত্বেও এদেশ ডে ভারতবিদের প্রতীচ্যের হিসাবে সভাতা ও সংস্কৃতি অনুপশ্থিত। বর্তমানে বিশ মানচিত্ৰে ব্যাপী ম্বিজাভযানের পরিপ্রেকিতে নিঃসন্দেহে আস্তে বিষয়ে <u>পরিবত ন</u> কিন্তু সায়াজ্যবাদী পশ্চিমী অহৎকারে দাপট আজও প্রচন্ড। এ জনাই আং অত্যুক্ত সংগত ভাবেই ধর্নি 'Black Power' এইজনাই ভারত 'Nigger-Nordic' দের পীড দিরে মাওয়ান্ত উঠছে 'Black is beautifull এ জন্যই এশিয়া, আফ্রিকা, ट्यांट আমেরিকায় আমাদের ভাবতে হচ্ছে নিঙে দেশের মাটিতে জীবনের শিকড় সম্বঞ্চ এজনাই অমান্ষতাকে পরাভূত কঃ মান্যের মহিমা জাতিবগনিবিশেষে সং প্রতিষ্ঠিত করার সংগ্রামে স্বাইকে জ: করার প্রক্রিয়া ও প্রকরণ সম্বন্ধে ভার: হচ্ছে। এ ভাবনা থেকে এদেশের **শি**ল্প সাহিত্যিকরা দুরে থাক্বেন কৈমন করে

এক স্থানীয় ইংরেজি প্রিকায় (অমু বাঞ্চার নয়) ২১ শ জনুন তারিখের রা বাসরীয় জ্বেভ্পত্র প্রকাশিত এক প্রব থেকে জানা গেল যে ল'ডনের ইম্ট এ'ড ভারতীয় এবং পাকিস্থানীদের 'দেখ্-ম করার জনা অলপবয়সী ইংরেজ দুর্বতি অবল1লাক্তমে দৌরাস্ব্য চালায়ে আর পালিশের নিশ্তিয়তার অভাহা লডসভায় (অধানা ক্ষমতাচুটে লেবর) ম কার পক্ষের প্রবস্তা 🦠 বৈসিক(Beswic যাকিদেন যে যা ার থচেছ তাং ভাষা পর্লিশ ্ঞতে পারে না, ড কিনা শীঘ্রই প**্রলশ কমচারীদের** হ কয়েকজন তাদের ভাষা শিখে নিচেছ। টীখেভ ্ল বাংলা এবং ইংরেজ : কা'রব মুখপাত এ-সম্বদেধ বলে 'the dialect in questio সাতাম ক্ষর আগে যে ভাষায় রচনার : নোবেল প্রদকার দেওয়া হয়েছিল, ভাষা হল ১৯৭০ সালে লেবর গভর্ণমেং হিসাবে 'উপভাষা'! কালো কাঞ্চী কপালে যাই ঘট্ক না কেন, 'আর্য' সগোর হিসাবে আমরা মাথা এ উ'চুকরে নাকি, তা যে আসল সাহে **সইবে না।** এটা হয়তো আমরা জনা চাই না।' কিম্তু ঘটনাটা হল তাই। 💌 কারণ বৃত্তি চালিয়ে ভারতবর্ষের পা্নভ ঘটিয়েছি, এবন্বিধ বহু কথা অবশা আ বলে থাকি। কিন্ত মনকে চোখঠারা জমাগত ভাবৰ ঘাৰ ৮বি করে চালে বে কদরেই গ্রিকে আমন্য উঠতে **পারব** যাই ভার - এনীন নগণসভায় আরক্ত কাল কলক প্রাক্তি 'অয় ষতার দিব বধ কে লগ্দরাপী সং তাতে যেন সবাই আমরা শামিল হই।



মনোমোহনের বিছানা শিউলি ফ্লের মতো শাদা। তার বিশ্বাস, আর পাঁচ সাত বছরের মধ্যা এমনই শাদা বিছানায় তার মতো হবে। তথনো তার বিছানা এতটাই মালন হবে না, সুষ্মা হতে দেবেন না, আটাইল বছরের মধ্যা কোনোদিন হতে দেন নি, স্কুষার নিজের অস্পুথতার সময়েও না। বিয়ের অগ্নে নামোমানের শ্যা কেমন ছিল, এখন আর প্পত মনে পড়ে না। অথচ আজ দ্পুর থেকে এই বিকেল প্যান্ত শিউলির মতো শাদা সেই বিছানায় শুয়ে ভাল ঘ্য হল না। বড় কন্টে চারটি ঘণ্টা কেটেছে। একবারও

সম্ভবত দশ মিনিটের বেশী একটানা ঘ্র হয় নি। সব সময় সামানা শব্দ করে প্রোন পাখাটা ঘ্রছিল এবং চৈতের গব্দ ঠিক দ্বেসহ নয়। পরে আরো বেশী গরম পড়বে। তথাপি আজ কেমন চামড়া জুলে যাছিল, মাঝে মাঝে কী খেন বি'ধহিল কটার মতো। এ সবের কারণটাও অবশ্য জানা। আজ সকালে এ বাড়িতে যে-নাটক হয়েছে, তার ফলেই দ্বের থেকে বিকেল পর্যান্ত চারটি ঘণ্টা এমন কণ্টে কাটল।

এখন যেমন মনোমোহন বারাদায়ে পরিচ্ছল কাপে চা নিয়ে বসেছেন, আজ স্কালেও তেমন বাজার থেকে ফিরে শ্বতীয় দফায় চা নিয়ে বাসজিলেন। তথন নাটক শ্রা। বাইরের দরজার কড়া নাড়রে শব্দ শ্নতে পেলেন। দেখলেন, মাল্লিকা ক্ষিপ্র হাতে দরজা খালে দিল। মালিকার সংগ্য একটি দাটি মাদ্র কথা বলে অচেনা যুবক একটি টানটান ভগ্গিতে বারাদ্যায় উঠে এসে তাঁর সামনে দাড়াল। একখানা অধ্যেক ছাপা অধ্যেক হাতে-লেখা ধ্সের রঙের বড় শক্ত কাগজ তাঁর সামনের টোবিলে মেলে ধ্রে প্রয়োজনের বেশী গলা চড়িয়ে বলল, অমি মালিকাকে বিয়ে ক্রেছি।

মজিকাকে বারাশ্যায় দেখতে পেলেন না। তার বদলে দেখলেন, স্বয়মা পিছনে এসে দুর্গীভূরেছেন। মনোমোহন উর্জেজত হলেন মা। বস্তুত ইলানীং শ্রমীর মনের সব তরিতা শিথিল। ওপালে আর একটা চেয়ার ছিল। তার বড় ছেলে বর্নণের রয়সী এই অচেনা ছেলেটিকে ইল্লিভে সেই চেয়ারটা টেনে বসতে বললেন। শ্বিতীয়বার পিছনে মুখ ফরিয়ে স্কুমার চোখ, মুখের আক্রিমক বিবর্ণতা দেখলেন। ছেলেটি চেয়ারে বসেই আবার উঠে দাড়াল। সরে এসে নিচু হয়ে স্কুমাকে প্রণাম করল। প্রথমে স্কুমাকে কেন? স্কুমাকে তার থেকে নরম ভেবে কি? তাকে কি কঠিন মান্য মনে হয়? তাকৈ প্রণাম করার সময় মনোমোহন পা সরিয়ে নিলেন না।

নাম বজল, পরিতোষ। পদবী শুনে জানা গেল, অস্বর্ণ। অসবর্ণ বলে যেট.কু থোচা লাগল তার ধার থ্ব কম। তথ্মই আবার মোটেই খোঁচা লেগেছে কি-না ব্যুক্তে পারলেন না। আজই প্রথম আশ্চর্ষ হয়ে লক্ষ্য করলেন, ও-স্ব সংকীণ্ডার বালাই তাঁর নেই।

প্রণাম সেরে পরিতোষ দীড়িয়েছিল। আবার বসতে না বললে হয়ত বসবে **না**। খুব কালো, কিন্তু বলিষ্ঠ, উচ্চতা একট, বেশী। মাথের দিকে তাকাতে অস্ববিধে হচ্ছিল বলে আবার বসতে বললেন। মনোমোহনের চা তখনো শেষ হয় নি। বাইরের লোকটির সামনে একা কী করে চা খাবেন? ওর সামনেও অস্তত এক কাপ স থাকলে ভাল হত। আবার—'পরিতোষকে हा माख'—এই कथाग;त्मा ≠भणे উচ্চারণ করতেও একটা বিচিত্র লক্ষা মেশানো অস্বস্থিত জিভ আটকে যাজিল। ভাছাঞ্চ তার একমাত্র মেয়েকে যে বিয়ে করেছে, বে-বিয়ের প্রমাণ তার সামনে, তে-বিরে অস্বীকার করার সাধ্য তাঁর নেই, অস্বীকার করার যুক্তি আছে কিনা তাও জানেন না. সেই লোকটি কতটা বাইরের, মনোমোহন ব**ুঝতে** পার্রাছ**লে**ন না।

এই নাটক ষতই প্রেম হোক, মনো-মোহনের কাছে নতুন। জীবনে প্রথম মঞ্চে অবতীর্ণ হওরার মতো লাগছিল। অসহায়ের ছিগতে পিছনে তাকিঃ দেখলেন, স্মুমা কথন বারান্দা থেকে চলে গেছেন। মল্লিকাকে জেরা করতে গেছেন হয়ত, অথবা চায়ের আয়োজনে। চায়ের জন্য গিয়ে থাকলেই ভাল।

এত অসহায়তাই বা আসবে কেন! মাচ বাষটি বছর বয়সেই কি শ্বিতীয় শৈশব আদে?

মজিকার সংশ্য পরিতোষের কোথায় কেমন করে পরিচয় হয়েছিল জিজ্ঞাস করতে গিয়ে চেপে গেলেন। প্রশ্নটা মনে হল, কিশোরোচিত। দ্বারার পার্ট ট্রা ফেল করে মজিকা হলে হয়ে চাকরি খ্রাজছিল। খ্রাজতে খ্রাজতে হয়ত পরি-তোষকে চিনেছে। ছেলেটা বল্ছে, সে বেকার নয়, এল-আই-লি-তে চাকরি করে। নিকে চাকরি জোটাতে পেরেছে বলেই হয়ত মঞ্জিকাকেও একটা জুটিরে দেবে, এমন আশা সঞ্চারিত করে দিতে পেরেছে মেরেটার মনে।

সকাল থেকে এই বিকেলে পেছিতে বেল কয়েকটা ঘন্টা পার হরে আসতে হয়েছে। ইভিমধ্যে আকস্মিকস্তার চমক থিতিরে গেছে। একটা দরে থেকে দেখবার न रवाच रशरहरूम भरनारमाहन। अपन हास्त **हुम**्क निरंश मरन के किया, जकान रवनाव নাটকটা মোটেই বিবাদান্তিক ছিল মা। বরং আনুদের খবর নিরে এসেছিল পরিতোর। উল্লেখিত হওয়ার মতো খবর। মনোয়োহন নিজে মল্লিকার জন্য এর থেকে ভাল কিছু করতে পারতেন না। মলিকা যা করেছে তা-ই স্বাভাবিক ছিল। কারো মনে অভিযোগের বাষ্প জমে যাবার কোনো যুদ্তি নেই। অক্তত মনোমোহনের নিজের কোনো অভিযোগ ছিল না। তব্ মাঝে মাঝেই কোথায় যেন ছড়ে বাবার মতো একটা জনালা টের পাচ্ছিলেন, বিশেষ করে স্বমার কথা ভেবে। একমার মেয়ের कौरातत मर थाक रफ डेश्मातत स्वान সূৰ্যা যোটেই পেলেন না। অবশ্য এখনো ছোটখাট অনুষ্ঠানের আয়োজন করা হায়। কিন্তু মনোমোহন উৎসাহ পাচ্ছিলেন না: **প্লাস্টিকের ফাল দিয়ে থর সাজাবার মতো** লাগছিল।

এক সময়ে মনোমোহন প্রচুর সিগারেট থেতেন। দেশ-বিভাগের আগে গ্রামের বাজিতে গড়গড়া ছিল। ইদানীং কোনোদিন দ্-একটি সিগারেট, কোনোদিন একটিও না। এখন বালিশের তলায় রাখা চাপ্টা প্যাকেট থেকে একটা সম্ভা সিগারেট নিয়ে ধরিয়ে আবার বারান্দায় এসে দাড়ালেন। আসবার সময় শোবার খরের আয়নাহ নিজের মুখ দেখতে পেলেন। আজ সকালে দাড়ি কামানো হয় নি। দাড়ির তিন ভাগ

বারাশদায় দক্ষিরে এই প্রথম মনো-মোহন কোষাও ছড়ে বাবার মতো জনালার আসল কারণটা ব্রথতে পারলেন। কেন যে শিউলির মতো শাদা বিছানার চার ঘণ্টা শ্রেও ভাল ঘুম হয় নি, এখন প্রথম ব্রথলেন।

বড় ছেলে বর্ণ এখনো এই সংসারে
সাধামত টাকা দিলেও বিরের পর অন্য বাড়িতে চলে গেছে। তার বাচ্চা ছেলেটাকে
দেখতে হলে শহরের অন্য প্রাণ্ডে যেতে
হবে। ছোট ছেলে অর্ণ, মলিকার থেকে
তিন বছরের হোট, বয়েস তেইশ পার
হরেছে, এর মধ্যেই সুম্পূর্ণ ব্যাধীন, তার
কাছে মন্যোহাইন এবং স্বমার প্রায়
অশ্তিষ্ট নেই, ব্যাসানা। আর আজ জানা
গেল, মলিকা তার আপনজন খুড়েল
পেরেছে। তিন ছেলেমেরের লিভুলের
মাঝখনে মনোমোহন এবং স্বমার কোনো স্থান নেই। স্পণ্ট প্রমাণিত হয়েছে, তাঁর অদরকারী।

জনালাটা নিজের জনা ততটা নয় প্রধানত সংখ্যার জন্য। বারান্দার দাড়িত বিবর্ণ বিক্ষত দেয়ালে চোখ রাখলের मह्माह्माह्म अक्टेंक्न जना अक्टि म्र∞ দেখলেন। এই বারান্দায় দাঁড়িয়ে আ বছরের মেরে মলিকা পালের বাড়ি রেডিওর গানের সংখ্য গলা : মেলাচ্ছিল গান্টা শেষ হলে রালাঘরে গিয়ে সূৰ্য্ পিঠ বে'ৰে দাঁড়িয়ে বলল, 'আমি গা **শিথবো, মা।'** রালার কাজে সংযম দু-হাতই বাদত ছিল। শুধু মুখ খ্রীরয়ে এনে মেরের গালে স্বমা নিছে शाम अकरें, घरव फिरमन। मरनारमाइस কানে আট বছরের মল্লিকার আব্দেরে গ **একবার ঘা মেরে গেল, উন্**নের তা' রক্তাভ অথচ প্রশ্রয়ের হাসিতে সিন স্বমার মূখ পলকের জন্য বিবর্ণ দেয়াতে **এकाश्म एएक मिल।**

ওই সব দিনে তিছুজটির ঠিক কো বিদ্যুতে স্থান ছিল মনোয়োহন ও সূৰ্যার। তারপর সংগত কারণেই তিভুগ তিনটি বাহা আর সরল রেখায় থাকে বাইরের অনিবার্য টানে কিছা সরল ও অসরল নকশা তৈরি করে প্রসারিত হল দানা দিকে। তব্ এই সেদিন প্রথদ বিশেষত মেয়ে কলেই মিছিকার সব বা অথবা আশা প্রথমে সূৰ্যাকে ছুগ্ম অন্ধেতে চেয়েছে।

আজ সকালের নাটক স্ত্রিধে করে দিখেছে মনোমোহনের। o ব্যাপারে মন-স্থিব করতে থবে সাং **করেছে। এই ব্যাপারে** তাঁর প্রচর দি **ছিল। এক স***তাহ ধরে অনেক ভো কোনো সিন্ধানেত আসতে পার্রাছলেন একটা বড় ভাল প্রস্তার ত্রসেছে কাছে। প্রস্তাবটি কা ছেন তাঁদের পা গ্রামের ছোট ় চে^{ছি}া, যাঁর দালার স দেশ-বিভাগের অ . মনোমোহ নের বম্ধ্যত্ব ভিলা ছোট চৌধ্যুরীর একটা ব আছে বারাণসীর সোনারপরে। বাজিব একভলার একটি করে ছোট চৌধ্য মায়ের নামের দাতবা িচ কিৎসালে? ভার যাঁর ওপর ছিল, এক মসে হল মৃত্যু হয়েছে। সেই বাড়ির এবং চিকিং লয়ের দায়িত নিতে হবে মনোমোহন দোতলার ঘরগালো মাঝে মাঝে এ সাফস্ফ করে তালা দিয়ে রাথবেন নিজে থাকবেন এক তলাটায়। চৌধ্রীর বিশ্বাস, মনোমোহন ভ পারবেন। অনেক দিন থেকে তো হোহি প্রাথির বইটই পড্রেন, পরিচিত্দের 🔻 দিক্তেন। শেয়ালদার কা**ছে** ফার্ণিচ দোকান করতে যে-ভারাপদর্ক টাকা অংশীদার হয়েছিলেন মনোমোহন অত্তাশ্ত চত্র। ক্রমান্বয়ে তাঁকে আরো গ ঠকাবে। বারাণসীতে গেলে ছোট চৌ যে-টাকা পাঠাবেন তাতে মনোমোহনের যাবে। অর্থেকে নিয়ে যেতে পার্কে এ

কার কুসপা থেকে দ্রে গিরে ছেলেটা হরত বদলাতে পারে। ডাছাড়া বাবাকে টাকা দেওয়ার দার থেকে অব্যাহতি পেরে বর্ণ বাঁচবে। ছোট চৌধুরীর প্রশতাবের যুক্তিগুলো নিখাদ। সাত দিনের মধ্যে এই প্রথম ছোট চৌধুরীর প্রতি কৃতক্স হলেন মনোমোহন। সিগারেটটার শেষাংশ চেপে নিভিরে ফেলে দিলেন। চটিলোড়া পাবে গালিকে বাড়ির বাইরে এসে ভাবছিলেন, বারাণসী, আহা বারাণসী, সুদ্রে মধ্র প্রবিদ্ধ বারাণসী! একবার ছোট চৌধ্রীর সপো দেখা করা দরকার। বলে আসতে হবে, তার প্রকাবে মনোমোহন রাজ!। মনে হচ্ছে, আজ আর কোনো দ্বিধা নেই।

গলি থেকে বড় রাস্তায় এলে খোলা-মেলায় গারে বিকেলের হাওয়া লাগল। কোথাও আর রোম্পুর নেই। তাপ নেই হাওয়য়। বাড়িতে কাচা হলেও মনো-মোহনের খুডি-পাজাবি মোটেই ময়লা নয পাটভাঙা। কেমন পবিচ লাগছিল। এক

সণতাহের দ্বিধার পর একা সম্পাণেত আসতে পেরে ভাল লাপছিল। দাড়িটা কামানো থাকলে হয়ত আরো ভাল লাগত।

বাসে উঠে বসবার জায়গা পেরে
গোলেন। উল্টো দিকের বাস, তাই ভিড়
একট্ কম। অফিস-ফিরতি বাস হলে
এ সময়ে উঠতেই পারতেন না। রাস্তার
ও-পাশে পরিতোবের মতো টানটান
ভগিতে একটি ছেলে হটিছে, পালে
মল্লিকার বয়সী একটি মেরে। এত দ্বে





লিলি বিছুট কোম্পানি গ্লাঃ জিঃ। কলিকাতা-৪

হলত বিদ্যাল জানলা থেকেও ঠিক বোঝা
হার, মেরেটি অবিরাম কথা বলতে, হেলেটি
লুনছে দুখা। যতক্ষণ দেখা গেল, মদোমোহন দেখলেন। সকালের পর মারাকাকে
ভার দেখতে পান নি। কিন্তু জানেন,
মারাকা দুখারে স্বাভাবিকভাবে থেরেছে,
একটা রোদ পঞ্চলে স্ব্যাকে বলে বাইরে
গেছে। ফিরতে একটা দেরি হলে ভাবতে
হারল করেছে। কাল প্রশুক্ত মারাকার
ফিরতে রাভ হলে স্ব্যার ভাবনা হতো।
আরু ঠিক তেমন ভাবনার আর কারণ
নেই। অর্থেক ছাপা. অর্থেক হাতে-লেথা
ধ্যুসর কাগজ্পানা পরিভোষ ক্রমা রেথে
গ্রেছে।

Tarty on the second of the sec

वास्त्र कानमा (थरक मतासाहतन कारिय भएन, वक कामगा मा मुद्राक लाक कासगा मा मुद्राक लाक कासगा का मुद्राक लाक कासणा किया कार्यका की एक एक कासणा कार्यका की एक एक कासणा कार्यका की एक एक कामगा कार्यका कार्

একটা যড়ির দোকানের সামনে প্রশাসত ফুটপাতে উল্লিক্ত লোক জমেছে। ব্ডেড়া আঙ্লের ওপর লাড়িরে জলস্র মাথা ও যাড়ের আড়ালা ভিতিরে মনোমোছন ভিড়ের মাঝাদটা এক বলক দেখলেন। যাসের জানলা থেকে বা আভালে দেখেরেন বলে মনে হরেছিল, বানিও নিশিষ্ট কিছু মানে হর নি, ঙা-ই আবার দেখলেন। জরেণ। নিজের পারের দিকে ভাকিরে বালিক দক্ষতার কোনো দিকে লা ভাকিরে বালিকে বালেক বালিকে না ভাকিরে বালিকে মান্টা ভাকির বালিক দক্ষতার বালিক দক্ষতার পালাবি বালিক দক্ষেরা দ্বাটা পরিচালনা করেছে। ব্রেরের ভিতর দিকের লোকগালোর আনলা ও উত্তেজনা ফ্টেছে টগাবিগরে।

সংগার কারণে মলোমোছনের ইং-গৈন্ডের লাখান কিবিং জনিরমিত হয়ে शिर्ताष्ट्रमः अवना अहे स्तरमत अक्षे मृना কোনোদিন দেখতে হতে পারে এমন कादना क्षरमा भरत बारम नि-अक्षा बदनात्माद्य ब्लाइ करेड क्लाउट भारतन ना। অর্পের অন্তত গত দ্ বছরের আসা-बाउदा, कथा वना अवर कथा मा-रना. ভাৰে না জানিয়েও যেন তাঁকে এমন म्रामान जेला তৈরি করছিল। তব্ হ্ৰপিডের দাপাদাপি ট্যং স্বাভাবিক হতের আসতে সময় লাগল। অর্ণকে আর হৈশা হাতে লা। সামনে মান্বের দেরাল **গ্রুলছে। মনোমোহ**ন এখন কী করতে পারেন? এই সাকাসের দশকদের সংগা विश्वका इता अक्छा नज़ारे गुत्र क्तरपन? ঠেলে এগিলে দোকালের সিশ্ভিতে মল-মলের পাঞ্জাবি মোটা বাড়েম পামে মাথা রেখে হাহাকার করে উঠবেন ঃ ওকে হেকে মাথ !

কী করছেন ভিক না বুলে, ঠেলে
সামনে এগিন্ধে ঘাষার বদলে মনোমেছেদ
বরং বৃত্তের বাইরের দিকে চাপেচাপে
একট্র সরে একেন। ঠিক কিছু না দেখেও
কোনো রহসাময় কারো অদৃশ্য হাত তাকৈ
ঠৈলে ঠুলে বৃত্তের বাইরের দিকে নিয়ে
আসহিল। মনে ইচ্ছিল, নিজেকে দুভ
কুরিরে ফেলা দরকার। যদ অরুণের সংশ্য চোখাচোখ হরে যার! কোনকুমে ছেলেটা বদি
এখানে তার অস্তিত্ব টের পায়! তাহলে
কোনোদিদ আর কী করে তার
মথ্যেম্থি হবেন?

একজন দশক মবাগত অপন্ন একজনকে বলছিলঃ 'রাসতা থেকে চলস্ত বাসের মহিলার হার ছিনিবে নিতে চেণ্টা করেছিল। ধরা পড়ে গেছে বাছাধন। নাক-থত দিরেছে। এবার শালা বৈঠক মারছে দ্শা বোলবার। আরো কিছু হবে। ওসব প্রিলশ-ক্লিশে দিরে লাভ নেই।'

নতুন করে উল্লাসের গমক উঠতে মনো-মোছনকে ওদিকে মূখ ফেরাছে হল। মোটা খাড় এক বালতি জল ঢেলে দিচছে। যার ওপর জল ঢালা হল তাকে দেখতে পেলেন না। কাপুরুষতা **অ**থবা ল**ং**লা অথবা আৰু-ধিক্কার তাকে ভিজের কেন্দ্রিন্দ্র দিকে এগোতে দিল না। পায়ে-পায়ে পি**ছিরে** এলেন অনেকটা দরে চলে এলেন। তথন দ্যাসহ দ্যাথ বেদনার মতো কোনো অন্তেব তাঁকে ক্রমাণ্যয়ে অত্যন্ত দুর্বাল করে रफर्नाइन। भारत स्नाद तिई, मर्ग इन-দীড়িয়ে থাকতে পার**ছেন না। সামনেই अक्टो छन्**रहो मिरकत बान स्वरमीहर, ভিতরে চাপাচাপি নেই, সম্ভবত বসবার ভাষণা ব্যৱস্থে। বাস্টাতে উঠে পড়লেন, অথচ ভাবছিলেল-এমন শেরালের মতো পালিছে মা গিয়ে অস্তত ফাছেই কোথাও গোপনে অপেকা করা উচিত, ভিড়ের মাথ-খানটার দিকে চোৰ রাখা উঠিত। দাঁড়িকে शाक्टक मा भावरंग, मा रह शर्वेभारक কোথাও কলেই থাকডেন। সার্কাসের मर्भाकरमञ्ज मृन्धि बाटक विश्व करत्र स्त्रस्थरहः লেব প্রবিত তার কী হয় না লেখে চলে যাওয়া অস্তত তরি পঙ্গে মোটেই স্বাভাবিক ময়।

এভাবে চলে বাওরা আন্টেড, আবচ দেখতে পাভিলেন বাসটা বেশ লোরে চলছে। এ বাস বালগিক গার্ডেনের দিকে বাবে না, ছোট চৌধুরীর বাড়িক দিকে বাবে না। এ বাস বরং তাকৈ দিরে বাজে অন্য প্রান্তে বর্গের বাসস্থানের দিকে। কেই ভাল। আজ ভিড়ের কেন্দ্রে অর্গুনেক দেখার পর তার বাবা মনোমোহন ছোট চৌধুরীর সামনে গিরে মাখা সোজা রৈপে দাড়াতে পারবেন না। চৌধুরীদের কথা ভাবতে গিরে পুরোন একটা ঘটনা মনে

भारता शाम कांग्रे मृत्य हैयात कि कारण आदित सर्था कांग्रा कांग्रा आत्मार्थ्य साम्राद्ध स्थाप कांग्रा कांग्रा आसम्पर्ध साम्राद्ध स्थाप कर्णा कांग्रा आसम्पर्ध साम्राद्ध सित नृहे जातिर निर्मेष्ठ निर्मेष्ठ साम्राद्ध साम्

বর্ণদের দিকে যাচ্ছেন ঠিকই। তবে আছে বা দেশলেন তার সবউ্কু বর্ণকে কেমন করে বলবেন। স্বমাকেই বা সব কথা যালকেন কা করে। মনোমোহন কাউকে এতটা বলতে পারবেন না, বর্ণকে না এমন কি স্বমাকেও না। অর্ণ যে এতদ্র নেমেছে, ওরা নিজেয়া যেদিদ জানতে পারবে সেদিন জানুক। তব্ শুধ তরি একার পক্ষে এ বড় বেদী ভার।

মনোমোহন দেখলেন, তিনি আসবা আগেই বর্ণ অফিস থেকে ফিরেছে। আং যেন একট্ তাড়াতাড়ি। কোনো রহসাজন-কারণে তাঁর মনে হল, বর্ণ আজ একট দেরি করে ফিরলেই পারত। ছাহলে ঠিঃ এখনই বর্ণের সামনে আসতে হত না অর্ণকে আজ ওইভাবে দেখার পর বর্ণে মুশোম্মিথ হতেও তাঁর অস্বচ্চিত হচ্জিল

তিমি এমন হঠাং এসে পড়ার বাদ হেলেটি হাড়া আর দ্রুজনকে একা অপ্রশাকরে করণের চাপা থাকছে না। এবা পরেই অবশা করেণটা ব্রুতে পারলেন বর্গদের অফিসের খিরেটার। সাতট শ্রু। ছেলেক, ছাত্রর বাপের বাড়ি রে দ্রুজন খিরেটার দেখতে বাবে। মনোমোং তথনই উঠতে চাইশ্লেক সময় আনে আপনি বস্ক্ল চিরা। করি।

অংশ সময়ের মধ্যে তৃশ্তি দুধ তেজপাতা কিসমিস দিয়ে সুজি রামা ব মিয়ে এক। চারের বদলে এক কাপ ডিং চকোলোট। সুজিটা মলোমোহনের হি ভৃশিত মনে রেখেছে।

বন্ধের সংসারে প্রাচুর্যের চিহ্ন ত্ ভবে সর্ব থ্র ছিমছাম। বাজাটা শা দৌরাখা করে দা। ভাল কাপড়ে ঢ সপতা টোবলটা বরং মিচু। ভব্ন ভার ওং ফুল্লানিতে ফুল নিরাপদেই রয়েছে।

শেকে থেকে মালামোছন বর্ মাথার ওপর দিয়ে দেয়ালে তারি বললেন, 'অর্ণটার জন্যে আর মান্ মাথ দেখাকে পারি না। লেথাপড়ার ইতি হরে গেছে। কোথাও বদি ছেলো ঢাকিরে-ট্রীকরে দেয়া যেত।' বাবা আস্বার সপ্সে মণ্ডে বউ নিরে
সৈলেগন্তে বেরোতে হচ্ছে বলে বর্ণ
এতক্ষণ বিশেষ কথা না বললেও বেশ
সিন্ধ ভাব দেখাছিল। একট্ ঘেন
লভ্জিতও। অর্ণের প্রস্পা ওঠার এক
মুহ্তে বসার ভাগা টানটান কঠিন হরে
গেল। বলল, 'আপনার ছোট ছেলের কথা
আমাকে আর বল্বেন না। আপনার
আদরের নন্দন!

কথা বাড়াতে মনোমোহনের সাহস হল

দা। সময়ও ছিল না। বর্ণের জন্য তিনি
বিশেষ কিছু করতে পারেন নি। ক্লুলের
শোষ পরীক্ষাটা পর্যত চালিয়ে নিরেছিলেন
মাত্র। তারপর ছেলেটা চাকরি জ্টিরে
রাত্তিরে ক্লাস করে বি-কম পাশ করেছে।
এখন বউ-ছেলে নিয়ে একট্ সাফস্ফ খাকতে চায়। একে ছ্বার্থপরতা বলা অনায়। তবে শুধু তার সংগ্র কথা বলার সময় বর্ণের গলা কেন যে এত ব্লু

মলিকার বাপোরটাও আর বলতে ইছে হল না। ছোট বোনের এমন জর্বী থবরটা জানবার অধিকার তো বর্ণেরই প্রো-প্রি। তব্ মনোমোহন কিছু বললেন না। প্রতি রবিবারে যেমন আসে, এই রবিবারে এলেই স্কুমার কাছে শুনবে।

ঘরে এবং সদরে তালা লাগানো হল।
ওদের সংগাই মনোমোহন বাইরে এলেন।
তারপর ওদের থেকে আলাদা হয়ে আবার
বাসে উঠলেন। এবার বাস্ডেম্থো বাস।
এক্দিনে কতবার বাসে উঠলেন। নিজেরই
আশ্চর্য লাগছিল। অথচ আসল কাজটা
তো হল না। ছোট চৌধ্রবীর সংগু দেখা
করা হল না। বাসটায় খ্ব ভিড়া দাঁডাবার
ভায়েগা নেই। কন্ডাক্টরকে পয়সা দিতে
প্রত্ব কসরং করতে হল। দ্'জন বাহীর
সংলাপ কানে এল ঃ 'মশাই, ঘাড়ের ওপর
এসে পড়ছেন কেন?' 'আপনার গায়ে মধ্
মাখানো আছে, চাটতে আস্ছি।'

ঠিক তথন নিজেকে বড় একা ভেবে মনোমোহন আরো বিষয় হয়ে যাচ্ছিলেন। মনে হচ্ছিল, কোনো গড়ে অপরাধ করার জনা তাবং শহরবাসীর ভিড়ের কেন্দে তাকৈ শাস্তি দেয়া হচ্ছে। একটা শঙ্ক এবং মস্ন আড়াআড়ি কাঠ দ্' হাতে থামচে ধরে তিনি শ্নো ঝ্লাছেন। সেই মহন্তে আবার বারাণসীর ছায়া পড়স মনে। সন্দের মধ্র প্রচ বারাণসী।

বাড়ির কাছাকাছি এসে দ্' দ্বীপ আগে নেমে পড়লেন। পারে পারে পারিচিত পার্কটার মধ্যে এসে দাড়ালেন। এথানে আলো কম। চোখ একট্ ঠান্ডা হয়। তথনই বাড়ি ফিরতে ইচ্ছে করছিল না। সব দিক ঘ্রে দেখলেন, বেণ্ডে বসার জাহগা নেই। মাটি থেকে ঘাস উধাও। তব্ একটা জায়গায় সামানা সব্জের আভাস পেরে ধ্লোর মধ্যেই বসলেন। বসেই চোধে পড়ল, কাছের একটা বেশুর কোণ ফাঁকা। আগে দেখতে পান ' নি। ধুলো ময়লা মনোমোহন সহা করতে পারেন না। উঠে গিরে বেশুটায় বস্পেন।

ছোট পার্ক। নিরিবিল নেই। চারদিকে খাগা শহর। একবার অলপ দ্রে
কোথাও বোমা ফাটার শব্দ হল। একট,
পরে আশ্চম হরে লক্ষ্য করলেন, বেওটার
তিনি একা। টানটান হরে শ্রুর পড়লেন
মনোমোহন। শরীর টান করতে গিরে
কোমরে একট, লাগল। আকাশের দিকে
তাকালেন। মেঘ নেই। তব্ ধোঁয়াধুলোর
শহরের প্রতিফলিত আলোর জন্য তিন
চারটির বেশী তারা দেখা গেল না।
শিররের দিকে উচ্চে একটা গ্লমোহরের
ডালা তার পাতার জাফরির ফাঁক দিয়ে
বির-বির হাওরা আসছে। বিমন্নি আসছে
ব্রুতে পেরে শরীর আরো শিথিল করে

পাকটা ক্রমে নিজন হয়ে এল। আকাশে এমন মেঘ জমল, যেন বৃণ্টি হবে। জোর হাওয়া মেঘ কোথায় উড়িয়ে নিয়ে গেল। বৃষ্টির সম্ভাবনা রইল না। এ-সব भतात्माद्य किছ, त्याक भातत्वय मा। মাত্র কয়েক শাে গজ দরে দিয়ে মােটর, तिक्म, नित, राम शिन धकित भत धकि। অজস্ত্র। মনোমোহনের ঘুম ভাঙল না। নানাবিধ অসংলান স্বান দেখলেন, প্রধানত শৈশবের। এক-একটা স্বপ্ন ঝাঁকুনি দিয়ে ঘুম ভাঙায়। অবশেষে তেমন একটা ∽ব∙ন তাঁকে জাগিয়ে দিল। সাত-আট ইণ্ডি উণ্চু আমের চারার গোড়ার নরম মাটি খংড়ে অঠিটা তুলে নিয়েছেন ডে'প**্** করবেন বলে, থোলার মধ্যে থেকে শাসটা বের করে নিয়েছেন, তাঁর মা বারান্দা থেকে দেখতে পেয়ে প্রায় লাফিয়ে নেমে এসে হাতে ১ড় মেরে অঠিটা ফেলে দিলেন। উঠোনে পড়ে গিয়ে অঠিটা দ্ব' ভাগ হয়ে গেল। স্বশ্নে দেখতে পেলেন, আঁঠির ভিতরটা পরিচ্ছায়. হালকা নীল। মা'র ভয় মিথো, অঠিটার ভিতরে কোনো কালো লিকলিকে বিষায় সাপ ছিল না।

স্বন্দের ঝাঁকুনিতে ঘ্ম ভেঙে বেণ্টার উঠে বসলেন। ব্রুলেন, অনেক রাত হয়েছে। দেখলেন, চটিজোড়া রয়েছে, কেউ নিয়ে যায় নি। তাডাতাড়ি পা গলালেন।

সদর দরজা ভিতর থেকে বংশ ছিল না।
ঠেলতেই খুলে গেল। বারাণ্দার চেয়ারে
আলোর তলার বসে সুষমা কিছু একটা
করছিলেন। মনোমোহন দরজা বংশ করে
এগিয়ে এলে স্বমা বললেন, 'ছোট
চৌধুরীর সংগা দেখা হল?'

भार्यः भाषा त्नर्क् भव्नात्मादन कानारनन, दर्भान । জামা-কাপ্ড বদলে, হাত^{্রু} ধরে মনোমোহন থেরে নিজেন। থাবার সমঙ্গও স্বমাকে কিছু বললেন না, দেরি হওয়ার জন্য কোনো কৈ ফরত দিলেন না।

কৌটো থেকে লেবরে রসে ভিঞিছে আবার শাক্তিয়ে রাখা যোয়ান মাখে দিয়ে একটা সিগারেট ধরিয়ে ভিতর দিকের বারা-ন্দায় এসে দাঁড়ালেন। বা[']ড়টা উত্তরম্থো বলে ভিতর দিকের এই দক্ষিণের বারাল্যার বেশ হাওয়া আসে। বাডি ফিরে জামা-কাপড বদলাবার আগেই মনোমোহন এই বারালনয় একবার এসেছিলেন। দেখে গেছেন, বারাদ্দার নিদিপ্ট জায়গাটার অর.প একপাশে ঘুমোচ্ছে। ওপাশের রাস্তার আলো একটু আসে জানলা দিয়ে। দেখতে পেলেন, মলিকা খ_নমোয় নি, বিছানায় ছটফট করছে। আল যেন কিছ,ই হয়নি, তেমন স্বাভাবিকভাবে বিছানা থেকে মল্লিকা বলল, 'বাবা তোমরে আৰু এত দেৱি হল!'

মনোমোহন সমান স্বাভাবিক গলায় উত্তর দিলেন, 'এই একটু দেরি হয়ে গেল।'

বারাদার একপাশে সরে এলেন।

অর্ণ হটি, দুটো মড়ে কোলের কাছে নিরে

এসেছে। কোথাও হে'ড়াকাটার দাগ চোষে

পড়ল না। এখানে অবদ্য আলো কম।

মুখের ওপর বা-হাতের কনুই। নাসাগ্রে

কতচিহা আছে কিনা দেখতে পেলেন না।

ডিডের কেন্দ্রে অর্ণকেই দেখেছিলেন তো?

অর্ণের বরসী, একরক্ম আদল অন্য

কাউক দেখে ভূল করেন নি? দেশ ছেড়ে

আসবার সময় অর্ণ বসতেও শেখে দি।

ঘটেবলার বাবার কাছে শোবার জনা বায়না

ধবত।

এ বাড়িটার কোথাও এখন কোনো শব্দ নেই। রাহাখরে স্থমা বরাদ রুটি চিবোক্ছেন। ঠিক চিবোক্ছেন না, দাঁতে তেমন জোর নেই। তাঁর খাওয়া হয়ে গেলে রাষাদ্রর গড়েছানোর একট্ শব্দ পাওয়া যাবে। বরুণের ছেলেটা এতক্ষণে ঘ্নিয়ে বালিশে অনেক লালা ঝার্ডেছে। মনোমোহন চার্ডাকে চোঝে ব্লিয়ে আনলেন। সব কিছ্মু একাল্ডভাবে তাঁর কাছের, সব যেন কাদার মতো অথবা চন্দনের মতো তাঁর আন্ত্রুগায়ে লেপে দেরা হয়েছে, সব পরিপ্রেশ্বরপে তাঁর নিজন্ব। রেলিয়ের হাত রেখেছিলেন। সেখানে দুটো টবে বেল ফুলের চারা লগিয়েছে মলিকা। এই ব্যায়ি নাকি ফুল ফুটবে।

একদিনের মধ্যে মনোমোহন দ্বিতীয়বার সিম্থাকত বদলালেন। কাল স্কালে
ছোট চৌধুরীকে সবিনরে বলে আসতে
হবে, তাঁর প্রস্ভাবে মনোমোহন রাজ্ঞী হতে
পারলেন না। এজক্মে বারাণসীবাসের
সৌভাগ্য হল না। বারাণসী বড় দ্রে।
নিজের শোবার ঘরের দিকে তাকিয়ে হবণপ
আলোয় দেখলেন, তাঁর বিছানা শিউলি
ফুলের মতো শাদা।

म्र्य

সোনালী গমকেত এবং সোনিয়া•••

সতেরো নন্দর বাসাড়ে-লাইনখরে ভারতের প্রায় সব প্রদেশের মান্য তাদের আন্ডাগ্রিষ্ঠ নিরে এসে সংসার পেতে বসেছে। চটকল কারখানার ছোটখাটো কেরানীবাব্ রমেন মিনই শুধু একক। চারটের পর কারখানা থেকে ফিরে লাইনখরের গায়ে ল'গানো 'টিউকল' থেকে বালতি ধরে জল বোঝাই করে মাখায় টেলে চন্দন সাবান, মেখে ন্নান সেরে এসে স্টোভ জ্বালিয়ে চা করছিল, এমন সময় পাশের বাসার হিন্দুস্থানীর সোমন্ত মেয়েটা দোর ঠেলে ভেতরে চুকে কি যেন খেজাখ্যিক আরম্ভ করল।

রমেন শুধোলে, 'কি চাস রে সোনিয়া?' সোনিয়া বেশ কাংলা বলতে পারে। বললে, 'বাব্জী, আপেনার বর্ণটটা লিব।'

'ব'টি, কি হবে!'
'বাবা মাংস আনছে।'
'কিসের?'

'থাসীর।'
বাংটিটা দেখিয়ে দিতে সোনিয়া সেটা নিতে এল। হাতে
পায়ে ওর রঙের চিত্তির। কোমরে রুপোর চন্দ্রহার। চওড়া
লকেটটা ঝুলছে সামনে—নাভির গতটার নিচের দিকে। প্রুক্ত
শরীরে খ্ব খাটো কুর্তো। পাতলা হলদে রঙের ছাপা শাড়ির
মধ্যে দিয়ে বুকের বাংকম ডোল চোখে পড়ে। সোনিয়ার নিত্তব
ঈশ্বং ভারী, চললে মনোরম দেখায়। রঙটা ওর কালো আর

ফরসার মাঝামাঝি।

রমেন বললে, দেখি দেখি, আরে. তোর হাতে এ-সব কি অংকিছিস?'

হাতটা ধরে দেখলে রমেন। লম্জায় হাসতে লাগল সোনিয়া। 'তোর সাদি হবে নাকি রে?'

লভজায় মাথা হেট করলে চিব্ক তুলে ধরে রমেন। ভাসা ভাসা বড় বড় চোখ দুটোতে যৌবনের সলাভ অপূর্ব এক মাধ্রী থেলা করতে দেখলে।

'না ৰাব্, সাদি হবে কেন, অমনি !' 'ব'টি নিয়ে বাচ্ছিস, মাংস-রাল্লা দিবি তো?'

'হা বাব,।'

তার বাপ কোম্পানীর পিয়ারের লোক। তাঁতের সরদার।
খাসীর মাংস খাচ্ছে! তোর বাপের ওপরে অন্য সব লোকজনের
ভ্রাগ।

জানি বাব্। বাপ বলে, কো-পানী বেহার মূল্ক থেকে আনহে। ঢাকরি দিছে। তার কথা না শ্নে কি পারি?'

নারা পড়বে একদিন। আমার কথা ফেন বলিস না।'

'সোনিয়া—কা তৈল রে—জলদি আও'...সোনিয়ার বৃড়ী
ভাবি পাড়ে।

সোনিয়া সাড়া দেয়, 'ৰাতা হায় দাদি, তুমং চিল্লানা, লাংল দেখকর বহুং খুশু হো গিয়া বৃঢ্টী দাদি!' সোনিয়া চলে গেল।

\$03V.



ধরা থাকে রমেনের বাসার ভান-পালে। বা-পালে থাকে রবি দাসের বউ আর ছেলে। তার পালে মাদ্রাক্ষী পরিবার। সোনিরাদের পালে থাকে ভড়িরারা।

চা হলে রমেন ভাকে সোনিরাকে। মারথানে এক-ইটেবু গাঁথানি দেওরা মার একটা পাঁচিলের ব্যবহান। সোনিরা এলে রমেন বলে, তোর ব্ড়ী দাদির জন্যে একটা চা নিয়ে বা।

একটা বগ নিরে আসে সোনিয়া। তা নিরে বায়। দুটো সন্দেশ ছিল তাও দিরে দেয়। দেবার পর সোনিয়ার হাতে চুম্ব থেরে দেয়। সোনিয়া কৃতিম ক্লোধ দেবার তার চোধের তীর ছেমে।

র্রার দালের বড় বড় জ্বাপি-রাখা ্ছেলেটা এলে কলে, 'আপনার সাইকেলটা একটা ধের মামা?'

'CRF4 ?'

'বাজার থেকে আসৰ একট্টু মারের জন্যে ওব্ধ কিনে আনব।'

সাইকেল বার করে নিয়ে চলে গেল ছেলেটা। তারপর এল রবি দাসের স্থাী।

বললে, 'ছেলেটা বড় জানাছে, বলে, বলোনা মা, আমার মাধা কনকন করছে, টাবলেট কিনতে থাবার কথা কলে সাইকেলটা নিই মিশুমামার!'

রমেন হেসে উঠল। বললে, 'বসো রমলা। রবির তো নাইট ডিউটি পড়ল আজ থেকে। তাস খেলাটা মাটি হল।'

'তুমি রালা করবে না?'

থ্ব এক ঝামেলা। শুধু ভাত রাধব কিবা রুটি করব। সোনিয়াদের খাসীর মাংস এনেছে নাকি, ব'টি নিয়ে গৈছে, নিশ্চয়ই এক বাটি দেবে—বাস থ দিরেই হয়ে যাবে। রবি কি ছুমোচ্ছে?'

'না। কোথায় বেরিয়েছে। তুমি ওদের মাংস রামা খাবে?'

বিছানাটার চিত হরে শ্ল রমলা। ছাই ডাঙলে। আড়মোড়া দিলে। বলসে, তেমোর বিছানায় শ্লে আমার ঘ্ম পার, কেমন নরম!

রমেন কোনো মন্তব্য করে না। চোথ বন্ধ করে পড়ে থাকে রমলা।

রমলা একট্ আলসে এবং মোটা হরে বাচ্ছে। প্রথম ঘোবনে ঐ একটি ছেলে হবার পর থেকে ও বাঁজা হয়ে গেছে। বয়েসে বোধহয় তিরিশ হবে।

রমলা বলে, 'তুমি বিয়ে করবে না?' 'তুমি তো আছই আবার কেন?'

'আমার মধ্যে আর কি আছে?' হাসলে কলো।

'যা আছে ঐতেই আমার মতন একজন গরিকের চলে যায়।'

—বলে রমলার কাছে এসে বসল রমেন। তারপর কাতুকুতু দিতে শ্রের করলে রমলাকে। রমলা বালিশে মুখ চেপে হাসতে হাসতে ওর হাডটা সরিমে দিতে লাগল। শেষে দৃজনে হাডাহাতি লেগে গেলা। এবং আরো পরে এ ওকে জড়িয়ে ধরতা। এ ভাদের জীবনে নজুন বিষ্ট্রনর।
দশ বছরের প্রোনো ব্যাপার। কিছু কণ
পরে রমলা ব্রেকর ভেতর কনকন করছে
বলে চলে গেলে রমেন চুপ করে আছমের
মতো পড়ে থাকে। অংশকার হরে বার।
আলো জ্বালে না। সে বোধহর ঘ্নিরের
পড়েছিল।

হঠাং গাধার চিংকারে তার ঘ্ম ভেঙে গোল।

শিব মন্দিরে বিজন্বিত লরে খণ্টা বাজছে: রবির গলা শোনা যাছে, 'এই বনির, মাথার জল ঢাল! রমলা—রমলা!'

িক হল আবার রমলার?

আলো জেবলে ছনুটে বেরিয়ে এল রমেন।

রমলার ভাষণ কণ্ট হচ্ছে বৃংক, ডার চোখের বল লুটো বেরিরে পড়েছে। দাঁত লেগে গেছে।

হাসপাতালে নিরে হাবার ব্যবস্থা করলে রমেন। কোশ্পানীর গাড়িতে করে ওরা বাপ-বেটার নিরে গেল কলকাভার।

রমেন ধন নিজেকে অপরাধী চেবে বাসার ফিরে কিছুক্ত জড়ের মতন পড়ে রইল সজিচেয়ারে।

সরদার সাঁতারাম তেরারা এল বাসার।
তার গলা শোনা গেল। বেটা মদ খেরে
এসেছে। কিছুক্লণ পরে সে তার ভূড়িভালা
নির্বাক বন্ধ কালা স্থার ওপরে খ্র
তান্বতান্বা করেই আবার জ্বার আভার
চলে দেল। সারারাত হয়তো আর ফিরবে
না। পড়ে থাকবে কু-প্রানীতে।

সোনিয়ার মা নির্বাক হয়ে গেছে।

খড়ম দিয়ে নাকি মাথায় মুখে কাথের
ওপরে একবার খুব মেরেছিল তেরারী।
রাচে আর তেমন কিছু দেখতেও পায় না।
সোনিয়া এক সময় এক বাটি তরকারী

"রোটি এনে দিব?' 'দে। তোনের কুলোবে?' 'হাঁ।'

সোনিয়া জল গড়িরে এনে খাবার দিলে। কেমন খরের বউ বা মেরেরা দের। রমেন কললে, 'আবে বাঃ! চমংকার মাংস রামা তো? কে রাধলে, তুই বৃত্তি।

'হা বাব্**জা**।' "তুই আমার বউ হবি?"

'লাজ লাগে বাব্!'
'হয়ে যা। অনেক গয়না দোব। শাড়ি দোব।'

আপনার বউ নাই?

'না।'

নথ খ্ৰ'টতে থাকে সোনিয়া। রমেন কলে, 'তোর বর হবে দেখাঁব ইয়া মোচঅলা কোন এক ব্যাটা!'

থিলখিল করে হেসে উঠল সোনিয়া। রমেন ভাকলে, 'আর, এখানে বস, থা আমার হাতের একগাল।'

ইং!' লক্ষার জিব কাটলে সোনিয়া।
হাত দিরে পাড়িটা ধরে টেনে কাছে
আনলে তাকে রমেন। সোনিয়া বসলাং
মাংস র্টি গালে প্রে দিলে তার। সে
কক্ষায় মূব চেপে আড়ালে গাল নাড়তে
লাগল।

তোর দাদি, ভাই-বোনরা ব্যোছে? হো। মা?' সেও বি নিদ বাছে।'

'বাপ আসবে কখন?' 'সে আসবে না।' 'কেন?'

'সারা রাত জ্যা চালাবে। আর 'মাসিদের বাড়ি' থাকবে!'

মাসিদের বাড়ি!' তুই তবে তো দেখার বাঙালী মেয়ে হয়ে গেরিস? তবে তুই আন্ধ রাত্রে আমার ঘরে থেকে যা। এই ভাল বিছানায় দ্কানে শারে থাকবখনে। খাওলালি, শোবে কে?'



क्षे काते!' राष्ट्रा चार्न मिन्द्र नानिक लाग मानिया।

> ল্লাভ ভথন বোধহর একটা। ভারদিক কুরাশার ঢেকে গেছে।

গাধা-যোড়া-শ্রোরের কুকুর আর চিৰকার লোনা বাচ্ছে মাঝে মাঝে। কার-শ্বানার ক্ষাক্ষ শব্দ হচ্ছে একটানা।

আৰু রাতকাজ ছিল। রবি দাস খার না খাকলে প্রায় সারারাত রমেনের কাছে শাকত রমলা। এককালে রমেন খুব ভাল ছেলে ছিল। দয়া, সহান,ভূতি, আদল, পাপ প্রণার বোধ ছিল তার মধ্যে টনটনে। কিন্তু রমলা সব ভাসিরে দিলে। জীবনটা বরবাদ করে দিলে। তার ছেলেটা অজ্ঞান অচেতন হরে ঘুমোর—সন্ধ্যার পর শোর আর সকালে ওঠে।

কোম্পানীতে গ্রম আবহাওয়া। দাম-কড়ি বাড়াবার আবার জোর আন্দোলন ছবে। রমেন গরিবদেরই সমর্থন করে। তাই তার চাকরি বেতে পারে বলে ম্যানেজার **্**মকি দিরেছেন। প্রকাশ্যে রাজন**ি**ত করে নাবটে রমেন তব্ ও'রাঠিক লোক

হঠাৎ দোরটা খোলার অলপ ぬあるる সাড়া হয় যেন। হয়তো কুকুর নাড়া मिट्य ।

আবার ঘ্নিরে পড়ে রমেন।

সোনিয়া ঘরের মধ্যে এসে চুপচাপ দাঁড়িরে দাঁড়িয়ে কাঁপতে থাকে কিছ্কেণ। ভাবে, চলে বাবে কিনা!

কিন্তু...পারে হাত দেয় সে।

त्रामान्त्र च्या एक्ट यात्र। ভাকে. 'লুমলা?'

হাত ধরে টেনে নিয়ে গায়ে হাত উठेन मि! 'धिक, তাম, मिए इ स्मरक সোদিয়া!'

সোনিয়ার কণ্ঠ রুন্ধ। কাঁপছে সে শ্ব্য ভীতু কব্তরের মতন। সে কি তবে প্রেমে পড়ে গেছে নাকি বাঙালীবাব, রমেন মিতের ?

'কেন এলে তুমি সোনিয়া?' ক্লান্ত গলার শ্বধার রমেন।

'আমাকে 'বিয়া' করবে?'

'পাৰ্গাল!' রমেন তাকে কোলে টেনে নিলে। বললে, 'হাঁ, ডোমাকেই বিয়ে করব সোনিয়া! তুমি বড় ভাল!'

'তোমার আমার বহুং ভাল লাগে বাব্! দিদ নাই আঁখে!'

রমল্য আবে ফিরল না হাসপাতাল থেকে। পাড়িতেই নাকি সে হাটফেল করেছিল। রমলার হার্ট দুর্বল ছিল। মাঝে भृ वात ल्हाक इलिङ्ग। मत्रवात भ्रति स रबन बदल উঠেছिল। मी॰छ, नद्रफान, **স্থাস্থ্যবৃতী**ে আর দুর্বার হরে উঠেছিল।

অবচ সোনিয়ার মধ্যে কি অপ্রে চ্চিত্ৰতা।

কিন্তু হঠাৎ এক রাত্তে তেরারীর চোৰে পড়ে গেলঃ সোনিয়াকে ধরে বিক্ষা প্রচার मिट्न ।

রমেনকে বললে, 'বাব্জী, আপজোক বহুং ব্রা কাম কর্তা ছারে। দোসরা রোজ हामत्लाकका चौथरम धहेना बुझा काम वर আরে গা আপকা খুন নিকাল দে গা।

কিন্তু সোনিয়া মাস কতক পরে রমেনকে জানালে বে সে নাকি মা হতে

किनिक निरम বিপদ! ওকে কোনো ষাওয়াও যাবে না—ওয় বাপ জানতে পারবে। সে তাহলে কি করে বসবে কে

র্বাব দাস কোম্পানীর অন্য কারখানার हरन राम।

গৈতা লেগে গন্দ্রগোল আবার কারখানায়।

কারখানা বন্ধ। रठार এकपिन निर्धांक रात्र राज সীতারাম তেওয়ারী।

সোনিয়া রমেনের পায়ে জড়িয়ে ধরে কাদতে লাগল, 'বাব জী, আমাদের কি

তারা দেশে চলে যেতে চায়। চিঠি দিয়েছে তেয়ারীর ভাইকে। সোনিয়ার চাল এসে সবাইকে নিয়ে যেতে চাইলে সোনিধা रयरण हारेरम ना। तरमरनंत्र कार्ष धाकर् সে। তার সম্ভানের মাহতে চলেছে সে।

সোনিয়া বললে, 'ভূমি যে আমাকে বিয়ে করবে বলেছিলে?'

'বৰ্লোছলাম, কিন্তু আমি একজন ছাপোষা বাঙালী ভদ্দরলোক, আর তুমি হিন্দুস্থানী মেয়ে।'

'চোপ শয়তান। ভন্দরলোক! আমি **हाहारक वरन एमाव? छम्मत्रत्नारकत्र निकृ**हि করে দেবে?'

রমেন বোকা বনে গেল! সোনিয়া গালে চড় হাকায় যে!

'বাপকে হারিয়েছি, মা থেকেও নেই, দাদি বৃঢ়া, ভাইবোন ছোট। এখন আমার এই অবস্থা করলে—িক আমি করব শানি?'

রমেন বললে, 'তোমাকে য'দ নিই, এত বোঝা আমি বইব কেমন করে? তুমি দ্লো कि जिनला ग्रेका नाउ।'

সোনিয়া বললে, 'চাচা ওদের স্বাইকে লিয়ে যাবে, দেশে ক্ষেতি আছে-কাৰ্ম করবে: বাবা জমি কিনে রেখে গেছে। ভূমি শৃথ্য আমাকে সাদি করে লাও— আমার ইম্জৎ খেয়েছ। তোমার টাকা আমি লিব না।'

শেষ পর্ষত বৃড়ী দাদির সংগ্রাক বেন যু, ভি করলে সোনিয়া। চাচা বোকা-সোকা লোক। ক্ষেত খামার দেখে দেশের, গর্-মোষ চরায়।

বুড়ী রাজি হল। তিনশো টাকা দিলে রমেন সোনিয়ার হাতে। কোনো ক্লিনিক एथरक वायम्था करत स्नरक माकि

व्याज्यक र प्रीटे जब क्लार्य-रंज माकि कारन त्म अव। श्रीखरूप कारण्य होकाग्रहना**छ** ভূবে নিলৈ ওরা তেরারীর।

क्यानिकाना ठटन रणन।

ধাবার সময় সে পায়ে ছাত দিয়ে कॉमराङ कॉमराङ वलाता : 'वाव, आभारक बदन रत्रत्था।'

ब्राम्बन्द्रिक मर् गान विदय्न कार् यदर्शहरू।

পাগলের মতো সেদিন সারারাত শ্র্য কত কি হাতড়ে বেড়িরেছিল বাসার অন্থকারে। এ-পাশের বাসায় রমলা নেই -ওপালে নেই সোনিয়ারা। এখানে আর পড়ে त्थरक कि श्रव ?

কিন্তু মাস পেরিরে গেল। জীবনটা বড় একা একা বোধ হতে সাগল। ঘরে ফিরে বাবে কিনা ভাবতে লাগল।

তার এখন বিরে করা দরকার বোধহর।

কারখানার স্টাফ লাইরেরীতে সহকমী বংধ্ সত্যেন সরকারকে সে কথা জানাতেই সে তাদের বাড়িতে টেনে নিয়ে গেল। আর তার বোন শীলাকে দেখিয়ে বললে, 'একে তোর পছন্দ হয়?'

রমেন বললে, 'অপছন্দর কি আছে!'

যদিও সে জানত শীলার স্থেগ অন্য একটি ছেলের অবাধ মেলামেশায় খবর স্বাই জানে। কিম্তু এখন ব্যক্তিম্বাধীনতার যগে। ঠগ বাছতে গেলে গাঁ উজাড় হয়ে যায়।... भौना मधाभु काता प्रमुख करत कथा বলতে জানে। চমংকার রোমান্টিক মেয়ে।

খন-খন কয়েকদিন সে রমেনের বাসায় আসতে লাগল। ঘরটা তার গ্রিছমে পরিপাটি করে দিলে।

শীলা বললে, 'আপনার চার্কার চলে যেত এই মাসেই। ম্যানেজার শ্নেছেন আপনার সংক্ষে আমার বি: হচ্ছে। তাতে খুশীই হয়েছেন। আচি আপনার জন্যে রিকোয়েস্ট করেছি। । দিয়েছেন বিয়ে হলেই আপনার পানামতি করে দেবেন। আর স্টাফ কোয়ার্ণারে একটা ক্ল্যাট দেবেন।'

শীলা অভ্তুত মেয়ে। স্ব দিকে তার চোখ! চুল আঁচড়ে দিতে দিতে দ্-ুহাতে রমেনের মুখখানা করতলে পদ্মফ্ল ধরার মতো করে চুম্বন করলে। ওর মধ্যে একটা আট আছে। কাট'দি আছে।

অতএব বিয়ে হয়ে গেল।

সোনিয়ার কথা মনে পড়ল রমেনের। তার মন খারাপ হয়ে গেল।

কে জানে এতদিনে সোনিয়ার কি হল। হয়তো সোনিয়া তার বাচ্চাটাকে মেরে ফেলেছে। কিন্বা হয়তো মারে নি। স্বামী মারা গেছে বলে ছেলেটাকে দিরেছে। মহুরা গাছের ডালে কাপড়ের দোলনায় শ্ইয়ে রেখে দিয়ে তার বাবার ক্ষেতে পাকা সোনালী গম কাটছে।

—आवम्बन करवान

त्रवीन्म्रनाथ : विज्दर्भ देखदत

শ্রীলোকনাথ ভট্টাচার্যের প্রবন্ধের উত্তরে আলোচনার কনা অমৃত সম্পাদক আহ্বান জানিয়েছেন বলেই এই করে প্রবদ্ধতি লিখতে সাহসাঁ হলাম। তিনি ঠিকই বলেছেন; যদিও রবীন্দ্রনাথ সম্বন্ধে অনেক প্রবদ্ধতি করেকখানি ভাল বইও বেরিয়েছে তব্ আরো অনেক বেশী আলোচনা ও ভাল বই লিখিত হওয়া উচিত, যেমন শেকসপীয়ার সম্বন্ধে আজ্বার হচ্ছে।

আমার মতে রবীন্দ্রনাথ প্রথবীর একজন শ্ৰেষ্ঠ কবি। বাল্মীকি কালিদাস দাণ্ডে শেকসপীয়ার গোটে প্রভৃতি শ্রেণ্ঠ মহাকবি-দের পাশেই তার স্থান, একথা স্বীকার করতে আমি কুণ্ঠিত হই না। রবীন্দ্রনাথকে বোঝা, এবং তাঁর মহত্ব স্বীকার করার প্রধান অশ্তরায় এই যে রবীন্দপূর্ব উক্ত মহাক্বিগণ এমন বিষয় নিয়ে কাবা-রচনা করেছেন যা ধরা ছেতিয়া যায়, মহাকাব্য ও নাটক ব্রুতে অত্যন্ত স্ক্রা অনুভূতির দরকার হয় না। অতি-শিক্ষিত না হয়েও সাধারণ লোকও মহাকাব্য ও নাটকের রস মোটামাটি গ্রহণ করতে পারে। কিন্তু নিছক লিরিক কবিতার রস গ্রহণ কিন্তু এবং প্রকৃত সমালোচনা বরা অপেকা-কৃত কৃতিন কাজ। রবীন্দ্রনাথকে প্রভাবে গ্রহণ করতে বাঙালীর সময় শেগেছিল, এবং বিরূপ সমালোচনা এবং 'দুবে'াধা' আখ্যা তিনি প্রথম খুগে পেয়ে-ছিলেন। ক্রমে খ্যাতির সর্বোচ্চ শিশরে উঠবার পর তিনি দেশের শ্রেণ্ঠ কবি বলে ম্বীকৃত হলেন। ম্ভিনেয় ভঙ্জ অবশ্য প্রথম যুগ থেকেই ছিল। আবার সুধীন্দ্রনাথ দত্ত বিষয় দে প্রভৃতি নতুন কবিদের উত্থানের সংগ্রবীন্দ্রযুগের অবসান, মোটাম্টি এই বলা যেতে পারে। রবীন্দ্রনাথের মত ক্ষমতা ও মাত্রাজ্ঞান না থাকাতে অনুকারী কবিরা ভাষায় উচ্চনাস ও শিথিলতা এনে ফেলছিলেন একথা অস্বীকার করা যায় না। স-তরাং রবীশেদ্রান্তর কবিদের উপর আমার কোনও বিরুপতা নেই, তাঁরা নতুন পথ ঠিক সময়েই বেছে নিয়েছিলেন। নয়তো তাদের আজ কেউ নামও মনে বাথত না। তরে ভাষা গাঢ়বন্ধ করা সম্পদ্ধে তাদের চেন্টা কতদরে সফ্ল হয়েছে বলতে পারি না। অ্যার মনে হয়, রবী-দ্ররীতির কাছাকাছি পেণছতে হলে প্রমথ চৌধ্রীর রীতি গ্রহণ করা দরকার। স্থান্দ্নাথের সংস্কৃত বহুল পাশ্চিত্যের অনুকরণেযে ভাষা অণ্ডতঃ কবিতাম আৰু প্ৰচলিত, অনেক ক্ষেত্ৰেই ত। উল্ভটই হয়েছে, সার্থক হয় নি। **এ ক্ষেত্রেও সেই অধিকারীভেদের কথা**। किन्ठु भ्रमारलाहना कता भारतह धरः मम्भी সমালোচনা নয়, দুই দিক দেখাতে যিনি পারেন তিনিই প্রকৃত সমালোচক। আমার আক্ষেপ এই যে রবীন্দ্রনাথ ভগীরথের মত ভাষার আড়ুখ্টতা ঘ্রচিয়ে গুণ্গাধারা প্রবাহত করলেন। নতুন বাক-সংযমের প্রোধারা স্যোগ পেলেই তাঁর মাহাত্ম কেন অস্বীকার করবেন? আঞ্চকাল রবীন্দ্রনাথ সন্বধ্ধে কিছু লিখতে গেলেই লেখক তার "অতি-কথন". "অতি প্রজলেখনী ইত্যাদ কমেকটা শব্দ না জাতে দিলে যেন অস্বণিত বোধ করেন। পাছে লেথককে যথেণ্ট শিক্ষিত ও যোগা লোচক বলে গণা না করা হয়। তাঁর সব লেথাই যে সকলের সমান ভাল বোধ হবে তার কোনও অর্থ নেই। কিন্তু

আশা মজুমদার

প্রথদ অপ্রথম বাদ দিলেও তিনি যে মহা-কবি একথা স্বীদার করতে লাম্ভাত বা কুষ্ঠিত হবো কেন ? শ্ধ্মহাক্ষিই নন, তার গদারীতির উৎকর্ষ ও প্রাঞ্জলতা বোধ হয় অনুন্দুর্শীয়।

যা হোক, এবার লোকনাথবাব্র প্রবন্ধের আসল উদ্দেশ্যে ফিরে আসা যাক।
"ভোমার স্থিতর পথ" কবিতাটি ব্রুতে একট্র কণ্ট হয় না যদি আমরা "এই প্রবন্ধনা দিয়ে" পাঠের বদলে "এই প্রবন্ধনা মাঝো" এই পাঠান্তর গ্রহণ করি। রবীন্দ্র-নাথ এই শেষ কবিতাটি শেষ শ্যাাশায়ী

अवन्धाश तहना करतम, **এवर अन्,रमध**न-कार्तीरक राजन "आका अथन अहे बाक् काल अकवाद कावाद देन्द्र एम्ब ।" किन्छ সে কাল আর আর্সেনি। কা**জেই ধরে নিতে** পারি কবি হয়তো ঐ "দিরে" ক্যাটি বদলেই দিতেন কারণ "দিয়ে" কথার ওখানে কোমও অর্থ হয় না। **রাণী চন্দ**ে भरलानिय या रेमलाबी प्रयी कांब কোন বইয়ে বা প্রবংশ এই তথাট্যকু আমি পের্যোছলাম, আন্ধু আর তা শারণ করতে পার।ছ না। পাঠক দেখবেন দিয়ে**র যদলে** মাঝে পড়লে কবিতাটি জলের মত স্বচ্ছ হয়ে যাবে। ছলনামগ্ৰী প্ৰকৃতি না একথা দার্শনিকরা বিচার করবেন, আমাদের মত সাধারণ পাঠক সো**জাস,জি** এই ব্রথবেন যে মহৎ লোকের অল্ডরের আলোকেই তাঁকে ভুলদ্রাণ্ডিসংকুল পথে ঠিক দিক দেখায়, এবং মত্যের পরেও **তাই অক্ষয়** শাশ্তির অধিকারী করে। রবীশ্রনাথ শেষ পর্যণত ঈশ্বর-বিশ্বাসী ছিলেন বলেই আমার ধারণা। কিন্তু তীর মত বিরাট প্রতিভা কি অংধবিশ্বাস নিয়ে সম্ভূত থাকতে পারেন ? স্বভাবত**ই ব**র্ণি**ধ** ও তক' দিয়ে তিনিও চিরজীবন**ই বিচার করে** চলেছেন। তাঁর প্রথম দিকের মা**ভাবিধরক** কবিতার যে সহজ বিশ্বাস ও **আশাবাদ** ছিল, বয়সের সংগ্যে, শারীরিক **শব্তি হ্রাসের** সংগ্রের যে ঈষং প[্]রবর্তন ঘটেছে সেটা অত্যনত স্বাভাবিক। একেতে ডিনি কিছু-মার কৃতিমতার আশ্রয় নেন নি, নিজেকে সাধক সভাদুটা বলৈ প্রচার করতে চান নি। সংরেন্দ্রনাথ দাসগ**্রতকে লেখা ^গচঠি'** কবিতাটিতে মৃত্যুর পরে **এখাগের** কোনও মায়া ছায়া ফেলপে কি না মানব মনের এই চির্নত্ন প্রশ্নটির উত্তর খার্জেছেন; মনে তোহয় না তার ঈশ্বর-বিশ্বাসের অভাব

১৫.০০ আল্লম পাঠাইলে ডাক মাশ্মল ফ্রি দেওয়া হয়। ফোন : ৩৫-০৬৩৩

ষটেছিব্দু তিনি সাধনার কোন স্তরে পে'ছেছিলেন সে কথার আলোচনা অবাশ্তর, কিন্তু মহাক্রির যে মহাগ্রুণ Communicability অর্থাৎ নিজের মনের ভাব পাঠকের যনে সংক্রামিত করবার ক্ষমতা, এই শেষের কবিতাগালির সধ্যেও পূর্ণ ভাবেই বিদ্যান—আমরা আমাদের প্রয়োজন মত আহরণকরব এইটাই বড় কথা। সেদিক থেকে তিনি যথা**থ**ই **ঋষি।** অক্ষয় শাশ্তির তাধিকার যদি কারও থাকে তবে তাঁর নিশ্চরই আছে, কারণ তিনি নিজের অন্তরের আলোকে উধের নক্ষতের দিকে দুল্টি রেখে **পথ চলেছে**ন। প্থিবীর নানা মায়া মোচ তাঁকে মোহিত করকেও সম্মোহিত করতে পারে নি। মান্তমারেরই ক্ষমতার একটা সীমা আছে, রবীন্দুনাথের মত মহামানবেরও তাই। বথাসাধ্য সে ক্ষমতার সম্ব্যবহার যদি কেউ করতে পেরে থাকেন, রবান্দ্রনাথকে সে পর্মারে নিশ্চয়ই ফেলা যায়। অক্ষয় শানিত কামনা করা তাই তো তাঁর পক্ষে মোটেই অসপতে নয়।'

এই শেষের কবিতাগালির মধানণি আমার মতে শেষ সম্ভকের (বোধ হয় ৪০ নং) 'প্রথমজাতমম্তং' কবিতাটি। এই কবিতাটিতে সেই অনিব্চনীয়তা রয়েছে যা বিশেষভাবে একাণ্ডই রবীন্দ্রনাথের। বেশীরভাগ লেখক ও সমালোচক কিন্ত্ স্ক্রমটের "আমার প্রণাম লও প্রথিবী" কবিতাটির কথাই উল্লেখ করেন, কারণ বহু, অল•কারখচিত এই গৃস্ভীর কবিতাটি যেন ৰোরোব্দ,রের অপ্র ভাস্কর্য। কিন্ত ভব, আমার মনে হয়, এরকম কবিভা হয়তো প্থিবীর অনা কোনও কবি লিখলেও লিখতে পারেন, কিম্ত "প্রথমজাত অন্তে"র মত কবিকা লিখতে তিনি রবীন্দ্রনাথই পারেন। এখানে একাশ্দই একক। যেমন আমার 2777 উর্বাদীর প্রথম স্তবকগালি যদিই বা জন্ম কোনও কবি লিখনে পারতেন, শেষ দুটি-স্তবক একাস্তই রবীন্দ্রনাথের।

রবীন্দ্রনাথ সামাবাদী নিশ্চয়ই ছিলেন দা। কিন্তু তাঁর মানত প্রীতির মধ্য কৃতিমতা ছিল না, একথা আশা করি সকলেই স্বীকার করবেন। যে যগে তিনি দ্রুমগ্রহণ করেছিলেন সে যুগের সমূহত সমস্যাই তিনি গভীরতাবে চিম্তা করেছিলেন ও সমাধান করবার পথও
করেছিলেন। মুখাত তিনি করি, সম্পূর্ণ
বাংলাভাষা তার বাল্মন্তে কতথানি জেলে
উঠেছিল সেকথা বলবার অপেকা রাখে না।
এবংগে কমালে তিনি কমিউনিন্ট হতেন
কিনা সে চিম্তা ব্রথা। মোটাম্টি বলা বেতে
পারে তার সহান্ভূতি পীড়িত বলিণ্ড
প্রেণীর প্রতিক্লে নিশ্চয়ই বেত না। কিন্তু
কোনও রাজনৈতিক দলের প্রতি পক্ষপাত
না থাকলে কবি বা আর্টিস্ট নস্যাৎ হয়ে
যাবেন এ মত আমি পোষণ করি না; করা
জন্যার বলেই মনে করি।

তাঁকে আমাদের দেশের লোকে ভুলতে বসেছে একথা সত্য নয়। সেণ্টেনারীর সময় থেকে সাধারণ লোকেব মধ্যে তাঁর প্রতিপত্তি বৃদ্ধিই পেয়েছে। তবে যাঁদের বলা যায় দেশের বৃদ্ধিকীবী, এবং তাঁরা অধিকাংশই বামপন্থী, তাঁদের মনোভাব যে অনেকক্ষেত্রেই উদাসীন একথা অস্বীকার করা যায় না। প্রথমেই তার কিছু কারণ দেখিয়েছি। একটা য**ুগের পরিণতির** পর প্রাভাবিক নিয়মেই নতুন যুগের আবিভাব হয়ে থাকে। আফাদেরই জীবনকালে কত দ্রত পরিবর্তন দেখলাম। মোটর দেখলে বিশ্মিত হতাম, ডারপরে এরোপেলন এল. তারপরে এভারেন্ট বিজয়, তারপরে মান্য চাঁদেও পেণছে গেল। যথন কলেজে পড়তাম, ইংলন্ডের ইতিহাসে ভিকটোরিলন যুগের ইতিহাস পড়তে ক্লান্তি আসত, মনে হত সব জায়গায় তো শাণ্তিপূর্ণ সহাবসদ্থান, এদের বৈদেশিক নীতির মধ্যে আর কি বৈচিতা থাকবে ? তারপরেই যে মহাভারত পর্ব আসছে তা তখন মনে হয় নি। স্তরাং মান্ষের মন যে আজ এতটা বদলে গেছে তাতে বিস্মিত হবার কিছুই নেই। জীবনযাত্রা দ্রুছ, চারদিকে অনাায় অবিচার অত্যাচার নিপীড়ন; অনা দিকে যদা্যুগের অভাবনীয় দুতে উল্লতি; এ শাুধা আমাদের দেশে নয়, সারা বিশেব। এ যুগে কবিরা এই সবেরই মুখপার হবেন এতে কিন্ময়ের কিছ্ন নেই। আমার অংপত্তি এই যে, এ যুগে জন্মছেন বলে কবিরা রবীন্দ্রনাথকে ক্রমাণত হেয় করবার চেণ্টা কেন করবেন ? অমৃত পানে অর্র্যুচ এলে ঝাল চাটনী মুখে ভাল লাগে, তাই বলে স্বাস্থ্যকর খাদ্য কোনও কাজেরই নয়

এমন কথা শ্বং অর্বাচীনের মুথেই সাজে। ^ব কোনও দেশে কোনও কাবই চিরদিন এক-ী क्षारव भीठेख इन ना। याक वरन "मिक्स ভলে রাখা" তাই হয়েই থাকতে হয়, সময়-**মত নামিরে নেড়ে চেড়ে** দেখা হয়। আঞ্ **রবল্দিনাথ কারও** কারও কাছে তাই হয়েছেন, এতে তার মাহাত্মা কণা মার ৫ **হাস হয় নি। লোকনাথবাবতে অবশা তা**ই মনে করেন, আমি যতদ্র ব্রালাম। কিন্তু তিনি অক্ষম শাশ্তির অধিকার কথাটি নিয়ে একটা অথথা চিশ্তিত হয়েছেন মনে করি রবীন্দ্রনাথের জক্ষয় শান্তির অধিকার কথাটি ব্রুবার জন্য অতি-পাণ্ডিতের **দরকার করে না। অ**ত্যান্ত সাধারণ অথে ই ম্মার্ক্ট কবি চোথ বন্ধ করবার আগে **ঐ কথা কয়টি বলে** গিয়েছেন। শ**ু**নেছি রবীন্দ্রনাথ বলতেন যে, 'আমার লেখায় কি তত্ত্তাছে জানি না। আমি কবি, আমাকে সহজভাবে নেওয়াই ভাল।

আর একটি কথা বলে এই ক্ষুদ্র প্রবংধ শেষ করি। লোকনাথবাব্ বলছেন, "কিছু, কিছু," আগের কবিতা এবং শেষ জীবনের কবিতাগর্নল প্রথম গ্রেণীর স্বীকৃত হবে। এখানেও দেখি সেই কন্ঠা। কেন প্রথম পর্যায়ের কবিতা, ধর্ম সোনার তরী থেকে প্রেবী প্যণ্ড প্রথম নয় ? মিল আছে, কালার আছে তাকে বড় কবিতা বলাব না ? এই ধরণের মনোভাব ঠিক নিরপেক্ষ সমালোচকের নয়। একটা কথা উঠেছে Hs peaks are few । এর উত্তরে and far between কেবল এইটাকু বলতে চাই যে হিমালয়ের সবোচ্চ শিখরগালির সংখ্যাও থাব বেশী নয়। কিন্তু তার ন**্ট্রই অসংখ্য শি**থর রয়েছে যারা আণিডস বার্কি পর্বতমালায সর্বোচ্চ শুপোর চেয়েও উচ্চতর। স্তরং আধ্যানক লেখক যখন লেখনীধারণ করবেন রবীন্দুনাথকে বিচার করবার জন্য, তথন দ্যা করে একটা বিবেচনা ারে মতামত প্রকাশ করলে উপহাস্য ন ন। একথা আমি লোকনাথবাব,কে লঞ্চ করে বলছি না, তিনিও আমারই মত রবী-দুভক্ত আমার বিশ্বাস: তবে ব্রবীন্দ্র সমালোচনার নামে কিছু কিছু বিরূপ মনোভাব অনেকের লেখায় প্রকাশ পেতে দেখোছ তাই এই 'का**छ**।





田庫

ভप्तलाक प्रक्रम ६८म शाल, अपद पद-জাটা বৃষ্ধ করে দিলাম। অর্মান সড়-সড় করে লাল-সব্ল প্ৰতি দিয়ে গাঁথা এক:শা **বছরের পরেনো** পরদা সরিয়ে বসবার ঘর থেকে অনি-মাসি বেরিয়ে এসে জিল্ডাসা করল, আশা করি সব ঠিক হয়ে গেল? বল-লাম "হুম্'। শ্নে অনি-মাসি মহাথ্সি। কারণ সব ঠিক হয়ে যাওয়া মানেই আমি এ-বাড়ি থেকে বিদায় হব। বড় দুধের বোতলে আবার ভাগ বসাব না। তবে র্যাশন-কাডটা রাথবে নিশ্চয়ই আনি-মাসি। রাথলে বেলি দাম দিয়ে বাড়তি চালগ্রলো আর কিনতে চবে না।

কান থাড়া করে শ্নতে চেণ্টা করলাম বাড়িটাও খুসি হয়েছে কি না ওর অবিরাম সর-সর ঝর-ঝর চিট--পিট খ্রট-খ্রট শব্দের মধ্যে একট্ৰে আনন্দ প্ৰকাশ পাচ্ছে ক না। এতদিন বাদে আমাকে ঝেড়ে ফেলতে পেরে নিশ্চয় ওর খ্রিস হওয়া উচিত ছিল। দাদামশাই উইলে লিখে গেছিলেন যতদিন না বিয়ে হয়, ইচ্ছা হলে এ-বাড়িতে থাকতে পারি। এবং দোকান ভাড়ার টাকার থেকে অন্যদের সঙ্গে সমান ভাগ আমার। অবিশি কাঁচা টাকা ছাতে পাব না, আমার থাওয়া-পরার জন্যে থরচ হবে। কিন্তু বিয়ে কর-লেই, বা যে কারণেই হক অনা জায়গায় বাস করলেই, এ বাডিব উপর আর অধিকার থাকবে না।

ভালো উইল। এর-ই জোরে এতকা**ল ধ**রে থেকেছি, থেয়েছি। দিদিমার গরনার অধেকিও আমার ভাগে পড়েছিল। তাইতো আনি-মাসির কি রাগ। যার একটা ফিরিজিগ সাহেবের সঞ্জে পালৈয়ে যায়, তাকে আবার দিদিমার গ্যনার ভাগ কেন? দাদামশাই শানে খাক হেসে-ছিলেন। 'আরে তোদের মার মৃত্যের সংখ্য সংগ্রেট তো তার অর্ধেক গ্রনা ননীর আব অধেক তোর হয়ে গেছিল। সে তো ইচ্ছে করলে ওগ্রলো সংগ্রুও নিয়ে যেতে পারত। নেহাং আমি ভণ্টে তলে রেখেছিলাম তাই নিতে পারে নি। আমি যদ্দিন আছি, ননীর মেয়ের সব ভার আমার। আমি মলে গয়না বেচে ওর পড়ার খরচ চলবে।

স্পন্ট সে-কথা মদ্রে আ**ে।** আমার তথ্য সাত বছর বয়স। মাকে এক্রেবারে জ্বলে কেছি। বাবাকেও। মা যাবার পর বাবা সেই যে আমাকে এ-বাড়িতে ফেলে দিয়ে গেল, তারপর থেকে আজ অর্বাধ দেখা নেই। কেউ বলে সম্যাসী হয়ে হিমালয়ের কোনো

গহোয় বাস করছে। কে**উ বলে জাহাজে**র ভারার হয়ে দেশে দেশে ঘুরে বেডাচ্ছে। অ'ন-মাসি वर्टन, 'किरमंत्र महाग्रमी, खे শৌথিন মানুষ হল আর কি সম্নাসী! 'স সম্যাসীও হয় নি. জাহাজেও যায় নি। বোম্বাইতে নাম পালটে, ব্যবসা করে লাখ-পতি হমেছে। তোর মার চেমেও দশগণে স্ক্রী মারাঠী মেয়ে বিয়ে করে, ছেলেমেয়ে নিয়ে সুখে আছে। তোর খবর নিতে তার বয়ে গৈছে।'

শ্বনে আমার একট্ও দুঃখ হয়নি ৷ বলেছিলাম, 'তাহলে নিশ্চয় বেচারিকে নিরামিষ খেতে হয়।'

নিরামিষ থেতে আমার ভারি আপত্তি ছিল।

আমি যেবার কলেজে ভরতি হলাম, সেবার দাদ**ু মারা গেলেন। বেশ গেলেন**। আমিও ঐ রকম যেতে চাই। আমাকে ভেকে বললেন, 'লখাকে গাড়ি জাততে বল। ঘে। দাগলো কু'ড়ে হয়ে বাচেছ।' কোথায

গাড়ি, কোথায় ছোড়া, কোথায় লখা। ছোট-বেলায় শ্নতাম দাদামশাইমের বন্ধরো নাকি আগেই উ'চু উ'চু ফোর্ড গাড়ি কর্নোছলেন, किन्जू मामामगाइ किन्द्राउदे किन्द्रन मा। তার জ্বাড়-গাড়ি আর টম-টম, দুটো বড় ঘোড়া আর একটা মাঝারি সাই**জের তেঞ্চ** ঘোড়া ছিল। সে সব গ্রহড় আবার ফোর্ড-গাড়ি কিনতে আছে নাকি! ছোঃ!

তবে আমি এ-সব দেখি নি। বোধ হয় যখন এসেছিলাম, দাদামশাইয়ের তথান পড়তি অবস্থা। মামপা করে জমিদারি গেছে। দোকানঘরের ভাডা আরে কি একটা পেনসন পেতেন, তাতেই সংসার চলত। তব্ খ্ব সুখে কেটেছিল আমার ছোটবেলাটা। জমিদারি নেই তো বয়ে গেল। সে যাই হক, লখাকে চেচিয়ে ডেকে ফিরে এসে দেখি, ইতিমধ্যে সে অদুশাভাবে এসে দাদামশাইকে নিয়ে গেছে। কাঠের **সি**ণ্ডির একটার পর একটা ধাপ উঠে তিনতলার পে^{*}ছৈছি। অম[্]ন আন-মাসির নাতান টিকাল আমাকে চেপে ধরল। 'শীগগির বল কেওয়া ?

সাহিত্য সদনের প্রকাশনা

শ্যামল চক্রবতারি

কলেজ জ্বীট সাহিত্যতীথেরি প্রণাংগ ইতিব ভ

ছাপা হরফের হার্টি ৫০০০

দ্বনামধন্য লেখক তারাশ্যকর বন্দ্যোপাধ্যায় প্ৰত্যকর ভূমিকায় বলেছেনঃ—এই স্থপ্রিচা রচনা পাঠকদের হাদয়ে ইতিহাস ছাড়াও আরো কিছার স্বাদ যোগাতে পর্বে। সাধারণ পাঠক বই খানি থেকে রস ও তথা, হাদয়ের উতাপ ও তত্ত্ব দাই-ই পাবেন।

नजीव नदकारबद

॥ এক অম্ত প্রেষের অম্তন্য কাহিনী॥

এখনো সেই মুখ

শৈলজানন্দ মুখোপাধ্যায় লিথেছেন :--শ্রীমান সঞ্জীবের **লে**খা আমি পড়েছি। **লেখা দিয়ে অনোর হাদয়কে স্পর্গা**কবার স্দ্রেভ শান্তটি সে অজনি করেছে।

স,বোধ বিকাশ গতের

সাম্প্রতিক শিশ্ব সাহিত্যের এক **অভিনব**

স্বগ্ন সত্যি হলো ₹.00

বাংলা শিশ; সাহিত্যের অন্যতম দিকপাল ট্রিঅবিল নিয়োগী (স্বপন্ব(ড়ো) এই পাুস্তক সম্বদ্ধে বলেঞ্ছন ৪--ইদানিং বাংলা সাহিত্যে যে ধরণের ছোটদের বই প্রকাশিত হচ্ছে তাতে মনকে উপ্তে নিয়ে যাবার একটি আদৃশমিলক বাসনার বড় অভাব। আমরা দেখে আনন্দিত হলাম যে সুবোধ বিকাশ দ'তের 'স্বপ্ন সতিয় হলো' গ্রন্থে **कार्येता এकंरि जानरमंत्र मन्धान शृक्ष भार्य**।

अफीम अक्रमगद्वत

ष्ट्राप्टेरन्त्र मन एकालारना शरक्शद्व बहे

যুগান্তর, দৈনিক বস্মতী, লোক সেবক প্রতকের ভূমিকার প্রবাণ কথাসাহিত্যিক মাসিক ও বাহিক শিশ্ব-শাথীর পাঠক পাঠিকাদের কাছে লেখক শ্রীঅতীন মঞ্জুমদার বিশেষভাবে পরিচিত। ছবি ও গণেপ থলমলে এই বইটি বাংলা শিলা সাহিত্যে একটি মধ্র স্থি।



৬৫এ মহাম্মা গাম্ধী রোড, কলিকাতা-৯ ফোন : ৩৪-৮৮৭১

নিশ্চয় আমার বিষের সম্বন্ধ এনেছিল? मिमा वाथ दम अपनत् कि विद्या मिल। किन मिना अभन करता! अहे वटन धिकान कांगरड লাগল। আমি স্থেরি পড়তে আলোওে দেখলাম ভার স্কের ফরসা গাল বেকে মুক্তোর মতো ফোটার পর ফোটা কর পড়িরে নামছে। একট্ও দুঃখ হল না। বিয়ে ছাড়া ওর কোনো চিন্তা নেই। হেসে বললাম, আগে দকুল ফাইনেল পাল কর, তারপর বিয়ে। আরে বিশ্বের জনা ভাবনা কিসের? তোর অমন রূপ দেখে লাথপতিরা তোকে তাদের ছেলেদের জন্য মোড় অবধি সারি বে'ধে ওদের বাড়িব বেহারারা কেমন তত্ত্ব নিয়ে আসবে দেখিস, র্মান-মাসির বিয়েতে যেমন এসেছিল। এখন মন দিয়ে অঞ্চ কষ্ দিকি নি।'

এই বলে চলেই যাচ্ছিলাম, কিন্তু টিকলি ছাড়লে তবে তো থাব। বলল, 'তাংলে ওরা কারা?'

আমার নিজের ঘরে এসে ঢ্কলাম।
টিক লও সংগ এল। বললাম,
'ওরা হল খবরের কাগলে বিজ্ঞাপনদাতা উকিল। ওরা আমাকে একটা খবরদারির চাকরি দিল। মাসে তিনশো টাকা
মাইনে। ১ ডিসেম্বর জ্যেন করতে হবে।
সেখানেই থাকতে হবে। শ্নে নিশ্চর খ্ব
খ্যে হচ্ছিস? আমার ভাগের মাছটা এখন
থেকে তুই পাবি।'

তিকলি আন্তে আন্তে মাথা নাড়ল। মা. তা পাব না। দিদা কম করে মাছ আনাবে। তুমি অনেক দুরে চলে যাবে নাকি? তোমাকে দেখতে না পেলে আমি মরেই যাব।

বললাম, 'নারে, বেশি দুরে নয়। একেকবার এসে তোকে দেখে যাব। এখন যা দিকি নি, কালকের পিড়া তৈরী কর গে। আমাকে একট্বেরুতে হবে।'

'काथाश शारव?'

'বাঃ, চার্করি করতে যাচ্ছি, নতুন কাপড় শামা লাগবে না? এই সব পরে কেউ



চাকার করে নাকি?' সাজ্যিই সব পরেনো রঙ-বলো। চিকাল প্রভার মুখ করে বলল, টাকা কোধার পাবে? দিলা কক্ষ্যে দেবে না।"

যুটো খুলে নুটো একশো টাইন ইনটি দেখলায়। এই নাখ, দৈখোহন কথনো একশো টাকায় নোট? বিজ্ঞাপনদাতা উক্তিবার দিয়েওঃ।

উপহার দিরেছে?

'দ্রে, পাগল নাকি? ডিসেম্বর মাসের মাইনে থেকে আগাম দিরেছে, দরকারি জিনিসপত কেনার জনা। দাদামশাই ছাড়া কেউ আমাকে কথনো উপহার দেয় নি।'

টিকলি বলল, কিসের জন্য দেবে? কালো মেরেদের আবার কেউ উপহার দেয় নাকি? আমার কথা আলাদা। আমি ফরসা। আমাকে মা শাড়ি পাঠার; পালের বাড়ির বংকুদা আমাকে চকোলেট দেয়—।'

বাধা দিয়ে বললাম, 'ফের, বাইরের লোকের কাছ থেকে কিছ, নিয়েছ তো অনি-মাসিকে বলেটলৈ একাকার করব! আমি ষর্থান আসব, তোমার জন্য চকোলেট আনব। থবরদার বংকুর সংগ্যে কথা বলবে না। মহ'-পাজি ছেলে, লেখাপড়া ৩হড়ে 'দয়ে থিয়েটার করে বেড়ায়।'

চিকলি বলল, থিমেটারে ও সীতা সালে। পরচুলা পরে দ্বংথের গান গায়, আর দশকিয়া কে'দে ভাসিংগ্ন দেয়।'

বললাম 'মনে থাকে যেন, ওর সংস্থা মিশবে না। যদি শানি কথা বলেছ, বাস্চকোলেট ফকোলেট সব বন্ধ।'

অনেককণ মনটা খু'ত খু'ত করতে লাগল। আমি গেলে এদের কি দশা হবে? একরকম বলতে গেলে আমি মেয়ে হয়েও এবাড়ির একমাত্র প্রেষ মান্য। অবি^{*}না গণ্গাধর আছে। তার প'চাশী বছর বয়স দাদামশাইয়ের ছোট বেলাকার থেলার সংগাঁ, লখার ছোট ভাই। কানে শোনে না, চোখে ছানি। তবে একটা হাঁক দিলে লোকের এখনো বৃক দ্রু-দ্রু করে। আর আছে ওর-ই বিধবা ভাই*থি* সৌদামিনী। তারও বয়স সত্তরের উপরেই হবে। শুখার মেয়ে। স্বাই ভাকে সদ্। আমাদের বাড়ির বাজার করা, র:লা করা, খাবার দেওয়া, ও-ই করে। ধোয়, বাসন মাজে, কাপড় কাচে মতির মা। সদ্ তাকে বলে চাকরানী। অনি-মাসিও কখনো তাকে নাম ধরে ডাকে না। দাসী। মতির মাহাসে। বলে, 'তা দাসী ঘাসী যা খ্রিস ডাকুক। সারা দিন খাটব, দ্য বেলা পেট পরে খাব আর রাতে বাহি গিয়ে শোব, বাস চুকে গেল। রাতে কখনো পরের বাড়িতে শুতে হয় না দিদি।' এদের সবাইকে াছড়ে যেতে হবে। একবার গেলে এখানে যে আর ঠাই হবে না সেটা নিশ্চিত।

বৌবালারের গলিতে প'চাতর টাকার পাঁচখানা তাঁতের শাড়ি কেনা যায়। পাঁচখানা জামা কিনলাম রঙ । মালিয়ে। দ: জোড়া দ্যান্ডাল, সায়া, বডিস, রুমাল, দব কিনলাম। দুটো তোরালে, গামছা, তেল, সাবান, পাউডার আর একটা মাঝারি সাইকের ফাইবার স্টেকেস। এক সপো এত নতুন জিনিস জন্ম কথনো দেখি-ই নি, কেনা তো স্বেরর কথা। খাসি না হরে পাইলাম না। খ্সির চোটে এগারো টাঝা দিলে টিকলির জনোও একটা গাঢ় নীল লাড়ি কিনে ফেললাম। আর মাত্র এগারে: টাকা রইল।

টিকলি শাড়িটি পরে হাসবে না কদিবে ভেবে পেল না। তারি মধ্যে সময় 576 গণ্গাধর আর সদুকে পাশের বাড়ির বংকু সম্বন্ধে সাবধান করে দিলাম। টিকলির ষোল বছর বয়স। রুপের ডালি। বুল্ধি-শ্বণিধ নাম্তি। ওর একটা ভালো বিয়ে হয়ে গেল আমিও নিশ্চিত মনে চাকরি-ম্পলে যেতে পারতাম। আন-মাসির <u>ব্রাম</u>ী ম্টক এক্সচেঞ্জে দেদার টাকা করেও[ি]ছ*ল*, আবার স্বাদ্ত হয়ে শ্বশ্রবাড়িতে মরে-ছিল। তার একমাত্র মেয়ে চার, বিধবা **হ**য়ে বর্ধমানে মেয়ে দকুলে মায়ের অমতে পড়ায়। তিকলি দিদিমার কাছে থাকে। মা বড় একটা খেজ-খবর নেয় না। তবে মাসে মাসে প'চাত্তরটা করে টাকা পাঠায় টিকলির থরচ বাবদ। ছুটিতেও চার্নুদিদি এবাড়িতে থাকে না। একবার দেখা করে, অমান বাধ্বদের সংখ্যা চলে যায়, শিমলা, কাশ্মীর, প্রুকর। টিকলির জনো নাকি তার মাথের ব^ৰধরো বর খু'জাহ। টিকলি শানে আহ্মাদে আটখানা। আহা, মায়ের বৃণ্ধ্রা বড় ভালো। এদিকে টিক'ল পাড়ার দকুলে ফি-তে পড়ে। দাদামশাইয়ের বাবা **এ** স্পুলর প্রতিষ্ঠাতা ছিলেন।

রাতে শ্রে শ্রে শ্রতে পেতান বাড়িটার অবিরাম সর-সর ঝর-ঝর শব্দ, যেন কোথায় বালি-স্রবি করে পড়ছে,কাঠের কড়ি-বরগায় ঘূল ধরে, গ্রুড়ো হয়ে ঝুর বারে করে খনে পড়ছে। ভারতাম আমাদের মাথার উপর বাড়িটা একটা একটা করে মরে যাচেছ, অথচ এর কেউ টের পাচেছ না। সদ্বলেছিল, টের পাবে কি ব ? আন-দিদির এক ভাবনা, কত কা জমাবে। এই এর মধে। থেকেও । , ৬-কাড়ি প্রস্ জমিয়েছে, এই তোমাকে বলে রাখলাম। এই বাড়িতেই কোথাও ল্লকিয়ে রেখেছে। **মলেও** একটা বাড়াত পয়সা খরচ করবে মরবেও একদিন নাথেয়ে নাথেয়ে। তখন টাকাগ্লো কোথাও খু'জে পাবে না তোমরা। হাণা।

মনে হত বাড়িটা যথন খলে পড়বে,
লকেনো টাকাভ তথন বেরিয়ে পড়বে।
আমার দি'দমাও নাকি বাপের বাড়ি থেকে
আনা এক হাজার মোখর দাদামশাইয়ের
মামলা-মোকদ্পমার হাত থেকে বাঁচাবার
জনো কোথায় লুকিয়ে রেখেছিলেন। মরবার
সময় দাদামশাইকে কি একটা বলার জনা
আর্কুপাকু করেছিলেন। মুখ দিয়ে দ্বর
বেরোয় নি। সে মোহরগালোও পাওরা
যায় নি। এ-সব অনি-মাসির মুখেই শোনা।
সে মাঝে মাঝে ঐ মোহর খেজি। আর সাত
দিন পরে, এই বাড়ি এই সব গলপ, এই
মানুষগালোকে ছেড়ে আমি চলে বাব।

(ক্সমাঃ)

मिर्वेडियेडिय

লাটপ্রসাদের নেপথ্য কথা

শ্বাধীনতা উত্তরকালে যাঁদের জন্ম তাঁরা প্রবল প্রাক্তমশালী মহামান্য বড়লাট বাহাদ্রদের বিক্তমের সংবাদ বিশেষ পান নি। যাঁরা আজ মধ্য-জাঁবনে, বড়লাট বাহাদ্রদের ম্মৃতির দ্বেশ্বন আজো তাঁদের উৎপাঁড়িত করে।

সেইকালে বিটিশ সরকার যাদের হাতে শাসন ক্ষমতা দিয়ে এদেশে পাঠাতেন তারা ঠিক কাষ্ঠপুত্তলিকা নন, যথেষ্ট বিচার বিবেচনা করেই এ'দের এদেশে পাঠানো হত। তাদ্বর-তদারকের খাতিরে যাকে-তাকে এই পদ দেওয়া হত না, এবং বড়লাট একটি শাসক গোষ্ঠীর শোভাস্বরূপ হয়ে শাসন বাবস্থার মাথায় নৈবেদ্যের চড়ো হিসাবে বসে থাকতেন না। দৈনন্দিন শাসন করের সংগে তারা প্রতাক্ষভাবে যুক্ত থাকতেন, লার্টগিরির বিলাস-ব্যস্থের মধ্যে ডবে থাকলেও কাজের মধ্যে ফাঁকি ছিল না। বাৎক্ষচন্দ্র বলেছেন—'ইংরাজ মদ খার বটে, কিব্লুবিপদকালে তার নেশা ছাটে যায়', অর্থাৎ তথন সে সচেতন। লাট বাহাদরেগণ শিকার, ন্তা-গীত, পান-ভোজন প্রভৃতিতে ভূবে অবসর যাপন করলেও, রন্ধদেশ ও সিংহল নামক বৃহৎ ভূখনেডর भाजनकत्म त्री हिल मा।

এই রকম একজন থ্যাতিমান বড়লাট তিনি জাতিতে **ছিলেন লড** রিডিং। ইহুদি এবং আইনজীবি হিসাবে বিশেষ প্রতিভার পরিচয় দিয়েছিলেন। ১৯২১-১৯২৫ খৃন্টান্দ ভারতবর্ষের ইতিহাসে এক অশাশ্ত কাল। সেই সময় মনটেগ্-চেমস-ফোর্ড পরিকহিপত সংস্কার বাবস্থা চাল হচ্ছে, তাই তখনকার উদারনীতিক ব্টিশ পরীকা উদারনীতিক সরকার একটা ভিসাবে বিভিংকে নির্বাচিত করলেন। এই সারে উল্লেখ করা প্রয়োজন, মনটেগা, নিজেও ছিলেন ইহুদী। লর্ড রিডিং-এর কার্যকাল ভারতের প্রাধীনতা সংগ্রামের ইতিহাসে প্ররণীয় হয়ে আছে।

রিভিং পত্নী লেভাঁ রিভিং-এর করেকথানি ব্যক্তিগত চিঠিপত্র ভিতিত করে মিসেস
আইরিশ বাটলার লিখেছেন—দি ভাইসরয়স
ওরাইফ'—এইসব চিঠিপত্রে বিশের দশকের
রাজা মহারাজা, নবাবজাদা, শিকার, গার্ডেন
পার্টি, বিলম্বিত লয়ের রেল ভ্রমণের
কাহিনী ইত্যাদির কিছু সংবাদ পাওয়া
থাবে আর সেই সপ্পে মিলবে সমসাময়িক
রাজনৈতিক ঘটনাবলীর ছিটে-ফোঁটা।

এই গ্রন্থের লেখিকা মিসেস বাটলার জন্মছিলেন সিমলা গৈলে। তাঁর বালালীবন কেটেছে লাহোর আর রাজস্থানে,
এর পর তিনি লিল্লী শহরে ছিলেন অনেকদিন। একজন ইন্ডিরান আর্মি বিভাগের
অফিসারের সপ্রে মিসেস বাটলারের বিষ্
হয়। তিনি উদ্বিশিখেছিলেন এবং স্থানীর
লোকজনের সপ্রে তাঁর মেলামেশা ছিল।
এই গ্রন্থিটিতে মিসেস বাটলার ষ্থেওট
সহ্দয়তার পরিচয় দিয়েছেন, তাঁর দ্যিটভংগী স্বচ্ছ এবং সংবেদনশীল।

লড বিভিং এবং তার স্থা শাসক
ভাতি সলেভ উল্লাসিকতা থেকে কিছ্টা
ম.ভ ছিলেন। সাম্লাজাবাদীদের বহুপারী
মানসিকতার উধের থাকার তাদের পক্ষে
এদেশে কাজ করার স্বিধা হয়েছিল।
লেডী রিভিং ভারতবর্ষ সম্পর্কে কিছ্ই
জানতেন না যথন এদেশে এসেছিলেন এবং
এই দেশে বেশ কিছ্ফিন অবস্থান করেও
ভারতীয় ইতিহাসের বিশেষ পরিচয় লাভ
করেন নি। এমন কি এদেশে বসবাসের
শেষ সমর পর্যন্ত ভারতবর্ষ সম্পর্কে ভার
ধারণা স্পন্ট হয় নি। তবে এই পাঁচ বছরে

এদেশে অনেক নতুন বংধ্-বাংধবী লাভ করেন এবং ভারতীয়দের প্রতি কিণ্ডিং সহান্তৃতিশীল হয়ে ওঠেন।

রাজনীতির বিশেষ কিছ্ জানতেন বলে
মনে হয় না, অগততঃ সেদিকে তাঁর আগ্রহ
ছিল না, তা থাকলে ১৯২১-২৫-এর
ভারতবর্ষের স্বাধীনতা সংগ্রামের কিছ্
সংবাদ তাঁর চিঠিপতে পাওয়া বেত। তবে
ভারতবর্ষের জাতীয় নেতাদের সম্পর্কে
কিছ্ কিছ্ মজার মশ্তবা আছে। সি আর
দাশকে তিনি 'কর্ডিয়ালি ভিসলাইঞ্চ
করতেন। কেন যে এই ঝাল কে জানে,
কিন্তু রাইট অনারেবল শ্রীনিবাস শাস্থী
নাকি—

"—is very interesting, but it is difficult to make him talk".

ব্যন্তভাই প্যাটেল সম্পর্কে তিনি বেশ প্রসম: তার কারণ বোধহর প্যাটেল এসেন্বলীর উন্বোধনী ভাষণে বলেছিলেন যে লাটসাহেব যদি তাকৈ দিনের ভিতর দশবার ডাকেন তাহলে তিনি সে ডাকে সাড়া দিতে অবহেলা করবেন না—এবং

"He renounced his extreme views in his opening speech and was kind enough to say that if the Viceroy sent for him ten times a day he would obey the summons when we met in Bombay he refused to join in our address of welcome to His Excellency though he was careful to say it was not because of the man, only the politics".

মহাত্মা গাণ্ধী এলেন ভাইসরস লক্ত রিজিং-এর সংশো দেখা করতে সিমলা শৈলে। তথন সেখানে বেশ শীত, আর গান্ধীলীর শুরীরটা সেই সুমুর তেমনু ভালো ছিল না, লেডী রিডিং-এর চোথে-গাম্ধীজী—

"elderly, frail, slim man climbing stairs with difficulty, dressed all in home spun, with bare legs, an intelligent face, the eyes of a seer".

বাজিগত চিঠিপতে গান্ধীজী সম্পর্কিত এই বিবরণটাকু নিঃসলেহে প্রশংসনায়।
লাটভবনে ছাগদকুথ ছিল না; গান্ধীজীকে
তাই আপায়নে বুটী থেকে যায়। গান্ধীজী
শুধ্ গরম জল পান করেছিলেন এবং তার
মধ্যে 'চার্মি' কার্টেসি' ছিল। এই অসীন
সোজনো লাট গিয়ী প্রসম হয়েছিলেন।
গান্ধীজী পরে যথন অন্যান করলেন তথন
সেই সংবাদে লেডী রিডিং লিখেছিলেন—

'I do feel sorry for Gandhi. I do believe he is sincere".

এইসব চিঠিপতে জওহরলাল নেহর্র উল্লেখ নেই, কারণ জওহরলাল তথনও নেত্বের প্রথম শ্রেণীতে উন্নীত হন নি। মহম্মদ আলি জিলার কথা অলপই আছে। তবে তাঁর স্থাীর উল্লেখ আছে অনেক বার। জিলা এসেছিলেন সম্থাীক লাঞ্চ খেতে: লেডী রিডিং এই ঘটনাটির চমংকার বর্ণনা ফরেছেন—

"He (Jinnah) came to lunch with his wife very pretty, a complete minx." She is a Parsee and he a Mahammedan (Their marriage convulsed both the communities."

' এর পর শ্রীমতী জিলার পোষাক সম্পর্কে লিখছেন—

"She had less on the day time than any one I have ever seen. A tight dress of brocade cut to waist back and front, no sleeves, and over it and her head fowered chiffon as a sari".

া লেডা রিডিং লিখেছেন যে, তাঁদের একজন এডিকং বললেন, তাঁদের হোটেসটি রাতের বেলায় বেশ শাল্ডিময়, এর জবাবে শ্রীমতী জিলা বললেন—

"I do'nt like nice, quiet nights, I like a lot going on'.

্ৰীমতী জিলা সম্পৰ্কে লেডী রিজিং শেষ কথা বলেছেন—

"All the men raved about her, the woman sniffed",

অর্থাৎ সব স্কারীদের অদ্তে যেমনটি ঘটে থাকে।

প্রথম ভারতীয় নারী ব্যারিন্টার মাদাম কর্নেলিরা সোরাবজি সম্পর্কেও লেডী রিডিং অনেক চমংকার মন্তব্য করেছেন—

"She had been a true friend and adviser to me in many ways—".

এবং ভারতবর্বে দেখা মহিলাদের মধ্যে চতুরতম।

স্যার এডওয়ার্ড লুটেনাস বিখ্যাত ভথপতি। নিউ দিল্লীর সরকারী বাড়ি-ঘর, লাটপ্রাসাদ, এসেম্বলীডবন, সেক্রেটারিয়েট সবই তার পরিকলিপত। একবার লেডী রিডিং-এর অসুখের সময় স্যার এডওয়ার্ড চমংকার গলপ বলোছলেন। তিনি বললেন,
যথন নতুন দিল্লীর পরিকল্পনা হল তথন
ভারতীয় ও য়ুরোপীয়দের নিয়ে একটা
কমিটি করা হল। কি নামকরণ করা হবে
নতুন শহরের সেই হল সমসা। তথন
জ্বন মাস, ছায়ায় আড়ালে তাপমাতা ১১৭
ডিগ্রি। কিছুবতেই আর কেউ ঠিক করতে
পারছেন মা কি নাম দেওয়া যায়; এমন
সময় সয়য় এডুইনের কন্ঠন্বর শোনা
গেল—

"Why not Uzepore? (ooz-a-pore)"
এই উভির পর মিটিং শেষ হল
গশ্ডগোলের ভেতর; সবাই বলতে লাগল
প্রতিভাশীল মান্যদের নিয়ে এই বিপদ কোথায় কি বল্তে হয় তার ঠিক থাকে
না।

বর্তমান দিল্লীতে যে স্বোল্লোত বরে যায় তা দেখলে মনে হয় সার এডওয়ার্ড সেদিন ঠিকই বলেছিলেন।

লেডী রিডিং-এর চমংকার মুক্তর। ভারতীয় রাজনাবগ সম্পর্কে। এক ছেটট বানক্ষেটে মহারাজা পাতিয়ালা এত জোরে হে চৈছিলেন যে, তার কলার থেকে প্রকান্ড একটা মক্তা থসে পড়ল। মহারা**জের** ভোজনম্প্রা এবং জাকজমকপূর্ণ আকৃতি বডলাট প্রাসাদের কর্মচারীদের অভিভূত করে ফেলত। তিনি মাথায় ছ ফাট লম্বা ছিলেন, ওজন কুড়ি শ্টোন, আর তাঁর পোষাক পরিচ্ছদ অনবদ্য। দেশী বিদেশীর সংমিশ্রণে তৈরী পোষাক দেখবার মত ছিল। মহারাজা সিশ্বিয়া চমৎকার মান্ধ। হাসিখ্ণী, ব্দিধমান এবং উল্ভাবনী শক্তিসম্পল্ল। **জামসাহেব ছিলেন** সৌজনাশীল আপ্যায়নকার । বরোদার গাইকোয়াড ভারী ফু,ডিবাজ, তাঁকে আপ্যায়নে প্রীত করা সহজ ছিল। মহারাজা বিকানীরের আকুতি অসামানা তীর সৌন্দর্যের মত আশাও ছিল অসীম। মহারাজ আলওয়ার ছিলেন বয়সে তরুণ সংস্কৃতিবান এবং আকৃতি জাঁক-**জমকপ্রা। পাছে গর**র চামড়া স্পর্শ করতে হয় এই আশংকায় তিনি স্ব'দা হাতে দশ্তানা পরে থাকতেন। ভূপালের বেগম সাহেবা ছিলেন অতুলনীয়া। তাঁর ঘোমটার ভেতর এক জোড়া উল্জবল বাদামী চোখ প্রকাশিত হত। সে চোখ ব্যাম্পদীপত এবং চতুরতার প্রা।

রামপ্রের বেগম সাহেবা ভারী মজার মান্য। তিনি নতকিী ছিলেন—

"She had been a dancer. She is quite fascinating but she chews betel nut all day. She wore a gergeous dress, enormous pearl tassels in her hair, diamonds through her nose. She had to lift the nose ring everytime she drank".

মহারাণা উদরপ্র দেখতে ছিলেন পাসীঘান ছারিং'-এর মতো। তিনি একটিও ইংরাজী কথা বলতেন না, আর এমনই গোড়া ছিলেন যে, লাট বাহাদ্রদের সংশো কিছুতেই একরে ভোজন করতেন নাঃ নিজাম ক্ষ্যুদ্র আফ্তির 'আগলি লিটল-মাান'। দেখতে কুংসিত এই মান্বটির মেজাজ ছিল ভারী কড়া। তাঁর এক অন্চর এক মিনিট দেরী করেছিল আসতে, লেভী সাহেব শ্নেছিলেন এর জনা লোকটির লাখ টাকার মত ভরিমানা হবে।

ভারতীয় রাজনাবর্গের নানারক্য থেয়াল ও বদ-থেয়াল ভারী চমংকার ফুটেছে লেডী রিভিং-এর চিঠিপতে। বড়লাটের এক ভোজসভায় এক বহু বিবাহিত মহারাজা গান করেছিলেন—

"I am tickled to death I am single,
I am tickled to death I am free":
এবং তিনজন গোঁড়া হিন্দু, মহারাজা
"The roast beet of old England"
নামক বস্ত্তির গরিমা কীর্তনে আছহারা
হয়েছিলেন।

র্ণদ ভাইসরয়স ওয়াইফ' পড়তে পড়তে মনে হবে হায় রে সেকাল হায় রে—

--অভয়ঙ্কর

THE VICEROY'S WIFE: BY
IRIS BUTLER Published by
Hodder & Stonghton London
Price 45 Shillings

সাহিত্যের খবর

হিন্দি কৰির সম্মান।। তর্ণ হিন্দি কবি ও গল্পকার শ্রীকানত ভার্মা ৭০ সালের জন্য আর্মেরিকার আইয়োয়া বিশ্ববিদ্যালয়ের একটি বৃত্তি লাভ করেছেন। এই বৃত্তিটি প্রধানতঃ রচনায় ক্রতিম্বের জন্য ইউরোপ 🦈 এশিরার কোন কবিকে দেওয়া হয়। তার সম্মানে ভারতীয় সাহিত্য র্গসক্ষাত্রেই আন**িদত হবেন।** এই বৃত্তির অনুসারে তিনি আমেরিকার এক বংসর অবস্থান করবেন এবং বিভিন্ন সমরে কবিতা পাঠ ও কবিতা বিষয়ক আলোচনা সভায় হিপি অংশ গ্ৰহণ করবেন। শ্রীভার্মা 'সাশ্তাহিক দিনমান' পাঁচকার সহ-'সর্বভারতীয় কবি সম্মে**লনে**' সম্পাদক। কবিতা পাঠের জন্য তিনি কলকাভার এসেছিলেন। এই সময় বাঙালী লেখকদের সংগ্র তার পরিচয় ঘটে। তার প্রকাশিত গ্রন্থগ্রনির মধ্যে ঝারি' (গল্প) 'দ,সরি বার' (উপন্যাস) এবং 'মারা দ**প'ণ**' (কবিতা) বিশেষ **উল্লেখবোগ্য।**

আশ্তলাভিক প্ৰতক প্ৰদৰ্শনী।। গত ২৬ মে থেকে ১ জুন ফরাসীদেশের নিসে একটি আশতজাভিক প্ৰতক প্ৰদৰ্শনী অনুষ্ঠিত হয়। পৃথিবীয় বিভিন্ন ভাষার প্রকাশিত প্রায় লক্ষাধিক গ্রন্থ এই প্রদর্শনীতে প্রদর্শিত হয়। প্রদর্শনী ছাড়াও এই উপলক্ষে শিশ্প-সাহিত্য বৈরক্ষ করেকটি অ্যালোচনা-সভারও আরোজন হয়। এতে অংশগ্রহণ করেন আন্দ্রে চ্যাল্লসন, মিগ্রেজ আস্ত্রিয়ান প্রমুখ একালের প্রসিম্ধ ফরাসী লেখকবৃন্দ।

আৰাচন্য প্ৰথম দিৰলে।। প্ৰতিবারের মত এবারেও আযাঢ্স্য প্রথম দিবসে মহা-কবি কালিদাসের অমর কাবাগাথা 'মেঘদ্তে' ম্মরণে কয়েকটি সাহিত্যসভার আয়োজন হয়। এর মধ্যে বঙগীয় কবি-সম্মেলন ও কলিকাতা সাহিত্যিকদের যৌথ উদ্যোগে এবং সাহিত্যতীথের উদ্যোগে অনুষ্ঠিত 🥻 🏿 অনুষ্ঠানদুটি বিশেষ উল্লেখযোগ্য। প্রথমটি কলকাতার শ্রীবিদ্যানিকেতনের প্রাথমিক বিদ্যাভবনে শ্রীকাশীকিৎকর দেনগরেশতর সভাপতিছে অনুষ্ঠিত হয়। প্রধান অতিথ হিসেবে উপস্থিত ছিলেন শ্রীযোগেশচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়। শ্রীমনোমোহন ঘোষ মেঘদ্তের প্রামেঘ ও উত্তরমেঘ থেকে কয়েকটি শেলাক আবাত্তি করে শোনান। স্বরচিত কবিতা পাঠে অংশগ্রহণ করেন প্রপরানী দাস, সরোজপ্রভা কর, শ্রো ঘোষ, বেলা দেবী, শক্তিপ্রসাদ শর্মা, স্থালচন্দ্র বস্, বঙিক্ম-চন্দ্র ভট্টাচার্য, যোগেশচন্দ্র চট্টোপাধায়ে, রাজেন্দ্রলাল বন্দ্যোপাধ্যায় প্রমূখ। অনুষ্ঠানে সংগীত পরিবেশন করেন সংগীতাচার্য জয়-কৃষ্ণ সান্যাল ও আরো কয়েকজন। সাহিত্য-তীথের অনুজানেও বাংলাদেশের বিশিষ্ট কবি-লেখকেরা উপস্থিত ছিলেন।

কার্থালক গ্রাণ্ড প্রক্রকার।। ফরাসী
ভাষায় ধর্মীয় সহিতা রচনার জন্য প্রতিবারই
বিশিষ্ট লেখকদের এই প্রস্কারে সম্মানিত
করা হয়। এবার এই প্রস্কার পেয়েছেন
রেভারেণ্ড লোই এবং জা রিভারে। লোই
পেশায় একজন আইনজীবী। রিভারে
মূলতঃ সাংবাদিক। তিনি সাধারণ জীবন
নামক গ্রম্থাটির জন্য এই প্রস্কার লাভ
করেছেন।

বিশিষ্ট উদ্ কবির পরলোকগমন।।
বিশিষ্ট উদ্ কবি শাকিল বদায়নি সম্প্রতি
পরলোকগমন করেছেন। তিনি প্রধানতঃ
গজল রচিয়তা হিসেবেই উদ্ সাহিতো
খ্যাতি অজনি করেছিলেন। উদ্ ভাষায়
তাঁর অনেকক'ট কবিতা-গ্রন্থ প্রকাশিত
হয়েছে। বিখ্যাত উদ্ কবি জিলার
মোরাদাবাদীর তিনি ছিলেন ভাবশিষা।
তাঁর মৃত্যুতে উদ্ সাহিত্য যে বিশেষভাবে
ক্ষতিগ্রুসত হলো, তাতে সম্পেহ নেই।

একটি কবিতা প্রতিযোগিতা।। 'ন্প্রে'
পরিকার উদ্যোগে একটি কবিতা প্রতি-যোগিতার আয়োজন করা হয়েছে। এতে বে কেউ যোগদান করতে পারেন। যে-কোন বিষয়ে কুড়ি লাইনের মধ্যে কলিতটি রচনা করতে হবে। যোগদানের শেষ তারিখ ১৫ অগাস্ট। বিস্তৃত বিবরণ ও নিয়মাবলীর জনা যোগাযোগের ঠিকানা ঃ হেনা বাসর, শক্তিবগর, কৃষ্ণনগর, নদীয়া।

বিজ্ঞান-বিষয়ক গ্রন্থের জনা ববীন্দ্র ব্যক্তান-বিষয়ক গ্রন্থের জনা ববীন্দ্র ব্যক্তারে সম্মানিত হয়েছেন শ্রীননীমাধ্য

ও শ্রীদেবেন্দ্রনাথ বিশ্বাস। প্রস্কৃত বইদ্টির নাম বথাক্রমে ভারত-বর্ষের অধিবাসীর পরিচয়' ও 'মানব-কল্যাণে রসায়ন'। প্রথম গ্রন্থটিতে নৃতত্ত বিষয়ে মৌলিক গবেষণা লিপিবন্ধ হয়েছে। লেখক ভারতের বিভিন্ন জাতি ও মানবগোষ্ঠী সম্বশ্ধে এই গ্রম্থে বিশ্তুত আলোচনা করেছেন। শ্রীবিশ্বাস এর আগেও বাংলায় বিজ্ঞান-বিষয়ক বই লিখে সুধীজনের দুল্টি আকর্ষণ করতে সমর্থ হয়েছিলেন। তাঁর 'বিজ্ঞান ভারতী' গ্রন্থটি এর আগেই দিল্লী বিশ্ববিদ্যালয়ের নর্রসং দাস পরুক্তারে সম্মানিত হয়েছে। বাংলাভাষায় বিজ্ঞান-চর্চার তেমন প্রচলন নেই। যাদের এ-বিষয়ে দক্ষতা আছে, তাঁরা বাংলায় লিখতে তেমন আগ্রহ প্রকাশ করেন না। অথচ এছাডা ভাষার উল্লতি কখনও সম্ভব নয়। তাই যাঁরা এই দ্রেহে সাধনায় নিজেদের নিয়োজিত করেছেন, তাদের কাছে জাতি কুতজ্ঞচিত্তে ঋণ স্বীকার করবে বলেই আশা

হেমিংওয়ে প্রসংশা। হেমিংওয়েক নিরে ইংরেজি ভাষায় অনেক গবেষণাম্লক গ্রন্থ প্রকাশত হয়েছে। এখনও তাঁকে নিয়ে এই বই লেখায় তেমন ভাঁটা আসেনি। ভাছাড়া তাঁর উপর লেখা বইগালির বিক্রীও নিতাগত কম নয়। কার্লাস বেকার লিখিত আনেশ্টি হেমিংওয়েঃ এ লাইফ স্টোরি' গ্রন্থাটর তৃতীয় সংস্করণ প্রকাশিত হয়েছিল ১৯৫২ সালে। বইটিতে হেমিংওয়ের জীবন-কাহিনী এত স্প্রন্রভাবে বর্ণনা করা হয়েছে যে, যাঁরা কেবল সাহিতাণাঠক, তাঁরাও এর রস আস্বাদন করতে পারবেন। গবেষকয়াও পাবেন নানা তথা।

ফরাসী ভাষায় ব্লগেরিয়ান কবিতা।। ফরাসী ভাষায় ব্লুগেরিয়ান কবিতার একটি প্রামাণা সংকলন প্রকাশিত সম্পাদনা করেছেন নেভেনা স্টেসননোভা। বুলগেরিয়ার সাহিতা সম্বর্ণেধ বাইরের প্রিথবীর ধারণা তেমন স্বচ্ছ নয়। অথচ এই ভাষায় অনেক উল্লেখ্য গীতি-কবি কাক্ রচনা করে গেছেন। আলোচা সংক**ল**নে অবশ্য দ্ব'-একজন প্রাচীন কবি অন্তর্ভু হলেও অধিকাংশই আধুনিক **য**ুগের। গ্রন্থটির ভূমিকা লিখেছেন এফরেইম করণফিলও। তিনি ব্লুগেরিয়াম কবিতার বিভিন্ন গতি-প্রকৃতিগলে পাঠকের সামনে তলে ধরেছেন। ফলে, ব্লুলগেরিয়ার কবিতা সম্বদ্ধে প্রথমেই পাঠক-মনে একটা ধারণা জন্মায়। এছাডাও কবিদের ব্যক্তিগত পবি-চয়ও বইটির শেষে সংকলিত হয়েছে।

একটি ওড়িয়া গ্রন্থ।। ওড়িশার বিখ্যাত লেখক শ্রীক্জবিচাবী দাসের আমেবিকার, ইউরোপ অফ্রিকা নামক গ্রন্থটি সম্প্রতি বিশেষ আলোড়ন সাফি করেছে। বইটি আসলে একটি দুমণকাচিনী। আমেবিকা ইউরোপ এবং আফিকা শ্রমণের অভিন্যাতিনি এই গ্রন্থে বর্ণনা করেছেন। কিন্তু এই বর্ণনা নিছক চোখে দেখার বর্ণনা নর,
তিনি বেন সমসত কিছুর ভেতরে প্রবেশ
করে তার দার্শনিক দিকটিও ফ্টিরে
তুলেছেন। বইটি তিনভাগে বিভক্ত। প্রথম
ভাগে আর্মেরিকা শ্রমণের, ন্বিতীর ভাগে
ইউরোপ শ্রমণের এবং তৃতীর ভাগে
আফ্রিকা শ্রমণের অভিজ্ঞতা বর্ণতি হয়েছে।
এর মধ্যে আর্মেরিকা শ্রমণের বর্ণনার
অংশটিই চিন্তাকর্ষক হয়েছে। ওড়িকা
সাহিত্যে একটি ম্লাবান সংযোজন হিসেব
বইটি স্বীকৃতি লাভ করবে বলে আশা
কবি।

অশ্বৌদয়ার কৰিতাঃ পোর্ফেট্ট অস্ট্রে-লিয়া নামে একটি কবিতার মাসিক পত্রিকা অস্ট্রেলয়ার সিডনী থেকে নিয়মিত প্রকাশ হয়ে আসছে। এই পত্রিকাটি এরই মধ্য পথিবীর বিভিন্ন দেশের বৃণ্ধিজীবী মান্ধের দুল্টি আক্র্বণ করতে সম্প্ হয়েছে। বিভিন্ন দেশের সাম্প্রতিক কবিশার উপরও তাঁরা বেশ করেকটি বিশেষ সংখ্যা প্রকাশ করেছেন। সম্পত্তি প্রকাশ করেছেন 'কাাণ্টেন কক বাই-সেণ্টিনাবি' বিশেষ সংখ্যা। অভেটলিয়ার কবিতা সম্বাদ্ধ যাঁবা উৎসাচী ত্রণাদের কাছে সংখ্যাতি খালই মলোবান মনে হবে। পাচীনকাল থেকে শ্রে করে অতি আধ্যনিক কাল পর্যাস্ত অস্টেলিয় কবিভার একটি স্তিনশ্চিত সংকলন এর প্রধান আকর্ষণ। পরিকাটি সম্পাদনা করেন শ্রীমতী শ্রেস নেরী।

নতুন বই

জলতরংগ: সৈয়দ মুস্তাফা সিরাজ। বিচিত্র প্রকাশনী, ৭. নবীন কুণ্ডু লেন, কল-কাতা-৯। দাম সাত টাকা।

সৈয়দ মদেভাফা সিরাজ বাংলা কথাসাহিতে। একজন তর.ণ প্রতিষ্ঠিত লেখক।
ইতিমধাে তরি বেশ কিছু উপনাাস ও গ্রেটগলপ পড়ার সোভাগা আমাদের হলেছে।
সাম্প্রতিক বাংলা ছোটগলেপ তিনি বংশেউ
ক্যাতার পরিচয় দিরেছেন। তার পূর্বপ্রকাশিত অনা করেনিট উপনাাসের সন্ধ্যে
জলতরংগা উপনাাসিতি প্রমাণ করে, তিনি
সম্বালীন বাস্তবতাকে উপস্থাপিত করে
সাথক উপন্যাস রচনাতে রীতিমত
পারদ্দী।

বাংলাদশের এক মফ্চন্সল লহর বাবলতলী। এই শহর, তার আদপাদের গ্রাম,
রাস্তাঘাট এই উপনাদের প্রতাক পটভূমি।
বিগত কিছুকাল বাংলা সাহিতো গ্রামবাংলা কমবেশী উপেক্ষিত হরেই ছিল।
সম্প্রতি এই দিকে অনেক তর্ণ লেখকের
দাণিট নতুন করে পড়ছে। সৈরদ মুস্তকা
সিরাজও যে সে বিষরে সচেতন, আলোচা
উপনাস তা প্রমাণ করে। বরং বলা বার,
গ্রামের পটভূমিই বেন তার নিজুক্ব কেন্ড্র।

্ উপন্যাস্টিতে বহু াবাচত काउन **চরিতের ভিড়। কল**কাতা থেকে আসা এক অম্থিরচিত্ত, **জ্ঞাধ্বনিক, বন্দ্রণা**কাতর, জুৰিনের আজিক সমস্যার বিক্ষাৰ্থ ব্যবক **উৎপদ দেন এ** উপন্যাসের নায়ক। তার শৈক্ষি দিদি দীশ্তি, দীশ্তির বাংধবী **জ্ববাদি, জ্**রাদির প্রেমক এক রহস্যময় চরিত্র সম্পীপ চৌধ্রী, বন্ধ্য শিবনাথ ও আরতি, **রাজনৈতিক কমী** অমিয় দাস, বাবলতলীর নতুন হাবসাদার শতদল মৈত্র, উৎপলের নতুন প্রেমের আশ্রন্ধ তপতী, তপতীর দাদা বাবল-তলীর শিকারী অমরদা, উৎপল, মেনকা, সীমা, ফেলু, কান্বাব,—এই সমুত ছোট চারত-নিহিত ফেকচস্কভ কড় চরিত্র, কাহিনী রচনায় উপনাসের ভার ও ব্যাণিত রচিত হয়েছে। সমগ্র কাহিনীটি এদেব मर्सार উष्मनम ও क्रीयम्छ।

সাম্প্রতিক উপন্যাসে জীবর্ননিষ্ঠ সম-কালীন বাদতবতাকে আনতে গেলে রাজনীতি বাদ দিয়ে তা সম্ভব নয়, আলেচ্য লেখক সে সম্পর্কে সচেতন। বাব**ল**তলীর পটভূমিকার বদ্বাব, ও শিবনাথের দলের সংঘর্ষের চিত্র একে, নায়ক উৎপলের আত্ম-আন্বেষণের সপ্তে তাকে জড়িত করে লেখক **দর্গির প**রিচয় দিয়েছেন। উৎপল-তপডীর উপন্যাসের শেষ দকে প্রথম ভাল-লাগা ও ভালবাসার মহেতৃগ্রলি, জয়ার জটিল মানসিকতা, প্রেমিকের জন্য দীপ্তির গোপন-প্রতীকা, ফেল্র আাক'স-ডেল্টে মৃত্যুর খবরে স্মাল চৌধ্রীর অকপট আত্ম-উম্ঘাটনের চিত্র লেখকের সংক্ষা **শিল্পরচনার সাথ কত্ম নিদর্শন।**

কস্তুত 'ফলেতরংগ' উপন্যাসটি লেখকের গ্রামবাংলার সমকালীন বাস্তব-অভিজ্ঞতা প্রবিক্ষণ শক্তি ও তার যথায়থ শিল্পর্প রচনার অন্যতম উদাহরণ।

রঙমছল —(উপন্যাস) পরেশ ভট্টাচার্য। ক্লাসিক প্রেস, ৩ ৷১এ, শ্যামাচরণ দে দ্বীট, কলি, দাম—পাঁচ টাকা।

বিশাল তাঁব্র ভিতরে আলোর বন্যার
মাঝখানে সার্কাসের থেশোয়াড্রা নানারকম
থেলা দেখায়। আর দশকিরা রুখ নিঃশ্বাসে
সেই থেলা উপভোগ করে, ক্লাউনের অংগভেশীতে উজকিত হাসিতে ফেটে পড়ে।
কিন্তু তাঁব্র অন্তরালের যে কাহিনী
অজন্তর মান্বের হাসি-কালা বাথা বেদনার
সিন্তু সে দিকটা ঢাকা থাকে। তাই সেদিক
আমাদের চোখে পড়ে না। পরেশ্বাব্ তাঁর
রঙ্গহল উপন্যাসে আমাদের দাঁড় করিরে
দিরেছেন অন্থকারে মাথা কুটে মরা মান্বেগ্লোর সামনে। তারা হাজার বাতির সামনে
নেচে-কুদে, দু'দিন বাদে আবার অন্ধকারের
মধ্যে হারিছে যার।

কাহিনীর নারক রামস্বামী কৃষ্ণান, আর তার মেরে ক্ষলা কাহিনীর কেন্দ্র-বিন্দুতে দাঁড়িরে। কৃষ্ণানের অতীত স্মৃতিচারণের মধ্যে দিয়ে ঘুরে ঘুরে এসেছে গ্রেট এশিরান সার্কাসের নানা চরিত্রের নানা নরনারী। এসের মধ্যে সার্কাসের ফাউন

গোপাল রাও, ম্যানেকার; শারতাম বোলেক প্রভৃতি চরিত্রগৃলি সফলতা লাভ করেছে। এ সত্ত্বেও বলতে হয় কাহিলীটি আলো সংহত করা বেতো। কিছু কিছু ঘটনা অবাশ্তর ভাবে কাহিনীয় মধ্যে আপ্রর পেরেছে। কিপ্তু ছোটখাটো করেকটি চ্র্টি-বিচুর্গিত থাকলেও উপন্যাসটি সূখপাঠা।

লোপারিক ইন্দ্রে—(কবিতা) সাধনা ম্থোপাধার। মিগ্রালয়, ১২, বিংক্ষ চাটাজণী স্থাটি, কলি—১২, দাম— তিন টাকা।

সময়ের বৃক্তিরে মান্ব এগিয়ে চলে। কি**ন্ত সৌন্দর লাবেল্ড হয়, লাবেল্ড** পড়ে। চিরকাল কিছুই থাকে না। তব্ও তাকিয়ে ঝরে বাওয়া সৌন্দর্যের দিকে কবি-অণ্তর হাহাকারে ভরে ওঠে भारमा ম,খোপাধ্যায়ের 'দোপাটির ইচ্ছে' পড়তে একটা পড়তে কথাগ্লোমনে এলো। রোমাণ্টিক বিষ**গতা কবিতাগ**্লির অংশ অপো সন্তারিত। একটি দ্নিশ্ব কবিপ্রাণ আমাদের বকের মধ্যে নানা প্রশ্ন তো**লে**। এই অপ্ণ জীবনে প্ৰতা খ'্জতে হলে যেতে হবে কল্পনার জগতে। কবি স্বৰ্ণন-বাসিশা। প্রতিটি কল্পনাডরা জগতের কবিতায় সেই কবিপ্রাণের স্পর্শ আমাদের হৃদয়কে নাড়া দেয়। তাঁর <mark>ভাষায় সজী</mark>বতা আছে, রুপকদেপ আছে বলিষ্ঠতা। তিনি অচিরেই প্রতিষ্ঠিত হবেন, এ পরিচয় এই প্রথম কবিতার বইয়েই যথেণ্ট পাওয়া যার।

কথনো মুহুডেরি আলো—(কবিতা) শিশির ভটুচার্য। বাক সাহিতা, ৩০ কলেজ রো, কলি—৯, দাম—তিন টাকা।

আজকে আমাদের জীবন বড় যন্ত্রণা-मृथ्यः क्वांत्रिम्दकः मृश्यः द्यमनातः आवर्णः। তব্তু মান্য এগিয়ে চলেছে। কারণ মাঝে মাঝে হতাশ জীবনের অন্ধকারেও ম.হ.তের আলো আমাদের উদ্দীশ্ত করে তোলে। আমাদের পথ দেখায়—কোন আলোকিত চোখের উদ্ভাস/জীর্ণমন আলোড়িত করে।' কবি শিশির ভরাচার্য 'কখনো মহেতের আলো' কাবাগ্রণেথ এমনি আলোর শ्रीनाः हिन । य जात्नात उन्हारम 'উৎकन्ध्रे মৃত্যুকে ব্যক্তি রেখে' জীবন সম্প্রসম্বানী। তাই আকাপ্কার সোনালীদিনের বুকে নিয়ে কবি গেয়ে ওঠেন, 'প্রতিশ্রতির/ সব্জ ধানেরা/আরো কতদ্রে সোনালী দিন।' এই আশাবাদে কবিতাগর্নি উক্জবল, সংবেদনাশীল মনের শব্দচয়নে কবির পরিচয় পাওয়া যায়। তাঁর শব্দচিত্রগর্মি স্মপত এবং স্কর। কল্পনা ও ভাষার উপর তার এই দখলে রাতিমত আশ্বান্বিত কবিতা **লিখে** হতে হয়। আরো ভালো অচিরেই তিনি নিশ্চর আমাদের উৎসাহিত করবেন।

ন্দের কেবারি (শ্রমণ) ঃ স্বোধকুমার চরুবতী, এ মুখার্লি আন্ত কোম্পানী প্রাঃ লিঃ, ২, ব্যক্তিম চ্যাটালী পাঁটি, ক্লিঃ-১২। দার ৭-৫০ টাকা।

বাঁক্যার লেখক হিসেবে 'त्रमानी শ্রীস্ববোধকুমার চরবতী বাংলা সাহিত্যে স্প্রতিষ্ঠিত। রবীদ্রনাথ রম্যাণী বীক্ষার বাংলা অনুবাদ করেছিলেন 'স্কুলর নেছারি'। ভারতবর্ষ সৌন্দর্যের দেশ। তার যুগ যুগ সাধনা-- स्त्रोग्पर्यात साधना। यूरण यूरण সৌন্দ্রণিপাস, মান্দ্র ছুটে বার দেশ-দেশাস্তরে পাহাড়ে পর্বতে গিরিগাছায় অপর্পকে দ্' চোথ মেলে দেখবার জনো। সুবোধবাবুর 'স্বাদর নেহারি' সেই সৌন্দর্যের অন্বেষণ, যে সৌন্দর্য ছড়ানো আছে কন্যাকুমারিকার, উড়িব্যা মহাবলী-প্রমের মান্দরগারে আগ্রায়, সোমনাথে, আব্ পাহাড়ে। লেখক ঐ সমণ্ড স্থানের যে রূপ দেখেছেন, তা স্ফরজাবে ফ্রটিরে তুলৈছেন। সংগ্যে সংখ্যে কথা বলজেও বিশ্যুত হ্ননি। যার ফলে ল্মণ্পিপাস, মান্ষের কাছে বইটি একটি 'গাইড বৃক'-এর কাজ করবে। পথের স্ববিধা অস্বিধার নানা হদিস তাঁরা বইটি থেকে সংগ্রহ করতে পারবেন। বইটির প্রথমে আর্ট পেপারে ম্চিত বিভিন্ন স্থানের দশনীয় বিষয়ের করেকটি স্ন্দর ছবি সংযোজিত হয়েত<u>ে</u>। গ্রন্থটি ভ্রমণ্পিপাস্দের তৃণ্ডিদানে সক্ষম হবে সন্দেহ নেই।

সংকলন ও প্র-পত্রিকা

श्वनांत्रमः [हैठठ ১०৭७]—সম্পাদক :

আশিস সান্যাল, शिरित छुछार्य,
श्रमम ट्डोंभिक ।। त्रिशन श्रमी,
यामवश्र्व, कनकार्छा र ।। सम :

வक ग्रेंका ।।

এ সংখ্যায় প্রকং বা আলোচনা ছাপা হয়নি একটিও। সম্পাদকীয় বৈশিষ্টা প্রকাশ প্রেছে কবিতার নির্বাচনে। পূর্ব বাংলার কবি সাগর দ্বিতের একটা কবিতা (নিহত গান আর অসমাণত উপনাস) ছাপা হয়েছে শ্রুতে) শেষেরিদকে ছাপা হয়েছে অন্বাদ। লেখকদের ও বিদেশী কবিতার অন্বাদ। লেখকদের মধ্যে আছেন স্টেতা মির, পলাশ মিত, রতেশের হাজরা, তুলসী মুখোপাধ্যার, সৌমোলনু গংগণাধ্যার, নাম্কেল চের্ও, অমল তৌমক, আশিস সানাাল, লিশির ভট্টাচার্য এবং আরো কয়েকজন। আধ্নিক কবিতা পাঠকের পক্ষেপিরদিটি সংগ্রহারগাঃ।

প্রতিবিদ্ধ — (প্রথম বর্ষ, তৃত্যীর সংক্ষান)
— সম্পাদক ঃ গিরিধারী কুন্তু। ৫৯,
বর্নিরাপ্তুর রোড, কলিকাতা-১৪। দাম—
তিরিশ পরসা।

মিনি পাঁচকা 'প্রতিবিদেব'র এই সংখ্যাটি নজর্মককে নিবেদিত। অচিন্তাকুমার, প্রেমেন্দ্র বিত্ত, পৰিত্ত গণেগাপাধ্যার, ভবানী মুখো-পাধ্যার, শিবরাম চক্রবতী, আলাপ্থা দেবী, কৃষ্ণ ধর, বিশ্ব মুখোগাধ্যার, বীরেপ্ত-কৃষ্ণ ভদ্ত, অধিকা নিরোগী, সন্পোক্যার মিনি রচনার পত্তিকাটি সর্ব্ধ। প্রক্ষাের এবং ভিতরে নজর্লের করেকটি চিত্ত সমি-বােশিত হরেছে। 'প্রতিবিদ্ধ' সম্পাদনার সম্পাদক কৃতিবের পরিচর দিরেছেন।

상실하면 가게 있다. 나는 아이는 얼마를 하면 살아가 있다.

দর্শক — (১০ম বর্ষ', ১০ম সংখ্যা) — সম্পাদক : দেবকুমার বস্ত্র রবি মিত। ১৯, পশ্ভিডিয়া টেরেস, কলিকাতা-২৯। এই সংখ্যার মূল্য এক টাকা।

'দৃশক' বিগ্রুত দশ বংসর ধরে একটা বিশিশ্ট ধারার সংগাদিত হরে প্রকাশিত হক্তে। সাহিত্য, শিলপ, দাটাকলা প্রভৃতি সংশ্কৃতিমূলক বিবরাদি এই পত্রিকার আলোচ্য বিবরবিশ্ট লক্ষ করা গেছে, তা রুচিবান পাঠককে আকুণ্ট করেছে। এই সংখ্যাটিতে কলকাতার আশেপাশে বংগা-সংস্কৃতির নিদ্শনি ও বিশেষ করে পূর্ব ভারতের ত্রিপ্রের রাজ্যের একটি প্রণাণ্প পরিচ্য় দান করা হয়েছে। প্রাচীন ঐতিহরে পুনরাবিশ্বারের এই প্রচেণ্টা খ্বাই প্রশাসনীর। পত্রিকাটির বহুল প্রচার বাঞ্চনীয়।

কালৈ ও কলম (কৈন্টে ১৩৭৭)—সম্পাদক
বিমল মিচ। প্রকাশ ভবন। ১৫,
বাকিম চাট্লো স্টুটি। কলকাতা-১২।
দাম প'চাতর পয়সা।

এই সংখ্যার লিখেছেন চুনীলাল রায়,
নচিকেতা ভরম্বাজ, প্রজেশ সন্দোপাধাার,
চিত্তত পালিত, যজেশ্বর রায়, য্থিকা
বস্ত্র, স্কুদরলাল তিপাঠী, মৃত্যুজার মাইতি,
জজিত চট্টোপাধাার, মলাক্রমার বন্দোন
পাধাার, অশোক সেনগৃহ্ণত, ছবি ম্থোন
পাধাার এবং আরো কয়েকজন। ধারাবাহিক
উপনাস লিখছেন বিমল মিত এবং
জরাসাধ।

কাট্ম কুট্ম (বৈশাথ ১৩৭৭)—সম্পাদক শ্যামাপ্রসাদ সরকার। ২৮, বেনিরা-টোলা লেন, কলকাতা-১।। দামঃ তিরিশ প্রসা।।

শ্যামাপ্রসাদ সরকার সম্পাদিত এই মিনি
পারিকাটির যারা পাঠক-পাঠিকা, তাদের
বরস খুবই অলপ। সম্ভবত মিনির জগতে
এই পারিকাটি একটি বিরল বাতিকুম। এ
সংখ্যার প্রথম ছুড়াটি লিখেছেন স্তাজিং
রাম। অনানা লেখকদের মধ্যে আছেন
অবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর (চার ব্লোর গল্প),
জ্যোতিমার গল্পোপাধ্যায় প্রতিমা দেবী
(শালিতনিকেতনের ম্মৃতি), ল্যোভিত্বণ
চাকি, বীশ্ চেধিরী, দিলীপ মালাকার
সম্পাপ রায়, জর্মী চক্তবতী স্ত্ত সরকার শৈলাশের মির ও লীলা মজ্মদার।
পারিকাটির প্রজ্বন, মুদ্রণ ও অঞ্সাক্তরা
অসাধারণ। কৰা — (ঠোমাসিক কবিতাপত) — হর বব', ১ম সংখ্যা ঃ সম্পাদক ঃ দেবী মুখো-পাখ্যার ও সোজনাথ চট্টোপাখ্যার। ১০৯। ৩৪, সাবর্শপাড়া রোড, কলিকাডা-৮। গাম — পদের পর্যনা মাতা।

এই সংখ্যার গোরাপা ভোমিক, কবিতা সিংহ, শাশতন্ দাস, শিপ্তা ঘোব, শংকরান্দপ মুখোপাধ্যার, নির্মালেক্ কবিতা ও রিলকে, কোরাসিমদো, জল্প সিফেরিস, এডুইন মুর প্রভৃতির কবিতার বপান্বাদ আছে। গ্রৈমাসক পতিকা হিসাবে আরতন অতিলর কণি এবং সম্পাদকীরতে প্রস্থাত শিরোনামে বেট্কু লিখিত হরেছে তার বন্ধবা ঠিক বোধগায় নর।

ৰ্ষান্তনী (বৈশাধ ১৩৭৭)—সম্পাদক গাজী বিশ্বজিং ইসলাম।। ৫৫, কলেজ স্ট্ৰীট, কলকাতা-১২।। দামঃ সত্তর প্রসা।।

মনুদ্রে, রচনা-নিব'চনে পঠিক'টি কোনো আলাদা বৈশিষ্টা নেই। এ সংখ্যার প্রথম ছতিশ প্তা জন্তে একটি ধারাবাহিক উপনাসের অংশ ছাপা ছরেছে। লেথক দবহং সম্পাদক। অন্য লেখকদের মধ্যে আছেন, শেখ আব্ল কালাম, ক কু দে, শ্যামস্কার বস্তু ও হিমালর্যনির্থর সিংহ।

সারক্ষত (মাষ-টেচ ১৩৭৬)—সম্পাদক অমিঃকুমার ভট্টাচার্য।। ২০৬ বিধান সরণী, কলকাত্য-৬।। দাম ১-২৫ টাকা।।

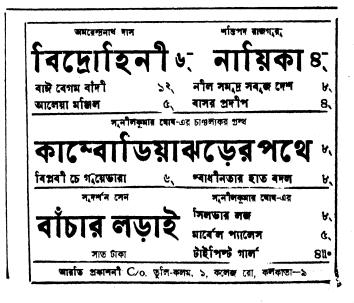
এ সংখ্যার দুটি মুলাবান আলোচনা লিখেছেন ডঃ অমুলাচন্দ্র সেন (ইতিহাস চর্চার বৈজ্ঞানিক প্রণালা) ও হারাণচন্দ্র নিরোগা (বোম্ধ্যমাঃ মার্কাসীর বিচার)। দক্ষিণ আমেরিকার করেকটি কবিতা। অন্-বাদ করেছেন ডঃ অশোকদেব চৌধুরী। গলপ ও কবিতা লিখেছেন বাঁরেন্দ্র চট্টো-শাধ্যার, ম্গাণক রার, কল্যাণকুমার দাশগণ্শত, লোরাণ্স ছোমিক, তুলসী মুখোপাধার, লিলির সামণ্ড, মনোডোর সরকার ও তথাে-বিজর বেছে। প্রেডক সমালোচনা বিজ্ঞানে করেছিল কাবারান্থ বিজর আলোচনা করেছেন দীপেন্দু চক্তবর্তী। পত্রিকাটির রচনামান ও সম্পাদকীয় দুভি উমতধরণের। প্রজনে ছাপা ইরেছে সক্রাসের আঁকা একটি ছবি খেড়ে-সঙ্বারা। সাহিতাপাঠকের কাছে পত্রিকাটি সমাদ্ত হবে।

মানৰ মন ়েনবম বৰ', দ্বিতীয় সংখ্যা !-সম্পাদক: ধীরেন্দ্রনাথ গ্রেণ্যাপাধ্যায়।
১০২।১এ, বিধান সরণী, কর্মকাতা—৪ ।। দাম: ১-২৫ টাকা ।।।

মানব মন' মূলত মনোবিজ্ঞানের
পঠিকা। এ সংখাটি বৈরিরেছে কোনন
ক্ষম শত-বার্বিকী বিশেষ সংখ্যা' ছিসেবে।
প্রায় প্রতিটি লেখাই সুনির্বাচিত। সব
চাইতে উল্লেখযোগ্য হলো 'কোনন প্রসঞ্জে ক্ষেকটি অভিমত' পর্বারে আনাডোল ল্নাচাহ্নি এরভান্দ জাকারিয়ান্তস, জার্জি লোমিদ্দে, আদাতোভহ্নি মিজা ভুরসন লাগ্য ও জি কালচিন-এর ক্ষ্যিতচারধাম্কক রচনাগ্রি। জোতিম'র চট্টোপাধারে লিখেছেন, 'আধানক বাংলা কাব্যে লোনন' দবিক একটি আলোচনা।

দপ্শক [বৈশাখ ১৩৭৭]—সম্পাদ্ভ ঃ রংশেদ্র চন্ধবর্তী'।। ৩২।১৪, মতিলাল মালক লেন, কলকাতা—৩৫ ।। এখ টাকা ।।

এ সংখ্যার প্রবংধ লিখেছেন, আমর্যাভ দাশগুণ্ড, মৈতেরী দেবী ও চিন্ত হৈছে। দিনিনা লীবিক একটি নাটিকা লিখেছেন দীপক সরকার। পাতকাটিতে ক্ষারালর ভাগ চৌধানা সর্বাধিক। গলপ লিখেছেন ভিগ চৌধারী ও জীবন সরকার। পা্তভক সমালোচনা বিভাগে ভাপা হরেছে ভিমটি কাবাগ্যান্থের আলোচনা।



ক্খ্যাত রবীন্দ্রভত্ত !

"নবৰলের বাংলা সাহিতা ছইতে যিন ব্যবীস্থবাৰীর প্রতিভা বাদ দেন, আমরা মার কণ্ঠে বলিডেখিহ—ডাঁহার জন্য দাশ;ু রাষ্ট্রের পাঁচালী ব্যবস্থা"—বলোছলেন সংরেশচন্দ্র সমাজপতি। সেকালের বিখ্যাত লেখক, সমালোচক, বাগ্মী এবং সম্পাদক। সমা-লোচক হিসেবে ছিলেন অতি নিম্ম, কটোর। সাহিত্য পরিকার সম্পাদক এই মান ৰ'ট ছিলেন সেকালের রবীন্দ্রভত্তদের काट्ड বিভীষিকার মৃত। একালেও তাকে রবীন্দ্র-বিরোধীর পে চিত্রিত করা হরেছে। অথচ সাহিত্যিক রবীন্দ্রনাধের ওপর সমাজপতির অন্রাণ অনা কারো চেয়ে কম ছিল না। দ্বীন প্রশিদ্ধনাথের কোনো কোনো গান, প্রবন্ধ, কলিতার ভাষার দৈন্য ও कन्हे কল্পনার বাখিত হয়েছেন ছিন। 🗫ত বহুবার বহু, রচনার তিনি প্রশংসাও করে-ছেন। রবীশ্রনাথকে বলেচহন, 'দেশভন্ত-সাধক', মানবতার প্রোহিত'-বলেছেন 'সোমার লেখনী অক্স হউক'—'অতান্ত সহজভাবে, ন্তন ছন্দে, ন্তন ভংগীতে রবীন্ত্রমাথ বাণ্গালীকে বাংগালীক মর্মের পরিচর দিরাছেন।' তার রবীশ্রবিরোধিতা मञ्जू अ. ब्रबीन्सनात्वत्र कविष्ठा, भग्न, श्रवन्ध সমালোচনায় যে আন্তরিকভা ছিল-ভা व्याधिकारम त्रवीन्तकरस्त हिम किया मरणसः। সাহিত্য পত্তিকার এমন **অজন্ন প্রমাণ আছে**. বা নিঃসংশয়ে সুরেশচন্দ্রকে রবীন্দ্রভঙ্ক প্রমাণিত করে।

টেগোর রিসার্চ' ইনস্টিটটে প্রকাশিত সামরিকপতে রবীল্ড প্রসংগ পর্যারে সূরেল-চন্দ্ৰ সমাৰপতি সম্পাদিত 'সাহিত্য' থেকে রবীশ্র তথ্য সংকলন করেছেন নদ্দরাণী চৌধ্রী। আট টাকা দামের এই বইখানির ঐতিহাসিক মূল্য অনেক। সৃদীর্থ ভূমিকা এবং প্রশেষর মূল অংশ পড়বার পর একথা নিঃসংশরে প্রমাণিত হবে, বিশেষজ্ঞরা অন্ধ স্তাবকের মত এতকাল অসত্যই গ্ৰহার করেচহম। সংস্কেলচন্দের सरीन्त्रविद्यायी मन्छ्या विद्युत्र अवर शालि-গালালের মূল্য বে কতথানি, তা পেছন কিন্দে তাকালে বোভা বাবে সহভেট। এ'দের উপদেশ ও সাবধান বাণীই কবিজে সভক'-ভাবে পথ চলার শিকা দিরেছিল। নিজের ৰাদ্যপথে কবি স্বভাবত জমেক ভুল কয়েছেন. ज्ञारणाधन करतरक्त **अवर श्रीतवार्णन** करत-ছেম। স্বরেশচন্দ্র সেকালে রবীন্দ্র সাহিত্যের প্রতিক্লতা করে ক্ষিকে আন্মোহাতির শুথে চালিত করেছেন। ডিনি এবং ডার মতো স্মালোচদরাই রবীন্দ্র সাহিতোর আদিমতম ভারাকার—স্মাতদসপথী স্মা-লোকদের এমন ক্ষাতা ছিল মা থে, স্ববীন্দ্র বিচারে নতুন কোনো পথের ছাল্প দেন।

সংরেশচন্দ্রের স্মাহিত্যা পত্রিকা ১২৯৭ বৈশাখ থেকে ১৩২১ চৈত্র পর্যণত এবং ১০২০ বৈশাখ থেকে ১০২৭ কাডিক পর্যণ্ড তিশ বছর বেরিয়েছিল। প্রথম শ্রেণীর সাহিত্য মাসিক হিসাবে পত্রিকাটি ছিল বিপ্রলভাবে সমাদ্ত। নবীন ও প্রবীণ লেখকেরা প্রার সকলেই লিখতেন। লিখতেন না কেবল রবীন্দ্রনাথ এবং তার অনুরাগী ভরুরা। সারেশচন্দ্রের 'সাহিত্য' প্রকাশের দেড বছর বাবে বেরোর রবীন্দ্রনাথের 'नायमा' : त्रविष्ट्रनात्थत लिया द्यांभाक मा भातात्र कः स्थ হয়েছিলেন সুরেশচন্দ্র। সেকালের বে-কোন পত্রিকার গৌরব ছিল রবীন্দ্রনাথের রচনা। অথচ সে যুগের বিখ্যাত সম্পাদকের পত্রিকায় যুগণ্ধর কবির রচনা ছাপা বংধ হয়ে গেল। সে অভাব সমাজপতি প্রেণ করেছিলেন অন্যভাবে। রবীন্দ্রনাথের নিন্দা বা প্রসংসা যে কোন প্রসংশ্য তরি রচনার উন্ধ্রতি পাঞ্চ 'সাহিত্যে'। ফলে সাহিত্য-পাঠকরা রবীল্ড রচনার বল্ডিড ছতেন না। অব্শ্য শেষাদকে সমাজপতির রবীকা বিরোধিতার যার ক্ষে গিয়েণিছল অনেক।

 मान्यवं भिन्न नम्ब्य हिन ना। দক্তনে ছিলেন মৃ মেরুর লোক। সুরেশচন্দ্র রক্ষণশীল প্রচিব্যর্ভ্রাস্থ সনাত্রপঞ্চী হিন্দ_{্ধ} আর রবীন্দ্রনাথ সংস্কারম্ভ নব-জায়ত চিন্তাধারার প্রতীক; স্বাতক্ষ্যে, ব্যক্তিছে, বৈশিক্টো অনন্যসাধারণ প্রেষ। সাহিতার চিতেও ছিল দৃশ্ভর পার্থক্য। স,বেশচন্দ্রের শহিত্যবোধের গৌড়াম এবং নিজের সাহিত্য বিশ্বাসে অন্ধ মমন্ববাধ ছিল তার যুভিবাদী সমালোচক र्वनात्र क्षेत्राम नाना। बाल्य बाल्य कठि।द नमार्काठमात्र मराज्य विकार-ठमक चंग्रेज वर्ते, কিব্তুরবীন্দ্রনাথের মত বিব্তৃত প্রতিভার অধিকারী মান্তকে ভার মন্ত সংকাণপ্রাণ সমালোচকের পক্ষে স্বীকার করে নেওয়া সম্ভব ছিল না। অবশ্য সমাজপতির রবীন্দ বিরোধিতার অস্তরালে ব্যক্তিগত ক্ষোভ, কিছ; মভবিরোধ এবং অসহিষ্ণভাও ছিল ব্রেণ্ট। **এই মনোভাবকেই রবীন্দ্র বিরোধীরা কালে** লাগাত এবং সমাজপতি ক্লমে ভালের পাঠ-পোৰক হলে ওঠেল। ভার হিণ্দ্রানী মন বাভিগত আক্রমণ ও ,বিশ্বেষ প্রচারে: উংসাহী হয়ে ওঠে।

সমালোচনার কেন্তে স্বেশচন্দ্রে আদর্শ शिक्तम बांध्कम। विन्कु वांध्करमञ्ज मण खेनात ও প্রশস্ত মনের অধিকারী তিনি ছিলেন না। বণ্কিমচন্দ্র সমালোচনার বারগত কুংসা ও বার্ণাবন্তুপ প্রচার পছন্দ করতেন ना। मृत्रमहन्त्र भ्रात शाल এই क्रिनिमहोहे যেন মেনে নিয়েছিলেন। সম্ভবত ব্যক্তিগত ভাল লাগা মুন্দ লাগাকে ভিনি সমালোচনার মানদ-ত মনে করভেন। সাধ্ সমালোচকের প্রমতসহিক্তা স্থাত-নিঃ***প্হতা এবং** পতির একেবারেই ছিল না। তার ধর্ম-বিশ্বাস, সাহিত্য-বিশ্বাস, বাণ্গ-বিদ্ৰ প-প্রবণতা, অসহিক্ আপস্বিমুখ মনোভাব প্রকাশ পেয়েছে বিভিন্নভাবে। সেকালের প্রায় সব পত্নপতিকার সংগে তিনি বিবাদ করে-ছেন। উগ্র খামখেরালী কলহপ্রিয় মনের জনা অকারণে তিত্ততা সৃত্তি করছেন। কিন্তু একথা স্বীকার করতেই হবে, বাংগলা সাহিত্যের ওপর স্রেশচন্দ্রের মম্বরেশ ছিল গভীর। সাহিত্য পতিকায় তাঁর বিশেষ রীতির মাসিক সাহিত্য সমালোচনা বিশিষ্ট ম্যাদা লাভ করেছিল। বাজা-বিদ্রুপের বঙিক্ম কটাক্ষ, তীক্ষা ক্ষুরধার বাকাবাংগ জনলাধরা হ্দয়ের অস্তেকাচ অধারিত আত্মপ্রকাশ তাঁর সাহিত্য সমালোচনংর অন্যতম বৈশিষ্টা। ধারালে। ও রসালে। মন্তব্যে প্রতিন্ঠানবানদের চোখে আঙ্:ল দিয়ে ভূল দেখিয়ে দেওয়ার দ্বংসাছস ছিল সমাজপতির। বাণ্যলা সাহিত্যে তথন যে-সব অবাঞ্চিত আগাছার জন্ম হরেছিল নিশমভাবে ভার উৎথাতে ারেশচন্দ্রই ছিলেন একমার জগুণী প্রেছ: তার স্থা-লোচনায় কেবল নবীন নয়, প্রধাণরা প্রাণ্ড বিরত হয়ে **উঠেছিলেন।** সাহিত্যে **লে**খা ছাপা **হওরা ছিল সে**কালে প্রম সৌভাগা। কিম্কু সম্পাদকের প্রছাদ-অপ্রভাগ ও মেজাজের ভয়ে পতিকা অফিসে কেউ লেখা দিতে বেত না।

খাতি অখ্যাতি দিলে গড়া মানুষ ছিলেন স্রেশচন্ত্র। তাঁর এমন প্রতিজ্ঞা ছেল না যে সাত্যিকারের একটা নতুন পণ্ণের নিপে'ল দেবেন। অবশ্য তথন বাংগলং সমালোচনার সভর ছিল অপরিণত্ত। ধণিক্ষ-চন্দেরে রচনা বাদ দিলে বলা যায়, হয় কুংস' না হলে প্রশাস্ত-এটাই ছিল অভ্যন্ত রীভি। পাটকের অসংস্কৃত ব্রচিবোধে এই ধরনের সমালোচনা ছিল **পরম** উপাদের। ব<u>,বিহু</u>ণীন পিঠ চাপড়ানো অধবা চাব্যক আল্ডেলন ছাড়া সমালোচকের অন্য কাজ ছিল না। স্বেশচন্দ্র এই প্রচলিত রীতিরই সাধক। এই পটভূমিতেই জন্ম নের মননশীল বিচার বিশেলৰণ এবং সহান্তুভিপ্ৰ' রসবিচারের ধারা। তার প্রথম প্রকাশ পায় রবীশ্রমাথ এবং জঞ্জিত क्रकारण अ वीतवामत त्रामात्रः --नारवानिक

বই নিয়ে লেখা হয় 'বইকুণ্ঠের খাতা'। শ্বভাবতই গ্রম্থদশীর প্রধান উদ্দীপক হিসেবে কাজ করে সদ্য-প্রকাশিত একেকটি বই। লেখা উপলক্ষা হলেও, কথনো কথনো, শেখকই তার প্রধান লক্ষা।

কয়েকদিন আগে জনৈক প্ৰকাশককে जिल्लाम करतीहलाम । कान् रत्नभरकत উপন্যাস ইদানীং বি**লী হচ্ছে সবচেয়ে** रवंभी?

কোনো কিছা না ভেবে, নিশ্বিধায় উত্তর দিয়েছিলেন তিনিঃ 'শংকর'-এর। বই বেরুতে না বেরুতেই এডিশন হয়ে যার। এই দুর্মাল্যের বাজারে কারো বইয়ের এত ভাড়াতাড়ি সংস্করণ হয় না। मत्त दश, काम् कात्मन कप्तत्माक।

শংকর, মানে মণিশংকর মুখোপাধ্যায়। পিতৃদত্ত ম্লনাম ও পদবী বজন করে নিজেকে চিহ্নিত করেছেন তিনি শংকর নামে।

শংকরের সাহিত্যজীবন

তার প্রথম প্রকাশিত উপন্যাস 'কড अजामा(त्र'।

ओ अकिं वह जिए यह कथन वाकाव मार করেছিলেন ডিদি। পাঠক-পাঠিকাদের কার থেকে বিপাল স্বীকৃতি পেরেছিলেন জনপ্রিয় সাহিত্যিক ছিলেবে। রুপোলি পদার দেখেছি উপন্যাস্তির চিত্তর্প।

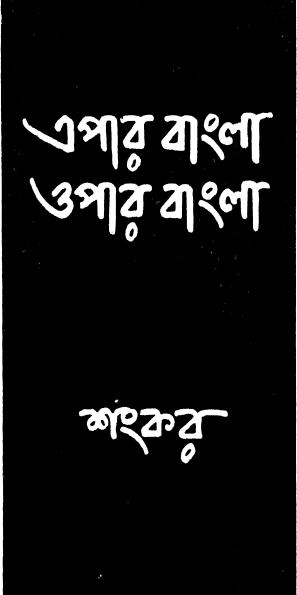
প্রনো দিনের ম্মাতিচারণা-প্রস্থেগ শংকর বলেন : ভয় ছিল আইনপাড়া নিয়ে। ভেবেছিলাম, উকিল - ব্যারিল্টার - জজ -আডেভাকেটদের হয়/তা 'কত অজানারে' एकाम खारमा नाश्चर मा। रक्नमा, रा-জীবন নিয়ে আমি লিখেছি, স্বই তো ও'দের পরিচিত। কিন্তু 'দেশ' **পত্রিকার** প্রথম কিন্তি বের্বার পর সে-ভূপ ভাঙলো। সর্বস্তরের পাঠক-পাঠিকার মনে **সাভা ভাগিয়েছিল** উপন্যাস্টি।

ভিজেস করলাম, আপনার কনপ্রিয়ভার মূল রহসটো কি?

সহজ্ঞতাবে উত্তর দিলেন তিনি ঃ সে-क्या आधि कि करत रमता? . সাহিত্যের প্রধান ধারার সংগ্যে জামার যোগ নেই। **ৰলতে** পারেন, ডা থেকে আমি বিচুতে। কোনো আন্ডায় কিংবা সন্তা-সমিতিতে যাই না। কোথাও সভাপতিত করিনি। তার ওপরে, লিখি ছম্মনামে।

প্রসংগ পাল্টে বললাম, আপনার প্রথম लिथा कान्छि?

—হাত মহলো করেছি, জন্য অনেকের



তার বাইরে, আমার প্রথম শেখা গণ্প किरवा উপन्ताम नश, এकिंग প্রবন্ধ বেরিরে-ছিল দৈনিক বস্মতীতে। আর আমার প্রথম রমারচনা 'কলকাভার ব-ডসংস্কৃতি'। যুগাল্ডর সামরিকীতে ছেপেছিলেন শ্রীযুৱ পরিমল লোম্বামী।

मारकरत्रत्र म्यिकीत वटे का वरना काहे

बिरस्क्षेत्र करामाम, रमारथन कथन?

—কোনো নিয়ম নেই। সময় পেলেই निधि। आहेनकान्य श्रीम मा। कथरना लिधि मकारण कथामा मध्याह किश्ता রাচিতে। আসলে, আমার কাছে সমন্ধ অতাতত ম্লাবেন। সেজনো অভিযোগ মতো, স্কুল-কলেকের মাগাজিনে লিখে। করারও কিছা নেই। পনিবার অফিস ছাটি। र्সापन नकानरवनाहा, जना काला काल मा थाकरन, रनथा निरश काणेहै।

আপনার ভূতীর বই কোন্টি?

—'পশ্মপাতায় জল'। বেরিরেছি**ল** हात्र्रहेन्द्र छहे।हार्य अन्त्राम् क 'वस्याता'त । চতুৰ' বই, 'এক দুই ডিন', পণ্ডম বই 'বোগ विस्तानं ग्रान छानः।

জিজেস করলাম : আপনার সবচাইতে প্রিয় বই কোন্টি?

এবার বেন শ্বিধার পড়লেন শংকর। বললেন, 'সবচাইতে প্রিয়' বলা ম্লাকল। আমার একেকটা বই একেক রকম। ভবে...

रयम याधकी माधका मिरा वनामम, তবে...'নিবেদিতা রিচাস' ল্যাবরেটরীর' শাষ করতে পারেন। ওতে আমি এমন কিছে বলতে চেয়েছি, এবং দির্মেছি, যা পরবত্তীকালে অনেককে ভাবাবে। আমাদের বিজ্ঞানচেতনা প্রায় নেই বললেই চলে। অথচ,
বিজ্ঞানের প্রভাব আমাদের জীবনের ওপর
সবচেরে বেশী। একেকটা নতুন আবিভকার
হচ্ছে, তা প্থিবীর বে-প্রান্তেই হোক না
কেন, শেষপর্যাত্ত তার ফলভোগ করাছ
আমরা প্রত্যেকেই। আমার ইচ্ছা ছিল,
জীবনভিত্তিক এমন কিছু একটা দেবো।
এ-উপন্যানে যতটা পেরেছি, দির্মেছি। আর,
তাতেই আনন্দ পেরেছি। ঠিক এভাবে
বাংলাসাহিত্যে আর কেউ চেন্টা করেনি।
আমার মনে হয়, এ-পথটাকে আরো
বাড়ানো দরকার।

এপর্যাত কোন্ কোন্ ভাষায় আপনার লেখা অন্থিত হয়েছে?

— 'চৌরগগী'র অন্বাদ হয়েছে হিন্দী, রুশ, মালয়ালাম, গালয়াগী ও ওড়িয়া ভাষায়। 'কড অজানারে' হয়েছে হিন্দী, মালয়ালাম প্রভৃতিতে। সব অন্বাদের কথা জ্ঞান না। অনেকে অনুমতি না নিয়েই অন্বাদ করেন। শানুছি, আমার 'চৌরগগী' উপন্যাসটি নাকি এখন সাউথ এশিয়ান ল্যাগানুরেজ স্টাভিজ-এর পাঠ্যতালিকাভুক।

আপনার সম্পর্কে উল্লেখযোগ্য আলো-চনা হরেছে কোখাও?

—সম্প্রতি হনোপ্স্ বিশ্ববিদ্যালর ধ্বের প্রকাশিত 'ব্রুক্স অ্যারোড' পতিকার আমার ওপরে একটা বিরাট প্রবন্ধ লিখেছেন ডক্টর রাচেল আলবামা। তার মতে, 'চৌরংগাঁ' আমার প্রেষ্ঠ রচনা। তিনি লিখেছেন, উনিশ শতকে বাংলাদেশে বেক্থকতার ধারাটি ছিল, বিশ শতকে আমি সেই রাতিতে উপন্যাস লিখে সার্থক হয়েছি 'চৌরংগাঁ'-তে। আমার সম্পর্কে তার মতামত সম্পূর্ণ নতুন। তিনি তার প্রবন্ধের নাম দিরেছেন 'শংকর ঃ দি টোরেনটিথ সেগুরা বেপালী কথক'।

অবাণ্ডালি পাঠকের মনে আপনার লেখার প্রতিক্রিয়া কি রকম?

—অপ্রত্যাশিত। প্রচুর চিঠি আমে। হিন্দীতেই বেশী। বোধহর আমার লেশা তাঁদের মনে সাড়া ছাগার। কেউ কেউ বলেন, আমার 'চোরঙগাঁ' হলো, দি মোস্ট ওয়াইডলি রেড বেগালী দডেল।

তাঁর অন্যান্য বই ঃ 'পারপারী' মান-চির্ল' 'রুপতাপস' 'সাথ'ক জনম' ও বোধোদর'।

বললাম ঃ আপনার অধিকাংশ কাহিনীই তো উত্তমপ্রেরে বর্ণিত। সেই উত্তম-প্রের্ণিটর সংশা আপনার ব্যক্তিকীবনের সংবোগ কতথাি.?

—সব নর, করেকটা বই লিখেছি আমি উত্তমপ্রেহে। তবে সব লেখাতেই, আমি, আমিই আছি। কোথাও নাম পান্টাইনি। কিংবা 'উত্তমপ্রেহ'কে অন্য নামে চিহ্নিত করিন।

প্রস্পান্তমে বললেন : তর্ণ লেখকনের কলে আমার তেমন বোদাবোগ নেই। তারপর নিজের ভুল শুন্ধরে নিরে বললেন : না, আমারই-বা এমদ কি আর বরস হরেছে? নির্মায়ত লিখে আর্সাছ ১৯৫৪ সাল থেকে। সে-বছরই আমার 'কত অঞ্জানারে' বেরোর।

জিজেন করলাম : এখন আপনার বয়স্ কৃত ?

—জন্মেছি ১৯৩৩ সালের ৮ ডিসেম্বর।

বছনের কোন্ সময়টায় আপনি বেশী লেখেন?

—সব বছর তো একই নিরম মেনে লিখি না, বা লিখতে পারি না। বেরের বেশী প্রের সময় কোন না কোন প্রো-সংখ্যার। পরে বই হিসেবে বেরোর।

এপার বাংলা ওপার বাংলা

গত পরলা বৈশাখে বেরিয়েছে তাঁর নতুন বই 'এপার বাংলা ওপার বাংলা'। মাত্র একুশ দিনের ব্যবধানে প্রকাশিত হয়েছে তার দ্বিতীয় মৃদ্রণ।

বইটি উৎসর্গ করেছেন তিনি : "ওপার বাংলার বড়োগপা নদীতীরে সেই অকুতে:-ভঃ য্বকব্দকে—যাঁদের নিষ্ঠা ও তাগে বংগভাষা একটি স্বাধীন দেশের অন্যতম রাষ্ট্রভাষার মর্যাদা লাভ করেছে।"

মনে হর, বিষরটি তাঁকে গভাঁরভাবে
নাড়া দিরেছে। দেশ নর, ভাষাগত ঐক্য
কিভাবে মানুষকে পরস্পরের দিকে আকুণ্ট
করে, তা তিনি জেনে এসেছেন প্রাচ্য ও
পাশ্চাতোর নানা দেশ ঘুরে ঘুরে। তিনি
আমাকে বলেন : বিদেশে বাংলাভাষার এক্ষ
যে মহাাদা বৈভেছে, তার কারণ বাংলাসাহিত্যের সম্থিব নর, একটি স্বাধীন
রান্টের রাদ্টভাষা বলে।

দৃঃখ করে তিনি বলেন ঃ এতে আমাদের কোনো দান নেই। পাকিস্তানী-দের তাতে গৌরব আছে।

িবলেশে জনৈক পাকিশ্চানী ভদুলোক তাঁকে বলেন ঃ "বাংলাভাষা আপনাদের কাছে প্রাদেশিকতা, আমাদের কাছে জাতীরতা।"

'লেখকের নিকেন'-এ তিনি বলেছেনঃ
''নানা কারণে এই বইটিকে আমার লেখকজীবনের একটি গরেছগুর্গ পদক্ষেপ বলে
মনে করি। পৃথিবী দেখার লোভে একদিন
দেশ ছেড়েছিলাম, কিন্তু ভূ-প্রদক্ষিণ শেব
করে ব্রেছি, দ্বে থেকে স্বদেশ ছাড়া আর
কিন্তু দেখা হলো না।"

প্রার অন্তর্গ কথাই বলেছিলেন ভিনি সানফ্রান্সসকোতে গিরে: "কলন্দাস ভারত-সংখানে বেরিরে আর্মেরিকা আবিন্দার করেছিলেন। আমি আর্মেরিকা ক্রমণে এসে ভারত আবিন্দার করলাম।"

মনে পড়ে, লবউ,লিরার 'আরশাক' পরিবেশের নিজ'নতার বিভূতিভূষণ বদেন্যা-পাধ্যারের সেই ব্যাকৃল আতি ঃ "দেশকে কী ভালো করিয়াই না চিনিলাম বিদেশে গিরা।"

শংকরের সপৌ বিভৃতিভূষণের মানসিক-ভার অবশ্য কোনো মিল সেই। সামানা সাদৃশ্য কলপনা করা বার, এই ত্বাদেশিক-তার ভাবনার। যদিও, দৃশ্বনেই কনগাঁ-র আদি বাসিন্দা।

শংকর লিখেছেন ঃ "মহাযুদেশর আনে বনগ্রামের বন থেকে একদা রেজে চত্তে শিরালান্ত এসেছিলাম এবং সেখান থেকে সেকেন্ড ক্লাশ খোড়ার গাড়িতে চড়ে মেই বৈ হাওড়ার নতুন বাসার হাজির হয়ে ছিলাম, ভারপর আর নড়াচড়া করিন।"

¥

জিজোস করলাম ঃ দেশভাগের যক্ত্রণ তো পাননি, পাকিস্তানে গিরেছেন কখনো?

--না, বাইনি।

তাছলে, দুই বাংলার ভাবাবেগের স্থের জড়িত হলেন কি করে?

তার উত্তর দিরেছেন তিনি প্রথম অধ্যায়ে। এই অধ্যায়টির নাম অন্সারে তিনি সমগ্র বইটির নামকরণ করেছেন 'এপার বাংলা'। বিলেতে ফ্টেপাথে দটিড্রে দ্ইে বাঙালের কথা শ্নেচমকে উঠেছিলেন শংকর ঃ ''আমার মনেহলো আকাশবাণী শ্নেছি। ভত্তের বিপদেশিবর থাকতে না পেরে ভগবান শ্বয়ং এই শ্লেছ দেশে আমার জন্যে বঞ্গবাসী পাঠিছে দিয়েছেন।'

অত্যন্ত চমংকারভাবে তিনি তাঁর সেই মুহ্তের মনোভাব ব্যক্ত করেছেন : "গল্প, উপন্যাস, কবিতা অনেক পড়েছি, গানও শ্ৰেছি বহু, কিছু কিছু সাহিতা-চর্চা নিজেও করেছি, কিল্ডু মোদের গরব মোদের আশা এই বাংলাভাষায় যে কী লাদ্ আছে তা জীবনে এই প্রথম হাদয়ঞাম করলাম। সৌজন্যের ব্যাকরণে অমার্জনীর ত্টি হলেও এই দুই অপরিচিত পথচারীর প্রায় নাকের উপার এসে 🕾 জাল্ম। বিনা অনুমতিতে ওদের প্রাইভেসি ভগা করে বললাম, 'আমার অপরাধ মার্জনা করবেন, जाननाता वारमात्र कथा वमरहम भूत जाद স্থির থাকতে পারলাম না।'...ভদুলোক দৃজন পরম আদরে আমাকে আশ্রর দিলেন।"

ক্রমে বামিংহামেই তাঁর সপো পরিচর হরেছে মাছের ব্যাপারী আজিজ সাহেব, ইলোরা কফি-বারের মালিক চৌধুরীবাব, দুইজন ওরেটার—বর্ধ সাহা আর জিরার্ল হকের।

ঘটনাপ্রসংগ্ তিনি লিখেছেন ই
"মালিকের সামারক অন্পশ্চিত্র স্বোগ
নিরে শাদা শাকশ্চিকনের সটে ও কালো
বো-টাই-পরা দ্ই ওরেটার ঘ্বক একসংগ্
গগিরে এলো আমার দিকে এবং কোত্হলী
হরে জিজেস করলে, 'কলকাতা থেকে আসছেন?'

रममाम, 'बारक हारी।'

'আমার নাম বর্ণ সাহা। আমরাও বাদবস্তে বাসা নিসি।' সংশ্যের সহক্ষমীকে দেখিরে সাহা
বললে, এর নাম জিয়ার্ল হক। এলের
জনাই তো আমাদের যতো দ্গতি। ছিলায়
বরিশালে; চালচুলো ছাইড়াা আজ এ
রিফার্জি কলকাতা আইলায়। তারপর ভাইবোন-বাবা-মা সমেত ন'জন ফেমিলি
মেশারকে 'সেভ' করার জন্য কালাপানি
পার হইল্যাম।'

হক এতক্ষণ ফিকফিক করে হাসছিল।
শূম্প পশ্চিমবংগাঁর উচ্চারণে সে বললে,
'আমাদের বাড়িছিল হাওড়ার বাঁকড়া
গ্রামে। রিফাছিল হরে বাবা পাকিস্তানে
এলেন। তারপর পেটের দারে দেশ থেকে
পালিরে বার্মিংগাঁওরে এসে ফাা-ফাা করে
ঘ্রের বেড়াছিলেনা। হঠাৎ সাহাদার সংগ্য একদিন রাস্তায় আলাপ হয়ে গেল। দারা
স্মামার চাকরি করে দিলেন; এখন দ্রুলনে
একখানা ঘর ভাড়া করে একসংগ্য আছি।

এই দৃশ্য দেখার বাঁর সৌভাগ্য হয়েছে,
তিনি নিঃসন্দেহে ভাগ্যবান। তাঁর পক্ষেই
লেখা সম্ভব 'এপার বাংলা ওপার বাংলারা
মতো বই। রাজনৈতিক কারণে বেখানে
দেশের মাটি ভাগ হয়, সেখানে মানুকের
মিল হয় বিদেশে মাটিতে। এটাই গ্রা
স্বাভাবিক। ভাবার সপ্রে। অসভবের
টানটাও বে কম নর!

আমেরিকায় গিরেও তিনি লাভ করেছেন একই অভিজ্ঞতা। পাকিস্তানের মহম্মদ আলী তাঁকে বলেছেন : "আমি দাদা কোনোদিন কলকাতার যাইনি। তবে গাম্প শানেছি অনেক। আমার খ্য ইচ্ছে ওখানে গিরে খিরেটার দেখি আর সন্দেশ খাই।"

উত্তরে তিনি বলেছিলেন ঃ "প্রেব-বাংলাও আমার চোখে দেখা নর। তবে আমারও এতটা স্বান আছে। যদি কেউ আমাকে বলে বিলেত প্রমণ আর প্রে পাকিস্তান প্রমাণের মধ্যে একটা বেছে নাও, তাহলে আমি পাকিস্তানে বেড়াতে বাবে। পন্মার ব্রুকে স্টিমারে চড়ার আলাটা আমার কাছে একটা স্বান্ধের মতো হরে ররেছে।"

এমনিভাবে বহু লোকের সংশে ভরি পরিচর। ঘনিষ্ঠতা হয়েছে প্র' পাকি-স্তানের বাংলা আকাদমির জিলা হামদারের সংশে। হাওরাই ব্বীপে প্রবাসী পাকি-স্তানী বেনেভিক্ট গোমেজ তাঁকে উপহার দিয়েছেন প্র' পাকিস্তানের গ্রামের একটা ছবি-আঁকা মাদ্র। এ-বইরের সদনা অংশে তা প্রতিলিপি ছাপা হয়েছে গভীর মমতার স্পো।

সাতটি অধ্যারে সমাপ্ত হরেছে 'এপার বাংলা ওপার বাংলা'। যথারুমে—িশতীয় লাধারে 'চ্যাপেন্স হিলা', তাতীয় অধ্যাম নিউ-ইয়াক'র পাথা' চাতথা তাধ্যাম নিউ-ইয়াক'র পাথা' চাতথা তাধ্যাম নিউ-রুমান পার্মন অধ্যায় বাংলার রবি' যাই ভাষামে 'আনক দ্বা', সণ্ডম অধ্যায় 'জাপানে ক্রেক্সিন'।

0

ঘটনাবহুক এই গ্রন্থের পাতায় পাতায় ছড়িরে আছে লেখকের বিচিন্ন অভিজ্ঞত:র দৃ্টাক্ত। বিক্তৃত পরিচয় নিক্পরোজন। কেননা, সর্বাচই কাজ করেছে একই মানসিক্তা।

জিন্তেস করলাম ঃ বই আকারে বের্বার আগে কোথার কোথায় বেরিনে-ছিল এর বিভিন্ন অধ্যায়গ্রিল ?

শংকর বললেন ঃ কিছুটা বেরিয়েছিল 'দেশ'-এ, থানিকটা 'উল্টোরথ'-এ, বাকিটা কোনো কাগজে বেরোহনি। পান্ডুলিপি থেকে একেবারে বই হিসেবে ছাপা।

বইটি লেখা শ্রে করেছেন কবে?

—বিদেশ থেকে ফিরে আসার পর, বোধহয় ১৯৬৭-র শেষের দিকে।

একট্ থেমে নিজেই বললেন, দুট বাংলার সম্পকে মান্য যে কতথানি ভাবে, তা এর আগে আমার জানা ছিল না। এ বিকরে সাহিত্যিকদের কিছু ভাবা দরকার। তাদেরও কিছু ক্রণীয় আছে।

বেনেডিক্ট গোমেজ তাঁকে বলে-ছিলেনঃ "বাংলার লেখকদের ওপর অনেক কিছু নির্ভার করছে। দুই বাংলার অগণিত নান্বের মনে আজও আপনাদের অবাধ গতিবিধি। আপনারা মানুবের মনকে তৈয়ী কর্ন, তাদের আশা দিন, তাদের বল্ল-জয় হবে, জয় হবে।"

শংকর বলেনঃ দেশভাগ না হলে
পূর্ব বাংলার মুসলমানদের উর্লাভ হলে
না। ওরা শিক্ষিত, উর্লাভ এবং স্বাবলম্বী
হম্ছে পাকিস্তান হওয়ার জনাই। এখন
অবিভদ্ধ বাংলার কথা ভাবাও বার না। সে
রক্ষ চিস্তা করাও অন্যার।

বললাম ঃ বইটির ঘটনা এবং প্রেবণা বাইরে থেকে নিয়ে এলেও, আপনি কি দেশে ফিরে ভার জন্যে আলাদা কিছু, পরিপ্রম করেছেন?

—বাইরে গিরেছিলাম পরীক্ষা দেবার জন্য। দেশে ফিরে প্রচুর পড়াশোনা পরিপ্রম করেছি। অততত হ' মাস লেগেছে দানা উপাদান সংগ্রহ করতে।

8

হাাঁ, একটা কথা ভূলে গেছি। শংকর লামাকে বালছিলেন, লিখনেন আমাদের পারিবারিক সম্পর্কের কথা। বইটি ভালের করে পড়ে দেখবেন, আমি এ বইতে সেকথা বলতে চেরেছি। আমাদের জীবন পেকে প্রেনা মূল্যবোধগালো ভেও বাজে, ছোট-বড়র সম্পর্ক অন্যাক্ষম হরে বাজে, অথচ জীবনের প্রতি কোনো দৃষ্টিভিগ গড়ে ওঠেনি। বিস্লেশ-ক্রমণে এটাও আমার একটা বড় উপলব্ধি।

আমি তাঁর লেখার অনুভব করেছি
সেই বাফলভাব হাব মাঝে মাঝে প্রজ্জা উপ্তর্গ আন উংস্ফো: করেকটি অধ্যায়ে আছে তার ঘটনাগ্রামী বিবরণ। তব্ স্ব- কিছকে ছাপিয়ে ওঠে, দুই বাংলার জন্য বেদনাবোধ।

জিজ্জেস করলাম: আপনার এ বইটিকে কোন্প্রেণীতে ফেলা যায়?

শংকর বললেন: স্টিক্টলি স্পিক্তি ভ্রমণকাহিনী। লাইরেরী কাটালাগিং-এও নিশ্চরই তাই লেখা হবে। আমার মতে, জীবন-কাহিনী।

তাঁর সংগেই জামি একমত। হাাঁ, এটা জীবন-কাহিনী-ই। এছাড়া অনা কোনো অভিধায় একে চিহ্নিত করা যায় না।

মনে পড়ে, জালাল আমেদের কথা। পাকিস্তানের এক তর্ণ মাইনিং এজিনিয়ার।

শংকর বললেন, তাঁরই চেম্টার জাপান রেভিও থেকে বাংলা অনুন্ঠান প্রচারিত হক্ষে।

খটনার বিবরণ দিয়ে তিনি বালেনঃ
"প্থিবীর প্রার প্রতিটি উন্নত ভাবাতেই
কাপান রেডিও থেকে অন্টান প্রচারত
হর। কেবল হতো না বাংলা ভাবার।
কালাল আমেদের তা ভালো লাগেনি।
তিনি গিমে ধরালন রেডিও জাপানকে।
কর্তৃপক্ষ বললেন, সরকারী স্ত্রে অন্রোধ
আসা দরকার। জালাল আমেদ ইণ্ডিরার
করেকছন বাঙালিকে অন্রোধ করেন
ইণ্ডিরান এমব্যাসি থেকে একটা চিঠি
লেখানোর জনা। কিন্তু ওদের কাছ থেকে
সাড়া পাননি তিনি। ভারতীর দ্যোবাসের
মতে, বাংলা ভাষার জনা অন্রোধ করাটা
হবে প্রাদেশিকতা—প্রতিনশিয়ালিজম।"

তারপর ?

পারিস্তানের রাখ্যাত গ্রন্থ জালী
চিঠি লিখে দিলের জাপার রেডিওকে,
কোনে কথা বললের বাংলা প্রোগ্রাম করাল
জাপার ও পার্ব-পারিস্তানের গ্রন্থার
হবে দৃই দেশের গৈতীবাধর দৃত্তর হার ।
তারপর খোকেই লাপার কেলাবাকল
ধেকে দরে, হয় বাংলা অনুষ্ঠার প্রায়র ।

শংকর বিসিমত চুরেছিলেন জালাল আমেদের কথা শানে। আয়াদেরও বিসমারের আনত নেই। স্থানশাম ঐাকা না ভাক ভাবাগতে ঐাকা দেই নালোর মান্ত বে একই সমতলের বাসিন্দা!

---शुक्थममारि ।

শ্লীনিনাইপদ বস্ব বহু পঠিত ও উচ্চপ্রদাসিত নব ভারত (নাটক) ২০০০ প্রাণ্ডস্থান—হিন্দুস্থান নাইরেবী কলিঃ-১২ ও অন্যান্য প্সত্তাস্ব

কবিতার অনুবাদ

আশিৰ সান্যাল

যদি সমুসত প্রথিবী হত একই সংসার আর সকলেই একই ভাষায় কথা বলত, তাহলে অন্বাদের এই সমসাটি নিয়ে বিরত হতে হত না কাউকে। কিন্তু যেহেতু রূপে. বৰ্ণে ও ভাষায় এই প্ৰিবী বহু বিচিত্ৰ এবং সমস্ত রূপ-রস-বর্ণ-গদেধর স্বাদ আগবাদনের আকাৎক্ষা মানুষের মনে চিরন্তন, তাই আনবার্যভাবেই এর প্রয়োজনীরতা প্রতিবেশী মান্য म्भध्ये इरहा छेठेन। সম্পর্কে জানবার এবং তার শিল্প-সাহিত। আম্বাদনের পথে প্রধান অন্তরায় হল ভাষা। ভাষার অজ্ঞতাই ভিনদেশী সাহিত্যের রস আশ্বাদের প্রধান প্রতিবন্ধক। সব দেশের ভাষা শিখে. সেই ভাষায় রচিত সাহিতেরে স্বাদ আস্বাদনের চিম্তা আম্লক এবং অবৈজ্ঞানক। এই কারণেই আন্ত(কর প্রথবীতে অনুবাদের প্রয়োজনীয়তা ভীষণ-ভাবে অনুভত হচ্ছে। এই প্রয়োজনীয়তা যে কেবল শিশ্প সাহিত্যের ক্ষেত্রেই, তা নর, উচ্চতর গাণতবিদ্যা এবং ইলেকটিক এঞ্জিনীয়ারিং-এর ক্ষেত্তেও লক্ষ্য করা যার।

অনুবাদের এই সাধারণ প্রয়োজনীয়তার কথা দ্বীকার করে নিয়েও কবিতার অন্বাদ নিমে বিদেশ সমাজে বিতর্ক স্দৃশীর্ঘদিনের। কারণ প্রতিদিনের ভাষা আর কবিতার ভাষার বাবধান বিরাট। স্থোশীন্দনাথ দন্তের ভাষার গাদ্য চলে যুক্তির সংগ্র পা মিলিয়ে, আর কারা নাচে ভাবের তালে তালে, গদ্য চার আমাদের দ্বীকৃতি, আর কার্য খোঁজে আমাদের নিষ্ঠা; রেখার পর রেখা তেনে পরিপ্রাদত গদ্য যে ছার আঁকে, গোটা করেক বিশরে বিন্যাসে কাবোর যাদ, সেই ছবিডেই ফুটিরে তোলে আমাদের অন্কম্পার পটে।' কবিতার এই আদতর-সম্পদের গ্রণেই তার ভাষান্তর নিমে এত বাদান্বাদ।

।। क्छा।

ইতালীর ভাষার একটা কথা প্রচলিত আচাই বে অন্বাদকমাটেই নাকি বিশ্বাসঘাতক। সব অন্বাদকই বিশ্বাসভাতক কিনা জানি না, তবে কবিতার অন্বাদক
এক অথে তো বটেই। ষোড়শ শতকের
ফরাসী কবি ভানবোলে কবিতার অন্বাদ
সম্পর্কে যে বিরুপ মনোভাব পোষণ
করতেন, একথা সর্বজনবিদিত। সৈরদ
ভালাওল পদ্মানং'-এর অন্বাদের
অবভারণায় যে বলেছিলেন ঃ অথনে
স্বাদের
অবভারণায় যে বলেছিলেন ঃ অথনে
স্বাদে

প্রকাশিব নিজ মন উল্লি।'—বোধ করি তাতেও এই অন্ভবের একটা প্রক্লেম ইণ্গিত রয়েছে। ডঃ জনসন তো কবিতার অন্-বাদের বিপক্ষে স্পত্তই বললেনঃ

"It is the poet that preserve language".

একালের মার্কিন কবি শিরোমণি ব্বর্গত রবাট ফল্ট বলেছেন, কবিতা অন্দিত হলে, তার রসচুটিত ঘটে। ফরাসীদেশে রমার রবালিকে একবার কথোপকথনের সমরে রবালিকে একবার কবিতা সম্বদ্ধে বা বলোছিলেন, তার মধ্যেও কবিতার অন্বাদের মৌল সমস্যা সম্পর্কে একটা প্রজ্ঞের ধর্নিন শোনা বার। তিনি বলেছিলেন ঃ

"Although Keats cannot be translated into our language, but we can presume the beauty of his language".

স্তরাং দেখা বাচ্ছে, কবিতার অন্বাদ সম্পর্কে একটা অনীহা অনেকেই প্রকাশ কবিতা অন্দিত হলে ম্লের রস ও সৌপর্য অনেকটাই বিনন্ট হয়। তব্ব কবিতার স্থন-বাদ হচ্ছে এবং হবার প্রয়োজনীয়তাও আছে। অন্য দেশের কবিতা সম্পর্কে জানার আগ্রহ সাহিত্যর সিক মাতেই অন্ভব করে থাকেন। সে কথা আগে বলা হরেছে, সব ভাষা শিখে ভারপর কবিভার রুস আম্বাদনের প্রচেষ্টা অনেকটা মর্ভূমির মধ্যে মহাসাগর অন্-সুন্ধানের মৃত। একেতে দুধের স্বাদ ঘোসে মেটানো ছাড়া পথ নেই। সম্প্রতি ওয়াশিংটনে লাইরেরি অব কংগ্রেসের' উদ্যোগে বে আন্তৰ্জাতিক কবি সম্মেলন অন্থিত হয়ে গেল, তাতেও ক্বিতার অন,বাদের বিবরটি গ্রুড় অর্জন করে। অনুবাদ মূল কবিতার অনেকাংশে ব্যাহত করে, এই উপর্লাব্দ থেকেই প্রখ্যাত সমা-লোচক জর্জ স্টেইনার কবিতার অন্বাদ সংকলন সম্পর্কে লিখেছেন: আধ্যমিক প্রতিটি কবিতার অন্বাদ সংকলনে অন্দিত কবিতারই মূল মুখেমমুখি প্টোর অবশাই থাকা উচিত।' (১) ইদানিং ইউরোপ এবং আমেরিকায় অনুরূপ আদর্শে কয়েকটি সংকলনও প্রকাশিত হরেছে। কিন্তু এর কোন বিশেষ বৌদ্ধিকতা আছে বলে মনে হর না। কারণ, অনুদিত কবিতা প্রধানত তিনিই পাঠ করবেন, বিনি ম্ল ভাষার কবিতাটি পাঠ করার স্বোগ থেকে বিভিত। এক্লেচে কেবলমাচ অনুদিত কবিতাগ্রিল থাকাই বিধের বলে মনে হর।

কবিতার অনুবাদ আলোচনার আর একটি প্রসংগ্যর অবতারণা বোধ করি অতান্ত জর্রী। অনুদিত কবিতা মুলের প্রতির**্**প হবে, না অনুরূপ হবে? অধ্যাপক নীরেন্দ্র-নাথ রায় এক সময়ে শেলির একটি কবিতা অন্বাদ করে রবীন্দ্রনাথকে পরিমাজ নের জনা পাঠালে তিনি দেখে দেবার সময় বর্লোছলেন—মালের ভাবটাকে যথাসাধ্য বোধগম্য করতে গেলে একেবারে ঠিক তার মাপসই করে আটি করা চলে না। তাই প্রতিরূপ না হরে কডকটা অন্র্প হয়েছে। মূল কবিতার সংগে যাদের পরিচয় নেই, এটা যে তারা জলের মতো ব্ৰুবে এমন আশা নেই, কিল্ডু সেন্সন্যে আমি **वा वाश्माভाষाই यে একমাত দাर**े **छा भा**नर्ज পারিনে। বস্তৃত প্রথম শেলাকের শেষ দুটো লাইন ঠিক যেন জায়গ, পায়নি—বেন আরেকজনের কেদারার হাতার উপরে বসেচে।' (২) রবীন্দনাথের এই মনোভাবকে বিশেলবৰ করলে বোঝা যাবে, তিনি কবিতার অনবোদ বলতে কেবল ভাষাত্তর বোঝেননি, ব্রেছিলেন আন্তরভাষা। আর এই কারণেই স্বেন্দ্রনাথ মৈতের রাউনিংএর অন্বাদ পড়ে তাকে 'দ্বঃসাহসিক নাবিকবৃত্তির' সংজ্ঞ তুলনা দিয়েছিলেন। এই আশ্তরভাষ্য রচনা করতে অনুবাদক খ্র একটা কিন্তু সূজ্জন-ধর্মিতার পরিচর দিতে পারেন না। এক্ষেত্রে ম্লান্গত্যের সংগে মোলিকদের সমন্বয় সাধনই কবিতার অনুবাদকের প্রধান কর্তব্য:

समृहे स

কবিতার অন্বাদে এরপর বে প্রতিব্ বংশকগ্লির সম্মুখীন হতে হর তা ম্লত প্রকরণকেশ্রিক। প্রকরণের মধ্যেও প্রধান বাধা বোধকরি 'শব্দে'র ভাষাত্র। কেননা, কবিতার শব্দ শ্রুষার তার বাচার্থকে

On Modern Verse Translation : George Steiner; Encounter; August, 1966.

⁽⁺⁾ চিঠির অংশ: পরিচর—ক্তিক, ১০০৮:

and the second

প্রকাশ করে নাঃ 'শবদমান্তেরই দুটো দিক আছে ঃ একটা তার অর্থের দিক, অন্যাটা তার রসপ্রতিপত্তির দিক। গদ্যের সংশ্ শব্দের সম্পর্ক ওই প্রথম দিকটার খাতিরে: গদ্যে শব্দগালো চিন্তার আধার। কিন্তু কাবা শব্দের শরণ নেয় ওই দ্বতীয় গাণের লোভে কারের শব্দ আবেগবাহী ৷' (৩) শব্দের এই রসপ্রতিপত্তির দিকটি ভাষাস্তরে ফ,টিয়ে তোলা অসাধ্য ব্যাপার। কেন্দা শব্দের এই রসপ্রতিপত্তির সংখ্য কবি-মানস ছাড়াও জড়িয়ে আছে দেশীয় ঐতিহা, যু:গ-চেতনা এবং বৃহত্তর জনসমাজের আধাত্মিক চেতনা। 'পরণে ঢাকাই শাড়ি কপালে সি'দার' वनएठ वाडानी भाठेरकत घरन एव साना বিজাতীয় 757 সংস্কৃতিতে প্রতিপালিত মান্ধের পক্ষে অনুধাৰন অসম্ভব। অথবা 'কিসের তরে মদীর চরে চথাচখির মেলা' শোনার সপো সংগ্রা যে ব্যঞ্জনা ফুটে ওঠে আমাদের মনে, ভা অনাত্র অসম্ভব। 'নদ্বির চর' এই কথাটির সভেগ আমাদের সংস্কৃতি এবং ঐতিহ্যের সম্পর্ক', তা আর কোথায় পাওয়া হাবে? নদী হয়ত সর এই আছে কিশ্ত নদীয় চর আর চথাচথির মেলা? এ ক্ষেত্রে শব্দটিকে ভাষা-শহরে কিভাবে ফুটিয়ে তোলা যাবে? বাংক অবা দি রিভার' বা 'আইল্যান্ডস অবা দি রিভার'-যাই ভাষাত্তরে লেখা হোক সা ্রকন, তাতে রসপ্রতিপত্তির বিরাট ব্যাঘাত ঘটবে। এম পি ভাষ্করণ এ প্রসংশা কয়েকটি স্মার উদাহরণ তৃলে ধরেছেন। (৪) মালয়ালম কবি কুমারণ আশানের 'সীতা' অনুবাদ করতে বসে তিনি দেখলেন, মালে ব্যবহাত অনেক শক্ষের ইংরেজি প্রতিশব্দ নেই। মূল গ্রহেথ সীতার বর্ণনায় কবি অনেক কটি বিশেষণ ব্যবহার ক্রবেছেন। য়েমন সীতা, দেবী, অলস্ক্রী, মহামন্দ্রিনী, क्रिक्टा॰गी, भुम्पती, धावर्तम्यती हैलापि। এর মধ্যে সাকরী এবং 'অবনেশ্বরী' শব্দ দ্টির ইংরেঞ্জি হয়ত পাওয়া যায়। 'ললিতা-গ্গীর ইংরেজি গ্লে ভাষাস্তর হয়ত হতে পারে। কিন্ত অনাগ্রালর কি হবে?

দেশ কাল ভেদে শংশের একটা গগুরু গড়ে ওঠে। সংপ্রতি মন্টেলতে এক আলো-চনা সভায় কবি ভার্মিল ফায়োদরভ এ প্রসংগে একটি উল্লেখা মন্তব্য করেছেন : প্রতিটি শংশই জনগণের আধ্যাত্মিক শন্তির ইতিহাসকে প্রতিফলিত করে, যেমন একটি গাছ বা কয়লা সৌরশন্তিকে করে প্রতি-ফলিত। কবির দায়িত্ব সেই আধ্যাত্মিক শতির নিম্কারণ।' তাই দেখা যাছে, শন্দের সংশা কর্মিক সংশা জড়িরে থাকে কোন দেশের স্থামিক কালের ঐতিহ্য এবং ইতিহাস। প্রচালত শন্দ তৈরী করে একটা গ্রিড'। প্রথাত ভাষাতত্ত্বিদ জে সি কাটিফোডের রচনাতেও এর প্রতাক্ষ শ্বীকৃতি আছে ঃ

"The language we speak forces us to select and group elements of our experience of the world in ways it dictates. It provides a kind of grid, or series of grids, through which we see the world".

শংলার এই ঐতিহ্য এবং বাঞ্চনাধমি তার জনোই কবিতার যথার্থ অনুবাদ সম্ভব নর। অথবা অনুবাদে কবিতা তার মুল সৌল্যর্থ অনুবাদ কবিতা তার মুল সৌল্যর্থ অনুবাদ কবিতা তার মুল সৌল্যর্থ অনুবাদ কবিতাকে একটি শুলাসের পারের সংশ্যে তুলনা করেছেন। সেই পারেটি শুক্ত হতে পারে, ভংন হতে পারে বা রঙিন হতে পারে। সেই পারের তিন্দুরে বেমন অন্য জিনিসকে পার অনুবামী শুক্ত, বিকৃত যা রঙিন দেখা যায়, তেমনি কবিতার অনুবাদকত বেন একটি পার। অনুবাদত কবিতার আনুবাদকত বেন একটি পার। অনুবাদত কবিতা পার

করার সময় পাঠক যেন কবিতার স্বাধ এভাবেই গ্রহণ করে।

ছদ্দের গ্রেছও কবিতার অনুবাদে ग्र्यूषश्र একটা ভূমিকা করে। ইদানিং অনেকে কবিতা অনুবাদের বিভিন্ন অস্বিধাগালি অন্ধাবন করে কবি-তার গদ্যান্বাদ করে থাকেন। এটা কাব্য অন্বাদের পঞ্চে খ্রই ক্তিকর। মূল কবি-তার ছম্পকে অপরিবতিতি রেখে যে কবিতার অন্বাদ করা যায় তা সত্যেদ্দনাথ দভের বোদলেয়রের অন্বাদগ্লি অনুধাবন কর-লেই বোঝা যাবে। কিন্তু তব্ সৌন্দর্যকে তিনি ফ্<mark>টিরে তুলতে পারেমনি।</mark> আর এখানেই কবিতা অনুবাদের সমস্যা-গুলি নিহিত।

।। फिना।

উপরের আলোচনায় যে বিষরগ্রেক্ত স্পট করবার চেণ্টা করা হরেছে, তা হল ঃ —(ক) কবিতার বধার্থা অন্বাদে সভ্তর নয়: (থ) তব্ কবিতা অন্বাদের প্রেঃ-স্কনীরতা আছে এবং স্মকালে এই প্রেঃ-কনীরতা আরা অধিক পরিমাণে উপলব্ধ হছে। প্থিবীর বিভিন্ন ভাষা ও সাহিত্যে

সংস্কৃতি-বিষয়ক গ্রন্থমালা			
কালিকট থেকে প্লাশী	শ্রীসতীন্দ্রমোহন চট্টোপাধ্যার রচিড পাশ্চাত্য জাতিগ ্লির প্রাচ্যে অভিযান কাহিনী; ভারত ও বাঙা লা সবিশেব আলোচিত। দশটি বিরল মার্মচিত। [৬-৫০]		
ৰবীশ্চনাথ ও	ডঃ স্থাংশ,বিমল বড়য়ার গবেষণাম্লক সরল আলোচনা।		
বৌশ্ধ সংশ্ৰুতি	অধ্যাপক প্রবোধচন্দ্র সেনের ভূমিকা। [১০٠০০]		
टेबकव	সাহিত্যরত্ন শ্রীহরেকৃষ্ণ মুখোপাধ্যার সম্পাদিত ও স র্কালত		
भगवनी	প্রার চার হাজার পদের আকর গ্রন্থ। [২৫·০০]		
ভারতের শক্তি-সাধনা ও শান্ত শহিত্য	ডঃ 'শশিভ্ষণ দাশগ্রেতর এই গবেষণাম্লক গ্রন্থটি সাহিত্য আকাদমী প্রেক্ষার ভূষিত। [১৫·০০]		
রামায়ণ	সাহিত্যরত শ্রীছরেক্ক মুখোপাধ্যার সম্পাদিত বুণোপ্রেলণী		
কৃতিবাস	প্রকাশনার সোঠবয়ন্তিত। ডঃ স্নীতি চটোপাধ্যারের		
বিরুচিত	ভূমিকা। সুবা রায় অফিকত বহু বঙীন ছবি। [১-০০]		
ৰাকুড়ার যদির	শ্রীঅমিয়কুমার বন্দ্যোপাধাার রচিত বাঁকুড়ার তথা বাঙ্চার মন্দিরগ্রিলর সচিত্র পরিচয় ও ইতিহাস। ৬৭টি আর্ট স্লেট। (১৫-০০)		
উপনিষদের	শ্রীহিরশমর বন্দ্যোপাধ্যায় রচিত উপনিষদ-সম্হের		
कर्मम	প্রাঞ্জল ব্যাখ্যা। [৭-০০]		
सर्वीत्रप्त-	শ্রীছিরশ্বর বন্দ্যোপাধ্যার রচিত রবীন্দ্রনাথের		
कर्णम	জীবন-বেদের সরল ব্যাখ্যা। [২-৫০]		
ठाक्तवाण्डीत	শ্রীহিরকার বন্দ্যোপাধ্যার রচিত রবীন্দ্রনাথ ও তাঁর প্র'-		
क्या	প্রিয়ে ও উত্তরপ্রের্বের স্কৃত্য আলোচনা। [১২-০০]		
ভেটিনিউ	অমলেন্দ্র দাশগ্রেত রচিত। শ্রীভূপেন্দ্রকুমার দত্তের		

সাহিত্য সংসদ

ভূমিকা। [O·00]

তহএ আচার্য প্রফলেচন্দ্র রোড। কলিকাতা ৯

⁽৩) কাবোর মূৰ্তি: স্থানিলাখ দ্বা

(4) An Experience of Poetry
Translation — From Italayalam
into English: M. P. Bhaskaran;
Poetry India (April-June, 1966).

(5) No two words in two different langulages ever have identically the same meaning. There is no absolute standard of conformance, it is alaways a question of degree" —Mrs. Lila Roy
(Problems of Translation; Published by All India Poet's conference.

ইদানিং কবিতার অনুবাদ একটি বিশিষ্ট শ্বান অধিকার করেছে। এই যে 'বাধার্থ' অনু-বাদ হম না' অগচ 'প্রতিনিয়ত অনুবাদ হছে' —এই দুই বিরোধী ভাবধারার সমন্বরসাধন সম্ভব কি ভাবে? সম্ভব একমান্ত পরিমিতি বোধের অনুশাসনে।

এ-ক্ষেত্রে প্রথমেই যে প্রশ্নটি বিবেচা, তা হল, যেহেতুম্ল কবিতার শব্দ, ছক্দ অন্সংগকে যথাযথভাবে ফুটিয়ে সম্ভব নয়, সতেরাং কবিতার অনুবাৰক কতদর স্বাধীনতা অজনি করতে পারেন তার বিচার। এ প্রশ্নটি নিয়েও সহদেয় সমাজে বিতক' আছে। তবে একথা সকলেই স্বীকার করবেন, কবিতার অনুবাদক যতই দক্ষ হোন না কেন, তিনি মূল কবির সমাশত-রাল প্রভী কথনই নন। তিনি কথনই মূল কবিতার বিষয় এবং চিত্রকল্প থেকে সরে যেতে পারেন না। অন্দিত কবিতা পাঠের সময় পাঠক যেন কখনই না ভূলতে পারেম, তিনি অন্যভাষার কবিতা পড়ছেন। তার ম্বাদ ভিন্ন এবং ম্বতন্ত্র। অনুবাদক কখনই ম্ল কবির প্রতিযোগী স্রভী নন। কিন্তু এর মানে এই নয় যে, তিনি মূল কবিতার শব্দ ও পংল্লি ধরে শতুরিয়াঁ নিদেশিত রী[°]তর অন্সারক হবেন। প্রেই বলা এভাবে কবিতার অনুবাদ সম্ভব মলোনগত অবশাই হতে হবে। কিল্ড সেই ম্লান্গভাের স্বর্পটি প্রেমেন্দ্র মিচের **ভाষা** ये वना या श्र

"The faithfullness is to the sense and spirit of the original only.....
The sentences of the original must be transferred in their full sence to as approximatly parallell expressions as possible. (%)

এ দিক থেকে অন্বাদ সমালোচনারই আর একটি ধারা বা উপায়।

এল ভরু ট্যানকক কবিতার অন্বাদের এই বিষয়টি নিয়ে আলোচনা করতে গিয়ে বলেছেন, বখন মূল কবিতার অর্থ. প্রকরণ ইত্যাদি সম্বাদ্ধ ধারণা ম্বছ্ছ হয়ে যাবে তখন কবিতাটির পরিমণ্ডল নিয়ে ভাবা দরকার। আর সেই মৃত্তে সবটাই ব্যক্তিগত হয়ে

6 Responsibilities of A Translator: Premendra Mitra (Bengall Literature, Vol 2 No 1).

अग्रतम्

ম্ল, পদরিভাগ, অনবর, অন্বাদ ও শব্দার্থ-বাাধ্যাসহ খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত হইতেছে। প্রতি খণ্ড তিন টাকা। গ্রাহকদের জন্য বিশেষ ক্রিধা। বোগাবোগ কর্ন—

পরিতোষ ঠাকুর, বেদগ্রন্থমালা, ২৯. সদানন্দ রোড, কলিকাতা—২৬

বার। ব্যক্তিগত প্রার্থে নেমে আসার সংশা সংশা অনুবাদক কবির ব্যক্তি-মানস এতে সংগারিত হর। তাই দেখা গেছে, মুল কবির সংশা অনুবাদক-কবির মিল বেখানে সম্বিক, সেখানেই অনুদিত কবিতা উল্লেখ-ব্যোগ্য হরে উঠেছে।

অতএব দেখা বাছে, কবিতার উল্লেখ্য অনুবাদককে একই সংশ্য ভাবাজ্ঞান এবং কবি প্রতিভার অধিকারী হতে হবে। এ দ্টোর কোন একটিতেই ঘাটতি পড়লে অনুবাদ বিবর্ণ হরে পড়ে। তাতে না থাকে র্প, না থাকে রস।

(চার)

কবিতার অন্বাদ প্রসংশ্র আকোচনায়
আরো দ্টি দিক উল্লেখের অপেক্ষা রাখে।
বিশেষ করে ভারতের মতো বহুভাষিক
দেশে এই প্রসংগ দ্টির অবতারণা অত্যুত
জর্বী। প্রসংগ দ্টি হলঃ (১)
ভারতীয়দের শ্বারা ভারতীয় কবিতার
অন্বাদ এবং (২) অপ্রভাক্ষ অন্বাদ।

ভারতীয় কবিতার প্রতি ইদানিং বিদেশী কবি-অন্বাদক কিছ কিছ আগ্রহী হলেও অধিকাংশ কবিতার অন্-বাদক ভারতীয়রা নিজেই। বোধহয় প্থি-বীর আর কোথাও এ নিদর্শন নেই। বলা-বাহ্মা, ভারতীয়দের ম্বারা কৃত অধিকাংশ ভারতীয় কবিতারই অনুবাদ হচ্ছে ইংরে-জিতে। প্রশন হচ্ছে, এইসব অনুদিত কবিতা ইংরেজ সাহিত্যরাসকদের কতদ্র त्राष्ट्रा জাগাতে সমর্থ হচ্ছে? একথা কেউ অস্বী-কার করবেন না যে, বিজাতীয় ভাষায় সাহিত্য সাধনা সফল হওয়া খ্বই কঠিন। টি এস এলিয়ট এক সময়ে ফ্রাসী ভাষায় কাব্য রচনা করতে আরম্ভ করেছিলেন : কিন্তু অচিরাৎ নিজের ভ্রম ব্রুমতে পেরে निष्मरक **मःश्माधन करत** सन। माইरकलात কথা তো বাঙালী পাঠকের কাছে খ্বই পরিচিত। যেহেতু কবিতার অন্বাদে অন্-বাদকের কবিত্বপ্রতিভা একান্ডই প্রয়োজ-নীয়, তাই ভারতীয়দের স্বারা ইংরেজিতে অন্দিত কবিতা স্ব্দাই সফল হবে এ প্রত্যাশা অয়েছিক। অবশ্য এর ব্যতিক্রম যে নেই, একথা স্বীকার করা যায় না।

ভারতীয়দের ম্বারা ভারতীয় কবিকা অনুবাদের প্রয়োজনীয়তার কারণ স্বতন্ত। ভারতবর্ষ একটি বহুভাষিক দেশ। বিচিত্র এর সংস্কৃতি। অথচ পরস্পরের ভাষা জানায় পরস্পরের কবিতা এবং সাহিত্য থেকে যার আমাদের কাছে অপরিচিত। ইংলন্ড বা আমেরিকায় কাব্য ও সাহিত্তার পরিচয় আমরা পাই, তার এক শতাংশেরও পরিচয় পাই না আমাদের ভারতীয় কবিতার। ভারতবর্ষের প্রতিটি ভাষা শিখে সেই ভাষার কবিভার স্বাদ আস্বাদন করবো এ ধারণা অবিবেচনাপ্রস্ত। ভারতীর সংহাতি এবং ভারতীয় বোধের জাগরণে প্রতি ভাষার কবিভার অন্বাদের প্রয়োজনীরতা অসামারণ। আর ইংরেজীভাবী ও অন্যাদের বিদেশী পাঠকদের কাছে ভারতীর সাহিত্যে কবির ক্যান ও অবদান কতদ্ব, সেট্কু বোগানোই এই অন্বাদের আনাতম উল্লেখন। মালরালম কবি ক্যারণ আশানের কবিভা অন্বাদ করতে গিয়ে এম পি ভাস্করণের মাতবাটি প্রস্কাত উল্লেখ করা বাচ্ছে ঃ

"I tried to remember that I might have two kinds of audience (1) an Indian from the same unified cultural area as of the people of Kerala and with this common inherited culture surrounding the use of Malayalam and the other Indian languages, and (ii) an English-speaking audience culturally remote from India, From readers outside India, I should ask for nothing more than an understanding of Asan's contribution to Indian poetry and thought"

ভারতীয়দের শ্বারা কৃত ইংরেজি অন্বাদের সাফলা এখানেই এবং একে যাঁরা লখ্ম করে দেখাতে চান, তাঁরা ভারতীয় সমাজ ও ভাবিন থেকে বহুদেরে বিচ্ছিম। আর একটা কথা। এইসব অন্বাদই হয়ত এভাবে এক-দিন কোন দক্ষ বিদেশী কবি-অন্বাদকের দান্টি আকর্ষণ করতে সমর্থ হবে।

প্রয়োজনীয়তাও অ-প্রতাক অন্রাদের ইদানিং প্রিথবীর সর্বর ভীষণভাবে উপলব্ধ হচ্ছে। পূর্ব ইউরোপীয় দেশসমূহে, ভারত-বর্ষে, আফ্রিকার বহুদেশে এই পর্ম্বাত এখন চলছে। সোজাস্জি বিধ্যুটি দাঁড়াচেছ, অন্-বাদের অন্বাদ। একে কবিতাটি অন্দিত হওয়ার পরেই মালের সৌন্দর্য আনেকটা বিবর্ণ হয়ে যায় ভারপর সেই বিবর্ণ চেহারা থেকেই আবার তার অন্বাদ কবিতার স্বাদ কতদ্রে থা তা বিবেচা। কিম্তু বর্তমান পৃথিবীতে এরও প্রয়ো**জনী**-য়তা অসীম। যত বিবণই হোক, **তব, পর-**ম্পরকে জানার এই তো একমার পথ। ভবি-ষাতে হয়তো কবি-সাহিত্যিকরা মূল ভাষা থেকে অনুবাদেই এগিয়ে আস্বেন। কিন্তু যত্তিদন না আসেন, তত্তিদন এ পথেই হোক ভাবাদশের আদান-প্রাদান।

।। शींह ।।

কবিতার অন্বাদ বর্তমান সময়ে প্রথনবীর প্রতিটি উলত ভাষারই একটি প্রধান দিলপকর্ম। আধ্নিককালের কবিতা আপেলালনের সপো তার সম্পর্ক নিবিড্ডাবে জড়িত। তাই কবিতার অন্বাদে ষত দ্রহ্ সমস্যাই থাক না কেন, প্রতিনিরত বিশ্বন্যহিতা ভাশ্ডার পরিস্কৃশ হচ্ছে অন্বাদের ফসলে। ভিনদেশী ক্ল আহরণ করে প্রথিবীর বিভিন্ন দেশের কবিরা নিজ্ঞ ভাষার কার মালগকে আরো বর্শময় আলো ব্নময় আরো ধ্নিময় করে ভূলছেন। আর অন্ধান করেছন অপন চিত্তের প্রসারতা।



পায়ের শব্দে চোখ মেলে তাকালো স্রত। ঘুম ভেঙে গেছে অনেকক্ষণ আগেই, তব্চোথ ব'জে শ্রেছিল সে। নানারকম শব্দ তার কানে আসছিল, ঘর থেকে, বারাম্পা থেকে, কী রকম মৃদ্যু, যেন স্বশ্নের মধ্যে বা্ল্টর শব্দের মত, তবা প্রতিটি শব্দ म जामामा करत जर्ज्य कतरा भार्ताहम। মশারির ভেতর এখনো ফিকে অন্ধকার: বাইরে টকেটাক শব্দ : হঠাৎ তার হলো যেন খবে স্কালে যখন ভাল করে 'সর্কাসর স্য ওঠেনি, হাত-পা একট্ আমার দ্' একটি প্রেনো গাছের ভেতর অংধকার শেষ আশ্রয় নেয়, ত থন একটা ছোট স্টেশানে যেন টেন থেয়ে গেছে। দুএকটি কণ্ঠস্বর জল প7.ড হাওয়ার এক ধরনের অনু চচ **अ**श्रिक স্টেশ্যনের কথাবাতা, জানলার ফ্রেন চাই... ই... গর... ম চা-স্ব মিলিয়ে চক্রে যাওয়ার এক অভ্ত বেদনা আর স্রতর গতান,গতিক সকাল: এখন व्यासको एमहे तकम किन्द्र भएन हरना। বেন দীর্ঘ রাভ সে প্রি-টারার স্লীপার-এ কোথায় চলেছে, ভার চারপাশে অপরিচিত মান্ব, ট্রেনের শব্দ আরু কোলাহল,

চোখের ওপর যেন রাতের আলো অতিকায় পোকার মত ঘ্রছিল, রকম, ঠিক সেই রকম, তার মনে হলো এখন। সতি। বোধহয় স্কালের কোনো স্টেশানে তার ট্রেন থেমেছে। এইবার হয়তো তাকে নেমে যেতে হবে। তারপর সকালের কুয়াশায় ঘাস যখন ভিজে আছে, তাকে... আর একবার ভাকালো স্বত। না টেন নয়, বিছনায় মশারির ভেতর সে শ্রের আছে। আর যারা খুব বিশ্বাস নিয়ে বে'চে আছে. তাদের কাছে স্যোদয় হচ্ছে, পথি,বীর আর একটি দিন শ্রে, হলো, সেইসব মান্বের কাছে। চাপা নিঃশ্বাস পড়লো তার, পিঠের নিচে তোষকের চাপ, মশারি সামানা দলেছে, যদি আবার সে খ্যিতে পড়তে পারতো, আর ছামিরে পড়লেই সেই মাঠ, যার শেষে কোনো পরেনো গাঁজায় প্রাথনার ঘণ্টা বাজছে...এক...দুই...ভিন: সে হে'টে যাকেছ়…জনমণ হে'টে যাকেছ আনব কে তাকে হাত ভুলে ডাকছে: স্ত্রত ঘুম আর প্রাথিতি স্বশ্নের কথা ভাবলো। এখন ঘ্য এখন স্বাপন...

সে টের পাছিলো সকালের সামান্য ব্যস্ততা শ্রুর হয়ে গেছে ইতিমধ্যেই। তার মনে হয়, কী রকম মন্ত্রকো বেন সকালের
দপে সপ্তোই স্বাই এখানে জেগে ওঠে;
বে'চে ওঠে। স্বত জানে তার মাথার কাছে
জানলার বাইরেই কী একটা গাছ আছে।
এখন সেই গাছের ভাল থেকে পাখিদের
মিলিত কলরব তার কানে আসে।

হঠাং তার মনে পড়ে, সে বখন ছোট ছিল, ট্-প্রী-তে পড়ে, তথন কার কবিতার পাখিদের মধ্র গান এই কথাটা পড়েছিল; সে মাকে জিজ্ঞেস করেছিল, স্কুলের মাস্টারমশাইকে জিজ্ঞেস করেছিল, স্বাই হেসেছিল তার কথার। আর তার পার্লিদ ভাকে খেপিরেছিল—তুই কী বোকা রে!...

এখন তার সেই আশ্চর্য কথাটা আবার
মনে পড়লো। কিছু দুরোধ্য কিচিরমিচিরকে
কেমন গান বলে চালিয়ে দেয় কেউ কেউ।
সবাই সেটা মেনে নের। সবই অভ্যাস,
সবই শুধু চালিয়ে নেওয়া। জীবন...কে'৯
থাকা, সুখ...সুখের অভ্যাস; প্রেম...
মৃত্য়ে প্রতীক্ষা। এখন সে ব্রুক্তে পারে
অনেক কিছু। এখন সে আর হঠাং নিজ্প

রাস্ট্রার পথ হারিরে ফেলার ভর করে না। এখন আর—

এখন তার বেশ ভাল লগছে। বেশ তালা মনে হচ্ছে নিজেকে। বোধহর ভোরের, বাতাসের কোনো নিজম্ব পবিহতা আছে। এখন স্বাইকে কাছে ডাকতে ইচ্ছে করে; क्लाइड हैएक करता स्म सम्बद्ध भा किन्द्रहै। অথচ স্বকিছাই ভার কানে আসছে, যেমন মধ্যরাতে অনেক দ্র থেকে 'মাইকে' গানের দ্ৰ-একটি অম্পণ্ট লাইন ভেলে আসে। দরজা, জানলার শবদ, জমাদারদের কথার ট্রকরো, সিম্টারদের জ্বতোর রক্ষ শব্দ, পর্দার রিঙ টেনে দেওয়া; স্বেড স্বকিছ, টের পাচ্ছে এখন। এইসব অভ্যাসের মধ্যেই সে বেন বে'চে আছে। সত্তেত কী রকন আত্মসূথের ছকি তৈরি করগো মনে মনে। भक्त... मान, रखन भा वाहरत शाष्ट्रित शोष्ट्र নেওয়া, তার মানে আর একটা দিন; আর **किको प्रिन भूत् इंट्ला क्यारन। कृष्टि प्रितः** शह जूनला मुख्छ।

কাতিকৈর শেষ। শেষ রাতের দিকে
বেশ হিম পড়ে। তাই মাঝ রাতে সে গামে
চাদর টেনে দির্মেছল। আর তথন হঠাৎ
তার খবে কণ্ট হরেছিল; কেন সে জানে
না; অথচ মনে হরেছিল পালিয়ে যাই।
কুয়াশার মধ্যে ফিকে জ্যোৎশার রঙ দেখে
তার মৃত্যুর শীতলতার কথা মনে হরেছিলো
তখন। ইচ্ছে হয়েছিলো চীংকার করে ওঠে
—ফিরিয়ে লাও আমার শ্বাভাবিক আলো।

এখন কথাটা কী রকম অবাস্তব মনে হয়। স্বত বাইরে তাকালো। যদিও বাইরে বাগানে, মাঠে, মাঠ ছাড়িয়ে বাইরের বড় রাস্তায়, এখনো সামান্য কুয়াশা জনে আছে, নাড় বাঁধানো পথের পাশের আলোগনলো এখনো জনলছে, তব্ আকাশ কী পরিচ্ছা, রোদ উঠছে জমশ, হাওয়া আস্প্রে ঘরের ভেতরে, আর সেই হাওয়া তার কেমন শীত শীত করছিল; একটা বালিশ টেনে নিল সে ব্কের মধো। তাতং শব্দে দ্টোর ঘণ্টা শ্নতে পেল সে।

এখন সে বেশ ঘ্মোতে পারে। এখান-কার দিনরাত জীবনের প্যাটার্ন, ক্রমশ স্ব তার নিজের অভ্যাসের সংশা মিশে যাছে! কেমন হাসি পেল তার, তার কোনো আলাদা অভ্যাস আর আছে নাকি? নোটিশ বোডে मार्काता निरामग**्**लात मण स्माउ वधन কিছ্ নিয়ম জানে মাত্র; কথন ওষ্ধ খেতে হবে, কখন পথ্য, কখন বড় ডাক্তার আসবেন রাউপ্ডে, সব তার জাদা হয়ে গেছে। কথন বিশ্রাম, কখন খাওয়া, দিনে কটা সিগারেট খাওয়া যেতে পারে সব তাকে বলে দেওয়া হয়। এমনকি খ্যোবার সময় পর্যত এখানে ছড়ির কটার সংগে বাঁধা। ঠিক সাড়ে আটটার সময় ওয়াডের আলোগ্রেলা নিভিয়ে দেওয়া হয়। শৃধ্ জনলতে থাকে মাঝখানে শেড-দেওয়া বড় আলোটা, আর - ----- जिल्होर्-हैन-

জ্বলতে থাকে এক অভ্যুত বাদামি আলো। কী অম্ভূত মনে হয় তার।... হয়তো বাইরে **मार्कीत्नत्रं उँग्झर्ज जालाम् क्ये उपन** কাপড় কিনছে, রেম্তোরীয় বদে আন্ডা মারছে কর্ত লোক, সিনেমার আশ্চর্য ভাল-বাসায় কল্ট পাচ্ছে কেউ কেউ, হয়তো ব্ৰেক-ডাউন বাসের যাত্রীদের সংগ্যে ঝগড়া হচ্ছে কনডাকটারের, কেউ কেউ রেডিওতে শনেছে 'জয়মালা অনুষ্ঠান', আর এখানে চারপাশে সাদা মশারি, পরপর খাটের সারি, দেরাজে বিচিত্র ছায়া ওই ঝোলানো আলোর। প্রথম প্রথম সেদিকে তাকিয়ে ভয় হতো স্বতর: মনে হতো যেন সে এক শব্দহীন মৃতের প্রিবীতে চলে এসেছে; কোখাও কোনো শব্দ নেই; শ্ব্ব, তার নিজের ব্রক ওঠানামা করে; তখন খবে ভর হতো তার; তার শরীর ছেমে হেতো, যেন দমবন্ধ হয়ে খাটের ওপর সে মরে পড়ে যাবে ; নাকি সে মরে গেছে? সমস্ত শ্রীরে নিষ্ঠ্র যশাণ। ছড়িয়ে পড়তো তখন, সমস্ত শিরাগালি ছি'ড়ে যেন অবিরাম রস্তমোক্ষণ হচ্ছে তার: অন্নি আলো চাই রোদ...বাতাস মান্বের হাতের আঙ্ল...তখন সে ভরে চোখ ব্যে ফেলতো, অভান্ত কাতরভাবে বলতো--একট্ট জল দৈবেন সিন্টার ?...বিছনায় উঠে বসার চেণ্টা করেছে কিন্তু শরীরের গভীর **যন্ত্রণা ভাকে অসাড় করে রেখেছে** ডিউটির সিস্টারকে বিরক্ত করেছে—আমাকে স্ট্রে! **ম্পিলি** পিল দিতে পারেন?...

না, সি**স্টার সাহস পা**র্যান। বরং সে বাড়াবাড়ি করলে সিস্টার ধমক দিও তাকে। কতবার সে ডেকে ডেকে ক্রান্ত হয়ে পড়েছে: সেই আলোর দুল্নি, বাইরে হঠাৎ গাড়ির ব্রেক কধার শব্দ, কুকুরের ডাক, সর্বাকছরে মধ্যে সে যেন কার অমোথ আদেশের জন্য চুপ করে জেগে বসে আছে: শ্নতে পেত দেয়ালে ঘড়ির শব্দ একটা বাজে...দুটো...তিনটে...তারপর এক সময় রাত ফিকে হয়ে আসে ক্রমশ; তথন তার মনেও পড়তো না ডিউটির ক্লান্ডিতে হয়তো টেবিলে মাথা নামিয়ে সিস্টারও ঘ্রমিয়ে পড়েছে এতক্ষণে। নিষেধ অগ্রাহ্য করে কারা রাস্তা দিয়ে চীংকার করে শবযাতা িনয়ে যেতে থাকে: অসহ্য যক্ষণায়, ভয়ে চীংকার করতে থাকে কোনো রোগী; তখন সে সিম্টারের যাগ্তিক ব্যবহার লক্ষা করেছে। তথাক হয়দি।

--কী চেডামেচি শ্রু করেছেন? কী হয়েছে আপনার?

—আর পারছি না সিণ্টার, আমি মরে যাবো—নিম্মাৎ মরে যাবো, সমদত শরীরে অসহা জানালা, দয়া করে আপনি...

— চূপ কর্ন এখন, মোটেই মরবেন না আপনি, বরং খুমোবার চেজা কর্ন, দা হলে ইনজেক্শান দিয়ে খুম পাড়িয়ে রাখা হবে আপনাকে, এত রাতে এমাজেপিনীর ভারার এসে কী আপনার গারে হাত রোলাবেন?

তীক্ষাকতে সিন্টারের এই শাসম শ্রমতে

ভারা কভ অসহার, কভ দুর্বল। তার ইচ্ছে করতো প্রতিবাদ করে, কিন্তু করে কাছে করে? ইচ্ছে করতো—বারা বন্দুগার কাতর ভাদের মাথার হাত রাথে, সাক্ষমা দেয় ভাদের। কিন্তু কী করতে পারে স্থতঃ সে নিক্তেও ভো একজন...

পরে এখানকার সিনিয়ার দটাত নাস আমাদির মুখে সে অনেক কথা শুনেতে। আমলাদি তাকে অনেক কিছু বলেছিল, বুকিরেছিল।

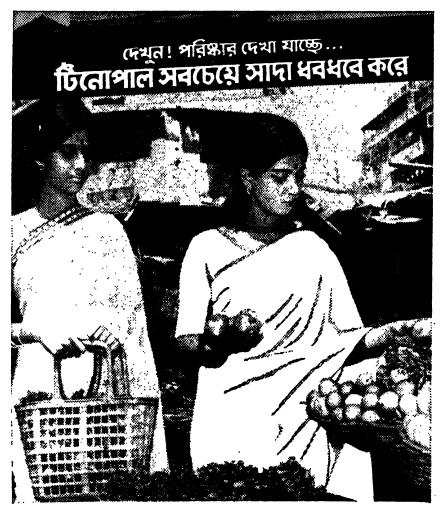
অমলাদি বলেছেন—জানো স্বত, বাইরে থেকে দ্র'দিনের জন্য দেখে সম>ত কিছু বিচার করতে যাওয়া ঠিক নয়। সতিটেই হঠাং অন্যরক্ষ কিছ্ ভাবা খব প্রাভাবিক। কিন্তু এছাড়া আমাদের <u>আর</u> কী উপায় আছে বল? তোমরা ঠিক ব্যতে পারো না, ভাই খারাপ লাগে, কিন্তু দিনে**র পর দিন হসপিটালে**র এই আব-হাওয়ায়, অসকে লোকন্লোর পরিচর্যা করতে মনের সব স্বাভারিক ব্রিগ্রলা भा**नार्छ रारक। এकर्ए** रहरभएहर অমলাদি, আমাদের এই অম্ভূত সাদা পোশাকটা দেখছো না? বাইরের মত ভেতরটাও কখন একসময় একদম বর্ণহীন হয়ে যায়। কত অসংখা রোগী, বিচিত্র তাদের অস্থ, বিচিত্তর ভাদের বাবহার : হয়তো প্রথম প্রথম আর্তের সেবা---বইয়ের এই কথাটা একট্র প্রেরণা জোগায়; ভারপর কখন অজানেতই এক সময় সব মাছে যায় মন থেকে। রোগী আসছে আবার চলে স্বাচ্ছে, বিছানার চাদর আর দেয়ালের টিকিট পালটে যাওয়া স্ফথ হয়ে ফিরে अ¦्श्र_ू १ কেউ আবার প্রনো জীবনে কেউ ফেরেনা অরি। যারা ফিরে যায় দ্দিন বাদে আদের মুখটাও কেউ ানে রাথে না। আবার ন্তুন মুখ, ন্তুন হ**ু** সাদা গাউন, সাদা ক্যাপ, থাা এটার মেজার *লাস...টেম্পারেচার চার্ট, ওষ্ট্রের ট্রে হাতে ডাঙারকে সাহাযা, আবার সেই রুটিন বাঁধা ডিউটি : আমরা কুঝতেই পারি নাকখন আমরা একটা অভাসের য**শ্**চ**ৃহরে** গেছি। স্নেহ্নেই, মমতা নেই, সমবেদনা নেই। শ্ধ্ আছে এক বেড থেকে আর এক বেড।

জানলার পদা তুলে দিতে অমলাদি আবার বলেছেন—জানো, যেদিন এথানে 'মৃত্যু' দেখেছিলাম, সেদিন কীরকম একটা অস্থিরতার কোথাও পারিনি, যেতে পারিনি, শুতে লোকটার প্রাণপ্রণ বে°চে থাকার যন্ত্রণাক্ত মুখ ফেন বার বার চোখের ভেঙ্গে উঠেছে: অথচ লোকটা আমার কেউ নয়, তার কী অসুখ, এমন কী নামটা পর্যাত জানা নেই আমার তব্য সেদিন আমি কেন্দে ফে**র্লেছিলাম।** আর আজ এই তো তিনতলার ওয়াড়ের আট নন্বর বেডের एडलिए त्रकारन भारत राजन: रव श्रामः निमश्र বলেছিল—ভাইফোঁটার আগে আমি বাড়ি যেতে পারবো তো?...দেখে এলাম সাদা কাপড়ে ঢাকা ভার দেহ, হয়তো ছেলেটির মা বাবা এসে ডেডবাড **জড়িয়ে ধরে**

পাগলের মন্ত কে'লে উঠবে, পাথর হরে বাবে
ভার বেল, কিন্তু আমরা জানি, ঘণ্টা
দ্রেকের মধ্যে এই বেডে চলে আসরে মতুন
রোগী। বিছালার চাদর পালটে দেওরা হবে।
আর মাথার কাছে বেড নাম্বারের পাশে
থাকবে রোগীর নাম। আবার ভাভারদের
রাউদ্ভে আসা; আবার রোগীনের
প্রশন; কবে ভাল হরে বাড়ি বাবো
ভাভারবাব?...

এখন এই ভোরবেলা, যখন ভার বাইরে

ভাকাতে খ্ৰ ভাল লাগছে, গাৰীদের জোখাও ক্ষেন আর কোনো গানি কমে নেই, চোথের পাতা সামান্য ভারি, তখন ভার এইসর কথা মনে পড়তে খ্ৰে আশ্চর্য লাগলো কেন তার ভেতর থেকে টেপ-রেকভারের মত অমলাদির সব কথা অবিকল বেরিরে আসহে। চোথ ব্লকেই হরতো এখন সে আবার অমলাদির কন্টস্বরের মধ্যে আন্তে আন্তে নেমে বেতে থাকবে। সত্যি, এখানে বড় বিচিত্ত এক জীবনের মধ্যে সে হঠাং এনে পড়েছ; নিজে আর্নোন; ভাষা ভাবে
টেনে এনেছে এখানে। বেন এক স্থান্দ্রের
মেলার মধ্যে সে মিলে গোছে। কত রক্ষ
মানুষ! কড বিচিন্ন অভিজ্ঞতা, কতরকমের
স্থে-দুঃখ। তার মনে হর সে দেখছে এক
অভ্যুত নাটক, যার কোনো দুন্দের সংশা
কোনো দুন্দার মিল নেই; নেই কোনো পরিচালক। সে কী বাইরে থেকে কোনোদিন এর
আভারটুকু পর্যান্ড পেতো?... দাকি
অম্পাদিই ভাকে চিনিরেছেন সব কিছু?...





পদীক্ষা ক'রে দেখা গেছে ! সামাজ একটু টিরোপাল শেববার ধোরার সমর্ দিলেই কি চমংকার ধবধবে সাদা হয়— এমর সাদা তথু টিরোপালেই সকর । আপরার লাট, লাড়ী, বিছারার চাদ্যু, ভোরারে—সর ধবধবে ! জার, ভার ধরচ ? কাপড়পিছু এক পরসারও কম 1 টিরোপাল কিয়ুর —কেউলার প্যাক, ইকরমি প্যাক, কিবা "এক বালভির করে এক প্যাকেট" !



(ই) তিনাপাল---মে আহ গাচনী এল এ, বাল, হুইআয়জাও-না বেলিন্টার্ড ট্রেডার্ক।

नूसन बारबी बिद, (बाद बाद क्या 22000, (बाबाई २० वि. जात्र.

THE PERSON NAMED IN

--ग्रान्टक्त ?...

উঠলো স্বত। তাকালো **54C**# **নিন্টারের মাথের** দিকে। কেমন শাস্ত, रकावन क्ष्याता। रमध्यम गरम इस धाधारम मंत्र, स्नामा काथा ७ कत्र कारना द्वारासन **আছে। যেন কোনো তুলসীমণ্ডের প্রদীপের** মালিল আলোয় এই মেয়েটি ভগবানকে তার লোপন ইচ্ছাটি জানাতে পারে; চেথের দিকে তাকালে অস্থের কথা ভূলে যেতে ইছে হল: কোনো প্রার্থনার মদ্য কী লাকিয়ে আছে চোখের গড়ীরে? আর একবার **দেখলো স**রেত, ছোট কপালের ওপর অপ-ক্লাব্রিতার মত একটি স্বন্দর টিপ, চুলের সামানা টুকরো দেখা বার ক্যাপের আড়ালে, বোঝা বার ভিউটির আগেই ল্লান লেরে নিয়েছে মেরেটি। স্নান করতো বোধহয়**্**স্ব মেরেকেই বড় মিম্পাপ মনে এম; সংরাজন यफ् हेर्ट्स हरणा अकवात अत जिन्दे गतीत इ. दा तत्व।

—নিম, **হাঁ কর্ম, মেরেটির সা**মান্য ঠোট নড়লো।

নিবি'চারে আদেশ পালন করলো সে।

এমন কী ভার মনে হর, এখন বলি এই
মেরেটি তাকে বলতো—চল্ন তাড়াভাড়ি
আর আধ্যকী পরেই শেলন ছাড়ছে আমানের
ভাহলেও সে হয়তো অবাক হতো না।

তার মুখের ভেত্তর থামোঁমিটার চালান করে দিরে হাতের হাড়ির ওপর চোখ রাখলো সিস্টার; মুখ বাছে স্তুত তাকিরেছিল মেরেটির এই নম্ম কাল করার হাণ্যর দিকে; কী রক্ম পাতলা ভেলা ভেলা ঠোঁট, একট্র অহংকারী ভিবৃক, সূত্রত দেখছিল সকালেও মেরেটির গলার খাঁলে সামানা ঘামের দাগ।

—দিন, হয়ে গেছে। স্বত সিস্টারের হাতে থামের্মিটার ফিরিরে দিল। মেরেটি শিররের কাছ থেকে টেম্পারেচার চার্টটা ভূলে নিল। সে **লানে, এখন ওটা**য় আজকের তারিথ পড়বে, তার দেছের তাপ লেখা হবে তারপর, আর সমর। তার মানে স্বর্ হলো দিনের কাজ। ঠিক নটার সময় রাউণ্ডে বেরিয়ে এই ওয়ার্ডের যিনি কর্তা: সেই বড় ভাক্তার দলবল নিয়ে তার বিছানার সামনে দাঁড়ালে ডিউটির সিস্টার হরতো চার্টটা খালে দেবে তাঁর হাতে, তিনি হয়তো আল-গোছে একবার চার্টটার চোখ বোলাবেন. হয়তো বোলাবেন না, তবং নিয়ম, আর নিয়ম দিয়েই বাঁধা **আছে এখা**নকার জীবন। কথাটা এভাবে মনে হতেই যেন একটা অসহ্য যন্ত্রণা তার শরীরের ভেতর পাক দিয়ে **গেল। তা**র বুকের ভেতর কী অবি<mark>রাম</mark> রম্ভমোকণ হচ্ছে? আজ তার একচিঃল मिन इस्र लाम এथानि।

একচলিশ দিন।..মনে হর কভ হাগ আগে সে যেন এই চুসপিটালে এসেছে। ক্রমশ সে ভূলে যাছে বাইরের জীবন। বাইরের আলো, হাওয়া ঘাসের রঙ, এরিমেলের তারে কাকেনের জ্রটলা, বাভির কলকাতা, মানাযের মুখ, গান্দাস ম্যদানের মিটিং একটা রকারেব বালের মত বিশাল

শহরটার ছুটতে থাকা, অফিসের সিণ্ড, টিফিনের আন্ডা, তার মা, অর্চনা, সংশেখা, বিজন, আপিস, শেখর, রাসবিহারীর মোডের মাথায় সিনেমার একটানা বিজ্ঞাপন সব, সব কিছুর বাইরে যেন এক নির্জন স্বীপে কারা তাকে নির্বাসিত করেছে। এখন আর সেই জীবনে যাওয়ার কোনো পথ নেই, কোনো উপায় নেই, বহু, দিন আগের কোনো গলেপর অঙ্পণ্ট স্মৃতির মত যেন প্রেনো জবিন খ্ব আবছাভাবে মনে পড়ে ভার। এখন আর কাতিকের হল্প রোদের মধা দিয়ে সে স্লেখার সংশা হে°টে যেতে পারবে না মেয়ো রোডের মস্ণতার মধ্য भिरद्य। अथवा वश्यातम्ब **अर्था देश-दे**ठ क्रबर्फ हरन वाउता विजतहारे, अधन जाद कहनारक নিমে সে সিনেমা দেখতে বেতে পারবে না. বড়াদনের সময় ইছে হলেও কোলাও বেতে পারবে না পিকনিক করতে। এখন শুখু ভার চারদিকে সিন্টারদের অভোর শব্দ, ভারারদের উপদেশ, রাত্তিরের ঠান্ডা আলো-ছায়া, রোগীদের আত'স্বর, ওব্ধের वीवारना भन्य।... अकरें, अकरें, करत छात्र অস্তিত ভূবে বাচেছ, কমশ ভূবে বাচেছ। এখন তার দিনগর্লি অভাছীন, রাতগ্লি বিবল, পোকার মাত দ্বেশ্স বলে বেড়ার তারা। তার মনে হয়, বেন এখানেই সে জনেহে আর এখান খেকেই এক দিন, শাদা চাদরে তার শরীর ঢেকে ওয়ার্ড-বয়েরা বাইরে নিরে বাবে তাকে। পরণিন **ভাতার এসে দেশবে** বাইশ নন্দর বেডের রোগীর নাম পালটে গেছে, আর তাতে সামান্য বিচলিত না হলেই জিল্ডেস করবে তাকে কী **কণ্ট হলে** আপনার ? এই উদাসীনা, এই নিষ্ঠ্রতার নাম জীবন! অমলাদি ঠিকই ব**লেন**।

টের পেতে থাকে সর্ত্রত তার রছের ভেতর যেন বিষাদ ছড়িয়ে পড়ছে ক্রমল, সহা করা ছাড়া উপার নেই, চারপাশে আর এক-বার তাকালো সে—ফানে কর। হুসপিটালের আইনে বিশেষ করেল না থাকলে এখন আর ফান চলবে না, লক্ষা করলো স্বত্রত, সাদা রেডগলোর ধ্লো যেন সরের মত শেলে আছে। তার চোথে পড়লো—বিছানার চালর সাদা তার চারদিকে সাদা দেওরাল, তার সামনে দাঁড়ানো সিস্টারের সাদা পোলাক, জানালার পদা সাদা, ব্ক কেপে উঠলো স্বত্রত্র তার মানে আমার চারদিকে শুধ্ ধ্সর শ্নাতা, কোথাও উক্রমণতা নেই, ব্যভাবিক রঙ নেই...মাথা কেমন কিমঝিম করে ওঠে স্বতর।

—আপনি তে। একদম ভালো হরে গেছেন। স্ত্রত দেখলো সিস্টার ওদিকের কাজ সেরে আবার ঘ্রে তার বিছানার সামনে এসে দাঁড়িরেছে। তথনো মেরেটির হাতে থার্মোমিটার।

—ভালো হয়ে গেছি?...সা্ক্ত কেমন অসহায় বোধ করে।

তাই তো দেখছি বোধহর করেকদিনের মধোই আপনার ছবিট হরে **বাবে। ছোট করে** হাসলো মেয়েটি। —ব্রটি?...স্রতর কণ্ঠস্বর সকালের রোদে যেন শ্রিকরে যাছে।

—হা ছুটি, এখান খেকে বাড়ি ফিরে বারেন। টোবলের সরঞ্জামগলো গর্ছিরে রাখতে সিস্টার কথা বলে। প্রথম প্রথম অবলা একট্ব অস্ববিধে হবে, চার-পালের মান্বদের দেখে কণ্ট হবে, কারো কারে চীংকার করে নালিশ জানাতে ইক্ষেকরে, পরে দেখনেন সব একসমর ঠিক হরে যাবে। কোনোদিন যে আপনার বাঁ-পাছিল, হরতো সেটাই ভূলে যাবেন। আমার এক জামাইবাব্রও বখন একটা হাত কাটা যায়

—কিন্তু আমি যদি আর ফিরে না ধাই? মানে যদি…

—তা হর না। নিরম নেই। অকারণ হসপিটালের বেড আটেকে রাখা যার না।

এসৰ কথা সে নিজেও জানে। তব্ যেন এক অবাস্তব স্থান দেখতে ইচ্ছে হয় তার। বেন মেলেটির হাড ধরে বলতে পারলে ভাল হতো—আমার জনা তৈরী করা যায়না কোনো সভুম নিজম "..ৰলা যায়না। মেরেটি ভাহলে তাকে পাগল ভাববে।

--কোথার বাব আমি?...

শ্ৰেছি, আপনার খ্ত ভজন আপন জন আছেন; তার কাচের ্ৰত অপলক ভাকিয়ে থাকে সিম্টারের 🐩 🛪 দিকে। কী গভীর বিশ্বাস থেকে ক বলছে **ার্টোরেটি: হয়তো এখন** তাকে হাততুলে **কোনো আশীর্বাদ করতে পারে** সে। সমস্ত **ঘর যেন এক অলোকিক স্পেতা**য় ভারে উঠছে। হাওয়া আসছে, বিছানার ওপ**া** मन्त ताम। ज्ञा की उत्क এकरे, काष्ट বসতে বসবে? কিল্ডু নিজেকে গ্রুটিয়ে নিল লে: এসবের মানে হয়তো মেয়েটি क्लिंद्रे द्वर्ड **পারবে**না। অস্ক্থ মানুবের আবেগের কোনো উল্টো মানে খুলে পাবে। শুধ্ মুখে বললো-আপান সামার অনেক কথা শ্বনেছেন।

ভানলার ছেনে সিস্টারের
মধ প্রতিমার মতো মনে হয় স্বত্তর,
পরিপ্প দুভি একবার স্বত্তর
শরীর স্পর্শ করে বার, জানলার পদা গ্রিছরে
ঠিক করতে করতে বললো—হাসপাতালে
কেউ পড়ে থাকার কথা ভাবে? এসব বাজে
চিন্তা করে—

-- मन्प की; এখানেই यीप--

—না. এখানে শুধু অসম্প মান্বদের আশুর; যারা স্বাভাবিক জীবনে বে'চে আছে, ভাদের প্রতি আমাদের কোনো দায়িত্

স্কুত মাঠ দেখলো, কাতিকের নিমের আকাশ: তার সামনে সকালের স্নান সেরে দাঁড়িরে আছে এই মেরেটি। হঠাৎ তার মার কথা মনে পড়ালা: কী রকম যেন এক সাদৃশা খালে পায় সে। তার ইচ্ছে হয়, হঠাৎ নাটকের মত একটা টাটকা দৃশা স্রুর

করে সে; ধ্ব আন্তরিক তার ইচ্ছা; তব্ মের্মেট বিরক্ত হবে, হয়তো রিপোট'ও করতে পারে তার রিগ্রী ব্যবহারের জন্য কিন্তু সিস্টার ক্রী ব্রুতে পারে, আগ্রয়ের জনা, বিশ্বাস ফিরে পাবার জন্য সে কত কাতর?... খুব ইচ্ছে হয়, মেরেটির হাত চেপে ধরে বলে—কী হবে বাড়ি ফিরে গিরে? কাদের মধ্যে ফিবে যাব আমি? কেন?... সমস্ত জীবন সংসারের বোঝা হয়ে, সকলের গলগ্ৰহ হরে বে'চে থাকার যে কী প্লানি, কী শ্ন্যতা আরু যদাশ; তা ভূমি কী করে ব্ৰুবৰে? প্ৰতিটি মান্য আমার অক্ষমতায় সহান,ভূতি জানাবে, জীবন যে একটা স্থাগল, লেটা বোঝাবে, যারা খবে কাণ্ডর**ু মান**ুর, দনা করবে তারা, কেউ কেউ উপদেশ দেবে সমস্ত ব্যর্থতার মধ্যেও জীবনের মুখোমুখি দাঁড়াতে। ... অথচ সব বোগাস। ... স্ব্রুড জানে এসব শ্ব্ব কথার কথা, সংসারের অভ্যাস শ্বে; যারা বলবে এসব কথা, কিছ্ হারামীন তারা, সংমায়ের কোনো অধিকার থেকে এক কণা বঞ্চিত হয়নি তারা; কী করে তারা বরুবে কী নিষ্ঠর এই শ্নাতা, সমুস্ত বাকি জীবনটা এক কাল্পনিক অন্ধকার; স্বত্তত প্রাণপণে বলতে চায় আমি দয়া চাই না, প্রশ্রয় চাইনা, তোমাদের মধ্যে, তোমাদের মত বে'চে থাকতে চাই।...

কিন্তু কিছুই বলতে পারলো না স্তত; বলা যায়ন। তার বুকের সব ন্বাভাবিক ইচ্ছা শুধ্য তাকে ক্লান্ত আর দুবল করে তুললো; কোনো রকমে মুখে শুধু বললো—

- —আপনি জানেন প্রথম থেকে জন্যের দয়ার ওপর বে'চে থাকতে হবে আমাকে?
- আপনি বড় বেশি ভাবেন; মার কাছে ছেলে কখনো গলগ্রহ হয়?
 - —কিন্তু আমার মত প্রগান ছেলে?... —না, সেও নর

—আপনি বিশ্বাস করেন? না আমাকে সাম্পনা দিচ্ছেন? ওদিকে ভাকছে; আপনি শ্রে থাকুন; আর করেকদিন দেখছি, আপনি দ্পুরে একটংও রেম্ট নিচ্ছেন না, সম্মত দ্পুর বই পড়ছেন, এক্ষ্নি নার্ডের ওপর এত স্টেন ...

আর একবার ডাকাডাকি স্র, হতেই
কথা না বাড়িরে চলে গেল সিস্টার। স্রুড
কী রকম আবিস্ট হরে রইল কিছ্কেণ; তার
পারের মৃদ্ধ শব্দে, শরীরের ভঞ্গী, কথার
রেল বেন একটা গলেপর বর্বনিকা মনে হলো
ভার।

নিজের শরীরের দিকে চোখ ফেরালো
স্রুত। চাদর দিরে শরীরের নীচের
দিকটা ঢাকা; স্রুত জানে তার কিছুটা
অংশ একটা গোলাকার মার্সেপিশেডর
চেহারার শেষ হয়ে গেছে বিকৃত...
অসহা! চাদরটা সরাতে হাত কাঁগছিল
তার। মনে পড়ছে তার, প্রথম বখন সে একট,
একট্র করে ব্রুতে পারছিল—সে বেচে
আছে, অথচ তার বাঁ-পায়ের অর্থেকটা তাকে
চিরজন্মের মতো হারাতে হর্লেছে, তখন তার
কোনো অনুভূতিই চিক কাজ করেনি, বেন
একটা দুঃস্বশেরর মধ্যে ভেসে যাছে। ভর

नव, चाठरक नव, काला नव, पर्श्य नव, की রকম বিহরণ হয়ে গিয়েছিলো লে। সমস্ত ব্যাপারটা কী তার জীবনেই ঘটেছে?... শাকি সিনেমার রীল উল্টে গিয়ে সে এক গোলক যাঁখার ডাকে পড়েছে? চারপালে তাকিয়ে ছিল সে। করেকটা ঝাপসা মুখ, কাউকে সে চিনতে পারেনি তখন, যেন একটা ব্ৰীক তন্দার मध्य स्मृत ছাড়িলে চলে যাছে...কী রকম পাজিতল বোধ হয়, নাকি দ্ব'লত। ন সে চোখ খুলে রাণতে পারহিল না? ঘ্যের মধ্যে আবছা স্বশ্নের ওঠাপড়ার মতো বেন তার মাথার ভেতর দিয়ে হাজার হাজার পা কোথার চলে বাচ্ছিল তখন, ডা হলে ভার নিজের পা?...নাকি এখনি সে খাটের অপর প্রাশ্ত খেকে তার বাঁ পারের অধেকিটা খাকে পাবে? কে নিয়ে চোল তার শরীরের অবিচ্ছেদ্য অংশটাকু?...মা, ফিরে আর পায়নি। রুমণ স্বত্ত ব্রুক্তে পেরেছে এই অংগহানি স্বন্দা নর, গলেপর**্** निष्ट्र'ण गरम्थ नज्ञ, यज्ञर निष्ठेर्द्ध सर्मान्टिक

সভা। এখন থেকে পর্যিথবীতে তার সবচেরে বিশ্বস্ত সহচর কাঠের দুটো ক্ল্যাচ!...আর তখন সমস্ত দেহের কোব থেকে কালা উঠে আসছিল তার...দেন প্রতিটি রক্তকণা প্রতি-করতে চাইছে, কীরকম ভর পেরে কে'পে উঠেছিলো সে; জাতাজ ভূবির পর ষেন পাতালের কোনো রহস্যমর জগতে সে চলে এসেছে, বিচিত্র সব পোশাকে কারা দাঁড়িয়ে আছে তার চারপাশে? স্বরত তাদের কথা ব্ৰুতে পারেনি, নিবিকার মুখ দেখে সে শিউরে উঠেছে...হনতো এবার ভারা খনলে নেবে ভার বাকি পা, হাত দ্বটো, চোখ...সব। তারপর হরতো নিষ্ঠরে উল্লাসে পাথর ছাড়ে ছাড়ে মেরে ফেলবে ভাকে? একবার মাকে খ**্ব'জে পাবার চেন্টা** করলো সে...স্লেখা কোথার এখন?...তার চোখে বোধহর হাজার বছরের ধেরিয় জন্ম-ছিল তখন।

হাত ওঠালো না স্বত। বাইরে বধন হেমন্তের উল্ভাৱন সকাল, গাছের পাতার

र्जाबनाम नामग्रू-छ-द

र्लानन द्रम्भशादि श्लव

ৰাংলা সংবাদ-সাহিত্য

একটি বহুমূল্য তথ্যসমূন্ধ গবেৰণাগ্ৰন্থ

চার টাকা

क्रामकाणे वृक शाउन

১ ৷১, ৰণিকম চ্যাটাজি প্টাট, কলিকাভা—১২

শ্রীত্যোরকান্তি খোষের বিচিত্র কাহিনী ও আরও বিচিত্র কাহিনী পড়ে' আনন্দ পাবেন

}

মাৰ হুসপিটালের মাঠে করেকটি চড়,ই नाम धारमाह, क्यां हुण करत थाका हाजा জালো উপায় কেই ভার, অথচ এখন ভার **র্ভ ইন্তে হয় কো**নো অলৌকিক নদীয় পাশ নিৰে লে ছটিতে হটিতে কোথাও চলে বার, ব্রীক্তের আগে বেখান থেকে ফিন্তে আসার **ট্যামনে পড়ে না...সেই অবাস্তব প্রিব**ী কার বাজে পেতে বড় ইছে হয় এখন। কিছু এখন খেকে সেফটিশিন দিয়ে পার্ল্ড দ্বাটনে পড়ভে হবে তাকে, মনে পড়ছে তার বী পারে গোড়ালির কাছে একটা পর্ডে বাওরার দাগ ছিল, কালী প্রের সময় **এবটিট ফেটে আগনে বলসে গিরেছিল** জান্নগাটা, আর সেই দাগটাই পরে অফিনে 'বিশেষ চিহ' হিসেবে রেকড' করা হয়ে-ছিলো। নিঃশ্বাস পড়লো তার...এখন-এখন ভার 'আইডেনটিটির' জন্য তাইলে...

অপারেশনের পর তার জ্ঞান ফিরে আসার অনেক পরে সে জানতে পেরেছিল— এমনভাবে সে জখম হয়েছিলো, এত বছ গেছে তার শরীর থেকে যে, সে বে বেচে যাবে, সে সন্বধ্যে ডাক্তারদেরও সন্দেহ ছিল। এখন কথাটা মনে হতে তার দঃখ নর কেমন হালি পেল শ্ব্।

ভারাররা তাঁদের কর্তবা করেছেন, মরতে দেননি তাকে। কিন্তু তারা কী ব্যতে পারছেন ভাকে বাচিরে রেখে নতুন করে দ্রভাগোর মধ্যে তাকে ছ্র্ডে ফেলে দেওয়া राईएर ?...

জ্ঞান ফিরে আসতেই সে দেখেছিলো অনেক উ'ছু ছাদ, কিন্তু তার ভাবনার কোনো আলাদা শক্তি ছিল না তখন, যেন শরীরটা মেমের ট্করোর মত হালকা হলে ভাসছিলে খরের মধ্যে। সে দেখছিল কেমন সাদা রঙের বিশাল দরজা, সাদা পদা ঝুলছে একটা **থাবালো গণ্ধ** তার শরীরে ছড়িয়ে পড়-ছিল; সব গোলমাল হয়ে বাজিল তার-সে কী: কোনো অ্যাডভেঞ্চারে বেরিয়ে পড়েছে? হাও খ্ৰুজিছিল...পা, কোনো কথা সে পরিক্ষার শুনতে পাছিল না। চারপাশের সবই ষেন খুব রহসমেয়। ষেন একটা ভরংকর বৃদ্ধশেষ সভক'তা চলতে থরের মধ্যে, সে চোখ মেলতেই একজন হেসে তার পালস পরীক্ষা করেছিল, ভারে মাখার কাছে তথনো 👣 সব ফলপাতি, সে ব্ৰুতে পার-ছিল তাম শরীরে এখন ধীরে ধীরে কী रकत. रवाधरश रिंग्फ बीकाब ब्रमम, ब्रम्भ ঢুকিয়ে শেওয়া হচ্ছে।

--জামি কী?

—হটে এসেছিলেন একজন সিনিরর সিস্টার। ইশারায় তাকে কথা বলতে নিবেধ करतिष्ट्रन ।

—আমার মা কোখার? আমার **ৰো**ন ?

—अस्त्रका कत्रादान मा, जबाहै आहिन, গতকাল সকাল এগারোটায় আপনার অপা-রেশান হরেছে, এইমাত্র আপনার জ্ঞান क्रिट्राट्स, अधन स्कारना अक्स म्हलसक्ती का PUT WITH ण्णा— —जी इरहर६ आभास?

—गर भाग भागासन, अवहान सामा जामत्वेम बार्जमारक समाव्य

-- जामार या जामस्यम मा?

—गा, बावेडीझन बन्डी मा दक्छ स्मान , पाणानमा नार्वाभणान इत्रत्वन मा. अन्यत्वा ক্রাইসিস পিরিয়ত ওভার হর্নি। **পাউকে** रम्परम्, कथा बनाव राज्यो कराज वरमत कना থুৰ ভাগ গড়ৰে জাগদাৰ, ভাৰ যেকে ছেমানেক হওয়াও বিভিচ নয়।

चारण्ड जारण्ड छात्र बार्क स्वरतिहरू স্কৃত।

भारत एम भारतिहरू गांव विमास अवस रभारत মা অজ্ঞান হলে গিলেখিলো, দু রাভ ইল निर्धारमध्ये रबरक्टमः कर्ममा, जान अध्यम मध्य खाब माला म्याहेरक राम्या क्वारक रामका হরেছিল লে মার দিকে ভাকাতে পারেনি, कर्मा त्रहे श्रथम ছেলেमान्द्रका वर्क क्लिन रक्टलिंडन, अथेड एन - कीत्रका यरनाव मेंख जान्द्रना **ए** ७ हात् हुन । जान्द्रना एक नारक।

---काद्राकां हें करत की क्वाबि? बन्नर कृषे भारक धकरें...

—দাদা তোর এরকম **সম**স্ত **সরীর** কেশে উঠছিল অর্চনার

किन्छू अथम न्याख्य महाम घरना, की ক্ষতি হতো যদি লে না বাছতো?...হরতো কিছুদিন সকলের আড়ালে মা একা জেথেই জল ফেলতো, অর্চনাও কয়েকটা দিন চুপচাপ বাড়িতে বসে থাকতো; ভারপর কলেকে যেতো, গলেশর বই পড়তো, রেভিঞ শ্নতো, আর সংলেখাও হয়তো দ্দিনেই স্থ স্থা করে নিত, হয়তো তার কথা জমণ ভূলে যেতো, [']মধারাতে **ব্**ম **ভেঙে** দোলে স্লেখা কী তাকে...হয়তো স্লেখার জীবন থেকে রোদ-লাগা কুয়াশার মত 🦪 মুছে বেতো, বিলে করে সুখী ছতো, প্জোর ছ্টিতে ষেতো পাহাড় **অথবা** স্মাদের কাছে মিজের বিশ্রামের জন্য, স্কুখের জন্য। রোগ-প্রতিবেধকের মত শোক-প্রতিষেধকও নিশ্চয়ই কিছু আছে মান্তের ভেডরে: না হলে মানুব পাগল হরে বেতো, প্রথিবীটা হতে। একটা সম্মাধির ভার্থী মাত্র! মান্বের মন বড় বেশি ডাইনামিক; আকাশের মন্ত সব দাগ সেখান থেকৈ খুই তাড়াতাড়ি মুছে যায়।

এই হয়। জীবদের এটাই জীলখিও নির্ম। সংসারের সত্যিকার কো**নো** কথ**ন** কোপাও নেই: সকলের সুখ-দঃখেম ওপর দিয়েই নিবিকার দিনরাতগালো আসে, স্হ ওঠে, অস্ত যায়, সংখ-দংখ, ব্যথভা, প্রানি, প্রাজয় সবই মান্ত্রের **অভি**মান शाह: हातीपटक छाक्तिस मरमक पर्क मा रक আছে, কে নেই, পাঁড বার, গ্রীক্ষ আসে, ক্যালে-ডারের পাতায় ধ্লো জমে, আর किन्द्र मह।...रम निरम् ७ एका रमरथरन, वाचा-মালা বাবার পদ কিছুই তো আটকে थारकीन। अथह अथरम मरन हस्तीहरना বোধহয় স্থাকছ, শ্না হরে গেল, কী

क्रमा कार्यात क्रमान क्रमाना कामा। वामान बद्धाः क्षेत्रकेक अस्तिकां मा, निमग्राक कार्यम कामारण छन-बात, बाजारक माजिल सांचा बराविकारा द्वारी बरव, बारक कविता करा का मा बारक बारक दुरू रा केंद्राचा। बाक रान निवास मामानिम् कार्यस्य वार्यस्य प्राप्तरका, वका अना नारक यात्र वाकावा, दाव नारक शीय क्रांपटक क्रवाहा; क्या वनाटक कार्या मानक्षा मा। कार्यसम् अक मनव मन विक दक्षा अरुगा, न्याकारिक दस्त अरुगा। सामग्र नाक्षिक द्रवांके कारण या वानानाना निरम्हरू, म जीकरन रनरह, जाकात रनरह, मर्सनात क्या कटनका कटबट्ड; गहेटा निटंड हाक-नाम्बे नता बाँव कुरमाम, गामिता गामिता कारमा बारमा बरमस्य बन्दरमञ्ज शामायाव बना। बाबार दन जिन्दा ट्रन्टहरू, बर्डना मामानीत निरंतरक रगवंद, कारणादमत विकिर्णक जाना होका क्रारक्तर जान कारक। जनम मान খনে নাৰাৰ কোটো ছাড়া সভিটে কী আৰ **ट्यांगा डिस् मादर नामात्र?...**

স্কুত ব্যাহে পারে সেও আবিকাশ अवेकार्य अवका बान्यरम्य मछ केम करत कृत्या त्यक । किन्यू अथम ? अथम भारत श्रामा ভার স্থানিবর দিনগর্মান।

भारा माज्ञज्य बार रेटक विन दम धार স্কেরভাবে বরে যায়। বেদ ভার চাল ৰাওয়াটা গতেশয় কৰাণ শেষ যিদায় হয়ে क्टि। क्रिक दश्यम् कक्ष निरम्भाव रन रनरभरवे। আহা! কী লোভনীর সেই মৃত্যু! সে रंगरथरक जिरमबात जनाहे चून बाह्यारन **এই श्रमाय फाल करत हरन बाम; यान-**চোৰ একটাও বিকৃত হয় না, বল্যবার **কাভরতা দেই, ভর দেই, শরীরের কো**নো শীপতা নে**ই। তথলো বেল ট**াটান **হয়ে** স্কুলৰ **ভণ্চিতে লে দ্বে** %া#: श्रा বানিরে বানিরে দুঃখের, ভ^{্রানের} কথা **नरम** ; कूरम यात्र ना किक्_र, क्रापुरत बात्र ना জিভ; আর ৰে মদের মান্ব, সে কাছে বলে থাকে; ভূলেও ভাতার ডাকার কথা ভার মনে হয়ালা, আয় পচিজনকৈ খনর দেওয়ার कथाठीकः; रत भाषाः इनदन कार्य नाग्रान ভাবের গাল গার একখানা; আর সেই গান দ্নতে শ্নতে মহাপ্রস্থানের পথ ধরে নায়ক: আৰু কী অস্কৃত, কেউ সঞ্চাল পৌনে अगारतारोत या बाख आरेरे। मरखरवा विनिदर्भ भरत मा, मूर्च यथम भाषा मिरत परावत काशरकत क्रम काल कालमा निरंत रवान পাঠার, দেই সংক্রম সকালে ভার মৃত্যু হয়। ইস্, এরক্স মৃত্যুঃ কী আক্ষেপ হয় महत्त्वतः दल दहरका लाख चा**डेरक-का**वता अको रे'न्यास यह अकोन्ड रामाक्सकार মালা বাবে একদিন; তথ্য বা হয়তো बालिन स्वास्त स्टब्स, महरमथा श्वरका कारमब कमा गोर्भक मिक्कि बाक्टब, जनवा रमाकारम शबन्य कत्तर माक्ति भाष्...धरे-इक्क जिर्दाप अवर अकान्सिककारन रम ब्राप्त बारव । इस बालक्काकेन्ड विकेशिक. अमीरभव निरंध-गांधवा नाविकांत्र पंटरपत न्दरभा क्षांक-वाना...वाविना न्द्रक व्यटन रमण्डमा क्या क्या

्र (श्रम्भक्ष)



পাড়ার স্বাস্থ্য

हारला, हारला। भान्य जाननारस्व অফিসার এলে বলবেন যে গত সপ্তাহে নটা কলেরা রোগী আমার এলাকা থেকে আই-ডি হাসপাতালে ডতি করেছেন, অথস আমাকে একটা খবর পর্যন্ত দেন নি। এটা কোন দিশী ভদ্ৰতা? হ্যালো, কি বললেন? আমার একাকার রুগীর থেজৈ আমি নিজে কেন রাখি না? কি করে রাখব? আাব্দেশ তো আর আমার আন্ডারে নয়। পেসেন্টের বাড়ীর লোক আপনাদের থবর দিয়েছে। তা আপনারা কেন আমাকে कानार्यन ना? शार्या, रमध्न वारक कथा বলবেন না। আমরা ডিস্ইনফেকশানের रावण्था ना कतला न'होत **जावशास मध्यहेंहा** কেস শভাত ব্যলেন। আমার দায়িত কর্তব্য আমাকে শেখাতে হবে না। হ্যালো, আপনাদের অফিসার যে এখনো আসেন মি সে তো আগেই শ**ুমেছি। এলে বলবেন বে** আমার কাছে ন'টা সেসেন্টেরই নামধামের লিশ্টি আছে। আজ বারোটার মধ্যে আপনারা বলি রিপোর্ট না পাঠান ভাছলে जामरवन कशिमनारतत् कारह निन्धि नरश्ङ কমপ্লেন পাঠাব। বৃষ্ণেন। হার্গ ভাই रकारना।

ঋপ করে হাতলের ওপর রিসিভারটা एक लिए इंटिंग एक ता एक विशेष करत যুরে বসলেন হেলথ অফিসার। অম্লা আড়চোনে হাতঘড়িটার দিকে চেয়ে দেখস. পোনে এগারোটা। আধ্যণ্টা ধরে চেরারে ঠুটো জগলাখ হয়ে বসে রয়েছে। অফিসার এতক্ষণ ফোন নিয়ে বাস্ত ছিলেন। শ্ব্ৰ চোথের ইসারার চেয়ারটা দেখিরে দিয়ে অনুপস্থিত কোন এক অফিসারের সাব-অভিনৈটকে এতক্ষণ ধয়কালেন। অমূল্য बात मृत्याक कथा बनावात छन्छ। द्वारा नित्य এমন ধমক খেরেছে যে আর মুখ থোলে নি। অথচ কারখানার এখনি ওর একবার ছাওয়া দরকার। আজ বিকেলেই এক সট शाम हामान मिर्छ शता क्रीयानी কোম্পানীর চীফ ইনজিনিয়ার থবে কডা লোক। টাইম মত মাল চালান না দিবল वात्र त्राहरू एएए कथा वरनम मा। विन আটকে দেন। বলেন, আমাকে বেমন
ভূগিরেছেন, এবার নিজেও একট্ ভূগনে।
অম্লা কোন জবাব দের না, শুনু হালে।
কিন্তু এবার দেরী হলে আরু কোন অর্ডার
দেবেন না জানিরে দিরেছেন বোস সাহেব।
ওদিকে হেডমিস্মী স্কালে কাজে আসে মি।
নিশ্চরই ওভারটাইসের টাকা কটা গিলে ভূব
দিরেছে। অথচ ও না এলে অন্য মিস্মীগুলো কাজে ফাঁকি দেবে। কাজ নামাবে না।
তব্ অম্লা থাকলে কিছুটা এগতে।।

K. W. Wall. Made. Sayan

কিন্দু কাল বিকেলে যথন কোন করল তথন হেলখ অফিসার নিজে বললেন, সকালের দিকে যে কোন দিন আসুনে। হাতে সমর থাকে। শ্লেবখন আপনার কথা। সেই কথা শোমাতে এসেই আধ্যানী ধরে চুপচাপ বলে আহে অম্লা। এডকংশ সময় হল। শোলার লাবা-চঙ্ডা টোকাটার ব্কজাড়া ফাইলের গাদার হাত দুটো চাপিরে দিরে ভদ্নলোক স্জোড়া নাচালেন— কি ব্যাপার?

অমলো তাড়াছ,ড়ো করে ব্যাপার্টার কট ছাড়াতে গিয়ে কেমম অগোছাকে, বেশামাল হরে গেল। ঠিক গাছিরে গোড়া থেকে শ্রু করতে না পেরে মাঝপথেই হ্মাড় থেরে পড়ল, এবারও ফাইন গিতে ছোল স্যার।

কিসের ফাইন? বেন একটা হকচজিরে গেছেন হেলথ অফিসার। ফেলন সিম্পুল কোন জাজি আশা করেই বোধছর দ্রুজোড়া নাচিরে ছিলেন, কিন্তু বদলে কমফেনের মত জবাবটা পেরে কেমম পিটা হরে গেলেন। অসহিকা হরেই জিজ্ঞাসা কর্তনন ফের, বলবেন তো কিসের ফাইন? দেখছেন ছাতে এক কোটা সময় দেই, বা বলবার ভাডাভাডি বল্পা।

আমার কোশ্পানীর হেলখ লাইলেন্স মেই স্যার, এতক্ষণে নিজেকে একটু প্রিছরে নিরেছে অম্লা, বছর বছর কাইন দিতে হচ্ছে।

তা নেই তো করে নিন, তাহলে আর ফাইন দিতে হবে না। চুটপট কথাকটা ছব্বেড় দিরে ভদ্রলোক গাদা থেকে একটা কাইক টেনে নিলেন। কিন্তু খাতাপন্ন, রেজিস্টার, ফাইল ইত্যাদির ভিড়ে পেনটা কোবাও খালে না পেরে বিরভ হরেই কাইলটা টোবলের এক কোপে হাড়ে কেনে কিন্তেন। অম্লা উত্তর পেরেও উঠে বার নি সেথে, চাপা বিরভিতে গ্রগর করে উঠলেন, কললার তো লাইসেল্স করিয়ে নিন্দ, আছু কোন ব্যামেলা থাকবে না।

ভদ্রলোকের মুখটার বেন চৌধুরী কোম্পানীর বোস সাহেবের খানিকটা আৰ্থ जारमः। शाम प्रम सम्बन्धी **स्ट्रोबंश अवद्यो**ः। লেপা পোঁছা মুখ**টার চোখ যুখ নাক চেল্টা** করলেই খ'ড়জে পাওরা হার, বিশেষ করে কালো রোঁয়া ওঠা ভূর্র সেডে **ভূভভূতি** रहाच मद्रहो। **धे स्त्रीता कहे। कू'त्रदक वर** টানটান করেই মুখে ভাষ ফোটান ভয়ুলোক। কপাল বেন ফাঁকা গড়ের মাঠ। সিবে বন্দতাল, ছাড়িয়ে আউট্টাম খাটের দিকে পাড়ি জমিয়েছে। পাড়ু ঘে'বে একটা *কাঁ*চা পাকা চুলের সর্ বেল্ট পেছন থেকে এসে काम प्रतिक काशरहे श्राहर । हरणव के কটা পাক ররেল বু; কালিতে মাখামাখি ম্খটায় তব্ থানিকটা বৈশিষ্টা এনে দিয়েছে। মেজাজটা অফিসালের আস্থে শরিফ মর ব্রথতে পারে **অম্ল্য। একটা** আঠলো হাসিতে ঠোঁটের **ভার**টা কান পর্যান্ত ছড়িকে দিরে প্রকটা থেকে একটা भगरकरे वा**त करत क्रिकाजा करत-हजरव**

মা আমি সিগারেট থাই না, হে'তে উঠনেন হেলথ অফিসার। বাঁবটা এখনেন মরে নি অম্লা টের পেল। ভাড়াভাড়ি গাাকেটটা পকেটে প্রতে গৈরেই কিক্টু হেচিট খেল। শ্মতে পেল ভালেনাক বলহেম, কি নিগারেট? বিলিভি ক্রিছা?

হাাঁ, হাাঁ সারে। ঠিক বলেহেন।
পাাকেটটা আর পকেটে না ভরে চৌবলের
দিকে বাজিরে ধরদ—এক কব এসেছে আর্মেরিকা বেকে। একটা পাকেট প্রেক্তেট করেছিল। এবলে এর পার কর करतः । क्यां का । अस्तरम अक जनारत विक्री इत्र ।

আম্লা যখন সিগারেটের গ্লপনা ব্যাখ্যা করছিল সেই ফাঁকে ছ'ইণ্ডি লব্বা একটা সিগারেটের ডগার আগ্লন ধরিরে হেলখ অফিসার গোটা দ্'চার টানও বাসরে দিরেছেন। এবার ডোরালে ঢাকা চেরারের পিটে গিট ঠেকিরে গা থেকে বাস্ত ভাবটা একট্ একট্ করে থেড়ে ফেললেন। মনে মনে খুলী হল অম্লা। এ ধরনের ব্রহার ওর কাছে নড়ন কিছু নর। এগারো বছর ফ্যাক্টরী লাইনের অভিজ্ঞতা থেকে একটা সার সভা ব্রেছে, কিছু আগার করতে হলে কিছু ছাড়তে হর। সেই কিছুটা হল, মান, মর্যাণা ও মানি। ভা বাক কালটা হলেই ও খুলী।

একট্ খলে বলন তো ব্যাপারটা। দশ
নম্বরী ফুটবলে বোলা ফুটেছে। এখনি
ঠিকমত টাাকল করতে পারলে হরতো
কাজটা হাসিল হবে। তাই বিনয়ের
কলসটা গলার উপ্ত করে দিরে ধারে
করল অম্লা—ফ্যাকটরটা স্যার গত মাসে
এগারো পোররে বারোর পা দিরছে। কোন
রক্মে ধারধার করে, গারেগতরে খেটে
চালিরে বাজি। কিন্তু স্যার ছেলও লাইসেন্স
আছো পাই নি। বছর বছর ফাইন দিছি।
ভর হর কোনদিন আপনারা আবার নোটিশ
পাঠাবেন, তাহলে তো কারখানা ভকে
উঠবে

- ঃ ট্রেড লাইসেন্স আছে আপনার? জোড়া ভুরু নেচে উঠল।
- ঃ নিশ্চয় স্যার, জোর দিয়েই বলে অম্লা।
 - ः बाहेरमञ्ज कि करु ?
 - ঃ বছরে বাট টাকা স্যার ৷
 - ঃ ফ্যাক্টরীর জারগাটা কি নিজের?
- 🌣 ঃ না স্যার, ভাড়া। মাসে স্তার টাকা।
- ই । তাহলে তো আপনার হেলথ
 লাইসেপ ফি তো খ্ব কমই হবে। গোটা
 পঞ্চাশ বড় জোর। একটা কাজ কর্দ.
 ফ্যাকটরীর প্লান সমেত একটা
 জ্যাপ্লিকেশন পাঠিরে দিন।

হাগুড়া কুষ্ঠ কুটির

বৰ'প্ৰকার চম'রোগ, বাতরছ, অসাড়তা,
কুলা, একজিমা, সোরাইসিস, দ্বিত
কতানি আরোগেরে জন্য সাক্ষাতে অথবা
পরে বাবদখা লউন। প্রতিষ্ঠাতাঃ পদ্ভিত
রাজ্যাদ শর্মা কবিরাজ, ১নং মাধব ধোব
কোন, শ্রেট, হাওড়া। শাখাঃ ৩৬
মহাখা গাদ্ধী রোড, কলিকাতা—৯।
কোন: ৬৭-২৩৫৯।

ঃ সে আদিলকেশন তো সারে পাঁচ বছর আগেই পাঠিরেছি, লাইদেশ্য তো পাছি না।

অম্লার শেষ কথাগ্লো শ্লে ভপ্রলোক একট্ নড়ে চড়ে উঠলেন। ভেবে নিরেই যেন বললেন, পাঁচ বছর অ্যাম্লি-কেশন করেছেন অথচ লাইসেস এখনো পান নি? আপনার ফ্যাকটরীর ঠিকানাটা বল্ল তো।

খ্ব কাছে . স্যার । আপনার অফিস থেকে হে'টে গেলে ম্যাকসিমাম সাত-আট মিনিট । বাঁধানতলাটা চেনেন স্যার ? বাড় নেড়ে অফিসার জানালেন যে জারগাটা তাঁর পরিচিত । উৎসাহের সপ্যে অম্লে পরিচিতিটা পাকা করে তোলে, ঐ মোড়েই, মসজিদটার গারে ।

তাই বলনে, ওটাতো রেসিডেনসিয়াল কোয়ার্টার। এতক্ষণে আদত রহস্যের হদিশ পেয়ে খুশী হলেন অফিসার। চর্বির পরে আস্তর নাচিরে হাসতে হাসতে বললেন. দেখন নিশ্চয়ই কোন লোক্যাল অবজেকশন আছে। আফটার অল ফ্যাকটরী তো. ঘটাং ঘটাং আওয়াজ, সরু গলিতে দিনরাত লরী-টেন্পোর ছোটাছন্টি, পাড়ার ছোট ছোট ছেলেমেয়েদের যে কোন মুহ্তে আ্যাকাস-ডেন্ট হওয়ার ভয়, এরকম গোটা কয়েঞ অবজেকশন এলেই তো আমাদের হাত বাধ। ব্ঝতেই তো পারেন, রেসিডেন্সিয়াল এলাকায় পাবলিকের ইচ্ছার বিরুদ্ধে তো আমরা ফ্যাকটরী চালাতে দিতে পারি না। তারপর আপনার ফায়ার লাইসেন্স আছে কিনাকে জানে। যদি কখনো আগ্ন-টাগনে লাগে তখন তো কোট আমাদের চেপে ধরুবে কেন আপনাকে আমরা হেলথ লাইসেক্স ইস্কু করেছিলাম। ধাক সে সব কথা। আপনি একটা কাগজে আপনার काक्रवेदीत नाम ठिकाना, करव आश्नारे करत-ছিলেন, উত্তরে যদি আমাদের কোন চিঠি পেরে থাকেন তো তাররেফারেন্স নম্বর রেণ্ট-আমাউণ্ট, ট্রেড লাইসেন্স, ফারার লাইসেন্সের নন্বর : সব লিখে দিয়ে ঘান। আমি স্যানিটারী অফিসার এলে, ভার সর্পো কথা বলে আগে জেনে নিই কেসটাব পজিশন কি, তারপর আপনার সংশে কথা

জম্লা ব্রেল আর কথা বাড়িরে লাভ নেই। ভদ্রলোক থেকে থেকে বাঙ্গত হরে উঠছেন। তাই চেরার ছেড়ে উঠতে উঠতে জিজ্ঞাসা করল, কবে আসব স্যার?

পরশ্ব আস্কা। আর ঐ কাগজটা পাশের ঘরে বড়বাবরে কাছে দিরে যাবেন। আছে।
আস্কা। আম্লার দৃখোভ জড়ো করা
নমক্লারের বিনিমরে। শ্ব ভান হাতটা
একবার আলতো করে কপালের কাছে
ঠৈকিয়ে বাস্ডভাবে ফাইলের গাদার ভূবে
গেলেন হেলণ অফিসার।

পাশের ঘরে এসে অমূলা দেখ**ল গোটা** আণ্টেক ফান লাইট সব**ুজন করে বেলা** প্রগারোটার সময় জনা তিনেক বেরারা একটা বেশিতে বনে জমিরে আড্ডা দিছে। আর কেউ নেই ধরে। চেমার টেবিলগ্রেলা ধাঁ ধাঁ করছে। অসমরে আগস্টুক এসে আড্ডার মৌল ডেপো দেওরাতে বেরারা ক'জন বেশ বিরক্তই হল। কি চাই, কাকে চাই-এর জবাবে বড়বাব্রকে চার লুনে ওরা বলল, বারোটার গর আসবেন, দেখা হবে। অম্লা দেখা না করেই ফিরে এল।

বৈ আশম্পার ভাড়াভাড়ি ফিরে এল, এসে দেখল ঠিক ভাই। মন্দ্রীরা সব হাত গ্রুটিরে বসে আসে। হেডমিন্দ্রী আসে নি। ভাই কাজও বন্ধ। ছান্সামটা স্টেনজেস ন্টালের টের মধ্যে তখনো এগারোটার কাজ বাকী। তিনটের মধ্যে চালান না গেলে বোস সাহেব লোক পাঠাবেন। আর একবার যদি বোস সাহেবের লোক এসে ফিরে যার তো বাস। অর্ডার কান্যন্সা।

কিল্ডুসে কথাকে ব্ৰবে? কারই বা এত বোঝার দার পড়েছে। হেডমিস্টী সমেত সাত-সাতটা লোক থাটে ফ্যাকটরীতে। অফিসে একজন অ্যাকাউনটেন্ট কাম স্টেনো-টাইপিস্টুছাড়াও দ'জেন দারোয়ান আছে। মাস গেলে যেখান থেকেই হোক অম্ল্যকে এই দশটা লোকের মাইনে দিতে হবে। নেহাৎ কম নয়—প্রায় আড়াই হাজার টাকার ধাক্কা। তার ওপর হাজারটা ঝামেলা একাই ওকে পোহাতে হয়। বাজারের অবস্থা খবে খারাপ। অর্ডার নেই বললেই চলে। গত ছ'মাস ঐ চৌধরী কোম্পানীর খ্চরো অর্ডার ধরেই কোনরকমে টি'কে আগ্রহ ফ্যাকটরীটা। বড় কোম্পানীগুলোর দরজায় দরজায় ঘ্রেও একটা অর্ডার আদায় করতে পারে নি অম্লা। সব জারগার একই কথা শ্নেছে, দাড়ান মশাই। অর্ডার দেব কি, কোম্পানী টি'কলে হয়? দেখছেন তো দেখের অবস্থা।

দেশের অবস্থা যে কি তাতা দেখতেই
পাছে অম্জা। শুধ্ দেখা তা আর পেট
ভরবে না। মাস গেলে হাজার টাকা বাড়ীতে
দিভে হবে। মা, গিসমীমা, তিনটে বরস্থা
বোন আর ছোট একটা ভাই—ছাছটা প্রাণীর
ভরণপোষণের দার তার। বোন তিনটির
বিরের ব্যবস্থাও করতে হবে। একটিকে
তো ঠিকই করে রেখেছে সামনের প্রাবণেই
ম্বিরের দেবে। নিজের গোপন সঞ্চয় থেকে
সাত হাজার টাকা সেজন্য সরিরেও রেখেছে
অম্জা। তিন হাজার টাকা ক্যাশ না দিলে
বরের বাপ তার বেকার ইনজিনিয়ার
ছেলের বিরেতে মত দেবেন না।

হাজার ঝামেলা সন্তেও অ্মলা টেনেট্রেন সব চালিয়ে বাচ্ছিল। কিন্তু এবার
সেই টানবার প'্লিতেই টান ধরেছে।
বাড়ীতে কেউ জানে না, সবাই বড়খুকীর
বিরের আরোজনে মন্ত। অম্লা চোথে
এখন অংথকার দেখছে। এবার পাঁচশো
টাকা ফাইন দিতে হরেছে।

থত টাকা কেন ফাইন হল সেটা জানতেই গিয়েছিল করপোরেশনের ডিসট্রিকট অফিসের হেলথ ডিপার্টমেন্টে। কাজ কিছাই হল না যাঝ গেকে থানিকটা সময় নন্ট হল। তাছাড়া থাদকের কাজ- করাবার সব কথ হরে আছে। মনটা এমনিতেই খিচড়ে ছিল। খুব একচোট কড়া কথা বলবে মিশ্চীগুলোকে। তারপর নিজেই সাট-ফাট খুলে কাজে নেমে শড়ল।

তথ্য বাঁধানতলার এই সাইডটায় কিছু ছিল না। পাকার মধ্যে ছিল একটা বিরাট জলা। চারপাশে রজকের আড্ডা। অম্লা ফ্যাকটর থালার পর পরই আশেত আশেত চারপাশে বাড়ী উঠতে লাগল। তারপার একদিন রাবিশ ফেলে প্রকর ব্যজিরে বড় বড় হালফাশাশানের তিনভালা মাথা ত্রেল দড়িলা। চারপাশের স্কের ব্যজিরে বড়বা বাড়ীগলোর মাঝখানে এই চিনের ট্লী পরা ফাাকটরীটা কেমন বেমানান আপ্রভাগে বাড়াকটরীটা কেমন

আর সেখানেই হয়েছে যত ঝামেলা। প্রতিবেশীদের উচ্চনাক তার ফাাকটরীর সিটকৈ ওঠে। গোড়ায় গায়ের বাতাসে যখন ফাাকটরী খুলেছিল তথ্নি যদি আর্নাপ্সাকশন করত, হয়তো আর্নিদনে লাইসেম্সটা পেয়েও যেত। কিম্তু তথন করপোরেশন থেকে এসে কোন খেঁজ নেয় নি, অম্লোও আর পা করেনি। পাঁচ কাহর আগে হঠাৎ একদিন কোর্টের সমন পেয়ে থ মেরে গেলা হাজিরা দিল টাউনহলে. মিউনিসিপ্যাল কোটে। অভিযোগকারী দ্বয়ং করপোরেশন, বকলমে হেলথ ডিপার্ট-মেন্টা অম্পার ফ্যাকটরীটার জন্য না কি বাঁধানতলার স্বাস্থা নণ্ট হচ্ছে। এখনো মনে আছে, জজ সাহেব ওকে কি কি প্রশন করেছিলেন, তার জবাবে ওই বা কি বলেছিল,

- ঃ আপনি ড্যাসকো এজেন্সীর মালিক?
- ঃ আজা হৃজনুর।
- ঃ আপনার ফ্যাকটরীর হেল্ছ লাইসেক্য নেই?
 - ঃ নেই হ্জরে।
- : नाहेरमञ्ज ना कतारन कााक हेवी छेठिरत मिरल हरत। এवात आभनात काहेन इन मुख्त होका।

ছোট ছোট অনেকগ্রেলা ফ্যাকটেরীর মালিকের সংগো সেদিন কোট ওঠা প্র্যুক্ত লাইন লাগিয়ে দাঁড়িয়েছিল অম্প্রাক্ত প্র্লিশের হেফাজতে। ফাইন জমা দিরে বধন বাড়ী ফিরল তথন বিকেল গাড়িয়ে স্থো নেমেছে। শীত-শোষর মরা সংখার সরু গলিটার মোডে দাঁড়িয়ে নিজের ফ্যাক্টরীটা দেখে কেমন মারা হল। অনেক



পরিপ্রমে যত্নে এটাকে ও গড়ে তুলেছে। বাচিয়ে রাখার দায়-দায়িত্ব সবই ওর।

পরের দিনই আগুলাই করল হেল্থ লাইসেন্দের জনা। দিন-পনেরো বাবে সাানিটারী অফিসার এলেন। খুটিরে খুটিয়ে মেদিনপন্তরের পজিশন দেখলেন। গুরাকারদের জিক্সাবাদ করলেন। তার-পর ঘ্রের ঘ্রের আশুপাশের বাড়ীওয়ালাদের অপিনিয়ন নিলেন। এর দেড় মাস বাদে করপোরেশন থেকে চিঠি এল অম্লার কাছে—তোমার ফাক্টরীর বির্ধেধ লোকালে অবজেকশন আছে। পাড়ার দ্বাস্থা নতা হচ্ছে। তাই লাইসেন্স ইস্ক্ হবে না তো হবে না, তাতে হরেছে

কি। বছরে ঐ একদিন তো মোটে করেছটা

টাকা ফাইন দেবার ঝামেলা, তা অম্লা

দিয়ে দিবে। কিন্তু এবারই ফাইন বিতে

গিয়ে ব্রেছে মামলা ঘোরালো হরে বাজে

দিনকে দিন। সময় থাকতেই ঝামেলাটা

ছিকয়ে ফেলা ভাল।

ভয়াকারদের কাজটাজ ব্ধিরে দিরে
অফিসে এসে চন্কল অম্লা। বারোটা বার্দ্ধে।
আর একবার ভিস্মিকটে অফিসে সেলে
কেমন হয়? কিন্তু ও চলে সেলেই কাজে
চিলে পড়বে। তার চেরে আক্রাক্টেকী
বাব্রেক পাঠানোই ভাল।

আবার একটি ঢাঞ্চলকর গ্রন্থ

বিয়াফ্রা

ক্টরাজনীতির দাবাখেলায় পশ্চিম নাইজিরিয়াকে বিভন্ত করার বড়যন্তে যে কালোরড় বয়ে গেছে তারই চাঞ্চাকর কাহিনী।

श्वतं अतं अविकृते ॥ नाम ७-०० होका ॥

স্হিত্য সংঘ | ৭৩ শ্বামীক্ষী সরণী, কলিকাতা-৪৮

লোরবাব্ প্রানো লোক। সাত বছর
এই কারথানার হিসাব দেখছেন। অম্সার
ব্যবসার নাড়িনকছ সব ভদ্রলাকের জানা।
ভাই নিভিন্ত হরেই সব ব্যাপারে অম্লা
এই ব্ডে মান্বটির ওপর ভিপেন্ড করে।
তেও লাইসেন্স, ফারার লাইসেন্স, প্রোনো
আর্মিলকেশনের রেফারেন্স নান্বার, করপোরেশনের সলো করেসপন্ডেনের ফাইল,
রেন্ট-রিসিট, বছর বছর ফাইন দেওয়ার
কাগজপার সমেভ গোরবাব্বে করপোরেশনের অফিসে পাঠিরে দিরে আবার
কার্ম্টনীতৈ ফিরে গেল অম্লা। কাজটা
বে করেই হোক ভিনটের আগে ফিনিশ
করতে হবে।

টেশেপার সব মাল তুলে দিরে সংগ চালানসমেত একজন দারোয়ানকে চৌধুরী কোম্পানীতে পাঠিরে সবে টিফিনের বাক্সটা খুলে বসেছে অম্লা, এমন সময় গৌরবাব্ ফিরে এলেন। দুটো সদেশ আর একমুঠো ছোলা দিয়ে টিফিনটা শেষ করে জলের কাসটা টৌবলে নামিয়ে রেথে রুমালে ম্থ মুছতে মুছতে জিপ্তাসা করল অম্লা, কি ব্যাপার এত দেরী হল যে? সব ব্রিরে দিয়ে এসেছেন তো?

ব্ৰিবেরে তো এলাম। কিন্তু এ যে গন্ধীর গাড্ডা, ছাতাটা দেয়ালের পেরেকে ঝোলাতে ঝোলাতে গৌরবাব্ জবাব দেন। শ্বে চমকে উঠল অম্ল্য। জিজ্ঞাসা করল, কেন?

ৰদি পাঁচ হাজার ছাড়তে পারেন তো **धर्मान नारेटमन्त्र (शरा** शास्त्रन, नरेटन **এবার থেকে** নিতিয় ফাইন গনেতে হবে। **আমাদের ফ্যাক্টরীর এগেনস্টে** না[°]ক **সিভিয়ার কমশেলন আছে। আ**স্তে আস্তে **अवरे पृत्न वनत्मन आा**काछेनरहेन्हे वावर्। কথাবার্তা বলে জানতে পেরেছেন, পাড়ার মধ্যে ফ্যাক্টেরী, তাতে নাকি অনেকেরই ম্ম হচেছ না। ছেলে-মেয়েদের পড়াশোনার রীতিমত ক্ষতি আওয়াজে। হচ্ছে অন্যাক্সিডেন্টের চাল্স যথন তখন। এ রকম **দশ গন্ডা অভিযোগের ফিরিস্তি।** গৌর-বাব্ ব্ৰিয়ে বলতে গিয়েছিলেন যে ঘ্ম **নত্ত ছওয়ার অভিযোগটা নিছক ফিচলে**মি। কারণ কারখানার একটাই সিফট, তাও **দুপুরে, যখন কেউ ঘুমো**য় না। সকাল, **সম্পো কম থাকে নেহাৎ** ওভারটাইম না থাকলে, ফলে পড়াশোনার ক্ষতি হওয়ার ফ্যান্টরী বে মাল আনা নেওরার জন্য লরী লাগে না, টেপ্পেতেই কুলিরে যায়। কিপ্তু সে সব কথা কানে বার নি বাব্দের। ভাদের ঐ এক ধরতাই—পার্বালকের অস্ক্রিধা হলে ভারা নাচার। সেক্ষেত্র ফ্যাক্টরী উঠে গেলেও ওদের করার কিছু নেই। ফাইন হবেই।

বরং আরো বাদ কয়শেল আসে
তাহলে নাকি হেলথ ডিপার্ট ফেন্ট
ফ্যাক্টরীর ঘাড়ে ডেইলি ফাইন চাপাবে।
আমাউন্টটা কত হবে বলা মুন্দিকল,
ঘাটও হতে পারে সন্তরও হতে পারে।
অর্থাং মাসে গড়ে হালার দুরেক টাকা।
সেই সপো এটা শোনাতেও তারা ভোলেন
নি বে এই ফাইনের জনাই গত বছর
কঠীতলার কিরণ সা মিলটা উঠে গেছে।
ওর ডেইলি ফাইন ছিল পাঁচণ টাকা।

এতক্ষণ চুপচাপ বসে বসে সব শ্নছিল
অম্লা। এবার হঠাং যেন খেপে গিয়ে
চেচিয়ে উঠল, কেন আপনি বললেন না
যে এই ফাাক্টরীর ওপর এতগুলো
পরিবার ডিপেশ্ড করছে? কেন বললেন না
যে ফাাক্টরীর ক্ষমতা নেই যে জনা
কোথাও সিফট করবে? তাছাড়া কেন
চ্যালেঞ্জ করলেন না যে ফ্যাক্টরী এলাকায়
ঘরদার বানাবার পার্মিশন কপেরিশন
দিল কি বিকেচনায়? এথানে কি আগে
থেকেই রেসিডেনসিয়াল কোয়াটার ছিল?
এ-সব কিছের বললেন না? তবে আপনাকে
পাঠালাম কিসের জন্য? গ্ডে ফর নাথিং,
কালাস।

এক রাশ ধোঁরা উগরে মেসিনটা। ঠান্ডা হতেই অম্পা ব্ঝতে পারল মিছিমিছি এই ব্ডো মান্যটাকে ধমকানো ওর উচিত হয় নি। ওকে এ-সব বলে কি লাভ? তাই তাড়াতাড়ি শুধের নেওয়ার জন্য গলাটা খাটো করেই বলে, কিছু মনে করবেন না গৌরবাব্। মাথার ঠিক ছিল না। কি বলতে কি বলে ফেলেছি, আমায় মাপ কর্ন। আপনি পাঁচ হাজার টাকার কথা কি বলছিলেন?

মনে মনে বোধহর বৃশ্ধ আকাউনটেট
থানিকটা দেনহই করেন অম্লাকে।
দেখছেন তো চোথের সামনে দিন-রাড কি
অমান্যিক পরিশ্রম করে এই ছেলেটি
ফ্যাক্টরীটাকে বাচিয়ে রাথার জন্য। বিপদে
আপদে হাত পাতলে কথনো ফেরায় না!
হাসতে হাসতে বললেন, তাতে কি হয়েছে।
ওতে আমি কিছু মনে করি নি। এ অকথার

পদ্দল আমারই কি মাথার ঠিক থাকত।
থাক একথা, যা বলাছলাম। পাঁচ হাজার
দিতে পারলে বাবংথা হয়ে যাবে। এর এক
পরসা কমে হবে না। টাকাটা আগাম চাই।
পরশ্ আপানাকে যেতে হবে না। অফিস
থেকে লোক আসবে। টাকার সংশ্যে একটা
ফ্রেস আদিবকেশন তার হাতে দিলেই
চলবে। তা হলেই অবজেকশন-টবজেকশন
সব হাস আপ হয়ে বাবে। পাল্টা
আদিবকেশন পদ্ধে বা ফাক্টারীটা থাকার
পাড়ার কি কি উপকার হছে। সে সব
দার-দারিছ ওদের। আপানাকে কিছ্মু ভাবতে
হবে না, শুনু টাকাটা দিলেই হবে।

টাকা না ছড়ালে যে কিছু হবে না, হর না, তা অম্ল্য জানে। কিন্তু টাকা এখন কোথার পাবে? ব্যাণেক যা আছে তাতে বড় জোর আগামী মাসের মাইনেটা হতে পারে। চৌধ্রী কোম্পানীর বিলের টাকাটা পেতে পেতে সামনের মাস কাবার হরে যাবে। আর সামানা যা হাতে আছে, তা ছাড়া চলে না। কাঁচা মাল কেনার প্রয়োজন যখন তখন দেখা দিতে পারে।

বিকেলে অফিস বংধ করে হাঁটতে বাড়ীর পথে এই কথাই শ্ব্ধ ভাবছিল অম্ল্য। কোনও ক্ল-কিনারা পাচ্ছে না। অথচ যে কোন দিন ডেই^{*}ল ফাইনের নোটিশ এসে যেতে একবার যখন আঁচ পেয়েছে, তখন কি আর ঘাড় না মটকে ছাড়বে াঘ? সাত পাঁচ ভাবতে ভাবতে কখন যে বাড়ীর কাছে পেশিছে গেছে, দরজার সামনে যে কভক্ষণ দাঁড়িরে আছে, খেয়ালও ছিল না অম্লার। থেয়াল হল বড়খুকীর গলার আওয়াজ —এ কি দাদা তুমি চুপচাপ এখানে দাঁড়িয়ে যে! কড়া নাড় নি কেন? ডাটি া দেখল, বড় খুকী আর রমা, ওরা দ ি পঠোপিঠি বোন সেজেগুজে কোং বেরোক্তে ৷ জিজ্ঞাসা করল, কোথায় খাচ্ছিস? জবাবটা দিল রমা, গত সাসে সরকার রাদার্সে তিমি पिनित करा य मृक काए। वासारक मिरह-ছিলে, পাটোনটো ওর পছনদ হয় নি, তাই আজ পাল্টাতে যাচ্ছি। বড়খুকীর খাশী খুশী মুখটার টাকরো লংজার মেঘ হালকা একটা ছায়া ফেলেই সরে গেল, কিছাই এডায় নি। বড়খাুকীক অমুলার চোথ দেখেই য়ে ভাবনাটা অম্লার মাথায ঝিলিক মেরে উঠেছিল, ওলা চলে যেতে সেন আরো স্পন্ট আবো গভীরভাবে দানা भाकिता छेत्रेल-वित्यक्षे प्राप्ति भिक्ति দিলে হয় না? তাহলে ফ্যাকটবীটা বাঁচে। দশটা পরিবাস তব ওপর ডিল্পেক্ড সার। डालापा कारकारेनी फ्रेंग्रे रशस्त्र शिक्ताहे ता शाहर कि ? किरक शिप कासन नाभ भन्द আবে বাজনী না হয় ২ য়া পেস⁹য়াই বা কৈ भ्रात करायत र আৰু ব্ৰেখাকী __ংক দিংক शास्त्रत कराव्या जाता जिल्हा प्रश्नाप्तक मताम्था करान प्राप्त प्र⁴िय शास्त्रातेष तास शाकारक शाकारक राज्यात निर्देशहरीया सरहा अव গুলিরে ফেলে অম্লা।



--সন্ধিংস



বিরামবাব, আজ থেকে প্রায় ১৪।১৫ বছর আগে চিকিৎসার জন্যে এসেছিলেন। আমাদের উভয়েরই পরিচিত এক ভদুলোক এক রকম জোর করেই আমার কাছে পাঠালেন। তাঁর রোগউপসগ থেকে চিকিৎসকরা মনে করেন নি যে তার মানসিক চিকিৎসার দরকার হতে পারে। রক্তের চাপ কম, দুর্ব'লপ্রকৃতি, স্বভাব-ভীর, এই রোগাটি শহরের এক নামকরা চিকিৎসকের চিকিৎসাধীনে ছিলেন প্রায় বছর দশেক। আমার সঙ্গে যখন পরিচয় হয়. তখন তাঁর বয়স প্রায় ৪৪।৪৫। ডিগ্রীধারী এঞ্জিনীয়ার। প্রায় বিশ বছর ধরে এক স্টীন কোম্পানীর ড্রাফ্টোসম্যানের কাব্দ করেছেন। ভালভাবেই পাশ করে-ছিলেন, কিন্ডু অস্ক্রেখতার জনো প্রোমোশন হয় নি: প্রোমোশন তিনি দাবীও করেন নি। কোনো দায়িত্ব ও ঝঞ্চাটের কাজ তিনি পছন্দ করতেন না। নিঝ্ঞাটে বসে ভইং করে যেতে মন্দ লাগত না। যেখানে যে কাজে মান্যজনের সংগ্র বিবাদ-বিসম্বাদের সম্ভাবনা, সে কাজ, সে জায়গা তিনি এড়িয়েই চলতেন। গত কয়েক বছর ধরে থবেই অনিয়মিতভাবে অফিসে আসা-যাওয়া করছেন। বছরে প্রায় म भाज বৰ্ষাকালটা, তিনি বাড়ীতে শ,য়েই কাটাতেন। চলাফেরার ক্ষমতা থাকত না। ডান্তারের সহকারী এসে প্রায় রোজই তাঁকে •সাকোজ ইঞ্জেকসন দিয়ে যেতেন। খ্বই দক্ষতা ছিল বলে কোম্পানী তাঁকে বিৰায় দেয় নি. অস্থায়ী কর্মচারী হিসেবে গণ্য করে এসেছে। দশ বছরে একবারও বেতন বাড়ে নি। বিবাহিত: তিনটি সম্তানের পিতা।

বিরামবাব্দে দেখেই মনে হবে তিনি
চিন্তারোগে ভূগছেন। তাঁর বন্ধ্-বান্ধবরা
তাঁকে হাসতে দেখেছেন কমই। কিছুক্ষণ
কথা বলার পর বোঝা যাবে ভাগোল না হাসলেও রসিক এবং আলাপে পট্।
নানা ধরনের বিষয় নিয়ে তাঁর সংগা আলাপ
আলোচনা করেছি। তাঁর আগ্রহের অভাব
ঘটে নি। কমন-দেশ্যা তাঁর তারিফ করার
মত। অজানা বিষয়েও খ্ব অন্পসময়ের
মধ্যে প্রকেশ করতে পারতেন ও কয়েকদিন
পরেই দেখা যেত, সে বিষয়ে তিনি বেশ
কিছুটা জ্ঞান অর্জন করে নিয়েছেন। শ্রে
শ্রেও ক্ষেথাপড়ার কাল চালিয়ে যেতেন। এইবার তাঁর কথাতেই রোগ ইতিহানের বিবরণ বলছি।

পূৰ্ব বাংলার মান্তব আমি। পাকি-न्थानी रामा करना एकमना **এथम** उत्तरमञ् াব্যর**সম্পত্তি কাড়ী-বর বেচে দিট** মি। যৌথপবিবারের মধ্যে শৈশব কেটেছে। खना न्कृत **स्थरक माप्तिक शाम क**न्नि। কোলকাতার চার কহর পড়ার পর প্রাক্তরেট হরে উত্তরপ্রদেশের এক ইউনিভার্নাসিটিতে ইঞ্জিনিয়ারিং পড়তে বাই। কোলকাডার কাকার বাসার ছিলাম। ইঞ্জিনিরারিং পড়তে গিয়ে হোন্টেল-জীবন স্বাহ্ন হল। বলতে গেলে এই সময় থেকেই আমার রোগের স্ত্রেপাত। এই রোগের কথা অন্য ভারার-দের বলি নি, কেননা জানি তাঁরা আমল দেবেন না। এ রোগের কথা আমার শা ছাড়া আর কেউ বো**ধহর জানে না।** আমাকে বন্ধ-বান্ধবরা স্বভাবভীর বলে জানে; কিন্তু তারা জানে না যে রন্তপাতের কথা শুনলে আমি ভর পাই। রঙ্গাত দেখলে ভয়ে আমার চেতনা লোপ পার। এরকম হয়েছে। রাস্তার অজ্ঞান হয়ে পড়েছি, চেনা লোকে বাড়ী নিয়ে এসেছে। **ভা**রা ভেবেছে বন্ধচাপের স্বল্পতাই বোধহর চেতনা হারাবার কারণ। কিন্তু আমি হয়ত তখন মাধনের দোকানের সামনে দিয়ে যাচ্ছি: ফালীব্যতির সামনে পাঁঠা কাটা হছে, নদ'লা দিরে রভল্লোত রাস্তার ভ্রেমে **এনে পড়ছে। এই দুশ্য** দেখে আমি চেতনা হারিয়েছি, একখা কার্র কাছে প্রকাশ করতাম মা। হার্ বা বলভিলাম, সেই **হারজীবনের কাহিনী।** সেটা বোধহয় ১৯৩০ দাল। রাজনৈতিক আকাশে ঘন মেঘ, ক্ষণে ক্ষণে বিদ্যাৎ-স্ফারণ হচ্ছে। কংগ্রেস লীগের রাজনৈতিক প্রতিযোগিতা রক্তকরী সাম্প্রদারিক দাংগার মধ্য দিয়ে অভিবার হচ্ছে। আমাদের ইউনিভারসিটি টাউনে দাপা বাধার দিন থেকেই আমার ভরের জীবন সূরে হল। আমার রুম মেট এসে হুরিকাহত এক হতভাগোর রম্বপাতের কাহিনী সালকারে বিব্যুত করছিল, অনেকেই আগ্রহের সংশা কমন রুমে বসে তার বিবরণ **শুনছিল।** হোপ্টেমও রাত্রে আক্রান্ত হতে পারে শোনা গেল। বন্ধর গণে শ্নতে শ্নতেই আমার গলার কাছে কেমন অস্বস্তি বোধ হল: মাথা ঘ্রতে **লাগল। বাথরুমে গিয়ে** খানিকটা বমি করে, মুখে চোখে জলের ঝাপটা দিয়ে বিছানায় এসে শারে পড়লাম। খাওয়ার কোনো ইচ্ছেই হল না। রাডটা কিভাবে কেটেছিল মনে নেই। তবে ঘ্রম ভাল হয় নি, আর ভরের স্বপন দেখেছিলাম এইট্র মনে আছে। পরের দিন অনেক বেলা অবধি বিহানার ভিলাম। বংশনো ডাক্তার নিয়ে এসেছিল। তিনি ওয়ার দিয়ে-ছিলেন। কি রোগ হয়েছে তা তিনি বলেন নি: আমিও জানতে চাই নি। কয়েক দিন পরে প্রজার ছাটিতে দেশে গিরে বিশ্লাম নিতে আবাব মনোবল ও সামর্থা ফিরে পেলাম। বছর চার পাঁচের মধ্যে বার কফেল অসুস্থ হয়ে পড়েছিলাম। শহরের সেরা

ভারার নার্ভ-টনিক খেতে দিয়েছিলেন। তবে তথমও বাস্তার ভিড় দেখলে, বা হৈ-চৈ শ্ৰালে ভর পেতাম মা। এখন অফিলে হাবার পথে কোথাও বদি জটলা হছে দেখি, বা হৈচে শুনি, সোজা বাড়ী ফিরে আসি। বৃণ্টি-বাদলার দিনে **আঁফল** যেতে পারি মা আক্রমাল। লো-প্রেসার अक्यात कारण, मरन करत्वन मा स्वम। वर्षात আমার বাড়ীর পাশের থালটার গণ্যার জল আসে, গের্রা রঙের জগ। আমি ভর পাই। আমাদের কারখানার ভিতরকার রাস্তাগ্রলোর স্বর্রাক ঢালা হর: বর্ষার সেগ্লো ধ্রের ড্রেনের মধ্যে পড়ে, রভেন্ন মত মনে হয়। আমার ভর করে তাকারে। তাই দু' মাস শুয়েই কাটাই। এখন জীবন मार्वित्रह रात जिलेख मारे कात्राम। अयम. অর্থাভাব। এই মাইনেতে চার পটিজনের थत्रहा कुट्नार मा। वष्टत्रथात्मक दन माना আসামে বৰ্ণাল হয়ে গেছেন। তিনি **বতণি**ল আমার সপো ছিলেন, খরচার কথা বিশেব ভাবি নি। কেননা, সংসার্থরচার মোটা অংশ তিনিই বহন করতেন। এখন ৪৪ বছর বয়সে দাদার মণি-অর্ডারপ্রত্যাশী হতেও লভ্জাকরে। হাাঁ, আর একটা কারণেও বিশেষ মনোকন্টে ভূগছি। এখন যে আমার 'বস' সে আমার সহপাঠী ছিলো। পরীক্ষায় বরাবর আমি তার চেরে ভাল ফল দেখিয়েছি। সে আমাকে যথেন্ট সমীহ করতো, কেননা আমি ছিলাম ক্লানের সেরা ছেলে। সে আগে অনা কোম্পানীতে ছিল, আমাদের এখানে বছর ডিনেক এসেছে। এখানে এসেও আমার সংশা বিশেষ সম্পর্ক ছিল না: সে অন্য ডিপার্ট-মেন্টের চার্জে ছিল। আজ করেক মাস হল সে আমার উপরওরালা। আর **এই করেক** মাস আমার অসুখ অতিমানার বেডেছে। তিন মাস প্রায় অফিসে ফেতে পার্রছি না। আমার ত' জানেনই, 'নো ওয়ার্ক' নো সে'। বাবা হয়ে দাদাকে লিখতে হয়েছে। তিন সাহাষ্য পাঠিয়েছেন। এই নিয়ে আবার স্ক্রীর মুখভার। তাঁর নাকি আ**ত্মসম্মানে যা** লেগেছে।

এইবার, প্রশেনান্তরের ফলে বে সব তথ্য সংগ্রহীত, সেগুরেলা জানাচ্ছি।

বিরামবাবার ভয় এবং আনারভিগক প্রতিভিয়া গত ২৫ বছরে কয়েক বার বেশ মনে রাখবার মত ভাবে বেডেছে। দ্বিতীয বিশ্বহাসের সময়, যখন কলকাতা নগরী প্রথম নিজ্পদীপ হল: ভয়ের প্রাদৃ্ভার বাড়ল। সাম্প্রদায়িক দালার সমর ভর একেবারে চরমে উঠেছিল: খবরের কালছের পাতা ওল্টান্ড বা রেডিও খলেতেও সাহস পেতেম না বিবামবাব,। অনেকদিন বাস্তার বেরতে পারেন নি। কাকার মৃত্যুর পর রখন খ্যুড়তভো ভাইদের সংশা আনু-জানিকভাবে আলাদা হাত গোলেন, তথনও বেল মনে আছে, কবেকদিন শ্ব্যালায়ী জিলেনা এব পৰ নেতাদেব চলাতে বা प्यालक स्थाल वास्तापनम संश्रम प्रा मैकार्त्रा इल जिनाशतास कामत जाम था जाएकिस**े** সাধারণভাবে উদেবগ অশাণিত বাডার

স্পো ভর বাড়ত। আর । দাণ্যা-হাণ্যামা, রক্তপাতের সম্ভাবনা ঘটলে ত' কথাই নেই। এদিক দিয়ে বিচার করতে গেলে বিরাম-বাবুকে অনায়াসে স্বভাবভীয**় বলা** চলে। শ্বভাবভীর্তা চিকিংসার ফলে দ্রে হতে পারে, বলে মনে হল না। অবশ্য জ্ঞানের অভাব থেকে অনেক সময় ভয় আসতে পারে, সে ভয় আলাপ-আলোচনা মারফত দ্র করা যায়। আমি আজীবন কলকাভার আছি, সাপ দেখলেই ভয় পাই। সে ঢোড়াই হোক আর কেউটেই হোক। আবার পক্লী-গ্রামের লোক ঢোড়া কেউটে চিনতে পারে, কাজেই ঢোড়া সাপ দেখে ভর পার না। জ্ঞান ব্যাড়ার সংগ্যে সংখ্যে এই ধরনের ভর দ্রে হয়ে যায়। আইনের জ্ঞান না থাকলে, অথবা অন্তর্ণাকোনো উকিল বন্ধ্ না থাকলে: বাড়ীওয়ালার উকিলের যে কোনো চিঠি পেলেই আমার পক্ষে ভয় পাওয়া স্বাভাবিক। চিঠিটার তাৎপর্য বিশেলষণ করার পর অর্থাৎ জ্ঞানাঞ্জনশলাকায় চক্ষ্ম উন্মীলিত হবার ফলে যদি দেখা বার আইনের দিক থেকে আমার কেস খারাপ নয়: ভয় নিঃসন্দেহে কমবে। কিল্ডু যে সনায়,তুত্ত জন্মস্তে দুবলি, তাকে স্কাগঠিত করে থানিকটা ঘাতসহ হয়ত করা বায়, কিন্তু প্রোপ্রি তার ভয় দ্র করা যায় না।

বিরামবাব্র ভয়ের স্তপাতের যে ইতিহাস পেলাম, তা থেকে ভয়ের কোনে। নিদিশ্ট কারণ খ্রাজে পেলাম না। হৈ-চৈ **দাপা-হাপামা, রঙ্গাত** ইত্যাদি স্বাভাবিক-ভাবেই অনেককে ভয়ার্ত করে। বিশেষ करत रेमभरव याता प्रमार्थाय (थमाध्या করে না, খেলাধ্লার স্তে ঝগড়া মারামারি করে না, তারা বড় হয়ে এই ধরনের ভয়-কাতুরে হতে পারে। বিরামবাব, ত' বললেন, ম্কুলে পড়ার সময় তিনি দল বে'ধে খেলা-ধুলা করেছেন; ফুটবলের মাঠে আঘাত পেয়েছেন, আঘাত ফেরতও দিয়েছেন! শৈশবের কথা বলতে গিয়ে অনেক ছোট-**খাটো ঘটনা তাঁর মাঝে মাঝে মনে পড়তে** লাগল। আমার নিদেশি ছিল যে যখনই ছোটবেলার কোনো বিশেষ ঘটনা (ভয় ভাবনার সংগে সংশিল্ট) মনে পড়বে, তিনি যেন খাতায় লিখে রাখেন। নিজের <u>রোগারবরণী</u> ও স্মাতিচারণ লিপিবস্ধ করার জন্যে একখানা মোটা খাতা, আমার পরামশে তিনি কিনেছিলেন। অনেকটা ভারেরীর মত করে প্রতিদিনকার ঘটনা, চিস্তাধারা এবং অতীতের আনুষ্ণিগক **ম্মাতি তিনি সেই খাতায় লিখে আনতেন:** আমার সামনে বসে পড়তেন। ক্ষেক স্পতাহের মধ্যে তাঁর মানস্কিতার একটা স্ক্রিদিশ্টি পরিচয় পেলাম।

বিরাট যৌথ পরিবারের মধ্যে মান্ত ছছেছেন, ফলে সামস্ততান্তিক পরিবার-প্রীতি পরিবার-নিভরিতার তার মানসিকত। বিশেষভাবে প্রভাবিত। যাঁরা নির্মিত মনের কথার রোগীদের কাহিনী অন্সরণ করে চলেছেন, তাঁরা এদিক দিয়ে নিবারণ- মিল দেখতে পাবেন। রোগলক্ষণ অবশ্য তাদের স্বতন্ত। গ্রেকনদের প্রতি ভঙ্কি, ভর এবং পারিবারিক নির্মণ্ড্থলার প্রাত অভিরিক্ত অন্রাগ ও অন্গামিতা বিরাম-ষাব্র চারিত্রিক বৈশিশ্টা। ব্যক্তির কাঞ্চেই অপারস্কৃত, ব্যক্তিস্বার্থ সংরক্ষণে বিশেষ অনীহা। চাকরীর প্রথমদিকে বেডনের একটা ষোটা অংশ বাড়ীতে পাঠাতেন। সে-টাকার कारना मत्रकात चारह किना, व निरत माथा ঘামাতেন না। বিরের পর, বিশেষ করে আলাদা বাসা করার পর, এই সব ব্যাপারে শ্বীর অন্যোদন পেতেন না। এ নিমে মনোমালিনা প্রারই ঘটত। বিরামবাব, অলপ কথার মাদ্র, তাঁর ক্লোধ বা ক্লোভ প্রকাশ পেত শারীরিক উপসর্গের মাধ্যমে। বেকার ছোট ভাই সপরিবারে করেক বছর বিরাম-বাব্র পোষ্য ছিলেন; সেই সময় স্ত্রীর সংখ্য বচসা ঘন ঘন ঘটত: রোগাক্রান্তও ঘন ঘন হতেন। বড় ভাই-এর উপর নিভর্বতা ছিল অতিমান্তার। পিতার মৃত্যু ও খ্ড়তুতোভাইদের খেকে আলাদা হয়ে যাবার পর এই নির্ভারতা বৃদ্ধি পায়। স্থীর কাছে নিজের এই আন্গত্য গোপন রাখতে গিয়েও পারতেন না। ফলে খিটিমিটি লেগেই থাকত। এইসব ব্যাপারেও মাঝে মাঝে অফিস কামাই হত। পারিবারিক নিভ'রতা ও আনুগতা বিরামবাব্র নিরাপত্তাবোধের সংগে বিশেষ-সম্পর্কিত; এটা বেশ ভালভাবেই বোঝা গেল। শক্তি, দামর্থ্য, বিদ্যাব্দিধ যথেন্ট থাকা সত্ত্বেও বিরামবাব্ দায়িত্বপালনে অক্ষম, দায়িত্ব-গ্রহণে নির্ংসাহী। আত্মপ্রতায়ের অভাব ভাঁকে দিবারাত্র পাঁড়িত করছে; আম্মনিভার হবার জান্যে কোন পশ্রতি অবলম্বন করবেন; বুঝতে পারছেন মা। আত্মনির্ভার হ্বার ও দায়িত্বগ্রহণের তাগিদ এসেছে; অথচ পথ খাজে পাছেন না। দাদার বদক্রি ও সহতীথেরে উপরওয়ালা হিসেনে আবিভাব -- তার জীবনে প্র্যুপ্ণ ঘটনা হিসেবে দেখা দিয়েছে।

কিন্তু ভর আর দুর্বলতা দ্র না হলে তিনি আত্মপ্রতার পাবেন কি করে? অফিসে নির্মাত হাজিরা দিতে না পারলে, প্রয়োগনের কথাই বা চতালেন কি করে? ভরের বিশেষ করে, রক্তের ভরের উৎস খ'লে না পেলে, ভরই বা দ্র হবে কি করে? এই-রকম নানা চিন্তার মধ্যে রোগী এবং চিকিৎসক, দৃজনেই হাব্দুব্ খাচ্ছিলাম। এমান সমর, করেকদিন স্নুমাহিত অবন্ধার রক্ত-ভীতির উৎস অনুসন্ধান করবার জনা তাকৈ 'সাজেশসন' দিলাম। 'সাজেশসন'-এর ফলেই কিনা জানি না, সপ্তাহখানেক পরে তিনি বেশ স্পন্টভাবে রক্তনীতির কারণ আমার কাছে বিবৃত্ত করলেন।

কথা হছিল তাঁর জেলার মানুবদের কোধ-প্রবর্ণতা নিয়ে। জাতিগত বৈশিষ্টা বনি থাকে, স্থানীর বৈশিষ্টাই বা থাকবে না কেন? বিরামবাব প্রশন করলেন। নিজেই উত্তর দিয়ে চললেন। স্থানীর বৈশিষ্টা বোধহর জাতীর বৈশিষ্টোরই সামিল। তাঁর জেলা নশীমালায় ভরতি; তখনও বেলওরে স্থাপিত হয়নি। তার দেশের মান্বদের স্পো বীরভূমের মান্বদের মার্শাসকভার ও চরিয়ের পার্থক্য থাকাই ত ব্যাভাবিক। ভাছাড়া, সময়ের উপক্ষরতী হওরার मद्द्व अष्ट्रभीक ଓ ग्रम कनम्मात्मा व्यक्तिन ভেকাতে গিরে বিরামবাব্র পিতামহেরা অনেক লড়াই করেছেন। এর ফলে ন্বাভাবিকভাবেই ভীদের সংগ্রামী মনোভাব বেড়েছে। তার কিছ্টা সন্তানসন্ততিদের মধ্যে সংক্রামিত হয়েছে। ক্রুম্থ না হয়ে লড়াই করা চলে না। তাই তারা স্বভাবত द्रांगी ও मान्गाराखः। आमि निम्हत्ते स्मान, তাঁর জেলায় দাপা-হাপামার ফৌজদাবী মামলার সংখ্যা অন্য জেলার তুলনায় অনেক বেশি। ফৌজদারী আদালতের সংখ্যাধিকা তার জেলার বিশিশ্টতা। তাদের অনেকের ধমনীতে মণা ও পতুণিীজ রভ প্রবাহিত; সেটাও তাঁদের ক্লোধ-প্রবণতা ও সংগ্রামী মনোভাবের কারণ হতে পারে। এছাড়া, উচ্চবর্ণের হিন্দ্রেমধ্যে জমিদারী মেজাজ বিশেষভাবে **লক্ষ্**ীয়। সরাসরি সরকারকে খাজনা দেবার দর্শ অসংখা ক্র্দে জমিদারে তার জেলা ভরতি। তারা সবাই প্রায় দুর্যোধনের মত অভিমানী। বিনায্তেধ স্চ্যের পরিমাণ মেদিনী হস্তান্তরে তাঁরঃ রাজী নন। এ'দের সকলেই লাঠিবাজি-শড়কিবাজিতে ওস্তাদ। ভাড়া-করা পাইক-দের সংগ্রে নিজেরাই জমির লড়ায়ে সম্মুখ-সমরে নেমে পড়েন। বিবামবাব্যর মনে আছে তাঁর এক নিকট আখা^{†ে}র **লড়াই**রের ক**থ**ে। রাইটার্স বিলিডং-এ অফিসার-গ্রেডের চাকরি করতেন। কয়েক কাঠা জমির লড়ায়ে তিনি বন্ধ নিয়ে নেমে পড়েছিলেন।

—আপনিই দেখছি জেলাবাসীদের মধ্যে ব্যতিক্রম। আপনার বাবা-কাকারাও বোধহয় নিরীহ প্রকৃতির জি :?

আমার এই প্রশেদ উত্তরে, উপরে উম্পাত আলোচনার সূত্র ৭.র রোগের কাবণ বোররে এল।

—হ্যা প্রথম ভয় পাবার দিনের কথা এইবার মনে পড়েছে। অনেকদিন আগের কথা। বোধহয় তখন থাড কুলাশে পড়ি (আজকালকার ক্লাশ এইট)। প্রজোর इ्रिंग्स्ट विष्मम थ्याक जवार वाफ़ी अस्त्रहरू। আমার ছোটদাদ্ (বাবার কাকা) এলাহা-वार्ष हाहेरकार्टे श्लाकिंग करतन। वहरम প্রবীণ ও সকলের শ্রুণ্ধাভাজন। জ্ঞাতি বড় জ্যাঠামশাইও কম ধান না। মহকুম:-হাকিম বা জেলার জজ-এইরকম একটা কিছু। সেদিন বোধহয় অন্টমী কিংবা নবমী প্জার দিন। রাত্তে এক পশলা বৃশ্টি হওরার ফলে সকালবেলার রোদটা মিঠে লাগছিল। বড়রা দুই বাড়ীর মাঝের খোলা জারগায় রৌদ্র সেবন, খবরের কাগজ পঠে, খোসগলেপ মেতেছিলেন। আমরা ছোটরা একটা দারে দাঁড়িয়ে তাদের কথাবাতা শানছিলাম, আর মিজেদের মধ্যে দাুপারের প্রোগ্রাম ঠিক করছিলাম। তাঁদেব আলাপ-আলোচনার মধ্যে ধীরে ধীরে উরাপ স্পারিত হচ্ছিল: আমরা স্থাটরা সেধী খেরাল করিনি। হঠাং তুম্ল চীংকার, হৈ-

তৈ, ৰুম্ব গৰ্জনে আমরা ভয় পেয়ে গেলাম। তাকিরে দেখি, দাদু ও জ্যাঠামশাই সেনা-পতি হরে দুই দলের মধ্যে খণ্ডযুম্খ পরি-**ठानना क्रतह्न। अक्रमल खाधारमद श्रीद-**বারের বছরা: অন্যান্দলে সপাশের বাড়ীর বয়স্কর। পরস্থরকে **রখার**ীতি বাকাশরে विधर्म्क करते, मुद्दे स्मतानीक निरक्रास्त वात्रगृहित मिरक क्रिकेटनन। मा, तर्ण कंना দিয়ে নয়। বাক্ষুম্পটাকে শদ্ভয়ুম্পে পরিণত করার চেণ্টার তাঁরা নিজেদের অন্দের मन्धात इ.तिह्न । हार्गमान, नित्र करनन তার গাদা বন্দকে, আর জ্যাঠা নিয়ে এলেন পঠি। বলি দেওয়ার খাঁড়া। ব্যাপারটা বিনা রক্তপাতে থামত না: যদি দা সত্তর বছরের কতামা যুখুংস্ দৃজনের মাঝখানে এসে না দক্ষিতেন। দৃশাটা মনে পড়াতে আমার গারে কটা দিয়ে উঠছে। মেনেরা ছোটরা গুলা ছেড়ে কাদছে, বড়রা গুজুরাচ্ছেন; দাকু বন্দকের নিশানা ঠিক করছেন, জ্যাঠামশাই বিরাট খলাখানা দ্য-হাতে মাথার উপরে তলে ধরেছেন। আর মাঝখানে শ্বেতাম্বরা কতামা শেবতপতাকা হয়ে দু-দলের মাধা বিরাজ করছেন। কয়েক মিনিটের মধেটে শান্তি ম্থাপিত হল। দু'পক্ষই লফ্জিত হয়ে ঘটনাম্থল থেকে সরে পডলেন। এমন সময় জ্যাঠামশাইদের চণ্ডীমণ্ডপে কাঁসর ঘণ্টা বেজে উঠল। সংশে সংশা ঢাক। মা এসে আমার হাত ধরে প্রেলা দেখতে নিয়ে গেলেন। চণ্ডীমণ্ডপের উঠোনে পা দিয়ে আমার নজরে পড়ল হাডিকাঠের দিকে। রক্তে লাল। উঠোনের অনেকটা জায়গা রক্তে ভেজা। আমার পায়ে প্রম গ্রম ভিজে ভিজে কি যেন লগেল। তাকিয়ে দেখি হাড়িকাঠের কাছ থেকে একটা ক্ষীণ রম্ভের স্রোত আমার পায়ের পাশ দিয়ে গড়িয়ে যাকে। আমার মাথা ঘারে উঠল। হাত-পা কপিতে লাগল। বমনোদ্রেক হল। মায়ের আঁচলটা নিয়ে চোখদটে। ঢাকলাম। ফিস-ফিস করে মাকে বোধহয় বলেছিলাম, বাড়ী যাব আমার ভয় করছে। তারপর আর

কিছু মনে নেই। আমি জ্ঞান হারালাম। **এथन মনে গড়ছে, ज्ञान इल्ल** म्थलाम আমাকে খিরে দ্-বাড়ীর সব লোক। পাশাপাশি বসে আছেন ছোটদাদ্ অর জাঠামশায়। এত বড ঘটনাটা এতদিন व्याशनात्क र्वार्शन त्कन? मान विक मान वनाल ठिक हार ना। आशाब कार्य अमृत्यन স্ত্ৰপাত এখানে। আৰু সেটা স্পণ্টভাবে ব বতে পারছি। ওছো কি নিরে ঝগড়া বেধেছিল, সেটাই আপনাকে বলা হয়ন। গাংধী আরু সি আর দাশের মতপাথকা নিয়ে দাদু আর জাাঠামশাই-এর তক সশস্ত্র সংঘরের রূপ নিতে পারে,—একথা বোধহয় আপনি ভাবতেও পারেন না। দান্ ছিলেন অহিংসার উপাসক গান্ধীর দলে, আর তিনিই প্রথম বন্দকে টেনে বের করে-ছিলেন। জ্যাঠামশায় বিচারক: হত্যার দায়ে ফাঁসিব রায় না লিখলেও, মারাম্মক আঘাতের জন্যে অনেক আসামীকৈ সাজা দিয়েছিলেন নিশ্চয়ই। তিনিই মারাত্মক আঘাতের জনো থজাধারণ করেছিলেন। সেই থেকে আমার ভয়। আসল ভয় কি জানেন? আমি যাঁব দাদ্য-জ্যাঠামশাইদের মত ক্লোধ সংবরণ করতে না পারি, তাহলে কি হবে?—এই চিন্টা বোধহয় কিশোর বয়স থেকে আমাকে পেয়ে বর্দোছল। আমি বোধহয় স্বভাবভীর, নই। আত্মসংযমের, ক্লোধ দমনের অতিরিক্ত চেণ্টার ফলেই বোধহয় আমার স্নায়্তণত্ত. আপনারা যাকে 'ইনহিবিটরী' (নিস্তেজনা-প্রধান) বলেন, তাই হয়ে গেছে। রক্তের ভয় মানে ক্রোধ দমন না করতে পারার ভয়। রাস্ভাঘাটে গণ্ডগোল হৈ-চৈ থেকে দুরে থাকি, —ভয়, পাছে কোনো পক্ষাবলম্বন করে ক্রোধ প্রকাশ করে ফেলি। কোনো দল বা গ্রাপের সংখ্য একতা বোধ করতে ভয় পাই: পাছে সেই দল বা গ্রাপের হয়ে কোনো অসতক মুহুতে আৰুবিস্মৃত হয়ে আমার দিবতীয় বিপক্তে প্রশ্রয় দিয়ে ফেলি। এমনকি চাকরীর জায়গায় কার্রে স্গেগ প্রতিযোগিতা করে প্রমোশন প্রেড হবে

ভাবলে আমি ঘাবড়ে বাই। মানবীর মানতক্ষর, বাকে আমরা নিউ দুকুনা বাল, পুরনো জৈব মানতক্ষের তুলনার অনেক দুবাল। তাই আখাপ্রভারের অভাব; কোনো ব্যাপারে ইনিশিরেটিজ দিতে চাই না; সব ব্যাপারে উদ্যাহীন প্রনিক্ষির থাকতে চাই। মনে হর বিপুর্গাল্য আমার সাধ্যাতীত।

এত স্কুলরভাবে আত্মবিশেলষণে খবে কম রোগীই সক্ষম। অনেক কথা ডিনি বললেন; কিম্ভু একটি কথাও অপ্রাসন্গিক নর। কয়েকদিন ধরে বিরামবাবরে সংখ্য হিংসা, দেবৰ, ক্লোধ ইত্যাদির শারীরব্ভিক মনস্তাত্ত্বি আলোচনা করলাম। মানব-মাস্ত্রুকের তিনটি স্তর : একটি স্ত্রীন পরাবতেরি: আরু দুটি শতাধীন পরাবতেরি দতর (প্রথম ও দিবতীয় সাংকোতক দতর)। স্কুথ মানুষের এই তিনটি স্তর পরস্পর-নির্পেক্ষ নয়। যাকে তিনি 'নিউরেইন' 'নিউরেনের' দিবতীয় বলছেন, সেই সাংকেতিক বা বাক্ডিতিক গতারের নিয়দ্রণ-ক্ষমতার নিদ্শনি হিসেবে দ্-একাট প্রীক্ষা-নিরীক্ষার থবরও তাঁকে জানালাম।

মান্য প্রবৃত্তি বা রিপ্রে দাস নয়।
বিশেষ অবস্থায়, বিশেষ পরিবেশে রিপ্র
প্রকা হয়ে উঠতে পারে, সামরিকভাবে
উচ্চদিতদেকর নিয়ন্ত্রণ-কামতা হ্রাস পেতে
পারে, কিব্তু নিয়ন্ত্রণ-বাবস্থা আবার
ফিরিয়ে আনা হায়। এইভাবে ব্যাখাম্লক
চিকিৎসার সংগা সম্মোহিত অবস্থায়
অভিভাবন চিকিৎসাও চলল। বিরামবাব্রে
ভয় ক্রমশ ন্র হল, দারিগ্ন নেবার ক্ষমতা
আয়ত্তে এল। 'লো-প্রেসারের' ভয় চলে
পেল। অফিসে নিয়মিত খাতায়াত শ্রে
করলেন।

দাদ্ব ও জাঠামশায়ের মদিতকের বিশেষর তাদের উত্তেজনাপ্রবল্তার স্থান-কালনিভারতা, অন্য একটি রক্তাতকের কেস-প্রসংগ্যালোচনা করব।

–মনোবিদ





(50)

জায়গাটা বড় নিজন, পুকুরটা প্রাচীন। মজা দিঘির মতো দাম এবং কছরিপানায় ঠাসা। পাড়ে পাড়ে কত বিচিত্র গাছ-গাছালি গভার বনের সৃতিট করে**।ছে।ছেটে** বড় শতার ঝোপ-পায়ে হাটা সামান্য পথ। পথে শ্রুকনো ঘাস পাতা। মাটিতে মরা ঢাল, পাখির পালক। বোধহয় মাথার উপরে গ্রাচীন এক অজুনের ডালে পাখিদের গাতের আম্তানা। তার নিচে কত যগে ধরে, াছের এবং মানুষের হাড়, গরু বাছ,রের াড়। পাশেই এক জরদ্গবের মতো কড়ই াছ। গাছটার ভিতর কত বিচিত্র খোঁদল. গলপালা নিয়ে প্রায় যেন আকাশ ছংস্কে াঁড়িয়ে আছে। একপাশে সব মৃত ভাল গাছের, ডালে ডালে হাজার হবে সব শকুন দার সার বসে রয়েছে। ওরা গাছটার নিচে যেতে সাহস পেল না। কিন্তু এইটাকু পথ পার না হতে পারলে ওরা অকালের ফল বকুল ফল খু'জে পাবে না। বকুল গাছটা বড় নয় ছোট। ঝোপ জঙ্গলে গাছটাকে খ্বজ বের করা কুঠিন। গাছটার খোঁজ-খবর ফতিমাকে জোটন দিয়ে গেছে। আবেদালির দিদি জোটন আবেদালির জন্য একটা মুরগি এনেছিল, মুরগিটা উড়াল দিয়ে চলে গেল হাজি সাহেবের আতা বেড়াতে। আতা বেড়ার পাশে ছোট বিবির সংগে দেখা, জোটনকে ছোটবিবি ব**লল,** মর্রাগটা মাঠের দিকে নেমে গেছে। মাঠে নামলেই মনে হল জোটনের দুরে কি একটা কেবল ছাউছে। বাঝি কুকুর হবে। বেড়াল হতে পারে। মাঠের উপর দিয়ে অকারণে ছাটে পালাছে। মাঠে নামতেই সাংহ্রের ছোট বেটার সংখ্য জোটনের দেখা — ঐ যায়, যায়। দেখা **যায়। সব** স্লাপ্রাম্শ যেন ठिक ছিল। ছোট বেটা জোটনকে অকারণ সেই মাঠের দিকে হাত তুলে মুরগির থোঁজে যেতে বলে দিল।

জোটন মরেগিটা চুরি করে এনেছিল আবেদালিকে থাওয়াবে বলে। জোটনের ধারণা এখন সেই মার্রাগ ফাঁক বাবে তার **গ্রামের দিকে পালাছে। পোষা ম**ুরগি, বড় সোহাগের মুর্রাগ মৌলভিসাবের। আদরের भ,र्ताभ भारतेत উপর দিয়ে ছ,টে পালাচ্ছে। সে কি ভেবে তাড়াতাড়ি মুর্রাণ ধরার জন্য **ছটেতে থাকল। যদি এ-মূর্গ্য চলে** যায় আর যদি টের পায় মৌলভিসাব, মুর্রাগ **বাবার পথে জো**টন চুরি করে নিয়ে গেছে তবে আর রক্ষে থাকবে না। সেই মার্রিগ হথন দূরে থেকে অপ্পণ্ট, মনে হচ্ছে কি **একটা ট্যাবার পক্রের পাড়ে বনের** ভিতর চুকে যাচ্ছে, তখন জোটনও না ছুটে পারল না। এত সথ করে, এত কুর্রাশস করে মুর্রাগটা ধরে এনেছিল আবেদালিকে খাওয়াবে বলে, এখন হায় সেই মুর্রাগর চৈতনা উদয়। কি হবে! কি হবে! সত্তরাং ছোটা ভাল। ম্রগি ধরার জনা জোটন **কাপড় হাঁট্রে উ**পর তুলে ছ্টতে থাফল। **ছাটতে ছাটতে টাবোর পাকু**র **9**17.5. ভিত**রের জ্বগলে। কিন্তু** শেষে আর পথ খ্বংদে পাছিল না। ম্রগিটা যদি গাছের ভালে চুপচাপ বসে থাকে উ'কি দিয়ে দেখতে থাকল। তখন মুর্রাগর গলা টিপে ধরেছে ছোটবিবি। হাজি সাহেবের ছোট-বিবি মুরগির গলা কেটে হাতের ভিতর শক্ত করে ধরে রেখেছে। ছে'ড়ে দিলেই ক্যাঁ-কাাঁ করে ডেকে উঠবে। তথন ব**নে ব**নে জোটন খ্ৰজছিল, হায় মুরগি তুই কোথায় গেলি! ঝোপে জংগলে জোটন মুর্বাগ খ'লেতে এসে কপাল থাপড়াতে থাকল। তথন মনে হল ঝ্টিতে লাল রঙ ম্রণির, ঝোপের ভিতর লাল রঙের কি যেন দেখা যার। সে লোভে প্রায় হামাগর্ড়ি দিয়ে বনের ভিতর চুকে পড়বা। কিন্তু হার ডুকে দেখল গাছের ডালে লাল লাল বকুল ফল। বকুল **ধরেছে গাছ**টাতে। পাকা ফল দ**ু**-চারটে

নিচে পড়ে আছে। একটা বিডাল কি নেড়ি কুকুর এই বাগের ভিতর চাকে গেল আবছা অসপত শীতের রোদে দরে থেকে বিড়াল কুকুর না অন্য কোন জীব ধর যাছিল না। জোটন ভেরেছিল, ওর মারণি পালাছে। নাকের বদলে নর্ন পাবার মতে জোটন মারগির বদলে বকুল ফল তুলে নিল সেই ফল এনে সে ফতিমার হাতে দিয়েছে আর বলেছে সেই আশ্চর্য বকুল ফলেগাছটা বনের ভিতর লাকিয়ে আছে।

গাছটার অনুসকানে এসে সোনার ভা ধরে গেল। সে বলক, আমার ভয় করতাথে ফুতিমা।

—ডর কিয়ের। আইয়েন আপনে। বচে ফতিমা সোনার হাত ধরে কড়েই গাছটার দিকে ভাকা**ল।** বড় বড় ১ কন্তরা নিবিশ গাছটার দিং মনে বসে আছে। ক তাকালেই সোনার এটা বাড়ছে। ওর শকুনের রাজা গাণিনীকে দেখতে পেল, মং ভালে ব**সে র**ঞ্জ মতে৷ তা**বং প্রিথ**বীং কোথায় কোন মতে জাব পড়ে আছে বাতা শ,*কে টের পাবার टाण्य অন্য শকুনগর্মল ঠোট গ, 'জে ঘনোচ্ছে। কেউ কেউ হয়তো ছাড় নি করে ওদের একবার দেখে নিল—ছোট ছোট দুই কাঠের পুতুলের মতো মন্যাকুলেই দুই জীব নিচে দাঁড়িয়ে আছে। শুধ শকুনের রাজা সবসময় জেগে। সে **ক্ষ্**ধার জন্য শিকারের খবর দেবে। সেই একমার উটু মথে আকাশের জন্য প্রাণ্ডে কি উড়ে যাচ্ছে, কারা উড়ে যাচ্ছে, কত হবে.....আর **যদি মৃত জীবের গণ্ধ ভেসে আসে, সে** প্রথমে দ্ব পাখা বাতাসে ছড়িয়ে দেবে তারপর উড়তে থাকরে আকাশে—প্রায় তখন **মনে** হয় নিব'ণি লাভের মতো এইসব বড় পাখি কোনো এক অদুশ্য জগতের সন্থানে উড়ে যাছে।

কিল্ডু রাজা শকুনটা ওড়ার বদলে क्विन के कि मिर्स अत्मन सम्बद्ध। क्विसा. যে ফতিমা, একা গোপাটে ছাগল নিয়ে আসে, যে মাথায় করে সামকিতে নাস্তা নিমে যায় জমিতে, যার ভর্মার একেবারে কম-পাট খেত বড় হলে অথবা নির্ম্পন মাঠের ভিতরে যথন বড় বড় পাট গাছখালৈ ফডিমার মাথা পার হয়ে জনেক উপ্তে উঠে ৰায়, বখন সামনের আলপথ সি'থির মতো, দ্ধেরে পাটগাছ ঘন বনের স্থিট করে রাখে তেমন

পথে কত্বার ফতিমা একা একা চলে এসেছে ছাগলটার দড়ি ধরে—সেই ফতিমা পর্যান্ত ভয় পেয়ে গেল। রাজা শকুনটা নিচের দিকে উৰ্ণক দিলে সে লাফ দিয়ে ছাটতে চাইল সোনাবাব্র হাত ধরে।

যেন এই গাছটা গলেপৰ সেই সাধা দেউড়ি গাছটা রাক্ষস খোরুসের মতো সদর দেউড়িতে পাহারা দিছে। সদর দেউছি পার হতে পাবলেই ফুল-ফল রাজকন্য মিলে যাবে। ফাঁতমা সাহসে ভর ক'রে ফ্ল-ফলের

জনা এবং সেই অত্যাশ্চর জগতের জনা मानावाद्दक देहल-ठेदल भाभित भागक, মাছের হাড়, মানুষের হাড় পাখিদের মলমূর অতিক্রম ক'রে বনের ভিতর চাকে গেল। ভিতরে বিচিত্র ধর্ণের ছোট ছোট পাখি উড়ে বেড়াজিল। পাখিরা ভাকছিল। প্রকাপতি উক্তে বিভাছে। একটা গির্মাগটি ক্রপ ক্রপ শব্দ করে ভাল খেকে পাতার উঠে ওদের দিকে **ভাকিনে থাকল।** কারগাটা বড় নিজন, নিঃসংগ মনে হচ্ছে সোনার। কে।খাও



কস্মেটিক ডিভিসন বৈস্থল কৈ মিক্যাল ক্লিকাতা • বোছাই • কানপুর দিল্লী • মাদ্রাজ • পাটনা

Progressive/BC-UT-S/76

কেন মান্তের শব্দ পাওয় যাছে না। দুরে কৈ বেন কেবল কাঠ কেটে চলেছে—তার শব্দ তেনে আর্ম কো। কাম পাতলে ঢাক ঢোলের বিষ্ণু লোনা বায়। ওয়া এমন একটা জারগার চলে একে এই প্রথম পরস্পর অসহায় চোথ ভূকে ভাকাল।

স্থৃতিমা, বলল, সেনোবাৰ, আপনের , অইলা দিছি। বাড়ি গেলে সান্য করতে ইইব।

্লোনা মার ভরো বলল, তুই ছাইলি কাল অমারে।

- আমি ছুইলাম, না আপনে ছুইলেন! ৰাশিতে নাক-চাবিটা আপনে দ্যাখলেন না!

—মার শ্নলে আমারে মারব। সোনার চোখের উপর সেই শৃশাটা এতক্ষণে ডেলে উঠক: সেই বর্ষার হাতো। সে ফাঁতমার জাঁচলে প্রকাপতি বে'ধে দিরেছিল বলে—মা ওকে খ্যা মেরেছিল। ফাঁতমার কথার সোনার বথার্যই তর বরে গেল। বললা তুই কইস না প্রামি তরে ক্ইরা দিছি মার্যর কইসানা।

-- जारिय क्षेट्रंक यात्रा, क्यामा 🦈 😁

-- कहेरन ठिक मात्र आभारत भातर।

— द्वामिम क्या मा।

্-তিন সভা।

— তিন সতা।

সোনা যেন এবার একট, নিশ্চিত হল। ফতিমা না বললে, এ-কথা কেউ আর স্থানতে পারবে না।

চারিদিকে বড় বড় গাছ। অপরিচিত্ত গাছ। ঝোপ-জুণ্যালে লভায় পাডায় প্রায় কোপুত্ত কোপাত নিবিড অরণা সাগি ক'রে ফেলেছে। ওরা সেই অরণেরে ভিতর বকুল গাছটিকে খ্ণান্ধ বেড়াল্ডে। যান ওরা বলাগে চাইছে, বৃক্ষা ভূমি এডদিন করে ছিলে?

ব ক উত্তর দিল রাক্ষসের।

—এখন কার?

—এখন তোমাদেব।

—তবে তুমি আমাদের ফল দাও। বকুল ফল।

ভেনা পাবে পানে এগিয়ে যাছে। দ্রুত এগরেত পারছে না। চার পাশটার যেন জংগলের শেষ নেই। কতদার হে'টে যাওয়া যেন এই জংগলের ভিতর দিয়ে! শাকনো ঘাস-পাতা পারের নিচে। কত দীঘদিনের মান্ব-বিবঙ্গিত জামগা! ওরা হামাগাড়ি দিয়ে ভাগরা সম্ভর্পা কটাগাছ পার হবার জন্য ছোট ছোট লাফ দিচ্চিল। আর মনে মনে সেই গলেপর মতো বলা, বৃক্ষ তুমি কার ছিলে?

---রাজার ছিলাম।

-এখন কার?

- এখন তোমার।

─ ल्या कन मोख। वक्न कन।

বৃক্ষ কথনও রাজার, কথনও রাক্ষদের বৃক্ষ থা বৃক্ষ! ওরা বৃক্ষ বৃক্ষ বশে চেচাটে থাকল। কোথায় গেলে তৃমি বৃক্ষ। ওরা বনের ভিতর হোকে ডেকে বেড়াতে থাকল। এরা কেবল গাছটার আন্দরণ আছে। মগভালে বসে শক্ষনেরা চিংকার করছিল, বনের বিচিত সব শক্ষ উঠছে থস- ঘস—ডালে ডালে পাখিদের কলরব ছিল আর ছিল দুই বালক-বালিকা। এরা ভরে ভরে বকুল গাছটার উদ্দেশ্যে ছটিছে।

আরু ঠিক তখন মলে হল বলের ভিতর কে বা কারা বেন হাম্ হাম্ শব্দ করে ক্লম্ল, এলের দিকে এগিয়ে আসহে, ঠাকুমার কাছে শোনা গণেশর সেই ভূত প্রেত অথবা ভাজিনী যোগিনীর মতো। ফ্লিমা ফিস-ফিস করে বলল, সোনাবাব, ঐ শোনেন।

সোনা একটা মরা গাছের গ্রুপিডে
বাসছিল। ও আর হাঁটতে পারছিল না।
পারে লাগছিল। পারে কটা ফুটেছে। ওর
মনে হল এখন এইসব ফেলে খোলা মাঠের
ভিতর নেমে যেতে পারলে বেশ হত। কিন্তু
মনে মনে বড় শখ অকালের সেই বকুল
ছলের। নিডে পারলে বড়লা মেলদা টারা
হলে বাবে। আমারে একটা দে, সোনা বড়
ভাল পোলা, দে দে একটা দে বলে বড়দা
মেজলা এর চরপাণে ঘ্র-ঘ্র করবে।
ফ তরাও বড় শখ করে এই খনের ভিতর
পালিকে এসেছে ফল নেবে বলে। কিন্তু
বনের ভিতর সেই হ্ম-হ্ম শক্টা ক্রমণ
এগিরে আসছে।

বনের ভিতর ওরা চুপচাপ বসেছিল। ওদের ভিডরে আত•ক—এবারে কিছ, একটা ছয়ে যাবে। ওরা পালাতে গিয়ে ঘন গাছ-পালার ভিতর ক্রমে আরো হারিয়ে যাচ্ছিল। খনটা যে ভিতরে ভিতরে এত বড় ওদেব জানা ছিল না। বনের ভিতর ঢাকে গেলেই গাছটা সদর দেউড়ির সেপাইর মতো সামনে দীড়িয়ে থাকবে, এবং ওদের অঞ্চলিতে বকুল ফল ভরে দেবে এমন একটা ধারণা ছিল। কিন্তু হার এখন ওরা এত ভিতরে ভাকে গেছে যে, কোনদিকে গেলে মাঠ এবং পরিচিত পথ মিলে যাবে ব্রুথতে পারছে না। ফতিমার মুখ চোখ শ্কেনো एम्थाल्छ। यसभय स्मर्टे मन्न स्कर्मन घुरत বেড়াজে: মনে হজে এইসব জগালের ভিতর কৈ বা কারা সহসা সহসা অট্রাস্য করছিল। ঠাকুমার গলেপর মতো যেন কে যা কারা বলছে হাড়-মাড়-কাড়, মান্যুবর গংগ পটি। ওরা ভয়ে, মৃত্যুভরে চোথ মৃথ বন্ধ করে সামনের ঘাস, শুক্নো পাড়া, জংগল যা কিছু, সামনে পড়াছ স্ব স্বিয়ে ছাটছে। অথচ বাইরের খোলা মাঠ এখনও দেখা যাচেছ না। ওরা শ্রেকনো ভাল, পাখির পালক, মাছ - এবং মানাংধর হাড় অভিক্রম करत करन इ.हेरङ शाकन। कन्छ माधरम আৰ'পথ নেট, ফের পেল্যের দিকে ছোটা। অথচ সেই এক অট্থাসি পিছনে চেট্টে আসক্ত বে। আসভেই। আঞ্চপালা যোগ-ख[्]शन र**ভ**रঙ श्राप्त शतात कमा **घ**्राहे আসেনে। সাংহরি অভিনে তেকের মতে। সমর ভিত্র সেই এক অট্রাসি গ'ছপালা ভেঙে দাম-দাম শব্দ ক'রে তোলপাড় করে বেড়ান্ডে।

তথম মাঠের ভিতর ছাম-ছাম শব্দ। রাজ-রাজেশ্বর কি জয়! জয় যজেশ্বর কি জয়—কারা যেন মাঠ ভেগেগ এমন বলতে বলতে চলে যাছে। দোনা তয়ে গাছ-পাতার ভিতৰ লাকিয়ে পড়গ। ফডিমাও জপালের ভিতর মূখ ঢেকে শাংর পড়ল। আর মাখ তুলতেই দেখল, ঝোপের ভিতর থেকে रथाला मार्क रनथा यारकः। द्वार ठीइन-পঞ্জাশ্রানের এক্টা দল খোলা মাঠের উপর निस्य हरू शास्त्र । स्थानकन् लाक यौरनद िक्छ्य कामे स्थावणे यामिता निरम्रक । हात পা বাঁধা কাটা মোঘটা মরা গর-বাছ-মের মতো বলৈছে। ঠিক পেটের মাঝখানে বসালো কাটা মোধের মাথাটা। দড়ি দিয়ে মাথাটাকে পেটের উপর বেশ্ধে রাখা রয়েছে। মাথাটা চোথ খালে রেখেছে, কান ঝালিয়ে রেখেছে। এবং শস্যবিহীন মাঠ দেখতে দেখতে চলে **बारक्ट् । रमाक्षश**्रीम क्षत्र यरकाण्यत कि जरा, बाक-बार्कम्यव कि कर वनक वनक त्राक যাচ্ছে। ওরা ঝোপের ভিতর প্রায় যেন শ্বাস रन्थ करत शर्ष चारह। जत्रक्त मृशा এथन শার চোঝের উপর ভাসছে। গলা এত শ্বকনো যে, ওরা ভাকতে পর্যাত পারল না। বলতে পারল না। আমরা ঝোপের ভিতর আটকা পড়েছি। কোনোদিকে বাস্তা থ, জে পাছি না। 'আর কিছুক্ষণ এভাবে থাকলে আমরা মরে যাব। 🦈

and the first of the same of the same of the same

रनाकश्चरना कां**वे स्माय** निरम् इटन খা'ছে। পিছমে যারা আসছে, তাদের মাথায় চাল ভাগ। একটা মোধের মাংস খাবার মতে। মান,ষের জন চাল ডাল তেল। শীতলক্ষার পার থেকে এসেছে। প্জার প্রসাদ মোষের মাংস ফেলতে নেই। তাই এইসব মান্তা এসেছে শীতককার পার থেকে এই কাটা মোষ নিয়ে যেতে। মোঘটা নিয়ে যেন পালিক কাঁধে বেহাবা যায়া—হা^{*} হোম না, যেন বারর সংগ্রাক্ত থায় ত[ে]-তোম-না, যেন মোলেব পেটে কাটা মাথা যায় হু হোম-না! বড় কুংসিত **দ্শে। মুক্তবিহুীন মোধ পেটে মাথা নিয়ে** मामा'क पामा'क योष्ठा। तहार 🐰 ५७त च्या ভালপালা ভেঙে বেড়াছে ু অট্ডাস্য, অটুসাহা ! মগডালে শকুনে? আত্নাদ, বি'-**থি'পোক'র ডাক এবং সেই** দ্র'ত ডাল-পালা ভাতার শান্দ-ওরা ভয়ে এবার চোখ বাজে ফেলল। কারণ বনের ভিতর পথ করে সেই অটুহাসং ওদের ভপর হার্মাড় খেয়ে পড়াছ। ওদের দাজনকে শকু দাই বাহাতে জডিয়ে ধকেছে। মাটি থেকি টেনে উপরে কলে নিচেছ।যেন দাই পাকল। সোনা রুপোর প্রতেশ। দৈতেটো দাই কাঁধে দাই সোনা-র্পোর পাজল ফোলে বনের হাটরে বেব হয় এল। তখন দই পাতল। পাণ পেয়ে **ঝলমল করে** উঠন্তে। দৈতাটা বাঝি আনন্দ আর চা-তাকে সামলাকে পার্ডিল ना । िष्ठिश्कात करत छेठेल, भार रहादत भाला ।

তথমও মাঠ ঢাক বাজছে, ঢোল বাজছে। বাদতৃপ্রেলা শেষ হলেই পুরি প্রেলার মেলা। মেলার দোকানপত্র যাচ্ছে। গোপাট ধরে। বাঁশ কাঁধে মানুষ যাচ্ছে। চিপাল মাখাল মানুষ যাচ্ছে। সোনালি বলের নদরির জালে এখন কত সভুদাগর নোকো ভাসাল। বাদাস তুলে খাড়ি ধরে বজপতে পড়বে। তার্রপর ফের বাঁক নিলে সেই প্রকাণ্ড দিলে—পাঁচ ক্রোপের মতো বিল ছবেছে। খাজের জল বিলে পড়েছে। বিল পার হলেই মেলার প্রাঞ্জাপ। বড় কাঠের প্রাল পার হলে বজেনবর্মের মিলিক। মালিবের পালে সারকাসের তবিবু পড়েছে।

সেই বিলের কথা মনে পড়ছিল পাণ্ডল ঠাকুরের। তিনি সোনা এবং ফতিমাকে মাঠে धारन व्हार्फ मिर्टनन। स्मानात मय कर छरव গেটে। ফতিমা পর্যস্ত এখন ছি-হি করে ্ছাসছে। ওরা বাড়ি ফেরার জনা দৌড়াতে লাগল। বেলা পড়ে আসছে, শীতের বেলা। সামস্থিন ঢাকা গৈছে। আজ ঢাকা খেকে ফেরার কথা। ফতিমা দ্রত ছাটতে থাকল। ঢাকা থেকে বাজান কাচের চুড়ি কিনে _ব আনরে। ফিরে ফডিমাকে বাড়ি না দেখলে थ व त्रांश कत्रत्व वांकान। कारनत मृत আনবে।। মার জন্য ভূরে শাভি আনবে। বা'লান সময় অসময় নেই শহরে চলে বায়। দ্য-চার দিন পর কের ফিরে আসে। সেই ঢাকাশহরে বড় হলে ফডিমা যাবে। যেতে যেতে তেমন গলপত করল ফতিয়া।

সোনা বলল, আন্মি-অ যাম্। বাবায় কইছে বড় হইলে আমারে লইয়া বাইব।

—বা'জ্ঞী কইছে আম্লারে সদর ঘাটের কামান দেখাইব।

—-বাবায় কইছে আমার সদর ঘাটের কামান দেখাইব। রমনার মাঠ দেখাইব। ব্যক্তিগংগার জলে সান করাইব।

—বাজী কইছে দিখা-পড়া দিখলে মোটরে চড়াইব।

—বাবায় ক**ইছে ফাস্ট হইলে রেলগ**িড্ কইবা ঢাকায় নিয়া যাইব।

—রেলগাড়ি ছোট। ছোট গাড়িতে সোনাবাব যাইব!

—মোটরগাড়ি রেলগাড়ির **ছো**ট।

—হ কইছে? ফতিমা সোনার মুপের সামনে গিয়ে মুখ বাঁকাল।

— কিছ**ুজানস্নাছেরি, দিম**ু এক থাপ্র।

—দ্য নত দ্য থ। ধাণ্পড় দিবেন। আপনের মায়কে কইয়া মাইর থাওয়াম্না তবে। কম্ সোনাবাব্ আমারে ছুইয়া দিছে।

—আমি 🛌 তবে ছ্ইয়া দিছি, তুই ক্টয়া দিবি!

—তবে মোটরগাড়ি ছোট এন্ডা কন কান!

-- আর কম্না।

ফতিমা আর দেরী করল না। এই বাব্টির উপর বিজ:রনী হয়ে উলাসে ছটেছ। মাথার চুল উড়ছে। কোমর থেকে ডুরে শাড়ি খুলে পড়ছে। ছটতে ছটতে দোনারকমে পাটি দিছে কোমরে। কোনো-রকমে কাপড় সামলে মল বাজিয়ে ছটেছিল। পায়ে মল, রুপোর মলের ভিতর ছাট লোহার দানা। ফতিমা ছটেছল আর পায়ের মল বাজছিল কম-কম। ছটতে ছটতে দ্বার ফিরে তাকাল পিছনে. সোনাবাব্ এতটুকু নড়ছে না, সেই এক জায়গাম দাড়িরে কোভে দৃঃখে ভেঙে পড়ছে। ফতিমা বিজরিনীর মতো ঘ্রে ফিরে লাফ দিল, হাটল, দুপা এগিরে ফের লাফ দিল।

কের ব্র ফিরে চরকি বাজির মতো মাঠের উপর ব্রছে। বেন এক চণ্ডল খরগোস কচি ঘান খেকে এক কাজড় থাছে, দ্-কামড় নত করছে। ফতিমা মাঠের উপর দিরে চণ্ডল খরগোসের মতো ছ্টছিল, কিন্তু মনে মনে সোনা, বে লোনার শরীরে সব সময় চন্দনের গণ্ধ লেগে থাকে, বে সোনাবাব্র মুখ ঘাসের মতো নরম, কচি কলাপাতার মতো বে লাজ্ব ডেমন মানুবকে মাঠে একা ফোলে গেতে কেমন কন্ট ছাজ্জা ফাতিমার। ফাতিমা এবার দাড়াল। পিছন ফিরে ডাকল, আইরেল, আমি খাড়ইছি।

সোনা बार्स अबर स्कारक हिरकात करत छेरेल, ना खाँकि याम, ना।

ফতিমাও গলা হৈছে বলল, আপনে না আইলে, আমি-অ ইমি,ুনা।

দ্বজন দ্ব ক্ষিত্র শেব প্রাণ্ডে দাঁড়িরে থাকল। সোনা কিছ্তেই নড়ছে না। ফডিয়া ভুটে সোনার নাগালে চলে গেল।—চলেন।

—না আমি যাম্না।

— ভ্রমেন । না-মন্ত্র আপানের রেজগাড়িটাই বড়। তারপার ফাতিয়া আলও কি
যেন বলাতে চেমেছিল। বলতে পারল না।
অপবা মনের ভিতর হতে এমন কথা উ'কি
মারতে পারে—মেলায় গোলে আমরা রেলগাড়িতে বাব। বড় গাড় না হলে আমরা
দ্রুনে যাব কি ক'রে। অথচ ফাতিয়া কথাটা
প্রনাশের ভাষা ঠিক খু'জে পেল না। সে
চুপচাপ দাড়িরে থাকল কিছু সময়।তারপর
সোনার হাত ধরে বলল, আমারে একটা
কারতিক পুজার ছিরাঘট দিবেন!

---দিম্।

—আইক্ষেন ইবারে মাঠের উপর দিয়া ছুটি। ওরা হাত ধরে শীতের রোদে কিছু-কণ ছুটে দেখল, প্রক্রপারে মালতী। ওরা তাড়াতাড়ি হাত ছেড়ে দিল। হাত ছেড়ে দিরে দ্বেন দুদিকে ছুটতেথাকল।

সেই যে ঢাক বাৰ্জছিল, ঢোল বাৰ্জছিল আর থামছে না। পঞ্চাশটা ঢাকী অনবরত ঘাড় কাৎ করে বাজাচ্ছে তো, বাজাচ্ছেই। সরকারদের বাস্তু প্জ। অণলে বিখ্যাত। লোকজনের 'সীমা সংখ্যা নেই। আখার কুট,ম, গ্রামের নিবাসীগণ, কিছ; গরীব প্রজা আর সব মাতৃত্বর ব্যক্তি লাঠি হাতে ঘোরা-ফেরা করছিল। প্রকুর পাড়ে হাজার মান্য হবে, দ্রে দূর গ্রাম থেকে ওরা এসেছে। ধোপা নাপিত নমশ্রে। ওরা পাত পেতে থিচুড়ি খাচ্ছে। আর মাঠের উপর দিয়ে মোষ যাচ্ছে, সেই যেন পালিক কাঁধে বেহারা যায়। ওরা মুসলমান প্রাম্পর্লির পাশ দিয়ে যাবার সময় শিব ঠাকুর কি জয়, রাজ রাজেশ্বর যজেশ্বর কি জয় এইসব বর্ল ছল। পেটে মাথা নিয়ে মোষ চলছে। মাঠের উপর, ঘাসের উপর বিন্দ্ বিন্দ্ রঙ পড়ছে--ধর্ম আমাদের সনাতন, এত কচি মোষ তল্লাটে বলি হয় না। এত বড খাঁডা তল্লাটে আর কার আছে। আর এই ধর্মের মতো প্তপবিত্ত কি আংহ—কয় রাজেশ্বর, হজেশ্বর কি জয়। বিলের পাশ দিয়ে ষেতে বেতে মান্যগ**্লি** কাটা মোষ वाँटम यहिनदा अतथनीन क्वीहरू। विरामत

গরীব দৃঃখী মানুবগৃলি বারা পালুক তুলতে এসে জলের ভিতর সাদা হরে বাজে—হাত পা ঠান্ডা—এবং পাতে দিখিল হরে বাজে, বারা মাঝে মাঝে পাড়ে বসে রোদ পোহাজিল, তারা পাড়ের উপর দেখল বিন্দু বিন্দু এক ককি পাখির মতো মানুবগৃলি কারে মোল নিকে চলে বাজে। কিন্দু বিন্দারে বাগার কাটি মোকে পেট মাখা, মাখাটা ইডকে নিকে পড়ে খেল। এত খাড়া হিল বিলের পাড়া বে পড়েবি তা পড়াব একেবারে সেই গরীব বুংখীনের পারের করে। সহসা একা কাড়ে। ধড়-বিহীন মুন্ড ওদের পারের কাজে পড়ে আছে।

মোৰের কাটা মুন্ত দেখে ওরা তোবা তোবা বলে উঠল। এক কোণে কাটা মুন্ত দেখে ওরা কেমন গুনাহ করে কেলল। এত বড় বিকে ওরা দুঃখী মানুম সর শালুক ভুলতে একে এমন কুবনিত বুলা দেখে ফেলে চোখে কানে কোন কার্ক্ত বিল, বিকে কত না কিবেন্ত্তী, কত না সাপ খোল অক্তগর আর কত না কলর দাল কলের ভিতর। লতাপাতা, কটি শতপা, বড় কাক কাকে না কেলর ভিতর। লতাপাতা, কটি শতপা, বড় বড় কোক নাকে কাকে কাকে কাকে কাকে বছা স্ভেচার কিব

শীতকাল বলে উত্তরের হাওরা ক্লমণ প্রবল হচ্ছে। আকাশ বড় পরিক্ষেমা মনে হর এবার প্রথিবী উজাড় করে সব ঠান্ডা এই মাতির উপর, এই বিলের উলর নেমে আসবে। এতক্ষণ বিলের জলে সহস্ত্র পাতিল ভেসেছিল, এখন একতিমার পাতিল জলে ভাসছে। জলে একা এক পাতিল ভাসলে বড় ভর। সেই পাতিলের মান্রটা কোধার গেল! দ্যাখো পাতিলের মান্রটা কোধার গেল!

সূর্ব তেমনি অশ্ত বাছিল। শাল্ক ফ্ল ফোটে না আর। দুরে সব পদ্মপাতা, পশ্মপাতার পাশে ছোট এক পাতিল একা একা জলে তেসে বেড়াছে। মান্বটা কোথায় গেল! পাতিলের মান্বটা! জলের মান্ব সব পাড়ে উঠে এসেছে। বে বার শাল্কের পাতিল মাথায় পাড়ে দড়িয়ে দেখছে—একটা পাতিল বিলের জ্লে উরের হাওয়ায় ভেসে তেসে গভার জ্লেল চলে বাছে।

কে তখন হাঁকল, দ্যাখো বিলের জলে পাতিক ভাইস্যা ধায়।

কে তথন ফের হাঁকল, দ্যাথে। পানির তলে মান্য ভূইবা যায়।

কিন্তু এক ত্রিকালজ্ঞা বৃশ্ধা, মুখে জরার চিহ্ন, মুখে ক্রিন্ট চেহারা, সে জ্লোর গলায় হাকরাতে থাকল, বিল আবার একটা মান্য কাইড়া নিলা। সেই বৃশ্ধা নির্মাতর মতো দাড়িয়ে যেন বলতে চাইল, এটা হবেই। সালের পর সাল বিল ক্ষ্যা নিরে জেগে থাকে। ফাক পেলেই গিলে খায়। কিন্তু মান্যটা কে? কে ডুবে গেল কলে!

· (골대비)



(প্ৰ' প্ৰানিভের পর)

এদিকে স্তরাং নাটাভারতী রাধানাথ-বাব্র হাত থেকে ম্রলী চাট্জোর হাতে গেছে।

মাটাভারতীর চলতি নাটক কংলাবতীর ঘাট। ৪ জানুরারীর অভিনর ছিল্ ৪৬ আর ৪৭তর অভিনর।

বধারীতি অভিনর হলো। অভিনয় শেবে মরলীবাব্র কাছে জানানো হলো, শগুাশ্তম অভিনয় রজনী আসম ঐদিনে জুবিলী উৎসব অনুষ্ঠিত হওয়া দরকার।

মুরলীবাব, আপত্তি করলেন। এ সময়ে ওলৰ উৎসৰ করা তার পক্ষে সম্ভব নয়।

নাটাজগতেরও বেমন খবর আছে, ভেমনি প্রতিটি খবরের ওপর এখন যুদ্ধের খবর। ৪ জান্দারীর জ্যোক্নাপ্লাবিত রাজে রেপান্ন শহরে প্রচণ্ড বোমাবর্ষণ ছরেছে।

যুদ্ধের গতি-প্রকৃতি সম্পর্কে সবাই ওরাক্ষিবহাল থাকতে চায়। ডাছাড়া যুদ্ধের বিজ্ঞীবিদা ষেভাবে ভারতের মাটির দিকে এগিয়ে আসছে—সেটাও মানুষকে ভাবিয়ে তুলেছে।

এদিকে কোলকাতা শহরবাসীদের মনের ওপর আতংশ্বর ছারাটা আরো জড়িংম কলছে। এ আতংশ্ব হাবার নর। প্রতিদিন হাজার হাজার নর-নারী শহর ছেঞ্ছে চলেছে। যারা জীবনে কখনো শহর ছেঞ্ছে যাবার কথা ভাবতে পারে নি, তারাও চলেছে দুরের কোন গ্রামে—সেখানে কোন আখ্রীর কিশ্বা বংশ্বর ঠিকানা জানা আছে।

প্রত্তিও থেকে বাড়ি ফিরেছি। কিন্তু বাড়ি ফিরেও শ্বন্সিত নেই। নাটাভারতীর সমস্যান কথা কিছ্তে ভূসতে পারছি না। এতগ্রেলা কথা, অভিনেতা—সবাই আমার মুখ চেয়ে আছে—এইটাই তো সবচেয়ে বড়ে সমস্যা। সবাই ভাষনা-চিন্তার দায় এড়িয়ে আমাকে ভাষিরে ভূলেছে।

হঠাৎ রঙমহল বন্ধ হবে, একথাটা কেউই ভাবতে পারেনি। কথচ ৩ জান্যারীতে বন্ধ হলো রঙমহল। এতো-দিন যামিনী মিল্ল, দ্গোদাস রঙমহল চালাজিল রজের ভাক নাটক নিমে। কিন্তু বন্ধ হল্লে গেলা।

মিনাভার ভূতপুর্ব অভিনেতা শরৎ
চাট্জো বর্তমানে শীরের শিলপীগোভারি
একজন। পাঁচ তারিখে শ্নেলাম, যামিনী
মিত্র, দুর্গাদানের পর ওই রশ্বমহল ছাতে
নিরেছে। ভালো-মন্দ জানি না, তবে খবরটা
এই।

এদিকে মুরঙ্গীবাবুর হাতে আসার পরেও নাটাভারতীতে প্রতি শনিবার-রবিবার কংকাবতীর ঘাট অভিনর হচ্ছে। অবশ্য দর্শক সমাগম মোটেই আশাব্যঞ্জক নয়। তব্ত একরকম চলছে।

জান্মারীর প্রতিটি দিন ব্শেষর ক্ষাতি চিচ্ছে ভরা। প্রতিদিনের সংবাদপতের ভাষা যুশ্বের সংবাদ নিরে জাসছে। আর প্রতিদিন কোলকাতার ভর-পাওরা মান্থেরা দল বে'ধে চলেছে শহরের বাইরে।

আমি নিজের চোখে দেখেছি, এই ভরপাওরা মান্বের চেহারা। কভোদিন রাতে
থিরেটার সেরে ফিরে আসতে অথকার রাজপথে দেখেছি এই সব ভাঁত নর-নারীর মৌন
মিছিল। দেখেছি, ছারার মতো নিঃশব্দ পদসঞ্চারে রাতের অথকারে এগিরে চলেছে
হাওড়া কিংবা শিরাকান ভেঁশনের দিকে।
থারো দেখেছি, কতো নর-নারী বারা ইণ্টকাঠের শহরে নানা আরামের মধ্যে দিন
কাটান, তারাও এই দার্ণ শীতের মধ্যে
একট্ব আপ্ররের সন্ধানে গেছে প্লাবীবাংলার
কোল গঞ্চামে। আপ্রর না পেরে গোটা
সংলার নিরে ভেঁশন স্বাটকর্মে দিন
কাটাকে। এমনও দেখেছি, বাঁচার ভাগিলে

বারা সেছে, তারা শেব পর্বাত বাঁচতে পারেনি। তবুও বাঁচার তাগিদে পাঁলিরে ধাবার ক্রমণা—শহরবাসীকে বেন বাাধির মুতো পেরে বসেছে।

ুজন কৰা কৰা দৈশ, তথ্ রংগা করা এতোর মধোও নাটক চলছে বিষয়েটার চলছে। তিউ করে মা এলেও নাটক দেখতে আসছে মান্ত্। নতুন নাটকও উল্লেখন হচ্ছে কোন কোন মধ্যে।

চব্দিশে জানুয়ারী গটার থিয়েটারে উদ্বোধন হলো মহেন্দ্র গ্রেণ্ডের নতুন ঐতিহাসিক নাটক রাণী ভবানী। দ্রগাদাস মিনার্ভার যোগ দিরেছে এটা আঠাশে জানুয়ারীর থবর।

শান্তি গৃংতাও মিনাভায় যোগ দিল উদ্ধিশে জান্যারী।

কংকাবতীর ঘাটের হারক জয়ণতী উৎসর অনুষ্ঠিত হলো ২ ফের্রারী। জনুষ্ঠানে পোরোহিতা করলেন খ্যাতনামা শিলসম্মালোচক ও সি গাণ্ডালী।

সেদিনের অন্টোনে প্রভেক শিংপীকে নাটক এবং থিয়েটারের, নামাঞ্চিত রৌপ্য পদক উপহার দেওয়া হলো।

৯ জান্যারী আবার নাটাভারতীর কলকাতার বাইরে যাবার পালা। যশোহরে বি সরকার মেমোরিয়াল হলে চার্রাদনবাপী নাট্যান্ত্রানের আয়োজন হয়েছে।

প্রথম রাতের নাটক পি **ডবলা**, ডি। অভিনয় মন্দ হয়নি।

শ্বিতীয় রজনীর নাটক শচীন সেন-গ্রুপ্তের সংগ্রাম ও শাহিত।

কংকাবতীর ঘাট অভিনীত হল তৃতীয় রজনীতে। এ রাতে আশাতি ও দশক সমাগম হর।

শেষ রজনীর নাটক সংজাহান। এদিনেও অক্সস্ত্র-দশ্যক পরিপ্রণ ছিল হলঘর। তার-পর উচ্চয়িত অভিনদনও পাওয়া গেল।

স্থানীয় দশকিরা প্রতিটি রাতের অভিনক্তে মুক্ষ হলেও শাজাহান আর সংগ্রাম ও শানিত তাদের বেশি আনন্দ দিয়েছিল।

চতুর্থ রজনীর অভিনর শেষেই রাতের টেনেই যশোহর থেকে কলকাতায় পাঞ্চি দেওয়া।

৯ ফেব্রুরারী থেকে ১২ ফেব্রুরারী—
কদিন আমরা নাট্যভারতী গোণঠী যদোহরে
ছিলাম। ঐ ১২ তারিখেই রঙমহল উন্থোধন
হরেছিল নর্তুন নাটক 'জীবনপ্রে'। শিল্পী
তালিকার শরং, ভূমেন জহর গাংগুলী,
রবি রার ছাড়াও অনেকে ছিলেন।

১৩ ফের্রারী শিবরারি। ঐদিন নাট্য-ভারতীতে সারারাহব্যাপী নাটবাভিন্যের

नि-ख्यन्-ि क्षं शिक्तेस स्ति। व्यदौन्स क्रीय्ती

'कारणा। नार्क काणिकास जात्व पिनवारि, कारकारकीस वार्के, पि क्रकार् सि, जार्नसा साथ राजकार्गा।

Market 200 is a first time of 201 is a first

অভিনেতার জীবনে বোধছর ক্লান্তি নেই। রাতের পর রাত অভিনর আর অভিনর—তারই মধ্যে ক্তো চরিক্রের মধ্যে নিম্পেকে মিশিয়ে দেওরা, কতো ক্রিপেত ভরিক্রের স্থা-নুত্রঘটাকে নিম্পের মধ্যে টেনে নেওরা। নাটকের চরিয়া হালে, ফাঁনে—ক্যা বলে, নপক্রির কী ভাবেন জানি মা, ভবে যে অভিনেতা লে জানে অভিনরের ফালা কোথান। যে ফালার মধ্যেই স্থিত উৎস।

সারারাত অভিনরের শেবে বাড়ি ফেরার পথে এই কথাই মনে হচ্ছিল।

কিছ্দিন আগে 'জীবন রঞা' নিরে শিশিরবাব, প্রীরঞানের উদ্বোধন করে-ছিলেন। কিন্তু কিছ্দিন না বেতেই পনেরোই ফেব্লুরারী জীবন রঞাের অভিনার বন্ধ হলা।

পনেক্রেই ফেরুরারী সিপ্সাপ্রের পতনের সংবাদ প্রচারিত হলো। এশিরার মাটিতে শ্বিভীর বিশ্ববৃদ্ধের পটভূমিকা রুমেই প্রদারিত হতে চলেছে।

বাংশা চলচ্চিত্রে ভারার আলোড়ন স্থি করেছিল: সেই ডাছারের হিন্দী চিচর্প ম্রি পেল ২০ ফের্রারী, চিচা এবং নিউ সিনেমার:

ভাষারের হিদ্দী সংশ্বরণও খুব জন-প্রিয় হরেছিল। ভাষারের জন্যক্ষ ভরিৱা-ভিন্নেতা আমি, করাচী, লাহেরে, কানপরে প্রভৃতি ভারতের বিজিল্প শহর থেকে কর্ণাণত চিঠি পেরেছিলাম। প্রতিটি চিঠির মূল কথা এক—আমার অভিনর সকলের ভালো লেগেছে।

পরদিন একুলে কেরুয়ারী কশাক্ষ্ম চিহাটি মুভি লাভ করলো। ঐ চিহে আমি রুপ দিয়েছিলাম শকুনি চরিতে, আর ছবি বিশ্বাস ছিল কর্ণের ভূমিকার। ছবিটির যুদ্ম পরিচালক ছিলেন জ্যোতিষ বন্দ্যো-পাধ্যার আর সভীশ দাশগাস্ত।

সাতাল বছর আগে আর সাতাল বছর পরে—এটা কোন নাটক কিংবা নাটক নিরে কথা নর, আমার নাটকের বাইরে বে জীবন, সেই জীবনের কথা।

বাগ্তাচড়া শান্তিপুরের কাছেই একটি প্রাম। বে গ্রামটির সপো আমার জীবনের তানেক সম্পর্ক জড়িরে আছে। বাবার মাতামহের স্ত্রে বাগতাচড়া আমার ন্যিডীর জন্মভূমি।

সাভাগ বছর আগে সেই বে বাগআঁচড়া থেকে এসেছিলাম, সাভাগ বছর পরে বাগ-অভিডার বাওরার পথে সাভাগ বছর আগের একটি দিনের কথা মনে পড়লো।

দেখিন গাণিতপ্র কৌগনে না নেবে, নেমেছিলান গোবিসপ্র বালনে কৌগনে। বাগজাঁচয়ার বাড়িতে বাংকে প্রতি গৈঠ



দিরে জানিরেছিলাম, আমি অম্ক দিনে যাছি গোবিন্দপরে বাগদে দেটশনে গাড়ি পাঠিয়ে দিও। কিন্তু কা-কস্য পরিবেদনা। দেটশনে নেমে কোন গাড়ির সংধান পেলাম না। এখানে যাভায়াতের জন্যে কোন গাড়ি পাওয়া যায় না। বাইবে পানের দোকানে জিজ্ঞাসা করলাম, বাগআঁচড়া কোন দিকে?

দোকানী দরের কতকগ্লো তালগাছ দেখিরে দৈরে জানালো, ওই দ্রের তাল-গাছ বরাবর বাগলাঁচড়ার পথ।

সাভরাং সেই মতে। হটিতে শা্রা, করলাম।

অচেনা-অজানা পথ। চলেছি পায়ে ছে'টে। পথে বৈতে সম্পো হলো।

সংকীৰ্ণ পথ। দ্ধারে আগাছার
জ্বপাল। পা চলতে অব্যক্তারে কথনো গতে
পা পড়ছে, কথনো কটার কত-বিক্ত হাছি।
এমনি করে পথ চলতে চলতে গ্রামের এক
বাভীর খিড়বিততে একে দাঁড়ালাম।

অচেনা-অজানা লোক থিড়কিতে এসেছে। বাড়ির কর্তা তো রেগেই আগন্ন। বলে, ঠাওর পাওনা? একেবারে গেরুজ্জ-বাড়ির খিড়কিতে ত্কেছো।

বললাম, আমি বিদেশী মান্ব—চিনতে পারি নি।

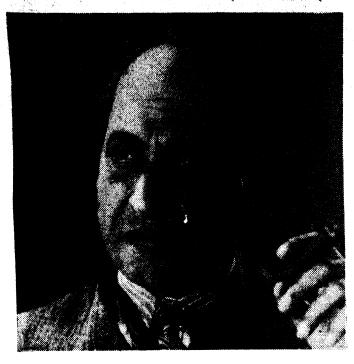
লোকটি আমার আপাদম**শ্তক লক্ষ্য** করলো।

বললাম, একটা জল খাওরাবে কতা।
—জল! লোকটি বললে, আপনারা কি
ভাতঃ?

আমি কারুপথ শ্নে লোকটি বললে, আপনাকে জল দিরে পাপের ভাগী হবে। না। আমরা জাতে বাগদী!

বললাম, একট্ছল দাও—বন্ধ তেন্টা পেকেছে। জল দিলে তোমার পাপ হবে না, আমারও জাত যাবে না।

विक्ति त्रानकार वराम्य कार्या



কিন্দু কোন কথাই শ্নলো না সে। ভল দিলে না। বগলে, কোন ময়রার দোকানে গিরে জল খান গে—না হয় অন্য জেতের বাডিতে। আমি জল দিতে পারবো না।

এবারে জানতে চাইলাম বাগআঁচড়ার পথের নিশানা।

লোকটি বললে, ওই ভাগাড় ধরে যান। ভাগাড় শব্দের একটা মানেই আমি জানি। গ্রামে যেখানে মরা গর্-মহিষ ইত্যাদি ফেলা হয়, তাকেই ভাগাড় বলে।

কিন্তু ভাগাড় মানে যে পায়ে চলা গ্রাম্য পথ—আজই নড়ন জানলাম।

কিছ, পথ এসে দ্রে আলো দেখতে পেলাম। ব্যতে পারলাম, বাগগৌচড়ার বাজারের ফাছে এসেছি।

এবারে বাড়ি চিনতে অস্নবিধে হলো না।

বাড়ির দরজার কাছেই মদত বড়ো ঝাঁকড়া বকুল গাছ। এ জারগাটা এলেই মনে হয় ছোটবেলার কথা। এখানে নাকি ভূত থাকে! কুড়ি-একুল বছরের যুবক আলি, তব্ধ গাটা কেমন ছমছম করে উঠলো। সেই সংশা সাপের কথাও মনে হলো। এখানে আবার সাপের উপ্তব্ধ আছে।

বাড়ির মধ্যে গেলাম। এবারে আর এক মুস্কিল। দরজায় তালা বন্ধ।

ভাবলাম, মা নিশ্চরই প্রফ্রের বাড়িতে গেছে। প্রফ্রে আমার সম্পর্ক খড়েতুতো ভাই। সেই বাড়িতেই গেলাম। মা তো আমাকে দেখেই অবাক!

---হাানে তুই?

বল্লাম, বাঃ---আমি তো তোমাকে চিঠি দিয়ে জানৈয়েছি। লিখেছিলাম গাড়ি পাঠাতে।

শ্বনলাম মা আমার চিঠি পান নি। তথন আর অন্য কথা নয়, ক্ষিধে-তেন্টায় প্রাণ ওষ্ঠাগত।

বললাম. আগে একট্ছল দাও— তেন্টাটা মিটিয়ে নিই। কী যে দেশ, লোকে তেন্টার জল প্রশিক্ত দেয় না।

সে রাতে আর বাড়ি ফেরা হলো না । কাকীমার বাড়িতে গাওয়া-দাওয়া করে সেখানেই দোতলার ঘরে নিশ্চিশ্তে নিপ্তা ধাওয়া।

সাতাশ বছর পরে বাগআঁচড়ায় পেণিছে সেই পারোনো কথা মনে হলো। সেদিনের অপরিণত তর্ণ, আজ পরিপ্ণ যুবক অহীশ্র চৌধুরী। যার জীবনের প্রচ্ছদপট শাধ্ব নয়, গোটা পটভূমিকা বদলে গেছে। সেই আমি বাগআঁচড়ায় এলাম পার ভান্কে নিরে। শ্রী-কন্যা আগেই এসেছে।

অনেবদিন পর এক জীবনের বাইরে আর এক জীবনকে খ'লে পেলাম।

আবার কলকাতা। অবার সেই দৈনন্দিন জীবনের জের টেনে চলা। ছাম্বিশে ফের্লারী মিনার্ভা মঞে স্প্রিয়ার কীতির উম্বোধন হলো। শচীন সেনগ্রেতর এই নাচকের পারচালক দ্ব্যাদাস, আর নাারক। স্থিরার ভূমিকালিপিতে ছিল শান্তি গশ্তো।

ফেব্রারী মাসটা গেল। মার্চের পাঁচ-ছর তারিখে শ্রীরামপ্রে গিরেছিলাম নাটক অভিনরের জনো।

এরই মধ্যে এগারোই মার্চ একটি
সরকারী ঘোষণায় শহরবাসীর আত ক
চরমে পে'ছিলো। সরকারী ঘোষণা হলো,
যুখ্যকালীন জরুরী অবস্থার তাগিদে
কলকাতা শহর থেকে স্থালোক শিশ্ প্র
এবং সাধারণ নাগরিক যাদের শহরে না
থাকলেও চলে, তারা যেন অবিলম্বে শহর
তাগ করে। কেননা যে কোন মহেতে চরম
বিপর্যয় ঘটতে পারে।

এদিকে এই ঘোষণা অনাদিকে ওই একই তারিখে শিশির ভাদ্ঞীর শ্রীরংগম মঞ্চে 'উড়ো চিঠি' নাটকের উদেবাধন।

কদিন বাদে উনিশে মার্চ নাটাভারতী গোষ্ঠী চন্দননগরে সিনেমা-দ্য-পারীতে একটি অভিনয় অনুষ্ঠানে অংশ নির্মেছল।

উনিশে মার্চ রঙমহালর পাদপ্রদীপে একটি নজুন নাটক অভিনীত হলো। নাটা-কার ধারেন মুখান্সী, পরিচালক প্রভাত সিংহ আর প্রয়োজক শরং চট্টোপাধায়। নাটকের নাম লোভের ফ্লো।

বিশে মার্চ তারিথেও চন্দননগরে দুটি নাটক অভিনয় করেছিল নাট্যভারতীগোষ্ঠী।

তেইশে মার্চ বাগআঁচড়ায় পাঁচ বিব্য জন্ম রেজিজি করা হলো কোলকাতা থেকে। ঐজনো বিভৃতি মিত্র এসেজিলোন কলকাতায়। ঐদিন রাগ্রে আমাদের বাড়িতেই ছিলেন।

মার মাসের আঠাশ তারিখটিতে একটি অপ্রত্যাশিত ঘোষণা—জাপানের নিকটে বিমান দ্বিটিনায় নেতাজী স্ভাষ্ট্র বসরে মৃত্যা ঘোষণাটি কিল্ফু কোথাক কোন সরকারী সমর্থান পেলানা।

খোষণা শুনে গোটা বাংলাদেশ তথা 🔏 ভারতবর্ষের মান্শ বিষ্যাপের সঞ্জো সেদিন একটি প্রশাই করেছিল, সত্যি কি প্রিয় তেজী মারা গেছেন ?

সেই প্রশ্নটা এখনো রয়েছে ভারত-বাসীর মনে।

এদিকে যুম্ধ ভারতের দয়জায়। ২ এপ্রিল জাপান অভিকয়ার অধিকার করলো।

দ্বিদন যেতেই পাঁচ তারিথের সংবাদ সিংহলের রাজধানী কলদ্বোতে জ্ঞাপানীরা প্রচন্ড বোমাবর্ষণ করেছে।

পরদিন ভারতের মাটিতে প্রথম
জাপানী বোমা পড়লো। ভাইজাগ এবং
কোকোনাদ—বোমার বিমান থেকে
জাপানীরা দুই শহরে বোমাবর্ষণ করেছে।
সেদিন তারিখটো ছিল ৬ এপ্রিল। ঐদিনেই
শিশির ভাদ্ডী অনিদিন্টিকালের জনো
শ্রীরূপামের দরজা বন্ধ করে দিলেন।

न्द्रमश्याम यदम किन्द्र त्नदे। १ अधिन থবর পেলাম রাণীবালা কলকাতায় তার করে জানিয়েছে উদীয়মানা **অভিনেত্রী জ্যোতি** মধ্বপ্রে মারা **গেছে। একজন প্রতিভাষরী** লনপ্ৰিয় অভি**নেতীয় আৰু নিৰ্ভ মৃত্যু**-সংবাদে বাথা পেলাম।

ব্ৰেখন গতি পৰিবতিত হলো। ১৮ এপ্রিলের সংবাদ **তা প্রমাণ ক্রলো।** জাপানের রাজধানীতে বোমাবর্থ করেছে মাকি'নরা।

ঐদিনেই নতুন করে 'উড়ো চিট্টি' নাটক নিয়ে শ্রীরপামের **স্বায়োগ্যাটন ছলো**। ঐদিনেই নাটাভারতীতে অভিনয় শেৰে আমি ম্বলীবাব্র কাছে গেলাম। ম্রলীবাহ্ कथा वर्नाहरून मण्डू मारमङ मरेग्न। स्मारमहे ম্রলীবাব্যে বললাম, এই মালের ভিলিল তারিথ থেকে আমি চলে **যালি।**

ম্রলীবাবঃ আমার ম্থের দিকে ভাকালেন। বগলা**ন, এই কথাটা আপনাকে** জানিয়ে দেওয়া **আমান্ন দরকার ছিল।**

किञ्च दे वलालन ना। মারলীবাবা ব্যতে পারলাম, আমার কথাটা উনি সহজ-ভাবে গ্রহণ কর'তে পারেন নি।

পর্রাদন ১৯ এপ্রিল যথারীতি নাট্য-ভারতীতে এর্সোছ। সোদনে ক•কাবতীর ঘাটের ১০০ ও ১০১ডম রজনীয় অভিনয়। শতত্ম রজনীয় অভিনয় হলেও শোন স্মারক অনুষ্ঠান হলো না।

ঐদিনে অভিনয় দেখতে **এসেছিল** রউমহালের শরৎ চ্যাটান্তি নাটকের শেষের দিকে সে চলে গেল। কিন্তু অভিনয় শেষে, আমি যখন মেক-আপ তুলছি তথন আবার তার আবিভাব আমার ককে। বলগাম, কিরে এলে যে?

শরৎ তথম বলাল, দাদা-একটা কথা मानिष्ट, खरा कि ठिक।

--হাাঁ, যা শ্নেছো তা কিছ্টা সভি।

—তবে নিশ্চয়ই আমাদের কথাটা ভেবে দেখবেন !

ভেবে দেখা বলতে, শরতের ইচ্ছে আমি রঙমহলে যোগ দিই। বলসাম আজ্ঞা---তোমার কথা নিশ্চয়ই মনে থাকবে।

তেইশে এপ্রিল সকালে বি সি মল্লিক শিশিরবাব: একবার ফোনে যোগাযোগ করে বলেছিল, আমি যদি তাদের ওথানে শনিবার আর রবিবার অভিনয়ে চ্রিক্ত হুই।

আমি জানিয়েছিলাম, সে কী করে मन्डव ? मन्डव नश् ।

ঐ তারিখেই নাটাভারতীতে কর্ণাজন অভিনয় হয়েছিল। কণের ভূমিকায় ছিলাম আমি, নরেশ মিত্র ছিলেন শকুনির ভূমিকার। বলা বাহ,লা আগের দিনেই মরোল মির লোগ नियासम् माजेखात्रकीरकः।

২৫ এপ্রিল সভু সেন নাট্যভারতীতে क्रणीनक राजांबन, अदीनवाद, राजां नामेन कातकी बाफ्टबन, रकामना कि क्नारव।

वर्कीत्मत कारबंद भारतीवनाम क्याणा। बरमोद्रम, नामा---कि वनरवा कन्युक्

বলেছিলাম, ভোমরা বেম্ল-জাছো-থাকো। তথে আমি তো ভৌমানের ছাড়া महै। यथम या नवकात र भटव जागाटक।

श्रीद्धान मान शानाः स्म मार्लाः श्रापम ভাষিশে সাটাভারভীতে ক্কাবভীর খাটের अक्रि विरमय जीवनदात आसामन क्या 'কিলবাৰ' কোম্পানী'র জন্যে। কোম্পানীর কেরানী খেকে কডাখাভি স্বাই ইপদিশত ছিলেন। ক্মাকতাদের অধিকাংশ শেষতাপা। অভিনয় নেখে তারাও মুন্ধ इरसद्दम शीक्ष्यरका। रकाभ्यामीस अक्क्रम বিশিষ্ট ব্যক্তি জাতিতে ইংরেজ, এনে স্থানালের, যভো সন্পের অভিনয় দেখলায়। এমন মাজিত মাচির অভিনয় আমানের रम्पान क्या समि।

একজন বিদেশীর মুখে এ ধরনের প্রশংসা শনে আনন্দ হলো।

ঐদিনের যুদ্ধের খবর মান্দালয়ের প্রেন।

চিত্রস্পতের একটি খবরই ছিল সোদন, উত্তর কলকাতার 'মিনার' চিচ্চাহের ম্বারোম্ঘাটন। এই দুর্দিনেও একটি চিত্র গাংহর স্বারোস্ঘাটন হলো।

০ মে দঃপরে এগারোটা নাগাদ রঙমহল থেকে শরং এলো। আমাকে রঙ্গহলে যোগ দেওয়ার কথা বললে।

নাটাভাষতীতে কংকাবতীর ঘাটের ১০৮ ও ১০৯তম অভিনয় আমার কাছে ঐ **থিলেটারের শেব** অভিনয় রজনী। ঐদিন অভিনয় শেষে রাণীর বাড়িতে এসেছি। মলিকমশায় ওখানেও আবার নতুন করে প্রোদো কথা বললেন। শনি ও রবি যাতে ওদের সপো চ্ডিবন্ধ হই।

আমার উত্তর সেই একই! শনি-রবি শিদ থাকবো, তাহলৈ চলে যাবো কেন!

নাটাভারতী ছাড়তে বাধ্য হলাম। না ছেড়ে উপায় ছিল না। মরেলীবাব, হাউস নেবার পর থেকে অনেক শিশ্পী আমার মুখ চেয়ে বৈতন কমিয়েও খিয়েটারে ছিল। ভবিষাতের কথা ভেবে। কিন্তু যথন তারা দেখলো, দুই প্রেষ খোলার আগে নতুন নতুন অভিনেতারা মল্লিকমশাই-এর কাছে খাতায়াত করছেন, এবং তাঁরা থিয়েটারে **ঢোকার পথ করছেন, সেই স**ম্য স্বভাবত **আমাদের প**ুরোমো শিল্পীরা আমার কাছে **এলো। বললে, দাদা— এই জনো** কি আমরা **ত্যাপ স্বীকার করে পিয়েট**ারে বইলাম। এ ষে দেখছি, ভিতর ভিতর অন্য ব্যাপার STILE !

श्रकारिक बस्तद्ध :

त्य शैका এক **খণ্ডে সম্পূর্ণ। চার সম্ভাধিক প্**কার मृत्यहर शुम्धा युद्ध मृत्यक्षांमा स्थि। **छे भदा**न **छेन्यांगी ग्रांसम् शक्त**। ल्यक-अधारमात्रक्षम स्थाय

> स्वरंहेन-धन त्राच्य दाखा

আগ্রাসী সাম্বাজ্যবাদী দক্তির বিরুদ্ধে সর্বহারার সংগ্রামী জনতার ম**্ভিয**়েখ।

তারাশতকর বদেয়াপাধ্যায়

কালৱ ৷ ত্র

পি সমুকার সমাজাবরোধ

न्धारणात्रक्षम रचाय

नक्षालवाफि

देनदराम दा

ফাঁসি মণ্ড থেকে

অমরেন্দ্রকুমার ঘোষ অণ্নিয় গোর নায়ক

Ġ,

Ġ,

উত্তলপূর্ব **श्वर्ग** (थलना

٥,

নীহাররঞ্জন গ্রুত উদয় দিগস্ত

8,

সুমুমহল শেখর দেনগ**্ৰত**

¥. 8.

নিযাতিত নিগ্ৰো

ডুলি-কলম : ফোন : ৩৪-৮১৮০ कल्लाङ (दा, कलकाणा--->



ৰোদ্ৰের চিন্তা সেনের সজ্যে আম্রর একং থাইল্যাল্ডেন দুজন গাইড

या

পারস্পরিক বোঝাপড়া

নয়টি দেশের গাল দ্বাউট এবং
গাইজদের এবার বার্ষিক ছাউনি পড়েছিল
প্রণার সপ্যমে। একমাস ধরে ২৪ জন
কাউট এবং গাইড এবারের সেসনে
উপন্থিত ছিলেন। তারা এসেছিলেন বেলজিলাল, সিংহল, ইসরায়েল, জাপান,
মালমেলিয়া, সিয়ের। লিওন, থাইলান্ডে,
আর্মেরিকা থেকে এবং আমন্তগকারী ভারত।

এই সেসনের নাম ছিল জ্বলিয়েট লো সেসন, ১৯৭০। এই নামকরণের একটা বিশেষ উদ্দেশ্য ছিল। আমেরিকায় গার্লা শ্বাউট আন্দোলনের প্রবর্তান করেন জ্বলিয়েট লো এবং তিনি হলেন সেদেশে এর প্রতিষ্ঠাতা। তাঁর প্রতি প্রন্থা নিবেদন যেমন উদ্দেশ্য ছিল তেমনি সেসনের থরচ-শ্বহার একটা বিরাট অংশও এসেছিল তাঁর নামাঞ্চিত ফাল্ড থেকেই।

২৪ জন গার্লা স্কাউট এবং গাইড প্রায় একমাস কাটালেন সংগমে। ওদের বরুদার বিষ্কাইট ওদের উপর চাশিরে দেওরা হমেছিল তা খ্বই গ্রেভার। বিশেবর তাবং বিশেবজ্ঞরা যে সমস্যানিরে তেবে অস্থির ওরাও সেই সমস্যানিরেই বাস্ত ছিল। বিশেবর বিরাট জনসংখ্যার খাদ্যসমস্যা সম্পর্কে এই একমাস ভাষনাচিস্তা করাই ছিল ওদের কাজ।

তাই এই অধিবেশনের নাম ছিল--হাগার, आ। धराक्तम, आक्रमन। धरः धक्रना दिए নেওয়া হয়েছিল ভারতবর্ষের মতো একটি দেশ। এদেশে খাদ্যসমস্যা ব্যাপক। আমাদের কৃষকরা বিপূল প্রমের বিনিময়ে যা উৎপন্ন করে তাতে সারা দেশের ক্লিব্তি হয় না। দেশে দেশে খাদোর জন্য আমাদের হনে৷ হয়ে ঘ্রে বেড়াতে হয় ভিক্ষাপার হাতে নিয়ে। এ সমস্যা আমাদের দেশে যেমন তীর তেমনি বিশেবর নানা দেশেও খাদাসমস্যা ক্রমেই তীব্র আকার ধারণ कर्दछ। कनमरथा। वृश्यित हात्र एथरक मरन হয় এমন দিন আর খবে দ্বে নেই যথন অনেক দেশকেই খাদ্যাভাবে ভুগতে হবে। তাই প্রয়োজন আগে থেকেই সাবধানতা। সবাইকে এ নিয়ে ভাৰতে হবে। বয়সের বিচারের তুলনায় প্রাধান্য পেয়েছে সমস্যা। তাই গার্ল স্কাউট এবং গাইডদের এক সময়ের প্রমোদভবন আজ রুপায়িত হয়েছে সমস্যা নিয়ে মাথা ঘামানো কেন্দ্রে।

বিশ্বের মাথা ধরানো সমস্যা নিয়ে
এদের মাথা খামানোর একটা বিরাট
স্বিবাও আছে। গার্ল স্কাউট এবং
গাইডদের এই সংস্থা প্রথিবীর সব দেশেই
দাখা বিস্তার করে আছে। এদের সদস্য
সংখ্যা প্রায় ১৫ মিলিয়ান ছাড়িয়ে গেছে।
এই সসংখ্য চঞ্চল যৌবন ধরা পড়ে আছে

এই সংস্থায়, যারা অসাধ্য সাথন করতে পারে। আর ট্রকরো ট্রকরো ট্রকরো ভবনার তুলনায় এরকম সম্মিলিত চিন্তা নিশ্চমই আরো বেশি কাযকরী হবে। লাখাড়া গার্ল গাইডরা তে: আর সরাসরি সমস্যা সমাধানে হাত লগাতে পারখেন না। হাদের বছরা হলো, এই সেসন প্রেক রিরা ঘাদা সমস্যার অলতনিহিত রং অন্থাবন করতে পারবেন এবং এধ শ্বারা ভবিসাতে কাজ করা তাদের পক্ষে হবে থাবই সর্জে। তাদের ভাষায়, ট্রানাভ উইথ আন্ডার-চ্ট্যাফিং ইন দি এরিয়। ভবিষাতের লিকে চোথ রেখে তাদের আজ্কের এই অভিযান স্থিতা প্রশংসনীয়।

বিশ্ব খাদাসমস্যার ভূমিকা ক্রমেই আপ্রাসী রূপ নিছে। প্রথম দায়িত্ব তাই উদ্যান্তাদের ছিল এদের সমস্যার স্বর্প সম্বধ্ধে ওয়াকিবহাল করা। এজনা তাদের বইপত্র, হান্ডবিল এবং অজস্ত্র প্রামফলেট সরবরাহ করা হয়। ফিল্মের সাহ্যযোও দেখানো হয় সমস্যা আজ কোথায় এবং জনসংখ্যা বৃদ্ধির অগ্যামী দিনগুলিতে কোন অঞ্চলে সামস্যা কি রূপ নেবে। এছাড়া প্রতিনিধিম্থানীয় যেসব অংক্ত-জাতিক সংক্ষা খাদ্য নিয়ে মাথা ঘামান ভাদেরও ডাকা হর্মেছিল এদের সাহাযা করার জন্য। তারা দানারক্ষম আলোচনার

আংশ নেয়। খামারবাড়ি ঘ্রে প্রতাক্ষ
অভিজ্ঞতা সংগ্রহ করে এবং শসাক্ষেত
গরিদশনি তাদের জ্ঞান বাড়ানোর কাফে
লাগা। এ তো গেল খিরোরীর দিকটা।
এবার প্রাকিটবালা। মান্বের সংগণ
গরিচর না হলে, স্থানীয় খাদের প্রভাব
থদের উপর কঠটা কার্যাক জ্ঞানতে না
শারলে সমস্যা লিজ বিজান্টে ভাষটা কার্টির
ওঠা হবে খ্বই শ্রহা তাই মালা কার্টিও ও
গাইডের এই দল গেছেন নিজটবতী প্রামে।
ভারা কৃষকদের সংগা কথাবাতা বলেছেন
এবং বিচক্ষে প্রতাক্ষ করেছেন মাালনিউট্রসনের ভ্রাবহতার পরিগাম।

ওরা দেখেছেন। তারপর ওরা নিজেরা কত কথা বলাব[া]লে করেছেন। ওরা সবাই **একই প্রতিশ্র**তি দিয়েছেন। দেশে ফিরে গিয়ে ওয়া নিজের লোকজনদের গোচরে কথাটা আনবে। ইসরায়েলী তর্ণী মন্তবা করেন, দেশের কাউন্সিল নেতাদের সংখ্য আমি এ ব্যাপারে কথা বলবো এবং বিপোর্ট তৈরি করে তার ব্যাপক প্রচার করবো। যাতে সমস্যা সম্পক্তে স্বাই সচেতন হতে পারে। আবার কেউ কেউ অন্য কথাও উল্ছেন এবং মনোভাবও প্রকাশ করলেন সেরকম। টেলিভিসন, সেমিনারে তার। বছরা রাখবেন। প্রয়োজন ভাল গ্রোত্মভলীর সামনে বছরাও রাথবেন। ওদের কথাবাতীয় মুখ খ্লালেন ভারতের একজন <mark>গাল গাই</mark>ড। তিনি

বললেন, সতি। আমাদের করার মতো কতো কাজ তাছে তার ইমন্তা নেই। এসব দেখে-শ্নে আমাদের মাথায় এমন সব চিম্তা গিজগিজ করছে যে, হয় আমরা বাছিগত-ভাবে অথবা দশবশ্যভাবে বেগ্লিল কালে ব্লায়িত করতে পারি। স্বাই এ কথায় একমত।

শুধু আলাপ-আলোচন কান কান কান্তরের জনা ওরা এক ট্রুকরো জাম নির্দেশ্য করে করে। তেওঁ চাষ করে, জল সেচ করে এবং ফসল ফলায়। ওদের বাগানের অভিজ্ঞতা এখানে কাজেলাগে। ফসলটা অবশাই এখানে আসল কথা নয় কিব্তু জামর উৎপাদন ক্ষমতা এবং ওদের প্রচেণ্টার একটা প্রশীক্ষা হলো।

এই গার্ল স্কাউট এবং গাইডদের
স্বন্ধে আর একটা মজার তথা হলো,
একদিন ওরা দল বেধে একটা স্ইমিং
প্লে বেড়াতে যায়। ওদের পরনে অবশাই
স্টমিং কস্ট্ম ছিল না। স্বাই কথা
বলছিল। এতগালি মেয়েকে একটা
জিনিসেই বেমানান লাগছিল, সে হলো
পাতলে শোনা যেত সেখানেও ওরা খাদা
সমসা। নিষ্টেই কথা বলছিল।

নানা দেশের ২৪ জন প্রায় সমবয়সী মেয়ে একসংক্ষা একমাস কাটালেন। এই থাকার মধ্যে ওরা অন্তেব করজেন, আল্ড- জাতিক জীবন। এবং প্রতিম্হুতে ওরা অন্তর্ক করেছেন, ওরা আন্তর্কারিত ফাকৈ ফাকে এবা আন্তর্কারিত ফাকে বাই সেদিন জাতীয় পোশাক পরেছেন। সেবাই সেদিন জাতীয় পোশাক পরেছেন। সেদিন একজন আয়ায় এইজাককৈ ওলের লোক-সংগীত এবং সংস্কার ওরা আয়ত্ত করেছেন। ভারতীয় পরিবারের সপ্পোম্পানেশা করেছেন। আর সবসময়ই ওদের মনে হয়েছে ওরা বাড়িতেই জ্যাছেন।

এদের খাবার টেবিলে এক অভ্যুত দুশোর অবভারণা হতো। সব দেশের খাদা সেখানে পরিবেশন করা হতো। আমেরিকান গ্রায়েড চিকেন থেকে জাপানীস গ্রুকিয়াকি। ওরা আনদেদ মত্ত হলে খাওয়া শেষ করতো।

তারপর আগতো ক্যাম্পফায়ারের শভে
মহেতে । প্রভাউ গাইড্রােদর সমাবেশ
এছাড়া থাকে অসম্পূর্ণ । চারপাশে ওরা
থিরে বসতো । গান গাইতো । এর ফাঁকে
কেউ হয়তো ফিশফিশিয়ে বলতো, এথানে
আসার সাথে গ পেয়ে আমি সভি গবিত ।
আমার ভীবনে এ এক বিরাট অভিজ্ঞতা ।
কথাটা এ কান থেকে ও কানে ঘ্রতো ।
সবাই হেসে ওই কথায় সায় দিত ।

—প্ৰমীলা

যগাদের মনে পড়ে

মাতৃৎের সকল মহিমা প্রক্ষাতিত শতদলের স্বভি নিয়ে বিকাশত হলে ওঠে
আপন সংতানের সম্ক্রল কৃতিছের মধ্যে।
সংস্কান মায়ের অলক্ষার এবং অহংকারেও
বটো রবীন্দ্রনাথের জননী সারদা দেবী
কৃতি স্কানের সৌভাগারতী জননী। তিনি
রত্তাগভা। রবীন্দ্রনাথ ভিন্ন শিবজেন্দ্রনাথ,
স্কোন্দ্রনাথ, জ্যোতিরিন্দ্রনাথ, স্বাক্সারী
দেবীরও জননী ছিলেন জীমতী সারদা দেবী।
আমন রত্তাগভা জননী বাংলাদেশে কেন,
বিশেবর কোথাও বিশেষ আছেন বলে মনে
হয় না।

কিপ্তু বড়ই দুঃথের বিষয় দ্বিছেন্টানাল প্রমূথের বিরাট সাহিত্যের মধ্যে জননীর তেমন বিশেষ উল্লেখ বা পরিচয় পাওণা যায় না! রবীশুনাথের বিশাল সাহিত্য-ভান্ডারে মায়ের প্রান অতি সামান। বনে হর সেইকালের বৃহং পরিবারের নির্মান্যায়ী ছেলেরা শৈশবকাল অতিক্রম

করলেই অনতঃপরে থেকে বাহির বাড়ীতে ম্থান গ্রহণ করতেন। সেখানে লোকজন পরিবেণ্টিত হয়ে থাকতে হোত। কবি যাকে আখ্যা দিয়েছিলেন ভূতারাজকতন্ত্র। রবীন্দ্র-নাথ দঃখ করে বলেছেন, বাডীতে নতুন বধরে শভেগেমন হলে সেই বালক বয়সে নববধ্র সংজ্যে আলাপ পরিচয়ের সুযোগ থেকে বণ্ডিত হতেন। এইসব উলেখ থেকে বোঝা যায় বালকদের সংগ্য অংতঃপর্যারকাদের এমনকি জননীর প্যাশ্ত একটা আড়ালের সম্বৰ্ধ রয়ে গিয়েছিল ! তাছাড়া রবীশ্রনাথের বালক বয়সে সারদা দেবীর মৃত্যু ঘটে ৷ শেষ জীবনে সারদা দেবী বহুদিন রোগশ্যায় ছিলেন। তাই মা ও ছেলের মধ্যে নিকটতমের স্নেহমধ্রে আলাপ গভীর হয়ে উঠতে পার্রোন। রবীশুনাথ তাই বোধ হয় বেদনার সংগ্র অন্তব করে বাস্ত করেছেন—

তিমির দ্যার খোলা
...জননী জীবন জ্যুড়াও ত**ং**প্রসাদ স্থো সমীরণে।

জীবন জাড়ানো সেনহস্পর্শ যে জননী তাঁর বালক সম্ভানকে দিতে পারেননি, সেই জননীর মমবেদনা নিশ্চয়ই আরো গভীর— আরো কর.৭! রবী-চনাথের সম্তানেরা পিঙার মতই অলপ বয়সে মাতৃহারা হয়, রবীণ্ডনাথ আপন হাদ্যের অনুভৃতি দিয়ে সেই মাতৃহারা ছেলেমেয়েগালির অন্তবে-দনাকে রুপ দিয়েছেন দরদী লিপিকার মোইন স্পশো। তার শিশলেশীলার আনি ও অকৃত্রিম ভাবধারাই স্থিট করেছে মা ও ছেলের মধ্যে এক অপর্প র্পকথা—শিশ্-গাঁথার সেই র প্রকথা টিরকালের মা ও হেঁলের মধ্যুর সম্পর্কোর কথা বাস্তু করেছে। এই শিশ্কাবোর মধ্যে রবীন্দ্রনাথ নিজের মাকেও সমরণ করেছেন। লিশ্যকালে যথন বাধাধরা লেখাপড়া তার পছন্দ হতো না,

নেই সমর মার স্নেহনীড়ে নিজ্ত আগ্রের স্থান করে নিতে তার বড় তাল লাগত—

> ভোমার মনে পড়ে গোলো ফেলে এলাম খেলা।

আজৰে আমার ছ্টি, আমার দনিধারের ছ্টি কাল বা আহে সব রেখে আর মা ভোর পারে ক্টি।

সারদা দেবী বৃহৎ পরিবারের কর্মী।
শুধ্মার আপন সম্ভান নিয়ে তাঁর সংসার
ছিল না। আশ্বীর-অনাশ্বীরের ভাঁড়
দেখানে। বহুজনের নিজা প্ররোজনের
তাগিদ সেখানে বেশা, পাঁচজনের মনোরঞ্জন
করাই হল গৃহক্মীরি প্রধান কাজ। দিনুর
সূর্র্থেকে দিনাস্ত পর্যন্ত নানাজনের
নানা আবদার সহা করার পালা চলত।
কাজেই নিজের ছেলেমেদেনের ঠিক নিঞ্জ
ভ্রাবধানে রাখা কোনমতেই সম্ভব হতো
না।

সেই যগের সাধারণ হিচ্ছরের মেরের মত সারদা দেবীও ধর্মপ্রায়ণ, নিশ্টাবতী ছিলেন। পরিবারের ধর্ম, কর্ম, জাচার অনুষ্ঠানের মধ্যে তাঁর বিবাহিত ছাবনে প্রথম দিকটি অতিবাহিত হয়। তিনি ছিলেন কলাাণম্বর্পা সর্বাম্মী ক্টা। ম্বামা দেবে দুনাথ প্রায়ই দ্রে দেশে ভ্রমণে গেলে তিনিই সকল দিক সামলাতেন।

সারদা দেবীর স্নেহময়ী, কল্যাণগ্রী রপের পরিচয় থানিকটা পাওয়া ধায় অবনীন্দ্রনাথের কোন কোন আলাপ-আলোচনার মধ্যে দিয়ে। অবনীন্দ্রনাথ প্রভৃতি সারদা দেবীকে কতাাদিদিমা নামে সম্বোধন করতেন—'কতাদিদিমাকে দেখেছি তার ছবিও আছে। তেমেরাও তার ছবি দেখেছ। কি÷তু তাঁর সেই পাকা চুলে সি*দ্ব মাথা রূপ এখনো আমার চোখে জন্লজনল করছে, মন থেকে তা মছেবার নয়। তিনি ছিলেন যশোরের মেয়ে, তথন এই বাড়ীতে যশোরের মেয়েই বেশী আসত। প্রতি ১১ই মাঘ খ্ৰ ভোজ হোত পোলাও মেঠাই, সে কি মেঠাই যেন এক একটি কামানের গোলা। খেয়ে দেয়ে সবাই আবার মেঠাই পকেটে করে নিয়ে যেতো। অনেক অতিথি-অভ্যাগতের ভীড় হোত সে সময়ে। আমরা ছেলেমান্যে, বাইরের নিমনিততদের সংখ্য আমাদের থাবার নিয়ম ছিল না। বাড়ীর ভিত্তে একেবারে কর্তাদিদিমার ঘরে নিয়ে ষেতো আমাদের। সংগ্রেথাকত রামললে চাকর।

আমার প্পণ্ট মনে আছে কতাদিদিমার সে ছবি। ভিতর দিকের তেতলার ঘরে থাকতেন। ঘরে একটি বিছানা সেকেলে

মশারী স্বুজ রংরের, পংকের কাজ করা মেৰে, ভাতে কাৰ্পেট পাতা—একপাৰে. একটি পিন্দিন জনুলছে। বাল্টেরী শাড়ী পরে, সাদা চলে লাল সিদ্ধে টক্টক করছে কভাদিদিমা বনে আছেন তভুগোষে। রাম-লাল শিখিয়ে দিত, আমরা কর্তানিদিমাকে পৈলাম করে পালে দীড়াডাম। তিনি বলতেন, ৰোস বোস। তারপর বলতেন, ও বৌমা ওদের এখানেই আমার সামনে জায়ণ্য করে দিতে বল। এই ঘরেই একপাশে ছোট ছোট আসন পাতা হোত। কর্তাদিদিমা কাছে বসে বলতেন-বৌমা, ছেলেদের আগে গরম গরম বাচি এনে দাও—আরো মিণ্টি দাও-বড়দের মতো আদরষতা করে থাওম-তেন। আমরা খাওয়া-দাওয়া করে পায়ের ধ্বা নিয়ে চলে আসভুম।'

অবনীন্দ্রনাথের নিশিকার তুলিতে সারদা দেবীর যে পরিচয় পাওয়া যায়, সেই যুগের একালবতী পরিবারের কর্তার-পরায়ণা সুগোহিণীর বেশ একটি নিখাত ছবি ভেসে ওঠে।

রবীশ্রনাথ অলপ বয়সেই মাতৃহারা হন।
মায়ের মৃত্যুর পর তার মনটা উদাস হরে
মাকেই খাজে বেড়াত। মাটা মোটা বেলফল চাদরের প্রান্তে বেগে ঘ্রে বেড়াতেন—
অন্ভব করতেন যেন মায়ের চপশাও
ফলের মধে। লিখেছেন—"আমার মায়ের
শাল আগগ্লগালি মনে পড়ত, আমি
কপদাই দেখতে পেতাম যে চপশা সেই
ফলের আগগ্লের আগায় সেই চপশাই
প্রতিদিন বেলফ্লগালির মধো নিমলি হয়
ফ্টে উঠেছে—জগতে তার আর অহত নাই,
তা আমরা ভ্লেই যাই বা মনে রাখি।"

রবীন্দ্রনাথ সেই স্পর্শা মনে রেখেছিলেন
—মায়ের গৃহাভান্টরের কমরিত। মৃতিটিকে
বার বার শ্রুম্বানতচিত্তে প্ররণ করে রবীন্দ্রনাথ প্রাচীন মহীয়সী হিন্দ, নারীর প্রতি
গভীর শ্রুম্বা প্রদর্শন করেছেন। সবার
মধ্যেই আপন জননীর কলাাণী রুপটিকে
দেখেছেন—নারী, রবীন্দ্রনাথের কাছে তাই
বিশ্বজননী।

কবি মায়ের মৃত্যু সম্বংখ লিখছেন—
মার মৃত্যু যথনহয় আমার তথনবয়স অলপ।
অনেক দিন থেকেই তিনি শ্যাগত কিব্
কখন যে তার জাবিন-সংকট উপস্থিত হয়েছিল জানিতেও পারি নাই। এতদিন প্রবিত্ত যে ঘরে আমরা শ্রেতাম সেই ঘরেই
স্বত্তা শ্যায় মা শ্রেতান। কিব্
তু তার রোগের সম্প একবার কিছ্দিন তাঁকে বোটে
করে গণ্যায় বড়াইতে লাইয় যাওয়া হয়
—তাহার পরে বাড়ীতে করিয়া আমরা
ঘ্রাইতেছিলাম, তথন কত রাত্তি জানি না
শ্রোতন দাসী আমাদের ঘরে ছ্টিয়া
আসিয়া চাঁধকার করিয়া কানিলা



ফটোঃ রমেন মিত্র

'ওরে থোদের কি সর্বনাশ হলো রে'..... প্রভাতে উঠিয়া যখন মার মৃত্যু সংবাদ শানিলাম তথ্নো সে কথাটির অর্থ সম্পূর্ণ গ্রহণ করিতে পারিলাম না বাইরের বারান্দায় আখি। দেখিলাম 🔠 জ্বত দেহ প্রাজ্গণে খাটের উপর শহ .. কিন্তু মৃত্যু যে ভয়ঙ্কর, সে দেহে তাহার কোনো প্রমাণ ছিল না, সৌদন প্রভাতের আলোকে মৃত্যুর যে রূপ দেবিলাম এহা সংখ-সঃকিতর মতই প্রশাণ্ড ও মনোরম। কেবল যখন তাঁহার দেহ বহন করিয়া বড়ৌর সদর দজারি বাহিরে পইয়া গেল এবং আমরা ভাহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ শম্শানে চলিলাম, তখনই শোকের সমস্ত ঝড় যেন একেবারে এক দমকায় আসিয়া মনের ভিতরটাতে এই হাহাকার তুলিয়া দিল যে এই বাড়ীর এই দজা দিয়া মা একদিনও নিজের এই চির-জীবনের ঘরকরণার মধ্যে আপন আসনটিতে আসিবেন নাং

সারদা দেবী রবীশ্রনাথের জননী কিন্তু রত্যগভা জননীর্পে বিশেবর জ্বনী স্কাশে চিরশ্বরণীয়াঃ

संदेख **्राज्या त्य**

(गायुक्त कवि पराभव • क्षाम्प्रीकि

















ठिक बह्मरून, मिः छर्म।।



१थन मानव

बूरम्लन कि कह्व ?



বেতারশ্রহীত

जन्द्धान-भवा दनाहना

বিশ্ববিদের প্রতি কেন্দ্রীয় সরকারের চরম অবজ্ঞার ও নিন্দুরতার আর একটা প্রমাণ পাওয়া গেলা। পরপর এমন প্র্টো ঘটনা ঘটল আকাশবাণীতে, যাতে কিছুতেই একথা অব্যক্তির করার উপায় নেই বে, কেন্দ্রীয় সরকার বিশ্ববিদির মোটেই পছন্দর না। প্রথম ঘটনাটি ঘটেছে গত ২৫ মে রাস্বিহারী বস্তুর বেলাং, আর শিক্তিরিটি গত ১২ জ্বন লীলা রায়ের বেলায়,

বি মে দেশনায়ক রাসবিহারীর জন্মদিন্দে তীর কারণে কোনো অন্তর্গন প্রচারের
পূর্ব-পরিকল্পনা আকাশবাণী কর্তুপক্ষের
ছিল না। ১৯ জন রাত প্রায় সাজে
১২টায় দেশনেরী লীলা রায় পরলোকগ্যন করেন, পর্রাদন সকাল সাজে সাতটাই
দিল্লীর খবরে সব প্রথম এই খবরটিই বলা
উচিত ছিল, তাহতত প্রথম দিকে—কিন্তু
এমনই নির্মায় আকাশবাণীব বাপোর যে,
এই খবরটি বলা হায়ত একেবারে শেস
দিক্ষে, শেষ দ্-মিনিটে। তার আগে অনেক
ম্বা গ্রাইছপ্রা সব খবর বলা হাছে।

এ শুধু নির্মামতা ময়, নির্লাজ্জতাও।
এই খানা মাডিলা এত যে স্মালোচনা
ইচ্ছে, তবু কড়াপক্ষ নির্লাজ্জ রক্ষ
উদাসীম। এই উদাসীমতা দ্বে কররে জন।
আক্ষামবাদী কড়াপক্ষকে সজ্যোবে নাড়া দিতে
প্রাায়ন, এয়ম কেউ কি নেই দেশে।

্ব জান বেলা ১টায় ছিল গারাবাহিক নক্ষা দিশেহারক কড়চা-র নক্ম পর্ব। রচনা শীপাথ চটোপাধায়।

এট নবম প্রশাস মাজ সরকা ছিল ।
এই পরিবার পরিকলপনা স্তেও দেশের লোকসংখ্যা বেডেট চলেছে। তাই ভিড আর ভিজ—সমস্প জায়লাহ জিল। এক ভিজ বার ট্রীক্সি আফিস নব-দশ্পভিত্র তানিয়ালা জ্ঞাতে যাবার জায়লা দিতে পারেন না, থর ছার্কাক্সিক্স সাবার প্রস্কাল দেন।

. तम भानाचा प्रस्कान महन्ताचा स्वरंतरा स्वाप्त्र स्वरंतरा स्वाप्त्र स्वरंतरा स्वाप्त्र स्वरंतरा स्वरं

সেখানে তাঁর কোন্এক বোন না সই থা:কন, ভানেকদিন থেকে তাঁকে মেতে বলছেন।

নকশাটিতে রঞ্গ-রসের অনেক সুযোগ ছিল কিব্ বৈশি সুযোগ কালে লাগানো হর্মান। যা-ও হুমেছে, তেমন কমতে পারেনি ভবে ঘোটামুটি উপভোগা বলা চলো। অভিনয়ে ছিলেন শ্রীহারধন মুযোপাধ্যায়, শ্রীস্থার গণোপাধ্যায়, শ্রীমণ্ডী মমতা বন্দ্যাপাধ্যায়, শ্রীমণ্ডী মমতা আরও ব্যুবজন।

এইদিন রাত ১০টা ১৫ মিনিটে আধ্নিক গান শোনালেন শ্রীমতী আর্রাড মুখেপাধ্যায়। স্ফার লাগল। বেশ মিন্টি গলা, শোভাবিক সার।

৮ জনে সকাল ৮টা ৲৫ মিনিটে শ্রীমটো কল। সাহার আধুনিক শানত সহজ. ≯বাভাবিক, উপ্তোগ।

এইদিন সকাল সা'ডে ৯টায় ছিল সংবাদ-বিচিত্তা-- 'সীমানেজর অভন্য প্রহরী, ফর্দাস-চলচিচ্য টেংসব, ই×তীশলপ প্রদর্শনী, ময়দানে ফ;্টবলের আসর, তাব সাইকেলে ভারত পরিব্রুমা' বিষয়ে। প্রথমটাতে কিছা পোলাবারাদ আরু কচ-কাওয়াজেন শোমানোর পর সীমাণ্ড-রক্ষীদের কতবিং সুম্পরের পৃষ্ঠিমবঙ্গ প্রিল্লাক একজন পদৃষ্থ অফিসারের ভাষণের কিয়দংশ প্রচার করা ছায়েছে। দিবতীঘটাতে একেবারে ফাঁকি দেওয়া হয়েছে—ফ্যাসিকা'দর বিব্যুদেধ বক্তত।র দ্য-চারটি মাত্র কথা শ্রনিয়ে। হস্ত-िबारकभार भागतनाहै। किलाहि क्वास्ट्रा शहामाहरू ফাটেবলের আসরটা ছিল সমজ্ঞমাট, উৎসাহ ভার টেফটীপরাই ভ্রো। ফাফেরটায় ৫৭ রন্তর ব্যামের এক পানে-বাংশের সাইকুলে ভারত ভ্রমণের বিষয়টো উৎসাহরাঞ্জক, তাঁর সংই-কেকেৰ ঘৰায় সাপ জড়িয়ে গাৰার ব্যাপার্টা ব্যেয়াকক্ষ ।

ज्ञाजीवर कार जिल्लाक राजाकीमानि जिल्लाक रिजाकर्गक कार्य क्योक्सीच । ज्ञाना रिस्कासका आरितरकात कार्यजीर कार्या अवहें रक्ताकार अधारता

و عبد التشخيف شدية من عن همانشيخة بإنشال بيده المتحدثاتين يحالمان المانشان ميدة المدالتات المتحدثاتين يحالمان إلى هانتا التشد المدالتات المتحدث عاددا بإعظا التشد فراطانية وتتامين المتحدثات تاريخانة للمواسد المناشئة

সমীক্ষার রণ্যমণ্ড প্রসংগ্রা বললেন ডঃ

সাধনকুমার ভট্টাচায়। বলাটা বেশ পাশ্ডিত-সংশভ। বিষয়টাও আলেটেমিক। রশমণ প্রসংগ অন্য অনেকের সমীক্ষার সাধাদণত যা শোনা যায় তার থেকে একটা ভিন্ন। নাটাকলায় সভিকোরের উৎসাহ আছে যাদৈর, ভাদের ভালো লেগেছে বলেই বিশ্বাস।

১২ জনে রাভ ১০টা ৪৫ মিনিটে ইংরেজী নিউজ রীলটি ছিল বছতায় ভরা--কেবল শেষের কলকাড়া-দীঘা মোটর র্যালের অংশটাকু ছাড়া। এই ধর্মের মোটর রাণ্ল এখানে এই প্রথম। বেশ উত্তেজনা স্ভিট কার**িছল এই রাজে, প্লচণ্ড উম্দ**ীপদা। প্রথম যাগের মার্কিন নিবাক চলচ্চিত্র উৎ-সবের উদেবাধনে শ্রীসত্যাঞ্জং রায়ের ভাষণের অংশটাক প্রণিধানযোগ্য। বর্ষায় কলকাতার আর জল জমবে নাবলে গত বছর প্রতি-শ্রতি দেওয়া সত্তেও এ-বছর এই ক'দিনেব বুণিটতে কেন আবার জল জয়োছ তার যে কৈফিয়ৎ দিয়েছেন কলকাতো কপোৱেশনৈর কমিশনার শ্রীএম জি কুটি, এই নিউজ বীলে তা শোনানো হয়েছে অনেকক্ষণ ধরে—যেন নিউজ রীলের একটা অংশ 🕾 এটা, আকাণ-বাণীর প্রেরা একটা কথিকা কংবা আলো-চনা। অথবা বলায়েছে পারে, কপেটেরশমের প্ৰক্ষে সাফাই : লোড়ায় লীলা বায়েব উদ্দেশ্ৰ বিশিষ্ট ব্যক্তিদের শ্রুণ্ধা নিবেদনের অংশট্র ेस्त्रथस्यानः ।

১৪ জন বিকেল সাড়ে শ ব্যক্তথ-দদ্ধের আসর আরম্ভ হবার **আলে 'এক**টি বিশেষ ভোগগর' বলা **হ'ল 'ট্রাণসন্মিটারে** বিদ*্*ত স্রবর্জ ব**ন্ধ থাকার জন্য ৫টা** বেভে ১৩ মিনিট খোকে ৫টা বেজে ১৪ মিনিট প্রশিত কোনো অন্তেঠান প্রচার করা সম্ভব হয়নি, এজনা আমরা দার্যখিত।' ঠিক একট ঘোষণা আবাব শোনা গেক এই আসর শেষ হবার পরে—শাধা '৫টা বেজে ১৩ মিনিট থেকে ৫টা বেজে ১৪ মিনিটের ভায়গায় বলা হ'ল '৫টা বেলে ৩৯ লিমিট থেকে ৫**টা** বেজে ৪০ মিনিট'। ঘোষণাটায় আপত্রি কিছ, নেই কিন্তু অসতা ভাষণে ভাপতি আছে। দিব**তীয়**বাৰে ভান্তীান প্রচার বংধ ভিজা পরেয়া এক মিনিট নয়, এক মিনিট ২৫ সেকেণ্ড মতো। আরু গ্রুপদানুর ভাসকের মাথে একবার নয় দু-বাব ভাষাকীন পদাৰ বৃষ্ধ হাষ গ্ৰিয়েভিল। কিল্ড একবারের কথা ছোষণা কবা ছায়েছে, আব लक्षेत्रारहत केशा रहाल गावश **इ**र्यु**ष्ट** । ह्राल् সাঞ্<mark>ষা হয়েছে যেটা, সেটা ৪৫ সেক্ষান্ত</mark>র aग**शाव** ।



জানন্দধারার জন্তান : গত সংতাহে উত্তর কলকাতার নবজাত প্রতিষ্ঠান আনন্দদধারার সভাব্দদ তাঁদের দ্বিতীয় অধিবেশন পোশ করেন। আসর স.র্ হয় শ্রীবৃষ্ধদেব দাশগণ্ত সরোজ দিয়ে। প্রথমে কেদারা পরে দেশ এবং সর্বাশেষে খাদবাজ রাগালিত ১ংবী বাজিলে ইনি অন্তান সমাণত করেন। বর্ষাকাল বন্দের পক্ষে স্ন্সময় নয়। কিন্তু স্র নেমে যাওয়া চড়ে যাওয়া তার তহ'ড়ার অবশান্ভাবী উৎপাত সত্তেও বৃষ্ধদেববাব্ যতেটুকু বাজিয়েছিলেন যথাযথ স্রবিশ্তার, দ্বর্বিনাাস ও তানশৈলীতে নিজের স্নাম অক্ষায় রেখেছেন।

পরের অনুষ্ঠান কঠে-সঞ্গীতের।
শিক্পী প্রস্ন বন্দোপাধার। ঘনখোর
বরিষপের পটভূমিকার সঞ্গে যেন ছব্দ
লি লগেই ইনি ধরলেন গোড়-মল্লার।
শিক্পীর পরিলালিত, মধ্র কঠ, মেজাজ
মাধামের শিক্পীজনোচিত অনুরক্ষন এক
লগমার যেন বর্ষার আসর জমিরে তুলেভিলো। করেকটি ছুট্তান ও সাপটের
বাহার মনে রাথবার মত।

উভয় শিলপীর সপো উপযক্ত তবলা-সংগত করেন গোবিন্দ বসু। ইনি স্-পরিচিত শিলপী শ্যামল বসুর হাতা। এর হাতে দাপট মিছ্টতা দুই-ই আছে এবং রেওয়াল ও শিক্ষার নিন্দা **থাকলে** উচ্চমানে পেণিছতে এ'র দেবী হবে না।

সংঘ-ভারতীর চিতাশালা : সম্প্রতি
বালাগাঞ্জ শিক্ষা সদনে সংঘ-ভারতীর পক্ষ
থেকে মঞ্চম্ম কবিগ্রের চিতাশালা গাঁতিন্তা-নাটো গানের দিকটি গোতম বস্র
পরিচালনার মোটের ওপর সংস্কৃর্পেই
পরিবেশিত হয়। একক কন্তের গানে
স্শাল মলিক, পাপিয়া বাগ্চি ও অলকা
দে। সমবেত সংগীতগ্লিতে উপয্
রহাড়ার অভাবে স্বরস্কগতি ছিল না। ন্তা
আশান্রন্থ নয়। নেপথা-স্বগীত ও র্প-

जनग

সম্জা চলনসই। সরশ্রী বোব, হিমানী দেবী ও দ্বোল রানচৌধ্রীর আব্তি স্থাব্য।

সাধিনী প্রবাজিত 'গোপীচন্দ্রের সাহিনী': অন্যান্য ধারার মত বাংলাদেশের লোকগাঁতি উপাখ্যানেরও একটি নিজ্ ধারা আহে। সহস্ক সরল অনাড্ম্বর ভণ্গীতে অনেক গভীর জীবনদর্শনের অনাবাস প্রকাশ ঘটেছে, এমনই এক

শোক সংবাদ

গত ২৬শে জনুন মিত এশ্ড বোরালএর প্রবীণ অংশীদার শ্রীরাসবিহারী মিত্র
সালিসিটর তার কলকাতাম্প বাসভবনে
৭৪ বংসর বয়সে প্রলোকগমন করেন।
তিনি কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের সংস্কৃতের
একজন ঈশান স্কলার ছিলেন। তিনি
এম-এ প্রীক্ষার প্রথম শ্রেণীতে প্রথম হন



এবং এটণীশিপ পরীক্ষার বেলচেম্বার স্বর্গপদক লাভ করেন।

শ্রীমিত তাঁর স্বগ্রাম বর্ধমান জেলার চান্ডুলীতে বহু জনহিতকর প্রতিটানের সহিত বৃদ্ধ ছিলেন এবং গ্রামীণ উল্লয়নের জনা বহুবিধ কাজ করেন। মৃত্যুর পূর্ব পর্যাপত তিনি গ্রামের হাই স্কুলের সেজেটারীর পদে অধিন্ঠিত ছিলেন।

সরলতা এবং চারিত্রিক দৃঢ়তার জন। তিনি সকলের সম্মানভাঙ্গন ছিলেন।

মৃত্যুকালে তিনি স্ত্রী, তিন পত্ত, এক কন্যা এবং এক ভাই রেখে গিরেছেন।



কাহিনী হোলো বাঙালী রাজপুর গোপী-চন্দ্রর ভর্গ যৌবনে সক্ষ্যাস **গ্রহণ করবার** কাহিনী। বিষয়-গাল্ভীর্য্যে এই উপাখ্যানের একদা ভারতব্যাপী প্রসার ঘটেছিল এবং ডাঃ আশ্বতোষ ভট্টাচার্ষের মতে মাত্র ৫০ বছরেরও আগে কোলকাতা বিশ্ববিদ্যালর থেকে 'গোপীচন্দের গান' বিষয়টি উত্তর বাংলার কৃষকদের মুখ থেকে সংগৃহীত হরে প্রকাশিত হরেছিল। 'রাগিণী'র **সভারা** সর্প্রথম এই বিষয়কে নৃত্যনাট্যরূপে মণ্ডম্ম করে কলা-রাসকদের ধন্যবাদাহা কারণ এই প্রয়াস জাতীর চরেছেন। ঐতিহার প্রতি শ্রন্ধার এক উদাহরণ নিশ্চয়।

প্রথম প্ররাস অভিনশনীর হলেও
করেকটি বিষর সম্বন্ধে আমরা সংগীত ও
নৃত্য পরিচালকের দৃষ্টি আকর্ষণ করছি।
প্রথমের দিকে রাজসভা বর্গনার রাজকীর
ভাকজমক প্রদর্শনাথেই হরত তারণো
সংগতে ভারত-নাটামের অবতারণা। কিম্তু লোকগীতি নাটো আমরা লোকন্ডেরে
বিশেষ প্রকাশভগাটি দেখবার আশা করেছিলাম এবং লোক-নৃত্য ও গীতি ম্বারা
কভাবে বিষয়-গাদভীর্য বর্গিত হতে পারে,
ভারই বাপিক অনুশীলন ও চিম্বা প্রয়েজন। অবশা নৃতাকুশলীদের নৃত্য ও
প্রস্ন বন্দোপাধাারের গানের ম্বড্য রস্ন্যুলা অনস্বীকার্য।

জনান্য নৃত্যপরিকশপনায় অসিত
চট্টোপাধ্যানের কারিগরী প্রশংসনীয়। টিমওয়ার্ক পরিজ্জা। স্যৃচিচা মিচর কংওঁ
লোক-সংগীত অতাণত উপভোগা ও
চমকপ্রদ হলেও আশ্চর্য হ্বার কিছু নেই।
তিনি পরিণত শিল্পী, কণ্ঠসম্পদে দীম্তা,
যে কোনো গানকে রসোতীর্গ করা তার
পক্ষে কিছু আয়েসাধ্য বাাপার নয়।
সম্জ্বপেরিকলপনায় রুচির পরিচয় রয়েছে।

—िंচठा॰शको

অগ্রদ্ভের মঞ্জরী অপেরার সেটে জ্যোৎনা বিশ্বাস এবং উত্তমকুমার। ফটো ঃ অন্ত

(श्रकाग्रह

একটি অসামান্য আবেগপ্রবণ হিন্দী হবি

একটি বড়ো ছবির--অর্থাৎ যে-ছবিতে প্ৰকাশ্য আথিক ঝ'ুকি নেওয়া হয়েছে, বে-ছবির উপস্থাপনায় বা মাউল্টিং-এ প্রচর প্রমা অবর্ধ ও সময় বায় করা হরেছে, যে-ছবিতে বাছাই-করা শিলপী ও কলা-কুশলীর সমাবেশ ঘটানো হয়েছে এবং য়ে-ছবিকে নিমাতারা একটি মর্যাদাসম্পন্ন প্রযোজনা ব'লে মনে করেন, এমন ছবির---প্রাক-মারি প্রচার ব্যাপারে ছবির নায়ক-নায়িকার ভূমিকা গ্রহণকারী শিল্পীদের ছবিটি সম্পরেণ এবং বিশেষ ক'রে নিজেদের গ্হীত ভূমিকা সম্পর্কে লিখিত মতামত প্রকাশের রেওয়াজ আছে। ब्राष्ट्रीज् कम्बादेनन् (शाः) লিমিটেড-এর নিৰেদন, এ সংস্বারাও প্রযোজিত ও পরি-চালিত ইস্টম্যান কলারে ডোলা ছবি **দপ্ৰ' এ**মনই একটি ম্যাদাসম্পল বড়ো ছবি ব'লে এর ক্ষেত্তেও এই প্রথার ব্যতিক্রম कता इस्रोत । नासक जानील एख वरलएम ३ মিঃ স্কারাও-এর প্রথম হিন্দী চিত্র 'দপ্ৰণ''-এ যে-ব্যাপারটা সর্চেয়ে বেশী কাৰ্যকৰ ব'লে আমাৰ মনে হথেছে, হক্ষে উপভোগ। **উপাদানগ**িলর সংগ আবেগধমী নাটকের একটি স্কৌ্সমণ্বয়-সাধন। ওয়াহীদা রেতমান এবং আমার কথা বলভে গেলে বলভে দ: জানেই আমাদেব শিহিপ জীবনের কঠিনতম ভামকাগালির অনাত্মকে চিত্তি করেছি। নায়িকা ওয়াহীদা রেহমান বলেভন : ভামি 'দপ'ণ'-কে আমার জীবনের ভিন-চারটি প্রেণ্ঠ ভবির অনাতম মনে করি। আমার ভূমিকাটি অস্তান্ত বুলিক, জটিল এবং আবেগপ্রধান-শিল্পী जित्नात वाघारक **अ**कि शहरू हारलाजन সন্মুখীন হ'তে হয়েছে।ভাবনা উদ্ৰেককারী গ্রাত্বপূর্ণ বিষয়বদত হিসেবে 'দপ'ণ' সমগ্র ভারতের নারী-দশকের চিত্তে একটি বিরাট আবেদন স্থিত করবে বলে মনে হয়।

'দ্বৰ্গ' সমপ্ৰাক' আন্দের কথা. নায়িকা সুনীল দত্ত ছবিটির নায়ক ও এবং ওয়াহীদা রেহ মান যে-সব কথা বলেছেন, তা' দির্থকি সার্টিফিকেট-এ পর্যবাসত না হয়ে অক্ষরে অক্ষরে সতা বলৈ প্রতিপণ হয়েছে। আমরা তাদের সংগ্রে যোগ দিয়ে বলব "দর্পণ" চির্যাটতে নায়ক বলরাজ ও নায়িকা মাধবীর চরিত্র যে-ভাবে পরিকল্পিত হয়েছে এবং তাদের সম্পর্কাকে যে উচ্চ আদশে বেশ্যে চিন্তিত করা হয়েছে, হিণ্দী চলচ্চিয়ের ইতিহাসে তার তুলনা অল্পই মেলে। এবং পার্শ্ব-



চরিত্র দ্বিট—পেয়ারে বিক্সাওয়ালা ও বিজ্ঞানীর কাষ্যকলাপ ও তাদের প্রতি আক্রমণের দ্শাগালির আত্যদিতকতা বা বাড়াবাড়ি অংশগালি বাদ দিলে এমন পরিক্ষাে অথচ স্বাংশে হৃদয়গ্রাহী ছবি হিন্দী চলচ্চিত্র জগতে অলপই নিমিতি হ্য়েছে। এমন কি, ছবিচিকে বিয়োগাশত বা ট্রাজিভিতে শেষ ক'রে পরিচালক-প্রযোজক স্থাবাও অভ্যন্ত অসম-সাহসিকভারই পরিচয় দিয়েছেন; যদিও সকল দ্বংথের অবসানে নারিকা বদি নারকের ধর্মপত্যীর্পে স্থী জীবন-যাপনে অশ্রসর হ'ত, তাহ'লে সেটাই হ'ত কাহিনীর ব্ভিগ্রাহা পরিস্মাণিত।

কাহিনীতে নারীকে দপণের সপ্তে তুলনা করা হয়েছে। বলা হয়েছে, প্রু, বের সং এবং অসং কার্য নারীতে প্রতিফলিত হয়। প্র, বের সদ্পাণাবলী নারীর, পী দপণিকে উজ্জাল ও দ্বাতিময় করে, আবার তার একটি অসংকার্য তাকে তেওে ট্রুক্রো টুক্রো করে ফেলে। 'দপ্ণ'-এর নারিকা
যাধবীর জীবনে একটি দুর্বল মুহুতে
ভাজার জরদেব ্ব-ভাষিত্র রজনী ভোকে
এনেছিলেন, বেচারা সারাজীবন ধরে ভার
থেকে নিজ্ঞানত হ্বার সাধনা করে বে
পরমক্ষণে আলোকিত প্রা লোকের
আভাসটুকু পেল, সেইক্ষণে সম্ভবত
অকলপ্নীয় আন্দের গপ্নে সে আছারা
হয়ে চলে গড়ল মুড়ার কোলে; বলরাজের
প্রতি ভার শেষ কথা 'দুর্নেছিলাম ভগবান
আছেন, তাকৈ এই প্রথম দেখছি মান্বের
দেহে'--আয়াদের কানে এখনও বাজহে।

সতিটে স্মরণীর অভিনয় করেছেন স্নীল দক্ত এবং ওয়াহ্ীদা রেহমান र्धार्यित नात्रक रमताब ଓ नात्रिका प्राथवीत ভূমিকায়। এমন সংযত, আভিশ্যাবজিত অথচ অণ্ডরস্পণী অভিনয় কচিং দেখতে পাওয়া যায় চলচ্চিত্রের মাধ্যমে। ঠিক বিপরীতধ্যী অভিনয় করেছেন পিতিতা নি,ধার সদন'-এর রিক্সাওয়ালা পেয়ারে এবং প্রথমে উচ্চ্ভথলম্বভাবা বারনারী ও পরে 'পেয়ারে'র প্রেমিকা ও স্তাী বিজলীর ভূমিকায় বথাক্রমে জগদীপ ও সোনিয়া সাহনী। সম্ভবত অধ্ধকারের পাশে আলো रतभी भूभारत वरलहे नाशक-नाशिका स्थरक সম্প্ৰ বিপ্ৰতিধ্য় ি এই হাল্কা আতি-শ্যাপ**্র্ণ অভিনয়ের প্রবতনা করেছে**ন পরিচালক স্কারাও। পারিবারিক সম্মান সম্বদ্ধে সঞ্গ অথচ একরাতের দ্বলি মহেতে পদস্থলনের জনো অন্তরে অন্-তশ্ত, সমাতন নাায়-জনাায় বোধের প্রতি আন্বাভাপার্থ গরিত ডাক্তার জনদেবের ভূমিকাটিকে বাস্তবভাৱে র্পায়িত করেছেন চরিত্রাভিনেতা রেহমান। অপরাপর ভূমিকায় স্কোচনা (বলরাজের মা সরস্বতী), ললিতা পাওয়ার (দাণিমা), অচলা সচদেব (নারী আশ্রমের অধ্যক্ষা), সীমা (ডাঃ জয়দেরের স্ত্রী সংখ্যা) ও বেবরী গদদী (বিশন্) বিশেষ উল্লেখযোগ্য অভিনয় করেছেন।

ছবিটিকে কলাকৌশালের বিভিন্ন দিক
দিয়ে আশ্চরভাবে নিথাত দলা যায়। কি
বহিদ্যা গ্রহণে, কি অশ্চন্যা রচনা ও
গ্রহণে আলোকচিয়শিশালী ও শিশাপ
নিদেশিকের একটি স্থান যোগাযোগ লকা
করা যায়। মনে হয়, দ্ভানে যেন একাছ
হয়ে পরিচালক-প্রেভিন। ছবির সংলাপ ও গান
রচনার প্রতি বিশেষ যতা নিয়েছেন পশিভত
মুখরাম, শর্মা এবং আনন্দ বন্ধী। লতা
মগেশকার গতি 'মুখে পারে করণেকা
হল্ নাহাী' এবং 'এক গগনবারাজা, এক
চমনকারাণী' এবং মানা দে গতি 'দপ্প
মঠেন বোলে—গান তিনখানি স্প্রহত,
দুগাতি এবং জনপ্রি হবার সম্ভাবনাপ্ণা।

এ, স্বারাও পরিচালিত ও প্রয়েজিত দর্শণ আদশ কহিনী চিত্রুপে হিন্দী চলচ্চিত্রজগতে একটি ন্তন দিগণেত্র সম্ধান দিয়েছে।

ফিম্মন্ ডিভিসন সম্প্রতি তিনটি অভাত চিত্তাকৰ্ষক তথ্যচিত্ৰ নিবেদন করেছেল ঃ (३) वि छोडीक इं श्रीमठ्यवटभात मानिनाः-রের সমিকটে টোটোপাড়ার মার ৪৬৫ জন বিশিষ্ট 'টোটো' নামে একটি উপজাতি বাস করে। তাদেরই সরক জীবনবারা, প্রাচীনকাল বেকে প্রচলিত আচার-ব্যবহার, বিবাহাণি সামাজিক উৎসৰ এবং সম্ভাতার সংস্পাদে ভাবের জীবনে যে অবশাস্ভাবী পরিবর্তন এনে বাছে, ভাও-এই রঙীন ছবিটির মধ্যে দেখানো ইয়েছে। আজ খেকে অন্তত পাচিল বছর আলে পাচ্চয়বল্য সরকারের হরে নাটাকার মদমধ রার 'টোটোপাড়ায় আসুম' বলে বে ছবিটি করেছিলেন, সেই ছবিটি সাদা-কালোর ভোলা হলেও ভার মধ্যে অলপ মানবিক আবেদন ছিল না। (২) এক্সমেলন ঃ নাগরিক জীবনের উপর এकप्रि नहीक्काम्लक हिन्छ। भएतात्र यायमारा কেন্দ্রে একটি পার্কের ভিতরে এক পরী ম্তি । এই ম্তিটি বেন নিলিপ্তভাবে প্রত্যক্ষ করছে নাগরিক সভ্যতাকে একেবারে ভার থেকে গভীর রাত্র পর্যাত। **উ(৩)**ইল্কোরারি ঃ ইলোরার কৈলাশ মান্দিরে
অত্যম শভাব্দীতে খোদিত মা্ভিট্রে
অবলম্বন করে মন্যাজীবনের চারাটি প্রধান
আবেগ সম্পর্কে বিশেলবদী চিচ্চ। এই
স্বর্পদীর্ঘ তথাচিচ্চ ভিনটিরই ভাবেধন
যথেগট।

রো হট রো কোল্ড

এক প্রোচ্ দশপতি (বিবি এশ্ডারসন ও গানের রোজদটাশ্ড) আর এক প্রণারীন্দালের (রোজদেরী ডেক্সটার ও গানিরেনা গোন্দা) পারস্পরিক নৈপারীতা, প্রবৃত্তির ভাড়েনা ইতাাদি বড়রিপরে গান্দা নিরে ক্রেরসেড ভাগিসনির ছবি 'রো হট রো কোন্ডা-এর কাহনীর বিশ্তার। নানন্দাশ্যকর সিন্দালের এক ছোট দ্বীপে একদল ট্রিকটালের সপ্রশা উপরোভ চারজন বেড়াতে গোছে। ভর্মণ প্রপারীন্সল প্রেমের ব্যাপারে বড় প্রগাক, অন দিকে প্রোচ্চ দশভির ক্রামী ভর্মেনাক

শুভারম্ভ বৃহষ্পতিবার ২রা জুল।ই

দৈবত ভূমিকায় সৌমিত্ত অপণা অভিনীত



(याजी - वाथा - शूर्ण - वात्वाहाया - शयसा

স্চিচা - মারাপ্রে - পারিজাত - পার্যতী - জয়য় - গোরী - য়য়য় নৈহাটি সিনেমা - মানসী - কৈয়ী - ডটিনী - রূপমহল (বর্ধমান) - চিচা (আসানসোল তরা জ্বাই থেকে ঃ ম্পালিনী - রমা - রুপয়ী (গোহাটি) - জরুবা (পাড়ে) নিমুদ্ত শাস্ত, যুভিপ্রবণ, শিক্ষক। স্থা কিছু বাধদেওরা প্রেমের জোরার। তর্গ প্রদানীযুগনের বেপরোয়া উদ্দামতার আকৃষ্ট হর সে। বাধ বুঝি ভেশে যেতে চার। তাই ভার সপ্রে সাঁতার কাটতে বা নাচতে তার থারাপ লাগে না। স্বামীর মনে ঈর্যার জন্ম হর। বর্ষের দরজা তেঙে স্বামী এক রাগ্রে স্থার কাছে নিজেকে উজাড় করে দিতে চার, কিন্তু প্রত্যাখ্যাত হয় সে। ঈর্যা থেকে ঘ্ণা আসে তাঁর মনে। কামের অক্ষমতা পাশাপাশি ক্রোধের জন্ম দের স্বামীর মনে। একদিন স্নানের শেষে তর্গ প্রেমিকাকে দেখা যার রক্তান্ত অবস্থার প্রাণহানি দেহে।

ছবির শ্রেতে যে উদ্দাম গতি
ছিল প্রমোদ-তরণীর, ফেরার পথে তা
লাশত ধীর। দ্-পাশের দ্টি ট্লে বসে
থাকে দ্ই প্রেমিকা আর স্ত্রী, মুথে কারো
কথা নেই। পরিচালক ভান্সিনি অত্যত স্মুদ্দর ভুগগীতে চিত্রায়িত করেছেন এই
কাহিনীকে। অংধকার রাতে যথন ভারা পাথী
দেখছে, তথন স্ত্রীর চোথ দিয়ে অতীতের



কিম্বদ•তী

নিউ এম্পাৰে ববি ৫ই সকাল ১০॥টার ব্যাজন অয়নিপাউস বিশ্ববাপার ব্ধ ২২লে সংখ্যা ৭টার

विशवस्थास याथ २२८म अन्धा ० । **० वधास्थात जीव जीवनस** ० প্ৰেশিন্শেখর পত্নী পরিচালিত রবীদ্দনাথের 'দ্মীর প্র' চিতে ন্বাগতা রাজেশ্বরী রায়চৌধ্রী এবং নিম্ ভৌমিক।



ছে'ড়া কটা দৃশ্য আবার স্বামীর মন দিরে
প্রবতী সময়ে সেই ছে'ড়া ছে'ড়া দৃশোর
প্রমিলিন পরিচালকের স্সম পরিচালনার
পরিচয় দেয়। এ ছাড়াও ছোটো ছোটো
ক্রেকটি চিত্রকলপ মনে রাথার মত।

প্রধান চারটি চরিত্রে সকলেই অভিনয় করেছেন স্কুনর, বিশেষ ভাবে প্রোচা দ্রীব চরিত্রে স্ইডেনের খাতেনামা অভিনেত্রী বিবি এন্ডারসনের নাম উল্লেখযোগা। গুয়ার্নার রাদার্সের পরিবেশনায় নিউ এন্পায়ারে ছবিখানি গত শ্রুবার মৃতি পেরেছে।

মণ্ডাভিনয়

'অনিব'াণে'র শিক্পীরা সম্প্রতি পট পড়া বারোয়ারী সামিতির প্রাংগণ শচীন ভট্টাচার্যের দুটি বলিষ্ঠ এব 'এক্লাগাড়ির ছোড়া' ও 'ভূমিকম্প' 🔊 বেশন করে**ছে**ন। নতুনের **সঞ্জে প**্রাত অবিরাম সংঘাতের পটভূমিকায় বত তীব্ৰ ক্ষাঘাত সমাজবাবস্থাকে হয়েছে 'এক্কাগাড়ির ঘোড়ায়' আর 'ভূমিব তুলে ধরেছে ঘ্ণ-ধরা এই সামা কাঠামোর ভেঙে চ্রণ-বিচ্ন হয়ে য পূর্ব মুহুতেরি এক মমান্তিক ছবি। একা িককার অভিনয়েই শিল্পীদের : চাণ্ডল্য উদ্যাম ছিল, তাই প্রয়োজনী হয় নি। প্রথম নাটকটির নিদেশিক ছি গোবিন্দ গাংগলে এবং শচীন ভটা ছিলেন 'ভূমিকদেপ'র নিদেশিনায়। বি ভূমিকায় বাঁরা ছিলেন তাঁরা হলেন স্থ লাহিড়ী, দীপ্তেশ বানাজি^ৰ, গো গাংগ্লী, চণ্ডল ভট্টাচার্য, গৌর সোম, দাস, রথীন চক্রবতীর্, সভারত গাণ্গ পরিতোষ চক্রবতী ও অনিল মণ্ডল।

মজঃফরপুরের প্রখ্যাত নাট্যের
'চতুরঙ্গে'র শিলপীরা সম্প্রতি বং'
বসুর 'পাতা ঝরে যার' ও স্যাম,
বেকেটের 'ওরেটিং ফর গোডেট' অবল
প্রদীপ বন্দেয়াপাধ্যায় রচিড 'ঈম্বর
আসছেন' নাটক দুটি অভিনর
সেখানকার নাট্যানুরাগীদের প্রশংসা ত
করেছেন। 'পাতা ঝরে যায়'তে আছে
শ্বছ জীবনদর্শনি যা ঝরে পড়েছে বস্যা
এক নিশব্দ বিকেলে এক বৃশ্ধ ও
দুবীর স্মাৃতির বাতায়ন দিয়ে। দুটি
চরিত্রের এই নাটকটিতে আশ্চর্য আ
করেছেদ দিলীপ ছোষ ও অনিমা ছো

শ্বিতীয় নাটক স্থিতরবাব আসছে ম্ল কথা হল মান্ধের জীবনের উশে





ভাছাড়া পাৰেন— + বেডিওপ্ৰান (ফিলিপস বেডিও ও গাারার্ড চেঞ্লার কিট করা) + বেফর্ড প্লেরার ও চেঞ্লার + সবরকম রেকর্ড (রেকর্ড শুর্ থেকেটার রোডে) + 'এভারেডি' ইামজিন্টর ব্যাটারী ইডাালি।

জি বজার্ম আভ কোং

নীতভাপ নিয়ন্ত্রিভ শো-ক্লম ১২, ডালহোসি জোনার ইন্ট কলিকাডা-১ ৯ ২২-৫১শ২ ৫১, থিয়েটার রোড, কলিকাডা-১৭ ৯ ৪৪-০৭৭৯

পদ্দেশালাপ লোমির চটোপাধ্যায় ও অপশা দেন।



হীনতা। আমরা সবাই অপেকা করে আছি
তাঁর জনা, অথচ আমরা কেউ জানি মা কে
সে, কি ভার রূপ। তব্ অধীর প্রতীক্ষা।
আমাদের বিশ্বাস তিনি আসবেন, কবে তা
জানি না—তবে আসবেনই। এই বন্ধবাসম্প্র নাটকটিকে অভিনয়ের মধা দিয়ে
দর্শকদের কাছে প্রাণবন্ড করে তুর্লোছলেন
শিশির দাস, ইন্দুদীপ মুখাজি, সুধীর
রায়, শামাদাস ভট্টাচার্য, স্বাধীন দাস।
দুটি নাটকেই নিদেশনার দায়িত সুক্রভাবে পালন করেন দিলীপ ঘোষ।

মরশুমী ইউনিটের শিল্পীয়া সম্প্রতি
অর্ণ বংশ্যাপাধ্যায়ের 'বশীকরণ' নাটকটি
সাফালার সংগ্য মণ্ডম্থ করেন। কাহিনীর
মধ্যে বিভিন্ন চরিত্র এবং ঘটনার সংখ্যত
থাকার ফলে নাটকীয় গতি কোথাও
প্রতিহত হয় নি। এর সংশ্য মিলেছে
শিল্পীদের আন্তরিক চরিত্রচিত্রণের প্রয়াস।
অভিনয়ের ব্যাপারে যাদের নাম সবাত্রে
উল্লেখযোগ্য তাঁরা হলে রমেন দেব, স্কুমার
পাল ও তার্ণ বল্ল্যাপাধ্যায়। অম্যান্য
চরিত্রে ছিলেন স্কুলাক পাল, মিমলি পাল,
গোবিশ্ল মাইতি, বলাই সামশ্ত, সনহ মালা,
সবল দে দীপালি চেধির্বী। আবহসংশীতে
ভয়কিষণ সম্প্রদায় প্রশংসার দাবী রাখে।

কিছ্বিদন আগে দ্বাপ্রের প্রথাত সাংশ্রুতিক সংশ্যা 'কাল্লাল' শৈলেন গর্ন-নিলোগীর ফাস' নাটকটি পরিবেশন কবল ও ডি বি ক্লাব হলে। শ্রীঅনিল বান্দো-পাধাার পরিচালিত এই নাটকের বিভিন্ন ভূমিকার ছিলেন ছরিলাস চক্রবতী, কানাণ চক্রবতী, আমতাভ গাঙাবুলী, স্বিভ সেন-

গ্ৰুত, স্বপদ চাটোজি, প্ৰলয় চক্তবতী, বিশ্লব দত্ত, বিজয় চ্যাটাজি, আসিত বাগচী, শ্বিজেন বোস, শাস্তি খোষ-দস্তিদার, বিধান মুখাজি ডিভিরথন সিনহা এবং স্বাগতা রায়।

সামভিয়ানস সংস্থা সম্প্রতি রবীন্দ্র-সরোবর মঞে অমর সেনের 'রাস্তা নির্মে' নাটকটি পরিবেশন করেছে। শ্রীসেন রোনাওড় মিচেলের 'দা রোড় ট্র রুইন' অবলম্বনে এই নাটকটি রচনা করেছেন। স্প্রযোজিত এই নাটকের কয়েকটি বিশিল্ট চরিত্রে রুপ্ দেন ঃ দীপক চক্লবতী, সোমনাথ চৌধ্রী, দেবপ্রসাদ সেনগুশ্ত, মিহির বস্কু, স্কুকমল বাানার্জি, কাজল মুখার্জি।

সম্প্রতি 'রুপশিকণী'র সদসারা মিদার্ভা থিয়েটারে 'কালিদ্দী' নাটকটি মঞ্জন্ম করেন। কয়েকটি চরিত্রে অসাধারণ নাট-নৈশ্পোর পরিচয় দেন অমরেশ ভট্টাচার্য, পাঁচুগোপাল বস্ক, দেবেন দাস, অমর ভট্টাচার্য, বাসনুদেব পোন্দার, স্ক্শীল দাস, সবিতা মুখার্জি', সাধনা পাইন, প্রতিমা পাল ও তাপসী গ্রইন।

বোশ্বাইয়ের 'সংখ্যা' সংস্থার শিল্পীরা সম্প্রতি বাদল সরকারের 'বছ্রস্তপ্রের র্শক্থা' নাটকটি মোটাম্টি সাফলোর সন্ধ্যে অভিনয় করেছেন। বাস্ব ভট্টাচার্যের নাটা পরিচালনায় স্ক্রেডম শিল্পবোধের নজীর আছে, কিন্তু মঞ্চসভ্যা, আলোকসম্পাত আরো উলত হোতে পারতো। করেছকটি ভূমিকায় বৈশিণ্টাচিছিত অভিনর্মের প্রাক্ষর রাখেন মাণিক দত্ত,

জ্যোতিম'র মুখোপাধ্যার, তর্প কুমান, স্কৃতি রারচৌধ্রী, সমর গ্ণুত, অনুরাধা চ্যাটাজি, ইন্দ্রাণী মুখাজি।

দিল্লীর বাবাবর **গোণ্ডীর নতুল লাট**ক শ্বশন সেনগ্লেডর 'কবে বলত আসংব' সম্প্রতি রাজধানীতে **অভিনীত হোল। বে** রাজনৈতিক भ्यन्त्र वाश्लादम्हणा সামাজিক জীবনকৈ প্রত্যন্ত আছিল করে ফেলছে তারই প্রেক্ষাপটে এই মার্টকটির **সংঘাত गएए উঠেছে। यहादा विराम स्माम** অভিনৰণ নেই, সংলাপও মাথে মাথে 'অতিনাটক' স্থিত করার প্রবশতাবেই স্পত করে তুলেছে। কিন্তু নিখ**্ড টিমওয়ার্** এই দুৰ'লভাকে প্ৰায় তেকে দিয়েছে, একৰা নিদেশিক অমরেশ দত্ত নিশ্চরই প্রশংসার দাবী রাখেন। বিভিন্ন **ভামকার উল্লেখনোল্য** অভিনয় করেছেন দিলীপ যোৱ, বেলা রাম, লিবদেশ্ব সরকার, অনীতা সিংহ, গোৰিক চক্রবর্ড**ী**।

রাইদেশ ঃ শ্রীউংপল দরের প্রাইদেশ নাটক মণ্ডপথ করে হাউসিং রিক্টিরেলদ ক্লাবের ৬ণ্ঠ বামিক সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠান সম্পন্ন হল। প্রাক-প্রাধীনতা ও তৎপরবর্তী-কালীন অবস্থার পটভূমিকে কেন্দ্র করেই নাটকের বিষয়বস্তৃ। নাট্যমিদেশিক শ্রীপ্রেছ-মর রায়চেধির্বীর স্নুদক্ষ পরিচালনা নাটকের প্রতিটি মৃহ্তি ও শিল্পীদের অভিনয় প্রাণবন্ধ্য হয়েছিল। বিশেষভাবে বেসম্ব শিল্পীরা দক্ষতার ছাল রাখেন, ভারা হলেন স্বাস্ত্রী কান্দ্ ভট্টাচার্য, দশিক বল্লোপাব্যায়, নির্মাল্য রায়, কাশ্ভিময় ঘোর, ন্ধান কুন্দু, কাজল সিংই।

নৰান্ধ : গত ২০ জন মধ্য কলকাতাৰ প্ৰথিতমুশা নাটাসংস্থা নৰান্ধ বীষ্ণ কৰ রাহের সভাপতিছে শৈলেশ গুৰুনিকালীৰ 'ফাস' নাটকটি দক্ষতার সন্ধো নতাজী সুকাম মধ্যে মধ্যুস্থ করেন। একক ও গল-



্ণাভাতপ-নির্মান্তভ নাটাশালা |

मकुन मार्डिक



অভিনৰ নাটকেঃ অপুৰে ব্লীকে প্ৰতি বৃহস্পতি ও শনিবার ঃ ৬৪টাট প্ৰতি ব্লিবার ও হুটির কিল ১ ৩টা ও ৬৪টাট

য় রচনা ও পরিচালনা গ্র দেবনারায়ৰ সংস্ট

হ: বাপারতে প্র
অভিত বংশবাপারায়ে অপশা দেবী খাতেল;
চটোপারায়ে নীলিমা গান, নাইডা চাইলিমানা,
সভাগ্র ভাইচার নীলিমা নান থারে
লাভা প্রেয়াংশ: বাল বালভা প্রটোপারায়;
বৈলেন রাখোপারায়ে গাঁডা বে বিশ্বস্থা বিশ্বস্থ

ক্যালকাটা আটা থিলেটারের দর্পাণে মিছিল নাটকে দীপিকা দাস এবং তর্প ঘোষাল। ফটো ঃ অমৃত



গত অভিনয়ে দিলিপব্দের নিষ্ঠা প্রশংসনীয়। নাটা নিদেশক শ্রীঅসীম সেন করেকটি উপভোগ্য নাটকীয় মৃহত্ স্থিট করে বিশেষ কৃতিপ্রের পরিচয় দেন। অভি-নয়ে সর্বাত্তে নাম উল্লেখ করতে হয় কল্যাণ সেনবরাট। তিনি চরিপ্রটিকে প্রাণবর্শত করে তোলেন। শিক্সীর বাচনভগণী ও অভিবাধ্যি স্ফর। অপর তিনটি চরিপ্রে স্ফর অভি-নয় করেন স্বপন চটোপাধ্যায়, সজল ঘোষ অমিত মল্লিক, স্বপন দাস। স্থী চরিপ্র রাণ্ বায় ও মালা দাস চরিতান্গ। আলো, আবছসংগীত, র্পসক্লা ও মঞ্সক্লা যথায়থ।

শিমান নাইকঃ 'মিনি'র বন্যা এবার তাহোলে মধ্যে এপো। মাত সাত মিনিটের নাটক। তব্ আলোর থেলা, সংঘাতের মহুত্র, চরিত্রের মুখরতা। নাটকের নাম 'ফু', লিখেছেন রমেন ভাদুড়ী। পরিবেশন করলেন, বেহালার 'ফ্রেন্ডস থিয়েটার ইউনিট'! এই 'খদে' নাটকটির রচনায় শ্রীভাদুড়ী যে মুশিস্যানার পরিচয় রাখতে পেরেছেন অতি অলপ সময়ের বাঁধনে তাতে কোন সন্দেহ নেই। প্রণব গণোপাধাারের নাটানিদেশিনাও প্রশংসার দাবী রাখে। সাত মিনিটে যে সব শিলপীরা বিভিন্ন চরিত্র হয়ে দশকদের অন্তর্গকে নাড়া দিয়েছেন তারা হোলেন গ্রেম্য শাল, পংকজ রার, মণীশ ঘোষ, প্রণব গণোপাধাার।

ভর্বে অপেরা : আগামী ২০শে জলোই সংধ্যা ৬টার বিশ্বর্পার প্রবীণ অভিনেতা ছরিপদ চট্টোপাধ্যারের একশ বছর প্তি উপলক্ষো একটি অনুষ্ঠানের বাবক্থা করা হয়েছে। অনুষ্ঠানে সভাপতি থাকবেন শ্রীদ্ধিগারঞ্জন বস্বু ও প্রধান ক্রতিথি হবেন ডাঃ আশ্বেতাৰ ভট্টাচার্য।

অনু-ঠানের অনাত্ম আকর্ষণ তর্ণ অপেরার 'লেনিন' যাত্রাভিনয়।

সমাজ দুর্পণ : চন্দননগর থিয়েটার সেন্টারের বাধিক উৎসব উপলক্ষে সম্প্রতি ন্তাগোপাল ম্মতি-মন্দিরে তর্ণ নাটাকাব দিলীপ দে'র বাস্ত্রনিষ্ঠ নাটক 'সমাজ দপ্ণ' আঁভনীত হোল। আজকের সমাজ জীবনের যে বহুমুখী সমস্যা তারই আলোয় গড়ে উঠেছে এ নাটকের তীরতম সংঘাত। প্ৰবীণ অভিনেতা পণানন ভটাচায" নাটকটির নিদে'শনায় দ্বাক্ষর রেখেছেন। পরিণত শিল্পচিশ্তার শিল্পীদের সমবেত অভিনয়ের সংঘবদ্ধতার প্রযোজনটি বৈশিষ্ট চিহ্নত হোতে পেরেছে। ক্ষেক্টি মুখাচ রত্রে বাসম্তী চ্যাটাজারী, প্রেমাংশ্বস্ও দিলীপ দে স্বচ্ছণ ও সাবলীল অভিনয় 'করেছেন। নাটকের অন্যান্য ভূমিকায় ছিলেন পাল্লালাল ভট্টাচার্য, পঞানন ভট্টাচাৰ্য, শৈলেন মুখান্দী, মূণাল দত্ত, উদয় রায়, নিতাই দত্ত, আশা দেবী, লক্ষ্মীরঞ্জন ব্যানাজী, লতা দেবী। আবহ-সংগীত স্থিতৈ ছিলেন বাস্দেব গোদ্বাম্য। অনুষ্ঠানে সভাপতি ও প্রধান অভিথির আসন অলওকৃত করেন যথাক্তমে নাটাকার দেবনারায়ণ গুণ্ত ও সাংবাদিক র্যেন্দ্র গোস্বামী।

রাজা বদল ঃ সংপ্রতি পাঞ্জাব ন্যাশনাল বাংকের কানিং স্ট্রীটম্প শাখার কমীদের উদ্যোগে শ্রীজোতু বদেনাপাধ্যারের বহু আলোচিত নাটক 'রাজা বদল' অভ্যান্ত সংস্কৃতাবে অভনীত হোলো স্টার রক্ণ-মধ্যে। নাটকের কাহিনীভাগ বর্তমানের বিতর্কিত প্রীক্ষাম্লক আখ্যানভাগে গঠিত নয়—বাংলা নাটকের চিরপরিচিত শ্বাভাবিক সমাজ-গ্রাহ্য জীবনবোধের ওপর তৈরী। সে কারণে এ নাটকের নাটকীর ভাবধারাকে স্তুর্ও স্কুলরভাবে ফুটিরে ভুলতে গোলে বে নিষ্ঠার ও লোকারত দুভিত্তিগির দরকার তা অংশগ্রহণকারী অনেক ব্যক্তির মধ্যেই পরিক্ষ্মিটিত। টিম গুরাক্ বলতে যা বোন্ধার তাও এ'দের মাঝে উচ্চ প্রশংসার দাবী রাখে। মণ্ডসক্লার ক্ষেপ্রে সামান্য চ্টি-বিচ্চিত চোথে পড়লেও মোটাম্টি পরিচ্ছর।

অভনীত চরিত্রের মধ্যে তিনকড়ি মিঞা'র চরিত্র সবচেয়ে প্রাণবন্ত ও স্বাভাবিক হ'রে ওঠে। কথা-বার্তা, ভাব-ভাগ্ণ, চাল-চলন সব কিছ্বে মধ্যে উল্লিখিত চরিত্রে শ্রীশিবদাস কুন্ডুর অভিনয় অনস্বী-कार्य छारव छळ्यात्नत দাবী রাখতে পেরেছে। 'দীপনারায়ণ'-এর ভূমিকার মানিয়ে ছ'লা শ্রীউপেন্দ্রনাথ চক্রবতীকে ভালো অভিনয়ের ক্ষেত্রে তাঁর উপস্থিতি দশকিদের আনন্দ দিয়েছে সন্দেহ নেই তবে মাঝে মাঝে অতি-নাটকীয় ব্যঞ্জনা অভিনীত **চরিত্রের স্**বাভাবিকত্বকে ক্ষুণ্ণ করেছে। শ্রীপরেশচন্দ্র দত্ত 'শেঠজী'র চরিত্রকে সহজ স্বাভাবিক করে তোলায় সচেন্ট ছিলেন এবং সেদিক দিয়ে অনেকটা সাথকিকাম হরেছেন। 'কাল', ও 'স্বল'-এর ভূমিকায় যথাক্তমে শ্রীঅবনী দত্ত ৫ শ্রীআশীষ সোম দশকদের আনন্দ দিয়েছেন। তবে 'ভজহরি' ও 'নকুল' এ দুটি চরিত্রকে আরো বেশী সাবলীল করে তোলার জনো শ্রীঅশোক বসত্ ও শ্রীঅরিন্দম সরকারের আরো অনেক সুযোগ ছিলো। স্ত্রী ভূমিকায় 'ছোলার মা'র চরি**গ**িকে ভাবগভীরঁতা ও শ্বাভাবিক্<mark>ষ'</mark>র দিক[্]দয়ে অতি অপ্রে'ভাবে ফ্রটিয়ে তুলেছেন শ্রীসমতা বন্দোপাধায়। এ'র অভিনয় আগাগোডাই দশ'কচিতকে জয় করেছে। 'রাধারাণী' চরিত্রে শ্রীতৃপিত দাসের আরো বেশী সহজ হওয়া উচিত ছিলো। তাঁর 'ময়ভয়ে'[,] জড়তার ছাপ ম্পণ্ট। অবিশ্যি 'স[ি]ারবী'র ভূমিকায় শ্রীপতুল চক্রবতারি 🗀 স্থাতিও ঐ একই ত্তিযুক্ত। এছাড়া গ্ৰগত বিচারে ব্লা-বনের ভূমিকায় শ্রীচিত্তরঞ্জন বস্কুর নাম উল্লেখ্য, অন্যান্য ভূমিকায় ছিলেন সৰ্বশ্ৰী গিরিশ ভটাচায', পঞানন ভটাচায', কুণী-ভ্ৰণ সেন, অসিত মিল্ল, প্ৰুপ রক্ষিত, পিনাকী গ্ৰহ, প্রশাস্ত ঘোষ. চক্রবর্তী, সংধীর দাস ও তর্ণ রায়। পরিবেশে বলা যায় যে, সামগ্রিক বিন্যাসে নাটকটির উপস্থাপনা আরও উচ্চমানের হোতো যাদ আবহসগাতৈ আরও পরিচ্ছন্ন হোতো।

৫ জ্লাই অণ্ধ হলে কলকাতার প্রখাত নাট্য সংস্থা শিল্প ও শিল্পী তিনটি একাংকের তৃতীয় অভিনয় পরিবেশন করবেন। নাটক তিনটি যথাক্তমে মোহিত চট্টোপাধাায়ের 'বাজপাখী', মনোজ মিহের 'কালবিহুলা' ও ক্লিফোর্ড ওলেতের ওয়েটিং ফর লেফ্টি অন্প্রাণিত 'বিজয়ের অপেকার'।

विविध সংবাদ

সম্প্রতি নাটকীয় নাটা-বারম্থা প্রতাপ-চন্দ্র মেমোরিয়াল হলে তাদের বাংসরিক অনুষ্ঠানে সুখ্যাত চর্লাচ্চকার শ্রীম্ণাল সেনকে এক সম্বর্ধনায় আপ্যায়িত করেন।

'চলচ্চিত্রে ম্ণাল সেন' সম্পকীয় আলোচনাটি বেশ কোত হলদীপক হয়। এই আলোচনায় অংশ গ্রহণ করেন সর্বস্ত্রী শেথর চট্টোপাধ্যায়, সেবারত গণেত, উৎপল চক্রতার্বি, চন্ডাদাস মুখোপাধ্যায়, শিব-শংকর দত্ত ওসংদীণ্ড চক্রবতী'। সম্বর্ধনার উত্তরে চলচ্চিত্র নিমাণের সমস্যাগর্মল তুলে ধরেন শ্রীমূণাল সেন। এই প্রসংগ্য ভূবন সেন প্রস্তৃতির ভূমিাকটি আলোচনা করেন। নাটকীয়ে তরফ থেকে শ্রীসেনকে শিল্পীর প্রতিকৃতি, একটি তাম্মফলক এবং মানপর উপহার দেওয়া হয়। এই অনুষ্ঠানে নাটকীয় সংস্থা কত'ক তাদের নবতম প্রযোজনা 'দ্বর্গাচত সংলাপ' (নাটক-নিদেশিনা—স্দুণিত চক্রবতী () অভনীত হয়।

এক শিক্ষিত য্বকের বেকার জীবনে একটি আপারেন্টমেন্ট লেটারকে কেন্দ্র করে নাটকটি জাম উঠেছে। পরিশেষে এক জোরালো বঙ্কা দানা বেংধে উঠেছে।

স্বাভাবিক সংলাপ ও বাস্তবসম্মত উপস্থাপনার মধ্য দিয়ে পরিবেশনের জন্য নাট্যকার পরিচালক শ্রীস্দ্দীশত চক্রবতী অবশাই ধনাবাদার্হা।

সাথাক অভিনয়ের জনা অমিতাভ বস্, জয়নত দাস ও স্দীপ্ত চক্রবতী প্রশংসা পাবেন।

দীপিত চট্টোপাধ্যায়ের কঠ্টন্বর সম্পর্কে সচেতন হবার অবকাশ আছে।

নাটা-পরিবেশ তৈরী করতে সংগতি ভত্তাবধানে সহায়তা দান করেছেন চম্ডা-দাস মংগাডি', হিমাংশ্ চৌধ্রী ও অমিতাত বস্।

৩৪৩ম বাবিক অধিবেশনে বে**ণ্ডাল**ফিল্ম জাণালিদ্টস্ আচ্মোসিয়েশনের
নতুন কমাকতা ও কার্যনিবাহক সমিতির
সদসার্পে নিন্দালিখিত বা**রি**গণ স্বাসম্মতিক্মে ও বিনা প্রতিন্বাদ্যতায়
নিবাচিত হয়েছেনঃ

প্রত্তপোষকগণ ঃ তৃষরেকান্তি ঘোষ, অশোককুমার সরকার।সভাপতি ঃ মন্জেন্দ্র ভঞ্জ। সহ-সভাপতি ঃ মহেন্দুনাথ সরকার এবং কালীশ মুখোপাধ্যায়। সম্পাদক: পশ্পতি চটোপাধায়। **সহঃ-সম্পাদক** : অশোক মজ্মদার এবং শৈলেশ মুখো-পাধ্যায়। কোষাধাক্ষ ় গোপাই পাল। সমিতির अपभाव म १ কার্যনিব'াহক বাগীশ্বর ঝা, সেবারত গৃহ্ণত, জ্যোতিমায় বস্রায়, রবি বস্, রঞ্জিং দত্ত, সমর বল্দ্যোপাধ্যায়, নিমলি ধর, তাপস কন্দ্যো-পাধ্যায়, রণধীর সাহিত্যাল কার, রফিক হার্ণ, নরেন্দ্রদেও তেওয়ারী, বিশ্বরঞ্জন भागाम । विक्रम मरः।

এবারের বার্লন ফিল্ম ফেস্টিভালে ভারতের পক্ষে প্রতিম্বান্দরতা সত্যান্ত্রং রায় পরিচালিত "অর্থাের দিন-রাচি" ছবিটি। এ-ছাড়াও প্রতিম্বন্দিরতার বাইরে প্রদর্শিত হ্বার জনো যাচ্ছে নারারণ চক্রবর্তী ও বিমল ভৌমিক পরিচালিত "দিবারাচির কাব্য"। এই ছবি দু'টির সংগ্য এদের সংগে সংখিলত প্রযোজক, পরিচালক ও কিছু শিল্পীরও বালিনি উৎসবে যোগ-मान्तर करना यायात यायम्था किया। এएनत জানাবার জন্যে জার্মান ফেডারাল রিপান্রিক-এর পক্ষ থেকে একটি সম্মেলনের আয়োজন করা হয়। যোগ দিয়েছিলেন সর্বশ্রী সত্যাঞ্জং রায়, অসীম দত্ত, নারায়ণ চক্রবতী, বিমল ভৌমিক, বসতত চৌধ্রী, রবি শ্রেন্দ্র চট্টোপাধ্যায় প্রভৃতি।

চলচ্চিত্র জগতের অনাতম পুরোধা চিত্রাচার প্রমথেশ বড়ুয়ার ক্ষ্টিত বাংলা-দেশে জাগরুক রাখা ও তার প্রতি প্রখা নিবেদনের উদ্দেশ্যে প্রম্থেশ বড়্যা
মেমোরিরাল কমিটি' দামে একটি সংক্থা
তৈরীর সংবাদ পাওরা গেছে। সবস্ত্রী স্কালীল
মজ্মদার (সভাপতি), বাগাঁশ্বর ঝা (সহসভাপতি), প্রথব রার (উপদেশ্টা), স্কুত্রকুমার দাস (সক্ষাদক), স্নালাস্দ্র দাস
(কোষাধ্যক) ও অমিতাভ সেন (জনসংবাগ
আধিকারিক)। ডাঃ বিশ্বনাথ মন্ডল, ডাঃ
স্কালিত হাজরা, সবস্ত্রী সমর বানালার্গ,
দ্ভেদন্ ছোর শিবাজী সেন দিলার্গ,
কল্যাণ বস্ শৈক্ষানন্দ চাটাজি, বর্শ বস্ত্র,
কল্যাণ বস্ শৈক্ষানন্দ চাটাজি, বর্শ বস্ত্র,
কল্যাণ বস্ শেক্ষানন্দ চাটাজি, বর্শ বস্ত্র,
কল্যাণ বস্ শেক্ষানন্দ চাটাজি, ইন্দ্রভূষণ গোস্বামী, ক্যুল পাকড়াদা, গোপাল
মুখাজি, মুকুলেশ্বর নিয়োগ্যী ও বিরক্ষাপ্রস্থা রার এই কমিটিতে আছেন।

মিলনী পাঠাগার গত ৯ থেকে ১৪ মে—ছ'দিনবাপী প্রতিযোগিতামূলক উৎসব অনুষ্ঠিত হল ধ্পগুড়ি কাব হলে ম্থানীর মিলনী পাঠাগারের অন্টাদশ প্রতিমা

আমাদের সময়ের সবচেয়ে স্মরণীয় চিত্র প্রাদশিত হচেছ

শুক্রবার ৩রা জুলাই থেকে

যে রোম্যান্স ভেসে গিয়েছিল বিনাট এক চান ভূমির মধ্য দিয়ে...



শ্বাসে সালোজ কুসার জন্মন একালন এর রাম শর্মা জন্মন কল্যাণজী আলন্দতী: দাবন পিকার আ নি একালন

ଘ(ଏସୀ - (ଖଣ୍ଡା - (ହଣ୍ଡ - ଯୁଗ୍ରାସି*)*

(বাতান্ক্ল বিলাসবহলে প্রেক্ষাগ্হসমূহ)

খ্রি - রাগ্রি বংগ্রাসী - ন্যাশনাল - অজস্তা - অশোক

অন্ত্রপূর্ণা - লীলা - শ্রীলক্ষ্মী - অন্বাধা (দ্রগাপ্র) - এলফিনটেটন (পাটনা)

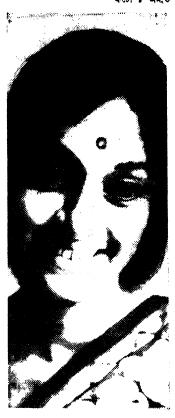
বাৰিকী উপলক্ষে। রবীন্দ্র দিবস, নজর্ক বিষস, স্কান্ড দিবস, লেনিন দিবস, গণ-সংক্ষাত দিবস ও প্রস্কার বিতরণী দিবস-রূপে এবারের উংসব উদযাপিত হয়। ভূরাসেরি মধ্যে ধ্পগন্ডির মিলনী পাঠা-গারই একমার সংক্ষা যে যথেন্ট ঝানি নিম্নে প্রচুর প্রতিক্লাতার মধ্যে জেলাভিত্তিক আব্তর, প্রকংধ ও কবিতা রচনা, বিতক্ উপান্ধত বল্কুতা এবং নাটক প্রতিযোগিতা স্কুক্তারে পরিচালিত করতে পেরেছে।

সমান্তি দিবসে প্রস্কার বিতরণী সভায় পৌরোহিতা করেন উৎসব কমিটির সভাপতি শ্রীনিমলিকুমার সরকার। পাঠা-গারের সম্পাদক শ্রীতপন চট্টোপাধ্যায় বার্ষিক কার্যবিবরণী পাঠ করেন; সভাপতি শ্রীস্বেশ্চন্দ্র দে উপস্থিত সকলকে ধনাবাদ জানান। শ্রীস্বৃদর্শন নন্দ্রী, বি ডি ও প্রধান আতিথির আসন গ্রহণ করেন এবং প্রেস্কার বিতরণ করেন। প্রস্কার বিতরণের পর প্রতিযোগিতায় প্রথম প্রস্কারপ্রাপত নাটা-সংম্থা অগ্রদ্রত মধ্যুম্থ করেন তরণে নাটাকার অনিল অধিকারীর 'জনতার আদালতে' নাটকটি।

बान, छरनव : वाश्लादमरणत छत्। याम् क्रवरम् व निरंत्र गठि याम् नः भ्या বে•গল ম্যাজিক সাকেলি-এর সভা এবং সভ্যাগণ আচার্য প্রফল্লচন্দ্র রায় শিলপ ও বিজ্ঞানভবন আয়োজিত কলকাতা যাদ্যবের সামনে অনুষ্ঠিত বিজ্ঞান-প্রদর্শনীতে এক যাদ্র উৎসব-এর আয়োজন করেছিলেন। বাদ্য উৎসবের উদ্বোধন করলেন শ্রীসমুচারত্ব **ভট্টাচার্য। সভাপতি এবং প্রধান অতিথি** হিসেবে উপন্থিত ছিলেন যথাক্রমে চিত্র-সাংবাদি**ক শ্রীধীরেন মল্লিক এবং প্রব**ীণ **ষাদ্যকর · ক্যান্তিকি চট্টোপাধ্যা**য় (কে সি)। বেপাল ম্যাজিক সাকেলি-এর সভাপতি আন্তর্জাতিক থ্যাতিসম্পন্ন যাদ্যকর দি গ্রেট **प्राणीम এই** शाम् উष्प्रत रकन कहा अवर সাকেনি কেন গড়া, সে সম্বর্ণধ এক মনোজ **ভাষণ দেন।** হাদ টংসবে অংশ নেন সাকেলি-এর সভাপতি যাদ্কর দি গ্রেট স্পীল, বেতাল ভটু, শৈলেশ্বর, এস[ি]প সরকার, হিমাংশ্লেখর, কুমারী স্মিতা, সমীরণ।

শিশালী শত ১৬ জান अन्धराय **স্টাডেন্ট** হলে এক মনোজ্ঞ অন্ত্রানের মাধ্য ম দিশারী সংস্থা অপেশাদার নাটা-গোষ্ঠী উচ্চাপা সপাতি ও যাত্রাজগতের বিভিন্ন শিল্পীদের প্রদক্ত করেন। অমতবাজার পতিকার সম্পাদক শ্রীত্যার-কাশ্তি ঘোষ অনুষ্ঠানের পৌরোহিতা **করেন। প্রধান অতিথির**্পে উপ**স্থিত ছিলেন শ্রীদেবনারারণ** গ**্রুত। অতীত** দিনের মণ্ডালিক্সী শ্রীমতী রেণ্ডবালা সত্থ প্রস্কার বিতরণ করেন। সভাপতি শ্রীঘোষ বাঙলা দেশের শিল্পচর্চার প্রচার ও প্রসারে দিশারীর ভূমিকা বিশেলঘণ করে বলেন, অতীতেও আমন্ত্রা শিল্প-প্রতিভাষ মৃণ্ধ হয়েছি। **আমরা সেদিন এ'দের প্রস্কৃত করিনি,**

য'ৃই বন্দ্যোপাধ্যায় ফটো ঃ অমতে



তবে সম্মান দিয়েছি। আজকের দিনে শিলপ্রচার যেমন প্রসার ঘটছে, তেমনি এইসব পর্রুকারে এ'রা উৎসাহও প্রচুর। প্রধান অতিথি নাটাকার শ্রীগঞ্জে অতীত ও বর্তমান যুগের নাটাধারার ইতি-হাস বর্ণনা করতে গিয়ে বলেন, আঘাদের দেশের যা সমস্যা তাই দিয়ে নাটককে ভরিয়ে **তুলতে হবে। আজকে**র নাট**্দেশ**কে वालक करा करतक किना एम्पल श्रव। সাংবাদিক শ্রীঅর্ণ বাগচী বিদেশী ভাল নাটক অভিনয় করার স্বপক্ষে স্দীর্ঘ **করেন। সংস্থার সভাপ**িত শ্রীদ^{্বি}ক্ষণারঞ্জন বস**ু প্রাতিবাদের** অভাবে আমরা পরদপরকে ভালবাসতে ভূলে গেছি-তাইতো এত গোলমাল। ন্তা ও সংগীত আমাদের দেশেব ঐতিহ্য। সংগীত জগতে শ্যানেলা জগছে। তাই বাঙলার সংগীত সম্পদকে ধংসের হাত থেকে বাঁচানোর জনা সংগতি সমাজের আচার্য স্থানীয়দের সেই শ্যাওলা পরিষ্কার করতে হবে। যাত্রা সে-তো অনেক আগেই চৈতনাদেবের আমলে শরে; হয়েছে। কিন্তু আজকের যাতায় এমন স্কুর অভিনয় হতে পারে ভারতেও অবাঞ্চ লাগে।

শ্রীমতী রেণ্বালা সূথ কলেন, সাংবাদিকরা প্রবীণ শিলপীদের জনসমক্ষে তলে ধরাব যে উদ্যোগ নিয়েছেন তাতে আমি কৃতজ্ঞ। শ্রীমতী সূখ সংশ্বার পক্ষ থেকে ১৯৬৯ সালের নাটক ও যাহায় শ্রেষ্ট প্রযোজক, পরিচালক, নাট্যকার, অভিনেতা, অভিনেতা, ও উচ্চাল্য-সংগতি শিল্পীদের হাতে এ্যাওয়ার্ড তুলে দেন। অনুষ্ঠানের শেষে সংগতিলে,ষ্ঠানে অংশ নেন চন্দনা মুখার্জি, সনুবোধ রায়, প্রতাপ রায়, জয়ন্তী সেন, ঝর্ণা রায়, শামল রায়টোধ্রী, বগলা মুখার্জি, প্রভৃতি। সকলকে ধন্যবাদ জানান রমেন ছোধ।

शानाहार्य नम्दर्धमा नका .

গিরিশ নাট্য সংসদ-এর পক্ষ থেকে উত্তর কলিকাতার বহু প্রথ্যাত ও বিশিষ্ট স্ধীব্দের উপস্থিতিতে গত ১২ জন শ্রুকার সমধ্যায় ৪৩।২,, রাজা রাজবঞ্চভ স্মীটম্থ ভবনে কলকাতার প্রখাত কবিরাজ শ্রীহের=বনাথ শাস্তী মহোদয়কে তাঁর 'প্রাণাচাষ'' উপাধি প্রাণিতর জন্য সম্বধিতি করা হয়। এই অনুষ্ঠানের উদ্বোধন করেন সংগতি। চার্য জরকৃষ্ণ সানালে ও পৌরোহিত 🕌 করেন প্রথাত আইনবিদ শ্রীরমণীমোহনী কর। সংসদ সচিব শ্রীধীরেন্দ্রনাথ চক্রবতী 🖁 সভায় জানান যে, ধন্বত্রী জয়ন্ত মহোৎস্ব ! উপলক্ষে শ্রীবিদ্দাবৈদ্য পরিষদের দিল্লী? পরিষদ ক**ড়'ক ভারত** ও র্ভাধবেশনে -সিংহলের যে সভেরোজন খ্যাতকীতি কবি-রাজকে এই প্রাণাচার্য উপাধিতে সম্বর্ধিত করা ছয়, শ্রীহেরম্বনাথ শাস্ত্রী তাঁদের অনাতম। আয়ুৰেদি চচাঁহ কবিরাজ মহা-শ্যের সাধনার কথা শ্রন্ধার স্থেগ স্মরণ-যোগা। সংসদ-এর পক্ষ থেকে কবিরাজ মহা-শয়কে মানপত্র দ্বারা অভিনাদত করাহয়:

সম্বর্ধনার উত্তরে কবিরাজ মহাশয় অতি স্ক্রে ভাবে আয়ুরেদির প্রসারের জন্য যে চেণ্টা একনিষ্ঠ ভাবে করে আসংছন তা বিশেলখণ ও ব্যাখ্যা করেন। তিনি বলেন যে আয়ুবেদের মূলভিত্তিকে আধুনিক বিজ্ঞান-সম্মত পর্ন্ধতিতে সকলের গ্রহণযোগ্য সহজ ও সরল ভাবে বা^লা ও প্রয়োগ করে আয়ুরেণ্দের প্রচার াশার ও গবেষণা কার্যে সচেণ্ট হতে হ**ে**। মানব কল্যাণ্ট আয়,বে'দের মূল লক্ষ্য, সেই লক্ষ্যে আবি-চলিত থেকে ডিনি সকলের সেবা ও নিরাময় করতে চির্নদ্রন সচেণ্ট থাকবেন। বংগীং আয়ুবেদি মহা-সুমলনের বৃত্মান ও প্রাক্তন সভাপতি শ্রীরামকৃষ্ণ শাস্ত্রী ও শ্রীঅমশারণ সেন্ডাঃ ধীরেন্দুনাথ বংল্লা-পাধ্যায়, শ্রীঅমিয়কুমার গৃহে, শ্রীজগদ্ধারী-কুমার বন্দোপাধায়ে প্রমুখ বিশিষ্ট ব্যক্তিগণ কবিরাজ মহাশয়ের গুণবালীর কথা উল্লেখ করে ভাষণ দেন। পরে সংগতিান্তান হয়।

সারা আকাশ' ভার্মানীতে—বাস্
চ্যাটার্জি পরিচালিত পরীক্ষাম্লক হিদ্দী
ছবি 'সারা আকাশ' পঃ জার্মানীর 'রেকলিনঘাউসেন' চলচ্চিত্র উৎসবে ভারতের এক
মধ্যবিত্ত পবিবারের বাদত্তব কাহিনী
ছবিটিতে বিধ্ত। পরিচালক শ্রীচাটার্জি
অতাদ্ত দক্ষতার সংগ্রা মাত প্রণিল দিনে
সম্প্র আগ্রায় আউটডোরে ছবিটির কাল
করেছেন। হিদ্দী চিত্রকাত্ত 'সারা আক্রেঙ্কা

ইউরোপের ছবি : ভিন্ন রীতি

সৈকত ভট্টাচার্য

সাম্প্রতিক রাজনৈতিক সাহিত্যে ও াচিতে 'জেড' একটি উল্লেখযোগ্য স[্]ন্ট। িসলিকস রচিত 'জেড'-এর কাহিনী ণত হয়েছে জার্জি লামরাকিসের হতা-্স্য অবলম্বনে। এই রাজনৈতিক খানের াছনে ছিল বহু দিনের পর্লেশী যভয়ত। িলশ কর্ণধার থেসোলোনিক ও উত্তর 'সর ইন্সপেক্টের জেনারেল গেনভারমেস ্রাকিস হতার সংশ্যে প্রতাক্ষভাবে জডিত লন। লাম<u>রাকিসের মৃত্যু গ্রীসবাসী</u>কৈ কদতব্ধ করে দিয়েছিল। লামরা কস লেন গ্রীদের খ্যাতনামা চিকিৎসক। [†]ড়াবিদ হিসাবেও তার খ্যাতি ছিল। ন ছিলেন যুবসমাজের আদর্শ। পিতে-,সে তার ক্রিনিকের দ্বার গরীব দুঃখীর না থাকত সর্বাদাই উন্মান্ত। গ্রীসের শান্তি-ফাজের তিনি ছিলেন নায়ক। লাম-্যাকিস অসাধারণ সাংগঠনিক ক্ষমতার মধিকারী ছিলেন। তাঁর মৃত্যু খ্রসমাজকে াদশাহার। করে দেয়। দশ বছরের ভানপন্থী দরকাবের পত্ন ঘটল আবিলমেবট। লাম-इाकिटभव वार्य वर्व याद्य आस्मालन । शर्छ উঠল। লেখক ভর্মসলিকস লামরাকিসের হত্য তদ্ত, পলিশী যড়যন্ত্র ও প্রশাসনিক দ্রণীতির ওপরই গ্রুড় আরোপ করেছেন। বই ট বৈ রাজ ১৯৬৬ খং। এই প্রশ্ব ভাগিলিকসের অক্লান্ত প্রম ও নিষ্ঠার প্রতীক, লামর্রাক্সের প্রতি শ্রন্থার নিদশন ৷ লাম-ল্রাক্সের আদর্শ গ্রীসের যুবসমাজকে বিশেষভাবে অন^{ুপ্রাণি}ত করেছে। লাম-ত্র।কিন্ন অমর। তাই গ্রেথর নামকরণ 'জেড' (২) বিশেষ সাথাক**াপ্রণ। 'জেড'-এর অথ** 'সে জীবত'। এই জটিল রাজনৈতিক তথা-সম্বলিত কাহিনীক চলচ্চিত্রায়নে তর্ণ পরিচালক কোণ্টাগ্রাতাস অসাধারণ কৃতিত্ব প্রেপ্তেম। চলচ্চিত্রের খাতিরে স্বাভাবিক কারণেই পরিচালক এই সাদীর্ঘ গ্রন্থের বহালাংশ বজ'ন করেছেন এবং ভাতে কাহিনীর মূল সূর যেমন আক্ষুণ্ন রয়েছে, তেম্ন চিত্রন টার গণে ছবিটি পেয়েছে তীর নাটাগতি। প্রতিটি ঘটনা নিখ',তভাবে ফ.টে উঠেছে প্রতিটি চরিত্র জীবনত। ইভাস মন-টানোকে লামরাকিসের চরিত্রে চমংকার ননিয়েছে। তিনি অভিনয়ও করেছেন প্রাণ দেলে। তার সংগ্র সমান তাল রেখে গ্রেছন ফরাসী অভিনেতা জ'লাই বিজই পার্বালক সারাজটা কিফের প্রসি কউটার সাংবাদিকের চরিত্রটিও অতানত সান্দরভাবে র পায়িত হয়েছে। 'জেড' ইউরোপ ও আমে-রিকায় যেখানেই মৃত্তি পেয়েছে সাড়া জাগিয়েছে। গত কান উৎসবে 'জেড' বিশেষ

এশংসিত ও পারুকুত হয়। মারি পাবার সংখ্য সংখ্য সব্যৱই বিশেষ জনপ্রিয়তা অর্জন করে। পরিচালক কোস্টাগ্রাভাস ও কাহিনীকার ভাসিলিকস দ্রজনেই তিন বছর ধরে নিবাসিত। সামরিক শাসিত গ্রীসে এদেব প্রবেশ নিষেধ। ছবিটি আলজেরিয়াতে তোলা হয়েছে। গ্রীস সরকার ছবিটি প্রদর্শনের অনুমতি দেন নি। লাতিন আর্শেরকা— যেখানে আজ রাজনৈতিক ছবির বনা৷ বইছে সেখানেও 'জেড'-এর প্রবেশাধিকার নেই। কিন্ত সরকারী নিষেধাজ্ঞ। 'জেড'-এর সম্মান ও জনপ্রিয়তা স্পর্শ করতে পার্রেন। শ্রেণ্ঠ বিদেশী চিত্র হিসাবে আমেরিকার অঞ্কার পেণ্ডেছে ডি সিকা ফেলিনি, আশ্তনিভনি ভিস্কাশ্তির প্রভাবমার যে কজন ইতালীয় পরিচালক সম্প্রতি খ্যাতি অর্জন করেছেন তার। হলেন মাকো বেলচিও, বেরনাডো বেওলাচি ও এডোয়ারডো ব্রুনো এবং এরা সবাই রাজনৈতিক বিষয়বস্তু নিয়ে ছবি করছেন। চলচ্চিত্রায়নে কিছু ডিসিকা ও রোজিলিনির 'নববাস্তববাদ' ঘে'বা হলেও এরা আন্ত্রনিভান ও ফেলিনির কম্পনাজগত থেকে সরে এসেছেন কঠিন বাস্তবে। অনেক (तम्पी प्राक्षाद्वम भाना, एषद कथा वना, छन । ইতালীর রাজনৈতিক দাবাথেলাকে তীর ক্ষাঘাত করেছেন। দুনীতির মুখ্যেস থালে দিয়েছন। কল্পিত কাহিনী অবলম্ব'ন বোমান্টিক ছবি তুলতে এবা মোটেই ইচ্ছাক নন। রাজনৈতিক বিষয়বস্তু নিয়ে সমাজ-সচেতন ছবি তোলার দিকেই এরা উৎসাহী।

আঠাশ বছরের বেলচিতর প্রথম ছবি এ ফিফ্ট ইন দি পকেট' ইতালীর সমা*জ*-বাবস্থার দুনীতির দলিল। ইতালীর পালামেন্টের কজন সদস্য চেট্টা করেছিলেন যেন চিত্রটি প্রদর্শনৈর অনুমতি না পায়। অনেক ঝামেলার পর ছবিটি মৃত্তি পেল, আর সংগ্রে সংগ্রেই পেল জনসাধারণের দ্বতঃ-ম্ফার্ক অভিনন্দন। দেশেবিদেশে উচ্চ প্রশংসা ল।ভ করল তর্ণ পরিচাল'কর প্রথম দঃসাহসিক স্থিচিহসাবে। শ্রেষ্ঠ 500-নাটোর জনা ইতালীর অস্কার দেওয়া হল বেলচিওকে। দ্বিতীয় ছবিতে বেলচিও হলেন আরও দৃঃসাহসী। ছবিটি 'চায়না ইজ নিয়ার'। জটিল বাজনৈতিক মতবাদের বিদ্রান্তিকর বিশেলষণ। আদশ'হণীনতা, নতন প্থবীর দবংন ও মোহভংগ হল ছবিটির বঞ্জা। মধাবিত্ত ঘরের দুই ভাই ও এক বোন কবিনীর মখোচরিত।

বেংলচিও মনে কাবন রাজনৈতিক বিষর-বংজু নিয়েই তিনি ছবি করে যাবেন। জ্ঞান-সাধারণকে সজাগ করার শ্রেষ্ঠ মাধাম চল-



জেড লুই বিশ্তিগা

ফিব্ৰে তিনি তার রাজনৈতিক চিন্তা**র প্রতি**-ফলন হিসাবে ব্যবহার করতে চান। পূর্ব-স্বীদের প্রসংখ্য তিনি বলেন ভি**সকাশ্তির** প্রথম জীবনের দু-একটা ছবি তার **প্রিয়.** তবে ভিসকান্তি এখন পথত্রণ্ট এবং তীর ছবিও বৈশিশ্টাহীন। ফেলিনি সম্পকে বলেন, একেবারে অসহ্য, দশ মিনটের বেশী দেখতে পারি না তার ছবি। **আন্তনিওনিও** খাব একটা পছন্দ নয়। তর্ণ পরিচালক-গণের মধ্যে বেতলাচি ও বানা সম্বশ্ধে তিনি উচ্চ ধারণা পোষণ করেন। বেরলাচির 'বিফর দি বিভালউসন তার প্রিয় ছবি। **রানো** ইতালীর বিখ্যাত চলচ্চিত্র পত্রিকা 'ফিল্ম-ক্রিটকার প্রকাশক ও সম্পাদক। চলচ্চিত্র বিষয়ক গ্রন্থ রচনায় তিনি বিশেষ কৃতিত দেখিয়েছেন। গতবার বালিন উৎসবে ভার কাহিনীচিত্র 'জেলারিয়াস ডেজ' বিতকে'র ঝড় তুলেছিল। একদল য**্বকের রাজনৈতিক** কাল্ডকারখান। ছবিটিতে স্থান পেন্থেছে। ইতালীর রাজনৈতিক ও সমাজবাকশার তিনি ভীব সমাপোচক।

বহু-বিতর্কিত জাল্মকগদার রাজনৈতিক চলচ্চিত্রব একজন দিকপাল। ফিল্ল সোসাইটি থেকে শর্র করে ইউনিভাসিটি কাফে পদ •ত আতেলেকচ্য়াল য্র-সংপ্রদায়ের চলচ্চিত্রালোচনার প্রধান বিষয় গদারের ছবি। 'লা চিনোয়া' থেকে গদারের চলচ্চিত্রচিন্তা একটা বিশেষ দিকে মোড় নিয়েছে। 'লা চিনোয়াই' গদারের প্রথম বাজ-নিতিক ছবি। 'লা চিনোয়াই' গদারের প্রথম বাজ-

একি **প্রশ্কা**র পাওয়া সত্ত্বে ইউরোপে বিশেষ কোন প্রতিক্রিয়া স্থান্ট করতে সক্ষম হয়ন। ব্রুরান্টের পরিবেশক ছবিটি कानिएकानिका विश्वविकानस्य अन्धनीत ৰাক্ত্মা করেন এবং জ'ল,কগদার প্রতিটি শোতে উপস্থিত থাকেন ও ছারদের সংগ্র লা**লোচনার** যোগ দেন। সিনেমাংস্কু ছাত্র-**ছাত্রী**রা চেয়ে[°]ছলেন সিনেমা আর্ট সম্বন্ধে **ৰিছ**ে শ্ন'ত। কিব্তু আজকাল গদার বিশ্বাসই করতে চান না আট বলে কিছা আছে। তিনি উৎসাহের সংশ্য রাজনীতি नित्त चामाहना करतरहर्ने चग्गेत भत गर्गा थटत, विकक्ष हर्णाकश निरम्भ नवः। कानिस्कानिसा विश्वविद्यालायात साहता 'ला हिरनाशा'रक जामित्रारह्म। 可可止代码代码7万字 ক সৈত্ব আন্টার-গ্রাউন্ড **ऋाश्वा** निक 135 লিখেছেন---"আমি প্রেল আহার মড অসেকেই সিরিয়াসলি ভাষন স্কাল্কগদার কোন অংশে সার্চে বা **ज्याचिक्त रहास क्या गर्न।" बाक्टो**लिक চি**ণ্ডাধারায় কালিফোনিরার ছাত্ত ও** সাংবা-मि**टकंब मरश्न समारत**त निरम्भय भार्थाका राज्या দেয়**লি। প্রখ্যাত ভকুমেন্টা**রিন্ট সোল লানড় यिमि शिराजन कारमोत कीवनी তাবজামনুরে **ছবি ভূচেল খ্যাত্তি অজনি করেছেন, 'রাজনীতি** ভ চলচিত্ত' আলোচনা প্রসংগ্র তিনি গণাক্তে বলেম, 'আমরা মনে করি না আপনার

জন্ম মশুলা ক্ষিত্র ব্যব্দ সোডা ক্রিস ব্যব্দ সোডা ক্রিস মেডার্টিন সামার, জি, কর রোড, কনি- ৪ ছবি একটা আরক্ষেত্র শেষ বরং বলা হৈতে পারে আরক্ষেত্র শ্রুর। বিশ্ববী রাজনীতিবিদ্ ও বিশ্ববী চলচ্চিত্রজারদের পক্ষে এই ছবির মূল্য অসীম। আন্দের কল্পনাশন্তির বিশ্তার ছবির মাধ্যমে।

আপনি কি চলচ্চিত্রকে বিশ্ববের হাতিহার হিসাবে বাবহার করতে চান র প্রশানর উত্তরে গদার বলেন, "আমি মনে করি চলচ্চিত্র মাধ্যমে বিশ্বর সম্ভব। আমার হাতে বন্দাক নেই। থাকলে হয়ত বা বন্ধাকেই ্লী করে বসতাম, কারণ আন্দেয়াপেরে সঠিক বাবহার আমি জানি না। আমি বিশ্বাস করি চলচ্চিত্রই আমার অস্ত্র এবং এই চলচ্চিত্র মাধ্যমকে আমি সলক্ষ্য বিশ্বাস করেতে চাই।"

'লা চি:নয়া'র পর '**উইক্সেন্ড'** 1 বিতকের ঝড় উঠেছে। উইক্সেন্ডে রাজপথে দ্বেশ্তবেশে গাড়ী চলে। প্রাণ হারায় অসংখা। কিন্দু গতি ক্ৰমশাই বেডে চলেছে। প্ৰাণের চেয়ে গ**িতর মূল্য বেশাী। গদার** ৰেভাবে মোটরের মিছিল ও দৃর্ঘটিনা চিত্রাহিত করে-ছেন তা চলচিত্রের ইতিহাসে অভিনব। রাস্তার দুখারে দুর্ঘাটনায় নিহত দেহগুলো যেন প্রকৃতিকে শোভাম শ্ডত করেছে। এক-দিকে রভাক দেহের ছড়াছড়ি আনু পাশে সীমাহীন সব্জ প্রান্তর। ூர் বৈপরীত্য অসাধারণ। স্বাভাবিকতা ও ঘটনার সাম্প্রসা উইক্রেন্ডের অনেক ক্ষেত্রেই নেই: এবং এ ব্যাপারে গদার যতটা ইচ্ছাকুতভাবে উদাসীন, বুণ্ধিজীবি দর্শকরা নিশ্চয়ই ততটা নন। উইক্যেকেড় নৃশংসতা মাঝে মাঝে সীমা ছাড়িয়ে গেছে কিল্ড গদারের মতে এই হল আধুনিক সভাতার স্নাটাগের।

পরের ছবি 'ওয়ান পলাস ওয়ান' বা ভার পরের ছবি 'দি গে নোরিং'রে ঘটেছে প্রোনো সংলাপের প্নবাব্যক্তি। কাছিনী প্রায় একই, শুদ্ধ পরিবেশে হয়ত বা কিছুটা অভিনবত্ব আছে, যেমন ওয়ান প্লাস ওয়ানের দৃশ্যপট জাড়ে আছে পরিত্যক্ত ভান গাড়ীর সমাধি—যার অর্থ হল বৃজ্ফা সমাজে শেষ অবস্থান।

াদ গে নোরিং'য়ে মুখ্য চরিত্রে রয়েছে একজন তর্গ এমিল রুসোও একজ পেণ্ডিসা লুমুম্বা। প্রারিসের কাফে। বস্তব্য ঃ মার্কস্ ভিয়েংনাম, চে গাভেরা, ছার বিপলব। প্রা ঘণ্টা ধরে তর্ণ রুসো ও তর্ণী ল্মুম্ব মধ্যে রাজনীতি নিয়ে আলোচনা হল সারা ছবিটি জাড়ে আছে শা্ধা সংলাপ নাজেল ভাগ আন্দোলনের হোতা ছবিকে এককালে যে শিলপসৌন্দর্য ও স্বতঃ ×ফ্ড'ফাছিল আজ তাসম্পূৰ্ণ বিলীন কিন্তু তব্ভু আজভ তিনি জনপ্রিয়তাং অদিবতীয়। আগামী ছবি 'ইস্ট উইস্ড সমা•তপ্রায় । চিত্রনাটা त्रह्ना পাারিসের বিশ্লবণী ছাত্রনেত। কো বাণিডট

পূর্ব ইউরোপের পরিচালকরা ঘাদকে কশাঘাত করতে কু•ঠাবোধ কবছেন 🐗 কোন সমাজব্যবস্থাই যে জুটিহীন নয় এট ভা**র সবচে**য়ে বড় প্রনাণ। চেক, হাজেগর[†] যুগোশলাভ পরিচালকগণের আধুনিকতঃ স্থিটগুলো ভূম্পী প্রশংসার দাবী করতে পারে। চেক ছবিতে দেখতে পাওয়া সাক্ষ প্রতীকের ব্যবহার, রাজনীতি অধিকাং ক্ষেত্রেই পরোক্ষ রয়েছে। কল্ডু যুগোশলার প্রচালকগণ সোজাস্ত্রি স্বদেশের বাজ নীতিকে আক্রমণ করেছেন। তর্ণ পরি চালকরা একটা বিশেষ মত ও পথ অবলম্ব ছবি কর/ছন। এর স্বাই ক্যারশ দ**ুঃসাহসী। এবং যে**ভাবে নিজের দেশে রাজনীতি ও সমাজনাবস্থাকে বাংগ একের পর এক ছবি তুলে মাণ্ড্র ত তলনাহীন। গত বালিনি উৎসবের শ্রে<u>ণ</u> পুরস্কার বিজয়ী সিহককে প্রথম কাঁহনী চিত্র 'আর্র'ল ওয়াক'স' সারা ইউরোপ জ্বা বুণিধজীবী মহলে যে আলোড়ন স্থি করেছে তা পূর্ব ইউরোপে সাম্প্রতিক কোন ছবির পঞ্চেই সম্ভব ২য়নি। 'অলি ভুয়ার্ক'সে'র নায়িকা ধুগোশ্লাভা নতুন প্রিবীর স্বন্ধ দেখে। মার্কসের স্বন্ধ্র সফল বরতে বন্দপরিকর। যুংগাশ্লাভা সঙ্গে রয়েছে ভার তিন পর্ব্যবন্ধ,। কিন্ যখন বিশ্লবের সময় ঘনিয়ে এল, তিন বন্ধ কাদ্শা হল।বকুতা কেউ কম रभग्नीन প্রতিজ্ঞান্ত কেউ কম করেনি কিন্তু দ্রের রইল আসেল সময়ে। বংধুদের বিশ্বাস ঘাতকতা সরলমনা যুগোশলভাকে 418 স্মাঘান্ত করল। সে ব্যথতি।ই ভেঙে 97.15 ভীর মানসিক যন্ত্রায় সে ছটফট করতে থাকে। বন্ধুরা হারা হজা দেখছিল এবার এগিয়ে এশ। যুগোশ্লাভাকে যক্ত্রণা 7473 চিরদিনের জনা মাত্রি দিল তার দেছে পেট্রন দিয়ে আগনে ধরিয়ে। *লেলিহান বহিং* বহিময়ী খ্লোশ্লাভা ধারে ধারে মিলিল গেল। বিশ্লব বার্থ হল, যুগোশলাভার নতঃ প্রথিবীর স্বংনও বার্থ হল, যুগোধলাক্রার নতুন প্থিবীর স্বংন যাংগাস্লাভিয়াথে এখনও যারা দেখেন, তার পরিণতি বার্থ'তা ও মোহভুজা। রাজনীতিতে সারল **७ व्यक्तिय कान ग्रामा तिहै।**'



বিশ্ব কাপ ব্লেজিলেরই

मक्य वन

আছরা বলি ছেজিল। স্বদেশবাদীরা,
ভাসিল। ভেজিলের কোনো থেলোছাড়ের
গায়ের ট্রাফ' সাটের ওপরকার ছাপও
ভাসিল। মেকসিকো থেকে নতুন রাজধানী
ভাসিলিয়ায় অথবা রিও ডি জেনেরোতে
যৌদন ফুটবলের 'সোনার পরীটিকে' হাতে
নিয়ে কোচ মারিও জাগালো ও কাপেটন
কালাস আলেবাটো দলবল নিয়ে পেশিছলেন
স্কোন তন অক্ষরের ওই নাম ল্লাসিলই
আলপাশের বাতাস ভরিরে তুলেছিল।
ভানির উনা ভালের তর্জা লীরে
উঠে মাকাল চিয়ে ফেলেছিল। হাজাবো
কপ্টের উথালপাশাল! প্রত্যক্ষ সাক্ষী নই।
ভব্ ব্রহতে পারি যে, সে উল্ফাদনা গভারিভার বাহতে।থানি।

কিন্দু রাগিলিয়া বা রিও ডি জেনেরোর মাথার ওপরকার আকাশ কডোট,কু! ওই আকাশ কি রাসিল বা রেজিলের মহিমাধরে রাথতে পারে? রাজশহর রাসিলিয়া অথবা রিও ডি জেনেরোর হাদের সীমানা ছাড়িয়ে রেজিশ আজ ভড়িয়ে পড়েছে সারা ফ্টবল দ্নিয়ার মহাকাশে। তিন অক্সরের ছোট নাম বেজিশ, কিন্দু ব্যাণিততে কভোখানি! কান, বিনা গাঁও ধ্যমন নেই. তেমনি আধ্নিক ফ্টবলে রেজিল ছাড়া অনা নামওব্ঝি আর কিছা নেই।

কথাটা কি মিথো? গত এক যুগের ইতিহাস উল্টে দেখন। ১৯৫৮ খেকে এই ১৯৭০-- দীঘ' বারে। বছরে ব্রেজিলই বিশ্ব ফুটবলে প্রথম প্রুষ, প্রায় সব'লভিমান। বারো বছরে বিশ্ব কাপ ফা্টবলের চারটি অন্পান হয়েছে। তার তিন্টিতেই রেজিলের জয়জয়কার। অবশিশ্ট লাকেন মাত্র একবারের জনোই ব্রেজিল কোণঠাসা। কিশ্চু ভাও অনা পঞ্চাদর ক্রীড়া-দক্ষতার চাপে নয়, তাদের গা-জোয়ারীর গ্রুডামীতে। ১৯৬৬ সালে হালে পানি পাবে না জেনেই অনা অনা পক্ষরা রেজিলের স্থেগ খেলতে চায়নি। চেয়েছিল 'সন্তাট' পেলের পায়ের হাডগালি টাকরো টাকরো করে দিয়ে রেফিলকে হাতশন্তি করে তুলতে। সে এক ভ্রমনা চক্রান্ত। ফুটবলের অগুগতির ইতিহাসে তা এক অন্ধকারাজ্ঞর লগন। ওই মুহুতের কথা আমরা যতো ভূলে যেতে পারি ভভোই মধাল।

আশার কথা, মেকসিকোতে এবার বিশ্ব কাপ ফা্টবলের যে অন্তাম হয়ে গৈল, তার বিবরণ ইংলাজের আন্নোজনের (১৯৬৬) দৃঃদবংশকে জুলারে দিতে বংগালী সাহায্য করেছে। অশোজন আচরণের জন্ম এবার একজন খেলোয়াড়কেও মাঠ থেকে বার করে দিতে হয়নি। অথচ ১৯৬৬-তে রেফারীরা প্রম সহিষ্ণু ও অমাশীলের ভূমিকা নিতে চেরেও নয়ু নয় করে জন-পাঁচেক থেলোয়াড়কে মাঠ ছেড়ে বাবার

নিদেশি দিতে বাধ্য হয়েছিলেন। এই ছিসাব থেকেই জন্মান করা যান্ন যে, চার বছরের ফাকে বিশেবর প্রথম সারির ফ্টবল থেলোরাড়দের মনোভাব বদলেছে। নৈতিক দার-দারিক্ষ সংবব্ধে তারা আগের চেয়ে সচেতন ইয়েছেন। বেপরোয়া গা-জোয়ারীর আফ্যালন ঘটানোর চেয়ে তাদের নজর এখন থেলার দিকে।

ভারা খেলতে চেয়েছেন বলেই আজটেক,
ভালিসকো, মিউনিসিপালে, ডোসাল ও
ভারাগোজা, মেকসিকোর এই পাঁচটি
ক্টেডিয়াম আধ্নিক ফুটবলের ঐশ্বর্ধে
এবং প্রভিডাবান খেলোয়াড্দের ব্যক্তিগত
কটিে কৃতিদ্বে সাক্ষরে ভরে উঠেছিল।
ও'লা বলি খেলডে মা চাইতেম, না খেলে
লাখি, ঘ'্রি, কিল, চড় ছ'ড্ডে যদি পেলে,
ভাইরিজনহো, টোসটাও, কিউবিলান, লাইগি
ম্লার, লাইগি রিভাবে অকেন্ডা করে
দিতে চাইতেম, ভাহলে নিশ্চরই ফুটবলের
কাত-শিক্পিদের মাধা ও পারের কাক্ষের
অল্পকরণে মেকসিকোর পাঁচটি কেটিভায়াম
সম্প্র হয়ে উঠতো না। যেমন ওঠেন
১৯৬৬-তে ইংলাপ্ডের মাঠ-ম্যানানগ্রিল।

চ্ছোল্ড পরের ষোলটি দলই সাধ্যাসের খেলার খেলা খেলতে চেয়েছে। রক্ষণে তাদের মন ছিল, কিল্ডু সর্বক্ষেত্রে কেউই (উর্গ্যে, ইতালীও নয়) নিজেকে রক্ষণ-ব্যুহের মধ্যে গ্রিয়ে নিতে চায়নি। ^{ইংরাঞ্চীতে} যাকে বলে কিপিং দি সাটার্সা ডাউন, অর্থাৎ দরজা-জানালায় খিল এণ্টে বসে থাকার মতো নেতিমনের প্রভাব কোনে: দলকেই গিলে ফেলেনি। মৃত্ত মনে, স্ফ্ভি-भाशा भिकास निराहे भवाई (थलाइ) धदः ওইভাবে খেলতে খেলতে জিতে এবং হেরেও আনন্দ পেয়েছে তারা। হেরেও আনন্দ: কথাটায় অবিশ্বাস করার কিছুটু নেই। ফাইনালে হেরে ইতালীর খেলোয়াড়ের অথবা কোয়াটার ফাইনালে হারা পার্টি हैश्नर-७त स्थलाशास्त्रता म्दरमर्ग फिन्नस স্বদেশবাসীদের কেউ ভাদের দুয়ো দেননি। বরং ও'দের ভূমিকার যথার্থ মালায়েনে প্রাপ। প্রশংসাই তাদের উপহার দিয়েছেন।

বেলোয়াড় এবং দেশ-বিদেশের ফুটবল
অন্বাগীরা নেতিমনের প্রভাব থেকে বোধহয় ক্রমণাই মৃত্তি পাছেন। এটা স্লক্ষণ।
১৯৬৬-তে রেজিল সেরে যাওয়ার পর কে
বা কারা যেন রিও ডি কেনেরোর রাজপথে
দলের মানেকার ভিসেনটি ফিওলার জনে
একটি ফাসির মণ্ড তৈরি করেছিল। কিন্তু
কই, আগের বারের চানিপয়ন ইংলন্ড এবারে কোয়াটার ফাইনালের গণডী
ডিঙোতে না পারলেও তো কেউ দলের
মানেকার সারে আল্ফে রামজের মুন্ডপাত্
করতে চাইছে না? তাই বলছিলাম,
ভাতীয়ভাবোধের প্রেরণা এবং দল স্মর্থনের লোড়ামার ব্রচাপা প্রভাব ম বুর ফ্টেন্স আন্মাণীয়া ব্রিথ বাস্তব পরিন্ধিতির নাড়ি টেপার আগ্রহ দেখাতে চাইছেম। তারা এই তত্ত্বে মর্মার্থ অনুধাবনে সমিন্ঠ হরে উঠহেন হে, ধেলার জিং বেছন হারও তেছানি স্তি। যে হারে সেই জিততে পালে। হার যার ম্বের হাসি কেড়ে নিতে পারে না, জ্তোর আনশ্য তারই সবচেয়ে সাচা।

মেকসিকোয় বহিশটি থেলার গোল হয়েছে প'চানন্দইটি। শৃধ্য দৃশ্ আপলাবার **সংকলেপ স্বাই यদি শৃধ্ आहेबाট यौधात्र** চেণ্টার আত্মসমর্পণ করতো, ভাহলে কি এতা গোল হোভো? আর এতো গোল লা হলে আমরাই বাকি করে ব্রেওসম থে. বিশ্ব কাপ ফুটবলের নবম অনুষ্ঠানটি উপভোগা হয়েছে? সব না হলেও গোলই তো ফ টবলের অনেকখান। গোলেই গণ্ড-গোল, আবার গোলই আনন্দ, উত্তেজনার উৎস। আনন্দ, উত্তেজনাই (এবং গণ্ড-গোলও) প্রাণের উষ্ণ উপাদান। উত্তেজনার হেতুটিকে হত্যা করে আনদের উৎসের ওপরে যদি কবরের মাটি চাপা দেওয়া হর, তাহলে গোলবন্ধিত সেই থেলায় থাকেই বা কি! যা অবশিষ্ট পড়ে থাকে তা দিয়ে মন যেমন ভরে না, তেমনি নয়নের ছপ্তিও कि चर्छ ?

এক পর্যারে পাচানস্বাহীট গোল বিশ্ব কাপ ফুটবলে রেক্ড নর কিন্তু। তবে বেকডের কাছাকাছি বটে। আরও গোল (১০৫) হরে-ছিল ১৯৫৪-তে যেবার জ্লে বির কাপ পায় পশ্চিম জার্মানী হাপ্পেরীক্ষে হারিয়ে এবং (১২৯টি) ১৯৫৮ সালে।

গোল গোল বলে আকাশ ফাটাড়ে গিছে
ফোকসিকানদের গলা চিরে বেশ্বছয় ছেব্ছে
ইয়ে গিয়েছিল। বহিলটি খেলার মধ্যে গোল
হয়নি এমন মাাচের সংখ্যা মাল তিনটি—
লীগ পর্যায়ে রালিয়া ক্যায় মেকসিকো এবং
ইতালী বনাম উর্গারে, বনাম ইজবারেল।
সেমি-ফাইনাল এবং ফাইনালের তিনটি
খেলার প্রবেকটিতেই আন্মে চারটি কাশ্ব
গোল হয়েছে এবং চারটি কোয়াটার ফাইন্যালের একটি ভাজা বাকী কাটিছেই গোল
হয়েছে পচি বা ভ্রোধিক।

এবারের সেরা খেলা সেমি-ফাইনালে ইতালী বনাম প²শ্চম জামনিনী। শ্ৰে**লার** নিম্পতি হয় অভিবিত্ত সময়ে। অভিবিত্ত সময়ের আধ্যণ্টায় নয় নম করে পাঁচটি পোল হয়েছে। এই য়াচে ইডাঙ্গী না পশ্বিয়া জায়ানীর, কোন্য দল আন্পোতিক হিসেবে বেশি ভাল থেলেছে, তার ছিদ্দেব-নিকেলে रमधक्य एक छेटे अथा बाजासीत, भाषा स्ट भाक्तत श्रीभक्ताकता श्राष्ट्राः। कात्रम् निर्ह्णानम দক্ষতা এবং প্রাণশক্তিকে উভাদে করে দিয়ে ইতালী ও পশ্চিম জামানিরি যে স্ব খেলোয়াড় মেকসিকোর মাঠে প্রতিক্ষণই নাটক গড়ায়ে সফল হয়েছেন, তাবা প্রত্যেকই ভাল খেলেছেন। দ্রিগার ফাটবল অনুরাগীবা তাঁদের কাছে কৃত্তর। তারা শাখা ফুটবলের ক্রীভাগত ঐশবয়া বাড়ামনি জীৱা মান্তব্যু শ্রীর ও মুক্রে বিরাট কর্মক্ষতার সম্ভাবনার হুদিশ দিরে

সমকালীন সাজের চোধ ফুটিয়ে দিয়েছেন। শ্ৰেছি, পশ্চিম জার্মাদী বনাম ইতালীর **७२ माराज्य रणवार्ष्य पर्' शस्क्र क्राक्स**क শেলোরাড়কে দৈহিক স্থেতা ছিল না। কান্র হাত ভেঙেছিল, কার্র বা পা হরেছিল খেড়ি। কেউ বা প্রায় অঠেতনা। কিন্তু এতো স্ব অস্বিধা সভেও ও'রা কেউই রশে ভঙ্গ দিতে চার্নান। ওপের মানসিকতা অপরাজের, সন্দেহ নেই। শেষ-শ্বতি ব্ৰেছেন, লড়েছেন, দম-দেওয়া কলের প্রতুলের মতো ১২০ মিনিট পরিশ্রম **করেছেন। ও'দের রভ জল-করা মেহনতের** স্ত্রে আন্তর্জাতিক ফুটবল ইতিহাসে নতুন অধ্যার সংযোজিত হয়েছে-যে-অধ্যায়ে স্পন্টাক্ষরে লেখা : ওই খেলাই শতাব্দীর সেরা ম্যাচ।

দলগত শোভন আচরণে পের ুএবার 'ফেয়ার তেল কাপ' পেয়েছে। মেকসিকোয় বিশ্ব কাপ ফুটবল আর্ডের মুখে এক সর্বনাশা ভূমিকদেপ পের্র জনজীবনে মহা বিপর্যার দেখা দিয়েছিল। এই প্রলথের পরিপ্রেক্ষিতে মাথা ঠিক রেখে খেলে পের্র খেলোয়াড়েরা মেকসিভান দর্শককুল এবং সেই সংশ্যে অন্য ম্লুকের ক্রীড়ান্রাগীদের সহান্ভূতি ও প্রশংসা দুই আদায় করতে পেরেছেন। স্ব'সম্মত রায়ে এবং অন্-ষ্ঠানিক স্বীকৃতিতে এবারের যোলটি প্রতি-যোগীর মধ্যে পেরুর জনপ্রিয়তাই সবচেয়েও বেশি। কিল্ড ফেয়ার তেল কাপ না পেয়েও পশ্চিম জামানী কোয়াটার ফাইনালে ইংল-ডকে হারিয়ে এবং সেমি-ফাইনালে ইতালীর কাছেহেরে যে স্নাম ও জনপ্রিয়তা আরুন করেছে তার পরিমাণও কিছ, নয়। কোয়ার্টার ফাইনাল ও সেমি-ফাইনাল, পরপর দ্বি গ্রুত্বপূর্ণ ম্যাচে পশ্চিম জার্মানীর খেলোয়াড়দের যে পরীকার মুখে গিয়ে দড়াতে হয়েছিল, সেই কঠিন-তম পরীক্ষার কণ্টিপাথরে এবার অন্য পক্ষকে ঘষামাজা করার অবকাশ ঘটেনি। হারে জিতে কিই বা আসে বায়! পশ্চিম জার্মানী ইতালীর কাছে ৩--৪ গোলে হেরেছে। তাতে কি! কেই বা এই হারের লেখা মনে রাখতে চেয়েছে? হেরেও যদি কোনো দল বিজয়ীর প্রাপ্য অভিনন্দন পেয়ে থাকে তাহলে সে দলটি হলো ওই পশ্চিন জামানীই। ইতালীর জনো দঃখ হয়! এই দল্টির পিছনে এতোটুক জনসমর্থন ছিল না। কোরাটার ফাইনালে মেকসিকোকে হারিয়ে দিতেই ইতালী হয়ে ওঠে মেকসিকান দশকিকুলের দ্ব' চোখের বিষ। জনমতের ব্যাপক বিরোধিতা সত্তেও ইতালী যে ফাইনালে উঠেছে তা যে মস্তো কৃতিম্বে পরিচায়ক তাতে কোনোই সন্দেহ

ইতালীর ল্ইগি বিভা, বোনিগদেগনা, ভোমেনখিনি, ব্রেজিলের জাইবিজিদহেশ, বিভেলিনো, গারসন, টোসটাও, পশ্চিম জামানীর জার্ড ম্বার ও বেনহার্ড লিব্ডা, পের্বুর কিউবিলাস এবং আরও দ্ব'-একজন হলেন ফ্টবলের আকাদে নতুন ক্ষত। ইতালীর ফেচেটি, জামানীর

ইউ সিলার, ইংলন্ডের ববি ব্র ও চালটন
এবং ফ্টেবলের 'রাজরাজেশ্বর' পেলের
ছেড়ে-বাওয়া আসন ও'রা অধিকার করলেন
বলে। বলতে পারা বায় বে, একটি ব্রুগ
শেষ হতে চলায় নতুন ফ্লের স্টুনা
অত্যাসম। এই তো স্বাভাবিক। অন্তবৌবন কেউ নন। কালের নিরিখে আজকের
রাজ্ঞাকে আগামীকাল ফকির বনে বেতে হবে
অথবা আজকের নায়ককে নতুন কালের
নায়কের আবিভাবের পথ ছেড়ে দাঁড়াতেই
হবে। পেলে-চালটিনেরা সরে বাবেনই।
ও'দের জায়গা দখলে বারা আসছেন, তাঁদের
কি মেকসিকোর মাঠে-ময়দাদে দেখতে
পাওয়া গেল না?

ফ্টবলের সোনার পরীকে চিরদিনের জনো রেজিল ঘরে তুলতে পারায় আনতকাতিক ফ্টবলে পরীক্ষা-নিরীক্ষার ক্ষেত্রে
দক্ষিণ মার্কিন মন্ডলের অভিমতটিই আবার
প্রাধানা পেরেছে। এই মতে প্রথা-প্রকরণের
উধের্ব খেলোয়াড়দের ঠাই দেওয়া হয়।
পরীক্ষিত তত্ত্বের দাম আছে সন্দেহ নেই,
কিল্তু মানুবের সম্ভাবনার কি শেষ আছে?
রেজিল বা দক্ষিণ মার্কিনমন্ডলের অন্য দেশগ্লি খেলোয়াড়দের অবাধ স্বাধীনতা
দিয়েছে। তাঁদের স্কানশীল প্রতিভাকে প্রথা
প্রকরণের রক্কচক্ষ্ণ শাসানিতে বেধে রাখতে
চার্মন।

ভেজিল দলের প্রশিক্ষক মাবিও
জাগালো ঠিক সেই কথাই বলেছেন।
জাগালো ১৯৫৮ ও ১৯৬২-তে বিশ্ববিজয়ী রেজিল দলের খেলায়াড় ছিলেন।
রেজিলের সাফল্য সম্পর্কে তার মত কি
জিজ্ঞাসা করা হলে জাগালো বলেন,
খেলতে নেমে আমরা বলের দিকে দ্লি
রেখেই একাগ্র হতে চাই। মানুষ বা
আগালক রক্ষণনীতির তেমন ধরে ধারি না।
এইখানেই আমাদের সংগ্র ইউরোপীয়
ফ্টবলের পার্থকা।
ত্ব কানিষ্কেই তো খেলা। বলের সংগ্র
অপ্যাপনা খেকেই ফ্টবল খেলার অনা াকরণ
আপনা থেকেই ফ্টবল খেলার অনা াকরণ
আপনা থেকেই ফ্টবল খেলার অনা াকরণ
আমার আনা যায়। করা যায় অনেক
মুশ্কিলের আসান।

অন্য প্রথা-প্রকরণ ও প্রস্কৃতি সম্পর্কে প্রথমে মাথা না ঘামিরে রেজিল আগেভাগেই বলটি নিজ্ঞুত্ব সম্পত্তিতে পরিণত করতে চেয়েছে। পেরেছেও বহুলাংশে। তাই পরের কাজ-গ্লি করে তুলতে রেজিলের আটকার্যান।

বিজ্ঞ আধ্নিক ফ্টবলে একটি
পরীক্ষারই প্রতীক। এবং সে পরীক্ষার
সাথকিতা সম্পকে ক্রমশঃই একটি সর্বসম্মত ধারণা দানা বেধে উঠতে। যেতেত্ব
পরীক্ষিত সম্বল হাতে করেই দক্ষিণ মাকিন
মন্ডলের প্রতিনিধিরা অন্যুন পাঁচবার বিশ্ব
কাপ ক্লয় করেছে। পক্ষান্তরে আন্পাতিক
হিসাবে সংখ্যায় অনেক বেশি হয়েও
ইউরোপীর প্রতিযোগীরা অতোবার বিশ্ব
কাপ ক্লয় করতে পারেনি। তারা আরও
গারেনি দক্ষিণ মার্কিন ম্কুকে গিয়ে বিশ্ব

ফুটবলের আসরে গ্রেণ্ডের সন্মান অর্জন করতে। কিপ্তু রোজল পেরেছে স্কৃন্র ইউরোপে গিয়ের সর্বোভ্তম প্রাত্যোগার ভূমকায় নিজেকে প্রাভিত্তিত করতে। ফুটবলে ইউরোপ ও দক্ষিণ মাকিন মন্ডলের মধ্যে কৃতিত্ব, কীতির ম্ল্যায়নে কোন্ পক্ষ প্রেণ্ডিতর এবং কোন্ পক্ষ অন্স্ত রীতি ১,ড়ান্ড সাফলোর পথে সহায়ক সে সম্পর্কে নিন্দর্যই এডোদিনে স্বাই নিঃসন্দেহ হতে পেরে। হ।

ফুটবলে পথিকুৎ ইউরোপের সংশ দক্ষিণ মার্কিন মন্ডলের চিদ্তাধারার পাথ'কা কোথায় এবং কভোটা মৌল, রে:জল তা ব্যবিয়ে দিয়েছে।

ইউরোপ জোর দেয় খেলোয়াড়দের শারীরিক সক্ষমতা ও প্রস্তৃতি এবং খেল।র <mark>প্রথাপ্রকরণ, টে</mark>কনিকের ওপর। রেজিল শারীরিক স্পাতি ও প্রথাপ্রকরণের আশীর্বাদকে অস্বীকার না করেও খেলো-য়াড়দের ব্যক্তিগত দক্ষতাকে অনেক বেশি ম্ল্যবান বলে মেনে নিয়েছে। ব্ৰেজিলীয় মতে, দক্ষতার বিকলপ নেই। ইউরোপ অনুশীলন ও পরিশ্রমে, ছক কাটা পদ্ধতি অনুসরণে খেলোয়াড়দের যক্তবং নিখ'ত করতে চেয়েছে। কিন্তু যন্তের সামর্থা কি সীমাবন্ধ ময়? তাই রেজিল কাটা ছকের বাঁধন কেটে খেলোয়াড়দের সামনের দিকে আরও এগোতে এবং স্জনধমিতায় তানের **উৎসাহ যোগাতে চেয়েছে। রেজিল খেলো**-शाफ्राफ्त करलेत भारत विस्तारिक निवास करा अपन-আটিস্টি' বা জাতখিলপী হিসেবে গড়তে চেয়েছে। গড়েওছে।

এক যুগের মধ্যে রেজিল তাই পেলে, গারিনচা, ভাভা, ডিডি, জাল্মা সানটোস, জাগালো, জাইরজিনহা, টোসটাপ প্রমাথের মতো প্রতিভাবানকে আলতজ^{নি} ফুটবল আসরে নামাতে পেরেছে। মা ারো বছরে যে দেশ নিজের ফুটবল গান এতো সব দর্শনিধারী ফুল গাছে সাজাতে পারে সেদশে প্রতিভা প্রতিভা হওয়ায় পথ সতি।ই সংজা। রেজিল তাই শুধ্ এক পরীক্ষার প্রতীকই নয়, রেজিল এক শিক্ষণীয় দৃষ্টালতও বটে।

বিশ্ব কাপ ফ্টবল প্রতিযোগিতার নবম অনুষ্ঠান সম্পর্কে শেষ কথা যে এবার আচমকা অঘটন বা আপসেট বড় একটা হরনি। গতবারের বিজয়ী ইংলন্ডের পরাজয় কোনো অঘটনই নর। কারণ, বিশেষজ্ঞ মহলের, মার আশতর্জাতিক ফ্টবল সংস্থার ব্রটিশ সভাপতি স্যার স্ট্যানলি রাউজেরও প্রভিষ্যে কর্মি শ্রমিটিকৈ নিজের অধিকারে রাখতে পারবে না। ইতালীর ফাইনালে ওঠাও কোনো অঘটন নর। যেহেতু ইতালীই ইউরোপীর চ্যাম্পিয়ন। চুড়াম্ত পর্বে দক্ষিণ মার্কিন মন্ডলের শ্রেণ্ঠ দলের মোক্যবিলা করার অধিকার ইভালীর বতোটা ছিল আর কার্মে তো তা ছিল না।

গার্হাফন্ড সোবাস বিশ্ব রেকর্ড প্রভী



हेश्लाम्ड वनाम विश्व मन

अथम रहेन्हे स्थना

ইংল্যাম্ড: ১২৭ রাম (রে ইলিংওরার্থ ৬৩ রাম। সোবার্স ২১ রামে ৬ এবং মারেকজী ৪৩ রামে ২ উইকেট)

ও ০৩৯ রান (লাকহাস্ট ৬৭, বেসিস ডিওলিভেরা ৭৮, রে ইলিংওরার্থা ৯৪ রান। ইন্তিথাব আলম ১১০ রানে ৬ এবং সোবার্সা ৪৩ রানে ২ উইকেট) বিশব একাদশ ২ ৫৪৬ রান (সোবার্সা ৮৮৩, এডি বার্লো ১১৯, ইন্তিথার আলম ৬১ এবং গ্রেমী শোলক ৫৫ রান। ওরার্ডা ১২১ রানে ৪, আন্ডারউড ৮১ রানে ২ এবং নেনা ১০৯ রানে ২ উইকেট)

ঐতিহাসিক লডাস মাঠে আয়োজিত ইংল্যাণ্ড বনাম বিশ্ব একাদশ দলের প্রথম টেস্ট খেলায় গ্যারী সোবাসের নেড়ারে বিশ্ব একাদশ দল এক ইনিংস ও ৮০ রানে ছয়ী হয়েছে। সোবাসা ব্যাটিং এবং বোলিংয়ে বিশেষ সাফলোর পরিচয় দিয়ে সর্বজালের শ্রেড টোকস খেলোয়াড় হিসাবে যে তিনি বিশ্বখ্যাত লাভ করেছেন তা অক্কার্ম রাখেন।

প্রথম দিনেই ইংল্যান্ডের প্রথম ইনিংস মাট ১২৭ রানের মাথায় শেষ হয়। বিশ্ব একাদশ দলের অধিনায়ক গণরী সোবাদ ইংল্যাণ্ডের এই হাড়ির হাল করেছিলেন মাত ২১ রানে ৬টা উইকেট নিয়ে। ইংল্যান্ডের দলপতি রে ইলিংওয়ার্থ যা কি**ছ্য খেলেছিলেন।** দলের ১২৭ রানের মধ্যে তাঁর একারই ৬৩ রান ছিল। লাঞের সময় ইংল্যানেডর ৭টা উইকেট পড়ে মাত্র ৪৪ রান উঠেছিল। এই সময় সোবাসের <u>বোলিং</u> পরিসংখ্যান ছিল-১১-৫ ওভার বল করে মার ৮ বান দিয়ে ৫টা উইকেট ইংলাংডের প্রথম ইনিংস মাত্ত ঘণ্টা ২০ মিনিট টিকেছিল। থেলার বাকি সময়ে বিশ্ব धकामम मल २ छो छेरेक्ट थ्हेस ১১৫ রান সংগ্রহ করেছিল। দক্ষিণ আফিকার এডি বার্লো ৫০ রান করে অপরাঞ্চিত थादकन्।

दथनाभर्ना

TW ds

দ্বিতীয় দিনের খেলার বিশ্ব একাদশ দলের রাম দাড়ায় ৪৭৫ (৬ উইকেটে)। অর্থাৎ তারা আরও ৪টে উইকেট খাইয়ে এইদিনের খেলায় ৩৬০ রান সংগ্রহ করেছিল। এডি বার্লো সেণ্ডারী (১১৯ রান) করেন। টেস্ট ক্লিকেট খেলায় তাঁর এই ৭ম দেশুরী। ৩য় উইকেটের জাটিতে দ[্]কণ আফ্রিকার দুই খেলোয়াড়—গ্রেমী পোলক এবং এডি বালোঁ ১৫৭ মিনিটের খেলায় ১০১ রান সংগ্রহ করে দেন। গ্যারী সোবার্স ১৪৭ রান এবং পাকিস্তানের অধিনায়ক ইন্তিখাব আলম ৫৬ রান করে অপরাঞ্চিত থাকেন। বর্তমানে টেম্ট ফ্লিকেট থেলার সোধার্সের সেগ্রী দাঁড়াল ২২টি। এখানে উল্লেখ্য সাধি ডোনাল্ড ব্যাডমান (অস্ট্রেলিয়া) ২৯টি টেস্ট সেণ্ডারী করার স্ত্রে সর্বাধিক দেশ্যুরী করার যে বিশ্ব রেকর্ড করেছেন তা ভাঙতে হলে সোবার্সকে আরও ৮টি সেগ্ররী করতে হবে।

তৃতীয় দিনে বিশ্ব একাদশ দলের প্রথম ইনিংস ৫৪৬ রানের মাথায় শেষ হয়। সোবার্স ১৮৩ রান করেন। ৪ ঘণ্টার কিছ্ব কেশী সময় খেলে সোবার্স তরি ১৮৩ রানে ৩০টা বাউন্ডারী এবং ২টো ওভার-বাউন্ডারী করেন। ইংলাদেও ৪১৯ রানের পিছনে পড়ে দিবতীয় ইনিংস খেলতে নামে এবং ৫ উইকেট খ্ইয়ে ২২৮ রান সংগ্রহ করে। খেলার এই অসম্পায় ইনিংস পরাশ্র থেকে অবাহতি পেতে ইংলাদেওর আরও ১৯১ রানের প্রয়োজন ছিল। হাতে জমা ছিল দিবতীয় ইনিংসের ৫টা উইকেট।

চতুর্থ দিনে লান্ডের পর ইংল্যান্ড এক বান্টা থেলেছিল। ৩৩৯ রানের মাথার্থ ইংল্যান্ডের দিবতীয় ইনিংস শেষ হলে বিশ্ব একাদশ দল এক ইনিংস ও ৮০ রানে জ্বারি হয়। মই এবং ইলিংওয়ার্থ ৬৩% উইকেটের জ্বিতে ৩ ঘণ্টার খেলায় দলের ১১৭ রাম সংগ্রহ করেছিলেন। এই ৬৩% উইকেট জ্বিউ ভাঙার পর ইংল্যান্ডের বাকি ৪টি উইকেট অলপ রামের মধ্যে পড়ে যায়।

টেম্টে ২০০০ রান ও ২০০ উইকেট

ওয়েণ্ট ইন্ডিজ জিকেট দলের অধিনায়ক গারফিল্ড সোবার্স ৬৪ রানে ৮টি উইকেট পাওয়ার স্ত্রে টেণ্ট জিকেট খেলায় ২০০০ রান ও ২০০ উইকেট সংগ্রহ করার বিশ্ব রেকর্ড করেছেন। বর্তানানে সোবার্সের টেণ্ট জিকেট খেলোয়াড্-জীবনে পরিসংখ্যান দক্ষিয়েছে: টেণ্ট খেলা ৭৭, মোট রান ৬৯৫১ এবং ২০১ উইকেট (৬৭৪১ রানে)।

উইম্বলেডন টেনিস প্রতিযোগিতা

গত ২২শে জনুন থেকে ৮৪৩ম উইম্বলেডন টেনিস প্রতিযোগিতার থেকা চলছে। এ পর্যাস্ত থেলায় বড়রকমের দুটো অঘটন ঘটেছে। প্রমুষদের সিণ্যলন থেলার চতুর্থ রাউন্ডে ১নং বাছাই খেলোয়াড় রড লেজন (অন্থেলিরা) এবং নিং বাজ্ছ থেলোরাড় আথার আ্যাস (আমেরিকা)
অপ্রভ্যাশিতভাবে পরাজিত হয়ে প্রতি-যোগিতা থেকে বিদার নিরেছেন। ১নং
বাছাই লেভারতে ৪—৬, ৬—৪, ৬—২ ও
৬—১ গেমে পরাজিত করে ১৬নং বাছাই
রোজার টেলার (ব্টেন) রাভারাতি বিশ্ব-থাতি অর্জন করেছেন। অপর্বাদকে ৩নং
বাছাই নিয়ো থেলোরাড় আর্খার অ্যাসতে
৭—৫, ৭—৫ ও ৬—২ গেমে ছারিয়েছেন
১৪নং বাছাই আঞ্জেস গিমেনো (দেপন)।

লাগভন্তা তক টেনিস খেলার পণিডত মহলের মতে অস্ট্রেলিয়ার রড লেডার বভামান বিশেবর শ্রেষ্ঠ টেনিস থেলোয়াড়। লেভার ইতিপারে চারবার (১৯৬১-৬২ ও ১৯৬৮-৬৯) উইন্বলেডন সিপালস খেতাব এবং দুবার (১৯৬২ ও ১৯৬৯) দুর্লাভ 'গুন'ড দলাম' থেতাব জয়**ী হয়েছেন, যা** মার একবার করে পেরেছেন আমেরিকার ডোনাল্ড বাজ ১৯৩৮ সালে এবং কুমাংী মর্বীন ক্যাথেরিন ক্নোলী (বিবাহিত জীবনে শ্রীমতা নম্যান বিজ্কার) ১৯৫৩ সালো। সাত্রাং ১৬নং বা**ছাই থেলোরাড়ের** হাতে ১নং খেলোয়াড় **লেভারের এই** প্রাজয় প্রতিযোগিতার **ইতিহাসে** 9131 বিসময়কর ঘটনা হিসাবে **নজির** शासम्ब

প**ু**রুষদের সিশালস খেলার বাছাই তালিকায় যে ১৬ জন খেলোয়াড়ের নাম ছিল তাঁদের মধ্যে এ বছরের প্রতিযোগিতার কোয়ার্টার ফাইনালে থেলবার যোগ্যতা লাভ করেছেন এই ৭ জন বাছাই খেলোয়াত —২নং বাছাই জন নিউক্দ্ব (**অস্টোলয়া),** ৪নং বাছাই টান রোচে (অস্ট্রেলিয়া), ৫নং বাছাই কেনু রোজওয়াল (অস্ট্রেলিয়া), ৯নং বাছাই ক্লাক' গ্রেবনার (আর্মোরকা), ১০নং বাছাই রয় এমার্সন (অস্ট্রেলিয়া), ১৪নং বাছাই আ্রাণ্ড্রেস জিমেনো (ম্পেন) এবং ১৬নং বাছাই রোজা**র টেলর (ব্রটেন)।** প্রেয়দের সিংগলস কোয়ার্টার ফাইনালে ৮ जन (थामाशाइफ्त भाषा १ **फन वाहारे** এবং একজন অবাছা**ই থেলোয়াড় (অস্ট্রে-**লিয়ার বব্ কার্মাইকেল। আছেন। এই ৮ জন খেলোয়াড়ের মধ্যে অস্টেলিয়ারই ৫ জন এবং একজন করে ব্রটেন, আর্মেরিকা এবং স্পেনের খেলোয়াড় আছেন।

মহিলাদের কোয়াটার ফাইনালে ৫ জন বাছাই এবং ৩ জন অবাছাই খেলোয়াড় উঠেছেন। পাঁচজন বাছাই খেলোয়াড় চলেন—১নং বাছাই শ্রীমতী মার্গারেট বোলে জিন কিং (আমেরিকা), ৫নং বাছাই শ্রীমতী বোজেমেরী কাাস্লিস (আমেরিকা), ৫নং বাছাই কারেন ক্যানজেক (অম্যৌকিষা) এবং ধাছাই কুমারী হেলগা নিসেন (পাঞ্জামানী)।

ভারতবর্ষের ভূমিকা

ভারতবর্ষের ১নং থেলোয়াড় প্রেমজিক লালকে ওর রাউন্ডে ৯নং বাছাই ক্লার্ক গ্রেবনার (আর্মেরিকা) ৬—০. ৬—২ ও ৬—১ গেমে এবং জয়দীপ মুখার্কিকে ২্র ক্রারেল্ট কিলার' রোজার টেলর (ব্টেন) ঃ ৮৪তম উইম্বলেডন টেনিস প্রতিৰোগিতায় পর্যব্দের সিপালস খেলার শির্থ রাউম্ভে ১নং বাছাই রড লেভারকে (অম্মেলিয়া) ৪-৬, ৬-৪, ৬-২ ও ৬-১ গেমে প্রাক্তিত করে রাতারাতি বিশ্বধ্যাতি লাভ করেছেন।



রাউক্তে ১৬নং বাছাই রোজার টেলার (ব্টেন) ৩—৬, ৬—৩, ৬—২ ও ৬—৪ গেমে পরাজিত করেছেন।

্ডাবলসের ১ম রাউন্ডের থেলার প্রেমজিক লাল এবং জয়দীপ ম্থাজিকি ৮-৬, ৬-১ ও ৬-২ গেনে মার্ক করু এবং গ্রাহাম স্টিলওয়েল (ব্টেন) প্রাজিত করেন।

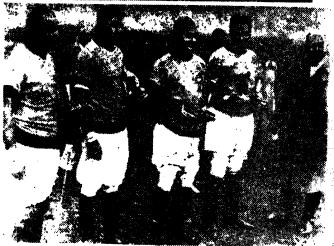
প্রথম বিভাগের ফ্টবল লীগ

গত ববিবার (২৮ ল জ্ন) ইডেন
উপানে আয়োজিত মোহনবাগান বনাম
মহমেডান স্পোটিং দলের ফ্টকল লগি
খেলা প্রবল বৃণ্ডিপাতের ফলে আরন্ডই
হর্মন। এখানে উল্লেখ্য, এই আসরেই ২১ শে
জ্বন মোহনবাগান বনাম ইস্টবেশ্গল দলের
লগি খেলাও প্রবল বৃণ্ডির ফলে বিরতির
পর পরিত্যক্ত হয়। বিরতির সময় ইস্টবেশ্গল
১—০ গোলে অগ্রগামী ছিল। ইস্টবেশ্গল
বনাম মহমেডান স্পোটিং দলের খেলার
জোর বৃণ্ডি হয়েছিল তবে খেলা ভব্ডুল
হর্মন। ইস্টবেশ্গল ১—০ গোলে
জিতেছিল। দেখা যাজে, ইডেন উল্যান
ফ্টবল খেলার প্রম শত্র হয়ে দাঁড়িয়েছে।

বর্তমানে লীগ তালিকায় শীর্ষ প্রান্ধনার করে আছে বি এন আর ১০টা খেলায় ১৭ পরেন্ট। মোহনবাগান ৬টি খেলায় ১২ পরেন্ট, ইস্টবেক্সল ৮টি খেলায় ১৫ পরেন্ট এবং মহমেডান স্পোটিং ৬টি খেলায় ১০ পরেন্ট সংগ্রহ করেছে। খেলায় অপরাজিত আছে মাত্র এই দুটি দল—গভ বছরের চ্যাম্পিয়ান মোহনবাগান এবং রানাস-আপ ইস্টবেক্সল।

প্রলোকে জয়পুরের মহারাজা

গত ২৫শে জুন ইংলাদেডর দক্ষিণ পশ্চিম অণ্ডলের চিরেনচেন্টার শহরের পোলো থেলার মাঠে জয়প্রের মহারাজা সওয়াই মান সিং থেলার বিরতির সমল্ল সংজ্ঞাহীন হয়ে ৫৮ বছর ব্যাস্থ্য প্রলোক-গ্যান করেছেন।



১৯৫৭ সালের বিশ্ব পোলো জ্যান্পিয়ান ভারতীয় দলঃ বাদিক থেকে— বিষেণ সিং, কুনোটার বিজেম সিং, রাঞ্রাজা হন্ত সিং, জয়পুরের মহারাজা সওয়াই মান সিং (অধিনায়ক) এবং ফরাসী পোলো এসোসিয় ানর সভাপতি।

১৯১১ সালের ২১শে আগস্ট তার
জন্ম। তিনি জয়প্রের মহারাজা সওয়াই
মাধা সিংয়ের দত্তকপুত ছিলেন। ১৯২২
সালের ৭ই সেপ্টেন্বর তিনি জয়প্রের
রাজসিংহাসনের উত্তরাধিকারী হন; কিন্তু
পূর্ণ ক্ষমতা লাভ করেন ১৯০১ সালে।
তিনি ছিলেন জয়প্রের ৩৯তম মহারাজা।
মহারাজা সওয়াই মান সিং ইংল্যাপ্ডের
উলউইচ রয়েল মিলিটারী একাডেমিতে
শিক্ষালাভ করেন। ভারতীয় সৈনাবাহিনীতে
তাকৈ সম্মানস্চক লেফটেনাল্ট জেনারেল
পদবী ন্বারা সম্মানিত করা হয়। তিনি
১৯৪৯ সালের ৭ই এপ্রিল থেকে ১৯৫৬
সালের ৩১শে অকটোবর পর্যন্ত নবগঠিত
রাজস্থান রাজোর প্রথম রাজপ্রমুখ ছিলেন।

১৯৬২ সালে তিনি রাজাসভার সদস্য নির্বাচিত হন এবং ১৯৬৫ সালে স্প্রেন ভারতবর্ষের রাষ্ট্রন্ত নিযুক্ত হন: উদার দুণিউভগা এবং শাসনকারে দক্ষতার জন্য তার বিপলে ২াতি ছিল। পালামেন্ট সদস্যা শ্রীমতী গায়তী দেবী তার সহধার্মাণী।

পরলোকগত মহারাজা স্বন্ধাই মান
সিং ছিলেন তার সমকালে বিশ্বের অন্যতম
শ্রেষ্ঠ পোলো থেলোয়াড়। ১৯৩০ সালে
তার পোলো টিম ইংল্যানেডর সমসত পোলো
ট্রনামেনেট অপরাজিত ছিল। ১৯৫৭ সালে
ফ্রান্সের ছুভিলে অনুষ্ঠিত বিশ্ব পোলো
ট্রনামেনেট তারই নেড্রে ভারতীয় পোলো
টিম 'গোল্ড কাপ' জয়ী হয়ে আল্ডর্জাতিক
থেলাধ্লার মানচিত্রে ভারতবর্বের নাম
উৎকাপ করে। ভারতীয় পোলো ট্রনামেনেট
তার জয়প্রে পোলো টিম বহ্বার
চ্যান্সিয়ান হয়েছে। কলকাতার প্রালো
প্রতিযোগিতার তিনি নির্মাতভাবে ৬১তম
ক্যাভালরী পোলো দলে থেলেছেন।

মপা ওয়াশিং পাউডার ওণে অসাধারণ কেন জানেন?



জামাকাপড় অনায়াসেপরিছার ও ঝকমকে হয়ে ওঠে। কাজেই গিন্নীরা আজকাল বেশীর ভাগই স্পা ব্যবহার শুরু করেছেন। আপনিই বা বাকী থাকেন কেন ?

ञताग्राम कार्यं कामात अकिं मिल्लिमाली उग्नामिश भाषेषात !



এখন পাওয়া যাবে পশ্চিমবাংলার ক্রমবর্ধমান সাগর-শহর দিঘা টাউনশিপে আবাসিক প্লট

সদ্য সম্প্রদারিত এন—২ সেকটরে ৩-৪৪৫ থেকে ৪৫-৫৮৪
কাঠার বিভিন্ন আবারের প্রাট

िषधा

नाना शिष्ट्रका मना वर्ष

যথা রাস্তা ক্লেন বৈদ্যুতিক শক্তি জলা সরবরাহ ইজারার মেয়ালে দেওয়া ইবে।

প্রতি কাঠার দাম ৩৩৬ টাকা থেকে ১৩১১ টাকা। প্রাটের বিবরণী, প্রতি প্রাচান এবং ইজারার মোটাম্টি শর্ভাবলী—সম্বলিত পর্বিক্তান ৭৫ পরসা দামে পার্যলিকেশন সেলস অফিস, প্রশিচম বাংলা সরকার, ১ কিরণশংকর রায় রোভ কলিকাতা-১ বা আাডমিনিসেটটর, দিঘা ডেভালপমেন্ট দিকম প্রাঃ প্রাঃ প্রাঃ বিদ্যান কর্নার জন্য দ্বাধানেতার ছাপা ফরমের নিমিস্ত আবেদন কর্ন :—

(১) **ডেপ**্টি সেকেটারি ডেভালপমেণ্ট আণ্ড জার্নিং ডিপার্টমেণ্ট পশ্চিম বাংলা সরকার, রাজভবন কলিকাতা-১

অথবা

(২) আাডমিনিশ্রেটর দিঘা ডেভালপ্যেণ্ট চিক্স, পোঃ অঃ দিঘা জেলা—মেদিনীপ্র।

৩১ **জ্লাই,** ১৯৭০ ভারিখ পর্যত দর্খাস্ত গা্হীত ইবে।





ডবল্য বি (আই আদ্ভ পি জার) আডেডাঃ নং **২১**০৮।৭০ -

- विरम्हामरस्य वहे-

প্ৰকাশিত হ'ল

সূত্রকাশ রামের মহাগ্রন্থ

ভারতের বৈপ্লবিক সংগ্রামের ইাতহাস ঃ

[স্প্রকাশ রায়ের প্র-প্রকাশিত ভারতের কৃষক-বিছোহ ও গণ-ভাশ্তিক সংস্থাম : প্রথম শণ্ড (১৬.০০) গ্রন্থের পরবতী খণ্ড] মোহিতলাল মজ্মদারের

कवि स्रोधभूमुम्ब ५०.६०

ৰাংলার নৰযুগ ₽.00 ৰঙিক্য-বরণ ৬-৫০ সাহিত্য বিচাৰ 4.40 সাহিত্য-বিতান 2.40 রাজকুমার মুখোপাধ্যায়ের

স্কুল ও কলেজের

গ্রন্থাগার পরিকল্পনা

খগেন্দ্রনাথ মিতের

শ্তাব্দার শিশু সাহিত্য

0.96

F.00

0.40

R.00

\$0.00

2.00

\$0.00 ডাঃ সাধনকুমার ভট্টাচার্যের নাটাতত্তম ীমাংসা 20.00 শাণ্ডিরঞ্জন সেনগ্রেণ্ডের

অলিম্পিকের ইতিকথা ২৫২০০ ডাঃ বৃষ্পদেব ভট্টাচার্যের

পথিকৃত রামেন্দ্রস্কুদর যোগেন্দ্রনাথ গ্রেত্র

ভারত মহিলা

त्रव स्वयवव

সংকলন : দীনেশচন্দ্র চটোপাধ্যায়

विख्वानी श्रीव

क्षशमी भारतम् ভূঞ্জঞাভূষণ ভট্টাচার্যের

4.00

व्योग्न भिका-मर्गन

ডঃ বিমানচন্দ্র ভট্টাচার্যের সংস্কৃত সাহিত্যের

ब्भद्रिथा

কানাই সামদেত্র

ित्रपर्मव

विम्हामस नारे द्वती श्राः निः ৭২ মহাত্মা গান্ধী রোড ॥ কলিকাতা ১ ফোন: ৩৪-৩১৫৭



>म अश्या

৪০ পরগা

Friday 17th July, 1970.

भाइबाब, ७२८म जाबाइ ১०৭৭

সূচীপত্ৰ

श्का	বিষ য়		टम बक			
200	চিত্রিপত্ত					
৯০২	भागा दहादभ		গ্রীসমদশার্শ			
200	रमरणीयरमरण		—শ্রীপ;•ড্রীক			
৯০৬	ৰ্যপাচিত্ৰ		श्रीकारमी श्री			
209	সম্পাদকীয়					
POA	সীমাস্ত হাড়িয়ে		—শ্রীশিকেন চট্টোপাধায়ে			
POR	भवीरतत वाधारन	(")	—শ্রীঅজিতেশ বন্দ্যোপাধ্যয়			
20R	দ্'টি কৰিতা	(")	—শ্রীপ্রতিমা সেনগ্রুত			
808	লহোদর	(গ্রন্থ)	—শ্রীমিহির আচার্য			
226	সাহিতা ও সংস্কৃতি		—শ্রীঅভয়ঙ্কর			
222	ঢোকরা কাহিনী		—শ্রীশংকরেন্দ্রনাথ মিত্র			
३ ₹३	পাথি	(উপন্যাস)				
258	निक्छिरे बाह्य		—শ্রীসন্ধিংস			
269	নীলকণ্ঠ পাখির খোজে	(উপন্যাস)	– শ্রীঅতীন কল্যোপাধাায়			
208	मत्नन कथा		—গ্রীমনোবিদ			
704	হিপনোসিস	(গল্প)	—শ্রীসমীর দত্ত			
৯৪৫	বৈৰূপেটৰ খাতা		শ্রীগ্রন্থদশী			
787	দিনগ্ৰি রাডগ্রিল	(বড় গল্প)	— श्रीकन्यान स्मृतः			
202	গোষেশা কৰি পৰাশৰ		- শ্রীপ্রেমেন্দ্র মিত্রচিত			
		5. 6	—শ্রীশেল চক্রবতী চিত্রিত			
20%	निकास राजारत यांक	(ম্ম্রাডাচ্ছণ)	শ্রীঅহ্নিদ্র চৌধ্রী			
৯৫৭	অপানা		—শ্রীপ্রমীলা			
208	ৰেতার#ন্তি		গ্রীগ্রবণক			
267	জ্যানিমেটেড ক্লিক		– গ্রীস্বপনকুমার ঘোষ			
292	জলসা		— শ্রীচিত্রাশ্যদা			
298	ওৰারহাউজেন উংসৰ		—শ্রীচিত্রলেখক			
, 2 64	প্রেক্ষাগ্র		—শ্রীনান্দীকর			
248	খেলার কথা		– শ্রীক্ষেতনাথ রায়			
294	<i>दल्लाश</i> ्ला	_	শ্রীদর্শক			
	প্রচ্ছদ : শ্রীপালালার মলিক					

ষ্পঞ্জী ১৩৭৭

रम्भ-विरम्राभन यावजीय ज्या भनिभाग वाला 'हैयान-वाक'

দীর্ঘ ২৪ বংসর ধরে মাতভাষায় এই অসাধারণ তথাগ্রন্থ ঘরে ঘরে সমাদ্রত ইচ্ছে। বর্তমান সংস্করণে চলতি দুনিয়ার সকল প্রধান প্রসংগ আলোচিত হয়েছে। মানুষের চাঁদে অবতরণ, কংগ্রেস বিভাগ, রাণ্ট্রপতি নিবাচনে প্রতিম্বান্দরতা, কেরল ও পশ্চিমবংশে যুক্তরেন্টের উত্থান-পত্ন, শ্রীমতী ইন্দিরা গাধ্বীর সর্বশেষ মন্দ্রিসভার বিবরণ এই সংখ্যার বিশেষ বিভাগসমূহ।

५०६ भृष्ठी, जुम्ह बौधाई ६ जुम्क अव्हम। श्रृणा ५ होका ६० भः

প্রকাশক : এস আর সেনগতে আভে কোম্পানি

৩৫।এ, গোয়াবাগান লেন, কলিকাতা-৬।



भार्षक भिला

গত ২৬শে জন তারিথের অমতে
মুখের মেলা বিভাগে, আন্দুল জবারের
তালপাতার পাথার ছবি' শীষক লেখারি
পড়ে বিক্ষয়াভিত্ত হয়ে পড়েছি। লেখারি
পড়তে পড়তে মনে হয়েছে য্রগৎ
বরজাহান ও ফ্লজান ফোন কানের পালে
ফোপাছে। গত কয়েক বছর ধরে নবাধারার
বাংলাসাহিতা সম্পর্কে বেশ পড়াশ্না
করছি। কিন্তু গ্রামবাংলার পটভূমিকার
এমন সাথকি জাজেডী আর একটিও
পড়িনি। লেখককে আমার অন্তর্ম উজাড়
করা অভিনদনৰ জানাছি।

মনোজকুমার খাট্যা, রায়প্র, ২৪ পরগণা।

রবীন্দ্রনাথ: বিতকের উত্তরে

্ শ্রীলোকনাথ ভট্টাচার্য "রবীন্দুনাথ ঃ একটি বিতর্ক" লিখে ঝড় তুলেছেন। বিতরে ছোগ দিতে চাই, বতামান পর্যুটি ছাপালে বাধিত হব।

লোকনাথবাব্র বিরুদ্ধে আমার একমার **অভিযোগ হল এই যে তার প্রবং**ঘটি অত[া]র সালিখিত হলেও অতীব সংক্ষিত। কিন্তু যে প্রশনগ্লি তিনি তুলেছেন, তা অসাধারণ গার্মপূর্ণ। দেখে আ×চর্য হচ্ছি, বিভংক' আৰু যাঁৱা যোগ দিয়েছেন, তাঁৱা সকলেই লোকনাথবাব্র মুখা বছবাগালিকে পাশ কাটিয়ে গিয়েছেন। সে বস্তবাগলি আলার মনে হয়েছে একে একে এই : (১) "শাশ্তির **জালিত বাণী শোনাইবে বার্থ পরিহাস" এ**বং "সে পায় তামার হাতে শানিতর অক্ষয় আধিকার", এই দুটি উল্লিতে "শান্তি" **শক্ষের অর্থ** বিভিন্ন—ত। মানবতাবাদী রবী-দূনাথ ও অধ্যাত্মবাদী ব্যক্তিবিশেষ त्रयौग्प्रनार्थत माथा अविति न्यरन्तत भित्रताहरः (২) বৈদেশিক শাসনাধীন ভারতে হ্যাঁ ও না-র সীমারেখা ছিল চিহ্নিত, আজ সমস্য আরো অনেক জটিল—আজ মানবভাবাদ ও ব্রাহ্মধর্মসাল্ড আধ্যাত্মিক উচ্চারণ আর হাত ধরাধরি করে চলতে পারে না; এবং (৩) যে উনবিংশ শতাব্দীর রেনেসাসের "পরম পরিপক ফল" রবীদ্দুনাথ, আজে তার সকল ম্ল্যবোধ ধ্লায় লাুণিঠত, আ্স ভল্পরলোকেরা ধনে-মনে-মানে ছোটলোক हास वातक-वदः वह भारतक्षाकरक त्रवीन्ध- নাথের নতুন ম্ল্যায়ন অপরিছার্য হয়ে উঠছে।

এই প্রশনগালি তুললেই কেন যে 'গেল গেল' বব উঠবে বা মহাভারত অশুন্ধ হঙ্গে যাবে, তা আমি ব্রুল্ম না। বরং প্রশন গালি তোলাই উচিত ছিল। পরিশেষে বলি, সেণিট্যেণ্টাল রবীল্যান্রাগীদের দলে হয়ত লোকনাথবাব, পড়তে চান না, কিন্তু তিনিও কার্র চেয়ে রবীল্যনাথের কিছু কম অন্বাগী নন, তাঁর এই আন্তরিক লেখাটি পড়ে সেকথা অন্তত আমার মনে হয়েছে।

লেথাটির জন্য লেখক ও "অমৃত" পত্রিকাকে আবার অভিনন্দন জানাই।

> দিলীপরঞ্জন দাশগ**্রত** কলিকাতা—৩৩।

यन्ताम अन्रद्भा

ভিন্নভাষী বন্ধ্র কাছে আমার দেশের कथा পেশेছতে চাই বলে অনুবাদ করি। তার ভাষা জানা থাকে তো ভালো, নইলো আর কোনো মিলনী স্তের আশ্রয় নেই। ভাষান্তরে মালের ক্তটাকু দ্রী অবশিষ্ট থাকে তা নিয়ে সৌন্দর্যবাদীর সন্দেহ থাকলেও, কার্যতি পাকে-প্রকারে আমরা এর অপরি-হার্যতা একরকম মেনেই নিয়েছি। 'কবিতার অন্বাদ' প্রবশ্ধে শ্রীআশিস সান্যাল বিষয়টি প্নর্থাপন করেছেন। কৌত্হলেদ্দীপক রচনা, কারণ এতে প্রথমত একজন সাম্প্রতিক কবির মতামত পাচ্ছি। উপরস্তু শ্রীসান্যাল **সম**স্যাটি নিয়ে দীর্ঘকাল রত আছেন। 'বেংগলি লিটারেচার' নামক একটি ইংরিজী পত্রিকার উদ্যোদ্ধা হিসাবে আমরা বিদেশের সঙ্গে তাঁর যোগাযোগ রক্ষার চেণ্টা লক্ষ্য করেছি।উপস্থাপিত রচনাটিতাই **তত্ত্**কথার সীমা ছাড়িয়ে অভিজ্ঞতায় নিঃস,ত*হ*য়েছে।

কবিতা অন্বাদের প্রতিবন্ধকতা প্রমাণে
প্রীসানাল অজস্ত সতকবিণী উদ্ধান করেছেন। দেখা যাছে সব মতের লেথক মহলেই ও-কাজের বিপদ সমানভাবে ঘোষিত। রাশ কবি ভাসিলি ফারেদেরভ ইদানিং মশ্কোতে আহতে এক সাহিত্য সভায় আবার নতুন করে মার্কসীয় গশন অন্যায়ী শশ্দের চরিচ নির্দার করে বলেছেন যে কথার রাপ নির্ভার সামাজিক পরি-প্রেক্তিত অধ্যার নামার্ক্ত পরি-

আর তাতে অন্বাদকের কাজ বিড়ান্বত হয়। একই সারে যারুরাম্মের জর্জ স্টেইনার জানিয়েছেন : 'আধ্নিক কবিতার অন্বান সংকলনে প্রতিটি অন্দিত কবিতারই ম্ল ম,থোম,থি পৃষ্ঠায় অবশাই থাকা উচিত। দিবভাষী বই আমরা দেখেছি। মূল ভাষাটি যিনি জানেন অনুবাদের সাহায্য তাকে অংশবিশেষে দার্হতা অতিক্রমণের ক্রমতা দেয়। কিন্তু যাদের সেই **ভাষাজ্ঞান** নেই তাঁদের পক্ষে অন্যাদই সার। **অন্যাদ্রের** বিদ্রান্তির ফলে মলে কবিকৃতি ভিন্ন আকার ধারণ করতে পারে। একটি উদাহরণ দিই। অন্পেষ্ট অনুবাদের ফলে রবীন্দ্রনাথের সমাক পরিচয় বিদেশ পায় নি, বা্শাদেব বস্ব এই অভিযোগ অনেক দিনের। একদা তিনি নিজে এই অভাব প্রেণে কিছা প্রশ্তাব রেথেছিলেন। ফলে যে সমস্ত সংশয় দেখা দিয়েছিলো বিষয় দের 'সাহিত্যের ভবিব্যত' গ্রান্থের আন্তর্ভুক্ত 'রাজায় রাজায়' প্রবদেধ তার ন**জ**ীর আছে। অন্বাদ **প্র**েনর জটিলতা বিশেলষণে আমরা উলিথিত রচনার একাংশ উদ্ধৃত কর্নছ। ব**ুদ্ধদেব বস**্থ 'মাধ্যেরে মালা' বোঝাতৈ বলেছিলেন 'গালািণ্ড অব সাইটনেস্'। বি**ষ**্বার প্রশ্ন রাখেন ঃ "তিনি াুম্বদের বস্তু) মিণ্টির অনুরাগী কিন্তু মাধ্যর কি ধরও 'গ্রেস' এর আত্মীয় নহ 👈 মাধ্যেরি মালা 'এ টেণ্ডার গার্ল্সা**ণ্ড'? তার মণ্ডারে** বৃন্ধদেববাব্ লিখেছেন যে রবীলুনাপের নিজের অন্যাদে স্বর্ণলতা **হয়েছে গো**ণেড**ন** বাস কেট এবং এ উন্নতির বৃশ্ধদেবদত্ত কারণটি এরকম—

Basket is a better visual image than garland on the plate.

—তাই কি? বাজারের বাস্কেট, টি ফিন বাস্কেট, ফলের বাস্কেট, ফ্লের বাস্কেট কি সঠিক ইমেজ কিছ্? তাছাড়া পালাগ্যক্ত অন দি পেলট এল কোখা থেকে? 'সেথা উষা ডান হাতে ধরি স্বর্ণথালা, নিয়ে ভাসে একথান মাধ্যের মালা'—ইমেজটি ডো সোনার থালা উধার ডান হাতে।

বিদেশী পাঠকের পক্ষে প্রাচ্য জাবিন-যাতা, সঠিকভাবে বাঙালী জাবিন্যাপন, সমরণ করে অনুবাদে যাথাখা রক্ষা কতথানি সম্ভব হত ? ট্যাসন-এর গ্লম্ম উল্লাসিড হবার সাক্ষ্য দেয় না। অনুবাদ সর্বাচ্য আমার্জানীর নাও হতে পারে। 'ডক্থর' নাটকের অনুবাদ



পড়ে বৃশ্বদেববাব আনন্দ জ্ঞাপন করে-ছিলেন। ভিন্নভাবে আপদ সংস্কৃত উপহারের চেণ্টা ভাষান্তরে অন্য কোনো কবির কাজে লাগতে পারে। কালীমোহন ঘোষকৃত কবিরের অনুবাদ পাঠে এজরা পাউল্ড-এর একটি বিখ্যাত কবিতা জন্ম নিয়েছিলো। বিক্ষিতভাবে দেখা গেলেও দুন্টান্তগুলি বজুনীয় নয়। অনুবাদের প্রচেন্টায় আমতা আমতা করেও তাই অগ্রসর इट्डं इट्टा के भार त्नहे।

অনিবার্য বলেই প্রশ্নটির একটি সদর্থক উত্তর খ'্জহি। অনুবাদ বাধ্য না হলে মলে থেকে বিচ্যুত হবে না এটি আশা করা যায়। কিন্তু সাহিত্যের আবেদন তো এক রকম নয়। বাবহারে দেখতে পাই এক-ই শব্দ ভিন্ন ভিন্ন অনুবাদকের হাতে বং পাল্টায়। অনুবাদের গুণে তারতমা ঘটে। শ্বকীয় স্থির মত অনুবাদও তাই ব্যক্তিগত মাণসীয়ানার ওপর নিভার করে। 'প্রতিকৃতি নয়, প্রতিভাতি' রবীন্দ্রনাথ যেমন বর্লেছিলেন। ট্রাম্স-লিটারেশন নয়, ট্রাম্স-ক্রিংগ্রশন। ম্লের প্রতি যতটা সম্ভব অনুগ্ত হয়েওয়ে ভাষায় অনুবাদ করা হচ্ছে তার দাবি তাই মেনে চলতে হয়। ফলে সাথ'ক অন্বাদে একটি স্বভদ্ত সৌক্ষা বতায়। স্থীন্দ্রনাথের মত মনে পড়ে—"অন্বাদের বেল। সংবেদনের পরোক্ষ প্রতিক্রিয়া মামে আদা অন্ভবনের ভূমিকায়; এবং পরে যা ঘটে, তার সংখ্য কবিতা রচনার একমাত্র পার্থকা এই যে এখানে আদিভূতের বিষয়ে মতাস্ত্রের অবকাশ অলপ। তাহলেও এমন সাথকি লেখা বিরল যার অভিপ্রায় মুগে যুগে বদলায় না, অথবা যাতে পঠক-বিশেষের ব্যাপক বোধশক্তি প্রভায় পার না; এবং সেই জনে। একই কবিতার একাধিক তজমা যেমন স্বভাবসিম্ধ, তেমনই একই অনুবাদকের চোখে তা চির্নিন এক রক্ষ দেখায় না'। (ভূমিকা ঃ প্রতিধ্বনি)। ফলে মন্বাদের প্রয়াস্ অব্যাহ্ড থাকবে। আশা করবো উত্তরোত্তর আরো উৎকৃণ্ট ফল। পথ দ্মুম্বর বটে তবে ভাববিনিময়ের ক্ষেত্রপুপ অন্বাদের প্রসার কামনা ক**্**বো।

> নিথিলেল গ্ৰে কলকাতা—১৯।

সাহিত্য ও সংস্কৃতি

'আজ অম্ভের ১০ বর্ষ ১ম খণ্ডের ৯ম সংখ্যার 'সাহিত্য ও সংস্কৃতি' অধ্যারে 'লাট প্রসাদের নেপথা কথায়' 'অভয়•কর' ৰল্লভভাই প্যাটেল সম্বদ্ধে যা লিখেছেন रमि ठिक नय-कात्रण प्रविज्ञाहे भारतेमहैं প্রথম Non-official President হয়েছিলেন। বল্লভভাই কোনদিন Indian Legislative

Assembly এর member ছমনি। বোধহয় নামটি মুদ্রাকর প্রমাদ। ইতি লৈলেন্দ্ৰনাথ মেন

- কলিকাতা---২৫

अकि मुख्याना कविका : बाहरकल बश्जामन मख ब्रीठिक

১৮৫৬ খনীঃ ব্যক্তনারায়ণ দত্তের रनाकान्छरतत भत भाहेरकन भधुन्तम पछ নিরাশ্রয় অবস্থায় মাদ্রাজ থেকে কলকাতায় ফিরে আসেন। হিন্দু কলেজে সহাধাাগী এবং তৎকালীন কলকাতার ম্যাজিস্টেট ১নং দমদম কিশোদীচাঁদ মিতের উদ্যাদ ভবনে মাইকেল. সাতপ্কুরের কিশোরীচাদ মিয়ের অতিথি হিসাবে বহুদিন <mark>অবস্থান করেন।</mark>

"Kissorv Chand Mitra was magistrate of Calcutta, when Modhu returned from Madras, He returned like a true poet, with-out a six-pence in his pocket. One Mr. Thacker, choosing to go Mr. Thacker, choosing to go away from the Police Court to the Small Causes Court, made room for Modhu to be taken in as interpreter by Kissory, Modhu's pay was Rs. 120 a month — just enough for his DAL-PHAT (ভোলানাথ চন্দ্র লিখিত, হোগীন্দ্রনাথ বস্ রচিত মাইকেল মধ্যম্দন দত্তের জীবন-চরিতের পরিশিষ্ট দুন্টব্য)।

১৮৫৬ সালের ২০শে জ্লাই মধ্-স্দেনের সম্মানে কিশোরীচাঁদ মিত্র এক নৈশভোক্তের আয়োজন করেন। এই ভোজ-সভার শেষে মধ্স্দন দত্ত একটি ছোট কাগজে কবিতাটি লিখে কিশোরীটাদ মিত্রকে উপহার দেন।

"20th July 1956, Mr. M. S. Dutt gave me the following song :--

উল্লেখযোগা এই দৃষ্প্রাপা কবিতটি ফিশোরীচাঁদ মিতের পরিবার**স্থ** এ**ক** মহিলার নিকট সংরক্ষিত ছিল। ১০২০ বস্গামেদ প্রথাতে জ্বিনীকার মন্মদন্থে ঘোষ মহাশয়ের চেণ্টায় কবিতাটি সংগৃহ[†]ত হয়। কবিতাটির কোন বিশেষত্ব না থাকলেও মাইকেল মধ্সদেন দতের একটি দুক্পাপা কবিতা হিসাবে উৎসাহী ও অনুৱাগী পাঠকগণের নিকট ঐতিহাসিক মর্যাশ-সম্পশ্ন ৷ গোৱা খিতু কলিকাতা—৪

বেতারশ্রুতি প্রসংখ্য

আমি আপনার বহুল প্রচাবিত সাণ্ডাহিক অমৃত পত্রিকার নিয়মিত পাঠক। গত ১০ম বষ', ৭ম সংখ্যায় শ্রবণকের বেতারপ্রতি পড়ে সতাই থবে মমাংভ হলাম। কি করে যে আকাশবাণীর কলকাতা . কেন্দ্র মহানায়ক রাস্বিহারী বস্ত্র কথা সেদিন ভুলে গিয়েছিলেন ভাবতেও আ**শ্চর্য** লাগে। সাত্য কথা বলতে কি গান্ধী ও জহরলাল ছাড়া ভারতের স্বাধীনতা লাভ সম্ভব ছিল না-একথা বোঝাবার চেন্টা সর্বদাই করা হয়। এ জনাই গত ২বা; অকটোবর মহাঝা গান্ধীর জন্মশতবাধিক উদ্যাপ্রে আমরা যথন বাস্ত ছিলাম—তথন ভলে গিয়েছিলাম দ্বগতি লালবাহাদ্র শাদ্বীর কথা। আকাশবাণী সেদিনও তার দায়িত্ব পালন করতে পারেন নি। এটা অতানত পরিতাপের বিষয় যে স্বাধীনতার সতা ইতিহাস আজও উম্ঘাটিত হয় নি i য়ে সব নেতা ও বিশ্লবীদের অক্লান্ড পরিশ্রম ও আত্মত্যাগের কাহিনী আজও অজানা রয়ে গেল, স্বাধীনতা সংগ্রামের পটভূমিকায় লিখিত ইতিহাসে আজ**ও যার**' উপেক্ষিত, বলতে দিবধা নেই বৃটিশ ভাদের ভয়েই ভারত ছাড়তে বাধ্য হয়েছি**ল। প্রেম** ও ভালবাসার মিণ্ট কথায় বৃটিল কথনও কর্ণপাত করে নি। সকল উপে**ক্ষিত নে**তা বিশ্ববাদের জীবনকাহিনী প্রচারে আকাশবাণী অগ্ৰণী হোক, এ দাবী আমরা করতে পারি কি!

বিজনবিহারী চৌধাবী, শিলচর, আসাম।

"When I was a young and gay recruit Just landed at Madras I thought to lead a sober life
With a superfine black shining lass. I roved about from place to place Until I found my Mothonia Oh what a charming girl she was With her thana-na-na". (-M. S. Dutt).

(Diary of Kissory Chand Mitra).

मानिशिक्ष

বাংলা কংগ্রেস ও অব্টবামের মধ্যে মিল্রতা স্থাপনের আলোচনাকে কেন্দ্র করে রাজ-নৈতিক মহলে যে গভীর ঔৎস্কোর স্ভি হর্মেছিল এখনও তা সাসপেণ্সএর পর্যায়ে র**রে গেল। শৃধ**ৃ আশার বাণী হিসাবে ভাদের সমর্থকরা শ্নতে পেয়েছেন 'তারা পরস্পরের কাছাকাছি এসেছেন মান্ত। ঐকা-নয়টি আবন্ধ হয়ে **प्राम्य** স্ত্ৰে একটি र सार्धे কিনা সেই হ্ৰ 2147 চ,ড়াগ্তভাবে এখন নিভ'র বাংলা কংগ্রেসের কর্ম-পরিষদের **43(8** অর্থাৎ বাংলা কংগ্রেস মিনুতা রজনীহলে পশিচম বাংলাব রাজনীতির ক্ষেত্রে সংহতিকরণের প্রদেন এক नजुन अवन्धात সृष्टि १८व।

দ্"দিনব্যাপী আলোচনার সাংবাদিকদের কাছে কি বছৰা রাখা হবে এই প্রশ্নটি সভায় আলোচিত হয়। সমস্ত প্রশেবর সদত্তর পেয়ে বাংলা কংগ্রেসের অন্টবামের সপো মিলনের আর কোন বাধা নেই, একথা বলতে নাকি বাংলা কংগ্রেসের নেতৃবৃদ্দ রাজী হন নি। তাই পরস্পরের काष्ट्राकर्रीष्ट्र कामा श्राट्ट এই वश्रान्ये निर्वानन ক্রবার জনা স্বস্মত সিন্ধান্ত হয়। क्यानिन्धे নেতা কুশাগ্রবাদ্ধ শ্রীসোমনাথ লাহিড়ীর উপরই দায়িও অপ'ণ করা হয়, নয় পার্টির তরফ থেকে ঐ বছকা সাংবাদিকদের জানিরে দেওয়ার জন।। কাজেই প্রশ্ন করে সাংবাদিকরা খ্র স্বিধ। করতে পারেন নি। ফলে, আলোচনার গতি-প্রকৃতি সম্পর্কে বিশাদ বিবরণ বাইরে বেররনি।

রাজনৈতিক অভিধানে 'কাছাকাছি আসা' কথাটার বিশেষ তাৎপর্য আছে বলে ধরে নেওয়া কঠিন নয়। কারণ ঐ কথাটার মধ্যেই লা্কাহিত আছে পরস্পরের মধ্যে পার্থাকোর কথাটা। এবং সেই পার্থাকোর গভীরতা পারিপান্বিকের পরিবর্তানের উপর নিভবিশীলা। যে ধ্রান মুহ্রুতে তা

বিরাটভাবে দেখা দিতে পারে। অধিকন্ত ঝাখ্যা শ্নবার পরও অণ্টবামের সমস্ত বাংলা কংগ্রেস ক্সভুতপক্ষে কোন মতামত ব্যত্ত করেনি। শা্ধামাত্র অণ্টবামের তের দফা দাবীর রা**জনৈতিক প্রতি**তিরা কি হতে পারে বাংশা কংগ্রেস নেতা শ্রীঅজয় মুখার্জি খ[্]টিয়ে খ্^ৰটিয়ে তাই ব্ৰিজ্ঞাসা করেছেন। জিজ্ঞাসার রক্ষ-সক্ষা দেখে রাজনৈতিক ভাষ্যকারদের মনে এই ধারণাই জন্মেছে যে শ্রীম্খাজি হয়ত কোন 'জনপ্রিং সরকার' গঠন করলে কি সমসায় তাঁকে পড়তে হবে ভাই আঁচ করবার চেণ্টা করেছেন মানু। অবশ্য সমস্ত ধানধারণাকে বানচাল করে শ্ৰীম্খাজি" এ গ্রম্ম একবারও উত্থাপন করেন নি যে অর্ফবাম সরকার গঠনে প্রস্তৃত কিনা যে কোন বিচক্ষণ রাজনীতিজ্ঞই তাবশা এই রকমই করতেন। কারণ কর স্চীর মধ্যে ঐকামত হলেই ডা সরকার গঠনের প্রশন আসে দেখা যাচেছ তের দফা দাবীর মধ্যে कनकमान्य मक स्थ ক্মস্চী আছে ভারা ভাতে হরেছেন। 'সমদশী'র আন্দাক্তে ঢিল মার। বক্তক নয়। শ্রীসোমনাথ লাহিড়ী নিকেই ছোৰণা করেছেন যে অনেকগঢ়লি বিষয়ে ভাদের মধ্যে ঐকামত প্রতিষ্ঠিত হয়েছে। এখন যদি তের দফা দাবীর সংপ্র এই বস্তবা মিলিয়ে দেখা যায় তবে সিন্ধান্তে আসতে কিছ্ মুশকিল হওয়ার কথা নয়। সেই তের-দফা দাবী কি সহ্দর পাঠকদের অবগতির জনা প্রথমে তা নিবেদন করছি।

অর্থনামের তের-দফা সনদং—(১)
গণতান্দ্রিক আন্দোলনের উপর প্রনিশা
নির্মাতন ৰুংধ করতে হবে; বে-আইনী
কাজ-কর্ম দমনের জন্য যে আইন আছে
তার অপপ্ররোগ করে গণতান্দ্রিক আন্দোকনকে বানচাল করা চকবে না এবং সেই
আইনকৈ গণতান্দ্রিক আন্দোলন দমন করার

জন্য পরিবর্ধিত করা চলবে না, যে সমস্ত রাজনৈতিক দলের কমীদের বিরুদ্ধে মিথ্যা মামলার্জ্ করা হয়েছে তা অধিলঞ্ব তুলে নিতে হবে। প্রাথমিক তদম্ভ না করে কাউকে গ্রেণ্ডার করা চলবে না। (২) দখল করা বেনামীও খাস জলমি থেকে থ্নষক উচ্ছেদ বন্ধ করতে হবে; বগণিদার উচ্ছেদ বর্ণধ করতে হবে; (৩) কৃষিকার্মের জন৷ প্রয়োজনীয় ঋণ সহজ্ঞলভা করে কুষকদের মধ্যে বন্টন করতে হবে এবং দরিদু কৃষকদের ঋণ মুকুব করতে হবে ও সার্টিফিকেট জারী করে মাল ক্লোকবন্ধ বরতে হবে: (৪) উত্তরবংশ্যর জনা বনা। নিয়োধ সম্পকিত 'মাস্টার স্ল্যান' অবিলম্বে রূপায়িত করতে হবে: (৫) বহা কলকারখানা খ্লতে হবে ছটিটে লে-অফ ও অফিস স্থানাতর 🕾 করতে হবে। চায়ের নীলামের কে: স্থানান্তর কর চলবে না: প্রমিকদের জনা বাধ্যতামালক গ্রাচ্যুর্যট প্রবর্তন করতে হবে; (৬) বেকার'নর কম সংস্থান করতে হবে এবং কর্মপ্রাণিডর পূর্বে পর্যাশ্ত ভাতার ক্সবন্ধ করতে হবে; (৭) অন্টম শ্রেণী পর্যক অবৈতনিক শিক্ষার প্রবর্তন এবং শিক্ষ প্রতিষ্ঠানের প্রধানের অনুমতি ব্যতিরিদে প্রিলশী অভিযান চলবে না: (৮) যুক্তুল প্রবৃতিত পে-ক্মিশনের সূপারিশ (সরকার কর্মচারীদের জন্য) কার্যকর করতে হবে এবং সরকারী কম্চারীদের গণডান্দ্রি স্ব ীকার করতে (৯) প্রবিশ্ব থেকে আগত উদ্বাস্তদে অবিলম্বে পন্নবাসন দিতে হবে এবং ধ সমস্ত শরণাথীর অদ্যাব্ধি সম্পূর্ণ প্র ৰ্বাসন দেওয়া হয়নি তা অবি**লদে**ৰ সমা। করতে হবে; (১০) বনাঞ্চলের অধিবাসীদে ভোগ করে আসা অধিকার কৈছে নেও **ठगर**व ना अवर जारमत भर्मा वनाश्वम मिन्निह খাস জমি বন্টন করতে হবে; (১১) নিয়

াৰহাৰ জিনিসপটের দাম ৰাষ্ট্ৰোল করতে हिंद धार्यर मानाका-मिकादी एनव कमा करेंद्रोव াশস্থী গ্রহণ করতে হবে; (১২) খরা ও **লাখিত অভলে** বা যেখানেই মান্যের ्रमें नार क्रमांस खेळांच पाल माम दाव राजदे ৰ্মাণত জাইলার টেন্ট **রিলিফ ও** খহরতি শাহাযোর বাবদ্থা করতে হবে, এবং (১৩) শ্ব শফায় বলা ইয়েছে রাখ্রপতির শাসনের মবসান ঘটাতে হবে এবং ফুন্টের প্ন-্ৰেকীবন যদি সম্ভবপর শা হয় তবে মবাচন করতে হবে। সেই মিবাচন যাতে া-ঠ.ভাবে হয় অর্থাৎ প্রত্যেক ভোটার মবি'থে৷ ভোট দিতে পারেন তার জন্য পরিবেশ সাম্ভি করতে হবে। আর নির্বাচন য়াতে 'ফেয়ার ও ফ্রি' হয় তার জন্য ব্যবস্থা সবলন্বদ করতে হবে।

রাজনৈতিক প্রসংগে প্রবায় প্রবিষ্ট ভেয়ার আগে ভের-দফা দাবী সনদ সম্পর্কে গমদশী একটি নিজম্ব মন্তবা আমঞ্চনতার গরবারে নিবেদন কবতে। চায়। সেটা ছচ্ছে, গোটা সনদটাই প্রায় ভগবানের মত নিরাকার। কবে, কথন এবং এটাকে কার্যকর করতে হবে সেই সম্পর্কে কোম উল্লেখ নেই এই সনদে। কতক সাধ্য নাবী কার্যকর করতে ছবে খলেই জোর দেওয়া হয়েছে মাচ। গোস্তাকি মাপ করবেন. ভবিষ্যতের উপর ছেড়ে দিয়েই অণ্টবাম শুধু হরতালের মাধ্যমেই এই দাবী মিঠাবার ষে যৌত্তিকতা আছে তা প্রমাণ করবার জনা দচেশ্ট হয়েছেন।

থা হোক, শাদা চোখে দেখলে এই তের দ্ফার মধ্যে বাংলা কংগ্রেস কোন্ দ্ফার যোক্তিকতা সম্পর্কে প্রশ্ন তুলতে পারে তা সহজেই অন্মান করা যায়। বিশেলধণ করলে দেখা যায় ১, ২ ও ৮নং দাবী ছাড়া অন্য প্রশেন মতাশ্তর ইওয়ার কোন স্বা্যাগ নেই। আর শেষ দফার উপর কিছ্ আলোকপাত করবার জন্য হয়ত বাংলা কংগ্রেস একট্ চাপ দিয়েছিল মাত্র।

প্রথমেই শেষ দফা নিয়ে আলোচনা করা যাক। এখানে বলা হয়েছে যে, যদ 'প্রোনো ফ্রান্টের' প্রনর্জ্জীবন সম্ভব না হয় তবে শীঘই নির্বাচন করতে হবে। আর সেই নির্বাচনের জন্য শান্তিপ্রণ অবস্থার স্থিট করা প্রয়োজন, এবং নির্বাচন ফাতে স্কুত্তাবে হয় তার ব্যবস্থা করা প্রয়োজন। একমাত্র যুক্তফুন্টের প্রবর্জীবনের প্রশন ছাড়া বাংলা কংগ্রেসের এই দফা সম্পর্কে জিজ্ঞাসার অন্য কিছ্ন থাকতেই পারে মা া কিন্তু অভীবাম একথা উল্লেখ করল কেন-এই প্রশন যদি জিজ্ঞাসা কেউ করেন তবে, **'সমদশী'র উত্তর হবে এটা অ**ণ্ট্রামের कौमल भारत। कातन भूनत एक विश्वत कथा যদি না বলা হয় তবে সংখ্যা-সংখ্যেই বলাও হয় এখনুই নির্বাচন চাই। আরও বলতে হবে, বিধানসভা ভেঙে দেওয়া হোক। কাজেই গভর্নরের কাছে যদি একথা বলা হয় সরকার গঠনের চেণ্টা চলছে অতএব, ধীরে রজনী ধীরে, গভনারের সেই অবস্থায় विद्यम किए, वलात, शाकरव ना। जात রার্থাপতি শাসনের অবসান, সে ত সরকার গঠিত হলে স্বাভাবিকভাবেই অপসারিত হথে। এ বঙ্কা অতাত মাম্লী, অতত এই দাবীর পরিপ্রেক্ষিতে। কাজেই কংল। কংগ্রেসের এই দফা সম্পর্কে ভিন্নমত পোষণ করার কোন হেতু আছে বলৈ মনে করা যায় না।

এবারে ১, ২ ও ৮নং দফার আসা ষাক। প্রবিশা নিষ্টিউদ বন্ধ করার প্রশেও ষাংলা কংগ্রেস অভিন্ন মত লোমণ করতে शाशा। रेकनमा, कि शामभन्थी कि प्रीक्रिगभन्थी, কোনো রাজনৈতিক দলই পরীলদা অভাচার চলবে একথা বলে নি। বলতে পারে না। **অবে 'গণডান্ফিক আন্দোলন' সংপর্কে'** বা ভার ডেফিনিশান কি এই প্রশ্নে মতাণ্ডর ঘটতে পারে। সেটা অনেকথানি পার-পাদিবকৈর উপর নিভরণীল। অভিজ্ঞতা প্রমাণ করে যে, ক্ষমতাসীন দল বহু ক্ষেত্রেই

গণতা পাক **বি**রোধীদের আন্দোলনকে व्यारमानन वनए क्-छेर्वाथ करतन। वाक्टव ক্ষেত্রে আরও দেখা গৈছে, প্রভাক দল श्रांतिय आत्माननत्वदे भवाधिक भगवान्यक বলে অনাদের উপর নির্যাতন চালাতে কসংর করেন নি। এমন কি বিগত याउसा गरेत সময়ত এর ভূরি-ভূরি দৃষ্টান্ত পাওয়া গেছে। কাজেই বাংলা কংগ্রেদ ঝেছেপু একটা বাম-সালভ ভূমিকা গ্রহণের চেণ্টার তংপর অতএব এই দফা সম্পর্কেও বিশেষ कामि थाकात कथा सम्। कार्यक्रियारे তার প্রমাণ পাওয়া সম্ভব, এই দফা কভোটা মেনে নেওয়া যায়। আর রাজনৈতিক আদ্দোলন দমাবার জন্য আইনের বিরো'শতা ষাংলা কংগ্রেস অতীতেও করেছে।

এর পর ২নং দফা যেমন আছে সেভাবে বাংলা কংগ্রেস মেনে নিতে পারে। মেনেও নিয়েছে। তবে দুলাদলির জন্য সাধারণ ছে।ট

শাস্বত বাঙ্লার অঞ্য র পলিপি

অচিন্ত্যকুমার সেনগ্রেকের নতুন উপন্যাস

यन्मकाखा ७००

বাঙ্লা দেশ ঘুরে বৈডানা বিচারকের চাকরি মিল অতন। কলকাতার মেয়ে জন্নতী ভাকে ভালবাসে, কিন্তু তার সংগ্র মফ্টুর ল ষেত্তে চাইল না-বিয়ে করল কলকাজারই এক শাসালো শিল্পপ্রিষ্টে। কিন্ট্র শেষ প্রযাত পার লা কি সোনার বাঙলার ভাককে উপেক্ষা করতে? 'অটোগ্রা কর খাডায়া যার দশ্তখত একদিন প্রত্যাখ্যান করেছিল, তারই স্বাক্ষরে এবার সিতে হতে স্বামীর মৃত্যুদণ্ড -- সাক্ষীর কাঠগড়ায় এ সা দক্ষিবে না জয়ত্রী : স্থাক্ষর কি শন্ধ্য বিচারকের প্রতায়। : জীবনের আলখিত আর কো মা গ্রদেথর প্ঠোয় নয় ? সর সময়েই অভিনব আচন্তাকুমারের এ আরেক আচ্চর্ম স্থিট।

১৯৬৯-৭০ সালে বিজ্ঞানে র্বীন্দ্র পরেস্কারপ্রাপত

শ্রীদেরেশ্প্রনাথ বিশ্বাসের নারায়ণ সান্যালের নতুন উপন্যাস

यानवक्तारन वभायप 🗝 नागष्ट्रभा

ज्ञान्द्रदेशव भ्रद्धानाधारमञ्

यन यथुप्रस्तिका 🚥 📉 वेवाकात यन

পতীনাথ ভাদ,ড়ীর

म्बरहण्ड हर्ष्ट्रानाशास्त्रद

फिग्छाछ गेर्-विज्ञा

কাশ নাথ

माभ : 5 00

माध : 5२.00 বিমল মিটের

FIN : 0.00

কথাচ রত মানস छात्रएएएथत एथला

২য় ম.দ্রণ ৬০০০

৪৭ মন্ত্রণ ৫-৫০

ভাঙনীক্ষ ৪০০০ অন্যদিন ৪০৫০ ॥ গোপাল হালদার দম্পতি ৫٠০০ **জন্মজন্ম•তী** ৪٠০০ ॥ ধনঞ্জয় বৈরাগী অগ্নিসাক্ষী ৪০০০ শ্যামলীর স্বপ্ন ৪০০০ ॥ প্রবোধকুমার সান্যাল **ৰিপিনের সংসার** ৪·৫০ ॥ বিভূতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায় **পিয়াপসন্দ ৩**-৫০ ॥ রমাপদ চৌধুরী

প্ৰকাশ ভৰন : ১৫, বঞ্চিম চাট্টজ্যে স্ট্ৰীট, কলিকাতা—১২

চাষীর যে সব জান কেড়ে নেওয়া হয়েছে তার বির্দেশই প্রতিবাদ নাকি বাংলা কংগ্রেস জানিয়েছে। অণ্টবামের পক্ষ থেকে পরিব্দারভাবে ব্রকিয়ে দেওয়া হয়েছে যদি এরকম কোন ঘটনা ঘটে থাকে তার প্রকিষ্ট কেনে সমুসত মিটিয়ে দিতে ইচ্ছাক। আর ফ্রন্ট আমলেও তাদের তরফ থেকে যদি এহেন জবর-দখল কিছা করা হয়ে থাকে তবে তা হিসেব-নিকেশ করে ফিরিয়ে দিতে তাদের কোন আপত্তি নেই। অণ্টবামের এই প্রতিশ্রুতি মেনে নিতে শ্রীপ্রজ্যুর মাুখাজির কোন বাধা থাকার কথান্য।

৮নং দফায় সরকারী কর্মচারীদের বেতন ব্ঞির স্পারিশ করা ছয়েছে সেই সংগ্র পে-কমিশনের রায় কার্যকর করাব কথা হয়েছে। শ্রীস্থাজি স্থানতী থাকাকালীন মন্ত্রী-পরিষদের সিদ্ধান্তের ফলেই এই পে-কমিশন গঠিত হয়েছিল। অতএব, শ্রীমুখাজি নৈতিক কারণেও এর বিরোধিতা করতে পারেন না। শুধু সরকারী কম্চারীদের ট্রেড ইউনিয়নেব অধিকার দেওয়ার প্রশ্নটা একটা সংশ্রের উদ্রেক করেছিল এবং তখন নাকি শ্রীমুখা জ সংখদে কর্মচারীদের হাতে তাঁর লাঞ্নার কথাও বাস্ত করেছিলেন। তথানি অন্টবামের নেতারা নাকি বলেন যে, ট্রেড ইউনিয়নের অধিকার দেওয়া হলেও সরকারের হাতে রক্ষাকবচ হিসাবে অনেক বিশেষ ক্ষমত। থেকে যায়। এই উত্তর শোনবার পর শ্রীম,খাজি ঐ প্রসংগ নাকি আর উত্থাপন করেন নি।

আগেই বলা হয়েছে অন্যান্য যে সম্প্রদানী আছে সে সম্প্রস্ত যে কোন বংশবি রাজনৈতিক দলই কার্যকর করার জন্য অক্রেশে প্রতিপ্রতি দেবেন। দিয়েও আসছেন। একট, তলিয়ে দেখলে দেখা যাবে সেই দাবীগালির অধিকার প্রতান যুক্তফুন্টের ৩২ দফার অন্তর্ভুক্ত ছিল। ক্য়েকটা মাগ্র অবস্থার পবিবর্তনের সভ্রেম্মান্তর বাধে নতুন করে তোলা হয়েছে। স্মরণ থাকতে পারে যে, শ্রীমা্থাজি ঐ সম্প্রত দাবী রাপায়ণ্ডের পন্ধতির বিধ্যে বিরোধিতা করে যুক্তফুন্ট সরকারের

মুখামন্তিত্ব থেকে পদত্যাগ করেন নি।
কার্যকির করার পন্ধতির প্রশেবও দলবালীর
নন্দর্শ পারস্পরিক হানাহানিতে পারণত
হয়েছিল, তারই বিরুদ্ধে প্রতিবাদ জানি রাই
শ্রীমুখার্জি পদত্যাগ করেছিলেন। কারণ
তার আশা ছিল যুক্তফুট সরকার মাইন
করে অতি সহজেই ঐ সমস্ত কর্মস্চী
বাস্তবে রুপায়িত করতে পারবেন। অধিকর্মত্ত তারা বামপন্থীর। কার্যকর করার
প্রচেণ্টা শ্রে করলে জনতা যে বিপ্রস্
সমর্থনি নির্বাচনে তাদের জানির্য়েছি, শন
ভবিষাতেও ঠিক অন্রুপভাবেই সমর্থন
জানবেন শ্রীমুখাজির এই ভরসা ছিল।

সে যা হোক, বর্তমানে দেখা যাছে
মার্কসবাদী কম্যানিসট দল ছাড়া—কি অণ্টবাম, কি বাংলা কংগ্রেস বা শাসক কংগ্রেস
কেউই বিধানসভা ভেঙে দেওয়ার কথা
বলছেন না। অণ্টবাম প্রনায় যুক্তুল-ট প্নব্যুক্তাবনের কথা এখনও বলে যাছেন,
আর বাংলা কংগ্রেস ও শাসক কংগ্রেস
সরকার গঠনের কথা বলছেন। অতএব দেখা
যাটে বিধানসভা জিইয়ে রাখার পক্ষেই
মেজরিটি, কাজেই গভনবি সাহেব এই
অবস্থায় বিধানসভা ভেঙে দেওয়ার কথা
বললে তা অগণতাশ্যিক হবে কিনা সেটা
বিচার করা যেতে পারে।

এই ভাণ্টবাম ও বাংলা কংগো-সের আলোচনার প্রউর্ভারকায় রাজা-পালের সংগ্র শ্রীমুখাজৈর रम्था হয়েছে। এখন কর্মসূচীর ভিতিতে চিত্ত করলে দেখা যাবে বাংলা কংগ্রেস ও অণ্টবাম সম্পূর্ণ একমন্ত। অণ্টবাম এই তের দফা দাবী পেশ করছেন সরকারেঃ কাছে অবিলম্বে প্রেণের জন্য। আর জন্য-ভাবে যদি বলা যায় তবে এই কথাই বলতে হয় যে, অণ্টবাম জনতার কাছেও এই সমগত কার্যকর করার জন্য প্রতিশ্রুতি দিয়ে আন্দোলনে সাড়া দেবার জনা আহ্নান জানিয়েছে।

এখন যদি শ্রীভাজর মুখার্জি অণ্টবামের কাছে বলেন যে, তিনি সমসত কমসিটের সংশ্য একমত হয়ে একটি নির্দিশ্ট সময়েব মধ্যে অশ্তত কিছুসংখ্যক দাবী প্রবণ করে দেবেন এবং সেইজন্য সরকার গঠনে নিমিল তাকে সমর্থন করা হোক তা অণ্টবাম কৈ বলবেন? তাঁরা কি কলং পারবেন, কংগ্রেসের সাহায্য নিলে ত সম্থান কাবেন না? তাহলে তাদের পাব প্রতি আর্তারকতার চেয়ে অন্ধ কংগ্রে विर्त्तािश्र हो श्रेष्ठ श्रेष् আর কংগ্রেসকে সরকারে না নিয়ে শ্রীমাখাী যদি একটে রাজাতরণীর হাল ধরেন তং অণ্টবামের কি বলার থাকে? প্রসংগ উল্লেখ করা যেতে পারে যে, তাঁদের ম পারুস্পরিক আলোচনার সময় তাঁরা একঃ হয়েছিলেন যে, রাজ্যে প্রশাসনিক কাঠত বর্তমানে যে অবস্থায় আছে তাতে নিবাং অনুষ্ঠিত হ'লে তা 'ফ্রি ও ফেয়ার' হও অসম্ভব। এই বরু 🖙 মধেটে মিহিত আ যে এমতাবসভা নিৰ্বাচন হলে হু কম্মানিস্টদের - াবিলা করা কঠিন ছট্ বাম কম্ব বর সাংগঠনিক অবস্থ প্রতি নিঃসাধার এটি একটি ভাৎপর্যপ ইত্যিত। অভএব, রাজোর প্রশাসনিক কর হাতে না এলে এই অবাকথাকে অন্ত করে তোলা যে অসম্ভব সেকথা আ থাকলেও অবচেতন মনে তা উ'কিঝ'. মারছে কিনা বলা শক্ত।

শ্রীমুখার্জি এই সমস্ত প্রশন গভীরত চিণ্ডা করেই অন্ট্রামের তের-দফা দাব রাজনৈ তক সম্ভাকা ফলাফল ও প্রতিচি সূহ রাখার নিমেছেন। এবং এই তুরু তাস রাতে নিয়ে শ্রীমুখার্জি তার পরকারাজনৈতিক পদক্ষেপ নির্ধারণ করা শ্রীমুখার্জি হাদ অন্ট্রামের স্তীমুখার্জি হাদ অন্ট্রামের শ্রীমুখার্জার হাদ তবে অন্ট্রামের শ্রীমুখার্জার ও প্রতিশ্রুতি রাখতে করাপায়? যদি ভা না করা হয়—ব্দেহাতিকরণার প্রশ্নে যে এক নয়া স্বাল্লে যাবে, তাতে আর আন্ট্রামিক হামে পরিণত হয় সেটা দেব আশাক্ষায় পশ্চিমবংগ্রাসী কম্পিত হ নজর রাখছে।

---अवम



ভাতীয়তাবাদী ও গণতালিক দল-গুলির সংশা জোট বাধার' কথা বলে প্রোনো কংগ্রেস দলের নেতারা ফ্যাসানে পড়ে গেট্ডন। দলের কয়েকটি রাজা শাণা, বিশেষ বরে গুজরাট শাখা একেবারে বে'কে বসেছে এবং দলের সভাপতি শ্রীনিজ-লিগ্গাম্পা, কোষাধাক্ষ শ্রী এস কে পাতিল প্রভৃতি প্রকৃতাবটির নানারকম ব্যাখ্যা দিয়ে দলের ভিতরকার বিরোধীদের আপত্তির ধরে কমিয়ে দেওয়ার চেড্টায় বাস্ত হয়ে উঠেছেন।

কংগ্রেস ভাগ হওয়ার পর থেকেই
প্রানো কংগ্রেস নয়া কংগ্রেস সম্পর্কে বলে
ভাসেছে যে, কেন্দ্রে ক্ষমতা রাথার জন্য ঐ
ল ক মই বেশী করে কম্যানিস্টদের উপর
নভরিশীল হয়ে পড়ছে এবং শ্রীমতী
ইন্দিরা গান্ধীর সরকার সোভিয়েট রাশিয়ার

তেক বর্ণকে পড়েছেন। নয়াদিয়া প্রানে।
গ্রিস দলের কমিটির যে বৈঠক হয়ে গেল
পানেও এই সব অভিযোগের প্রারাব্যি
রা হয়েছে।

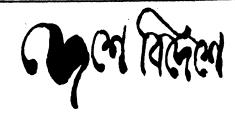
অনাদিকে শ্রীমতী ইন্দিরা গান্ধীও বি অন্গামীরা কংগ্রেস ভাগ হওয়ার ার থেকেই বলে আসে।হন যে, সিন্ডিকেট বতারা জনসংঘ ও স্বতংগ্র দলের সংগ্র মতাত গড়ার চেন্টায় আছেন।

'নয়া' কংগ্রেস দল এই বলে বাহাদ্বিস দাবী করতে পারে যে, এখন মান্ত এই দল নিজের কর্মস্টী য়ের একাই চলছে, অনা কোন লার সংগ্ণ তাকে আঁতাত করতে হয় নি, লাচ 'প্রানো' কংগ্রেস দল যে জনসম্ম ও তথ্য পার্টির সংগ্য আঁতাত করার জনা তথ্য পার্টির সংগ্য আঁতাত করার জনা তথ্য পার্টির সংগ্র আঁতাত করার জনা তথ্য পার্টির সংগ্র আঁতাত করার জনা তথ্য সংগ্রেম্বিক সাম্প্রীর দল পাল্টা কংগ্রেসের নিজেদের সদস্যানের মধ্যে ঢুক্রে দিতে সক্ষম হয়েছেন।

শ্রীনিজ্লিগগাপপা প্রমুখ নেতারা জানেন যে আজ তাঁরা যদি শুধু জনসংঘ ও দকত ও দলের সংগে জোট বাঁধেন তাহলে শ্রীমতী গান্ধী গত এক বছরের বেশী সমগ্র ধরে যে কথা বলে আসাছন, সেটাই সভা প্রমাণত হবে। তাঁদের রাজনৈতিক মর্যাদার দ্বার্থেই কথাটা মিথা। প্রমাণ করা দরকার। সেই কথাকা মিথা। প্রমাণ করা দরকার। সেই কথাকা মিথা। প্রমাণ করা দরকার। সেই কথাকে শ্রীনিজলিগগাম্পা বলাহেন, দক্ষিণপদ্ধী গ্রাণ্ড আলারেন্সা গড়ার রটনাটা তাঁদের হেম করার জন্ম তাঁদের কোন কছাই করার জন্ম অপচেন্টা হাড়া আর কিছাই না আসলে তাঁরা চাইছেন গণতন্ত বাঁচাবার জন্ম গণতন্ত বিশ্বাসী দলগালির করা।

গ্ৰুজরাটে দলের মধ্যে বিদ্রেং
সামলাবার জন্য সেখানে ছুটে গেছেন প্রী
এস কে পাতিল। তিনিও একই ধরনের
কথা বলেছেন। কিন্তু তার ব্যাখ্যার পর
গ্রুজরাট প্রদেশ কংগ্রেস (প্রেংনা) নমিটিব
একজন সম্পাদক বলেছেন যে শ্রীপা, তলের
এই সব চালাকির সংগ্য তারা পরিচিক
আছেন, দক্ষিণপঞ্চী প্রতিক্রমার জোট যাতে
তাদের উপর চাপিরে দেওয়া না হয় সেজনা
তারা সতক থাক্বেন।

শ্রীনিজলিক্দাম্পা ও শ্রীপাতিল [্]যথন এইভাবে জোট বাধার প্রদতার্বাট ব্যাখারে



শ্বারা নরম করার চেণ্টা করণ। হন, তথন
'প্রানো' কংগ্রেসের আর একজন নেতা
শ্রীমোরারজী দেশাই অগতত দ্যেকার
বামপশ্বী দলকে এই জোটে আনার জন।
কথাবাতা চালিয়ে যাছেন। অগততপশে
তাঁর দল, জনসংখ, স্বতক্ত পাটি, এস-এসপি, পি-এস-পি, বি-কে-ডি প্রভৃতি দল
যাতে একটে পালামেন্টের ভিতরে একটি
কথাবন্ধ অক্যানিক্ট বিরোধী পক্ষ হিসাবে
কাজ করতে পারেন, তার জনা শ্রীদেশাই
সংশিল্টা দলগ্লির সংগ্য কথাবাত্
হিলিয়ে যাছেন।

এই সব ব্যাখা।, আলাপ-আলোচনাটির
মধ্য দিয়ে পরিব্দার যে, (১) 'প্রানো'
কংগ্রেস নেতারা কতকটা পিছিয়ে এসেছেন,
(২) প্রস্তাবিত জোটের স্বর্প ও উদ্দেশ।
কি সে বিষয়ে ধারণাটা অনেকটা ঘোলাটে
হয়ে গেছে এবং (৩) জনসংঘ ও স্বতদ্য
দল ছাড়া-অনা কোন দলকে প্রস্তাবিত জোটের মধ্যে পাওয়ার স্ম্ভাবনা ক্ষীণ হয়ে

শেষ পর্যাত্ত ঐ জোট বাঁধার প্রস্তাবের সারবস্তু বলতে কতট্কু অর্বাশষ্ট থাকবে, সে বিষয়ে বিলক্ষণ সন্দেহ দেখা দিচ্ছে। তবে, 'প্রোনো' কংগ্রেসের নেতারা এগিরে যাচেছন। আগোমী ২০ ও ২১ জালোই তারা দক্ষিণ ভারতের মণ্দির-শহর তিরু-পতিতে মিলিত হচ্ছেন। বলা হচ্ছে থে. দক্ষিণ ভারতের রাশ্যগর্মালর জনা নির্বাচনী কৌশলী দিথর করার উদ্দেশ্যে ঐ সব রাজ্যের কংগ্রেস নেতাদের যে সম্মেলন ইচ্ছে, সেই উপলক্ষেই নেতারা তিরুপতিতে যাচ্ছেন। কংগ্রেসের ইদানীংকালের ইতিহাসে তির্পতি শহরের একটি বিশেষ ভূমকারয়েছে। এই তির্পতি শহরেই কামরাজ পরিকল্পনা তৈরী হর্ষেত্ল. এই তিরুপতি শহরেই সিণ্ডিকেট নেতাবা শ্রীসঞ্জীব রেভিকে রাণ্ট্রপতির পদের অবন্য মনোনয়ন দেওয়ার সিংধান্ত করেন। ঐ তিরুপতিতে 'প্রোনো' কংগ্রেস নেতারা 'ক আবার ন্তন কোন ইতিহাস তৈরী করতে চাইছেন? এই প্রশ্ন উঠছে। লক্ষ্য করার বিষয় যে, নেতাদের ঐ বৈঠকের তারিখ এমনভাবে ফেলা হয়েছে, যাতে বৈঠকের আগেই জনসংঘ, স্বতন্ত্র পার্টি ও সংঘ্রপ্ত সোস্যালিন্ট পার্টর জাতীয় পরিষদের অধিবেশন হয়ে যাবে এবং জোট গঠনের প্রদতাব সম্পরের্ক তাদের সিম্ধান্তও জানা

মহারাদ্র নিরা কংগ্রেস দলের একটা শস্ত ঘাঁটি বলে গণা করা হয়। সেখানে নায়ক মান্দ্রসভা থেকে রাজস্ব মন্দ্রী ও মহারাদ্র

বিধানসভার কংগ্রেস দলের ডেপ্রুটি লীভার ক্রী ডি এস দেশাই পদত্যাগ করাম শঞ্চ ঘটির মধ্যে দলের দ্বালতা প্রকাশ পেরেছে।

গত মাসে নয়াদিল্লীতে নিশ্বল ভাবত কংগ্রেস (নিয়া) কমিটির বৈঠক চলার সক্ষয় মহারাণ্ট্র বিধানসভার ক্ষেক্তেন নয়া কংগ্রেস সদস্য বিধানসভার দলের নেতৃত্ব থেকে শ্রী ডি পি নায়ককে সরাবার দাবী জানিয়ে একটি স্মারকলিপি প্রচার করে-ছিলেন। মুখ্যুদতী নায়কের বির্দ্ধে একটি অভিযোগ হল, 'ভিওরাণিড ও জলনাওয়ের দাবগা দিবারণ করতে তিনি বার্থা হ্যেছেন।' ঐ স্মারকলিপিতে বানের স্বাক্ষর ভিল তাদির স্থাধিকাংশই সহারাণ্ড শ্রীদেশাইয়ের অনুগত বলে প্রতিতঃ। (শ্রীদেশাই মারাধা' সম্প্রদা্যের একজন নেত্রা বলে স্বীকৃত)।

গত ও জুলাই তারিথে মহারাষ্ট প্রদেশ
কংগ্রেস ('নয়া') কমিটির সভায় নারকবিরোধী সদস্যদের এই আচরণের প্রস্রুত্বের
কথা ওঠে। বিদেশ আমন্তলে প্রীচাবন ঐ
সভায় উপস্থিত ছিলেন। প্রকাশ, শ্রীচাবন
কঠোর ভাষায় মুখামন্ত্রীর বিরোধীদেব
বির্ণেধ বাবস্থা অবলন্দন করতে বলেন।
সভায় নাকি এমন ইণিগতও করা হয় যে,
সম্প্রতি বিধান পরিষদের নির্বাচনে দলের
যেসব পরাজয় ঘটেছে, সেগালির জন্য দারী
প্রীদেশাই ও তরি অনুগামীরা।

ক্ষিটির ঐ পভার পর দিনই **গ্রীদেশাই**মান্তসভা থেকে ইস্ভয়া দেন। ম্থামান্তী
নারক সে সমরে নাগপ্রে ছিলেন। গ্রীদেশাই
টোলফোন করে তাঁকে পদত্যাগের কথা
জানিয়ে দেন। প্রকাশ যে, গ্রীদেশাই তাঁর
ঘনিষ্ঠ বংধ্দের বলেছেন, 'কোন আছামর্যাদান্তানসংপর মান্যের পক্ষে মান্তা
মতার ও সংগঠনে কাজ করা সম্ভব নয়।'

শ্রীদেশাইয়ের এই পদত্যাগের ফলে 'নয়' কংগ্রেসের ভিতরকার অনৈক্য প্রকাশ পেষেছে। এর জের কতদ্র গড়াবে তা এখনও বোঝা যাছে না। তবে, 'পুরানো' কংগ্রেস স্পণতৈই এব্যাপারে খুশী। মহা-রাণ্টের ভারতীয় ক্লাঁত দলের সভাপতি শ্রী ভি আর পাওয়ার ইতিমধ্যে শ্রীদেশাইকে তাঁর দলে যোগ দিতে আমন্ত্রণ জানিয়েছেন।

পাঞ্জাবে 'নরা' কংগ্রেস দল কি করবে ঠিক করে উঠতে পারগ্রহ না। শাসন ক্ষমতায় অধিকিঠত অকালী দল 'নরা' কংগ্রেসের সমর্থনের নাভের জনা উঠসভে লেগেছে। এই সমর্থনের ম্লা 'হসাবে সম্ভ ফ'ত সিং একালী দলের নেপথা-নেতৃত্ব পেকে এক বাছনীয়ি গকে সার যেন্ডেও রাজী আছেন বলে শোনা বাছে। এই

ì



সমর্থানের বিনিমরে অকালী দল পাওরার থেকে 'নরা' কংগ্রেস দলকে পালামেনেটর করেকটি আসন পাইরে দেওয়ারও নাকি প্রলোভন দেথাছে। পাঞ্জাবে 'নয়া' কংগ্রেম সদস্যদের একাংশ এই প্রশ্নতাব গ্রহণ করতে চান, তথন অন্য এক অংশ কিম্তু এই প্রশাবের ঘোরতর বিরোধী। দুই অংশই দিল্লীতে দলের নেডাদের কাছে ছোটাছ্টি করছেন।

এদিকে, মুখামলতী গ্রীপ্রকাশ সিং বানল অবশেষে আগামী ২৪ জুলাই পাঞ্জাব বিধানসভায় শক্তি পরীকার সন্ম্বীন হতে রাজী হয়ে0হন। সংতাহখানেক আগেও তিনি বলছিলেন, সেপ্টেম্বর মাসে প্রাভাবিক সমরেই' তিনি বিধানসভার অধিবেশন **एाक्टरन। त्राक्षाभाम ७ विद्याधी मन**-গ্ৰান্ধার চাপে তিনি পরে ৫ই আগখ্ট তারিখে বিধানসভার অধিবেশন ডাকবেন বললেন। শেষ প্যশ্ত রাজ্যপাল যখন ২৪শে জলাই বিধানসভার অধিবেশন ডাকার त्नारिम निर्मान, उथन भूश्रमकी तमालन বে, রাজ্য সরকার ভার সপ্ণে পরামণ করেই ঐ তারিখ বোষণা করেছেন এবং তিনিও হথাসম্ভব শীঘ ভার বিরোধীদের শক্তির পরীকা দেওয়ার স্বোগ দিতে চান। জনসংঘ দল কোরালিখন ত্যাগ করার
পর ইতিমধ্যে পর পর সাতজন বিধানসভা
সদস্য মুখ্যমধ্যীর দল যোগ দিয়েছেন।
বিধানসভায় মুখ্যমধ্যীর দলের সদসাসংখ্যা
এখন দাঁড়িয়েছে মার ৪৩। পাঞ্জাব বিধান-সভার আসন সংখ্যা ১০৪।

ম্থায়কটা বাদল কিব্তু এখনও জোর-গলার বলে বাজেন, বিধানসভার তার সংখ্যাগরিষ্ঠতা আছে, কেননা, তার মতে সেমুক্ত প্রগতিশীল দল তাঁকে সমর্থন করবে' এবং প্রগতিশীল দল বলতে তিনি কংগ্রেসকেও বোঝেন।

and the second

শ্রীগ্রনাম সিং যখন পাঞ্জাবের মুখ্যমাল্টী খিলেন সেই সময় তাঁর কতকগ্লি
কাজ সমপকে এখন তদন্ত চলছে। এই
তদন্ত করছেন এমন একজন অফিসার যিনি
শ্রীগ্রনাম সিংরের আমলে দণ্ডিত ছঙ্গেছিলেন। ভূতপ্ব মুখ্যমাল্টী আশাশ্বা
প্রকাশ করেছেন যে, রাজ্য সরকার হয়ত
তাঁকে গ্রেণতার করতে পারেন। সেইজন্য
তিনি আগেডাগেই আদালত থেকে জামিন
নিরে এসেছেন।

পাঞ্জাবে ষথন ালী দলের সং দেয়া কংগ্রেস দে হাত মেলাবার ব উঠছে তথন উত্তরপ্রদেশে কিন্তু নি কংগ্রেস দলের সংগ্রে ভারতীয় ক্রাণিত দিং জোট একটা নৃত্ন অস্বশিতর মধ্যে পড়ো

এই তৃতীয়বার ভারতীয় ক্রান্তি দ জাতীয় কাষ্িনবাহক স্মিতি কংগ্রেসের স**েগ** সংয**়বির প্রদতান প্রত্যা**ধ করলেন। প্রত্যাখ্যানের সূরটা নর্ম ক জন্য এবং সংযুক্তি প্রস্তাবের সবচেয়ে সম্থাক যিনি সেই দলের সভাপতি 🤻 শ্রীচরণ সিংয়ের মুখরক্ষার জন্য অ কাৰ্যনিৰ্বাহক **সমিতি একট্ৰ- রেল্খ**-ে সিম্ধানত নিয়েছেন। **সমিতি বলেছেন** সংয্তির প্রস্তাবটি নিয়ে, জ্বাক বিকেচনা করে সমিতিকে উপযুক্ত পরা দেওয়ার ভার দলের সভাপতি 🖺 সিংকে দেওয়া হল। কি**ন্তু বে ভা**ষা সিন্ধান্ত নেওয়া হোক, এটা পরিক্ষার উঠেছে যে, সংযক্তির প্রস্তাব বাতিল দেওয়া হয়েছে।

এই প্রত্যাখ্যানের ফলে উত্তরপ্র 'নরা' কংগ্রেস দলের সংগ্য ভারতীর ই দলের কোর্মালিশনের আর্হ্ব আনিশ্চিড পড়ল।

\$ 19 190

A Vision



ৰন্ধ, হরতাল ও তারপর

বাংলাদেশের রাজনীতি নিয়ে বাঁরা মাধা ঘামান তাঁরা আট পার্টি ও ছয় পার্টি জোটের কার্যকলাপে খ্বই কোত হল বাধ করবেন। পশ্চিমবংশ্য এখন রাষ্ট্রপতির শাসন চলছে। তার বিরুদ্ধে প্রতিবাদ জানাবার জনা আট পার্টি এবং ছয় পার্টি সাধারণ মানুষকে বাংলা বন্ধের তাক দিয়েছিলেন। রাষ্ট্রপতির শাসন কারো কাম্য নয়, এটা জানা কথা। কিন্তু রাষ্ট্রপতির শাসন বাংলাদেশে কেন প্রবিতিত হল তা নিয়ে তো এই আটেছয়ের জোট কোনো কথা বলছেন না। ১৯৬৭ সালে বাংলার কংগ্রেম-বিরোধী বামপন্থী পার্টিগুলো রাজ্য শাসনের সূত্রপ্র্যোগ পেয়েছিল। বামপন্থী দলগুলোর মধ্যে কোনো কালেই আদর্শগত বা কার্যস্চাতিত্তিক ঐকা ছিল না। কংগ্রেম বিরোধীতার মঞ্চে তাঁরা এক হয়েছিলেন। পার্লামেন্টারি শাসনে এক ধরনের পার্টিগত সমঝওতা করে নিতে হয়। ১৯৬৭ সালের নির্বাচনের পর কংগ্রেম-বিরোধী পার্টিগুলো সেই সমঝওতার ভিত্তিতে রাজাশাসন ক্ষমতা লাভ করে। কিন্তু বাপেক দলতাগের কলে সেই মন্ত্রিসভা রক্ষা করা সম্ভব হয়নি। সত্যি কথা তখনও তাঁদের পালামেন্টারি ঐক্য অট্ট ছিল বার ফলে ১৯৬৯ সালে মধাবতী নির্বাচনে যুক্তমন্ট বিপ্লে সংখ্যাগরিষ্ঠতায় আবার ক্ষমতার ফিরে আসে।

১৯৬৯ সাল থেকেই বাংলাদেশে বামপন্থী রাজনীতির অণিনপ্রীক্ষা। পার্লামেন্টারি পন্ধতিতে ক্ষমতা পেলে কীভাবে তা বাবহার করতে হয় এবং কতথানি সূবোগ-সূবিধা জনসাধারণকে তাঁরা দিতে পারেম তা দেখাবার সূষোগ তাঁরা পেরেছিলেন। কংগ্রেসের এমন ক্ষমতা ছিল না যে পেছনের দরজায় কারসাজি করে তারা যুক্তফুনকৈ রাইটার্স বিলিডং থেকে হটার। কিন্তু তা সত্তেও যুক্তফুন ক্ষমতাচ্যুত হল নিজেদের শরিকদের মধ্যে পারস্পরিক বিশ্বাসঘাতকতার।

এখন তাই বাংলা বন্ধের ডাক দিয়ে এবং হরতাল পালন করে রাখ্যপতি শাসনের বির্দেধ এই বিক্লোভ জানানোর মধ্যে রাজনৈতিক অসপগতি অনেকেরই নজরে পড়বে। প্রথমে তো দুট্দিন দুটি তারিখে বন্ধের ডাক দেওরা হরেছিল দুই পরস্পরবিরোধী পার্টি-জোটের তরফ থেকে। পরে ও'দের স্মৃতি হওয়ায় একই দিনে হরতালের তারিখ ধার্য করা হয়। কিন্তু এই হরতাল বা বন্ধের কার্যকারিতা আরে কী অবিশিন্ট আছে, তা কি বাংলাদেশের রাজনৈতিক দলগালো আবার একটি তলিয়ে দেখবেন। রাজনৈতিক কারণে উন্দুদ্ধ হয়ে অলশ লোকই বন্ধের সামিল হয়। কিছু লোক ভয়ে বন্ধ করে, অনারা তো একে একটা বাড়তি ছাটি বলে গণা করে। রাজনৈতিক হাতিরার হিসাবে হরতাল বা বন্ধের গরেছে কমে গেছে। রক্ষান্স বারবার বাবহার করলে তা ভোঁতা হয়ে যায়। বাংলাদেশে হরতাল বা বন্ধের রাজনৈতিক প্রয়োগও সে কারণেই ক্রমণ তাংপ্রহান হয়ে পড়ছে কিনা, ভেবে দেখতে হয়।

পশ্যতিই বামপ্রথী দলগালো এখন দাই বা ততোধিক শিবিরে ভাগ হরে যাকে। তাদের রাজনৈতিক বিরোধ এড ভীর যে কোনো কারণেই এদের মধ্যে মিল হবার সম্ভাবনা নেই। এই বিরোধ থেকে রাজনৈতিক সংঘর্ষের উৎপত্তি। নিজের নাক কাটা সাক কতি নেই, অপরের যাতাভগা তো হল! এই বন্ধা রাজনীতির শিকার হচ্ছে জনসাধানণ। এরি মধ্যে চলছে উপ্রশানিত্বি উৎপাত ও তাশ্ডব। রাজ্যা সান এখন যাঁদের হাতে তারা এই সমস্যার মোকাবিলা করতে মোটেই সক্ষম নন। এদিকে অর্থনিতিক বাজার বাংলার অবস্থা শোচনীয়। তার কলকারখানায উৎপাদনের হার মদ্যা। অনেক কলকারখানা বন্ধ। বাজনৈতিক অনিশ্রেতার কারণে অনেক শিক্তা-কারখানা বাংলার বাইরে পা বাজিয়েকে। কমবর্ধানা বেকার সংখ্যা যাবক শোলীর মধ্যে হত্যাশা ও ব্রেণে পঞ্জীভত করে দিকে দিনের পর দিন। দর্ভাগোর কথা এই যে রাজনৈতিক নেভাবা এই আরম্ভান মান্ধে ও পারনো কাবদার এর পরিবর্তন আনতে চাইছেন। এর শ্বারা বে সক্ষেল পাওয়া শন্ধ তা এই কেতারা ব্রুষতে পারছেন মা, এটাই আশ্বর্ধ।

नीयाख शांक्राया

मिर्दिन हर्द्वाभाशाश

ঝ্লবারান্দার কোণে এখন সন্ধার ধ্লোঞ্জ নাগকেশরের চোথ জেগে থাক বিনিদ্র রজনী কুল্ণগীতে বারের পাঁচালী প্রদীপের তেল সলতে তৈরী রাখতে গ্রুবধ্ চিন্রপট ভেঙে চলে আসে।

সমস্ত দেয়াল ছবি দিনে দিনে দ্লান হয়ে গেলে কি থাকে কিই বা থাকে প্থিবীর উজ্জ্বল সম্ভার সময়ের থরশান রোদে জাগা পাহাড়ের বিপ্রতীপ দিকে ভালোকের নির্মম প্রশ্লা।

পা হাবাহারের দেহে তব্ও বণালী আঁকে
আলোবাশাসের কররেখা
ছিড়ে যায় দিকসীমা
সীমানেতর ছবে কটি।তার
নাগ্রেশারের ফ্রেল জমাট ব্রেকর কারা
অগ্রেয় গুড় বেদ্যার

দ্টি কবিতা

ত্রিম।।

প্রতিয়া সেনগুণ্ডে

তুমি এক আশ্চর'!
কি নাম দেওরা যেতে পারে জানি না;
কানে অভিধানেরই বোধহয় তা জানা নেই,
তাই আমার বিপর্যাপত আঝার প্রতিটি মুহুতা আজ আকৃত্
তোমাকে প্রা করে পাওয়ার আশায় হ্দয় মেলাতে চাইছে
আমাকে ব্যাতে গাও।

भिभिन्न।।

তুমি আমাকে বধন কিছু লাও
খ্বা বেশী করে দিরে ফেল; বা নেবার মত স্লুড় মর
এই করতল; অথচ
তীক্ষা একাগ্রতার তাকিরেছিলাম আমি ওরই জন্যে;
এখন এই মুঠোর মধ্যে সন্তিত রাজেন্বর্য টলমল করছে
অথচ হাদর কপিছে থরথর করে এক ফাঁকা অম্ভৃতির ই
তোমাকে মনের বেড় দিরে আকণ্ঠ পান করতে পারছি না
আমি কি বোলা!

শরীরের বাগানে।।

অজিতেশ বন্দ্যোপাধ্যায়

শরীরের বাগানে তোমার অজস্ত ফ্ল, অদেকা
আমি ক্রমর নই দক্ষিণের বসন্ত বাতাস অপ্রমের
আনন্দ কিংবা লুন্দ এবং রঙীন প্রজাপতি নই
তব্ বারবার কোন অনামী স্বাস্থাবান পানীরে
পূর্ণ করে রঙীন পরীরেচ আমার এ ভিক্ক্
ওগঠের প্রকাশে ধরেছো মোহবরী। শরীরের মদ
সবচেয়ে সেরা বলে খাডে প্রচিন গোধ্লি থেকে।
তদনক ভেড়ার পাল সৌন্দর্য বেচেছে শীতে
পাশমী কাপড়ে; অনেক অনেক রাঙা
প্রজাপতি মরে আছে রেশমী আর্তে।
শরীর শরীর চাকো ক্ষায় জন্তর হয়ে
আকাঞ্জারা কানে তো কান্ক এই কথা
বলে গেছে কৃষ্ণ পক্ষ রাতে কোনো অন্ধ জমপতি।

ভামরা এখানে আছি ততদিন শরীরে সাবান দিই: স্পেধ কলোল ফলধারা: আয়নায় আকাংকার মুখ ধরা পড়ে।



শতকশ্র মতন ভীতু মন্ব তায়ি প্রটা সেখিন। ও যে কিসে ভয় পায় থার মা পায় তার হদিশ পাইনে। অধ্ ल आभारतित घटन श्रीतश्रुव व्याम्श्राम ব্ৰক। কলেকে ভালো দেপাৰ্টসম্মান ছিল। जीतान मार्गेक करत त्रमाम जानम करताह। ছোটো সংসার। দ্বী দীলা আর ছোটো

নভেন্দ বদি নিৰোধ হত তাইলে ওকৈ এক রক্ষ ব্রুতাম। বরং আমাদের থেকে বেশি পরিমাণেই ওর চোখ-কান (थामा।

माजन्य वेटन, ना लाउन अवक्य किन मा। हेमानीः तकन त्य धमन हतह।

व्यक्ष विमृथ सत्त, व्याधिक हिन्दा छ सद्र।

নভেশ, বলে, খতক্ষণ বাড়িতে গানি একরকম। তারপর বাড়ি থেকে এক পা বৈর্কেই মন্দ্র হয় আমার অজ্ঞাতে কী रम्भ बर्रत गाल्हा छत्र छत्र छात्र छत्।

তেজার ভৈত্রে কাঁকোনো পাপ-

'नाभ!' मात्रमः, तता, 'मा। ति'फ्र আছি এর চেরে আর বড় পাপ কী

'दि'कि शका भाभ!'

'नहा : आमात, ति'राठ-शाकात अश्रहे इटिइ जारतकसमारक स्मात स्माना। मनाई যেন আমার দিকে আঞ্চলে দিয়ে দেখাতেঃ ाडे. এई प्रारे लाक। **धतका** धक्छा অনিশ্চয়তা নিকে কাঁ করে বাঁচা গায় বলো তো? তোমরা বে'চ গেছ ভোমাদের এরকম হয় না! কিন্তু আমি, আমার কী

की वसङ् शांभास्मत माजा ? कृषि वर्षाः থেকে ভাৰ কী ক্ষতি হচ্ছে :

নভেৰ্ত ব'ল, তেব আমি জয় পাছি किन ? नीना वतन, उखरना मा आधना आहि।

অথচ ওরা আছে বলেই তো **ভাবনা।** খানার একার জানো নয়, আমরা সবাই এতসংগ আছি সেই জনো ভো আলে

^{'ভাবনা} আর ভর কী এক জিনিস ;' की कामि। छत् नाहेल तन्तुलहै... स्मिन এको लाक स्मीए वास्त्र छैठेहिन, আমি থমকে দাড়ালাম। আমার ভবিণ ভত্ন कर्ता इत। शुरुक्तन मा त्नाकरी तात्र छैत প্তৰ হতক্ৰণ আমার ভই হাকিল মা। তারপর হৃপি ছেড়ে নিশ্বাস ফেললামাঃ भरत इल आधि लाकछोड़े वाटन फैटोडिं।

'শহরে বাস করলে "নায়্গুলো ^{াদের} এরকম উক্রেক্কিক **প্রভা**ট অফাদের এরকল্প **जेरर्शकड शका**ई

'ক্যি ব্ৰহ এটা ম্নার্ত্ত বাপের : 'छाटे मांस इस। ट्यांमान मारण मारल शास्त्र किनोट डेरेक करत ना श्रीष्टात राज करेली रणकारक तर किन्द्र तरका थान थाईस

নিতে হবে। সভাতা মানেই কে কত বেশি পরিবেশের সংগ্যে খাপ খাইমে নিতে গারে!

'দ্যাথো বতকণ না বাড়ি ফিরছি মনে হচ্ছে আমার অবর্তমানে ভয়ংকর কিছু একটা ঘটে গেছে। রস্থ কিংবা...'

'তুমি বেশি-বেশি ভাবো। অত না ভাবলেও চলে।'

ু কী জনি, রাস্তার ভিড়ে ভিড় হতে পারিনে। মনে হয় আম আলাদা, বিজ্ঞিল, আপছাড়া এগিরে চলেছি। কাউকে চিনিনে, কাউকে হ্রিনেনে, ভিনদেশীর মতন। আর তথান ভরটা সাপের মতন স্বাংশে জড়িরে ধরে। বেন ওরা আমাকে চিনে ফেলবে, ফেলছে, আমাকে ধরতে আসছে। আমার চারদিকে পাথরের দেয়াল দেখি।'

'তোমার চিন্ডাগাহুলার কোনো মানে নেই। অথবা তুমি কিছু গোপন করতে চাইছ।'

'এরচেয়ে আমি যদি ধরা পড়ে যেতাম, ওরা যদি সতিটে আমার বিচারক হত. একটা ফয়সালা হয়ে যেত। আমি এই যন্ত্রণা থেকে বে'চে যেতাম। অথচ ওরা আমাকে কোনোদিনই ধরবে না, দরে থেকে আল্যাল দেখিয়ে ফিসফিস করবে: এই, এই সেই লোক। আহ।' একট থেমে দীর্ঘশ্বাস ফেলেঃ 'আমি যেন দাগাঁ হয়ে গৈছি। সেইটেই এক শাহ্তি। যতক্ষণ ঘুলিয়ে থাকি মরে থাকি। সকালে ঢা থেয়ে, বাজারের গালতে হ্বহ্ তিনটি ভিখিরি, বাব, দুটো প্যসা...। সে যে কাঁ অভ্যাচার। একেক দিন জেদ করে দ্বটো একটা পয়সা ছ'ড়ে দিয়ে আগ্ন-লাগা মানুষের মতো উদভাশ্ত ছিটকে বেরিয়ে প্রেছি। হাওয়ার সময় এবং আসার সময় ভরা আমার বাজারের থলির দিকে শাদাটে ভতের চোখে তাকিয়ে থাকে। ওদের মণি-হারা চোখের ভাষা ত্রি দ্যাখোনি।

'বারে, তুমি একা এসব ভেবে মন খারাপ করবে কেন? তুমি তো কোনো কিছরে জনো দায়ি নও। তোমার যোগাতার বাইরে তুমি তো কোথাও হাত বাড়াওনি।'

'তাহলে আমি ভয় পাচ্ছি কেন? আমার বাঁচবার প্রক্রিয়াগুলোই আমাকে ভয় পাইফে দিক্তে। আমি আমার মেয়েরা, আমার স্ত্রী, আমার চোখে যত পরিন্কার সভা হয়ে ওঠে ততই আমি মিথা। হয়ে যাই। মনে ছয় আমি একদিকে অধিক ঝোঁক দিলি। ফলে ভারসাম্য প্রতি মৃহ্তে নন্ট হচ্ছে।... অমার কৈশোরের ফ্রেমে-আঁটা মামাবাড়ির মধ্যর স্মৃতির কথা তেমাকে কলেছি। কী ছল? যৌবনের প্রাদেত এসে সে-স্মৃতি খর আগুনে ঝলসে কিম্ভুত হয়ে গেল। কালকে সেজমামার এই প্রাঘাতঃ 'আমার একমার শয়নগাহের খড়ো চাল বৈশাখের কাডে উডিয়া গিয়াছে। তমি একশত টাকা পাঠাই'ল ঘরটাকে খাড়া করিয়া জলিতে পাবি। তমি বিবেচক, তোমাকে অধিক কলাই বাহালা।' আমি যে এক্লো টাকাও পাঠাতে পারিনে সেক্সমামাকে কী করে বিশ্বাস করাবো? অথচ স্লান্নাবাড়ির
থিড়াকর প্রকুর পেরিটে আমবাগান,
তাঁন্দের অবকাশের দুপ্রগ্রেলা বাগানের
কু'ড়েতেই কাটও। আহ্ । কা বলছ?
চিঠির জবাব দেবো না ? দিলাম না । হরতো
টেনের মাশ্রা জোগাড় করে মামাবাব্র এডদরে চড়াও হবেন না । কিল্ড...আমার বিবেক? আমাকে দস্ডুরমতো বিবেচক বলে উনি বিশ্বাস করেন। পরিস্থিতিটা ভূমি ব্রতে পারছ? বিকেক খ্যাতির লোভ কাটনোও মুশকিল।

আমার মুখের কথা কেড়ে নিয়ে নভেন্দ আবার বলে, 'একা ছলে ভয় করতাম না। কিন্তু আমার লীলা, আমার মেয়েরা, এদের জনোই ভয় পাই 🕽 ওরা আমার ওপর বেশি নির্ভার করে রমেছে কিনা! অথচ ওরাও আমার মন্দভাগ্যের সংশ্য জড়িত। ওদের দোষ নেই, তব আমাকে বধাড়মির দিকে নিয়ে যাবার সময় ওরাও আমার সংগী হবে। একসংগ্র আছি বলেই ভয়টাও বেশি। ছোটো মেয়েটার একদিন অসুথ হলে শংকিত হয়ে পড়িঃ বোধ হয় ও আর বাঁচবে না। কেন এমন হয়? আমি তো জ্ঞাতসারে কোনো গহিতি কাজ করিন। তব্, জ্ঞানের অংগাচরেও পাপ আছে।

'তুমি এইভাবে ভাবতে শ্রু করলে...' 'কী করব? ঢেউয়ের মতন একটার পর একটা ভয় আসছেই। বয়েস মানেই ভয় নিমে বাস করা। বয়স্কতাই একটা বিপদ। দাাখো প্রথম যৌবনে ভালবাসার পারী নির্বাচনে আমি একটার পর একটা ভল করে গেছি। দুটি মেয়েকে বিভিন্ন সময়ে আমি একরকম বিষের সম্মতিই দিরে ফেলেছিলাম। বিয়ে করলাম তৃতীর জনকে। আমি নিকেই অবাক হয়ে গেলাম। আগের নেয়ে দুটোর সব্দো আর দেখা হর্মন। নাঃ ভূল বললাম, চিত্রার সঙেগ হঠাৎ দেখা হয়ে-ছিল তিন পাহাড় স্টেশনে। **ও** সেদিন °ল্যাটফরমের হা-হা বাতালে দাঁড়িলে ছোটু প্রশন করেছিল, 'আমার মার কাছে আমাকে অপমান করার কী হেতুছিল? আর রঞ্জিতা সেদিন খবর পেলাম লিউকো-মিয়ায় সে হাসপাতালে মাত্র বাইশ বছর বয়েসে মারা গেছে। চিতা বিয়ে করে যথারীতি জননী হয়েছে, সম্ভবত সুখী **হয়েছে।** কিন্তু রঞ্জিতা, ওর অকালম্ভার পিছনে আমার কী কোনো হাত ছিল? আমি কী ওকে বাঁচাতে পার্তাম!'

'তুমি অতীতকিহারী হয়ে পড়ছ। গতসার শোচনা করে লাভ কী?'

'লাভ-লোকশানের কথা নর ভাই। তুমি কোনো সামাজিক নৈতিকভাষ বিশ্বাস করো না? বা রক্ষার দায়িত্ব রুমেছে বাজিপত মান্বের ওপর: আমাদের এমন কোনো কাজ নেট যা সমাজকে আঘাত করে না। ভালোই ভাক আব মন্দট চোক। অথচ একদ ভাবতাম: আঘার কাজগালি নিছক আনাড়ি, ভাল জন্ম কালব দায়িত নেট। এই ভল দুন্টিভালি গোলে সামাজিক নৈতিক-হীনভাগালি ঘটে থাকে।' 'ভূল-প্রাণ্ডি মান্বের জীবনে থাকবেই। মানুষ তো আর ঈশ্বর নর।'

'না ঈশ্বর নয়। তাহলে ভো নির্ম্বাদর নিবিকলপ থাকতে পারতাম। মান্যৰ কলেই তো হরেছে জনলা। একদিন ব্ৰতাম না কোদন ব্ৰুলাম সেদিন আমার বাবামশারের পরিকল্পনাহীন জীবন সম্পর্কে সমা-লোচনা করেছিলাম। মনে হরেছিল আমার জীবনের পরিকল্পনাহীনতার জন্যে দায়ি আমার বাবা। অথচ কেউই দায়ি নর। জীবন এইরকমই। জীবনে পথচলার কোনো গ্রেমশার নেই। তাই শরসংধান এবং লক্ষ্যবস্তু সম্পর্কে জ্ঞানের অভাবে एउटम हललाम। यथन त्य चाएँ त्लिशिह, আবার ভেসে গোছ। তারপর ক্লান্ড হয়ে প্রাচীন গাছের গু'ডিতেই আশ্রয় নিরোছ। গড়ানে পাথরের মতন এই জীবন। স্থিতি পেয়ে বারবার পিছনের জীবনের দিকে তাবিয়ে চলেছি। আর নাভাস হয়েছি: এই की मन्द्रश-क्वीरन? जाइः। भवकितः ক্ষেতে কাকভাড্যার মতন আমার নডবডে আকৃতিটা হাঁহয়ে দাঁডিয়ে রয়েছে। তারপর অনেক বর্ষার জল আর গ্রীন্সের তাপে দ্মড়ে-ম্চড়ে বিবর্ণ হয়ে গেছে। কণ্ট হয় না, কর্ণা জাগে। কে আমার নাম দিয়েছে মানুষ? আমি একটা শ্লা। আমার ভার নেই, আয়তন নেই, আমি কিছ,ই নই।'

'ভূমি বড় হতাশায় ভূগছ। এই হতাশা ডোমাকে মেরে ফেলবে।'

'না ভাই, আমার এই মূড় অলিস্তভ্রের জের <mark>আর</mark> আমি টান:ত পার্রছিনে। কেন এমন জাবনটা হল? এর মানে কাঁ? কেন প্থিবীতে পা দেবার মহেতেইি আমি ব্ৰুক্তে পারলাম না আমাকে অর্থপূর্ণ হতে হবে। আমি মহৎ কোনো উদ্দেশ্যের অন্ধ **যন্ত হতে পা**রি আমার প্রতি-শ্রতিগ্রন্তো আমাকে 🗊 করতে হবে। কিম্তু পারিনি। একে 🛊 সময়ে আমি একেক রকম শপথ করেছি, অথচ রক্ষা করতে পারিনি। চিচাঞ় কথা দেবার **সম**য় আমি রঞ্জিতাকে মিখ্যা বলেছি। রঞ্জিতাকে কথ দেবার সময় আমি লীলার সভেগ সম্প্রে এসেছি। অথচ কেন এমন করেছি আটি জানিনে। ওদের সংক্যে আলাদা আলাদ মেশবার কালেও আমি কার্র সম্পকে! অসং মনোভাব পোষণ করিনি। এরা স সময় আমার কাছে সত্য হিল। চিনা: রঞ্জিতাকে আমি বিয়ে করিনি, কিদ ওদের আমি ভালোবাসিনি একথা বলং মিখ্যা হবে। এমন কি চিনা রঞ্জিতাও তা বিশ্বাস করে। অথচ কেন আমি জম করকাম, ওদের কাছে স্পন্ট নয়, আম কাছেও অধিকণ্ড মজার কথা জী আমার কাছে বিশ্বাসযোগ্য হয়ে ওঠব আগেই দুম করে তড়িত নোটিশে ও বিরে করে সকলকে অবাক করে দিলা নিক্ষেকেও। চিনা আমার নট দেখাতে নে জিল সালা টেপহারও নিয়ে এসেজি র্মঞ্চতা আদেনি, ওর বাবা ভাড়াভা

মেদিনীপুর ব্যাল হরে গিরেছিলেন।
আশ্চর্য, বিরের পর একা প্রেরও চিন্তা
একদিনও আমার বিরে সম্পর্কে ওর
মনোভাব আমাকে ব্রুতে দেয়নি। ওরা
বাদি আমাকে অভিবৃত্ত করত, আমি জনেক
নিশ্চিশত ইতাম। ওদের উদাস হরে
বাওরটো আমার কাছে অপমানকর লেগেছিল। যেন মানুহ হিসেবে আমার দেউলে
হাদরটাকে ওরা সঠিক ধরে ফেলতে
পেরেছিল। লীলা সব জানে। আর সেইবানেই মুশাকিল। সেও আমার দেউলেপনাকে
ব্রের ফেলতে এতদিনে।

অধণ্ড নীরবতা।

নভেদ্য চিন্তা করে বলে, মুখে
সভ্যতার পালিশ লাগিয়ে সাজালো একটা
সংসারের মধ্যে আমি বাস করছি। বে
কোনো মুহুভে পালিশ চটে যেতে পারে,
সাজানো সংসারটা তবির মতন ভেগে
পড়তে পারে। কেউ-না-কেউ আছে যার
নিঃশব্দ অথি আমাকে পাহারা দিছে, তার
কাছ থেকে কেউ কখনো লুকোতে পারে
না। আমিও পারব না। একদিন ধরা
পড়তেই হবে। আজ কিংবা কাল।
পরিচাণের পথ নেই। বলো আমার কী হবে,
আমি কী করতে পারি?

পুমি বদি অন্তণ্ড হও, তোমার অন্তাশগ্লোই তোমাকে অণিনশ**্**ধ করবে।

শা. আমি অনুতাপ করতে চাইনে। অন্তাপগ্লো আবার আমাকে নতুন করে, অপরাধ করতে প্রবৃত্ত করে।

'তৰে তুমি কী করতে চাও?'

ভাষার অপরাধগুলো নিরেই আমি
বাঁচতে চাই। আমি যেন সব সময়ই ব্পতে
পারি আমার ঘাড়ে একটা প্রকাণ্ড পাথর,
আমাকে পাথরটাকে পাহাডের চ্ডোয় পেশছে
দিতে হরে। যা কোনোদিনই পারা যাবে
না। আমরা একটা অসম্ভাবাতার সপেশ
লড়ারের অভিনয় করে চলেছি। করে যেতে
হবে বতদিন না বাঁচবার উপকরণ, পটভূমি,
ম্লেক্ষেধ পালটাবে।

'শালটাৰে ? সেদিনও কী নতুন কোনো সমস্যা দেখা দেবে না?'

'জানিনে। তবে এমন বংধ অবস্থায় চিরকাল ধাকতে পারে না। দ্বাশ্ধ বের্ছে, চারণিকে সব পচে বাছে।'

'এড জেনেও ভূমি ভয় পাছ কেন?'

'পাবো দা? আমি তো দিশ্ব নই যে থোলা ছাদের কাশিশে দটিড়য়ে আকাশে ঘট্ড-ওড়া দেশবার চেণ্টা করব? থানি বিদেই তো তর পাই।' 'সজি করে বলো তো কী হয়েছে তোমার? তোমাকে আৰু অধিক অম্পির চিন্তিত দেখাছে।'

'পাপ একটা মধ্র লোভ। রাস্তায় গজিরে-ওঠা অজস্র চারের গোকান। তেন্টা না থাকলেও আমরা চুকে পড়ি। আমাদের তেন্টাগুলোও বানানো। না হলে এত চারের গোকান চলত না।'

'তোমার কথা আমি ব্রুতে পার্রাছনে।'

'কী জানি, আনমি কী জাটিল হকে পডছি?' নভেন্দরে ক্লান্ড কন্টানর যেন দীঘাকাল হে'টে আসছে: 'আমি জানতাম य भन्न भन्न अभ्य चर्टतः मृतिम कथा-वना, হাসা, ভৃতীয় দিন ময়দানে, চতুর্থ দিনে রেভেটারার। একটা আন্ধও নিজুলি হেটে ষেতে পারে। একঘোরে বাংলা সিনেমার রোমাণ্টিক নায়কের নতুন অবন্থা। আমাদের পারস্পরিক বিবাহিত জবিনের আটপৌরে পোশাক**টা বথারীতি** ব্যতি**ল হ**য়ে যেত। त्रिं उन्होंत्नहें त्नाका मिक्को प्रथा यात ভয়ে আমরা **ওলটা**তাম না। আমাদের তার ণার অসহায়তা নেই আমরা ভয়ানক সিহিজ**স গম্ভীর।** গাম্ভীরের আবরণের আশ্রামে আমরা যথেন্ট চতুর। ছুটির পর একজনের অপেক্ষায় নিদিপ্ট প্থানে দাড়ানো, ভারপর কটেপাথ বনে হাটতে হাটিভে পরিপর্ণ গাস্ডাবৈ রেস্ডোরার পর্ণার অঞ্চালে আক্সমপণ।

'কাঁ বলছ তুমি? এ জাদের কথা?'

আমারে, আমারের। বিলেস নদ্দীকে তা তুমি চেনো। আমারের আাকাউন্টনের মরেরি। মাল দ্বাবছর হল ওর বিরে হরেছে। বিশ্বাস করের আমি চাইনি যে এমন হোক। আমি ভারন, ভারন ক্লানত। কিন্তু কা করে বে হয়ে গেল। বোধ হয়, দুজনের মধ্যেই একটা বাড়তি লোভ ছিল। আল একেবারে আকঠ পড়িরে পড়েছি, একটা বিশ্রী অভ্যেস পানাসম্ভের মতন আমানের দুজনকেই বেধে মারছে। আমি আর পারহিনে। কা করে যে মুভি পার জানিনে।

'আ, কীবলছ?'

প্রত দয়গো কার। কানাকানি করছে,
আপ্রাক্ত দিয়ে দেখাকে: এই এই কেই
লোক। আমাকে কোথাও লুকোতে **হবে।**আমি লুকোচ্ছি, দোহাই তুমি ওদের
বোলো না আমি কোথায়।

হাড়মাড় করে ছাটে বেরিরে গেল নভেন্দা।

বাংলা সংবাদ-সাণ্ডাহিক অনেক আছে

िकन्त्र विष्ठात अक अवर अनना

দলনিরপেক্ষ একমাত প্রগতিশীল সংবাদ-সাংতাহিক

বিচার

নৰপৰ্যায়ে আত্মপ্ৰকাশের মান্ত দশ মানের মধ্যেই পাঠকমহলে দায়ুখ সাড়া জাগিয়েছে

এখন দশম বর্ষ চলছে

অভিন্ন ও প্রথিত্যুণা সাংবাদিকদের ক্রেমার লেখনী বিচার'-এর বৈশিন্টা। রাজনীতি আর প্রশাসনের ইড়ির থবর, 'ভড়ি, দক্ত' নামের আড়ালে প্রখাত সাহিত্যক-সাংবাদিকের ব্যংগ রচনা, 'রাজ পণিডত'-এর রাজ্য-রাজনীতিই গ্রুতক্থা, 'চিনস্কের ডায়েরী'-তে তর্ন রিলোট'রের অপরাধজগতের চাঞ্চাকের বিবরুর, সন্দীপন গ্রেডের পিরিভাল অর্থাং সব থবরের পিছনের খবর সেই সন্দেশ নানা রাজ্যের বিহাই'ড দি নিউজ অর্থাং সব থবরের পিছনের খবর সেই সন্দেশ প্রশাসক দা-র মাঠ্-ময়দানে' এবং 'শংকরনাথ' ও 'শম' পরিবেদিত চিত্তজগতের ভাজর তথা।

—ঃ বিশেষ আকর্ষণ ঃ— 'মেমসাহেব', 'ডিং-লাম্যাট' খ্যাত শ্রীনিমাই ভট্টাচার্যের অভিনব ধারাবাহিক উপন্যাস

উইং কমান্ডার

প্রতি শক্তেবার প্রকাশিত হয়। মূল্য প্রতি সংখ্যা ২৫ পঃ। প্রাহক/একেণ্টরা আজট বোগা'বাগ কর্ম

সংস্কৃতি সাহিত্য মন্দির

৮৬এ আচার্য জগদীশচন্দ্র বস্বোড, কলিকাতা-১৪ টেলিফোন : ২৪-৬৬৫৬

स्या

কাছিম শিকারী

নামখানার বাজার থেকে কেনা ছ-টাকার ছাতাখানা ফড়াস্
করে আকাশের দিকে উল্টে গোল বিভূতির। তার তো গাল হাঁএখন করে কাঁ? গাছপালা দুমড়ে-মুচড়ে-ছোটা ঝড়ের মা-মাসি
উদ্ধার করে সে মুখাখিস্তি আরুভ্ড করে, '...বাও' বইচে, শালার
নিকৃতি করেছে, লতুন ছাতিখান দিলে শালা উল্টে! এখন কি হয়!
প্লাপ্টিকের খাগের মধ্যে পুরে, সেটাকে আবার একটা চটের
থলের মধ্যে ভরে মরা বাছরে মাথায় নিয়ে সপ্লে-আসা
চলধর মালা বোঝাটা নামিয়ে রেখে বলে, 'দে আমাকে, তিনটাকা
দোব। ও তো শালা শহরের লোকদের ঠকানো 'কম্ম'। একটা দমকা
বাও লোগে উল্টে গেলেই বাস!'

নতুন ছাতার 'আবস্থা' দেখে বিভূতির অবস্থা হল কাঁদো-কাঁদো। আগত একটা কচ্চপের দাম! বললে, 'তুই 'নিয়ে কি কর্মৰ শালা?'

'ওর কল সরে গ্যাচে, নামখানায় যেয়ে 'সাতা হারাইব্যান'-এর কাছ থিনে কল বস্যে নেস্বো। তাকে আরো এক টাক দিতে হবে।'

'ধােং তেরি, তবে তুই নে মন্দার-বাপ, দে তিন টাকা।' টাকৈ থেকে ভক্ষানি তিনটে টাকা বার করে দিয়ে খানা নিয়ে নিলে চক্তধর। তারপর অমনি ওল্টানো অবস্থাতেই খ্যানিকক্ষণ নিয়ে চলল মাথার বোঝার উপরে ধরে ঝড়ের দিকে করে। সে ভাবলে বোকারাম 'বিগতে'কে দেখিয়ে ছাতাটা চেপে ঠিক করে নিলে হবে না। তাহলে এক্ষনি ফেরত চাইবে। না দিলে মন-বাঁকাবাঁকি হবে। ব্যাটা কখনো ছাতা ব্যবহার করে [!] নি। •বশ্রেটার একটা অবস্থা ভাল, একশো বাঁশ দিতে গাঁরের খোলে ব্কসমান 'গোজে' প'্তেছে সম্পন্রের বড় কাছিম ধরবার জনে। আর একখানা নোকা দিয়েছে। কিন্তু বিভৃতির বংশ্বি মোটা, তার হোঁত কা পাথরকালো চেহারটোর মতন। একশো প্রযুক্ত গুনতেও পারে না বেচারী! কিন্তু হঠাৎ বৃজ্টি এলে চক্রধর বাধা হয়েই ছাতাটা নামিয়ে আবার ভেতরমুখী করে উল্টে ী মিলে। বিভৃতি মহাবিদ্যায়ে বলে ওঠে, 'দে আমার ছাতা, ও শালা িকল। তুই শালা তো ওদতাদ আছিস চলুরে। এই লে তোর টাকা। িতোর মেয়ে মন্সার সপ্তেগ ধরাধরি হল, তুই শালা আমাকে চালো-কাঠের রাড়ি ঠেঙালি, তোকে শ্বশ্ব করলেই বরণ্ড ছ্যালো। 'থালে' শালা আমার কচ্ছপ চার কর্রতিস নি। দে, ছাতি লে।'

চক্রধর বলে, 'কি রক্ষ, আমাকে তো বেচে দিলি ৷ ভস্পর-লোকের ক-কথা রাং'

ুণিওঃ! আমি শালা ভিদরনোক'! সুপ্তমুখী নদীর মোহনার চরে মতা ফেলে ছেরি বেগধে আমরা শালা কচ্ছপ ধরি—আমরা ভদ্দরনোক্। ছাতি না দিলে মা-কালীর দিবাি, ফের তোর মুদ্দাকে নিরে সেই গোসাবার দিকে পালাব। সেখানে তাড়া করলে দেশান্তরী হব।

আগতাং ছাতাখানা ফেরত দিয়ে টাকা তিনটে টাকের গুলাসিনির বাগের মধ্যে রেখে চরুবর বলে, 'ভন্দরনোক না হলে ছাতি কিন্তা গেলি কেন? একটা কম্তা কিম্বা ভালপাতার পেখে' মাগায় দিলে আমাদের চলে যায়—শালা 'ভন্দরনোক' হলে। আমাদের দেকে নজুব দিয়েছ কি এবার মরেছ। শভূকি দিয়ে

יו סומו מוא ביי -



তোর মেরে তবে শালা, নুক্কে
নুক্কে জাসে কেন? থতো মার দিস তব্
কি শোনে? শালা মারের চাইতে 'পীরিত'
জনেক বড়। আমি তুই জভে আলাদা। কিণ্ডু
ধরি এক কাজ। তব্ বিরে হল না! কোন্
শালারা এই রকম নিরম করেছে বলতো?'

কথা বলতে বলতে ওরা একটা পাড়ার কাছে এসে গেল। শ্মশানটার দিকে আঁত-পুর্ণীত করে দেখে কোনো মরা গর্, ছাগল, কুকুর, শিয়াল অথবা যে-কোনো জীবজনতু পড়ে আছে কিনা।

সকালে বিভূতি বালারের পাইকেরকে রাত্র তিনটে কচ্ছপ দিতে পেরেছে পাঁচাদন পুরে আজে। কোনো পচানী না দিলে তার 🕼 হৈ বা ছেরির মধ্যে কচ্ছপরা আসবে কিন্ সংখে? শালা চকারে খ্ব মাল পাচ্ছে কদিন। চার বাপবেটায় খাটছে—চারদিক ুথেকে মাল আনছে কুড়িয়ে। দুপ্র গড়িয়ে ্বগল। ক্ষিদেয় পেটের ভেতরটা কোঁ-কোঁ পরে শব্দ করছে। চক্রধর চলে গেল। বিভৃতি াথায় গামছার পক্কড় জড়িয়ে বসে রইল াশানটার পাশে। কোথাও কেউ নেই দেখে ুঠে-বাঁধা কচি বাছার সমেত গাই-গর্টার <u>রামনে গিয়ে কলাপাতায় করে বাঁধা সে'কো-</u> বিষ নিয়ে ফেলে দিয়ে সট্ করে বনের আড়ালে অবার সারে এল। গাইটার অনেক-খানি দুখ হয় বোধহয়। কিন্তু কি করবে, তারও তো রোজগার দরকার! চারটে ছেলে-ময়ে বউ আর মা আছে সংসারে। রোজ कर हाम आणे मार्ग?

নাইগর্টা দিব্যি কলাপাতা চিব্তেচিব্তে এক সময় গিলে নিলে । আর্শেনিক
বিষের কিয়া এবার ওব শ্রীরের রঞ্জে রঞ্জে
ছড়িয়ে পড়বে। তারপর ঘণ্টাক্ষেক পরেই
পেট ফালে দম-সম হয়ে মাথে গাঁজা তুলতে
ভুলতে মারা খাবে শ্যো পড়ে হাত-পা
ছাড়িতে ছাড়িত।

্ হয়তো সংখ্যার মথে 'মশানের গোভোগাড়ে পড়রে গর্টা। আশেপাশেই থাকরে
হৈবে। অনেক গ্রাহক আছে অর মতন
ন কাকিয়ে। তবা সরে পড়তে হয়। তার আগেই
া মাচি নিমাই দাসের বাডিতে একবার যেতে
ব হবে। খবব দিতে হবে নিমাইকে। একটা
উ টাকাও হাতাবে সে তার হঠাং অর্থপ্রাণিতর
সাহোগ করে দেবার অজ্হাতে।

মাচিপাড়ায় ঢাকে সে নিমাইয়ের বাডি
আসতে কালো চেহারার তার বিধবা বোনটা
একটা চট পেতে বসতে দিলে। বললে,
পাদা দোকানে গ্যাছে বিগ্তে-গা। এক্ষ্নি
এসবে, বস।

খ'নুটি হেলান দিয়ে বসল বিভূতি।
নিমাইরের বউ ছেলেমেরেবা নাকি তার
ধ্বশুরবাড়ি গাছে। বোনের নাম হরকুলি
দাসী। তাকনাম 'হরি'। বিভূতি দেখলে
বিকে নিয়ে এখন একটু আন্দদ করা যায়।
ছাট একখানা কুড়েযর। তালপাতায়

ছাওয়া। হার কথা সেলাই করতে বসল গিরে আবার একখানা পা লখ্যা করে আর এক-খানা পা মুড়ে কোলের কাছে জড়ো করে। ওর ছেলেপিলে হয় নি। বাধা যৌবন।

বিভৃতি বলে, 'তোর বয়েস কত হরি?'

'কত মনে হয়?'

'এক কুড়ি কিন্বা এক কুড়ি দুই।'

কালো চোথ মেলে, শাদা দাঁত মেলে একট্ হাসলে হরকুলি দাসী। বললে, আমার বয়েস এক কুড়ি বারো।'

'ছেলেপ্লে একটাও হয়নে না?'

'দুর মিনসে। আমার কি ভাতার আছে যে ছেলে হবে?'

'ওঃ! ভাতার না থাকলে আবার মেয়ে-দের ছেলে হয় নে, না?'

খিলখিল করে হাসে হরকুলি।

াবভূচি ভার যোবন দেখে। দেখার হরকুলি। চাপা দের না। মন্দার কথা মনে পড়ে। মন্দা শাম্ক কুড়োবার নাম করে ভার নোকোতে উঠে চলে যায় হেতাল-বনের মধ্যে। কিন্তু কাদিন ভার দৈখা নেই। বিভূতি আর থাকতে না পেরে উঠে যায় হরির কাছে। তাকে ধরতে গেলে সে বলে, দেখ মিনসের কান্ড! এই, না ভাই ছাড়ো, দাদা এসে পড়বে। আরে আরে...

নিমাই এল ঘণ্টা দুই পরে। তখন হরকুলি দুটো টাকা হাতিরে নিয়ে পাড়ার অবস্থাপায় বাড়ির মোড়লদের গিলির কাছ থেকে এক কেজি চাল কিনে এনে গোটাকতক ভেজে নুন-চা করে দিয়েছে বিভৃতিকে।

বিভূতি দেখলে মেয়েটা খ্বই চতুর।
ফুডিনিভি করবার সুযোগ দিয়ে দুদিন
খাওয়া হয় নি বলে টাকাটা ঝেড়ে দিলে।
আশা দিলে, অথচ...টাকা না দিলে নিমাইকে
বলে দেবার ভয় দেখালে আবার!

নিমাই বললে, 'কি খবর বিগুটে-লা?'
'একটা মাল পাবি সম্বে প্রতি-টালিপাড়াটার গো-ভাগারে খেজি রাখিস।'

খাল থাইয়েচিস?'

'হাাঁ।'

হরকুলি বলে, 'এই রকম গোহতো করছ বিগুতে-দা, পাপ হয় না?'

হয় না আবার। এত পাপ করিচি বে, ভগমানের তা রাথবার 'আছরা' (আল্লয় নেই। কিণ্ডু কছেপ ধরে যে থাওয়াছিছ থাতে প্লাহয় না?'

নিমাই বললে, 'মাল পাই এণ্লে, চামড়া 'ছাইড়ে' বেচে এসে তোর বায়না এক টাকা দোব।'

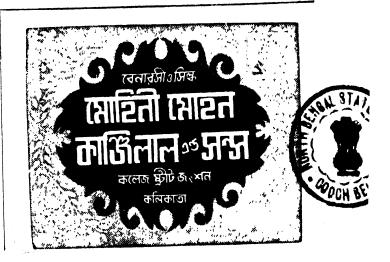
বিভৃতি বাড়িতে চলে এল। তার বউ তরলা বললে, 'আজো কিছু পেলে না? ভাগিয় থারাপ তোমার। চান করে এসে ভাত থেয়ে নাও।'

'চাল কোথা পোল?'

তরলা তরল হাসলে। ছোট মেয়েটাকে
দায় থাওয়াতে থাওয়াতে বললে, 'বাবা
এয়েছিল। মা এয়াত্গন্নি আলোচাল,
মাড়ির চাল আর ভাতের চাল বে'থে দিরেছিল নাকি—একটা 'কাটাল' এনেছে।
ছেলেরা হাঙ্বে বলে নাচতেছে।'

ব্ড়ী মা বললে. 'তোর শ্বশ্র মিনসেটা, এত করে বলন্, রইল্নি।'...

শনান করে এসে ভাত থেরে নিলে বিভূতি। একট্ শোবার পর মালটা থোওয়া যাবার ভয়ে সংখ্যা পর্য ভ আবার এল সে নিমাইদের বাড়িতে। নিমাই বললে, 'মাল পড়বে সকালে। সারদা ঢালি নাকি কপাল চাপড়াতে চাপড়াতে গোবদ্যি সত্যচরণকে ভেকে নিয়ে গেছে।'



অধিও তাহলে সারা রাতটা পচানী-বিহনে ককিড়া-কাছিম চুক্বে না তার ঘেরিতে। নিরাশ মনে বিভূতি চলে এল।

সকালে গো-ভাগাড়ে গিয়ে চামড়াছাড়ানো গর্র লাসটা পেরে গেল বিভূতি।
কথন নিমাই চামড়া ছাড়িয়ে নিয়ে গেছে তা
কেউ দেখে নি। শিয়াল কুকুর জুটেছিল।
তাদের তাড়িয়ে দিয়ে ঠাং-ঠোকনা কেটে
যথন বদতার ভরে মাথার তুলেছে একটি
ছোকরা শুধোলে, 'কোন্ মুচি চামড়া
ছাড়িয়ে নিয়ে গেল দেখেছিস, ছুই?'

'কই না তো দাদা! আমরা প্রচামাল কুড়িয়ে কুড়িয়ে নিয়ে যাই, কজ্মপ ধরি।'

--- 'কচ্ছপ মাংস খায়?'

হবিদা। আর কচ্ছপের মাংস থার মানুষে।

বিভৃতি দ্রুত চলে এল বাড়িছে।
নোকোয় বশ্তাটা তুলো নিয়ে ধজি
মেরে মেরে একাই সশ্তম্পী নদীর তীর
ধরে চলে এল তার খড়িতে। লোয়ার নেমে
গেছে। শত শত ঘন-ঘন বাঁশের 'গোঁজে'
ঘরের মধ্যে একটাও কচ্চপ নেই। ওপাশে
চক্রধরের ঘরির মাল তুলে নিয়ে চলে
গেছে। হাড়গোড় পড়ে আছে।

জোয়ার ওঠবার অপেক্ষায় তীরের ওপরে বসে রইল বিস্তৃতি। অদ্রেই জলগল, তীরের ওপরে। কে'দোবাঘ এসে টাকৈ করে যাড়ের ওপর ঝাপিয়ে পড়লেই হল। বড় বল্লমটা হাতে করে ধরে থাকে সে। কেউ লোকজন নেই এখন।

বুড়ো চকুধর আসবে জোয়ার লাগার সময়ে যদি আবার মাল পায়। হরকোচ, তেকটোল আর ফণিমনসার ঝাড়টার পাশে শুরোছিল একটা কুমীর। আস্তে আস্তে জলে নেমে গেল।

> বিস্তীর্ণ নদীর বৃক্তে জোয়ার লাগছে। চক্রধররা ক-বাপ-বেটায় এল।

বিভূতি উঠে কম্তার মাল থালে ঘেরির মধ্যে ঢেলে পাথরে বে**ংধে ছড়িয়ে দিয়ে** এল।

চক্রধর বললে, 'আদ্রু আমরা কুকুর মেরে এনিচি রে বিগতে। তোরই কাল পোয়া-বারো। দুটো জোয়ার পরে মাল তুলিস— অনেক হবে।'

দ্বপুরের জোয়ার মামতে সেই সংখ্যা। ছ-ঘন্টা জোয়ার। তারপর রাতে যথন ভাটা পড়বে তখন কি তার ঘেরির মাল চুরি করে আনতে পারে চন্ধুরেরা?

वृत्का हक्त्रतंत्र जीवन **मारम। मान**, वाष, कृमीत काष्ट्रेत्वर रम स्वयं करतं ना।

তবে চকুরে বলে, 'রাতের বেলা কখনো ঘেরিতে যাবিনি বিগুতে। সোদর-বনের জুগালে থাকে মেলাই শকিচুমি। তারা ঐ ঘেরির মাছ বা মাংস খেতে আসে! মান্যকে দেখলে, তারু গুলা তিপে রম্ভ শব্বে খেয়ে নেয়।'

বিভূতি হাসে: এসব শৃধ্ তাকে মিধো ভয় দেখানো। তব্ ভয় ফরে। অংধকারের যেন আগাদা একটা শীবন আছে!

রাত্রে যখন সে বলে, 'যাব মা একবার ঘেরিতে—যদি চকঃরে মাল তলে নের?'

'দোহাই 'ধন্মের' বাবা, 'আভিরে' যাসনি। বাঘে খেয়ে ফেলবে, সাপে কাটবে, কিন্বা তোকে কুমীরে ধরবে। কাল সকালে

সকাল কথন হবে কে জানে। **জেবলে হসে থাকে বিভৃতি। বিডি** होद ছৌষণ তেজে বৃষ্ট এলে উল্রে পরুরোনো ছাউন[ি] থেকে ঘরের এখানে-ওখানে জল পতে। মা খসস্সস্—শব্দ করে খেজরে-চাটাই টেনে আনে। ভার কাছে **দুটো ছেলেমে**ার ঘ**ুমোচেছ। তরলা**থে ভাকলেও সে জাগে না। তার হাঁ-করা মাখে ওপরে যথন জল পড়ে তথন ঘুম ভেঙে যাং উঠে ছেলে দ্বটোকে নিয়ে দোরগোড়ায় 🐇 वरम चुट्याएँ थारक स्न। मरम्यत र ফ্রিয়ে গেছে। নিভে গেল। এখন এই,বর্স অন্ধকারে যদি । ঘরের পাশের হোগলাবনের মধ্যে থেকে একটা গোথরো উঠে আনে ত**ে তাকে অং**ধক মারাই বিপদ!

जिला शाह होता । अन्तल। मूर्

होता श्रुक्ति मा हारा व्यक्त मृद्

ग्रूहर्क व्यक्ति मा हाराहे व्यक्ति

ग्रूहर्क व्यक्ति श्रुक्ति। हाराह वात्

क्रिक्ता ज्ञूक्ति वा त्रिहे। क्रीवर्त क्रिया ज्ञूक्ता के

हिन्दु रुद्ध। श्रुक्ति। स्रुक्ता।

ভোর হয়ে আসতে নৌকো নিরে । গেল বিভূতি। গিয়ে দেখলে চক্রুং নেমেছে তাদের কাছিম-ঘেরির মটে

বিভৃতি দেখলে আর একটা দে হলেই ওরা তার মাল তুলে নিয়ে নিড পলল মাটিতে পারের দাগ দেখলেই ঝগ তর্ক মারাখারি খানোখানি বেধে যেত।

পাচট বড় বড় কছুপ পড়েছে বিছুলি ঘারর মধ্যে। বলম হাতে নিয়ে সে দে গেশে কছুপগ্লো ফোনফো করে শব্দ কট বেরিয়ে পালিরে যেতে গেলে বালের বেড় মধ্যে আটকে যায়।

ক্ষেকটা সমুদ্রে-কাঁকড়া পড়েছে। এক
কুমারের থাছা। বল্লম গোঁথে তাকে ঘায়েল
করে দেয় বিভূতি। হাতে গামছা স্পাড়য়ে
জড়িয়ে সমুদ্র-কাঁকড়াগ্রেলা ধরে ফেললৈ সে
প্রথমে। একটা হাতে চিপটে ধরে কেটে দিতে
চিন-চিন করে খুন বেরুতে লাগল। কছপ-গ্রেলা উল্টে দিলে বল্লমের খোঁচা মেরে
মেরে। তারপর সব এনে এনে নোঁকোয় তুলে
নিয়ে জোরে গলা ছেড়ে গান গাইতে গাইতে
চলে এল নামখানার বাজারে।

'ও সোনার ভাবিরে কি উপার করি রে তোর সনে মোর ভাব রাখা দায়।'...

পাইকের ভার মালকটা সব নির্ নিশে। তিরিশ টাকার কচ্ছপ আর পা টাকার কাঁকড়া। পাঁয়তিশ টাকা মাত পেত সে একটা আড়াইশো টাকার গর্ম মেরে মুচিটা চামড়া বা খাল' বেচে পাবে ছ-টাকা

সংতাথানেক হয়তো আর মাল পা না কিভৃতি। কোথায় কার গরা পাবে আব কে জানে।

तिश्चित्रिण व्यवशत कत्रत्त कत्रशस्त्र पृथ(शष्टे सांज़ित (शाल(याश (८) प्रतिकत्र ऋश (ताध क्रत

ক্ষরাক টুখপেট মাড়ির এবং গাঁডের গোলবোগ রোধ করার ক্ষন্তেই বিশেষ প্রক্রিরায় তৈরী করা হয়েছে। প্রতিধিন রাজে ও পরদিন স্কালে ক্রহাক টুখ-পেট দিয়ে গাঁড মাজলে মাড়ি কুক্ষ্ হবে এবং গাঁড শক্ত ও উক্ষাপ ধবধবে সালা হবে।

বিনালুল্যে ইংরাজী ও বাংলা ভাষার রঙীল পুল্কিলা—"দাঁভ ও নাজির বন্ধু" এই কুপনের সলে ১০ পরসার ট্রাম্ম (ভাকষাওল বাবহ) "ম্যানার্স ভেটাল এডভাইশরী ব্যারো, গোস্ট ব্যাগ নং ১০০৩১ বোরাই-১ এই টিকানার পাঠালে আপনি এই বই পাবেন।

নাম টিকানা

A-7

টিকানা ভাষা —

> িবহান্সে ট্রমাষ্ট-এক দন্তচিকিৎসকের স্থান্ট

> > AND BEN

--আবদ্ধে জরব



শেষ পর্বের জীবন

াত সংখ্যার প্রখ্যাত ফরাসী লেখিক।

দোম সীম দা ব্ভার সম্প্রতি প্রকাশিও

ব্রুজ্জ এন্ধ্র প্রসংগ্রে তাকে বিখ্যাত

সী পাঁচকা 'লা ম'দ' যে ক্ষেকটি প্রশ্ন

ন তার ক্ষেকটি উত্তরসহ প্রকাশিত

হ। এই সংখ্যায় বাকী প্রশ্নগ্রিল

সহ পরিবেশিত হল।

্যাদাম সীম দা ব্ৰেচার এই গ্রন্থটিতে ব্ৰষ্পের সমস্যা নিষে যে স্কুল্ডীর নিভ্রিতর সংক্রে আলোচনা করেছেন ব্র্বাহিতোর ইতিহাসে তা প্রায় ন্বিভীয় হত।

শ্বভাবতই এই সব গ্রন্থাদির পিছনে
গনৈতিক অভিসন্থি থাকে। তাই প্রণনোসোজাস্কি প্রণন করলেন যে, গ্রন্থটির
ইনে রাজনৈতিক অভিসন্থি আহে
না ? মাদাম স্দীর্ঘ উত্তরে বলেছেন, উপহার অংশটিকে অন্ততঃ সেই রকম
থা দেওয়া যায়।

প্রশন: আপনার প্রশ্যটি যে রাজনৈতিক কথা কি স্বীকার করবেন?

উত্তর : উপসংহারট্কু হয়ত তাই ।
ততঃ সে রকম বলা চলে। আর আমার ।
থরচনার প্রেরণাট্কুও রাজনৈতিক। থিবার ইতিহাসের প্রতা জন্ডে আছে ।
টি বিশেষ ধরনের বন্ডা মান্ষের দল। নবিংশ শতাবদী পর্যান্ত দরিপ্র এবং বন্ধ ন্যের সংখ্যা অনেক কম ছিল। যথা—
সি বা রোমের ক্রীতদাস সমাজ বা ফ্রান্সের দ্বাণ স্মুপ্রণ প্রকলা করে গেছে।

এর পরবতীকালে শ্রেণীসংগ্রামে দুর্টি ।শেষ শ্রেণীর বুড়ো মানুষ দেখা গেছে।
ড়ো মানুষ সম্পর্কে দুটি বিভিন্ন ধরনের
রণা গড়ে উঠেছে। একদিক থেকে বুড়ো
নুষরা পরম প্রশেষ, তাদের রক্ষত-শ্ ভ্রু
কবেশ সম্প্রম সুণ্টি করে, মাথা ঘিরে
হিমার উম্জ্রেল আলো—আর বাকী বুড়োরা
কেবারে অকর্মা, অপদার্থ, শারীরিব দিক
থকে সম্পূর্ণ নিঃশেষিত, বাহাত্রেপ্রাম্থত
নির্থাগ্রীসত বাতুলের দল। তর্ণ সমাজ
থ্যেছ প্রেণীর বুড়োনের উপহাস করে,
বিজ্ঞা করে।

ু যারা স্বিধা ভোগকারী ধনী সমাঙের প্তভুতি, সেই সূব্যুড়োরা তাদের চার- পালে শ্রম্থামণিডত বার্ধক্যের এক মহিমামণিডত ম্তি রচনা করেন, যার পিছনে
আছে সামালিক, নৈতিক ও বাল্লিগত ছেতু।
সেইহেতু ও'দের সাহিত্য আছে, ও'দের
সমর্থ'ক নীতিবাগীলের দল আত্তর।
সিসেরো দা সেনেকট্টে'স্হ, সেনেকা
ইত্যাদি ইত্যাদিরা এই সব পরম শ্রম্থের
ব্যো মান্ষের চিত্রক্স রচনা করেছেন,
এ'বা পরম প্রস্কার বৃশ্ধ স্থিত করেছেন,

তথাপি উনবিংশ শতাব্দীতে মান্য ব্ৰেছে যে, ব্জো মান্যদের পরিপ্ণ-ভাবে বলিদান করা হছে। তার সংগে তাঁরা ব্ৰেছায়া মানবিকতাবাদ সংযুক্ত করেছেন। স্তরাং ব্জো মান্যদের শ্রেণী বিভাগ হল, তাঁরা হলেন সমাজের দ্বিতীয় শ্রেণীর মান্য এবং বরস নিয়ে বরস বিচার করে মান্যের গ্ণোগ্ণ বিচারে তারতমা করা হতে লাগল। বলিত এবং শোষিত শ্রেণীর স্বিধার জনা তারা ক্ষয়িক্ষ্ ব্রেশ্বর এক চিত্রবল্প রচনা করলেন।

প্রশনঃ আপনি কি কোনো সমাধান স্থিয় করেছেন?

উত্তরঃ দেখুন! তার অর্থ সমাজের আমূল পরিবর্তনে সাধন। অথচ ফ্রান-ডিনাভিয়ান দেশসমূহে এই সমস্যা সম:-ধানের পর্শ্বতিটাকু অনেক চমংকার। অনেক দিক থেঁকৈ প্রশংসনীয়। দৃশ্টাতস্বরূপ বলা যায়। নরওয়েতে ব্ডো মান্যদের অনেক দিন পর্যাত কাজে নিযুক্ত রাখা হয়। প্রায় সম্ভর নহর বয়স পর্যনত। তবে, এই কাল তীদের বীধতি বয়সের সামথীানসোরে শরীর-উপযোগী কাজ হয়ে থাকে। এই সব দেশে ভোগ্য পণোর ওপর অতিশয় চড়াছারে কর ধার্য করা আছে, আর এই স্তে প্রাণ্ড রাজন্ব থেকে বুড়ো মান্বদের জন্য উল্লত-তর বাসগৃহ এবং কাজে নিযুক্ত রাখার ব্যবস্থা করা হয়। অবশ্য আদর্শ ব্যবস্থা হবে--(দঃখের বিষয় সোস্যালিন্ট দেশ-সম্হেও এই ব্যবস্থা নেই), ব্যঞ্জে মানুষদের জবিনের সপো এমনই জড়িয়ে রাখতে হবে যে, তারা বে'চে থাকার একটা অর্থ ব্রুথবে, জীবনে অনেক আগ্রহ বৃদ্ধি পাবে। ব্যঞ্চা মান্ধরা অপরের জন্য কান্ধ করবেন এবং অ্পরে তার পরিবর্তে কাজ করবেন বুঁড়ো-

ব্জিদের জন্য। এই সহযোগিতার পার-স্পারক যোগ তাঁদের মাতৃ।কাল প্যশ্ত স্থায়ী হবে।

বংদ্যে মান্যদের পি'জরাপোলে পাঠানো হবে না। এইভাবে নিবাসিতের জীবন-যাপন ক্লেশকর। বত'মানকালে তাদের অবস্থা অনেকটা অন্তত পারিয়ার মত, তাঁরা সামাজিক অচ্ছাত। এই অবস্থার পরিবর্তন চাই।

প্রশন : বিদেশদের বয়োব্দিধ বিষয়ে কি বলেন?

উত্তর : যে সব বিদম্ম মানুষ দীর্ঘদিন
ধ্যর এবং জীবনের শেষ প্রাণেত পেণছে
মানসিকতার ক্ষেত্র কর্ষণ করে থাকেন তারা
অনেক,দন পর্যাপত তাদের মানসিক
সচেতনত্ব অক্ষ্যাল রাথতে পারেন। যে সব
সোভাগাবান মানুষের অতীত বৈদম্পার
আবহাওয়ায় লালিত, তাদের প্র্যাতি, সহজ
বিচার শক্তি, বোঝাপড়ার প্রভাবিক শক্তি,
বিশেষ ধরনের জ্ঞান প্রভৃতি বয়োবাদ্ধির
সংগা ক্ষয় পায় না। মানতাম্বের মান্তি হ্লাস
পায় শ্মা, তাদের ক্ষেত্রে যাদের মানতাম্বের
বাবহার সামিত।

যে মান্য চল্লিশ বছর বরসে অতি সামানা পড়াশোনা করে থাকে তার যথন যাট বছর বরস হবে সে ত' কিছুই আর পড়াব না।

বিদেশ মান্ধের ক্ষেতে যা ক্ষয় পায় সে হল তাঁর স্কানী শক্তি। তবে সকলের ক্ষেত্রে তা হয় না, আর সেই দিকটি বিশেষ গ্রেড্পার্ণ এবং কৌত্হলপ্রদা দ্বংথের বিষয় এই বিষয়ে তথাদি তেমন সলেভ নয়। যা আছে তা সংগ্রহ করা সহজ্যাধা নয়। এই স্বংশতথ্য নিয়ে বেশী দ্ব যাওয়া চলে না।

চিচাশিশ্পী, আর সংগতিবিদ্রা তাঁদের স্কানী শক্তি দীর্ঘকাল সজাবি রাখতে পারেন। ইতিহাস এই সাক্ষ্য দেয়। দার্শনিকদের ক্ষেত্রেও অন্তর্গ অবস্থা। কিন্তু লেখক এবং তাঁদের চেয়ে আরো অনেক কম শক্তিমান হলেন গণিতবিদ্রা, এ'দের স্কোনী শক্তি বেশী দিন থাকে না। বৌবনকালে, বয়স যখন অনেক কম বৈজ্ঞানিক এবং গাণিতিক আবিষ্কার করা